

সচিত্র মাসিক পত্র

৩৪শ ভাগ, দ্বিতীয় খণ্ড

কাৰ্ত্তিক—চৈত্ৰ

7987

শ্রীরামানন্দ চট্টোপাধ্যায় সম্পাদিত

বাৰ্ষিক মূল্য ছয় টাকাঞাট খানা

বিব্র-সূচী

| শচিন ৰাহ্য (কবিতা)—রবীন্দ্রনাণ ঠাকুর | ••• | 959 | দাসন-বণ্টনে মন্তারের প্রতিবাদ (বিবিধ প্রসম্ | ••• | W8 |
|--|-------|-----------------|---|------|-------------|
| অনুষ্ঠ শ্ৰেণী-সমূহের উন্নতি-বিধারিনী | | | শাসন বণ্টনের দোধোদঘাটন করি | | |
| সমিতি (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | >69 | কেন (বিবিধ গ্রাসঙ্গ) | ••• | *** |
| অপচয়-নিবারণে-রসংয়ন বিদ্যা— | | | খালোচনা ১১১, | (00, | 414 |
| শ্রীপুলিনবিহারী সরকার | ••• | 668 | ঈশানচক্র মুখোপাধ্যায় (বিবিধ প্রসন্ধ) | ••• | 105 |
| শ্বনতহ স্বীকারে স্তরধর:দর স্তাধ্য ও স্বাভাবিক | | | উ ইলিরম কেরীর শত বার্থিক | | |
| আপন্তি (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | €>• | স্বতিসভা (বিবিধ প্রস স্থ) | ••• | 8€> |
| 'অবনত'দিগের জন্ত আগন সংরক্ষণের | | | উড়িয়ার বাঙালী এক বলের বাঙালী ও প্রবাসী | - | |
| কুফল (বিবিধ প্রাসন্স) | • . • | Pas | বঙ্গ সাহিত্য-সংশ্বলন (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | 181 |
| শ্রভিনৰ মে ংদুত ও কালিদাসের অব্যাননা | | | উৰোধন- রবীক্সনাথ ঠাকুর | ••• | 68 > |
| — ञ्रीवीरत्रभन्न रमन | ••• | 8•0 | একাদণী— প্রীসীতা দেবী | ••• | 974 |
| মভিবানশ্রী ভারাপদ মছ্মদার | ••• | 8 > € | এলাহ'ব'দ বিশ্ববিদ্যালয়ের সঙ্গীত- | | |
| শ্রীত্রমূলাচন্দ্র চট্টোপাধার (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | 188 | সম্বোলন (বিবিধ প্রাসন্ধ) | ••• | 9>> |
| মহচক্র মার্কা ইম্পী রিয়াল কেমিকেল ইণ্ডারীক | | | এলাহাবাদে বাংলার চর্চা (বিবিধ প্রসন্থ) | ••• | 865 |
| লিমিটেড (বিবিধ প্রসঙ্গ) | •-• |) 6 F | কংগ্রেস ধ্রাকিং কমিটর অধিবেশন | | |
| वार्शामय-त्यान-जीत्वार्शनक्य वात्र विमानिधि | ••• | ৮৬১ | (বিবিধ প্রাসৃষ্ট) | ••• | 627 |
| অৰ্দ্ধোদর যোগে স্থান (বিবিধ প্রাসঙ্গ) | ••• | 980 | কংগ্রেদ পার্লে মেণ্টারী দলের কার্যাড: | | |
| মলভার (সচিত্র)— এ মুলাচরণ বিদা'ভূষণ | ••• | 22 | দেশদ্ৰোহিতা (বিবিধ প্ৰস দ) | ••• | 108 |
| আইন-সচিবের নিরপেক থাকা (বিবিধ প্রসঙ্গ) | | Gep | কংগ্রে:সর গভ অধিবেশন (বিবিধ প্রাসক) | ••• | 5 DK |
| মাড়িয়লের কাগন্ধ (সচিত্র)— খ্রীমণীক্সভূষণ গুপ্ত | | २७ | কংগ্রেসের নৃতন ওয়ার্কিং কমিট (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | 9•1 |
| মাধুনিকা (কবিতা)—রবীক্তনাথ ঠাকুর | ••• | b 30 | কথাকলি (সচিত্র)—গ্রীশরদিন্দু সিংহ | ••• | ₽84 |
| মাধুনিকা (কবিতা)— শ্রীপুশীলকুমার ঘোষ | • • • | ৬৭• | কনে-বউ (ক্বিতা)—- শ্রীফান্তনী মুখোপাধ্যার | ••• | ્ટ |
| আফগানিস্থানর শীগপ্রবেশ (বিবিধ প্রাসক) | ••• | >6> | কৰি ও কৰ্মী অভূলপ্ৰসাদ—গ্ৰীরাধাক্ষল | | |
| ৰানু আৰহুল গড্ফর খান (বিবিধ প্রাসক) | | >83 | মুখোপাধার | ••• | 6 |
| ধানু আৰহণ গড়কর খান ও | | | কমিটির প্রস্তাবিভ প্রাদেশিক আত্মকর্ত্ত্বের স্বরূপ | 1 | |
| বঙ্গদেশ (বিবিধ প্রসন্ধ) | ••• | ઝર | (ৰিবিধ প্ৰস ক) | ••• | 889 |
| ছার আবহলা হয়াওয়ার্জী (বিবিধ প্রসন্থ) | | 188 | প্ৰীবৃক্ত কল্পাদাস গুহ (বিবিধ প্ৰসঙ্গ) | ••• | 694 |
| মাবেদন (কবিতা)—রবীক্রনাথ ঠাকুর | ••• | 542 | কলিকাভা বিশ্ববিদ্যালয়ে মাতৃভাষা ও ইংরেজী গ | ভাবা | |
| মানানের হুর্বলভার হুক্ত আমরা | | , ' ' | (ৰিবিধ প্ৰাসক) | ••• | 200 |
| मात्री (विविध क्षत्रक) | | cra | ক্ৰিকাড়া বিশ্ববিদ্যালৱের ছাত্রমকল ক্ষিটি | | |
| ৰা মরিকার দৃষ্টান্ত অনমৃস্ত (বিবিধ প্রাসম্ব | | 110 | (विक्थि काम्ब) | ••• | 863 |
| আসন-বণ্টন বৃহস্ব অসুসারেও | • | | কলিকান্তা বিশ্ববিদ্যালয়ের কল্মোৎসৰ | | |
| নংছ (বিবিধ প্রাসন্ধ) | ••• | > | (বিবিধ প্রসন্থ) | ••• | 98 |
| আসন-বর্ণন শিক্ষাসুধারীও নহে (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | 440 | কলিকাতা স্বাহ্যপ্রদর্শনী (বিবিধ প্রসঞ্চ) | ••• | F 2' |
| | | | | | |

| ৰ্শিকাভার ধান আবহুল গফ্কার ধানের সহর্জনা | | তর চাক্লচন্দ্র হোব (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | >81- |
|--|--------------|---|--------------|---------------|
| (বিবিধ প্রাস্থ) | 56 % | চিরস্তনী (গল্প)—শ্রীপাক্ষণ দেখী | ••• | 98€ |
| কলিকাভার প্রবাসী-বঙ্গসাহিত্য-সন্মেলন (সচিত্র) \cdots | 950 | চীনে লোকশিকা (বিবিধ প্রদৃদ্ধ) | ••• | 923 |
| কাস্তা (কৰিতা)—গ্ৰীস্ধীরচন্দ্র কর 🗼 \cdots | ७ऽ२ | চীনের কৃষি ও কৃষক-পরিবার-শ্রীদেবেজনাথ | | |
| कोर्बनावावन-जीननीमाधव कोषूवी | 08 F | মিত্র | ••• | ૭૨ 8 |
| কুটির-শিল্প ও বন্ধীর শিল্প-বিভাগ (সচিত্র) | | ছেলেমেরেদের একত্র শিক্ষা (বিবিধ প্রসন্ধ) | ••• | ৬৽৩ |
| ञ्चिक्क नामात्र अ ह | હર દ | ছোটনাগপুরে বাহিত্য-সেবার উপাদান (সচিত্র) |) | |
| কুলীনের মেরে—প্রতারাশভর বন্যোপাধ্যার | 967 | — শ্ৰীশরৎ চন্দ্ৰ রাষ | 860, | હા છે, |
| কেশকজ্ঞ সেনের স্থৃতিপুঞা (বিবিধ প্রাসন্দ) | e \$9 | जन्मनिद्रार्थित छेयथ छ यञ्ज (विविध व्यनज) | ••• | ۲۵۹ |
| কোখার কত জন ভোট দিয়াছে ? (বিবিধ প্রসন্থ) | 605 | জলদেচন সম্বন্ধে ঘুমন্ত কে? (বিবিধ প্রাসঙ্গ) | ••• | F 3• |
| कान्षि हान ? श्री द्वारणमहस्य द्वात्र विद्यानिधि ··· | 206 | জাগরণী (কবিতা) - শ্রীসজনী কান্ত দাস | ••• | ષ્ટ્ર |
| কোন্ জাভি কাহার হিভ করেন ? (বিবিধ প্রদঙ্গ) · · · | ebb | জাতীর বৈজ্ঞানিক প্রতিষ্ঠান (বিবিধ প্রদৃষ্ট) | ••• | €2F |
| কোলিল অব্ টেটে দেশী রাজ্যের নরেশদের মডের | | कानकीनाथ वर्ष (विविध क्षत्रक्र) | ••• | 864 |
| भूगा (विविध व्यमक) · · · | bb-8 | জিতেন্দ্রনাথ কন্যোপাধ্যান্তের | | |
| কৌবিল অব ষ্টেটে প্রদেশ অহুসারে আসন | | मान (विविध क्षत्रण) | ••• | 209 |
| क्णेन (विविध श्राम) · · · | bb 2 | মি: জিলা কি চান ? (বিবিধ প্রাস্ত্র) | ••• | 906 |
| কৌ শিল অব ষ্টেটের আসন বণ্টন | | মিঃ জিলার রফার সর্ত্ত (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | b b9 |
| (বিবিধ প্রাগন্ধ) · · · | 443 | জীবনায়ন (উপস্তাস)—গ্রীমণীক্রলাল | | |
| ক্ষণিকের মারা (গর)—শ্রীবিজেন্দ্রনাল ভাহড়ী 😶 | २১१ | | 9>৮, | 100 0 |
| ক্ষরিকুতার জন্ত গবংশ ণেটর দারিত্ব | | জীবিকা (গল্প)—গ্রীমাণিক বন্দ্যোপাধ্যার | ••• | 93 |
| (বিবিধ প্রা সঙ্গ) · · · · | ८७७ | ক্ষেলার জেলার আলালা পাঠ্য-পুত্তক | | |
| এগুকু কিভিশচন্ত্র নিয়োগীর ব্যবস্থাপক স্ভা য় | | (विविध व्यंत्रङ्ग) | ••• | >61 |
| পুনাপ্রবেশ চেষ্টা (বিবিধ প্রানন্ধ) · · · | 8%• | ডালাকালিয়া ও ডালাকালিয়ান (সচিত্র) | | |
| থাইবার সীমান্তে (সচিত্র)—শ্রীনন্দ্রনাল | | শ্রীশর সিংহ | ••• | હ |
| চটোপাধার · · · | 6.4 | ডিক্টেটর বা খৈর শাসক (বিবিধ প্রাসঙ্গ) | ••• | 389 |
| ডক্টর গণেশ প্রসাদ (বিবিধ প্রসঙ্গ) | >•• | (छामीनिश्रनस्वत्र चित्रस्य, ना छेन्छ। बिर्क ? | | |
| পৰক্ষেণ্টের বণিক-বৃদ্ধি (বিবিধ প্রদদ্ধ) | ት ቅን | (विविध व्यमक) | ••• | 88> |
| গভর্মেণ্ট আর্টমূল সমূহে চিত্র-প্রদর্শনী (সচিত্র) · · · | 959 | ডোমীনিরনদ্বের প্রতিশ্রতি (বিবিধ প্রসঞ্চ) | ••• | F29 |
| মহান্দা গান্দীর কংগ্রেস হইতে অবদর গ্রহণ | | চাকার দেণ্ট্রাল ব্যাক্ষের শাখার বাঙালী | | |
| (विविध व्यमम) | ৩•৯ | এজেণ্ট (বিবিধ প্রাসঙ্গ) | ••• | 906 |
| গ্রাম্য শিল্পসভা সম্বন্ধে শুম্বব (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ea9 | তপশীলভুক্ত কোন কোন জাতির প্রতিবাদ | | • |
| গিরিডির ঔপনিবেশিক বাঙালী (সচিত্র)— | | (বিবিধ প্রাসঙ্গ) | ••• | ৮ ৯৭ |
| শ্রীপরোজ কুমার দে ও শরদিলু চট্টোপাধ্যায় ••• | % 2• | ভূতীর শ্রেণীর রেশ্যাত্তীর স্থবিধা | | |
| গিরিডির বিবিধ প্রতিষ্ঠান (সচিত্র)—গ্রীসরোজ | | (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | ৮ ৯৭ |
| কুমার দে ও শ্রীশরদিন্দু চট্টোপাধ্যার 🗼 🚥 | 965 | निनित प्रःथ— ञी र्थमीना (नवी | ••• | 993 |
| পৌড় জাতি (সচিত্র)—শ্রীসভ্যকিন্বর | | দিবাম্বপ্ল-শ্রীদীতা দেবী | ••• | res |
| চটোপাধার | 2>0 | महात्राक निया (विविध व्यन्त्र) | ••• | 900 |
| গোপন কথা (কবিতা)—শ্রীপ্রমধনাথ বিশা | २ऽ७ | ছদিন পরে (কবিতা)—শ্রীস্থীর চন্দ্র কর | ••• | 292 |
| ঘাসের ফুল (গল) শ্রীভারাশনর বন্দ্যোপাধ্যার ··· | 92 | দৃষ্টি-প্ৰদীপ (উপস্থাস)—জ্ৰীবিভূতিভূবৰ | | |
| চরণ ক্লাবকে প্রহার সম্মীয় | | वत्सार्थाशांत्र ১३, ১१৯, ६०७, ६१১, | 6 50_ | 990 |
| প্রাপা (বিবিধ প্রাসক) | ተ৯৮ | দেনা-পাওনাগ্রীউমেশ্চক্ত ভট্টাচার্য্য | ••• | |
| চার অধার—শ্রীরাজশেধর বহু | 878 | মহর্ষি দেবেজনাথ ঠাকুরের বৈরাগ্য— পণ্ডিত | | |
| "চার অখ্যার"(বিবিধ প্রসন্ধ) ··· | ७•२ | ব্যিরনাথ শান্তী | ••• | 633 |
| | | | | |

| [मन-विमिद्र कथा (मिठिक) 382, २৮°, 820, equ | , १ २७, | প্রবাসী-বন্ধসাহিত্য-সম্মেদন (বিবিধ প্রানন্ধ | >8€, | |
|---|----------------|--|--------|-----------------|
| | 645 | | 88>, | ess, |
| দেশী নরেশদের শুরুত্ব কেন এত ? | | প্রবাসী-বঙ্গদাহিত্য-সম্মেলন—শ্রীললিভমোহন | | |
| (বিবিধ প্রাসৃষ্ণ) ••• | bb 8 | ক্র | ••• | P>8. |
| দেশীরাজ্ঞাসমূহের নরেশদের ও ব্রিটশ-শাসিত | | প্রবাসী বাঙালীর সন্মান (বিবিধ প্রসন্ধ) | 887, | 69> |
| ভারতীয়:দর মূলা (বিবিধ প্রাসঙ্গ) 🗼 \cdots | 447 | প্রশ্ন (কবিতা)—রবীক্তনাথ ঠাকুর | ••• | 845 |
| দেশীরাজ্যের প্রফাদের মতের মূল্য (বিবিধ প্রাসদ) · · · | ৮৮২ | প্রাচীন ভারতীর প্র্থির পরিচয় ও | | |
| অধাপক বিজ্ঞদাস দত্ত (বিবিধ প্রসঙ্গ) | 843 | স্চী (বিবিধ প্রাসন্ধ) | ••• | 860 |
| धातावाशी—ववीज्य नाथ ठाकूव ··· | ৬•৯ | প্রাথমিক শিক্ষক সন্মিলনীর অধিবেশন | | |
| নাগপুরের কংগ্রেদনেতা অভ্যন্ধর (বিবিধ প্রসঙ্গ) · · · | ७• २ | (ৰিবিধ প্ৰাসঙ্গ) | ••• | 180 |
| নারীদের আইনগত অন্ধিকার (বিবিধ প্রাসক) · · · | ৮৯৮ | প্রাদেশিক বজেটসমূহ (বিবিধ প্রসন্ধ) | ••• | P>4 |
| निधिन वक श्रक्षांत्रात्वनन (विविध श्राप्त) | 989 | প্রেত—এ অমিয়কীবন সুখোপাধায় | ••• | ₽•• · |
| निश्वितक (दकांत्र यूदक माम्बनन (दिविष ध्यमक) · · · | ৬•২ | মিঃ ফল্পুল হকের একটি বক্তৃতা | | |
| নিখিল ভারত সাম্প্রদায়িক বাঁটোয়ারা বিরোধী | | (বিবিধ প্রাসক) | ••• | ७ऽ२ |
| मस्त्रगन (विविध क्षेत्रण) | २৯৮ | কিরদৌসির সহস্রবার্ষিক জন্মোৎসব | | |
| নিখিল ব্রহ্ম ভারতীয় শ্রমিক কনফারেল | | (বিবিধ প্রাসন্দ) | ••• | ৩•৬ |
| (विविध क्षात्रक) ••• | 908 | ক্রাব্দের রবীক্স বান্ধব সমিতি (বিবিধ প্রাসঙ্গ) | ••• | 889 |
| নিশীবে (কবিডা)—শ্রীপ্রধীরচন্ত্র কর ··· | ૯ ઝર | বঙ্গদেশে ডাকাইতী বৃদ্ধি (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | 424 |
| নিশীথে ডাকিল কে—শ্রীফমিয়কুমার ঘোষ … | ₽ ₹• | বঙ্গীয় মহাকোষ (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | 869 |
| মুটু (কবিতা) – রবীক্তনাথ ঠাকুর ••• | be > | বদীয়-সাহিত্য-পরিষদের প্রতি কর্ন্তব্য (বিবিধ 🕏 | াস্প) | 186 |
| নৌবছরের কথা ও জাপানের দাবী (সচিত্র) | | বঙ্গে অন্টম শতাস্কীতে নৃপতি নির্ব্বাচন | | |
| — শ্রীষোগেশচন্দ্র বাগল | ee> | (বিবিধ প্রাসক) | ••• | 456 |
| মৃত্য ধর্ম (সচিত্র)—রাজেন্ত্রশঙ্কর ··· | 8>¢ | বঙ্গে আরও কাপুড়ের কল চাই (বিবিধ প্রসন্ধ) | ••• | ৩• ৬ |
| পত্ত-রবীক্তনাথ ঠাকুর ••• | 906 | বঙ্গে কাপাদের চাষ (বিবিধ প্রাসন্ধ) | ••• | 424 |
| পত্রাবলী—রবীক্সনাথ ঠাকুর ••• | 965 | ৰঙ্গে ডাকাতী ও নাৱীহরণ (বিবিধ প্রাসঞ্চ) | ••• | >64 |
| পদ্মবিতের কবি — শ্রী মমুতবাৰ শীৰ ••• | ૭ ૮૮ | বঙ্গে জলপ্লাবন (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | >60 |
| পরস্পর নির্ভরশীলতা (বিবিধ প্রাসন্ধ) ••• | ebb | বঙ্গে জলসেচন অনাবশুক, এ ভ্রম কাহার ? | | |
| পরীক্ষান্তে ছাত্রছাত্রীদের কাজ | | (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | P9 • |
| (বিবিধ প্রসঙ্গ) ••• | 200 | ৰদ্ধে হৰ্ভিক (বিবিধ প্ৰসন্ধ) | ••• | ७०२ |
| শাটচাষ নিয়ন্ত্ৰণ (বিবিধ প্ৰসক্ষ) ••• | >%• | বঙ্গে নৃতন ট্যাক্সের প্রস্তাব (বিবিধ প্রাসঙ্গ) | 980, | 608 |
| পাটের চাব কভ ক্ষাইভে হুইবে | | বঙ্গে ৰাঙাশীর চাকরি (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | ददन |
| (विविध श्राम) | e a9 | ৰদে ফলের চাষ (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | ৩১২ |
| পাটের চাষ ক্মাইবার চেষ্টা (বিবিধ প্রসন্থ) | 888 | বলে মুসলমাননের শিকা (বিবিধ প্রাসক) | ••• | 363 |
| পাটের পরিবর্ত্তে অন্ত ফদল (বিবিধ প্রদঙ্গ) ••• | 9>> | বঙ্গে লবণ প্রস্তুত (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | १दच |
| পাটের বদলে অন্ত ফসল (বিবিধ প্রসঙ্গ) | 889 | বঙ্গে সন্ত্রাসনবাদ উচ্ছেদের বেসরকারী চেষ্টা | | |
| পারভ মহাক্রি ফির্দৌসির সহস্রবার্ষিক জয়ন্তী | | (বিবিধ প্রাসন্থ) | ••• | 786 |
| (বিবিধ প্রসঙ্গ) | >69 | বলের কয়িষ্ণু অঞ্চলগুলির উন্নতিসাধন | | |
| পুত্তক পরিচয় ৯৭, ২৬৫, ৩৯৯, ৫৩৫, ৬৭ | ર, ৭৯৬ | (विविध व्यन्त) | ••• | 69 |
| পূজার পশুবলি (বিবিধ প্রাপদ) ••• | >63 | বলের গবমেণ্ট তপশীশভূক্ত জাতিসমূহ | | |
| প্ৰার বাজারে বাঙালীর তৈরি কাপড় | • | (বিবিধ প্রাসক) | ••• | 8 > ¢ |
| (বিবিধ প্রাসৃষ্ণ) | >69 | ৰঙ্গের পটচিত্র (সচিত্র)—শ্রী অঞ্জিভকুমার | | |
| পৌষের নানা সভাসমিতি (বিবিধ প্রাসন্ধ) · · · | €20 | মুখেপাধাৰ | ••• | ৬৭৯ |
| व्यापनश्चनित्र मध्या जानन वन्त्रेन (विविध व्यानक) · · · | b b• | ৰলের বাহিরে বাঙালীবিষেষ (বিবিধ প্রাসন্ধ) | ••• | O. 4. |
| | | | | |

| ৰঙ্গের বাণিক্য-শুল্ক (বিবিধ প্রদঙ্গ) | ••• | : cc | বিহারের কাজ বিহারী ও ওড়িয়ার জন্ত | |
|---|-----------------|---------------|---|-----------------|
| ব:শ্বর রাণ্টনভিক অবস্থা সম্বাস্থ স্থভাবচন্দ্র বস্থ | | | (বিবিধ প্রসঙ্গ) | 499 |
| (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | >60 | ব্রি:টনে-ভাবতে বাণিজাচুক্তি (বিবিধ প্রসঙ্গ) 🚥 | 6.6 |
| বড় ও প্রাদেশিক লাটদের অসাধারণ ক্ষমতা | | | বী.রজনাথ শংসমল (বিবিধ প্রসঙ্গ) | 866 |
| (বিবিধ প্রাসঙ্গ) | ••• | 464 | বৃহংসংহিতার নারী—গ্রীভ্রমর খোষ | ১৭৬ |
| ৰহু সিনেমা-চিত্ৰের অপকারিতা (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | ৩১২ | বেলুড়ে লোহার কারখনো (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ৬•৩ |
| বরিশালের ত্রন্ধমোহন ইলাটটেউপ্রনের জ্বিলী উ | ৎসৰ | | देवती श्रीकांनांचनांच शाकृती | ৬৮৮ |
| (विविध व्यन्त्र) | ••• | >%• | रेवद्यानिक वधार्थाक्त पान (विविध क्षत्रक्र) | 9• 8 |
| বৰ্তমান অধীকট—শ্ৰীমনাথ গোপাশ দেন | ••• | くとく | বোষাই র মহিলাদের ললিভকলা ও শিল্প-প্রদর্শনী | |
| বহিৰ্মগৎ (সচিত্ৰ) ১৬১, ২৮৯, | | ee> | (বিবিধ প্রসঙ্গ) ••• | 9. • |
| ৰাংশাদেশে ব্যায়াম5র্চা (সচিত্র)—প্রীরাজেন্সনার | ात्र न ् | | বোধাই কংগ্রেসের প্রধান প্রধান কাজ | |
| খ হ ঠাকুরতা | • • • | २१२ | ् (विविध् क्षेत्रक्) ••• | 3. F |
| বাংলা দেশের একটি শিক্ষা-প্রতিষ্ঠান (সচিত্র) | | | • | |
| — দ্রী মনাথনাথ বহু | ••• | 965 | ব্যবস্থাপক সভার করপরাক্তর (বিবিধ প্রসন্ধ) | ૧૭૨ - |
| অ্থাংলা ভাষার প্রশ্ন পর —শ্রীদনৎকুমার দিংছ | | 693 | ব্যবস্থাপক সভার অধিকাংশের সাম্প্রদারিক বাঁটোরারা | |
| बाढानी देवमानि मानद ज्ञानिक महत | | • • • • | সম্মতির মূল্য (বিবিধ প্রসঙ্গ) ••• | 900 |
| (विविध धमक्र) | • • • | (62 | ব্যবদা-বাণিক্যে বাঙাশীর আত্মকণা (বিবিধ প্রদল) | くつか |
| वाडानीत खानाव इत्म (विविध खानकः) | | 644 | ব্ৰহ্মদেশবাসী ভারতীয়দের দাবী (বিবিধ্প্রসঙ্গ) 🚥 | 622 |
| বাজালার অভাব খ্লাপ (।বাবব আবস) বাকুড়ার মিউলিরম স্থাপনের প্রস্তাব | | 003 | ব্ৰহ্মপ্ৰবাসী বাঙালী—জ্ৰী,দবব্ৰত চক্ৰেবৰ্ডী 💮 😶 | 790 |
| (বিবিধ প্রসঙ্গ) | | 985 | ব্যঙ্গ-চিত্ৰ ১৪০- | >8 |
| ্বিণিক্স চুক্তি (বিবিধ প্রদক্ষ) | ••• | 186 | ভারতরক্ষা সম্বন্ধে ডাঃ মুঞের বক্তৃতা (বিবিধ প্রাদস্স) | >45 |
| ব্যাপঞ্জ) চুল্কে (বিবিধ অগন) ব্যাপিন ব্যাপিকা-বিক্যাপর (.সচিত্র)—শ্রীচিত্তরভ্রম | | 104 | ভারত সচিব ও ডোম নিয়ন টেটস (বিবিধ প্রাসহ) | 485 |
| विभावन वर्गान श्रान्य (१०००) ================================= | | ೨৯೨ | ভারত সম্বন্ধে লীগের ব্যবহার (বিবিধ প্রসঞ্চ) ··· | >0. |
| व्यक्तवस्य विकानिका-विकानियः— औ ५ जनावितः (प्रम | | 906 | ভারতে দেশী ও বিদেশী দৈনিক (বিবিধ পাসক) | >•• |
| ৰাপাৰৰ বালিকা-।বৰ্ণালয়——আ সমৰ্গ্ৰহণ গেল ৰাঘ আসিয়াছে—জীবিষল মিত্ৰ | | | ভার ত নিম্নভাতি সমস্তা—শ্রীপুকুমাররওন দাশ | ₽₹€ |
| | ••• | € ೨৯ | ভারতে মন: সমীক্ষা—শ্রীরবীক্সনাথ ঘোষ ••• | 09 6 |
| বাঁকুড়ার পুরাক্কতি রক্ষা (সচিত্র)— গ্রীবোলেশ১ক্স রাম | | ৬৭৫ | ভারতে বিদেশী চাউলের আমদ:নী (বিবিধ্ প্রাস্কু) | ba9 |
| আবোজেনতক্র গ্রাপ বাশীর সুর — শ্রী প্রাশালভা দেবী | | ৬ ১৮ | ভারতের লিপিসমস্তা—শ্রীনির্ভন নিরোগী ••• | ৩৬৩ |
| · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | | 9.5 | ভারতের শিপিসমস্তা— শ্রীব্রফেক্সনাথ ব:ন্দ্যাপাধার | 676 |
| বিলেভাই পটেলের উইল (বিবিধ প্রাণক) | ••• | ೮೦೮ | ভারতে শিপিসমস্তা (অ'লোচনা)—শ্রীসুধীরচক্ত | |
| विद्यानस्य मधारकः कनस्यात्र (विविध व्याप्तः) | ••• | ودن ودن | আচার্যা ও উমাদাস ৩প্ত ··· | 9.8 |
| প্রজ্ঞানরে মধ্যান্থে জন্মান (বাবব আগস) প্রজ্ঞিত বিশূপের শাস্ত্রীর শেক্সারার নিরোগ | | 5 7 3 | ভারতে লিপিসমস্তা (উত্তর)—গ্রীনির্মন নিরোগী | 902 |
| (বিবিধ প্রাসক) | | . a 9 | "ভারতীয়করণ এরপে কখনও হইবে না" | |
| বিমান-চালনার প্রতিবোগিতা (বিবিধ প্রাসঙ্গ) | ••• | ৬০৩ | (বিবিধ প্রাসঙ্গ) ••• | PSE |
| বিশাতে অবাঙালী আসামবাদীদের প্রতিনিধি | | 300 | ভারতীয় পশ্লীশিল্প সংঘ (বিবিধ প্রসঙ্গ) ••• | 90 b |
| বেশাতে অবাভাগা অ:সাৰ্যাসাধ্য আভাসাব ক্ষেরণ (বিবিধ প্রাণস) | | >69 | ভারতীয় বিজ্ঞান কংগ্রেসে বড়লাট (বিবিধ প্রাসক্ষ) | 463 |
| বিলাতে দারকানাথ ঠাকুরের সন্ধান—শ্রীব্রজেন্সনা | · GI | J & 1 | ভারতীয় ব্যবস্থাপক সভায় আসন-বণ্টনে অবিচার | |
| व्यक्तातावार्यं अपूर्णं विकास | . ~ | .0 | (বিবিধ প্রসঙ্গ) | b b• |
| বিলাতে ভারতীয় ভূলার বাবহার (বিবিধ প্রসঙ্গ) | | ા અ | ভারতীয় ব্যবহাপক সভায় প্রাদেশিক আসন- | |
| विचारक काष्ट्रकात्र क्रुमात्र पायरात्र (पायय व्यागमा विचारक:स (विविध क्षात्रक्र) | | 3 C b | বিটান স্থার ও নির্মের অভাব (বিবিধ্ প্রাস্ক্র) | 0.04- |
| বিষ্ণুব্রর ই ভিহাসের নূতন কথা—শ্রীছেমেন্দ্রনাগ | | , - v | ভারতীয় বাবস্থাপক সভার সভাগতি ও ডেপুটি | 986 |
| भाविष्ठ | | ₹8\$ | সভাপতি (বিবিধ প্রাসক) | 9.50 |
| বিহারে বঙোলীবিধেব (বিবিধ প্রাসন্ত) | | 769 | ভারতীরদের পরিচ্ছের (বিবিধ প্রাসক্ষ) ••• | 908 |
| CALIS ALLE I A LEGA I I LIGHA CALIA Y | • • | 1 | CINCINCAN LINEAL (IAIAA GALA) | 698 |

| | ভারতবর্ধ ও আমেরিকান পুস্তক-প্রকাশকগণ | | | রবীক্রসাহিত্যে বাংলার পদীচিত্র—জীরাধামোহন | | |
|-----|--|------------|-----------------|--|------------|----------------|
| | (বিবিধ প্রাসঙ্গ) | ••• | 202 | ভট্টাচার্য্য •• | . ; | २.२ 8 |
| | ভান্নতবৰ্ষ হইতে ব্ৰহ্মদেশ পৃথক করণ (বিবিধ প্রস | 罗) | 864 | রাখালচক্র সেন (বিবিধ প্রসঙ্গ) •• | • 1 | 8¢5 |
| | ভারতবর্ষে শিক্ষার প্রগতি (বিবিধ প্রদক্ষ) | | 866 | রাজ্মহলের মালপাহাড়িয়া ধর্ম (সচিত্র)—গ্রীশশাক | ; - | |
| | ভারতবর্ষে ঐক্য উৎপাদন ও বিনাশ (বিবিধ প্রসং | ₹) | 885 | শেখর সরকার •• | • | 80 |
| | ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক সভায় স্বাঞ্চাতিক সভা | | | পণ্ডিত রাজেন্দ্রনাথ বিদ্যাভূষণ (বিবিধ প্রদঙ্গ) 😶 | • • | १८५ |
| | (বিবিধ প্রাসঙ্গ) | | 860 | বাবু রাজেন্দ্রপ্রদাদকে কংগ্রেদ সভাপতি নির্বাচন | | |
| | ভারতবর্ষে ডিক্টেটরত্ব (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | >88 | (বিবিধ প্রা সজ) | • | 696 |
| | ভিক্ষু উত্তমকে হিন্দু-মহাসভার সভাপতি নির্বাচন | | | রাণুর দিদি—ত্রীহেম চট্টোপাধ্যায় •• | • : | २७१ |
| | প্রস্তাব (বিবিধ প্রসঙ্গ) | | 806 | রামক্রফ পরমহংস—পণ্ডিত শিবনাথ শাস্ত্রী •• | • 1 | FSE |
| | ভূল (কবিতা)—রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর | ••• | .yo @ | রাজা শ্রীরামচন্দ্র ভঞ্জদেও—শ্রীষোগেশচন্দ্র রায় | | |
| | মডার্ণ রিভিয়ুর ঊনত্তিংশ বৎসর (বিবিধ প্রসঙ্গ) | • • • • | y•8 | বিদ্যানিধি | | ۵٤ |
| | মডার্ণ-রিভিয়ু সম্বন্ধে ডাঃ সাঞ্চার্লগাণ্ডের মত | | | রাজা রামণোহন রায়—শ্রীদীননাথ সাতাল •• | • | b>t |
| | (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | 786 | রামমোহন রায়ের স্মৃতি (বিবিধ প্রাসক্ষ) •• | • | >89 |
| | মধুগন্ধি বনে (কবিতা)—গ্রীহেমচন্দ্র বাগতী | ••• | 366 | রাশিয়ায় আইন-আদাশত—শ্রীনিত্যনারায়ণ | | |
| | কুমার মন্মথনাথ মিত্র (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | 786 | বন্দ্যোপাধ্যায় | | ৬৬৫ |
| | স্বায় মহিতকুমার মুখোপাধ্যায় (বিবিধ প্রদঙ্গ) | | ৫৯২ | কুশিয়ার রাজ-অলঙ্কার (সচিত্র)—শ্রীবিমলেন্দু কয়ান | 7 | 67 |
| | महिना-नःवान (मिंठिक) २৮८, ४२२, ८८०, | | | রূপান্তর-গ্রহমচন্দ্র বাগচী | | ৫२১ |
| | महादन्य- विद्वताथ वत्स्राभाधाः | ••• | 966 | পুণাৰতী সাধ্বী রোকেয়া থান্ম (বিবিধ প্রসঙ্গ) · | | 850 |
| | মাৎশুড় প্রয়োগে জমির উর্বরতা বৃদ্ধি (বিবিধ ৫ | | | রোমে ভারতীয় ছাত্রীর দল (বিবিধ প্রসঞ্চ) | | ७ ० २ |
| | वाक्वनी मानवक्तांश वात्र (विविध श्राप्त) | ••• | 864 | রোমের সাগরতীরে (সচিত্র)—শ্রীপ্রমধনাথ রার •• | • | در د |
| | मालात्क ও विশास्त्रभावत द्वीलनात्वद महर्दन | | - • • | লক্ষৌয়ে বাঙালী (বিবিধ প্রসঙ্গ) | | ۰ده |
| | - | 1 | | শজ্জা গ্রীরামপদ মুখোপাধ্যায় | •• | ২৮৬ |
| | (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | O. 1 | লণ্ডনে ভারতীয় চিত্রাদির প্রদর্শনী (বিবিং প্রসঙ্গ) |) | 986 |
| 1 - | পণ্ডিত মালবীরের উপর আক্রমণ (বিবিধ প্রাসক | | 9 °C | লণ্ডনে ভারতীয় ললিভকলা প্রদর্শনী (বিবিধ প্রসঙ্গ |) | €àà |
| | মিলের অভাব (কবিডা)— শ্রীগোকুলেশ্বর ভট্টাচা | | C•9 | ৰাভট্টোক—আবু ৰ হা ছানাৎ | •• | ৬৯৭ |
| | भौता (वत्नत्र व्याप्मतिका-शावा (विविध व्यत्रक्र) | | >62 | শীগ অব্ নেশান্সে ক্ৰিয়ার যোগদান (বিবিধ প্ৰসং | 7) | >85 |
| | মুক্তি (উপন্তাস)—শ্রহাশালতা দেবী ১১২, | | | লীগ ও নেপাল (বিবিধ প্রসঙ্গ) · · | •• | 262 |
| | মৃত্যু নাহি মম (কবিতা)—জীমলিনা হালদার | ••• | હર 8 | শীগের সভ্য ভারতবর্ষ ও ক্লশিয়া (বিবিধ প্রসঙ্গ) 💀 | •• | >60 |
| | মেডিকেল কলেজের শতবার্ষিক উৎসব (বিবিধ প্র | | | লেঁজা, সুইজারল্যাণ্ড—গ্রীসুধীক্রনাথ সিংহ | •• | २७२ |
| | মৈথিণ কবি গোবিন্দদাস ঝা—শ্রীনগেন্দ্রনাথ গুপ্ত | | 908 | শবরী (গল্প)—শ্রীম্বর্ণশতা চৌধুরী 🗼 👵 | •• | >२ ६ |
| | মোগল সামাজ্যের জ [*] াকজমক ও প্রজাদের দারিত | ŧ, | | শব্দপ্রসদ—শ্রীবিধুশেশ্বর ভট্টাচার্ষ্য | 8b, | ೦> ೬ |
| | (বিবিধ প্রাসন্ধ) | ••• | 8¢ 8 | भंद ९ हज्ज वर्ष (विविध व्यनम) | | 863 |
| | মাট্রিকুলেশ্যন পরীক্ষার্থী (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | ६८४ | শান্তিনিকেভনে ঠৈনিক অধ্যাপক্ষয় (বিবিধ প্রসন্ধ) | | 884 |
| | বাদবপুর বন্ধা হাসপাতাল (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | ७०४ | শান্তিনিকেডনে সুইডিশ শয়-শিক্ষয়িত্রী (বিবিধ প্রসন্থ | 9 | 0) } |
| | যুদ্ধ ও রাষ্ট্রিক আন্দোশন (বিবিধ প্রাসঙ্গ) | ••• | >8¢ | শিখদের মহাগ্রন্থ—শ্রীক্ষিতিমোহন সেন | | 292 |
| | যশ্চারম্ আত্মনি-রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর | ••• | ¢8 9 | শিকাগো বিশ্ব-প্রদর্শনী (সচিত্র)—গ্রীবিমলেন্দু কয়া | म । | عاث |
| | যুরোপে স্ত্রীধর্মনীতি—রবীক্সনাথ ঠাকুর | ••• | ७२० | শিৰ-ভাণ্ডৰ (কবিভা)—শ্ৰিগোপাললাল দে | • | २¢८ |
| | ষ্যাসেমীর আসন বণ্টন (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | bb• | শীতের রোম—শীপ্রমধনাথ রায় •• | • | 996 |
| | র্শিলা নায়ের মাঝি—শ্রীবিমল মিত্র | ••• • | ७६१ | শুধু একটুখানি কুন শ্রী অমরেক্ত খোষ •• | • | १८६ |
| | রবীক্রনাথের পত্র | • • • | 8 | শেষ পর্ব্ধ (ক্ষিতা)—রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর | | > |
| | ববীজনাথের গ্রাম-পুনকজীবন-চেষ্টা (বিবিধ প্রস | 7) | ೨• ৯ | শের শাহের সিংহাসনারোহণ বৎসর (সচিত্র)— | | |
| | রবীক্রকাব্যে শ্রেক্লোবোধ ও আনন্দ—রবীক্রনাথ ঠা | কুর | 366 | শ্ৰীনগিনীকান্ত ভট্টশালী | •• | 862 |
| | ર | | | • | | |

| | | | | ••• | m. 1. | | |
|---|------------|----------------|--|------------|-------------|--|--|
| সংশ্বতশিক্ষা ও জীবিকা শ্রীবৈত্তনাথ কাব্য-পুরাণর্ড | ीर्थ | 989 | সুভাষচন্দ্রের পুস্তক বালেরাপ্তী (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | \$69 | | |
| সন্তান (গল্প)—গ্রীশান্তা দেবী | ••• | ৯• | স্ভায্চন্দ্র বহুর স্থাদেশ আগমন (বিবিধ প্রাস্থা | ••• | 889 | | |
| সমগ্র ভারতের জন্ত একীক্বত শাসনব্যবস্থা কি অসম্ভ | ৰ ? | | স্ভাষবাবুর করেকটি মন্তব্য (বিবিধ প্রাসঙ্গ) | ••• | %•8 | | |
| (বিবিধ প্রাসঙ্গ) | •• | 808 | মুভাষবাবুর পুস্তক ভারতে নিষিদ্ধ (বিবিধ প্রা ন |) | 900 | | |
| সমগ্র ভারতীয় বঙ্গেট (বিবিধ প্রসঙ্গ) | | , 8 <i>६</i> न | স্ভাষবাব্র পুনর্কার ইউরোপ-যাত্রা (বিবিধ প্রসা | 7) | १७১ | | |
| স''াওতাল মেয়ে (কবিতা)—রবীক্সনাথ ঠাকুর 🕡 | •• | 987 | পুরেক্তকুমার সেন, অধ্যাপক (বিবিধ প্রানন্স) | ••• | ৩১২ | | |
| সাংবাদিকের কার্য্য শিক্ষা (বিবিধ প্রাসক) | •• | >62 | স্থভেনে ব্যায়ামদক বাঙালী (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | >cc | | |
| সাগরিকা (কবিতা)—গ্রীষতীক্রমোহন বাগচী • | •• | ৩৭ | স্থইডিশ সাহিত্য (সচিত্র)— শ্রীশর সিং হ | ••• | 99 6 | | |
| সাবিত্রী (কবিতা)—-শ্রীঅমরেশ রায় | •• | ४७१ | দে-কালিনী ও আধুনিকা (কবিতা)—শ্ৰী মপরাঞ্জি | তা | | | |
| সাৰিত্ৰী শিক্ষালয় (বিবিধ প্ৰস ঙ্গ) | •• | 8¢9 | ্দেৰী | ••• | トくか | | |
| সামরিক ব্যয় (বিবিধ প্রসঙ্গ) | •• | ৮৯৫ | স্কটিশ চার্চ কলেজ অবৈতনিক নৈশ বিদ্যাল | ब्र | | | |
| শামাঞ্চিক ও রাজনৈতিক অবনতত্ব (বিবিধ প্রদঙ্গ) |) | 869 | (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | 986 | | |
| সাম্প্রদায়িক বাটোয়ারার প্রতিবাদ (বিবিধ প্রসঙ্গ) | | 485 | ভিমিতায়মান (কবিত।)—-শ্রীদৌবনময় রায় | | २२७ | | |
| সাম্প্রদায়িক বাঁটোয়ারা বিরোধী সম্বেশনের প্রস্তাব- | | | স্বর্লিপি শ্রীশৈলজানন্দ্ মজুমদার ১৩০, ৩৯৭, | ৫৬৩, | ৮৭৮ | | |
| | •• | 9 50 | ন্ধপ্রিতিমা (গল্প)—গ্রীসীতা দেবী | ••• | ५ ७२ | | |
| সাম্প্রদায়িক বাটোয়ারা বিরোধী কনফারে জ | | | স্বর্ণযন্ত্র (গল্প)—গ্রীমনোক বস্থ | ••• | ¢> | | |
| (বিবিধ প্রসঙ্গ) | •• | ०६५ | <u>ক্লে</u> নারেশ স্বাটস ভারতে স্বরাজ চান (বিবিধ প্রস | ?) | ٥٧٧ | | |
| সাম্প্রদায়িক বিদ্যালয় শিক্ষাবিস্তারের অন্তরায়— | | | ভক্তর হরে <u>ক্</u> কুমার মুখোপা ধ্যারের নৃত ন দা | ₹ | | | |
| শ্রীরমেশচক্র বন্দ্যোপাধ্যায় | •• | C8 3 | (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | 900 | | |
| - History manifesting 12 | •• | ৬০৭ | হাউসু অব কম:ক্স রক্ষণশীলদের জয় (বিবিধ প্রাস | | 8৫७ | | |
| সারদা আইন সংস্থেও বাল্যবিবাহ (বিবিধ প্রসঙ্গ) | | ৮৯৮ | শ্ৰীমতী হালিদে এদীব, হানুম (বিবিধ প্রসৃদ্ধ) | | ৭৩২ | | |
| সাহিত্যের ভাষা ও বস্তু—গ্রীপীতা দেবী . | •• | ७७४ | হিন্দুদের 'নৈশ অবরোধ' ও হিন্দু নারী হর | 1 | | | |
| ি সিংভূমের তান্রথনি (সচিত্র)—গ্রীপিণাকীলাল রায় | | ¢9¢ | (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | 889 | | |
| সিংহলের শিল্পবিভাগে বাঙালী নিয়োগ (বিবিধ প্রস | 7) | 864 | হিন্দু সমান্দের কর্তব্য (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | ¢>• | | |
| সিন্ধু-তটে (কবিতা)—গ্রীগোপালনাল দে . | •• | ⊬ 8₹ | "হে মোর হুর্ভাগা দেশ" (বিবিধ প্রসঙ্গ) | ••• | ৫ ৮৯ | | |
| সিভিন সার্বিদ প্রতিযোগিতার পরীক্ষিতব্য বিষয় | | | হ্বাভেন-শ্রীষ্ণবনীন্দ্রনাথ ঠাকুর | ••• | ¢ 99 | | |
| (विविध व्यमक्) | •• | ८७ | স্থাভেল-শ্রী অর্কেন্দ্রকুমার গলেপাধার | ••• | 69 3 | | |
| | •• | <i>७६८</i> | হাভেল, আর্ণেষ্ট বিন্ফীল্ড (বিবিধ্প্রসঙ্গ | ••• | ७०२ | | |
| স্থনন্দার বিয়ে—গ্রীশান্তিময়ী দত্ত | •• | ৪৯৬ | হ্বাভেদ সাহেবের সহিত সাক্ষাৎ—শ্রীমুকুদচক্স দে | ••• | 694 | | |
| • চিত্ৰ-সূচী | | | | | | | |
| জ্রী অধিলচন্দ্র দত্ত্ব | ••• | 908 | —উড়িয়ার হস্ত ও পদের গহনা | ••• | >•¢ | | |
| শ্ৰী অধিলপদ ঘোষ | ••• | २৮२ | —মস্তক ও কর্ণাভরণ | ••• | >04 | | |
| अर्थनाम एनम | ••• | 82 | —রপার বাজু | ••• | >•< | | |
| व्यापम्पताण्य जान | ••• | 8 রব | —রেপ্যের কণ্ঠহার | ••• | 302 | | |
| CH 2441 441 | •• | @98 | —সাতনরী হার | ••• | >•• | | |
| व्यान्त्रा चढणा ।(प) प्र | ••• | 9 २ € | শ্ৰী অসিতকুমার হালদার | ••• | 697 | | |
| ৺অমৃতলাল ঘোষ | ••• | ৭৬১ | 'আজান' (রঙীন) - শ্রীগগনেক্সনাথ ঠাকুর | ••• | 862 | | |
| অলক ার | | | আড়িয়লের কাগজ | | | | |
| উড়িষ্যার অলঙ্কা র | •• | >•8 | —কাগজ পালিশ করা | ••• | २७ | | |

| —কাগজী | ••• | 29 | গিরিডির উচ্চ-ইংরেজী বিদ্যালয়ের ছাত্রীদের | | |
|---|-------|--------------------|---|-----|---------------------|
| —কাপড়ের মাড় ধুইয়া ফেলা ইইতেছে | ••• | २৮ | রন্ধন ও চরকা কাটা | ••• | 9:58 |
| , পচান-কাগ ল মাড়াই হইতেছে | ••• | २२ | গিরিডি ত্রাহ্মসমাজ মন্দির, সাধারণ ও নববিধান | ••• | ૧ |
| —পা ট চূর্ণ কর া | ••• | २৮ | —ব্যাটরে দাভব্য চিকিৎসালয় | ••• | 9.50 |
| —कानारि | ••• | २७ | শ্ৰীগোকুশক্তফ দে ধাড়া | ••• | 900 |
| আবহুর রহিম | | 900 | গোড়জাতি | | |
| আবহুর গফ্ফর খান | | >৫২ | —গৌড়জাতির শস্তোৎস ব | ••• | २२৫ |
| আৰপনা চিত্ৰ | | 690 | —গৌড়ন্সাভির স্ত্রীলোকেরা শশু সংগ্রহ | | |
| বাজা আ লেক জাণ্ডার ও রাণী মেরি | ••• | 806 | ক রিতেছে | ••• | २ऽ७ |
| অভ্ৰেমের দৃশু (রঙীন)—গ্রীনন্দলাল বহু | | 3 | —গৌড়নি ত | ••• | २५७ |
| हेत् <i>स</i> न | • • • | o8? | —গোঁড়-সেবামণ্ডলের প্রধান গৃহ | ••• | २ऽ२ |
| ক্ষানচন্দ্ৰ মুখো পাধ্যায় | •• | ৭৩৬ | —গ্রাম্যমোড়ল | ••• | ₹ 55 |
| উদয়শঙ্কর ও সঙ্গীদল | 839- | | —দাতব্য চিকি ৎসাল য় | ••• | ₹ 28 ° |
| উপেক্ষিতা (রঙীন)—গ্রীশ্রীক্কঞ্চ মিশ্র | ••• | 684 | ক্রীগোপেশ্বর বন্দ্যোপাধ্যার | ••• | e9e |
| প্রীউপেক্সরঞ্জন বিশ্বাস | ••• | 200 | গোবিন্দরাও বলবন্ত প্রধান | ••• | २२४ |
| छर्कमी (ब्रङ्गीन >—ञ्जीरेन ा कक्ष्म्यन ८ ए | | 030 | ডক্টর গো রেবেল্ স্ | ••• | 808 |
| এলাহাবাদ বিশ্ববিদ্যালয়ের সঙ্গীত-সম্মেলন | | 800 | ठिवकणा-व्यक्तिकी | 959 | 1-936 |
| এসাইস্ টেগনের | | აგ∙ | শ্রীমতী এম. চিল্লয় | ••• | 926 |
| ওকাডা, আডমিরাল | ••• | 8 9 9 | चित्रपार मन्द्रिय चित्रपार मन्द्रिय | ••• | ৬৬ |
| কংগ্রেস | | | ছোটনাগপুরে প্রাপ্ত প্রস্তর | | 8 % br |
| | | ২৯৩ | क्शन्नाथ मन्दित, वाँठी | ••• | ৬৫৪ |
| —থান্ আবহ ন গফ্ফার ধান্ | ••• | | জাপানী চিত্র (রঙীন)—শ্রীবিশ্বরূপ বহু | ••• | ૭૱ર |
| —বাবু রাজেন্দ্রপ্রসাদ —রাজেন্দ্রপ্রসাদের অজ্ঞান শোভাযাত্রা | ••• | २२४ २२१ | ন্ধাপানে ভার ভীয় নারীগণ | ••• | ৮ 99 |
| — রাজেল্লপ্রানির বিশ্বনির নামজী — কুমারী সোফিয়া সোমজী | ••• | | জুয়াক গ্রাম | ••• | 89¢ |
| — পুনরে। সোকরা সোকর। কথাকলির চিত্রাবলী | | २ २० | • | ••• | |
| ক্ষাকালয় চেতাবল। শ্রীমতী কপিলা দেশাই | ₩8€- | | —ভূয়াঙ্গ যুবক | ••• | 898 |
| আমতা কাগো দেশার শ্রীমতী কমলা জামগণ্ডী | ••• | २৮ ৫ 8२२ | — তুয়ান্ত রমণী | ••• | 8 <i>৬</i> ৬ 8৬૧ |
| এক ঙ্গণাদাস শুহ | ••• | ৫৯৬ | — ভুষাঙ্গে র প ণ্ড- বর | | ৬২১ |
| কলিকাতা গভর্গমেণ্ট আর্টস্কুলে চিত্র-প্রদর্শনী | | | জ্যাকার্ড ও ইক্ইকি তাঁত | | 829 |
| ক্লিকাভা বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রতিষ্ঠা-দিবসের চিত্র | | 959 | জ্যোতিরিন্দ্র রা য়ের নৃত্য | | |
| • | 746, | , १२৯ | টোগো | ••• | (3) |
| ক্লি মূৰ্ত্তি | ••• | 422 | ডাভৃদ্ শহর | ••• | 8 २ ¢ |
| প্রীকল্যাণী চক্রবর্ত্তী | ••• | १२७ | ডালাকার্লিয়া | | |
| কাৰ্গ, রাজ্য খাদশ | ••• | ೦88 | —গোস্তাব ভাষার প্রস্তর মৃষ্টি | ••• | 99 |
| ক'ল'ফেলডট্ | ••• | ૭કર | —গোন্তাব ভাষার শ্বতিগুম্ভ | ••• | ৬৮ |
| কুমকেত্র (রঙীন)—গ্রীগিরীক্রঞ্ব বস্থ | ••• | 967 | —চক্রালোকে সিলিয়ান হদের দৃশু | ••• | ৬৮ |
| শ্ৰীমতী স্কুপাৰনী | ••• | २৮8 | —জর্ণ অঙ্কিত মধ্যরাত্রির স্বর্যাভিনন্দন | ••• | ৬৮ |
| কুপাস্থন্দর বহু | ••• | 8२१ | —জর্ণের অঙ্কিত নিজ্চিত্র | ••• | ৬৯ |
| শ্রীকেদারনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় | ••• | 8¢• | —জর্ণের চিত্রশা লা | ••• | 95 |
| শ্রীক্ষেত্রমোহন বহু | | .२४२ | —ভাশাকাশিয়ান বর ও কনে | ••• | 95 |
| থাইবার-সীমান্তের দৃখ্যাবলী | ¢•>- | -¢>8 | —কা ল ´ লারসনের বাসগৃহ | ••• | 90 |
| মহাত্মা গান্ধীর স্থচী-চিত্র | ••• | 456 | —বাদ্যরতা মহিশা | ••• | 90 |
| গিরিডির উচ্চ-ইংরেজী বিস্থালরবা টী | ••• | 9.60 | —মেরেরা চরকার স্থতা কাটিভেছে | ••• | ৬৯ |
| | | | | - | |

| — র <i>বিবার উপাসনা-গৃহের দিকে</i> | • • • | છ | — রাজপ্রাসাদের এখ-নতথা | | - F. M. C. X. |
|---|------------------|----------------|--|------|------------------|
| —শি ল্লী জ র্ণের বাসগৃহ | ••• | ৬৭ | —রামারণের একটি চ়িত্র | ••• | २৯১ |
| ডেষ্ট্রয়ার | ••• | eee | —শান্তিকালের বিমানপোত্ত | ••• | >45 |
| এ তিড়িৎকুমার গুহ | ••• | ২৮• | —শাস্তিকাশের বিমানপোতের অভ্যস্তর | ••• | ≽৬২ |
| এ ভারকনাথ দাস | ••• | 8 8 | —ভাষরাজ্যের স্থাপত্যের নিদর্শন | ••• | ₹₩ |
| ৺তিনকড়ি ব <i>হু</i> | | ৭৬১ | বাকুড়া জেলার বাহুলাড়ার মন্দি র | | ৬৭৮ |
| দিব্যের জয়ন্তম্ভ | ••• | ৭২৯ | বাটোরারা-বিরোধী সম্বেশন | ••• | 255 |
| ছর্ব্যোধন (রঙীন)—গ্রীননীগোপাল দাস্তপ্ত | ••• | ७৫२ | বাংশার বর্বা (রঙীন)—শ্রীঅঞ্চিতক্বক শ্বপ্ত | | ર |
| দেওঘর বিদ্যাপীঠে রামানক চট্টোপাখ্যায় | ••• | ৮98 | | | |
| দেওবর রামক্ক বিদ্যাপীঠ ও ছাত্রগণ | ••• | ৮৭৩ | वांश्ना (म्दन वाजामवर्ष्टी | | |
| শ্রীদেবেক্সকুমার রাম্ব | • • • | ¢22 | —শেশক | ••• | २१७ |
| শ্রীদেবীপ্রসাদ রার চৌধুরী | ••• | 8 ¢ २ | —সশ্বা শেপক | ••• | २१६ |
| `` | | | —হন্তীপদতলে লেখক | ••• | २ १ 8 |
| • বিজ্ঞদাস দত্ত | ••• | 865 | — এই রেক্স দত্ত মটর টানিতেছে | ••• | २१७ |
| औ धीरत्रस्मातात्रन त्रोह | • • • | 958 | বাণী (রঙীন)—গ্রীশৈলেক্সভূষণ দে | ••• | @•• |
| भिः नक्ष | ••• | 800 | বাণীবন বালিকা-বিদ্যালয়ের চিত্র | ৩৯৪ | <i>-</i> ৩৯৬ |
| শ্ৰীননা চক্ৰবন্ত | ••• | 802 | ৰাথু′ | ••• | 80¢ |
| এীনবগোপাল দাস | ••• | २৮८ | বিপু ল সিংহ ও রমেন | ••• | ৮98 |
| জ্রীনশিনীরঞ্জন সরকা র | ••• | १२७ | স্বামী বিবেকানন্দ | ••• | レ シレ |
| এীনির্মালা সরকার | ••• | १১७ | বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রতিষ্ঠা-উৎসবে ভাইস-চ্যা ল্যেল র | ••• | 929 |
| নীল বালিকা (রঙীন) | ••• | ト>く | শ্রীবীরেন রায় | ••• | ৫৯২ |
| পাড়াগ্রামের দেউল | ••• | ૭ ૯૯ | বুড়াডিহি গ্রাম | ••• | 969 |
| পা হাড়তলী (বঙীন)—শ্রীরামেশ্বর চট্টোপাধ্যায় | ••• | ૭૯૨ | বুড়াডিহি গ্রামের দেবমূর্ত্তি | ••• | ७६२ |
| গ্রীযুক্ত পিলেই | ••• | ৭৩৪ | বুড়াডিহি গ্রানের প্রস্তর-সন্দির 🕦 | ••• | ৬৫৮ |
| পুনর্মিলন (রঙীন)—• শ্রীবিমল দেব | •• | . 5 ●€ | বেঙ্গল একাডেমি, রেঙ্গুন | ••• | 802 |
| প্রকাধিপক ও রাণী রমাবাঈ | | 88• | বেশমান | ••• | ೨೨ ನ |
| প্রফুলচন্দ্র বহু | ••• | 885 | বোড়ে রার ম ন্দি রে নবগুঞ্জ র | ••• | ৬৫৬ |
| প্রথম প্রায় (রঙীন)—গ্রীনীলিমা বিশ্বাস | ••• | ≻8 8 | বোম্বায়ে মহিলাদের শিল্প-প্রদর্শনীর চিত্রাবলী | 900 | ~ > •< |
| প্রথম বিশাতধাত্রী বাঙ্গালী চিকিৎসা-শিক্ষার্থী ছ | <u>ত্রিব</u> ন্দ | १२२ | ব্যঙ্গ-চিত্ৰ | >80, | 78> |
| প্রবাগে বিকলাক ভিখারী | | ৮१२ | ডক্টর ভটনাগর | ••• | 9•8 |
| প্রবাসী-বঙ্গসাহিত্য-সম্মেলনে স্থীমারে প্রীতিদশ্মিলন | ति | 95€ | শ্ৰীভাণুভূষণ দাশগুপ্ত | ••• | 8¢> |
| ব্রির (রঙীন)—কুমারী নিবেদিতা ঘোষ | ••• | >? • | ভিক্টর রিয়ডবৈর্গ | ••• | ৩৪১ |
| चित्रक्षमा (मवी | ••• | €98 | ভিরেনার দীপালী উৎসব | ••• | 8२७ |
| প্রেমশতা দেবী | ••• | ৮৭৬ | শ্রীমণীক্রমোহন মৌ শিক | ••• | रьर |
| रिवारणा (प्रपा) कित्र णोगी | ••• | 260 | মনোমোহন গঙ্গোপাধ্যায় | ••• | 429 |
| রাণী ফুলকুমারী | ••• | 844 | মহিতকুমার মুখোপাধাায় | ••• | ६৯२ |
| রাম হৃণাহ্রনাম। বঙ্গের পট-চিত্রাবলী | 9b-0- | | মারা ভট্টাচার্য্য | ••• | ৮ 98 |
| विक्ति (ब्रहीन)—कुमांत्री यमूना वस् | | -30 0 | মান্ত্রাক্ত গভর্গমেণ্ট আর্টকুলে চিত্র-প্রদর্শনী | 956, | 475 |
| वर्षा (त्रहीन)—श्रीकानी किन्दत्र त्याय परिवाद | | 80 | মুকুন্দদেৰ মুখোপাধ্যায় | ••• | ૧૨૭ |
| विर्काश | | - | মুচির ঘর (রঙীন)—শ্রীয়ঞ্জেশ্বর সাহা | ••• | २ऽ७ |
| ——আধুনিক যুদ্ধ | ••• | >6> | चीमूनीखरान्य बांब | | 696 |
| — চিত্রাবলী | ••• | २ ७० | শুনোবালন মান শুদোলিনী কর্ত্ব অভিনন্দিত ভারতীয় ছাত্রীবৃন্দ | ••• | 200 |
| —বৃ দ্ধদেবের জীবনের একটি চিত্র | ••• | २৯১ | মুনিকে ভারতীর ছাঁত্রগণের শ্বতিফলকে মাল্যমান | | 828 |
| ************************************** | | | ्राक्ष्यक्षा १७०० - प्राप्ता चार्यक्षा अपने कारण विकास स | | |

| म्ह्रम च लामान (त्रहान)—मानिक्किस त | | ร _ั | —ডাক্তার বৌলিয়া | ••• | ২৩৬ |
|--|---------|----------------|--|--------|-------------------|
| ধুদ্ধে বিমানপোত ও রণপোত | ৪৩৭– | | —ভেমারী | ••• | २७६ |
| दमा कद | ••• | re> | —পশ্চিম পার্ষের দৃশ্য | ••• | २७७ |
| রা [*] চির সাহিত্য-সন্মি লনী | ••• | 826 | —লেঁশ্বার অপর দুশ্য | ••• | २७८ |
| রাজ্মহলের মালপাহাড়িয়া ধর্ম | | | — (न ः "निंम (होर्हेन | ••• | २७१ |
| —গ্রামদেবতা ও জাতা সোঁদাই | ••• | 88 | —লে শালে ক্লিনিক | ••• | २७৮ |
| —ধার্তী বহুমতী থান | ••• | 89 | —স্থারণ দৃশ্য | ••• | ২৩৯ |
| —ব্রন্ থান | ••• | 88 | —কুত গ্ৰাম | ••• | २७8 |
| , —মাৰপাহাড়িয়া দম্পতি | 8 | t, 89. | লেভেরটিন | ••• | 988 |
| त्रांख्यनाथं विमाज्यन | ••• | 902 | न्ता रशद्र नक | ••• | 080 |
| রাধাক্তক (রঙীন) | ••• | ৬৯২ | শ্রীশাস্তা সপ্তর্বি | ••• | be• |
| বামক্রক পরমহংস (রঙীন)—ক্রান্জ ভোরাক্ | ••• | 985 | भारत-श्री | ••• | p-b- |
| রামগড়ের পঞ্চ-রডু মন্দির | ••• | ૭ ૯૭ | শাস্মল মহাশ্রের শ্বাসূগ্যন | ••• | 8 २ ७ |
| রামচন্দ্র ভঞ্জ দেও বাহাত্তর | ••• | ₹€ | निकारण अपर्यंत्रीत हिवायनी | | ~૭ >૨ ં |
| শ্রীরামলাল বন্দ্যোপাধ্যার | ••• | ৬৩৬ | শ্রীমতী শুভ ভাটি শর্মা | ••• | २५६ |
| রামানন্দ চট্টোপাধ্যারের স্থর্জনা | ••• | २ २ ३ | औरनगराना <i>(</i> पनी | ••• | 8¢• |
| শ্রীরাসবি হারী দে | ••• | ¢98 | শ্রীনিবাস রায় মহাপাত্র | ••• | ৮৭৬ |
| ক লিয়া | | | দ্রীগুবের্ন, আগষ্ট | | ૭કર |
| —'ক্যাথারিণ দি গ্রেট্রে'র বিবাহ-মুকুট | ••• | M | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | | |
| —হুন্তাপ্য মণি | ••• | ₽8 | ষ্ট্যানলি, এ্যাডমিরাল শ্রীসভাচরণ লাহা | ••• | 809 |
| —নৰ্শাণ উ ইগজ ্ | ••• | ь< | আগতাপন পাং। শ্রীসতীশচন্ত্র ঘোষ | . ••• | 958 |
| —পত্রের অমূ লিপি | ••• | ৮२ | শ্রেশতাশতক্র বেগব শ্রীমতী সরলা দেবী | ••• | 699 |
| —পদ্মাগ মণির সমারোহ | ••• | be | | ••• | २५६ |
| —র কুমহিখীর টার্মী | ••• | b | সরিবা-আশ্রমে ছেলেমেরেদের ধেলা | 969- | |
| — শুষাটের নন্তাধার | ••• | ৮৬ | স'পিতাল মেয়ে—গ্রীনন্দলাল বস্থ | *** | 960 |
| —স্পুর ব্রোচ | ••• | ৮৭ | সাইকেলে দিল্লী-যাত্ৰা | ••• | ৮ ٩¢ |
| রোনেবের্গ | ••• | ე8 • | সাংহাইরে রণপোত-সমূহ | ••• | ¢¢8 |
| রেন্দের সাগর-ভীরে | | | সারা ওয়ামবাগ | ••• | 800 |
| অভিয়ার সমূদ- সানের দৃশ্য | ••• | >5> | 'সারাটোগা' জাহাজ | ••• | 660 |
| সমূদ্রতীর | . • • • | ऽ२२ | সিংহভূমে ভাষ্থনির দৃশ্য | e5e- | - e 95 |
| —সমুত্ৰতীবন্ধ প্ৰমোদসৌধ | ••• | ১ २७ | গ্রীস্মার নন্দী | *** | २৮১ |
| —সম্ভ্রতীরকর্তী রাজপথ | ১२२, | >58 | শ্রীসুবিমশচন্দ্র সরকার | `\ ••• | 8¢5 |
| রাণী শন্মীবাঈ রাজবাড়ে | ••• | P.G. | শ্রীমতী স্বভদ্রা বাঈ গোসালির৷ | ••• | ર⊬96 |
| ত্ৰীযুক্ত লঙ্কাহন্দরম | ••• | 9 0 8 | হুভাষ্চন্দ্ৰ বহু ও বদ্ধবৰ্গ | ••• | 905 |
| শ্রীমতী শতিফি শণ্ডন নৌ-বৈঠক | ••• | 823 | সুভাষ্চক্স ৰমুৰ স্বগৃহে যাত্ৰা | ••• | 889 |
| | ••• | ccz | प्रशासन्य प्रम बगुर्स् राजा मिः इति | 444 | ⊘ ●8 |
| শ্রীলাবণ্যলভা সেন্ধ্রপ্রা | ••• | cc • | | | |
| ভর লালগোপাল মুখোপাখ্যার | ••• | 688 | শ্ৰীমূতী ভূম্মি ও কমলা চটোপাধায় | ••• | १७२ |
| लक ।— बा श्मिक मृन्य — रुलको क फ़िन | ••• | २७७ | <i>হেইডেন</i> টাম | ••• | 989 |
| — | ••• | २७६ | হাভেন | ••• | 6 99 |
| | | | | | |

লেখকগণ ও তাঁহাদের রচনা

| শ্রীঅজিভকুমার মুখোপাধ্যায়— | | | শ্রীগোকুলেশ্বর ভট্টাচার্য্য— | | |
|---|----------------------|-------------|--|---------|-------------|
| বঙ্গের পটচিত্র (সচিত্র) | ••• | ৬৭৯ | মিলের অভাব (কবিতা) | | 609 |
| শ্ৰীঅনাথগোপাল সেন— | | | এগোপাৰনাৰ দে — | | |
| বৰ্ত্তমান অৰ্থস কট | *** | くなる | শিব-তাণ্ডৰ (কবিতা) | ••• | ₹68. |
| শ্ৰীখনাথনাথ বস্থ— | | | - সিন্থতটে (কবিতা) | ••• | 284 |
| বাংলা দেশের একট শিক্ষাপ্রভিচান (সা | চিত্ৰ) | 966 | শ্ৰীচিন্তৰঞ্জন চক্ৰবৰ্তী— | | • • • |
| শ্রীমন্নদাচরণ সেন | | | वाग्यन प्रधानका वाग्यन वा गिका-विमाग (महित्र) | | ಿ ನಲ |
| বা ণীৰন বা লিকা-ৰিদ্যালয় : | ••• | 900 | ঞ্জীবনময় রায় | ••• | 0.0 |
| শ্রী মপরাব্বিতা দেবী— | | | ন্তিমিতায়মান (কবিতা) | ••• | २२७ |
| দে-কানিনী ও আধুনিকা (কবিতা) | ••• | b २० | প্রতারাপদ ম জু মদার— | | , |
| শ্রীঅবনীক্রনাথ ঠাকুর | | | অভিযান (গল্প) | | 01.4 |
| ने वी शास्त्र | | 699 | আত্থান (গল্প) শ্রীতারাশঙ্কর বন্দ্যোপাধ্যায়— | ••• | 8 b & |
| শ্রীক্ষরেক্ত হোষ— | | • | कुनीदनद्व (सदय | | 91.5 |
| গুৰু একটুখানি মুন (গল্প) | ••• | 759 | খানের ফুল (গ র) | ••• | १५५ १३ |
| শ্রীক্ষরেশ রার— | | | वालात्र क्या (गम्न) खीरीमनाथ माळाग— | ••• | 7 |
| সাবিত্ৰী (কৰিতা) | ••• | ৮১৭ | রাজা রামমোহন রায় | | ৮৬৫ |
| জীঅমিরকুমার ঘোব— | | , | সাজা সান্তনাধন সাস শ্রীদেবত্রত চক্রবর্তী— | | 79 6 |
| নিশীথে ডাকিল কে (গ্রা | ••• | b 3• | ব্ৰহ্ম প্ৰবা সী বাঙালী | | 226 |
| প্রিঅমিরজীবন মুখোপাধ্যার— | | | ভাদেবেন্দ্রনাথ মিত্র— | . • • • | 3 20 |
| প্ৰেড (গল্প) | ••• | 600 | घौटनत कथि ७ कथक- ¹ | 7 | ુંગરફ |
| প্রমুশ্যচরণ বিদ্যাভূষণ— | | | | • • • | ,548 |
| অল্কার (সচিত্র) | ••• | สส | শ্ৰীবিজেৱলাল ভাহড়ী | | • • • |
| শ্ৰীঅমৃত্বাৰ শীৰ— | | **** | ক্ষণিকের মায়া /ঠু ১৯ / শ্রীনগেন্দ্রনাথ ৩৪ ^১ — | ••• | २১१ |
| পন্মাবতের কবি | ••• | ા ૯ | द्यानरगत्त्रमाथ उ द्ध रेमिथन कवि श्रिप्तिनामात्र क्षा | | 968 |
| শ্রীঅর্ক্ষেকুমার গলোগাধ্যার— | | | देनावन कार्य रिशासक्तान का व्यननीमांश्व (होशुद्री | ••• | 748 |
| হাভেশ | ••• | ৫৭৯ | कीर्षिनातायन (राष्ट्रमान्न | | .001 |
| আবুৰ হাছানাৎ— | | • | ক্রারারণ (সন্ধা) শ্রীনন্দর্গার্গ চট্টোপাধ্যায়— | ••• | 984 |
| লাভষ্ট্ৰোক - | ••• | ৬৭৯ | शहरात अधिकार है। अधिकार के अधिक अधिकार के अधिकार के | | a o br |
| श्रीवानानका (नवी | | • (10 | · · · · · · · · · · · · · · · · · · · | ••• | C.A. |
| | | | শ্ৰীনগিনীকান্ত ভট্টশাৰী— | , | |
| মুক্ত (ভগগুলি) : বাশীর সুর | ^{५२} , २८¢, | | শের শাহের সিংহাসুনারোহণ বৎসর (সচিত্র |) | 87.5 |
| বাশার মূর শ্রীউনেশচন্দ্র ভট্টাচার্যা— | ••• | シント | শ্রীনিত্যনারায়ণ বন্দ্যোপাখ্যায়— | | |
| | | | ক্লশিয়ায় আ ইন-আদাল ত | ••• | ゆりむ |
| দেনা-পাওনা | ••• | • | শ্রীনির্ভন নিয়োগী— | | |
| শ্রীকঙ্গণাদাস শ্বহ— | _ \ | | ভারতের শিপিসমন্তা | ••• | 990 |
| কুটার-শিল্প ও বন্ধীর শিল্প-বিভাগ (সচিব | ā) ··· | હર€ | ভারতের নিপিসমন্তা (উত্তর) | *** | વ• હ |
| একানাই লাল গাঙ্গুলী— | 3 | | শ্রীপাক্ষ্প দেবী— | | |
| বৈরী (গ্রু) | | 444 | · চিরন্তনী (গ্রা) | ••• | ७8 € |
| শ্রী ক্ষিতিমোহন দেন— | | | শ্রীপিণাকীলাল রায়— | | |
| শিপদের মহাগ্রন্থ 🌁 | ••• | 243 | সিংহভূমের ভার্যথনি (সচিত্র) | •• | 6.44 |

গাজানের দৃশ্য শাস্তি ক শ্রীনকলাল বহু



"नज्ञम् नितम् एनतम्" "मात्रमात्रा वनशैलन नजाः"

৩৪শ ভাগ ২য় খণ্ড

কাত্তিক, ১৩৪১

১ম সংখ

শেষ পর্ব

রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর যেথা দূর যৌবনের প্রাস্থসীম সেথা হ'তে শেষ অরুণিমা শীর্ণপ্রায় আজি দেখা যায়।

সেথা হ'তে ভেসে আসে

তৈত্র দিবসের দীর্ঘশ্বাসে

অক্ষুট মর্শ্মর.

কোকিলের ক্লান্ত স্বর,

ক্ষীণপ্রোত তটিনীর অলস কল্লোল.

রক্তে লাগে মৃত্ব মন্দ দোল।—

এ আবেশ মুক্ত হোক্ ; যোরভাঙা চোথ

শুভ্র স্থস্পত্তের মাঝে জাগিয়া উঠুক। রঙ-করা হৃঃখ স্থখ সন্ধ্যার মেঘের মতো যাক্ সারে আপনারে পরিহাস ক'রে। মুছে যাক্ সেই ছবি.—চেয়ে থাকা পথপানে,
কথা কানে কানে,
মৌনমুখে হাতে হাত ধরা,
রজনীগন্ধায় সাজি ভরা,
চোখে চোখে চাওয়া,
তুরু তুরু বক্ষ নিয়ে আসা আর যাওয়া।

যে-খেলা আপনা সাথে সকালে বিকালে

• ছায়া অস্তরালে,

সে খেলার ঘর হ'তে
হ'ল আসিবার বেলা বাহির আলোতে।
ভাঙিব মনের বেড়া কুস্থমিত কাঁটালতা-ঘেরা,
যেথা স্বপনেরা
মধুগদ্ধে মরে ঘুরে ঘুরে
গুন-গুন স্বরে।

নেব আমি বিপুল রহৎ
আদিম প্রাণের দেশে তেপাস্তর মাঠের সে-পথ
সাত সমৃদ্রের তটে তটে,
যেখানে ঘটনা ঘটে,
নাই তার দায়,
যেতে যেতে দেখা ষায়, শোনা যায়.

দিনরাত্রি যাস্ক চ'লে নানা ছন্দে নানা কলরোলে।

থাক্ মোর তরে
আপক ধানের ক্ষেত অন্তাণের দীপ্ত দ্বিপ্রহরে;
সোনার তরঙ্গ-দোলে
মুগ্ধ দৃষ্টি যার পরে ভেসে যায় চ'লে
কথাহীন ব্যথাহীন চিন্তাহীন সৃষ্টির সাগরে,
যেথায় অদৃশ্য সাথী লীলাভরে
সারাদিন ভাসায় প্রহর যত
খেলার নৌকার মতো।

দূরে চেয়ে রবো আমি স্থির
ধরণীর
বিস্তীর্ণ বক্ষের কাছে
ধেথা শালগাছে
সহস্র বর্ষের প্রাণ সমাহিত রয়েছে নীরবে
নিস্তব্ধ গৌরবে।
কেটে যাক্ আপনা-ভোলানো মোহ,
কেটে যাক্ আপনার বিরুদ্ধে বিদ্রোহ,
প্রতি বংসরের আয়ু কর্তব্যের আবর্জনাভার
না করুক স্তুপাকার,—
নির্ভাবনা তর্কহীন শাস্ত্রহীন পথ বেয়ে বেয়ে
যাই চলে অর্থহীন গান গেয়ে গেয়ে ।

প্রাণে আর চেতনায় এক হয়ে ক্রমে অনায়াসে মিলে যাব মৃত্যুমহাসাগর-সঙ্গমে, আলো-আঁধারের দ্বন্দ্ব হয়ে ক্ষীণ গোধূলি নিঃশক রাত্রে যেমন অতলে হয় লীন

জোড়াস কো ৫ এ**জিল, ১**৯৩৪



রবীন্দ্রনাথের পত্র

Ģ

নমস্কার পূর্ব্বক নিবেদন

তোমাদের এক বাকা বই পাঠিয়ে দিয়েছি। হয়তো এ চিঠি পাবার হপ্তাধানেক পরে পা:ব। তার মধ্যে বৈজ্ঞানিক বই অনেক আছে। আমার ইচ্ছা এইগুলো অবলম্বন ক'রে তোমরা ছেলেদের বক্তৃতা দাও। এক দেট বই পাঠিয়েছি তাতে বৈজ্ঞানিক প্রায় দকল বিবয়েই খুব মনোজ্ঞ ক'রে আলোচনা করেছে। তোমরা এক এক জনে তার এক একটা विषय निया ছেলেদের কাছে यनि আলোচনা কর তাহ'লে थुव উপकात হবে। अःश आभारतत विवर्गलस ছেলে দের मत्नत्र ठाउँ । এथनकात (५८३ चानक (४मे २'उ-चाककान क्रमण्डे वड़ त्वनी वाञ्चिक इता পড़েছে—हेकून माछाति मख হস্তী সরস্বতীর পদাবনে প্রবেশ করেছে—ক্রমশই ওর বাসাটা একেবারে লণ্ডভণ্ড ক'রে দিতে পারে। তোমরা ঐ চতুপদটাকে অধিক পরিমাণ প্রশ্রয় দিয়ো না—অন্তত ওর যেখানে স্থান সেইথানেই আলানস্তম্ভে ওকে বেশ ভাল ক'রে বেঁধে রেখো—ওকে জননী বীণাপাণির পদ্মবনের অতিকায় ভ্ৰমর ব'লে কোনদিন যেন ভল ক'রো না।

আমার দেই বইটা ছাপংখানার দেওরা হয়েছে। ইয়েট্ন্
ভার যে ভূমিকা নিথে দিয়েছেন দেটা পড়েছি। পড়ে লছা
বোধ হয়। এটা আমার পক্ষে বহুমূলা অলঙ্কার সন্দেহ নেই,
কিছু যাকে বলে অভিশয়াক্তি অলঙ্কার।—-বোধ হয় পূর্বেই
লিখেছি, চিগ্রাঙ্গলা, মালিনী এবং ডাকরটা তর্জনা
হয়ে গোছে। রোটেন্টাইন এগুলি ট্রেভেলিয়ান ব'লে
এক জন কবিকে পড়তে দিয়েছিলেন, ঠার সঙ্গে আমার দেখা
হয়েছে। ভিনি এ-সয়য়ে য়ে-রকম অভিমত প্রকাশ করলেন
ভাতে বোধ হছেে এগুলোও এ-দেশে চলবে—এমন কি
ভিনি এই নাটকগুলিকে অন্ত তর্জ্জমার চেয়ে শ্রেষ্ঠ আসন দিতে
চান। এই ভিনটের মধ্যে কোন্টা য়ে সব সেরা সেটা তাঁর
স্কীর সঙ্গে কয় দিন ধরে আলোচনা ক'রে কিছুভেই স্থির
করতে পারছেন না ্ব প্রথমে তিনি স্থির করেছিলেন,

চিত্রাঙ্গনাই ভাল, তার স্থ্রী স্থির করেছিলেন, ডাক্থর, তারপরে মালিনীটা ভাল ক'রে পড়তে গিরে তাঁর মনে ধোঁকা লেগে গেছে। ইনি নিজে গ্রীক পৌরাণিক কথা নিয়ে নাটক লিথে থাকেন। আমার এই লেখাগুলির মধ্যে তিনি সেই গ্রীক্ সাহিত্যের রস পান। আমাকে এগুস্ সাহেব বলেছিলেন মালিনী পড়ে তাঁর গ্রীক নাটকের কথা মনে পড়ে। এগুস্ সাহেবের সঙ্গে অল্প কয় দিনে আমার বেশ একটু হল্পতা হয়েছে। বড় চমৎকার সহালয় লোকটি। তিনি আমাকে বলে রেথেছেন, দিল্লীতে তুমি আমার সঙ্গে তিন মাস একত্রে বলি কাটাও তাহ'লে আমি তোমাকে গ্রীক অনেকথানি শিথিয়ে দিতে পারব। আমি তোমনে করছি এই নিমপ্রণাট গ্রহণ করব। তারা অক্টোবর মাসেই ভারতবর্ধে ফিরবেন।

এই মেলেই কুমারস্থামীর Art and Swadeshi নামক একটা বই পাঠিয়ে দেব। তাতে আমার উপরে একটা প্রবন্ধ আছে। অজিতের একটা তর্জ্জমার থাতা একবার তিনি দখল ক'রে নিয়ে গিয়েছিলেন, এই লেখার কতক উপকরণ বাধ হচ্চে তার থেকে পেয়েছিলেন—আমারও কতকগুলো তর্জ্জমা দেখলুম এর মধ্যে আছে। একটা কথা তোমাদের ব'লে রাথি—আমাদের চিঠিতে আমার সম্বন্ধে এখানকার লোকের বে-সব অভিমত পাও সেগুলো তোমরা কাগজে ছাপিয়ে দাও। এতে আমি অত্যন্ত লজ্জা বোধ করি। তোমাদের আমি আয়ীয়ভাবে লিখি সেগুলো বাইরে যাবার জিনিব নয়। ইতি

২রা আখিন

তোমা**দে**র

4:06

রবীক্রনাথ ঠাকুর

২**> ক্রমোয়েল রোড** সা**টব কেন্**সিঙ**ট**ন্

নমস্থার পূর্বক নিবেদন-

মানাদের বিদ্যালয়ের ছাত্ররা একটা বড় জিনিব লাভ করছে যেটা ক্লাসের জিনিব নয়—সেটা হচেচ বিশের মধ্যে

আনন্দ-প্রকৃতির সঙ্গে আত্মীয়তার যোগ। সেটাতে যদিও পরীক্ষার সহায়তা করে না কিন্তু জীবনকে সার্থক করে। আমাদের ছেলেরা বৃষ্টিতে ছুটে বেড়ার, ক্যোৎসারাত্রি:ত আনন্দ ভোগ করে, তারা রৌত্রকে ডরায় না, তারা গাছে চড়ে বলে পড়া করে, এগুলোকে আমি সামান্ত জিনিব मान कति ता। हाति मिरकत माम कीवरनत वावधान चूहिस দেওয়া, আন্তান্ধর ছোট বড় নানা বাতায়াতের পথ খুলে দেওয়া যে কত বড় লাভ তা বলে শেষ করা যায় না। এ যেন জগৎকে দান করা। আমরা হতভাগ্যরা বিদ্যাসাধ্য খ্যাতিমান টাকাকড়ি যত সহজে পাই জগৎকে তত সহজে পাই নে— আমরা যার দারা বেষ্টিত হয়ে রয়েছি তাকেই হারিয়ে বদেছি—ঈশ্বর বা আমাদের দিয়ে বদেছেন তা আমাদের তু:ল নেবার শক্তি নেই—এই অসাডভাটার খোলস ভেঙে ফেলে ছেলেনের বাতে মুক্ত জগতের মধ্যে জন্মগ্রহণ করে এখানকার মাটিতে জলেতে আলোতে অবাধে সঞ্চরণ করবার অধিকার শাভ ক'রে এইটে আমি একাস্ত মনে কামনা করি। বোলপুরের মাঠে আমাদের ছেলেরা এই জিনিষটা পাচ্ছিল —তারা নিজের ছোট ছোট মুঠো তুলে ভগবানের এই দক্ষিণ হস্তের দান গ্রহণ করছিল। তোমরা দেখো আমাদের বিদ্যালয়ে এই জিনিষ্টার যেন ব্যাঘাত না হয়। বিশ্বপ্রকৃতির সঙ্গে এবং শিক্ষকদের সঙ্গে ছাত্রদের ফ্রামের প্রতাহ অব্যবহিত যোগই আমাদের বিদ্যালায়র 🕯 সকলের চেয়ে বড় বিশেষৰ। এইটেকে কোনোমতে কিছুমাত্র আচ্ছন্ন করতে দেওরা চলবে না। আমি চলে আসার পর তোমাদের বিদ্যাশয় থেকে অনেক পুরাতন মধ্যাপক একদকে চলে এসেছেন—তেজেশ, হীরালাল, কালীমোহন, বঙ্কিম এঁরা স্বাই পলাভক-ভাট ছোট ছেলেদের সঙ্গে দীর্ঘকাল ধরে এঁদের জীবনের যোগস্ত্ত :বঁধে গিয়েছিল—হঠাৎ তাঁদের জারগার অনেকগুলি নৃতন শিক্ষক এসেছেন--এ রা ছেলেদের সঙ্গে আপনার জীবনকে

ক'রে জড়িত করতে পারবেন কিনা কিছুই জানি নে।

ই যোগটা কর্ত্তব্য-জ্ঞানের দারা হ'তে পারে না—এর
ল একটি উদার প্রেম থাকা চাই—সেই প্রেমের উৎস
বন কিছুমাত শুকিরে না যার, এই কথাই আমি বার-বার

ভাবি। বাধা হ'লেই দেখতে পাবে যা সবুজ ছিল তা करम करम के किरम हलाए हरत वारव-वा थाराव किनिय ছিল, তা কলের জিনিষ হয়ে উঠবে। অমৃত-নির্মরিণী যদি না বয় ভাহ'লে আমাদের শুষ্কভাকে কেউ দূর করতে পারবে না। আমাদের পরস্পরের ম:ধ্য প্রকৃতির পার্থক্য, শিক্ষার প্রভেদ, বাধাব্যবধান এমন কি, বিরুদ্ধতা কিছু-না-কিছু ছিলই এবং থাকবেই-কিন্তু তৎসবেও আশ্রমে সেই জিনিষ্টাই একাস্ত হয়ে ওঠে নি—বেহুরের উপরেও মুর বেঞ্জেছে; গ্রন্থি বতই কঠিন হোক তা ক্রমশই শিথিল হ্বার দিকে গিয়েছে। এখনও সেই অমৃতের ধারাটিকে তোমরা রক্ষা ক'রে চ'লো—ছেলেদের হৃদয় প্রত্যহ পূর্ণ হোক, তারা প্রত্যহ আনন্দিত হোক। তারা প্রতাহই বড়র দিকে তাকাতে শিথুক। তাদের চিত্তের বোধশক্তি বিশ্বদ্ধগতে ব্যাপ্ত হ'তে থাক্—তাদের হাসি উজ্জ্ব হোক, তাদের আনন্দ গানের সুরে মুধরিত হয়ে উঠুক্। সেই প্রান্তরের মধ্যে ছেলেদের আনন্দ-সন্মিলনের কলধ্বনি সমূদ্র পার হয়ে আমার হদরের মধ্যে প্রাবেশ করছে--আনন্দের নির্মাণ আলোকে তাদের হৃদয়-মুকুক পূর্ণবিকশিত হয়ে উঠুক্ এই আমি তাদের আশীর্কাদ করছি। **>∙ই जाचिन, ১৩১**৯. ভোষাদের

রবীজনাথ ঠাকুর

লওন

কল্যাণীয়েষু---

অঞ্জিত, এখানে শীত কাটানোটা আমার একেবারেই
ইচ্ছা নর। কিন্তু মোটের উপর শরৎকালটা ভদ্রব্যবহার
করছে—মনে হচ্ছে গ্রীম্মকাল-ভোর এখানকার আকাশ
যে রকম মাৎলামি করছিল এখন তার জ্ঞে অমুতাপ
প্রকাশ করতে আরম্ভ করেছে—সেপ্টেম্বরের শেষ হুই
সপ্তাহ দিবা স্থ্যালোক ভোগ করা গেছে। গত হুই দিন
আবার বাদলা ক'রে ভয় লাগিয়ে দিয়েছিল। কিন্তু আঞ্চ
সকালে রৌদ্রে আকাশ ধলমল করছে। আমাদের দেশে
স্থ্যালোকের তো কপণতা নেই কিন্তু তবু আঞ্চ পর্যন্তু
আমার স্থ্যালোকের ভৃষ্ণা মিটল না। বেদিন এখানে
স্থ্যা দেখা দেয় সেইদিনই তার আহ্বানে আমার মন
উত্তলা হয়ে ওঠে। ইচ্ছা করে কোনো দ্বুর সমুক্রপারে

আলোর দেশে গিয়ে বর বাধি-পিছনে আমার তমাল-তাশীবনরাজিনীলা সমুদ্র বেলা, সামনে निस्नक 0 अ বালুতটের পাশে নীলাম্বরাশির मरकन ठाकना, शन्दिक তীরে পৃথিবীর আকাশমুখী হুরাশার মত পাহাড উঠেছে এবং ঝাউবনের ভিতর দিয়ে নদীটি বয়ে এসে সমুদ্রে পড়েছে; আকাশে "সিন্ধুশকুন" উড়ে চলেছে, নীলজলের উপর জেলেদের নৌকো শাদা পাল মেলে দিয়েছে—এবং এই সমস্ত দুষ্ঠটির উপর অবাধ প্রদারিত আলো, আমার ক্রচিত্রখচিত অবকাশের গভীর পাত্রটি সোনার আলোয় উপচে পড়েছে—এবং গুঞ্জরিয়া গুঞ্জরিয়া বাজছে আমার মনোবীণা আকাশের আলোর সমান হুরে সমান তালে — সময় নদীর জলের মত মৃত্যুনন্দ কলস্বরে কালসমুত্রে মিলিয়ে যাচ্ছে, কেউ তার কোনো হিসাব দাবি করছে না। মাস্থকে বিধাতা মহরগামী করে স্পষ্ট করেছেন — সে বোড়ার মত দৌড়তে পারে না, পাধীর মত উড়তে পারে না—তার পালাবার পথে অনেক বাধা— সেই জন্তেই সাহস ক'রে তার মনের মধ্যে এত গতিসঞ্চার ক'রে দিয়েছেন। নইলে আজ এমন সকালে কে আমাকে ধরে রাখতে পারত ? ইতি

১৫ <mark>আবিন</mark> ১৩১৯ তোমাদের রবীব্রনাথ ঠাকুর

দেনা-পাওনা

শ্রীউমেশচন্দ্র ভট্টাচার্য্য, এম-এ

চারিক্র-নীতির ইতিহাসের সঙ্গে থাদের পরিচয় আছে, তারা জানেন যে মাসুযের ভাল-মন্দের ধারণা চিরকাল এক রকম থাকে না। ইতিহাসে এ-সব ধারণার অনেক আদল-বদল ঘটিয়াছে। কোনও এক দেশে কিংবা এক সমরে যাহা ভাল, অনা দেশে কিংবা অনা সময়ে তাহাকেই আবার লোকে মন্দ মনে করে,—এরপ দৃষ্টাস্তের সংখ্যা বছ। এ-সম্পর্কে একটা অতি পুরাতন, স্বীণ দৃষ্টাস্ত এই যে, স্পার্টাস্তে ধরা না পড়িয়া চুরি করাটাকে এক সময় শৌর্যাপ্রণের অন্তঃপাতী মনে করা হইত ; কিন্তু এখন বোধ হয় এমন লোক খুব বেশী নাই, ধারা চুরি-বিদ্যাকে সত্য সত্যই বড় বিদ্যা মনে করে। এই ধরণের পরিবর্ত্তনের দৃষ্টাস্ত আরও যথেষ্ট দেওয়া যায়।

অতীতকে অভিক্রম করিয়া বর্ত্তমানে উপস্থিত হওরাটাই উরতি কিনা বলা কঠিন। কিন্তু অনেকেই মনে করেন, চারিত্র-লীতির দিক্ দিরা দেখিতে গেলে মাম্বের ক্রমিক উরতিই হইতেছে। যে-সব ধারণা আমরা ত্যাস করিরাছি, বর্ত্তমানের তুলনার সেগুলি অমূলত ছিল; আর বর্ত্তমানে আমরা বে-সব আদুর্শ প্রহণ করিয়াছি, তাহা অতীতের চেয়ে উচ্চতর । শুণু তাই নর, এই বর্ত্তমানও এক দিন অতীত হইবে ; অনাগত বে ভবিষ্যৎ তাহা আবার এই বর্ত্তমানের চেয়েও উচ্চ । তার মানে এই বে, মানুষের ইতিহাস মোটের উপর উন্নতির ইতিহাস, অবনতির নহে। অনেক প্রাচীনপদ্মী মনে করেন, সত্য বুগ অতীত হইয়ছে; কিন্তু অন্য অনেকের আবার ধারণা এই বে, উহা এখনও আসে নাই,—তবে অধিবে।

মাম্বের ইতিহাস সত্য সত্যই অনবজ্জির উরতির ইতিহাস কি-না, সে-বিচারে এখানে প্রায়েজন নাই। তা ছাড়া কোন্টা উরতি, কোন্টা উরতি নয়, সে-বিষয়ে সকলের ঐকমত্য আছে কি-না সন্দেহ। তবে এ-কথা নিশ্চিত বে, আমাদের ভাল-মন্দের ধারণা সনাতন নহে— উহা পরিবর্ত্তন-সহ। বর্ত্তমানে জগতের ভাবধারা ও কর্মধারা যাঁরা ভাল করিয়া অনুধাবন করিয়া থাকেন, তাঁরাই লক্ষ্য করিবেন বে, আমাদের অনেক ধারণা এখনও চোথের সামনে ক্রত পরিবর্ত্তিত হইয়া বাইতেছে।

একটা সময় ছিল যখন মামূষ দেনা-পাওনা সম্বন্ধে

বড় সাবধান ছিল, এবং সে-সমরে সঙ্গে সঙ্গে মাহ্নবের কথারও একটা বড় দাম ছিল। বাহা ঋণ বলিয়া মা নিয়ছি, ভাহা শোধ দিতেই হইবে—আর বেখানে বে-কথা দিয়াছি, সেখানে সে-কথা রক্ষা করিতেই হইবে—এইটি ছিল প্রাচীন কালের নৈতিক আদর্শ। ইহাতে ফলাফলের বিবেচনার কোন স্থান ছিল না। প্রাচীন চিন্তাপদ্ধতি অনুসারে ঋণ না-দেওয়া পাপ। ঋণী সাধারণতঃ নিজেই ঋণ করে; বেখানে ঋণ নিজক্বত সেখানে ঋণের সঙ্গে সতা জড়িত থাকে। আমি স্বীকার করিয়াই লই, একটা সময়ে এক জনকে একটা কিছু দিব; এখানে বাহা দিব বলিয়াছি তাহা ঋণ; আর, দিব বে বলিয়াছি, উহা অঙ্গীকার। ঋণ না-দিলে পাপ, স্তরাং বাহা দিতে চাহিয়াছি তাহা দেওয়া উচিত। আর, নাহা করিব বলিয়াছি তাহা না-করিলে সতাধংশ্বর অপলাপ হয়। স্তরাং স্ব-কৃত দেনা পরিশোধ না করা দ্বিগুণ পাপ।

অনেক সময় আবার ঋণ নিজকত নছে, ঘটনাচক্রে সঞ্জাত হয়। সেধানেও অঋণী হওয়া মামুধের কর্ত্তব্য, ইহাই প্রাচীন ধারণা। বেমন, পিতার ঋণ পরিশেধ করা পুত্রের কর্ত্রা। এ-সম্বন্ধে আইনের ব্যবস্থা সর্কতে এক ছিল না হয়ত; কিন্তু সংধারণ বিশ্বাস এই ছিল যে, পিভার নিকট হইতে বিত্তলাভ না করিলেও পিতৃখণ শোধ করা পুত্রের ধর্মতঃ উচিত। "ভায়মানো হ বৈ বান্ধণ ব্ৰিভি খা[']লৈ খা[']ণবান ভবিভি''—জন্মনাতেই বান্ধণ তিন প্রকার খণে খণী হইয়া পড়েন ;—ইহা প্রাচীন হিন্দু ধর্মণান্ত্রের উপদেশ। এই তিন প্রকার ঋণ—দেবঋণ. পিতৃথণ ও ঋষিঋণ। বজা, স্বাধাার ও পুতোৎপাদন--এই তিন উপারে এই সব শোধ করিবার উপদেশ আছে। নিজের কথাছারা বাধ্য হইরা ঋণ না করিলেও যে ঋণ শোধ করিতে হয়, এ-সম্বন্ধে প্রাচীনদের মনে আর কোন সন্দেহ ছিল না।

ঋণ বেধানে খ-কত সেধানে উহার দারিছ আরও বেণী। সোক্রেটিসের মৃত্যুর প্রাক্কালে তাঁর বছুরা তাঁকে নামা কথা বিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন এবং তাঁর কোন শেষ ইছা জানাবার আছে কি না, তাহাও জানিতে চাহিয়াছিলেন। তথন সোক্রেটিসের অর্জান্ধ অবশ ইইয়া গিয়াছে, শরীর

আড়ই, অতি কটে কথা কহিতে পারেন। কছুক্ষণ চপু
নিমীলিত রাধিয়া সোক্ষেটিস কহিলেন, "দেবভার কাছে
আমার একটা ঋণ আছে—আমি একটা মোরগ মানত
করিয়াছিলাম—তা দেওরা হর নাই। ভোমরা সেটি
দিও ।" এটাও ঋণশোধের একটা প্রমাণ। মান্নবের
কাছেই হউক, আর দেবভার কাছেই হউক, বাহা দিব
বলিয়া অলীকার করিয়াছি, ভাহা দেওয়া আমার কর্তব্য—
এই ছিল প্রাচীনদেব চিস্তাপদ্ধতি।

ভৃধু অঙ্গীক্ষত বস্ত প্রদান করাই বে কর্ত্বা ছিল, তা নয়; কোন বস্তু দিতে অঙ্গীকার করা বেমন অঙ্গীকার, তেমনি কোন কার্য্য করিতে কিংবা কোন কার্য্য না-করি.ত অঙ্গীকার করাও অঙ্গীকার। অঙ্গীকার হিসাবে উভরই রক্ষণীয়। কথা দিলে সে-কথা রাধিতে হইবে, ইহা অতি প্রাচীন আদর্শ। ইহারই নামান্তর সভ্যপালন। পিতার সভ্যপালন করিতে রাম বনে গিয়াছিলেন; নিজের সভ্যপালন করিবার জন্ত ভীয় চিরকুমার ছিলেন। কথা দেওয়া হইয়াছিল বলিয়াই এ'দের এত বড় ভাগিটা করিতে হইয়াছিল। ঋণও একপ্রকার সভ্য; দিব বলিলেই কথা দেওয়া হইল; স্ভরাং না-দিলে সে সভ্য আর রক্ষিত হয়না।

এইরপে সত্যের প্রতি শ্রদ্ধা এবং ঋণ-শোধের পবিক্রতাবোধ, এই ছই কারণ হইতেই সাবেক কালের লোক ঋণ
না-দেওরাটাকে একটা বড় পাপ মনে করিত। কিন্তু
বর্ত্তমানে পৃথিবীতে একটি নৃতন বিজ্ঞানের আধিপত্য
প্রবণ হইরাছে—তার নাম ধনবিজ্ঞান। এখন আর
দেনা-পাওনার প্রশ্ন তথু চারিত্র-নীতির দিক্ দিরাই বিচার
করা হয় না—ইহাকে প্রধানতঃ ধনবিজ্ঞান অথাৎ
ইকনমিল্লের প্রশ্ন হিসাবে দেখা হয়। ইহার ফলে
দেনা-পাওনা সম্বন্ধে আমাদের যে উচিত-মন্তুচিত বোধ ছিল,
ভাহা ক্রত পরিবর্ত্তিত হইরা বাইতেছে।

আগে উত্তমৰ্ণ ও অধমৰ্ণের সম্পৰ্ক 💘 ব্যক্তিতে

^{* &}quot;But now the parts around the lower belly were almost cold; when uncovering himself, for he had been covered over, he said, and they were his last words, 'Crite, we owe a cock to Acsculapius; pay it, therefore, and do not neglect it."—Phaedo, Plate (155).

ব্যক্তিতেই হইতে পারিত। কিন্তু এখন উহা একটা আন্তর্জাতিক সম্বন্ধের মধ্যেও পরিগণিত হইয়াছে। এখন এক জাতিও আর এক জাতির নিকট ঋণী হঠতে পারে। বিগত ইউরোপীয় মহাসমরের পরে কগতের প্রধান প্রধান ন্তাতিগুলি প্রায় সকলেই এই সম্পর্কে আবদ্ধ হইরা পডিয়াছে। জার্মেনী প্রভৃতি করেকটি জাতি ফ্রান্স ও ইংলণ্ডের নিকট ঋণী হইয়া পড়িয়াছে এবং ক্রা**ন্স, ইংশণ্ড প্রভৃতি**ও আমেরিকার নিকট ঋণী হইয়া আছে। ঋণের এই আধুনিক পরিণতি—ইহার এই আন্তর্জাতিক ভাব, ধনবিজ্ঞানের একটা নৃতন সমস্তার স্থাষ্ট করিয়াছে, তা নয় ; ইহার ফলে জগতের জাতিসমূহের কর্ত্তব্যাকর্ত্তব্য বিচারেও একটা নৃতন ধারা প্রবর্ত্তিত হইয়াছে। অধমর্ণ যদি তাহার ঋণ অস্বীকার করে কিংবা উহা পরিশোধ করিতে না-চায়. তবে সেটা তার পক্ষে নিন্দনীয়; এখনও আমরা অনেকেই হয়ত তাই মনে করি। কিন্তু এই সেদিন ইংশণ্ড তার ঋণ দিতে অত্থীকার করিল;—অজুহাত স্তায়ের দিক্ দিয়া किছू नारे, किन्दु अर्थनी जित्र मिक् मिन्ना अपनक कथा वना এ-সম্পর্কে ধনবিজ্ঞানের বে-সব কৃটতর্ক উপস্থাপিত করা হইয়াছে, তাহা নিশ্চয়ই থুব জটিল এবং শিক্ষাপ্রদ। ঋণ নগদ টাকা দিয়াও শোধ করা যায়, আবার সেই মূল্যের বাণিজ্ঞান্তব্য দিয়াও শোধ করা যায়। এক জাতি ষথন আর এক জাতির প্রাপ্য ঋণ শোধ করিবে, তথন এ-হুইয়ের কোন উপারে শোধ করিবে? কোন উপায়ে শোধ করিলে অন্তান্ত নিরপেক জাতির, অর্থাৎ সমগ্র ভগতের উপকার হইবে? এই বিরাট প্রশ্নের উত্তর আমেরিক। একরূপ দের, আর ইংশণ্ড দের আর এক রকম। উভয়ের মতের মিল হইল না, ফুতরাং আপাতত: ইংলও দেনা শোধ করা স্থগিত রাখিল।

তা ছাড়া, আরও এর চেরে বড় একটা তর্ক আছে।
আমেরিকা অত্যন্ত ধনী দেশ—্বহু নগদ টাকা ও সোনারপা
তার মন্ত্র্দ আছে'। এ-ক্ষেত্রে ইংগণ্ড ধদি তার দেনা
শোধ করিয়া আমেরিকাকে আরও ধনী করিয়া দেয়, তবে
তাতে কি পৃথিবীর অমঙ্গলের আশকা নাই? এই সব
প্রশ্ন লইয়া আলোচনা আক্ষোলন চলিতেছে; এবং নিক্ষরই
আরও কিছুকাল চলিবে। কিন্তু এ-সম্বন্ধে কোন মত-প্রকাশ

আমাদের উদ্দেশ্য নহে। আমরা গুণু ভাবিতে চাই চারিত্র-নীতির উপর ইহার প্রভাব কিন্ধপ দাড়াইবে!

ইংলণ্ড ঋণ দিতে নারাজ হইরাছে; সুযোগ বুঝিরা জার্দ্মেনীও তার দেনা দিতে জন্মীকার করিতেছে। তার যুক্তি সরল; যে-দেনার বোঝা তার কাঁথে চাপানো হইরাছে, সে-সব শোধ করিতে গেলে সে আর মাথা তুলিতে পারিবে না। এ-দেনা অবশুই এক সময়ে সে স্বীকার করিরাছিল, কিন্তু সে ত দায়ে পড়িয়া। তার পরাজয়ের স্থাবিধা পাইয়া বিজেতারা তার স্করে যে ঋণের ভার চাপাইয়াছিল, আজ সে উহা অস্বীকার করিবার মত শক্তির রাথে, স্থতরাং উহা সে অস্বীকার করিতেছে।

মনে পড়ে ভীগ্মের কথা। পিতার একটা হুর্মলভার জন্ত হস্তিনাপুরের রাজসিংহাসনের উত্তরাধিকারী এক ধীবরের নিকট একটা কথা দিয়াছিল: বলিয়াছিল. রাজমুকুট পরিব না এবং চিরকাল অরুতদার থাকিব। সেই কথার উপর নির্ভর কবিয়া ধীবর ভীন্মের পিতার সঙ্গে তার কন্তার বিবাহ দেয়। এই বিবাহের পর ভীন্ন যদি বিবাহ করিতে চাহিতেন, তাহা হইলে হয়ত পারিতেন; আর পিতার মৃত্যুর পর যদি তিনি বিবাহ করিতে চাহিতেন, তবে, পুথিবীতে এমন কোন শক্তি ছিল না যাহা তাঁহাকে প্রতিরোধ করিতে পারিত। কিন্তু ভীম্মের প্রতিজ্ঞা সুবিধা-অসুবিধা বিচার করে নাই। আবার যখন তাঁর रेक्सार्ख्य ভाইয়েরা নিঃসন্তান मারা গেলেন, তখন এই ধীবর-কন্তা রাণী সতাবতীই ভীম্মকে দারপরিপ্রহের জন্ত কত অমুরোধ করিলেন! তথাপি ভীম্মের প্রতিজ্ঞা টলিল না। কথা দিয়া সে-কথার অবমাননা হস্তিনাপুরের রাজার ছেলে করিতে পারে না। ভীগ্ন ত এ-কথা বলেন নাই, বিপদে পড়িয়া একটা কথা বলিয়াছি, এখন ত আর সে বিপদ নাই. স্তরাং সে-কথাও আর রক্ষা করা চলে না। ন্দার্মেনীর যে যুক্তি তাহা ভীমের সময়েও যুক্তি হইতে পারিত, কিছ হর নাই। এই ছিল প্রাচীন আদর্শ।

ব্যক্তির জীবনে এখনও এই আদর্শ বর্তমান রহিরাছে বিনিরা মনে হর। এখনও কথা দিরা বে-কোন অজুহাতে বদি-কোন ব্যক্তি সে-কথা পালন না করিতে চার, তবে আমরা তার নিন্দা করি। কিন্তু আন্তর্জাতিক সম্পর্কের ভিতর এ-আদর্শ আর থাকিতেছে না; তা যদি না হইত, তবে জার্মেনীই বা তার দেওরা কথা অন্বীকার করে কি করিরা আর ইংলওই বা তার ঋণ অন্বীকার করে কেমন করিয়া?

ঋণ-সম্বন্ধে জগতের জাতিসমূহ যে বিচারপদ্ধতি গ্রহণ করিতেছে, তাহার অর্থ এই যে. ঋণ অবশ্রই দেওরা উচিত. তবে নিজের অত্যন্ত অনিষ্ট কিংবা অসুবিধা হইলে উহা না দেওয়াই উচিত। স্বীকার করিতেই হইবে, উহা ন্তায়-অন্তায় বিচারের একটা নূতন ধারা ; আর ইহাও স্বীকার করিতে হইবে যে, এই নূতন বিচারপদ্ধতি ব্যাপকভাবে অবশস্বিত হইলে, ব্যক্তির এবং জাতির জীবনধারাও অনেক পরিবর্ত্তিত হইবে। অনেক আগৈ, যথন আন্তর্জ্জাতিক সম্পর্কের ধারণা খুব স্পষ্ট হয় নাই, তথন হয়ত এই প্রকার জাতীয় ঋণশোধ সম্বন্ধে জাতিসমূহের ধারণাও অস্পষ্টই চিল। কিন্তু আজ জাতিতে জাতিতে সম্বন্ধটা একটা বিরাট সত্য: অথচ এই সম্বৰ-স্বীকৃতি সংৰও ঋণ-সম্বৰে জাতিসমূহ এক নৃতন চিস্তাধারা গ্রহণ করিতেছে। ইহাতে আন্তর্জ্জাতিক সম্বন্ধই যে কেবল পরিবর্ত্তিত হইবে এমন নহে, বাক্তিতে ব্যক্তিতে সম্বন্ধের উপরও ইহার প্রভাব অনিবার্য্য। মামুষের সামাজিক পদমর্যাদা, তার ধনসম্পত্তি, তার ক্রিয়াকলাপ ও চিস্তাধারা —এক কথার তার সমগ্র জীবন, তার ভালমন্দের ধারণাদ্বারা নিয়ন্ত্রিত হইতেছে। ফুতরাং ইহা স্পষ্ট যে, এই ভালমন্দের ধারণার পরিবর্ত্তন ঘটিলে তার জীবনপদ্ধতির পরিবর্ত্তনও অপরিহার্যা। একটা দৃষ্টান্ত সহজেই দেওয়া ঘাইতে পারে। আমরা সাধারণতঃ কোন সভ্য গ্রন্মেণ্টকে টাকা ধার দিতে সংকাচ বোধ করি না । বিনা সন্দেহে ধেমন দেশে 'কোম্পানীর কাগজ' কিনিরা টাকাটা নিরাপদ্ হইল মনে করি, তেমনি ফ্রান্স বা জার্ম্মেনীর কাগন্ধ কিনিতেও আমাদের কোন ভরের কারণ ছিল না, কেন না, ওরা সভা দেশ, টাকা দিবে, এ বিশাস সকলেরই ছিল। কিন্তু ক্রেমে বদি এমন হইরা দাঁড়ার যে, অসুবিধা বোধ করিলে পুথিবীর ভিন্ন ভিন্ন গবন্দেণ্ট ঋণ দিতে অস্থীকার করিয়াছে, তখন আর লোকে অত সহজে দেশী কিংবা বিদেশী কোম্পানীর কাগজ কিনিতে চাহিবে না।

আরও একটা কথা। যারা মভাবে পড়িয়া কিংবা

নৈতিক আদর্শের পরিবর্তনের ফলে খণ দিতে অস্বীকার করে. তারা আগের ঋণ সব পরিশোধ করিয়া জ্বগৎকে এই নৃতন আদর্শের কথা জানাইয়া দিয়া শুধু ভবিষ্যৎ ঋণ সম্বন্ধেই এই নৃতন নিয়ম অমুসরণ করে না। স্থতরাং যে-মুহুর্ত্তে কোন দেশ এই নৃতন আদর্শ গ্রহণ করিবে, সেই मृद्रार्ख वह धर्नी निर्धन इदेश यांत्रेत । कांत्रन, त्म-त्मत्मत কাছে টাকা ধার রাধিয়া অনেকেই নিজপিগকে ধনবান মনে করিতেছিল : কিন্তু ঐ দেশ নখন তার ধার-করা টাকা দিতে অসম্মত হইবে, তথনই ত ধনীদের ধন কপুরের মত উবিয়া যাইবে! কত লক্ষপতি শুধু কোম্পানীর কাগজে : লক্ষপতি। এই কোম্পানীর কাগজের টাকা পরিশোধ করিতে যারা প্রতিশ্রতি করিয়াছে, তারা যদি সে প্রতিশ্রতি প্রত্যাহার করে, তবে আর লক্ষাধিপতিদের লক্ষ টাকা কোথায় রহিল! ফুতরাং জগতের নৈতিক আদর্শের পরিবর্ত্তন ঘটিলে সমাজে ধনী-নির্ধন প্রভৃতি যে শ্রেণী-বিভাগ আছে তাহাও অবিক্লত থাকে না।

ঋণের আদান-প্রদান সম্বন্ধে যে নৃতন ধারণা জগতে দেখা যাইতেছে, তাহা ইউরোপ আমেরিকার জাতিদের দেনা-পাওনার মধ্যেই সীমাবদ্ধ নয়। গত **তুই-তিন বৎস্**রের ভিতর বাংলায়, তথা ভারতবর্ষে, কয়েকটি আন্দোলন হইয়াছে. যাহার ভিতরও ঋণ-সম্বন্ধে এই নৃতন ধারণার প্রভাব দৃষ্ট হয়। প্রথমত: কংগ্রেসের অনুমোদন অনুসারে ধালানা ব**র** করিবার জন্ত যে একটা আন্দোলন হইয়াছিল, তাহাতেও ঋণ অস্বীকারেরই প্রকারাস্তর দৃষ্ট হয়। খাজানাও একপ্রকার ঋণ-এবং এক হিসাবে দেখিতে গেলে, অকীক্বত ঋণ, স্তরাং তাহা না-দেওয়া ঋণ অস্বীকারেরই নামান্তর। এক সময়ের নৈতিক ধারণা অনুসারে উহা অন্তায় বলিয়া মনে করা হইত, কিব্ব আজ যে একটা অবস্থাবিশেষে উহা না-দেওয়ার উপদেশ হইন, তাহাতে ইহাই প্রকারান্তরে বলা हरेन (य. तांहे वा ममास्कृत व्यवसा-विस्नित्य अन व्यवीकांत्र করিলে কোন অন্তায় বা পাপ হয় না। হতরাং মামুধের নৈতিক আদর্শের একটা পরিবর্ত্তন যে ইহাতে স্থাচিত হইল, সে-বিষয়ে আর সন্দেহ করা চলে কি ?

কংগ্রেসের অন্থ্যোদন ছাড়াও বাংলা দেশের কোন কোন জেলার থাজানা এবং কর্জ টাকা পরিশোধ না-করার জন্ত

এकটা আন্দোলন হই ब्राष्ट्र—এবং এখনও ইহা একেবারে দুর হইগ্নছে বলিগ্না মনে হয় না। ধাজানা সম্বন্ধে আন্দোলনটা আপাততঃ কতক্টা মনীভূত হইয়াছে বলিয়া মনে হয়; কারণ শিষ্টমত অনুসারে বর্ত্তমানে রাজ্য বেমন দেওয়া উচিত. ব্রমিদারের খান্সানাও তেমনি দেওগা উচিত; এখন পর্যাস্ত এই অভিমতই প্রবদ বশিয়া মনে হয়। কিন্তু কর্জ্ব টাকা---অর্থাৎ অঙ্গীরুত ঋণ সম্বন্ধে বর্তুমানে শিষ্ট্রসমাক্ষেও প্রবন্ধ ধারণা এই দে, উহার ভিতর একটা জুলুম রহিয়াছে। দেনাদার অঙ্গীকার করিয়াছে সত্য, কিন্তু দে দায়ে পড়িয়া: মুতরাং সমা: সর উচিত তাহাকে রকা করা রক্ষার উপায়, ভাহাকে এই অঙ্গীকৃতির দায় হইতে মুক্তি (मिथा। এ-शांत्रपारे यमि शांतन ना हरेल जांदा हरेला वनीय वावशा-পরিवर किइपिन इटेन (व-मव আইন পাস করিয়াছে, ভাহা হইত না। অতিরিক্ত হুদ ডিক্রী না পেওরার জন্ত আদালতকে ক্ষমতা দেওয়া হইরাছে। ইহাতে দেনাদারের যে উপকার হইরাছে, তাহাতে সন্দেহ নাই; কিন্তু তাহার কর্ত্রব্যেরও পরিবর্ত্তন বটান হইয়াছে। এক সময়ে হাজার অসমর্থ হইলেও সে মনে করিত, বাহা অঙ্গীকার করা হইরাছে, ধেমন করিরাই হউক তাহ। দেওয়া উচিত। সে বেংধটা আর তাহার রহিল না। সে আজ স্তার-অস্তার সম্বন্ধে অন্তরূপ ধারণার অধীন হইয়াছে। আইনের উপদেশ অনুসারে এখন সে ইহাই মনে করিবে যে, স্বীকৃত হইলেও কর্ম-টাকার বেশী সুদ তাহার না দেওয়াই উচিত।

কিছুদিন পূর্বে বাংলার ব্যবস্থা-পরিমদে এক জন এক প্রস্তাব উপস্থিত করিয়াছিলেন যে, তিন বংসরের জন্ত দেশের দেনাদারদের দেনা দেওয়া স্থগিত থাকুক এবং এ-তিন বংসরের জন্ত তাদের দেনার স্বর্দ্ধিও বন্ধ থাকুক। এ-প্রস্তাবটি গৃহীত হয় নাই। তাতে কিছু আসে যার না। শিক্ষিত সমাজে দেনা সম্বন্ধে যে একটা নৃতন ধারণা জ্লোলাং মাথা উচু ক্রিতেছে, তাহার প্রমাণ এই প্রস্তাবে পাওরা যার। আর, সেদিন বোধ হয় বেশী দ্রেও নয়, বধন এরপ প্রস্তাব জনায়াসেই গৃহীত হইয়া যাইবে।

এ-কথা আমরা বলিতে চাই না বে, এ-দেশে থাজানা ও কর্জ টাকার সম্বন্ধে বে-সমস্ত ব্যবস্থা চলিয়া আসিয়াছে ভাহার ভিতর অবিচারের লেশমাত্র নাই, বেমনটি ছিল তেমনটিই উহা থাকা উচিত। আমরা তর্ ইহাই বলিতে
চাই বে, দেনাদার বদি শক্তিমান্ হইয়া দেনা অখীকার
করে, তাহা হইলে পাওনাদারদের আবিক অবস্থারই
যে কেবল পরিবর্তন হয়, এমন নহে; ইহাতে সমাজের
নৈতিক আদর্শেরও পরিবর্তন ঘটে এবং সমাজে বিভিন্ন
শ্রেণীর মধ্যে পরস্পার যে সম্বন্ধ আহে, তাহারও পরিবর্তন
ঘটে। এক কথায়, সমাজের গঠনই অত্যন্ত পরিবর্তিত
হইয়া যায়। স্তরাং আইনের সাহায্য বা অক্ত উপারে
ঝণ-সম্বন্ধে নৃতন ধারণার প্রবর্তনের ফল যে ঝণদাতা
ও ঝণগ্রহীতার মধ্যেই সীমাবদ্ধ থাকিবে না, ইহা আমাদের
ভাবা উচিত।

এটা একটা সাধারণ সত্য যে, সমাজ মান্থরের কর্ত্তব্যবোধের উপর প্রতিষ্ঠিত। এক জনের যা অধিকার, আর এক জনের সেটাই কর্ত্তব্য। পরদ্রেরো লোভ না-করা আমাদের কর্ত্তব্য বলিয়াই দ্রব্য-স্থামীর স্থামিত্ব রক্ষিত হয়। কেই যদি তাহার কর্ত্তব্য অবহেলা করে, তাহা হইলে তাহাতে আর এক জনের অধিকার ধর্ম হয়। ব্যাঙ্কে আমার যে টাকা আছে, আমার প্রয়োজন অন্থনারে সে-গুলি আমার প্রত্যাপন করা ব্যাঙ্কের কর্ত্তব্য। ব্যাঙ্ক যদি সে-কর্ত্তব্য অস্থীকার করে এবং তাকে উহা স্থীকার করাইবার যদি কোন উপার না থাকে, তবে তার ফলে আমি সর্বস্থান্ত হইয়া যাইতে পারি। আমার ধনসম্পত্তি এইরপে মপ্রেরে কর্ত্তব্যবোধের উপর নির্ভর করে।

অন্তকে আমি টাকা ধার দিরাছি, এই আশার বে, উহা আমি আবার পাইব। আর, আমার ধনদম্পত্তির হিসাব করিবার সমর আমি ঐ টাকাটাও গণনা করি। কিছ দেনাদারেরা বদি একবাক্যে সকল দেনা অস্বীকার করে, তবে এক মুহুর্তেই জগতের সমস্ত উত্তমর্ণ নিঃম্ব হইরা বাইবে না কি?

স্বাভিতে জাভিতে বেধানে ঋণসম্পর্ক রহিরাছে, সেধানে এইরপ ঋণ অস্বীকার করিলে উত্তমর্ণ জাভি হরত একেবারে নিঃম্ব হইরা বাইবে না; কিন্তু ব্যক্তির বেলার বদি ঋণ অস্বীকৃত হর এবং বদি ঐ অস্বীকৃত ঋণ আদারের কোন উপারান্তর না থাকে, তবে শ্রেণী-বিশেষের একেবারে সর্বাস্থান্ত হওরা অস্ক্তব নহে।

বাংলা দেশের সমস্ত লোককে যদি উত্তমর্গ ও অধমর্ণ এই চুই শ্রেণীতে বিভক্ত করা যায়, তাহা হইলে দেখা বাইবে, উত্তমর্ণ-শ্রেণীর বেণীর ভাগই হিন্দু আর অধনণ শ্রেণীর বেশীর ভাগই মুসলমান। গুরু তাই নর; থাজানার পাওনাদার ও দেনাদারের মধ্যেও ঠিক এইরূপ সাম্প্রদায়িক বিভাগ রহিয়াছে। খাজানা দেয় বেশীর ভাগই মুসলমান-পার বেশীর ভাগই হিন্দু; কারণ জমিদার বেশীর ভাগই হিন্দু। ইহা বড়ই ফুর্ভাগ্য। কেননা, এই ক্ষেত্রে নৈতিক আদর্শের পরিবর্তনের ফলে ভর্ যে সমাজে অর্থনৈতিক সম্পর্কই পরিবর্ত্তিত হইবে, এমন নয়; সাম্প্রদায়িক সম্পর্কটাও ইহার ফলে জটিল হইয়া পড়িবে এবং সম্প্রদায়গুলির পদমর্য্যাদাও পূর্ব্ববৎ থাকিবে না।

এতকাল ধনী ও মফুরদের ভিতর যে কলহ চলিতেছিল, তার ভিতর দেনা-পাওনা সম্পর্কের আদর্শের একটা পরিবর্ত্তনও লক্ষিত হইত। তার পর বিগত শতাব্দীতে সোসিয়ালিজ্ম, কম্যালিজ্ম প্রভৃতি যে-সব মতবাদ পৃথিবীতে প্রচলিত হইয়াছে, তাতেও সমাজের অর্থ-বিভাগ প্রভৃতির পরিবর্তনের সঙ্গে সঙ্গে মানুষের নৈতিক আদর্শের আমূল সংস্থারও অভিপ্রেত। সমাক্র শ্রেণীবিশেষ বা ব্যক্তিবিশেষের অধিকার লোকের কর্ত্তব্য-বোধের উপয় প্রতিষ্ঠিত; এই কর্ত্তব্য-বোধের পরিবর্ত্তন না ঘটাইলে তাদের অধিকার থর্ব বা নষ্ট হয় না। এইজন্তই বর্তমান ক্লশিরার ধর্ম্মের বিক্লম্বে এত বড় অভিযান চলিতেছে। ধর্ম একপ্রকার কর্ত্তব্য-বোধের প্রশ্রয় দেয়; সেই কর্ত্তব্য-বোধের উপর আবার শ্রেণী-বিশেষের অধিকার নির্ভর করে। স্থতরাং ঐ সব শ্রেণীর অধিকার যদি নষ্ট করিতে হয়, তবে ঐ কর্ত্তব্য-বোধও দুর করিতে হইবে এবং তারই জন্ম উহার প্রভারদাতা ধর্মেরও উচ্ছেদ প্রয়োজন।

আদ্র যে আন্তর্জাতিক সম্পর্কে এবং অন্তরে ঋণ অন্দীকার সমীটীন মনে করা হই:তছে, তাহাতে আপাততঃ অর্থনৈতিক যুক্তিরই প্রয়োগ দেখা গেলেও ভিতরে ভিতরে উহার ফলে মান্তবের নৈতিক আদর্শের এবং তার কর্তব্য-বোধেরও প্রভুত পরিবর্তন সাধিত হইবে, এবং তার ফলে সমাজের একটা বিরাট পরিবর্ত্তন অবগ্রভাবী। সমস্ত জগতে উহার ফল কিন্তুপ দাঁড়াইবে স্পষ্ট কল্পনা করা কঠিন; কিন্তু বাংলা দেলে উহার আঞ্চল যাহা হইবে, তাহা কাবাসীর, विश्विष्ठः धन्यानी हिन्तुनमास्त्रतं, श्राणिधानस्यांगा ।

मृष्टि-श्रमीপ

শ্রীবিভূতিভূষণ বন্দ্যোপাধ্যায়

পাতা

সপ্তম পরিচ্ছেদ

শন্ধার সময় আটঘরা পৌছে দেখি সভ্যিই মায়ের অসুধ। আমাদের ঘরখানায় মেজের ওপর

বিছানার মা ওয়ে। অন্ধকারে আমার চিন্তে না পেরে ক্ষীণস্বরে বললেন—কে ওখানে—হারু?

ভারপর আমার দেখে কেঁদে উঠে বললেন—কে জিতু, আর বাবা আর, এতদিন পরে মাকে মনে পড়লো ভোর? আর এই বালিশের কাছে আর—ওমা, একি হরে গিরেচিদ রে! রোগা, কাল চেহারা—ওরা সন্ডিট বল্ড তো!

শা একটি হিরে **ও**য়ে—অনপ্রাণী কেউ কাছে নেই।

সদ্ধা হব-হব, ঘরে একটা আলো পর্যান্ত কেউ আলে নি। এমনিই বাড়ি বটে! কেন, এত ছেলে মেয়ে বৌ বাড়িভে, এক স্থন কাছে থাকতে নেই? অথচ পরের দৌষ দিয়ে লাভ কি, আমিই কোথায় ছিলুম এতদিন ?

বল্লাম—মা, দাদা কোথায় ? সীতা আসে নি ?

মা নি:শব্দে কাঁদতে লাগলেন। বললেন-ওরা কেউ চিঠি দেয় না, ব'লে ব'লে আজ বুৰি হাৰু একখানা পত্ৰ দিয়েচে সীতাকে।

- —ক'দিন অমুধ হ:য়চে ভোমার মা? **ওরা** কেউ **(म(थ ना ? खा**र्किश्रों, कांकिशांत्री कांत्र ना ?
 - —ভ্রনের মা মাঝে মাঝে আসে। এই বিকেলে

নাবু দিরে গেল—তা সাবু কি খেতে পারি, ওই ররেচে বাটিতে। ছোটবো এসেছিল বিকেলবেলা। বট্ঠাকুর বাড়িনেই বুঝি—আর কেউ এদিকে মাড়ার না।

তারপর আমার গায়ে হাত ব্লিয়ে বললেন—ই্যারে

কিছু, ভূই নাকি সন্নিসিহয়ে গিয়েচিদ্—িদিদি, হায়, মেজবৌ,
ঠাকুরপোরা স্বাই বলে—সত্যি? বলে আর সে আসবে
না, সে কোন্ দিকে বেরিয়ে চলে গিয়েচে। তার ঠিকানা
কেউ জানে না। আমি ভাবি জিছু আমায় ভূলে যাবে

এমনি হবে? আবার ভাবি আমার কপাল খারাপ
নইলে এ-সব হবেই বা কেন—ভেবে ভেবে রাতে জেগে বিসে থাকি।

—কেঁদো না, কাঁদে না, ছিঃ। ওসব মিথ্যে কথা। কে বলেচে সন্ধিসি হয়ে গেছি! এই দ্যাথ না শাদা কাপড় পরনে, সন্ধিসি কি শাদা কাপড় পরে?

মনে বড় অনুতাপ হ'ল—কি অন্তায় কাজ করেচি এত দিন এতাবে ঘুরে ঘুরে বেড়িয়ে! আর এদেরও কি অন্তায়, সবাই মিলে মাকে এমন ক'রে তয় দেখানোই বা কেন, মা সরল মানুষ, সকলের কথাই বিশ্বাস করেন। কিন্তু আমার দোব ছিল না, আমি তেবেছিলাম মা আছেন দাদার কাছে। নিশ্চিন্ত ছিলুম অনেকটা সেজতে। জিগ্যেস করলাম—মা, দাদা তোমায় নিয়ে যায় নি!

—সে অনেক কথা। নিতৃ নিতেও এসেছিল, বট্ঠাকুর বললেন—যাও, কিন্তু আমার এথানে আর আসতে পাবে না। সীতার যভরবাড়ির লোক ভাল না এখন দেখুচি—তারাও বট্ঠাকুরের হাতের লোক, বললে তা হ'লে মেরে-জামাইরের সঙ্গে সম্বন্ধ ঘুচে যাবে। মেরে তারা আর পাঠাবে না। বৌমাকেও এখনও দেখি নি, এমনি থামার কপাল। বট্ঠাকুর সে বউকে এ-বাড়ি নাকি ঢুকতে দেবেন না। তা নিতৃ আমার লিখলে, মা এই কটা মাস যাক—কোথার নাকি ভাল চাকরি পাবে—এখানে পাড়াগারে বাসাও পাওয়া যার না। আমি আবার গিয়ে ওর খভরবাড়ি উঠবো সেটা ভাল দেখাবে না। মাঘ মাসে একেবারে নিরে যাবে এখান খেকে। এই তো নিতৃ ওমাসেও এসেছিল। আহা বাছাকে কি অপমান করলে স্বাই মিলে! আমার

কপালে কেবল চারি দিকে অপমান ছাড়া আর কিছু জোটে না—

কেন চাকরি ছেড়ে দিশাস? কেন এভাবে খুরে খুরে বেড়াই? এখন দেখতে পাচ্ছি সীভার বিবাহ হয়ে গেলেই আমার কর্ত্তব্য শেষ হয়েচে ভাবা উচিত ছিল না। মাকে আমি উপেক্ষা ক'রে এসেচি এত দিন, দাদা সাধ্যমত অবিশ্রি করেচে—কিন্তু আমি কিছুই করি নি। কেন আমার এমন ধারা মতিগতি হ'ল! কোথার আমার কর্ত্তব্য, সে-সম্বন্ধে এমন অন্ধ ছিলাম কেন?

লজ্জিত ও অন্তপ্ত স্থারে বললাম—মা আঙ্র খাবে? অঙ্র এনেচি, ভাল আঙ্র—লেয়ালন' থেকে— —ভূতোকে বললাম, একটা আলো দিয়ে আয়, তা দেয় নি দেখচি—বল্তে বল্তে ছোটকাকীমা ঘরের দোরের কাছে এসে আমায় দেখে থম্কে দাঁড়িয়ে বললেন—কে বসে ওথানে?

আমি অপরাধীর মত কুঞ্জিত স্বরে বললাম—আমি, কাকীমা।

এগিয়ে এসে বললেন—কে, নিতু?

--না, আমি।

কাকীমা অবাক হয়ে বললেন—ওমা, জিতু যে দেখচি, কোখেকে, কি ভাগ্যি তোমার মায়ের! তারপর কি মনে ক'রে?

কাকীমা বললেন—তোমার কাণ্ডজ্ঞান যে কবে হবে, তা ভেবেই পাই নে। একেবারে এ-কটা বছর নিরুদ্দেশ নিথেঁ।জ—আর এই এ-ভাবে মাকে ফেলে রেথে? তোমাদের একটু জ্ঞান নেই যে এটা কার বাড়ি? এথানে কে দ্যাথে ভোমার মাকে? সবই তো জ্ঞান—বয়েস হয়েচে এখনও এ-বৃদ্ধি হ'ল না? বট্ঠাকুর বাড়ি নেই, একটা ডাক্ডার-বিদ্য কে দেখার তার নেই ঠিক। হরি ডাক্ডারকে একবার আন্তে হয়—টাকাকড়ি কিছু আছে? নেই বোধ হয়, সে দেখেই বৃঝেচি—নেই? আচ্ছা, টাকা আমি দেব-এখন ভেব না, ডাক্ডার আন।

ছোটকাকীমার পারের ধুলো নেবার ইচ্ছা হ'ল।
এ-বাড়িতে স্বাই পশু, স্বাই অমাম্য—স্তিট্রার মেয়ে
বটে ছোটকাকীমা।

রা**জেই** ভাক্তার এল। ওযুধপত্রও হ'ল। দাদাকে পত্র **দিলা**ম পরদিন সকালে।

আমার নিয়ে খুব হৈ চৈ হ'ল। জাঠাইমা আমার রারাঘরের দাওয়ার বসে থেতে দেবেন না—আমি জাত-বিচার মানি নে, বাগ্দি-ছলে স্বার হাতে খেয়ে বেড়াই, এ-স্ব কথা কে এসে গাঁয়ে বলেচে। নানা রক্ম অলঙ্কার দিয়ে কথাটা রাষ্ট্র হয়েচে গাঁয়ে।

মায়ের অবস্থা শেষরাত থেকে বড় থারাপ হ'ল। সকালে আমাকে আর চিন্তে পারেন না—ভূল বক্তেও লাগ্লেন।

সন্ধ্যার সময় একটা মিটমিটে টেমি অলচে বরের মেজেতে—আমি একা বসে আছি মায়ের শিয়রে, এমন সময়ে বাইরে উঠোনে একখানা গরুর গাড়ী এ:স দাঁড়াবার শব্দ হ'ল। একটু পরেই ব্যস্তসমস্ত ভাবে মাটিতে আঁচল লুটোতে লুটোতে সীতা ঘরে ঢুক্ল। আমায় দেখে বললে, ছোড়দা? মা কেমন আছেন ছোড়দা? আমি ওর দিকে চেয়ে রইলাম। সীতা একেবারে বদলে গিয়েচে, মাথায় কত বড় হয়েচে, দেখতেও কি স্থক্সর হয়েচে—ওকে মেন চেনা যায় না আর।

মাকে বললাম—মা, ওমা, সীতা এসেচে,—

মা চা**ইলেন, কি বললেন বোঝা গেল না**। বোধ হয় বুঝতে পার**লেন না** যে সীতা এসেচে।

সীতা খুব শক্ত মেরে। সে কেঁলেকেটে আকুল হরে পড়লো না। আমার বললে—দাদা, আমার বালাজোড়াটা দিচ্চি, তাই দিরে ভাল ডাক্তার নিরে এস। এখানকার হরিডাক্তার তো? তার কাল্প নয়।

আমি অক্ষমতার লজ্জায় কুটিত সুরে বললাম—তার পর তোর যাত্তরবাড়ির লোকে তোকে বক্বে। সে কি ক'রে

সীতা বললে—ইস্! বক্বে কিসের জ্বন্তে, বালা কি ওদের? মারের বালা, মা দিরেছিলেন বিরের সময়। বাবা গড়িয়ে দিরেছিলেন মাকে। তুমি বালা নিয়ে বাও, তার পর ওরা বা বলে বলবে—

এই সমর সীতার স্বামী ঘরে ঢুকল। আমি যে-রকম চেহারা ক্রনা করছিলাম, লোকটা তার চেয়েও পারাপ। কালো তো বটেই, পেটনোটা, বোধ হর পিলে আছে, কাঠখোটা গড়ন, চোরালের হাড় উচু—গারে একটা ছেলেমান্থবের মত ছিটের জামা, একটা রাঙা আলোরান, পারে
কেবিসের কুতো। আমার দেখে দাঁত বার ক'রে হেসে
বললে—এই যে ছোটবাবু না? কখন আসা হ'ল? বড়বাবু
বৃঝি এখনও আসবার ফুরসৎ পান নি—তার পর, অফুখটা
কি?…এখন কেমন আছেন?

তার পর সে খানিক ক্ষণ বসে থেকে বললে—বস তোমরা। আমি জ্যাঠাইমাদের সঙ্গে দেখা ক'রে আসি— একটু চায়ের চেষ্টা দেখা যাক্, গরুর গাড়িতে গা-ছাত ব্যথা হয়ে গিরেচে।

ওর কথার ভঙ্গিতে একটা চাষাড়ে ভাব মাথানো। এই লোকটা সীভার স্বামী! সীভার মত মেরের! সীভাকেও আমরা স্বাই মিলে উপেক্ষা করেচি।

এই সমন্ন হঠাৎ শৈলদিনির কথা আমার মনে পড়ল।
শেরালদ' ষ্টেশনে ছোট-বৌঠাকৃক্ষণ বলেছিলেন শৈলদি
এখানেই আছে। সীতার বালাজোড়াটা নেবো না—ওকে
তার জল্পে অনেক হুঃখ পোয়াতে হবে সেখানে, ও যে-রকম
চাপা মেয়ে, কোন অভিযোগ করবে না কথনও কাক
কাছে। শৈলদিনির কাছ থেকে টাকা ধার নেবো, মায়ের
অসুথের পরে যে-ক'রে হোক, দেনা শোধ হবেই।

একবার বাড়ির মধ্যে গিয়ে দেখি সীতার স্বামী ওদের রান্নাঘরে বসে ছ কো-হাতে তামাক খেতে খেতে খুব গল্প জমিয়েচে—আমার খুড়তুতো জ্যাঠতুতো ভায়েদের সকলেরই প্রায় বিমে হয়ে গিয়েচে এবং বৌয়ের। সকলেই সম্পর্কে ওর শালাজ—তাদের সঙ্গে।

রাত দশটার সময় শৈলদিদি এসে হাজির। আমায় দেখে বললে—এই বে সন্নিসি-ঠাকুর ফি.র এসেচ দেখিট। এই বে সীতা—এস এস, সাবিত্রী সমান হও, কখন এলে ভাই? আমি শুনলাম এই থানিকটা আগে, আমাদের ও-পাড়ায় কে ধবর দেখে বল।

আমি আর সীতা শুধু ঘরে মারের পাশে বসে। সীতার স্থামী থেরে দেরে শুরেচে, অবিখি সে বসে থাকতে চেরে-ছিল—আমি বলেছিলাম তার দরকার নেই। ভূমি থেরে একটু বিশ্রাম কর—দরকার হর ডাক্ব রাজে। শৈলদিধিও রাত্রে থাক্তে চাই:ল, বল:ল—আঞ্চরাতে লোকের দরকার। ভোরা হুটিতে মোটে ব:স আছিস্। আমি থেয়ে আসি, আমিও থাকব।

আমি বললাম—না শৈলদি, আমরা ত্-দ্রনে আছি, ভগীপতি এ:সচে—তোমায় আর কন্ত করতে হবে না।

তারপর বা**ই**রে ডেকে টাকার কথা বললাম। শৈলদি বললে—কত টাকা ?

— গোটাকুড়ি দাও গিয়ে এখন। কোল সকালেই আমি তা হ'লে চলে বাই ডাক্তার আনতে—

—তা হ'লে কাল সকালে বাবার সময় আমার কাছ '
থেকে নিয়ে বাবি। ওধান দিয়েই তো পথ—কেমন তো?

ছোটকাকীমা এই সময় এলেন। শৈলদিদিকে দেখে বলালন—ঠাকুরবিকে নিয়ে বেজায় মুক্তিল হায়চে ভাই— ওরা ছেলেমাম্য, কি বা বোঝে, নিতু এখনও ভো এল না। হঠাৎ চার-পাচ দি নের জারে যে মান্য এমন হায় পড়বে ভা কি ক'রেই বা জানবো। তবুও ভো জিতু কোথা থেকে ঠিক সময়ে এসে পড়েছিল ভাই বক্ষে।

রাতে জ্যাঠাইমা এসেও ধানিকটা বসে রই শেন। অনেক রাত্তে স্বাই চলে গেল, আমি সীতাকে বল্লাম—ভূই ঘুমির নে সীতা! আমি জেগে থাকি। রাতে কোন ভয় নেই।

সকাল বেলা আটটা-নটার পর থেকে মা'র অবস্থা भूत थात्राभ ह'न। नमहात भत्र नाना धन-नाम तीनिनि मामात्र (थाका। वोमिमि:क व्यथम एमध्यह मान **হ'ল শান্ত, সরল, সহিষ্ণু মে**য়ে। তবে খুব বৃদ্ধিনতী একটু অগোছালে, আনাড়ি-ধর:ণর। পাড়াগাঁয়ের মেয়ে, বাই.র কোথাও বে:রায় নি বি.শ্য, এই বোধ হয় প্রথম, কিছু তেমন দে:খও নি। গ্রম জলের বোতন গায়ে সেঁক করতে হবে গুনে ব্যাপারটা না বুৰতে পেরে সপ্রশ্ন দৃষ্টিতে বিপন্ন মুখে সীতার मिटक (छःत्र द्रहेग। কাপড়-চোপড় পরবার ধরণও অগোছালো—আঞ্জকালকার মত নর। বৌদিদি যেন বনে ফোটা শুলু কাঠমল্লিকা মূল, তু:ল এনে ভোড়া বেধে মূলের দোকানে সাজিরে রাধবার জিনিয় নয়। আর একেবারে অভ্ত ধরণের মেরেলী, ওর সবটুকুই নারীছের ক্ষনীয়তা মাথানো।

সীতা আমার আড়ালে বললে—চমৎকার বৌদিদি হয়ে:চ, ছোড়দা ৷ আহা, মা যদি একটিবারও চোব মেলে দেখ:তন! আমাদের কপাল!

বেলা তিনটের সময় মা মারা গেলেন। যে মায়ের কণা তেমন ক'রে কোননিন ভাবি নি, আমাদের কাজ-কর্মে, উদ্যমে, আশায়, আকাজ্ঞায়, উচ্চাভিলায়ে মারের কোন স্থান ছিল না, সবাই মিলে যাকে উপেক্ষা ক'রে এসেচি এত দিন-আজ সেই মা কত দুরে কোখার চলে গেল—সেই মারের অভাবে হঠাৎ আমরা অসূভব করলাম অনেকথানি থালি হ.র গিয়ে:চ জীবনের। ঘরের মধ্যে বেমন প্রকাণ্ড ঘরভোড়া খাট থাকে, আজন্ম তার ওপর শুরেতি, বসেচি, থেলেচি, ঘুমিরেচি, সর্বদা কে ভাবে তার অভিত, আছে তো আছে। হঠাৎ এক দিন থাটখানা ঘরে নেই—ঘরের সে পরিচিত চেহারা একেবারে কালে शिक्षात्र एक चत्र हे त्यन नयु, अक पितन चत्त्रत तम निविष् মুপরিচিত নিজ্মতা কোথায় হারিয়ে গেল, তখন বোঝা যায় ঘরের কতথানি জায়গা জুড়ে কি গভীর আখীয়তায় ওর সংক্ষ আবন্ধ ছিল সেই তিরপরিতিত একঘেরে সেকেলে था**টথানা—হরের বিরাট ফাঁকা আর কিছু দিয়েই পূর্ণ** হবার নয়।

সীতার ধৈর্যাের বাধ এবার ভাঙলাে। সে ছােট মেরের মত কেঁ.দ আবদার ক'রে বেন মাকে জড়িরে থাকতে চার। মা আর সে ছ-জনে মিলে এই সংসারে সকালে সজ্যার ছ-বেলা থেটে ছ:খের মথাে দিরে পরস্পারের অনেক কাছাকাছি এসেছিল—সে-সব দিনের ছংখের সদিনী হিসাবে মা আমাদের চেয়েও ওর কাছে বেশী আপন, বেশী ঘনির্ছ—অভাগী এত দিনে সতি্য সভি্য নিঃসঙ্গ হ'ল সংসারে। ওর স্বামী যে ওর কেউ নয়, সে আমার ব্রুতে দেরি হয় নি এতটুকু। কিন্তু ও হয়ত এখনও তাা

দিন-ছই পরে বৌদিদি ছুপুরবেলার ও:দর রালাঘরে একটা ঘড়া আনৃতে সিচেচেন। জ্যাঠাইমা বলে:চন—
ওখানে দাড়াও, দ'ভাটাতে—অন্নি হট ক'রে ঘরে চুক্লে বে?

वोविष व्याक् श्व व देत शिव शैक्षिक्रकम्

জ্যাঠাইমা বড়া বার ক'রে দি:রচেন দাওরাতে। বৌদিদি নিরে এসেচে। কিন্তু বুক্তে পারে নি ব্যাপারটা কি, বৃদ্ধিমতী মেরে হ'লে তখনই বুক্ত।

এ-কথা তখন সে কাউকে বলে নি।

পরদিন মেজকাকা আমার ডেকে বললেন—একটা কথা আছে শোন। তোমার মারের কালটা এথানে না ক'রে অন্ত জারগায় গিয়ে করো। মানে তোমার দাদার বৌরের এথানে ভো পাকম্পর্শ হয় নি, বড়দাদাও নেই বাড়ি—এ-অবস্থার প্রান্থের সমর কেউ খেতে আস্বে না। ভোমার দাদার বৌকে আমরা সে-ভাবে ঘরে ভো নিই নি? এই বুরো গা হয় বাবস্থা করো। ব'লো ভোমার দাদাকে।

তলার তলার এরা সীতার স্থামী গোপেশ্বরকে কি পরামর্শ দিয়েনে কানি নে, সে হঠাৎ বেঁকে দাঁড়িয়ে বললে চতুর্থীর প্রান্ধ সীতাকে বাড়ি নিরে গিরেই করবে— হওচ আগে ঠিক হরেছিল চতুর্থীর প্রান্ধ এধানেই হবে। কালই প্রান্ধের দিন, হতরাং আজই সে সীতাকে নিরে নেতে প্রস্তুত হ'ল। এর কোনও দরকার হিল না, সীতা এধানে প্রান্ধ করলে তাতে কোনা দেখে সমাজের মতেও হব'র কথা নর — কিন্তু সে কিছুতেই কথা শুন্লে না। এই অবস্থায় বৌদিদিকে পেরে সীতা অনেকটা সাম্বনা পেরেছিল—কিন্তু সে ওলের সইল না। বৌদিদির সঙ্গে সীতার বেণী মেণামেনিটা যেন গোড়া গেকেই আমার ভন্নীপতি পছন্দ করে নি। নিজেই হোক্ ভার ওলের পরামর্শেই হোক।

যবির সমর সীতা বৌদিদির গলা জড়ির কাঁদতে লাগল। আমার আড়ালে বললে—ছোড়দা আমার বনবাসে কেলে রেখে ভূলে থেকো না োন, মাঝে মাঝে আস্বে বল? আর লোনো, বৌদি বড়ড ভালমানুষ, ও এখনও জানে না বে ওর জন্তেই মারের কাজ এখানে করতে দিচে না ওরা। এ-কথা বেন বৌদিদির কানে না যার, ব'লে দিও রাদাকে।

বৌদিদিকে বৃধিরে দেওরা হ'ল এখানে শ্রাদ্ধ করতে
রচ বেলী পড়বে, কারণ জাঠানখারদের নাম বেলী,
লাকজন নিমন্ত্রণ করতে হর অনেকঃ গলাতীরে
রাজ্যে কাল করলে অনেক কম ধর:চ:হ'ব। বৌদিদি ভাই
[যে গেল।

যাবার সময় আমাদের থরের চাবীটা ছোটকাকীমার হাতে দি: য় বশগুম—এ-বাড়ি:ত আর কাউকে আপন ব'লে জানি নে, কাকীমা। সীতার থোঁজখবর মাঝে মাঝে একটু নিও—ওর তো এ-বাড়ির সঙ্গে সম্পর্ক একরকম মিটেই গেল।

ছোটকাকীমার চোথে জল এল। বললেন—আমার কোন ক্ষমতা নাই, নইলে নিজুর বৌকে এ-বাড়ি থেকে আজকে অন্ত জান্ধগার বেতে বলে?

আমি বলনুম—সে-কথা ব'লো না কাকীমা। আমরা এথানে এসেহিলাম প্রার্থী হয়ে, পরের দয়ার উপর নির্ভর করে। এথানে কোন অধিকার নেই আমাদের।

কাকীমা বললেন— চুই ওকি কথা বলতিস্ ক্ষিত্ ?

এ তোদের যে সাতপুক্র:বের ভিটে। জারগা-জমি আর

ত্থানা ইট থাকলেই বা কি আর গেলেই বা কি ? এ
ভিটেতে হারুর কি গোগেলের যে অধিকার, তোদের ত্-ভারের
অধিকার তার চেয়ে এক চুল কম নর।

ছোটক কীমার এক মূর্ত্তি দেখেছিলাম বালো, এ আর এক মূর্ত্তি। এই এক জনই এ-বাজির মধ্যে বৃহলে গিরেচে একেবারে। গাড়ীতে খেতে গেতে সেই কথাটা বার-বার মনে হচ্চিল।

অষ্টম পরিচ্ছেদ

মাস পাঁচ ছর পরে ঘুরতে ঘুরতে একবার গেলাম দাদার বাডিতে।

দাদা ছিল না বাড়ি, বৌদিদি বাটনা-মাথা হাতে ছুটে বার হরে এল—আমার হাত থেকে প্টুলিটা নিয়ে বললে —এল এল ঠাকুরপো, রক্তরে মূথ রাঙা হয়ে গিয়েচে একেবারে। কই, আস্বে ব'লে চিঠি দেও নি তো? তা হ'লে একথানা গল্পর গাড়ী ষ্টেশনে যেত।

তথনই বৌদিদি চিনি ভিজিরে সরবৎ ক'রে নিয়ে এল। বনলে—ঠাকুরপো ভোমার মারা নেই শরীরে। এত দেরি ক'রে আস্তে হয় ৈ উনি কেবল বলেন তোমার কথা।

বিকেলে দাদা এল। আমার পেরে যেন হাতে শুর্দ পেলে। কিসে আমার হুখ-স্থবিধে হবে, কিলে আমার বড় মাছ, ভালটা-মন্দটা থাওয়ানো যাবে, এই বোগাড়েই ব্যস্ত হয়ে পড়ল।

এরাবেশ হথে আছে। দাদা যা চাইড, তা সে পেরেচে। সে চিরকালই সংসারী মানুষ, ছেলেপুলে গৃহস্থালী নিয়েই ও সুধী, তাই নিয়েই ও থাক্তে ভালবাসে। ছেলেবেলা থেকে দাদাকে দেখে এসেচি, সংসার কিসে গোছালো হবে, কিসে সংসারের হুঃখ ঘূচবে, এই নিয়েই সে ব্যস্ত থাক্ত। লেখাপড়াই ছেড়ে দিলে আমাদের হ-পর্সা এনে থাওয়াবার জন্তে। কিন্তু পরের বাডিতে পরের তৈরি ব্যবস্থার গণ্ডীর মধ্যে সেথানে তো কোন স্বাধীনতা ছিল না: কাজেই দাদার সে সাধ তথন মেটে নি। যার জন্তে ওর মন চিরকাল পিপাসিত ছিল, এত দিনে তার সন্ধান মিলেচে, তাই দাদা হথী। দাদা ও বৌদিদি একই ধরণের মাহ্র। নীড় বাঁধবার আগ্রহ ওদের রক্তে মেশানো রয়েচে। বৌদিদির বাপের বাড়ির অবস্থা থারাপই। একারবর্ত্তী প্রকাণ্ড পরিবারের মেয়ে সে। তার বাপের বাডিতে সবাই একসঙ্গে কট পায়, সবাই ছে'ড়া কাপড় পরে, একঘরে পুরনো লেপকাথা পেতে শীতের রাতে তুলো-বেকনো, ওয়াড-বিহীন ময়লা লেপ টানাটানি ক'রে ছেলেপুলেরা রাভ কাটায়—সব জিনিষই সকলের, নিজের ব'লে বিশেষ কোন ঘরদোরও নেই, তৈজসপত্রও নেই—সেই রকম ঘরে বৌদিদি মানুষ হয়েচে। এতকাল পরে সে এমন কিছু পেরেচে যাকে সে বলতে পারে এ আমার। এ আমার খামী, আমার ছেলে, আমার ঘরদোর—আর কারও ভাগ নেই এতে। এ অমুভূতি বৌদিদির জীবনে একেবারে नकुन ।

দাদা আমার তার পরদিন সকালে ওর কপির ক্ষেত, শাকের ক্ষেত, দেখিরে বেড়ালে। বৌদিদি বললে—তথু ওদিক দেখলে হবে না ঠাকুরপো, তুমি আমার গোরাল দেখে যাও ভাই এদিকে। এই দ্যাখো, এই হচ্চে মুংলী। মঙ্গলবারে সন্দেবেলা ও হয়, ওই সক্রনগাছতলায় তখন গোয়াল ছিল। ও হ'ল, সেই রাভেই বিষম ঝড় ভাই। গোয়ালেয় চালা তো গেল উড়ে। তার পর এই নতুন গোয়াল হয়েচে এই বোশেখ মাসে। বৌদিদি রাছুরের গলায় হাত বুলিয়ে আদর করতে করতে বললে—বড্ড পয়মস্ত বাছুর,

বে-মাসে হ'ল সেই মাসেই ওঁর সেই মনিব আমার
শ'াখা-শাড়ী পাঠিরে দিলে, ওঁর হ-টাকা মাইনে বাড়ালে।

দিনকতক যাবার পরে বৌদিদির একটা গুণ দেখলাম, লোককে থাওয়াতে বড় ভালবাসে। অসমরে কোন ফকির বৈষ্ণব, কি চুড়িওয়ালী বাড়িতে এসে খেতে চাইন্দে নিজের মুথের ভাত তাদের খাওয়াবে। নিজে সে-বেলাটা হয়ত মুড়ি থেয়ে কাটিয়ে দিলে।

এক দিন একটা ছোক্রা কোথা থেকে একথানা ভাঙা থোল ঘাড়ে ক'রে এসে ছুটলো। তার মুথে ও গালে কিসের ঘা, কাপড়-চোপড় অতি নোংরা, মাথায় লম্বা লম্বা চুল। ছ-সাত দিন রইল, দাদাও কিছু বলে না, বৌদিদিও না। আমি এক দিন বৌদিদিকে বললাম—বৌদি, দেখচো না ওর মুথে কিসের ঘা। বাড়ির থালা-গেলাসে ওবে খেতে দিও না। ও ভাল ঘা নয়, ছেলেপ্লের বাড়ি, ওকে পাতা কেটে আন্তে বললেই তো হয়, তাতেই থাবে। আট দিন পরে ছোকরা চলে গেল। বোধ হয় আরও আট দিন থাকলে দাদা বৌদিদি আপত্তি করত না।

ে বৌদিদি খাটতে পারে ভূতের মত। ঝি নেই, চাকর নেই, একা হাতে কচি ছেলে মামুষ-করা থেকে সুক্ষ করে ধানসেদ্ধ, কাপড়-কাচা, বাসন-মাজা, জল-তোলা—সমহ কাজই করতে হয়। কোনদিন ব্যাক্ষার হ'তে দেখলাম ন সে:জন্তে বৌদিদিকে।

এদের মারায় আমিও ধেন দিনকতক হুড়েরে গেলাম এরকম শাস্তির সংসার কতকাল ভোগ করি নি—বোধ হা চাবাগানেও না, কারণ সেখানে বাবা মাতাল হরে রাফে ফিরবেন, সে ভর ছিল। ভেবে দেখ্লাম সত্যিকার শাষ্টি ও আনন্দভরা জীবন আমরা কাকে বলে কোনদির জানি নি—লোভের শেওলার মত বাবা স্ত্রীপুত্রে নিথে এ-চাবাগানে ও-চাবাগানে ঘূরে ঘূরে কেড়াভেন, শেবকাণে না-হয় কিছুদিন উম্প্লাং বাগানে ছিলেন—এতে মা সামাদের এক কারগার বস্তে না-বস্ভেই স্বাবার অং কারগার উঠে থেতে হ'ত—এই সব নানা কারণে নিক্ষেয়র নিজের দেশ, এমন কি নিক্ষের জাতি ব'লে কোটি জিনিষ আমাদের ছিল না। তার অভাব ষদিও আমর কোনদিন অমুভব করি নি—অত অল্পবরসে করবা

প্রথাও নয়—বিশেষ ক'রে যথন হিমালয় আমাদের সকল মভাবই পূর্ণ করেছিল আমাদের ছেলেবেলাতে।

এখানে সকলের চেয়ে আমার ভাল লেগেচে বৌদিদিকে। দামি বৌদিদির ধরণের মেয়ে কখনও দেখি নি। যা তা केनिय पित्र वोपिपिक थूनी कता शाब, (व-कान ্যাপার যত অসম্ভবই হোক না কেন—বৌদিদিকে বিশ্বাস দ্রানো যায়, পুর অল্পেই ভয় দেখানো যায়—ঠকিয়ে কে!ন हेनिय वोषिषित काइ थिटक जानाह कता स्टेटिंह कठिन অথচ একটি সহজাত বৃদ্ধির সাহায্যে বৌদিদি রকলা ও সংসার সম্বন্ধে দাদার চেয়েও ভাল বোঝে, বড চ্ছু একটা আশা কখনও করে না, ভারি গোছালো, জের ধরণে ঠাকুরদেবতার ওপর ভক্তিমতী। কেবল कों। स्मिष्ठ आंभात हारिय वर्ष मार्श--निष्क रय-मव সংস্থার মানে, অপরকেও সেই স্ব মানতে বাধ্য করবে। নেক ব্যাপারে দেখলাম ভাবটা এই রকম, আমার সংসারে s ক্ষণ আছ তত ক্ষণ তোমায় মান্তেই হবে, তার পর ইরে গিয়ে হয় মেনো না-হয় না-মেনো। লে নয়, মিনতি অনুরোধ ক'রে মানাবে। কড়া কথা তে বৌদিদি জানে না—টকের ভাঁজ নেই কোগাও ोদিদির স্বভাবে, সবটাই মিষ্টি।

সপ্তাহ হুই পরে ওদের ওথান থেকে বিদায় নিয়ে চলে

গাম। আস্বার সমরে দাদা বললে—শোন্ জিতু,

টিৎরার বাড়ি সম্বন্ধ কি করা যাবে, তুই একটা মত

দ্। ছোটকাকীমা ঠিকই বলেচেন—ওবাড়ি আমরা

ডবো না। আর একটা কথা শোন্, একটা চাকরি
থে নে, এরকম ক'রে বেড়াস্ন নে। তোর বৌদিদি

ছিল এই বছরেই তোর একটা বিয়ে দিয়ে দিতে।
র পর ছভায়ে ঘরবাড়ি করি আয়, ছ-জনে মিলে টাকা

ন্লে ভাবনা কিসের সংসার চালাবার? সংসারটা বেল

ড তুলতে পারবো এখন। আর দ্যাখ, পয়সা রোজগার

তে না পারলে, ঘরবাড়ি না থাক্লে কি কেউ মানে?

ভের বাড়ি কোথাও একথানা থাকা চাই, নইলে লোকে

ছচ্ছতাচিছ্লা করে।

দাদার শুধু সংসার আর সংসার। আর লোকে আমার ক্রে কি ভাবলে না-ভাবলে তাতেই বা আমার কি? লেথাপড়া শিখলে না কিছু না, দাদা যেন কেমন হুরে গিরেচে। লোকে কি বলবে সেই ভাবনাতেই আকুল। দাদার ওই সব ছাপোষা গেরস্থালী-ধরণের কথাবার্তার আমার হাসি পার, দাদার ওপর কেমন একটা মারাও হয়।

ভাবনুম, কোথায় যাওয়া যায়? কলকাতায় গিয়ে একটা চাকুরি দেখে নেবো ? দাদা যদি তাতেই সুখী হয়, তাই না-হয় করা যাক। আমি নিজে বিয়ে করি আর না-করি, ওদের সংসারে কিছু কিছু সাহায্য করা তো যাবে? নৈহাটির কাছে অনেক পাটের কল আছে, কলকাতায় না গিয়ে সেথানে গেলে কেমন হয় ? পাটের কলে শুনেটি চাকুরি জোটানো সহজ।

কিন্তু শেষ পর্য্যস্ত কলকাতাতেই এলাম। মাস ত্রই কাটল, একটা মেসে থাকি আর নানা জারগায় চাকুরির চেষ্টা করি। কোন জারগাতেই কিছু সুবিধে হয় না।

₹

এক দিন রবিবারে বারাকপুর ট্রান্ক রোড্খরে বেড়ান্তে বেড়ান্তে অনেক দূর চলে গেছি, দম্দমাও প্রায় ছাড়িয়েচি, হঠাৎ বড় বৃষ্টি এল। দৌড়ে একটা বাগানবাড়ির ঘরে আশ্রয় নিলাম। ঘরটাতে বোধ হ'ল বছ দিন কেউ বাস করে নি, ছাদ ভাঙা, মেজের সিমেন্ট উঠে গিয়েচে। বাগানটাতেও জন্মল হয়ে গিয়েচে।

একটা লোক সেই ভাঙা ঘরে বারান্দাটাতে শুরে ছিল, বোধ হয় ক'দিন থেকে সেধানে সে বাস করচে, একটা দড়ির আল্নায় তার কাপড়-চোপড় টাঙানো। আমায় দেখে লোকটা উঠে বস্ল, বললে—এসো বসো বাবা। বেশ ভিজেচ দেখচি বৃষ্টিতে ? বসো।

লোকটার বরেদ পঞ্চাশের ওপর, পরনে গেরুরা আলথেরা, দাড়ী-গোঁপ কামানো। আমার জিগ্যেদ্ করলে— ভোমার নাম কি বাবা ? বাড়ি এই কাছাকাছি বুঝি ?

नाम वननाम. जःएकप्त श्रविष्ठश्र मिनाम ।

বললে—বাবা, ভগবান তোমার এখানে পাঠিরেচেন আজ। তুমি বদো, তুমি আমার অতিথি। একটু মিট্টি খেয়ে জল থাও—

আমি খেতে না চাইলেও লোকটা পীড়াপীড়ি করছে

লাগল। তার পর কথা বল্তে বল্তে হঠাৎ ডান হাতটা শুন্তে একবার নেড়েই হাত পেতে বললে—এই নাও—

হাতে একটা সন্দেশ।…

আমি ওর দিকে অবাক্ হয়ে চেয়ে আছি দেখে বললে— আয়ে একটা থাবে ? এই নাও।

হাত যথন ওঠালে, আমি তথন ভাল ক'রে চেয়েছিলাম, হাতে কিছু ছিল না। শৃত্যে হাতথানা বার গুই নেড়ে আমার সামনে যথন পাতলে তথন হাতে আর একটা সন্দেশ। অভ্ত ক্ষমতা তো লোকটার! আমার অত্যন্ত কৌত্হল হ'ল, বৃষ্টি থেমে গিয়েছিল কিন্তু আমি আর নড়লাম না সেধান থেকে।

লোকটা অনেক গল্প করলে। বললে—আমি গুরুর দর্শন
পাই কাশীতে। সে অনেক কথা বাবা। তোমার কাছে
বলতে কি আমি বাব হ'তে পারি, কুমীর হ'তে পারি।
মন্ত্রপড়া জল রেথে দেবো, তার পর আমার গায়ে ছিটিয়ে
দিলে বাঘ কি কুমীর হয়ে গাব—আর একটা পাত্রে জল
থাক্বে, সেটা ছিটিয়ে দিলে আবার মান্ত্রহ হবো। সাতক্ষীরেতে
ক'রে দেখিয়েছিলাম, হাকিম উকিল মোক্তার সব উপস্থিত
সেধানে—গিয়ে জিগোস্ ক'রে আস্তে পার সত্যি না
মিথো। আমার নাম চৌধুরী-ঠাকুর—গিয়ে নাম করো।

আমি অবাক হয়ে চৌধুরী-ঠাকুরের কথা শুন্ছিলাম।

এসব কথা আমার অবিশ্বাস হ'ত যদি-না এই মাত্র ওকে

ধালি-হাতে সন্দেশ আন্তে না-দেশভূম। জিগ্যেদ্

করলাম—আপনি এখন কি কলকাতার যাচেনে ?

—না বাবা। মুরশিদাবাদ জেলার একটা গাঁরে একটি চাঁড়ালের মেয়ে আছে, তার অন্তুত সব ক্ষমতা। ধাগড়াঘাট থেকে কোশ-হুই তফাতে। তার সঙ্গে দেখা করবো ব'লে বেরিরেচি।

চৌধুরী-ঠাকুর কি সহজে রাজী হন, অতিকটে মত করালুম। তার পর মেসে ফিরে জিনিবপত্র নিয়ে এলাম। চৌধুরী-ঠাকুর বললেন—এক কাজ করা থাক্ এস বাবা। আমার হাতে দ্বেশভাড়ার টাকা নেই, এস হাটা থাক্। আমি বলগাম—তা কেন? আমার কাছে টাকা আছে,
হু-দ্ধনের রেশভাড়া হয়ে যাবে।

চাঁড়াল মেয়েটির কি ক্ষমতা আছে দেথ্বার আগ্রহে আমি অধীর হয়ে উঠেচি।

ধাগ্ডানাট ষ্টেশনে পৌছতে বেলা গেল। ষ্টেশন থেকে এক মাইল দুরে একটা ছোট মুদির দোকান। সেথানে যথন পৌছেচি, তথন সন্ধ্যা উত্তীর্ণপ্রায়। দোকানের সাম্নে বটতলার আমরা আশ্রম নিলাম। রাত্তে লোবার সময় চৌধুরী-ঠাকুর বললেন, আমার এই ছুটো টাকা রেথে দাও গে তোমার কাছে! আজকাল আবার হুয়েচে চোর-ছেঁচড়ের উৎপাত। তোমার নিজের টাকা সাবধানে রেখেচ তো?

চৌধুরী-ঠাকুরের ভয় দেখে আমার কৌতুক হ'ল।
পাড়াগাঁরের মান্নয ত হাজার হোক্, পথে বেরুলেই ভয়ে
অস্থির। বললাম কোন ভয় নেই, দিন্ আমাকে। এই
দেখুন ঘড়ির পকেটে আমার টাকা রেখেচি, বাইরে
থেকে বোঝাও যাবে না, এথানে রাখা সব চেয়ে সেফ্—

সকালে একটু বেলায় থুম ভাঙলো। উঠে দেখি চৌধুরী-ঠাকুর নেই, ঘড়ির পকেটে হাত দিয়ে দেখি আমার টাকাও নেই, চৌধুরী-ঠাকুরের গচ্ছিত হুটা টাকাও নেই, নীচের পকেটে পাচ-ছ আনার খুচরা পয়সা ছিল তাও নেই।

মান্যকে বিখাদ করাও দেখতি বিষম মুক্তিল। ঘণ্টাখানেক কাট্ল, আমি দেই বটতলাতে বদেই আছি। হাতে
নাই একটি প্রদা, আছ্চা বিপদে তো ফেলে গেল লোকটা!
মুদিটি আমার অবস্থা দেখে শুনে বললে—আমি চাল ডাল
দিচিচ, আপনি রেঁধে খান বাবু। ভদ্রলোকের ছেলে,
এমন জুয়োচোরের পাল্লায় পড়লেন কি ক'রে? দামের জন্তে
ভাব্বেন না, হাতে হ'লে পাঠিয়ে দেবেন। মান্য দেখ্লে
চিন্তে দেবি হয় না, আপনি যা দরকার নিন্ এখান
থেকে। ভাগ্যিদ্ আপনার স্টকেস্টা নিয়ে যায় নি?

হুপুরের পরে সেখান থেকে রওনা হয়ে পশ্চিম মুখে চল্লাম। আমার স্টুট্কেসে একটা ভাল টর্চেলাইট ছিল, মুদিকে ওর চাল-ভালের বদলে দিভে গেলাম, কিছুতে নিলে না। ক্রমশঃ

রাজা শ্রীরামচন্দ্র ভঞ্জ দেও

শ্রীযোগেশচন্দ্র রায় বিভানিধি

ইং ১৮৮৯ সাল। সে বৎসর গ্রীন্মের ছুটির পর আমি দিতীয় বার কটক কলেজে গেছি। দেখি, দিতীয় বর্ষের ছাত্রদের সঙ্গে এক সোমামুর্তি শাদা-পেনটুলেন-চাপকান-পরা এক ছাত্র আমার ব্যাখ্যান শুনছে। এ-পাশে সে-পাশে দৃষ্টি নাই, ধীর ও দ্বির। বালকটি কে ?

পরে শুনলাম ময়ুরভঞ্জের ভাবী রাজা শ্রীরামচক্র ভঞ্জ দেও।

রাক্ষপুত্রই বটে। স্কুমার মুগ আভিজাত্যের অভিমানে
মণ্ডিত হয়েছে। মৃত্ভাষী, অল্পভাষী, বিনীত, নম।
কেবল আমি নই, কলেজের অন্য শিক্ষকেরাও তাঁর প্রতি
আঞ্চ হয়েছিলেন।

যিনি ছ-ভিন বছর পরে ময়ুরভঞ্জের রাজা হবেন, তার সঙ্গে ভাব ক'রতে পারলে একটা-না-একটা ভাল চাকরি জুটবে। তার সহপাঠাদের মনে এ চিস্তা আসা স্বাভাবিক। কিন্তু দেখভাম ব্যাখ্যানের অবকাশে শ্রীরাম বরের বাইরে এক আগুদগাছের তলায় দাঁড়িয়েছেন, সেই ছ-ভিনটি সহপাঠার সঙ্গে কথা কইছেন, অন্য কোন ছাত্রকে দেখতে পেতাম না। হয়ত তারা কাছে থেতে সঙ্কুচিত হ'ত। আলাপ-বিমুখের কাছে কেহ যায় না।

ওড়িব্যার বড় নদী, মহানদী। কটকের সাত-আট
মাইল পশ্চিম-দক্ষিণে এর এক শাখা বেরিয়েছে। এই
শাখার নাম, কাঠজুড়ি। দক্ষিণে কাঠজুড়ি, উত্তরে মহানদী।
এই তুই নদীর মধ্যে ত্রিকোণ ভূমিতে কটক। কলেজ কাঠজুড়ির নিকটে। আমার ও কলেজের অন্য শিক্ষকদের বাসা
কলেজের কাছে ছিল। মহানদীর দিকে, কলেজ হ'তে
আর তুই মাইল দুরে, একটা গ্রামের নাম তুলসীপুর।
সেখানে একটা কুঠাতে শ্রীরাম থাকতেন। গোবিন্দবার্
তাঁর গৃহ-শিক্ষক ছিলেন। তিনি শ্রীরামকে প্তবং চোথে
চোথে রাথতেন। তাঁর শিক্ষার গুণেও শ্রীরামের স্বভাব
মধ্র হয়েছিল। তিনি বেশভুষার আড়ম্বর আসতে দেন নি।

কলেজের বাইরে শ্রীরামের সঙ্গে দেখা হ'ত না। এক দিন শুনলাম শ্রীরামকে বিলাত পাঠাবার কথা হ'ছে। দৈবাৎ সেদিন ঘরের বাইরে তাঁর সঙ্গে দেখা হয়। আমি জিজ্ঞাসা ক'রলাম, ইংরেজীতে, 'আপনার বিলাত যাবার কথা শুনছি। প্রজারা বিরক্ত হবে না?' তিনি উত্তর কর্যেছিলেন, 'বিরক্ত হবার কারণ দেখি না। যদি কেহ হয়, বিলাত হ'তে ফিরে এলে সে কারণ পাবে না।' ব্রুলাম, বালক বটে, বয়দ আঠার বছর, কিন্তু দৃঢ়চিত্ত ও পরিণামদর্শী। পয়তাল্লিশ বংসর পুবে, বিশেষতঃ ওড়িয়ায়, সমুদ্রমাত্রা ক'রলে জাতি-নাশের শঙ্গা ছিল।

কিন্তু শ্রীরামচন্দ্রের বিলাত যাওয়া হয় নাই। ইং১৮৯০
সালে এফ-এ পাস হ'য়ে কলেজে বি-এ পড়তেও আসতে
পারেন নি। ইই বৎসর পরে তাঁকে রাজ্যভার নিতে
হবে, এখন রাক্ষকম নিখতে হবে, কলেজে পড়তে আসতে
গোলে সে শিক্ষা হবে না। ময়ুরভঞ্জের রাজধানী বারিপদা।
তিনি সেখানে থেকে ইং১৮৯০ সালে জুন মাসে আমাকে
এক পত্র লেখেন। এই আমাকে তাঁর প্রথম পত্র। তিনি
লেখেন, তিনি বাড়ী বস্যে বি-এ পরীক্ষার জন্ত প'ড়বার
সংকল্প করেছেন, বিজ্ঞান শাখা প'ড়বেন। ভূতবিদ্যা
(l'hysics) শিখতে কি কি য়য় কিনতে হবে, তার একটা
তালিকা চান। তাঁর এই সংকল্পে আমি আনন্দিত হয়েছিলাম,
এবং য়য়ৢ-মূলাপুস্তকে চিহ্নিত করে তালিকা পাঠিয়েছিলাম।
দিন পনর পরে তিনি দ্বিতীয় পত্রে জানতে চান, আমি তাঁর
কাছে য়েতে পারব কিনা। নানা কারণে আমি সন্মত
হ'তে পারিনি।

কটক কলেজে তথন মোহিনীমোহন ধর, এম-এ, বি-এল, গণিত-বিদার 'লেকচারার' ছিলেন। তাঁর চাকরি বেনা দিন হয় নি। রাজা তাঁকে পত্র লেখেন, এবং মোহিনীবার্ কলেজের কর্ম ছেড়ে দিয়ে রাজার কাছে চল্যে ধান। অক্টোবর মাসে রাজা আমাকে লেখেন, তিনি কতক

ষয় কিনেছেন, এবং মোহিনীবাবুকে বারিপদায় নিয়ে গেছেন। তিনি এর কাছে গণিত ও ভূতবিদাা প'ড়বেন, আইন শিখরেন, এবং বিচারপদ্ধতি জেনে নিবেন। রাহ্মার শিক্ষা সমাপনের পর মোহিনীবাবু মনুরভঞ্জের দেওয়ান প্রেধান বিচারপতি) হ'য়ে বারিপদায় র'য়ে গেছলেন। কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় রাজাকে অত্মতি দিলেন না, তাঁর বি-এ পরীক্ষা দেওয়৷ হ'ল না। কিয়ু বাড়ীতে পাহ্য বিবয় শিখেছিলেন। একবার রাজা ছাখ করেয় আমায় লিখেছিলেন, তাঁর অধিকাংশ সময় রাজকার্যে যাছেছ, পড়ার সময় হ'ছেছ না।

নিসর্গে ও রাষ্ট্রে ওড়িয়ার ছই ভাগ। বান্ধণী, বৈতরিণী, মহানদী ও মহানদীর শাখার পলি ও বালি ছারা বালেশ্বর, কটক, ও পুরী, এই তিন জেলার উৎপত্তি হয়েছে। এই তিন জেলা ওড়িয়ার পূর্বভাগ, পরে সমুদ্র। পশ্চিম ভাগ উন্নতানত, পর্বতময়, অরণ্টময় ৷ ওড়িয়ার তিন ভাগের ছই ভাগ এই রূপ। পূর্বকালে সমুদয় ওড়িয়া। খণ্ড খণ্ড রাজ্যে বিভক্ত ছিল। মোগলের। পূর্ব দিকের সমস্থলী স্বীয় অধিকারে এনেছিল। এই হেতু এই ভাগের नाम (मांगनवन्ती इराइहिन। विकित्नता है: ১৮০৩ সালে মোগলবন্দী দথল করেন। বিষমস্থলীর রাজারা অল্লসম্ম কর স্বীকারে ব্রিটিশের সহিত সন্ধি করেন। রাজারা এক এক গড়ে থাকতেন। গড়, ষৎসামান্ত গিরিহুর্গ। গড়ই তাঁদের রাজধানী। যত রাজা, তত গড়। এই কারণে করদরাক্ষাগুলির নাম গড়ফাত (গড়সমূহ)। ব্রিটিশেরা এই সকল রাজ্যের নাম ওড়িয়ার গড়জাতমহল অথবা করদমহল (Tributary Mahals) রেখছিলেন। করেক বৎসর হ'তে সামস্তরাজ্য (Feudatory States) নাম হয়েছে। ইংরেজ দপ্তরে নাম যাই হ'ক, সাধারণে গড়জাত জানে, গড়ের রাজা স্বীকার করে! এককালে ১৮টি গড় বা রাজ্য ছিল। অধিকাংশ ছোট ছোট। মরুরভঞ ও কেওঝর (ও উচ্চারণে ওঁ) সর্বাপেক্ষা বড়। হুই রাজ্যেরই আদি প্রতিষ্ঠাতা ভঞ্জ-বংশ। ছয়েরই লাঞ্চন ময়ুর।

ব্রিটিশের সহিত সন্ধির পর রাজাদের রাজ্যশাসন ক্ষমতা ধর্ব হয়েছে ৷ বধন করদরাজ্য নাম ছিল, তথন ওড়িখাা-বিভাগের অর্থাৎ বালেশ্বর কটক পুরীর কমিশনার সাহেব গড়জাতের অধ্যক্ষ (Superintendent) ছিলেন। সামস্ত রাজ্য নাম হবার সঙ্গে এক পূথক অধ্যক্ষ (Political Agent) নিযুক্ত হয়েছেন। শ্রীরামচক্রের সময় ময়ৢরভঞ্জ ও অসাস গড়ের ব্রিটিণ অধ্যক্ষ, ওড়িয়্যার কমিশনার ছিলেন। শ্রীরামচক্র তাঁর পিতার জ্যেষ্ঠপুত্র। তিনি ময়ৢরভঞ্জ-রাঙ্গাধিকারী, তিনিই রাজা। ইং ১৮৯২ সালো তিনি রাঙ্গপদে প্রতিষ্ঠিত হন। রাজা তাঁর সৈতৃক পদবী। ইং ১৯০৩ সালে ব্রিটিশ গবমেণ্ট তাকে মহারাজা উপাধি দিয়েছিলেন। সেটা উপাধি, তশ্বারা তাঁর পদবৃদ্ধি হয় নি।

₹

কটক কলেঞ্জে পৃথক বিজ্ঞানশালা ছিল না। এই অভাবহেতু কটের সীমা ছিল না। প্রীরামচন্দ্র দেখে গেছলেন। এজার (S. Ager) নামে এক সাহেব প্রিন্সিপাল ছিলেন। তাঁকে বালা বালা দেখিয়ে দেখিয়ে কটে ফেলেও গবমেল্টের কাছে চিঠি লেখাতে পারি নি। তিনি টাকা চাইতে ভীত হ'তেন। কলেজের ছাত্র এখন রাজা হয়েছেন, তাঁর কাছে টাকা চাইতে লক্ষা কি? তাড়াতাড়ি একটা বিজ্ঞানশালার চিত্র লিখে নিমাণবায় ১৮,০০০ নিরূপিত হ'ল। রাজাকে প্রার্থনামাত্র তিনি টাকা দিতে সন্মত হ'লেন। অবগ্র প্রিন্সিপাল পত্র লিখেছিলেন। সরকারী ইঞ্জিনিয়ার সে-টাকায় গৃহনিমাণ করিয়ে দিলেন। তথনকার পক্ষে সে গৃহ য়থেউ হয়েছিল।

রাজা হবার পাঁচ-সাত বৎসর পরে প্রীরামচক্স কটক এসেছিলেন। তিনি এসেছেন জানলে দেখা ক'রতে যেতাম। জানলাম তাঁরই নিমন্ত্রণে, রাত্রে ভোজনের নিমন্ত্রণ। সেবারে তিনি মহানদীর তীরে একটা কুঠাতে ছিলেন, আমাদের পাড়া হ'তে দেড় মাইল দ্রে। তথন নীলকণ্ঠ মন্ত্র্মদার কলেজের প্রিন্সিপাল। তিনিও নিমন্ত্রিত হয়েছিলেন। তাঁর বেরতে দেরি হ'ল, ঘোড়ার গাড়ীর অধ্যুগলও থেতে দেরি ক'রলে। প্রায় রাত্রি ৯টার সময় কুঠাতে পহছিলাম। দেখি, একটা বড় ঘরে গালিচা পাতা, কটকের গণ্যমান্য পদস্থ বিশ-পাঁচিশ জন বসোছেন, রাজা ঘরেরমাঝে, আর সাত-আট জন তাঁকে ঘিরে বসোছেন। সে ব্যহ ভেদ করা আমার কঠিন, তাঁরও কঠিন। রাজা

একটা ছোট যাত্রাদল, বোধ হয় বালেশ্বর হ'তে, নিয়ে এসেছিলেন। তারা দেখানেই হিল। কিন্তু কে তাদের অভিনয় দেখে, রাজার সহিত বাক্যালাপ করো অধিক মনোরঞ্জন হ'চ্ছিল। একটু পরে রাজা উঠে দাঁড়িয়ে সক**লকে** ভোজনের আসনে বেতে আহ্বান ক'রলেন। ঘরের পেছ, মহানদীর দিকে বারাণ্ডার আসন। আসন, ভোজা-পাত্র, আচমন-পাত্র প্রভৃতি দেখে বুঝলাম রাজা সে-সব গড় হ'তে আনিয়েছেন, পাচক পরিচারক গড় এনেছে। ভোক্তন সমাপন ও আচমন হ'য়ে হ'তে গেল। একে এ:ক উ}তে লাগ লেন। দেখলাম পাশের এক ঘর দিয়ে পথ। রাজার পরণে কোঁচানা ধুতি, গায়ে শাদা কোট, বা কাঁধে কোঁচানা উড়ানী। তিনি দ্বারে দাঁড়িয়ে, পাশে এক পরিচারকের হাতে একটা বড় থালায় বেল ুলের মালা, আর এক পরিচারকের হাতে চন্দনের বাটি। বিনি বেরিয়ে বাচ্ছেন, রাজা তাঁর কপালে চন্দনের তিলক, গলায় মালা দিয়ে করমর্দন ক'রছেন। আমার পালা প'ড়ল। আমি ভাবছি, দেখি শ্রীরাম কি করেন। তিনি ক্ষণমাত্র স্থির থেকে ব'ললেন, 'আমরা এখন বন্ধু' (We now meet as friends), আমিও হেসে ব'ললাম, 'নিশ্চয়' (certainly)। তথাপি হাত বাড়াতে পার্লেন না, আমাকেই বাড়াতে হ'ল। তাঁর এই ব্যবহার ম্মরণ হ'লে আজিও আমার আনন্দ হয়। কি বা পরিচয়, কিছুই নয়। কলেজ-বরে চল্লিশ-পঞ্চাশ ছাত্রের সঙ্গে তিনি ব'সতেন, ব্যাখ্যান শুনতেন, চল্যে থেতেন। ঘরের বাইরে এক দিন হু-তিন মিনিটের কথা হয়েছিল। এইটুকু আলাপ। তথন আমার বর্দ ত্রিশ, গুরু মানাবার বর্দ নর। আমাদের দেশের গুরুভক্তির তুলনা নাই।

সেকালের একটা শিষ্টাচার এখন বাংলা দেশ হ'তে লুপ্ত হ'তে বসোছে। উত্তরীয় বিনা রান্ধা হ'ন, প্রজা হ'ন, কেহ কোন ভদ্রলোকের সহিত দেখা ক'রতেন না। গায়ে কিছু নাই, কিন্তু কাঁথে উত্তরীয় থাকত। নিজের বাড়ীতে উত্তরীয় বিনা দেখা দিতেন না। ওড়িয়ায় এই রীতি সর্বদা দেখতে পেতাম, প্রশংসাও ক'রতাম। রাজার গায়ে কোট ছিল, কিন্তু সে কোট পর্যাপ্ত নয়, উড়ানী না থাকলে ভদ্রলোকদিকে অসন্মান করা হ'ত।

করেক বছর পরের কথা। এক দিন বিকাশবেশা আমি বেড়াতে বেড়াতে মধুস্দন দাস-মশারের বাড়ীর সমুথের পথ দিয়ে পূর্বমুথে যাচ্ছিলাম। দেখি, রাজা সে পথে হেটে কোথায় আসছেন। পেছুতে এক চাকর। কোঁচানা ধুতি, গায়ে শাদা কোট, বা কাঁধে কোঁচানা উড়ানী। কাছে এলে তিনি ডান হাত তুলে নমস্কার ক'রলেন, আমিও ক'রলাম। 'কবে এলেন' জিজ্ঞাসা ক'রতে যাচ্ছি, তাঁর কোটের দিকে চোথ প'ড়ল। শাদা ছ-আনা গজের জিনের কোট, তারও স্থানে স্থানে স্তা বেরিয়ে পড়োছে। বা পাশের পকেটের কাছে মনে হ'ল তালি দেওয়া। আমি বিশ্বিত হ'য়ে কুশল প্রশ্ন ক'রতে ভূলে গেলাম। ব'ললাম, 'রাকা, আপনার কোটটি পুরানা হ**য়ে গে**ছে। **দেখলে** লোকে কি ব'লবে।' তিনি একটু হেসে পকেটের দিকে দৃষ্টি রে'্থ ব'ললেন, 'নাং। তত প্রানা হয় নি।' পথে দাঁড়িয়ে অপর কথা হ'ল না, তিনি চল্যে গেলেন। আমি ভাবলাম, রাজা কি রূপণ হয়েছেন, জীর্ণ কোটকে व'न इन कीर्व रह नि! ताथ रह किन माहेन मृत्र तन টেশন হ'তে হেটে আসছিলেন। কথাটা মনে রইল।

এর বছর-খানেক পরে রাজা তাঁর করেক জন উচ্চ কর্ম চারী স'লে ল'রে কটক এসেছিলেন। আমার জানবার সন্তাবনা ছিল না। সে সময় এক দিন সন্ধার পর মোহিনীবার্ ও আর এক উচ্চ কর্ম চারী দেখা ক'রতে আমার বাসায় এসেছিলেন। অনেক কাল পরে দেখা, এ-কথা সে-কথা নানা কথা হ'তে লাগল। হঠাৎ সে কোটের দশা মনে প'ড়ল। আমি মোহিনীবার্কে জিল্ঞাসা ক'রলাম, "আপনি র'জাকে অনেক দিন দেখছেন, মাম্বটি কেমন?" তাঁরা ভ্রুনেই ব'লা উঠলেন, "মাম্ব কেমন আর কি? আমরা প্রভু, কি তিনি প্রভু, আমরা ব্রুতে পারি না।"

"রাজা বুঝি অলস, আপনাদের কাজ দেখেন না।"

"অলস একট্কু ন'ন, ঘড়ির কাঁটা। কাজকম সব দেখেন, সব বুঝেন। কিন্তু কিছু বলেন না। আমাদের বিপদ এই। প্রাণপনে যথাসাধা ক'রতে হয়।"

"মোহিনী বাব্, আপনি যাই বনুন, রাজাটি দাকুন কুপণ।" তাঁর। ব্ৰুভে পারবেন না, আমি কোটের বর্ণনা ক'রলাম। তথন তাঁরা হেংস উঠলেন, আর বললেন, "যদি তাঁর থাস কামরা দেখতেন, আপনি চুকতে চাইতেন না। ত্থানা চেরার, কোন্থানা ভাল, তা দেখতে সময় লাগবে। টেবিলের চাদরে কালীর দাগ, এক কোণ ছেঁড়া। নিজের কাপড়চোপড় সম্বন্ধে সম্পূর্ণ উদাসীন।"

"আপনার এজলাসের দশাও কি ঐ রকম ?"

"আমার এজনাস ব্রিটিশ জ্ঞ্জকোর্ট অপেক্ষা কোন বিষয়ে নিরুষ্ট নয়, বরং কোন কোন বিষয়ে ভাল।"

"তাহ'লে দেখছি, আপনিও বিগড়ে গেছেন। আপনি বনেন সুসজ্জিত ঘরে, আর আপনার রাজা যে ঘরে বসেন সে ঘরে আপনার কেরানীও ব'সতে চাইবে না। রাজাকে এই বিসদৃশ বলেন না কেন?"

"অনেকবার বল্যেছি, হার মেনেছি। তিনি বলেন, পদগৌরবের যোগ্য ঘর ও যোগ্য সজ্জা চাই। তাঁর নিজের ওতেই চল্যে যাছে।"

"চল্যে যাচ্ছে বটে, চেনা বামুনের পইতার দরকার হয় না। তর্। রাজা কি বই প'ড়তে ভালবাদেন ?" "দর্শনের বই।"

এতক্ষণে ব্রালাম, রাজা দর্শন-জ্ঞান নিক্ষের চরিতে ফলাতে চান। তিনি ব্যাসন-মুক্ত।

পরদিন বৈকাশে রাজার সহিত দেখা ক'রতে গেলাম। পথেই দেখা হ'ল, তিনি হেঁটে কোথার বাচ্ছিলেন। সঙ্গে এক জন চাকরও নাই। সেই নমস্কার। ত্-এক কথার পর আমি ব'ললাম, 'রাজা, আপনার মন্ত্রীরা আপনার অভ্যন্ত অনুগত, অনেক চেষ্টা করে।ও আপনার নিন্দা করাতে পারি নি।' রাজা তৎক্ষণাৎ উত্তর ক'রলেন, আমি আমার কর্মচারী-সংগ্রহণে ভাগ্যবান্ (I am very fortunate in the choice of my officers)। কথাটা সভ্য, যেমন প্রভ্ তেমন সেবক।

আমি রাজার সহিত কদাচিৎ পত্র-বাবহার ক'রতাম, কদাচিৎ দেখা ক'রতাম। বখন ক'রতাম, তখন তাঁর রাজ্যের উন্নতি কামনা ক'রতাম, বিজ্ঞানের প্রতিষ্ঠা বাঞ্চা ক'রতাম। আর, আমার কি এক শ্বভাব ছিল, আমি আমার ছাত্রদিকে বালক মনে ক'রতাম। তিনি রাজা হন, মহারাজা হ'ন, প্রীরামচক্রকে বালক মনে ক'রতাম। তিনি মহারাজা হবার পরেও তাঁকে রাজা সম্বোধন ক'রতাম। পত্রে ও আলাপে কথনও কথনও তাঁর বিবেচনার দোষ দেখাতাম। কিন্তু তিনি ধীরভাবে উত্তর ক'রতেন। আলাপের সময় আক্ষেপ একটু শুক্লতর দেখলে তিনি ইংরেজীতে উত্তর ক'রতেন। তাঁর ফুএকখানা উত্তর আমার পুরানা কাগজ্বপত্রের মধ্যে পড়েয় ছিল। একখানা দেখছি, ইং ১৯০২ সালে মার্চ মাসে লিখেছিলেন। ভাবে ব্রুছি, রাণীর অকালে স্বর্গপ্রাপ্তির সংবাদে তাঁকে সাম্বনা কর্যেছিলাম। পত্রখানি প্রতিপত্র। দাক্ষণ শোকের সময় লোকের কপট সভ্যতা থাকে না। তথন অন্তরের গৃঢ় বাসনা মনে আসে। পত্রখানিতে তাঁর প্রগাঢ় ধর্ম ভাব পরিম্পুট ছিল। তথন তাঁর বয়স একত্রিশ বৎসর।

9

অনেকে জানেন মিষ্টার পি-এন বোস (প্রমথনাথ বহু, প্রায় এক বংসর স্বর্গগত) ময়্বভঞ্জে লোহার আকর আবিদ্ধার কর্মেছিলেন, এবং সে আবিদ্ধারের ফলে টাটা-কোম্পানীর বিপুল কারধানার উৎপত্তি হয়েছে। কিন্তু অনেকে জানেন না, বহু-মশায় কি হুত্রে ময়্বভঞ্জে এসেছিলেন। বহু-মশায়ও আদি বৃস্তান্ত জানতেন না। তিনি ইং ১৯০৩ সালে নভেম্বর মাসে গবর্মেণ্ট ভূবিল্যা-বিভাগের কর্ম হ'তে অব্যাহতি পেয়েছিলেন, ডিসেম্বর মাসে রাজার ভূবিল্যাবিৎ হয়েছিলেন। তার পর ময়্বভঞ্জের গোক্তমহিধানি পাহাড়ে লোহার আকর দেখতে পান।

আদি : বৃত্তান্ত একটু লিখি। ইং ১৯০১ সালের জাকুআরি মাসে মধুকুদন দাস-মশারের উদ্বোগে কটকে ওড়িয়ার শিল্পদ্রেরের প্রদর্শনী হয়। এইটি প্রথম। সে সমরে রাজা কটক এসেছিলেন। উদ্বোক্তারা রাজাকে ও আমাকে।এক দ্রব্য-জাতের ভালমন্দ বিচারক কর্যেছিলেন। ১২টার সমর্য বৈতে হবে, আমি একটু আগে বেরে সব দ্রব্য একবার দেবে রাখলাম। প্রায় পদর আনা নানা গড় হ'তে এসেছে। একস্থানে চীর হাড়ী কাল গুড়া মাটি ছিল।

মাটি কোপা হ'তে এসেছে, তাতে কি আছে, জেনে রাধলাম। ১২টার সময় রাজা এলেন। তাঁর সঙ্গে আবার সব দেখতে লাগলাম। নানা প্রকার বন্ত্র, লোহার অস্ত্রশন্ত্র, পিতল-কাঁসার তৈজসপাত্র ইত্যাদি ছিল। ময়ুরভঞ হ'তেও এসেছিল। আমরা এক একটি দেখি গুণপণার প্রশংসা করি। এক একটা দেখে আমি মুগ্ধ হয়েছিলাম। আমাদের, বিশেষতঃ বাঙ্গালীর, বর্তমান চোখে সব ফুন্দর নয়, কিন্তু কত কালের উদ্যমে ও সাধনে কলার তেমন উৎকর্ষ হয়েছে ! আমি রাজাকে এক একটা দেখাই, আর বলি, 'রাজা, এই रंग कला, এकि नूश्व इरंद ? अहे (व को नन, अ:क अकरू নৃতন পথে চালিয়ে দিবার কেহ নাই কি ?' দ্রবাঞ্চলি রাজার কাছে নৃতন ছিল না, কিন্তু তিনি গুণপণা ভেবে দেখেন নি। পরে সেই চার হাড়ীর কাছে এলাম। কৌতুক ক'রো রাজাকে ব'ললাম, 'রাদা, গড়জাতী বৃদ্ধি দেখেছেন, মাটি পাঠিয়েছে!' রাজাও দেখলেন মাটি। একটা হাড়ী তুলে ব'ললেন, 'ভারী ঠেকছে, মাটতে কিছু থাকবে।' 'এক হাড়ী মাট, ভারী ত হবেই।' কিছু মাট নিয়ে দেখালাম, দোনার আঁষ চিকচিক ক'রছে। কেরানী কাছে দাঁড়িয়ে ছিল, 'বল ত কোথা হ'তে এসেছে।' 'এই ত্ৰ-হাড়ী ময়ুরভঞ হ'তে, এই ত্-হাড়ী অমুক গড় হ'তে। সোনা ও মরুরভঞ্জের নাম ভানে রাজার আগ্রহ হ'ল, জারগার নাম শুনে বিশ্বাস হ'ল। 'তাই ত, সেধানে সোনা পাওয়া ু যায়, আমি জানতাম না।' 'কে জানবে? ম্যুরভঞ্জ রাজ্য আপনার। আমার মনে ক'রলেও আপনার ক্ষতি হবে না।' রাজা অবশ্য মম ব্রালেন।

এর প্রায় পীচ-ছয় মাদ পূর্ব হ'তে আমি কুন্তকলা জানতে বস্যেছিলাম। আমি তথন বাসায় কুন্তকায়। এই কাজের নিমিত্ত একটা পাথর খুজছিলাম। পাথরটা ইংরেজীতে ফেল্স্পার (felspar), বোধ হয় সংস্কৃত নাম চপল। কটকের নিকটের পাহাড়ে পেলাম না। তালচেরের রাজাকে (বর্তমান রাজা), কেঙঝরের মহারাজা ও ময়য়ভঞ্জের রাজা শ্রীরামচন্দ্রকৈ প্রার্থনাপত্র লিখলাম, তাঁদের রাজ্যে যত রকম পাথর আছে অসুগ্রহ করে। এক এক টুকরা পাঠিয়ে দিবেন। সংক্ষেপে বাছলকণ দিরেছিলাম। তথাপি এই বৃদ্ধি ক'রতে হয়েছিল। কারণ, থাকলে দেশী

নাম থাকবে, সে নাম আমি জানি না, সকলে বাহুলক্ষণ বুঝবে না, নমুনা পাঠালে খাঁট কিলাস (crystal) খুজবে,. ना (পলে 'नाहे' व'नाता। है: ১৯০১ मालित मार्घ मारम পত্র লিখি। তিন চার মাস মধ্যে তালচের ও কেউঝর পাথরের অনেক টুকরা পাঠিয়ে দিলেন, কিন্তু একটাও চপল রাজা শ্রীরামচন্দ্র আমার পত্ত পেয়েই শিখলেন, তিনি এক ভূবিদ্যাবিৎ দ্বারা ময়ুরভঞ্জের কিয়দংশ পর্যবেক্ষণ করিয়েছেন, কিন্তু কাজ ভাল হয় নাই, স্থগিত রাথতে হয়েছে, অবদর পেলেই আবার করাবেন। আরও লিখলেন, তাঁর এক শিলা-সংগ্রহ আছে, আমার দেখবার তরে তিনি সেটি পাঠাতে পারেন, কিন্তু দিতে পারবেন না। আমি পত্র পেয়ে আহলাদিত হ'লাম, শিলা-সংগ্রহ পাঠিয়ে দিতে লিখলাম। রাজা লিখলেন, 'তাই ত। খুজে পাচছি না।' কোথায় গেল, কেউ ব'লতে পারছে না। মোহিনীবাবু জানতে পারেন, তাঁকে লিখবেন। মোহিনীবাবুকে লিখলাম, তিনি শিলা-সংগ্রহ দেখেন নি. পাথর-টাথর চিনেন তিনি অরণ্য-বিভাগের এক কর্ম চারীকে পরোয়না: পাঠালেন, আমার যথন যে পাথর দরকার হবে, তিনি পাঠিয়ে দিবেন। অগতা আমাকে এঁকে পত্ৰ দিখতে হ'ল, কিন্তু ছ-মাস পরে ইনি সেরখানেক ওঞ্চনের ক্ষটিকের একটা কিলাস পাঠিয়ে দিলেন! আমি হতাশ হয়ে আক্ষেপ কর্যে রাজাকে লিখলাম, 'রাজা, আপনার রাজ্যে কোথায় কি আছে, কেহ জানে না, চিনে না।'

দে বৎসর বোধ হয় এপ্রিল মাসে, টি-চৌধুরী নামে এক ভদ্রলোক আমার সঙ্গে দেখা ক'রতে আসেন। কথার ব্রালাম, রাজা এঁকেই শিলা-সংগ্রহে নিযুক্ত করেছিলেন। এঁর লম্বা লম্বা কথা শুনে আমার শ্রন্ধা হ'ল না। ইনি সীসার আকর, 'গেলিনা'র (Galena) কিলাস দেখালেন, ময়রভঞ্জে পেয়েছেন। আমার বিশ্বাস হ'ল না। রাজা মুর্ধ নহেন যে এই আবিদ্ধারের মূল্য ব্রুতে পারেন নাই। চৌধুরী-মশায়ের ইচ্ছা আমি রাজাকে পত্র লিখি, ইনি যোগ্য লোক, এঁকে রাখলেই উদ্দেশ্য সিদ্ধ হবে। আমি অবশ্য লিথলাম না।

সে সময়ে আমি বালেখরের রাজা বৈকুঠনাথ দে বাছাছুরের নিকট হ'তে পোয়াটাক ভারী একটা কাল-পাথর.

পেরেছিলান। তাতেও আমার থানেক কাজ চ'লতে পারত।
পত্র লিথে জানলাম রাজা বাহাত্র রাজা প্রীরামচক্রের এক
আলমারিতে পেরেছিলেন। রাজাকে পত্র লিথলাম, তিনি
কিছুই জানেন না। দৈবক্রমে কিছুদিন পরে গুই রাজা
কটকে এসেছিলেন, একত্র ছিলেন। আমি পাথরটি নিয়ে
চকুকর্ণের বিবাদ-ভত্মন ক'রতে গেলাম। রাজা প্রীরামচক্র
বলেন, তিনি সে পাথর কথনও দেখেন নি; রাজা বৈকুণ্ঠনাথ
বলেন, অমুক ঘরের অমুক আলমারিতে ছিল। থানিক কণ
তর্কাতর্কির পর আমি রাজা প্রীরামচক্রকে ব'ললাম, 'রাজা,
আপনার কত শিলা হারিয়ে বাচ্ছে, আপনি দেখছেন না।'
(পাথরটা আমার ভারি ভূগিরেছিল। বস্ততঃ সেটা ক্লত্রিম
কাচ)।

রাজা গড়ে যেয়ে মাস্থানেক পরে আমাকে পত্র লিখলেন, তিনি ইণ্ডিয়া গ্রমেণ্টের কাছে এক জন ভূবিছা-প্রাপ্ত চেম্নেছিলেন, কিন্তু গবমেণ্ট কাকেও দিতে পারেন না, সম্রতি কেই উদ্বুদ্ত নাই। প্রমথনাথ বত্ত-মশার রাজার পত্ত দেখে থাকবেন, এবং সরকারী কর্ম হ'তে অবসর পেয়েই ময়ুরভঞ্জে এসেছিলেন। তাঁর মুখে শুনেছি, লোহার আকর আবিষ্কার ক'রতে তাঁকে তেমন কট্ট ক'রতে হয় নি। পূর্বে ওড়িয়ার ভিন চার রাজ্যে আকর হ'তে লোহা কাড়া হ'ত; ময়ুরভঞ্জ হ'তেও হ'ত। কোথায় হ'ত, বসু-মশায় দেখতে পান। বিলাভী লোহা এলে এদেশের লোহার নাম দেশী লোহা হয়েছিল। দেশী লোহা 'টান লোহা', এর আদর ছিল। কামারকে কাটারী গ'ড়তে দিলে সে দেশী লোহা দিয়ে কাটারীর ধার ক'রত। কেঙথারের দেশী লোহায় ্সেতারের তার হ'ত, কটকে কিনতে পাওয়া খেত। নিজাম হায়দারাবাদের তার উৎকৃষ্ট ছিল। অনেক কাল পর্যস্ত ভালতের রাজ্যে ও বামড়া রাজ্যে দেশা লোহা পাওয়া যেত। এই বাকুড়া জেলায় লোহার নামে এক জাতি আছে। তারা জানে না, তাদের পূর্বপুরুষ দেশে লোহা যোগাত। সন্তা বিলাতী কাপড় এসে তাঁতীর এর মেরেছে, সন্তা ্বিলাতী লোহা এসে লোহারের অন্ন মেরেছে।

8

রান্ধা শ্রীরামচন্দ্র ময়ুরভঞ্জে নৃতন নৃতন কলা প্রতিষ্ঠা

क दाख जल्माहा । इत्यान । जान धर्मात वृक्षाक जान किंद्ध श्रक्टेवश्रमा इट्टोंटे विषम हामिन। हर ১৯०७ সালে কটক কলেজ হ'তে কৈলাসচন্দ্র ভরতকার বি-এ পাস হয়ে জাপানে কলা শিখতে ইচ্ছুক হ'ল। আমি তাকে কৰিকাতাৰ Industrial and Scientific Association হ'তে জাপানে শিক্ষাযোগ্য কলা, কলাশালায় প্রবেশের কাল, শিখবার স্থবিধা অস্থবিধা জানতে পাঠালাম। উক্ত সভা ভরতকারকে জাপানে থাবার জাহাজ-ভাড়া দিতে সন্মত হ'লেন, কিন্তু জ্ঞাতব্য সম্বন্ধে কিছুই ব'লতে পার্লেন না। ভরতকার, ময়রভঞ্জের প্রজা, কিমিতি (Chemistry) বিস্থার বি-এ পাস। তার বৃদ্ধিশুদ্ধিও মন্দ ছিল না। আমি রাজাকে পত্র লিখলাম। তিনি জাপানে থাকবার ধরচ দিতে সম্বত হ'লেন। জাপান যাবার আগে আমি ভরতকারকে ব্ঝিয়ে দিলাম, 'বড় কলার দিকে যাবে না, त्रोथीन कनात मिरके गांदि ना, अक्टा एका लोह-कना লোহার তারের পেরেক কিনচি, তুমি শিখে আসবে। ফিরে এসে এই রকম পেরেক দিও।' আমার বিশ্বাস ছিল, এই নিম্বি অল্পব্যয়ে হ'তে পারবে, রাজাও টাকা দিবেন। ভরতকার জাপানে থেয়ে লিখলে, কলাশালায় প্রবেশের কাল উত্তীর্ণ হয়ে গেছে, জাপানী ভাষা শিখতেও ছ-মাস লাগবে, শুধু বস্যে না থেকে সে কৃষিবিতা কলেজে চুকতে চায়, দেখানে তখনও ছাত্র নিতে পারে। আমি পত্র পড়ো হতাশ হলাম, তার জাপান যাওয়া রুখা, রাজার টাকা ধরচও বুথা হ'ল। তু-বছরের পর আরও তু-মাস থেকে ভরতকার ফিরে এল। রাজার সঙ্গে কি কথা হয়েছিল জানি না। আমার সঙ্গে দেখা ক'রতে এল। আমার জানা ছিল, তার বিস্তা কোনও কাজেই আসবে না। কথাবার্তায় তাই বুঝলাম। সে চীনি ক'রতে শিথে এসেছে, রাজা কারখানা খুলতে টাকা দিতে চান না। রাজা তাকে একটা চাকরি দিতে চান, জুমি নিরিখের কাজ, সে-কাজ স্বাই পারে, ইত্যাদি। ময়ুরভঞ্জ আথচাষের জন্ম প্রাসিদ্ধ ছিল না, কেমনে চীনি হবে? একথারও উত্তর নাই। তথাপি রাজাকে লিখলাম, ভরতকার যে-বিদ্যা শিখে এসেছে, সে-বিশ্বার ফশভাগী হওয়া উচিত। আমি রাজার উত্তরে অত্যন্ত সম্ভুষ্ট হ'লাম। তিনি লিখলেন, যার জ্ঞানের

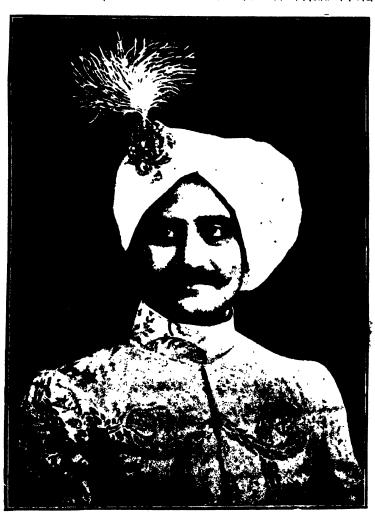
পরিচয় নাই, কর্মসামর্থ্য জানা নাই, তাকে রাজকোষ হ'তে লক্ষ টাকা দেওয়া উচিত হবে না। তিনি ঠিক লিথেছেন। ভরতকার আমাকে এত টাকার কথা বলে নি। ছ:থের বিষয়, এর বছরখানেক পরে ভরতকার হঠাৎ মারা যায়।

আর এক কাজে রাজা আমার প্রামর্শ চেয়েছিলেন। আমি প্রকারান্তরে নিরস্ত হ'তে বল্যোছিলাম, কিন্তু তিনি ওনেন নি। সাল মনে প'ড়ছে না। এক দিন সকালবেলা দেখি, যোগেশ উপস্থিত। তার পুরা নাম অবিকল আমার নাম। গোগেশ রাজার সঙ্গে প'ডত, পরে রাজার এক প্রাইভেট সেক্রেটরী হয়েছিল। পদের ওডিয়া নাম ব'লতে হ'লে, ছামুবেবতা (সন্মুখ ব্যবহৃতা) ! 'কেন এনেছ ?' 'রাজা তাতীশালা খুলবেন, সেথানে কি শেখানা উচিত, ক মাসে শেখাতে পারা যাবে, ইত্যাদি জানতে আপনার কাছে পাঠিয়েছেন।' আমি অবস্থা বুঝলাম। 'রাজা বেশ লোকের কাছে পাঠিয়েছেন! আমি তাঁত-টাঁত জানি না। চিঠি লিখলে এত কষ্ট কর্যে আসতে হ'ত না।'

বোগেশ এত স্পষ্ট কথা মানলে
না। প্রত্যহ আসতে লাগল, মনে
ক'রলে আমার অবসর হ'লে আমি
শিক্ষাক্রম লিখে দিব। এক দিন
শনিবার, সন্ধ্যার পর আসতে ব'ললাম।
নিকটে মধুস্দন রাও-মশারের বাসায়

ছিল, সন্ধ্যার পর এল। আমি ব'ললাম, 'দেখ নোগেশ, আমার বিধাস, মন্থণাটি রাজার নয়, তোমার। তোমাকেই জিজ্ঞাসা করি। আছে।, বল, ময়ুরভঞ্জে কত তাঁতী আছে? তারা কি কাপড়, কত রকমের কাপড় বুনে? কাট,তি কেমন? হংথ কিসের? ওড়িষ্যায় এমন তাঁতী আছে, যাদের পারের ধূলা নিতে ইচ্ছা হয়। তুমি তাদিকে কি শেখাবে?'

উত্তর শুনে ব্রালাম, যোগেনের কোন স্পষ্ট ধারণা নাই। সে মন্ত্র চার, যে-মন্ত্র ক্ষপ ক'রলে ময়ুরভঞ্জের তাঁতী লক্ষীমস্ত হ'তে পারবে। কিন্তু সে ছাড়লে না। প্রদিন রবিবারে হুই বৎসরের ও অতিরিক্ত আর এক বৎসরের শিক্ষাক্রম



স্বর্গীয় মহারাজঃ শীরামচন্দ্র ভঞ্জ দেও বাহাত্র

লিখে দিলাম। লিখন পঠন গণন চিত্র-লিখন বয়ন-বিদ্যা বয়ন-কলা প্রথম তৃই বৎসর। পরে যে ইচ্ছা ক'রবে, স্তা রঙ্গাতে শিখবে। ওড়িয়ায় তাঁতী নিজে স্তা রঙ্গাত। মাস তৃই পরে রাজার সঙ্গে দেখা হ'ল। কটক রেল-স্টেশনের কাছে। এক রাজপুরুষের আগমনে সম্মান দেখাতে যেতে হয়েছিল, রাজাও এসেছিলেন। পথে দেখা, তৃই এক কথা হ'তে পেরেছিল। তিনি ব'ললেন, আমি তাতীকে ছ-তিন বছর শেখাতে চেয়েছিলাম, কিন্তু কলিকাতা হ'তে তিনি কেনেছেন, ছ-মাস গথেষ্ট। আমি এই আশ্রুষ করো-ছিলাম। ব'ললাম, 'রাজা আমি জানতাম না, আপনি কল-তাতী চান। আমি মানুষ-তাতী চিন্তা করোছি। কল-তাতী অনেক আছে। আপনার তাঁতীশালা চ'লবে না।'

পরে শুনেছিলাম, রাজার ঠাতীশালা উঠে গেছে। ক্তক্গুলি টাকা অকারণে ক্লে পড়োছে। সে টাকায় ঠক-ঠকি তাঁত গড়িয়ে প্রামে বিশিয়ে দিলে উপকার হ'ত। এক-শুটাকায় দশটা তাঁত হ'ত।

বাজার সঙ্গে আমার শেষ মালাপ এই।

রাজার ইচ্ছা ছিল, তিনি একটি বিজ্ঞান ও কলা বিভাগ খুলবেন। কৃষি, রাজ্যের প্রধান সম্পদ। কিন্তু আবহ-জ্ঞান বাতিরেকে অসম্ভব। পার্বত ও জাঙ্গল দেশে কৃষি একমাঞ্ ভরসা হ'তে পারে না। দেশী কলা রক্ষার ও উন্নতির চেষ্টা না ক'রলে প্রজা-প্রিপালন হ'তে পারবে না।

দেশের ত্তাগা, তিনি অকালে বিং ১৯২২ সালে এক-চল্লিশ বংসর বয়সে চলো গোলন।

আড়িয়লের কাগজ

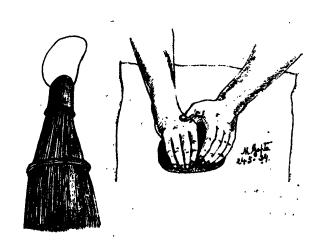
গ্রীমণীন্দ্রভূষণ গুপ্ত

দাকা জেলার বিক্রমপুর প্রগণার করেকটি গামে এক সময় প্রচ্ব পরিমাণে কাগজ প্রান্তত হইত এবং বহু পরিবার ইহা দ্বারা স্বচ্ছলে জীবিকা নির্বাহ করিত। বড় বড় কারপানা হইতে বহু পরিমাণে নানাদ্রবা আমদানী হওয়াতে যেমন সনেক কুটীরশিল্প বিনষ্ট হইয়াছে এই কুটীরশিল্পও তেমনি বালি, জীরামপুর, টিটাগড়, রাণীগঞ্জ প্রভৃতি মিশের কাগজের প্রচলন হওয়াতে বিনষ্ট হইয়াছে। প্রণি, দোকানের হিসাবের খাতা, জমিদারী সেরেস্তার দলিল প্রভৃতির কাগজ পুর্বেষ হাতে তৈরাবী হইত।

বর্ত্তমান স্থা কলকারখানা ও প্রচুর উৎপাদনের যুগ হইলেও, বিবিধ কুটীরশিল্পের প্রক্রুজীবনেরও কথা শোনা ধার। মিলে প্রচুর পরিমাণে বস্ত্র উৎপন্ন হইলেও থদ্ধরের প্রচলন হইতেছে। সেই রকম হাতে-তৈরারী কাগজের প্রচলন হইবেনা কেন? অবগ্র এ-ব্যবসাকে আজকালকার দিনে পূর্ব্বাবস্থায় ফিরাইয়া আনা একেবারে অসম্ভব; তবে আমার বিশ্বাস পুর অল্প আয়াসেই এ-কাগজের উন্নতি-বিধান এবং প্রচলন করা যাইতে পারে।

গাড়িয়ল, পাইবপাড়া, জলিহাটা, কুবমিরা, নাগেবপাড,

দীঘিরপাড় এই কয় গ্রামে কাগজের ব্যবসা ছিল। পাশাপাশি এই কয় গ্রামের ভিতর আড়িয়ল বড় গ্রাম বলিয়া। এগানকার



ফাল্যহি কাগজ পালিশ কর!

কাগজ 'ছাড়িয়লের কাগজ' বলিয়াই পরিচিত। এক সময় াথেটি পরিবার এই বাবসায়ে নিযুক্ত ছিল; প্রত্যেক বাড়িতেই কাগজ তৈয়ারী হইত। হহারা সকলেই মুসলমান। এখন বৃদিও ইহাদের বংশাত্ত্রমিক ব্যবসা নাই, ভবুও ইহারা সাধারণের কাছে কাগজী বলিয়াই পাবিচিত। বোধ হয় পঞ্চাশ-যাট বৎসর পূর্বে এই ব্যবসায়ের অবস্থা ভাল ছিল। তার পর হইতেই অবনতি আরও ইইয়াছে এবং

সকলে অন্ত ব্যবদা অবলম্বন করিতে বাধা হইয়াছে। কাগজীরা এখন দপ্তরী, দরজী, দোকানদার, নৌকার মাঝি, চাষী হইয়া জীবিকানিকাহ করিতিছে। লৌহজঙ্গ, তালতলা বন্দরে এবং এতদঞ্চলে থে-সব নৌকার মাঝি দেখা দায়, ভাষাদের ভিতর অনেকেই কাগজী।

এথনও কাগজীদের অনেকের বাজিতেই দেখা নায় কাগজ-নিশ্মাণের নৰপাতি অবাবহাৰ্যা গ্ৰন্থায় প্ৰিয়া হাতে-তৈয়ানী কাগজেন 5/7/5/1 চাহিদা বাড়িলেই বল পরিবার আবার পৈতৃক ব্যবসায় শুরু করিতে পারে। ধাইরপাড়া গ্রামের ৭৫০ পরিবারের পুষিগায় এথন মাত্র একটি পবিবারের ছ-ভিন সরিক ভাহাদের পৈতৃক ব্যবসা কোনও রক্ষে টিকাইয়া রাখিয়াছে। ইহাদের মধ্যে রজ্জবালী কাগজী বড় কারিগর। তাহাদের গু-তিন সরিক নাকি এথন বংসরে ৬০০ টাকার মত কাগজ বিক্রী করিয়া থাকে। ঢাকার ক্ষেক্টি মনোহারী দোকানে ইহাদের কাগজ কিনিতে পাওয়া যায়। বাহিরে সামান্ত কিছু চালান যায়। কাঞ্চন

মাসে চাঁদপুর, ভৈরব, কৃমিল্লা অঞ্চলের দোকানে দোকানে বিক্রী করার জন্য লাল থেরোর বাধা হিসাবের থাতা চালান বার; সঙ্গে কিছু আড়িয়লের কাগজও বার। কাগজীরা পূর্বে তাহাদের নিজেদের তৈয়ারী কাগজেই এ-সব থাতা তৈয়ার কবিত, এপন মিলের কাগজ ব্যবহার করিতেছে। বজ্জবালী বলিল, সে নাকি ভাহান বাপদাদার মুগে ভানিয়াছে বহুপুলে বগন মিলের কাগজের আমদানি হয় নাই ভখন মীরকাদিমের এক হাটেই নাকি ১৫০০ টাকার উপর কাগজ বিক্রী হইত। টাকার সংখ্যাটা রোধ



কাগ্য :

হয় একটু আশ্চর্যা রক্ষ ওিকবে : কিন্তু থুব কম করিয়া প্রতি পরিবারে তিন জন করিয়া লোক ধরিলে ৭৫০ পরিবারে হুই হাজারের উপর লোক কাগজ নিম্মাণে নিযুক্ত ছিল এবং সপ্তাহে দেড় হাজার টাকার কাগজ উৎপাদন করিত—ইহা অভ্যুক্তি বলিয়া মনে হয় না । মাবকাদিমের হুটে হুইতে বাহিরেও কাগজ চালান গাইত বৃদ্ধদের মূথে শোনা যায়, শেষরাত্রি হুইভেই কাগজীপাড়ায় ঢেঁকিতে কাগজের উপকরণ কুটিবার আওরাজ পাওয়া গাইত। হু-তিন মাইল দূরের গ্রামের



্. ..: পাট চূর্ণ করা

লোকেরাও টে^{*}কির শব্দ শুনিতে পাইজান সেই চে^{*}কি আন্ধ একেবারে নীরব !

বিশ-পটিশ বৎসর পূর্বে বঙ্গভঙ্গের সময় আড়িয়লের কাগজের কিছু চাহিদা হইয়াছিল; প্রায় পটিশ-ত্রিশটি পরিবার তথন কাগজ প্রস্তুত করিত।

' ফাগৰুপ্ৰস্তুতপ্ৰণালী

কাগজ-প্রস্তুতের প্রণালী খুবই সহজ; সাজসরঞ্জাম বিশেষ কিছুই নাই। কাগজ ও পাটের মণ্ড হইতে এই কাগজ প্রস্তুত হয়। এক মণ কাগজের সঙ্গে পাঁচ সের পাট মিশাইতে হয়। দপ্তরীদের দোকানে কাটা টুক্রা কাগজ কিনিতে পাওরা যায়। এগুলি থাতার ছাঁট কাগজ। ছাপা কাগজেও কাজ চলিতে পারে, কিছু তাহার মঙ্গে কাগজের রং পরিকার হইবে না। এই কাগজ কল দিয়া ভিজাইরা রাখা হয়, কাগজ যাহাতে সহজে গলে সেজন্ত কিছু সোড়া মিশাইতে হয় ৷ এক দিন ভিজাইয়া রাখিলেই কাজ চলে ৷

পাট রাখিতে হয় চুণের জলে ভিজাইয়া। যে-কোন পাটে কাজ চলে না; মিহি ও মোলায়েম পাটের প্রয়োজন। জৈয় জ আবাঢ় মাসে ক্ষেত হইতে কিছু কিছু পাট তুলিয়া ফেলা হয়; এ-সব ছোট ছোট পাটকে বাছ-পাট বলে। আজিকাল য়:এই পরিমাণ কাগজ পাওয়া যায় ুবলিয়া কাগজ ও পাট তুই-ই মণ্ডপ্রস্তুতকার্যো ব্যবহৃত হয়। পূর্বে ভিধুপাট দিয়াই মণ্ড প্রস্তুত হইত। সেজ্ন্য



্ কাগজের মাড় ধুইয়া ফেলা হইতেছে

এখনকার কাগন্ধ দেখিতে আগেকার অপেক্ষা অনেক ভাল। কিন্তু আগেকার কাগন্ত বেনী শক্ত ছিল। পূর্বে যে পাট ব্যবহার করা হইত ভাহাকে বলে মেছট পাট (পশ্চিম-বঙ্গে—মেছতা)। এ-অঞ্চলে মেছট পাটের চাষ ছিল না। চাঁদপুর ও ফরিদপুরে ইহার চাষ হইত। লোহজন্দে এ-পাট কিনিতে পাওয়া যাইত। সাধারণ পাট হইতে মেছট পাট ভিন্ন। এ-পাটের বীজ কলাইরের মত বড়, ফুল, হয় দেখিতে কতকটা চেড্স ফুলের মত। এক রাত্রি ভিজাইয়া রাথিয়া রেনিদ্রে শুকাইতে হয়। এর পর শুকনা পাট ঢেঁকিতে গুঁড়া করা হয়। এই টে কৈ লম্বায় হাত-দলেক; ইহার মুখলে লোহা পরান

থাকে। কাগজীরা এই মুয়লকে পরতম বলে। এই চে^{*}কি খুব ভারী; ইহাতে পাড় দিবার জন্ত তিন-চার জন লোকের প্রয়োজন হয়।

এখন প্রচুর পরিমাণে কাগজ প্রস্তুত হয় না বলিয়া ঢেঁকির ব্যবহার উঠিয়া গিয়াছে। এখন বড় একখণ্ড পাথরের উপর শুধু এই লোহাদারা পাট ছেচা হয়। ইহার পর গুঁড়া পাট জলে-পচান কাগজের সঙ্গে মিশাইয়া পা দিংগ ভাল করিয়া চটকাইতে হয়। কিছু ক্ষণ এই জিনিযটাকে ভাল করিয়া পা দিয়া মাড়াইলে কাদা বা মাথা-ময়দার মত একটা জিনিয়ে পরিণত হইবে। এই হইল কাগজের মণ্ড—ইংরেজীতে ইছাকে বলে 'পেপার পাল্ল'। নতন কাপড়ের মত কাগজে মাড় লাগা थां कि। कला धूरेशा এहे माफ पृत করার প্রয়োজন। কাপড়ের এক অংশ কাগজীর কোমরে বাধা থাকে; অপর::অংশ জলের ভিতরে পোঁতা একটি বাঁশের খুঁটির সঙ্গে বাঁধিতে হয়, তাহার পর হুই হাতে জলের ভিতরে জিনিষ্টাকে ভাল করিয়া কচলাইতে

চূণের জলে পাট ভিজাইলে এর রং হলদে হইয়া যায়। বুটিয়া দিলে, মণ্ড জলের দক্ষে মিলিয়া যায়। এক রিম কাগজ তৈয়ার করা যায় এ-পরিমাণ মণ্ড একটি জালার ভিতর ধরে।

পূর্বে নে-স্ব কাজের কথা বলিয়াছি তাহা কেবল



পচান-কাগজ মাড়াই হইভেছে

হইবে। এইরূপে কাগজের মাড় জলে ধুইয়া যাইবে। এবার শারীরিক পরিশ্রমসাপেক। এইবার যাহা করিতে হইবে এই জলে-ধোওয়া কাগজের মণ্ডকে জলপূর্ণ বড় একটা ভাহাতে কাজে অভাস ও কৌশলের প্রয়োজন। জালার ন্দালার ভিতরে রাখা হয়। থুব বড় জালা মাটির ভিতর ভিতর চালুনী (কাগজীদের ভাষায় ছাব্রি) ভূবাইয়া তুলিতে পোঁতা থাকে; জালার উপরের অংশ কাটা থাকে। এখনও হয়। চালুনীর ফাঁক দিয়া জল ঝরিয়া পড়ে এবং মণ্ডের কাগজীদের বাড়িতে বে-সব জালা মাটিতে পোঁতা দেখা এএকটা গুরু চালুমীর উপর পাতলা সরের মত পড়িয়া যায়।

যায় সে সবই তাহাদের পূর্বপুরুষদের আমলের। এই হইলু কাগজ। মণ্ডের স্তর সমানভাবে ফেলা কঠিন।

বাঁশের একটা কঞ্চি দিয়া জালার ভিতরের জলটাকে : চালুনীটা দেখিতে ছোট একটা চীকের স্থায় ; ইহা গুটান

নায়। যাহাতে টান হইয়া থাকে, সেজস্ত সেটাকে রাখা হয় বাঁশের চাঁচারির মাচার উপর। এই চাঁচারির মাচাকে কাগজীরা থাপাহি বলে। চালুনীর হই পাশে বেখানে হাত থাকে, সেথানে হাঁট আলগা মোত্রা (যে গাছ হইতে পাটী তৈরারী হয়) থাকে; কাগজ চালুনী হইতে তুলিবার সময় মোত্রা ছটি থুলিতে হয়; পরে জালার ভিতর চালুনী তুবাইবার সময় আবার লাগাইতে হয়।

চালনী হইতে তুলিয়া কাগজ একটার উপর আর একটা রাথা হয়। কাগজের স্তুপের নিকট মাটির ভিতর একটা হাঁড়ী রাথা হয়, কাগজের স্তর হইতে জল চুইয়া গিয়া হাঁড়ীর ভিতর পড়ে। অনেক কাগজ জমা হইলে, তার উপর কলাপাতা এবং তক্তা রাখিয়া জন তুই লোক চাপিয়া বসে—ভিতরে দেটুকু জল আছে, সেটুকু ঝরিয়া পড়ে। আন্চর্যা এই যে, প্রত্যেকটি কাগজ আলাদা আলাদা থাকে, গায়ে লাগিয়া যায় না। এবার টিনের উপরে মেলিয়া দিয়া কাগজ রৌজে শুকাইয়া লইতে হয়। টিনের উপরে একটা ছোট ঝাঁটা (কাগজীদের ভাষাহ কালাহি) দিয়া কাগজ প্রস্তুত করা চলে না, সেজ্ল বর্ষাকালে আষাঢ় হইতে অথিন এই চারি মাস কাগজ প্রস্তুত করা বন্ধ থাকে।

শুকান হইলে কাগজের চারিপাশ ছুরি দ্বারা সমান করিয়া কাটা হয়। আতপ চাউলের শুঁড়া দ্বারা মাড় প্রস্তুত করিয়া নারিকেলের ছোবড়া দ্বারা কাগজের উপরে প্রলেপ দেওয়া হয়। এই মাড় দেওয়ার নাম হইল "কলপ" (সাইজিং) দেওয়া। কলপ না দিলে শিথিবার সময় কাগজে কাশি চুপসিয়া যায়।

কলপ দেওয়া হইলে কাগজের ছই পিঠ পাথর দিয়া ঘিয়া পালিশ করা হয়। পালিশের পর কাগজ প্রস্তুত শেষ হইল। হল্দে রঙের য়ে-কাগজ দেখা যায় তা শাদা কাগজে নারিকেলের ছোবড়ায় পিউরি রং লাগাইয়া প্রস্তুত করিতে হয়। এই রং প্রস্তুত করিতে পিউরির সহিত তেঁতুল-বিচির আঠা মিশাইতে হয়। স্থানীয় লোকেরা এই হলদে কাগজকে তুলট কাগজ বলে এবং হল্দে রং লাগানকে তুলট করা বলে। ব্রাহ্মণপিগুতেরা অনেক সময় সাদা কাগজ

কিনিয়া বাড়িতে নিজেরাই তুলট করিয়া লইতেন এবং বাঁশের কলমে লিখিতেন। অভিধানে "তুলট" শন্দের অর্থ যে-কাগজ তুলা হইতে প্রস্তুত করা হয়। এখানে কাগজ প্রস্তুত করিতে কথনও তুলা বা স্থাকড়ার প্রচলন ছিল না।* পাট দিয়াই কাজ চলিতেছে।

কাগজ-প্রস্তুতের সমস্ত প্রক্রিয়াই ঘরের বাহিরে উঠানে গাছতলায় হয়, সেজন্ত মণ্ডের ভিতর প্লা বালি থড় অনেক ময়লা উড়িয়া আসে, ঘরের ভিতরে করিতে পারিলে কাগজ আরও ভাল হইতে পারে।

পাঁচ জন এক দিনে এক রিম কাগজ প্রস্তুত করিতে পারে। আলোর আড়ালে ধরিলে কাগজে যে শাদা লাইন বা লেখা দেখা যায় তাহাও ইহারা করিতে পারে। ইচ্ছা করিলে, সকলেই তাঁহাদের ট্রেডমার্ক এবং কোম্পানীর নাম কাগজে লিখাইয়া লইতে পারেন।

সাধারণতঃ বাজার-চল্তি কাগজ ৪ রিম বা ছুই হাজার তা কাগজ ইহারা রিম-প্রতি ছুই টাকা হিসাবে ৮ টাকার বিক্রী করে। ঢাকার এ-কাগজ ৫০ জানা দিঙা হিসাবে বিক্রী হয়। ঢার রিম কাগজ প্রস্তুত করিতে লাগে ১ মণ দপ্তরীর ছাঁট কাগজ, মূল্য ২ টাকা, পাট পাচ সের মূল্য ॥৫০, সোডা ও চূণ ।৫০, মোট ও টাকা থরচ। ইহা হইল কেবল কাঁচা মালের দাম। মজুরী ধরিলে মোট খরচ আরও বেশী পাড়বে। থরচ বাদ দিয়া কাগজীদের লাভ খুব বেশী থাকে না। মিলের সঙ্গে প্রতিযোগিতার ফলে দাম কমাইতে ছইয়াছে।

শিল্পীদের অনেক সময় চীনা, জাপানী ও নেপাণী হাতে-তৈয়ারী কাগজে (হাণ্ডমেড্ পেপারে) ছবি আঁকিতে হয়; এ-সব কাগজ সহজ্ঞলভা নয়। কিন্তু আমাদের ঘরের পাশেই বহুকাল হইতে উত্তম কাগজ তৈয়ার হইতেছে— শিল্পীরা তাহার খোঁজ রাখেন না। এই ধরণের কাগজেই একদিন মোগল বা কাংড়া চিত্র অন্ধিত হইয়াছে—তথন কাগজ বিদেশ হইতে আসে নাই। এ-কাগজে ছবি আঁকিতে আরাম আছে, রং চমৎকার লাগে, অন্তান্ত স্থবিধাও আছে, বাহা অন্ত কাগজে পাওয়া যায় না।

^{*} স্থাকড়া হইতে প্রস্তুত কাগজ (rag-made paper) উৎকৃষ্ট । সম্প্রত তুলা ও স্থাকড়ার বাবহার ছিল i--প্রবাসার সম্পাদক।

জীবিকা

শ্রীমাণিক বন্দ্যোপাধ্যায়

কালুর বাবা মাধব দাস দিনমজুরী করিয়া জীবিকা অর্জ্জন করিত। লোকে তাহাকে ভাড়া লইত দিনহিসাবে। মফস্বলে ঘণ্টা পরিয়া সময়ের হিসাব নাই। ঘড়ি ক'জনেই বা রাথে ! দিন বাহার আদি-অন্তহীন কীর্ত্তি সময়ের হিসাব করিতে মফস্বলের লোক কাজে লাগায় তাহাকেই। এই নিয়ম স্থির করা আছে। পূব দিকের গাছপালার মাঝামাঝি মূর্যা উঠিয়া আসিলে মজুর কাজে লাগিবে, আর পশ্চিমের গাছগুলির আড়ালে গেলে পাইবে ছুট। ঘড়ির কাঁটা নয়, তক্ষায়ার আবর্তন, পশ্চিম হুইতে পূবে। মাঝখানে তুপুরবেলা থাওয়ার জন্ত কিছু ক্ষণের ছুটি। তা ছাড়া, কাজের ফাঁকে ফাঁকে মজুর যদি পাচ মিনিট গাছের ছায়ায় বসিয়া ভাহার কালো কলিকাটিতে তামাক টানিতে চায়. কারও কিছু বলিবার নাই। এ-কথা কে না জানে গে, ঁ মানুষ য**ন্ত্র নয়, মাঝে মাঝে স্থুম দম টানার আরা**ম না পাইলে মানুষ খাটিতে পারে না ? মাধব কিন্তু চালাকি করিয়া থাওয়ার ছুটি ও তামাক টানার বিরাম ছাড়াও স্থযোগমত ফাঁকি দিয়া আলস্য ভোগ করিয়া লইত। বৈশাখী দিপ্রহর। বর ছাইতে ছাইতে চালার উপরেই দারুণ বোদে পিঠ দিয়া থানিকক্ষণ হাত পা শিথিল করিয়া ব্যিয়া থাকিতে সে আরাম বোধ করিত কিনা সে-ই জানে, কিছু কিছু গাঁকি না দিলে তাহার চলিত না। কাজের শেষে মজুরীরও শেষ। হাতের কাজ তাড়াতাড়ি শেষ করিয়া যদি হাট দিনও ঘরে বসিয়া থাকিতে হয়, দিনমঞ্চুরের সে অপূরণীয় ক্ষতি। মাধবের কাজ ছিল রকমারি। সে ঘর ছাইত, বেড়া বাধিত, কাঠ চেলাইত এবং এমনি আরও মনেক কিছু করিত। অল্প বয়সে কালুও এই-সব কাজ শিথিতেছিল। কিন্তু হারাণের ছেলে মধুর পালায় পড়িয়া শেষ পর্যান্ত তাহার জীবিকা অর্জনের পথটা দাড়াইয়া গেল মন্ত প্রকার। হারাণ কৃয়া খুঁড়িত আর হারানো বিদিনিধের সন্ধানে ডুব দিত বিশ হাত জলের তলে। সে-

কায়মসলুর বয়স ছিল কম, পেটভরা ছিল প্লীহা আর মাথাভরা বোকামি। মধুর সঙ্গে সে হারাণের জ্বলে ভূবিবার প্রক্রিয়া দেখিতে বাইত। হারাণ জলের তলে অদৃশ্য হহয়া গেলে ছোট ছোট চোথ ছটি প্রাণপণে মেলিয়া মুখটা হা করিয়া চেউভোলা জলের দিকে একদৃষ্টে চাহিয়া থাকিত। কারও বারণ না মানিয়া এমন ভাবে কুয়ার মধ্যে ঝুঁকিয়: পড়িত যেএক দিন বিপদ না ঘটিয়াই পারে নাই। সাঁতার কাল সেই বয়সেই মন্দ জানিত না। কিন্তু কুড়ি বাইশ হাত নীচে জলের উপর আছড়াইয়া পড়িয়া বোধ হয় পেটের প্লীহাতেই আঘাত লাগিয়া সে অজ্ঞান হইয়া গিয়াছিল। हातान नी एक ना थाकिएन एम-पिन एम जात ना कि ना। শুধু হারাণের জলেডোবা দেখিতে নয়, কাছে হোক দুরে হোক সে কৃপ-খনন আরম্ভ করিলে প্রতিদিন সেথানে হাজিরা না দিলে কালুর চলিত না। হারাণ ও তাহার সঙ্গীরা কোদাল দিয়া মাটি কাটিয়া তুলিত, কালু কৌতৃহংলর সঙ্গে চাহিয়া দেখিত। গর্তটি কিছু গভীর হইলে ভিতরে নামিবার জন্ম তাহার মন ছটফট করিত। কিন্তু অভটুকু ছেলের ব্যাকুলতা কেহ বুঝিত না, নীচে তাহাকে কেহ নামিতেও দিত না। একফাঁকে সকলের চোণ এড়াইয়া নামিয়া গেলেও পাতালের সেই কামা স্বর্গে কয়েক মুহুর্ত্তের বেশী সে থাকিতে পাইত না, তাড়া থাইয়। উপরে উঠিয়া আসিতে হইত। কালুর কাল্ল আসিত। তার পর বয়স বাড়িবার সঙ্গে বুকে কিছু সাহসের সঞ্চার হইলে জ্যোৎস্নারাত্তে একা সে বাহির হটয়া যাইত গ্রামান্তরে অর্দ্রসমাপ্ত ইনারার উদ্দেশে। জ্যোৎসালোকে ইদারার ধারে দাঁড়াইয়া সে উত্তেজিত হইয়া উঠিত। থানিক তফাতে মাটির স্ত,প, ইদারার মধ্যে রহস্যঘন গভীর অন্ধকার, আর এই মনোহর স্বৰ্গ ও পাতালের কাছে একা সে উদ্গ্রীব বালক। যত ক্ষণ খুনা খেলা করুক, কেহ বারণ করিতে আসিবে না। কিন্তু থেলায় কালুর মন ছিল না, সে চুপ করিয়া দাঁড়াইয়া

পাকিত। কয়েক হাত গর্ত্ত কাটিয়া চারি দিকে গোল করিয়া ইটের গাঁথনি তোলা হইয়াছে। ভিতরের মাটি কাটিয়া তোলার সঙ্গে সঙ্গে এই গাঁথনি নীচে নামিতে পাঁকিলে তারই দঙ্গে সামঞ্জু রাথিয়া উপর হইতে গাঁথিয়া চলা र्रेंग!ता-रुष्टित এ-ममन्ड कनाको भन किছूरे कानूत অজানা নয়। দ্রোণাচার্য্যের অস্তাজ শিষ্যের মত কেবল অথও নিবিত পর্যাবেক্ষণের ছারা সে সব শিথিয়া ফেলিয়াছে। সাবধানে সে ইনারার মধ্যে নামিয়া যাইত। তলার ভিজা নরম মাটিতে পা দিয়া শিহরিয়া উঠিত। পুধার্ড কীটের মত মুদ্তিকার এই ক্ষতের মধ্যে সে বোধ করিত অপরিমেয় উল্লাস। মাংদের মত কোমল মৃত্তিকায় ভই হাতের দশটা আঙ্ল চুকাইয়া দিয়া সে থাবলা থাবলা মাটি ভূলিয়া ফেলিত। তার পর আঙুল ব্যথা করিতে ণাকিলে ইটের আবেউনীতে পিঠ দিয়া দাঁড়াইয়া সে. দেখিত স্থপ্ন। স্পপ্র দেখিত এমনি একটি বিশ্বয়কর সৃষ্টির অবাধ অধিকারের।

কালুর এ-স্বপ্ন হয়ত সফল হইত না। হয়ত সে মাধবের মতই ঘরের চালে ধানের ক্ষেতে দিনমজুরী করিয়া মরিত। কিন্তু হারাণ মরিয়া গেলে মধু তাহাকে বাপের বাবসায়ে নিজের সঙ্গী করিয়া লইল। এত দিনে কালুর স্বগ্ন দেখিবার অভ্যাস বন্ধ হইয়াছে। পেটে আর তাহার প্লাহা নাই. মাথার জমজমাট বোকামিও সাফ হইয়া আসিয়াছে। কিন্তু তাহার আদিকালের সেই স্প্রির প্রেরণা আজও হইয়া আছে অক্ষয়। সকালে পুর দিকের গাছের ডগা পর্যান্ত সূর্য্য উঠিলে সে কোদাল ভুলিয়া লয়, চকচকে ফলাটা বার-বার মাথার উপর হইতে নামিয়া আাসয়া মাটিতে আমূল প্রোথিত হইরা যায়। দেখিতে দেখিতে পাশের ঝুড়িট ভরিয়া ওঠে। পিঠ বছিয়া বুক বহিয়া দরদর করিয়া ঘাম ঝরিতে থাকে। হাতের ও বুকের মাংসপেশীগুলি এক সময় ব্যথা করিতে থাকে, কোমর ধরিয়া যায়। স্থা উঠিয়া আসে আকাশের माध्यादन ।

মধু বলে, हामावि ?'

অন্ত এক জন বলে, 'তোর যন্তনায় কাজ করা ভার বাপু, তোকে দেখিয়ে বাবু মোদের আলসে কয়।'

কালু সিধা হইয়া দাঁড়াইয়া কোমরের টনটনানিতে মুধ বাকাইয়া বলে, 'বাবুকে ছ-কোপ কোদাল চালাতে বলিস, ভিৰ্মি যাবে'খন।'

মাটির স্তর-বিভাগের বৈচিত্র্যে কালু অবাক হুইয়া যায়। াঁটেল মাটি, বালি মাটি, ধুসর পাটল কালো রঙের মাটি, কত রকমের মাটিই যে পর-পর থাকে-থাকে সাজানো আছে! পৃথিবী যেন তাহার সহিত তামাশা করিতে ভালবাদে। কোদাল বদে না এমনি শক্ত কাঁকর-মেশানো মাটিতে খুঁড়িতে আরম্ভ করিয়া পাঁচ-ছ্য় হাত **নী**চে হয়ত বালি-মেশানো আলগা ঝুরঝুরে মাটির দেখা মেলে, আরও গানিকটা খুঁড়িয়া পুনরায় শক্ত মাটি পাওয়া না গেলে সেথানে কৃপ-খননই বন্ধ করিয়া দিতে হর 🗅 মাটির বর্ণ ও প্রকৃতির বৈচিত্র্য ছাড়া আরও অজ্ঞ বিশ্বয় কালুর জন্ত মাটির তলে সঞ্চিত হইয়া থাকে। পনর হাত খু^খড়িয়া গাছের শিকড়ের দেখা পাইয়া কৌতৃহ্লভরে উপরে উঠিয়া সে চারি দিকে তাকায়। চারি পাশের গাছগুলির মধ্যে যে রসিক তরুটি রসদের সন্ধানে এত নীচে শিকড় পাঠাইয়াছে, সেটিকে বাছিয়া লইবার চেষ্টা করে। কোনদিন অনেক নীচে মাটির হাড়ি-কলসীর ভাঙা টুক্রা দেখিতে পায়, কোনদিন তাহার কোদালের ফলায় উঠিয়া আসে মানুষের হাতে তৈরি ইট, মানুষের ব্যবহৃত লোহার জিনিবের মরিচা! কালু আশা করে এক দিন এমনিভাবে সে গুপু ধনের সন্ধান পাইবে। টাকা ও মোহর ভরা কলদীর গায়ে কোদাল ঠেকিয়া টং করিয়া একটি শব্দ হইবে। সে দাক্ষেতিক আওয়াজ সে চিনিতে পারিবে চোথের পলকে। বৃথিতে পারিনে, কলসীটি একক নয়, সে আর ছ'টি কলসীর নকিব কোদালের ঘা থাইয়া সাড়া দিয়াছে। সাত কলসী মোহর। মাটির বুকে গোপন-করা গুপ্ত ধনের রূপকথা কালু শুনিয়াছে, সব সাত কল্সী মোহরের, সোনার চকচকে মোহর, সাত কলসীর क्नानी क्रम नर। এত মোহর निश्चा সে कि कतिय कानू 'তামুক খা কালু, একটানা কাঁহাতক তাহা জানে না। কল্পনায় ধনী হইতেও সে একান্ত অক্ষম। দশ-বিশ টাকার ব্যবহার সে ক্ষানে, তার বেশী নয়। তবু,

পাইতে দোষ কি? সবগুলি মোহর সে তো একসঙ্গে ধরচ করিবে না, একটি বাহিরে রাখিয়া সবওলি পুঁতিয়া কর্ণেলবাজারে ক্ষেলিবে ঘরের মেধেতে। পোন্ধারের কাছে মোহরটি ভাঙাইরা সে-টাকা যত দিন না খরচ হইতেছে আর একটি মোহর বাহির করিবে কে? মুতরাং দাত কল্সী মোহর পাইয়াও কালু অনায়াদে তাহার ধারণক্ষ চরম উল্লাস বোধ করিতে পারে, দশ-বিশ টাকার व्यभीम सूंच, या टेकांत এकिए क्यात्नात मत्कांत नाहे। কিছ লাভের কল্পনার অনাবিল আনন্দ সে ভোগ করিতে ্পারে না। আরাম নর, বিলাসিতা নর, যশ ও প্রতিপত্তি নয়, যে-মামূষ সমস্ত শক্তি বায় করিয়া শুধু জীবিকা অর্জ্জন করে, তার দিবাম্বগ্নেও ভিড় করিয়া আসে রাত্রির হুংম্বপ্ন। नकरन कानिया किनिया यनि छात्र ठांत्र ! यांत्र कामि तम यनि সৰ মোহর দাবি করিয়া বসে! পুলিস যদি কাড়িয়া নেয়! কালুর বৃক ধেন তবে ফাটিয়া যাইবে! তার চেয়ে গুপ্ত ধনের সন্ধান না পাওয়াই যেন ভাল।

শৈহরের কলসী নয়, কালু একবার একটা ঘটি
পাইয়াছিল। তথন খাওয়ার ছুটের সময় হইয়া আসিয়াছে।
বৈশাধের ঝলসানো আকাশ হইতে দিগস্তব্যাপী নিরেট
আগুনের হলকার মত নামিয়া আসিতেছে রোদ। খানিক
আগে কালুর তৃষ্ণা উগ্র হইয়া উঠিয়াছিল, এখন ঝিমাইয়া
আসিয়াছে। কড়া রোদে দাঁড়াইয়া বহুক্ষণ ঘামিবার পর
কড়া তাড়ির নেশার মত, শীতের দিনে উষ্ণ জলে ডুব
দিবার মত, যে অবশ শিথিল শিহরণ থাকিয়া থাকিয়া
সর্বালে বহিয়া যায়, কালু তাহা প্রায় উপভোগ করিতে
আরম্ভ করিয়াছিল। এমন সময় কোদালের ফলায় উঠিয়া
আসিল কালো একটি ঘট। ঘামে কালুর দৃষ্টি ঝাপ্সা
হইয়া গিয়াছিল। কম্ই পর্যন্ত হাত মাটি-ভরা, কাঁধের
নীচে বাছমুলে চোখ মুছিয়া কালু অবাক হইয়া ঘটিটার
দিকে চাহিয়া রহিল। টাকা আছে? না মোহর?

আলগা মাটতে ঘটটা সে ও জিরা দিল। এখান হইতে বাড়ি তাহার প্রায় জিন মাইল তফাতে, ভাত খাইতে সে বাড়ি বায় না। বিনি ক্রা কাটাইতেছেন মজুরী ফু-আনা কমাইরা এক বেলা ভাতের ব্যবহা তিনিই করিয়া দিয়াছেন। কোদাল রাখিয়া উপর হইতে গামছাটা আনিয়া ঘটিটা কালু গামছার জড়াইরা লইল। তার পর স্নান করিতে গেল পুকুরে।

মধু বলিল, 'ঘাম না মরলে জলে নেমো না কালু-মা, সন্ধি-গার্মি হয়ে মরবে।'

कानू विनन, 'घाटि वनव।'

'চল, আমিও যাই।'—বলিয়া মধু ভাহার সঙ্গ নিল।

পুকুরের ধারে তেঁতুলগাছের ছায়ায় বসিয়া তাহারা বিশ্রাম করিতে লাগিল। কালু কথা বলে না, উস্থ্য করে। মধু কি সন্ধেহ করিয়াছে?

হঠাৎ মধু বলিল, 'গামছার কি কালু-দা ?'

'তোর মাথা।' রাগের ভানে ভন্ন চাপা দিরা কালু পুকুরে নামিয়া গেল, ঘাম মরিবার জক্ত আর অপেক্ষা করিল না। সাঁতরাইয়া ঘাটে গিয়া ঘাটের পাশে পাঁকের মধ্যে তথনকার মত ঘটিটা সে ভাঁজিয়া রাখিয়া দিল।

থাওরার সময় সে অত্যন্ত গন্তীর হইরা রহিল। ঘাটের পাশে ঘটিটা রাখিয়া আসিয়া তাহার ভয় করিতেছে। বোকা আর কাহাকে বলে। ঘাটে কভ লোক মান করে, কত হরস্ত ছেলে ঘাটের জল তোলপাড় করিয়া খেলা করে। ঘটিটা যদি কারও পায়ে ঠেকিয়া যায়?

করেক বার আড়চোথে তাহার মুখের ভাব দেখিরা মধু বলিল, 'ভাব কি কালু-দা? থারাপ লাগে নাকি শরীল ?"

'আঁ।? উত্তক। শোন দিকি মধু, কাল এক কাজ করিস্, আমার বাড়ি রান্তিরে তোর নিমস্তরো।'

দিনের কাজ সমাপ্ত হইল অপরাহে, গাছের ছারা ধখন পূবে অনেক দূর আগাইয়াছে। সকলের শেষে নির্জন ঘাটে গিরা কালু পুকুরে নামিল। ঘটিতে কিছু নাই শুধু মাটি। অর্দ্ধেক গলিয়া গিয়াছে, বাকীটা হইরা আছে কালা।

বাড়ি ফিরিবার পথে অনুকৃশ বৈরাণীর বিভিন্ন দোকানের সামনে মধু অপেক্ষা করিতেছিল। সঙ্গে চলিতে আরম্ভ করিয়া জিঞ্জাসা করিল, 'দেরি হল যে?'

কালু বলিল, 'এমনি।'

মধু বলিল, 'হা কালু-দা, কাল নিমস্তলো কিসের ?'

'নিমন্তলো?' কালু সশব্দে হাসিরা উঠিল। 'ভাষাশা বুৰিস না মুখ্য়!' নিমন্ত্রণ অসাধারণ ব্যাপার। মধু অত্মন্তি বোধ করিতেছিল। এবার নিশ্চিত হইরা সেও হাসিল। 'ভাষাশা? ভাই বল! আমি ভাবলাম কি না কি।'

ডুবুরির কাজ পাইলে কালু বড় খুণী হয়। সর্বাজে সে ভাল করিয়া তেল মাথে। নাকে ও কানে তেল ভরিয়া দের; কুরার পাড় তিন বার স্পর্শ করিয়া কপালে হাত ঠেকার। বিভবিভ করিরা কি যেন সে মন্ত্র বলে। তার পর দড়ি ধরিয়া ঝাঁজে ঝাঁজে পা দিয়া নামিয়া যায় ভিতরে। অব্নদুর নামিরাই সে একটি জলসিক্ত নিবিড় শীতলতা অমূভব করে। ক্রমে উপরের পৃথিবীর শব্দ মৃত্ হইয়া আসে। কানে হাত চাপা দিলে যে গুঞ্জরিত স্তর্নতা শুনিতে পাওয়া যায়, ভাছাই চারি দিকে থিরিয়া আসিরা কালুকে যেন ভাছার সদ্যংপরিত্যক্ত জগৎ হইতে বিচ্ছিন্ন করিয়া দেয়। জলে পৌছিরা একটা ছোটখাট ভূব দিরা সে মাধা পর্য্যস্ত ভিজাইরা শয়। তারপর দড়ি ধরিয়া থানিক কণ ভাসিয়া থাকে। এই কৃপখননের ইতিহাস হয়ত বেশী দিনের পুরনো নয়। ভারই ছেলেবেলায় হয়ত হারাণ ও ভাহার मकोता এই ছায়াচ্ছন খাওশাধরা গহবরটি স্ঠি করিয়াছিল। এমনি কত গছবরে সে কতবার নামিয়াছে, তবু কালুর মধ্যে অজ্ঞানা জগতের একটি পরম উপভোগ্য ভয়ের উত্তেজনা জাগিয়া থাকে। ছায়া-অস্বচ্ছ জলের তলে বর্ণহীন অন্ধকারে কি রহন্ত, কি বিভীষিকা লুকাইরা আছে কে বলিভে পারে? সে জানে কৃপের একটা তল আছে, কিন্তু তাহার সংস্থারবন্ধ কর্মনায় কৃপের গভীরতা বাস্তবতার সীমা ছাড়াইরা পাতাল পর্যন্ত চলিয়া যায়, যেখানে বড় বড় গহৰৱে স্পৰ্ণায়ন্ত কালো জল আবৰ্ত্ত রচিয়া পাক থাইতেছে। দড়ির নীচে পাথর বাধা থাকে। এক সময় জোরে কোরে নিংখাস গ্রহণ করিরা ফুসফুসে যতখানি পারে বাতাস পুরিয়া দড়ি ধরিয়া সে তলাইরা বায়। নিমেষে ক্রলের আলিকন নিটোল স্পর্শ দিরা তাহাকে জড়াইরা ধরে। কৃপের জল যে এত শীতল, এমন স্নিগ্ধকর, এক মৃহুর্ত পূর্বে আকণ্ঠ জলে ডুবিয়াও কালুর বেন সে ধারণা ছিল না। তাহার শরীর ভুড়াইয়া যায়। কে বলিল জীবিকার জন্ত ? জীবনের বিরক্তি ও সন্তাপের সহবাস এড়াইতে স্বেচ্ছার সে

এই প্রগাঢ় মধুর মমতার নামিরা আসিরাছে। কালুর মনে

একটি প্রসার সন্তোষ দেখা দের। তাহার আরামের সীমা
থাকে না। জলের পরিচিত ফ্যাকাশে রং তাহার চোথের
তারার মাখা হইরা যাইতে থাকে। এই ছারার আকাশে
বালুকণাগুলি তারার মত উজ্জ্বল। কালুর সবচেরে
রোমাঞ্চকর মনে হর, দেহের বিপরীত ভার, হারা
মৃত্র, উর্দ্ধা। জল যেন তাহার সেই গোড়ার দিকে লাজুক
ন্তন বউরের মত তাকে সম্বর্গণে ঠেলিরা দিতে চার।
তার পর চারি দিক ক্রমে ক্রমে অক্কার হইরা আসে।
বালুকা-তারাগুলি নিস্প্রভ হইরা নিবিরা বার। কানে সে
জলের চাপ অমুভব করিতে আরম্ভ করে। তলার তরল
পাকে পা ঠেকিলে অসংখ্য বৃদ্ধু চারি দিক হইতে তাহার
দেহে ঠেকিরা ঠেকিরা মুড়ুসুড়ি দিরা উপরে উঠিরা বার।

কালু রূপকথার দেশে আসিয়া পড়িয়াছে। এই তাহার বাল্য কামনার স্বর্গ।

এ-সব কাজে বিপদের ভয় কম নয়। ইদারা-খনন অনেকটা নিরাপদ, ইটের গাঁথনিতে চারি দিকের মাটি আটকানো থাকে। কিন্তু কাঁচা কুরা খুঁড়িবার সময় সর্বনাই চারি দিক ধ্বসিয়া পড়িবার আশকা। কুয়া বড় হইলে চারি দিকে তক্তা বদাইরা আডাআডি ভাবে কাঠের বীম দিরা আটকাইয়া সাবধানতা অবশ্বন করা চলে, কিন্তু তাতেও বিপদের সম্ভাবনা একেবারে ঘূচিয়া যায় না। এই ব্যবস্থায় খরচ আছে। যিনি কৃপ খনন করান সংক্ষেপেই ভিনি কাজ সারিবার চেষ্টা করেন। কতবার কাজ করিতে করিতে উপর হইতে রাশি রাশি আলগা মাটি কালুও তাহার সদীদের গামে আসিয়া পড়িয়াছে। এই ব্যাপারটাই আরও বিশদভাবে ঘটলে ভাহাদের একেবারে জীবস্ত সমাধি। বিপদ ভুবুরীর কাজেও যথেষ্ট। জল বেশী গভীর হইলে জলের চাপে কানের পর্দা ছিঁ ড়িয়া যাইতে পারে। এ বদিও কলাচিৎ ঘটে, করেক বছর ব্দলে ডোবাড়ুবি করিলে কানের আর কিছু থাকে না। হারাণ তো শেষ বয়সে বন্ধ কালা হইরা গিয়াছিল, বন্ধপাতের আওয়াজ স্পষ্ট শুনিতে পাইত না। তার পর আছে ফুসফুস। ভূব দিবার কিছুক্রণ পরেই বুকে *হা*ভুড়ির বা পড়িতে আরম্ভ

হয়, প্রথমে আন্তে, শেবে জােরে জােরে। আটকান বাতাস
এমন চাপ দিতে থাকে বে খানিকটা বাহির করিরা দিতেই
হয়। তথন বুকের মধ্যে একটা নিজেজ বেদনা স্পান্দিত
হইতে আরম্ভ করে। কান দিয়া, হুই জর মাঝখান দিয়া,
ঝাঁঝালো জালা থেন হল্কার মত চারি দিকে শীতল ফলে
মিশিয়া যাইতে থাকে। কয়েক বৎসর এমনিভাবে চলিলে
ফুসফুসের পেশীগুলি ঢিলা হইয়া দেখা দেয় খাসকই।
নিঃখাস টানিবার সময় মনে হয় পৃথিবীর বাতাস বুঝি তুরাইয়া
গিয়াছে। শরীর শুকাইয়া যাইতে থাকে,—ধীরে ধীরে
জীবনের মারায়ক য়থে অপচয়! নানা স্থানে দেহের শিরাগুলি
নীল হইয়া ভাসিয়া উঠে। পরিশ্রম করিবার শক্তি নই
হইয়া যায়।

তবু, জীবিকা অর্জনের এই পথ যখন সে বাছিয়া লইয়াছে সব সময় কাজ জুটিলেই কালু বাচে। জগতে যার যা পেশা, তাই তার তপস্থা। তাহা না হইলে কোন্ দৈনিক মাসিক কয়েকটা মুদ্রার জন্ত কামানের সামনে গিয়া দাড়াইত ? কালু কান্ধ চায়, প্রত্যন্থ বিপজ্জনক কান্ধ তাহার প্রয়োজন। তা সে পার না। মফস্বলের যে শহরটির প্রান্তভাগে কালু বাস করে ধনীর সংখ্যা সেখানে এত বেশী নয় যে, সারা বছর কৃপ ও ইদারা খননের মরস্থম লাগিয়া থাকিবে। নৃতন গৃহ নির্মাণ করিয়াও বাড়িতে কৃষা কাটাইতে পারে না, পাড়াপ্রতিবেশীর অথবা সরকারী কৃপ ও পুরুরিণীতেই কাজ চালাইয়া দেয়। কালুর পশার ভরু শহরে নয়, আশপাশে দশধানা প্রামে তাহার নাম আছে। কুয়া কাটাইতে, কুয়া সাফ করিতে, হারানো জিনিষ তুলিতে লোকে তাহাকেই প্রথমে থোঁছে। তবু কালুকে বছরের অনেকগুলি দিন বেকার বসিয়া থাকিতে হয়। কালুর অসুবিধা বিশেষ করিয়া এই কারণে। সারা বছর অপেক্ষা করিয়া পুণ্য বৈশাথ মাসে লোকে কুপ খনন করার-সকলে একসঙ্গে। বর্ষার আগে সকলের একসজে কৃয়া সাফ করাইবার ঝোঁক চাপে। দলে দলে আনাড়ি মানুষ কাজপার, মর্ম্ম ফুরাইলে কালুর মত পাকা লোক কাজের অভাবে বসিয়া থাকে, পুঁজি ভাঙিয়া থায়। বেশী দিন ভাঙিয়া থাওয়ার মত পুঁজি, দিন মজুর সে, পাইবে কোথার?

সে আধপেটা খায়, বউ গালাগালি দেয়, ছেলেমেরে কুধার চেঁচামেটি করে,—অভাবের পীড়নে কেপিরা উঠিরা খাদ্যের ভাগীদার কমানোর জন্ত যে পিসি তাহাকে বুকে করিয়া মান্ত্র করিয়াছিল তাহাকেই কালু একদিন তাড়াইয়া দেয়, কিন্তু পিসি বার না। একবেলা মধুর বাড়িতে বসিয়া থাকিয়া গুটি গুটি ফিরিয়া আসে। কালুকে গুনাইয়া বউকে ডাকিয়া বলে, 'হুটি চাল মেগে এনেছি বউ, ছেল্যাদের রেছে দে গো।'

এ-কাহিনী শেষ বর্ধার। ভাদ্রের শেষে কালু সর্ক্ষান্ত হইরা যার, ধান-কাটা কুক হওরা পর্যান্ত সর্ক্ষান্ত হইরা থাকে। বিগা-তিনেক জমি তাহার আছে, রাধাল ভূইরা চাষ করিরা তাহাকে ধানের ভাগ দের। যত শীঘ্র সন্তব্ধে পান পরিবর্ত্তিত হইরা যার চালে। মাঠে ধান কাটিতে গিয়াও কালু কিছু কিছু রোজগার করে।

এ-বছর ভাল্রের গোড়াতে কাঁসাই-নদীর জল বাড়িয়াছিল। শহরের কাছে নদীর বাধ ভাঙিয়া যাওয়ার আশহা দেখা দেওয়ায় দিন-সাতেক কালু বাধে মাটিও পাথর ফেলিবার কাজ পাইয়াছিল। ভাদ্রের শেষ পর্যান্ত আর কোথাও কাঞ্চের সন্ধান মেলে নাই। তার পর কালু পড়িয়াছে জরে, ম্যালেরিয়ায় আর ছল্চিন্তায়। ম্যালেরিয়া যেন ওৎ পাতিয়া থাকে। সাত দিন পেট ভরিয়া থাইতে না পাইয়া শরীর একটু কাবু হইলে সহসা হি হি করিয়া কাঁপাইয়া আসে জর। সমিতি-বাবুদের দেওয়া কুইনাইন গিলিয়া শরীর আরও কাবু হইয়া যায়। হোক, এমনি ত্র্বণ শরীর শইরা কালু এক দিন ক্ষেন্দু সরকারের ইদারায় ভূব দিতে গেল। রুফেন্দু সরকারের ছোট-বৌ হাতের অনস্ত খুলিয়া ইঁদারার ধারে রাখিয়া গারে সাবান মাধিতেছিল, একটি অনস্ত কেমন করিয়া ইদারার মধ্যে পড়িয়া গিয়াছে।

কালু বলিল, 'ভাল রকম বকশিস চাই, কর্তা।' কৃষ্ণেন্দু সরকার বলিলেন, 'দেব।'

বর্ধার ভবে ইদারা ভরিয়া গিয়াছে। ইট-বাধা দড়ি নামাইরা জবের গভীরতা মাপিয়া কালুর মুখ শুকাইরা গেল। মাথা নাড়িয়া দে বলিল, 'জল বড় বেলী কর্তা।'

ক্তবেশ্দু সরকার বলিলেন, 'পারবি না কালু? ভবে ভো

বিপদ হ'ল বাপু! কাল বাদে পরশু বৌমা যে বাপের বাড়ি ধাবেন! তাছাড়া, পুরনো ইনারা, জল কমতে কমতে পাঁকের মধ্যে কোথায় তলিয়ে বাবে শেষকালে হয়ত পাওয়াই বাবে না।'

কালু সায় দিয়া বলিল, 'আজ্ঞে সেও কথা বিবেচ্য বটে কর্তা।'

ক্তম্নে সরকার বলিলেন, 'একবার নেমে দ্যাথ বাপু পারিস বদি। সাত ভরি সোনা আছে ওতে। পুরো একটা টাকাই দেব ভোকে, যা।'

থানিক ভাবিরা তেল মাথিরা কালু ইনারার ভিতরে নামিরা গেল। এ বড় সহক্ষ কথা নর। অবিশ্রাম গোলাবৃষ্টির মধ্যে যে উন্মাদ আগাইরা যার সে সৈনিক, কালু তার চেরে কম সাহসী নর। সে পাকা ডুব্রী, জলের পেষণে মান্ত্র কি হইরা যার সে তাহা জানে। একটি টাকার জন্তুই সে কি জানিরা শুনিরা রুফেন্দু সরকারের পরিপূর্ণ ইনারার ডুব দিল? অথবা এমনি ভাবে মান্ত্র জীবিকা অর্জ্জন করে, কুধা ও তপস্থা প্রয়োজন ও কাব্যকে একত্র মিশাইরা। কিন্তু তল কালু পাইল না। ভাসিরা উঠিরা মভার মত দভি ধরিরা বিশ্রাম করিতে লাগিল।

इर्कन् मत्रकात शंकिश विनातन, '(भनि ?'

কালু শুনিতেও পাইল না, জবাবও দিল না। খানিক পরে অতিকটে সে উপরে উঠিয়া আসিল। ইঁদারার পাশে বর্বার শাওলায় পিছল সিমেন্ট করা স্নানের জায়গাটুকুতে বসিবামাত্র গলগল করিয়া তাহার নাক দিয়া এক ঝলক রক্ত বাহির হইয়া গেল। কিন্তু ইহাতেই সে যেন একটু সুস্থ বোধ করিল। বুকে একটা অসহ ভার চাপিয়া ধরিয়াছিল, রক্ত হইয়া তাহা বাহির হইয়া গিয়াছে। কালুর রক্তবর্ণ চোধ জলে ভরিয়া গেল। সমস্ত জগৎ যেন অকস্মাৎ পরিবর্ত্তিত হইয়া গিয়াছে। সব স্তন্ধ, কোধাও এতটুকু শব্দ নাই। এরনও সে যেন জলে ভ্বিয়া আছে। এ শুধু আশ্চর্যা নয়, এ ভয়ানক। সে কালা হইয়া গিয়াছে।

দিন-ভিনেক সে বিছানার শুইরা রহিল। ব্কের যন্ত্রণা একরাত্রি ঘুনাইয়াই কমিরা গেল। কিন্তু আকম্মিক বধিরতা সারিতে সমর লাগিল। সম্পূর্ণ সারিকও না। কালু কানে কম শুনিতে লাগিল। ক্সম্পক্ষনে শুঞ্জরিত বে-ন্তক্কতা এতকাল কৃপে ইন্ধারাত্ব তাহার প্রির ছিল, এখন তাহাই স্থায়ী ভাবে লাভ করিয়া কালুর মন নিরানন্দে ভরিয়া গোল। তাহার জগৎ এবার ক্রমে ক্রমে একেবারে শব্দহীন হইয়া যাইবে এই ভয় দে এক মৃহুর্ত্তের ক্রম্ত ভূলিতে পারিল না।

কিন্তু সে মরে নাই। সে জীবিত। তাহার জীবিকা চাই।

সে আধপেটা খার, বউ গালাগালি দেয়, ছেলেমেয়েগুলি কুধায় কাঁদে। কালু আবার গা-ঝাড়া দিয়া উঠিল। বাড়ি বাড়ি খোঁজ করিয়া ভনিল, তাহাকে কাহারও প্রয়োজন নাই। নদীর ধারে গিয়া দেখিল, অটুট বাঁধ দাঁডাইয়া আছে, নদীর পঙ্কিল স্রোত শান্ত। মাঠে ধানের শিষগুলিতে রং ধরে নাই, রোদ লাগিয়া সব্জ রংকে रनाम (मथारेटिक्स, फांकि चुित्रा এ-तः कार्यमी रहे.ज অনেক দেরি। বর্ধার আগে যে যেমন পারিয়াছে ঘরের চাল মেরামত করিয়াছে, যে পারে নাই সে কালুকে ডাকিবে না, কালুর মতই হয়ত সে আধপেটা খাইয়া স্থুদিনের পথ চাহিয়া আছে! শহরের পথে মন্থর পদে চলিতে চলিতে কালু শক্ষ্য করে, জীবিকা অর্জ্জনের মরমুম সকলের ফুরাইয়া যায় নাই। গাড়োয়ান কর্মনাক্ত পথে গাড়ী চালাইতেছে, ফিরিওয়ালা হাকিয়া ফিরিতেছে, কুলি মোট বহিতেছে, ভাকরার ঘরে অবিরাম ঠুকঠুক শব্দ, কুমোরের দাওয়ায় চাকার আবর্ত্তন, ধোপার পিঠে কাপডের বোঝা। দিনের পর দিন ভাহার কোদাল চালানোর ইতিহাস কালু ভূলিয়া যায় : স্ষ্টির সেই অফুরস্ত উল্লাস, ইনারায় ডুব দিবার রোমাঞ্চ, সাত কলসী মোহরের স্বপ্ন, মুখ ও সচ্ছলতার সেই সানন্দ দিনগুলি। সে ঈর্বা বোধ করে। তাহার আপশোষ হয়। ভাঙা রাস্তার যেখানে মিউনিসিপ্যালিটির কুলিরা মাটি ফেলিতেছে, সেইখানে দাঁড়াইরা সে ৰুদ্ধ দৃষ্টিতে তাহাদের কাজ দেখে।

তার পর এক দিন সকালে দড়ি-হাতে গামছা-কাঁথে মধুকে সে রুফেন্দু সরকারের বাড়ির দিকৈ যাইতে দেখিল।

'कांश वान् मध्?'

'সরকার-মশারের বাড়ি। অনস্ত ভূলে দিলে পাচ টাকা কবুল করেছেন।' 'জল কত জানিস্? মরবি তুই মধু, মরবি।'
মধু উদাস ভাবে বলিল, 'কপালে লেখা থাকে মরব—
অদেষ্ট কে ঠেকাবে কালু-দা, এঁচা ?'

কালু মুখ কালো করিয়া বলিল, 'চ, আমিও যাই।'
পাঁচ টাকা? কালুর বুকের ভিতরে কেমন করিতে
লাগিল। বর্ধার জল প্রথমটা তাড়াতাড়ি কমিয়া যায়,
ক'দিনে ইনারার জল না-জানি কত নীচে নামিয়া গিয়াছে।
এখন হয়ত অনস্ত তুলিয়া আনা আর অসম্ভব নয়! পাঁচটা
টাকা তাহা হইলে মধুই পাইবে? কালু আড়চোখে
মধুর মুখের দিকে চাহিয়া রাগিয়া উঠিতে লাগিল। মধু
এক দিন এ-ব্যবসায়ে হাতেখড়ি দিয়াছিল, তাই না পৃথিবীফুদ্ধ সকলে যখন কাজে ব্যস্ত, পথের ধাঙ্গর মেথর পর্যাস্ত,
কাজের মরমুমের অপেক্ষায়্ম ঘরে তাহার অল্প নাই! আর
সেই মধু আজ তাহার হকের ধনে ভাগ বদাইতেছে। কুফেন্দু
সরকার তাহাকে প্রথম ডাকিয়াছিল, অনস্ত তুলিয়া পুরস্কারলাভের অধিকার সে ছাড়া আর কাহারও নাই। এ কি
অস্তায় মধুর! ওিক ডাকাত নাকি? সমস্ত পথ কালুর

রাগ বাড়িতে লাগিল। ক্লেম্পু সরকারের বাড়ি পৌছিয়া মধুর সঙ্গে সে এমন কলছ ভুড়িয়া দিল বলিবার নর।

कृत्सम् नृ मत्रकांत्रहे मश्रश्च हहेता सीमाश्मा कृतिहा पिटनन । विनिटनन, 'পातिम यपि, नाम, जुहे-हे नाम वाशू।'

কালু সর্বাঙ্গে তেল মাধিল, নাকে ও কানে তেল ভরিয়া দিল, তারপর দড়ি ধরিয়া নামিয়া গেল ইঁদারার ভিতরে। জল কয়েক হাত কমিয়াছে। ডুব দিয়া কালু ভাসিয়া উঠিল একেবারে অজ্ঞান অবস্থায়। জ্ঞান নাইবা রহিল, জ্ঞান ফিরিয়া আসিবে; দড়ি বাঁধিয়া তাহাকে টানিয়া তুলিয়া দেখা গেল, অনস্তটি সে শক্ত করিয়া ধরিয়া আছে। প্রক্তপক্ষে, কালু জ্ঞান হারায় নাই। সম্বের অতিরিক্ত কিছু, বাহা জলের চাপ ছাড়া হয়ত আর কিছুই নয়, সম্থ করিয়া সে অশক্ত, বিহ্বল ও মুয়্মান হইয়া গিয়াছিল। গলগল্ করিয়া নাক দিয়া কয়েক ঝালক রক্ত বাহির হইয়া বাওয়ার পর সে একটু প্রস্থা হইয়া উঠিয়া বসিল।

সে পাঁচটা টাকা রোজগার করিয়াছে।

<u>সাগরিকা</u>

এীয়তীস্রমোহন বাগচী

জগৎ জুড়িরা যত ক্রন্সন, হা-হতাশ।
ফোঁস-ফোঁস-খাস, আকুল বাপ্পবিদ্ব—
ছড়ানো কোনা কুড়ারে কুড়ারে বারো মাস
ফ্রে ব্কে তব বাধিয়া রেখেছ সিন্ধ।

অঞ্চ তোমার শুকার না তাই, জননি,
কভু তা' জমিরা মুক্তা শুক্তি-অঙ্কে
শোণিতের মাঝে ধ্বনিত বে ব্যথা, স্থান নি—
রক্তপ্রবালে পরিণত তব পক্ষে!

চঞ্চলতার শেষ নাই আর জীবনে
বৎসলতায় চির অশাস্ত চিন্ত,
আর্ত ধরার কল্যাণ মাগি' বিজ্ঞনে
কোটি জিহবায় জপো কার নাম নিত্য ?

মাঝে মাঝে বুঝি থাকিতে পার না নীরবে— অন্তর তব শুমরিয়া উঠে গর্জ্জনে, বিসরিয়া তাই অপার উদার গরবে ডুবাও স্থাষ্টি ও তর্জ্জনীর তর্জ্জনে

কোটি সস্তানে খেরিয়া আদরে চারিধারে পালন করিছ অমৃতসরস গুল্তে, বে স্নেহ তোমার বক্ষে বহিছে বারিধারে— সে-কথা তোমার কেমনে জানিবে অন্তে ?

ওগো মহীয়সি প্রথমা জননি পৃথিবীর, লহ মা প্রণাম হে আদি প্রকৃতি চণ্ডি, কবে মুছাইয়া কুন্ত জীবের আঁখিনীর পার করি' দিবে হঃধসুধের গণ্ডী?

বিলাতে দ্বারকানাথ ঠাকুরের সন্মান

শ্রীব্রজেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়

১৮৪২ সনের ৯ই জামুয়ারি স্থনামধন্ত দারকানাথ ঠাকুর প্রথম বার বিলাত যাত্রা করেন। তাঁহার বিলাত-প্রবাসের কথ, সেকালের একথানি সাময়িক পত্রে যেটুকু বাহির হুইয়াছিল এথানে তাহা উদ্ধৃত করিয়া দেওয়া হুইল। কাগজধানির নাম—'বেঙ্গাল স্পেক্টেটর'। প্রধানতঃ রামগোপাল দোয ও প্যারীচাল নিত্রই ইহা পরিচালন করিতেন।

(বেঙ্গাল স্পেক্টেটর, ১ অক্টোবর ১৮৪২)

আগপ্ত মাসীয় ছলপথগামি ডাক।—-এতছাসীয় ১৭ ছিবসে বেলা
১০॥ সাড়ে দশ ঘটিকার সময় আগপ্ত মাসের ছলপথগামি ডাক
আসিরা পাঁহছিয়াছে, তদ্ধারা অবগত হওরা গেল, শীযুত বাব্
ঘারকানাথ ঠাকুর ইংলতে রাণা তৎপরিবার এবং লার্ড প্রভৃতি
প্রধান ব্যক্তিও অক্সান্ত মান্ত ভদ্রলোকের নিকটে মথেষ্ট সম্মান প্রাথ
হইয়াছেন; উক্ত বাবু এবং শীযুত চক্রনাথ ঠাকুর ইইাদিগকে লার্ড
মেরার ভোল্প দিয়াছিলেন এবং বাবু ঘারকানাথ ঠাকুর "রাজা
ঘারকানাথ ঠাকুর জমীনার" এই থাাতি প্রাথ হইয়াছেন। উক্ত
বাবু মহারাণীর সহিত অনেকবার ভোল্পন করিয়াছেন কিন্তু ঐ থাাতি
ইংলত্তেম্বরা হইতে প্রাথ হইয়াছেন কিনা তাহা আমরা বিশেবরূপে
জানিতে পারি নাই; আমরা শুনিতে পাই ঐ বাবু ইংলও এবং
ফটলণ্ডের মধ্যবর্ত্তি যে সকল গ্রামে শিশ্পকর্শ্বের প্রাচুয্য আছে তথায়
বতিশীয় গমন করিবেন।

(বেঙ্গাল স্পেক্টেটর, ১লা নবেম্বর ১৮৪২)

<u>শীযুত বাবু মারকানাথ ঠাকুর আগষ্ট মাসে স্কটলও দেশ দর্শনার্থ</u> যাত্রা করিয়াছিলেন: এডেনবর নগরের কৌকেলিরা এক মহাসভা করিরা উক্ত বাবুর যথেষ্ট অভ্যর্থনা করিয়াছেন এবং তত্রন্থ মাজিট্রেট ও কৌন্দেলিরা নৃতন পরিচছদ পরিধান করিরা এবং লাড প্রবোষ্ট সাহেব ঐ বাবুর স্থ্যাতির বিষয়ে দীর্ঘ বক্তৃতা করিয়া ভাঁহাকে নগরবাসির মধ্যে গণ্য করিয়াছেন এবং বাবুও উত্তম বস্তুতা করিয়া তাহাদিগকে উত্তর প্রদান করিরাছেন, তিনি কহিয়াছেন বে আমার শোতার। আমাকে যে সম্ভ্রম প্রদান করিলেন ইহাই আমার জন্মদেশের উপকারের চিহ্নস্বরূপ, এবং যাহাতে বাঙ্গালা দেশের শ্রীবৃদ্ধি হয় এতাদুশ কর্মে তাহারা উৎসাহী হইবেন, এমত যদি জানিতে পারি তবে আপনকারদিগের দত্ত এই সম্ভমকে অভিনয় কিম্মতীয়রণে গণনা কল্লিব ৷ জনা পেল যে উক্ত বাৰু সাধারণ উপকারজনক কর্মের মধ্যে নিষ্কর ভূমির বিষয়ে এক আবেদন পত্র তত্ত্বস্থ প্রধানং কর্ত্তপক লোকদিগের নিকটে উপস্থিত করিরাছেন। আমরা অবগত হটরা আহ্লাদিন্ত হইলাম বে ঐ বাবু আক্টোবর মাসের জাহাজে ইংলও পরিভাগে পূর্বক স্বাদেশে প্রভাগিমন করিবেন কারণ ভিনি আর অধিক দিন তথায় বাস করিলে সেধানকার শীতে তাঁহার পারীরিক পীড়া হইবার সম্ভাবনা হইত।

(বেঙ্গাল স্পেক্টেটর, ১ ডিসেম্বর ১৮৪২)

শীযুত বাবু মারকানাথ ঠাকুর ফটলণ্ড দেশ ভ্রমণ করিতে গিয়াছিলেন, সেধানে যথেষ্ট সন্মান প্রাথ্য হইয়াছেন ; উক্ত বাবু কোন্ দিবংস তথা হইতে ইংলও দেশে প্রত্যাগমন করিরাছেন তাহার সংবাদ পাওয়া যার নাই। শুনা পেল যে তিনি ইংলভের মহারাণীকে এক মহামূল্য শাল এবং প্রিন্স আলবর্টকে এক কিম্মতীয় ছোরা উপটোকন প্রদান করিয়াছেন, ঐ বাবু ৩০ সেপ্টেম্বরে উইওসর দেশের রাজপ্রাসাদে মহারাণীর সহিত সাক্ষাৎ করেন, তাহাতে महाद्वानी ও প্রিক আলবটের নিকট যথেষ্ট সৎকার প্রাপ্ত হইরাছেন, এবং ঐ স্থানেই মহারাণীর নিকটে স্বদেশে প্রত্যাগমন করিবার বিদায় লইবাছেন | অবগত হওয়া গেল যে ইংলণ্ডেম্বরী উক্ত বাবুকে আপনার ও প্রিন্স আলবর্টের এক প্রতিমূর্ত্তি প্রদান করিবার মানস প্রকাশ করিয়াছেন। ঐ বাবু ১৫ আক্টোবরে পেরিস নগরে গমনার্থে ইংলও পরিত্যাগ করিয়াছেন, তংস্থান হইতে মারসেলিস এবং আলেকজেক্সিয়াতে যাত্রা করিবেন। আমরা শুনিলাম, যে বাবু 'নাইট' উপাধি গ্রাহ্ম করেন নাই ভিনি হুএজে গত মাসের ২৫ পঁছছিয়া থাকিবেন ও আগামি মাসের শেষে এতনুগরে আসিতে পাছেন।

(বেঙ্গাল স্পেকটেটর, ১ জামুয়ারি ১৮৪৩)

প্রীয়ত বাবু দারিকানাথ ঠাকুর স্বদেশে প্রত্যাগমন করিবার নিমিত্ত মহারাণার নিকট বিদায় গ্রহণের পর বোড আব কণ্ট্রোলের সভাপতি লার্ড ফিডেবর লাণ্ডের সহিত সাক্ষাৎ করিরাছিলেন, ঐ সাহেব শ্রীমতা মহারাণীর আফ্টামুসারে উক্ত বাবুকে ইংলভেম্বরীর পরমানু-এহের চিহ্নস্বরূপ এক হবর্ণ মিডেল প্রদান করিয়াছেন, এবং বাবুর প্রশংসা করিয়া এক বক্তৃতা করিয়াছেন। ২১ আক্টোবর কোট আব ডিরেক্টরেরা ঐ বাবুকে তজ্ঞপ এক স্বর্ণমিডেল এবং তাহার সাধারণোপকারিত্ব গুণের প্রশংসাসূচক এক পত্র প্রদান করেন, বাবুও অভিশয় সম্মান পুরংসর তাহার প্রতান্তর প্রদান করিয়াছেন। ২৮ আক্টোবরে তিনি ফ্রান্সদেশে গমন করত তথাকার রাজার নিকট ১৯৭ট অভার্থনা পাইরাছেন, বাদসাহদিগের যে সকল নিরম আছে তাহা পরিত্যাগ করিয়া ঐ রাজা বাবুকে স্বীয় পরিবারের মধো উপবেশন করাইয়াছিলেন। এবং অস্তঃপুরে প্রবেশ করাইরা রাণীও অক্সান্ত ব্যক্ত! এবং ব্যক্তীর সহিত তাঁহার আলাপ পরিচর করিয়া দিরাছেন; এবং তাঁহার সম্মানার্থ রাজবাটী আলোকমর হইরাছিল। আর রাজা বাবুকে বাটীর সকল অংশ দেণাইরাছেন, এবং তাহার সহিত ভারতবর্ষের অবস্থা ও তৎসম্বন্ধীয় আর্থ বিষয়ে অনেক কথোপকথন করিয়াছেন এবং বাবুকে পুনর্কার ডদেশে বাইবার নিমিত্ত অমুরোধ করিয়াছেন, বাবুও ১৮৪৩ শালে শীতকালে বাইতে অঙ্গাকার করিরাছেন। উল্ভেখাবু গত মাসের ১০ চারিথে এটলোটর জাহাজ ছাত্রা বোলে উত্তীর্ণ হইরাছেন, এবং ধন আনরনেম নিমিত ইউর- প্রাইজ নামক বে জাহাজ বোমে প্রেরিত হইয়াছে ভদারা তিনি মাল্রাজে আসিবেন, অসুমান হর, অবিলম্বে এণানে আসির! উপদ্বিত হইবেন।

বারকানাথ বাবু সাধারণের অথবা আগনার কোন কর্মের ভারপ্রত হইরা ইংলভে বাত্রা করেন নাই, তিনি শুদ্ধ আমোদের নিমিত্ত ও নানাবিধ আশ্চর্যা বিষয় সন্দর্শন ও দেশত্রমণের জপ্ত গমন করিয়াছেন, যাহা হউক, বাঙ্গালিদিগের মধ্যে দেশত্রমণার্থ উৎসাহ প্রথমে কেবল তাহারি দৃষ্ট হইল। একণে অমুদ্দেশের অক্তান্ত ধনাতা জ্ঞানবান্ মন্ম্বোরা ইংলও গমনের এই এক দৃষ্টান্ত পাহিলেন, কিন্তু এবিষয়ে আমরা যদিও আপাতত আশা করিতে পারি না তথাপি ঐ সকল মহাশারদিগকে এই অন্যুরোধ করিতে পারি যে তাহারা স্বং সন্তান-গণের শিক্ষা পূর্ণ করণার্থ একং বার ভাহাদিগকে ইংলও স্বরূপ মহাতার্থে প্রেরণ করিতে আরম্ভ করুন। এধান হইতে ইংলওে যাইতে ও॰ দিন লাগে এবং ৪০ দিনে তথা হইতে এধানে আসা বার, ইহাতে প্রাঃ তিন মানের মধ্যেই গমনাগমন নিষ্ণায় হয় আর দেখানে গিরা বিবিধ বিষয় দর্শন ও কিঞ্চিৎ কাল অবস্থিতি করণ ইহাও ছই মাসের মধ্যে সম্পন্ন হইতে পারে অভএব সর্বাভদ্ধ ছর মাস অপেকাও নান কালে ঐ আশ্চর্যা দেশভ্রমণ নিম্পন্ন হইবেক; আমারদের দেশের বারাণদা প্ররাগাদি তীর্থ যাত্রিরা ঐ সময়ের মধ্যে তার্থবাত্রা সাল করিরা বদেশে প্রত্যাগমন করিতে পারেন না।

(বেঙ্গাল স্পেক্টেটর, ১ জাথুয়ারি ১৮৪০)

শুনা যাইতেছে, ব্রিটিস ইপ্তিয়া সোসাইটীর উৎসাহা সভ্য, এবং এতদ্দেশের বিশেষ মঙ্গলার্থি মেং জার্জ তামসন সাহেব… শ্রীযুক্ত বাবু বারকানাথ ঠাকুরের সমজিব্যাহারে এতদ্দেশের বিবয় সকল উত্তমরূপে অবগত হইবার নিমিত্ত আসিতেছেন; তাঁহার মানস এই, ইংলওে প্রত্যাগমন করিয়া ভারতবর্ষের প্রজাদিগের উপর যে ২ অত্যাচার হয় তাহার আন্দোলন করিবেন।

কবি ও কন্মী অতুলপ্রসাদ

ডক্টর শ্রীরাধাকমল মুখোপাধ্যায়, এম-এ

বে গভীর শোকে ভরু বাঙালী নহে লক্ষ্ণোবাসী সকলে মুহুমান, তাহা পাছে ভাষাকে খ্লথ ও রুদ্ধ করে সেইজ্ঞ্জ অতুশপ্রসাদ সেন আমার এই লিখিত অভিভাষণ। মহাশয়ের ব্যক্তিত্ব উদার ও বিশাল ছিল। তিনি যেমন বাঙালীর, তেমনি এদেশবাসীরও নেতা ছিলেন। দেশবাসীর সঙ্গে নিবিড় সামাজিক প্রীতির নিগড়ে তিনি যাবজ্জীবন আবদ্ধ ছিলেন। তাঁহার রাজনীতিও বাঙালীর রাজনীতি হইতে বিচ্ছিন্ন। তিনি ছিলেন উদার লিবারাল। মনোমোহন ঘোষের মত গোখলেও ছিলেন তাঁহার রাজনৈতিক গুরু। বাঙাশীর প্রাদেশিকতা ভূলিয়া তিনি কি রাষ্ট্রনৈতিক ক্ষেত্রে, কি সামাজিক ক্ষেত্রে, একটা সমগ্র আদর্শ অমুধাবন করিয়াছিলেন বলিয়া তিনি এদেশের **अननात्रकरपुत शाम অভিধিক্ত হইয়াছিলেন । এইজন্ত** আমাদের বড় শোক যে তাঁহার মুত্যুতে আমরা শুধু যে তাঁহাকে হারাইলাম তাহা নহে। তাঁহার জীবন এদেশবাসীর কৃষ্টি, রাষ্ট্র ও সমাজনীতির সহিত একটা মিলন-গ্রন্থি ছিল। এই মিলন-গ্রন্থি ছি'ড়িয়া যাওয়াতে আমরা প্রবাসের রাষ্ট্র ও সমাজজীবন হইতে অনেকটা বিচ্যুত হইব। আমি কিন্তু এ-সম্বন্ধে একেবারে আশা ত্যাগ করিতে পারি না। কারণ বাঙালীর ব্যাপকতর জীবনের এই প্রতিভূ, অতুলপ্রসাদ

সেনের সমগ্র জীবনের দান ও তাগিধশ্ম ও তাঁহার পরিশীলনের প্রসারতা আমাদিগকে সঙ্গীর্ণতা হইতে অনেকটা রক্ষা করিবে, সন্দেহ নাই।

১৮৭২ সালে ঢাকা শহরে ডাং রমাপ্রসাদ সেন মহাশয়ের পুত্র অতুলপ্রসাদ সেন জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন। ডাঃ সেনের সংস্কৃত কাব্যসাহিত্যে বিশেষ অসুরাগ ছিল। শিশু অতুলপ্রসাদ বাড়িতে অহরহ তাঁহার ফুললিত সংস্কৃত কাব্য আরুত্তি শুনিতেন। তথন হইতেই একটা ছন্দের নেশা তাঁহাকে পাইয়া বিসয়ছিল। এদিকে তাঁহার দাদামহাশয় প্রীকালীনারায়ণ গুপ্তের প্রভাব তাঁহার উপর কম হয় নাই। তিনি সে-সময়কার এক জন প্রসিদ্ধ বাউলগান-রচয়িতা ছিলেন। প্রবাসী-সাহিত্য-সন্মিলনের প্রথম অধিবেশনে অতুলপ্রসাদ সেন মহাশয় যে নিজেকে বাংলা-সাহিত্যের বাউল বিলয়া আখ্যা দিয়াছিলেন, সতাই ইহাতে তাঁহার উত্তরাধিকার।

স্থৃশ ছাড়িয়া অতুগপ্রসাদ সেন মহাশয় কলিকাভার প্রেসিডেন্সী কলেন্দ্র অধ্যয়ন করিয়াছিলেন এবং আঠার বৎসর বয়সে তিনি বিলাতে ব্যারিষ্টারী পড়িতে ধান। ইংলণ্ডে অরবিন্দ ঘোষ, মনোমোহন ঘোষ, লোকেন পালিত, চিন্তরঞ্জন দাশ মহাশয় প্রভৃতির সঙ্গে তাঁহার দেশী বিলাভী কারের রসাম্বাদনে দিন কাটিত। বিখ্যাত ঘোষ-প্রাতাদ্বর তথন বিলাতে কাব্যরচনার থ্যাতিলাভ করিতেছিলেন। সে-সমর আরভিঙের শেক্ষপীয়রের নাটকগুলির অভিনর বিলাতে এক আন্দোলন সৃষ্টি করিয়াছিল। অতুলপ্রসাদ সেন মহাশম বছদিন ধরিয়া পাশ্চাতা নাট্যকলারও সৌন্দর্য্য ও গান্তীর্য্য উপভোগ করিতেছিলেন। বিলাতে চিত্রকলার চর্চ্চাও তিনি কিছু দিন অধ্যবসায়ের সহিত করিয়াছিলেন। সেই সময় তিনি ভারতীয় সঙ্গীত সম্বন্ধেও একটি গবেষণা-পূর্ণ, রসাবিষ্ট প্রবন্ধ ইংলণ্ডে পাঠ করেন। ঐ প্রবন্ধে প্রথম তাঁহার দেশীয় সঙ্গীতের স্বতন্ত্র ধারা সম্বন্ধে মত

অথচ নেপৰস্ বন্দরে যথন জাহাক্ত থামিরাছে তথন গণ্ডোলা-বিহারী ভিথারীদিগের মুথে ফাউটের গান শুনিয়া তিনি ভাঙা ইটালীয় স্থরে ন্তন গান রচনা করিয়াছিলেন। যে-গানে বাংলার গান-রচনায় এক রকম প্রথম দেশী-বিদেশী স্থেরর মিশ্রণ ঘটিয়াছিল, সেই গানটি হইতেছে

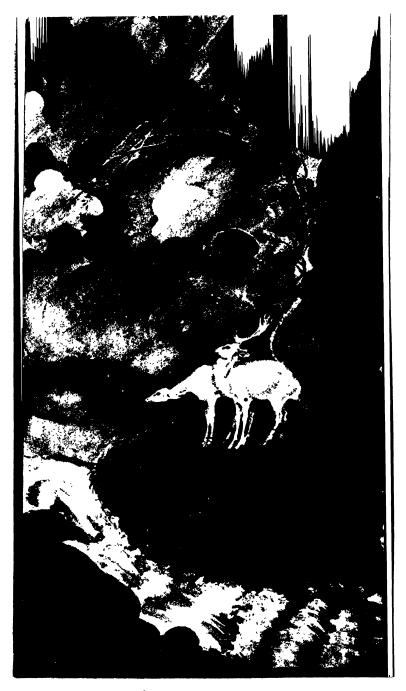
> উঠগো, ভারত-লন্দ্রী! উঠ আজি জগত-জন-পৃদ্ধা! তুংথ দৈছা সৰ নাশি, কর দূরিত ভারত-লক্ষ্ণা! ছাড় গো, ছাড় শোক-শ্যা!, কর সক্ষা পুনঃ কমল-কনক-ধন-ধান্তো!

১৮৯৫ সালে তিনি দেশে ফিরেন এবং কলিকাতা হাইকোটে বারিষ্টারী আরম্ভ করেন। সেই সময় রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর, খিজেন্দ্রলাল রায়, গগনেন্দ্র ঠাকুর, খুরেশ সমাজপতি, লোকেন্দ্র পালিত, নাটোরের মহারাজা জগদিন্দ্রনাথ রায় প্রভৃতি মিলিয়া একটা মধুচক্রে রচনা করিয়াছিলেন। সে বৈঠকটির নাম ছিল 'থেয়ালী'। সেখানে অভুলপ্রসাদ সেন তাঁহার অনেক নৃতন রচিত গান গাছিতেন। রবীন্দ্রনাথ ঠাকুরের আধোবন বন্ধুত্ব তাঁহার সাহিত্য-সাধনার কম সম্পদ ছিল না। ছিজেন্দ্রলাল রায়ের হাসির গান অভুলপ্রসাদ এতই ভাল গাছিতেন যে, রবীন্দ্রনাথ এই আসরে তাঁহার নামকরণ করিয়াছিলেন 'নন্দ্রলাল,' যে 'নন্দ্রলাল একদা করিল ভীষণ পণ।'

এই বুগে ক্রমে রবীক্রনাথ ঠাকুরের গানের প্রভাব এতই বেশী হইরাছিল বে, অভুলপ্রসাদ সেনের অনেক মুললিভ গান রবীক্রনাথের রচনা বলিরাই লোকে গাহিত।

অতুলপ্রসাদও সাত বৎসর পরে তথন প্রবাসী হইলেন। স্থুদুর প্রবাসে তাঁহার কাব্য ও গানের নিবিড় রসসঞ্চার উত্তর-ভারতের সংস্কৃতি ও সভাতা হইতে লাগিল। বাংলা দেশের সংস্কৃতি ও সভ্যতা হইতে অনেক পরিমাণে যে উদার প্রাণে অতুলপ্রসাদ সেন এদেশের সামাজ্ঞিক মিষ্টালাপে আপনাকে ঢালিয়া দিয়া এদেশবাসীর সহিত নিবিড় আত্মীয়তার সম্বন্ধ স্থাপন করিতে পারিয়াছিলেন, তাহাই তাঁহার কবি-জীবনের রসপ্রেরণা হইয়াছিল। অতুলপ্রসাদ সেন যেমন তুলসীদাস ও কবীরের ভাব ও সাহিত্যে মাতিয়া গেলেন, তেমনই মুসলমানের গীতিকবিতাও তাঁহাকে বিশেষ মুগ্ধ করিয়াছিল। তাই বাঙালী কবির পদাবলী উত্তর-ভারতে একটা নুতন ছাদ পাইয়াছে, যাহ। বাংলা-সাহিত্যে একেবারে নৃতন জিনিষ। তুলসীদাস কবি, সেখানে সাহিত্য সার্বজনীন। সাহিত্যিক विनम्ना न्छन त्कान कीव अल्लाम लिया लग्न नाहे, कांत्रन সাহিত্যে সকলের সমান অধিকার, সাহিত্যের অনুভূতি সহজ সরল লৌকিক অহভৃতি। কবি অতুলপ্রসাদ সেন তাই কবি হইয়াও নিক্ষের সঙ্গে অপরের কোন ব্যবধান সৃষ্টি করেন নাই। তাঁহার কবিতার সহজ্ব শৌকিক আবেদন ও তাহার সরণ ভাব প্রকাশের মূলস্ত্র এইখানে। যে-সমাজে তিনি কবি সে-সমাজে গায়ক, দোঁহা ও গজৰ রচয়িতার ভাব প্রকাশ বাংলা দেশ অপেক্ষা উদারতর ও আভিজ্ঞাতাহীন বলিয়া তাঁহার গান ও ছন্দ বাংলা দেশের গ্রামে গ্রামে, এমন কি নিরক্ষর অশিক্ষিতকেও এত আক্নষ্ট করিয়াছে।

উর্দু, ভাব ও সাহিত্য তাঁহার গান ও ছন্দকেও কম ভ্যিত করে নাই। তাঁহার গানে ও ছন্দে আছে আরব-মঙ্গভ্মির তৃকার জালা, অপর দিকে আছে একটা কঠোর বৈরাগ্য। এক দিকে আছে ওরেসিসের ভোগের চঞ্চল-চরণ-ভঙ্গ, অপর দিকে মারামরীচিকার পরপারে চিরশাস্তি। প্রকৃতি ও জীবন তাঁহাকে যত দান করিয়াছিল ভাহাদের সম্পদ, তাহা অপেক্ষা তাঁহাকে বঞ্চিত করিয়াছিল অধিক,—মঙ্কুজীবনের বিফলতা আনিয়া দিয়া, তৃকার জলের পরিবর্ত্তে গরলের পেয়ালা বার-বার তাঁহার শুক্ক ওর্চপুটে ধরিয়া,—



• বর্ষা শ্রীকালীকিঙ্কর ঘোঘ দহিদার

প্রবাসী প্রেম কলিকাজ

প্রেম-নারে ভরি, আশার কলস।
কত না গতনে সেচিথ তার!
ফুলদল আসি কহে পরিহাসি,
কোপায়, তব বঁধু কোপায়?

কিন্তু জীবনের এই নিদারুণ পরিহাস ঠাহার অন্তরকে তিন্তু না করিয়া বরং মধুর, স্থিপ্ন ও কোমল করিয়াছিল। কবি স্বল্পভাষী ছিলেন। উর্দুনার্শীয়া ও গজল গানের মুর্মারুদ হুঃথের আড়ালে একটা সহজ বিশ্বাস দেমন তাঁহাকে মুগ্ন করিত তেমনই ত'হুদের সহজ প্রকাশভঙ্গিও তিনি আপনার রচনায় আনিতে চেই কবিতার এ গাঁদ বাংলায় আর নাই। এমন ছন্দেরও বৈচিত্র নাই। শুধু ছন্দের দিক হইতে

(পিল)

বাদল কম ক্ম বোলে,
না পানি কি বাল !
ব্ৰি: পানি না কথা,
তবু দ্যান উছাল !
কাথার দুপ্রপানি
ছনাগছে আগমনী !
বির্থা প্রাণ ভা র থাচে :
আশা-মগ্র গুলি পুছ মেলি নাচে ;
রাপিব প্রাণ-খানি ভার চর্যাগ্রেল !
(সাওয়ন)

ঝরিছে ঝর ঝর গরজে গর গর, ঝনিছে সর সর শ্রাবণ মার:

এই গানগুলির স্ব বাঙালীব প্রাণকে কাড়িয়া লইরাছে তাহাদের গতির চঞ্চলতা ও কমনীয়তার জন্ত। কিন্তু বাংলার প্রামে ও শহরে এই গানগুলি গাহিতে গাহিতে দ্র ভবিষ্যতে কবে কোন্ বাঙালী মনে করিবে টেরাইয়ের সেই নিরুম, অবিশ্রান্ত রৃষ্টির রাজি, উদাস কবি বখন বারেইচের ডাক-বাংলার বারাণ্ডার রেলিঙে ভর দিয়া বন্টার পর ঘণ্টা বর্ধাপ্রকৃতির বিরহবেদন ভোগ করিতেন, অন্তর বাহির ঘুই ভরিষা একটা ন অন্ধকার দ।মিনীর শুক্তাবে বখন তাঁহাকে অসীমের প্রেম-সন্থাবণ জানাইত ও তেমনই

চাদিনারাতে কে গো: আসিলে বাংলা অপেক্ষা উত্তর-ভারতের ভীব্রতর জ্যোৎসারাত্রির রূপালি ছটা এই গানে নৃতন ছন্দের সমাবেশ আনিয়াছিল। বাস্তবিক উত্তর-ভারতের লৌকিক হোলি, কাজরী, চৈতী, শাওয়নী, লাউনী, ভজন, রামায়ণী ও গজলের পুর তাঁহাব মস্তরে নিগৃঢ়ভাবে অন্প্রনেশ করিয়াছিল। ইহাদের ছন্দ ও তাল অভুলপ্রসাদের গাঁতি-কবিতায় ললিত নৃতন



অতুলপ্রসাদ সেন

রূপ পাইরাছে। এই সংগোজনাতেই তাঁহার প্রতিভার কৃতিত্ব। বলা বাছলা, দিলীপকুমার রায়, সাহানা দেবী ও কনক দাস তাঁহার নিকট হইতে গান লইয়া বাংলা দেশকে তাঁহার হের ও তালের সহিত নিবিড় পরিচয় করাইয়া দিয়াছিলেন; কিন্তু বাংলা দেশে তাঁহার গান অনেক সময়ই পরিবর্ত্তিত, এমন কি বিক্কত হইয়াও গীত হয়।

কিন্তু সুর ও তালের আবেদন অপেক্ষা তাঁহার গাঁতি-কবিতার আকর্ষণ হইতেছে তাঁহার নিদারুণ ব্যথা, শেশীর সেই নির্দেশ Our sweetest songs are those that tell of meddest thoughts. জীবন-মক্কতে উহির গানগুলি যেন বাসরার গোলাপ, কাকটাস-বনের রক্তকুসুম। কাঁটার বনে বৈরাগী একভারা লইয়া যথন ব্যথভিরে গান গায় স্বভি প্রন মোরে যুরাইছে মিছে ঘোরে -ংধু কি ফুটাও কাঁটা ? ফুটাও না কি মুক্ল ?

ত্রধন বিনি বাণার ব্যথী তিনি চরণের বাণা দূর করিয়া অন্তর কুমুমের গন্ধে ভরপুর করিয়া দেন। এই বে অ'মাদের বাউল, অতুলপ্রসাদ, গাহার 'অন্তরে মোর বৈরাগী গায় তাইরে তাইরে নাইরে না,' তিনি কিন্তু বাংলা দেশের মত ব উল ন হন। তিনি থেন উত্তর-ভারতের পল্লীব:টের দরবেশ। উত্তর-ভার:তর মাঠে মাঠে শিম্বল পলাংশর রক্তিম শোভা তাঁহার হৃদয়কে রাঙ্গিয়া দিয়াছে। র স্পৃতানার মার্ভণ্ড-পীড়িত ধুসর মাঠ তাঁহার হৃদয়কে বিদগ্ধ করিয়াছে। সমূনার ছফুল-প্লাবন কত প্রে:ম কত গানে এই দরবেশকে টানিয়াছে। গঙ্গা-সর্যুর উদার শ্যামল অঙ্গে তৈত, কাজরী, ঝুলন ও হোলী উৎসব পাতুপর্যায়ে তাঁহা ক আহ্ব'ন করিয়াছে। বিশ্বাগিরির পর্শতগাতে ও রামগড়ের উপত্যকায় যে বীর্যা ও স্বাধীনতা প্রতিক্ষনিত হইতেছে তাহাও তিনি শুনিয়াছেন। সেই স্বাধীনতার জ্লেইসের গান আজ কলিকাতার হাজার কর্পোরেশন স্কু.ল ছাত্রদের মু.খ প্রতিধানিত, "বল,বল, বল সবে শত বীণা বেণ্ রবে, ভারত আব!র জ্ঞগৎসভায় শ্রেষ্ট আসন লবে।" কিন্তু এই দরবেশের গানের উন্নাদন: একট:না হুঃখ হইলেও তিনি বাজাইয়াছেন ভাষার স্ক্র চুম্কির কাজে, সুর ও ष्टत्मत नीनारेविष्ठिका। अम् अत घरत घरत र स्मित কারুশিল্প। উত্তর-ভারতের পল্লীবপূর কেশবিন্যাসে ও নানাবর্ণ বিভূষণে, তাহার চিকণের শোভন বয়নে, যে স্থ্যা তাহার অন্দরের আনন্দকে প্রকাশ করিতেছে তাহাই এই দরবেশ আপনার গানে ধরিয়াছেন। তাই তাঁহার এক-একটি গান যেন গেরুয়া জমিনের উপর চিকণের কাজ-করা এক একখানি রুমালের মত। তুঃধময় ভগবানের मिक विभामत अधिकांत्र छे एवन इड्रेग्न छाँ हात शान छिन কত না লীলাতরঙ্গে ভাসিয়া চলিয়া বায়।

কিন্তু আৰু আমরা এই প্রদক্ষে অতুবাপ্রদাদ সেনের গান

ও কবিতার আর আলোচনা করিব না। শুধু প্রবাস নহে বাংলা দেশ হইতেও তাঁহার গীতি-কবিতার যথোচিত সমাদর আমরা সাগ্রহে প্রতীক্ষা করিতে থাকিব। তাহা ছাড়া আমরা যাহাকে হারাইয়াছি তিনি শুধু যদি কবিই হইতেন, তাহা হঠলে আমাদের শোক এত আন্তরিক ও তর্বহ হইত না। তিনি আমাদের প্রবাসী সমাজের ন∤য়ক ছি′েলন। আজীবন তিনি বাঙালী ইয়ং মেনদ য়াসে:সিরেশনের সভাপতি ছিলেন। সঞ্জিলিত ইয়ং মেন্স্ য়া:সে সিয়েশ নর ও বেঙ্গলী ক্লাবের'ও তিনি সভাপতি ছি.লন। সামাজিক হিসাবে তিনি লক্ষ্ণোবাসী বাঙালীর সঙ্গে এত নিবিড ভাবে মিশিতেন যে, প্রত্যেক বাঙালী তাঁহার মৃত্যুতে ব্যক্তিগত শোক অন্নভব করি তচে। स्मिनिकांत वित्रां विष्यं प्रशाखाःत कि धनी, कि पतिम, কি বাঙালী, কি অবাঙালী বে শোকে তাঁহার শ্বামগমন করিয়াছে, তাহাও তাঁহার জনপ্রিয়তার নিদর্শন। প্রবাসী-বঙ্গদাহিতা-সন্মিলনের এক জন জন্মদাতা। অধিবেশন প্রথম অধিবেশন কানপুরে এবং গত গোরক্ষপুর সভাপতি হইয়া তিনি প্রবাদী ব'ঙালীর সংহতির উপদেশ দেন। এমন কোন বাঙালী অন্ঞান এ প্রদেশে নাই যাহা তাঁহার নিকট ঋণী নহে। তাঁহার দান কিন্ত জাতিধৰ্মনিৰ্বিশেষ ছিল। তিনি বহুকা<mark>ল</mark> ধরিয়া অবেধাা দেবাসমিতির সভাপতি ছিলেন এবং নানা লোকহিতকর কার্য্যে তাঁহাদিগকে উৎসাহ দিয়াছিলেন। অস্পৃগ্রতা-নিবারণ-আন্দেল্পনেও তিনি **বিশে**ব আমি তাঁহাকে অনেক বার চামার-সংশ্লিষ্ট ছিলেন। विमानय পরিদর্শন করিতে দেখিয়াছি। এ-সকল বিষয়ে, বিশেখতঃ পল্লীর সংস্কারে, তাঁহার হৃদ্যা উৎসাহ ছিল। গোথলে ভাত-সংথের তিনি সভাপতি ছিলেন। দুর পথ অতিক্রম করিয়া তিনি গ্রামে গ্রামে রুষকগণের নিকট দেশের বাণী পৌছাইয়া দিতেন। কবি ও ভাবুক হইয়াও তিনি এক জন অধ্যবসায়শীল কম্মী ছিলেন। লোক শিক্ষাপ্রচার, পল্লীগঠন, অস্পুখতা-নিবারণ, ছর্ভিক্ষ, বক্তা বা প্লাবন-পীড়িতের জন্ত কল্যাণ কর্ম্ম—সব উদ্যোগে সর্বদাই অগ্রণী হইয়া তিনি দেশের লোককে আহ্বান করিতে জানিংতন। সে আহ্বান এ.দশবাসী শুনিত। তিনি

রাজনীতিতে গঠনবাদী ছিলেন এবং গুইবার যুক্ত-প্রদেশের প্রাদেশিক উদারনৈতিক সম্মিলনের সভাপতি হইয়া গঠনের দিকের প্রতিই বিশেষ জ্বোর দিয়াছিলেন।

ভারতবর্ধ তাঁহাকে রাজনৈতিক নেতা বলিয়া চিনে, কিন্তু তিনি যে গান রচনা করিয়া অমর হুইয়াছেন এ-থবর বাংলার বাহিরে অবিদিত। লিবারাল-নেতা হুইয়াও তাঁহার একটা বহুদর্শিতা সাহস ও তাগে ছিল যাহা পুরাতন নেতাশ্রেণীর মধ্যে বিরল। তিনি আপনা ভূলিয়া দান করিতে জানিতেন। বাস্তবিক তাঁহার স্বাভাবিক, অভ্যাসগত দানধর্মের ব্যত্যয় পাছে এটে এইজন্ত নীরোগ না-হওয়া সত্ত্বেও অর্থাপার্জন তাঁহার মৃত্যুরও প্রধান কারণ বলিয়া মনে হয়। মৃত্যুর পর তিনি যে দানপত্র রাধিয়া গিয়াছেন

তাহাতেও তাঁহার উদারতা, জাতীয়তা, ও নিংস্বার্থ দান প্রকাশ পাইয়াছে। এমন একটি স্থরসিক অথচ বৈরাগী, ভাবক অথচ কর্মপ্রাণ, উদার অথচ সাহসী, ক্ষমতাশীল অথচ মৃত্কুশ্ম লোক পৃথিবীতে বিরল। এই মৃত্কুশ্ম লোকটির অগ্তর হইতে তাঁহার মৃত্যুর পর যে প্রবাস ছড়াইয়া পড়িয়াছে, তাহা আমাদের প্রবাস-জীবনকে ধন্ত করিবে। যিনি গদ্ধ বিতরণ করিয়া গেলেন তাহার জীবনের যে সার্থকতাই এই অ্যাচিত, অক্রপ্ত দানে। তিনি নিজেই গাহিয়াছেন

্লাট ফোটে মবে, ভাবে কি কাল কি হবে, না হয় তাদের মত শুকিয়ে ধায়ি গন্ধ করি বিভরণ !"

্লকোৰ।সা বাঙালার শোকসভায় সভাপতির অভিভাষণ।

রাজমহলের মালপাহাড়িয়া ধর্ম

শ্রীশশান্ধশেখর সরকার

স**াওতাল-প্রগণার রাজ্মহল পাহাড়ের বর্বর** জাতি-গুলির মুধ্য মালপাহাডিয়ারা অপর জাতিগুলি অপেকা কিছ সভা। ইহারা এককালে রাজ**মহল** পাহাড়ের ্শিথরবাসী 'মালে' নামক জাবিড়ভাষী জাতির অন্তর্গত ছিল। দৈহিক আকার, ধন্ম, কৃষ্টি, প্রভৃতিতে এখন এই তুই জাতির মধ্যে বহু সাম্য আছে; এমন কি তুই-এক জেলায় ইহাদের মধ্যে অন্তর্বিবাহও চলিতে দেথিয়াছি। আদমত্মারীতে ইহাদিগকে বাঙালীর মধ্যে গণনা করা হুটা থাকে এবং 'ওরেষ্টার্ন চারালেক্ট অব বেঙ্গলি' নামক এক ভাষার ভাষী বশিয়া অভিহিত করা হইয়াছে, অথচ এখন ইহাদের মধ্যে অনেকে ইহাদের আদিম 'মালতো' ভাষায় কথা বলে এবং ইহাদের বাংলা ভাষার মধ্যে বহু 'মালতো' কথা আ:ছ। মালপাহাড়িয়ারা এখন সমতল-ভূমিতে বাস করে এবং এই সমতল স্থানে বসবাস করার ফলে ইহারা অপরাপর নিয়শ্রেণীর হিন্দু বাঙালীর কৃষ্টিই গ্রহণ করিয়াছে। সাঁওতাল কিংবা মালেদের মত নিঙ্গন্থ গ্রাম অতি অল্পই আছে। বিভিন্ন গ্রামে আসিয়া

অপরাপর নিম্নশ্রেণীর হিন্দু বাঙালীর সহিত প্রতিবেশার
মত বসবাস করিতেছে। নিজস্ব গ্রাম হইলে গ্রামের
মোড়ল স্বজাতির মধ্য হইতে নির্বাচিত হইতে পারে,
কিন্তু মালপাহাড়িয়াদের এই স্বন্ধ বহু গ্রামেই লুপ্ত হইয়াছে।
জীবিকানির্বাহের জন্তই হউক, অথবা এক গ্রামে এইরপ
নবাগত জাতি যাহাতে গ্রামবাসিগণ অপেকা অধিক বিস্তার
লাভ না করে গ্রামবাসিগণের এই দ্বেবের ফলেই হউক,
মালপাহাড়িয়ারা সাঁওতাল-পরগণা বাতীত বাংলা
দেশের বহুস্থানে ছড়াইয়া পড়িয়াছে। বাংলা দেশে বিগত
আদমস্বমারীতে ১১,৭৮৯ মালপাহাডিয়া পাওয়া গিয়াছে।

মালপাহাড়িয়া ধংশা এথন ইহাদের আদিম ধশা এবং হিন্দু ধর্মা, উভয় ধর্মেরই প্রভাব দেখিতে পাওয়া থায়। ঈষ্ট-ইণ্ডিয়ান রেলওয়ের লুপ লাইনের পাকৃড় টেশন হাইতে পশ্চিমে গোড়ডা পর্যাস্ত একটি মোটামুটি সরল রেখা অধুনা 'মালে' এবং 'মালপাহাড়িয়া'দের বিভাগস্থল। এই সরল রেখাটির উত্তর হাইতে গঙ্গার উপকূল পর্যাস্ত সমস্ত অঞ্চাটি মালেদের বাস এবং এই রেখাটির

দক্ষিণ ভাগ মালপাহাড়িয়াদের রাজ্য। বে-সকল মাল-পাহাড়িয়া এই রেধার সন্ধিকটে থাকে তাহাদের মধ্যে 'মালে'দের প্রভাবই অধিক এবং এই অঞ্চলের রুষ্টি-দৃদ্দ সমাজতত্ত্বের একটি আদর্শ দৃষ্টাস্ত। সমাজের চক্ষে একে



গ্রাম-দেবতা ও জাঙা গ্রোসাট (মালে) গ্রাম -এক্ষবোনা

অপরকে যথেষ্ট হীন চক্ষে দেখে, অথচ বিবাহের পদ্ধতি এবং উভয়ের মধ্যে বিবাহের আদানপ্রদানও চলিয়া থাকে। একই দেবতা—সভা হইলেও দেবতার রোয়ের ভয় যায় না পাছে কথন কি অনিষ্ট হয়, অথচ যে দেবতাকে গোখাদক নালেরা পূজা করে তাহারা তাহাকে পূজা করে কিরপে? দেবতাটি কার্টের একটি স্তম্বাত্তা: তাহার পারে একটি বাদা বাদা বাধা—এই হইল আদি দেবতা। ইহাকে 'মালে'রা পূজা না করিয়া কোন কাজই করে না, কিন্তু মাল-তাই তাহারা বাদটি বাদ দিল—মালতো 'জাণ্ডা গোসাই' নাম 'ব্ডন যানে', পরিবর্ত্তিক হইল। য়্রাই-ছয়ের প্রভাব এই পর্যন্তেই—অস্তরের দেবতা অস্তরেই রহিল, বাহিরে তাহার রূপের পরিবর্ত্তন হইল মাত্র। এই জাণ্ডা গোদাই অতি নিরীহ দেবতা বালের মঙ্গল ছাড়া অমঞ্চল করেন

না, কিন্তু যে-সকল দেবতা কিছু দিন পর পর হাস, মুরগী, পায়রা না পাইলে তুষ্ট থাকেন না তাঁহাদের পরিবর্তন করিতে এই মালপাহাড়িয়াদের কোন সাহস হয় নাই। এই জন্ত যে-সকল প্রামে এই মালপাহাড়িয়ারা একেবারে বাঙালী হইয়া গিয়াছে তাহাদের মধ্যে সর্ক্রদা এমন একজন লোক থাকে, যে এই আদি বর্কর দেবতাগুলির পূজা করিয়া তাহাদের রোয় নিবারণ করিতে পারে।

মান্য ধথন সর্বান্তঃকরণে এবং থাড়শোপচারে দেবতাকে ডাকিয়া কোন প্রতাফ ফল পায় না তথনই দেবতার ঠাই জার এটল থাকিতে পারে না: আপন আপন দেবতাদের গাঁকি সহজেই ধরা পড়ে এবং অপর এক ধ্যের দেবতা এই ক্ষেত্রে বিশিষ্ট স্থান অধিকার করিয়া থাকে। 'মালে' দের মধ্যেও তাই বহু দেবতার ঠাঁই বিনুপ্ত হইয়াছে* আর মালপাহাড়িয়া দর মধ্যে কালী, তুর্গা প্রভৃতি হিন্দু দেবদেবীদের আসন প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে।

হিল্দেবদেবীদের পূজার জন্ত মালপাহাড়িয়াদের মধ্যে



বুরন থান - গাম--কেরোছলি, পাকুড়

এখন হিন্দু পুরোহিতের প্রচলন হইয়াছে। তুমকা শহর হইতে প্রায় এগারো মাইল পূর্বে গান্দো নামক একটি গ্রাম আছে এবং এইখানে এক জন মালগাহাড়িয়া রাজা বাস করেন। এই রাজার সম্পত্তি ১৮৫৫ খ্রীষ্টাব্দে কোট

* বিচিত্রা -- জৈচন, ১৩৪০ ; রাজমহলের পাহাড়ীয়া ধর্ম, পৃ. ৬৯৯-৭০৪।

অফ ওয়ার্ডসের হস্তে আসে; সম্পত্তির মূল্য প্রায় ৩০,০০০ টাকা হইবে। এত বড় সম্পত্তি এই মালপাহাড়িয়াদের হস্তে কিব্রপে আসিল তাহা আশ্চর্যোর বিষয়। ছমকা জেলা আপিসের পুরাতন নথিপত্র আলোচনা করিলে এই বিষয়ে কিছু জানা বাইতে পারে। নথিপত্র সমস্তই ফার্সীতে লিথিত।

এই গান্দো-রাজবাটীতে কয়েনটি হিন্দু দেবদেবীর পূজা
মহাসমারোহে হইয়া থাকে। রাজবাটীর সম্মুথে একটি
বিরাট অঙ্গনে এই সকল পূজা হয়। একটি হিন্দু
পুরোহিত এই পূজা করেন এবং তাঁহার উপর পূজার
মধ্যে যতটুকু হিন্দুর কর্ত্তবা সেইটুকুর ভার থাকে। মালপাহাড়িয়া রুষ্টির মধ্যে পড়িয়া হিন্দু দেবদেবীদেরও কিছু
পরিমাণে মালপাহাড়িয়া হইতে হয়। রাজবাটীতে তুর্গা,
কঁ.লী, সরস্বতী ও শিব পূজা হইয়া থাকে। প্রত্যেক
দেবীর মুন্ময়-মুর্জি স্থানীয় কুজকার দারা করাইয়া পূজা করা
হয়। এই স্থলে এই সকল হিন্দু দেবীদের পূজার মধ্যে মালপাহাডিয়া অনুষ্ঠানগুলির গালোচনা করিব—

(১) চূর্গাপূজা-মালপাহাড়িয়াদের মতে দেবী প্রথমে কৃষ্টকারের গৃহে আগমন করেন, পরে ডোমের গৃহে এবং পরে সপ্তমীর দিন বিঅরক্ষের নিম্নে আসেন। এই দিনের নাম 'বেলগন্ধ'। এই দিন প্রাতঃকালে আর একটি দেবীকে পাহাড় হইতে আনা হয়। ইহারা ইহাকে 'পাতিঠাকুরাণী' বলে এবং ভূর্গার ননদ বলিয়া পরিচয় দিয়া থাকে। হরিদ্রা ও ধান্তের চারা, একটি ডালিমের শাখা, ছইটি বেল এবং অশোক পুপ---এইগুলির সমষ্টিতে পাতিঠাকুরাণী প্রস্তুত হয়। পাতিঠাকুরাণীকে তুর্গার বামদিকে বসান হয় এবং বসাইব'র সময় একটি লালগান্ধারী শাকের চারা ও একটি কুমড়া বলি দেওয়া হয়। অষ্টমীর দিন ছাগবলি হয় এবং অপরাপর পূজাপাঠ হিন্দু পদ্ধতিতেই চলে। এই সকল পূজায় ধান্তমদ ব্যবহৃত হয় না-বর্বর দেবতাদের পূজার এই সুরার প্রাচুর প্রয়োজন হয়। হিন্দুপূজায় পশুবলিই প্রচুর পরিমাণে হইয়া থাকে। হিন্দুপূজায় সাধারণ মালপাহাড়িয়া থাদ্যাদিও ব্যবহৃত হয় না---পূজা সমাপন না-হওয়া পর্যান্ত সকলেই উপবাস করিয়া থাকে।

কালীপূজার মধ্যে পশুবলির সংখ্যাই অধিক দেখা যায় এবং হিন্দু অনুষ্ঠানই প্রতিপালিত হয়।

সরস্বতী পূজায় আবার মালপাহাড়িয়াদের নিজস্ব কিছু দেখিতে পাওয়া বায়। হিন্দুদের মধ্যেই এই পূজায়



মালপাহাড়িয়া দম্পতি: গ্রাম --কেরোছলি, পাক্ড

আ ম মুক্ল এবং যবের শীষের প্রারেজন হয়; কিন্তু মালপাহাড়িয়ারা ইহার উপর আরও কয়েকটি শাখাও মুক্ল প্রদান করে। আমন ও শালের নৃতন শাখা দেওয়া হয় এবং ইহা বাতীত নিগলিথিত পুশগুলি না হইলে পূজা সিদ্ধ হয় না। টগ্যন, শাল, অশোক, ভাঁট, পিয়াল এবং ধৎকী * কুলের প্রয়োজন হয়।

চৈত্র মাসে শিবপূজা হয় এবং ইহাদের বিশ্বাস, এই মাসে শিব ও তুর্গার বিবাহ হইয়াছিল। শিবলিক্ষের মত কতকগুলি শিলাখওে এই পূজা হয়।

মালপাহাড়িয়াদের নিজস্ব দেবতাগুলি • ইহাদের ভৌগোলিক বিভাগের জন্ত হই ভাগে বিভক্ত করা

^{*} ধৎকা ফুলের বাংলা নাম ইহানের নিকট অনুসদ্ধান করিয়াও জানিতে পারি নাই।

হ**ই**য়াছে। ইতিপূর্বে এই ভৌগোলিক বিভাগের কথা বলিয়াছি।

- (ক) পাকুড় মহকুমা এবং পাকুর-গোড্ডা সংযোগস্থল
- () রাক্সী থান :—ইহা একটি মালে দেবতা। গ্রামে ব্যাত্রের উপদ্রব হইলে এই দেবতার আরাধনা করা হয়। সিন্দূর দারা একটি ব্যাত্রের আকার করিয়া গভীর বনের মধ্যে এই পূক্তা করা হয়। কোথাও কোথাও মালপাহাড়িয়ারা ইহাকে গ্রামদেবতা বলিয়া পরিচয় দিয়া থাকে।
- (২) কালী থান; মাঝি থান; বা বুড়ন থান:

 মাঝি থান হইল মালে দেবতার নাম। গ্রামের মোড়লের
 বাড়ির পার্শে এই দেবতার স্থান প্রতিষ্ঠিত হয় বলিয়া ইহার
 নাম মাঝি থান। কোন কোন মালপাহাড়িয়া কালী দেবীর
 উপর গ্রামের মঙ্গল নির্ভর করিয়া থাকে বলিয়া কালী
 থান গ্রামদেবতার সহিত সংশ্লিষ্ট। ব্ড়ন থান সম্বন্ধে
 আমরা পুর্বেব বিলিয়াছি।
- (৩) জাহির থান বা চালদই থান, এবং বোকা-পাহাড়ী :--ইহাও একটি মালে দেবতা। সাঁওতালেরাও ভাহির থানের পূজা করে। বন, পাহাড় প্রভৃতির অধিষ্ঠাত্রী দেবী বলিয়া এই দেবতা ইহাদের মধ্যে পরিচিত। ফাল্লন মাসে শাল বৃক্ষের দুল দুটিলে এই দেবতার পূজা হইয়া থাকে। স্থারণতঃ ইহা এক প্রকার শস্ত্র-দেবতা (harvest deity) বলিয়া মনে হয়। পাকুড় মহকুমার মালপাহাডিয়ার: বোকা পাহাডী নামক দেবভাটির মালপাহাড়িয়ারাও ইহাকে আবিষ্কারক। এখানকার বনদেবতা বলিয়া পরিচয় দেয়, কিল্ম ইহার পূজাপাঠ নৃতন শয্মের সহিত সংশ্লিষ্ট বলিয়া ইহা.কও এক প্রকার শশ্র-দেবতার মধ্যে গণা করা যাইতে পারে।
- (৪) সিংমানী :—এই দেবতাটি মালপাহাড়িয়াদের
 নিএম্ম দেবতা। বংসরে ছুইবার এই দেবতার পূজা হয়—
 একবার বর্ধাকালে আর একবার শীতকালে। একটি
 প্রস্তুফলকে এই দেবতার ঠাই প্রস্তুত হয় এবং ইহাকেও
 ছিল্ দেবতার মত পশুবলি দ্বারা সম্ভূট্ট রাখিতে গ্র এবং ছাগ
 ও মহিন্ বাতীত অন্ত কোন প্রাণিবলি নিষেধ। সিংমানী
 শক্ষটি সিংবাহিনী (সিংহ্বাহিনী) শক্ষের অপভংশ। মালপাহাড়িয়ারা, বিশেষতং ছুমকা মৃহকুমাবাসীরা, তুর্গাকে এই

নামে ডাকিয়া থাকে। পাকুড় মহকুমার মালপাহাড়িয়াদের মধ্যে হুর্গাপুজার প্রচলন নাই বটে, কিন্তু হুমকার এই দেবতার নামটি আসিয়া পড়িয়াছে। পাকুড় মহকুমায় সিংমানীও শস্ত-দেবতারূপে পূজা হইয়া থাকে।

(৫) জোক: --গ্রাম রোগমুক্ত করিতে হইলে এই



ধাব্তী বহুমতী থান । আম---গান্দো, ছুমকা

দেবতার পূজা করিতে হয়। নদীর তীরে ছইট হাস অথবা পায়রা, কয়েকটি মোরগের ডিম এবং সিন্দূর দ্বারা এই দেবতার পূজা হয়।

- (৬) কুরি আড়া ও শিব গোঁসাই :—কেবল মাত্র পাকুড়-গোড়া সংযোগস্থলের মালপাহাড়িয়া গ্রামে এই দেবতা ছইটির সন্ধান পাইয়াছিলাম। ইহারাও 'মালে' দেবতা। কুরি আড়া এক প্রকার গ্রামদেবতা এবং গো মহিষ প্রভৃতি পর্যাদির আপদে শিব গোঁসাইয়ের পূজা হয়। এই মালপাহাড়িয়া গ্রামধানিতে এই সুইটি দেবতার স্থান ছিল না, তবে গ্রামবাসীরা তাহাদের আপদে এই দেবতার স্থান ছিল না, তবে গ্রামবাসীরা তাহাদের আপদে
 - (থ) তুমকা মহকুমা।
 - (১) মাড়ো :--মালপাহাড়িয়াদের মধ্যে বিবাহকালে

বরপক্ষ কন্তাপক্ষের গৃহে যাত্রার পূর্ব্বে এই পূজা করিয়া থাকে। ছমকা মহকুমা ব্যতীত অন্ত কোথাও এই দেবতার নাম শুনি নাই। 'মালে'দের মধ্যে এই সময় রাক্সি দেবতার পূজা হর। ছমকার মালপাহাড়িয়াদের মধ্যে মালপাহাড়িয়া পুরোহিত কেবল এই পূজা করিতে পারে।

তিন শ্রেণীতে সারি সারি নয়টি খুঁটি পোতা হয় এবং
এইগুলির মধ্যের খুঁটিতে এই পূজা করা হয়। খুঁটিগুলির
মধ্যে এরপ বিষ্তৃত স্থান রাখা হয় যাহাতে ইহার মধ্যে
নৃত্যব'দা প্রভৃতি চলিতে পারে। পূজার সময় সাধারণতঃ
একটি ছাগ বলি দেওয়া হয়।

(২) স্থাদেবতা: — মালপাহাড়িয়ারা অধুনা প্রতি রবিবার স্থাপূজা করিয়া থাকে। পূজার সময় বে-সকল পশুবলি দেওয়া হয় তাহাতেই এই পূজার বিশেষর। মুখে বে-কয়টি পশুর কথা প্রার্থনা করা হয় বলি দিবার সময় ত হার দ্বিগুণ দিতে হয়।

(৩) ধার্তী বহুমতী:—ধার্তী অর্থে ধরিত্রী ব্ঝায়।
মাঘ এবং আঘাত মাসে যখন বীজ বপন করা হয় তথন এই
দেবতার পূজা করা হয়। মালপাহাড়িয়া প্রোহিত এই
পূজা করিয়া থাকে। প্রতোক গ্রাম হই.ত চাঁদা তুলিয়া এই
পূজা করা হয় এবং সাধারণতঃ পক্ষীই এই পূজার্থে বলির
জন্ত ব্যবগত হয়। জইটি শালবৃক্ষের নিমে কতকগুলি
প্রভারথণ্ডের দ্বারা এই দেবতার পূজা হইয়া থাকে।
'মালে'রা এই পূজা গ্রাম-দেবতার নিকট করিয়া থাকে।

মালপাহাড়িয়াদের কোন এক ধর্ম্ম-বিশেষের মধ্যে বিভক্ত করা হত্যন্ত কঠিন। কংয়ক বৎসরের মধ্যে হয়ত সমস্ত জাতিটি হিন্দু ধর্মের মধ্যে আসিয়া পড়ি.ব। ক্কষ্টি-সংঘর্ষে পড়িয়া আপন বৈশিষ্ট্যগুলি একেবারে লোপ পাইতেছে; সভ্যতার চাপে মালপাহাড়িয়াদের সামাজিক অবনতি ঘটয়াছে, সমাজে নানা প্রকার ছনীতি দেখা দিয়াছে।



ুমালপাহ।ড়িয়া দম্পতি। গ্রাম—কেরোছলি, পাকুড়

ন্তন গোত্রস্থাপনের ফলে স্বগোত্রে অন্তর্বিবাহও প্রচলিত হইরাছে। ওদিকে 'মালে'রাও অনাহারে—অস্বাস্থ্যকর পাহাড়ের উপরের গ্রামগুলি পাংসপ্রায়। মালপাহাড়িগারা আজ এই গুইটি অবস্থা হইতে মুক্ত, কিন্তু পাহাড়-জঙ্গলের ও-পারেই এই বিরাট সমতলভূমির জাতিগুলির সহিত সমান তাপে নিজ বৈশিষ্ট্য বজায় রাখিয়া চলিতে পারিবে কি ?



শব্দপ্রসঙ্গ

শ্রীবিধুশেখর ভট্টাচার্য্য

হং হো, হ মৃ ভো, অ মৃ ভো। লৌকিক সংস্কৃতে 'সম্বোধন' অর্থে আমরা হং হো এই শব্দটিকে দেখিতে পাই। প্রাক্তেও (হেম চ ন্দ্র, ২.২১৭) ইহার প্রয়োগ আছে। সংস্কৃতে আছে "হংহো বান্ধণ" 'ওছে ব্রাহ্মণ।'* ইহাতে কোনো সন্দেহ নাই যে, এই আলে'চা পদটি হ মৃ ভো (ঃ< স্) অথবা হং ভো (ঃ<স্) হ্ই.তে ভকারের স্থানে হকার হওয়ায় হইয়াছে, যেমন, रिविषिक मूल √ श्र छ, इहेर्रछ √ श्र ह, इहेग्रा थारक। छ> इ প্রাক্তেও অতিপ্রাসিদ্ধ: মেন, বিভান > বিহান। এই হম্ভো শকটি সংস্তের হার দি বা ব দা ন, ৩৮৩. ৪, ৬২১. ২৬ ; ম হা ব স্থ্, ৩য় খণ্ড, ২০৪.১৬, ২১৫.১১ প্রাক্ত (মুর মুন্দ রী চরি অ, অথবা 'ক হা, কাশী, ১১.২৩৪) ও পালিভেও (জা ত ক, ১ম থণ্ড, ১৮৪, ৪৯৫) প্রযুক্ত হয়। পালিতে সামরা এই 'সম্বোধন' অর্থেই অম ভো শন্ত দেখিতে পাই (জাত ক, ২য় খণ্ড, ৩)। এ স্থাল হকারের খাসটা চলিয়া যাওয়ায় হ মৃ-এর অ মৃ-মাত্র থাকে। অবার এই হ্ ম্ ভো শক্ষা হইয়াছে সংস্কৃতের অ হ মৃ ভো: 'ওহে আমি' হইতে। কাহারো মনোগোগের জক্ত সংস্কৃতে অহম্ভোঃ বলিয়া ডাকা হয়। আনরা দেখিতে পাই, অভিজ্ঞান শ কুন্তলে (পিশেল-সংস্করণ, ৪. ০. ২০) তুর্বাসা মূনি আশ্রমে প্রবেশ করিয়া (শকুন্তলাকে লক্ষ্য করিয়া) বলিতেছেন—''অয়মহম্ ভোঃ'' 'ও'হ্ এই আমি !' হং হো প্রভৃতির হং (অথবা হ মৃ) হইয়াচে অ হং শব্দের আদিস্থিত অকারের লোপে, যেমন সংস্কৃতেই ধি< অ ধি, পি<অ পি, ব< অ ব; পালি-প্রাক্ততে তো কথাই নাই, বেমন, ব<ই ব, বি অথবা পি< অ পি, ইত্যাদি।

হ প্লে

সংস্কৃত নাটক- বা দৃশ্যকাব্য-সম্হের প্রাকৃত অংশে দাসীকে

বা কথনো-কথনো স্থীকে* সম্বোধন করিতে হঞ্জে এই শব্দটির প্রচুর প্রয়োগ দেখা যায়। ইহার আসল অর্থটি কি ? আমাদের কোশ-কারেরা বলেন 'ক তাা' অর্থে হ ভা শব্দ, এবং তাহারই সম্বোধনের একবচনে হু ওে। গালোচ্য শব্দটির অর্থ বে, 'ক ন্যা' তাহা তিববতী প্রমাণের দ্বারা সমর্থন করিতে পারা যায়। এইর্ধের রচিত বশিয়া প্রসিদ্ধ না গা ন স্প নাটকের একখানি তিবেতী অনুবাদ আছে। তিবেতী ভাষায় ইহার নাম ক্রুক্ন্তু দ্গা'ব। ইহাতে বহু স্থানে (দ্রষ্টব্য-তঞ্র, ম্দো, থে, পাতা ২৬৯:খ, ১; ২৭০ ক, ৫; ইত্যাদি) মুলের হঞ্জে শক্**টি**কে বুমো এই শব্দ দারা অনুবাদ করা হইয়াছে। বুমো শব্দের অর্থ 'ক ভা'। কিন্তু এই তিন্বতী অনুবাদের স্বতন্ত্র কোনো মূল্য নাই; কেন-না ইহাতে কেবলমাত্র সংস্কৃতকে অনুসরণ করা হইয়াছে, এবং সাধারণতও তিব্বতী অনুবাদে তাহাই করা হইয়া থাকে। আমাদের কোশকারগণ হ ঞ্জে শব্দের কোনো উপযুক্ত সমাধান দেপিতে না পাইয়া অগতা। হ ঞা শব্দ কল্পনা করিয়াছেন, এবং স্বামিনী ও দাসীর সম্বন্ধ মাতা ও কপ্তার সম্বন্ধের স্তায় মনে করিয়া দাসীর সম্বোধনে প্রানৃক্ত শব্দটির অর্থ 'কভা' ভিন্ন আর কিছু সঙ্গততর হয় না বলিয়া উহাই ধরিয়া লইয়াছেন। নাহাই হউক, সংস্কৃতে এই হঞা হইতে হ 🗟 কা শব্দও কল্পিত হইয়াছে। বলা বাহুলা, পূর্ব্বোক্ত ব্যাখ্যা মোটেই সম্ভোবাবহ নহে। অতএব, যদি সম্ভব হয়, আরও একটু অনুসন্ধান করিয়া দেখা যাউক।

হ ঞ্জে ইহা মূলত একটি শব্দ নহে, তুইটি ভিন্ন-ভিন্ন শব্দের বোগে ইহা হইয়াছে, হং আর জে। এখানে হং হইয়াছে পূর্ব্বের স্তায় অ হং হইতে, আর জে হইতেছে একটি অবায়। পালি ও প্রাকৃত উভয়েতেই এই জে প্রযুক্ত হইয়া থাকে। কিন্তু ইহার অর্থ কি ? হেমচক্স (২.২১৭) বলিয়াছেন, ইহা

শ সি হি ত্য দ পি ৭ (৬.১১৮) অতুসারে মধ্যম শ্রেণীর পুরুষেরা পরশারকে এই শব্দে সংখ্যান করেন।

^{*} সাহিতাদপণি, ৬.১৫৫; দশরপক, ২ ১•৪; নাটা শাল, ১৭.৮৯ |

"পাদ-পুরণের" জন্ত প্রায্ক্ত হয়, অর্থাৎ কবিতার কোনো চরণ পূর্ণ করিতে হইলে ইহার প্রয়োগ হয়। শুভচক্স (২.১.৭৭) প্র ত্রিবিক্রম (২.১.৭৬) হেমচক্রেরই কণার পুনক্লজিক করিয়াছেন। কিন্তু ইহা নিশ্চিত বে, পূর্বেইহার একটা বিশেষ কোনো তর্ম ছিল, কিন্তু হেমচক্রেরও সময়ে লোকেরা সেই অর্থাটিকে ভূলিয়া গিয়াছিল। সেই অর্থাটি

পালিতে নিমোদ্ধত ও তৎসদৃশ বাক্যে আমরা আলোচ্য শব্দটির প্রয়োগ দেখিতে পাই:—কালী নামে একটি मानीक তাহার কর্ত্তী ডাকিতেছেন "হে ছে কালি" (मिक्सिम निकाम, ১.১२५) '(इ.ट्रा कांगी'; "কিং জে দিৱা উট্ঠাসি" (এ) 'কি লো (এতটা) দিনে উঠ্ছিস্?' "ভো ওে জং অনেকবারং মম সম্ভিকং আগতা" (ধমা পদ— আট্ঠক থা, ৪.১০৫) 'ও লো, ভূমি অনেকবার আমার নিকটে এসেছ'; বিশাখা নিজের দাসীকে আদেশ করিতেছেন—"গচ্ছ জে আরামং" (विन श शि है क, ১.२৯२) 'अ ला वाशांत या।' দ্ৰুৱ বিমান বঋু—ভাট্ঠক থা, ("স চে ক্ষে বিহারে ঠপেছা বিদসরিতং')। এই সমস্ত উদাহরণ হইতে বুঝা যাইবে যে, কেবলমাত্র "পাদপুরণের" জন্ত জে শব্দের প্রয়োগ হইত না, কারণ ইহা গদোও প্রযুক্ত **ब्रे**बार्छ। श्रद्धः (ब्राहेन (२.२) (व छेनाहत्र निर्वार्छन, তাহাও গদ্যেরই মধ্যে ব্লিয়া মনে হয়। অতএব তাঁহার মতে সম্ভবত ইহা পদপূরণের জন্ত ("পাদপূরণে"র জন্ত নহে) একটি অব্যয় (enclitic)।

প্রাক্কতে (মাহারাষ্ট্রী, অর্জমাগধী, ও জৈন মাহারাষ্ট্রীতে)
আমরা একটি জে শব্দের প্ররোগ দেখিতে পাই; অপত্রংশে
ইহার আকার হয় জি (হেমচক্র, ৪.২২০)। কিন্তু এই জে
শব্দের সহিত আমাদের আলোচ্য জে শব্দের কোনো যোগ
নাই; কারণ, প্রথম জে শব্দটি মূলত সংস্কৃতের এ ব (>
প্রাক্কত রে ব) হইতে ক্রমশ উৎপন্ন হইরাছে, এবং তাহারই
অর্থে প্রেম্কুক হয়। জেইব্য Pischel, § § ১৫০, ২০৬।

পূর্বে উদ্ধৃত পালি বাক্যগুলি হইতে স্পষ্ট জানা যাইবে বে, জে শক্ষটিও লো প্রভৃতি শব্দের স্থায় কোনো ত্রীলোককে সামুনর ভাবে সংখাধন করিতে প্রবৃক্ত হয়। এই জে, এবং আংহং শক্ষের হং একতা যুক্ত হইরা হং জে অথবা হঞে।

কিছ জে শব্দের আসল অর্থ কি ভাষা এথনো ধরা পড়ে নাই। আমরা আরও একটু চেটা করিয়া দেখি। সংশ্বতে, বিশেষত তাহার দৃশুকাব্যসমূহে, দেখা বার বে, কোনো মেহাম্পদ বালককে জা ত (প্রা. জা দ, জা অ) বলিয়া সম্বোধন করা হয়; বেমন, উ ত্ত র রা ম চ রি তে, ৪র্থ আছে, কৌশল্যা লবকে বলিতেছেন "লা ত কথমিতব্যং কথয়" 'বাবা, ইহা বলা উচিত, বল'; অ ভি জ্ঞান শ কু তেলে ৪র্থ আছে গৌতমী শকুত্তলাকে বলিতেছেন 'লা দে" এদো দে" গুরু উবট্রিদো" 'মা এই তোমার' গুরু উপস্থিত হইয়াছেন।' সংশ্বতের জা তে প্রান্ধতে জা দে, জা এ। এই জা এ হইতে আকার ও একারের সম্বোলনে পালি বা প্রান্ধতের সন্ধির নিয়মান্সারে জে।

পূর্ব্বে বেরপ আলোচনা করা হইল তাহাতে জানা বাইবে বে, সংস্কৃত জা ত ও জা তা শব্দে বথাক্রমে 'পূল্ল' ও 'কল্লা'কে ব্রা বার। এথানে আমরা ব্রিতে পারি, কোশকারেরা হ ঞা শব্দের অর্থ বে, 'কল্লা' করিয়াছেন, তাহার মূল কোথার। সম্বোধনের জা তে হইতে উৎপন্ন জে শব্দেরই অর্থ 'কল্লা', কিন্তু তাঁহারা ঠিক ইহাই অনুসরণ না করিয়া সমগ্র হ ঞ্জে শক্টিরই 'কল্লা' অর্থ ধরিয়া লইয়াছেন।

এখানে একটি প্রশ্ন উঠিতে পারে। সংশ্বতে জা ত ও জা তা শব্দ যথাক্রমে 'পূল্র' ও 'কল্লা' অর্থ কিরুপে প্রকাশ করে। ইহার উদ্ভর এই:—সংশ্বত ভাষার আমরা পিতাকে বলি জ ন ক (বৈদিক জ নি তা, লৌকিক জ ন রি তা), আর মাতাকে বলি জ ন নী (বৈদিক জ নি ত্রী, লৌকিক জ ন রি ত্রী)। এই উভার শব্দেরই প্র ন্ হইতে উৎপত্তি, এবং যৌগিক বা আক্ষরিক অর্থ 'বিনি জনন বা জন্ম প্রদান করেন'। এখন পিতা ও মাতার নাম যদি যথাক্রমে জ ন ক ও জ ন নী হয়, তবে তাঁহাদের হইতে জা ত পূল্র ও কলার নাম যথাক্রমে জা ত ও ভা তা হওয়া পূবই স্বাভাবিক।

Pischel সাহেবের সংস্করণে সর্বত জা দে পদের স্থানে জা দ মুক্তিত হইরাছে। জানি না, ইহার কারণ কি।

মরাঠী ভাষার "ক্ষে দেবা" 'হে দেব' ইভ্যাদি স্থলে সসন্মানে সংস্থাধন করিতে ক্ষে শব্দের প্রয়োগ হইরা থাকে। কিছু যদিও মূলত 'কস্তা'-লর্থে প্রযুক্ত ক্ষে শব্দের সহিত এই ক্ষে শব্দের কোনো সম্ম আছে কি না একবংরে ঠিক করিরা বলা শক্ত, ভথাপি মনে হয় ইহারা উভরেই অভির।

মরাঠার এই বে আর হিন্দী ও গুজরাতী প্রভৃতির জী একই, বে শন্মই জী এই আকারে পরিবর্তিত হইরাছে, এবং কালক্রনে অবিশেবে ত্রী ও প্রুব উভরকেই সংবাধন করিতে প্রবৃক্ত হইরাছে; বেমন, হিন্দীতে 'করো জী' ('ওগো কর'); প্রান্ধ—'ভূম বঁহা গএ থে রা নহী' ('ওগো ভূমি কি ওবানে গিরাছিলে?'); উত্তর—'জী হা' ('ওগো হা')। গুজরাতীতে 'মারে মাটে প্রেক লাবলো জী' ('ওছে আমার জন্ত বই আনিবে')।

গে, হে গে।

মগহী ও বাঙ্লার (অর্থাৎ বাঙ্লার উত্তর-পশ্চিম প্রান্তের অর্থাৎ মালদহের চলতি কথার) স্ত্রীলোকের সহোধনে গে শব্দের প্ররোগ দেখা বার; বেমন, 'কি গে?' ('ওগো কি?')। কথনো-কথনো এই গে শব্দের পূর্বের হে শব্দও লাগান হয়; বেমন 'হে গে মামী' ('ওগো মামী')। এই গে আমাদের পূর্বের আলোচিত ফে হইতেই হইরাছে বলিরা মনে হয়। ফকার ও গকারের পরস্পার পরিবর্ত্তন হয়, ইছা স্প্রাসিদ্ধ; বেমন, √গ ম্ হইতে জ গা ম, আর √ জি হইতে জি গী বা। দেউবা Pischel, 234.

प्त, एर प्ता

প্রাক্কতে দে একটি অবার (হেমচক্র, ২.১৯২);
সিংহরাল, ১৩.২৩; ত্তিবিক্রম, ২. ১. ৫৯; শুভচক্র,
২. ১. ৬১)। প্রাক্বত ব্যাকরণ-সমূহে দেখা বার, নিজের
দিকে কাহারো মনোবোগ আকর্ষণ করিতে হইলে ("সমুধী-করণে") ইহার প্ররোগ হর। গদাধর ভট্ট হালের স স্ত
স ঈ র সীকার (১৬, ৪৮) বলিরাছেন যে, ইহা "সামূনর
স্বোধনে" অথবা (৩৪৫) সাধারণত স্বোধনে প্রযুক্ত
হইরা থাকে। প্রাক্কত ব্যাকরণে ইহা লিখিত হর নাই,
আর সাহিত্যেও দেখা বার না যে, ইহা কেবল
স্রীলোকেরই সম্বাদ্ধ প্রযুক্ত হইবে। অবিশেষে পূক্কর ও
স্রীলোক উভরকেই ইহা ছারা স্বোধন করিতে পারা বার।

खानात मतन इत थाई पर खामाप्तत शृंदर्स खारनािष्ठ एक इटेंग्ड इटेंग्ड । ककांद्रत द्यान मकांत इश्वता वह द्या प्रिया शाश्वता यात्र; रामन माः (= माःद्वड) श्रा म न कि ९, शाः (= भागि) श म न मि; माः कि च ९ मां, शाः का ख ना एड, शाः ना म स एड; माः एकां ९ मां, शाः प्रा म स एड; माः एकां ९ मां, शाः प्रा म न ना; माः कि ह्यां, मिः ह नी मि वा; माः एड क म् मिः ना ह नी एड मां

পূর্ব্বে হে শব্দের বোগে এই দে শব্দের প্রারোগ হে দে এই আকারে আমাদের বাঙ্গায় আছে; ধেমন 'ছে দে হাভাতির ঝি'। এই বাক্যে দে স্ত্রীলোককে সম্বোধন করিতে প্রযুক্ত হইয়াছে, কিন্তু পুক্ষেরও সম্বোধনে বাঙ্গায় ইহার প্রারোগ হয়; ধেমন 'ছে দেও নগরবাসী'।

হ খে, টে

প্রাক্কতে ও ভারতীয় প্রাদেশিক আর্য্যভাষা-সমূহে দকারের স্থানে ডকার হওয়ার বহু উদাহরণ পাওয়া যায়: যেমন, সং. দং শ, প্রা. ডং স, বাঙ্লা ডাঁশ; रेजापि। এই निव्रास पि इरेबा यात्र ए। এই एउ भक्तिव পূর্বেহ ঞে শব্দের স্তার আহম অথবা আহং শব্দের হম্ অথবা হং বোগ করিলে হণ্ডে শব্দ উৎপন্ন হয়। ইহা সাধারণত নীচ শ্রেণীর ব্যক্তি:ক সম্বোধন করিতে প্রযুক্ত হইরা থাকে; যেমন শ কু ख লার (৬. •. ২) রক্ষী পুরুষেরা কেলেদের বলিতেছেন—"হতে কুম্ভিল্আ" 'হারে চোর'। আমাদের কোশ-গ্রন্থে দেখিতে পাওয়া বার বে. হ গু। একটি শব্দ আছে (ঠিক বেমন হ अ:)। ইহা নীচ শ্রেণীর স্ত্রীলোককে বুঝায়। এই হ তা হইতেই সম্বোধনে হ ওে। অভএব ইহা নীচ শ্রেণীর স্ত্রীলোককৈ সম্বোধন করিতে প্রযুক্ত হইয়া থাকে। হ ওে শব্দের সমাধান করিতে না পারিয়াই বে, হ গুঃ শব্দ কল্লিভ হইয়াছে ইহা না বলিলেও চলে।

দে শব্দ পূর্বে আলোচনা করিরাছি। এই দে শব্দ আঘাষ হইলে টে হইরা বার, অর্থাৎ দকার হানে টকার হইরা পড়ে। বাঙ্লার বর্জনান, বীরভূম, মূর্শিদাবাদ, ও মালদহে এই টে শব্দ স্ত্রীলোকের সংবাধনে প্ররোগ করা হর; বেমন 'কি টে', 'ঝার টে', 'হা টে রামীর মা', ইত্যাদি। অসমীরাতে এই টে শব্দ হানে 'টি' দেখা বার।

স্বৰ্ণ যত্ত্ত

শ্ৰীমনোজ বস্থ

শ্বশান-কালীভলার এক সন্ধাসী আসিরাছেন। চেহারার বা জলুস,—সিদ্ধপুরুষ-টুরুষ না হটরা বার না। রাধাচরণ সিকলার মহাশর ভারেবেলা ষ্টেশনে নামিরা বাড়ি আসিডে-ছিলেন, তিনি স্বচক্ষে দেখিরা আসিরা বর্ণনা দিলেন। দেখিতে দেখিতে কালীভলার মাঠ মালুষের মাথার ছাইরা গেল। সন্ধাসী ধ্যানস্থ। পরনে রক্তবাস, সমস্ত কপালটা ভরিরা সিঁত্রমাখানো, কাচের কড় ও রুদ্রাক্ষের মালায় বুকের উপরে ভিল পরিমাণ জারগা নাই। ভক্তের দল জমারেভ হইরা বিপুল উৎসাহে আধ্যাত্মিক আলোচনা জুড়িরা দিল।

ধান আর উহার মধ্যে টিকিবে কতক্ষণ! সন্ন্যাসী চোখ মেলিলেন। অমরনাথ অমনি সকলের আগেভাগে গিন্না সাষ্টাব্দে লুটাইনা পড়িল। তার পর মাথা ভূলিন্না প্রাশ্ব করিল—ভৈলকক্ষ চেন, বাবাঠাকুর?

সকলে **হা-হা** করিয়া উঠিল—ও ফুকেলীর মা, পাগল ঠেকাও, পাগল ঠেকাও—

ভিড়ের মধ্য হইতে এক জন প্রোঢ়া-গোছের বিধবামান্ত্র ছুটিয়া গিরা পাগলের হাত ধরিলেন। কিন্তু অমরনাথ
শুনিবার পাত্রই নয়। বলিতে লাগিল—দোহাই সন্নাসীঠাকুর, জান ত ব'লে দাও—কোথার পাওয়া বায়। কালকেউটে রাভ-দিন ভার গোড়ায় পাহায়া দিয়ে বেড়ায়;
সে গাছের চারি দিকে ভেল চুঁইয়ে চুঁইয়ে দল-বিশ হাত
জায়গা ভিজে জবজবে•••

বঙাগোছের জন-হাই-ভিন উঠিরা ততক্ষণে বাড় ধাকা দিতে দিতে তাকে সীমামার বাছির করিরাছে।

সন্ধাসী হাত নাড়িরা নিবেধ করিতে লাগিলেন এবং কেবল অম্বরনাথ বলিরা নর, হাতজোড় করিরা স্কলকে উদ্দেশ করিরা বলিতে লাগিলেন—বাবা-সকল, মা-সকল, তোমরা বাড়ি-বরে বাও। আমি সামান্ত লোক, কিছু জানি নে। আজকে শনিবার, অমাবতা, রোহিণী নক্ষত্র— সমস্ত ত্থাসয়। একটা মস্ত কাজে বসেছি, ভোমরা বাধা দিও না।—

বিশিয়া নির্বিকার মনে আবার তিনি চোখ বুঞ্জিলেন।

অখখগাছের আবছারে একটি বছর-আটেকের ছেলে বসিরা বসিরা ঝিমাইতেছিল। ভিড় সরিরা গেল, আর সে-ও কোলের ঝুলিটা ঠক করিরা রাবিরা উঠিয়া দাঁড়াইল। মৃত্কঠে ডাকিল—বাবা!

কটমট করিয়া তাকাইয়া সন্ম্যাসী বলিলেন—ঠাকুর— ছেলেটিও সংশোধন করিয়া লইল—ঠাকুর!

— হাারে হাা, ঠাকুর—। সন্নাসী ফিস-ফিস করিরা তর্জন করিতে লাগিলেন—এক-শ বার ব'লে দিইছি না!… কিন্তু এখন আর কিছু কথা নয়। রাত জেগে বুম পার বদি, শিকড়ের ঐ ঐখানটার ঘুমিয়ে পড়।

পুনশ্চ ধাানস্থ হইবার আগে তীক্ষ দৃষ্টিতে একবার চারি দিক দেখিরা লইলেন। দেখিলেন, তথনও একটা লোক সাদা কাপড় মুড়ি দিরা নদীর কিনারা ঘেঁসিরা বসিরা আছে।

一(4;

ছেলে!

সংস্থাকে। কৃষ্টিত পদে ধীরে ধীরে আসিয়া সন্মাসীর পারের কাছে বসিল।

— এখনও বাড়ি বাও নি স্থকেশীর মা ?
কোমল কল্পার খরে স্থকেশীর মা কাঁদিয়া ফেলিলেন।
সন্ন্যাসী বলিতে লাগিলেন— বড্ড কট ভোর মা, প্রথম
দেখেই তা ব্রতে পেরেছিলাম। ঐ পাগল ব্রি ভোর

—ছেলে নর, জাম ই। ওাঁচল দিরা চোধ রগড়াইরা ফুকেশীর মা ভাল হইরা বসিলেন। বলিলেন—জামাই আমার মন্ত বিহান। ভাই দেখেই ফুকেশীকে ওর হাতে সঁপে াদ্ধ। কলেজে মন্ত চাকরি করত। তার পর কি হরে গেল। কত চেষ্টাই হচ্ছে, কিছুতে কিছু হয় না —

সন্ন্যাসী গম্ভীর মুথে ঘাড় নাড়িতে লাগিলেন।

—কি করব মা, আমার বে নিষেধ ররেছে। আমার হাত-পা বাধা। ঝাড়-কুঁক মস্তোর-তস্তোর—করিনি বে কথনও, তা নর—চের করেছি এককালে। কিন্তু ও-সব হ'ল সিদ্ধাই, নীচের থাকের জিনিয—

হকেশীর মা তথন একেবারে ত্ই পা জড়াইরা ধরিয়া মাথা কুটিতে লাগিলেন। তুমি মহাপুরুষ বাবা,—কিছু করতে হবে না, তথু ছখিনীর বাড়ি একটাবার পারের ধুলো দিও। ওতেই মলল হবে…

মাথা ছুলিরা মুখের দিকে চাহিরা সুকেশীর মা আবার বলিতে লাগিলেন—দরামর, দরা কি হবে? সে শুনব না; ঐ পাদপদ্ম ছেড়ে উঠব না আমি তবে। এই বে হাসছ, আমার দরাল। কথন যাবে? ছপুরবেলা? ঐথানে আক্রকে সেবা হবে।

হাসিমুখে সন্ধাসী বলিলেন—শুধু যাব আর চলে আসব। গৃহত্বের বাড়ি আমি সেবা নিই নে।

—কিন্তু আমার বাড়ি? সেখানে ত কোন অনাচার নেই।

সন্ধাসী বলিলেন—ভাই কি বলা যায়?

এক মুহুর্ব্তে স্থকেশীর মা'র চোখে যেন আগুন ফুটিরা উঠিব।

—বলা যার ঠাকুর, খুব বলা যায়। সমস্ত গ্রামের মানুষ বলবে। পঁচিল বছর বয়সে ছ-মাসের মেরে নিরে বিধবা হরেছি; সেও আজ বিশ-কুড়ি বছর হয়ে গেল। গ্রামহৃদ্ধ মানুষকে জিজ্ঞাসা ক'রে দেখ। স্বাই বলবে। তবু কিসে যে কি হচ্ছে—

একটু চুপ থাকিয়া আকৃল হইরা কাঁদিয়া উঠিলেন— ঠাকুর, হর আমার পাগল আমাই সেরে উঠুক, নর ত হুকেশী আমার পাগল হয়ে যাক। আমি বে চোথের সামনে আর দেখতে পার্কি নে।

ভথন বেশ বেলা হইরাছে। মাঠের মধ্যে রৌজের তেজ ধর হইরা উঠিরাছে। ওপারে কুকশিমার বিলে চাষীরা এক কোমর চাব করিয়া ছায়ার আসিয়া বসিল। मन्नाभी वनित्नन-मा, वाष्ट्रि वाष्टर

স্থকেশীর মা নিক্সন্তরে উঠিয়া অখন-তলায় চেলা-সন্ন্যাসীর হাত ধরিয়া তুলিলেন। বলিলেন—তুমি সেবা না নেও ঠাকুর, আমি এই গোপালকে নিম্নে চললাম। গোপাল আমার সেবা নেবে—

হাসিয়া কোমল কঠে সন্ন্যাসী কহিলেন—সেবা আমরা হুই জনেই নেব। তুই যে মহাজ্জে—তুই মুখ ভার করিদ নে মা। একটি মুঠো চাল রেখে দিবি, মাত্র এক মুষ্টি— ভার বেশী নয় কিন্ধ, ধবরদার। আমার একেবারে হাত-পাঃ বাধা, বড্ড কঠিন নিষেধ রয়েছে কি না ···

চাল ঐ এক মুঠাই, কিন্তু ডাব-কলা-আতা-আনারসে যথন একটা ঝুড়ি ছাপাইরা বিতীয় আর এক দফা বোধাই হইতে লাগিল ফুকেশী কোন্দিক হইতে দেখিয়া হাপাইতে হাপাইতে ছুটিয়া আসিল।

—রও, রও মা,—আমি একটা সাজাই; আমায় একটু পুণার ভাগ দেও। আজকে কয় নম্বর ?

মা আমতা-আমতা করিয়া জবাব দিলেন— ত্-জন মোটে। একটি ত একেবারে বাচা। কেমন ফুটকুটে স্থলর। বলিতে বলিতে চোখের কোণ চকচক করিয়া উঠিল, খার গাঢ় হইল, বলিতে লাগিলেন— তুই অমন মোটে দেখিদ নি স্কেশা। ঠিক খেন আমাদের গোপালের মত। আক্তকে তুই রাগ করতে পারবি নে মা আমার…

কিন্তু রাগ কোথার, অকন্সাৎ আর্ত্ত অসহায়ের মত হকেলী কাঁদিয়া উঠিল।—ও মা, মা গো, তুমিও আমায় ছাড়লে! এক কনে সন্ন্যাসী-সন্ন্যাসী ক'রে সর্কান্থ ভাসিরে। দেছে, আবার তুমি যদি ছেড়ে যাও, কার ছ্রোরে যাব। আমি?

—বালাই! ভোর কিসের অভাব মা?

ছেলে বরস হইতে নেরের দেশাকই দেখিরা আসিরাছেন, আজকাল সেই নেরে বধন-তধন এদনি কাঁদিরা ভাসাইরা থাকে। মা সকল আরোজন ফেলিরা স্কেশীর চোধের জল মুছাইতে লাগিলেন। বলিলেন—কেন মা, ভোর কিসের অভাব? আজকে সিদ্ধপুরুষ এক জন আস্কেন বাড়িছে—তোরই ভালর ক্লন্তে—

— নিদ্ধ কচু — বলিরা নারের হাত সরাইরা দিরা স্থকেশী
মুথের উপর আঁচল চাপিতে চ.পিতে ক্রভপদে চলিয়া
গোল।

অতিথিরা বধাসময়ে ধর্শন দিলেন। মা জল ও আসনের ব্যবস্থা করিয়া তাড়াতাড়ি উপরের ঘরে আসির! দেখেন, সুকেশী পরম নিরুদ্ধেগে চাদর মুড়ি দিয়া শুইয়া আছে।

- -প্রণাম করতে বাবি নে ?
- —মাথা ধরেছে।

মা একটু ইতপ্ততঃ করিয়া কহিলেন—সেই ছেলেটা এ:সছে—

হু --- বলিয়া সুকেশী পাশ ফিরিল।

—বভ্ড চমৎকার চেহারা কিন্তু।—মা বলিতে লাগিলেন—চুলগুলো ঠিক আমাদের গোপালের মত—

ধোকার কথা বলছ মা? সুকেশী উঠিয়া বসিল; চোধ তৃটা ধবক করিয়া জলিয়া উঠিল। বলিতে লাগিল—

ঐ গাঁজা-থেগো রোদ-পোড়া ছেলেটা আমার থোকা?
ছিছি, অমন কথা আর ব'লোনা। প্রথমে একবার দেখে এলাম; আবার ভাবলাম, মা কি একেবারে মিথ্যে বলেছে? আবার গেলাম। ফিরে এসে মন বোঝে না—

ফের আর একবার। অমন মিথ্যে ক'রে আমার লোভ দেখিও না মা, গোপাল আমার আর ফিরে আস্বে না—

মা চলিরা গেলেন। তার একটু পরেই অমরনাথ আসিরা হি হি করিরা হাসিরাই খুন। বলিল—মজা দেখে যাও গো, গলপুটে সাপ পাক হচ্ছে। অমার একটা পরসা দেবে?

—কি হবে ?

স্বরের অনুকৃতি করিয়া পাগল কছিল—কি হবে! দেখো বিকেল নাগাত। সাপের মুখের মধ্যে একভরি পারা। সেই পারায় ছুঁইয়ে ছেব, আর পরসা হরে যাবে সোনার মোহর। বিকেলবেলা দেখো।

খানীর মুখের বিকে তাকাইরা হঠাৎ হুকেনী সঞ্জল কঠে প্রশাসক্রিক-জালানের খোকা কোখার বল দিকি ?

—গোপাল চন্দোর বাবু? একগাল হাসিরা **অ**মরনাথ

বলিল—ঘুমুচছেন বৃঝি! কিন্তু ধৰরদার ওকে জাগিরে দিও না বেন। তা হ'লে আর ছাড়বে না।

সুকেশীর চোথে জল চকচক করিতেছে, তাহারই
মধ্যে হার্সিয়া আবদারের ভলিতে বলিল—না, ভাকব আমি।
ধোকা—ধোকা—

পাগল সভয়ে পিছাইয়া দরজা অবধি গেল। বলিল—
ওরে বাস্রে, তা হ'লে রক্ষে থাকবে না; কেঁদে-কেটে
এমন বায়না ধরবে…না না ্আমি চললাম। পরসাটা
দাও—

হুকেলী শুনিল না—ওরে থোকা,—মাণিক,—গোপাল!
পর্যা না লইরাই অতি বাস্তভাবে অমর পলাইরা গেল।
তথন নিঃখাস ফেলিয়া স্কেলী ভাবিতে লাগিল, বদি ইহা
হইত, ডাক শুনিরা থোকা তার এত কলে বদি ফাগিরা
উঠিত!কোল ভরিয়া বেন থোকা ঘুমাইরা ছিল, কভ দিন
কত বৎসরের পর জাগিয়া বিসিয়া এই ঘর বারাঙা সমস্ত
ছাপাইরা ছপুরের নিদাক্লণ শুক্কতা মথিত করিয়া কচি
অথচ স্চের মত তীক্ষ গলায় তেমনি করিয়া বদি খোকা
অকল্মাৎ কাঁদিয়া উঠিত—মা, মা, মাগো—তবে ওর ঘাইতে
হইত না আঁজ; আঙ্ল দিয়া সে থোকাকে দেখাইরা দিত—
ওরে থোকা, ধর ধর—ঐ দেখ, পালাচ্ছে…

ঘণ্টাখানেক পরের কথা। মা অগ্নিমূর্ব্ভিতে উপরে ছুটিয়া আসিলেন।—ওরে হারামজাদা মেয়ে, কি সর্বানাশ্র করেছিস্?

- **一**春?
- —জান না কিচ্ছু ? বিনিয়া তিনি সুকেশীকে এক রকফ টানিতে টানিতে নীচে নামাইয়া আনিলেন।

ঝুড়িভর্ত্তি অত যে ফল, প্রত্যেকটি রসগোলার মত করিরা কেরোসিনে চুবানো। ডাবের শোলেও জলের সচ্লে অর্জেকটা আন্দাক্ত কেরোসিন। সন্থাসী এক চোক মুখে লইরা তার পর থিল-খিল করিরা হাসিরা আকুল। ফকেশীকে দেখিরা বলিলেন—এই কেশীর কাও? আনার বড্ড মঞ্চা লাগে। এক বেটা কেশী ত নাকে বড়ি বিরে মাণানে-মশানে ঘুরিরে মারছে। ঘর-সংসার ছেড়ে ভারই খান্দার সম্ভ জীবনটা গেল—

मा विनिद्धान-भारत वत्।

অপ্রতিভ ভাব কাটিয়া স্থকেশীর মুখ ক্রমণ কঠিন ক্টরা আসিল। শুমু হট্যা সে গাঁড়াইয়া রহিল।

मा वनिरनन--- ५त् ।

—কেরোসিন দিইছি, বিষ দিই নি ত ? থর থর করিরা ওঠ কাঁপিয়া ছ-ফোঁটা হল ফুকেনীর গাল বহিয়া পড়িল। বলিল—গোপালের নাম ক'রে কেন তুমি ঠকালে মা, তিন-তিনবার আদি এসেছি তাকে দেখতে। একবার কিরে বাই আবার আসি। সাধু-সন্ন্যাসীরা কত অসাধ্য সাধ্য করেন, ভনতে পাই। তোমার ঐ সিদ্ধপুক্ষ একটা বার এক পলক তাকে দেখিয়ে দিলে ত পারতেন।

সন্ধানীর হাসি উত্তরোত্তর বাডিয়াই চলিল।

নাৰ কিছ অত রাগে একেবারে জল পড়িরা গেল। সহসা কথা স্টিল না, তার পর বলিলেন—কিছ ঐটুকু ঐ ছোট ক্ষেত্রে ক্লেনা থেরে থাকল তা-ও একবার ভেবে দেখলি নে, সাঁচ মেরেমাসুষ হরে এনন নির্ভূর তুই কি ক'রে হলি। ও বলি ভোর ছেলে হ'ত ?

স্কেনী বোমার মত কাটিয়া পড়িল।—আমার মরা ছেলের কথা বার-বার ভূলো না বল্ছি, আমি একুনি এক্টিকে চলে বাব—

মা তথন কাঁদিতে কাঁদিতে সন্ন্যাসীর পারে আছড়াইরা পড়িলেন—ভূমি অভিশাপ দিও না ঠাকুর। মেরে আমার শোকে তাপে পাথর হরে গেছে। ওর মাধার ঠিক নেই।

একটি ছইটি করিয়া বারাপ্তায় তথন ভিড় জমিয়া গিয়াছে। পাড়ায় আর একটি মেরেলোক নাই। সন্ন্যাসী চেলার হাত ধরিয়া উঠিয়া গাড়াইলেন।

হুকেশীর মা পথ আটকাইরা গাঁড়াইলেন।—সে হবে না বাবা। আমি একদণ্ডের মধ্যে সমস্ত আবার কোগাড় ক'রে আনছি। সেবা না হ'লে বেডে দেব না, খুন হরে মরব। —এ ত হ'ল রে—ভার পর হাসিরা ফেলিরা সন্নাসী

বিশিষ্টে কালিলেন—রাগ করি নি মা। বেদিন ঘরসংসার হৈড়েছি, ঐ আপদশুলোও সেনিন সলে সলে ছেড়ে এসেছি। আছা, ঐক কাল করা বাক্ বরং। আলকে দিনটা ভাল, বাবার সময় ভাড়াভাড়ি একটু হোম ক'রে দিয়ে বাই—

সুকেশীর মা কছিকো—বেশ, ভভক্তে আমি ওদিকে

বা হয় গুছিয়ে কেলি, কিন্তু রাজেও এবানে ফিরে স্থাসতে হবে---

—সে হবে, হবে। মা-সকল, তাড়াতাড়ি আরোজন ক'রে দাও ত। এই—সামান্ত একটু মি, ত্-চার খান কাঠ···যা যা লাগে। আমার সময় বেলী নেই। খুব তাড়াতাড়ি।

মা গেলেন সেবার জোগাড় দেখিতে, এদিকে ছুটাছুটি করিয়া হোমকাঠের ব্যবস্থা হইল; কুলা-ভর্তি অপরাপর জিনিব আদিল। তার এক কোণে একটা দেশলাই। সেটা হাতে তুলিয়া হাসিতে হাসিতে সন্ন্যাসী বলিলেন—বিলাভী আন্তন। কি হবে এতে?

খাঁটি খদেশী আগুন আবার মিলিবে কোথার? সকলে
মুখ চাওয়া-চাওয়ি করিতে লাগিল। দেশলাই ছুঁড়িয়া
ফেলিয়া সন্ন্যাসী বলিলেন—এ অগুচি। এতে কাজ হবে
না। আমার কাছে এ-সবের ব্যাভার নেই—

হকেশী নিস্পৃহভাবে একদিকে দাঁড়াইয়া ছিল, ব্যঙ্গের হুরে প্রশ্ন করিল—ভবে?

সন্ন্যাসী বলিলেন—দেখতে পাবে মা-লন্ধি, আগে একটু ধুনো আর নারকেলের খোলা আন দিকি।

মুখের কথা মুখে থাকিতে সমস্ত আসিরা পড়িল।
কৌতৃহলে এতগুলি লোকের নিঃখাস পড়ে কি না-পড়ে। এক
কন ফিস ফিস করিয়া বলিল—মণ্ডোরে আগুন হবে বৃধি—

তাচ্ছিল্যের ভাবে সুকেশী বলিল—ছাই—

সন্নাসী মুথ তুলিরা আবার হাসিরা উঠিয়া নিরুত্তরে তোড়জোড় করিরা বসিংলন। ধুনা, নারিকেলের খোসা হাড়ির খোলে রাথিয়া মন্ত্র আরম্ভ হইল। প্রথমটা খীরে খীরে, ক্রমে বেগ বাড়িল, শেবে আর মন্ত্র পড়া নর—কথাগুলি মুখের উপর ধেন টগবগ করিয়া মুটিতে লাগিল। মধ্যে মা-চণ্ডীর দোহাই—সে দোহাই আকাশ ফুঁডিয়া মা-চণ্ডীর দেশে পৌছিবার মতই বটে। কোলের ছেলে সব আঁৎকাইয়া কাঁদিয়া ওঠে, মাহরয়া হাড চাপা দিয়া কালা ঠেকাইবার চেটা করেন—ওরে, চুপ—চুপ! কিছ তা বলিয়া সাধ্য কি, কেহ এক পা নজিয়া লাড়াইবে। চোখ ছ'টা লাল হইয়া উঠিয়াছে, ক্লেল কলে হুলাই দিয়া সন্নালী ভাকিতেছেল—বোহাই মা-চণ্ডী বোহাই মা—

स्रक्नी विश्वनी काविन-कहे रह ठाकूत!

সন্ধাসী ঋষাৰ না দিরা হাড়ির মধ্যে হাড চুকাইরা বন-বন করিরা পাক দিলেন। তার পর প্রবশতম আরও ত্-তিনটা দোহাই পাড়িরা একেবারে স্থির অচঞ্চল। বেন পাথরের মুর্ম্মি।

আর সঙ্গে সঙ্গে এদিকে বহু কণ্ঠের কোলাহল।

মাস্থবের ভিড়ে তথন আর তিলধারণের জায়গা নাই;

যারা পিছনে ছিল, হড়মুড় করিয়া আগের লোকের ঘাড়ে
আসিয়া পড়িল। সতাই হাড়ির মধ্যে মৃহ ধেঁায়া দেখা

দিয়াছে। কেবল যে সতাযুগেই মুখের কথায় আগুন জলিত,
তাহা নয় তাহা হইলে। ধেঁায়া ক্রমশং খন হইয়া কুগুলী
পাকাইয়া উঠিতে লাগিল। হঠাৎ কি হইল—কি হইল—
বলিতে না বলিতে সুকেনীর মা দড়াম্ করিয়া একেবারে
বাবা-ঠাকুরের পারের উপর।

সমাধি অন্তে সরাসী ঠাকুর মৃত্কঠে মা-মা-মা করিতে লাগিলেন। একটু একটু করিয়া আবার সহক্ষ মামূষ। হাড়িতে আগুন গন-গন করিতেছে। সরাসী চারিদিকে একবার সগর্ম দৃষ্টি বুলাইরা লইংলন; একটা যুদ্ধ জর হইরাছে, এমনি গোছের একটু হাসি মুশের উপর।

স্কেশীর মা ভবনও পড়িরা; বেন তার সন্ধিং নাই।
মাধার মৃত্র মৃত্র করাবাত করিরা সন্ধাসী বলিলেন—ওঠ্
বেদী, ওঠ্
একবিন্দু একট্ ছিটেফোঁটা—এতেই
অবাক হোন্—আর সে রম্বাকরের বে তল নেই। কত
মণিমাণিক্য হাল্ব-কুমীর তার কোলে পাশাপাশি রয়েছে,
কিছু তার অবধি আছে?…

এবারে হোদ আরম্ভ হইল। সে-ও নিভান্ত সহজে সমাধা হইল না। বেলা একেবারে ড্ৰিলা সেল। যাবার মুখে স্কেশীর মা প্রশ্ত মনে করাইলা বিলেন—বাধা, আসবে ভ রাজিরে?

· ---

— তুৰি ঐ হোৰের ফোঁটা দেও একটা ফুকেশীর কণালে; একটু মাধার হাত রেধে ওকে আশীর্কাদ করে বাও। আর হত্তাগী—

কিন্ত কোথার সে! কথন বে সরিয়া পড়িরাছে। মা
চীৎকার শব্দে ডাকিয়া বেড়াইডে সন্মিলেন—ছংকেশী,
ফ্রেন্সা!

স্থকেশী এদিকে একেবারে চিলে-কোঠার। সে অনেককণ পলাইরা আসিরাছে, সন্থাসী মন্ত্রকলে বধন আগুন আলাইরা সকলের তাক লাগাইরা দিরাছেন ঠিক-সেই সমর। একা নহে—আসিবার সমর ছেখে, রোরাকের উপর বাচ্চা সন্ত্রাসীটি ককণ গুৰু মুখে বসিরা আছে—ইলারা করিরা ডাকিতেই ছেলেটি দালানের মধ্যে কাছে—আসিরা ইণ্ডাইল।

—कि (গা খোকা-ঠাকুর, ভোগে মুৎ হয় नि ?

মারিরা ফেলিয়াও আবার মড়ার উপর থাঁড়া চালার, ইহার কথার জবাব কি? ছেলেটি চোথ হ'ট ভূলিরা. কাঁদ-কাঁদ ভাবে হুকেনীর মু:ধর দিকে ভাকাইল।

এবার নরম স্থার স্কেশী প্রশ্ন করিল—বিদে পেরেছে ?

- 一切—
- —তুই গাঁজা বাস ?

হাত-মুধ নাড়িয়া তাড়াতাড়ি ছেলেট সাফাই দিলা উঠিল-না-না মা, কক্ষনো না···

— মা বললে আমি ভিজি নে, আমার মায়ামরা নেই—
ক্লক ভর্পনার কঠে স্কেশী বলিতে লাগিল—কে শিধিরে
দিরেছে, বল শীগ্গির। ও ভোলের ব্যবসাদারী ভাক—
দশ হরোরে মেঙে থাস ঐ ব'লে ডেকে,—না ?

আবার নৃতন করিয়া রাগের পাত্র হইরা ছেলেট ঠকঠক করিয়া কাঁপিতে লাগিল। করেক মৃত্র্ত স্ক্রেণী
ন্তর্ক হইরা তার দিকে চাহিরা চাহিরা হঠাৎ হিড়হিড়
করিয়া হাত ধরিরা টানিয়া রায়াবরে পিড়ির উপর তাকে
বসাইরা দিল। তার পর নিজের হাতে তাত বাড়িয়া দিয়া
বিশিক্ষ—থা।

বেই সাত্র বলা অসনি আরম্ভ। আর থাওয়া ত নার,
টপটপ করিয়া কোনগতিকে গোগ্রাসে গিলিয়া ফেলা।
বেন কে আসিয়া কাড়িয়া লইয়া ঘাইবে, ভার আগে
বভটা বোঝাই করিয়া লওয়া বার। চুপ করিয়া করিয়া
ফ্রেনী ক্ষিত বালকের থাওয়া দেখিতে লাগিল। হঠাহ
চোথে জল আসিয়া পড়িল। আঁচল দিয়া মুছিয়া প্রামা
করিল—নাম কি ভোর ?

- -राज्य।
- —या (वैरह ति है ?

রতন খাড় নাড়িয়া সকেতে স্থানাইল—নাই। হাত ও মুধ সমানে চলিয়াছে, বারংবার অভ কথা বলিবার ফুরসং কোথায়?

--ৰাবা ?

ক্ত একটা গ্রাস কোঁৎ করিরা গিলিরা ছেলেটি জ্ববাব বিল--ক'উ---উ---

—ভবে এই চুলোয় শরতে এনেছিল কেন?

ইহার সহত্তর দেওরা কৃঠিন। অস্ততঃ হ'-হা করিয়া ছ-এক কথার দিবার নয়। সভয়ে রতন মুখ জুলিল। এই অপারাধে পুনশ্চ কেরোসিন-ভোগের বাবস্থা না হইয়া বায়।

হুকেশী বলিশ— এই চেলাগিরি এখন থেকে ছেড়ে দিবি, বুষলি ?

যাক্-রক্ষা! রতন নিংখাস ফেলিয়া বাচিল; ঘাড় নাজিয়া তৎক্ষণাৎ স্বীকার করিল।

- —ঠিক ত! না মিথো বলছি**ন** ?
- হাা—বিশিয়া রতন আবার সজোরে ঘাড় নাড়িল।
 ঠিক এমনি সময়ে চটি ফট ফট করিতে করিতে অর্মরনাথ।
 খরে আছ, ও সুকেনী?
- এস, এস ছুটিরা সে আগাইরা গেল। বলিল—
 এই তিন পছর বেলার মাধার এক ফোঁটা ভেল রূল
 পড়েনি বে হার আমার কপাল! একটু ভেল মাধিরে
 এক ঘটি জল চেলে দিয়ে ভাল ক'রে মুছে-টুছে দিই
 আমি লানিটি, দেব ?

অধীর উত্যক্ত কঠে অমরনাথ বলিল—না, না, না,—
সমর কোধার? পাক শেব হয়েছে, হাড়ি নামিরেছি, কিন্তু
পারদভক্ষ খুঁজে পাচিছ নে। তাড়াতাড়ি একখানা আসন
বিছাইরা বসিরা বলিল—চট ক'রে দাও ত চারটি। বড়ড থিলে পেরেছে।

আঁচল দিরা মুখ মুছাইরা স্বামীকে ধাইতে বসাইরা স্বকেশী বাডাস করিতে লাগিল। ছ-এক বার মুখে দিরাই হুঠাৎ অমরনাথ চিস্তিত মুখে খাওরা বন্ধ করিল।

মুকেশী বলিল-কি?

জবাব নাই, সে যেন অন্ত এক জগতে।

স্থকেশী ব্যাকুল কণ্ঠে কহিল—ওগো, কি হ'ল বলবে না আষার? ক্ষরনাথ বার-করেক কাপন মনে মাধা নাজিল। কহিল—পারা পাওরা বাচেছ না, তাই ভাবছি— …গাঁপের ইাড়ার বনি লেগে থাকে। হ —ভাই-ই।

ভাত ফেলিরাই সে উঠিল। স্থকেশী খপ করিয়া হাত ধরিয়া বলিল—সাপ নিয়ে খাঁটাব াট করতে আমি দেব না ভোমায়—

— দেদ্ধ-করা নরা সাপ থে। হা-হা করিয়া অমরনাথ হাসিতে লাগিল। বলিল— জান্ত যথন ছিল তথনই ছিল ভয়। তথন কি আর টের পেরেছ? কিন্তু এত পারা দিলাম, এক কোঁটাও ত পাইনে—

এক মুহূর্ত্ত চুপ থাকিয়া দৃঢ়কণ্ঠে আবার কহিতে লাগিল—শোন ফুকেনা, ত্বএক আনীও বদি পাই খুঁজে, একটু ক'রে লাগাব প্রদার গারে, আর প্রদা হয়ে যাবে ধকঝকে মোহর। কষ্টিপাথরে থযে দেখবে, একেবারে পালা সোনা। তত্ত্বের কথা—তোমার আমার নয়—। হাত ছেড়ে দাও, আমি যাই—

বার-করেক টানাটানি করির।ও হাত ছাড়াইতে পারিল না। হঠাৎ পাগল সুকেশীর চোখাচোধি হইরা টিপিটিপি হাসিতে লাগিল। বলিল—সুকেশী, দেখনহাসি, এ কাঞ্ডধানা কি বল দিকি।

—মনে আছে ? মনে পড়ল নাকি ? আনন্দে সুকেশীর মুখ অলজন করিছে লাগিল। বলিল—কড দিন অমন ক'রে আমার ডাক নি বল ড ? আর সেই যে কি ছাইভন্ম ব'লে ঠাটা করছে…

—বলব ? দেখবে, বলব ? কৌতুকদীপ্ত চোথে সুৰ্থ ঘুৱাইয়া সেই কতকুলি আগের মত অমরনাথ হয়ে ধরিল— উত্তৰেনী, দেখনহাসি,—ভালো-ও-বাসি-ই-ই মোটি

মুথ ফিরাইরা হঠাৎ ছি: ছি: করিরা সে থামিরা গেল। জিব কাটিরা বলিল—সর্কনাশ! ছেলের সামলে—

রতন তথন থাওরা ফেলিরা উঠিরা দাঁড়াইরাছে। পাগলে ভাহার বড় ভর।. এমন-ডেমন দেখিলে পিছনের দরভার চম্পট দিবে এই মডলব। স্থকেশীরও তার কথা মনে ছিল না।. অঞাভিত মুখে তাড়াভাড়ি সে খানীর হাত ছাড়িরা বাড়াইল।

অবরনাথ বলিতে লাগিল—বেশ ভুনি বা হোক।

সোপাল চলেদ্ম ৰাবু ওমিকে পিটপিট ক'রে তাকিরে ররেছেন আর তুমি তার সামনে অবিছে বলিতে মুখ-চোখের তাব কেমন এক অভুত ধরণের হইরা উঠিল। ব্যাকুল হাই বাছ প্রসারিত করিয়া সে রতনের দিকে ছুটিল—

— এস, এস, — মাণিক এস, সোনামণি এস। ভর কিরে পাগলা ৈ সোনার লাটিম গড়িয়ে দেব, সোনার বাটের ছাতি—। রতন ততক্ষণ এক ছুটে একেবারে ঘরের বাহিব।

অমরনাথ ধপ করিয়া আসনের উপর বসিয়া পড়িয়া হতাশ কঠে হুকেশীর দিকে চাহিয়া বলিশ—এল না।

ু ক্রেনী বলিল:—আর আসবে না। পালিয়ে গেছে।
—কোথায় গেল ?

অক্সৰ কঠে সুকেনী বলিতে লাগিল—অনেক, অনেক দুর। কত দেশ-বিদেশ ছাড়িয়ে বাতাসে মিশে সে চলে গেল, আর আসবে না।

___(कन ?

— তুমি তাকে ভালবাস না।— তুমি কেবল সোনা সোনা ক'রে বেড়াচ্ছ, ভার দিকে ফিরেও চাইতে না। ভাই সে রাগ ক'রে গেছে। আর আসবে না।— অঞ্চ ঝর ঝর করিয়া হকেশীর গাল বাছিয়া বরিতে লাগিল। বলিতে লাগিল—সে নেই, সে আর আসবে না। তুমিও ভূলে গেছ। একা আমি থাকি কাকে নিয়ে?

ক্ষা আলে না-ই এল । বঁরে গেছে। হা-হা করিরা উন্নাদ হাসির স্রোতে অমরনাথ বর ফটোইতে লাগিল । স্বলিন্ধ—হাৰ কিসের স্কেনী? থোকা গেছে, ভোমার আমি নোনার থোকা গড়ে দেব—একেবারে শালা সোনা, কটিতে ক'ষে দেখো—

টলিতে টলিতে পাগল বাহির হইয়া গেল।

হকেশী তথন রতনকে খুঁজিরা আনিরা একেবারে চিলেকোঠার গিরা দোর দিল। বাক্স খুলিরা খোকার পোবাকের বোঝা টানিরা আনিল। তিন বৎসর আগে খোকা গিরাছে, ভিন বৎসর ধরিরা সমস্ত পাটে পাটে সাজাইরা রাখা—সে লামা রভনের গারে কুলার না, তব্ টানিরা ছিঁছিরা হকেশী অধীর আগ্রেছে সমস্ত পরাইতে পাগিল। বিলিল—সব

তোর—সমন্ত। আরও কভ দেব। ভূই এখানে থাকবি— ব্যবি ?

व्रष्टन विनन-शा

—সন্ন্যাসীরা সব ঠক জোচ্চোর। ভাল মামুষকে পাগল ক'রে দেয়—ওদের পিছনে ঘুরে মামুষ ঘর-সংসার উচ্ছন্ন ক'রে দেয়। ওদের সংল ধাবি নে —বুঝলি ?

রতন বলিল—হ্যা।

এমনি সময়ে—হুকেশী! সুকেশী!

উপর-নীচে মা চীৎকার শব্দে ডাকিরা বেড়াইতেছেন।
পোষাক খুলিতে রতনের মন সরে না। হাসিরা
ফুকেশী বলিল—কি পাগল তুই! এ গারে লাগে নি—
সবাই যে হাসবে। আমি তোমাকে নতুন নতুন কত
পোষাক কিনে দেব, বাবা। এ-ও থাকবে। চল, নীচে
ঘাই।

সন্ত্রাসী তীক্ষ চোখে একবার ছ-জনের দিকে চাহিলেন, তার পর রতনকে প্রশ্ন করিলেন—কোধার ছিলি রে বেটা ?

—মার কাছে।

সে স্থকেশীকে দেখাইয়া দিল।

"সন্ন্যাসী হাসিমা বলিতে লাগিলেন—তা ব্ৰেছি। অন্নপূৰ্ণার ভাণ্ডার উজাড় করছিলে। কম পেটুক ভূমি! কিন্তু এদিকের সে সব—

- সমস্ত ঠিক আছে ঠাকুর ?
- ---উদ্ভরসাধক ?

র**তন বলিল—হ**ঁ।

—শব ? করোট ? কারণবারি ?

রতন ব**লিল**—সমস্ত জোগাড় আছে, উ**ন্তরসা**ধক সে সব সঙ্গে ক'রে নিয়ে আসবেন।

সন্ন্যাসী নিশ্চিন্ত হইরা নিঃখাস ফেলিলেন। উঠিরা দাঁড়াইরা বলিলেন—আর বেলা নেই—চলু বেটা।… কিন্তু মারেরা এদিকে কি মুস্কিলে ফেলেছেন দেখু। আমি বলছি, এ সমস্ত কি হবে—

- সামনে নৈবেদ্যের মত করিয়া সাক্ষানো ধান-পঞ্চান্দেক সিধা—বারকোশের উপর চাল ডাল ভরকারী ছু-একটা প্রসা — ঠিক বেমনটি হইতে হয়। পাড়ার গৃছিণীরা সমস্ত সাজাইরা গুছাইরা চারি পাশে বিরিয়া দাঁড়াইরাছেন।

সন্ধাসী বলিতে লাগিলেন—এ সবে কি দরকার, মা-সকল ? আজ বে বেলা নেই,—নইলে মার ক্লপায় একদানা চাল না রেঁবে ভোমাদের এই করজনকে ভর পেট প্রসাদ পাইরে দেওরা বায়—

বলিতে বলিতে আড়চোথে একবার ফুকেশীর দিকে চাহিলেন; সে-মুখে ব্যঙ্গের হাসি নাই—প্রত্যর বা অপ্রত্যর কোন ছবিই ফুটে নাই।

সন্ধানী কাশিরা লইরা বলিতে লাগিলেন—খবরের কাগজ পড় না মারেরা? সেই সেবার রাজশাহীতে থড়ম-পারে পত্মা পার হওয়া—লাটসাহেব কাগজে ভূলে দিয়েছিল—হাজার দশ হাজার মানুষ, জজ, ম্যাজিট্রেট, বড় দারোগা, নৌকো, দীমার সব কাতার দিয়ে দাঁড়িয়ে।—ভাই বলি
মা-সকল, ও-সব আমি নেব না—ভোমরা বাড়ি চলে যাও।

কিন্তু ইতিমধ্যে রতন হাত পাতিরাছে, মারেরা সিধার পরসাগুলি তুলিয়া তুলিয়া দিতেছেন। দেখিতে পাইয়া সন্মানী চোক পাকাইয়া বলিলেন—কি হচ্ছে ?

রতন আবদার ধরিল—আমি পয়সা নেব ঠাকুর।

—নেও বাবা, তাই নেও। বে-কজন বাকী ছিল, তাড়াতাড়ি তাহারাও রতনের হাতের মধ্যে পরসা ভ'জিয়া দিল।

সন্ত্যাসী গর্জন করিয়া উঠিলেন—লোভী, অর্কাচীন,—
কিন্তু তিরস্কারে শিশু বাগ মানে না; তেমনি দাঁড়াইয়া
দাঁড়াইয়া একবার সন্ত্যাসীর দিকে চায়, একবার আর
সকলের দিকে।

সন্ধ্যাসী বলিলেন—ওরে বেহারা, সেদিন অমনি হাত পাতলি—ত্র-হাত ভর্জি ক'রে দিলাম না ?

রতন ব**লিল** —সে তো সোনার পরসা ঠাকুর, এ রকম পরসা আমার একটাও নেই—

রাগ ভূলিরা সন্ধাসী অকন্মাৎ হো হো করিরা হাসিরা উঠিলেন-বিলস কি হতভাগা! চণ্ডীর কাছে তামার পরসা চাইতে বাব? লজা করে না আমার? সেই-সেই আদারই বদি করতে হর-ত্রেক সোনা- ---সন্ন্যাসী-ঠাকুর, সোনা করতে পার তুমি ?

হঠাৎ দে এক বিপর্যার কাশু। কখন যে ইহার মধ্যে অমরনাথ আসিরা দাঁড়াইরাছে কেহ তাহা দেখে নাই। হঠাৎ সে তীত্র আনন্দে চীৎকার করিরা উঠিল, মুখে হাসির বিছাৎ জলিতেছে, মেরেদের ঠেলিরা সরাইরা সে আগাইতেছে আর বলিতেছে—সোনা করতে জ্ঞান তুমি? ঠিক তুমি তৈলকন্দের গাছ চিনেছ তা হ'লে। সাপের মুথে পারাজন্ম হর না—সমন্ত ধাপ্পা—আমি মিছে থেটে মরেছি—

এত কথার একটিও ধেন কানে যার নাই এমনি ভাবে ধীরে সুস্থে আপন মনে সন্ধাদী রতনের হাত ধরিয়া চলিলেন। একবার বেলার দিকে চাহিয়া বলিলেন— একদম সন্ধ্যে হয়ে গেছে রে—চল্, চল্—

পিছন হইতে স্কেশীর মা ডাকিলেন—আসবে ত ঠাকুর ?
—আসব। বড় শক্ত বাঁধনে বেঁধেছিল্! ভক্তির
বাঁধন। বলিরা মুথ ফিরাইরা একটু হাসিরা ধীরে ধীরে
তিনি অদুশ্র হইলেন।

মাঠ ছাড়াইয়া গ্রাম ছাড়াইয়া নির্ক্তন নদীকৃলে গিয়া রতন ডাকিল—বাবা!

— চুপ! চুপ!—চারিদিকে ভাকাইরা সর্র্যাসী বলিলেন—বল্, ঠাকুর। মাসুষ নেই,—তাতে কি? ও অভ্যেসটাই খারাপ। কোন্ দিন মাসুষের মধ্যে ডেকে বসবি।

রতন করণ কঠে বলিল—না, তা ডাকব না, আজকে একটু ডাকি। উপরে নিরে গিরে আমার আজ কত জিল্লাসাবাদ করলে, বলে—তোর বাবা কোধার থাকে? আমি বললাম—কোথায় কে জানে?

—বেশ, বেশ ! সন্ন্যাসী খুব বাহবা দিরা বলিয়া উঠিলেন— .
আজকে সমন্ত ঠিকঠাক হরেচে, একটাও ভূল হরনি। তবু
কাজ কি, তুই ঠাকুর বলেই ডাকিস্।

নিঃশব্দে কয়েক পা গিরা আবার সন্থাসী কথা বলিলেন।
--এত লোকে বাবা বলছে, আর তুই বললেই বে সর্থনাশ
হর, তা নর। কিছু ভোর ডাকটা বে অস্ত এক রকম—
আমারই গোলমাল লেগে বার। ঐ চেলা আছিস বেশ

আছিল-এ-ই ভাল ৷ কি জানি, কে কি ভারবে- যে দিনকাল হরেছে···

বৈচিকন, বাশ, সারি সারি গোটা তিন-চার ছাতিম গাছ। সেইখানে জলতের মধ্যে বাপ ও ছেলে চুরি করিয়া বসিয়া রহিল।

সেদিনের সেই অমাবস্থার অন্ধকার রাত্রে আকাশ ভরিয়া মেঘ করিয়া আছে, একবিন্দু বাতাস নাই, গাছের পাতাটি নড়ে না। স্থকেশা ঘুমাইতেছিল, ঘুমের মধ্যে শুনিতে লাগিল গুন-শুন করিয়া গান হুইতেছে—

ও হকেনী দেখনহাসি,—ভাল-ও-বাসি-ই-ইগো—
মাথা হইতে পা পর্যান্ত তার থর-থর করিয়া কাঁপিতে লাগিল।
চোথ বন্ধ আছে, কিন্তু সে দেখিল, অস্পন্ত ছায়ার মত এক-থানা মুথ—সে মুখ ছলিতে ছলিতে কাছে—খুব কাছে—তার চোথ ছটির চুল-পরিমাণ ব্যবধানে এক-একবার আসিয়া দাঁড়ার—আবার ভাসিয়া চলিয়া যায়। ঘুম ভাঙিয়া কতবার হুকেনী উঠিয়া বসে—তথন আর মুখথানি নাই, গানের গুঞ্জন নাই, কিছু নাই—নীরদ্ধ অন্ধকার, শুন্ত বিছানা।
চোথ বৃজ্জিতেই সজে-সঙ্গেই আবার—ও সুকেনী ও সুকেনী।
মনে হইতে লাগিল, যেন এই রাত্রে জানালা দিয়া কত জ্যোৎমা আর কত বক্লমুল তার বিছানায় আসিয়া পজ্যাছে!

খ্ব ভোরবেলা, অল্প অল্প অন্ধকার আছে, কেছ কোন দিকে জাগে নাই। সন্ন্যাসী কেবল খট করিলা বৈঠকখানার দরজা খ্লিলেন, অমনি স্থকেনা স্বপ্নমূর্ত্তির মত সামনে একেবারে মুখোমুধি ইাড়াইল।

—সন্মাসী-ঠাকুর, শ্বশানে-মশানে ছোট ছেলে নিয়ে ব্যতে আছে—আর জমন রাজিবেলা ?

সন্মাসী অবাক হইয়া চাহিলেন।

ত্বকেশী বশিশ—রতন তোমার সঙ্গে আর কোথাও গাবে না। ও এখানে থাকবে।

─(कब ?

—ও আমার ছেলে।

पाफ नाफिश महाजी दनिस्तन-स्वी हिका अरक

গ্রহণ করেছেন। ওর ক্ষমের রাশি-নক্ষত্র বড় চমৎকার। ওকে ভূমি পাবে না মা।

ক্ষণকাল চুপ থাকিরা হুকেশী প্রশ্ন করিল—পাব না ?

দূচ্কঠে সন্ন্যাসী বলিলেন—ন । কোন আশা নেই।
আমার চিরজীবনের সমস্ত সাংনা ওর উপর নিরোগ
করেছি। ঐ ছোট ছেলে দেখছ—কিন্তু ও ক্ষণজন্মা,
অন্তুত!

শ্বিরদৃষ্টিতে চাহিয়া চাহিয় হঠাৎ মশ্মভেদী আকুল কণ্ঠে সুকেনী বলিয়া উঠিল—তবে আমার গোপালকে এনে দাও।

महाामी विनदन-व'रमा जूमि मा।

রোয়াকের চাতালে সন্ধাসী বসিলেন, নীচে স্থকেশী। ভোরের স্লিগ্ধ শীতল হাওয়া বহিতে লাগিল; মেঘ আর বড়বেশী নাই, প্রায় স্বচ্ছ হইয়া আসিয়াছে।

সন্ন্যাসী প্রশ্ন করিলেন—গোপাল—তোমার থোকা?

মান ছলছল চোধে স্থকেশী বলিল—শন্তুর। জিন বছর আগে চলে গেছে। সে-ও গেল,—উনিও ছরছাড়া। তারপর এই দশা। এক সম্মাসী এসে সোনা-তৈরির ধেরাল ধরিয়ে দিল, এখন রাত-দিন কেবল বনে-জন্মলে— আর সম্মাসী দেখলেই তার পেছনে পেছনে ছুটে বেড়ান। সে ধাকলে উনি কি অমনি ক'রে সর্বস্থ ভাগিয়ে দিভে পারতেন ১

স্থকেশী আঁচলে মুখ ঢাকিল। নিংখাস ফেলিরা সন্ধ্যাসী উঠিয়া দাঁড়াইলেন। বলিলেন—মৃত্যু অমোঘ, ওর হাত থেকে ত্রাণ নেই। কেউ তোমার ছেলেকে ফিরিয়ে দিতে পারবে না মা—

—তবে আমার স্বামীকে ফিরিরে দাও। স্থকেশী কাঁদিয়া বিদ্যালন বিদ্যালন ক্রিয়ালী-ঠাকুর, উনি ত বেঁচে আছেন, আবার ওঁকে আগেকার মত ক'রে দাও—

হুতীক্ষ দৃষ্টিতে চাহিয়া সন্ন্যাসী বলিলেন—আমানের শক্তিতে বিশ্বাস আছে তোমার ?

স্থকেশী বলিল—না। কিন্তু বিশ্বাস আমি করব। তা ছাড়া উপার যে নেই। আমার কেউ নেই, একলা আমি থাকি কি ক'রে?

গর্কিতা নারী কারার ভারে আবার ভাঙিরা পড়িল।

সন্থাসী ধীর পারে মাঠের মধ্য দিয়া চলিলেন।
আনেক দূর অবধি গেলেন, আবার ফিরিলেন। এমনি
কতক্ষণ পার্চারি করিয়া ফিরিয়া আসিরা আবার যথান্থানে
বসিলেন। বলিলেন—তোর ছেলের গারের সোনার
গরনা চাই একটা কিছু—

—কেন ?

—ভেঙে ফেলব।

হুকেশী সপ্রশ্ন দৃষ্টিতে চাহিরা রহিল। সন্ন্যাসী বলিতে লাগিলেন—শোন্ তবে। বড়রিপুর কাম প্রথম, ক্রোধ বিতীয়, লোভ ভূতীয়, আর মোহ হ'লগে চতুর্থ। তোর সামীর সস্তান-মোহ বড় প্রবল ছিল। তাকে বড্ড বেশী ভালবাসতেন। নর ?

সুকেশী মাথা নাড়িল--ঠিক।

—সেই মোহ এখন তৃতীয়ে পৌচেছে—লোভ, খর্গ-লোভ। এ কিছু অঙ্কৃত বাাপার নয়। ঈড়া আর সূর্য়ার উপরে চৌম্বক প্রক্রিয়ায় বহির্ভেদ হয়েছে। এখন বিষম্ভ বিষমৌবধন্। সেই যে সপ্তান-মোহ তারই অভিজ্ঞানস্কর্ম তোর ছেলের গায়ের সোনা দিয়ে খামীর ঐ ভয়ানক
মর্গলোভের প্রতিক্রিয়া হবে। বুঝতে পার্লি কিছু?

क्रकनी वनिन-किन्तु ना

শন্তাসী মৃত্ হাসিরা বলিলেন—আশ্চর্যা নয়। এ-সব শুহাৎ গুহুতর। কেবল ঐ গহনা নর, সিকি ভরি সিঁত্র চাই, কপিশ্বমূল—তালের কটা, মোছব্বর—সে সমস্ত আমি গুছিরে নেব। সিঁত্র আর ঐ সমস্ত কারণবারিতে শুলে ভার মধ্যে সোনা কেললে একদম মিলিয়ে বাবে।

—এক দম বাবে? কোন চিহ্ন থাকবে না? একটু-থানি বাঁকা হাসি সুকেশীর মুখের উপর ফুটিয়া উঠিল।

সন্ন্যাদী শান্তকণ্ঠে বলিলেন—অবিখাস হয়ত কান্ত নেই।

—না - না। স্থকেশীর মুখ একেবারে ছাইরের মত সালা হইরা গেল। বিলিল—আমার মনই এই রকম ঠাকুর, ভূমি কিছু মনে ক'রো না। কিবাস এবার আমাকে করতেই হবে। ডাক্তার, কবিরাক্ত, ককির, অবধৃত, কালী, শীতলা, খেঁটু, মাকাল কিছু আর বাকী নেই। হাজার হাজার টাকা ধরচ হয়েছে, একটা গরনার আর কি-ই বা দাম ? কেবল গোপালের গারের জিনিষ্ণতাই—

এতক্ষণে রতন উঠির। চোপ মৃছিতে সুছিতে উহাদের পাশে আসিরা দাঁড়াইল। সকল বাথা ভূলিরা সুকেনী স্লিম্ম হাসিরা উঠিল। ভার মাধার হাত বুলাইরা মুখের দিকে চাহিরা জিল্পাসা করিল—কভ রাত্রে এসেছিলি? ধাওরা হ'ল কি না, আমার ত একটি বার ডাকলি নে ভূই রতন?

সে কিছু না বলিতেই সন্মাসী আগেভাগে বলিয়া উঠিলেন—মহাভক্ত ভোমার মা। তিনি জেগে ছিলেন, তাঁর সেবার কি কোন ক্রটি আছে? তোমার ঘুম ভাঙাবে ও কি ছঃখে?

সরল প্রশাস্ত দৃষ্টি সন্ন্যাসীর মুখে স্থাপিত করিয়া স্থকেশী বলিয়া উঠিল—ঠাকুর, সন্ন্যাসীতে আমার বিশ্বাস নেই;— কিন্তু রতন আমার সন্ন্যাসী নয়, সে আমায় কাল বলেছে, তোমার অনেক ক্ষমতা। গোপালের গয়না চাও, যা চাও— দিচ্ছি, ওঁকে আবার তেমনটি ক'রে দাও, ঠাকুর।

ছেলের হাতের এক গাছি বালা আনিয়া তাঁর পদপ্রান্তে রাধিয়া সুকেশী প্রণাম করিল।

সেইদিন গভীর রাত্তে আনন্দের আতিশব্যে রতন আবার ভুল করিয়া ডাকিয়া বসিল—বাবা!

ব্যস্ত হইরা সন্ন্যাসী বলিলেন—এখন নয়, এখানে থাকতে নয়—

উজ্জ্বল মুখে রতন বলিতে লাগিল—গয়না কৈ**ত্ত** আমার—

- —আচ্ছা । 🙉
- —দাও তবে^{ক্স}।
- —ना, ना—এशात नत्र।

রতন বারনা ধরিল—একটিবার দাও ওগু, আমি দেখে রেখে দেব—

সন্ন্যাসী বলিলেন—অন্ধকারে দেখবি কি রে ?

—হাত বুলিয়ে দেখব।

.ঝূলির মধ্য হইতে বালা বাহির করিতেই হইল, না করিলে শোনে না।

সন্মাসী বলিলেন—একটা রন্দি পচা পোযাক, ভোর

গারে পরিরে দিশ সেদিন তা-ও তুই নিতে পারণিনে।
আর দেখ দিকি—আন্ত সোনার গরনা—কত ভারী
দেখেছিস ?

রভন তথন গহনা পরিবার প্রাণপণ চেষ্টায় আছে। শেষে হতাশ হইয়া কহিল—হাতে ঢোকে না যে—

সন্ত্রাসী কহিলেন—ছোট্ট ছেলের জিনিষ; টুকবে কেন? বড ক'রে দেব—

- —মোটে এক হাতের হ'ল—
- আর একটা গড়িয়ে দেব।

নিশ্চিত্ত হইয়া শিশু তথন চোথ ব্জিল। হাতের মধ্যে বালাগাছি। সন্মাসী লইতে গেলে কিছুতে দিল না। ঘুমাইয়া পড়িরাছে, মুঠি তবু ছাড়ে নাই।

ভার পর দিন-ভিনেক কাটিরাছে। স্বর্ণটিত সিঁত্র প্রস্তুতের নানাবিধ প্রক্রিরা চলিরাছে, সমাধা হইতে অভি সামান্তই বাকী, আর একটা দিন মাত্র লাগিবে। ভক্তের নির্ব্বন্ধে ইভিমধ্যে সেবার বিষয়ে সন্ত্যাসী একেবারে হাল ছাড়িয়া বিসয়াছেন, এক মৃষ্টি চাউল লইয়া প্রথম দিনকার মত জেলাজেদি আর নাই। দিনে রাত্রে প্রহরে প্রহরে নির্ম্বপ্রত্ব সামুসেবা চলিভেছে। আজিকার রাত্রিটা কাটাইয়া আগামী দিন অভি প্রভ্রেষ্টে সন্ত্যাসী স্ক্রেশীকে সিঁত্র পরাইয়া দিবেন, সিঁত্র পরিয়া সে গিয়া স্বামীর সম্মুখে দাড়াইবে,—সমস্ত ঠিকঠাক।

হপ্রবেশাটার হজনে ঐ সকল পরামর্শই হইতেছিল,
এমন সমর অমরনাথ একেবারে দৌড়িতে দৌড়িতে
আসিল। কোটরের মধ্য হইতে জবার্ক্লের মত চোথ
হটি ঠিফরিয়া বাহির হইতেছে, লখা লখা কল্ফ চুলগুলি সজাক্ষর
কাঁটার মত থাড়া, রূপ স্থানি ভান হাত সন্ন্যাসীর মুথের
উপর ভূলিরা সে বলিরা উঠিল—তৈলকক্ষের গাছ চেন
কি না ব'লে দাও—

সন্ন্যাসী বলিলেন-না।

মহাকুদ্ধ হইয়া অমরনাথ কহিল—তবে বে বললে সেদিন, মুঠোমুঠো সোনা তৈরি করেছ—

সন্মানী বলিলেন—তৈরি কোথার ?—চণ্ডী-মা দিলেন।

—মিথ্যে কথা। চণ্ডী-মা বাতাস থেকে দিলেন না কি? স্বর পর্দার পর্দার চড়িতে লাগিল।—বাতাসে সোনার শুঁড়ো ভাসে, তাই চণ্ডী-মা অমনি হাতের উপর ধরে দিলেন। সোনার স্পেসিফিক গ্রাভিটি কত জান?

সন্থ্যাসী চুপ করিয়া রহিলেন, কিন্তু পাগল থামিল না। বলিল — ডুমি নিশ্চন জানো তৈলকন্দ। কালকেউটে সাপ রাতদিন সে গাছের গোড়ার পাহারা দিয়ে বেড়ার। এমনি তার বিষ, ছুঁচ বিঁধলে ছুঁচটা অবধি গলে ন্দল হয়ে যার। ঠিক চেন ভুমি—বলতে চাও না। কিন্তু আমি ছাড়ব না।

বক্তমৃষ্টিতে সে সন্ন্যাসীর হাত ধরিল। রোগা লোকটি, কিন্তু গায়ে থেন অফ্রের বল। হাতের কম্ই অবধি কড়-কড় করিয়া উঠিল।

— ওকি? কি কর— কি কর বলিতে বলিতে সুকেশী
মাঝধানে আসিল। এতক্ষণে অমরনাথ সুকেশীকে
দেখিল। সন্ন্যাসীর হাত ছাড়িয়া দিল; আর সে মাহ্যষ
নয়, অক্সাৎ হাহাকার করিয়া উঠিল— হ'ল না সুকেশী।
সেই সাপ সিদ্ধ হ'ল কিছু পারাভন্ম হয় নি। কাঁচা পারা
জলের নীচে সব তলানি পড়ে রইল, কোন কাজে এল
না।

মাথায় হাত দিয়া সে বসিয়া পড়িল। বলিল—এ-সমন্ত ব্জক্ষী, সমন্ত প্রক্ষিপ্ত। আসল হচ্ছে স্বর্ণ-তন্ত্র। কিন্ত তৈলকন্দ যে চেনা গেল না। তিন বচ্ছর কনবাদাড়ে ঘুরেছি, কত বেটা দল্লাসী আশা দিয়েছে, শেষে পালিয়ে গেছে। একে আমি ছাড়ব না কিছুতে।

আবার পাগল রুথিয়া উঠিল। তাহাকে টানিরা পালে বদাইরা অনেক করিয়া সুকেশী শাস্ত করিল। ভরে হুংথে সুকেশী একেবারে কাঁদিয়া ফেলিল।

—ভাল করতে গিয়ে এ আমার কি হ'ল, সন্ন্যাসী ? উনি নিজের মনে বসে বসে জলল ঘাটতেন, ষা-খুণী করতেন—আজকে এ কি ভয়ানক রাগ!

সন্মাসী সপ্রতিভ হাসি হাসিরা বলিতে লাগিলেন—

ঐ ত মঞ্চা, নিববার আগে আলোটা দপ-দপিরে আলে।

তৃতীর রিপু লোভ এবারে দিতীরে পৌছুল। এ-ক্রোধ
আর কি-ই বা? এমন দেখেছি, গুরুধারাপি করতে বার—

শান্ত মানুষ খুনের কথার আবার লাফ্টিরা উঠিল।
চীৎকার করিরা বলিতে লাগিল—আমিও খুন করব।
শীগ্গির তৈলকক্ষ ব'লে দাও—নইলে ক্ষানু থাকবে না—

গতিক আরও ভরানক হইরা দাঁড়াইল। ঘণ্টাথানেক পরে দড়াম করিয়া দরক্ষায় লাখি। চকচকে একথানা বলির থড়া হাতে পাগল ঘরের মধ্যে আদিয়া লাফাইতে লাগিল।

—গর্দানে একটা কোপ···ব্যস! বলিরা হা-হা করিরা ছাত ফাটাইয়া হাসি। বলিল—বলে দাও শীগ্রনিক

রতন সেধানে ছিল, আকুল চীৎকারে কাঁদিয়া উঠিল।
বে বেথানে ছিল, আসিয়া পড়িল। স্থকেশী আসিতেই
ভালমাসুষের মত ভার হাতে ধাঁড়াথানা দিরা পাগল হাসিয়া
বিলিল—ঠাটা করছিলাম।

- কিন্তু ভাল কথা নর মা। সন্ন্যাসীর মুখ শুকাইরা গিরা এতটুকু; তাহারই মধ্যে একটু হাসির মত ভাব করিয়া বলিতে লাগিলেন— আঞ্চকের দিনটা ওকে শিকল দিরে রাখ। একেবারে গোড়া ধরে টান দিরেছি কি না, তাই অমন। মন্ত্রের ফলটা হাতে হাতে দেখে নাও।
- —ছাই মন্তোর, মিথ্যে কথা। পাগল চোধ পাকাইরা উঠিল। বলিতে লাগিল—ঠাকুর, অনেক ঠকেছি। জব্-থবু ব্বিয়ে পালিয়ে ধাবে—সে হচ্ছে না। রাতে আমি ঘুমুই নি—ভিন বছর ঘুমুই নি। ভাল চাও ত ব'লে দাও-— আর নয়ত এক-শ কুচি ক'রে রেথে যাব, কেউ ঠেকাভে পারবে না—

বাস্তবিক, ঠেকানো মৃষ্কিল। স্কেশী নিরস্ত করিতে গোলে মাথা ঝাঁকাইরা পাগল বলিরা উঠিল—বলছ কি, স্কেশী। ও জানে, তব্ বলবে না। আমি থাইনে, ঘূম্ই নে—খোকা মরল চোধের দেখা দেখি নি—খর-সংসার সমস্ত ভ্লে গেছি,—চাকরি ছাড়লাম,—পাগল হলাম—। কেবল একটু…একটুলএকটুগানি—সামান্ত এতটুকু কাল্ল—ঐ গাছটা মাত্র বাকী। সন্ন্যাসী জানে, তব্ বলবে না।

আর পাগ**লে**র প্রলাপ নয়, আগাগোড়া কাহিনী এমন করিয়া বলিরা যাই**ডেভে** বে চোখের জল রাখা দায়। স্থকেশীর মা সন্ধাসীর পারের উপর পড়িরা মাধা কুটিতে লাগিল—বাবা ভূমি সমস্ত জান ব'লে দাও। বাছা আমার সেরে উঠ্ক—ভূমি আমাদের বাচাও—

পাগলও আসিরা নতজানু হইরা মিনতি করিতে লাগিল
—ব'লে দাও—ব'লে দাও—

সন্ন্যাসী সুকেশার দিকে চাহিলেন। করুণ সজল চোথে সে চুপ করিয়া ছিল, সেও আসিয়া পারের উপর পড়িল—ঠাকুর, আমি সমস্ত বিশ্বাস করি। ভূমি আমাকে বাচাও—ওঁকে ব'লে দাও—

সন্ধাসী উঠিয়া দাঁড়াইয়া অমরনাথকে ডাকিলেন—এস আমার সঙ্গে—

ছ-ক্সনে সমস্ত বিকাশ বনে বনে ঘ্রিয়া সন্ধার পর এক বোঝা গাছ-গাছড়া লইয়া উত্তরের কোঠার অধিষ্ঠান করিল। তারপর দাউ-দাউ করিয়া উনান জ্ঞালা। পাত্রের উপর ক্লল ফুটিভেছে। ঘরে মাত্র একটা মিটমিটে আলা। রাত্রি ক্রমে গভীর হইল। ক্লল টগবগ করিয়া ফুটিভেছে। আবছা অন্ধকারে উনানের উপর বড় বড় ফুল্কী উঠিভেছে। গাঢ়নীল ক্লের বর্ণ। উপ্র কটু গন্ধে ঘরের বাভাস বিষের মত লাগিভেছে।

আশুনের তাপে অমরনাথের সর্বাক্তে ঘামের ধারা চলিয়াছে। চোখ তুলিয়া জিজ্ঞাসা করিল—এইবার ?

मन्नामी वनित्नन-मन्त्र।

চারিদিকে আবার নিঃশস্বতা, কেবল আগুনে ও ফুটস্ক জলে মিলিয়া একটা অস্কুত ধরণের ক্ষীণ আগুরাক্ষ।

আবার থানিক পরে সন্মাসী জলম্ভ একথানা চেলাকাঠ তুলিয়া আর একবাঁর পাত্রের ভিতরটা দেখিলেন।

—এখন ?

ঘাড় নাড়িয়া সন্ন্যাসী বলিলেন—উছ—
অমরনাথ অধীরকঠে কছিল—একেবারে শুকিয়ে গেল।
কথন তবে?

—শুকোক। সন্নাসী নিরুদেগ কঠে বলিলেন— শুকিরে এক বিবৎ থাকবে, তথন ফটকিরি দিরে ভার পর—

अमतनाथ निविष्ठे मत्न कांठि विश्वा अन मां भिष्क नांत्रिन ।

সন্ন্যাসী টিপি-টিপি নিজের ঘরে গিরা ঘূমন্ত রভনের কাঁথে হাত দিলেন।

—ধরে রতন, ওঠ্—বেটা, ওঠ্—

রতন বার-ছই উ-উ করিল, কিন্তু উঠিবার লক্ষণ দেখাইল না। তথন সন্ধাসী হাত ধরিয়া টানিতে লাগিলেন। মুঠির ভিতর সেই সোনার বালা, রোজ রাজে শুইবার সমর বালা তার চাই। ঠক্ করিয়া বালা মেজের উপর গড়াইয়া পড়িল।

মূহ পারের শব।

মুখ বাড়াইরা সক্লাসী আবছা দেখিলেন, ঠিক দরজার কাছে অমরনাথ চুপটি করিরা দাঁড়াইরা আছে। তিজ্ঞ কণ্ঠে কহিলেন—আবার এই অবধি ধাওরা করেছ? বিকেল থেকে এক পা আশ-পাছ হ'তে দিচ্ছনা—ব্যাপারটা কি?

—না না ঠাকুর, তা নয়। ঘরের মধ্যে আসিয়া অমরনাথ ছই হাতে সয়াসীর পদধূলি মাথায় লইল। হাসিয়া বলিল—
অনেক ঠকেছি কি না···যাবার সময় সাধু-মশায়রা প্রায়ই পারের ধূলো না দিয়ে চলে যান··। তাই—

উত্তরের কোঠার ফিরিরা আসিরা সর্যাসী কাঠি ভূবাইরা অল মাপিরা মুখ বিক্বত করিলেন। বলিলেন—যা ভেবেছি তাই। এক বট বেশী শুকিয়েছে। দোষ তোমার বাপু। পই পই ক'রে বললাম,—ফটকিরি না ফেলে ভূমি আমার ডাকতে গেলে কেন?

—এতে হবে না ?

मन्नामी विनामन-व्यमस्य

—বেশ! তাতে কি? এক মৃত্তু দিধা না করিরা অবিচল মৃথে অমরনাথ পাত্র উপুড় করিরা চালিল। তথনই পুনরার চড়াইবার উদ্যোগ। একটু ক্লান্তি নাই, একটি সেকেণ্ড তার নই করিবার উপার নাই, এমনি ভাব।

সন্ধাসী ধরকার পা বাড়াইরা বলিলেন—এবার আমার বিশ্রাম।

— স্মার একটু। বলিরা পাগল পথ আটুকাইরা দাঁড়াইল। আবার সন্ত্যাসীর পারের ধূলা লইরা বলিল— ঠাকুর, সোনা বধন চকচক করবে ঐ জলের নীচে, বিশ্রাম-টিশ্রাম তথন·· তার আগে পা বাড়ালে বাঁড়া দিরে হুই ঠাঙে ছুই কোপ। • বলিরা উদ্দান হাসিতে হাসিতে বলিল—ঠাট্টা করলান, ঠাকুর—মিছে কথা।

ঠাকুর কিন্তু আবার স্বস্থানে ফিরিয়া কাঠ হইয়া বসিলেন। তথন আকাশে শুক্তারা দপদপ করিতেছে, পূর্বাকাশে রক্তিম আভা। বিশাল পাত্র পরিপূর্ণ হইয়া আবার জল চড়িল। হিসাব করিয়া সমস্ত উপকরণ. পরিমাপ করিয়া অমরনাথ জলের মধ্যে ঢালিয়া দিল।

সকালবেলা তুকেনী আসিয়া সে ঘরে চুকিতেই সন্ন্যাসী হাসিলেন—অনেকটা কান্নার মত হাসি। বলিলেন— আৰুও সমস্ত দিন ছুটি নেই মা, এই সিদ্ধি হ'তে রান্তির হয়ে যাবে। তত ক্ষণ এই ঘরে আটক।

ঘাড় কাং করিয়া হাসিমুখে আবদারের ভব্দিতে সুকেশী বলিল—না—না, আমি নিমে যাচিছ। আমার একটু দরকার আছে। লক্ষিটি, যাবে?

অমরনাথ হাসিয়া বলিল--থুব--খুব! ভুমি ওঁর কথা বিশ্বাস করলে, হুকেলী ? সমস্ত ঠাট্রা---

বাহিরে আসিয়া সন্ন্যাসী হাপ ছাড়িলেন। স্লকেশ্যবিলল—আমার সিঁহর?

—কালকে ভোরে। আজই হ'ত, কিন্তু সমস্ত রাত্রি বে ছাড়লে না। না আর নয়, নেহাৎ ছাড়বে না যখন, আজই দেব সোনা ক'রে। কাল সকালে দেব তোর ভৈরবী-সিঁহুর। তার পর তোদের স্থে-স্বচ্ছলে রেখে বিদায় নিয়ে চলে যাব—

স্কেশী বলিল—হবে ত ঠাকুর ? সত্যি বলচ, হবে ? তার চোথ ছল-ছল করিয়া আসিল। বলিল—ভাঙা কপাল, বিশ্বাস হ'তে চায় না··· আমার গোপালের গ্রনা কি ভেঙে ফেলেছ ?

সন্ন্যাসী বলিলেন-ছ ।

গাঢ়বরে সুকেশী বলিল—বেন সিদ্ধি হয় ঠাকুর। বড়ড সুবে ছিলাম, এখন আর কিছুই নেই। গোপাল নেই— তার গয়নাও দিয়ে দিলাম—ওঁকে যেন ফিরে পাই।

· নিঃশব্দে মাধায় হাও দিয়া সন্ধ্যাসী আশীর্কাদ করিবেন।

সমস্ত দিন কাটিয়া গেল। বল টগবগ ফুটিতেছে,

व्यमत्रनाथ निष्णनक मिटे पिटक ठाकाहेदा । • जादापिन धाद নাই, তিলার্দ্ধ উঠে নাই। এবারে বড় সাবধান, কিছুতেই কোন ক্রটিতে বাহাতে পশু না হইতে পারে। সন্নাসীকেও সমন্তটা দিন একরকম ঠার বসাইরা রাধিরাছে, উঠিবার চেষ্টা করিলে দেরালে-টাঙানো চকচকে সেই খাঁড়াখানা দেখাইয়া এমন ঠাট্টা করে যে উঠিতে ভরসায় কুলায় না।

সন্ধার কাছাকাছি সুকেশীকে ধবর দিয়া আনাইয়া সন্মাসী বলিলেন-আমার জন্ত নর মা, আমার এ-সমস্ত অভ্যাস আছে। বেমন ক'রে পার চারটি ওর মুখে দিয়ে দাও, নইলে অনর্থ করবে। যত্ত্ব ক'রে বৃথিয়ে-স্থক্তিয়ে বদাও। আজকে শেব-মুখ, তাই বড্ড বাড়াবাড়ি। খুব সাবধান আজকের দিনটা।

স্থকেশী অনেক বলিয়া-কহিয়া অমরনাথকে থাইতে বসাইল। সেই ঘরেই—ঘর হ'ইতে এক পা আজ সে নড়িতে পারিবে না। করেক গ্রাস মাত্র মুথে প্রিয়াছে,--সন্ন্যাসী কাঠি দিয়া নীল জল নাড়িতেছিলেন, হঠাৎ চে'চাইয়া উঠিলেন - দাও - ফটকিরি দাও এইবার-

অমরনাথ খাওয়া ফেলিয়া লাফাইয়া উঠিয়া ফটকিরির ও"ড়া লইয়া বসিল।

ব্দল শুকাইতে লাগিল। সুকেশীর ছুটিয়া আসিরাছেন, রতন আসিরাছে, এতগুলি চোথের দৃষ্টি ঠিকরিয়া যাইতেছে। স্থকেশীর বুকের মধ্যে এমন চিব-চিব করিতেছে, যদি—

এমনি সময়ে জল ভকাইয়া পাত্রের মধ্যে থকমক করিয়া উঠিল

সোনা! সোনা! সোনা!

প্রকাণ্ড পাত্রটি অমরনাথ সিংহের বিক্রমে মেজের উপর উপুড় করিয়া ফেলিল। অল্ল জল এক পাশে গড়াইয়া গেল-পড়ির। রহিল ছোট একটি সোনার ভাল। হাভ থরথর করিয়া কাঁপিভেছে, অমরনাথ ভাড়াভাড়ি কষ্টিপাথর লইয়া তু-ভিনটা টান দিল। রেখাগুলি বিহাতের মত পাথরের গায়ে জলিতে লাগিল।

নোনা !

হাকা একটা প্টেশীর মত সন্নাসীকে কাঁথের উপর

বসাইরা অমরনাথ সারা বাড়িমর তাওব নাচিরা বেড়াইতে नाभिन।

তারপর শান্ত হইল বখন, অমরুনাথ একেবারে সুস্থ ষাভাবিক মানুব।

সে-অঞ্জ বভ কিছু মিলিভে∵ পারে, সে-রাত্তে সমস্ত দিয়া সন্নাসীর সেবা হইল। অমরনাথ করিল, তেল মাথিল, ফরগা জামা পরিল, দিব্য সহজ মানুষের মত হাসিয়া আনন্দ করিয়া অনেক ক্ষণ ধরিয়া থাইল। তার পর আবার ধীরে ধীরে উত্তরের কোঠার দিকে চলিল দেখিরা স্থকেশীর মা সভরে প্রাশ্ন করিলেন-ওদিকে বে?

সন্ধ্যাসীকে লক্ষ্য করিয়া হাসিয়া অমরনাথ বলিল— বাবা থাকতে থাকতে আর একটা জাল চড়িয়ে দিই গে। প্রক্রিয়াটা পাকাপাকি শিথে নেওয়া দরকার—ভূলচুক এবারে একেবারে শ-খানেক ভরির মত বাবস্থা না থাকে। করা যাক---

মা তবু মৃত্ আপত্তি তৃলিলেন--রাত্তিরটা থাকলে হ'ত। বাবা ত থাকবেন এখানে. আমি ছেডে দেব না।

-क'मिन थांक्न ठिंक कि, **आ**ंद्र এकवांत्र एमिस्त छनिस्त নেওয়া ভাল। দেরি করা কিছু নয়---

অমরনাথ চলিল। পিছন হইতে স্থকেশী বলিল-আমি বাচ্ছি গো, আমিও শিথে নেব। মাও হাসিয়া সঙ্গ ধরিলেন। একটি পাগল ছিল, সোনায় এখন সবস্থা পাগল কবিয়া দিয়াছে।

সন্ন্যাসী ক্লান্তকণ্ঠে বলিলেন-কিন্তু আমি যাব না। আমি বিশ্রাম চাই---

সুকেশী কাছে আসিয়া কর**লোড়ে** মিনভি করিতে লাগিল-একট্রখানি,-আরম্ভটা ব্ড্ড গোলমেলে শুনেছি। শুধু ঐটে আপনি দেখিরে দেবেন। এবারে আমি শিথে নিতে চাই।

সন্ন্যাসী ইন্সিত করিয়া বলিলেন—ভৈরবী-সিঁহর ? स्किमी विमन-श्रीक रा।

সমস্ত ঠিকঠাক করিয়া কাজ হক্ত করিডে ছপুর রাত্রি হইরা গেল। অমরনাথ প্রণাম করিরা কহিল-বচ্ছন্দে সে চীৎকারে তার হৃৎপিও বু**রি-বা ফাটিরা** বার। - ওরে গড়ুন গে, বাবা। বদি অটিকার কোন জারগার, তখন না-হর ডেকে নিরে আসব।

স্কেশীর মা আজ আর শোবার তদারক করিতে আদিলেন না, বলিয়া দিলেন—কর্মল-টম্বল পাতা আছে। আলো জালা আছে। আমি যাব ধানিকটা পরে। দেখে আদি এদের কাণ্ডকারখানা—

বিশিয়া তিনিও ফুটস্ত জলের উপর ঝুঁকিয়া পড়িলেন।

সন্ন্যাসী ঘরে আসিয়া দেখিলেন, হুটি বিছানা পাতা
— একটিতে রতন ঘুমাইয়া। নিক্ষের বিছানার কম্বলটি
তাড়াতাড়ি শুটাইয়া লইয়া রতনকে টানিয়া তুলিলেন।

ঘুমচোধে রতন বলিল-কি ?

সন্ধাসী বলিলেন—সেই পোষাকের বাক্সটাক্স যা দিয়েছিল তোকে—কোথায় নিয়ে আয় শীগ্ গির।

এ কর্ম নৃতন নহে এবং কিছু ব্যাখা। করিয়া ব্ঝাইবারও প্রয়োজন হয় না। ফিস-ফিস করিয়া রতন বলিল—পোযাক উপরের ঘরে; দরক্ষায় তালা দেওয়া। চাবি খুঁজে দেশব ?

সন্নাসী বলিলেন—না—না। এজুণি হয়ত এসে পড়বে, আর ধরে নিয়ে উত্তরের কোঠায় ঢুকিয়ে দেবে। না, দেথে কাজ নেই, ভূই চল—

তব্ রতন এখানে-ওথানে হাতড়াইয়া যাহা পাইল লইল। পিছনের থিড়কী দিয়া জঙ্গলাবৃত গ্রাম-পথের উপরে অ'াধারে অ'াধারে হুইজনে উর্দ্ধাসে ছুটি ত লাগিল। হঠাৎ সন্ন্যাসীর পিছনের কাপড়ে টান। দৌড়িবার ঝোঁকে রতন হাপাইতেছে—হাপাইতে হাপাইতে সে বলিল— ঠাকুর, বালা এনেছ ?

—হ'—

লাও আমাকে—

—एनव, हन्-

দৌড়িতে দৌড়িতে গ্রাম পার হইরা গাঙের সাঁকো পার হইরা তারা বিলে আসিয়া পড়িল। সক্ষ আলপথ। হঠাৎ পা সরিয়া পড়িয়া রতন কাঁদিয়া উঠিল। বিনাবাক্যে সন্মাসী তাকে কাঁথে তুলিয়া লইলেন। জিজ্ঞাসা করিলেন— হাতে কি রে?

রতন শাস্ত হইয়াছে। বশিল- সেই নতুন হাড়িটা।

দেখানে পেলাম ত নিয়ে এলাম। ভাঙে নি ঠাকুর, ও ঠিক আছে।

বিল শেষ হইয়াছে। একটা বটতলায় তাহারা বসিল। সন্ন্যাসী বলিলেন—বোঁচকা খোল্—

বোঁচকা খুলিয়া রতন বাহির করিল গাঁহ্লার কলিকা।
মুখ বাঁকাইয়া সন্ন্যাদী বলিলেন—ও এখন কোথায় কি
হবে ? আর কিছু নেই ? দেখ দিকি খুঁজে—

এবং নিজেই খুঁজিয়া পাতিয়া একটি বিজি বাহির করিয়া মুগে দিলেন।

রতন বলিল-অক্তিন ?

—মস্তোরে হ:ব। বলিয়া উন্টা গাঁট হইতে লাল দেশলায়ের কাঠি বাহির করিয়া হাঁড়ির তলার থস করিয়া টানিয়া আগুন ধরাইলেন। হাসিয়া বলিলেন—সেদিন আগুন করলাম, তুই জু-হাত ভর্তি প্রসা নিলি, স্ব ভ্লে গোচিস?

শেষরাত্রির হিম হাওয়া বহিতেছে, লতাপাতা খদখদ করিতেছে, রতন চুপি চুপি আঙুল দিয়া দেখাইল—ঠাকুর, দাদা কাপড় প্রা… ঐ মানুষ—না ?

— দুর, উলুবন। পোড়া বিজিটা ফেলিয়া দিয়া সম্যাসী নিঃখাস ফেলিয়া বলিলেন—বাপ রে বাপ! বড়ড বেঁচেছি। একেবারে বাজিফ্দ্ধ পাগল! অমন আর দেখি নি।

—এইবার আমার গয়না…

—গন্ধনা কি আছে? টানিয়া রতনকে একেবারে কোলের মধ্যে আনিলেন। কত দিন পরে শিশু আবার কোলে উঠিল। সন্নাসী বলিলেন—বাল ভেঙেচ্রে ফুটস্ত জলের মধ্যে ফেলে দিয়েছিলাম। নইলে রক্ষা ছিল! যাদের গমনা, তারাই নিরে নিয়েছে, বাবা। এবারে আর হ'ল না।

— নিক গে—। সেহে গলিয়া গিয়া রতন থানিক ক্ষণ কথাই বলিতে পারে না। বলিল—গয়না আমি চাই রেঁ। কিন্তু এবার আমি বাবা বলব। আর ঠাকুর ব'লে ডাকছি নে—

জুরাচোর নিঃশঙ্কে ছেলের গালে চুমা থাইয়া মাথাটি বুকের উপর চাপিয়া ধরিল।

ডালাকার্লিয়া ও ডালাকার্লিয়ান

শ্রীলক্ষীথর সিংহ

স্কাণ্ডিনেভিয়ান দেশসমূহের অধিবাসীদের মধ্যে বিভিন্ন স্থানসমূহে ল্যাপ জাতি লোকেরা বাদ করে। জাতিতে, স্থাতির সংমিশ্রণ ইউরোপীয় অন্তান্ত দেশের তুলনায় ভাষায়ও আহার-বিহারে ইহারা একেবারে ভিন্ন শ্রেণীর



জন -নিম্মিও বর্জমান স্ক্রডেনের জক্ষণতো রাজা গোপ্তাব ভাষার প্রস্তর মূর্ত্তি। জ্বাজ নিজ শংর-—মোরাতে ভাপিত।

অপেক্ষাকৃত কম। হয়ত দেশের ভৌগোলিক অবস্থান ইহার কাবণ। স্কাণ্ডিনেভিয়ার উত্তর-সীমাস্ত প্রদেশ ও নিকটবর্তী



জনের অগ্নিত নিজের চিত্র

লোক: মতা ভাষায় বলিতে গেলে, ইহারা ইউরোপীয় সভাতার প্রায় বাহিরে বাস করে। সমস্ত স্বাণ্ডিনেভিয়ার, বথা— স্ইডেন, নরওয়ে, ডেনমার্ক ও আইসল্যাণ্ডের, অধিবাসীরা জাতিতে ও ভাষায় এ: প্রিবারের মন্তর্গত; সেই জ্ল ইহাদের প্রত্যেকর ভাষা প্রকাপ ও স্বাত্র প্রকৃতির হইলেও



শিল্পী জর্মের বাসগৃহ । এখন ইং! নিউজিয়মে পরিণত ২ইয়াছে এবং সক্ষসাধারণের সম্পত্তি

তাহাদের মধ্যে পার্থক্য খুব বেশা নহে। আজ এখানে শুধু প্ইডেনের মধ্যস্থ একটি প্রদেশ—ভালান (Dalarna) ও ইহার অধিবাসীদের সম্বন্ধে কিছু লিখিতেছি।

অধিবাসীদিগকে ডালান্ প্রদেশের সাধারণতঃ ঢালাকার্লিয়ান বলা হইয়া থাকে। ইহারা স্বই:ডনের প্রাচীন অধিবাসীদিগের অন্তত্ম। এই দেশের প্রাচীন সভাতার পরিচয় লাভ করিতে হঠলে উক্ত প্রদেশে ভ্রমণ করা নিতান্তই আবশ্রক। এই প্রদেশের স্থানে স্থানে গাজও প্রাচীন অসংস্কৃত সুইডিশ ভাষা প্রচলিত; এখনও ন্তানে স্থানে মেরের সেকালের রঙীন পোষাক পরিয়া পাকে। উচ্চ পর্বত, সমভূমি, হুদ—এ-সমস্ত এমন প্রদেশটকে সজ্জিত করিয়াছে, ইহাকে ধে, প্ই:ডনের প্রতিক্রতি বলিয়া অভিহিত করা হয়। দেশের স্বাধীনতার ইতিহাদে ডালাকার্লিয়ানর। নিজেদের শৌর্য্য-বীর্যোর জন্য একটি বিশিষ্ট স্থান অধিকার করিয়া

ইহাদেরই সাহাথ্যে বর্ত্তমান স্ইডেনের জ্লাদাতা বিখ্যাত রাজা গোস্তাব ভাসা ডেনিশদের কবল হইতে দেশকে মৃক্ত করিয়াছিলেন।

প্রবাদ আছে, যে, অল্লাধিক সাত শত বংসর পূর্বে একদিন এক পার্বাত্ত মেযপালক দেখিল, একটি শ্বেতবর্ণ মেয-শাবকের গায়ের রং বদলাইয়া গিয়া পিঙ্গল লাল বর্ণে পরিণত হইয়াছে। অনুস্থানে জানা গেল, পাক্ষত্য চারণভূমির পাথরের মধ্যে তামা রহিয়াছে; অগ্রির উত্তাপ ও জ্ঞলবায়ুর সংস্পর্শে তামায়ুক্ত পাথরের গায়ে ঐ রং কুটিয়া উঠিয়াছিল এবং তাহার সংস্পর্শাই মেয়শাবকের রং বদলাইয়া গাওয়ার কারণ। ফলে সেগানে যে তামার গনি আবিঙ্গুত হয়, তাহা উত্তর-ইউরোপের ইগনিসমূহের মধ্যে প্রাচীনতম। সম্ভবতঃ এই খনিতে সর্ক্রপ্রথম ১২২০ গ্রীষ্টাব্দে তামা সংগ্রহের কাজ আরম্ভ হয়। সপ্রদেশ শতাক্ষীর মধ্যভাগ পর্যান্ত এই গনি হইতে প্রকাশ লক্ষ্ণ টন তামা উল্লোলন করা হয় এবং • সেই সময়ে এই খনি দেশের রাজকোযের বড় সম্পদ ছিল।
এই খনির গভীরতা উপরের সমভূমি হইতে প্রায় ১১৫০
ফুট এবং ইহার সমগ্র সুড়ঙ্গপ্র বার মাইলেরও অধিক লম্বা।



িঅধিত মধারানির সূর্য। ভিনন্দন ও তদুপলকে নাচগান । মূল চিত্রটি স্থাশগ্রাল মিউজিয়মে বন্ধিত

হইয়াছে তাহাদের সকল প্রকার মডেল রক্ষিত আছে। ১১৮৮ খ্রীষ্টান্দে উক্ত কোম্পানীর আসল ছাডপত্র বা document



সিলিয়ান-হুদের তারে রেপভিক নামক স্থানে বার গোন্ডাব ভাসার শ্বতিক্তম্ভ

এই থনিতে কাজ চালাইবার জন্য যে বৃহৎ কোম্পানী গঠিত হয়, তাহা ইউরোপের মধ্যে প্রাচীনতম। ইহার নাম Stora Kopperberg Bergslags Aktiebolaget। উক্ত প্রদেশের প্রাণন শহর ফালুন নামক স্থানে কোম্পানীর প্রাচীন আফিস অবস্থিত। এই শহরে কোম্পানী একটি বৃহৎ মিউজিয়াম প্রাচীন কাল হইতে আরম্ভ করিয়া আজ পর্যন্ত যে-সকল ব্যাপাতি ও কলের সাহাব্যে থনিয় কাল করা



চক্রালোকে সিলিয়ান-ছ.দর দুগু

ও তা ছাড়া বহু ধনিজ দ্রবাও সেধানে সংরক্ষিত আছে। প্রাচীনকাল হইতে এই প্রদেশবাসীদিগকে সমৃদ্ধি দান এই ধনি এখন অতি অল্পই তামা দান করে। তবে এই একই করিয়া আসিতেছে। গ্রেক্ষ্গেসবের্গ নামক শহরের

দেশের মধ্যে এখন কোম্পানী লোহ-কারথানার বহৎ সর্বাপেকা মালিক। এই কারখানা ফালুন শহরের দক্ষিণে দমনারভেট (Damnervet) নামক স্থানে অনতিদুরে অবস্থিত। ডালএলবেন নদী ইহার পাশ দিয়া এট নদীর মুখে চলিয়া গিয়াছে। শ্বটিসারি (Skutskar) নামক স্থানে পৃথিবীর সর্বাপেক্ষা বৃহৎ কাঠের কারণানা অবস্থিত। বলিতে ভূলিয়া গিয়াছি, যে, ফালুন শহরের মিউ-জিয়মে সপ্তদশ শত কীর বৃহৎ তানমুদ্রা সংগৃহীত রহিয়াছে এবং ইহাদের ওজন একত্ত্রে ৮০ পাউণ্ড।

বলা বাহুলা, উক্ত থনিজ সম্পদ্ত



রবিবার উপাসনাগৃহের দিকে নৃদ্ধার। সর্বিত পোষাকে চলিয়াছেন



ভালাকার্লিরার প্রভিদরে মেয়েরা চরকায় এইভাবে সূতা কাটে

কার্হের বাবসা চারিদিকের পর্বতমালার উচ্চপ্রেণীর লৌহপূর্ণ প্রায় ৫০০ শত লৌহখনি রহিয়াছে। এই শহরে অবস্থিত রহৎ লৌহকারগানায় উক্ত থনিসকল বৎসরে গড়ে ২৫ কোটি টন লৌহধাতু সরবরাহ করিয়া থাকে। তা ছাড়া এই একই প্রদেশে কয়েকটি রহৎ কাগজের কারগানা ও ইলেকট্রক কোম্পানী রহিয়াছে। প্রদেশের দক্ষিণ-সীমান্তে ভেটেরস নামক শহরে অবস্থিত "এশিয়া" ইলেক্ট্রিক কোম্পানীব কারগানায় গত কয়েক বৎসর যাবৎ ভারতীয় ইণ্ডিনিয়ারগণ কার শিথিতে আসিতেছেন এবং কয়েক জন কাজ শিথিয়া আপাততঃ দেশে কিরিয়াছেন। এখানকার সম্পদ্ধ ও সমুদ্ধির কথা সংক্ষেপে লিখিলাম। অন্ত দিকে স্বাভিনেভিয়ার বিধ্যাত সাহিত্যক, কবি ও অন্তিম্ব, বাহানের নাম দেশ-বিদেশে ছড়াইয়াছে, তাহ'দের অনেকেই এই প্রেদেশের লোক।

বিখ্যাত কবি কাল ফেলড়ট, ডন আণ্ডেরসন, নামফাদা চিত্রকর কাল লারসন, আণ্ডেস জন, এই ডালাকালি হা প্রদেশের সম্ভান।

কবি কার্লফেলড্ট্ ১৯৩১ গ্রীষ্টাব্দে স্বর্গারোহণ করেন।

জীবনের শেষমুহর্ত্ত পর্যাপ্ত তিনি নোবেল প্রাইজ কমিটির সেকেটারী জিলেন। ১৯২৮ সালে ঠাহাকে নোবেল প্রাইজ দেওয়া স্থির হয়। কিন্তু তিনি এই কমিটির



পহত্তে প্রস্তুত রঙান পোষাকে ডালাকালিয়ান গাঁটার বাদ্যারত মহিলা

সেক্রেটারী বলিয়া উক্ত সঞ্চান গ্রহণ করিতে অনিচ্ছা প্রকাশ করেন। পরে ১৯৩১ গ্রীষ্টাব্দে তাঁহার মৃত্যুর কিছু দিন প্রের ভাঁহাকে নোবেল প্রাইজ দেওয়া স্থির হয়। তুর্ভাগ্যের বিষয়, ঠাহার প্রাপ্য সম্মান তিনি জীবিতাবস্থায় দেখিয়া যাইতে পারেন নাই। উক্ত প্রদেশের ফাল্ক সারিণা নামক স্থানে কবি জন্মগ্রহণ করেন। ভেষ্টেরস **भरत উक्ठविमानस**्त्र পাঠ শেয করিয়া কাল ফেলড্ট্ উপসালা-বিশ্ব-বিদ্যালয়ে দর্শনশাস্ত অধ্যয়ন করেন। বিদ্যালয়ে পাঠকালেই ঠাহার কবি-

প্রতিভা ধরা পড়ে। তাঁহার রচনার অধিকাংশই উচ্চাঙ্গের প্রেমের কবিতা। ফ্রিললিন নামক নামকের মুথ দিয়া তিনি তাঁহার কবিতার সূর দিয়াছেন। ইহা তাঁহার প্রথম বয়সের যৌবনের উচ্ছাস ও কল্পনায় পরিপূর্ণ।

সিলিয়ান-হদ ও পাশবর্তী গ্রাম-সকল---বিশেষ ভাবে মোরা (Mora), লেকসান্দ (Leksand) ও রেটভিক (Rattvik), এ দেশের প্রাচীন সভ্যতার কেলুস্থান; বহিন্দু গতের প্রভাবের পূর্ণ বিস্তার সম্বেও এই হদের ্তীরবর্ত্তী গ্রামগুলিতে এখনও মেয়েরা ঘরে নিজেদের হাতে তাঁতে কাপড় বনে। হাতে-তৈরি রঙীন কাপড-জামঃ এখনও অধিবাসীরা অন্ততঃ প্রতি রবিবারে ও গ্রীম্মের **ছটির দিনে** পরিয়া থাকে। পুরুষেরা এখন প্রাচীন ধারাহ কাঠের নানা প্রকার প্রয়োজনীয় ও খেলার জিনিয তৈবি গৃহনিশাণেও গরে করে। প্রাচীন ধারা সেথানে রক্ষিত। সিলিয়ান-হদ দৈগ্যে প্রায় ত্রিশ মাইল। এই প্রদেশের অধিবাসীদের সম্বন্ধে ব্যক্তিগত ভাবে জ্ঞানলাভের জন্ম গত জালুয়ারি মাস্টা সিলিয়ান-হদের চারিদিক পুরিয়া কাটাইয়াছিলাম। তাহার :বৃত্তান্ত পরে লিখিব।

পূর্ব্বেই বলিয়াছি, এই প্রাদেশের চিত্রকর আণ্ডেস জন ও কার্লারসন স্ইডেনের জাতীয় চিত্রকর বলিয়া খ্যাত। কালুন শহর ইইতে মোটরে করিয়া বন্টাখানেকের মধ্যে



থুওবর্ণ গ্রামে বিখ্যাত,চিত্তকর কাল লারসনের বাসগৃহ

পুশুবর্ণ (Sundborn) নামক স্থানে কাল'লারসনের বাড়িতে পৌছানো নায়। বাড়িখানি বাহির হইতে:দেখিলেই ব্রা নায় বে, ইহা চিত্রকরের বাড়ি,—চতুর্দিকের বরবাড়ির সঙ্গে ইহার পার্থকা এত বেশী। তাহার অধিকাংশ প্রসিদ্ধ

চিত্র এখন ইক্ছলমের জাতীয় মিউজিয়মে রক্ষিত। তা সংরও স্পুর্বর্গে
তাহার বাড়ির করেকথানা কোঠা
এখনও তাহার অুঙ্গিত চিত্রে পরিপূর্ণ।
বিশেষভাবে গ্রামা অধিবাসীদের
বাড়ির ভিতরের দুখ্য তাহার ভুলিতে
কুটিয়া উঠিয়াছে। বাড়ির ঘর দরজা
ও আসবাবপত্রের সকল স্থানেই তিনি
কিছু-না-কিছু ছবি আঁকিয়া গিয়াছেন।
বর্ত্তমানে তাহার বাড়ির অংশবিশেষ
মিউজিয়মে পরিণত হইয়াছে।

চিত্রকর জর্ন প্রেসিদ্ধ মোরা নামক

স্থানে জন্মগ্রহণ করেন। শিল্পরাজ্যে জর্নের প্রতিভা বহুমুখী
এবং ঠাহার চিত্র-সংখ্যাও কম নহে। এচিং এবং: জীবিত
মানুষদের চেহারা আঁকায় তিনি সুইডিশ চিত্রকরদের মধ্যে
অগ্রগণা। ঠাহার বহু ছবি নানা দেশের মিউজিয়নে



জনের চিরশাল



ডালাকালিয়ান পোষাকে বর ও কনে

স্থান পাইয়াতে। তাঁহার তৃইটি প্রাসিদ্ধ চিত্রের সংক্ষিপ্ত বর্ণনা এথানে দিতেছি। একটি গ্রাম্য বালিকার চিত্র, ইহার নাম কিংস কারিন (Kings Karin)। সাধারণতঃ গৃহস্থ খরের শাস্ত স্স্থ সবল সরল মেয়ে; তাহার গালের হাড় তৃইটি বেশ উ চু, মুখথানা টুকটুকে লাল। সে বেন গ্রাম্য সরল পবিত্রচেতা স্টেডিশ মেয়ের প্রতিম্হি, যে ধরণের মেয়েরা চিরকাল ধরিয়া প্রস্থদের প্রাণে শক্তি ও শাস্তি যোগাইয়া আসিতেছে।

তাঁহার আর একথানি চিত্র গোপেনবার্গ (Gothenberg) মিউজিয়নে রক্ষিত। তহার নাম "মৃক্ত বাতাসে" ("Out in the Open Air" । চিত্রথানি দেশ-বিদেশে বহু প্রদর্শনীতে সমাদর লাভ করিয়াছে। চিত্রিত বিষয়টি ও বিষয়ের আবেইনী প্রোপ্রি স্ইডিশ। সমুদ্রের তরঙ্গাঘাতে মক্ষ কঠিন ধুসর রঙের পাথরের গায়ে লানোদ্দেশে মাথায় পীত সোনালী রঙের চুলে ভরা হুই তর্ফণী নিরালায় জলে নামিবার জন্ত প্রস্তুত। কঠিন পাথরের উপর তার্ক্ষণাভরাদেহ, নৌকাবিহার, মনের সহজ্ব আনন্দের অভিবাজিক

ইহা দেশের সামাজিক জীবনের অতি স্বাভাবিক চিজ্ঞ,— ভাহাতে বিশুমাত্র পঞ্চিলতার আভাস নাই।

রুর্নের অধিকাংশ ছবি তাঁহার বসত-বাড়ির মিউজিয়মে রক্ষিত। তাঁহার বিধবা স্ত্রী অতি স্বত্ত্বে সমস্ত রক্ষণা- বেক্ষণ করেন। প্রতিবৎসর, বিশেষ করিয়া গ্রীম কালে, দেশ-বিদেশ হইতে শত শত লোক উপমাবিহীন সিলিয়ান-রদ ও পাশ্ববর্তী গ্রাম-সকল দেখিবার জন্ত সেখানে ভিড করে।

ঘাদের ফুল

শ্রীতারাশঙ্কর বন্দ্যোপাধ্যায়

রাণীগঞ্জ-টাইলে ছাওয়া উত্তর-দক্ষিণে লম্বা বাংলোটা কলিয়ারীর আপিস। আপিসের উত্তরেই পূর্ব্ব-পশ্চিমে লম্বা পড়ে ছাওয়া বাংলোটা কলিয়ারীর বাব্দের মেস। বাংলো ছটোর কোলে প্রকাণ্ড বড় থোলা মার্ঠথানায় অতুল পায়চারি করিতেছিল। চারিদিক অন্ধকার। 'পিট'গুলার ম্থে, বয়লারগুলোর চিমনীর মাথায় গুপু আগুনের শিথা হু হু করিতেছে। আর এথানে ওথানে কৃশীদের কেরোসিনের কৃপী খদ্যোতের মত কাঁপিয়া কাঁপিয়া উঠিতেছে। মেসের একটা ঘরে কৃশী-রিকুটার চল্লকাপ্ত হুঁকা টানিতে টানিতে সার্ভেয়ারকে বলিতেছিল—আমার ভাই যোল আনার মধ্যে সাড়ে পনের আনা মিছে কথা। তানে আমি মিছেকথা বলব না।

বড় টেবিলটার উপরে ধনির ম্যাপধানায় নৃতন একটা লাইন টানিতে টানিতে সার্ভেয়ার উত্তর দিল—হুঁ—তা নইলে চাকরি থাকবে কেন? আলোটা একটু বাড়িয়ে দেন ত চক্রবার। চশুমা নইলে আর চলছে না।

পাশের বরে শেবার-রেজিট্রার সীতাপতি আপন মনে একখানা ছবি আঁকিতেছিল। সমুধে গন্তীর ভাবে আর এক জন বসিয়া আছে স্থাণুর মত—চোথের পলক পর্যাস্ত পড়েনা।

তার পাশের ঘরে বৃদ্ধ কম্পাউণ্ডার চশমা-চোথে স্ত্রীকে পত্র লিথিতেছিলেন—"এখানে ৺বৃষ্টি থুবই হইরাছে। ওথানে ৺বৃষ্টির অবস্থা কিরূপে পত্রপাঠ জ্বানাইবে। চায-আবাদের অবস্থা বৃষ্ধিয়া ধান্তগুলি ধার দ্বিবার ব্যবস্থা করিবে।" আর একখানা হরে লটারির টিকিট কেনা হইতেছিল।
ম্যানেজারের নামে একথানা লটারীর টিকিট-বই আসিয়াছে—
সেইথানা হেডক্লার্ক বাব্ লইয়া বিক্রেয় করিতেছেন। আট
আনা করিয়া টিকিটের দাম। প্রথম পুরস্কার পাঁচ হাজ্পার
টাকা। কালীপদ একটা ছদ্মনাম খুঁজিয়া সারা হইয়া গেল।
হেডক্লার্ক বাব্ কলম ধরিয়া বসিয়া ছিলেন—বলিলেন—কি
নাম দেবে বল হে কালীপদ?

কালীপদ বলিল—জীবৎস—কি বলেন ? ও নামে শনির দৃষ্টিও চলে না ।... দাঁড়ান, দাঁড়ান,—মহালক্ষী কেম্ন হবে বলুন দেখি ?

একেবারে এ-পাশের ঘরে একটি গুরূপ তরুণ হারমোনিয়ম লইনা গলা সাধিতেছিল—'কি ঘুম তোরে পেরেছিল হতভাগিনী!' ছেলেটি কলিয়ারীর মালিকদের থিয়েটারে নায়িকা সাজে। এখানে চাকরিও তার সেই জন্ত। বেতন বাইশ টাকা ছিল—এখন গুই টাকা কমিয়া হইয়াছে কুড়ি।

পাশের বারান্দার ষ্টোরকিপার অ্রম্ল্য ক্লিদের তেল মাপিতে মাপিতে বলিল—ত্মি একটা যাত্রার দলে চুকে পড়, ব্রলে বিনোদ! মোটা মাইনে হবে। কেন কুড়ি টাকার পড়ে আছ বল দেখি! গান থামাইয়া বিনোদ বলিল—ভারী চুক হয়ে গেছে গুদোম-বাব্! সেবার বীণাপাণি অপেরা আমাকে সাধাসাধি করলে। বলে—পায়ত্রিশ টাকা মাইনেতে তুমি ঢোক—ভার পর ছ-মাস পরে পঞ্চাশ ক'রে দেব। তিন বছরে এক-শো টাকা। তা যাত্রার দল ব'লে আর—!

অমূল্য বলিল—আমি একটা দোকান করব ভাই। বেগুনী-কুলুরী কলাই-সেদ্ধ ব্রুলে! বউ ক'রে দেবে, একটা ভোঁডোকে দিয়ে বিক্রী করাব। ভারী লাভ।

শুটিতিনেক ছেলেমেরে ছুটতে ছুটতে আসিরা বিনোদের বিছানার ঝাপাইরা পড়িল। একটি মেয়ে বলিল—বাড়িতে গান করতে হবে বিনো-কাকা। চল, মা ডাকছে।

অপর মেরেটি নাকিহুরে বিশিশ—ধঁরে নিয়ে যাব হা।।
ছোট ছেলেটি তথন হারমোনিয়মের রিড চাপিয়া
ধ্রিয়া একটা বেহুরের হৃষ্টি করিয়া ফেলিয়াছে। বিনোদ
হাসিয়া বিলিশ—চল্ চল্ বাই। চিক্লণীটা কোথায় রাথলেন
শুদোম-বাব্?···আমার আবার ডিউটী আছে—তা চল,
তথানা গান গেয়েই চলে আসব।

প্রথম মেরেটি বলিল—বই নিয়ে যেতে বলেছে মা।

কুঠীর মালিকদের কয়েক জন এখানে সপরিবারে বাস করেন। বিনোদকে মাঝে মাঝে বাসার ভিতর গান শুনাইতে হয়, রেলের বাব্দের লাইত্রেরী হইতে উপস্তাস আনিয়া যোগানও তাহার একটা কাজ। নিজেই হারমোনিয়ামটা লইয়া বিনোদ চলিয়া গেল। শুদামবাব্ বলিলেন—দেখলে হে বাবুর চল আঁচড়ান?

বিমূর ঘরের অংশীদার বিনোদের পরিত্যক্ত চিক্ষণীথান। লইয়া চুল আঁচড়াইতে আঁচড়াইতে বলিল—ত্

তারপর আয়নাধানার নানা ভলীতে মুধ দেবিয়া বলিল—বেশ আছে বাবা। আর থাকবে নাইবা কেন বল? চেহারা ভাল, গলা ভাল।

ষ্টোর-বাব্ ফিক্ করিয়া হাসিয়া বলিলেন—বই যোগায়—সেটা বল। তথার মেঝেনগুলোর দেখেছ! টাইমবাব্বলতে পাগল।

অঙুণ ভাবিতেছিল, হেন্রী কোর্ড জীবন আরম্ভ করিরাছিল কাঠের মিন্ত্রী রূপে—এডিসন নামে একটি ছেলে থবরের কাগজ বেচিত। অভুল এথানে আসিরাছে দেড় শত মাইল পারে হাটিয়া—পথে বর্বার নদী—তথন ছকুল পাথার সেই নদী সে সাঁতার দিরা পার হইরা আসিরাছে। পারের পরসা দিতে গেলে ধাবারের পরসার অভাব পড়িবার সম্ভাবনাছিল। আজ সে

কলিরারীর ম্যানেজার হইতে চলিয়াছে। এক বৎসর পরে মাইনিং পরীক্ষা দিবে।

অদুরে একটা আলোর পিছনে ছুই জন বাবু আসিতেছিল।
এক ক্ষন উচ্চকণ্ঠে অনুৰ্গল বকিয়া চলিয়াছে। অতুল বুঝিল
ম্যানেকার ও ওভারম্যান আসিতেছে। ম্যানেকার আসিয়া
বলিলেন—এই বে অতুলবাবু, আপনাকেই খুঁজছিলাম আমি।
আজ থালে বারুল জলে গেছে। ক্রমশংই থাদ গরম হয়ে
উঠছে—এখন ফায়ার না হয়।

অতৃশ মৃত্যুরে প্রশ্ন করিল—গান-পাউডার অলে গেল ?
ওভারম্যান খাটো মানুষ, কিন্তু শক্তিশালী দৃঢ়দেহ। সে
কথা কয় যেন বক্তৃতা করে। হাত-পা নাড়িয়া অভিনয়
করিয়া প্রত্যেক কথাটি ব্রাইয়া দেওয়া ভাহার শভাব।
সে বলিয়া উঠিল—আজ্ঞে হাা। দক্ষিণ দিকের মেন
গ্যালারীর পালে ৫৮ নং সুঁদের মধ্যে—দেওয়ালে—হৈই
—এতথানি এক চাঙড় কয়লা জমে আছে। ঠাঙারাম
সর্দার বললে—বাবু ওই কয়লাটা দেগে দি। টোটা ভোরের
ক'রে ঠাঙারামকে নিয়ে গেলাম দেখতে—বলি নিজের
চোধে একবার দেখে দি। হঠাৎ শুঁড়ি হইয়া ওভারম্যান
বলিল—ঠাঙা বাক্লদের—জায়গা নামিয়ে রেখে—।

আবার থাড়া হ**ইরা হাত তুলিরা বলিল—আ**মাকে দেখাইতেছে—বলে বাবু—ঐ চাংটা—আর ইদিকে অমনি ফাাঁস ক'রে নিয়ে নিয়েছে তথন্। সঙ্গে সজে আলোয় একেবারে দিন দীপামান!

একটু থামিরা তাড়াতাড়ি হাত কর পিছাইরা গিরা ওভারমান আবার আরম্ভ করিল—আমি তথন হঠ্তে লেগেছি। বুঝতে পেরেছি কিনা। ঠাণ্ডা বেটা কিছ হা ক'রে গাঁড়িরে।

হা করিয়া বৃদ্ধিহীনের অভিনয় করিয়া সে থামিল। তারপর আপনার বা-হাতথানা থপ, করিয়া চাপিয়া ধরিয়া বলিল—থপ ক'রে বেটার হাতটা ধরে হিড় হিড় ক'রে আনলাম টেনে।

তার পর সে পাণিপথক্ষেত্রে বিজয়ী আমেদ শার মত গন্ধীর ভাবে নীরব[°] হইল।

ম্যানেজারটি সাদাসিধা মানুষ—বৃদ্ধির মত আকারেও স্থল। ভদ্রলোক বলিলেন—কি করা ধার অভূলবাব্? অতৃল চিন্তা করিরা বলিল—ও 'পিট'টায় কাজ বন্ধ ক'রে দিন।

ম্যানেজার বলিলেন—কিন্তু বলি ফারারই হয় ধর। হাসিয়া অভূল বলিল—ফারার ভ হবেই।

মহাচিন্তাগিত ভাব ম্যা**নেজা**র বলিলেন—তা হ'লে ?

—দে আর আমরা কি করব ৈ আপনি, এখানে বারা মালিক আছে, তাঁদের জানান—আর হেড আপিসেও টেলিগ্রাম ক'রে দিন। তা হ'লই খালাস।

ম্যানেজার বলিলেন—তাই ত হে—কলিয়ারীটা আমার নিজের হাতে তৈরি করা—

অভূল হাসিয়া বলিল—চল্লাম আমি তিন নম্বর পিটে। আমার ডিউটি আছে।

প্রকাণ্ড লোহার বিম্—রাাষ্টারে ছাঁদাছাঁদি করিয়া একটা অভিকার কঙ্কালের মত গীরারহেডটা দাঁড়াইরা আছে। ভাছারই ভলে বিরাটকার সাড়ে ভিল-শো ফুট গভীর একটা কৃপ ম.টির বুক ভেদ করিয়া নামিয়া গেছে। ওপাশেই ছইটা বরলারের বুকের ভিতর রাবণের চিতা অলিভেছে। ইঞ্জিল-শেডের বিপরীত দিকে আর একটি ছোট শেড। এটি পিট-ক্লার্কদের আপিস। একদিকে ছোট একথানি বেঞ্চ—মধ্যে একটি টেবিল—এপাশে একখানা চেয়ার। টেবি:লর উপরে একটা হারিকেন চারিপাশের বিপুল অন্ধকারের মধ্যে অসহায় ভাবে অলিভেছিল। শেডের বাহিরেই একটা লোহার ঠেঙোর উপরেই একচাপ কয়লা দাউ দাউ করিয়া প্রিভেছে।

সেই আগুনে সেঁকিয়া একটি কুলীর মেয়ে তাহার ভিজা ঝুড়িটা গুকাইয়া লইতেছিল। চেয়ারে অতুল চুপ করিয়া বসিয়া আছে। ও-পাশের বেঞে বিনাদ—সেই ছেলেটি একখানা খাতায় কুলিদের উঠা-নামার ছিসাব করিতেছিল। ওই ওর কাজ। লেবার-রেজিট্রার পদবী। বিমুর পাশে বসিয়া ছিল খ্যামাপদ—ছ নম্বর ওভারম্যান। বলিয়া উঠিল—এই—এই মাসী, ঝুড়িটো কি পৌড়ারে দিবি না কি?

এদিকে পিটমাউবে ঘণ্টা বাজিয়া উঠিল—ঘং-বং-ঘং। খাদের তলা হইতে সক্ষেত হইতেছে, লোক উঠিবে।

উপরের 'টালোয়ান' ঘণ্টার সঙ্কেতে উত্তর দিয়া হাকিল— ছো—ই। এ সঙ্কেত ইঞ্জিন-ডাইভারকে।

বিপুল শব্দে ইঞ্জিন গতিশীল হইয়া উঠিল। ইঞ্জিনের গতির সঙ্গে গীয়ারহেডের চাকা বাহিয়া মোটা তারের দড়ায় ঝুলান একটা লোহার খাঁচা সন্ সন্ শব্দে অন্ধক্পের গর্ভে নামিয়া গেল—সঙ্গে সঙ্গে পাশের আর একটা দড়া উপরে উঠিয়া আসিতেছিল। সেই দড়া বাহিয়া একটা কেজ পিটের মুখে সশব্দে আসিয়া লাগিল।

থাঁচার মধ্যে চার জন লোক।

বিন্মু প্রশ্ন করিল—কারা বটিস রে ?

উত্তর হইল—আমরা গো—ভক্তার দল। নারাণ ভক্তা।

খাঁচার মধ্য হইতে বাহির হইয়া আসিল-জলসিক্ত, কঃলার কালিতে সর্বাঙ্গঢ়াকা বীভৎস কালো মুর্ত্তি। জলস্ত কয়লার আলোয় মনে হয় যেন প্রেত! নগপ্রায়—পরণে ভরু একটা কৌপীন, কাঁধে গাঁইভি, হাতে একটা কেরোসিনের ডিবিয়া। মেয়েদের হাতে ঝুড়ি। কয়লার কালিতে कांट्या (मरहत मर्था मामा छहें। (हाथ (मथिया छत्र हत्र। কথা কহিলে দেখা যায় সাদা দাঁত। শেডের বাহিরে গিয়া তাহারা উপরের দিকে মুখ ভূলিয়া দাঁড়ায়। ভাবিতেছিল ম্যানেজারশিপ পরীক্ষায় সে প্রথম হইবে। তাহাতে তাহার বিন্দুমাত্র সন্দেহ নাই। ধনি-বিজ্ঞান তাহার मम्भूर्ग चात्रख ह्हेबाटह। এই বে चाश्वन-भूथियीत तुरकत. ভিতর শক্ষ শক্ষ টন কয়লার স্তরের মধ্যে যে বিরাট অগ্নিদাছ-যে আগুন জলে নিভিবে না—সে আগুন নিভাইবার উপায় দে আবিষ্কার করিয়াছে। কিন্তু কেন সে নিজের জীবন বিপন্ন করিয়া পরের উপকার করিতে যাইবে! ভাছার জীবনের মূল্য পঞ্চাশ টাকা নর।

যং যং--- !

আবার সঙ্কেত হইল। একটা কেন্দ্র নামিয়া গেল, একটা উঠিয়া আসিয়া পিটের মুখে দাঁড়াইল—ঘটাং! কেন্দ্রটার মধ্যে কয়লা-বোঝাই টব-গাড়ী—লেবার-রেজিষ্ট্রার প্রশ্ন করিল—কি বটে—কয়লা না লাক? ওভার- ম্যান এক জন কুলিকে বলিতেছিল—ওরে ইরা—কি নাম তোর? গুরুচর্ণা—গুন গুন ইধারে গুন্। হোই—ছিলিয়ার!

ছোট লাইনের উপর কয়লাভণ্ডি টবগাড়ীটা ঠেলিয়া ঠেলিয়া দিয়া টালোয়ান হাকিয়া উঠিল। সশব্দে গাড়ীটা লাইন বহিয়া চলিয়া গেল।

ওদিকে পিটের মুখে ঘণ্টার পর ঘণ্টা বাজিতেছিল।
কেজ ওটে-নামে। গুরুচরণ বলিতেছিল—আমাকে খাদে
নামতে বলছেন না-কি?

ওভারম্যান বিরক্তিভরে বলিল—না—বলছি গুরুপুত্র আমার হেথাকে বসেন দয়া ক'রে—আমি পা পূজা করব।

লেবার-রেজিষ্ট্রার বিন্ধু থাতা লিখিতে লিখিতে গুন্ গুন্ করিয়া গান করিতেছিল—'ওহে স্বন্ধর ভূমি এসেছিলে আজি প্রাতে।'

অতৃশ মনে মনে একটু হাসিল। সভাই বেশ আছে ছেলোট! বাজিতে মারের ছেঁড়া কাপড়ে হয়ত চোথের জল মুছিবার স্থান নাই—আর ও পোষাক পরিয়ারাণী সাজে। তুই টাকা মাইনে ওর কাটা বায়—আর ও বাজির ভিতর গান শুনাইয়া ক্লভার্থ হইয়া বায়। কয়লার হিসাব লিখিতে লিখিতে ও গায়—'প্লেকর তুমি!'...

নীচে থাদের তলদেশ হইতে অন্ধকুপ বাহিন্না অতি ক্ষীণ মানুষের সাঙা ভাসিয়া আসিল।

ওভারম্যান বলিল-হাকা-হাকা-হাকা!

পিটের মূখে টালোয়ান হাই জন একটু ঝুঁকিয়া সাড়া দিল—ও—ই!

অত্ল একটু অন্তমনস্ক হইরা চারিপাশের অন্ধকারের দিকে চাহিল। চারিদিকের কলিরারীতে করলার চাপ গভীর অন্ধকারে রাত্রির অলে দূষিত ক্ষতের মত ধ্বক্ ধ্বক্ করিয়া অলিভেছে।

घः--घः-- घः।

এবার উঠিয়া আদিল আর করেক গুন কুলি। বিশাসপুর অঞ্চলের অধিবাদী। মেরেদের অলে মোটা মোটা রুগদন্তার গছনা—হাতে তাগা, গলার হাতুলি, পারে বাক, নাকে বেসর, কজিতে একহাত কাঁসার চুড়ি।

আবার থানিকটা বিরাম। ইতিন স্তব্ধ, কেঞ্চা নিধর ভাবে ঝুলিভেছে। শুধু বয়লারটা স্থামের শক্তিতে কাঁপে— লে কম্পানের আঘাত বায়ুন্তর বহিন্না শেডের থাপরার চালে আসিয়া চালের মধ্যেও কম্পন তোলে। চালের থাপরান্তলা কাঁপে—ছোট একটা জানলা—সেটাও ভূমিকম্পান-টোলোয়ান থরথর করিয়া কাঁপে। অবসর পাইয়া কেন্দ্রম্যান-টোলোয়ান কভি গুণিয়া 'রেজিং'এর হিসাব করে।

বেখানে লোহার ঠেডোটার করলার চাপ জলিতেছিল সেখানে কুলিরা ছই-চারি জন করিয়া আসিয়া জমিতেছিল। ইহারা এইবার থাদের নীচে নামিবে। একটা কেরোসিনের ডিবের আলোতে একটি তক্ষণী বিড়ি ধরাইয়া দপ করিয়া আলোটা নিব;ইয়া দিল। সে বলিল—দে নামাই দে বাবু। ক-ত ব'সে রইব?

অতুল চিন্তা করে, এ ওদের নেশানা, কুধার প্রেরণা? বিন্তু বলিল—এখন থাদে গিয়েত ঘুমুবি। তার পর সেই রাতে কাজে লাগবি। ঘরে ঘুমুলেই ত পারিস।

তরুণীটি হাসিয়া বলিল—ভবে তু একটি গান কর বাবু। ওভারম্যান বলিল—তু নাচবি বল!

সে বিল ধিল করিয়া হাসিয়া উঠিয়া হাসিতে হাসিতে বলিল—শীলকাটা যে মারবে বাবু ধুমাধুম—গতর ভেঙে দিবে আমার। লইলে—

ভার পর অকন্মাৎ এক বুড়ীকে ধরিয়া বলে—এই দেখ্ ই নাচবে। ইয়ার মালকাটা মরে গেইচে।

আশপাশের তর্নশীর দল হাসিয়া ভাঙিয়া পড়িল।
ওপাশে জলস্ত করলার ধারে বসিয়া একটা আঠারো-উনিশ
বৎসরের ছেলে অকারণে জলস্ত চুল্লীটার ঢেলা মারিভেছিল।
দুরে এই কুঠারই সাইডিং-লাইনের উপর লোকোমোটভের
বাশী তীক্ষরে বাজিয়া উঠে। অতুল পিছন ফিরিয়া
চাহিল। দক্ষিণে বহুদুরে রেলওয়ে জংসনের ইয়ার্ডে
অগণিত বিজলী বাতি সারি সারি স্থির থদ্যোতের মত
জালিতেছে। এ-পাশে বরলারের চোঙ হইতে উর্জমুখী
আশুনের শিখা সাপের জিবের মত লক্-লক্ করিতেছে।
শিখার মাথার অন্ধকারের চেয়েও গাঢ়-ক্ষণ রাশি রাশি
ধোঁয়া ফুলিয়া ফ্লিয়া ভাসিয়া চলিয়াছে। মধ্যে মধ্যে
শিখার মাথার হাজারে হাজারে আশুনের ফুল্কি ফুলঝুরির
মত ধোঁয়ার রাশি ভেদ করিয়া বহু উর্জে উঠিতেছে, বুবুদের
মত নিভিয়া যাইতেছে।

শাদকে তেন মিনিট চার মিনিট অন্তর কেল ওঠে, নামে।
এক দিকে দলে দলে কুলি ওঠে, অন্ত দিকে দলে দলে নামে।
মানুষের হর্দান্তপনার বোবা রাত্রি অন্তর হইরা উঠে।
বিনোদ চমকিয়া উঠিল। কে ভাহাকে ছোট একটা ঢেলা
ছু ভিয়া মারিয়াছে। লোহার কেলটা সন্ সন্ শব্দে নীচে
নামিয়া গেল। কুপের মধ্যে খিল্ খিল্ হাসি অভি ক্রভ
ক্রীণ হইতে ক্ষীণভর হইয়া মিলাইয়া গেল।

রাত্রি প্রগাঢ় হইয়া আসিয়াছে।

থাদের মুথে স্বারই চোখে ঘুম জড়াইরা আসে। ব্যপ্তধারও থেন ঘুম পাইরাছে। কেজ—ইঞ্জিন স্তন্ধ—
তথু বরুলারের টীমের শব্দ উঠিতেছিল ফাঁাস—ফাঁা—স।
কেজমানটাও বেলীর উপর বসিরা চুলিতেছে। ওভারম্যান
দেওয়ালে ঠেস দিরা গাঢ় নিজামগ্ধ—নি:খাস সশব্দ হইরা
উঠিয়াছে। বিনোদ টেবিলের উপর মাথা রাধিরা তব্দামগ্ধ।

অভূলের মাথাও বিমৃ বিমৃ করিতেছিল। হেন্রী কোর্ড কি এডিসনের নাম এখন মনের মধ্যে নাই। মনে পড়ে বাড়ির কথা—মাকে মনে পড়ে। ইচ্ছা হয় ছুটি লইয়া একবার বাড়ি যাইতে হই.ব। অভূল একটা বিড়ি ধরাইল। ধেঁায়াটা ছাড়িতে ছাড়িতে বিনোদের মুধের দিকে চাহিয়া মনে হইল ঠোঁটে খেন মৃহ্ হাসি ফুটিরাছে। হয়ত অগ্ন দেখিতেছে।

মেসের কোলাহল নীরব। ক্যাশিয়ার হয়ত খগ্নের ঘোরে ক্যাশ মিলাইতেছে। ম্যানেজার হয়ত আশুনের খগ্ন দেখিতেছে। কালীপদ হয়ত পাঁচ হাজার টাকার প্রাইজটার ধরচের বিলি-ব্যবস্থা করিতেছে।

খং—খং । সঙ্কেতের ঘণ্টা বাজিয়া উঠিল।
কলিয়ারীর চৌকীদার এক চোখ কাণা সোম্রা হাক
দিয়া চলিয়াছে—হো—হো—হ—হো!

টালোয়ান বা কেজম্যান সন্তাগ হইরা পিটের মুখে গিরা সঙ্কেত করিয়া ইঞ্জিন-ড্রাইভারকে হাঁকিল। ইঞ্জিন চলিতে আরম্ভ করিল।

ওভারম্যানেরও ঘুর্ম ভাত্তিরাছিল—সে ভক্তারক্ত চোথে বলিল—চাকরে আর কুকুরে সমান। চাকরি মাসুষে করে? বিনোদও কখন সোজা হইরা বসিরাছে—সে মেসের নিস্তরভার দিকে লক্ষ্য করিয়া বশিল—এরা বেশ যুষ্চেছ, নর ?

কেহ কোন উত্তর দিবার পূর্বেই সশব্দে কেন্দ্রটা আসিয়া পিটের মূথে আবদ্ধ হইয়া গেল। কেন্দ্র হইতে ৰাহির হইয়া আসিল পিটক্লার্ক বাবু।

সে বশিশ-শাদের অবস্থা বড় থারাপ অভুশবারু। বড় গরম হয়ে উঠেছে থাদ।

অতুল বলিল-সে আর আমি কি করব ?

—থাদে মালকাটারা টিকতে পারছে না।

অভূল নির্মিকার ভাবে বলিল—ম্যানেজার বাবুকে থবর দিচ্ছি।

—ওদিকের ক'টা হু^{*}দে ত ধেঁায়ায় ভর্জি—আর উত্তাপ কি! ভেতরে কয়লাতে আগুন লেগেছে মনে হ'ল।

অতুৰ বৰিৰ-সঞ্জেৰা ত বাদ দিতে ব:ৰছি।

— হাা, সেগুলো বাদই আছে। কিন্তু ক্রমশঃ এগিয়ে
আসছে মনে হচ্ছে যে! একবার নীচে বেতে হবে মশায়।
এ সব ত আমার ডিউটি নয়!

অঙুৰ হাসিয়া বৰিল—বেশ আমি নীচে ধাচ্ছি। আপনি আর ওভারম্যান বাবু বরং ম্যানেজারকে সব জানিয়ে আহন। টাৰোয়ান, ঘণ্টা দাও নীচে।

গ্যাস-বাতিটা জালিরা লইয়া সে কেজের মধ্যে গিয়া উাড়াইল।

উপরের শব্দ পিছনে ফেলিয়া অতল গহবরের মধ্যে কেলটা সন্ সন্ শব্দে নীচে নামিয়া চলিয়াছিল। পিটের গাঁথনি ক্রভবেগে উঠিয়া চলিয়াছে। মাথার মধ্যে কেমন একটা অহত্তি রন্ রন্ করিয়া উঠিল। প্রথম দিনের কথা মনে করিয়া অতুল একটু হাসিল। এখন এ-মহত্তি তাহার অভ্যাস হইয়া গেছে। প্রথম তলার খাদটা পার হইয়া গেল। বে-কেলটা উপরে উঠিতেছিল সেটা পার হইয়া গেল। কোন সাঁওতালের মেরে ওই কেলে বসিয়াই গান গাহিতে গাহিতে উপরে উঠিয়া গেল। সে স্বর ক্রমশঃ ক্ষীণ হইয়া আসি:তছে ইঞ্জিনের শব্দেও আর ভাল শোনা বায় না। ছই পাশে পিটের গা বহিয়া ক্রল করি:তছে। নীচের ক্রল করার শব্দ ক্রমশঃ ফুটতর হইয়া আসিল।

কেজের গতি মন্দ হইরা আসিরা সশব্দে কেজটা এইবার থামিয়া গেল।

উপরে পিটের মুখে ও-কেজটাও সঙ্গে সঙ্গে থামিল। বিনোদ স্তব্ধ ভাবে বসিয়া ছিল—সে বলিল—উঠে এলি বে তুই?

কেন্দ্র হইতে বাহির হইয়া আসিল সেই মেয়েটি। মেয়েটির নাম চূড়কী। চূড়কী বলিল—বে ধুঁরো আর গরম খাদে— পাঁলায়ে এলম। তারপর ফিক্ করিয়া হাসিয়া বলিল— ভুর গান শুনতে এলম।

বিনোদ বিরক্তিভরে বলিরা উঠিল—ভাগ্ এথান থেকে। শেডের বাহিরে করলার ধূলার উপরেই জাঁচল বিছাইরা চুড়কী শুইরা পড়িল। বলিল—ভূর ভারি শুমোর হইছে, লয় গো বাব!

বিনোদ কোন উত্তর দিশ না।

্ চূড়কী আপন মনেই বলিল—ভূর চেঁরে আমি ভাল গান জানি। শুন্বি! সম্বতির অপেক্ষা না রাধিয়া সে নিজের ভাষায় গান আরম্ভ করিয়া দিল। গান করিয়া সে নীরব হইল। কিছুক্ষণ পর আষার সে বলিল—আকাশে ছই যি তারাটি দিপ্ দিপ্ করছে—ওইটি ভূকো তারা, লয় গো বাবু?

বিনোদ তব্ও কোন উত্তর দিল না। চুড়কী এবার উঠিয়া আসিয়া তাহার কাছে বসিল, বলিল—একটি গান ডুকেনে বলবি না বাবু? সোবাই ভূর গান শুনে-ছে। আমাকে আমার মাঝি শুনতে দেয় না। বলে কি জানিস— বলে—ভূ বাবুকে ভালো-বেসে ফেলাবি।

বিনোদের ক্রমে থেন নেশা ধরিয়া আসিতেছিল। তাহার নবজাপ্রত যৌবন অহঙ্কত হইয়া উঠিল। সে হাসিয়া বিলিল—গান ত আমি তোকে শোনাব—ভূই কি দিবি আমাকে?

চূড়কী যেন]চিন্তিত হইরা পড়িল। তার পর বলিল— একটি ক'রে রাঙা জবাফ্ল ভূকে আমি রোজ দিব।

বিনোদ বলিল—খেণ্ড, জবাফুল নিয়ে কি করব আমি?
—কেনে কানে পরবি—সরত চুলে গুঁজরি। ভূ
আমাকে রোজ গান বলবি হোক্।

প্রকাপ্ত একটা টানেলের মধ্য দিয়া অতুল চলিয়াছিল।

ছ-পাশে কয়লার নিবিড় কঠিন গুর। গ্যাদের আলোকের প্রতিচ্ছটার করলার তীক্ষ স্থা কোণগুলি ছুরির মত চক্ষক করিয়া উঠিতেছে। হাতের আলোটা তুলিয়া অতুল তাহাতে একটা বিভি ধরাইতে গেল। কিন্তু নিঃখাসের ফুৎকারে আলোটা নিবিয়া গেল। অন্ধকার! কোথাও কোন সাড়া নাই, শব্দ নাই। ধোঁয়ার উত্তাপে শ্বাস-প্রশাস লইতে কট বোধ হইতেছে। অছুত—বিটিত্র! পকেট হইতে দেশলাই বাহির করিয়া অভূল আবার আলোটা আলিয়া ফেলিল। টানেলটা একটু বাকিয়া গিয়াছে। বাকটা ফিরিয়া দুরে ধোঁয়ার মধ্যে জলস্ত অঙ্গারের মন্ত শিথাহীন কয়টা দীপ্তি দেখা গেল। মানুষের কথার আওয়াত্র পা**ও**য়া ষাইতেছি**ল—কে আবা**র বাশীও বা**ন্ধাইতেছে। টানেলের** পালে পালে কুলিরা দিব্য শ্যা বিছাইরা দিয়াছে। হুটি ছেলে আপন মনে বালা বাজাইতেছিল। কতকগুলি মেয়ে গান করিতেছে। অতুল পশ্চিমের গ্যালারীর দিকে এইদিকেই আগুন। মোড ফিরিল। উন্তাপ—ধেশারা ক্রমশঃ বাড়িয়া উঠিতেছে। অতুল দাঁড়াইল। তাহার জীবনের অনেক দাম। সে ফিরিয়া আসিয়া ব**লিল—তোরা** সব পিটের মুখের কাছে গিয়ে ব'স । ম্যানেজার এলে কাজে লাগবি।

অবস্থা দেখিয়া মালিক মাধার হাত দিয়া বসিরা পড়িলেন। ম্যানেঞার ভাবিরা আকুল হইরা উঠিলেন। অতুল বলিল—আমি পারি। অবগ্র বে-যারগার আশুন লেগেছে সেখানটা চিরদিনের মত বাদ যাবে। কিন্তু বাকী থাদ নিরাপদ হবে।

মাণিক তাহার হাতে ধরিয়া বণিণেন—তাই কক্ষন যত থরচ হয়, কোন ভাবনা নাই।

অঙুল দিধাহীন পরিষার ভাবে বলিল—কিন্তু কি স্বার্থে আমার জীবন বিপন্ন ক'রে আপনার উপকার করব? আমার পারিশ্রমিক কি দেবেন বলুন।

মালিক অবাক হইয়া গেলেন। তাঁহার মনে পড়িল, কয় বৎসর পুর্বের ছিল্লবাস উপবাসক্লিষ্ট একটি ছেলের কথা। সেদিন তিনি দয়াপরবশ হইয়া তাহাকে একটি চাকরি দিয়াছিলেন। একটা দীর্থখাস ফেলিয়া তিনি বলিলেন— এ-কথাটা আপনার কাছ থেকে প্রত্যা**শা** করি নি অভুলবাবু।

অতৃণ হাগিল, বলিল—বোধ হয় আপনি আমাকে আশ্রয় দিয়ে চাকরি দিয়েছিলেন দেই কথা ভাবছেন। কিন্তু এই যে এত দিন আপনার এখানে রয়েছি, বিনা পরিশ্রমে কোন দিন ত আপনার কাছে বেতন আমি নিই নি। আমি পরিশ্রম করেছি তার পারিশ্রমিক আপনি দিরেছেন। খাঁটি বিনিময়—দান নয়। আজ পর্যান্ত আমি আমার কর্তুব্যে একবিন্দু অবহেলা করি নি।

মালিক বলিলেন—কি চান আপনি ?

অভূদ বলিল—এক জন বড় মাইনিং ইঞ্জিনীয়ার যা নিত তাই নেব আমি। অবগ্র আমার মাইনে পঞ্চাশ টাকা বাদ দেবেন তা থেকে।

মালিক রাজী হইলেন। বলিলেন—তাই পাবেন।
অতুল বলিল—কণ্ট্রাক্ট ঠিক বিধান মতে হওয়া দরকার।
কাগজে কলমে একথানা চিঠি দিতে হ.ব আমাকে।

তাও হইরা গেল। অতুল বলিল—ফারার ব্রিকস আর ফারার ক্লে দরকার। যে গ্যালারীগুলোতে আগুন হয়েছে ওগুলো বন্ধ ক'রে দিতে চাই আমি।

মালিক প্রশ্ন করিলেন—তাতে কি হবে ?

অভূল হাসিয়া বলিল—তাতেই আগুন নিববে স্যার।
নইলে স্কলে থাদ ভর্ত্তি করেও নিব'ব না। বেদিন জল
মেরে কাজ আরম্ভ করবেন সেইদিনই আবার গ্যাস হতে
স্কল্প করবে।

ইভিনটা আরু নিস্তর—খাদ বর । শুধু ষ্টামের শব্দের সঙ্গে পাম্পিঙের শব্দ উঠিতেছিল অলস ভাবে।

লরীর শব্দে কলিয়ারীটা মুখরিত হইরা উঠিল। লরীতে জিনিবপত্র আসিতেছিল। বিপুল উদ্যুদ্ধে দ্রুভবেগে উদ্যোগআধোক্তন শেষ হইরা গেল। কিন্তু কাক্স আরম্ভ করিয়া গোল বাধিল। কুলিরা কেহু নামিতে চার না। কুলিরিক্টার কুলিদের বড়ু প্রিয়। সে হুয়ারে হয়ারে ফিরিয়া আসিয়া বলিল—আক্রে কেউ নামতে চাইছে না। বলছে বিনা দম লিয়ে আমরা মরে যাব বাবু। উ আমরা লারব। কতকগুলো কুলি কালরাত্রে ভরে পালিয়ে গিয়েছে।

হাক্ষপ্যাণ্টের পকেটে হাত হইটা প্রিরা দিয়া অতুল বলিল—ত্ন-টাকা ক'রে হাজরী দেব—চার ঘণ্টা কাজ। ফের আপনি গিরে বনুন।

রিকুটার চলিয়া গেল। অভূল নিজেই ফারার-ব্রিকস বোঝাই একটা টবগাড়ী পিট দিয়া ঠেপিতে ঠেলিতে বলিল—ইডিয়ট কোথাকার? টাকার ছনিয়া কেনা বায়— মামুষ কি ছনিয়ার বাইরে?

তারপর নিজেই ঘণ্টার সঙ্কেত করিয়া হাঁকিল—হো—ই ! ্ ইঞ্জিন চলিতে শু.গিল।

মেসের ঘার ঘরে বাবুদের ব্যক্তভার সীমা ন'ই। কার কখন ডাক পড়িবে কে জানে। কালীপদ লটারীর টিকিটের নম্বরটা ভূলিয়া গিয়াছে। সার্ভেয়ার-বাবু প্লান খূলিয়া বসিরা আছেন। কভদূর গ্যাস আগাইয়া আদিল, দাগের পর দাগ টানিতেছেন। বিহুর হারমোনির্মটা বন্ধ। কেরাণী সীতাপতির ছবির থাতা বাল্লে বন্ধ হইয়া আছে—রঙের বাটগুলা শুকাইয়া গেছে। গুেরবারু জিনিষ জ্ঞমা করিয়া আর থরচ লিখিয়া হাপাইয়া উঠিয়াছে। বিনোদ খাদে নামিবার পোয়াক পরিতেছিল। ঘরের উত্তর দিকে খোলা মাঠ। উত্তর দিকের জানলা হইতে কে বলিল—একটি গান কর কেনে বাবু।

বিনোদ ফিরিয়া দেখিল চুড়কী। তথু চুড়কী নয় আর ছই-তিনটি মেরে। বিনোদ বিরক্ত হইরা উঠিল। এই কুশ্রী কালো বর্জর মেরেগুলার অভ্যাচারে তাহার গ্লানির আর পরিসীমা নাই। নানা জনে নানা কথা বলে। নিজেরগু স্থণা বোধ হয়। সে কহিল—যা—যা বিরক্ত করিস না।

আর একটি মেরে বিশিশ—রাগ কর্ছিস কেনে বারু? একটি গান শুনারে দে আমরা চলে যাই।

এক জন বলিল—চূড়কী ভূর লেগে জবাজ্ল এনে-ছে। দে গে—চূড়কী বাবুকে সুলটি দে।

্চুড়কী জবাফুলটি ছুড়িয়া বিনোদের বিহানায় ফেলিয়া দিয়া বলিল—লে বাবু কানে উটি পর। বড়া ভাল লাগবে ভুকে। বিনোদের ইচ্ছা করিল ফুলটাকে ছিঁড়িরা ছুড়িরা কেলিয়া দের। কিন্তু তাও সে পারিল না। এইটা তাহার একটা অক্ষমতা—দে তাহা জানে। রুড়ভাবে কাহাকেও আঘাত করিতে সে পারে না। বিব্রত হইরা বিনোদ অন্রোধ করিয়া বিলি—পালা বাবু তোরা এখন। আলাস নে আমার। খাদে যাব দেখছিল না।

আশ্চর্যাধিত হইরা চূড়কী বলিল—খাদ ত পুড়ে গেইছে তুদর।

—তোদের মাথা হইছে। তোরা কাজ করবি না— আর তোদের কাজ আমাদিগে করতে হচ্ছে।

চুড়কী বলিল—সত্যি বলছিন তু? খাদে গেলে মরে যাবি না?

ত্থাপন মনেই হাসিয়া বিনোদ বিশ্বল—আছা বোঙা জাত বটে বাবু।—মরে কেন বাবি? এই ত আমি চল্লাম। তোদিগে হু-টাকা তিন টাকা ক'রে হাজরী দেবে। আসবি তোরা?

একটি মেয়ে ব**লিগ—হা**—বাবু সন্ত্যি—তিন টাকা ক'রে দিবি তুরা ? আর মরে যাব নাই ?

—না—না । কতবার বলব তোদের বল !

চুড়কী বলিল—তু থাকবি ত বাবু খাদে? না— আমাদিগে ফেলে দিয়ে পালায়ে আসবি?

—ভা**লা বিপদ বাবা**। **ওরে পালি**রে স্মাসবার বে।
কি? চাকরি বাবে ধে।

নিজেদের ভাষার কি সব বলাবলি করিরা চুড়কী বলিল—মালকাটাদিগে বলি গা বাবু। ভূকে কিন্তুক গান শুনাতে হবেক।

তারপর সঙ্গীদের পানে চাহিরা বণিল—দেলা বোঁ! অর্থাৎ—চল চল।

বৰ্জর কালো মেরেগুলি নাচিতে নাচিতে, ছুটিতে ছুটিতে চলিয়া গেল।

কিছুক্ষণ পর কয় জন মাঝি আসিরা প্রাপ্তা করিল—স্তিয় ভূরা তিনু টাকা ক'রে দিবি !

অতুল বলিল-ভাই পাবি।

—হা বার্—তুরা আমাদের সাথে রইবি ত ? হাসিরা অতুল বলিল—ভোলের পাশে আমি দাঁড়িরে থাকব। তা ছাড়া রাক্ষমিস্ত্রী থাকবে, অন্ত বাবুরা থাকবে। ভোরা একা থাকবি না।

—বেশ্বাব তবে আমরা নামব। মাঝিন্ নামতে দিবি ত ?

অতৃশ জানিত এই মাঝিনদের ফেলিয়া ইহারা কোথাও যায় না। রাজসিংহাসন পাইলেও না। সে হাসিয়া বলিল—বেশ ভারাও নামবে।

ম্যানেদ্ধার ক্ষীণ ভাবে প্রতিবাদ করিলেন—সে বে বে-আইনী হবে অভূলবারু।

কেজে ব্ৰেকটা খুলিতে খুলিতে অভূল বলিল— নেসেসিটি হাজ নোল। আইন মানতে গেলে থাল পুড়ভে দিতে হবে।

তার পর হাকিল-হো-ই-ইটার গাড়ী লাও।

অন্ধকার থাদের তলে মান্ন্যের কর্মকোলাহলের আর বিরাম ছিল না। উপরেও তাই। থাদের মুথে থাজাকী বাক্স লইরা বদিয়া আছে। সঙ্গে সঙ্গে কুলিদের বেতন মিটিয়া যাইতেছে। শেডের মধ্যে বদিয়া বুড়া ডাক্ডার। গীয়ারহেডের চাকা ছুইটা অবিরাম ঘুরিতেছে—বং—বং—বং!

নীচে হইতে সঙ্কেত আসিতেছে লোক উঠিবে।

টালোয়ান ইঞ্জিন-ডাইভারকে সক্ষেত করিল, হো—ই।
মিনিট ছই পরেই বিপুল শব্দ করিয়া কেজটা উপরে
আ'সিয়া লাগিল। এক জন বাবু একটি কুলি এক জন
কামিনকে লইয়া নামিল। মেয়েটির ব্কে ব্যথা ধরিয়া
য়াস লইতে কষ্ট হইতেছে। অক্সিজেন-সিলিগুারের
চাবি আলগা করিয়া দিয়া টিউবটা মেয়েটির নাকের কাছে
ডাব্রুরা ধরিয়া বিলি—ভয় নাই।

নীচে হইতে আবার সক্ষেত আসিল—ছং—বং—ছং।
আবার লোক উঠিয়া আসিয়া বলিল—মাটি—মাটির
গাড়ী জলদি চালাও।

মাটির গাড়ী শইরা কেজ নামিশ।

থাকাকী হিসাব করিতেছিল—তিন হু-গুণে ছয়— এই লে মাঝি, ছ-টাকা হাজরী তোজের।

থাদের নীচে লাইন ধরিয়া মাটি-বোঝাই টব-গাড়ীটা চলিতেছিল খীরে ধীরে; এক জন আসিয়া ঠেলিয়া সেটার গতি ক্রন্ত করিবার চেষ্টা করিল। আরও ভিতরে বেধানটার আঞ্জন লাগিরাছে সেখানে গ্যালারীর মূথে মূথে গাঁথনি উঠিতেছিল। বিশ-পঁচিশ মিনিট অগুর লোকে স্থান পরিবর্ত্তন করিতেছে। গ্যাসে খাস ক্রন্ধ হইয়া আসিতেছিল, বিবর্গ পাংশু মানুষগুলি টলিতে টলিতে অক্সিজেন-সিলিগুরের ফানেলের মূথে আসিয়া দাঁড়াইতেছিল। অভূলের পিঠে ভূব্রীদের মত ছোট একটা অক্সিজেন-সিলিগুরে বাঁধা, তাহার হুইটা নল নাকের কাছে খাস-প্রখাসে সাহায্য করিতেছে। সে অনবরত ঘুরিয়া ঘুরিয়া গ্যালারীর মূথে মূথে ফিরিতে ছিল।

সে বলিল—জল্দি—জল্দি—আর মাত্র তিনটে গ্যালারী। চালাও ভাই চালাও। দেরি হ'লে সব নষ্ট হবে। গ্যাস-সব ঐ গ্যালারী দিয়ে বেরুতে আরম্ভ করবে।

বিনোদ একটা গ্যালারীর মুথে দাঁড়াইরা ছিল। চুড়কী বহিতেছিল কাদা, তাহার মাঝি ইট যোগান দিতেছিল। কাদার পাত্রটা ফেলিরা দিয়া চুড়কী বলিল—লারব আর আমি। সে হাপাইতেছিল। বিনোদ বলিল—যা-ঘা ঐথানে যা। বাভাস নিয়ে আয়—বাভাস নিয়ে আর।

—হট বাও—হট যাও। ইটাকে গাড়ী যাতা হ্যায়। বিনোদ সরিবা দাঁড়াইল, হড় হড় শব্দে গাড়ীখানা চলিবা গেল।

কাল' কাদা কানার-ক্রে। অতুল হাকিতেছিল।
 ওপাশ হইতে কে হাকিল আদমী গির গিরা হিরা।
 জলদি লে যাও।

অভূল ক্রভবেগে বিনোদের পাশ দিয়া ধাইতে ধাইতে বলিতেছিল—আর হুটো—আর হুটো গ্যালারী!

ধোঁয়ার পরিমাণ বেন বৃদ্ধি পাইতেছে। বিনোদের কট
ইতৈছিল। সে একটু সরিয়া আসিয়া ২৫ নম্বর গ্যালারীর
মূধে দাঁড়াইল। স্থানটি অপেকারুত নির্জ্জন। ওদিকে
২৮ নম্বরে কাজ চলিতেছে। ২৭ নম্বর বন্ধ ইইলেই বৃদ্ধের
শেব হয়। ধরণীগর্জে আজ্ঞন খাসক্রম হইয়া মরিয়া
যাইবে। কে তাহার চোখ চাপিয়া ধরিল। বিনোদ এক
রট্কায় ভাহাকে ফেলিয়া দিয়া আপনাকে মুক্ত করিয়া
লইল। ক্রোধের :আর ভাহার সীমা ছিল না। চুড়কী

পড়িরা গিরাও থিল থিল করিয়া হাসিয়া উঠিল। ফুতার ডগার চূড়কীর মুথে একটা ঠোজর মারিয়া বিনোদ বলিল—লাথি মেরে তোর মুথ ভেঙে দেব আমি।

চুড়কী ফোঁপাইয়া কাঁদিয়া উঠিল। তাড়াতাড়ি বিনাদ সেধান হইতে পলাইয়া গেল। যাইতে যাইতে সে আবার ফিরিয়া চাহিল।

ধোঁরার বাস্পে ভাল করিয়া দেখা গেল না। কিন্তু অফুট কান্নার শব্দ সে যেন তখনও শুনিতে পাইতেছিল। বিনোদ ফিরিল। ডাকিল—চূড়কী—এই চূড়কী কাজে যা—উঠে যা।

——না—আমি ধা-ব না। তু কেনে আমাকে নাঁথায়ে মেলি?

ওদিক হইতে হড় হড় শব্দে টব-গাড়ী আসিতেছিল, বে ঠেলিয়া আনিতেছিল—সে হাঁকিল—হো-ই হট যাও।

বিনোদের আর সাহস হইল না। সে পলাইরা আসিল।
সিলিগুারের মুথে অক্সিজেন লইবার অছিলার পিটের মুথে
সে দাঁড়াইরা রহিল। হড় হড় শব্দে টবগাড়ী বস্ত্রপাতি
ফিরিরা আসিতেছে। কাল্ল বোধ হর শেষ হইরা আসিয়াছে।
কয় জনে কাহাকে ধরাধরি করিয়া লইরা আসিল।

— অণ্টি মারো টালোয়ান— ঘণ্টি মারো জল্দি। পাচ আদমী গির গিয়া।

পিছনৈ পিছনে আবার এক জন আসিল। বিনোদ প্রশ্ন করিল—কি—বাাপার কি হে?

— আর কি ? গ্যাস একদিক দিয়ে ক্লোর ধরেছে। ২৭ নম্বর আর বন্ধ হ'ল না:। পিছিয়ে আসতে হ'ল।

—ক নম্বর পর্যাম্ভ পেছুতে হ'**ল** ?

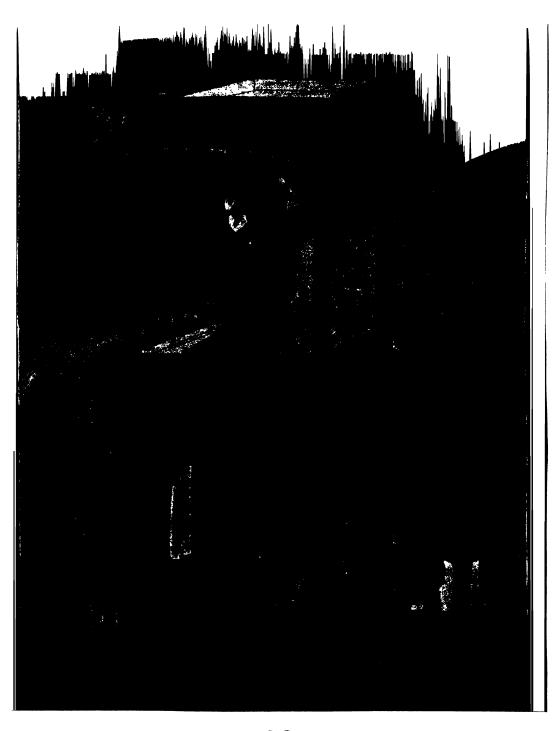
সন্ সন্ শব্দে কেজটা উঠিয়া গেল, উত্তর আর শোনা গেল না। বিনোদ দ্রুতপদে বাদের মধ্যে আগাইয়া গেল।

वक इटेंखि हिन ३६ नम्दत्रत मूथ ।

অতুৰ কাহাকে বলিতেছিল—উপায় নাই—বারোটা। গ্যালারী ছেডে দিতে হ'ল।

বিনোদ চীৎকার করিয়া উঠিল—ভাঙো—গাঁথনি ভাঙো। ভেতরে লোক—

তাহার মুখটা চাপিয়া ধরিয়া অভুল বলিল— গেট্-মাউট।



বন্দিনী কুমারী বহুনা বহু

বিনোদ সকরুণ দৃষ্টিতে চাহিয়া আর একবার বলিশ—
চুড়কী—

বাধা দিয়া অত্ল বলিল—ওপরে বাও তুমি।
ভার পর ইংরেজীতে একটা চিরক্ট লিধিয়া হাতে দিয়া
বলিল—ক্য শিয়ারকে দাও গে।

্লাশিয়ার কাগজধানা পড়িয়া কুড়িটি টাকা বিনোদের হাতে দিয়া বলিল—তোমার ম'ইনে। এক ঘণ্টার মাধা ক্লিয়ারী ছেড়ে চলে বাও। ছটু সিং!

•—ভ্জুর !ছটু সিং সেখানে হাজিরই ছিল।

—এক ঘণ্টার মধ্যে বাব্কে কৃঠীর সীমানা থেকে বের ক'.র দে.বু।

নীক্ত তথন কাভ শেষ হইয়া আসিয়াছে। অতুল রুমালে

কপাল মৃছিতে মৃছিতে আপন মনেই বলিল—হি লাভ্স হার। প্রকাশ ক'রে ফেলবে। ফুল্! জানে না বে-সম্পদ বাচল তাতে ওই মেয়েটির মত কত হাজার স্ত্রী-পুরুষের ভীবিক'র সংস্থান হ'ল। প্যাকিং দাও—ফারার-ক্লের প্যাকিং দিয়ে দ'ও—েন এক বিন্দু গ্যাস না আসে।

আগুন থামিয়া গেছে। আবার কলিয়ারী তেমনি চলে। কেজ ওঠে-নামে। রাত্রিতে কৃলি-কামিন ভিড় করিয়া আসে—বাবুবা ন'ম লেখে।

টা:লায়'ন হাকে—হো—ই। ই©ন চলে—কেডটা নামিতে থাকে -

রুশিয়ার রাজ-অলঙ্কার

শ্রীবিমলেন্দু কয়াল, এম-এ

রা'সপুটি'নর হত্যাক'রী র'জকুম'র ইউস্পফ্ তঁহ'র কার্যাবেলীর ঘ'রা লভন শহরে প্রসঙ্গক্রমে রুশিয়ার রাজ-ঐশ্বর্যার রহস্তময় কাহিনীর ছারোদ্য'টন করিয়াছেন। জগদ্বিধাত মণিকার কাল ফেবার্গ বিরচিত, 'জার' তৃতীয় আলেকজ ন্দারের স্বর্ণময় 'ইষ্টার এা'ও এই লওন শহরে প্রকাশভাব নীলামে বিক্রয়ের জন্ত আনীত হয়। রুশীয় বিপ্লবের অবাবহিত পরে নিহত 'জার' ২ম্ব-নি কে'ল'দের সমুদ্য নিদম্ব সম্পত্তিও এইরূপে ইংল্ডে বিক্রয়ের নিমিত্ত আনীত হটয়াছিল। এই ক্রয়-বিক্রয়ের প্রধান অভিনেতা মিঃ নর্মান উইদ্রা ইনি বর্তুম'ন জগতের সর্ব্ধশ্রে^ই মণিকার পরিচিত। <u>ত্র'হার</u> সাক্ষ'ৎপ্ৰ'ৰ্থী নিকট কোনও সাংবাদিকের নিকট রুশীয় সমাটগণের নিজস্ব ক্রয়দম্বন্ধে তিনি নিয়লিখিত বিবৃতিটি অ**লক**'র'দি প্রদান করেন :---

যদিও আমি এক জন হ'ঙ্গেরিয়'ন তথাপি ইংলণ্ডের প্রতি আমি গভীয় শ্রদা পোষণ করি। আমার জননী

ইংরেডী রষ্টি ও সাহিত্যে বিশেষ অনুরাগিণী ছিলেন। বেধ হয় এই কারণেই আমিও তাঁহার নিকট হইতে উক্ত স্বভাব প্রাপ্ত হই। আমি শৈশবকাল হইতেই বুদাপেষ্টের একটি বিখা'ত মণিকারের অধীনে শিক্ষানবীশী করিতাম, কিন্তু বখন অ'মি অষ্টাদশ বংসরে প্র'র্পণ করিলাম তখন এক দিন তিন শিলিং ছ-পেন্স এবং লণ্ডনের ক্রিক্ল্উডের এক জন অধিবাসীর ঠিকানা মাত্র সম্বল করিয়া বৃটিশ স'ম'জের শ্রেষ্ট নগরী লণ্ডন শহরে উপস্থিত হইলাম এবং উক্ত মণিকারের সহিত সাক্ষাৎ করিয়া চাকুরী প্রার্থনা করিলাম। ভদ্রলোকটি বর্তমানে আমাকে কোনরূপ সাহাযা করি:ত পারিবেন না জানাইলেন, তবে সুপ্রসিদ্ধ হাটন গার্ডেন নামক ইংলণ্ডের প্রধান জতরী-কেন্দ্রের ঠিকানা বলিয়া দিলেন। দীর্ঘকাল ধরিয়া প্রত্যেক জ্বছরী-দোকানে চাকুরী প্রার্থনা করিয়া ঘুরিয়া বেড়াইলাম, কিন্তু হুর্ভাগ্যবশতঃ কে'পাও চাকুরী পাইলাম না। বোধ হয় বিদেশী বলিয়া ও বাহ্য আকৃতির জন্ত চাকুরীর পথে আমার বি:শ্ব বাধা

উপস্থিত হইল। বাহা হউক আমার ভাগ্য স্প্রসন্ধ হইণ; অবশ্যে একটি ছোট স্বর্ণকারের দোকানে কাজ পাইলাম। কাজের মধ্যে আমি নিজেকে একেবারে বিশ্বত হইয়া গোলাম; এমন-কি রাত্তিকালে বধন আমার একমাত্র অবদরের

> 108 11 Austen Frans. Throgmerten Street, London v. r. cananto 22.

to determine the outer an opening to hear as with a view of to begins in the outer of the builting Founds (aligned 5000) multiplet to Mr. Altred is denote over an appropriate the purchases and I agree

3. B. JOEL.
BY HIS ATTORNEY.

সলি যোরেল কর্তৃক মি: নয়ান উইন্জ.ক লিখিত পাত্রর অগুলিপি
সময় খাসিত তথনও আমার বন্ধ-বাদ্ধবদের ভূ-একটি খুচ্রা
কাজ করিয়া দিতাম। এই ভাবে কাজ করিবার পর
এক বংসারের মধ্যে আমি কিঞ্জিং অর্থসঞ্চয় করিতে সক্ষম
হইলাম এব তদ্ধারা আমারই তুর্গটি বেকার বন্ধুকে উচ্চ
কমিশনে কম্মসংগ্রহের জন্য নিযুক্ত করিয়া মংকিঞিৎ
অর্থাপার্জন করিতে লাগিলাম।

এই সময় আমি থুব মূল্যবান প্রস্তরের কাজ পাইতাম না; সচারচির বে-সকল কাজ পাইতাম তাহা অল্প মূল্য প্রস্তরের। এক দিন প্রাত্তঃকালে এক জন ভদলোক আমাকে একটি অঙ্গুরীতে ছোট সবুজ রঙের একটি পাথর বসাইবার জল্প দিয়া গোল। বদিও এই শ্রেণীর প্রস্তরগুলি খুব মূল্যবান নাহ তথাপি নূতন ধরণের প্রস্তর দেখিয়া আরও কতকগুলি এই প্রকারের প্রস্তর জন্ম করিবার জল্প মনস্থ করিলাম। আমি জানিতে পারিলাম এই প্রস্তরগুলি সাধারণতঃ প্রেরিডটস্ব (Peridots) বলিয়া সমধিক পরিচিত;

প্রাতীন মিশর দেশে ইহা পাওয়া বাইত, কিন্তু ইহার ঐতিহাসিক তব কেই জ্ঞাত ছিলেন না। আমি এক দিন উক্ত প্রেপ্তর জের করিবার জন্য আমার এক সতি বিশ্বস্ত বন্ধুর সহিত আমার গংসামান্ত সঞ্চিত অর্থসমেত বহির্গত হইলাম: কিন্তু তুর্ভাগ্যজ্ঞমে বন্ধুটি আমার সমস্ত অর্থ আয়ুসাৎ করিলেন! প্তরাং আমাকে পুনর র দারিদ্রোর নিপ্রেগণে ব্যাকল হইতে ইইল: উপায়তের না



বিব্যাত ইংরেজ জগরা মিঃ নর্গান উইস্জ ; ইনিই স্পশিষার রোমান্ফ্ রাজ-বংশের বহু অলগার ক্য় করিয়াছেন

দেশিয়া মার একটি স্বর্ণকারের দোকানে কর্মে নিগৃক্ত হইলাম। এক দিন বধন আমি দোকানে কাজ করিতে-ছিলাম তথন উক্ত বন্ধুটিকে হুটাং দেখিতে পাইলাম। আমি দ্রুতপদে তাহার নিকট উপস্থিত হুইয়া চীৎকার করিয়া বলিলাম, "শীল্ল আমার সমুদ্র অর্থ ফিরাইয়া দাও।" সে আমাকে একটি দরজার আড়ালে লইয়া গিয়া জানাইল থে দে তাহার সমস্ত অর্থ হারাইয়া ফেলিয়াছে এবং তাহার কাছে এমন কিছু নাই যাহাদারা সে আমার ক্ষতিপূরণ করিতে পারে। যাহা হউক অনেক বাদানুবাদের পর সে আমাকে কতকগুলি ঐ প্রকারের প্রস্তর দিতে রাজী হইল।

্বথন ব্ঝিতে পারিলাম আমার বন্ধবরের নিকট হইতে অপহত অর্থ উদ্ধারসাধনের আর কোনরূপ আশা নাই তথন অগতন প্রস্তরগুলি ও একটি জীর্ণ টাইপ-রাইটার হস্তগত করিলাম। পুনরার আমার নিজ বাদকক্ষে পূর্বের গ্রার ব্যবদা অরম্ভ করিলাম। দশ মাস পরে ঐ শ্রেণার প্রস্তর সাধারণের বিশোন দৃষ্টি আকর্ষণ করিল, কারণ সাধারণতঃ ইহার মূল্য বেশ অল্প এবং ইহা অত্যন্ত পুদৃশু। দেখিতে-দেখিতে অমার ব্যবদা বেশ উন্নতির পথে অগ্রসর হইতে লাগিল। ইহার পর আমি আর কাহারও নিকট চাকুরী গ্রহণ করি নাই। তিন মাস পরে উক্ত পেন্তরের থনির এক দালালের সহিত আমার পরিচয় হয় এবং আমার এক মাসের সমস্ত সঞ্য ঐ থনির অংশ ক্রেরের জন্ত নিযুক্ত করিলাম।



শেষ রুশ-রাজমহিষীর হীরক-খচিত টায়র৷

থামার অবস্থা অভুডভাবে পরিবর্ত্তি হইল। ক্রেম আমি উক্ত থনির সমগ্র স্বস্থ প্রাপ্ত হইলাম; ফ.ল অস্পন্লা প্রস্তরের একচ্ছত্র বি:ক্রেভার:পে লণ্ডন শহরে পরিচিত হইতে সক্ষম হইলাম।

হীরা, মুক্তা এবং অভাত ম্লাবান প্রান্তর পরীক্ষা করা এবং জয় করা আমার চিরকালের ইচ্ছা ছিল, স্ত্তরাং ইহা এথন আমার দ্বিতীয় স্বভাব হইয়া দাঁড়াইল। সমগ্র দেশে আমার নাম ছড়াইয়া পড়িল। কোন মূল্যবান

প্রস্তরের বথ।র্থমূল্য নির্দ্ধারণের জন্ত আমার সর্ব্বতি বাতারাত করিতে হইত। পৃথিবীর প্রায় সমস্ত দেশ হইতে লোকেরা হাটন গার্চেনে প্রস্তর ক্রয় ও বিক্রয়ের জন্ত আগমন করি.তন। ভারতবর্ষের রাজা-মহারাজা



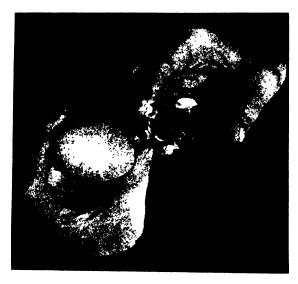
রাজ্ঞা 'কাাথারিন দি গেটে'র অপ্ন মণিমুক্তাণচিত বিবাহ-মুবুট

ও মার্কিন ধনকুবেরগণের নিত্য আবির্ভাবে এই স্থানটি এক ঐশ্বর্যাশালী স্থানে পরিগণিত হইল। আমার সামাত ঐকাস্তিক মধ্যবসায় এবং মসাধারণ কক্ষশক্তি শুঘ্রই বড়-বড় স্বর্ণকারের দৃষ্টি আকর্ষণ করিল।

তথন সবেমাত্র ইউরোপের মহাস্ক্র শেষ হইরাছে।
সকলেই নিজেদের সঞ্চিত অথগুলি ম্লাবান প্রান্তর ও অর্ণ পরিণত করিবার জন্ম ব্যস্ত হইরা পড়িল। এই অবস্থার হঠাৎ চতুর্দ্ধিকে গুল্প উঠিল রুশিয়ার সরকার ভূতপূর্বা জোরে'র যাবতীয় ধনবতু বিক্রয়ে মনস্থ করিয়াছেন। উক্ত ঐযর্যাগুলি উহার বিভিন্ন প্রাসাদে ও ছর্গে পাওয়া গিয়াছে। শাঘই এই সংবাদ আমরা অবগত হইলাম এবং ইহারই ফলে সমগ্র হাটন গার্ডেনে এক অনস্ভূত চাঞ্চলার সৃষ্টি হইল।

প্রথমে সকলে ইহাকে 'উড়ো' সংবাদ হিসাবে ধরিয়া

লইয়াছিল। পরে যথন উক্ত সংবাদটি সত্য বলিয়া বিবেচিত হইল তথন সমস্ত হীরক-ব্যবসায়িগণ কর্মব্যস্ত মৌমাছির মত এ-বিষয়ের সংবাদ লইতে আরম্ভ করিলেন। সকলেই ক্শীয়-বাজ-ঐশ্ব্যা ক্রয় করিতে বাস্ত হইয়া পড়িলেন। বোধহয়



নিগ ত কলরে নাল-সব্জ রঙের আভা-বিশিষ্ট চ্প্রাণা মণি ত্র্য একটি ডিংমর আক্তিবিশিষ্ট

একমাত্র আমিই কেবল চুপ করিয়া ছিলাম কারণ তথন সামার নিকট এমন কিছু অর্থ ছিলানা যাহার দ্বারা ঐ প্রভূত ঐশ্বর্যা ক্রয় করিতে পারি।

সেই সমর লগুনের শ্রেন্ন হীরক-ব্যবসায়ী 'সলি যায়েলের' নাম জগছিথাতে। ইনি এক জন উচ্দরের ব্যবসায়ী ছিলেন। এক দিন আমি এই ব্যবসায়ীর সহিত রুশীয় রাজ-ঐশ্বর্যাের সম্বন্ধে কথাবার্তা কহিতেছিলাম। ইনি কথায়-কথার জানাইলেন যে উক্ত ঐশ্বর্যা পছন্দ ও ক্রেয় করিবার মত শক্তি একমাত্র আমারই আছে এবং যদি আমি সম্বত থাকি তাহা হইলে তিনি এই বিরাট ঐশ্বর্যাক্রয়ের সমস্ত দায়িত্ব আমার উপর ভাস্থ করিতে প্রস্তুত আছেন।

পর দিবদ ১০ই জানুরারী। এই দিবদের কথা আমি কোন দিন বিশ্বত হইতে পারিব না। দলি বোরেদের নিকট হইতে এই দিনই আমি একটি ফমতা-পত্র প্রাপ্ত হইলাম। তিনি আমাকে এশ্বর্ধ জ্বায়ের জ্বত ১,০০০,০০০ পাউও দিব'র নিমিত্ত র'জী হইয়াছেন। ইহাতে অ'র কে'ন সর্ত্ত ছিল না। অ'মার ইচ্ছামত সম্দয় দ্রব্য ক্রন্থের ক্ষমতা প্রাপ্ত হইলাম। এই প্রাট বখন আমার হস্তগত হয় তখন মামি প্রতি অঙ্গ-প্রতাঙ্গে দ্রুত রক্তসঞ্চালন অনুভব করিয়াছিল'ম; মন্তিক্ষে এক প্রক'র অভূতপূর্ব স্পান্দনে ন্ত্রের জন্ত সংজ্ঞা হ'র'ইল'ম। বাহা হউক ক্রমে শুস্থ হইয়া এই বির'ট কর্ত্রবা অগ্রসর হইল'ম।

নথাসম য় আমি নির পদে রুশিয়ার রাভধানী পীটদব র্গে পৌছ ইলাম। গছীরভানী রুশ-সরকারের কর্মচারিগণ অ'মাকে যথাযোগা সম'দারের সহিত অভার্থনা করিয়া ওশু করিলেন যে উক্ত ঐশ্বর্যা ক্রয় করিব'র মত যথেষ্ট অর্থ অ'মার নিকট অ'ছে কিনা। আমি তাঁহাদিগকে জানাইলাম ণে নে-সকল ভলক'র অ∤মি ক্রয় করিব ত'হ'র মূলা কিয়দংশ অগ্রিম দিব ও মণি-মৃক্তা নির্বিল্ল জ'হ' জ চাল'ন দিব র পর অবশিষ্ট'ংশ পূরণ করিব। প্রাথমে তাঁহ'রা অ'ম'র এই প্র'রে স্থত হই লন না; কিন্তু অ'মার অবিচলিত ভ'ব ফদয়জন করিয়া অবশেষে তঁ'হ'রা অ'নার প্রস্তাবে স্বীকৃত হই লন; যখন প্রথমে রাজপ্রাসাদ পদার্পণ করিল'ম তগন স'রা অক্সে একপ্রকার অভূতপূর্ব শিহরণ তর্ভব করিলাম। চতুর্দ্ধিকে হে-স্বল মণি-মুক্তা ও তলকার প্র্যাবেক্ষণ করিতেছিলাম ত'হা যে কেবল ভূতপূর্ব 'কা'র' ছিতীয় নিকে'লাসের বাহিত্ত স্প্তি ছিল এমন নহে; তাবহম'নক'লব্য'পী স্থিত ক্ষিয়ার রে'্ম'নফ র'জবংশীয়গণের নানারপ অভুত প্রকারের সেথানে বিদাম'ন ছিল।

এত দিন ধরিয়া ভাহবীর কার্য্যে আমি বতটুকু অভিজ্ঞতা ভর্জন করিয়াছি, তাহ'ত আমার দৃঢ় বিশাস এই রাজ-অলঙ্কারের তপূর্বে গঠন-প্রণালী আক্রকালকার মণিকারগণ ক্রনাতেও আনিতে পারিবেন না।

হীরা, পান্না, ভহরৎ, মৃল্যব'ন প্রস্তর, স্বর্ণপাত্র, স্ক্র্র্ম
মূল্যবান পরিচ্ছদ, প্রস্তর-ক্রেমে বাধান আলোকচিত্র এবং
আরও অসংখ্য প্রকারের অমূল্য ঐর্থ্য চুত্রনিকে ইতঃস্ততবিক্ষিপ্ত ছিল। সমস্ত দ্রাব্যের উপর একবার দ্রুত দৃষ্টি
নিক্ষেপ করিলাম। বে অল্কারটিতে আমার দৃষ্টি প্রথম
আরুষ্ট হইল তাহা একটি প্রকাণ্ড স্বর্ণপাত্র। এইরূপ

মতি স্ক্র উন্নত ধরণের কার্রুকার্য্য-ক্রোদিত অর্ণণাত্র যে গঠিত হই ত পারে তাহা আমার কর্মনারও অতীত। পাত্রটির ওজন সর্কান্দেত ১০৮ আউল; ১৭৯১ সালে ইহা গঠিত হয়। পাত্রটির চতুর্দিক এক হাজার তিন শত পঞ্চাশটি বৃহদাকার এবং অসংখ্য ক্র্ড্রু-ক্র্ডু স্থীরকথণ্ড দ্বারা শোভিত। জিপ্তাদা করিয়া জানিতে পারিলাম, বহু পূর্বেক ইহা পূজার্চনার পাত্রহিসাবে বাবহৃত হইত। সমসাময়িক পোপ কর্ত্বক প্রদত্ত একটি অঙ্গুরীও ইহাতে সন্নিবিট ছিল। হীরকথণ্ডগুলি কিঞ্জিৎ নীল আভাবিশিপ্ত ও শ্বেত বর্ণের। অর্ণমন্ন পাত্রটি পীটারস্বার্ণের গীজা হইতে আনীত হইয়াছিল। পরবর্ত্তী যুগে রাজকীন্ন প্রাপাত্র-হিসাবে ইহা ব্যবহৃত হইত। বর্ত্তমানে লণ্ডনের প্রাপাত্র-হিসাবে মিঃ ওয়াটস্বিক ইহার অত্যাধিকারি।

ইহার পর আমি যেস্থানে গমন করিলাম সেথানে এক
সেট চায়ের সরভাম ছিল। স্থানটি অন্ধকারাচছন্ন কিন্তু এই
মণিথটিত পানপাত্রের উক্ষ্ণো চতুর্দ্দিক আলোকিত
হইয়াছিল। ইহা 'জার' দিতীয় নিকোলা সর জগদিখাত
স্বর্ণময় চা-পানের পাত্র। সর্ব্দেমত ছয়ট পাত্র ছিল।
সবগুলিই স্বর্ণময়, কিন্তু ইহাদের হাতলগুলি ফুদৃশু হতিদস্তে
নিম্মিত। ইহাদের মোট ওজন ২০ পাউও এবং ক্ষোদনকার্য্য অতুলনীয়। কোন্ স্বর্ণকার যে ইহা প্রস্তুত করিয়াছেন
তাহা জানিবার উপায় নাই, কারণ পাত্রে তাহার নামের
উল্লেপ ছিল না। তবে তিনি যে এক জন সমসাময়িক শ্রেষ্ট
ছতরী ছিলেন সে-বিষয়ে বিশ্লুমাত্র সন্দেহ নাই।

একতলার একটি প্রকাণ্ড কক্ষে গ্রীক্ ক্যাথলিক পুরোহিতের স্বর্ণথচিত পরিচ্ছদ ছিল। এই অপুরুর স্থান-সমারোহে আমার চক্ষু ঝলদাইয়া গেল। পরে আমি যে ক্ষুদ্র প্রকোন্তে প্রবেশ করিলাম সেথানে সোনার ফ্রেমে বাধান কতকগুলি ছোট ছোট ছবি দেখিতে পাইলাম। চিত্র-গুলির অন্ধন এত স্কার যে সাধারণ শিল্পীর পক্ষে ইহা চিত্রিত করা সম্ভবপর নহে। পার্মে টেবিলের উপর একটি কাম্মকার্য্যময় বাশরী শায়িত অবস্থায় ছিল, আজ্কাল এই প্রকারের একটি বৃহৎ হস্তিদন্ত অত্যস্ত তুল্ভ।

মজ্যপর নানাবিধ জল্প-জানোয়ার-ক্ষোদিত কতকগুলি মূল্যবান প্রস্তর একস্থানে সুসজ্জিত রহিয়াছে দেখিলাম। পূথিবীর মৃত ভীবজন্তদের ইহা এক কৃত্র চিড়িয়াথানা বলিয়া আমার ৫ তীয়মান হইল।

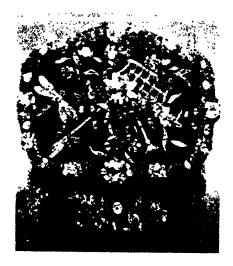
ঐ কন্দের আর একটি টেবিলে নানা প্রকারের হীরক ও অক্তান্ত প্রস্তর ক্লোদিত হাতলওয়ালা একটি তরবারি



বৈ৷মান্ফ্ বাজ-বংশের প্রবাস্মণির সম্বোহ

দেখিতে পাইলাম, ইহাই 'পীটার দি গ্রেটের' ব্যবহৃত অস্ত্র। এলিজাবেণ বার্গনারের প্রযোজনায় যে 'ক্যাথারিন দি প্রেট' দার্যক চিত্র প্রদর্শিত হয় তাহাতে ডগলাস্ ফেয়ার-ব্যাৎস্ (জ্নিয়ার) 'পিটার দি গ্রেটর' ভূমিকায় অবতীণ হইয়া এই অস্ত্রের অনুকরণে রচিত একটি অস্ত্র বাবহার করেন। মারলিন ডিটারিক্ও এই অসিসংক্রান্ত একটি ছায়াচিত্র ভূলিবার আয়োভন করিয়াছেন; তিনি এই অস্তাট ব্যবহারের জন্ত আমাকে অনুরোধ জানাইয়াছেন। বত্তমানে এই অস্তাট আমার নিকট আছে।

রক্তবর্ণ ভেলভেটের উপর কোণাকুনি ভাবে স্থাপিত ছয়টি প্রকাণ্ড আসল প্রস্তর ও গৃই দারি উক্ষ্ণল ছোট ছোট প্রস্তর দ্বারা সমাচ্ছাদিত একটি মুক্ট দেখিতে পাইলাম। ইহা সমাজ্ঞী 'ক্যাথারিণ দি গ্রেট' বিবাহোৎসবের সময় ব্যবহার করিয়াছিলেন। হতঃপর একটি মহামূল্য মণিময় টায়রা দৃষ্টিগোচর হইল। ইহার সন্নিকটে একটি প্রকাণ্ড হীরক-পত্র-ক্ষোদিত বোচ দেখিলাম; ইহার উপরিভাগে কতকগুলি পুদৃগ্য চুনী-পালা, মধাধানে গুইটি স্বচ্ছ রক্তমন্ত্র মূলাবান প্রান্তর এবং তিনটি প্রকাও আসল মুক্তা বসান ছিল। এই ধরণের কার্ককার্যামন্ত্র ক্রেচ আমি কোধাও কথনও দেখি নাই। মেঝের উপর একটি স্বুজ



শেষ কশ-সমাটের মরকভমণি-সল্লিবিষ্ট নভাধার

বর্ণের ফেলর কোটা দেখিতে পাইলাম; ইহা পঞ্চদশ ্বই য়র রাজ্যকালে নিম্মিত স্বর্ণ ও হীর কে থচিত একটি নক্স ডিপা; চতুর্জিকে ইংশার উক্তল আভা বিচ্ছারিত হইতে ছিল। ইহার পর খারও কতকগুলি সূর্ণ পেটিকা, প্রস্তরক্ষোদিত বড়ি, হীরা-বসান চস্মা এবং অক্তান্ত মহার্ঘ জড়োরা দেবিলাম। আমার সৃষ্ঠী ভিজ্ঞাসা করিলেন কোন কেন্দ্রব্য আমি ক্রয় করিব। উত্তরে তাঁহাকে জানাইলাম, দরে ঠিক হই:ল আমি সবগুলি ক্রয় করিব। লোকটি মূল্য বলিবার ম(গ্ৰ জারের গ্রীমাবাসে वर्ग এখানে জড়োয়া গহনা, জহরৎ অংগক আসবাবপত্র, কলা শিল্প. নানা থকার প্রাচীন বান্তান্ত্ৰ 8 উ জ্বল দর্পণ গুলি বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য। প্রোগম কক্ষের মধাস্থলে একটি বীণা দেখিতে পাইলাম, ইহার হ:বন্ত্র তথনও পর্যান্ত বেশ ভালই ছিল। ইহা অপূর্ব্যস্করী ফরাসী बाब्डी भारती आध्यादेशकार अविष्य करामी शास्त्रिकेन উপহার-স্বরূপ প্রদান করিয়াছিল। রুশ-করা**দী সন্ধিকালে** ১৮৭: ব্রীষ্টাব্দে ফরাসী প্রেসিডেণ্ট লোবে কশিয়ার গ্রাপ্ত

ডিউক পলকে এই বীণাটি উপহারশ্বরূপ প্রাদান করেন ইহা পরে জারের অধিকারে আসে।

কশ-সরকার আমাকে চিন্তা করিবার জন্ত ২৪ ২০ট সময় দিলেন। পরদিবস তাহারা আমাকে এই প্রস্তরাদি ক্রয় করিবার জন্ত আমি প্রস্তত আছি কিনা তাহা জিজ্ঞাসা করিলেন। উত্তরে জানাইলাম যে ঠাহাদের চাহিদার উপর আমার ক্রয় নির্ভর করিতেছে। যাহা হউক ঠাহারা আমাকে যে-দর বলি লন তাহা আমার নিদ্ধিই অর্থ হইতে অল্প ছিল। সরকারের নিক্ট প্রতিশ্রত আছি বলিয়া আমি ম্লোর কথা এগানে প্রকাশিত করিতে পারিলাম না।

সত্য কথা বলিতে কি এই মূল্যের কথা শুনিয়া আমি অত অ অস্থির হইয়া পড়িলাম। কারণ আমি বিশ্বস্ত সূত্রে জানিতে পারিলাম জাম্মান-সরকারের প্রেরিত প্রতিনিধি উক্ত ঐশ্বর্যাগুলি ক্রয় করিবার জন্ম তিন মাস ধরিয়া অবস্থান করিতেছেন। বুঝিতে পারিলাম জাশ্মান-সরকার রুশ-সরকারের চাহিদা অপেক্ষাও অল্প দিতে চান। যদি আমি ঐ দামে উহা গ্রহণ না করি তাহা হইলে রুশ-সরকার ভার্মান-সরকারকে সমুদ্র ঐশ্বর্যা বিক্রয় করিবেন--সে-বিহয়ে আমার কোন সন্দেহ রহিল না। গ্রহা হউক প্রথমে আমি ২০,০০০ পাউও কম দিতে চাহিলাম, কিন্তু রুশ-সরকার আমার প্রান্তার সমত হইলেন না। মুত্রাং আর কালবিগধ না করিয়া তাঁহাদের প্রার্থিত মূল্য দিয়া সমস্ত রুশ-রাজ-ঐশ্বর্যা ক্রয় করিলাম। বুটিশ ও রুশ সরকারের সর্ভানুযায়ী আমি ক্রীত নুলোর দাম জ্ঞাপন করিতে পারিলাম না, কিন্তু মোটের উপর যে অর্থ আমি প্রস্তরাদি ক্রেয় করিবার জন্ত লইয়া গিয়াছিলাম তাহা অংপেকা অনেক কম।

এখন ঐশ্বর্যাগুলি চালান দেওয়াও একটি ভীষণ দায়িত্বপূর্ণ কাজ। অত্যন্ত বিচক্ষণতার সহিত আমার সূদক্ষ কর্ম-চারীর সাহাযো সমস্ত জিনিয়গুলি গুছাইয়া লইলাম। প্রত্যেক অলক্ষারটি এত দৃষ্টি-আকর্ষণ যে আমি প্রায় কোনটারই কথা বিশ্বত হই নাই। যাহা হউক আমাদের সর্ত্ত অনুসারে উক্ত রাজঐশ্বর্য জাহাজে চালান দেওয়ার পূর্ব্ব পর্য্যন্ত সমস্ত অর্থ দিতে হয় নাই। আমাদের জাহাজটি লাট্ভিয়ার রাজধানী বিগাতে নোলর করিয়াছিল, সমস্ত মাল জাহাজে ভোলা হৈ হ'ল ক্লশ-সরকারকে একটি মোটা রক্ষের চেক্ কাটিয়া দিলাম। বাহা হউক বত দিন আমি জাহাজে ছিলাম তত দিন আমি নিদ্রা বাই নাই।

करत्रक मिन পরে জাহাজটি নিরাপদে লগু:নর বন্দরে আদিলে হুটাৎ কাহার আহ্বান আমার কর্ণে প্রবেশ করিল। ভাবিলাম আমার কোন পরিচিত বন্ধু বোধ হয় আমাকে লইতে আসিয়াভেন। কিন্তু পরে জানিলাম বন্ধরের শুর-কর্মচারী আমাকে ডাকিতেছেন। তিনি আমাকে প্রশা করিলেন, আপনি কি মিঃ নশান উইসজ? উত্তর দিলাম, হা আমিই বটে :—আমি রুশরাজ্ঞপুর্যা ক্রয় করিয়াছি কিনা সে-বিষয়ে আমাকে কন্মচারীটি প্রশ্ন করিলেন। আমি সন্মতিস্চক বাড় নাড়িলাম। এই সংবাদটি গোপন করিবার জন্ম আমি যথাসাধা চেষ্টা করিয়াছিল।ম। কিন্তু দেখিলাম আমার অজ্ঞাতদারে ইহা চতুর্দিকে প্রচারিত হইয়াছে। কথাচারীটি আমাকে জানাইলেন যে বর্তমানে মালগুলি শুল্প-আফিসের শুদাম-বরে জমা হইবে। এই থবর শুনিলা আমি একবারে বিশ্বিত হইলা পড়িলাম। কি উত্তর দিব বুঝিতে পারিলাম না। সমস্ত ব্যাপার ক্রমশঃ স্পষ্ট ভাবে ব্ঝিতে পারিলাম।

নে বীণাটির কথা আমি পূর্বে বলিয়াছি তাহা এঞ্চলে অধিকারস্থত্রে ডিউক পলের বিধবা-পত্নী রাজমহিতী পেলীর প্রাপ্য; ফুতরাং যথন তিনি জানিতে পারিলেন নে আমি রাজ্ঞপর্যা ক্রেয় করিয়া ফিরিতেছি তথন নিশ্চয়ই ঐ বীণাটি ও তাঁহার অন্তান্ত সম্পত্তিও ক্রম করিয়াছি। তিনি একণে ইংরেজ বিচারালয়ে এই বলিয়া দাবি উত্থাপন করিলেন যে তাঁহার ব্যক্তিগত সম্পত্তিতে কাহারও অধিকার নাই এবং কেহ উহা ক্রয় করিতেও পারেন না। যাহা হউক আমাদের কৌতূহলোদীপক বিচার আরম্ভ হইল। হুপ্রেসিদ্ধ ব্যারিষ্টার স্থার পেটি,ক হেষ্টিংস ছিলেন আমার প্রধান কৌ জিল; ইহার হত্তে মোকদ্দমার ভার অর্পণ করিয়া আমি নিশ্চিত্ত হইলাম। আমার দৃঢ় বিশ্বাস ছিল আমি জয়লাভ করিবই করিব: রুণ-সরকারের কর্ম্মচারিগণ মানার সাক্ষী হইয়াছিলেন। কোট রাজমহিষী পেলীকে শামার সমস্ত ব্যয়ভার গ্রহণ করিবার ডিক্রী দিলেন; কিন্তু জানিতাম ইনি কপদ্দকশূল, প্রতরাং টাকার জল তাঁহাকে আমি পীড়ন করি নাই। তাঁহাকে আমি শুধু একটি অনুরোধ জ্ঞাপন করিলাম বে যেন উক্ত বীণাটি বিক্রয়ের সময় তিনি উপস্থিত থাকেন। রাজ্ঞী সহজেই সন্মত হইলেন এবং এক বার ঐ বীণাটি শেষ বারের মত বাজাইতে



পুথিব:র সকা,প্রা থেশর রোচ। ইহার কার্রুকার। অপুরু। মধ্যভাগের মণিটর সাদৃশ নিভান্ত বিরল

দিবার জন্স অংমাকে অন্থরোধ করিলেন। এই ঘটনাটি অচিরাৎ জগতের প্রত্যেক থ্যাতনামা সংবাদপত্তে ও চিত্রে প্রকাশিত হয়।

'ক্রিষ্ট'তে রাজঐশর্যা প্রকাশ্রভাবে নীল'মে বিক্রয়ের কথা চতুদিকে প্রচারিত হইল। ধনী গৃহস্ত, ব্যবসায়ী, লেখকগণ ও অভাত শ্রেণার বহু দর্শক দলে দলে লণ্ডনে আগমন করিতে লাগিল।

এই বিশ্ব-মাকর্ষণের কেন্দ্রস্থানার ছিলেন রাজ্বমহিধী পেলী। মার্কিন ধনকুবেরগণ এই বিজ্ঞারের শ্রেষ্ঠ জেতা হইয়া দাড়াইলেন, অধিকাংশ তাহারাই জয় করিলেন। ইংরেজগণ জেতা হিদাবে ইংলের অপেকা কোন অংশে কম ছিলেন না। ফরাসী পোর্ত্তগীজ এবং অস্তান্ত দেশের লোকেরা অল্পার অল্পারপত্র জয়

করি.লন। এই স্ত্রে বলা প্রয়োজন যে ক্যাথারিন দি গ্রেটের বিবাহমুচ্ট, হারকগঠিত নভাধার ও সেই ফুলর ব্রোচটি একজন সম্রাপ্ত ইংব্রজ মহিলা ক্রয় করিলেন। বীণাটির কথা সর্বাপেক্ষা অধিক প্রতারিত হইয়াছিল। সকলেই ঐট ক্রারের জন্স ব্যস্ত হইয়া

পড়িল, কিন্তু আঞ্চি এই ইতিহাস-প্রসিদ্ধ জিনিষটি নিজের ব্দু সু রাখিয়াছি। অবশিষ্ট ঐশুর্যা একসঙ্গে এক জনকে মণিময় টায়রাটি মার্কিন ধন কুবেরগণ ক্রেয় করিয়াছিলেন। বিক্রেয় করা হইবে; জ্ঞানি না কাহার ভাগ্যে ঐ বিরাট ঐশ্বর্যা লিখিত আছে: তবে সাধারণকে এ-গুলি পুনরায় দেখান হইবে না। সম্ভবতঃ ঐখর্যাগুলি পৃথিবীর কোন দুরান্তরে স্থিত রক্ষণাগারের ব্দস্ত ক্রীত হইবে। 📌 🐪 🕟



শারদ-জী শিলা--- শ্রীবজেমর সাহা

জাগরণী

ঞ্জীসজনীকান্ত দাস

ভূমি বৃশিরাছ, ভোমার মনের ক্ষ্ধা
ভাক্ষো জাগে নাই, আমারে কেন্দ্র করি,—
অসহ আবেগে চেউরে চেউরে ভাঙে স্থা,

শক্ষ-বালুতটে তিলে তিলে বার মরি।
ভব বালুতলে বহে কি ফল্পধারা,
ভরক্ষ মোর তাই নাহি পার সাড়া?
উন্মাদ চেউ উঠে পড়ে বিধাহারা,
গুমরিয়া কাঁদে চিরদিবাবিভাবরী।
ভূমি বশিরাছ, ভোমার মনের ক্ষ্ধা
আক্ষো জাগে নাই, আমারে কেন্দ্র করি।

মরুপথে আমি চলেছিন্ন উদাসীন,
ভঙ্ক স্রোতের শীর্ণ রেখাটি টানি,
ভেবেছিন্ন মনে, শেষ হরে এল দিন,
মুক হরে এল মনের মুখর বাণী!
তিমির বনানী উদার অন্ধলারে
ঢাকিবে আমার ছঃসহ ছখভারে,
হেনকালে ভূমি স্থগোপন পদচারে
সহসা স্থ্যে দাঁড়ালে বনের রাণী,—
সরুপথে আমি চলেছিন্ন উদাসীন,
ভঙ্ক স্রোতের শীর্ণ রেখাটি টানি।

দিনের রৌজ স্তিমিত পত্রছায়ে
আপনি আড়াল, বুঘু যেন দিল ডাক,
শ্রাবণ-গহনে যেন রঞ্জার বারে
ঘন কালো মেঘে উঁকি দিল বৈশাধ!
ভামতৃণদল ছুঁরে যার রবিকর,
শাধা-অবকাশে হাসিছে দ্বিপ্রহর,
মারা-গোধ্লির এ নহে আড়ম্বর—
নির্বাক নহে, বাণী মোর হতবাক্।

দিনের রৌক্ত স্তিমিত পত্রছায়ে
আপনি আড়াল, ঘুযু যেন দিল ডাক।

বিশার মানি চাহিলাম আঁথি তুলে,
ফুলিয়া ফাঁপিয়া কাঁপিয়া উঠিল প্রাণ,
মক্রুকে যেন তরক উঠে হলে,
হই কুল ভেঙে ছোটে জীবনের বান!
তুমি গান গাহ বনের আড়ালে বসি,
আমার আকাশে পড়েন। উলা খসি,
এযে খররবি, নহে ঘাদশীর শশী,
তক্ষণ দিবস, নহে দিবাঅবসান!
বিশায় মানি চাহিলাম আঁথি তুলে,
ফুলিয়া ফাঁপিয়া কাঁপিয়া উঠিল প্রাণ।

প্রথম আবেগে ছটি তব হাত ধরি
নিবে-আসা প্রেম নিবেদন করিলাম,
কোন্ অতীতের কোন্ পরিচয় শ্বরি,
সহজ প্রণামে দিলে কি প্রেমের দাম!
বলিলে, 'আমার থাক' প্রণম্য ভূমি,'—
ছল ছল রূল, স্থগতীর বনভূমি,
ফুর্মদ স্রোত তটেরে চলে না চূমি—
ধরবেগে তার পূর্ণ মনস্কাম।
প্রথম আবেগে ছটি তব হাত ধরি
নিবে-আসা প্রেম নিবেদন করিলাম।

তথন বৃক্তি নি, আজো না বৃক্তিতে পারি, কি ছিল তোমার মনের অস্তরালে, আকালের মেঘ ঢালে অকারণ বারি, আমি পড়ি বাঁধা আপনার মায়াজালে। তে:মারে স্থাজিয়া তোমারেই ভালবাসি,
ভাজিদাগর পার হরে প্রেমে ভাসি,
আপনার মনে রচিয়া কালাহাসি,
প্রেমের ভিলক পরটে ভোমার ভালে।
ভগন বৃধি নি, আজো না বৃধিতে পারি,
কি ছিল ভোমার মনের অস্করালে।

কুধা তব আজো জাগেনি আমারে বিরি,
কবে তা জাগিবে, আমিও জাগিরা রব,
দখিন পবন বহে বাবে ধীরে ধীরি,
আমারে একদা মনে হবে অভিনব।
মক্ত-বালুতটে হাসিবে তৃণের দল,
তারে ছুরে জল ছুটে বাবে কল কল,
ভোমারে ছলিবে আমার মনের ছল,

চেউরে চেউরে কানে স্তবের বচন কব, ক্ষা তব আর্দ্ধো জাগেনি আমারে থিরি, কবে তা জাগিবে, আমিও জাগিয়া রব।

প্রেরদী, আজিকে ভোমার প্রণামধানি,
লইফু প্রেমের প্রথম শ্বরণরূপে,
আমার মনের কাটুক সকল গ্লানি,
ভোমার নতির পুত মঙ্গলধূপে।
শুভ জাগরণে যাক শ্বপ্নের জালা,
দেহবেনীতলে পড়ে থাক ফুলডালা,
জানি একদিন তুমিই গাঁথিবে মালা—
পরিব একদা সেই মালা চুপে চুপে।
প্রেরদী, আজিকে ভোমার প্রণামধানি,
লইফু প্রেমের প্রথম শ্বরণরূপে।

সন্তান

শ্ৰীশাভা দেবী

ৰড বউ প্ৰসাধনে বাস্ত। আয়না টেবিলের পাশেই খাটের উপর মর্রক্সী, বেগুনফুলি ও আগুন রঙের তিনধানা জরির জংলা বেনারসী শাড়ী পড়িয়া রহিয়াছে, হাতকাটা কিংথাবের জামা ও চওড়া সুরাটি জরির পাড়-ৰসানো হণুদ রঙের জাম: ছটির ভিতর কোন্টি কেনারসীর সঙ্গে বেৰী মানাইবে ভাবিতে ভাবিতেই মুকুল চুলের রাশির ভিতর দিনা চিহ্নণী চালাইতেছে। টেবিলে একটা ছোট গালার কাজ-করা বান্ধের ডালার উপর একছডা মুক্ত'র মালা ও একটি হীরার কন্তী বাক্ষক করিতেছে। খোঁপাটা মুকুলের মনের মত হইল না, বড় খাড়ের কাছে নামিরা পড়িরাছে : আবার গোড়ার ফিডাটা খুলিরা ফেলিরা বড় চিক্রণী দিয়া সমস্ত চুলের গোছা সে ঠেলিয়া মাথার প্রায় মারাখানে আনিয়া ফেলিল। ফিভাটা বাঁধিয়া টেবিলের আরনার দিকে পিছন ফিরিয়া দাঁড়-করা আরনার ভিতৰ চাহিল, ছই হাতে আলগা ধোঁপাটা ভুলিয়া ধরিয়া

দেবিল এবার দিব্য মানাইরাছে; উচু খোঁপার তলার মজন্তার ছবির মত চূর্ণ কুন্তলগুলি শুভ্র ঘাড়ের কাছে ছলিতেছে। এমন খোঁপা কাপড় দিরা চাকিরা ফেলিতে হইবে বলিরা মনে হুঃখ হইতেছে বটে, কিন্তু যেমন ভেমন খোঁপার উপর মাধার কাপড়ই কি তেমন মানার ?

ছোট ননদ মারা ঘরে ঢুকিয়াই গালে হাত দিরা বলিল, "বাপরে বাপ, আজ কার বিয়ে বৌদি, দাদার না— ছোড়দার? ক্লপে ত ন্তন বৌদিকে হার মানিরেইছ, জাবার সাজেও বদি সকলকে তাক দাগিরে দাও ত সে বেচারীকে বে কেউ দেখবেই না।"

মুক্ল মুখনাড়া দিরা বলিল, "ত। কি করতে হবে শুনি? মুখে খানিকটা কালি মেখে আর গরনা কাপড়গুলো আঁতাকুড়ে ফেলে দিরে এলে যদি ভোমাদের মনোবাঞা পূর্ণ হর ত বল তাই না হয় করা বাছে।"

শারা বেচারী ভালমামূষ, তাড়াভাড়ি নরম হইরা

বালন, "না ভাই, তা কেন? তে:মার দিব্যি ঝাড়া হাত পা, তুমি সাজ্ঞবে না ত কি আর আমর: চারটে ছেলে কোলে কাঁথে ঝুলিয়ে সেজে বেড়াব?"

মুক্ল ঠেঁটে উন্টাইরা বলিল, "ঐ ত বিপদ! ঝাড়া হাত-পার হিংসেতেও বাঁচ না, আবার যত দিন না একটি এসে চাঁা ভাঁা করবে ভত দিন নেই নেই ক'রে নাকে কালারও শেব নেই। আমি বাপু ও-সবের ধার ধারি না। অ'মার কোনোদিনই ও-সব সাধ ছিল না। ব'ঙালীর ছেলে আজ পেট ছাড়ছে, কাল পিলে ব'ড়ছে, অমন সম্পদ একটি পেরে লাভের মধ্যে নিজেরও ত আহারনিদ্রা যার ঘুচে, তার চেরে যেমন আছি বেশ আছি।"

মায়া বলিল, "তাই ব'লে একেবারে খালি খাঁ খাঁ বাড়ি আবার কারুর ভাল লাগে শুনি নি।" মুকুল বেগুনফুলি শাড়ীটা ঘুরাইয়া পরিয়া মাখার কাপড় টানিতে টানিতেই ঘর হইতে বাহির হইয়া গেল। মায়ার কথার আর উত্তর দিল না।

মেজ পিসিমা পিছনের দরজা দিরা হাপাইতে হাপাইতে চুকিতেছি লন, তিনি বলিলেন, "হাাগা বৌমা, মিষ্টির ঘরের চাবি থোলা পড়ে রয়েছে, সব যে লুট হয়ে যাবে বাছা।"

মারা বলিশ, "বৌদি নি.জর গরনা-কাপড়ের ভাবনাতেই অছির ত ভাঁড়ার সাম্লায় কখন বল। এই ত সবে সাক্ষ শেষ ক'রে ঘর থেকে বেরিয়ে গেল। আমাদের চারটে ছেলে টেনেও বিশ্ব মাথায় ক'রে বেড়াতে হয় আর এঁদের নিজেদের থেয়ে শুরেই কোনো কাজের আর অবসর মেলে না।"

পিসিমা বলিলেন, "বৈচে থাক ওরা বেটের কোলে।
ছুই এসেছিল ব'লে তবু ঘরে ছটো কচি-কাচার মুখ দেখে
বাচ্ছি। নইলে বাড়ি নয়ত পিজরাপোল। ওদিকে দাদা
বাতের বাথা নিয়ে কোঁকাচ্ছে, এদিকে হাপানি নিয়ে আমি
কোঁন্ কোঁন্ করছি। ছেলে ছটোর ত সারা দিনে দেখা
নেই, রাত দশটা বাজলে তবে ঘরে পা দের। বৌও
হয়েছেন তেমনি, দোকান বাজার স্যাকরা আর দরজির
সংক্ষই তাঁর সম্পর্ক, ল্যাজে একটা মোটর বৈধে সারা
দিন ত তাই ক'রে বেড়াচ্ছেন। থাক্ত কোলে একটা
কিছু ত ছ-মণ্ড নাড়তে চাড়তেও ঘরে মন বস্ত।"

মারা বলিল, "সাত বছর ত হার গেল বিরে হরেছে, আর কবে হবে বল? আমারই ত বরুস, বৌদির বিরের সমরই আমার পান ছ-মাসের ছেলে। এইবার একটা ডাক্তার-টাক্তার দেখালে পারে। বলতে গেলে ত মারতে আসবে সব।"

পিসিমা বলিলেন, "তা মারতে আস্বে বইকি! অমন অভাব না হ'লে আর অমন কপাল হবে কেন? ছেলের মা হওরা কত তিশিলার ফল তা কি আর একালে কেউ বোঝে? হ'ত সেকাল ত ব্রত েলা। কাকীমার আমার বিরের আট বছর পেরিয়ে বেতেই ঠাকুমা এনে গলায় সতীন গেঁথে দিলেন; চিরটা কাল সতীলক্ষী সব সহু করেছেন, কিন্তু নিজের অদৃষ্ট ছাড়া কাউকে দোষ দেন নি। একটা সথের জিনিয় কথনও দোন নি, বল্তেন—কোন্ ভাগো আমি ওসব ছোঁব, সিঁথির সিঁহরটুকুই আমার বজার থাকুক।"

মারা বলিল, "সে-সব সেকালের কথার কাজ কি বাপু, এখন নতুন বোটি বংশ বজার রাখলেই আমরা বর্তে যাই। এও মস্ত উনিশ বছরের মেরে, কেমন হবে কে জানে ?"

পিসিমা বলিলেন, "তার মার ত শুনি পাঁচ ছেলে ভিন মেরে। এই ভরসাতেই ত আনা বে যাহোক ছটো-চারটে কিছু হবে। নইলে শুধু টাকা ওড়াবার জন্তে ভ বৌ করা নয়।"

মুক্ল নববধুর বৌভাতের শাড়ীটা আলমারীতে তুলিরা রাধিবার জন্ত ঘরে আসিতেছিল আড়াল হই.ত কথাটা গুনিল। নিমেবের জন্ত তাহার মুখখানি অহকার হইরা গেল। তবু জোর করিয়া মুখে হাসি টানিয়া সে ঘরে চুকিল। তথনও গুনিল মায়া বলিতেছে, "বামার এই বিহেজোড়া ঘরবাড়ি, মা'র কত সাধের সংসার, ঠাকুরমারই কি কম শ্বতি এর মধ্যে? খাট আলমারী বাসন-কোশন সোনা রূপো সবের সঙ্গে তাঁদের এতকালের মায়া পরতে পরতে জড়িয়ে আছে। বৌ দর যদি ছেলে পিলে না হর তবে আর এ সবের অর্থ কি ?—"

মুকুল চৌকাঠে পা দিরাই বলিল, "কেন ভাই ঠাকুর বি অত ভাবনা কিসের? আমার মন্তই ত স্বাই হয় না! হলেও ত তোমার ছেলেরা রয়েছে, তারাই না হয় সংসার সাক্ষিয়ে রাধ্যে।"

পিসিমা বিরক্ত হইয়া বলিলেন, "বৌমা, আপন মামী হও, যেটের বাছাদের জমন ঠেস দিয়ে কথা ব'লো না।"

₹

मूक्न जारात क्रिश (योवन ও वनकात व्यमाधन नरेश) বেশ ছিল। মধ্যবিত্ত পরিবারের পাঁচ সন্তানের এক সন্তান সে, বিবাহের আগে ঐশ্বর্য্য কি বিলাদের পরিচয় বিশেষ পায় नारे। धनी व्याधीयवद्गामत त्मिया यथन रेक्स कतिछ বেনারসী শাড়ী পরে তখন তাহাকে শান্তিপুরে ভুরে পরিরাই খুণী হইতে হইত, যথন ইচ্ছা করিত প্রতি অঙ্গক্ষেপে রত্ব অলহার বহার দিয়া উঠুক, তথন ছই হাতে ছই গাছা ভার-জড়ানো শাখা পরিয়াই তাহার দিন কাটিত। আয়নায় আপনার প্রসাধনের সহস্র ক্রটি দেখিয়া মন কাঁদিয়া কাঁদিয়া উঠিত, কিন্তু মুখে কিছু বলিবার উপায় ছিল না—সে যে গরিবের ঘরের পাঁচটার একটা ! উক্ত্রণ গৌরবর্ণ রঙের জোরে হঠাৎ তাহার বিবাহ হইয়া গেল এমন ধনী লোকের ঘরে। মুকুল তাহার কুমারী জীবনের যত অপূর্ণ সাধ ও যত অনামাদিত সুথের কথা নিজের কাছেও স্বীকার করিতে ভয় পাইত, আৰু তাহায়া সব নিজ নিজ দাবি লইয়া উপস্থিত হইল। শাড়ী গহনা, গাড়ী আসবাব, আমোদ আহ্লাদ কোনও ভোগের ইচ্ছাই সে মিটাইতে ভূলিন না। এখনও একটা ইচ্ছা আর একটা ইচ্ছা ত্রাগাইরা তুলিতেছে। লাত বছরে মুকুল অনেক স্থাবর মধ্যে বু**বিয়াছে মাসুহে**র আকাজ্মার শেষ নাই। সারা জীবন যদি নিত্য নৃতন আকাজ্ঞা মিটাইরা বাওরা বার তাহা হইলে জীবনে আর कामा दक्षि कि? देशंहे छ कीवन। किन्द आनत्मद এहे পূর্ণ পদরার মাঝধানে শিশুর কচি মুখ কোনদিন উকি দের নাই। মুকুরা মনে করিত সে-সবের জন্ত জীবন ত পড়িরাই আছে, এখন ছই দিন ও সকল দার ভূলিরা জীবনটা ভোগ করিয়া **লওরাই** ত পরম লাভ।

কিন্তু সাতটা বছর বে কাটিয়া গিরাছে, সমস্ত সংসারে বে সাড়া পড়িয়া গিরাছে ভাহা মুকুল টের পাইল ত্থম্বপ্লের মাঝখানে আৰু প্রথম দেবরের বিবাহের পর। ছোটবউ মাস-আটেক হইন আদিয়াছে। তাহার শরীর ভাল বাইতেছিল না। তাহার মা তাহাকে অবিশয়ে পাঠাইয়া দিতে বলিয়াছেন। তাহারই ব্যবহা করিতে মুকুল আদিয়াছিল স্বামীর দরবারে।

দাঙ্গণ গ্রীমের মধ্যাকে ইন্ধিচেয়ারের উপর বৈহাতিক পাধা চালাইরা জয়ন্তবাব মুসালিনি-চরিত্রের বিশেষদ্ব আবিদ্ধার করিবার চেষ্টা করিভেছিলেন। কিন্তু নিজাদেবীর মোহিনী মায়ায় ভূলিয়া তিনি প্রায় মুসোলিনিকে বিদর্জন দিতে বসিয়াছেন, এমন সময় মুকুল আসিয়া মাধার চুলের ভিতর আঙুল চালাইয়া বলিল, "ওগো শোন, পরশু একটা ভাল দিন আছে, আজ যদি স্থবিধে-মত খবর দিয়ে দিতে পার, তাহলে ওরা পরশু সকাল-সকাল ছোটবৌকে নিয়ে বেতে পারে।"

জন্মন্ত চেরারের হাতল হইতে পা নামাইরা সোজা হইরা বদিরা অর্জজড়িত স্বরে বলিলেন, "কেন, কেন, বৌমাকে নিয়ে যাবে কেন?"

মুকুল স্থামীকে একটা ঠেলা দিয়া বলিল, "কেন স্থাবার ? স্থাকামি রাখ ফান না খেন কিছুই। প্রথমবার, এ সময় বাপের বাড়ি না পাঠালে কি চলে ? মার মত যত্ন কে করতে পারবে ?"

জরন্ত মুক্লের মুখের দিকে তাকাইর! বলিল, "প্রকান্তও ছ-দিন বাদে ছেলের বাপ হবে? এই দেদিন বই-বগলে কলেজ ফাঁকি দেবার মতলব আঁটত, ভাবলেও হাসি পার।"

ভাগত হাসিরা উঠিল, কিন্তু তাহার হাসিটা নিছক হাসির মতই ওনাইল না, মুকুলের কানেও সে হাসিটা বেহরা ঠেকিল। সে চিরকালের মত হাত নাড়িরা কানের ঝুম্কা হুলাইরা ঠাটার হারে কোনও জবাব দিতে পারিল না। জরস্ত মুকুলের হাতভর। চুড়িগুলি ঘুরাইতে ঘুরাইতে নিজেই কথা তুলিল, "আর কি? এইবার হুকান্তই হবে বাড়ির কর্ত্তা; বুড়ো বরসে তার ছেলেপিলের হাততোলা থেরেই আমরা থাক্ব। তার চেরে লোকদেখানো সংসার ছেড়ে এখন থেকেই বানপ্রস্থ অভ্যাস করা বাক্, কি বল?"

মুকুলের মনের ভিতর সজোরে একটা ধালা লাগিল। সে নারী হইরাও একথা এতদিন ভূলিরাছিল কি করিরা? লোকচক্ষে তাহার এ সাজোনো ঘর-সংসার আড়ম্বর আরোজন অলকার প্রসাধন সকলই নিরর্থক, সকলই মন ভূলাইবার ক্ষণিক চেটা ছাড়া আর কি? সে যে সভ্যসভাই জীবনের আনন্দরস এই সকলের মধ্য হইতে আকণ্ঠ পান করিতেছিল বলিলে কে বিখাস করিবে? জীবনধাত্রার এই সমারোহে বসন্তের পৃষ্পসন্তারের মত বর্ণগন্ধের প্রাচ্বা আছে, কিন্তু স্প্রিলীলায় এ যে নিম্মল, একথা সে আজ প্রথম অন্তুত্তব করিলেও স্থামী ভাহার পূর্বেই বৃষিরাছেন ভাবিয়া মুকুলের মন ব্যথায় ভরিয়া উঠিল। তবু অভিমানের ত্মরই জয়ন্তর গা যে বিয়া বিয়া লাল ঢাকাই শাড়ীর পাড়টা আঙুলে জড়াইতে জড়াইতে সে বলিল, "কেন আমরা ছ-জনে ছ-জনের কি যথেষ্ট নই? আমানের নিজেদের বর্ত্তমান স্থশ-সাধের কি কোনো মূল্য নেই? সবই ভবিষ্যতের মুখ চেয়ে?"

জন্ত মুক্লের গালে টোকা দিয়া বলিল, "মূল্য আছে বইকি মুক্ল? কৈন্ত বর্তমান কতট্ক, একটা মূহুর্ত্তরও কম নয় কি? জীবন মানেই একট্খানি অতীত আর অনেকথানি ভবিবাৎ। সেই দিকে চেয়েই আমরা বেঁচে থাকি।"

মুক্ল বলিল, "বাবা রে বাবা, দার্শনিকের তম্ব-কথা এখন থাক্। ও-সব আমার মাথায় ঢুকবে না। তোমার থদি নিতাস্তই ভবিষাৎ না হ'লে চল্ছে না ত সেকালের কন্তাদের মত আর একটা বিধে কর গে না।"

জয়স্ত বিশিল, "থাক্ মুকুল, তোমার মুখে ওসৰ কথা আর শুন্তে চাই না। ও-সব বল্বার জন্তে এখনও অনেক সেকেলে বুড়ো বুড়ী বেঁচে আছে।"

মুক্লের বৃকের ভিতর কে যেন একটা জলন্ত ছাঁাকা লাগাইরা দিল। ইহারই মধ্যে এ-কথাও তবে উঠিরাছে! তাহার সাত বৎসরের ঘর-সংসার, তাহার একান্ত নিজম্ব মানী, সমস্তই এক কথার জনারাসে মিথা করিরা দিবার কথা এই বিংশ শতাব্দীতেও মান্ত্র ভাবিতে পারে? মুক্লের চোধহটি জলে টল টল করিয়া উঠিল। সে দুরে সরিয়া বিসিনা ঠোঁট ফুলাইরা স্থামীকে বলিল, "এসব কথাও ভোমাদের হরেছে, অথচ আমাকে তুমি লুকিরে রেখেছ? আছো বেশ!" জার বেণী কথা মুক্লের জোগাইল না।

ক্ষমন্ত বলিল, "অন্তে যদি তোমার মনে কট দেবার মত কথা বলে তাহলেও সব এসে তোমার কানে কানে ব'লে-বেতে হবে ?"

মুকুল অভিমানভরে বলিল, "তোমার যদি ভন্তে মিষ্টি লাগে ত আমাকে আর বল্বে কেন বল ?"

জয়ন্ত কথার উত্তর দিল না। আবার ইঞ্জি-চেয়ারে সেদ দিয়া বইরের পাতা উন্টাইতে লাগিল। মুকুল কিছুক্ষণ চুপ করিরা থাকিরা বলিল, "কোন্ সেকেলে বুড়ো বুড়ী বলেছে ও-কথা বল না একবার! সাত বছর এক সঙ্গে ঘর ক'রে মুখ বুজে কথা শুলো শুনে এলে, একটা জবাবা দিতে পার নি ?"

জয়ন্ত বিরক্ত হইয়া বলিল, "কি বন্ধা? আমার গলা ধরে কি তারা বল্তে এসেছিল বে আমি জবাব করতে যাব ? ওঁরা বলাবলি করছিলেন আমি শুনেছি। এ-রকম অবস্থায় মানুষ অমন ত্-চার কথা ব'লে থাকে, তাতে রাগ করবার কি আছে ?"

''কৃমিও তাই বল্বে?'' বলিয়া মুকুল তুম্ তুম্ করিয়া পা ফেলিয়া ঘর ছাড়িয়া চলিয়া গেল।

9

বিবাহ হইরা পর্যান্ত মুক্ল বাপের বাড়ি থাকে নাই।
কথনও কিছু উপলক্ষ্যে নিমন্ত্রণ থাকিলে সেই দিনই
সন্ধ্যার আবার শশুরবাড়ি ফিরিয়া আসিত। একে ত
জরস্কদের বাড়ির বৌরা বাপের বাড়ি বাওয়ার জন্ত প্রাসিদ্ধ
নয়, মন্ত মানী ঘর কিনা। তাহার উপর এ-বাড়ির
ঐশর্যাের আড়ছর বাপের বাড়ি গিয়া দেখাইতে মুক্লের
লক্ষ্যা করিত; সে গরিবের মেয়ে, শশুরবাড়ির ঐশর্যা
দেখাইয়া বাপকে কেন ছোট করিতে যাইবে? অথচ
এই-সব রাজসমারোহ ছাড়িয়া বাইতেও মন চাহিত না।

কিন্তু এত দিন পরে সামান্ত একটা ছুতা করিয়া স্বামীর সঙ্গে মন্ত কলহ বাধাইয়া সে বাপের বাড়ি চলিয়া গেল। দিতীর বার বিবাহের কথা কে বলিয়াছিল হুরস্ত কিছুতেই নাম করিল না, মুকুলের তাই প্রচণ্ড অভিমান।

বাপের বাড়ির সাদাসিধা সংসার। গুই ভাই, গুই ভান্ধ, গুই জনের কোলেই কুদ্র শিশু। তাহাদের সমত ভাবন'- চিস্তা সাধ-মাজাদ এই শিশু হুইটিকে িরিরাই। বড়-বৌ স্থার মেরে আড়াই বছরের, ছোটবউ বীণার থোকা এই সবে এক বছরের হইল। স্থার খুকী টুকু সারাদিনই তোতাপাথীর মত ছড়া বলে, "বিশ্তি পলে তাপুল তুপুল," নরত ছোট হুইটি কচি হাত মাথার উপর তুলিয়া পা বাকাইয়া নাচ স্কুল করে, অথবা ছোট কোলটি পাতিয়া ভাইকে আদর করিবার জন্ত কচি ছুটি হাত বাড়াইয়া কাকীমাকে সাধাসাধনা করে, "একটু বাচচাকে আমাল কোলে দাও না।"

টুকুর পাকামি দেখিরা ছই জারের হাসাহাসির অন্তঃ
নাই। টুকুর রাগ হইলে সে যখন ফোলা ফোলা গাল
ছটি আরও ফুল:ইরা ঘাড়ের ভিতর মুখ শুঁ জিরা বলিত,
"তোমান সঙ্গে আড়ি," তখন সুধা ঘরসংসার সব ফেলিরা
ছুটিয়া আসিত খুকীকে কোলে তুলিরা অজ্জ চুমা দিরা
রাগ ভাঙাইবার জন্ত।

খোকনকৈ দইরা ত বাড়িস্থন্ধ পাগল। একে সে ছোট একরন্ধি, তাহাতে আবার বাড়ির প্রথম পুতা। ঠাকুমা তাহার জন্ত সারাদিন পুরানো পাড়ের রঙীন স্থতা ভূলি:তছেন আর ছোট ছোট কাঁথার ছড়া সেলাই করিতেছেন—"আমার বুক জুড়ানো ধন, আমার পদ্মলোচন।" মা বিকাল:বলা রান্ধাবারা সারিয়া কাজল-লতার কাজল পাড়িয়া খোকাকে সাজাইতে বসে; তার পর তার কপালে মন্ত একটা কাজলের ফোঁটা পরাইয়া আল্র করিয়া বলে,

> "সাঁঝের বান্তি নড়ে চড়ে, বে আমার খোকনকে খোঁড়ে পুড়ে মরে সে আঁখার কোণে"

থোকা কি ব্রে জানি না, কিন্তু খল্ খল্ করিরা হাসিরা উঠে। বাপ জাঠা অ'পিস হই ত ফিরিরা সকলের আ.গ থোকনমনির থোঁজ করে। এক, গা ধূলা মাথিরা হামা দিতে দিতে থোকা জাঠার জুতা হুটা গিরা চাপিরা ধরিরা বসিরা বসিরা নাচে। কোলে উঠিবার ভিকা, সে যে আপনি উঠিতে জানে না। সেদিনও প্রতিদিনের মত সন্ধার খোকাখুকুকে খিরিরা সভা বসিরাছিল। কাকী বলিল, 'ছিকু, তুমি কাকে সবচেরে ভালবাস?" টুকু বলিল, ''মাকে, বাবাকে, ভোমাকে, ছোটভাইকে আছ ঠাকুমাকে।"

মা বলিল, "স্বাই:কই স্বচেরে ভাল্বাসিস্, মুধ্ধু কোধাকার ?"

কাকী বৰিল, "আমাকে কভটা বাসিদ্ ?" টুকু হুটি হাত বৰ্থ সম্ভব ছড়াইয়া বলিল, "এই এত্তধানি।" মা বলিল, "আর আমাকে ?"

টুকু বলিল, "মালো আলো আকাশ পর্যান্ত।" কাকী বলিল, "ভবে রে হুই, ভূমি না স্বাইকে স্মান ভালবাস ?"

খোকা হা**দা দিরা আসিরা মার পিঠ ধরিরা দাঁড়াইরা** ব**লিল, "ডুট্**টু বোকা।"

এমন কথা জগতে বে'ধ হয় আর কেহ কথনও বলে নাই। সকলে গালে হাত দিয়া বলিল, "ওমা দেখেচ, এরই মধ্যে ছেলের কি বোলচাল! পাকা ছেলে কোথাকার!"

টুকুও আঙ্*ল* তুলিয়া খোকার মুখের কাছে গিয়া নাড়িয়া বলিল, "পাকা ছেলে কোথাকার <u>!</u>"

যত টুকু সময় অবসর স্থা বীণার মুথে থোকা খুকু ছাড়া অন্ত কথা নাই, যেন পৃথিবীতে আর কোন ভীব কি পদার্থের অন্তির থাকা না-থাকার ভাহাদের কিছু আসিয়া যার না। মুকু: লর অল্কার শাড়ী ছই দিন প্রাতন হইয়া যার, ভাহার পর ন্তন একটার কথা না ভাবি.ল কোন রস্পাওয়া যার না। কিন্ত ইহাদের থোক টুকু যে নিত্যই ন্তন। হাজার হাজার বার মানবশিশু যে কথা বলিয়'ছে, যে লীলা-চাঞ্চলার লহর ভূলিয়াছে ভাহা এই খোকা-খুকুর প্রতি কথার প্রতি অলক্ষেপে যেন স্প্রতিত প্রথম দেখা দিতেছে। মুকুল এই পৃথিবীতে পাঁচিশ বৎসর বাস করিয়াও আজ ভাহা প্রথম আবিহার করিল।

খোকার চোথে ঘুম আসিরাছিল। মা ভাহা:ক কোলের উপর টানিরা আন্তে আন্তে দোল ইরা গান ধরিল—"ধন, ধন, ধন, এ-ধন বার হরে নাই তার বুথাই জীবন।" খোকা ছোট কচি মুঠিতে মা'র গলার হার চাপিরা বুকের কাছে আগাইরা আসিল।

আজ মুকু লর মনে বেদন'র কঁটা ভাহ'কে বুঝাইরা দিল, মাসুষ এ-সকল কথা গুধু ছড়া কটিবার জন্তই লিখে নাই। কত যুগ ধরিরা কত মারের মনের কথা এই ছোট ছড়াটুকুর ভিতর পুঞ্জীভূত হইরা আছে, তাহাদের বহু সাধনার আভাসও এই কথাগুলির ভিতর ফুটরা উঠিরাছে। তাই বুঝি তাহার আজ সতাসতাই বিশাস হইল সম্ভানের অভাবে স্বামী হয়ত আবার বিবাই করিয়াও বসিতে পারে। মুকুল হঠাৎ উঠিয়া গিয়া ঠাকুরবরে উপুড় হইয়া প্রণাম করিয়া জোড়করে বুলিল, "হে ঠাকুর, তোমায় কোনো দিন তাকি নি, আজ বড় হংখে ডাক্ছি। কাণা খোঁড়া যা-হোক একটা কোলে দাও ঠাকুর, কিছু সতীন-যন্ত্রণা দিও না।"

নীচে তথনও বীণা থোকনকে সূর করিয়া ঘুম পাড়াই:ভৃতিব,

"তারা কিসের গরব করে।

ে '(তারা) আগুনে পুড়ে কেন না মরে।"

মুক্লের মনে হইল বীণা বেন ত'হারই ধন-ঐশব্যকে বিদ্রাণ করিয়া ভাহাকে ভনাইরা ভনাইরা বাকাবাণ বর্ষণ করিতেছে।

8

মুক্ল আবার খণ্ডরবাড়ি কিরিয়া আসিয়াছে। বিধাতা তাহার ক্ষেদ রক্ষা করিয়াছিলেন তাহার জ্ঞাতেই। সে জানিত না বে, বে-সন্তান না-হও ার ত্রংধে ও অপমানে সে এত দিনের স্থামীর সংসার এক দিনেই ছাড়িয়া চলিয়া আসিয়াছিল সেই সন্তানকে সে তথনই আপনার শরীরে বহন করিয়া বেডাইতেছে।

একথা বৃথিবার পর জ্ঞার সে অভিমান করিয়া স্থামীর নিকট হইতে দুরে পড়িয়া থাকিতে পারিল না। এ-ফুসংবাদ স্থামীর আগে জ্ঞার কাছাকেও সে দিতে পারে না, দেওয়া চলে না।

ব'ড়ি আসিরা মকুল সবার আগে তাহার রেশমের শাড়ীগুলা বাহির করিয়া কাটি ত বসিল। এই কাপড়ের বোঝা আলমারীতে সাজাইরা রাথিরা কি হইবে? তাহার চেয়ে ত'হার অনাগত শিশুদেবতার পূজা ইহাতে করিলে মনে অনেক তৃথ্যি পাওয়া বাইবে।

खन्त लिथेन विनन, "अकि अकि, ध आवान कि

রক্ষের পাগলামী? ছেলের মা'রা কি কেউ ভাল কা শড় আর পরে না ? ওপ্তলোকে মিথো কেটে কুটিকুটি করছ কেন? বাজারে এখনও অনেক সিক্তের দোকান আছে। তোমার ছেলের জামা-কাপড়ের কিছু অভাব হবে না।"

মুক্ল লক্ষা পাইরা বলিল, "না না, ভার জন্তে নর। ও কপিড়গুলো পরতে আর আমার ভাল লাগে না, ভাই কেটে ফেল্ছি। মাসুরে কাট্লে তবু কোনো কাজে আসে, পোকার কাট ল ত স্বটাই লোকসান।" ভার পর মুখ রান করিরা বলিল, "ভাছাড়া এই বুড়ো বরুসে ছেলেপিলে হওয়া, বাঁচব কি মরব কে জানে? ভখন এক-আলমারী কাপড় দেখে ভোমরা আপশোষ করবে, নরত সতীন এসে পরবে। বিয়ে ত ভোমার ঠিকই ছচ্ছিল, মারের থেকে আমি আবার ক'মাসের জ্যুন্তে বাগড়া দিলাম।"

ক্ষমন্ত বলিল, "আচ্ছা থাক্, অত বাজে কথা বংক কাজ নেই। সমস্ত ইউরোপ আমেরিকা হৃদ্ধ মেরের বুড়ো বয়সে ছেলে হ'তে পারছে, আর তোমার বেলায় বমরাজা ওৎ পেতে ব'সে রয়েছেন আর কি ?''

মুক্লের মনে সত্যসত্যই তর চুকিরাছিল, হরত এবার তাহার গাইবার দিন খনাইয়া অ'সিরাছে। সব স্থ কি মাহ্যের বরাতে একসঙ্গে সহু হর ? তবু সে তর্নতা ঠেকাইরা রাখিতে চেটা করিত আপনাকে নানা তত্বকথা তনাইরা। মরণ ত মাহ্যুয়ের হই বই এক দিন, দীর্ঘ আয়ুর পিছনে চিরকালব্যাণী শৃত্যতা ফেলিরা রাখিরা মরার অপেকা এই মরণই ত ত'হার ভাল। তাহার অলায় জীবনের মধ্যে হিন্দুনারীর কাম্য সকল হুথই সে ভোগ করিরাছে; এখন যাইবার বেলা যদি বংশধারাকে চির-প্রবাহিত রাখিবার আলা ও গৌরব লইরা মরিতে পারে তাহা হইলে না-ই বা পৃথিবীতে আর কুড়ি-পাঁচিশ বংসর একই হুর্ঘ্যোদর ও হুর্ঘান্ত দেখিল এবং একই অরজল বার বার করিরা থাইল! গাহা সে কোনদিন দেখে নাই সেই সম্ভানের মুধ একবারটি দেখিরা হাসিরা সে জগতের নিকট বিদার লইতে পারিবে।

মুক্লের সম্ভানের অভার্থনার নানা আরোজনের সজে
দিন অগ্রসর হইয়া আসিতে লাগিল। ছেলের আমা,

মোনা, টুপি, দোলা, খাট, গাড়ী কোনটারই অভাব পিতা মাতা থাকিতে দিল না।

আখিনের পূজার বাজনার সঙ্গে সঙ্গে জয়স্তদের বাড়িতে শহুধানির হুড়াহুড়ি পড়িয়া গেল। পিসিমা, মায়া সবাই মহা ব্যস্ত। মুকুলের খোকা হুইয়াছে। পিসিমা বলিলেন, "ওরে ডাক্ রে ডাক্, দাদাকে ডাক্। গুই হাতে গিনি নিম্নে আস্তে বল, এত দিনে বংশপ্রদীপ ঘর আলো করতে এসেছে।"

মারা বিশিশ, "গিনি হবে এখন, বৌদির ত চোখ উন্টে গিরেছিল, সে আছে না গেছে তাই দেখ আগে। ছেলের আগে মাকে বাঁচিরে তোল, তার পর ওসব মাথা-মুণ্ডু ক'রো বত পার।"

ধাত্রী বলিল, "না গো না দিদিমণি, বৌদিদি ঠিক সাম্লে উঠেছেন। তাঁর কজে কোনো ভয় নেই। সোনার টাদকে একবার দেখিয়ে দাও, সকল ছংথকট সব যন্ত্রণা এক মুহুর্ক্তে ভূলে যাবেন।"

ঝি ছেলেকে তুলিরা মুক্লের মুখের কাছে ধরিল।
কি কক্ষণ অসহায় মুখ্থানি। দেখিয়া মমতায় মুক্লের
সারা প্রাণ আকুল হইয়া উঠিল। এ-ছেলে তাহার
বাচিবে ত!

মোহর, গিনি, টাকা লইরা, ঠাকুর্দাদা ঠাকুমা, কাকা পিসি সকলে দেখিরা গেল। মুকুলের মনের ভিতর কেবলই তুরু তুরু করিতে লাগিল। ভগবান এত সুখ তাহার সহিবে ত? এ-ছেলে বেন তাহার কোলজোড়া করিয়া বাঁচিয়া থাকে।

মুক্লের বৃকভরা ভালবাসা ও দেহ-মন-প্রাণের বত্ব আদর লইরা মুক্লের ছেলে এক বছরের হইরা উঠিরাছে। কিন্তু মুক্লের মুথের হাসি একেবারে স্লান হইরা গিরাছে। ছেলে ভাহার এত দিনেও উপুড় হইতে বসিতে কথা বলিতে কিছুই শিথে নাই। কলিকাতা শহরের কোন চিকিৎসার সাহায্য লইতে মুকুল বাকি রাখে নাই, কিন্তু সকলেই বলিয়াছে এ-রোগ শিবের অসাধা। ছেলের মেরুলওই জন্ম হইতে বিক্লত। ইহার চিরজীবন এমনই করিয়া কাটিয়া ঘাইবে।

শিশু মাকে চিনিতে শিধিরাছে, মাকে দেখিলে হাসে,
মা চলিরা গেলে কাঁলে। ডাক্তার ৰলে, "ইহার বুদ্ধির কোনো অভাব হইবে না। সবই বুঝিবে, তবে চিরক্তীবরই পরের উপর নির্ভর করিতে হইবে।"

মুক্ল বলে, "ভগবান সবই যদি ওর বাদ দিলেন বৃদ্ধিটুকুও না দিলেই পারতেন, আপনার ছর্ভাগ্য ভা হলে আর কোনো দিন বুঝতে হ'ত না।"

ছেলে যত মা'র মুখের দিকে চাহিয়া হাসে, মা'রু চাথ দিয়া ততই জল পড়ে। কাঁদিয়া কাঁদিয়া মুক্লের ছই চোখ লাল হইয়া গিয়াছে। সে দিবারাত্রি ছৈলে লইয়াই পড়িয়া আছে, তাহার বেশভ্যা আমাদ-আহ্লাদ সব বেন পূর্বজন্মের বিশ্বতির অতল তলে তলাইয়া গিয়াছে। এ-মুকুল বেন সে-মুকুলই নয়। অয়য়য় দেখিল, এমন করিলে ইহাকে বাচানোও মুয়িল হইবে। মুকুলকে ডাকিয়া অনেক ব্রাইয়া সে বলিল, "দেখ, মাম্বের পাঁচটা আঙুল কিছু সমান হয় না একটা ছেলে অমন হয়েছে ব'লে তার জন্তেই কি প্রাণটা দিতে হবে। বেঁচে থাক্লে আরও পাঁচটা ভাল ত হ'তে পারে। সবগুলোই অমনি হবে না।"

মুক্ল বলিল, ''আর আমার বেঁচে পাঁচটা ছেলে নিয়ে কাজ নেই। আমি স্বার্থপরের মত দেবতার দোর ধরে কাণা-ধোঁড়া ছেলে চেয়েছিলাম। ভগবান আমাকে উচিত শিক্ষা দিয়েছেন। এর চেয়ে আমার সতীন হওয়াও ভাল ছিল। তৃঃখ পেতাম আমিই পেতাম! আমার বদ্ধানাম বোচাতে চিরটা জীবন ধরে আমার প্রাণের বাড়া বাছা ত তৃঃখ পেত না।"



বাঙ্গালা সাহিত্যে গদ্য— একুমার সেন। রঞ্জন একাশালর, কলিকাডা ১৬৪১। পু. ২২২।

শ্রীযুক্ত সুকুমার সেন মহাশয়ের নাম বাঙ্গালা ভাষা সমালোচনার কোঁত্রে অপরিচিত নহে। তাহার এই সারগর্ভ পুত্তকথানি যে তথু উাহার পাক্তিত্যের উপযুক্ত হইরাছে, তাহা নহে,—বর্ত্তমান ভাষা-বিকৃতির ৰূগে এক্লপ ঐতিহাসিক সমালোচনার ধথেষ্ট প্রয়োজন আছে বলিয়া, ইহা সময়োপযোগীও হইয়াছে: বাক্লালা পাঠকমাত্রেই অবগত আছেন যে, বাঙ্গালা দেশে উনবিংশ শতান্দীর অক্সান্ত কার্ডির মধ্যে, গদা-সাহিতোৰ স্টুও একটি প্ৰধান কীৰ্ত্তি। সেই গল্প-সাহিত্য-সৃষ্টির ধারাবাহিক ইতিহাস সাধারণ পাঠকের অজ্ঞাত না ২ইলেও, খুব স্বস্পষ্ট নুহে। সুকুমার বাবুর বহুপ্রঘত্নসাধ্য রচনা, উনবিংশ শতাকীর আরম্ভ হইতে বর্তমান সময় পর্যান্ত, সেই সাহিত্যের যে তথ্যপূর্ণ ও ফুশুঝুল থসড়া-প্রস্তুত করিয়া দিয়াছে, তাহা শুধু বিশেষজ্ঞের নহে, সাধারণ পাঠকেরও আদরণীয় হইবে। এ-পর্যান্ত এই বিষয়ে যে-সকল পুস্তক থা প্রবন্ধ প্রকাশিত হইরাছে, তাহার মধ্যে অধিকাংশই নির্ভরযোগ্য বিবরণ হইতে পারে নাই ; কারণ, এই সকল রচনা হয় তথা ও অতথা নির্নিচারে এহণ করিয়াছে, অথবা শূক্তগর্ভ উচ্ছ,াদে পর্যাবসিত হইরাছে। জ্ঞাতব্য তথ্য-সংগ্রহ ও সুদ্ধ বিশ্লেষণ হিসাবে সুকুমার বাবুর পুস্তক নাতিদাৰ্য হইলেও মূলাবান্, তাহাতে সন্দেহ নাই ৷ সমগ্ৰ ৰাঙ্গালা গড়া-সাহিত্যের উৎপত্তি ও ক্রম-বিকাশ সম্বন্ধে, তাহার রচনাই পূর্ণাবয়ৰ না হইলেও, এ-পর্যান্ত একমাত্র শৃত্বলাবদ্ধ বিবরণ ৰাঙ্গালী পাঠকের গোচরে আনিরাছে।

কিন্ত স্কুমার বাবু যে-মনোভাব লইয়া তাঁহার গ্রন্থথানি রচনা করিয়াছেন, তাহা সাহিত্য-ব্লসিকের নহে, তথামাত্র সন্ধানী বৈয়াকরণের মনোভাব। ব্যাকরণ-অভিধানের দিক লইরা হাঁহারা চর্চ্চা করিয়াছেন, তাহাদের পরিশ্রম নিরর্থক, এ-কথা বলিতেছি না; কিন্তু একদিকে দৃষ্টি নিবদ্ধ থাকার **জন্ত**, নিছক বৈয়াকরণ অনেক সময় মাত্রাজ্ঞান হারাইরা বসেন। তুকুমার বাবু বাঙ্গালা গল্প-সাহিত্যের প্রায় সমস্ত খ্যাতনামা লেধকদের গঞ্জ-দ্রীতির বৈজ্ঞানিক বিশ্লেষণ করিয়াছেন। গবেষণা হিদাবে তাহার মৃল্য কেহই অস্বীকার করিবেন না; কিন্ত ভাষার পুঁটনাটি বিশ্লেষণই কোনও বিশিষ্ট গল্প-রীতির প্রকৃত সৌন্দর্যা উপলব্ধি করিবার একমাত্র উপার নহে। ইহা ভাষাতত্ব হইতে পারে, কিন্তু তত্ত্ব সকল সময়ে সভা না হইতেও পারে। ব্রিমচন্দ্র হয়ত এলিক শব্দের বিলেবণ-পদে ত্রীপ্রতায়ের বাড়াবাড়ি করিয়াছেন, অধৰা অসমাপিকা ক্রিরার প্রচুর ব্যাকরণ ছুষ্ট ব্যবহার করিরাছেন, অধৰা তৎসম ও তম্ভব শব্দের নির্বিচারে প্রয়োগ করিয়াছেন ; কিন্ত এইরুণ বিলেবণের দারাই কি বন্ধিমচন্দ্রের অপূর্বে গল্প-রীতির প্রকৃত मोन्पर्या-त्वांथ **इट्रांद** ? घू: त्थन महिल बौकांत्र कन्निएल इट्रेएल एक. স্কুমার বাবুর বিবরণ পড়িয়া মনে হইল যে, লোকে বৃদ্ধিমচক্রের গদ্ধ-রচনার অবধা অত্যক্তিপূর্ণ হ্রখ্যাতি করে; বিলেবণ করিরা দেখিলে ইহা শাষ্ট প্রতারমান হইবে যে, তিনি প্রকৃতপক্ষে অতি বিশী গড়াই লিখিতেন। ফুকুমার বাবুর বহু পরিশ্রমপ্রস্থত পুস্তকের অষ্থা গুণাপকর্ষণ আমাদের উদ্দেশ্য নহে; কিন্তু তিনি পুস্তকের নামকরণ ব্যাপক নামকরণ করিয়াছেন—'বাঙ্গালা সাহিত্যে গড়া'! এ-ক্ষেত্রে ভাষাতব্বের দিক হইতে আলোচনা একেবারে অপ্রয়োজনীয় নহে; কিন্তু সাহিত্যে গঢ়া-রীতির বিচারে এ-কথাও মনে রাখিতে হইবে যে, ভাষার অস্থি-সংস্থান এবং তাহার দেহ-লাবণ্য এক বস্তু নহে; একের বিচারে অপরটির উপর শাসন জারি করিলে, উভ্যেরই অবিচার ক্যাহ্য।

গ্রীমুশীলকুমার দে

নরবাঁধ—জীমনোজ বধু : রসচক্র সাহিতা সংসদ্, ১৫, রাজা ব্যস্তরায় রোড, কলিকাতা : মূল্য ১৫•

'নরবাধ' আর 'মাথুর'—-এই হুইট গলে প্রায় আধাআধি করিয়া ১৫•পাতায় বইথানি জ্ডিয়া আছে :

যে অতি অন্নসংখ্যক প্রতিভাবান লেখক একেবারে জয়পতাক।
লাইয়া সাহিত্যক্ষেত্রে নামেন, শ্রীমনোজ বস্থ তাহাদেরই মধ্যে এক জন।
এব ব্রত বাংলাকে বাঙালার কাছে পরিচিত করা। দেশের
অস্তর্লক্ষীর পরিচয় পাইতে হইলে যেখানে গিন্ধা উত্তার্প হইতে হইবে
সেই মর্মন্ত্রলাট্য পথ লেখকের ভাল ভাবেই জানা আছে।

লেখার মধ্যে এমন একটি অপরূপে সরসত। আছে যে, যে বিশ্বয় আর আবোধ আনন্দের সহিত ছেলেবেলায় রূপকথা শোনা যাইত, বইখানি পড়িবার সময় তাহারই যেন একটা আবছায়া শ্বতি মনকে অভিত্ত করিয়া বসে। ভাষা বেশ সুরাল—মাঝে মাঝে বালারে কাত হইয়া উঠে। চরি নগুলি ধব সঞ্জাব—ভাকিয়া সঙ্গে লইষা ঘরে।

এমন বইথানিতে এক স্নায়গায় কিন্তু একটু নিরাশ হইতে হইল ।
'নরবাধ' গল্পটি ২৬ পাতায় জাসিয়া শেষ হইয়া গেছে; ভাহার পর
আর টানিয়া লইয়া যাওয়া ভাল হয় নাই; ২৬ হইতে ৭০ পাতার
মধ্যেও লেখার সব বিশিষ্টতাই বর্ত্তমান, কিন্তু ঐ ২৬ পাতার জোড়ের
কথাটা বরাবরই মনকে পীড়ো দেয়। সম্পূর্ণতার বাহিরে যায় নাই
বর্তিরা মাথুর গল্পটি নিগুৎ হইয়াছে।

ছাপা, বাঁধাই, कांगक--मवर दिन छाल :

শ্রীবিভৃতিভূষণ মুখোপাধ্যায়

বিশ্বকোষ — বংশ্বর বহু সাহিত্যিকের সহবোগিতার প্রাচ্য-বিভাগমহার্ণৰ শ্রীনগেক্সনাথ বহু সিদ্ধান্তবারিধি তব্চিন্তামণি কর্তৃক সঙ্কলিত ও শনং বিখকোষ লেন, বাগবালার, কলিকাতা, হইতে শ্রীবিখনাথ বহু কর্ত্তক প্রকাশিত। দ্বিতীর সংস্করণ: প্রথম ভাগের দ্বাদশ সংখ্যা প্রকাশিত হইরাছে। প্রতি সংখ্যা । তানা, ১২ সংখ্যার অগ্রিম মূল্য ৫১, এক ভাগ বা ২৫ সংখ্যার অগ্রিম মূল্য ১৭১ টাকা।

বঙ্গভাবার এই বিখ্যাত এন্সাইক্রোণীডিয়ার পরিচয় আমরা প্রথম সংখ্যা প্রকাশিত হইবার পর দিয়ছি। ইহা নিয়মিত রূপে পূর্ববং বিদ্যাবতার সহিত সঙ্গলিত ও সম্পাদিত হইতেছে। আবশ্রক্ষমত ছবি ও মানচিত্র ইহাতে দেওয়া হইতেছে।

বলের ও বলের বাহিরের বাঙালীদের নিকাসংক্রান্ত সব এছাগারে, সাধারণ পৃত্যকালরে এবং সক্ষল অবস্থার লোকদের পারিবারিক পৃত্যকার্যেহে ইহা রাধা উচিত।

পুরাতনই নৃতন—"ভিকার বৃলি" ও "মন গাসলের বৃলি"র অসক্রম। 'প্রেম ভিগারী' জ্বীমোহিনীযোহন চট্টোপাধ্যার কর্তৃক রচিত। তত নং ম্যাকলাউড ব্লীষ্ট, কলিকাতা স্কৃত্য এক টাকা। কলিকাতার প্রধান প্রধান প্রধানরে গাওৱা বার।

২>৬ পৃষ্টার এই বহিখানিতে ছড়ার ছন্দে গুব সহজ ভাষার লেখা ২৪২টি কবিতা আছে। কবিতাগুলি পারমার্থিক ও ধর্মনৈতিক তত্ত্ব পূর্ণ, কিন্তু নীরস নতে। অনেকগুলি পড়িরা প্রীত ও উপকৃত হইরাছি।

বঙ্গীয় শব্দকোষ— এইরিচরণ বন্দ্যোগাধ্যার কর্ত্তক সকলিত ও প্রকাশিত। "বিষভারতী" কর্ত্তক প্রকাশিত, শান্তিনিকেতন। প্রতি থণ্ডের মূল্য আট আনা, ডাকমাণ্ডল এক আনা। ক্রৈমাসিক ২৪৫ণ, বার্ষাক ৬৪৫ণ, বার্ষাক ৬৪৫ণ, ব্যাধিক ৬৪৫ণ হয়।

বাংলা ভাষার এই বৃহত্তম অভিধানের পরিচর আমরা প্রে দিরাছি। গঞ্চল থাওে 'আ'' লেব হইরাছে। লেব লক্ব ''আহর'' আহবান, প্রভৃতি। শীনুক্ত হরিচরণ বন্দোগোলার মহালর উাহার পাণ্ডিতা এবং বহুবর্ববাাপী অধ্যবসার ও নিচার জন্ত শ্রহ্মাভাজন ন মবিকত্ত, তিনি ধনশালী না-হইলেও এবং কোনও বিধ্যাত প্রেক-প্রকাশকের সাহায্য না-পাইরা ধাকিলেও যে নিজের বারে এতবড় একটি অভিধান ছাপাইডেছেন, তাহার জন্ত বঙ্গসাহিত্যাম্বরাপী সকল ব্যক্তির নিকট হইতে উৎসাহ পাইবার দাবি করিতে পারেন। বাঙালীদের সমুদর বিস্থালর, কলেজ, বিশ্ববিদ্যালর ও প্রশ্বাগারে এই অভিধান ক্রীত ও রক্ষিত হওয়া আবগুক। যে-কেহ বাংলা-সাহিত্যের চর্চ্চা করিতে চান, ইহা ভাহারই কাজে লাগিবে।

বঙ্গবীণা— জ্ঞাললিতমোহন চট্টোপাধ্যার ও নীচারচজ্র বন্দ্যোপাধ্যার। ইণ্ডিয়ান প্রেস লিমিটেড, এলাহাবাদ। পৃষ্ঠাসংখ্যা ২০৮ + ২০। শ্রীবৃক্ত দেবীপ্রসাদ রার চৌধুরী মুখপাতের রঙীন ছবিটি জাঁকিরা দিবাছেন। জীযুক্ত অসিতকুমার হালদার প্রজ্ঞাপটের পরিকল্পনার রচরিতা। মুল্যের উল্লেখ নাই।

এই হৃদৃশ্য ও হৃদুদ্ভিত বহিখানি ২০২টি গীতিক্বিভার সমষ্ট।
পুত্তকথানির 'পরিচর'' দিরাছেন সরং ক্রিসার্কভৌম রবীক্রনাধ।
ক্রিভাগুলি ছাড়া ইহাতে ক্রি-পরিচর ও ক্রিভা-পরিচর আছে।
ভাহার সাহায্যে ক্রিভাগুলি ব্রিবার ও ভাহার রস আখাদন করিবার
ক্রিথা হইবে। ক্রিভাসমূহের প্রথম পংক্রির বর্ণামুক্রমিক স্টো এবং
ক্রিদের বর্ণামুক্রমিক স্টো খাকার পুত্তকথানি ব্যবহার করিবার ধুব
ক্রিবা হইবে। সংক্লন ভালই হইরাছে।

"ভূমিকা"র লেখা হইরাছে, "বলসাহিত্যের প্রাচীনতম কাল হইতে আরম্ভ করিরা আধুনিক কাল পর্যান্ত লেখা গীতিকবিতাগুলি

হইতে কিছু কিছু চয়ন করিয়া বন্ধৰীপার চারিটি তবক রচিত হইয়াছে।"
"চতুর্থ-তবকে জীবিত কবিদের ১৯০০ সাল পর্যন্ত লেখা কবিতা গৃহীত হইরাছে।" এই সালটি কেন সকলকরা নির্কাচন করিয়াছেন তাহা বলেন নাই। রবীজনাধেরই বহু উৎকৃষ্ট গীতিকবিতা ১৯০০ সালের পরে লেখা।

বিস্তাসাগর চরিত ।— ঞ্জানরংকুমার রার। প্রকাশক রার এও কোং, ২২ কর্ণওরালিল ষ্ট্রাট, কলিকাতা। মূল্য এক টাকা। ১৩৪ পৃষ্ঠা এবং করেকথানি স্বভন্নযুক্তিত ছবি।

এই পৃক্তকথানি পড়িলে পাঠকগণ বিভাগাগর মহাপরের জাবনবৃত্তান্ত, নানা প্রকারের কৃতিত্ব, বহু কাঁঠিও তাহার চরিজের সহিত পরিচিত হইতে পারিবেন। জাগে বে-সকল বিধাতি লেখক তাহার সম্বন্ধে পুত্তক বা প্রবন্ধ লিখিরাছেন, তাহাদের অনেকের মন্তব্যও ইহাতে সঙ্কলিত হইরাছে। বহিখানি স্থলিখিত। তুল কিছু আছে। বেমন চতুর্থ পৃষ্ঠার গ্রন্থকার ''জাতুড়" ঘর না লিখিরা ''আতুর" ঘর লিখিরাছেন। বহিখানির ছাপা ভাল।

কালিদাসের পাথী।— জ্রীসভাচরণ লাহা, এম্-এ, পিএইচ-ডি, এফ -জেড্ -এস্, এম্-বি-ও-ইউ, প্রণীত। গুরুদাস চটোপাধার এণ্ড সন্স, কলিকাতা ১৯০৪ শ্লা ছর টাকা। পৃষ্ঠাসংখা ২৯৬ + ১২। ছুইখানি বছবর্ণ ও এগারখানি একরঙা স্বতন্ত মুদ্রিত ছবি। কাগজ ও ছাপা অতি উৎকৃত্ত। মজবৃত কাপাড় বাধান ও ভাহার উপর স্ক্রমর রঙান ছবি। পৃষ্ঠা প্রবাসী র চেয়ে দৈর্ঘো ও প্রস্কে এক ইকি আন্দাল ছোট।

পকিতৰ্বিষয়ে হাঁহাদের কথা প্রামাণিক বলির। গৃহীত হয়, ডক্টর শীযুক্ত সভাচরণ লাহা মহাশর তাঁহাদের মধ্যে অন্ততম। বস্ততঃ, বাংলা দেশে, পক্ষীদের সম্বন্ধে তাঁহার সমান জ্ঞান আর কাহারও আছে বলিরা অবগত নহি। তাঁহার নিজের একটি চিড়িরাখানা আছে। তাহাতে নানাজাতীর পক্ষী পালিত হয় এই চিড়িরাখানার সাহায্যে তিনি ভাহাদের জীবনের সমৃদ্র ব্যাপার পর্যঃবেক্ষণ করেন।

"কলিদাসের পাণী" বহিথানিতে তিনি কালিদাসের নাটক ও অক্সান্ত কাব্যে বর্ণিত রা উলিথিত পাণীদের সম্বন্ধে কৰি বাহা বলিরাছেন, তাহা কিরূপ বিজ্ঞানসম্মত তাহা দেপাইরাছেন। কালিদাস ছিলেন কবি, কিন্তু কবি বলিরা তিনি পক্ষীদের সম্বন্ধে কল্পনা বা অনুমানের আশ্রন্ন লাই, পর্যাবেক্ষণ দারা ভাহাদের আকৃতি প্রকৃতি অবস্থত হইরাছিলেন

বহিণানি মনোহর। পাইবার পরই পড়িরা শেব করি। ইহার বিভারিত বর্ণায়ক্রমিক সূচী ইহার একটি বিশেবছ। কালিদাসের গ্রহাবলীতে উমিথিত প্রায় ত্রিপ রক্ষের পাণীর কোথার কিভাবে কিরপ উরেপ আছে, তাহা স্চীর সাহাব্যে অনারাসে শৃঞ্জিয়া পাওরা বার

অলঙ্কার

अअभूगाठत विमाण्यन

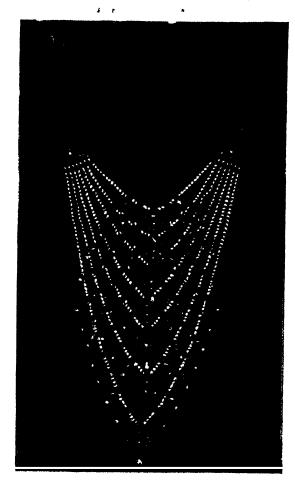
"নাভি কা **হগৰ মৃগ নহা জান**ত গু^{*}চৃত ব্যাকুল হোই ॥"

হরিণ দেখে তাহার চারিদিক্ হুগছে আমোদিত, সারা বন গদ্ধে ভরিগা গিরাছে। হরিণ গদ্ধে মাতোরারা হইরা বনের চারিদিকে, ঝোপের এদিক্-ওদিক্ অন্থেষণ করে; বৃদ্ধিতে পারে না সে—এ মধুর প্রাণ-মাতান গদ্ধ কোথা হইতে আসিল। গদ্ধের আকর যে তাহারই মধ্যে বিরাজ করিতেছে, তাহারই অভ্যন্তরম্ব কন্তরীর গদ্ধ যে তাহারই আশপাশ সৌরভে মাতাইরা তৃশিরাছে—অঞ্জান হরিণ বেচারা তাহা বোঝে নাই; তাই সে চারিদিকে এমন করিয়া বাাকুল হইরা চুঁড়িয়া বেড়াইতেছে।

मकन युर्ग मकन अवश्वात्र मासूष मोन्सर्यात **উপामक**। সে সৌন্দর্য্যের অন্বেধণে চিরঞ্জীবন ঘুরিয়া বেড়ায়। মানুষ পুথিবীতে জন্মায়, সেধানে সৌন্দর্যা উপলব্ধির জন্ত কিছু দিন সুখ-ত্রংথ ভোগ করে, হাসে-কাঁদে, এই করিয়া মৃত্যুকে বরণ করে। কিন্তু যত দিন সে পৃথিবীতে থাকে, সৌন্দর্যোর আকর্ষণে মুগ্ধ হইয়া তাহারই সন্ধানের জন্ত ধন, ঐশ্বর্ষ্য, যুখ, যশ, প্রতিপত্তির মধ্যে সৌন্দর্য্যের অবেষণে সে ছোটে। সৌন্দর্য্যের জন্ত সে লালায়িত, কিন্তু জানে না সে, তাহার মধ্যে এমন একটা কিছু আছে যাহাকে পাইবার জ্ঞ্জ সে নিরবধি অসম্হ চুঃধক্ট সম্হ করিয়াও বাঁচিয়া থাকিতে চার। নিজের অঞ্চাতসারে নিশ্চরই সে এমন একটা কিছুর আমাদ পাইতেছে যাহাকে ছাড়িয়া থাকা তাহার পক্ষে অসম্ভব। তাহাকে সেই অজ্ঞাত বস্তুর জন্ত আগ্রহায়িত হুইয়াই যেন বাঁচিয়া থাকিতে হইবে। কিন্তু সৌন্দর্য্যের আকর যে তাহারই মধ্যে মাসুব ভাহা না বুরিলা সংসারের আবর্ত্ত নিরহুর ঘুরিয়া মরি:তছে:। আপনার শরীর ও মনের আশ্ৰায় সে বে-সকল অভিজ্ঞতা লাভ করিয়াছে, যত দিন সে তাহাদের নিগৃঁঢ় মর্ম ও চূড়াস্ত অর্থ আবিহার করিতে

না পারে তত দিন সে বাহুসৌক্ষর্ব্যের অবেষ্বণে পুরিয়া বেড়ার। যথন তাহা আবিদার করিবার ক্ষপ্ত শাস্থবের প্রাণ আকুল হয়, তখন সে এই বিশ্বসমস্তার নির্বিরোধ মীমাংসার জন্ত প্রস্তুত হইতে প্রবৃত্ত না হইরা থাকিতে পারে না। ফলে জীবের চরম লক্ষ্য কি তাহারই অমুসন্ধান পরিতে থাকে: কিন্তু বত দিন বাছসৌন্দর্য্যের প্রতিষ্ঠা যাহা তাহা লাভ করিবার সৌভাগ্য মাসুষের না-হর, তত দিন সে বাহুসৌন্দর্য্যের পশ্চাতে পশ্চাতে ছুটিয়া থাকে। এই विहः सो सर्वा छाव প্রণোদিত হই शहे, এক দিকে निष्मत মভিবৃদ্ধি এবং অন্তৰিকে সমাজের প্রচলিত কটির অমুবর্তী হইয়া মানুষ বরাবর চলিরা আসিরাছে। সমাজের সঙ্গে ভাহার একটা সম্বন্ধ আছে, এ-কথা সে কথনও ভোগে নাই। তাহাঁর নিজের দারিছের কথাও তাহাকে ভাবিতে হইয়াছে। আবার সঙ্গে সঙ্গে তাহাকে দশ জনের এক জন হইরা থাকিতে হইবে,— সুতরাং তাহাকে বাঁচিরা থাকিতে বে হইবে ভাহাও সে উপলব্ধি করিয়াছে। বাঁচিয়া থাকিতে হুইলে নানা বাধাবিদ্ধ অস্তরারের হাত হুইতেও আবারকা করিতে হইবে। শরীরে কোন ব্যাধি না হয় এবং পারিপার্শিক ও দৈব ঘটনা হই.ত তাহার স্থ-স্বাচ্ছন্দ্যের কোনত্রপ ব্যাধাত না ঘটে তজ্জ্ঞ্জ ভাহাকে চেষ্টা করিতে হইবে। এইজন্ত প্রথম প্রথম মানুষ স্মাভিচারিক তন্ত্রে নানা ধর্মামুষ্ঠান করি:ত লাগিল। অব্দে রক্ষা-কবচ ধারণ করিল। ক্রেমশঃ তাহার মধ্যে তাহার স্থপ্ত সৌন্দর্যাবোধ দেশকালপাত্রামূসারে আশ্বরক্ষা ও উঠিশ। সৌন্দর্য্যপ্রকাশের প্রচেষ্টা হইতে রক্ষা-কবচগুলি ভিন্ন ভিন্ন রূপ ধারণ করিল। স্ত্রীপুরুবভেদে তাহাদের তারতম্য হুইল। শনৈ: শনৈ: অলহারের স্ট হুইল। বিবাহিত, ও অবিবাহিতের পরিচ্ছদের পার্থকোর সঙ্গে সঙ্গে অলহারেরও পার্থক্য ঘটিল। ব্যক্তিগত ফুচি এবং সমাজের প্রচলিত স্কুচির প্রভাব অলঙারকে নানা রূপ প্রদান করিল।

সমাজের সকল অবস্থাতেই অলঙ্কারের প্রতি ঝোঁক, সাজসজ্জার প্রতি ঝোঁক মাম্যের রহিয়াছে। যথন মাম্যে মৃৎপাত্তের ব্যবহার জানিত না, যথন তাহাদের মধ্যে কৃষির প্রচলন হয় নাই, যথন মান্যে কন্তুদিগকে গৃহে পালন



পঞ্জিবের সভিনর: হার

করিতে শেপে নাই, সেই অ'দি প্রভুষ্গেও মান্নুযের মনে শরীরকে অন্তর, ভূমিত ও মণ্ডিত করিবার প্রবৃত্তির উরেয়ে হইয়'হিল। কুজিয়ান জাতি, আণ্ডামান দ্বীপের প্রাচীন জাতি প্রভৃতি বে-সকল আদিম জাতি আজও বাঁচিয়া থাকিবার সোভাগ্যলাভ করিয়াছে তাহাদের মধ্যে শরীর-মণ্ডানের আদিম প্রথার নিদর্শন কিছু কিছু পাওয়া বার। আদি প্রভুষ্গেরে মান্যুয় শরীরের এী ও

শোভা সম্পাদনের জ্বন্ত স্থায়িভাবে অঙ্গবিশেষের বিরুতি শাধন করিত, উল্লি-চিত্রণে অঞ্চ বিভূষিত করিত, অঙ্গে রং ফলাইত এবং রিড্রাভরণ প্রভৃতি দিয়া দেহ মণ্ডিত করিত। রক্তাভরণের মধ্যে কণ্ঠে পরিহিত হারের ব্যবহারই আদিম জাতিদের মধ্যে প্রচুর পরিমাণে ছিল। এই হার নানা আকারে, নানা উপকরণে নির্মিত হইত। কণ্ঠাভরণ, নাসালঙ্কার, অধরভূষণ, হস্তাভরণ, চরণ-মণ্ডন ও কটি-মেথলা নানা জাতির মধ্যে দেখিতে পাওয়া যায়। ্দেশ, কাল ও জাতিভেদে কচির বিভিন্নতা অন্তান্ত বাাপারের ক্তায় অলম্বারবিলয়েও সুস্পষ্ট। আদিম যুগে প্রকৃতিজাত সৌন্দর্যা-উপকরণে অঙ্গাভরণের ভূরি ভূরি নিদর্শন পাওয়া যায়। পাথীর পালকে শরীর অলকত করিবার প্রাণা এখনও বৃহিয়াছে। প্রশান্ত-মহাসাগরের কোন কোন দ্বীপের অধিবাসীরা কাকের পালকে দেহ শোভিত করে। তাহারা কভির হারও পরে। ইউরোপের মুদ্রা ইংরেজ অথবা ফরাসী জাতি উটপক্ষী ও মন্তর প্রভৃতির চাকচিকামর পালকের সজ্ঞা এখনও ভালবাসে। অস্ট্রেলিয়ার অধিবাসি-গণ তাহাদের পূর্ব্বপুরুযের চিহুস্বরূপ জন্তু ও বৃক্ষাদি, দেবক প্রভৃতি নিজেদের **শরীরে প্রচ্ছান করিয়া** থাকে। এক সময়ে মানুয প্রজাপতির ডানা, নানাপ্রকারের বীজ, অত্যুক্ত্রণ প্রস্তর, বিচিত্র পত্র প্রভৃতি অঙ্গে ধারণ করিয়া তাহার অঙ্গশোভা বর্জন করিয়াছে। তারপর জ্ঞান ও স্থােগ বৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে নানা ধাতুর অলঙ্কারের স্ঠি করিয়াছে। কেমন করিয়া এই সমস্ত প্রসাধনের ব্যাপার ঘটিল ত'হা অনুসন্ধানের বিষয়।

যে করিয়া হউক অলকার-প্রীতি মান্ন্যের মনকে অধিকার করিয়া বিদিয়াছে। অলকার কোন দিন মান্ন্য ত্যাগ করিতে পারি:ব বলিয়া মনে হর না। আমরা বলিয়া মনি হর না। আমরা বলিয়া মাকি কামকাঞ্চনত্যাগী সংসার-বিরাগী তাপসেরা অলকারের প্রতি বিরূপ। তাঁহারা কামিনী-কাঞ্চনত্যাগের জন্ত সাধনা করেন বটে, কিন্তু তাঁহারাও অলকার ছাড়িতে পারেন না। তাঁহারা যে জটাধারণ করেন, চীর ও উর্দ্ধপুত্র ধারণ করেন, ভঙ্গা বিলেপন করেন এবং সাম্প্রদায়িক প্রথাম্যায়ী রুদ্রাক্ষ, দণ্ড, কমণ্ডলু, সিন্পুর, কর্ণভিরণ, কটি-শুঙ্বল, চিমটা, ত্রিশুলাদি ধারণ করেন.

সেগুলি কি অলঙ্কারের রকমফের নয়? বৈষ্ণব-বৈরাণীর কৌপীন, বহির্বাস, মালা, তিলক, শিখা, এগুলিও প্রাদস্তর অলঙ্কার-প্রিয়তার নিদর্শন।

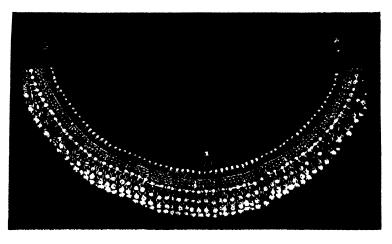
অলঙ্কার শোভা বর্দ্ধন করে। কিন্তু আমাদের শাস্ত্র ভাহা বর্জ্জন করিতে উপদেশ দিয়া থাকেন। বে-দেশের

নীতি উপদেশ দেয় অর্থ অনর্থের মূল—
অর্থমনর্থং ভাবয় নিতাং নাস্তি ততঃ
স্থলেশঃ সত্যম্,—সে-দেশে কেবল
শোভা-সংবর্জনের জন্ত অর্থসাপেক
অলকারকে বিলাস-বাসনের নিদান ভাবা
স্থাক্তি ভিন্ন আর কি বলিব ? সাধ্,
সন্নাসী, বৈরাগী অলকারের প্রতি
বীতশ্রুদ্ধ হ'ন হউন, কিন্তু গৃহীর পক্ষে
অলকার ত্যাগ করা হৃদ্ধর। একেবারে
অনাবগ্রক এ-কথা বলিতে তো আমার
সাহসে কুলায় না। অলকার আমাদের
ধর্মকন্মের অনুষ্ঠানে আমাদের সহায়।
বিবাহে আমাদের সালকারা কন্তা দান

করিতে হয়। সর্বাকশ্মের প্রারম্ভে দেবতা ও শুরুপুরোহিতের অঙ্গুরীয়-বরণ প্রয়োজন। পারিবারিক মেহ-প্রীতি-বন্ধনে অলঙ্কার আমাদের প্রধান অবলম্বন। অর্থবিজ্ঞানের বহু সমস্তার সাধক অলঙ্কার। ইহার প্রসাদে কত শিল্প-কলা, কত বিজ্ঞান ফুটিয়া উঠিয়াছে, কত ধাতৃ ও রত্বতবের অমুসন্ধান জ্ঞাগিয়া উঠিয়াছে।

সকল দেশের চেয়ে ভারতে গহনার আদর বেশী।
প্রাচীনতম না হইলেও অপেক্ষাক্কত প্রাতন আর্থাগণ
অলক্ষারের থুব প্রিয় ছিলেন। তাঁহাদের বড় বড় বীর
যোদ্ধারা অলক্ষার পরিতেন। আমাদের স্থাপত্যে গহনাপরা
এরপ যোদ্ধমুর্দ্ধি যথেষ্ট আছে। আর সেগুলি সবই এক
ধরণের—উৎসবের বেশে সক্ষিত—তহপযোগী অভরণে
অলক্ষত। ভারতীয় শিল্পের ইতিহাসে এই সমস্ত মুর্দ্ধি থেন
একই চাঁচে ঢালা—পরিবর্তন কাহাকে বলে ভাহারা বেন
জানেও না, বোকেও না। আক্র্যা, ভার:তর আলপাশের
দেশেও এই একই অপরিবর্তনীয় লীলার অভিনয় হইয়াছে।
অপেক্ষাক্ষত প্রাচীন আর্থাদের এবং আর্যা-উপনিবেশিকদের

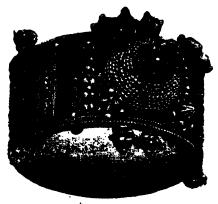
উৎসবোপযোগী অলম্বারের আরুতি ও প্রকৃতি ভারতের গণ্ডী ছাড়াইরা গিয়াছে। অবশ্য দেশ-বিশেষের বিশেষ বিশেষ ক্ষচি ও পদ্ধতির অনুবর্তী হইয়া একই অলকার বহু আকারে পর্যাবসিত হইয়াছে। বর্মা ও সায়ামে, তিবকত ও মঙ্গোলিয়ায়, বালি ও গ্রন্ধীপে রাজাদের উৎসব-বেশে,



मिक्टनत्नत द्योरभात कर्श्यात

বরকন্তার সাজসজ্জায় সেই পুরাতন ভারতীয় উৎসবের অলঙ্কার কথঞ্চিৎ সংস্কৃত আকারে আজও দেখিতে পাওয়া যায়। নাট্যশালাগুলিভেও যেথানে প্রাচীন চরিত্রের অভিনয় করিতে হয়, সেথানে প্রাচীন অলঙ্কারগুলিও বাদ যায় না। আরও আশ্চর্যোর কথা ভারতের অনার্যান অধ্যুসিত প্রদেশে, অথবা প্রাচীন স্থসভা প্রদেশবাসী জাতিসকলের নিম্নন্তরের মধ্যে প্রাচীন অলঙ্কারের নিদর্শন যত বেশী পাওয়া যায়, ভারতের প্রাচীন স্থসভা রাজ্যগুলিতে তাহার একাংশেরও কল্পনা করা যায় না। স্থসভা দেশে লোকে বেশভূযায় কালপ্রভাবেরই বশবর্তী ইইয়া থাকে।

প্রাচীন অলকারের মধ্যে শিল্পকৃতি ও শিল্পচাতুরী সর্বতা দেখিতে পাওয়া যায়। তথনকার বহুমূল্য অলকারগুলি অসাধারণ কারুকার্যাথিচিত—শিল্পীর প্রশংসনীয় শিল্পবৃদ্ধি অলকারের ভিতর দিয়া সর্বপ্রকারে আত্মরক্ষা করিয়াছে। প্রাচীন বৌদ্ধদের ভাস্কর্যা ও মুৎশিল্পকৌশল কোনোদিন আসীরীয়দের অলক্ষতির অভ্যাসদিদ্ধ একঘেয়ে একটানা পদ্ধতির মধ্যে আত্মাবমাননা বিঘোহিত করে নাই। বেশভূষার দেহমণ্ড'নের আকাজ্জা সকলেরই মধ্যে প্রবল।
আমরা বাঙালী, আমরা আবার অলঙ্কারের
আতিমাত্রায় ভক্ত। বাঙালী কতকণ্ডলি অলঙ্কারকে
পুণ্যদারক মনে করে। অনস্ত তাহাদের মধ্যে একটি।



কট.কর রূপার বাজু

নবরত্বের অঙ্গুরী, অঙ্গাত্র তাগা, নাভিশঙ্খের কেয়র আমাদের সৌভাগ্য বন্ধন করিয়া থাকে। অলম্বার পতিপুত্রের কল্যাণবদ্ধন করিয়া থাকে, নিব্দের আয়তি রক্ষণ করিয়া থাকে বলিয়া স্ত্রীলোকের নিকট সেগুলি আদর, যতু ও পূজা পাইয়া থাকে। শাঁথ, নৎ, নোয়া—এই শ্রেণীর অল্কার। সাধারণের বিশ্বাস, গলায় মাহলী, হাতে কবচ বা তাগা, আঙুলে আংটী, পারে কড়া প্রকৃতি ধারণে দেবরোয, গ্রহদোষ ও রোগশান্তি হয়, বিবদোয নষ্ট হয়, ভূতপ্রেতের ভয় থাকে না। কোনো কে'নো রোগ সারাইবার জ্বত লোকে কুমীরের নথ সোনা দিয়া বাধাইয়া কোমরে ধারণ করে। কেহ বা সোনা, রূপা ও তাবা একসঙ্গে জড়াইয়া অসুরী করিয়া হাতে দেয়। মৃতবৎসা রমণীরা শিশুর দীর্ঘঞীবন কামনায় সদ্যংপ্রস্থত সম্ভানের নাক ফুঁড়িয়া সোনা, রূপা বা লোহার মাকড়ি অথবা বামপদে লোহমল কিংবা দোনার আবরণ দিরা উচ্ছিষ্ট আমড়া, বাবন্ধ ও কুমীরের ছাঁত গলায় পরাইয়া দেয়।

আমাদের দেশে একই অলম্বার স্ত্রীপুরুষের ব্যবহার্য্য হই:ল আরুতির পার্থক্য হয়। শিশু, বালক-বালিকা, যুবক-যুবতী, বৃদ্ধ-বৃদ্ধার গহনার আকার ও প্রকারভেদ আছে। আমাদের দেব-দ্বীর অলমারের বৈশিষ্ট্য নামা

প্রকারের। এক দেবতার যে অলঙ্কার থাকিবে, অন্ত দেবতার তাহা থাকিবে না। অলঙ্কার দেখিয়া অনেক সময় দেবমূর্ত্তির পরিচয় পাওয়া যায়। দেশবিশেষের ধাতৃবিশেষ র্ক্তবিশেষ, অলঙ্কারবিশেষ ব্যবহার নিষিদ্ধ। বছ ব্যবহার ও সংস্থার লইয়া, আমাদের অলম্বারতত্ত বাঙালীর বিপুলায়তন হইয়াছে। গায়ে আজকাল কিছ মাত্রায় পশ্চিমে হাওয়া লাগিয়াছে ও বেশী শিক্ষাদীকার বীতিও বদলাইয়া গিয়াছে. কাজেই ্আদর্শ ভিন্ন পথ ধরিয়াছে। তাহার উপর, কালে পরিবর্তনও অবশুস্তাবী। আগেকার গহনা এখন বেয়াড়া বেখাপ্লা বোধ হওয়া কিছু বিচিত্র নয়। তথনকার দিনে বাঙালীর কানের অনেক গহনা ছিল। ঝুমকো লতার ফুলের অনুকরণে ঝুমকা বা ঝুমকো): পোন্তদানার ফলের অনুকরণে টে'ড়ি, —ভাহার উপর ঘণ্টার মত ঝুমঝুম করিবে বলিয়া ঝুমকা চে"ড়ি; ইহার আর চলন নাই। চাঁপাকুলের অক্ষুট কলি হইতে 'চাঁপা'ং —ইয়ারিঙ, তাহার স্থান অধিকার করিয়াছে। পিপুলপাত, কর্ণফুলও বা কানফুল, মাকড়ি, তুল, कान, कानवाना, कनकरवीनी, পু**ৰু**ষরাও কানে অলস্কার বীরবৌলী । এছাড়া আরও কানের গহনা ছিল। কঠাভরণ ছিল-মটরমালা,-ঘুরিয়া ফিরিয়া আজকাল পুনরায় ইহার চলন হইয়াছে। আর ছিল টাপাকলি,—এটি চম্পক-কলিকার মালা, বোটায় বোঁটায় গাঁথা, দেখিতে অনেকটা মত। হংসগ্রীবার নেকলেসের অফুকরণ হাস্থলী ; নির্বিব হেলে সাপের শেজের অনুকরণে হেলেহার, কামরাঙা-হার, দড়াহার, কণ্ঠমালা, মুক্তমালা, তেনরী, ধৃক্ধৃকি, পাঁচ লছর বা পাঁচ হালীর পাঁচনরী, সাতনরী. माना. মোহনমালা. বিলমিলি হারণ

> হিন্দুছানীদের মধ্যে আছে বৃষক, ঝুল্মক।

२ 'राष्ट्रि हानि माक्षि कर्रार्ख कर्गक्त ।'— अवाविकटनियो।

ও 'স্বর্ণের কর্ণফুলে শোভে কর্ণির '—কৃত্তিবাসী রামারণ।— হিন্দুস্থান দের 'ক্রনফুল,' 'কনফুল'।

^{় &#}x27;স্বর্ণের কড়ি বৌলি রন্ধতমুলা পাশুলি স্বর্ণের অক্ষদ করণ।' — চৈত্রচারিতায়ত, আদি

< हिन्त्रामीएक 'वोफ़'।

७ हिन्दुशनीत्तत्र रेखनी।

[•] প্ৰনাৱ তাহার দিল হার বিগমিলি।--কুন্তিবাসী স্বামারণ

প্রভৃতি অনেক রকমের হার ছিল; মেরেদের কটিভূবণ ছিল-কিন্ধিণি, গোট, কোমরপাটা, মেধলা, চক্রহার। শিশুদের কটিভূষণ ছিল নিমফলের মত দানাওয়ালা নিমফল, কুলের আঁটির মত দানাগাঁথা সোনা-রূপার বোর, বোরপাট, বোরপাটা—এগুলি বে'র ও তাবিজের মত সোনা-রূপার পাতা গাঁথা ; তেঁতুলে বিছার অমুকরণে বিছা। তেঁতুলে বিছার আক্বতি হারও ছিল, তার নামও বিছা-নিমফুলের অনুকরণেই হার নিমফুল। শিশুদের কোমরে বেঙও দেওয়া হইত। আবার গোঁপ-হারও ছিল। ্যোপহারের কল্পনা কিছু উদ্ভট বা উৎকটও মনে হইতে পারে ; র্গোপের সঙ্গে এ হারের কোন সম্বন্ধ নাই-পশ্চিমবঙ্গের অনুনাসি:কর পাল্লায় পড়িয়া হিন্দুস্থানী পুরুষদের গোপ নামক হার আমাদের মেয়েদের গৌপহার হইয়াছে। শোভা বর্ধন করিত কর**তলপ**ঞ্চির **र्डेक, त्रमगीराह्य** বতনচূড়, তাহারা হাতে পরিত পলাকাঁটি, ধবদানা, मत्राना, मुङ्की आकारत गड़ा मुङ्की माछ्नी, महेत्रीकक्ष्ण, १न प्र कहन, रेथाप्र नामा: कहन, थापू, नातित्कन क्न, বালা, শাখা, লবকত্ল; পৈছা, বাউটী; উপর হাতে वाळू, २२ कमम, ইত্যাদি। ভাড়,১০ ভাগা, কুলুপা শঙ্খ অনেক দিন আগে বাঙ্গালায় চলিত। এটি নাচি-করা শাঁখা। সাধারণতঃ ছ-সেট হইত। এক সেট হল্দে, এক সেট সবুজ্ব। হল্দে সেটকে লক্ষণ বলিড, সর্জ সেটের নাম রাম। রামেশ্বরী সত্যনারায়ণে আছে —"কুলুপা তু-বাই শঙ্খ জীরাম লক্ষ্ণ"। বাই মানে সেট। মাথার অলভার ছিল, সীঁথি, ঝাঁপা, ঝাপটা, ১২ শিরোমণি; পোঁপার শোভা ছিল—প্রজাপতি, ফুল, চিক্লী, কাঁটা; রমণীদের নাসাশোভা ছিল নোলক, নথ, বেশর, ৠ্রীবঙ্গ,

৮ কটিতে কিছিনিধানি গুনি মনোহর। খনরাম

শতেশরী ইত্যাদি। পারের গরনা ছিল মল, বেঁকি, বাকমল, ব্ যুমুরগাধা মল, ঘুজ্বুর পাতামল, হীরাকাটা মল, নৃপুর, ১৪ নেউর, কেয়্র, পাশুলি, আনট বিছা, ১৫ শুজ্বরিপঞ্চম, পঞ্চম, পাঁজর, মঞ্জীর, তোড়া, খলখিল, ছরা, ঝুমুর চরণচাপ প্রভৃতি। পারের বুড়ো আঙুলের গহনা আঙ্গট, কড়া, চুট্কি। হাতের আঙুলের আংটি, মুদ্রি।

আমি দিগ্দর্শন হিসাবে অলঙ্কার সম্বন্ধে গুইটা কথা বলিলাম। এইবার প্রাচীনতম যুগ হইতে আমাদের দেশে অলঙ্কারের পরিকল্পনা সম্বন্ধে আরও গুইটা কথা বলিব।

চারিথানি বেদের কোনো বেদে 'অলঙ্কার' বলিয়া কোনো শব্দ পাওয়া যায় না। বেদে কিন্তু 'অরংকৃত', 'অরংকৃতি' শব্দ পাওয়া যায়-অর্থ অলকার। বৈদিক 'অরম' শব্দ হইতে 'অলম' শব্দ নিপান হইগাছে। ঋ হইতে অর নিপান হইগাছে। ইহার দ্বিতীয়ার একবচনে অরম [অব্যয় (adv. Acc.)] 'অরম' হইতে 'অলম'—ঠিক, যথেষ্ট (fit, fitly, justly)। 'অলঙ্কার' শব্দ বেদে নাই বলিয়া তথন নরনাবীর অঙ্গলোভারূপ অলম্বার অথবা কাব্যশোভারূপ অলম্বার ছিল ना, এकथा वना गाइँ एक भारत ना। त्कर तकर वनिवाद्यान. ভূষণ, মাভরণ প্রভৃতি মলঙ্কার-পর্য্যায়ের কোন শব্দই বেদে নাই। বেদে অনেক অলম্ভার বা গছনার নাম পাওয়া অলঙ্কারবাচক শব্দও বেদে নাই তাহাও নয়। ঋকসংহিতায় দেখা যায় মঙ্গুলগ অলঙ্খারের বিশেষ প্রিয় ছিল (১.৬৪; ৮.২০; ১০.৭৮)। তাহারা স্থলর স্থলার অলম্বার পরিয়া শরীরের শোভা বর্দ্ধন করিত। ক্লুকে ঋথেদে উজ্জ্বল স্বৰ্ণালকারমণ্ডিত ও কণ্ঠহারশোভিত বলিয়া বর্ণনা করা হইয়াছে। মঞ্চল্গণ ও অধিদ্যেরও অনুরূপ দেবপ্রতিষন্দী অমুরদেরও স্বর্ণ ও বৰ্ণনা আছে। মণিমুক্তাখচিত অলহার ছিল। ঋষি কক্ষিবান স্বৰ্ণকণ্ডল ও রছহার-শোভিত পুত্রের জন্ম প্রার্থনা করিতেছেন। ব্রাহ্মণ ও পুরোহিতদের মর্ণ ও মর্ণালঙ্কারাদির কথা আছে।

ন শথের উপর সাজে সোনার করণ।—কৃত্তিবাসা রামারণ 'হাতে বালা, পারে মল, কাঁকালেতে পোট।'—হেমচন্দ্র

>• ভূলে বিরাজিত তাড় ভূবন উজন্ন।—খনরাম

১০ নানা ছন্দে বাজুবন্দ হেম ঝীপাড়্রি। পরিরা পাইল,শোভা পরম ফুলরী। শিবারন

>२ 'माबात नान् है। निबी क्षिज्दे दिक् हळहात ।'--माইदिक

১৩ নাকেতে বেশর দিল মুক্তা সহকারে।—কৃত্তিবাসী রামারণ 'বেশর ধচিত—শভেষরী পহিরল।'—কৃত্যতিনাধের পদ লবক্সবেসরে কারো মুধ করে জালো।'—পক্সাক্তিভরক্রিক।

^{*} ছ্বাছতে দিবাশখ রজতের মলবন্ধ বর্ণমূলা নানা হারগণ।— চেতস্তচিরিতামৃত, আদি। 'ছ্বাছ শুখেতে শোভিল বিলক্ষণ।' –কুডিবাসী রামারণ

১৪ ছুই পারে দিল তার রজত নৃপুর।—কুত্তিবাসী রামারণ

১৫ পাতামল, পাণ্ডলি আন্ট বিছা পার। গুলুরিপঞ্ম আর শোভা কিবা তার।—গঙ্গাভজিতরসিণী

্বৈদিক অলগ্ধার ব্রাইতে একটি সাধারণ শব্দের প্রয়োগও দেখিতে পাওয়া যায়। সে শব্দটি 'অঞ্জ' বা 'অঞ্জি'। একটা উদাহরণ দেওয়া গেল—







উড়িব্যা।, কোণার্ক। থ্রী: ছাদশ শতানী। কম্বণ, বলর, বাজু, গাঁজোর ও পদভূবণ। মণিসংযোজিত দৃচসম্বদ্ধ গহনার নিদর্শন।

চিত্রৈরঞ্জিভির্বপূবে বাঞ্জতে বক্ষংস্থ রুক্ষী অধি বেভিরে শুভে। অংসেবেবাং নি মিমৃকু ক'ষ্ট্রয়ং সাকং জ্ঞাজিরে বধর। দিবো নরঃ ॥ — —ক্ষু ১.৬৪.৪.

—''শোভার জম্ম মন্ত্রগণ নানাবিধ অলঙ্কারধারা বশরীর অলঙ্কত করেন! শোভার নিমিত্ত বক্ষে স্থার হার ধারণ করেন; অংসদেশে আয়ুধ ধারণ করেন, নেতা মরুদ্রগণ অন্তর্নাক্ষ হইতে বকীর বলের সহিত প্রান্থেত হইরাছেন।"

ম্যাকডোনেল ও কীথ তাঁহাদের 'বৈদিক স্চী'তে মাত্র একুশটি অলঙ্কারের নাম দিয়াছেন। কিন্তু বৈদিক সাহিত্য আলোচনা করিলে নিয়ালিখিত নামগুলি পাওয়া যায়—

(श्रद्यम)

১ আনুক। ২ । ওপল। ৩ । কর্ণশোভন। ৪ । কুরীর

ে কুলন। ৬ । কুলনিনু । ৭ । থাদি। ৮ । নিক . ৯ । প্রোচনী

১ • ! পুণ্ডরীক । ১১ । পুকর ১২ । প্রভ্বণ ১৩ । বর্হন ১৪ । ভূবণ

১৫ । মিশি ৷ ১৬ । রন্ধ ৷ ১৭ । কুরা ৷ ১৮ । কুরি ।

১৯ । ললামা ৷ ২০ ! বরিমং ৷ ২১ । ব্যক্তন ৷ ২২ ৷ বিবন ।

২৩ ৷ শতপ্র ৷ ২৪ ৷ সিবন ৷ ২৫ ৷ স্নিক ৷ ২৬ ৷ ভূকা ৷

২৭ ৷ হিরণ্যা ! ২৮ ! হিরণ্শিপ্র ৷ ২০ ৷ হির্মিং ৷

তৈন্তিরীয়-সংহিতার আরও কয়েকটি নৃতন নাম—

৩০। প্তরিস্ত্। ৩০। প্রাকাশ। ৩২। ভোগ। ৩০। শুরু।

অথর্ববেদে আরও কয়েকটি নৃতন নাম—

৩৪। কুম। ৩৫। জীবভোজন (অঞ্জন)। ৩৬। দেবাঞ্জন। ৩৭! নগদ। ৩৮। নিক্ষাীব। ৩৯। নানাহ (= কোমরপাটা) ৪০। প্রসাধন। ৪১। মধুলক । ৪২, কুম্মন্তরণ। ৪৩। ললাম ৪৪। ললামন্ত। ৪৫। ললামা। ৪৬। সামন্। ৪৭। স্কুম্ম ৪৮। সুমা। ৪৯। স্বনাজি। ৫০। হরিতমঞ্। ৫১। হিরণাজ ৫২। হিরণাস্ক। ৫৬। হৈরণা।

এইগুলির কোন-কোনটির অর্থ সম্বন্ধে কেছ কেছ সন্দেহ করিয়াছেন; বেমন গেল্ডনার (Geldner) বলেন 'আনুক' শব্দের অর্থ 'ভূষণ'; কিছু রোট (Roth), লুড্, ভিগ (ध्रुष्टेश), ও ওলডেনবার্গ (Oldenburg) বলেন, ইহা ক্রিয়ার বিশেষণ। ভাষ্যকার ও টীকাকারগণ 'ভূষণ অর্থই খীকার করিয়াছেন। আমাদেরও তাহাই সমীচীন বলিয়া মনে হয়।

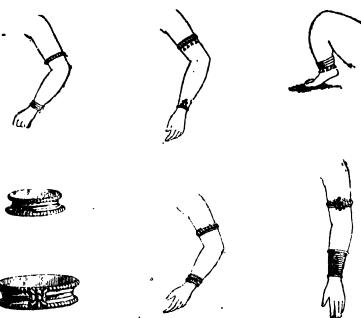
উপরিলিথিত শব্দগুলি আলোচনা করিলে আমরা দেনি

কৈ, বৈদিক যুগে স্বর্ণালকার ও মণিমুক্তার অলকারে।
প্রচলন ছিল। তথন 'ওপন' ছিল—কেশালকার। মাথা
ভূষণ ছিল 'কুন্ব'। কর্ণশোভন তো ছিলই। সে যুগে
রমণীরা মাথার আরও একটা গহনা পরিত—তার নাম ছিল

'করীর'। ভাহারা পারে পরিত 'থাদি'। গদার পরিত 'নিক'। এছাড়া 'প্রবর্ত' নামে এক রকম গোলাস্কৃতি অলঙার ছিল। তথনকার মেরেরা মাথার সন্মূথের দিকে ঝালর-দেওরা রম্বণ্ডিত সী'থি পরিত। এই

সিঁথির মাঝখানে চন্দ্রাকৃতি খচিত থাকিত। থোঁপার ইহারই সঙ্গে একাংশ লাগাইরা দেওয়া হইত। এই সঁীথি চার রক্তমর, ভাহাদের नाम-ननाम, ननामी, ननामा ७ ল্লামণ্ড। তাণ্ডামহাত্রাহ্মণে স্বর্ণনির্শ্বিত স্রকের কথা আছে। বৈদিক কালে সোনার অর্কচন্দ্রাকৃতি . একরকম হার ছিল তাহার নাম 'রুক্স'। ইহা বক্ষের শোভাসস্পাদন করিত। ভারপর 'ফণ' 'প্রাকাশ,' 'মণি,' 'মনা,' 'শঙ্খ,' স্ক-সারও কর্ত রক:মর ভূষণ ছিল। অলকার শব্দ চারি বেদে নাই বটে, কিন্তু উল্লেখের অভাব অনস্থিতের কারণ হয় নাই। শতপথব্ৰাহ্মণে অলকার শব্দের প্রথম প্রারোগ পাওরা যাম—

দেৰতাং শাৰি বাং দেবতা মুণান্ম ইতি। তমুহণর: প্রাকৃত্যবাচাহহারে ছা খুজ তবৈব সহ গোভিরন্ত"—৪র্থ অধ্যার। বৈদিক বুগে 'স্হলা' নামে অভ্যুম্ভ্রন হারের নাম কঠবলীতে (১.১৬) পাওলা বার। যম নচিকেতাকে



খ্রীষ্টির ঘাদশ শতাব্দীর উড়িব্যার হস্ত ও পদের গহনা। বর্ণালকার নির্দ্ধাণ-চাতুর্ব্য ও চারু-পরিকল্পনার অত্যুৎকৃষ্ট নিদর্শন

"ব্যান ভারনে প্রকছ্তোর হ মানুষোহলভার: " —১৩.৮.৪.৭; ৩.৫.১.৬৬

ভারপর উপনিষদ্-যুগে অলম্বার শব্দের প্রচার হয়।
মৃত্যুর পর পরক্ষীবনে বস্ত্রালম্বার ব্যবহারের জন্ত শবের
সহিত বস্ত্র ও অলম্বার দেওরা হইত। অথর্ববেদে (১৮.৪.৩১)
ভাহার নিদর্শন আছে। উপনিষদেও ভাহারী নিজন
পাওরা বার। ছান্দোগ্য উপনিষদে (৮.৮.৪) গহনা
(ornament) অর্থে অলম্বার শব্দের প্রবােগ পাওরা
বার—"প্রেভক্ত শরীরং বসনেনালম্বারেণ সংস্কৃর্বন্তি" ৮.৮.৫।
এখানে প্রভিত্ত শরীরকে বসন দিরা অলম্বার দিরা সংস্কার
করা হইতেছে। ছান্দোগ্যে গহনারও নাম আছে—রাফ্রা
আনশ্রতি রৈক ঋষিকে ছর শত গক্ষ, একটি নিক ও
অ্যাভরী-যুক্ত রথ দান করিরাছিলেন। এ নিক ছিল হার।
"রৈকেমানি বট্শভানি গ্রাহ্মরশ্রতরীরগো স্মান্তাং ভগবাে

. এकों एका निशाहित्तन।

"তবৈৰ নামা ভবিতারমধিঃ অহাক্ষো মনেকরপাং গৃহাণ" (১.১৬)
গহনার নাম অলকার হইল কেন? প্রাচীন কালের
ঋবিদের মধ্যে এক জন ইহা লইরাও মাথা ঘামাইরাছেন।
ভিনি বলিরাছেন, নারীকে যতকিছু দাও না কেন, তাহাকে
সন্তই করিতে পারিবে না। তাহাকে ভাল কাপড়,
ভাল খাবার, ভাল জিনিস, যাহাই দাও, সে 'না' বলিবে
না—বেমনি তাহাকে গহনা দিবে অমনি সে খুণী হইরা
বলিবে 'আর না' 'অলম্' 'বেশ হইরাছে'। এই অলং-করা
হয় বলিরা গহনার নাম হইরাছে 'অলংকার'। অলকারের
এটি একটি প্রাচীন স্বরসিক শাক্ষিকের সরস তাৎপর্য্য।

ভরতের নাট্যশান্ত্রের পূর্ব্বে অলফার সম্বন্ধে আলোচনা কোথাও দেখা যায় না। পরবর্তী কোবগ্রন্থে অলফারের নাম ও কিছু কিছু বিবরণ পাওরা যায়। নাট্যশান্ত্রের ২১শ অধ্যারে ভরত অলধার লইরা অনেক কথাই বলিয়াছেন। তিনি অলধারকে চারি ভাগে বিভক্ত করিয়াছেন। তাঁহার মতে, অলধার আবেধ্য, বন্ধনীয়, ক্ষেপ্য ও আরোপ্য। কুগুলাদি আবেধ্য; শ্রোণীস্ত্র, অলদাদি বন্ধনীয়;



উৎকলের মস্তক ও কর্নাভরণ

ন্পুর, বস্ত্রাভরণ ক্ষেপ্য; স্বর্ণস্ত্র ও নানাপ্রকার হার আরোপ্য।

চতুবিধন্ত বিজ্ঞেরং নেহস্তাভরণং বুদৈ:।
আবেধ্যং বন্ধনারক কেপ্যমারোপ্যকল্পথা।
আবেধ্যং বৃদ্ধনারক কেপ্যমারোপ্যকল্পথা।
আবেধ্যং বৃদ্ধনার বংশ্যান্ত বিদ্দিশেশ।
প্রক্রেপ্যং বৃদ্ধান্ত বিশিল্পেশ।
আবোপ্যং হেমস্তাণি হারাক্চ বিবিধাশ্রা:।
নাট্যশান্ত—২১,১১-১৩

তারপর তিনি বিশেষভাবে নির্দেশ করিয়া বলিয়াছেন, চ্ডামণি আর মুক্ট হইল শিরোভ্ষণ। কর্ণের অলম্বার—
কুণ্ডল। মুক্তাবলী অর্থাৎ মুক্তাহার হর্ষক এবং স্ত্রা কণ্ঠভ্ষণ। অঙ্গুলির আভরণ হইল বটিকা ও অঙ্গুলিমুদ্রা। কেয়র ও অঙ্গল—কুর্পরের ভ্ষণ। ত্রিসর ও হার প্রীবা ও স্তনমগুলের ভ্ষণ; তরল ও স্ত্রেক এই ছইট কটিভ্ষণ ছিল। তথন দেহভূষণ বলিলে বুঝাইত মুক্তহার ও মালা। এগুলি সাধারণতঃ বেশ বিলম্বিত হইত। এই সমস্ত অলম্বার পুরুষরা পরিত।

চ্ডামণি: সম্কুট: শিরসো ভ্রণ: শুডন্।
কুণ্ডলং কর্ণমেরৈকং কলাকরণমিবাতে ।
মুক্তাবলী হর্ষকক সম্প্রং কণ্ঠজুবণন্।
বিটিকাকুলিমুল্লা চ জ্ঞানজুলিবিভূকণন্।
বিসরশ্বন হারক বীবাবক্ষোজভূবণন্।
তরলং স্কেবকৈব অবেৎ ক্টিবিভূকণন্।
আরং প্রকাদিব বিবেহ কার্যজ্ঞান্তরণাশ্বর:
ব্যালিমিন্তিকা হারা-মালাগ্যা নেহভূবণন্। ২১,১৫-১৯

ভারপর দেবতাদের ও মর্ভ্যবাসিনী রমণীদের অলঙারের কথা ভরত মূনি বর্ণনা করিয়াছেন। সেই অলঙারগুলির নাম ভরতনাট্যশাল্রে (২১/১৯-২১) এই রুপ-

নিধাপান। কুওল। নিধানান। থড়গণত্র। থঙপত্র: বেণীগুছে। চূড়ামণি। দারক। মকরিকা। সলাটিতিলক। মুক্তানাল। গুছে (জ্র এবং কক্ষের উপরিভাগে ধারণ করা হইত)। গবাকি। কুমুম (নানা রক্ষ ফুলের অমুকরণে বর্ণাভরণ)।

এ ছাড়া, कात्नत्र शहनात्र नाम (२)।२२-२৪)-कर्निका. · কর্ণবৃদ্ধ, পত্রকর্ণিকা, আপেঞ্চক, কর্ণমূজা, কর্ণোৎপল, নানারত্বধচিত দস্তপত্র। গণ্ডস্থলেরও গহনার নাম---ভিলক ও পত্রলেখা। যাঙ্কের নিরুক্তে এবং পাণিনির অষ্টাধাায়ীতে শুৰু অল্ভারের উল্লেখ আছে তাহা নহে, বিভিন্ন প্রকার নানা অলঙ্কারের নাম ও বর্ণনা আছে। একটা উদান্তরণ দিতেছি---পাণিনি ব্যাকরণ লিখিতে গিয়া শব্দের বাৎপত্তি করিরাছেন। এক জারগার (৪.৩.৬৬) তুইটি ভূষণের নাম করিয়াছেন। কর্ণে থাকে বলিয়া একটি গ্রহনার নাম 'কর্ণিকা', ললাটে থাকে বলিয়া আর একটি অলঙ্কারের নাম 'ললাটিকা'। তাঁহার স্ত্র হইল-"কর্ণলাটাৎকনলভারে"। ইহার বৃদ্ধি এই- "কর্ণলাট-শন্ধাভ্যাং কন্ প্রভানো ভবতি তত্ত্ব ভব ইভ্যেতদ্বিন্ বিষয়েহলঙ্কারেহভিধেয়ে।" 'বং' প্রত্যয় (৪.৩.৫৫) না হইয়া সেইখানে আছে এই অর্থে 'কন' প্রত্যয় হইবে।

রামারণে (সুক্ষর ২.৬) লিখিত আছে, লঙ্কাপ্রধোষিদ্গণের কর্ণে বক্স অর্থাৎ ছীরকখচিত বৈদুর্থামণিখচিত
কুগুল ছিল। মহাভারতেও (বন পা-৫৭) মণিকুগুলের
উল্লেখ আছে। ভাগবতেও (১০.২৯.৪) গোপাঙ্গনাথের
কথাক্ক্রিয়ার বর্ণনার ভাহাদের বলা ছইরাছে—আজগ্মুরস্তোল্তমলন্দিতোদ্যমা: সবত্র কান্তো জবলোলকুগুলা। ভূবনেখরের
মন্দিরের একটি স্ত্রীমূর্ত্তির কর্ণে 'তালপত্র' নামক কর্ণাভরণের
নিদর্শন আছে। অমরকোষের বর্গনার সহিত ইহার মিল
আছে। ভূবনেখরের (রাজেক্রলাল মিত্রের নির্বাত-মিণ্ডুলার
ভঙ্গ সংখ্যক চিত্রের কর্ণাভরণ বাঙ্গালা দেশের ঝুমকার
অস্ক্রপ। ৬৫ সংখ্যক মূর্ত্তি—মণিকণিকা। ৬৬ নং চিত্র প্রীর
কার্গনিক্স হইতে গৃহীত। এই মূর্ত্তির অস্ক্রপ কর্ণাভরণ বাঙ্গালা
দেশের 'চেড়ী' নামে পরিচিত। ৬৩, ৬৪, ৬৫ নং চিত্রের

কণাভরণগুলি সুকানিৰ্দ্মিত ও তাহাতে মণি-মুক্তা স্বস্মতাবে ধচিত ছিল।

কৌটল্যের অর্থশাস্ত্রেও দেখিতে পাওয়া বার বে, প্রাচীন কালে বহুপ্রকার অলঙ্কারের প্রচলন ছিল। বছবিধ কণ্ঠহারের মধ্যে শীর্ষক, উপশীর্ষক, প্রকাণ্ডক, অবঘটক ও তর্বপ্রতিবন্ধ প্রভৃতি বিভিন্ন প্রকার মুক্তাহারের উল্লেখ বহু গ্রন্থে পাওগা যায়। সমান আক্রতির মুক্তামালায় হার রচনা করিয়া কেব্রস্থলে একটি বড় মুক্তা দিয়া 'শীর্ষক' প্রস্তুত হইত। এইরূপ হারের কেব্রুস্থলে পাচটি বড় বড় মুক্তা থাকিলে তাহাকে উপশীৰ্ষক বলিত। 'প্ৰকাণ্ডকে' ক্রমহাসমান মুক্তামালায় রচিত হারের কেন্দ্রস্থলে একটি বড় মুক্তা থাকে। অবঘাটক সমান অবয়বের মুক্তামালায় রচিত হইত। মুক্তাহারের কেব্রস্থলে একটি উজ্জ্বল মুক্তা निशा (य हात त्रिष्ठ हहें **डाहात नाम**--डन व्याखितक। এক হাজার আট লহরে 'ইক্সছন্দ,' ইহার অর্জেক লহরে 'বিজয়চ্ছল্ম' এবং চৌষ্টি লহরে 'অর্দ্ধহার' নামক মুক্তাহার রচিত হইত। এতভিন্ন চুমান্ন গাছি মুক্তা-মালার লহরে 'রশ্মিকলাপ,' বত্তিশ লহরে 'গুচ্ছ', সাতাশ শহরে 'নক্ষত্রমাল,' চবিলশ শহরে 'অন্ধন্ডফ', বিশ লহরে 'মানবক' এবং দশ লহরে 'অর্জমানবক' হার রচিত হইত। উপরোক্ত হারগুলির ঠিক মধ্যভাগে একটি বড় মুক্তা বসাইয়া দিয়া সৌন্দর্য্য বৃদ্ধি করা হইত; এইরূপ হার 'বিজয়ছন্দ-মানবক' 'অধ্বহার-মানবক' ও 'রশ্মিকলাপ-মানবক' প্রভৃতি আখ্যা পাইত।

অনেক গাছি মুক্তামালার লহরের হারগুলি আবার শীর্বক, উপশীর্বক, প্রকাণ্ডক, অব্যাটক এবং তরলপ্রতিবন্ধ প্রভৃতির আদর্শেও প্রস্তুত হইত। উপরোক্ত আদর্শে রচিত হারগুলিকে 'শুদ্ধহার' বলিত; এইরূপ 'ইক্রচ্ছন্দ-শীর্বক' ইক্রচ্ছন্দ-উপশীর্বক' প্রভৃতি হার ছিল।

মুকামালার রচিত অন্ত প্রকার হারের নাম ফলকহার;
এই সকল হারের মধ্যভাগে তিনটি, পাঁচটি করিরা চ্যাপ্টা
মুকা বসান থাকিত; এইরূপ তিনটি চ্যাপ্টা মুক্তাখচিত
হারকে 'ত্রিফলক' এবং পাঁচটি মুক্তাখচিত হারকে 'প্রকালক'
বলিত। একগাছি লহরে রচিত মুক্তাহারকে 'একাবলি'
এবং 'একাবলি'র মধ্যভাগে একটি 'মণি' বসান থাকিলে

তাহাকে 'ষষ্টি' বলিত। এইক্লপে হারের মধ্যে মধ্যে

পর পর এক গাছি করিয়া মুক্তাহার এবং সমান অবরবের
অর্থহারে রচিত হারকে 'অপবর্ত্তক' হার বলা হইত। ছইগাছি মুক্তাহারের মধ্যে একগাছি অর্থলহর দিয়া 'সোপানক'
প্রান্তত হইত; এইরূপ হারের মধ্যভাগে একটি 'মনি' ধচিত
থাকিলে তাহাকে 'মনি-সোপানক' বলা হইত। অর্থচিত
অপবর্ত্তক, সোপানক, মনি-সোপানক, ঘটি, একাবলি প্রভৃতি
প্রাচীনকালে শিরোহার, কয়ন, বলর ও ঘূন্টিকা প্রভৃতি
মুক্তাখচিত অল্কারের পরিচর পাওয়া যায়।

অর্থশান্তে স্বর্ণকারদের কথাও আছে। সদর রাম্ভার কেঞ্রন্থলে স্বর্ণকারের দোকান থাকিত; উচ্চবংশের সচ্চরিত্র নিপুণ কারিগর ভিন্ন অন্ত কেহ দোকান ধুলিতে পারিত না। স্বর্ণ ও রৌপ্যের অলম্বার বিভাগ বা ব্যবসায় যাহাতে সভভার সহিত চালিভ হয়, সেই জ্বন্ত রাষ্ট্রের এক জন তত্ত্বাবধায়ক থাকিতেন; তাঁহার অধীনে 'অক্ষশালা' থাকিত। এই অক্ষশালায় স্বৰ্ণরৌপ্যাদি ধাতুর কারিগরী শিক্ষা দেওয়া হুইত এবং স্বর্ণরৌপ্যের অলকারাদি স্বর্ণকারগণ স্থর্ণের গুণনির্ণয়ে এবং প্ৰস্তত হইত। ধাতুদ্রব্যাদি সম্বন্ধে রসায়ন-বিদ্যায় বিশেষ অভিজ্ঞ ছিলেন। অকশালায় চারিধানি কক্ষ এবং মাত্র একটি দার থাকিড; অক্ষশালায় স্বর্ণকারগণ এবং যাহাদের সেখানে কাজ রহিয়াছে ভাহারা ভিন্ন কেহই প্রবেশ করিতে পারিত না; ইহার নিয়মাবলী অত্যন্ত কঠোর ছিল। স্বর্ণকারগণ বিশুদ্ধ স্বর্ণের কাঞ্চন, পৃষিত (শুন্তগর্ভ), ভষ্টা বা মণিধচিত স্বৰ্ণ এবং তপনীয় প্রভৃতি বিবিধ স্বর্ণালয়ার প্রস্তুতে নিযুক্ত থাকিত। অক্ষণালায় যে স্থানে বসিয়া স্বর্ণকারণণ কার্য্য করে, তাহাদের কোন কার্য্য যে-পর্যান্ত সমাপ্ত না হয়, সেই পর্যান্ত সেইস্থানে অসমাপ্ত দ্রব্য ও ব্রপ্রাতি থাকিত। তাহারা কার্য্যের জন্ত বে মর্ণ গ্রহণ করিত, দৈনিক কার্য্য সমাপন করিয়া তাহার হিসাব ভাহাদের বুঝাইয়া দিতে হইত। যে-সকল অলহার সমাপ্ত হইত তাহা কারিগর ও তত্ত্ববিধারকের শীলমোহরে বন্ধ করিয়া রাখা হইভ।

ক্ষেপণ, গুণ এবং কুদ্র—এই তিন প্রকার অলভারের কাজ ছিল। কাচের দানার স্বর্ণচতি-করণের কাজকে

ক্ষেণ্ণ বলা হয়। স্থানর লাহরকে গুণ বলিত। এত ভিন্ন নিরেট অথবা শৃষ্ণগর্ভ বিবিধ মালা তৈয়ারী হইত, তাহাকে 'ক্ষুড' বলা হইত।

মর্থকারগণকে মর্থ দিলে সেই পরিমাণ রাজমুদ্রাও প্রস্তুত করিয়া দিভেন; সাধারণ লোকও এইরূপ মর্থবিনিময়ে মর্থকারগণের নিকট হইতে মুদ্রা গ্রহণ করিতে পারিভেন। মর্থকারগণ এইজন্ত রাষ্ট্রের অধীনে বিশেষ ভত্বাবধানে নিযুক্ত হইভেন।

শুদ্রকের মুচ্ছকটিকে এক জন মণিকারের বিপণিবর্ণনার আমরা মুকা, হীরক, মণিমাণিকা, পদ্মরাগমণি,
প্রবাল, গোমেন, বৈদুর্যামণি প্রভৃতির এবং স্থর্ণে পচিত
বিবিধ মণি-মুকার কাক্ষকার্য্যের উল্লেখ পাই। বিভিন্ন
অলকারের বৈশিষ্ট্যবিচারে ইহার উপাদান, দেশ কাল ও
পাত্রভেদে ইহার ঐতিহাসিক ভিত্তি ও সংস্কৃতির কথা
বিশেষভাবে চিন্তা করিতে হয়; শিল্পতন্তের সলে শিল্পের
উপাদান বিশেষভাবে সংশ্লিষ্ট; যে দ্রব্য বা পদার্থ হইতে
যে অলকার প্রস্তুত হয়, তাহার সলে সেই অলকারের
মৌলিক যোগ রহিয়াছে। কর্দ্দম অথবা পাথরে যে
কাক্ষকার্য্য করা হয়, তাহার সলে নিশ্চরই স্ভার কাক্ষকার্য্যের পার্থকা রহিয়াছে। প্রত্যেক কাক্ষকার্য্যের প্রকৃতি
ছক্ষ ও একটি হার রক্ষিত হয়; তাহা দেখিলেই শিল্পীর
ক্ষিতি ও সংস্কৃতির আভাস পাওয়া যায়।

কাব্যেও অলহারের ছড়'ছড়ি। পুরুষরাও নানাবিধ অলহার পরিধান করিত। কয়েকটি উদাহরণ দিতেছি। "কনকবলয়ভ্রংশব্রিক্তপ্রকোর্ন্ত"—প্রকোর্ন্ত মেঘদুতের বক্ষ হইতে তাহার কনকবশর ভ্রন্ত হইরাছে। আবার ভাশ কাঞ করিলে তাহার পুরস্কারের জন্ত এগুলি দানও করা হইত। চারুদত্ত কর্ণপুরককে পুরস্কার দিতে উদ্যত হইলেন। পূর্বে তাঁহার ধন ছিল, তধন গ্ৰনা এখন অনুষ্টের গরিহানে তিনি নি:খ-—কিন্তু তাঁহার মনে নাই---তাঁহার অঙ্গে ভূষণ নাই; পূর্ব্ব অভ্যাস-বশতঃ শীঘ্র অলহার খুলিয়া দিতে গেলেন। অব্দের বেধানে বেধানে অলভার ধারণ করা হয়, সেই সেই স্থানে হাত দিয়া দেখিলেন---আভর্ব নাই। তখন নিরূপার হইয়া দীর্ঘনিখাসসহ উত্তরীয় নিক্ষেপ করিলেন।

মুদ্রারাক্ষসে দেখা যার, রাক্ষস ঋলভার পরিরা মলয়কে হুর নিকট বাইতেছেন। পর্বতকণ্ড এই অলভারগুলি পরিতেন। রাক্ষস নিবেদন করিতেছেন—"উচ্যতাং শকটদাসং। যথা পরিধাপিতা কুমারেণাভরণানি বরম্। তরমুক্তননলকাড়েঃ কুমারদর্শনমস্ভবিতুম্। অতো যন্তদলবরণত্রবং ক্রীতং তন্মধ্যাদেকং দীরভাম্।"—শকটদাসকে বল, কুমার আমার অলভার পরিয়াছেন; অলভার না পরিরা কুমারের সহিত সাক্ষাৎ করা অনুচিত। সূত্রাং ধে তিনটি অলভার কেনা হইয়াছে তাহাদের মধ্যে একটি ধেন পাঠাইরা দেন। "রসাকর" একখানি অতি প্রোচীন প্রস্থ। মল্লিনাথ মেংদ্তের টীকার এই প্রস্থ হইতে বচন উদ্ধৃত করিয়াছেন। মল্লিনাথক্কত একটি বচন এই—

কচৰাৰ্যাং দেহধাৰ্যাং পৰিধেরং বিলেপনম্।
চতুধ'। ভূবণং প্ৰাহঃ স্ত্ৰীণামন্তচ্চ দেশিকম্।
—উত্তৰ্মেৰ, ১৩ লোকের চীকা

এই প্রস্থের মতে রমণীদিগের অলস্কার চতুর্বিধ
(>) 'কচধার্য্য,' অর্থাৎ যাহা মন্তকে ধারণ করা হর,
(২) 'দেহধার্য্য'—অঙ্গশোভা অল্কার, (৩) 'পরিধেয়'—
বস্ত্রাদি, (৪) 'বিলেপন'—চন্দন, কন্তরী প্রভৃতি। ভিন্ন ভিন্ন
দেশের বিশেষ বিশেষ অল্কার 'দেশিক' নামে অভিহিত।

সংস্কৃত সাহিত্যে দেখা যায় তখন নৃপুর, বলয়, কাঞ্চী, হার ও কুগুলের খুবই প্রচলন ছিল।

রাজশেখারর 'কর্পুরমঞ্জরী'তে পাই—

মরগ অমক্রীরজ্জং চরণে সে লম্ভিজা বজস্সাহিং। ভাএ নিজ্পক্ষএ দিবেসি জা শক্ষরাজ মণিক্কী। দিল্লা বলজা বলিও করকমল পট্টাাল কুমলন্দ্র।"

—বরশুরা চরণে নৃপুর পরাইরা দিল। নিতথফলকে পদ্মরাগমণির কাঞ্চী নিবেদিত হইল। করকমলে বলয়, কঠে মুক্তাহার দেওয়া হইল, আর ক:প কুগুলযুগল স্থাপিত হইল।

কপুরমগুরীর অন্তস্থানেও পাওরা যার— ফ্রুরীর হিন্দোল-লীলার আন্দোলনের সহিত তাহার মণিনৃপুর রণিত হইতেছে, হার ঝন্ ঝন্ করিয়া বাজিতেছে, মেধলার কিন্ধিণী কণিত হইতেছে, চঞ্চল বলয়ের মধুর নিনাদ শ্রুত হইতেছে।

ত্থনকার দিনে সূচত্র স্বর্ণকারদের দক্ষতাও লক্ষণীর। মৃচ্ছকটিকের চতুর্থ অঙ্কে ইহার বেশ আভাগ পাওয়া বার। শিক্সিগণ বৈদুর্ঘ্য, মৌজ্ঞিক, প্রবাল, পুম্পরাগ, ইক্রনীল, ক ঠেতরক, পদ্মরাগ, মরকত প্রভাতর রত্ব বাছাই করিতেছে।
প্রপদিরা মাণিক্য বদ ই তেছে। দোনার গহনা তৈরি
করি তছে । লাল রঙের হত্ত দিয়া মুক্তাভরণগুলি
গাঁ,থিতেছে। বৈদুর্ঘামণি ধীরে ধীরে ঘর্ষণ করিতেছে। শঙ্খ
কর্তন করিতেছে—শানে প্রবাদ ঘর্ষণ করিতেছে।

প্রাচীন ক লৈ কণ্ঠাভরণ হই রকমের ছিল। ধাহা কণ্ঠে সংলগ্ন থাকিত তাহার সাধারণ নাম ছিল 'গ্রৈবেরক'। স্বর্দ্ধপে কথঞিৎ বিলম্বিত হইলে তাহার নাম হইত 'ললস্তিকা'। ললস্তিকা সোনার হইলে তাহাকে 'প্রালম্বিকা' বলিত—আর মুক্তার হইলে 'উরঃস্থৃত্তিকা' নামে অভিহিত হইত।

সুশৃত (সুত্রস্থ'ন ১৬ অধ্যায়) বলিয়াছেন—
রনা-ভূবণনিমিত্তং বালস্ত কর্ণো বিধ্যতে।

বাণ তাঁহার হর্ষচরি:ত 'ত্রিকণ্টক' নামক কর্ণাভরণের প্রাসক্ষে বলিয়াছেন—

কদম্পুলাছলমুক্তাকলযুগলমধ্যাধ্যাদিত মরকতক্ত ত্রিকটককণিভরণক্ত থেশুক্তঃ প্রভন্ন।"

শিশুপালবধে রুঞ্চের কুণ্ডলে গারুত্মত-মণির কথার পাই— "তভোরসং কাঞ্চন্তুশার্ত্ত-প্রারুত্তররত্বভাসা"—২।০৩

তারপর শিক্ষশাস্ত্রে ও কোষগ্রন্থে অলঙ্কারের বেশ একটি পদ্ধতি দেখিতে পাওয়া যায়। নিঘণ্ট ও যাঙ্কের নিক্ষক্ত ও পাণিনির পরে অমরাদির কোষগ্রন্থে অলঙ্কারের যথেষ্ট পরিচয় পাওয়া যায়।

মিশ্রকর –পত্র, রক্ষ্ণ ও অন্তান্তের সংমিশ্রাণ তৈরি। এইগুলি দেবতা ও রাজাদের করু বিশেষভাবে তৈরি।

সাধারণ অলম্ভারের নাম---

পাদন্পুর, কিরীট, সরিকা, কুণ্ডল, বলর, মেখলা, হার, করণ, শিরোভূষণ, কর্ণভূষণ, কেরুর, কর্ণ, চূড়ামণি, বালপট্ট, নক্ষমালা (২৭টি মুক্তা দেওরা), অর্জহার (৬৪ লহরবৃক্তু), স্থব্পিক্ত (হলরশোভা), রজুমালিকা, চির (চারকেরা নেকলেস), স্থব্ধিক্ক, হির্ণামালিকা (সোনার চেন), লবহার, পাদজাল, মকরভূষণ, মিজিত ও রজুকর, (রাজা ও দেবতা ব্যবহার্যা), রজুপুণা, ক্রম্বন্ধ, ল্বপার, বলর।

মর্মত প্রতৃতি শিল্পাক্তে অলভারের বধেষ্ট পরিচর আছে। মানসারেও অনেক কথা আছে। মানসার বলে— শরীরের সাধারণ অলভারের নাম 'অজভূহণ'—গুছের জাসবাব 'বহিভূবণ'। মানদ'র-মতে অলঙার চভূবিধ —পত্তকর,
চিত্রকর, রত্বকর ও মিশ্রিত বা মিশ্রকর। এগুলি দেবতার
উপবোগী। তবে চক্রবর্তী রাহ্মা পত্তকর ব্যতীত আর
তিনটি ব বহার করিতে পারেন। অধিরাক্ষ ও নরেক্স নামক
রাজা রত্বকর ও মিশ্রিত পরিতে পারেন। অভান্ত রাজাদের
ভূষণ মিশ্রকর। লতাও পত্ত হইতে তৈরি বলিয়া নাম
হইরা'ছ 'পত্রকর'। পুশা, পত্ত, অক্সন, বহুম্ল্য প্রত্তর ও
অন্তান্ত অলঙ্ক রের নাম চিত্রকর। রত্বকর —পুশা ও রত্ব
(jewellery) দিয়া তৈরি।

মহতে স্বৰ্ণ-শিল্প একটি বিশিষ্ট জাতির ব্যবসা বলিয়া বর্ণিত হইরাছে; স্বর্ণ-রারগণ অলঙারাদি প্রস্তুত করি:তন; মহু স্বর্ণ-ব্যবসায়ে ক্রত্রিমতার জন্ত কঠোর শান্তিরও ব্যবস্থা করিয়াছেন। অমর সিংহের অভিধানে মুক্ট, কিরীট প্রভৃতি বিবিধ শিরোভ্যণ, অনুরীয়ক, বিবিধ কর্ণ-কুণ্ডল, কর্ণপুল, শতনরী প্রভৃতি বিভিন্ন হার, অনন্ত, বলম, কন্ধণ, মেধলা, বেইনী, হন্ত ও পদের বিভিন্ন প্রকার কন্ধণ, নৃপুর ও বলম প্রভৃতির উল্লেখ ও বর্ণনা রহিয়াছে।

প্রাচীন খুগের অলঙ্কারাদির অধিকাংশই বর্ত্তমান কালে প্রচলন না থাকি:লও ভূব নখর-মন্দির, সাঁচী ও অমরাবতীর খোদিত মুর্ব্তি হইতে আমরা হস্ত, পদ, কোমর, কণ্ঠ এবং মস্তক প্রভৃতির বিবিধ অলঙ্কারের নিদর্শন পাই!

দাঁচী এবং অমরাবতীতে আমরা বলর, করণ প্রভৃতি বে-সকল অলহারের নিদর্শন পাই সেপ্তলি তত উন্নত পদ্ধতির নহে; অবশু সাঁচী অপেক্ষা অমরাবতীর কারুকলা একটু উন্নত পদ্ধতির। ভূবনেশ্বরের কারুকলা বিশেষ উন্নত ও পরিক্টে।

মুক্ট, কিরীট, চূড়া প্রভৃতির কাক্সকার্য্য বিশেষ স্ক্র ছিল। ষাজপুরের দেবমন্দিরে 'ইব্রাণীর' মুক্টের কাক্সকার্য্য অভুলনীর। ইহা দেখিতে ইরাণীর টুপির (cap) মত, কিন্তু অতি স্থন্দরভাবে রত্বগতিত।

মণিমুক্তাথটিত কালকার্যামর নাকছবি ও নাসাঙ্গুরীক প্রভৃতি নাগিকার অললাবের প্রচলন এথনও ফলদেশে এবং ভারতের সকল প্রদেশেই রহিরাছে। এক জন অন্ধ্-মহিলার বর্ণনার তাঁহার খাসপ্রখাসের সহিত নাসাঙ্গুরীর সঙ্গে দোলারমান মুক্তা ছলিতেছে—এইক্লপ বর্ণনা সারলা- ভিলকে রহিরাছে। প্রাচীন ভান্ধর্য বা স্থাপত্যশিল্পের মধ্যে ইহার কোন নিদর্শন পাওয়া বায় নাই।

ভূবনেশবের প্রাচীরগাত্তে খোদিত বে-সকল বড় বড় প্রতিমূর্ত্তি রহিয়াছে, সেই সকল মূর্ত্তিতে বিবিধ স্থলর হারের নিদর্শন পাওয়া যায়। এই হারগুলি দেখিলে বোধ হয় মণিমুক্তাধচিত বিভিন্ন আদর্শের হারের প্রচলন ছিল।

হাতে বালা-পরা বালালী মেয়েদের বিশেষ আদরের; বিশেষতঃ স্থামী বর্ত্তমানে ইংরেজ মহিলারা বিবাহের চিহুস্বরূপ বিবাহ-অসূরীরককে থেরূপ সন্থান দের, বালালী মেয়েরা তদপেকা অধিক সন্থান লোইযুক্ত স্থাবনত করে, খাড় একটু বড় ও উচুঁ। রাজেক্রলাল মিত্রের প্রস্তে (Indo-Aryans, Vol. I, pp. 234, 235) ৭০ নং চিত্রে অস্ত প্রকার খাড়র নম্না আছে। ৭১, ৭২, ৭৩, ৭৪ নং চিত্রে বিভিন্ন প্রকার বালার নিদর্শন আছে। ৭৪ নং চিত্রের অম্রন্ধপ বালা ক্রাদেশে পটুরী নামে পরিচিত। ৭৫, ৭৬ নং চিত্রে ম্পরিচিত শাধার চিত্র আছে, ইহা শাখ কাটিয়া প্রস্তুত হয়।

বর্ত্তমানে লোকের ক্ষতির পরিবর্ত্তন হওয়ায় চুড়ি প্রভৃতির প্রচলন হইয়াছে। বাক্ত্ব, তাবিজ্ঞ, তাড় প্রভৃতি হস্তাভরণের পরিবার্ত্ত বাঙালী মেয়ে অক্ত অলঙ্কার অথবা দাদাদিধা অলঙ্কার ধরিয়াছে। কিন্তু উড়িয়া। প্রভৃতি দেশে বাক্ত্ব, তাবিজ্ঞ, তাড়, পেটা চুড়ী প্রভৃতি রৌপ্য ও অর্ণাভরণ এখনও প্রচলিত। ভগবতী ও কার্ত্তিকেয়ের মুর্ত্তিতে বাক্ত্ব ও বলয়ের অতি উচ্চাঙ্গের নিদর্শন রহিয়াছে।

গ্রীকেরা মেধলা পরিতে ভালবাসিতেন। ইহা গুধু অলম্বার ছিল না, কটবন্ধের কাজও ইহা করিত। ভারতে গুধু সৌন্দর্যার্ধির কল্প ইহা সজ্জাভরণ রূপে ব্যবহুত হইত, গুধু জ্রীলোকেরা নহে বয়স্ক পুরুষেরাও মেধলা পরিধান করিত। ইহা গুধু একটি নরীতে সীমাবদ্ধ ছিল না, অনেকগুলি নরীতে ইহার সৌন্দর্যা বর্দ্ধিত হইত। চক্রহার-মেধলা বিশেষ প্রসিদ্ধ।

শীতপ্রধান দেশে পারের কোনরপ অলন্ধার পরা কঠিন, কারণ গরম মোজা বা জ্তা প্রভৃতি বারা পদবর সব সমরেই চাকিরা রাধিতে হয়; কিন্ধ ভারতের অবস্থা ভিন্ন রূপ। প্রাচীন কালে পারের বহু প্রকার অলন্ধার প্রচলিত ছিল; কিন্ধিণী পুরুষ ও স্ত্রীলোকেরা উভরেই পরিত। পাঁজর, নৃপ্রে, গুজরি প্রভৃতি বিবিধ অলন্ধার এখনও প্রচলিত। নৃপ্রের ঝুসুঝুসু এবং কিন্ধিণীর রিণিঝিনি শব্দ এখনও শুনি ত পাওরা বার।

উড়িয়ায় প্রচণিত কংমালা অন্তরণ পদাভরণ। রাজেবলাল মিত্রের গ্রন্থে (Indo-Aryans,) ৮৪, ৮৫ এবং ৭৮ নং চিত্রের পদাভরণ শুর্ উড়িব্যা এবং তেলেঙ্গী দেশে সীমাবদ্ধ ছিল। পাঁজর মুসলমান মহিলারা এখনও পরিয়া থাকেন। ৭৮, ৭৯ এবং ৮০ নং চিত্রে ভিন্ন ভিন্ন কিঞ্চিণীর ছবি আছে। ৮১, ৮২ এবং ৮৩ নং চিত্রে ঘূর্ণীকার (ঘুঙ্গুরের) চিত্র আছে।

অতি প্রাচীন যুগের নির্মিত কোন অলহার পাওরা বার নাই; শুধু ভান্ধর্য চিত্রাদি হই:ত আমরা মণিমুক্তা-থচিত অলহারের পরিচর পাই। আলেক্জাণ্ডারের আক্রমণের বহু পূর্ব হইতেই করমণ্ডল উপক্লে মুক্তা সমুদ্র হই.ত আহরিত হইত তাহার প্রমাণ আমরা পাই। মপুতে মুল্যবান রক্ষ ও প্রস্তরাদির উল্লেখ এবং ইহার বাবসারের কঠোর বিধান রহিরাছে। তৈত্তিরীয়-আন্ধাণে মণিমুক্তাদি অর্ণভারে প্রথিত করার কথা পাওরা যায়। তৈত্তিরীয়-আন্ধাণ প্রাণ্ডির জ্বোর অন্ততঃ ৮০০ শত বৎসর পূর্বের রচিত। মণিও রক্ষাদিকে 'কাচ' বলা হইয়াছে; কাচ বলিতে পদ্মরাগ্রমণি, হীরক প্রভৃতিকেই বুঝাইত।

বিভিন্ন যুগের কাক্ষ-শিল্প অথবা অশকার পরীক্ষা করিয়া তাহার বিভিন্ন ধারা ও সংস্কৃতির ক্রমপরিণতি অতি সহজেই ধরা বায়।

কোন কোন আদর্শ অন্ধভাবে অন্করণ করা হইরা থাকে, এবং শত শত বৎসরেও তাহার পরিণতি হয় নাই। প্রাতন হইতে নৃতনে যে পরিণতি, তাহাতে স্ক্ষভাবে প্রাতনের আভাস পাওয়া যায়। পরিণতির একটি উচ্চ আদর্শ লাভ করিয়া অনেক সময়ে শিয়ের পথ কর হইয়া যায়, শিয়ী তথন প্রাতনে ফিরিয়া যায়; এইয়পে অনেক দেশে প্রাচীন শিয়ের প্রক্ষত্ব হইয়াছে।

- ৪। সিরীশচন্ত্র বেদান্তভীর্থ-প্রাচীন শির্পরিচর।
- e | Ruth Bunzel-Social Sciences.
- ! Westermarck—The History of Human Marriage.
- 1 R. Karsten—The Civilization of the South-American Indians.
 - Fraser-Totemism and Exogamy.
 - | Haddon-Evolution in Art.
- 3. | Holmes—Origin and Development of Form and Ornament.
 - >> 1 F. Boss-Primitive Art.

^{*} এই প্ৰবন্ধ-সঙ্কলনে নিম্নলিখিত গ্ৰন্থ হইতে সাহায্য গ্ৰহণ করিয়াছি। ভন্মপ্ত গ্ৰন্থকারগণের দিকট কৃতক্ষতা স্থাকার করিভেছি।

> | P. K. Acharya—Dictionary of Indian Architecture.

Representation of Lindon and Lindonasian Art.

ও। R. L. Mitra—Antiquities of Orissa এবং Indo-Aryans.



আলাচনা



ত্ৰীবৃক্ত "প্ৰৰাসী" সম্পাদক মহাশন্ন সমাপেৰু।

মান্তব্যের্—আণনি যে আখিনের প্রবাসীতে "জমণেদপুরে বাজালী" শীর্বক প্রসক্তে বাজালীদের উপর অবধা আক্রমণের প্রতিবাদ করিরাছেন, ইয়া সর্ববাংশে আপনার উপযুক্ত হইরাছে। এ-বিবরে আপনাকে কিছু তথা জানাইতেছি।

প্রায় ছই বৎসর পূর্বের মি: এ. আর. দালাল, এম-এ, আই-সি-এস (wangertet) as "Contribution of Tatas to Bengal" শীৰ্ষক একটি লেখা দৈনিক সংবাদ-পত্ৰে (ধুব সম্ভবত: অমুতবালারে) প্রকাশিত হইরাছিল। এই প্রবন্ধে বাঙালী ও বঙ্গদেশ টাটা কোম্পানী হইতে কি উপকার পার দালাল-মহালর তাহাই দেখাইতে চেষ্টা कतिग्राह्म । मालाल-मश्नित्र है।है। कान्यामोत्र मार्गिकः छिरत्रकेतः; হতরাং তাহার তথ্যসমূহ যে সম্পূর্ণ নিজুল, এ-বিষয়ে সন্দেহ নাই। किंद्र जिनिष्ठ देश प्रथाहेत्ज भारतन नाहे र्य, अम्मप्रपादात्र व्यक्षिकारन পদ বাঙ্গালার অধিকারে। পরস্ক তাঁহার প্রবন্ধ হইতে ইহা পরিকার বুৰা যায় বে, ভারতের অনেক প্রদেশের তুলনার জমশেদপুরে বাঙালীর সংখ্যা কম। প্ৰবন্ধটি ছই বৎসর পূৰ্বে প্ৰকাশিত হইলেও ইতিমধ্যে টাটা কোম্পানাতে খুৰ বেশী পরিবর্ত্তন (বিশেষতঃ চাকুরার বিষরে) হওয়। সম্ভব নহে, স্থতরাং প্রবন্ধে বর্ণিত অবস্থা বর্ত্তমান সময়েও প্রযোজ্য। দালাল-মহাশর তাঁহার প্রবৃদ্ধে ১৯৩২ সালের এপ্রিল মাসে কোন্ অদেশের কড লোক জমশেদপুরে টাটা কোম্পানীতে কাজ করিত ভাহার তালিকা দিয়াছেন :---

বিহার ৩০ং২, যুক্তপ্রদেশ ২৭৪৫, মধাপ্রদেশ ২৬৫০, পঞ্চাব ২৫৪৯, বাংলা ২৪৯৭, মাজ্রাজ ১৭৩০, উড়িব্যা ১৬২৬, ৰোম্বাই ৬১০, উত্তর-পশ্চিম সীমান্তপ্রদেশ ৩২০, জাসাম ২৩৬, বিদেশী ৯৮।

ইহারা মাসের শেবে মাহিনা পার। ইহা ব্যতীত সপ্তাহের শেবে মাহিনা পার এরপ লোকের সংখ্যা:—আদিম অধিবাসী ২৫০০, ছত্রিশগড়িরা ২৪৪১, উড়িরা ও তেলেগু ভাষী ৩০০!

এই হানে ইহা লক্ষ্য কদ্মিবার বিষয় বে, এই তিন শ্রেণীর লোকেরা প্রায় সবাই বিহার, উড়িব্যা ও মধ্যপ্রদেশের অধিবাসী।

দালাল-মহালর হিসাব করিরা দেখাইরাছেন বে, প্রথম শ্রেণীর (অর্থাৎ বাহান্না মাসিক বেতন পার) চাকুরোদের মধ্যে শতকরা মোটে ১৩ জন বাঙালী, অর্থাৎ টু জংশ জপেকা কিছু বেশী: বিতার শ্রেণী (অর্থাৎ বাহারা সাস্তাহিক বেতন পার) তাহাদের সহিত মিলাইরা হিসাব করিলে বাঙালীর জমুপাত আরও কম হইবে। ইংাই কি বাঙালীর একচেটিরা অবিকার স্থাপন ?

কোম্পানীয় মূলখন (subscribed capital) ১০,৪৫,৬৮,০০০ টাকা। ইহাতে কোন প্রদেশের কিরণ অংশ আছে দেখা বাউক:— বোদাই 1,83,89,... e.e»,... বিহার-উডিব্য: <u> শঞ্জাঞ্চ</u> €,€83... বাংলা 83,86. ... উ. প. সীমান্ত ৩,-৪,---আগ্রা-অবোধা ১৮,৮৭,০০০ 34(44 মৰাপ্ৰদেশ 39,24,000 45. ... ভারতীর দেশীরাজা সমূহ—১,৩৯,৬৫,০০০ ও বিদেশ ৮,০৭,০০০।

ইহা হইতে প্রতীরমান হটবে যে, বাঙ্গালীর মূলধন মোটেই নগণ্য নহে। দেশী রাজ্যসমূহের মিলিত অংশ বাদ দিলে বক্লদেশ এ-বিষয়ে ততীর স্থান অধিকার করে।

জামশেপপুরে ২৫০, ও তদপেকা উচ্চবেতনের বে-সব কার্য্যে ভারতীর নিযুক্ত আছে তদ্মধ্যে শতকরা ৪১টি পদে বাঙালী আছে : কিন্তু এ-হিসাবে বিদেশী কর্মচারাদের ধরিলে বাঙালীদের অনুপাত অনেক ক্ষিয়া খাইবে! টাটা কোম্পানাতে ১৯৩২ সালে ৯৮ জন বিদেশী চাকুর্য়ে ছিল। তাহাদের অধিকাংশ কিংবা প্রায় সবই ২৫০১ টাকা অপেক্ষা অধিক বেতনভোগী, এরপ অনুমান মোটেই অসঙ্গত নহে। বাঙালীরা যে কিছু কিছু উচ্চপদ পাইরাছে তাহা তাহাদের বোগ্যভার ৰলে। এ-বিবরে মি: দালাল ৰলিরাছেন:-The proportion of Bengalees holding the higher posts is 41 p. c. and is by far the largest of any province. This is a fact which in itself is creditable to Bengal and it is only brought out here to show that competent and deserving men from the province here received due recognition of their merits at the hands of the Company." সর্ববেশ্বে তিনি বলেন, "If Bengal has benefited by the establishment of Tata Iron & Steel Co...it is due to the favourable geographical position of the province.

If the abilities and energies of the sons of Bongal have enabled them to capture a substantial proportion of the higher appointments in the Company's service and to play their part in the progress of this great national industry, that also should be a matter of gratification and of pride to Bengal."

নিবেদক শ্রীনক্ষত্রলাল সেন

আধিনের 'প্রবাসীর' ১০২ পৃষ্ঠার বিতীর কলমে 'রুমুর' সম্বন্ধে বে তথ্য দেওরা হইরাছে এবং বে ছুইটা দৃষ্টান্ত উদ্ধৃত করা হইরাছে, তাহা ১০১৯ সালের 'সাহিত্য-পরিবদ্-পত্রিকা' বিতীর সংখা, ১০৮ পৃঃ প্রহরেরুক মুখোগাখ্যারের প্রবন্ধ হইতে লওরা হইরাছে, কিন্তু নেধক তাহা বীকার করা আবশুক বোধ করেন নাই।

একুমুদচক্র বন্দ্যোপাখ্যার

আধিন সংখ্যার প্রবাসীতে প্রকাশিত "বাংলার সৃৎশিল্প ও কুজনার অ'ভি" প্রবন্ধটি নাতিলীর্ব, উপাদের ও সমরোপবােদী। প্রবন্ধের 'চিত্রগুলিও মনোরম। লেখক-মহাশার কিন্তু একটি বিবরের উলেধ করিতে জুলিরাছেন, হরত ইহা তাঁহার অনিচ্ছাকৃত। প্রবন্ধের ''রিইনক্লেস'ড পদ্ধতি নির্মিত বমুনা মূর্জি" ও "লগ্ধ মৃত্তিকা নির্মিত গণেশ-মূর্জি'র ডিলাইন শিল্পী ক্রীবৃত্ত নম্পনাল ব্যু মহাশার কৃত। এই ডিলাইনগুলি কুজকার লাতি কর্ম্বক সৃহীত হইরাছে দেখিরা আনন্দিত হইরাছি।

শ্রীগণেজনাথ বন্যোপাধায়

শ্ৰীআশালতা দেবী

2>

প্রত্যেক দিন সকালবেলায় ডাক আসিবার সময় দারোয়ানটা যথন ভেলেদের হুয়ারে হুয়ারে ভাকিয়া বেড়ায়, 'চিঠ্টি স্থায়!' সে সময় প্রত্যেক দিনই যামিনীর হুৎস্পান্দন ক্রততার হুইতে থাকে। মনে হয় দরোয়ান এইবারে তাহার দরের সমুধে আসিরা দাড়াইবে, এইবারে তাহার দিকে একথানা নীলাভ রঙের থাম হয়ত প্রদারিত করিয়া ধরিবে। তাহার নামেও হয়ত চিঠি আছে। আর সে চিঠি লিথিয়াছে নিশ্চয় নির্মাণা। কিন্তু কোনদিনই আশা পূর্ণ হয় না। প্রতীক্ষার পালা দীর্ঘতর হইতে থাকে। কিন্তু এমনি তুর্বার আশা নে আবার ঠিক পরের দিন চিঠি আসিবার সময় হইলেই ভাহার পক্ষে কোন কাজ করা কি শেখাপুড়া করা অসাধ্য হইয়া উঠে। সেই কয়েকটি মুহূর্ত্ত ব্যাকুল আশার উত্তেজনায় কাটিরা যায়। তাহার পরে তাহার বারংবার প্রশ্নের জবাবে দরোয়ান যথন ঠিক একই ভাবে মাথা নাড়িয়া বলিতে থাকে, না বাবু, আজও আপনার নামে কোন চিঠিপত্র নাই, তথন কিছুক্ষণের জন্ত তাহার মনের সমস্তটা একেবারে অন্ধকার হুট্রা যায়। একটা দিনের জন্ত সমস্ত আশা গেল।

সেদিন বেলা ন'টার সময় ডাক বিলি হইয়া ঘাইবার পরে যামিনী নিরাশ মনে চুপ করিয়া বসিয়া আছে, এমন সময় জাফ্রাণি পর্দ্ধা-ঝোলান পাশের বাড়ি হইতে খুব একটা সোরগোল, একটা স্ত্রী-কঠের আর্ত্রনাদ শোনা গেল। যামিনী সেইদিকের জানালাগুলা বরাবর বন্ধ রাখিত, টানিয়া খুলিয়া দেখিল গেটের সামনে গোটাছই-ভিন মোটর দাঁড়াইয়া আছে। একটা হল্লা উঠিয়াছে। নিধিলকৈ ডাকিয়া কহিল, "ওছে ব্যাপার কি? এত গোলমাল কেন? নাঃ, এ ঘর ছ'টো আমাকে কলোতে হ'ল দেখি। এমনিতেই ত দিবারাত্রি সারেদির নিকণ, গানের সুর আর মাতালের অপ্রাব্য ভাষার কান ঝালাপালা। তার উপরে কোন কোন দিন বদি বিশেষ পালা সুক্র হন্ত ভাহলেই ত চমৎকার!"

নিধিল সেই বাড়ীর ফটকের কাছে গেল ব্যাপার কি দেখিবার জন্ত। কোন এক বেহারী বড় ভূমিদারের ছেলে এক জন রক্ষিতার মত স্ত্রীলোককে আনিয়া কিছুদিন হইতে ·**ওই বাড়ীতে** রাধিয়াছে। লোকে এইরূপই বলে। **অনেকটা** আন্দাঞ্জও তাই হয়। মেয়েটিকে জানালার কাছে দাঁড়াইরা থাকিতে যামিনী অনেকবার দেখিয়াছে। কালো দীর্ঘ ঘনপন্ম চকু। অপূর্বে স্থন্দরী। চকিতের মত জাফ্রাণি পর্দা সরাইয়া ভাহার কালো চক্ষুচঞ্চল হইয়া উঠে, আবার তথনই সরিয়া যায়। দিনের বেলায় সমস্ত ব'সাটা নিস্তন্ধ थाक । क्वन धक जन मानीक नमतमत्रका भूनिया मधा মধ্যে যাতায়াত করিতে দেখা যায়। কিন্তু স**দ্যা লাগিতে না**-শাগিতে প্রকাণ্ড এক মোটরের হর্ণ ঘন ঘন বাজিতে থাকে। তাহা হইতে যে বেহারী ভদ্রলোক নামে তাহার পাঁচ আঙুলে পাঁচটা হীরার আংটি এবং বেশভূষার দিকে চাহিলেই ভাহার শিক্ষা এবং রুচি সম্বন্ধে সংশয় করিবার আর অবকাশ থাকে না। তাহার পরে আরও হুই-একটা জুড়িগাড়ী লাগে ও সারারাত্রি ধরিয়া হুরা এবং বীভৎসভার যে প্রমন্ত লীলা চলে, দুর হইতেও কণে কণে তাহার আভাস পাওয়া যায়।

নিধিল ক্ষণকাল পরে ফিরিয়া আসিয়া কহিল, "হবে আবার কি, মাতাল জমিদারটা আজ অন্তদিনের চেরে মাতা চড়িয়েছে, তাই হয়ত বেখেচে কোন গোলবোগ। বাক্গে ও-সবে আর মনোবোগ দিয়ে কি হবে ব'ল। দেখি বদি এই রকম রোজই চলে, ভা'হলে অক্ত মেস দেখতে হ'ব। এখানে আর অন্ত কোন ঘর ত খালি নেই। তুমি কি বল? কিন্তু এ-বাড়ীটা খুব সুবিধের ছিল।"

ৰাড়ী কালাইবার নাম গুনিবামাত্রই ধামিনীর মুখ গুকাইরা গেল। ভাহার সমস্ত দেহ-মন বেন ক্লান্তির অকলাদের চরম সীমার পৌছিরাছে। এভটুকু চেষ্টা উল্যোগ ভাহাতে আর সহিবে না। চেয়ারটার ভাল করিয়া হেলান দিরা বসিরা সে কর্জনিমীলিত চক্ষে ত্রহিল, "থাক, ভ্রত হালামে কাজ কি, বেশ আছি। ওসব গোলমালে কান না দিলেই হ'ল।"

নিখিল তাহারই নির্দ্ধেশমত সেইদিক্কার জানালা হুটা আবার বন্ধ করিয়া দিয়া আসিয়া শ্বিতহাসো বলিল, "কিন্তু তাও বলি, তোমার অত বাড়ির ভাবনা কেন দাদা? বৌদির কাছে সোজা চলে যাও। সকালবেলায় উঠেই প্রাইমাস্ ষ্টোভের পাম্প ঠেলতে হবে না চা'য়ের জন্তে। বরঞ্চ সেধানে সোনালি চায়ের সঙ্গে সোনার বর্ণের করকমলের যে ছায়াটুকু এসে মিশবে তাতে ক'রে চায়ের খাদের আর অন্ত থাকুবে না। তাই যাও না ভাই। অনর্থক অভিমান ক'রে শ্রীরপাত কেন?

· "বল কি!" যামিনী গন্তীর মুথে কহিল, "একবার ফেল করেছি। আমার পড়াশোনা?"

়ে - "আর পড়াশোনা ? পড়াশোনা যা করছ তা অর্কের ঈশ্বর দেখছেন।"

"সত্যি কিছু পড়ছিনে। নয় নিখিল ?" সে এমন ভাবে নিখিলের মুখের দিকে চাহিয়া এমন স্থরে কথাটা জিজ্ঞাসা করিল যে সেইটুকু প্রশ্নের মধ্যেই তাহার অন্তরের অপরিসীম ভার, অসহ ব্যথা একেবারে উন্মুক্ত হইয়া যেন চোথে পড়িল। নিখিল তাহারই পাশে নিজের চৌকিটা সরাইয়া লইয়া গিয়া যামিনীর একটা হাত চাপিয়া ধরিয়া কহিল, "কি হয়েছে আমাকে থুলে বল যামিনী। সেই প্রথম যথন আই-এ পড়তে তুমি কলকাতায় এস, তথন থেকেই তোমার সঙ্গে আমার বয়ুছ। আমার কাছে কিছুই লুকিও না।"

যাদিনী ধীরে ধীরে হাতটা মুক্ত করিরা লইবার চেটা করিয়া কহিল, "কিছুই হয় নি। এক দিন এক জনকে প্রাণপণে পাবার চেটা ক'রে মনে করেছিলুম, বাইরের সব বাধা কাটিয়ে তাকে বিয়ে করতে পারলেই বুঝি সমস্তই মুগম হয়ে আসংব। এখন দেখতে পাচিছ বাইরের চেয়ে ভিতরের বাধাই বেশী। সেইটেই সবচেয়ে বড় সমস্তা নিখিল, যেখানে পাশাপাশি রয়েছি, অখচ মিলতে পাচিছ নে।"

"দেখ,তোমাদের নব্য পুরুষদের এই একটা ভারি দোক—" নিধিল একটু উত্তেঞ্জিত হইরা কহিল, "তোমরা আক্ষকাল নেরেদের হার মানিরেছ। বসে বসে স্ক্রেডমরূপে ভাষা থেকে ভাবটুকু এবং তাৎপর্য্য হইতে তম্মটুকু বেছে চিনে বার হুরা চাই। কিন্তু দোহাই ভোমাদের, সংসারের সর্ব্বে অত স্ক্র মনের আমদানী ক'রো না। যা সহজ্ব এবং সরল মুখে মুখে ছড়াকেটে তাকেই কাব্য বানিরে তুলো না।"

যামিনী উঠিয়া পড়িয়া কহিল, "ভাই নিধিল, আমার কথা তুমি ব্রুতে পারবে না, সে চেটাও ক'রো না। সংসারের বারো আনা লোক ঘরের গৃহিণীকে পেলেই স্থী হয়, স্বস্তিতে সংসার্যাত্রা নির্কাহ করে। কিন্তু আমার সে স্বস্তিতে সংসার্যাত্রা নির্কাহ করে। কিন্তু আমার সে স্বস্তিতে দরকার নেই। আর সে স্থাও আবশুক নেই—না না, স্থা চাই নে এ কথাটা অবশু এখন অত জোর দিয়ে বলতে পারি নে। কারণ এখন অত জারহীন হই নি। কিন্তু আমি যে-পরিপূর্ণতাকে চেয়েছি সে ত শুধু ঘরের গৃহিণীকে দিয়ে মেটে না। আমি তারই জন্তু অপেক্ষা ক'রে রইলুম। যদি কখন পাই তেমনি ক'রেই পাব। তার চেয়ে কমে আমার মন ভরবে না ভাই। এর জন্তে যদি সমস্ত জীবন অপেক্ষা ক'রে থাকতে হয় সেও স্বীকার, কিন্তু আমার চাওয়াকে আমি ছোট করব না।"

'হেরছে গো মশাই হরেছে। সারাজীবন তপস্থার পালা এখন শিকের তোলা থাক, হুটো মাস বিরুষ্ট সহু হ'লে বাঁচি। রোজ ডাক আসবার সমর যখন হরে, তখন মনটা যেন মেঘের পানে চাতকের চেরে থাকার মত সেই দিকপানে অনিমেষ হরে থাকে। দেখি দাদা, আর হু'টো দিন সব্র কর, ডাকটা আগে কোনদিক থেকে আসে!

२२

রাত্রি তখন প্রায় বারোটা। মেসের সমস্ত ঘর অককার।
আলো নিবাইরা দিরা সকলেই ঘুনাইতেছে। যামিনীর
পাশের ঘরে নিধিলও গভীর নিজাছর। কেবল সে
নিজেই এত রাত্রি অবধি ঘুমাইতে পারে নাই। আলোর
অভাবে বই পড়িতে না পারিরা চুপ করিরা বিছানার ভইরা
ছট্কট্ করিতেছিল। এমন সময় তাহারই পাশের ঘরটার
কে যেন ধালা দিরা ভাকিতে লাগিল, "বাব্রা কেউ জেগে
আছেন গো? ভারি বিপদে পড়েছি। দোহাই আপনাদের
ঘদি জেগে থাকেন ত দোর খুলুন।"

ত্রী-কণ্ঠের স্বর। কণ্ঠস্বরে আর্ত্ত ব্যাকুলতা।

বামিনী মাধার কাছে টিপারে-রাধা মোমবাতি ও দেশলাই দিয়া আলো আলিয়া দরদ্বা প্লিয়া দিল। খুলিয়া দিয়া ডাকিল, "কে? কি বলছো।"

সাড়া পাইরা স্ত্রীলোকটি তাহার ঘরের দিকে আগাইরা আদিল। বাদিনী দেখিরা চিনিল, ও-বাড়ীর দাসী। বাহাকে প্রারই সে সদর দর্জা ধূলিরা বাতারাত করিতে দেখিরাছে।

"কি হরেছে ?"

"সর্কনাশ হয়েছে বার্। বাড়িতে দালা হয়েছে।
দিলিদানির মাধার ছুরি মেরে···আর কি বলব বার্? সে
সব নোঙ্রা কথা। ঝগড়া-ঝাঁটির পর কে কোন্দিকে
পালিয়েছে। একা বাড়িতে কি করব ভেবে পাছি নে।
এক জন ডাক্তার ডাকা ত দরকার। কিন্তু কি করব,
একলা তাঁকে ফেলে রেখে কোথার যাব ? এদিকে ডাক্তার
ডাকতে বেণীক্ষণ দেরি হ'লে হয়ত ওলাকে বাচান যাবেনা।"

যামিনী কিছুকাল ভাবিয়া কহিল, "তুমি একটু গাঁড়াও, দেখি আমি কি করতে পারি।" নিখিলকে ডাকিয়া উঠাইয়া সে সমস্ত বুতান্ত বলিল।

নিখিল গায়ের কাপড়টা টানিয়া লইয়া কহিল, "চল। বিপদের সময় আর কোন কথা ভাবতে নেই। একটা ডাক্তার ডাকিয়ে চিকিৎসার ব্যবস্থা ক'রে দিয়ে চলে আসব।"

সিঁ ড়ি দিয়া উঠিয়া দোতালার বড় বরে আসিয়া সকলে দেখিল মেঝেময় ফরাস পাতা। দলিত ফুলের মালায়, সিগ্রেটের পোড়াটুকরায় সমস্ত জায়গাটা লগুভগু। একধারে সোফার উপর মেরেটি মুদিত চক্ষে গুইয়া আছে। জ্ঞান আছে কি না ঠিক বোঝা গেল না, রগের পাশে কালশিরার স্পষ্ট দাগ। নিখিল হুয়ারের কাছে আসিয়া চুপি চুপি কহিল, "ঘরের মধ্যে যেতে আমার স্থণা বোধ হচ্ছে। আমি চল্লুম। একটা ডাক্টার ডেকে এনে দিছিছ। ততক্ষণ ভূমি বারান্দায় ব'ন।"

নিখিল চলিয়া গেল। ধামিনী বাহিরে বসিয়া রহিল।

কৃষ্ণক্ষের রাত্রি—অব্ধুকার। আকাশের তারাগুলি যেন
কাহার অনিমেধ দৃষ্টির মত স্থির হইরা চাহিয়া আছে।

সেই দিকে তাকাইয়া সে আপনার চিস্তার মধ্যে তন্মর হইয়া

গিয়াছে। দাসী পিছনে আসিয়া মুজ্খরে কহিল, "কুই

ডাক্তার বাবুত এখন এলেন না। ওঁর কি আরে জ্ঞান হবে না?"

ষামিনী ভাহাকে ভয়ে অভিতৃত দেখিয়া কহিল, "চল ভিতরে গিয়ে দেখে আসি গে।" সোকার পাশে একটা টুল লইয় গিয়া সে বসিল। দাসীকে বলিল, "ভোমাদের বাড়িতে যদি গোলাপজল থাকে নিয়ে এয়। আর অমনি একটা হাতপাথাও।" দাসী প্রার্থিত জিনিষপত্র খোঁজ করিয়া আনিতে গোল। ঘরের মধ্যে উক্জ্বল আলো।

সেই বিমথিত, বিশৃঙ্খল কক্ষের মাঝে নিম্পন্দ নারীমূর্জির দিকে সে ভাল করিয়া চাহিয়া দেখিল। কী স্থন্দর মুখ! স্কুমার ললাটখণ্ডটুকুতে কি অসহায় কর্মণতা! সমস্ত মুখ বিবর্ণ। ইহারই মুখের দিকে ভাকাইয়া কে বলিতে পারে দিন কাটে ইহার নিঃশক্ম গ্লানিতে, রাত্রি যাপন হয় প্রমন্ত লালসার মাঝে। দাসী আসিয়া মাথায় গোলাপজলের পটি দিয়া পাখা করিতে লাগিল। যামিনী ভাহার হাতের মণিবক্ম স্পর্ণ করিয়া দেখিল নাড়ী ক্ষীল।

মিনিট পাঁচ-ছয় পরে সে চোধ খুলিয়া চাহিল। শৃষ্ঠ অথহীন দৃষ্টি। বাড়ির গেটের কাছে একটা মোটরের হর্ণ বান্ধিতে লাগিল। সিঁড়ির আলোটা আলিয়া দিয়া দাসী কহিল, "ওই যে ডাক্ডারবাব্ এসেছেন।"

ডাক্তার আদিয়া কয়েকটা বলকারক ঔষধ লিধিয়া দিয়া গোলেন। থানিকটা গরম ছথে ব্যাগ হইতে কয়েক ফোঁটা ব্র্যাণ্ডি মিশাইয়া পান করিতে দিয়া আঘাত পরীক্ষা করিয়া কহিলেন, "তেমন কিছুই নয়। হঠাৎ শক্ পেয়ে এতক্ষণ জ্ঞান ছিল না।…আজে, না। রাত্তিতে আমি বৃত্তিশ টাকাই নিই।"

যামিনী তাহার পার্স্ হইতে দশ টাকার চারিধানা নোট বাহির করিল। নিথিল সেইদিকে চাহিরা ক্রক্ষিত করিল। সোফা হইতে মেরেটি ক্ষীণস্বরে কি কহিল ঠিক শোনা গোল না। ডাক্ডার পকেট হাতড়াইরা কহিলেন, "আমার কাছে চেঞ্চ নেই।" নিথিলের দিকে চাহিরা কহিলেন, "আপনি টাকাটা আর ওব্ধ করেকটা নিয়ে যান আমার ডিম্পেন্সারী থেকে। ওঁর যে-রক্ম অবস্থা, আজ রাত্তিরেই ফুনাগ ওব্ধ পড়া চাই।" নিখিল নিভান্ত বিরক্ত হইরা ভাহার সঙ্গে বাহির হইরা গোল। ঘরের মধ্যে প্রগাঢ় নিস্তব্ধতা। শিররের কাছে পাখা হাতে করিয়া দাসী চুলিতেছে। মেরেটি চোখ খুলির: তাহার কালো চক্ষুর পূর্ণ দৃষ্টি যামিনীর উপর মেলিরা ধরিয়া কহিল, "এমন আমি কোথাও দেখি নি।"

কণ্ঠস্বর সঙ্গীতের মত মধুর। ৰামিনী অন্তমনত্কের মত জানালা দিয়া বাহিরের অব্বকারের দিকে চাহিয়াছিল, চমকাইয়া উঠিয়া কহিল, ''কি বলছেন?"

"ভাবছি কি ব'লে আপনাদের কাছে পরিচয় দেব। আমার নাম অমলা। আমার নামটাই বেন আমাকে করছে সকলের চেয়ে পরিহাস। হয়ত কত কি-ই ভাবছেন।"

"কিছুই ভাবছিনে। পরের সম্বন্ধে কোন রকম কিছু ভাবা আমার স্বভাব নয়। আপনি যা তাই। কিন্তু এখন আর বেশী কথা বলবার প্রয়োজন কি? ডাক্তার বলেছে আপনার শরীর এবং মস্তিস্ক তু-ই এখন তুর্বল।"

মেরেটির মুথে আতক্ষের গাঢ় কালিমা পড়িল। কহিল, "আচ্ছা, কি ক'রে আমি অক্সান হয়ে গেলুম, জানেন?"

"জানি নে। আমরা আপনাদের বাড়ির ঐ পাশের মেনে থাকি। আপনার দাসী গিয়ে আমাদের থবর দেয়।"

"জানি। আমি আমার এই জানালা দিয়ে কতবার আপনাকে দেখেছি।"

অমলা কি যেন স্মরণ করিতে আবার চক্ষু মুদিল। বাহিরে নিথিলের পায়ের আওরাজ্পাওরা গেল। দাসীকে উঠাইরা দিয়া যামিনী কহিল, "আপনার ইতিবৃত্ত শোন্বার জন্তে আমরা তত ব্যস্ত হই নি। আপনি শাস্ত হয়ে বিশ্রাম কর্মন। আমরা চললুম। যদি কোন প্রয়োজন হয় খবর দেবেন।"

নিখিলের সঙ্গে আসিয়া রাস্তাতে পড়িতেই সে গন্তীর হইয়া কহিল, "যামিনী, বাড়ি বদলাবার কথা বলছিলে, এবারে আর তামাসা নয়। এবার একটা ভাল বাড়ি দেখে ক।ল-পরশুই উঠে যাছিছ।"

"কেন কি হয়েছে? এত তাড়া কিসের?"

"তাড়া নয়ই বা কেন? রোজ-রোজ এই-সব কাণ্ড-কারখানা আরম্ভ হ'ল। আজ তো দেখছি একরাশ অর্থদণ্ড হ'ল। তব্ও যদি এইটুকুর উপর দিয়েই যায় তাহ'লে ভাগ্য ব'লে মানি।" "এত ভয় কিসের ?"

"ভয় আমার জন্তে নয়। ভোমারই জন্তে ভাবনা। ভোমাদের মত ঝোঁকালো, আবেগপ্রবণ লোকগুলোকে আমি বিশেষ ভরসা করি নে। তার উপরে একবার শাঁলের সন্ধান পেলে সহজে কি ওরা…"

"নিধিল, কোন এক জন প্রীলোকের সম্বন্ধ কিছুই নাজেনে অসম্ভ্রম ক'রে কথা ব'লোনা।"

''ওই রে! কপালে যা ছিল এখন থেকেই তা ঘটতে স্কুক হয়ে গেল বুঝি। স্ত্রীলোক আবার কি? গণিকা সম্বন্ধেও সম্ভ্রম ক'রে কথা কইতে হয় না কি?"

"অত সব জানি নে নিখিল। মেয়েদের বাড়তির ভাগ সম্ভ্রম ক'রে ঠক্তে বরঞ্চ রাজী আছি, কিন্তু আগেভাগে হিসেব ক'রে সাবধানী হ'তে পারব না।"

२७

ত্বপুরবেলায় নিখিল কলেজ গিয়াছে। যামিনী তাহার ঘরের বিছানায় শুইয়া ভাবিতেছিল কাল রাত্রিবেলার ঘটনাগুলা। • সে সমস্তই এত আচন্বিতে এত ভাড়াভাড়ি ঘটিয়া গিয়াছে যে এখনও তাহাদের সত্য বলিরা মনে হয় না। মনে হয় অন্ধকার রঙ্গনীর অন্তরাল ছিল্ল করিয়া কোন এক অলীক কাহিনী কয়েক মৃহুর্তের জন্ত নামিয়া আসিয়াছিল। নির্মালা ছাড়া এ-অবধি কোন স্ত্রীলোকের পানে যামিনী ভাল করিয়া চাহিয়া দেখে নাই। তাহার কবি-প্রাকৃতির সমস্ত নীরব পূজা এবং প্রদ্ধা উদ্যাত করিয়া ধরিয়াছিল তাহারই দিকে। কিন্তু এত দিয়াও সে এক জনের মন তেমনই করিয়া জাগাইতে পারিল না। কোনও ফারে সে নিকের জন্ত দৃঢ় আশ্রম-ভিত্তি রচনা করিতে পারিল না। তাই এই নিরম্ভর শুক্ততার মাঝে তাহার সমস্ত মন অকৃশ তৃষ্ণায় চঞ্চশ হইয়া বেড়াইতেছিল। কোন-কিছুতেই স্থির হইয়া মন বদে না, কোন কিছুর জন্তই চেষ্টা করা, আগ্রহ করা ভাল লাগে না। মনের মধ্যে ক্লান্তি এবং শুন্ততার ভাব ছাড়া আর কিছুই নাই। কিছু করিতে গেলেই এক জনের উপর নিদাক্রণ অভিমান জাগিয়া উঠে। মনে হয় আমার কিছু করা, আমার ভাল থাকা সে যেন তাহারই গরক। সে-ই যদি থাকিল উদ্বাসীন হইয়া তবে এ-সব অর্থহীন চেষ্টার দরকার কি ? লেখাপড়ার আদৌ মন বসে না। সে চেটা করাও সে এবারে ছাড়িয়া দিয়াছে। খাটের উপর বিছানায় শুইয়া কড়িকাঠের দিকে চাহিয়া ভাবিতেছিল, আর কত দিন এই নির্মান নীরবতায় দিন কাটিবে। অভিমান ভাসাইয়া দিয়া সে-ই না হয় প্রথমে নির্মালাকে চিঠি লিখিবে। চিঠি লিখিবে স্থির করিয়া সে ফাউন্টেন পেন এবং কাগক্ষ টানিয়া লইয়া বসিবে বসিবে করিতেছে, এমন সময় ওবাড়ির দাসী আসিয়া ক্লানালার কাছে দাঁড়াইল। যামিনী উঠিয়া দরকা খ্লিবার উপক্রেম করিতেই কহিল, "দরকা খ্লবার দরকার নেই বাব্। তিনি ভাল আছেন। এই চিঠিখানা আপনাকে দিয়েছেন।"

একটা ফিকে ফিরোন্ধা রঙের পুরু থাম তাহার হাতে জানালা গলাইয়া ফেলিয়া দিয়া সে অন্তর্ধান করিল।

বামিনী নির্জ্জন মধ্যাক্তে সেই খামথানা হাত পাতিয়া লইয়া চেয়ারে আসিয়া বসিতেই তাহার সমস্ত মন বিতৃষ্ণায় ভরিয়া উঠিল। কিন্তু কৌতৃহল সংবরণ করিতেও পারিল না। খামধানা ছি"ডিয়া দেখিল লেথা আছে:—

"কাল তুমি যখন ঘর হইতে চলিয়া গেলে তথন মনে হইল আমার জীবনে একবার মাত্র আলো জলিয়া উঠিয়াছিল, তাহাও দপ করিয়া নিবিয়া গেল। তোমাকে তুমি বণিলাম বণিয়া রাগ করিও না। কারণ দুর হইতে অনেকবার তোমাকে মনে মনে তাহাই বলিয়া ডাকিয়াছি। মনে মনে যাছ। করিয়াছি, প্রকাশ্রেও তাহাই করিলাম; কারণ তোমার কাছে আমার লুকাইবার কিছুই নাই। কিছু লুকাইব না, বোধ হয় সে সাধ্যও নাই। যদি আমার ইতিহাস শুনিতে ভোমার প্রবৃদ্ধি না হয় তবুও বলিব, কারণ না-বলিয়া আমার মুক্তি কোণায়? দূর হইতে জানালা দিয়া কতবার তোমার ধ্যানমণ মুখের দিকে বিশ্বয়ে ডুবিয়া গিয়া ভাকাইয়াছি। মনে করিয়াছি কাছার এত ভাগ্য, কে এমন তপস্তা করিয়াছে, যাহার ধ্যানে তুমি নিজের মনেই এত তন্ময় হইয়া আছ? না, সে আর কোন চিস্তা? কিন্তু থাক সে কথা, ভোমার কথা জানিবার আমার কি অধিকার? কিন্তু আমার কথা যে ভোমাকে ভনিতেই হইবে। আমার স্বামীর নাম বলিব না। তিনি বাংলা দেলের এক ফুলুর পল্লীপ্রান্তের কোন এক নগণ্য

ষ্টেশনের ষ্টেশন-মাষ্টারী চাক্রি করি:তন। সেধানকার क्षिमादित नकदि वामि পिड़िया याहै। लाक वर्ण আমি না-কি রূপসী, যদিও এ ছাই রূপের দিকে কোন দিন চোথ মেলিয়া চাহি নাই। তাহার পরে সেই অশিক্ষিত দোর্দণ্ডপ্রতাপ জমিদার আমার স্বামীকৈ ভন্ন দেখাইরা এবং বলিতে লক্ষা করে বিস্তর টাকা ধরিয়া দিয়া তাঁহারই সহিত বড়বস্ত্র হোগে আমাকে অপহরণ করিয়া শইয়া কলিকাতায় পলাইয়া আসেন। স্বামী অত্যপ্ত অকিঞ্চন। মাসাস্তে পনেরটি টাকা করিয়া বেতন পান। বোধ করি টাকার লোভ সামলাইতে পারিলেন না। এই **ত** আমার পুরুষের সহিত পরিচয়। কিন্তু আমার অনস্ত তুর্গতির মাঝেও বিধাতাকে ধন্তবাদ যে এই পরিচয় সম্বল করিয়াই আমাকে মরিতে হয় নাই। তোমার পরিচয় পাইলাম। আমার জীবনের কালো অন্ধকারের মাঝে সোনার একটি রেখা পড়িল। হউক তাহা তু-দথ্রে। তবু ত তাহাকে দেখিয়াছি। কিন্তু কাল রাত্তি বলাকার ব্যাপারটা এখনও বলা হয় নাই। যিনি আমাকে এই বাড়ি ভাড়া করিয়া রাথিয়াছিলেন, কয়েক দিন হইতে তাঁহার সহিত এক বেহারী ভদ্রলোক আমার বাড়িতে প্রায়শঃ পদ্ধুলি দিতেন। ক্রমশঃ তাহার অস্তরঙ্গতা করিবার সথ বাড়িয়া উঠিব। **ब्रेड** करनत मास्त्र ठ्रक **रहेन ने**र्या, প্রতিযোগিতা, বিসম্বাদ। অবশেষে ছুই জনে একতা হুইয়া মদের ঝোঁকে মারামারি সুক করে। আমি বাধা দিতে বাইরা আছত হইলাম। আমার জ্ঞান ছিল না। পরে দাসীর কাছে গুনিয়াছি বেহারী ভদ্রশোকটি খুব ওঞ্চতর রূপে জখন হওয়ার তাঁহার সঙ্গের লোকজন ধরাধরি করিয়া লইয়া গিয়াছে। ভগ পাইয়া জমিদার বাবুও মোটরে অন্তর্ধান করিয়াছেন, বদিও **জানি ভব ভাঙিলেই আসরে আবার আসিবেন। আবা**র আরম্ভ হইবে আমার হঃসহ মানির জীবন। কিন্তু এই অবসরে, হে আমার দেবতা, দুর হইতে তোমাকে প্রণাম করিয়া লই। আমার কলয়-স্মুদ্রের বহু, বহু উর্দ্ধে পূর্ণচন্দ্র উঠিয়াছে। তঃহারই ক্ল্যোতিতে আমাব সমস্ত কৃষ আলোকিত হইব। প্রভু, ভয় পাইও না। জোয়ারের অব ভোমার উদ্দেশ্যে যতই উচ্চুসিত হইগা উঠক, জানি তাহা তোমার কাছেও পৌছাইতে পারিবে না। কিন্তু এক এক সময় ভাবি কাহার অভিশাপে আমার জীবনভরা এই অন্ধকার। বিধির বিধানে বিনাদোবে মরণের শেষদিন পর্যান্ত আকণ্ঠ পকে নিমজ্জিত হইরা থাকা। ইহার কি শেষ নাই ? এ জীবন হইতে কি উদ্ধার নাই ?"

যামিনী যদি সুস্থ স্বাভাবিক অবস্থায় থাকিত তবে এই চিঠির সাজান নাটকীয় ভঙ্গী হয়ত ধরিতে পারিত। আমাদের ত মনে হয় তাহার ধরিতে পারা উচিত ছিল। কারণ আজকালকার ত্ব-পয়সা তিন পয়সা দামের সাপ্তাহিক কাগজগুলাতে পতিভার কথা এবং পতিভার ব্যথা নাম দিয়া রসে-ভেক্তা বাষ্পগদগদ তাল তাল যে-সকল লেখা বাহির হয়, সে ধরণের শিক্ষা এবং সংস্কৃতির বহু উদ্ধে তাহার মন : কিন্তু সেই সময়ে বামিনীর মন অভিমানে, বেদনায় এমনই বিৰুত হইয়াছিল যে, তাহাকে ঠিক স্বাভাবিক অবস্থা বলা চলে না। নির্মালার ব্যবহারকৈ সে তাহার পৌরুষের অবমাননা বলিয়া কল্পনা করিয়া লইয়াছিল। এক জনের কাছে আপনার যথার্থ মূল্য না পাইয়া সে নিজের উপর নিজের শ্রনা হারাইতে বসিয়াছিল: ঠিক সেই সময়ে আর এক জ্বনের কাছে নিজের স্তুতির যথার্থতা ধরিতে পারিল তাহাকে যথার্থ মনে করিয়া ভাহার ক্ষীত হইয়। উঠিশ। বে-ভাষায় চিঠিখানা শেখা, তাহা বে স্বদ্ধের ভাষা নয়, তাহাতে আন্তরিকতা মাত্র নাই, এমনতর সহজ্ঞ কথাটাও তাহার নজর এড়াইয়া গেল। তাহার অবমানিত পুরুষের চিছে যত করুণা যত শক্তি সুপ্ত হইয়াছিল তাহারা একসলে জাগিয়া উঠিল। মনে মনে সে কহিল, "আমি ত ইহার মধ্যে অস্তায় কোনখানটায় দেখিতে পাই না। কারণ আমি কোন উদ্দেশ্য লইয়া তাহার কাছে ধাইতেছি না। আমার মধ্যে কোন আসক্তি নাই। কিন্তু কেহ যদি আমার কাছে মুক্তির উপায় খোঁজে, শাহাষ্য চায়, তবে তাহা না-দিয়া থাকি কি করিয়া ?''

তথন গুণুরবেলার মেদের সমস্ত বাড়িটা খালি। ধে বাহার কলেজ, কোট আফিস গিরাছে। আলনা হইতে চাদরটা টানিরা লইরা বামিনী পালের বাড়িতে আসিরা উপস্থিত হইল। দাসী আসিরা দরজা খ্লিরা দিল। অমলা মুখের হাসি কোন রক্ষে চাপিরা, গভীর মুধে যামিনীর হাত হইতে চাদরটা লইয়া রাখিল। সোরাই হইতে ঠাণ্ডা হল গড়াইরা রাখিল। গোলাপ হল, স্থগন্ধী পান বাহির করিল। আপনার হাতে হাতপাখা লইয়া বাতাস করিতে করিতে কহিল, "আমার উপরে যে তোমার এত দরা তা জানতুম না।" যামিনী কহিল, "থাক, আমার অত সবে প্রয়োজন নাই। তুমি আমাকে ডেকেচ তাই আমি এসেছি। যদি তোমার উদ্ধারের কোনও উপায় থাকেত বল। আমি যথাসাধ্য করতে রাজী আছি।"

অবরুদ্ধ হাস্তবেগে অমলার পক্ষে আপনাকে সংবরণ করা কঠিন হইরা উঠিল। মনে মনে হাসিরা লুটোপুটি থাইতে থাইতে সে মনে মনেই কহিল, "আমি ডেকেছিলাম অমনি এসেছ, এমন জান্লে যে আরও আগেই ডাকতুম।"

কিন্তু মুথে বিষয় সুরে কহিল, ''উদ্ধার করবে কি ক'রে, একবার ধখন এ-পথে আমাকে জোর ক'রে টেনে এনে ফেলা হয়েছে তখন সংসারে স্মাজে আর ত আমার স্থান নাই।"

"তা না-ই থাক, কিন্তু তোমাকে স্বাধীন ভাবে সৎ উপায়ে জীবিকানির্বাহের কোন উপায় হয়ত দেখিয়ে দিতে পারি। কোন নারীমঙ্গল সমিতিতে—" **যামিনী** ক্রকুঞ্চিত করিয়া কি বেন ভাবিতে লাগিল। কারণ এ-সব বিষয়ে তাহার জ্ঞান অত্যন্ত সীমাবদ্ধ। কিছুই স্থানা নাই। ভাসা-ভাসা ভাবে লোকের মুথে ভনিয়াছে, কাগজে পড়িয়াছে মাত্র। অমলা হাত-পাখাটা তুলিয়া লইয়া আবার মৃত্ মৃত্ পাখা করিতে করিতে কহিল, "আছো, সে ধীরে-হুন্থে ভেবে ঠিক করা ধাবে। কিন্তু আমার কপালে ঘা-ই থাক আমার জন্তে যে ভেবে-ভেবে তুমি সারা হবে, সে আমার কিছুতেই সইবে না। তুমি আমার জন্তে উবিগ হ'তে পাবে না। এখন ক'দিন আমি স্বাধীন। কাল রান্তিরের ব্যাপারের পর ভরে সেই হু'টো লোকই আর এখন সহজে এমুথো হচ্ছে না। ইতিমধ্যে কিছু একটা উপায় ভেবে স্থির করছি।"

"তুমি এখন কেমন আছ?" যামিনী এতকণ মুখ নামাইরা ছিল। এইবারে মুখ তুলিরা অমলার দিকে চাহিল। কাল রাত্রির দীপালোকে অবসর বিবর্গ নারীমূর্ত্তি অন্তরকম লাগিরাছিল, অ'জ দিনের উজ্জ্বল আলোর তাহার অনাবৃত্ত প্রথব সাজসজ্জা, মুথের উগ্র প্রসাধন, ঠোটের পানের দাগ
বড় বেনী স্পষ্ট হইমা নজরে পড়িতে লাগিল। বাহিরে
শাস্ত নীলাকাশ, কতদুরে একটা চিল উড়িয়া চলিতেছে।
কপোতের বিশ্রক কলগুঞ্জন শুনা যাইতেছে। হঠাৎ
যেন ভিতরের একটা ধাকা খাইয়া যামিনী তীরের মত
সবেগে উঠিয়া দাঁড়াইল। বিভূফায় তাহার কঠরোধ
হইয়া আসিল। মাতালের নেশা ছুটিলে যেমন কোন
অপ্রত্যাশিত কদর্যা স্থানে নিজেকে দেখিয়া লজ্জায়
তাহার মাথা কাটা যায়, তেমনি এই জনহীন নিস্তক্ষ মধ্যাহে
এই ঘরে এই জাতীয় স্ত্রীলোকের মুখেমুথি বসিয়া
তাহাকে চুপি চুপি প্রশ্ন করা, "তুমি কেমন আছ?"
যামিনীকৈ কে যেন চাবুক দিয়া মারিল। সে উঠিয়া
চেয়ারের উপর হইতে চাদরখানা টানিয়া লইয়া আর কোন
কথা না বলিয়া, কোন কথার জ্বাব শুনিবার জন্ত অপেক্ষা
না-করিয়া দ্রুতপদে বাহির হইয়া গেল।

রাপ্তার সায়ান্স কলেজ হইতে নিথিল ফিরিয়া আসিতেছিল, যামিনী কোনদিকে না চাহিয়া হন্ হন্ করিয়া চলিতেছিল। তাহার সহিত ধাকা লাগিল। নিথিল অবাক হইয়া চাহিয়া কহিল, "এত ব্যস্ত কেন? হাওয়াটা বইছে আজ কোথা দিয়ে ?"

যামিনী কোন উত্তর দিল না। ত্ই ক্ষনে একসঙ্গে আসিরাই ঘরে ঢুকিল। মনের অধীরতায় যামিনী যাইবার সময়ে অমলার চিঠিখানা টেবিলের উপর তেমনি খোলা অবস্থাতেই ফেলিয়া রাথিয়া বাহির হইয়া গিয়াছিল। নিথিল ফিরোজা রঙের সেই খামথানার দিকে চাহিয়া সহাত্যে কহিল, "অনেক দিনের প্রতীক্ষার পরে আজ বুঝি বৌদির চিঠি এসেছে? যদি অভয় দাও তা'হলে পড়ে দেখি।" যামিনীকে কথা বলিতে না দেখিয়া সে টেবিলের কাছে অগ্রসর হইয়া চিঠিখানা চোখ বুলাইয়া দেখিতে লাগিল। কিছুক্ষণ পরে গন্তীর হইয়া যামিনীর দিকে চাহিয়া কহিল, "এই চিঠিখানা পেয়েই বুঝি সেই মেয়েটার কাছে দৌড়েছিলে?"

একথারও কোন উত্তর না দিয়া ধামিনী নিথিলের হাত হইতে চিঠিথানা কাড়িয়া লইয়া মুঠার মধ্যে দলা পাকাইয়া জানালা দিয়া ফেলিয়া দিল। কহিল, "ভোমার কাছে এখন কৈফিয়ৎ দিতে পারব না নিধিল। আমার মন ভারি খারাপ। আমি একটু একলা থাকতে চাই।"

নিধিল তীত্র দৃষ্টিতে একবার তাহার দিকে চাহিয়া ঘর ছাড়িয়া চলিয়া গেল। নিজের ঘরে বসিয়া ভাবিতে লাগিল যামিনীকে এই বিপদ্ হইতে কি করিয়া উদ্ধার করা যায়। নির্মালকে সেই বিবাহের দিনটিতে ছাড়া আর সে কখনও দেখে নাই। কিন্তু আজ তাহার উপর বিধিমত রাগ হই তে লাগিল। মনে মনে সঙ্কল্ল করিল, যদি প্রয়োজন হয় ত.ব নির্মালার সঙ্গে দেখা করিয়া তাহার সহিত পরিচয়্ন করিয় ও সে কিছু বলি ব। স্লেহের মৃত্র ভর্ৎ সনা করিয়া কহিবে, 'তোমার মত বোকা মেয়ে পৃথিবীতে আর ত ছটি দেখি না। এত অভুল রূপগুণের অধীষরী হইয় ও তোমার কোমল কঠোর বন্ধনে এক জনকে বাধিতে পারিলে না।'

আবে:গ, বন্ধুর প্রতি অক্কৃত্রিম স্নেহের উদ্বেগে সে আরও কত কি-ই না মনে মনে বলিয়া চলিয়াছিল, কিন্ত বাহিরে লাল বাইকে করিয়া টে*লি*গ্রামের পিয়নকে দে থিয়া স্ব্ হিত হ ইয়া বারাক্রায় বাহির হইয়া আসিব। পিয়ন হলদে খামধানা বাহির করিয়া কহিল, যামিনীভূষণ রায়ের নামে ভরুরি তার আসিয়াছে। যামিনীর নামে সাইন করিয়া খামধানা চি ডিয়া দেখিল তাহার পিতার শক্ত অমুখ, তাহাকে অবিলম্বে বাড়িতে যাইবার অমুরোধ।

যাক্, নিথিল নিশ্চিন্ত হইয়া ভাবিল, এ যা হইল ভালই হইল। তাহার বাবার অন্থথ আজ না-হয় ছ-দিন পরে সারিবেই। কিন্তু এই উপলক্ষ্যে ঠিক এই সময়েই যামিনী যে কিছুদিন অন্ততঃ কলিকাতার বাহিরে গেল ইহার চেয়ে ভাল আর কিছু হইতে পারিত না। সেই রাত্রেই সাড়ে নয়টার এয়প্রেসে যামিনী ব ড়ি গেল। নিথিল তাহাকে ট্রেনে তুলিয়া দিয়া কহিল, "তাড়াভাড়ি করবার কোন দরকার নেই। তোমার পরীক্ষার এখন তপ্রায় ছ-মাস দেরি। ত'ছাড়া লেক্চার-টেক্চার সবই তোমার এটেণ্ড করা রয়েছে, পড়াশোনাও প্রায় সব তৈরি। দিন-পনের আগে এলেই বথেষ্ট। তোমার বাবা সম্পূর্ণ স্বস্থ সবল হ'লে তবে এস।"

যামিনী তথন নিঃশকে ট্রেনের জানালায় মুধ বার

আকাশের দিকে চাহিয়া, বাবার অন্ধকার করিয়া নাই. পড়াশোনার কথাও চিন্তা করে অসুথের ভাবিতেছিল আজই তুপুরবেলায় কথাও ভাবে নাই। निर्मानां क (य ठिठिथाना निर्धि.व-निर्धित कतिराजिन रम

কি আর কথন লেখা হইবে না? নিয়তির অলঙ্গা আদেশে সে निशि कि চিরদিনই অনিধিত হইরা থাকিবে? মাঝখানে আসিয়া পড়িবে একটার পর আর একটা বাধা।

রোমের সাগরতীরে

শ্রীপ্রমথনাথ রায়, এম-এ

মুসোলিনীর ইটালীতে বাস করিয়া সুথ আছে। প্রকৃতি इंगेलीक की निवाह । भूतानिनी अ-तिन वात्र वात्र वात्र भक्त করিয়াছেন।

মুসোলিনী অঙ্গাতির চরিত্র জানেন। কি করিয়া রাজ্য শাসন করিতে হয় সে-কলাও তিনি ভাল করিয়াই সানেন। তিনি জানেন ইটালীয়ানদের জাতীয় চরিত্র তীত্র দাহিকাপ্রবণ উপাদানে গঠিত: ইটালীয়ানদের ব্যক্তিগত ও সাধারণ জীবন প্রবল ঈর্ধাতে ভরা। এ-দেশীয় লোকের প্রবশ। ইটালীর ঐক্য ভিতর প্রাদেশিকতা অত্যস্ত স্থাপনের পূর্বকাল পর্যান্ত এ-দেশের ইতিহাসে এই প্রাদেশিকতার অনুভৃতি ও প্রাদেশিকতার দেমাক সুস্পষ্টরূপে বিকশিত হইয়াছে। এখন এই প্রাদেশিকতা অনেকটা সংবত হইয়াছে, কিন্তু একেবারে নির্দ্<u>মা</u>ল হয় নাই। মাট্সিনি গারিবল্ডী ও কাভুরের নেতৃত্বে ইটালীর যে ঐক্য স্থাপিত হইয়াছিল তাহা রাজনৈতিক ঘটনা মাত্র। জাতির নৈত্কি একতা সাধনের কাজ এখনও সম্পূর্ণ হয় নাই। ৰদি এই নৈতিক একতা সাধনের কাজে শৈথিল্য দেখা দেৱ তাহা হইলে ইটালীয়ানদের ভিতর আবার ব্যক্তিগত দলাদলি ও রাজনৈতিক কলহ-বিবাদ ফিরিয়া আসিবে।

মুসোলিনী এ সমস্ত জানেন। জানেন বলিয়াই তিনি কড়া ভাবে রাজ্য শাসন করেন ও কড়া শাসনের প্রয়োজন অমুভব করেন। কিন্তু তিনি এও জানেন, শাসিতের আরামের দিকে দৃষ্টি না রাধিলে কোন শাসনই দীর্ঘকাল স্থায়ী হইতে পারে না। লোকের নিকট হইতে টাাক্স

আদায় করিতে হইবে? লোকে যদি ট্যাক্স দিয়া তার পরিবর্ত্তে আরাম পায়, তাহা হইলে ট্যাক্স দিতে আপত্তি कतिरवनः। आमि यमि लाकित सूथ-सूविशात मिटक मृष्टि ताथि তাহা হইলে লোকেও আমার আজ্ঞাবহ হইয়া চলিবে।

ইহাই মুসোলিনীর রাজ্য শাসন করিবার গুঢ় রহস্ত, তাঁর সাফল্যের কারণ। তিনি লোকের জন্ত কি করিয়াছেন তাহারা সর্বদো স্বচক্ষে তাহা দেখে আর চুপ করিয়া থাকে। আনন্দের স্থােগ সকল শ্রেণীর লােকের হয়ারে পৌছাইয়া দেওয়া হইয়াছে। বহু উৎসব লোপ পাইতেছিল, সেগুলির পুনরায় প্রচশন করা হইতেছে। সিনেমা ও থিয়েটারে টিকিটের দাম কমাইয়া দেও গ হইয়াছে। লোকের ভ্রমণের স্থবিধার জ্বন্স রেলের ভাড়া সন্তা করিয়া দেওয়া হইয়াছে। একাধিপত্যের ফল যদি এব্ধপ ফুল্বর হয় তাহা হইলে লোকে বে একাধিপত্য সহু করিবে তাহাতে আশ্চর্যা হইবার কিছ নাই।

আমি ফুন্দর বলিয়াছি। এই গরমের দিনে প্রতি রবিবার নামমাত্র ভাড়ায় পাহাড়ে কিংবা সাগরতীরে বেড়াইয়া আসিতে পারা কি ফুল্বর নয় ? মুসোলনী জন-সাধারণের জন্ত কতকগুলি বিশেষ টেনের চলন করিয়াছেন। প্রতি রবিবার হাজার হাজার যাত্রী বোঝাই হইয়া এই ট্রেনগুলি পাহাড়ে কিংবা সাগরের ধারে কিংবা পল্লীতে যায় ও শহরের কল্ধিত হাওয়ায় আবদ্ধ বাসিন্দাকে কয়েক ঘণ্টা প্রকৃতির সারিধ্যে কাটাইবার স্থযোগ দেয়। ভাড়া অতি সামান্ত। একটা উদাহরণ দিই, নেপ্লস রোম হইতে

প্রায় তিন ঘণ্টার পথ। সাধারণ ট্রেনে শুধু ষাইতে তৃতীয় শ্রেণীর ভাড়া ৪৮ লিরা। কিন্তু রবিবারের এই বিশেষ ট্রেন রোম হইতে নেপলস্ যাতায়াতের ভাড়া মাত্র ১৮ লিরা। সকালবেলা উঠিয়া এইরূপে একটি বিশেষ ট্রেন ধরুন, যেস্থান আপনার পছল হয় সেইখানেই যান (পূর্ব হইতেই ধবরের কাগজে ট্রেন ছাড়িবার সময় ভাড়া ও স্থানের নাম ছাপাইয়া দেওয়া হয়), সারাদিন আনলে কাটাইয়া রাত্রে ১১টা ১২টার মধ্যে ফিরিয়া আম্বন। এজন্ত আপনার পকেট বেশী হারা হয় না, অথচ আপনি তৃপ্ত মন্ন ফিরিয়া আসেন।

মুসোলিনী রোমানদিগকে যে-সকল স্থলর জিনিষ উপহার দিয়াছেন, তাহার মধ্যে সকলের চেয়ে সেরা ও ফুব্দর উপহার *হইতেছে* রোমের লি:দা বা সমুদ্রতীর। রোম সমুদ্রভীর হইতে মাত্র ১৫ মাইল দুরে। কিন্তু এত দিন রোমের সমুদ্রতীর বলিয়া কোন কিছু ছিল না। মাত্র কয়েক বৎসর আগে তাহার সৃষ্টি হইয়াছে। এখন এই সমুদ্রতীর রোমানদিগের পক্ষে গ্রীমের সন্ধা কাটাইবার প্রিয় স্থান হইয়া উঠিয়াছে। রোম হইতে সমুদ্রতীর পর্যান্ত ইলেকট্রিক রেলওয়ে আছে। ট্রেনে আধ ঘণ্টার পথ। ট্রেন প্রতি দশ মিনিট অস্তর ছাড়ে। মোটরে বাওয়ার জন্ত একটি বিশেষ মোটর রোডও আছে। রাত্রে অসংখ্য দীপমালায় যথন এই পথ আলোকিত হয়, তথন মনে হয় স্বর্গের পথ ধরিয়া চলিয়াছি। স্নান করিবার জন্ত চমৎকার বন্দোবস্ত আছে। ইচ্ছা হয় আপনি মান করিতে পারেন কিংবা কাফেতে বসিয়া বাজনা শুনিতে পারেন ও সমুদ্রের হাওয়া সেবন করিতে করিতে তরক্ষের থেলা ও স্নানার্থীদের দুশু দেখিতে পারেন।

জনসাধারণের কাছে রোমের এই সমুদ্রতীর অন্তিরা নামে পরিচিত । প্রকৃত অন্তিরা এথান হইতে থানিকটা দুরে। প্রাচীন রোমান যুগের ধ্বংসাবশেষে ভরা। সেই সুদূর অতীতে অন্তিরা ছিল রোমের বাণিজ্য ও ফৌজ বন্দর। কিন্তু কালের অপ্রগতির সঙ্গে সমুদ্র দুরে সরিরা যায়। এই অপসরণের ফলে যে ভূখণ্ডের উত্তব হইরাছে ভাছারই উপর নৃতন অন্তিরা নির্ম্মিত।

দেদিন ছিল রবিবাদ্ধ। কয়েক ঘণ্টাব্যাপী ক্রমাগত

মানসিক পরিশ্রমের ফলে মাথাটা ঝিম ঝিম করিতেছিল।
কি করিব ভাবিয়া না পাইরা কোটটা গায় দিয়া রাস্তায়
বাহির হইয়া পড়িলাম। রাস্তা তথন জনবিরল। কদাচিৎ
কোন পুরুষ কিংবা নারী যাইতেছিল। তথনও বাহিরে
যাইবার সময় হয় নাই। উদ্দেশ্রহীনভাবে কিছুকণ
এদিক-সেদিক ঘুরিতে ঘুরিতে হঠাৎ মাথায় আসিল সমুদ্রতীরে গেলে মন্দ হয় না। তৎক্ষণাৎ ট্রামে চাপিয়া বিদলাম ও
আধ ঘণ্টার মধ্যে সেণ্ট পলস্ গেট ষ্টেশনে পৌছিলাম। এই
ষ্টেশন হইতে অস্তিয়ার ট্রেন ছাড়ে।

সেণ্ট পলের গির্জ্জার কাছে বলিয়া ষ্টেশনের নাম সেণ্ট পলস্ গেট। এই গির্জ্জাটি রোমের একটি অপরূপ ফুলর এটালিকা। সেণ্ট পিটারের গির্জ্জার খ্যাতি বেনী, কিন্তু এই গির্জ্জার গঠন-শ্রী অধিক চিত্ততোবিণী। সেণ্ট পিটারের গির্জ্জা বৃহদায়তন ও জাঁকজমকে ভরা; এই আয়তন ও জাঁকজমক মনকে অভিতৃত করিয়া ফেলে। ইংা খুষ্টান ধর্মের উপর প্যাগান প্রভাবের পরিচায়ক। রেনাসাঁসের খ্রে প্যাগানিজ্যেন বে বীজ ইটালীর উর্বর ক্ষেত্রে উপ্ত হইয়াছিল এই গির্জ্জা তারই একটি ফল। কিন্তু সেণ্ট পলের গির্জ্জার অনাড়ম্বর ও শাস্ত সৌন্দর্য্যে আধ্যান্থিকতা অধিক পরিক্ষুট, কাংজই মনেব উপর ইহার প্রভাবও সুক্ষতর।

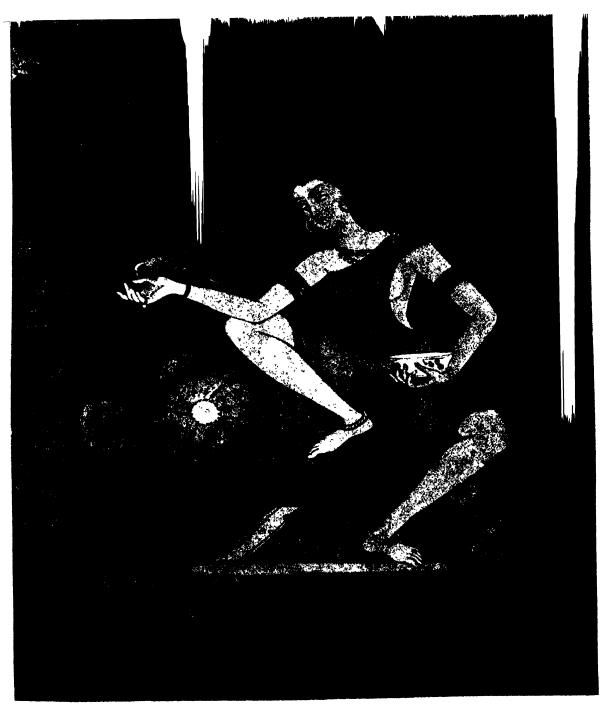
ষ্টেশনের পাশেই ইংরেজদের সমাধিভূমি। এধানে ত্ই জন অমর ইংরেজের কবর রহিয়াছে—শেলি ও কীট্সের। তাহাদের যশ ও তাঁহাদের কবরের মধ্যে বিস্তর প্রভেদ! ঘাসে-ঢাকা তুইটি অতি সাধারণ কবর। দেখিয়া আশ্রাণ হইতে হয়। আগদ্ধকের দৃষ্টি আকর্ষণ করিবার মত কিছুই নাই। শুধু কবরের উপরকার শিলালিপি হইতে ব্ঝিতে পারি কত বড় তুই জন লোকের মৃতদেহ এখানে নিহিত রহিয়াছে। শেলির কবরের শিলালিপিতে লেখা আছে:—

Nothing of him doth fade But doth suffer a sea-change, Into something rich and strange.

কীট্সের কবরের শিলালিপি এইরূপ:--

This grave contains all that was mortal of a young English poet, who on his death-bed, in the bitterness of his heart, at the malicious power of his enemies, desired these words to be engraved on his temb-stone: Here lies one whose name was written in water.

আমি বখন টেশনে পৌছিলাম তখন একটা ট্রেন প্রায়



প্রিয় কুমারী নিবেদিতা থোয

চাড়ে ছাড়ে। ছুটিরা গিরা একটা কামরার ঢুকিলাম। কিন্তু বিস্বার পূর্বেই ট্রেন চলিতে আরম্ভ করিল। কামরাটা লোকে ভরা—সকল বয়সের লোক, ছেলে, মেয়ে, পুরুষ, নারী—প্রায় সকলেরই সেইরূপ স্থলর মুথের গঠন যা

আমরা প্রাচীন গ্রীস ও রোমের প্রস্তর-মুর্জিতে দেখিতে পাই। এ-দেশের শিল্পে কেন যে দেহবাদ এত বেনা উন্নতি লাভ করিয়াছে তাহা এখানে বাস না করিলে বুঝা যায় না। ইটালীয়ান শিল্পীদের দেহ-প্রীতি বুঝিতে হইলে ইটালিয়ান নরনারীর সৌন্দর্যা পান করা দরকার। মাডোনারা এখানে আপনার চারিপাশে ঘ্রিয়া বেড়ায়। মন সংস্কারবর্জিত ও খোলা রাখুন, আর এই সকল চলস্ত মাডোনাদের সৌন্দর্যোর প্রভাব মনের ভিতর চুপি চুপি প্রবেশ করিতে দিন, তারপর

গ্যালারীগুলি দেখিতে যান। তথন আপনি পেরুজিনো ও
র্যাফারেলের বিম্মরপ্রদ ম্র্জিগুলি আরও দরদের সহিত ব্ঝিতে
পারিবেন, যে-প্রেরণা ক্রা লিপ্নো লিপ্নি দোনাতেলো,
বিত্তিলে, তিশিয়ান ও অন্তান্ত অসংখ্য শিল্পীকে অন্থাণিত করিয়াছে, তাহা আপনার কাছে স্পটতররূপে
পরিষ্ট্ট হইবে। ইটালীয়ান শিল্পের প্রাণ ত্ইটি জিনিযে—
ক্যাংশিক চার্চের আধ্যাত্মিকতার আর ইটালীয়ানদের—
বিশেষ করিয়া ইটালীয়ান নারীয়—মদালস সৌলুর্বেয়।

আমি সবেমাত্র একটু জায়গা খুঁদ্দিয়া বিসয়াছি এমন
সময় আমার নিকটবর্ত্তী একটি বেঞ্চ হইতে কে এক জন
ডাকিয়া বিশিল—ভারতীয়? যে-দিক হইতে ডাক আসিল
সেই দিকে চাহিয়া দেখিলাম আর এক জন ভারতীয় সেখানে
বিসয়া। মধ্যবয়সী অল্প লাড়িওয়ালা লম্বা চেহারা, বেশ
অন্তপ্তই, মুখ দেখিয়া বুঝা যায় জীবনথাত্রা বেশ হথেই
সম্পান্ন করিতেছেন। ইনি আমাদের গভর্গমেণ্টের এক জন
উচ্চপদস্থ কর্মচারী। আট মাসের ছুটি লইয়া ইউরোপ
ঘুরিয়া বেড়াইডেছেন। কাইরোডে ছিলেন, বাগদাদ,
জেক্লজালেম, ইস্তাম্বল ও এথেকা হইয়া আসিয়াছেন।

ভদ্রলোকের সঙ্গে কণোপকথন আরম্ভ করিলাম।

কি কণোপকথন হইল তাহা এখানে আগাগোড়া
তুলিয়া দেওয়া নিম্প্রাজন। নানাবিধ বিষয়েই
আলাপ করিতে লাগিলাম—ইনি বে-সব দেশ



অভিয়ার সমুদ্র-স্নানের দৃশং

দেখিয়াছেন সেধানকার অধিবাসী ও তাহাদের রীতিনীতি, সেধানকার জলবায়, সেথানকার ঐতিহাসিক ও ভৌগোলিক বৃত্তান্ত ইত্যাদি। ভদ্রলোক ঠাহার হাতব্যাগ খুলিলেন ও তাহার ভিতর হইতে আর একটি ছোট থলে বাহির করিয়া বলিলেন, "আপনি ত অনেক কাল পান-মুপারি কিছুই খান নি, নিন একটু।" এই বলিয়া তিনি আমাকে কিছু

ট্রেন চলিতে লাগিল। কামরার ভিতর জনতার বাচালতা। বাহিরে উজ্জ্বল রৌদ্রালাকিত শশুভরা ক্ষেত্ত। এথানে-সেধানে হু-একটা ক্ষয়কের কুটীর। এথানে-সেথানে হু-একটা গল্প চরিতেছে। মাঝে মাঝে শশুগদ্ধ বহন করিয়া হঠাৎ বিকালবেলার হাওয়ার প্রবাহ কামরার ভিতর প্রবেশ করিতেছে।

পথ ফুরাইরাছে। আমরা অন্তিরাতে পৌছিরাছি।
নবপরিচিতকে সঙ্গে করিরা গাড়ী হইতে নামিলাম।
টেশনের বাহিরে আসিলাম। সম্মুখে আনন্দ ফুর্গু হাসি
কোলাহল ও জনতার ভরা নূতন শহর: ফুল্লর ঘরবাড়ি, ফুল্লর
রাস্তাঘাট। দশ বৎসর আগে এখানে এই শহরের চিহ্নপ্ত

ছিল না। তথন বে-কেহ সমুদ্রে সান করিবার জন্ম ইচ্ছা-মত ময়দানে নির্মন্ত হইলে কেহ দেখিবার বা কিছু বলিবার ছিল না। এথন সেই বসতিবিহীন ভূভাগ লোকালরে, হোটেলে ও কফিথানায় ভর্তি, তীর ধরিয়া সানের জন্ম



সমুদ্রতীরবর্তী রাজপথ -অভিয়া

শত শত ক্যাবিন ও তাবু; বালুকার উপর সকল বয়সের শত শত লোক পূর্যালোকে শায়িত, শত শত লোক সমুদ্র-তরক্ষের সহিত স্বাস্থাপ্রদ লড়াইয়ে মন্ত।

এ সমস্তই মুসোলিনীর কাজ। তিনি যে বৎসর দেশের শাসন-বলা হাতে নেন, সেই বৎসরই ভার মনে রোমানদিগকে তাহাদের সমুদ্রতীর ফিরাইয়া দেওয়ার সয়ল জাগে ও কালকেপ না করিয়া রোম হইতে অভিয়া প্রায় রেলপথনির্দাণের আদেশ দেন, পর বৎসর ১৯২৪ সালের ১০ই আগন্ত এই রেলপথ থোলা হয়।

ইতিপুর্কে ১৯১৮ সালে জোসেন এলমি নামে রোমের এক বিনয়ী ও সাহসী বাসিন্দা অভিয়ার ''রোম' নামে স্নানের ঘাট নিম্মাণ করিতে আরম্ভ করেন। ১৯২০ সালে 'বাত্তিস্তিনা' নামে ঘাট তৈয়ার হয়। ১৯২২ সালে তৈয়ার হয় "প্রিচ্ছিপ্রপ" নামীয় ঘাট।

১৯২৪ সালের ১০ট আগন্ত সকালবেলা রোম-অভিয়া রেলপথ প্রতিষ্ঠা উপলক্ষ্যে সেণ্ট পলস্ স্টেশন নিশানে নিশানে সাজানো হয়। বেলা ১০টার সময় মুসোলিনী সদলবলে ষ্টেশনে হাজির হন ও সর্ব্ধপ্রথম গাড়ীতে আরোহণ করেন। এই প্রথম টেনে সর্ব্বসমেত পাঁচথানা গাড়ী ছিল। কাঁর অস্কুচরেরা বকী গাড়ীগুলি দ্বল করিয়া বসেন।

গাড়ী যথন প্রাচীন অন্তিয়াতে পৌচে তথন মুসোলিনী

ট্রেন হইতে নামিয়া সম.বত জনতার সমুখে এক বক্তাদেন ও জনতার নিকট হইতে তাহংদের ক্তজ্ঞতার অর্থ্য গ্রহণ করেন। বক্তৃতাশেযে টেন আবার চলিতে আরম্ভ করে ও বেলা সাড়ে দশটার সময় লিদো টেশনে পৌছে। এখানে পূর্ব্দ হইতেই রোম হই.ত আগত বহুলোক অস্থির ভাবে মৃসোলনীর আগমনের প্রতীক্ষা করিতেছিল। মুসোলনী টেন হইতে নামা মাত্র তাঁর উপর রীতিমত পূপ-বর্ষণ হইতে থাকে।

· তারপর তিনি নৃতন অন্তিয়ার মিউনিসিপালিটির ও ধূলের ভিত্তি স্থাপন করেন।

সেইদিন হইতে অন্তিয়ার কি দ্রুত উন্নতিই না হইয়াছে !

রানের ঘাটগুলি ও লোকালয় ছাড়া এখন আরও

অনেকগুলি হরমা সৌধ ও পার্ক এই শহবের শোভা
বাড়াইয়াছে। অনেকগুলি গৃহ ফিউচারিষ্টিক থিওরী

অহবায়ী নিশ্মিত হইয়াছে—সাদাসিধা সরলরেগায় তৈয়ারী।
বাহিরে ও ভিতরে সম্পূর্ণ গুনাড়ম্বর

ক্ষিউচারিষ্ট আটের মূলকথা আটের ভিতর হইতে বক্রবেথার কাজ গতদুর সম্ভব বাদ দেওয়া। জাকান-বাকান, হেলান-তুলান কিছুই থাকিবেনা; সমগ্রই হইবে



সমুদ্রতীর—অ**ন্তির**:

সরলরেথার সৌন্দর্যা। এই আট যে শুরু গৃহ-নিম্মাণ আর চিত্রাঙ্কণেই অ'বদ্ধ তা নয়। ইটালীতে ঘরের আসবাবপত্রও আজকাল এই অ'দর্শ অনুসারে তৈয়ার হইতেছে। যে-ঘর এই ফিউচারিষ্টিক আসবাবে সাজান, সে ঘরের ভাডাও বেশী।

শহরের ভিতর দিয়া পাষ্টারি করিতে করিতে ভজ-

লোককে আমি এই সব কথা বলিতে লাগিলাম। তার পর মানের ঘাটে আসিয়া পৌছিলাম। তথন বেলা পড়িয়া আসিয়াছে; মান করিবার সময় আর নাই, বিশেষতঃ আমরা মানের জামাও সঙ্গে আনি নাই। তাই সমুদ্রের

উপরে স্থিত প্রকাণ্ড রেস্তোরাতে গিয়া বিদলাম। ত্ই য়াদ 'ভিনো'র অর্ডার দিলাম ও দমুদ্য-বায়ু বীজিত হইয়া য়ানের দৃশ্য ও চেউয়ের থেলা দেখিতে লাগিলাম। ভারতীয় হইয়া ভিনোর অর্ডার দিলাম বলিয়া দোঘ দিবেন না। ভিনো মদা নয়। কবি ফার্ছচি বলিয়াছেন ভিনো আঙ্গুবের বক্তা। তাছাড়া মনে রাখিবেন ইটালী ব্যাকাদ-দেবতার দেশ; মনে রাখিবেন প্রটালী ব্যাকাদ রোমের নীতিবাগাশ কেটো নিজের ব্যক্ত তরবারি চালনা করিবার

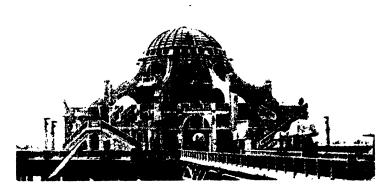
পূর্বে চাকরকে ভিনোর জন্ত হুকুম ক'রিয়াছিলেন।

রেস্তোরাঁ লোকে ভরা। শুধু আমরা ছই জন কালো আদমী। কাজেই ক্লণেকের জন্ত সকলেরই দৃষ্টি আমাদের উপর পড়িল। এক জন যুবক ও যুবতী আমাদের পাশের টেবিলে বসিয়াছিলেন। আমাদিগকে দেখিয়া বলিলেন-"ইজিপশিয়ান"। আমি তাহাদের ভূল সংশোধন করিবার জন্ত বলিলাম—"না, ভারতীয়"। তারা ইহাতে একটু মপ্রস্ত হইরা পড়িশেন, কারণ তারা বে ত্ল করিয়াছেন ও মামি বে তাহা সংশোধন কবিয়া দিব, একথা তাঁহারা ভাবেন নাই। য'হা হউ হ ইহার ফাল তাহারা নিজে দের টেবিল আরও নিকটে আনিয়া অ'ম'দের স্কুঅল্প আরম্ভ করিলেন। ভারতবর্ষ সম্বন্ধে ও গান্ধী সম্বন্ধ প্রশ্ন क्रि.लम्। शासीशीत नाम এथ: त लाग्न मकरल हे छात्। মহিল টি রবি ঠাকু রর কয়ে চথানা বই পভিয়াছেন। তিনি তার কবিতা সম্বন্ধে আলোচনা করিতে লাগি লন। রবিবার্ ব্ধন এখ'নে আসিয়াছিলেন, তথন মহিল টি নাকি তাঁহ'কে নিকট হইতে দেখিয়াছিলেন। বি: খনতঃ রবিব ব্র চোখের গভীর দৃষ্টি নাকি তাঁহাকে মুণ্ট করিয়াছিল। এখন পর্যন্তে

তিনি সেই চেথের দৃষ্টি ভূলিতে পারেন নাই। আমাদের

দেশের গ্রন্থ জন মনীয়ীর প্রতি এঁদের শ্রাক্ষা দেখিরা আনন্দ অনুভব করিলাম। তবে এই শ্রাক্ষা কতদুর আন্তরিক বলিতে পারি না!

হঠাং রেপ্তোব^{*}াতে চঞ্চলতা দেখা দিল। এক জন প্রেশা



সমুদ্ত রম্ভ প্রমোদসৌধ অন্তিয়া

ভারি চটপটে মহিলা ভিতরে চুকিলেন। সকলেই ইহাতে একটু উদ্গ্রীব ও চঞ্চল হইয়া উঠিলেন। আমরা একটু বিশ্বিত হইয়া ভাবিতে লাগিলাম এই মহিলাটি কে। ইটা লিয়ান ভদ্রলোক বলিলেন—ইনি আমেরিকার ছায়াচি ত্রের বিগাত অভিনেত্রী—গ্রীগ্রে চিত্তবিনোদনের জন্ত রোমে আদিয়াছেন। একটু যত্ত্বসহকারে ঠাহার দিকে ভাকাইলাম। দিনেমাতে বহুবার এই সুন্দর ম্থ দেখিয়াছি বটে। প্রজ্ঞাপতির মত হালা এর কায়িক আন্দোলন সকল দিনমান্দর্শকের কাছেই পরিচিত।

আমাদের পাফে এই ছায়াচিত্রের অভিনেত্রীর সঙ্গে পরিচয় করার আকাজ্জা বামনেব চঁদ ধরিবার অ'কাজ্জারই মত। কাজেই দেদি চহহাত দৃষ্টি কিরাইয়া অ'মরা ভিনোর শেষ বিদুপান করিয়া রেপ্তোগাঁ হইাত ব'হির হইয়া আদিলাম।

শহারর দক্ষিণে এটি পাইন-বন অ'ছে। এই পাইন-বান "কান্তেল ফুলানো" নামে ফুলর পার্ক। এই পার্কে পূর্বেক কোন সন্ত্রান্ত রোমান পরিবারের বাগানবাড়ি ছিল। এখন ইহা সরকারী সম্পত্তি। সরকার হই তে ইহার দরজা সাধারণের কাছে খুলিয়া দেওয়া হইলাছে। আমরা এই পাইন-বনের দিকে চলিলাম।

সমুক্তীর এখন প্রায় জনশৃত্য। অধিকাংশ সানার্থীই
চলিয়া গিয়াছে অথবা কফিথানায় আশ্রয় লইয়াছে।
পাইন-বনের ধারে সমুদ্রতীর আরও নির্জ্জন।

আমরা একটা বেঞ্চেতে বসিলাম। আমাদের পিছনে



সমুদ্রতারবন্তা রাজপথ —'এন্ডিয়া

পাইন-বনে অন্ধকার গাঢ় হইয়া আসিতেছে ও বাতাস পাইনের ডালে ডালে শিস্ দিয়া যাইতেছে। সম্মুখে সমুদ্রের অনস্ত প্রসার ও পৃথিবীর কানে কানে তার তরক্ষের কলগীতি। মাথার উপরে যুঁইফুলের মত একটি একটি করিয়া তারা ফুটিয়া উঠিতেছে।

"Era l'ora che volge 'I disio A' naviganti, e 'ntenerisce il core, Lo di' ch' han detts a' dolei unici addis : E che lo nuovo peregrin d' avore punge, se ode squilla di lontano Che paia il giorno pianger che si nuore."

—এ সেই সমন্ত্র ধর্থন ক্রমন্ত্র কোমলতার ভরিরা উঠে: মুগন প্রিন্ত্র বন্ধুর নিকট হইতে বিদায় লইরা নাবিকেরা স্বদেশের কথা মনে করে। এ সেই সময় যুখন গিজার ঘটাধ্বনি মরণোশ্ব পিবার রোলনের মত মনে হয় ও সেপানি শুনিয়া নব প্রিক্র মন প্রীতিরাস ভরিয়া উঠে!

দান্তের এই ল.ইন করাট মনে পড়িল। শাস্ত বিবাদে মন ভরিমা উঠিল। গোধূলির অন্ধকারে প্রিম্মনমধুর স্বদ্র স্বদেশের ছবি তার নদী গিরি বনের দকল স্বমা লইয়া চক্ষের সমুথে ভাসিতে লাগিল। ফ্কোমল চিন্তা, ফুক্মার অন্তর্ভিও স্মধুর শ্বতি আমার মনে শ্বান পাইবার জন্ত গ্রেলাঠেলি করিতে লাগিল। ক্রমে শতাকীর সিঁড়ি ভাঙিয়া আমি স্দ্র অতীতে ফিরিয়া গেলাম,—সেই ফুদুর অতীতে, কণিছ ও আগষ্টাদের দিনে, যখন রোমানদিগের নৌকা ভারতীয় বন্দরে আনাগোনা করিত ও মৃক্তা, হুন্মূলা পাথর ও স্গন্ধি মশলায় বোঝাই হুইয়া আবার রোমের বন্দরে ফিরিয়া আসিত, গথন ভারতবর্ধ রোমের রাজদরবারে দ্ত পাঠাইত, আমি সেই গগে ফিরিয়া গেলাম। আর ভাবিতে লাগিলাম তুই হাজার কিংবা ততোধিক বৎসর কাল পূর্বে হয়ত কোন ভারতীয় সন্তান গোধূলির মনোহর মৃহর্তে আধ- অন্ধকারে রোমের সমৃদ্তীরে বসিয়া আমারই মত স্থদেশের স্থা দেখিত ও মধুর শ্বতিতে তার মন বেদনায় বিধুর হুইয়া উঠিত।*

কতকক্ষণ আমি এই চিস্তায় ডুবিয়াছিলাম জানি না। ভদ্ৰশোক আমাকে ঠেলা দিয়া বলিলেন, চলুন যাওয়া থাক। আমি স্বপ্ন হইতে জাগিয়া উঠিয়া দাঁড়াইলাম। রাত্রি তথন সাড়ে নয়টা।

ভদ্রশে:ককে তার হোটেলে রাথিয়া যথন গৃহে ফিরিয়া আদিলাম তথন রাত্তি গভীর হইয়াছে। গৃহক্তী হয়ার খ্লিয়া মৃত্ ভর্মনা করিয়া বলিলেন—nignore e tardi, il cibo e freddo" (আপনার দেরি হয়েছে, থাবার ঠাণ্ডা হয়ে গেছে)।

আমার কোন কৈফিয়ৎ ছিল না, কাজেই বিনা প্রতিবাদে ঠাণ্ডা থাবারই গলাধঃকরণ করিলাম।

^{*} রোম ও ভারতবর্ষের বাণিজ্য-সম্পর্কের কথা—লাটন-লেথক ফাভিয়দ, অরেলিয়দ ও কাদিয়দ লিথিয়া গিয়াছেন। ভারতব্য কর্তৃক প্রেরিড বত রাজসূতের কথাও জাহাদের গ্রন্থে পাওয়া যার

শবরী

শ্ৰীম্বৰ্ণলতা চৌধুরী

দার্কুইসের গৃহে সেদিন উৎসব। শিকারের সময় আসিয়া পড়িয়াছে, তাই এই উৎসব। সাদ্ধাভোজ শেষ হইয়া গিয়াছে, টেবিলের উপর এখন শুধু কুল আর নানাক্ষাতীয় ফল সাক্ষান। টেবিলের চারি ধার ঘিরিয়া অনেকগুলি মান্য বসিয়া গল্পগুলব করিতেছিলেন, তাহাদের ভিতর থিগার জন প্রসিদ্ধ শিকারী, এক ক্ষন ঐ স্থানের ডাক্তার এবং বাকি আট জন মহিলা। মহিলাদের মধ্যে সকলেই তরুণী।

গল্পটা হইতেছিল প্রেমের বিষয়। দেখিতে দেখিতে তর্ক বাধিয়া গোল, দে, যথার্থ প্রেম জীবনে একবারই মাত্র অনুভব করা সম্ভব, না একাধিক বার। জীবনে একবার মাত্র মথার্থ ভালবাসিয়াছেন, এমন অনেক লোকের দৃষ্টাস্ত দেওয়া হইল, আবার এমন অনেকের কাহিনীও শুনা গোল খাহারা বছবার ভালবাসিয়াছেন, অথচ সকলবারেই সমান প্রগাঢভাবে।

পুরুষ অতিথিরা সকলেই প্রায় একমত দেখা গেল। তাঁহারা বলিলেন, ভালব'সা রোগের মত, উহা এক ব্যক্তিকেই বছবার আক্রমণ করিতে পারে। প্রেমের পথে বাধা ঘটিলে উহাতে মৃত্যু হওয়াও অসম্ভব নয়।

মহিলাদের কিন্তু মত দেখা গোল অন্য প্রকার। তাঁহাদের মত অবশ্য বেণীর ভাগ কাব্য পাঠ করিয়া গঠিত, ব্যক্তিগত অভিজ্ঞতা তাহাতে খুব বেণী ছিল না। তাঁহারা বলিলেন, যথার্থ প্রেম মাত্র জীবনে একবার অনুভব করা বায়। উহা ঠিক বজ্রপাতের মত ব্যাপার, মান্ত্রের জীবনে একবার উহা আদিয়া পড়িলে জীবনকে একেবারে দক্ষ ও শুন্ত করিয়া দিয়া যায়, উহার ভিতর আর ভালবাসার স্বপ্র মাত্রেও প্রবেশ করিতে পারে না।

মাকু ইস্ মহোদর নিজে বহুবার প্রেমে পড়িরাছেন, স্তরাং তিনি মহিলাদের মতের বিরুদ্ধে উত্তেক্ষিত ভাবে তর্ক করিতে লাগিলেন। তিনি বলিলেন, "আপনার। আমার কথা বিশাস করুন, মানুষ অনেকবার ভালবাসিতে পারে এবং সমস্ত মনপ্রাণ দিয়াই পারে। আপনারা অনেক ব্যক্তির কাহিনী বলিলেন যাহারা হতাশ প্রণয়ে কাতর হইয়া আয়হত্যা করিয়াছেন। তাহার উদ্ভরে আমি শুপু এই বলিতে পারি, দে, তাহারা ঐ ভুলটি না করিলে, ঐ প্রেমবাধি হইতে আরোগালাভ করিতেন, এবং আবার বহুবার প্রেমে পড়িতেন। প্রেমিকের সঙ্গে মাতালের বিশেষ একটা সাদৃশু আছে। একবার মদ থাওয়া ধরিলে যেমন বার বার না ধাইয়া থাকিতে পারা যায় না, তেমনি একবার প্রেমে পড়া ফুক্ল করিলে, বার-বার প্রেমে পড়া অনিবার্যা।"

সকলে মিলিয়া তথন বুদ্ধ ডাব্জারকে সালিশ মানিয়া তাঁহার মত জিপ্তাসা করিলেন। ডাব্জার পূর্ব্বে পারিসে ব্যবসায় চালাইতেন, এখন শহর ছাড়িয়া মাকুইসের জমিদারীতে বাস করিতেছেন। তিনি বলিলেন, "এবিষয়ে আমার যে কোনো একটা পাকা মত আছে তা নয়। তবে আমি একটি প্রেমের ইতিহাস জানি, যাহা পঞ্চার বংসর সমানভাবে টিকিয়াছিল, এক দিনের ক্ষক্তও যাহার ভিতর কোন ব্যতিক্রম দেখা যায় নাই।"

মাকু ইসের পত্নী আনন্দে করতালি দিয়া উঠিয়া বলিলেন, "কি সুন্দর! এই ভাবে ভালবাসা পাওয়া সুখস্বপ্রের মত মনোহর। পঞ্চায় বংসর ধরিয়া এই দ্রপ ভালবাসা বে-পুরুষ পাইয়াছে, সে বাস্তবিকই সুখী, জীবনে সে-ই যথার্থ আনন্দ পাইয়াছে।"

ডাক্তার হাস্ত করিয়া বলিলেন, "আপনি ঠিক কথাই বিনিয়াছেন, বে-ব্যক্তি এই ভালবাসা লাভ করিয়াছিল, সে পুরুষই বটে। সে পুরুষটির নাম করিলেই আপনারা তাহাকে চিনিতে পারিবেন। সে শ্রীষ্ক্ত শুকে, এই স্থানের ঔষধ-বিক্রেতা। স্ত্রীলোকটিকেও চিনিতে পারিবেন। প্রতি বৎসর চেয়ার মেরামত করিতে যে স্ত্রীলোকটি আপনার বাড়ি সাসিত, সামি তাহারই কথা বলিভেছি।

মহিলাদের উৎসাহ এক নিমেযেই বিলুপ্ত হইয়া গেল।
ঠাহাদের সকলের মুথেই দারুণ একটা অবজ্ঞার চিহ্ন ফুটিয়া
উঠিল, যেন ধনী এবং বনিয়াদী গরের মান্ত্য ভিন্ন আর
কাহারও ভালবাসা, ভালবাসা নামেরই গোগা নহে।

ডাক্তার বলিতে লাগিলেন, "তিন ম'স আগে আমাকে এই নারীটির মৃত্যশ্যাপারে ড'কিয়া লইয়া গাওয়া হয়। সে ইহার পূর্ব্বদিনে এই স্থানে আসি। উপস্থিত হুট্যাছিল। তাহার একথানা বোড়ার গাড়ী ছিল, উহাই সে গুহুরূপেও ব্যবহার করিত: বোডাটা বুদ্ধ ও নর্ণ, আপনারা সকলেই উহাকে দেথিয়াছেন। ত'হার এইটি কালো রঙের বড় বড় কুকুর ছিল, তাহ'রাই ঐ স্থী ল'কটির বন্ধ ও রক্ষকের কাব্দ করিত। আমি ভিন্ন, গ্রাণ্যের পুরোহিতও সেগানে উপস্থিত ছিলেন। স্ত্রীলোকটি আমাদের ছুই জনকে তাহার উইলের এক্জিকুটোর নিযুক্ত করিল। তাহার অভিম ইচ্ছা**গুলির মর্**ম বাহাতে আমরা ভালভাবে ব্ঝিতে পারি, এইজন্ত সে আমাদের তংহার জীবনের ইতিহাস বলিয়া গেল। এই কাহিনীটির মত অঙ্ত ও করুণ কাহিনী আমি আর শুনি নাই। তাহার পিতামাতা উভয়েই চেয়ার-মেরামতের কাঞ্জ করিত, গাড়ী ভিন্ন, মাটির উপর নির্ম্মিত গ্রহে সে কোনো দিন বাস করে নাই। শিশুকালটা হেঁড়া স্তাকড়া পরিয়া পথে পথে ঘ্রিরাই তাহার দিন কাটিয়া গিয়াছে।

তাহারা প্রামে প্রাপে ঘ্রিয়া বেড়াইত, এবং সর্বকাই প্রামের ব হিরে আনিয়া আন্তানা গাড়িত। মাঠের বেড়ার ধারে গাড়ী থামাইলা তাহারা বেড়াটকে খুলিলা দিত। বেড়াটা মাঠে ঘাস থাইত, কুকুরগুলি গাড়ীর সামনে, থাবার উপর মাথা রাখিলা ঘুমাইত, এবং নিগুটি নাসের উপর থেলা করিত। উহার সিতাম তা গাহতলায় বিষিষ্ট প্রামের যত ভাঙা চেয়ার মেরামত করিত। এই ভামানান পরিবারটিতে কথাবার্তা কহার রেওয়াজ বিশেঘ ছিল না। কে গ্রামের পথে, "চেয়ার মেরামত করি গো," বলিয়া হাকিয়া যাইবে, ইহা স্থির করার পরই তাহারা নীরবে বেত বুনি ত আরম্ভ করিত। শিশুটি যদি থেলা করিতে করিতে বেণী দুর চলিয়া যাইত, অথবা গ্রামের কোনো ছোক্রার সঙ্গে ভাব করিবার কেটা করিত, তাহা হই ল

উহার বাবা রুষ্টভাবে চীৎকার করিয়া উঠিত, ''এদিকে আয় বল্ছি লক্ষীছাড়ী।"

ইহা ভিন্ন আর কোনো আদরের ডাক সে কথনও কানে শোনে নাই। যথন সে কিছু বড় হইল, তথন ভাঙা কোরা সংগ্রহ করার জন্ম তাহার বাবা ও মা তাহাকে মাঝে মাঝে গ্রামের ভিতরে পাঠাইতে আরও করিল। এখন সে এক-আধ কন গ্রামা বালকের সঙ্গে ভাব করিতে আরও করিল, কিন্তু বালকগুলির পিতামাতা এট স্থোর চেষ্টা দেখিলেই চটিয়া আগুন হইয়া যাইতেন। তেলেদের ফিরিয়া আসিবার জন্ম রচ্ছাবে ডাক দিয়া বলিতেন, "নিগ্গির চলে এস লক্ষ্মীছ ড়া ছেলে! যত বাজেবে ভিথিৱীর বাচ্চার সঙ্গে ভাব করতে হবে না।"

কথনও কথনও গ্রামের বালকেরা এই ছেঁড়া কাপড়-পরা বালিকাকে চিল ছুঁড়িয়া মারিত। গ্রামের গৃহিণীরা কথনও কথনও দ্য়া করিয়া বালিকাকে ছুই-চারিটি পয়সা দিতেন। সে সেগুলি সমত্বে জমা করিয়া রাখিত।

এক দিন এই গ্রামের ভিতর দিয়া যাইতে যাইতে বালিকা বালক শুকেকে দেখিতে পাইল। কোনো বন্ধু ভাহার হইতে হুইটি পয়সা কাড়িয়া লইয়াছিল সমাধিক্ষেত্রের পিছনে দাঁড়াইয়া রোদন বলিয়া সে করিতেছিল। এই দরিদ্র বালিকার মনে বালকের রোদন এক অভ্তপূর্ব ভাবের উদ্রেক করিল। ভদ্রণোকের চেলেমেয়েরা সর্বনাই ফ্থী ও সন্তুষ্ট থাকে, ইহাই ছিল তাহার ধারণা। সেবালকের নিকটে আসিয়া তাহার রোদনের কারণ শুনিতে পাইল, এবং তৎক্ষণাৎ তাহার হাতে নিজের এতদিনের সঞ্চয়, সাতিটি প্রসা চালিলা দিল। প্রসাগুলি হাতে পাইনা বলকের কালা তৎক্ষণাৎ বন্ধ হইয়া গেল, সে নিভের চোধ মুছিয়া ফেলিল। বালিকা আনন্দে আহহ রা হই া বালকদে চুম্বন করিতে লাগিল। ছেলেটি প্রসাগুলি নিরীক্ষণ করিতে ব্যস্ত ছিল, সে কোনো বাধা দিল না। গালাগালি বা মার না থ ইয়া বালিকার সাহস ব'ড়িয়া গেল, সে শুক্তকে হড়াইয়া ধরিয়া, বারকারক চুম্বন করিয়া ছুটিয়া প্লায়ন করিল।

দরিদ্র ব'লিকার মনে কি ভাবের ধ'রা বহিতে লাগিল, ত'হা কেহই বলিতে পারে না। ব'লকটির প্রতি ত'হার চিত্ত কেন যে এত আকৃষ্ট হইল তাহা বুঝা যায় না। হয়ত তাহাকে নিজের অতিকষ্টসঞ্চিত অথ দান করার জন্তই কোনোদিন বালিকা ছেলেটিকে ভূলিতে পারিল না, অথবা তাহাকেই ভালবাসিয়া প্রথম চুম্বন করিতে পাওয়ার জন্তই ভ্লিল না। বয়োবুদ্ধ বা বালকবালিকা, সকলেরই মনে এক রহস্তময় প্রবৃত্তি কাজ করে।

অনেক মাস ধরিয়া সে শুধু এই বালকটির এবং সেই সমাধিক্ষেত্রের পিছনের জায়গাটির স্বগ্ন দেখিত। যদি তাহার সহিত আবার দেখা হয়, এই আশায় সে চুরি করিয়া পয়সা জমা করিংত লাগিল। চেয়ার-মেরামতের মজ্রি হইতে কথনও কথনও সে ছ-এক পয়সা সরাইয়া রাখিত, বাবা মা থাবার জিনিত কিনিতে পাঠাইলে তাহা হইতেও এক-আধ পয়সা বাথিয়া দিত। এই গ্রামে আবার মথন সে কিরিল, তথন সে ছই দ্রুঁ জমা করিয়াছে, কিন্তু তাহার বালকবয়টিকে সে নিকট হইতে দেখিতে পাইল না। একবার মাত্র দুর হইতে তাহাকে দেখিতে পাইল, খুব কিটজাট সাজিয়া সে নিজের বাবার ইয়ধের দোকানের জন লার ধারে দাড়াইয়া আছে। তাহার ছই ধারে রঙীন কলেব বেতিল আর রঙীন কাচের ছ্লদানি। জিনিত্র দোকরে সৌদ্রেল বালিকা একেবারে মোহিত হইয়া গেল, বালকের প্রতি ভালবাসাও তাহার বাজিয়া গেল।

বালকের চিরউক্ষ্ণে স্মৃতি সে ফারের কোণে ঐশ্বর্যার
মত সৃষ্ণিত করিয়া রাগিল। পরের বৎসর গখন সে তাহাকে
আবার দেখিল, তথন শুকে একটু বড় হইয়াছে, স্কুলের
পিছনের-মাঠে সে বন্ধুদের সঙ্গে গুলি খেলিতেছিল।
বালিকা তাহার উপর ঝাঁপাইয়া পড়িয়া এমন আবেগের
দহিত তাহাকে চুম্বন করিতে আরম্ভ করিল খে, শুকে
ভয়ে চীৎকার করিয়া কাঁদিয়া উঠিল। তাহার কায়া
থামাইবার জন্ত বালিকা নিজের এতদিনের সঞ্চিত সমস্ত
মর্থ, ত্ই ফ্রাঁ, কৃড়ি সেন্টিম, তাহার হাতে গুঁজিয়া দিল।
এত পয়সা বালক কোনো দিন একসঙ্গে হাতে পায় নাই।
তাহার কায়া তৎক্ষণাৎ থামিয়া গেল, বালিকা ত ইন্ছা
তাহাকে আদের করিতে লাগিল, তাহাতে কোনো আপত্তি
না করিয়া শুকে একদৃষ্টে বিক্ষারিত চোগে চাহিয়া রহিল
নিজের হাতের মন্ত্রাগুলির দিকে।

ইহার পর চার বৎসর ধরিয়া যথনই বালকের সহিত
ঐ বালিকার দেখা হইত, সে তাহাকে যথা ইচ্ছা চুম্বন
করিতে দিত, অবগ্র বালিকার সঞ্চিত প্রসাপ্তলির পরিবর্তে।
একবার সে ত্রিশ স্থা পাইল, একবার হুই ফ্রাা, আর
একবার বারো স্থা। এত জল্প প্রসা দেওয়ার ক্ষন্ত এই
হৃতীয়বার বালিকা লক্ষা ও ভয়ে কাঁদিয়াই ফেলিল,
কিন্তু বংসরটা বড় থারাপ যাওয়াতে কোনোমতেই সে
ইহার বেশী সঞ্চয় করিতে পারে নাই। কিন্তু পরের
বংসর সে প্রদে-আসলে পোষাইয়া দিল। চক্চকে বড়
একটি পাঁচ ক্রা মুদ্রা বালকের হাতে দিতেই আনক্ষেসে
হাসিয়া উঠিল, দরিদ্রা বালিকা ধন্ত হইয়া গেল।

এই বালকটিই তাহার জীবনধারণের একমাত্র উদ্দেশ্য হইরা দাঁড়াইয়াছিল। বালকটিও খুব উৎস্ক ভাবে তাহার আগমনের জন্ম প্রভীক্ষা করিত, তাহাকে দেখিতে পাইলেই দৌড়িয়া তাহার কাছে গিয়া উপস্থিত হইত। ইহাতে বালিকা একেবারে আনন্দে আগ্রহারা হইরা যাইত।

হৃদৎ বালিকাটিকে আর প্রামে দেখা গেল না। অনেক জিল্পানাদ করিয়া বালিকা জানিতে পারিল, যে, তাহাকে এক বোর্ডিং স্থলে পাঠাইয়া দেওয়া হইয়াছে। তথন হইতে সে বাবা-মায়ের পিছনে লাগিল, বাহাতে তাহারা এই প্রামে আসার সময়টা পরিবর্তন করে। স্থূল যথন ছুটি থাকে, তথন এথানে আসিলে সে বন্ধুকে দেখিতে পাইবে ইহাই ছিল তাহার উদ্দেশ্য। এক বৎসর চেষ্টা করার পর সে বাপ-মাকে রাজী করিতে পারিল।

তৃষ্ঠ বৎসর পরে সে খালককে আবার দেখিতে পাইল।
শুকের চেহারা ও ধরণধারণ একেবারে বল্লাইয়া গিয়াছে।
সে অনেক লম্বা ও শুন্দর হইয়াছে, ঝক্ঝকে পিতলের
বোতাম-দেওয়া জামাতে তাহাকে এমন চমৎকার দেখাইতেছে
বে, বালিকা প্রথমে তাহাকে প্রায় চিনিতেই পারে নাই।
বালক এমন ভাল করিল বেন সে বালিকাকে দেখিতেই
পার নাই, গন্ধীরভাবে পাশ কাটাইয়া সে চলিয়া
গেল। তুই দিন ধরিয়া বালিকা অবিশ্রাম অশ্রবর্ষণ করিল।
ইহার পর হইতে সে নীরবে এই বেদনা সহু করিতে
লাগিল।

প্রত্যেক বৎসরই সে এখানে ফিরিয়া আসিত। শুকের পাল দিরা চলিয়া যাইত, কিন্তু তাহার সঙ্গে কথা কহিছে সাহস পাইত না। শুকে তাহার দিকে একবার চাহিয়াও দেখিত না। এই মানুষটিকে ঐ যৌবনোমুখী বালিকা পাগলের মত ভালবাসিতে আরম্ভ করিল। মরিবার আগে সে আমার বলিয়াছিল, "ডাক্তার, আমি অন্ত কোন পুরুষের দিকে এ-জীবনে চাহিয়া দেখি নাই, জগতে আর কোনো পুরুষ মানুষ যে আছে, তাহাই আমার মনে হইত না।"

কিছুদিন পরে তাহার পিতামাতা উভয়েই মারা গেল।
মেরেটি তাহাদের ব্যবসা চালাইতে লাগিল। ত্ইটি প্রকাণ্ড
বড় বড় কুকুর সংগ্রহ করিয়া রাখিল, তাহাদের ভয়ে কেহ
আর উহার কাছে আসিত না।

এক বৎসর সবে সে প্রামে প্রবেশ করিতেছে, এমন সময় দেখিল একটি যুবতী তাহার প্রিয়তমের হাত ধরিয়া ওযথের দোকান হইতে বাহির হইতেছে। যুবতী শুকের পত্নী, অশ্বদিন হইল তাহাদের বিবাহ হইয়াছে।

এখানে টাউন-হলের পাশে একটি ছোট পুকুর আছে, সন্ধারাত্রে ভগ্নসন্ধা নারী তাহার মধ্যে ঝাঁপাইয়া পডিল।

কিন্তু আত্মনাতিনী হওয়াও তাহার অদৃষ্টে ছিল না।
একটা মাতাল পথে গুরিতে গুরিতে তাহাকে দেখিতে পাইল,
এবং টানিয়া তুলিল। কয়েক জন লোক ধরাধরি করিয়া
তাহাকে প্রামের একমাএ ওয়ণালয়ে বহন করিয়া লইয়া
গোল। শুকে ড্রেসিং গাউন পরিয়া তাহার তত্মাবধান
করিতে নামিয়া আদিল। তাহার ভিজা কাপড় ছাড়ান
হইল, গা ঘিয়া গরম করা হইল। শেন তাহাকে চিনিতে
পারে নাই, এমন মুধ করিয়া যুবক বলিল, "তুমি কি পাগল
হয়েছ? এরকম বোকামী আর কথনও ক'বো না।"

এই করটি কথাতেই ঐ হতভাগিনীর সমস্ত জালাযন্ত্রণা বেন জুড়াইরা গেল। প্রিরতম তাহার সহিত কথা বলিরাছে। বছদিন ধরিরা ইহারই আনন্দে সে দিশেহারা হইরা রহিল। যুবক ডাজার তাহার ভশ্মবার জন্ত টাকা লইতে রাজী হইল না, যদিও নারী টাকা দিবার জন্ত অত্যন্ত আগ্রহ দেখাইরাছিল।

এই ভাবেই তাহার জীবন কাটিয়া চলিল। চেয়ার মেবামত করিতে করিতে সে **তথু নিজে**র প্রিয়তমের স্বপ্ন দেখিত। প্রত্যেক বৎসর গ্রামে আসিয়া সে তাহাকে দেখিয়া গাইত। অনর্থক দোকানে গিয়া, টাকা দিয়া নানা রকম ঔষধ কিনিত, যাহাতে সে তাহার কাছে গাইতে পারে, তাহার সঙ্গে কথা বলিতে পারে, এবং তাহাকৈ কিছু টাকা দিতে পারে।

আমি গোড়াতেই বিশিয়াছি, এই বসস্তকালে ঐ নারীর মৃত্যু হইয়াছে। এই হঃখভরা জীবনকাহিনী বলা শেষ করিয়া সে আমাকে ও পুরোহিতকে অনুরোধ করিয়া গিয়াছে, যেন. তাহার চিরজীবনের সঞ্চিত অর্থ আমরা তাহার ভালবাসার একমাত্র পাত্রের হাতে পৌছাইয়া দিই। তাহাকে দিবার জন্তই সে কেবল অর্থ সঞ্চয় করিত। কাজ করিবার তাহার আর অন্ত কোনো উদ্দেশু ছিল না। নিজে ভাল করিয়া আহার পর্যাস্ত সে করিত না, পাছে তাহার সঞ্চিত অর্থ অধিক না হয়। তাহার মৃত্যুর পর কিছু টাকা হাতে পাইলে শুকে একবার অন্ততঃ তাহাকে শ্বরণ করিবে, এই ছিল তাহার আশা। আমাদের হাতে সে হুই হাজার তিন শত সাতাশ ক্রা দিয়া গিয়াছিল। তাহার শেষনিশ্বাস পড়িবার পর আমি তাহার অন্ত্যেষ্টিকিয়ার জন্ত সাতাশ ক্রা পুরোহিতের হাতে দিয়া বাকি টাকা লইয়া, চলিয়া আসিলাম।

পরদিন গুপুরবেলা আমি টাকা লইয়া শুকের বাড়ি গিয়া উপস্থিত হইলাম। স্বামী-স্ত্রী সবেমাত্র তথন মাধ্যাহ্রিক আহার শেষ করিয়া গুখানি চেয়ারে মুখোমুখি হইয়া বসিয়া আছে। গুই জনেরই বেশ গোলগাল চেহারা, টক্টকে রং এবং সন্তুষ্ট মুখের ভাব। ঘরখানি গন্ধদেব্য ও ঔষধের সৌরভে ভরপুর।

তাহারা তাড়াতাড়ি স্নামাকে বসিতে আসন দিল।
স্মামি বসিয়া নিজের বক্তব্য বলিতে আরম্ভ করিলাম।
স্মাবেগে স্নামার গলা ভারি হইয়া স্নাসিয়াছিল, স্নামার
ধারণা ছিল, কাহিনীটি শুনিয়া তাহারা কাঁদিয়া ফেলিবে।

শুকে ধেই বুঝিতে পারিল, ধে, ঐ দরিন্তা ভিশারিণীর ন্তার স্ত্রীলোক, ধে ভাঙা চেরার মেরামত করিয়া দিনপাত করিত, সে ভাহাকে ভালবাসিতে সাহস করিয়াছিল, রাগে ভাহার মাথার চুল পর্যাস্ত খড়ো হইয়া উঠিল। ভাহার রকম দেখিয়া বোধ হইতে লাগিল ধেন ঐ হতভাগিনী নারী ভাছার মানসন্তম, যাহা নাকি জীবনের চেমেও
মূল্যবান জিনিষ, তাহা সমস্ত চুরি করিয়া লইয়াছে। তাহার
স্ত্রীর ত রাগে একপ্রকার কঠরোধই হইয়া গেল। সে
গালি বার-বার করিয়া বলিতে লাগিল, "এ ভিকিরিটা,
মাগো মা!" তাকে চেয়ার ছাড়িয়া উঠিয়া পড়িয়া ঘরের
ভিতর দ্রুত পায়চারি করিতে লাগিল, তাহার টুপিটাও
বাকা হইয়া এক কানের উপর ঝালিয় পড়িল।

থানিক পরে সে হাপাইয়া হাপাইয়া বলিতে আবম্ভ করিল, "ডাক্তার, আপনি কি ইহার অর্থ কিছু বুঝতে পূর্ট্রন? মাকুষের অদুষ্টে মধ্যে মধ্যে এমন তুর্ঘটনা ঘটিয়াই থাকে, ইহার বিরুদ্ধে মানুষের কোন শক্তি নাই। আঃ, এ তুষ্টা দ্রীলোক বাঁচিয়া থাকিতে জামি বদি গুণাক্ষরেও তাহার অভিস্ত্তির বৃথিতে পারিতাম, তাহা হইলে তাহাকে ভেলে পাঠাইয়া ছাড়িতাম: সেখান হইতে হার বাঁচিয়া থাকিতে তাহাকে বাহিরে আদিতে হইত না।" আমি ত তাহাদের কাণ্ড দেখিয়া ও কথা শুনিয়া হতবৃদ্ধি হইয়া গেলাম। ভাল ভাবিয়া অ'মি গ'হা বলিয়'ছিলাম, তাহার ফল বে এইরূপ হইতে পারে, তাহা আমি একেবারেই আশা করি নাই। বাহা হউক, আমি যাহা করিতে আসিয়াছি ভাহা আমাকে করিতেই হইবে, যদিও কি ভাবে নৈ আবার কথাটা পাড়িব, তাহা -আমি ভাবিয়াই পাইতেছিলাম না। আমি সোজাপুজি বলিলাম, "ঐ নারী চিরজীবন পরিশ্রম করিয়া তুই হ'জার তিন শত ফ্রা সঞ্চয় করিয়াছিল, উহা সে আপনার হাতে দিবার জন্ত আমাকে দিয়া গিয়াছে। কিন্তু তাহার কাহিনী ওনিয়া আপনারা বেরূপ বিরক্ত হইয়াছেন, তাহাতে আমার মতে **এই টাকা দীনছ:शीकে मिग्न मिलाई ভাল।**"

ভকে ও তাহার স্ত্রী বিশ্বর্থবিক্টারিত চোথে আমার দিকে চাহিরা রহিল। আমি পকেট হইতে টাকার থলিটা টানিরা বাহির করিলাম। উহাতে স্বর্ণমূজা, রৌপামূজা তামসূজা নির্মিচারে মেশালো, স্বগুলিই যে এক দেশের ভাহাও নয়। তাহার পর আমি জিজ্ঞাসা করিলাম, "আপনারা তবে কি হির করিলেন?"

শ্রীশতী তকে ভাড়াভাড়ি বলিলেন, "তা, উহাই বধন ত্রীলোকটার শেব ইচ্ছা ছিল, তথন আপত্তি করা উচিত নর।" তাহার স্বামীও একটু লজ্জিত ভাবে বলিল, "ছেলেমেয়েদের জ্ব্লও ঐ টাকাতে কিছু কেনা বায়—"

আমি সংক্ষেপে বলিলাম, "যাহা আপনাদের ইচ্ছা।" শুকে বলিল, "আচ্চা, টাকাটা আমরা নেওয়াই স্থির করলাম, উহাধারা সহজেই কোন ভাল কাজ করা গাইবে।"

আমি টাকার থ**লিটা ভাহার হাতে ভূলিরা দিয়া,**নমস্কার করিয়া চলিয়া আসিলাম। পরদিন সকালে ওকে
আসিরা আমার গৃহে উপস্থিত হইল। সে বলিল, "ঐ
ক্রীলোকটা ভাহার গাড়ীগানাও এথানে কেলিয়া গিয়াছে,
উহা কি হইবে?"

আমি বলিলাম, "আমি ত জানি না। আপনার প্রয়োজন গাকে ত উহা অংপনি লইতে পারেন।" শুকে বলিল, "ভাল, আমার স্বজীর বাগানে একটা ছাউনী দ্রকার, আমি গাড়ীটা ঐ কাজে লাগাইব।"

সে চলিয়া বাইতেছিল, আমি তাহাকে ডাকিরা ফিরাইলাম। জিজ্ঞাসা করিলাম, "গ্রীলোকটি একটা গোড়া ও ছুইটা ক্কুরও রাগিয়া গিয়'ছে, ওগুলোও কি আপনি চান ?"

শুকে দাঁড়াইল, অত্যন্ত বিশ্বিতভাবে বলিল, "নিশ্বরই না, আমি ওপ্তলো লইয়া কি করিব? আপনি উহাদের দ'হা হয়, বাবস্থা করিবেন।" সে হ!সিয়া আমার সহিত করমর্দ্ধনের জন্ম হাত বাড়াইল।

একই গ্রামের ডাক্টার এবং উধধ-বিক্রেতার ভাব না রাধিয়া উপায় নাই, সুতরাং আমি বাধ্য হইয়া ভাহার হাত ধরিলাম। আমি কুকুর ছইটাকে নিলাম, এবং পুরোহিত বোড়াটি ক স্থান দিলেন। শুকে গাড়ীখানা দিয়া বাগানে একটা ছাউনি করিল, এবং টাকাগুলি দিয়া পাঁচখানা কোম্পানীর কাগজ কিনিয়া রাধিল।

যথার্থ প্রেমের এই একটিমাত্র কাহিনী আমি জানি।— ডাজ্ঞার এই বলিয়া চুপ করিলেন।

মাকু ইসের পত্নীর চোথ জলে ভরিরা উঠিরাছিল। তিনি দীর্ঘনিখাস ফেলিয়া বলিলেন, "ক্রীলোকেই যথার্থ ভাবে ভালবাসিতে পারে।"*

^{*} গী দে মোপাস। হইডে

শ্বরলিপি

গান

মম মন উপবনে চলে অভিসারে আঁধার রাতে বিবহিণী রক্তে তারি নুপুর ব'জে রিনি রিনি । হুরু হুরু করে হিয়া মেব উঠে গরজিয়া বিল্লি ঝনকে ঝিনি ঝিনি ॥ মম মন উপবনে ঝরে বারিধারা গগনে নাহি শশিতারা । বিজ্ঞার চমকনে

মিলে আলো ক্ষণে ক্ষণে,

ক্ষণে ক্ষণে পথ ভোগে উদাসিনী।

- শ্ৰাবণ-গাথা

| কথা ও স্থর—-শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর। | | | | | | | | | | | স্বরলিপি—-শ্রীশৈলজারঞ্জন মজুমদার। | | | | | | | | | | | | | |
|------------------------------------|-------------|-------------------|--------------------|----|------------------------|-------------------------|-----------------------|-----------------------|---|------------------|-----------------------------------|-------------------|--------------------|---|------------------|---------------------------|-----------|--------------------|---------------------------------------|-------------|--------------------|-------------------|---------------|--|
| সা ম | সা ম | সন্ য0 | স া ন | | র। উ | র া প | র া ব | রা নে | | র া চ | রসা শে | র <u>া</u> অ | <u>-91</u> | | মা ভি | জ্ঞরা সাত | শ রে | <u>-ब्र</u> 1 0 | \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ | -ন্ অ | সা ধা | স রা র | সা রা | |
| ণ.1 তে | _*(\ 0 | -† 0 | -1 0 | | ধ্ _{সা} বি | সা ধ | র া হি | -517 0 |) | গা ণী | _ ग । 0 | -1 0 | -† o | | 제 지 | હ્કો મ | রা ম | সা ন | | ন্ উ | সা প | রা ব | রা নে | |
| ম া র | -7 0 | মপা ক্তেণ্ | -1 তা | 1 | গ ব্লি | ۲- 0 | ન 0 | -1 0 | | মা নু | পমা পু০ | প মা রo | পমা বা ০ | | প <u>ৃ</u> জে | _ - र्ग1् o | -ना ० | -1 0 | | ধা রি | 이 주 | ধা বি | ণা দি | |
| ধা বি | পা নি | পধা রি০ | মপা নি ০ | | মা ম | ख्डा म | র া শ | সা ন | ; | ন্ । উ | সা প | রা ব | রা নে | | • • | • • | •• | ইভ্যা | पि | | | | | |
| পম ছুণ | 1 প1 ক্ল | ণপা হ ০ | न। क | 1. | না কু | দর্শ [:] রে | ^ন রা হি | ^ਸ ੰਜੀ 0 | | ৰ্গ য়া | -† o | -1 0 | -1 0 | 1 | না : মে | ৰ' ঘ | (4) 90 | र्गना ८४० | 1 | না গ | ท์ ส เ โ | म ी इंद | त्त्र 1 00 | |

```
| र्गु-११ - 1 - 1 | श्रश - 1 श्री ११ | श्री - 1 श्री ११ | मा श्री ११ | श्री ० ० ० | श्रि ० व्रि ० | श्री ० व्रि ० | श्री ० व्रि ० | श्री व्रि वि
 ধাণামাজ্ঞ, রাসান্য রারারারা ... ... ইত্যাদি
ঝিনিঝিনি ম ম ম ন উ প ব নে
। জ্ঞা-ারাসরা না-া সা -া -া -া
হি ০ শ শি০ তা ০ রা ০ ০ ০ ০ ০
পিমাপাণপানা । নাৰ্মা<sup>স</sup>রা<sup>স</sup>না । সা -া -া -া নাৰ্মানবাৰ্সনা
বিত জুলিতর । চম ক ০ নে ০ ০ মি লে আওলোত
 नार्गीनर्यानर्यो प्रति शा ना न रे शा शा ना शा शा भी भी भी भी कि एक एवं कर एक एवं एक एवं एक एवं एक एवं एक एवं एक
  মা জগরা সা না না রা রা ... ... ইত্যাদি
মুমুমুন উচিপুর নে
```

স্বৰ্ণ-প্ৰতিমা

শ্ৰীসীতা দেবী

•

মূর্শিদাবাদ জেলার এক অংশে স্থানীয় জমিদারবার এক দীঘি কাটাইতেছিলেন। তাঁহার পরম পুণ্যবতী মাতা অল্পদিন আগে পরিণত বন্ধান পরলোকগমন করিয়াছেন। তাঁহারই স্থাতি-রক্ষার জন্ত এই চেষ্টা, নহিলে জনহিতের জন্ত জমিদার বাব্র এতাবৎ কোন প্রাণিদ্ধি ছিল না। মান্তের নামে এ দীঘির নাম হইবে গৌরী-দিধি।

সকালবেলা এক দল মন্ত্র আসিয়া জমা হইয়াছে,
সকলেরই হাতে কোলাল। কেহ-বা হই এক কোপ
বসাইতেছে, কেহ-বা তথনও আলসা ভাঙিতেছে।
জমিলারের বেতনভোগী এক কর্মচারী, তাহাদের তবাবধানে
আসিয়াছে, সে গাছতলায় বসিয়া ঝিমাইতেছে। মাঠেঘাটে তথনও পাতলা কুয়াসার আবরণ, সির্ সির্ করিয়া
ঠাণা বাভাস দিতেছে। মোট কথা রোদটা ভাল করিয়া
না উঠিলে কাহারও কাজে উৎসাহ নাই। নিতান্ত পুরা
মন্ত্রি পাইবার লোভে সকলে এত সকাল-সকাল আসিয়া
জুটিয়াছে।

মোহন বাগ্দীর দাঁড়াইয়া দাঁড়াইয়া শীতভোগ করিতে ভাল লাগিতেছিল না। ছোট ভাই মদ্নাকে এক ঠেলা দিয়া দে কোদালটা দেখাইয়া দিল। ছুই ক্ষনে ভাহার পর ঝপাঝপ্ কোদাল চালাইতে লাগিল। ক্র:ম আরও ছ্-এক জন করিয়া আদিয়া ফুটতে লাগিল, দলও ভারি হইয়া উঠিল।

হঠাৎ ঠং করিরা একটা শব্দ হইল এবং মদ্না চমকাইরা কোদাল টানিরা লইল। মোহন জিজ্ঞাসা করিল, "কি হ'ল রে মদ্না?"

মদ্না বলিল, ''কিসে কোদাল বাধল? পেতল-কাঁসা কিছু আছে ওখানে।"

মন্ত্রের দলে চাঞ্জ্য দেখা দিল। মুর্শিদাবাদ প্রাচীন কীর্ত্তির, প্রাচীন ঐশব্যের নিমাধি-ভূমি। এখানে মাটি খুঁড়িতে গিয়া কত রকম জিনিষ সদাসর্কানা পাওয়া যায়, যত না পাওয়া যায়, তাহার চেয়ে গয় শোনা যায় পঁচিশ গুণ বেশী। স্তরাং সকলের মনেই গুপ্তধনের কথাটা বিহাতের মত থেলিয়া গেল। মদ্না যেথানে মাটি কাটিতেছিল, সেইখানটায় গোল হইয়া দাঁড়াইয়া স্বাই মাটির দিকে একদৃষ্টে চাহিয়া রহিল, যেন ভূপ্পোথিত পদার্থটি নিজেই তাহাদের কোত্হল চরিতার্থ করিবার জন্ত বাহির হইয়া আসিবে।

জমিদারের কর্মচারী দূর হইতে হাক দিয়া বলিল, "কি হ'ল রে তোদের ? সাপে-টাপে কামড়াল নাকি ?"

উত্তরে সমন্বরে কোলাহল করিয়া সকলে কি যে বলিল তাহা ঠিক বৃথা গেল না। একটা কিছু শুক্তর ব্যাপার হইয়াছে বৃথিয়া সে আরামের আসন ছাড়িয়া উঠিয়া পড়িল এবং মফুরদের নিকটে আসিয়া বিরক্তিমিশ্রিত উপ্রকণ্ঠে জিজ্ঞাসা করিল, "হ'ল কি তোলের ? মাটির মধ্যে কি দেখছিস ?"

আবার সমবেত কঠে কোলাহল। এবার কিন্তু ব্যাপার-খানা শ্রীকঠের ব্রিতে বাকি রহিল না। সে ব্যপ্র ভাবে বলিল, "তা হা ক'রে দাঁড়িয়ে কেন? কাট, কাট, মাট কাট। ভাগ্যে থাকলে চিরদিনের মত মাটি কাটা উঠে থেতে পারে।"

মোহন আর মদনের দাবি বেশী, কারণ মদ্নার কোদালই প্রথম গুপ্তধন স্পর্শ করিয়াছে। তাহারাই সেই-থানে কোদাল চালাইতে লাগিল, অক্তেরা আশপাশের মাটি কাটিতে লাগিল।

দেখিতে দেখিতে কি-একটা জিনিষ অর্থ্যেক বাহির হইয়া পড়িল। মজুরদের মধ্যে অক্ষ্ট কোলাহল উঠিল, "পিরতিমে, পিরতিমে।"

মাটির ভিতর হইতে সভাসতাই একটি ধাতব প্রতিমার অর্জাংশ বাহির হইরা পড়িরাছিল। ম**কুররা সম**ন্ত্রমে কোদাল নামাইরা রাধিল, শেষকালে কাহার-না-কাহার কোপে পড়িরা পৈড়ক প্রাণটা ধোরাইবে? শ্রীকণ্ঠ যুক্ত-করে নমস্কার করিয়া বলিল, "বাগ্দী-জনম তোর সার্থক হয়ে গেল রে। মাকে ভুই উদ্ধার করিল।"

কোদাল রাখিয়া দিয়া সবাই হাত দিয়াই প্রতিমার চার পাশের মাটি সরাইতে লাগিল। দেখিতে দেখিতে প্রতিমাটি প্রায় সম্পূর্ণই বাহির হইয়া পড়িল। একেবারে নিখুঁৎ সর্কাঙ্গ-সম্পূর্ণ মুর্ন্তি, কোথাও ভাঙিয়া চুরিয়া বা টোল খাইয়া নষ্ট হয় নাই। স্ত্রীমূর্জি বটে, তবে কোন্ দেবীর তাহা অশিক্ষিত মজুরের দল বুঝিতে পারিল না। হুর্গা-প্রতিমা নয়, কারণ ছইথানি মাত্র হাত; কালীমুর্ছি নয়, কারণ বন্তালম্ভারে বিভূষিতা; সরস্বতী নয়, কারণ ছাতে वीषा नारे। এक मन्त्री इंटरन इंटर्ड शास्त्र, যদিও লক্ষীরও বিশেষ কোনো লক্ষণ ইহাতে বিদ্যমান नारे। औक्षे वायान देशामत मध्य अकमांक পश्चिक, मित्र मत्न प्रति क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त क्रिक्त । मञ्जादत नगाक (र्रमा निया शानिक है। महाहेबा निया বেটারা সর, তোলের ছায়াও "পর मा-नक्षीत शास्त्र ना नाश्य। थवत्रमात क्षे हां मिवि না, বান্ধণ ছাড়। কেউ বেন স্পর্শ না করে। আমি বার্কে থবর পাঠাচিছ, তাঁর কি সৌভাগ্য! ধল্ল হয়ে গেলেন। এ মায়েরই কাজ রে বেটারা। না-হ'লে আমাদের বৃড়ীরাণী ঠাকরুণ নব্ব ই বছর বেঁচে থেকে এখনই বা দরবেন কেন, আর বার্ই বা তাঁর নামে দীঘি কাটাতে যাবেন কেন ?"

মজুরের দলে একটা চাঞ্চল্য দেখা দিল। লক্ষ্মী-ঠাককণ এমন নিজ মুর্জিতে দেখা না দিয়া, রজত বা অর্ণমূলা রূপে আবিভূতা হইলে ভাহারা মধেষ্ট বেশী খুশী হইত। কিন্তু অদৃষ্ট মন্দ। লক্ষ্মীকে ভূগর্ভের অন্ধকারা হইতে বাহিরে টানিয়া আনিয়া ভাহাদের পুণালাভ হইল বটে, কিন্তু পেট ত ভরিল না?

ছই জন মজুর উর্থানে কাছারী-বাজির দিকে ছুটিল।
জমিদারবাবৃকে থবর দিতে হইবে, তিনি বাহাতে প্রোহিত
মহাশরকে লইরা আসিরা বর্থাশাত্র প্রতিষাটিকে মাটি হইতে
উত্তোলন করেন। প্রকণ্ঠ গর্জের পালে পাহারার থাডা

হইরা রহিল, মজুরের দল চারি পাশে, কিন্তু কিছু দুরে, তাহাকে বিরিয়া বসিয়া রহিল।

থবরটা শুধু যে জমিদারবাবুই পাইলেন তাহা নহে, ছই জোশের মধ্যে যে যেখানে ছিল সকলেই পাইল। ঘণ্টা-ছরের ভিতর মাঠটা লোকে লোকারণ্য হইয়া গেল। ম্যাজিট্রেট সাহেবও দীঘ্রই আসিতেছেন বলিয়া শোনা যাইতে লাগিল। গর্ভটির কাছে ত তিল ফেলিবার স্থান রহিল না, এবং পিছনের লোকেরাও আগাইয়া আসিবার চেটায় জমাগত চারিদিক হইতে ঠেলা দিতে লাগিল। একটা ভূমূল কোলাহল বাধিয়া গেল।

ন্দানিবার স্বয়ং কুলপুরোহিত এবং আরও করেক অন ব্রাহ্মণকে সঙ্গে করিয়া আসিয়াছিলেন। তিনি অনতার ব্যবহারে বিরক্ত হইয়া পাইকদিগকে ছকুম দিলেন, ঠেলা দিয়া লোকজনকে একটু দুরে সরাইয়া দিতে, না হইলে তাঁহারাই যে গর্ত্তে পড়িয়া ঘাইবেন ?

ঠেলাঠেলিতে গোলমাল আরও বাড়িয়। গেল, তবে গর্ভের চারি ধারের ভীড়টা একটুথানি পাতলা হইল বটে। তথন ত্রাহ্মণ কয় জন মিলিয়া কালোচিত মস্ত্রোচ্চারণপূর্বক প্রতিমাটিকে ধরাধরি করিয়া মাটি হইতে তুলিয়া ফেলিল। ফ্লের প্রতিমা, আশ্চর্য্য তাহার গঠন-নৈপুণ্য। লম্বায় তিন ফুট প্রায় হইবে। জমিদারবাব জিল্লাসা করিলেন, ''কিসের তৈরি ঠাকুর? পেতল ব'লে বোধ হচ্ছে না?"

পুরোহিত বলিলেন, 'ভিত্তমরূপে মার্চ্ছন প্রয়োজন, কলম্ব ধরে গেছে, ঠিক বোঝা যাচ্ছে না।''

পিছল হইতে নিতাই-স্যাকরা উ'কি মারিতেছিল। সে উৎসাহ সম্বরণ করিতে না পারিয়া বলিয়া উঠিল, "এজে, আমায় একবার দেখতে দিলে হ'ত। আমার যেন মনে হচ্চে পিতল নয়, এ আসল মাল।"

জমিদারবাবু বিশ্বিত হইয়া বলিয়া উঠিলেন, ''বলিস কিরে, সোনা ? দেখত ভাল ক'রে।"

স্বৰ্ণকারের দেবীপ্রতিমা স্পর্ণ করিবার অধিকার আছে
কি নাই তাহা আগ্রহাতিশব্যে সকলেই ভূলিয়া গেল।
নিতাই নিকটে স্থাসিয়া মূর্তিটিকে ভাল করিয়া দেখিল,
তাহার পর বলিল, "এজে, সোনাই বটে।"

চারি দিকে একেবারে হৈ হৈ বাধিয়া গেল। ভাগাক্রমে

ঠিক এই সময় ম্যাঞ্চিট্রেট সাহেব, স্থানীয় একটি ঐতিহাসিক এবং এক জন প্রত্মতাবিককে সঙ্গে করিয়া আসিয়া জুটাডে একটা দালাহাঙ্গামা বাধিতে বাধিতে থামিয়া গেল। ম্যাজিট্রেটের মোটরটা দেখিয়াই জনতা পিছন হাটিতে আরম্ভ করিল।

আগন্ধক তিন জন সোজাস্থজি অগ্রসর হইরা গিয়া প্রতিমাটি ক বিরিয়া দাঁড়াইলেন। প্রস্থুতান্ধিক এবং ঐতিহাসিকে প্রায় হাতাহাতি বাধিয়া গেল মূর্জিট লক্ষীর, না পদ্মিনীর, না যক্ষিণীর তাহা লইয়া। কোনো কিছুরই সঙ্গে ইহা বিশেষ মেলে না, স্থক্ষরী বালিকা বা কিশোরীর মূর্জির মত, আলুলায়িত কুন্তলা, সর্বাঙ্গে অলকার।

রৌ দ্র প্রথব হইরা উঠিল, কিন্তু কোনো মীমাংসাই হয় না। শঙ্কীমূর্জি বলিয়া প্রমাণ করা যায় না, স্থতরাং সোজাসুজি লইয়া গিয়া মন্দিরে প্রতিটা করাও চলে না। পদ্মিনী বা মক্ষিণী যাহাই হউক, জিনিষটি সোনার। ম্যাজিট্রেট সাহেব সেটিকে সহজে হাতছাড়া করিতে রাজী হইলেন না। ছির হইল, ইহা সম্প্রতি তাঁহারই হেফাজতে থাকিবে, বিশেষজ্ঞের অভিমত লইয়া তাহার পর যাহা হয় একটা ব্যবহা করা যাইবে। যদি দেবীমূর্জি বলিয়া ছির হয়, তাহা হইলে জামিদারবাবু উহা লইয়া মন্দিরে প্রতিটিত করিবেন, যক্ষিণী বা পদ্মিনী হইলে স্থানীর ম্যুজিয়ামে উহার স্থান হইবে, আর ষদি কিছুই ছির না করা যায়, তাহা হইলে উহা সরকারের সম্পত্তি বলিয়া গণ্য করা হইবে।

মূর্ন্তিটি ভারী কম নর। ম্যান্সিট্রেটের আজার মন্কুরের দল তাহা বহন করিরা লইয়া চলিল, তাঁহার দোটরে তুলিরা দিবার জন্ত। এখন আর তাহাদের কোনো দোষ হইল না। জনতা হুই ফাঁক হইয়া তাহাদের পথ ছাড়িরা দিল, এবং মূর্ন্তিটি নয়নগোচর হইবামাত্র সকলে সেটিকে সাষ্টাঙ্গে প্রণাম করিতে লাগিল। সাহেব গাড়িতে উঠিয়া বসিবামাত্র মোটর সপকে গর্জন করিয়া উঠিল, এবং ক্লুম্ম জনতাকে পশ্চাতে ফেলিয়া মিনিট-ছুইরের মধ্যেই অদৃশ্য হইয়া গোল। ক্ষমিদারবার্ মনের ক্লেম মনেই রাবিয়া তাড়াভাড়ি প্রস্থান করিলেন। দীবিকাটার ক্লিজ সেদিন আর অপ্রসর হইল না।

কিছুদিন ব্রিলা মূর্তিটি গ্রাইরা জেদাগত তর্কাতর্কি ও

আলোচনা চৰিতে লাগিল। দেশ-বিদেশের পঙিত ও
বিশেষজ্ঞ আসিরা ফুটলেন, কাগজে কাগজে ইহার ছবি ও
বিবরণ বাহির হইল, সংবাদ-পত্তেও অসংখ্য দশুব্য ছাপা
হইল, কিন্তু শেষ-পর্যান্ত কিছুই প্রমাণ হইল না। ম্যাজিট্রেট
সাহেব মদন ও মোহন বাগদীকে দশ দশ টাকা পুরস্কার দিয়া
ব্যাপারটার নিপাত্তি করিয়া দিলেন। জনিদারবাব্
নিক্ষণ ক্রোধে গর্জন করিতে লাগিলেন। দেশের লোক
প্রথম কিছুদিন অ্পপ্রতিমার বিষর উদরান্ত আলোচনা করিল,
তাহার পর নিজেদের ব্যক্তিগত স্থত্ঃথের ভাবনার
তাহার ভাবনা ভূলিয়া গেল। কোন্ এক সময় বাপীয়পোতে
চড়িয়া অর্ণমন্ত্রী মূর্জিট ভারতবর্ষের তটভূমি ছাড়িয়া চলিয়া
গেল, তাহার খোঁজও কেছ রাখিল না।

२

প্রতিমাটি দেবীমূর্দ্ধি নয়। ইছার আসল বিবরণ এই।
দেড় শত বৎসর পূর্ব্বে, দেশের এই অংশ গভীর অরণ্যের
প্রান্তবর্ত্তী ছিল। কিল্প দেশের মান্তবের দেহে তথন
ছিল অন্তবের শক্তি, মনে ছিল অসীম বল। বাদ, ভালুক,
হাতীর সঙ্গে নিত্য দেখাসাক্ষাৎ করিয়াই তাহাদের দিন
কাটিত। বদুকের চলন প্রায় ছিল না, তব্ রামদা, বর্শা,
কোঁচ, জাঠা প্রভৃতির সাহায্যে এই ভীষণ জ্বন্ধদিগকে
বধ করার মধ্যে লোকে তথন বিশ্বরকর কিছুই দেখিত না।
ব্রীলোকে পর্যান্ত তথন অক্তের ব্যবহার জানিত এবং
প্রারান্তন হইলে অকুভোভরে চোর-ডাকাত বা ব্যান্ত্র-ভালকের সামনে দাঁভাইত।

ঐ অংশের ফামিদার ছিলেন তথন রাজবল্লভ রায়। বীরত্ব ও চরিত্রের খ্যাতি তাঁছার এমনই ছড়াইয়া ছিল বে দেশের লোকে মিলিয়া তাঁছার নাম দিরাছিল রাজা রাজবল্লভ।

রাজবল্লভ পারিবারিক জীবনে স্থী ছিলেন না।
বনের পশুদিগের রাজ্য জোর করিয়া তাঁহার পূর্কপুরুবেরা
কাড়িয়া লইরাছিলেন বলিয়াই বেন ঐ অরণ্যচারী জীবদের
প্রতিহিংসাবৃত্তি তাঁহার পরিবারের বিরুদ্ধে সর্বলাই উভেজিত
হইরা থাকিত। তাঁহার শিতা প্রাণ হারাইয়াছিলেন হাজী
শিকার করিতে গিরা, তাঁহার কনিউন্রাভা ব্যাজের স্থুবে

পড়িরা শারা বাদ। জামাভা নৌকাড়্বি হইরা প্রাণত্যাগ করেন, কেং কেং বা বলেন ে কুন্তীরে তাঁহাকে টানিয়া লইরা গিয়াছিল।

প্রোঢ় রাজবরভের পরিবার বলিতে ভগন এক পুত্র **(मवकीनम्मन, विश्वां कन्नां विश्वां क्रांजिं।** চন্দ্রাননার মাতা অবগ্র ছিলেন, কিন্তু স্বাস্থাহীনতার জন্ত প্ৰায় সকল সময়ই তাঁহাকে গুইখা থাকিতে হইত. তাই তিনি বে একটা মামুধ অ'ছেন, তাহা সব সময় লোকের মনে থাকিত না। দেবকীনন্দনের যদি পুত্র-সম্ভান না জন্মগ্রহণ করে তাহা হইলে রাজবল্লভের বংশের এইবানেই অবসান, এই একটা ছশ্চিস্তা সক লরই মনে সারাকণ জাগিয়া থাকিত। চক্রাননার বয়স দশ-এগার বৎসর, ইহার পর আর ভাহার মাতার স্ন্তানাদি किइरे रम नारे। एपवकी नन्मरनद रा व्यविषाः व व्यविषाः বিবাহ করা উচিত, এই লইরা ক্রমাগত কাণাগুরা চলিত। দেবকীনন্দ,নর কানেও যে কথাটা না-বাইত ভাহা নয়. কিন্তু বাব-ভালুক মারিয়া বেড়ানর দিকেই তাহার সমস্ত মন পড়িয়া থাকিত, বিবাহের ভাবনা ভাবিবার তাহার অবসর ছিল না। সেই বীরংজর জন্ত বিখ্যাত যুগেও সেরা বীর ও শিকারী বলিয়া দেবকীনন্দনের নাম গিরাছিল। সংসার ও জমিদারী দেখিবার জন্ত বিধবা ভগিনী এবং পিতা ছিলেন, স্ত্রীকে কেহই দেখিত না চাকর দাসী ভিন্ন, কাজেই দেবকীর পূরা ছুটি ছিল। চক্রাননা সকলেরই নয় নর তারা ছিল, ফুতরাং তাহার ভাবনাও তাহার পিত:কে বিন্দুমাত্র ভাবিতে হইত না।

শর্ৎকাশটা প্রাচীন যুগ হইতে বিধ্যাত মানুষকে ঘরের বাহির করিবার জন্ত। রাজারা এই সময় দিখিজরে যাত্রা করেন, সপ্তমাগর যান বাণিজ্যে, শিকারী যান মুগরায়। অভিশ্রম বর্ধণে বাধা হইয়া ঘরের কোণে বসিরা বসিরা মানুষের প্রাণ ইফাইরা ওঠে। তাই শরৎকালের নীল আক্রাণ রেন ভাহাকে হাতহানি দিরা ভাকিতে থাকে। বে বে-রক্ষ্ ক্রমা পারু, ভাহাই ধরিবা বাহির হইয়া পড়ে।

ব্যেকীমূল্য দলকা ক্ষম নিকারে ঝছির হাইবার আরোজনে ব্যস্ত ছিল। এ বংসর বনের ধারের প্রানন্তলিতে বাজের উৎপ্রাক্ত অসমুদ্ধ রকম-রাজিরা সিরাছিল। ুবিশেষ

করিয়া একটা নর-খাদকের অভ্যাচারে ঘরে ঘরে হাহাকার পড়িয়া গিয়াছিল। তাহার বল বেমন অসাধারণ, বৃদ্ধিও ভেমনি অভূত। ভীত গ্রামবাসীদের চক্ষে তাহার চেহারা পর্যান্ত অলোকিক হইয়া দাঁড়াইয়াছিল। আরুতি তাহার এত বড় যে হঠাৎ দেখিলে বাঘ না মনে হইরা বড় একটা ঘোড়া মনে হয়, পিঙ্গণ চোধ দিয়া তাহার যেন নরকের আগুন ঠিকুরাইয়া বাহিব হইতে থাকে। সব চেয়ে ভাষ্কত এই যে তাহার ছইটার বদলে তিনটা চোখ বলিয়া ভ্রম হয়। কপালে অবিকল একটা চোথের মত ছবি। উহা যে সাধারণ ব্যাঘ নয়, কোনো দেবতার অবতার, এই বিখাস ক্রমেই গ্রামবাসীদের মধ্যে ছড়াইয়া পড়িতেছিল। তাহাতে ব্যাঘ্রপ্রবরের স্থবিধা বই অস্থবিধা ছিল না। সে নির্ভয়ে সর্ব্বত বিচরণ করিত, কুটীরেমুদ্ধ প্রবেশ করিয়া মানুষ টানিয়া লইয়া ঘাইত। ত্রস্ত গ্রামব!সীরা ভাহার সমুধ হইতে পলাইয়া প্রাণরক্ষা করিবারই চেষ্টা অধিক করিত। তাহাকে বে মাতুষে মারিতে পারে, এ-বিশ্বাস ক্রমেই তাহাদের চলিয়া যাইতেছিল।

ব্যাত্রপ্রবৈরে বিবরণ দেবকীনন্দনেরও কর্ণগোচর হ্ইয়াছিল। সে হাসিয়া বলিত, "আকাশ ফরসা হ'তে দাও, তারপর তিনটে চোথের আগুনই একসঙ্গে নিবিয়ে দেব।" তাহার বয়স্তের দলও সঙ্গে সঙ্গে কোলাহল করিয়া হাসিত।

বাঘ মারিবার জন্তই এবার সে তাড়াতাড়ি বাহির হইবার আরোজন করিতেছিল। আর তিন-চার দিন পরেই যাত্রা করার কথা। যত দূর খোলা মাঠ আছে, হাতীর পিঠে যাওরা যাইবে, তাহার পর পারে হাটিরা স্থল-পথে, বা নৌকা করিরা জ্লপথে। যতই খুরিতে হউক, নর-বাদকের আবাসস্থল তাহাকে আবিছার করিতেই হইবে।

সারা দিনের ভিতর একবার মাত্র আহারের সময় দেবকীনন্দন অন্দর-মহলে প্রবেশ করিত। মেদিন আসনে বসিধামাত্র চন্দ্রানা। তাঁহার পিঠের উপর ঝুঁকিয়া পড়িয়া বদিল, 'বাবা, এবার বে বাঘটা মারতে, ভার ছালটা আমি নেব।"

দেবকীনন্দন হাসিয়া বলিল, "কেন রে? ভূই কি সন্নিটিন হবি ?" চক্রনেনা বলিল, "না অ'মার চাই, আমি আসন করব।" বোগমারা তাড়া দিয়। বলিল, "নাম দেখি কাঁখের উপর থেকে। মাহুয়কে থেতেও দেবে না।"

চন্দ্রাননা নামিরা পড়িল। নোগমারা ভ্রাতাকে বাতাস করিতে করিতে বলিল, "বৌ একবার তার ঘরে থেতে বলেছে।"

দেবকীনন্দন বিজ্ঞাসা করিল, "কেন?" যোগমায়া বিলিল, "ওমা, এর আবার কেন কি? দশ দিন অন্তরও ত একবার ও-মুখো হও না, তার কি একবার ইচ্ছাও হয় না হুটো কথা কইতে?"

দেব শীনন্দন সংক্রেপে বলিল, "বেশ বাব।" তাহার পর নীরবে খাওয়া শেষ করিয়া উঠিয়া গেল।

চন্দ্রাননার মা নিভাননীর বাল্যকাল হইতেই হাফানির অলুব ছিল। সকলে আশা করিরাছিল বড় হইলে বিবাহাদির পর সারিরা যাইবে। কিন্তু হইল অল্প রকম। রোগ বাড়িতে বাড়িতে জনে এমন অবস্থায় দাঁড়াইল বে নিভাননীকে পাকাপাকি রকম শন্যা-গ্রহণ করিতে হইল। গভ তিন বছর সে শুইরাই আছে, দিন রাত্রে তাহার স্বস্থিনাই, বিশ্রাম নাই। থাইতে পারে না, ঘুমাইতে পারে না, ভাহার যন্ত্রণা দেখাও মালুষের পক্ষে কটকর। তাই পারতপক্ষে কেহ তার যরে যার না, বুড়ী দাসী তারিণী ছাড়া। চন্দ্রানাকে সে-ই দিনে বার-ছই-তিন মায়ের কাছে ধরিরা লইরা যায়, মেয়ে আবার তথনই পলাইয়া আসে। যোগমারা ভদ্রভার থাতিরে দিনে একবার কোনো মতে ভাজের কুশল প্রশ্ব করিয়া আসে, এই পর্যান্ত।

আজ নিতান্ত বাধা হইয়া দেবকীনন্দন গুপুর বিশা স্থীর ঘরে এ চব'র গিয়া প্রবেশ করিল। তারিণী বসিয়া নিভাননীর প'রে হ'ত বুলাইতেছিল, দেবকীকে দেখিয়াই সে মাধার কাপড় টানিয়া দিয়া ঘর হইতে বাহির হইয়া গেল।

দেবকী ত্রীর কাছে একটা ভারি চৌকি টানিরা লইরা বসিরা বিজ্ঞাসা করিল, "কেন ডেকেছ ?"

নিভাননী কছালসার দেহ তুলিরা সোজা হইরা বসিল। প্রেকার অপরপ রপের আর চিহ্নাত্তও অবশিষ্ট নাই, গুণু চোধ হটি আগের মত আরে, তাও কোটরগত। সে বিশিল, "দেখ, ঠাকুর বি ও বাবা—স্বাই চান তোমার আর একবার বিরে দিতে, ভূমি তাই কর।"

দেবকীনন্দন একটু খেন বিরক্ত হইয়া বলিল, "দিন-ছুপুরে ডেকে নিয়ে এলে, এই বলবার জ্বস্তে ? এ ত পরেও বলা চলত ?"

নিভাননী বলিল, "আগে বললেও ক্ষতি নেই। ঘরে তোমার এক দণ্ডও মন বলেনা। তোমার আমি দোষ দিছিল।। আমার দিকে একবার তাকালে বে আর ফিরে তাকাতে কারও ইচ্ছে করেনা তা আমি ব্রি। কিন্তু আমার খর ছেড়েছ বলে, সংসার ছেড়ে দেবে নাকি? আমি ক'দিন আর? কিন্তু তোমার মেরে রয়েছে, বংশের প্রতি কর্ত্তব্য রয়েছে, সব ভাবনা ভূলে পাণ্মারার মত বনে বনে জন্তু মেরে খুরলেই ত চলবেনা? ও সব ছাড়, দেপে-ভনে মনের মত বউ নিয়ে এস, এসে আবার সংসার-ধর্ম কর। বয়স বাড়ছে বইত কমছেনা?"

দেবকী বলিল, "হঠাৎ এত মন্ত বক্তৃতা দেবার কি কারণ ঘটল ? আমি নৃতন বউরের জন্তে ভয়ানক বাস্ত হয়ে উঠেছি, তাই বা কে তোমায় বললে ?"

নিভাননী এতগুলি কথা বলিয়া হাফাইয়া উঠিয়াছিল।
সে আবার বালিশে ঠেস দিয়া এলাইয়া পড়িয়া বলিতে
লাগিল, "বউয়ের জল্পে বাস্ত হ'লে কিছু অস্তায় হ'ত না।
যে বয়সের যা ধর্ম। তাতে কেউ রাগ করে না। কিছু এই
যে চলেছ কোথাকার রাক্ষ্সে বাব মারতে, এটা ভাল হচ্ছে ?
বংশের একমাত্র ভরসা ত তুমি ?"

দেবকীনন্দন বলিল, "আছ ত শুরে পড়ে; এত কথা তোমার কানে তোলে কে? বাব মারতে লোষ নেই, না মারলেই লোষ। এত লোকের প্রাণ যাচেছ, তারা আমাদেরই প্রজা ড? তাদের রক্ষা করবার চেষ্টা করব না ?"

দিভাননী বশিশ, "তুমি ছাড়া আর লোক নেই? নিজের জীবনটার দাম তুমি বোঝো না।"

দেবকী বলিণ, "ও হ'ল মেরেমাস্থের কথা, পুরুষ বাচ্ছার এরকম ভাবতে পারে না। জীবনের মূল্য আছে ব'লে কি থাটের তলার লুকিরে থাকতে হবে? জমন জীবনে ধিক্।"

নিভাননী একেবারে ভইরা পড়িরা অক্টকর্চে বলিল,

"আমার কথার কাজ হবে না, এ আমি জানতামই। কবে বা আমার কথা রেখেছ বে আজ রাখবে?"

দেবকীনন্দন উঠিয়া পড়িয়া বলিল, "অসম্ভব কথা হ'লে কি ক'রে রাখব, নিভা? রাজবল্লভ রায়ের ছেলেকে ভূমি কনেবৌরের মত ঘরে লুকিয়ে থাকতে বল, বাঘের ভয়ে। একথা কি রাথবার মত?" বলিয়া জোরে জোরে পা ফেলিয়া সে বাহির হইয়া গেল।

মাঝের তিনটা দিন দেখিতে দেখিতে কাট্রা গেল।
চতুর্থ দিনে হাতী, ঘোড়া, শিকারীর দল সাজাইয়া লইয়া
দেবকীনন্দন যাত্রা করিয়া গেল। যাইবার আগে সকলের
সঙ্গে দেখা করিল, বাদ গেল ওয় নিভাননী। চক্রাননাকে
বলিয়া গেল, "বাঘের ছাল তুই ঠিক পাবি বেটি!"

তথনকার দিনে রেলগাড়ী ছিল না, স্থতরাং দ্রদেশ হইতে নিত্য থবর দেওয়া-নেওয়া চলিত না। মানুষ পায়ে হাটিয়া যাইত আসিত, তাহাতেই যুগন হয় থবর মিলিত!

দেবকীনন্দনেরও প্রথম থবর আদিল পাঁচ ছয় দিন পরে। প্রামের সীমানা ছাড়াইয়া সে এবার বনের ভিতর প্রবেশের আল্লোজন করিতেছে। বে কয় দিন সে প্রামে ছিল, তাহার ভিতর সেই নরধাদক আর ওদিকে আসে নাই, ভয়েই যেন দুরে সরিয়া ছিল।

আবার কিছুদিন চুপচাপ গেল। তাহার পর এক দিন মকন্দাৎ অলনিপাতের মত নিদ!রূপ সংবাদ সমস্ত রাজবাটীকে স্তম্ভিত করিরা দিল। দেবকীনন্দন সেই ভীষণ ঝাছের দারা নিহত হইরাছে। শিকারীরা উদ্ধারার্থে ছুটিরা আসিতে-না-আসিতেই ব্যাদ্র নিজের হিংসাবৃত্তি চরিতার্থ করিরা গহন বনে অদৃশ্র হইরা গিরাছে। মৃতদেহ দাহ না করিরা গো-শকটে লইরা আসা হইতেছে।

বিকাল পড়িতে-না-পড়িতে শিকারীর দল নিহত জিদিবার-পুত্রের দেহ লইয়া আসিরা পৌছিল। বিভূত জদনে ভাহাকে স্থান করাইরা মাল্যচন্দনে ভূবিত করিয়া শোরান হইল। রাজ্যবরত আসিরা মৃত পুত্রের পাশে দাঁড়াইলেন। চন্তাননা আসিরা ভাহার হাত ধরিরা দাঁড়াইল, এতক্ষণ সে কাঁদিতেছিল, পিভানহের ভীষণ কর্টি-মুটল সুখের দিকে চাইরা ভাহার কারাও বর্ম হইয়া সেল। অঞ্চাপুর হইতে গাকিরা থাকিরা ভার

বোগমারার করুণ আর্জনাদ শুনা বাইতে লাগিল।
রাজবল্লভ বজ্ঞনির্বোধের মত শ্বরে বলিলেন, "ভোমরা শুনে
রাখ, আমি মা ভবানীর নামে শুপথ করছি। বে ঐ বাঘকে
মেরে আন্বে, আমার শুজাতি হ'লে আমার একমাত্র পৌত্রী
চক্রাননাকে সে লাভ করবে। যদি শুজাতি না হয়,
আমার সমস্ত জমিদারী তার। একবত্তে আমরা বাড়ি
থেকে বেরিরে বারাণসী চলে যাব। যাও, গ্রামে গ্রামে,
নগরে নগরে এ সংবাদ প্রচার ক'রে দাও।"

লোকজন ধীরে ধীরে সরিয়া ধাইতে আরম্ভ করিল।
এখন দাহের আয়োজন করিতে হইবে, আয়ীয়ম্মজনের।
অগ্রসর হাইয়া আসিল।

হঠাৎ অন্তঃপুরের ক্রম্মনধানি উচ্চতর হইয়া উঠিল।
সকলে চকিত হইয়া চাহিয়া দেখিল, রক্তাম্বরা রত্মালয়ারবিভূষিতা কয়ালের মত কে এক জন হাসিমুধে অপ্রসর হইয়া
আসিতেছে। কাছে আসিয়া শশুরের পারে প্রণাম করিয়া
নিভাননী বলিল, "বাবা, আশীর্কাদ কয়ন, পরের জয়ে
বেন স্বামীকে রেগে বেতে পারি।"

রাজ্বল্লভ অবিচলিত কঠে বলিলেন, "বাও মা, দতীলোক তোমার অক্ষয় হোক।" চন্দ্রাননা চীৎকার করিয়া কাঁদিয়া উঠিল। যোগমায়া ও দাসীরা তাহাকে টানিয়া লইয়া ভিতরে চলিয়া গেল।

দেবকীনন্দনের অপথাতমূত্য, নিভাননীর সহমরণ ও রাজবল্লভের শপথের কথা দেশের সর্ব্ব দেখিতে দেখিতে ছড়াইরা পড়িল। ত্রিনেত্র ব্যাঘ্রকে বধ করিবার চেষ্টার দেশসুদ্ধ শিকারীর আহার-নিজা ঘূচিয়া গেল, কিন্তু সেটার আর কোণাও খোঁজ মিলিল না। দেশের অধীখরের প্রিয়তম প্রের প্রাণ হরণ করিরা তাহার হিংসার্ভি কিছু-কালের মত বোধ হয় চরিভার্থ হইরা গিরাছিল, ভাই লোকালয়ে তথন আর সে মুখ দেখাইল না।

রাজবল্লভের বাড়িতে বেল চিররাত্রি বাসা বাঁধিল।

দূর হুইতে দেখিলে কাহারও বোধ হুইত লা বে এই বিরাট

পাষাণস্ত পের ভিতর জীবিত মহুষ্য কোথাও কেহ আছে।

চাকরদাসীরাও বেল হাটিতে চলিতে নিংখাস্টুক লইতেও

ভর পার। রাজবল্লভের দিন কাটিরা যার ভ্যানীর মন্দিরেই,

ক্ষল-বা রাত্রেও সেইখানেই খান্ছ ইইনী বসিরা

থাকেন। বিধবা যোগমায়া একলা একবরে অঞ্পাত করে। আর মেবের কোলে সৌদামিনীর মত এই অক্কার পুরীতে ধেলিয়া বেড়ার বিহুৎরূপিণী চন্দ্রাননা।

দেখিতে দেখিতে বৎসর কাটিয়া গেল। এ বৎসর আবার ভিন্ন ভিন্ন প্রাম হইতে ব্যাহের উৎপাতের কাহিনী শুনা বাইতে লাগিল। কিন্তু ইহা সেই ব্যাহ্র কিনা ভাহা কেহু বলিতে পারিল না।

সমরের প্রভাবে রাজবলতের ফারের বিধাক্ত কতের আলা একটু থেন জুড়াইরা আসিরাছিল। তিনি এক দিন হাসিরা পৌত্রীকে কোলের কাছে টানিরা লইরা বলিলেন, "দিদি, দেশে ত পুরুষমানুষ আছে ব'লে মনে হচ্ছে না। আমাকেই না শেষে বাধ মেরে তোকে বি:র করতে হয়।"

"ধেৎ, তোমার মত টাক-পড়া বুড়োকে আমি বিয়ে করলাম আর কি ?" বলিরা চক্রাননা তাঁহাকে ঠেলিরা দিয়া চলিরা গেল।

বড়মান্থবের কণা পড়িতে পায় না। রাজবল্লভের এই শ্রেবটুকুও লোকের মু: প মু: প দেশের সর্ব্য ছড়াইরা পড়িল। যুব কর দশ ক্দ হইয়া চক্ষ রক্তবর্ণ করিল বটে, কিল্ক ব্যাঘ্র-শ্রেবর তখনও নির্ভরে বিচরণই করিতে লাগিলেন। কি কারণে জানি না তাহ'র প্রামে চুকিয়া উৎপাত করার কণা অ'র শোনা ঘাইত না, যেন কিছু সাবধানী হইয়া পড়িয়াছিল। তবে গরু চরাইতে গিয়া বা কাঠ কাটিতে গিয়া হনেক হতভাগ্যই এখনও বে এই ম্র্জিমান ব্যের সাক্ষ'ৎ পাইতেছে, তাহার ভয়'বহ কাহিনী প্রায়ই শুনা যাইত।

এ বংসরটাও কাটিয়া গেল। চন্দ্রাননার বর্স তের ছাড়াইয়া চলিল। অ'সর্যোবনা কিলোরীর অ'ল অলে বেন সৌন্দর্য্যের বান ডাকিয়া বাইতেছিল, ভাছার শিকে ত'কাইলে মাজুযের চোধ ধাঁধিয়া বাইত।

চতুর্থ বৎসরের 'শরৎকাল আসিরা পড়িল। রাজ-বরজের শরীরে ভাঙন ধরিরাছিল। এক দিন অন্তঃপুরে আসিরা তিনি কলা ও পৌত্তীকে বলিলেন, "এবার কালী-পৃত্তার এক-শ মহিন বলি দিতে হবে। মা যদি দরা ক'রে এ-বেশের ভেড়ার পালে একটু লোখ্য দেন। নইলে ভ আশা কিছু দেখছি না।"

বাজবলভের মানসিক ইন্টা দেবী মহাশক্তি বোধ হয়

শুনিতে পাইলেন। এক শত মহিব বলি হইবার আগেই বোধ হইল ভেড়ার পালের ভিতর হই একটা বাবের বাচছাও আছে। থবর পাওয়া গেল ঝাঁকুড়িয়ার ভবানীপ্রসাদ চৌধুরী এবং কুমারপুরের নরনারায়ণ শুহ প্রতিষ্ঠা করিয়াছেন যে মাস ঘুরিতে-না-ঘুরিতে তিন-চোধো বাঘের বাাম্লীলা তাঁহারা ঘুচাইয়া দিবেন।

শুনিরা রাজবলত হাসিগা পৌজীকে বলিলেন, "দিদি, ভূই বে একেবারে পৌরাণিক রাজকন্তাদের দলে ভর্তি হরে গোলি। অয়ম্বর-সভার কার গলায় মালা দিস দেখা যাবে।" চক্রাননা কম্ কাম্ করিয়া নুপুর বাজাইয়া ছুটিয়া পলাইল।

কালীপূজা আসিল, মহা ধুমধামে সম্পন্নপ্ত হইয়া গেল।
দেশ-দেশান্তর হইতে লোক আসিল বলি ও ভাসান দেখিতে।
সকলেরই মনে একটা অস্পন্ত সন্দেহ যে এই রাজবল্লভের শেষ পূজা, বংশে আর কেহ রহিল না যে তাঁহার কীর্ত্তি বজার রাধিলা চলিতে পারিবে।

ভাসানের পরদিন সকালে রাজবল্লভ ভবানীর মন্দির হুইতে ফিরিতেছেন, এমন সময় ছুই জন পাইক ছুটিয়া আসিরা ধবর দিল ধে ব্যান্ত্র মারা পড়িয়াছে। গোগানে ভাহাকে লইয়া আসা হুইতেছে, সঙ্গে আসিতেছে শিকারীর দল এবং সাত গ্রামের লোক।

রাজবন্নত দাঁড়াইয়া পড়িলেন। বিশাল বক্ষ ডেদ করিয়া তাঁহার একটু উফ দীর্ঘনিখাস বাহির হইয়া আসিল। সেই এক অশুভ দিনের কথা তাঁহার শ্বতিপথে উদিত হইল, বখন এমনি করিয়া দেবকীনন্দনকে তাঁহার গৃহে শিকারীর দল বহন করিয়া আনিয়াছিল। আজ আসিতেছে সেই প্রহস্তাকে লইয়া, ইহাকেও সমৃচিত ভাবে অভ্যর্থনা করা উচিত। তাহা ছাড়া একদিক দিয়া দেখিতে গেলে আজ চন্দ্রাননার শ্বর্থর, আল তাঁহার অতি আনন্দের দিন।

পাইকদিগকে দেওয়ানের সন্ধানে পাঠাইরা দিরা তিনি ধীরে ধীরে অগ্রসর হইরা চলিলেন। অস্তঃপুরে ধবর পাইরা সকলে হুলম্বল বাধাইরা দিল। এত দিনের গতীর শোকের আঁধার খেন এক নিমেধে কাটিরা গেল। বোগমারা চক্রাননাকে জোর করিরা ধরিরা আনিরা রক্তালভারে বহুমূল্য বংল্ল সাজাইতে লাগিলেন। অস্তঃপুর-বাসিনীর দল, প্রতিবেশিমীর দল সার দিরা দাঁড়াইরা গেল মৃত্ত নরখাদককে দেখিবার জন্ত। বিত্তীর্ণ অঞ্চন,

জমিদার-বাড়ির দাস-দাসীরা পরিষার করিরা ফেলিল। চারিধারে জনতা ভীড় করিরা দাঁড়াইল, মাঝের জারগাটা থালি রহিল শিকারীর দলের জন্ত।

শিকারীর দলকে দূর হইতে দেখিবামাত্র জনতা চঞ্চল হইরা উঠিল। অনেকে তাহাদের আগ বাড়াইরা আনিবার জন্ত ছুটিরা চলিল, অনেকে নিজ স্থানে দাঁড়াইরাই উৎস্ক-নেত্রে আগস্তুকদিগের দিকে চাহিয়া রহিল।

বন্তাম্রোতের মত মামুযের শ্রোত আঙ্গিনার ভিতর
হুড়হুড় করিয়া চুকিয়া পড়িল। গন্ধর গাড়ী বটে, তবে
গন্ধ তাহাতে নাই, গ্রামের লোকেই মহোৎসাহে তাহা
টানিয়া আনিতেছে। গাড়ীর উপর বিপুলাকার ব্যাত্মের দেহ,
মস্তকটা তাহার দেহ হইতে প্রায় বিচ্ছিয় হইয়া গিয়াছে।

এত বড় বাণ তথনকার দিনের মান্ত্যও দেখে নাই, বিদিও বাথের স'লে দেখা-শুনা তাহাদের হুই বেলা হুইত বলা যায়। মৃত পশুর কপালের তৃতীয় নেত্র দেগিবার জন্ত পিছনের লোক ঠেলাঠেলি করিতে লাগিল।

অঙ্গনের মাথখানে গাড়িটা আসিয়া দাঁড়াইল। তাহার ত্ই পাশে গুই ব্যক্তি ভীড়ের ভিতর হইতে আলাদা হইয়া আসিয়া দাঁড়াইলেন। ব্যাদ্রের বাম দিকে যিনি তিনি ধর্মান্তি, অতি বলিন্ঠ দেহ, কঁঃধ অবধি বাবরী চুল, হাতে বর্ষা, তাহার অগ্রভাগ রক্তরভিত। ইনি কুমারপুরের নরনারায়ণ শুহ। দক্ষিণ পাশে দাঁড়াইয়া ঝাঁকুড়িয়ার ভবানীপ্রসাদ চৌধুরী। ইনি নরনারায়ণ অপেক্ষা অল্লবন্ধ, শরীর দীর্ঘ একহারা, বর্ণ উক্তল শ্রাম। মুখন্ত্রী অতি ক্ষেক্র, শরীরের নানাস্থান ক্ষতবিক্ষত, রক্তাক্ত।

রাজবল্লভ অগ্রসর হইরা আসিলেন। একদৃটে মৃত প্রহন্তার দিকে কিছুক্ষণ চাহিরা রহিলেন। তাহারপর শিকারীদ্বরের দিকে চাহিরা বলিলেন, "মা ভবানী তোমাদের কল্যাণ করুন, বাংলার প্রস্থাবের ভোমরা মান রক্ষা করেছ। কিন্তু ব্যান্ত্র বধ করেছে কে আমার জানা আবগুক। আমার পৌরীকে ভার হাভে সম্প্রদান করতে চাই।"

অন্তঃপুরবাসিনীদের দল ভেদ করিয়া যোগমায়া বাহির হইয়া আসিলেন, চক্রাননার হাত ধরিয়া। তাহার রূপ-জ্যোতিতে সমস্ত দিক যেন আলো হইয়া উঠিল। নরনারায়ণ ও ভ্রানীপ্রসাদ একবার তাহার দিকে চাহিয়া দেখিলেন, তাহার পর চকু ফিরাইয়া লইলেন।

ভবানী প্রসাদ বলিলেন, "বাঘ আমরা ছু-জনে বধ করেছি, নরনারায়ণ সাহায্য না করলে হয়ত একলা আমার হারা একাজ সম্ভব হ'ত না। তবে আমরা আপনার বিচার মেনে নিতে রাজী আছি।"

রাজবল্পত মহা ফাঁকরে পড়িনেন। উভরেই ভাঁহার বজাতি, ভাহাকে রাধিয়া কাহার হতে ভিনি পৌত্রী সমর্শন করিকে। কুলগুরু পশুপতি শর্মার দিকে চাহিয়া বলিলেন, "গুরুদেব, কি উপায় করা যায় ?"

পশুপতি হাসিয়া :বলিলেন, "নাতনীকে নিজে নির্মাচন করতে বলুন। ব্যাপারটা ঠিক পোরাণিক যুগের মত, ব্যবস্থাও সেই রকম হোক।"

রাজবল্লভ নাতনীর দিকে চাহিরা দেখিলেন। সে একেবারে মাটির সঙ্গে মিশিরা যাইবার উপক্রম করিতেছে, তাহার ঘারা এ-কাজ হইবে বলিয়া ত বোধ হয় না।

রাজবরত বলিলেন, "শুক্লেব, পৌরাণিক সীতা, সাবিত্রী দমরতীর মত দৃদ্ মন এখন কোন মেরের পাবেন ? চন্দ্রাননা অরথরা হ'তে পারবে না। অন্ত উপায় দেখুন, যাতে আমি সভ্যত্রষ্ট না হই, সকলেই যেন উপযুক্ত পুরস্কার পার।"

পশুপতি শর্মা নীরবে কিছুক্ষণ চিন্তা করিলেন। ভাহার পর বলিলেন, "ঘাপর বৃগে কৃষ্ণমহিনী সভ্যভামা একবার ব্রত ক'রে স্বামী দান করেছিলেন। দেবর্ধি নারদ ক্ষুফ্রকে নিয়ে চলে যাবার উপক্রম করাতে, শুক্রফের সকল মহিন্তা অতি কাতরভাবে রোদন করতে থাকেন। ভা ত শেবে দেবর্ধি শুক্রফের ওজনের স্বর্ণ পোলে তাঁকে মুক্তি দিতে স্বীক্রত হন। আপনিও তাই কক্ষন। তুই জনকে ক্যাদান অসম্ভব। ক্যার স্বর্ণমন্ত্রী মুর্ত্তি এক জনকে দান কক্ষন, আর এক জনকে ক্যাদান কক্ষন। এ ব্যবহা শারসক্ষত।"

রাজবন্নভ বলিলেন, "তাই হোক। কিন্তু কন্তা বিনি গ্রহণ করবেন তিনি তাতেই যেন সন্তুট হন। স্বর্ণমন্ত্রী মুর্তি প্রস্তুত করতে আমার প্রায় বধাসর্বস্থ বিক্রীত হয়ে বাবে।" বলিয়া তিনি শিকারীছয়ের দিকে চাহিলেন।

ভবানীপ্রসাদ অগ্রসর হইয়া আসিয়া রাজবন্নভকে প্রণাম করিয়া বলিলেন, "আপনার পৌত্রীকে পেলেই আমি নিজেকে ধন্ত মনে করব।"

নরনারায়ণ হাসিয়া বলিলেন, "বয়স অল্প ভায়া ভোমার।"

শ্বর্ণমনী মুর্জি ও চন্দ্রাননার সম্প্রাদান প্রার একই দিনে হইরা গেল। উদ্বৃত্ত সামান্ত সম্প্রিজ দেবোত্তর করিরা, ভবানী-পূজার ব্যবস্থা করিরা, পৌত্রীর বিবাহান্তে রাজবলত রার দেশত্যাগ করিশেন। যোগমারাও গেলেন তাঁর সঙ্গে। কাশীতেই তাঁহাদের দেহান্ত হর।

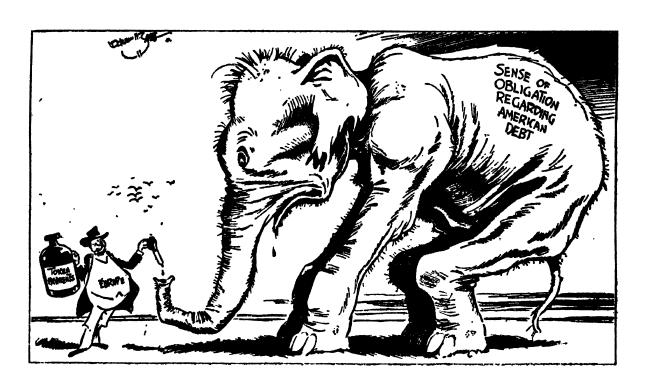
ভবানীপ্রসাদের বংশ এখনও টিকিয়া আছে।
নরনারারণের বংশ কিছুদিন পরে লুপ্ত হইরা ধার।
ভামিদারী অভ্যের হস্তগত হয়, কিন্তু বিখ্যাত অর্থমারী
ম্রিটিকে আর দেখা গেল না। নরনারারণ মৃত্যুকালে
কোখার বে সেটি লুকাইয়াছিলেন, ভাহাও কেহ ভানিতে
পারিল না।

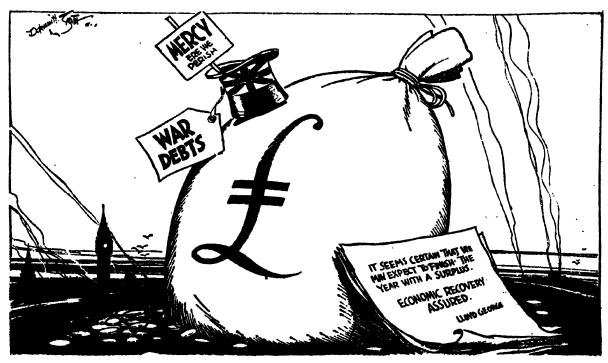
ব্যঙ্গ-চিত্ৰ

আমেরিকার সংবাদপত্র হইতে সঙ্কলিত)



- >। ইউরোপের একটি রাট্ট আমেরিকার যুক্তরাজ্যের নিকট বণী, জার্মানী আবার এই রাষ্ট্রের নিকট টাকা ধারে। রাষ্ট্রটি যুক্তরাজ্যকে ৰলিডেছে বে, তাহার ধার শোধ করিতে পারিবে ন!। অবচ ইহা জাগানীর নিকট হইতে প্রাপ্য টাকা আদার করিবার জন্ত নানা উপার অবলম্বন কম্বিতে বাজ। এই রাইের ব্যাক্তলিতে জার্নানীর বত টাকা গচ্ছিত আছে তাহা বাজেয়াও কছিবার জন্ত ব্যবহা-পরিবদে একটি আইন পাস ক্ষাইয়া লইয়াছে! এক কিন্ল্যাও ছাড়া रेफेरबारभव जाव गरन वर्ग बार्डेबरे अरेबर बादरात ! अरे किवयानि **रहेए** इंशान मई वृक्षा नाहे(वें।
- আমেরিকার যুক্তরাজ্যের নিকট হইতে বিশুর ৰণগ্রহণ করিয়াছিল। তথন ইহারা যুক্তরাজ্যের কতই না খোশামোদ করিরাছে; কুতজ্ঞতাপ্রকাশেও ख्यन देशातः शक्त्यूथ हिल। किन्नु এখন हेशात शतिवर्तन चित्रारह। এখন অল অল অৰ্থ দিয়া বুঝাইতে চাহিতেছে, বে, ধণশোধের চেষ্টা হইতেছে, আৰু ইহাৰাই ব্যাহে ৰণসভাৰ ৰাডাইবাৰ বস্ত বিভৱ অৰ্থনাৰ কৰিতেছে। চিত্ৰখানিতে ইহাই প্ৰথাকাপ।
- रेलाक्त नात्र वर्ष शकुष्ट बांडेमी विविधायम्बन अरे विवधा পর্ম অমুভব করিতেছেন বে, সেধানকার আর্থিক অনুস্থা বিন বিন ভাগ ररेट्डार । अपन तारे कार्यप्रये अस्मान अखिनियि आवारिकांत विशे ২। বুৰের সমরে ও বুৰের প্রকৃত্রিকালে ইউরোপের বিভিন্ন রাষ্ট্র - বুক্তরাজ্যের সম্বাধারক পণ মতুর ক্রিবার জন্ত অসুয়োগ করিতেইক্ট





দেশ-বিদেশের কথা

বাংলা

নারী-শিকা সমিতি---

নাম্বী-শিক্ষা সমিতির মহিলা শির-প্রদর্শনীয় সংখ্য বার্ষিক অধিবেশন উপলক্ষো সমিতির সম্পাদিকা মাননীয়া প্রীযুক্তা লেডী অবলা বহু মহোদরা বলেন, --

আজ এই পৃথিবীব্যাপী অর্থকুছে তার দিনে, বাজিপভভাবে কুদ্র প্রতিষ্ঠানের ভিতর দিরা দেশে দেশে গৃহশিরের প্র:-প্রবর্ত্তনের যে মহতী প্রচেষ্টা চলিতেছে, আমাদের এই অকিস্থিৎকর আরোজন তাহারই ক্ষীণ আভাস মাত্র। হথের বিবর, দেশের হিতাকাঞ্চী জননায়কগণ বুকিতে পারিতেছেন, ইহা কেবলমাত্র ধনীয় কল্পনা-বিলাস নহে ; যদি বছলিয় ও কলকারধানার যুগে ব্যাপকভাবে গৃহে গৃহে কুটার-শিরের প্রচার সহজ্ঞতর ভাবে সাধিত হয় তাহা হইলে ইহা কেবলমাত্র এই অনুহীন, জীহীন দেশে আর্থিক কষ্ট মোচনে সহায়তা করিবে না. ইহা আমাদের ব্যক্তিগত স্বাধীনতা, গ্রের শুচিতা, দেহের সৌন্দর্য্য এবং পারিবারিক জীবনের হুখ ও শাস্ত্রি অনেক পরিমাণে किताहेबा जानिए प्रपर्व इटेर्स। यूर्यन विवन्न, जाल এই जठीव প্রব্যেক্তনীয় কার্ব্যের পৌরোহিত্য করিতে এমন এক জন মনীবীকে আমরা পাইরাছি বিনি কেবলমার এই কলিকাতা মহানগরের মহানাগরিক হিসাবে নর, প্রতিভাশালী অর্থনীতিবেতা হিসাবে, নানা-প্রকার সংপরামর্শ প্রদান করিয়া আমাদিপের এই কার্য্যে বিশেষভাবে উৎসাহ দিতে পারিবেন।

বাণী-ভবনের সংশ্লিষ্ট মহিলা শিশ্বভবনের উদ্যোগে প্রতি বৎসর এই প্রদর্শনী অম্বর্টিত হইতেছে, মহিলা শিল্পভবন একটি অবৈতনিক শিল্প-বিদ্যালয়। এ-পর্যান্ত প্রান্ন ১৫০টি মেল্লে এই প্রতিষ্ঠান হইতে শিক্ষালাভ করিয়া নানারূপ শিল্পকার্ব্যে পারদর্শী হইরা স্বাধীনভাবে জীৰিকা অৰ্জন করিতেছেন এবং অনেকে এখান হইতে শিক্ষা প্রাপ্ত **২ইর' মাসিক ৫**০ টাকা পর্যান্ত আয় করিতে সমর্থ হইয়াছেন। এ-পর্যান্ত এই ভৰনের শিকার্থিনীদের প্রস্তুত নানা প্রকার শিল্পমন্তার প্রায় ১২০০১ টাফা দলো বিক্রীত হইরাছে। দেশের ছুরবস্থা এবং আমাদের অভাবের প্ররোজনীয়তার দিক হইতে এই পরিষাপ হয়ত সামাম্ব হইতে পারে, কিন্ত আমাদের চেষ্টা ও আন্তরিকতার দিক ২ইতে ইহা কিছুমাত্র অগোরবের নহে। আজ এই উৎসবক্ষেত্রে 🗸 প্রতিভা সেনগুলার কৰা স্মৰণ কৰিতেছি। বাণী-ভৰনের আরম্ভ হইতে তিনি ইহার সহিত সংশ্লিষ্ট ছিলেন এবং সর্বনাই ইহার উন্নতির জন্ত পরিশ্রম করিরাছেন। তিনি মার কিছুদিন হইল আমানের ছাড়িরা চলিরা গিরাছেন, আজ এই প্রদর্শনীকেত্রে দেই স্বর্গগত মহিলার স্লেহমর স্থা, প্রতিভা-বাঞ্জক দীব্যি ক্ষণে ক্ষণে আমাদের স্মরণপথে উদিত হইতেছে।

কুটার-শিল প্রবর্তনের চেষ্টা কেবলমান মহিলা শিল্পভবনের ও বাণী-ভবনের কতিপর সহল শিকার্থিনীর মধ্যেই আবদ্ধ নহে; বাংাতে মদূর পানীপ্রামে পর্যন্ত গৃহ শিল্পের পুন:গ্রুতিটা হইতে পারে তাহার করুও সমিতি বথাসাথা চেষ্টা করিতেছে। কিন্তু সকল সকলভার মূলে বেমন প্রস্থা, আত্তরিক্তা, কর্মশৃহা ও উৎসাহের প্রয়োজন, তেমনি ব্যাপকভাবে সকলভা লাভ করিতে হইলে দেশের শিক্ষিত ও অর্থশালা ব্যাক্ষিরণের ওক্ত ইচছা ও অর্থসাহাবের প্রয়োজন। এই ভাগ্যহীন দেশে মধ্যবিদ্ধ হিন্দুসনাজের বিধুবাদের অবহা বে কত্যুর ছুঃখনর ভাহা আক্র আনানিসকে বিশ্ব পর্যায় বলিতে চাহি মা। ভাহাদের

জীৰন বাহাতে হণ্টুভাৰে নিরন্ত্রিত হইরা দেখের ও দখের মঞ্চলময় কার্যো লাগিতে পারে, এই মহৎ উদ্দেশ্যে অনুপ্রাণিত হইরা দশ ৰৎসর পূর্বেল ছুইটি মাত্র বিধবা লাইয়া বাণী-ভবনের ভিন্তি স্থাপনা হয় দশ বংসর অতাত হইরা গিয়াছে, আজ সেই শুভদিন আগত. আপনাদের ওভেচ্ছার এবং সমবেত চেষ্টার এই সমিতি মাধা ও জিবার মত একটি গৃহ পাইয়াছে। এই আশ্রমে কিঞ্চিদধিক ৬০টি বিধৰা বিনা ব্যয়ে শিকালাভ করিয়া শিক্ষয়িত্রী হইয়া পরীগ্রামে পরীগ্রামে সমিতিকে স্ত্ৰীশিক্ষা-বিস্তাবে সহায়তা করিতেছে, নারীশিকা সমিতি বালিকাদিগের জন্ত ৫০টি প্রাথমিক বিদ্যালয় স্থাপন করিয়াছে এবং ইহাদিগকে নিরমিত ভাবে অর্থসাহায্য করিয়া আসিতেছে। এপর্যান্ত এই সমস্ত বিদ্যালয় ২ইতে প্রায় ৫৫০০ ছাত্রী শিক্ষালাভ করিয়াছে। তের বৎসর হইল নারীজাতিকে দেশের কল্যাণকারিণী হইবার উপযে!গী শিক্ষার শিক্ষিত করিবার উদ্দেশ্যে এই নার্নাশিক্ষা-সমিতির প্রতিষ্ঠা হ**ই**রাছে। আমাদের এই পরিকল্পিড আদর্শের পথে আমরা কতনুর অবসর ২ইরাছি তাহ। আমরা জানি না—তাহার বিচারভার আপনাদের হতে। তবে এইটুকু মাত্র বলিতে পারি আমাদের এই ক্ষুদ্র প্রচেষ্ট্রা সমাজ-জীবনের জড়বেহে এক অভূতপূর্ব্ব সাড়া আনিয়াছে। আঞ আমরা গণগন্ত, আমাদের ভবিষাৎ কর্মপন্ততি আজ অর্থা-ভাবে নিশ্চল, প্রারম্ব কাবাস্থটা আজ উপেক্ষিত: তের বৎসর পূর্বে যে ক্ষীণ দাপদিখা লইয়া পরিক্ষিত পথে অগ্রসর হইয়াছিল।ম. বন্ধুগণ, আপনাদের সমবেত চেষ্টা এবং শুভেচ্ছা সেই ক্ষীণ দ।পশিখাকে স্থির ও উচ্ছলতর করিয়া তুলুক—যাহার দীখ্যি গ্রাম হইতে গ্রামান্তরে পরিবাাপ্ত হইরা এই তম্সাচ্ছর দেশকে আলোকিড করিয়া তুলুক— ইহাই একমাত্র প্রার্থনা।

খদেশী ঔষধের কারখানা---

এক জন মনাবী বিশিল্পাছেন—'আমুবেদ অনাদি'। ভালতবর্ষে আয়ুর্বেদ-চর্চার সঙ্গে সঙ্গে উবধ-প্রস্তুতির আল্লোজনও যথেষ্ট ছিল। প্রতীচাল চিকিৎসা-বিদ্ধা 'এলোপাথি' নামে ব্যাত; আয়ুর্বেদের প্রার ইবার উবধও গাছ-গাছড়ার নির্ব্যাস হইতে প্রস্তুত হয়। ভালতের জলবার্র উপবোগী করিলা ভালতার গাছ-গাছড়ার নির্ব্যাস হইতে উবধ প্রস্তুত করা একান্ত প্রেরাজন। ইহা সন্তব হইলে বল্প মূলো রোগ-প্রতিবেধক নানা ওবধ পাওলা বাইতে পারে। দরিজ্জন-অধ্যুবিত দেশে ইহার প্রয়োজনীয়তা আরও অধিক।

বাংলা দেশের সৌভাগ্য বে, কিছুকাল যাবং এইরূপ অদেশী উবধ প্রস্তুত হওরার দেশবাসীর অদেশ কল্যাণ সাধিত হইতেছে। বেলল কেমিকেল, ঢাকা শক্তি উবধালর, কলিকাতা রিসাচ ইন্টটিউট প্রভূতি ক্ষতকন্তনি কার্যধানা এইরূপ উবধ প্রস্তুত ক্ষিরা আসিভেছেন। সম্প্রতি 'ট্টাণ্ডার্ড কার্যাসিউটিক)লে ওরার্কস' নামে এইরূপ একটি কার্যধান। হাপিত হইরাছে। রোগপ্রতিবেশক বলেশী উবধ বতই প্রস্তুত হইবে ভতই মল্লন।

এলাহাবাদে শোকসভা---

গত,৮ই সেপ্টেম্বর পূর্ণিনা-সম্মিলনীর পক্ষ হইতে এলাহারাকে কবি
অতুলঞাদ সেন মহাশরের পরলোকগমনে একটি লোকসভা হইরা
গিরাছে। প্রার দেড় শত হানীর প্রবাসী বাঙালী মহিলা সভার
বোগদান করেন। কবি অতুলঞ্জানের জীবনী ও ক্ষিডারি সম্বদ্ধে
সভার বস্তুভা হইরাহিল।



ডিক্টেটর বা স্বৈর শাসক

ইংলওে ৭১ বৎসর ধরিয়া টেট্স্মাল্স্ ইয়ার্-বুক্
নামক একটি বার্ষিক নানাতথ্যপূর্ণ পুত্তক বাহির হইয়া
আসিতেছে। তাহার সহিত অবগ কলিকাতার ষ্টেট্স্মান্
কাগজের কোন সম্পর্ক নাই। বর্ত্তমান ১৯৩৪ সালে
যেখানি বাহির হইয়াছে, তাহার ভূমিকার সম্পাদক
বলিতেছেন:—

"A statesman surveying the world at the end of the first quarter of 1934 would be struck by the fact that an increasing number of countries is being ruled by Dictators, and that many countries have so changed their constitution as to grant enlarged powers to the executive."

তাৎপর্যা ! ''১৯০৪ সালের প্রথম তিন মাসের শেষে কোন রাট্রনীতিজ্ঞ পৃথিবী পরিবীক্ষণ করিলে এই তথাটি উচ্চার মনে মুদ্রিত হটবে, যে ক্রমশ: অধিকত্তরসংখ্যক দেশ বৈর শাসকদের দারা শাসিত হইতেছে এবং অনেক দেশ নিজ মূল রাট্রবিধি এরূপ ভাবে পরিবর্ত্তিত ক্রিয়াছে, যে, তাছার দারা কর্মনিক্রাহকদিগকে বিস্তৃতত্তর ক্ষমতা দেওয়া হইরাছে।"

ইহা সভ্য কথা। পৃথিবীর অনেক দেশের অবস্থা এইরূপ হওয়ায় একটা রব উঠিয়াছে, নে. গণতাথ্রিক শাসনপ্রণালীর পরীক্ষায় ব্রা ধাইতেছে, যে, উহা বার্থ এবং অকেন্দো। প্রকৃত কথা কিন্তু এই, যে, গণভান্ত্রিকভার পরীক্ষা ঠিক মত হয়ই নাই। ইহার ঠিক পরীক্ষা করিতে হইলে সর্বসাধারণের মধ্যে শিক্ষার বিস্তার হওয়া আবশুক। কেবল বর্ণপরিচয় বা লিখনপ্টনক্ষমতা এই শিক্ষা নয়। ত'হার সঙ্গে হিসাব করা বা রাখা বোগ করিয়া দিলে ষতটুকু শিকা হয়, ভাহাও ধথেষ্ট নছে। সর্বসাধারণের মধ্যে, বাহার বৃদ্ধিতে ও ক্রচিপ্রবৃত্তি অমুসারে যভটা শিক্ষালাভের সম্ভাবনা আছে, তাহার ভতটা শিক্ষা পাওরা প্রকার, এবং ভত্তির প্রভাকে প্রাপ্তবয়ন্ত মানুষের রাষ্ট্রীয় অধিকার ও রাষ্ট্রিক কর্ত্তব্য সম্বন্ধে জ্ঞানলাভ আবশ্রক। এইরূপ শিক্ষার পর যদি কোন দেশের লোক রাষ্ট্রীয় অধিকার সহত্বে সর্বাদা সচেতন ও রাষ্ট্রিক কর্ত্তব্য পালনে সতত অবহিত থাকে, তাহা হইলে সে দেশে গণতর ক্থনই

বার্থ হইবে না, সে দেশের লোকদের স্বাধীনতা বহিংশক্র বা অন্তঃশক্রর দারা বিলুপ্ত হইবে না :

মাকুষের বেমন প্রমণীণতা আছে, তেমনই আলত্তে কাল কাটাইবার ইচ্ছাও আছে। যথন রাষ্ট্রিক কর্ত্তব্যু সাধনে মাকুষ আলস্ত করে বা অসমর্থ হয়, তথন দেশের বাহির হইতে আগত বা দেশের মধ্যস্থ এরূপ লোকদের অভাব হয় না ধাহাদের ঘারা দেশের স্বাধীনতা লুপ্ত হয়। ইংরেজীতে যে একটি কথা আছে, "Eternal vigilance is the price of liberty," "সদাজাগ্রত অশেষ সতর্কতা স্বাধীনতার মূল্য," তাহা সর্বদা মনে রাখিতে হইবে। কয়েক বৎসর অন্তর প্রতিনিধি নির্বাচনের সময় একবার ভোট দিয়া, তাহার পর প্রতিনিধিরা কর্ত্তব্যু সাধন করিতেছেল কিনা, সে দিকে দৃষ্টি না রাখিলে, সামান্ত মিউনিসিপালিটির কাজ্বই ভাল করিয়া হয় না, রাষ্ট্রের কাজ্বত্য দ্বেরর কথ।

বে-সব ডিক্টেটর বা স্বৈর শাসকদের কথা হইতেছে ভাহাদের ও স্থৈর নুপজিদের মধ্যে একটি বিষয়ে প্রভেদ আছে। সৈর নৃপতিরা হয় উত্তরাধিকারস্ত্রে রালত্ব প্রাপ্ত हम् ଓ नि:कत थाजुष निरम्बत वः मधतमिगरक मिन्ना गरिए সিংহ'সন ও র'জত্ব দখল করিয়া চার, কিংবা श्वयुः বংশধরদিগকে ভাহা দিয়া যাইতে চায়। ডিক্টেটররা গোড়ায় দেশের লোকদের ভোটের জোরেই প্রভুত্ব অধিকার করে এবং ভাছার জোরে পরে দেশের লোকদের মংখ্য স্বাধীনচিত্ত বিক্লম্ব'দী লোকদের উপর অত্যাচার করে, কিন্তু নিজের প্রভূত্ব নিজ বংশে পুরুষাসূজ্জনে স্থায়ী করিবার চেষ্টা সাধারণতঃ ডিক্টেটররা করে না, করিলেও সেরপ (Dहे। माध'द्रगण: मक्न इट्वाद कथा नव। काहारकथ বৈর নুগতি থাকিতে বা হইতে দেওরা এবং কাহাকেও ডিক্লেটর হই.ত ও থাকিতে দেওয়া কোন দেশের লেংকদেরই উচিত নহে। কোন দেশে খৈর মৃপতি কিংবা খের শাসক থাকিলে তাহার ঘারা সে দেশের লোকদের আলস্ত, অসামর্থ্য ও অযোগ্যতা হুচিত হয়।

ভারতবর্ষে ডিক্টেটরত্ব

ভারতবর্ষ পরাধীন দেশ। ইংরেজ জাতি ইছার শাসনকর্ম। ইংরেজদের শাসন থাকিতে এ দেশে গণতদের প্রতিষ্ঠা দেমন হইতে পারে না, স্বৈর শাসকের প্রাফুর্ডাবও সেই রূপ ছইতে পারে না। তবে যদি ইংলণ্ডেই কেছ ডিক্লেটর হয়, তাহা হঠলে ভারতবর্ধের ডিক্লেটরও সে কিংবা তাহার অনুগত কোন লোক হইতে পারিবে। ইংলণ্ডে যে ডিক্টেটরের আবির্ভাব হইতে পারে না, এমন নয়। গত মহাবুদ্ধের সময়, নামে না হইলেও, কার্য্যতঃ িমিঃ লয়েড জঙ্গ ডিক্টেটর হইয়াছিলেন। আঞ্চকালও ইংলওে যে ফ্যাশিষ্ট দল গড়িবার চেষ্টা হইতেছে, ভাহার 'পরিণামেও ইংলওে ডিক্টেটরত্ব প্রতিষ্ঠিত হ'ইতে পারে। অক্ত যে-সব ইউরোপীয় দেশ এখন ডিক্টেটরের অধীন. তাহাদের ডিক্টেটররাও গোড়া হইতেই স্বৈর শাসক হইবার অভিপ্রায় প্রকাশ করে নাই, ক্রমশং সব ক্ষমতা আত্মসাৎ করিয়াছে। ইতালীতে প্রথমে সমাজতমুবাদী (socialists) ও সামাবাদীদের (communistsদের) বিরুদ্ধে কালকোর্তা-পরিহিত ফ্যাশিষ্ট দশ গঠিত হয়। তাহাদের নেতা मुलामिनी পরে ডিক্টেটর হইয়াছেন। ইংল:ও শুর অসোআল্ড মোদলী (Sir Oswald Mosley) কালকোর্ত্তা দল গড়িতেছেন। এখনই এই দলের কর্মিণ্ড ও চ্ছা দাতা ১৭০০০ সভা হইয়াছে। ইংল:ওর "বাধীন শ্রমিক দল" যথন খুব প্রভাবশীল, তথনও ইহার দিখণের চেয়ে বেশী সভা তাহার ছিল না। স্থতরাং অল্প সমারই বধন ব্রিটিশ ফালিট দলের এত সভা জুটিরাছে, তখন অচিরে তাহা আরও প্রভাবশালী ও পুট হওরা অসম্ভব নছে। ইহার সভাবের অনেকেই মধ্যবিত্ত শ্রেণীর যুবক। ভাহারা আধা-অনী (অর্কনামরিক) কুচ-কাওরাজ করে, ভাহাদের কলেকট সাঁলোভাযুক্ত গাড়ী (armoured cars) ভাছে,এবং व्याशास्त्रकः शीव-इत्रहे अस्तात्मन नहेता छ हाता विमानवाहिनी গঠন করিভেছে। বাহা হউক, ইংগওে কেহ ডিটেটর

হইলেও ভারতবর্ষে ডিক্টেটর তথনি তথনি কেহ হইবে না আমরা অন্তবিধ ডিক্টেটরের কথা বলি।

অসহযোগ আন্দোলনের গোড়া হইতে, নামে না হইলেও কালে, মহাত্মা গাত্মী ডিক্টেটর আছেন। উহা বথন লোরে চলিতেছিল এবং যখন উহার প্রতিকৃল আইনের জন্ত কংগ্রেস-সমিতিগুলির অধিবেশন সম্ভবপর ছিল না, তখন অসহযোগীরা অগত্যা প্রাদেশিক ও কেলার ডিক্টেটর নিযুক্ত করিয়াছিলেন। কিন্তু সর্ব্বোপরি ডিক্টেটর অসহ্যোগ আন্দোলনের স্কল অবস্থাতেই গাৰীজী ছিলেন। ইহা কডটা ভাঁহার অভিপ্রেত ছিল, কডটা বা তিনি ইহাতে সায় দিয়াছিলেন বলিয়া ঘটিয়াছে, বলা যায় না। কিন্তু তিনি এখন ইহার বিরুদ্ধে মত প্রকাশ করিতেছেন, এবং দে-সব কারণে তিনি কংগ্রেসের নেতৃত্ব ছাড়িয়া দিবেন বলিতেছেন ইহা তাহার মধ্যে একটি। তাহাতে কংগ্রেসের ভাল হইবে কি মন্দ হইবে, তাহার আলোচনা আমরা করিব না ; কিন্ধ ইহা স্পষ্ট, যে, এমন অন্ত কোন কংগ্রেসনেতা নাই, বাহার পরিচালনা গানীগীর পরিচালনা যত লোক মানে, তত লোক মানিবে; স্তরাং কংগ্রেসে আরও দল বাড়িবার সম্ভাবনা ঘটিবে। আমরা কেবল ইহাই বলিতে চাই, বে, নানা লক্ষণ দেখিয়া আমাদের মনে হ'ইতেছে, যে, আমাদের দেশে স্বরাজ স্থাপিত হইলে ডিক্টেটরছ স্থাপিত হইবার সম্ভাবনা আছে।

ভারতবর্ষে শুরুবাদ বড় প্রবশ । হিন্দু সমাজের নানা সম্প্রদায়ে ত শুরু আছেনই, মুস্লমানদের মধ্যেও শুরুস্থানীয় নানা পীর আছেন—আগা খাঁ ত এক জন খুব প্রভাবশালী ও বিভ্রশালী শুরু । অভএব, রাষ্ট্রানভিক ক্ষেত্রেও এদেশে শুরুত্রপী ডিক্টেটর বেশ মানানসই হইবে । ইহাতে আমরা ভীত । প্রভারে মান্ত্র্যক ভগবান বৃদ্ধি দিয়াছেন । তাহার ব্যবহার করা সকলেরই কর্ত্তর । ধর্মবিষ্টেই হউক, আর রাষ্ট্রীয় ব্যাপারেই হউক, বকলম দেওরা বেশ আরামদায়ক বটে । কিছু ভাহাত্রুম্লপ্রাদ ।

যুদ্ধ ও রাষ্ট্রিক আন্দোলন

যুদ্ধের সময় নেতার ছকুম মানা দরকার। না মানিলে
যুদ্ধে জয় হয় না। এই জয় দৈনিকদের এই বাধাতা,
এই নিয়মান্ত্রবিত্তিতা প্রশংসা পাইয়াছে। ইংরেজদের
দহিত রূপদের ক্রিমিয়ান যুদ্ধে ইংরেজদের লাইট ব্রিগেড
) হয়ত ব্রিয়াছিল, নে, শক্রপক্ষকে আক্রমণ করিতে তাহারা
বে হকুম পাইয়াছে, তাহা লাস্ত।* তথাপি ব্যাল্যাকলাভার
- যুদ্ধে ছয় শত বোদ্ধা অগ্রসর হয় এবং অধিকাংশ মারা পড়ে।

) এই ঘটনা অবলম্বন করিয়া টেনিসন তাঁহার চার্জ অব দি
লাইট ব্রিগেড' কবিত। লিধিয়াছেন—লিধিয়াছেন—

'Forward the Light Brigade!'
Was there a man dismay'd?
Not though the soldier knew
Some one had blundered:
Theirs not to make reply,
Theirs not to reason why,
Theirs but to do and die:
Into the valley of Death
Rode the six hundred.

তাৎপর্য। 'হও আওরান, লাইট ব্রিগেড!' এ হকুমে তারা কেউ কি জয় পেরেছিল? না, বদিও তারা ব্বেবিল কারও জুলে এমন হকুম হরেছে। জবাব দেওয়া তাদের কাজ নয়, যুক্তিত র্ক করা তাদের কাজ নয়—তাদের কর্ষণ ছিল কেবল হকুম তালিম করাও মর!: তাই সেই ছয় শত বোদ্ধা মৃত্যুর উপতাকার বোড়ার সওয়ার হয়ে এগিয়ে গেল।

যুদ্ধকালে সৈনিকদের এই যে নিরমান্থগতা ও বাধ্যতা, ইহা ভারতীয় কোন কোন রাষ্ট্রনৈতিক নেতা রাষ্ট্রনৈতিক প্রচেষ্টাতেও দেখিতে চান। কিন্তু রাষ্ট্রনৈতিক প্রচেষ্টা ঠিক্ যুদ্ধ নর। স্তরাং যুদ্ধের সময় কোন সৈনিক থেমন হক্ম না-মানিলে সামরিক আদালতের বিচারে বা বিনাবিচারেও তাহার প্রাণক্ত হইতে পারে, রাষ্ট্রনৈতিক প্রচেষ্টার দলের কোনও সভ্য হক্ম না মানিলে তাহার তেমন কিছু লান্ডি (অবশ্র প্রাণক্ত নহে!) হইতে পারে না।

ইহা অবগ্র স্বীকার্যা, বে, কেহ কোন রাষ্ট্রনৈতিক দলের সভ্য হইলে সেই দলের উদ্দেশ্য ও নিয়মাবলী তাঁহাকে মানিতে হইবে, না-মানিলে তিনি সভ্যস্থ ছাড়িয়া দিবেন, কিংবা সভাস্থ হইতে বঞ্চিত হইবেন। কিন্তু দলের

কার্যানির্বাহক কমিটির জন চার-পাচ লোক একটা কিছ নির্দারণ করিলেই তাহা দলের মূল উদ্দেশ্রের ও নির্মাবলীর अकीकृठ हरेशा शत्र ना, जाशा ना-मानित्न पत्नत नित्रम **७७ ह**रू ना। अवह मिथिएडिइ, श्रीमञी मदाक्रिनी नारेडु, শ্রীযুক্ত বন্নভভাই পটেল প্রভৃতি 'ডিসিপ্লিন চাই, ডিসিপ্লিন চাই' (নিয়মানুগত্য চাই, নিয়মানুগত্য চাই), বশিরা श्वाकिः কবিতেছেন। কংগ্ৰেস জন চার-পাঁচ মানুষ সাম্প্রদায়িক ভাগবাঁটোয়ারা সমকে যাহা স্থির করিরাছেন, তাহাতেই ত কংগ্রেসের আদর্শের বিরোধী কাজ করা হইয়াছে। স্থতরাং ডিসিপ্লিনের আবশ্যক যদি কাহারও হইরা থাকে, ত তাহা তাঁহাদেরই। এক গণ্ডা বা দেড় গণ্ডা মানুষ যাহা স্থির করিবেন, ভাহাই সকলকে মানিতে হ**ইবে.** কংগ্রেসের আদর্শ ও নির্মাবলীর মধ্যে এমন কোথাও কিছু লেখা নাই। কংগ্রেসের সভা হইতাম, তাহা হইলে সাম্প্রদায়িক ভাগ-বাঁটোয়ারা সম্বন্ধে ওয়ার্কিং কমিটির নির্দ্ধারণ কথনই মানিতাম না।

যুদ্ধে বে অনেক দৈনিক, নেতার ছকুম প্রাপ্ত জানিরাও,
মরণান্ত বাধাতা দেখার, তাহাতে তাহাদের সাহদ ও বশাতা
প্রমাণিত হয়, সন্দেহ নাই। কিন্তু তাহাতে ইহাও
প্রমাণিত হয় বে, বাহা মাসুবকে নিজের বৃদ্ধি ও বিবেক
অগ্রান্ত করিয়া অন্তের ছকুম মানিতে বাধা করে, সেরপ
জিনিব ভাল নয়। যুদ্ধ সেইরপ একটা জিনিব। অভ্যান্ত
যুদ্ধের অবিচারিত বাধাতা শান্তিকালীন কোন প্রচেটার
আমদানী করা বাঞ্নীয় হইতে পারে না।

প্রবাসী বঙ্গদাহিত্য সম্মেলন

প্রবাসী বঙ্গদাহিত্য সম্মেলনের দাদশ অধিবেশন
ডিসেম্বরের শেষ সপ্তাহে কলিকাতার হইবে, ইহা
পাঠকেরা থবরের কাগজে দেখিরা থাকিবেন। এবারকার
অধিবেশনের জন্ত এলাহাবাদ হাইকোটের অবসরপ্রাপ্ত
জন্ত স্যর লালগোপাল মুখোপাধ্যার মহাশর সভাপতি
মনোনীত হইরাছেন। তিনি এলাহাবাদ হাইকোটের
প্রধান বিচারপতির কাজও কিছু দিন করিরাছিলেন।
তাহার বিদারতোক উপলক্ষ্যে সার তেজবাহাছের

^{*} হকুমটা বে আছিপ্ৰস্ত ভাষা ইংরেজদের বারাও স্বীকৃত ইইরাছে। সেই কারণে এক জন করানা সেনাগতি অবারোহা লাইট ব্রিসেডের প্রচণ্ড বেগে শক্র আক্রমণ সম্বন্ধে বলিরাছিলেন, 'ইহা পুর জমকাল চমকপ্রদ ব্যাপার, কিন্তু ইহা যুদ্ধ নর ('It is magnificent but it is not war')।

সাঞ্চর মন্ত প্রসিদ্ধ আইনজ্ঞ ব্যক্তি মুখোপাখ্যারমহাশরের আইনজ্ঞান, খাধীনচিত্ততা ও নিরপেক্ষ বিচারক্ষমতার বর্ণনা করেন এবং বলেন, বে, তিনি এক জন 'প্রেট
জ্ঞাও' (মহৎ বিচারপতি)। মুখোপাখ্যার মহাশর প্রবাসী বজসাহিত্য সম্মেলনের জন্ত বিচক্ষণতার সহিত দীর্ঘকাল বহু
পরিশ্রম করিরাছেন। বাঙালীর সাহিত্য ও সংস্কৃতিতে
তাঁহার আন্তরিক জন্মরাণ আছে।

এই সম্মেলনের নাম ক্ষেসাহিত্য সম্মেলন হইলেও ইহাতে বাঙালীর সংস্কৃতির শিল্প বিজ্ঞান সঙ্গীত প্রভৃতিরও আলোচনা হইরা থাকে—কেবল রাজনীতির আলোচনা হয় না, হইতে পারে না; কারণ গবলোলের কর্মচারী অনেকে ইহাতে যোগ দিয়া থাকেন।

কলিকাতার ইহার অধিবেশন এই উদ্দেশ্যে করা হইতেছে, ধে, মাহাতে বঙ্গের ও বংলর বাহিরের বাঙালীরা মিলিত হইতে পারেন। শ্রীমৃক্ত রবীক্রনাথ ঠাকুর মহাশর ইহার উদ্বোধন করিতে স্বীক্ষত হইরাছেন। বঙ্গের বাহিরে অনেক বাঙালী আছেন। তাঁহারা সম্মেলন উপলক্ষ্যে যত অধিক সংখ্যার কলিকাতার আগমন করিবেন, অধিবেশন তত অধিক সাফল্যলাভ করিবে। কলিকাতার অধিবেশনের কর্ত্বপক্ষ তাঁহাদের সকলকে সাদর ও সনির্বাহ নমন্ত্রণ করা সন্তবপর নহে। এই জনা সংবাদপত্রের মারক্ষতে নিমন্ত্রণ করা হইরাছে।

বলের সকল বাঙালীর পক্ষ হইতে অভ্যর্থনা সমিতি
নিমন্ত্রণ করিরছেন। বলের সব বাঙালীকে বলের বাহির
হইতে আগত অতিথিদিগের আদরষত্ব করিতে হইবে।
আমরা বলের বাহিরে গেলে প্রবাসী বাঙালীরা বেরূপ
আতিথেরতা প্রদর্শন করেন, তাহা আমাদের সাধ্যাতীত
হইলেও আদর্শহানীর নিক্ষর বটে। বঙ্গের বাঙালী
সমাজ মনোধোগী হইলে কিছু অতিথিসংকার আমরা
করিতে পারিব।

কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ে পণ্ডিত বিধুশেখর শাস্ত্রীর লেক্চ্যারার নিয়োগ

ধবরের কাগজে দেখিলাম, পশুত বিধুশেধর শান্ত্রীকে কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের সংস্কৃত বিভাগে এক জন লেক্চারার নিযুক্ত করা হইবাছে। এই নিয়োগ হইতে বুঝা যাইতেছে, যে, বিশ্ববিদ্যালয়ের কর্ত্বপক্ষ শান্ত্রী মহাশরের বোগ্যতা কিঞ্চিৎ উপলব্ধি করিতে পারিয়াছেন। তাঁহাকে 'আশুতোয সংস্কৃত-অধ্যাপক' নিযুক্ত করিলেই তাঁহার যোগ্যতার ঠিক আদর করা হইত। কলিকাতার দেশী প্রধান প্রধান দৈনিক এবং কোন কোন সাপ্তাহিক শান্ত্রী মহাশরের যোগ্যতার বর্ণনা করিয়াছিলেন, এবং কেহ কেহ স্পান্ত ভাষার তাঁহাকে যোগ্যতম বলিয়াছিলেন। জবশু, যোগ্যতম লোকেরাই মে নিযুক্ত হইরা থাকেন, এমন নহে। দৃষ্টাস্তম্বরূপ বলা যাইতে পারে, যে, কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ে ভারতীয় লালিতকলার অধ্যাপক নিয়োগের সময় দেখা গিয়াছিল, যে, যোগ্যতা অপেক্লা তাহির ও মুক্তবিরর ক্লোরে বেশী ফল পাওয়া যায়।

শান্ত্রী মহাশয় বে আর বিশ্বভারতীর বিদ্যান্তবনের প্রিলিপ্যান থাকিবেন না, ইহাতে বিবাদ অমুভব করিতেছি। বিশ্বভারতীর ক্ষতি হইবে বিশিয়া হংখিত হইতেছি। আশা করি শান্ত্রী মহাশয় কোন-না-কোন প্রকারে বিশ্বভারতীর সেবা ভবিষ্যতেও করিতে পারিবেন।

বঙ্গে সম্ভাসনবাদ উচ্ছেদের বেসরকারী চেকা

বঙ্গে সন্ত্রাসক দল ধখন হইতে গঠিত হইরাছে বলিয়া সন্ত্রাসক কার্য্য দারা বৃক্ষা গিরাছে, তখন হইতেই খবরের কাগন্সের মারফতে একং সভাসমিতির বক্তৃতা ও প্রভাবের দারা উহার বিক্লছে কেসরকারী মত প্রকাশিত হইরা আসিতেছে। তাহার উপর গত মাসে কলিকাতার জনসাধারণের একটি সভার সন্ত্রাসনবাদ উচ্ছেদের জন্ত একটি কার্য্য-প্রাণালী ধার্য্য হইরাছে। এই সভার ও ভাহাতে নিযুক্ত ক্রিটির উদ্দেশ্যের সহিত আমাদের সম্পূর্ণ সহাস্তুত্তি আছে। অবান্তর কোন কোন বিষয়ে আমাদের যাহা বক্তব্য ছিল, তাহা অক্টোবর মানের মডার্ণ রিভিয়ু পঞ্জিকায় লিখিরাছি।

গবন্দেণ্ট বরাবরই এইরূপ ভাব প্রকাশ করিয়া আসিতেছেন যেন বেসরকারী লোকেরা এ-বিষয়ে যথেষ্ট किছ करान नारे। উদ্যোজ্ঞাদের কার্যপ্রণালী খুব ব্যাপক। তাঁহারা কিছু করিতে পারিলে গবন্মেণ্ট তাহা ধর্থেষ্ট মনে করিবেন কিনা, আগে হইতে বলা যায় না।

কিন্ত বেসরকারী পক্ষের এই ধারণাটাও গবমেণ্টের ज्ञिना ना-राउदा पदकाद, (य. গবমেণ্ট पमनायुक আইন ও কান্ত ছাড়া এমন আর কিছু করেন নাই যাহার ছারা সন্ত্রাসনবাদের মূলা নই হইতে পারে। উহার মূলা উচ্ছেদ করিতে হইলে ভারতবর্ষকে স্থশাসনের অধিকার দেওয়া আবগুক, এবং সকল দিকে যুবা বরসের লোকদের কার্য্যক্ষেত্র উন্মুক্ত করা ও রাখা আবগুক।

রামমোহন রায়ের স্মৃতি

১৮৩০ দালের ২৭শে সেপ্টেম্বর রামমোহন রায় ব্রিষ্টল ু নগরে পরলোকগমন করেন। প্রতিবৎসর ২৭শে সেপ্টেম্বর ভারতবর্ষের অনেক নগরে ও গ্রামে তাঁহার প্রতি শ্রদ্ধা প্রদর্শনের জন্ত জনসাধারণের সভার অধিবেশন হয় এবং তাঁহার ব্যক্তিছের নানা দিক আলোচিত হয়। এ-বৎসরও তাহা হইয়াছে। সকল সভার উল্লেখ করা মাসিক কাগজের পক্ষে সম্ভব নছে। আমরা ছটির উল্লেখ করিব।

দার্ক্তিলিঙের সভার ঐতিহাসিক স্তর যতুনাথ সরকার মহাশর যাহা বলেন, ভাহার প্রতিবেদন এলোসিরেটেড্ প্রেস এইরপ দিরাছেন :---

"It will be a wrong reading of the Raja's life to consider him as a type of wild passionate youth aspiring to be a nation's leader," said Sir Jadunath Sarkar, in

to be a nation's leader," said Sir Jadunath Sarkar, in presiding 'over a public meeting held yesterday evening at the local Brahma Mandir Hall to commemorate the death of Raja Rammohun Roy. Sir Jadunath added, "The Raja made long arduous preparations for his life's chosen task of founding a religion of concord. He went into the original sources of the chief religions of his day, by maetering Sanskrit, Arabic, English and Hebrew and probably some amount of Tibetan. Mere emotionalism could not have created for him such as emotionalism could not have created for him such a commanding position in the world of thought. Emotion is like alcohol administered to a sinking patient; it can create a temporary stimulation, but if it is given as a

permanent diet, it promptly kills him.

"The Raja's success had a more solid foundation than frothy rhetoric. He was truly a pioneer—like the early North American explorers, who blazed a trail across the dark unknown and dangerous primitive forests to reach the West. At Rammohun's birth the old Indian civilisation was almost dead, and Rammohun was the prophet of a new Indian civilisation, uniting the best elements of the East and the West, so that the Hindu race did not perish in the new age, as the American Indians have done.

"In Europe the Renaissance and the Reformation were two distinct movements. But in India they were united in the person of Rammohun. All modern Indians, Hindus, Muslims, Brahmos and Christians, irrespective of their special creeds, are the heirs of the rich legacy of spiritual and intellectual culture left behind by Ram-

mohun Roy.'

Concluding, the speaker said, "To contemplate his life and achievements is to ennoble our minds like glimpses of the pure, lofty, serene Himalayan heights caught amidst our low daily surroundings."

তাৎপৰ্য্য। জাতীয় নেতা হইৰায় উচ্চাকাব্দাপোৰক অসংবত-ভাবোদ্মত ধাচের এক জন যুবক বলিরা রামমোহনকে মনে করিলে তাহার জাবন ভুল বুঝা হইবে। মিলন ও সামগ্রন্তের ধর্ম ছাপনরূপ তাহার জীবনের নির্কাচিত কার্য্যের জম্ম তিনি দীর্যকাল ছংসাধ্য শ্রম ঘারা প্রস্তুত হইরাছিলেন। সংস্কৃত, আরবী, ইংরেজী, হিন্তু এবং সম্বতঃ কিছু তিব্বতী শিখিয়া তিনি তাহার সময়কার প্রধান ধর্মগুলির মূল শাল্ত অধ্যয়ন করেন। কেবল ভাবোচ্ছ্বাস**গরায়ণ**ভা চিস্তারাজ্যে তাঁহাকে এর**ণ উ**চ্চ ছান দিতে পারিত না। **ভাবাবেশ** ব্রিরমাণ রোগীকে প্রদত্ত হ্রাসারের মত। উহা সামরিক উত্তেজনার সৃষ্টি করিতে পারে, কিন্তু উহা নিত্যগ্রহণীর পান্ধরূপে দিলে অচিরে তাহার মৃত্যুর কারণ হয়।

রাজার কৃতকার্য্যভার সৌধ ফেনিল বাগ্মিতা অপেকা দুচ্তর ভিত্তির উপর নির্মিত হইরাছিল। তিনি এক জন প্রকৃত প্রথনির্মাত! অপ্রদায়ক ছিলেন। স্থামমোহনের জন্মকালে প্রাচীন ভারতীয় সভ্যতা মৃতপ্রায় হইয়াছিল! রামমোহন নৃতন এক ভারতীর সভ্যতার প্রবর্ত্তক হইয়াছিলেন, বাহাতে প্রাচ্য ও প্রতীচেত্র শ্রেষ্ঠ উপাদানসমূহ সন্মিলিত হইয়াছে, এবং ঘাহার কলে নব যুগে হিন্দুজাতি লোপ পায় নাই।

ইউরোপের রেনেশ'াস (প্রাচীন সভ্যতার নব অস্থাদর) এবং রিকর্মেক্তন (ধর্মের ও সমাজের সংখার) ছটা আলাদা প্রচেষ্টা। ক্ষিত্ত खात्रजबर्द **এই ছুটি এक! त्राबरबारम्बत्र कोबरम भिनि**छ रहेन्नाहिन । हिन्मु, মুসলমান, ব্রাক্ষ ও প্রীষ্টিয়ান-সমুদ্র আধুনিক ভারতীর, তাঁহাদের বিশেষ বিশেষ ধর্মসত নির্বিশেষে, স্থাসনোহনের আধ্যাত্মিক ও নানসিক সম্পদের উত্তরাধিকারী।

आमारमञ्ज रेमनिक जीवरनत निज्ञखरत्रत शतिरबहेरनत मरश हिमानरत्रत উচ্চ প্রশাস্ত নির্মাল শিধরসমূহের স্বীবৎ ক্ষণিক দর্শন বেমন আমাদিগকে উন্নত করে, তাঁহার জীবন ও অবদানপরম্পরায় পরিচিন্তনও আমাদিগকে সেইরূপ উন্নতত্তর লোকে লইরা বার।

শান্তিনিকেডনে রামমোহন শ্ব-তিসভার অখ্যাপক ক্ষিভিষোহন সেন শাস্ত্রী, এমৃ-এ, বলেন,

সম্প্ৰ হিন্দু-ভাৰত ৰৎসৰেৰ এই সময় প্ৰলোকগত পিতৃপুত্ৰবদিগেৰ তৰ্পণ কৰিয়া বাকেন ৷ এমন একটি সৰয়ে ভাষতেয় অপ্ততম শ্ৰেষ্ঠ

)WEDER

সম্ভানের শ্বৃতির প্রতি শ্রদ্ধান্তলি নিবেছন করিবার হবোগ হওয়ার ভালই হইরাছে। রামমোহন রাজের ব্যক্তিত্ব মহামানবন্দের দীপ্তিতে সমুক্তাসিত। তাই তিনি দেশকে একটি গৌরব্যার লক্ষ্যের দিকে লইরা গিরাছেন।

অধ্যাপক সেন বলেন, তাহার বিষ্ণাসী ল্ধা উত্তরোত্তর বৃদ্ধি পাইরা অবশেষে সেই নিভ্যজ্ঞানময়ের চরণেই তাঁহার নখর দেহ উৎস্পীকৃত হয়। কিন্তু তাহার জ্ঞানামুরাগের তুলনার দেশপ্রেম ছিল আরও অধিক। তাই তিনি লগতের নিকট দেশের মর্য্যাদ। বৃদ্ধির বস্তু আপ্রাণ চেষ্টা করিয়া গিয়াছেন। যথন তিনি সাহসের উপর ভর করিয়া নৃতন যুগের স্চনাকরে কালের গুরু আহ্বানে একটা নৃতন ভাব-ধারা বংল করিয়া আনিলেন, সেই ছিল তাহার জীবনের একটা যুগ-প্ৰবৰ্ত্তনকারী শুভ মুহূৰ্ত। এই সময় দেশে সহসা বাহির হইতে একটা নুতন ভাবের বন্ধা প্রবেশ করিয়া দেশবাসীকে পাশ্চাত্য বিজ্ঞানের আলোকছটার মুগ্ধ ও বিমোহিত করিল। তাহারই জন্ত প্রয়োজন হইরাছিল এই মহামানবের। জাতীর ইতিহাসের ইহা ছিল অতিশর সকটমূহুর্ত্ত ; পুরাতন বাহাকিছু ছিল, তাহার বিরুদ্ধে চলিতেছিল একটা মারাম্বক অভিযান। পাশ্চাত্য ভাবধারার সংস্পর্শে হাঁহারা আসিলেন, তাঁহাদের মধ্যে অসন্তোবের বহিং প্রজ্ঞলিত হইতে লাগিল। এই সময় আসিলেন মামমোহন। তিনি তাঁথার বিরাট ব্যক্তিছ এবং অসামান্ত বৃদ্ধিবলে হাদক নাবিকের মত এই বিক্লম প্রোতাবর্ত হইতে জাতীয় ভাবধারাকে একটা হানিহন্তিত পথে পরিচালিত করিয়াছিলেন এবং সংস্কৃতিগত পরাঞ্জের প্লানি হইতে ভারতকে বুকা করিতে সমর্থ ছইয়াছিলেন।

ষামমোহন প্রাচীন আদর্শকে একেবারে বর্জন করেন নাই। ঐরপ কোনও ভাব উাহার মনে স্থানও পার নাই। কারণ, ভারতের বিশাল ধর্ম-এম্বাবলা পাঠ করিরাই তিনি পরিপুট্ট হইরাছেন। তিনি ধর্মের মূলস্থ্রকে আধুনিক জ্ঞানালোকের সাহাবে। একটা বৈজ্ঞানিক ব্যাথা। দিতে চেট্টা করেন। তাহা সংসারবাদী ও সনাতনা উভরের পক্ষেই মঞ্চলজনক হইরাছে। এইরূপ অদমা চেট্টাবারা তিনি জীবনের একটা নৃতন আদর্শ স্পষ্ট করিলেন। রামমোহন রার উাহার বহুমুখী প্রতিভা ও দুরুদ্ধী বারা ভারতের বে উপকার সাধন করিরাছেন, তাহা অভলনীর।

অধাপক সেন আরও বলেন, বে, জাতীর জীবনের প্রত্যেক ক্ষেত্রেই রানমোহনের বিশেব দান রহিয়াছে। তাহার দেশপ্রেমের কথা পুনরার বলা নিআয়োজন। জাতীর অভাব-অভিযোগের প্রতিকারকল্পে তিনিই প্রথম ইংলতে বিরা আন্দোলন মৃদ্ধ করেন। শিক্ষাসম্পর্কে তিনি ইংলতে বে প্রতাব প্রেরণ করেন, তাহা চিরম্মরণীর হইয়া থাকিবে। বাংলা গ্রাসাহিত্যেও তাহার দান কম নহে।

উপসংহারে অধ্যাপক সেন বর্তমান ভারতের যুবকদিগকে এই মহৎ জীবদের ভাবধারা হইতে অনুপ্রেরণা লাভ ক্রিবার জন্ত অনুরোধ করেন।--আনন্দ্রাজার পত্রিকা

শুর চারুচন্দ্র ঘোষ

ভার চার্কচন্দ্র যোব অনেক বৎসর ধরিরা হাইকোর্টের জঞ্জিরতী করিরাছিলেন এবং তাহার মধ্যে চারিবার প্রধান বিচারণতির কাল অন্থারী ভা.ব করিয়াছিলেন। পঞ্জাবে হারী বেশী প্রধান কিচারণতি হাইনাছিলেন ভার শালীলাল। বলে বে কোন দেশী লোক ছানী প্রধান বিচারপতির পদ পান নাই, তাহা যোগ্যতার অভাবে নছে। জল্ল হইবার পূর্ব্দে যখন ভার চাক্ষচন্দ্র উকীল ও পরে ব্যারিষ্টার ছিলেন, তথন রাজনীতিক্ষে ত্রেও সার্ব্দ্রনিক হিতকর্মের সহিত তাঁহার কর্মমন্ন যোগ ছিল; জল্ল হইবার পরেও রাষ্ট্রনৈতিক ভিন্ন অন্তবিধ অনেক দেশহিতকর কার্য্যের সহিত তাঁহার যোগ ছিল। এইরূপ আশা ছিল, যে, তিনি জল্লিরতী এবং পরে বলীয় শাসনপরিষদের সভ্যন্ত ছাড়িয়া দিবার পর ব্রান্থালাভানন্তর আবার রাষ্ট্রনীতিক্ষেত্রেও উদারনৈতিক দলের সঙ্গে যোগ দিয়া কাল্ল করিবেন। কিন্তু তাঁহার অকালম্ভ্রুতে সে আশা পূর্ণ হইল না। মৃত্যুকালে উহার বন্নস ৬০ অতিক্রেম করিরাছিল।

কুমার মন্মথনাথ মিত্র

কুমার মন্মথনাথ মিত্র পরশোকগত রাজা দিগম্বর মিত্রের পৌত্র ছিলেন। মৃত্যুকালে তাঁহার বয়স ৬৮ হইয়া-চিল। দেশহিতকর অনেক কালের সহিত তাঁহার ঘনিষ্ঠ যোগ ছিল। বন্ধবিভাগের পর যথন জাতীয় ধনভাণ্ডার স্থাপিত হয়, তখন তিনি তাহাতে অনেক টাকা দিয়াছিলেন এবং টাকা সংগ্রহের জন্ত থালি পায়ে ছারে ছারে ভিক্ষা করিয়াছিলেন। কলিকাতার কর্ণওয়ালিস ষ্ট্রীটস্থিত সঙ্গীতসমাজের গৃহে তিনি চরখায় স্থতা কাটা শিখাইবার জন্ত বিস্থানয় স্থাপনের জন্ত অনেক পরিশ্রম করিয়াছিলেন। ঝামাপুকুরে তাঁহাদের কশের প্রাসাদে অনেক দরিদ্র ছাত্র আহার পাইত ও ও অন্ত দরিদ্র শোক প্রতাহ গরিব লোকদের এই অনেক রোগী ঔষধপথ্য পাইত। উভন্নবিধ সেবার কাজ সেধানে এখনও হয়। ইহা স্থানী ভিছির উপর স্থাপিত হইরাছে। কুমার সাহিত্যামুরাগী এবং মণিরত্ব স্বত্তে বিশেষজ্ঞ ও স্থনির্বাচক हिरमन ।

মডার্ণ রিভিয়ু সম্বন্ধে ডক্টর সাণ্ডার্ল গাণ্ডের মত আমেরিকার ভারতবন্ধ ধর্মাচার্য ডক্টর সাণান্যাণ্ডের নাম শিক্ষিত ভারতীয়দের নিকট স্থবিদিত। তাঁহার বয়স ভিরানবাই বৎসর হইরাছে, অধ্য তিনি এখনও নৃতন প্রস্থ লিখিতেছেন এবং আদেরিকার ও ভারতবর্ধের অনেক কাগজে প্রবন্ধ লিখিতেছেন! তিনি সম্প্রতি মডার্গ, রিভিন্ন ও প্রবাসীর সম্পাদককে এই চিঠিখানি লিখিয়াছেন:—

Editor of "The Modern Review,"
Calcutta, India.

MY DEAR SIR:

I have long had in mind sending you some brief words expressing my high appreciation of the monthly magazine which for so many years you have edited and published. I have taken it almost from the beginning of its issue, and consider it indispensable. It is a constant wonder to me on account of the breadth and wealth of its contents, covering as it does, and with such intelligence, the wide fields of politics, history, literature, art, education, economics, industries, social reform and religious reform. I speak with care when I say, that we do not have in America, nor is there in England, any monthly review that covers so wide a field, and does it with such accuracy of scholarship and at the same time so interestingly. One might well suppose that your Review would confine itself to Indian affairs. As a matter of fact, it gives a larger amount of important Indian matters than any other periodical with which I am acquainted, while at the same time it takes the world for its field, and is surprisingly rich in information regarding everything of most importance that is going on in all countries.

It ought to have a large circulation in foreign lands, as well as in India. I know of no other periodical that so truly and adequately represents the real India, giving to the world what the world ought to know about India's civilization, her great past, the present condition of her people, the real nature and effects of British rule, and the meaning of her great struggle for freedom.

I regard The Modern Review as not only an in-

I regard The Modern Review as not only an invaluable asset to India; but as a messenger to the outside world, the importance of which increases with every

year of its publication.

My dear Mr Chatterjee, I trust you will pardon these frank words from me, which I am sure will surprise you. But my personal debt to your able monthly is so great that I could not forgive myself if I refrained longer from expressing them.

Sincerely, J. T. SUNDERLAND.

New York, September 1, 1934.

ভারতবর্ষে ডক্টর সাঞাল'্যাণ্ড "ইণ্ডিয়া ইন্ বণ্ডেক্ব"
নামক গ্রাছের লেখক বলিয়াই পরিচিত। কিন্তু তিনি
"দি অরিজিন্ এণ্ড্, ক্যার্যাক্টার অব্ দি বাইবল," "ইণ্ডিয়া
ইন্ ওয়াল'ড ব্রাদারহড," "রিলিক্তান এণ্ড্, ইভলিউশ্যন,"
"এমিনেণ্ট য়্যামেরিকান্স্ হন্ ইণ্ডিয়া অট টু নো," প্রভৃতি
ভারও অনেক বই লিধিয়াছেন। এখন পৃথিবীর সম্দর্ম
ধর্ম সম্মে একখানি এবং আমেরিকার প্রেষ্ঠ মনীবী এমার্সান
সম্মে একখানি বহি লিখিভেছেন।

শান্তিনিকেতনে চৈনিক অধ্যাপকৰয়

ইউনাইটেড প্রেস সংবাদ দিয়াছেন-

বিশ্বভারতীর কর্মানিক জীযুক্ত স্বধীক্রনাথ ঠাকুর অধ্যাপক তান ইউন সান এবং অধ্যাপক চেন ইউ সেনকে চানে প্রত্যাশর্কনের প্রাক্তালে এক প্রীতিভোক্তে সম্বর্ধিত করেন। ্রুউক্ত অধ্যাপকগণ চীন-ভারতীর সংস্কৃতি-সজন সম্পর্কে শান্তিনিকেতনে আসিরাছিলেন। পণ্ডিত বিশ্বশ্বর শারী তাহাদিগের শুক্তবারা কামনা করেন এবং চীন-ভারতীর সংস্কৃতির আতৃত্ব-বন্ধন বৃদ্ধিকরে তাহার। যে অ্রান্ত পরিশ্রম করিতেছেন, তাহার প্রশংসা করেন। তিনি বলেন, এই চান বন্ধুদ্ম সত্য সতাই প্রভু বৃদ্ধের বাণীতে অম্প্রাণিত। প্রভু বৃদ্ধ এক সমর তাহার পির্যুক্তকে বাণী প্রচারের কল্প দেশ-দেশান্তরে ভ্রমণ করিবার কল্প উপদেশ দিরাছিলেন। ই ইারাও তাহাই করিতেছেন। বক্তা আশাক্রেন যে, তাহাদের এই মহৎ উদ্দেশ্ত সকল হইবে। তিনি আরও আশাক্রেন যে, সেই সমর থ্র দূরবর্তী নহে, বধন ইইাদের চেষ্টার চীন ও ভারত জপতের শান্তি ও স্থধের কল্প একবোগে কাল করিবে।

অধ্যাপক চেন মি: ঠাকুর ও বিষভারতীর অধ্যাপকবৃশ্বকে তাঁহাদের সহবােসিতার জস্ত অশেষ ধন্ধবান দেন। কবি রবীপ্রনাথ তাঁহাদের উদ্দেশ্য সম্পর্কে বেরপ যত্ন করিরাছেন ভক্তক্ত তাঁহাকে তাঁহারা ধন্ধবাদ জ্ঞাপন করেন। তাঁহারা বাহাতে কবি ও শান্ত্রী মহাশরের আশীর্কাদের বােগ্য পাত্র হইতে পারেন, তাহাই তাঁহাদের কামনা। তাঁহার ক্ষপুচ বিশ্বাস বে, তাঁহাদের সহবােসিতা ও সদিছে৷ পাইলে তাঁহারা শান্তিনিকেতনে একটি চীন মন্দির নির্মাণ করিতে সমর্থ হইবেন। সেখান্টীন ও ভারতীয় কৃতী ছাত্রগণ একতা মিলিত হইরা উভরের সংকৃতির মধ্যে একটা সভা স্থাপন করিবেন।

অধ্যাপক তানও অমুক্লণ বস্তৃতা করেন। আপাডড:-বিদার-সপ্তাহণাজে সকলে প্রস্থান করেন।

অধ্যাপকগণ কলিকাতা হইতে ২রা অক্টোবর ৌনে রওনা হইবেন।

লীগ্ অব্নেশ্যকে কশিয়ার যোগদান

কশিয়া জেনিভার মহাজাতি-সংবের (লীগ অব্ নেশ্যন্তের) সভ্য হইয়াছেন। লীগের সভ্য আর বত রাষ্ট্র আছে, সবগুলি ধনিকপ্রভূত্বের দেশ এবং যাহারা লীগে প্রভূত্ব করে তাহারা সাম্রাক্ষ্যবাদী ধনিকপ্রভূত্বের দেশ। ক্লশিয়া প্রমিকপ্রভূত্বের রাষ্ট্র। লীগের যে অধিবেশনে ক্লশিয়াকে তাহার সভ্য বলিয়া গ্রহণ করা হয়, তাহাতে ক্লশিয়ার প্রতিনিধি লিটভিনক বংলন,

"নিজের কোন বিশেষৰ বৰ্জন না করিয়া এবং নিজ বাজিৰ আটুট রাখিরা নৃত্য অর্থনৈতিক ও সামাজিক বাবছার প্রভিনিধি বরূপ ক্রিলা লীগে বোগ দিয়াছে, এবং জগতে শাভি ছাপনার্থ মহাজাতি-সমূহের মন্ত্রণাসভার নিজের ক্ষতা ও প্রভাব অসুভূত করাইতে অভীকার করিতেছে।"

লীগ ছোট ছোট কোন কোন জাতির বাগড়া মিটাইরা দিয়া বছ নিবারণ করিতে পারিরাছেন, ইহা খীকার্য: কিছ পরাক্রমশালী জাতিদের (ধেমন জাপানের) বেলার কিছু করিতে পারেন নাই। তা ছাড়া, সাম্রাজ্যবাদ জিনিষ্টাই যুদ্ধের জন্ত প্রস্তুত থাকিবার এক প্রকার স্থায়ী জ্বস্থা ও ব্যবস্থা। সাম্রাজ্যবাদী দেশসমূহের গবল্পেণ্টসমূহ সাম্রাজ্যবাদ পরিত্যাগ করিয়া যদি নিজ নিজ সামাজ্যভুক্ত দেশগুলিকে স্থাসক করিয়া দেন, তাহা হইলে জগতে শাস্তি স্থাপিত হইতে পারে। নতুবা শক্তিশালী কোন দেশ অন্ত কোন দেশ জয় করিয়া সাম্রাজ্য স্থাপন করিতে গেলে যখনই লীগের কর্তারা যুদ্ধের পরিবর্ত্তে শাস্তির পক্ষে ওকালতী করিতে যাইবেন, তথনই সেই শক্তিশালী জাতি বলিবে, "ডোমরা ত আগে আগে যুদ্ধ করিয়া নিজেদের সামাজ্য গড়িয়া जूनियाह, এখন আমাদের সেই প্রকার কাজে বাধা দাও কোন মুখে? আগে নিজেদের সাম্রাজ্যক্ত দেশগুলিকে স্বাধীনতা দাও, তাহার পর আমাদিগকে উপদেশ দিতে আসিও।" জাপান যে চীন সাধারণতত্ত্বের মাঞ্চুরিয়া প্রভৃতি বৃহৎ ভূবও কার্য্যতঃ গ্রাস করিয়াছে, কাহারও নিষেধ উপদেশ মানে নাই, তাহার পশ্চাতে রহিয়াছে উক্তপ্রকার মনোভাব।

কশিয়া লীগের সভ্য শক্তিশালী অন্ত সব রাষ্ট্রকে সামাজ্যবাদ ত্যাগ করাইতে পারিবে কি? না পারিলে শাস্তি স্থাপিত হইবে না। কশিয়া অন্তদিগকে সামাজ্যবাদ ত্যাগ করাইতে না-পারিয়া নিজেই যদি সামাজ্যবাদী হইয়া পড়ে, তাহা হইলে তাহার লীগপ্রবেশ স্ফলপ্রদ হইবে মনে হয় না।

লীগের সভ্য ভারতবর্ষ ও রুশিয়া

লীগ্ অব্ নেশুলের একটি কার্যানির্বাহক সমিতি আছে, তাহার নাম লীগ্কোলিল। ইহার সভ্যসংখ্যা পনর। এই পনরটির মধ্যে পাঁচটির আসন স্থায়ী ভাবে ব্রিটেন, ক্রান্স, ইটালী, জার্মেনী ও লাপানকে দেওয়া হইয়া আছে। জাপান লীগ্ ভ্যাগ করায় একটা আসন খালি হয়। ভাহা ক্রশিয়াকে দেওয়া হইয়াছে। অর্থাৎ লীগের সভ্য হইলেই সে স্থায়ী ভাবে লীগ কৌলিলেরও সভ্য হইবে, এই সর্প্তে সে সভ্য হয়।

মন্ত দিকে, ভারতবর্ষ শীগস্থাপানের ভারিণ হইভেই

লীগের সভা; কিন্তু এ-পর্যান্ত লীগ্ কৌলিলের ছারী সভা হওরা দুরে থাক্, এক বংসরেরও জন্ত অন্থারী সভাও তাহাকে করা হয় নাই। নিজের একটা ভোট বাড়াইবার জন্ত প্রেট ব্রিটেন ভারতবর্ধকে গোড়া হইতেই সভা করাইয়াছে, কিন্তু কৌলিলের সভাদের মর্যাদায় পরাধীন ভারতবর্ধ উন্নীত হয়, তাহা প্রেট ব্রিটে.নর ইছা নহে। নতুবা প্রেট ব্রিটেন প্রস্তাব করিলে অন্ততঃ একবারও ভারতবর্ধ কৌলিলের অস্থায়ী সভা নির্মাচিত ইইতে পারিত।

ক্ষশিরার স্বাধীনতা ও পরাক্রম এবং ভারতবর্ষের পরাধীনতা ও হর্ব্বলতা লীগে রুশিয়ার ও ভারতবর্ষের মর্য্যাদার পার্থক্যের কারণ।

ভারত সম্বন্ধে লীগের ব্যবহার

সাতান্নটি রাষ্ট্র লীগ্ অব্ নেশুলের সভা। লীগের বার্ষিক ধরচ যত হয়, তাহাকে ১০১৩টি ভাগে বিভক্ত করা হয়। এক একটি ভাগকে য়ুনিট বা একক বলা হয়। শক্তি, মর্যাদা, ধনবন্ধা ইত্যাদি বিবেচনা করিন্না এক একটি রাষ্ট্রসভাকে করেকটি য়ুনিট চাঁদা দি'তে হয়। ভারতবর্ধ দেয় ৫৬ য়ুনিট। ভারতবর্গর চেয়ে বেশী য়ুনিট দেয় আর কেবল পাঁচটি রাষ্ট্র। স্থতরাং, শুরু ভারতবর্গের বিশালতা ও লোকসংখ্যা হিসাবে নহে, তাহার প্রান্থত চাঁদা হিসাবেও ভাহার লীগ্ কৌ লিলের সভা হইবার দাবি রহিয়াছে ঐ অধিকতর চাঁদাদাতা পাঁচটি মাত্র রাষ্ট্রের পরেই। কিন্তু, যেমন সংস্কৃত প্রবচনে বলে, "দারিদ্র্যাদায়ে শুণারাশিনাশী," তেমনি বলা যাইতে পারে, যে, পরাধীনতা-দোষে অন্ত সব গুণ বা যোগ্যতা থপ্তিত হইরা যায়।

লীগ থে ভারতবর্ধের প্রতি অনেক কর্ত্তব্য করেন নাই, তাহা অনেক বার বলিয়াছি। ১৯২৬ সালে লীগের নিমন্ত্রণে জেনিভা যাইবার পর আমরাই বোধ হয় এদিকে সর্ব্বপ্রথম সর্ব্বসাধারণের দৃষ্টি আকর্ষণ করি। লীগের একটা অবিচারের কথা আবার বলিভেছি।

শীগের খরচের ১০১৩ য়ুনিটের মধ্যে ৫৬টা য়ুনিট অর্থাৎ শতকরা সাড়ে পাঁচ ভাগের কিছু বেশী ভারতবর্ধ দের। অতএব শীগের অধীন চাকরির শতকরা সাড়ে পাঁচটা ভারতীয় দের স্থায়তঃ পাওরা উচিত। কিন্তু নোটায়ুটি
৭০০ (সাত শ)টার মধ্যে ভারতীয়েরা স্থায়ী ভাবে ছয়টাতে
এবং অস্থায়ী ভাবে তিনটাতে নিযুক্ত আছে। শুধু স্থায়ী
চাকরিগুলিই গণনার মধ্যে ধরা উচিত। তাহা হইলে
ভারতীয়েরা শতকরা একটি চাকরিও পায় নাই। যদি
অস্থায়ী তিনটিও ধরা হয়, তাহা হইলে ভারতীয়েরা
শতকরা ১৩এর চেয়েও কম চাকরি পাইয়াছে, অওচ চাঁদা
দেয় শতকরা সাড়ে পাঁচ ভাগেরও বেনী। তভিয়, আরও
একটা কথা মনে রাধিতে হইবে, বে, ভারতীয়েরা লীগের
কোন বিভাগ বা উপবিভাগেই উপরের কোন কাম্ন পায়
লাই, অধ্তদ চাকরি:তই নিযুক্ত আছে।

আফগানিস্থানের লীগ প্রবেশ

আফগানিস্থানও দীগ্ অব্ নেগুলের সভা হইরাছে।
দীগের বে অধিবেশনে আফগানিস্থানের দরপান্ত মঞ্র
হয়, তাহাতে আগা বাঁ ভারত-গবর্মেণ্টের অন্ততম প্রতিনিধিরূপে বক্তৃতা করেন। তিনি বলেন, "দীগ কেবল প্রতীচ্যের এবং একই ধর্মের (অর্থাৎ প্রীষ্টার ধর্মের)
প্রতিনিধি হইবার আদকা থাকার ইহার উদার ও
বিশ্বজনীন হইবার পক্ষে বাধা রহিয়াছে। অতএব
তাঁহার (আগা থানের) মত এক ক্ষন মুস্দমানের বিবেচনার
আর একটি মুস্দমান দেশের দীগের সভা হওয়া কম
কথা নহে। আফগানিস্থানের লোকদের ধর্ম্ম গাহা,
ভারতবর্ষের ৭ কোটি লোকেরও ধর্ম তাই।"

ভবী ভূলবার নয় ! লীগ অব নেশুলেও ধর্ম অমুসারে বধরা চাই। কিন্তু সে বড় কঠিন ঠাই, ওরেটেজের আশা নাই।

বাহাই হউক, ধার্মার কথা বখন উঠিয়াছে, তখন বলিতে হয়, য়ে, ভারতবর্ষে হিন্দু আছে প্রায় ২৪ কোটি, অন্তত্ত্বও অল্পন্থ আছে, এবং ছইটেকারস্ য়ালমান্তাক অনুসারে সমগ্র পৃথিবীতে মুসলমানের সংখ্যা ২১ কোটির কিছু কম। কিছু গুংখের বিষয়, পৃথিবীতে স্বাধীন হিন্দু রাজ্য আছে কেবল নেপাল।

লীগ ও নেপাল

শৌর্ঘ্যে ও লোকসংখ্যার নেপালের চেরে নিমন্থানীর করেকটি রাষ্ট্র লীগ অব নেপ্তলের সভ্য। স্থাতরাং নেপালও তাহার সভ্য হইতে পারে। তা ছাড়া, দাসদিগের মৃক্তিদানরণ লীগের একটি কর্ত্তব্য, নেপাল অতঃপ্রবৃত্ত হইর। করিরাছে। নেপালের প্রধানমন্ত্রীই প্রকৃত শাসনকর্তা। তাহাকে মহারাজা বুলা বর্তনান মহারাজা বুধা শম্পের জং বাহাত্বর রাণা ইংলপ্তে নেপালের দেশিত্যের

ব্যবস্থা করিরাছেন। সম্ভবতঃ লীগ অব নেশুলের সভ্য হইবারও চেষ্টা তিনি করিবেন।

মীরা বেনের আমেরিকা যাত্রা

এক জন ইংরেজ নৌসেনাপতির কন্যা কুমারী সুেড্
মহাত্মা গান্ধীর শিষ্য হন। তাঁহার ভারতীয় নাম
হয় মীরা বেন্ (ভগিনী মীর!)। তিনি বিশাত গিয়া
শ্রমিক শ্রেণীর লোকদের কাছে গান্ধীন্দীর বাণী প্রচার
করিয়াছেন এবং ভারতবর্ধের স্তায্য দাবির কথা তাহাদিগকে
জানাইয়াছেন। তিনি গড়ে প্রতাহ একটা এবং গত ২৮শে
সেপ্টেম্বর পর্যাস্ত প্র্যাষ্টিটা সভায় বক্তৃতা করিয়াছেন।
তিনি বলেন, ইংরেজ শ্রমিক শ্রেণীর কাছে তিনি
আশ্চর্যা রেম্পজন্ (সাড়া) পাইয়াছেন। এই সাড়ার
অকপটতা ও ক্ষমতা ফল দারা অনুমেয় ২ইবে।

এখন মীরা বেন আদেরিকার গিয়া চৌদ্দ দিন থাকিবেন
এবং সেখানে লোকদিগকে ভারতবর্ধ ও মহায়া গাছী সম্বন্ধে
সত্য কথা শুনাইবেন। অবশু, সেখান হইতেও তিনি
সম্ভবতঃ আশার কথা ভারতবর্ধে প্রেরণ করিবেন।
আমেরিকার ইউনাইটেড্ ষ্টেট্স্ দেশটার আয়তন তিন লক্ষ
বর্গ মাইলের অধিক, ভারতবর্ধের দেড়গুণেরও বেশী।
অতবড় দেশে চৌদ্দ দিনে কিছু করা বড় কঠিন। তা ছাড়া,
আমেরিকাতে সকল দেশের সকল লোকের কল্যাণকামী
স্বাধীনতাপ্রিয় মানুষ অনেক থাকিলেও, আমেরিকান্
ভাতিটা ভারতবর্ধের জন্ত ইংলণ্ডের উপর চাপ দিবে,
এরূপ আশা করা গুরাশা। প্রাদির লেখক ডক্টর সাণ্ডার্লগুণ্ড
আমেরিকার রাম্বিক (সিটিজেন)। তাঁহার একটি অভিজ্ঞতা
হইতে এ-বিষয়ে ভারতীয়দের চোখ খুলিতে পারে। ভাহার
বিষয় নীচে লিখিভেছি।

ভারতবর্ষ ও আমেরিকান পুস্তক-প্রকাশকগণ

স্বাই জ্ঞানেন, মিস্ মেয়োর ভারতবর্ষের নিন্দাপূর্ণ বহির আমেরিকায় এবং ইংলওে ও ইউরোপের অন্তান্ত দেশে কাটতি খুব হইয়াছে। তাহার বহি প্রকাশ করিতে তাহাকে কোনই কট্ট স্বীকার করিতে হয় নাই। তাহার অনুবাদও করেকটা ভাষায় হইয়াছে।

অন্ত দিকে ডক্টর সাণ্ডার্ল্যাণ্ডের ভারতবর্ধ-বিবন্ধক বহি প্রকাশের জন্ত তাঁহাকে কিরূপ বেগ পাইতে ও ক্ষডিগ্রন্ত হইতে হইরাছে ওনুন। তিনি আমাদিগকে আমাদের কোন একটা জিজ্ঞাসা উপলক্ষ্যে গভ ৩০শে জুলাই লেখেন:—

"I tried 14 publishers before I found one that would touch my book, with one exception:

the Putnams would issue it and handle it for 6,000 dollars, but would guarantee nothing and would not advertise it. All were afraid of Britain. Copeland was sympathetic with India, but I had to pay him 2,000 dollars down, and 1,000 dollars more later on for advertising. In all, my book cost me over 4,000 dollars," etc.

তাৎপর্য্য। "আমার বহি বে ছুইবে (অর্থাৎ কোন সর্ত্তে প্রকাশিত করিতে রাজী হইবে) এ রকম কোন প্রকাশক পাইবার আগে আমি চৌন্দ ক্ষায়গায় চেষ্টা কবিয়াছিলাম-একটি ব্যক্তিক্রমন্থল আছে। পুটনামরা বলে. যে, তাহাদিগকে প্রকাশব্যর-স্বরূপ হয় হাজার ডলাব দিলে ভাহারা উহা প্রকাশ করিবে এবং দোকানে রাথিয়া কেহ চাহিলে দিবে, किन्ह वहिशानांव विख्वांशन मित्व ना এवः বিক্রীর থেকে যে ধরচ কিছু উঠিবে বা কিছু লাভ হইবে, ভাহার গ্যারাণী দিবে না। সকলেই ব্রিটেনের ভরে ভীত। (कान्गाध (य थाकानक विशानि थाकान कतिवाहित्तन) ভারতবর্ষের সহিত সহ!মুভূতিসম্পন্ন ছিলেন, কিন্তু আমাকে কাঁহাকে আগাম গু-হাজার ডলার দিতে হইয়াছিল, এবং পরে বিজ্ঞাপনের জন্য আরও এক হাজার ডলার দিতে সর্বসমেত, আমার বহিটির জন্ত আমার হইয়াছিল। চাবি হাজার ডলারেরও উপর খরচ হইয়াছিল," ইত্যাদি।

এক ভশার মোটামৃটি তিন টাকার সমান।

ডা: সাণ্ডার্ল্যাণ্ড ভারতবর্ষের জন্ত যে তথু ইহাই করিয়াছেন, তাহা নাহ, বিনা পারিশ্রমিকে বছ বৎসর ধরিয়া ভারতবর্ষের অনেক পত্রিকায় প্রবন্ধ লিখিয়া আসিতেছেন।

খান আবহুল গফ্ফার খান

উত্তর-পশ্চিম সীমান্ত প্রাদেশের কংগ্রেসনেতা থান আবহল গফ্ফার থান বন্দী অবস্থা হইতে মুক্তি পাইরা শান্তিনিকেতনে তাঁহার পুত্রকে দেখিতে এবং রবীন্দ্রনাথের সহিত সাক্ষাৎকারের জন্ত সেথানে গিরাছিলেন। তাঁহার পুত্র সেথানকার ছাত্র। ইহা হইতেই তাঁহার মনের ভাব বুঝা যার। সেগানে কবির ও আশ্রমের পক্ষ হইতে তাঁহার আন্তরিক সম্ভাব ও শ্রমাপূর্ণ অভ্যর্থনা হয়। শ্রীষ্ক্তানন্দাল বহু তাঁহার যে উৎক্তই রেখাচিত্রটি আঁকিরাছেন, বহু মহাশরের সৌজন্যে এথানে ভাহার প্রতিলিপি দিতেছি।

খান সাহেব কলিকাতাতেও আসিয়াছিলেন এবং এখানেও তাঁহার অভ্যর্থনা হইয়াছিল।

বাহারা ভীক্ষতা বশতঃ মৃত্যুভরে বৃদ্ধ করিতে পারে না, তাহাদের অহিংসাবাদের বিশেষ কোন মূল্য নাই। কিন্তু পাঠানরা সেরপ জাতি নহে <u>। বৃদ্ধ</u>প্রিয় সাহসী পাঠানদের মধ্যে অহিংসা প্রচার করিয়া ধান সাহেব থক কক্ষ সভা नहेन्ना "धूना-इ-धित्मन्शांत्र" (क्रेश्वंत्रत्न त्मवकः) मन शिक्राः। ছिन्नाः। এই দলের মূলমন্ত্র ছিল অहिংসা। তাহার।

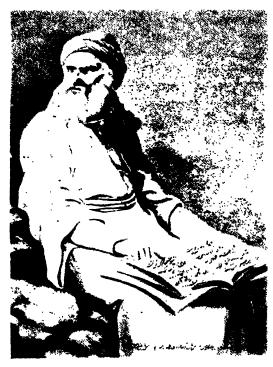


ধান আৰম্ভল গক্কার ধান

লাল কোর্তা পরিত বলিয়া তাহাদিগকে লালকোর্তা দল বলা হইত, কিন্তু রক্তপাতের সঙ্গে তাহাদের কোন সম্পর্ক ছিল না।

পারস্থ মহাকবি ফিরদৌদীর সহস্রবার্ষিক জয়ন্তী

শাহ্-দামা প্রণেতা মহাকবি ফিরদৌসীর জন্ম হর প্রার হাজার বংসর পূর্বে। পারস্তের বর্ত্তমান দৃপতি রিজাশাহ্ পহলবী তাঁহার সহস্রবার্ষিক জরস্তী করিতেছেন। শাহ্-নামা সম্বব্ধে আখ্যারিকা প্রচলিত আছে, বে, গজনীর ফুলতান মামুদ্ধ বলেন, বে, ঐ মহাকাব্যের প্রত্যেক হাজার 'শ্লোকের জন্ত এক হাজার স্বর্ণমূজা কবিকে দিবেন।
স্থলতান প্রধান মন্ত্রীকে তদন্তরপ আদেশ দেন। মন্ত্রী
'ফিরদৌসীকে ঈর্ধা করিত। যথন মহাকাঝাট সম্পূর্ণ
করিয়া কবি তাহা স্থলতানকে উপহার দিলেন, তথন
মাহমুদ কবিকে ৬০,০০০ স্বর্ণমূজা দিতে আদেশ করিলেন।



মহাকবি ফিরদোসী

ইন্ধ্যাখিত মন্ত্রী স্বর্ণমুদ্রার পরিবর্ত্তে মোহর-করা কতকগুলি থলিতে করিয়া রৌপামুদ্রা পাঠাইয়া দিল। যথন থলিগুলি ফরদৌসীর গৃহে পৌছিল তথন তিনি স্নানাগারে ছিলেন। থলি খুলিয়া রৌপামুদ্রা দেখিয়াই তাঁহার মনে হইল স্থলতান তাঁহাকে অপমানিত করিতে চাহিয়াছেন। অতএব তিনি তৎক্ষণাৎ হাক্সামীকে (স্নানাগাররক্ষককে) ২০,০০০, শরবৎ-বিক্রেতাকে ২০,০০০ এবং যে দাস থলিগুলি আনিয়াছিল তাহাকে বাকী ২০,০০০ বথলিস দিলেন। দাসকে বলিলেন, "আমি ধনের জন্ত লিখি নাই, যশের জন্ত লিখিয়াছিলাম।" সমস্ত থবর স্থলতানের নিকট পৌছিলে তিনি উজীরের উপর ক্ষুদ্ধ হইলেন। কিষ্কু পৌছিলে তিনি উজীরের উপর ক্ষুদ্ধ হইলেন। কিষ্কু বুলিয়ার বলিলা, "আপনি যাহা দিকেন, তাহাই সম্মান বলিয়া গ্রহণ করা উচিত। অতএব, ফিরদৌসীর অত্যন্ত বেয়াদবী হইয়াছে।" এইকপ আরও অনেক কথা

বলিয়া উদ্দীর পরিশেষে কবির প্রতি ফুলতানের মনে ক্রোধের সঞ্চার করে। ফলে কবিকে পলায়ন করিয়া নানা কইভোগ করিতে হয়। কবিও ফুলতানের সম্বন্ধে ভীক্ষ বিদ্রুপপূর্ণ কবিতা রচনা করেন।

পরিশেষে স্থলতানের রাগ পড়িয়া যায় এবং তাঁহার মনে কবির প্রতি দয়ার সঞ্চার হয়। তিনি তাঁহাকে ৬০,০০০ অর্ণমুলা পাঠাইয়া দেন। এক দিন কবি বাজারে বেড়াইবার সময় ভানিলেন একটি বালক তাঁহার রচিত স্লতানের প্রতি প্রবৃক্ত বিদ্ধেপের কবিতা আবৃত্তি করিতেছে। তিনি মুর্চ্ছিত হইয়া পড়েন, এবং গৃহে নীত হইবার পর একটিও কণা না বলিয়া মৃত্য়মুধে পতিত হন। যথন তাঁহার দেহ সমাধিস্থ করিতে লইয়া যাওয়া হইতেছিল, তথন স্থলতানের উপহার ৬০,০০০ অর্ণমুলা পৌছে। কবির কলাকে তাহা দিতে চাহিলে তিনি এই বলিয়া তাহা লইতে অস্বীকার করেন, যে, তাঁহার পিতা তাঁহার জীবিত কালে যাহা গ্রহণ করেন নাই, সেই প্রত্যাখ্যাত উপহার গ্রহণ করা তাহার পক্ষে অশোভন হইবে।

আরবদিগের দ্বারা পারস্থ বিজিত হইবার পূর্ব্বেকার পারস্থ-নৃপতিগণের সদ্ধন্ধে শাহ্নামা মহাকাব্য রচিত। ইহা ছাড়া ফিরদৌসীর রচিত কতকগুলি ক্সীদা ও গঙল আছে। তটিয় তাঁহার য়ুফুফ-উ-জুলেইথা নামক কবিতাও পারসীক সাহিত্যে স্থবিদিত।

বঙ্গের রাজনৈতিক অবস্থা সম্বন্ধে স্থভাষচন্দ্র বস্থ

কলিকাতার কয়েকটি ইংরেজী ও বাংলা দৈনিক ইউনাইটেড্ প্রেসের মারফৎ প্রাপ্ত "রিকলিনিয়েশুন" নামক বিলাতী মাসিকে শ্রীযুক্ত সুভাষচন্দ্র বস্ত্ কর্তৃক লিখিত একটি প্রবন্ধ ৩০শে সেপ্টেম্বর ও ২রা অক্টোবর প্রকাশিত করিয়াছেন। উহা এয়ার মেলে (বিমান-ভাকে) প্রাপ্ত বলিয়া উপরে লিখিত আছে। "রিকলিলিয়েশুন" কাগজের গত এপ্রিল সংখ্যায় উহা প্রকাশিত হয়। আমরাও গত সেপ্টেম্বর মাসে ঐ সংখ্যা এক খানি পাই। এপ্রিলের কাগজ সেপ্টেম্বরে কেন পাইলাম বলিতে পারি না। ইউনাইটেড্ প্রেসই বা উহা সেপ্টেম্বর মাসে বিমান-ভাকে কেন পাইলেন, জানি না। তবে, উহা যথন সম্প্রতি এদেশে প্রকাশিত হইয়াছে, তথন সে-সম্বন্ধে কিছু বলি।

ঐ প্রবৃদ্ধটি রিকন্সিলিয়েশুনের এপ্রিল সংখ্যায় ১০৪-৫
পৃষ্ঠায় মুদ্রিত হইয়াছে। ভাহার পরে ১০৫-৬ পৃষ্ঠায়
"আদার ইণ্ডিয়ান ভিউজ" নাম দিয়া ঐ বিলাতী কাগজের
ছ-জন পত্রপ্রেরকের চিঠি ছ্থানি ছাপা হইয়াছে। বিলাতী
কাগজ্পানি গোপনে ভারতবর্ধে আসে নাই,গ্রন্মে লৌর ডাক-

'ক্টিপ্রবাসীটি

বিভাগ উহা পৌছাইয়া দিয়াছে। উহা সন্ত্রাসকদের বা বিপ্লববাদীদের কাগজ্ঞ নহে। বিলাতে "ফেলোশিপ অব রিকন্সিলিয়েশুন" নামক একটি গ্রীষ্টায় সমিতি আছে। উহা তাহার এবং অন্ত কয়েকটি তৎসদৃশ গ্রীষ্টায় সমিতির মুখপত্র। গবন্দে দ্টের গোমেন্দা-বিভাগের ইহার অস্তিত্র না-জানিবার কথা নহে।

প্রবন্ধটি যদিও ৬ মাস পূর্বে লিখিত ও পাঁচ মাসের মধিক পূর্বে বিলাতে প্রকাশিত হইয়াছিল, তথাপি উহা সংপ্রতি বঙ্গে প্রকাশ করা অনাবগুক হয় নাই। কারণ, উহাতে গবর্নো তৌর বে-নে কর্ত্তব্য স্থচিত হইয়াছে, গব্দেণিট তাহা পূর্বে না-কবিয়া থাকিলেও, এথনও করিলে স্ফল ফলিতে পারে।

সুভাষবাৰ বলিয়াছেন, যথনই রাজনৈতিক বন্দীদিগকে কমা করিবার কথা উঠিয়াছে, তথনই পুলিসের রাজনৈতিক শাথা তাছার বিক্লনে তাহাদের সমগ্রাশক্তি নিয়োগ করিয়াছে। রাজনৈতিক বন্দীদিগকে কথনও নথেষ্ট সংখ্যায় উদারতা ও মহাপ্রাণতার সহিত মুক্তি দেওয়া হয় নাই, এবং যাহাদিগকে মুক্তি দেওয়া হয়, তাহাদেরও পশ্চাতে গোয়েন্দা-বিভাগের লোক সর্বাণা এরপ লাগিয়া থাকে, যে, তাহাদের ঐ অপেক্ষাক্ত স্বাধীনতার অবস্থা প্রায় যন্ত্রণাভোগের অবস্থা হয়। স্তরাং রাজক্ষমাতে তাহাদের প্রাণ জুড়ায় না।

তিনি বলিয়াছেন, বৈপ্লবিক প্রচেষ্টার নিদান সম্বন্ধে বৈজ্ঞানিক অনুসন্ধানের প্রস্তাব হইয়াছিল। কিন্তু গবন্দেণ্ট তাহা করাইতে রাজী হন নাই। মানসিক ব্যাধি সম্বন্ধে বিশেষজ্ঞ লেফটেন্তাণ্ট-কর্ণেল বার্কলে-ছিল এই ধরণের প্রস্তাব করিয়াছিলেন। স্থভাষবাবু বলেন, রাষ্ট্রীয় স্বাধীনতার ইচ্ছা ছাড়া বঙ্গে বৈপ্লবিক প্রচেষ্টার একটি কারণ, মেকলে বখন বাঙালী জাতির অপমানকর নিন্দা করিয়াছিল তদবধি বাঙালীদের জাতীয় হীনতা উৎপাদন চেষ্টা।

শুভাব বাবুর তৃতীয় কথা এই, যে, যদিও মধ্যে মধ্যে রাজনৈতিক নেতাদের সহিত (নেমন মহাথ্যা গান্ধী, পণ্ডিত মোতীলাল নেহক প্রভৃতির সহিত) ব্ঝাপড়ার চেষ্টা গবন্দেণ্ট করিয়াছেন, কিন্তু বৈপ্লবিক দলের সহিত এরপ ব্ঝাপড়ার চেষ্টা করেন নাই। তিনি অবশ্য স্বীকার করিয়াছেন, যে, ভৃতপূর্ব গবর্ণর শুর ষ্ট্যানলী জ্যাকসন স্বর্গীয় যতীক্রমোহন সেনগুপ্তের মধ্যবর্জিতায় এরপ ব্ঝাপড়ার জেষ্টা করিয়াছিলেন। তিনি বলেন, এই চেষ্টা বার্থ হইবার কারণ, যে রাজনৈতিক বন্দীদের সহিত কথা হইতেছিল তাঁহারা চাহিয়াছিলেন গবন্দেণ্টের সঙ্গে সাক্ষাৎভাবে কথাবার্তা চালান, প্রলিসের মধ্যবর্জিতা বা মারফভে নহে, কিন্তু গবন্ধেণ্ট ভাহাতে রাজী হন নাই।

প্ভাষ বাবু বলেন, ব.ঙ্গর অনেকের আন্তরিক অন্তৃতি এই, শে, বুঝাপড়ার প্রধান অন্তরায় পুলিসের রাজনৈতিক শাখা; তাহারা নিজেদের প্রণালী অনুসারে কাজ চালাইতে চায়, এবং অক্লাস্ত ভাবে বলিয়া চলিয়াছে, বিপ্লবীরা অপরিতোষণীয় ("irreconcilable")। উত্তরে পুভাষ বাবু বলেন, কংগ্রেসও ত পূর্ণ স্বাধীনতার কমে সম্ভই হইবে না বলিয়াছে, অতএব কংগ্রেসও অপরিতোষণীয়; অথচ গবন্দেণ্ট কংগ্রেসনেতাদের সহিত শ্রাপড়ার চেইণ করিয়াছেন।

· এই শেয়েক্তি কথাগুলি সুভাষ বাবু ছয় মাদ পূরে লিখিয়াছিলেন। তথন এগুলি যতটা সত্য ছিল, এথন তভটা নাই। এখনও কংগ্রেস-নেতারা বলিতেছেন বটে, নে, তাঁহাদের লক্ষা দেই পূর্ণস্বরাজ বা পূর্ণস্বাধীনতাই আছে; কিন্তু, ব্যবস্থাপক সভায় প্রবেশ দারা আংশিক স্বরাজের আন্দোলন চালান সম্ভবপর হইলেও, পূর্ণস্বরাজ তদ্বা সাক্ষাৎভাবে পাওয়া বাইতে পারে না। স্থভায বাব কথাগুলি মথন লিথিয়াছিলেন, তথনও শান্দিক ভাবে, নামতঃ, তাহা সত্য থাকিলেও, বাস্তবিক সত্য ছিল না-কারণ মহান্না গান্ধী তৎপূর্বেই, সাধীনতার সারভাগ ("substance of independence") পাইলে সম্ভ হইবেন, প্রকাশ্যভাবে বলিয়াছিলেন। এই সারভাগের একটা বাস্তব দৃষ্টাস্ত ডোমীনিয়ন ষ্টেটস্। ইহা সতা, যে, স্বয়ং মুভাষ বাবু, পণ্ডিত জওআহরলাল নেহরু এবং অন্ত কোন কোন নেতা বলেন নাই, বে, তাহারা সারভাগে রাজী হ ইবেন।

নথ ন ছই পক্ষে বিবাদ চলে, তথন পরস্পারের শক্তিনামর্থা বৃঝিয়া কোন পক্ষ বা উভয় পক্ষ আপোথে নিপজি করিতে অগ্রসর হয়। লই আকইন তাঁহার আমলে যে গান্ধীজীর সহিত একটা চুক্তি করিয়াছিলেন (যদিও সেই চা'লে কংগ্রেসের পরাজয় হইয়াছিল), তাহার কারণ, অসহবোগ-প্রচেষ্টা প্রায় জয়যুক্ত হইতে বসিয়াছিল। ইহা আমাদের কথা নহে, বোম্বাইয়ের ভূতপূর্ব্ব গবর্ণর লভ লয়েড এই কথা বলিয়াছেন। বৈপ্লবিক প্রচেষ্টা প্রায় জয়যুক্ত হইতে বসিয়াছে, এরূপ অবস্থা কথনও ঘটে নাই। গবন্দেণ্টি যে বৈপ্লবিক নেতাদের সঙ্গে সাঞ্চাবে কথনও ব্যাপড়ার চেষ্টা করেন নাই, ইহা তাহার একটা কারণ, আমাদের অনুমান এইরূপ। কলিকাতা প্লিস ও বঙ্গীয় প্লিসের সর্ব্বাধুনিক রিপোর্ট যিনি পড়িবেন তিনি ব্ঝিতে পারিবেন, সন্ত্রাসক ও বিপ্লবীদেব বিক্লমে গবন্দেণ্টের চেষ্টা ক্রমণঃ অধিকতর সফল হইতেছে।

অসহযোগ বা অহিংস আইনশঙ্গন প্রচেষ্টার সহিত বৈপ্লবিক প্রচেষ্টার একটি প্রভেদ আছে। প্রথমোক্ত প্রচেষ্টা এক প্রকার সিভিল বা প্যাসিভ রিজিষ্ট্যান্স বা 'নিজিম্ম প্রতিরোধ।' দক্ষিণ-আফ্রিকায় মহায়া গান্ধীর নেতৃত্বে যখন তথাকার ভারতীয়েরা প্যাসিভ রিজিষ্ট্যান্স করিয়াছিল, তখন ভারতের বড়লাট লর্ভ হাডিং বিলয়াছিলেন, যে, উহা এক প্রকার কন্সটিউগ্রন্থাল (মূলরাষ্ট্রবিধির স্বন্থামী) প্রচেষ্টা। এরূপ প্রচেষ্টা ইংলণ্ডে অনেক বার হইয়াছে। এরূপ প্রচেষ্টার নেতাদের সহিত গবন্মে ণ্টের ব্রাপড়া হইতে পারে। কিন্তু সে নজীরে সম্থাসন বা অক্যবিধ বৈপ্লবিক প্রচেষ্টার নেতাদের সহিত কথাবার্ত্তা চলে না। অবশ্রু, অনেক দেশে স্বাধীনতা-গৃদ্ধে লিগু লোকদের বা বিদ্রোহীদের সঙ্গে তথাকার গবন্মে ণ্টের কথাবার্ত্তা অবস্থাবিশেষে চলিয়াছিল, ইতিহাসে এরূপ দেশ যারা। কিন্তু ভারতবর্মের সন্থাসন বা বিপ্লব চেষ্টাকে স্বাধীনতার দৃদ্ধ বা বিদ্রোহ নাম সাধারণ প্রচলিত মর্পে দেওয়া যায় না।

বঙ্গের বাণিজ্য-শুল্ম

বঙ্গের সমুদ্রপথবাহিত বাণিজ্যের ১৯৩৩-৩৪ সালের সরকারী রিপোর্টে দেখিলাম, আমদানী ও রপ্তানী পণ্য-দ্বোর উপর বাণিজ্য-শুল ১৯৩২-৩০ সালে আদায় হইয়াছিল নিট ১৬,৮৬,৯৩,০০০ টাকা এবং ১৯৩৩-৩৪ সালে আদায় হইয়াছিল নিট ১৪,৭৩,২৭,০০০ টাকা। আদায় কম হউক বা বেলা হউক, বাংলা-গবন্দেণ্ট এই শুলের টাকার একটি প্যসাও পাইতেন না; এই বৎসর হইতে পাটের শুলের অংশ বাবদে মাত্র অল্প কিছু পাইবেন।

এই প্রকার, রেলওয়েগুলি যাত্রী ও মাল বহন করিয়া

থত টাকা অর্জন করে, বাংলা দেশের শুধু হাবড়া ষ্টেশন

হইতে যাহারা ও যত মাল যায় এবং ঐ ষ্টেশনে যাহারা ও

যত মাল আসে তাহা হইতে প্রাপ্ত ভাড়ার মোট পরিমাণ

খুব বেনী। অথচ, তাহারও কোন অংশ বাংলা-গবন্দে গট
পান না।

প্রাদেশগুলির গবন্মেণ্ট এবং কেন্দ্রীয় ভারত-গবন্মেণ্টর মধ্যে রাজস্ব বন্টন এমন ভাবে করা হইয়াছে, যে, তদন্সারে বঙ্গের ভৌগোলিক অবস্থানের ও কোন কোন ফসল উৎপাদনের প্রাকৃতিক উপযোগিতার ফল বাংলা-গবন্মেণ্ট পান না। বাংলা-গবন্মেণ্টের দেনদার গবন্মেণ্ট হইবার ইহাই প্রধান কাবণ।

স্থইডেনে ব্যায়ামদক্ষ বাঙালী

ঢাকার শ্রীযুক্ত উপেক্সরঞ্জন বিশ্বাস, বি-এ, এখন মাসগো বিশ্ববিদ্যালয়ে শিক্ষাবিজ্ঞান অধ্যয়ন কৈরিতেছেন এবং দৈহিক শিক্ষার প্রতিষ্ঠান স্কটিশ কলেজ অব্ ফিজিক্যাল এড়কেশুনেও শিক্ষালাভ করিতেছেন। তিনি সুইডেনের মাল্মাহেড্নামক স্থানে গত গ্রীপ্নের সময় সুইডিশ ব্যায়াম-উৎসবে (Swedish gymnastic festival) ব্যাগদান



শীযুক্ত উপেক্সরঞ্জন বিখাস

করেন। ইউরোপের নানা স্থান হইতে সমাগত জনতা বিদেশী বলিয়া তাঁহার সমাদর করেন। তিনি সুইডেন পৃথিবীবিখ্যাত ব্যায়ামপ্রণালী জন্ত সারা ভ্রমণ করিয়াছেন। সিড্সভেনকা জিমনাষ্ট্রীক প্রতিগ্রান (Sydsvenska Gymnastic নামক Instituet) তাহাকে প্রশংসাপত্র (diploma) দিয়াছে। তিনি সুইডিশ জিন্নাষ্ঠীক সভা হইতে "শ্ৰেষ্ঠ ব্যানামদক্ষের নিদর্শন" "(Elite gymnastic mark") লাভ করিয়াছেন। তাঁহার পূর্ব্বে কেবল এক জন বিদেশী এই নিদর্শন পাইয়াছিলেন। তিনি বাংলা দেশে ফিরিয়া আসিলে তাঁহার সুইডেনের উৎকৃষ্ট ব্যায়ামপদ্ধতির অভিজ্ঞতা দেশের কাজে লাগিবে।

সাংবাদিকের কার্য্য শিক্ষা

কলিকাতার যে ভারতীয় সাংবাদিক সভা (Indian Journalists' Association) আছে, কয়েক বৎসর পূর্বে তাহা সাংবাদিকের কার্য্য শিখাইবার ব্যবস্থা করিবার জল্ল কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়কে অনুরোধ করিবেন স্থির করেন। কি কি বিষয় শিখাইতে হইবে, ইত্যাদি নির্দ্ধান্য করিবার জল্প একটি কমিটি নিযুক্ত হয়। তাহার সভাদের মধ্যে দুলীর নলিনাক্ষ সাল্লাল খুব উদ্যোগী ছিলেন। শিক্ষণীয় বিষয় গ্রভৃতি লিপিবদ্ধ হয়, এবং তাহা বিশ্ববিদ্যালয়ের নিকট প্রেরিভও হয়। বিশ্ববিদ্যালয় কিছু করেন নাই।

সম্প্রতি পূর্ব্বোক্তরূপ প্রস্তাব আবার হইয়াছে, এক লাটসাহেবদের কাছে থেমন প্রার্থীর দল থায় সেইরূপ কয়েক জ্বন সাংবাদিক কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের ভাইস-চাঙ্গেলারের নিকট গিয়াছিলেন। তিনি বিবেচনা করিবেন শ্রীয়ক্ত মুণালকান্তি বহু তাঁহার একটি বক্ততায় বিশ্ববিদ্যালয়কর্ত্বক এরপ শিক্ষাদানের নজীর এবং গোক্তিকতা দেখাইয়াছেন। আমরা এরপ শিক্ষাদানের প্রাক্তন আছে মনে করি। অনেক স্বাধীন দেশে শেরপ বোগ্য সাংবাদিক আছেন, এদেশে তেমন না-থাকিতে পারেন, এবং শিক্ষা দিবার লোক বিদেশের মত তত ভাল না-জুটি.ত পারে। কিন্তু অন্ত সব বিবরের শিক্ষাদান বেমন ভারতীয় অধ্যাপকদের দারা চলিতেছে, সাংবাদিকের কাজ শিখানও সেইরূপ চলিতে পারিবে। যত ছাত্রছাত্রী ইহা শিখিবে, সকলেরই বে কাজ জুটিবে, এমন নয়—হয়ত অধিকাংশেরই জুটিবে না। কিন্তু তথাপি ইহা শিথিলে জ্ঞান বাজিবে, মানসিক উন্নতি হইবে। বিশ্ববিদ্যালয়ে শিক্ষিত আরও অনেক বিদ্যা চাকরিপ্রাপ্তি হিসাবে কাজে লাগে না। স্বাধীন রোজগারের উপায় হিসাবে আইনের পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হওয়া শত শত যুবকের কোনই কাজে লাগে না, এমন কি ডাক্তারী পাস করিয়াও অনেকের অর হয় না তথাপি বিশ্ববিদ্যালয় নানা বিদ্যা ও विशासक्ष । কতকগুলি বৃত্তি শিখা**ইতেছেন। সাংবাদিকে**র কাজ বহি পড়িয়া ও ব্যাখ্যান শুনিয়া স্বটা শিখা যায় না বটে, খব রর কাগজের সংস্রবে কাজ করিয়া অনেকটা শিথিতে হয়। কিন্তু উকীলের কাজ, ডাক্তারের কাজ প্রভৃতিও অনেকটা ঐ প্রকারে শিথিয়া পরে এপ্রেণ্টিসী করিয়া শিথিতে হয়।

কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় সাংবাদিক-বিদ্যা শিথাইবার বন্দোবস্ত করিলে এবং কোন কোন সংবাদপত্তের সহিত সম্পর্কিত ব্যক্তিদিগকে শিক্ষক নিযুক্ত করিলে, বিশ্ব-বিদ্যালয়ের কর্তৃপক্ষকে মনে রাখিতে হইবে, বে, বিশ্ববিদ্যালয় সম্বন্ধে ঐসব সংবাদপত্তের সমুদ্য মন্তব্য বা অবস্থাবিশেষে তথ্যীস্থাব সাবধানতার সহিত বিবেচ্য।

অমুন্নত শ্রেণীসমূহের উন্নতিবিধায়িনী সমিতি

বাংলা দেশ ও আসামের অনুনত শ্রেণীসমূহের উন্নতি-বিধায়িনী সমিতির ১৯৩৩-৩৪ সালের বার্ষিক রিপোর্ট প্রকাশিত হইয়াছে। তাহাতে দেখা নায়, এই বৎসর সমিতির তন্ত্রাবধানে ৪৪৪টি বিদ্যালয় ছিল এবং তাহাতে মোট ১৮২৬৯টি ছাত্র-ছাত্রী শিক্ষা পাইতেছিল। সমিতির মেটি বায় হইয়াছিল ৬৭০৪১৸/৮॥। ইহার স্থায়ী ফণ্ডে ৩৬২১২॥ টাকা জমা হইরাছে। স্থায়ী কণ্ডটিকে এক লক্ষ টাকা পবিমিত কবিবার সঙ্কল্প আছে। ভাহার সুদ সুবিধা হইবে। হইতে সমিতির চলতি বায়নির্কাহের নানা কারণে কারক বৎসর হইতে সমিতির আয় যথেট হইতেছে না। ইহা সাতিশয় তুঃথের বিষয়। নিরক্ষর লোকের সংখ্যা এদেশে অত্যন্ত অধিক। সমিতি বিদ্যালয় স্থাপন দ্বারা গত ২৫ বৎসর নিরক্ষরতা কমাইবার চেষ্টা করি**ত**েছন। আরু যত বাডিবে, ইহার বিদ্যালয়ের ও ছাত্রছাত্রীর সংখ্যা তত বাড়িবে, এবং বিদ্যালয়গুলিতে প্রদন্ত শিক্ষার উৎকর্যসাধনও সেই পরিমাণে করা চলিবে।

ইহার ৪৪৪টি বিদ্যালয়ের মধ্যে ১২৮টি বালিক:-বিদ্যালয়। ছাত্রের সংখ্যা ১২৯৭৮, ছাত্রীর সংখ্যা ৫২৯১। জ্বান্তিধর্মনির্বিশেষে সকলে এই সব বিদ্যালয়ে পড়িভে পারে ও পড়ে।

বিদ্যাশয় ছাড়া সমিতির পাঁচটি সর্ক্সাধারণের বাবহার্যা লাইব্রেরী ৫টি গ্রামে আছে, ছটি ব্রতী বালক দল ছটি গ্রামে আছে, বিপদ আপদের সময় সাহান্য করিবার জক্ত ৪টি গ্রামে চারিটি সেবাসমিতি আছে, এবং স্বাস্থ্যরক্ষা সম্বন্ধে উপদেশ দিবার জক্ত ম্যাজিক লগ্নন সহথোগে বক্তৃতা করিবার বন্দোবস্ত আছে।

বংশা দেশ ও আসামে কোন বেসরকারী সমিতি ইহার মত মিতবায়িতার সহিত এত অধিক বিদ্যালয় এ-পর্যাস্ত চালান নাই। সকলেরই ইহাকে যথাসাধ্য সাহায্য করা উচিত। সাহায্য ইহার সম্পাদক শ্রীযুক্ত ডাক্তার প্রাণক্কম আচার্যা, এম্-এ, এম-বি, মহাশয়কে ৪০ কারবালা ট্যান্ধ লেন, কলিকাতা, ঠিকানায় পাঠাইলে তিনি ক্লতক্সতার সহিত তাহার প্রাপ্তিম্বীকার করিবেন।

শ্রীযুক্ত রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর, আচার্য্য প্রফল্লচন্দ্র রায়, প্রভৃতি ইহার কার্য্যের প্রশংসা করিয়াছেন।

বঙ্গে জলপ্লাবন

এ-বংসর বঞ্জের বাহিরে জলপ্লাবন হইয়াছে, বজ্জের অনেক জ্বেলাতেও হইয়াছে। গ্রীহট্ট, মালদহ, রাজশাগী, পাবনা, মুর্শিদাবাদ, নদীয়া প্রভৃতি জ্বেলায় জলপ্লাবনে লক্ষ্ণ লক্ষা বেপর হইয়া ত্রংখ ভাগ করিতেছে। ভাহাদের যথেষ্ট সাহাব্য হই তেছে না। অর্থের এবং কর্ম্মীরপ্ত
অপ্রাচ্যা অন্তৃত হই তেছে। এই বৎসর নানা নৈসর্গিক
বিপৎপাতে বদান্ত লোকেরাও আর সাহায্য করিতে
পারিতেছেন না। অন্তদের ত কথাই নাই। যথেষ্ট কর্মী
এই কার্য্যে অগ্রসর না হইবার অনেক কারণ থাকিতে
পারে। বিশুর উৎসাহী যুবক বিনা বিচারে বন্দী হইয়া
আছে। মর্লী যে বলিয়াছিলেন, "It is silly to be in
such hurry to root out the tares as to pluck
up half your wheat at the same time," "ভোমার
গমের ক্ষেতের আগাছা উপড়াইয়া ফেলিবার অতিবাস্ততায়
অর্কেক গমও যুগপৎ উপড়াইয়া ফেলিবার অতিবাস্ততায়
অর্কেক গমও যুগপৎ উপড়াইয়া ফেলা মৃঢ়তা," একথা
মিগা নয়। অনেক যুবক অসহযোগ আন্দোলনের
বিফলতায় সকল কাজে নিক্রৎসাহ হইয়া পড়িয়া থাকিবে।
দানের ও সৎকর্মনীলতার প্রেরণা নৃতন করিয়া আমাদের
মধ্যে আসা আবঞ্চক হইয়াছে।

পূজার বাজারে বাঙালীর তৈরি কাপড

পূজার সময় হিন্দু বাঙালীরা ত নুতন কাপড় কিনিবেনই, বাহারা হিন্দু নহেন তাঁহারাও অনেকেই ছেলেমেমেদিগকে নূতন কাপড় দিয়া থাকেন। স্কল বাঙালীর বঙ্গে উৎপন্ন খন্দর ও হাতের তাঁতের অন্ত কাপড় এবং বঙ্গে স্থিত বাঙালীর কলে প্রস্তুত কাপড়ই ক্রয় করা একাস্ক কর্ত্তবা।

ব'ংলা দেশে যে কয়টি কাপড়ের কল আছে, তাহার অ'নক গুণ বেণী কল লাভের সহিত চলিতে পারে। সব বাঙালী কেবল বঙ্গে স্থিত বাঙালীর কলে তৈরি কাপড় কিনিলে ইহা সহজেই সম্ভব হয়।

জেলায় জেলায় আলাদা পাঠ্যপুস্তক

বঙ্গের ভিন্ন ভিন্ন জেলায় ভিন্ন ভিন্ন পাঠ্য পুত্তক চালাইবার একটা প্রস্তাব হইম্নাছে। এই সাতিশয় অনিষ্ট-কর প্রস্তাব অন্সারে কথনও কাজ হওয়া উচিত নয়।

জিতেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়ের দান

ত্রেক্সনাথ বন্দ্যোপাধ্যারের কনিষ্ঠ প্রাতা জিতেক্সনাথ বন্দ্যোপাধ্যার মহাশর বঙ্গে ব্যারামাদির দ্বারা দৈছিক উন্নতি সাধনার্থ নিজের লক্ষাধিক টাকার সম্পত্তি দান করিয়াছেন। তিনি নিজে খুব বলিষ্ঠ পুরুষ। এই সৎকার্য্য দ্বারা সকলের ক্ষতজ্ঞতাভাজন হইলেন।

বিলাতে অবাঙালী আসামবাদীদের প্রতিনিধি প্রেরণ

আসামের অবাঙালী অধিবাসীদের করেক জন প্রতিনিধি
বিলাত যাইতেছেন। তাঁহারা ইংরেজদিগকে ও ব্রিটিশ
সরকারকে হুটি প্রার্থনা জানাইবেন : (>) আসামে উৎপন্ন
পেট্রলের শুলের ও পাটের শুলের সব টাকা আসামগবন্দ্রেণ্টকে দেওয়া হউক। ইহা আমরা স্তার্থনকত
মনে করি। (২) প্রীহটকে বঙ্গের সামিল করা হউক।
যদি আসামের অস্ত বাঙালীপ্রধান জেলা ও মহকুমাগুলিকেও
বঙ্গের মন্তর্গত করা হয়, তাহা হইলে আমরা ইহার
বিরোধিতা করিব না; নত্ব। আমরা ইহার বিরোধী।

বিহারে বাঙালীবিদ্বেষ

বিহারে ভমিকম্পে বিপন্ন লোকদের সাহায্যার্থ দান সব প্রদেশের লোকেই করিয়াছে, বাঙালীরাও করিয়াছে; বিপন্নের সাহাত্যার্থ অবৈতনিক বাঙালী কলীরাও খাটিরাছে। কিন্তু বিহারের ব্যবস্থাপক সভায় মৌলবী গনি বলেন, ভূমিকম্পে বিপন্নদের সাহায্যার্থ গবর্মেণ্ট যে-সব লোক নিযুক্ত করিবেন তাহার। যেন বিহারীই হয়। বাবু নন্দকুমার ঘোষ বলেন, অন্তান্ত প্রদেশের লোকেরাও টাকা দিয়াছে, অতএব বিহারী না হইলেও গোগ্য অন্ত লোকদিগকে নিযুক্ত করা উচিত। বলা বাহুলা, বিহার এই অন্ত লোকদের মধ্যে বাঙালীর সংখ্যাই বেণী। বিহারের অন্ততম বিহারী নেতা. অমৃত বাজার পত্রিকার পরম বন্ধু, মিঃ সচ্চিদানন্দ সিংহ চাতুরী সহকারে বলেন, অন্তান্ত প্রদেশের লোকেরা দানের পরিবর্তে প্রত্যাপকারের আশায় দান করে নাই, স্তরাং বিহারী ছাড়া আর কাহাকেও চাকরি দেওয়া উচিত নয়। দাতারা প্রতিদানের আশার দান করেন নাই, ইহা সত্য; কিন্তু ইহাও সত্য, যে, যাঁহারা দান করিয়াছেন, কাজ দিবার বেলায় তাঁহাদের প্রদেশের লোকদিগকে বাদ দেওয়া হইবে, এ সম্ভাবনাও তাঁহাদের মনে আসে নাই। ভূমিকম্পদৃশ্যকীয় কাজে যাহাতে কেবল বিহারী যুবকেরা কাজ পায় এবং কেবল বিহারী ঠিকাদররা কণ্ট্যাক্ট পায়, তাহার জন্ত মিঃ সচিচদানন্দ সিংহ, বাবু শ্রীকৃষ্ণপ্রসাদ ও মিঃ হাফেব্রু থুবই আগ্রহায়িত। বিহারীরা বিহারে কাজ পাইবেন, ইহা খুব স্বাভাবিক; কিন্তু বিহারবাসী অবিহারীদিগকে বাদ দিলে অন্য সব প্রদেশের সাহায্য বিহারীদের আশা করা উচিত নয়, এবং অনা সব প্রাদেশে বিহারীরাও বাদ পড়িতে পারেন।

ইংরেজ জাতি নিশ্চিস্ত থাকুন—ভারতবর্ষের লোকেরা এরূপ সংকীর্ণননা, যে, এখানে জাতিধর্মভাষাপ্রাদেশ-নির্বিশেষে একতা প্রতিষ্ঠিত হওরা কুদূরপরাহত।

ভারতরক্ষা সম্বন্ধে ডাঃ মুঞ্জের বক্ত তা

নাগপুর বিশ্ববিদ্যালয়ের য়ুনিয়ন সোসাইটি ছারা আছত এক সভায় হিন্দু মহাসভার ভৃতপূর্ব সভাপতি ডাঃ মুঞ্জে বলেন—

ভারতবর্ষ স্বরাজলাভের জন্ম আন্দোলন করিতেছে।
কিন্তু স্বরাজ পাওয়া গেলে তাহা রক্ষা করা এবং বহিঃশক্র

ইইতে ভারতবর্ষ রক্ষা করা কি প্রকারে ইইতে পারে, সেদিকে ভারতীয় রাজনীতিজ্ঞানের দৃষ্টি পড়ে নাই। পশ্চিম
'ও উত্তর-পশ্চিম দীমাস্ত দিয়া ভারত প্রাচীন কাল ইইতে
আক্রান্ত হইয়া আসিয়াছে। সীমান্ত রক্ষা সোজা কাজ নয়।
স্থলে দীমান্ত ৭০০০ মাইল লম্বা; তা ছাড়া সমুদ্রোপক্ল
আছে। পূর্ব্ব ও উত্তর-পূর্ব্ব দীমান্তের কথাও ভাবা উচিত।
তাহা এখন নিরাপদ হইলেও বরাবর নিরাপদ না-থাকিতে

ভারতবর্ষের কারখানাসমূহ অল্পাধিক জামেনীর কারথানাসমূহের মত করিয়া গড়া উচিত। সে দেশের कात्रथाना छिल भाष्ठित ममग्र नाना भगाजवा छेरभागन करत, যুদ্ধের সময় যে-কোন কার্থানা দেশরকার জন্ত ব্যবহৃত হইতে পারে (অর্থাৎ তাহাতে যুদ্ধের সরঞ্জাম প্রস্তুত হইতে পারে)। মোটর গাড়ী ও এরোপ্লেন নিম্মাণের কারণানা ভারতবর্ষের নানা স্থানে স্থাপন করা উচিত। শিক্ষা-প্রতিষ্ঠানদকলে ব্যায়ামশিক্ষা ও বন্দুক-দেঁাড়া আবশ্রিক হওয়া উচিত। প্রাথমিক যুদ্ধশিক্ষা দিবার বন্দোবস্ত কর্ত্তব্য। অনেক রাইফল-সমিতি গঠন করা যুবকদিগকে **দ**াতার উচিত। শিথান স্বেচ্ছাসেবক দল গঠন, লাঠিহন্তে ডিল শিক্ষার ক্লাস স্থাপন প্রাকৃতি দারা যুবকদের স্বাস্থ্যের উন্নতি করা আবশুক। তাহা করিতে পারিলে দশ বংসরের মধ্যে দেশের চেহারা বদলাইয়া যাইবে, এবং তথন গবনেটি বলিতে পারিবেন না, নে, গামরা স্বরাজের উপযুক্ত নহি। (এ-বিষয়ে আমাদের সন্দেহ আছে-প্রবাসীর সম্পাদক)

ডাক্তার মুঞ্জে যাহা বলিন্নাছেন, আমরা দেখিয়াছি নাগপুরে কোন কোন দিকে সেইরূপ কাজ হইতেছে। সেখানকার যুবকদিগের লাঠি-ডিল দেখিয়া প্রীত হইয়া-ছিলাম। ডাঃ মুঞ্জে নাগপুরে যেরাইফল্ সমিতি স্থাপন করিয়াছেন, তাহাতে অনেক যুবক বন্দুক চালাইতে শিখিয়াছে ও শিথিতেছে।

, বঙ্গে ডাকাতী ও নারীহরণ

বাংলা-গবমেণ্ট সম্ভাসকদের হাত হইতে রক্ষার জন্ত সৈব ইংরেজ কর্মচারীর — বিশেষতঃ শাসন ও পুলিস বিভাগের কর্মচারীদের—জন্ত : সশস্ত্র রক্ষীর বন্দোবস্ত করিয়া নিজের কর্ত্তব্য পালন করিয়াছেন। তদ্ভিন্ধ, ঐ সকল কর্মচারীর নিজেদেরও অন্ত্র অংছে। কিন্তু ডাকাতদের হাত হইতে লোক:দর—বিশেষতঃ গ্রামের লোকদের—রক্ষার জন্ত যথেষ্ট সরকারী ব্যবস্থা নাই, এবং পশুপ্রস্কৃতি লোকদের হাত হইতে নারীদের রক্ষার জন্তও যথেষ্ট বন্দোবস্তু নাই।

অন্ধ চন্দ্ৰ-মাৰ্কা ইম্পীরিয়্যাল কেমিক্যাল ইণ্ডাষ্ট্ৰিজ্লিমিটেড

থবরের কাগজের পাঠকেরা জানেন, ''ইম্পীরিয়াল ইণ্ডাষ্ট্রিক্তি (ইণ্ডিয়া) লিমিটেড" নামক কেমিক্যাল ভারত-গবন্মেণ্ট কোম্পানীকে ৫০ বংসরের জন্ত পঞ্জাবের কোন কোন স্থানের থনিজ কোন কোন জিনিষ উত্তোলন ও ব্যবহারের একচেটিয়া অধিকার দিয়াছেন বলিয়া ভারতীয় ব্যবস্থাপক সভায় তর্কবিতর্ক হইয়াছিল। ভারতে রেজিষ্টা হইয়া থাকিলেও ইহা ইংরেজদের কোম্পানী। ভারতের এক ভূতপূর্ব্ব বড়লাট লর্ড রেডিং ইহার চেয়ারম্যান। ভারতীয়দের অজ্ঞাতসারে ইহা গঠিত এবং ইহাকে একচেটিয়া অধিকার প্রদত্ত হয়। ভবিষাতে হয়ত আরও অনেক একচেটিয়া অধিকার ইহাকে দেওয়া হইবে। সকল দেশের জাতীয় (National) গবনের্ণি নিজ নিজ জাতির লোকদের (Nationals(দর) দ্বারা নিজ নিজ দেশের প্রাকৃতিক সম্পদের ব্যবহারের ব্যবস্থা করেন। ভারতবর্ষের স্তাশস্তাল গবন্দেণ্ট না থাকায় সেইরূপ ব্যবস্থা হয় নাই। লর্ড রেডিং বড়লাট থাকা কালে দেশশাসন করিতেন, এবং অবসর সময়ে হয়ত পেন্সান শইবার পর ভারতবর্ষ হইতে আরও অর্থ সংগ্রহের জন্ত কোগায় কি থনিজ সম্পত্তি আচে, তাহার থবর রাখিতেন। এখন তাহা কাজে লাগিল।

এই কোম্পানীর আয়োজন যে অনক দ্ব অগ্রসর হইয়াছে, তাহা জানিতাম না। ৩০শে সেপ্টেম্বরের অমৃত বাজার পত্রিকার প্রথম পূঞায় সমগ্রপৃঞ্চারাপা ইহার বিজ্ঞাপনে ব্ঝিলাম, কলিকাতা, বোম্বাই, মাক্রাজ, লাহোর, রেঙ্গুন, কোলোম্বো, কানপুর, পাটনা, আহমদাবাদ, কোচিন, কালিকট, বিজাগাপাটাম, করাচী ও অমৃতসরে ইহার গদী স্থাপিত হইয়াছে।

ইহার ট্রেড্মার্ক অর্থাৎ ব্যবসার মার্কা ক্রেসেণ্ট অর্থাৎ অর্দ্ধচন্দ্র। যথাযোগ্য বটে! ইহার প্রসাদে কত দেশী রাসায়নিক ব্যবসার অদৃষ্টে মর্ত্তালোক হইতে অর্দ্ধচন্দ্র ভবিষ্যতের গর্ভে নিহিত।

তুর্গাপূজা ও কালীপূজা উপলক্ষ্যে অনেক পশুবলি হইবে ামরা বলির বিরোধী। স্বর্গীয় পণ্ডিত শরচ্চক্র শাস্ত্রী নিষ্ঠাবান শাস্ত্রক্ষ হিন্দুর দিক হইতে কয়েক বৎসর পূর্ব্বে 'প্রবাসী'তে গশুবলি যে শাস্ত্রীয় বিধি অনুসারেও অত্যাবগ্রক নহে, তাহা দেখাইয়াছিলেন।

বার রাজেন্দ্রপ্রসাদকে কংগ্রেস সভাপতি নির্ব্বাচন

ধোম্বাইয়ে কংগ্রেদের আগামী অধিবেশন হইবে। বিহারের কংগ্রেসনেতা বাবু রাজেল্রপ্রসাদ তাহার সভাপতি নির্বাচিত হইয়াছেন। এই নির্বাচন ঠিক হইয়াছে। ইহার আগেই কোন অধিবেশনের সভাপতি তাঁহাকে করা উচিত ছিল। তিনি বিদ্বান ও কর্মিট ব্যক্তি। তিনি ওকালতী ছাড়িয়া অসহযোগ আন্দোলনে যোগ দেন, তথন ওকালতীতে ভাঁহার বেশ পসার ছিল এবং পসার ক্রমণঃ ব¦ড়িতেছিল। কালক্র.ম তাঁহার জজ হওয়া আশ্চর্যোর বিবয় হইত না। অসহবোগ সাংসারিক আন্দোলনে বোগ দে ওয়ায় তাঁহার অসুবিধা গুবই হইয়াছে। তাঁহাকে কারারুদ্ধও হইতে হইগ্নাছিল। বিহারে ভূমিকম্পের পূর্ব্বেও তিনি জনহিতকর কাজে ব্যাপত থাকিতেন। ভূমিকম্পের পরে যে তিনি বিপন্নদের সহায়ক প্রধান কন্দ্রী হইয়া আছেন, ইহা সংবাদ-পত্রের পাঠকমাত্রেই জানেন। তিনি চরিত্রবান নম প্রকৃতির মানুষ।

কলিকাতায় খান আবহুল গফ্ফার খানের সম্বর্জনা

কলিকাতার নাগরিকগণ টাউন হলে সমবেত হইয়া গান আবহুল গফ্ফার খানের সম্বর্ধনা দ্বারা গুণীর আদর করিয়াছেন। তিনি উত্তর-পশ্চিম সীমাস্ত প্রদেশের রণদক্ষ পাঠানদের মধ্যে অহিংসাবাদ প্রচার করিয়া "সীমাস্ত গান্ধী" অংখ্যা পাইয়াছেন।

টাউন হলে সম্বৰ্জনার উত্তরে তিনি বলেন, ভারতবর্ষ হিন্দু মুসলমান সকলেরই দেশ। ভারতবর্ষে বে-কেই স্থায়ী ভাবে বাস করে, ইহা তাহারই দেশ, ইহা সত্য কথা। কিন্তু "আমার দেশ" বলিলে কে কি বুঝে, তাহার আলোচনাও, অন্ততঃ মনে মনে, সকলের করা উচিত, এবং আয়ুপরীকা করা উচিত। লোহার সিন্দুক ও তাহার মধ্যস্থিত টাকাগুলি আমার, রসগোল্লার

তাহার উক্তিতে "আমার" শন্দের মানে নাহা হয়, "আমার দেশের" "আমার" শন্দের অর্থ কেবলমাত্র বা প্রধানতঃ তাহা হওয়া উচিত নয়। "আমার দেশ" বলিতে প্রকৃত দেশভক্ত লোক ইহা বুঝেন না, বে, ইহার ধন রত্ন প্রথমেবিধাগুলি আমার, কিন্তু ইহার জন্ত তুঃথভোগ ও আম্মোৎসর্গ করিবার অধিকার বা দায় অস্তের, ইহার সেবা করিবার ভার অস্তের। বস্তুতঃ দেশের লোকদের সেবা বে করিবে, দেশের নৈসর্গিক সম্পদ দেশের লোকদের কাজে নে লাগাহবে, দেশকে স্ক্রের, স্বাস্থ্যকর, কার্য্যসৌকর্য্যময় বে করিবে ও রাখিবে, দেশ তাহার। খান আবহুল গফ্কার খানের প্রবং তাহার মত অন্ত লোকদের ভারতবর্ধকে "আমার দেশ" বলিবার অধিকার আহতঃ ।

অল্পদিন পূর্বো আলীগড় বিশ্ববিদ্যালয়ের ছাত্রদের সভায় একটি বিতর্ক হয়। ছাত্রেরা মুদলমান। এক জন ছাত্র এই প্রস্তাব পেশ করেন, যে, "মুদলমানদের ভারতবর্ষে থাকিবার অধিকার নাই"। ইহার সপক্ষে বক্তৃতা ছাত্রেরা করেন, বিপক্ষে বকুতা বয়োবৃদ্ধ থেতাবধারী মুসলমানেরা করেন। শেয়ে ভোট লওয়ায় খুব বেশী ভোটের জোরে প্রস্থাবটি সভায় গৃহীত হয়। ইহার সপক্ষে বাঁহারা বক্ততা करतन, अशापन श्वान युक्ति अहे हिन, त्व, मूननमान নেতারা স্বার্থপর এবং নিজেদের সাংসারিক স্বিণা দেখেন; দেশকে স্বাধীন করিবার চেষ্টা না-করিলে, তাহার কল্যাণ-চেষ্টা না-করিলে সে-দেশের অধিবাসী হইবার অধিকার কাহারও নাই। এই শেধোক্ত কথাটি সতা। কিন্তু আলীগড়ের ছাত্রদের বিতর্ক-সভায় যে প্রস্তাব সূহীত হইয়াছে, তাহা সর্কাংশে ভাষা বলিয়া আমরা মনে করি না। ভারতের সব মুসলমান-নেতা বা সব সাধারণ মুসলমান স্বার্থপর ও কেবল নিজ নিজ সাংসারিক শ্বিধা দেখেন, ইহা সত্য নহে। তা্হাদের মধ্যেও পরার্থপর ও দেশসেবক লোক আছেন। অন্ত দিকে হিন্দুদের মধ্যে স্বার্থপর ও স্বস্থবিধা**-লো**লুপ নেতা ও সাধারণ লোকের অভাব নাই। স্ত্রাং মুদলমানদের অনেকের স্বার্থপরতার দোষে যদি ভারতবর্ধের সাত কোটি মুসলমানের কাহারও ভারতবর্ধে থাকিবার অধিকার নাই বলা হয়, তাহা হইলে এমন অস্ততঃ সাত কোট হিন্মু জিয়া বাহির করা কঠিন হইবে না ধাহাদেরও ভারতবর্ষে থাকিবার অধিকার নাই।

ভারতবর্ষের হিন্দ্ ও অহিন্দুদের মধ্যে একটি প্রভেদ উল্লেখযোগ্য। ভারতপ্রেমিক কোন হিন্দু তাহার জ্বনের কোন দেশকে ভারতবর্ষের চেয়ে উচ্চ স্থান দেন না, কিন্তু ভারতপ্রেমিক অহিন্দু তাহা দিতে পারেন। অবশ্য হিন্দু ইইয়া জন্মিয়াও যে কেহই সুবিধালাভ বা অক্ত কারণে ভারতবর্ষের চেয়ে অন্ত দেশকে পছন্দ করে নাই, তাহা নহে।

ধান আবহুল গফ্ফার খান হিন্দু-মুসলমানের মিলনের দিয়াছেন। তিনি মনে করেন, থ্ব জোর আমাদের পরম্পারের ধর্ম ও সংস্কৃতির সহিত পরিচিত উচিত। হিন্দু-মুসলমান উভয়েরই তাহা হওয়া অবশ্যই উচিত। তাহাতে সদ্ভাব বাড়িতে উভয়ের শাস্ত্র ও সভ্যতার উৎকৃষ্ট অংশ গ্রহণ করিতে হইলে, নিরুষ্ট অংশ কিছু থাকিলে তাহা বর্জন করাও আবশ্যক। হিন্দুশাস্ত্র ও সমাজবিধি সম্বন্ধে ইহা করিবার নিরাপদ। কিন্তু করাইবার জন্ম সমালোচনা মুসলমান শাস্ত্র ও সমাজবিধি সম্বক্ষে ইহা করা অনেক মুসলমান বিপৎসঙ্কুল করিয়াছে। হিন্দু, মুসলমান, গ্রীষ্টিয়ান, জৈন, শিধ প্রভৃতি সকলেরই নিজ নিজ শাস্ত্র, ধর্মপ্রবর্ত্তক ও উপদেষ্টাদিগকে অভ্রান্ত ও নিথুত মনে করিবার অধিকার আছে; কিন্তু অন্ত কেহ তাহার বিপরীত কথা বলিলে তাহাকে হত্যা করিবার অধিকার কাহারও নাই।

পরস্পরের ধশ্ম ও সংস্কৃতির প্রতি শ্রহ্ণাবান হইলে পরস্পরের সন্থাব ও মিলন গভীর হয়। রাষ্ট্রনৈতিক মিলনও হইতে পারে। কিন্তু যত দিন কোন সম্প্রদায় নিজের জন্ত, গে-কোন ওজুহাতেই হউক, বিশেষ স্থবিধা ও বেশা স্থবিধা চাহিবে, তত দিন এই মিলন ইইবে না।

পাটচাষ নিয়ন্ত্রণ

নে-ভাবে ও ষেরপ বায়ে পাটচাষ নিয়য়ণ দারা উহা
কমাইয়া গবল্মেণ্ট পাটের মুশ্য বাড়াইতে চাহিতেছেন, তাহাতে
ফুফ্ললাভ হই ব বলিয়া আমরা মনে করি না। পাটচাষ
এখন যে-যে জমিতে হয়, তাহার যে-অংশে পাটের চাষ
করা হইবে না, লাভজনক অন্ত কি ফ্সলের চাষ তাহাতে
করা যাইতে পারে, তাহা চাষীদিগকে ব্রাইয়া তাহাদের
বিশ্বাস উৎপাদন করা আবশ্যক। তথু সরকারী লোকদের
চেষ্টায় সাফল্য লাভ করা কঠিন। সরকারী লোকদের উপর
চাষীদের বিশ্বাস ক্তটা আছে, তাহা বিবেচনা করা
দরকার। চাষীদের অস্ববিধা এবং ক্ষতি করিয়াও ষে-সব

শ্রেণীর লোক লাভবান হইয়াছে ও হইতে চায়, তাহাদের ও তাহাদের প্রভাবের অধীন লোকদের পরামর্শ গ্রহণ ও সহযোগিতা অবলম্বন বাঞ্নীয় নহে।

বরিশালের ব্রজমোহন ইন্সটিটিউশ্যনের জুবিলী উৎসব

বর্গীর অখিনীকুমার দন্ত মহাশরের প্রতিষ্ঠিত ব্রজমোহন ইন্সাটিটিউপ্রন বাংলা দেশে কেবল ইংরেজী শিক্ষার বিশ্বরিক্তরে সাহায্য করিয়াছে, এমন নহে, বিশুর ছাত্রের প্রাণে ধর্মজাব ও স্বদেশপ্রেম উদ্দীপিত করিয়াছে। গত ১৫ই সেপ্টেম্বর ইহার পঞ্চাশ বৎসর বয়স অতিক্রম করা উপলক্ষ্যে উৎসব হইয়া গিরাছে। তাহাতে সভাপতিরূপে আচার্য্য প্রকুল্লচন্দ্র রায় অস্থান্ত কথার মধ্যে বলেন ই—

আমাদের দেশে শিশুসূত্র হার অধিক; মাথুনের মধ্যে বটে, এবং প্রতিষ্ঠানের মধ্যেও বটে। পঞ্চাশবংসরবাণী অন্তিবের গোরর করিতে পারে, এমন প্রতিষ্ঠানের সংখ্যা অঙ্গুলীতে গণনা করা যার। রজমোহন ইনষ্টিউশুল এই পঞ্চাশ বংসর কাল কেবল অন্তিম্ব বজায় রাথে নাই,—ইহা মানবপ্রাণে প্রেরণা জাগাইয়াছে, বাংলার শিকিত সম্প্রান্থের মধ্যে সংস্কৃতি ও আদর্শ প্রচার করিয়াছে। বজ্ঞমোহন ইনষ্টিউশুল কেবল মাটি কুলেট প্রস্তুত করিবার কার্যানা নহে; ইহা অখিন,কুমারের আদর্শবাদের মুর্ক প্রতীক। যাহাতে কিলোর ও তর্মণদল উত্তরকালে জীবনমুদ্ধে জয় হইতে পারে, মুর্যুত্তর গোরবে সমুদ্ধত শিরে দ টোইতে পারে, তাহাদিগকে তক্রপ শিক্ষাদানই ছিল অথিনাকুমারের লক্ষা। তিনি ছাত্রদিগকে কেবল পূ থিগত শিক্ষাদানের উদ্দেশ্যে ব্রজমোহন ইনষ্টিউশ্রেশ স্থাপন করেন নাই। তিনি তাহাদিগকে নেতিক শিক্ষা ও ধর্মশিকা দিয়া আদর্শ মানুষ করিয়া তুলিতেন।

বিজ্ঞাপন

প্রবাসী-কার্যালয় আগামী ২৭শে আখিন ১৪ই অক্টোবর হইতে ১১ই কার্ত্তিক ২৮শে অক্টোবর পর্য্যন্ত বন্ধ থাকিবে। এই সমরের মধ্যে যে-সব চিঠিপত্র আসিবে, ১২ই কার্ত্তিক ২৯শে অক্টোবর হইতে সেই সকলের জবাব দেওয়া বা তদকুষায়ী অন্ত কাজ করা হইবে।

শ্রীরামানন্দ চট্টোপাধ্যায়, স্বন্ধাধিকারী

বহি<u>ৰ্জ</u>গৎ

বিশ্বের রণসজ্জা



আধুনিক বৃদ্ধ-জল স্থল ও আকাশ ব্যাপী

সমুদ্-শক্তির অভাব থাকিলে কোনও সামরিক জাতির পক্ষে বিজয় লাভ সথব নহে। এইজন্ম জলগুদ্ধা বিভিন্ন প্রকারের বৃদ্ধাপাতের মূলা অর্থাৎ কার্যাকারিতা সথক্ষে বিশেষ আলোচনা চলিতেছে। চিত্র গুজরাজার একটি নৌবহরের কুচ-কাওয়াজ দেখান ইইয়াছে। সম্পূথের ক্থে যুদ্ধাপাতগুলিই (বাট্লানিপ) নৌবৃদ্ধা সর্পপ্রধান আক্রমণের অব। অন্ত সকল প্রকার পোতই—কি জলের উপরে, নীচে বা আকালে— এইগুলির কার্যাকারিতা রক্ষা বা নাই করার জন্ত ব্যবহৃত হয়, ভ্রাগের এরোপেন এবং সাব্যেরীন প্রধান।

গত মহাযুদ্ধের সময় অনেকেই বলেছিলেন যে, এই যুদ্ধ 'যুদ্ধের যনোবৃত্তিনাশের অন্ত,' অর্থাৎ এই যুদ্ধাই শেষ মহাযুদ্ধ ' : ৯১৪ পৃষ্টাপে দ্বিরাজের সময় রেনে ব্যার্জ'। নামে প্রসিদ্ধ ফরাসা মনীয়া বলেছিলেন, 'এই যুদ্ধে মানবঙ্গাতির গুদ্ধি হইবে। মানুষের জীবন এখন অভ ন্ত ন্যুদ্ধ মানবঙ্গাতির গুদ্ধি ইইবে। মানুষের জীবন এখন অভ ন্ত ন্যুদ্ধ অভান্ত ইক্তিয়-পরিত্তিপ্রমুগ। এখালের পূদ্ধা, সাধিক দ্বিবালীর প্রতি অবহেলা, ধর্মকে হেয়জ্ঞান করা, এই সকল এখন দ্বানাদের জীবনের প্রধান অংশ। ইহার জন্ত আমানের অনেক ছংখাইতে হইবে এবং বভ অর্থনাশ ও জন্বন নম্ভ ইইবে, কিন্তু যখন দ্বামানের নিরে বিজ্ঞানুষ্ট আসিবে, তখন ঐ সকল মানবজীবনের পাপ বা পাপা।) চির্কালের জন্ত লুগ ইইবে।''

ঐ নুদ্ধ আৰু বোল বংসর পূর্বেলের হয়ে গিয়েছে। ইতিমধে।
লাগ অব নেশল" ইতাদি শক্তি ও জাতিসংঘে অনেক চেটা হয়ে
গছে অব সংক্ষেপ করার জন্তে, বৃদ্ধ নিরোধ করার জন্তে। কিন্তু
তবারই কোনরকম চুক্তি বা আন্তর্গতিক সংকংগ্র ব্যবস্থা হয়েছে,
কান-না-কোন জাতি সার্থের আঘাতের ভয়ে তাতে বাধা দিয়েছেন।
তিমধ্যে বৃদ্ধও অনেকগুলি হয়ে গিয়েছে এবং প্রত্যেকবারই বৃদ্ধবহিত্র
নিধার সমন্ত পৃথিবী শক্তিত হয়ে উঠিছে।

বর্ণমান অবস্থা কি ? জার্মানাতে হিটলার সামরিক বার শতকর।

ন্ধান ভাগ বাড়িরেছেন এবং সামরিক এরোপ্রেনের জস্ত পরচ
নি গুণ বাড়াইবেন বলেছেন। সাজ সঙ্গে তিনি জাতিসংখকে
নিজেছেন যে, হয় পৃথিবীর অস্ত শক্তিবর্গকে অন্ততাগ করতে হবে,
ত জার্মানীকে অন্তথারণের অনুসতি দিতে হবে।

বেলজিয়ান আবার তাহার "মাজিনো" দেওয়াল—অর্থাৎ তুর্গনালা গঠন কর্তে উঠে পাড় লেগেছে। এবার এটা হচ্ছে ফ্রান্সের দীমান্তের দিকে। স্পোনর কুদ্র যুদ্ধ-নৌবহর বাড়ান হবে, তার জন্যে তিন কোটি টাকা বরাদ্দ করা হয়েছে। স্থাইস্কাতি সেনাবিভাগ পুনগঠনের জন্ম উঠে পড়ে লেগেছে। আমেরিকায় পকেট গুদ্ধছাছাত্র যোলখানি ভাষান হয়ে গেছে এবং সারও তৈরি হচ্ছে। ফ্রান্স, পোলাও, জাপান, কুদ্য, এবা ত আপানস্তক অন্তে সজ্জিত হয়েই আছেন।

অবংশ্যে ইংরেজও বহু বংসর ধরে মৃদ্ধ নিরোধের চেষ্টা ক'রে, হিট্লারাইট জার্মানী ছাতিসংজ্ব থেকে বিদায় নেবার সঙ্গে সঙ্গে একটি ''হোষাইট পেপার" বিলি ক'রে আবার অনুসঞ্জায় মন নিতে বাধা হয়েছেন। এপন ইংরেজের উদ্দেশ্য ফান্সের সমান মৃদ্ধান্তি সঞ্চয় করা অর্থাৎ প্রায় ৩০০০ যুদ্ধান্তান এবং অস্তান্ত সমরসজ্জার বাবস্থা করা। শিকাগোর দৈনিক পত্র 'টাইম'' বলেন, ইংরেজের এই হতাশ হওয়ার অর্থ ''যুদ্ধনিরোধ'' চেষ্টার অন্তান্তি বিয়া!

ওদিকে চীন-জাপান-রুশ বঞাট দিনের দিন বেড়েই চলেছে। এখন ইউরোপের চেয়ে প্রশাস্ত মহাসাগরকুলেই জগতের দৃষ্টি নিবদ্ধ রাখা প্রয়োজন। কয়েক মাস আগে জাপান সমস্ত পৃথিবীকে জানিয়েছিল যে, 'চীনের সাক্ষ কারচুপি অন্ত কাহাকেও জাপান করতে দেবে না, অর্থাথ চীনকে মুদ্ধার্মন, মুদ্ধাশিকক বা মুদ্ধসরঞ্জাম সরবরাহ করা, বা রাজনৈতিক বাপারের জন্ত টাকা ধার দেওয়া এ সকলে জাপান বাধা দিবেন।''

সমত্ত পৃথিবাকে এরকম সরাসরি হকুম দেওরা কোনো জাতিক





শান্তিকালের বিমানগোড

ডি-ইণাভিলাও এরোগেন ; ইছা এখন ইংলও-ভারত-অইেলিয়া বিমান-পথে ব্যবহৃত ইউতেছে। যুদ্ধের সময় দামরিক শক্তির ক্রত চলাচলের অন্ত এই প্রকার পোতের বিশেষ প্রয়োজন

পাকাই সহজ বা নিরাপদ নয়। তবে জাপান এ রক্ষ করল কেন? কারণ গুজিতে হ'লে কয়েকটি বিষয় জানা দরকার।

শিকাগোর ''টাইম''পর থেকে ''ওরিয়েণ্টাল ওয়াচমান'' কয়েকটি বিষয়ের সুভাগ্য দিয়েছেন :

'প্রথমত জেনারেল হান্দ ফন্ সিয়েন্ট, পৃথিবার এক জন অন্তত্তম সেনাশক্তি পর্যনকারী যোদা, চানের সমরশক্তি অসাধারণ ভাবে আধুনিক ও দুঢ়শক্তি করে ত্লেছেন। এই সমরকোশলা প্রোচ্ছ জলোক গত মহানুদের পরে ছাম্মানীর অন্নংথাক রাষ্ট্র সৈঞ্চলকে ছগতের শ্রেট কুপ্র সৈঞ্চললে পরিণত করেন। ইনি হিট্লারের পক্ষাতী নহেন, বর্ঞ ১৯২৬ সালে হিট্লারের দেশ লগলের চেন্তা বার্থ এবং হিট্লারের প্রাণরক্ষার জন্ম পলায়ন—হক্ষেছিল ই হারই হাতে। পতরাং ছাম্মানী হিট্লারের হাতে যাওয়ার ইনি অদেশ ছেড্ছে এখন চীন্দেশে গিয়ে বসেছেন।

''দিতীয়তঃ আমেরিকা যুক্তরাজ্যের তুই প্রসিদ্ধ বিমানবার, ফ্রাফ হক্স এবং জ্রেম ডুলিউল, চানে বহু শ্রেছ এবং প্রাণুনিক যুদ্ধপ্রেন বিকর কর্ছেন। ইহারা গত বংসর প্রায় চল্লিশ লক্ষ টাকার যুদ্ধপ্রেন চীনকে বিকয় করেন এবং আরও অনেক বেশী বর্তমান বংসরে বিকয় কর্বেন আশা করেন। ইটালার এক দল কাসিষ্ট বিমানবার ঐ দেগাদেশি বিকর চেষ্টার চীনদেশে গিয়েছেন। পৃথিবার এরোপ্লেনের স্নতগতি ও উর্দ্ধগতির ''রেকড'' ইহাদেরই, এবং বিমানবিহারে ইহারা একেবারে নিতীক। তাহার পর কর্পেল জেম্স জোয়েট নামক যুক্তরাজ্যের প্রসিদ্ধ বিমানসেন'-নায়ক—এগন অবসরপ্রাণ্ড—এগন ফাংলিওয়ে চীন সামরিক বিমান বিদ্যালয়ের প্রধাক।''

''ভূতায়ত: টি ভি হং, চীনের অর্থনৈতিক মন্ত্রী, যে ভাবে জাপানের সকল চেষ্টা বার্থ করে চীনে বৈদেশিক অর্থবন ও রসদের আমদানী করছেন তাহাও একটি কারণ জাপানের চেষ্টা ছিল যাতে বিদেশ হ'তে চীন কোনও ঋণ গ্রহণ করলে তা জাপানের সম্মতি ও সাহাযা ভিন্ন না হ'তে পারে।''

গ্রাপানের নি খোষণার ফল কি ২য়েছে ? চান উচ্চকণ্ঠে বলছে "জাপান জগতকে হেয়জ্ঞান করে এই বাহুকোটন করছে। এইর দুস্তপূর্ণ খোষণাকে কি সমস্ত জগুই উপেক্ষা করার ভান করবে ?''



শান্তিকালের বিমানপোতের অভান্তর

গ্রাস বলছেন, "আমরা জানবার চেষ্টা করছি যে, জাপান কি ইহাই প্রকৃত উদ্দেশ্য, অথবা মাধ্যক্ষ্যো ব্যবস্থায় জগতের সন্ম নেবার ইহা একটি উপলক্ষ।"

ব্রিটিশ কর্ত্তপক্ষ অতি ওস্তভাবে জাপানকে "নাইন পাও? টুটিটি'র কথা শ্বরণ করিয়ে দিয়েছেন।

আমেরিকা যুক্তরাজ্য বলেন, "জাপান অকারণ এই ঘোষণা করেছেন। যুক্তরাজ্য চীনদেশে কোনও সামরিক শিক্ষক বাবস্থাবিশারদ পাঠান নাই। যদি কেউ অবসর-প্রাপ্তির পর হি থাকেন, তবে তিনি স্বতঃপ্রবৃত্ত হয়ে গিয়েছেন।"

কেন 'কুন্তলান'

ব্যবহার করিব 🤋



কবীন্দ্ৰ বুবীন্দ্ৰণাথ

বলেন-কুন্তলীন তৈল আমরা তুই মাস কাল পরীক্ষা করিয়া দেখিয়াছি। আমার কোন আত্মীয়ের বহুদিন হইতে উঠিয়া যাইতেছিল কুন্তলীন ব্যবহার করিয়া এক মাসের মধ্যে ভাঁহার মূভন কেশোকাম **इडे-**割に直) তৈল স্থবাসিত এবং ব্যবহার করিলে ইহার গন্ধ ক্রমে তুৰ্গন্ধে পরিণ্ড হয় না।"

একগা হয়ত অনেকেই মনে করিতে পারেন যে "বাঙারে এত রকমের সন্তার তৈল থাকিতে কেন "কুন্তলীন" ব্যবহার করিব" ? "কুন্তলীন" কেন যে নিত্য-ব্যবহার্যা তৈল ভাহার কমেকটি কারণ নীচে দেওয়া হইল :—

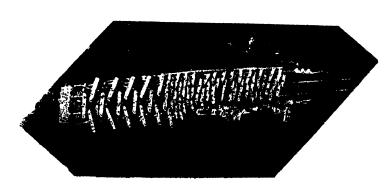
- া ইহা রাসায়নিক প্রক্রিয়ায় পরিশোধিত বলিয়া ইহাতে তৈলের স্বাভাবিক রজন, ক্ষার, অস্ত্র, মোম ও গন্ধক নাই। এই জন্মই ইহার ব্যবহারে চূলের কোনওরপ অনিষ্ট ও চূলে আঠা হয় না।
- । ইহ'তে 'কৃত্তিম গন্ধ' (Artificial perfume) নাই এবং সেইন্ধন্ত কোনও প্রকার দীদা, পার। বা তাপিণ তৈল নাই।
- । ইহার ব্যবহারে চুলে জটা না হওয়ায় কেশ-বিক্যাদের সময় অ্যথা কেশ কমিয়া যায় না।
- । সাধারণ কেশ-তৈলের ন্সায় ইহাতে বাজে অপরিষ্ণার তৈল ব্যবহার করা হয় না। এই কারণে তুর্গন্ধ দূর করিবার জন্ম কেশনও প্রকার তীত্র গন্ধ ব্যবহার করার দরকার হয় না। ইহার গন্ধের মধুরতা তুর্গ ভ।
- । ম হুছ ঠাণ্ডা রাধিবার ক্ষমতা 'কুম্বলীনের' বিশেষত্ব। এইচ, বস্ত্র, কলিকাতা





যুদ্ধ নামুদ্রিক বিমানপোতের ব্যবহার 'প্রেনের নীচে বিরা**ট বো**মা রহিয়াছে, এইরূপ একটি বোমার বিক্ষোরণে বৃহস্তম-বুদ্ধপোত্তও অচল বা ধ্বংস হউতে পারে।





এরো প্রন্থাহী হুদ্ধ-পোত

ঞারাজের দদিণ জংশ বির ট ''ওল্ডি" (কাণিপ'ট) আছে, যাহার দারা এবাণ নিমেষর মধা শৃক ছুডিয়া দেওয়া যার। বিপ'লর নৌবহবের সন্ধান ও আজম প্র ছ এইকপ জাহাক ২০তে ঝাঁকে ঝাঁকে এরোমেন ছাড়িয়া দেওয়া হয়, সেওলির আত্মন্ বিপ বাতিবাত হইয়া পাড়। হাফটোন ব্লকের আধুনিকতম সরঞ্জাম নিয়ে আধুনিক বিজ্ঞানসম্মত প্রণালীতে ব্লক প্রস্তুত ক'রে ভারত ফোটোটাইপ ষ্টুডিও যে সফলতা লাভ এবং সমঝদার স্থণীজনের প্রশংসা অর্জ্জন করেছে, আজ বিনীতভাবে সকলের কাছে তা' নিবেদন কর্ছি।

বিশ্ববিশ্যাত কবি

রবীন্দ্রনাথ বলেন:—
"ভারত ফোটোটাইপ
ট্রুডিও থেকে ছবির
প্রতিলিপি দেখে আনন্দ
লাভ করেছি।"

বিশ্ববিগাত চিত্রশিল্পী তথ্যবনীন্দ্রনাথ বলেন:—
"এই ষ্টুডিওর প্রতিষ্ঠাতা
শ্রীযুক্ত ললিতমোহন গুপ্ত আমার
অনেক ছবির প্রতিলিপি
করিয়াছেন সকলগুলিই সঠিক ও
কাজহিদাবে অত্যন্তম। গভ
ছত্রিশ বংসর ধরিয়া ইনি এই
কার্যা করিতেছেন।"

বিশ্ববিধ্যাত সাংবাদিক রামানশদ চট্টোপাধ্যার বলেন:— "তাঁহার কাজ সমঝদার লোকদের প্রশংসা পাইতেছে।"

শারদীয় উপহার-পত্র

পূজায় প্রিয়জনকে ইহার একটি উপহার না দিলে আপনার শারদোৎসবের আনন্দ অসম্পূর্ণ থেকে যাবে। বাংলার শ্রেষ্ঠ কবি ও শিল্পীগণের স্থললিত রচনা ও স্থচারু আজিম্পনে প্রেয়েকটি উপহার-পত্র সৌন্ধর্যা স্থযনায় বাস্তবিকই অনুপ্র।

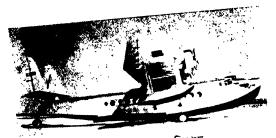
বড় কার্ড ১/১০ পয়সা, ছোট /০ আনা নিদিষ্ট সংখ্যা ছাপা হয়েছে—আজই সংগ্রহ করুন। বিশেষ ক্রেন্টব্য—ভিঃ-পিঃতে পাঠানো হয় না।

আমাদের এখানে সর্কোৎক্রন্ট মুজণ্-যন্তন্ন একবর্গ ও বছবর্গের ছবি অতি তুন্দররূপে ছাপিয়ে দেবার বন্দোবন্তও করা হয়েছে ৷ ছাপার কাজ দেখে আপনাকে সম্ভট্ট হতেই হবে ৷

ফোন— বি, বি, ৩৯৬২ ৭২-১, কলেজ খ্রীট, কলিকাতা

টেলিগ্ৰম -"মেগেটিন্ট"







भागूजिक वात्राध्यन --नाखिकात्म

কর্টিনৃ—এন্ ^{১২} ; ইহা উত্তর ও দক্ষিণ আমেরিকার ডাক-সর্বরাহে ব্যবহাত হয়। এক টালে ১২০০ মাইল দশ গণীয় যায়। ৰত্ৰিশ জন যাত্ৰী, পাঁচ জন কৰ্মচারা এবং প্রায় পনেরে! মণ ডাক ল্টতে পারে।

এখন জগতের প্রধান সমস্তা প্রধা-এশিয়ার এই ছাট মহাজাতি-সমষ্টিকে নিয়ে। একই পরিবারের ন' হ'লেও এরা যে পুটুম্ব, সে বিষয়ে সন্দেহ নাই। সম্ভাতার আদিকাল থেকে এনের কৃষ্টির ধারা একই স্রোতে প্রবাহিত হয়ে এসেছে, এপন কালের চক্রে একের যাহা আদর্শ তাহাতে অস্তের সর্পনাশ। তুই হাজার বংসরের সম্প্রের এই ফল।

সম্ভা জটিল হয় পঞ্চাশ বংসর প্রেম যথন কশড়াতি বর্ত্নুগু বন্দরের সন্ধানে প্রশান্ত মহাসাগরউপকূলে মাঞ্রিয়ায় এসে উপস্থিত হন। তারপর ইংরেজ, আমেরিকান, জার্মান ইত্যাদি সকল বণিক ও সাম্বাঞ্জাবাদী জাতিই একে একে এমে উপস্থিত হন-কেহ বাবসার চেষ্টায়, কেহ দাস্ত্রাজ্য বৃদ্ধির চেষ্টায়। ইতিমধ্যে আমেরিকা জাপানের



পূজার শ্রেষ্ঠ উপহার "চন্দ্ৰ"

"চন্দন লেখা দ্বারে দ্বারে আজি চন্দনমালা তু'লিছে বা'য়ে—

গৃহলক্ষ্মীদের ক্ষ্মনীয় দেহে লাবণ্য ফুটাইয়া তুলিতে

ছাণে — সৌন্দর্যে; — অতুলনীয়

লকাতা সোপ—বালিগঞ

пинитиния пиничений пиничений примений примений примений примений примений примений примений примений примений

চোখ ফুটিয়ে দেয়— অনেক অপমান অনেক আঘাত দিয়ে। জাগ্রত জাপান যেদিন দেশের সামানার বাইরে দেগতে শিগল, সেদিন প্রথমেই তার দৃষ্টি পড়ল এই পাশ্চান্তা অর্থ ও সাম্রাজ্যলোলুপ জাতিসজের উপর।

তারপর নিজের শক্তিবৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে সে অক্টের শক্তি বিচারও । করতে আরম্ভ করল এবং নিজের ও অক্টের বলর্দ্ধির (যার অক্ট অর্থ সাম্রাজ্যবৃদ্ধি) স্থাগে ও বাধার কথাও ভাবতে লাগল। এই ভাগ্য-গণনার প্রথমেই তার দৃষ্টি পডল কশের বর্মাকুপাণ্যুক্ত প্রসারিত হত্তের উপর। কশ তথন মাঞ্বিয়ার দারে উপস্থিত।

ইহারই ফলে ১৮০৬-৯৫ সালে চীন-জাপান যুদ্ধ হয়। চীন তথনও



মূদ্দের এরো**লেন**

থাগুলি-পেজ-হেন্দোড, বোমান্দেপণকারী এরোপ্লেন। ইহা ৫ মণ বোমা লইরা ১৫০০০ ফুট উচ্চে উঠিয়া ৭ ঘণ্টার মধো ৫০০ মাইল দূরে বোমা ফেলিক্সা ফিরিক্সা আসিতে পারে। বোমাগুলিও এরূপ ভয়ানক যে উহা গেগানে গড়ে ভাহার ১০০ গজের মধ্যে সকল ॥ স্থানই বিধ্বস্ত হয়।

খতাতের মধ্যে বদে। জাপান ক্রতগতিতে বর্ত্তমানের দীমানার পৌছেছে। ,

গুদ্ধে জাপান জর্মী হয়েও কিন্তু পাশ্চাত্য শক্তিপুঞ্জের চক্রান্তে যুদ্ধজ্ঞরের

ফল থেকে বঞ্চিত হ'ল। এই যে আজকের জাপান দন্দিগ্ধচিতে সমন্ত
পৃথিবীর বিরুদ্ধে দশস্ত্র দাঁড়িরে উঠেছে, ইহা ঐ যুদ্ধের ফললান্তের

নৈরাশ্যের কথা মনে করেই। তারপর আমেরিকা যুক্তরাজ্য জাপানের !

''ভদলোকের দদ্ধি'' ভেঙে আমেরিকানরা জাপানীদের যুক্তরাজ্যে প্রবেশ

বন্ধ করে দেওয়ার ফলে ঐ উন্নত জাতির প্রাণে বিষম আঘাত লাগে

বাবদা-বাণিজ্যের ক্ষেত্রেও জাপানের আধুনিক্তম কলকান্ত্রখানা এবং
কৌশলী বাবদারীদের প্রতিযোগিতায় অন্ত সকল জাতি হটে গিয়ে

জাপানী পণ্যম্বব্যের বিরুদ্ধে বিরাট গুক্তের দেওয়াল তুলে দিরেছে

গতে-জাপানের ভবিষ্যৎ আবার অন্ধকার হয়ে আদ্যুছে।

সময় অর্থ-প্রস্থ

অনর্থ সময় নফ্ট না করিয়া ঘরে বসিয়া

প্রত্যহ ৬ হইতে ৬০১ উপার্কন করন

সহজে পরিচালনযোগ্য ৩২৫ টাকার মোজা বুনার কল বা ৪,৭০০ টাকার গেঞ্জা বুনার কল ঘারাই ইহা সম্ভবপর হয়। উপদেশ সম্বলিত আনাদের পুস্তক দেখিরা থ্রী-পুরুষ, বালক-বালিকা যে কেহ অল্প ক.রকদিন মধ্যেই শিপিয়া অতি উত্তমরূপ আর করিতে পারিবেন। এক্সত মাল আমরা গ্রহণ করার গ্যারাণ্টি দিতেছি।

সহস্র সহস্র লোক মোজা, গেঞ্জি, আণ্ডারওয়ার ইত্যাদি বরন করিয়া বেশ তু'প্রদা উপার্জ্জন করিতেছে।

--প্রশংসাপত্র--

লড হাডিং (ভারতের ভূতপূর্ব বড়লাট) এবং লড কারমাইকেল (বাপালার লাট) করুক উচ্চ প্রশংসিত।

ইদার গবর্ণমেণ্টের শিক্ষা বিভাগের বড়কণ্ঠা লিগিতেছেন ঃ—"আপনাদের মেশিন নিঝ ম্বাটেই কান্ধ নিতেছে।"

তাজউদ্দিন এস, আদম করাচাওয়ালা রিটায়াড হেড, ড্রাপ্ টুস্ম্যান্ করাচী পোর্ট টান্থিতেছেন:—"ব্রের কোনে বাসন্না দৈনিক ৩১-৪১ টাকা উপার্জ্জন করা যায় দেখিয়া আমি সন্তোগ লাভ ক্রিয়াছি।"

ম্যাজিষ্ট্রেট মিঃ টি, এন্, চৌধুরী লিখিতেছেন "আমার পত্নী খুব স**হজে মোজা** ও সাইকেল মোজা ইত্যাদি ব্নিতে শিখিয়াছেন।"

—সংবাদপত্রের অভিযক্ত—

ন্যাশস্থাল কলঃ—"যে কোন ব্যক্তি ঘরে বসিরা ৩<mark>, টাকা হইতে</mark> ৩• টাকা প্যাপ্ত উপাৰ্জ্জন করিতে পারে। নারীদের স্বাধীনভাবে জী।বকার্জ্জনের পক্ষে এই কলট বিশেষ সহায়তা করিবে। ইহা দেশবাসীর সহামুভূতি লাভ করিবে আশা করা যার।"

মাজাঞ্জ মেল: — এই ফার্ম্ম কেবল কাজ শিখাইরাই দিরা যার না, পরস্ত স্তাও সরবরাহ করে এবং তৈয়ারী মাল নিজেরা লয়।"

এডভান্স: — ''আনর। আশা করি, ভারতের গৃহে গৃহে এই কল প্রতিষ্ঠিত হইবে, কারণ শিক্ষিত, অশিক্ষিত নির্দিশেষে ব্রী-পূক্ষ যে কেহ এই কল চালাইতে পারে।"

কমার্শিয়াল গেজেট:---"এই কল দারা মধ্যবিত্ত শ্রেণীর বেকার সমস্তা ঘচিবে।"

লিবাটি:—"এই কল খারা শত শত নরনারী খাধীনভাবে অর্থোপার্ক্তন করিতে পারিবেন।"

বিস্তৃত বিষয়ণের জন্ম পাঁচ পদ্মার টিকিটস্ছ চিঠি লিখুন।

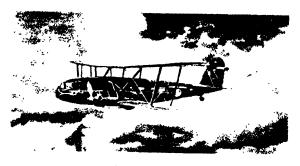
দি ইণ্ডিয়ান ন্যাশনাল ইণ্ডাষ্ট্ৰীয়াল কোম্পানী

১২৬ এ।১ ধৰ্মতলা ট্ৰীট, কলিকাতা বা কোৰ্ট ৰোম্বাই। আমাদের নিকট ত্রেইজিং, টুইটিং ইন্ড্যাদির কল, ববিন, শাটল, কুতা ইন্ডাদিও পাওরা যার।

ফোন--ক্যাল ৩৮৩৭

"SIA-Taukkalto" afar i







শান্তিকালের এরেপ্রেম

কার্টস-কওর: ইহা যুক্তরাজো ওলপ্থে যাত্র ও ডাক সর্বর্ধে ব্যবস্থা ইহাতে বাবে জন যাত্র দিনে আর্মে ব্সিঞ্চিত্র বিছানায় শুইয়া প্রথমিক ক্রিতে পারেন।

স্তরাং জাপানের সমস্য ক্রমেই জটিল হয়ে গাস্ত এবং সাঞ্ সঙ্গে পৃথিবীরও শান্তিভাঙ্গর আশস্থা বে ড চলেছে। জাপান কি চায় ভাষা জাপানের প্ররাষ্ট্রশ্চিব কাউট ইমাই প্রেই বলেছেন—

''উনবিংশ শতাকার মধাভাগে, আধুনিক জাতিসভোৱ পরিবারে অবেশ করার সময় হ'তে অভাবিকি ভাপানের পররাই-ন!তির অধান উ:দেশ গুইটি মারু--সমক্কতা ও নিঃশ্রতা।''

বিদেশী সেলুলইড ্দ্রব্যের আমদানিতে প্রতিবৎসর দেশের যাট লক্ষ টাকা ক্ষতি হইতেছে।





'ইণ্ডিয়া সেলুলইড্ ওয়ার্কসের' প্রস্তুত দ্রব্যাদি ব্যবহার করিতে বদ্ধপরিকর হউন এবং এইজন্য গৌরব অনুভব করুন।

সম্পূর্ণরূপে ভারতবাসীদ্বারা প্রস্তুত এবং ভারতবাসীর স্বত্ন সকল ব্যবসায়ীর নিকটেই পাওয়া যায় ৷

সোল এজেন্ট্য্—ব্ৰাহ্ম এণ্ড কোৎ

৪৬, ষ্টিফেন্ হাউস্. ৪।৫, ডালহাউদী স্নোয়ার।



"ज्ञाज, य निवय् श्रम्बद्रय्" "नावयाया वनशैतन नजाः"

২৪শ ভাগ ২য় **খণ্ড**

অপ্রহারণ, ১৩৪১

২য় সংখ্যা

আবেদন

রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

পশ্চিমের দিক্সীমায় দিনশেষের আলো
পাঠালো বাণী সোনার রঙে লিখা, —
'রাতের পথে পথিক তুমি, প্রদীপ তব জ্বালো,
প্রাণের শেষ শিথা।"
কাহার মুখে তাকাব আমি, আলোক কার ঘরে
রয়েছে মোর তরে,
সঙ্গে যাবে যে আলোখানি পারের ঘটপানে
এ ধরণীর বিদায়বাণী কহিবে কানে কানে;
মম ছায়ার সাথে
আলাপ বার হবে নিভ্ত রাতে।
ভাসিবে যবে খেয়ার তরী কেহ কি উপকূলে
রচিবে ডালি নাগ-কেশর ফুলে
তুলিয়া আনি চৈত্রশেষে কুঞ্জবন হ'তে
ভাসায়ে দিবে শ্রোতে ২

আমার বাঁশি করিবে সারা যা ছিল গান ভার. সে নীরবভা পূর্ণ হবে কিসে ?

তারার মতো স্থূদূরে-যাওয়া দৃষ্টিখানি কার মিলিবে মোর নয়ন অনিমিষে ? সনেক কিছু হয়েছে জমা. অনেক হ'ল খোঁজা, আশাতৃষার বোঝা ধূলায় যাব ফেলে। धृलात मारी नांटेरका यारह रम धन यिन स्मरल, স্থ-গ্থের সব শেষের কথা, প্রাণের মণিখনির যেথা গোপন গভীরতা সেথায় যদি চরম দান থাকে, কে এনে দেবে তাকে? যা পেয়েছিমু অসীম এই ভবে ফেলিয় ৣ্রুয়তে হবে. মাকাশ-ভরা রঙের লীলাথেলা. বাতাস-ভরা স্থুর, পৃথিবীভরা কত না রূপ. কত রুসের মেলা. হৃদয়ভরা স্বপন মায়াপুর. মূল্য শোধ করিতে পারে তার এমন উপহার যাবার বেলা দিতে পারো তো দিয়ো যে আছ মোর, প্রিয়।

৫ সেপ্টেম্বর ১৯৩৪



শিখদের মহাগ্রন্থ

শ্রীক্ষিতিমোহন সেন

নুষ্ণেপৃষ্টীর বেমন বেদ, বৃদ্ধপৃষ্টীর বেমন ত্রিপিটক, গ্রীষ্টপৃষ্টীর বেমন বাইবেদ ও মহম্মদপৃষ্টীর বেমন কোরান, নানকপৃষ্টীর তেমনি গ্রন্থানহেব। এই গ্রন্থানহেব বলিতে কি ব্রায় তাহার একটা স্পষ্ট ধারণা হয়ত বাংলা দেশে সকলের নাও থাকিতে পারে। তাই গ্রন্থাহেবের একট্ পরিচয় ও কেমন করিয়া তাহা গড়িয়া উঠিল তাহার একট্ ধারা দিবার চেষ্টা করা ঘাইবে।

তৃতীয় শুক্ক অমরদানের কন্তা ভানী বিবি বাল্যকাল হইতেই ছিলেন সরল নিস্পৃহ ও ধর্মপ্রায়ণ। অমরদানের বিল্যকালে বৈশ্ববভাবেই পালিত হওয়ায় তাঁহার মধ্যে ধর্মের ঐকান্তিক নিষ্ঠা ও রসের প্রাচুর্য্য দেখা বাইত। সেই বৈশ্ববোচিত দৈন্ত ও নিষ্ঠা ভানী দেবীরে বিবাহ হইল পরিমানে ছিল। বয়স হইলে ভানী দেবীর বিবাহ হইল পরম ধ্যমপ্রায়ণ ভক্ত ক্রেঠার সাল। পরে এই জেঠাই হইলেন চতুর্থ শুক্ত রামদাস। ইইাদের প্রথম পুত্রের নাম পৃথীচাল। তাঁহার জন্ম হয় ঠি৫৭ প্রীষ্টাব্দে। ইইাদের বিতীয় পুত্র ভক্ত মহাদেব, তৃতীয় পুত্র গুক্ত অর্জুন। মহাদেব ছিলেন সংসারবিরাগী। অর্জুনকেই যোগ্য জানিয়াকরা হইল সম্প্রদায়ের শুক্ত। পৃথীচাদ অসম্ভূষ্ট হইয়া এক নৃত্ন সম্প্রদায় প্রবর্তন করিলেন। শিথেরা সেই সম্প্রদায়ক বাম।

পৃথীচংদ গুরু নানকের নামে সব ঝুঠা পদ রচনা করিতে আরম্ভ করিলেন। শিথদের হইল মহা ভয়। কি উপায় করা বায়। গুরু অর্জুনের প্রধান চিস্তা হইল কেমন করিয়া গুরু নানক ও অন্তান্ত গুরুদের ধাঁটি পদগুলি একত্ত করা বায়।

শুক্র নানকের পদগুলি প্রথমে লেখা হইত সংস্কৃত অক্ষরে। পঞ্চাব ও উত্তর-পশ্চিম প্রদেশে সংস্কৃত ক্রি মালায় ৪৯টি অক্ষর ছাড়া, 'ক্ষ' ত্র' জ্ঞা' এই তিনটি বর্ণ লইয়া ছিল ৫২টি ফক্ষর। অথচ পঞ্চনদের প্রাকৃতে ৩৫টি অক্ষরেই ক'জ এক রকম চলিয়া বায়। শুরু অঙ্গদ নিজেও প্রথাম লিখিতেন সংস্কৃত অক্ষরে। পরে তিনিই কাশ্মীরের 'দারদা' অক্ষর ও পঞ্চাবের উত্তর-ভাগস্থ পর্বতে প্রচলিত 'টাকরা' অক্ষর ও 'লহংডা' মিলাইয়া শুরুমুখী অক্ষরের পশুন করিলেন। অঙ্গদের নিজেরও কিছু পদ রচনা ছিল।

নানা ভাবেই গুরু অর্জুন শিথ ধর্মকে একটি নিজম্ব রূপ দিতে প্রান্ত হইলেন। তিনিই শিখদের বিধ্যাত 'হরমন্দির' রচনায় প্রান্ত হন। এখন ধেধানে অমৃতসর পূর্বে সেধানে এক খোগার স্থান ছিল। সেই থানেই ১৫৮৮ গ্রীষ্টাব্দে বিগাতি সরোবর রচিত হয় ও তাহার মধ্য-স্থলে হয় হরমন্দিরের স্থান। এই সরোবরের আরম্ভ হয়গ্রাছিল ওক অমরদাসের সময়ে। শুরু র মদাসও এই জন্ত প্রভৃত শ্রম করিয়া গিয়াছেন। বাহা হউক, এই সরোবর-রচনা সমাপ্ত হইলে তাহার মধ্যস্থলে শিখনের পর্ম ফুলার মহামন্দির হইল প্রতিষ্ঠিত।

শুরু অজুন চেষ্টা করিতেছিলেন থাহাতে শিথদের ধর্ম, আদর্শ, নীতি, আচার, দিন-ক্বতা, সব একটি সংগ্রহের মধ্যে লিপিবদ্ধ থাকে। কাদ্মীরের শিথরাও বলিলেন তোমাদের শাস্ত্রধন্ম ও আচার প্রাচীন ধর্মশাস্ত্র ও আচারের সঙ্গে গুল ইয়া যাইতেছে। শিথদের ধন্মের ও আচরণের একটি নিজ্প সংগ্রহ সম্পূর্ণ হওয়া প্রয়োজন।

তৃতীয় গুরু অমরদানের দানী ভানী নামে ছিলেন হুই কন্তা। ভানী দেবীর কথা আগেই হুইয়াছে। আর মোহনী ও মে হন নামে ছিলেন হুই পুত্র। কিন্তু অমর-দাস আপন জামাতা রামদাসকেই যোগ্য জানিয়া গুরুপদ দিয়া যান। মোহরী ও মোহন উপেক্ষিত হুইয়া মনে মনে বিষম ক্লাই হুইলেন।

চতুর্থ গুরু রামদাসের তিরোধানের পর অর্জ্জুনদেব হ**ইজেন** পঞ্চম গুরু। তিনি নানা স্থান হ**ইতে গুরু নানকের ব নী,** দিতীর গুরু অঙ্গদ ও তৃতীয় **গু**রু অমরদাস ও চতুর্য গুরু রামদাদের সব পদ সংগ্রহ করিতে লাগিলেন। এই কার্য্যে তাঁহার মাতৃল-সম্পর্কীয় ভাই গুরদাস হইলেন তাঁহার পরম সহায়। গুরু অঙ্গদ প্রবর্ষিত গুরুমুণী অক্ষরে তাই গুরদাস সব লিপিবন্ধ করিতে লাগিলেন। কিন্তু অ'দিগুরুর আসল একথানি সংগ্রহ-গ্রন্থ ছিল গোই-দ্বালে অমরদাসের পুত্র মোহনের কাছে। সেই সংগ্রহথানা না পাইলে আর কাজ চলে না। অপত তাহা পাইবার উপায় কি থ

গুরু অর্জুন ভাই গুরদাদের লিপিসৌন্দর্য্যে ও তাঁহার রচিত "বার" বা গুরুদের মহিমাগানের রচনায় মুগ্ন হইয়াছিলেন। গুরু অর্জুন প্রথমে ভাই গুরদাদকে গোইন্দর'লে মোহনের কাছে পাঠাইলেন। মোহন তাঁহাকে একেবারে আমলই দিলেন না। অগত্যা গুরু অর্জুন নিজেই গেলেন ও ন'না ভাবে চেষ্টা করিয়া মোহনকে প্রসন্ধ করিলেন। সেই সংগ্রহ গুরুর হন্তগত হইল।

এখন অর্জুনের ভাবনা হইল কেমন করিয়া তাঁহাদের
মহাগ্রন্থ রচনা সম্পূর্ণ হয়। নানা স্থান হইতে গুরু সব পদ
একত্র করেন ও মু.খ বলিয়া যান। ভাই গুরুলাস তাহা
লিশিবদ্ধ করেন। এই উপলক্ষো গুরু এর্জুন, হিদু ও
মুসলমান নানা সম্প্রদায়ের ভক্তদের নিমন্ত্রণ করিয়া
প্রত্যেকের কাছে সেই মহাগ্রন্থ রচনার সহায়তা প্রার্থনা
করিলো। এই প্রসাস্থ ভারতের নানা স্থান হইতে নানা
সম্প্রদায়ের সব নির্বাচিত ভক্তদ্বন আসিয়া উপস্থিত
হইলেন। বাংলা দেশ হইতে জয়দেবের ভক্তগণ তাঁহাদের
নির্বাচিত লোক পাঠাইলেন। ভক্ত নামদেব, রামানন্দ,
রবিদাস, কবীর ও ফরীদ প্রভৃতি সাধক-দলের প্রতিনিধিরাও
আসিলেন।

ভক্ত িলো, ভক্ত কাহু (क्रुक्ष), ভক্ত ছজ্জু, সাধক শাহ হুসেন প্রভৃতি বহু ভক্ত এই উপলক্ষ্যে আসেন। কিন্তু তাঁহাদের রচনা গৃীত হয় নাই। কাশী হইতে বৃদ্ধ পণ্ডিত হুরলাল ও রফলাল আসিয়া বলিলেন, ওক্ত নানকের কাছে তাঁহারা অনক উপদেশ পাইয়াছেন। তাহা তাঁহারা এই সংগ্রহের অন্তভূক্ত করাইবার ক্ত্যে আসিয়াছেন। যে সব কবিরা শিধধর্ম গ্রহণ করিয়াছিলেন তাঁহার ও তাঁহাদের রচিত নানা শুবস্তুতি এই ক্রম্ত আনিয়া উপস্থিত করিলেন।

পদশুলি লেখক অনুসারে ভাগ না করিয়া ভাগ করা হইল রাগ অনুসারে। প্রস্থসাহেবের মধ্যে ৩১টি রাগ দেখা যায়। এক একটি রাগের মধ্যে প্রথমে প্রথম শুরুর পদ প্রথম মহল্লা নামে, দ্বিতীয় শুরুর পদ দ্বিতীয় মহল্লা নামে, তৃতীয় শুরুর পদ তৃতীয় মহল্লা নামে—এইরূপে (সাজান হইল। এক এক রাগে শিধ শুরুদের পদ সাক্ষান হইলে তাহার পর জৈদের, রামানন্দ, ক্বীর, রবিদাস প্রভৃতি ভক্তদের পদ হইল সাজান।

প্রথমাহেবের পরিশিটে 'রাগমালা' বলিয়া একটু অংশ আছে। তাহা মুদলমান কবি আলিমের কাব্য হইতে গৃহীত। ১৫৮০ খ্রীষ্টাব্দে আলিম এক কাব্য রচনা করেন, তাহার নাম "মাধবনাল সঙ্গীত"। এই কাব্যের নায়ক মাধবনাল ও নায়িকা কামকন্দলা। এই কাব্যের ৬৩-৭২ পদগুলিতে যে রাগ-পরিচয় আছে গ্রন্থদাহেবের পরিশিষ্টে ভাহাই গৃহীত হইয়াছে।

শ্ব্যুত্দরের দরোবরতীরে রমণীর স্থানে বদিয়া শুরু অর্জুন বলিতেছেন ও ভাই শুরুদাস লিখিতেছেন, এমন করিরা ১৮০৪ খ্রীষ্টাব্দের ভারে শুরুপ্রেতিপদে এই গ্রন্থ-সাহেব সংগ্রহ সমাপ্ত হয়। ইহাই আদি গ্রন্থ। ইহার পরে আরও তুইবার গ্রন্থনাহেব্রে সংগ্রহ হয়। এই আদি গ্রন্থ সমাপ্ত হইলে এই গ্রন্থের বোগ্য স্থান অমৃত্দরে হরমনিরে ইহা রক্ষিত হইয়াছিল।

পঢ়াবের অন্তর্গত গুজরাত জেলার মঙ্গত প্রামে তাই বলো নামে এক জন ভক্ত ছিলেন। গ্রন্থগাহেব রতি হই.লই তিনি গ্রন্থগানি একবার স্থগ্রামে নইয়া গিয়া দেবিতে চাহিলেন। গুরু অর্জুন বলিলেন, "যাও গ্রন্থগানি লইয়া, কিন্তু তোমার প্রামে গিয়া এক দি.নর বেশা রাখিও না।" ভাই বন্ধো পথে বিশ্রাম করিতে করিতে অতি ধীরে অগ্রসর হইতে লাগি লন। পথেই তিনি গ্রন্থগানির আদান্ত প্রতিলিপি করিনা লইলেন। প্রামে যাইয়া গ্রন্থভানি এক দিন রাখিবারও প্রায়েজন আর হইল না। পরে তাহাতে এমন অনেক পদ ব্লো বনাই লন যাহা গুরু অর্জুনের আদি গ্রন্থে বাদ গিয়াছিল। গুরু তাঁহাকে বলিলেন, "তোমার সংগ্রহ তোমারই থাকুক। আমার সংগ্রহ বেমন ভাবে সমপ্ত হইয়াছে তেমনই চলক।" কেছ কেছ বলেন,

লাহারে প্রন্থসংহেব বাধ ইতে আনিয়া ভাই বল্লো প্রতিলিপি করাইয়া লন ও তাহার সংগ্রহ তাহাতে বদাইয়া দেন।

গুরু হরগোবি:দর কাছে পরে বিধিচংদও এই ভাদি গ্রন্থথানির একথানি প্রতিনিপি করাইলা লইবার 🖟 নুমতি ল'ভ করেন। মূল গ্রন্থানি স্বগ্র'মে লইরা গিয়া বিধিচাংদ অতিশয় নিগ'র সহিত প্রতিলিপি করাইতে লাগি লন। বিধিদংদ যখন বিল'বল রাগ পর্যান্ত প্রতিলিপি করা ইয়াছেন অর্থাৎ অর্দ্রেকের অধিক গথন লেখা হইয়া গিয়াছে তান এক দিন গুরু হরগোবিন্দ বিধিতংদকে তাঁহার দঙ্গে স্পরিবারে কিরাতপুরে শাইতে অনুরোধ করিলেন। স্বাংশই যাতা করি লন কিন্তু গুরুদিতার পুত্র शीतमन माम (शानन ना। शीतमन ७। वितनन, "नि आमि না বাই তবে আমি সমস্ত ধন-সম্পত্তি অধিক[†]র করিতে পারিব, বিশেষভাবে ঐ গ্রন্থদাহেবধানা আমারই হই.ব।" বিধিতংদ ধীরমলকে গ্রন্থসাহেবধানা যাইব:ব সময় আনিতে আজ্ঞা করিলেন, তখন ধীরমল বলিলেন, "চিন্তা কি, আপনি চলিয়া বান, আমি পরে পাঠ ইয়া দিব।" ওর হর গোবিদ ধীরমলের কাণ্ড শুনিয়া বলিলেন, "চিস্তা নাই, শিব দর পন শিথরাই উদ্ধার করিবে।"

গুরু তেগ বাহাত্রের সময় শিথের। ধীরম:লর সর্বস্থ লুটিয়া আ:ন। এবখ ত'হার এত কারণও ছিল। গুরু শিশনের উপর ইহাতে বিরক্ত হইয়া ধীরমলকে উ'হ র সর্বস্থ ফিরাইয়া দেন। গ্রন্থসাহেবের প্রতিনিদিখানিও তাঁহ'কে প্রত্যুপ্ন করেন।

মীরা মৃত্যুকালে তাঁহার সাধনার সহচরীদের বলিয়াছিলেন, আমার এই কায়ার অবদান ইউলেও আমার ভীবনের অবদান হইবে না, আমি তোঁমাদের সাধনাতেই বাটিয়া থাকিব। তাই মীরার দেশে প্রায় সব নারী সাধিকাই আপেন আপন নাম লুপ্ত করিয়া মীরার না মই দিয়া ছল ভণিতা। সেইরূপ সকল শুরুই দিয়া গিয়াহেন নানকের নামে ভণিতা। তাব মহয়ার সংখ্যা দিয়া কোন্ গুরুর রচনা তাহা বুঝা বায়। সকল প্রস্থাতা দেয়া কোন্ গুরুর রচনা তাহা বুঝা বায়। সকল প্রস্থাতা কেন্ গুরুর রচনা তাহার এক এক মহয়ায় এক এক গুরুষর কবিতেছেন বিবাল।

शास्त्रहे रना कहेरान कर कर्कातर मध्यकील अध-

সাহেবের পর দিতায় সংগ্রহই হইণ ভাই বল্লোর। ভাই বলোর মূল গ্রন্থথানি এখনও গুরুরাত জেলায় মঙ্গত গ্রামে রফিত আছে। তাহাতে মীরা বাঈর এ≉টি গান আছে, আদি গ্রন্থে এই গানটি নাই। সাধারণ গ্রন্থসাহেবে সারংগ রাগে স্থরদা:সর একটি প্রখ্যাত পদ আছে—"হরিকে সংগ্রসে হরিলোক" ইত্যানি। ভাই বল্লোর গ্রন্থসাহেবে সার:গ রাগে স্রদাসের আর একটি পূর্ণ পদ আছে -ভক্তিহীনদের সঙ্গ ত্যাগ করিবার উপ.দশ প্রসঙ্গে—"ছাড়ি মন হরি বিমুধনকো সংগু।" আদি গ্রন্থদা হবে ঐ একটি মতে পংক্তিং আছে। কিন্তু বন্ধো তাহার সংগ্রহে পূরা পদটিই ধিয়াছেন। গুরু অজুনের সংগৃহীত মূল আদি গ্রন্থদাহের কর্তারপুরে রক্ষিত আছে। কর্তারপুরের গ্রন্থসাহেবেও প্রথমে পূরা পদটি লেখা হইয়াছিল পরে কি জানি কেন ঐ একটি পংক্তি র বিষা বাকীটা কলম দিয়া কাটিয়া তাহার উপর অ'বার হরিতালের রং আগাগোড়া লেপন করিয়া লুপ্ত করিয়া ফেলা হয়।

ভাই গুরদাসের গ্রন্থসাহেবের প্রথম সংগ্রহের পর হইল ভাই ব রার দ্বিভীয় সংগ্রহ। তাহার পর তৃতীয় সংগ্রহ হইল শুরু গোবিন্দ সিংহের সহ'য়তার ভাই মণিসিংহের সংগ্রহ। এই গ্রন্থকে অনেকে দশম বাদশাহের সংগ্রহ। এই গ্রন্থকে অনেকে দশম বাদশাহের সংগ্রহ-গ্রন্থ বলেন, গদিও এই নাম শুরু গো,বিন্দ বা মণিসিংহের দেওরা নহে। এই সংগ্রহের মধ্যে বি.শ্য ভাবে উ.ল্লখ্যাগা শুরু গোবিন্দ-রচিত্ত জাপজী, অকাল স্তৃতি বা পরমেশ্বরের বন্দনা, বিচিত্র নাটক এবং ম.কি.শুরু পুরাণের দেবীম হান্মোর তিন ভিনটি সংক্ষিপ্ত অনুবাদ, জ্ঞান প্রবেধ, চতুর্বিংশ অবতারত্বর, "হলারে দে স্বদ্," সার্মা, শস্ত্রনামমালা, স্থীচরিত্র, ভাফরনামা বা আওবংক্তবকে লেখা শুরু গোবিন্দের পত্র, ও করেলটি পারসী গরের মর্থ ৎ "হিকায়তে"র অনুবাদ; এই অনুবাদও কবিতাতেই করা হইরাছে।

যুদ্ধ অপরিহার্যা মনে করিয়া গুরু গোবিন্দ সেই ভাবেই
শিথধর্মকে চাহিলেন চালনা করি.ত। তাই তাঁহার
সংগ্রহগ্রন্থ শন্ত্রনামমালা, মার্কণ্ডের চণ্ডীর তিন তিনটি
সংক্ষিপ্ত অনুবাদ প্রভৃতি বিষয় আছে। গুরু গোবি নার
"ক্রা-ক্রী"কে কেই বেন নানকের জপত্তী কলিকা ভাল কা

করেন। নানকের "জপজা" হইল নিথধ শার সার ও মূলস্ত্র। ইহা প্র তাক শিথ-ভক্তের প্রভাতে নিতা-শারণীয়। শুরু গোবিন্দের "জা জী" হইল বিধ তার সহস্র নাম। শুরু গোবিন্দ বিধাতার যে-সব বীরত্বসূচক নাম বিশেষ ভাবে চালা স্মাছেন ত'হার মধ্যে করেকটি বেশ ভাবিয়া দেশিবার মত।—অকাল, সর্প্রকাল, মহান্কাল, অসিধ্বজ, অসিকেতু, প্রজাকেতু, অসিপাণি, সর্প্রলোভ (লোহমার), মহান্ল হ ইতাাদি।

গ্রন্থসংহবে শুরু নানক, অঙ্গদ, অমরদাস, রামদাস, অর্জুনের বাণী চিল। কর্ত্তারপুরে বে মুল আদি গ্রন্থসংহব আছে তাহ তে নবম শুরু তেগ বাহাতুরের কোন পদ নাই। শুরু গোবিন্দ দমদম র মঠের গ্রন্থসাহেবে তেগ বাহাতুরের পদাবলীর স্থান করিয়া দেন, গোইন্দর ল ও থাতুরের মাঝামাঝি একটি স্থানের নাম পরে হয় "দমদমা।" শুরু অমরদাস উইার শুরুপদ গ্রহণের পূর্বে প্রতিদিন প্রভাতে গোইন্দরলৈ ও থাতুরের মধ্যে যাত য়াতের মাঝো ঐথানে একটু বিশ্রম করিতেন ও জপজী পাঠ করিতেন। "দমদমা" শব্দের এর্থই হইল একটু বিশ্রাম অর্থাৎ দম লইবার স্থান। সেইবানে পরে এক শিন্মট প্রস্তুত হয়। শুরু গোবিন্দেরও একটি প্রে ক গ্রন্থসাহেবের মধ্যে গৃহীত হয়।

গ্রন্থনাহে:বর মধ্যে শিবধন্মের ব হিরের এই কয় জন ভ্রেরের পদ গৃহীত হইয় ছে:—জয়দেব, নামদেব, ত্রি লাচন, পরমানক, সধনা, বেণী, রামানক, ধন্না, পীপা, সৈন, কবীর, রবিদ স, স্রদাস, ফবীদ ও ভীখন। ফরীদ ও ভীখন এই ছুই জন মুসলম ন-বংশায় ভক্ত। পূর্বেই বলা হইয়াছ, ভাই ব লার সংগ্রহ মীরা ব ঈরও একটি পদ আ'ছে ও সারংগ রাগে স্রদাসের তুইটি পূরা পদ আছে। আদি গ্রন্থসংহবে স্বলাসের একটি পূরা পদ ও একটি পংক্তি মত্র আছে। ভাই বলো তাহার সংগ্রহে সেই পংক্তিয়ক পাটি পূর্ণ করিয়া দিয়াছেন।

গুরু অর্জুন নি করে মুখে অ দি গ্রন্থস হেবর পদগুলি লিখাইলেও নিজেকে ভগবানের দিক হই ত প্রত্যাদিট মা ক্রিয়া এই দণ্ডলি সংগ্রহ কর ইয় ছেন। যথন সমুট ্রি গ্রন্থস হেব হইতে মুদলম'ন ধর্মের বিরুদ্ধে ্নীগুলি তুলিয়া দিতে বলেন তথন গুরু অর্জুন

বলিলেন তাহা অসম্ভব। কারণ এই গ্রন্থ কাহ, র**ও** পঞ্চে **বা** বিপক্ষে বা কোনো উদ্দেশ্য করিয়া রচিত নহে, ইহা পরম সতোর সহজ প্রকাশ। কাজেই ইহাতে হাত দেওয়ার অর্থ শুকু অর্জুনকে এই জগ্র ধর্ম্মের বিরুদ্ধে বিদ্রোহাচরণ। অশেষবিধ নির্যাতন সহিন্না প্রাণ দি.ত হয়। তবু তিনি তাহাতে এক চলও বিচলিত হন নাই। ১৬০৬ গ্রীষ্টাব্দের জাষ্ঠ শুক্লাচতুর্থীতে তিনি প্রাণত্যাগ করেন। "দবীস্থান-ই-মজ।হিব"-প্রণেতা মুহদিন ফানীর মতে গুরু অর্জুনের প্রাণদ.গুর অন্য কারণ ছিল। স্কাহাঙ্গীরের প্রতিণুক্ষ খুসক্ষকে এক সময় সাহায্য করিয়াছিলেন বলিয়া অর্জুনকে এই দণ্ড গ্রহণ করিতে হয়। অথচ অৰ্জ্জুন খুসক্ল.ক অতিথি ভাবেই সাহায্য করিয়াছিলেন। তাহা না করাও তাহার পক্ষে শিখধশ্যের বিরুদ্ধ আদিগ্রন্থসাহেবের সংগ্রহ ও রচনা-প্রণালী সম্বন্ধ শিপদের এত দুর নিষ্ঠা যে তাহারা হহার কিছুমাত্র পরিবর্ত্তন সহ করিতে পারেন না।

ভাই মণি সিংহ যাসন গুরু গোবিন্দের আজ্ঞান্দারে তাহার গ্রন্থসাহেব সংগ্রহ করেন তথন তিনি অনুভব করিয়াছিলেন যে রাগ অনুসারে পদগুলির বিভাগ না হইয়া বদি গুরু অংন্সারে বিভাগ হয় তবে অনেক দিকে স্থবিধা হয়। দেই ভাবে তিনি করিয়াও তুলিয়াছিলেন। কিন্তু তাহাতে সমস্ত শিথমণ্ডলী এমন বিরুদ্ধ হইয়া উঠিলেন যে মণি।সংহ সকলের কাছে বিনীত ক্ষমা ভিক্ষা করিয়া পরিত্রশব্য সেই সব সম্পূর্ণ ভাবে নই করিতে বাধ্য হন।

প্রথমহেবের মধ্যে কোথাও কোন ছেদ বা বিচ্ছেদ নাই। অক্ষরের পর অক্ষর সমান ভাবে চলিয়া গিরাছে। হহা বদলালয়া শব্দগুলি পদ্বিভাগ-মত বদাইলে সুবিধা হয়, কিন্তু উপায় নাই। এই সব শব্দযোজনা ঠিক মত না পড়িলে অর্থ এক হইতে আর হইয়া যায়। একব'র এক শিথকে এই রূপ ভূল ভাবে পড়িতে দেখিয়া গুরুগোরিন্দ গ্রাহর পাঠ সম্বন্ধে বিশেষ সাবধান হইবার বাবস্থা করেন। "গ্রন্থী" বলিয়া বিশেষ এক শ্রেণীর লোকেই গ্রন্থ পড়িতে পারেন। কিন্তু তাহাতেও যে কত ভূল হয় তাহা একটু খোঁজ করিলেই দেখা যায়। এখন কোথাও কোথাও গ্রন্থাকে বর্তুমান কালের উপায়াগী করিয়া মুদ্রিত

করিবার কথা চলিয়'ছে। আমার এক ছাত্র শ্রীম ন্ জয়ন্তী-লাল আচার্য্য এই কাব্দে হ তও দিয়াছেন। তবে এখনও ইহা সমাপ্ত হইতে বিস্তর বিলম্ব আছে।

শুরু গোবিন্দের আদেশে ভাই মণি সিংহ এই গ্রন্থ সংগ্রহ আরম্ভ করিলেও ইহা সমাপ্ত হয় শুরু গোনিন্দর মৃত্যুর ছাবিশে বংসর পরে। শুরু গোবিন্দ এক ধর্মান্ধ পাঠানের হত্তে নিহত হন। ১৭০৮ গ্রীষ্টান্দের কার্দ্তিক শুরুপঞ্চমী বৃহস্পতিবারে তিনি পরলোকগমন করেন। ১৭৩৪ গ্রীষ্টান্দে ভাই মণি সিংহের সংগ্রহ-গ্রন্থ সমাপ্ত হয়। সেই গ্রন্থ এখন পাতিরালার অন্তর্গত তলবন্তী গ্রানের মঠের কথা আন্ত্রেও বলা হইয়াছে।

. শুরু গোবি করে সংগ্রাহ অনেক শি.থর কিছু কিছু আপতি ছিল। উহাতে 'গ্রী চরিত্র' ও পারস্ত ভাষার 'হিকায়ত' বা মনোর এক গল্প প্রভৃতি যাহা আছে তাহা তাঁহাদের মতে ঐ সংগ্রহে না থাকিয়া স্বতম্ব গ্রন্থাকারে থাকা উচিত। বখন এই রপ তর্ক চলিয়াছে তখন বিকানের হইতে মিরানকোটবাসী মহতাব সিংহ নামে এক শিথ আসিয়া উপস্থিত হইলেন। তিনি শপথ করিয়াছি লেন মস্গা রংবর নামে এক মুসলমান রাজপুরুষের প্রাণ লই বন। মস্সা নাকি অমৃতসরের শুরুমন্দির করায়্ত করিয়া সেই ধ্রমন্দিরের অপমান করিবার জন্ত সেথানে নইকীর নাচ চালাইতেছিল। মহতাব সিংহ কহিলেন গদি আমি আমার শপ্রপ্রপূর্ণ করিয়া

এধানে ফিরিয়া আদি তবে গুরু গোবিন্দের গ্রন্থ ঠিক এমন ভাবেই রাখিতে হইবে, আর বদি এই চেষ্টায় আমার প্রাণ বায় ত:ব তোমরা তোমাদের ইচ্ছান্মসারে গুরু গোবিন্দের গ্রন্থসাহেব:ক খণ্ডিত করিতে পার। মহতাব দিংহ শপথ পূর্ণ করিয়া দমদমায় ফিরিলেন, কাজেট ঐ গ্রন্থ ঠিক তেমন ভাবেই রহিয়া গেল।*

* শিথধর্ম সম্বান্ধ এম্, এ, মেকলিফ সাহের ইংরেজীতে যে ছয় থণ্ড পুত্তক লিপিয়াছেন তাহাতে গুরুমুগী না জানিয়াও শিখধর্শ্বের অনেক থবর পাওয়া যায়। তিনি কয়েক জন শিথ শ্রন্থীর সহায়তায় মূল বাগাগুলির অন্থবাদ করেন। ভবু সেই সব অন্থবাদে বি**ন্ত**র ভুলভ্রাস্তি **ঘটিংছে: মেকলিফ নাহেব শিধধর্মের জন্ত যে প্রভূত শ্রম** করিয়াছেন তাহার জন্ম আনর: সকলেই তাহার নিকট কৃতক্ত, তবু তাহার পক্ষে মুদ্দিল হইয়াছে তিনি ভারতীয় অক্সান্ত ধর্মের কোনো পরিচয় ন: লইয়াই নিশ্ধর্মকে ভারতীয় সাধনার জগতে একটি বিচিছন্ন ব্যাপার মনে করিয়া তাঁহার কাজে হাত নিয়াছেন। বরং তাহার গ্রে ইহাই প্রমাণ করিবার চেষ্ট' দেখা যায় যে ভারতের অক্সাক্ত সাধনার সক্ষে শিপধশ্যের কোন গোগ থাকা স্বাভাবিক নয়। ইহার মূপে কি উদ্দেশ্ত আছে জানি না, তবে এই বিষয়ে পরে আলোচনা করিবার ইচ্ছা অংছে। শিপধক সম্বান্ধ আমি নিজে এখনও বিশেষভাবে কিছু কাজ প্রকাশ করি নাই। তাহার কারণ তাহাদের বিস্তর শিক্ষিত ভক্ত আছেন। আমি এখন প্রধানতঃ এমন সব পদ্ব লইয়া কাজ করিতেছি যাহাদের বিষয় এথনই কিছু না করা হইলে তাহাদের বহু অমূল। রত্ন নম্ভ ২ইবে। শিবধণ্মের সে বিপদ নাই ' আমার কয়েক জন প্রীতিভালন কর্মসংচর এই কাজে হাত দিয়াছেন। আশা করি ভাষাদের দারা এই বিষয়ে অনেকে অনেক ভিতরের কথা জানিতে পারিবেন। আমার সেই সব প্রী*তিভাজ*ন সহকন্মীর প্রার্টনায় এই শিথধর্মের আলোচনাতেও আমাকে ভবিষাতে কিছু কিছু কাজ সম্ভবতঃ করিতে হইবে।



'বৃহৎ-সংহিতা'য় নারী

ঞী ভ্রমর ঘোষ, এম-এ

বরাহমিহিরক্কত বৃহৎ-সংহিতা মনোগোগ সহকারে পাঠ করিলে স্বতঃই একটি কথা মনে প্রতিক্লিত হয় বে এ-বাবৎ "স্ত্রী-বৃত্তাস্ত" সংগ্রহণের নিমিত্ত থে-সমন্ত শাস্ত্রকারের সহিত তাঁহাদের গ্রন্থের মধ্য দিয়া পরিচয় হইরাছে, তন্মধ্যে বৃহৎ-সংহিতাকার বরাহমিতিরের ছায় নির্ভীক ও স্পাইবক্তা অতি বিরল।

ঋথেদে নারী সম্বন্ধে বিশেষ করিয়া কিছু বলা হয় নাই, কারণ ইহা কতকগুলি ঋক্বা স্তুতির সমষ্টি মাত্র। তবে ইহ'র বিষয়বস্ত হইতে অনুসন্ধান দ্বারা আমরা নারীসম্বন্ধীয় তথ্য কতকটা ব'হির করিয়া লইতে পারি। মন্ত্র, অতি, বিষ্ণু, হারীত প্রাকৃতি বিংশতি সংহিতঃকারগণের শাস্ত্রে এবং অত্যান্ত পরবর্ত্তী শাত্রে আমরা ক্রীলোক-সম্বন্ধীয় বিশেষ সারগর্ভ বিনরণ প্র'প্ত হই। উক্ত-সংহিতাগুলির কতকগুলি অধ্যায়ে সম্পূর্ণভাবে এবং কতকগুলি অধ্যায়ে আংশিকরূপে নারীবিষয়ক আলোচনা আছে: কিন্তু আশ্চর্য্যের বিষয়, ভাহার অধিকাংশ স্থল পাই করি.লই একটা ভাব দকলের মান জাগে বে, নারী দক্ষবিবয়েই পুরুষ হইতে হীনতরা ও কৃটস্বভ!বা । এক একটি সংহিতায় অধ্যারের পুর অধায়ে স্ত্রীলোকগণের নিকট হইতে আগ্ররক্ষা ও ত।হ'দের তুটদংদর্গ-দোম হই তে মৃক্তির উপায় ও সংস্কার বিহৃত রহিয়াছে। সমাজে এতাদৃশ বিরুদ্ধ ভাব ত্রী-সমাজের পক্ষে বিশেষ সম্ম নস্টক নহে। কি কি ক'র.ণ সমাজে স্ত্রীলোকের স্থান অবনতির স্তরে ধাবিত হইল, ইতিহাস-পাঠে তাহা ক্লানা নায়। বৈ:দশিক অ'ক্রমণ ভারতের গৌরবময় ইতিহাসে ক**লম্বলে**পন করিয়াছে ও থুব সন্তব বৈদেশিক সংসর্কেই ভারতীয় জাতীয়তায় তখন অবনতি আনয়ন করিয়াছিল।

সর্কাপ্রথম ভারতবর্ষে যথন বিজ্ঞাতীয় ভাব প্রাবেশ করিল, তথন ভারতের ন্তায় স্থসভা দেশ পৃথিবীতে বিরল। অপরাপর দেশ ভারতীয় সভ্যতার তুশনায় এক রূপ

অসভা ছিল বলিরাই ধরা হয়। এই সকল অপেক্ষ'কুর অসভা জাতির অনুন্নত চিস্তাধারা বীরে ধীরে ভারতের কৃষ্টিতে প্রবেশ করিল; সমাজে অন্নবিস্তর পরিবর্তন ঘটিতে লাগিল। বৈদেশিকগণের লোলুপ দৃষ্টি হইতে রক্ষার নিমিত্ত সমাজে অবরোধপুণার স্থান্ত ও তৎসঙ্গে অল্পবিস্তর স্থালোকগণকে সন্দেহের চক্ষে দেখা বাইতে লাগিল। এই সন্দেহের বিন্মর ফল এককালে স্থান্তার গোরব অ.ল্ল হরণ করিল। সমাজসংশ্বারকগণও তাঁহাদের স্বান্ধিপ্রশোদিত শাস্তাদির সাহাণো স্ব স্ব মতবাদ প্রচার করিতে লাগিলেন।

ঋথেদের কালে যে সময়ে আমরা স্ত্রী-পুরুষের সমান অধিকার দেখিতে পাই, সে সময়েও গ্রীলোককে পুরুষ ইইতে হীন করা হইয়াছে। ঋষেদে ঋষিক্ষত ঋকেও অংশরা দেবিতে পাই যে স্ত্রীলোকগণের স্বভাব নাকি "হিংস্র বুকের তুল্য" ("সালারুকাণাং হদয়াণ্যেতা" পং ১০। ৯৫। ১৫) ; ওঁহাদের হুদ্য ্মেছ ও ্প্ৰেমব্জিক্ত ("ন বৈ স্ক্রোনি স্থ্যানি") এবং তাঁহাদের মন শাসনের অবোগ্য ("প্রিয়া অশাস্যং মনঃ" ধাং ৮। ৩০। ১৭)। ধ্যথেদে স্ত্রীঝাধি কর্তৃক রচিত (অর্থাৎ 'দৃষ্ট' —'প্রায়ো মন্ত্রজারিঃ') কতকগুলি পাক্ আমরা দেবিতে পাই; কিন্তু আশ্চর্যোর বিনয়, তাহাদের রচিত ঋকে কোনস্থানেই তো পুরুণের নিন্দা নাই। মানুষ হিসাবে ন্ত্রী-পুরুষ উভয়রেই কতকগুলি দোয় ও গুণ বর্তমান আছে বাহা স্বাভাবিক, কিন্তু দেই সকল দোঘ-গুণ-সমন্বয়ে গঠিত মানব যে হঠাৎ শ্রেণীভেদে কেহ কাহারও অংপকা উচ্চতর অথবা নিয়তর হইতে পারে ইহা ব্রায় না। শাস্ত্রজংগণ প্রায় সকলেই পুরুষ ছিলেন, স্তর!ং শাস্ত্রসমূহ বে পক্ষপাতিত্ব-দোষে হুট এ-কথা অন্থীকার করিবার কোনই কারণ নাই। এ-নাবৎ সমাজের বুকে এবংবিধ অসায় ও পক্ষপাতিত্ব-হৃষ্ট শান্ত্রের নীতি অবলম্বন করিয়া নারীগণের প্রতি মতাম্ব অন্তায় মাচরণ করা হ**ই**য়াছে। বরাহমিহিরই

একমাত্র ঋষি—ষিনি অতি নির্ভীকভাবে ও স্পষ্ট ভাষায় এই অন্তায়ের প্রতিবাদ করিয়াছেন। তাঁহার রচিত বৃহৎ-সংহিতায় পঞ্চসপ্রতিতম অধ্যায়ে তিনি বলিতেছেন—

প্রকত সতাং কতরোহক্সনানাং দোনোহন্তি যো নাচরিতো মসুযোঃ
) অর্থাৎ, যথার্থ বল দেখি, স্ত্রী ও পুরুষ এই ছুইয়ের মধ্যে
অঙ্গনাগণের এমন কি দোষ আছে যাহা পুরুষ কর্তৃক আচরিত হয়
নাই ?

পুৰুষের যে সকল গুণ রহিয়াছে স্ত্রীগণের তদপেকা অধিক গুণাবলি বিশ্বমান। স্ত্রীলোকগণ বরাহমিহিরের মতে পুরুষ হইতে অধিক-গুণ-সম্পন্না—"গুণাধিকাস্তাং"। তবে কেবলমাত্র পুরুষের ধৃষ্টতা নিমিত্তই স্ত্রীগণকে সকল অধিকারচাত করা হইয়াছে।

धार्छ। न পुष्टिः श्रमा नित्रस

া বরাছনিছিরের হৃদয়ে স্ত্রীজাতির আসন অতি উচ্চে প্রতিষ্ঠিত ছিল। তিনি বলেন, ক্রন্ধা কর্ত্বক স্বষ্ট সম্দর পদার্থের মধ্যে সার স্বষ্টি 'নারী'—

শ্রুতং দৃষ্টং ননং ম্পুষ্টং স্মৃতম্পি নুগাং হ্লাদজননং ন বৃত্তং স্ত্রীভ্যোহন্তৎ কচিদপি কৃতং লোকপতিনা। তিনি স্বীজাতিকে কেবলমাত্র অবলার আসনে আসীনা দেখেন নাই। তিনি যথার্থ স্নেহ, ভক্তি ও ক্রায়ধর্মের দারা স্ত্রীজাতিকে বিচার করিয়াছেন। তাঁহার ন্যায়-চক্ষুর সম্মুখে স্ত্রী ও পুরুষ উভয়েরই দোষগুণ বর্ত্তমান। তিনি একদিকে যেরূপ স্ত্রীলোকের আগন্তক 'চপলতা'র প্রতি কঠোর কটাক্ষপাত করিয়াছেন, সেইরূপ আবার নারীর প্রকৃতি-সিদ্ধ সরলতার নিকট পুরুষের স্বভাবস্থলভ কপটতার অত্যন্ত নিন্দা করিয়াছেন। নৈসর্গিক সরলতা হেতৃ স্ত্রীলোক নেরূপ প্রতি পদে ব্যথা পায়ও অনুপক্ষত হয় তাহা বরাহমিহিরের ক্লায় ঋধির জ্ঞান-চক্ষুর অবিষয়ীভূত ছিল না। তিনি স্পষ্ট বলিয়াছেন, "স্ত্রীলোক সংসারে প্রতারিত হইয়াও সুত্ততজ্ঞতাহেতু মৃতপতিকে অঙ্গে গোপিত করিয়া সপ্তজিহ্ব অনলে অবলীলাক্রমে প্রবেশ করিয়া থাকেন।"----

পুৰুষশ্চটুলানি কামিনীনাং কুৰুতে যানি রহো ন তানি পশ্চাএ। স্কৃতজ্ঞতমান্তনা গতান্থনবগুহু প্রবিশন্তি সংগ্রেহনম্ম ।

বরাহমিহিরের মতে বাহারা স্ত্রীলোকের কেবলমাত্র দোষই দেখিয়া থাকেন তাঁহারা হর্জন। তাঁহার মতে পুরুষজাতি কৃতস্ব। যে স্ত্রীক্সাতি পুরুষের জননী, জায়া,

ভগিনী ও কন্তা রূপে শোকে, হঃথে ও আনন্দে শান্তি আনরন করেন, সেই নারী-জাতির নিন্দা করা কি অক্কতজ্ঞতার পরাকাগ্রা নহে?

তাহার মতে 'সংগম' বিষয়েও স্ত্রীলোকের স্থায় অসাধারণ ক্ষমতা পুরুষের বিদ্দাত্তও নাই। গাহ স্থা-ধন্মই 'শ্রেড ধন্ম' এবং গৃহেতেই ধন্ম, অর্থ ও স্থতস্থে ও বিষয়-স্থ ঘটিয়া থাকে এবং এই গৃহের স্ত্রী-জাতিই লক্ষীস্থরূপা। স্থতরাং মানধন পুরুষগণ কর্ত্তক সতত তাহাদের রক্ষা করাই কর্ত্তবা কার্য্য।

অন্যান্ত ঋষিগণের ন্তায় তিনিও স্ত্রীজাতির 'পবিত্রতা' সম্বন্ধে একমত। স্ত্রীলোক সর্বাদা শুচি ও তাঁহাদের সর্বাঙ্গ পবিত্র। তাঁহারা কোনকালেও দৃষিতা হন না— "নৈতা হ্বাস্তি—কহিচিং"। মন্থ অন্তান্ত সংহিতাকার এবং বরাহমিহিরের মতে চক্র স্ত্রীজাতিকে 'শোচ,' গর্ম্বর্গণ 'পুনৃত বাকা' এবং অগ্নি তাঁহাদের 'সর্ব-মেধ্যত্ব' প্রদান করিয়াছেন। এই নিমিত্তই লোকসমাজে তাঁহারা স্বর্ণনিশ্বিত কণ্ঠাভরণ স্বরূপ।

সোমস্তাদামদাজ্জোচং গন্ধৰ্ণাঃ শিক্ষিতাং গিরন্ । অগ্নিণ্ট স্বাদেশ্যেং তমান্লিক্ষ্যমাঃ প্রিয়ঃ ।

স্বীজাতির চপ্রতার কথাও তাঁহার অজ্ঞাত ছিল না, কিন্তু এই তর্লতাকে তিনি নারীর 'আগন্তক' বা কাদাচিৎক ধর্ম বলিয়াই গ্রহণ করিয়াছেন বলিয়া মনে হয়। এই জন্তই তিনি 'মন্তঃপুর চিগুা' নামক অধ্যায়ে কোন নারী অনুরক্তা বা বিরক্তা এই বিষয়ে অগ্রে পরীক্ষা করিয়া লইবার নানাবিধ উপায় বলিয়াছেন। বিদুর্থ রাজার মহিথী বেণীমধ্যে অস্ত্র লুকায়িত রাথিয়া স্বামীকে নিহত কবিয়াছিলেন এবং কাশিবাজের বিবক্তা স্বী বিষ-প্রাদিগ্ন নুপুর দ্বারা পতির বিনাশ সাধন করিয়াছিলেন—এই সমস্ত ইতিবৃত্তও তাঁহার (বরাহমিহিরের) অবিদিত ছিল না এবং তিনি তাঁহার গ্রন্থমধ্যে তাহার উল্লেখও করিয়াছেন। বরাহমিহির স্ত্রীলোকের শারীরিক ফুলক্ষণ-সমূহও বর্ণনা করিয়াছেন। বরাহমিহির পুরুষগণকে ফুলক্ষণ পড়ী গ্রহণে আদেশও করিয়াছেন। "ব্রাহ্মণগণের পাদ্যুগল পবিত্র, গোজাতির পূর্ত পবিত্র, কিন্তু স্ত্রীজাতির সর্ববাঙ্গ পবিত্র"— এ-কথা তিনি পরিষার রূপে বর্ণনা করিয়াছেন। বরাহমিহির বলেন, "নারী পুরুষ অপেক্ষা অনেক গুণেই উচ্চতরা এবং নারীচরিত্রের দোয়কে অত্যন্ত স্থণার চক্ষে দেখেন এবং সেইজন্ত নারী নিজ চারিত্র পবিত্র রাখিবার জন্ত প্রাণ পর্যান্ত পাত করিয়া থাকেন, কিন্তু পুরুষ নিজ চরিত্র বিশুদ্ধ রাখিবার কোনই চেষ্টা করেন না এবং নিজ চরিত্রক্ষনিত দোষকে প্রণার চক্ষেও দেখেন না।

দম্পতোব্ৰিক্ৰমে দোষঃ সমঃ শাস্ত্ৰে প্ৰতিষ্ঠিতঃ। নৱা ন তমবেক্ষম্ভে তেনাত্ৰ বৰুমঙ্গনাঃ॥

মহাভারতে আমরা নারীজাতির সন্ধান ও প্রতিষ্ঠা দেখিতে পাই। যদিও মহাভারতে ছুষ্টা নারী হইতে সাবধান থাকিবার কথা বলা হইরাছে, তথাপি স্ত্রীজাতিকে সাধারণতঃ মেহ, ভক্তি, প্রীতি ও সন্ধান, শ্রন্ধা ও বিশ্বাসের সহিত দেখা হইত। নারী হইলেই ছুল্ডরিআ হইবে, কপটা বা মায়াবিনী হইবে, এরূপ ভাব তখন ছিল না, পক্ষান্তরে ভার্যা কল্পা বা ভাগিনীকে সেহ ও বিশ্বাসের চক্ষেই দেখা হইত। মহাভারতে এই দেগুই ভার্যাকে ছুংগ-রোগের মহৌষধ ও প্রকৃষ্ট বন্ধু বিশিষা ব্যক্ত করা হইরাছে।

> নান্তি ভাষ্যাসমং কিঞ্চিৎ নরস্তার্ক্ত ভেষজম্। নান্তি ভাষ্যাসমো বন্ধানান্তি ভাষ্যাসমা গতিঃ। নান্তি ভাষ্যাসমো লোকে সহায়ো ধশ্মসংগ্রহ। (শান্তি, ১৪৪ ।১৬)

কিন্ত আশ্চর্য্যের বিষয়, পৌরাণিক যুগে— অন্ততঃ
পুরাণসমূহে নারী মাত্রকেই ভূশ্চরিত্রা বলা হইয়াছে।
নারী কথনও পবিত্রা নন—সচ্চরিত্রা হইতেই পারেন না—
তা সে কুলরমণীই হউক আর অন্ত স্ত্রীলোকই হউক—

নজ্যণ্ড নাধাশ্য সমস্বভাৰা: স্বতহুভাবে গমনাদিকক। তোমৈশ্য দোবৈশ্য নিপাতমন্তি নজ্যে হি কুলানি কুলানি নাধাঃ॥

আবার-

নদা পাতরতে কুলং, নারা পাতরতে কুলম্। নারীণাঞ্চ নদীনাঞ্চ সক্রন্দা ললিতা গতিঃ।

ন্ত্রীলোক নাকি সর্বসমরেই বিষম ও তাহাদের নাকি দান ও সন্ধান ছার। তুই করা যার না, এমন কি সরল ব্যবহার ও সেব। ছারাও নাকি বাধা করা যার না—

ন দানেন'ন মানেন নাৰ্ব্জবেন ন সেবয়া। ন শান্তেণ ন শক্তেণ সৰ্বহথা বিষমা: জিয়: ॥

আবার পুরাণাশুরে বলিতেছেন, নারী নাকি নিধিল

পাপের উৎস এবং নারী হইতে অধিকতর পাপশীল নাকি আর কেছই নাই।

> ন ন্ত্রীভাঃ কিঞ্চিল্পন্তদ্ বৈ পাপীরস্তরমন্তি বৈ । স্ত্রিয়ো মূলং হি পাপানাং তথা ত্বমপি বেশ্ব হ ॥

নারী নাকি সংকুলসম্ভবা হইলেও এবং নাথবতী হইলেও সর্বলা মর্যাদা লঙ্খন করিয়া থাকেন।

> কুলীনা নাথবত্যক রূপবত্যক যোবিতঃ । মর্য্যাদায় ন তিইন্তি স দোষঃ স্ত্রীযু নারদ ! ॥

এই নারীজাতি যে পুরুষের সহধর্মিণী হইয়া ধর্ম-কর্মে সহায়ভূতা হন, পুরাণবিশেষ তাহাও অস্বীকার করিতেছেন এবং পূর্ব্ব পূর্ব্ব মহর্ষিগণ ধাহারা ভার্যাকে সহধর্মিণী আখ্যা দিয়াছেন (যথা, মহাভারতে "সহায়ো ধর্ম্মসংগ্রহে") ঠাহাদিগকেও বিদ্যূপ-বাৰে জৰ্জ্জবিত করিয়াছেন। वथा-"विनिषः 'সহধমে''তি পূর্বামুক্তং মহর্বিভি:। সন্দেহ: সুমহানেষ বিরুদ্ধ ইতি মে গতিঃ।" এই শ্রেণীর পুরাণশাস্ত্রকারগণ কি কথনও কুলস্ত্রীকে পতির জন্ত হাস্তমুধে মৃত্যু বরণ করিতে দেখেন নাই অথবা শ্রবণও করেন নাই যে কুলস্ত্রীগণ-

> জীবতি জীবতি নাথে মৃতে মৃতা যা মূলা যুতা মুদিতে। সহজ্ৰ-স্নেহ-সরলা কুলবনিতা কেন তুল্যা স্থাৎ ।

এই শাস্ত্রকারগণের উক্তি বে অযথার্থদোবে হুই তাহ। সকলেই বৃঝিতে পারেন। এই সমস্ত শাস্ত্রকারকে লক্ষ্য করিয়াই বরাহমিহির বলিয়াছেন—

> অহো ধাষ্ট্রমসাধ্নাং নিন্দতামনখাঃ ব্রিয়ঃ। মুক্তামিব চৌরাণাং তিঈ চৌরেতি জগ্পতাম্॥

অর্থাৎ, চোর যেমন নিজে চুন্নি করিয়া অপরকে ''চোর ! চোর !" ৰূলিয়া ধরাইয়া দিতে যায়, ইহাদের প্রচেষ্টাও অনেকটা সেইরূপ ৷

জননী জায়া ও ভগিনীর জাতিকে পুরুষে যে কি করিয়া এরূপ নিন্দা করেন তাহা সত্যই ব্ঝিতে পারি না। সত্যই বরাহমিহির পরিস্টুট ভাবে তথ্যকথা বলিয়াছেন—

> জারা বা স্থাক্ষনিত্রী ব! সগুব: ত্রীকৃতে বৃণাষ্। হে কুতন্মান্তরোনি নাং কুর্বাভাং ব: কুত: ওভস্॥

ত্রীলোকের জন্তই ধর্ম অর্থ সমস্ত প্রাণ লাভ করিরাছে, একথা অস্বীকার করিবার উপার নাই। বরাহমিহির সেই জন্ত বিশদরূপে মনে করাইয়া দিতেছেন—

> তদৰ্থং ধৰ্মাৰ্থে । হতবিষয়সৌধ্যানি চ ততো। গুৰু লক্ষ্যো মাকা সতত্ত্বৰূলা মানবিতৰৈঃ।

মন্থুও বলিয়াছেন--

যত্র নার্যাপ্ত পুরুজ্ঞে রমস্তে তর দেবতা:।

বরাহমিহিরের এতাদৃশ যথার্থোক্তি-সকল স্তাই মনে শ্রদ্ধার উদ্রেক করে। বলিলে অত্যুক্তি হইবে না যে, ইনিই একমাত্র ঋষি যিনি স্ত্রী-পুরুষকে স্তারের তুলাদণ্ডে স্থাপিত করিয়া নিরপেক্ষ ভাবে বিচার করিয়াছেন। এরূপ মনীবীর উদ্দেশে ক্ষম স্বতঃর প্রদায় পরিপ্রিত হইয়া উঠে। এরূপ মহাস্তব ও ন্তায়দর্শী ব্যক্তি স্তাই বিরশ। ইনি প্রকৃতই ঋষি। সমগু স্তীসমাজ ইহার নিকট কৃতজ্ঞ।

দৃষ্টি-প্রদীপ

গ্ৰুষণ বন্দ্যোপাধ্যায়

অষ্টম পরিচ্ছেদ

৩

পথ হাটি, একেবারে নিঃসম্বল অবস্থা। সন্ধার কিছু আগে একটা বড় পাকুড়গাছের তলায় পথের ধারে-জনকয়েক লোক দেখে সেধানে গেলাম। চার জন পুরুষ মান্য ও একটি ত্রিশ-বত্রিশ বছরের স্ত্রীলোক—তারা গাছতলায় উত্তন জেলে রাধবার উদ্যোগ করছে।

এক জন বললে-ক্র থেকে আস্ছেন বাবু?

- —ৰাগড়াবাট থেকে। তোমরা আস্চ কোথা থেকে ?
- —অামরা আদ্তেছি তো বড় দুর থেকে। যাব কেঁহলীর মেলায়।

এক জন তামাক সেজে নিয়ে এসে বললে—তামাক ইচ্ছে করুন বাবু। ও জুড়ন, বাবুকে বসবার কিছু দে -

—আমি তামাক খাই নে, তোমরা খাও। তোমরা দেশ থেকে বেরিয়েচ কতদিন ?

ছুড়ন বৈরাগী এগিয়ে এসে সঙ্গীর হাত থেকে ছঁকোটা নিলে। বললে—বাবু বড় কট, আর পুরিমেতে বাড়ির বার হওয়া হয়েছে। রাস্তায় কি অনাবিষ্টি, কি অনাবিষ্টি! তিন দিন ধরে আর থামে না, জিনিমপত্তর ভিজে এক্সা, প্রায় পঞ্চাশ-ষাট কোশ এখান থেকে—নওদা চেনেন? সেই নওদার সন্ধিপত্য আমাদের বাড়ি, হাতীবাধা গ্রাম, যশোর ফেলা।

গরগুজবে আধ্বণ্টা কাটলো। জুড়ন বললে—

দাদাঠাকুরের খাওয়া-দাওয়ার কি হবে? এক কাজ করুন দাদাঠাকুর, আমা দের সঙ্গে সবই আছে, রপ্রই করুন, আমরা পেরস্দি পাব এখন। ব্রাহ্মণের পাতের অন্ন কতকাল খাই নি। ও কাপাসীর মা, পুকুর থেকে জল্ডা নিয়ে এস, আর রাত কোরো না।

আমি বিশেষ কোন আপতি করলাম না। এ দর
সঙ্গ আমার বড় ভাল লাগ্ছিল, এই রাত্রে তা ছাড়া
বাবই বা কোথায় ? র'য়া চড়িয়ে দিল!ম। কাপাসীর মা
আলু বেগুন ছাড়াতে বস্.লা। ওদের মধ্যে এক ভনের
নাম বাব্র!ম—দে পুক্রে চাল ধুতে গেল। জুড়ন শুক্নো
কাঠকুটো কুড়িয়ে আনতে গেল।

পথের ধারে এই দরিদ্র, সরল মাহ্যগুলির সঙ্গে গাছতলার রাত্রিগাপন, জীবনের এ এক নতুন অভিজ্ঞতা। রাত্টিও বেশ, কি রকম ফুলর ভ্যোৎসা উটেছে! নির্জ্জন মাঠে ভ্যোৎসায় অনেক দূর দেখা যাচছে।

এই জ্যোৎসার'তে ভামার কেবলই মনে হয় আমি আর সে-সব জিনিয় দেখি নে। কতদিন দেখি নি। যথন চিন্তে শিখি নি, তথন রোগ ভেবে বাকে ভয় করেছি কত, এখন তা হারিয়ে বুঝেছি কি অমূল্য সম্পদ ছিল তা ভীবনের। বোধ হয় মাঠের ধারের এই সব্দ্রু দুর্বা ধাসের শযায় শুয়ে চোক বুজে ভ'ব্লে আবার দৃষ্টিশক্তি ফিরে পাই—এই সব বিজন মাঠে শেনপ্রাহরের জ্যোৎসাভরা রাত্রে মুখ উচু ক'রে চেয়ে থাক্লে অনস্ত পথের যাত্রীদের

দেখা যায় ··· ওপর আকাশের জ্যোৎস্নামাখা বায়্স্তর তাদের গমন পথে পথে দেহগদ্ধে সুরভি হয়—পরের হৃঃথে কোনো দয়ালু আত্মা যে চোখের জল ফেলে, নদী-সমুদ্রে বিক্লেকর মধ্যে পড়লে তা থেকে মুক্তা হয়, বিলবাঁওড়ের পদ্মফুলে পড়লে পদ্মম্মুর স্থাষ্ট করে ··· আমার নিবে-যাওয়া দৃষ্টি-প্রদীপে আলো জেলে দিতে যদি কেউ পারে তো সে ওরাই পারবে।

সীতার কথা মনে হয়। আচ্ছা, এই রাত্রে এতক্ষণ সে কি করছে? বে-জীবনের মধ্যে সে আছে, সে-জীবনের জন্তে সে তৈরি হয় নি। হয়ত রান্নাঘরে বসে এতক্ষণে এইরকম রাধ্যে, ও জত বই পড়তে ভালবাসে, তাদের ঘরে একথানাও বই নেই, বই পড়া হয়ত সেধানে ঘোর অপরাধ, বেমন ছিল জ্যাঠাইমার কাছে। জীবনের বে-কোন আনন্দভরা অভিজ্ঞতার সময়েই সীতার বার্থ জীবনের কথা আমার না মনে এসে পারে না।

স্বাই মিলে খেতে বস্লাম। রাক্ষা হ'ল বড়ির ঝোল, আনুভাতে, পটলভাজা। কাপাসীর মা অবিশ্রি দেখিরে দিলে। কাল ঠিক এই সমরে থাগড়াঘাটের পথে বটতলায় চৌধুরী-ঠাকুর ভক্তন গাইচে। কি থারাপ লোকটা! টাকার দরকার ছিল, আমায় বললে তো আমি দিতামই। চুরি ক'রে কি হ'ল!

জুড়ন বৈরাগী খাওয়া-দাওয়ার পরে গল্প করতে লাগল।
বললে—শুন্ন দাদাঠাকুর, এই যে কাপাসীর মা দেখ্ছেন,
এর বাবা অনেক টাকা জমিয়ে মারা গিয়েছিল। খেতো
না, শুধু টাকা জমাতো। মরবার সময় ভাইকে বললে,
অমুক জায়গায় মাল্সায় টাকা পোঁতো আছে, নিয়ে এসে
আমায় দেখা। তা এই পান্চালার কোণে ভাঙা উন্নের
মধ্যি মাল্সা পোঁতা ছিল—কেউ জান্তো না। মরবার
সময় তাই টাকার মাল্সা সাম্নে নিয়ে থোলে। টাকা
দেখ্তি দেণ্তি মরে গেল।

- —সে টাকা কে পেলে তার পর <u>?</u>
- তারপর বুড়ো তো মরে গেল। তার ভাই রটালে মাল্সাম্কু টাকা সেই রাতি গোলমালে চুরি হয়েছে। এমন কি টাকার অভাবে বুড়োর ছেরাদ্টাও হ'ল না। পেটের ওপর বাণিজ্যি ক'রে টাকা জমিয়ে গেল, নিজের

ভোগে ত লাগলোই না—একটিমান্তর মেয়ে এই কাপাসীর মা, তার ভোগে ত হ'ল না। টাকার মাল্সা রাতারাতি কে যে কোথায় সরিয়ে ফেললে—

কাপাসীর মা ঝাঁঝের সক্ষে ব'লে উঠল—ই্যাগো হাা।
সরিয়ে ফেল্তে এসেছিল পাড়ার লোক। যে নেবার সে
নিয়েছে। আমি কি আর কিছু ক্লানি নে না বুঝি নে?
ধন্ম আছেন মাথার ওপর—তিনি দেগবেন। ছ-মাসের
মেয়ে নিয়ে বিধবা হয়ে লোকের দোর-দোর ঘুরিচি ছটো
ভাতের জন্তি—আমায় যিনি বাপের ধনে—

বাব্রাম বললে—আর শাপমন্তি কোরে। না বাপু। তোমার অদেষ্টে থাক্ত, পেতে। বাদ দেও ওদব কথা। উন্নে আগুন আছে কিনা দেখো তো, আর একবার কলকেটা ধরাই।

ওদের মধ্যে আর এক জন বললে—ও জুড়নথূড়ো, স্বরূপগঞ্জের বাজারে কাল হুপুরের আগে পৌছনো যাবে না? —হুটোর কম হবে না। ছ'ডী কোল, তার আগেই

খাওয়া-দাওয়া ক'রে নেওয়া যাবে।

বাব্রাম বললে—এবার কেঁহলির মেলায় লোক ঘাচ্ছে কই তেমন জুড়নথুড়ো?…সে বছর দেখেছিলে তো? পথে দারারাতই লোক হাটতো।

অঙ্ত লাগছিল এ রাতটি আমার কাছে। এত কথাও মনে এনে দেয়! পুম আর আদে না। ভাবছিলাম মান্ত্র এত অল্পেও স্থী হয়! আর স্থ জিনিষটা কি অনির্দেশ্য রহস্তময় ব্যাপার—এই নির্জ্জন রাত্রে মৃক্ত অপরিচিত প্রাস্তরের মধ্যে তারাখচিত আকাশের নীচে শুরে স্বাই স্থের স্বপ্ন দেশ্ছে—কিন্তু এক জনের স্থের ধারণার সঙ্গে অন্ত আর এক জনের ধারণার কি বিষম পার্থক্য! সকালে ওদের কাছ থেকে বিদায় নিয়ে পশ্চিম মুথেই হাটি। রাঢ় দেশের বড় বড় মাঠের ওপর দিয়ে পথ। রাঙা বালি, দিগস্তে তালবনের সারি। হয়ত মাঠের মাঝে প্রাচীন কালের প্রকাণ্ড দীঘি, তালবনে ঘেরা। কি ফাঁকা ভায়গা এ-সবঁ! মনে হ'ত ধেন সীমাহারা দিক্সমুদ্রে ভেলা ভাসিয়ে চলেছি, কোন্ অজ্ঞাত দিগস্তের বননীল উপক্লে গিয়ে ভিড্বো, কোনখানে তমালতক্ষনিকরে বনস্থিম শ্যামারমান, সেখানে গ্রুভরা অক্কার বীথিপথ বেয়ে

অভিসারিকারা চিরদিন পা টিপে টিপে হাটে; বৃন্দাবনের দিন কুরিয়ে গেল, মহাভারতের বৃগ কেটে গেল, যমুনার তটে কেলিকদম্বের ছায়া কালের অন্ধকারে লুকিয়েছে, তব্ও ওদেরও বাওয়ার শেব হবে না, আমারও না।

8

মান্তের পথের প্রথমটায় কেঁছলি মেলার লোকজনের সঙ্গে দেখা হ'ত। পরে আর পথে তেমন লোক দেখি নি, এত বড় ম'নের মধ্যে অনেক সময় আমি একাই পথিক। এই পৃ ধু সীমাহীন প্রান্তেরে ক্র্যান্তের কি মূর্ভি! আমাদের অঞ্চলে কোনোদিন তা দেখি নি। অন্ধকার হ'লে মাঠের মধ্যেই কতদিন রাত কাটিয়েছি। ছেলেবেলায় চা-বাগানে কাটিয়ে এই শিক্ষা পেয়েছিলাম, রাত্রিতে যে কোণাও আশ্রয় নিতে হবে, একথা মনেই ওঠে না। শীতের দেশ নয়, ঘন হিমারণাের হিল্ম শ্বাপদ নেই এথানে—নিতান্ত নিরীহ, নিরাপদ দেশ—এখানে নক্ষত্রভারা মৃক্ত আকাশের চালায়ার তলায় মাটির ওপর যা-হয় একটা কিছু পেতে রাত কাটানাের মত আননদ খাট-পালক্ষে শুরে পাই নি।

একদিন এই অবস্থায় একটি অন্তৃত অভিজ্ঞতা হ'ল। একটা অপূর্ব্ব নাম-না-জানা অনুভূতির অভিজ্ঞতা। মুথে সে-কথা বলা যায় না, বোঝানো যায় না, শুধু সে-ই বোঝে, মার এ রকম হয়েছে।

সকালে বামুনহাটি ব'লে একটা গ্রামে এক গ্রাম্য হাতুড়ে কবিরা:জর অতিথি হয়েছিলুম সেদিন। তাঁর স্ত্রী একটি রণচণ্ডী—যতক্ষণ সেখানে ছিলাম, তার গালবাদ্যের বিরাম ছিল না। আমি গিয়ে সবে বসেছি, তিনি দোরের আড়াল থেকে স্বামীর উদ্দেশে আরম্ভ করলেন—ও অলপ্লেমে মিন্সে, আমার সঙ্গে তোমার এত শস্ত্রতা কিসের বল দিকি? রালাধরের রোয়াকে চালা তুলতে তোমায় বলেছে কে? গরমে একে ঘরের মধ্যে টে কা যায় না উত্ন জল্লে, বাও বা একটু হাওয়া আসতো, চালা তুললে হাওয়া আসবে তোও ভাক্রা? ওই অগ্লিকুণুর মধ্যে তোমার জন্তে পিণ্ডির বাঁধবো থেও।

ত্রী চলে গেলে কৰিরাজ-মশার বললেন—আর বলেন কেন মশাই, হাড় ভাজা ভাজা হয়ে গেল। শুনলেন ভো দাঁতের বাণ্যি—ওই রকম সদাসর্বাদা চলছে। আর ঘোর শুচিবাই, তুনিয়ার জিনিষ সব অশুদ্ধ । দিনের মধ্যে সাতবার নাইছে, নিম্নিয়া হয়ে যদি না মরে তবে কি বলেছি। আজ এক বছর ধরে ওই গোয়ালের একপাশে তক্তপোষ পেতে শোয় আলাদা—যরের জিনিষ সব অশুদ্ধ যে, সেখানে কি শোয়া যায় ? ওরকম ছিল না মশায়, ছেলেটা মরে গিয়ে অব্ধি ওই রকম—

তারপর বে কথা বলছিলাম। বামুনহাটি থেকে বিকেলে বার হয়ে ক্রোশ-ভিনেক নেভে-না-বেতে সন্ধ্যা হয়ে গেল। মাঠের মধ্যে একটা ছোট নদী, রাস্তা থেকে একটু দূরে। নদী এত ছোট যে তাকে আমাদের দেশ হ'লে বলতো থাল। ছ-পাড়ে রাঙা কাঁকর বিছানো, ধারে ধারে কাঁটা-ঝোপ আর তালগাছ। দেখানে রাত্রি যাপন করবো ব'লে মাটির ওপর ছোট সভরঞ্চিথানা পেতে তার ওপরে বল্লাম। কোনদিকে জনপ্রাণী নেই।

খালের ওপারে একটা তালগাছের মাথায় শুক্নো পাতা হাওয়ায় খদ থড় শব্দ করছে—এই অন্ধকার প্রদাষে তালগাছের মাথার ওপরকার আকাশে নিংসঙ্গ একটা তারা—আমি একবার তারাটির দিকে চাইছি, একবার চারিদিকের নিশুন, পাত্লা অন্ধকারের দিকে চাইছি। হঠাৎ আমার মনে কেমন একটা আনন্দ হ'ল। সে আনন্দ এত অভ্ত যে বেদনা থেকে তা বেন্দী পৃথক নয়, সে প্রাক চোখে ভল এনে দিলে, মনে কেমন একটা আনির্দেশ্য অভাবের অনুভৃতি কাগিয়ে ভূলেছে থেন।

কিছুক্ষণ আণেও বে-জগতে ছিলাম, এ ধেন সে-জগৎ নয়।

এ জগৎ গুগযুগের ভূচ্ছ জনকোলাহল কত গভীর মাটির স্তরের নীচে চাপা পড়ে বাওয়ার জগৎ। ফুল ফুটে নির্জ্জনে ঝরে পড়ার জগৎ…অজানা কত ব.ন প্রাস্তরে কত অশুভরা আনন্দতীর্থের জগৎ…কত স্বপ্ন ভেঙে বাওয়া… কত আশার হাসি মিলিয়ে বাওয়া…

শুধু নির্জ্জনে চৃতবীথির, তালীবনরেখার মাথার ওপর শ্রামলতার পাড়টানা সীমাহীন নীল শৃত্তে বহুদ্রের কোন ক্ষীণরশ্মি নক্ষত্রের সঙ্গে এ ক্রগৎ এক···শতালীতে শতালীতে কত লক্ষ মনের আনন্দ, আশা, গর্ব্ব, হাসি, দৃষ্টি- ক্ষমতার বাহ: হরী কোণায় মুহিয়ে নিয়ে ফেলে দেয়, ক্ষীণ হর্মল হাত প্রিয়কে নিশ্বম জীবনের গ্রাস থেকে বাচাবার চেটা করে, না বুঝে হাসে, পুশী হয়, আশার স্বপ্রজাল বোনে…

অন্ধকারে কোন্ ধনিগ: ভ চুনাপাথর হয়ে যায় ত:দের হ/ড়...

व्य:वात नवीन वृत्क नवीन वृत्क नवीन व्य'नन एवता ওঠে। আবরে হাসি, আবার খুনী হওয়া, আবার আশার স্বপ্রজাল বোনা--- অগচ সব সময় তালের মাথার ওপর দিয়ে অনস্ত কালের প্রেই ছু.টচলে, প্রনো পাতা ঝার পড়ে, নতুন গান পুরোনো হ' য়খায়। গ্রহে গ্রাহ নক্ষত্রে নক্ষত্রে কত দুগু, অনৃগু লোকে, কত অজানা ভীব ভগতেও এরকম বেদনা, দীনতা হুঃধ। দুরের সে-সব অস্থানা लाटक क्रुन श्रामाननी नीर्च वनशांष्ट्रत इ। प्राप्त वरम याम, ডালের শাস্ত বন-বীথির মূলে প্রিয়জনেরা বছদিন-হারা প্রিয়জনের কথা ভাবে—নদীর স্রোতে শেওলা-দাম-ভাসা জলৈ অনপ্তের ঙ্গণ দেখে অনন্ত ত'র চার ধার থিরে আছে সব সময়, তার নিঃখাসে, তারবুকের অনুমা প্রাণস্থোতে, তার মনের খুণীতে, নাক্ষত্রিক শূসপারের মিট্মিটে তার'র আলে'র। দুরের ওই দিগুলয় বেখান চুপি চুপি পৃথিবীর পানে মুখ নামিয়ে কখা কইছে, শ্তপণে অদৃগু চরণে দেবদেবীরা বেন এই সন্ধায় ওথানে নেমে আসেন। গখন নদীগল শেবরৈকৈ চিক্ করে, কুল কুল অন্নকার ফিরে ভাসে, পানকলস শেওলার ফুল কালো জাল সন্ধার ছায়ায় ঢাকা পড়ে যায়—তগনই। আমার মনে সব ওলট-পালট হয়ে গেল, এমন এক দেবতার ছায়া मत्न नात्म-त्यन क्यांठी हैमालित भावाधामिनात एए व व । আটিবরার বটতলার সেই পাথরের প্রাচীন মুর্বিটার চেম্বে বড়, মহাপুরুন খ্রীটের চেয়েও বড়—চক্রবালরেখার দুরের স্বপ্ন রূপে সেই দেবতারই ছায়া, এই বিশাল প্রান্তরে মান সন্ধার রূপে, মাথার ওপর উজে-নাওয়া বালিহা সর সাই সঁ।ই পাধার ডাকে।…সেই দেবতা আমায় পথ দেখিয়ে मिन। अभिय हातिष्राहि छ। आत हाई तन, आशि हाहे আব্দকার সন্ধার মত আনন্দ, এবং যে নতুন দৃষ্টিতে এই এক মুহর্ত্তের হৃত্তে জগভটাকে দেখেছি সে দৃষ্টি হারিয়ে যাবে

জানি, সে আনন্দ জীবনে অক্ষয় হয় না জানি—কিন্তু আর একবারও যেন অন্ততঃ তারা আসে আমার জীবনে।

নবম পরিচ্ছেদ

>

পরদিন গুপুরে সন্ধান মিলল ক্রোশ-চারেক দুরে ছারবাসিনী গ্রামে একটি প্রসিদ্ধ আগজাবাড়ি আছে, সেধানে মাঝে মাঝে ভাল ভাল বৈষ্ণব সাধু আসেন। গাঁয়ের বাইরে আধড়া-বাড়ি, সেধানে থাক্বার জায়গাও মেলে।

সন্ধার সামান্ত আগে দারবাসিনীর আধড়াবাড়িতে পৌছলাম। গ্রামের প্রান্তে একটা পুকুরের ধারে অনেক-শুলা গাছপালা—ছায়াণুন্ত, কাঁকরভরা, উবর ধু ধু মাঠের মধ্যে এক জায়গায় টলটলে স্বচ্চ জলে ভরা পুকুর। পুকুর-পাড়ে বকুল, বেল, অশোক, তমাল, নিম গাছের ছায়াভরা, ঘনকুল ছ-চারটে পাধার সাদ্ধা কাকলি—মক্রর বুকে শুমাল মক্রবীপের মত মনে হ'ল। এ-গঞ্চলে এর নাম লোচনদাসের আধড়া। আমি বেতেই এক ক্ষন প্রোচ় বৈষ্ণব, গলায় ভূলদীর মালা, পরণে মোটা তসরের বহির্বাস, উঠে এসে জিল্যেস করলে, কোখেকে আসা হচ্চে বাবুর? তার পর তালপাতার ছোট চেটাই পেতে দিলে বদ্তে, হাত-মুগ ধোয়ার জল নিজেই এনে দিলে। গোলমত উঠোনের চারিধারে রাভা মাটির দেওরাল-তোলা ঘর, সব ঘরের দাওয়াতেই ঘটি-তিনটি বৈষ্ণব, খুব সন্তবতঃ আমার মতই পথিক, রাত্রের জন্তে আগ্রের নিয়েছ।

সন্ধার পরে আমি তালপাতার চেটাইয়ে বসে একটি বৃদ্ধ বৈষ্পবের একতারা বাজ্না ও গান শুন্চি—এমন সময় একটি মেয়ে আম'র সামনে উঠোনে এসে জিগ্যেস করকে—আপনি রাভিরে কি থাবেন ?

আমি বিশ্বিত হয়ে বলগাম—আমায় বলচেন ? মেয়েটি শান্ত হুরে বললে—হাগ্য রাভিয়ে কি ভাত ধান?

আ:মি থতমত থেয়ে বলনাম—যা হয়, ভাতই খাবো। আপনানের যাতে সুবিধে।

स्यापि वनान-कामात्मत स्वित्ध नित्त नत्र-धशान

আপনার যা ইচ্ছে হবে খেতে তাই বল্বেন। চাখান্ কি আপনি?

এ-পর্যান্ত কোন জারগার এমন কথা শুনি নি, কোন মন্দিরে বা বৈষ্ণবের আথড়াতেই নর। ডেকে কেউ জিগ্যেস করে নি আমি কি থেতে চাই। বনলাম—চা পাওরা অভ্যেস থাছে, তবে পুবিধে না হ'লে—

মেয়েটি আমার কথা শেষ হওয়ার আগেই চলে গেল এবং মিনিট কুড়ি পরে এক পেয়ালা চা নিয়ে এসে নিঃসঙ্গোচে আমার হাতেই দিলে। বললে—চিনি ঠিক হয়েছে কিনা দেখুন।

খাবার তাকে দেখলাম রাত্রে ধাবার সময়ে। লম্বা দাওরার সারি দিয়ে সাত-আট জন লোক থেতে বসেছে, মেয়েটি নিজের হাতে সবাহকে পরিবেশন করলে। প্রকাণ্ড বড় ভাতের ডেক্চী নিজে ত্-হাতে ধরে নিয়ে এসে আমাদের সাম্নে রাখলে—তা থেকে থালা ক'রে ভাত নিয়ে সকলকে দিতে লাগল। আমার পাশের লোকটিকে বল্লে—ও কি শ্রামা কাকা, নাউয়ের ফট দিয়ে আর ত্টো খান্। ওবেলা ত ধাওরাই হয় নি প্

সে সসম্বাদ বললে—ন। দিদিঠাক্রণ, আমাকে বল্তে হবে না আপনার। পেটে জায়গা নেই। তেতুল মেথে বরং ছটো খাবো—

— ইাা কাসছেন, তেঁতুল না থেলে চল্বে কেন? হুধ দিচিচ—তারপর আমার সাম্ন এসে বললে— আপনার বোধ হয় ওবেলা ধাওয়াই হয় নি, আপনাকেও হুধ দিছি।

এতগুলো লোক থেতে বসেছে, হধ দেওয়া হ'ল মোটে তিন ব্দনকে—কিন্তু সে ব্যক্তিগত প্রয়োদনবিশেষে এবং তার বিচারকর্ত্রী ওই মেয়েটই। আমার কৌতৃক হ'ল ভারি।

রাত্তে শুরে শুরে ভাবণাম চমৎকার মেরেটি ত!
দেশতে সুত্রী বটে, তবে থুব সুন্দরী নয়। কিন্তু আমি
ওরকম মুথের গড়ন কথনও দেখি নি, প্রথমে সন্ধাবেলার
ওকে দেখেই আমার মনে হরেছিল একথা। বার-বার চেরে
দেশতে ইচ্ছে হর—সে ওর প্রন্দর ডাগর চোথ হটির জ্ঞান্তে,
না ওর মুথের একটি বিশিষ্ট ধরণের লাবণ্যমন্ত্র গড়নের
জ্ঞান্তে, রাত্রে তা ভাল বুরতে পারি নি। মেরেটি কে?

নিভাস্ত ছেলেমানুব তো নয়—সারাদেহে বৌকন শ্রী কুটে উটেছে পরিপূর্ণ ভাবেই—এথানে ওভাবে থাকে কেন? আধড়ার সঙ্গে ওর কি সম্পর্ক? নানা প্রশ্ন মান উঠে বুম আর এাসে না।

পরদিন সকালে মেয়েটির সঙ্গে অনেকবার দেখা হ'ল।
অভিথিদের কারও অযত্ব অথবিধে না হয় সেদিকে
দেখ্লাম ওর বেশ দৃষ্টি আছে। এ-এঞ্চলে চালে কাঁকর ব'লে
সে নিজে সকালে কুলো নিয়ে বলে প্রায়্ম আধ মণ চাল
ঝাড়লে। বেলা নটার সময় হঠাৎ এসে আমায় বললে—
আপনার ময়লা জামা-কাপড় যদি পুট্লিতে থাকে ত
দিন্ কেচে দেবো। আপনার গায়ের জামাটাও ময়লা
হয়ে গিয়ছে খুলে দিন্। খুব রোদ, ত্পুরের মধ্যে ভকিয়ে
যাবে।

আমি প্রথমটা একটু সঙ্কুচিত হরে পড়েছিলাম। তার পর দেখলাম সে দকলকেই জিগ্যেশ্ করছে করিও ময়লা কাপড়-চোপড় কিছু আছে কিনা। এক জন বৃদ্ধ বাউলের গেরুরা আলথেক্লা ময়লা হয়ছিল ব'লে খুলিয় নিয়ে গেল। পরে শুনলাম মেয়েট গুরুক্ম প্রায়ই করে, আধ্ডাতে ময়লা ভামা-কাপড়ে থাক্বার গো নেই।

এথানে দিন ছুই কাটবার পরে আর একটা জিনিষ আমার বিশেষ ক'রে চোগে পড়ল বে ন্ময়েটর মধ্যে কোন মিথো সঙ্গোচ নেই। সহজ সিধে ব্যবহার, কি কাজে, কি কথবা তায়। সজীব ও দী প্রিময়ী, যেন সঞ্চারিণী দীপশিখা যদি প্রামাঙ্গী মেয়েকে দীপশিখার সঙ্গে তুলনা করা যায়। তৃতীয় দিন বিকেলে এসে বললে—পুক্রপাড়ের বাগান দেখেছেন দ আস্কন দেখিয়ে নিয়ে আসি। এই কথাটা। আমার বড় ভাল লাগল—এ পর্যান্ত আমি কোন মেয়েদেবি নি যে বাগান ভালবাসে, দেখাবার জিনিষ ব'লে মনে করে।

ওর সঙ্গে গেলাম। অনেক গাছ আমাকে সে চিনিয়ে দিলে। কাঞ্চন কুলের গাছ এই প্রথম চিন্লাম। এক কোণে একটা বড় তমালগাছের তলায় ইটের একটা তুলসীমঞ্চ ও বেদী দেখিয়ে বললে—বাবা এধানে বসে জপ করতেন।

জিগ্যেদ্ করলাম—আপনার বাবা এখন কোথায় ?

মেরেটি কেমন থেন একটা বিশ্বরের দৃষ্টিতে আমার

দিকে চেয়ে বললে—বাবা ত নেই, এই চার বছর হ'ল মারা গিয়েছেন। এই যে পুকুরটা, বাবা কাটিয়েছিলেন, আর ওই বকুলগাছের ওপালে বিষ্ণুমন্দির তুলছিলেন, শেষ ক'রে বেতে পারেন নি।

এই কথায় স্ত্র খুঁজে পেলাম ওর সম্পূর্ণ পরিচয় জিগ্যেস করবার। এ গ্র-দিন কাউকে ওর সম্বন্ধে কোন কথা বলি নি, পাছে কেউ কিছু মনে করে। কৌতৃহলের সঙ্গে বললাম—আপনার বাবার নামেই বৃঝি এই আথডা?

— কি লোচনদাসের আথড়া? তা নয়, আমরা ব্রাহ্মণ, আমার বাবার নাম ছিল কাশীখর মুখ্যো। লোচন-দাস এই আথড়া বসান, কিন্তু মরবার সময়ে বাবার হাতে এর ভার দিয়ে গান। ভারপর বাবা আট-ন বছর আথড়া চালান। আথড়ার নামে দত ধানের জমি, সব বাবার। আফুন, বিশ্বুগনিদ্ব দেগবেন না?

মনে ভাবি বিশ্বুমন্দির তুচ্ছ, ফিলিপাইন দ্বীপপুঞ্চ পর্যান্ত আমি দঙ্গে যেতে রাজী আছি। পুকুর-পাড়ের একটা বকুলগাছের পাশে একটা আধ-তৈরি ইটের পর। মেয়েটি বললে—গাঁথা শেষ হয় নি ত, হঠাৎ বাবা—ভাইতে আদ্দেক হয়ে আছে। কাঁচা গাঁথুনি, আর-বছরের বর্ষায় ওদিকের দেওয়ালের থানিকটা আবার ভেঙে পড়ে গিয়েছে।

বক্লগাছে কি লতা উঠেছে, দেখিয়ে বললাম—বেশ ফুল ফুটেছে ত ? কি লতা এটা ?

ও বললে—মালতী লতা।

একটু চুপ ক'রে থেকে *হেসে বললে—জানেন* ? আমার-নাম—

ওর কথার ভঙ্গিতে মনে হ'ল এ এখনও ছেলেমান্ষ।
বললাম—আপনার নাম মালতীলতা ? ও! কাল উদ্ধবদাস বাবাজী কনি ব'লে ডাকছিলেন আপনাকে, তাই
ভাবলাম বোধ হয়—

ও সলক্ষ মুথে বললে—লতা নয়, মালা।

ছ-জনেই আথড়াবাড়ির নাটমন্দিরে ফিরে এলাম।
তার পর মালতীকে আর দেখতে পেলাম না, সেই যে
সে রান্নাঘরে কি কাজ নিয়ে চুকল রাত দশটা পর্য্যস্ত
আর দেখান থেকে বেরুল না।

সকালে ঘুম ভেঙে উঠে মনে কেমন এক ধরণের মধুর অমৃত্তি। মালতীকে যেন স্বংগ দেখেছি—ওর প্রকৃতপক্ষে কোন পার্থিব অস্তিত্ব যেন নেই। স্বগ্ন ভাঙার সঙ্গে সঙ্গে তার কথা মনে পড়ল, বকুলতলায় তার সঙ্গে দাঁড়িয়েছি, সে হাসিম্থে নিজের নাম বলেছে, তার চোথম্থের সেই সচেতন নারীত্বের সলজ্জতা অথচ বালিকার প্রগল্ভ কৌতৃকপ্রিয়তা—তার সারা দেহের স্থাম লাবণা, এ-সব নেন অবাস্তব স্বপ্রজ্ঞাৎ থেকে সংগ্রহ করা স্থতি। কিম্ব মনে সে বেদনা অহতব করলাম না, বা আসে এই কথা ভেবে সে স্বগ্নে বা দেখেচি ওসব মিথো, ছায়া, মায়া—ও আর পাব না, ও ছায়ালোকের রচা স্বর্গ, ওর চক্রালোকিত নির্জ্ঞন পর্বতশিধরও মিথো, ওর দিব্যাঙ্গনারাও মিথো। মালতী এইখানেই আছে, কাচে কাছেই আছে, তাকে আরও কতবার দেখবো। মালতী আসবে ত ?

মালতী সকালে একরাশ তুলো পিঁজতে বস্ল। বেলা এগারটা পর্যান্ত সে আর কোন কাজে গেলনা। প্রথম এখানে এসে বে প্রোচ় বৈশ্বটিকে দেখেছিলাম, তার নাম উদ্ধনদাস—সেই লোকটি মালতীর অভিভাবক, কার্যাতঃ কিন্তু মালতীর থেয়ালে তাকে চলতে হয়। সেও মালতীর কাছে বসে তুলো পিঁজতে ব্যস্ত আছে, মালতীর কথা ঠেলবার সাধা তার নেই।

₹

মালতীর ইতিহাস উদ্ধবদাসের মুখে একদিন ইতিমধ্যে শুন্লুম। উদ্ধব বাবাজীকে একদিন আগ্ডার বাইরের মাঠে নিয়ে গিয়ে কৌশলে ঘুরিয়ে মালতীর কথা জিগোস করতেই ও বললে—ওর বাবা আমার পাঠশালার পোড়োবন্ধু। ওরা রাহ্মণ, এ-দেশের সমাজে কুলীন। মালতীর ঠাকুরদাদা প্রীধর মুখুটি বেশ নাম-করা কীর্ত্তন-গাইয়ে ছিলেন। নিজের দল ছিল। ছ-পয়সা হাতে করেছিলেনও। একদিন রান্ধিরে বাইরে বেক্লচেন, দরজার চৌকাঠের কাছে বাড়ির বেড়ালটা যেন কিসের সঙ্গে খেলা করছে। ফুটফুট করছে অনস্তচভূপ্পীর রাত, ভাত্ত মাস, যেমন বাইরে পা দিতে গিয়েছে অমনি সাপে ছোবল দিয়েছে পায়ে। সাপ ছিল চৌকাঠের বাইরে, আলো-অধারের লেগে বুড়ো তা টের



যশোদা ও গোপাল

পায় নি। ঘরে তথন ছেলের বৌ মালতীর মা, মালতীর বাবা বাড়ি নেই। চেঁচিরে বললেন—বৌমা, শীগগির আলো আলো, আমায় এক গাছা দড়ি দাও শীগগির। দড়ি নিয়ে বাধন দিয়ে উঠোনে গিয়ে বদ্লো। বললে— আমায় আর ঘরে যেতে হবে না বৌমা, তলব পড়েছে। লোকজন এল, ঝাড়ানো হ'ল—কিছুতেই কিছু হ'ল না, ভোর রাত্রে মারা গেল।

মালতীর বাবা গৈতৃক কিছু হাতে পেয়ে একটা শবণ-কলায়ের দোকান করলে। তার মত অতিথসেবার বাতিক আমি ক্ষমণ্ড কারও দেখি নি। দোকান ত ছাই, বাড়ি হয়ে উঠল একটা মন্ত এতিগশালা। যত লোকই বাড়িতে আপুক, ফিরতো না। একবার র ভ ছুবুরের সময় পটিশ জন সাধু এদে হাজির, গঙ্গাসাগর শাচে, এনেক দুর থেকে শুনে এদেছে এখানে জায়গা পাবে। দোকানের জিনিবপত্র ভাঙিয়ে পটিশমূর্ত্তি সাধুর সেবা হ'ল। সকালে তারা বললে, আমাদের জনপিছু গ্র-টাকা প্রণামী দাও। অত টাকা নগদ কোথায় পাবে? সাধুৱা বললে—না দাও তো অভিস্পাত দেবো। আমি বল্লাম—মিতে, অভিস্পাত দেয় দিক, টাকা দিও না ওদের। ওরা লোক ভাল না। সে বললে—অভিসম্পাতের ভর করি নে, তবে আমার কাছে ८६ छाइ, व्यामि रायान रथक भार, निरा अस्त एएव. है। মালতীর মায়ের নাকের মাক্ড়ী আর ফাঁদি নথ গ্রীমন্তপুরের বাজারে বিক্রী ক'রে টাকা নিয়ে এল। তাতেও কুলোয় না, আমি বাকী সাতটা টাকা দিলাম—তবে সাধুরা বিদেয় হয় ৷

মালতী তথন ছোট, একদিন হুঠাৎ খ্রীকে এসে বললে—

দ্যাথ আর সংসারে থাক:বা না। খ্রী বললে—আমায় সঙ্গে
নাও। খ্রীকে বললে—বাশবাগানের ওই হাড়িটা পড়ে
আছে, নিয়ে এসে ধুয়ে ওতে ভাত রাধো। থেয়ে চলো।

শবণ-কলায়ের দোকান বিলি:য় দিলে। ডোমপাড়া থেকে
স্বাইকে ডেকে নিয়ে এসে বললে—শার য়া খুলা
নিয়ে য়াও। দশ মিনিটের মধ্যে দোকান সাফ্। স্বাই
বললে—পাগল হয়ে গিয়েছে। ভার পর বৌ আর
মেয়ের হাত ধরে কোণায় চলে গেল। বছর ছই পরে
এসে ওই লোচনদাস বাবাজীর আথড়ায় উঠলো। বাবাজী

তথন বুড়ো হয়েছেন, বড় ভালবাস্তেন, তিনি বললেন—বাবা,
মহাপ্রভু তোমার পাঠিয়ে দিয়েছেন, আমার আথড়ার ভার
তোমার নিতে হবে, আমি আর বেশী দিন নয়। পরের
বছর বাবাজী দেহ রাধলেন, ওই পুকুরপাড়ের তমালতলার
তাঁকে সমাজ দেওয়া হ'ল। ক্রমে মালতীর বাবার নাম
দেশময় ছড়িয়ে পড়ল।

োঁসাইজী বলতো সবাই। োঁসেইজীকে দেবতা ব'লে জানুতো এ-দেশের লোক। ধমন নির্লেভি, অমন অমায়িক লোক কেউ কথনও দেখে নি। শরীরে অহন্ধার ব'লে পদার্থ ছিল না। আর এমন মুক্ত মারুব হয় না—কোন বাধন, কোন নিয়ম গণ্ডীর ধার ধারত না। আমাদের বোইমের সমাজেও অ.নক আইন-কানুন আছে, মেনে না-চললৈ সমাজে নিলে হয়, বড়বড় মচ্চবের সময় নেমন্তর পাওয়াবায় না। সে গ্রাহাও করতো না, একেবারে আপনভোলা, সদানন্দ, মুক্ত পুরুষ ছিল। স্বারবাসিনীর কামারদের গাড়ীর কাজ আছে কল্কাতায়, একবার তাদের বাড়ি কাঙালীভোজন হচ্ছে, বেশ বড়লোক তারা। কামারদের মেজকর্তা রতন বাবু গাঁড়িয়ে তদারক করছেন-এমন সময় দেখেন গোঁদাইজী কাঙালীদের সারিতে পাতা পেতে বদে থাচ্ছেন। পাছে কেউ টের পায় ব'লে থামের আড়ালে বদেছেন। হৈ হৈ কাও, বাড়িশ্বন্ধ, এদে হাত:জাড় ক'রে দাড়ালো। এ কি কাণ্ড োসাইজী, আমাদের অকল্যাণ হবে যে! লোকটা এত मत्रम—(कात्मा नषा ५७५) भ्या नय, कात्मा छेपानम नंब्र, অবাক হয়ে বললে. তাতে দোষ কি? আমি শুনলাম কাঙালীভোজন হবে, ভাল-মন্দ খেতে পাওয়া বাবে, তাই এসেছি, এই পথ দিয়ে যাচ্ছিলাম। সে জাত মানতো না. সমাজ মানতো না, আপন-পর বুঝ্তো না, নিয়ম-কালুনের ধার ধারতো না। কভণোক মন্ব নিতে আস্তো। বল্তো— মন্ত্র কি দে.বা ? আগনাকে ভাববে স্বাইয়ের চাকর, বাস, এই মধু। মালতীর মা আগেই মারা গিয়েছিল। র্ণোসাইজীর নিজের মরণও হ'ল স্ত্রীর মৃত্যর তিন বছর পরে। একদিন কোণা থেকে বৃষ্টিমাথায় ভিজে আধ্ভার এলেন। তার পর্বনিন সকালে আমায় বললেন—উদ্ধব, কাল আমার বড় ঠাণ্ডা লেগেছে, একটু খেন জ্বর মত হয়েছে। আজ আর ভাত খাব না কি বলো? ছ-দিন পরে জরু নিমোনিয়ায় দাঁড়ালো। বুঝ্তে পেরেছিলেন নিজে বাঁচবেন না, মেয়েকে মরণের আগের দিন ডেকে ব'লে গেলেন—মালতী মা, তোর বিয়ে দিয়ে বেতে পারলাম না, তা আমার বলা রইল যাকে তোর মন চায়, তাকেই বিয়ে করিল। তিনি তো চলে গেলেন, মালতীকে একেবারে নিঃসম্বল অবস্থায় ফেলে রেখে। হাতে পয়লা রাখতে জানতেন না। ভবিষ্যতের ভাবনা ভাবতেন না—সেটা আমি গুণ বিল নে, দেখিই বলি—বিশেব ক'রে অতবড় মেয়ে—আর ওর কেউ নেই ত্রিসংসারে। বাপ নেই, মা নেই, পয়লা নেই, বাড়ি নেই, ঘরবাড়ি এই অংশ্ডা। মালতীও বে দেখছেন—ও মেয়েও পাগল, ও বাপের ধারায় গিয়েছে। লোকজনকে বাওয়াছে, সেবালম্ব করছে—ওই নিয়েই থাকে। কিছু মানে না, ভয় করে না। অত্য মেয়ে হ'লে এই সব পাড়াগাঁয়ে কত বদ্নাম রট্ডে।—গোঁসাইজীর মেয়ে ব'লে স্বাই মানে, তাই কেউ কিছু বলে না।

o)

দিন-পনের কেটে গেল।

মালতীর বাবার ইতিহাস শুনে বুঝেছি আমি এখানে ছ-মান থাকলেও এরা আমায় চলে যেতে বলবে না—বিশেষ ক'রে মালতী তো বল্বেই না। কিন্তু আমার পক্ষে থাকাও বেমন অসন্তব হয়ে উঠ্ছে, চলে যাওয়া তার চেয়েও অসন্তব বে! মালতীকে নৃতন চোথে দেখতে শিখেছি ওর বাবার পরিচয় শুনে পর্যন্ত ৷ মালতীর বাবার মত লোকের সন্ধানে কত ঘুরেছি, এতদিন পরে সন্ধান মিলেছে, কিন্তু চাকুষ দেখা ছ'ল না। জগ তর সকল নিংখার্থ, নির্মাৎসর লোক পরস্পরের সগোত্ত—তা সে লোক গঙ্গাতীরে নবদ্বীপের আকাশেই প্রথম দিনের আলো দেখুন, কিংবা দেখুন কপিলাবান্ত বা প্যালেইটেন বা আসিসির ওপরকার ইটালীর ইক্রনীল আকাশের তলে।

মালতীকে কত কণা বলবার আছে ভাবি, কিন্তু ওর সঙ্গে আর আমার তেমন নির্জ্জনে দেখা হয় না। আমি দেবি মালতীর আশাতেই আমি সারাদিন বসে থাকি—ও ক্থন আসবে। ও থাকে সারাদিন নিজের কাজে ব্যস্ত— হয়ত দেখলাম ঘর থেকে ও বার হ'ল, ভাবি আমার কাছেই আসছে বুঝি—কিন্তু তা না এসে থালা-হাতে কাকে ভাত দিতে গেল। নয়ত আল্নাতে কাপড় টাঙাতে ব্যস্ত আছে। হয়ত একবার থাকতে না পেরে ডেকে বলি— ও মালতী।

মালতী বললে—আস্ছি।

আমি বদেই আছি, বেলা ছপুর গড়িয়ে গেল। ও এল কই '

ি দিনপ্তলো প্রায়ই এই রকম। ত: ছাড়া আমার ওপর ওর কোন বিশ্যে পক্ষপাত আছে ব'লে আমার মনে হয় না। প্রথম দিনকতক যে সে রকম ধারণা না হয়েছিল এমন নয়। কিন্তু এখন সে ভূল ভেঙে:ছ। ও সকলকে যেমন যত্ন করে, আমাকেও তেমনি করে।

একদিন ব'সে উদ্ধবদাদের একতারা মেরামত করছি—
মালতী দেখতে পেয়ে উঠনের ওকোণ থেকে চঞ্চলপদে
এসে সামনে দাঁড়াল। সকৌতুক হারে বললে—ও! কাকার
সেই একতারটা ই আপনি সারাচ্ছেন নাকি ই কি জানেন
আপনি একতারা সারানোর ই

আমি অগভিত না হয়ে বললাম—জানাজানির কি আছে এতে ? থানিকটা তার হাতে এসেছিল—তাই পরিয়ে দিছি। কথা শেব করার সঙ্গে সঙ্গে হাসিমুখে চোথ তুলে চাইতেই ওর সঙ্গে টোথেটোথি হ'ল। সেই মুহুর্ত্তে হঠাৎ আমার মনে হ'ল মালতীকে এথানে একা নিঃসহায়, নির্বান্ধব, রিক্ত অবস্থায় ফেলে আমি কোথাও খেতে পারব না। ওর এথানে কে আছে ? একপাল অনামীয়, অশিক্ষিত গোঁয়ো বৈফবের মেলার মধ্যে ওকে ফেলে রেখে যাব কি ক'রে ? তারা ওর কেউ নয়। তারা ওকে ব্যবে না। তার চেয়ে আমার মনের দেশে ও আমার অনেক আপন, আমার নিকটতম প্রতিবেশী।

ভাবলাম মালতীকে সব কথা বলি। বলি, মালতী, সংসারে ভোমারও কেউ নেই, আমারও কেউ নেই। তৃমি সাম্ম বাপের সতী মে:য়, ভোমার সংসার-বিরাগী আপেন-ভোলা বাপের আশীর্ঝাদ ওই শ্যামপ্রন্দর তমালতক ছায়.র মত তে:মাকে বিরে রেবেছে জানি, কিন্তু আমিও বে-সন্ধানে বেরিয়েছি, সে-সন্ধান সফল হবে না তুমি যদি পাশে এসেনা দাঁড়াও।

কিন্তু তার বদলে বললাম—ভাল কথা মালতী, তোমাকে অনেক দিন থেকে বলব ভাষচি। উদ্ধব বাবাকী:ক ব'লে আমায় এখানে একটা পাঠশালা করার ব্যবস্থা ক'রে দিতে পার? আমার কিছু হয় তা থেকে।

मानठी এসে मः 'अश्र'श পা ঝूनिय वनन। अत्र मूर्शत পাশটা দেখা যাচেছ, একটা প্রকুমার লাবণ্য যেন ওর মুখের চারিপাশে িরে আছে—এক ধরণের স্থন্দর মুখ আছে মনে হয় েন তাদের মুখের চারিপাশে একটা অদৃশ্য সৌন্দর্য্য-कालित (वरेनी त्राव्राह, यथन कथा ना वल हुल क'रत थारक, তথন তাদের মুখের এই ভাবটা স্ম্পট হয়ে ফুটে ওঠে --মালতীর মুখ দেই ধরণের। আমার কথায় ওর মুধচোধ চিস্ত কুল হয়ে উ'ল, খেন কি একটা বিষম সমন্যা তার খাড়ে আমি চাপিয়ে দিয়েছি। বললে—কিন্তু এথানে থা ভেবে করবেন, তার কিছু হবে না। এথানে মাইনে দেবে না কেট। এখানে ভদ্রলোক নেই। দারবাসিনীতে কামারেরা আছে, ওাদর কলকাতায় গাড়ীর কারধানা, সেইধানেই থাকে। সরকারেরা তিন বছর পরে এসেছিল পূজোর সময় দেশে। তারপর হেদে ছেলেমাসুযের মত ঘাড় গুলিয়ে বল ল—ধান নিয়ে ছেলে পড়াতে পারবেন ? এদেশে মাইনের বদাল ধান (দয়। নাঃ, সে-সব আপনার কাজ নয়। তা আপনি ত এখানে ভলে পড়ে নেই? হাতে কিছু নেই, একদিন হবেই। যতদিন না হয়, এখানে থাকুন। আপনাকৈ এ অবস্থায় কোথাও যেতে দেব না। এথানে থাকতে কট হচ্ছে বে'ধ হয়, না ? সত্যি কথা বনুন।

- সত্যি কথা কি সব সময় বলা বায় মালতী ?
- —কেন, ব**ুন না কি কথা বল** বন ?
- —এখন থাক্, আমার কান্ধ আছে। শোন, উদ্ধবদাসের একতারটো এখানে রইল, ব'লো তাকে। তে:মার জ্ঞে সারানো হ'ল না।

মালতী অবাক হার চেয়ে থেকে বললে—কোথার যাবেন ? শুনুন। বা রে, অঙুত মানুম কিন্তু আপনি ?.

বাইরের মাঠে এসে দীড়ির মনে হ'ল আকাশ-বাতাদের রূপ ও রং থেন এই এক মুহুর্ত্তের মধ্যে বদলে গেছে আমার চোখে। মালতী ও-কথা বললে কেন যে আপনাকে এ অবস্থায় কোথাও যেতে দিতে পারব না? এই সেই মাঠ, সেই নীলাকাশ, মাঠের মধ্যে ছারবাসিনীর কামারদের কাটানো বড় দীঘিটা, সবই সেই আছে—কিছ মালতীর মুখের একটি কথার সব এত সুন্দর, এত অপরূপ, এত মধুমন হয়ে উঠল কেন?

ঠিক সেই অঙ্ক রাজিটির মত—মাঠের মধ্যে নির্জ্ঞন নদীর ধারে শুরে বেমন হরেছিল সেদিন। অনুভৃতি-হিসেবে ঘুই-ই এক। কোন প্রভেদ নেই দেখলুম। কোথার সেই বিরাট দেবতা, আর কোথার এই মালতী!

তারপর দিন-কতক ধরে মালতীর সঙ্গে কি জানি কেন আমার প্রায়ই দেখা হয় সময়ে-অসময়ে, কারণে-জকারণে ও আমার প্রায়ই দেখা হয় সময়ে-অসময়ে, কারণে-জকারণে ও আমার সামনে গাড়িরে হ া কথা না ব'লে যায় না। হয়ত অতি তুচ্ছ কথা—বসে আছি, সামনে দিয়ে যাবায় সময় ব'লে গোল—বসে আছেন ? এ-কথা বলবার কোন প্রয়োজনই নেই—কিন্তু সায়াদিনের এই টুব্রো টুক্রো অকারণ কথা, একটুখানি হাসি, রুত্রিম প্রেয়, কথন-বা ওরু চাহনি—এর মধ্যে দিয়ে ওর কাছে আমি জনেকটা এগিয়ে বাই—ও আমার কাছে এগিয়ে আ.স। এতে ক'রে বুঝি ও আমার অন্তিত্বকে উপেগণ ক'রে চলতে পারে না—ও আমার সংস্ক কথা ব'লে আনক পায়।

বিকেলে যথন ওর সঙ্গে এক-এক দিন গল্প করি, তথন দেখি ওর মানর চমৎকার একটা সজীবতা আছে। নিজে বেনী কথা বলাত ভালবাসে না—কিন্তু শ্রোতা-হিসাবে শ্রে একেবারে প্রথম শ্রেণীর। বে-কোন বিঘয়ে ওর কৌতুরল জাগানো যাল্প—মনের দিক থেকে সেটা বড় একটা গুল। এমন ভাবে সংকীতৃহলে ভাগর চোধ হটি তুলে একমনে সে গুনবে—তাতে যে বলছে তার মনে আরও নতুন নতুন কথা জোগায়, ওকে আরও বিশ্বিত করবার ইচ্ছে হয়।

মালতী বড় চাপা মেরে কিন্তু—এতদিন পরে হ্রাৎ সেদিন উদ্ধবের মুখে শুনলাম যে ও বেশ সংস্কৃত জানে। ওর বাবার এক বন্ধু ত্রিগুণাচরণ কাব্যতীর্থ নাকি শেষ বন্ধসে এই আথড়ায় ছিলেন, এথানেই মারা ধান। তার কেউ ছিল না --মালতীর বাবা তথন বেঁচে—তিনিই এখানে তাঁকে আশ্রেয় দেন। ত্রিগুণা-পণ্ডিতেরই কাছে মালতী তিন-চার বহর সংস্কৃত পড়েছিল। মালতীকে জিগোস করতেই মালতী বললে—এখন আর আমার ওসব চর্চা নেই, ভূলে গিয়েছি। সামান্ত একটা ধাতুর রূপও মনে নেই। তবে রঘুর শ্লোক অনেক মৃথস্থ আছে, যা যা ভাল লেগেছিল তাই কিছু কিছু মৃথস্থ করেছিলাম, সেইগুলো ভূলি নি। তবে সহজ ভাষা যদি হয়, পড়লে মানেটা থানিকটা ব্রতে পারি। সে এমন কিছু হাতী-ঘোড়া নয়। উদ্ধব-জ্যাঠা আবার তাই আপনাকে গিয়েছে বলতে—উদ্ধব-ভ্যাঠার যা কাও!

বৈষ্ণব-ধর্মের আবহাওয়ায় মান্ত্য হয়েছে বটে, কিন্তু ও
নিজে যেন কিছুই মানে না—এই ভাবের। কথনও
কোন পূজা-অর্চনা ওকে করতে দেখি নি, এক ওর বাবার
বিষ্ণুমালিরে প্রাদীপ দেখানো ছাড়া। আধড়ায় প্রতিষ্ঠিত
বিগ্রহের পূজার জোগাড় করে উদ্ধব নিজে, মালতীকে
সেদিকে বড়-একটা ঘেঁস্তে দেখি নি। তা ব'লে ওর মন
ওর বাপের মত সংস্কারমুক্তও নয়। ছোটখাটো বাচবিচার এত মানে যে, আখড়ার লোকে অভিষ্ঠ। সন্ধাবেলা
বিজে ভুলেছিল ব'ল একটি বাবাজীকে মালতীর কাছে
কড়া কথা শুনতে হয়েছিল। ছোঁয়াছুয়ির বালাই বড়-একটা
নেই—মুচির ছেলেকেও ঘরের দাওয়ার বসিয়ে খাওয়াছে,
কাওয়া পাড়ায় অর্থ হ'লে সাবু ক'রে নিয়ে গিয়ে নিজের
হাতে থাইয়ে অসতে দেখেছি।

একদিন বিকেলে আগড়ার সামনের মার্চে পাঠশাল কর্মি, মালতী এসে বললে—দিন আজ ওদের ছুটি। আফ্র একটা জিনিব দেখিয়ে আনি।

আপড়ার পাশে ছোট একটা মাঠ পেরিয়ে একটা রাঙা মাটির টিল:। তার ওপর শালপলাশের বন—টিলার নীচে ঘন বনসিদ্ধির জঙ্গল। টিলার ওপাবে পলাশবনের আড়ালে একট ছোট মন্দির। মালতা বললে—এইনেখাতে আনলাম আপনাকে। নন্দিকেশ্বর শিবের মন্দির—বড় জাগ্রত ঠাকুর —খুঠান মান্ত্র হ'লেও মাথাটা নোয়ান—দোষ হবে না।

মন্দিরের পূজারী ত্থানা বাতাসা দিয়ে আমাদের জন দিলে। সে উড়িয়াবাসী ব্রাহ্মণ, উপাধি মহান্তি, বহুকাল এদেশে আছে, বাংলা জানে ভাল। মালতীকে ছেলেবেলা থেকে দেখে আস্টে।

ভারপর আমরা তিন জনেই মন্দিরের পশ্চিম দিকের রোয়াকে বদলুম। মালতী বললে—মহান্তি-কাকা, বলুন ভ এই মন্দির-প্রতিগার কথাটা এঁকে? ইনি আবার খুটান কিনা, ওদব মানেন না—

আমি বলনুম—আঃ, কেন বাজে বক্ছ, মালতী? কি
মানি না-মানি—মানে প্রত্যেক মানুষের—মালতী আমার
কথাটা শেব করতে দিলে না। বললে—আপনার বক্তা
রাধুন। শুন্ন, এটা ধুব আশ্চর্যা কথা—বনুন তো
মহাত্তি-কাকা?

মহান্তি বললে—এই গানে আগে গোয়ালাদের বাধান ছিল, বছর-পঞ্চাশ আগেকার কথা। রোজ তাদের দ্রধ চুরি থেত। ত্-তিনটে গরু সকালে একদম হ্রধ দিত না। একদিন তারা রাত জেগে রইল। গভীর নিশুতি রাতে দেখে টিলার নী চের ওট বনসিন্ধির জঙ্গল থেকে কে এক ছোকরা বার হয়ে এসে গরুর বাটে মুখ দিয়ে ত্র্ধ খাছে। বে-সব গরু বাছুর ভিন্ন পানায় না, তারাও বেশ হ্র্ধ দিছে। ছোকরার রূপ দেখে ওরা কি জানি কি ব্রুলে, কোন গোলমাল করলে না; ছোকরাও হ্র্ধ থেয়ে ওই জঙ্গলের মধ্যে চুকে পড়ল। পরের দিন স্কালে বনে খোঁজ ক'রে দেখে কিছুই না। খুঁজতে খুন্তে এক শিবলিঙ্গ পাওয়া গেল। ওই যে শিবলিঙ্গ দেখছেন মন্দিরের মধ্যে। মাঘমাসে মেলা হয়—ভারি ভাগ্রত ঠাকুর।

মালতী গর্বের দৃষ্টিতে আমার দিকে চেয়ে বললে — শুনলেন পালি-মশাই? মানেন না যে বড় কিছু?

আমি বলগাম—আমি বেড়াতে বেড়াতে অনেক ভারগায় এরকম দেখেছি। কত গাঁয়ে প্রাচীন বটতলায় স্ট্ডি, ষ্টাদেবী, ওলাবিবি, ফালীন্র্রির প্রতিষ্ঠার মূলে এই ধরণের প্রবাদ আছে। লোকে কত দ্ব থেকে এসে পূজো দেয়, তাদের মধ্যে সত্যিকার ভক্তি দেখেছি। এক পাড়াগাঁয়ের বোষ্টমের আখড়ায় একখানা পাথর দেখেছিলাম—তার ওপরে পায়ের চিহ্ন খোদাই করা, আখড়ার অধিকারী প্রসার লোভে বাত্রীদের বলতো ওটা খোদ শ্রীক্তকের পায়ের দাগ, সে বৃন্দাবন থেকে সংগ্রহ ক'রে এনেছে পাথরখানা। আমি দেখেছি একটি তরুণী ভক্তিমতী পল্লীবধ্কে চোঝের জলে আকুল হয়ে পাথরটা গলাকলে ধুয়ে নিজের মাথার

লম্বা চুল নিম্নে মুছিয়ে দিতে। কি জানি কোথায় পৌছালো ওর প্রণাম? কোন্ উদ্ধুল অবাকগথে দেবতা ওর দেবা গ্রহণ করতে সেদিন বাড়িয়ে দিয়েছিলেন তাঁর বহুপল্লবিত বাছ ?

কি অপূর্ব স্থাতি হচ্ছে বিশাল পশ্চিম দিগন্তে! দুরের তালগাছের মাথাগুলো গেন বাধাকপির মত ছোট দেখাছে, ভাঁড়িগুলো দেখাছে নেন সরু সরু নলখাগড়ার ভাঁটা— আর তার ওপরকার নীলাকাশে রঙীন মেবলোকে পিলল বর্ণের পাহাড়, সমুদ্র, কোন্ স্থাসাগরের অজ্ঞানা বেশাভূমি। স্পারের নীচের মাটি সারাদিন রোদে পুড়েছে—বাতাসে তারই প্রার্ন।

মালতী বল:ল—বিষ্ণুমন্দিরে স^{*}। জ দ্বলে নি এখনও। শ্রদীপ দিইগে চলুন—

ে সেখানে ওর বাবার মন্দিরে প্রদীপ দেওয়া হয়ে গেল। আমি পুক্রপাড়ের ভেতৃলগাছের মোটা শেকড়ে বসনুম, ও দাঁড়িয়ে রইল! বললাম— আমায় তুমি য়ে পৃষ্টান পৃষ্টান কর, তুমি আমার কথা কিছু ভান না। তার পর ওকে আমার বালাজীবন, মিসনরী মেমেদের কথা, আমাদের দারিজা, মা, সীতা ও দাদার কথা সব বললাম। বিশেব ক'রে উল্লেখ করলাম আমার সেই দৃষ্টিশক্তির কথাটা—যা এখন হারিয়েছি। ছেলেবেলার ঘটনা আমার এখন আরৈ তেমন মনে নেই—তাও বললাম লা মনে ছিল— যেমন চা-বাগানের ছ-একটা টেনা, বালো পানীর মৃত্তাদিনের ব্যাপার, হীক রায়ের মৃত্রুর কথা, মেডবাব্র পুত্রসন্তান হওয়া সংক্রাস্ত বাপার।

বললাম—শীওখুইকে ভক্তি করি ব'ল অনৈক লাঞ্চনা সহ করেছি ভীব ন। কিন্তু সে আমার দেখে নর, ছেলেবেলার শিক্ষা। ওই আবহু ওর তেই মানুষ হ য়ছিলাম। আমি এখনও তাঁর ভক্ত। তুমি তাঁর কথা কিছু জান না—বৃদ্ধ তৈত্ত গেমনি মহাপুরুষ, তিনিও তেমনি। মহাপুরুষদের কি জাত আছে ম'লতী ? কর অ'দ'য় কর তা লেভি, ইহুদী-সমাজে সে ছিল নীচ, পতিত, সমাজের ম্বণা। স্বাই তাকে দেখে মুখ ফিরিয়ে চলে গেত। যীশু তাকে বললেন—লেভি, তুমি নীচ কে বলে ? তুমি ভগবানের সন্তান। লেভি আনিক্ষে কেলৈ ফেল্লা। স্ম'জর বত ছেয় লোককে তিনি কোল দিঃমছিলেন, তালের মধ্যে বেশা। ছিল,

জালজীবী ছিল, কৃষ্ঠী ছিল। তাঁকে স্বাই বলত পাগল, ধর্ম্মহীন, আচারন্তর। তাঁর বাপ, মা, ভাই আসনার জনও তাঁকে বলতো পাগল—ভারা জানত না ঈশ্বরকে যে জেনেছে, তার বাইরের আচারের প্রয়োজন নেই। তাঁর ধর্ম্ম সেবার ধর্ম্ম।

তার পর আমি ওকে দেদিনকার অভিজ্ঞতার কথা বললাম। পুকুরের ওপারে দূরবিসর্গিত আকাশের দিকে চোথ রেথে আমার মনে এল যে রাঢ়দেশের এই সীমাহীন রাঙানাটির মাঠের মধ্যে সেদিন আমি অন্ত এক দেবতার স্বগ্ন দেথেছি। সে কি বিরাট রূপ! ওই রাঙা গোধুলির মেথে, বর্ণে, আকাশে তাঁর ছবি। তার আসন সর্বত্ত—তালের সারিতে, তমালনিকুঞ্জে, পুকুরে-ফোটা মৃণালদলে, ছংখে, শোকে, মানুষের মুথের লাবণাে, শিশুর হাসিতে—সে এক অঙ্ত দেবতা। কিন্তু কভটুকুই বা সে অন্তভ্তি হ'ল! থেমন আসা অমনি মিলিয়ে যাওয়া!…

মালতী, আগেই বলেছি, অঙুত শ্রোতা। সে কি অভুত মনোখোগের মঙ্গে শুনলে বখন আমি বকে গেলুম। চুপ ক'রে রইল অনেকক্ষণ, যেন কি ভাবছে।

তার পর হুদাৎ বললে—আচ্চা, আপনাকে একটা কথা বলি। প্রেম ও সেবাব ধর্ম কি শুধু গী শুখুটের দেওয়া? আমাদের দেশে ওসব ব্ঝি বলে নি ! আমাদের আথড়ায় লোচনদাস বাবাজী ছিলেন, ঠাাং-ভাছা কুকুর পথ থেকে বুকে ক'রে তুলে আন্তেন। একবাব একটা বাঁড়ের শিং ভেঙে গিয়েছিল, ঘায়ে পোকা থুক থুক্ করছে, গদ্ধে কাছে যাওয়া যায় না। গোচন-জ্যাঠা তাকে জোর ক'রে পেড়ে ফেলে ঘা থেকে লম্বা লম্বা পোকা বার ক'রে ফিনাইল দিয়ে দিতেন ভাকড়া ক'রে। তাতেই এক মাস পরে ঘা সারলো।

—এ-স্ব কথা বলবার দরকার করে না, মালতী। আমি তোমাকে বলেছি তো ধর্মের দেশকাল নেই, মহাপুরুষদের জাত নেই। যথন শুনি তোমার বাবা গরিব প্রতিবেশীদের মেরের বিয়েতে নিজের বাড়ি থেকে দান-সামগ্রীর বাসন বার ক'রে দিতেন—দিতে দিতে বাসনের পৈতৃক আমলের বড় সিন্দুক খালি ক'রে ফেলেছিলেন—তথনই আমি বুঝেছি ভগবান সব দেশেই অদুশালোক থেকে তাঁর বাণী প্রচার

করছেন, কোন বিশেষ দেশ বা জাতের ওপর তাঁর পক্ষপাত নেই। মান্থবের ব্কের মধ্যে বঙ্গে তিনি কথা কন, যার কান আছে, সে শুনতে পার।

ওর বাবার কথার ওর চোথ জলে ভরে এল। অসমনস্ক হয়ে অন্তদিকে মৃথ ফিরিয়ে রইল। কথন দেখেছি মালতী শুক্চোখে ওর বাপের কথা শুন্ত পারে না। সন্ধাহরেছে। উঠ্ছি এমন সময় তমালচারার বিঞ্মন্দিরের দিকে আর একবার চোপ পড়তেই অংমাদের গ্রানের পুক্রপাড়ের বটতলার সেই হাতভাঙা পরিত্যক্ত স্কর বিষ্ণুম্র্রির কথা আমার কেমন ক'রে মনে এল। মনে এল ছেলেবেলার সীতা আর আমি কত ফলের মালা গেথে মূর্ত্তির গলার পরিয়েছি— তার পর আর কতদিন সেদিকে গাই নি, কি জানি মূর্ত্তিার আজকাল কি দশা হয়েছে, সেথানে আছে কি-না? কেমন অন্তমনত্ব হয়ে গেলুম নেন, মালতী কি-একটা কথা বললে তা আমার কানেই গেল না ভলে ক'রে। বারে, পুক্রপাড়ের সে ভাঙা দেবমূর্ত্তির সঙ্গে আমার কিসের সম্পর্ক ?

বিশ্বুমন্দির থেকে ছ-জনে যথন ফিরেছি, আথড়ায় তথন আরতি আরম্ভ হয়েছে। দিগস্তপ্রসারী মাঠের প্রায়ে গাছপালার অস্তরালবর্ত্তী এই নিভৃত ছোট দেবালয়টির স্কারিতি প্রতিদিনই আমায় কেমন একটা অপূর্ব ভাবে অফ্প্রাণিত করত—আরু কিন্তু আমার আনন্দ থেন হালার ওবে বেড়ে গেল তার ওপর আজ এক জন প্রথিক বৈশ্বর জীব-গোস্বামীর সংস্কৃত পদাবলী একতারায় অতি গ্রেরের গাইলে—আমার মনেস্কুলাবনের বংশীবটমূলে কিশোর হিরি চিরকাল বালী বাজান, আমার প্রাণের গোঞ্চে তার ধেন্দল চরে; সেথানে তার থেলাগুলো চলে রাধাল-বালকদের নিয়ে দীর্ঘ সারাদিন, দীর্ঘ সারারাত।

কেন এত আনন্দ আমার মনে এল কে বগবে? আমি ধেন অস্ত জন্ম গ্রহণ করেছি। বুম আর আনে না—দে গভীর রাত্রে তমালশাধার আড়ালে চাঁদ অস্ত গেলে আমি আধ ড়ার সামনের মাঠে গাছের তলায় এসে বসনুম। আকালের অন্ধকার দূর করে ছ শুধু জলজলে শুক্রতারার আলোয়।

কে জানে হয়ত ওই শুক্রতারার দেশের নদীতীরে, জ্যোৎসমাথা বনপ্রাস্তরে, উপবনে মৃত্যুহীন, জরাহীন দেবকস্তারা মন্দরেবীধির ঘন ছারার প্রান্থান সম্প্রে গোপন
মিলনে সারারাত্রি কাটার—ভৃথিহীন অমর প্রেম তাদের
চোধের ভ্যোৎয়ার জেগে থাকে, লজাভরা হাসিতে ধরা
দের। পীত স্থ্যান্তের আলোর করুণ থার বছ দ্রের শৃষ্ট
বেরে সেধানে ভেসে এসে সাদ্ধ্য আকাশকে আরও মধুর ক'রে
তোলে—কোথা থেকে সে থার আসে কেউ ভানে না—কেউ
বাল বছ দ্রের কোন নক্ষত্রলাকে এক বিরহী দেবতা বসে
বসে এমনি তাঁর বীণা বাহান, সেই মূর ভেসে আসে প্রতি
সন্ধ্যার—ঠিক কেউ বলতে পারে না—কেবল আদ-আলো
আদ-ভারার প্রপরীপিতে নুকিরে বাস থুনী প্রেমিক প্রেমিক।
হাৎ অন্তমনম্ব হয়ে পড়ে—ভাদের চোর অকারনে ভল এসে
পড়ে— অবাক হয়ে ভারা পরস্পরের মুনের দিকে চেয়ে থাকে।
হাৎ আমার সামনে অস্পত্ত অন্ধনরে এক ভন ভরুল

হঠাৎ আমার সামনে অস্পষ্ট অন্ধকারে এক ভন তরুও যুবক হাসিমুথে এসে দাঁড়িয়ে বললে—এস আমার সঞ্চ—

তার গেরুয়া উত্তরীয় আমার গায়ে এসে পড়ছে উ.ড়। আমি বলি—কোথার বাব ? কে আগনি ?

নবীন বৈষ্ণৰ বললে—আমি জীবগোন্ধামী—আমারই
পদাবলী তুমি সন্দেবেলা শুনেছ বে। এত শাগ্রির ভূলে
যাও কেন হে ডোক্রা? এন আমি বৃন্দাবনে বাব।
শ্রীক্ষণক আমার পাওয়াই চাই। আমি সংসার ছেড়েছি,
সব ছেড়েছি, তাঁর জতো দেখছ না পাগলের মত পথে পথে
বেড়াছি

—আপনি ত মারা গিয়েছেন আজ তিন-শো বছরের ওপর। আপনি আবার কে'ধায়?

—পাগল! কে বল.ল আমি মরেটি। আর মলেই কি আমার বাওগা ছ্রিয়েছে নাকি? এ:সা…এ.সা…আমি সংসার ছেড়েছি, সব ছেড়েছি, তাঁর জ্ঞে। দেবই না পাগল হায় প্রেপ্ বেড়াছিট

এমন ভাবে কথাগুলো সে বল ল আমি বেন শিউরে উলুম। বললাম—ভাভো দেশ্তে পাছি, পাগলের আর বাকী কি? আপনি যান, আমি বীতথ্টের ভক্ত, আমি বৃন্ধাবনে যাব না। তা ছাড়া মালতীকে ছাড়া এক পাও এখান থেকে নড়ছি নে আমি।

ভন্ধণ বাউন হেসে একতারা বাজাতে বাজতে চলে গেল—পথের মাঝে নাচ্তে নাচ্তে গাইতে গাইতে বেতে বেতে দুরের এককারে মিলিয়ে গেল··· অন্ধকারের মাধ্য থেকে তার গলার মিষ্টি হুর তখনও বেন ভেসে আদ্ছে···

> मध् तिश्क्षश मृतःतम् मध् तिश्कश मृतःतम्

হঠাৎ আমার ঘুম ভেঙে গেল। গাছের **ওঁড়িতে** হেলান দিয়ে শেব রাতের ঠাণ্ডায় কথন ঘুমিয়ে পড়েছিলুম কে জানে—শিশিরে কাপড়-চোপড় ভিজে গিয়েছে। ফরসা হবার আর দেরি নেই।

(ক্রমশঃ)

ছু-দিন পরে

গ্রীস্থীরচন্দ্র কর

তোমার যাওয়ার পরে

र'न मिन छुरे।

ছপুরের তাতে

রিম্ঝিম্ আকাশে বাতাসে।

চারিদিক চুপ।

গাছগুলি স্তব্ধ যেন নিরোধি নিশাস।

মাঝে মাঝে ডাকে ঘুবু,

ব'গানে বিবশ বেলি।

কাঠবিড়াল নেমে আসে শিমুলের শাখা হ'তে,

ছোট ছুটি পায়ে ভর করি'

উঠিয়া দাঁড়ায়,

সচকিতে চাহি চাহি

ম'টি হ'তে কি বে লয় খুঁটে

চ'লে যায় ফিরে অ সে,

আবার পালায়।

দুর মাঠে এথানে ওথানে

এলে মেলো

পালে পালে গরু চরে।

তালের ছারার

রাখাল র রছে শুরে।

দিগন্তের বাঁকা লাল পথে

গরুর গাড়ীটি চলে ধীরে।

লক্ষ্যহীন আঁবির সমু:ধ

জলের চেউরের মত

ভেলে বার ছবি।

কোথাও লাগে না ভাল।

এ-বরে ও-বরে ফিরি---

অবংশধে দেগি

কোনক্ষ:৭ উপনীও

তোমারি সে ছেড়ে-বাওয়া

ছোট কক্ষটিতে!

ংদন্য-পাণ্ডর দৃষ্টি

চিরাভ্যা:স থেঁকে হারাধন।

আনি তুমি চলে গেছ,

তৰু থাকি থাকি

ভাবি অতি বাগ্র কৌতৃহ:ল—

ঐ থেন এলে ঘরে

খাসি:ত আসিতে খেন

থেমে ঐ রহিলে দাঁড়ায়ে

ভ্রমার গোড়ায়।

অ'চল অসম্বত

লুটায়ে পড়িল মেঝে,

তুলি বাম হাত

কপাটের পাট আছ ধ'রে

ভারই গায়ে ম'থা ক'ৎ করা,

মুণ সমুজ্জল।

হাসির দোলায়

তুৰতুৰে পুৰু রাঙা ঠোঁটে

উথৰি' গড়ায়ে পড়ে

চেপেরাথা শক্বিত

সকৌতুক পুলকের চেউ।

হুচতুর আঁধি হটি

চঞ্চলিয়া

শুধায় আঁথিরে মম

"দেখে নি তো কেউ ?—

व्यात यमि (मः शह-तः,

কি বা আদে যায়!"

খাটের তলার থেকে

ভনি উদ্গুদ্।---

চেয়ে দেখি,

ল্যা'জ মুড়ে

নুথ ও জৈ

আছে শু:য়

পোষা তব আদরের মেনি।

জানালার পাতৃলভাগুলি

উ কি মেরে যায় বারেবারে

বাতাসের দোলে।

তাদের ফুলের গর্গে

মনে পড়ে,---

विनेव, कि मदन পरफ़ ?

—তোমারি সে চুলবাধা।

ঐ যে দেৱান্দ 'পরে

ল্যাভেণ্ডার আধনিদি,

ক্ৰীম আছে,

কৌটার ঢাকাটি থোলা।

হাত-আয়না দাঁড়করা একধারে।

অটেপৌরে ফিকে নীল শাড়ী,

প্রায়ই যাহা পরিতে অমনি

তা-ও ঝাছে ঝালনাতে ছাড়া।

খাটে বিছানার গদি।

শিয়রের কাছে

থোঁপার স্থালিত শুক

মালতীর মালা।

বাজে কাগজের টুকরো

মেঝেতে ছড়ানো,

তার সাথে কপোলের স্বেদ-মেছা

কুমাল্থানিও।

আর আছে সেই খ'তা !—

—গতবার জন্মদিনে

खँ क मिरा शहार्ज

वलिहिल-"किছू निय पांछ।"

আজি সে টেবিলে ফেলা

भूनाय भनिन।

তুলে নিয়ে পড়ে দেখি--

শেখা তার প্রথম পাতায়,—

''মনে যে রাথার নয়,

—তাই মনে ক'রে দিতে

রাথিত্ব স্বাক্ষর।"

সেদিন কি জানি,

থামারই হাতের বাণ

সন্ধানি ফিরিছে শেয়ে

অমারই ললাট

বিধাতার পরিহাস এতই নিম্মম !

তুমি তো ভ্লিয়া গেছ

মনে যা লেগেছে বোঝা।

ঘরদোর খাত,পত্র

অাসবাব ধত---

মূক এরা, এরা জড়---

জানায় নি কোনো প্রতিবাদ,

করেও নি করুণ মিনতি.

অথবা চাহে নি ফিরে

অশেষ ক্ষণিক চাওয়া।

কিন্তু মানুধের প্রাণ!---

সে কেমনে রয় স্থির ?

শাস্তি থাক,

প্রাণ ছাড়া কোথায় সাম্বনা তার

তাও ভাবিলে না,

शिर्म हिम !

এতদিন প্রতি ভোরে

পেয়েছি প্রথম দেখা

সকলের আগে !

দেখা ফিরে দিনশেষে—
দিনটি সার্থক হ'ড,
বুঝিভাম,—বৈচে আছি,
মানিভাম,—ধরণী মধুর :
—অপূর্ব স্থল্বর এই মানবজীবন
কামনার ধন বটে!

এমন আমার তৃমি
তৃমি চলে গেলে!

—তা-ও যদি জানাতে আভাসে
কিছু অগে!

বন্ধ-প্রবাসী বাঙালী

অধ্যাপক শ্রীদেবত্রত চক্রবর্ত্তী, এম্ এ

গত ১৯৩১ সালের আদমসুমারীর বিবরণ হইতে জানা ায়, ব্রহ্মদে:শ প্রায় চারি লক্ষ বাঙালী অর্থাৎ বঙ্গভাষা-ভাষী লোক আছেন। ঐ বিবরণেরই অপর এক স্থলে দেখান হইয়াছে, যে, সমগ্র ব্রহ্মদেশে ৪৮৬৮২ জন বাঙালী এবং ১৬৩৯১২ জন চট্টগ্রামবাসী আছেন। আবার অন্ত এক স্থলে দেওয়া হইয়াচে, সমগ্র ব্রহ্মদেশে প্রায় ১৮০০০ वाडानी हिन्मू, श्राप्त २००० वाडानी मूमनमान, श्राप्त ১৫৮০০০ চট্টগ্রামবাসী মুসলমান এবং প্রায় ৪৯০০ চট্টগ্রাম-বাসী হিন্দু আছেন। এই ভাবে বিভিন্ন স্থলে বিভিন্ন ভাবে বাঙালী ও চট্টগ্রামবাসী ভেদে বঙ্গদেশের অধিবাসী-দিগের যে সংখ্যা দেওয়া হইয়াছে, তাহা খুব সঠিক ও বিশ্বাসবোগ্য বলিয়া মনে হয় না। বিশেষতঃ মুসলমানদের সংখ্যায় ভুল হইবার সম্ভাবনা খুব বেলী। তাহা হইলেও উপরিউক্ত সংখ্যাগুলি হইতে মোটামুটি ইহা বেশ বুঝা যায় যে চারি শক্ষাধিক বাঙাশী স্থাপুর ত্রহ্মাদশে নানা প্রতিকৃল অবস্থার সহিত সংগ্রাম করিয়া জীবিকা অর্জ্জন করিতেছে। ইহাদের মধ্যে আরাকানেই বাঙালীর সংখ্যা অপেক্ষাকৃত বেশী। চট্টগ্রাম হইতে স্থলপথেও আরাকান গমন করা কষ্টসাধ্য নহে। তজ্জন্তই প্রধানতঃ চট্টগ্রাম ও তৎপাৰ্মবৰ্ত্তী জিলাগুলি হইতে বহু বাঙালী আরাকানে গমন করিয়াছেন। তাঁহাদের মধ্যে মুসলমানের সংখ্যাই বেশী এবং অস্তান্ত স্থানের স্তায় তাঁহাদের অনেকেই ঐ স্থানে স্থায়ী ভাবে বসবাস করিতেছেন।

ত্রন্ধ-প্রবাদী বাঙালীদের মধ্যে অনেকে ত্রন্ধদেশীয়া নারীকে পত্নীরূপে গ্রহণ করিয়া স্থায়ী ভাবে ঐ দেশে বাস করিয়া আসি:তছেন। ঐ শ্রেণীর লোক হিন্দু অপেক্ষা মুসলমানদের মধ্যেই গৃব বেশী। কিন্তু একটি শুরুতর বিষয়ে প্রভেদ । বিশেষ শক্ষ্য করিব র আছে। মুসলমানের। বিবাহ করিবার পূর্বের ঐ নারীকে ইসলামধর্মে দীক্ষিত করিয়া লন। কোনও কোনও ক্ষেত্রে ধর্মান্তরকরণ ঠিক বথাবথ ভাবে সম্পন্ন না হই লও, ঐ ব্রহ্মনারীর গর্ভজাত সম্ভানেরা সকলেই মুসলমানরূপে পরিগণিত হইয়া থাকে, এবং অন্তান্ত মুসলমানদের সহিত সামাজিক মিলামিশা এবং বিবাছ প্রভৃতিছারা সম্বন্ধ স্থাপনে কোনও বাধা হয় না। এই ভাবে ব্রহ্ম:দশে একটি খুব বড় সঙ্কর জাতির উদ্ভব হইয়াছে। ব্রহ্মদেশে 'জের্বাদী' নামে যে বর্ণসঙ্কর সম্প্রদায়ের উৎপত্তি হইয়াছে, তাহা মুলতঃ ভারতীয় এবং প্রধানতঃ বাঙালী মুসলমান এবং এখনেশীয়া নারীর মিলনোৎপন্ন সম্ভানগৰ দ্বারা গঠিত। এই সকল বাঙালী মুসলমানেরা অনেক সময়ে নিজ নিজ ত্রহ্মদেশীয় পত্নীকে স্বদেশেও শইয়া আসেন। কিন্ত অধিকাংশ ঐ দেশেই স্থায়ী ভাবে বসবাস করিতেছেন।

কিন্তু বাঙালী হিন্দুদের মধ্যে যাঁহারা ব্রহ্মদেশীয়া নারীকে পত্নীরূপে গ্রহণ করিয়াছিলেন, তাঁহাদের সন্তানগণের ভবিষ্যৎ নানারূপ সমস্তাসন্থল হইয়া উঠিয়াছে। প্রথমতঃ ধর্মান্তরিত করিয়া ব্রহ্মদেশীয়া বৌদ্ধ নারীকে হিন্দু করিয়া লইবার

কোনও দাম দ্বিক উপায় না থাকাতে, ঐরূপ বাঙালীদের সন্তানগণ প্রায়ই ত্রন্যদেশীয় লোকদিগের সহিত মিশিয়া গিয়'ছে। কেহ কেহ বা গ্রীষ্টীয় ধর্ম অবশ্বন করিয়া কিরিঙ্গি সম্প্রধার ভুক্ত হইরা গিয়াছে। যে-সকল বাঙালী হিন্তুর দশীয়া নারীকে পড়ীরপে গ্রহণ করিয়া বরাবর তাহকে পত্নীর মর্যাদা প্রদান করিয়া অ**¦সিয়†ছেন**, তাঁহাদের প্রায় সকলেবই ইক্রা ছিল, বে, তাঁহাদের সম্ভানগণ বেন বাঙালী হিন্দু সমাজে স্থান পায়। তজ্ঞ্জ তঁ/হরা অনেক সময়ে নিজ নিজ সন্তানদিগকে কলিক/তা, কাশী প্রভৃতি স্থানে র'বিয়া শিক্ষা প্রানা করিয়াছেন. এবং বাঙালীভাবে গড়িয় ভুলিবার চেষ্টা করিয়াছেন। কিন্তু তাঁহাদের আন্তরিক ইচ্ছা পাকা সত্ত্বেও তাঁহাদের সন্ত'নেরা প্রায়ই বাঙালী সমাজে আপ্রায় নাই। এই একটি স্থল ভিন্ন প্রায় সর্ববিষ্ট এই সকল ভদ্রলোকের উচ্চ-भिक्षां शांश महाना उकामिया गाम शहर अर्थक के प्राप्त লে'দেরই সহিত মিশিয়া গিয়াছে। কোন কোন স্থাল এরপও দেনা গিয়াছে, নে, ব'ড'লী পিতামাত'র সন্তান ব্রুমাদেণীয় নাম গ্রহণ ও ব্রুমাদেণীয় খাচারব্রহার অবলম্বন পুর্বাহ বিয়া বনিয়া গিয়াছেন। নিয়বকোর কোন স্থানের প্রতিয়াপর বাঙালী ব্যবহারজীবীর পুত্র 'কর্মা দিবিল দাবিল' পরীক্ষায় পশংদার সহিত উত্তীর্ণ হইয়া ব্রন্ধার নাম গ্রহণ পূর্বক ডেপ্টি মাজিষ্টেটের পদে নিয়ক আছেন।

ব্রকাদেশব'সী বাঙালী দের মধ্যে আনকে পূর্ব্বোল্লিখিত ব্রকানারীর গর্ভছাত সন্তানদিগের মধ্যে পরম্পর বিবাহ দিবার প্রয়াস পান। কিন্তু জ্-একটি স্থল ভিন্ন প্রায়ই এ-বিময়ে তাঁহ দের চেষ্টা বার্থ হয়। বাঙালী ভিন্ন অন্ত প্রদেশবাসী হিলুদের মধ্যও আনকে ব্রকদেশীয় পত্নী গ্রহণ করিয়াছেন। সম্প্রতি আর্ঘ্য সমাজের পক্ষ হইতে ঐ সকল দম্পভির সন্তানগণের মধ্যে পরম্পর বিবাহ প্রদানের চেষ্টা হইতেতে। আশা করা ধায় এতদ্বারা ব্রকদেশবাসী ভারতীয়েরা তাঁহাদের সম্প্রাণ্রের সংখ্যা বৃদ্ধি করিতে সমর্থ হইবেন।

আন্দানান-দীপে দণ্ডিত ব্যক্তিদিগকে নির্বাসিত

করিবার ব্যবস্থা হটবার পূর্বের ব্রস্কদেশের পশ্চিম ভাগে মারাকানের উপকৃলে এবং নিম্নব্রন্ধের কোন কোন স্থানে দণ্ডিত ব্যক্তিদিগকে নির্বাদিত করা হইত। ঐরপ নির্বাদিত ব্যক্তিদিগের মধ্যে অনেকে ঐ স্থানই পরস্পরের মধ্যে বিবাহ সম্বন্ধ স্থাপন পূর্বেক স্থামী ভাবে ঐ দেশেই বসবাস করিমাছিলেন। ঐ প্রকার বাঙালীদের বংশধরগণ অনেকে মৌলমেন, সাণ্ডোয়ে প্রভৃতি স্থানে এখনও বাস করিতেছেন। অনেকে আবার পুরাপুরি বন্ধা অথবা কিরিক্ষ বনিয়া গিয়াছেন !

ব্রস্থানেশে আর এক সম্প্রাদায়ের লোক বাস করেন বাহারা ঠিক বাংলা দেশের অধিবাসী ন: হইলেও ধর্মবিশ্বাস ও আচার ব্যবহারাদির সাদ্গ্র হেতু ব ঙালী হিন্দু বলিয়া পরিগণিত হইতে পারেন। তাঁহারা ব্রঙ্গাদেশে পৌনা নামে পরিচিত। এই পৌনার! মণিপুরের অধিবাসী এবং বৈশ্ববর্ম্মাবলম্বী। ব্রঙ্গাদেশের সহিত আসাম ও মণিপুরের বনিও রাজনৈতিক সম্বন্ধ বহুকাল হইতেই বর্ত্রমান রহিয়াছে। এই পৌনা নামে পরিচিত মণিপুরবাসীরা ব্রন্ধ-রাজ্যভায় বিশেষ সমাদৃত হইতেন এবং রাজকীয় ব্যাপারে তাঁহাদের বিশেষ প্রভাবও ছিল। মালালয় নগরীতে এগনও বহু পৌনা বাস করেন। ব্রঙ্কাদেশের শেষ স্বাধীন নরপতি থিবার প্রধান রাজ-জ্যোতিখী এক হন পৌনা ছিলেন। এখনও ব্রঙ্কাস করা হা এবং তাঁহাদিগকে পুরোহিতের যোগা সমাদর প্রদর্শন করা হয়।

মানার পূর্ব প্রবন্ধে উল্লেখ করিয়াছিলাম ে ব্রহ্মদেশে চাকুরীজীবী বাঙালীদের ভবিদ্যে খুবই সমস্থার বিষয় হইয়া উঠিয়াছে। চাকুরী পাওয়া ত তুর্ল ভ হইয়াছেই, অধিকল্প এ দেশীয় ভাষা এক্ষণে বিশ্বালয়ে অবগ্রশিক্ষণীয় হওয়াতে ব্রহ্মদেশের স্কুলকলেজসমূহে শিক্ষালাভ করা ভারতীয় মাত্রেরই অতি কঠিন হইয়া উঠিতেছে। অনেক স্থলে, অপর কোন রাধানা থাকিলেও শুধু ভারতীয় বলিয়াই বিশ্বালগদিতে ছাত্রদিগকে গ্রহণ করা হয় না। এই সকল কারণেই ব্রহ্মদেশবাসী বহুসংখ্যক ভারতবাসীদের অবস্থা দেশ হিতাকাজ্কীদিগের গভীর চিস্তার বিষয় হইয়া উঠিতেছে।

রবীন্দ্রনাথের কাব্যে শ্রেয়োবোধ ও আনন্দ

রবীজ্রনাথ ঠাকুর

Ġ

শান্তিনিকেতন

কল্যাণী স্বযু---

তোমার "রবিদীপিতা" বইখানিতে সামার করবার গথেষ্ট বিষয় আছে—কিন্তু আমার কাছে ওর মূল্য কেবল সে জনো নয়। নিজের কবিতার মধ্যে নিজের অস্তরতম যে পরিচয় স্বত উদ্থাবিত হয়, নানা ভাববৈচিত্রের মধ্য থেকে ত'র ঐক্যটিকে অ বিষ্কার করা কবির পক্ষে, এমন কি অধিকাংশ প্রাকের প্রেই, অসাধা। বে চিতদপ্রে নিজের স্বরূপ প্রতিফলিত হ'লে নিজেকে প্রতাক্ষ দেগতে পাওয়া সম্ভবপর হয়, সেই স্বচ্ছ দর্পণ তুর্লভ। তেমার ব্টুখানি পড়তে পড়তে তোমার উপল্কির মধ্যে আমার কবি-প্রক্লতিকে অত্ভব ক'রে আনন্দ পেয়েছি। ইতিপূর্নে কোন কোন প্রন্থে আমার কাব্যের ব্যাখ্যা দেখেছি, কিন্তু নে যেন পরীরতক্ষাত দেহের বিশ্লেষণ, তাতে মুর্মাগত প্রা.ণর সন্ধান পাওয়া যায় নি। তুমি সেই প্রাণ-রহস্য উদ্ঘটিত করেছ ব'লে মনে করি। ভাতে অনেক ছায়গন্ধ আমার নিভেকে ভাবতে হয়েছে।

ভার একটা দৃষ্টান্ত, বথা, তুমি লিখেছ আমার কাব্যে শ্রেরাবোধের প্রাধান্ত নেই। যদিও ভার কোন কোন ব্যতিক্রম পাওয়া গায়, তবু আমার মনে হ'ল মোটের উপরে তে:মার কথাটা সভ্য। আমার বোধ হয় এ-কথাটা সাধারণতঃ ভারতবর্ষের প্রকৃতি সম্বন্ধে থাটে। য়ুরোপীয় খ্রান ধর্ম্মে ভাল মন্দ পাপ পুণা ঘটিত ছন্দের সংখাত সবচেয় প্রবাদ বায়। এই জন্যে সে ধর্ম্ম শ্রেরোবৃদ্ধিপ্রধান। ভারতীয় আর্যান্মে আধ্যাত্মিক, সে ধর্ম্ম ছন্দাতীত পরিপূর্ণতার জন্ম প্রমানী। কর্ত্রাবৃদ্ধির প্রেরণা নিঃসন্দেহ আমার নানা অমুণানের মধ্যে প্রকাশ পোরেছে। সভ্বত তার আদর্ম মুরোধীয় শিক্ষা গেকেই আমার মনের মধ্যে সঞ্চারিত হুরেছে। এই আদর্ম হুরোধান্ত প্রাক্রের প্রান্ধে কঠোর ভারেই

প্রবর্ত্তিত করেছে। কিন্তু আমার কাব্যের মধ্যে আমার চি**ল্ভের** থে গৃঢ় শক্ষা দেখা ধায়, সে কর্ত্তব্যসিদ্ধির অভিমুখে নয়। তাতে দেখতে পাই কর্মাকে অতিক্রম করে যে অমৃতময় অবকাশ দেবভোগ্য, তারই জন্ম আমার যথার্থ উৎকণ্ঠা। এই নৈশ্বর্যা অক্রিয় নয়। এর গভীরতার মধ্যে যে-ক্রিয়া আছে তা সভাবিকী, তা স্ষ্টিসংকল্পের সহজ আনন্দে বেগবভী। প্রাকৃতির সৌন্দর্য্য এই জগুই শিশুকাল থেকে আমাকে এমন নিবিড় আনন্দ দিয়েছে। সে আনন্দ ইমুল-পালানে ছেলের ছুটির আনন্দ। আমার কাব্যে আমার ছুটি, আমার ছবি আঁকাতেও তাই। আমি শান্তিনিকেতনে যে আশ্রম রচনা করতে নামশেম, তার প্রবর্তনা তপোবনের আদে র্শ। অনিন্দের দ্বারা সৌন্দর্য্যের দ্বারা শিক্ষার সাধনাকে অবকাশের মধ্যে ফলবভী ক'রে তুসব, এই কল্পনার আনন্দই একদা আমাকে এই কাজে আকর্ষণ করেছে—যে-অসীম অবকাশের মধ্যে চক্রত্র্যাগ্রহতারকার নিরস্তর উদাম দীপালি উৎসবের মত প্রকাশ প্রেয়েছে, যে-অবকা শর মধ্যে ধুল ফুট্চে, ফল ফলটে, শশু উচেচে পেকে, তাদের প্রাণের চেষ্টাকে নেপথাগত ক'রে ভানের প্রাণের প্রকাশ বিশ্বের কাছে উৎস্ঠ হচ্চে—সেই অন্তগৃত্ প্রাণপূর্ণ অবকাশকেই আমার কম্মের মধ্যে কামনা করেছি। এ-কথা শ্বীকার করতেই হবে যে জাতীয় অনুগান নানা স্বভাবের নানা লোককে নিয়ে সম্পন্ন করতে হয়, সেথানে "আনন্দান্ধ্যের ধর্মিনি ভূতানি ক্ষায়ন্তে" মৃথুটি চাপা পড়ে, সেখানে প্রকাশ হ'তে থাকে "দ তপতপ্তা দক্ষসভূত গদিদং কিঞ্চ।" এথাৎ দেখানে শ্রেরাবৃদ্ধিই ঘদ্ধের সমাধানে সর্কদাই উদ্যত হয়ে থাকে। এই নিরন্তর সংগ্রামের মাহাগ্যবোধ আমরা গুরোপের কাছে পেয়েছি। থুতরাং এই সংগ্রামে নানা ক্ষেত্রেই আমাদের নামতে হয়েছে। তবুও ক শ্রন মধ্যে তার প্রয়াসটাই যদি প্রধান হয়ে ওঠে তবে আমার মন বলতে থাকে বিপুল ক্ষুধাশালী গক্ষড় যে জনোছিল সে কেবল খাদ্য ও অংশ্রয়

প্ল প্রবাসী 🖔

খুঁজে বেড়াবার ক্সন্তে নয়, বিষ্ণুকে বহন করবার ক্সন্তেই।
গক্ষড় যথন গৌণ হ'ল তথনই সে সার্থক হ'ল। আমার
নধ্যে যে কবি সে কর্ম্মের উর্দ্ধে এই দীপ্তিমান দিব্য
অবকাশকেই চেয়েছে, পেয়েছে কি না সে-কথা এই চিঠিতে
আলোচনা করবার নয়। ভারতবর্ষের দেবতা বাজিয়েছেন
বাঁশি, ভারতবর্ষের দেবতা নেচেছেন নাচ, সে-কথা শাস্ত্রে
মানেন এমন ধীমান্ বিঘানের অভাব নেই। তাঁরা হয়ত
ভাবেন না, সেই গানে সেই ন'চেই স্প্রের কাজ আপিসের
কাজ হয়ে ওঠে নি—দেবতারা যে-চাপলো কুর্তিত হন নি
আমি সেই মনোরগুনী চপলতাকে আমার কর্ম্মরুর্গনে
আছ্বান করেছি, আমার স্প্রেকর্মে আমি বিশ্বস্তিকর্তার
অনুসরণ করতে চেয়েছি। তোমার বইগানি পড়ে এই
কথাটি বিশেষ ক'রে আজ্ আমার মনে হ'ল। আমার অনেক

পণ্ডিতবন্ধু এ সমস্তকে শ্রেয় নর ব'লে থাকেন। কিন্তু আমি কবি, শ্রেয়ের উর্ছে তাঁকে মানি আনন্দরপম্ অমৃতং বহিভাতি।

যাই হোক, তোমার বইখানি এই জন্মই আমাকে বিশেষ আনন্দ দিয়েছে খেহেতু তোমার কাব্য-আলোচনা কেবল মাত্র বৈশ্লেষিক নয়। তুমি যাকে বলেছ "সাংঘটিক," এ তাই। এতে তুমি সমগ্রভাবে কাব্যের প্রকৃতি নির্ণয় কয়েছ, এই জন্ম তোমার কাছে আমি কতজ্ঞ।

সময় অল্প, শরীর অপটু, তরু চিঠিথানা বড় হয়ে গেল, সে কেবল মনের আবেগে। ইতি ১২ অক্টোবর, ১৯৩৪ তে'মা দের রবীক্রনাথ ঠাকুর

ঞ্জাতু **প্রেক্তনাথ দাশগুপকে লিখিত** -

সুখের জম্পনা

গ্রীকৃত্মিণীমোহন কর

একদা ধীবর এক পৌষের নিশিতে,
মংশু ধরি ফিরে ঘরে কম্পমান শীতে।
। চড়া কাঁথা গায়ে, বসি আগুনের পাশে,
মানর আবেগে তার প্রিয়ারে জিজ্ঞাসে—

"রাজারাণী বুঝি আজি এ দারুণ নাঁতে, উন্নের ধারে বসি থাকে তুইটি.ত; কাঁথা-গায়ে, তাড়ি দিয়ে তাজা মুড়ি বায়।" প্রিয়া কহে, "কত সুখী তারা তবে, হায়।"

শুধু একটুখানি নুন—

গ্রীঅমরেন্দ্র ঘোষ

বার বার তিনবার।---

এবারও সম উমেশের ঝু"টি ধরিয়া টানাটানি করিয়া অবশেবে শৃত মুঠিতেই ফিরিয়া গেল। সে সেন ধতাধতি করিয়াই রহিয়া গেল।

এক, তুই•••

তিন, চার…

এমন করিয়া গণিলে দূর হইতে পরমনি শিচ্ওমান তার ছই পালেরের হাড় কয়েকধানা গণিয়া শওয়া গায়— ভূল করিবার কোনও আশকা গাকে না।

বাহা হটক, ক্রমণঃ সে গুই পায়ে ভর করিয়া উঠিয়া বাঁড়াইল বটে, কিন্তু মেব্দন্ত সোজা করিয়া কোনও কাজ-কম্মেনামিতে পারিল না।

মট্কার বাধন ভিঁড়িয়া গরের চাল ছইথানা একেবারে উপুড় গ্রহা চাপিয়া পড়িয়াছে। উঠানের একপাশে ছায়ায় বসিয়া উমেশ ভাবে অ র ঝিমায়—বেন পরম বৃদ্ধ একটা ঝাড়ো দাঁড়িকাক। এত খড় মাঠে লুটপাট ছইয়া গোল, সে এক আটিও আনিতে পারিল না। বৈশাথ মাস সন্নিকট, ঝড় উঠিবে, তথন উপায় ছইবে কি ? ডাগর মেয়ে ও কচি ছেলেটাকে লইয়া দাঁডাইবে কোথায় ?

'বাবা! হীক্ষটা গেল কোথায় ? আর ত ব'সে থাকা যায় না—বেলা শেষ হয়ে এল যে!'

'কি জানি মা, তার কি সে থেয়াল আছে ? হয়ত কোনও পুকুরে থোল মকুচি দিয়ে ছিনিমিনি থেল্ছে, নয়ত মেঠো বকের পিছু পিছু ফির্ছে তাড়া ক'রে— একেবারে পাগল মা, পাগল! ওর জন্ত ব'সে ব'সে আর বেশা না ডুবিয়ে ভুই থেগে যা!'

"গাব কি !---সকালে সেই যে হু'টি থানেক পাস্তাভাত মুখে দিতে-না-দি:তেই, 'থাবো না, থ'বো না, মিছে কথা' ব'লে উঠে নাচতে নাচতে বের হ'ল আর দেখা নেই। কত ডাক্লাম, ভাইটি লক্ষ্মী আমার শোনো, শোনো—তা কে খার কার কথা কানে তোলে!"

'ভূই কি ব'.লছিলি যে অমন ক'রে বেবিয়ে গেল ?' 'বলেছিলাম, থেয়ে দেখ্—ভাতের সঙ্গে মেথে দিয়েছি।' 'কি, বালন্ বৃঝি ?'

এইবার জনও নিয়স্বরে লক্ষী ছববে দিল, না বাবা— নুন!

'ফ্ন্!' উমেশ কিছক্ষণ চুপ করিয়া থাকিল। 'কাল মুখুক্ষোদের বাগান থেকে ছ্থানা নারকেলের ছেগো আন:লও ত পার্তিদ চেয়ে। তাই পুড়িয়ে নিলেই হ'ত।'

'মামি ত বাবা, গিয়েছিলাম আন ত কিম্বু—'

'দিলে না ভারা ? তা দেবে কেন ? আমাদের যে কিছু নেই! থাক্ত ভমিদমা—মা, পারত বন্ধক রেথে গ্রাস করতে তবে দিত, নিশ্চয় দিত।'

উমেশ আবার নীরব হইল। ভাঙা গরের চাল হইতে কতকগুলি পচা ও আল্গা খড় বাতাদে উড়িয়া তার পারের কাছে আসিয়া গড়িল।

লক্ষী দ্বিধাজড়িত কঠে শুধাইল, 'বাবা! এন দেব বালিট্কু—থাবে এখন ?' দ্বিধা করিবার কারণ যথেষ্ট আছে। একে উ.মশ বালি থাইতে নিতান্তই অনিচ্ছুক, আর কও দিনই-বা ভাল লাগে, তাহা ছাড়া আজ আবার ঘরে চিনি—মিছরিত দুরেব কথা সামান্ত একটু মুনও বাড়ন্ত। তার পিতা অতথানি বালি মিষ্টি কিংবা হুন ছাড়া কি করিয়া ভুষু ভুষু গলাধকেরণ করিবে? সেও ত মানুয—হয়ত সকাল-বেলার মত বলিয়া বসিবে,—কুধা নাই।

উমেশ মুথ না-তুলিয়াই বলিল, 'এনে দে।' আজ আর কেন জানি আপত্তি করিল না।

লন্ধী চলিয়া গেল এবং একবাটি বার্লি হাতে করিয়া ফিরিয়া আদিল কিছুক্ষণ বাদে। 'এধানে এস, এই পুঁটিটার কাছে।' লক্ষী দাওয়ার উপর দাঁড়াইয়া বলিল, 'একখানা পি'ড়ি এনে দিচিছ' বলিয়া, সে ভাঙা ঘরের জীর্ণ গুন-ধরা পুঁটিটা নির্দ্ধেশ করিয়া দিল।

উমেশ উঠিয়া গেল, কিন্তু ঐ পক্থকে ঘন বালিগুলির প্রতি নজর পড়িতেই তার অন্তরাত্ম বিদ্রোহ করিয়া বসিল। স্বাদ নাই, গন্ধ নাই—তাহাতে আবার আলুনি! না, না, ইহা সে থাইবে না, থাইতে পারে না। সে নিতান্ত বালকের মতই বেন অভিমানে মুখ ফিরাইয়া বসিয়া রহিল।

'ও-কি বাবা,—ব'দে থেকো না, খাও।'

'না মা, আমার বড় গা-বমি করছে—থাবো না।'
লক্ষী শুধু দেবিতেই বড় হয় নাই, ত্থ-দৈতের সহিত
অবিরত সংগ্রাম করিলা সে এই বয়সেই অনেক অভিজ্ঞতা
সক্ষয় করিয়াছিল। সকলই সে বেবেন। পিতার নিকটে
আসিয়া তার কপালের উপর হইতে চুলগুলি সরাইয়া দিয়া
সমেহে বলিল, 'ছিঃ বাবা, অমন করে কি?' থাও।'
তার পর মমতা-মেত্র চাহনি ত্রটি ক্ষা বাপের মুখের উপর
তুলিয়া ধরিল!

'কি ক'রে খাই, তুই-ই বল্না লগ্নী! একটুখানি সুন্ও গদি না দেনটে—' অভাবিক উত্তেজনায় তার কঠরোধ হইয়া গেল।

উপায়ান্তর না দেখিয়া লক্ষী পিতার মনোভাব লবু করিবার থাশায় সান হাসি হাসিয়া বলিল, 'থাবে এরে কি ক'রে—চট্ ক'রে চুমুফ দিয়ে। তাড়াতাড়ি ভাল হ'য়ে ওঠা, আবার সব জুট ব, সব হবে।'

মে য়র কথায় উ মশের মনোভাব হালা ২ইল বটে, কিন্তু বালি খাইবার স্পাহা ক্যালি না মোটেই ।

উঠানের উপরের মরা কুলগার হইতে কতকগুলি রোদে-পোড়া কুধার কাক তারস্বরে কা-কা করিনা উঠিল। নিতা ও কলা একসঙ্গে চাহিলা দেবিল বে, শ্রীমান্ হীক টিশ ছুঁড়িতে ছুঁড়িতে খাদিতেছে। দে আদিয়াই জিজানা করিল, 'বাবা, নুন এনেছ ?'

'a) i'

'তবে অামি থাবো না, চললাম।' আবার চলিয়া যায় দেবিয়া লক্ষী অগ্রসর হইয়া তার

একথানা হতে চাপিয়া ধরিল।—'কি বোকা ছেলে, কিচ্ছুর ধপর রাথে না!'

হীরু থতমত থাইয়া ভগ্নীর মুখের উপর সপ্রশ্ন দৃষ্টি স্থাপন করিলা।

'আজ জানিদ তুই, মুখু:জ্য-মশাই থাজনা চাইতে এসে কি ব'লে গেছেন ?'

'ना ७ मिमि ४'

'তা জানবে কেন ? আজ ওর নামও ক'র্তে নে? ?'

'কিসের ?'

'কি.মর থাবার, ওই যে—শুধু কি তাই, খেতেও নেই।'

এইবার হীরু বুঝিল। উনেশ রহিল অবাক্ হইরা কান পাতিয়া। লক্ষী বলে কি!

शैक जिड़ांगा कतिन, 'त्कन तत निनि ?'

'তুই ত কিছু জান্বিও না, বললেও ভন্বি না।'

'শুন্ব দি দি, শুন্ব বল্।'

'অ'জ ন্ন-সংগরের পূজে!—তাই আলুনি বেতে হয়! কুনের ন,ম ক'র্লেও দে¦য় হয়।'

'বা রে! ত:ব তুই ক'র্লি যে ?'

'থামি কর্লাম, থামি, অ'মি, আমি ক'র্লে দোষ হয় না!' লক্ষীর বৃক ছক্ত ছক্ত করিতে লাগিল। এইবার বুঝি সব ধরা পড়িয়া যায়!

'(मांप इश्र ना ! किन द्व मिनि ?'

'আমি বে মেয়েমান্য। বেটাছেলে দর ওর ন'ম ক'র্তেও নেই, খেতেও নেই। ওই দেখ্বাবাও আলুনি খায়।'

'আচ্চা দিদি আজ আলুনি থেলে কি হয় ?'

'পূব পূণ্যি হয়—তার আর ক্লের আনটিন হয় না কথ্যনো। বস্তা বস্তা ফ্ন রোজগার করতে পারে, খুব বডলোক হয়।'

'जूद !'

'হাা, হাা—দুর না, সত্যি।'

হীরুর খেন প্রতার জন্মিতে চার না। সবিশ্বরে পিতার নিকট প্রশ্ন করিল, 'বাবা! সত্যি না কি?'

উমেশও ক.লার পুতুলোর মত হাবাব দিল, 'হুঁ।'

'ত:ব চল্ চল্ দিদি,—এক্ষ্নি আমায় ভাত দিবি। আমি আলুনি থাব, আলুনি থাব রে।' হীরু নৃতা সুরু করিয়া দিল।

অবোধ মা-মরা ভাইয়ের এ আনেদে লক্ষীর তুই চোধ ভরিয়া জল আদিল। নিজেকে কেমন জানি অপরাধী বলিয়া বোধ হটল। সে বলিল, 'চল্ দাদা।' হীক্ষ গাইতে যাইতে হঠাৎ দুরিয়া দাঁড়াইয়া বলিল, 'দিদি, তবে বাবা বে ধে ল না এখনও ?'

হীরু অ'বার না বেকিয়া দাঁড়ায়! অত্তে উমেশ ব'লির বাটিটা মুখের কাছে তুলিয়া ধরিল।

উমেশ আর আপত্তি করিশ না।

আপত্তি করিবার কোনও হেতুই ত নাই।

তার চোথের জলেই ত আলুনি বার্লি চমৎকার লোনা। হইয়া উঠিয়াছে।

বৰ্ত্তমান অৰ্থসঙ্কট

শ্রীঅনাথগোপাল দেন

বংশরের পর বংশর চলিয়া নাইতেছে, কিন্তু আর্থিক জগতে বে জুলৈব দেখা দিয়াছে তাহা কাটিবার কোন লক্ষণই বিশেষ দেখা যাইতে ছ না। কোথা হইতে কি করিয়া এই বিশ্বব্যাপী অনর্থের স্কুলপাত হইল তাহা কেহই বড় ঠাহর করিয়া উঠিতে পারিতেছেন না; কিন্তু অসীম ধৈর্য্যের সহিত আশা করিয়া আছেন, স্বর্গের কিংবা মর্ত্যের অধিপতিরা নীম্মই ইহার একটা প্রতিকার করিয়া ফেলিলেন। কন্তু আমাদের ছর্ভাগ্য, মর্ত্যের দেবতাবাও হালে পানি পাইতেছেন না, স্বর্গের দেবতাবাও হালে পানি পাইতেছেন না, স্বর্গের দেবতাবাও বালে সম্প্রাক লইয়া নানারপ কার্দান্জি চলিয়াছে, ম্যুরে মাথে সম্বর্টা একটু নড়িয়াচড্য়াও উঠিতেছে, কিন্তু তার প্রাণের স্পান্দন বেশাক্ষণ স্থায়ী হইতেছে না। মান্ত্রের ছংখ বখন জ্বার হইয়া উঠিয়াছে তখন তাহা লইয়া নিজেদের মধ্যে কিঞ্চিৎ আলোচনা করিলেও সাম্যিক আয়াবিশ্বতি ঘটিতে পারে।

রোগের কারণ সম্বন্ধে নানা মুনির নানা মত হুইলেও একথা ঠিক নে পূর্বকালে অভিবৃষ্টি, অনাবৃষ্টি বা অন্ত কোন দৈবহাকিপাকে থাজ্ঞশন্ত ধ্বংস হইয়া যে অভাব-অনটন বা ছভিক্ষের প্রান্তভাব হইড, ইহা ভাহা নহে। প্রাক্কভিক সম্পদের অভাব হইডে এই সম্বটের উম্ভব হয় নাই। মানুষের নব নব উদ্মেষ্শালিনী প্রভিভা বা সংগঠনশক্তি যে অপুর্ব শিল্পসম্ভারের জনাদান করিয়াছে, তাহার অভাব হুইতেও এই সমস্থার স্থ হয় নাই। এ সঙ্কট বন্ধুজগতে প্রাচর্য্যের সঙ্কট---অভ'বের সঙ্কট নহে। তবে কি ব্ঝিতে হইবে সমগ্র পুথিবীর অভাব আজ পূর্ণ হইয়া গিয়াছে ? মানব মাত্রেরই কোন পার্থিব আকাক্ষা আরু আরু অপূর্ণ নাই--ভোগ তাহাব আজ আক্ষ হইয় ছে ? তাহাও ত সতা নহে। প্রাকৃতির দানে কার্পণা গটে নাই, মানুযের স্থাষ্ট তেমনি অবিরাম চলিয়া: চ ইহা খেমন সতা, সকল রকমে বঞ্চিত নিংম্বের অসম্ভাবও পুথিবীতে কিছু মাত্র ঘটে নাই, ইহাও তেমনই সতা। বিশ্ব-৯ধিব'দীর এক পঞ্চম'ংশ ভারতীয়দের দিকে তাক**্ষ্টলে**ই তাহার পরিচয় পাওয়া শ**ইবে।** এক জন ইং:রজ পণ্ডিত ব্লিয়াছেন—"Human demand is illimitable and will be until the last Hottentot lives like a millionaire." "ৰাজু মের চাহিলা অসীম, এবং বতদিন পর্যান্ত না শেব হটেণ্টণ্ট ক্রোড়পতির মত চা'লে জীবন যাপন করে, ততদিন অসীম থ কি:ব।"

স্তরাং আমরা দেখিতে পাইতেছি, ম'মুযের অভাব পূর্ণ হয় নাই এবং অকমাং স্থার হৈছের আবিভাব না হইলে, সে অভাব পূরণ হইতে এখনও সম্বতঃ বহু যুগর আবশ্রক। অথচ অন্ত দিকে পণ্যসম্ভার আজ শিল্পী ও বণিকের কাঁধে ভূতের বোঝা হইয়া চাপিয়া বিসিয়াছে—মান্ন বের ভোগে তাহা আদিতে পারিতেছে না। ভোজ্যও প্রচুর, বৃভূক্ত সংখ্যাতীত। বৃঝিতে পারা যাইতেছে কোন কারণে হইয়ের যোগস্তের বিচ্ছেদেই এই প্রাণাস্তকর নাটকের স্পষ্ট হয়য়াছে। যে বাবস্থা ক্রেডা ও বিক্রেডার শক্তি ও স্বার্থ মধ্যে সামপ্রস্তা রক্ষা করিয়া উভয়ের কোন ছিল্রপথে আভ গুল ধরিয়াছে।

সাধারণ বৃদ্ধিতে মনে হইতে পারে উৎপন্ন পণাের পরিমাণ বর্তমান সময়ে প্রয়োজনের অতিরিক্ত অত্যধিক বৃদ্ধি পাওয়ায় এই অবস্থার হাই হইয়াছে। কিন্তু হিদাব লইলে দেখা বাইবে ১৯২৯ সালের পর এই ছদিনের স্কুক্ত হইতে, পণা ও শিল্পের উৎপাদন পূর্বাপেক্ষা অনেক ব্রাসপ্রাপ্ত হইয়াছে। উহাদের মূল্যও অত্যধিক ব্রাস পাইয়াছে: অণচ পৃথিবীর লােকসংখ্যা ও বিবিধ জিনিথের প্রয়োজন বৃদ্ধি পাইয়াছে ছাড়া হাসপ্রাপ্ত হয় নাই। ইহা যদি সতা হয়, তাহা হইলে উৎপন্ন পণাের আধিকা হেতু এই অবস্থার হৃষ্টি হইয়াছে, আমাদের এই অনুসান ঠিক নহে বৃধিতে হইবে।

কাঁচা মাল বা তৈরি ভিনিয়, কাহারও আক্র আর বথেষ্ট চাহিদা নাই, ইহাই হুইল বর্তমান তুর্গতির গোড়ার কথা। ইহার মূলে রহিয়াছে, যে-মূলো ক্রেডাগণ ক্রয় করিতে সমর্থ এবং বে-মূলো বিক্রেডা ক্ষতি স্বীকার না করিয়া বিক্রের করিতে সমর্থ এই ছুই ক্ষমতার তারতম্য। কোন ক্সিনিবের প্রয়োজন থাকা ও বাজারে ভাহার থাকা এক জিনিব নহে। প্রশ্নেষ্কন বা স্থ আমাদের বহু জিনিবেরই আছে, কিন্তু তাই বলিয়া সব প্রয়ে।জন বা দথ মিটাইবার শক্তি আমাদের সকলের আছে কি ? প্রাঞ্জন তথনই চাহিদায় পরিণত হয় যথন মূল্যদারা প্রয়োজনীয় জিনিয় ক্রয় করিবার শক্তি আমরা অর্জ্জন করি। তাহা হইলে আমরা দেখিতে পাইতেছি যে, জিনিযের চাহিদা নিভর করে গুইটি জিনিযের উপর-প্রথমতঃ, তাহার প্রান্ধনীয়তা; ধিতীয়তঃ, ভাহার মুলা। মানুষের প্রয়োজন ও পছন সম্বন্ধে কার্থানার মালিক যদি ঠিক অনুমান করিতে না পারেন, তাহা হইলে তাঁহাকে পণ্যদ্রবা শইয়া খেমন গুরুতর অবস্থায় পড়িতে হইবে, অর্থনীতির

মারপ্যাচে জিনিযের মুল্যন্থাস ঘটিলেও তাঁহাকে তেমনি বিত্রত ও ক্ষতিগ্রস্ত হইতে হইবে। অর্থনীতির সহিত মুল্যের ঘনিষ্ঠ সম্পর্ক সম্বন্ধে এগানে আর একটু পরিক্ষার করিয়া বলা যাক। অর্থের পরিমাণ বিভিন্ন দেশের অর্থনৈতিক ও অন্তান্ত নানা কারণে কমিতেছে বাড়িতেছে। কোন দেশে চল্তি অর্থের পরিমাণ হ্রাসপ্রাপ্ত হইলে অর্থাৎ অর্থস্যষ্টির সংক্ষাচন (deflation) ঘটিলে, জোগান ও চাহিদার সাধারণ নিয়মান্যায়ী অর্থের মূল্য বৃদ্ধি পাইবে; অর্থাৎ কিনিয়ের মূল্য হাস পাইবে। পক্ষান্তরে, অর্থের পরিমাণ বৃদ্ধিপ্রাপ্ত (inflation) হইলে অর্থের মূল্য কমিবে অর্থাৎ জিনিয়ের মূল্য বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হইলে অর্থের

অনেকে মনে করেন পণ্যবিনিময়ের বা বেচাকেনার ফেত্রে মুদ্রার আবিভাব এবং একাধিপত্য এই শুক্ততর সমস্থার জন্ত বিশেষ ভাবে দায়ী। সেই জন্ত এক দল নৃতন পদ্বী পণ্যের হাট হই ত এই থামথেয়ালি মধ্যবর্তী প্রস্কৃতিকে বাদ দিয়া পণ্যের সহিত পণ্যের সাক্ষাং বিনিময় প্রশ্নপ্রবর্তন করিয়া আদিকালের ব্যবস্থাকে ফিরাইয়া আনিতে চাহেন। বিভিন্ন দেশের মুদ্রানীতি বর্ত্তমান সমস্থাকে কিভাবে প্রভাবান্থিত করিতেছে তাহার বিস্তারিত আলোচনা করিবার পূর্বের্থ আমরা জন্তান্ত কারণগুলির অফ্সন্ধান করিতে চাই।

নেহরক্ষা ও প্রাণধারণের উপযোগি নিতান্ত প্রয়োদ্ধনীয় কয়টি জিনিথ বাদ দিলে প্রথমছন্দতা বা আরামের জ্বন্ত আজ মানুষের যে অসংখ্য প্রকার বিলাস-সামগ্রীর প্রয়োজন হইয়াছে, তাহা নিতা পরিবর্তনশাল। বিজ্ঞান ও উদ্ভাবনী শক্তির ফ্রন্ড উন্নতির ফ্রন্থে একই শ্রেণীর জিনিয় নিজ্য:নুজন রূপে আত্মপ্রকাশ করিয়া ক্রেতাদিগকে বিশাস্ত ও বছবিভক্ত করিয়া তুলিয়াছে মার্যের পছন বা স্থের আঞ্চ আর অন্ত নাই। হালফ্যাশনরূপে আজ যাহা সাগ্রহে গৃহীত হইতেছে, কাল তাহা পুরাতন ও দেকেলে হিদাবে পরিত্যক্ত হইতেছে। অস্থিরমতি ক্রেডার এই দৌরাক্স্য বর্ত্তমান বুগের কারথানার মালিকগণের পক্ষে মারাত্মক হইয়া উঠিয়াছে। পূর্বের কারিকরের সংখ্যা ছিল বহু ও বিহুত এবং শক্তি हिन कम। वाकारतत अवशा वृक्षिता निक निक क्यु প্রতিষ্ঠানের ব্যবস্থা তাহারা সহজেই সময়োপযোগী করিয়া শইতে পারিত। একণে এক একটি জিনিষ প্রস্তুতের জন্ত

এক একটি বিশাল বৌথকারবারের সৃষ্টে হইয়াছে; তাহার বিরণ্ট আয়োজন। একই গাঁদে একং জিনিব তাহার উদর হইতে বাহির হইতেছে শ.ত শতে বা সহত্রে সহযে। নৃতন ফ্যাশন, নুত্র গড়ন একটি চলতি জিনিঃকে বাতিশ করিয়া দিলে, নৃতন অবস্থার সহিত নিজেকে খাপ থাওয়ান এই সব রহৎ পাকা ইমারত ও ঢালাই লোহ-ইস্পাতের পক্ষে পুর্কের তায় সহজ্সাধ্য হয় না। ব্যবসাক্ষেত্রে এমনি একটা অবিছেদা সম্বন্ধ দেশে দেশে, জাতিতে জাতিতে গড়িয়া উঠিয়াছে, যাহাতে একটা বহু কারখানার অবস্থা কাহিল হইলে তাহার প্রতিক্রিয়া বহু দুর বিস্থৃত হইলা পড়ে। দুষ্টাপ্ত দারা বুঝিবার চেটা করা যাক্। বাংলার চাণীর অবস্থা খীন হওয়াত্র তাহারা পূর্বের ভায় বন্তাদি জ্ব করিতে পারি তছে না এবং ফলে বিশাতি ও দেনী কাপড়ের কলের অবস্থা কাহিল হইয়া পড়িরাছে। এথা নই শেয নহে—কণওমালা দর তুলার প্রয়োজন পূর্বাপেকা হ্রাসপ্রাপ্ত হওয়ায় ভারতের ও আমেরিকার তুশার কবদয়ীর অবস্থাও দক্ষেদাঞ্চ জর্মল হইয়াছে। শুগু তাহাই নহে, কাপড়ের কলের কারিকর ও মছুরদের অবস্থা খীন হওয়ায় পরচ সম্বন্ধে হাঝা হইয়া তাহাদিগ কৈ হ'ত গুটাইতে হইয়াছে। ফলে যে-সব ব্যবদায়ী তাহাদের নিতা প্রায়োগনীয় ত্রব্য সরবরাহ করিয়া শাভবান হই.তিখিল তাহা দের ব্যবসায় ভাটা পড়িতে ত্রফ করিল। একমত্র পাটের মূল্য হ্রাস হইতে বে অবস্থার প্রথম হ্রক হইয়াছিল তাহার শেব পরিণতি কোথায় তাহা বলা কঠিন। এক স্থানের ক্লের আজ সাহা ছনিয়ায় ছড়াইয়া পড়ি.ত:ছ। কারণ দেশকালের ব্যবধান গুডিয়া গিয়া সারা ছনিয়া আজ এক হ'টে মিলিয়াছে। ব্যবদা-জগতে একের অন্তবে সম্পূর্ণ ব'দ দিয়া চলিবার উপায় আর নাই।

বর্ত্তমান অর্থার টকে অনেকেই ট্রেড সাইকেল (trade cycle)এরই একটা সাধারণ পর্যায় মাত্র মনে করিয়াছিলেন। কিন্তু উহাদের সেধারণা এত্রদিনে ঘুটিয়াছে। অবগ্য একথা কেহ অস্বীকার করেন না ব্যে, ব্যবদাভগ তরও একটা ভাগাচক্রে আছে এবং ভাষা পর্যায়ক্রমে উধান ও পত্তনের মধ্য দিয়া ঘুরিয়া চলিয়াছে। উন্নতির পর অবনতি এধানকারও স্বাতাবিক

নিয়ম। কোন সময়ে ব্যবসা-ব নিস্ফোর ক্রত উন্নতি ও অর্থাগম আরম্ভ হইলেই ব্যবস্থিগণ অধিক লাভের আশায় অভিরিক্ত মাল এন্তত করিয়া বাজারে ছাড়িতে ফুরুকরেন। ফলে মুলাহাস ও লাভের ঘরে শুল পড়িতে থাকে এবং নূতন ব্যবনা-ব'ণিজ্ঞা প্রতন ও অর্থায়ের সব পথ রুদ্ধ হইবার উপক্রম হয়। এই রপ অবস্থা অংশিলে অবিক্রীত মাল যে-কোন মাল্য ছাড়িয়া দেওয়া ডিল্ল উপায় থাকে না। তখন আবার দ্বিনিনের চাহিদা শ্বল্পশাত র দক্ষন ধীরে ধীরে বৃদ্ধি পাইয়া ব্যবদান্ত্রগতে নৃতন প্রাণ সঞ্চারের স্থ ট করে। ইহারই নাম ট্রেড সাইকেল। কতকগুলি লোকের দুরদর্শিতার অভাব, উৎপন্ন প্রণ্যের আধিক্য, ইত্যাদি সাধারণ কার্নে মাঝে মাঝে এরপ অবনাদ ব্যবসা-জগতে আসিয়া থ কে। কিন্তু বর্ত্তমান অবদ'দের গুরুত্ব ও বিতৃতি বেমন অনমূভূতপূর্ব, ইহার বৈশিষ্টাও তেমনই অসাধারণ; কারণ পাণ্যর অভাবনীয়ন্ত্রপ মুল্যন্থাস সংৰও বি.শ্বর হাটে মালের চাহিদা তেমন ব.ড়িতে পারি.তছে না।

অনেকে মনে করেন অর্থানতিক ও বিগত যুদ্ধাটিত কারণ বাতিরেকেও রাজিতি পণার মূলা ও ক্যাকের অবস্থার আধাগতি অনিবার্যা ছিল। শিল্পসাত পণার প্রয়োজনীয়তার শেন নাই সত্যা; কিন্তু কৃমিজাত পণা সম্পার্ক একথা প্রণোজ্যানহে। মান্মবের হুদ্দশক্তির একটা সীমা আছে, ভোজনের রক্মারি বৃদ্ধি পাইয়াছে, কিন্তু প্রত্যেক জিনিবের পরিমাণ ক্মিয়াছে। যানবাহন ও চাবাব দের জন্ম গরু ও বোড়ার স্থান মোটর অধিকার করায় গরু গোড়ার জন্ম বে পরিমাণ যাদ্যের আবিগ্রুক হইত তাহারও আব প্রয়োজন হইতেছে না। কিন্তু অমুনা বিজ্ঞানর কল্যাণে ভাল সার ও উন্নত প্রণালীতে চান-অব দ হইরা প্রতি এক র উৎগন্ধ ফ্সলের পরিমাণ বহল পরিমাণে বৃদ্ধি পাইয়াছে। এই সব কারণে আনেকে মনে করেন স্থান্তের আন্তালে বা অবসাদ শেখা যাইতেছে তাহার গোড়ায় রহিয়াছে রুমি ও ক্বাকের গ্রেবস্থা। দেখন হই তই বর্জমান হুর্গতির স্ত্রাভাত।

তার উপর বিগত লড়াই চারিদিকে বাধানিয়ে ধর স্থাই করিয়া মাল-সরবরাহের সাধারণ ব্যবস্থাকে একেবারে ওলট-পালট করিয়া দেয়। যুক্ষে নিরত দেশসমূহ বিভিন্ন দেশে খাদ্যশস্ত বা সেই সমন্ত্র প্রয়োজনীয় সকল জিনিয়ের রপ্তানি বন্ধ করিয়া দেয়। অন্ত দিকে অবরোধ (blockade) নীতিও চলিতে থাকে। ক্রশিয়ার গম বাহিরে ঘাইতে না পারায় আমেরিকা তাহার গমের চাষ এই স্থযোগে খুব বুদ্ধি করিয়া ফেলে। বুদ্ধের অবদানে স্বাভাবিক অবস্থা ফিরিয়া আসিলে দেখা যায়, পৃথিবীর প্রয়োজন অপেক্ষা গমের সরবরাহ অত্যধিক হ**ইয়া** পড়িয়াছে। ভারতবর্ষ এবং ভাপান লড়াইয়ের সময়ে তাহাদের কাপড়ের কল যথাসাধ্য বাড়াইয়া ফেলিয়া ল্যান্ধাশায়ারের বাজার অধিকার করিয়া ফেলিল। শড়াই অন্তে শ্যাক্ষাশায়ারের কল যথন পুনঃ পুরা দমে চলিতে সুক্ষ করিল তথন সকল কলওয়ালারই হইল ফ্যাসাদ। যুদ্ধের সময় জিনিয়ের আমদানি বা রপ্তানি কইসাধ্য হওয়ায় প্রত্যেক দেশই নিজ নিজ প্রয়োজনীয় জিনিঘ তৈরি ও সরবরাহের ব্যবস্থা নিজ দেশের মধ্যেই করিয়া লইতে বাধ্য হয়। কাজেই যুদ্ধশেষে আমদানি রপ্তানি পুনরায় আরম্ভ হইলে জিনিবের প্রাচুর্যা লক্ষিত হইতে থাকে। আয়োজনের সহিত প্রয়েজনের, রুষির সহিত শিল্পের এই আকস্মিক বৈষ্ম্য বিগত যুদ্ধেরই অপর পরিণাম এবং ব্যবসা-বাণিক্সকে পঙ্গু করিবার অন্ততম কারণ।

এই ত গেল পণ্যের যোগান ও চাহিদা সম্পর্কীয় সমস্তা— একের অদুরদর্শিতা ও অন্যবস্থা; অপরের থামথেয়াল। (याशान ও চাহিদার मस्या रंग किनियि मात अमार्थ, मधाय হইয়া যিনি উভয়ের সংযোগ সংঘটন করেন, সেই সকল অনর্থের গোড়া অর্থ সম্বন্ধে একণে আমরা আর একটু বিস্তারিত ভাবে আলোচনা করিব। আমাকে স্থিরচিত্তে কাজ করিতে হইলে আমার পূর্বাছে জানা দরকার, যে-মধ্যস্থ মাপকাঠির সাহায্যে আমার পণ্যের দর নির্দিষ্ট হইবে তাহার মাপ বা মূলা ঠিক আছে এবং ভবিষ্যতেও ঠিক থাকিবে। যোল গিরার মাপে গভ হিসাব করিয়া পাইকারী দরে কলিকাতা হইতে কাপড আনিলাম পল্লীর হাটে খুচরা বিক্রেয় করিয়া লাভবান হইব। কিন্ত মাল পৌছিবার সঙ্গে সঙ্গে গজের মাপ যদি যোল গিরার স্থলে বজিশ গিরা নির্দিষ্ট হইয়া যায়, তাহা হইলে লাভের ঘরে আমাকে নিশ্চয়ই সর্যেফুল দেখিতে হয়। যে অর্থকে মধ্যস্থ রাখিয়া আমরা বেচাকেনার কাজ করি, লাভ ক্ষতি নির্ণয় করি, তাহার মূল্যই যদি পরিবর্ত্তনশীল হর,

তাহা হইলে আমাদিগকে নিতান্ত নিৰুপায় হহয়া বলিতে হয়, ''বল মা তারা, দাঁড়াই কোথা ?" আধুনিক যুগে আমরা ভরু রৌপ্য বা স্বর্ণমূজা ব্রিব না; কারেন্সি নোট, চেক, ড্রাফ্ট্, বিল, মার ধার করিবরে মর্যাদা (যাহাকে ইংরেজীতে ক্রেডিট বলা হয়) এই সবই আজ অর্থপর্য্যায়ভুক্ত। আমার হাতে টাকা নাই, কিন্তু বাজারে মর্য্যাদা (Credit) আছে। আমি লক্ষ টাকার মাল ধারে ক্রয় করিতে পারি। এখানে অর্থের প্রয়োজন আমি নিজ প্রতিপত্তির দ্বারা মিটাইয়া লইতে সমর্থ হইতেছি। লক টাকা পুঁজি লইয়া তু-চার লক্ষ টাকার কারবার হর্দম চলিয়াছে বর্ত্তমান ছনিয়ায়। তাই অর্থপাস্ত্রে ক্রেডিইও আজ টাকার মর্যাদা লাভ করিয়াছে। এই ক্রেডিটের পরিমাপ করা চলে না। এই সব কারণে দেশবিশেষের বা ছনিয়ার অর্থের পরিমাণ একেবারেই স্থির রাথিতে পারা গাইতেছে না। শুধু ধাতব মুদ্রা ও গবর্ণমেণ্ট-প্রচলিত নোট ভিন্ন অ.র্থর প্রায়োজন অন্ত কোন ভাবে মিটাইবার উপায় না থাকিলে এবং বহির্জগতের সহিত ব,বদা-বাণিজ্যাদি সকলপ্রকার সম্বন্ধ বিভিন্ন করিয়া ফেলি:ত পারিলে, কোন দেশের অর্থের পরিমাণ হয়ত অনেকট। স্থির রাধিতে পারা যাইত। কিন্তু বিশ্বের হাট আজ ঘরের হয়ারে আসিয়া দাঁড়াইয়াছে। আমাদের কাছে তাহার দিবার ও নিবার আহ্বান আসিয়া পৌছিয়াছে। তাহার মূল্য যেমন পাইতেছি তেমনি দিতেছি। এই সব আন্তর্জাতিক লেনাদেনার ভিতর দিয়া দেশের অর্থভাণ্ডার অবিরত বাড়িতেছে কমিতেছে। সঙ্গে সঙ্গে জিনিযের মূল্যও স্থির থাকিতেছে না। আর একটু পরিষ্কার করিয়া বৃঝিবার চেষ্টা করা বাক। ধরা বাক, বাজারে পাঁচটি রোহিত মৎস্য আসিয়াছে: সমবেত ক্রেতাদের পকেটে মোট এবং পঁচিশটি টাকা আছে। এ অবস্থায় একটি মাছের দর ৫১ টাকার বেশী হইবার উপায় নাই। মৎস্য-ব্যবসায়ীকে অগত্যা এই মূল্যেই তাহার মাছ বিক্রের করিতে হইবে। কিন্তু ২৫ টাকার স্থলে যদি হাটের ক্রেভাদের নিকট ৩০১ টাকা থাকিত তাহা হইলে ৬, টাকা দরেও মাছগুলি বিক্রয় হইতে পারিত। পক্ষাস্তরে ক্রেতাদের নিকট ২০ টাকার বেশী ना थाकिल विक्कारक 8\ । টोका मूलाই **मा**ছগুनि वांधा

হইরা বিক্রয় করিতে হইত। টাকার পরিমাণের উপর জিনিষের দর কি ভাবে নির্ভর করে ইহা হইতে আমরা সহজেই অমুমান করিতে পারিব।

অর্থনীতির মারপাাচ ব্যতিরেকেও জিনিধের মূল্য যে হ্রাসরুদ্ধি পাইতে পারে এখানে সে কথাটাও অ'মাদের জানিয়া রাখা আবশ্যক। এই দ্বপ হ্রাসবৃদ্ধির সহিত অবশ্য বর্ত্তমান সমস্তার কেন্দ্ররূপ যোগাবোগ নাই এবং ইহা অন্তায় বক্ষ ব্যবসা-বাণিজ্যের ক্ষতিও করে না। শিল্পীর চেষ্টা ও বিবেচনার ফলে কোন পণ্য প্রস্তুত করিবার বায় হ্রাস পাইতে পারে; কোন নুত্রন আবিষ্কারের কল্যাণে শ্র:মর লাঘব হইয়াও খরচের সাশ্রয় হইতে পারে। এইরূপ যোগ্যতার দক্ষন মুল্য-হ্রাদ ব্যবদাবানিজ্যের পক্ষে অনিষ্টকর ত নহেই, বরঞ্চ স্বাস্থ্যকর-কারণ, অর্থের মূল্য বা ক্রয়শক্তির নড়চড় না হইয়া জিনিযের মূল্য হ্রাসপ্রাপ্ত হইলে স্বাভাবিক নিয়মে তাহার গাহিদা বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হইবে। শিল্পোন্নতির ইহাই সত্যকার পরীক্ষা। এ-ভাবে মূলা-ব্লাস জিনিব-বিশেষের ক্ষেত্রেই ঘটতে পারে—সকল জিনিষের ক্ষেত্রে কথনও একদঙ্গে এভাবে মূল্য-হ্রাস সম্ভবপর নহে। কিন্তু বর্ত্তমান সমস্তার মূলে ভিনিয়মাত্তেরই অসম্ভব রকমের মূল্য-হ্রাস আমরা দেখিতে পাই। ইংা উল্লিখিত যোগ্যতার স্বাভাবিক পুরস্কার নহে, অর্থনৈতিক কারণের অস্বাভাবিক পরিণাম। ইহার মূলে রহিয়াছে পৃথিবীব্যাপী অর্থসঙ্কোচন বা Currency deflation। এখানে ইহাও উল্লেখ করা অপ্রাসঙ্গিক হইবে না যে, ভূয়োদর্শিতা ও যোগ্যতা দারা ন্ধিনিয়ের তৈরি-খরচ কমাইয়া কোনই লাভ নাই—ঘদি মূদ্রা-মুলা আমরা স্থির রাখিতে না পারি। কারণ মুদ্রা-মূল্য হাসপ্রাপ্ত হইলে জিনিবের দর আপনিই চড়িয়া যাইবে এবং কারিকর তাহার যোগ্যতার স্তাগ্য পুরস্কার হই.ত বঞ্চিত হইবে।

লড়াইয়ের জীবন-মরণ সমস্তার সময় অংথর প্রয়োজন হইল সর্বাপেক্ষা অধিক। অর্থমূলা পরিত্যাগ ক্রিয়া সকলে নিজ নিজ দেশে অত্যধিক পরিমাণে কাগজের নোট চালাইতে স্কুকরিলেন। তারপর লক্ষ লক্ষ টাকার কাজকর্ম নিজেদের মধ্যে ধারে চলিতেলাগিল। এইরপে পৃথিবীর অর্থতহবিলকে অস্থাভাবিকরপে জোর করিয়া

অত্যন্ত ফাঁপাইয়া তোলা হইল। ফলে লড়াইয়ের সময় জিনিধের দর কল্পনাতীত বৃদ্ধি পাইরা গেল। কিন্তু যুদ্ধ-শেষে স্বাভাবিক অবস্থা ফিরিয়া আসিলে সকল দেশ্ট যথন স্র্ণমান পুনঃ প্রচশন করিতে উদাত হইলেন তখন সকল জিনিধের মূল্যের উপরই হঠাৎ একটা গুরুতর চাপ পড়িল। ঘোর ছুৰ্ন্নিনে যে 'মেকি' মুদ্রা ও মর্য্যাদাকে একপ্রকার জোর করিয়া চালান হইয়াছিল তাহা বাতিল হইয়া গেল এবং মুদ্রাতহবিলের ক্ষীতি অক্সাৎ হ্রাসপ্রাপ্ত হইল—সাক্ত সঙ্গে জিনিয়ের দরও চারিদিকে একেবারে পড়িয়া গেল। বর্ত্তমান ব্যবসামনার মূলে মুদ্রানীতির অদৃশ্য হস্ত যে অনেকধানি দায়ী তৎসম্বন্ধে আর ভূল নাই। নরমেধ-যজ্ঞের উদ্যাপন সফল করিবার জন্ম হাঁহারা ভুয়া অর্থ সৃষ্টি করিয়া মানুষের অর্থ-লালসাকে অসম্ভব রকম বাড়াইয়া তুলিয়াছিলেন, যুদ্ধের শেষে এক কলমের খেঁটায় তাঁহারা সেই 'মেকি' অর্থের অন্তর্জান ঘটাইলেন বটে, কিন্তু মানুষর হুরাশাকে তুড়ি দিয়া উড়াইয়া দিতে পারিলেন না। কারিকর, মছুর হইতে মুকু ক্রিয়া উপরওয়ালা স্কলেই লড়াইয়ের স্ময়কার মজুরী দাবি করিতে ছাড়িলেন না; কিন্তু সেই দাবি মিটাইবার জন্ত তহবিলে আর তথন অর্থ নাই। জিনিযের তৈরি ধরচ কমি:ত চাহিল না, অ্পচ ক্রেডার ক্রয়শক্তি ব্রাস পাইয়া গেল। উভয়ের মধ্যে বৈন্দ্যের ইহাও অন্ততম প্রধান কারণ।

অর্থনান্ত্রের সংক্ষাচন বা প্রসারণ নীতির ফলে ম্ডাম্লা বৃদ্ধি বা বাস পাইলে আর্থিক জগতে তাহার অপর কি পরিণান হই ত পারে তৎসম্বন্ধে এখানে সংক্ষেপে কিঞিৎ আলোচনা করা বাইতে পারে। রামের নিকট আমি যখন টাকা ধার করি তখন টাকার যে মূল্য বা ক্রম্নান্তি ছিল এক্ষণে তাহা বদি কমিয়া অর্দ্ধেক হইয়া গিয়া পাকে তাহা হইলে আমার দেনা আপনা হই ত অর্দ্ধেক হাস পাইয়া গিয়াছে বলা বাইতে পারে। কি প্রকারে, বলি তিছি। ধরা ধাক্—আমি যখন টাকা ধার করিয়াছিলাম, তখন এক মণ চালের দর ছিল ৫ টাকা। এক্ষণে টাকার ক্রয়েশক্তি অর্দ্ধেক হাস পাইয়া সকল ন্দিনিষের মূলাই দ্বিশুণ বৃদ্ধি পাওয়ায় এক মণ চালের মূল্য ১০ টাকা এবং আধ মণ চালের মূল্য ৫ টাকা দাঁড়াইয়াছে। যে ৫ টাকা ধার করিয়া আমি এক मन চাল कि निव हिनाम, तिहे ६ होका यथन बक् क অ'মি কিরাইয়া দিল ম তখন তিনি ত হা মারা আধ মণের বেণী চাল আর খবিদ করি:ত পারিলেন না। ইতিমধ্যে তাঁহার অর্থ্নেক টাকা হাওরার উড়িয়া গিরা তাঁহার দেনদারের भाकरहे आला नश्य रहा। मालुराव होकाव बाराजन होकाव জন্ম ন.হ. ড:হার সাহাধ্যে ড:হার অন্ত প্রয়োজন মিটাইবার জ্য। কর্মাক্ষতে বা ক্রন্যাক্ষেত্রে মানুযের সহিত মানুযের मन्त्रक (पना-भावना नहेबा: ज्ञानदात निकंडे जामात (यमन টাকা প্রাপ্ত আছে তেননই অ'ব'র অপরেও অ'মার নিকট টাকা পাই:ব। কিন্তু মুদ্রা-মূলোর হ্রাদ-বৃদ্ধির ফলে এই দেনা-পাওনা স্থিব থাকে না এবং নিতান্ত অকারণে একজনের পাওনা বাড়িয়া দেনা কমিয়া লায় কিংবা দেনা ব'ড়িয়া পাওনা কমিয়া বার। এইরূপে ভর্থ যান অসায় রকমে হাত বা্লায় তথন নুভন ধনী নুভন পছল ও নুভন मावि नश्या वाकारत छे विष्ठ श्य এवः माकानमात তাহার পুরাতন অভিজ্ঞতা ও আয়োগন লইয়া একেবারে বোদা বনিয়া যায়। ইহাও বাবদাজগতে বর্তমান বিশুখলার অন্যতম ক রণ মনে করা ধাইতে পারে।

একটি হুর্গতি অপর হুর্গতিকে আইবান করিয়া আনে; দেহের এঞ্টি অংশ বিকাশ হংগে তাহার আগর অংশও धीत भौत जाक छ दश। একেছেও তাহ दे हरेग हि। জিনিয়ের কট্তি পড়িয়া গিলা ব্যবসামন্দার স্থাই হই তই মার্থের মান একটা আতি হর স্ট হইয়াছে। দোকা ন বা গুলামে মাল পড়িয়া আছে, কিন্তু হাতে এর্থ নাই। কাকেই মহাওন তাহার পাওনার জন্ম বান্ত হটয়া উঠিয়াছে এবং ধারে ক'জ করিতে কেহট ভার ভরদা পাইতেছে না। চারিদিকে কেমন একটা অবিশ্বাস বা অনাস্থা ছড়াইয়া পড়িয়াছে। বাঁহার কিছু টাকা আছে তিনি সে টাকা আর হাতছাড়া করিতে প্রস্তুত নহেন। হহু'তে নৃতন বাবেশা-ব'ণি,জার পথ ক্লভ্ন হইয়া বেছ'র-সমস্থার গুরুত্ব যেমন বাড়ি.তটে, কেনাবেল আরও ক্ষিয়া গিয়া চলতি বাবদা-ব'ণিডোর অবস্থ:ও আরও ত্র্বল হইয়া পড়িয়াছে। অন্ত স্বকিছুতে আস্থা হারাইয়া লোকে শুধু নগদ টাকা পুঞ্জি করিতে বাস্ত হইয়াছে মনোবৃত্তি ব্যক্তিবিশেনকে ছাড়াইয়া প্রত্যেক

গতর্ণনে টের মধ্যে পর্যান্ত সংক্রে.মিত হইয়'ছে। ফলে প্রত্যেক গতর্গ মন্টই বিদেশে মাল চালান করিরা নিজ দেশে অর্থ,গনের জন্য বেমন এক দিকে বান্ত, অন্ত দিকে বিদেশ হই ত মাল আমলনৈ হইরা দেশের অর্থ বাহ'তে বাহিরে চণিয়া বাইতে লা-পারে তাইরে জন্তও তেমনই উৎক্ষিত। আপাতদৃষ্টিতে ইছা ভালই মনে হইতে পার। কিন্তু আন্তর্জাতিক ব্যবদা-বাণিজ্যের হলে প্রত্যেক দেশই যদি এই পথ অবলম্বন করে, তাহা হইলে আন্তর্জাতিক ব্যবদাই বা চলিবে কিরুপে? আরু যে উদ্দেশ্যে এই পথ অবলম্বন করা তাহাই বা সিদ্ধ হইবে কেমন করিয়া? বেখানে স্ব দেশান দেখানে কেলে কুলি, সেখান এ-পথ দে আরুরফার পথ নহে, এ-পণে পরের বাত্রা ভঙ্গা হইলেও নিজের নাককানও বে আন্ত থাকিবে না, ইছা বলাই ব্রলা।

অপ রর ব্যবদান ই করিয়া নিজের ব্যবদা প্রদারের এই বার্থ চেষ্টা চলে ছই উপারে। প্রথমতঃ, বিদেশী ফিনিয়ের উপর উচ্চ শুরু বদাইয়া উহার প্রবেশ-পথ কর করিবার চেগা; দ্বিতীয়তঃ, স্বদেশের কার্থানাকে অর্থনাহায়া করিয়া অর্থাৎ subvidy দিয়া নিজেদের অক্ষম প্রচেষ্টাকে বিদেশা প্রতিগোগিতার বিস্কন্ধে দুঁড় করাইবার চেষ্টা। দলে আন্তর্জ্ঞাতি হ ব নিজার স্বাভাবিক প্রগতি বাহত হইতেছে। উচ্চ শুরু-প্রাচীরের নিগোধাজ্ঞা লত্য্য করি ত না পারিয়া ব্যবদা-বাণিধা ঘদি আন্ত অচল হইয়া থাকে ত ব তাহার জন্ম বির তাপুকাকে দোঘ দিলে তিনি ভাহার জন্ম দিয়েন না সতা; কিন্তু এ অবস্থা হইতে মুক্তিও অমাদের মিলিবে না।

বর্তম ন অবস্থ র জন্ত বিশেষ ভ'বে দ'রী এবং বিগত
লড় ই রর সহিত সাক্ষাং ভাবে সংক্রিউ হেট কারণ এখনও
আমাদের উল্লেখ করা হয় নাই। তাহা হইতে:ছ—সমরঋণ ও বিভিত দেশসমূহের উপর ক্ষতিপূরণের দাবি।
এই ঘুই দাবি একত্র করিলে এক শত কে টি টাকার উপর
প্রতি বর্ণমরে অধ্যাদির দেয়। এই টাকাটার প্রায় তিনচতুর্থাংশ অাদেরিকার এবং অবশিষ্ট ক্রান্সের প্রাপা।
বিশ্বের হাট হইতে প্রতি বংসর এভগুলি হর্ণমূলা অপস্ত
হইরা ঘুইটি দেশের অর্থভাগুরে স্থিত হইতে পাকিলে

এবং তক্ষন অধুমূর দেশসাহ এতগুলি অর্থের স্পতাবছার ুইতে বঞ্চিত হইলে, তাহার পরিণাম ব্যবসা-ব:ণিজ্যের পক্ষে কিরূপ ক্ষতিকর হইতে পারে তাহা সহফেই অনুমেয়। এতগুলি টাকা ঋণপরিশোধের জন্ত ব্যয় হওয়ার অর্থ ঐ পরিমাণ মূল্যের ব্যবসা-বাণিজ্যের হানি হওয়া। ই:হংদের ভাণ্ডারে টাকা যাইতেছে তাঁহারা যদি উহা সঞ্চয় না করিয়া উদার ভাবে ব্যয় করিতেন, তাহা হইলেও এইটা ক্ষতি হইত না। কিন্তু ঠাহারা উহা ব্যয় না করিয়া উহা দারা নিজ নিজ স্বর্ণ-তহবিল ফ্লীত করিয়া চলিয়'ছেন। নগদ মুদা না লইয়া তৎপরিবর্তে তাহারা যদি অধমর্ণদিগের নিকট হইতে ঐ মুলোর প্রয়োজনীয় পণা গ্রহণ করিতেও শীক্ষত হইতেন ত'হা হইলেও হতভাগ্য অব্দর্গদের বাতিবার উপায় হইত। কিন্তু তাহা ত হইবার উপায় নাই; অধিকন্ত মধ্যণ ও অভাত দেশ হইতে পণ্যের আমদানি বন্ধ করিব'র সব ব্যবস্থাই বিধিমত ঠিক আ'ছে। নিৰূপায় হইয়া ्रननमात्र (प्रभानमूह (प्रत्भेत्र होका गर्थामञ्जय वीहाईयात छे.प्रत्भा বিদেশা মালের আমদানি বন্ধ করিবার চেষ্টা করিতে:ছ এবং গণপরিশে'বের জ্ব্য বে-কোন মূল্যে বি.দংশ মাল বিক্রয় করিতে বাব্য হইতেছে। ৩ পু তাহার নহে, পুনরায় স্বর্ণমান পরিহার করিয়া নিজ নিজ দেশের মুলা-মুলা হ স করতঃ বিদে: म নিজ মাল সন্তায় চলে ইবার প্রতিবে গিতা চলিয়াছে।* দলে আয়ুক্সাতিক বাণিজ্য অধিকতর বাধাপ্রাপ্ত হইতেছে. বেকার-সমস্থা বুদ্ধি পাইয়াছে, দিনিবের চাহিদা ও মূল্য পরিও হাদ পাইয়াছে। মুদ্রা-মুল্য হাদের সঙ্গে সঙ্গে দেনদারের দেনার পরিমাণও আপনা হইতে বাড়িয়া >িলা:ছ। এতওলি দেশকে পন্ন করিয়া ভরু একা প্রী ও লভিব'ন্ হওয়া বর্তমান আন্তর্জাতিক ব্যবসা-ব্ণিজ্যের ^{মুগে} সহবলর নহে। তাই আমেরিকা, ইংশণ্ড, ক্রা**ন্স** প্ৰভৃতি দেশও বড় মুধে নাই।

এই যে নিজ হাতে তৈরি গোল গ্রীবার মধ্যে সভাতাভিমানী মানবজ্ঞাতি চোবে ঠুলিবাধা জন্তবিশেষের মত্ত পরিয়া মরিতেত্তে, এই অবহার প্রতিকার কি? বিচার-ব্রন্থির দ্ব রা ইহার একটা মীমাংসা হয়ত তেমন কঠিন নহে;

কিন্তু মীম ংসাকে কার্যো পরিণত কর!ই হুরাছ। গ্রুমগার-সংশ্লিষ্ট এই আন্তর্জাতিক ব্যাবির প্রতিক:র করিতে হইলে প্রথমেই উগ্র জাতীয়ত বাদের মু:লাচ্ছেদ করা ভাবগুক। ম'কুবের বৃদ্ধিবৃত্তি ও ক্ষমতা যে হারে বৃদ্ধি পাইয়'ছে, ভাহার মনুবাছ, ম'নবপ্রীতি ও ধর্মভাব দে হ'রে বুদ্ধি পায় নাই। মনীবা খারা যে অন্তুত স্থাই সে নিজ হাতে গড়িয়া তুলিয়াছে, হদয়ের উদারতার অভাবে আরু সে তাহা রক্ষা করি ত পাৰিতেছে না। সম্প ম'নবংকিক সে নিচেট আহ্বান করিয়া একত্র মিলিত করিয়াছিল; অ'জ এই মিলনকে আব'র সে নি.ভই ফুড় শোভ ও স্বার্থ-বৃদ্ধির অধীন হইয়া পণ্ড করিতে বৃদিয়াছে। মাহুনের উন্নতিকে অবাংহত র'বিয়া ভাল ভাবে বঁ'চিতে হইলে আমাদিগকে একস'থে বাঁচিতে হটবে— ২ল ভাতির খদে রোধ করিয়া যদি বাহিতে চাই তাহা হইলে বিধির আমান বিধান এছত উপায়ে ত হার শেধি লই ব এবং আ থেরে কাহারও মধল হইবে না। ভারত-রূপ কামধেরের বাঁট আজ একেবারে ৩৯ হট্ট্রা পড়ায় ইংল্ড, আ.মরিকা, জাপান প্রভৃতি দকল দে.শর্ ক্ষতি ও ডিন্তার কারণ হইনা পড়িয়াছে। স্বিধার জন্মই রাভ্য ও রাজত্বের অ'রোদন, সেই জন্মই এত রেয়ারেনি, এত যুদ্ধবিগ্রহ। কিন্তু দেই পণা অর্থ-সামর্থা ना शोकिरत एक किनिवि ? शाउँ। इनि कि मान होना देवात এতবছ হ ট এই ভারতবর্গ। এই হ ট খদি তা**হ: দর** भाग विक्रम तक इस छाव धा-नव (माकानम दान क छ कि করিয়া বঁটিেবে ? যে ব্যবসা-ব পিন্দা উন্ধিংশ শতান্দীর "এবারিত দ্বার" (Free Trade) নীতির অন্তল হ'ওয়'য় অবাহত গতিতে পুথিবীর সুর্বত প্রাক্ত করিয়'ছিল, আজ ত'হাকে অম্পুণ্-জ্ঞানে নানা কল কীণাল বিদ্রিত করিতে চাইলে তহা রক্ষা পাই.ব কিরু.প? আন্তজ্ঞাতিক বণিয়াকে বাঁচিতে হইলে আন্তজ্ঞাতিক মনে'বৃত্তির আবৈগ্রক—ইউরে'নের স্বাৰ্থক নুথিত জাতীয়তার হ'ওয়া তাহার পক্ষে মারাত্মক।

শ্বন্য খার একটি প্রথ আছে—বিদ্ণীর সহিত্ত সমগ্র বাবদা-সম্পর্ক তুলিয়া দিয়া আমুদর্কত্ব হইয়া বঁচা। প্রত্যেক দেশর অভাব ও প্রয়েক্তন নিজ দেশ হইতে মিটাইবার আমেজিন ও বাবস্থা করা এবং দেশের শিল্প ও

^{*}বিগত বংৰ্বর প্রবাসীর অংবাঢ় সংধারে প্রকাশিত "অর্ণমান" এবক জটুরা।

বাণিজ্যকে তথু নিজ দেশের প্রয়োজনেই নিয়োজিত করা। আমেরিকা, চীন, ভারতবর্ষ, রুপিয়া প্রভৃতি প্রাকৃতিক সম্পদে ধনী প্রকাণ্ড দেশসমূহের পক্ষে এ-পথে চলা তেমন অসাধ্য নহে। কিন্তু ইংলও, জাপান প্রভৃতি অন্তান্ত কৃত্র দেশের পক্ষে এ-পথ বিনাশের পথ। প্রথম কথা, বৎসরে ছ-মাসের খোরাকও ইংলওের নিজ দেশে উৎপন্ন হয় না। বিদেশের সহিত তাহার বাণিজ্য বন্ধ হইলে ইংশণ্ড অনাহারেই মারা ঘাইবে । দ্বিতীয়তঃ, ইহাদের যে-সব পণ্য পু গিবীর হাট-বন্দর ছাইয়া ফেলিয়াছে, সে-সব তৈরির কঁচাম'ল আসে সব বিদেশ হইতে। তাহারই বা কি উপায় হইবে? অন্ত দিকে, উল্লিখিত বৃহৎ দেশগুলি ঐশর্যের খনি হইলেও শিল্প-বাণিজ্যের ক্ষেত্রে তাহারা অনেকে নৃতন ব্রতী ও অনভিজ্ঞ। বি.দশ হই:ত আধুনিক কলকজা ও অগ্যন্ত নানাবিধ সাজ-সর্ভাষ আমদানি করিতে না পারিলে তাহাদের চলিবে না। সকলের চাইত বড় কথা এই '৫০ বিখের সম্পদ ও জ্ঞান ভাণ্ডার আজ জ্বাতিধর্মনিধিবশে:য সকলের নিকট সকলের প্রয়োজনে উন্মুক হইয়াছে। অ'মর কি চীনাপ্রাচীর ধাড়া করিয়া দিয়া নিজ নিজ কুদ্র গণ্ডীর মধ্যে কিরিয়া গিয়া আবার কৃশমণ্ডক হইয়া বসিব ? ইহাতে কি জগতের প্রগতিকে শত সহত্র বৎসর পিছাইয়া দেওয়া হইবে না? আমরা নিজ দেশের মথো আগ্রসর্কত্ব ও পূর্ণমনস্কাম হইয়া থাকি.ত পারিব না: অথচ আন্তর্জ্জাতিক সম্বন্ধ ও বাণিজ্যকেও স্বাভাবিক পথে চলিতে পদে পাদ বাধা দিব--আমানের বর্তমান বপত্তির গোডার গলদই এই পরস্পর-বিরোলী নীতির অনুসর,ণ। স্তরাং মানবজাতির স্বাভাবিক বিবর্ত্তন ধারাকে যদি অ'মরা ঠিক রাথিতে চাই, দেশে দেশে, ক্ষাতিতে জাতিতে ভাবের ও বস্তুর আদান-প্রদান যদি আমরা অব্যাহত রাধিতে চাই, তাহা হইলে পরস্পর:ক অগ্রায় রক.ম আঘাত করিবার যত উপায় তাহা আমাদিগকে পরিত্যাগ করিতে হইবে। ভন-গানীর (Tariff Wall) ভাঙিয়া ফেলিতে হইবে। তেলো মাথায় তেল দেওয়া (subsidy) বন্ধ করিতে হইবে। শিল্প-অনুগানে নৃতন ত্রতী কোন কে'ন দেশের পক্ষেও ক্ষেত্রবিশেষে প্রবলের প্রতিযোগিতা হইতে আত্মরকার জন্ত এরপ প্রাচীত্রের ও স্বৈসিভির সংময়িক

প্রয়োজন থাকিতে পারে; কিন্তু তাহার প্রয়োগ আমাদের ভার ত্র্বল ও অম্রত জাতির জন্ত বথাসন্তব দীমাবদ্ধ হওয়া আবশ্রক এবং তদম্কুল জাতিসজ্জের (League of Nations এর) অনুমোদন থাকা সঙ্গত। অবশ্র সেই সঙ্গকে নৃতন করিয়া গড়িতে হইবে।

সমস্ত গোলমালের মুলোচ্ছেদ করিবার আর একটি হঃসাহসিক পন্থা আছে। কিন্তু তাহা খেম।ই নূতন তেমনই ধনতাপ্ত্রিকদের পক্ষে মারাত্মক। পণ্য-বিনিময়ের সময় যে অর্থরূপ দালালটি মধ্যস্ত হইয়া কাজ করেন তিনি সমস্ত অনর্থের মূল; কারণ তিনি বহুরূপী, তাঁহার রূপের বা মু:লার কিছুই ঠিক নাই। এই দালালটি.ক একেবারে বাদ দিয়া প:ণার সহিত পণ্যের সাক্ষাৎ বিনিময় করিতে পারিলে সব গোলমাল চুকিয়া যায়। মানুষের ভোগের জন্তই শিল্প ও পণ্যসন্তারের প্রয়োগন— এর্থ পণ্যসন্তারকে মানুষের নিকট প্রয়োজন ও প্রবিধামত পৌছাইয়া দিবার একটি সহজ উপায় মাত্র। ইহা ভিন্ন অর্থের অন্ত কোন সার্থকতা নাই। তাই প্রশ্ন উঠিয়াছে, এই থামথেয়ানি দালালটিকে মাঝে রাথিবার দরকার কি? এই প্রস্তাবে শ্রমিক বা সাধারণ সম্প্রদায়ের লাভ ভিন্ন ক্ষতি নাই সত্য, কিন্তু ইহাতে ধনিক সম্প্রদায়ের সমূহ ক্ষতির কারণ রহিয়াছে। সেই এক্সই এক্সপ প্রস্তাবে তাঁহারা একেবারে चाँ का देश डिरियाह्म अवर अदे शर्बत श्रीक क्रियादक স্কলে মিলিয়া কোণঠাসা করিবার চেষ্টায় আছেন। ধনী অর্থ চায় শুধু ভোগের সামগ্রী সংগ্রহের জন্ত নহে, ব্যাক্ষের থাতায় হিসাবের অঙ্টাকে যথাসম্ভব বড় করিয়া एिथियात खन्छ। **इंह**: প্রয়োজনের দাবি নহে,—ইহা নিছক শোভ ও যুগযুগান্তের সংস্কার। সাধ মিটাইয়া ভোগ করিবার বিলাস-সামগ্রী ইহ'দিগকে দিলেও ইহারা অর্থের মোহ পরিত্যাগ করিতে পারিবে না। অথচ ইহাদের এই লোভের ফলে জনিয়ার ধন আসিয়া কতিপর ব্যক্তির হাতে জড় হইতেছে, কিন্তু ব্যবহারে লাগিতেছে না। কারণ মানুষের ভোগবিশাসিভার সীমা আছে। অন্ত দিকে নানাবিধ পণাসম্ভার পড়িয়া আছে, অর্থাভাবে ছনিয়ার অধিকাংশ মামুষ তাহার নিতান্ত প্রয়োজনীয় অভাব মিটাইতে পারিতেছে না। বিনিময়ের জ্বন্ত তৈরি না হ**ই**র্য

াণ্যদ্রবা যদি মানুযের বাবহার ও ভোগের জন্ত তৈরি হইত ্রবং দেশের শাসনতগ্র যদি তাহা প্রত্যেক ব্যক্তির চার্য্যকুশলতা ও প্রয়োদন অনুবায়ী বিতরণ করিবার ভার াহণ করিতেন (গেমন আজ ক্রশিয়ায় চলিয়াছে), তাহা ্ইলে ধনীসম্প্রদায়ের ঘরে বসিয়া টাকায় তা দেওয়া নে হইত বটে, কিন্তু ছনিয়ার বঞ্চিতেরা কিঞ্চিৎ পাইয়া-শরিয়া বাঁচিতে পারিত। এই বাবস্থায় বাক্তিগত ধনে চাহারও অধিকার থাকিবে না। দেশের রুবি ও শিল্প-গণতন্ত্রের প্রতিনিধিগণের নির্দেশ অনুবায়ী পরিচালিত হইবে—তাহার ফলভাগী হইবে দেশের সকলে ন্মভাবে যোগাতাত্মসারে অর্থ থাকিবে না বটে, কিন্তু মভাবও থাকিবে না: কারণ সকলের সকল রকম মভাব মিটান **হই:ব** সরকারী ধনভাণ্ডার হইতে। ব্যক্তিগত ধনাধিকার কিংবা কমফেত্রের স্বাধীনতা বা স্বেচ্ছাচার এ-ব্যবস্থায় স্থান পাইতে পারে না: কিন্তু আমাদের নিজেদের গভর্ণনেণ্ট বুদি আমাদিগকে খাটাইয়া লইয়া পরম যতুও বিশেষ বিবেচনা সহকারে আমাদের দৈহিক মানসিক সর্ববিধ অভাব পূরণ করিবার ব্যবস্থা করিয়া দেন, ত'হা হুটলে স্ক্রাপেক্ষা অধিকসংখ্যক মানবের স্ক্রাপেক্ষা অধিক পরিমাণ মঙ্গল হইবে না কি? বে বাক্তিগত স্বাধীনতা হারাইবার ভয় আমরা করিতেছি. বৰ্ত্তমান অবস্থায় মানবজাতির সে অধিকার কি পদে পদে ক্ষম হইতেছে না ?

এই ন্তন পশ্বা অবলম্বন করিয়া ক্লশিয়া আজ আশ্চর্যা ফল পাইরাছে। সেথানে বেকার-সমস্তা নাই, জিনিষ সেথানে পড়িয়া থাকিতে পায় না। দেশবাসী সকলের সকল অভাব মিটাইয়া যে জিনিয় উদ্ভূত হয় গে-কোন মূল্যে বিক্রেয়র জন্ত তাহারা তাহা বিদেশে চালান করিয়া দেয়। বাক্তিগত লাভের জন্ত জিনিয় তাহারা তৈরি করে নাই, লাভক্ষতি বিচার করিয়া বিদেশে জিনিয় বিক্রেয় করিবার তাহাদের তেমন প্রায়েজন হয় না। জিনিয়ের বিনিময়ে তাহারা বিদেশ হইতে যাহা পায় তাহাই তাহাদের লাভ। ১৯২৯ সালের পর ইউরোপ আমেরিকা সর্ব্জে বেকারের সংখ্যার্দ্ধি পাইয়াছে ও জিনিয়ের উৎপাদন হাসপ্রাপ্ত হইয়াছে। একমাত্র ক্লশিয়ার উৎপন্ন প্রোশ্ব পরিমাণ বিশ্ববাপী ব্যবসা-মন্দার পরেও বাড়িয়া চলিয়াছে। এই সব

দেখিরা শুনিরা একদল লোক সমাজ হইতে অর্থের একাধিপতাকে নির্বাসিত করিতে চাহিতেছেন এবং রুশিয়া-প্রবর্ষিত সমাজ ও অর্থনীতির অত্যন্ত পক্ষপাতী হইয়া পড়িয়াছেন। বর্তুমান অর্থসঙ্কটের মধ্যে ইহার। ব্যক্তিগত ধনবাদের চিরসমাধির স্বপ্ন দেখিতেছেন।

ধন ও ধনী-সম্প্রদায়কে রক্ষা করিয়া যদি এ অবস্থার প্রতিকার করিতে হয় তাহা হইলে সর্ব্বপ্রথমেই ধন বা অর্থের থামথেয়াল ও স্বেচ্ছাচারকে বন্ধ করিতে হইবে। অলথা বর্তুমান সামাজিক বাবস্থাকে রক্ষা কবিবার আবে অল পন্থা নাই। বিভিন্ন দেশের বিভিন্ন মুদ্রা, বিভিন্ন মুদ্রার বিভিন্ন মূল্য, পরস্পারের মূল্যমধ্যে আবার অনিশ্চয়তা, পুথিবীর মুদ্রাসমষ্টির হ্রাস-বুদ্ধি ইত্যাদি কি করিয়া মাহ্নযের সকল হিসাবকে পণ্ড করিয়া দিয়া ব্যবসাবাণিভাকে থকা করে তাহার পরিচয় আমরা পর্বেট কিঞ্চিৎ দিয়াছি।* অর্থের এই সর্বনেশে থেলা বন্ধ করিতে হইলে প্রথমেই আন্তর্জাতিক সহনোগিতার একান্ত আবগুক। সেইজন্তুই লড়াহয়ের পর জেনেভা কন্ফারেন্সে স্বর্ণান প্রগ্রহেণর প্রস্তাব তাড়াতাড়ি গৃহীত হয়। ইহার ফলে স্বর্ণমান পরিহারের দক্ষন বিভিন্ন দেশের মুদ্রামধ্যে বাট্রা বা বিনিময়ের হার লইয়া যে অনিশ্চয়তার উদ্বব হইয়াছিল ত হা বিদ্বিত হটন বটে, কিন্তু সকল মুদ্রার সমষ্ট্রিগত মুল্যের স্থিরতা লাভ করা গেল না। কারণ বিভিন্ন মুদ্রামধ্যে পরস্পরের আপেক্ষিক মূল্য নির্দিষ্ট হইয়া গেলেও পুথিবীর মুদ্রা বা অর্থের মোট পরিমাণ স্থির রাথিতে না পারায় মুদ্রামূল্যও স্থির রহিল না। সমগ্র পৃথিবীর মোট মুদ্রার পরিমাণ একটি সংখ্যাদ্বারা নির্দ্ধেশ করিয়া দিতে হইলে সকল দে:শর গভর্থ মণ্ট প্র দেণ্ট ল বাাক্ষের একমত হইয়া একবোগে কাজ করিতে হইবে। কিন্তু বিভিন্ন দেশের মনোবৃত্তি বর্তুমান সময়ে যেরূপ ঘোরতর পরস্পরবিরোধী ও ঈর্ষাপরায়ণ হইয়া উঠিয়াছে তাহাতে সেই সম্ভাবনা স্নদর-পরাহত।

বিভিন্ন দেশ ও তাহাদের ব্যাক্ষসমূহ একমত হইলেও ব্যবসা-বাণিজ্যের প্রয়োজন অনুযায়ী অর্থের পরিমাণ

^{*} বিগত ৰৰ্ণের প্রবাদীর কার্ত্তিক সংখ্যার প্রকাশিত 'ভারতে ৃমুজানীতি" প্রবন্ধ জন্তব্য।

নির্নেশ করিয়া দেওয়া আরও একটি কারণে একপ্রকার অসম্ভব। নাধুনিক জগতে ব'জার-মর্যা,দা বা credit কিন্তুপে অর্থের স্থান অশিকার করিয়াতে, ইহা আমরা পূর্বেই উল্লেখ করিয়াছি। প্রত্যেক দেশের সেণ্ট্রাল ব্যাক্ষ মুদ্রার পরিমাণ নিয়প্তিত করিতে যদিবা সমর্থ হন, কিন্ত এই নিবাকার credit পদ:র্থটিকে আয়ন্তাধীনে আনি বন কি প্রকারে? কোন্ দেশে কোন্ব্যক্তির কি পরিমাণ ধার পাওয়া উতিত, তাহাকে কি পরিমাণে ধারে ব্যবদা-ব্রনিজা করিবার মর্যাদা দেওয়া যাইতে পারে, তাহা নির্ণয় করা হুঃসাধ্য বলি লই হয়। অর্থের পরিমাণকে স্থির বাধিয়া তাহার মূল্য স্থির রাধিব'র পথে ইহা একটি গুরুতর অন্তরায়। কিন্তু পন্থা ছক্রহ হর্লেও সকল দেশের সমবেত চেষ্টায় এহ প্রতিবন্ধকতা দুর করিতে না পারিলেও চলি তেছে না। বের্জ্তই সমগ্র পুথিবীর অর্থ-নিয়গুণের ক্ষমতা বিভিন্ন দেশের গংগ্.ম. টের হাত হইতে তুলিয়া লইয়া এ¢টি কেন্দ্রীয় শক্তির উপর দিবার কথা উঠিয়াছে। বিবৰমান জাতিবগুছের মধো এরবে প্রতিষ্ঠান গড়িয়া তোলা কতদুর সম্ভব তাহা এবখা ভাবিবরে বিনয়।

বর্তমান অবস্থার আশুপ্রতিকার করি ত হইলে অধমর্ণ জাতিনমূহের স্কর হঠতে সমরধণ ও ক্ষতিপূরণের ওকভার অবিশয়ে তুলিয়া লই ত হইবে। সকলের সন্মিলিত পাপের বিরাট বেঝা গুধু পর ভিত জাতিসমূহের ক্ষ:ক্ষ চাপাইয়া দেওয়ার ইহারা আজ মরিতে বদিয়াছে। পুনিবীর এতথানি জ্ঞাপক্তিকে এভাবে নিপেঘিত করিয়া রাখিলে বাবসা-বাণিত্য কোন প্রকারেই পূর্ব্বাবস্থা ফিরিয়া পাইতে পারে না। কেবল সমরঝা ও ফতিপুরণের দবি বাতিল করিলেও চলিবে না-পৃথিবীর বেথ নে যত জাতি নিফল ঋণের চাপে মুাড়িয়া পড়িয়াছে ভাহাদিগকেও রেহাই দিতে হইবে। নতবা পৃথিবীর জয়শক্তিকে যথেই পরিমাণে ফির ইয়া আনা সম্ভব হইবে না। ইউরোপের বহু মনীয়ীও এ-কথা আজ শ্বীকার করিতে ছন। ভারতের বিরাট পূর্বে খণের কথা ছাড়িয়া দি.লও বিগত লড়াইয়ের সময় বিনা স্বাথে ও বিনা ক'রণে গুপু অ'মাদের বিধিনিটিউ অভিভাবকের উপকারের কিঞ্চিৎ প্রভাপকারার্থ আম দিগকে নৃতন করিয়া বিরাট ঋণভার গ্রহণ করিতে হইয়'ছে। এই সব ঋণের

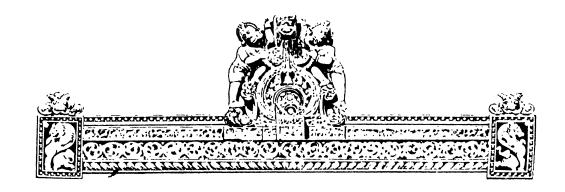
চাপ না কমিলে আমাদের আর্থিক উন্ধতির আশা প্রদূর-পরাহত। ক্লফিলাত পণ্যের মুল্য সর্বাপেক্ষা অধিক হাস পাওয়ায় ক্লিপ্রধান দেশসমূ:হর ঋণমূক্তি অধিকতর আবশ্যক হইয়া পড়িয়াছে।

বর্ত্তমান অবসাদ দুর করিতে হইলে খাহারা টাকা লইয়া গাঁট হইমা বসিয়া আছেন তাঁহাদিগকেও হাতের টাকা ছাড়িতে হইবে। খয়রাৎ করিবার কথা কেহ অবগ্র তাঁহ:দিগকে বলিতেছেন না। একটা অনন্তদাধারণ কুণ্ঠা ও অবিশ্বাদ হইতে তাঁহারা যে-সকল ব্যবসা-বাণিজ্য হইতে হাত গুটাইয়া বসিয়া আছেন, ইহা পরিত্যাগ করিয়া তাঁহাদিগকে পুনরায় কার্য্যক্ষেত্রে অবতীর্ণ হইতে হইবে। তবেই নৃতন ব্যবদার পত্তন হইবে, বাজারে অর্থ নৃতন করিয়া চলিতে সুরু করিবে, ম'্রুবের জড়তা ও অবস'দ কাটিয়া গিয়া ব্যবদা-জগতে নৃতন চাঞ্চল্যের সৃষ্টি হইবে। বনের বায় অপেক্ষা মনের বায় আমাদিগকে অধিক কাবু করিয়া ফেলিয়াছে; এবং ফলে ছনিয়ার সকল অর্থ বাজার হইতে মাকুবের ঘরে আশ্রেয় শইয়াছে। এই অর্থ পুনরায় ঘরের বাহির না হইলে মৃতপ্রায় ব্যবদা-বাণিজ্ঞ আর টিকিয়া থাকিতে পারিবে না। এই সম্পর্ক আরও একটি ব্যবস্থা করিতে হইবে। বর্তমান অনাস্থা ও অবিশ্বাদের ফলে ধারে কার্য্য করিবার সুবোগও একেবারে নষ্ট হইয়া গিয়াছে। মাত্রকে এই সুবোগ ফিরাইয়া দিতে হইবে; ভাহার কর্ম-ক্ষমতার উপর অ'ব'র বিখাস স্থাপন করিতে হইবে। কারণ মানুবের এই মর্যাদা (credit) অর্থের প্রয়োজন যে কতথানি মিটাইতে পারে তাহা আমরা পূর্বেই উল্লেখ করিয়াছি। মাত্রকে তাহার কর্মকুশলতা অনুযায়ী খানিকটা বিশ্বাস না করিলে কেবল নগদ অর্থ দিয়া সকল সময় কাজ করা কঠিন ; ত ই অর্থের সঙ্খোচন দুর করিতে হইলে অকাতার অর্থবায় করা থেমন অত্যাবগুক হইয়া পড়িয়াছে, ভেমনই মানুনকে তাহার প্রাপ্য মর্যাদা বা credit দান করারও প্রয়োগন অথব্যয়-সম্পর্কে গভর্ণ:মণ্ট ও ধনীসম্প্রদায়ের দায়িত্বই সঁক্রাপেক্ষা বেণী ; কারণ শক্তি ও স্থবোগ তাঁহাদেরই সর্বাপেকা অনিক। পূর্বে শুধু লড়াই ব'নিলে গভর্নেন্ট অজ্ঞ অর্থব্যয় করিতেন। তদ্বির সাধারণ অবস্থায় তাঁহ দের ব্যয়ের ধারা একটা কুত্র সীমার মধ্যে অবৈদ্ধ ছিল। কিন্তু

ার্ত্রমান কালে দেশের নানাবিধ বিরাট জনহিতকর অনুষ্ঠানের public utility concernএর) স্থিত তাঁখারা সাক্ষাৎ ভাবে সংশ্লিষ্ট হইয়া পড়িতেছেন। রুশিয়ার কণা ছাড়িয়া দিলেও অক্তান্ত দেশেও আজকাল গ্রহণমেণ্ট রেলওয়ে, পাব্লিক্ ট্রান্সপোর্ট, সেচ, থাল-থনন, বৈত্যতিকশক্তি পরবরাহ, জাহাজনিশাণ, সাধারণের বাসোপবোগা গৃহ নিসাণ ই ত্যাদি নানা বিভাগের কর্ত্বভার নিজহাতে গ্রহণ করিতেছেন। ভাবিয়া-চিন্তিয়া তাহাদিগকে এইরূপ বৰ্মান সময়ে প্রোজনীয় ও লাভবান কার্যো ব্রতী হইতে হইবে এক সঙ্গে সঙ্গে ধনীসম্প্রদায়কেও এই সব অনুষ্ঠানে অর্থনিয়োগ করিতে হইবে। ইহাতে ভাঁহারাও লাভবান হইবেন, দেশের বেকারের সংখ্যাও অনেক পরিমাণে হাস পাইবে। ক্রেডিট প্রতিষ্ঠা ও মর্থবায় করিয়া বাজারের বাট্তি টাকা পূরণ না করিলে এই অসচ্ছল অবস্থা যে কিছুতেই দূর হইবে না, গুছাতে আরু মতুদ্ধৈ নাই।

কেন্দ্র মনে করেন শিল্পগতে বিজ্ঞানের নব নব থাবিদার বভ্যান অবস্থার জন্ত অংশতঃ দায়ী। নিতা-নৃতন স্পাধির ফলে অপ্রায়েছিলে যে অর্থবায় হইতেছে, পাক্কত পানোজনে তাহা বায় হইলে জনসংধারণকে এতটা দুগিতে হইত না। ধনী ক্রেতার অপ্রায় বাঁচিলা গাইত; এবং বিক্রেতাকেও নিতা-নৃতন জিনিমের সহিত প্রতিনোগিতা করিতে গিলা হয়বান ও নাকাল হইতে হইত না। তাই আজ এমন কথাও উঠিয়াছে গে, কিছুকালের জগ্ন বৈজ্ঞানিক গবেহণা ও আবিদ্ধার বন্ধ করিয়া দেওয়া হউক!

পরিশেয়ে আমাদের বক্তব্য এই যে, প্রতিকারের পথ থাকিলেও তাহা অনুসরণের উপায় নাই। বর্তমান সঙ্কট সমধে বাচিতে হইলে যে ছুর্জন সাহস, উদার বিশাস ও একান্ত সহবোগিতার আবশুক তাহা আজ কোথায়? পরস্পরের প্রতি বিভিন্ন ছাতির মনোভাব দেখিলে আমাদের একটি পুরাতন গল্পের কথা মনে পড়িয়া যায়। ছইটি গাইতেভিলেন। উহাদের মধ্যে ভদ্ৰবোক এক টেনে একপ:টি চটি বদল হইফা নায়। এই ভুল ধরা পড়ে একজনার ষ্টেশনে নামিবার পর। তভদণে ট্রেন চলিতে সুরু করিয়াছে। প্লাটকম্মের বাত্রী**ট** গাড়ীর যাত্রীকে তাঁহার পাতকাটি প্লাটফথ্যে ফেলিয়া দিবার জন্ম চীৎকার করিতে করিতে ছুটিতে থাকেন, এবং গাড়ীর ধাত্রীটও ঠাহার পাছকাথানি গাড়ীয় ভিতর ছু'ড়িয়া দিবার জন্ম বলিতে থাকেন। কেহই কিন্তু ভরদা করিয়া অপরের জুতাটি আগে হাতছাতা করিতে গারিলেন না। দেখিতে দেখিতে গাডীট প্লাটিফম ছাড়িয়া চলিয়া গেল। প্লাটফমের বাত্রীট গাপাইতে গাপাইতে বদিয়া পড়িলেন, গাড়ীর যাত্রীটি জানালা দিয়া ব্যাক্ল নয়নে ভাহার দিকে ভাকাইয়া রহিলেন। পরিণামে একণাটি চটি লইয়া উভয়কে ঘবে ফিরিতে इडेंब् ।



গোড়জাতি

শ্রীসত্যকিন্ধর চট্টোপাধ্যায়

ভারতবর্গে নে-সব পার্স্মতা জাতি আছে তাহাদের মধ্যে গোঁড়জাতিই বিশেষ উল্লেখনোগ্য। তাহারা সংখ্যার নিতান্ত কম নয়, প্রায় ত্রিশ লক্ষের অধিক হইবে। বনভূমিশোভিত সাতপুরা পর্স্মতশ্রেণীর সর্প্রত, ম্যালেরিয়া-প্রপীড়িত ফুদ্র চিন্দ্বারা প্রদেশের জায়গীরগুলি, বেতু:লর নদীসমূহর তীরভূমি, সিয়োনীর মনোরম পাহাড়গুলি—এই জাতির বাসস্থান। চন্দা, ওয়ারধা, নয়্সিংপুর এবং আসাম প্রাদেশেও ইহারা বাস করিয়া থাকে।

গোঁড়েরা দ্রাবিড়ী ভাষায় কথাবার্ত্তা বলে, চল্তি কথায় ভাষাদিগকে রাবণবংশা বলা হয়। সম্ভবতঃ তাহারা দাক্ষিণাতা হইতে মধ্যপ্রদেশে আসিয়া বসতি স্থাপন করিয়াছে। আদি বাসস্থান সম্বন্ধে সঠিক কিছু তাহারা বলিতে পারে না। তাহাদের ভাষায় 'ভুলে যাওয়া' শব্দ পাওয়া গায়, কিন্তু 'মনে রাগা' শব্দের উল্লেখ নাই। তাহাদের সম্বন্ধে প্রাক্ত প্রেম্ব এবং পৌরাণিক উপাখ্যান খুব অল্পই পাওয়া যায়। বেভুলে তাহাদের উৎপত্তি সম্বন্ধে একটি প্রবাদ প্রচলিত আছে:—

পাচীন সমৃত্যে সিঙ্গমালী পাখীর ডিম ইইতে ইহাদের আদি পিত্রমাতার উৎপত্তি। সাগরমাতা বনভূমিকেই শেন তাহাদের বাসস্থান নির্দেশ করিয়া দিয়াছিলেন এবং তাহারা নীলকণ্ঠ পাখীর পালক ও ময়ুরপ্চ্ছসংশোগে তথায় বাসস্থান নির্দাণ করিয়া লইয়াছিল। য়িষ্টানদের আদিমাতা ঐত শেরপ নিযিদ্ধ ফলভক্ষণে প্রাল্ক হইয়াছিলেন, গোড়দের আদিমাতাও সেরপ ইইয়াছিল বলিয়াই তাহাদের উত্তব এবং এই বিশ্বজোড়া হুংথের হা-ছতাশ। শেষে ত্ররতমসাচ্চন্ন পৌরাণিক উপাথ্যানের ভিতর বনের রাজাও বীর রাইলিঙ্গের অভূথেক্ট কাহিনী আংসিয়া পড়িল। থে-রাইলিঙ্গ রাজা আর্থার, থে-রাইলিঙ্গ ফরাসী দেশের গুই, সেই মানবদেহধারী রাণীর শিরস্তাণ হইতে উত্তত একটি অবতারহরূপ। কিন্তু তাহার জন্ম সম্বন্ধে রাণী

সিদান্ত করিলেন যে, ইহা তাঁহার পক্ষে একটি মন্তব্ড অভিশাপ; তাই তিনি শিশুটকে জীবস্তে মাটতে পুঁতিয়া দেশিবার জন্ম গ্রহটি বালিকাকে আদেশ দিলেন। কিন্তু বালিকারা শিশুটির দিকে তাকাইতেই মে তাহাদিগকৈ দেখিয়া ঈথৎ হাসিল; ঐ প্রীতিভরা হাসিতে মুগ্ন হইয়া বালিকারা তাহাকে পুঁতিয়া ফেলার বদলে একটা বট-গাছের মূল লুকাইয়া রাখিল। এমন সময় এক শকুন-রাণা তাহার পর্বভিত্তিত বাসা হইতে আহার অন্নেন্ণে বাহির হইল এবং রাইলিঙ্গকে তুলিয়া লইয়া তাহার বাসায় চলিয়া গেল। বালক রাইলিঙ্গও সেথানে মনের সূথে বৰ্দ্ধিত হইতে লাগিল। সে তীর ধনুক লইনা শিকার অন্মেয়ণে বেড়াইতে বেড়াইতে তাহার নিজ জ্বনভূমিতে তাহার মাতার কাছে আসিলা পড়িল। হল চয় জন বড়ভাই থাকা সংয়েও মাতা রাইলিঙ্গকেই রাজাসন দিল, কিন্তু ভাইয়েরা ইহাতে ঈর্ষ্যাপরায়ণ হইলা তাহাকে বধ করিবার চেষ্টা করিতে লাগিল। ইহাতে বার্থমনোরথ হইয়া তাহারা রাইশিঙ্গকে তাহাদিগের খ্রীদর নিকট রাখিয়া দিয়া বাণিজ্যবাত্তায় বাহির হইল। তাহাদিগের কাছে তাহার নিষ্কন্ম চরিত্র প্রতি রাত্রে ব্যাহত হইতে লাগিল, কিন্তু সে কিছুতেই তাহাদের কামনা পূর্ণ করিতে চাহিল না, অবশেষে হতাশ হইয়া তাহারা পারাবত শিকারের জন্ম রাইলিঙ্গকে বনমধ্যে লইয়া গিয়া তাহার বস্থ উন্মোচন করিয়া দিল, কিন্তু তাহাতে তাহার কিছুমাত্র লক্ষার ভাব প্রকাশ পাইল না। অনক্তোপায় হইয়া স্ত্রীগণ একটি বিডালকে ঘরের ভিতর বন্ধ করিয়া রাগাইয়া দিল এবং ঐ কুদ্ধ বিভাবের আঁচড়-কামড়ে তাহারা পীড়িত হইল। তাহাদের স্বামীরা ফিরিয়া আসিলে তাহারা জানাইয়া দিল যে, রাইলিক তাহাদিগের উপর অতিশয় অত্যাচার করিয়াছে। তথন ভাইয়েরা মিলিয়া রাইলিঙ্গকে প্রাণে মারিবার জন্ম তাহাকে উত্তপ্ত লোহার কড়ায় ফেলিয়া

দিল। কিন্তু তিন দিন পরে যখন ভাইয়ের তাহার अर्छाष्टिकिया मगांधा कतिएक शांत ज्यन (मृथिन (४ स জীবিত। তথন তাহারা ব্রিল বে, পুণ্যাত্মার নিকট ্মরাজের অপ্রতিহত শক্তি পর্ব হইয়াছে। ভাইয়েরা ত হাদের স্ত্রীগণের অপরাধ বঝিতে পারিয়া রাইলিঙ্গকে অতিশয় সম্মানের সহিত মুক্ত করিল। রাইলি**সে**র কোনরূপ প্রতিব'দ না শুনিয়া তাহারা স্ত্রীদের পায়ে বেডি পরাইয়া দিল এবং তাহাতে বলদ স্থৃতিয়া দিয়া তাহাদের চরম দশা উপস্থিত না-হওয়া পর্যান্ত গ্রামের চারিদিকে গরাইতে ল'গিল। পরে রাইলিঙ্গ অগ্নির অনুসন্ধানে ব'হির হইয়া বনে গিয়া তাহ'র প্রতিদের জন্ম নুতন র'ণী ও অগ্নি সংগ্ৰহ করিল এবং সে নিজে বিবাহ করিতে অসম্মতি জানাইল। সে বলিল, "তেমরা তেমাদের রাজধন্ম ও সাংসারিক ধ্যা পালন কর— হামার সংসারী হইবার পার্জি নাই " তারপর সে তাহাদের থালিঙ্গন করিয়া অন্তর্হিত হইল এবং অমরধামে প্রস্থান क्तिवा।

এই উপাথান ভিন্ন ভিন্ন দেশে ভিন্ন ভিন্ন রূপে প্রচলিত।

চকুরশ শতাকীর পরে বেতুল, চিন্দ্বারা, মাণ্ড্লা ও চনায় গোঁড়জাতির আধিপতা প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল, কিন্তু গাহার পূর্বে ভাষানের কোন মূল ইতিহাস পাওয়া যায় নাই। উহাদের গানিপতা প্রায় হুই তিন শতাকী ধরিয়া গায়ী ছিল, সেজভা দেশও সমৃদ্ধিশালী হইয়াছিল। তথন গারতের অতীত গৌরবপ্রচারের পক্ষাশ্রমী পূর্তপোষক ছিল না বলিলেই হয়, তবুও "মধ্যপ্রদেশের সরক রের অকুমত্যাকুসারে প্রকাশিত" একথানি প্রন্থে আছে :—

"গোঁড় শাসনকর্ত্তাদের নিরুপদ্রব ও শান্তিপূর্ণ শাসনে দেশের শাপুদ্ধি হইয়াছিল, গোমেবাদি পশুর সংখ্যাধিকা এবং রাজকোষ ধন-রত্বে পূর্ণ ছিল ...গোঁড় রাজাদের এরপ একটি ফুলর নিরম ছিল, মো কোন লোক পুদ্ধরিণী ধনন করাইতে সম্মত হইলে রাজারা সেই প্রুরিণীর জমি তাহাকে নিকরভাবে দান করিতেন।"

চন্দার জরীপ-বিভাগের প্রধান কর্মচারী গোঁড়শাসন-ফর্তাদের সম্বন্ধ লিথিয়াছেন---

"তাহাদের রাজত্বকালে দেশ হুশাসিত ও শান্তিপূর্ণ ছিল। মট্টালিকাশোভিত হুন্দর নগরগুলি ছুগতিবিভার নৈপুণা প্রকাশ করিয়াছিল। কিন্তু পরবর্জীকালে তাহা ক্রমশঃ ধ্বংসের পথে, অগ্রসর ২ইয়াছিল। যাহারা এক সময় রাজপাদ অধিষ্ঠিত ছিল আজি তাহাদের ভূজিশা দেখিলে এই সকল ঘটনা স্বতঃই আমাদের স্মরণ হয়।"

বে-সাতপুরা পর্বতশ্রেণী এক সময় মনোহর দৃঞ্জের লীলাভূমি ছিল, আদ তাহার উপর অশেষ হংগের ববনিকাপত হঠয়াছে। যদি কেহ এধানে আসে তাহা হইলে সে এধানকার পীডিত মানকার বিষাদমাখা



গৌড়জাতির গ্রাম্য মোড়ল

কাতরকানি শুনিতে পাইবে। গোঁড়েরা এখন জগভের আপ্রান্ত জাতির মধ্যে গণা। বর্ত্তমানে তাহারা প্রত্যেক আগল্পকের কাছে চক্তঃশূল হইয়া পড়িয়াছে। তাহারা এখন দারিদ্রোর চরমদীমায় আসিয়া পৌছিয়াছে; তাহাদের গড়পড়তা দৈনিক আয় এক আনা মাত্র; তাহাদের সস্তানকে পাঁচ বৎসর বয়স হইতেই খাটিয়া খাইতে হয়; আহার্য্য তাহাদের অতি সাদাসিধা, কেবলমাত্র ফেনসমেত ভাত; পরিচ্ছদের দৈক্ত এরপ যে



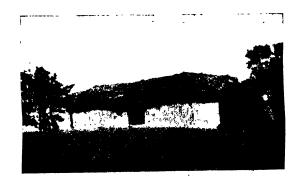
ঝড়ের পরে গোঁড়েঞ্জালোকেরা শস্ত সংগ্রহ করিতেছে

শীতকালে পার্ব্বত্যপ্রদেশের আত্যস্তিক শীত কোনরু,পই রক্ষা হয় না। তাহাদের পোষাক সম্বন্ধে একজন কবি বলিয়াছেন—

আভরণের টান পড়েছে
করছে তাদের ছন্নছাড়া,
কোপানেতে অর্জন্মক
লক্ষ্যা চাকে সর্লহারা।

তথাপি অর্ক্নভুক্ত, অবজ্ঞাত, ধ্বংসোন্ন্থ এই জ্ঞাতি
মদাবিক্রেতা, কুদীদজীবী ও তংশীদদারের হাতে প্রতিনিয়ত
উৎপীড়িত। এই জ্ঞাতিকে ভূমির, ক্ষ্মিযন্ত্রাদির, গবাদি
পশুর এবং ভোজন-পত্রের উপর, এমন কি, গৃহাদি সংস্কার ও
পরিন্ধার করিবার জ্ঞা যে মৃত্তিকার প্রয়োজন তাহার
উপরও করভার বহন করিতে হয়। আগেকার মত প্রাণিবধ
করিয়া তাহারা আর খাত্ম সংগ্রহ করিতে পারে না, কারণ
এখন ধনীলোকের মৃগয়ার সাধ মিটাইবার জ্ঞা বনের
জীবজন্ত সুসংরক্ষিত। তাহাদের উপর উৎপীড়ন ও অত্যাচার

যথেষ্ট হইয়াছে। যেন কোথা হ'ইতে এক ঝঞা আসিয়া গ্রীত্মের আতপ-তপ্ত পক শশু নষ্ট করিয়া ফেলিয়াছে। বাাঘ, ভল্প ও চিতা এখন তাহাদের মেষপাল গ্রাস ক:র; রাত্রিকালে কথনও কথনও ইহারা তাহাদের কুটীরে প্রাবেশ করিয়া তীক্ষ্ণ নথরাঘাতে ও অন্ধকারে চোথের উজ্জ্বলতায় তাহাদের সুমস্ত শিশুসন্তানগুলিকে তঃস্বপ্লের মত জাগাইয়া দেয়। বাাঘের অপেক্ষাও ভীতিউৎপাদক ও ব**ক্ত**পিপা*ন্* মহাজন তাহাদের বিব'হে ও অস্ত্যেষ্টি ক্রিয়ার সময় টাকা লখী করিবার জন্ত ভাহাদিগকে নানারূপ স্তোকবাক্য প্রয়োগ ক**র**ে। এই সকল মহাজনের শোঘণের পর তাহাদের যাহা অবশিষ্ট থাকে তাহা সভ্যসমাজে আদৃত ও রাজসরকারের পুর্গপোয়িত আফিং ও মদ্যে নিঃশেষিত হুইয়া যায়। নিমুপদস্থ সুরকারী কর্মাচারীরাও তাহাদের পাইয়া থাকে। **সকলদিকে** এই অপবায়ের উপায়বিহীন, একেবারে অজ্ঞ ও নিঃসহায় হইয়া এই জাতি সহজেই নানাক্রপ পীড়ায় আক্রাস্ত হয়। তাহাদের সাহায্যের জন্ত কোন সাধারণ তহবিল নাই। স্থতরাং বংশাহক্রমে তাহারা তুর্বল হইয়া পড়িতেছে। ম্যালেরিয়া তাহাদিগকে পঙ্গু করিয়া দিতেছে, তাহাদের চিকিৎসাদির কোনরূপ



র্গোড়-দেবামণ্ডলের প্রধান গৃহ (করঞ্জিয়া)

ব্যবস্থা নাই। থাদ্যাভাবে তাহাদের সস্তানগুলি মৃত্যুম্থ পতিত হইতেছে। তাহাদের রাজপদ বা রাজদদ্মান আজ স্থৃতিপথ হইতে বিলুপ্ত হইতে বিলিশ্ত

কিন্তু কি সাহস ও উদ্যমের সহিত এই অঙ্কৃত জাতি তাহাদের হুংবের সন্মুখীন হইয়াছে! ইহাদের অপেক্ষা

কৌতুকপ্রিয়, সদানন্দ, কমনীয় জাতি আর কোথাও দেখিতে পাওয়া যায় না। তাহাদের মর্য্যাদাবোধ স্মরণাতীত হইলেও রজের সহিত প্রতি ধমনীতে প্রবাহিত। এখনও তাহাদের আচরণ রাজোচিত, তাহাদের বংশ শতি প্রাচীন।

তাহাদের এই শক্তির মূল উৎস কোণ য় যে নিহিত আছে তাহা নির্ণয় করা সহজসাধ্য নহে, তবে তাহাদের গত্যের তালে ইহার অনেকটা আভাস পাওয়া যায়। অন্তপ্রেরণাহীন মানব-মনও বনভূমির নিগুঢ় তব কিছু

কিছু অনুভব করিতে পারে বলিয়া মনে হয়। তাই শ্রীযুক্ত এম ডি পাতিয়াল গোড়-দেবামণ্ডলে কিছু দিন কাজ করিয়া বনভূমির প্রভাব-প্রতিপত্তি সম্বন্ধে লিখিয়াছেন—

"এই জাতির অন্তরায়া স্বাচ্ছল্যপ্রয়াসা হইয়া পৃথিবার নগবক দাবনিঃখাসে পরিপূর্ণ করিতেছে। বনের পত্রাজির মর্মার্কানির সহিত ইহার দার্যখাস নিয়ত প্রতিধানিত হইতেছে। দুরবর্তী পশু-পঞ্চীর স্মধুর সঙ্গীতধ্বনিতে আখার এই কাতর সন্দরের সমবেদনা মুগরিত হয় ; অদৃগ্য পতক্ষের শবিরাম সঙ্গীতপ্রবাহ উহার আকুলতাকে প্লাবিত করে। তাহাদের অস্তর ২ইতে মানবপ্রকৃতির স্বাভাবিক উদ্বেগ অন্তর্হিত হয়; তাহাদের হৃদ্যের এই ভাব একটে স্বগীয় বস্তু। বাঞ্প্রকৃতির এই প্রভাব কখনও কখনও অতি অন্ন সময়ের জন্মও পানাহার এবং পরিচ্ছদের চিন্তা তাহাদের মন হইতে বিদুরিত করে; তাহাদের ছঃথে প্রপীড়িত আশ্বা ক্ষণিকের জন্ত আশ্ববিশ্বত হইয়া থেন একটা বিমল আনন্দের রাজ্যে প্রবেশলাভ করে এবং ভাহা ভাহাদের আনন্দদায়ক পার্কাত্য জীবনের ক্ষণিক স্বপ্ন উপভোগ করে। তাথাদের স্বাধীনতা যেন ফিরিয়া আসে, দারিত্রা-ছঃখ যেন ভ্যাগের আনন্দে পরিণত হয়। তাহাদের এই বন্ত জীবন মানবাস্থার একখেয়ে-একটানা ভাব হইতে তাহাদিগকে দূরে রাথে। এই বনভূমির মধ্যে তাহাদের আভিজাত্যে-ভর। হৃদয় স্পন্দিত হয় এবং মধ্যে মধ্যে শান্তিনিলয় এই বনদেব।র বক্ষে তাহারা ক্ষপিক আনন্দে বিভোর হইয়া প:ড় ৷ এই ইন্দ্রজালই গোঁড়দিগকে অবিরত বনভূমির দিকে হাতছানি দিয়া ডাকিয়া লইয়া যায়। যে-প্রকৃতিদেবী তাহার মেহসিক্ত মঙ্গলময় হস্ত ছারা তাহাদিগকে লালনপালন ও সাত্মনা প্রদান করেন, তাঁহারই সহাতুভূতি ও ভালবাসার গৌরবময় রহস্ত তাহার। এই বনভূমিতেই উপলব্ধি করে। এস্থানে লীলাময়ের হৃদয়-কন্দরে তাহারই প্রেমের গান প্রকৃতিদেবীর শত সহস্র হরে ধ্বনিত হয়। এই বনভূমির বক্ষে তাহারা হর্ভাগ্যপীড়িত অসহায় শিশুর স্তায় তাহাদের মর্ম্মোচছ, াস জ্ঞাপন করে। ভগবানের এই সমস্ত লীলা-বৈচিত্র্য তাহারা সামাক্ত অনুভব করে মাত্র; অথবা ইহারই ভিতর দিয়া অসীমে পৌছিবার পথের সন্ধান পায়। ইহা কল্পনা নয়, স্বপ্নও



গ্রোড়-শিশুরা মণ্টেসরা শিক্ষাপ্রণালীর যন্ত্রাদি ব্যবহার করিতেছে

নয়: ইহা কেবলমাত্র ক্ষণিক দীপিতে প্রকাশিত ২য় এবং মুহূর্রমণ্যেই বিশ্বতি-গর্ভে লীন হইয়া যায়।

মুহুর্ত্তের এই আশ্ববিশ্বৃতিই সোঁড়জাতির জাবন-প্রবাহের উৎস।
ধর্ম, শিল্পকলা, যাছবিল্লা এবং সঙ্গীত—সমস্তই এই বস্তুজাতির নিজস্ব।
অন্ত স্থানে এবং অন্ত সময়েও ভাহারা সত্ত এই সমস্ত বাস্তবের
সান্নিধ্যে থাকিবার জন্ত ও সেই সচিদানন্দ অক্তাতের রহন্ত ভেদ
করিবার জন্য ভাহাদের ইক্রিয়ের উৎকর্ম সাধনাভিলায়ে এই অনিক্রেনীয়
উচ্ছু বাস প্রকাশ করে। যে বিধাতা ভাহাদিগকে এই বিশাম ও
স্বা্তির গর্ভে নিমন্দ্রিত করিয়া রাখিয়াছেন জাবনসংখামে ভাহারই
পরাক্ষায় উত্তার্গ হওয়াই ভাহাদের একমার উদ্দেশ। অহএব সমগ্র
জাব-জগতের স্থায় ভাহাদের জাবন কল্পনা ও উচ্চ আদর্শের ভিত্তিতে
স্থাপিত। এই সকল কল্পনা আবার সেই পরমায়ার হদমনিংগত
মহৌধধের প্রতি প্রগাচ় অনুরক্তিপ্রস্ত।"

পাতিয়াল সাহেব গোঁড়দের সহিত ঘনিষ্ঠ সংশ্রবে থাকিয়া গোঁড় বনিয়া গিয়াছিলেন এবং তাহাদের আচার-ব্যবহার সমাক্ আয়ত্ত করিয়াছিলেন। পূর্বেন সভ্য সমাজের ধারণা ছিল বেন, অসভা জাতির মধ্যে কেবল ভূতের তয় ছাড়া কোন ধশ্ম নাই; কিন্তু তাঁহার প্রদত্ত বিবরণী সে ধারণা দুরীভূত করিবে বলিয়া আমার বিশ্বাস।

গোঁড়জাতির জীবনবাপনপ্রণালী ও আচার-ব্যবহার এত অল্প পরিসরের মধ্যে বর্ণনা করা সম্ভব নহে। রাসেল সাহেবের রচিত মধাপ্রাদেশের বর্ণ ও জাতি-সমূহ (Tribes and Castes of the Central Provinces) নামক পুস্তকে উহা ফুল্লরন্ধপে বর্ণিত আছে। এই ধরণের পুস্তকে বাহ্যিক বর্ণনাটা বেমন বেশী থাকে ইহাতেও সেইন্ধপ আছে। এই সকল পুস্তকে যে যে স্থলে ভারতবাদীর আচার-ব্যবহারের



গোঁড়-সেবামওলের দাত্রা চিকিংসালয়

প্রেশ'সা করা হুইয়াছে সেই সেই স্থান নিডুল বলিয়া বোধ হয়। আর যে যে অংশে ভারতীয় আচার-বাবহারের নিন্দা করা হইয়াছে সেই সেই অংশ ঠিক নহে। গোড়-জাতির বন্ধস্বপ্রথা সম্বন্ধে পাতিয়াল সাহেব বেভাবে বিবৃত করিয়াছেন আর কোনও পুঞ্জকে সেরূপ নাই। তাহাদের বন্ধুহের আদর্শ উচ্চ। বন্ধুহুগুগাকে তাহার। একটা কলাবিদ্যায় পরিণত করিয়াছে বলিলেও চলে। এই বন্ধুত্ব ন্ত্রী-পুরুষের সংস্পর্শজাত নয়। কেন-না, ভাছাদের বনুষ সাস জাতির মধ্যে আবদ্ধ। প্রস্পরের প্রতি ভালবাসাব গভীৰতা এইসারে তাহাদের বন্ধ পাচ প্রকারে বিভক্ত। নগা—ভাজলি, স্থী, জন্তরা, মহাপ্রসাদ ও গুস'জল।* এই পাচটির মধ্যে ভালব'সা উত্তরে(তর বদ্ধিত ভাবে বৰ্ত্তমান থাকে। অৰ্থাৎ প্ৰথমটি অপেক্ষা দ্বিতীয়টিতে অধিকতর এবং দ্বিতীয়টি অপেক্ষা ভূতীয়টিতে সারও বেশা ভালবাসা দষ্ট হয়।

গৌড়জাতির জীবনযাপনপ্রণালী কিরূপ স্কর ও মাধুর্যাময় তাগা আংশিক বলা হইল। এইবার তাহাদের কি কি ক্লিনিথের অভাব আছে সে-সম্বন্ধে সন্ধান লওয়া থাক। সভা মানবসমাজ তাহাদিগকে বহু শতাকী ধরিয়া অবহেলা করিয়া আসিয়াছে। আজ তাহাদিগকে কি কি সুযোগ দেওয়া উচিত ? সর্ক্রপন প্রেম্বের,

তাহাদিগকে শিক্ষা দান করা।
এই শিক্ষা প্রকৃত শিক্ষা হওয়া
চাই, নে-সে শিক্ষা নহে। বর্ত্তমানে
ডিপ্তিক্ট বোর্ড যে শিক্ষা দান করে
ভাহা কোন প্রয়োভনেই লাগে না।
এই শিক্ষা ভাহাদিগকে কিছু সভা
করিয়া ভোগে বটে, কিন্তু উহা
ভাহাদের মানসিক শক্তি দমিত্
করিয়া ভাহাদিগকে ক্রমশা দাসম্বের
দিকে অগ্রসব করাইয়া দের।
শিক্ষার উদ্দেগ্য আল্লাকে মুক্ত বা
স্বাধীন করা। অভএব নে-শিক্ষা

সাদ্ধানে বন্ধনমুক্ত করিয়া তাহার চিত্র্ভির সমাক পরিস্কুরণের অবসর দেয় সেই শিক্ষাই তাহাদের দরকার। টুগোল এবং বিজ্ঞান চর্চা করাও প্রয়োজন। তাই দিগকে রাজারাজড়া বা মুদ্ধের ইতিহাস না শিপাইয়া সেই সাধু-সন্মাসীন ইতিহাস শিপাইতে হইবে, বাহারা জগতে মহৎ কার্যা করিয়া মহরলাভ করিরাছেন। স্বাধ্যানীতি এবং সঙ্গীতবিদ্যা তাহাদিগকে শেগান উচিত। বিভিন্ন প্রকাবের খাদ্যজ্বর উৎপন্ন করিবার জন্ত প্রপ্রের জন্ত বয়ন এবং উৎক্কই গৃহনিস্মাণের জন্ত স্ত্রধ্বের কার্যাও তাহাদিগকে শিক্ষা দেওয়া উচিত।

দিতীয়তঃ, চিকিৎসাবিদ্যা তাহাদের পক্ষে অপরিহার্য। হইয়া পড়িয়াছে। কেননা, ভারতের অধিকাংশ বালক-বালিকাই রুয়, অনাহারক্লিষ্ট ও কঙ্কালসার। মতদিন না ভারতে বহুলপরিমাণে হাসপাতাল ও উষধালয় প্রতিষ্ঠিত হয় ততদিন কেহই ভারতবাসীর স্বাস্থ্য দেখিয়া সম্ভষ্ট থাকিতে পারিবে না।

কর, বিশেষতঃ গোমছিষাদি গৃহপালিত জন্তুর উপর কর, উঠাইয়া দিতে হইবে। উত্তমর্ণের কবল হইতে তাহাদিগকে উদ্ধার করিতে হইবে এবং দে-সকল আইন-ব্যবসায়ী দরিদ্রের কলহ হইতে নিজেরা বেশ ত্র-পয়সা উপায় করে তাহাদের হাত হইতেও ইহাদিগকে রক্ষা

^{*} আমাদের স্ভা বাঙালী জাতির মধ্যেও সধী, মহাপ্রসাদ এবং গঙ্গাজল—এই ডিনটি প্রচলিত আছে।

করি:ত হইবে। দুরবর্তী স্থানগুলির শাসনকর্তাদের উণর উচ্চ রাজকর্মচারীদের তীক্ষ দৃষ্টি রাথাও উচিত। ব:ন শিকার করিবার অধিকার তাহাদিগকে দিতে হইবে। গরিব লোকেরা পুধার নিবৃত্তির জন্তই শিকার আর ধর্মীরা করেন আমোদ উপভোগের গরিব লোকদিগকে শিকারের অধিকার হইতে বঞ্চিত করিয়া ধর্নীদের সেই অধিকার দিলে তাহা অপেকা অধিকত্তর পক্ষপাতিত্ব আর কি হইতে পারে? প্রাণিব্য করাই অভায়। অনাহারক্রিও লোকের কুলিবুভির জন্ত প্রাণী বধ করিতে হয় তাহা বরু মার্জনীয়, কিন্তু মান্ত্র নে কেবলমাত্র তহার আনন্দ উপভোগ ও ধন্মের নামে গশহতা। করিবে ইহা নিতাত গঠিত।

আমরা সমাজের উন্নতি করিব, গ্রামের উন্নতি করিব বলিয়া বুখা চীৎকার করি। অ!মাদের এই সব বিবয় ছালে'চনা করিবার কোনই অধিকার নাই। চোর বেমন গুল্পানীর নৈতিক উন্নতির বিগয় খালোচনা করিতে পারে না, অমরাও দেইরপ গ্রামবাসীদের উন্নতির বিষয় আলোচনা করি.ত পারি না। বনবাসীদের উন্নতির বিষয় আমাদের িন্তা করিতে গাওয়া আরও উপহাসের বিষয়। কেননা, গুলুদের বংশ আমাদের অপেক্ষাও প্রাচীন এবং ভাহরো ্ৰে-স্ব গুঢ় তথ্য অবগত মাছে তাহা আমাদের নিকট অপরিজ্ঞাত। যে শ্রেণীর খাদ্যদ্রব্য ব্যবহার করিয়া আমরা এক মাসের মধ্যে মৃত্যুমুগে পতিত হই সেই ্রেণার খাদাদ্রবো হস্ত থ।কিয়া তাহারা সারাদিন কাজ করিয়া বাইতেছে এবং রাত্রির অধিকাংশ সময় নৃত্যাদি খানন্দে কটিইতেছে। তঃহারা বে বৈর্যা ও আনন্দের সহিত তাহাদের এই দারুণ তঃখ্যয় জীবন প্রমাননে উপভোগ করিতেছে ত,হার অর্দ্ধেক পাই.শও আমরা রুতার্থ হই।

তবে কেন আমরা তাহাদিগকৈ বর্মর বলিয়া নিন্দা করি? শ্রেতবর্ণের উত্তরীয়বিশিষ্ট, মস্তকে শোলার টুপী-ধ'রী, রাজ্ম কার্যালারের বাবুর নিকট হই.ত সেলাম-প্রাপ্ত নাগরিকের পাগ্নে বস্ত বৈগা অথবা কোর্কু কুৎসিত বা ক্দাকার বলিয়া প্রতিভাত হুইতে পারে। কিম্ব এখানে জিজ্ঞাসা করা যাইতে পারে, কে বা কাহারা প্রকৃত বর্ধর— বিখশিল্পী-নির্মিত পদ্যুগলকে গায়ের জোরে চর্মপিঞ্জরে প্রবেশ ্বাস্থাপূর্ণ, গতিবিধি সক্ষণ ও সাবলীল 🖟 কামার্শলতায় তাহাদের



গৌডজাভির শঙ্গোংসব

করান এবং বিদেশী বম্বের কুৎসিত •গোলাকার মোজার ভিতর পা ছুইটিকে রক্ষা করা এবং গাধার গলদেশের রক্ষুর ন্তায় গলবন্ধবারা গলদেশ বন্ধন করা, না হন্তপদকে উন্মুক্ত রাথিয়া স্বচ্ছন্দচিত্তে বৃনানীর মধ্যে পরিভ্রমণ করা ? ইহাদের মধ্যে কোনটি পাকত 'জঙ্লী' ?

শ্রীয়ক্তা রোনভা আধুনিক সভা বালিকার যে রূপ বর্ণনা করিয়াছেন তাহা এবং রবীন্দ্রনাথ সাঁওতাল ললনার যে রূপ বর্ণনা দিয়াছেন তাহাও নিমে দেওয়া গেল। পাশাপাশি রাথিয়া পাঠক বিচার করুন কোনটি বর্দ্দব নামে অভিহিত হইবার বোগ্যঃ—

''এ-বুগের সভা ললনাগণ শরারটিকে একটি ছবি বা প্রতিমা বলিয়া বিবেচন' করেন : উাহাদের ঠোটে র ০, গলায় হার, কানে ভূল, চুল কোকড়ান, বৃক্তিম জা-এসৰ তাঁখাদের সংজ স্বাভাবিক ভাব দূর করিয়া তাহার পরিবর্ধে কুজিম ভাব ধারণ করিয়াছে।

রবীক্রনাথ সাঁওতাল রমণীদের এইরূপ বর্ণনা দিয়াছেন :---মাওভাল রমণীরা সর্বদ। কায়ো ব্যাপ্ত পাকায় তাহাদের শরীর সজাবতা পরিলক্ষিত হইয়া থাকে। সর্বাদা ধূলি-সংস্পর্শে থাকিলেও তাহাদের স্থাবাল, সাস্থাব্যপ্তক অঙ্গ-প্রতাঙ্গাদি মলিন বলিয়া বোধ হয় না। বর্ত্তমানে সভ্য নার। সাবান, এসেন্স, হেজলীন, পমেটম ইত্যাদি কূত্রিম সোন্দর্য্যস্তান্তর উপকরণ সাহায্যে পরিচ্ছন্নতা রক্ষার বার্থ চেষ্টা করিয়া থাকেন। তাহাদের সাস্থাব্যপ্তক সভাব-সৌন্দযোর নিকট সে চাকচিক্য কোনরূপে তুলনা করা চলে না।"

এই বন্ত ভ্রাতা ভগিনীদিগকে ভালবাসার চোথে দেখা প্রত্যেক ভারতবাসীরই একাস্ক কর্ত্তবা। এখন এই এক কোটি আশী লক্ষ লোকের প্রতি সহাত্ত্ততি প্রদর্শন ও অর্থসাহাব্য করা আমাদের প্রত্যেকেরই উচিত। গদি প্রাঞ্জন হয় প্রাণ দিয়াও তাহাদের উপকার করা বাঞ্চনীয়। যদিও তাহারা তাহাদের অভ্যদয়ের জন্ত কোনও লোকের মুখাপেক্ষী নহে, তথাপি গদি কেহ তাহাদের নিকট বন্ধরূপে তাহাদিগকে প্রীতির চক্ষে দেখিয়া থাকে তাহা

হইলে তাহারা ক্বতপ্রতাম্বরূপ তাহাদিগকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করিবে। ইহা অপেক্ষা অধিক কিছু প্রতিদানের আশা যেন তাহারা না করে।

নব্য ভারতবাসীর ধমনীতে বনভূমির আদিম অধিবাসিগণের শোণিত প্রবাহিত হওয়া প্রয়োজন। এই শোণিত তাহাদিগকে নববলে বলীয়ান করিবে। অরণ্যই ভারতের ফদয়য়রপ। অরণ্যই একদিন মুনিঝিবিদিগের আশ্রম ও আবাসক্ষ ছিল। অরণ্যই একসময় ভারতের সর্বোৎক্র সাহিত্য ও দর্শনের উৎপত্তি হইয়াছিল। ফুতরাং অরণ্য ও অরণ্যবাসীকে ভারতবাসী অশ্রদ্ধা করিতে পারে না।*

* ১৯০০ সালের নবেম্বর মাসের 'মডার্গ রিভিউ' পরে প্রকাশিত ভেরিয়ার এল্উইন্ সাংধ্বের ইংরেজা প্রবন্ধ অবলম্বনে।

গোপন কথা

শ্রীপ্রমথনাথ বিশী

[প্রাচীন পার্সাক হইতে]

গোপন কথাটি সথি আমার তৃমি রে!
মনে বাহা জানা যায়, নাহি বায় বলা,
ছায়া সম আভাসিয়া বেহাগের মীড়ে
বাসনারে করে বাহা বেদনা-বিহ্বলা।

বে-কথাট প্রভাতের প্রথম কমল, প্রদোষের প্রতীক্ষিত গোধুলির তারা, পুমভাঙা মধ্যরাতে অঞ্চ-উতরোল রজনীগন্ধার তুমি আকুল ইসারা।

তুমি মোর দেই কণা, বাহিরে আনিলে আলোকে ঝরিয়া যায়, এত সুকুমার! আপনি দেখি না যারে, পাছে পরশিলে বিরহের তপ্তখাদে খদে দল তার।

তুমি মোর সেই কথা স্মরণের পারে নিজেরে বঞ্চিত করি রাথিয়াছি গারে!



ক্ষণিকের মায়া

শ্ৰীদ্বিজেম্ৰলাল ভাছড়ী

পাত্রের বরস বছর বোল এবং পাত্রীর বরস নয় কিংবা দেশ। পাত্র আমি ছয়ং এবং পাত্রী হইতেছে আমার মামার মনিব পদ্ধীবাসী কোন এক ছোট-খাট জমিদারের তৃতীয় বা চতুর্থ কল্যা। অতএব এখানে মাতুলই ঘটক বলা বাহল্য। তিনি মায়ের কাছে কল্যার বিবরণ দাখিল করিলেন, "মেয়ের বয়েস তো এখন তেমন কিছু হয়নি। তবে বলতে পারি রং বেশ পরিষ্কার, মুখ-চোখ-নাকও মোটের ওপর ভালই। মেয়ের গড়ন খারাপ এ-কথা কাউকে বলতে শুনিনি। বয়েসকালে দেখে নিয়ো এ-মেয়ে কেমন ফ্রন্সরী হ'য়ে দাঁড়ায়।" তাঁহার বক্তব্যের সরলার্থ হইতেছে যে, এই আম্র-মুকুলের অনতিসারতের মধ্যেই তাহার ভাবী মিইছ্-সন্তাবনার প্রাচুর্য্য ফ্রন্সাইরপেই বাক্ত।

মা মামার সহোদরা, তহুপরি একাধারে নারী ও মাতা। স্বতরাং করার এবন্ধি রূপবর্ণনার তাঁহার মনটা ভিজিয়া কাদার মত নরম হইয়া ওঠাই স্বাভাবিক। তত্রাচ মামা রূপের সঙ্গে গুণেরও একটা আন্দাজ দিলেন এবং সে গুণাবলী রীতিমত কাঁচা, অতএব গড়িয়া-পিটিয়া মনোমত ধরণে পাকা করিয়া লওয়া চলে,—ইহা জানাইতেও ক্রটি রাধিলেন না। তারপর পরিশিষ্টরূপে যোগ করিলেন, "বলেছে দেবে-থোবে মন্দ নয়। ওঁদেরও হাত থ্ব আছে।"

ইহার পর বে-কেহ অসংশরে বলিতে পারে, আমার মারের মানসচকুর সামনে ভাবীকালের কতকণ্ডলি ফুদর্শন ছবি ভীড় করিয়া আসিয়া হাজির হইরাছে, অনেকটা-চলচ্চিত্রের চঞ্চল চিত্রলেখার মত। আমি তাহার দৃষ্টাস্তও দিতে পারি, যুখা,—ছোট্ট একটি ফরমা রঙের মেরে, ভূরে-শাড়ী পরা, মা'র সঙ্গে সঙ্গে ফাই-ফরমাস খাটিয়া ব্রিতেছে ফিরিতেছে; ছুটির আবেদন বেচারীর মুখে-চোথে

ফুটরা উঠিতেই মা হাসিমুথে দরখান্ত মঞ্র করিতেছেন, "যান্ত মা, এখন একটু খেলা ক'রো গে।" কিংবা, ছেলে-বৌরে তাদের বিবাদ-বিসম্বাদে তাঁহাকেই সালিসি মানিয়াছে, এবং তিনি বিচারের তুলাদণ্ড হাতে লইরা অত্যন্ত গন্তীর হইয়া বলিতেছেন, "তোদের জ্বালায় আমি আর পারি না বাপু।" এমনি করিরা ছবির পর ছবি ইছোমত আঁকিয়া যাণ্ডয়া চলে কিন্তু ছবিগুলোকে সত্যকারের করিয়া তোলা নির্ভর করে ইহার আবেদনটুকু যোগ্যস্থানে সার্থকভাবে পৌছাইয়া দেণ্ডয়ার উপর। সে যোগ্যস্থান এই কুদ্র সংসারচক্রের মূলাধারে; সেথানে বিসম্বা আছেন একটি করা, নিজ্মির প্রক্রম মানুষ,—ব্যক্তায়ী এবং নির্বিরোধী ব্যক্তি; দশে-পাতে থাকেন না,—তব্ত তাঁহার গান্ডীর্যের ছায়া কিংবা শ্বিতহাসির ছিটাফোঁটা চক্রের গতিনির্দেশ নির্দ্ধারণ করিয়া দেয়।

অতঃপর সময় বৃঝিয়া কথাটা বাবার কানে উঠি**ল। বাবা** বলিলেন, "ছেলে যে অত্যন্ত ছেলেমান্নয়।"

মাও সায় দিলেন, "ছেলেমাস্থ তো বটেই। তাই ব'লে কি তোমার ছেলের আর বিয়ে হবে না ?"

মাতৃশও সেথানে উপস্থিত। তিনি হ্বর দিলেন, "তোমার ঘরও নেহাৎ থারাপ নয়। ওঁদের অবস্থা বেশ ভালই। কুটুপিতায় কিপ্টেমি করতে কথনও দেখি নি। অস্ত মেয়েদের বিয়ে তো আমার চোথের সামনেই হয়েছে, থরচ-পত্তর সবই আমার হাত দিয়েই হয়েছে।"

বাবা মন দিয়া শুনিলেন, তারপর অতি সংক্ষেপে উদ্ভর দিলেন, "বড় ছোটঘর।"

উত্তর সংক্ষিপ্ত কিন্ত তার তাৎপর্য্য অস্পষ্ট নয়। মামা যুক্তি থাড়া করিলেন, "ওঁদের সব কাজই কুলীনের খরে হয়েছে। সেদিক থেকে আজ্ঞকালকার যুগে ওঁদের কুলীন বলা চলে—জান ?" বাবা হাসিরা উঠিয়া মামার পিঠ চাপ্ডাইলেন, "শালার বন্ধি কি!"

ইহার পরই আমার মায়ের ছ-চোথে অঞ্চর বান ডাকিরা ওঠা উচিত ছিল এবং তাহার সঙ্গে ছর্জ্জর অভিমান, কারণ তাঁহার ভাইকে বাবা অহেতুক গালি দিয়াছেন। বোধ করি কিছু হইয়াও থাকিতে পারে, কিছু সে নাটকীয় দৃশ্য আমার চোধে পড়ে নাই। এইটুকু মাত্র শুনিয়াছিলাম, মামা বলিতেছেন, "ছেলে ওঁদের চোধে ধরেছে বলেই এত ধরচ-পছর করতে ওঁরা পেছপাও হচ্ছেন না।"

অর্থাৎ এই পাত্র কন্তাপক্ষের দেখা এবং খ্ব জানা। কারণ ইস্কুলের ছোট-বড় নানা ছুটি উপলক্ষে এই পাত্র ধধন মাতৃলালয়ে যাইত, তখন ভাহার দিন কাটিত ঐ কন্তাপক্ষের বাড়িতেই। মধ্যাহ-অ'হার কালে কন্তার পিতা আমার ডাকিতেন, "এদ, বাবাজীবন, পাতা হয়েছে।" 'বাবাজীবন' ভাক জামাতাবাবাজীউ করার অভিলাষে পরিণত,—এরূপ সক্ষেহ করা চলে।

এই ভূমিকার পর কন্তাপক্ষের দিক হইতে আর কোন সাড়াশক আসিল না। বাবা নিশ্চিত্ত। শুধু মা ছোটগাট কীর্ষধাস কেলেন, "বেশ ভালই হরেছে। মেরের বাপের বড় শুমোর।" মাঝধান হইতে আমার মাতৃলালরে যাভারাত কঠিন নিধেধে বন্ধ হইরা গেল।

বলা নিশুরোজন যে বিবাহ হইল না। শুধু তাই নর,
আমার বাবার সেকেলে দ্রদর্শিতার নিষিদ্ধ প্রেমের কোন
জটিল কাশুও জনিল না। ঘটনাটা বহু প্রাতন, কিন্তু মনের
মধ্যে সহসা এই বিগত দিবসের স্থরটা আজই বা কেন
ৰাজিয়া উঠিল ভাবিতেছি।

যাই বলি না কেন অভীত বস্তান মন্ধ নয়। অভীতের
শ্বতি মনের মধ্যে একটা অভ্ত মোহ রচনা করিতে পারে।
ভাহা না হইলে এই পৃথিবী হন্ধ নর-নারী অমন করিয়া
ঐ অভীতের পানে চাহিরা থাকিবেই বা কেন! তাই আমি
এত বিপর্যারের মধ্য দিয়া আসিরাও আজ বসিয়া গিরাছি
প্রাতন দিবসের বাপ্সা পাতা উল্টাইতে। ভার রে
সেকাল! কোথার গেল বা আমার সেই মামার বাড়ি,
মামা-মামীর আদরষত্ব, মারের ভালবাসা, আর বাপের
ভারহনীড়া মারের ভীক বুকের তলার একটি ঘোষ্টা-চাকা

ছোট্ট বৌ লইরা ঘর করার বে-সব সাধ লুকাইরা রহিরাছিল, কালের কোলে ভার কোন চিহুরেখা আজ নাই। শ্বতির এই রেশটুকু না থাকিলেও চলিত, কোন ক্ষতিই হইত না; তবে এই নিভৃত আঁধারে একেলা বসিরা এমনি করিয়া মনের সঙ্গে রঙ্গ-বিলাস রসিরা রসিরা উপভোগ করাইইত না।

এইখানে একটু ভূল বুরিবার আশকা আছে বলিরাই বলিতেছি, আমার এই কৌমার্য্য বা ভবদুরে জীবনযাত্রার সঙ্গে উক্ত ঘটনার এতটুকুও সম্বন্ধ নাই। এমন কি, বর্ণনামতই যে ব্যাপারটা ঘটনাছিল তাহাও নিশ্চিত করিয়া জানি বলিতে পারি না। বর্ণনাটা আমার অসুমান মাত্র। আর আমারও নিশ্চল-নীড় রচিত হইতে বিলম্ব নাই। মাসথানেক হইল প্রীমতী নিভাননীর সঙ্গে আমার আলাপ জমিয়াছে। এবং সমরের অল্পতা সংস্কেও আমরা পরম্পারকে বেণী করিয়া বুরিয়া ফেলিয়াছি। ইহার অবশুভাবী ফলম্বরূপে একটি নির্দিষ্ট শুভদিনে তিনি আমার আকাশে গ্রুবভারার মত উদিত হইতে সলজ্যে স্বীকৃত হইয়াছেন। সংবাদটা ঘটা করিয়া বন্ধ্মহলে প্রচার করার আবশুক বোধে আমরা তৃজনে পরামর্শ করিয়া নিময়ণপত্র আজই ছাপিতে দিয়া আসিয়াছি।

ইহার পর এই শ্বভি-হ্রের গুঞ্জনকে ব্যর্থ প্রেমের হতাশ প্রশার হতাশে। জ্বান বলা চলে না। উপস্থিত বলা চলে, আমার মনের বর্ত্তমান অবস্থা অনেকটা অত্যন্ত আহলাদে কাঁদিয়া কেলার মত। তাই এই রঙীম শ্বগ্ন নিজেকে নিরালা আঁধারে পাইয়া বিশ্বত শ্বভির পটে হঠাৎ জমকালো রং চড়াইতে ক্রক্ক করিভেছে এবং বোধ করি তাহার সঙ্গে বাপের সেকেলে মভি-গভিকে সংগোপনে শ্বভি

তবুও এমন করিয়া রং চড়ানোর পর্যাপ্ত হেড় ইহা নয়। এখন মনে পড়িতেছে, ইহার হেড় রহিয়াছে, মাস-করেকের পূর্বের একটি ঘটনায়। সেই কথাটা বলি।

বেশমাতার সেবা উপলক্ষ্য করিয়া বক্তৃতা দিয়া ঘুরিরা বেড়াই, বলিতে গেলে আমার শেশাই এই। তাই এক স্বন্ধ পারী হইতে ডাক পড়িয়াছিল, বক্তৃতার ধুবশক্তিকে উদুদ্ধ করিয়া গাঁরে একটি স্থারী প্রতিষ্ঠান গড়িয়া দিয়া আসার জন্ত। বড় বক্তা নই, ভবে এই কপালে। আঁকা হিল কারাবাদের রা**ন্ধটিকা,** তাই বড় বড় নেতাদের মত বিপুল ভিড়ের হর্মবনি অদৃটে না স্কৃটিলেও, আদর-মভার্থনার ক্রটি হুইত না।

ষ্টেশন্ হইতে গ্রাম স্বরে। গব্দর গাড়ী ছাড়া অন্ত প্রকারের যানবাহন এখানে হলভ। তাই স্থির করিলাম, গল্প করিতে করিতে পায়ে হাটিয়া চলাই হইবে যুক্তিযুক্ত।

"আপনার যে কন্ট হবে—"

"চল তো বাবু। হেঁটে কে হারে আর কে জেতে আমি দেখে নেব।"

গ্রামের দীমানার মধ্যে পৌছাইতেই মনে হইল, এ গ্রাম আমার খুবই পরিচিত।

ঐ আঁকাবাঁকা উচুনীচু পণ, গাছের পাতার হুর্যোর কিরণ, বা পাদের বাঁদের ঝাড় আর পাতার থস্ থস্ শব্দ, ঐ পুকুর পাড়ের তাল-নারিকেল গাছের সারি, পূব দিকের পর্ণক্রীর,—এরা স্বাই বেন আমাকে অতি পরিচিতের হুরে সাদরে আহ্বান করিতে:ছ। হুতরাং সন্দেহের অবকাশ ছিল না; তবুও সম্পূর্ণ নি:সংশ্বর হুইবার অন্তই আমি জিঞ্জাসা করিলাম, "এ কোনু রহমতপুর হে?"

সঙ্গীরা আমার প্রশ্নের অর্থ ঠিক বুঝিণ না। আর বুঝিবেই বা কি করিয়া? একজন প্রামের ইতিকথা দিয়া পরিচয় দিতে চাহিল, "বাদশাহী আমলে…"

আমি তাহার বক্তব্যে বাধা দিয়া জানিতে চাহিলাম বে, আমার মাতৃলের নাম তাহাদের কাছে পরিচিত কি না। কিন্তু প্রশ্নটা উহারা অন্ত অর্থে লইল, কেন-না তাহাদের মধ্যে যে বরোজ্যেষ্ঠ সেই বলিল, "আপনার থাকবার জাগা করা হরেছে হরবিলাসবাবুর বৈঠকখানার। আপনার কোনো অস্থবিধেই হবে না। হরবিলাসবাবু চমৎকার লোক।"

হরবিলাসবাবু! তারপর পথের ছোটখাট নির্দ্ধেশের জ্ঞা আর আমাকে সঙ্গীদের মুখাপেক্ষী হইরা থাকিতে হইল না। নিত্য-নৃতনের চাপে পুরাতন চাপা পড়িলেও একেবারে অতলে তলাইরা বার না।

গন্ধব্য স্থানে আসিরা পৌছাইডেই একটি বৃদ্ধ অভ্যন্ত ব্যস্ত হইরা ছুটিরা আসিলেন, "এই বে, আসুন, আসুন। বৃদ্ধ হট হ'ল আপ্নার—" চিনিতে কট হইল না। পদ্ধূলি লইরা আমি কৌলিক পরিচর দিলাম। বৃদ্ধের মুখ হাসিতে ভরিরা উঠিল,— "ভূমি আমাদের সেই জীবন, এতবড় হরেছ,—আমি তো চিন্তে পারি নি। কতকাল আগে দেখেছি, তখন ভূমি ছেলে মামুষ।…এস বাবা এস। ভূমি ভো ঘরেরই ছেলে—"

সন্ধ্যার পর অন্ধর মহলে আমার ডাক পড়িল।
মামাবাড়ির সম্পর্কে আমি হরবিলাসবাব্র ব্রীকে মামীমা
বলিয়া ডাকিতে অভ্যন্ত। সাকাৎ হইতেই তিনি আমার
মামা-মামীর অকাল বিয়োগের জন্ত করেক ফে াটা
অঞ্চ বিসর্জন করিয়া বলিলেন, "ভূমি বে কোন কালে
আসবে, একথা আমরা স্বন্ধেও ভাবি নি। ভাগ্যে স্বন্ধেনীর
হক্তুগ উঠেছিল তাই ভোমার দেখা পাওয়া গেল।"

তারপর আমার পারিবারিক খুঁাটিনাটি সংবাদ জিজ্ঞাসা
করিতে সুরু করিয়া দিলেন। দেখিলাম, আমার ভাগ্যবিপর্যায়ের অল্প-বিস্তর সংবাদ ভিনি রাখেন। বলিলেন,
"তোমরা আমাদের ভূলে খেতে পার, আমরা তো আর
পারি না। লোকজন পেলেই খবর নি', আমাদের জীবন
কেমন আছে, ভাল আছে তো? ধেখানেই থাক না,
বাবা, সুথে থাক, এই কামনা করি।"

কথাটা সতা। বাঁহাদের স্নেহছায়ায় এককালে দিন কাটাইয়াছি, তাঁছাদের এমনি করিয়া ভূলিয়া যাওয়া বথাৰ্থই অমাৰ্জ্জনীয়। তাই এ অভিযোগের বিক্লমে আমার বলিবার কিছুই ছিল না।

ঘরের মধ্যে সহসা একটি মেয়ের আবির্ভাব হইল।
মেয়ের চেয়ে ব্বতী নারী বলাই ভাল। মনে হইল, ইহাকে
ছিপ্রহরে মলিন বাসে ও অনাবৃত ক্লফ কেশে আমার সমুধ
দিয়া বাতায়াত করিতে দেখিয়াছি। ধ্ব সম্ভব এই বাড়িরই
কোন বিধবা দাসী, তবে তাহার গতিবিধির সজে দাসীছের
কোন সঙ্গতি ছিল না বিলয়াই মনটা তখন অকারণে
বিরক্ত হইয়া উঠিয়াছিল।

মেরেটি আমার সামনে আসিরা নিঃসংখাচে প্রশ্ন করিরা বসিল, "আপনি বিরে করেন নি ?"

প্রশ্নটা সম্পূর্ণ অহেতুক এবং অভ্যস্ত বিরক্তিকর। ঘরে

আদীপের আলো, কাছের লোকের মুখ তেমন স্পাষ্ট করিয়া দেখা বার না। আবে আমার ইচছাও হইল না।

সে প্নশ্চ প্রশ্ন করিল, "আপনার বুঝি বল্তে লজ্জা করছে?"

"না, আমি এখনও বিয়ে করি নি।" "কেন ?"

"ফুরস্থ হয় নি ব'লে।"

"ওমা, কি রকম মানুষ গো, স্বদেশী করলে কি মানুষের বিষে করার একটু সময়ও ক্ষোটে না,"—হাসিয়া উঠিয়া সে কোন জিনিষ শইমা ঘর হইতে বাহির হইমা গেল।

আমি অত্যস্ত বিশ্বরে মামীমার মুখের দিকে তাকাইতেই তিনি হাসিয়া বলিলেন, "কি তুমি চিন্তে পারলে না? ও বে অনু।"

ইহার পরও চিনিতে না পারা উচিত হয় না, কিন্তু নামের স্ত্র ধরিয়া মনের পুরানো পাতা উল্টাইয়া দেখা গেল পরিচয়ের কোন ঠিকানাই মিলে না। অথচ লজ্জায় আর স্পষ্ট করিয়া জিজ্ঞাসা করাও চলে না! মুখ নীচু করিয়া বসিরা রহিলাম। মামীমা বলিতে থাকিলেন, "অনু দূর থেকেই তোমাকে চিন্তে পেরেছিল। ওই তো গিয়ে থবর দিলে—মা, যে এসেছে সে দেখতে ঠিক জীবন-দাদার মত, বাবাও জীবন জীবন বলছেন।"

এখন অন্মুকে আন্দাজ করা কঠিন নয়। ভাগ্য ভাল বে দাসী স্থির করিয়া তাহার প্রশ্নের উন্তরে কিছু কট্স্তি করিয়া বসি নাই।

মানীমা অনুর হুর্ভাগ্যের ইতিহাস বর্ণনা করিলেন।
বিবাহ হইরাছিল কুলীনের ঘরেই। অবস্থা ভাল, মোটা
ভাত কাপড়ের অভাব না হুইবারই কথা। অবশ্র বর দোলপক্ষের, তবে বরস্থ বে খুব বেনী তা নর। কিন্তু মেরের
পোড়া কপাল, সহিল না; হু-বছর না ঘুরিতেই হাতের
নোরা থসাইরা, সিঁহুর মুহিরা হুতচ্ছাড়ী আবার বাপের বুকে
আসিয়া বসিরাছে। সঙ্গে আনিরাছে সভীনের একটি মেরে
আর একটি ছেলে। সে মেরেরও কি আশ্রুর্য বাড়ন্ত গড়ন,
পার করিতে আর বিশম্ব করিলে চলিবে না। মানীমা
বলেন আর আঁচেল দিয়া চকু মার্কনা করেন।

আমি সাম্বনা দিবার জন্ত বলিদান, "কি করবেন বসুন, অদৃষ্টের উপর তো আর কারুর হাত নেই।"

"হা বাবা, অদৃষ্ট, অদৃষ্ট ছাড়া আর কিছুই নয়।"

কিছুক্ষণ চুপ করিরা থাকার পর বলিলেন, "অম্কেতামাদের ঘরেই দেবার ইচ্ছা ছিল। সদাশিব ঠাকুরপোকে দিরে আমরা একবার তোমার বাবার কাছে কথাও পেড়েছিলুম। আমরা তোমাদের চেয়ে নীচু ঘর ব'লে তোমার বাবা রাজী হ'লেন না। হ'লে বে কত মুখের হ'ত! হতভাগী কি অদৃষ্ট নিয়েই এসেছে,—নিজেপুড়েছে, আমাদেরও পুড়িয়ে মারছে।"

বৃঝিতেছি, বেচারী অন্তর অকাল বৈধব্য মামীমার বৃকে
বড়ই লাগিয়াছে । ঐ সব কটু বিশেষণ প্রয়োগে অনুত্র
অদৃষ্ট-দেবতা স্প্রসন্ধ হইবে না,—মা'র মন ইহা বোঝে না।
তিনি এইভাবে তৃঃধের একবেমে প্নরাবৃত্তি করিয়াই
চলিলেন।

অনুই আসিয়া আমাকে এই অম্বস্তিকর অবস্থা হইতে মুক্তি দিল। আমাকে জিজ্ঞাসা করিল, "আপনি আমায় চিনতে পারেন নি?"

আমি খুব পাহস করিয়া তাহার মুথের উপর দৃষ্টি নিবদ্ধ করিবার চেষ্টা করিয়া উত্তর দিশাম, "পারব না কেন ? খুব পেরেছি।"

"আপনার চিন্তে পারার বৃঝি এই নমুনা ? উত্তর না দেওয়াই শোভন।

মামীমা বলিলেন, "তোর কি-যে কথা অনু, সেই কত ছেলেবেলায় দেখেছিল, তারপর কত বদ্লে গেছে, চেনা কি সহজ?"

অনু মা'র কথা গারে মাখিল না। সে বলিল,
"তবু এখনও ঘরে বৌ আসে নি। স্বদেশী করতে এসে
বোনকে দেখে যদিও বা একটু ম'ন পড়ে, বিরে করলে
সেটুকুও ম'ন থাকবে না।—তাই না জীবন-দা ?"

"বি য় করার সময়ই জুটুক—"

"তার মানে? সন্নিসি হরেছেন না কি?"

ভারি গে:ছের উত্তর দিরা মুখ বন্ধ করিব ভাবিতে-ছিলাম, কিন্তু সং-মেরের ডাকে অনু চলিরা গেল, স্থভরাং আমার উদ্ভর শোনান হইল না।

অনুর কথার স্ত্র ধরিয়া মানীমা বলিতে স্কুক করিলেন, "হা বাবা, এ রকম ছন্ত্র-ছাড়া দিন কটোন একটুও ভাল দেখার না। বিরে কর, সংসারী হও, ছেলে-পুলে নিরে ঘর সংসার কর। আমরা দেখে শুনে মরি।"

হ্প-ছ: থের প্রসঙ্গ সাক্ষ করিয়া, ক্লান্ত দেহ-মন লইয়া আসিলান শুইতে। কিন্তু ঘুন যেন আসিয়ণও আসে না। প্রদীপের অফুক্রন আলোম অফুর মুখবানা সম্পূর্ণ করিয়া দেখিতে পাই নাই, তর্ও বেটুকু দেখিয়াছিলান তাহাতেই মনে হইয়াছিল, বৈধ:বার কঠিন কছে তায় ওর বর্ণের ঔক্জালা হইয়া উঠিয়াছে য়ান ও কক্ষ,—হাই-চাপা স্তিমিত আগুনের মতই। ওর হাসি-খুনী, ওর গতিচাঞ্চলা সর্বক্ষণই যেন চাপা, উথ্লাইলেও কবনও ছ-কুল ছাপাইয়া উচ্ছুসিত হইয়া ওঠে না। মন মনে অফুশোচনা হইতে লাগিল, ওকে দাসী-পর্যায়ে ফেলা আমার সক্ষত হয় নাই, আর ওর স্বাভাবিক প্রশ্নে অতটা বিরক্তিবোধের কোন সক্ষত হতুও ছিল না।

কাঠের জানালা খুলিয়া দিতেই তারাভরা নিশীথ আকাশখানির নিঃশব্দ সঞ্চরণ অন্তব করিলাম। দেখিলাম, এই সমাহিত নিস্তক্কতার জনশৃত মহারণ্যে আমিই একা জাগিয়া ব্যিয়া রহিয়াছি।

এই শাস্ত নীরবতার প্রতিবেশের অবসরে হুচাৎ
আমার এই মনটা বন্ধন-ছিন্ন পাগ্লা বোড়ার মত দিক্বিদিক্
জ্ঞানশৃত হুইয়া দিল ছুট্। তারপর রামায়ণ-বুগের
মুখপোড়া হুনুমানের মত বিশাল বিশ্বত অতীতের সাগর
ডিঙাইয়া দেই ধোল বছরের বন্ধনটায় গিয়া ছাজির হুইল।

মান্ন যের মন তথু অঙ্তই নয়, তার নির্লক্ষতারও ত্লনা নাই। কারণ সে দেখা স্কুক করিয়াছে, আমার মা প্রচুর চোথের জল ধরচ করিতেছেন, "ঐ মেয়ের সলেই—।" বাবা গত্যস্তর নাই দেখিয়া রাজী হইলেন। এবং আমার ক'নে ঐ নয়-দশ বছরের মেয়ে অয়,—এক হাতে এক মুল লবন এবং কোঁচড় ভরিয়া কাঁচা কুল লইয়া সিলিনীলের ডাক দিতেছে, "আয় না ভাই, আমগাছতলায় বসে কুল ধাই গে—"

কিংবা ধরা যাকু, আমার ক'নে আমার হাত ধরিয়া

টানাটানি সুক্ল করিয়াছে, "জীবন-বা ভাই, ছটো কাঁচা আম পেড়ে বাও না ভাই।"

মন্দ নয়। বোমটা টানিরা এই অসু আমার ইসারায় ডাকিবে,—মন্দু কি ?

এই ছোট্ট অসুর মনোরশনের ভাবনার আমার মাথার দেশোদ্ধারের অপ্ন স্থান পাইত না। ছোট থাট শান্তি-অশান্তির জ্ঞালার মন সর্বদাই ব্যাপৃত থাকিলে এই মুক্তি-ক্মনার প্রচণ্ড স্থপ্ন-কুধার হাত এড়ান যাইত।

মনকে শাসাইতে লাগিলাম, এ বড় অন্তায়। দেশ-মায়ের অশুসিক্ত মূণ, শৃঞ্জার নিদারণ বেদনা—এ ছাড়া আর কিছু ভাবার তোমার অধিকার নাই।

যে কাজের জন্ত আমি আছুত, সে কাজ সাফল্যমণ্ডিত
বলা যায়। ছেলেরা কাজের জন্ত এক টুক্রা জমি সংগ্রহ
করিতে পারিয়াছে এবং গ্রামে গ্রামে ঘুরিয়া অর্থসংগ্রহণ্ড
মন্দ হয় নাই। তাই ছেলেদের ঐকাস্তিক ইচ্চা, আমি
তাহাদের সভ্দের কর্ণধার হইয়া বিস। আমার ভব্যুরে
জীবন, কোন স্থানে স্থায়ী হইয়া বিসয়া জীবনযাতাা নির্কাহ
করা অদৃষ্টে লেখা নাই। কিন্তু হইলে ভালই হইত।
পদ্লীমাতার স্নেহচ্ছায়ায় বিদয়া কাজ করা দেশ-দেশান্তরে
ভগ্ন বভ্তাবাজি করিয়া বেড়ানোর চেয়ে চেয় ভাল।
এতে তব্ ঘরের মায়ার কিছু আস্বাদ পাওয়া যায়।

তাই বিদায়-দিবদে অনুভব করিতেছি, আমার উৎসাহ যেন নিস্তেজ হইরা আসিরাছে, একটা অলস ফ্লান্তিতে আমার সর্ব্ধ দেহমন যেন আছের হইরা আসিতেছে। দেখিতেছি, এই অপরাষ্ট্রের অবসন্ত্র রৌদ্র ও ছারার লীলার প্রতিবেশে মানুষ ও মাটির মাধ্য একটা অতি অভ্ত মারার স্নেহনীড় গড়িয়া উঠিয়াছে, তাহার বাধন কাটানো কম কঠিন নয়। তাই বোধ করি, পদ্লীমারের ছেলে বৃহত্তর জীবনের সন্থানে বাহির হইতে গেলেই দেখে মারের জ্বলভরা চোখের নীরব হাতছানি, আর শ্রামল তক্ষ্ণভার পিছুটানে ভাহার গতি হয় বারে ব'রে প্রতিহত।

এই ক'দিনই মামীমা ধে-কথাটার প্রতি অস্পষ্ট আভাস দিবার চেটা করিয়া ছন, আজ ভাহা হইল একটু স্পষ্ট। জান'ইলেন, অন্তর সৎ-মেরে পাত্রী হিসাবে মন্দ নয়, বর্ষ জন্ম ইংলও পুর বাড়ন্ত গড়নের নেরে এক ভার ওপর বিরের জল পড়িলেই বাড়িয়া বাড়িয়া উঠিবে, স্তরাং বখন ঘর-গোত্রে আটকায় না তখন কোন দিক হইতেই বেমানান হইবে না। আমি হাসিয়া উঠিলাম। এই রক্ষ উচ্চ হাসির প্রভাগতর দেওরা ছাড়া আমার গত্যস্তর ছিল না। অসং কথাটাকে অন্ত রক্ষ আকার দিতে চাহিল, "মা বলছেন, আপনার গলে অনেক ছেলের আলাপ, আপনার মত স্বদেশী ক'রে বেড়ায়, তাদের মধ্য থেকে একটা স্থপান্তর আমার মেরের জন্ত যোগাড় করে দিতে পারেন তো।"

ব্যাপার মন্দ রহস্যের নয়। যে-অমূর একদিন বো হইয়া ডব্রুনী হেলাইয়া শাসন করার সম্ভাবনা ছিল, সেই অমূই হু-দিন বাদে সৎ-মাশুড়ী হইয়া বলিবে, "ও-টুকু হুধ ফেলে উঠো না বাবা,—"

হাসি চাপিরা রাখা পুবই কঠিন। কিন্তু অন্তর মনোভাব স্পষ্ট বুঝিলাম না, এবং আমার মত পুরুষের বোঝাও সাধ্য নয়।

যাত্রার সময় আসিয়াছে। আমি প্রণাম করিলাম। হরবিলাসবাবু আশীর্কাদ করিলেন, "বড় হও, দেশের মুখ উজ্জ্বল কর।"

মামীমা আশীর্কাদ করিলেন, "বেঁচে থাক বাবা, সংসারী হ'রে সুখে ঘরকলা কর।" তার পর অসুরোধ করিলেন, "আবার সময় পেলে এসো বাবা। এমনি ক'রে এসে তোমার মামা-মামীদের একটু থোঁক নিলাে বাবা।"

এখানে কিছু প্রাতনের আবির্ভাব স্বাভাবিক এবং ইহার ফলে এই মুহুর্ত্তের বাতাস একটু কঙ্কণ রসে আর্ক্র হয়া উঠে।

অসু বৃঝি কাছেই ছিল। সে ইহার মধ্যে একটা লঘুতার ছন্দ আনিয়া দিয়া এই বিদার ব্যাপারটাকে সহজ করিয়া দিল। একটু হাসিয়া বলিল, "আপনার বিয়ের সময় কিছু আমাদের নিয়ে থাকেন, ফাঁকি দেবেন না।"

হাসিয়া কহিলাম, "বদি করি তো নিশ্চই নিরে যাব।"

"আবার বদি—" শাসনের এই চপল ভঙ্গী আমার ব্যক্ষভায় ভড়তা হড়'ইয়া দিল।

গৰুর গাড়ী করির। যাতা। গৰু ছটিকে আমার জন্ত

এতটা কট দিতে আমার বিশুমাত আগ্রহ ছিল না, কিছু সকলেরই সনির্বাহ অসুরোধ,—মন:কুর হইবেন। তাই তাড়াতাড়ি অক্ষর হইতে বাহির হইরা যাইতেছি, অসু বাধা দিয়া বলিল, "একটু দাড়ান, তাড়াতাড়িতে ছাতাটা ফেলে যাবেন না।"

বলিয়া ছাতাটা আমার হাতে তুলিয়া দিল; তার পর
নতক্ষান্ত হইয়া গলায় আঁচল জড়াইয়া আমাকে একটি
প্রণাম করিল উঠিয়া দাঁড়াইয়া অনুচ্চ কণ্ঠে অনুরোধ
কানাইল, "আবার আদবেন কিন্তু—"

বইরে পড়িরাছি সমর-বিশেষে মানুষের কণ্ঠস্বরও কাপড়জামার মত ভিজা হয়। আমার কানে অন্তর কণ্ঠস্বর ঐ রকষ
ভিজা-ভিজাই ঠেকিল। তথু তাই নয়, ঠিক সেই মুহর্তেই
অন্তর মুখবানি সম্পট্ট দেখিলাম। দীর্ঘ আয়ত চক্ষু, ঘন পত্রপক্ষা, এবং তাহারই তলে রুক্ষ আঁথি-ভারা। গভীর কালো
দৃষ্টি সেই দীর্ঘ পক্ষের ছায়ায় চরম ক্লান্তিতে যেন কোন্ স্বদুরে
হারাইয়া গিয়াছে। একটি উদ্দেশ্য-বিহীন প্রতীক্ষা ওই তথী
ঋকু তমু বেইন করিয়া কোন্ পরম বেদনার উপ্রতপ্তাা
করিতেছে।

পুরুষের কঠিন মন কথন কি করিয়া শতিকাটির মত তুর্বল হইয়া উঠে, মেয়েদের মতই ভাবাবেগের ভারে মূইয়া পড়ে,—বলা ভারি কঠিন। তথন সে যাহা দেখে, যাহা শোনে, সবই ভূল, আগাগোড়া মিথ্যা। তাই আমিও দেখিয়াছিলাম, ঐ নারীটির চোখের কোলে জলের অছ কাজল-রেখা। তার চেয়েও কিছু বেশী দেখিয়াছিলাম, কোন জানালার অন্তরালে দাঁড়াইয়া এখনও সেই জলভরা চোখ ছটি এই অন্তমিতপ্রায় রবির রক্তরশ্মিতে গরুর গাড়ীর মন্তর গতি নিরীক্ষণ করিতেছে।

মনকে এই বলিরা কমা করিলাম, এই ক্ষণস্থায়ী ক্ষণের মারালীলার তাহার অস্কৃত-কিছু দেখা মার্ক্তনার বোগ্য।

ব্যাপারটা শ্রীমতী নিভাননীকে বলা আমার উচিত হয় নাই। কিন্তু প্রেমে-পড়া মানুষ শুধু ভেড়াই হয় না, নারীর অধমও হয়, অর্থাৎ তাহার পেটে কোন কথাই লুকান থাকে না। নিভাননী বলিল, "হরবিলাসবাবুকে নেমন্তর চিঠি পাঠানো অত্যন্ত অক্সায় হরেছে।"

আমি বলিলাম, "ভূমি ভূল করছ। হরবিলাসবার্

মামীমা, জন্ম,—এঁরা এতে ধ্ব খ্নী হবেন। জন্মর ঐ ব্যাপারটা ভূল বুঝো না। ওটা আমার নিছক কল্পনা। জন্ম জামার মনের মধ্যে ওরকম কল্পনা জাগিরে দিয়েছিল বলেই জামি তোমাকে দেখবা মাত্রই এত ভালবেসে ফেলেছি।" "অর্থাৎ ভূমি বলতে চাও আমরা—এই মেরেজাভটা ভোমাদের থেলার পুভূল ?" "এ তো বড় মুস্কিলের কথা। ওসব ছেড়ে দিরে এস একটু মুধোমুধি হ'রে ব'সে ভালবাসার স্বগ্ন দেখি।"

উত্তর আসিল, "আমার এখন ভাল লাগছে না। তুফি এখন যাও, আমাকে একটু ভাষতে সময় দাও।" তারপর শ্রীমতী ভাষিতে বসিল।

স্তিমিতায়মান

শ্রীজীবনময় রায়

তোমার গভীর চিত্তে যার ধ্যানে তুমি অবহিত,
সে ত আমি নহি;
আনন্দের পাত্র মোর ছিল রিক্ত, সুধার বঞ্চিত;
আনিরাছ বহি।
তোমার মঞ্ল কঠে মধুরস-বিহ্বল সঙ্গীত—
নির্মার উচ্ছল;
আমার সাগরতীর্থে তারই মন্দাকিনী তরক্তিত

नीनात्र प्रका

দীর্ষ দিন জীর্ণ তরী বাহিন্না এসেছি চলি আক্ষ দিনান্তের তীরে. বার্থ বৃত্কিত চিন্তে, অন্তরে বহিন্না দৈনা লাজ ঘুরিন্নাছি কিরে; বারম্বার যার পরে স'পিরাছি চিন্ত ঘুরালার, অসীম নির্ভরে, ঘুরস্ত ছ্দিনে মোরে ত্যাঞ্চনা গিরাছে নিরুপার;— অবহেলা ভরে।

আজি সেই ভগতরী প্রতীক্ষিয়া নিম অবসান
নিঃসঙ্গ অতলে,
চলিছে মছর গতি বন্ধুর তরজ-ধরসান
মৃত্যু-রসাতলে।
দিগত্তে খনার মেঘ বিহাতিছে প্রালয় ইলিড;
মরণের কোল
আমারে দিরেছে ডাক;—ধ্বনিডেছে ধ্বংসের সঙ্গীত
সিদ্ধ উভরোল।

এই নিংম্ব তৃংসময়ে কোণা হ'তে করিছ আহ্বান;
কারে ডাকো মিছে!
মোর কোণা অবসর শুনিবারে জীবনের গান!
মৃত্যু নিংম্বসিছে
আমার শিষরে বসি। স্তিমিত এ নয়নের আলো
অবসর প্রাণ;
সন্মুবে প্রশন্ত-সিন্ধু স্গন্তীর মিন্ধতার কালো
পূর্ণ মহাতাণ।

নয়নে নিবিছে দীপ্তি; জলস্থল আকাশ অক্ল সাগরসঙ্গমে; পথহারা বিহঙ্গমা ফুকারিয়া ডাকিছে আকুল নীড়-বিহঙ্গমে। সন্ধ্যাতারা অশুঅঁথি; দিগস্তে তিমির-অজ্ঞাগর ঘেরিল জলধি; ডাকিছে সংন রাত্রি, ডাকে ঐ আঁধার সাগর, শুক্ত-নিরবধি।

ফিরিবার নাহি পথ ; সক্ষুধে অনস্ত মৃত্যু-রাশি হানে উর্ন্মিদশ ; ছিন্নপাল ভগতরী রক্ষা উঠে গগন-বিলাসী নিষ্ঠুর চঞ্চল। পশ্চাতের শ্বতি আব্দ অন্ত গেছে অতীত পাধারে, বিদারের গানে ; মরণের যাত্রী, তারে মিছে ডাকা জীবনের পারে, সন্ধ্যা অবসানে।

রবীক্র-সাহিত্যে বাংলার পল্লী-চিত্র

শ্রীরাধামোহন ভট্টাচার্য্য

্রবীক্স-প্রতিভা সোনার কাঠি। যা ছুঁরেছে তাই সোনা হয়েছে। রবীক্স-সাহিত্য মণি-ভাণ্ডার। সে-ভাণ্ডারে অগণ্য অপরূপ মণি-মুক্তা ছড়ানো আছে বললে কম বলা হয়, বলা উচিত, মণি-মুক্তা দিয়ে তা ঠাসা, বোঝাই। আমার স্থির বিশ্বাস যে, রবীক্স-সাহিত্যের কোন একটা দিক সম্বন্ধে আলোচনা করতে গেলে সব চেয়ে ফুল্সর হয় থালি রবীক্স-নাথের সেই সম্বন্ধীয় কথাগুলি তুলে দেওয়া এবং নিজে কিছুই না বলা এবং হয়ত শেষ পর্যান্ত এক্ষেত্রে হবেও তাই, তবু নেহাৎ 'আলোচনা' কথাটার জাতিরক্ষার জপ্তেও যা রবীক্সনাথের নয় এমন কথা গোটাকয়েক অন্ততঃ বলতেই হবে, এই কথা মনে রেখে ভূমিকা শেষ করা বেতে পারে।

শৈশবে রবীক্রনাথের শাসন ছিল ভৃত্য-তন্ত্র। ছেলেদের খবরদারি করবার একটা অতিশয় সহজ এবং সরল উপায় তারা বের ক'রে ফেলেছিল—তাদের একেবারে বাড়ির বাইরে বেতে-না-দেওয়া। স্তরাং বাড়ির বাহিরটা রবী.জনাথের শিশু-মনে বছদিন ধরে একটা হুপ্রাপ্য আনন্দের উৎস ছিল। সে-আনন্দের প্রায় স্বটাই নিজের মনের মধ্যে গড়ে নিতে হ'ত অতি সামান্ত মূলধন পেকে-চাকরদের হাত থেকে হঠাৎ পালিয়ে পাওয়া কোন গ্রীম্ম-ছপুরে চুরি-করা অবকাশে, ছাদের আলিসার ওপর দিয়ে মুখ বাড়িয়ে, কিংবা তেতলার काननात गताल नित्र वाज़ित পেছনের বাগান নামধারী বে ছোট রাজাটুকু দেখা বেত তারই চীনেবট, নারিকেল-সারি, ঘাটবাধানো পুকুর আর ওপরের টুক্রো টুক্রো মেঘ-ওড়া নীল আকাশের মধ্যে চিলের :তীক্ষ ডাক থেকে। এইটিকে যে সামান্ত মূলধন বললাম, এ আমার বলবার ক্রটি ছাড়া আর কিছুই নয়, কারণ ত্রনকার, সেই:বন্দী শিশুর কাছে এই ছিল এক **প্রকাত** অনাবিষ্ণুত বিশ্বয়ের রাজ্য। রবীজনাথের মনের যে ওব তাঁকে আমাদের কাছে রবীজনাথ ব'বে প্রতিভাত, করেছে তাই ছিলু ঐ ছেলেবেলাকার বাড়ির পেছনের বাগানের বট-রান্ধিকেলছের। পুকুরবাটে পরী-রাজ্য থোঁজার। যাক, যে কথা বলছিলাম। এই হ'ল রবীক্সনাথের পল্লী-প্রকৃতির সঙ্গে প্রথম পরিচয়। যদিও জারগাটা ছিল জোড়াসাঁকো, তাহলেও তথনকার কলকাতার ভেতরে ফাঁকে ফাঁকে এমন অনেক ছোট টুকরো ছিল যার সঙ্গে পল্লী বলতে যা বোঝার তার কোন ভেদ ছিল না। রবীক্রনাথের নিজের কথাই বলি, 'তখন সহর আর পল্লী অল্পরস্বের ভাইবোনের মত অনেকটা একরকম চেহারা নিমে প্রকাশ পেত।' এই পরিচরটি কেমন ছিল তা পাই রবীক্সনাথের একার বছর বয়সের লেখা 'জীবনস্থাতি'তে

"জানালার নাচেই একটি বাট-বাধানো পুকুর ছিল। তাহার পুর্কা ধারের প্রাচীরের গায়ে একটা প্রকাণ্ড চীনা-বট—দক্ষিণধারে নারিকেল-শ্রেণী।"

এই বটটির সঙ্গে তাঁর বড়াই সথা, কিন্তু তার ঘন পাতার আবছারার ঝুরি-নামা আধ-অন্ধকার স্যাঁতসেঁতে তলার মাটিতে অনির্দ্ধেশ্যের সঙ্গে একটু যে ভয়ের আমেজ আনত না তা বলা নায় না। এই বটকে লক্ষ্য করেই লেখা—

নিশি দিশি দাঁড়িয়ে আছ মাথায় ল'রে জট,
ছোট ছেলেটি মনে কি পড়ে ওপো প্রাচীন বট ?
মনে কি নেই সায়াটি দিন বসিয়ে বাতারনে,
তোমার পানে রইত চেয়ে অবাক ছুনয়নে ?
মনে হ'ত তোমার ছায়ে কতই কি যে আছে—
কাদের বেন ঘুম পাড়াতে ঘুবু ডাকত গাছে।
মনে হ'ত তোমার মাঝে কাদের বেন যর,
আমি যদি তাদের হ'তেম, কেন হ'লেম পর ?— পুরাণো বট
(কড়ি ও কোমল)

"গণ্ডাবন্ধনের বন্দী আমি প্রায় সমস্ত দিন জানালার থড়খড়ি থুলিরা সেই পুক্রটাকে একধানা ছবির বহির মতন দেখিরা দেখিরা কাটাইরা দিতাম। সকাল হইতে দেখিতাম প্রতিবেশীরা একে একে সাম করিতে আসিতেছে। তাহাদের কে কখন আসিবে আমার জানা ছিল। প্রত্যেকের সানের বিশেব্ডট্রুও আমার পরিচিত। কেহবা ছই কাণে আঙুল দিরা কৃণমূপ করিরা ক্রতবেগে করেকটা ভূব পাড়িরা চলিরা বাইত; কেহবা জুব না দিরা গামছার ফল তুলিরা ফাবন মাধার ঢালিত; কেহবা জলের উপরিভাগের মলিনতা কাটাইবার জন্ত বার-বার ছই হাতে জল কাটাইরা লইরা হঠাৎ এক সমরে ধাঁ করিরা ভূব পাড়িত; কেহবা উপরের সি ড়ি হইতেই বিনা ভূমিকার সলক্ষে অলের মধ্যে ঝাঁপ দিরা আক্সবর্শণ করিত; কেহবা জলের মধ্যে নামিতে নামিতে এক নিংখাস কতকণ্ঠলা রোক অ'ওড়াইয়া লইড; কেইবা বান্ত, কোনো মতে মন সারিয়া গৃহে কিরিবার লপ্ত উৎপ্রক, কাহারো বা বান্তভার লেশমার নাই, ধারে মুস্থ মান সারিয়া, গা মুড়িয়া, কাপড় ছাড়িয়া কোচটা ছুই ভিন বার ঝাড়িয়া, বাগান হই ত কিছুবা ধুল তুলিয়া, মুছ্মল দোছুলগভিতে মানমিয়া লরাবের আরামটিক ব য়তে বিকার্ণ করি ত করিতে গৃহর দি ক তাহার যাত্রা। এমনি করিয়া ছুপুর বাজিরা যায়, বেলা একটা হয়। ক্রমে পুকুরর ছ'ট জনশ্ভ নিস্কর। কেবল রাজহাঁস ও পাতিহাঁসগুলা সারাবেলা ডুব বিয়া গুগলি তুলিয়া খায়, এবং চজুচালনা করিয়া বাভিবান্তভাবে পিঠের গালক সাক করি ত থাকে।"

এই হ'ল পট্নী-প্রকৃতির সক্ষেরবীন্দ্রনাথের অতি-প্রথম পরিচয়। আমরা একেবারে পদ্ধী-প্রাকৃতিই বলব। এর কিছু দিন পরে ডেমুজ্বরের কল্যাণে উহারা সপরিবারে গঙ্গার ধারে পেনেটির বাগানে কিছু দিনের জ্বন্ত চলে যান। সেইখানে উন্মক্ত বিস্তৃত পরিসরের সঙ্গে রবীক্রনা ধর প্রথম আলাপ। সামানই গঙ্গার জোরার ভাটা, নৌকার চল'চল, মেব্রষ্টিতে সমস্ত ঝাপসা হার যাওয়া, এদি কে পেছনের দিকে থিড়কীর পুকুরের প্রাচীরবেরা ছায়া-চাকা সঙ্কৃতিত একটু-খানি ঘোমটা-পরা সৌন্দর্য্য-- দেন ঘরের বরু। এইগুলি তার নতন-পাওয়া স্বাধীনতাকে মুধাপূর্ণ ক'রে তুলত। বাড়ির বনীশালার ইট কাঠ দরজার গঙী ছাড়িয়ে পল্লী-প্রার্ভির সঙ্গে ত জান শোন'র আরম্ভ হ'ল, কিন্তু পল্লী-জীবনের ত কিছুই ভানা হ'ল না। আসল যে পাড় গাঁ তার চণ্ডীমণ্ডপ, রাস্তাঘাট, হাটমা^দ, দৈনন্দিন জীবনবাত্তা— এর দেডরে প্রাবশ করবার জ্ঞান্তেও বালক রবীন্দ্রনাথের কৌতৃহলের অন্ত ছিল না। ঐ ত খিড়কীর ব'গানের পরেই গাঁরের পথ, ঐ পথে বেরিরে পড় লই ত সব জানা হয়ে যায়, কিন্তু একলা বেরিয়ে পড়বার সাহস তথনও জোগায় নাই। একদিন সকালে ব!ভির ছ-জন বড়লোকের পেছ ন পেছনে চুপি চুপি বেরিয়ে পড়েওছিলেন, কিন্তু হঠাৎ ধরা প'ড়ে বাড়ি ফিরে ষেতে হ'ল। তার কথায়—

"একদিন আমার অভিভাবকের মধে। দুই জন পাড়ার বেড়াইডে গিরাছি লন। আমি কৌতুহ লর আ বগ সামলাইডে না পারিরা উাহা দর অপোচ র পিছনে পিছনে কিছুসূর গিরাছিলাম। আমের গলি ত খন বনের ছারার সেওড়ার বেড়া নওরা পানাপুরু রর ধার নিরা চলি ত চলিতে বড় আনশে এই ছবি আমি মনের মধে আঁকিরা আঁকিরা লইডেছিলাম। একজন লোক অতঃবলার পুরুরের ধার খোলা গারে দীতন করিতেছিল তাহা আলও আমার মনে রহিরা গেছে। এমন সমর আমার অগ্রবর্ত্তিরা হঠাৎ টের পাইলেন আমি পিছনে আছি। তথনি ভৎ স্না করিরা উট্টলেন—যাও, যাও, এখনি কিরে যাও । কিরে আসতে হ'ল। এই বে পদ্দীজীব নের সঙ্গে পরিচ র বাধা, এ বাধা সম্পূর্ণ কে বিদ্দীবনে কখনই ঘুচল না। জন্ম ও পারিপাশিকভার জন্ম এই জীবনের সঙ্গে একাস্ত ঘনিষ্ঠ পরিচয় হওয়া কখনই সভব ছিল না, কিন্তু কুতৃহলী দর্শক হিসাবে যে পরিচয়ের সম্ভাবনাটুকু ছিল ভাও তাঁর জীবনে বেশ দেরিতে এসেছিল। এর ফল তাঁর সাহিত্যে কি দাঁড়ি য়ছে সে কথার প্রসঙ্গ আসবে পরে।

পেনেটির পর ভাষরা আবার পদ্ধী-আবেইনীর মধ্যে রবীক্রনাথকে পাই এর বেশ কিছুদিন পরে যথন তাঁর বরস কুড়ি। ইতিমধ্যে মহর্যির সঙ্গে হিমালয়-ভ্রমণ, বাড়ি-ফিরে ইস্কুলে পড়বার রথা চেষ্টা, প্রথমবার মেন্ডদাদার সঙ্গে বিলাত্যাত্রা, ফিরে আসবার পর ব্যারিষ্টারী পড়বার জন্তে আবার বিলাত্যাত্রার চেষ্টার অর্থেক পথে পরিসমাপ্তি—এত কাও হয়ে গেছে। কেবল পিতৃদেব ছাড়া আর সকলে তাঁর এই ছয়হাড়া ভাবে একটু হতাশ, একটু হঃখিত। তাঁর নিভের, পরিপূর্ণ ক্রমর ভোগ করা ছাড়া আর কোন কাজ নাই। এই অবস্থায় আবার রবীক্রনাথ চক্ষননগরে গঙ্গার তীর ফিরে এলেন।

"আবার সেই গলা। সেই আলস্তে আনন্দে অনির্কাচনার বিবাদে ও বাণকুলতায় ঋড়িত, সিগ্ধগুলিল নদীতারের সেই কলধ্বনি করুণ দিন রাত্রি। অনার পাক্ল,—বাংলাদেশের এই আকাশস্তরা আলেলা, এই দক্ষেণের বাতাস, এই গলার প্রবাহ, এই রাজকার আলন্ত, এই আকাশের নাল ও পৃথিবীর সবু-জর মাঝ্যানকার দিগন্তপ্রসারিত উদার অবকা শর মধ্যে সমন্ত শর।র মন ছাড়িয়া দিয়া আস্ক্রমর্থণ—তৃক্ষার জল ও কুশার বা জের মতই আবগুক ছিল।"

কুড়ি থেকে প্রায় চকিবল বছর বয়স পর্যান্ত কবির জীবন ভরাট আনন্দ ও নির্ভাবনার মধ্যে চ'লছিল। এরই ম.ধ্য তাঁর ভাবভীবনের সবতেরে বড় ঘটনাটি আসে—বেদিন সদর খ্রীটের বাড়িতে এক মধুর সকালে হঠাৎ তাঁর চোথে পৃথিবীর সবকিছু সাধারণ জিনিষ, আশপাশের যা-কিছু, সব এক নৃতন এক সহজ আনন্দের প্রতীক ব'লে প্রতিভাত হয়ে উঠল।

এদিকে লেখার ক্ষেত্রে যোল বছর বরসের 'কবি-কাহিনী' থেকে আরম্ভ ক'রে 'বনমূল,' 'ভগ্নজার,' 'রুক্রচণ্ড' (নাটিকা), সন্ধ্যা-সন্ধীত, প্রভাত-সন্ধীত, বিবিধ প্রসন্ধ, বৌঠাকুরাণীর হাট, ছবি ও গান, প্রাকৃতির পরিশোধ, ভান্থসিংহের পদাবলি, প্রাকৃতির ভিতর দিরে কড়ি ও

কোমলে এসে পৌছেছি। কবিষশঃপ্রার্থী ভক্তণ রবীক্রনাথের এরই মধ্যে বাংলা-সাহিত্যের আসরে সম্মানের স্থান নির্দিষ্ট হরে গেছে. কিন্তু এই লেখাগুলির মধ্যে বাংলার পদ্লীর আন্তর ত নরই—বহি:প্রস্কৃতিরও বিশেষ জারগা হয় নাই। প্রথম সাক্ষাৎ-পরিচরের অভাব. বিতীয় কারণ কারণ গ্রন্থ-স্পালোচনা, গান, কাব্য, নাটক ইত্যাদিতে প্রথম বরসের আবেগ ও উচ্ছাস যথেষ্ট অবসর পাচ্ছিল। আমাদের পক্ষে এটা ভালই হয়েছিল, কারণ রবীন্দ্রনাথ পল্লী-চিত্তের মুখোমুখি আস্বার সুযোগ পেলেন তখন মনের ভিতরে, একা বাহিরে প্রকাশ-ভঙ্গিতে যথেষ্ট পরিণতি এসে গেছে, স্থতরাং সেই চিত্রগুলি হয়েছে বেমন মধুর তেমনি সাবলীল।

১৮৮৪ সালের মে মাসে, অর্থাৎ বাইশ-তেইশ বছর বরসে, কর্ত্তাবার্, দাদা ও বৌদি সমভিব্যাহারে নিজেদের 'সরোজিনী' জাহাদে চ'ড়ে গঙ্গা বেরে দমা পাড়ি দেবার ব্যবস্থা হয়। সেই বাত্রায় গঙ্গার ছই তীর তাঁর চোথে বেমন ঠেকেছিল তা প্রায় সঙ্গে সঙ্গেই লেখা হয়, এবং আমার মনে হয় এইখানেই আমরা প্রথম বখনকার-দেখা তখনকার-দেখা বাংলার নিভ্ত দৃশ্ভের বর্ণনা পাই। আমি আগেই বলেছি যে রবীক্রনাথের লেখার স্বচেরে বড় স্তুতি হবে সেই লেখাটি অবিকল উদ্ধৃত করা, স্তুরাং এখানেও তাই করি—

''বসিরা বসিরা পঙ্গাতীরের শোভা দেখিতে লাগিলাম। শান্তিপরের দক্ষিণ হইতে আরম্ভ করিয়া গঙ্গাতীরের যেমন শোভা এমন আর কোধায় আছে! গাছপালা ছারা কুটীর নয়নের আনন্দ অবিরল সারি সারি ছুই ধারে বরাবর চলিয়াছে-কোণাও বিরাম নাই। কোণাও বা তটিভূমি সবুদ্ধ খাসে আচ্ছন্ন হইয়া গলার কোলে আসিয়া গড়াইয়া পড়িয়াছে, কোখাও বা একেবারে নদীয় জল পৰ্যান্ত খন গাছপালা লতাজালে জড়িত হইরা বুঁকিরা আসিরাছে —ললের উপর তাহাদের ছারা অবিশ্রাম ছলিতেছে। কতকগুলি সূর্য্যকিরণ সেই ছারার মাবে বিকমিক করিতেছে, আর বাকী কতকগুলি, পাছপালার কম্পমান কচি মহণ সবুর পাতার উপরে চিক্চিক করিরা উট্টতেছে। একটা বা নৌকা তাহার কাছাকাছি গাছের ভূঁড়ির সঙ্গে বাধা রহিরাছে। সে সেই ছারার নীচে, অবিশ্রাম জলের কুলুকুলু শব্দে, মুদ্ন মুদ্ন দোল থাইরা বড় আরামের ঘুষ ঘুষাইতেছে। তাহার আর এক পাশে বড় বড় গাছের খনচহারার মধ্য দিয়া ভাঙা ভাঙা বাকা একটি পদচিক্ষের পথ জল পর্যান্ত নামিরা আসিরাছে। সেই পথ দিরা গ্রামের মেরেরা কলসী কাথে জল লইতে নামিতেছে, ছেলেরা কাদার উপর পভিয়া, জল ছোঁড়াছু ডি করিরা ভারি মাতামাতি করিতেছে।

প্রাচীন ভাঙাবাটগুলির কি লোভা! বাহুবেরা বে এ বার্চ বীধিরাহে তাহা একরকন ভূলিরা বাইতে হর; এও বেন গাছপালার

মত গলাতীরের নিজ্প। ইহার বড় বড় ফাটলের মধ্য দিয়া অপথগাছ উট্টিরাছে, ধাপগুলির ইটের ফাঁক'দিরা বাস প্রভাইতেছে। বত বৎসবের বর্বার জলধারার গারের উপর শেরালা পডিরাছে, এবং ভাছার রঙ চারিদিকের স্থামল গাছণালার রঙের সহিত কেমন সহজে মিশিরা গেছে। মাথুবের কাজ ফুরাইলে প্রকৃতি নিজের হাতে সেটা সংশোধন করিরা দিয়াছেন; তুলি ধরিরা এখানে ওখানে নিজের রঙ লাগাইয়া দিয়াছেন। অত্যন্ত কঠিন সগর্ব্ব গ্রহণে পারিপাট্য নষ্ট করিরা ভাঙাচোর। বিশুখল মাধুর্য্য স্থাপন করিরাছেন। প্রক্রাতীরের ভগ্ন দেবালয়গুলিয়ও খেন বিশেষ কি মাহাত্ম আছে। তাহার মধ্যে আর দেবপ্রতিমা নাই। কিন্তু সে নিজেই জ্বটাজুটবিলম্বিত অতি পুরাতন কবির মত অতিশয় ভত্তিভাজন ও পবিত্র হইরা উঠিয়াছে। এক এক জারগায় লোকালয়—সেধানে জেলেদের নৌকা সারি সারি বাঁধা রহিরাছে। কতকগুলি জলে, কতকগুলি ডাঙার তোলা, কতকগুলি তীরে উপুড় করিরা মেরামত করা হইতেছে; ভাহাদের পাঁজরা দেখা বাইতেছে। কুড়ে মরগুলি কিছু খন খন কাছাকাছি-কোনো কোনোটা বাঁকাচোরা বেড়া দেওরা-ছুই চারিটি গরু চরিতেছে; ঝামের ছুই একটা শীর্ণ কুকুর নিক্র্মার মত গঙ্গার ধারে ঘুরিয়া বেড়াইতেছে; একটা উলঙ্গ ছেলে মুখের মধ্যে আঙ্ল পুরিয়া বেগুন ক্ষেতের সামনে দাঁড়াইয়া অবাক হইয়া আমাদের জাহাজের দিকে চাহিরা আছে। হাড়ি ভাসাইরা লাঠি-বাঁধা ছোট ছোট জাল লইরা জেলের ছেলেরা ধারে ধারে চিংড়ি মাছ ধরিরা বেডাইতেছে।

আবার আর একদিকে চড়ার উপরে বঞ্চুর ধরিরা কাশবন—
শর্থকালে যথন ফুল ফুটিরা উঠে তথন বার্র প্রত্যেক হিলোলে হাসির
সমুত্রে তরক উঠিতে থাকে। স্থাত্তরে নিতরক গকার নোকা
ভাসাইরা দিয়া গকার পশ্চিম পারের শোভা বে দেখে নাই সে বাংলার
সৌন্দর্যা দেখে নাই বলিলেও হয়। এই পবিত্র শান্তিপূর্ণ অমুপম
সৌন্দর্যাভ্রবির বর্ণনা সম্ভবে না · · · (সরোজিনা প্ররাণ—ভারতী)

এতথানি পড়ে ধেতে একবারও কোথাও আটকায় না. এবং মনেই পড়ে না যে আমরা একটা দশু-বর্ণনা পডছি। **একেই** যথা<mark>র্থ বলা</mark> যেতে পারে চিত্র। এর কিছ দিন পরে—কবির বয়স তথন ছাবিবশ—জীরনে যা-কিছু কাম্য তার অপ্রমিত প্রাচুর্য্য অবাধ আনন্দ এবং পাশাপাশি প্রিয়বিরোগের গভীরতম ছ:খ, ছই মিলে যখন তাঁর মনের পরিণতির প্রায় আর কিছু বাকী রাথে নি, তথন একদিন গরুর গাড়ী চড়ে পেশোয়ার অভিযানের বদলে তলব এল বোটে ক'রে জমিদারী পর্য্যবেক্ষণের। পেশোরার অভিযানটা হ'লেও একটা অমুভ রকমের সুন্দর কিছু আমরা পেতাম নিশ্চরই, কিন্তু তার বদলে শিলাইদা, সাজাদপুর অভিযানের ফলই আমাদের আলোচনার সবচেয়ে বড় পর্বা। এখন থেকে সাভ-আট বৎসরের মধ্যেই আমাদের আলোচ্য বিষয়ের চরম 'ফুর্ছি। এই করেক বংসর রবীজনাথ বাংলার পদ্ধী-প্রক্লতির

একেবারে মুখোর্খি কাটিরেছেন এবং তার ফলে কবিতার, প্রবদ্ধে, ছোটগল্পে, স্বার উপরে বিভিন্ন জনকে লেখা পত্রধারাতে এমন অপূর্ব স্থানর পল্লী-চিত্রের স্থান্ট হরেছে যার ভূদনা আর কোন সাহিত্যে আছে ব'লে আমার জানা নাই।

আগেই বলেছি এই সমরের ঠিক পূর্ব্বেই জীবনের বা-কিছু জানবার তা প্রায় কবির জানা হয়ে গেছে। এখন নিজের মধ্যে নিজে ডুবে থাকা এবং রঙ্গকেত্রের নির্দিপ্ত দর্শকের মত দুর থেকে জীবনটাকে সহাত্ত্তিপূর্ণ করুণার চোথে দেখা, এ হুটোই তাঁর পক্ষে খুব সহজ হয়ে এসেছে। চারি পাশের জগৎ তাঁর চোথের ও কানের ভিতর দিয়ে মনে আনন্দের সাড়া তুলছে, কিন্তু সে আনন্দের মধ্যে উচ্ছাদ একেবারেই নাই, আছে একটি অপার দাক্ষিণ্যের ভাব। ঠিক এই কারণেই তাঁর পক্ষে ক্রমাগত সাত-আট বৎসরের বেশীর ভাগ সময় হয় পদ্মার উপর বোটের মধ্যে, নম্ন জমিদারীর কাছারি-বাড়িতে, প্রায় নিঃসঙ্গ জীবন কাটানো মোটেই কষ্টকর হয় নাই বরং অনাবিশ আনন্দপূর্ণ ছিল; এবং আমার মনে হয় এই শীবনের বিশেষ প্রয়োজনও ছিল। আমার মতে এই সময়টিই কবির জীবনে পূর্ণ ফসলের সময়। সাধনার যুগ (১২৯৮, অগ্রহায়ণ থেকে ১৩০২, কার্ত্তিক) সমস্তটাই এর মধ্যে পড়ে। 'সাধনা'র প্রায় সমস্তটাই চালানো ছাড়া ঠিক এই সময়ের রচনা--রাজা ও রাণী, বিসর্জ্জন, মানসী, চিত্রাঙ্গদা, গোড়ায় গলদ, ছোট-গল্প, সোনার তরী, বিদায় অভিশাপ, বিচিত্র গল্প (১ম ও ২য় খণ্ড), কথা-চতুষ্টয়, চিত্রা, গল্প-দশক, ইত্যাদি, ছিন্ন-পত্রে ষেণ্ডলি স্থান পেয়েছে সেণ্ডলি এবং আরও অনেক পত্র, চৈতালি, বৈকুঠের থাতা, পঞ্চভূত, কণিকা, কথা, কাহিনী এবং ঠিক এর পরেই ক্ষণিকা। পল্লী-চিত্র বলতে এই শেখাগুলিতেই স্বচেয়ে বেণী পাওয়া যায়, এবং স্থানেশ, সমাজ, লোক-সাহিত্য প্রভৃতিতেও কিছু কিছু পাওয়া যায়, यिनि अधिन अस्तक श्रात्र । এই সম। हिस्क आमता শোটামুটি শিলাইদ্রের যুগ বলতে পারি।

আলোচনার স্বিধার জন্ত আমরা আলোচ্য বিষয়টকে হই ভাগে ভাগ করব। প্রথম, পদ্ধী-প্রকৃতির বাহিরের চিত্র; বিতীয়, পদ্ধী-জীবনের চিত্র। পদ্মবিক্ষ, এপারের

ছোট ছোট গ্রাম, বাধাঘাট, ধেরা-পারাপার, ওপারের বালি ধু ধু করা চর, মাত্র এই পটভূমিকার উপর সকাল, সদ্ধা, ছপুর, রাজি, শীত, গ্রীম্ম, বর্ষা, শরৎ এর ফিরে ফিরে আসা-এইগুলিকে কেন্দ্র ক'রে যে একটা পুরা সাহিত্য গড়ে উঠতে পারে এ ধারণা করা শক্ত হ'রে উঠত যদি-না রবীন্দ্রনাথ বাস্তবিক তাই ক'রে যেতেন। চিত্র-হিসাবে এগুলির বোধ হয় তুলনা নাই। সেই একই আবেটনী, কিন্তু প্রত্যেকটি চিত্র সমানভাবে উপভোগ্য। সেই পদ্মার উনুক্ত প্রশক্তি, অভিদুরাবস্থিত গুই পার, সকালের সোনালি আলো, সন্ধার শাস্ত ছায়া, গ্রামের ব্যুদের ঘাটে ঘাটে আনাগোনা—ফিরে ফিরে এরাই আসে. কিন্তু কোন চিত্রটিকেই অনাদর করার কথা কারও মনে আসতেই পারে না। এর প্রথম এবং প্রধান কারণ—রবীক্সনাথের মনে এর প্রত্যেকটি যে গভীর এবং অনাবিদ আনন্দ নিয়ে আসত, তা যেন আমাদেরও মনে অবশ্রস্তাবী রূপে সঞ্চারিত হ'রে পড়ে, বেমন---

> আজি মেৰমুক্ত দিন, প্ৰসন্ন আকাশ হাসিছে বন্ধুর মত ; ফলর বাতাস মুথে চক্ষে বক্ষে আসি লাগিছে মধুর---जन्ड जन्म एक दश निश्रभूत উড়িয়া পড়িছে গায়ে। ভেনে বার ভরী প্রশাস্ত পদার দ্বির বক্ষের উপরি তরল কলেলে। অর্থময় বালুচর দুরে আছে পড়ি, যেন দার্ব জলচর রোক্র পোহাইছে; ভাঙা উচ্চ তীর; ঘনচহায়াপূর্ণ ভরু; প্রচছন্ন কুটীর ; ৰক্ৰমীৰ্ণ পথখানি দূর আম হ'তে শস্তক্ষেত্র পার হয়ে নামিয়াছে স্রোতে তৃষ্ণার্স্ত জিহ্নার মত; গ্রামবধ্গণ অঞ্চল ভাসায়ে জলে আকঠ মগন ক্রিছে কৌতুকালাপ; উচ্চ মিষ্ট হাসি জল কলবন্ধে মিশি পশিতেছে অ।সি কর্ণে মোর ; বসি এক বাধা নৌকা পরি বৃদ্ধ জেলে গাঁথে ঞাল নত শির করি রোড়ে পিঠ দিয়া, উলঙ্গ বালক তার আনন্দে ঝাঁপায়ে জলে পড়ে বার্মার কলহান্তে: ধৈৰ্যামনী মাতাৰ মতন **পরা সহিতেছে তার মেহ-ফালাতন** ! ••• •• জাতপ্ত প্ৰনে তীর উপবন হতে কভু আসে বহি

আৰি বহিতেহে

প্রাণে মোর শাস্তিঃার!, মনে হইডেছে মুখ অতি সহজ সরল— (মুখ—চিত্রা)

একটির পর একটি যতই চিত্র উল্টে যাই, মন ক্লান্ত বা বিমুধ হয় না, আরও নৃতনতর চি.ত্রর জন্ন উন্মূধ হ'রে ওঠে। এ-পারের সন্ধা-কানায়—

হের কুল নদীতারে
স্থাপ্রার থাম। পকারা গিরাছে নীড়ে,
শিন্তরা থেলে না; শৃষ্ক মাঠ জনহান;
দক্রেরা আছে গান্তা গুট সুইতিন
কুলীর অকনে বাধা ছবির মতন
ভক্ষপ্রার। পৃহক্ষে হ'ল সমাপন—
কে গুই থামের বধু ধরি বেড়াধানি
সন্মুণে দেখিছে চাহি, ভাবি ছ কি জানি
ধুসর সন্ধার।

ও-পারের সন্ধা আরও চমৎকার---

সমস্ত অপার মাঠের উপর একটি ছারা প'ড়েচে—একটি কোমল বিবাদ—ঠিক অঞ্জল নর—একটি নিনিমিব চো:বর বড়ো বড়ো পরবের নীচে গণ্ডার ছলছলে ভাবের মত। এমন মনে করা বেতে পারে—মা পৃথিবী লোকালরের মধ্যে আপন ছে.লপুলে, কোলাইল এবং বরকরনার কাঞ্চ নিয়ে বাকে, বেথানে একট্ কাঁকা, একট্ নিস্তরতা, একট্ বোলা আকাল, সেইবানেই তার বিশাল হলন্তর অস্তনিহিত বৈরাগ্য এবং বিবাদ ফুটে ওঠে, সেইবানেই তার গণ্ডার দার্ঘনিংযাস শোনা বার। (ছিন্নপত্র—৪৬ পূ.)

কোন ভিনিষ যথার্থ উপভোগ করতে গেলে তার চার দিকে অবসরের বেড়া দিয়ে বিরে নিতে হয়। কখনও শিলাইদহে, কখনও কালিগ্রামে, কখনও সাজাদপুরে রবীক্রনাথের দিনগুলি প্রায় পরিপূর্ণ অবসরের মধ্যে কাটছিল, স্তরাং শীত, গ্রীয়া, বর্ষা, শরৎ একে একে আসত আর প্রত্যেকটিকেই তিনি পূর্ণ আনন্দের সঙ্গে ডেকে নিতেন। শিতের মধ্যাছের একটি চিত্র পাই কালিগ্রাম—৫ই মাব, ১৮৯১এর চিঠিতে—

বেশ কু ড়মি করবার মতো বেল।ট । কেউ তাড়া দেবার লোক নেই, যেন পৃথিবাতে অত্যার্শ্রক কাল্প বলে কিছু নেই। এথানকার চতুর্শিকের ভারগতিকও সেই রকম। একটা ছোট নদী আছ বংট, কিছু তাতে কাশকড়ির যোত নেই, সে যেন আপন শৈবালদামের মণো জড়াভূত ই রে জল্প বিস্তার ক'রে দিরে পড়ে পড়ে ভাব চ বে বদি না চলালও চলে তবে আর চলবার দরকার কি? জলের মাথে যাবে যে জলজ খাস আর উদ্ভিদ জাছ, জে লরা জাল কেলতে কা এলে সেওলো সমস্ত দিনের মধ্যে একটু নাড়া পার না। কা বাংলা ঘটা প'ড়ে গ'ড়ে কেবল রোদ পোচার, এবং অবলিষ্ট বারো ঘটা খুব গভীর অককার মুড়ি দিরে নি:শক্ষে নিল্লা দেব।

ঋতুর মধ্যে বর্বা কবির চিত্তকে বেমন নাড়া দিরেছে
এমন আর কোনটি নর। কথনও পদ্মা, কথনও ইছামতী

কিংবা গোরাই নদীর ওপর বাদকালে বর্গার বে অন্তরঙ্গ মূর্বি কবি দে.খছিলেন তার প্রচুর বর্গনা রয়েছে, ধরস্রোতা পদ্মার উপর চারিদিকে যত দূর দৃষ্টি বার অথে জলের নৃত্যা, ঝুপঝাপ বৃত্তির শব্দ, পাছপালা নদী সব ঝাপসা একাকার, কোধাও বা গাছের মাধা-জাগা ছ-একটা প্রাম; ছোট নদীগুলির ভরাবৌবনে তীরের কেতকী কদম গাছের তলা-ছে ায়া হলের ছলছলানি, গৃহস্থ বধুদের ভলে ভিজে ভিজে কাজ করা, এই সমন্ত তিত্র অজ্ঞাপাই। সেনার তরীর—

পরপারে দেখি আঁকা তরুভারা মসী-মাধা আমধানি মে.ঘ ঢাকা প্রভাত বেলা

'ভরা ভাদরে'র

কদৰ গা'ছর সার চিকণ পরবে তার গ'্ৰ ভরা অক্কার হ'রছে খোরালো

ইভাগি মাত্র ছ-একটি দৃষ্টাস্ত।

বর্ণর পরে আসে মে মুক্ত স্থার শরৎ, সোমালি আলো গাঢ় সবুজ অ'র নির্দান নীলে ভরা। তথন প্রাচুর্য্যে প্রকৃতির শোভা ধরে না—

> মাঠ মাঠ ধান ধরে নাক' আর পারে না বহিতে নদা জলধার•••

হয়ত

ধানের ক্ষেত্র ধর ধর ক'রে কাঁপাচ—আকালে সালা সালা মেবর স্থাপ— গারি উপর আম এবং নারি কল গাছের মাণা উ ঠচে—নারকেল গাছের পাতা বাতাসে কুর কুর করচে—চ রর উপর ছাটা একটা ক'রে কালা ফুটে ওঠবার উপক্রম ক'রে চ। বারে ঘর মিল নর আগ্রহ, এবং লারংকালের এই আকাল, এই পুথিবা, সকাল বেলাকার এই বিরবিরে বাতাস, এবং গাছপালা তুলঙল নদ র তরক সকলের ভিত্রকার একটি অবিশ্রাম সমন কম্পান—

সমস্ত মিলিয়ে কবির চিত্তকে অপূর্ব্ব ভাবে অভিভূত এবং কাণায় কাণায় পূর্ণ ক'রে ফেলত।

অ'ম'দের আলোচ্য বিবরের প্রথম ভাগ অর্থাৎ নিছক পল্লীদৃশ্বের চিত্র সহকে আলোচনার এইখানেই শেষ। কারণ শিলাইদা-বু,গর পরে আর কোন লেখার এ-রকম চিত্র পাই না। এর পরের সমস্ত লেখার বেখান প্রকৃতিক আঁকতে হরেছে সেখানে এই ধুগের প্রকৃতির সঙ্গে খনিস্তার সহাব্য ক্রমশই গৌণ হরে এসেছে। উদাহরণ-স্বরূপ বলা বায়—জ্ঞানক পরের লেখা 'ঋতুরক্তে' (১৯২৭) বধন বৈশাধের কথা পাই, তথন বৈশাধ আর

> নিম্ব-বৃক্ষ মন-শাখা ৩০ছ ওচছ পূপ্পে ঢাকা আত্ৰবন তাত্ৰ ফলময়—

কিংবা

ৰাউগাছ ছায়াহান নিঃৰসিছে উদাসান শুক্তে চাহি আপনার মনে···

(कृष्क्षि-- मानमी)

দ্রান্ত প্রান্তর ওধু তপনে করিছে ধু ধু বাঁকা পথ ওফ তপ্ত কায়—

এরপে আসচে না,—তথন শুনি—

বৈশাধ হে, মৌনী চাপদ, কোন্ অতলের বাণী এমন কোখায় খুঁজে পে:ল ? তথ্য ভালের দীখি ঢাকি মন্থর মেখবানি এল' গভার ছায়া ফেলে ?

কিন্ত এশুলিকে পল্লীচিত্রের পর্যায়ে ফেলা যায় না,
এবং এর সঙ্গে পূর্বের যুগের নিছক চিত্রশুলির যোগ
নেহাৎ কম। 'ক্ষণিকা'র করেকটি কবিতাতে কিন্তু
স্পান্ত বোঝা যায় যে, শিলাইদার ছবি তখনও তাঁর মনে খুব
জাগরক, কিন্তু সেই ছবিকে বাহন ক'রে, এবং তাকে
ছাড়িয়ে গিয়ে, তার সঙ্গে আর কিছু যোগ ক'রে
সৌন্দর্য্য স্কেটির চেটা হচ্চে। যেমন, 'আমরা ত্-জন একটি
গায়ে থাকি' কবিতাটিতে—

ছুইটি পাড়ার বড়ই কাছাকাছি

মাৰে শুধু একটি মাঠের ফাঁক,
তাদের ব'নর অনেক মধু-মাছি

মোদের বনে বাধে মধুর চাক।

তাদের যাটে পুলার লবামালা ভেসে আসে মোদের বাঁধা যাটে, তাদের পাড়ার কুসুম ফুলের ডালা বেচতে আসে মোদের পাড়ার হাটে।

আমাদের এই এামের নামটি খঞ্জনা, আমাদের এই নদীর নামটি অঞ্জনা, আমার নাম ত' লানে গাঁয়ের পাঁচজনে, আমাদের সেই তাহার নামটি রঞ্জনা।

কিংবা 'হুই জীরে' কবিভ,টিভে—

ভোমার আমার মাবধানেতে একই বহে নদা। ছুই ডটের একই গান দে শোনার নিরব্ধি। আমি গুনি, গুরে বিজন বালু ভূদ্যে, তুমি শোন কাঁ.ধর কলস বাটের প.র ধুরে:

> তুমি তাহার গানে বে:ৰ একটা মানে আমার কৃলে আরেক অর্থ ঠেকে আমার কানে।

এখন আমরা আমাদের আলোচনার বিভীয় ভাগ আরম্ভ ক'রতে পারি অর্থাৎ পল্লীঞ্চীবনের কথা। পাড়াগাঁয়ের ধনী, গরিব, মধ্যবিত্ত, ভাল মন্দ, চাণী-বাসী দের ঘরের কথা, তাদের আপন আপন স্থপ-ছঃথ আনন্দ-বেদনার কাহিনী; বেণীর ভাগ সেই সময়কার লেখা ছোটগল্লগুলিতেই পাওয়া যায় এবং কিছু কিছু 'পঞ্চভূত,' 'লোক-সাহিত্য,' 'গ্রাম্য-সাহিত্য,' 'হদেশী সমান্দ,' 'হদেশ' প্রভৃতি আলোচনায় পাওয়া বায়।

শিশাইদা-যুগটা ছোটগল্পরচনার পক্ষে ভারী উপযোগী হ'য়ে উঠেছিল। চারিদিকের প্রভাব টুকরো টুকরো ভাব প্রকাশের একান্ত অনুসূল ছিল। মনকে বেণী না আন্তে আন্তে বহিঃপ্রকৃতির তালে তালে তাকে বলগা ছেড়ে দিয়ে, ছন্দোমিলের জন্তে ষতটা চেষ্টা করা দরকার তারও মধ্যে না গি.মু, ছোট ছোট গল রচনাই ছি**ল সেই সম**য়ের প্রধান আনন্দ। গ**রে**র চরিত্র-গুলিও সেই জন্তে হয়েচে আলপালের গাঁরের মামুষ, যাদের রোজ দেখতেন-হয় জমিদারীর দরবারে প্রাকা ছিসেবে, নয়ত বোটের ওপর থেকে উৎস্থক দর্শক হি.সবে। তা দর মনের কথা, তাদের ঘরের কথা, প্রায় সম্পূর্ণই স্থাই, কিন্তু প্রায় প্রত্যেকটি গাল্পরই আরম্ভ, এবং প্রায় সবগুলিরই পটভূমিকা, কোন-না-কোন একটি দুখ্য--বা কোন-না-কোন সময়ে তাঁরে চোকে পড়েছে। অব্য প্রকৃতি এই আরম্ভ মাত্রই যোগাত, বাকিটা আসত নিঞের মন থেকে, কিন্তু গল্পগুলি পড়বার সময় সে-কথা প্রায় মনেই হয় না---এমনই তরতরে তাদের গতি। ঠিক এই কথাটির উল্লেখ পাই-সাজাদপুর-৫ই সেপ্টেম্বর, ১৮৯৪এর একটি চিঠিতে (ছিন্নপত্র, ২৯০-৯১ পু)—

বাইরের লগতের একটা সজাব প্রভাব খরে অবাগে প্রবেশ করে— আলোতে, আকাশে, বাতাসে, শব্দে, গব্দে, সবৃদ্ধ হিলোলে এবং আনার মনের নেশার মিশিরে কড গদ্ধের ইচি তৈরা হয়ে ওঠে।••• আমার এই সাঞ্চাদপুরের ছপুর বেলা গল্পের ছপুর বেলা: ছপুরের উত্তাপ, নিজকতা, নির্জনতা, পাধীদের, বিশেবত: কাকের, ডাক এবং ফুলর ফ্লার্থ অবসর—সবস্তম্ম আমাকে উলাস ক'রে দের। এই সমরে এই টেবিলে ব'সে আপনার মনে ভোর হ'রে 'পোষ্ট-মাষ্টার' গল্পটি লিংপছিলুম। আমিও লিবছিলুম এবং আমার চারিছিকের আলো বাতাস ও তরু-লাধার কম্পন তাদের ভাবা বোগ ক'রে দিছিল।

পোষ্ট-মান্টার ব'লে একটি লোক ছিল বটে, তাঁকে মাঝে মাঝে রবীক্রনাথের সঙ্গে গল্প করতে দেখা যেত বটে, কিন্তু গল্পের পোষ্ট-মান্টারের সঙ্গে তার যোগমাত্র ঐটুকু। তার মধ্যে 'রতন' মেয়েট এবং মোটের উপর গল্পের কর্মণ ভাবটি—কবির সম্পূর্ণ নিজন্ম। এই ধরণের গল্পগুলির মধ্যে আখ্যান বলতে প্রায় কিছুই নেই, আছে শুধু চিত্র এবং সে চিত্রের মধ্যে পল্লী-দৃশু না মানুষগুলি—কোন্টি বে বেলী মনোযোগ আকর্ষণ করবে তা সব সময় ঠিক ক'রে ওগা বায় না। বেমন—'ঘাটের কথা' গল্পটিতে নদীর ধার, প্রনো ঘাট, না 'কুমুম'—কোন্টি বে চিত্রের আসল বস্তুভাগ তা ঠিক করা বায় না এবং তার ক্ষন্তে আনন্দের কিছু ক্রুটিও হয় না।

'ছুটি' গল্পের ক**রুণ** বেদনার চিত্রটি অপূর্ব্ব, কিন্তু এটরও গোড়ায় রয়েছে একদিনকার চোখে-দেখা ছেলেদের খেলাধুলার চিত্র। গল্পটির আরম্ভে দেখি বালক-সর্ভাব ফটিক তার সালোপাল নিয়ে নদীর ধারে প'ড়ে-থাকা মস্ত একটা মান্তল গড়ানোর থেলার মগ্ন। খেলার বাধা উপস্থিত করল ছোটভাই মাধন-সে গিয়ে মান্তলটার উপর চড়ে বসল। খেলায় বাধা পাওয়াতে ফটিক চটে গেল খুব, এবং মাধন কিছুতে নাম ত রাজী না হওয়ার ফলে তাকে মুদ্ধ গড়িয়ে দিয়ে খেলার আমোদ ধোল আনা থেকে আঠারো আনার পৌছান হ'ল। ঠিক এই রকমের একটি দুশ্র এর আগে রবীক্সনাথের চোখে পড়েছে (ছিন্নপত্ত, ৭৯ পু.) এবং এই সামান্ত বাস্তব ভূমিকা খেকে সুক্ক ক'রে বোটে বসে আপন অবসর মিলিয়ে যে গল্পটির সৃষ্টি হয়েছে তা অপূর্বা। 'সুভা' গল্পটিভেও দেখি তাই—চণ্ডীপুরের গৃহস্বদরের মেরেটির মত ছোট নদীটিই সভা হয়ত প্রক্লতির নেরে বোবা স্থভার মত কেউ নব্দরে প'ড়ে থাকবে, হয় ভ ধা নয়। সাজাদপুরে একদিন ঘাটে অনেক মেয়েছেলের ষ্ঠলা হরেছে, কে বেন কোথার ুযাবে। তাদের মধ্যে একট বেরের প্রতি কবির মনোবোগ বিশেষ ক'রে আক্লষ্ট

হ'ল। মেরেটির বরস বছর বারো-তেরো, কিছ স্বাস্থ্যের প্রণে একটু বড়ই দেখাছে। দেখবার বিষয় হছে তার ছেলেদের মত ক'রে চুল-ছাঁটা, এবং বৃদ্ধিনান, সপ্রতিভ, সহজ ও সরল, আধা-ছেলে আধা-মেরের মত ভাব। পরে এই মেরেটিই 'সমাপ্তি' গরের 'মৃগারী'-রূপে প্রকাশ পেরেছে, এবং গরের খাতিরে আর বেক'টি চরিত্র স্থাষ্ট করতে হরেছে তার মধ্যে বি-এ পাস গ্রাম্য মূবক অপূর্ব্ব রায়ও অন্ত সকলের মতই এক জন। 'মেঘ ও রৌদ্র' গরাটিতে শশীভূষণ ও গিরিবালা অনেকথানি জায়গা জুড়ে আছে বটে, কিছ সেই যে সেদিন "আকাশে মেঘ ও রৌদ্র পরস্পরকে শিকার করিয়া ফিরিতেছিল"—এই চিত্রটি গোড়া থেকে শেষ প্রান্ত আমা দর মনে গাঁখা থেকে যায়।

এই রকমের উদাহরণ দিতে গেলে একটার পর একটা থালি বেড়েই চলে। এদের মধ্যে দিয়ে আমার বলবার কথা হছে যে, এই গল্পগুলিতেও আমরা যে চিত্র পাই তা সেই মানুষগুলির চেয়ে সেইখানের এবং সেই সময়ের বহি:প্রাক্ততির সমস্ত ছায়া, আলোক, বর্ণ ধ্বনিকেই যেন বেণী ক'রে ফুটিয়ে তুলছে। যে-সব দৃশু, লোক, ঘটনা করা হয়েছে তাদের চারিদিকে সেই একই নদীজ্রোত, রৌজর্ষ্টি, নদীজীরের শরবন, সেই বর্ষার আকাশ, ছায়াব্রিন্ত গ্রাম, জলধারা প্রফুল্ল শস্তের ক্ষেত, সেই মেঘমুক্ত বর্ষার লিম্ম রৌজে রঞ্জিত ছোট নদী গাছের ছায়া এবং গ্রামের অগাধ শান্তি সৌকর্য্যে ও সঞ্জীবতার মিশে ফুটে উঠেছে।

নিছক প্রাম্য-জীবন সম্বন্ধে রবীক্রনাথের বা-কিছু অভিজ্ঞতা তা দূর থেকেই, কারণ তিনি থাকতেন প্রাম থেকে দূরে—নদীর ওপর, কিংবা কাছারিবাড়ির দেউড়ির ভিতর 'ক্রমিদার বাহাহর' ব্লপে। তবু সেখান থেকেই এই জীবনের যা চিত্র এঁকেছেন তা এক তিনি বলেই সম্বত্ত হেরেছে। পাড়াগারের ব্যস্ততাহীন মন্থর জীবন-যাত্রার কথা ব'লতে গিরে এক জারগার লিখেছেন—

এখানকার জীবন ক্রড এপ্লিনের মত হাস-কাঁস করিরা কিবা গুরুভারাক্রান্ত গরুর গাড়ীর চাকার মত আর্ডনাল করিতে করিতে চলিতেছে না। গাছের তলা দিয়া একট্খানি শীতল নিবার বেমন ছারার ছারার কুল কুল করিরা বার, জীবন তেমনি করিরা বাইতেছে।

'লোক-সাহিত্যে' ও 'প্রাম্য-সাহিত্যে' সংগৃহীত ছড়াগুলির

থেকেও আমরা সেই সমরের এবং তার আগেকার কালের প্রাম্যজীবনের চমৎকার চিত্র পাই। বাংলা দেশের গৃহস্থদের মেরেকে শশুরবাড়ি পাঠানো ব'লে যে একটি কঠিন অস্তর্যেদনা আছে, তার চমৎকার চিত্র ররেছে এই ছড়াটিতে —'বাপ কাঁদেন, মা কাঁদেন'…ইত্যাদি। বাপ মা ত কাঁদ্রেনই কিছ—

> বোন কান্দেন ৰোন কান্দেন থাটের গুরো ধ'রে সেই বে ৰোন গাল দিয়েছেন ভাতারখাকী ব'লে।

এই ছড়াগুলি কতকালের কে জানে, কিন্তু রবীক্রনাথ দেখিয়েছেন কেমন ক'রে এইগুলি এবং 'হর-গৌরী' রক্ষ-রাধা' বিষয়ক আরও অনেক ছড়ার ভিতর দিয়ে রাংলার চিরস্তন আনন্দ-বেদনাশুলি রূপ পেয়ে এসেছে। এ ছাড়া 'অদেশ', 'অদেশী সমাজ' 'সমাজ' 'শিক্ষা' ইত্যাদি পরের লেখাগুলিতেও আমরা সংস্থারকের চোখে তৎকালীন পল্লীজীবনের চিত্র কিছু কিছু পাই।

আগেই বলা হয়েছে—রবীক্তনাথের লেখা গাঁরের জীবনের কথা নিয়ে বিচার ক'রতে গেলে বরাবর মনে রাখতে হবে তিনি কখনই গাঁরের এক জন ছিলেন না, মাত্র কিছুদিনের জন্ত গাঁরের বাইরের এক জন ছিলেন। স্তরাং এ চিত্রগুলিকে চিত্র-ছাড়া ফটোগ্রাফির বিচার দিয়ে দেখতে গেলে এগুলির উপর অন্তায় করা হবে। এ-কথা বললে অপ্রাস্ত্রিক হবে না, যে, রবীক্তনাথ নিজেও এ-কথা বেশ ভাল ক'রে জানতেন। তাঁর সাহিত্যজীবনের প্রথম দিকের বছু প্রাশ্চক্র মন্ত্র্মদার যখন 'কুলজানি' উপন্তাস্থানি লিখলেন তখন রবীক্তনাথ তাঁকে লেখেন—

বাংলার অন্তদেশবাসী নিতান্ত বাঙালীদের মুখ-মুংথের কথা এ পর্যান্ত কেন্টে বলেন নি। তেনামাদের এই চিরপীড়িড, ধৈর্যাশীল, বজনবৎসল বান্তন্তিটাবলঘা প্রচণ্ডকর্মশীল পৃথিবার এক নিভূত প্রান্তবাসী লান্ত বাঙালীর কাহিনী কেন্ট ভালো ক'রে বলে নি। ত আপনার লেখার মধ্যে সেই বাংলার সন্ধান পাওরা বার। আপনার লেখার মধ্যে বাংলার ছেলেমেরের! প্রতিদিন গৃহের মধ্যে যে রক্ম কথা কর ও যে রক্ম কাল করে তাই দেখতে পাওরা বার। অল্প কারও অথবা কুল আমার লেখার সেইটি হবার বো নেই। তির্প্রশ্য—১১-১০ পূ.)

এর মধ্যে বিনয় অনেকখানি থাকলেও থানিকটা **অন্ত**ত সত্য ছিল।

পল্লীঞ্চীকন বলতে শুধু চাবাভূযো কিংবা মধ্যবিদ্ধ

গ্রামা গৃহস্থ দের কথাই সব নর, পল্লীর মধ্যে প্রবৈদপ্রতাপ জমিদারও থাকেন এবং অতি সহজ কারণে রবীন্দ্রনাথ বেখানে এই রকম কোন চিত্র এঁকেছেন সে চিত্র সাধারণ গ্রাম্য জীবনের চিত্রের চেরে বেশী বাস্তব হরেছে। উদাহরণ-স্করপ বলা বেতে পারে, 'ঠাকুর্দা' গল্পের নরানজ্যেড়ের বাবুরা তাঁদের গারে লাগবে ব'লে তাঁরা ঢাকাই মসলিনের কাপড়ের পাড় ছিঁড়ে পরতেন, বিড়ালের বিরেতে লাখ টাকা থরচ ক'রতেন, রাত্রে দিনের আলো করবার জন্তে আতসবাজির ওপর আকাশ থেকে সাঁচচা রূপোর জরি ছড়িয়ে ফেলতেন। 'বোগাযোগে'র মৃকুন্দলালের বর্ণনা একবার পড়লে আমার কথার সত্যতা অক্ষরে অক্ষরে প্রতীর্মান হবে—

পুরাতন কালের প্রথামত মুক্ষ্লালের জাবন ছুই মহলা। এক মহলে গার্হস্ত, আর এক মহলে ইয়ার্কি। অর্থাৎ এক মহলে দশকর্ম, আর এক মহলে একাদশ অকর্ম। মরে আছেন ইষ্ট্রপেরতা আর মরের গৃহিণা। সেবানে পূজা-অর্চনা, অতিধিসেরা, পাল-পার্বাপ, বত-উপরাস, কাঙালা-বিদান, রাক্ষ্ণ-ভোজন, গাড়া-পড়দী, শুল্প-পুরোহিত। ইয়ার-মহল গৃহ-সীমার বাইরেই, সেধানে নবারা আমল, মজলিসি সমারোহে সরগ্রম ইত্যাদি।

আমরা আমাদের আলোচনা প্রায় শেষ ক'রে এনেছি। এ-কথা মনে হ'তে পারে বে, আলোচনার ক্ষেত্র রবীন্দ্র-সাহিত্যের মাত্র একদেশ ভাগে সীমাবদ্ধ করা হয়েছে। তা বটে, কিন্তু সেটা অবগুম্ভাবী, কারণ উপরিউক্ত সমরের মধ্যেই আমাদের আলোচনার বিষয়বস্তু সবচেয়ে বেশী পাওয়া যায়। এর পরই বলা যেতে পারে রবীন্দ্রনাথের কর্ম্ম বা ব্রভঙ্গীবন আরম্ভ হ'ল (শাস্তিনিকেতনে ব্রন্ধচর্য্যাশ্রম স্থাপিত হয় ১৯০১এর ২২শে ডিসেম্বর তারিখে) এবং বাংলার এক পল্লী-আবেষ্টনী থেকে আর এক সম্পূর্ণ বিভিন্ন রকমের পল্লী-আবেষ্টনীর মধ্যে তাঁর কর্মক্ষেত্র স্থানাস্তরিত হ'লেও জীবন ও ভাবধারা নৃতন পথে চলভে আরম্ভ ক'রল। সমস্ত অবসর দিরে 😘 বাংলার পল্লীচিত্র দেখা ও আঁকা, এর আর সময় রইল না। বছ পরে রচিত ্'ঋতু উৎসবে'র পালাগুলিতে শুধু ছয় ঋতুর যে রূপগুলি ধরা দিয়েছে, সেগুলিকেও 'পল্লীচিত্রে'র পর্যায়ে ফেললে ভুল করা হবে।*

^{&#}x27;'त्रवोत्त-भाक' भूतकात व्याख।

লেজাঁ—সুইজারল্যাণ্ড

জীমুধীজ্ঞনাথ সিংহ, বি এস্সি, এম-বি

অম্পম নৈদৰ্গিক শোভা সুইজারল্যাণ্ডের বৈশিষ্ট্য এবং এই বৈশিষ্ট্যের জন্তই পৃথিবীতে এই দেশটার এত ধ্যাতি, এ-কথা আমরা শৈশবকাশ হইতে শুনিয়া আসিতেছি। প্রাকৃতিক সৌন্দর্য্যের আদর্শ ধরা হয় এই সুইজারলাওকে। কাশীরকে আমরা ভূমৰ্গ বলিয়া পাঁকি। আবার ভারতবর্ষের "মুইস্কারল্যাণ্ড" এই আথ্যাণ্ড দেওলা হইয়া থাকে। কাশ্মীরের বিবরণ পুঁথি-পুস্তকে যতটা অবগত হইরাছি তাহাতে এই ছুইটির মধ্যে যথেষ্ট সাৰুত আছে বৰিয়াই মনে হয়। বয়স বাড়ার সঙ্গে সঙ্গে কল্পনাম সুইজারল্যাণ্ডকে দেখিয়াছি নিছক সৌন্দর্যোর ভাণ্ডার রূপে। সে কল্পনা বাস্তবে পরিণত হইল এবার স্থ্রারল্যাণ্ডে আসায়। দেখিলাম কল্পনার সঙ্গে বাস্তবের কোন পার্থক্য নাই, বরং বাস্তব হয়ত কল্পনাকে ছাড়াইয়া গিয়াছে ! সুইজারল্যাণ্ডের সৌন্দর্য্য সত্যই মন মুগ্ধ করে এবং ইহার বিচিত্র দৌন্দর্য্য প্রাণে অভূতপূর্ব্ব ভৃপ্তির সঞ্চার করে; এই পাহাড়ময় দেশটার যে এত সৌন্দর্য্য তা চোথে ना-एक्शे भर्याख मभाक উপनिक्षि कता योग्र ना। आमारमञ हार्थि व त्रोक्स्या चात्र विविध नार्श, यथनरे पिथि মানুষ তার প্রয়োক্তন ও অভিকৃচি অনুসারে কত পরিবর্জন করিরাছে এবং করিতেছে। প্রকৃতি অ'র মানুষ এই ছুই:রর সমবেত চেষ্টার সমস্ত দেশটা একটা ছবির মত গড়িয়া উঠিয়াছে। সমস্ত দেশটা জুড়িয়া পাহাড়, ছোট ছোট নদী আর ইদ। অবশ্র আমাদের দেশের মত বড় বড় নদী এদেশে নাই। পাহাড়গুলি প্রধানতঃ বড় বড় পাইন গাছে ঢাকা, আর যে পাহাড়গুলি গাছণুন্ত সেপ্তলি ব্রফে ঢাকা। মাঝে মাঝে অল্পবিস্তর সমতল ভূমি। প্রাম, শহর সবই প্রায় পাহাড়ের গারে গারে অবস্থিত— স্থানে স্বানে সমভূমির উপর। পাহাড়ের বুকে বড় বড় পাইন গাছের ফাঁকে ফাঁকে প্রাম ও শহরওলি এত চমৎকার দেখার—বর্ণনা করা চলে না, 'চোধে দেখিরা

উপভোগ করিতে হয়। লোজান, ক্লেনেভা প্রভৃতি বড় শহরগুলি প্রারই হলের তীরে প্রতিষ্ঠিত। हरेला ७ विकास मम्बा नाइ। विकास स्टा পাহাড় ক্রমশঃ ঢালু হইয়া হ্রদে গিয়া নামিয়াছে। সাধারণতঃ এইরূপ জমির উপর বড় বড় শহরগুলি অবস্থিত। পার্বিতাদেশ হইলেও জমি খুব উর্বার। এ যাবৎ যত দুর দেখিয়াছি তাহাতে বরফ-ঢাকা পাহাড়গুলি বাদ দিল অমুর্বের ক্লফ ভূমি চোথে পড়িয়াছে বলিয়া মনে হয় না। সমভূমির ত কথাই নাই, এমন কি ঢালু পাহাড়ের গায়ে পাথর দিয়া বাঁধিয়া স্তরে স্তরে কুথিক্ষেত্র করা হইয়াছে। শস্ত্রজাত দ্রব্যের মধ্যে প্রধানতঃ ফলমূল, শাকসজী, আলু, অন্তান্ত তরকারী, গম প্রভৃতি উৎপন্ন হয়। বসস্তকালে সমস্ত দেশটা ভরিয়া যায় নানা রকমের নানা রঙের ফুলে—সমস্ত দেশটা যেন মস্ত একটা ফুলের বাগান। প্রকৃতির এমনি বিচিত্র লীলা—শীতক'লে সব সাদা হইয়া যায়। নদী, হ্রদ, গাছ, বাড়ি, মাঠ সব সাদা। তথনকার চেহারা দেখিয়া কল্পনায়ও আসে না যে বরফ পড়া বন্ধ হুইলে এই **मिण्डोरे आवा**त मव्क हरेना शहरव! जमनकातीत मन দেশ-দেশ স্তর হইতে ছুটিয়া আসে সুইক্সারল্যাণ্ডে এবং বোধহর সেই জভ্ত দেশটা ভরিয়া স্থলর প্রশস্ত রাস্তা *হ্রদের* পাশ দিয়া পাহাড়ের গায়ে গারে শহর ও গ্রামের ভিতর দিরা আঁকিয়া-**ব**্টিরা চলিরাছে। ভ্রমণকারীর দল কেহ বা পায়ে হাটিয়া, কেহ বা রেলে, কেহ বা মোটরে সমস্ত দেশময় ঘুরিয়া বেড়াইতেছে; কেহ বা উঠিতেছে সমস্ত বিপদ বাধা ভূচ্ছ করিয়া পর্বেভের চূড়ায়। যেন সকলের ভিতর একটা প্রতিদ্বিতা লাগিয়া গিয়াছে—কে স্বচেয়ে বেশী আনন্দ লুটিয়া লইবে এই অপূর্ক **म्हिन्य क्षां का क्षांत्र हरेला वित्वभावत क कथारे** नारे, এই দেশৰ'সীদেরও অভূত ভ্রমণ-লিপ্সা। ছুটির দিনে



লেজার পশ্চিম পাথের দুগ্র

াখন গতামুগতিক কাজের চাপ থাকে না, দলে দলে গ্রী-পুরুষ দব বাহির হইয়া পড়ে দমস্ত দিনটা কোণাও পাহাড়ে, জঙ্গলে বা হুলে কাটাইয়া দিবে বলিয়া ৷ এদের এ লিপায় বয়সের কোন বাধা নাই। সকলেরই স্মান উৎসাহ। প্রায় সকলের পূর্তেই একটা করিয়া গলি— তাহাতে আছে থাবার ও পানীয়। অনেকে অতি-প্রত্যুয়ে স্ব্যোদয়ের আগেই বাহির হইয়া পড়ে-আবার সন্ধ্যায় ধরে ফিরিয়া আসে। প্রত্যেকের হাতে থাকে কুলের গোছা; যেখানে গিয়াছে সেথান হইতে সংগ্রহ করিয়া স্থানিয়াছে। এ-রীতির ব্যতিক্রম দেথিয়াছি বলিয়া মনে হয় না। বাচিবে ইহাদের আকাজ্ঞা. যত তত দিন জীবনটাকে ততদুরসম্ভব আনন্দময় করিয়া র**খিবে** ।

স্থ ইন্ধারন্যাণ্ডের আবহাওরা অতি উপাদের। সেই জন্ত স্বাস্থ্যান্থেষীর দল চিরকাল এথানে আসে ভগ্নস্থা কিরিয়া পাইবার আশায়। দেশ-দেশান্তর হইতে লোকের আসার বিরাম নাই। সেই জন্তই সমস্ত দেশটায় হোটেল,

স্বাস্থানিবাদের অভাব নাই। হোটেল এবং স্বাস্থানিবাস পরিচালনা এ-দেশের একটা প্রধান ব্যবসায়ে পরিণত হইয়াছে। ইহা হইতে প্রভূত অথাগমও চইয়া থাকে। সূর্যাকিরণের অসাধারণ **মাবহাওয়া** এবং সঞ্জীবনী শক্তির গুণে কল্পা-বোগাদের সহক্ষে এবং অল সময়ে আরোগ্য লাভ করা সম্ভব হয়। চিকিৎসকরা বাহাদের নিরাশ করিয়া দিয়াছেন মৃত্যু যাহাদের সময়সাপেক্ষ, তাহারা আসে তাহাদের গুরুল কন্ধালসার দেহ লইয়া এই সুইঞ্চারল্যাণ্ডের কোলে। হয়ত আবার প্রাণে জীবনীশক্তির সঞ্চার হইবে-হয়ত মৃত্যুকে এড়ান গাইবে। আবার হয়ত সৃস্থ সবল দেহ ফিবিয়া পাইবে—আবার হয়ত কর্মকোলাহলময় সংসাবে ফিরিয়া নাইবে। সুথে ছঃথে জড়ান এই পুথিবীর মায়া ুকাটান বড় কঠিন—এ পৃথিবী ছাড়িয়া যাইতে কেহ বড় একটা চায় না—সুস্থ কর্ম্ম্য দেহ লইয়া লোকে বাচিতে চায়। দারিদ্যের নির্মান পেষণও লোকে সহু করিতে পারে বদি তার সুস্থ কর্মাক্ষম দেহ থাকে। সুইজারল্যাওও ইহাদের আবহাওয়ার গুণে, এদেশের প্রতি সদয়। এদেশের

অনাবিশ নিশ্লক স্থারশা সেবনে মৃতপার রোগাদের জীবনীশক্তি ধীরে ধীরে ফিরিয়া আসে, আবার ভাহারা স্ফ সবল মান্ন্য হট্যা উঠে। এই ভাবে এই স্থার দেশটার বুকের অমৃতধারায় আজ কত শত যক্ষারোগী বাচিয়া উঠিতেতে!



পর্বতগাতে কুদ্র আম

শ্রানাটোরিয়ামগুলিতে ১৯০০ গৃষ্টান্দের পুরুর পর্যান্ত গুরু বক্ষা-রোগাদের চিকিৎসার্গ হইত। অবগ্ প্ইজারলাাণ্ডের বাহিরে অন্তান্ত দেশেও শুনাটোরিয়াম আছে। কিন্তু আবহাওয়াও স্থারিশ্মি ছারা অস্ত্রোপচারে টিউবারকুলেসিস্ রোগের (Surgical tuberculosis) চিকিৎসা এই পৃথজারলাাণ্ডের অন্তর্গত লেজা নামক প্থান ছাড়া অন্ত কোথাও হয় না। গত ১৯০০ খৃষ্টান্দে ডাক্তার অগান্টা রোলিয়া নামে এদেশের একজন চিকিৎসক নৃতন পদ্ধতিতে এই রোগের চিকিৎসা লেজাতে আরম্ভ করেন। ইহার পূর্বের এ চিকিৎসার প্রচলন ছিল না। ডাক্তার রোলিয়া এবং তাহার নৃতন প্রণালীগত চিকিৎসার থাতি আন্ধ সমস্ত পৃথিবীতে ছড়াইয়া পড়িয়াছে—ভর্মু পৌছে নাই আমাদের ভারতবর্ষে। এখানকার সাধারণ লোকের কথা ছাডিয়া দিলে চিকিৎসকদের ভিতর খব অন্ধ সংথাকই এ

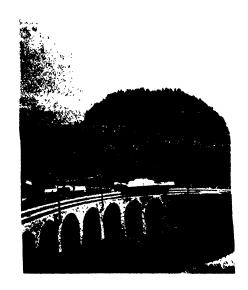
সংবাদ অবগত আছেন বলিলে অন্তায় হইবে না। এই চিকিৎসাপ্রণালী সম্বন্ধে বিশ্বদ বিবরণ আমাদের দেশের জনসাধারণ,
বিশেষতঃ চিকিৎসকগণের গোচরীভূত করার যথেষ্ট প্রয়োজন
আছে। বর্তুমান প্রবন্ধে লেজ ার একটু বিবরণ দিতে
চেন্টা করিব। কিন্তু তৎপূর্ব্বে গাহার অধ্যবসায়-শুণে লেজ ।
আজ জগছিব্যাত সেই স্থা-উপাসক ডাক্তার রোলিয়া
প্রধানতঃ কি ক্তা হইতে স্থা-চিকিৎসক হইয়া পড়িলেন
সে-সম্বন্ধ সামান্ত তই-একটি কথা বলিতে চাই।

অগান্তা রোলিয়ার নিবাস সুইজারল্যাণ্ডের অন্তর্গত লোজানের (Lausanne) নিকটবর্তী নোশাতেল নামক স্থানে। তাহার পিড: এক জন অধ্যাপক ছিলেন। অগান্তা স্থলে অধ্যয়নকালে তাঁহার সহপাঠীদের ও নিজের গান্তের রুখের পার্গকা লক্ষ্য করেন।



লেজার অপর দৃষ্ট

তাঁহার চামড়ার বং ক্যাকাশে আর রুয়কদের ছেলেদের রোদে পোড়া। শারীরিক শক্তিতে রুষকদের ছেলেরা তাঁহার অপেক্ষা অনেক শ্রেণ্ড ছিল। এই সব ছেলেদের নিশ্চরই ভাল আহার-বিহারের ব্যবস্থা ছিল না। তবে তাহাদের শক্তি তাঁহার চেয়ে বেশী কেন? তিনি চিম্ভা করিয়া ছির করিলেন রোদ লাগিয়া উহাদের শরীরের চামড়ার রংও বদলাইয়াছে এবং দৈহিক শক্তিও বাড়িয়াছে। এই সিদ্ধান্তের সঙ্গে সঙ্গে তিনি নিজের শরীরেও রোদ লাগাইতে স্থক করেন। ইহাই তাঁহার স্থোগসনার ভিত্তি। আব একটা (সাধারণের দৃষ্টিতে সামান্ত) ঘটনায় সুর্যারশ্বির উপকারিতা সম্বন্ধে তাঁহার ধারণা



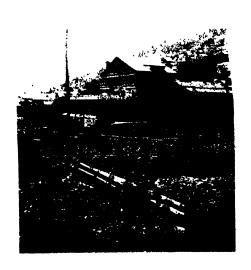
ইলেকট্রিক ট্রেন ধাইতেছে

দৃচ্তর হয়। তাঁহার ক্কুরের পিঠে একটা গুলা tumour ।

হয়। তাঁহার ছাত্রাবস্থা হইতেই অস্ত্রবিদ্যার প্রতি
আস্থা ছিল। কান্দেই কুকুরের পিঠে ছুরি চালাইলেন এবং
অস্ত্রোপচারের পর ষ্ট্রসহকারে বিজ্ঞানসক্ষত ব্যাণ্ডেজ
বাধিয়া দিলেন। কিন্তু তাঁহার রোগাঁটি কিছুতেই ডাক্রারের
বা ডাক্রারের ব্যাণ্ডেজের মর্যাদা রাখিল না। সে বিনা
দিধার বিনা সন্ধোচে দাঁত এবং নথের সাহাব্যে ব্যাণ্ডেজ
ছিঁড়িয়া নিশ্চিন্ত হইল। ডাক্রারও ছাড়িবার পাত্র নহেন।
প্ররায় রোগীর পিঠে ব্যাণ্ডেজ চাপিল। রোগাও কম
বেহায়া নয়। এমন সুন্দর ব্যাণ্ডেজ অল্লফণের ভিতরেই
টুকরা টুকরা হইয়া ধূলিবিল্পিত হইল। প্রত্যহই এই
ব্যাপার চলিতে লাগিল। তার পর এক দিন রোলিয়া ছঠাৎ
শক্ষ্য করিলেন, রোগী নির্দ্ধিকারচিত্তে ভাহার প্রিঠে রোদ
লাগাইতেছে—ক্ষুত্রান সম্পূর্ণ অ্যাব্তা। এই ভাবে রোদ

লাগাইয়া কয়েক দিনের ভিতরেই কুকুরের ক্ষত সম্পূর্ণ শুকাইয়া গেল।

বিধাত অন্ত্রচিকিৎসক কোচার (Kocher) ছিলেন ডাব্রুনার রোলিয়ার গুরু। এই কোচারই সন্ধপ্রথম অন্ত্রোপচার দারা আংশিকভাবে পাইরয়েড্ য়াণ্ডের অপসারণ করেন। ইহার হাত্যশ অন্ত্রুত এবং অসীম ছিল। কিম্ব গুরুর শিব্যরকালেই রোলিয়া উপলব্ধি করিলেন যে কোচারের ছুরি ব্যাধি-মুক্ত করে বটে, কিম্ব পঙ্গুছ নিবারণ করিতে পারে না, এমন কি অন্ত্রোপচারের ফলে মৃত্যুও চটিত পারে। এই উপলব্ধি তাঁহার মনে প্রবল



ডেয়ারী--লেজা

আঘাত করে। পঙ্গুত্ব আর মৃত্যু রোধ করিতে পারে না এই অস্ত্রোপচার—তবে? অগাষ্টের এক বন্ধু সিঁড়ির উপর পড়িয়া গিয়া অঘাত পাওয়ার ফলে কটিদেশে টিউবার-কুলেসিস্ হয়। রোগী মনে করিলেন, বিশ্রাম লইলে আরোগ্যলাভ করিবেন। কিন্তু কোন ফল না হওয়ায় কোচারের নিকট গমন করেন—পুইজারল্যাণ্ডের রাজধানী বেয়ান নগরে। কোচার ছুরি চালাইয়া অতি সম্তর্পনে বুলিয়ার ছারা আ্লাক্সাস্থ্য ও বিধ্বন্ত অংশসমূহ স্পূর্ণক্রেণ্ড



ডাক্তার অগাষ্টা রে।লিয়া

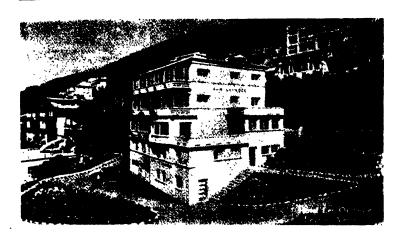
নিশুল করিয়া অপসারিত করেন। ফলে রোগীর পা দৈর্ঘো একটু ছোট হইয়া গেল। রোগা মনে করিলেন, ইহাতে কিছু ক্ষতি হইবে না বরং পর্ম আনন্দের বিষয় এই যে, চিরদিনের জন্ম এই হরস্ত ব্যাধির হাত হইতে মুক্ত হওয়া রোগী আবার স্বকাব্দে ফিরিয়া গেলেন। কিন্তু তাঁহার সে আনন্দ বেশাদিন স্থায়ী হইল না। ধাটতে রোগের আক্রমণের লক্ষণ পুনরায় ফুটিয়া উঠিল। কোচার আবার ছুরি চালাইলেন। কিন্তু রোগ তবুও ছাড়িল না। পায়ের এক অংশ ও একটি আঙ্**লেও** চশিল। তবুও রোগের শেষ নাই। অবশেষে কোচার সেথানেও হতভাগ্য রোগীর স্বন্ধ আক্রান্ত হয়। অতিক্রম সীমা চালাইলেন। -কিন্ত করিয়াছিল। রোগী ডাক্তারকে ক্লডজ্ঞতা ন্দানাইয়া বিদায় লইয়া ঘরে ফিরিলেন। কিন্তু আর এ যন্ত্রণা সহু হয় না; রোগী আত্মহত্যা দ্বারা জীবনের অবসান করিল। রোলিয়ার মনে প্রচণ্ড আঘাত লাগিল। এই ভাবে চারি বৎসর

কাটিল; রোলিয়ার মন আলোড়িত হইতে লাগিল। তাই ত কোচারের অস্ত্রোপচারের পরও শতকরা ৫০ জন রোগী মৃত্যুমুথে পতিত হয়! ইহার প্রতীকার কি? ক্রমশঃ এই মৃত্যু-বিভীষিকা হইতে রোলিয়ার মনে এক তথ্য জাগিয়া উঠিল। যক্ষা-বীজাণু দেহের সর্ব্বত্র ছড়ান থাকে—যদিও আক্রমণ স্থানবিংশয়ে নিবদ্ধ থাকিতে পারে। স্তরাং অস্ত্রোপচার দ্বারা আক্রান্ত অংশ কাটিয়া বাদ দেওয়া বাইতে পারে সত্য, কিন্তু তাহাতে রোগ শরীর ইইতে দূর



লেঞার আংশিক দৃশ্য

হয় না। শ্রতরাং এমন চিকিৎসা চাই দাহাতে রোগ
সর্প্রশারীর হইতে বিদ্বিত হয়। রোলিয়া ভাবিতে
লাগিলেন। এদিকে আর একটি ঘটনা তাঁহাকে টানিয়া
লইয়া গেল একেবারে লেজ"তে। বাঁহাকে ক্ষীবনসন্ধিনী
করিবেন স্থির করিয়াছেন হরস্ত যক্ষারোগে তিনি মরণাপন্ন।
তাঁহাকে লেজ"তে স্থানাস্তরিত করা হয়। এদিকে রোলিয়া
তথন বিচক্ষণ অন্তর্চিকিৎসক হিসাবে খ্যাতি লাভ
করিতেছিলেন;—তাঁহার পসার-প্রতিপত্তিও কম নহে।
কিন্তু তিনি তাঁহার উজ্জ্বল ভবিষ্যৎ, খ্যাতি, প্রতিপত্তি, অর্থ—এ-সকলের মারা কাটাইয়া চলিয়া আসেন
প্রেরসীর সঙ্গে লেজ"তেই এবং এই ক্ষুত্র গ্রামেই



'(लाड़्नां निष' द्यादिन

চিকিৎসা-ব্যবসা সুৰু করেন। ইহাই ভবিতব্য। ŤŦ লেক 1 চিকিৎসা-জগতে অন গু থাতি লভ করিবে **देशंहे नि**न्ठग्र বিশ্বনিয়ন্তার বিধান ছিল, নভুবা ঘটনা-পরম্পরায় রো**লি**য়ার গ্রামে এই শুদ্র সাধারণ চিকিৎসক রূপে চিকিৎসা গ্রাম্য আরম্ভ করার কোন হেতৃই ছিল না তিনি രള് সামান্ত গ্রামে আড়ম্বরশুক্ত চিকিৎসা আরম্ভ করিলেন। সামান্ত গ্রাম, তাঁর নিজের ব্যাদিও সামাক্ত এবং উপযুক্ত ঔষধপত্ৰ এবং অন্তান্ত উপকরণেরও যথেষ্ট তবুও চিকিৎসা চলিল- অস্ত্রোপচার, ধাত্রী-(Obstetrician), বিস্তাবিযয়ক প্রস্থ তিবিদ্যাবিষয়ক (Gynaecologist) স্কল প্রকার চিকিৎসাই তাঁহাকে করিতে হইত। কিন্তু শহরের সংস্কার তথনও সম্পূর্ণ দর रुष्र नारे ; डांरे डिनि (मिथिय़) आफर्या इरेलन (य, এত অপরিচ্ছন্নতার ভিতরেও রোগীরা বেশ সহক্ষেই আরোগ্যলাভ করিতে লাগিল। অস্ত্রোপচারে ক্ষত বেশ উকাইতে লাগিল, প্রস্তিরাও সহজেই সুস্থ হইয়া উঠিতে লাগিলেন। অথচ শহরের অভিজ্ঞতায় তিনি দেথিয়াছেন সর্ব্বপ্রকার **সাবধানতা** সংস্থেও সর্ব্বত্র পচনক্রিয়া (sepsis) প্রতিরোধ করা যায় না। (कन थमन इब्र,—(दानिब्रा मिनदां छाविष्ठ नांशित्न। ভাবিতে ভাবিতে এই মনীষীর চোখের সামনে ভাসিয়া উঠিল

ছেলেবেলার খেলার সাথীদের ছবি-সব ছিল রোদে-পোড়া. কোনদিন অসুথ করে নাই। ভাসিয়া উঠিশ সেই কুকুরের স্থাচিকিৎসার সেই আগ্মঘাতী হত-দশ্য, আর ভাগ্য বন্ধুর ছবি কোচারের যশস্ত্রী অস্ত্রচিকিৎসকও তাঁহাকে নীরোগ করিতে পারিলেন না— তাঁহাকে হাত মৃত্যুর হইতে রক্ষা করিতে পারি**লেন না**! তবে অস্ত্রোপচারের উপর কিরূপে ভরসা কর† যায় ? আবাব অক্তদিকে লেজার রোগীদের চোথের সমনে

কি এ অঙুত শক্তি যাহার প্রভাবে দারুণ অপরিচ্ছন্নতার ভিতরও এত সহজে রোগীরা নিরাময় হইয়া উঠে? ভাবিতে লাগিলেন আর ক্রমশঃ সব পরিভার হইতে লাগিল। এদিকে তাঁর প্রেয়সীও ক্রমশঃ লেজ'ার আবহাওয়াও সূর্য্যরশ্মির গুণে মুস্থ সবল হইয়া উঠিলেন। এই মহিলাকে এখন দেখিয়া কেহ বলিতে পারিবে না ত্রিশ-প্রত্তিশ বৎসর পূর্বে তিনি ত্রারোগ্য ব্যাধিতে মরণাপন্ন হ'ইয়াছিলেন। রোলিয়ার মনে কোন দ্বিধা রহিল না, বুঝিলেন সূর্যারশার অন্তত এবং অনস্ত ক্ষমতা, তাই তিনি এই শক্তিকে মানুষের হিতার্থ নিয়োজিত করিতে ব্রতী হইলেন। আজ ত্রিশ বৎসরের উপর হইল রোলিয়া তাঁহার এই ব্রতে ব্রতী আছেন। এই সুদীর্ঘ কালের ভিতর কত মৃতপ্রায় রোগীকে এই সঞ্জীবনী শক্তিদারা পুনজীবিত করিয়াছেন, কত রোগীকে পঙ্গুত্ব হ'ইতে রক্ষা করিয়াছেন তাহার ইয়তা নাই। মানব-সমাজ এই মহাপুরুষের কাছে চিরঋণী থাকিবে। রোলিয়ার প্রশন্ত বক্ষ, সুদীর্ঘ শক্তিমান দেহ দেখিয়া কেহ ধারণাও করিতে পারিবে না ইঁহার বরদ আট্যটি বৎসর। চলনভঙ্গী (मशिरन मत्न इब मक्तिमांनी यूवक। मत्रीरतत **ठाम**णा त्रारम পুডিয়া অনেকটা আমাদের চামড়ার রং ধারণ করিয়াছে। রোদের সময় তিনি ছাতা বা টুপী ব্যবহার করেন না। স্দাপ্রফুল মুখ, মিষ্ট ছাড়া কথনও কটু কথা বা



'(ल नाःल' किनिक

সামাক্ত বিরক্তিবারুক কথা ঠাহার ম্থে শুনি ম'ত্র नाई। - মাজ চার মাসের উপব *হইল প্র*তিনিয়ত ঠাহার **সঙ্গে ক্লিনি**কে ক্লিনিকে পরিয়া রোগা দেশিরাছি এব দেশিতেছি, কিন্তু মনে হয়না কোন দিন তাঁহার মুখে হাসি ছাড়া বিরক্তির কোন চিহ্ন দেখিয়াছি। বিভিন্ন জাতির, বিভিন্ন দেখের, বিভিন্ন মেজাঞ্জের রোগী-প্রত্যেকের প্রশেষ উত্তর দিতেছেন সব হাসিমুখে । এ যে কত বড় সংবম তাহা কল্পনা এরপ সংযম দেখিয়াছি বলিয়া মনে করা বায়না। ইহাকে দেখিলে যে কিরূপ রোগাদের আনন্দ হয় তাহা লক্ষ্য করিবার মত। চিকিৎসক রোগীরা স্থানে রোশিয়া এমনই হওয়া দ্রকার। তাঁহার উপর রোগাদের তাহাদের আরোগ্য করিবেন, অগাধ বিশ্বাস। এ বিব্ৰতি কণামাত্রও অতিরঞ্জিত এরপে অভিজ্ঞতা, ডাক্তার ও রোগীর এমন মধর সম্পর্ক-এই প্রথম দেখিলাম। ঠাহার সঙ্গে নজে ঘরিয়া শিক্ষালাভ করিতে পারিতেছি বলিয়া গৌরব বোধ করি। এ বয়সেও তিনি এত পরিশ্রম করেন দেখিলে অবাক হইতে হয়। ভোর হইতে আরম্ভ করিয়া গভীর রাত্রি পর্যান্ত কান্ধ করিয়া যাইতেছেন-ক্লান্তি নাই, অবসাদ নাই, কাজের ভিতর কোথাও কোন ক্রটি নাই, বিশৃঙ্খলা নাই। তাঁহার তরাবধানে প্রায় চল্লিগটি ক্লিনিক। সর্গুলি

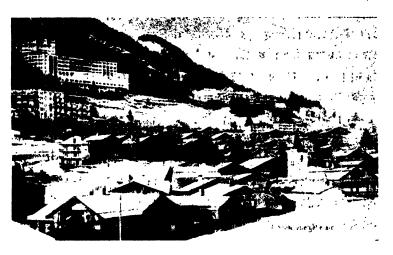
ঘুরিয়া দেখিতে হয়। ক্রমান্বয়ে রোগী দেখা ছাড়া তিনি নানাপ্রকার পরীকা করিতেছেন। বৈজ্ঞানিক লোজান বিশ্ববিদ্যালয়ের অবৈতনিক অধ্যাপক হিসাবে ছাত্রদের লেকচার এতদ্বির আরও দিতে হয় ৷ অনেক কাজ ইঁহাকে করিতে হয়। একটা বড় কাজ—পৃথিবীর বিভিন্ন স্থানের সঙ্গে পত্রব্যবহার। চিকিৎসা-পদ্ধতি সম্বর্টে **লেজ**ার পৃথিবীর অভিজ্ঞতালাভের জন্য বিভিন্ন দেশ হইতে ডা ক্রাররা আসেন এক সাধারণ লোকও এথানকার

ক্লিনিকগুলি দেখিবার জন্স স্থাসিয়া পাকেন। আন্দ্রকদের সব দেখান-বুঝান এও একটা বড় কাজ। নানং দেশের ভাষা রোলিয়াকে শিখিতে হইয়াছে। এসব ছাড়া নিজের পুস্তক ইত্যাদি শেখা আছে। মতহ এই লোকটিকে দেখিতেছি ততই ঠাহার গুণে নুগ হইয়া পড়িতেছি। পুথিবীজোড়া ঠাহার নাম, অথচ কোন আঞালন নাহ, আড়ম্বর নাই, নাম জাহির করার আগ্রহ নাই, নীরবে কাজ করিয়া যাইতেচেন। অবহেলা, বিরক্তি তাঁহার ত্রিসীমানায় আসিতে পারে না। নিজের সাধনায় ভূবিয়া আছেন— মণচ বহিজু গতের সঙ্গেও যথেষ্ট সম্বন্ধ রহিয়াছে। শুৰু অবাক হইয়া দেখি কত মহান এই সরশ সদাপ্রাকুল মানুষ্টি! মাগা ভক্তি:ত নত হইয়া আসে—ইঁহারাই জগদ্ধরেণা, ইঁহারাই স্তিকার মানুষ।

আলপ্দ পর্বতমালার ভাডোরা অংশে অবস্থিত একটি গ্রাম লেজা। গ্রামটি অভি প্রাচীন। এই গ্রামটির উল্লেখ এরোদশ শতাব্দীর ইতিহাসে দেখিতে পাওরা বার। এত প্রাচীন কালের কথা ছাড়িরা দিরা মাত্র পঞ্চাশ বৎসর পূর্বেও লেজাকে ছোটখাট গ্রামরূপেই পাই; তবে প্রাকৃতিক দৃশ্র ও অত্যন্ত স্বাস্থ্যকর আবহাওরার জন্ম ইহার খ্যাতি বছকাল হইতে চলিরা আসিতেছে। লেজা এক ইহার চতুপার্বর্জী স্থানসমূহের, সন্মেহর প্রাকৃতিক, দৃশ্র

বহুকাল ধরিয়া ভ্রমণকারীদের আকুষ্ট কিন্ত করিতেছে । যাতায়াতের অসুবিধা বাদোপযুক্ত গুহৈর অভাবের দক্ষন ভ্রমণকারীর সংখ্যা পুব কম हिन । অর্দ্ধ শতাকী পূৰ্বেও চিকিৎসকগণ তাঁহাদের কোন বোগীকে কেন বায় পরিবর্ত্তনের জন্ম এখানে পাঠাইতেন। রোগী শেক তৈ **অ**াসিত ্ণ-সব তাহাদের স্বাস্থ্যের অতি প্ত করে আশ্চর্যাজনক উন্নতি (FST যাইত। এই কারণেই বোধ হয় ছ-একটি করিয়া নক্ষারোগীও লেজাতে আসিতে

থাকে। শেজ'য় এবস্থানকালে এই রোগাঁদের স্বাস্থ্যের দ্রুত উন্নতি লক্ষিত হওয়ায় ক্রমশঃ এই গ্রামটির দিকে চিকিৎস্ক ও অপরাপর লোকের দৃষ্টি পড়ে। ইহার আবহাওয়ায় জীবনীশক্তি আছে-এই ধারণায় বৈজ্ঞানিক পরীক্ষা আরম্ভ হয়, এবং পরীক্ষা দ্বারা ইহার মাবহাওয়া সম্বন্ধে আশ্চর্যা রক্ষ তথা জানা ধায়। ধক্ষা-রোগীরা এই আবহাওয়ায় থাকিয়া রোগ-বীজাণুর আক্রমণ সহজে প্রতিরোধ করিতে পারিবে এই ধারণায় রোগাদের বাসের জন্ম স্থানাটোরিয়াম নিশাণের স্থচনা গতছদেশ্রে "লা সোসিয়েট ক্লিমাটেরিক দা লেজা" (La Sociate' Climaterique de Leysin") নামক প্রতিষ্ঠানটি সংগঠিত হয়। এই সোসাইটির চে**টায় ১৮৯**০ খ্রীষ্টাব্দে "গ্রাণ্ড হোটেল স্থানাটোরিয়াম" প্রতিষ্ঠিত হয়। এই স্থানাটোরিয়াম প্রতিষ্ঠিত হওয়াতে লেজাঁতে এত অধিক-সংখ্যক ক্ষয়রোগী আসিতে থাকে যে আর একটি স্থানা-টোরিয়ামের প্রয়োজনীয়তা কর্ত্বপক্ষ অমুভব করিতে থাকেন। ১৮৯৫ খ্রীষ্টাব্দে ম' ব্ল'া (Mont Blane) নামে আর একটি স্বৃহৎ স্থানাটোরিয়াম স্থাপিত হয়। ইহার পর ইইভে শেষার সৌভাগারবি অতি দ্রুত উদিত হইতে থাকে। শোকসমাগমের সঙ্গে সঞ্চে বাভায়াভের অহুবিধা দূর করা অতাস্ত প্রয়োজন হুইয়া পড়ে। এখানে ১৯০০ গ্রীষ্টাব্দে ইলেকট্রিক ট্রেনের প্রচলন হয়। ফলে যাতায়াতের



লেভার সাধারণ দণ্ড

অথবিধা দূর হইগাছে। লেজা হইতে প্রায় চার হাজার কুট নীচে গ্র্শ্ (Aigle, প্রাপ্ত এই গাড়ী চলে। এগ্ল্ ফুইন্ডে কেডেবেল রেলওয়ের একটি টেশন। এগ্ল্ হইতে টেনে লেজা পর্যান্ত আসিতে মাত্র ৪৫ মিনিট সময় লাগে। পূর্ব্বাস্থে বেল-কোম্পানীকে ভানাইলে রোগাদের জন্ত বিশেষ গাড়ীর বাবস্থা করা হয়। অবশু এজন্ত কিছু অভিরিক্ত ভাড়া দিতে হয়। এখানে একটা কথা বলা প্রয়োজন—স্ইজারলাণ্ডের সমস্ত রেলগাড়ী বৈত্যাতিক শক্তিতে চলে।

ট্রেনের প্রচলনের সঙ্গে সংস্প অন্তপ্রকার উন্নতিও পরি-লন্ধিত হয়। বহু গৃহ নিশ্মিত হৃহতে লাগিল, দোকান নাট বসিল, স্থানাটোরিয়ানের সংখ্যাও উন্ধরোভর বৃদ্ধি পাইল। ক্রমশং ছ-একটি করিয়া হোটেল গড়িয়া উঠিতে থাকে। পূর্ব্বোক্ত প্রতিষ্ঠানের চেষ্টাতেই গোড়াতে গ্রামটির উন্নতি হইতে থাকে। প্রথম দিকে এই সোসাইটিই অধিকাংশ গৃহ নিশ্মাণ এবং পূর্ব্ব হইতে যে-সব গৃহ বর্ত্তমান ছিল ভাহার কতক কতক প্রয়োজনাহ্যায়ী ক্রয় করে। ক্রমশং আরও স্থানাটোরিয়াম নিশ্বিত হয়।

টুর দ' আই (Tour d' Ai) নামক পাহাড়ের ক্রমশঃ চালু দক্ষিণ ভাগে লেজ'। গ্রামটি অবস্থিত। ইহার উচ্চতা প্রায় পাঁচ হাজার ফুট। স্থানটি হুই ভাগে বিভক্ত। উপরের ক্রংশের নাম কেডে (Feydey) এবং নিয়ভাগ লেজ'। গ্রাম

বলিয়া অভিহিত। অবস্থানহেতু স্থানটির আবহাওয়া অতীব উপভোগ্য। পাহাড়ের দক্ষিণে অবস্থিত বলিয়া উত্তরের অতিশয় ঠাণ্ডা হাণ্ডয়া লেজার উপর বহিতে পারে না। যে পাহাডের গায়ে লেঙ্কা অবস্থিত সেই পাহাড়ই উন্নত প্রাচীরের ন্যায় উত্তরের হাওয়ার সামনে দণ্ডায়মান। এই প্রাচীরে শাগিয়া উত্তরের ঠাণ্ডা কন্কনে বড়ো হাওয়া প্রতিহত হয়। লেজ'তে প্রায় সর্বদাই অতি মৃত্ হাওয়া বহিতেছে। কদাচিৎ ঝড়ো হাওয়াবা প্রবশ হাওয়ার উদ্রেক হয়। এই মৃত হাওয়ার সূর্যারশ্মি-চিকিৎসার পক্ষে স্থানটি এত বাঞ্চনীয়। যেথানে কোর হাওয়া চলে সেখানে রোগীরা এমন ভাবে অনাবুত দেহে স্থারশি লাগাইতে পারে না, বিশেষতঃ শীতকালে রোদ লাগান অসম্ভব হইয়া পড়ে। এখানে দাধারণতঃ নবেশ্বর মাসে ত্যারপাত ্বারম্ভ হয়। তুষারপাত হয়, কিন্তু শেষভাগে প্রবল দিন-কমেকের বেশা স্থায়ী হয় না। তুষারপাতের পর^ই আকাশ পরিষার হইয়া উক্সল স্থ্যালোকে ভরিয়া যায় এবং রোগীরা সকাল ১টা হইতে সন্ধা ৪টা পর্যান্ত অনাবিল স্থ্যালোক উপভোগ করিতে পারে। নিম্নলিখিত বিবরণ হইতে লেজ'ার আবহাওয়ার একটা নমুনা পাওয়া যাইবে:---

গ্ৰীমকাল-নৈনিক উত্তাপ (গড়ে)

১২'৭ ডিগ্রী (সেণ্টিগ্রেড)

শীতকাৰ ··· ০'৫০ " "
গড়ে জলীয় কণা ৬৫'৮'/.
বাৎসরিক প্রেসিপিটেশুন্ ১২১৯ মিলিমিটর
গ্রীয়ে—দিবাভাগের পরিমাণ (গড়ে)

" "(জুন) ১৯৪ ঘণ্টা

" "(**जून**हि) २১৯ "

শীতকালে "(ডিসেম্বর) ৯৬ "

" " (জানুরারি) ১১০ "

" (ফেব্ৰুব্নারি) ১৩৩ **"**

লেজ'ার দক্ষিণে ও পশ্চিমে স্থবিস্তীর্ণ রোন্ উপত্যকা এবং তাহার পর ডেন্ট ডু মিডি (Dent du midi), ম' ব্ল'। প্রভৃতি

পর্বতমালা বৃত্তাকারে দণ্ডায়মান রহিয়াছে। এই উপত্যকার ভিতর দিয়া রোন নদী প্রবাহিত হইতেছে। শেল। হইতে প্রায় চার হাজার ফুট নীচে এই উপত্যকা। এখান হইতে এই উপত্যকার শোভা পরম মনোরম দেখায়। মুসৌরী হইতে ডুন ভেলীর দৃশ্য গাঁহারা দেখিয়াছেন তাঁহারা এই দৃশ্য সহজে কল্পনা করিতে পারিবেন। রাত্রে যথন উপত্যকার বিভিন্ন গ্রাম এবং শহরগুলিতে বৈহ্যতিক আলো জ্ঞলিয়া উঠে, তথন মনে হয় অগণিত উজ্জ্ঞল নক্ষত্ৰ এই উপত্যকার বুকে ফুটিয়া উঠিয়াছে। সে দৃশ্য কত স্বন্ধর, কল্পনায় উপলব্ধি করা অসম্ভব। স্থানাটোরিয়াম এবং ক্লিনিকগুলি এমন ভাবে প্রতিষ্ঠিত যে সমুখেই তুযারাবৃত পর্মত ও রোন উপত্যকা চোগে পড়ে। লেজ'ার আশপাশে বহু বিস্তৃত মাঠ—তাহার কতকগুলি গোচারণভূমি। বসন্তকালে এই সব মাঠ কুলে ভরিয়া গায়। এরপ কুলের মাঠ আর কোথাও দেপিয়াছি বলিয়া মনে হয় না ৷ শীতকালে বর্ফে সব সাদা হইয়া যায় এবং শীতের সক্ষে পক্ষে বরফ লুপ্ত হইয়া যায়। এপ্রিল মাসের প্রথম সপ্তাহে এথানে আসিয়া হু-এক স্থান ছাড়া বরফ দেথা যায় না। অবশ্য কতক কতক পাহাড়ে সারা এপ্রিল মাসে বরফ থাকে। আবার কতক কতক পাহাড় চিরতু্যারাবৃত। পূর্বা, পশ্চিম ও দক্ষিণ এমন খোলা যে সমস্ত দিন লেজা উজ্জ্বল সূর্যাকিরণে উদ্বাসিত থাকে। মাত্র **৫০ ব**ছর পূর্ব্বেও লেঙ্ক্রী সাধারণ গ্রাম মাত্র ছিল। তথন লোক-সংখ্যা ছিল মাত্র চারি শত। আর এই ৫০ বছরের ভিতরে ইহা শহরে পরিণত হইয়াছে—যদিও গ্রামই বলা হয় এবং লোকসংখ্যা পাঁচ হাজারে দাঁড়াইয়াছে। উন্নতির পরিমাণ ইহা হইতে ধারণা করা যায়। আজ **সম**স্ত পৃথিবী লেজার থোঁজ রাখে। পাঁচ-ছয়-সাত তালা প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড বাড়ি-কোনটা স্থানাটোরিয়াম, কোনটা ক্লিনিক, ছোটবড় নানা প্রকার হোটেল, রকমারী দোকান-সমস্ত মিলিয়া ৫০ বছর পূর্বের কুত্র লেজাকৈ আজ শহরে পরিণত করিয়াছে। বৈহাতিক আলো, জলের কল, মোটর গাড়ী, সিনেমা, রেডিও কোন কিছুরই অভাব নাই। ফুল্বর প্রাশস্ত রাস্তা লেজার আশপাশে এবং দুরে--বহু দুরে গিয়াছে। এমন কি, ইটালী, ফ্রান্স, প্রভৃতি বিভিন্ন

দেশ পর্যান্ত গিয়াছে ফুলর রান্তা। পারে ইাটিয়া অথবা মে টরে বেড়ানোর খুব ফুবিধা এবং দর্শনীর স্থানেরও অভাব নাই। একটি স্থল প্রতিষ্ঠিত আছে। অনেকটা জুনিয়র কেম্ব্রিজের সমান পড়া হয়। বিশেবদ এই বে, ছাত্রছাত্রীদের বেতন ত লাগেই না উপরস্ক যাবতীয় ধরচাও কর্তৃপক্ষ যোগাইয়া গাকেন। বিনা বেতনে পড়িবার ব্যবস্থা আম'দের দেশেও আজকল ক্রমশঃ হইতেছে; কিন্তু পুত্তক, পেনসিল, কাগদ্ম সমস্তই স্থল হইতে দেওয়া হয় বিনা মুল্যে—এ ব্যবস্থা পুব কমই আছে।

মিউনিসিপালিটিও প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। এথানে স্ব ডেনর পাইখনা (flush system)। কিন্তু জল-সরবরাহের কর্ত্ত্ব "সোসিয়েট ক্লিমাটেরিক দা লেজ"ার" হাতে। মিউনিসিপালিটি শীঘ্ট সে কর্ড্ছ ক্রয় করিয়া লই:বন এরপ ব্যবস্থা হইতেছে। লেজার স্থানে স্থানে স্থলর ছোট ছোট উদ্যান এবং রাস্তয় মাঝে বসিবার আসনের ব্যবস্থা আছে। লেজার উন্নতির বাবস্থা এই সে:সাইটি করিয়া থাকে। অনেকটা আমা দর ইমপ্রভ-মেণ্ট ট্রাষ্টের মত। বৈহ্যতিক আ**লো** সরবর'হ করে একটি কোম্পানী। লেকা হইতে কিছু দরে হাই ছ ই লেকট ক কোম্প:নীর পাওয়'র হাউস। এথানে প্রত্যেক বাড়ির আবর্জনা নিঙ্ক নর বাবস্থা বেশ ভাল। প্রত্যেক বাড়ির সাম ন ত্ব-একটি করিয়া মুধ-ঢাকা ডাষ্টবিন আছে। সমস্ত আবর্জ্জনা উহাতে নিক্ষেপ করা হয়। প্রত্যহ সকালে মোটর লরি कतिया এই ডাউবিনশুলি দুরে একটা নির্দিষ্ট স্থানে লইয়া যাওয়া হয়। সেধানে জমি ভরাট করার জন্ত এই আবর্জনা ব্যবহৃত হয়। ঐ স্থানে পৌছিবার পূর্ব্বে 'ডাষ্টবি:ন'র মুখ খোলা হর না। সমস্ত আবর্জনা নিক্ষেপ করিয়া সেগুলি আবার নির্দিষ্ট বাড়ির সম্মুখে রাথিয়া যায়। রাস্তার পাশে মাঝে মাঝে তারের ঝুড়ি ঝুলানো আছে।

কাগজ ইত্যাদি রাস্তায় না ফেলিরা ঐ ঝুড়িতে ফেলিবার অন্ধরোধ করিরা বিজ্ঞাপন লটকান রহিয়াছে। রাস্তার উপরে কাহাকেও কোন আবর্জনা ফেলিতে দেখি নাই। এমন কিলোকে পুখু, কাশও ফেলে না। এখানে হুইটি সিনেমা আছে। এতঘ্যতীত বিভিন্ন দানাটোরিয়ামে মাঝে মাঝে কনসাট বা খিরেটার হয়। স্থানীয় ইউনিভারসিটি স্থানাটোরিয়ামে

মাঝে মা'ঝে নানা বিবরে বক্তভ'লি হয়। সময় সময় অস্ত স্থান হই তে স'র্কাস, ম্য'জিক প্রভৃতিব দল আসে। অধিক র'ত্রি পর্যান্ত কোনপ্রক'র আমেদ-প্রম'দ এগা ন নিবিছা। রে'সী দর পক্ষে সেসব অনিষ্টকর। কুবস'য়'ল্ মৃ (Kurenals) নাইট ক্ল'ব প্রভৃতি লেজা'তে নাই। শীতক'লে যথন সমস্ত জারগাটি বরফে চ'কিরা যায় তথন নানাপ্রকার ক্রীড়া-কৌতুক চ'ল। তথন ইউ:র'পের অস্তাস্ত দেশ হইতে বহু লাক লেকা'তে অ'সে। শীতক'লটা এগানক'র প্রের্ফ সময়—
যান্ত্যের দিক দিরা। লেকা'তে কবিকাত জ্বার মধ্যে ম'ত্রে আলু হয়। যাবতীয় তবিতরক'রী এবং ধ'দান্তব্য অস্তাস্ত স্থান হই ত আমদ'নি হয়। প্রতি বহুস্পতিবার এথানে একটি বিশেষ ব'জার বসে। বহুদ্র হই ত ন'না জিনিষ আমদানি হয়—ত'হ'র অধি নাংশই থ'দান্তব্য এবং ন'না প্রকা'রর কৃল। অবশ্য স্থানীয় দেক দেশের তুলন'য় খ্ব বেশী।

এখানে প'চ-ছয়টি বেশ ভ'ল হোটেল আছে। ইংরেকীত বাঁছ'রা কগ'বার্তা বলেন তাঁহাদের পকে লেভ ভিন ("Les Orchidies") হোটে ল থ'কা সুবিধান্তনক। এখানে করাসী ভাষার চলন। ভার্মান ভাষাও কিছু চলে। किन्दु हेरदिकी व हमन थूव कम । वर्ग-देवयमाक निक्र वि:वय धर्मान আদৌ নাই, অন্ততঃ এ-পর্যান্ত অ'মি কিছুমাত্র উপলব্ধি করি নাই। সুইস প্রিবারেও মিশিয়া দেশিয় ছি, কিছু আন্তরিক স্থ্যস্থতা ছাড়া অন্ত ভাব টের পাই নাই। এধানকার লোকগুলি মেটের উপর বেশ প্রফুল্ল ও অমায়িক এবং অ-(बंड लोक.मत म अड (वर्ग मत्रमड रिवेर (मर्स्य) है गत একটা প্রধান কারণ স্বামার মনে হয় এই বে, পুপিবীর নানা ञ्चात्तत (न'रकत मर्क इंहारमत चाम'न-अमान व'न'हे छ हत्र। का कि र क्रम 'त इहेगा वा म'मा हामड़'त शीतव नहेगा था किएन পেট ভরিবে না; কাঞ্চেই মতিগতি পরিবর্ত্তি হইয়া গিয়াছে। ভার পর সবচেয়ে বড় কথা চ'মড়ায় রং শাগানো এখানকার চিকিৎসার একটা প্রধান অস। এধানকার লোকদের মনে সাদা-কালে'র প্রভেদ থাকা সম্ভব নহে এবং থাকিলে অমুত অসঙ্গতি হইরা দাঁড়ার। বিশুদ্ধ তথ্য সরবরাহের জন্ত একটি ডেরারী স্থাপিত হইরাছে। এখানে সব ব্যবস্থা আসুনিক বৈজ্ঞানিক প্রণাদীসমত।

মাধন এবং ক্রিম এই ডারেরীতে প্রস্তুত হর। বিভিন্ন গ্রাম হইতে হুধ আনিয়া, শোধন করিবার পর সরবরাহ করা হয়। বর্ত্তমানে লেজ^{*}াতে প্রায় পঁরত্তিশটি স্থানাটোরিয়াম এবং প্রায় চল্লিলটি ক্লিনিক্ আছে। ডক্টর রোলিয়া এই যাবতীয় ক্লিনিকের কর্ণধার।

বিষ্ণুপুরের ইতিহাসের কয়েকটি নৃতন কথা

শ্ৰীহেমেব্ৰনাথ পালিত

বিক্ষুপ্রের রাজা বীরহাম্বির দ্যা-সর্দার ছিলেন। ইতিহাস এইরূপ বলে। শ্রীনিবাস আচার্যাের পুঁথি চুরির গল্প শুনিরাছি। বলরামদাসের 'প্রেম বিলাস' বা নরহরি চক্রবর্ত্তীর 'ভক্তিরত্বাকর' দেখি নাই। ধন্দাের মহিমায় তল্করও সাধু হয়—বিশ্বাস করি। আচার্যাগ্রাকুরের কন্তা হেমলতা দেবীর শিষ্য, কবি বতুনন্দন ব্যাপারটা এইরূপ বলিয়াছেন:—

শ্রীপ্কসোত্তম দরননে প্রভু জাত্রা কৈল।
বন পথে পথে প্রভু জানন্দে চলিল।
চৌরগণে পৃত্তক হরিজা নিলেক পথে।
রাজ্ঞাপান গেলা প্রভু পৃত্তক নিমির্ছে।
সেইখানে এক বিপ্র প্রমর গিত পড়ে।
ব্যাখ্যা করে শুনি প্রভু হাসে গালি আড়ে।
রাজ্ঞা নিবেদিল তবে বিনয় করিয়া।
আপনে করহ ব্যাখ্যা করুলা করিয়া।
প্রভু ব্যাখ্যা করিল লোক গোস্বামির মত।
শুলু ব্যাখ্যা করিল লোক গোস্বামির মত।
শুলু কুপা করি কো পাএ পড়ে ততিক্ষণ:
প্রভু কুপা কর মোরে লইকু শ্বরণ।
মর্ম ভুপতি নাম শ্রীবির হাধির।
কুপা কৈলা ভারে প্রভু সদর গধির।

পুঁথিগুলি বীরহাম্বিরের লোকজন চুরি করে নাই,—
চুরি করিয়াছিল চোরে। ঘটনাম্থল অবশু বিষ্ণুপ্র রাজ্যেরই
অন্তর্গত ছিল। প্রতিকারকল্পে আচার্য্যাকুর বীরহাম্বিরের
নিকট উপস্থিত হইলে, সেধানে তথন ভ্রমর গীতা পাঠ
হইতেছিল—ভাগবতবাধ্যা নর।

विक्रूश्रुद्रद्र मननत्माहन । वीद-हाक्टिद्रदृष्टे कीर्षि । এই मननत्माहन एषु 'मननत्माहन' हे नन, তিনি আবার বাকা মদনমোহন। রকমারি 'মদনমোহনবন্দনা' শুনিয়াছি। রতন কবিরাজের 'মদনমোহন বন্দনা'র
কথা শুনি নাই। আমার নিকট একগানি পুঁথি আছে।
ইহাতে ঐতিহাসিক মালমসলা রহিয়াছে দেপিতেছি।
মদনমোহন বাকা কেন হইলেন তৎসম্বন্ধে রতন কবিরাজ
এইরূপ বলিতেছেনঃ—

একান্ত করিজা মন: वन्त थञ्ज मतनस्माहन : বিশূপুরে জাহার ক্ষিআতি। একবার মহিমা সিন্ধু : বন্দ পাই একবিন্দ : দেসে ২ জাহার কিয়াতি। জেন সমুদ্রের তিরে: টাম্পক্ড়া মৎস্তবুলে : নির্ণন্ন করিতে সিন্ধু চার_। পবন জিনিয়া গতি : মংস্ত বুলে দিবারাতি : নারে মংস্ত করিতে নির্ণয়: প্রভুর মহিমা তেন: মৎস্ত ৰূলে মোর মন: নির্ণয় করিতে নাহি পারে। বলি ভোরে ওরে ভাই: টের নাহিক পাই : ভাসি ভাসি বুলি তার ধারে। ন্ডনহে জতেক বিপ্ৰ: रेश ना कत्रिश् कहा : কহি কিছু ভিলব্নাধ সিমা। यन मित्रा छन मर्क्व : জে কথা শুনেছি পূৰ্বে : ' মদৰমোহন প্ৰভুৱ মহিমা। অভিনাম গোৰামি ৰলি: হে গোৰামি মহাবলি: তার হান মহিমা প্রচুর ! প্রভাতের রবি জেন: অকের বরণ তেন: দওবতে ফাটএ ঠাকুর॥ প্রভুর মহিমান্থনি : বিষ্পুরে আইলেন ভিনি: তিন দণ্ডবত একে একে। ভকতে বাড়াতে হরি : আপনাকে খাট করি: কেবল কিঞ্চিত অস বাঁকে। তথন গোসাঞি কন: ছাড়ি তুমি বিন্দাবন :

ভূলে আছ পানে মন সেবা।

এখানে বসিরা ওমি: ইহা নাহি জানি স্থামি:
কোন কাজে বিন্দাবন জাবা।

এতেক বচন বলি: নিল প্রভুর পদ-ধুলি: নিজালয়ে করিল গমন।

पदमन क्त्रि (प्रथः

নেই পদ মনে রাখ :

বাকা আছেন মদনমোহন।

এই অভিরাম গোস্থামী রুঞ্নগরের অভিরাম গোস্থামী
ন'ন ত ৈ যতুনন্দন, শ্রীনিবাস আচার্য্যের নীলাচল হইতে
বৃন্দাবন যাইবার পথে, রুঞ্নগরে গোস্থামীদর্শন বর্ণনা
করিয়াছেন:—

আসি কৃঞ্চনগরে: অভিরাম গোসাঞী স্বারে: বসিলেন অতি দীনজন।

বৈরাগ্য পরিক্ষা লাগি: কৈল আগে ছংখ ভাগি:
পরিক্ষিয়া স্থেসন্ন মন ॥

কহে জাহা মাগ তুমি: তাহা তোরে দিব আমি: রাজ্য ধন জন নিত্য জত।

সর্ব্যজন বিমোহিনী: রূপ দিয়ে কাম জিনি : মাগ কিবা তোর অভিমত ॥

আচাষ্য ঠাকুর কহে: আমি কিছু না মাগিএ: মোরে বর দেহ কুপা করি।

রাগান্থগা পথে ভক্তি: গোপাঙ্গনাজন সক্তি: ভাহা দেহ এই সাধ করি ৷

রতন কবিরাজ মদনমোহনের আর এক মহিমার কথা বলিতেছেন :—

> আর এক মহিমা ফন: কির্ব্তিচন্দ্র আইল পুন: হাজার পাঁচ ছর ঘোড়া সঙ্গে করা।।

> লইয়া সকল কোন্তে: মাস ছুই তিন যুবে: নিরব্ধি গড় কোট খেরা। ॥

> করিরা গমন ফন্দি: রসদ করিরা বন্দি:
> তুলে কামান গাছের উপরে।

থানাতে সুলুকু কাটে: কড়াকড়ি নাই আটে: তবু কিছু করিতে না পারে।

তার পর দিনা ছ্এ: মার গেল ছ্আা নিয়ে: টানে ঘোড়া এক বাগ করণ।

কামানে ভরিয়! **হিটা। : সিত্রগতি দিল পিট্যা :** আড়াই সর্ভ ঘোড়াগেল মার। ঃ

জাকর খাঁ জমাদার: মার গেল ভাগিনা তার তথাপি কিরিয়া নাই চায়।

নিসিতে সরনে থাকে: প্রভুকে সপনে দেখে: হাঁসা খোড়া নিল জামা গার ।

প্রভুর কুপার জানি: গড় পরাজয় মানি: নিসি সেসে পালার সর্ভর।

না জাইল নিজ নেসে: নবাবের তলপ রাইসে: বন্দি হইল চোর্দ্ধ বর্জ্কর ।

হুজাদি আইল চড়ি: সজে কোন্ত হানার কুড়ি: আইল কোন্ত বিলাত সূটীআ প্রভুর মোহিমা পায়া: রাজারে সিরণা দিরা: ফিরিআ গেলেন তিনি বরে।

কীর্ছিচক্র সম্ভবতঃ বর্জমংনের রাজা হইবেন।
বর্জমান-রাজ পূর্বেই মুসলমানদের অধীনতা স্থীকার
করিয়াছিলেন। বিষ্ণুপ্র-রাজ প্রথম রঘুনাথের মুসলমানগণ
কর্ত্বক কৌশলে বন্দী হওয়ার কথা ভানিয়াছি। এখন
দেখিতেছি সা হজা বিষ্ণুপ্র-রাজকে 'সিরপা'ও
দিয়াছিলেন।

ইহার পরেই মদনমোহন প্রভর অপর এক মহিমার কথাঃ—

টাক' পুটা হইল ধিক: চড়া! য়াইল মহাসিংহ:

ঠেকার তলায় জাহার মোকাম।

দিন কত বসেছিল: আপুনি পালায়ে গেল:

ফুপ্তা কিছু প্রভুর মঞ্জিমা।

মহাসিংহ—শোভাসিংহ হইতে পারে। বিষ্ণুপ্রের
নিকটে কোথায় ঠেঙ্গারতলা স্থান আছে। শোভাসিংহ
সম্ভবতঃ ঠেঙ্গারতলায় ছাউনি করিয়া থাকিবেন।
১৩২৫ সালের ফান্ধন সংখ্যা প্রবাসীর ৪৩০ পৃষ্ঠার
"ঢাকা নিতে হ'য়ে ধিঙ্গি। ধেয়ে এল শোভাসিকি"
প্রবাদ বচনটির উৎপত্তি সম্ভবতঃ রতন কবিরাজের
'মদনমোহন বন্দনা' হইতেই।

মদনমোহন প্রভুর আর হুই মহিমা :---

আইলেন কলন্দর: সক্রে অনেক লক্ষর: গুলুর করিরা বন্দে।

প্রভুর মহিমা ফ্রনি: ফিরিয়া গেলেন ডিনি: এইরপে গেল ভারাচানে ॥

'কলন্দর' কে—বেংঝা কঠিন। বিশেষজ্ঞগণ অবশ্য 'হলুর' শব্দের অর্থের সহিত সামঞ্জস্য বজায় রাখিয়া একটা কাহাকেও থাড়া করিতে পারিবেন। 'তারাচান্দ' কোথাকার রাজা ছিলেন অনুসন্ধান আবশ্যক।

ভাস্কর পণ্ডিত বিষ্ণুপুর আক্রমণ করিলে গোপাল সিংহ গড়ের মধ্যে আত্মগোপন করিয়াছিলেন ক্যিস করিবার কারণ নাই। রতন কবিরাজ মদনমোহন কর্তৃক মারহাটা বিজয় বর্ণনা প্রসঙ্গে বলিয়াছেন:—

ভাশ্বর পণ্ডিত আইল: বাঙ্গালার মার গেল: কোন্ধের নাহিক রম্মান।

নবাবের চৌঠা থার: মারহাট্টা বলার: ' শুলা সব রাজার শুলান ! পালার রাজা সিকরভূঞ্য : হাজার পাচ ছর লোক নিঞা : এইর.প অঞ্জর পালান।

পালার রাজ! বিরভ্ঞাঃ হাজার পাচ ছর লোক নিঞা: উবু মু.খ বলে তোবা ভোৱা।

পালায় রাজা রামগড়া। : পড় কোটা সব ছাড়া। :

তুল-মানের নাহি থবর থোজ।

পালায় লক্ষের পতিঃ পার সংক্র পালায় ক্ষেত্রিঃ পাছু ধার পাঁচ সর্ব কোজ।

ধল ভূঞা রাজা জার: পাছু পানে নাহি চার: রামকাস্ত গেল এইরপো।

অগাদ বানর মাঝে: পালার সামন্তরাজে: একে একে গেল সব ভূপ।

সকল পালার রাজা: নানা স্থানি হৈল প্রজা: কেবল অটল মর্ম বর।

হরি নামের মালা হাতে: সদাই মগন তাথে: বস্তা রাছেন পাাটের উপর ঃ

ইহা হইতে গোপাল সিংহের সময়ে বিশুপুর রাজ্য কভদুর বিশ্বত ছিল ঐতিহাসিকগণ অনুমান করিতে পারিবেন। অনুসন্ধান করিলে 'তুঙ্গমান' ও 'রামকান্তের'ও ধবর অবণ্য মিলিবে।

ভাষ্কর পণ্ডিত বিষ্ণুপ্রে আসিয়া পড়িয়াছে—গুভঙ্কর আসিয়া গোপাল সিংহ.ক সংবাদ দিতেছেন :—

আইলেন ভান্ধর: থবর করে শুভরর:
তিন লক'-ঘোড়া সঞ্জে কর্যা।
শুনিরা চিস্তিত র'জা: নান তানি হৈল প্রজা:
ভাবনা কর্এ মনে মন।

এই শুভদরই বিধ্যাত 'শুভদরী' প্রণেতা। শুভদর
গোপাল সিংহের অমাত্য ছিলেন। কেহ কেহ বলেন, তিনি
চৈতত্ত সিংহের আমলের লোক। কাহারও মতে গোপাল
সিংহেরও পূর্কেকার। তুইটি ধারণাই ভূল। শুভদ্ধর সম্বন্ধে
ভিন্নপ্রবাদ্ধ বিশদ আলোচনা করিবার ইক্সা আছে।
উপস্থিত রতন কবিরাজ্ঞের মাত মদনমোহন কেমন করিয়া
বর্গী তাড়াইরাছিলেন দেখা যাক।—

স্বাজার ভাবনা দেশি: প্রভু হৈলা মনে ছখি: নিসি সেহ কহিল সপন।

জোপনির লক্ষ্যা রাখি: তাহারে করিলা স্থাধি: আনলে রাখিলে দভাস্থতে।

পাওবের বহার হইরা: ছুর্জোধনে নিপাতিরা: রাজ! কৈলে হস্তিনাপুরিতে ।

ইন্দ্রস ন বাদ করি: ধরি গোর্ম্মন গিরি: গোকুলে রাখিলে গোগুসলে।

কল্পট মারির। নি র : তৈর্থারিলে, নুপতিরে : বিপ্র সিশু দিয়া প্রাণ দানে । ছবিস ক্ৰোট দেৰতা সাথে : জদি আইসে স্থয়নাৰে : তথাপি না দিৰ গড় নিতে।

মাহস হজা গড় নিব: মদনমোহন কে বলিব: কোন ৰ্চ্ছার ভাষর পণ্ডিত।

রাজান্তে নির্ভয় করি: গেলা প্রভূ তরাতরি: নিসি গেল উদর তপনে।

প্রভুর পদ ভরদা করিরা: ভদ্রকে বারাম দিরা: মহারাজ বসিল ধিরানে ।

হেনকালে গোল উঠ : হুবে ঘাটতে কামান হুটে : ধবর আনিতে লোক চলে।

ৰাটে আইসে লাগেছিল: মার থাআ পালাইল:

त्राक्षात्त्र थवत्र कात्व वत्न ।

ন্তনিয়া গোপাল সিংহ: তিলয়াধ নাই ব্লিক: কাজ্ঞিগনে বলিছেন বচন।

ভাবনা করহ সর্বের: ভাশ্বর কিরিয়া জাবে:

আছেন প্রভু মদনমোহন ।

ছুই পাথা পদারিরা: পশ্চিম বাহিনি হকাঃ

ক্ষিরে প্রভুর মন্দির উপর।

অস্তবিক্ষেণ্যতিঃ গড়ে আইসেন পড়পতিঃ

ভাপ্করে-হইরা নিষ্টুর ।

বেষ্টিত তিনধান কো জ: ভান্তর তাহার মাঝে: নিজ্ঞার পালঝে গুডিরা।

পুনরাত্রি প্রহরে: প্রভুদেখা দিল তারে: উঠে ভাগর চমকিত হযা। গ

বলে ডাম্বর পণ্ডিত: কি দেবিলাম আচম্বিত:
হেনকালে নিসি আগুসার!

আইল সৰ জমাদার : সঙ্গে সৰ আসোৱার : ভাষ্ণর করিল হুহার ॥

কহিতে পিঞ্জরে রক্ত: দেখা**ছি জেমন রক্ত:** ভয়ে মোর কাঁপিছে জিবন ॥

ভাষর পুন কয়: বএস বৎসর নর: ফিরে সিপ্ত গড়ের উপর এক।।

সনালি কাড়ের ঠেমা: গারে দেখি নিল জামা: মাধায় পাগড়ি দেখি বঁকো ৰ

সনার কাটার টেড়ি: ভাহে লাল পাগড়ি:

ভাহে বান্দ'। ছহেন্দ্রি ২ ভলনার। গৌর কামান হাভেঃ সনঃ বান্ধ'। ঘট ভাবেঃ

পিঠে ছলে কনকেছ চাল । প্রবণে কুণ্ডল ছলে : বনমালা দেখি গলে :

প্রথম কুলো :
প্রকার কুলো :
প্রকার কুলো কুলো নাম বিদ্যান বিদ্য

জলজ জিনিয়া তমু: ডানি বংর দেখি বেমু: কে:টা বেড়া সনালি যুকুর ।

ৰাউল উন্নমাল খোড়া : গলা ৰেড়া পদক ছড়া :

জিনি দেখি জন্ধন বরন।
বোড়া বাজে' গাছে: দীড়ালই যোর কাছে:
করেন কিছু কর্কশ বচন।

স্থনরে ভাস্কর তুমি: পদ্ধিচর দিয়েঃ।মি;

ষদনমোহন মোর নাম।

আমান বিলাত পুটু: আমারে বাস্তাছ খাট:

বিধাতা হইল তোরে বাম ।

পাপি হয়া বাঁচে গোল : মুঞ হতে আমি ছুলে :

च তক বাঁচিল তোর প্রাণ।

আমার মোহিমা পাবে: বাঙ্গালাতে মার জাবে:

এত বলি হৈলা অন্তৰ্জান ঃ

এত গুনি মমাচার: তক্ষ হৈল জমাদার:

ভান্ধরে বলেন উত্তর ৷

এখান হৈতে চল জাব: এখানেতে নাহি রব:

জানা গেল ঠাকুরের গড় ।

আফ্রা দিল ভাগ্র: কমর বার্ছে লক্ষর:

ভোরেং বিলাত হৈল পার।

এমন প্রভুর রকে: সব জমাদার সক্ষে:

নবাবের হাতে পেল মার।

मल त्रीकात्र सन : क्विल প্रज्ञू भागार्थाश्न :

নজন্তে ব্লাধেন প্রিথিবি ত।

ঠেকিল প্রভুর ঠাঞিঃ পারা পার পাতে নাঞি:

বুক্তন কবিকাজ বিবে।চন।

মুক্তি

শ্ৰীআশালতা দেবী

₹8

নির্মাণা অভিভূতের মত ত'হ'র রাজির শ্বা'র উপর বিসিন্ন ছিল। হ'ত-হইখানি কোলের উপর ক্ষ.ড়া করা। এতদিন বে তরুনী সংসারের ব'হিরে পুঁথিগত জ্ঞ'নের রাজ্যে ড্বিরা ছিল, ভে'রের আকাশ বাহ'র কর্ননাকে জাগ্রত করির'ছে এবং স্থা'ন্ডকালের বালীলা যাগার জনমকে রাঙ ইরছে, সে অজ সংস'রের মর্ম্মন্থানের পরিচর প'ইরা বিশ্বার স্তন্ধ হইরা ভ'বিতেহিল, "এ কি! এতদি যাহ'কে জানিতাম এ তাে সে নয়। ইহ'র সহিত কোনদিন আমার পরিচর ন'ই। এত অজাব এত দৈত এমন শীর্ণ্যুর্ভি কলাল এই সুক্ষর জগতের কোন কো ণ লুক ইয়'ছিল!"

ত হার এমন ভ বন'র কারণ ছিল। চল্লক'ন্তের সংসারে এই তু-তিন মাসের মধ্যে জনেক পরিবর্ত্তন ঘটিয়া গিয়'ছে। সেই বে মাসগানেক আ গ ইনফুরভার মত জার তিনি দিন-পানর ভূগিয়'ছিলেন, তাহার পরে জর সারিল বাট, কিছু কাশির জের খানিকটা রহিয়'ই গেল এবং এমনিই ক্রত তাঁহার শরীর থার'প হইয়া জিল বে বয়ব ছবেরা গুই বেলা দেখিতে আসিয়া চোক টেপা-টেপি করিতে লাগিলেন। তাঁহার বে গুই ছেলের বিবাহ হইয় ছিল ভাহারা নিজের বাড়ির

গতিক দেখিয়া শশুরবাড়িতেই কায়েমি হই ন ক্ষবাস করিতেছিল। এক জন উকিল হইয়া শাম্লা-মাথার নিজ্য আলি রে কোটে বাতায়াত করিত। আর একজন শশুরের একমাত্র মেয়েকে বিবাহ করিয়া তাঁহার চালের গদি ত গুই বেলা বিসিয়া কাজকর্ম শিবিত। বাজির সহত ত হা দের সম্বন্ধ প্রায় হিল না বলি লই চলে। কারণ বাজির প্রতি ছিল তাহাদের তীত্র এতিমান। চক্রকান্তের নিজের বিস্তর ঋণ তাঁহার নানা বন্ধুবান্ধবের কাছে। তাহারা চক্রক স্তের শরীরের গতিক দেখিয়া রোজ বেণী করিয়া মুখভার করিতেছিল। জোয়ারের জল সরিয়া গেলে নদীর ঘাটের উদ্ভেক্ত পাথরগুলা যেমন বাহির হইয়া পড়ে তেমনি এ সংসারের জীর্ণ অস্থিপভরগুলাও জনশা প্রকট হইয়া

চন্দ্রকান্তের সেজ ছেলে মুরলী মার্চেণ্ট আফিসে
পরাত্রিশ টাকা মাহিনার কেরানীগিরি করিত। তাহার
বিবাহ হয় নাই। আপাততঃ তাহার ক্ষুদ্র আরের উপর
নির্ভর করিরাই সুগীলাকে সংসারের সমস্ত চালাইতে হইত।
সংস'রের নানা তঃধ'দৈত্তের মধ্যে পড়িরা তাহার আজন্মসহিঞ্ স্বভাবেরও বেন বাতিক্রম হইরাছে। প্রতিমা-স্করী
নির্মলা আসিবার করেক দিন পরেই বাপের বাড়ি চলিরা

গিরাছে। আর কম বলিয়া ঠিকা ঝিকেও সুনাঁলা ছাড়াইরা দিরাছেন। তাঁছাকে উদয়াস্ত একলা পরিশ্রম করিতে হয়। নির্দ্মণা তাঁছাকে একটু সাহান্য করিতে গেলেই তিনি যে দৃষ্টিতে তাহার দিকে তাকান তাহা তিরস্কারেরও বাড়া। এ-সংসারের হংশদৈন্ত এমন অব্যবহিত ভাবে নির্দ্মণা আর কথনও অম্ভব করে নাই। সে যেন এত দিন স্থপ্রের খোরে কোন এক অর্ফকুট চক্রালোকে যুমন্ত রাজ্পের উপর দিয়া যাইতেছিল। অনতিক্ট জ্যোৎস্লার রমণীয়তায় সমস্তই মধ্র, সমস্তই স্থক্পর্শ লাগিতেছিল। জাগিয়া উঠিয়া য়ঢ় দিবালোকে সমস্তটারই চেহারা আর একরকম দেখাইতেছে।

এই একটু আগে তাহার ভাই মুরলী আফিস হইতে আসিয়া জীর্ণ পুরান র্যাপারধানা গায়ে দিয়া ভাঁড়ার ঘরের দাওয়া হইতে ডাকিল, "মা, চাটি মুড়ি।" শীতের বিকাল বেলায় তাহার আফিস হইতে ফিরিতেই প্রায় সন্ধ্যা লাগিয়া গিয়াছে। সারাদিনের পরিশ্রম এবং অপরিসীম কুধার চিহ্ন তাহার সমস্ত মুণে একেবারে স্পষ্ট করিয়া আঁকা।

রাল্লাবরের পৈঠার উপর একটা কেরোসিনের ডিপে

হইতে একটুখানি আলো এবং অপ্যাপ্ত ধুম নির্গত

হইতেছে। চুল্লিতে আশুন জনিতেছে। রাল্লা চড়াইবেন
বিলয়া সুশীলা কাপড় কাচিতে গিয়াছেন। তাঁছার দেরি

দেবিল্লা আর থাকিতে পারিল না। তাঁড়ার ঘরে

চুকিলা একটি রেকাবিতে করিলা চারটি মুড়িও কল্লেক থণ্ড
নারিকেলের টুক্রা লইলা মুরলীর সামনে রাখিল। মুরলী

ধেন দক্ষর মত সন্ত্রন্ত হইলা উঠিল। নির্দালা আসন
পাতিতেছিল; তাহার হাত হইতে তাড়াতাড়ি আসনটা

টানিলা লইলা সে বলিলা উঠিল, 'থাক, থাক।'

নির্ম্মলা যথন বাবার ঘরে থাকে তথন সর্বনাই পরিছার-পরিচছন হইয়া থাকে। চক্তকাস্ত বাবু প্রায়ই বলেন, মা আমার, এই নিরানন্দ রোগীর কক্ষে কেবল তোমার দিকে যথন চাই তথনই আমার সমস্ত মন ভরে ওঠে। মনে হয় থেন অন্ধকারের মাঝে একটুক্রা চাঁদের আলো।

আৰম্ভ তাই সে বিকাল বেলার গা ধুইরা একথানি কালো ডুরে কাপড় পরিয়াছিল। গারের ব্লাউসে একটু আতরের গন্ধ। মুরলী তাহার হাত হইতে থাবারের রেকাবিখানা লইবার সময় অতি সমূচিত ও বিপন্ন ভাবে তাহার দিকে চাহিল। তাহার দীন ভাব এবং জীর্ণ বেশ আজ এত সুস্পষ্ট হইয়া সেই চাহনির মধ্যে ধরা পড়িল যে, নির্ম্মলা বেদনায় কাতর হইয়া পড়িল। প্রগাঢ় কুয়াশার মধ্যে পণিক অশ্বের মত চলিতে চলিতে হঠাৎ স্থর্য্যের আলো প্রকাশ পাইলে যদি চমকিয়া দেখে পায়ের কাচে অতলম্পর্শ গহুবর তাহা হইলে সে ধেমন ত্রাসে বিশ্বয়ে স্তন্থিত হয়, নির্মালাও পুমকলকিত অনুজ্জ্ব আলোকে মুরলীর সঙ্কুচিত দৃষ্টির দিকে চাহিয়া তেমনি স্থগভীর লক্ষা বিশ্বয় এবং বাথায় থেন স্তব্ধ হইয়া থমকাইয়া দাঁড়াইল। এক মুহুর্ত্তের মধ্যে তাহার মনে বিশ্বের চিস্তা ভিড করিয়া আসিল। তাহার নিজের ভাই, এই তাহার আনেশবের সংসার! যেখানে এত হৃঃথ এত দৈল দেখানেও দকল দীনতা হইতে আবৃত করিয়া এতকাল এ সংসার তাহাকে কেবল অমৃত দিয়াছে। কিন্তু নির্মালার আজ আয়ধিকারের সহিত বারংবার মনে হইতে লাগিল, কেন ছোট হইতে তাহার বাবা তাহাকে এমন করিয়া আগ্লাইয়া মান্ত্ব করিয়।ছেন ? কেন ছঃখে অভাবে দৈল্তে সে সকলের সহিত এক হইতে নারী আক পারে নাই? আজ আবরণ থসিয়া গেল। করুণারূপিণী হইয়া নিজেকে খুঁজিয়া পাইল। **যে আঘাতে** যে বেদনায় সে জাগিল, জাগিয়া যে পৃথিবীতে আসিয়া দাড়াইল, সে জগৎ পুঁথির জগৎ নয়, সে পৃথিবী সুত্র্লভ সৌন্দর্য্যে বেরা নিভত স্থান নয়। সংসারের সমস্ত ভুচ্ছতা এবং অকিঞ্চিৎকরতার মাঝখানেও বেখান দিয়া সেহ, প্রেম, করুণার ধারা নিত্য প্রবহমান, সেইখানেই সে নিজকে জাগিতে দেখিতে পাইল।

নিশ্বলা তাই ভারাক্রাস্ত মন লইয়া আপন শ্যার উপর
বিসিয়া ভাবিতেছিল। কিন্তু বে বেশী ক্ষণ বিদিশ না। বাবাকে
হরলিক্স করিয়া দিবার সময় হইয়াছিল। উঠিয়া একটি
ছোট ষ্টোভ্ ধরাইয়া হরলিক্স তৈয়ারী করা শেষ হইলে,
পেরালা-হাতে চক্রকান্তের খরে চুকিল। আঞ্চলাল তিনি
অধিকাংশ সময়ই বিছানায় শুইয়া থাকেন। দেহ হুর্ম্বল,
ক্ষয়ক্ষীণ। ঘরের মধ্যে আলো এবং অন্ধকার মেশামিশি।
বিজ্ঞলীবাতির পরিবর্তে ঘরের এক কোণে রেজির তেলের
সেক্স জ্ঞলিতেছে। তাহাতে ঘরের সমস্ত অন্ধকার দূর হয়

নাই। চন্দ্রকান্ত তক্সাচ্ছরের মত পড়িরাছিলেন। নির্মাণা সবেমাত্র পেরালাটি টেবিলের উপর নামাইরাছে, বাহিরে জুতার আওয়াজ পাওয়া গেল। নিবিল আসিয়া ঘরে চুকিল। তাহার ঘরে চুকিবার শব্দে চক্রকান্ত চমকিয়া কহিলেন, "কে?"

অপরিচিত দেখিয়া নির্মাণা মাথায় আঁচল টানিয়া দিয়া
আত্তে আত্তে পাশ কটোইয়া সরিয়া ঘাইবার উপক্রম করিল।
নিখিল নমস্কার করিয়া কহিল, "বৌদি, যাবেন না।
আপনার কাছে কিছু আবেদন আছে, তাই সাহস ক'রে
এসেছি। আমাকে চিন্তে পারছেন না, কিন্তু সেটা শুধু
আমার লক্ষীছাড়া চেহারার দোঘ। আমাকে আপনি
দেখেছেন যামিনীর বিয়ের সময়। আর আমার কথা হয়ত
অনেক শুনেছেন তার মুথে। আমি যামিনীর ব৸
নিখিল।"

চক্রকাস্ত বিছানা হইতেই বলিলেন, "তুমি নিখিল! ঘরে বেনা আলো নেই তাই প্রথমটায় ঠাহর করতে পারি নি। তুমি বো'স। মা নিশ্মলা, নিখিলকে একপেয়ালা চা তৈরি করে খাওয়াও।"

নির্মাণা আর বাহিরে না চলিয়া গিয়া চক্রকান্তের বিছানার কাছে সরিয়া গিয়া হরলিক্সের পেয়ালা তাহার মুখের কাছে ধরিল। তিনি যামিনীর বন্ধুকে দেখিয়াই তাহার খবর পাইবার জন্ত ভিতরে ভিতরে অত্যন্ত চঞ্চল হইয়া উঠিয়াছিলেন; কহিলেন, "তার পর, সব ভাল আছ ত ?"

নিখিল তাঁহার দিকে ফিরিয়া কহিল, "আমরা ভালই আছি। কিন্তু আপনি যে এমন অস্ত্রু সে কথা ত আগে জানতাম না। একটা কথা আপনাকে বলি, বৌদির সঙ্গে আমার কিছু কথা আছে। আপনার ঘরে বকাবকি ক'রে আপনার লাস্ত্রি ভঙ্গ করতে চাই নে। অতিথিকে আপ্যায়ন করবার আদেশ দিলেন তাঁকে, যদি অনুমতি করেন তবে ষ্টোভ্টা ধরিয়ে দিয়ে, চায়ের জ্বলটা চড়িয়ে দিয়ে তাঁকে কিছু সাহায্য করি।"

চন্দ্রকান্ত বৃদ্ধিলেন বামিনী নিশ্চর তাহার বন্ধর মারফতে ত্রীকে কিছু বলিয়া পাঠাইরাছে। সে কথা গোপনে বলিবারই কথা, তাঁহার সম্মুখে বলিবার নর। বৃদ্ধিরা তিনি পুলকিত হইয়া উঠিলেন, বলিলেন, "বাও মা, বাইরের ঘরে নিধিলকে বসিয়ে হটো গল্প-টল্ল করো গে। আমার এখন ঘুম পাচেছ। তাছাড়া রোগীর বদ্ধ ঘরে তাকেবসিয়ে কেন হঃথ দেবে? তোমরা পাশের ঘরে যাও।"

পাশের যরে আসিয়া তাক্ হইতে টোভ্টা পাড়িতে পাড়িতে নির্মলা ব**লিল,** "আমাকে কিছু বলবেন ?"

"চা করতে হবে না। আপনি স্থির **হরে সামনের** চেয়ারটায় ব*হ*ন।"

নিশ্মলা বসিল।

নিখিল নিজেই টোভটো টানিয়া লইয়া শিপরিট্ ঢালিভে ঢালিভে কহিল, "আচ্ছা, আমিই ধরাই। টোভের শব্দে আমাদের কথা বাইরের কেউ শুনভে পাবে না।"

"সে কি কারও শোন্বার মত কথা নয় ?"

নিখিল কিছুকাল অধোবদনে থাকিয়া কহিল, "এ কথার কি জবাব দেব জানি নে। কিন্তু আপনার বাবার না শুন্লেই ভাল। তাঁর দেহের অবস্থা দেখলুম ভাল নয়।"

বাবার অন্ত্রতার কথা মনে পড়িরা যাওয়াতে নির্মানা বিষয় হইয়া কহিল, "হাা, সেই বে ইন্মুয়েন্ডার পড়লেন, সেই থেকে কিছুতেই আর ভাল রকম সেরে উঠ্ভে পারছেন না। একটু কাশি আর সামান্ত জরের মত লেগেই রয়েছে।"

এখনই আধাঅদ্ধকারে চক্রকান্তের সমস্ত শরীরের উপর যে ব্যাধির প্রত্যক্ষ চিহ্ন দেখিয়া আসিয়াছে, নিখিলের সেই কথা মনে পড়িয়। গেল। অজ্ঞাতসারে তাহার মুখ হুইতে বাহির হুইয়া গেল, 'তিনি বোধ হয় আর বেশীদিন বাচবেন না, তার বোধ হয়…' বলিতে বলিতে নিম্মলার বিবর্ণ মুখের দিকে চাহিয়া সে থামিয়া গেল।

"বলুন না, থামলেন কেন? তাঁর কী হয়েছে? লোকে যা বলে সভ্যিই কি তাঁর তা-ই হয়েছে? আমি যে কিছুতেই বিশাস করতে পারি নে।"

নিখিল তাহার ভূলের পরিমাণ বুঝিয়া তাহাকে আশস্ত করিতে কহিল, "রে অসুথই হোক, ভাল ক'রে চিকিৎসা করালে সব রোগই সারে। আপনি ওঁকে নিয়ে কোথাও হাওয়া বদলিয়ে আসুন না। তাতে চের উপকার পাকেন। এই ত রাজগীরে বামিনীদের একটা প্রকাও বাংলোরাড়ি পড়ে ররেছে। ত্র'জনে মিলে ওঁকে নি র বেড়িরে আফুন। তা আপনি তো আফকাল যামিনীর থেঁ;জ-ধবরই রাখেন না। সে আজকাল কি করছে বনুন দেখি ?"

"কি করছেন ?"

"একটা কথা আপনাকে আগে থেকে ব'লে রাখি। আজ আপনাকে যা-কিছু বলব অপরাধ নেবেন না। মনে রাখবেন, সে আমার কত দিনের বন্ধু, আমি যা-কিছু করছি যা-কিছু বলছি কেবল তার প্রতি একান্ত শুভকামনা বশতঃই বলছি।"

"এত ক'রে ভূমিকা করছেন কেন ?"

তথন অনেক বিধার পর নিধিল সমস্ত কথা বলিল। কহিল, 'দেখুন, তার বাব র অমুথের সংবাদ এসেছিল ব'লে দিন ঘুই তিন হ'ল তাকে ষ্টেশনে ভুলে দিরে এলুম, এর মধ্যেই চিঠি দিয়েছে শীগ্রীর অবার ফিরে আস.ছ। আমি আমার সন্দেহের কথা বল্নুম মাত্র। আক্র অ'পনাকে দেখে আপনার সঙ্গ ভাল ক'রে আলাপ হ'রে মনে বড় কষ্ট হ'ল। আপনার মত এমন স্ত্রী থাকতেও সে…'

'থাক ওসব কথা।'

'আপনি কি রাগ করলেন ?'

'রাগ নর। কিন্তু আমার মনে কোন কট হচ্ছে না। তিনি যদি আর কাউকে ভালবে.স থাকেন আমার তাতে বাধা দেব'র কি অধিকার ?'

'এটা আপনার অভিমানের কথা হ'ল। কিন্তু আর কোন মেয়েকে ভাসবাসবার কথা তো আমি বলি নি। আমি বলছি শাপনি যদি আশ্রয় না দেন তবে আপনার স্বামীর বিপলে যাবার সম্ভাবনা রয়েছে।'

'চা:রর জ্বলটা তো ফুটে উ'ল। এইবারে স্টোভটা নিবিরে দিয়ে চা ভৈরি করি।'

'শাচ্ছা, চা থাচিছ। কিন্তু আমার কথার জবাব পেলাম না।'

'আপনার কথার ছব'ব কি দেব ব্রতে পারছি না।'

'আপনারই তো বোঝবার কথা। সত্যি কথা বলতে কি, আপনাকে আমিও ঠিক বুবে উঠতে পারছি নে। কি রক্ষ একটা অনাসভিত্র তাব। প্রমান্ত আপনি যে কারহীন ভিত্তি তো নর। এইবালে যে দেখে এলুব আপনার সামীর হাতের সেবা। সেই একটুবানিতেই অনেক ইপিত পেরেছি।
আছো, সত্য ক'রে বনুন ত সংসারে বাবা ছাড়া আর কি
কথনও কাউকে ভালবাসেন নি? অংশরৈ এ সমস্ত
প্রশ্নেরাগ করলে চলবে না। ধৈর্যা ধ'রে ওনতে হবে আর
কমা করতে হবে এই ভেবে, যে, আপনাদের জত্যে আমার
মনে মনে একটি উদ্বেগ রয়েছে।'

'রাগ কিছুই করি নি। বরঞ্চ আজ আপনার সঙ্গে কথা-বার্ত্তা কলতে পেরে মনের ভার অনেকটা কম হ'ল। নিজের মনে আজকাল এই সব প্রশা নিয়ে অনেক নাড়াচাড়া করেছি। খুব পরিকার ক'রে কিছু মীমাংসা করতে পারি নে। আমার বাবার কথা জিজ্জেদ করছিলেন; একমাত্র সংসাবে তার সঙ্গেই আমার মনের বোগ হয়েছে। তাঁর ভালবাসায় স্লেহের সঙ্গে আছে উদার শাস্তি।'

নিখিল তাহার কথার মাঝখানেই বাধা দিয়া কহিল,
'কিন্তু গুইটুকু গণ্ডীর মাঝে নিজেকে চিরকাল আবদ্ধ ক'রে
রাখলেই তো আর চলবে না। আমরা কি চিরদিন বাইরে
হাতজ্ঞাড় ক'রে দাঁ,ড়িরে থাকব ? আমার মনে,ছ্র যামিনীকে
আপনি আজও ভাল ক'রে ব্ঝা.ত পারেন নি। সেং যথন
যাকে চার তাকে সমস্ত মন-প্রাণ দির কামনা করে। সে
চাওয়ার মধ্যে এত বেশা জোর, যে, অনেক সময় তাকে
অত্যাচ র ব'লে মনে হয়। ও যাকে চাইবে, তাকে যেন
অক্ষেশ নিজের সমস্ত দিয়ে খিয়ে থাকবে। আপনার সঙ্গে
তার বিয়ের আগের দিনগুলোও তো মনে পড়ে। সে তার
কি অস্ত্র আবেগ! দিনরাত ঐ একই কথা, একই ভাবনা।
সেই জন্তেই তো আমার এত ভয়। ও বাকে দেয় তাকে
কিছু হাতে রেশে বিচার ক'রে দেয় না। সে কি, সে কেমন,
সে সকলও ভেবে দেখা আবগ্রত বোধ করে না।'

চা তৈরারি হইরা গিরাছিল। নির্মালা পেরালাটা তাহার হাতে আগাইরা দিল। নিবিল চারের পেরালা নিংশেষ করিরা কহিল, 'এবারে আমি উঠি। আলাপ যথন করলেন তখন মাঝে মাঝে আগব। এসে বিরক্ত করব। ভাল কথা, যামিনী আপনাকে চিঠিপত্র দের তো? না বাবার অত্থ ব'লে ব্যস্তভার দিতে পারে নি? আজ তার চিঠি পেরেছি। সেখানকার সকলে ভাল আছেন।'

निर्वित विवाद नहेवा ठनिया (अन । मत्न मत्न छाविन,

একদিনেই ইহাকে বেশী নাড়া দেওয়া হই বনা। নির্মাণাকে দেখিয়া তাহার ভাল লাগিরাছিল। আর সঙ্গে সঙ্গে সে বিশ্বিতও হইরাছিল। তঙ্গণীর চারিদিকে বেন প্রত্যুষ বেলাকার নির্দ্দিন কুয়াশার বোর। একট্ একট্ কাটিয়া গাসি তছে কিন্তু এখনও সম্পূর্ণ কাটে নাই। একটা সভ্ভ ঘুম ভাতিয়া ওঠার ভাব। রাত্রির অন্ধকার হইতে সহসা আলোকিত জগতে চোধ মেলিয়া চাওয়ার একটা বিহবলতা।

আজকালকার আধুনিক শিক্ষিতা বত মেরের সঙ্গে নিধিলের আলাগ ছিল তাহাদের সহিত কোনও থানে সে নির্মালার এতটুকু মিল গুজিরা পাইল না। সে ফেন ভিরা জগতের অধিবাসিনী।

₹@

চক্রকান্ত সচক্রিতের মত পড়িরাছিলেন। নির্মাণা বরে চ্কিতেই প্রাঞ্চ করিলেন, 'নিধিল চ'লে গেল ?'

'হা, তুমি গুমুচ্ছ, পাছে তোমার গুমের ব্যাঘাত হয় তাই এ থবে আব এলেন না'।

'বামিনীর কথা কিছু বললে না কি? সে এখানেই আছে তো? ভাল আছে?'

'হা ভাল আছেন—' নির্মাণা একটু ভাবিরা কহিল, 'কিন্তু এধানে নাই। তাঁর বাবার গ্র অসুধ তাই বাড়ি গেছেন।'

'নিধিল আর কিছু ব'লে গেল না কি ?' উৎসূক ভাবে চক্রকান্ত মেয়ের মুখের দিকে চাছিলেন।

निर्मामा भूथ नीष्ट्र कतिया मृष्यस्य कहिन, 'ना।'

জীবনের মাধ্য প্রথম সে বাবার কাছে সত্য গোপন করিল। মনের ভাব লুকাইল। ইহাতে সে মনে মনে ধে-পরিমাণে সৃক্টিত হইল তাহার চেয়ে বেশী কাতর হইরা ভাবিল, 'আমার জন্ধ আমাদের বাড়ির কাহারও মনে মুখ নাই। আমার কথা ভাবিরা ভাবিলা আমার পিতা পীড়িত, মা তো আমাকে দেখিলে বিতৃষ্ণার মুধ কেরান। আমার হাই ভাইরা আমার মত স্বার্থপরকে পরা মনে করে। কাছে গেলে সৃক্টিত হর। এত বড় নিরানন্দের বোঝা কেন আমি কিংলন বাড়ে চাপাইলাক। তে প্রভু, ইহার হাত হইতে কি আমার মৃক্তি নাই? আমি ভাল ভাবিরা গাহা করিরাছিলাম, আমার ভাগ্যে কেন তাহাই মন্দ হইল ?'

এই করেক দিনের হাদ্যভার তাহাকে বিষয়, চিন্তাশীল করিয়া তুলিয়াছিল। আগে দে মানুষের হাদ্যটাকে লক্ষ্য করিত না। সত্যকেই গবচেয়ে বড় মনে করিত। কিন্তু এখন কথা বলিবার আগে ভাবিতে শিখিয়াছে অপরের মনে ইহাতে আঘাত লাগিবে কি না।

চক্রকান্ত কিছুকাল চুপ করিয়া থাকিয়া কহিলেন, "নামিনীর বাবার বৃদ্ধি থ্ব অস্থা? সেই জন্তেই সেইদানীং আর খোঁজধবর নিতে পারে না। তা তৃমি মা আজহ তাকে একখানা চিঠি লেখ গে। বাড়িতে তাদের এত বড় বিপদ, বদি দরকার হয় তো তৃমিও যাবে।"

নির্ম্মলা হাটু গাড়িরা তাঁহার মাথার কাছে বসিরা পজিরা কহিল, 'না বাবা, তোমার এই অবস্থার তোমাকে কেলে আমি কোথাও যাব না।' 'কেন মা, আমি তো বেল ভালই আছি। আছে, বাওয়ার কথা পরে হবে। এখন তাকে একটা চিঠি লেপ গে। নিজের বাজির বিপদে এমন চুপ ক'রে থাকা কি ভাল ?' 'বাচছি। ভোমাকে ঘুম পাজিয়ে রেখেই যাব।'

চক্রকান্তের কাসির মত উঠিয়াছিল, কিছুক্রণ কাসিবার পর নির্জাবের মত হইরা ক্রক স্বরে হঠাৎ বলিরা উঠিলেন, "যা বলছি কর গে না নির্দলা। নিক্রের মত নিয়ে রাতদিন জিদ্ কর কেন? আমি এখন ঘূমোব না, ঘূমোব না। আমার চোধে ঘুম নেই। যাও।"

নির্দ্ধলা ধীরে ধীরে: উঠিয়া গেল। তাহার চকু ছল ছল করিয়া আসিল। নিজের ধরে আসিয়া আলো আলিয়া চারিদিকে চাহিল। পরিপাটি করিয়া ঘরটি সাজান। শেল্ফের উপর সাজান বই। গুলু সুন্দর বিছালার কাছে টিপাইরের উপর একটি প্লেটে করিয়া ছাদের টব হইতে তুলিয়া-আনা এক গোছা রজনীগজা কুল। একহিকে নির্দ্ধলার হার্দ্ধোনিয়মাও কাপড়ের তোরজ। দেওয়ালে রেশমের ঘেরাটোপের মধ্যে সেতার টাঙান। ঘয়ের চারিদিকে তাকাইয়া নির্দ্ধলা আবার বাহির হইয়া আসিল। মনো মনে বারংবার কহিল, না না, এ কথনই হইতে পারে না । এ রক্ষ করিয়া আর

সংগ্রাম বেধানে, সেধান হ**ই**তে বিচ্ছিন্ন হইয়া নিজের মনে নিমগ্ন হইয়া থাকিব না। সকলের মাবে: অতি সহ**ভে** নিজের স্থান করিয়া ল**ই**ব।'

নিজের ঘর ছইতে বার ছইয়া সে রায়াঘরের দিকে গেল।
দ্র হইতে দেখিল জলগু চুলির সমুখে বসিরা স্থালা
রাঁথিতেছেন। তাঁহার চোখে ত্-কে টা জল। বোধ হয়
অজ্ঞাতসারে পড়িরাছে, মুছিয়া লইতে ভূলিয়া গেছেন।
পাশে একটা বেতের মোড়ায় বসিয়া মুরলী তাঁহাকে কি
বলিতেছে। প্রভূতিরে তিনি জোরের সঙ্গে ঘাড় নাড়িয়া
কহিলেন, না না বাবা, সে হবে না। ও মেয়েকে দিয়ে কিছু
হবে না। ও অলক্ষী বেদিন খণ্ডরবাড়ি থেকে পালিয়ে এসে
আমার সংসারে চুকেছে, সেইদিন থেকেই এ-সংসারের কপাল
ভেঙেছে। ও মেয়েকে আমি নি.জ গেকে কিছু বলতে
পারব না। ওর দিকে মুখ ভূলে চাইতে অবধি আমার বিত্যণা
আসে।

মুরলী আরও কিছুকণ চুপ করিয়া বসিয়া থাকিয়া অবংশ্বে একটা নিশ্বাস ফেলিয়া বিষয় মুথে সেখান হইতে উঠিয়া চলিয়া গেল। নির্ম্মলা আর রাশ্লাঘরে ঢুকিতে পারিল না। আবার নিজের ঘরে আসিয়া বিচানার উপর চপ করিয়া বসিল। ব্যথিত মনে ভাবিতে লাগিল, বিবাহের আগে সেই বে আনন্দময় নিৰ্ম্মণ নিৰ্জ্জনতায় দিন কাটিত তাহা ইহারই মধ্যে আকাশের দিগস্তে একেবারে নিঃশেষ হইয়া কেমন করিয়া মিলাইয়া গেল। ইহারই মধ্যে এমন কি ঘটিল যাহাতে তাহাকে আশ্রয় করিয়া তাহাদের সংসারে এত অশাস্তি এমন গ্লানি এত চিস্তা ঘনাইয়া উঠিতেছে। সে হিন্দুর মেরে হইরা স্বামীর সংসার ছাড়িয়া পিতৃগৃহে আসিয়া বসিয়া আছে, এটা কিছু অপরাধ বটে, কিন্তু ভাহারও কি দথেষ্ট কারণ নাই? আমার বাপের বাড়ির লোকেও কি ভাহ। বুঝিবে না ? সে কাগজ-কলম বার করিল। দামিনীকে একটা চিঠি লিখিতে বসিল। কিন্তু অনেককণ আঁকি-বুঁকি কাটিরাও একটা লাইনও লিখিতে পারিল দা। সদরের প্রান্ত অবধি চাহিরা দেখিল সেদিক একেবারে অন্ধকার। সেখানে বে অফুরাগের রেগা একদিন দেখা দিয়াছিল আজ ভাছা किथात्र मिनहिता शिवाहि। ७५ मध्न शक् क वक किष्ट्रमिन काशादक आक्षादक कार्य करिया श्रीत्राष्ट्रिम,

অধীর আগ্রহে সমস্ত দিনরাত্তি অনিমেধ অতন্ত্র দৃষ্টিতে ভাহার দিকে চাহিয়া থাকিত। তাহাতে নির্মাণা তেমন করিয়া সুথ পায় নাই। বরঞ্জননে হইত তাহা হইতে মুক্তি পাইলেই ষেন সে বাঁচিয়া যায়। সেদিকে ষেটুকু আকর্ষণ সৃষ্টি ছইয়া-ছিল পিতার পীড়ার চিস্তায় তাহাকে আজ আর সে খুঁজিয়া পাইতেছে না। এই যে আজ স্কার স্ময় ব্যুর অমঙ্গলের আশঙ্কায় উৎকণ্ঠায় পূর্ণ হইয়া নিখিল আসিয়া ভাহাকে কভ কথাই না বলিয়া গেল। কিন্ত **নির্মাল**রে মনে হইতেছিল সে ধেন কাহারও গল্প শুনিয়া যাইতেছে। মাঝে মাঝে মন সেইদিকে ঝুঁকিয়া পড়িতে চাহিতেছিল বটে, কিন্তু সে পিতৃসেবার হানি করিতেছে ভাবিয়া আপনি আপনাকে শাসনে সংযত করিয়াছে। শেষে লেটার প্যাডের ছ-তিন পূর্গা নষ্ট করিয়া সে চার লাইনের এক চিঠি লিখিল :--''[©]‼চরণকমলেধু

আজ আপনার বন্ধু নিখিলবাবুর মুগে আপনার বাবার পীড়িত হওয়ার সংবাদে বিশেষ চিন্তিত আছি । ফেরত ডাকে তাঁহার সংবাদ দিবেন। আমার প্রশাম লউবেন। ইতি

> বিন।ত! নিৰ্ম্মলা ।"

চিঠি লেখা শেষ হই.ল সে বাজনার ডালাটা খুলিগা বাজাইতে লাগিল। নগন মন খুব খারাপ থাকে তথন সে নিজের মনে জানালার ধারে-রাখা এই তাহার অর্গানের কাছে বিসিয়া বাজায়। মৃত্যুরে গুই একটা গান করে। বাজাইতে বাজাইতে মনে হইল জানালার কপাটের ফাঁকে একটা লাল রঙের লেফাফা। উঠিয়া গিয়া সেখানা টানিয়া আনিয়া দেখিল ত'হাকেই সংখাধন করিয়া লেখা, বর্ণাশুদ্ধিতে ভরা একখানা চিঠি। তাহার অগণ্য বানান ভুল সংশোধন করিলে অনেকটা এইরপ দাঁড়ায়,—

অগ্নিশিপা! তোমার সঙ্গাতের বহিতে আমি বে দগ্ধ হইতেছি। তোমাদের বাড়ির ঠিক পাশে বে এক সার থোলার ঘর দেখিতে পাও, তাহারই একটা ভাড়া লইরা আমি পড়াশোনা করিতে আসিরাছি। দরিত্র ছাত্র। কিন্তু তুমি তাহাকে এমন করিরাছ বে তাহার পড়াশোনা মাধার উঠিয়াছে। রাতদিন শুধু তোমার ঘরের ঐ জানালার কার্ছে ত্বিতের মত চাহিরা থাকি বনি কথনও তোমার সুখ্খানি একবার দেখিতে পাই। যখন এই পথে বাডারাত কর তখন কখনো কখনো তাহা দেখিতেও পাই। কিন্তু সে মুখ এত স্লান। আকাশের তারার চারিদিকে এমন বাপ্স অমিরা থাকে কেন? তোমার সেই বিশ্বর মুখ আমার দিবা-য়াত্রিকে অসহ করিরাছে। আর সকলেছ

ও:গা

চেরে উতলা করিরাছে আমাকে তোমার গান। দরা করিরা অস্তত: পেলিল দিরাও হু-ছতা লিপিরা তোমার শরনধরের জানালা-পথে ফেলিরা দিরা আমার প্রাণ রক্ষার উপার করিও। ইতি

তোমারই অপরিচিত 'সেই'।

চিঠিট। নিৰ্ম্মলা ছি ডিয়া জানালা দিয়া ফেলিয়া দিল। মনে হইতেছিল একটা ক্লেদাক্ত পঙ্কিল পদাৰ্থ খেন সে হাত দিয়া নাড়াচাড়া করিতেছিল। উঠিয়া গিয়া হাত ধুইয়া আসিল। তাহার পরে হই করতলের মধ্যে মৃথ লুকাইয়া বসিতেই তাহার ছলছল চকু ছাপাইয়া সমস্ত দিনেব সঞ্চিত আবাত হইতে নিরুদ্ধ অশু ঝরিয়া পড়িতে লাগিল। মনে হইতে ল'গিল এই অভচিতা এই অসমান হইতে কে যেন এপনট ইচ্ছা করিলেই ভাহাকে রক্ষা করিতে পারে। সে কে? সে কি ভাহার স্বামী? গাহার কথা এতদিন সে किइंग्रे ভाবে नाइ. यिक्टिक मनरक वीशिश वाश्विवांत कौन পুখলা কোন শ্বুতি কোন আলোক ছিল না, সেই দিক্চিহ্নহীন অন্ধকাবের মধ্যেই নিম্মলা অজানা কাহাকে স্মরণ করিয়া ক'দি.ত লাগিল। ফুলেব কু'ড়ির মত যে নারী-প্রক্লান্তর ধক্ৰট কোবকগুলি এতদিন মুখ খুলি-খুলি করিয়াও খোলে নাই, আজ বাহিব হইতে সংসারের বিৰুদ্ধ এবং বিচিত্র বেদনাৰ ভাপে ভাছাৰা বিক্ৰিভ ছইয়া উঠিয়াছে। নিশ্মলা চোপ মুদিয়াছিল, তেমনি করিয়াই টকু নিমীলত করিয়াই রহিল। বাত্রিব অন্ধকারে লক্ষ লক্ষ বীদ্যের অন্ধব মাটির তলা হইতেও সূর্য্যালোকের স্বপ্ন অন্তরে লইয়া নেমন করিয়া উপরে মাথা ভূলিতে চায় তেমনি করিয়া তমসারত সংসারের মধাস্থল হইতে নির্জ্ঞন নিশীথে তাহাব অস্তরশায়ী প্রেম জীবনেশ্বরকে স্মরণ করিবার জন্ত সেই অন্ধকারের মধ্যেই হাতডাইয়া ফিরিতে লাগিল।

26

নিম্মলার চিঠি যেদিন শামিনীর হাতে পৌছিল, তাহার পূর্ব্বরাত্তে তাহার বাবার হার্টফেল করিয়া হঠাৎ মৃত্যু হইরাছে। বাড়িময় ক্রেলনের রোল। মূর্চ্ছিতপ্রায় মাতার নিকট হইতে সেইমাত্র সে উঠিয়া আসিয়া নিজের ঘরে বসিয়াছিল। নির্ম্মলার চিঠিথানা খাম হইতে না খুলিয়াই সে অনেকক্ষণ অতিশয় মমতার সহিত হাতে লইয়া নাড়াচাড়া করিতে লাগিল। তেও দিনের প্রতীক্ষা, কত দিনের স্বপ্নতা। নির্ম্মলার কাছ হইতে এই তাহার প্রথম চিঠি। কিছুকাল শুরু হইয়া

বিসিমা থাকিয়া তাহার পর যখন খুলিয়া সেই ছু-ছত্তের চিঠি পড়িল তথন তাহার মুখের রেখাগুলি আরও কঠিন হইয়া উঠিল।

সেইরাত্রেই সে কলিকাতায় চলিয়া আসিল। বড়বৌদি
মূথে মূথে দীর্ঘছনেদ বিলাপ রচনা করিতে করিতে আসিয়া
বলিয়াছিলেন, 'সেকি ঠাকুরপো! বাড়িতে এতবড় বিপদ,
আর তুমি আছই বাড়ি ছেড়ে চললে? ছোট্বৌকেও
ধন্যি মেয়ে বলতে হয়। এ'স্ত্রী মামুধ, সেই গে তেজ ক'রে
গায়ের গয়নাগাঁটি খুলে ফেলে দিয়ে ফরফর ক'রে বেরিয়ে গেল
ভার পরে এতবড় বিপদ-আপদেও আর ধোঁজ নেই।'

সংসারের প্রতি বিরাগে ও জীবনের নবলক বৈরাগ্যে থামিনীর সমস্তই যারপরনাই বিভূষাকর লাগিতেছিল। কাহারও কাছে আসিয়া সাস্থনা দেওয়া, কাহারও কোন কথার জ্ববাব দেওয়া, এসবই তাহার কাছে অসহ লাগিতেছিল। বড়বৌদির কৈফিয়তের হাত এড়াইতেই সে সংক্ষেপে কহিল, "তাকেই আন্তে চললুম। কি আর বলব, মা রইলেন, তোমরা রইলে, তাঁকে দেখো।"

'তা গাও ভাই। আমরা সব দেখবো গুনব। এসব বিময়ে ভোমাকে কিচ্ছুট ভাবতে হবে না।'

নিথিল অনিদাক্লান্ত আরক্ত চক্ষু যামিনীকে তাহার খেত উত্তরীয় সমেত দেখিয়া ভীত হইয়া কহিল, 'হঠাৎ এমন বেশে যে ?'

'বাবা বৃহস্পতিবার ভোরে হাটফেল ক'রে মারা গেছেন।' নিখিল বন্ধুকে সালনা দিল। মেসের বাসার অংশীচ পালনের যাহা-কিছু করা সম্ভব সমস্ত ব্যবস্থা করিয়া দিয়া কহিল, 'এমন সময়ে বাড়ি থেকে চলে এলে কেন ''

'ভাল লাগল না।'

'ভাহলে', নিখিল একটু বিধা করিয়া কহিল, 'এ সময়ে মেসে না পড়ে থেকে বৌদির কাছেই চল না।'

দেহ-মনের এই শোকার্ত্ত আত্মর অবস্থায় নিখিলের এই কণাটা তাহার মনে মোহের মত স্থাষ্ট করিল। কিন্তু তখনই মনে পড়িয়া গেল নির্ম্মলার সেই কাটার্চ্ছেড়া সংক্ষিপ্ত চিঠি। বলিল, 'মেসে পড়ে থাকব না কিন্তু ভূমি বেখানে বলছ সেধানেও ধাব না। আসি নিজে বাড়ি ভাড়া ক'রে থাকব।'

'সে কি! ভূমি এখন থেকে ক'লকাভাতেই থাকবে না কি?'

'তাই তো মনে করেছি।'

'পরীক্ষাটা দেবে ভো?'

'উফিল হরে আর কী হবে? বাবা নেই।'

'তোৰার দাদারা নিশ্চয় তোমাকে সাহায্য করবেন।'

'দ্ব'দোরে কথা আদাকে মনে পড়িয়ে দিও না।
আদার সমস্ত মনে আলা ধরে। আদি বাড়িতে বাব না।
এখানে থেকেই অধীন ভাবে উপার্ক্তন ক'রব।'

'পাক্। উপার্জ্জনের কথা পরে ভারনেও চলবে। আপাততঃ স্থান্থির হও।' -

'না না, নিথিল ভূমি বুঞ্জে পারছ না। লেংকে যে বলবে এই ছেলেটা ছ্যার ল ফেল ক'রে বাপের পয়সায় ব'সে থায়, আমি তা কিছুতেই সহু ক'রব না।'

'ব্দত উত্তেজিত হ'রোনা যামিনী। বাপের পরসার ব'সে থাওরার চেক্টেও চের বেনী তৃহার্যা বড়লোকের ছেলেরা ক'রে থাকে। ও সব চিস্তা ছেড়ে আগো দেহ-মনে শাস্ত হও। একবার ও-বাড়িতে যাবেনা কি? শুনেছি চন্দ্রকান্ত বাবুও অভিশর অসুস্থ।'

'तिथा यादा।'

সেই দিনই সন্ধার প্রাকালে বামিনী নিজের ঘরে চুপ করিয়া বসিয়াছিল। হঠাৎ সেই জাফরাণ-রভের পর্দাক্ষেলা অনলার বাড়ির দিকে নজর পড়িয়া যাওয়ায় দেখিতে পাইল ঘরে উজ্জ্বল আলো জলিতেছে। আগেকার মত নারেকির আওয়াজ। গেটের কাছে মেটির দাঁডাইরা আছে।

সমস্তই পৃর্বের মত ধর্থানিরমে চলি:তচে অওচ । একটা অন্তৃত হাসিতে তাহার সমস্ত মূখ ভরিরা উঠিল। সে কি বোকা । অথচ এক মূহর্ত্তের জল্প সে কত গভীর সকল লইরা ওই বাড়ির ছুরারে দাঁড়াইরাছিল। ভাবিতেও হাসি পার। আলনা হইতে চাদরটা টানিরা লইরা সে বাহিরে চলিরা পেল। পথে অনির্দিষ্ট ভাবে ঘুরিরা বেড়ানও ভাল। কিন্তু ওই বাড়ির ওই জানালার স্বমূথে বিদ্যা থাকা ভাহার পক্ষেক্টকর। ভিতরে ভিতরে নাজীলেত্বের ভারার প্রতিও তাহার বেন বিড্কা ধরিরা গিরাছিল।

२१

আর করেক দিন পরে নিখিলের এম-এসসি পরীকা। আঞ্চলাল তাহাকে পড়াশোনায় বেণী ব্যস্ত থাকিতে হয়। শামিনী এ মেদ হইতে উঠিয়া গিয়া ধর্মতলা অঞ্চলে খুব বড় বাড়ি ভাড়া দইরাছে। সে এখান হইতে অনেক দুর। নিপিল এখনও একদিনও সেই বাসায় যায় নাই! মনে মনে ঠিক করিয়া রাখিয়াছিল, পরীক্ষার পরে ধীরেম্রস্থে একদিন যাইবে। ভাবিয়াছিল, এতদিনে তাহাদের ছোটগাট ষামিনী যথন মনোমালিক নিশ্চয় গুচিয়া গিয়াছে। আলাদা বাসা করিয়াছে তথন নির্ম্মলাকে নিশ্চয় লইয়া গিষা:ছ। বন্ধুর বাদায় হঠাৎ একদিন গিয়া পড়িয়া তাহাকে পুলকিত এবং বিশ্বিত করিয়া তুলিবে। নির্মালার সহিত হাস্ত পরিহাস করিয়া আব্দার করিয়া তাহার হাতের ঢালা চা এবং তাহার হাতের সাজান থাবার চাহিয়া চাহিয়া খাইবে। এমনি আরও নানা ছোটখাট স্থধের কল্পনায় তাহার পুস্তকাকীর্ণ আদল্প পরীক্ষার দিনগুলা ভালই কাটিতেছিল! কেবল মনের মধ্যে একটু অভিমান ছিল যামিনী নিজের বাড়িতে গিয়া অবধি একদিনও এখানে আদে নাই।

দিন কুড়িক পরে পরীক্ষা হইয়া যাইবার পরদিনেই
নিধিল বিকালের দিকে বন্ধুর বাড়িতে গিয়া হাজির হইল।

যখন সেধানে পৌছিল তখন সবেমাত্র সন্ধ্যা হাজির হইল।

রাস্তার গ্যাসের বাতিগুলা জলিয়া উঠিয়াছে। নিধিল অবাক

হইয়া দেখিল মস্তবড় বাড়ি। গালিচায়, ছবিতে, সোফা
কেদারায় একেবারে আকীর্ণ। এতবড় বাড়ি এবং গৃহসজ্জার
এমনতর কচি যামিনীর কবে হইতে হইয়াছে সে ভাবিয়া
পাইল না। সামনের ঘরটায় কড়া আলো জলিতেছে।

শৃস্ত ঘর, কেহ কোথাও নাই। সামনে এক জন ভৃত্যকে
পাইয়া প্রালু করিল, বাবু কোখায়?

'ভিন্তরে আছেন।'

কিছুকাল অপেকা করিয়া সে ঠিক করিল নিজেই ভিতরে যাইবে। এননে মনে হাসিয়া ভাবিল, বন্ধুবর বহুদিনের বিরহের পর স্ত্রীকে কাছে পাইয়া অন্তঃপ্রের সংঘাই নিময়। এবন বাহিরে আসিবেন কি? ভিতরে চুকিয়া ধেবিল কোণের

দিকের একটা ঘরে একা বসিরা বামিনী কি করিতেছে।
নিধিল কাছে আসিরা পিছন হইতে তাহার কাঁথের উপর
হাত রাখিল। যামিনী এমন ভাবে চমকিরা উঠিল বে:
নিধিল অভ্যন্ত আশ্চর্যা হইল। সে যেন কোন একটা গভীর
হুস্বভির মাঝে ধরা পড়িয়া গিরাছে,—এমনই ভাহার ভাব।
তাড়াভাড়ি উঠিয়া পড়িয়া মুখে ৩% হাসি টানিয়া আনিয়া
কহিল, "চল বাইরে গিয়ে বসি গে। ভার পর? এত দিন
বাদে হঠাৎ কি মনে ক'রে?"

নিধিশ বাইরে গেশ না। তাহার বদলে টেবি:শর উপর যে কয়েকটা জিনিষ রাখা ছিল তাহা নাড়াচাড়া করিতে লাগিল। কয়েকটা কাঁচের গ্লাস, একটা সোডার বোতদ এবং ছইস্কির বোতলের ছিপিতে কর্ক-জু জাটা।

নিধিল মুখ তুলিরা বন্ধুর দিকে চাহিল। তথন আশ-পাশের বাড়িতে স্ক্রার শব্দ বাজিয়া উঠিয়াছে। স্ক্রার সেই কল্যাণপূর্ণ শান্তির মাঝখানে যামিনীর মুখে সে অশান্ত বেদনার কালিমা দেখিতে পাইল। তাহার হাতটা আপন হাতে আবদ্ধ করিয়া কহিল, 'চল, একটু বেড়িয়ে আসি গে। কথা আছে।'

'এখন !'—বামিনী ইতন্ততঃ করিয়া স্কুচিত হইয়া কহিল, 'এখনই দেবীপ্রসাদ আসবে। তার সঙ্গে একটু কাজ রয়েছে। কাফ্টা সেরে যাবো।'

'দেবীপ্রসাদ কে ?'

'তার সঙ্গে অনেক দিনের আলাপ। যে ব্যাক্ষে আমাদের টাকা জমা আছে সে আগে তার থাতাঞ্চিল। পাকা লোক। তার সঙ্গে একযোগেই তো ব্যবসায়ে নেমেছি।'

'এমন পাকা পরামর্শদাতা কবে থেকে জোটালে?' কিসের ব্যবসা? তোমার মন এত অস্থির। পড়াশোনা ছেড়ে দিয়ে এখনই ব্যবসা করবার কি দরকার ছিল?'

কিছু একটা না করতে পারলেই বরঞ্চ মন অস্থির হয়। লোকে বে বলবে আমি কিছু কান্ধ করি নে সেইটেই আমার পক্ষে অসহা।

'বামিনী, আমি বলছি তোমার মন কথনই সুস্থ নেই। অনেক শময় কিছু না ক'রে চুপ ক'রে থাকতে পারাই মনের পক্ষে ভাল। কিছু বাক্ ওস্ব তর্ক। কেবল একটা কথার আমার জ্বাব দাও; এ সব কি?' নিধিশ অঙ্গুলি দিয়া টেবিলের উপর গ্লাস এবং বোতল দেখাইরা দিশ।

বামিনী অপ্রতিভ হইরা কহিল, 'আমি মাতাল হবার ছল্তে থাই নে। কিন্তু সন্ধ্যের সময় মনটা ভরানক চঞ্চল হয়ে থাকে। রোজ ঠিক এই সময়েই দেবীপ্রসাদ থবর আনে সমস্ত দিনের শেরার মার্কেটের ফলাকল। ম.নর অধীরতা কিছুতেই চুপ ক'রে সহু করতে পারি নে। কাল ঠিক এই সময়ে তিন হাজার টাকা লস্ দিয়েছি, কিন্তু তার আগের দিন সাড়ে চার হাজার টাকা পেয়েছি।'

'ভূমি শেরার মার্কেটের থেলা ধরেছ? কিন্তু ও বে এক রকম জুরাথেলা।'

চাকর আসিয়া ধবর দিশ বাইরে দেবীপ্রসাদবারু আসিয়াছেন। বামিনী চট্ করিয়া উঠিয়া পড়িয়া কহিল, 'আমি এখনই আস্চি। আধ ফণ্টার বেশী দেরি হবে না।'

নিধিল চুপ করিয়া বসিয়া রহিল। সে অন্তঃপুর হইতে কোনখানে একটু চুড়ির রিণিঠিনি, কোনখানে একটু ষ্টোভের সাড়া, চায়ের পেয়ালার ঠংঠাং আওয়াজ, কোন-খানে একটু স্কোমল পদশব্দ শুনিবার জন্ত উৎস্ক হইয়া রহিল। কিন্তু কোনখানে কোন ধ্বনি নাই। নিরানন্দ বাড়ি নিঃশব্দ। কিছুক্ষণ পরে একটা চাকর খরে চুকিল। নিধিল ভাহাকে জিজ্ঞাসা করিল, "মা-জী কি এবাড়িতে নাই?"

'শা জী!" সে এমন অবাক হইয়া তাহার দিকে চাহিল যে নিখিল স্পষ্টই বুঝিতে পারিল নির্ম্মণা এখানে নাই বা কোন দিন আদে নাই। চাকরটা টেবিলের উপরকার মাস ও বোতল উঠাইয়া লইয়া বাহিরের বরে চলিয়া গেল।

মিনিট কুড়ি পরে এলাচ দেওয়া পান চিবাইতে চিবাইতে চাদরে অগুরু মাথিয়া প্রাকৃত্র মুখে বামিনী এ ঘরে আনিয়া চুকিল।

তাহার এত করিয়া স্থগদ্ধ মাধিয়া আসার এবং এলাচ খাওয়ার ঘটার ভিতরকার কারণটা বুঝিতে পারিয়া নিথিলের চোথে জল আসিয়া পড়িল। সনে মনে একটু যেন বিভূষণার সহিতই ভাবিল, এই ধরণের লেণ্টিমেণ্টা;ল লোকেদের প্রকৃতির মধ্যে কোন একটা ধারাবাহিকতা নাই।
ভাবের রসে বুঁদ্ হইরা সপ্তম স্বর্গে উঠিতেও ইহাদের যত ক্ষণ,
একেবারে মাটিতে নুটাইরা গড়াগড়ি দিতেও তত ক্ষণ!
তাহার এতদিনের বন্ধুর শেষে এমন পোচনীয় অধােগতি
হইরাছে যে তাহার চাথের স্বমুগে মদ এবং সােডা গ্লাসে
দিশাইতে না পারিয়া চাকরকে দিয়া অপর কক্ষে লইয়া
গিরাও ধাইয়া আসিল। একথা মনে হইতেই তাহার সমস্ত
মন বেদনায় ভবিয়া উঠিল।

ছু-জনেই বহুক্ষণ চুপ করিয়া থাকিল। কথা হারাইয়া গিয়াছে। তাহাদের বন্ধুত্ব দেন নিম্পাণ নিম্পত।

নিখিল চেয়ারটা ঠেলিয়া উঠিয়া দাঁড়াইয়া কহিল, 'এবারে উঠি। এত ক্ষুর্ধি কেন ? খবর ভাল ?'

'ভাল। দেবীপ্রাদা থবর দিয়েছে কাল মার্কেটের দাম

চড়বে, যে শেরারগুলো কেনা রয়েছে তাদের ছাড়লে মোটা টাকা পাওরা যাবে।

'ভাৰই। আছা, আৰু আসি।'

নিখিল উঠিয়া ছয়ারের কাছ পর্য্যস্ত গিয়াছিল। যামিনী টেবিলের উপরকার ব্লটিং প্যাডে আঁচড় কাটিতে কাটিতে কহিল, 'আছ্বা চক্রকান্তবাবু কেমন আছেন জানো ?'

'অনেক দিন ওদিকে যেতে পারি নি। পরীক্ষার তাড়া ছিল। ভূমি মনে করিয়ে দিলে এইবারে যাব। চল না আমার সঙ্গে। কত দিন তো যাও নি।'

'আমি ! আছে। চল । ত্-মিনিট সবুর কর । মুখটা ধুয়ে আসি । আমার আবার ত্-বেলাই দাঁতমাজা অভ্যেস আছে কি না ।'

ক্রম শঃ

শিব-তাণ্ডব

শ্রীগোপাললাল দে, বি-এ

দশিন সমীর বনে বহে দীর পরশ্যন রচি,
কোণে কোণে উঠে বিকশি কুন্তে শামল পার্ক্তি
গন্ধবিষ্র মঞ্জরী এল আমলকী সহকারে
পলাশেতে গেল তেয়ে বনতল কাঞ্চন কোবিদারে,
শুক্তারি অলি, ঝালারি পিক 'বসন্ত বধু' গাহি
নন্দন এল কোন্ পণে আভ কবিদলমুখ চাহি।
হেনকালে একি প্রলায় ঝালা প্রশানপানে
বিত্তাৎকণা বিথারি 'কালীয়' বজ্জের বিষ হানে,
নাশে জীবকুল বনানী আকুল ধরণী কাংসে ঢাকে,
বনস্পতির কোঁপে উঠে শির ছিন্ন লতিকা শাবে:
হায় কোপা এর মিলা,
সুন্দর এনে স্ব্রাশের চরণে মরণ-নীল!

নদীর কিনারে যুগ যুগ ধ'রে ছারাবন প্রাস্তরে, রাথালের স্নেহ বাশরী শাসনে ধেনুমেবপাল চরে, অলুরেতে গ্রাম, আঁকা-বাকা পথে গেহগুলি সারি সারি, স্নেহ প্রেম দরা হুংগ স্থাপতে বাস করে নরনারী: মাঠে মাটি চবে' শস্ত জাগার জ্বাঙ্ডনে ফুটার ফুল বঙ সহি বহি মন্ত্রুকু লভে, হার কোপা ভার ভুল!

ত্যু হ'ে থাকে,- -হেনকালে আসে বিভীষণ মহামারী, খুণী ৰান্ধা, প্লাবনী বক্তা পুঞ্জিত রোযে তারি ; মতর্কে রহে শত নাগরিক শ্রান্ত শয়নতলে, কম্পিয়া উঠে বিপুলা বস্থা বাস্থকীর ফণা টলে ; শ্ৰশান রচিয়া লায়, বিহগীর নীড়ে কাল-ভূজক কেন নাছি ব্ঝা গায়! এ কি অকরণ পরিহ'স তব, ভগবান্! ভগবান্! শত 'তৈমুরী' ঋণান রচিয়া চলে তব অভিযান ! পলক কেলিতে সহে না ক ত্বর ধরণীরে ছিধা করো, অতি অসহায় নিরপরাধেরে **লক্ষ জ**ঠরে ভরো, তুমি দেছ মাটি কোটি বরষের তুমি দেছ জলবায়, त्सर পরসাদ রবি শশী দেছ সুদীর্ঘ পরমায়, ভূণে দেছ ফুল, কীটেরে বরণ, বিহুগের গলে গান, তর-মূম্মর বায়-হিল্লোল নদীবুকে কলতান: তুমিই আবার গুর্জটি বেশে গগনে এশায়ে জটা সুনীল লোহিত! অকারণে হানো তৃতীয় নয়ন ছটা; মূঢ় বিশ্বিত হায়, শিব-ভাণ্ডৰ মূরতি ভোমার কিছু নাহি বুঝা যায়!

কোন্টি চান ?

ঞ্জীযোগেশচন্দ্র রায় বিভানিধি

দশ বৎসর পূর্বে একবার কলিকান্তায় বর্ধা তিন মাস ছিলাম। মেছোবাজার দ্রীটের নিকটে বৈঠকথানা রোডের এক গলিতে বাসা ছিল। বাড়ীট নৃতন, হতলা, তেতলা, দক্ষিণে ও পশ্চিমে থোলা। নৃতন পাড়া, নৃতন বাসায় গেলে জানতে ইচ্ছা হয়, পাশে কে গাকে, কি করে। আমি সকালে বেলা ৮টার সময় বাসায় উঠি। পশ্চিমের হতলার বারাণ্ডা হ'তে দেগলাম, সমুথে ছোট উঠান, ইট-বাধা, বা-দিকে এক অট্টালিকার বাম ও পশ্চাৎ পার্গ। ডানদিকে একটা একচালা, একচালাতে গোটা চারি গাই আছে, বড় বড় গাই। একচালার বাইরে একটি বাছুর, গুইদেহ, দি,ড়িয়ে। কাছে একটি লোক বসো ছিল, দীর্যাকার, দীঘনাসা, এককালে বলিন্ত ছিল, বিহারী আহীর হবে। উঠানের বাদিকে অট্টালিকার গায়ে জলের একটা বড় চোবাচ্চা, নিকটে জলের হুটা কল। কে এই প্রাসাদে গাকে?

বেলা ১১টার সময় দেখি দশ, পাঁচ, পনর বালক চৌবাচার জল ২টা ২টা মাথায় চালছে, কেহবা জলের কলের তলে কাপড় কাচ্ছে, আর কেহবা গামছা আছ্ আছড়ে, বাধ হয়, হতা বার করের কেলছে। আবার দশ বারটি এল, তারাও মাথায় ঘটা ২টা জল চেলে কাপড় কাচতে ও গামছা আছড়াতে লেগে গেল। ছেলে দর বয়স বার হ'তে সতর আঠার বছর হবে, বালালী নয়, পশ্চিমাঞ্চলের।

ঘণ্টাথানেক পরে দেখি, কোন ছেলে লে'হ'র তাওয়া, কেহ পিতলের থালা, কেহ পিতলের বাট্লে: মাজতে বস্তে গেছে। এমন মাজছে থেন কত কালের কি মলা লগে ছিল।

বেলা ওটার সমর জট্টালিকার একতলার সামনের ধরে দেবি ছেলেরা বস্যে গেছে, পাঠ প'ড়ছে। এটা কি পশ্চিমাঞ্চলের ছেলেদের টোল ?

বেলা টোর সময় দেখি জলের চৌবাচচা ও কলের কাছে মধ্যাক্ত কাণ্ড চল্যেছে। মাথায় টো ঘটা জল প'ড্ছে, কিন্তু এখন কাণ্ড ও গামছা কাচার ধুম নাই।

সন্ধ্যার পর তাড়িত-দীপ জ্লো উঠল। এখন সে ঘরে অনেক ছেলে, স্বাই চুপ করে বস্যে আছে; কে খেন কি ব'লছে। আধ দণ্টার পর, বোধ হয়, শতক্ষেও এক মন্ত্র হুম্ম দীর্ঘমরে উচ্চারিত হ'তে শুনলাম। ভার প্রথম ছুটা শব্দ, 'হরে মুরারে'।

রাত্রি ১০টায় দীপ নিবাপিত। অত বড় অট্রা**লিকায়** সাড়াশন্দ নাই। রাত্রি ৪॥ টার সময় ঘ**টা বাজতে লাগল,** ঘর আালাকিত। ছেলেরা কে'গায় বেরিয়ে বেতে লাগল।

পরদিন সকাকে ৬টার সময় দেখি দলে দলে ছেলে এসে কলের কাছে কাপড় কাচ্ছে, গামছা কাচ্ছে। দশ পানর জন নয়, চল্লিশ পঞ্চাশ হবে, কি আরও বেশা। গটার সময় সেই ধরে ছেলেরা বভেছে, কে ধেন কি ব'লছে, ভারপর সেই মন্ত্র। শ্লোকটি ব্রুতে পারলাম।

> হরে মুরারে মধুকৈটভারে। গোপাল গোবিক মুকুক্লগোরে॥

তারপর সে ঘরে জনকয়েককে প'ড়তে দেখলাম। এক মধ্যবয়স্ক অধ্যাপক পড়াচ্ছেন। প্রতাহ এই ব্যাপার দেখি।

বর্ধাকাশ—বাম্-ঝম বৃষ্টি হ'ছে, ছেলেদের দুক্পাত নাই, ভিজতে ভিজতে গঙ্গালান করের কলতলায় আসছে। ভিজতে ভিজতে তাওয়া, খালা, বাট্লো মাজছে। ছাতা নাই। বৃষ্টির পর শীত প'ড়লে গারে চাদরও নাই। এত ছেলে, ভিন মাসের মধ্যে ঝগড়া মারানারি দেখি নি, কলরবও শুনি নি।

এরাকে ? কে পড়ার ? কে দেখে শুনে ? জানতে প্রবদ ইচ্ছা হ'ল। একদিন স্থোগও পেলাম। আমরা বঙ্গদেশে প্রীপঞ্চমীর দিন সরস্বতী-পূজা করি। ওড়িয়া ও প্রশিচমাঞ্চলে গণেশ চতুর্থীর দিন গণেশ-পূজা হয়। আমি পৃষ্ধার পূর্ব দিন নিমন্থণ-পত্র পেলাম। উঠান হ'তে অধ্যাপকেরা আমার দেখেছিলেন, কথনও বই-হাতে, কথনও সংবাদপত্র-হাতে; ভেবেছিলেন আমিও এক পড়ুরা। বরস হরেছে, খেত কেশ শাশুও আছে। স-ধর্মী প্রতিবেশীকে পূজার নিমন্ত্রণ অবগ্র কর্তব্য।

পরদিন বেশা ৯টার শায় পূজা দেখতে গেলাম। বৈঠকধানা রোভ হ'তে আমহান্ত দ্বাট পোষ্টাপিসে বেতে ডান দিকের ৯৩৩০ নম্বর বাড়ী। অটালিকার উপরে বড় বড় অক্সরে লেখা আছে 'শিবকুমার সংস্কৃত-বিদ্যার্থী ভবন।' ভিতরে নেরে দেখলাম নীচের প'ড়বার ঘরণানি বনমালায় সজ্জিত হয়েছে, এধানে ওখানে ফুল ঝুলছে। এক মুমার গণেশ-প্রতিমার পূজা হয়েছে। ঘরের ভিতরে ত্রিশ চল্লিশ বালক এদিকে ওদিকে থাছে, কিন্তু চেটামেচি নাই। সন্ধ্যার সময় আবার গেলাম, অনেক গণ্যমান্ত মারআড়ী ও বাঙ্গালী বস্যেছেন। প্রভুপাদ অভুলক্ষণ গোস্থামী মহাশরের এক ব্যাধান শুনলাম।

পর্দিন বেয়ে শিবকুমার-ভবনের বৃত্তান্ত ভনলাম। মহামহোপাধ্যায় লক্ষ্মণ শান্ত্রী-স্রাবিড় সংস্কৃত কলেজে অধ্যাপনা ক'রতে এসেছিলেন, দেখলেন সেধানে বিদ্যার ক্রম-বিক্রের হ'চেছ। তাঁকেও বিদ্যা বিক্রম ক'রতে হবে। তিনি এই দুষ্য কর্ম ছেড়ে দিয়ে এই বিদ্যার্থী-ভবন প্রতিষ্ঠা এক অধ্যাপক বাঙ্গালী, তাঁর নাম পণ্ডিত करवार्डन । জীচগুটরণ তর্করছ। ঠার দশ বংসরের এক পুত্রও ভবনে ধাকে। শতাবধি বালক বিনাবারে সংস্কৃত বিদ্যা লাভ ক'রছে। এদের সঙ্গে পাঁচ-ছ জন অধ্যাপক থাকেন। ভবন হ'তে ভোজা এবং মাসিক কুড়ি-পটিশ টাকা পান। वानक्ता होन, छोन, खाँही, यि शांत्र। कार्र, त्म अ যৎসামান্ত আনাজ নিজের পয়সায় কেনে। এরা কিন্তু কোখাও ভিক্ষা ক'রতে যার না। ভবনও কারও কাছে হাত পাতে না। পুণ্যশীশের অনাচিত দানে ভগনেন বায় নিৰ্বাছ হচ্ছে।

বহিষ বিনের বা-দিকে একথানি ছোট একতলা ঘর
শাছে। সেধানে আয়ুর্বেদ শিক্ষা দেওরা হ'ত। অধ্যাপক
মহারাষ্ট্রীর। তাঁকে জিঞাসা ক'রলাম এই বর্ধাকাল,
শতাবধি বালকের মধ্যে কও জন রোগে পড়ে? কি রোগে

পড়ে ? তিনি ব'ললেন, এমন কিছু নয়, তিন চারি শন কথন সামান্ত উদরাময়ে কথনও সামান্ত জরে পড়ে। লজন ও পাচনেই প্রায় সেরে ধায়। কদাচিৎ অন্ত ঔষধ দিতে হয়। বালকদিকে দেখেও মনে হ'ল, দেহ পুট নয় বটে কিছু স্বস্থ। ভবনের গখাত বুড়ান্ত সম্প্রতি প্রয়োজন নাই।

আমার বাদার ডান দিকে ছ-সাত কূট দূরে আর এক প্রাসাদ। আমার ঘরের জানালা ও সে প্রাসাদের জানালা দিয়ে একটা ঘর দেখতে পেলাম। এ প্রাসাদে কে থাকে? দেখলাম, এক যুবা, ক্লফর্ম, কিন্তু উদ্ভম টেরিকাটা, গায়ে গোঞ্জ। একটা দোড়িতে তিন চারিটা ক্লমাল ও তিন চারিটা রঙ্গিন মোজা ঝুলছে। বোধ হয় সাবান দিয়ে কাচা হ'য়ে গুখাতে দেওয়া হয়েছে। গুরাটি ঘেই হ'ক, সৌখিন বটে। বর্ধাকাল: কাদাজলের ছিটা মোজায় লাগবারট কথা, ছুতাও কোন্না তিন চারি স্প্রোড়া আছে।

১১টার সমর আগারের পর আমাকে আধ্বণটা বিছানায় গড়াতে হয়। ১১॥ টা হবে, সেইমাত্র শুরছি, সে ঘর হ'তে দেবদারু কাঠের বাব্দের বাজনা বাহুছে। গড়ের গোরার ঢাক। একটু পরে তব্জাপোষের শুড়গুড় ধ্বনি উঠছে। আমি নৃতন শুনছি। কানের কাছে নানা পরং বাদ্যে ঘুম আর হ'ল না। ওটার সময় সে ঘর হ'তে তব্কাতিকি শুনতে পেলাম, পরে শব্দ শুনে বোধ হ'ল মৃষ্টিযুদ্ধ চ'লছে। তারপর একবার বানী, একবার হারমোনি বাজছে। ৫টা পর্যন্ত এরকম চ'লতে লাগল। সন্ধ্যার পর তাড়িত-দীপে ঘর আলো হ'রে উঠল, শুনতে পেলাম ছতিন জন গল্প ক'রছে। পরদিন সকাল বেলা, ওটা হবে, সে ঘর হ'তে কে বান্ধান' 'রাজাল' বল্যে ডাকছে। নীচের তলা হ'তে কে উন্তর দিলে, "এই বাচিছ"; ব্রলাম রাজাল। আমি রাজাল নাম কথনও শুনি নি; নামটা রাখাল না আর কিছু, কে জানে। বোধ হয় চারের গরম জল ছরকার।

ছতিদ্ দিন এই রক্ষ ওনতে ওনতে কৌত্হল হ'ল, কার বাড়ী, কে থাকে? মেছোবাজার হ'তে কলিকাতা মিন্সিপাল্টির গাও-খানা পালে রেখে পথ আছে। নামটা গাও-খানা, কিছ তথন ঘোড়াখানা হরেছে। রাস্তার মরলা বইবার গাড়ী ও ঘোড়া থাকে। ধেধি প্রানাদ-ভিতি ভূল, বেন যুগ স্থ পর্যন্ত দীড়িরে থাকবে। এদিক হ'তে কোন সন্ধান পেলাম না। আমহার ব্রীটে বেরে ব্রুগাম, সেণ্ট পল্স্কালকের হোষ্টেল। সৌবিন যুব টি কলেকের ছাত্র, কিন্তু পড়ে কথন? প্রীষ্টান সমাজে বস্ত্র কিছু বেণী লাগে, কিন্তু বিনাপাঠে ডিগ্রি পাওয়া যার না।

.

ইমূলের ও কলেজের হিদু ছেলেদের হোইেল আছে।
ইমূলের হোউলে ব বুগিরি কিছু কম, কিন্তু কলেভের
হোউলের য্বা দর অর্থার কম হর না। প্রাসাদে হো উল,
এতে দোব নাই। কত কত ছাত্র, কত বৎসর বৎসর
থাকবে। লিবকুমার-ভবনও প্রাসাদ। দরিদ্র ব লকেরা
আছে, কিন্তু টাকা নাই বল্যে ব্রম্কারী, একথা ব'লতে
পারি না। শিবকুমার-ভবন একটা মঠ, কেন যে 'ভবন'
নাম হয়েছে, জানি না। মঠ দেশী; আর ইমূল, কলেভ,
হোউল বিদেশী। সেথানে বিলাতের হাওয়া বইতে থাকে।
সে হাওয়ায় দেশের মাম্যের মত থাকা কঠিন। ইংরেজী
নামগুলা আমাদিকে বিদেশী করের ফেলে। তথাপি
নান্ডিকেরা নামের মাহায়্য মানে না।

নাম-মাহায়্যের একটা উদাহরণ দি। জলে সাঁতার দেওয়া, (धना कता विनाजी व्याविकात नत्र। (मर्टन नमी, शुक्त, দীথি আছে, গ্রীয়ও প্রচুর। পুরী তে জগরাথদেবের চন্দন-যাত্রার সময় (বোধ হয়) একমাস নরেন্দ্র-সরোবরে হাজার হাজার লোক বিকাল বেলা জল-ক্রীড়া করে। ধৃতি প রা গামছা কাঁধে নরে:ব্রুর ঘাটে আসে, মাল-কোচা করে, কে'মরে গামছা বাঁধে, জলে ঝাঁপিয়ে পড়ে। কেহবা খুডি ছেড়ে গামছা পরে লাফিয়ে পড়ে। গামছা সাত হাত শবা, বহুরে খাট। দীড়ো সাঁতার, চিৎসাঁতার, ভাসা সাঁতার, ধে ধেমন পারে, দেয়। আনাড়ীরা কলসী নেয়, কেহবা সোলার আটি ছ-বগলে দিরে গলা পর্যন্ত ডুবিয়ে ৰাল দাঁডিয়ে পাকে। দলে দলে গানও গাইতে থাকে। বেশির ভাগ, পাণ্ডা। এই জল-কেলি যে বছ পূর্বকাল হ'তে আছে, তার একটা প্রমাণ দি। যারা সৌবিন, তারা কাঁধে মৰ্কটশিশু (লীলামুগ), কিখা হাতে পুৰুপক্ষী (লীলাপুক) নিমে আসে। কলিকাভার গোলদীঘি নামে পুকুরে বালক ও যুবকদের জলখেলা দেখেছি। শুনি, এরা সাঁডার

দের না, swimming exercise করে। আর যদি
swimming, তা হ'লে swimming costume চাই।
এটা আলিয়া-গেডি, গারে লেপটে থাকে। এটা শাদা
হ'লে মহাভারত অভদ্ধ হবে, নীল রঙ্গের হওয়া দাই।
বাজারে কিনতে হয়। চাণকা পণ্ডিত থাকাল ব'লভেন,
বিপে, যধন নৌকায় চ'ড়বে, তখন সাঁতারের নীল পোষাকটি
সঙ্গে রেখো, কি জানি নৌকাড়বি হ'তে পারে।'

রাঁচিতে ত্রন্মচর্য বিদ্যালয় আছে। আমি দেখি নি। ন'মটা ব্রস্কার্য বিদ্যালয়, না ব্রস্কারি বিদ্যালয়, মনে প'ড়ছে না। বছর আষ্টেক আগে, জনকরেক ছাত্র ইংরেজী ইছ্:ল পড়ো মেটি ক পাস হ'তে বাকুড়ায় এসেছিল। এক ছাত্রের কলিক'ভাবাসী পিভার অন্ধুরোধে ভাদের বাসার গেছলাম। পুত্রর নাম, ভারক গাঙ্গুলী। ভারা এক ব্রহ্মচারীর ত হ'বধানে থাকত, দশ বার জন। দেখি, এক পাচক আছে, ভুতা নাই। ছাত্ৰেরাই চাল, ডাল কিনে আন। ছুএক জন প্রতাহ বাদ্ধার যায়, নিজেরাই আনাজপাতি ব'রে আনে। একদিন দেখি, ভারকের কাঁধে একটা বড় ভারী বাক্ষ। সে কুরে হয়ে চল্যেছে। তাকে দেখে আমার কট হ'ল। আমি ব'ল্লাম, 'ভারক, তুমি এত ভারী বাক্ষ বইতে পারবে কেন?' সে ব'ল.ল. 'এত পথ আনতে পেরেছি. ঐ ত ব'সা দেখা যাছে।' রাজপথের মাঝে, কভলোক আসছে যাচ্ছে ভার স.কাচ হয় নি। ভার পি**ভা দরি**ত্রও নহেন, মু:ট-থরচ অক্লেশে দিতে পারতেন। দিলে কিন্তু ছেলেকে ব্রমচারী ক'রতে পারতেন ন।। ধুতি পরেয়েছ, গেব্রুয়া উত্তরীয় নিয়েছে, (গেৰুয়া 'পাতাবী' কিছ অবিধি), যার পায়ে এই কাঁকরো পাথরো পথে জুতা নাই, সে মুটের মাথ র ঝক্টে দিরে দুলবাবু সেজে পেছু পেছু যেতে পারে কি? বিনয়-ভোগ ও ত্রদ্বতর্য পরস্পর বিরোধী।

8

কলিকাভার হাজার হাজার ছাত্র কলেকে পড়ে। বাদের নিবাস কলিক'ভা, তারা কলিকাভার থাকবে, প'ড়বে। কিন্তু বাদের নিবাস কলিকাভার নয়, তারা কলিকাভার কোন্-ভণের জন্তে, কোন্ হথের আলার সেধানে প'ড়তে আসে? কলিকাভার বাসের হথে নাই। কেমন করেই বা থাকবে? একটা জেলার লোক জড় হয়েছে।
এই চলিড্ ইংরেজী সালের শীত গ্রীয় বর্গা, তিন ঋড়
কলিকাতার কাটিয়েছি। কাজকর্ম ছিল না, পঞ্চ-ইন্দ্রির
অবাহক ছিল। শীতকালে দেখি, সকালবেলা ৮টা ৯টা
পর্যুক্ত কুআসা। এই কুআসা ভালও নয়, ইন্মুক্তা বরে
আনে। এবার সকাল বেলা নাকে কালি পাই নি, কিছ
ঘরের মেঝের কালি, শাদা বিহানার কালি। ছ-বেলা রাস্তা
ধোআ হ'ছে, মোটর দৌড়ানার ধুলাও প্রায় নাই, কিছ
ঘরে এত ধুলা হয় কেন? ছ-দিন নিকানা না হ'লে
কোণে কোণে কাপড়ের আঁশ জমা হয়। কলিকাতায়
বেক্টিরিয়া-বিৎ আছেন। তারা ধুলা নিরীক্ষণ করেছেন
কি না, জানি না।

প্রকৃতিকে জব্দ করাই সভ্যতা। কলিকাতা সভ্য, পঞ্চইন্দ্রিরকে কর্মচ্যুত করোছে। গ্রীয়কালেও দেখেছি, সকলেরই গায়ে জামা। বড় বড় রাস্তার পাশে দাঁড়িয়ে দেখেছি, হাজার হাজার লোক চল্যেছে, কেবল সেখানে হর্মের মুশ্র দেখতে পাওয়া যায়, কিন্তু রবি-কর দেহ স্পর্দ ক'রতে পারে না। বর্ষাকালের হুপর বেলার পচা গরমে যামের প্রোভ বইছে, দে হই শুখাছেছে! কেবল অসভ্য মুদী ও ময়রা, মুটে ও রিক্শ-টানক আহুড় গায়ে আছে। কদাচিৎ ব্রাহ্মণপণ্ডিত, বোধ হয় পেঁয়ো, উড়ানীখানা আধ-কাঁধে ফেলে চল্যেছেন। এই সব অসভ্যদের শরদী-গরমী হয় না, এরা ১০৫ ডিগ্রি গরম টের পায় না।

কলিকাতার বাড়ী আর গাড়ী। বাড়ী নর, এক এক আটালিকা, এক এক প্রাসাদ। গাড়ী অল্ল, গুড়তে হয়। মোটর-রথ শুকরের মত ঘেঁাৎ ঘেঁাৎ ক'রতে ক'র ত সোজা দৌড়েছে, ভূমি পাশে, মর আর বাচ, দেখতে পার না। রথ এমন কদাকার হ'তে পারে, না দেখলে বিশাস হ'ত না। কিছু এত ধন বোছাই শহরেও আছে কি না, জানি না।

একটা জেলার লোক কলিকাভার, কিন্তু আধ কাঠা শাগের ক্ষেত্ত নাই। বাসি আনান্ধ, বাসি মাছ, আল-দেওরা বাসি তথ অপর্যাপ্ত পাওরা ব্যুর, রেল পাড়া আছে, দেল-বিদেশ হ'তে আনছে। প্রাকৃত্ত এক শিরোস্থি, হোটেলে থাকে, ভু-রেলা থেতে পার, বাসে, বাসে, তের টাকা দ্বের। ভার নিবাস রাড় দেশে, বেদেশে খাল্পসামগ্রীর খাদ আছে। সে কলিকাতা শহরে নৃতন চাকরি ক'রতে এ:সছে। সে ভাতের সঙ্গে এক খামগা নুন না মাখলে ভাত থেতে পারে না, ভাতের স্বাদ নাই। চীর পাঁচটা বান্ধন পার, ঝালের আস্বাদ পায়, আনাজের ও মাছের আস্থাদ পায় না। তার আরেও বিপদ, ১টা বাজতে না বাজতে ক্মিদের চোধে দেখতে পায় না। ময়রাদের পোয়া বার, এক এক জন দশ বার বছরের মধ্যে হু'একখানা বাড়ী ভাড়া দিচ্ছে। একদিন আমহাষ্ট ট্রীটে এক ময়রার দোকানের সামনে দাঁড়িয়ে লুচিভাজা দেখছিলাম। কলিকাতার ময়রার লুচি হাওয়ায় উড়ে বায়, আর গাছের ডালে লাগলে চিটি:য় বায়। এর লুচি মোটা ও ছোট। 'হে হে মোদক, মোটা লুচি ক'রছ, ভেসে উঠতেই তুলছ বে।' সে একটু হাসল, দেশলে দাড়ি পাকিয়েছি বটে কিন্তু বৃদ্ধি পাকে নি। 'এ পুচি নয়, পুরী।' 'এতকণ কাছে আছি, ঘিয়ের লুচি-ভাজা গন্ধ পাচিছ না?' সে আবার হাসল, গেঁয়ো মানুষকে কত বুঝাবে। বৌ-বাজারে এক ময়রার দোকানে একণালা কাল কাল এক নৃতন মিষ্টান্ন দেখলাম। 'ও হে, ঐ কালগুলার নাম কি?' 'গোলাপজাম।' 'কিসের, কেন এত কাল করোছ?' 'গোলাপজাম, লাল-কাল ক'রতেই হবে।' ময়রাটির মনেও রস ছিল। 'আ'**ভে**, শুনবেন, এটি আমার আবিষার নয়। অমুকের দোকানে দেখলাম, খুব বিক্রি হচেছ, নৃতন কি-না। সে ছোট ছোট পানতুয়া ক'রছিল, কি এক কাজে তাড়াতাড়ি উঠে গেছল। किरत **এ**সে দেখে, রস চুঁমে গেছে। পাঁচ-ছ সের জিনিস ফেলে দিতে পারে কি? গোলাপজাম নাম দি.ল, আর হু হু করে বিক্রি হয়ে গেল। কত ছেনা আছে, ভাবভেও रु'न ना।'

কলিকাভার বাসাভাড়া বেলী, হোটেলে ঠাঞি-ভাড়াও বেলী। ছট্দ্ লেনে আমাকে এক যুবকের সন্থান ক'রছে হরেছিল। সে এক মেস-বাড়ীতে অর্থাৎ একারভোজীর বাসার থাকত। বার হ'তে বাড়ীটা প্রাসাদ। চাকরোর সঙ্গে কলেন্তের জনকরেক ছাত্রও থাকত। যার সন্থানে গেছলাম সে চাকরো, পঞ্চাল টাকা বেতন পার। বাড়ী চুকে এক্সনকে, ডিক্লাস্লাম, 'এথানে স্ক্রনী থাকে কি?' ভিনি নাম ভানে ই। করের রইলেন, 'অবনী? এখানে থাকে?' আর একজন ক জিঞাস্ ভ ভিনি ব'ললেন, 'কি জানি, আপনি উপরে ধেরে দেখুন।' আমি ব'ললাম, 'উপরে ধেরে কোন্ ঘরে খুকুব? এই ভর সন্ধার সিঁড়ি বাইতে থেরে পা খনো প'ড়তে পারে। আপনি একটু কট করের জেনে আথন।' বরসের ও শাদাচুলের মান আছে। 'আপনি এই ঘরে বহুন, দেখে আসছি।' ঘরে চুকে দেখি ভিনশানা ছোট ছোট ভক্তপোষ পড়োছে। ৯×১১ ফুট ঘর, উঁচুও ১০ ফুট। ভক্তপোষ বস্যোকোধার যে পা নামিয়ে রাখি, জারগা পাই না। ঘরের ভিনজন সজ্জন, বোধ হ'ল, চাকরের, কিন্তু কি কটে আছেন, সে বোধ হারিরেছেন। অবনীকে পেলাম। কিন্তু আমার আল্চর্য কেল সে দেনবাসার বৎসরাবিধ আছে কিন্তু বাসার সকলে ভাকে চেনে না; সে নামের কেউ আছে কিনা জানে না। ছা ত্ররা কলিকাভার এই ছুর্গভিভোগ কেন করবে?

किनकां किम न वांगू नाहे, शर्फ़द्र मार्ट नाहे। বদি থাকে বহু দক্ষিণে, গঙ্গার ধারে। সংস্কৃত কলেক্রের সামনের রাস্তায় তত গাড়ী চলাচল হয় না, কিন্তু এক 'রেন্ডর^{*}।'র প**লাণ্ড** রম্থনের গন্ধে নাক জ্বল্যে উঠে। স্ব গশিতে ঢুকবার ভো নাই। রে'দ নাই, যত রাজের পচা গন্ধ আছে। সরু গলির কুপ-গৃ.হর গন্ধ তেতশায় হাওয়া-ধানার নিশ্চর বইছে। শ্রন্ধানন্দ পার্ক্ নামে একটা চারি পাঁচ বিনা খোলা জায়গা আছে, হ জ'র ছেলে.ময়ে বিকাল বেলা একটু হাঁফ ছাড়তে আ'সে, কিন্তু পালের আমহাষ্ঠ ষ্ট্রী.টর ফুটপাথে হটা বড় বড় আঁস্তাকুড় অ'ছে, কন্ত পচা শাছের, কত রকম মলের গন্ধে সে পথ ভর্ভর কর:ত থাকে। একদিন নর, ছদিন নর। কিন্তু আশ্রুতের কথা, সে পথ দিয়ে শতশত লে'ক যাচেছ আসছে, প্রায় সবাই নাক খুলে রেখে বেতে আসতে পারছে। গন্ধ-বহ অ-দুশ্র ; যদি দুশ্র ই'ত দেখতাম সে বাতাস ছেলেমেরেদের নাকে চকছে, তাপের open air excursion পরকার হ.চছ। কলিক।তায় থাকেন, তাঁরা গন্ধ টের পান না। কিন্তু বধনই আমি কলিকাতা গেছি, তখনই হ'ওড়া ষ্টেশ'ন এক রক্ষ ভদকা গ**ন্ধ পেরেছি। পরে আর দে গন্ধ** পাই नी। कमिकांछ।वात्री देश नांद्र शहे, छात्र अक बकाह्य

প্রমাণ পেরেছি। তিল তেল পেলে গ্রীম্মকালে গারে ও মাথায় মাধি। ফ্রাসিড হ'লে উত্তম। যেটা পরে আসে সেটা আগের চেরে ভাল হ'রে থা ক। এই সামান্ত বিধি মরণ করের একটা হালি তেল কিনে আনলাম। এক লিশির দাম ৬/০ আনা। নিশির চেপটা আকার দেখে সন্দেহ হ'ল, নিশিটা টেবিলে সাজিরে রাথবার, না শিশির তেল মাথবার। বিজ্ঞাপনের বাহার দেখে, সে স.লাহ বাঁড়িরে দিয়েছিল, মাথায় মংখতে সাহস হ'ল না। একটি ফোঁটা মাথার এক পাশে মাখলাম, আর তার উৎকট গরে মাথা ধরের গেল। তৈলকারের নাক নিশ্চয় ভোঁতা হ'রে গেছে, মৃহ মধুর গন্ধ টের পায় না। তেলটার সত্য সত্য তেল আছে, না কেরাসিন আছে, দেখা হয় নাই।

কলিকাতাব,সীর কানকেও ধ্য। রাজি-দিবা 'লরি'র বড়্যড়ানি, মোটেরের পোঁ-ভোঁ। শৃক্ষধানি, বিশেষ করেয় পৈশাচিক কিড়্কিড় নিতে কর্ণ-পটহচম ছিঁ ড়ে যার না! তার সঙ্গে 'রিকশ'র একতালা ঠংঠং সইতে হবে! তুই এক দিন পরে দেখি আমিও ভনতে পাছি না! ভনতে পাই আর না পাই, কর্ণ-পটহচম ও কর্ণান্থি নিশ্চর বে.গ ন'ড়ভে থাকে। ভনি, অমুকের nervous break-down হয়েছে। বাত-নাড়ী কোমল পদার্থ। ন'ড়ভে ন'ড়ভে মাথার খুলি ভাঙ্কে না, এই আশ্চর্য।

চোথেরই বা দোষ কি। যেদিকে ফিরাই আঁখি, সেদিকেই সামনে শাদা দেওয়াল। শিশুকাল হ'তে কাছের দিনিস দেথতে দেখতে, বইর ছোট ছোট অক্ষর দেথতে দেখতে চোধও হুস্ব-দৃষ্টি হ'য়ে পড়ে। ডাজ্ঞার অভয় দিছেন, চশমা পরাছেন। অয় বয়স, চোথে চশমা; এটা যে বিসদৃশ হ'ছে, সে ভাবনা তার নাই, আমাদেরও নাই। দিনের বেলা, হুপর বেলা, বাজালা দেশে, এই কলিকাভায় যেখানে সূর্য বছার হবার মাথার উপরে আসে, দীপ জেলে পঠন-পাঠন চল্যেছে, কিছুই বিসদৃশ ঠেকছে না। দীপও যেমন তেমন নয়। 'এটা কত ?' 'পঞাশ বাতি' 'ওটা কত ?' 'হুশ্ব ব ভি!' 'এত প্রথম দীপ কেন বসানা হয়েছে ?' 'নইলে দেখতে পাওয়া বায় না।' অ মরা রেড়ীর তেলে সলিতা জেলে প'ড়তে পারি। সেটা কলিকাভাবাসীর অসন্তব। 'প্রবাসী' ও 'ভারতবর্ধ' বার-মাসিকের চিত্র দেখে অনেক দিল

হ'তে জানতে ইচ্ছা হয়েছে, নববঙ্গীর চিত্রকরদের নিবাস কোধার। মনে হর, তাঁরা কলিক:তাবাসী। তাঁরা দিনের আলোতে ঝাপসা দেখেন। আগে আগে দেখতাম, মানুবের, —দৈত্যের নর, দৈত্যানীর নর—মানুষের হাতের পারের আঙ্গুলের শেষ নাই। এখন বছর ছই হ'তে দেখছি, দেব বেবীই হউন, মানুষ মানুষীই হ'ক, সব আধারে বুস্য ই'ড়িরে আছে। এক এক চিত্রে এত অন্ধক'র যে দ্রষ্টা বিড়ালাক্ষ না হ'লে কোধার কি আছে, দেখতে পাবে ন। কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালর কলেজ ছাত্রদের দারীর দেখতে এক কমিটি নিযুক্ত করোছেন। কমিটি দেখেছেন, কলিকাতার কলেক্ষের ছাত্রদের শতকে ৩০ জনের চোধ ধারাপ। সোজা কথার, ৩০ জন অন্ধ হ'তে বস্যেছে, পঞ্চাশ বছর আগে ছই এক জন দেখা বেত।

কলিকাতা-বাসের কট হাজার হ'ক, লোক বাড়ছে, বাড়বে। সেধানে টাকা ছড়ানা আছে, কত দেশের কত লোক বৃদ্ধিবলে ছ-হ'তে কুড়াচ্ছে, কেহ আইন বাতি য় কেহবা আইনের চোধে ধুলা দি য় লুঠছে। কত কত ভদ্র অভিভদ্র, শিক্ষিত অভিশিক্ষিত লোক দ্বি-দ্ধপ। তাঁদের এক দ্ধপ বাইরের দ্ধপদের মুর্পরা ঠকে, আর ফেল্-ফেল্ চেল্লে থাকে।

টাকা উড়াবার এমন জারগা আর কোণাও নাই। কলিকাতার অলিতে গলিতে কত সিনেমা, কত থিয়েটর, ও 'কার্নিভাল' ছবি দেখিয়ে গান ভনি য় বাজনা বাজিয়ে পথিককে মুগা ক'রছে। কলেজ-ছাত্রেরা ঘ্বা, তারাও মাহবা; ভারা কি লুক হয় না?

ধারা টাকা রোন্দগার ক'রতে চায়, তারা কলিকাতায় আসে। আর, বারা টাকা উড়াতে চায়, তারা আসে।কলেভের ছাত্র বিদার্থী, এই হুদলের বাইরে। সে কেন মানে?

বেঙ্গল গ্রমেণ্টের এক বিজ্ঞপ্তি হ'.ড জানচি, কলিক'ডা বিশ্ববিদ্যালরের অধী.ন ৫১টা কলেজ আহে, বিশ হাজার ছাত্র প'ড়ছে। ৫১টা কলেজের মধ্যে ৬টা কল্যা-কলেজ। বাকি ৪৫টার মধ্যে ১২টা কলিকাডার, ৩৩টা অন্ত হ'লে। ২০,০০০ ছাত্রের মধ্যে কলিকাডার ১২,০০০, বাইরে ৩৩টা কলেজে মাত্র ৮,০০০। এই গন্ডি:ড ঢাকা ক.লক নাই। থাক লাই বা কি হ'ত ? ১,৩০০ বাড়ত। কলিক তার ১২টা কলেজে ১২,০০০ ছাত্র সমান চারিয়ে নাই। প্রতি কলেজে ১,০০০ ছাত্র হ'লেও কতাদিকে হিমসিম খেতে হ'ত। হজোর যুবার তব্ব রাখা কি সোজা কথা ? কিন্তু শুনি, কোন কলেজে ৩,০০০, কোন কলেজে ২,০০০ ছাত্র! কলজে চারি বর্ব। প্রথম ও ছিতীর বর্বের ছাত্র সমধিক। একই বর্বের পাঠ নিশ্চর জিন চারি ঘরে হ'তে থাকে। বেখে হয় সকলের ভাগো সমান ভোজা পড়ে না। পাঠ্য বিথরের যত রকম সংবাগ বিযোগ হ'তে পারে, সবই আছে। সকালে, হ্পার, বিকালে কলেজের ২র কথনও থালি হয় না, ঘরের ভিতরের গ্যাস বেরিয়ে বেতে সময় পায় কিনা, কে জানে। এই সব মহা-মহা-বিদ্যালয়ে পড়াশুনা অবগ্য হচ্ছে, কিন্তু এসব শান্তিনিকেজন হ'তে পারে না।

দেখেছি কলিকাতানিব'সী ছাত্রও চোট কলেকে যায়।
কমল, তৃতীয় বর্বের ছাত্র। তাকে জিজ্ঞ স্লাম, 'কমল, তৃমি
বড় কলেজে না চুকে সেণ্টপলস্ কলেকে চুকলে কেন?'
সে কলেজের নাম তেমন শুনি না।' কমলের পিতা
কলিকাতানিবাসী, ধনবান, বিদ্বান, বিচক্ষণ, ভ্যোদশী।
তিনি ছেলেকে বেছে বেছে ছোট কলেকে দিয়েছন।
এই ক.ল জর হাওয়া নাকি ভাল। ফটক হ'তেও দেখেছি,
জায়গা অনেক, তৃণ আছে। আর বে'ধ হয় ছপর বেলা
তাড়িত-দীপ জেলে প'ড়তে হয় না। কমলকে দেখেও মনে
হয়েছ, সে দেশী হ ওয়ায় আছে।

বিশ্ব বিশালেরে গত বাথিক সমাগমে, ভাইস্-চেন্দ্লার স্থার হুসেন সুর ওয়াদি বালাছি লন, কলিকাতার বাইরের কলে জ গুণী শিক্ষক নাই, কলিকাতার কালজে আছেন, ছাত্রেও জুটে। যদি গুণব নৃশিক্ষক নাই থাকেন, বিশ্ববিদ্যালয় কেন দেখেন না ? গুণহীন শিক্ষককে ই ক্তি সের তে প্রারেন।

পাশ গংশ্য কলেন্ডের গুণের পরীক্ষা। বিজ্ঞাপনে দেখি, অমুক কলেন্ডে ত্-শ ছ'ত্র আই-এ পাশ হয়ে ছ, তমুক কলেন্ডে বি-এ পাশ বেশী হয়েছে। এর ছারা কলেন্ডের গুণু বুধতে পারা যায় না। বলা উচিত,

 এই তিনটি সংখ্যা না পেলে ক.ল.জের গুণ বুঝতে পারা যার না। যদি দেখি, মনে করুন, ২ ঃ বর্ষে ছাত্র ছিল ছ-শ, তাদের মংখ্য পাঁচ-শ পরীক্ষা দিতে পেরেছিল, আর ত্-শ পাশ হরে:ছ, তাহ'লে, সে কলেজের কোন্ গুণ আছে? ৬০০ ম.ধ্য ২০০ পাশ হরে:ছ!

কলে: জর গুণ পরীক্ষা অ'র এক রকমে করা হয়। দেখ,
২০০ মধ্যে কভন্দন প্রথম বিভ গে পাশ হরেছে। পরীক্ষাট
কিছু নির্ভরবোগ্য নয়। ছাএের ধার না থাকলে প্রথম
বিভানে পাশ হ'তে পার না। বে কারণেই হউক, যদি
কোন কলে: জ ধারাল ছাত্র বেণী জুটে, তা' হ'লে প্রথম
বিভাগে পাশও বেণী হবে। কলেজের গুণপণায় ছ্-তার জন
প্রথম বিভাগে উত্রে বেতে পারে, কিছু ছাত্রের ঈশ্রদন্ত
ধারই আসল কারণ।

প্রেদিডেন্দি কলেজে প্রথম বিভাগে মেট্রক পাশ ছাত্র চুক্তে পার, আর ছই বিভাগে পাশ ছাত্র পার না। ব্যবস্থাটি ভাল। অধন পাত্রে উত্তম দান কর্তব্য নয়। দে.শ মতিমান্, বিদ্যাবান্ চাই। বাছা বাছা প্রোফেসর, বাছা বাছা ছাত্র। ছারকে বেতনও কম দিতে হয় না। তথাপি ক লজের ধরত কুলায় না, রাম শুমে বহু হরি বহু র দেড় লক্ষ টাকা বোগাছে। এই কারণে ভারা জান ভ চায়, ২য় ও ৪র্থ বর্ষের কত ছাত্রের মধ্যে কত্তমন পাশ হয়, ১ম বিভাগে কত হয়। কলিকাতার অবর এক কলেজে বাছট ছেলে ভর্তি হ'তে পায়, রাশি ক অন্ত কলেজে চুক্তে হয়। বাছট কলেজের স্পের র'শি কলেজের তুলনা করা অভায়।

কলেজে ধরাল ছাত্র আনবার উপায় ক'রতে হয়েছে।
পূর্বদালে বাত্রালনের ছোকরা ভাঙ্গানা হ'ত। কোন
অবিকারী তিন চারি বছর লোগে পেকে ছোকরা তালিন
ক'র.ল, অনু এক দালের লোক এলে তুটাকা বেণী দি.র
ভাঙ্গিয়ে নি.র গেল। এখন বোধ হয় চুক্তি লেখাপড়া
চ'লছে। কলেজে কিন্তু ছোকরা ভাঙ্গানা মন্দ চ'লছে না।
বছর হই হ'ল বাঁকুড়ার এক ইছ্ল হ'তে এক ছাত্র প্রথম
বিভাগে, ২০ টাকা বৃদ্ধি পেয়ে মেট্রিক পাল হয়েছিল।
বিশ্ববিশালয়ের গণনার ছাত্রটি মেট্রক-গগনের এক
তারকা। আমি তাকে কেপ্.টন ব'লভাম। যখন সে
ইছ্লের চতুর্ধ শ্রেণীতে প'ড়ত, তথন আমের বেড়াবার

মাঠে ত র দল ফুটবল খেণত, সে কেণ্টেন ক'রত। এখানে কলেক আছে, সে এখানে প'ড়ব। কেণ্টেন আমার সংক্র দেখা ক'রতে এল। শুনলাম, কলিকাতার এক কলেজ হ'তে ভাক্ষান্তে চিঠি এসেছে তুমি এখানে আসবে, থাকতে খেতে খরচ লাগবে না, কলেজের বেতন লাগবে না, আর, জলপানি ১৫১ টাকা পাবে।' কেণ্টেন লোভে প'ড়ল। তার পিতা এখানে থাকেন, ইছুলে মাইারি করেন, টাকার টানাটানি নাই, তথাপি টোপ গিলালন। ছেলে কলেজে চুকতে না চুকতে মানে মাসে ৩০১ টাকা রোজগার ক'রবে, লোভটা কম নর। ফলে হ'ল এই, এই কলেজ এক ধারাল ছাত্র পেতে পেতে পেলে না।

পুত্র মেট্রিক পাশ হয়েছে, পিতা গ্রামে থাকেন। তিনি ঠিক কর্য়ে রেখেছেন, কলিকাভায় না প'ড়লে ছেলে মারুষ হবে না, চোথ ফুটবে না। এ কলেছের, সে কলেছের শিক্ষকদের নামও ছু একটা শুনে রেখেছেন। পুত্রের মাকে বুঝালেন, ওঁদের কাছে পড়ো মুধ, পাশ হয়েও মুধ। তিনি ভাব লন না, কলেজের পঞ্চাশ শিক্ষকের মধ্যে নামজাদা শিক্ষক হুই-এক জন। পুতার ভ'গো তাঁদের দর্শন-লাভ ঘট ব কিনা সংন্দহ। আর এক ছাত্র এক কলে: স্থ ভর্ডি ह'न, g-5ोत मिन शरत शिखारक व'नान, a करनरक পড় ভাৰ হয় না, এধানে প'ড়.ৰ পাশ হ'তে পারবে না। म कात ना, रेक्न र' उ कलाक है वात शाम है है, अक মাসের কম উ'তে পারা যায় না। পিতা কি ক.রন, তাঁকে পাশ হ'.ত হবে না, ছেলেকে হবে, ছেলেকে কলিকাতা পাঠালেন। আমি দিবাচক্ষে দেখাত পাচ্ছি এক বছর পরে সে ছেলে যখন ব'ড়ী আস:ব, তাকে চিনতে পারা যাবে ন । ইছুলে পড়বার সময় তার টেরি থাকত না, এখন টেরি দেখ যাবে, হয়ত আরও উন্নত সভাতা মাথার প্রকাশ পাবে, মাথার সামনের চল পেছু দিকে ঘুরানা थाकरा। এখন ৪২ ইঞি বহরের কাপড়ে চ'লভ, এখন ৪৬ ইঞ্চি কাপড় হয়েছে, কোঁচার ফুল জামার বাঁ পকেটে রয়েছে। এখানে মুড়ি খেত, মুড়ির সঙ্গে কাঁচা গুড় পেলে খুনী হ'ত। এখন মুড়ি রোজ খাওয়া যায় না, কচুরী নিমকি আর অপক স্পত্ন রসগোলা চ.ই। কলিকাতার মাসে মাসে ৪০ টাকা খরচ ক'রবে। বি-এ পাশ হয়ে

সিকি, দশ চল্লিশের চাক'ও <u> খানতে</u> পারবে না. গাঁয়ের লোক ব'লবে, যাঁড়ের গোবর। তা বলুক। विश्वविमाानग्रक व्यर्थ-विमां नग्र (मथएं ठाई ना। দোষ कि ? বে বিন ভে:গের प्रिंदक है!त्न. ভ'ব কলিক:ভার হ'ওয়া ভে'গের উপকরণ পথে পথে वस्य (वड़ाराइड़। এই প্রথম বর্ষের ছাত্র চতুর্থ বর্ষের এক ছাত্রকে সঙ্গী পেয়েছে। পথে বেতে বেতে দেখলে 'কেবিন'। 'ও:ছ চল, একটু চা ধেয়ে আসি।' বালকটি বাড়ীতে চা খেত, কিন্তু 'কেবিনে'র পেয়ালায় মুথ দিতে তার গা থিন- থিন ক'রতে লাগল। কিন্তু 'না' ব'লতে পারলে না, অসাভতা প্রকাশ হ'য়ে প'ড়বে, তাকে গেঁয়ো ভূত ব'ল.ব। তা ছ'ড়া চতুথ বর্ষর ছাত্র বিদ্যাজ্যেষ্ঠ, বয়েজ্যেষ্ঠ, তাঁকে সমীহ করা স্বাভাবিক। মন বলিগ হ'লে 'না' ব'লতে পারত, ব'ল ত পারত 'না, অ:মি কেবিনের চা থাব না।' কিন্তু मन जालनरे विनिष्ठं रहाना। मेवीरतत वाहाम बाता मतीत বলিগ্র হয়, মনের ব্যায়াম দ্বারা মন বলিগ্র হয়।

æ

অ'মরা চ'ই ছ'ত্রেরা অস্ত্র সচ্চরিত্র ও জ্ঞানী হয়। এই তিন গুণ পেতে হ'লে কলেজকে ছে ট হ'তে হবে। নিয়ম ক'রতে গবে কোন কলেজে পাঁচ শতের বেণী ছাত্র থাকবেনা। ৬, টাকার অধিক বেতন হবে না। পাঁচ শত ছাত্র পাঁচটা হোটেলে থাকরে। আমি হিন্দু ছাত্র ও হিন্দু হোষ্টেল চিস্তা ক'রছি। প্রত্যেক ছাত্র:ক প্রত্যন্থ ব্যারাম ক'রতে হবে। মুদলমানের কোরাণ, খিষ্টানের বাই বল আছে। হিন্দুর ধর্ম ও কর্ম এক। ছাত্রদের পক্ষে কর্মধোগ এক মাত্র পথ। ইম্বুণে অভাংস আরম্ভ হবে, কলেজে সে ১ভাসে চ'লতে থা ধবে। লোক চিনে হোষ্টেলের অধাক্ষ নিযুক্ত ক'রতে হবে। তিনি কলে:জ আধা শিক্ষক, হোটেলে ছাত্রের পিতা প্রাতা ও *বৃহদ হ*্বন। এ^বরই কাজ সকলের চেয়ে কঠিন। বাহ্য এফুল ন ভিন্ন ধর্ম ক্রিয়ান অসম্ভব। হোষ্টেল নাম তুলে नि: व मर्ठ व'नव। मर्ठव'नी क यम ও नियम পानन क'व्राउ€ হ:ব। কথন শ্ব্যা তা:গ ক'রবে, কথন স্নান ও আহার ক'রবে, কথন ঈশারের স্তে'ত্র আবৃত্তি ক'রবে, কথন প'ড়বে, কথন বাায়াম ক'রবে, কখন শয়ন ক'রবে, এ সব বিষয়ে ছাত্রের স্বাধীনতা গাকবে না। মঠে যে কাপড় ইচ্ছা প'রবে, কিন্তু

মঠের বাইরে গৈরিক প'রতে হবে। বেড়'তে বৈতে চায়,
অচ্ছলে বাবে, বেথানে ইচ্ছা বাবে, কিন্তু গৈরিক পরো বেতে
হবে। গৈরিক ধুতি ও পাঞ্জাবী দেখলেই ব্রাব, কে।
সন্মাসী ক'রবার মতলবে গৈরিক নয়। ধুতি ও পাঞ্জাবী
কোন এক রক্ষের চাই। গৈরিক ফুসাধ্য। অধ্যক্ষ ব্ধা-যোগ্য
বাবস্থা ক'রবেন। উপরে কেবল নীতির আভাস দিলাম।

আমি বাায়ামের পক্ষে, ক্রিকেট ফুটবলের পক্ষে নই।
বাায়াম বারা দেহ বলিছ ও প্রডৌল হয়। বাায়াম ক'রতে মাঠ
ব্ছতে হয় না, থরচও হয় না। প্রভাহ ক'রতে পারা যায়,
কলেজ হ'তে ছাড়পত্র পেয়ে যেথানে ইচ্ছা সেথানে ক'রতে
পারা যায়। দল বেঁধে বিলাতী থেলার দোষ অনেক। প্রথম
দোষ, এ সব খেলা এক এক বাসন। বাায়া মর মাত্রা ঠিক
রাথতে পারা যায়, বাসনের মাত্রা ঠিক থাকে না, শরীর মন
অবসয় হয়, খেলার পর প্ড়া অসভব হয়। ছিভীয় দোষ,
কু-সংসর্গ জ্টিয়ে দেয়। একথা ঠিক, যায়া খেলায় পাকা হয়,
তারা প্রায়ই বিদায় কাঁচা। অথবা বিদায় কাঁচা বলাই
খেলায় মাতে। ফুটবল কভ জনই বা খেলে? বাকিরা কি
করে? খেলায় জিতলে সুরা-পানের কাপে পুরস্কারলাভ
হয়। মতে সুরাপান-টুরাপান চ'লতে পারে না।

যে ছেলে ফুটবল থেলার দিকে ঝুঁকেছে, তাকে বাগিয়ে রাখা কঠিন। সলিলকুমার কলিকাতায় জ্যেঠার কাছে থাকে, বৌবাজারের এক ইছুলে প্রথম শ্রেণীতে পড়ে। পিতা ডেপুটি, কলিকাতার ব ইরে থাকেন। আমি তাকে ছেলেবেলা र'ा कानि। अतिक मिन शांत्र (मर्थाह, (मर्थ पृ:थ र'न। 'সলিল, ভোমাকে রোগা দেখছি কেন ?' 'কই, আমি কিছু বুঝতে পারি না।' 'বল ত তুমি দিনের মধ্যে কখন কি কর।' শুনলাম, সে ৪টার সময় ইছুল হ'তে বাড়ী এসে কিছু থেয়েই গড়ের মাঠে ফুটবল খেলতে ছুটে। বাড়ী হ'তে গড়ের মাঠ ২ মাইলের কম হবে না। জ্যোস্মায়ের কড়া ছকুম, ৭টার মংধ্য ফিরতে হবে। সেও ৭টার সময় ইাপাতে হাপাতে বাড়ী ফিরে, বই নিয়ে বসে, আর ঘড়ীতে ১টা দেখতে থাকে। তার পর থেয়ে পরদিন সকালবেলা ৭টার সময় উঠে। বাড়ীতে মাষ্টার আসেন, এক মাষ্টার ন-ন, পার পরে তু মান্তার। ১টা বাজে, স্বিলও নেরে থেরে ইছুলে দৌড়ে। সে নিজেই খীকার ক'রলে, খেলা বেলী হয়, over exercise হয়। কিন্তু সে জানে না, তার ৪টার সময়ের থাবার কম হয়, তাকে এক বাটি চা থেয়ে কিন্দে মারতে হয়। সে ইঙ্লের পড়া পারে না, বাড়ীতে পড়বার যে গতিক, পারবার কথাও নয়। তার পিতা কিন্তু ব্রোরেথেছেন, ছেলেটার বৃদ্ধি মোটা। সত্য সত্য মোটা কিনা জানি না। কিন্তু জ্বানি, কারও না কারও অবহেলায় অনেক স্লিল মুনীল অনিল প্রনীলের বৃদ্ধি মোটা হয়েছে।

শিক্ষার যে বাবস্থাই করি, এই থানে আটকে যায়।
পিতামতো স্থভাবতঃ চান, পুত্র কা.ছ থাকে। মাতার স্লেহ
প্রবল, এথানে বৃদ্ধি-বিবেচনা হার মানে। তিনি পুত্রকে
চোথে চোথে রাথতে চান। কিন্তু পারেন কি? পিতা
নিক্ষমা বদ্যে থাকেন না, নিজের ও সংসারের ধান্দায়
ব্রেন। পিতা পারেন না, খুড়ো জোমা মামা মেদো পিসের
কথাই নাই। কেহই পুত্র ও আঞ্রিত্রের হিতের প্রতি
উদাসিন ন-ন, কিন্তু এ কথা সত্য অনেকে ছেলে ম'মুষ
ক'রতে জানেন না, পারেন না। এক এক বাড়ী আছে,
পেথানে দিনের সব কাজ কলের মতন চলে, ছেলের
প্রতি বিশেষ দৃষ্টি রাথতে হয় না। এমন ড়ী
অতি অল্পা

একটা অনেক দিনের কথা মনে প'ড়ল এক কলেজে প্রথম বর্মের ছাত্র ভর্তি হ'চিছল। অধ্যক্ষ দেপলেন, একজন বৃদ্ধিনান্ কিন্তু রোগা, মেলেরিরায় ভূগে এসেছে, মুথ এথনও ফেকান্ডে, চোই হলানা। সে কলেজের হোষ্টেলে থাকল। অধ্যক্ষের ভার হিণ্ডান হ'ল। মাস খানেক গেছে, ছেলেটি একটু সেরে আসছিল, এক দিন অধ্যক্ষ ছাত্রের পিতার এক পত্র পেলেন, পুত্রকে বার দিন ছুটি দিতে হবে। কেন ছুটি, কিছু লেখা নাই। কেরানী শুনেছিলেন, গেলেটির বিয়ের সম্বন্ধ হ'চেছ, পাঁচ হাজার টাকা বরপণ ধার্য হারছে। পিতা শিক্ষিত, ডেপুটি। বরপণের জ্বন্তে নয়, পুত্রের হিত্তের জ্বন্তে অধ্যক্ষ ছুটি দিলেন না। পিতা অবাক্; রেলে ঘণ্টাখানেক দুরে থাক্তেন, অধ্যক্ষের কাছে এলেন।

পিতা। আমি পিতা, ছুট চেয়েছি, আপনি দিবেন না? মধ্যক। ছুটির প্রয়োজন কি? পিতা। প্রয়োজন বাড়ীর।

অধ্যক্ষ। আমি শুনেছি, প্রয়েজনটা কি। আমি

পুত্রের হি.তর তরে ব'লভি, গে প্রয়োজন ছই এক বছর থাক। বয়স ত মাত্র যোল সতর।

পিতা। আপনি কি পিতার চেয়েও তার হিত চিস্তা ক'রছেন ?

অধ্যক্ষ। নিশ্চয়। আপনি পিতা, আপনার বাৎসশ্য শ্বাভাবিক, আপনার সংসারতিস্তাও স্বাভাবিক। আমার বাৎসশ্য গৌণ, আমি আপনার সংসার হ'তে বিছিন্ন হয়ে বাশকের হিতভাবছি।

পিতা। আপনি এ অধিকার কোথায় পেলেন?

অধ্যক্ষ। আপনই দিরেছেন। যথনই আপনার পুত্রকে এই কলে:জ দিয়েছেন, হোষ্টেলে রেখেছেন, তথনই আপনি আমাকে তার পিতৃত্বানীয় কর্য়েছেন। ইচ্ছা ক'রলে, সে অধিকার তুলে নিতে পারেন।

পিতা তাই ক'র লন, পু.তার নাম কাটিয়ে তাকে নিয়ে গেলে।

যে নগরে কলেজ সে নগরে পিতামাতার কাছে পুত্র না পেকে মঠে বেয়ে থাকবে? প্রথম প্রথম আশ্চর্য ঠেকবে। কিন্তু এইটি সুবাবস্থা। মঠের অদৃশ্য শাসনে পুত্রের বি-ন-র শিক্ষা হবে। এই শিক্ষা মহামূলা। বিনয় হি দুধ: ম'র মূল। সলিক্মার পাঠে মন লাগাতে পারে না, যমনিয়মের মঠে ছ-মাস থাকলে দেখত তার মন এনেকটা বশ মেনেছে। তার সহপাঠীরা ভোরে উঠেছে, কেউ কিছু না ব'ললেও. সে ভোরে উঠত। সে অবশুঠুপ্রথম প্রথম শনিবারে শনিবারে বাড়ী থেতে চাইত। কিম্ব মাস গুই পরে চাইত না। মঠে এত সঙ্গী, সে পাড়ায় প ড়ায় ঘুরেও পেত না। দেশ নিঃসন্দেহে পিডাকে ব'লতে পারেন, 'পুত্র ভোমার একার নয়। তোমার ভাগা ভাল, আমি তোমার পুত্রকে মাকুষ ক'ৱৰার ভার নিয়েছি।' পিডার এক আপছি থাকৰে, তাঁকে মঠে থাকব'র থরচ দিতে হবে। -গোলে তাঁকে অর্থেক দিতে হবে, নিজের কাছে রাখলে - অপর অ:র্ধক প'ড়ত। কলেজের কাছে মঠ; কলেজে স্কালে বিকালে পঠন-পাঠন চ'লতে পারবে, মধ্যাকে বিশ্রাম।

এখন নগরে নগার কলেজ হরেছে, মহানগরে আসবার প্রায়েজন নাই। সৰ কলেজে সেই থোড়-বড়ি-খাড়া। কোনটায় হয়ত কোন ব্যায়ন ভাল রাধা হয় না, কিছ সকল বারন বিশ্বলৈ হয় না। বদি কোনচা হয়, অধাক্ষের গোচরে আনলে দক্ষ পাচক নির্ক্ত হ'তে পারেন। আর, বদি কোন শিক্ষক হটা কথা ভূলই শিখান, সে ভূলে কিছুই এ স বায় না। নগারে নগারে মহাবিদ্যালয়; নগারে নগারে সরস্বতীর অর্চনা হ'তে থাকরে, মুর্থেও ত্-একটা মন্ত্র ভনতে পাবে। মধ্যে মধ্যে কলেজও নগারবাসী ও প্রামবাসীকে সরস্বতীর প্রসাদ পেতে ডাক বন, ইংরেজী-শিক্ষিত ও ইংরেজী-অশিক্ষিতের অন্তর কম্যে বাবে। এই এক কারণেই কলিকাতার প্রাস হ'তে নগার রক্ষা উতিত। অনকে ব'লছেন, প্রামে ফিরে বাও। আমি বিশি, মহানগার হ'তে প্রথমে নগারে ফিরে এস।

কিন্দু পাঁচ শত ছাত্র, ও ছা ত্রর বেতন ৬ টাকা, ধর্যে বি-এ, বি-এস্সি কলেজ চালানা যেতে পারে কি? পারে, পারেও না। এখন বিশ হাজার ছাত্র, চল্লিশটা কলেজের দরকার। চল্লিশটা আছে। অনেক কলেজ বনাস্তের দান প্রতিষ্ঠিত হয়েছে। খিন্তান মিশনারী কলেজ, মিশন হ'তে মর্থসাহায় পান। দেশের পক্ষে এটা নিন্দার কথা। বিদেশী, তোমার মামার প্রকে মানুষ করের দিয়ে থাবেন, আর আমরা হা করের তাকিয়ে থাকব, নিন্দার কথা বই কি। নিন্দা সইব, টাকাও দিব, ছটা হ'তে পারে না। আমি ঠিক জানি না, কিন্তু বেংধ হয় প্রার্থ মিশনারী কলেজ গবর্মেণ্টের ক'ছে হাত পাততেন না। সে বা হ'ক, ছাত্রসংখ্যা ক্রমশঃ ব'ড়বে, কলেজের সংখ্যাও বাড়াতে হবে। দেশহিত্রী বদান্তও জুটবেন।

একটা মোটাসুট হিস'ব করি। ৫০০ ছাত্র,৬ টাকা বেতন,
মাসিক আর ৩০০০ টাকা। পাঠ্যের নানা ওড়ন-পাড়ন
অন'বগুক মান কি। মাস্য হ'তে যে জ্ঞান তোমার প্রের
চাই, সে জ্ঞান আমার প্রেরও চাই। তগাপি পঁচিশ শিক্ষ
চাই। হারাহারি ২০০ টাকা বেতন ধারলে মাসে ৫০০০ টাকা চাই। এর উপর অন্ততঃ ১০০০ টাকা চাই। এই
৬০০০ টাকার অর্ধেক ছাত্রের পিতারা দি বন, অপর অর্ধেক
বিশ্ববিদ্যালয় দিবেন। এখন ৫০ট কলেজ আছে। যদি
প্রত্যেককেই ৬০০০ টাকা দিতে হর, তাহিলৈ গবার্কিক
বংসরে আঠার লক্ষাট কা দিতে হর। এ আর বেশী কি।
শিক্ষকদ্বের বেতন হারাহারি ২০০ টাকা ধারাছি। বর্তনালে

এটা কম ম.ন হবে। কিন্তু এই বেতনে কোন কোন কলেজ
চ'লছে। আর এটাই স্থায়ী বেতন হবে। দশ পনর
বৎসরের মধ্যে গবর্মে টের ম্বতীয় বিভাগের মাধাদের
বেতন নেমে যাবেই যাবে। তখন অপরের বেতনও
আর স্থল্প নাম.ব, তুলনায় মনংকট হবার কারণ
থাকবে না।

গব্রুণট করেকটা কলেজ খুলেছেন, এখনও হাতে রেখেছেন। খুলবার প্রয়োজন ছিল, অন্ত কলেজ ছিল না। এখন সে প্রয়োজন গেছে। শুনি, 'মডেল' কলেজ হয়েছে। আদর্শের প্রয়োজন অবশু আছে, চিরকাল থাকবে। কিন্তু সে আদর্শ অধাবস'য়ীর প্রয়েছের উধের্থ থাকলে কোন ফল নাই। হাতের লাগাল না পেলে সেটা উপহাস। আদর্শ কলেজে পাঁচ শতের বেশী ছাত্র থাকবে না, ছাত্রপ্রতি বৎসরে ১৪৪১ টাকার বেশী খরচ প'ড়বে না, এই নিয়মে আদর্শ দেখাতে পারলে আনলের বিয়ে হবে।

যে পিতা পুত্রের চোধ ফুটাতে তাকে কলিকাতার কলেজে मिरग्रह्म, **जिनि व्यक्त अहे जायना इंदर উ**ড़िয়ে मिरवन। তিনি ব'লছেন, কলিকাতায় কত সাধু পুণ্যাত্ম আছেন, বিদ্বান মহাবিদ্বান আছেন, উপাধ্যায় মহা-মহা উপাধ্যায় আছেন, কত বিদ্যালয় মহ'মহাবিদ্যালয়, এছখালা পাঠশালা আছে, কত সভা, সম্মেলন, বক্ততা, ব্যাখ্যান চ'লছে ! এ সব দেখা ও শোনা যে মন্ত শিক্ষা। এরই জন্মে হাজার অসুবিধা হ'লেও কলিকাভায় থাকা উচিত। কিছু সত্য, বেশীর ভাগ কাল্পনিক। সংশ্বু ও উপাধ্যায় ভোমার পুত্রের কল্যাণ-চিন্ত'র ব.স্য নাই। কলিকাভা দেখা চাই, উত্তময়পে দেখা চাই। কিন্তু দেখা ও শে:নার কালাকাল আছে। যদি দেখতে ও শুনতে মন করো ৰাই, তা হ'লেই দেখা ও শোনা সতা হবে। পুত্র গ্রীমের ছুটিতে কলিকাভায় বিশ পটিশ দিন থে:ক এক-মনে দে**খতে ও গুনতে পারে।** যেটা আনুমনে দেখি ও শুনি, সেটা দেখা ও শোনা নর। এটাই ত মহাত্রং, ছাত্ররা চোপ কান বুল্লে থাকে। ত'রা বই পড়ে, 'টেষ্ট টিউব' ধরে, আর সময় পেলে গল্পের রস পান করে। এখন বাংলা ভাষা শিখতে হবে কি-না। সোজা নয়, ১০০ নছর রাখতে হবে !



বাংলার বর্ষা শ্রীঅজিতক্কফ গুপ্ত



সাগরিকা—জ্রিম্বেশচক্র চক্রবর্ত্তী প্রণীত ; প্রকাশক— জ্রামেশ্বর দে, চন্দননগর। মূল্যের উল্লেখ নাই।

বাঙ্গালা দেশের যে অল্প করেক জন লেখককে mystic আখন দেওয়া ষাইতে পারে, এীযুত চক্রবত্তী মহাশয় তাঁহাদের অক্সতম। তাঁহার বচনায় রূপ ও রূপকের একত্র সমাবেশে সাধারণ পাঠকের নিকট উহা তেমন উপভোগ্য না হউলেও প্রকৃত রসবেত্তার নিকট উহা বিশেষ উপাদের। এই গ্রন্থটি একটি গলপুত্তক, ইহাতে চারিটি আগণারিকা আছে-আদিকথা, সাগরিকা, রঙ্গনা ও কবি। আদিকখার লেথক সেই চিরস্তন কথা তুলিয়াছেন--নর নারীর সঙ্গ ভিন্ন অপূর্ণ, উভয়ের এক র মিলনে বছর উদ্ভবেট স্পষ্টির ঐবর্ধা। 'রঙ্গনা' গলটির প্লটের কতকটা সুবিখ্যাত ফরাসী লেখক খেওফিল গোতিরের "লাভান দ'র" নামক গল্পের প্লট হইতে গৃহীত, কিন্তু উপসংহা রন্ধ দিকে কিছুমাত্র মিল নাই ; 'রক্তনা' গঙ্গটিকে বিরোগান্ত করিরা লেখক পূর্বণপর একটা বুসের সঙ্গতি অকুঃ রাধিয়াছেন। 'সাগরিকা' গল্পটি কতকটা রূপকথার ধরণে রচিত, মামুংবর সংসর্গে হাসিকাল্লার ভেদাভেদ-জ্ঞান-বিবর্জিতা মৎস্ত-কঞ্চার নারীত্ব লাভ ও স্থবছ:খামুভূতি। ''কবি'' शक्षिक आथापिका ना विषया अकि हिज वला हाल ; कवि यथन নিৰ্জন পল্লীর দরিত্র আবাসে ছিল তথন তাহার গানে তাহার কাবেণ ফুটিত জাবনের কথা, সৌন্দার্যার কল্পনা; কিন্তু রাজানুগ্রহপুষ্ট अरेथेबर्ध) व मध्य कवित्र वमवारमत ममस्त्र जात्र मोन्नर्ध। वा खावरनद হার তাহার কাব্যে ফুটিল না, ফুটিল ছার্থ ও কুৎসিতের কর্মনা, তাহাতে প্রাণের তারে পুরাতন হব আর ধ্বনিত হইল না। লেখকের বলিবার ভঙ্গী বড় ফুলর, ভাষাও সতেজ ও সরল। মাঝে মাঝে ভাবোচ্ছাসের মাত্রা একটু বেশী হইয়া রচনার সৌন্দর্য কিছু নষ্ট করিয়াছে, বিশেষতঃ সাগরিকা গল্পে। যাহা হউক, গ্রন্থথানি বঙ্গভাষার একথানি বিশেষ উপাদের গ্রন্থ হইয়াছে। ছাপা, বাধাই, ক'গজ সৰ ফুন্দর।

শ্রীস্কুমাররঞ্চন দাশ

সন্ধি (উপক্তাস)—শয়বাহাত্বৰ শ্ৰীষতীক্ৰমোহন সিংহ। প্ৰকাশক ব্যৱগ এজেন্সী, কলেজ খ্লীট মাৰ্কেট, কলিকাতা। মূল্য ২.•

বতীক্রবাব বাংলা-সাহিত্যের ক্ষেত্রে রুপরিচিত। উপপ্রাসথানি পড়িরা তাল লাগিরাছে এইটুকু বলিলেই ব্যেপ্ট হইবে। "প্রাচীনপদ্ধী লেধক" যখন ''অচি আধুনিক বাংগার অর্ধাৎ নারীপ্রগতি" অবলখন করিরা উপপ্রাস রচনা করিতে বান, তখন হর তাহারা নৃতনের নকল করিতে গিরা বিভাট ঘটান না-হর পুরাতনের পুনরাবৃত্তি করেন। ইহাদের কোনটাই রুসবোধের পরিচায়ক নহে; হতরাং সেরপ রচনা উপভোগ করা বার না। রসক্ত লেখকের বরস দিরা রচনার বিচার চলে না। বতাক্রবাব প্রবীন হইলেও রসিক; তাই তিনি অতি আধুনিক ব্যাগার লইরাও একটি উপভোগ্য উপপ্রাস রচনা কম্বিরাছেন। এই অতি আধুনিকতার যুগে এক্লপ উপপ্রাস বাঠকের চিত্তে প্রসাদরস জোগার।

বিজোহী রাজা রামমোহন—গ্রীসতীসচক্র গঙ্গোপাধার। বুবক পুত্তকালয়, ২এ রমানাথ মজুমদার ব্লীট, কলিকাতা। পৃ.৯১। মূল্য ১১। বিশেষকাৰ্কিত (এক নামে ছাড়া) অমগ্রমানপূর্ণ রাজা স্নামনোহন রারের জীবনকাহিনা। গ্রন্থকার রামমোহন সম্বাস্থ্য নৃতন কথা কিছুই বলিতে পারেন নাই, পুরাতন কথাও নৃতনভাবে সাজাইতে পারেন নাই। লেখকের ভাষার দৈজের পরিচর প্রতি পৃষ্ঠার রহিরাছে। ভাষা ছাড়া এত ছাপার ভুল যে পাঠ করা অসম্ভব। এরপ গ্রন্থ ছাপিবার কোন যৌজিকতা দেখিতে পাই না।

গ্রীঅনাথনাথ বস্থ

নীট্নের বাণী—গ্রীনলিনাকান্ত তথা রামেম্বর এও কোং, চল্পননগর। ১৩৪ । ৪৭ পু:।

লেখক নীট্শের সমন্ত শিক্ষার মূলকথা গ্রথমে বিবৃত করিয়া পরে ভাঁহার বার্ণী হইতে কিছু কিছু অমুবাদ করিয়া দিরাছেন। এই সকল বার্ণীর মধ্যে ছানে ছানে অমুবাদের ভাব প্রকট হইলেও ইহাতে বন্ধ-সাহিত্যের গৌরব বৃদ্ধি হইবে এবং লেখক নীটাশের কথান্ডলির বে বিচার পূর্ববভাগে দিরাছেন ভাহা ফুলর এবং সঙ্গত ইইরাছে।

মুক্তিমন্ত্রে মুস্লিম নারী—মোহাম্মন মোদাকের। প্রাধ্যি-হান, >> মাপার সারক্লার রোড, কলিকাতা। দাম বারো আনা।

বাংলা ছেলে মুক্তিমন্তের সাধনা বে নাই তাহা নহে, কিন্তু অন্ত দেশে, বিশেষতঃ মুস্লিম নার দের সমাজে, এই সাধনা কল্পুর অন্তসর হইরাছে সংক্ষেপে তাহার পরিচয় দেওরাই পুত্তকথানির উদ্দেশ্ত । বিশেষতঃ এবনও বহু বাঙ্গালী মুসলমানের মনে ধারণা আছে বে, পর্কা-প্রথা তুলিয়া দেওরা বা লেখা-পড়া নিখানো বুৰি ধর্মণাত্রবিক্ষয় । লেখক তুরক, পারক্ত, ইরাক, আকগানিস্থান, মিশর—এই কর দেশের বর্তমান ইতিহাস হইতে দেখাইরাছেন, সে-মত কতথানি আছে । তুর্কী জননী হালিদা হামুম, লেড়া এস্কান্দেরী, এসুমা থানম যাহারি, রাণী সৌরিরা, মাাদাম জগলুল যে তেজবিতা ও সাহসিকতার পরিচর দিরাছেন, বাঙ্গালী পাঠক-পাঠিকার তাহা মরণ রাথা উচিত। এই তথ্যপূর্ণ পুত্তক পাঠ করিলে ওধু বাঙ্গালা মুসলমান নর, বাজালা হিন্দুরও উপকার হইবে। খিলাকৎ সথজে ও বাঙ্গালী মুসলমানের পক্ষেবিদেশী মুসলমানের সাহায্য করিবার কর্ষার হালিদা হামুম বাহা বলিরাছিলেন তাহা হিন্দু-মুসলমান সমস্তার সমাধান করিতে হাহারা চেষ্টা করেন তাহাছের জানিরা রাখা উচিত।

শ্রীপ্রিয়রগ্রন সেন

রামচন্দ্র ও জর্থুট্র — গ্রীবতীক্রমোহন চট্টোপাগ্যার এম্-এ, বি. সি. এস্ । প্রকাশক—শ্রীস্থনীরকুমার মুখোপাধ্যায়। ৬৯ বং স্বামীবাগ লেন, ঢাকা। পুঃ /০—।০+>—৫৮। মুলা ৮০ জানা।

হিন্দুর অবতার রামচন্দ্র ও ইরাণীর ধর্মগুরু অবং তাহাদের প্রচারিত ধর্মমতের বিস্তৃত আলোচনাই এই এছের প্রধান উপজীব্য বিবর। এই প্রসালে জরপুট্র মতবাদের সহিত অক্সাক্ত ধর্মমতের সম্বন্ধ— বিশেব করিরা ইস্লাম মতের সহিত জরপুট্র মতের অঞ্চাজিতাব সম্বন্ধ এবং সেই স্থাতে হিন্দু ধর্মের সহিত ইহার মনিষ্ঠতা—এই প্রছে বিংশব ভাবে আলোচিত হইরাছে। ধর্মের মূল তথা ব্রাইরা হিন্দ্ ও মৃসলমানের পরশার বিরোধ পূর কবিবার সহারতা করা এছকারের এই ইছ-প্রণাপ্তির অঞ্চলম সাধু উ দাধা। এছকারের সমস্ত মত ও বাখ্যার সহিত আমরা একমত হইতে না-পারি:লও গ্রন্থানিকে আমরা আন্তরিক ভাবে প্রশাসা করি। ইহা প্রত্কারের গভার পাঞ্জিতার পবিচর দেয়। হিন্দু, মুসলমান ও ইরাণীর ধর্মসাহিত্য তিনি তুলাভাবে আলোচানা করিছা এই গ্রন্থ সিবিরাছন। প্রছমধো আলোচানিবিরর নির্দ্ধেশক পার্কির এবং তাহার একটি বিভ্ত হটা সংবোজিত হইলে পাঠকের বিশেষ স্ববিধা হটত।

ঐচিন্তাহরণ চক্রবর্ত্তী

রাসপুটিন — শ্বনরেজনাথ রায়। সর্বতী লাইত্রেরী। ১, রমানাথ মজুমদার ব্লীটা দাম বারে। আনা!

ক্লেশিয়াৰ স্বিপানি ধর্মান্ত্রক ও বড়বপ্তকার। রাসপৃটিনের জীবনী সরল ভাষার ছেলে দর জন্ত লেখা। সেখার স্তান পাঠকের মনের কৌতুহল শেষ পর্যান্ত জারীত করিয়া রাখে। কাগজ ও ছাপা ভাল।

দারী — হাসিরাণি দেব। ও প্রভাবনী দেব। জি, এম্ পারিশিং হ'উস। ২১, নক্ষাম সেনের ক্রীট, কলিকাতা। মূলাং ১।

বে উপঞ্জাস পিতৃবন্ধ্র হন্দরী কথা আছে, পরিচ্ছেদে পরিচ্ছেদে নৃত্ন পাঁচ কসাহয়, উপঞাস পড়িতেছি না তার পাল্লের সারাংশট্কু পড়িতেছি—হন্দরী নারিকা হঠাই বিধবা হুইরা বাপের বাড়ি আসিরা নারকের পথ নিকটক করিরা তোলে—এগানিও সেই ধরপের একথানি মামুলি উপঞাস। চরিত্র-ভাসির মুখের কথাবার্থা নাটুকে ধরপুর সংক্রিয়া লাহুহেন্ত্রেক ভাষা ও বুচনা রাতির অক্ষম অনুকৃতির ছারা বহুদ্ধলে স্ক্লাই; ছাপা ও বাধাই ভাল।

ছহিতা — ∰ৰাস্ত| দেৱী। প্ৰবাসী প্ৰেস, ২২০।২ আপার সাকুলার বোড়। মুল, এক টাকা। পৃ. ১৩০।

ানপুপ লেখিকাছ এই সরল অনাড্যর গল্পটি আমাদর সহাই আনন্দ দান করিয়াছে। বিশেব কোন গুরুতর সমস্তার অবতারণা নাই—(সামান্ত যা একটা পংরিবারিক সমস্তার দাঁড়াইছাছিল কর্যাগার জীবনে বইরের শেষের দিকে—কর্যাগা নিজেই অতি ফ্টারুক্তারে ভারের মাঁমাংসা করিয়াছে) বা জটিল মনস্তান্তর বিরেশে নাই—ভাবে ভারের মাঁমাংসা করিয়াছে) বা জটিল মনস্তান্তর বিরেশে নাই—ভাগেল সংসারের সাধারণ দৈনন্দিন ঘটনা সহল ও ফুলর ভাবে ফুটাইরা তোলা। হাত নিপুণ না হইলে গল্প এত অনাড্যর ভাবে সালানো বার না বা তু-চার কথার ভিতর বিরা এমন সন্ধাব চরিত্র-স্টেও সম্বহ হর না। শিশু নারাংগা, কাত্যারনী, নারায়ণীর মা, সেজবো কল্যাগা, হারালাল—এরা স্বাই জ বস্তু, এদের গলার ফ্র যেন ওনিতে পাই, এদের মুর্বি স্পাইভাবে চোথের সামনে ফুটায়া ওঠে। এই চরি রাজণের প্রধান সহয়েক হইরাছে, চরি রগুলির মুপের কথাবার্ত্তা—সেওলি বেমন বাভাবিক ও আড়েই চার্ক্তিক, অঞ্জনিকে তেমনি নাট্রকে ভাববিহান।

মিলন-মালা— ই চারকেছর দেন শান্তা। প্রকাশক—জ্রাপণিভূষণ বিষাস, উকাল, স্কলকোর্ট, আলিগন্ত। স্বল্য ৮০।

সামাজিক উপক্রাস। প্রবন্ধাকারে নির্থিলে বোধ হয় বক্তবা বিবয়টি শুছাইয়া বলা চলিত। উপক্রাস হিসাবে বর্গে রচনা।

অঞ্জতিশাক্ত — এশীলালকার ছবির। প্রকাশিকা **শ্রী**মতী আশালতা বড়ুরা, বৌদ্ধ মিশন প্রেস, রেসুন।

मन्द्रवास अकांठ में सब कोवनी मत्रन छ।वात ছেলেছের सङ लाय।

ত্ব-এক সান ছাপার ভুল থাকিলেও ছাপা মোটের উপর ভাল। ছবিগুলি আরও স্পষ্ট হওরা উচিত ছিল।

শ্রীবিভৃতিভূষণ বন্দ্যোপাধ্যায়

কাতুকুতু-- প্রবিকাশ দত্ত। দাম।/• আনা।

টাক্ডুমাডুম্— এবিকাশ দত্ত ও এবিফল দত্ত। দাফ ।৴• আনা।

শ্রাওড়া গাছের কালোমাণিক—শ্রীবিকাশ দন্ত ও শ্রীবিমন দত্ত। দাম / ০ আনা /

প্রকাশক—চারু সাহিত্য কুটার! পি-৩৪ মাণিকতলা স্পার,কলিকাতা '

''কাতুকু হূ" কবিতার বই। এতে আছে অনেকণ্ডলি মলার মলার কবিতা, আর আছে পাতার পাতার হাসির ছবি। ছেলে-মেয়ের! এ বই হাতে পেলে আপনা-আপনিই হেসে গড়াগড়ি যাবে; তালের কাতুকু হু দিরে হাসাতে হবে ন!।

"টি:কৃত্মাতৃষ্ বইথানিও সচিত্র। আর এতে করেকটি মজার গল্প ও মজার কবিতা আছে। ছেলে-মেরেদের পুবই ভাল লাগবে।

'প্রাওড়' গাছের কালোমাণিক" কিন্তু অঞ্চ ধরণের বই। এতে আছে করেকটি ভূতের গল্প, বা পড়লে এবং যার ছবি দেখলে, ছোট ছেলে-মেয়েরা আন ন্দর চেয়ে ভয়ই পাবে বেশী। ভূত-প্রেডের গল্প শুনিরে ছোটবেলাতেই ছেলে-মেয়েদের মনে ভয় চুকিরে না-দেওবাটাই বোধ হয় ভাল। তার চেয়ে ভূতের গল্পের অবভারণা ক'রে ভূত-প্রেভ মিছে এই কথা যদি ছেলে-মে রদের মনে বছমূল ক'রে দিতে পারা বায়, তা হলেই ভাদের বেশী উপকার করা হবে বলে মনে হয়।

গ্রীযামিনীকান্ত সাম

হিমালয় পারে কৈলাস ও মানস সরোবর—

শীপ্রমোদকুমার চট্টোপাধার; প্রবাসা প্রেস হইতে প্রকাশিত পৃ. ২৪৮,
ত্রিবর্ণ প্রচ্ছেদপট; তিনটি ত্রিবর্ণ ও প্রায় ১০টি একবর্ণ চিত্র।
ছাপা ও বাধাই উৎকুষ্ট। মূল্য ২৪০

আজকাল বহু প্রমণ-কাহিনী প্রকাশিত হইতেছে। ইহানের অধিকাংশই আধুনিক প্রথার লিখিত—পাঠ করিলে মনে হর বেন প্রমণটা একটি উপলক্ষ্য মাত্র, তাহাকে আপ্রর করিরা একটি উপলাদ সৃষ্টি করাই লেখকের আসাল উদ্দেশ্য। তাই পথের দৃশ্যবিলীর বর্ণনা অংশকা উপপ্রাসেচিত চমকের সাহাবে রস-সৃষ্টি আধুনিক প্রমণ-কাহিনা লেখার মূল সূত্র। ইহাতে গল্পবা পথের অস্পষ্ট বর্ণনার মাত্র লেখকের প্রমণের অভিজ্ঞতা সম্বন্ধ কোন ধারণাও করিতে পারা বার না; এমন কি, অনেক সময়ে উাহার কথার সন্দেহ করিবার অবকাশ পর্যান্তও অংট।

প্রাদ্যাব্র বইথানি অক্সধরণের। উপপ্রাস-স্টের অক্স রোমাক্ষ্যুক্ত কল্পনার আশ্রর না লাইর! তিনি উচ্চার বারাপাথের বধাবধ বর্ণনা করিরা পিরাছেন এবং উচা লাইডর করিবার অক্স প্রায় ৯০টি রেখাচিত্রের সাহায্য লাইরছেন। বইথানি পাঠ করিলে উচ্চার বর্ণনার সরসভার মৃদ্ধ হইরা বেন উচ্চার সহিত প্র্যাম পথে টোচট খাইতে থাইতে চলিতে হয়; পণ্ডিভলী, রামা দেবা, দেখন-হাসি, লালাপ্রী প্রভৃতি উচ্চার সভা আমাদের নিক্ট অতি পরিচিত হইরা উঠে, পার্বতা প্রদেশের লোকেদের পারের ছুর্গন্ধ আমাদের নাকে আসিরা লাগে। বর্ণনার দিক দিরা বিচার করিলে বইথানিতে লেখকের পরিক্রম সার্বক হইরাছে বলা বার—ক্রমণ-কাহিনীয় ইহাই একমাত্র উপারনা। প্রত্যেক লাইবেরীতে ইহার স্থান পাওরা উচিত।

শ্রীভারকনাথ গঙ্গোপাধায়ে

রাণুর দিদি

ঐহেম চট্টোপাধ্যায়

শীতলক্ষার এখন আর সে প্রবাহ নাই। ঘোড়াশালের কাছে রেলওয়ে কোন্পানী মস্ত এক রেলের পূল বাঁধিয়া ভাহার গর্ক ধর্ম করিয়াছে। নদীপণে এখনও ষ্টামার, বোট, পান্সী, ডিঙা, মহাজনী নৌকা সর্কদাই যাতার ত করে। শীতের নদী শীতলপাটির মত স্থির, ধীর ও নীর্ব হইয়া যায়, কিন্তু বর্ধার প্রার্ভেই খরপ্রোতে আবার মুধ্রিত হইয়া ওঠে!

পূজা আসরপ্রায়, লক্ষার দিন-দিনই নৌকার ভিড় ক্রেমশ: বাড়িয়া ঘাইতেছে। আরু ও-বাড়ির ছেলেমেরেরা আসিয়াছে, কাল চক্রমামা আসিবেন, সীতানাথ এবার আসিতে প রিবে না, তাহার সাহেব বড় কড়া। সেদিন বড়বাড়ির জামাইবাবুরা আসি লন ছোটবাড়ির জামাইদের আরু পর্যান্ত দেখাশোনা নাই। ভাম পরের দিকে চাহিয়া আছে, গাঙের ঘাটেকোন নৌকা ভিড়িলে সে ছাদের ওপর ছুটিয়া আসে, কিন্তু মান মুখে ফিরিয়া ঘাই ত হয় অপরিচিতের মুখখানি দেখিয়া। স্থীলের এখানে আসিবার কথা আছে,

ভ্নিদার-বা ভির চত্বরের সুমুখে মেরেরা সার বাধিরা ছুটাছুটি খেলিভেছিল। ভাল এই দলের নেতা, ত'হার মত হটুমেরে এ অঞ্চলে পাওরা ভ'র। সে জমিদার জগদীশ বাবুর মেরে, সেদিন মাত্র বিব'হ হইরা.ছ, ব লিকা-স্লভ চপলতা এখনও একটুও ক.ম ন ই। চেহার'খানি এমন মিটি যে সাত গাঁরও এমন একটি কিশে রী মেরে খুঁজিরা পাওরা ভ'র! ছুট ছুটতে ত হ'র গৌরবর্ণ মুশ্খানি ঘামিরা লাল টুকটুকে হইরা গে.ছ। একটি হুটু মেরে ছড়া কাটিরা সুর ধরিরা কহিল,

রাঙা মাধার চিকণী বর আসবে একুণি,

ভনিরা ভণ্ম হো-৫ে। করিরা হাসিরা উঠিয়া কহিল— বেশ ত নামুক না। ভোর ভাতে কি ? ও-পাড়ার একটি ছেলে কবিতা আওড়াইরা কহিল— 'মুনীল গগনে সোনার ভামুটি হে মর বর এ হাসে,…'

ভাত্ন কে কথার কান না-দিরা কহিল—চুপ কর্ টুলু, মার থাবি কিন্তু, নিগ্নীর বল,—

খুকী গো খুকী ভোষাদের ছাগলছানা কোথার?
টুলু ভরে ভরে কহিল—মথুরার ডাঙায়—
মেরেরা আবার হুর ধরিয়া কহিল,—কি থ'র ?
—জ্মাশপাতা, বাশপাতা, কাঁঠা…ল পাতা থায়।

কেউঠাকুর চণ্ডীমণ্ডপে বদিয়া প্রতিমায় রঙ, দিতে-ছিল, ধমক দিয়া কছিল—কাল বোধন, তোমরা যদি এখানে সব গোলমাল কর, তাহলে তঠাকুর চিত্র করা হবে না, আন্ত বাড়ি যাও সন্ধা। হয়ে গেছে।

বসস্ত-পুড়ো সেধানে বসিয়া এক ছিলিম তামাক পোড়াই ত পোড়াই ত মনের আনক্ষে গান ধরিয়াছিল,

কৰে মা আস্বি ব'লে সেই খে:ক গো বসেই আছি
মা-হারা সন্তান ওগো আর কতদিন কেমনে বাঁচি।

শরতের নির্মেঘ আকাশে ক্যোৎস্নার মৃত্ আলো আমব.নর ভিতরে বাশবা ড়র ওপর দিয়া উকিঝুকি নিতেছিল। ত্-একটা রাতের পাখী করুণ কঠে ডাকিয়া আবার চুপ হইয়া গল। আকাশের কয়েকটি তারা ছায়া-পথের আশোগাশে বিক্মিক করি.তিছিল।

গা.ভর বৃক্তে দ ড় বাওয়ার ঝুণঝাপ শব্দ ভীর হইতে
শান থান, কে ফেন ছুরস্ত হাওয়ায় নৌকার পাল
ভূলিয়া দিয়া মনের সুথে গান ধরিয়াছে। চ্যোৎমার
ভাবহায়ায় মনে হয় যেন একথানি শাদা কাপড় গাঙের বৃক্তে
ছুটিয়া থাই তছে। নদীর ভীরে বাধানো ঘাটে আজ
সভা হইতেই ছেলেবুড়োর ভিড়। ঘাট্লায় বসিরা
আলাপ-আলোচনা না-হয় এমন বিষয়ই নাই। কিন্তু
রাত্রি অধিক হইতেই যে যার দিকে সরিয়া পড়িল।
আকাশের চাঁদ ডুবুডুবুপ্রায়। একথানি ডিঙা গাঙের

ঘাটে ভিড়িল। মাঝিরা তীরে আসিরা দেখে সমূথে বড় বড় গাছ, আশপাশ ঘোর জলল, কিনারে কাশফুলর অন্ত নাই, সেখানে বাতাসে টেউ খেলিতেছে! একটা বুনো কুলের মিঠা গন্ধ আচমকা ভাসিরা আসিতেছিল। মাঝি কে'নমতে জলল ঠেলিয়া বাগানের ভিতর গিয়া হারিকে নর সাহায্যে পায়ে-আঁকা পথ বাহির করিয়া কহিল, "বাবু, এই রূপগঞ্জ!" স্থনীল একবার মাত্র এই গ্রামে আসিয়াছিল, আর কখনও আসে নাই? জিজাসা করিল তে'মরা আস নি কখনও ?'

—আজ্ঞানা, আমরা উজান চরের মাঝি, সেদিকেই বেশী নৌকা বেয়ে বাই।

হুনীল ছইয়ের বাহিরে আসিয়া কহিল—কই, মঠ কোণায় রে ?

মাঝি চারিদিকে আবার ভাল করিয়া চাহিয়া জবাব দিল—আজ্ঞেমঠ ভ এখানে নেই।

হ্নীল একটুখানি ভাবিয়া কহিল—গাঙের ভিত:র গিরে দেখ দেখি, সাদা মঠের চূড়া দেখা যায় কিনা?

মাঝি কোন উচ্চবাচ্য না করিয়া নৌকা ছাড়িয়া দিল। বৈশি টানিয়া গাঙের বাকের কিনারা ধরিয়া কিছুদুর যাইতেই মঠের অস্পষ্ট চূড়া ধীরে ধীর দেখা গেল, তার পর ঝাউগাছের মত এক স'রি গাছ, রূপগঞ্জের বাচ্চারের টিনের ঘর, তার পর বাবুদের প্রাসাদোপম অট্টালিকাশ্রেণী।

ং ফ্নীল চণ্ডীমণ্ডপে পা দিতেই ভান্ন সেখান হইতে ছুটিয়া পলাইল। রাত্রি বারোটা বান্দে, কেইটাকুর বাথের চোধ আঁকি ত গিলা ভুল করিয়া শেষে রাগের চে'টে পাড়ার মেয়েছেলেদের ধমকাইলা ক্যান্ত হইল না। মাঝিরা একটু ভামাকু সেবনের জন্ত সেখানে বারম্বার আগুনের হাড়িটির বার্ষ সন্ধান করিলা ফিরিভেছিল। কে-একজন বুঝি গলা বাড়াইলা 'প্রভিমা-বানানো' দেখিভেছিল, কেইটাকুর চীৎকার করিয়া উঠিয়া কহিল—কিরে ভোরা সব পেয়েছিল কি? গান্ধী-আম ল কি শেষে ভোরা এসে মায়ের প্রাের ঘরে চুকবি? যতসব জনাস্থান্ট কাণ্ড।

বেচারী মাঝিরা কোন কথাবার্তা না বলিরা চুপিচুপি ভাড়া লইয়া নৌকায় ফিরিয়া গেল।

লামাইবাবুকে দেবিয়া ছোট ছেলে-পিলেরা ভিতরে

চীৎকরে করিতে করিতে ছুটিরা গেল। প্রনীল বারালায় গিরা পৌছিতেই জামাইবাবুকে দেখিরা ভাত্মর ছে'ট বোন রাণু প্রনীলের গা বে'সিরা দাঁড়াইরা মৃত্ হাসিরা কহিল—কি জামাইবাবু, কাল এলেন না বে? আসতে আর ইচ্ছা হয় না ব্রিথ ?

সুনীল মৃত্ হাসিয়া অবাব দিল-এই তো এসেছি।

এমন সমন্ন বৌদি আসিয়া দ্বাড়াই তই সুনীল প্রণাম করিয়া কহিল—ভাল আছেন বৌদি?

বৌদি সৈ কথায় কান না দিয়া কহিলেন—খুব ত এলে কাল।

—এমনই দেরি হয়ে গেছে,·····মা কোথায় ? ভাল আছেন ত ?

—মা পূজায় বদেছেন, একুনি আসছেন। বাড়ির সব ভাল ত ? তোমাকে এমন শুক্নো দেখাছে কেন?

রাণু চোথ টিপিয়া কহিল—এ ক-দিন কি চোথে ঘুম ছিল বৌদি? দেখ না চারিদিকে চেয়ে কি দেখছেন!

বৌদি ধমক দিয়া কহিলেন—চুপ কর, ফাজলামি করতে হবে না তোমাকে। আর ত বেশী দেরি নাই, নিজের বেলা দেখা বাবে।—বলিতেই রাণু ছুটিয়া পলাইল।

মুনীৰ হাসিয়া কহিল—কোথায় লুকতে গেৰে?

বৌদি কহিলেন—লুকোচুরি খেলা ত ওর দিদির বরের কাছেই শিখেচে।

স্নীল গম্ভীর মুখে জবাব দিল ন ।

ভান্তর চোখে মুখে আজ আর হাসি ধরে না, বৌদিকে ইস'রায় ডাকিয়া কহিল—ওর খাবার তৈরি, ঠাকুর ভাত নিয়ে বসে আছে।

বৌদি হ সিয়া কহিলেন—আর দেরি ক'রো না স্নীল, মুখহাত ধুরে থেতে হাও।

সক'লবেলা পায়রার ঝাঁকের মত একদল মে'র নতুন জামাই.ক দেখিতে আসিয়াছিল। বিমের পর আর স্থনীল এ অঞ্লে আসে নাই, থাকেও অ.নক দুরে, স্পুর আসামে।

মেরেরা জামাইবাবুকে দেখিরা মুখ টেপাটেপি করিরা হাসিল। কনক হাসিতে হাসিতে রমার পিছনে গিরা চুপ করিয়া দাঁড়াইল, উমা চাকার ক্লপসী মেরে, ক.মাক্লরেসাঃ স্থূলে এক সমায় পড়িত, শহরের আদৰকায়দা জানে, ধমকের হারে বলিয়া উঠিল—হানীল বাবুকে দেখে হাস্বার মত কি আছে বল ত ? কি রকম অসভা।

স্থনীশ বিছানায় উঠিয়া বসিল। বসিতেই কনক হাসিয়া কহিল—কাল সারারাত ঘুম হয় নি ব্ঝি?

উমা সুনীলের হইয়া জবাব দিল—না, হয় নি ত বেশ, কি করবে বলো!

বৌদি ঘরে ঢুকিতেই সরগরম সভা ভক্ত হইল।
মেম্বেরা চলিয়া যাই:ভই পুনীল অভির নিঃখাস ফেলিয়া
কহিল—বাচালেন বৌদি!

বাহিন-বাজিতে সেদিন ভোর না-হইতেই বোধনের সানাই বাজিয়া উঠিয়াছিল।

চণ্ডীমগুপে গ্রামের প্রবীণরা আসিয়া জুটিয়াছিলেন।
গ্রামের মধ্যে পূচার যত আমোদ-প্রমোদ এ-বাড়ি তই।
লোকজনের হৈ-চৈ, থাওয়া-দাওয়া, মহিষ পাঁঠা বলি,
এ-বাড়ির মত ঝার অন্ত কোথাও নাই। ব্রাহ্মণভোজন
শেব হইয়া গিয়াছে। ছকা-হাতে শইয়া ভগবান-দাদা
সভায় তোড়জোড় করিয়া বক্তৃতা দিতেছিলেন। কথার
আগাগোড়া বোঝা ভার। মাঝখানে তর্ক উঠিল, ফণীর
মেয়ে এবার বি-এ পরীক্ষা দিবে। ভাহার বিবাহের কথা
উঠিতেই সেই মেয় ব.ল কিনা, ভাহাকে থেমন ছেলের
পক্ষ দেখিতে আসিবে, সেও ছেলেটিকে আগে
দেখিতে চার।

হরেক্স থোষাল সমাজপতি, ক্কুর দৃষ্টিতে চতুর্দিকে চাহিরা গরুগজীর স্বরে বলিরা উঠিল—কেন ফণীর চেরে ফণীর মেরের বিদ্যাবৃদ্ধি বেশী হরেছে নাকি। ভাহলে আর বিবাহের সময় মুখচক্রিকার চারি চক্ষের মিলন কেন বলে, আগেই ভা শেষ ক'রে নিভে হ'বে কোন আইনে?

মুক্দ গাঙ্গুলি গজিয়া উঠিলেন, সীতা-সাবিত্রীর যুগে কোন্ স্থল-কলেজটা ছিল? তাঁরা কি বিচ্যী ছিলেন না? এ-মুগের মেরেদের চেয়ে কম শিক্ষিতা ছিলেন?

কে এক জন তরুণ ছোকরা পিছন হই.ত মৃত্ত্বরে বণিরা উঠিশ—সেদিনও নেই। সে কাক্স নেই।

কথাটা আরও অনেক দূর গড়াইত, কিন্তু ছোটবাড়ির

নতুন জামাইবাবুর আবির্ভাবে কথার প্রসন্ধটা একরকম চাপা পড়িরাই গেল।

মুকুন্দ চে'ধ-ইদারার হরিহরের পানে চাহিয়া জিজ্ঞাদা করিল—কে হে ছেলেটি?

—ছোটবাডির জামাই।

—কে, সুনীল? তেহারা ত মন্দ নর, ওদের জামাই-ভাগ্যিই ভাল। মেয়েগুলোর চেয়ে ছেলেগুলিও দেখতে ধারাপ হয় নি, যেন একেবারে চক্রস্থা।

ভগবান-দাদ: মুক্লের মুখের কথা কাড়িয়া শইয়া কহিলেন,—চন্দ্রহা কি বল হে, একেবারে সাক্ষাৎ নারায়ণ আর লক্ষীঠাকক।

ততক্ষণে স্নীল ও রাণু সেধানে আসিয়া পৌছিয়াছে।
—এস বাবা, এস, ভাল ত সব,···বলিয়াই ভগবান-দাদা
উভয়কে লইয়া বাড়ির ভিতরে গেলেন।

ভিতর হই.ত একদল বহুরূপী বাহিরের আঙিনায় আসিয়া নাচগান সুফু করিয়া দিল। তাহারা স্বদেশা গান বাউল হইতে আরম্ভ করিয়া খেমটা, বৈঠকী, টগ্লা, শেষে একটা গ্রুপদ পর্যান্ত গাহিয়া বিদায় লইল।

বোষাল-বাড়ি হইতে বিদায় লইয়া তাহারা কাদখিনীপিদীর বাড়ির দিকে যাইতেছিল। পথের ধারেই
একটা প্রকাণ্ড বকুলগাছ ডালে-পাতায় ভর্তী। শেয়াঘাটের
পাল দিয়া যত লোক এই পথে যাতায়ত করে,
সকলেই এই বকুলগাছের নীচে দাঁড়াইয়া একবার
বিশ্রাম লাভ করিয়া বায়। রাণু বকুলতলায় আসিয়া
গাছটির দিকে চাহিয়া কহিল—জামাইবার্, এই বকুলগাছের কথা মনে আছে ত? এই গাছেনা সেবার কি
এক মঞার কাণ্ড হয়েছিল, ভূলে গেছেন বুঝি।

থুনীল চক্ষু গুইটি কপট বিশ্বরে বিন্দারিত করিয়া কছিল—কি কথা ? তোমার দিদিকে বরং জিজ্ঞাসা ক'রো। ভার মনে থাক্তে পারে।

নদী-তীরের পথ। ওপারের কাশফুলে হাওয়া থেলে নিশিদিন। এ পারের লোকেরা ওপারের দিকে চাহিয়া মা.ঝ মাঝে বলাবলি করে; এইটুকু লক্ষ্যা, আজ কত বড় হয়ে গেছে, সেদিনও কত লোক থেয়ার নদী পার:পার হয়েছে বর্ধকালে, এখন আর শীতকাল ছাড়া নদীতে পাড়ি দের কার সাধ্য!

খেরাবাটে নৌকা ছিল না, কে এক জন যুবক সাঁতার কাটিরা অনায়াদে গহীন নদী পার হইরা গেল।

এদি ক বিষের বাড়িতে 'বর কোথায়, বর কোথায়', নুতন জামাইরের খোঁজ নেই, কবিন্ম ত্লু গুল পড়িরা গেছে। জামাই কোথার গেল, এই লইয়া হাটে মাঠে ঘাটে খোল-থেঁ.জ রব। চারিদিকে লোক ছুটিল। বরবাত্রীর সংখ্যাও कम ছिन ना, ভাহারাও পই-পই করিয়া খুলিয়া দেখিল। ব.রর পি**তা হ**ীকে**শ বা**বুর মুখ চুণ হইরা গিরাছে। ছেলে বে এমন বিবাহসভাগ তাঁহা.ক অপদস্থ করিয়া ষাইবে, ইহা তাঁহার ধারণার অভীত। তিনি মাথায় হাত দিয়া খরের এক কোণে বদিরা পড়িলেন। জগদীশ বাবু— ভাহর ব'বা, এমন যে একটা অনাহুত কাণ্ড সহসা ঘটিবে, हैरा च': अं ७ छार्यन नाहै। ना हहे:न, उाहार्यंत्र राम হইতে বর পশাইরা বাইতে পারে, তাঁহারই চোখের ওপর! ছে:লটি: চ ভ ল জানিয়া শুনিয়া তিনি এ সম্বন্ধ ঠিক করিয়াছিলেন। তিনি লোকের কোন কথায় কান দি:লন না। বিব'হের লগ রাত্রি তিনটা অবধি ছিল, সুভরাং **ठिख'র वि: नव क्यां के उन न' है। बिरक बिरक ला**क ছুটিরাছে; ক্র'মাই নিশ্চরই ধরা পড়ি'ব।

মেরেমহলে আশকার প্ল'বন বিরা গেল। এদিকে ভাসু বিরের কনে সাজিয়া রঙ-বের.ঙর গহনা, গরদের চেশি পরিয়া আনেক ক্ষণ বিষয়া আ'ছে. ত'হার ক'নেও বে এমব ঘটনা আ সিয়া না-পৌছিয়াছিল এমন নয়। ব্যাপার সঙীন দেশিয়া সে বড় ছ'দে আসিয়া হ'ফ ছাড়িয়া বাঁচিল। ভ'হ'বও কিশের মনে ন'না রক্ষ তুই বুদ্ধি ধেশি ভভিল।

ভ বী জ'ম ই কেন অন্তর্থান হইগ, এ-বিষয়ে ন'না রক্ষ জল্পনা-কল্পনা স্কুল হইগ। কৈছ বলি লন, আফকালের ছে-লছোক্রারা এমনি কত রক মর রোমাল্য করিয়া থাকে। কেছ বলিলেন, এখনই ফিরে আসবে, নিশ্চঃই দেখো।

আর এক জন বলি লেন—মেরে পছন্দ হরেছিল ত! ভারা যে অর: লক্ষীন্তী, সুন্দরীর চেহারার আজকাল মূল্য নেই। নাচি র গাইরে কার্দাছ্রত মেরে না হ'লে আজ-কাল বাবুদের মন ওঠনা!

এমন সময় ভিড় েলিয়া থাকী কোটপ্যাণ্ট-পরা এক জন দারোগা বাবু একদণ চৌকীদার, দফাদার, কনষ্টেবলের সব্দে ছুটিয়া আসিয়া ভাড়াভাড়ি কহিলেন—আপনাদের বাড়িতে আমরা সার্চ্চ করবো মশস্ব, ডাকাত তাড়া করেছিলাম, নদী সাঁতরে এ.স আপনাদের কম্পাউণ্ডে ঢুকেছে,…এই রামপুলার, মঙ্গলরাম, বাড়িটা থিরে ফেল।—হাপাইতে হাপাইতে দারোগাবাবু দাড়ি নাড়িয়া কহিলেন—বে দিন-কাল পড়েছে, গ্রামে আর হথে শাস্তিতে থাকবার ছো নেই। ভদ্রলোকের ছেলেরা এখন ফুব্ধ করেছে চুরি-ডাকাতি, আমরা কোথার যাই বলুন। থানার ব'সে কাল রাত্রির রিপোট লিখছি, এমন সময় মাধ্ব চৌকিদার এসে থবর দিতেই "দে ছুট, দে ছুট," আমরা কি মশায় খাওয়া-দাওয়ারও একটু সময় পাব না। সেদিন লাটসাহেব এসে গেলেন, সারারাত পথের ধারে চুপ ক'রে দাঁড়িয়েছিলাম, তবু মশার পুলিদের নামে কত কানাঘুদা! আমরা কি ভুগু জীবনপাত করতেই এসেছি,…

উপস্থিত কয়েক ক্ষন গ্রাম্য ভদ্রলোক সান্তনার স্থরে কহিলেন—আপনারা আছেন বলেই ত আমরা আছি। নাহ'লে দেশে কি আর বসবাস করা থেত।

তরতর করিয়া খু'জিয়াও ডাকাত ধরা পড়িল না। পাড়ার মুক্ষবিবরা কহিলেন—কি সোনার দেশ ছিল, আর এখন হয়েছে কি!

দারোগা সাহেব বিষম রাগিয়া কহিলেন—কি হবে আর! আমরা থাকতে আসনাদের ভর কি ? মারতে আমরা, বাচাতেও অ'মরাই! এখন ডাকাত ধরা পড়লেই হয়।

ভগব'ন-দ'লা পাকা লোক, অনসর বুঝিয়া হাসিয়া কহিলেন—আপনারা আছেন বলেই ত আমরা পরম সু.ধ বাস করছি, একেবারে রাম-রাজত্বে…

দারোগা বাবু খুশী হইয়া অনেক কথাই কহিলেন। নয়াসড়ক ধরিয়া ডাকাডেরা পথ চলিয়াছিল, ডাড়া খাইয়া নদী পার হইয়া এ গ্রামে আসিয়া চুকিয়াছে ইড্যাদি।

সে-কথা শুনিরা সকলে পরস্পারের মুখ-চাওরাচাওরি করিতে লাগিল।

জ্যে 'ৎস্নার আলো তথনও আকাশে লাগিয়'ই ছিল। থিড়কি-দরজা দিয়া ভাম্ বাহির হইয়া আসিয়া নদী- জীরের ঝোপঝাড়গুলি খুঁন্দিরা বেড়াইল। তাহারও চিস্তা কম নয়, ছেলেমাসুবি বৃদ্ধিতে আর কি সে করিতে পারে। তবু সে বৃদ্ধিমতী।

এমন সময় মিভিরদের বাগানে চৌকিদার দকাদারেরা বিবম হলা করিয়া উঠিল, বোধ করি ত্-একটা বলের শিয়াল সেধানে আত্মরক্ষা করিতেছিল। ভাসু ভয় পাইয়া ছুটিয়া গিয়া নিকটয় বকুলগাছের ছোট ছোট শাধা-প্রশাধা বাহিয়া আগ-মাধার চুপ করিয়া বিসয়া পড়িল। ছোট-বেলায় এই বকুলের ভালে তাহারা দোল্না ধেলিয়াছে, ফুল কুড়'ইয়া মালা গাঁধিয়াছে, ফল থাইয়াছে, গাছের ভালে বিসয়া পাড়ার ছেলেমেয়েদের সঙ্গে লুকোচুরি ধেলিয়াছে, এ গাছ ত তাহার কত জানাশোনা।

গাছের আগভালে বসিতেই দেখিতে পাইল, কে এক জন লোক আর এ দট্ উপরে বসিয়া থর থর করিয়া কঁ!পিতেছে এবং সেই কাঁপুনি:ত গাছের ভালপালা মৃত্ মৃত্ নড়িতেছিল। ভান্তর অন্তর:য়া এক-একবার কাঁপিয়া উঠিল, মনে সাহস সঞ্চয় করিয়া কহিল—গাছের ওপরে কেরে, শীঘ্র বল, নইলে চৌকিলারদের ডেকে দেব কিন্তু।

ভাসু এই মাত্র শুনিয়া আসিয়াছে বে, তাহাদের বাড়ির চভূদিকে ডাকাতরা আত্মগোপন করিয়া আছে, সে বে তাহাদেরই এক জন এ-কথা ব্রিতে তাহার বিশন্ধ হইল না। নিক.টই প্লিন প্রহরীরা ছুটাছুটি করিতেছিল ফুডরাং ভ্রেরও কোন কারণ নাই।

ভান্ন প্নরায় বলিয়া উঠিল—ডাকবো ? তুমি ডাকাতি করতে এসেছিলে, না ?

ক্সব'ব আসিল,…না, না…আমি এ-বাড়ির বিয়ের বর, …বিয়ে করতে এসে…

ভামু বিশ্বিত কঠে প্রশ্ন করিল-এভক্ষণ ছিলে কোথার ?

নিক্লন্তর দেখিরা ভা**ছ** পুনরার ধনক দিরা কহিল—কি চুপ ক'রে র**ইলে** বে? ডাকবো নাকি পুলিস?

কঁ: দক্ত দ্বে জবাব দিল—আজে নরাসড়ক দিরে পালিরে বাচ্ছিলাম,—একটু চুপ করিরা থাকিরা জামাইবার পূন্রার কহিলেন—মাপনি এই প্রামের লোক? জামার বাঁচান, আমি বড় বিপদ্ধে পড়েছি।

ভামু ব্যস্তভাবে প্রশ্ন করিল—পালিয়েছিলে কেন ব.লা, শীধ্র বলো,···ওই ওরা এদিকেই আসবে একুনি !

ন্দামাইবাবু নিক্ষত্তর।

ভার প্ররায় কহিল—না, তুমি বলবার লোক নও, আছো, দাঁড়াও,···বলিভেই ভামাইবাবু জড়িত কঠে বলিয়া উঠিল—আজে মেরে নাকি বিষম কালো···

ভান্ন মনে একচোট হাসিরা রাগত ভাবে কহিল— কালো হরেছে ত কি হয়েছে, কালো মেরের বিশ্নে হবে না: তা ব'লে! কালো, তুমি নিজে দেখেছ?

- --ना !
- —এ-সুসংবাদ কে দিলে তে**'মার** ?
- —পাড়ার হৃষ্ট ছেলের । বলাবলি করছিল, জামাইরের বউ কি কালো হবে রে…
- তুমি ছে.ল.দর সে কথা শুনে একেবারে দে ছুট !
 শীঘ্র নেমে এস যদি প্রাণে বাচতে চাও ।—পরে একটু মুখ
 টিশিয়া হাসিয়া ধমকের স্থার কহিল—লেখাপড়া শিখে এই
 বৃদ্ধি হয়েছে তোমার, তুমি না বি-এ পাস করেছ ?

বেচ রী মুখবানি কাঁচুমাচু করিরা জবাব দিল—আজ-কালের ছেলেরা সব.ই বি-এ পাস ক.র।

বকুলগাছ থেকে নামিবার সময় পরাণ দকাদার দেবিরা কেলিয়াছিল। ভান্ন এক দৌড়ে চোথের নিমিষে বে কোথায় অন্তর্হিত হইয়া গেল, কেছ তাহা জানিল না। মললরাম তাহার পিছু পিছু ছুটিয়া বাগানের ভিতর পথ হারাইয়া বিষম চেঁচামেচি স্কুক করিয়াছিল। ধরা পড়িল, । নৃতন জামাই! বেচারী একেবারে মরমে মরিয়া গেল।

গভীর রাত্রে ছোটবাড়িতে বিষের বান্ধনা বান্ধিরা উঠিল। পাড়াপড়সীরা আবার ছুটিয়া চলিল। সকলের মুখেই এক কথা—ভামাই ধরা পড়েছে।

বেচারী ভাত্ন কবে বে স্থনীলের কাছে ধরা পড়িয়া গিয়াছিল, সে ধবর আমরা ভাল জানি না, কিন্তু এই ব্যাপার লইরা বে তরুণ দম্পতির রীতিমত একটা বোঝা-পড়া মাঝে মাঝে না হয়, এমন নয়।

তবে ভাসুর কাহিনী গ্রামের দশ জনের কাছে শেষে ব্যক্ত হইরা গিরাছিল।

মিছামিছি দারোগা বাবু হররাণ হইরা শেবে মিটিমুখ করিরা থানার ফিরিয়া গেলেন।

বাংলা দেশে ব্যায়ামচর্চা

শ্রীরাজেন্ত্রনারায়ণ গুহ ঠাকুরতা

আক্রকাল ব্যায়াম সম্বন্ধে নানাক্সপ মতামত ভিনিতে পাওয়া যায়; ধাঁহার ধেরূপ অভিজ্ঞতা তিনি সেইরূপ ব্যায়াম ভাল বশিরা থাকেন। অনভিজ্ঞ ব্যক্তিও পুঁথিগত বিদ্যার উপর নির্ভর করিয়া কিংব লোকমুণে শুনিয়া, ভালমনদ বিচার-শক্তি না-থাকা সংস্বেও নিজের মতামত প্রকাশ করিতে ক্রটি আজকাল একদল লোক বলিতে আরম্ভ করেন না। করিরাছেন, খ্রিল, খালিহাতে ব্যারাম, কাালিস্থেনিক্স্ ব্যারাম, গেমৰ, স্পোট্ণুও পল্লীনৃত্যাদি ব্যতীত অভাভ ব্যায়াম শ্রীরকে ক্ষিপ্র, চপল, উদ্যমণীল, পরিশ্রমী ও কার্য্যকর করিতে পারে না। ইঁহাদের মতে এই গুণগুলি লাভ একমাত্র উপরি কথিত বাান্নাম শুলিদ্বারাই সম্ভব। অধিকস্ক অস্তান্ত বান্ত্রিক ও কইসাধ্য ব্যায়ামগুলি দ্বারা মন্তিকের শক্তির হ্রাস হয়, ধমনী ছি'ড়িয়া যায়, আয়ু কমে এবং ভবিষ্যৎ ক্ষীবন নানারূপ ব্যাধিগ্রস্ত হইবার স্ভাবনা অকর্ম্মণ্য છ থাকে। বক্সিং, যুযুৎসু, লাঠিথেলা প্রভৃতি আত্মরক্ষার কৌশলগুলির সম্বন্ধেও বিভিন্ন মতবাদ শুনিতে পাওয়া যায়, এমন কি কাহারও মতে এইগুলি ভদ্রসন্তানদের পক্ষে নিশুয়োক্তন, আবার মাংসপেশী বড় হইলে নাকি কিপ্সতা ও চাপলা নষ্ট হইয়া যায় বলিয়াও কেহ কেহ মত প্রকাশ কাহার কাহার মতে থাকেন। করিয়া এবং শরীর धून ও চর্বিবযুক মেধাশক্তি কমিয়া বার উহা অনিষ্টকর। যান্ত্রিক ব্যায়াম হইয়া যায় বলিয়া দ্বারা শরীর গঠন ও শক্তিশাভে শারীরিক পরিচায়ক থেলা, যথা—ভার-উত্তোলন, লৌহদণ্ড বক্রকরণ, চলস্ত মোটর গাড়ীর গতিরোধ এবং বুকে হাতী বা রোলার গ্রহণ প্রভৃতিকে ইঁহারা কেবল মাত্র সার্কাসের কৌশল বলিয়া মনে করিয়া থাকেন এবং এইগুলি প্রদর্শনের যে কোন উপকারিতা আছে তাহা ইহারা মনে করেন না বা স্বীকার করেন না।

ভিল ও খেলা।—বে প্রধায় দ্বল প্রভৃতিতে ভিল ও

খেলা ইত্যাদি শিক্ষা দেওয়া হয় তাহা কেবল মাত্র ছোট ছোট ছেলেদের পক্ষে উপকারী, আনন্দদায়ুক ও শৃত্যলারক্ষার সহায়ক সন্দেহ নাই: কিন্তু অনেক সময় দেখা যায় ছেলেরা রৌদ্রে দাড়াইয়া কুধিত ক্লান্ত অবস্থায় ড্রিল ও খেলা করিতেছে। ইহাতে উপকারের চেয়ে অপকারই বেশী হয়। বিশেষতঃ এইরূপ ডিল ও থেলা বয়স্ক ও কলেন্দের ছেলেদের ক্লচিবিক্লদ্ধ। প্রত্যক্ষ করা গিয়াছে, কতিপয় কলেজে এইরপ বাধ্যতামূলক ব্যায়ামশিক্ষার প্রচলন চেষ্টা দারাও আশাসুরূপ ফললাভ হইতেছে না। দেখা বায়, প্রায় বিশ বৎসরেরও অধিককাল যাবৎ স্কুলে (পরীক্ষা স্বরূপ) ডিল, থালিহাতে ব্যায়াম ইত্যাদি করান হইতেছে স্বাস্থ্যোশ্বতির কোনই লক্ষণ দেখা ছা**ত্রদে**র অথচ যাইতেছে না। অথচ এইরূপ ব্যায়ামকেই বিজ্ঞানসম্মত ব্যায়াম বলিয়া প্রচার করা হইতেছে এবং এইরূপ ব্যায়ামের বাধ্যতামূলক প্রচলন চেষ্টা কলেজেও চলিতেছে ।

খালিহাতে ব্যায়াম।—খালি হাতে ব্যায়াম নানা প্রকার, তন্মধ্যে এনাটমিক্যাল একসারসাইভ—ডন্, বৈঠক বিশেষ উপকারী। তবে এই ব্যায়ামগুলি অভিজ্ঞ ব্যক্তি ব্যতীত বাহাদের মাংসপেশী সম্বন্ধে জ্ঞান নাই বা নির্নিষ্ট পেশীতে ক্যোর দিতে পারে না তাহাদের পক্ষে তত উপকারী নয়। যাহারা ত্র্বল এবং যন্ত্রাদি বারা ব্যায়াম করিতে অক্ষম তাহাদের পক্ষে খালিহাতের ব্যায়ামগুলি উপকারজনক।

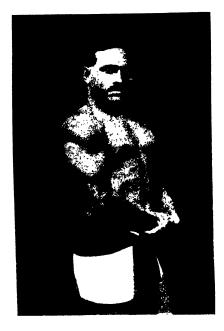
যাহারা তন্ বৈঠক করিবার উপযুক্ত তাহারা নিয়মিত ভাবে অভ্যাস করিলে ক্ষল পাইতে পারে। তন্, বৈঠক স্বাভাবিক নিখাস-প্রখাস ও নিজের ক্ষমতাম্বারী ক্রমশঃ বাড়াইয়া লওয়া উচিত। এতঘাতীত শ্রীরকে নানা প্রকার বক্রীকরণ, ক্রিশিং, এব্ডোমিনাল এক্সারসাইজ, আসন বারা ঝারাম স্বাস্থ্যের পক্ষে অক্কৃল। সোলা ভাবে লয়া পা ফেলিরা ধোলা বাতানে সাধ্যাম্বারী হাঁচা এবং

আন্তে আতে দৌড়ান বিশেষ উপকারী; ইহাতে কুধা বৃদ্ধি করে, পেটের চর্লি কমায়, এবং বিশুদ্ধ অন্তল্পান বাপা পাওয়া নায় বলিয়া সাস্থ্যের ক্রমোন্নতি হইতে থাকে।

ক্যালিসথেনিক এক সারসাইজ ।— ডুলের মত দল বাঁথিয়া এক সংস্ক হাল্কা মুগুর, ডাম্বেল, লাঠি ইত্যাদি দারা ব্যায়াম যদিও সাধারণতঃ স্বাস্থ্যকর তথাপি আদেশারু নায়ী সকলের এক সঙ্গে করিতে হয় বলিয়া হর্মেলদের পক্ষে হানিকর। এই রূপ ব্যায়াম করাইতে হইলে প্রথমে স্বাস্থ্য ও শক্তি অস্থ্যায়ী শ্রেণীবিভাগ করিয়া লওয়া উচিত।

বেশলাধূলা।— বাষেট বল. ভলি বল, হকি, টেনিস, ইত্যাদি ফুটবল বাতীত অন্তান্ত গেলাগুলি সাধারণতং শীতকালে গেলিতে হয় বলিয়া এবং ইহাতে ফুটবল অপেক্ষা কম সময় লাগে বলিয়া শ্রীরের ক্ষতি না হইয়া বরং ক্ষিপ্রতা চাপল্য ইত্যাদি সহজেই আনয়ন করে এবং শ্রীর ক্ষ্ম হয়। তবে অনিয়মিত বা অপরিমিত ভাবে খেলিলে বা পরিশ্রম উপযোগী গাত্যের অভাব হইলে শ্রীরের অনিই সাধিত হয়। স্বাস্থ্যবান বাজিদের পক্ষেই এই সকল গেলা উপযুক্ত।

ফুটবল।—নিয়মিত থেলিলে ্টবল অন্তান্ত থেলার গুণগুলি লাভ করিতে পারা যায়। কিন্তু দেশ ও ঋতু ভেদে গেলিবার সময় পরিশ্রম অনুযায়ী পেলা, শরীর গঠনোপদোগা থাতা, নিয়মিত অভ্যাস ও শিক্ষাৰ অভাবে এবং অত্যধিক প্রিশ্রম হেত শ্রীর ক্ষম হওয়ায় অধিকাংশ থেলোয়াড় অতিশীঘ্ৰ ভগ্নস্বাস্থ্য হইয়া পড়ে এবং গৃই-চারি বংসরের অধিক ্থেলিতে সমর্থ হয় না। আক্রকালকার বাঙালী ফুটবল দলের অবস্থা দেখিলে আননদ না আসিয়া ছংগট বেশ হয়। এই দ্ব দলের মৃষ্টিমেয় থেলোয়াড় (বাহারা শ্রীর-গঠন ও স্বাস্থ্যরক্ষার প্রতি গত্ন লইয়া থাকেন) ব্যতীত সকলেই শক্তি-সামৰ্থাবিহীন বলিয়া সহজেই পরিশ্র'স্ত হইয়া পড়ে। বিদেশা থেলোয়াড়দের বেমন গুলে, তাহারা তেমন্ট শক্তিসম্পন্ন, উল্লেশীল ও পরিশ্রমী। ইহার একমাত্র কারণ নিয়মিত শিক্ষা, অভাাস, শরীররক্ষা ও পরিশ্রমোপবোর্গা থান্ত। কুটবল থেলার সময় চলিয়া গোলে, ঠাহারা শরীর কর্মাঠ হাল্কা ও वाधनी. গঠনোপবোগী বায়ামের ব্যবস্থা করেন। দলগুলির এইরূপ বাবস্থা না-থাকায় ক্রমশঃ **ষ্**বনতির পথে অগ্রসর হইতেছে। কুটবল শীতপ্রধান দেশের থেলা, সে-সব দেখে একঘণ্টা খেলিলেও স্বাস্থ্যের বিশেষ ক্ষতি হয় না। আমাদের এই গ্রীমপ্রধান দেশে সাধারণতঃ গ্রীম্মকালে সম্ভ ব্যায়াম করা উচিত। অস্তান্ত



বোরক

ক্টবলে তাহা অপেকা দিগুণেরও অধিক হয়।
অতএব শাতকালে এই খেলার প্রচলন হওয়া উচিত।
এই খেলা শিবিরার সময় নিজ স্বাস্থান্যায়ী কে
কতট্ক সময় খেলিতে আরম্ভ করিয়া ক্রমে বাড়াইয়া
লওয়া উচিত। এইরূপ নিলমে না খেলিলে অধিক পরিশ্রম
হেতু দম কমিয়া যায়। সাধারণতঃ দেখা যায়, নৃতন ও
পুরাতন সকল খেলোমাড়ই এক ঘন্টা খেলিতেহে,
ইহাতে শিক্ষার্গীদের অবগুই ক্ষতির সম্ভাবনা।
তাহা ছাড়া পরিশ্রমানুগায়ী খাদেরে ব্যবস্থা সর্বলা কর্ত্তব।
সর্ব্বোপরি যথন কুটবল খেলা শেষ হইয়া যায় তথন
স্থিপিং, দৌড়, এব্ডোমিনাল একসারসাইজ এবং অত্রপ
শ্বীর-গঠনোপ্রােগি বাায়াম স্বঞ্চকর্ত্বা।

দেশীয় খেলা।—দেশীয় থেলাগুলির মধো দাড়িয়া
বাঁধা, গোলাছুট, বৃড়িছি ও হাড়ুড় প্রভৃতি থেলা
বয়য় ও ছোটদের উভয়ের পকেই উপকারী। সময়নির্দ্ধেশার্মারী নিয়মিত অভ্যাস করিলে ইহাতে ঘেমন দম
বাড়ায়, তেমন চাপল্য, ফিপ্রাকারিতা ইত্যাদি সহজেই
আনয়ন করে এবং শরীর কর্মাঠ হয়। হাড়ুড় থেলায়
সাহস বাড়ে ও কৌশল শিক্ষা হয়। এই সকল থেলা
বিয়য়র কার্যায়ভিকর, শক্তিপ্রদা ও



হস্তী-প্রত্তে লেখক

শরী:রর পক্ষে বিশেষ উপকারী; অথচ কূটবল প্রভৃতি থেলা অংশক্ষা অ.নক কম বয়েদ'পেক।

শোর্চিম।—নানা রকম দৌড়ান, লাফান বলনিফেপ ইতাদি থেল গুলি নিয়মাধীনভাবে থেলিতে হইলে জিলের মত দর্মনা আনদোত্রবর্তী হইলা চলিতে হয় না এবং আনেকটা ইছে ন্তুরূপ চলিতে পারা যায় বলিয়া মনে ফুর্ত্তি ব ডায়। বৈ কাজ স্বাধীনভাবে কবা যায় সে ক'জে উৎদাহ বাড়ে। বিশেবতঃ থেলাও ব্যায়ামের বেলায় ঐরপ হওয় ই বিশেব দরকার। থেলিবার উপযোগী শরীর গ'ন করিয়া পরে থেলা ইত্যাদি অভ্যাস করিতে হয়, তাহা না হইলে উপক'র অপেক্ষা অপক'রই বেণী হয়।

পল্লান্ত্য।—পল্লীন্ত্য খুব আনন্দদায়ক; ইহাতে মভ্যাসবলে বায়েমৈ হয় অর্থাৎ নিজে বুঝি ত পারে না বে কোন মাংসপেশীর কাজ হই তেছে। নাচ ও তাল-মানের সহিত মনঃসংগোগ করিতে হয় বলিয়া ব্যায়ামের প্রতি দৃষ্টি থাকে না এবং নির্দিষ্ট সময় ব্যতীত পরিপ্রান্ত হইলেও তালমান ঠিক রাথিবার জন্ত থামিতে না পারায় অভিরিক্ত পরিপ্রাম হয় বলিয়া অপকারী। প্রথম শিক্ষার্থী, দর ভোট ছোট গান এবং তদক্ষায়ী নাচের ব্যবন্থা করিয়া (অর্থাৎ বাহু 'তে তাহাদের অভিরিক্ত পরিপ্রাম না হয়) ক্রমশং ম ত্রা বাড় 'ইয়া লইলে উপকার হইতে পারে। যাল্লিক ব্যায়াম।—প্রথম শিক্ষার্থীদের খালি হ'তে

ব্ঝিত না পারিয়া অনিভ'স: ভ বির্ক্তির সহিত গ। ছাড়িয়া দিয়া হ.ত-পা নাড়ি:ত থকে। ক ংতে গেৰে লুইয়া ব্যায়াম বন্ধ হাতে উহা তুলি:তও কিছু-না-কিছু শক্তি উপর পড়ে বলিয়া অনেক কাজ হয় এবং ধীর ধীর বুঝিতে পারে যে কতটা জোর দি ত হইবে। যন্ত্রাদি দ্ব'রা ব্যায়াম করি ত গেল বহুব্যবহারজনিত একটা উৎস'হ ও মনোনোগ হয় এবং বা য়'ম করিব র জন্ম ইচ্ছা^ক্তি বহিত হয়। এইরপ করিতে করিতে বথন নির্দ্তি পেশীর উপর শিক্ষার্থী কে'র দিত শেখ তথন থ'লি হ'তে বায়িম করির ও তুলা ফল পাই ত পারে। শরীরের বিশিষ্ট মংস-পেশী বা অংশ অপুরণ প্রকিলে বিভিন্ন মংসপেশী গ⁵নোপ-বোগা যথাদি ব্যবহারে অংশগুলির যত সহজে পুরণ হয় অক্তাক্ত বা'ব'ম হুরা তত সহতে হয় না। শক্তিলাভের পক্ষে নম্নাদি দ্বার ব্যায় মই প্রাধান সহায়, বিশেষতঃ ডিল বা ঐরপ অস্তান্ত ভায়েম একসঙ্গে আদেশার্ষয়ী করিতে গিয়া বেমন জুর্মল বাক্তিদিগেব কট্ট ও অধিক পরিশ্রম হয় ইহা:ত ত'হা না হইয়া নিজের ইফ্টাক্রপ অকুণ্যী ঝায়াম করি.ভ শ্ক্তিও অভিকৃতি পারে; কাজেই অতিরিক্ত পহিশ্রম হয় না বলিয়া ইহা অধিক উপকারী। নানা রকম গন্তাদি স্বারা ব্যারাম করি ত হয় বলিয়া অসাতা ব্যায়ামের মত একণেয়ে না হট্য়া ট্হা বরং ক্রি আনয়ন কর। ইহ ছ'ড়া অন্ত'ল বাায়াম অপেকা ইহাতে সময় লাগে। নিয়মিত বায়'ম করিলে অপক:হিতা আমি যান্ত্রিক বাায়া.মর কোন প্রেকার স্বীক¦র করিনা। অতিরিক্তসকল বিষয়ই ধরাণ।

ব্যায়াম করিবার নিয়ম।—সপ্তাহে চারিদিন
শরীর-গানোপথোগী বা'য়াম, একদিন শক্তিচটো, একদিন
দৌড়ান ল'ফান ইত্যাদি এবং একদিন িশ্রেম।
প্রতাহ বা'য়ামর পর সামর্থা'ক্যায়ী আাত্ত আপ্তে
দৌড়'ন এবং ভত্তঃ মিনিট পানর খোলা বাতাসে বেড়ান
দরকার। বেদিন বে বায়াম করিতে ভাল ল'গে সেইদিন
সেইরপ বা'য়াম করা উচিত। ইচ্ছার বিক্লের বা'য় ম করিলে
লাভ না ইইয়া ক্ষতির সম্ভাবন'ই বেণী। স্বাভাবিক নিম্ব সপ্রেম্ব'সে, নি.জর শক্তি ও গাদা কুনায়ী বা য়াম করিলে সহ জই
উন্নতি লাভ করা বায়। সংব্দী না হইলে শুধু ব্যায়াম
করিয়া কোনই লাভ হয় না।

যুযুৎস্থ, বস্কিং ও লাঠি।—অনেকের মতে ব্যুৎপ্র মুষ্টিযুদ্ধ, লাঠিখেলা প্রভৃতি ভদ্র লাকের ক্ষতিবিক্ষন। আম র মতে নিয়মিত অভাগে করিলে ইহাতে শরীর কর্মাঠ হয়, আত্মরকার কৌশল শিক্ষা হয় এবং স'হস বাড়ে।



স'শ্যা লেগক

কোন গুণ্ডাকর্থক আংখ্রীয়-স্বদ্দ অ'ক্রান্ত হইলে তাহাকে ওওার হাতে ছাড়িয়া দিয়া জীবনরক্ষার জন্ম প্লায়ন অপেকা শত্রহত হইতে তাহার মুক্তিও শত্রকে বাধাদান করাই কর্ত্তব্য ।

বড় মাংসপেশী !- অনেকে বলেন, বড় মাংসপেশী পাকি ল শ্ৰীবের চাপ্লা নই হইয়া যায়। ম'ংসপেশী বলিতে কি তাঁহারা অতিরিক্ত চর্নি দ'রা আবৃত মাংসল দেহকেই মনে করেন ? না পরিমিত, চর্কিযুক্ত, সুগঠিত এবং কর্ম্মঠ পেশীকে মনে করেন, ভাহা জানা দরকার। যদি প্রথমটিকে উদেশ করিয়া বলিয়া থা:কন তহা হইলে তাঁহাদের কথা অনেকটা সত্য। কিন্তু দ্বিতীয়টি তাঁহাদের আলোচনার বিষয় হইলে অ'মি বলিব এইদ্বপ গঠিত ও বড় পেশীযুক্ত শরীরের ওক্সন অপেক্ষাকৃত কম হয় ও কর্মাঠ হয় বলিয়া অভাস করিলে সকল প্রকার কার্য্য করিতে সমর্থ হয়। পাশ্চাত্য দেশে বড় মাংসপেণীযুক্ত অনেক ব্যায়'মবীর অ'ছেন বঁহ'রা অভ্যাসমত দৌড়াইতে ল'ফাইতে ও সঁতর কাটিতেও পারেন। এদে শ ই'হা দর ম'ংস'পণী

অভান্ত ব্যক্তিদের মত পারি 1 উঠেন না। সেইজল এই প্রকার শ্রীর গঠনোপ্রোগী ঝায়ম বা এই প্রকার শ্রীর গঠন করা বে থ রাপ ত হা বলা যায় কি? যাহার যেরূপ দরকার সে সেইরূপ অভাাস করে এবং প্রয়োজনীয় মনে করে ।

কুন্তি।—কাহারও কাহারও মতে কুন্তিতে মতি:জর শক্তি इ'म इय ७ भवी तत सम वृक्ति इय । मखिएक मिक বুদ্ধি বলিতে ওঁহোৱা কি মনে করেন, কতকগুলি বই মুথস্থ করিতে পারিলে বা কতকগুলি সমস্যার সম'ধান করিতে পারিলেই মন্তিক্ষের উর্বর্তা প্রকাশ পার? আমার তাহা মনে হয় না। বে-কোন বিবয়ে নূতন তথ্য আহি । করাই কি মস্তি.ছর শক্তির পরিচায়ক নয়? এক জন কুন্তিগীর কোন রুতী ছাত্র হইতে কম মতিহ্বসম্পন্ন কিলে? কুন্তিগীরগণেরও নৃতন নৃতন তথা ও কৌশল আ বিষ্ণ'র করিয়া কুস্তির জীবৃদ্ধি সাধন করিতে হয়। তাহাতে কি তাহা দর কম উপস্থিত-বুদ্ধি ও চিন্তাশীলতার প্রয়েতন হয় ? পরীকা-স্বরূপ একজন ছাত্রকে ও একজন কৃতিগীয়কে যদি পরস্পরের শিক্ষণীয় বিষয় পরিবর্তন ৰজ হটয়াছ ওঁছোৱা এগুলি চৰ্চ্চা করেন না বলিয়াই করিয়া লইতে বলা হয় তাহা হইলে কেহই কাহারও



শার্ত হারেন্দত ছুইপামা মোটবের মাঝ্যানে থাকিয়া চাপ সক্ষ করা দেখাইতেছেন

অপেক্ষা অধিকতর মন্তিক্ষের ক্ষমতার পরিচয় দিতে পারিবেন বলিয়া আমার মনে হয় না। এক জন ছাত্র হয়ত বিদার্জিন হাওবা অর্থোপার্জনের উচ্চাশ্য লইয়া লেখা গড়া শিথে, সেইরপ একজন কুন্তিগীরও পৈতক ব্যবসায়ে থাতি অজ্ঞন করিবার জন্য সেই বিষয়ে অধিকতর অসুশীলন করিয়া থা'কন। ্ররপ কোনটা মস্তিক্ষেব ক্ষমতার পরিচায়ক বলা কঠিন। কস্তিতে শৰীৰ চালিয়ক্ত হ**ইয়া** যায়, এ ধারণা ঠিক নয়। সাধারণতঃ তৃতীয় শ্রেণার পা**লো**য়ানদের বেশ ফুগঠিত দেহ থাকে। পরে উন্নতির সঙ্গে সঙ্গে অতিরিক্ত পরিশ্রম ও খাপ্ত গ্রহণ করে এবং ক্রমশঃ থাত্তের পরিমাণ ঠিক রাখিলা ব্যায়ামের মাত্রা কমাইয়া দেয় ও বিশ্রামের ম'ত্রা বাডাইয়া দিয়া আয়াস-প্রিয় হইয়া পড়ে বলিয়া চর্বিযুক্ত হইয়া নায়। কেহ কেহ ইচ্ছা করিয় ই নিঞ্চের সুবিধার জ্বন্ত শরীর ভারী করে, অন্তে বাহাতে তাহাকে না নড়াইতে পারে। ত্রতএব কুস্তি করিলে মেদ বৃদ্ধি হয় এ ধারণা ঠিক নয়। নিয়মিত রূপে করিলে অন্তান্ত ব্যায়াম অংশক্ষা কুন্তিতে অনেক কম সময়ের মধ্যে জোর দিবার ক্ষমতঃ ও দম বাড়ায় : উপরস্থ আত্মরক্ষার কৌশল শিক্ষা হয় ও সাহস বাড়ে। স্বাস্থাবান ব্যক্তিরাই ইহা করিবার উপযোগী। অন্তান্ত ব্যায়াম অপেক্ষা অধিক সময় নষ্ট হয় বলিয়া সকলের পক্ষে ইহা সম্ভব নয়।

শক্তির কৌশল।—অনেকে বলিয়া থাকেন মোটরের গতি রাধ, লৌহন্ত বাঁকান, ওজন তোলা, বুকে ওজন ধারণ ইত্যাদি শক্তির পরিচায়ক কৌশলগুলির প্রদর্শন নিস্পারোজন

বকে হাতী নেওয়া প্রথম যথন প্রফেসর রাম্মূর্জ্তি দেখাইতেন ও রাশিয়ান স্যাভো সাহেব লৌহদণ্ড বাঁকান দেখাইতেন, তথন কত লোক তাঁহাদের দেবতা জ্ঞান করিতেন বা তাঁহাদের সঙ্গে আলাপ করিয়া কতার্থ হইতেন। আর আজ বাংলা দেশের ম্যালেরিয়াগ্রস্ত ব'ডালী ব্ৰক্গণের মধ্য হইতে নানারূপ হুভাব-অ ভিযোগ ও বাধাবিল্ল সংৰও এবং অন্যান্য দেশ অপেক্ষা কম ও সাধারণ থান্ত গ্রহণ করিয়া যতটুকু করি**তে** সমর্থ হইয়াছে, ইহা কি গৌরবের বিষয় নয় আমি অক্তান্ত শক্তিমান লোক অপেকা ইহাদের প্রশংসাই বেশী করিব, কারণ দাধারণত: মধ্যবিত্ত গৃহস্থ লোকের ভনপ্রতি মাসিক 415-53

টাকার বেনী খুব কম লোকেই আহার্ম্যে ব্যয় করিতে পারে। এই সকল থেলা থাহার। দেখাইয়া থাকেন টাহাদের মধো অনেকেট মধ্যবিত সংসারের লোক।

সাস্থ্যের উন্নতি করিতে হইলে বায়াম প্রয়োজনীয়। আজকাল বাংলার ছাত্রসমাজে ও সাধারণের মধ্যে যে শক্তি ও স্বাস্থ্য লাভের জন্ত একটা সাভা পডিয়াছে ইহাই একমাত্র ব্যায়াম-প্রদর্শনের কল। পূর্ব্বে ওকেসর বামমূর্ত্তি এবং ভীম ভবানী প্রামুখ তুই-তিন হ্বন ব্যায়ামবীর সার্কাদে ব্যবসায়ীরূপে এইরূপ অনেক থেলা দেখাইতেন। ভাঁহারা সাধারণের নকট প্রচার করিতেন যে যোগ্য প্রাণায়াম শিক্ষা ব্যতীত এইরূপ করিতে সমর্থ হওয়া যায় না ৷ এই কারণে কেইই এই কাজে হস্তক্ষেপ করিতে সাহসী হইতেন না। ছাত্রজীবনে ও ব্যক্তিগত কর্মজীবনে যে নিরুপদ্রবে ব্যায়াম দারা অতুল স্বাস্থ্য ও শক্তিলাভ করা যায় জাহা माधात्र (पत्र धात्रपात वाहिरत हिल: यहिए वाश्मात शर्क-কালে শক্তিচর্চচা ও ব্যায়ামের বহুল প্রচার ছিল এবং অনেক শক্তিমান ও সাহসী বীরপুরুষ জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন, কিন্তু চটার অভাবে ইহা ধীরে ধীরে লুপ্তপ্রায় হইয়া যাই:তছিল! সুথের বিষয়, আজকাল বাংলা দেশ হইতে অন্ততঃ হুই শত বাঙালী পাওয়া যার বাহারা প্রফেসর রামমূর্ত্তির সকল থেলা অথবা কিছু-না-কিছু থেলা দেখাইতে সমর্থ হয়। বিশেষ আনন্দের বিষয়, ছাত্র-সমাজের মধ্যে এইরূপ ব্যায়াম সম্বন্ধে উৎসাহ দেখিয়া সরকার ও বিশ্ববিদ্যালয় ইছার উন্নতির জন্স চেষ্টা করিতেছেন।

কলিকাভা বিশ্ববিভালয়ের ছাত্রমঙ্গল সমিভি ---এথানে কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের ছাত্রমঙ্গল সমিতি (Students Welfare Committee) সম্বন্ধে কিছ বলিবার আছে। উক্ত সমিতি প্রত্যেক বংদর স্কুল ও কলেজের ছাত্রদের স্বাস্থ্য পরীক্ষা করিয়া একটি রিপোর্ট প্রকাশ করিয়া থাকেন। কিন্তু ছাত্রগণের স্বাস্থ্য কিরূপে তাল হইতে পারে বা ঝাধিমুক্ত হইতে পারে, এরপ উপদেশ বা ব্যবস্থা করিতে না পারিলে শুধু এইরূপ স্বাস্থ্যপরীক্ষা দারা এ-যাবৎ ছাত্রদের স্বাস্থ্য সম্বন্ধে কি উন্নতি হইয়াছে বা হইতে পারে বুঝিয়া উঠা কঠিন। আমার মনে হয়, প্রশ্নতপক্ষে ছাত্রদের স্বাস্থ্যোমতি করিতে গেলে প্রথমতঃ বিশ্ববিদ্যালয়ের হোষ্টেলগুলির ছাত্রদের তিন মাস অন্তর স্বাস্থ্য পরীক্ষা করিয়া আবগ্রক-মত উপদেশ ও ব্যবস্থার 'বিধান করিতে হই.ব—কভজনের স্বাস্থ্য ভাল হই**ল,** কি কি রোগ সারিল তাহার তালিকা রাগিতে হইবে এবং নাসে একবার করিয়া স্বাস্থ্য রক্ষা সম্বন্ধে উপ দশ এবং প্রত্যেক ঝতুপরিবত্তনের সময় বাংলা দেশোপবোগা থাদ্য সম্বন্ধ উপদেশ দিতে হইবে। ইহা বিশেষ কঠিন কাজ নয়।

ছু:থের বিষয়, কমিটির সভাদের মাত্র ছুই-ভিন জন আছেন গাহারা ভাক্তার বা স্বাস্থ্যের চর্চ্চা করেন। তাছাড়া এমন অনেকে আছেন গাহারা নিজেদের কাজকর্ম্মের চাপে এ-বিষয় বেশা চিস্তা করিবার সময় পান না। আমার মনে হয়, যাহারা স্বাস্থ্য সম্বন্ধে চিস্তা ওচর্চ্চা করেন এইরূপ কয়েক জন ওচারি-পাচ জন ডাক্তার কমিটীতে থাকিলে বিশেষ উপকার হইতে পারে। স্থের বিষয় কমিটি একজন স্বাস্থ্য-বিষয়ক উপদেষ্টা নিয়োজিত করিয়াছেন কিন্তু কমিটির নিজেদের কোন ব্যায়ামাগার বা খেলিবার মাস নাই।

পাশ্চাত্য প্রথায় ব্যায়াম।—আদকাল পাশ্চাত্য দেশের অনুকরণে এদেশে ব্যায়ামের প্রচলন করিয়াও সুফল পাওয়া যাইতেছে না, তাহার একমাত্র কারণ সে দেশের লোক সাধারণতঃ থেরপে নিয়মে ও শান্তিতে জীবনগাপন করেন তাহার শতাংশের একাংশও আমরা পারি না বা তাহারা জন-প্রতি মাদিক আহারের জন্ত গাহা ব্যয় করেন তাহা আমরা বিশ জনের জন্তও করিতে পারি না। এতহাতীত শীতপ্রধান দেশের লোকের সাধারণ সাস্থ্য আমাদের গ্রীয়প্রধান দেশ অপেক্ষা শতশুণে ভাল।

প্রতিষ্ঠান।—আরও বিশেষ অসুবিধা এই বাংলা দেশোপযোগী কোন ব্যায়াম-শিক্ষা-প্রতিষ্ঠান এথানে নাই। বাহা ছই-একটি আছে তাহা পাশ্চাতা লোক দারা প্রতিষ্ঠিত বলিয়া পাশ্চাতা প্রথায় শিক্ষা দেওয়া হয়। এই প্রতিষ্ঠানসমূহে গ্রাক্স্যোট এবং অন্তান্ত প্রার্থিগণকে ছয় মাস হইতে এক বৎসর শিক্ষা দেওয়া হইয়া

এই সমস্ত প্রতিষ্ঠান হইতে উপাধি লাভ করিয়া সূল বা কলেজের শিক্ষকরূপে নিযুক্ত হওয়া যার। শিক্ষার্থীদের প্রধানতঃ পাশ্চাত্য প্রথায় কেতাবী ও হা.ত-কলমে শিক্ষা দেওয়া হয়। প্রায় দশ-বারো থানা বই পড়িতে হয়। ফলে হাতে-কলমে শিক্ষা বিশেষ কিছু হয় না ৷ দেশ-কাল-পাত্তাপুষায়ী কিরপ ব্যায়াম ও থাণ্ডের ব্যবস্থা হওয়া উচিত তাহা পর্যান্ত এই সকল প্রতিষ্ঠানে শিক্ষা দেওয়া হয় ন।। শিক্ষকদের মধ্যে অনেকৈ এদেশের লোকের সাধারণ খাভ বা জীবনবাপন প্রণাশী বিষয়ে কোন থেঁ।জ রাথেন না। অতএব ইংহারা ব্যায়াম-শিক্ষক হিসাবে কভদুর ক্লতকার্য্য হইতেছেন বা হইবেন তাহা ভাবিবার বিষয় ৷ এই শিক্ষা-প্রতিষ্ঠানের অনুষ্ঠান-প্রের মধ্যে এমন অনেক বিষয় দেখিতে পাওয়া যায় বাহা উপযুক্ত শিক্ষকের অভাবে শেখানো হয় না। শিক্ষা-প্রতিঠান হইতে পাশ্চাত্য দেশের অনুকরণে এ-দেশের জনসাধারণের মধ্যে ব্যায়াম প্রার চেষ্টা (থালিহতে ব্যায়াম ও ড্রিল) কার্য্যকরী হয় নাই। তাহার একমাত্র কারণ, উহারা থোঁজ রাখেন না যে ঐ সমস্ত দেশে চলিশ-পঞ্চাশ হাজার সরকারী ব্যায়ামবিদ্ আছেন। জন্মই উহা ঐ দেশে সম্ভব হইয়াছে।

শিক্ষক।—আজকাল গ্রাজ্বেটগণ শর্রাচচ্চায় মন দিয়াছেন দেখিয়া সকলেরই আনন্দিত হওয়া স্বাভাবিক। কিন্তু ছঃথের বিষয় ছুই চারিথানা এনাটমি, হাইন্দিন প্রভৃতি বই পড়িয়া, মাত্র ছয় মাস এক ব্যায়াম সম্বন্ধে দীমাবদ্ধ কতগুলি বিধয় শিক্ষালাভ করিয়া অনেক প্রান্থরেট নিজদিগকে শিক্ষিত ব্যায়াম-শিক্ষক বলিয়া প্রচার করিয়া থাকেন। আর গাহারা চৌদু-বৎসর গাবং ব্যায়ামচর্চা ও পনের বা ততোধিক এ-বিষয়ে উন্নতিসাধন এবং শিক্ষকতা করিয়া আসিতেছেন, বিশ্ববিদ্যালয়ের তক্ষার অভাবে এবং উপরোক্ত ব্যায়াম-শিক্ষালয়ের ছাপ না থাকায় অনেকে তাহাদিগকে অশিক্ষিত বাায়াম-শিক্ষক আখ্যায় অভিহিত করিয়া থাকেন। কিন্তু উদ্দেশ্য ব্যন প্রাকৃত ব্যায়াম-শিক্ষক হওয়া তথন ব্যায়াম সম্বন্ধে গাহার যত অভিজ্ঞতা ঠাহাকেই তওদূর শিক্ষিত ব্যায়াম-শিক্ষক বলা যাইতে পারে। আর যদি গ্রান্ধ্রেট বলিয়া ভাহাদের অভিমান থাকে তাহা হইলে বলা ধায় চৌদ্দ বৎসরের চেষ্টায় শেমন গ্রাক্সয়েট হইতে হয়, সেইরূপ অন্ততঃ বার-তের বৎসর চেষ্টা করিলে তবে ব্যায়াম সম্বন্ধ অনেকটা অভিপ্ৰতা লাভ করা যায়। এই সকল উপদেষ্টাগণের কাহারও কাহারও মতে ব্যায়াম সম্বন্ধে ঠাহারা যতটুকু অভিজ্ঞতা লাভ করিয়াছেন তাহার অতিরিক্ত অথবা ঐেরপ ধরণের ব্যায়াম বাতীত অস্তান্ত ব্যায়াম দরকার করে না। যদি তাই হয় তবে ইহাই

কি মনে হয় না যে, তাঁহাদের মতে বর্ণপরিচয়*ই* বিদ্যার্জ্জনের পক্ষে যথেষ্ট? স্থল-কলেজে ক্রমোন্নতির জন্ত েরপ শ্রেণী-বিভাগ আছে শরীর-চর্চ্চা বিষয়েও তদ্ধপ। দেখা যায়, ব্যায়ামাগার আছে বলিয়াই পঞ্চাশ-ঘাট বা একশত জন ছাত্র নিজের ইচ্ছায় বাায়াম করিয়া থাকে; এইরূপ ব্যায়'মাগার না থাকিলে নিজের ইচ্ছায় তুইটি ছাত্রও ব্যারাম করিত কিনা স.ন্দহ, বিশেষতঃ কলেন্দ্রে ব্যায়ামাগার ব্যতীত নানাত্রপ থেলা ও বায়োমের বন্দোবস্ত থাকে বলিয়া সকল র মে বায়োমট ইচ্ছারুগায়ী করিয়া থাকে। কলেজে যেন। বিজ্ঞান পডাইব'র সময় বীক্ষণাগারের অভাবে পেন্সিল দেখাইয়া টেষ্ট টিউবের কাজ সারিতে ্বুঝিতে অসুবিধা হয় বা বে!ঝেনা. োলে ছেলেদের সেইরূপ শরীরচর্চ্চাও এক প্রকার বিজ্ঞান। এ বিহয়েও মুথে 'শুধু এটা কর সেটা কর' বলিলে শিক্ষ থিগণ কিছুই বুঝিতে পারে না। সেই জন্ম বাংয়ামাগারের দরকার হয়। ব্যায়,মাগারে প্র.ত্যক বাায়:মার্ণীর প্রতি দষ্টি রাথিয়া স্বাস্থ্য, শরীর ও রুচি অত্যাগী বিভিন্ন প্রকার ব্যবস্থা করিকে হয় থাদ্যা দির মন্ততঃ শতকরা ৮০ জনের স্বাস্থ্য ও শ্রীর ভাল হইতে দেশা ন'য়। আজক'ল বে ছাত্রদের মধ্য শ্রীরগ'ন, স্ব'ষ্য, শক্তিলাভ ও বায়া মর প্রতি এতদুর অগ্রহ দেখি:ত পাওয়া যায় ত'হার উৎপত্তির মূল এই বা'র'ম'গ'রগুলি। কিন্তু একসঙ্গে দল ব'ধিয়া ড্রি:লর মত বা'য়'ম কর'ইতে গেলে প্রতাকের শরীর ও স্বাস্থ্য অত্যয়ী বাায়ামের বাবস্থা করা নায় না এবং একট প্রাকার ব্যায়ামের ব্যবস্থা হয় বলিয়া সকলের শরীর ও স্বাস্থ্যোরতির পক্ষে তাহা উপকারী নহ। ততাতা যে-সকল এইরপে দল বাধিয়া বা'য়'ম করান হয় (স-সকল স্থানে স্ব'স্থা পরীক্ষা করিয়া একই প্রক'র সাস্থোর ভাহাদের ক্ষতিব লে'কদিগকৈ লওয়া হ ; ব লিয়া সম্ভাবনা নাও থাকিতে পারে, কিন্তু ঐক্রপ ব্যবস্থা নাথাকায় ক্ষতির সম্ভাবনাই বেশী। এক সঙ্গেদল বাধিয়া ব্যায়াম করাইতে হইলে যেরূপ প্রাশস্ত জায়গার দরকার হয়, অনেক স্কুল-কলেজেই ভাহার অভাব। বায়'ম'গার একটি প্রকোর্ফের মধ্যেই হইতে পারে। কলেজে এইরূপ প্রকোষ্টের অভাব থাকি লও কলেজ-সংলগ্ন ছাত্র'বাসেও ঐব্ধপ একটি প্রকোষ্ঠ পাওয়া যাইতে পারে এবং কলেজ ও ছাত্রাবাসের সহযোগিতার একটি ব্যায় মাগার তৈয়ারী হইতে পারে।

আন্তকাল দেখা যায়, শুধু ড্রিল, গেমন্, স্পেটি ইত্যাদি কোন একটি বিষয়ে অভিজ্ঞতা লাভ করিয়াই অনেকে ব্যায়াম-শিক্ষক নামে নিজকে প্রকাশ করিয়া থাকেন। কিন্তু প্রক্রমঞ্জে ক্ষাকালে ক্রেক্সমঞ্জে ক্রেক্টি বিষয় ক্লাবিলেট চলিবেনা, কারণ বিভিন্ন প্রকারের ছাত্র তাঁহার নিকট বিভিন্ন বিষয়ে উপদেশ লাভের জন্ম আসে। প্রাক্তর ব্যায়াম-শিক্ষক হইতে হইলে কতকণ্ডলি বিষয় যথাসম্ভব অভিজ্ঞতা থাকা দরকার। ওাঁহ্দের সংন্মীও চরিত্রান হওয়া দরকার। শ্রীর ও থাত সম্বন্দে সাধারণ জ্ঞান, স্বাস্থ্য ভাল করার ও রোগ-প্রতি এধক ব্যায়াম (কতকণ্ডলি বোগ আছে গাহাতে ব্যায়াম দ্বো সহক্ষেই উপকার পাওয়া যাইতে পারে) সদ্ধে অভিজ্ঞতা তাঁহাদের দরকার। বাবস্থাত্যায়ী ব্যায়ামগুলি গাহাতে ছাত্রকে নিজে করিয়া দেখাইয়া দিতে পারেন সে বিয়য়েও উ হাদের দৃষ্টি পাক। উচিত। নানা প্রকার ব্যায়াম সম্বাস্ক্ষ কার্য্যকরী অভিজ্ঞতা, বিশেষতঃ শরীরের অপূর্ণ অংশ পূর্ব করিবার ব্যায়াম ও ব্যায়ামকে সর্বজনপ্রিয় করিয়া তলিবার ক্ষমতা-এই গুণগুলি তাঁহাদের থাকা একান্ত আবগ্রু এবং এই সকল বিবয়ে নৃতন নৃতন তথা আবিষ্কার ক্রিতে যতুবান হওলে উতিত। বাল্ম-শিক্ষকদের পক্ষে স্বাস্থ্য ভাল হওয়া, মুগঠিত দেহ ও শক্তি থাকাই উক্ত বিষয়ে পাবদ্শিতার তিহুস্করণ। এতহাতীত শিক্ষার্থিগণের সহিত ক্ষতা বারিম-শিক্ষকদের প্রক মিশিব.র আয়ামাখীরা প্রথমে একান্ত প্রয়ে:ভনীয়। (कनगं, আসিয়াই শিক্ষকের নিকট উৎবিউক্ত বিষয়গুলি সম্বন্ধে নিজ নিজ্ঞ আবগুকাত্রযায়ী ব্যবস্থা চায় এবং ব্যায় ম থিগণের মধ্যে অনেকের এমন কভগুলি গোপনীয় বিয়য় আছে বাহা আগ্রীয়-স্বজনের নিকটও বলিতে লক্ষা হয়, অণচ সংশোধন ম'ন স শিক্ষ:কর নিকট প্রকাশ করিতে ভাহারা শজা বোধ করেন না।

ব্যায়ামে বাধা — ব্যায়াম করিলেই প্লিসের নগরে পড়িতে হইবে এই আশ্কায় পুর্বের ন্যায় আজকাল অনেকেই ব্যায়ামচর্চা করিতে সাইস করেন না। আমার মনে হয়, ইহার মধ্যে যত ক্ষণ রাজনীতির গদ্ধ অথবা সরকা রর ক্ষতিকারক বিয়য় প্রবেশ না করে, তত ক্ষণ তাহারা শুধু ব্যায়াম করিলেই পুলিসের কোলে পড়ে না। ১৯০৬ সালে স্থায়াম করিলেই পুলিসের কোলে পড়ে না। ১৯০৬ সালে স্থায়াম করিলেই পুলিসের কোলে পড়ে না। ১৯০৬ সালে স্থালার মধ্যে রাজনীতি চুকিল তথনই উহা নাই হইয়া গোল। অতএব ব্যায়াম্চর্চার সালে রাজনীতি মিশাইয়া ছইটাকেই নাই করিয়া দেওয়া উচিত নয়।

বাংলা দেশে বায়ামচর্চার উন্নতির জন্ম স্বাস্থ্য-বিদ্যাণের একটা সক্ষ থাকা উচিত। প্রাচ্য ও পাল্চ তার, সংমিশ্রণে আমাদের উপযোগী বায়ামের একটা আদর্শ এবং ধারাবাহিক নীতি স্থির করা কর্ত্তবা। আদরে মনে হয়, আমরা সক্ষবদ্ধ হইয়া প্রতিবাদ করিতে পারিব না বলিয়া যাহার যহা খুণী তিনি তাহাই প্রচার করিয়া নিজের স্বার্থসিদ্ধি করিবার চেষ্টা করিতে ক্রটি করেন না। প্রচারর জন্ম আমাদের একটা মুখপত্র

থাকা দবকার এবং প্রতি বৎসর অলিম্পিকের অনুকরণে ্একটা প্রতি নাগিতার ব্যবস্থা করিয়া তাহার রেকর্ড র'থ। দরকার।

শেষ কথা।—মানবজীবন কর্মায়। কর্মপ্রেরণা লইয়াই মান্য পৃথিবীতে জন্মগ্রহণ করে। কর্মাই মানবজীবনের একমাত্র সাধনা। জীব মাত্রই জরা মৃত্যুর অধীন, কিন্তু বত দিন বাচিয়া থাকা যার তত দিন শব্যাগত মৃতপ্রায় হইয়া বাচিয়া থাকা যন্ত্রপাদায়েক, অশান্তিময় ও পৃথিবীর বোঝা বিলিয়া মান হয়। ভগবানের ফ্টে নিয়ম ধাবা গঠিত এবং জীব মাত্রই প্রেকতির নিয়মাধীন। তন্মধ্যে মান্ত্রই সকল জীবের প্রেই। মান্ত্র নিয়ম পালন করিয়াই দেবতা হয়, অবের অনিয়মে নিয়েই বলিয়া গণা হয়। অতএব মান্ত্র চেটা করিলে দ‡ল কার্যেই অগ্রসর হইতে পারে।

ক্ষা করিতে হইলে শ্রীর ও মন পৃস্থ ও সবল রাখা।
দর ছার। শ্রীর ও মন পৃস্থ না থাকিলে ঐশ্বার
মধ্যে নিমগ্ন পাকির ও প্রাক্ত প্রের অহভূতি হয় না।
ধাহাদের শ্রীর প্রকৃত পৃস্থ নহে ত'হাদের ধর্মা অগ্ন কাম
মোফ কোন বিয়েছেই মন নিবিষ্ট হয় না।

শরার মূলং হি সুধং, শ্রীর্মান্য প্র ধ্যু সাধন্ম।

প্রাচীন মহাজনগণের এই নীতিবাকাণ্ডল ত'হাই প্রমাণ করিয়া আদি তছে। অতএব দেশা নায়, শারীরিকাণ্ড মান সিচ আছের উপরে মাক্রের ক্থলান্তির ভিত্তি প্রতিষ্ঠিত বহির ছে। শরীরের সহিত মাক্রের মানের খুবই নিকট দক্ষ, শরীর ফুস্থ থ কিলে মন প্রকৃত্র থাকে: আবার শরীর অস্থ থাকিলে মন ত্র্বল হয় ও বিনর হইয়া পড়ে। শরীররক্ষার্থ খাদা, জল, বায়ু, আলোক, পরিচ্ছদ, বিশ্রাম ইচা দির বেমন বিশো প্রয়েজন, সেইরূপ বাায়ামও শরীর-রক্ষর একটি অন্তত্ম উপাদান।

শ্রীর কৈ সুস্থ এবং কর্মাঠ করিব'র জন্ম থে-কোন প্রকার অঙ্কালনার নামই ব্যায়াম। ব্যায় মুদ্ধারা আহু য্য

জিনিয সহজে হজম হয়, শরী রের রক্ত চলাচল বৃদ্ধি করে, প্রতি মুহুর্তে বিহৃত অবস্থপ্রপ্র মাংসপেশীর সুন্মতম অংশগুলি নৃতন করিয়া পুরণ করে এবং হংপিণ্ডের तक-ठन: 5.नत पदन **হদ** পিণ্ড সবল হয় ৷ খাদ গ্রহণ দারা ভিত র অন্নজান বাযুর প্রবেশ হেড অ'ম'দের কুদকুসের রক্ত শোধিত হইতেছে, কিন্তু ব্যায়াম-কালীন অধিক নিখান-প্রখাদ গ্রহণ ও ত্যাগের জ্ঞ অন্নজান বাপ্য আমাদের শরীরের দ্বিত রক্ত অধিক পরিমাণে শোধন করে। বায়েংমে শরীর কর্মাঠ হয়, চাপলা, সহিঞ্ছা ও মনের উৎদাহ বাড়ে, মাংসপেণাগুলি সবল হয় ও নানারপ বাাধির আক্রমণ হইতে রক্ষা করে। বায়ে'ম করিতে হইলে স্বাস্থ্য ও শরীর স্বানীয় সাধারণ জ্ঞান থাকা দরকার, কারণ কোন রকম বন্ধ ব্যবহার করিবার পূর্বের সেই দরের ব্যবহার-বিধি সম্বন্ধে জ্ঞান থাকি লৈ কাজ করা নেমন সহজ্ঞসাধ্য হয়, সেইদ্ধপ স্বাস্থ্য লাভ করিতে হইলে শরীর ও স্বাস্থ্য সম্বন্ধে অভিজ্ঞতা থাকিলে সহজে অধিক দিন স্থায়ী স্বাস্থ্য লাভ করিতে দমর্থ হওয়া বায়। সাধাত্রযায়ী. ক্রচি অহ্যারে ও নিয়মিত রূপে যে কোনরূপ ব্যায়ামই করা যাক না কেন ভাহাই আমাদের শরীরের পক্ষে বিশেষ উপকারী। শরীরের **প্র**াত্যক **অঙ্গ-প্রতাঙ্গের**ই কিছু-না-কিছু ব্যায়াম করা উচিত্র এবং দাহাতে উপরিউক্ত গুণগুলি লভে করিয়া শরীবের অনুপাত ঠিক রাখা গায়, সেইরূপ চেষ্টা কর ই দরকার এবং যাহাতে শরীরের কমনীয়তা ও লাবণ্য চুত্রি করে সেইরপ ব্যায়ম করা বি.শ্য প্রয়েজন : মাংসনেশ্ভিলি যদি পরিমিত চরিবারা আবৃত থাকে তবে শরীরকে বিশেষ কর্মক্ষম করে, শরীরের কমনীয়তা বাড়ায় ও শরীরকে অধিক শক্তিশালী করিয়া তোলে। শরীর-অভুগাতে মাহা দর চর্দির কম থ'কে (অর্থাত যাহাকে পাকান শরীর বলে) ত'হাদের সধারণতঃ শক্তি ও শরীরের কমনীয়তা কম হয় এবং কম পরিশ্রমী হইতে দেখা নায়





ভারতবর্ষ

গোনালিয়রে বাংলা গ্রন্থাগার প্রতিজা—

পোয়ালিয়রে প্রবাসা বাঙালীগণ কর্তুক সম্প্রতি একটি বাংলা গড়াকার প্রতিষ্ঠিত হউয়াছে। গোয়ালিয়র সরকারের স্থায়ী উদ্ধিনায়র রায় বাহাছর নিযুক্ত প্রেক্তনাথ ভাছড়ী এই উদ্দেশ্যে পিতার শ্বনির্কার্য পাঁচ শত টাকা দান করিয়াছেন। গোয়ালিয়র ভিস্টোরিয়া কলেনেরে ইংরেজী-বিভাগের প্রধান এব্যাপক নিযুক্ত হারালাল চট্টোপাধ্যায় এ-বিষয়ে বিশেষ অর্থনী: ভথায় প্রবাসী বাংগোঁর সংগণ অত্যন্ত ইউলেও চট্টোপাধ্যায় মহাশ্যের চেন্তা-গত্তে এই গভাগার স্থাপন স্বস্থ ইইয়াছে। প্রবাসী বাঙালীর বাংলা-সাহিত্য চর্চ্চায় উৎসাহ ও সাহার্যা কান করা বাঙালীমারেরই কর্ত্বা।

কাশী ভারত-স্থী-মহামণ্ডল-

গত লো অক্টোবর তাহেরপুর-রাজক্ঞা শানুজা হেমন্তন্মারী দেবীর সভানেরতে কাশী ভারত-দ্বী-মহামন্তলের অধিবেশন হচাকরপে সম্পন্ন চইয়াছে। শভাবধি ভ্রমহিলা সভায় যোগদান করিয়াছিলেন। সভায় শমতী পুর্ণশনী দেবী, শমতা গিরিবলো দেবী, শমতা নিস্তারিণ দেবী, শমতা প্রধাংগুরালা দাসী ও শীমতা মলিনা চলা বক্ততা করেন ও প্রবন্ধাদি পাঠ করেন। বাংসরিক আয়-বায়ের বিবর্কী পাঠান্তে ভোট বড় কয়েনট বালিকা কবিতা আরুত্তি, সঙ্গীত ও এতা করে। সভান্ত মহিলাগণ প্রপ্রমাল্য, সিন্দুর, যেতচন্দন ও তামুল দ্বারা প্রপ্রেকে অভার্থনা করেন। সভানেরাকে ধঞ্জবাদ দানের পর সভা ভঙ্ক হয়।

বিঠলভাই পটেলের দান---

বাবছা-পরিষদের ভূতপূর্ব সভাপতি বিচলভাই পটেল নহাশয় গও বুখসর সুইট্ঞারলাতে দেহত্যাগ করেন। ভারতবংশর রাজনৈতিক কাম পরিচালনার জল্প তিনি এক লক্ষ পানর হাজার টাকা দান করিয়া গিয়াছেন। শাযুক্ত প্রভাষচল্প বস্থা হাছার মনোনীত কোনও ব্যক্তি উক্ত উদ্দেশে ইহা বায় করিতে, পানিবেন -উইলে এইরূপ নির্দেশ আছে।

রেঙ্গুন বেঙ্গুল ক্লাব পঞ্চবিংশতি-বার্ষিকী---

রেঙ্গুনন্থ বেঞ্জল কাব এজ-প্রবাদী বাঙালার সক্ষপ্রধান সামাজিক প্রতিষ্ঠান। গত ২৬এ ইইডে ২৮এ অক্টোবর পর্যান্ত এই দাবের পঞ্চবিংশতি বাধিক উৎসব সম্পন্ন ইইয়াছে। ইংনুক বিভূতিভূষণ নুখোপাধ্যায় উৎসবের পোরোহিত্য করেন। প্রথম দিনের সভার উরোধন সঙ্গীত ও সংস্কৃত স্তোত্র, পাঠ অত্যত সভাপতি মহাশর রুধবের সংক্ষিপ্ত ইতিহাস বিবৃত করেন। এই দিন অপরাছে সাহিত্য-সভা অনুষ্ঠিত হয়। সভার কয়েকটি স্বচিন্তিত প্রবন্ধ পঠিত ইইয়াছিল। জিনীয় দিন বেঞ্জল একাডেমী হলে রবীক্রনাধের "শেব-রক্ষণ"র ্থভিনয় হয়। শেষ দিন, কাওন গানের পর সভাগণের এলগোগাতে উৎসর শেষকয়।

বাংলা

আত্রসেবায় দান--

কলিকাতা ৬২ ন: আমহান্ত রো-স্থিত শ্যুক্তা নিশ্বলনলিনী বস্থ সংগ্রহা প্রান্ত ক্ষেত্র আর্ত্তিয়ের জন্ম ক্ষেত্র ক্

বিদেশে বাঙালীর ক্লতিত্ব—

(-) ময়মনসিংহ-নিবাসা শাষ্ক ওরেণচজা সিংহ কলিকাতা বিশ্বিদালেয় হউতে এন্-বি প্রাক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়া গত বর্ধে বিলাত



শীযুক্ত ভড়িৎকুমার গুহ গমন করেন। গত মার্চ্চ মাদে তিনি এডিন্বরা হইতে এফ-আর-সি-এস

পরীকা সম্মানের সহিত উত্তার্ণ হন। পরে, লওন বিখ-বিদ্যাল্যরে অধ্যাপক হিলের তত্বাবধানে শ্রীর-তত্ব বিষয়ে গবেষণা করিয়া ইদানাং এই পরীকাতেও কৃতকার্য্য হইয়াছেন। পরীক্ষোত্তার্ণ ছাত্রবেদ মধ্যে সিংহ মহাশয়ই এক্মাত্র ভারতীয়।

- (২) শ্রীযুক্ত তড়িৎকান্তি গুছ প্রার্থাণীর ক্রারুণ্ট ও অন্ধ্রীয়ার ভিমেনা বিশ্ববিদ্যালয়ে দস্ত-চিকিংসা শিক্ষা সমাপ করিয়া এ-বিষয়ে ডিপ্রোমা লাভ করিয়াছেন। বাঙালাদের মধ্যে ইনিই এই বিশ্ববিদ্যালয় হইতে স্বৰ্গপ্রথম দস্ত-চিকিংসায় ডিপ্রোমা পাইলেন।
- হিনুক্ত স্থনীলকুমার নন্দী ঢাকা বিশ্ববিদ্যালয়ের এক জন কুত্রী ছার। তিনি সেগান ১ইতে এম্-এস্সি পরীক্ষায় প্রথম প্রেলাতে



শীপ্নীলকুমার নন্দ।

প্রথম হইয়া উত্তীর্ণ হন। পরে, গ্লাসগোছিত রয়ণাল কলেজ অফ টেক্নোলজি হইতে শর্করা-শিল্প বিষয়ে সর্কোচ্চ এ-আর-টি-সি পরীক্ষাতেও প্রথম শ্রেণীতে প্রথম হইয়া উত্তীর্ণ হইয়াছেন। তিনি সেথান হইতে শর্করা উৎপাদন ব্যাপারে অভিজ্ঞতা লাভের জ্ঞা মরিসসৃদ্বীপে গমন করেন। তিনি সম্প্রতি স্বদেশে ফিরিয়া আসিয়াছেন।

্রলোকে সুরেক্সভূষণ সেন—

'বেল্লল কেমিক্যাল' কোম্পানীর মানেজার স্বরেক্সভূষণ সেন সম্প্রতি পরলোকগমন করিরাছেন। তিনি উক্ত কোম্পানীতে সামাস্ত বেতনে নির্ফু হইরা অসামান্ত প্রতিভা ও অরুগন্ত পরিপ্রমের ফলে এই কোম্পানীর ম্যানেজারের পদে উন্নাত হইয়াছিলেন। মৃত্যুকালে ভাষার বয়স মাত্র চুল্লালিল বৎসর হইয়াছিল। ভাষার মৃত্যুতে বাংলা দেশ এক জন একনিষ্ঠ কন্মী হারাইল।

পরলোকে কুঞ্জলাল রায়—

गावना-निरामी क्ञमान बाब वाला ७ है:राबको माहिछ। এवः

সঙ্গীত ও রদকলার চর্চার জন্ম বিগাতি ছিলেন। তাঁহার স্থায় উদার-স্বভাব, মিষ্টভাষী ও দানশীল বান্তি বিরল। তিনি রংপুরের কাকিন। রাজপ্রেটে কাষা করিয়া বিশেষ ক্রতিও দেখাইতে সমর্গ হইয়াছিলেন: সম্প্রতি তিনি প্রলোকগমন করিয়াছেন।

মফঃস্বলে শিক্ষাপ্রচার—

গুলা জেলার ইলছোবা-মোওলাই উচ্চ ইংরেজা বিদ্যালয় এব টি হুপ্রাচীন প্রতিথান। ৮০৬ সনে রামগোপাল ঘোষ মহাশ্য ইহ। স্থাপন করেন। সেই সময় হুইতে ইহা স্থিকাপ্রচারে বিশেষ সহায়ত, করিয়া আসিতেছে। এরপ প্রতিথান যাহাতে উত্তরাত্তর জনশিক্ষার কাষ্যে অপ্রসর হুইতে পারে সেইজ্ব্য দেশবাদীর আত্তরিক সংগ্রহার প্রয়োজন।

কৃতী শ্রীণক নবগোপাল দাস---

শানুজ নবগোপাল দাস, আই-সি-এম, অর্থনৈতিক বিষয়ে গ্রেষণা-মলক প্রবন্ধ লিখিয়া কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় হইতে বীরেশর মিণ



শীযুক্ত নৰগোপাল দাস

স্বৰ্ণপদক লাভ করিয়াছেন। আই-সি-এস কৰ্মচারীদের মধ্যে তিনিই স্ক্তেথ্য এই পদক পাইয়াছেন বলিয়া প্রকাশ।

স্বাবলম্বী বাঙালী যুবকের ক্কতিত্ব—

শীগুক্ত অধিলপদ ঘোষ কলিকাত! বিশ্ববিদ্যালয় হইতে বি-এসিদি পারীক্ষাই উট্টার হাইয়। জামসেদপুর টীটার লোহ কারখানার দৈনিক আট আনা মজুরিতে শিক্ষানবীশ হইয়। প্রবেশ করেন। নিজের দক্ষতার এবং ক্ষাত্তপরতার চার ব্যুসরের মধ্যে উহার বেতন দেড় শত টাকা হয়। তাহার পর তিনি লোকোমোটিভ সম্বন্ধে উচ্চ শিক্ষা লাভ করিবার ক্ষম্ম নিজের চেষ্টার, নিজের স্কিত অর্থে বিলাত গ্রুন করেন। সেধানে স্থাসের কার ই, রাট এও কোম্পানার কারখানায় সাড়ে পাঁচ বহসর শিক্ষালাভ করেন। এই সময়ে তিনি নৈশ



শীঅধিলপদ ঘে;ষ

বিশালয়ে প্রায় পাঁচ বংসর অধ্যয়ন করিয়া 'এ-এম্-টি-মেণ্-ই' উপাধি লাভ করেন। উ!হার অধাবসায় ও আয়নির্ভরত। প্রতোক বাঙালী ছারের অনুকর্মীয় !

শ্রীয়ক্ত ক্ষেত্রমোহন বত্র সাফল্য—

শাবুন্ত ক্ষেত্ৰমোহন বস কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় ২ইতে ডি-এস্সি



শীবুক্তক্ষেত্রমোইন ৰম্ব

উপাধি লাভ করিরাছেন: উাহার গবেষণার বিষয় ছিল 'ওরেভ মেকানিকস' (Wave Mechanics)। তিনি কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের পালিত অধ্যাপক ডি এম বস্থ, ঢাকা বিশ্ববিদ্যালয়ের অধ্যাপক এস্ এন্ বস্থ এবং এলাহাবাদ বিশ্ববিদ্যালয়ের অধ্যাপক মেঘনার সাহার অধীনে ভূত-বিন্যা (playsics) বিষয়ে গ্রেষণা করিয়াছেন .

প্রবাদী বন্ধ-দাহিতা-স:শ্বলন, দ্বাদশ অধিবেশন-

প্রবাদী বঙ্গ-সাহিত্য-সংস্থলনের সাহিত্য-শাখার সম্পাদক শীযুক্ত প্রিয়রগ্রন সেন জানাইয়াছেন —

আগামী বড়দিশের ছুটীর সনয়ে কলিকা হার প্রবাসী বক্স-সাহিত্যস.মাল.নর দাদশ অবিবেশন হইবে। সম্মোলনের সাফল সাধারণের
সদিক্ষা ও সহায়ভূতির উপর নির্ভর করে। সাহিত্য-শাগায় প্রবদ্ধাদি
পাঠ করিবার জন্ত বাঙ্গাল সাহিত্যিক গর নিকট সনির্বন্ধ অনুবোধ
জানাইতেছি। গাঁহোর। সাহিত্য, দর্শন, ইতিহাস, বিজ্ঞান প্রভৃতি বিবদে
প্রবন্ধ পাঠ করিতে চাহেন, তাহার! অনুগ্রহপ্রক আগামী ২২শে
স্থাহায়ণ (২৮শে ডিসেম্বর) তারিখের মধ্য সাহিত্যশাগার সম্পাদকের
নিক ট তাহাদের নাম, প্রবন্ধর বিষয় ও সার্মগ্র পাঠাইরা দিবেন।

क्रजी श्रीमणेक म'रून मोलिक-

রোমের রয়াল ইটালিয়ান ইন্ষ্টিটেট শাগুরু মণীক্রমোহন মৌলিক মহাশয় ক সপ্রতি একটি বৃত্তি দিয়াছেন। ইহার পরিমাণ ৪৫০০ লিরা।



গ্রীমনীক্রমোহন মৌলিক

মণ্ডিৰাব ইটালাতে তথাকার বাবসা সংক্রাপ্ত বিষয় শিক্ষা করিবেন। কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ে প্রতিযোগিতামূলক পরীক্ষা দিয়া মৌলিক মহাপর এই বৃত্তি পাইয়াছেন। তিনি বীমা সম্বন্ধে করেকটি পুত্তক মহানা ও পত্র সম্পাদন করিয়াছেন।

অর্থ নৈতিক প্রসঙ্গ

পাটচায-নিয়ন্ত্রণে সরকার---

বাংলা-সরকার পাটের চাষ নিয়ন্ত্রণ করিবার জক্ত বিশেষ উদ্যোগী হইয়াছেন। কৃষি-লিল্ল বিভাগ হইতে গত ২০শে সে:প্টম্বর এই মর্মে একটি সরকারী বিবৃতি প্রচারিত হইয়া ছ। পাট-তবল্প-কমিটি আইন দারা পাটের চাব নিয়ন্ত্রণ করিবার বিরুদ্ধে মত প্রকাশ করিয়াছেন। ১৯৩৫ সালের ফস.লর জন্ত, এবং কুষকগণ যাহাতে স্বেচ্ছায় পাটের চাষ হাস করে সেজন্ত অধিকতর প্রচারকার্যা চালাইবার মুপারিশ সরকার গ্রহণ করিলেন। শতকরা কি পরিমাণ হ্রাস করা হুটবে জাত্মারী মাসে প্রকাশিত হইবে। পা.টর চাষ নিয়ন্থ করিরার জন্ত এক জন বিশেষ কর্মচার। নিযুক্ত হইবেন। প্রচারকার্য পরিচালনার ব্যবস্থা করা তাহার কর্ত্বণ হইবে। ইহা বাতীত পাট-সম্পৰ্কীয় নানাবিধ সংবাদও তিনি নরবরাহ করি:বন। এই কর্মচারীর উপদেশারুসারে ও সহায়তার জেলার ম্যাজি:ইটগণ প্রচারকার্যা চালাই বন জেল! কয়েকটি ''চাৰ্জে" বিভক্ত হইবে এবং ''চাৰ্জ্জ"গুলি এক-এক জন কন্মকৰ্বার অধানে স্থাপিত হইংব। এই স+ল ''চাৰ্জ্জ অফিসার" প্রায়ই বেসরকারী ব্যক্তি হইবেন; তিনি স্থানীয় কর্মচার।দের সহকারিতার গ্রামা কুষকগণর মধোপাট-চাষ নিয়স**্ণর জন্ম সমিতি গঠন করিবন। এই প্র**চারকার্য্যে**র** ব্যয়নিকাতের জন্ত ৫০,০০০ টাক। মন্ত্র হইয়াছে। ঐ তারিখে প্রচারিত একটি 'প্রেস নোটে'' প্রকাশ যে এই করচার, ''রুরাল ডেভেলপমেণ্ট কর্মচারার" অধীনে কায্য করিবেন। সম্প্রতি ণার্জ্জিলিডে জেলাবোর্ড সমুহের চেয়ারম্যান ও প্রতিনিধিবংর্গর এক সম্মেলন সভায়ে কৃষিমন্ত্রী উাহাদিগের সহায়তা আহ্বান করিয়াছেন। সরকারী ময়ার্য ও শাসন পরিধদের সক্ত প্তর নাজিম্দিন এই প্রচারকার্যো মফাস্বল ভ্রমণ করিতে প্রস্তুত

রায়-সাহেব দেবেজ্ঞনাথ মিত্র এই সম্পর্কে বি.শব কর্মচারা নিযুক্ত হইয়াছেন। ইতিমধ্যে পাটচায় পরিকল্পনার কাষ্য আরম্ভ করিবার এবং রবিশশু চাবের প্রচারের জক্ত জেলার মা।জি ইটদিগের নিকট উপদেশাবলী প্রেরিত হইয়াছে। এরপ প্রচারিত হইয়াছে যে, চানাবাদাম, তামাক, তিমি, রম্বন, পিয়াজ, বিলাত। শাক্ষজা, বালু ও ইক্ষু চাবে ভাল ফল আশ! করা যায়। যে-সব জেলার মিলা,শুর বাজ পাইতে অম্বিধা, সে-সব জেলার কলেইরের নিকট ক্রমিবিভাগের ডিরেক্টর বাজ প্রেরণ করিতেছেন।

ভারতের বহির্মাণিকা। যাথাসিক হিসাব —

বর্ণমান বংশরের এপ্রিল ১ইতে সেপ্টেম্বর পর্যান্ত ছয় মাসের হিসাব-নিকাশে দেখা যায়—আমনানি ও রুপ্তানি উচ্ছাই বাড়্তির দিকে চলিয়াছে, যথা—(লক্ষ টাকায়)

| | ৰাণাসিক হিসাৰ | | ৰাড় 🛨 | |
|--------------------------------------|---------------|----------------|---------|--|
| | C.C. K. | 3208 | क्व्छि | |
| ামদানি | ૧૯ ૪૨ | 65,30 | + 4,6 | |
| [ः] थानि | 9 > , • B | 90,24 | + 2,5: | |
| प्नः द्वशानि | 3,63 | >, % | २० | |
| ाठि ब्रशानि | 12,6 · | دد,٥٢ | + २,७७ | |
| শ্বামদানির উপর রখানির উদ্ভ | 39, 5% | 30,56 | | |

বর্ণ ও রোপে।র আমদানি-রংগনির হিসাব এইরূপ (লক্ষ টাকা)

| | ৰাখ।সিক হিসাব | | বাড়তি 🛨 | |
|----------------|---------------|-------------|-------------------|--|
| | 2200 | 3008 | ক্ষৃতি | |
| স্বৰ্ণ—আমদানি | ů. | :8 | 2.9 | |
| র ং শনি | 48,55 | ૨ ૨, | 8 ₃ %1 | |
| রোপ্যআমদানি | ₹1+ | 8• | + >> | |
| রপ্ত:নি | 8.3 | 102 | +** | |
| | | | | |

ষর্ণ রপ্ত:নি---

গত পাঁচ বুৎসর যাবুৎ ভারতব্য হইতে যে স্বর্ণ রকানি হইয়াছে ভাহার হিসাব এইরূপ:—

| >>> ~->· | 88,560 |
|-----------|-----------------------------|
| :200; | 80,00,10° |
| : 207-05 | 49,90,22,60A |
| ১৯৩২-৩৩ | ٠٠,٥٠,٥٠,8٠٠ |
|) 70-0-5- | \$? . 50, 52, 9 } ? |

ভারতে বীমা-বাবদায়---

ব মা-বাবদায় সম্পর্কে ভারত-সরকারের একটি বীমা বার্ষিকা (ইন্সিওরেন্স ইয়ার বুক) সম্প্রতি প্রকাশিত হইরাছে। ১৯১২ সালের ভারতার ভীমা আইন ও ১৯২৮ সালের ভারতীয় বীমা আইন মতে গঠিত ব মা কোম্পানাগুলি ১৯৩০ সালে যে কাষাবিবরণ সরকারের নিকট পেশ করিয়াছেন, তাহার উপরই এই সরকারা রিপেটে রচিত। বিটিশ ভারতে মোট ৩১৯ কোম্পানী কার্যা করিয়াছে ভ্রমধা ১৬৯টি এদেশে গঠিত, যথা-

বোধাই ৬৮, বাংলা ৩:, মাদ্রাজ ২৬, পাঞ্চাব ১৯, দিলা ৯, বিহার-উড়িয়া ৫, আজর্ম চূ-মাড়ওয়ার। ৩, মধাপ্রানেশ ৩, যুক্তপ্রদেশ ৩, আসাম :, ব্রহ্ম ১। যে : ৫০টি বৈ দশিক কোম্পানী এদেশে কাজ করে তাহাদের স্বাদশ এইরূপ :—যুক্ত-রাজা ৭১, ব্রিটশ ডমিনিয়ন ও উপনিবেশ সমূহ ৩১, যুব্বোপ .৮, মার্কিন ১৬, জাপান ৯, জান্ড। ৫।

কাৰ্য্য হিসাৰে ৰীমা কোম্পানীগুলি নিমলিখিতরতপ বিভক্ত, যথা—

| | ভারতীয় | অ-ভারতীয় |
|------------------|---------------|-----------|
| জাবনবামা | 254 | 22 |
| জাবন ও অন্ত বীমা | ২ ক | 20 |
| অন্ত প্ৰকাৰ বীমা | > 6 | ३२४३ |

আ:লাচা বর্ষে ৩ টি নূতুন কোম্পানী ভারতে গঠিত হইনা ছ, যধা— বোঘাই ৮, বাংলা ৫, মাডাজ ৬, পঞাব ৪, বিহার-উড়িবা! ৬, যুক্তপ্রদেশ ২, দিল। ২, মধাপ্রদেশ ১, আজমাড়-মাড়ওর,রা ১।

ভারতীয় জীবনব মা কোম্পানীর কাধ্য বাড়িতেছে, যথা—

| | | নৃতন ক'জ (লক) | বংসরাজে মোট (লক্ষ টাকা) |
|---|-------------------|------------------|-------------------------|
| | | र्मे वस सम्बद्ध | 4-41100 040 (414 0141) |
| • |) »२ ७ | e,ve | 9300 |
| | : 248 | 6,50 | 8₹•• |
| | : >> e | ٠,١٠ | 89•• |
| | ১৯২৬ | >•*⊙હ | ₹७•• |
| | >>> 4 | > 2,99 | 5 · · · |
| | >> > | >0,83 | 9>•• |
| | 7252 | >9, २% | ⊌ ₹•• |
| | ` | 36,4. | Ayne |

| ¿: 6 c 6 c | ১৭,৭৬ | \$b |
|------------|-----------------|-----------|
| 3 20 20 | 3 0, 5 5 | > 0 ७ • • |

১৯১০ সনের জাইন মতে ভারতীয় কোম্পানীশুলি নোট ১,২১,৫২,০০০ টাকা সরকারের নিকট জমা রাথিয়াছে।

ভারতীয় প্লিসির গড়ে টাকার পরিমাণ ১৩৭৪, অ-ভারতীয় কোম্পানীর ৩,১৭৬।

ভারতীয় কোম্পানীগুলির কিছু কাষ্য ভারতের বাহিরেও হইয়া থাকে।

জীবনৰীমা ব্যতীত অপরাপর বীমায় প্রিমিয়াম আয় এইরূপ হটরাচে—

| | ভারতীর | অ-ভারতীয় | মোট |
|-----------------|--------|-----------------|-------------------------|
| অথি (লক্ষ টাক!) | 2 to 🕏 | 203 | : २ ७ |
| নৌ (marine) | 93 | ७५ ३ | 88 |
| অপনাপর | ÷ 6- | 8 १ 🕏 | 9 0 } |

সমুদায় ভারতীয় বীমা কোম্পানীর সম্পত্তির পরিমাণ ৩১ওঁ কোটা টাকা। অ-ভারতীয় কোম্পানীর ভারতীয় বিত্তের পরিমাণ ২৭ই কোটা টাকা!

মহিলা-সংবাদ



শীমতী জেঠী কুপালান:

শ্রীমতী জেঠী রূপা**ণানী** করাচী কর্পোরেশনে সর্বাপেক্ষা অধিকদংখ্যক ভোট পাইরা সদস্য নির্বাচিত হইরাছেন। ইনিই সন্ধপ্রথম নির্নাচিত মহিলা সদগ্র । ইনি এক জন একনিষ্ঠ কংগ্রেস-কর্মী।



শীমতা হভদাৰাই গোসালিয়:

ক্রীমতী স্থভদ্রাবাঈ গোসালিয়া সম্প্রতি বোম্বাই বিশ্ববিদ্যালয় হইতে এম্-বি পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়াছেন। কাথিয়াবারের মহিলাদের মধ্যে তিনিই সর্বপ্রথম এই উপাধি লাভ করিয়াছেন।



শ্মতা কপিলা, ভাগুৰাই দেশাই শ্ৰীমতী কপিলা ভাগুৰাই দেশাই ব্ৰোচ জেলাবোডের মনে নীত সক্পোপম মহিলা সদস্য।



শিমতা শুভ ভাট শশ্ম: শ্রীমতী শুভ ভাটি শশ্মা পঞ্জাব বিশ্ববিদ্যালঃ হাইতে

এ-বৎসর বি-টি পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়াছেন। সারস্বত ব্রাহ্মণ সমাজের মহিলাদের মধ্যে তিনিই সর্বপ্রথম এই উপাধি পাইলেন। ইনি এখন সিমলা আর্থ্য-বালিকা-বিদ্যালয়ের প্রধান শিক্ষয়িত্রী।



শ্মতাসরল দেবা

উৎকলের শ্রীমতী সরলা দেবী কটক কেন্দ্রীয় কো-অপারেটিভ বাাঙ্কের সর্বপ্রথম মহিলা ডিরেক্টর নিযুক্ত হইয়াছেন। তিনি নিথিল-ভারতীয় কংগ্রেস কমিটির এক জন সভা। অক্তান্য জনহিতকর কার্যোও তাঁহার ঘনির্দ্ বোগ আছে।

लक्डा

শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যায়

ন্ধিষ্টারের ছুটি অস্তে ফিরিতেছিলাম এলাহাবাদ হইতে।
মধ্যম-শ্রেণীর কামরায় ভিড় মন্দ নহে। কিন্তু আমার ভাগো
ততটা ভিড় সন্থ করিতে হয় নাই। প্রথম বেঞ্চে
বিসরাছিলেন—হুটি ভব্নণ-তরুণী ও তাঁহাদের এক বন্ধ;
দ্বিতীয় বেঞ্চথানিও ঐরপ এক দম্পতি এলাহাবাদ হইতে
উরিয়া অধিকার করিলেন, সঙ্গে বন্ধ্বান্ধব কেহ নাই—এক
দেবর এবং তৃতীয় বেঞ্চথানিতে আমরা জন-পাচেক ঠাসাঠাসি হইরা বসিলাম। বেলা এগারটা। পশ্চিমের গরম,
তাহার বর্ণনা দেওয়া বাহলা। পাচ-সাতটা জলভর্ষি
কুঁজা কক্ষে ছিল, বেলা চারিটা পর্যান্ত দশ-এগারটি
প্রাণীর তৃষ্ণা-নিবারণে তাহার সব কর্মটিই শৃত্যার্ভ হইল—
তবু কি তৃষ্ণা মিটিতে চাহে! লেবু, বরফ, লেমনেড—
এ সব ত ছিলই। উত্তপ্ত কামরায় পাথার হাওয়া আর
কভট্ক শান্তি দিবে! বসিয়া বিসয়া বিমাইতে লাগিলাম।

ছটি বেঞের তরুণ তরুণীরা জাগিয়া রহিলেন এবং মৃত্যুহ্ জল পান করিতে করিতে হাসি-গল্পে অসহা শুমোটকে পরাজিত করিবার প্রয়াস করিতে লাগিলেন।

নাথের বেঞ্চে বে ত্-জন স্বামী-স্ত্রী বসিয়াছিলেন ভাবে বাধ হইল ঠাহার। নবুবিবাহিত। তব্ধ হাজ করেন এই রেলেই এবং তাঁহার সংসার বৃহৎ। ছুটিতে বেড়াইতে আসিয়াছিলেন শভরালয়ে। উভয়ের পরনে ফ্লা বিদেশজাত ফুল্সর ফ্যাশানের কাপড় ক্সামা, সর্বালে এসেনের উগ্র গন্ধ এবং বেঞ্চের উপর যে-সব সৌখীন চাদর বিছ।ইয়াছিলেন তাহাও ভারতজ্ঞাত নহে। ছুটি ঝালর-দেওয়া ভার বালিশে লেখা ছিল সুইট্ ড্রিম।

তক্ণ-তক্ষণীর নয়ন হইতে গতরাত্তির পূর্ণিমার আলোক একেবারে নিবিয়া যায় নাই, তাঁহারা বেশ স্বছেন্স ভাবেই কথাবাত্তা কহিতে লাগিলেন। গাড়ীতে আরও অনেক নবীন প্রবীণ যাত্ত্রী থাকি:লও তাঁহারা ক্রক্ষেপ করিলেন না। ক্যানি না তাঁহাদের বাড়ির গঙী এ-বিষয়ে কভটা সীমাবদ্ধ, কিন্তু তাঁহাদের স্ক্রিষয়ের অকুষ্ঠিত আলাপ দেখিয়া মনে হইল, মন্য্যসমাজে বন্ধন বা শালীনতা বলিয়া কিছু নাই, লজ্জাও দাসত্বের নামান্তর। প্রকৃতির প্র-কন্তা প্রকৃতির কোলে হাসিবে খেলিরে তাহাতে একটা মানব-রচিত শাসনের পদ্দা ফেলিয়া সে স্বাচ্ছল্যকে ঢাকা দিবার হাস্থকর প্রয়াস কেন? ও-পাশের বেঞ্চে যে তরুণ-তরুণী বসিয়াছিলেন তাঁহাদের বেশভ্যার সেরূপ বাহুল্য ছিল না। তরুণীর এলো খোঁপার সঙ্গে চোখের চশমাটি মানাইয়াছিল বেশ, কথা-বার্তায়ও স্কুলর ক্ষুচির পরিচয় পাওয়া নায়। ভাবে বোধ হয়, তাঁহারা প্রাতন ধর্মের আওতা কাটাইয়া নৃতন সমাজের রৌজালোকে স্বেমাত্র নয়ন মেলিয়াছেন।

আমার পাশেই বসিয়াছিলেন আপাদমন্তক থদর-বিভূষিত এক প্রোচ। তিনি তীক্ষ দৃষ্টিতে 'স্থইট্ ডিনে'র গাত্রীদ্বাকে বিদ্ধ করিয়া আমায় চুপি চুপি বলিলেন,— দেখেছেন কাণ্ডথানা? এক গাড়ী লোকের সামনে···ছিঃ!

বলিলাম,—কালের হাওয়া কি ধিকারে ঠেলে ফেলা বার ?

কথাটা ভজলোকের মনঃপৃত হইল না, বিরক্তি-ভরা মুধে ক্রকুটি হানিয়া চুপ করিলেন।

বিরক্ত হইব'রই কথা। তিনি ফিরিতেছেন কোন
একটা পল্লী-হিতেষী স.মালন হইতে। ফদরে তাঁর তুংথের
প্রাক্ত্যলিত অনল, সর্ব্ধ অঙ্গে ত্যাগের শিখা। দেশের
তক্ষণ-তক্ষণীদের তিনি সর্ব্ধকর্ম ফেলিয়া এই ব্রত গ্রহণ
করিবার উপদেশ দিয়া আসিয়াছেন। তিনি চাহেন না,
দেশের এই সকটে সময়ে বিবাহের আনন্দ-উল্লাস হয়,
বিলাসিতায় অজস্র অর্থ ব্যয়িত হয় এবং ক্লাব, পিক্নিক্,
থিয়েটার, সিনেমা, মোটর, সংখর ভ্রমণ ইত্যাদিতে দেশের
লোক মাতিয়া উঠে। আগাছার মত এই সমস্ত বাহুল্য বা
বিলাসকে সবলে উপড়াইয়া ফদয়ক্ষেত্রে রোপণ করিতে
হইবে শুধ্ কর্মের বীজ। ত্যাগের সলিলে তাহার অঙ্কুর
বাহির করিয়া সাধনার স্থ্যালোকে তাহাকে পরিপুষ্ট করিয়া

ভূলি ত হইবে। তার পর কালজয়ী সাধনা যথন
নববিকশিত পত্রপল্লবে সুশীতল ছারা স্টে করিয়া পথকান্তকে
ভূপ্তি-মান করাইয়া দি:ব, তথন তাহার তলে ইচ্ছা
করি:ল বাধিতে পার নীড়, ভূলিতে পার আনন্দের
কলরব এবং হাসিতে পার এমন প্রাণপূর্ণ হাসি যাহা সব
শালীনতা লজ্জাশীলতার উর্জাকাশে বিচরণ করে। কিন্তু
যত দিন অঙ্কুর মহীরুহে পরিণত না হয় তত দিন শুধু
তপস্যা,—কঠোর তপশ্রা।

ভদ্রলোকের আর ধৈর্য্য রহিল না। উঠিয়া নরম গরম ভাষায় উপরিউক্ত ভাবগুলি প্রকাশ করিলেন।

দেখিলাম, 'সুইট ডিমে'র তর্কণীর মুথ আরক্ত হইয়া উঠিয়াছে, লচ্জায় নহে, ক্রে'থে এবং ও-পালের চলমা-ধারিণীও বিশেষ স্থানেল স্প্রাসন্ত দৃষ্টিতে বক্তার মুথের পানে চাহিলেন না। বাঙ্গমন্ন হাসি তর্কণ ক্যটির মুণে কৃটিয়া উঠিল।

আমি বক্তাকে টানিয়া বদাইলাম। বলিলাম—
এ বেনাধনে মুক্তো ছড়িয়ে কেন ওদের হাসির মাতা বৃদ্ধি
করছেন, স্থির হ'য়ে বসুন।

তিনি জ্বস্ত কটাক্ষেউহাদের পানে চাহিয়া বলিলেন— বেহায়া যত, লজ্জা নেই। এই ঠিক ছপুরবেশায়—

বলিলাম, সে-কথা বলা বাহুল্য। রোদের বেগ খুব প্রথর এবং মানুষের মাধারও তার ক্রিরা বিশেষ রকমেই প্রকাশ প্রেয় থাকে।

জামার আজিন গুটাইয়া ভদ্রলোক বলিলেন,— কিবলছেন?

বলিলাম, ওঁদেরই ব'লছি। দেখছেন না দলে ওরা ভারী। বিশেষ রকমের একটা ত্র্বটনা হওয়া কিছু মাশ্চর্যোর নয়।

সে কথার দাথার্য্য উপলব্ধি করিয়া ভদ্রলোক নীরব ইইলেন।

বোধ হয় চুনার ষ্টেশন। ঝাঁকা-মাথায় এক ব্যক্তি দরকার হাতলটা ঘুরাইতেই কক্ষশ্যে প্রায় সকলেই চীৎকার করিয়া উঠিলেন, 'দেড়া হায়' 'দেড়া হায়।'

মধ্যম-শ্রেণীর বাত্রী হইতে হইলে এ একটি জিনিবের রীতিমত কসরৎ করা দরকার। গলার স্বরটি -

হওরা চাই কঠিন, স্পাষ্ট এবং প্রভুত্বব্যঞ্জক। অবোধ নিরক্ষর যাত্রীদল কাঠের ও কাঠাপেকা কিঞ্চিৎ কম কঠিন গদি-আঁটা বেকে বিশেষ পার্থক্য অনুভব করিতে পারে না; এক-একটা দলে লোকও থাকে দশ-পনের জন। বালক, রজ, স্তীলোক সকলেই ট্রেন থামিলে ব্যগ্রভাবে বেখানে পার উঠিবার চেষ্টা করে—অমনই নিষেধের কঠিন স্বরে মধ্যম-শ্রেণীর যাত্রীদের জানাইয়া দিতে হয় ভোমরা যে শ্রেণীর জীব এটি তাহা অপেকা উন্নভ শ্রেণীর জন্ত, স্বভরাং সাবধান। প্রভ্যেক ষ্টেশনে ট্রেন খামিলে তাই আমাদের কামরার সমস্ত গাত্রী প্রবল কঙে বোষণা করিতেছিলেন, 'দেড়া', 'দেড়া'।

লোকটি সমবেত চীৎকারে কর্ণপাত করিব না, হাতল ঘুরাইয়া ত্রার খুলিয়া ফেলিব। কক্ষমধ্যস্থিত সকলেই সম্প্রত হইয়া উঠিলেন। দক্ষিণ দেশে শুদ্রের ছায়া মাড়াইয়া ব্রাহ্মণেরা এমনই জাতিপাতের আশক্ষায় সম্পন্ত হইয়া উঠেন কিনা, জানি না।

শোকটি তাহার ভারি বোধাটিকে ততক্ষণে কক্ষমধ্যে ঠেলিয়া দিয়াছে।

থদ্দর-পরা ভদ্র লোকটি উঠিয়া গ্রাসিয়ারুক্ত কর্তে বলিলেন—বাত নেই শুনতা ? দেড়া হায়—

কালো নেখট-পরা হেঁড়া জামা গায়ে সেই লোকটা।
অস্ত্রান বদনে উত্তর দিল—মালুম হায়।

মুথ খিঁচাইয়া ভদ্রলোক বলিলেন—তব্? যা বাটা নামিয়ে নিয়ে যা বলছি।—বলিয়া মোটটায় একটা ঠেলা দিলেন।

লোকটি শশব্যত্তে মোটটি ধরিয়া বলিল—লাথ দেবেন না, বাব্—। এতে চুনারের জিনিষ আছে—ভেঙে বাবে।

ভদ্রবোক বলিপেন—ভেঙে বাবে ত বাবে। কেন উঠেছিস এ গাড়ীতে? দেখি তোর টিকেট?

লোকটি অন্নর করিয়া বলিল--বাব্, আমি এ গাড়ীতে উঠবো না। এই বোঝাটা শুধু রইল। থাড় কিলাসে বে ভিড়--কিছুতেই তুলতে পারলাম না। দরা ক'রে--

্রমন সময় গার্ডের বাশী বাজিল। লোকটি আমাদের

দরা আকর্ষণের জন্ত আর একবার করুণ দৃষ্টি নিক্ষেপ করিয়া ধেমন পিছন ফিরিয়াছে, অমনই ঝন-ঝন-ঝনাং।

শব্দ তীরের মত গিয়া লোকটির ব্কের মধ্যে শেন বিধিল। একটা আর্ত্ত চীৎকার করিয়া দে পাগলের মত দরক্ষার হাতলটা ঘুরাইয়া চলস্ত গাড়ীতে উঠিয়া পড়িল ও দেই প্রকাণ্ড ঝুড়িটার পাশে বদিয়া পড়িয়া ভাঙা মাটির খেলনাগুলি বাহির করিতে করিতে ক্লয়ভেলী স্বরে আর্ত্তনাদ করিতে লাগিল।

আমরা জ:নি,—গদ্দরধারীর ছোট স্টকেসটির গায়ে কৃত্বি এক প্রান্ত ঈষৎ স্পর্শ করিয়াছিল বলি। তিনি ভূজায় ক্রোধ দমন করিতে না পারিয়া দিয়াছিলেন উহাতে এক প্রচণ্ড লাখি কসাইয়া।

'পুটট ড্রিংম'র ভদ্রলোক বলিল—বেশ ক'রেছেন মশাই, শেষন ব্যাটা শুনলে না।

চশমা-পরা তরুণীর বন্ধ বলিল—ছোটলোকের স্পর্দাও কম নয়। এই সময়ে চেকার ওঠেত বেরিয়ে গায় ব্যাটার কারা।

জ্বিনিষ গিয়াছে—ভালই হইয়াছে, তৃতীয়-শ্রেণীর টিকেট কিনিয়া মধ্যম-শ্রেণীতে বসিয়া কাঁদটোও বোধ হয় নীতিবিক্লদ—সেই কপাটাই ট্রেনের আরও কয়েক জন গোণপণে বোধাইবার চেষ্টা করিতে লাগিলেন।

. থদরধারী ন নণৌ ন তকো অবস্থার দাঁড়াইয়া মাথা নিদারণ লজ্জ দাঁড়াইয়া এই করুণ ক্রন্দন শুনিতেছিলেন। তাঁহার কুদ্র সেই লজাহীনা দ স্টকেসটিকে নীচ সংস্পূর্ণ হইতে বাচাইবার জন্ত এইমাত্র বাগাভরা হুটি স্লিগ্ধ তিনি বে কাজ করিয়াছেন তাহা হয়ত পল্লীসেবকের। দাঁড়াইয়া বভিলেন।

ত্থে কপ্ত ও আত্মতাাগের আর একটা আলোকরেথাশৃক্ত দিক, তাহা তিনি মর্শ্বে অক্ভব করিয়াছিলেন।

মন্তব্য অনেকেই অনেক রক্ষের প্রকাশ করিছে লাগিলেন। লোকটি কিন্তু ভাঙা খেলনাগুলি বুকে চাপিয়া ধরিয়া একভাবেই কাঁদিতে লাগিল। সে গরিব, মহাজনের এই ক্ষতি পূরণ করিবার সাধা তাহার নাই এবং ভবিষাতের এক মৃষ্টি চানা সংগ্রহের আশাও বোধ হয় মহাজনের রক্ষচন্দ্রর অগ্নিশিথায় ভন্মীভূত হুগা ঘাইবে। ঘরে শিশুসন্তান ক্ষেকটি ও রুগা গ্রী। কাঁদিতে কাঁদিতে সে এই সব ইতিহাসেরই আর্ত্তি করিতে লাগিল।

দেখিলাম সেই নির্লুভা আখ্যাপ্রাপ্ত 'স্ইট ড্রিমে'র তরুণী উঠিয়া ধীরে ধীরে লোকটির নিকটে আসিল ও অঞ্চল হইতে কয়েকটি টাকা গুলিয়া মধুর কর্চে কহিল, —রোও মং। এই লেও, বাবা।

লোকটি কাদিতে কাদিতে ম'থা তুলিল এবং মাথা তুলিয়াই অকস্মাৎ তহলীর ছটি পাধের উপর শুইয়া পড়িয়া থাবলা-থাবলা কবিয়া হয়ত টেনেব ধূলাই মাথায় তুলিয়া লইয়া ব্কভরা দীর্ঘনিঃখাস মৃক্ত করিয়া বার-বার বলিতে লাগিল—মায়ী, নেরা মায়ী।

থদরধারী মাথা নীচু করিয়া টলিতে টলিতে আদিয়া নিজের জায়গায় বসিলা পড়িলেন। ট্রেনগ্রন্থ সকলকারই মাথা নিদারণ লজ্জার আঘাতে অবনত হইয়া গেল। শুধু সেই লক্ষাহীনা দ্যাময়ী পদতললুন্তিত হতভাগ্যের পানে ব্যথাভরা ছটি স্লিগ্ধ চক্ষ্ তুলিয়া মহিমময়ী সম্রাজ্ঞীর মতই দাঁড়াইয়া বহিলেন।



বহিৰ্জগৎ

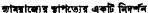
শ্রামরাজ্যের ভবিয়াৎ

গত করেক বৎসর যাবৎ খ্যামরাজ্যে কয়েকটি বিপ্লব হওয়ায় ট্রা সকলেরই দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াছে! নানা নেশে নানা পরে এখনও এই রাষ্ট্র সম্বন্ধে আলোচনা চলিতেছে। সম্প্রতি একটি সংবাদে প্রকাশ, খামের রাজা প্রজাধিপক সিংহাসন তাাগ করিবার ইচ্ছা জ্ঞাপন করিয়াছেন। কারণ, রাজার বিনা অনুমতিতে ज्ञानशीरक मुशुम् वा यावक्षीवन कातावाः मन ए ए एवम याहे व--ভ্যাকার বাবস্থা-পরিষদ এইরূপ একটি আইন পাস করিয়াছেন:

পরিষদের কয়েক জন প্রতিনিধি আইনটির মর্শ্ব বুঝাইরা দিয়া রাজাকে তাহার বর্তমান সকল হইতে প্রতিনিবৃত্ত করিতে বিলাভযাত্রা করিয়াছেন। রাজা প্রজাধিপক চন্দু-চিকিৎসার জম্ম এখন বিলাতের সারে নগরে অবম্বিতি করিতেছেন।

ভারতবাসীমাত্রেই আর একটি কারণে স্থামরাজ্য সম্বন্ধে পৌরব অনুভব করিরা থাকে। স্থাম ধর্ম, শিক্ষা, সংস্কৃতি ও জাতি-সংমিশ্রণে ভারতবর্ষের আত্মজ। প্রামের অধিবাসীদের শতকরা আটানকাই জন বৌদ্ধ। সম্রাট অশোকের সময়ে স্থাম বৌদ্ধর্মে দাক্ষিত হয়।





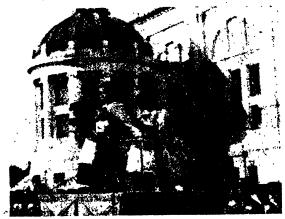
আইন বিধিবছা করিতে হইলে। রাজার সন্মতি প্রয়োজন। রাজা ইহার পূর্কোকার ইতিহাস এখনও ।লিপিবছ হয় নাই—এই উদ্দেশ্তে অকাধিপক এট আইনটিতে সম্বতি না দিয়া উক্তরণ ইচ্ছা প্রকাশ

অনুসন্ধান কুরু হইরাছে মাত্র। তবে বৌদ্ধর্মন প্রচারের পূর্বের স্থামরাক্ষ্যে করিয়াছেন। পরে একটি সংবাদে জানা সিয়াছে, গ্রামের ব্যবস্থা- ব্রাহ্মণাধর্ম্বও বে প্রভাব বিভার করিয়াছিল ভাষার করেই প্রমাণ

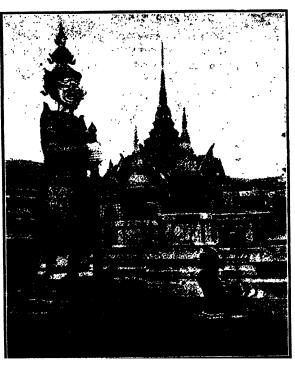








আছে। রাম, সীতা, বিক্, গণেশ ও অক্সান্ত দেবতার মূর্ত্তিও রামারণ-মহাভারতের চিনাবলা গ্রামারাজ্যের মঠও মন্দির অক্সান্ত করিরা আছে। অবোধান, সৌরাই, মহারাই, বিক্লোক ইত্যাদি লারগার নাম—লোকের নামও ভারতীয় নামের অম্রূপ। এমন কি 'গ্রাম' নামটিও ভারতায়। বিশেষজ্ঞদের মতে গ্রামলাতিরা আর্যা ও মোলোলীয় লাতির সংমিশ্রণে উভূত!



বাাঞ্চক রাজ প্রাসাদের মধ্যন্থিত 'ভাট ফ্রা' কেও' মন্দির। এই মন্দিরে প্রসিদ্ধ মরকতমণি নিশ্বিত বৃদ্ধ মূর্ত্তি অবন্থিত। বাহিরে সিংহ ও দানবের মূর্ত্তি

জাম দক্ষিণ-পূর্বে এশিয়ার একমাত্র বাধান রাষ্ট্র। তাহার আভাতত্ত্বিক বিপ্লবের কথা শুনিলে এশিয়াবাসীর ক্ষুক হওয়া বাভাবিক। আশক্ষা, বৃঝি-বা দক্ষিণ-পূর্বে এশিয়াপত্তের একমাত্র হিন্দু (বাংপক

চিত্ৰ—ৰামণাৰ্থে উপৰ হইতে

রাজা প্রজায়িপক গণতমুমূলক শাসনপত্রে শাক্ষর করিতেছেন। শাসনপত্র রাজা প্রজায়িপকের নিকট এই ভাবে উপস্থিত কর হইয়াছে।

শাসনপতে রাজার স্বাক্ষর ও সিলমোহর।

রাজার বাক্ষরের পর শাসনপত্র হতে জন-পরিবদের সভাপতি কারা বিজ্ঞরনতি। এক জন রাজ কর্মচারী ইহা পাঠ করিতেছেন। অর্থে) বাধীন রাষ্ট্র মরোরা বিপ্লবের ফলে পরশঙ্গলাঞ্চিত হইতে থাকিবে। কিন্তু এরূপ আশকার যে কারণ নাই গত ছই বৎসরের ঘটনাবলী তাহা প্রমাণ করিয়া দিয়াছে।

নান। উত্থান-পতন, জয়-পরাজ্যের মধা
দিয়া খ্যাম ১৭৮২ গ্রীষ্টাব্দে বর্ত্তমান চক্রীরাজবংশের অধীনে আসে। এই রাজবংশের
প্রতিহাতা ফ্রা বৃদ্ধ যোদ কা চুলালক। ইনি
খ্যামের রাজধানী আয়ুধিয়া (অযোধ্যা ?)
নগরী হইতে ব্যাক্ষকে লইয়া আসেন। আজিও
বাাক্ষকই খ্যামের রাজধানী। প্রজাধিপক এই
বংশের সংসম রাজা। প্রথম ছয় জন রাজা
সরকারী ভাবে প্রথম ছায় জন রাজা
নামে অভিহিত ইইতেন।

রাজা পঞ্চ রাম চুলালকরণের রাজছকালে (১৮৬:--১৯ •) ভামদেশে নানা বিষয়ে উল্লভি হইতে থাতে। এই সময়ে ভামের সর্পত্রই রাজশাসন ত্রপ্রতিতিত হয়। ক্রীডদাস-প্রথালোপ, বিচার-বিভাগ সংস্থার, রেল প্রচলন, জল ও ভুলবাহিনী পুনুর্গাইন প্রভৃতি কাধ্যার

দক্ষিণ পার্ধে—
বৃদ্ধদেবের জীবনের একটি চিতা।
রাজকুমার সিদ্ধার্থ রাত্রিকালে অখপৃষ্টে আরোহণ করিরা চিরতরে
কপিলাবস্ত ভ্যাস করিতেছেন।
উত্তর স্থামের কিৎসামূলকত্ব মন্দিরে
ইহা অবস্থিত।





ছার! প্রথম রাম চ্টা-রাজবংশের ভ্রেড রাজা বলিয়া প্রসিদ্ধিলাভ করিয়াছেন। বঠ রামের আমলে (১...১০-১৯২৫) গ্রাম সববর স্বাধীন রাই বলিয়া স্বাকৃত হঠয়াছে। দক্ষিণ-এশিয়ার বরু দেশ ইউরোপীয় শক্তিসমূহ পুরাপুরি ত্রাস করিয়া ফেলিয়াছে; ভাম স্বাধানতা আটে রাখিলেও সন্ধি-পর বা চুক্তি-পরের ভাষাদের প্রভাবে প্রভিয়াছিল। শামরাত্র ষ্ঠারাম বিদেশী শক্তিবুলের প্রভাব বিমৃত হইতে চেষ্টা করেন এবং কতকাংশে नाहोसः डि. पर्वे. স্ফলকাম হন! প্রামের নিয়ণ্ডিত হয়৷ দে:শর ধন-সম্পদ সময়ে বৃদ্ধির নানা আয়োজনও চলিতে থাকে: এই সময় প্রাথমিক শিকা আবশিক হয় এবং বিশ্ববিদ্যালয়ে প্রাম্বাস্থ্য উচ্চশিকা লাভ করিতে আরও করে :

গ্রামের বর্ণমান অধিপতি রাজা প্রজাধিপক ১৯০০ সনে সিংহাসনে আরোহণ করেন।

> বামপার্থেন । রামারণের একটি চিত্র। স্থামরাজ্যে নর্ত্তকরা এইরূপ অভিনয় করে।

ভাহার রাজত কাল করেকটি কারণে চিরশারণীর হটরা থাকিবে।

প্ৰক্ৰম ব্লামের সমর হইতে খ্লামের বিভিন্ন দিকে উন্নতি হইতে পাকিলেও কোন বাজাই গণতমুদ্দক শাসন প্রতিষ্ঠা করিতে অগ্রসর হন নাই। রাজা চিরাচ্ত্রিত প্রথায় সর্কময় কর্ডারূপেই বিরাজ করিতেন। **হউতে সর্বানিয় পদটি প**র্যাক্ত সর্বেবাচচ শ্রাম রাজ-পরিবারের বা রাজ-পরিবারের সহিত সংবদ্ধ লোকই নিয়ক *হইতেন* । ইহাতে স্বেচ্চাচারিতারও অবধি ছিল না। শ্রামবাসা স্ত্রনবেতাদের ইহ! অস্থ্র হইয়া উঠিল। তাহারা উচ্চশিকা লাভ করিয়াছেন, বিদেশের বিভিন্ন শাসন-প্রথার সঙ্গে সাক্ষাৎ ও পরোক ভাবে পরিচিত হইয়াছেন : রাজ্পদ অবাংহত ক্লাবিয়া কিরূপে গণতন্ত্রমূলক শাসন-নীতি প্রচলিত হইতে পারে এখন তাহারই উপায়-চিন্ত। কল্পিতে লাগিলেন। কোথাও সারা-শব্দ নাই, ১৯৩২ সনের ২৪এ এপ্রিল শ্রামরাস্ক্রো অভিনৰ ধর**ণের বিপ্লব** দেগা দিল। জননেতার! भीवाञ्चिते **७ इ**लवाञ्चित्र माशाया त्राम-পরিবারের বিশিষ্ট বাজিবর্গকে প্রাসাদে আটিক করিলেন। রাজধানী ব্যাক্তক ও সমগ্র ভামরাজ্যের জনগণের মধ্যে যাহাতে কোনরূপ চাকলোর' সষ্টি :না-হয় পূর্বে হইতেই তদমুরূপ ব্যবন্তা অবলম্বিত হইরাছিল। বাহির হইতে কেহট ববিতে পারিল না যে, ভামরাজোর শাসনতন্ত্রের ওলট-পালট হটরা যাইতেছে। রাজা ও রাণা এই সময় হয়া হিন নগরে অবস্থিতি করিতেছিলেন। একটি নৌবাতিনী . তাঁহাকে বাঙ্কধানীতে আনিবার জন্ত প্রেরিড

ইতিমধ্যে তারযোগেই নেতারা শাসন-তম্ন পরিবর্ত্তনে রাজার সম্রতি পাইয়াছিলেন। রাজা-রাগার প্রত্যাপমনে ব্যাক্তক নগরীতে একটা সাড়া পড়িয়া গেল তাহাদিগকে যথোপযক্ত করিবার জম্ম ব্যাককের নর-নারী বিবিধ আরোজন করিয়াছিলেন . ইতিমধ্যে জননেতার! গণতম্মূলক একটি শাসন-তন্ত্রের খসডা প্রস্তুত করিলেন। ইহা অল্লাধিক ব্রিটিশ রাজতন্ত্রের অঞ্ররপ। ইহা দারা রাজার নিকট আফুগতা স্বীকার করিয়া জনপ্রতিনিধিরা সরকারী সর্কবিধ কার্য্যই সম্পন্ন করিবার ক্ষমতা অর্জ্ঞন করিয়াছেন। রাজা প্রজাণিপকের প্রারম্ভিক অনুমতিক্রমে ব্যবস্থা-পরিষদে আলোচনা হইবার পর একটি চরম নিম্নপত্র গঠিত হইল। ১৯৩২ সনের >•ই ডিসেম্বর রাজা ইহাতে স্বাক্ষর করিলেন। ইছার পর ১৯৩৩ ও ১৯৩৪ সনের প্রারম্ভেও শাসনব্যাপারে কিছু কিছু পরিবর্ত্তন সাধিত হইরাছে। কিন্তু বিদেশে প্রকাশ পাইল--ভাষে বিপ্লব উপস্থিত! সে যাহা হউক, স্থামের এই 'বিপ্লব' সম্পূর্ণ রক্তপাতবিহীন ভাবেই হইরাছে। ইহাতে লগতের দৃষ্টি আরও বেশী করিরা খ্যামের দিক আকুষ্ট হইরাছে।



রাজ প্রাসাদের নর্ডক-নর্ডকী। প্রাচীনকালের ভারতবর্ষীর দেবমন্দিরের নর্ডক-নর্ডকীদের আদর্শে ইহারা শৈশব হইতে এই শিক্ষা লাভ করিয়া থাকে।

এবারে রাম্য প্রজাধিপক কেন সিংহাসন তাগে করিলে সকল করিয়াছেন তাহা প্রারংজই বলিয়াছি। ভাগেমর বাবভাগিরিয়া বতটা পরিবর্জন সাধন করিতে চান তিনি ততটা চান না। তিনি আরও বলিয়াছেন, ভাগেমর বাবভাগিরিয়া ততটা জনপ্রতিনিধিমূলক নহে। কাজেই এরপ আইন পরিবর্জন ব্যাপারে জনগণের ভোট লওয়া প্রয়োজন। ভামরাষ্ট্রের ভবিবংশ সম্বন্ধে এপন নানা জন্ধনা কর্মনা চলিতেছে

ভামের কথা বলিতে গেলে আর একটি দিকে আমাদের দৃষ্টি বাক্ত হর: ভামের মঠ-মন্দির সর্কাছেশে প্রশংলিত। রাজ্পানাদের মরকতমণি নির্মিত বৌদ্ধার্তী কারুকার্যেও গঠন-রীতিতে অতুলনীর। অবোধাা, বাাকক প্রভৃতি নগরীতেই বে ফুলর ফুলর মন্দির আছে তাহা নহে। ফুলুর পনীপ্রান্তেও অফুরূপ কারুকার্য- থচিত মন্দির বিরান্ধ করিতেছে। মন্দিরের মূর্ত্তীও চিত্রাবলী ইইতে মনে হয় ভামরাক্তা রান্ধ্যা ধর্মের পূর্ব বিকাশ ইইরাছে। কারণ ইহার ছুইটি প্রধান অক্স হিন্দু ও বৌদ্ধার্মের নৈসর্গিক মিলনে ভামরাক্তা গরীরান।



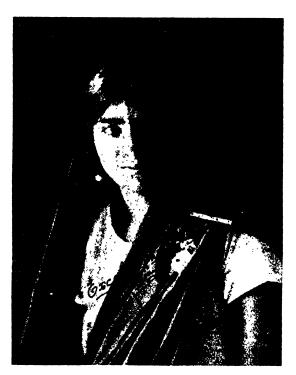
কংগ্রেসের গত অধিবেশন

বোষাইয়ে কংগ্রেসের গত অধিবেশন থুব আড়ম্বরের সহিত হইরা গেল। "প্রতিনিবি"র সংগ্যা মোটাম্ট আড়াই হাজার হইরাছিল। দর্শক এত বেশী হইরাছিল, নে, অভার্থনাসমিতি সমৃদর আয়োজন থুব বটার সহিত করা সবেও তাঁহাদের হাতে হাজার ত্রিশ টাকা উমৃত্ত থাকিবে। স্তম্ভে লিথিয়াছেন, যে, কংগ্রেস্ওয়ালারা (ভাষাদের সভাপতিও) হোয়াইট পেপারের সমালোচনা করে বটে, কিন্তু তাহাতে কি আছে স্পষ্টতই তাহা ফানে না, অথচ অন্ত এক পৃষ্ঠায় সভাপতির অভিভাষণের অধিক অংশ, "Congress President's Elaborate Analysis of White Paper" "কংগ্রেস প্রোসিডেণ্টের হোয়াইট পেপারের



ধান্ আবছল গফ্ষর ধান (কমু দেশাই অন্ধিত)

বোদাইরের টাইম্স্ অব্ ইণ্ডিয়া ইংরেঞ্জনের কাগঞ্জ। কংগ্রেসের সভাপতি বাব্ রাজেন্দ্রপ্রসাদের অভিভাষণের প্রতিকৃদ সমাদোচনা করিতে গিয়া এই কাগঞ্জ সম্পাদকীর



কুমার) সোফিয়া সোমজী। বোখাই কংগ্রেসের মহিলা-স্বেচ্ছামেবিকা-বাহিনীর নেত্র

সবিস্তার বিশ্লেষণ" শিরোনাম দিয়া ছাপিয়াছে! স্থতরাং এই কাগজ্ঞখানার মতে হোয়াইট পেপারে কি আছে তাহা না জানিয়াও তাহার সবিস্তার বিশ্লেষণ করা চলে!

এইরূপ শক্তাবাপর কাগজ্ও লিপিতে বাধ্য হুইয়াছে,





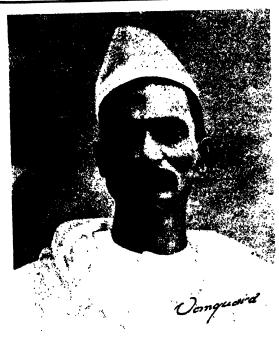
কংগ্রেস-নগরের দৃগ



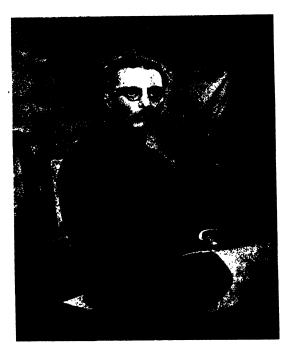
কংগ্রেস-নগরের দৃগ্য



কংগ্ৰেস কাৰ্য্যনিৰ্কাহক সমিতির অধিবেশন । উপৰিষ্ট—গান্ধীনী, রাজেল্রপ্রসাদ, বলভচাই, মানবীর প্রভৃতি



কংগ্রেসের ৪৮তম অধিবেশনের সভাপতি বাবু রাজেশ্রপ্রসাদ



কংগ্রেসের ৪৮তম অধিবেশনের অভ্যর্থনা-সমিতির সভাপতি



পঞ্জি মদনমোহন মালবীর

(यः, कः खाः नाम कः । व्यथ्यान कः । "দর্শনধোগ্যভার দিক দিয়া কেবল অসাধারণ সাফল্যমঞ্জিত বলিয়াই বর্ণনা করা যায়।" যাট হাজার লোক বসিবার মত জায়গা করা হইয়াছিল। ব্যেছাসেবক ও দেশদেবিকা নামধারিণী স্বেচ্চাসেবিকাদের দ্বারা বিশাল জনতার গতিবিধি সম্পূর্ণ নিয়ন্ত্রিত হইয়াছিল। (मन्द्रिकारमञ्जू त्नजी हिल्मन कुमात्री সোমজী। মধ্যে সোফিয়া গোলমাল যে হয় নাই, তাহা নহে। কিন্তু মোটের উপর ফুশুঙ্গল ভাবেই কাজ চলিয়াছিল। উচ্চ ও বিশ্বত একটি বেদীতে সভাপতি রাজেজপ্রসাদ, মহাঝা গান্ধী প্রমুখ সমধিক অর্থদাতা নেভারা এবং অভার্থনা-সমিতির সভোরা বসিয়া-ছিলেন। বক্লাদের জন্স একটি উচ্চতর নঞ্চ নির্মিত হইয়াছিল। ধ্বনির উচ্চতাবিধায়ক (loud-যদ্রের speakerএর) সুবন্ধোবস্ত থাকায় প্রত্যেক বন্ধার ও সভাপতির কথা স্বিস্তৃত সভাস্থলের দুরতম স্থান হইতেও স্পষ্ট শোনা গিয়াছিল। যথনই

কোন বক্তা মঞ্চে বাঁড়াইয়া বক্তৃতা আরম্ভ করিতেন, অমনি চারিদিক হইতে তাঁহার উপর বৈহাতিক আলোক নিক্ষিপ্ত হইত এবং এই প্রকারে দুরতম স্থানের লোকেরাও তাঁহাকে দেখিতে পাইত। সভাপতি মহাশরের উপরও মধ্যে মধ্যে এইরূপ আলোক নিক্ষিপ্ত হওয়ার তাঁহাকেও সকলে দেখিতে পাইত।

কংগ্রেস ও প্রদর্শনীর স্থান নির্দিষ্ট হইরাছিল বোষাইরের উপকঠে ওলী (Worli) নামক শহরতলীতে। অভ্যর্থনাসমিতি বোষাই শহর হইতে অপেক্ষাক্ত অল্প দূরে ও
উৎকটতর প্রাণম্ভ স্থানে কংগ্রেস ও প্রদর্শনী করিতে
চাহিরাছিলেন। গবন্দেওট সেই স্থান না-দেওয়ার ওলীতে



বাবু রাজেশ্রপ্রদাদের অভ্যর্থনায় শোভাগারার দৃষ্ঠ

ব্যবস্থা করিতে হয়। ইহার হাট অস্বিধা ছিল। প্রথম, বোষাই হইতে ইহার দ্রজ; ছিতীর, বোষাইরের সমুদ্র নর্দানা ইহার অনতিদ্রে সমুদ্রে পড়ায় মধ্যে মধ্যে হর্ণক বিস্তার। এই কারণে, অভার্থনা-সমিতির প্রণত কংগ্রেসপুরীর নাম আবহুল গফ্ ফর নগরের পরিবর্তে বিজ্ঞাকারীরা উহাকে গাটার (gutter অর্থাৎ নর্দানা) নগর বলিত।

কাজের মধ্যে মধ্যে বেদীর উপর আসীন নেতাদের পরস্পরের সহিত পরামর্শ এবং গল্পজ্ঞরও চলিত। বেদীতে কিছুক্ষণ থাকার ইহা আমি দেখিতে পাইরাছিলাম। জ্ঞামি অ্বশ্র সাংবাদিক বলিয়া প্রথমে প্রায় সাত আট শত



বাবুরাজেক্সপ্রদাদ (কথু দেশটে অধিত)

নির্দিষ্ট স্থানে উপবিষ্ট **ছিল**াম। সাংবাদিকের জন্ত পরে অভার্থনা-সমিতির অন্ততম সেক্রেটারী পাটিল আমাকে বেদীতে লইয়া বাওয়ায় মহাত্মা গারুট, বাবু রাজেক্সপ্রসাদ, সর্ভার বন্নভভাই পটেল, শ্রীমতী সরোজিনী নাইডু প্রভৃতির সহিত সাক্ষাৎ হইল। তথন অভার্থনা-সমিতির সভাপতি মিঃ নারিমান বক্ততা করিতেছিলেন। মহামাজী জিজ্ঞাসা করিলেন, রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর কেমন আছেন এবং কত দিন আগে তাঁহার সহিত আমার দেখা হইরাছে। পণ্ডিত মদনমোহন মালবীয় তখন ৰেদীতে শয়ন করিয়া বিশ্রাম করিতেছিলেন। তিনি সম্প্রস্থ ছিলেন; কিন্তু তাহা সব্বেও সাম্প্রদায়িক ভাগবাঁটোয়ারার বিরুদ্ধে তাঁহার বক্ততা খুব উৎকৃষ্ট হইয়াছিল।

কংগ্রেসের অধিবেশন সন্ধার প্রাক্কাল হইতে অনেক রাত্রি পর্য্যন্ত হইত। করাচীতে উহার 'গত অধিবেশন ক্ষেত্র আকাশের নীচে অনারত স্থানে হইরাছিল, বোদাইরের গত অধিবেশনও দেইরপ হইয়াছিল, মণ্ডপে বা চন্দ্রাতপের নীচে হয় নাই।

বিশেষ ঘটা সহকারে কংগ্রেসের অধিবেশন বোধ হয় এই শেষ বার হইল। কারণ, অতঃপর উহার প্রতিনিধির সংখ্যা ছই হাজারের বেশী হইতে পারিবে না।

নিখিল**ভার** তীয় সাম্প্রদায়িক বাঁটোয়ারা

বিরোধী সম্মেলন

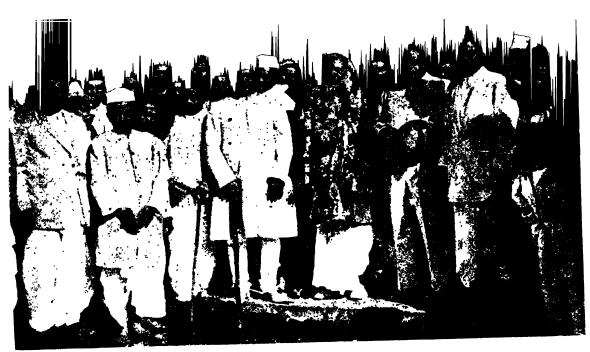
বোখাইয়ে কংগ্রেসের অধিবেশনের একদিন আগে ২৫শে অক্টোবর সাম্প্রদায়িক বাঁটোয়ারাবিরোধী সমগ্রভারতীয় সন্মেশনের অধিবেশন আরম্ভ হয় এবং ২৬শে তাহা শেষ হয়। প্রবাসীর সম্পাদককে তাহার সভাপতি নির্বাচন করা হয়। বোখাইয়ের ভূতপূর্ব্ব রাজস্ব-সচিব য্যাডভোকেট



নিখিলভারতীর সাম্প্রদায়িক ভাগবীটোরারা বিরোধী সম্বেলনের অন্তর্থনা-সমিতির সভাপতি ক্তর গোবিন্দরাও বলবস্ত প্রধান

শুর গোবিন্দরাও বশবস্ত প্রধান ইহার অভ্যর্থনা-সমি^{তি⊲} সভাপতি মনোনীত হন।

এই সম্মেলনে প্রতিনিধি ও প্রোতাদের সংখ্যা বে



বোখাই রেলওরে ষ্টেশনে শাযুক রামানন্দ চটোপাধ্যায়ের অভার্থনা



নিথিনভারতীয় সাম্প্রদায়িক ভাগ বাঁটোয়ারা বিরোধী সম্মেলনে স্তর গোবিন্দরাও প্রধান, শ্রীবৃক্ত রামানক চট্টোপাধ্যায় (সভাপতি) ও পণ্ডিত মদনমোহন মালবায় প্রভৃতি

কংগ্রেসের মত হয় নাই, তাহা বলাই বাহল্য। তাহা

ছইবার কথাও নহে। কারণ এরপ সম্মেলন এই প্রথম

ছইল, ইহার পশ্চাতে কংগ্রেসের মত ক্রভিত্বপূর্ণ ইতিহাস

ছিল না এবং ইহা কেবল একটিমাত্র জিনিবের বিরোধিতা

করিবার জন্ত আহুত হয়। তবে, কংগ্রেসওয়ালাদের
কোন কোন কাগজে ইহার প্রতিনিধি ও শ্রোতার সংখ্যা

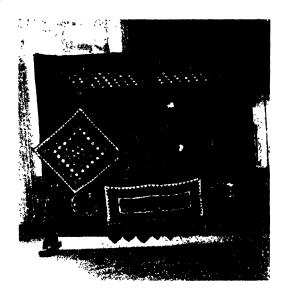
বেরূপ কম বলা হইয়াছে, তাহা ঠিক্ নহে। প্রতিনিধি
ভারতবর্ষের সমুদ্র প্রদেশ হইতে আসিয়াছিলেন।

পণ্ডিত মদনমে হন মালবীয় ইহার উদ্বোধন করেন।
তাঁহার বক্তা বেশ হইয়াছিল। তাহার পর অভ্যর্থনাস্মিতির সভাপতি জ্বর গোবিন্দরাও প্রধান তাঁহার
অভিভাবণ পাঠ করেন। তাহাতে তিনি সাম্প্রদায়িক
ভাগবাটোরারার বিহ্নত্বে অনেক যুক্তি প্রয়োগ করেন।
অভ্যন্পর সভাপতি রামানন্দ চট্টোপাধ্যায় তাঁহার বক্তৃতার
কিয়দংশ পাড়েন। ইহাতে, সাম্প্রদায়িক ভাগবাটোরারাসম্পর্কে যে-যে বিষয়ের ও যুক্তির আলোচনা আবশ্যক,
তাহা করা হইয়াছে বলিয়া ইহা দীর্ঘ। ইহা নবেম্বর মাসের
মডার্শ রিভিউ' পত্রিকার আন্যোপাস্থ মুক্তিত হইয়াছে।
সম্প্রেলনের বিরোধী কোন কাগজ ইহার কোন উক্তির বা
অংশের প্রতিবাদ বা ভ্রমপ্রদর্শন করিতে পারেন নাই,
ইহার কোন যুক্তি থণ্ডন করিতে পারেন নাই।

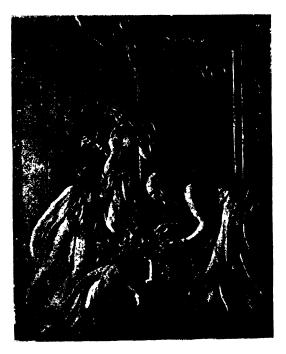
সভাপতির বক্তৃতার পর প্রথম দিনে একটি—ও তাহার পরদিন তিনটি—প্রস্তাব গৃহীত হয়। স্তর গোবিন্দরাও প্রধান, শ্রীযুক্ত যম্নাদাস মেহতা, শ্রীযুক্ত মাধব শ্রীহরি আনে, শ্রীযুক্ত রাধাকুমুদ মুখোপাধ্যায়, শ্রীযুক্ত ডাঃ সাভারকর প্রভৃতি বক্তৃতা করেন।

বোদ্বাইয়ে মহিলাদের ললিতকলা ও শিল্প প্রদর্শনী

কংগ্রেসের অধিবেশনের সময় বোষাইয়ের টাউন হলে মহিলাদের ললিতকলা ও কাঙ্ককার্য্যের একটি প্রদর্শনী হয়। "গুজর টী স্ত্রীসহকারী মণ্ডল" ইহার উল্যোগ করেন। বে কমিটির ঘারা সাক্ষাৎ ভাবে প্রদর্শনীর আয়োজন সম্পন্ন হয়, শ্রীমতী হংগা মেহতা তাহার নেত্রী এবং সদস্কদের মধ্যে



कष्ट्राम्भत स्टीकार्यत निमर्गन



ভাত্মৰ্য্য—'দীপাবদী'। শিলা শীমতী বদুনা রাওতে আধিকাংশ মহিলা। ইহাদের আহ্বানে একদিন প্রদর্শনী



বোখাই টাউন হলে মহিলাদের শিল্প-প্রদর্শনীর খারোল্যাটন উপলক্ষে গুর চুনীলাল মেহতা ও সভ্যবুন্দ

দেখিতে গিয়াছিলাম। এক জন
কর্মকর্ত্রী সৌজস সহকারে সমৃদর
জিনিষ তর তর করিয়া দেখাইলেন।
প্রদর্শনীটি চারিটি প্রধান বিভাগে
বিভক্ত। (১) তৈলচিত্র ও অন্তবিধ
চিত্র, (২) ললিতকলানুকারী কোটোগ্রাফ, (৩) মূর্জিশির, এবং (৪) স্ফির
কাজ ও অস্তান্ত কাক্ষকার্য্য। সকল
বিভাগেই নানাবিধ কাজের নম্না
দেখিয়া প্রীত হইয়াছি। কভকগুলির
ক্ষুদ্র কোটোপ্রাফ দিলাম।

প্রদর্শিত দ্রবাগুলির তালিকার প্রতিকার ভূমিকার শ্রীমতী হংসা মেহতা লিথিয়াছেন :---

দ্বাসকি হইতে :--(২) বিরহিণী--শিলা কুমারী শিরোদিরা, (২) বৃদ্ধ--শিলা কুমারী চোহার, (৩) নর্জকা--শিলী কুমারী কুমারী কুমারী কুমারী

Women are by nature artists and good oraftsmen. amateurish interest in them. It is time women realized

So far they have flirted with art and taken only amateurish interest in them. It is time women realized



আলোকচিত্র—'কাশ্মীরী বালিক!'। শিল্পী কমারী মনোরমা দেশাই

that arts and crafts can also be a good means of earning their livelihood, more especially so when life econcmically is becoming more and more complex and more women are driven to earn their own living or to supplement their small family income.

It was with the object of helping those women who have made arts and crafts their occupation in life, by securing a market for their work, and to show the possibilities of making arts and crafts a means of a new career for women that the Gujarati Stree Sahakari Mandal have organized this Exhibition.

তাংশর্য। নারীরা স্বন্ধাবত:ই রূপকার এবং উৎকৃষ্ট কারুপিন্ধী।
এ প্যান্ত তাহারা সৌগীন ভাবে ললিভকলার কিছু মন দিয়া
আসিরাছে। ললিভকলা ও কারুকার্য্য যে জীবিকা উপার্জনেরও
একটা ভাল উপায় হইতে পারে, তাহা উপলন্ধি করিবার এখন সময়
আসিরাছে—-বিশেষত: যখন জীবন-যাত্রা আর্ধিক দিক্ দিরা ক্রমশঃ
অধিকতর স্বটিল হইরা উঠিভেছে এবং নারীরা অধিকতর সংখ্যায় নিজের
জীবিকা অর্জন করিতে বা সামান্ত পারিবারিক আরের প্রশ্বন্ধ করিতে
দ্বাধা হইতেছে।

বে-সকল নারী ললিতকলা ও লিল্পকে তাঁহাদের জীবনোপার করিরাছেন তাঁহাদের তৈরি জিনিব বিক্রীর ব্যবহা করিরা তাঁহাদিগকে সাহায্য করিবার উদ্দেশ্যে এবং ললিতকলা ও কারুকার্যাকে মেয়েদের একটা কার্য্যক্ষেত্র করিবার সন্তাবনা দেখাইবার নিমিন্ত, "গুজরাটা দ্বী-সহকারী মণ্ডল" এই প্রদর্শনীর আনোজন করিরাছেন।



কাঠের উপর চিত্রাহ্ণ—শিল্পী 'ভগিনী সমাজে'র সভাবৃন্ধ কলিকাতায় নারীশিক্ষা-সমিতিও এইরূপ উদ্দেশ্যে এই প্রকার প্রদর্শনীর বন্দোবস্ত করেক বৎসর হইতে করিয়া আসিতেছেন।

রোমে ভারতীয় ছাত্রীর দল

কুড়িট ভারতীয় ছাত্রী ও শিক্ষয়িত্রী ইউরোপের
নানা দেশে ভ্রমণ করিয়া অভিজ্ঞতা দ্বারা শিক্ষালাভাথ
করেক মাস পূর্ব্বে ভারতবর্ষ হইতে ধাত্রা করেন। তাঁহারা
ফিরিয়া আসিয়াছেন এবং তাঁহাদের নানা অভিজ্ঞতার
আহ্লাদিত হইয়াছেন। তাঁহারা বে-সব দেশ দেখেন
ইটাণী তাহার মধ্যে একটি। সেখানে তাঁহারা ১৪ দিন
ধরিয়া নানা প্রাচীন কীর্দ্তি এবং চিত্র, মূর্দ্তি, গির্জ্জা ও প্রাসাদ
দেখিয়া মুদ্ধ হন। রোমে ইটালীর একছত্র শাসক
মুসোলিনির সহিত তাঁহাদের সাক্ষাৎকার ঘটে। মূহিলার।
বিশ্বাছেন:—



মুসোলিনা কর্তৃক অভিনন্দিত ভারতীয় ছাত্রীবৃন্দ

"মুসোলিনি আমাদের সঙ্গে ইংরেজীতে কথা বলেন— খুব দ্রুত নহে কিন্তু থুব সৌজন্তের সহিত। তিনি বলেন,— তিনি ভারতের মহান অতীত যুগ, তাহার দর্শন ও চিন্তা এবং তাহার আশ্রহ্যা সভ্যতা সম্বন্ধে কিছু অধ্যয়ন করিয়াছেন। এখন তিনি ঘনিষ্ঠ অভিনিবেশ সহকারে ভারতবর্ষের প্রগতির ও উচ্চ আশার দিকে দৃষ্টি রাধিয়াছেন। গত গ্রীষ্টমাসের সময় তিনি প্রাচ্য ছাত্রদের কন্ফারেন্সে ভারতীয় ছাত্রদের সহিত দেখা করিবার স্থযোগ পাইয়াছিলেন। তিনি কতকশুলি ভারতীয় মহিলাকে নিজের দেশে আনন্দের সহিত 'স্বাগত' করিতেছেন।"

ইহার উত্তরে ভারতীয়ারা কিছু বলেন। ইতিমধ্যে করিয়া ফোটোগ্রাফার তাঁহার ক্যামের1 ফোকা**স্** প্রস্ত হন। ভাহা করিয়া **মুসোলিনি** ম্বান, "আমার সঙ্গে একটা ফোটোগ্রাফ ভোলান কি তিনি খুব হাসেন। ছাত্রীদের পরস্পরকে ঠেলিয়া তাঁহার পাশাপাশি দাঁড়াইবার চেষ্টা তাঁহার পক্ষে খুব উপভোগ্য श्रेशां जिला।

এই ফোটোগ্রাফের একটি প্রতিশিপি রোম হইতে প্রকাশিত "ইয়ং এশিয়া" ("তক্ষণ এশিয়া") নামক সাময়িক পত্র হইতে আমরা মুদ্রিত করিলাম।

বিমান-চালনার প্রতিযোগিতা

সম্প্রতি লণ্ডন হইতে অষ্ট্রেলিয়ার মেলবোর্ন পর্যাম্ব বিমান-বোগে আকাশপথে যাইবার এক প্রতিযোগিতা হয়। তাহাতে ইংলণ্ডের একটি বিমান জ্বনী হইরাছে। তাহাতে রথী ছিলেন ইংরেজ বৈমানিক স্কট ও ব্লাক। প্রতিযোগিতার বিতীয় দিন ২১শে অক্টোবর আমি এলাহাবাদে ছিলাম। তাহার নিকটবর্ত্তী বামরাওলীতে আপনাদের ইচ্ছা?" সকলে "হা" এবং "নিশ্চর" বলায় একটি প্রধান বিমান-আড্ডা আছে। সেধানে গিরাছিলাম। মি: ও মিসেদ্ মুলিসনের বিমান
সকলের আগে আসিতেছিল কিন্ত
তাঁহালের আকাশবানটি করাচীর
কাছাকাছি বিগড়াইরা গাওরার তাঁহারা
পিছাইরা থাকিতে বাধ্য হন। কট এবং
ব্রাকে সর্বপ্রথম বামরাওলী পৌছেন।
তাঁহালের বিমানখানি লাল রঙের
বলিরা আকাশে থ্ব উচ্চে থাকার
সমরও স্পষ্ট দেখা যাইতেছিল। কট
দীর্ঘকার বলির পুরুষ। চিত্রে তাঁহাকে
লয়া কোট ও নাইটক্যাপ-পরিহিত
দেখা বাইতেছে। বামরাওলীতে দেদিন বেন একটা পর্ব্ব পড়িয়া গিয়াছিল।
বাঙালী ভদ্রলোকেরা অনেকে মাঠে



বামরাওলা ষ্টেশনে মি: ক্ষট (লখা কোট পরিহিত)। ইনি লওন—মেলবোর্ন বিমান-চালনা প্রতিযোগিতায় জয়লাভ করিয়াছেন

তাঁবু ফেলিরা সাবালরদ্ধবনিতা সেধানে গিয়াছিলেন, এবং গরশুজব জলখোগ আদি চলিতেছিল। অবগ্র তাহা অপেক্ষাও অধিক সংখ্যার হিন্দুস্থানী জন্মনোকেরা গিয়াছিলেন।

আমরা বসিয়া বসিয়া ভাবিতেছিলাম—"দিন আগত ঐ, ভারত তব কৈ!"

বৈজ্ঞানিক অধ্যাপকের দান

অধ্যাপক ডক্টর শান্তিম্বরূপ ভটনাগর পঞ্চাব বিশ্ববিদ্যালরের রসায়নীবিদ্যার প্রধান অধ্যাপক। তিনি বছ রাসায়নিক গবেষণা করিয়া বিধ্যাত হইয়াছেন। পঞ্চাবে খনিজ্ব তৈলের ব্যবসায়ী একটি ইংরেজ কোম্পানীর অন্তরোধে তিনি ঐ তৈলের সম্বায় কিছু গবেষণা করায় কোম্পানী তাঁহাকে দক্ষিণাম্বরূপ দেড় লক্ষ্ণ টাকা দিতে চান। তিনি ঐ টাকা নিজ্বে না লইয়া পঞ্চাব বিশ্ববিদ্যালয়ে রাসায়নিক গবেষণার জন্ত পাঁচটি বৃত্তি দিবার নিমিন্ত ঐ টাকা দান করিয়াছেন। তিনি ধনী লোক নহেন— অধ্যাপকেরা সাধারণতঃ ধনী নহেন। তাঁহাদের পক্ষে এরপ প্রান্ধনীয় দান এদেশে বিরল। বৃত্তে জাচার্য্য প্রস্কুর্যান্তর রায় এই প্রকার দান করিয়াছেন। ভক্টর



ডক্টর শান্তিস্বরূপ ভটনাগর

হরে ক্রফ্মার মুখোপাধ্যারও এইরপ দান করিয়াছেন। ডক্টর ভটনাগর ডক্টর নেঘনান সাহাকে একটি চিঠিতে দান করিতে অমুপ্রাণিত করে।

এই ব্যাপারটিতে অধ্যাপক মহাশরের দাননীলতা ও বিজ্ঞানামুরাগ প্রশংসনীয় এবং বিদেশী কোম্পানীর ক্লুভঞ ত্রলেই ব্যাপারটি অবিমিশ্র আনন্দের কারণ হইত।

প্রবাসী বঙ্গসাহিত্য-সম্মেলন

আগামী ডিসেম্বর মাসের ২৭শে, ২৮শে, ২৯শে ও ৩০শে কলিকাতার প্রবাসী বঙ্গসাহিতা-সম্মেলনের দ্বাদশ অধিবেশন হুইবে। আগেকার এগার্টি অধিবেশন বঙ্গের বাহিরে নানা খানে হইয়া গিয়াছে। এবার বঙ্গের রাজধানীতে ইহার গধিবেশন হইবে বলিয়া বঙ্গের বাহির হইতে প্রতিনিধি অন্তান্ত বার অপেক্ষা সংখ্যার অধিকতর হইবে। সেই জন্ত উপযুক্ত আয়োজনও অধিকতর বায়সাধ্য হইবে। বঙ্গের বাহিরের বাঙালী ভাতাভগিনীরা এবার আমাদের অতিথি হইবেন। ভাহাদের যাহাতে কোন অমুবিধা না হয়, সেইরূপ বন্দোবস্ত করিতে হইবে। এই জন্ত সকলের আর্থিক ও অন্তবিধ সাহায্য প্রার্থনীয় ।

কলিকাতার অধিবেশনে সাধারণ সভাপতি হইবেন এলাহাবাদ হাইকোর্টের ভূতপূর্ব্ব জ্বজ্ঞ ও অস্থায়ী প্রধান জ্বজ শুর **লালগোপাল মুখোপাধা**য়। ত**ন্তিয় বে-**যে শাখার সভাপতি এ পর্যান্ত মনোনীত হইয়াছেন তাঁহাদের নাম নীচে দেওয়া হইব।

দাহিত্য-গ্রীযুক্ত কেদারনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়, ঔপন্তাদিক ও গল্পেক।

বিজ্ঞান—শ্রীযুক্ত ডক্টর বিমানবিহারী দে, মাক্রাজ প্রেসিডেন্সী কলেজের রসায়নী-বিদ্যার অধ্যাপক।

ইতিহাস—শ্রীযুক্ত ডক্টর বিজনরাক্ত চট্টোপাধ্যায়, মীরাট কলেজের ইতিহাসের অধ্যাপক।

ধনবিজ্ঞান—শ্রীযুক্ত ডক্টর ভাতৃভূষণ দাসপ্তথ্য, সিংহলের কোলোঘো বিশ্ববিদ্যালয়ের লেকচারার এবং তথাকার ব্যাংকিং কমিশনের সদক্ত।

ললিভকলা ও শিল্প-শ্রীযুক্ত দেবীপ্রসাদ রারচৌধুরী, মাক্রাঞ্ **খুল অব্ আটসের প্রিলিপ্যাল, এবং চিত্রকর ও**

নিধিরাছেন, বে, আচার্যা রারের দৃষ্টান্তই তাঁহাকে এইরপ নিকাবিজ্ঞান—শ্রীযুক্ত ডক্টর স্থবিদ্যান্ত সরকার, পাটনা ইতিহাস-বিভাগের বিশ্ববিদ্যালয়ের অধ্যাপক ও পাটনার ট্রেনিং কলেজের ভূতপূর্ব **श्रिक्मि**शान।

ব্যবহারও প্রীতিপ্রদ। কোম্পানীট বিদেশী না হইরা স্থানশী সহিলা-বিভাগের সভানেত্রী হইবেন দিল্লীর শ্রীযুক্তা শৈলবালা (मदी। देनि कवि ও मिल्ली व बांडानी महिनारमत व्यक्तज्य निवा। देशत श्रामी श्रीयुक्त खानमाकां स्थान मिनीत. প্রথিতনামা ডাব্ডার এবং পুত্রকন্তাগণ সকলেই ক্বতবিশ্ব।

পণ্ডিত মদনমোহন মালবীয়ের উপর আক্রমণ

গত ২০শে কার্ত্তিক পণ্ডিত মদনমোহন মালবীয় নাগপুরে বক্ততা করিতেছিলেন। কতকগুলা লোক তাঁহার উপর ইট-পাটকেল ছুড়িয়াছিল। সভা ভাঙিবার পর তিনি ও ডাক্তার মুঞ্চে এক গাড়িতে চড়িয়া সভা হইতে বাইতেছি**লেন**। পূর্ব্বোক্ত লোকেরা তাঁহাদের গাড়ীও আক্রমণ করে। ইহা অসহবোগ বটে, কিন্তু অহিংস কিনা, তদ্বিদ্যে কিঞ্চিৎ সন্দেহ গত বার-তের বৎসর ভারতবর্ষে এক দলের ভারতীয়দের দ্বারা অন্ত দলের ভারতীয়দের উপর এইরূপ আক্রমণ বাড়িয়াছে। কয়েক বৎসর ত এরূপ হইয়াছিল, বে, কংগ্রেসওয়ালা ভিন্ন বা কংগ্রেসের সহিত সহামুভূতিসম্পন্ন ব্যক্তি ভিন্ন প্রকাশ সভায় অন্ত কাহারও বক্ততা করিবারই জোছিল না।

মান্দ্রাজে ও বিশাখপত্তনে রবীন্দ্রনাথের সম্বৰ্দ্ধনা

মাক্রাজবাসী দিগের নিমন্ত্রণে বৰীন্দনাথ গিয়াছিলেন, সঙ্গে বিশ্বভারতীর কতকগুলি ছাত্রছাত্রী ও শিল্পীরা ছিলেন। সেখানে নাগরিকদিগের পক্ষ হইতে विश्रम स्न जा दिन अदि दिन दिन के दिन कि दिन ·পরে পৌর**ন্তনে**র প্রতিনিধিরূপে মেয়র মিঃ ডব্লিউ লাডেন তাঁহাকে মানপত্র প্রদান করেন। ছাত্রসমাজ ও অন্ত সমিতিকর্ত্তকও তিনি সম্বর্দ্ধিত হন। কোন কোন করেকটি বিষয়ে বকুতা ছাড়া মান্দ্রাক্তে বিশ্বভারতীর শিল্প-প্রদর্শনীও হয়, এবং "শাপমোচন" নামক নৃত্যগীতবহুল ন্টিভার অভিনয় হয়। বিজয়নগরের মহারাণীর আমন্ত্রেণ তিনি বিশাৰণভদ গদদ করেন। সেধানেও দাপদোচনের অভিদর এবং কোন কোন বিবল্প বক্তৃতা হয়।

বিলাতে ভারতীয় তুলার ব্যবহার

১৯৩২ সালের প্রথম নর মাসে বত ভারতীয় তুলা ইংলাণ্ডের মিল্ডিয়ালারা কিনিয়াছিল, বর্তমান ১৯৩৪ সালের প্রথম নর মাসে তাহার তিন গুণ ভারতীয় তুলা তাহারা লইরাছে, পার্লেসেটে একটি প্রশার উন্ত:র ইহা বলা হইরাছে। ভারতবর্ষের লোকেরা যাহাতে বেশী পরিমাণে লাকেশারেরে প্রস্তুত কাপড় কেনে, তাহার জন্ত তথাকার বন্ত্রনির্মাতারা ভারতীয় তুলার প্রতি সদয় হইরাছেন। ইহা মন্দের ভাল। অবিমিশ্র বাঞ্চনীয় অবস্থা হইবে তথন, যথন ভারতবর্ষের যত তুলার কাপড়ের প্রয়োজন সমস্তই ভারতীয় তুলা হইতে ভারতবর্ষে প্রস্তুত হইবে। তাহার জন্ত যত তুলা আবশ্রুক, তার চেয়ে বেশী তুলা ভারতবর্ষে তথন উৎপন্ন হইতে ভারতির সব দেশে রপ্তানি হইতে পারিবে, বেশ্যর দেশে তুলা জন্মেনা।

বঙ্গে আরও কাপড়ের কল চাই

ইহা গেল সমগ্র ভারতবর্ষের কথা। ভারতবর্ষের প্রদেশভালির মধ্যে বঙ্গের লোকসংখ্যা সকলের চেয়ে বেলী। এখানে
কাপড়ের কাট্ভিও বেলী। বঙ্গে বিক্রীত কাপড়ের অধিক
অংশ বাহির হইতে আসে। বঙ্গের কাপড়ের কলে বঙ্গের অভাব
মোচন অল্লই হয়। বঙ্গে আরও অনেক কাপড়ের কল চলিতে
পারে। তাহাতে বাঙালীর মূলধন খাটলে এবং বাঙালীরা
তাহাতে শ্রমিকের ও অক্ত রক্ষমের কার্ল্য পাইলে বঙ্গের
শ্রীবৃদ্ধি হইবে। বাঙালীদের ক্ষলার খনির ক্রলার কাট্ভিও
তাহাতে বাড়িতে পারে।

বঙ্গের নামা স্থানে উৎকৃষ্ট কাপাস ক্ষরিতে পারে। বঙ্গীর সরকারী কৃষি-বিভাগ হইতে এই বিধরে বিভারিত বিবৃতি প্রকাশিত হওরা আবশুক। এইদিকে কৃষি-মন্ত্রীর দৃষ্টি পড়িলে ভাক হয়।

कि इत्रोगीत महत्वरार्थिक खत्या देनव

ইরান (পারত) দেশে তথাকার দুপতি রিজা শাহ্
পহলেবী ও জনসাধারণের উদ্যোগে মহাসদারোহে সম্পদ্ধ
হইয়া গিয়াছে। ফিরদৌসী সম্বন্ধ গত মাসের 'প্রথাসী'তে
আমরা কিছু লিখিয়াছিলাম। ইনি যে "শাহ্নামা"
নামক মহাকাযের রচরিতা বলিয়া বিখাত, তাহাতে যেসকল ইরান-নৃপতির জবদান-পরম্পরা বর্ণিত হইয়াছে,
তাঁহারা মোহমদীয়ধর্মাবলম্বী ছিলেন না। এ ধর্মা
প্রের্জিত হইবার পূর্ব্বে তাঁহারা রাজত্ব করিয়াছিলেন।
এই কারণে, তাঁহাদের সম্বন্ধে কাব্য রচনা করার
ফিরদৌসীর জীবিত কালে গোঁড়া ম্সলমানদের পক্
হতৈ, তিনি যাহাতে সম্মান না পান, সে চেটা হইয়াছিল।
কিল্প তাহা সম্বন্ধ হয় নাই।

ভারতবর্ধের মৃষ্ণমানের। "রবুবংশ" রচমিতা কালিদাসের জয়স্তী: কিংবা তাঁছার মত অন্ত কোন মহাকবির জয়স্তী যদি করেন বা তাহাতে উৎসাহের সহিত যোগদেন, তাহা ছইলে তাঁহাদের সেই কাজ কতকটা পারদীকদিগের অনুষ্ঠিত ফিরদৌদী-জয়স্তীর অনুরূপ হইবে।

বিঠলভাই পটেলের উইল

ভারতীয় ব্যবস্থাপক সভার ভৃতপূর্ক সভাপতি পরলোকগত বিঠনভাই পটেল তাঁহার উইলে ভারতের উন্নতিকর কার্য্যে ব্যয় করিবার জন্ত ১,১৫,০০০ টাকা রাথিয়া গিয়াছেন। তিনি উইলে এইরপ ইচ্ছা প্রকাশ করিয়া গিয়াছেন, যে, শ্রীমুক্ত স্থভাব চক্ত বহুর দারা বা তাঁহার নির্দেশমত তাঁহার মনোনীত কোন যোগ্য ব্যক্তির দারা বিদেশে ভারতের পক্ষে কল্যাণকর প্রচারকার্য্যে ঐ টাকা ব্যবিত ইইলে ভাল হয়। স্থভাব বাবু অন্ত কোন ভারতহিতকর কাজেও উহা লাগাইতে পারিবেন।

ইউরোপে পটেল মহাশরের মৃত্যুর পুর্বের সুভাষ বাব্ই তাঁহার সেবাগুশ্রধার জন্ত বিশেষ পরিশ্রম করিয়াছিলেন, অন্ত কোন ভারতীর রোগশ্যায় তাঁহার নিকটে ছিলেন না। পটেল মহাশরের মৃত্যুর পর তাঁহার শব ভারতবর্গে প্রেরণের ব্যবহাও স্ভাষ বাবু করিয়াছিলেন।

্বক্ষের বা**হিরে** বাঙালীবি**ত্র**য

ভারতের এক একটা প্রদেশ কেবল সেই সেই প্রদেশের লোকদের জন্ম হওয়া উচিত, বাংলা দেশ কেবল বাঙালীদের জন্ম হওয়া উচিত, এই প্রকার রব বাঙালীরা আগে ভূলে নাই। বাংলা দেশে অবাঙালী কাছারও ব্যবসা-বাণিজ্ঞা, শ্রমিকের কাজ, বা চাকরি করায় বাঙালীরা প্রথম প্রথম আপত্তি করে নাই। वदः বাঙালীরাই প্রথমে সমগ্রভারতীয় মহাজাতি গঠনের কল্পনা ও তদমুরূপ বক্তৃতাদি করিয়াছিল। "বিহার কেবল বিহারবাসীদের জন্ত" ইত্যাদি রব বছ বৎসর ধরিয়া চলিবার ্পর এত দিন পরে, যখন বাঙালীরা বঙ্গেও সকল কার্য্যক্ষেত্র হইতে বিভাড়িত ও বেদখল হইতে বসিয়াছে, যথন বঙ্গে অন্ত প্রত্যেক প্রদেশের যত লোক উপার্জন করে বঙ্গের তাহা অপেক্ষা অনেক কম লোক সেই সেই প্রাদেশে উপাৰ্জন করে, কেবল তথনই বাঙালীদিগকে বলিতে হইতেছে, যে, বঙ্গের সব কার্যাক্ষেত্রে বাঙালীরই অধিকার সর্বাগ্রে। অথচ অন্ত প্রেদেশবাসীরা বাঙালী দিগকেই সর্বাপেক্ষা প্রাদেশিকসঙ্কীর্ণতাগ্রস্ত বলে! কিন্তু কার্য্যতঃ দেখিতে পাই, সিমলার বাঙালীদের প্রতিষ্ঠিত বিদ্যালয়ে তাহারা বেদখল হইয়াছে, দিল্লীর বাঙালীদের প্রতিষ্ঠিত বিদ্যালয়েও সেই অবস্থা ঘটিয়াছে ৷

কংগ্রেদের নৃতন ওয়ার্কিং কমিটি

রিম্নি**বিত সন্ত**গণকে বাইয়া কংগ্রেসের ন্তন ওয়ার্কিং কমিট**াগঠিত হ**ইয়াছে।

সভাপতি—বাবু রাজেক্সপ্রসাদ।

সাধারণ সম্পাদক—পণ্ডিত জ্বাহরলাল নেহর, ডাঃ সৈয়দ মামুদ ও আচার্য্য-রূপালনী।

কোষাধ্যক্ষ-শেঠ যমুনালাল বজাজ।

সদক্ষণ — সন্ধার বল্লজভাই পটেল, থান আবহল গফ্ ফর থান, প্রীযুক্তা সরোজিনী নাইড়, সন্ধার শার্দ্ধুল সিং ক্রীখর, ডাক্তার, আজারী, মৌলানা আব্ল কালাম আজান, প্রীযুক্ত রাজগোপালাচারি, প্রীযুক্ত গলাধররাও দেশপাতে, ভাক্তার পট্টাভি সীভারামারা, এবং প্রীযুক্ত সময়সন্ধান নৌ শভ্রাম।

সাকাৎ ভাবে : **ব্রিটান-শাসিত** ভারতকে ২১টি দেশে ভাগ করিয়াছেন। সেই **স্বস্ত জাষ**রা আগে আগে লিখিয়াছিলাম, যে, কংগ্রেস ওয়ার্কিং কমিটির সাধারণ সদস্তমংখ্যা নুনকল্পে একুশ হওয়া উচিত; তাহা হইলে কোন প্রদেশই ওয়ার্কিং কমিটিতে প্রতিনিধিশুক্ত হয় না : নুজন ওয়ার্কিং কমিটতে সর্বাপেক্ষা জনবহুল প্রদেশগুলির মধ্যে বাংলা দেশের প্রতিনিধিই কেছ নাই। কোন কোন তরফ হইতে বলা হইতেছে বটে, যে, মৌলানা আবুল কালাম আজাদ বঙ্গের প্রতিনিধি। কিন্তু তাহা স্বীকার করা যায় না। কেন না, মৌলানা সাহেব উর্ভুতে কথা-বার্তা চালান, তাহা বাঙালীরা বুঝিতে পারে না। তিনি বাংলা জানেন বুঝেন বলেন কিনা জানি না। মৌশানা আকরম ধান বা মৌলবী মুব্দীবর রহমানের মত বাঙালী কেহ কংগ্রেস কর্ত্বক ওয়ার্কিং কমিটিতে গৃহীত হইলে বলা চলিত যে এক জন বাঙালী বঙ্গের প্রতিনিধি হ ইয়াছেন।

ওয়ার্কিং কমিটিতে বঙ্গের কোন প্রতিনিধি না-থাকার বঙ্গের নানা কাগজে—এমন কি ফরওয়ার্ডেও—অসন্তোষ প্রকাশ করা ইইয়াছে। বাংলাকে বাদ দিবার এই একটা কারণ দেখান ইইয়াছে, বে, এখানে কংগ্রেসের ছই দলে খুব দলাদলি; কোন এক দলের লোক লইলে অস্ত দলের লোক অসম্ভই ইইবে। কিন্তু তাহার জ্বস্ত উভয় দলকেই কি অসম্ভই করা উচিত ? দলাদলি অস্ত কোন কোন প্রদেশেও আছে। দৃষ্টান্তসক্রপ, আগ্রা-অযোধ্যা প্রদেশে দলাদলি-প্রযুক্ত মারামারি ও মানহানির মোকদ্দমা পর্যান্ত ইইয়াছে। ঐ প্রদেশের কংগ্রেসের প্রত্যেক দলের একটা করিয়া দৈনিক ত নাই-ই, কংগ্রেসের কোন দৈনিকই সেখানে নাই—স্বতরাং প্রত্যেক দলের কথাকাটাকাটি এবং কটুক্তি খবরের কাগজে স্থান পায় না। বঙ্গে প্রত্যেক দলের কাগজ থাকায় অবস্থা অস্তরূপ ইইয়াছে।

ওয়ার্কিং কমিটতে সভাপতি প্রভৃতিকে লইনা যে পনর জন লোক আছেন, তাহার মধ্যে ত্-জন বিহারের, ত্-জন সিদ্দেশের, এক জন মধাপ্রদেশের, অস্ততঃ, ত্-জন বোমাইয়ের, এক জন দিল্লীর, এক জন উত্তর-পশ্চিম সীমান্ত প্রদেশের, এক জন পঞ্জাবের, এক জন জন্ম, দেশের, এক জন ডামিল দেশের। মৌলানা আব্ল কালাম আজাদের আদি নিবাস কোথার জানি না।

বোশাই কংগ্রেদের প্রধান প্রধান কাজ

বোষাইয়ে কংগ্রেসের গত অধিবেশনে সকলের চেয়ে বেশী
সময় গিয়াছে সাবেক ওয়াকিং কমিটির সাম্প্রদায়িক
বাটোয়ারা না-গ্রহণ না-বর্জন সিদ্ধান্ত কায়েম রাখিতে।
ছ-দিন ১০০ ঘন্টা ধরিয়া কেবল ঐ বিষয়েই বাদ-প্রতিবাদ
হয়। কোঁড়া কংগ্রেসওয়ালারা এখনও বলিতেছেন,
"হোয়াইট পেপার আমরা গ্রহণ করিব না, উহা বাতিল
হইলেই উহার অন্তর্গত সাম্প্রদায়িক বাটোয়ারাও বাতিল
হইলেই উহার অন্তর্গত সাম্প্রদায়িক বাটোয়ারাও বাতিল
হইবে; কিন্তু আমরা এখন সাম্প্রদায়িক বাটোয়ারা গ্রহণ
করিতেছি বলিব না, বর্জন করিতেছিও বলিব না।"
এবিষধ অন্ত্র কথার আলোচনা আগে ইংরেজীতে ও
বাংলায় অনেক করিয়াছি। ন্তন করিয়া আর কিছু বলিতে
ইচ্ছা করে না। তবু বলি, বাপারটা এইরপ—

একটা হাড়িতে চাল ডাল পেঁয়ান্ত ও আলু দিয়া থিচ্ড়ী বাঁধা হইয়াছে। কংগ্রেস বলিতেছেন, "আমরা ঐ থিচ্ড়ী গ্রহণ করিব না, বর্জ্জনও করিব না!" আমরা বলি, "যথন বলিতেছেন, থিচ্ড়ী লইব না, তথনই ত বলা হইয়া গেল, যে, তাহার উপাদানীভূত চাল ডাল পেঁয়ান্ত আনু সবই বর্জ্জনীয়। নানা উপাদানে প্রস্তুত একটা সমগ্র জিনিষ অগ্রাহ্ম করিলে, তাহা বর্জ্জিত হইলে, প্রত্যেকটি উপাদানও ত অগ্রাহ্ম করা হইল ও বর্জ্জিত হইল, সহল বুদ্ধিতে ত ইহাই বুঝায়।"

এবারকার কংগ্রেসের অন্ত প্রধান কার্যা, কংগ্রেসের মূল
নিয়মাবলী পরিবর্তন এবং ভারতীয় পল্লীশিল্পসংঘ স্থাপন।
এই ঘূটির কোনটির ছারাই সাক্ষাৎ ভাবে রাক্সনৈতিক কোন
কাজ হইবে না, যদিও পরোক্ষ ভাবে দ্বিতীয়টির ছারা
ভারতীয় মহাজাতি রাজনৈতিক প্রচেষ্টার জন্ত শক্তি সঞ্চয়
করিতে পারিবে। বস্ততঃ অহিংস অসহযোগ এবং নিজিয়
প্রতিরোধ ও নিরুপদ্রব আইন সক্তন স্থািত রাধার পর
কংগ্রেস তাহার জারগায় নৃতন কোন রাক্ষনৈতিক কার্যা-

কংগ্রেসের কভকণ্ডলি লোক করিবেন বটে, কিছ উহা পুরাতন প্রণালী।

কংগ্রেসের মূল নিরমাবলীর বেরপ পরিবর্তন হইরাছে, তাহার দার। জাতীয় এই প্রতিষ্ঠান অধিকতর কার্যাক্ষম হইবে।

ভারতীয় পল্লীশিল্পসংঘ

কংগ্রেস মহাত্মা গান্ধীর নিথিশভারতীয় পল্লীশিল্পসংঘ স্থাপনের প্রস্তাবে সায় দিয়াছেন। ওঁাহার প্রস্তাবের মুলীভূত তাৎপর্যা সংক্ষেপে এই, যে, পল্লীগ্রামসকলের উন্নতিসাধনের এবং পল্লীসংগঠনের জ্বন্ত বিলুপ্ত ও ধ্বংসোন্মুখ গ্রাম্যশিল্পসকলের পুনকজ্জীবন অবৈশ্রক ; রাজনৈতিক প্রচেষ্টার সহিত সম্পর্ক বর্জিত হইলেই এই পুনক্ষজীবনের কাজ ভাল করিয়া হইতে পারে। মহাত্মাজীর পরামর্শ অনুসারে শ্রীযুক্ত ক্ষে সি কুমারাপ্লা "নিথিল-ভারতীয় পল্লীশিল্পসংঘ" নাম দিয়া একটি সমিতি গঠন করিবেন। ইহা পল্লীগ্রাম অঞ্চলের বিলুপ্ত শিল্পসকল পুনরুজ্জীবিত করিবে, ধ্বংসোর্থ শিল্পগুলিকে উৎসাহ দিবে, এবং গ্রামবাসীদিগের শারীরিক ও নৈতিক উন্নতির ব্যবস্থা করিবে; এই উদ্দেশ্যে সংঘ নিজের গঠনবিধি রচনা করিয়া অর্থসংগ্রহ ও অক্তান্ত কাফ করিবে; এবং কংগ্রসের বার্ষিক অধিবেশনের সময় "নিধিশভারতীয় মুতাকট্নী সংঘের (All India Spinners' Associationএর) সহযোগে শিল্পপেদর্শনীর বন্দোবস্ত করিয়া পল্লীবাদীদের আমোদের সহিত শিক্ষার ব্যবস্থা করিবে।

এই সংঘের কাজ মুপরিচালিত হইলে ইহার দারা দেশের থুব উপকার হইবে। হরিজনসেবা এবং এই সংঘ পরিচালন—এই উভরবিধ প্রচেষ্টা মহাত্মা গান্ধীকে সম্ভবতঃ প্রভৃত শক্তিশালী করিবে। কিন্তু ভিনি, কংগ্রেসের কতক লোকের উপর প্রভাব হারাইরাছেন বলিরা এই ভাবে শক্তি পুনর্লাভের চেটা করিতেছেন, সিন্ধুদেশের অক্ততম কংগ্রেসনেতা স্বামী গোবিন্ধানন্দের ভাঁহার উপর এই উদ্দেশ্যরোপ মানিরা লওয়া বার না।

মহাত্মা গাড়ীর বিভার লোকের উপর প্রভাব আছে।

ভাহার মধ্যে জনেকে অর্থশালী। টাকা ভিনি অনেক পাইতে পারেন। তাঁহার সুশৃত্বল কর্মপদ্ধতি রচনা ও ভদম্পাবে কাজ করাইবাব ক্ষমতাও আছে। এই সব কাবণে ভাহার উদ্দেশ্য সফল হইবার সম্ভাবনা।

রবীন্দ্রনাথের গ্রাম-পুনরুজ্জীবন-চেষ্টা

এম্বলে ইহা বলা অপ্রাসন্ধিক হইবে না, যে, গান্ধীজী এখন যে কাব্দ কবিতে যাইতেছেন, শ্রীমুক্ত ববীন্দ্রনাপ ঠাকুব অনেক বৎসব ধবিষা বিশ্বভাবতীব একটি শাপাব দ্বারা সেই এবং তাহাব আগেও কাজ কবাইভেচেন. গ্রামোল্লতিব কাজ তাহাদেব বাড়িব জমিদাবীব কোন কোন অঞ্চলে কবিবাব চেষ্টা করিয়াছিলেন। প্রভেদ এই, যে, ববীন্দ্রনাথ সমগ্রভাবতীয় কোন পরিকল্পনা ও সমিতি বচনা কবেন নাই, প্রথমে কেবলমাত্র একটি জেলাব একটি অংশে কার্য্যতঃ কিছু কবা সমীচীন ও শ্রেয়: মনে করিয়াছেন---যদিও 'ঠাহাব এই কাঙ্গেব কেন্দ্ৰ স্বন্ধণে স্থিত শ্ৰীনিকেতন হইতে বঙ্গের বাহিবের কোন কোন অবাঙালী ছাত্রও ঠাহাব কার্যাপ্রণালী সম্বন্ধে শিক্ষালাভ কবিয়া গিয়াছেন। হুংখের বিষয়, তিনি ঠাহার এই কাজটিতে স্বদেশবাসীদের নিকট হইতে উল্লেখগোগ্য কোন সাহায্য পান নাই। তাহার একটি কাবণ বোধ হয তাঁহাব ধনশালিতার অপবাদ।

ম নৃত্যা গান্ধার কংগ্রেস হইতে অবসর এইণ
মহান্ধা গান্ধী দক্তব-অন্থারী পদত্যাগপত্র প্রেরণ
দারা কংগ্রেসের সহিত সংস্রব ত্যাগ করিয়াছেন। গত
২০শে অক্টোবৰ কংগ্রেসেব বিষয়নির্বাচন সমিতিতে তিনি
এ বিষয়ে ভাঁহার বক্তব্য বশিয়াছিশেন। তাহাব তাৎপর্য্য
এই প্রকার—

''আমি বণিও অনেক আগেই আমার মন দ্বির করিয়াছিলাম, তথাপি নৃতন পথ অবলয়নের পূর্বে আপনাদের আশীর্কাদ চাহিবার লক্ষ্য এখানে আসা আমি কর্ত্তব্য মনে করিরাছিলাম। আমি আপনাদিগকে নিশ্চিত বলিতেছি, বে, আমি রুপ্ট হইরা কংগ্রেস গমিত্যাগ করিতেছি না; কংগ্রেস বাহাতে সাক্ষ্যমতিত হইতে পারে, তজ্জ্বই আমি প্রসন্নচিন্তে কংগ্রেস পরিত্যাগ করিতে চাই। কিছু দিব:হইতে আমার মনে এই ধারণা জন্মিয়াছে, বে, কংগ্রেসে থাকিরা আমি কংগ্রেসকে দাবাইরা রাখিতেছি, কংগ্রেস তাহার মনোভাব বান্ত করিবার হ্বেসক পাইতেছিল না, কংগ্রেস একটি কৃত্রিম প্রতিটানে গানিশক ক্ষমান্তে।

"পণ্ডিত ভ্ৰমাৰলগালের নিকট হইছে পান্ত পাইবার পার আন্ধারণ কংগ্রেস ভ্যাপের এই অভ্যুগ্র ইচ্ছা জাগিরা উঠিরাছে বলিরা আনেকে সন্দেহ প্রকাশ করিরাছেন ৷ কিন্তু সেরূপ ধারণ' আপনারা মনে সান দিবেন না ৷ ঐ পত্তের সহিত ইহার কোনই সন্পর্ক নাই ৷ আমার এই মনোভাব আমি পূর্কেই বাংলার বন্ধুগণের নিকট প্রকাশ করিরাছিলাম ৷ দিনের পার দিন আমার এই মনোভাব ক্রমেই প্রবল হইতে থাকে ৷ শেব পর্যান্ত আমি আর উহা দমন করিতে সমর্থ হট নাই ৷ ইহাই আমার এই সিদ্ধান্তে উপনীত হইবার কারণ ৷

'ক্ৰিব্য গণেগৰ বা কংগ্ৰেনেৰ কাষ্য পৰিভাগ কৰিবাৰ বিন্দুনাৰ আৰাক্ষা আমাৰ নাই। কংগ্ৰেসকে বিশুদ্ধ কৰাই আমাৰ একমাত্ৰ জন্ধ। আমি বাহাতে আমাৰ আদৰ্শেৰ পথে অগ্ৰসৰ হইতে পাবি এবং সক্ষ সক্ষে বাহাতে কংগ্ৰেসকে তাহাৰ আদৰ্শ অনুসৰণেৰ ফুৰোগ দান কবিতে পানি, তাহাৰ জন্মই আমি অবসৰগ্ৰহণেৰ সংকল্প কৰিবাছি। অকৃত্ৰিম অহিংসাৰ অন্তৰ্নিহিত শক্তিম উন্নতিসাধননৰ জন্মই আমি কংগ্ৰেস হইতে অবসৰগ্ৰহণ কৰিতেছি।

"আইন-লজ্বন আন্দোলন ব্যত^{্তি}ত বে পূৰ্ণস্বব্লাজ লাভ হইতে পারে না, সে বিষয়ে আমার কোন সন্দেহ নাই। কিন্তু আমাদের অবলম্বিত নিৰুপত্ৰৰ প্ৰতিবোধ কাৰ্যমনোৰাকো অহিংস হয় নাই। তবে আমাব দৃঢ় বিশ্বাস এই, যে, আইনলজ্বনে শ্বোগ দিয়া দেশ ক্ষতিগ্ৰস্ত হব নাই। একমাত্র নিযমতান্ত্রিক উপায়ে কোন ঞাতি স্বাধীনতা অৰ্জন কবিয়াছে বলিয়া ইতিহাসে আমি কোন প্ৰমাণ পাই নাই জগতের সমন্ত জাতির ইতিহাসেই আমাব জ্ঞান আছে ৰলিবা আমি দাবি করিতেছি না। তাব আমার যতটুকু জানা আছে, ভাহাতে আমি বিশাত পারি থে, কোন ছাতি কেবল নিয়মতাম্বিক আ ন্দালন দারা প্রণষ্ট স্বাধীনতার পুনক্ষার করিতে পারে নাই। নিৰুপদ্ৰৰ প্ৰতিবোধ বাতীত স্বাধীনতা লাভ অসম্ভব। আমৱা এত দিন যাথ করিবাছি তাহা শুধু থেলা, প্রকৃত জিনিব লইয়া কিছু কবি নাই। সেই হেতু আমি এই সিদ্ধান্তে উপনীত হইবাছি, যে, কংগ্রোসের গঠনতত্বের মূলনাতি সভাও অহিংসাকে বেখানে উহার সনস্তগণ প্রথম স্থান দান করেন নাই, সেখানে কংগ্রেসকে পরিচালিত করিতে আমি বিকলপ্রযাস হইব। আমরা যদি কাম্ননোবাকো অহিংস হইত পারিতাম, তবে এই অডিক্সান্সেব শাসন সম্ভব হইত না।

"আমি আপনাদের নিকট থোলাগুলিভাবে আমার মনোভাব বর্ণনা করিলাম। ভিন্নকপ বিষাস সংগ্রুত আমার কংগ্রেমে থাকা উচিত, এইকপ অমুবোধ না করিয়া একণে আপনাদের আলিপ্রাধ্যম আমাকে বাইতে দেওবাই আপনাদের উচিত। আমি আপনাদের নিকট হইতে কিছুই চাহি না, আমি দরকবাক্ষির মনোভাব লইরা এবানে আসি নাই। আমাকে অবসর এহণ করিতে দিন। ভবিষাতে যদি কোন দিন দেগি যে কংগ্রেম চিন্তা, বাকা ও কাথো প্রকৃতই অহিংস রহিরাছে, তবন আংবান মাত্রই আমি কংগ্রেসের সেবাহ প্রবৃত্ত হইব, এবিষয়ে আদি আপনাদিগকে প্রতিশ্রুতি দিতেছি। আমি গোরীশুক্ষ বা ভূগতে যেথানেই থাকি না কেন, যদি আপনাদের অহিংস মনোবৃত্তি দেখিতে পাই, তবে প্নরার সাপনাদিগবে গরিচালনের ভার গ্রহণ করিব।"

পরিশেষে গান্ধীজী বলেন—

"আমি দৌড়িয়া পলাইতেছি না। আমি একজন সিপাই।। আমি অত্যক্ত তুর্বল হইয়া পড়িয়াছি। আমি অক্ষের স্থায় আলোক চাহিতেছি। আমি আজ কংগ্রেসের পক্ষে অনাবগুক। আমাকে আপনাবের আশীর্ববিদসহ বাইতে দিন।" পাওত সমনমেরন মানবীর এবং মহান্বাবীর নিজের অমুরক্ত অনেক সহকর্মী তাঁহাকে তাঁহার সংক্ষম হইতে নিচুত করিবার চেটা করিবাছিলেন। ক্ষিত্ত তিনি অটল ভাবে নিজের সংক্ষম কার্যো পরিণত করিবাছেন।

কংগ্রেসওয়ালারা সভ্যাচারী এবং কায়মনোবাক্যে অহিংস হন, তিনি ইহা চান। কিন্তু তাঁহার কংগ্রেস-ভ্যাগের পরেও দেখিতেছি, ভারতীয় ব্যবস্থাপক সভার সভ্যনির্বাচন উপলক্ষে কংগ্রেসের তৃই পক্ষেরই প্রার্থীদের অনেক সমর্থক অসভ্যের আশ্রেয় লইয়াছেন—মহান্মান্ধীর উপদেশ, দৃষ্টান্ত এবং সবিধাদ কংগ্রেসভ্যাগ তাঁহাদের ধর্মবৃদ্ধিকে উদ্বৃদ্ধ করে নাই। অহিংসভার অবস্থাও ঐরল।

মহাত্মান্দ্রী আবশ্যক মত কংগ্রেসনেতাদিগকে পরামর্শ দিবেন, ইহা আশার কথা। কিন্তু তাঁহারা বেন নিতান্ত সঙ্কট অবস্থা ভিন্ন অন্ত সময়েও মহাত্মান্ধ্রীর পরামর্শ না-চান। যথন-তথন পরামর্শ চাহিলে তাঁহারা আত্মনিভরণাল হইতে পারিবেন না, নেতৃত্বের যোগ্যতা তাঁহাদের জন্মিবে না। যদি মহাত্মান্ধ্রীর অবদরগ্রহণের ফলে অন্ত কোন কোন সভ্যাচারী অহিংস নেতা দেশকে চালাইবার যোগ্য হইয়া উঠেন, তাহা হইলে মহাত্মান্ধ্রীর কংগ্রেসের সম্পর্কত্যাগ সার্থিক হইবে।

শাম্প্রদায়িক বাঁটোয়ারার বিরোধী সম্মেলনের প্রস্তাবসমূহ

পূর্ব্বেই লিথিয়াছি সাম্প্রদায়িক বাটোয়ারার বিরোধী সম্প্রেলনের সভাপতির অভিভাষণ দীর্ঘ হইয়াছিল। উহার বাংলা অনুবাদ ছোট অক্ষরে ছাপিলেও প্রবাসীর ত্রিশ পৃষ্ঠা হইবে। একটি বক্তৃতার জন্ত প্রবাসীতে এত জায়গা দেওয়া বায় না। এই জন্ত আমরা কেবল সম্প্রেলনে সর্ব্বসম্মতিক্রমে গৃহীত প্রস্তাবস্তুলির মর্মানুবাদ নীচে মুক্রিত করিতেছি।

া 'থেহেত্ গ্ৰন্থে থির সাম্প্রদারিক সিদ্ধান্ত জাতীয়তা ও গণতদ্বের বিরোধী, কোন স্থনিদিন্ত মূলনীতির উপর প্রতিষ্ঠিত নহে, বৈদেশিক প্রভুত্ব ছারী করিবার উদ্দেশ্যে রাষ্ট্রকে স্বতম পরম্পর-বিরোধী সুত্র সুত্র দলে বিভক্ত করে, জাতীয় ঐক্য প্রতিষ্ঠা অসম্ভব করে, দারিত্বপূর্ণ গ্রন্থে গৈরু:ভিত্তি নষ্ট করে, ধর্মবিধানের ভিত্তিতে কোন সম্প্রদায়কে বিশেষ স্থবিধা প্রদান করে কোন সম্প্রদায়কে করে না, অন্ত সম্প্রদায়ের ক্ষতি করিয়া কোন কোন সম্প্রদায়কে ভাব্যের অভিনিত্ত প্রতিনিধিত প্রদান করে; হিন্দুর ক্রিন ক্রিটান ক্রিটান ক্রিলিজ সংখ্যালখিটভার পরিণত করে, এই জন্ত এই স্ক্রেল্ড এ বিশ্বান্তের ভার প্রতিবাদ করিতেছে এবং বোবণা করিতেছে যে, উহা স্ক্রাংশে গ্রহণের অবোগা।

'কংকেংএনের কার্য।করী সমিতি কার্য্যতঃ এই সিদ্ধান্ত এইণ করার; যে-জাতায়তা কংগ্রেসের ভিত্তি, যাহার জল্প কংগ্রেস সর্বত্যেণীর সমর্থন লাভ করিলা আসিয়াছে, তাহা ক্ষুব্র হইলাছে। কার্যাকরী সমিতির নির্দ্ধারণ রদ করিয়া দিবার জল্প সংক্ষেলন কংগ্রেসকে অন্যুরাধ কবিতেচে।"

০। "এই সংখ্যালনের অভিনত এই যে, সংগালাবিষ্ঠ সম্প্রদার সম্প্রার সমাধানের প্রকৃষ্ট উপায়: বিশ্বরাষ্ট্র সজ্বের (লীগ অব্ নেশ্চলের) প্রবৃত্তিত সংখ্যালঘিষ্ঠ সম্প্রদায়ের স্বাগ্রক্ষা-পদ্ধতির নূলনীতি অন্প্রন্ন করা, ঐ পদ্ধতি বর্ত্তমানে ইউরোপে এবং পৃথিবীর স্বস্থান্ত ভালে রাষ্ট্রীয় আইনে পরিণত ইইয়াছে। উক্ শ্রাজ্বের কার্য্যকরী সমিতির সভাপতি নিজেই এ কথা যোষণা করিয়াছেন।"

০। ''এই সংখ্যলনের অভিনত এই যে, জাতি, বর্ণ, খ্রি পুরুষ ও ধর্ম-বিধাস নির্বিংশনে অসাম্প্রদায়িক সম্মিলিত নির্বাচকমণ্ডলী এবং সমান নির্বাচনাধিকারের ভিত্তির উপর প্রতিষ্ঠিত না ইইলে কোনরূপ প্রতিনিধি-নির্বাচন প্রণালী গ্রহণযোগ্য ইইবে না এবং এই সর্ভও পালিত হওরা আবশ্যক, মে, কোনও সম্প্রদায়কে স্থাধা স্বার্থ ত্যাগ করিতে বাধ্য করা ইইবে না।''

(s) ''দাম্প্রদায়িক দিদ্ধান্ত রদ ন'-হওরা পট্যন্ত উহার বিরুদ্ধে ক্রমাগত আন্দোলন চালাইবার উদ্দেশ্যে একটি দত্য স্থাপিত হইল।

''রাজনৈতিক দলনিবিদশেষে সাম্প্রদায়িক-সিন্ধাণ:-বিংরাধী ধে-কোন ভারতবাসী এই সজের সভ্য হইতে পারিবেন। সভ্যদের চাঁনার পরিমাণ চারি আনা।''

লক্ষোয়ে বাঙালা

পরত্রিশ বৎসর পরে সে দিন লক্ষ্ণে গিরাছিলাম। অনেক পরিবর্ত্তন দেখিলাম। বিশ্ববিদ্যালয়ের ঘরবাড়িও অন্ত নানা ব্যবস্থা বহু অর্থবায়ে করা হইরাছে। নিএখানে: অনেক বাঙালী অধ্যাপক আছেন। তাহারা কয়েকটি বিভাগে অধ্যাপনা ব্যতীত গবেষণার কাজও করিতেছেন। এখানকার আর্ট ও কার্ককার্য্যের বিদ্যালয়ে অন্তান্ত শিক্ষাদাতাদের মধ্যে চারি জন বাঙালী অধ্যাপক আছেন। তাহারা নিজ নিজ কার কার্ড করিতেছেন।

বলের বাহিরে কোথাও গেলে প্রথমেই জানিতে ইচ্ছা হয়, সেধানকার বালকবালিকারা বাংলা ভাষা ও সাহিত্যে জ্ঞানলাভ করিতেছে কি না। ছেলেদের চেরে ছেরেদের শিক্ষার ব্যবস্থা সম্বন্ধেই জানিবার ইচ্ছা বেশী হয়; কারণ আমাদের মধ্যে বালিকাদের শিক্ষান্ডেই অবহেলা অধিক্তর। লক্ষ্ণোরে বাঙালী সেরেদের একটি উচ্চ বিদ্যালয় আছে। ইহার নাম হরিমতি বালিকা-বিদ্যালয়। তথাকার সম্বাত্ত ও উহার এ নাম হইরাছে। উহার নিজের বাড়ি তানিদান, সাম্যাল মহালারেরা ইছহা করিলে নিজেন ড করিয়া দিতে পারেন। দিভেন্দ বাব্ নিক্রেন, জ্বান্দানিকেনের চেটা ও অর্থে করিতে পারেন বিশ্বা মনে হয়

্র্রীলাহাবাদ্ধ্রীবশ্ববিত্যালয়ের সঙ্গীত-সম্মেলন

এলাহ্যবাদ বিশ্ববিদ্যালয়ের সঙ্গীত-সম্মেলন প্রতি বৎসর ∖ৃপীচ বৎসর পূর্বে ইহার আরম্ভ হয়। শিহাবাদ বিশ্ববিদ্যালয়ের অধ্যাপক ডক্টর **কণারজন ৬ টার্চা**র্য্যের চেষ্টায় ইহা স্থাপিত হয় ও বৈচালিত **হইভে**ছে—এই জন্ম গত বংসরের অধি-ানের সভাপতি মেজর ডাঃ দেশরাজ রণজিৎ সিং এবং ্রান বংসরের সভাপতি বিহারী নেতা **শ্রীযুক্ত সচ্চিদানন্দ** হ তাঁহাকে ধন্তবাদ দেন। এ বৎসর আগ্রা-অবোধ্যার 'মন্ধী তার জালাপ্রসাদ শ্রীবাস্তব ও স্বরাষ্ট্র সদত্য 🕆 Member) কুমার জগদীশপ্রদাদও তাঁহার প্রশংসা ্ৰ**প্ৰকাৰ-বি**তৰণ উপলক্ষে কুমাৰ জগদীশপ্ৰদাদ র্ম বিষ্ট্রবিষ্ট্রালয়ের সঙ্গীত ফ্যাকান্টি না-থাকা আগ্রা-**দিল্লা প্রদেশে সঙ্গীতের স**ম্যক উন্নতির পক্ষে একটি বাধা। ক্রিই সম্রেশনে ভারতরর্ষের নানা প্রাদেশ ও দেশী রাজ্য ্রপ্তে ও**ন্তাদের। আসিয়া নিজ নিজ নৈপুণ্যের** পরিচয় দেন। ন্তির, ছাত্রছাত্রীদের সঙ্গীত ও নৃত্যে পারদর্শিতার পরীক্ষা **এবং তাহাদের মধ্যে স্থদক্ষেরা পুরস্কৃত হয়।** এ বৎসর ট পুরুষ্কারের মধ্যে ২৪টি প্রবাসী বাঙালী ছেলেমেয়েরা পাইরীংর। ওতাহাদের নাম ও দক্ষতার বিষয়-

কঠসঙ্গার্থ অন্নপূর্ণা বিখাস, শান্তিলতা বল্লোপাখ্যায়, প্রভাৰতী মির, সান্ধনা ট্রাচার্য্য; নৃত্যে সান্ধনা ভট্টাচার্য্য; হার্মেনিরমে মিনতি বোর; এবলার সান্ধনা ভট্টাচার্য্য। এই বালিকান্তিলির মুন্তস নয় বৎসরের কম। নয় বৎসরের কম বয়সের বালকদের মধ্যে পুরস্কার পাইয়াছে—কঠসঙ্গাতে নিরঞ্জন ভট্টাচার্য্য, প্রবালায় সমীরহুমার বল্লোপাধ্যায়, তবলায় নিরঞ্জন ভট্টাচার্য্য, গাবোরাজে মুদ্বন্দ্রহিল মধ্যে কঠসঙ্গাতে লৈলেক্রক্মার বল্লোপাধ্যায়, গ্রবলায় শচীরঞ্জন ভট্টাচার্য্য ও শক্তিপ্রসাদ বল্লোপাধ্যায়, এবং হার্মেনিরমে প্রজ্লেন্ডল বল্লোপাধ্যায় পুরস্কার পাইয়াছে। বিব্
বিভালরের হার্মেনের মধ্যে এলাহাবালে বাঙালা কোন হার্মানাই, বিব্
বিভালরের হার্মেনের মধ্যে এলাহাবালে বাঙালা কোন হার্মানাই, বিব্
বিভালরের হার্মেনের মধ্যে এলাহাবালে বাঙালা কোন হার্মানাই, এবং
বিভালরের হার্মেনের মধ্যে বল্লাপাধ্যায় পুরস্কার পাইয়াছে। ১৪ বংসরের
বিভালরের কম্বন্ধর বালিকালেন্ত, মধ্যে কঠসঙ্গীতে গ্রেম্বারাণী
ব্রহ্মের বালিকালেন্ত, মধ্যে কটস্বাহ্যে। ১৪ বংসরের
কম্বর্মের বালিকালেন্ত, মধ্যে কটস্বাহ্যে। ১৪ বংসরের কম্বর্মের বালিকালের প্রস্কার পাইয়াছে। ১৪ বংসরের কম্বর্মের বালিকালের স্বাহ্যার পাইয়াছে। ১৪ বংসরের কম্বর্মের বালিকালের স্বাহ্যার পাইয়াছে। ১৪ বংসরের কম বর্মের বালিকালের স্বাহ্যার পাইয়াছে। ১৪ বংসরের কম বর্মের বালিকালের স্বাহ্যার পার্লার প্রাহ্যার পার্লার প্রস্কার পার্লার প্রস্কার পার্লার প্রস্কার পার্লার প্রস্কার পার্লার প্রস্কার পার্লার প্রস্কার বালিকালের স্বাহ্যার পার্লার প্রস্কার পার্লার প্রস্কার পার্লার প্রস্কার বালিকালের স্বাহ্যার পার্লার প্রস্কার পার্লার প্রস্কার বালিকালের স্বাহ্যার প্রস্কার প্রস্কার বালিকালের স্বাহ্যার পার্লার প্রস্কার বালিকালের স্বাহ্যার বালিকালের স্বাহ্যার প্রস্কার বালিকালের স্বাহ্যার বালিকালের স্বাহ্যার স্বাহ্যার বালিকালের স্বাহ্যার বালিকালের স্বাহ্যার বালিকালের স্বাহ্যার বালিকালের স্বাহ্যার বালিকালের স্বাহ্যার বালিকালের স্বাহ্যার বালিকালের

ভার এবংসরও ভটাচার্য্য-পরিয়ত্তি এবং প্রকাশ করেন্দ্রক্ত

শান্তিনিকেতনে সুইডিশ্ শর্-শিক্ষরিত্রী

হাতের দ্বারা নানা রকম শিল্পের কাজ, কাক্সকার্য্য, স্থুইডেনে "ম্নয়েড" নামক পদ্ধতি অনুসারে শিখান হয়। প্লয়েডের ক্ষন্ত সুইডেন বিখ্যাত। শাস্তিনিকে**তনে**র শর-শিক্ষক শ্রীযুক্ত শক্ষীশ্বর সিংহ সুইডেনে ইহা শিথিয়াছিলেন। তিনি পুনর্বার সেখানে গিয়া**ছে**ন। তিনি গত ১৮ই সেপ্টেম্বরের চিঠিতে আমাদিগকে সুইডেন হইতে লিখিয়া-ছিলেন. "শান্তিনিকেতনে হাতের কাজ শিথাইবার নানা দ্রিনিষ সংগ্রহ করিয়া পাঠা**ইয়াছি। টাকা সংগ্রহ** করি**য়া** মেয়েদিগকে স্লয়েডের কাজ শিধাইবার জন্ম এক জন শিক্ষয়িত্রী পাঠান হইয়াছে। আশা করি এবার সেথানে ভাল কাজের ক্ষেত্র গড়িয়া উঠিবে।" কাগজে দেখিলাম, এই শিক্ষয়িত্রী মিদ জে জীন্সন শাস্তিনিকেতন পৌছিয়াছেন এবং সদাশয় সুইডদের প্রদত্ত হাতের তাঁত ও অক্তান্ত স্লয়েড শিগাইবার যন্ত্র আনিয়াছেন। শিক্ষয়িত্রীর সমস্ত ব্যয়ও সুইডেনের কতকণ্ডলি ভদ্ৰলোক ও ভদ্ৰমহিলা দিবেন। কাউণ্টেদ হামিন্টন তন্মধ্যে প্রধান। ইহারা সকলে কৃতজ্ঞতাভাজন। লক্ষীখন বাবু যে ধন্তবাদার্হ, তাহা বলাই বাহুল্য--তাঁহার চেষ্টাতেই এই সব হুইয়াছে। তিনি আমাদিগকে निर्विग्राष्ट्रिन, ''[आমি] निष्क দেশের অন্তত্ত কা**জে**র চেষ্টায় আছি।" এরূপ বোগ্য ও উৎসা**হী শিক্ষক**কে ক্রিকাতা মিউনিসিপালিটির কাজে লাগান উচিত। বাংলা দেশকে তাঁহার নৈপুণা হইতে বঞ্চিত করা উচিত নহে।

পাটের পরিবর্ত্তে অন্য ফসল

বঙ্গে পাটচায় আবগুক মত কমাইয়া তাহার জায়গায় অন্ত ফদল প্রবর্ত্তনের চেষ্টা সরকারপক্ষ হই,তে করা হইতেছে। এ-বিষয়ে "দঞ্জীবনী" শিখিয়াছেন—

সর্পাত্র বহুল পরিমাণে রবিশস্ত বপনের জন্ত বলা হইয়াছে। পাটের বন্ধনে চীনাবাদাম, ভামাক, তিসি, পিরাজ, রহুন, বিলাভী তরি-তরকারী, আগু ও আগের চাব করা যাইতে পারে। কৃষি-বিভাগের ডিরেক্টর যে সকল জেলায় রবিশস্তের বীজ পাওরা ছুছর সেই সকল জিলার কালেক্টরদের মারকৎ রবিশস্তের বীজ সরববাহ করিতেছেন।

এই ইস্থাহার পাঠ করিয়া আমরা বিশ্মিত হইয়াছি। পাট যে ভূমিতে জ্ঞা, তাহ। নিম্ন। তাহা জলে ডুবিয়া যায়। সেগানে তামাক, তিসি, পিঁয়াল, রহন, তরি-তরকারী বা চানাবাদামের চাষ করা ঘাইতে পারে না।

জেনার্যাল স্মাট্স্ ভারতে স্বরাজ চান

বেৰু বৃদ্ধি কৰেব, বাণাপাণ মুক্সেল্যার ওড়মা মিএ এবং হালোক পুন্ধি মুবোগাধণার পুরস্কার পাইয়াছে। ১৪ বংসরের স্কটল্যাণ্ডের ডাণ্ডী শহরে এক বক্তৃতার দক্ষিণ-ক্যুব্ধনের বাল্কুনর মধ্যে কঠসজীতের জল্প দেবীপ্রমাদ ভট্টাচার্য - আফ্রিকার বিধ্যাত ব্তার নেতা জেনারাল সাট্স্ বলিয়াছেন,

THE CAN MAKE THE PROPERTY OF T क्षा कि स्रवाद महाका दिनाता ? प्रकिन-वाकिकाटक ন্ত্রিটেন বিশাসন-অধিকার দিরাছিল এই জন্ত, যে, বুজররা <mark>একভার, শব্জির,ও স্বাধীনতাকে প্রাণ অপেক্ষা প্রিয়ত</mark>র মনে করিবার প্রমাণ দিয়াছিল এবং খেতকায় গ্রীষ্টিয়ানদের অধিষ্ণত দক্ষিণ-আফ্রিকা হইতে ভারতবর্ষের মত প্রভৃত অর্থাগমের সম্ভাবনাও ছিল না।

বহু সিনেমা-চিত্রের অপকারিতা

সিনেমার চিত্র দেখাইরা দর্শকদের জ্ঞান বাড়ান যায়, তাহাদিগকে বিশুদ্ধ আমোদ ও শিক্ষা দেওয়া যায়। কিন্তু ভনিয়াছি, সিনেমার অনেক ফিলা অনিউকর, তাহাতে মামুবের নানারপে পাপপ্রবণতা বাড়ে। বঙ্গের বর্তমান শিক্ষামন্ত্রী খান্ বাহাত্রর আজিজুল হকও এইরূপ মত প্রকাশ করিয়াছেন। জননায়কগণের ও গবন্মেণ্টের এক-বোগে नित्नमात्र चनिष्ठेकत ठिखा धनर्यन वस्त्र कतिवात एउँडा कता কর্ত্তব্য।

মিঃ ফজবুল হকের একটি বক্তৃতা

বন্ধীয় মুসলমান যুবকদের কন্ফারেলে মিঃ ফজলুল হক বঙ্গের সর্ব্বের মুসলমান ছাত্রদের জন্ত আরও অধিক-সংখ্যক ছাত্রাবাস চাহিয়াছেন। ছাত্রাবাসে থাকিবার যত ছাত্র জুটিবে ভদসুদারে গৃহনির্মাণ অবশুই হওয়া চাই। কিন্ত বঙ্গের আধুনিক সরকারী পঞ্চবার্বিক শিক্ষারিপোর্টে (৮৩ পুঠার) দেখিতেছি, যে, কেবল রাজশাহী মাদ্রাসা ছড়ি অন্ত সঁব মুসলমান ছাত্রাবাসে রিপোটাধীন পাঁচ বৎসর বিস্তর জায়গা ছাত্র অভাবে খালি ছিল এবং কয়েকটি ছাত্রাবাস ছাত্রভাবে একেবারে বন্ধ করিয়া দিতে হইয়াছিল। এ অবস্থায় ফ**জনুল হক সাহেব আরও খ**রবাড়ি কেন চান ?

তিনি মুদলমান যুবকদিগকে আত্মোৎসর্গপরায়ণ হইতে **উপদেশ नित्राहित्नन**। কিন্ত তাহার দৃষ্টান্তের গিয়াছিলেন সার্ভেণ্টাসের যুগের স্পেনে! ভারতবর্ষে বদি আত্মোৎসর্গের দুষ্টান্ত নাই দেখাইয়া থাকে, ভারতবর্ষের মুস্লমানরা সহস্রাধিক বৎসরেও তাঁহার দৃষ্টিতে এক্লপ কোন দৃষ্টাম্ভ দেখায় নাই, ইছা আশ্চর্য্যের বিষয়। যদি দেখাইয়া থাকে, তাহা হইলে তিনি তাহার সন্ধানে স্পেনে গেলেন কেন?

খান আবছল গফ্ফর খান ও বঙ্গদেশ

গত ৫ই আইটাবর খান অবিহ্বণ থানকে কলিকাতায় ্ষে সর্বসাধার্ক্তার পক্ষ হইতে মানুপত্র দেওয়া হয়, উৰ্ভয় প্ৰদান উপলক্ষে ভিনি বলেন. করিব।"

वक्त करनत हो व

অপ্রা-অযোধা প্রদেশে ফলের বিস্তৃতির জন্য চেষ্টা হ**ইতেছে। বঙ্গে**ও হুইতেছে। ফলভক্ষণের প্রয়ো**জনীয়তা** [।] চিকিৎসকেরা কিছুদিন হইতে প্রচার করিয় কিন্তু সকলের ব্যবহারের পক্ষে স্ক্রাদামে পাওয়া योत्र ना । वाःणा (मर्ट्यत्र क्रेकेंक्) ना চাষ হুইতে পারে। অনেক বর্ণুর হুইঃ নিবে**দিতা ম**ডার্ন রিভিউ দার্জিলিং জেলায় হিমালয়ের গাতে ইউ ভাল ফলের চাষ হইতে পারে. বাঙালী লাগা উচিত।

চীনে লোকশিকা

নিরক্ষরতা দূর করিবার জন্ম চীনে শো চেষ্টা হইতেছে। অনেক জায়গায় প্রাপ্ত পাওয়ায় লিখনপঠনক্ষ বালকদের ছারা হইতেছে। তাহারা দিনের বেলায় নিঞ্চে অন্ত লোকদিগকে পড়ার। মহিলাদের মুঞ থুৰ কাৰ্য্যক্ষমত্ব দেখাইয়াছে। একটি ছয় বৎসরের নাতী তাহার ষাট **বৎস** অল্প সময়ের মধ্যে পড়িতে শিখাইয়াছে।

বঙ্গে এই প্রণাশী প্রবর্ত্তিত হইতে পা এত শিক্ষিত বুবক ও শিক্ষিতা বুৰতী 🚎 আছেন, যে, অল্ল ব্যয়েই তাঁহাদের দারা বা নিরক্ষরতা বহু পরিমাণে দুর হইতে পা আমাদের হাতে থাকিলে আমরা, যথেই করিয়াও, এই কাজ করিতাম।

অধ্যাপক হুরেন্দ্রকুমার বে

দিল্লীর হিন্দু কলেন্ডের প্রিন্সিপ্যাল মহাশরের ৪৪ **বৎস**র বয়সে হঠাৎ মৃত্যুতে, 🛶 সমগ্র ভারতবর্ধ এক জন স্কৃতী শিক্ষক হারা অক্সফর্ড বিশ্ববিশ্বালয়ের গ্র্যাফুরেট ছিলেন্ সিবিল সার্বিসের প্রতিবোগিডামূলক হইরাছিলেন, কিছু দৈহিক ক্রিণে নির্ তিনি দিলী বিশ্ববিভালয়ের ই উহাসু-বিভাগ অন্তর্গাতিক ঐতিহাসিক স্তার সভ্যাহিলে **রুষ্টিসম্পর্কীর সব কাজে উর্ছিরে ঘনির্চ বোগ**্রীর সমাজেও ডিনি জোক্তিয় ছিলেন ৷



প্রধাসা প্রেম, কলিকার পুন্মিলন ভী,বিমল দেব



"সতাম্ শিবম্ স্থন্দরম্" "নায়মাত্মা বশহীনেন শভাঃ"

৩৪শ ভাগ ২য়

পৌষ, ১৩৪১

৩য় সংখ্যা

অচিন মানুষ

রবীক্রনাথ ঠাকুর

তুমি অচিন মামুষ ছিলে গোপন আপন গহন তলে কেন এলে চেনার সাজে? সাঁজ সকালে পথে ঘাটে দেখি কতই ছলে ভোমায় আমার প্রতিদিনের মাঝে। মিলিয়ে কবে নিলেম আপন আনাগোনার হাটে তোমায় নানান্ পাস্দলের সাথে, কখনো বা দেখি আমার তপ্ত ধুলার বাটে তোমায় কভু বাদল-ঝরা রাতে। তোমার ছবি আঁকা পড়ল আমার মনের সীমানাতে আমার আপন ছন্দে ছাঁদা. সরু মোটা নানা তুলির নানান্ রেখাপাতে তোমার স্বরূপ পড়ল বাঁধা। তাই 🍀 আজি আমার ক্লান্ত নয়ন, মনের চোখে দেখা হ'ল চোখের দেখায় হারা, পরিচয়ের ভরীখানা বালুর চরে ঠেকা

সে আর পায় না স্রোতের ধারা॥

^ধ্বিপ্রবাসী⁶

ও যে অচিন মামুষ, মন উহারে জানতে যদি চাহো জেনো মায়ার রং-মহলে, জাগুক তবে সেই মিলনের উৎসব উৎসাহ याद्ध वित्रश्-मीপ ष्वत्न। চোখের সামনে বসতে দেবে তখন সে আসনে রেখো ধ্যানের আসন পেতে, কইবে কথা সেই ভাষাতে তখন মনে মনে দিয়ো অশ্রুত স্থর গেঁথে। জানা ভুবনথানা হ'তে স্থদূরে তার বাসা তোমার তোমার দিগন্তে তার খেলা। ধরা-ছে ওয়ার অতীত মেঘে নানা রঙের ভাষা সেথায় সেথায় আলো-ছায়ার মেলা। প্রথম জাগরণের চোথে উষার শুক্তারা যদি তাহার স্মৃতি আনে যেন সে পায় ভাবের মূর্ত্তি রূপের বাঁধনহারা তবে তোমার স্থরবাহারের গানে॥

শান্তিনিকেতন ২০ কার্ত্তিক, ২**৩**৪১



শব্দপ্রসঙ্গ

শ্রীবিধুশেখর ভট্টাচার্য্য

নিম্নলিখিত শব্দ কাটির মূল অনুসন্ধের। বাঙ্লার ইহাদের প্রয়োগ আছে; তিবতী ভাষার ইহাদের অনুরূপ শব্দ আছে। মনে হয়, ইহারা অথবা ইহাদের কয়েকটি তিববতী হইতে বাঙ্লার, অথবা বাঙ্লা-প্রভৃতির সম্বন্ধে তিববতীতে গিয়াছে।

ভুরা

'নিকুট চিনি' অর্থে ভুরা শব্দ বাঙ্লায় পাওয়া যায়; যেমন,

> আট পণে আনিয়াছিলাধ সের চিনি। অন্ত লোকে ভুরা দে ভাগ্যে আমি চিনি॥

—ভারতচন্দ্র।

তিব্ৰতীতে সাধারণত 'চিা' বুঝাইতে বৃ. র ম* এই
শক্টির প্রয়োগ আছে। 'আক': 'ইকু'কে তিব্ৰতীতে বলে
বৃর. শি ও। শি ও শব্দের অর্থ 'গ্ছু'। বৃর. শি ও আক্ষরিক
অর্থ 'চিনির গাছ।' এখানে বৃ. গ না বলিয়া কেবল বৃর
বলা গিয়াছে, ইহা লক্ষ্য করিতে ইবোঁ। অতএব বৃর ও
বৃ. র ম বস্তুত একই। ম্ল তিব্বে ভাষায় ভ-ধানি নাই।
তিব্বতী হইতে শক্টি বাঙ্লায়মাসিলে বলিতে হইবে
তিব্বতীর জন্মপ্রাণ ব বাঙ্লায় মহাণ ভ ইয়াছে।

বো র

'ছালা' বা 'চটের বড় থলিয় অর্থে হিন্দী-প্রভৃতি ও বাঙ্লায় আছে বো রা। কে' হইতে ইহা আসিল? তিবেতীতে ঐ একই অর্থে আছো রঃ র।

চো না

'গোমূত্র' ব্ঝাইতে আমরা লো শব্দ প্রয়োগ করি।

ইহার মূশ কি? মনে হয় তিনবতী। ঐ অর্থেই তিব্বতীতে আছে গ চিন (=গ চিন-প)। ব্যঞ্জনের পূর্ববর্তী গকারের উচ্চারণ হয় না। তাই গ চিন উচ্চারিত হইয়া থাকে চিন।

. পে ছা

বর্জনান, বীরভূম, ও মুর্শিদাবাদ জেলায় 'টুকরী' বা 'ঝুরি' অর্থে পে ছা শব্দ আছে। নিশ্চমই ইহা কোনো সংস্কৃত শব্দ হইতে আসে নাই। জ্বল-প্রভৃতি বহনের জন্ত 'চামড়ার থলিয়া' বা 'মশক' ব্রাইতে তিব্বতীতে প েচে — (চ্-ছts, দস্ততালবা চ্) শব্দ আছে। আর একটি শব্দ আছে ফ ছে (ছ=tsh, দস্ততালবা ছ)। ইহা সাধারণত 'ছালা' 'বোরা' বা 'থলিয়া' অর্থে প্রযুক্ত হয়। মনে হয় এই তিব্বতী শব্দ গুলের সহিত পে ছা শব্দের যোগ রহিরাছে। দেইবা—F. W. Thomas: Some Notes on the Kharosthi Documents in the Acta Orientalia, Vol. xiii. Pars. I, pp. 54-56.

ठिक, ठिक-ठिक

'সত্য', 'উপযুক্ত', 'সমান-সমান' ইত্যাদি অর্থে বাঙ্ লার ও হিন্দী-প্রভৃতিতে ঠিক শক্ষের প্ররোগ আছে। হিন্দীতে উচ্চারণ ঠাক। তিববতীতে 'উপযুক্ত' ও 'সমান-সমান' ('কমও নহে, বেশীও নহে') প্রিগ প্রিগ শব্দ আছে। উচ্চারণে থু=হা। অভএব খ্রিগ প্রিগ উচ্চারণে ঠিগে। বিগ বাষ গ অবোষ হইলেক হয়। তদন্সারে ঠিগে। ঠিগ হইতে ঠিকা ঠিক হইতে পারে।

ফের, ফিরা

'আবার' অর্থে ফের শব্দ বাঙ্লার আছে। ধেমন, সারদাম ল লে "ফের একি আলো এল।" এই অর্থে হিন্দী শব্দ ফির। বাঙ্লার আরো আছে ফিরে; ধেমন

^{*} ভিবৰতী শব্দসমূহের শেষের নটি হসন্ত বুবিতে ২ই.ৰ; যেমন, র ম উচ্চারিত হর র মৃ।

⁺ দুইবা Laufer: Toung 10, Vol. xvii, 1916, pp. 404 ff: No. 46; বর্তমান কের Loan words in Tibetan in Archiv Orientali Vol. 6 (1934), No. 2, p. 354, No. 38.

শিবা র নে "ফিরে অর রাথে উমা দেথে গিরিরাণী।" পশ্চাৎ' অর্থেও আমরা ফিরে অথবা ফিরিরা বলিরা থাকি।
ইহাদের মূল কি? তিববতীতে 'মাবার' ও 'পশ্চাৎ' এই
উভর অর্থেই ফিরে শব্দ আছে। ফিরে ও ও ব ইহার
অর্থ 'ফিরিরা আসা'। 'ভ্রমণ' অর্থেও বাঙ্লাতে ফিরা
শব্দের প্ররোগ আছে; বেমন, সে ফিরিতেছে। তিববতীতে
ফিরে এই শব্দের অপর অর্থ 'বাহির'; বেমন, ফিরে ল
'বাহিরে'। এই 'বাহির' হইতে 'বাহিরে বাওয়।' ও তাহা
হইতে 'ভ্রমণ' অর্থ হইয়া থাকিবে।

এখানে একটা কথা লক্ষ্য করিবার আছে। তিব্বতীতে অনেক প্রদেশে ফ্য উচ্চারিত হয় ছ। আমাদের তিব্বতী শিক্ষক মহাশয় বলেন প্রশিক্ষিত লামারা এই পরিবর্ত্তি উচ্চারণ করেন না। ইহা হইলে তিব্বতী ফ্যির হইতে আলোচ্য বাঙ্লা শব্দটির আদিতে বাধা থাকে না। অথবা

বাঙালী প্রভৃতিই ঐ তিব্বতী শব্দটিকে নিজেদের মত উচ্চারণ করিয়া লইয়াছেন।

বো ল

বাঙ্লা প্রভৃতিতে 'শব্দ' অথবা বলা' অর্থে কোনো-না-কোন আকারে বোল শব্দ আহে; যেমন হ রি বোল ইত্যাদিতে। হেমচন্দ্রের দেশী লা দ শালা র (৬.৯০) ইহাকে দেশী শব্দ বলিয়া উল্লেখ করা গিরছে, এবং বহু প্রাকৃত গ্রন্থে ইহার প্রয়োগ আছে। হেমচন্দ্র নিজের প্রাকৃত বাকিরণের ধাতৃ-আদেশ প্রকরণে ৵ ব দ গতৃর স্থানে বোল আদেশ করিয়াছেন। ইহা দারা মনে করিতে হইবে না বে, ৵ ব দ ধাতৃ বোল আকার ধারণ করিয়ছে। ইহার প্রমাণ নাই। তবে বোল শব্দ কোথা হতে আসিল গ তিববতীতে 'আহ্বান' অর্থে বোল-পো শ্ আছে। (এখানে পো ধর্তবার মধ্যে নহে।) ইহাই কি বাঙাা-প্রভৃতিতে আদে নাই গ

একাদশী

শ্রীদীতা দেবী

প্রোচ্বয়সে বিধবা হইয়া নবছর্না বেন একেবারে ঘণই জলে পড়িয়া গেলেন। স্বামীর দ্বিতীয় পক্ষের স্থী তিনি, সতীনপো, সতীনঝিতে বাড়ি ভর্দ্তি। তথাপি আদরের স্থী বলিয়া, এই ত্রিশ বৎসরের বিবাহিত জীবন তাঁহার আনন্দেনা কাটুক, উপ্ররকম স্বাধীন ভাবে কাটিয়াছিল। তিনি কোন দিন কাহারও ম্থ চাহিয়া থাকেন নাই, পরিবারপরিজন সকলেই তাঁহার ম্থ চাহিয়া থাকিত। সংসারের উপর তাঁহার ছিল অপ্রতিহত ক্ষতা, স্বামীমুদ্ধ কথনও তাঁহার কথার উপর কথা বলিতে সাহস করিতেন না। য্বতী পত্নীকে তিনি স্থী করিতে পারেন নাই, তাহা রদ্ধ ব্রুড়ে হাড়ে ব্ঝিতেন, স্তরাং বাহা লইয়া সে ভূলিয়া থাকে থাক বলিয়া নবহর্নার অস্তাররক্ষ প্রভূত্বপরায়ণতায়ও কথনও বাধা দিতেন না।

প্রথম পক্ষের মেরেরা বিবাহ হইরা যাইবার পর পারজপক্ষে আর বাপের বাড়ির ছারা মাড়াইত না। সতীনপুত্রদের বিবাহ রিয়া আরও বেন জালা বাজিয়া গিয়াছিল। এক কানেৎমায়ের গালাগালি শুনিত, আর এক কানে স্ত্রীদের নাগ শুনিত। উত্তরে তাহাদের কিছু বলিবার ছিল না। স্থার গায় তাহারা, বাপের গৃহিণীর মুখের উপর কথা বলিকে করিয়া? দাঁতে দাঁত ঘবিয়া চুপ করিয়া নাইত। আত্র তাহাদের আশার বিষয় ছিল এই যে, নবহুর্গার সন্তাল কিছুই হয় নাই। বুদ্দ পিতা আর কয়দিন? তাম পর তাহারাও দেখিয়া লইবে। এক ভয় বাপ পাছে উ করিয়া সৎমায়ের বিশেষ কিছু স্থিধা করিয়া যান।

সেই ইচ্ছাই বাপে ছিল। পৈতৃক সম্পত্তি তাঁহার যাহা ছিল, তাহা ত পুত্রদেরই প্রাপা, তাহা তিনি বেহাত করিতে পানেনা। কিন্তু নগদ কিছু টাকা জমাইয়াছিলেন এবং দকাতায় মাঝারিগোছের একথানি বাড়ি করিয়াছিলেন এইগুলি নবছর্গাকে উইল করিয়া দিরা যাইবার কথা ছিল। এমন সময় বিনা মেথে বজ্ঞাঘাতের মত বৈধব্য আসিয়া নবহর্গার ললাটে আগুন ধরাইয়া দিয়া গেল। কর্ত্তা সন্মাসরোগে মারা গেলেন।

সতীনপুত্রদের উল্লসিত মুখের দিকে চাহিয়া নবহুর্গার বুকের ভিতর হুরহুর করিতে লাগিল। পিতৃবিয়োগের শোকও তাহাদের এই নিচুর আনন্দকে দমাইয়া রাথিতে পারিতেছে না। নবহুর্গা এই মহা সর্ব্ধনাশের মধ্যেও নিজের কাছে স্বীকার না করিয়া থাকিতে পারিলেন না যে, ত,হাদের এরকম অস্বাভাবিক ব্যবহার করিবার হেতু তিনিই জুটাইয়া দিয়াছেন। তিনি যদি অত পরিপূর্ণরূপে সৎমা-গিরি না ফলাইতেন, তাহা হইলে ইহারাও হয়ত এমন দানবের মৃতি ধরিত না।

কিন্তু সব দোষ কি তাঁহারই ৈ প্রথম যৌবনের সমস্ত আশা, সব রঙীন নেশা তাঁহার এমন করিয়া ভাঙিয়া দিলেন কেন পৈ পনের-যোল বংসর বয়সে তাঁহার বিবাহ হইল। বিধবা মাতার কস্তা তিনি, আয়ীয়স্বন্ধনে কোনমতে বুদ্ধের হাতে সন্দাণ করিয়া নিম্বতি লাভ করিল। শুভদৃষ্টিতে ক'নের চোথে যে জল আসিয়া পড়িয়াছিল, তাহা ত কেহ দেখিল না প্রশাবার রাত্রে দারুল অনুস্থতার ভান করিয়া সে যে পলায়ন করিয়া আয়রকা করিল, তাহাও কেহ জানিল না।

আশাভঙ্গের, আনন্দহীন জীবনের যে দারুণ জালায় নবত্র্গার অন্তিত্ব ভরিয়া উঠিয়াছিল তাহার সব ধাকাই পোহাইতে হইয়াছিল তাহার স্থামীর প্রথম পক্ষের সন্তানগুলিকে। দোখী তাহারা অবগু নয়, কিন্তু জগতে দোখী-নির্দোধীর বিচার অত চুল চিরিয়া ত হয় না? এক জ্বনের দোখে আর এক জ্বন ভ্গিতেছে, এ ত সদাসর্ব্বদাই দেখা যায়।

অংশীচের দিন ক'টা কোনমতে কাটিয়া গেল। তিনি একলা আপনার ঘরে মৃত্তিকালয়ায় পড়িয়া থাকেন, একবার খান কি না-খান, তাহারও ধোঁজ কেহ করে না। বাড়িতে হবিষ্যকারীদের জন্ত গাওয়া ঘি, হুধ, ফলমূল, মিষ্টান্ন, ভারে ভারে আসে; তাঁহার নিকট পর্যান্ত সেপ্তলির এক কণাপ্ত পৌছায় না। নামে অশৌচ, কিন্তু সকলের ব্যবহারে ও মুগের ভাবে মনে হয়, বাড়িতে মহা একটা আনন্দের ব্যাপার ঘটিয়া গিয়াছে।

শ্রাদ্ধ-শাস্তি কোন প্রকারে চুকিয়া গেল। কর্তা গ্রামের ভিতর মানী বাক্তি ছিলেন, তাহার উপযুক্ত ভাবেই তাঁহার কার্য্য হইয়া গেল।

পরদিন সকাল হইতেই বড় পুত্রবধু তাঁহার ঘরের দরজার বাহিরে দাঁড়াইয়া বলিলেন, "ছোটমা, উঠেছ নাকি গো?"

ইতিপূর্ব্বে ছেলেরা যাহাই বলুক, বগুর। তাঁহাকে মা বলিয়াই ডাকিত। এখন তাহাদেরও ডাক বদলাইয়াছে। যাক্, তাহাতে নবহুর্গার কিছু আসিয়া যায় না। পাতান মা হইবার জন্ম তাঁহার কোন ব্যস্ততা নাই। বলিলেন, "উঠেছি, বাছা।"

বপূ বলিলেন, "তোমার ছেলে বল্ছিলেন কি, দিন-কতক শাঁধরাইল ঘুরে এস। শরীর মনটা ভাল হোক। আমাদেরও একবার হাওয়া বদলাতে যাবার কথা হচ্চে।"

শাঁথরাইলে, অর্থাৎ নবছ্র্গার মামার বাড়িতে, ছই মামাতো ভাইরের সংসার। সেথানে যে তাহার খুব সাদর অভার্থনা হইবে, তাহা মনে করিবার কোন হেতু ছিল না। তবু তাঁহাকে মান রাথিবার জন্ত বলিতে হইল, "হাা, সে বাবস্থা আমি করেছি, কালই যাব। তোমাদের আর তা মনে করিয়ে দিতে হবে না।"

ঠাকক্ষণ ভাঙেন তব্ মচকান না। বড়বৌ মুথথানা বিক্ত করিয়া সরিয়া গেল।

বলিয়াছেন যথন তথন নবহুৰ্গাকে বাহতেই হইবে। গাড়ীর ব্যবস্থা করিতে লোক পাঠাইয়া, তিনি জিনিষপত্র গুছাইতে বসিয়া গেলেন। এ-গৃহে আর ঠাহার স্থান হইবে কি না তাহা কেই বা জানে ? গতদুর সম্ভব নিঞ্জর যাহা কিছু আছে তাহা লইয়া যাওয়াই ভাল। বাহা লইয়া যাইতে পারিবেন না নিতাস্তই, তাহা পাড়াপ্রতিবেশীর দরে রাথিয়া বাওয়া ভাল, কারণ এ বাড়িতে রাগিয়া গেলে তাহা আর ফিরিয়া পাওয়ার কোনই সম্ভাবনা নাই।

কিন্তু কি যে তাঁহার নিজের জিনিষ তাহা ত ভাবিয়া পাওয়াও ভার। নিঃসন্তান বিধবা তিনি, তাঁহার কিসেই বা অধিকার আছে? পরনের কাপড়-চোপড় এবং গহনা-গাঁটি ভিন্ন হিন্দুসংসারে স্ত্রীলোকের কিছুই আপনার বলিতে থাকে না। কাপড়-চোপড় নবহুগাঁর ঢের ছিল,

কর্তা সেদিকে কোন কার্পণ্য করেন নাই। কিন্তু সেগুলি এগন কোন কাজে লাগিবে? নিজের মেয়ে নাই যে পরিবে, ছেলেও নাই দে ঘরে একটি বউ লইরা আসিবে। তিনি বরং ঐ হান্সার-বারো-শ টাকার কাপড় জালাইয়া मिर्तन, उर् धे जैनानमूथी मजीनर्शा-र्वोत्मत्र मिन्ना याहरू পারিবেন না। থাক্ তাঁহার সংক্রই এ-সব, বে-বাড়িতে আশ্রম পাইবেন, সে-বাড়ির বৌ-ঝিদের দিলে বরং তাহাদের মন পাওয়া যহিবে। গহনা এতদিন গায়ে পরিয়াছেন ত যথেষ্ট, কিন্তু সেগুলির উপর তাঁহার অধিকার আছে কি? কর্ত্তা ছিলেন হিসাবী মানুষ, বড়গিল্লীর সিন্ধুক ভর্ত্তি গহনা ছিল, তাহার ভিতর হইতেই বেশ গা-সান্ধান অনেকগুলি গহনা তিনি ছোটগিয়ীকে বাহির করিয়া দিয়াছিলেন। অনর্থক স্থাকরাকে একরাশ টাকা বানি দিয়া হইবে কি? ছেলের বউরা অর্গগতা শাশুড়ীর গহনা সৎ-শাশুড়ীর অঙ্গে দেখিয়া রাগে জালিয়া যাইত, কিন্তু মুথ ফুটিয়া কিছু বলিবার উপায় ছিল না। স্বামীদের কাছে নালিশ করিলে তাহারা বলিত, "তোমরাও ত অনেক পেয়েছ বাপু, তা অত হিংসে কেন? ওটা ধমের বাড়ি গাক, ভারপর সবই ভোমাদের হবে।"

ছোটগিল্পী যদের বাড়ি ত গেলেন না, কিন্তু পাছে গহনা লইয়া বাপের বাড়ি পলায়ন করেন, সেই ভাবনায় তিন বৌ অভ্যন্ত সম্বস্ত হইয়া উঠিল। বড়বৌ একবার সং-শাশুড়ীর দরজা বুরিয়া আসিয়াছে, সে আর বাইতে রাজী হইল না। বলিল, "লাভ হ'লে সকলের হবে, আমি একলা নিমিন্তের ভাগী হব কেন?"

অগতা মেজবৌ এবার চলিল। সাহস সঞ্চয় করিয়া সোজাস্থান্ধ নবহুগার ঘরে চুকিয়া পড়িয়া বলিল, "জিনিয-পত্তর গোছান হয়ে গেল নাকি ?"

নবহুর্না রাগ দমন করিবার চেষ্টা করিতে করিতে বলিলেন, "একলা হাতে যতদুর হবার তা হরেছে।"

আৰু আর তাঁহার রাগকে কেই বা গ্রাহ্ম করে? মেজবৌ বলিল, "তোমার ছেলে বলছিলেন কি, গহনা-াাটিগুলো খেন নিতে গিয়ে পথে বিপদ বৃধিও না। রাস্তা-বাট ভাল না, তার উপর একলা বাছে।"

এই ভন্নই এতক্ষণ নবহুৰ্গা করিতেছিলেন। সভীন-

প্তরা তাঁহাকে শৃন্ত হাতেই বাড়ির বাহির করিয়া দিতে চায়। বাপের বাড়ি হইতে তিনি সোনার মাক্ড়ী আর মাথার ফুল কাঁটা জিয় কোন সোনার গহনাই পান নাই। বুড়া বরকে অমন লক্ষীরূপিণী মেরে ধরিয়া দেওয়া হইল, আবার সোনার গহনাও দিবে? অত আর না। নবছর্গার সারা অক্ষে বে পঞ্চাশ-ষাট ভরির সোনার গহনা ঝক্ ঝক্ করিত, সবই এ-বাড়ির দেওয়া। কর্তা যদি গড়াইয়া দিতেন, তাহা হইলে কোন ছোটলোকের বেটীকে আর কথা বলিতে হইত না। কিয় এ যে সতীনের গহনা, তাহার দাবি কোথায় এগুলির উপরে? জোর করিয়া কিছু বলিতে গেলে শেষে অপমানিত হইয়া বিদায় হইতে হইবে। কাজ কি বাপু?

গহনার বাক্সটা বড় উদ্ধি হইতে বাহির করিয়া তিনি ঠক্ করিয়া মেঝের উপর বদাইয়া দিলেন। তাহার ভিতর হইতে ফুল কাঁটা ও মাকড়িগুলি বাছিয়া লইতে লইতে বলিলেন, "নিয়ে যাও গো, তোমাদের গহনাতে আমার কাজ নেই, বুকে ক'রে আগলে রাখ। হাতের নোয়াই যথন ঘুচল, তখন ও-সব ছাইভঙ্গে আমার কাজ কি?"

মেন্দ্রবৌ আনন্দে আটখানা হইয়া গহনার বারাটি উঠাইয়া লইয়া প্রস্থান করিলেন। এগুলি উদ্ধারের আশা তাঁহারা ভরসা করিয়া এতদিন করিতে পারেন নাই। তিন বউয়ে ভাগ-বাটোয়ারা লইয়া মহা ব্যস্ত হইয়া পড়িলেন। ছেলেরাও আসিয়া যোগ দিলেন। গোলমালের মধ্যে নবছর্গা বিদায় হইয়া গেলেন। গহনা পাওয়ায় সকলে তখন এত খুশী যে সৎ-মা ঘটিবাটি লইয়া পলায়ন করিতেছে কিনা তাহা আর কেহ দেখিতে আাদিল না।

বহু বৎসর পরে নবহুর্গা মামার বাড়ি ফিরিয়া আসিলেন।
স্থামী বিবাহের পর সেই বে লইয়া গিয়াছিলেন, আর
ফিরিয়া পাঠানোর নাম করেন নাই। বাড়ির গৃহিণীর
অত বড় সংসার ফেলিয়া সারাক্ষণ হটর্ হটর্ করিয়া মামার
বাড়ি বাওয়া পোষায় না, তা আবার বাপের বাড়িও না।
তাঁহার একটা মানসম্বন ছিল ত? নবহুর্গার মা এ সংসারে
আপ্রিতা বিধবা ভগিনী ছিলেন, তাঁহার আর কিইবা
প্রতিপত্তি? অনেক ঝগড়া-ঝাঁটি করিয়া বড় মামাতে।



প্রমহংস রামকৃষ্ণ অসিদ্ধ চিত্রকর ক্রান্ত ডোরাক কর্তৃক অধিত তৈলচিত্রের কোটোগ্রাক হইতে।

ভাইয়ের বিবাহে নবহর্না একবার আদিয়াছিলেন, আর আদা তাঁহার ঘটয়া ওঠে নাই। দেবারে তাঁহার গহনা কাপড়ের ঘটা দেবিয়া মামী এবং মামাতো বোনরা কিঞ্চিৎ কর্মায়িতাই হইয়াছিলেন বলিয়া তাঁহার মনে পড়িতে লাগিল।

ষাহা হউক, তথন মা বাচিয়াছিলেন, দিদিমাও বাচিয়াছিলেন। এখন তিনি একেবারেই পরের সংসারে আসিতেছেন। মামাতো ভাইয়ের বৌদের মধ্যে বড়টিকে সেই বিবাহের কনে-বৌ রূপে দেখিয়া গিয়াছেন, ছোটটিকে একেবারেই দেখেন নাই। তাহাদের মধ্যে এক জন সাত ছেলের মা, এক জন পাঁচ ছেলের মা। কি ভাবে সকলে তাহাকে গ্রহণ করিবে কেইবা জানে? এত দিন নবহুর্গার মনে বড়ই বেদনা ছিল তিনি বন্ধাা বিলিয়া, আজ এক-একবার মনে হইতে লাগিল ভগবান ভালই করিয়াছেন। এই কপাল লইয়া তিনি ছেলেমেয়ে মালুষ করিতেন কিরপে? আবার মনে হইতে লাগিল, পেটের এক-আঘটা থাকিলে তাহাকে এমন ভাবে বিদায় করিয়া দিতেই বা কাহার সাহস হইত ?

বাহা হউক, মামার বাজিতে পা দিবামাত্রই কোন এঘটন ঘটিণ না। ভাইবোরা যথোচিত আর্ত্তনাদ সহকারেই তাঁহাকে গ্রহণ করিলেন। পাড়ার যত মহিলা আসিরাও কালাকাটিতে বোগ দিলেন। একদল ছেলেমেয়ে গোল হইয়া দাঁড়াইয়া তাঁহাদের বিরিয়া রহিল। ঘণ্টাখানেক ত এই ভাবেই কাটিয়া গেল।

ভাহার পর প্রতিবেশিনীরা যে যাহার কান্ধে চলিয়া গেল, ছেলেমেয়ের দলও থেলা এবং খাওয়ার সন্ধানে ছত্রভঙ্গ হইয়া পড়িল। নবহুর্গার বাল্ম বিছানা ভাঁড়ার বরে উঠিল, তিনিও তখনকার মত সেইখানেই গিয়া বিদিলেন। আশা করিয়া আসিয়াছিলেন যে তাঁহাকে অস্ততঃ একখানা আলাদা ঘর দেওয়া হইবে, কিন্তু দেখিলেন তাহা হইবার নয়। তাঁহার মাও চিরকাল ভাঁড়ার-ঘরেই দিন কাটাইয়াছেন।. তবে দিদিমা তখন বাচিয়াছিলেন, তাঁহার ঘরটা কার্য্যতঃ নবহুর্গাদের দখলেই ছিল, কাল্লেই তাঁহাদের কোন অস্বিধা ঘটিত না। ভাঁড়ার-ঘরধানি বেশ বড়, এক কোলে তক্ত;গোবও পাতা আছে। অস্ত ঘরের চেয়ে বরং

এ-ঘরে হাওয়া আলো বেশী। তবু মানে ত আঘাত লাগে? নবহুর্গার মনের ভিতরটা থচ্খচ্ করিতে লাগিল। বড়-বৌকে তিনি সোনার তাবিজ দিয়া মুখ দেখিয়াছিলেন, ছোটবৌয়ের বিবাহের সময় আসিতে পারেন নাই, কিছ এক-শ টাকা নগদ পাঠাইয়া দিয়াছিলেন, তাহাকে কিছু গহনা গড়াইয়া দিবার জন্ত। দিদিমার শ্রাদ্ধে পঞ্চাশ টাকা পাঠাইয়া সাহায়্য করিয়াছিলেন। ইহারা কি আর ইছয়া করিলে তাহাকে আর একট্ সমাদর করিতে পারিত না? কিছু বৃদ্ধ সিংহের মুখে ব্যাঙ্গু লাথি মারিয়া য়ায়। তাঁহার আজ কপাল ভাঙিয়াছে, কাহাকে আর কি তিনি বলিবেন?

ছুপুরের ধাওয়া তিনি খাইয়াই আসিয়াছিলেন, কাজেই সেদিনের মত নিশ্চিত। বিকালে একটু হুগ্ধ ও ফল খাইয়া গুইয়া পড়িলেন। ছশ্চিন্তার গুকুভার তবু ঘুমের আড়ালে খানিকক্ষণের মত তাঁহার বুকের উপর হইতে নামিয়া গেল।

পরদিন সকাল হ্ইতেই তাঁহার সব গুঃথ গুর্হাবনা আবার ভীড় করিয়া আসিয়া দাঁড়াইল। এতটা কাল ঝি চাকর এবং পুত্রবধ্দের ভুকুম করিয়াই তাঁহার কাটিয়াছে, কোন দিন কুটাটি ভাঙিয়া গুইথানা করেন নাই। আজ ব্ঝিলেন নিজের সকল কাজ ত তাঁহাকে করিতেই হুইবে, উপরি সংসারের কাজও কিছু তিনি করিবেন, ইহাই সকলে প্রত্যাশা করিবে। হিন্দুর বিধবার কাজ একলার হুইলেও নিতান্ত সামান্ত নয়। জল বহিয়া আনিতেই তাঁহার প্রাণান্ত হুইবার জোগাড় হুইল। পুকুরটা নিতান্ত কাছেও নয়। তাঁড়ার-থরটা ধুইয়া মুছিতে গিয়া তিনি হাপাইতে হাপাইতে বসিয়া পড়িলেন। বড়বো বাহির হুইতে উকি মারিয়া বলিলেন, "ঠাকুরঝি দেখি কাজের বার হয়ে গেছ একেবারে। তা দিন-কয়েক করতে করতেই সয়ে থাবে।"

দিন-কতক কাজ করিয়া সহিয়া যাইবার আগেই তিনি না মরিয়া যান, এই ভাবনাই নবহুর্গার হইতে লাগিল। জল টানিয়া, ঘর মুছিয়া এবং বাসন মাজিয়া তাঁহার সর্বাঙ্গে এমন বাথা হইল যে প্রায় নড়াচড়া বন্ধ হইবার জোগাড়। কলিকাতার তাঁহার এক মাসীর বাড়ি। তিনি বিধবা হইলেও নিজের সংসারের কর্ত্তী, যদি দিন-করেক হতভাগিনী বোনঝিকে লইয়া যান ত নবহুৰ্গা একটু বিশ্রাম করিয়া বাচেন। মাসীর কাছে কাল্লাকাটি করিয়া একথানা চিঠিই লিখিয়া ফেলিলেন তিনি।

মাসীমা চলিয়া আসিতে লিখিলেন। যাইবার অবগ্ৰ পাঠাইলেন না। গৃহিণী বড়মান্ত্রবের বলিয়া আগ্রীয়মহলে নবহুর্গার এত নামডাক ছিল, তাহাকেও যে আবার পথ-ধরচা পাঠাইতে হইবে তাহা কেহ ভাবিতেও পারিত না। নগহর্গা সামান্ত কিছু টাকা মাত্র লইয়া আসিতে পারিয়াছিলেন, তাহা হইতেই কিছু ভাঙিয়া ধাইবার ব্যবস্থা করিলেন। বড় মামাতো ভাইয়ের একটি গুলক, প্রায় বারো মাসই দিদির বাড়িতে অতিথি থাকিত, দে বিনা-ধরচায় কলিকাতা বেডাইয়া আসিবার শোভে তাঁহাকে শইয়া গাইতে রাজী इहेल।

ভাজ ছ-জন বলিলেন, ''তা ঠাকুরঝি ঘুরে এস দিন-কতক। এথন এক জায়গায় মন বসতে দেরি লাগবে।"

নবর্গা থার্ড ক্লাসে চড়িয়া কলিকাতার আসিয়া পৌছিলেন। মাসীর একটি ধরজামাই ছিল, সে থাইত-দাইত, এবং স্ত্রী ত্-কথা শুনাইয়া দিলে শাশুড়ীর কাছে গিয়া নালিশ করিত। শাশুড়ীরও তাহার উপর বিশেষ স্নেহ ছিল। এই জামাতাটিকেই তিনি নবহুর্গাকে মভার্থনা করিবার জন্ত ষ্টেশনে পাঠাইয়া দিয়াছিলেন।

নবহুর্গা নামিতেই ছেলেটি অগ্রসর হইয়া তাঁহাকে

চিপ করিয়া একটা প্রণাম করিল। বলিল, "আমি

আপনাকে সেকেণ্ড ক্লাসে খুঁজে খুঁজে হয়রান, আপনি বে

থার্ড ক্লাসে আসবেন তা জানব কি ক'রে?"

ছেলেটির বৃদ্ধির দেশি দেখিয়া কিঞ্চিৎ বিরক্ত হইয়া নবহুর্গা বলিলেন, "আর কি সেকেণ্ড ক্লাসে চড়বার দিন আছে ভাই !"

মাসীর ঘরজামাই আবার বুদ্ধির পরিচয় দিয়া বশিল, ''তা হ'লে ধোডার গাড়ীই একধানা ডাকি ?"

নবহুৰ্গা বলিলেন, "ভাই ডাক।"

কলিকাতার বহু দিন পূর্ব্বে একবার আসিরাছিলেন, তার পর এই। শহরটা আশ্চর্যা, একেবারে বদ্লাইরা গিরাছে, কিছুই আর চিনিবার উপায় নাই। বিরাট রাজধানীর বিচিত্র দৃশ্য দেখিতে দেখিতে তিনি নিজের তুর্ভাগ্যের ভাবনাহেদ্ধ ভূলিয়া গেলেন।

মাসী তাঁহাকে আদের করিয়াই গ্রহণ করিলেন। তাঁহার বৈধব্যের শোকে বেনা যে কারাকাটি করিলেন না, তাহাতে তিনি একটু বাঁচিয়াই গেলেন। এখানকার ঘরত্যার ভাল, কলের জল আছে, তরি-তরকারি, ত্ধ-ধি, ফল-মিটার অনেক রকম পাওয়া বায়, তাঁহার ক্লিপ্ট দেহ-মন একটু যেন প্রফুলই বোধ হইতে লাগিল। স্লান করিয়া, নিজের কাপড় কাচা ছাড়া আর বেনা কিছু করিতে হইল না। মাসী বেশ শক্ত আছেন, রারাবারা। নিজেই করিতে পারেন। বাড়িতে আর এক জন আত্মীয়া বিধবা আছেন, তিনিও করেন। নবহুর্গা থাইয়া-দাইয়া স্কৃত্বির হইয়া বেশ এক ঘুম দিয়া উঠিলেন। সন্ধায়ও এথানে জলপাবারের এলাহি রকম আরোজন। ক্ষীর, লুচি, রসগোল্লা কত কি।

ছ্-একটা দিন ভালই কাটিল। নবছর্গা কালীঘাট, দক্ষিণেশ্বর, বেলুড়, পরেশনাথের মন্দির সব বেড়াইয়া আসিলেন।

মাসীর মেয়ে রাজলক্ষী হঠাৎ জিজ্ঞাসা করিয়া বসিল, "দিদি ক-দিন আছ এখানে?"

নবহুৰ্গা ব**লিলেন,** "দেখি ভাই, কত দিন থাকতে পারি।"

রাজলক্ষী কি যেন বলিতে গিয়া থামিয়া গেল।
নবহুৰ্গা চিন্তিত হইয়া উঠিলেন। এখনই এ প্রেশ্ম কেন ?
মাসীমা কিছু বলিয়াছেন নাকি? সারারাত ভাবিয়া
সকালে উঠিয়াই নিজের বাক্স হইতে খুব স্থানর একথানা
জরির চৌখুপি শাড়ী বাহির করিয়া রাজলক্ষীর ঘরে গিয়া
হান্ধির হইলেন।

রাজ্বলন্দ্রী তথন সবে উঠিয়া বসিয়া কোলের ছেলেটাকে পিটাইতেছে। তাহার ছেলে একটি, মেয়ে একটি। মেয়ে ত মায়ের ধারেও ঘেঁষে না, দিদিমার কাছেই থাকে ছেলেটার নিভাস্ত এখনও খান্তের জন্ত মায়ের উপর নির্ভ্তঃ করিতে হয়, কাজেই তাহার রাজ্বলন্দ্রীর কাছে থাক ছাড়া উপায় নাই। তা হতভাগা ছেলের জালায় রাটেকি ছ-দশু ঘুমাইবার উপায় আছে? চঁটা, চঁটা, চঁটা, চিলেমত চীৎকার তাহার মুখে লাগিয়াই আছে।

নবহুর্গার হাতের শাড়ীখানা দেখিয়া রাজলক্ষী হঠাৎ মার থামাইয়া জিজ্ঞাসা করিল, "ওমা, এ শাড়ীখানা কার গা বড়ালি ? ভারি জেলা ত কাপড়খানার।"

নবহুৰ্ণা বলিলেন, "এই আমারই কাপড় ভাই। একবারমাত্র পরেছি, তারপর তোলাই ছিল। কাল ভাবলাম কাপড়খানা তোকে মানাবে ভাল, তা পরা কাপড়—"

রাক্ষলন্দ্রী তাঁহার মুথের কথা কাড়িয়া লইয়া বলিল, "ওমা তাতে কি হয়েছে? তুমি আমার নিজের মায়ের পেটের বোনের মত, তোমার পরা কাপড় পরব, তাতে আবার কথা কি?" বলিতে বলিতে ডেঁা মারিয়া কাপড়খানা তুলিয়া লইল। নবহুর্গা তাহার ডেলের সহিত ভাব জমাইবার একটু চেটা করিলেন, কিন্তু সকালে উঠিয়া চড় খাইয়াই তাহার মেজাজ খারাপ হইয়া গিয়াছিল, সেপ্রাণপণে হাত-পা ছুঁড়িতে আরও করিল। রাজলন্দ্রী বলিল, "ও হতভাগাকে ছুঁয়ো না, ও একেবারে মায়্য না। তোমার অনেক কাপড়-চোপড় আছে না বছলি?"

নবহুর্গা বলিলেন, ''পাড়ার্গেরে মানুষ ভাই আমরা, আমাদের কতই বা থাকবে ? তবু ছ-চারথান আছে।''

রাজলক্ষী বলিল, "থাওরা-দাওরা চুকে যাক, তার পর গিয়ে তোমার কাপড় দেগব এখন। আমি বাপু ভাল শাড়ীর বেজায় ভক্ত। তা বেমন কপাল, দেয় কে ? খেতে যে পাচছি তাই চের। দেই বিয়ের সময় মা বা ছ-দশধানা দিয়েছিল, তাই নেড়েচেড়ে দিন কটেছে।"

নিজের বাক্স ভেক্স লোকের সামনে খুলিতে নবহুর্গার একেবারেই ইচ্ছা ছিল না। নিজের দৈন্ত সর্ব্ধসমঞ্চে প্রকাশ করিয়া লাভ কি? তাহারা সকলে ভাবে তিনি প্রচুর ধনরত্বের অধিকারিণী, ভূল করিয়াও ভাবুক না কিছুদিন।

তুপুরবেলা ঠিক রাজলক্ষী তাঁহার কাছে আসিয়া হাজির। হতভাগা ছেলে সবেমত্তি ঘুমাইয়াছে, এখন থানিকক্ষণ তাহার সহস্কে নিশ্চিস্ত। নবহুগা শুইয়াছিলেন, উঠিয়া বসিলেন। রাজলক্ষী বলিল, "আহা, উঠছ কেন? চাবিটা আমায় দাও না বড়দি, আমিই বাক্স খুলে দেখি।"

বড়দির তাহাতে আরও অমত। তিনি উঠিয়া বসিয়া বালু খুদিরা এক একথানা করিয়া সব শাড়ী জামা বাহির

করিতে লাগিলেন। বন্ধা নারীর জিনিষ, অতি পরিপাটি করিয়া যত্নে রাখা, কিছুই নই হয় নাই। এক একখানা করিয়া তিনি বাহির করিতে লাগিলেন, বেনারসী, আনারসী, ঢাকাই, বালুচরী, বিষ্ণুবরী গরদ, শাস্তিপুরের কাপড়, ফরাশডাঙ্গার কাপড়, টাঙ্গাইলের কাপড়। লোভে রাজলক্ষ্মীর চোথ ছইটা জলুজলু করিতে লাগিল।

বলিয়া বদিল, "এত সব কাকে দিয়ে বাবে বড়দি? সতীনপো বৌদের? নিজের ত কিছু একটা আপনার বলতে নেই?"

নবহর্গা বলিলেন, ''ও মুবপুড়ীদের দিতে গেলাম কেন ? ওরা আমার কে ? যারা হৃংথের দিনে আমায় দেখলে না তারা যদি আপন ত পর কে ?''

শাড়াগুলি বৌরা পাইবে না তাহা ত বুঝা গেল, কিন্তু কাহারা বে পাইবে তাহা ত কিছুই বুঝা গেল না। রাজলক্ষী থানিক চুপ করিয়া থাকিয়া বলিল, "গহনার বালটা কোপায় রেখে এসেছ বড়দি? ছিদাম-দাদার বিরেতে তোমার সেই যে সাতনহর আর চুড়জোড়া দেখেছিলাম, তা এখনও আমার চোখে ভাসছে। এমন গড়ন আজকাল আর বড় দেখা যায় না।"

নবহর্ণা ইচ্ছা করিলেই একটা মিথা কথা বলিতে পারিতেন। কিন্তু কে যেন মনের মধ্যে তাঁছার ধিকার দিরা উঠেশ। ছিঃ, কি হইবে মিথা কথার লোক ভূলাইরা? তিনি দরিজ্ঞ, দরিজ বলিয়াই তাঁছাকে লোকে জ্ঞান্তক। বলিলেন, "গহনার বাল্য আরে কি আছে ভাই আমার? যাদের জিনিব তাদের কাছেই আছে।"

রাজলক্ষীর চোথ তুইটা প্রায় স্বস্থান ছাড়িয়া কপালের মাঝানাঝি উঠিয়া গেল। গালে হাত দিয়া বলিল, "ওমা, কোথায় যাব। গায়ের গ্রনা ক-খানাও খুলে নিয়েছে গা ?"

নবহর্ণার ইচ্ছা করিতে লাগিল উঠিয়া ছুটিয়া পালান। এ-সব কথা মেন তাঁহার কানে ছুঁচ ফুটাইতে থাকিত। কিন্তু কিছু না বলিয়াই বা উপায় কি ? বলিলেন, "সে স্বই বড়গিন্তীর গহনা মে, তার ভেলে-বৌয়ে ছাড়বে কেন ?"

রাজ্ঞ**লন্দ্রী বলিল, "ওমা, তাহলে তোমার কি ব্যবস্থা** ক'রে গেল বুড়ো? একেবারে পথে বসিমে গেছে নাকি?"

মাসী এবং তাঁহার সেই আপ্রিতা বিধবাটিও ইতিমধ্যে

আসিয়া জ্টিয়াছিলেন। নবহুৰ্গার প্রতি প্রশ্নটা শাসী শুনিতে পাইয়াছিলেন, ভিনিও প্রায় সঙ্গে সঙ্গে চীৎকার করিয়া উঠিলেন, "ভোকে কিছুই দিয়ে গায় নি নাকি? ওমা কি হবে গো। যার জন্তে ক্রমন সোনার পিরন্তিমে বুড়ো ঘাটের মড়ার হাতে দেওয়া হ'ল, সেই আশাতেই শেষে ছাই পড়ল? ওমা, ভুই তবে দাঁড়াবি কোথায় গা?"

নবহর্মা মাথা কেট করিয়া চুপ করিয়া রহিলেন। এমন সময় চীৎকারপরায়ণ শিশুপুত্রকে কোলে করিয়া রাজলক্ষীর স্বামী আসিয়া ধরে চুকিল, বলিল, "দিব্যি আড্ডা মারছ, ছেলেটা যে গলা শুকিয়ে মরল ?"

রাজ্ঞলান্দ্রী ঝান্ধার দিয়া উঠিল, "বেশ করছি আড্ডা দিচ্ছি, কাক্সর খোয়েত আড্ডা দিই নি? তুমি না-বইতে পার ফেলে দিয়ে এস ঘরে।"

তাহার স্বামী আহত ভাবে শাশুড়ীর দিকে মুথ ফিরাইয়া বলিল, "দেখলে মা, একে ভাল বল্লে মন্দ হয়।"

শাশুড়ীরও মেজাজ ভাল নাই দেখা গেল। তিনি বলিলেন, "তা বাছা, সবে ছ-দণ্ড একটু চুপ ক'রে বসেছে, এমন সময় ও চিলকে আবার নিয়ে আসা কেন? মাহুষের হাড়ে কতই সয়?" পলিয়া তিনি অক্সথরে চলিয়া গেলেন। রাজলক্ষীও উঠিয়া পড়িয়া বকবক করিতে করিতে স্বামীর পিছন পিছন চলিয়া গেল।

একলা ইইবামাত্র সব শাড়ীগুলিকে নির্দ্ধরভাবে তালগোল পাকাইয়া নবহর্গা ট্রাঙ্কের ভিতর ঠাসিয়া দিলেন। সে-গুলির প্রতি তাঁহার আর বিন্দুমাত্রও মমতা ছিল না। কি কুক্রণেই তিনি রাজলক্ষীকে কাপড় দিতে গিয়াছিলেন।

রাত্রে আজে শুধুফল ও মিষ্টি জুটিল। লুচিবা ক্ষীরের চিহ্নপুদেখাগেল না।

পরদিন সকালে উঠিতেই মাসীমা বলিলেন, "আজ ভারার শরীরটা ভাল নেই। চান ক'রে এসে রা**রা**র জোগাড়টা কর না একটু ?"

নবহুৰ্গা গম্ভীর মুখে স্নান করিতে চলিয়া গেলেন। রান্না বেশ ভাল করিয়াই করিলেন, তবে ুখাওয়াতে তাঁহার কচি চলিয়া গেল। মাসী-মা বলিলেন, "খেলি না কেন কিছু? পোড়া অদুষ্টে একবারের বেশী ত ফুটবেনা?" নবহুর্গ। বলিলেন, "হোক্ গে মাসীমা, শরীর ভাক নেই।"

মাসীমা বলিলেন, "বিধবা মানুষের আর ভাল থাকা-থাকি কি? তবে গে-কটা দিন জগতে আছি, পেটে ছটো না দিলে ত চলবে না? তোর আবার কাজকর্ম মোটে অভ্যেদ নেই, জামাই দিয়েও যায় নি কিছু, কি ক'রে গে দিন কাটাবি তাই ভাবছি।"

নবহুৰ্গ। একট্ থামিয়া বলিলেন, "বেঁচে থাকলে দিন কেটেই বাবে। থেটে থাব, কত লোকে ত থাচেছ?"

মাসীমা উৎদাহিত হইয়া বলিলেন, "তা বইকি বাছা, কত লোকেই ত থাচ্ছে? এই দেখ না তারাকে? আমার সব কাজ ক'রে দেয়, দিব্যি থেতে-পরতে পায়।"

রাত্রে শুইয়া শুইয়া নবহুর্না ভাবিতে লাগিলেন, বিদিয়া থাওয়াকে এত কামা তিনি মনে করিয়াছিলেন কেন ? এই রকম সাত-হয়ারে ঝাঁটো খাইয়া ফিরিয়া হইবে কি ? কিছু কি কাজই বা তিনি করিতে জানেন ? বিদিয়া কর্তৃত্ব করা ভিয় আর কিছু ত শেখেন নাই ? রাঁধুনীগিরি করিতে কি মন উঠিবে? কাশী চলিয়া যাইবেন কি ? সেথানেও কত নিঃম্ব বিধবার ব্যবস্থা হইতেছে। মাকড়ী, তুল কাঁটাগুলি বেচিলে অচ্ছন্দে যাইতে পারেন। রাজলন্মীর স্বামীকে বলিলে সে নিশ্চয়ই লইয়া যাইবে।

সকালে উঠিতেই আবার কাজের ফরমাশ আসিয়া জুটিল। মাসী বলিলেন, "ঠাকুরখরের কাজটা ভূই নে না? ভারা একলা পেরে ওঠে না?"

নবহুর্গা হঠাৎ বশিয়া বসিলেন, "হু-দিনের জন্তে ভার নিয়েই বা কি হবে ? আমি ত আর চিরকাশ থাকছি নে ?"

মাসী অপ্রসন্ধ মুথে বলিলেন, "তা থাকলেই বা? কোথাও এক জায়গায় ত থাকবি? আমার ঘরে থাকায় অপমান নেই কিছু।"

নবহুৰ্গা বলিলেন, "কাশী গেলে কেমন হয় ?"

মাসীমা বলিলেন, "কাশীতে ভারি স্থ তা মনে কোরো না'। দশ জনের মধ্যে থাকা আর কচকচি শোনা দে এক জালাতন। বৃড়ীশুলো জালিয়ে মারে। তার চেয়ে দাসীবৃদ্ধিও ভাল।"

ঠাকুরবরে গিয়া নবহুর্গা করন্দোড়ে ভিক্ষা করিতে

লাগিলেন, "হে ঠাকুর, আমার গতি ভূমিই করো। ছনিয়ায় ঠাই না হয়, বিদায় ক'রে দাও।"

পাথরের ঠাকুর নীরব হইয়াই রহিলেন। নবহুর্গা পূজার আয়োজনাদি করিয়া দিয়া বাহির হইয়া গেলেন।

একাদশীর দিন এ বাড়িতে নিরম্ উপবাসের ব্যবস্থা।
মাসীমা ও তারা ঠাক্কণ মেঝের উপর গড়াগড়ি দিতেছেন।
নবছর্গাও অগত্যা তাহাই করিতেছেন। তৃষ্ণায় তাঁহার
কঠরোধ হইরা আসিতেছে। মাসীমা তাহার অবস্থা
দেখিয়া বলিলেন, "তুই না-হয় এক ঢোক গঙ্গা জল মুথে দে,
মরবি কি শেষকালে?"

নবহুর্গা ব**লিলেন, "তোমরা স্বাই জল খাও ত পারি।"** মাসীমা পাশ ফিরিয়া **ভই**য়া বলিলেন, "না বাছা, ওতে যে তার অমঙ্গল হবে।"

নবহুর্গার হঠাৎ হাসি পাইল। কোথায় কাছার অমঙ্গল হইবে ? ঠাহাদের মঙ্গল-অমঙ্গলের কথাও কেহ ভাবিল না, যদিও রক্তমাংসের দেহ লইরা ঠাহারা ব্যুণায় ছটফট ক্রিতেছেন।

দিন কাটিতে লাগিল। হংখ-হুর্গতিই বাড়িতে লাগিল,
থেখ বাড়িল না। তারার আজ অস্থ্য, কাল পিসীর বাড়ি
নিমন্ত্রণ লাগিরাই আছে। মামার বাড়ি হইতে নবহুর্গার
কাছে চিঠি আসিরাছে, ভাজ বাপের বাড়ি যাইবেন, আর
এক জনের শরীর অতি অসুস্থ। সংসার চালায় কে?
নবহুর্গা যেন অতি শীঘ্র চলিয়া আসেন।

রাজলন্ধীর কাপড়ের বাহানা লাগিয়াই আছে। একথানির পর একথানি ভাল শাড়ী সে ক্রমাগত হস্তগত করিয়া চলিয়াছে। মাসীমাকে বাতে ধরিয়াছে, তাঁহার হাত-পা টেপার উৎপাত অহোরাত্ত লাগিয়াই আছে।

আবার একাদশী। মাসীমা ঘরে শুইয়া কাৎরাইতেছেন। তারা-ঠাকরুণ কল-ঘরে গিয়াছেন। হঠাৎ হস্তদন্ত হইরা তিনি ছুটিয়া ঘরে ঢুকিলেন, "ওগো তোমার শুণের বোনঝির কাণ্ড দেখ গে।"

মাসীমা চকিত হইয়া উঠিয়া বসিয়া বলিলেন, "কি ক:রছে সে?"

তার) বলিলেন, "আঁশ হেঁসেলে ব'সে ছাঁচড়া দিয়ে পিণ্ডি গিলছে।"

"ওমা, সে কি গো।" বলিয়া মাসীমা বিহ্যুদ্বেগে উঠিয়া পড়িলেন। ছুটিয়া গিয়া নবহুর্গার পিঠে এক লাখি মারিয়া বলিলেন, "এ কি হচ্ছে লা শতেক খোরারী, মুখপুড়ী ? সকলের নাম ডোবালি '"

নবহুৰ্গা ভাতের গ্রাস মুথে তুলিতে তুলিতে বলিলেন, "আমার ভাবনা যথন কেউ ভাবলে না মাসি, আমিই বা তাদের ভাবনা অত কেন করতে বাই?"

মাসী বলিলেন, "নিজের পথ দেখ বাছা। এ-বাড়িতে ও-সব অনাচার সইবে না।"

নবহুর্না ধারে সুস্থে থাওয়া শেষ করিয়া বলিলেন, "তা ত দেখবই গো। খেটেই বখন থাব, তখন থাটুনি আর থাওয়া-হুটোই যাতে ভালমতে হয়, তা ত দেখতে হবে। বসে থাকার ব্যবস্থা যদি কেউ ক'রে যেত তাহ'লে তার জ্ঞেন্ড বিদে বসে থাকতাম।" বলিয়া উঠিয়া গিয়া নিজের পোটলা-পুটলি বাঁধিতে বসিয়া গেলেন।



চীনের কৃষি ও কৃষক-পরিবার

শ্রীদেবেজ্রনাথ মিত্র

ভারতবর্ষের মত চীনও ক্লি-প্রধান দেশ। ইহার লোকসংখ্যা মোটামুটি চল্লিশ কোটি; তন্মধ্যে শতকরা প্রাণী
জন লোক চাথ-বাস করিয়া জীবিকা নির্দাহ করে।
প্রাক্তপক্ষে চীন দেশের কথা ভাবিতে গেলে ইহার
ক্ষমতাশালী সমাটদের কথা, জ্ঞানী বাক্তিদিগের কথা,
রাজনীতিবিশারদদিগের কথা কিংবা গৃদ্ধবিদ্যা-অভিজ্ঞ
পণ্ডিতদিগের কথা মনে আ.স না; প্রথমেই মনে
আসে সেই দেশের অসীম পরিশ্রমণীল ও গুড়ুত মিতবারী
বিপুল ক্রফশ্রেণীর কথা।

আমাদের দেশের ক্যকদিগের মত চীন দেশের ক্ষকদিগেরও কুদ্র কুদ্র কোত, তাহাদের ক্ষি-পদ্ধতিও
ভারতের ক্ষ্মি-পদ্ধতির মতই অতি পুরাতন, ক্ষ্মিযথাদিও সাবেক ধরণের ও নিতান্ত সাধারণ রকমের।
গরভ-চালিত ভল্না, কাঠের লাঙ্গল, ১০ ইঞ্চি প্রশস্ত
কোদালীই তাহাদের প্রধান ক্ষ্মি-যথ; তাহারা বিদেশ রাদায়নিক সারের ধার ধারে না; নিজেদের প্রস্তুত সারই
ভাহাদের প্রচুর শস্তু উৎপাদনে সাহাবা করে।

বান্তবিক চাঁনে দেশের ক্বকেরা নিজেদের অসীম পরিশ্রামের ও অভিজ্ঞতাম্লক জ্ঞানের দ্বারা কি উপায়ে তাহাদের বিপুল জনসংখার গ্রাসাচ্চাদন নির্দ্ধাহ করে, তাহার বিবরণ পড়িলে আশ্চর্যা হইয়া বাইতে হয়। কিছু দিন পূর্বে আান্ ব্রিছ্ বেতারের সাহায়ে চীন দেশের ক্থক ও ক্ষক পরিবারের একটি প্রশার ও শিক্ষাপ্রদ বিবরণ দিয়াছেন।

অধ্যাপক টনি চীন দেশের ক্রুষকদিগের ভীষণ গোঁড়ামি দম্বন্ধে মন্তব্য করিয়াছিলেন; তিনি বলিয়া-ছিলেন বে, চীনের ক্রুষকেরা ভাহাদের ক্রমি-পদ্ধতিতে ন্তন কোন উন্নত প্রণালী পচলন ক্রিতে একেবারেই নারাজ। কিন্তু আন্ ব্রিজ্ বলেন যে, উহাদের এইরূপ গোঁড়ামি ও নৃতন কোন ক্রি-প্রণালীর প্রবর্তনের অনিচ্ছার গথেপ্ট কারণ আছে; তিনি বলেন, জামরা তাহাদিগকে কি শিথাইতে পারি? তাহারা চার হাজার বংসর ধরিয়া তাহাদের পুরুষানুক্রমিক পরীক্ষিত রুষি-পদ্ধতি অবলম্বন করিয়া বিশেষ সফলতার সহিত চায্বাস করিয়া আসিতেছে। সংবাদপত্তের ভাষায় বলা হয়, "চীন দেশের অতি বিপুল জনসংখ্যা" (China's teeming millions)! চীনের ক্র্যকেরা ক্রিরূপে এই বিপুল জনসংখ্যার আহার ধ্যোগায় তাহার মোটাম্টি আভাস ভানিলেও বিশ্বিত হইতে হয়।

উত্তর-চীনের অন্তর্গত সাণ্টুং প্রদেশের ৭॥ বিঘা আয়তনের একটি কৃষিপ্তেত্র হইতে সেই দেশের একটি পরিবারের বার জন লোক, একটি গরু, একটি গাধা এবং জুইটি শুকরের থাদ্যের সংস্থান হইয়া হিসাব হইতে দেখা নায় নে, সেখানকার ১২০ বিঘা জমি ১৯২ জন লোকের আহার যোগাইতে পারে, এর্থাৎ কর্ষিত জ্বমির প্রতিবর্গ-মাইলের দ্বারা ৫০৭২ জন লোক প্রতিপালিত হয়। অপর একটি ক্লবিক্ষেত্র, মহার আয়তন ৫ বিনা মাত্র, তাহা দারা একটি পরিবারের দশ ক্ষন লোকের অন্ধ-বন্ত্রের সংস্থান হয়; এই হিসাব হইতে দেখা যার যে, কৰ্ষিত জমির প্ৰতি বৰ্গ-মাইলে ৩৮৪° জন লোক প্রতিপালিত হয়। চীন দেশে এইরূপ হাজার হাজার ছোট ছোট ক্ষফিক্ত আছে; এই ছোট ছোট ক্ষষি-ক্ষেত্ৰগুলিই মালিকদিগকে তাহাদের খাওয়া-পরার অভাব হইতে এত দিন বাঁচাইয়া রাধিয়াছে। আচার্য্য প্রকুল্লচন্দ্র রায় তাঁহার "মকভূমিতে সোনা ফলন" প্রবন্ধে চীন দেশের ক্লযকদিগের আয়ের যে হিসাব দিয়াছেন তাহাতে দৈখিতে পাওয়া যায় যে, উহারা বৎসরে এক একর জমি হইতে ১৬০ হইতে ২০০ ডলার পর্য্যন্ত উপায় করে; এক ডলারের মূল্য তথন প্রায় টাকা ছিল, তাহা হইলে দেখা যাইতেছে এক

জমি হইতে চীনের ক্ল্যকেরা অন্ততঃ ১৬•্ টাকা আর করে।

চীন দেশের ক্লাকেরা কৃষি-কার্য্যের জন্ত কিরূপ অভূত পরিশ্রম করে ত'হা উত্তর-চীনের অন্তর্গত চিহ্লি ও সাট্টুং প্রাদেশের রুষকগণের গৃই-একটি কার্য্যের বিবরণ হ**ংতে**ই স্পষ্ট বুঝা নাইবে। ক্ববি-কার্য্যের পক্ষে অত্কূল অবহাওয়া গতি প্রোজনীয়; এই সম্বন্ধে উত্তর-গীনের ক্বাৰুগণকে দৌভাগাবান ব**লা** যাইতে পারে। প্রবল ঝড়-ঝাপটার প্রাত্তীব দেখানে নাই; দেখানকার বার্ষিক রৃষ্টিপাতের পরিমাণ থুব কম, মাত্র ২৪ ইঞ্চি; ইহার মধো বংসরের চারি মাসের মধোই (জুন, জুলাই, আগতি ও সেপ্টেম্বর) অধিক পরিমাণে বৃষ্টিপাত হয়। এই চারি মানের রৃষ্টিপাতের গড় ১৭ ইঞ্চি। এই অঞ্চলের আবহাওয়া পড়ির কাঁটার মত অনির্দিষ্ট ও সঠিক। কথন কিরূপ অবিহাওয়া হঠবে তাহা সেথানকার রুণকেবা পর্বে হইতেই নিশ্চিতরপে জানিতে পারে। অসময়ে অতি-বৃষ্টির জ্ঞ তাহাদের কদল না হইবার আশক্ষা থাকে না: কিংবা শীতকাশে জমি মতিরিক ভিজা থাকার জন্ম লাক্ষণ দেওয়ারও অপ্বিধা ঘটে না। ভালা ও মিলেট্-জাতীয় শস্ত এইরূপ আবহাওয়ার উপযুক্ত বলিয়া তাহারা এই ত্ইটিকে প্রধান থান্ত-শস্ত হিসাবে উৎপন্ন করে; ইহা ছাড়া ইহারা নাস্পাতি, খ্বানী ও বিলাতী গাব্-জাতীয় এক পকার কলের চায় করে। গম, চীনাবাদাম ও মিঠা আলু সাহাব্যকারী ফসল হিসাবে জন্মায়।

চীনের ক্যকের। বিদেশা রাসায়নিক সার ব্যবহার না করিয়াও একই জমি হইতে চারি হাজার বৎসর ধরিয়া দথেপ্ত পরিমাণে শশু উৎপাদন করিতেছে। কিন্তু আমেরিকার যুক্ত-রাজ্যে একই জমি এক শত বৎসর চাব করিবার পরেই প্রচুর পরিমাণে রাসায়নিক সার প্রয়োগ করিয়া সেই জমি হইতে শশু উৎপাদন করা আবগুক হইয়াছিল। চীন দেশের ক্ষকেরা ক্রমি-কার্য্যের প্রধান প্রধান নিয়মগুলি বিশেষ ভাবে আয়ন্ত করিয়াছে। তনাধ্যে পর্যায়ক্তমে শশুউৎপাদন ও শশু-মিশ্রণ, ক্রমিতে সর্ক্ত সার প্রয়োগ এবং সকল প্রকার আবর্জ্জনা হইতে সার প্রস্তুত বিশেষ উল্লেখবোগ্য; তাহারা অতি দক্ষতার সহিত একই জমিতে অনেক

প্রকার শশু জন্মায়। শীতকালে ২৮ ইঞ্চি অন্তর সারি করিয়া গম জন্মাইরা থাকে; বসন্তকালে সেই গমের মাঝে মাঝে মিলেট্-জাতীয় শশু বপন করে; গম উঠাইয়া শিম-জাতীয় শশুর আবাদ করে; আবার মিলেট্-জাতীয় শশু কাটার পর শিম-জাতীয় শশু পাকে। এইরূপ ভাবে একই ক্ষেত্রে সারি করিয়া নানাবিধ শশুরে আবাদ করিলে, সকল প্রকার শসোরই ফুলর রূপে যত্ত্ব ও পরিচ্গা করা সহজ হয়। ইহার কলে জমি বেশ আল্গা থাকে এবং তংহার জন্ম জন্ম ক্ষেত্র পাকে। শসাক্ষেত্রগুলি রাজামহারাজার ফুলর ফুলর ক্লবাগানের মত পরিষ্কার-পরিচ্ছর দেখায়। শহুরের নিকটবর্ত্তী স্থানে অন্যান্ত শশুর সহিত তরি-তরকারীর বাগানও থাকে। পিরাজ, আলু, বাধা-কিপি, মূলা, সালাল্ প্রেকৃতি জনল একটির পর একটি অতি নিপুণতার সহিত আবাদ করে।

চীনের ক্বকেরা বিশেষ ভাবে জানে যে কোন প্রকার শস্ত রোপণ করিলে জমি হইতে ঐ শস্ত যে-সকল খাদ্য গ্রহণ করে, সেই দক্ত খাদ্য পুনরায় জমিতে সরবরাহ করা একান্ত আবশ্যক। ১৮৮৮ গ্রীষ্টাব্দে পাশ্চাত্য বৈজ্ঞানিকগ্র বহু গবেষণার পর প্রকাশ করিলেন যে, ভাটিপ্রাদ শস্ত্র (বেমন, ধ্রঞ্জে, মটর, শিম ইত্যাদি) আবাদ করিলে মাটিতে যবক্ষারজ্ঞানের পরিমাণ বৃদ্ধি পায়। কিন্তু চীন দেশের ক্ষকগণ ইহার বহুকাল পূর্ব্ব হইতেই তাহাদের পুরুষাত্ত্রুমিক অভিজ্ঞতা ও পর্যাবেক্ষণের দারা এই বৈজ্ঞানিক তথ্যটি জ্বানিত এবং তদকুসারে অতি পরিশ্রমের সহিত এই পদ্ধতিটি তাহারা পাশন করিয়া আসিতেছে। তাহারা কাঁচা অবস্থায় শুটিপ্রাদ শস্ত কাটিয়া আনিয়া গর্ক্তের ভিতরে স্তরে স্তরে সাজাইয়া, থাল বিলের কাদা মাটি কিংবা ক্ষেত্রের নিম্ন স্তরের ভিজা মাটি দিয়া স্তরগুলিকে ঢাকিয়া দেয়। পরে কিছুদিন অন্তর-অন্তর স্তরগুলিকে বার-বার ওলট-পালট করিয়া দেয়। ইহার ফলে শুরের দকল অংশের কাঁচা গাছগুলি সমান ভাবে পচিয়া মূল:বান সারে পরিণ্ড হয়। ইহা ছাড়া তাহারা সকল প্রকার আবর্জনা ছোট ছোট গর্ত্তে ফেলিয়া উহার সহিত মাটি ও ছাই মিশাইয়া দেয়। এই আবর্জনাও কিছু দিন পরে সম্পূর্ণভাবে পচিয়া উৎকৃষ্ট সারে পরিণত হয়। জীবজন্তুর মলমূত্রাদি

ঘাৰতীয় অপৰিত্ৰ পদাৰ্থের কোনটিই অপচয় করে না, সমস্তই মূল্যবান সাবে পরিণত করিয়া কৃষিক্ষেত্রে ব্যবহার করে। তাহারা কি ভাবে জীবজন্তর মলমূত্র সংরক্ষণ করে তাহা জানিলে আশ্চর্য্য হইতে হয়। হুইটি গ্রামের মধ্যে বে অপ্রশন্ত স্থান থাকে, তাহার মাঝে মাঝে মাটি চাঁচিয়া শইয়া ইহার। এক-একটি অগভীর খাত প্রস্তুত করে। সেই খাতের তুই ধারে সাধারণ ঘাস-জঙ্গল জন্মাইয়া বেড়া দেয়। পথিকেরা যথন উহার নিকটকর্ত্তী পথ দিয়া উট গাধা প্রভৃতি জল্প-ভানোয়ার লইয়া যায়, তথন ঐ সকল থাতের মধ্যে জন্ত-জানোয়ারগুলিকে ছাডিয়া দেয়। তথন ঐ পশুগুলি ঐ খ!তে মলমত্র ত্যাগ করে। পরে ঐ মল-মুত্রমিশ্রিত মাটি থাত হইতে উঠাইয়া সারব্ধপে ক্ষেত্রে প্রয়োগ করে। ইহা হইতে দেখা শায় যে, দেশের সর্বসাধারণেই দেশের রুণি-কার্য্যের উন্নতির জন্ম পরস্পর সহায়তা করে। ক্রবি-কার্যোর উন্নতির জন্ম তাহাদের চেষ্টার কথা বাস্তবিকই অন্তত! চীনের কুবকদের ২রের মেঝে কাঁচা, সেই জন্ত মেঝের মাটিতে যুবকারজান সঞ্চিত হয়। মাঝে মাঝে তাহারা মেঝের তিন ইঞ্চি পরিমাণ মাটি চাঁচিয়া সাররূপে ক্ষেত্রে প্রয়োগ করে। কি অন্তুত জাতি! কি ভাবে নিজেদের পরিশ্রম ও ৭ দ্ধির দারা জমির উর্বরতা-শক্তি রক্ষা করিয়া আসিতেছে !

চীন দেশের ক্বযি-কার্য্যের প্রধান গোপন কথা এই যে, চীনের ক্বয়েকরা ক্বয়ি-কার্য্যের দ্বারা কি ভাবে তাহাদের এই জনবহুল দেশের অন্ত্রসংস্থান করিতে পারে, তাহা অতি কঠোর ভাবে শিথিয়াছে। সেই শিক্ষা আর কিছুই নাহ, প্রত্যেকটি জিনিষ যাহা গান্তে, জালানি কার্যে অথবা সার্ত্রপে পরিণত করিতে পারা বায় তাহার অপচয় না করিয়া কাজে লাগাইবার জন্ম অসীম পরিশ্রম করিতে কথনই নারাজ হয় না।

কৃথি-কার্য্যের জন্ত ক্ল্যক্দিগকে বেমন অধিক পরিশ্রম করিতে হয়, ঘর-সংসারের কাল্প করিবার জন্তও তাহাদিগকে সেইরূপ কঠোর পরিশ্রম করিতে হয়। উত্তর-চীনে বড় বড় গাছপালা নাই বলিলেই চলে। সেই জন্ত তাহাদের জালানি কাঠের অভাব খুব বেশী। কয়লা কিংবা কাঠ-ক্ষ্মলা কিনিয়া ব্যবহার করা তাহাদের ক্ষমতায় কুলায় না। অতি পরিশ্রমের সহিত তাহাদিগকে জালানি কাঠ সংগ্রহ করিতে হয়। তাহারা দেওধান-জাতীয় গাছের শক্ত সতে আট ফুট লম্বা কাগুণুলি বেড়ার জন্ত এবং ঘরের চালের ছাউনীর জন্ত ব্যবহার করে। আবার এই সকল গাছের শিক্ড় ও ফলের খোদাগুলি শুকাইয়া রান্নার কাজে লাগায়। তাহারা ভূট্টাগাছের কাগু ও পাতা ছোট ছোট করিয়া কাটিয়া গত্বকে খাওমায়।

চীনের ক্বাকেরা শয়ন-গৃহ গরম রাধিবার জন্ত বরের মধ্যে কাঁচা উনান প্রস্তুত করে। ঐ উনানের চিমনীর ইটও কাঁচা। এই চিমনীগুলি সাধারণতঃ চারি বৎসর পরে ফাটিয়া বায়। সেই সময় ঝুলসমেত চিমনীর ইটগুলি গুঁড়া করিয়া ক্ষেত্রে ব্যবহার করে। উনানের ছাইও সার-হিসাবে জমিতে দেয়। ভূটা ও মটর গাছের কাও ও শিক্ড ইত্যাদি জালানি রূপে এই উনানে পোড়ান হয়। সেই স্বত্ত তাহারা এই সকল শস্য কাটিয়া আনে না, শিক্ডসমেত টানিয়া ভূগিয়া আনে। ইহা হইতেও বুঝা ঘায় যে, চীনের ক্র্যকেরা কে!ন জিনিষ অপচয় করে না। জালানি কাঠ সংগ্রহের জন্ত ক্রমকদের স্ত্রীলোকেরা ও বালক বালিকাগণ প্রক্রমণিকে যথেই সাহাব্য করে। তাহারা নীল রঙের ফ্লের ফ্লের ট্লা পোষাক পরিয়া অতি আনন্দের সহিত পাহাড়-পর্বত ও রান্তাঘাট হইতে ভূটা ও মটর গাছের শিকড় কাও ইত্যাদি সংগ্রহ করিয়া আনে।

চীন দেশের ক্বকদের খাদা প্রধানতঃ নিরামিব। তাহারা মাংস অতি অল্প পরিমাণে থার; ত্ব মোটেই থার না; গম ও ভ্টা হইতে প্রস্তুত ময়দা বা পিঠাই তাহাদের প্রধান থাদা। ইহার সঙ্গে মিলেট্-জাতীয় শস্ত সিদ্ধ করিয়া ভাতের মত থার। এই থাদ্যের সহিত সব্জী চাটনী ইত্যাদি ব্যবহার করে, কিন্তু লবণ থার না। এই সাদাসিধে-ধরণের খাদ্য খাইয়াও তাহাদের স্বাস্থ্য অতুলনীয়। ক্রীলোকগণ স্করী ও স্বাস্থ্যবতী, বালক-বালিকাগণ পৃষ্টকায়, লাবণ্যময় এবং সর্ব্বদাই ক্রীড়াসক্ত।

চীন দেশের রুষকদিগের মত তাহাদের স্ত্রীলোকেরাও কষ্টসহিষ্ণু। স্ত্রীলোকেরা বাজারে গিয়া খাদ্যত্র্ব্যাদি ও গৃহস্থালীর অস্তান্ত জিনিষ কিনিয়া আনে। তাহারা হাসি-মুথে খাল ও নদীতে কাপড়-চোপড় কাচে, যাঁতা চালাইয়া ময়দা প্রস্ত করে, গ্রামের কৃপ হইতে কাঁথে বহিয়া সকাল-সন্ধায় জল আনে, ক্ষেত্রে কাজে পুরুষদিগকে সাহায্য করে এবং ফলের বাগান হইতে নানাবিধ ফল তুলিয়া আনে।

চীন দেশের স্থীলোকেরা সেলাইয়ের কাজেও বিশেষ
পটু। যতদিন পর্যান্ত সম্ভব ততদিন পর্যান্ত তাহারা
পোষাক-পরিচ্ছদশুলি পূনঃ পুনঃ দেলাই করিয়া ব্যবহার
করে এবং যথন ঐগুলি একেবারে ছিঁড়িয়া যায় ও সেলাই
করিয়া ব্যবহার করিবার সম্পূর্ণ অম্পযুক্ত হইয়া পড়ে,
তথন উহাদিগকে জালানি হিদাবে কাজে লাগায়। পরিশেষে
উহা হইতে যে ছাই পাওয়া যায় তাহাও নই না করিয়া
জানিতে প্রয়োগ করে।

কন্কনে শাতেও চীনেরা তাহাদের ঘরদোর গরম রাখিবার জন্ত সদাসর্বদা আগুন জালে না। তাহাদের নাতকালে ব্যবহারের উপগ্রক পোধাক আছে বটে, কিন্তু উহা খুবই সাদাসিধে। উহারা মোটা ওভার-কোট ব্যবহার করে না; উহার পরিবর্ত্তে স্থতীর পোধাকের নীচে তুলার জামা ব্যবহার করে। এই জন্ত সকল সমন্ত্রই তাহাদের পোযাক পরিচ্ছদ স্থানর ও হালকা দেখার। ভারী পোধাক না থাকাতে সকল কাজ অনায়াদে করিতে পারে।

াদিও চীনের ক্ষক-পরিবারকে জীবনধারণের জন্ত অতি কঠার পরিশ্রম করিতে হয়, তথাপি উহারা সন্তান-সন্ততিগণকে যত্বের সহিত পালন করে। ছেলেমেয়েদের প্রতি উহাদের ব্যবহার অতি মধুব। প্রত্যেক প্রামেই কইপ্ট, পরিশ্রমী ও প্রকুল্ল বালক-বালিকাদিগের দল দেখিতে পাওয়া বায়। ছোট ছোট মেয়েরা রঙীন ফিতায় চুল বাধিয়া এব: গালে লালচে রং মাধিয়া রাস্তাঘাটে ছুটাছটি করিয়া বেড়ায়। খাবারওয়ালা দেখিলেই তাহারা আনন্দে নাচিতে থাকে এবং ছুটিয়া গিয়া ছই এক পয়সার খাবার কেনে। ছেলেমেয়েদের লেখাপড়া শিক্ষার প্রতিও চীনের ক্ষমকেরা অমনোযোগী নহে। প্রায় সকল প্রামেই স্কুল আছে। স্কুলের বাড়ি জমকালো নয়, সাদাসিধে ধরণের, কিছ দেখিতে স্কুলর। প্রীয়কালে সকাল ছয়টার সময় ছেলেমেয়েরা দল বাধিয়া প্রাম্য সন্ধীত গাহিতে গাহিতে স্কুলে যায়। স্কুলে বসিবার জন্ত বেঞ্চ বা টুল নাই;

ঘণ্টার পর ঘণ্টা ছাগলের চামড়ার আসনে বসিয়া লেখা পড়া করিতে হয়।

চীন দেশের অল্পসংখ্যক কৃষকই লিখিতে ও পডিতে পারে। তাহাদের প্রধান আমোদ প্রাণভরা আমেরিকার সিগারেট এবং লোকের মুথে মুখে সকল থবর জানা। মাটিই চীনের রুষকদের প্রধান সঙ্গী ও শিক্ষক। মাঝে মাঝে যুদ্ধ-সম্পর্কিত তুঃখ-তুর্নপা ছাড়া রাজনীতি যে কি জিনিয় তাহারা জানে না। তাহারা যে দেশের থবর বিশেষ রাথে না, তাহা একটি কথা বলিলেই বুঝা গাই ব। চীন দেশে প্রজাতর প্রচলিত হইবার পনের বংসর পরেও পিকিং শহর হইতে ২০০ মাইল দূরবর্তী স্থানের ক্ষকগণ চীনের স্থাটের থবর জানিবার জন্ত কৌতৃহল প্রকাশ করিত। সকল অবস্থাতেই তাহাদের মনের তৃপ্তি দেখিলে আশ্চর্যা হইতে হয়। তাহাদের মধ্যে তুঃখ-দারিদ্রা বে নাই, তাহা নহে, কিন্তু তাহার মধ্যে কিছুমাত্র মলিনতা ও অবসাদ নাই। নৈতিক ক্রটির জন্তই মলিনতা আসে এবং হতাশা. ত্ব-বিপদে হাল ছাড়িয়া দেওৱা ও যা হয় হউক এই ভাব উপস্থিত হয়। ীনের রুষকদিগের মধ্যে এই সকল নৈতিক ক্রটির কোন লক্ষণ দেখিতে পাওয়া নায় না। ভাছার। কোন বিবয়েই হাল ছাড়িয়া দেয় না, কোন কাজকেই মন্দ হইতে মন্দতর অবস্থায় পৌছিতে দেন না, প্রাণপণে উহাকে স্ফল করিতে চেষ্টা করে। কৃষিক্ষেত্রে কাজ করিয়া তাহারা এই কঠোর সভা ও শিকা লাভ করিয়াছে এক শিক্ষা দ্ম স্ত জাতির মধ্যে ব্ৰুমূল হুট্য়া কোন জিনি:যব **এপ**চয় ভাহাদিগকে অত্যন্ত আঘাত দেয়। অদম্য পরিশ্রম, অসীম উৎসাহ, প্রকৃতির সহিত সারা জীবন যুদ্ধ এই প্রাচীন জাতিকে মান্থ করিয়া তুলিয়াছে।

চীনের কৃষক-পরিবারের উপরোক্ত বিবরণ হইতে সহজেই বৃশ্ধা যাইবে বে, কৃষিকার্য্যে আধুনিক পাশ্চাত্য প্রণাদী অবশন্ধন না-করিয়াও ভাহারা কেবল মাত্র কটোর পরিশ্রম ও ভাহাদের অভিজ্ঞতা-লব্ধ ব্যবহারিক জ্ঞানের ন্বারাই ঐ দেশের চল্লিশ কোটি লোকের অন্নবন্ত্রের সংস্থান করিতেছে। আমাদের দেশের কৃষকদের মত ভাহারা অদৃইবাদী ও উৎসাহহীন নহে। সকল কাজই ভাহারা

সম্পূর্ণ আশা ও আন ন্দর সহিত সম্পন্ন করে। এ-বিষয়ে মনের তৃপ্তিই তাহাদের প্রধান সহায়। তাহারা যে ভারতবর্ধের ক্লয়কদি গের মত পুরাতন ক্লয়ি-পদ্ধতি অনুসারে

অল্প পরিমাণ ক্রমি চাষবাদ করিয়া যে যে কারণে অপেক্ষাকৃত সচ্ছল অবস্থায় আছে, তাহা ভারতের ক্র্যকদিগের অন্তক্রণের যোগা।

মুক্তি

শ্ৰী আশালতা দেবী

२৮

মধ্যে ক্ষীণ দীপের আশো। বিছানার পায়ের আসিয়া পড়িয়াছে। একফালি জ্যোৎসা চলুকান্ত শ্বায় শুইয়া ছিলেন। তাঁহার শরীর পূর্বের চেয়েও ক্ষীণ। মুখ পাত্র। নির্মালা শিয়রের কাছে বসিয়া তাহার মাথার চুলে হাত বুলাইতেছিল। তাহার চোথের কোনে কালিমার রেখা, মুথের ভাবে ধীর নিশ্মলার সহিত এথনকার আগেকার নিৰ্মাণার অনেক তফাৎ। তথন তাহাকে দেখিলে মনে হইত, সে যেন অনাঘাত পুপের মত কুত্মতুকুমার। তথন তাহার ঘনগল্লব চক্ষুর মধ্যে ছিল কেবল স্বচ্ছ এখন সেই কালো চোষে বেদনার নিবিড় সজলতা এবং করুণার স্পিতা আসিয়া নামিয়াছে। স্ব জড়াইয়া আগেকার নিমালায় বেটুকু অপূর্ণতা ছিল এখন আর তাহা নাই। তাই তাহার মুথের কাস্তি নানা তুশ্চিন্তায়, রোগার সেবায়, রাত্রিদ্বাগরণে মান হইলেও রূপের প্রভা আরও পরিপূর্ণ, পরিফুট হইয়াছে। চন্দ্রকান্তের অসুথ যে সারিবার নয়, এখন সে কথাটা ভাঁহার পরিবারের সকলের কাছেই দিনের আলোর মত স্পষ্ট হইয়া গিয়াছে। বি:শ্য করিয়া কয়েক দিন হইতে তাঁহার শরীরের অবস্থা খুবহ পারাপ হইরাছে। কিছুক্ষণ বিছানায় এপাশ-ওপাশ করিয়া তিনি ডাকিলেন, 'নির্মাণ!'

'কি বলছ বাবা?'

'আমি বেশ বুঝতে পেরেছি আমি আর বেশী দিন বাচব না। কিন্তু শাস্ত হয়েই আমি বেতুম, কেবল শাস্ত হ'তে পারছি নে তোমার কথা ভেবে। সেই এতটুকুটির থেকে আর কাউকে তোমার কাছে আসতে দিই নি। নিচ্ছেই তোমাকে ঘিরে ছিলুম। আজ আমার ভ্লটা নে হয়েছে কোন্থানে, তা বেশ স্পষ্ট ক'রে বুঝাত পেরেছি।'

নির্থালা চোথের জ্বল সংবরণ করিয়া লইয়া স্থিরকর্চে কহিল, 'তে:মার আবার ভূল হয়ে:ছ কোন্থানে বাবা ? যদি আমার জীবনে কোগাও গোল বেধে থাকে সে আমারই দোয়। কিংবা আমার ভাগ্যের দোষ।'

'না না, তা নয়। তোমার মত ভাল কারও ভাগা নয়
মা। আমার ভূলের কথাটা কেন আজকাল প্রায়ই আমার
মনে হয় জান, আমি নিজের জীবনের সমস্তটাই আগাগোড়া
এখন দুর থেকে দর্শকের মত দেখতে পাই। আগো এমন
বিচ্ছিল্ল হয়ে দেখতে পেতৃম না। তাই অনেক কথার অর্থই
অপ্পপ্ত ছিল। কিন্তু মৃত্যু বত এগিয়ে আসছে, ততই এখন
আমার কপ্তের সঙ্গে আমার খেন বিচ্ছেদ হয়ে আসছে।
কোন জিনিযের মধ্যে জড়িয়ে থাকলে তার ভালমন্দ তেমন
বোঝা বায় না। কিন্তু অনেকটা দূর থেকে দেখলে তার
ভূলভ্রান্তি বাকাচোরা সবই চোথে পড়ে, আমার অবস্থা
হয়েছে এখন সেই রকম।'

'বাবা, আজ্বকাল তুমি এত বেণী কথা বল কেন ?'

'আর কারও সঙ্গে ত বলিনে মা। তোমার সঙ্গেই বলি। আমার ভূলের কথা তোমার কাছে স্বীকার করে না গিয়ে, তার সংশোধনের উপার ঠিক না ক'রে আমি ত মনে শংস্থি পাব না।'

'আৰু তুমি ক্ৰমাগত ঐ একই কথা বলছ।'

'হা, আজ ওই কথাটাই মনে বেশী বাজছে। আস:ল কি হয়েছে জান নির্মাণা? আমার জীবন একদিক <u>থৌব'ন</u> নানাদিক সংসারে থেকে ব্যৰ্থ। থেকে নানা আগাত পেয়েছি। সে আগাতে স্বারই দিক থেকে মনকে গুটিয়ে নিয়ে এনে নিজের নিঃসঙ্গতার মাঝে আপন মনে ছিলুম। তার পরে পেলুম তোমাকে। বঞ্চিত, ক্ষধিত চিত্তের সমস্ত ব্যগ্রতা নিয়ে তোমাকে জড়িয়ে ধরণুম। তুমি যে কেবল আমার বাৎসলোর কুধা মিটিয়েছ তাত নয়, তুমি আমার বার্থ জীবনকে আশ্রয় দিয়েছ। আমার সমস্ত অসাফল্য এবং একাকীত্ব নিয়ে তোমাকে আবেষ্টন করেছিলুম।'

'তাতে কি হয়েছে বাবা ৈ তুমি যদি আমার কাছে কিছু পেয়ে থাক, আনি কি তোমার কাছে তার চেয়েও কিছু বেশী পাই নি ?'

'তার উত্তর ত আমি দিতে পারব না মা। কিন্তু আমি আমার সর্বস্থ দিয়ে তোমাকে এমন করে না জড়ালে হয়ত তোমার মনের বিকাশ এত অসম্পূর্ণ হয়ে থাকত না। তুমি সংসারকে, সবাইকে চিনতে শিখতে। আমি তোমাকে নতই ভা**লবাসি,** এ-কথাটা কিছুতে**ই অস্বীকা**র করতে পারব না নিম্মলা, যে, জীবনের পথে একটা বাঁকের কাছে গিয়ে তোমাতে আমাতে ছাড়াছাড়ি করতেই হবে। বাইরের ছাড়াছাড়ি নয়, জীবন-মরণের যেথানে যত গ্রন্থিতে গ্রন্থিতে বাঁধন পড়েছে সে সমগুই আলগা করতে হবে। তা নইলে যে তুমি তোমার জীবনের পরম কল্যাণকে খুঁজে পাবে না। আর তোমাকে তোমার আনন্দিত প্রতিষ্ঠিত না-দেখতে পেয়ে **সংসারের** শিথরদেশে আমিও মনে মনে শাস্তি পাবনা। শকুস্তলাকে তার নবজীবনের পথে ঋবি কথ খানিকটা দুর অবধি আগিয়ে দিয়েছিলেন, কিন্তু তার পরে আর ত তাঁর অগ্রসর হওয়া চলে নি । তারপর থেকে সেই তাপসকন্তার জীবনের বিচিত্র জটিশতা, অপমান, বেদনা, সাধনার পালা—দে সমস্তই যে তাঁর একলার সামগ্রী ছিল। এই কথাটাই কতদিন থেকে আমি ভাবছি মা।'

'তৃমি যা বলতে চাইছ তা আমি ব্যুতে পারছি। কিন্তু তোমার এই হুর্বল অবস্থায় বেশী কথা ব'লো না বাবা।'

'বেলা কথা কম কণায় আমার আর কি ক্ষতিবৃদ্ধি করতে পারে, নিশ্মলা কৈন্ত এ-ও আমি ভাবছি বে অমার বেলা দেরি নেই। এবারে আমি তোমাকে মুক্তি দিয়ে গাব। কিন্তু দে মুক্তি বেন নিখল না হয়। এবারে বেন তুমি নিজের মাঝে নিজেকে খুঁজে পাও।'

'অমন করে ব'লো না বাবা। আমার বড় কট হয়।'

মুরলী ঘরে ঢুকিয়া কহিল, 'নিধিলবাব্র সঙ্গে জামাইবাব্
এসেছেন।'

'কে ? থামিনী এসেছে!' চন্দ্রকান্ত অত্যন্ত চঞ্চল হইয়া উঠিলেন। 'তাকে এই ঘরেই একেবারে সোজা নিয়ে এস না।'

ভাক্তার বলিয়া গিয়াছিলেন রোগীর খরে বথাসভব কম লোক খেন আসে, আর তাঁহাকে কোন কারণেই খেন উত্তেজিত না-করা হয়। তাই মুরলী একটু ইতস্ততঃ করিতেছিল। এমন সমরে গেটের কাছে একটা মোটরের হর্ণ শোনা গেল। নিম্মলা জানালার কাছে মুথ বাড়াইয়া কহিল, 'ছোটদা, ভাক্তারবার্ এসেছেন, সঙ্গে ক'রে নিয়ে এস।'

'ডাক্তার চলে গেলেই ওদের এখরে নিয়ে আসছি।' বলিয়া মুরলী বাইরে চলিয়া গেল।

চন্দ্রকান্ত অতান্ত অস্থির হট্য়া কহিলেন, 'নিম্মলা মা, ভূমি একবার ওঘরে গাও।'

'এখনই যাব বাবা। ডাক্তার বাব্কে একবার কেবল তোমার টেম্পারেচারের চাটটা ব্ঝিয়ে দিয়ে যাব। আর ক্ষেক্টা কথা জিজ্ঞেদ করব।'

'না না, তুমি এখনই যাও।'

নিশ্মলা শান্ত চরণে বাহিরে চলিয়া গেল।

ত্য়ারের কাছে নিম্মলার শাড়ীর চওড়া পাড়টা দেখিয়া নিথিল তাড়াতাড়ি একটা অছিলা করিয়া ছাদে চলিয়া গেল। নির্ম্মলা আসিয়া স্থামীর পায়ের কাছে নত হইয়া প্রণাম করিল। বলিল, 'তুমি একটু ব'সো। গুঘরে ডাক্তার এসেছে। আমি এখনই আসছি। চায়ের জল চড়িয়েছে, কিছু না-খেয়ে বেও না বেন।'

তাহার মুখে মান সজল শান্তি। তাহার কথার, তাহার ভাবভঙ্গীতে মনে হইতেছে এত দিন যে যামিনীর সঙ্গে তাহার দেশা-সাক্ষাৎ হয় নাই, এত দিন যে এত স্রোত বহিয়া গেল, সে-সমস্ত যেন তাহার জীবনে কোন চাঞ্চল্যই আনে নাই। যামিনী মুগ্ধ হইয়া তাহার দিকে চাহিল। তাহার সমস্ত মন উদ্বেলিত হইয়া উঠিল। মনে হইতে লাগিল, তাহার একটা হাত চাপিয়া ধরে, ত্ই হাতে জড়াইয়া ধরিয়া অন্তাপের বিগলিত অশ্ত তাহাকে ভাসাইয়া দেয়। কিল্প সেই শান্ত বিবাদপ্রতিমার দিকে চাহিলে সমস্ত উচ্ছাস আপনা-আপনি শান্ত হইয়া আসে। মনে হয় যেন তাহার কাছে ঘাইবার উপায় নাই। নিজের চারিদিকে সে কোন্ এক সুদ্রতার বেইন দিয়া আপনাকে সকলের কাছ হইতে সরাইয়া রাথিয়াছে।

ধামিনী তথনও তাহার দিকে নির্ণিমেষ দৃষ্টিতে চাহিয়া-ছিল। নিম্মলা আবার কহিল, 'তুমি একটু ব'সো। আমি এথনই আস্ছি।'

সে চলিয়া গেল। নিথিল কিছুক্ষণ পরে ছাদ হইতে আসিয়া যামিনীকে উদ্দেশ করিয়া কহিল, 'তুমি তাহ'লে রাত্রিটা এখানেই থাকবে ত? আমি একবার চক্রকান্তবাব্র থবর নিয়ে বাড়ি ধাই।'

'থাকব।' থামিনী তন্ময় হইয়া কি যেন ভাবিতেছিল।
চমকাইয়া উঠিয়া কহিল, 'থাকব?' না না, আজ থাক্,
নিখিল। আজ আমার কেমন থেন ভয় করছে।'

'ভয় কিসের? পাগলের মত কি খা-তা বলছ? আসবে আর চলে যাবে? নিজের তুচ্ছ থেয়ালের জল্যে তুমি অনর্থক কত লোকের মনে কই দাও!'

না না, থেয়াল নয়। আজ আমি কিছুতেই থাকতে পারব, না নিথিল।' তাহার কণ্ঠস্বরে অত্যস্ত ব্যাকুলতা, ছেলেমানু: যর মত একটা অবুঝ ভাব। নিথিল অবাক হইয়া তাহার দিকে চাহিল।

যামিনী তাহার একটা হাত ধরিয়া টানিয়া কহিল, 'চল।'

'দাঁড়াও। অস্ততঃ খবর নিয়ে আসি চক্রকান্তবার্ কেমন আছেন। ডাক্তারে কি ব'লে গেল।'

'তবে তুমি যাও। ভালই আছেন নিশ্চয়। আমি ততক্ষণ রাস্তায় দাঁড়িয়ে অপেক্ষা করছি। নিখিল, তোমার পকেটে এলাচ আছে? ছোট এলাচ?' 'এলাচ ।'

'হাা, এলাচ। তুমি বুঝতে পারছ না, আজও বে আমি সন্ধ্যেয় ··· এখনও যে আমার মনে হচ্ছে মুথে গন্ধ রয়েছে। এ অবস্থায় ওর সামনে। না না, আজ নয় আজ নয়। অস্ত দিন।' যামিনী অত্যস্ত দ্রুতপদে সিঁড়ি দিয়া নামিয়া নীচে চলিয়া গেল।

বিমুঢ়ের মত ক্ষণকাল সেইদিকে চাহিয়া থাকিয়া নিথিল একটা নিঃখাদ ফেলিল।

নিশ্মলা বাবার বুকে মালিশ করিতেছিল। চক্রকান্ত অত্যন্ত ব্যস্ত হইয়া বারংবার বলিতে লাগিলেন, 'নিশ্মল মা, এবারে তুমি ওবরে যাও মা। রাত হয়ে যাচেছ।'

'হাা, এখনই যাব বাবা।'

মুরলী তাঁহার ঘরের ঘড়ীতে দম দিতে আসিয়াছিল।
চক্রকান্ত জিজ্ঞাসা করিলেন, 'কটা বাজ্বলা? বামিনীর
খণ্ডেয়া-দাওয়া হয়েছে ত? আজ তাকে এঘরে আসতে
বারণ ক'রো। রাত অনেক হয়েছে। সে নিশ্চয় ক্লান্ত।'

মুবলী কহিল, 'কে, জামাইবাবু?' তিনি ত তথনই চলে গেছেন। সে যে অনেক ক্ষণ হ'ল। চা ক'রে নিয়ে গিয়ে তাঁকে কত ডাকাডাকি করলুম। নিথিলবাবু বললেন, 'তাঁর বিশেষ জক্ষরি কি কাজ ছিল। আর এক মিনিটও বসবাব সময় নেই। আধার কাল আসবেন।'

চক্রকান্ত কিছুক্ষণ অসাড়ের মত পড়িয়া থাকিয়া তাহার পর বলিলেন, 'নিশ্মলা! এবারে তুমি যাও। আর আমাকে মালিশ করবার দরকার নাই।' নিশ্মলার কোনরূপ ভাবান্তর দেথা গেল না। সে সয়ত্বে ধীরে ধীরে তাঁহার বুকের বোতাম বন্ধ করিয়া দিয়া কহিল, 'বাবা, তুমি কিছু ভাবনা ক'রো না। সমস্ত ঠিক হয়ে যাবে।'

'সত্যি বলছ ? হাা, ঠিক হয়ে যাবে। আমি জানি ঠিক হবে। তার আর বড় বেলা দেরিও নেই। আমি বেদিন তোমায় মুক্তি দিয়ে যাব সেদিন থেকেই সমস্ত ঠিক হয়ে যাবে।' অর্ধেক তক্সাচ্ছয়ের মত বিজড়িত শ্বরে তিনি একই কথা বারংবার বলিতে লাগিলেন।

নির্ম্মলা তাঁহাকে আর বেশী উত্তেজিত করিবার ভয়ে আন্তে-আন্তে প। টিপিয়া টিপিয়া ঘর হইতে বাহির হইয়া গেল। ঘাইবার সময় আলোটা কমাইয়া দিয়া গেল।

শা, তুমি বুঝতে পারছ না এই রিট্রেঞ্চমেণ্টের (চাকরি চাঁটার) ধুমে আমার ঘদি চাকরি যায় তবে সংসার চলবে কি ক'রে?'—রান্নাথরের দাওয়ায় স্থালা বিদিয়াছিলেন। মূরলী ভাত থাইতে বিদিয়াছিল। মিট্মিটে একটি কেরোসিনের ডিবে জলিতেছে। ঘরে দীর্ঘ ছায়া ফেলিয়া তুই জনে বিদয়া আছেন। কাছাকাছি আর কেহ নাই। নিশ্মলা সদরে চক্রকান্তের ঘরে অংছে।

মুরলীর কথার উত্তরে সুশালা বলিলেন, 'আমি বুঝতে পারছি সব। কিন্তু কি করব বল ? অত টাকা আমি কোথায় পাব ? আমাদের আসল অবস্থাটা বে কি, সে ত তুমি নিজেও জান। তোমার দাদাদের ব'লে দেখেত ?'

'গাদের ওথানে হাটাহাটি ক'রে বে উত্তর পেয়েছি সে উত্তর তে¦মাকে বলতে প্রবৃত্তি হয় না।'

'ভবে ?'

मूत्रनी निःश्वाम (फॉनन।

আসলে ব্যাপারটা হইয়াছিল রিট্রেঞ্মেণ্টের ক্রন্ত মুরলীদের আপিদে কম্মচারী ছাঁটবার আয়োজন হইতেছিল। গাঁহার উপর বিবেচনা করিয়া দেখিবার ভার ছিল তিনি আকার-ইঙ্গিতে এমন ভাব দেথাইয়াছিলেন যে, হাজার-থানেক টাকা বুদ পাইলে তিনি সুরলীর নামটা অনাবশুকের লিঙে ফেলিবেন না। মুরলীর কশ্বতংগরতায় তাহাদের ফাম্মের যে বিভাগে সে কান্ধ করিত সেই বিভাগের যথেষ্ট উন্নতি হইয়াছিল। গত মাসে তাহার মাহিনাও বাড়িয়া বাট টাকা হইয়াছিল। কিন্তু সে মনে মনে জানিত তাহার এত জত উন্নতিতে আপিদের অনেক উপরওয়ালা কর্মচারী সম্ভুট ন'ন। যিনি টাকা চাহিয়াছিলেন তিনিও সেই দলের। এদিকে সে সবেমাত্র আই-এ পর্যান্ত পড়িয়াই চাকরিতে বছরথানেক হইল দকিয়াছে। এখন চাকরি গেলে সে কি করিবে, আবার কোথা দিয়া জীবন মুক্ত করিবে, এই ইকনমিক ডিপ্রেশনের দিনে, এই ব্যবসা-বাণিজ্যের মন্দার मित्न, व्यावात काथांत्र चारत चारत होकतित कन उत्मानाती ক্রিয়া ফিরিবে, এই সকল চিস্তায় আকুল হইয়া পড়িয়াছিল। তাহারই উপর আপিদের আয়ব্যয় এবং তহবিল মিলাইবার ^{ভার} ছিল। সে আপিসের তহবিল হইতেই মরিয়া হইয়া

টাকাটা শইয়াছিল। মনে করিয়াছিল মাস্থানেক পরে বধন হিনাব মিশাইয়া দিবার সময় হইবে তখন আর কোপাও টাকা না পাক, মায়ের গহনাগুলা আছে। এমন ব্যাপার শুনিলে তিনি সেই শুলোই বাহির করিয়া দিবন।

সে-প্রসঙ্গ ভূলিতে সুনালা কহিলেন, 'আমার গহনা হাতে এই ছ-গাছি বালা ছাড়া আর তা কিছই নেই।'

'কেন মা, তোমার যে সর্বারকমে প্রায় তিন-চার হাজার টাকার গহনা ছিল। তা'ছাড়া এখন দোনার দাম খুব চড়া… মত ভাবছ কেন? মামি যদি এই চাকরিটা বজায় রেথে চলতে পারি খুব শাগ্গির উন্নতি হবে। তথন আবার কত গহনা…'

থশীলা ক্ষীণ হাদিয়া কহিলেন, 'ওরে বাবা, এই ব্জো মাগাঁকে কি আবার গহনার লোভ দেখাতে হাব রে! কিন্তু এই তিন-চার বছর আমি সংসার চালিয়েছি কি ক'রে বল্ ত ? এই যে আর বছরেই যোগেনের আইনের বই আর পরীক্ষার ফীতে কত টাকা লেগে গেল। সে-সব এল কোথা থেকে ?'

মুরলী বিবর্ণ মুথৈ কহিল, 'সে কথা জানতুম না মা।
মনে করেছিলুম নিশ্মলার বিয়েতে যখন তোমার একখানা
গয়নাও ধরচ হয় নি, তখন সেগুলো বুঝি আছে।'

'তোমাদের জানতে পারার কথা নয়। সে-সব অতি গোপনে বিক্রী করেছি, পাছে কতার কানে যায়। তিনি মনে হৃথে পাবেন। কিন্তু তুই অত ভাবিস নে বাবা। চাকরির জন্তে অত ভাবনা কেন? ভগবানের উপর নিভর ক'রে থাক, ভিনি সব ঠিক ক'রে দেবেন।"

'না আর ভাবব না।' মুরলীর মুথে একটু হাসির মত ছুটিয়া উঠিল। সে সেথান হহতে উঠিয়া গেল। কেবল তাহার ভাবনার কথা আর প্রকাশ করিয়া বলিল না। এথন ভাবনাটা দাড়াইয়াছে কেবল চাকরির জন্ত নয়। ইহা তাহার চেয়েও গুরুতর। নানা চিন্তায় দিক্লান্ত হইয়া অবশেষে সে শেষদিনে আপিসের তহবিল হইতেই টাকা সংগ্রহ করিয়া উপরিওয়ালাকে ঘুস দিয়াছে। মাস-কাবারের আর পনেরটি দিন বাকী আছে। ইহারই মধ্যে তাহাকে টাকাটা সংগ্রহ করিয়া তহবিল মিলাইয়া রাধিতে হইবে।

মুরলী সেথান হইতে উঠিয়া নির্মালার ঘরের দিকে গেল।

ঘরে আলো নাই। অন্ধকার ঘরে শুক্লপক্ষের জ্যোৎসা আসিয়া পড়ায় একটুগানি আলোকিত হইয়াছে। খাটের উপর নির্মালা চুপ করিয়া বসিয়া আছে।

মুরলীর মনে আঘাত লাগিল। এ-বাড়িতে চক্রকান্তের পরেই সে নির্মালাকে স্নেহ করিত। অবগ্র তুই ভাই-বোনে সমস্ত দিনের মধ্যে কথাবার্ত্তা প্রায় হইতই না। কিন্তু দূর হই:ত নিঃশব্দে এই স্বল্পভাবিণী ছোট বোনটিকে মুরলী মনে মনে খুব ভালবাসিত। অন্ধকারের মধ্যে তাহাকে অমন করিয়া চূপ করিয়া বসিয়া থাকিতে দেখিয়া সে বৃথিতে পারিল নিজের মনের সঙ্গে তাহার বোঝাপভা চলিতেছে।

নিশ্মলাকে সে বুঝিতে পারিত না, তাহার জীবনকেও সে বুঝিত না। বড়লোকের বাড়িতে বিবাহ হইয়াছে, তাহাদের মন জোগাইয়া, স্বামীকে কখন-বা তোষামোদ কথনও শাসন করিয়া হাতের মুঠার মধ্যে রাথিবে। সাধারণ মেয়েদের মত এক-গা গছনা, দিব্য কাপড়-জামা পরিয়া হাসিয়া থেলিয়া বেড়াইবে। তা নয়, সব থাকিতেও কেমন উদাসীনের মত ভাব। সত্যি কথা বলিতে নিশ্মলাকে সে আদৌ বুঝিত না। তাহার সাদাসিধা সাধারণ মনের শাহায্যে মাতুষের মনের গভীর, সুক্ষ, বিচিত্র **জটিল**ভাময় অনেক তৃঃগই সে বৃঝিত না। তাহা ছাড়া অভাবগ্ৰস্ত মধ্যবিত্ত পরিবারে দিন কাটাইতে হইলে শরীর-মনের যতটা সঙ্গোচন হয়, মুরলীরও তাহা হইয়াছিল। না-বুরুক, কিয় নির্মালার প্রতি তাহার এক প্রকারের ছিল। তাই আজ সন্ধাবেশাকার থটনা**গুলা** মনে আলোচনা করিয়া দেখিল, জামাইবাবু হঠাৎ এত দিন পরে আসিয়াই চলিয়া গেলেন। ভিতরে ভিতরে কিছু একটা ঘটিয়াছে। বেচারার মন থারাপ। আজ থাক। টাকার কথাটা আর ত্র-এক দিন পরেই তাহাকে না-হয় বলিবে। বিশেষ করিয়া জামাই বাবুর কাছ হইতেই যথন টাকাটা কোগাড় করিতে হইবে তথন…। …না এথনও সময় আছে। মুরলী ভারাক্রান্ত মনে দে ঘরে আর না-ঢুকিয়া নিজের ঘরে চলিয়া গেল।

Oo.

ইহারই দিন গুই তিন পরে নিধিশ চন্দ্রকান্ত বাবুর থবর

লইতে আসিয়াছিল। যামিনী আসে নাই। এ-বাড়িতে এখন মুবলী সবচেয়ে অধীর চিত্তে তাহার আগমন প্রতীক্ষা করিতেছিল। নিখিলের সহিত তাহাকে না-আসিতে দেখিয়া সে জামাইবাব্র সংবাদ জানিবার জন্ত নিখিলের কাছে আসিয়া বদিল, এবং মনের ব্যপ্ততায় এ-কথা সে-কথার পর আসল কথাটাই বলিয়া ফেলিল। সমস্ত ব্যাপারটা শুনিবার পরে নিখিল কিছুকাল ভাবিয়া কহিল, 'এ আর শক্ত কি? যামিনী ইচ্ছে করলে ছ-মিনিটেঠ তোমাকে হাজার টাকা বার ক'রে দিতে পারে। আছো, এক কাজ কর না, তোমার বোনকে দঙ্গে নিয়ে আজকালের মধ্যে তার বাডি একবার যাও।'

এই কয়েক দিন টাকার ভাবনা ভাবিয়া ভাবিয়া মুরলী পাগলের মত হইয়া উঠিয়াছে। সে ভাবনা একেবারে তাহার একার ভাবনা। আর কাহাকেও বলিবার মো নাই রে, দিন-দশের মধো টাকাটা না-পাইলে তাহাকে ভেলে গাইতে হইবে। এমন কথা কাহার কাছে বলিবে যে, সে তহবিল ভাঙিয়াছে, চুরি করিয়াছে! নিথিলকেও ভিতরের কথা কিছু বলে নাই। কেবল বলিয়াছিল, বিশেষ কোন কারণে তাহার হাজারখানেক টাকার দরকার।

এখন নিখিলের কথায়—মজ্জমান লোকে গেমন গাহা পায় তাহাকেই আঁকিড়িয়া ধরে তেমনি করিয়া—অসহায় সূরে কহিল, 'সত্যি নিখিলবাবু ? যা বলছেন তা হ'তে পারে ?'

'হবে না কেন ৈ আ'পনি বাবেন অব্য আপনাব বোনকে নিয়ে।'

নিখিলের মনে ছিল এই উপলক্ষ্যে যদি নিশ্মলা তাহার নিজের বাড়িতে গিয়া দে-বাড়ির শাসনভার আপন হাতে তুলিয়া লয় এবং আর একটি মানুষকেও ভাহার শাসন-পাশে বাধিয়া আসে, তবে চাই কি যামিনীর জীবনের গভিটাও বদলাইয়া বাইতে পারে।

ধর্মতশার ধামিনীর বাড়ির ঠিকানাটা দিয়া নিধিল উঠিল।

রাত তথন আটটা বাজে। মুরলী একটা ট্যাক্সি আনিয়া নির্মালাকে কহিল, 'আমার বন্ধু সতীশ কিছুক্ষণ বাবার কাছে বসুক। তুমি একবার চল আমার সঙ্গে, কাজ আছে।' 'কি কাজ দাদা ?'

'এস। পথে বেতে বেতে বলব।'

মুরলী কহিল, 'আমার কয়েক দিনের মধ্যে এক হাজার টাকার দরকার। টাকাটা ভূমিই চেয়ে দাও। ভোমাকে ভোমার নিজের বাড়িতেই নিয়ে যাচ্ছি।'

নির্মালা কিছুক্ষণ ভাবিয়া ব্যাপারটা ব্ঝিল। সে আর সমস্তই ভ্লিয়াছিল, ভূলিতে প্রস্তত। কিন্তু সেই তুচ্ছ গহনার প্রসঙ্গ লইয়া পিতার অপমান ভোলে নাই। বিশেষতঃ বাবা এখন মৃত্যুশবাায়। বলিল, 'ছোটদা, ওঁদের কাছে কিছু চাইতে আমার আম্মানানে বাধে।'

মুরলী কহিল, 'কিন্তু আমার সে টাকাটার এত প্রাঞ্জন বে, তোমার আগ্রসন্ধানে বাধলেও আমি চাইতে অন্রোধ করব। এর চেয়ে বেশী আর কিছু ব'লতে পারব না। এর থেকেই ভূমি ব্রতে পারবে আমি কত অসহায়।'

'আচ্ছা চল।'

তাহারা যথন ধর্মতলার বাড়িতে পৌছিল তথন দেবাড়ির আর সমস্ত ঘর অন্ধকার। কেবল বামিনীর শরনকক্ষে আলো জলিতেছে। সেইমাত্র একটু আগে দেবীপ্রসাদ আসিয়া থবর দিয়া গিয়াছে শেয়ার-মার্কেটে তাহার অনেক টাকা লোকসান পড়িয়াছে। তাহার উপর সেই যে ত্ই-তিন দিন আগে মুহূর্ত্তের জন্ত নির্মালাকে দেখিয়াছিল সেই হইতে যামিনীর মন অশান্ত, চঞ্চল। প্রতি নিমেষে তাহার মনে হইতেছে সেখানে ছুটিয়া যায়, তাহাকে আর একবার দেখে। কিন্তু প্রত্যেকবারেই একটা ভয়ের মত হইতেছে। অবদি সে সমস্ত জানিতে পারে, যদি সে স্বণা করে। তাই তাহার মনে সাহস্ত নাই, শান্তিও নাই।

যামিনীর অনেক গুণ ছিল, কিন্তু তাহার মহদ্দোষ সে অতিরিক্ত তুর্বল। তাহার মত ধরণের মানুষরা যদি জীবনের সকলতার সোপানে একবার উঠিতে আরম্ভ করে তবে আর কোন দিকে তাকায় না, কিছু ভাবে না; প্রাফুল্ল মনে উৎসাহে ভর করিয়া উঠিতে থাকে। কিন্তু যদি কোন কারণে একটুখানি স্থালন হইয়া পড়ে, অমনি অন্ধকারে তাহাদের সারা চিন্তু আচ্ছন্ত হইয়া যায়। অবিরক্ত ভাবিতে থাকে, 'আমার সব গেল, আমার সব গেল।'

বামিনীও উক্তৰ আলোকিত শূক্ত ঘরে একা বসিয়া

মাদে কি একটা পদার্থের সহিত সোড়া মিশাইতে মিশাইতে তাহাই ভাবিতেছিল। এই ভাবনার অন্ধকারে সে অন্ত দিনের চেয়ে অনেক বেনী মদ খাইয়া ফেলিয়াছিল। ত্রারের কাছে মুবলীর সঙ্গে বখন নির্ম্মলা আসিয়া দাঁড়াইল তখন হাতের মাসটা ছুড়িয়া ফেলিয়া দিয়া আপন মনে কি বিড়বিড় করিয়া বকিতেছিল। মাসের পানীয় মেঝের উপর ছড়াইয়া পড়িয়া তীব্র য়্যাল্কোহলের গদ্ধে সমস্ত ঘর এবং বাহিরের হাওয়াকে ভারাক্রাস্ত করিয়া তুলিয়াছিল। পায়ের আওয়াক্র পাইয়া মুদিত চক্ষেই কহিল, 'কি বাবা দেবীপ্রসাদ, আবার এসেছ? এবারে কি খবর মাইরি বলছি সত্যি ক'রে বল দেখি।"

নিম্মলা সেই অন্ধকার বারান্দাতে দাঁড়াইয়াই অক্ট কঠে কহিল, 'ছোটদা, ও নে মাতাল! আমি ঘরে যাব না।'

ব্যাপার দেখিয়া মুরলী নিজেও অবাক কম হয় নাই। তথাপি কহিল, 'ভয় কি ? ভূমি ঘরে যাও। ওঁকে শুশ্রুষা ক'রে সুস্থ করাও ত দরকার। না-হয় আজ আমরা রান্তিরটা এথানেই থাকব। তাংহলে আমি একবার কেবল বাড়িতে গিয়ে খবর দিয়ে আসি। আর সভীশকে ব'লে আনি, সে রাত্তিবেলায় বাবার কাছে থাকবে।'

নির্ম্মলা মুরলীর পাঞ্জাবির খুঁট চাপিয়া ধরিল। ভীত আর্ত্ত কঠি কহিল, 'ছোটনা আমার ভারি ভয় করছে। আমার হাত-পা কাঁপছে। তুমি আমাকে এ-বাড়িতে একা ফেলে কোথাও বেও না। আমি…না না, মাতালে কি করে ছোটনা ? ও কি আমায় মারবে ?'

মুরলী ক্ষণকালের জন্ত নিজের চিন্তা বিশ্বত হইয়া নির্ম্মলার মুথের দিকে চাহিল। তাহার চোথ দিয়া জল গড়াইয়া পড়িতে লাগিল। নিঃখাদ ফেলিয়া কহিল, 'আছো, বাড়ি ফিরে চল, কিন্তু আমি কেবল ভাবছি বোন, নিজের স্বামীকে দেখে তোমার এত ভয়। এর পরে তুর্ভর দিন-রাত্রি তোমার কাটবে কি করে;'

9>

নিখিলের মুথে ধবর পাইয়া যামিনী অপরাধীর মত চক্রকান্তের শোকার্ত্ত বাড়ির দারপ্রান্তে আসিয়া আবার দাঁড়াইল। পূর্বাদিন রাত্রিতে মুবলী বিষ পাইরা আয়হত্যা করিয়াছে। কাহাকেও কোন কারণ বলিয়া যায় নাই। কেবল কাগতে সহতে শিখিয়া দিয়া গিয়াছে, সে স্বেছায় সানন্দে সম্ভানে এই কাক্ষ করিয়াছে। পাশের ঘর হইতে লুক্তিত মাতার অবরুদ্ধ ক্রন্তুলনাপনি ভাসিয়া আসি:তছে। ঘরে আপাদমন্তক গায়ের কাপড়ে ঢাকিয়া চক্রকান্ত মৃতের মত নিশ্চল হইয়া পড়িয়া আছেন। মাথার কাছে বালিশের উপর মৃথ গুঁজিয়া নির্মাণা বসিয়া আছে। বাহিরে জুতা খুলিয়া রাখিয়া বামিনী নিঃশক্ষ পদস্কারে পাটিপিয়া সেই আলো-এম্বকারময় ঘরে ঢুকিল। তথাপি বেটুকু শক্ষ হইল, তাহাতেই চক্রকান্ত চমকিয়া উঠিয়া কহিলেন, 'কে কে? সে আবার এল নাকি।'

নির্মাণা মুথ তুলিল। তাহার গ্র চোথের নীচে নিক্যকৃষণ পাণরের মত কালিমা। সে বলিল, 'না না, সে
ত নেই। সেত মরে গেছে।' বামিনী তাহার মুথের
দিকে চাহিতে পারিল না। বিছানার উপর বিদিয়া পড়িয়া
কহিল, 'নিম্মালা, আমাকে ক্ষমা কর। ক্ষমা কর। আমাকে
দয়া কর।'

সেই ক্ষীণ আলায় কাহার চকু দিয়া অজন্র জল ঝরিয়া পড়িতে লাগিল। যামিনী নিজের অজ্ঞাতসারে সেই রোদন-প্লাবিত বিবশ মন্তক ত্ই হাতে নিজের কাছে টানিয়া আনিল। চক্রকান্ত কণকালের জন্ত চকু মেলিয়া থামিয়া অনেক কন্তে কহিলেন, 'তোমাদের এই মিলন স্থায়ী হোক, সত্য হোক। আর যেন না তোমাদের বিচ্ছেদ হয়। নির্দ্দা, আমি তোমাকে মুক্তি দিয়ে গেলুম। আমার সংসারকে মুক্তি দিয়ে গেলুম। আমার বঞ্জিত, বার্থ, অভিশপ্ত জীবনের ছায়ায় আর যেন না তোমাকে বিড়ম্বিত হ'তে হয়। এই মৃক্তি তোমার জীবনে সার্থক হোক মা।'

নির্মাণা তাঁহার বুকের উপর মাণা রাথিল। চক্রকান্তের নিংগাদ খেন আরও ক্ষীণ হইয়া আদিল।

গামিনী সম্রেহে নির্মালার কক্ষ চুলের রাশির উপর হাত রাথিয়া কহিল, 'নির্মালা, কোঁদ না। ওঠ। এখনও যে উনি বেচে আছেন। তুমি যে আমাকে ক্ষমা করলে, আমি যে ভোমাকে পেনুম, তা ওঁকে ভাল ক'রে দেখে যেতে দাও।' (সম্প্র)

কনে-বউ

শ্রীফাল্পনী মুখোপাধ্যায়

নরম নরম, নীলাম্বরীটি

ময়্রক্সী পাড়

কে জানে কে ওকে কিনে দিয়েছিল—

কি যে আনন্দ তার!

সারোদিনটাই প'রে থাকে আর

উঠানে বেড়ায় খুরে,
ছটি পায়ে ওর রূপার ঝাঝর

বাজে মনটানা ফুরে।
বোনটি আমার, ভাইটি আমার

থাকে ওর কাছে কাছে;
আমি গুধু ভাবি, 'বাব কি যাব না,

যেতে আছে কি না আছে'
লক্ডা-সরম ব্ঝি কি তথনও—?

তব লক্ডাই হবে.

কোন দিন আমি যেতে পারি নাই
সঙ্গীর গৌরবে।

মনটা কেবলই পিপাসিত হয়ে
ঈর্যা জাগাত মনে,
আমি শুধু ওর থেলার সঙ্গী
হই নাই কি কারণে!

চালাবর থেকে জ্বানালার ফাঁকে
আড়চোথে চোখে দেখে
ওর কথা, ওর হাসি, ওর সব

নিয়েছিত্ম গায়ে মেথে,—
তব্ও দেগার পিপাসা মেটে নি,
নিরজনে পেলে কাছে,
আদরে সোহাগে দিয়েছি আমার
বাকিছু দেবার আছে।

রবীক্রনাথের পত্র

রবীশ্রনাথ ঠাকুর

Alfred Place W. South Kensington. London, S. W.

কল্যাণীয়েষু,

এবারকার মডার্থ রিভিয়ুতে একট। ভুল থবর বেরিয়েছে। যিনি আমাকে দেখলেই পায়ের পূলা নিয়ে প্রণাম করেন তিনি ইণ্ডিয়ান সিভিল সার্ভিসে ছিলেন না। তিনি কি, ও কে, আমি বলব না, তাহলে তোমরা কাগজে বের ক'রে দেবে। রোটেন্টাইন ঠিক জানতেন না তাই আমাকে ভুল বলেছিলেন। অতএব সেটা যেন সংশোধন করা হয়। ও সংবাদটা পড়ে আমার অত্যন্ত শজ্জা বোধ হ'ল। ওটা কি প্রকাশ করবার যোগ্য? আমি এ পৃথিবীতে প্রণাম বাচিয়ে চলতে চাই; যদি পাই তবে সেটা প্রকাশ করতে ইচ্ছা করি নে—কেননা, ওটা কিছুতেই আমার পাওনা নয়। পৃথিবীতে কবির দাবির উচ্চ দীমা কোলাকুলি পর্যান্ত-প্রণামের দ্বারা তার জাত বায়-খামি কবি ছাড়া যে আর কিছু নই সে বিষয়ে কোনো সন্দেহমাত্র নেই। আমি তোমাদের হৃদয়ের সমভূমিতেই দাঁড়াতে চাই—সেইগানেই আমার বথার্থ স্থান—উচ্চভূমিতে আমি সম্পূর্ণ অনাবশ্রক। আমি তোমাদের বার-বার বলেছি আবার ভুল আসনে তোমরা বসিয়ো না— বলছি—আমাকে সেটা হয়ত সম্মানের জায়গা হতেও পারে কিন্তু তেমন অস্থের জায়গা আর কিছু নেই---্বে পাগড়ি মাথায় হয় না সেই পাগড়ি পরার মত-সর্বাদা মনে হয় পড়ে বাবে এবং মাথা ধরে ও,ঠ। আমি তোমাদের বন্ধু, কিছু দেব, কিছু নেব। বদি আমার ভাগ্যক্রমে দেওয়া-বিষয়ে আমার জিত হয় তবু সে বন্ধুত্বেরই দান, স্তরাং তার জক্তে ফিরে আমি কিছু দাবি করব না। গুরুর পদ আমার নয়, নয়। আমি নিজে কিছু শিথি নি এবং কাউকে শেথাতেও পারব না; আমি পুথিবীতে সব জিনিষ থেমন ক'রে নিয়েছি তেমনি করেই দিয়েছি অর্থাৎ নিতাস্ত পড়ে-পাওয়া

ভাবে—তার যদি কিছু দাম থাকে সে দামের পাওনা আমার নয়।

বার্গসোঁ সম্বাদ্ধ একটি চটি বই তোমাকে শীঘ্র পাঠাব।
সেটা ভারি চমৎকার, সহজে ওঁর মতটা বাধ্যা। ক'রে দিয়েছে।
উনি যে দিকটা দেখি রছেন সেটা খুব চমৎকার—কিন্তু অন্ত
দিকটাকে একেবারে অস্বীকার করবার কোনো মানেই নেই।
গতি-তবও যেমন সতা, স্থিতি-তবও তেমনি সত্য—এবং
সেইজন্তেই গতিকেও খামরা স্থিতিরূপে ছাড়া বুরতেই
পারি নে—সেটা কেবল মাত্র আমাদের বৃদ্ধিবৃত্তির মায়া নয়
—সেটা সতা ব'লেই ভার হাত আমরা এড়াতে পারি নে।

তোমাদের জন্কীক্রাণ ক্রিক

গ্রীব্রনাথ ঠাকুর

Ğ

কল্যাণীয়েষু,

আজ এখানকার একটি পাড়ার্গানে কিছুদিনের জন্তে যাচ্ছি। সেগানে গেলে বোধ হয় একটু সময় পাওয়া নাবে। এখানে কিছুমাত্র হবকাশ ছিল না। আজ ভাড়াভাড়ি ভোমানের চিঠি লিখে দিচ্ছি।

তোমার চিঠি পেয়ে গুশি হলুম। তোমার সেই তর্জ্জমার কথা পূর্ব্বেই লিখেছি। তুমি আমার সেই কবিতা তর্জ্জমার কথা জিজ্ঞানা করেছ। সেগুলো এদের সকলের বিশেষ ভাল লেগেছে সে সংবাদ এত দিনে শুনে থাকবে। তোমরা নে-ক'টা দেখেছিলে তার পরে জাহাজে অনেকগুলো লিথেছি, এখানে এ:সও কম লেখা হয় নি। সবম্বদ্ধ বোধ হয় একশোটা পেরিয়ে গেছে। সেই লেখাগুলো নিয়ে ইয়েট্স নশ্মাণ্ডি গেছেন। সেখানে বসে তিনি তার একটা introduction লিখবেন—তার পরে ইণ্ডিয়া সোনাইটি থেকে সেটা ছাপা হবে। সেদিন উপ্ফোর্ড ক্রক্সের সংক্রে

পড়েছেন। এঁদের যে এইগুলো এত ভাল লাগতে পারবে দে কথা আমি স্বপ্নেও মনে করি নি। এঁরা মনে করছেন এই শেখাগুলি এঁদের পক্ষে একটা অতান্ত প্রয়োজনীয় সামগ্রী, শুনে আনার মনে থুব আনন হ'ল। যথন বোলপুরে বনে দিনের পর দিন এই গানগুলি একটি একটি ক'রে শিধছিনুম তথন কল্পনাও করতে পারতুম না এগুলা সমুদ্রপারে কারও কোন প্রয়োক্ষনে লাগবে। এমন কি আমি নিজে কত বার মনে করেছি এবং তোমাদেরও বলেছি বাংলা ভাষাতেও এগুলো ঠিক সাহিত্যের মধ্যে গণ্য হবার যোগ্য নয়—এ কেবলমাত্র আমার নিজের আমারই লেখা---নিতান্তই মনের কথা, প্র রাজনে নিরলঙ্কার। এথন মনে হচ্ছে কেবলমাত্র নিজের জন্তে লিখলেই সেটা যথার্থ সকলের জত্তে লেখা হয়-এবং অলঙ্কারটা বাদ দিলেই মুকাটা বেড়ে ওঠে। কিন্তু এ-কথা নিয়ে তোমাদের আমি বেশা কিছু বলতে ইচ্ছে করি নে— পাছে তাতে এর মধ্যে কিছু বিকৃতি এসে পড়ে। সেই কারণেই এখানে সকলে আমাকে যে আদর জানিয়েছেন তার বিষয়ে তোমাদের বিস্তাবিত ক'বে লিখতে পারি নি। এই সন্মানে তোমাদের সকলের আন্তরিক আনন্দ হবে এবং সেইটেই আমার সকলের চেয়ে আনন্দের বিষয়—কিন্ত তৎসত্ত্বেও এই ব্যাপারটাকে আমি নিজের আলোচনার ক্ষেত্র থেকে এক পাশে সরিয়ে রেথেছি।

আমার 'ডাক্ষর'-টা এধানকার একটি বাঙালী ছাত্র তর্জ্জমা করেছেন। তার ভাষাটা অত্যস্ত বেশা আড়ম্বর-বিশিষ্ট হয়েছিল—আমাকে আবার সেটা অনেক পরিমাণে নরম ক'রে আনতে হয়েছে—তব্পু মনের মত হয় নি। রোটেনষ্টাইন এইটে পড়ে আনন্দিত হয়েছেন। তিনি বলছেন অক্টোবরে এটা তিনি ষ্টেজ সোসাইটিকে দিয়ে অভিনয়্করাবার ব্যবস্থা করবেন।

আমার শান্তিনিকেতন থে'ক কতকগুলি প্যারাগ্রাক্ষের
মত বেছে নিয়ে আমি ত জমা করবার চেটায় আছি।
আমি যতদুর ব্যতে পারছি তাতে বোধ হচ্ছে এগুলো
এঁদের বিশেষ কাজে লাগতে পারে। ভূমি তোমার
অবকাশ মত কিছু কিছু তর্জমা প্রিয়ে দিলে এঁদের হাতে
দেওরা যেতে পারবে।

এখানকার একজন নাট্যকার—তাঁর নাম Calderon, আমার দানিয়া গল্পটা থেকে একটি ছোট্ট নাটিকা লিখেছেন। সেটা সেদিন আভিনয় হরে গেছে। দর্শকদের ভাল লেগেছিল। পড়তে বোধ হয় আমানের বিশেষ মনোহর হবে না। কারণ, তার মধ্যে যথেষ্ট থিলিতি গল্প আছে। তাতে আমি একটি ছোট্ট গান লিখে নিয়েছি নুন, স্থন্ত আমার। এই প্রথম কবিতায় লেখবার তেইা।

কিন্তু আজ আধার আর সময় হবেনা। সকালেই ট্রেন ছাড়বে—এখনও জিনিবপত্ত গোছানো হয় নি।

ছেলেদের স্কলকে আমার আট্র দাদ ভানিরো। তাদের কথা আমার সর্বনাই মনে হয় এবং মনে হলেই শ্রীরটা-সুদ্ধ তদভিমুখে চঞ্চল হয়ে ওঠে।

> তোমাদের শ্রীরবীক্রনাথ ঠাকুর

এই ঠিকানার চিট দিও 21, Cromwell Road South Kensington London, S. W. ২৬শে ভান্ত, ১৩১৯

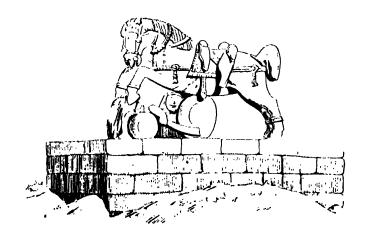
কল্যাণীয়েযু,

অজিত, এবারকার মেলে তোমাদের জন্তে কিছু লিথে পাঠাতে সময় পেলুম না। কুমারস্বামীর ইংরেজ স্ত্রী কতকগুলি ভারতবর্ষীয় গান লিখেছেন, সেগুলি নোটেশন ক'রে ছাপাচ্ছেন, কুমারস্বামী তার লম্বা ভূমিকা লিখেছেন: আমাকে তার একটি ছোট মুখবন্ধ ক'রে দেবার জন্তে ধরেছেন; সেইটে আমাকে লিখতে হ'ল। কুমারস্বামীর স্ত্রীর গান একদিন শুনতে গিয়েছিলুম। তিনি তানপুরা কোলে নিয়ে এমনি দিশি ধরণে তাল মান লয়ে গান করলেন আমি আশ্চর্যা হয়ে গেলুম। কানাড়া প্রভৃতি থুব ভারি ম্বরে রীতিমত মীড় দিয়ে গাইলেন—সে আমাদের ওস্তাদের চেয়ে ভাল বই খারাপ নয়। আমাদের বিদ্যালয়ে আজকাল গানের চর্চাটা বোধ হয় কমে এসেছে; সেটা ঠিক হবে না; ওটাকে জাগিয়ে রেখো। আমাদের বিদ্যালয়ের সাধনার নিঃসম্পেহ ওটা একটা প্রধান অঙ্গ। শান্তিনিকেতনে বাইরের প্রান্তরশ্রী যেমন অগোচরে ছেলেদের মনকে তৈরি ক'রে তোলে তেমনি গানও জীবনকে ফুলর ক'রে গড়ে ভোলবার একটা প্রধান উপাদান। এতে ক'রে ওদের জীবনের প্রাচীরে একটা বড় জানলা খুলে দেওয়া হচ্ছে; সেইখান দিয়ে নন্দনের গন্ধ নিয়ে দক্ষিণের হাওয়া ওদের প্রাণের মধ্যে প্রবেশ করবার পথ পাবে। ওরা বে সকলে গাইয়ে হয়ে উঠবে তা নয় কিন্তু ওদের জানলের একটা শক্তি বেড়ে গাবে, সেটাতে মালুযের কম লাভ নয়। কিছু বেজন দিয়ে একজন গাইয়ে যদি তোমরা জোগাড় করতে পার তমল হয় না।

কতক-বা ব্যক্তিগত কতক-বা অস্থান্ত নানা কারণে তোমাদের অনেকের মনে আমার আদর্শ সম্বন্ধে দিধার লক্ষণ দেখেছিলুম। এ সব কাছে জোর করা চলে না, যার যেটা গলা তার সেই দিকেই জীবন নিয়োগ করতে হবে। তোমাদের সেদিকে যদি বাধা থাকে তাহলে কোনো কথা বলবার নেই। কিন্তু যদি মনেব কোথাও কোন ব্যক্তিগত কাটা বিল্ল নিটোছে মনে হয় তাহলে দেটাকে উৎপাটিত করে ফেলাই যথার্থ পোরুম্ম হবে। বড় কাজের একটা সাথকতাই এই তাকে সাধন করতে গেলে পদে পদে নিছের ক্ষেত্রাগুলো ধরা পড়ে এবং কেবলমাত্র বড় কাজ করবার বেগেই সেগুলো বিদ্দ্দিন দেওয়া গেতে পারে। আমরা নিজের দৈতা বাইরের অবস্থার উপর আবোপ করি। কিন্তু বিধাতার আনার্কাদেই এ প্যান্ত কোনোন মহৎ সম্বন্ধ আপনার সম্বান্থ সম্পূর্ণ সম্পূর্ণ অবস্থা গাসেনি। আমাদের

বিদ্যালয়ের ইতিহাসে বার-বার আমরা দেখে আস্ছি, প্রতিকৃশতার আক্রনাই সব চেয়ে সত্য,—বথনই সমত সহজ হয়েছে যথনই মনে করেছি এইবার চোক বুজে চলব তথনই অত্যন্ত পুরাতন—এত করে এটা বলবার **দ**রকার নেই। কোনো সম্বল্পের মহত্ব বথন আমরা বপার্থভাবে উপলব্ধি করি তথন মন্তরের মধ্যে বে আনন্দ পাই সেই আনন্দের প্রবল বেগেই আমাদের পৌরুব আপনি জাগ্রত হয়ে ওঠে—তথন সামনে ছোট-বড কোনো বাধা দেখে মনের মধো কোনো কুঠা অ'সতেই গারে না। সেই আনন্দের জন্ম আমাদের অপেক্ষা করতেই হবে। সেই আনন্দের অভাবেই আমরা আপনাকে প্রচুররূপে দান করতে পারছি নে, ভাগে করতে পার্চিনে: আমরা সমন্ত বাধাকেই বড় ক'রে দেখছি। গার আছে দেই পায়, বাইবেলের এই কথাটা পুরই সভা। থে পেয়েছে সেই পাচ্ছে। বেখানে আমাদের ্ণেইখানেই সেটা মোচন হওয়া কঠিন। **অ**†ছে দৈত সাপনার শুক্তা পূরণ করবার পক্ষে আপনিই সব চেয়ে বড় বাধা-নিজের জীবান এইটেই বরাবর দেখে আস্চি। জীবনের একটা জায়গায় থেখানে ঐশ্বর্যার পথ মুক্ত হয় সব জায়গাতেই সেথানে দৈতের বাধা শিথিল হ'তে থাকে।

> েএ'মাদের ^{জ্রী}এবীক্রনাথ ঠাকুর



সুইডিশ সাহিত্য

শ্রীলক্ষীশ্বর সিংহ

প্রান্ডিনেভিয়ার অর্গাৎ নরওয়ে, সুইডেন ও ডেন্মার্কের, মাহিত্য বিশের সাহিত্যসমাজে **শবে**গষ্ট **গ্যাতিলাভ** श्रेष्ठरवर्ग, नार्गवन्तु, করিয়াছে। ইবসেন, হামপুন, প্রেমুথ নামজাদা সাহিত্যকদের লেখার কাৰ্লদেশড ট সঙ্গে দকল সভাদেশের সাহিত্যাত্মরাগী পাঠকমণ্ডলীই কমবেশা পরিচিত। বিশেষ কোন দেশের সাহিত্যের হইলে সেই প্রগতির করিতে আলোচনা দামাজিক ও রাষ্ট্রনৈতিক ইতিহাসের ও প্রকৃতির পরিচয় লওয়া প্রয়োজন, ভাষা না জানিলে সেই দেশের সাহিত্যের পূর্ণ রূপ উপলব্ধি করা কঠিন। এই প্রবর্জে ইউরোপীয় মহাসমরের পূর্ব্ব পর্যান্ত বিগত অর্দ্ধশতাব্দীর পৃইডিশ সাহিত্য সম্বন্ধে কিঞ্চিৎ আলোচনা করা হইবে।

১৮৬৫ গাঁপ্তান্দে সুইডিশ সাহিত্যে বড় ছুদ্দিন ঘনাইয়া আসে। ইহার পূর্ববর্তী কালে রাজা তৃতীয় গোস্তাভের মুইডিশ সাহিত্য-গগন রাজক্ষণা**লে** মধ্যাক্ত-কির্ণে সমুজ্জল। তৃতীয় গোস্তাত শুধু সাহিত্যামোদী ছিলেন না, ভথনকার নাটক, গান, আট, কবিতা ও কবিদের প্রধান অনুরাগা ও পরিপোযক ছিলেন। রাজ্ঞাসা**দ** তথন কবিশ্রেট বেলমানের গানে মুখরিভ। বেলমান স্থান্ডিনেভিয়ার উনবিংশ শতান্দীর অমর কবি ও গায়ক। ঠাহার গান না-জানে, এমন একটি লোকও সমস্ত পুহডেনে খুঁজিয়া বাহির করা তুম্ব। নেপলিয়ানের যুদ্ধের বিভীষিকার পথ সাহিত্য-গগনে কবি বেলমানের উদয় হয়। কবির ভাষায় বলিতে গেলে, বেলমানের কবিতার ছন্দে ও গানের ফুরে মতি সহজ সরলভাবে দেশের ও সমাব্দের চিত্র বাধা পড়িয়াছে, তাহাতে দেশের চিত্ত মুক্তিলাভ করিয়াছে। বেলমানের পর স্কান্ডিনেভিয়ার সাহিত্যে জাম্মান-দেশীয় ভাবসম্পদ ও রে'মাটিসিজম আপন প্রভাব বিস্তার করিতে আরম্ভ করে। তথনকার খ্যাতনামা সাহিত্যিক এসাইস টেগনের (Esais

Tagner) | তিনি রোমাণ্টিক ভাবধারার পুর্ত্তপোষক। তাঁহার প্রধান সাহিত্যিক রচনা 'ফ্রিটিয়ফ সাগা' (Fritiof Saga) ৷ সাহিত্য-নদীতে এই নূতন বন্তার সঙ্গে দুখের বোজনৈতিক ও সামাজিক জীবনেও নানা পরিবর্তন আমে। স্কানডিনেভিয়ার পুণক তিন অঙ্গ তথন একত্রীভূত এবং স্থান্ডিনেভিয়।নিজ্ম তথনকার সাহিত্যের মূলমন্ত্র। সেই যুগের আর এক জন খাতনামা সাহিত্যিক ফিন্ স্ইড্ বোহান লোডভিক্ <u>রোনেবের্গ</u> (Johan Ludvik Runueberg) | "লেফ্টেক্তেণ্ট ষ্টোলের কাহিনী" লিখিয়া তিনি সুইডিশ সাহিত্যে আপনার স্থান অক্ষয় করিয়া রাখিয়া গিলাছেন। ১৮০৮-১৮০৯ গ্রীষ্টান্দে ক্রশিয়ার বিপুল দৈন্তবাহিনীর সঙ্গে ফিনলাণ্ডের নগণা দৈলাদের গৃদ্ধ ও ইহাদের বীরত্ব-কাহিনী মৰ্ম্মপাৰী ভাষায় উক্ত গ্ৰন্থে বৰ্ণিত হইয়াছে।

১৮৮৫ গাঁষ্টাবেদ রোনেবের্গ পরলোকগমন করেন, এই সম'য় লিবারালিজ্য দেশের রাজনীতিতে আপন আধিপতা বিস্তার করে: ফ.ল পালেমেণ্টের আইনকাজনের নতন সংস্কার সাধিত হয়। মধ্যশ্রেণীর লোকেরা উক্ত পরিবভনের ফলে বিশেষ ক্ষমতা লাভ করে, কিন্তু অন্তদিকে বাদনীতিকেতে বাহিরের দেশ ক্রমাগত পরাজিত হইতে থাকে। বিসমার্কের নেতৃত্বে প্রাশিয়া কার্যাতঃ কোন বাধা না প্রিয়া ডেনমার্কের কতক অংশ দথল করে। ই ধ্রাষ্ট্রালিজম্ পূর্ণাতিতে দেশে প্রবেশ করিতে থাকে। **(**नरम नृजन नृजन সমস্থার উদ্ভব হয় ও ইহাদের সম্পূর্ণভাবে অধিকার সমাধান-চিন্তা দেশের চিত্তকে করিয়া রাথে। এইভাবে লিবারাালিজম ও আদর্শবাদ যুগের এক রকম অৰসান ঘটে।

১৮৬৫ খৃষ্টাব্দের পরবর্ত্তী সময়ে পক্ষান্তরে বাহিরের জগতের স.ক্সমেলামেশা বৃদ্ধি পাওয়ায় বিদেশীয় ভাবধারা ও মতবাদ দেশে অবাধ গতিতে প্রবেশ করিতে থাকে।

নৃতন ভাবধারা অনেক সময়ে সামাজিক প্রচলিত রীতি-নীতিকে ওলট্পালট্ অথচ নিজকে কোন করিয়া দেয়, দিতে পারে না। <u> ማ</u> ফলতঃ স্থান্ডিনেভিয়ার সাহিত্য-সমস্ত জীবনের অবস্থা তখন ঐ প্রকার। হইতে ডারুইনবাদ इं:लख স্পেনসারের ক্রমবিবর্তনবাদ, ফরাসীদেশ হইতে কোঁতের (('omte) পজিটিভিজ্ম, জামানী হইতে শোপেনহাওয়ারের (Schopenhauer) ছঃথবাদ নিট্শের (Nietzsche) মতবাদ সমস্ত স্বান্ডিনেভিয়ার সাহিত্য-চিত্তকে গত ইউরোপীয় মহাসমরের পূর্ব্ব পর্যান্ত দণল করিয়া রাখে।

উক্ত মতবাদসমূহ প্রাণমে
নরওয়েতে প্রতিপত্তি ও বিকাশ
লাভ করিতে আরম্ভ করে। হেনরিক
ইবসেন সেই যুগের অপ্রণী সাহিত্যপ্রোহিত। ইবসেনকে কেন্দ্র করিয়া
গে সাহিত্যিক দলের অভ্যাদয় :হয়
তাঁহারা সকলেই দেশের আভিজাত্যের
আঁচলে ঘেরা সামাজিক পঞ্চিলতাকে

শাহসের সহিত সাহিত্যের মধ্য দিয়া জনসাধারণের নিকট উপস্থিত করেন। ইবসেনের 'ব্রাণ্ড' (Brand) নামক নাটকে তথনকার সামাজিক চিত্র প্রতিফলিত হইয়াছে। 'ব্রাণ্ড' তথনকার নবীন সাহিত্যসমাজের নিকট বাইবেল-স্বরূপ। এই ট্রাজেডির প্রধান বক্তব্য ঃ— সকল প্রকার সামাজিক অসত্য ও চাটুকারিতার বি**রু**দ্ধে নৈতিক যুদ্ধঘোষণা এবং সভ্যের থাতিরে ও কর্ত্তব্যপালনের জন্ত আত্মবিদৰ্জন। ১৮৭০ খ্রীষ্টাব্দে সাহিত্যে ডেনমার্ক হইতে সহসা নুতন স্থর প্রতিপ্রনিত হয়। গেরর্গ ব্রাণ্ডেস (Georg Brandes) প্রচলিত রোমাণ্টিসিজ্মকে প্রবল ভাবে আক্রমণ করেন এবং টাইনে ও জোলার (Taine and Zola) পদচিহ্ন অনুসরণ করিয়া সাহিত্যে আমুল



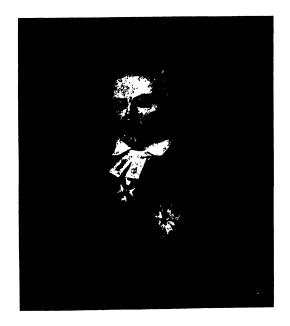
গুইডেনের কবিগুরু বেলমান

পরিবর্ত্তনবাদের (Radicalism) বক্তা আনিতে চেটা করেন।

উপরিউক্ত ঘটনাবহুল মতবিপ্লব কিন্তু তথনকার প্রচলিত সাহিত্যধারাকে একেবারে নিম্মূল করিয়া দিতে পারে নাই। এই মতবিপ্লবের দিনে সাহিত্যকরীর কাণ্ডারীর পদে অধিষ্ঠিত হন দার্শনিক সাহিত্যিক ভিক্টর রিয়েওবর্গ (Victor Rydberg)। তাঁহার ব্যক্তিত্বে ও লেখায় সাময়িক বহু মতবাদ সামঞ্জ্ঞ ও ঐক্য লাভ করে। উনবিংশ শতান্দীর দকল সাহিত্য-ভাবধারা, বথা, রোমান্টিদিজ্ম, প্রেটোর আদর্শবাদিতা, গথিসিজ্ম, লিবার্যালিজ্ম প্রভৃতির দমন্বয় দাধন করিয়া তিনি তথনকার সাহিত্যে পূর্ণতা দান করেন। কিন্তু ইণ্ডাইারালিজমের

প্রাসারের সঙ্গে সঙ্গে যে সমস্থামূলক ভাবধারার স্থান্ট হয়, নে-সম্বন্ধেও রিাডবের্গকৈ ক্রমে ক্রমে নিজের মত ব্যক্ত করিতে হয়। সার্বজনীনতা ও ঐক্য রিাডবের্গের জীবনের মূলমন্ত্র ছিল।

রিয়ত বর্গের পরে সাহিত্যক্ষেত্রে ষ্ট্রাণ্ডবর্গে আবিভূত জন। তাঁহার আগমন দেন আগুনের দুল্লীর মত। বাক্তিয়ে ও সাহিত্যক্ষেত্রে তিনি একেবারে নৃতন রকমের। ষ্ট্রাণ্ডবর্গ কে ?



রোমাটিক নাহিতে\র প্রধান পৃষ্ঠ**পো**ষক এস৷ইস **টে**গনের

তিনি নিজকে চাকরাণীর সন্তান* বলিয়া পরিচয়
দিয়া.ছন। তাহাতে তাঁহার বিদ্রোহী মতবাদ সম্বন্ধে
প্রথমেই রহস্তভনক ধারণা পাঠকের মনকে বিচলিত ও
অক্তেই করে। প্রধান শহর ইক্হলমের স্বল্প আয়ের এক
অভিজাত পরিবারে "অকারণ ভীতি ও নীরব অনশনখলাশনে"র মধ্যে তিনি বড় হইয়াছিলেন। ফলে বাল্যকাল
হইতেই তিনি প্রচলিত সামাজিক ব্যবস্থাকে গুণার
চক্ষে দেখিতে শিধিয়াছিলেন। ষ্ট্রাওবর্ণের সাহিত্য-

জীবনের তুলনা দেওরা কঠিন। মনে হয় যেন তিনি মজুরশ্রেণীর লোকদের তঃসহ জীবনের তঃগকে লোকের চক্ষে ধরাইয়া দিবার জন্ত কলম ধরিয়াছিলেন; বোধ হয়, তিনি সাম্যবাদ প্রচারের জন্ত চেষ্টা করিয়াছিলেন;

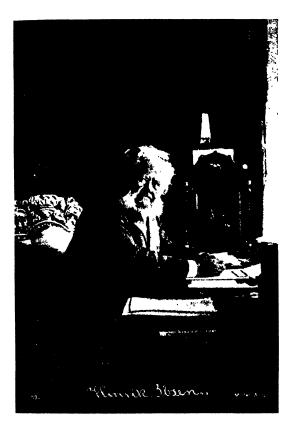


প্রসিদ্ধ নাহিত্যিক ফিন স্কুইড রোনেবের্গ

সাবার অনেকের পক্ষে ইহাও মনে করা সহজ, পে, তিনি সামাজিক সকল বাবস্থা ও রীতিনীভিতে অশ্রদ্ধাবান অভিজাতশ্রেণীর লেথক এবং নিট্শের চিঙা-ধারার অনুগামী। এইরূপ মত তিনি তাঁহার "সমুদ্র-তীরে" নামক রোমান্সের নায়কের মুথ দিয়া প্রকাশ করিয়াছেন; ইহাতে প্রচলিত রীতিনীতি ও বিশ্বাসের বিরুদ্ধে যুক্তি-যুদ্ধের অবতারণা করা হইয়াছে।

তাঁহার জীবনী পড়িলে মনে প্রশ্ন উঠে, তিনি কি ভগবান ও তাঁহার স্ট সকল-কিছুতেই অবিশ্বাসী ছিলেন ? ধর্মনৈতিব জীবনে যা-কিছু পবিত্র বলিয়া পরিগণিত, সেই সমস্তবে ইচ্ছাপূর্বক পদদেশিত করাই কি তাঁহার উদ্দেশ্য ছিল ?

^{* &#}x27;'চাকরাণীর সন্তান" নামক প্রুকে তিনি নিজের জীবনের ইতিহাস লিখিয়া গিয়াছেন।



জনেডিনেভিয়ার অমর কবি ইবসেন

তিনি অপ্রিয় সত্যের উদ্যাটন করার ভার লইয়াছিলেন বলিলেও উ'হার সম্বন্ধে সমস্ত বলা হয় না। স্বদেশে ঈশ্বরবাদীদের নিকট স্থাণ্ডবের্গ আত্মার অশান্তিতে রুগ্ধ পুরুষ বলিয়া বিবেচিত; তাঁহাদের মতে তিনি যে ভগবৎ শক্তিকে সারাজীবন অপমান অসন্ধান দেখাইয়াছেন, সেই শক্তির নিকটই তিনি অবশেষে অলক্ষিত ভাবে আত্মসমর্পণ করিয়াছিলেন। এক সমালোচক স্থাণ্ডবের্গের সম্বন্ধে বলিয়াছেন যে, তিনি (স্থাণ্ডবের্গ) বহুদর্শী পুরুষ ছিলেন। তাঁহার জীবনে ক্রমাগত ভাবপরিবর্ত্তন হইয়াছিল, তিনি কোন ভাবই আঁকড়াইয়া ধরিয়া থাকিতে পারেন নাই।

'মান্টার ওলভ্'নামক নাটকথানা তিনি তেইশ বংসর বয়সে লিখিয়াছিলেন। তাছাতে দেখা যায়, সন্দেহ-জালে জড়িত নিজের চিস্তা ও অনুভূতির মধ্যে কি দারুণ

দ্বন্ধ! একদিকে ভগবৎ-শক্তিতে বিশ্বাস, জীবনে কর্তব্যের
ডাক, দান-ব্যা, আশা-নিরাশা, অপর দিকে সত্যের বথার্থ
স্বরূপ সম্বন্ধে সন্দেহমূলক নানা ব্যাখ্যা ও সভ্যতার আবর্ত্তনে
মান্তবের ক্রমমুক্তি এই নাটকের প্রধান বিষয়। ইহার
নায়ক-নায়িকা ঐতিহাসিক হইলেও চক্ষের সমুগে এখনও
অতি-জীবস্ত বলিয়া প্রতিভাত হয়।

"রেড রুম" (লাল কক্ষ) অতি উচুদরের রোমাব্স। ইহাতে প্রকারান্তরে সামাজিক অবস্থার সমালোচনা করা



দাশ্ৰিক সাহিত্যিক ভিক্লর বিচ্ছবেগ

হইয়াছে। ভদ্রতার ক্বরিমতার ঢাকা সামাজিক বর্লরতাকে
তিনি এমন ভাবে আঁকিয়াজেন, দে, ইহাকে
প্রায় সমাজের কলছ-কাহিনী বলা চলে। ভদ্রতার
মুগোশ-পরা সামাজিক অাদান-প্রদানে, অফিসারদের
ব্যবহারিক জীবনে, রাজনীতিতে, সাংবাদিকতায়, সাহিত্যে,
শিল্পে সর্বত্রই তিনি শুরু লুকোচুরি লক্ষ্য করিয়াছেন। উক্ত
গ্রন্থে তিনি ইকহলম্ ও তাহার চতুপাশবর্তী সহস্রাধিক
দ্বীপ বা দ্বীপোদ্যান, হদ, সমুদ্র, বন, পশুপক্ষী সম্বন্ধে
বে-বর্ণনা লিখিয়া গিয়াছেন, তাহা সাহিত্যে অমর
হইয়া থাকিবে।

তাহার প্রথম বয়সের লেখাতেই স্ত্রীজ্বাতির সম্বন্ধে অবিশ্বাসের ভাব ধরা পড়ে। তথনকার মাদর্শ রোমাণ্টিক



ধনামখ্যাত আগষ্ট ষ্ট্ৰীওবেগ

গোড়ায় তিনি হুনীতির গন্ধ পাইয়াছেন। প্রেমের ১৮৮০ গ্রীষ্টাব্দে এক দ্বীপে স্বেচ্ছায় নির্ন্নাসিত জীবনের মাঝিণানে হঠাৎ এক ফু:খজনক ঘটনা ঘটে; নিজের বিবাহিত জীবনের মধ্যে অশান্তি আদিয়া পড়ে। গৃহমধ্যে স্ত্রীর স্থীদের অবাধ গতি এবং তাহাদের অসার গল্পগুজুব তাঁহার উত্তেজনা-প্রবণ মনকে অস্থির করিয়া তুলে। মেয়েদের প্রভাব ওাঁহার পক্ষে অসহা হইয়া উঠে। "বিবাহ" শীৰ্ষক উপন্তাসগুলিতে তাঁহার তথনকার মনোভাব ক্টিয়া উঠিলাছে। 'পৌক্ষধের প্রতিদান' উপন্তাস্থানঃ বিজ্ঞপাত্মক রসিকতায় পরিপূর্ণ। 'প্রেম ও তৃণগুল্ল' উপক্তাস্থানায় তিনি কতকটা ইবসেনের ডলস হাউসের (Doll's House) অনুকরণে বাঙ্গ-রসিকতার দ্বারা প্রোঢ় কুমার দেবাসের (Devas) প্রু শইয়া ওদাহিক সম্বন্ধের ব্যাখ্যা করিয়াছেন। তাঁহার মত এই, যে, পুরুষ-নারীর ভালবাসা শুধু রোমান্সে গঠিত নহে, তাহা আর্থিক সচ্ছলতা ও দৈহিক আনকর্ষণের আবেষ্টনে আবদ্ধ; পুরুষ-নারীর প্রেম শুধু মানবদের জন্তই-শুর্গের

দেবতাদের জন্ত নহে। এই উপন্তাসের দিতীয় ভাগে নারী-প্রেনের উপর বিজ্ঞাপ এত বেণী বে তাহাতে রচনা-সেটিবের হানি হইয়াছে। ইহার পরের রচনায় খ্রীগুবের্গের এই ম.নাভাব একেবারে উদ্দাম হইয়া ফুটিয়াছে, "পিতা" ও "মৃত্যুগত্য" নাটক হুইখানা ইহার চরম দৃষ্টাস্ত। এই উভয় বিয়োগাত্মক নাটক পাঠক ও দর্শকের মনকে গভীর ভাবে আলোড়িত করে।



কবি কাল ফেলডট

একটি রহনায় তিনি খ্রীষ্টিয় উপাদনা-রীতিকে অত্যন্ত বাঙ্গাহরে সমালোচনা করেন। ফলে সমাজ তাঁহাকে আক্রমন করিবার সুযোগ পায় এবং ইহার প্রতিশোধও লয়। কিন্তু সমাজের আক্রোশ তাঁহার মনের উত্তেজনাকে আরও বাড়াইয়া তোলে, "দি ফেটস্ এও য়াডভেনঞ্চার অফ্ সুইডেস্" (The Fates and Adventure of Swedes) দিখিয়া তিনি সমাজকে প্রতিআক্রমন করেন। এই ঐতিহাসিক উপস্তাসে ক্লশো ও বাক্লের মতবাদ প্রতিধ্বনিত হইয়াছে। অনেকের মতে ষ্ট্রাওবের্গ তথন স্নায়বিক উত্তেজনায় কাতর। আশ্চর্য্যের বিষয়,
স্পিণ্ডবের্গ বথন নিজের বিবাহ-বন্ধনকে চেদন করিবার
চেষ্টায় রত এবং উাহার মানসিক অশাস্তি প্রবল,
তথন তিনি পূব অল্প সময়ের মধ্যে অতি উচ্চ ধরণের
"হেময়োবাসী" রোমান্স থানা রচনা করেন, নিতান্ত
স্ব-রোমান্টিকভাবে হেময়ো-দীপবাসী ক্লয়ক ও মৎশুজীবীদের
দৈনন্দিন জীবনের চিত্র, দ্বীপের চারিদিকে সমুদ্রের
গর্জন, জলের কলকল শক্ত—এক কথায় দ্বীপের চিত্র



সেলমা লাগগরলফ

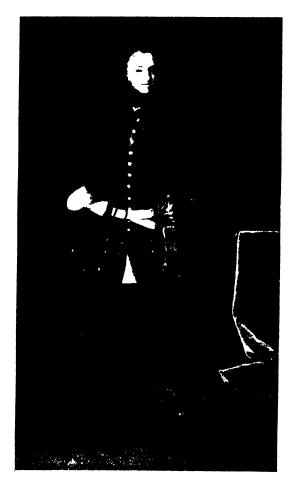
এমন নিখুঁত ভাবে ফাঁকিয়াছেন, যে, বইথানা পড়িয়া শেষ করিলে মনে হয় এই দ্বীপ ও দ্বীপবাসীদিগকে এ-দেশের কোন সাহিত্যিকই তাঁহার মত প্রাণ দিয়া ভালবাসিতে পারেন নাই। পরবর্ত্তী বৎসরে তিনি মাপনাকে নিট্শের ভক্ত বলিয়া প্রচার করেন। এই -সময়ে তাঁহার আত্মবিশ্বাস প্রবশভাবে বাড়িতে থাকে। এই অভিরিক্ত আত্মবিশ্বাসপরায়ণতা তাঁহার হুর্যোগের দিন ঘনাইয়া আনিভেছে বলিয়া দেশের লোকের মনে ভয় জাগাইয়াছিল। কায়িক, মানসিক, বিশেষভাবে সন্দেহবাদ



ভেনার ভন্ ফেইডেনস্টাম

রোগে ও বিবেক-ভর্পনায় জড়িত হইয়া দ্বীওবর্গ করশেষে ধর্মচিন্তার মধ্যে শান্তি খুঁদ্বিবার চেপ্তায় রত হন। তাঁহার ধর্মমত অবগ্র ভগবান সম্বন্ধে বিশেষ কিছু বলে না: তাঁহার মতে মান্থের সকল প্রকার কাজ অদৃশ্র শক্তির হাতে রহিয়াছে: কুকায়, কুকর্ম বা অধ্যা নিজেই নিজের শান্তি বিধান করিয়া বিবেকের আলো জালাইয়া দেয়। এই মত অনুসরণ করিয়া তিনি বর্তমান ফ্ইডেনের জন্মদাতা বীর রাজা "গোস্তাভাসা" নাটকগানা রচনা করেন। এই নাটকের প্রথম হুই অঙ্কে তিনি গোস্তাভাসার চিত্রকে অতি জীবস্ত করিয়া জাঁকিয়াছেন।

গ্রীওবের্গের সাহিত্য ও ব্যক্তিগত জীবন এইভাবে শেষ পরিণতি লাভ করে। ঠাহার ব্যক্তিগত জীবন সম্বন্ধে নানা সমালোচকের নানা মত গ'কিলেও এক বিষয়ে তাঁহার স্বদেশবাসীরা একমত, নে, তিনি সুইডিদ্ ভাষাকে সম্পূর্ভাবে নৃতন করিয়া গড়িয়া গিয়াছেন।



গ্ৰাক্ত দ্বাদশ ক্লে

নাট্যকার হিদাবে ভাহার সমকক্ষ সাহিত্যিক আজ পর্যান্ত স্কান্ডিনেভিয়ায় কেহ জন্মান ন:ই।

ইীওবের্গের জীবিতাস্থায় তাহাকে কেন্দ্র করিয়া এক দল নবীন লেথকের অভ্যথান হয়। তাহারা নিজের দলকে নবীন স্ইডেন বলিয়া অভিহিত করেন। রোমাটিসিজমের কেন্দ্র প্রধান শহর ইকহলম্ ও বিশ্ববিদ্যালয়-শহরগুলি তাহাদের আজমণের বিষয়। এই দলের অধিকাংশ সাহিত্যিকই সাংবাদিক ও মহিলা। এই ন্তন সাহিত্যের ভিত্তি পজিটিভিজ ম্। অনেকটা ইবদেনের অমুকরণে এই যুগের সাহিত্যে, সমাজে, ব্যক্তিগত জীবনে সততা, স্তায়, কর্ত্তবাপরায়ণতা ও জীবনের সকল স্তরে আদর্শের সামঞ্জন্ম রক্ষার দাবি বড় করিয়া ধরা হইরাছে। ফলতঃ, এই সময়েই নানা প্রকার সামাজিক সমস্তার আলোচনায় দেশের চিত্ত ব্যাপৃত। এরূপ সময়ে সাধারণতঃ অস্তান্ত ক্ষেত্রে গাহা ঘটিয়া থাকে, স্ইডেনের সাহিত্যক্ষীবনেও তাহাই ঘটিয়াছিল; অর্থাৎ নানা মত ও মতথগুনের আলোচনায় সাহিত্যের স্বাভাবিক গতি নানা প্রকারে বাধা পাইরাছে। মেয়েদের উচ্চশিক্ষার পগ



ওস্বার লে'ভরটিন

তথন প্রশন্ত হয়। মহিলা-পাঠকের সংখ্যা ক্রতগতিতে বৃদ্ধি পার। নারীরা নিজেদের ক্ষৃচি অনুবারী ও সমস্তা-সম্পর্কীর দাহিত্যের জন্ত ব্যাক্লতা প্রদর্শন করে। নারী-সমস্তা সমাধানে নারীরাই অগ্রসর হয়। ফলে মহিলা-সাহিত্যে—লবেলে, রোমান্সে—পুরুষজাতির উপর আক্রমণ চলে। পুরুষদের কাপুরুষতা, মেরেদের প্রতি তাচ্ছিলা, তুর্নীতি, অক্নতজ্ঞতা প্রভৃতি অবিচার দাহিত্যে বড় করিয়াধরা হয়।

সাহিত্যে ট্রাণ্ডবৈর্গের আসন অক্ষয় হইলেও তিনি চেম্ব্র কোন বিশেষ পথে চালাইতে সাহিত্যকে করেন নাই। সেজন্ত সাহিত্য-তরীর হালে গোস্তাভ আফ বেইজেরষ্টাম (Gustav af Geijerstam) আবিভূতি হন। কিন্তু তাঁহার রচনা উচুদরের হইলেও গুরুর পদে অধিষ্ঠিত হইবার মত প্রতিভা তাঁহার ছিল না। তাঁহার প্রসিদ্ধ লেখার অধিকাংশই গল্প, গ্রাম্য ক্লুষকশ্রেণী ও মৎক্রজীবীদের দৈনন্দিন জীবনের চিত্র। লোক-চরিত্র বিশ্লেষণে তাঁহার স্বভাবদত্ত ক্ষমতা খুব গভীর। যৌবনে তিনি অভিজ্ঞাত সম্প্রদায়কে আক্রমণ করেন, কিন্তু শেষ বয়সে সেই সমাজেরই এক জন সাধারণ লেখক হিসাবে পরিগণিত হন।

তদানীস্তন মহিলা-সাহিত্যিকদের মধ্যে বাঁহারা বিশেষ প্রতিপদ্ধি লাভ করিয়াছিলেন তাঁহাদের মধ্যে আনে চারলতে লেফ্লোর (Anne Charlotte Leffler) ও (Victoria Benedic-ভিক্টোরিয়া বেনেডিকসনের sson) নাম বিশেষভাবে উল্লেখবোগা। উভয়েই নারী-স্বাধীনতা আন্দোলনের বিশেষ উল্লোক্তা; উভয়েই সাহিত্য-জীবনের প্রথম ভাগে অভিজাত সম্প্রদায়ের নির্মম কঠোরতা ও প্রচলিত মিথাবাদকে—বিশেষ করিয়া বিবাহসম্পর্কে ও দাম্পতা জীবনে, পুরুষদের স্বেচ্ছাচারকে আক্রমণ করেন। উভয়েই নানা গল্প ও উপস্তাদের মধ্য দিয়া গৃহচিত্র নিপুণভাবে আঁকিয়াছেন। কিন্তু তাহা সবেও হই জনের জীবনের মধ্যে বিশেষ প্রভেদ বর্ত্তমান। লেফ্ল্যের ষ্টকহলমে পালিত ও বৰ্দ্ধিত হইয়াছিলেন ও রাশীক্বত পুত্তকের মধ্যে সকল সমস্তা পাঠ করিয়াছিলেন। পরে ইটালীর এক জন ডিউককে স্বামীরূপে বরণ করিয়া অল্ল বরসেই মারা যান।

বেনেডিকসন (ছন্মনাম এর্ণ ট আলগ্রেণ, Ernst Ahlgren) দক্ষিণ স্থাডেনের স্কোনে প্রদেশের এক গ্রামপ্রান্তে বর্দ্ধিত হইয়াছিলেন। তাঁহার বাল্যজীবনের পারিপার্শ্বিক অবস্থা হুর্গতিপূর্ণ ছিল। তিনি কথনও বিদ্যালয়ে পাঠ করিবার স্থাোগ পান নাই। পারিবারিক হুংখ-ছর্দ্ধশা ও অনশনে তাঁহার মনে অনেক সময় আত্মঘাতিনী হইবার সকল্প লাগিয়া উঠিত। কিন্তু অল্প বয়স হইতেই স্বাবলম্বীভাবে তিনি নিজকে শিক্ষা দিতে সচেট ছিলেন। তিনি অনেক সামাজিক চিত্র ও গল্প লিখিয়া গিয়াছেন।

তাঁহার প্রাসিদ্ধ প্রন্থ "ফু মারিয়ানে" (Fru Marianne) ও "অর্থ" (Money)। প্রথমথানি বাহির হইবার পর কোপনহেগেনের প্রাসিদ্ধ "পলিটকেন" (Politiken) কাগজে নামজালা সমালোচক গেরগ্ ব্রাণ্ডেসের ভক্ত ছিলেন; সেই জন্ত সমালোচনাটি তাঁহার জীবনে বিশেষ হুংথের কারণ হইয়াছিল। বেনেডিকসন বনাম আলগেনের জীবনী স্থইডেনের অন্ততম মহিলা সাহিত্যিক ও সমাজভব্বিৎ এলেন কেই (Ellen Key) লিখিয়া গিয়াছেন। সেই যুগের প্রতিভাবান তরুণ সাহিত্যিকদের কেহ কেহ অকালে মারা যান এবং অনেকে কঠোর সাহিত্যক্ষেত্র হুইতে বিদায় গ্রহণ করিতে বাধ্য হন।

বেশী দিন যাইতে-না-যাইতেই সাহিত্যের ধারা আবার প্রাচীন পথে বহিতে স্থক করে। রোমা**ণ্টিসিজম্ হ**ঠাৎ স্বাভাবিকতার বাঁধ ভাঙিয়া বক্তা-প্রবাহের মত সাহিত্যে প্রবেশ করে। ইহার কারণ সম্বন্ধে সমালোচকদের মত এই যে, নীরস বস্তুতান্ত্রিকত। সুইডিশ-চরিত্রে থাপ খার না। সুইডিশ-মন ভাবুক, গীতি-কবিতায় তাহার স্বপ্রকাশ স্বাভাবিক. সত্য ও সহজ। পূর্বকার রোমাণ্টিক যুগে সাহিত্যিকগণ কল্পনাবলে রচনার খোরাক আহরণ করিতেন, কিন্তু পরকর্ত্তী রোমাণ্টিক সাহিত্য বস্তুতান্ত্রিকতার প্রভাবে আপন ঘরে, আপন দেশের মাটির রসে ও পারিপার্থিক আবহাওয়ায় পুষ্টিলাভ করিতে থাকে। গত যুগের রক্তমাংসহীন আদর্শবাদিতা সুইডিশ-সাহিত্য হইতে সম্পূর্ণ বিদায় গ্রহণ করে। বহু সাহিত্যিক ও শিল্পী এই সময়ে দেশ-বিদেশ ভ্রমণ করেন। বহির্জগতের সঙ্গে তাঁহাদের এই সংস্পর্শ সুইডিশ গীতি-কবিতা ও চিত্রশিল্পকে নানাভাবে সম্পদশালী করিয়াছে। ইহার ফল সুইডেনে তুই ভাবে প্রকাশ পাইয়াছে। বাহিরের জগতের সংস্পর্শে আসিয়া সুইডিশ সাহিত্যিক ও শিল্পীগণ নিজেদের ও জাতীয় ঐতিহাসিক সম্পদের সন্তা সম্বন্ধে সচেতন হন; দ্বিতীয়তঃ, সাহিত্যে প্রাদেশিকতা স্থান লাভ করে। অবগ্র উক্ত প্রাদেশিকতা রাজ-নৈতিক প্রাদেশিকতা নছে—প্রতি প্রদেশের বিশেষম্ব. যথা—ঐতিহাসিক ও সামান্দ্রিক কীর্দ্তি ও রীতিনীতিকে সাহিত্যে চিত্রিত করিয়া পূর্ব্বপুরুষদের কথা জাগক্লক

রাধিবার চেষ্টা চলে। উনবিংশ শতাব্দীর শেষ দশকে সাহিত্যে বহু ঐতিহাসিক চরিত্র ও তথ্যের আলোচনা হয়। ঐতিহাসিক সাহিত্যিকগণ বীর রান্ধা দাদশ কার্ল, কবি-রাজা তৃতীয় গোস্তাভের রাজত্বকালের ঘটনাবছল স্মৃতি-গুলিকে সাহিত্যের মধ্য দিয়া একতা করেন; ফলে তথন দেশে দ্বাতীয়তাবাদের অভ্যথান হয়। একই সময়ে ইক্ছলমে "স্কানসেন" (Skansen) ও ''নরডিস্কা মিউঞ্জিয়ম" প্রতিষ্ঠিত হয়। স্থানদেন উকহলমের এক কোলে এক দ্বীপের মুক্তপ্রকৃতির কোলে সকল প্রদেশীয় প্রাচীন গ্রাম্য সভ্যতার শ্বতিগুলিকে ধারণ করিয়া রাধিয়াছে এবং শেষোক্ত মিউজিয়মে বা যাত্র্যরে প্রাচীন স্কান্ডিনেভিয়ার সভ্যতার সকল প্রকার স্মারক বস্তু রক্ষিত আছে। ইণ্ডাইয়ালিজনের প্রভাবে প্রাচীন গ্রাম্য সভ্যতার রূপ তথন ক্রতগতিতে পরিবর্ত্তিত হইতেছিল। কবি কার্লফেলড্টের (Karlfeldt) কবিভায় ও লেখিকা লাগেরলফের রচনায় অতীতের সামাজিক চিত্র চিরনুতন হইয়া উঠে। বন্ধতঃ, এই সময়ে প্রায় সকল প্রদেশেই সাহিত্যিকের জন্ম হয় এবং কম-বেনা সকল লেখকই নিজেদের প্রাদেশের গ্রামা জীবন ও পারিপার্ষিক প্রকৃতিকে সকল প্রকার রং দিয়া আঁকিয়াছেন।

ধর্ম ও দর্শনের ক্ষেত্রেও উনবিংশ শতাকীর শেষ দশক পূর্ববর্ত্তী সময় হইতে বিভিন্ন। ধর্মবিশ্বাসের প্রতি সাহিত্য অনেকটা নিরপেক্ষ ভাব ধারণ করে। অসন্মান দেখাইবার উদ্দেশ্যে কেহ কাহারও ধর্মসতকে আক্রমণ করে নাই। নারী-পুরুষের সম্বন্ধ, যথা—দাম্পত্য প্রেম, বিবাহ ইত্যাদি विषय शुक्रव ७ नाजी एन ज मधा शत्रभावत মন্দীভূত হইয়া আসে; সাহিত্যে ব্যঙ্গ-বিজ্ঞপের স্থান অধিকার রসিকতা। ব্যাতীয় জীবন-তন্ত্রীর করে তারগুলি ঐক্যের স্থরে এমন ভাবে বাজিয়া উঠে, যে, দেশ निष्कत त्रोन्मर्था निष्करे विष्य हरेशा छैर्छ। अमन कि, তুঃথকষ্ট ও মৃত্যুর মধ্যেও সাহিত্য শুধু শাস্তির আলোক আহরণ করিতে থাকে।

সাহিত্যে স্বাভাবিকতার গতি রোমাণ্টিক ও রূপকের পথে চালনা করেন হুই ক্ষন খাতনামা সাহিত্যিক। ইহাদের এক জন নোবেল প্রাইক প্রাপ্ত ভেনার ভন্ হেইডেনষ্টাম (Vener von Heidenstam) ও বিতীয় জন ওস্কার লেভেরটিন (Oskar Levertin), প্রাসিদ্ধ সাহিত্য-ইতিহাস-লেখক।

বে প্রাদেশে হেইডেন টামের জ্বন্ন, সেখানকার টিভেদেন (Tiveden) নামক গভীর অন্ধকারময় পার্কত্য বনরাজি ভেন্তেন নামক বৃহৎ অশাস্ত প্রদের মুক্ত তীর পর্যাস্ত পৌছিয়াছে। সেই প্রদেশের অন্তাদশ শতাব্দীর গ্রাম্য সভ্যতা অন্তিক কাল পূর্ক পর্যাস্ত জীবিত ছিল। কবি হেইডেন-টামের পিতা ছিলেন ভলটেয়ারের মত স্বাধীনচেতাও উদার প্রকৃতির লোক। তাঁহার নির্দেশ ছিল বেন মৃত্যুর পর তাঁহার দেহকে অগ্নিসৎকার করিয়া ভেন্তের্নের জলে নিক্ষেপ করা হয়।

যুবক হেইডেন্টাম শারীরিক অস্থস্তার দক্ষণ করেক বংশর কাল পূর্বদেশসমূহে কাটাইতে বাধ্য হইয়াছিলেন। তথন তাঁহার কবি-প্রতিভা দাধারণের দৃষ্টি আকর্ষণ করে। পূर्काल नवानी त्वत महत्व मत्रव व्यथ् व्याप्त्रम्त्र भूर्व कीवनवाळा-প্রণাশী, দেখানকার নীশাকাশ, তপ্ত স্থ্যকিরণ, মহিমময় চক্রা**লো**ক তাঁহার **ফান্মকে** গভীর ভাবে স্পর্শ করে। তাঁহার সেই সময়কার কবিতা ভাবপ্রবণ সুইডিশ-মনে গভীর আনন্দের সঞ্চার করে। কিন্তু পূর্ববেশে সুধময় জীবনের মাঝধানে কবি অন্তব করেন, ধে, তাঁহাকে তাঁহার আধুনিক সমাজেই সারা জীবন কাটাইতে হইবে--্যে সমাজের সঙ্গে তাঁহার অন্তরের যোগ নাই। কিন্তু পূর্বদেশে কয়েক বৎসর কাটিতে-না-কাটিতেই ফুদূর উদ্ভৱে অবস্থিত আপন দেশের মাটির টান কবির মনকে পাইয়া বদে। কবি-মনের এই বিপরীতমুখী ভাব তাঁহার "তীর্থবাত্রীর ঞ্রীষ্টঞ্রনাগীত" নামক কবিতাগুলিতে প্রকাশ পাইয়াছে। ভ্রাম্যমান হানস্ আলেনিউদ (Hans Alenius কবির ছন্মবেশী নাম) নামক ব্যক্তি দারা ছনিয়াটা ঘুরিয়াছেন, সর্বতাই অনেক বন্ধ জুটাইয়াছেন, কিন্তু তবুও তিনি একাকী, কোখাও শাটির সঙ্গে তাঁহার বোগ নাই! তাঁহার আপন দেশ ভূষারশীতশ ও অরকারময় নিজ কুটীরের জন্ত তাঁহার প্রাণ কাঁদে। এই বিষয়ে কবির অভিজ্ঞতা হয়ত তাঁহার সমশ্রেণীর লোকদেরই মত। থে-দেশের মাটিতে তাঁহার জন্ম সেই দেশের বন্ত

প্রকৃতি দীনতার আবরণে নিজের সম্পদ কবির নিকট হইতে
প্রথমে লুকাইরা রাখিরাছিল। তিনি দেশে ফিরিরা আসিলে
দেশ আপন বক্ষঃস্থিত সম্পদের মহিমা তাঁহার নিকট প্রকাশ
করিল। স্বদেশের সঙ্গে কবির পুন্মিলন ও দেশের
নূতন প্রকাশ বা রূপের অভিব্যক্তি তাঁহার প্রধান ও
প্রসিদ্ধ রচনা "কারলিনা" প্রস্থে প্রকাশ পাইরাছে।
এই রচনার প্রধান চরিত্র বিখ্যাত স্ইডিশ রাজা
ঘাদশ কার্ল।

যুদ্ধের সময়ে কালের নিজের দলের লোকজনেরা অনেক কার্পণ্য ও নীচতার পরিচয় দিয়াছে, কিন্তু যথনই কাল তাঁহাদের নিকট পৌরুষের দাবি করিয়াছেন, তথনই তাঁহাদের মধ্য হইতে অনেক অচিস্তানীয় বীরের আবিভাব হইয়াছে। প্ৰটাভা (Poltava) যুদ্ধের বিবরণ দিতে গিয়া কালের সৈক্তদলের এক নায়ক লিখিয়াছেন, "যে-বিজয়-মুকুট কার্ল নিজের জন্ত রচনা করিয়াছিলেন তাহা রাজ-হইতে গডাইয়া নিম্পদস্থের মাথায় শোভা পাইমাছে।" হেইডেনষ্টাম গাঢ় রঙে কার্লের জীবনের এই ট্রাম্বেডি চিত্রিত করিয়াছেন। কার্লের সত্যিকার চিত্র হে**ইডেনন্টামে**র রচনায় বাদ পড়িয়াছে। গ্রন্থকারের মতে রাজার ও রাজ্যের এই আত্ম-বলিদান জাতীয় জীবনকে महत्र मान कतिशाष्ट्र,--- हःथ-देमाळात्र উপরে महेशा वाधशात মুবোগ দিয়াছে, তুঃখবছনশক্তি জাতীয় চরিত্রকে দুঢ় ভিত্তির উপর স্থাপন করিয়াছে। আবার শাইবেরিয়ায় নির্বাসিত কার্যালনা নির্যাতনে মৃতপ্রায় হইয়াও আনন্দ বোধ করিতেছে; আনন্দের কারণ-একদিন হয়ত সতাই সে আপন মাতৃভূমিতে মাথা ঠেকাইতে পারিবে— দেশের পাথরকে চুম্বন করিয়া ধন্ত হইতে পারিবে। হেইডেন্ট্রান 'কার্লিনা' লিথিয়া সাহিত্য-আসরে বিশিষ্ট স্থান অধিকার করেন।

পরবর্তী সমরে তাঁহার শেখনী ছইটি বিভিন্ন ধারা লইয়াছে। এক দিকে সুইডিশ ইতিহাসের অতি-মানবদের জীবনী—ধেমন, সেণ্ট বিরগিন্ধার ভ্রমণ (Heliga Birgittas Pilgrimsfärd—তাঁহার শেখনীর বিষয়ীভূত হইয়াছে, অন্ত দিকে জাতীয়তাবাদ সম্বন্ধে দেশের বক্তব্য কবিতার মধ্য দিয়া বাক্ত করেন। এখানে

উল্লেখ করা প্রয়োজন, তাঁহার "প্রহডেন" নামক সঙ্গীত বন্ধিনের 'বন্দে মাতরমে'র ন্তায় এদেশে গীত হইয়া থাকে। বর্ত্তমান বৎসরে (৬ই জুন, ১৯৩৪) তিনি ৭৫ বৎসর বয়সে পদার্পন করিয়াছেন। তিনি নোবেল প্রাইজ্ঞ একাডেমির একজন সভা।

ওস্কার লেভেরটনই দর্বপ্রথম ইছদী-জাতীয় সুইডিশ যিনি সাহিত্য ও শিল্পের রাজ্যে খ্যাতিলাভ করেন। জীবনের অধিকাংশ সময়ই তিনি গৃহকোণে আবদ্ধ ছিলেন, এই কারণে দেশের প্রকৃতির সহিত তাঁহার পরিচয় ছিল কম। তাঁহার রচিত সুইডেনের প্রকৃতি-বর্ণনা অনেকটা কল্পনায় গড়া। স্থইডিশ সমালোচকদের মতে তাঁহার ভাষাও স্থানে স্থানে এমন যে, তাহা পড়িবার সময় সুইডিশ পাঠককে তাঁহার বিদেশীয়তার কথা মনে করাইয়া দেয়। কিন্তু ব্রাণ্ডেসের স্থায় তিনি সুইডেনে নিজকে পরদেশী বলিয়া বোধ করেন নাই। বস্তুতঃ তিনি মুইডেনকে এমন ভাবে নিজের করিয়া শইয়াছিলেন. যে, দেশের সাহিত্য-ইতিহাস রচনায় ও সাহিত্যিকদের চরিত্রবিশ্লেষণে তাঁহার সমকক বিরল বলিলেও চলে। সমালোচনা-কার্য্যে তাঁহার অজাতির বিশিষ্ট গুণগুলি. যথা—চিস্তাশীলতা, অন্তর্গৃষ্টি ও বিশ্লেষণ-ক্ষমতা-পূর্ণমাত্রায় বর্ত্তমান। সাহিত্য-সমালোচনা তাঁহার কলমে বড় আর্ট উপশালা-বিশ্ববিদ্যালয়ে ब्ह्या উঠে, প্রথমে পরে ষ্টকহলমের কলেজে তিনি সাহিত্যের অধ্যাপক ছিলেন।

এই শ্রেণীর অন্ত এক ক্ষন সাহিত্যিকের কথাও বিশেষভাবে উল্লেখযোগা, তাঁহার নাম পের হালষ্ট্রম (Per Hallström)। হেইডেনন্টাম প্রবাসে ইউরোপীয় সভ্যতার প্রতি বিতৃষণ বোধ করিয়াছিলেন এবং পূর্ববেদশবাসীদিগকে ভালবাসিতে শিধিয়াছিলেন। কিন্তু পের হালষ্ট্রমের ক্ষেত্রে তাহা অন্তর্রুপ হইয়াছে। যৌবনে ইঞ্জিনিয়ার রূপে তিনি আমেরিকার যুক্তরাজ্যে করেক বৎসর বাস করেন; কিন্তু সেধানকার নাগরিক জীবন তাঁহার পক্ষে অসন্থ হইয়া উঠে। বিগত শতান্ধীর শেষ দশকে বিখ্যান্ত সাহিত্যিকদের মধ্যে তাঁহার নায় কেইই নিজের আদর্শকে আঁকড়াইয়া ধরিয়া থাকিতে

পারেন নাই। তিনি সৌন্দর্যোর উপাসক সতা, কিন্তু নীতিবাদ তাঁহার জীবনের চরম কথা। গল্পে উপস্তাসে সর্ব্বেই তিনি নীতিবাদের উপাসনা করিয়াছেন। তাঁহার সাহিত্যের উপকরণ গ্রীসের ইতিহাস, বাইবেল, মধ্যযুগের বীর-কাহিনী, ইটালীর নবজীবন, ফরাসী-বিপ্লব ও বর্ত্তমান যুগের বহু ঘটনা হইতে গৃহীত।

তাঁহার অধিকাংশ রচনার জীবন-মরণের সম্বন্ধ ও
সমস্তা বড় হইরা উঠিয়াছে। তিনি শিশুদিগকে
ভালবাসেন, কারণ তাহারা মৃত্যুর স্বরূপ সম্বন্ধে অজ্ঞ।
বৌবনকে তিনি সমাদর করেন, কারণ বৌবন
বিগত জীবন সম্বন্ধে বিশেষ কিছু ক্রক্ষেপ করে না

বা বিশেষ সচেতন নহে; আবার ভবিষ্যতের জীবন-চিত্র
সম্বন্ধেও যৌবনের ধারণা অস্পষ্ট, কিন্তু তবুও যৌবন আপন
শক্তি ও সৌন্দর্যোর মধ্যে সমস্ত ক্রমে লইরা বাস করে।
থানাতস (Thanasos) নামক উপস্তাসশুলিতে তিনি
অতি কঠোর নির্মম প্রাকৃতির লোকের চরিত্র আঁকিয়া
দেখাইয়াছেন, কি ভাবে পায়ওও মৃত্যুর সন্নিকটে পৌছিয়া
বদলাইয়া যায়, কি ভাবে অসুশোচনা ছায়া নিজকে পবিত্র
করে। তাঁহার রচনায় বাজিগত জীবনের বহু অভিজ্ঞতা ও
লোকচরিত্র মর্ম্মশেশী ভাষায় বর্ণিত হইয়াছে।

পের হালষ্ট্রম নোবেল প্রাইজ কমিটির বর্ত্তমান সেক্রেটারী।

কীর্ত্তিনারায়ণ

এননীমাধব চৌধুরী

ভৈরব রারের বংশের দেশজোড়া অখ্যাতি ছিল যে সে-বংশের বড়ছেলের। নাকি খুনে হয়।

এ-অথ্যাতির মূল কোথায় কেহ বলিতে পারে না, কিন্তু
সকলেই একবাকো স্বীকার করে যে, এ-বংশের বড়ছেলেরা সকলেই কতকটা খুনে প্রাকৃতির এবং কেহ কেহ
বাস্তবিকই খুন করিয়াছে। খুন করিয়া কি উপায়ে
তাহারা আইনের হাত হইতে পরিত্রাণ পাইয়াছে জিজ্ঞাসা
করিলে লোকে তাচ্ছিলাবাঞ্জক মুখভঙ্গি করিয়া বলিত,—

— আরে বাপু, আইনের কথা আর ব'লো না, আইন কি বড়লোকের জন্ত তৈরারী হয়েছে? আর ভৈরব রায়ের বংশের লোককে আইনের পাঁচে ফেলবে কোম্পানীর আমলে এত বড় আইনবাজ লোক ক্লনাতে দেরি আছে। খুনের কিনারা যে করবে সাক্ষী-সাবৃদ পাবে কোথার? এ-তল্লাটে কার ঘাড়ে ছটো মাথা কবে ছিল যে এ বংশের লোকের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য স্লেবে? জ্যান্ত মানুষ চলে ক্লিরে বেড়াছে, হঠাৎ একদিন শুম হয়ে গেল্ব। ছ-চার দিন কানাঘুষো চলল, কালাকাটি চলল, ব্যন্। তারপরে সব চুপ।

কি ভাবে ভৈরব রায়ের সময়ে রায়-বংশ লোপ পাইল সেই গল্প এক দিন শুনিলাম।

বলা বাছল্য, ভৈরব রায় বংশের বড়ছেলে। প্রকাশু পরিবারের মধ্যে বর্ত্তমান ছিল কেবল ঐ বুদ্ধ, খটি হুই-তিন বিধবা আর ভৈরব রায়ের জ্যেষ্ঠ পৌতা। পুত্র বহুকাল হইল গভ হইরাছেন। পিতৃহীন পৌত্রকে ভৈরব রায় নি**ঞ্চ হাতে মানুষ করিয়াছিলেন। শি**শু পৌত্রের লালনপালন ব্যাপারে বাড়ির আর কাহারও হাত ছিল না, সে ব্যাপারে স্ত্রীলোকের করণীয় অংশটুকু করিবার অধিকার পাইরাছিল ত্রজদাসী নামী এক কৈবর্ত্ত-জাতীয়া পরিচারিকা। এই শ্বেতবসনা স্ত্রীলোকটিকে দেখিলে কেহ দাসী বলিয়া বুঝিতে পারিত না। ভৈরব রায়ের স্ত্রী পৌত্রের জন্মের অনেক আগেই মারা গিয়াছিলেন। তাঁহার মৃত্যুর পরে अन्तरের কর্তৃত্ব বর্ত্তিরাছিল তাঁহার বয়:কনিলা বিধবা ননদের উপর, কিন্ত কাৰ্য্যতঃ প্ৰকৃত কৰ্ত্ব ছিল ব্ৰহ্মাসীর হাতে। দিনাস্তে একবার ছেলেকে দেখিয়াই বিধবা পুত্রবধুকে সম্ভট থাকিতে হইত, একটিবার ছেলেকে কোলে লওয়া দূরে থাকুক ক্রাকে লুকাইয়া ব্রজনাসী মাঝে মাঝে ছেলেকে তাঁহার ক্রোকে লুকাইয়া দিত, কিন্তু কর্ত্তা একথা জানিতে পারিলে কি অনর্থ ঘটিবে সেই আশকাতেই তিনি এত ব্যাকুল হইয়া উঠিতেন যে, ছেলেকে আদর করিতে ভরদা পাইতেন না, এক মুহুর্ত্তের জন্ত তাহাকে বুকে চাপিয়া ধরিয়াই ব্রজনাসীর কাছে ফিরাইয়া দিতেন।

সেই পৌত্র আজ বড় হইয়াছে। ভৈরব রায় পৌত্রের নাম দিয়াছিলেন কীর্জিনারায়ণ। বাহির মহলে কাছারী-বাড়ির দক্ষিণে যে বৈঠকখানা দালানে ভৈরব রায় থাকিতেন তাহার সন্মুখে ছিল এক প্রাশন্ত, বাধানো আঙ্গিনা। বৈঠকখানা দালানের রকের উপরে যেখানে হই ঝাড় ছুই ফুলে শাদা হইয়া চারিদিকে মুগদ্ধ ছড়াইত ও বড় বড় পদ্মকরবীর গাছ হুইটিতে গুচ্ছ শুচ্ছ লাল ফুল কুটিয়া থাকিত সেখানে একখানা খেত পাথরের জলচৌকর উপর বসিয়া ভৈতব বায় পৌত্রেব শিক্ষাবিধান করিতেন।

প্রকাণ্ড বাড়ির মধ্যে একমাত্র এই বৈঠকথানার অন্তব্যহলের দালানটিই অক্ষত দেহে দাঁডাইয়াছিল। মাত্র করেকটি কোঠা ব্যবহারবোগ্য ছিল, বাকী সব পরিত্যক্ত বিশাল ভগ্নস্তুপে পরিণত হইয়াছিল। ছোট-বড় নানা আকারের অখখগাছ ভগস্তুপের মধ্যে মাথা থাড়া করিয়াছিল, সেই সকল গাছ বাহিয়া উঠিয়াছিল নানা জ্রাতির কণ্টকলতা। অন্দরের সীমানার মধ্যে ছিল কালীদহ নামে পুকুরটি—চারিদিক ভগতাপে পরিবৃত বেন একথানি স্বচ্ছ কাচথও। সান-বাধানো ঘাট ও উচ্চ পাড়ের নীচে ক্টিকের মত জল টল টল করিত। কালীদহের চারিটি পাড় জঙ্গলে ঢাকিয়া গিয়াছিল, শুধু সানবাধানো ঘাটগুলি সেই জঙ্গলের আক্রমণ হইতে অব্যাহতি পাইয়াছিল। উদ্ধর দিকের ঘাটের ডানপালে একটা অঙ্ত গম্বাকৃতি কোঠা, চূড়ায় একখানি লোহার ত্রিশূল तिथिता त्वांका यात्र त्व धककारण शिवमिलत किंग। কালীদহের জল কাকচক্ষুবৎ পরিষ্কার হইলেও সে জ্বলে কেহ স্থান করিত না, একমাত্র পরিচারিকা ব্রঞ্জাসী ছাড়া। তাহার এই বিশেষ অধিকারে কেহ কোনও প্রশ্ন করিভ না।

অন্দরের সঙ্গে ভৈরব রায়ের কোন সম্পর্ক ছিল না. তাঁহার হাতীর দাঁতের খড়মের শব্দ অন্সরের সীমানার মধ্যে কখনও প্রতিধানিত হইত না। তাঁহার স্নান, ভোজন, শরন বহির্মাটীতে সম্পন্ন হইত, সন্ধ্যাহ্নিকও বহির্বাটীর মধ্যে অবস্থিত ভগপ্রায় মন্দিরের একাংশে চলিত। বৈঠকখানা দালানে বাহিরের লোকের প্রবেশ নিষিক্ষ ছিল। ইহার একদিকে পাশাপাশি রক্ষিত ছুইট পালকে পৌত্র ও পিতামহ শয়ন করিতেন। পালকের শিয়রে দেয়ালের গায়ে সারি সারি নানা আকারের তরবারি ও ছোরা সজ্জিত ছিল, কোনখানির বাট সোনার, কোনটি রৌপ্যের। পায়ার দিকে বছসংখ্যক বল্লম ত্তক দিয়া দেয়ালের গায়ে আবদ্ধ ছিল, ইহাদের কোনটির করাতের দাঁতের মত, কোনটির মাথা মাথা ছইদিকে টাঙ্গির মত, কোনটি ত্ৰ-ফলা, কোনটি এক ফলা। ঘরের অন্তদিকে গোলাকার একটি খেত পাথরের প্রকাণ্ড টেবিল, তাহার হই দিকে হইটি প্রকাণ্ড আলমারী। একটির মধ্যে নানা আকারের সেকালের তৈয়ারী বন্দুক— কয়েকটি তাহাদের দৈর্ঘ্যের জন্ত দৃষ্টি আকর্ষণ করিত। দেখিলে বিশ্বাস করা কঠিন হইত যে, এত লম্বা ও এত ভারী বন্দুক সাধারণ মামুষ কোনকালে ব্যবহার করিত। অপর আলমারীতে ছিল ছোটবড় নানা আকারের থানকরেক খাপখোলা তরবারি ও ছোরা, মরিচা পড়িয়া একেবারে অব্যবহার্য্য হইয়া গিয়াছে, আর শুটি তিনেক অম্ভূত চেহারার বেঁটে বন্দুক—রিভ্লভারের মত কতকটা। লোকে বলিত এইগুলির প্রত্যেকটি নররক্তরঞ্জিত, এজন্ত আলাদা করিয়া রাখা হইয়াছিল। তুইটি আলমারীর পালে অনেকগুলি চামডা-বাধানো ঢাল দেওয়ালে আবদ্ধ। শ্বেতপাথবের টেবিলের উপরে গম্বাকৃতি কাঁচের আবরণে ঢাকা কয়েকটি বড় বড় সেকেলে ঘড়ি, একটি বাদে বাকী সব-গুলি বন্ধ। যে ঘড়িট চলিতেছিল সেটি একটু অম্ভূত একটি পরীমূর্ত্তি হাতে একটি ছোট হাতুড়ী বাজিবার সময় হইলে পরীটি হাত লইয়া দাঁডাইয়া। ভূশিয়া সম্মুধের একটি কাঁসীর মত বস্তুতে আঘাত করিত আর ক্লভরকের বাজনা বাজিয়া উঠিত, সঙ্গে সঙ্গে নারী-কণ্ঠের গান শোনা যাইত। টেবিলের এক পালে ছোট একটি দামামা, পিতলের দেহ, কতকটা বড় বাটীর আকারের।
তাহার একধারে হুইটি পিতলের ডাণ্ডা, মাথা গোল
বলের মত। এই অঙ্ত দামামা সম্বন্ধে নানারকম কিংবদন্তী
প্রচলিত ছিল।

এই সকল কিংবদস্তীর মধ্যে কিছু সত্য ছিল কিনা বলিতে পারি না। লোকে বলিত মাঝে মাঝে দ্বিপ্রহর রাত্রে পৃথিবী যথন নিবিড় স্চীভেদ্য অন্ধকারে আচ্ছন্ন হইরা যাইত, হঠাৎ গুমগুম শব্দ করিয়া দামামা বাব্দিয়া উঠিত. কেমন একটা অস্বাভাবিক, অশুভ ধ্বনি অন্ধকারের বুক চিরিয়া পল্লীবাসীদের কানে আঘাত করিত—আর এক অজানা আতক্ষে তাহারা শিহরিয়া উঠিত। এই দামামা वासिया উঠিলেই नांकि এक छन विभानकाय वृक्ष कुरिशीरतत মত ল্যাঙ্টপরা, বার্নক্যের ভারে কুক্তদেহ, প্রকাণ্ড শাদা গোঁফে মুণের অদ্বেক আরত ও লম্বা শাদা দাড়ির অগ্র-ভাগটি ছইদিকে টানিয়া ছই কানের সঙ্গে বাধা, বাঁ-কোমরে একথানি বাঁকানো তরবারি, পিঠের দিকে একথানি ছোরা, ডান হাতে একগাছা স্থতীক্ষ বল্লম লইয়া--ছারামুর্তির মত ধীরে ধীরে বৈঠকখানার রকের উপর আসিয়া দাঁডাইত। দাঁডাইয়া লোহা-বাধানে। বল্লমের গোডার দিকটা রকের উপর তিনবার ঠকিত, সঙ্গে সংস্থ দামামার চীৎকার হঠাৎ থামিয়া যাইত। আশ্চর্য্যের বিষয় এই যে, সেই বিশালকায় বুদ্ধটি রকের উপর উঠিয়া শব্দ করিবার পর বে-মুহুর্ত্তে দামামার শব্দ থামিয়া ঘাইত তার ঠিক পরমুহুর্ত্তে একটা চাপা কান্তার শব্দ শোনা যাইত। লোকে বলিত যে, রকের নীচে আঙ্গিনার প্রান্তে পশ্চিমদেশীয়া স্ত্রীলোকের পোষাকে একটি স্ত্রীলোক মুখটি ফুদীর্ঘ ঘোমটার আবৃত করিয়া বৃদ্ধের পিছনে পিছনে আসিয়া দাঁড়াইত, এবং তাহারই সুদীর্ঘ ঘোমটার মধ্য হইতে চাপা কালার শব্দ আসিত।

এই স্ত্রীলোকটি কয়েক বৎসর আগে মারা গিরাছে।
সে ছিল বিশালকার বৃদ্ধটির স্ত্রী আর বৃদ্ধটি ছিল ভৈরব
রায়ের দেহরক্ষী ও লাঠিরালবাহিনীর সর্নার লালা সিং।
আনেক কাল এই দম্পতি স্থথে ঘরকলা করিয়াছিল। তার পর
হঠাৎ কি এক কাণ্ড হইয়া গেল—ভাহাইদর একমাত্র সস্তান
বয়ন্থা মেরেটি গেল মারা। কি অপরূপ স্ক্রেরীই সে ছিল।

আর সেই সঙ্গে সঙ্গে দোর্জগুপ্রতাপশালী রায়-পরিবারের বংশপ্রাণীপ, বৃদ্ধ ভৈরব রায়ের জ্যেষ্ঠপুত্রটিও হঠাৎ মারা গেলেন। এই শোচনীয় হর্ঘটনার কাহিনী আজিও এক রহস্তজালে আর্ড রহিয়াছে, সে রহস্তজাল লোকে কোন-কালে ভেদ করিতে পারে নাই, পারিবেও না। কস্তাকে হারাইয়া লালা সিংহের স্ত্রী দীর্ঘকাল জীবিত ছিল না। কিন্তু এতদিন পরেও যথনই শুম-শুম শব্দ করিয়া দামামা গভীর রাত্রে, স্চীভেদ্য অন্ধকারের বৃক্ চিরিয়া বাভিয়া উঠিত তথনই তাহার ক্রন্দনরত ছায়ামূর্ত্তি স্থামীর পিছনে পিছনে কি যেন অকথিত অভিযোগ লইয়া ভৈরব রায়ের বৈঠক-থানার রকের নীচে আসিয়া উপস্থিত হইত।

দামানার শব্দ থামিয়া গেলে ভৈরব রায় বৈঠকথানার দরজা থুলিয়া বাহিরে আদিতেন। ঋজু, দীর্ঘ, মেদবর্জ্জিত দেহ,—উজ্জ্ঞল গৌরবর্ণ, দাড়িগোঁফ পরিষ্কার করিয়া কামানো, শুক্রকেশ ও ঘন যুগ্মজ্ঞ, গলায় যজ্ঞোপবীত, দক্ষিণ বাছতে সোনার তাগা, বামহন্তের মণিবন্ধে একটি অন্তথাতুর সক্ষ বালা, পায়ে হাতীর দাঁতের খড়ম। দেখিলে মনে হয় যে বয়স অনেক হইয়াছে, কিন্তু দাঁড়াইবার ও চলিবার কঠিন দৃপ্ত ভঙ্গী ও শুক্রবর্ণের বিশাল যুগ্মজ্ঞর দারা অর্দ্ধ আচ্ছাদিত ত্ই চোথের উজ্জ্ঞল অন্তর্ভেদী দৃষ্টি দেখিয়া বয়সের পরিমাণ অন্ত্মান করা সহজ্ঞ হইত না। কণ্ঠস্বরের সত্তেজ গান্তীর্যাও মধ্যবয়য়্প শক্তিশালী পুরুষের মত।

হাতীর দাঁতের খড়মের ঠকঠক শব্দ করিয়া ভৈরব রার রকের উপর আসিলে কি থেন মন্ত্রবলে সেই কুজনেহ বৃদ্ধ হঠাৎ সোজা হইয়া দাঁড়াইত, দাঁড়াইয়া বিগ্রুৎগতিতে কোমরের বাঁকানো তরবারি খাপ হইতে খুলিয়া সামরিক কারদার অভিবাদন করিত। সঙ্গে সঙ্গে আঙ্গিনার স্ত্রী-মূর্তিটিও মাটিতে পড়িয়া সাইাঙ্গে প্রণাম করিত।

তার পর ভৈরব রায় নিয়কঠে কি বেন আদেশ করিতেন, প্রভৃতক্ত বৃদ্ধ নির্মাণ ভাবে শুনিত। প্রভৃত্ বক্তব্য শেষ হইলে আবার অভিবাদন করিয়া বল্লমের ছারা রকে ঠক্ করিয়া একবার শব্দ করিত। সঙ্গে সঙ্গে খেন উহার প্রভৃত্তরেই শুম করিয়া দামামার একবার গন্তীর প্রতিধ্বনি হইত। রক হইতে নামিয়া কুল্ডদেহ বৃদ্ধ ধীরে খালিনা পার হইয়া যাইত, পিছনে পিছনে

চলিত সুদীর্ঘ ঘোমটায় আর্তা ক্রন্দনরতা স্ত্রীর ছায়ামুর্ছি।

লালা সিং আঞ্চিনা পার হইয়া অন্তর্হিত হইলে ভৈরব রায় রকের উপর পায়চারি করিতে আরম্ভ করিতেন— ঠক্ঠক্ ঠক্ঠক্ করিয়া হাতীর দাঁতের খড়মের শব্দ হইতে থাকিত।

বৈঠকথানা দালানের সেই রকের উপরে যেখানে হুই ঝাড় জুঁই অজস তুল ফুটিয়া শাদা হইয়া থাকিত ও বড় বড় পদ্মকরবীর গাছ হুইটিতে গুচ্ছ গুচ্ছ লাল ফুল ফুটিয়া থাকিত সেইথানে একথানি খেতপাথরের জলচৌকির উপর বসিয়া ভৈরব রায় পৌতা কীর্ত্তিনারায়ণের শিক্ষাবিধান করিতেন। কুদ্র বালক মাথায় প্রকাণ্ড এক বাধিয়া বা-হাতে ছোট একখানি ঢাল ও ডান হাতে তরবারি শইয়া কুজনেহ বৃদ্ধ লালা সিংহের সঙ্গে তরবারি ধেশিত-কখনও বা কল্পিত প্রতিশ্বন্দীকে সম্মুধে রাখিয়া একাই থেলিত বা কল্পিত প্লায়মান আততায়ীর পশ্চাদ্ধাবন করিয়া বর্ণা ছু"ড়িত। লালা সিংহের শিক্ষার গুণে কুদ্র वानक इंजिमश्री अञ्चान नाठियान रहेया উঠियाছिन। মালকোঁচা দিয়া কাপড পরিয়া ছোট লাঠিখানা হাতে লইয়া ডাক ছাড়িয়া লাফাইয়া লাফাইয়া সে যথন লাঠি বুরাইত, বন-বন শব্দ করিয়া বিত্যুতের মত তাহার হাতে লাঠি ঘুরিতে থাকিত, দেখিয়া ভৈরব রায়ের ছুই চোখ উজ্জ্বল ब्रहेश डेर्फिल ।

পৌত্রকে অখারোহণ-বিদ্যা শিক্ষা দিতেন ভৈরব রায়

যয়ঃ। একটি দোর্জাশলা তেজী শাদা রঙের দোড়ায়

জিন কলিয়া মুসলমান সহিস আঙ্গিনার একপ্রাস্তে তাহার

লাগাম ধরিয়া দাড়াইয়া থাকিত। প্রভুপুত্র কাছে আসিলে

সে লাগাম ছাড়িয়া দিয়া হেঁট হইত, তাহার আনত পিঠের
উপর পা রাখিয়া লাফাইয়া বালককে বোড়ায় চড়িতে হইত।

পিঠে সোয়ার চাপিলেই ঘোড়াটি পাগলের মত পিছনের

হই পা শৃত্তে ছুঁড়িতে আরম্ভ করিত, দেহ বাঁকাইয়া

আন্দোলিত করিয়া আরোহীকে ঝাড়িয়া ফেলিয়া দিতে

চেটা করিত।

প্রথম দিন বোড়ায় চড়িয়া বালক ভয়ে কাঁদিয়া ফেলিয়াছিল। কিন্তু অদুরে দণ্ডায়মান পিতামহের চোধের দিকে চাহিয়া তাঁহাকে নামাইয়া শইবার জন্ত অনুরোধ করিতে সাহস পায় নাই। ঘোড়ার কাঁধের উপর হেঁট হইয়া প্রাণপণে তাহার কেশর আঁকড়াইয়া সে পড়িয়াছিল। দিতীয় দিনে ঘোড়া লাফাইতে হুরু করিলে সে লাগাম টানিয়া সিধা বসিয়া রহিল। দশ মিনিট কাল লাফালাফি করিবার পর ক্ষুদ্র সোয়ারটিকে শইয়া সদর ফটক পার হইরা যোড়াট উর্ন্থাসে ছুটতে লাগিল। ছুটতে ছুটতে সে কেবল চেষ্টা করিতে শাগিল কোন ফাঁকে পথ ছাড়িয়া পথিপার্শের আগাছার দ্বঙ্গলের মধ্যে প্রবেশ করিতে পারে। কখনও বা এমন ভাবে বড় বড় গাছ ঘেঁষিয়া ছুটিতে লাগিল বে প্রতিমুহুর্তে বালকের পা গাছের কাণ্ডে বাধিয়া ছড়িয়া ধাইবার, উণ্টাইমা তাহার ঘোডা হইতে পড়িয়া যাইবার আশক্ষা হইল। বালক লাগাম দাঁতে কামড়াইয়া ধরিয়া চাবুকের উন্টা দিক দিয়া তুই হাতে তাহার ঘাড়ে ও পাশে আঘাত করিয়া তাহাকে পথে চালাইতে চেষ্টা করিতে কয়েক দিন এইভাবে চলিবার পর বুঝিতে পারিল যে তাহার সোয়ারট ক্ষুদ্র হইলেও ভর পাইবার পাত্র নহে। ক্রমে সে ঠাণ্ডা হইয়া আসিল।

এইভাবে কীর্ণ্ডিনারায়ণের পদোপযোগী শিক্ষাদীক্ষা চলিতে লাগিল।

কীর্ন্তিনারায়ণের বয়দ যখন আঠারো বছর পুরিল তখন এক দিন পিতামহ তাহাকে কাছে ডাকিলেন, নতমন্তকে পিতামহের সম্মুথে দাঁড়াইলে তিনি আদেশ করিলেন কালীদহে নান করিয়া পূজার কাপড় পরিয়া তাঁহার নিকটে আদিতে হইবে। কালীদহে নান করিবার আদেশ পাইয়া কীর্তিনারায়ণ একবার বিমিত ভাবে চোথ ভুলিলেন, পরক্ষণেই নতমন্তকে অন্দরের দিকে চলিয়া গেলেন। পৌত্রকে মান করিবার আদেশ দিয়া ভৈরব রায় রকে পায়চারি করিতে লাগিলেন—ঠক্ঠক্ ঠক্ঠক্ করিয়া হাতীর দাঁতের খড়মের শব্দ হইতে লাগিল। ঘন ঘন সেশক্ষ ভানিয়া মনে হইল বুদ্ধ ভৈরব রায় আজ যেন একটু উত্তেজিত ও অস্তমনস্ক।

কীর্ত্তিনারায়ণ কালীপহে স্নান করিতে নামিলেন। কালীপহের কাকচকুবৎ স্বচ্ছ, স্থির জলে নামিয়া ডুব দিতেই তাঁহার মনে হইল কত বিকুক সমুদ্রের তরঙ্গমালা একটির পর একটি করিয়া অবিশ্রামে দেন তাঁহার মাথার উপর ভাঙিয়া পড়িতেছে; হুই কানের কাছে ঝম ঝম করিয়া কিসের বেন শব্দ হুইতে লাগিল, তাঁহার ধাদক্ষদ্ধ হুইবার মত হুইল। মনে হুইল তাঁহার মাথার উপরে কালীদহের ক্ষে বুকে বেন প্রলম্বের তাণ্ডব আরম্ভ হুইয়ছে, গাছপালা উপড়াইয়া বায়ুবেগে তুপরপ্তের মত ছুটিতেছে, দালান কোঠা ভাঙিয়া-চুরিয়া সশব্দে কালীদহের ক্ষলে পড়িতেছে, প্রবশ ভুকস্পনে কালীদহের অথৈ জলরাশি বিষম বেগে তাঁহাকে লইয়া শৃত্তে উৎক্ষিপ্ত হুইতেছে—

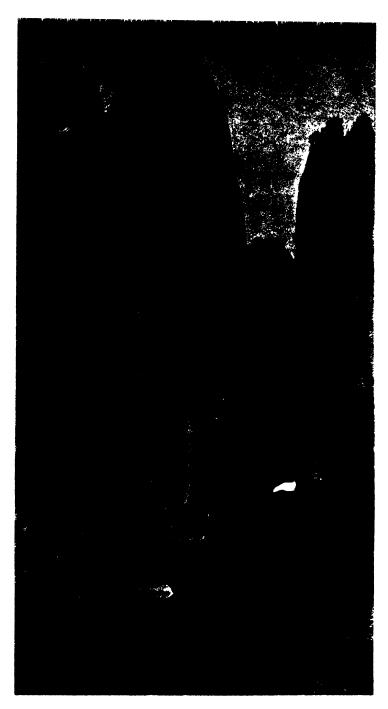
প্রাণভয়ে কীর্ছিনারায়ণ জল হইতে মাথা তুলিলেন, চারিদিক নিস্তর, নিঝুম, কালীদহের জলরাশি আগেকার মতই কাকচকুবৎ স্বচ্ছ, স্থির। প্রেততাড়িত ব্যক্তির স্থায় কীর্ত্তিনারায়ণ জল হইতে উঠিয়া পড়িলেন, তাঁহার সর্বাঙ্গ কাঁপিতেছিল। তার পর তিনি কি করিলেন, কি কি ঘটনা ঘটিল সে সকলের কোন পরিষার স্থৃতি তাঁহার নাই। মনে হইল যেন বিখের ঘুম তাঁহার হুই চক্ষুতে ভর করিয়াছে, চেতনা আচ্ছন্ন করিয়াছে। সেই অর্দ্বপুদ্ধোরে অতি অঙ্ত, বিচিত্র ঘটনাবলী তিনি প্রত্যক্ষ করিয়াছিলেন। পিতামহ তাহার হাত ধরিয়া এক অন্ধকার, অজ্ঞাত পুরীতে লইয়া গেলেন—বায়ুহীন, সঁগাৎসেতে, হুৰ্গন্ধ বাষ্পপূৰ্ণ পথ সেই পুরীতে বাইবার। সেধানে একটি বেদীর সম্বর্থে স্তিমিত প্রাদীপালোকে তাঁহাকে নতজাম হইনা বসিতে হইন, পিতামহ হাতে সক্ষ চুড়ির মত কি একটা পরাইয়া দিলেন। তার পর কোথা হইতে অজল আলো ঝরিয়া পড়িন, তিনি দেখিলেন এক জন খেতবন্ত্ৰভূষিতা স্ত্ৰীলোক আঁচলের চাবি দিয়া একটা রুদ্ধ কক্ষের ধার খুলিয়া ফেলিল। পিতামহের সঙ্গে সেই কক্ষে প্রবেশ করিয়া তিনি দেখিলেন দেয়ালের সঙ্গে গাঁথা অনেকগুলি লোহার সিন্ধুক। পিতামহের ইঙ্গিতে সেই স্ত্রীলোকটি সিম্বুকগুলি একে একে খুলিতে লাগিল, ভিতরের বিপুল ধনরাশি দেখিয়া তাঁহার ছই চোক ঝলসিয়া গেল; ধীরে ধীরে তাঁহার চেতনা লুপ্ত হইতে লাগিল। চেতনা সম্পূর্ণভাবে নুপ্ত হইবার পূর্ব্বমূহুর্ত্তে সেই স্ত্রীলোকটির মুধ তিনি দেখিতে পাইলেন—সে পিতামহের পরিচারিকা ত্রজ্ঞাসী !

তার পরের কোনও ঘটনা কীর্ছিনারায়ণের আর স্মরণ

নাই। ভৌতিক ঘটনা বিশিষা ব্যাপারটিকে তিনি উড়াইয়াই দিতেন, কিন্তু হাতের সেই অন্ত ধাতুর বালা স্মরণ করাইয়া দিল বে-অভিজ্ঞতা তাঁহার লাভ হইয়াছে তাহা অন্ত্ত, আশ্রুৱা, ভীতিজ্ঞানক হইলেও মিথ্যা নয়। সেই বিপ্লা, অগণিত ধনরাশি যাহা তিনি দেখিয়াছিলেন তাহা তবে পিতামহের, তাঁহার নিজেরই গৈড়ক সম্পদ। সেই গুপ্ত ধনরাশির কথা মনে পড়িয়া, উহা এক দিন তাঁহারই হইবে মনে করিয়া কীর্ভিনারায়ণের হুই চক্ষু অস্বাভাবিক উজ্জ্বল হইয়া উঠিল। হঠাৎ একটা কথা মনে উদিত হইতেই তিনি চমকিয়া উঠিলেন—এই বিপ্লা অগণিত ধনরাশি বেখানে আবদ্ধ রহিয়াছে তাহার চাবি ব্রজ্ঞানীর হাতে!

এত লোক থাকিতে ব্ৰজদাসীর হাতে কেন চাবিগুলি কে সে? কেন ভাহার উপর এতথানি দিয়াছেন ? সে যদি বিশ্বাস্থাতকতা করে? বিশ্বাস ? পরিবারের পরিচারিকা হইয়াও কেন সকলের উপরে কর্তৃত্ব করে? গুজুব পিতামহের সঙ্গে তাহার গুপু, অবৈধ সম্পর্ক আছে। থাকুক গুপ্ত, অবৈধ সম্পর্ক, তাই বলিয়া এক জন ইতরজাতীয়া স্ত্রীলোককে এত বিশাস? এ-সকল কথা ভাবিতে-ভাবিতে তাঁহার মনে বিজাতীয় জিঘাংসা-প্রবৃত্তি জাগিয়া উঠিল। কীর্তিনারায়ণের মনে পড়িল না কি অসমসাহসের সঙ্গে ত্রহ্মদাসী পিতামহের **রোষবহিং হইতে অন্তঃপুরিকাদিগকে রক্ষা করিয়া** থাকে, কি ভাবে বৃদ্ধ পিতামহের সমস্ত সেবাশুশ্রাবার ভার কেবল ব্রজ্ঞদাসী বহন করে, কি অগাধ মেহে কোলে পিঠে করিয়া তাঁহাকে সে মানুষ করিয়াছে, সকল আব্দার-অত্যাচার সহিয়াছে।

পাচ বৎসর বয়সের পর হইতে ভোজনের সময় ছাড়া কীর্জিনারায়ণের অন্দরে ঘাইবার ছকুম ছিল না। পিতামহের সঙ্গে যে সময়— টিবারে ছাকুম ছিল না। সময়— দিবসের অধিকাংশ সময়—কাটাইবার জন্ত তাহার তিনটি সঙ্গী ছিল ব্রজ্ঞদাসী, বৃদ্ধ লালা সিং ও লালা সিংহের স্ত্রী। রায়-বাদীর সংলগ্ধ বৃহৎ উদ্যানের এক পার্গে ছুইটি কুটীরে বৃদ্ধ লালা সিং ও তাহার স্ত্রী বাস করিত। পরিষার করিয়া নিকানো প্রাঙ্গণটি তক্তক করিত। প্রাঙ্গার একটি পিতলের খাঁচা ঝুলিত,—



পাহাড়তলী শ্রীরামেশ্বর চটোপাধাায়

প্ৰবাসা প্ৰেস, কলিকাড

খাঁচার ছিল একটি স্থন্দর ময়না। স্থাােদরের বহু পূর্বেই ময়নাটি পরিষ্কার মানুষের কণ্ঠে ডাকিত "জয় সীতাপতি," "জন্ম দীতাপতি"। তার পরেই দে চেঁচাইত—"বুড়ীমা, ও বৃড়ীমা, ওঠ্ ওঠ্।" বৃদ্ধ লালা সিং "জন্ম সীতাপতি" "জয় সীতাপতি" বলিতে বলিতে কু**টী**রের বাহিরে আসিত, আসিয়া ময়নাটিকে একটু আদর করিত। তার পর মুথহাত ধুইয়া প্রাঙ্গণের অপর দিকে অবস্থিত ছোট বাগানটুকুর ভদ্বির করিত। চারি দিকে বাধারির বেড়া-দেওয়া স্থন্দর ছবিখানির মত বাগানটি, বেড়া জড়াইয়া উঠিয়াছে তরুশতা, ছোট ছোট লাল দূলে অপব্ৰপ তাহার শোভা। একদিকে একটি নাতিবৃহৎ স্থলপদ্ম গাছ, ফিকে গোলাপী রঙের বড় বড় ফুলে গাছ ভরিয়া থাকিত। অপর কোণে একটি শিউলী গাছ, শরৎকাল আসিবার বহুপূর্বেই গাছের তলা শিউলী ফুলের আন্তরণে ঢাকিয়া যাইত। সন্ধাবেলা শিউলীর মৃত্যু**রে** ছোট কু**টী**রথানি আমোদিত হইত। তার পরেই থানিকটা জায়গায়—বড় বড় ভটার গাছ, সারি সারি লক্ষা ও বেগুনের চারা লাগানো, গাছগুলির অজ্স ফলন দেখিয়া আশ্চর্য্য হইতে হইত।

বালক কীর্তিনারায়ণ তক্তকে প্রাঙ্গণের মধ্যে একটি ছোট বেতের মোড়ায় বিসয় থেলা করিত। "বুড়ীমা, ও বুড়ীমা, ওঠ ওঠ্" ময়নাকে এ বুলি সে-ই শিখাইয়ছিল। ভূটা পাকিলে লালা সিংহের স্ত্রী আগুনের মালসায় সেঁকিয়া দিত আর বেতের মোড়ায় বিসয় বালক কীর্তি মহা আফ্রাদের সহিত তাহা থাইত। মাঝে মাঝে ব্রহ্মদাসী আসিয়া লালা সিংহের স্ত্রীকে বকিয়া-ঝকিয়া অর্কভক্ষিত ভূটা বালকের হাত হইতে কাড়িয়া লইত। ক্ষম বালক কিল-চড় মারিয়া আঁচড়াইয়া কামড়াইয়া ব্রক্ষাসীকে বিপর্যান্ত করিয়া দিত; যত ক্ষণ বুদা ঘর হইতে একটি সরের নাড় আনিয়া হাতে না-দিত তত ক্ষণ তাহার রাগ পড়িত না। নাড় হাতে লইয়া ব্রক্ষাসীর কোলে চড়িয়া "বুড়ী মা যাই" বলিয়া হাসিতে হাসিতে সে চলিয়া যাইত।

সেই কীর্ত্তিনারায়ণ আজ বড় হইয়াছে। বৃদ্ধ শালা-সিং দেখা হইলেই তাহাকে নমস্কার করে। তথু ব্রহ্মদাসীর ব্যবহারে কোন পরিবর্ত্তন হয় নাই। যুবক কীর্ত্তিকে বকাঝকা করিতে সে আজও কিছুমাত্র তয় পাইত না। যুবক কীর্তিনারায়ণ আগেকার মতই কসরৎ করিতেন, বোড়ায় চড়িতেন, বন্দুক লইয়া দলবল সঙ্গে শিকারে যাইতেন। তাঁহার গতিবিধিতে অনেকথানি স্বাধীনতা দেওয়া হইয়াছিল,—অন্দরে গিয়া ইচ্ছামত সময় কাটাইতে আর কোন নিষেধ ছিল না। কিন্তু তাঁহার মনের নিভ্ত কোণে অহরহ এই চিন্তা জাগিয়া থাকিত যে রায়-পরিবারের বিপুল ধনরাশি একটি ইতরজাতীয়া স্ত্রীলোকের হাতে রহিয়াছে।

ব্রজদাসীর সংসারে কেহ ছিল ন।। সাত বছর বয়সের সময় দুর গ্রামের স্বজাতীয় নয় বৎসরের একটি বালকের দঙ্গে তাহার বিবাহ হ**ই**য়াছিল। এক বৎসরের মধ্যে সে বিধবা হইল। তাহার বৃদ্ধা মায়ের মৃত্যু হইবার কিছুদিন পূর্বে পনের বছর বয়সের সময় সে রায়-পরিবারে চাকুরী করিতে আদে; সদ্যবিপত্নীক ভৈরব রায়ের বয়স তথন ত্রিশ। ক্রমে 🖛মে সে বৃহৎ রায়-পরিবারের প্রকৃত গৃহিণী হইয়া উঠিল। স্বল্লভাষিণী, শাস্ত, মৃত্ত্বভাবা ব্ৰজদাসীকে দেখিলে কেহ বি বলিয়া মনে করিতে পারিত না—করিতও না। কর্তার সঙ্গে সম্বন্ধ ধরিয়া সকলে ভাহাকে ডাকিত, ব্যবহারও সেইরূপ করিত। তুই পুরুষ পূর্ব্বে বঙ্গদেশের পল্লী-অঞ্চলের সম্ভ্রান্ত ঘরে এই ব্যাপার নিত্যনৈমিত্তিক ছিল, কাহারও চোথে ইহা বিসদৃশ ঠেকিত না, ইহা শইয়া পরিবারের কাহারও গাত্রদাহ হইত না। নামে পরিচারিকা হইলেও এই শ্রেণীর পরিচারিকারা পরিবারের আত্মীয়া বলিয়া গণ্য হইত, পারিবারিক সকল বিষয়ে তাহারাও মতামত প্রকাশ করিত। যেমন অরুত্রিম ন্মেছ তাহারা সকলকে বিলাইত তেমনই মেহ নিজেরাও পাইত। বৃদ্ধি-বিবেচনা, স্বভাব ও কার্য্যদক্ষতার গুণে কেহ কেহ যথেষ্ট ক্ষমতার অধিকারিণীও হইত। ব্রজদাসী हिन এই শ্রেণীর স্ত্রীলোক। ব্যবহারগুণে সকলকেই সে বশীভূত রাথিয়াছিশ। কর্ত্তার স্থথ-স্বাচ্চন্দ্রের বিধান যেমন তাহাকে না-হইলে চলিত না, কর্তার পিতৃহীন পৌত্রকে মানুষ করিবার কাব্রেও সেইরূপ তাহাকে না-হইলে চলিত না।

কীর্ত্তিনারায়ণ এই ব্রহ্মদাসীর কোলে-পিঠে চড়িয়া মানুষ হইয়াছিল, নিজের মারের সঙ্গে তাহার বিশেষ সম্পর্ক ছিল ন।। প্রোঢ়া ব্রহ্মানীকে সে ডাকিত দাদী বলিয়া, নিজের পৌত্রের মতই তাহার অমুগতও ছিল।

কিন্দ্র কালীদহে স্নান করিয়া সেদিনকার সেই অন্ত্রুত অভিজ্ঞতা লাভ করিবার পর ইইতে কেমন করিয়া খেন তাঁহার চিত্তের ধারা বদলাইয়া গেল। কি এক অদম্য গুণাও ভয়ের বশে ব্রজদাসীর প্রতি সকল ভালবাসা মুছিয়া গিয়া কুন্ধ, বার্থ আক্রোশে তাঁহার চিত্ত আলোড়িত হইতে লাগিল। নি:জর মনের এই মঙ্কুত অবস্থান্তর অন্ত্রুত করিয়া তিনি ভীত হইয়া উঠিতেন। আয়সংখ্য করিবার সকল প্রেয়াদ বার্থ হইতে দেশিয়া অসহায়ভাবে বিলাপ করিতেন। জ্বেম রায়-পরিবারের হিংপ্র রক্ত তাঁহার ধ্যনীতে ধ্যনীতে কি খেন এক ভয়য়র ইক্সিত বহিয়াচঞ্চল হইয়াছুটিতে লাগিল।

বৃদ্ধ ভৈরব রায় সদ্ধা-বন্দনা সারিয়া বৈঠকখানার দালানের রকে বিদিয়া আছেন,—তৃই ঝাড় ছুঁই গাছ দূলে শালা হইয়া গিয়াছে, গন্ধে চারিদিক আমোদিত। সেই গদ্ধের প্রভাবে তাঁহার চিত্ত আজ নির্মাল, উদার, প্রশাস্ত হইয়া উঠিয়াছে। বৈশাখী পূর্ণিমার পূর্ণচক্র চারি দিকে অজস্র রূপালী আলো ছড়াইয়া দিয়াছে, স্পুর অতীতে লুম্বিনী উল্যানে এমনই দিনে এক মানবশিশু শোকতাপব্যাধিরিষ্ট ধরণীর সাম্বনার জন্ত শাস্তিবার্তা বহিয়া জননী-জঠর হইতে ভূমিয় হইয়াছিলেন। আয়সমাহিত ভাবে কতক্ষণ তিনি বিসয়াছিলেন থেয়াল নাই। হঠাৎ একটা দ্রাগত, অস্পাই আর্তনাদ শুনিয়া তিনি সচ্কিত হইয়া

শব্দ শুনিয়া সচকিত হইয়া ভৈরব রায় দাঁড়াইয়া উঠিলেন, এক অজানা আতকে তাঁহার দীর্ঘ দেহ শিহরিয়া উঠিল। উত্তেজিত ভাবে তিনি রকে পায়চারী করিতে লাগিলেন, হাতীর দাঁতের খড়ম ঠক্ঠক্ ঠক্ঠক্ করিয়া শব্দ করিতে লাগিল। কতক্ষণ এইভাবে কাটিয়া গেলে হঠাৎ তিনি দেখিতে পাইলেন জ্যোৎস্নাধৌত প্রশস্ত প্রাক্ষণ পার হইয়া একটি ছারামূর্জি ত্লিতে ত্লিতে তাঁহার দিকে অগ্রসর হইতেছে। গন্তীর কঠে তিনি ডাকিলেন, কে? ছারামূর্জি আরও অগ্রসর হইল, আরও নি্কটে আসিল, তার পর রকের সিঁজির নীচে স্থির হইয়া দাঁভাইল।

ভৈরব রায় দেখিলেন ব্রজদাসী। ব্রজদাসী মাটিতে
না দাঁড়াইয়া একটু উপরে স্থির হইয়া আছে,
ব্রজদাসীর মাথা ব্কের উপর ঝুলিয়া পড়িয়াছে,
ব্রজদাসীর অঙ্গে অসংখ্য আঘাত-চিহ্ন, তীক্ষধার অন্ত দিয়া
সর্বালে কে যেন খোঁচাইয়াছে, দেহ বাহিয়া রক্তধারা
নীচে পভিতেছে।

তৈরব রায়ের সকল অঙ্গ হিম হইয়া গেল ! করেক
মুহূর্ত তিনি স্থির হইয়া গাঁড়াইয়া রহিলেন, ত্ই চকু
ফাটিয়া প্রাণ নেন বাহির হইয়া আসিতে চাহিতেছিল।
তার পর চমক ভাঙিল।

হঠাৎ পদ্লীবাদী সকলে উৎকর্ণ হইয়া শুনিল গুম-গুম, গুম-গুম শব্দ করিয়া ভৈরব রায়ের দামামা কর্কশ কঠে বাজিয়া উঠিল। পূর্ণচক্র ঘনক্কফ মেঘের অন্তরালে লুকাইল, ছাই-রভের অসংগ্য মেঘথগু মাথার উপরে ছুটাছুটি করিতে লাগিল, ঘন ঘন বিত্যুৎরেথা সমস্ত নভত্তল চিরিয়া ফেলিতে লাগিল। তথনও গুম-গুম করিয়া কর্কশ কঠে ভৈরব রায়ের পাগলা দামামা বাজিতেছে।

কুজদেহ বৃদ্ধ লালা সিং কথন তাহার বাঁকানো তরবারি কোমরে বাঁধিয়া রকের নীচে আসিয়া দাঁড়াইল, প্রভুর আদেশ বহন করিয়া কখন সে চলিয়া গেল, ভৈরব রায়ের হাতীর দাঁতের থড়মের ঠক্ঠক্ ঠক্ঠক্ শব্দের তথনও বিরাম নাই।

দেখিতে দেখিতে পূর্বাকাশ লাল হইরা উঠিল, মনে হইল কালীদহের পাড়ে থেন আগুন লাগিরাছে। লক্ লক্ করিয়া দে অগ্নির লোলশিখা আকাশে থেন ধাইয়া উঠিল। মনে হইল শত শত শিবা অগুভ চীৎকার করিয়া উঠিল। মনে হইল বহু কঠের করুণ ক্রন্ধনের রোলে চরাচর মূর্চ্তিত হইয়া পড়িল।

শুন্ন বন্ত্রে সর্বাদেহ আচ্ছাদিত করিয়া স্বল্পভাষিণী, শান্ত, মৃত্সভাষা ব্রজদাসী আর ফিরিল না, স্কল্পোপম উজ্জ্বল রূপ লইয়া রায়-বংশের শেষপুরুষ যুবক কীর্তিনারায়ণ আর ফিরিলেন না, বাকানো তরবারি কোমরে বাধিয়া নিমকহালাল কুজনেহ বৃদ্ধ ভৃত্য লালা সিং আর ফিরিল না।

পাগলা দামামা নিস্তব্ধ হইয়াছিল, কালীদহের পাড়ে

বৈশাখী পূর্ণিমার পূর্ণচক্র শান্তোজ্জ্বল হাসি হাসিতেছিল।
কিন্তু বৈঠকথানা-দালানের রকের কঠিন বক্ষে থেখানে
ছইটি ঝাড়ের শাদা জুঁই ফুলের গজ্জে ও গুচ্ছ গুচ্ছ পদ্মকরবীর
শোভায় চারিদিক আমোদিত ও উজ্জ্বল হইয়াছিল, ভৈরব
রায়ের হাতীর দাঁতের থড়মের শব্দ তথনও সেখানে নিস্তক্ষ
হয় নাই।

সাহসিক কোন পল্লীবাসী বৈশাধী পূর্ণিমায় রাশ্ব-বাড়ির ভগন্ত,পের সন্ধিকটে দাঁড়াইলে এখনও দেখিত যে কালীদহের পাড়ে আকাশের গায়ে পূর্ণচক্র বিরাট ভগন্ত,পের উপর মান ছারা বিস্তার করিয়াছে, আর শুনিতে পাইত, সেই ভগন্ত,পের অস্তর হইতে আসিতেছে কঠিন রকের বুকে হাতীর দাঁতের খড়মের শক্ত—ইক্ঠক্ ঠক্ঠক্।

পদ্মাবতের কবি

শ্ৰীঅমৃতলাল শীল

পদ্মাবতের কবির নাম মলিক মহম্মদ জায়দী (জায়দ নগর নিবাদী)। আক্রকাল থে স্থানে "নবাব" শব্দ ব্যবহৃত হয়, তুগলক ও থিলজী-বংশায় সম্রাটদের সময়ে সেই স্থানে মলিক [বাঙ্গলা মল্লিক] শব্দ ব্যবহৃত হইত। কিন্তু কবি মহম্মদ স্বয়ং এই উপাধি অর্জ্জন করেন নাই, বা কোন মলিকের বংশে তাঁহার জন্ম হয় নাই। তিনি স্বয়ং আপনার নামের সহিত এই মলিক শব্দ জুড়িয়া দিয়াছিলেন অথবা তাঁহার সঙ্গী বন্ধুরা তাঁহাকে মলিক বলিয়া ডাকিতে আরম্ভ করিয়াছিল ঠিক জানা নাই; তবে তিনি আপনার এক হিন্দু বন্ধকে মলিক উপাধি ধারণ করিতে অন্থরোধ করিয়াছিলেন ও তাহার বংশে এখন পর্যান্ত মলিক শব্দ ব্যবহৃত হইতেছে।

মহমাদ দরিত পিতামাতার সন্তান ছিলেন। জন্মের অল্পরেই তাঁহার পিতার মৃত্যু হয়, মাতা গৃহস্থাদের বাটীতে শরীর থাটাইয়া অতিকটে পুত্রকে পালন করিতে লাগিলেন। শৈশবেই মহমাদ বসস্তরোগে একটি চক্ষু ও একটি কর্ণ হারাইয়াছিলেন। তাঁহার মৃথথানি এমনই বিরুত হইয়া গিয়াছিল যে লোকে দেখিলে না-হাসিয়া থাকিতে পারিত না। আট নয় বৎসর বয়সে মহম্মাদের মাতারও মৃত্যু হইল, তথন বালক একেবারে নিরাশ্রম হইল। লোকে তাহার বিরুত মুখ মেধিয়া হানিত কিছু এই হানি বালকের করে শেকের কর

প্রবেশ করিত না। বনে যদি ফলমূল কিছু পাইত তবে তাহাই গাইত কিংবা কুধার তাড়নায় অস্থির হইলে রাত্রে অন্ধকারে গ্রামে আসিয়া ভিক্ষা করিত, অথবা বন হইতে কাষ্ট কুড়াইয়া কিছু অর্জন করিত। বালক এক দিন দেখিল বনে একদল হিন্দু সন্ন্যাসী রাত্রি-বাস করিবার উদ্যোগ করিতেছে ও পাক আরম্ভ ক্রিয়াছে। কুধার তাড়নায় বালক তাহাদের কাছে গিয়া দাঁড়াইলে সন্ন্যাসীদের দলপতি তাহার করুণ কাহিনী শুনিয়া তাহাকে আদর করিয়া থাওয়াইলেন ও বলিলেন-এক্লপ কন্ত করিয়া কর দিন কাটাইবে, আমাদের সঙ্গে চল, আমরা পরিব্রাহ্মক, এক স্থানে ছ-এক দিনের বেশী থাকি না, তীর্থে তীর্থে ঘুরিয়া বেড়াই, ভগবান আমাদের অল্ল জুটাইয়া দেন। আমাদের সহিত থাকিলে তোমাকে আমাদের ক্ষমতা-মত ভাল শিক্ষা দিব, ভবিষ্যতে ভূমি এক জন ভাল সাধু হইতে পারিবে। মহন্দ তাঁহাদের সহিত ক্রন্নভূমি ত্যাগ করিলেন। তাঁহারা নগরের বা গ্রামের বাহিরে আসন করিমা নগরে ভিক্রা করিতে বাইতেন, কিন্তু মহম্মদ কথনও গ্রামে প্রবেশ করিতেন না। তাঁহাদের শিক্ষাতে মহম্মদ হিন্দুদের পুরাণের অনেক কথা শিধিয়াছিলেন ও কালে ভাল যোগী **হইয়াছিলেন**। কিছুকাল তাঁহাদের সহিত সমস্ত ভারতের তীর্থ পর্যাটনের পর মহম্মদ হিন্দু সন্ন্যাসীদের সঙ্গ আগ করিয়া এক মুসলমান স্ফী সাধুর কাছে দীকা গ্রহণ ্রুব্রুব্রুব্রুব্রুব্রুব্রের সাধন করেন। এইরপে ডিনি क्षान्द्रशास्त्र वाष्ट्रशास क्षानिकारणा ।

ইহার পর তিনি করেকটি শিষা সংগ্রহ করিয়া পরিব্রাক্তক-রূপে গুরিয়া বেড়াইতে লাগিলেন। এইরূপ পরিব্রাঞ্জক যোগা সম্প্রদায়ে ভোতাপক্ষী-রূপী আত্মার নানা রূপক গল প্রচলিত আছে, তিনি ঐগুলি শিখিয়াছিলেন। **তাঁহা**র কবিতাতে যোগ-সম্বন্ধে হিন্দী ও আরবী উভয় ভাষার পারিভাষিক শব্দ পাওয়া যায়। মহম্মদের হাতের লেখা পাওয়া যায় নাই, বোধ হয় লিখিতে পারিতেন না, অথবা লিখিতে শিখিয়াছিলেন কিন্তু পরিব্রাজক গুরুর সহিত ঘুরিয়া হাত পাকাইবার অবসর পান নাই, কিন্তু কবিতা-রচনায় ঠাহার ঈশ্বরণত্ত ক্ষমতা ছিল। তিনি ছোট ছোট ফুন্দর কবিতা রচনা করিতেন ও তাঁহার শিষ্যেরা গ্রামে গ্রামে সেই গান গাহিয়া ভিক্ষা করিত। এক দিন তাহারা ন্ধায়দ প্রামে তাঁহার রচিত এক বারমাদা গাহিতেছিল। এই জায়দ প্রাম মোগলদরাই হইতে ১৩২ মাইল দুরে **লখন**উর পথে প্রতাপগড় ও রায়বেরেলীর মধ্যে রেলের ধারে অবস্থিত। গ্রামের জমিদার বা রাজা ঐ গীতে আরুষ্ট হইয়া বালকদের সম্পূর্ণ বারমাসা গাহিতে বলিলেন ও গাঁত কাহার রচিত জিজ্ঞাসা করিলেন। বালকরা বলিল, এ গাঁত আমাদের গুরুর রচনা, তিনি আমাদের কিন্ত তিনি সন্ন্যাসী, কখনও কোন সঙ্গেই আছেন গ্রামে প্রবেশ করেন না। এই কথা শুনিয়া রাক্সার শ্রদ্ধা বাড়িয়া গেল, তিনি স্বয়ং গ্রামের বাহিরে গিয়া মহন্দদের সহিত সাক্ষাৎ করিলেন ও অনুনয় করিয়া আপনার এক বড় বাগানে আসিয়া তাঁহাকে বাস করিতে বলিলেন। মহম্মদ উন্থান-বাটীতে বাস করিতে স্বীকৃত হইলেন না, তাঁহার জন্ম বাগানের এক নির্জ্জন এক থড়ের কুটীর বাধা হইল, সেই কুটীরেই তিনি জীবনের শেষ অংশ কাটাইয়াছিলেন। জায়সের রাজার বাটীর কাছেই তাঁহার গোর এখনও সম্মানিত বা পুঞ্জিত হইতেছে।

এই রাজার অনেকগুলি স্ন্তান জন্মিয়ছিল, কিন্তু একটিও বাঁচে নাই। মহন্মদের আসিবার পর (তাঁহার আশির্কাদের ফলে) এক পুত্র হইরা দীর্ফলীবী হইয়ছিল বলিয়া রাজা, রাজবংশ ও অন্তেক প্রামবাসী তাঁহার ভক্ত হইয়া পড়িলেন। এই বাগানে বাসকালে মহম্মদ পদ্মাবৎ রচনা করেন। গোগী-সম্প্রদায়ে আত্মার পাথীর সহিত তুলনা অন্ত দেশেও প্রচলিত আছে। ইরানের প্রসিদ্ধ স্ফী সাধু ও কবি ফরীদ-উদ্দীন অন্তারের আগ্রা সম্বন্ধে "মনতক্-উল-ত্যার" [পাখীর কথা] নামক পুস্তক দার্সী স্ফী- সাহিত্যে একথানি অতি উচ্চ শ্রেণীর গ্রন্থ। ইংরেজ কবি ফিট্সব্লিরাল্ড এই পুস্তকের কয়েকটি কবিতার ভাব শইয়া যে কবিতা রচনা করিয়াছেন তাহা তাঁহার "ওমর থৈয়াম" নামক কবিতা-পুস্তকে আছে। ভারতের : গেগী-সম্প্রদায়েও ভোতার গল্প নানা আকারে প্রচলিত আছে, মহম্মদ সেই রূপক বর্ণনা পদ্মাবতে করিয়াছেন, ক্রমে লোকে তাঁহার রূপককে ইতিহাস ভাবিয়াছে। এরপ নম অন্ত স্থানেও হইয়াছে, শুনিয়াছি অনেকে বর্দ্ধমানের রাক্সবাতীর নিকট মালিনীর মালঞ্চ ও ফুল্লবের থনিত ফুডক্লের স্থান নির্দেশ করিবার চেষ্টা করিয়া বিফল হইয়াছিলেন। মহম্মদ বোধ হয় রক্ত্রসিংহ ইত্যাদির নাম ভ্রিয়াছিলেন, সেই নামগুলি আপনার কবিতাতে বাবহার করিয়াছেন মাত্র, চিতোর-অবরোধের অশাও-উদ্দীন কি কি করিয়াছিলেন তাহার সবিস্তার বর্ণনা মহম্মদ জানিতেন না। সেকালে ইতিহাস কেবল ফার্সী ভাষাতে ছিল, মহম্মদ সে ভাষা জানিতেন না, তাঁহার সঙ্গীরাও ভিথারী সাধু-সন্ন্যাসী বা বৈরাগীর দল ছিলেন, কেহ ফার্সী ভাষার ধার ধারিতেন না। তবে অন্ত কোন লোকের মুখে ১৪০ বৎসর পূর্বের যুদ্ধের গল্প শোনা সম্ভব বটে, কিন্তু সে শোনা-গল্পও অত্যুক্তিপূর্ণ হওয়া সম্ভব। সেকালের হাতে লেখা পুস্তকও তুম্পাপ্য ছিল, নানা দিক দিয়া চিস্তা করিলে মহম্মদের মত লোকের বিখাস্য ইতিহাস না-জানাই সম্ভব বোধ হয়। ইহা ছাড়া কবির উদ্দেশুও ইতিহাস লেখা নহে, গল্পে যেমন এক রাজা ও তাঁহার হুয়ো সুয়ো রাণীর কথা বলা হয় সেইব্লপ গল্প বলিয়াছেন, কেবল রাজা-রাণীর একটা নাম দিয়াছেন মাত্র। চার শত বৎসর পরে তাঁহার রাজা ও রাণীর যে জীবনের থোঁক করা হইবে তাহা তিনি স্বপ্নেও ভাবেন নাই. ওরপ ভাবিশে তিনি হয়ত রাজা-রাণীর নাম দিতেন না ।

আজকাল পদ্মাবৎ গল্প বা কবিতা দেবনাগর অক্ষরে ও উর্ভু অক্ষরে লিখিত তুই প্রকার পাওয়া বায়, তাহাদের পাঠে অনেক প্রভেদ আছে। দেবনাগর অক্ষরে লেখা পুস্তক হিন্দী ভাষার বিদ্বানদের হাতে ছিল ও উর্ত্ অক্ষরে লেখা পুস্তক-থানি মুসলমানদের হাতে ছিল। মহম্মদ অশিক্ষিত ছিলেন, তাঁহার কবিতাতে ব্যাকরণ ও ছন্দের অনেক ভূল ছিল, হিন্দী পণ্ডিতরা অনেক ভূল সংশোধন করিয়াছেন, অতএব উভরের পাঠে অনেক প্রভেদ হইয়া গিয়াছে। উর্ত্ অক্ষরে লেখা পুস্তকথানি মহম্মদের আসল অবিক্কত রচনা বোধ হয়, মুসলমানরা সংশোধন চেটা ক্রেন নাই।

জায়সী সম্বন্ধে প্রবাদ আছে যে তাঁহার বিরুত মুখ দেখিয়া হাসিলে তিনি মনে বড় আঘাত পাইতেন, সেইজস্ত তিনি সকলের সমুখে বাহির হইতেন না। স্বারসের রাজার এক বন্ধ জমীদার তাঁহার সুখ্যাতি শুনিরা তাঁহাকে দেখিতে আসিরা রাজার অতিথি হইয়াছিলেন, পরে কবিকে দেখিরা হাসিরা ফেলিরাছিলেন। মহম্মদ বিরক্ত ও ব্যথিত হইরা কঠোর ভাবে জিজ্ঞাসা করিলেন, কাহাকে দেখিরা হাসিতেছ ? হাড়ি দেখিরা হাসিতেছ, না কুমোরের প্রতি বিজ্ঞাপ করিতেছ? অর্থাৎ আমার মুখ দেখিরা হাসিতেছ, না আমাকে যে কুস্তকার এইরূপ কদাকার গড়িরাছে তাহাকে বিজ্ঞাপ করিতেছ? জমীদারটি বড় লজ্জিত হইলেন ও ক্ষমা প্রার্থনা করিলেন।

রঙ্গিলা নায়ের মাঝি

গ্রীবিমল মিত্র

সন্ধাবেলা বউ-ভূবির-চরে নৌকা বাধা হইল । আশার আর আনন্দের সীমা নাই। বভদুর চাও কেবল জল—ছল-ছল কল-কল শব্দ করিয়া নৌকার গায়ে আসিয়া চেউগুলি আছাড় ধাইতেছে। পাশের বউ-ভূবির-চরে ঘন জ্বলন। অনেক দিনের পুরাতন চর; জ্বলও অনেক দিনের। বালুর চর চালু হইয়া জ্বলের উপর নামিয়া আসিয়াছে। দেখিতে দেখিতে আশা একেবারে আয়হারা হইয়া গেল।

মাঝিরা তৃই জন নৌকা বাঁধিয়া তাশাক সাজিতে বিদিয়াছে। চরে নামিয়া হাত-পা খুইয়াছে। সঙ্গে চিঁড়া নৃড়ি আছে—তাহা দিয়া তাহারা শেষবারের মত আহার সমাধা করিবে। বিকালবেলা স্থ্যান্তের সময় এবং তাহার আগেও তাহারা গান করিয়াছে। ছ-ছ-করা বাতাসের সঙ্গে তাহারে গান চমৎকার লাগিয়াছিল। বনমালী আর আশা সারা বিকাল ধরিয়া একমনে তাহাই শুনিয়াছিল। চমংকার গলা; গানটি কাহার রচনা কে জানে—কিন্তু বড় করুণ। পাড়াগেঁরে গান; গানের তাৎপর্যঃ মাঝিকে ডাকিয়া কোন্ বিরহী বলিতেছে, নাইয়া ভূমি তো কত দেশ ঘোর, কত দরিয়া পাড়ি দাও, ভূমি কি আমার বন্ধুর ধবর রাধ ?…

যদি কথনও তার দেখা পাও, তাকে বলিও আমি তাহার পথের দিকে চাহিয়া এখনও বসিয়া আছি ,…

ছইয়ের এধারে গলুই-এর কাছে বসিয়া আশা পা

দিয়া জল ছিটাইতেছিল। নৃতন বউ—বিয়ে হইয়াছে

সেদিন — বছরখানেকও হয় নাই—কিন্ত এমন চঞ্চল!

বনমালী যদি হকুম দেয় তো আশা এখনই চরে

গিয়া বেড়াইয়া আসিতে পারে—ভাহার এতটুকু ভয়
করিবে না —

বনমালী মানা করিল—উছ—পা দিও না জলে—দিও
না বলছি—বধু শুনিবে না। জলের ওপর পা দিলে যে কি
দোষ হয় তাহা তাহার বোধগম্য হইতেছিল না। বনমালীর
কথা না-শুনিয়া আশা তেমনই পা দিয়া জল নাড়াইতে
লাগিল। বনমালী বলিল—দিও না বলছি পা, ও আশা,
পা দিও না—তবু যদি কথা শুনবে—বে-কথাটি বলব,
সেইটি—জলে কত কুমীর-হাঙোর আছে—সাপ-থোপ
আছে—

আশা হাসিয়া ফেলিল—ইন, জলে নাকি আবার সাপ থাকে! বন্মালী এবার রাগ দেখাইল—থাকে না তো থাকে না বেশ—সাপ থাকে না, ক্মীর থাকে না, কিছু থাকে না— এই সংশ্লাবেলা জলের ওপর পা ঝুলিয়ে ব'সে থাক— শেষকালে সুস্মার মত তোমাকেও কামড়ে দিক—আমি কিছ্ছুটি বলব না—

আশা তবু পা তুলিল না—কিন্তু বনমালীর মুখের ওপর চোথ রাখিয়া জিজ্ঞাসা করিল—সুষমা কে ?···ংক সুষমা?

—কে আবার! নিতান্ত তাচ্ছিল্যভরে বনমালী ওধারে চাহিয়া উত্তর দিল—হুষমার নাম শোন নি? মার কাছে কোনদিন শোন নি? হুষমা—হুষমা—তিন আক্ষরের সেই এতিপ্রিয় নামটি বনমালী স্পন্ত করিয়া উচ্চারণ করিল হুই হুই বার?

—ও: দিদির কথা বলছ ?…

এবার আশা ব্ঝিতে পারিয়াছে। বনমালীর আগের পক্ষের বউয়ের নাম সুবমা!

আশা বলিল--দিদিকে ত সাপে কাম্ডেছিল, না? বনমালী চুপ করিয়া গন্তীর হইয়া ছিল। কথা বলিতে বলিতে কি কথা উঠিয়া গেল! কোথা দিয়া কি হইল--আজ এতদিন পরে হঠাৎ কপায় কথায় তার কণা কেন মনে পড়িয়া গেল! আগে আগে সুষমার কথা ভাবিতে গেলে বনমালী ভারী অন্তমনম্ব হইয়া পড়িত--কাঁদিয়া ফেলিত এক এক সময়; সুষ্মার একটা ফটোও বাধাইয়া রাখিয়াছিল ঠিক বিছানার উপর দিকের দেওয়ালের গায়, কিন্তু এই আশা আসিবার পর সেটা বনমালী ভাঙিয়া ফেলিয়াছে। কি হইবে রাথিয়া? সারা জীবন মন খারাপ রাখিলে বাচিবে কেমন করিয়া? কিন্তু এতদিন পরে সেই কথাটি আবার কেন মনে পড়িল! বনমালীর মনে হইল, মনে না-পড়িলেই বুঝি ভাল হইত। যাহারা চলিয়া যায় তাহাদের কেন মনে রাখা! কেন তাহাদের আশায় পথ চাহিলা বসিলা থাকা! সুষমাকে আর মনে রাখিবার দরকার নাই। সুষ্মাকে এবার হইতে বন্মালী একেবারে ভূলিয়া ঘাইবে। সেই বিপুল জলরাশির দিকে চোখ রাথিয়া বনমালী চুপ করিয়া বসিয়া রহিল। তাই ভাল তাই ভাল— স্থমাকে সে একেবারে ভূলিবে ।

আশা বলিল—আচ্ছা, আমার বদি সাপে কামড়ার ভূমি কি কর ?

বনমালী রাগিয়া উঠিল—কি সব তোমার অলুকুণে কথা—আর কোনও কথা নেই তোমার মুখে—তোমার কি হ'ল বল ত…?

আশা তাহার প্রথম প্রশ্নের জের টানিরা বলিল—
দিদির মতন যদি আমি মরে যাই—তুমি আবার বিয়ে করকে ত ? · · · বল না—ওগো—চুপ ক'রে রইলে কেন—বল—উত্তর দাও— ·

বন্দালী এবার ভীষণ রাগ করিল। বলিল—কথ্যনো বলব না—বলব না ত—কেন, মরা ছাড়া বুঝি তোমার আর কোনও কথা নেই মুখে—মরা মরা—মরতে তোমার বড় সাধ— আর আমি যদি মরে বাই ? •••

টপ করিয়া আশা বনমালীর মুথে হাত চাপা দিল। বলিল—ওগো, আর কথ্থনো বলব না—কথ্থনও না—
আমার ঘাট হয়েছে—হ'ল ত এবার ? মা গো—তোমার মুথে কিছু আট্কায় না—তুমি সব পার—

এই ঘটনায় বনমালীর আর একটি দিনের কথা মনে পড়িল। সেদিনও স্থমা ঠিক এমনি করিয়া তাহার মুখ চাপা দিয়াছিল। একটা কথাও বলিতে দেয় নাই। তার পর দেশে গিয়া বনমালীর নাম করিয়া চণ্ড-ভৈরবের মন্দিরে পূজা দিয়া আসিয়াছিল। ইহারা সবাই এক রকম। সেদিনকার স্থমার সঙ্গে আজিকার আশার এতটুকু তফাৎ নাই। এই আশা তাহাকে থেমন ভালবাসে স্থমাও ঠিক তাহাকে তেমনই করিয়া ভালবাসিত। তবে তাহাকে বনমালী এমন করিয়া ভূলিয়া গেল কেন? চোথের আড়ালে যে চলিয়া যায়—মনের আড়ালেও সে যে চলিয়া বায় না সে কথা কে বলিল। মিথা কথা—চিরকাল কেহ কথনও কাহাকে মনে রাখিতে পারে?...সে-ও যে স্থমাকে ভূলিয়া গিয়াছে তাহাতে তাহার কি দোব!

ক্রমে চারিদিকে আরও অন্ধকার হইরা আসিল।

অস্পষ্ট কুরাশার মত চারিদিকের প্রত্যক্ষ বাস্তবতঃ অব্ধকারে মিলাইরা গেল। কেবল অন্ধকার—সামান্ত একটু চাঁদের আলো পড়িরা জারগার জারগার চিক্ চিক্ করিরা উঠিতেছে; চরের জঙ্গণে একসঙ্গে অসংখ্য বিলী কলরব জুড়িয়া দিয়াছে—ইহাদের মধ্যে বদিয়া বনমালী আর আশা সীমাহীন কাল হইতে থদিয়া পড়া এক একটি মুহুর্ত্ত কুড়াইয়া সঞ্চয় করিতে লাগিল।

জোয়ার আসিবে রাত্রি ছটায়—সেই জোয়ারে নৌকা ছাড়া হইবে। মাথাভাঙার উত্তর দিকে থালের ভিতর দিয়া বড় নদীতে পড়িবে—সেথান দিয়া গিয়া বাবুইঘাটার জেটতে স্তীমার ধরিতে হইবে। চিঁড়া মুড়ি বাহির করিয়া মাঝিরা থাওয়া শেব করিয়াছে—বন্মালীও সঙ্গে করিয়া খাবার আনিয়াছিল, ছ্-জনে মিলিয়া শেব করিল। থাওয়ার শেবে এক জন মাঝি তার করিয়া গান ধরিয়াছে—

মুরে কথায় গানটি বনমালীর ভারী চমৎকার লাগিল। আশাও তন্ময় হইয়া গিয়াছে। এই পরিপূর্ণ উন্মুক্ত আব্হাওয়ায় আর মনের এই অতি-পরিচিত প্রতিবেশে গানটি বনমালীকে অবশ করিয়া দিল।

আশা পাশে বসিয়াছিল। আরও পাশে আসিয়া বলিল—তুমি তো বাঁশী বাজাতে এককালে, না ?

বনমালী বলিল—কে বললে ভোমায়?

—কে আবার বলবে! সবাই ত জানে। পাড়ার সবাই বলে—সেদিন ভঞ্জদের বড়বৌ বলছিল—যাত্রায় নাকি তুনি কেন্ট সেজে বালী বাজাতে, মা'র কাছে ভানিছি—এই-টুকুন্ বেলা থেকে বালীর সথ ছিল তোমার—একবার বালী কেন্ডে নিরেছিল ব'লে কি কালা তোমার—ভাত থাও নি কিছু না—আছো অভ সথ, এখন আর বাজাও না কেন?

वनमानी कथा कहिन ना।

—হাা গো সে বাশীটা গেল কোথার ? · · · আমার বিয়ের পরে ত দেখতে পাই নি—তুমি নাকি বাঁশী বাজালে পাধীরা ডেকে উঠত—সতিঃ সতিঃ এক দিন শুনিও আমাকে, বাঁশী শুনতে স্মামি ভারী ভালবাসি—সে বাঁশী রেখেছ কোধার বল ত ?

বনমালী বলিল-এই গাঙের হলে ভাসিরে দিরেছি-

আশার বিশ্বাস হয় না। বলিল—আহা, সব কথাতেই তোমার ঠাট্টা, সাধের বাশীটা জলে ফেলে দিলে? করার ওপর রাগ করেছিলে, শুনি?

—তোমার দিদির ওপর—

আশা ব্ৰিতে পারে নাই। বলিল-দিদি কে?

—হুষমা —

কথাট। বলিয়াই বনমালী বুঝিল মিথা। কথাটা বলা তাহার উচিত হয় নাই। সত্য সত্যই হৢবমার উপর রাগ ত সে করে নাই। রাগ হইয়াছিল বাশীর ওপর—সেই রাগেই সে বাশা বাজান ছাড়িয়া দিয়াছে। নিশাঁথ রাত্রে এক-এক দিন বনমালীর যথন যুম আসে না—বন-তুলসীর গন্ধে বাতাস উন্মন্ত হইয়া ওঠে—তথন সেই সময়ে ছাদে উঠিয়া বাশা বাজাইতে তাহার ইচ্ছা করে। ইচ্ছ করে—বাশীর ফুটা দিয়া প্রাণের সমস্ত গোপন কথা আকাশে এবং আকাশের তারকালোকে ছড়াইয়া দেয়। বেখানে মর্ত্তালাকের বাণা পৌছায় না, সেই গ্রহ হইতে গ্রহাস্তরে তাহার বাশা কাঁদিয়া কাঁদিয়া মাথা কুটিয়া মরক ৄা…

আশা বলিল—চুপ ক'রে রইলে যে বড়—বললে না ত ? —কি বলব ?

আশা বলিল-কেন দিদির ওপর রাগ করেছিলে...

—সে অনেক কথা—

আশা বলিল—হোক অনেক কথা, বলতেই হবে—'না' বললে শুন্ছিনে···আমাকে বলতে তোমার কি হয়েছে— আমি ত তোমার পর নই—

সে আজ চার বছর আগের কথা। গ্রীম্মকাল। জমিদারীর কাজে বনমালীকে শহরে আসিতে হইবে! অনেক বৃঝাইয়া-স্জাইয়া স্বমাকে বনমালী শাস্ত করিয়াছিল। বাহিরে গরুর গাড়ী দাঁড়াইয়াছিল—পোটলা-প্ট্লি লইয়া বনমালী উঠিতে বাইবে এমন সময় বলা-নাই কওয়া-নাই এক গলা বোমটা দিয়া স্বমা সরাসরি গাড়ীতে আসিয়া বিদিল।

তথন আর কেইবা বোঝে—আর কেইবা বোঝার সে সময় নাই তথন।

क्नमानी **७५ विनाहिन**—काथात्र वादव जूमि ?

কি জানি কেন—বোধ হয় অকারণেই—সুষমা বলিয়াছিল—"চুলো"—

বন্মালীও রসিকতা করিয়া বলিয়াছিল—চল সেধানেই তোমায় নিয়ে যাচ্চি—

শহরের তিন মাইল পুরে হ্যমার বাপের বাড়ি। সেখানেই যাওয়া আপাততঃ স্থির হইল। নৌকায় পথে ছ-দিন কটিইতে হয়। চেউয়ের দোলায় ছলিতে ছলিতে একটা গোটা দিন বেশ কাটিয়া গেল। চাঁদের আলোয়—আর অবাধ খোলা হাওয়ায় হ্যমার কি ফুর্ভি—কোলে মাথা রাখিয়া শুইয়া শুইয়া আকাশ দেখা—মাঝির গান শোনা; রাত্রিবেলা দুরে অন্ধকারের মাঝেটিম্ টিম করিয়া ছই একটি আলো জলে—কোন নৌকার আলো হয়ত। এই তীর—এই একেবারে অকুল পাথার। পৃথিবীর কোনও ভাবনা নাই—ছঃধ-দৈন্তময় পৃথিবীকে এড়াইয়া যেন তাহার। অমর্জ্যলোকে আদিয়াছে।…

দিতীয় দিন ভোর বেলা মাঝিরা একটা চরে নৌকা বাধিল। চারি দিক তথনও বেশ অন্ধকার—সকাল ভাল করিয়া হয় নাই। রাত্রে বনমালীর ভাল ঘুম হয় নাই তাই আর মিছামিছি ঘুমাইবার চেটা না করিয়। বাশীটা লইয়া বাহিরে আসিয়া বসিল—

সামনে কেবল জঙ্গণ। চরের উপর কতদিনকার গাছপালা নদীর জল পাইয়া বড় হইয়া উঠিয়াছে ঠিকানা নাই। কত ভয়ানক জীবজস্ক উহার ভিতর আছে কে জানে। খনস্ক্রিবিষ্ট ডালপালায় দৃষ্টি যায় না। এক-একবার হাওয়া আদে, সারা বনস্থলীতে একটা গম্ থম্ আলোডন হয়।

বনমালী বাঁশী লইয়া বাজাইতে লাগিল।

মুরে আরম্ভ হইরা উঠিতে পড়িতে কোমল রেথাব কোমল গান্ধার ছুইরা ছুইরা ভৈরবী উপরে চড়িতে লাগিল। কোমল ধৈবতে দাঁড়াইরা হেলিতে ছলিতে কোমল নিথাদ ছুইল—ভার পর কত পথে মূর চলিল। অপরূপ রূপ-লাবণাময়ী একটি পাহাড়ী মেয়ে কোমরে কলসী লইয়া আঁকিয়া-বাকিয়া পাহাড়ী পথে ঘুরিতে ফিরিতে সোন্ধা ও নীচু হইয়া গ্রামে চলিয়াছে। তাহারই চলিয়া গাওয়ার ছন্দ—ভাহারই বিরহবিশ্বর অভ্যরের দশ্ব—ভাহার গতিভঙ্গীর সরস ব্যঞ্জনা লইয়া বাশীর গান বাজিয়া চলিল। সুরের শরজালে আকাশের আবহাওয়া আছের হইয়া চলিল। নিবিড় অনুভৃতি লইয়া বাতাস চুপ করিয়া কান পাতিয়া আছে—জলের তর্গ ধেন নিশ্চল হইয়া গিয়াছে—আকাশ নাটির উপর ঝুঁকিয়া পড়িয়া মন্ত্রমুগ্ধ হইয়া গিয়াছে।

নৌকার ভিতর স্থমা ঘুমাইতেছিল-কথন বাঁশীর শব্দে কাগিরা উঠিয়া পাশে আসিয়া বসিরাছে। **মাঝিরাও** ঘুম হইতে উঠিমা বসিয়াছে। পৃথিবীর জড় জীব সমস্ত যেন হ্রের মন্তে অবশ হইয়া আছে। জলের মৃত্-স্রোতের উপর দিয়া ভাগিতে ভাগিতে স্থর চলিল। সেই ভোর-বেশা সমস্ত বনস্থশী যেন স্বরের মোহে আচ্ছন্ন হইয়া পড়িশ, স্থরের ঢেউ ভাসিতে ভাসিতে দৃরে অনেক দৃরে কোন গ্রামান্তের কোন ভীরে, কোন গৃহকোণে কোন বিরহীর বক্ষে কাঁদিয়া কুটিকুটি হইতে লাগিল। সীমা নাই-শ্রান্তি নাই-নৃতন নৃতন বেদনা-সম্ভার লইয়া সেই ভরা-বুক নদীর হুই কিনার ভাসাইয়া হুই কুল ছাপিয়া স্থরের কোয়ার ছুটিশ! এ স্থরে বেন নেশা আছে--এ যেন মাক্র্যকে বড় হর্কাল করিয়া দেয়। তথন সব ভূলিতে হয়—এই পৃথিবীর শ্রান্তি ক্লান্তি বার্থতা নীচতা দৈন্ত—সব সেই বাশীর স্থরে মিলাইয়া শাষ, স্থরের মোহিনী মায়ায় অতিবড় হুর্ম্ব জন্তুও কেমন নিজের অজ্ঞাতে মাথা নীচু করে, এ বাঁশীর কাছে আত্মসমর্পণ করিতে পারিলে জীবন ধন্ত হয়। সেদিন দেই নদীপারের চরের উপর বার্নী এক অপূর্ব্ব কাল্লা কাঁদিতে লাগিল…

সকলেই চুপ,—হঠাৎ স্থানার কি হইল কে বলিবে— একটা পা নৌকা হইতে জলের উপর ঝুলাইয়া দিল।… আরাম করিয়া বসিবার জন্ত হয়ত।…

কিন্তু পা ঝুলাইবার সঙ্গে সঙ্গে স্থবমা মা গো' বলিয়া চীৎকার করিয়া উঠিয়াছে।

বাঁশী ফেলিয়া রাখিয়া কনমালী স্থমাকে ধরিতে গেল—
স্থমাকে ধরিল—কিন্তু সেই মুহুর্জেই দেখা গেল একটা
সাপ কিল্বিল করিতে করিতে চরের উপর দিকে চলিয়া
গেল।

অভাবনীয় কাণ্ড !

বেদনার চীৎকার করিতে করিতে সুষমা নৌকার উপর

ছট্ফট্ করিতে লাগিল। খুব বিষাক্ত সাপ নিশ্চরই— অন্ধকারে বতটা দেখা যার সাপের চেহারা দেখিয়াই বন্মালী তাহা বুঝিতে পারিয়াছে!

ক্ষতস্থানের ঠিক উপরেই বাধিয়া দেওয়া হইয়াছিল—
কিন্তু হইলে কি হয়—সারা শরীর ক্রমে নীল হইয়া আসিতে
লাগিল। চোথের দৃষ্টি ঘোলা হইতেছে; সে কী যত্ত্বণাকাত্তর চীৎকার—অত বে লাজুক মেয়ে সে-ও গলা ছাড়িয়া
আকাশ-বাতাস কাঁপাইয়া চেঁচাইতেছে। দেখিতে দেখিতে
ক্রমে এক ঘণ্টার মধ্যেই সব যেন ঠাণ্ডা হইয়া আসিতে
লাগিল—বন্মালীর চোথের সামনে তাহার কোলের উপর
মাথা রাখিয়া সুধ্মা মরিতে চলিল•••

তার পর সেই নৌকা করিয়াই যত শীঘ্র পারা যায় কাছাকাছি কোন গ্রামে তাহাকে আনা হইল—বাঁচাইবার চেটা যথাসাধ্য হইল—কোথায় ডাক্তার কোথায় বিদ্যি—ওই বে অনেক দুরে একটা কালো জঙ্গল মতন দেখিতেছ,—ওইথানে শাশানে তাহাকে পোড়াইয়া বনমালী একলা নৌকা করিয়া ফিরিয়াছিল…

গল্প শেষ করিয়া বনমালী চুপ করিয়া বিশিয়া রহিল। আশা এতক্ষণ তন্মর হইয়া শুনিতেছিল। বনমালী থামিতেই বলিল—তার পর ?···বাশা বাজান সেই দিন থেকেই ছেড়ে দিলে ?

—সেদিন থেকে নয়—তার পরদিন থেকে—প্রমা মারা বাবার পর একদিন শুধু বাঞ্চিয়েছিলাম, তার পরদিন সংজ্যাবলা—

আশা ছেলেমান্থের মত কাছে খেঁষিয়া জিজ্ঞাসা করিল—কেন—সেদিন কি ছিল ?…

—তবে শোন—

সব কাজ শেষ হইরাছে—ভোরবেলা শাশান হইতে ফিরিয়া বনমালী বাড়ি ফিরিয়া বাইবে। সমস্ত ঠিক বন্দোবস্ত হইয়া আছে। এমন সময় মাঝি আসিয়া বনমালীকে তাহার বালীটি ফিরাইয়া দিয়া গেল। বনমালী ভূলিয়া আগের দিন নৌকার উপরেই ফেলিয়া রাখিয়া আসিয়ছিল। যাক্, বালীটি হাতে আসিতেই বনমালী ঠিক করিল আবার একবার সেই চরে বাইতে হইবে।

ত্ৰ-ত্বন মাঝি ছাড়া আরও ত্ৰলন লোক চলিল লাঠি-

শড়কি লইয়া। বিকালবেলা আবার সেই চরে গিয়া তাহারা পৌছিয়াছে। আগের দিনের মত ঠিক সেই জায়গায় নৌকা বাধা হইল। সন্ধ্যা আরম্ভ হইয়াছে কি হয় নাই— এমন সময়ে সেই ছটি লোককে লইয়া বনমালী চরে নামিল।

একটু ঝোপ-জন্মন ম অথচ কাঁকা জায়গা বাছিয়া লইয়া বনমালী বানী-হাতে সেধানে বিলি। ছটি লোক, তাহারাও বনমালীর ছ-পাশে ছ-জন বিদিয়াছে! বানীর হুরে সেই সাপকে ডাকিয়া আনিয়া লাঠি দিয়া ঠেঙাইয়া হত্যা করা হইবে! বে সাপ প্রমাকে ক মড়াইয়াছে তাহাকে আর পৃথিবীতে বাঁচিতে দেওয়া উচিত নয়। তাহার নিকাশ করিয়া তবে বনমালীর অন্ত কাল। আবার বাঁনী বাজিতে লাগিল।

তেমনি প্রের মূর্জ্নায় মীড়ে তানে অপরপ হইয়া বনস্থলী সচকিত হইয়া উঠিল। বনমালীর বৃকে বত বেদনা বত কালা আছে সব বাঁশার দুটাতে নিঃশেষে ঢালিয়া দিল। কারের অস্তত্তল পর্যান্ত কে ধেন বড় নিক্ষণ ভাবে মোচড় দিতে লাগিল। সন্ধার অন্ধকার বেন ধরণীর মাঝপথে আসিয়া বিহবল হইয়া পড়িয়াছে। কেহ আসিতেছে না। তাহার পাশের ছটি লোক ছ-জোড়া সন্ধানী চকু দিয়া আশে পাশে নজর দিতে লাগিল—কেহ ত আসিতেছে না। অন্ধকার তথনও তরল। প্রের বিনাইয়া বিনাইয়া কাঁদিতেছে। বনমালী মরীয়া হইয়া উঠিল—তাহার সমস্ত শক্তি একজ করিয়া একমনে বাশা বাজাইয়া চলিল। বাশা বাজিতেছে—এথনই বৃঝি আকাশ গলিয়া পড়িবে—নদীর জল সমস্ত বৃঝি এথনই চর ভাসাইয়া লইয়া যাইবে—আরও— আরও করণ করিয়া বনমালীর বাশী কাঁদিয়া চলিল—

তিন জনেই দেখিল-ফল ফলিয়াছে---

সাপ আসিতেছে; বনমালীর মনে হইল বেন ঠিক সেই
সাপটাই! আসিতেছে—আসিতেছে—আসিয়া পড়িল—;
কিছু দুরে আসিয়া সাপ চুপ করিয়া দাঁড়াইয়া গেল। স্থির
নিশ্চল মুর্জির মত—কেবল সুরের তালে তালে যেন একটু
মাথা দোলাইতেছে; উহার চোথে যোর লাগিয়াছে—
সুরের নেশা উহাকে পাগল করিয়াছে…

লোক ঘটি ইঙ্গিতে পরস্পরে একসঙ্গে তৈরি হইতেছিল।
আর এমন প্রোগ নউ করা উচিত নর, লাঠি হাতে লইয়া
ঠিক হইতে বাইবে—এমন সময় বনম'লী দেখিল সাপ এক

নর ছটি। একজোড়া! দম্পতি উহারা! পাশাপাশি

এ উহার গারে হেলান দিয়া রহিয়াছে। লোক ছটিও

দেখিল—একটি সাপ নয় ছটি! মারিতে হইলে ছটিকে

একসঙ্গেই শেষ করিতে হইবে! লোক ছটি প্নর্কার প্রস্তত

হইয়া উঠিতে উদ্যুত হইয়াছে…

হঠাৎ বনমালী ভাহাদের ইঞ্চিতে বসিতে বলিল।

বনমালী বালী বাজাইতে বাজাইতে আন্তে আন্তে পিছনে হটিতে লাগিল। লোকত্তিও সঙ্গে সঙ্গে পিছাইয়া আসিতে লাগিল। তার পর নৌকার কাছে আসিতেই বনমালী নৌকার উপর লাফাইয়া উঠিয়াছে; লোকত্তিও উঠিল। নৌকাতে উঠিয়া দেশা গেল—বহুদুরে সাপত্তি বনের মধ্যে কোথায় অদুশু হইয়া গেল।…নৌকা ছাড়িয়া দিল।…

নৌকার উঠিয়া বনমালী একটাও কথা বলে নাই।
চুপ করিয়া গলুইয়ের কাছে উদাস দৃষ্টিতে আকাশের দিকে
চাহিয়া বসিয়া ছিল! •••

লোক **ছাট বনমালীর অসঙ্গত আ**চরণ ব্**ঝি:ত পারে নাই।** কাছে আসিয়া ব**লিল—কি হ'ল বাবু—মারলেন না** বে ?

বনমালী বলিল—ওদের কি মারতে আছে? এক জোড়া এসেছিল—ওরা যে স্বামী-স্ত্রী—

সত্য-সত্যই প্রাণ গেলেও উহাদের বনমালী কখনও মারিতে পারিত না! একটা যদি আসিত তবে হয়ত মারা সহজ ছিল। কিছু এক জ্যোড়া—স্বামী-ফ্রী উহারা—জন্ধ হউক আর যাহাই হউক—উহাদের মারা বড় নিচুর কাজ! কবে এক ব্যাধ কোন এক পক্ষী-মিথুন মারিয়া ঋষির শাপে ত সারা জীবন ভবপুরে হইয়া বেড়াইল—বর পরিবার নীড় রচিবার অধিকার তাহার জীবনে হইল না—ংশেষে কি বনমালীও তেমনই অভিশাপ কুড়াইবে! উহারা ছ-জনে স্থে থাকুক—মন্থ্য-বিবর্জিত দেশে উহারা স্বাধীন চিত্তে ঘুরিয়া বেড়াক—মান্থ কেন উহাদের দেশে আসিয়া অনধিকারপ্রবেশ করিবে! মান্থেরই অন্তার—

গল্প শেষ করিয়া বনমালী চুপ করিল। আশা বলিল—ভার পর ?

—তার পর বাশীটা নিয়ে অনেক দূর নদীর জলে ছুঁড়ে কেলে দিলাম; সেই থেকে বাঁশী আর ছুই নে —ও সর্বনেশে বাঁশী আর বাজাই নে !···

ইহার পর আশা আর বনমালী ছ-জনেই থানিক কণ চুপ করিয়া রহিল। রাত্রি অনেক হইয়াছে। ব্দলের প্রোত প্রায় স্থির হ**ইয়া আসে-আসে। আ**র ঘণ্টা-হই পরেই জোয়ার আসিবে। আকাশের গায়ে শুক্লা-একাদশী চাঁদ সারা নদীটিকে রূপালী পাতে মুড়িয়া দিয়াছে; থম্থমে গল্প করিতেছে আন্তে আন্তে। আবহাওয়া; মাঝিরা এধারে আশার একাস্ত কাছাকাছি বসিয়া আছে বনমালী! কাছাকাছি বসিয়া আছে বটে, কিন্তু মন তাহার চার বছরের উজ্ঞান ঠেলিয়া বহুদুর পশ্চাতে চলিয়া আসিয়াছে !… লোকান্তরের প্রান্তসীমায় একটি চঞ্চলা প্রীতিমতী মুথ স্মরণ করিয়া বনমালীর বুকখানা ভাঙিয়া যাইতে লাগিল। তবু আজ সে সুষ্মাকে ভূলিতে বসিয়াছে—আশা আসিবার পর হইতে সুয়মাকে তাহার খুব কমই মনে পড়ে…

আশা হঠাৎ কথা বলিল—আচ্ছা, দিদি তোমাকে খুক ভালবাসত, না ?

বনমালী কি উত্তর দিত কে জানে!

হ্যাৎ ওধার হইতে এক জন মাঝি সুর করিয়া গানা ধরিল। আগেকার সেই গানটি! কোন্ বিরহী বেন বলিতেছে—ও গো রঙ্গিলা নায়ের মাঝি, তুমি ত কত দরিয়া পাড়ি দাও —তুমি কি আমার বন্ধুর থবর রাগ? যদি তাহার দেখা পাও ত বলিও—আমি তাহার পথের দিকে চাহিয়া এখনও বিসিয়া আছি—তাহাকে আমি ভূলিতে পারি নাই—আর বলিও, তাহার জন্ত আমি সারা জীবন এমনই বিসয়া থাকিব।…

গান শুনিতে শুনিতে হঠাৎ বনমাণী মনে মনে গর্জন করিরা উঠিল; মিথা কথা! সমস্ত মিথা! কেহ কাহারও জন্ত বসিরা থাকে না!…কেহ কাহাকে চিরকাণ মনে রাথে না! সবাই ভূলিরা বার ৷...ভূলিরা বার সবাই— চোথের আড়াল হইলেই সব ভালবাসা সব প্রেম ধূলিসাং হইরা বার ৷ স্থাম: বাইবার পর আশা আসিরাছে—আশা চিণিয়া গেলে আর এক জন আসিবে! বিরহ মিথাা—প্রেম মিথাা—সব মিথাা—কেহ কাহারও নর—সবাই একক—

অনমৃত্ত এক বিচ্ছেদ-বেদনা আসিরা কথন অক্সাডসারে: বনমালীর মনকে আচ্ছন্ন করিয়া ফেলিল।

ভারতের লিপিসমস্থা

অধ্যাপক শ্রীনিরঞ্জন মিয়োগী, এম-এ

ভারতবর্ষের নানা সমস্ভার মধ্যে ভাষা ও লিপিসমস্ভা একটি প্রধান, কেননা, আমাদের দেশে জাতি ও ধর্মের বৈচিত্র্য যেমন, ভাষা ও শিপির বিভিন্নতা তা থেকে কিছু কম নয়। কাশ্মীর থেকে কুমারিকা এক কৃষ্টির অন্তর্গত হ'লেও এই ভূমিখণ্ডে প্রায় ১৬০টি মূলভাষা ও ৬০০টি উপভাষা বা dialects আছে। লিপিসম্বন্ধেও এই বৈচিত্ৰ্য কতকটা পাওয়া যায়, যদিও প্রধানতঃ লিপির ছটি ধারা এখন প্রচলিত-একটি, দেশীয়, দেবনাগরী, ও অন্তটি বিদেশীয়, আরবীসম্ভূত ফার্সীলিপি। ভাষার ইতিহাসে বেমন, আমাদের দেশীয় লিপিমালার ইতিহাসেও তেমনি দেখা যায় যে এক মূল লিপি থেকে ক্রমাগত পরবর্ত্তিত হয়ে ভিন্ন ভিন্ন প্রকারের শিপির উদ্বব হয়েছে, যথা, দেবনাগরী থেকে উদ্ভ হয়েছে হিন্দী, মারাচি, গুলুরাতী, গুরুম্থী, कारमणी, रेमिशन, वांगा, छेड़िया देखानि, এवः मिरनांगती স্বারা প্রভাবান্বিত হয়েছে তামিল, তেলুগু, সিংহলী প্রভৃতি কিন্তু এই সকল লিপিপ্রণালী মূলত: এক পরিবারের হ'লেও এই পরিবর্তনের ফলে তারা পরস্পরের নিকট সম্পূর্ণরূপে অপরিচিত হয়ে পড়েছে। ভাষা-বৈচিত্ত্যের ক্সায় লিপি-বৈচিত্ত্যও ভারতবর্ষে এক মহা সমস্থার স্থষ্টি করেছে এবং নানা ভাবে ভারতের জাতীয়তার অস্তরায় হয়ে দাঁডিয়েছে।

লিপিপ্রণালীগুলির নানা পরিবর্ত্তন স্ক্রভাবে বিচার করলে একটি কথা সুস্পষ্ট হয় যে ভাষা ও লিপির পরস্পারের সঙ্গে কোন ঘনিষ্ঠ বা স্বাভাবিক যোগ নেই। একই ভাষা নানা লিপিতে লেখা যেতে পারে, ভাতে মূল বস্তুর ভাব বা চিস্তার কোন পরিবর্ত্তন বা বিক্ততি ঘটে না, কারণ ভাষার প্রাণ "ধ্বনি," অক্ষর বা লিপি নয়। এক একটি ধ্বনিসমষ্টি বা "শক্ষে"র (word) সঙ্গে আমাদের চিস্তা বা ভাব গ্রথিত, কিন্তু লিপির সঙ্গে ভাব বা চিস্তার কোনও অচ্ছেন্য যোগ নেই, কেননা, লিপি ধ্বনির প্রভীক (symbol) মাত্র, তার নিজের কোন বৈশিষ্ট্য নেই, কেবল "প্রনি"কে দৃগুত: প্রকাশ করাই তার কাজ। এইজন্ত একই ভাষা নানা শিপিতে স্বচ্ছনেদ লেগা যেতে পারে এবং লেগা হয়েও থাকে।

সকল দেশের লিপিপ্রণালী সন্থন্ধেই এ-কথা থাটে, যদিও
সকল লিপিপ্রণালীর প্রকৃতি কিছু এক নয়। এক-এক
প্রণালীর এক-একটি বিশেষত্ব আছে, কেননা, সরলরেশা,
বক্ররেশা ও বিল্পুর নানা সমাবেশ ও আবর্ত্তন-বিবর্ত্তনের
উপর লিপির বৈশিষ্ট্য নির্ভর করে। এই সকলের আধিক্যে
কোন অক্ষরমালা নিতান্ত ভটিল ও কঠিন হয়ে দাঁড়িয়েছে,
আবার এদের সংযত ব্যবহারে কোনটি বা সরল ও সহজ্
হয়েছে। নানা দেশের লিপিমালা তুলনা ক'রে দেশলেই
লিপি বা অক্ষরের সাধারণ প্রকৃতি, বিভিন্ন প্রকার
লিপিমালার গুণাগুণ বা স্ববিধা-অস্থবিধা সহজ্ঞেই বিচার করা
যায়, এদের মধ্যে কোন্টি শ্রেষ্ঠ ও কোন্টি অপেক্ষাক্ত
নির্কৃত্ত, কিংবা লিখন ও মুদ্রণ বিষয়ে কোন্টি আদর্শস্থানীয় তা
নির্ণির করা যায়। অবশ্য পক্ষপাতশৃত্য হয়ে বিচার করা
প্রয়োজন, নইলে নিজের নিজের লিপিমালাই প্রত্যেকের
কাছে ভাল, সহজ্ব ও স্থবিধাজনক ব'লে মনে হবে।

কিন্দ্র আদর্শলিপির (ideal script) লক্ষণ কি
কি ? প্রথমেই বলা যেতে পারে যে, এই লিপির প্রত্যেকটি
অক্ষরের রেখাচয় যথাসন্তব আবর্তন-বিবর্তনবর্জ্জিত হবে
অর্থাৎ অক্ষরগুলি স্পষ্ট ও জটিলতাহীন হবে, যাতে
সহজে তাদের পরিচয় পাওয়া যায় ও সহজে লেখা যায়।
এই গুণাট লিপি সম্বন্ধে সর্বপ্রধান। ধ্বনিকে প্রকাশ করাই
যথন অক্ষরের কাজ, তখন অক্ষর ইচ্ছামত সহত্ব বা জটিল
করা যেতে পারে। কিন্দু মনে রাখতে হবে যে অক্ষরকে
অনর্থক জটিল করাতে কোন গৌরব বা ক্লতিছ নেই।
ছিতীয় কথা, আদর্শ লিপির অক্ষরগুলি অগ্রগতিশীল
হবে, অর্থাৎ প্রত্যেকটি অক্ষরের অন্ত্যরেখাপাত্ব বা শেষ-

বেধার গতি সন্মুখগামী হওয়া উচিত, কেননা, তাহ'লে লেখনী একটি অক্ষর থেকে অন্ত অক্ষরে সহজে অগ্রসর হ'তে পারে। যদি অক্ষরগুলির শেষ-রেখার গতি সন্মুখের দিকে না হয়ে পশ্চ'তে, নীচে বা উপরে হয়, তবে প্রতি

লিপিচিত্র

| DEVA- NAGRI | BENGALI | ORIYA | S GUJRATI | G G TELEGU | ENGLISH |
|----------------------|------------------------------|-------|---|-------------------|------------------------|
| BBM中の現代の中でのBBM-NACRI | のである。 をはいかが後のの BENGALI | IT | 3 3 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 | වර්ධ සමුව ඉහැලියි | BOD DIATION BID ENCISH |

দেবনাগরী বাংলা উড়িয়া গুলুরাটী তেণ্ঠ ইংরেজী
পদে লেখা বাধা পাবে এবং যত সামান্ত ভাবেই হোক না
কেন লেখার অপ্রগতি কুর হবে। তৃতীয়তঃ, আদর্শলিপির
অফরগুলি এমন ভাবে গঠিত হবে বে, প্র্ত্যেক অক্ষরের
শেষরেখা পরের অক্ষরের প্রথম রেখাপাতের সঙ্গে

সহজে ও বিনা জটিশতায় যুক্ত হ'তে পারবে, অর্থাৎ শেখার ক্রমের অবাধ গতি থাকবে অথচ পাঠে কোন বিম্ন হবে না। এ গুণ না থাকলে লেখনী ক্রত অগ্রসর হতে পারে না এবং এক অক্ষর থেকে অন্ত অক্ষরে সহজে যাওয়া যায় না। চতুর্থ কথা, আদর্শলিপিতে এক-একটি শিতে শেখনী বার-বার উঠাতে হবে না, অথবা এক--একটি ধ্বনিসমষ্টি বা wordএর মাঝধানে লেখনী তুলিবার প্রয়োজন হবে না। লেখনী বার-বার উঠান দরকার হয়ে পড়লে অলফ্যে হাতের বুণা পরিশ্রম বাড়ে, কেননা, যতবার আমাদের লেখনী উঠাবার প্রয়োজন হয় ততবারই হাতের কিছু কিছু ক'রে পরিশ্রম হয় এবং লেখনী বাধা পায়। প্রথমে ব্যাপারটি সামাক্ত মনে হ'তে পারে, কিন্তু-লেখার সময়ে মনোবোগ করলে এ-কথার যাথাথ্য সহজে উপলব্ধি করা যায়। শেষ কথা, প্রত্যেকটি অক্ষর অল্প পরিসরে স্পট হওয়া প্রয়োজন। মুডাযন্ত্রবদায়ীরা জানেন যে সকল ভাষার অক্ষর সমান ছোট মাপের হঃ না; কোন কোন লিপির অক্ষর থুব ছোট মাপের ব্যবহার করা যায়, কিন্তু অন্তগুলির অক্ষর অত ছোট মাপের: ব্যবহার করা চলে না, কেননা, অক্ষরগুলি স্পষ্ট হয় না এবং পাঠে অসুবিধা হয়। এই সকল গুটা যে-লিপিতে পাওয়া যাবে তাকে আদর্শলিপি বলা থেতে পারে।

এখন আদর্শনিপির লক্ষণানুসারে দেবনাগরী ও তদ্সমৃত লিপিগুলির বিচার সাধারণ ভাবে করা বাক। এই প্রবন্ধের লিপি-চিত্রথানিতে দেবনাগরীসমৃত করেকটিলিপিমালার গঠন তুলনার জন্ত দেওয়া গেল এবং এ-থেকেই বক্তব্য বিবরের দৃষ্টান্ত সহজেই পাওয়া বাবে; অন্তান্ত দৃষ্টান্ত আমর। বাংলা লিপি থেকেই গ্রহণ করিব। প্রথমতঃ অসংযুক্ত অক্ষর—দেবনাগরী ও ভার বংশজাত লিপিগুলির অসংযুক্ত অক্ষরগুলিকে জটিলতাহীন একেবারেই বলা বেতে পারে না; অনেক স্থলেই সরল ও বক্ররেধার প্রাচুর্য্যে এবং আবর্ত্তন-বিবর্তনে অক্ষরগুলি জটিল হয়ে পড়েছে এবং তার জন্তে সহজ্বপাঠ্য না হয়ে এদের বর্ণসরিচয়-চেষ্টান্ত সময়সাপেক্ষ হয়ে পড়েছে। মনে হয়, দেবনাগরী থেকে লিপিগ্রণালী বত দুরে গিয়েছে অক্ষরগুলি জ্বদাং তত বেশী জটিল হয়ে উঠেছে, বেমন, উড়িয়া৯

তামিশ, তেলুগু ইত্যাদি; কোন কোন অঞ্চর ত থুবই জটিন, বেমন, দেবনাগরী, বাংলা, উড়িয়া প্রভৃতির क्रे, छे, इ, ঞ, ইত্যাদি। निशि-চিত্রখানি মনোধোগ দিয়ে দেখলেই একথা কতটা সত্য তা বুঝতে পারা যাবে। তার পর এ অক্ষরগুলি অপ্রগতিশীল বা সমুধগামী নয়, কেননা, এক-একটি অক্ষর নিয়ে পরীক্ষা ক'রে দেখলেই বুঝা যাবে যে, এক-একটি বর্ণ লিখতে কতবার লেখনী তুলতে হয় এবং তার শেষ রেখাপাত কথনও উর্দ্ধে, কথনও অধোতে, কথনও বা পশ্চাতে চলেছে; এই কারণে লেখার গতি পদে পদে বাধা পায়। অনেক অক্ষরের রেখা-পরস্পরায় ক্রমগতি নেই, প্রত্যেকটি ব্যক্তিত্বপ্রধান, কেহই প্রায় সক্ষর বেন সঙ্গে সহজে মিলিত হ'তে চায় না এবং মিলিত করবার তেষ্টা করলেই পড়া অনেক সময়ে কঠিন হয়ে পড়ে। এ-বিষয়ে মনে হয় আমাদের দেশীয় বর্ণমালাগুলি জাতির বিশেষস্বাঞ্জক, কেননা, আমাদের অক্ষরশুলি প্রধানতঃ পার্থক্যপ্রধান; আমরা যেমন কেহ কারও সঙ্গে মিলতে পারি না, মিলে কোন কাজ করতে পারি না, তেমনি আমাদের অক্ষরগুলিও কেহ্ কাহারও সঙ্গে সহজভাবে যুক্ত হ'তে পারে না। এই ক্রটির ফলে লেখনী বার-বার উঠাতে হয়; এমন কি কোন কোন অক্ষর আছে যা এক ধারায় বা "টানে" লেখা যায় না এবং সেই জন্তো অনৰ্থক স্ধিক প্রিশ্রম হয়। আমাদের বাংলা কণাগুলি লিখতে আমরা কতবার লেখনী উঠাতে বাধ্য হই যদি পরীক্ষা করে দেখা যায় তবে এই অস্থবিধার বিশয়ে কোন মত-বৈধ হ'তে পারে না। একথানি চিঠিতে "শ্রদ্ধাম্পদাত্র" লিগতে ছয় বার এবং আর একথানিতে "অনুগ্রহপূর্বক" লিগতে তের বার লেখনী উঠাবার প্রয়োজন হয়েছে দেখা গিয়েছে। যদি একটানে এ কথাগুলি লেখা যায় তা হ'লে ा निथन व्यत्नक महक्र हाम्र वाम्न एम-विवास मान्सह त्नहै। শেষ কথা, আমাদের অক্ষরগুলি অপেক্ষাকৃত জটিল হওয়ায় অল্পরিসরে শিখন বা মুদ্রণ কঠিন হয়ে পড়ে; প্রকৃতপক্ষে তা সম্ভব হয় না।

এই ত গেল অসংযুক্ত অক্ষরের কথা। সংযুক্ত অক্ষরগুলি পরীক্ষা করলে দেখা বাবে যে, অসংযুক্ত অক্ষরের বে-সব দোষ বা ক্রটি উল্লেখ করা হয়েছে সেই সমস্ত অগুণ আরও নিবিড় ভাবে সংযুক্ত অক্ষরগুলির মধ্যে পাওয়া যায়। এগুলি আরও অধিক জটিল, অগ্রগতি-হীন, পার্থক্যপ্রধান, লেখনীর বাধা উৎপাদক। উপরস্ক

| नश्कायन सम्माधान्य मान्त्र |
|---|
| 4日日の今十倍女の四日の日日本中 BENGAL |
| 空ののO a co |
| ITAMUD の万十日のよるのなななるといった |
| 30000 मुक्सिस्स्रिस्मि |
| HEITONE KINGSIN TO CHIJIN THOUSE |

দেবনাগরা বাংল' উড়িয়া গুলরাটী তেণ্ও ইংরেজী

হুট, তিনটি এবং সময়ে সময়ে চারটি অক্ষর যুক্ত হয়ে একে অন্তের স্কল্পে আরোহণ করে এবং যত রক্মে পারে

শেখনীকে বাধা দান করে। কেবল তাই নয়, এক-এক সময়ে অক্ষরগুলি হঠাৎ বন্ধৃতাসতে আবদ্ধ হয়ে এমন রূপাস্তরিত হয়ে বায় যে তাদের আর পুথক ভাবে চেনা যায় না। রসায়নে **ধেমন ''হাইড়োঞ্জেন**' "অক্লিজেন" মিলিয়ে দিলে "জল" উৎপন্ন হয়, কিন্ত চর্ম্মচকে ঐ উপাদানগুলিকে আর দেখা বায় না. তেমনি আমাদের বর্ণমালায় কোন এক অম্ভূত প্রক্রিয়ায় হুটি বা তিনটি অক্ষর মিলে এমন একটি নৃতন অক্ষর উৎপন্ন হয় যে তাতে মূল অক্ষরগুলির পরিচয় আর চর্ম্মচক্ষে পাওয়া যায় না। বাংলা লিপিতে তার অনেক উদাহরণ পাওয়া **ず十万二変: ず十月二面:** বেষন. আবার একই অক্ষর অন্ত অন্ত অক্ষরের সঙ্গে মিলিত হয়ে নানা রূপ ধারণ করে, যেমন, য+ণ=ফ; হ+ণ=হ। কোন স্বরবর্ণের সময় অবস্থাটা বিশ্বয়কর হয়ে দাঁড়ায়, দৃষ্টান্তস্থলে "উ" যথন অন্ত অক্ষরের সঙ্গে মিলিত হয় তথন চারটি বিভিন্ন রূপ ধারণ করে---কু, রু, শু, হু। এই রূপান্তরের আবার নির্ফিষ্ট কোন নিয়ম পাওয়া যার না। এই সকল কারণে দেখা যায় যে এক বাংলা লিপিতেই প্রায় ৫৫০টি পুথক পূথক অক্ষর সম্ভব এবং মুদ্রণে অভগুলি অক্ষর বা টাইপের প্রয়োজন হয়। এই অক্ষরবিভ্রাটে মুদ্রণ যে কত কঠিন ও ভটিশ ব্যাপার হরে বাঁড়িয়েছে তা ১৩১৯ সনের পৌৰ-মাঘ ও তৈত্ৰ মাদের 'প্ৰবাসী'তে "বাঙ্গালা টাইপ ও কেস" শীৰ্ষক প্ৰবন্ধ পড়লেই সহজে ক্ষুমক্ষম হবে। এই অক্ষরবাহুল্যের বিভয়না যে কেবল বাংলা লিপিতেই আছে তা নয়, দেবনাগরীসম্ভূত সমস্ত লিপিতেই এটা পাওয়া যায় এবং বদি এই অনুপাতে অক্ষরের সংখ্যা নির্ণয় করা হয় তবে দেখা বাবে যে কেবল. দেবনাগরীসম্ভূত ভাষাগুলিতেই প্রায় চার বা পাঁচ হাজার অক্ষর (type) লেখায় এবং মদ্রণে ব্যবহৃত হয়।

সহজেই এখন আমরা এই সিদ্ধান্তে উপস্থিত হ'তে পারি
েব দেবনাগরী বা দেবনাগরীসস্থৃত কোনও লিপিই
আদর্শলিপি বলে গ্রাহ্ম হ'তে পারে না, কেননা, আদর্শলিপির বে-সকল লক্ষণ বা শুণ থাকা উচিত এশুলিতে

তা নেই। এ-কথা যদি সত্য হয়, তবে যদি কোন আদর্শনিপি পাওয়া যায় আমরা তা গ্রহণ করব না কেন, এবং সেটা গ্রহণ করা যদি উচিত মনে করি তবে ভারতের সকল ভাষা ও উপভাষা এই আদর্শনিপি গ্রহণ করবে না কেন?

এ-পর্যাস্ত যা বলা হয়েছে তাতে এ দেশের শিপির অক্তর-পরিচয় কত কঠিন ও হঃসাধ্য ব্যাপার তা সহজ্ঞেই আমাদের দেশের প্রত্যেক ছেলেমেয়েকে অন্ততঃ পক্ষে এই প্রায় ৫৫০টি অক্ষর পৃথক পৃথক ক'রে শিথিতে হয় এবং বর্ণপরিচয়ের দিতীয় স্তরের জটিশ ও বহুরূপী বর্ণমালার ভীষণ অরণ্যের মধ্যে দিয়ে যেতে হয়। তা ছাড়া এই লিপি-বিভ্রাটের আর ভাববার আছে। ভারতের প্রত্যেক ভাষা ও উপভাষার নিপিপ্রণানী ক্রমশঃ এত পুথক হয়ে পড়েছে যে ভাষার সাদৃশ্য সবেও বিভিন্ন প্রদেশের শোক পরস্পরের নিকট অপরিচিত ও বিদেশী ব'লে গণ্য হচ্ছে। এক প্রদেশের লোক অন্ত প্রদেশের লিখিত ভাষা শিক্ষা করতে গেলেই তাকে এই অসংযুক্ত এবং সংযুক্তাক্ষরের বিরাট বাহিনীর সন্মুখীন হ'তে হয়; একে জয় না-করতে পারণে তার পক্ষে আর অগ্রসর হওয়া সন্তব হয় না। কাজেই নিতান্ত দায়ে না পড়লে কেহ অন্ত প্রদেশের ভাষা বা সাহিত্যের সহিত পরিচিত হ'তে প্রবৃত্ত হয় না। এই কারণে নানা প্রকারের "অক্ষর" ভারতের বিভিন্ন ভাষা ও জাতির মধ্যে একটা প্রাচীর বা ক্বত্তিম ব্যবধান স্থষ্টি করেছে। বিশেষতঃ উত্তর-ভারতে আমরা সকলেই মুলতঃ একই ভাষা বলি, অনেক সময়ে পরস্পরের কথিত ভাষা বুঝতে পারি, কিন্তু সেই কথাগুলিই লিখিত হ'লে আর বুরতে পারি না। এক প্রদেশের সাহিত্য বা সংবাদপত্র বা পত্রিকা অন্ত প্রেদেশ বুঝতে পারে না, ভাবের বা আদর্শের আদান-প্রদান হয় না, জ্ঞানপ্রসারে বাধা হয়। ফলে যদিও আমরা সকলে নিজেদের ভারতীয় বলি তবু আমরা নিজেদের এক জাতি ব'লে অহভব করতে পারি না, সকল विषय निर्द्धात्म श्रेथक व'ला मत्न कत्रि, अथे अधिकाः म সময়ে পরস্পরের কথিত ভাষা বুঝতে পারি। একই বিষয়, একই বিদ্যা, একই জ্ঞান আমাদের প্রত্যেক পুথক লিপিতে

পুনরাবৃত্তি করা না হ'লে সকল প্রদেশের লোকের তা জানবার উপায় নেই। এই মহা বিহাটের মূলে প্রধানত: লিপিগত পার্থকা এবং এই পার্থকা আমাদের জাতীয় জীবনের পক্ষে কত হানিকর তা বিশদ ভাবে ব্রাবার প্রয়েজন নেই।

কিন্তু এই নান। লিপিবিভাটের পরিবর্তে যদি আমরা একটি আদর্শলিপিকে সাধারণ লিপি বা Common Script ব'লে গ্রহণ-করি ভবে দেশের যে কত কল্যাণ হয় তা বলা যায় না। এই সাধারণ লিপিমালা বিশেষ ক'রে উত্তর-ভারতের অধিকাংশ প্রদেশের মধ্যে ঘনিষ্ঠ যোগাযোগ স্থাপন করবে, সহজে পরস্পরকে বুঝবার স্থবিধা হবে, বিভিন্ন প্রদেশের ভাব ও চিস্তার আদান-প্রদান, পরস্পরের জ্ঞান ও সকল প্রাকারের অভিজ্ঞতা সহজে বিনিময় করা সম্ভব হবে। ইহার ফলে সকল প্রকার সাহিত্যের পুষ্টিলাভ ও চিন্তার প্রদার আশা করা যায়। আবার এক সাধারণ লিপিমালা প্রচলিত হ'লে সকলেরই নিন্দ নিজ প্রদেশের সঙ্কীর গভীর বাইরে যাওয়ার চেষ্টা স্বভাবতই হবে, কেননা, লেখকেরা স্বতঃই বুঝতে পারবেন যে তাঁরা কেবল তাঁদের নিজেদের প্রদেশের জন্মই লিখছেন না, বরং তাঁরা সমস্ত ভারতের জক্তে নিশ্বছেন এবং তাঁদের পাঠক-সম্প্রদায় অনেক শুণ বেড়ে গিয়েছে। ভাবের ও আদর্শের ক্ষুত্রতা দুরে যাবে, এক সাহিত্য থেকে অন্ত সাহিত্যে নৃতন আদর্শ বা পরিকল্পনা সহজে প্রাসার লাভ করবে। সকল প্রাদেশের জীবনে ও আদর্শে এক মহা পরিবর্ত্তন উপস্থিত হবে, কেন-না পরস্পরকে বুঝবার ও বুঝাবার চেষ্টা থাকলে সাহিত্যের প্রকৃতিও পরিবর্ত্তিত হওয়া অবশুস্থাবী। সকল প্রদেশের দাহিত্যের ভাষা সহজ ও সরল হবে এবং ধে-ধে বিষয়ে মিলন ও সাদৃশ্য আছে বা মিলন সম্ভব ক্রমশঃ সে সকলের উৎকর্ষ সাধিত হবে। স্থতরাং সকল দিক দিয়ে বিবেচনা করলে একই সিদ্ধান্তে উপস্থিত হ'তে হয় যে যদি কোন আদর্শ- 🔭 লিপি পাওয়া যায় তবে এই সকল কারণেও অবিলয়ে আমাদের তাহা ভারতের সাধারণ লিপি ব'লে গ্রহণ করা . উচিত।

পৃথিবীতে যত প্রকার লিপিপ্রণালী প্রচলিত আছে তার মধ্যে মনে হয় একমাত্র রোম্যান বর্ণমালাকেই—

Roman Script—বাকে এদেশে আমরা "ইংরেজী অক্ষর" বলি, আদর্শলিপি বা Ideal Script বলা নায়, কেননা, বিচার ক'রে দেখলে খুব সহজেই প্রমাণিত হবে

| るのなって出来のプロコCockul DEVA-NACRI | DEVA- NAGRI | 61-1-119 |
|--|----------------|------------|
| BENGALIA CHARALLA PARALLE ARCALL | BENGALI | 1 1014 1 |
| ಹಿಗುತ್ತು ಅತ್ಯಾಪ್ತಿ ನಿರುದ್ಧಿ ಅನ್ನು ನಿರುವ (ORIYA | ORIYA | 64 04 10-1 |
| COURAL ASSERT CUJRATI | GUJRATI | 1, 11,000 |
| क्रिट्र विक्रिय क्रिय्य क्रिय्य क्रिय्य | TELEGU | |
| THOURTH HAINTHORN THOUSE | ENGLISH | |

দেবনাগরী বাংলা উড়িয় গুজরাট তেলুগু ইংরেজী

যে রোম্যান বর্ণমালায় আদর্শলিপির অধিকাংশ লক্ষণই পাওয়া যায়। এই অক্ষরমালা সহজ, স্পষ্ট ও জটিলতাহীন, পরিচয়ে ব্যাঘাত হওয়ার কিছু নেই এবং রেথাপাতের আবর্তন-বিবর্তন যথাসম্ভব কম। অক্ষরগুলির সন্তারেধার গতি অধিকাংশ সময় সমুখগামী, পশ্চাদ্মুখীন বা নানা দিগপ্রসারিত নয়, অর্থাৎ অক্ষরগুলি অপ্রগতিশীল। প্রায় প্রবং প্রক্রেটি অক্ষর এক ধারা বা "টানে" লেখা যায় এবং প্রত্যেকটি অক্ষরের অস্তারেধাপাত পরের অক্ষরের প্রথম রেধাপাতের সঙ্গে সহজে মিশিত হয়, স্তরাং অক্ষরগুলি ক্রমগতিশীল, বার-বার লেখনী তুলিতে হয় না, বস্ততঃ রোম্যান বর্ণমালার আরম্ভ থেকে শেষ পর্যান্ত প্রায় সমস্তটাই এক ধারায় লেখা গায়। পুনশ্চ এতে যুক্তাক্ষরের উৎপাত নেই অথচ যুক্তাক্রিন সহজেই প্রকাশ করা যায়; স্বরবর্ণের "কার" বা ব্যঞ্জনবর্ণের "ফলা"-র উপদ্রব নেই, কেননা, এতে স্বর বা ব্যঞ্জন কোন বর্ণই ক্রপান্তর গ্রহণ করে না। এই সকল কারণে ছেলেমেরেরা অনেক সহজে এই বর্ণমালা

| DEVA- | BENGALI | ORIYA | GUJRATI | TELEGU | ENGLISH |
|-------|---------|-------------|------------------|--------|---------|
| 西安富多高 | MENCH! | MIYA BELLYA | To the Course of | श्रभ्र | 人中中十名の |

দেবনাগরী বাংলা উড়িয়া শুক্ররাটী তেলুগু ইংরেক্সী

শিখে ফেলে এবং ইংরেক্ষী কথা অল্প আয়াদে ও অল্প সময়ের মধ্যেই পড়তে ও. শিখতে পারে। অনেক অল্প-সংখ্যক টাইপ (type) এতে প্রয়োজন হয়, কেননা, ভারতীয় এক-একটি ভাষার সাড়ে পাঁচ-শ ছ-শ টাইপের পরিবর্ত্তে পঞ্চাশ-যাটটি টাইপে ভারতের সমস্ত ভাষার কাল্প স্থচাক্ষরূপে চলতে পারে। এক-একটি টাইপ অল্প স্থান অধিকার করে এবং অ্ক্সরগুলি স্পষ্ট ও ক্ষটিলভাবিজ্ঞিত ব'লে টাইপ অনেক ছোট পর্যান্ত ব্যবহার করা যায়। উপরস্ক চলতি টাইপরাইটারের সামান্ত কিছু পরিবর্ত্তন ক'রে নিলেই তাকে দেশী ভাষায় ব্যবহারোপবোগী ক'রে নেওয়া দেতে পারে। অতএব বে দিক দিয়েই দেখা যাক না কেন রোম্যান বর্ণমালা বে আদর্শলিপির অতি নিকট তাহা অস্বীকার করার উপায় নেই, ফ্তরাং ভারতবর্ষের সকল লিপিমালার পরিবর্ত্তে এই লিপিই আমাদের গ্রহণ করা বিধেয় ব'লে মনে হয়। ভারতের সব লিপিই যে রোম্যানে প্রকাশিত হ'তে পারে লিপিচিত্রধানিতেই তার প্রমাণ পাওয়া যাবে।

এ ভিন্ন আরও কয়েকটি ক্ষেত্রে রোম্যান লিপি ব্যবহারের উপযোগিতা দেখে স্বতঃই মনে হয় যে, এই লিপিই আমাদের গ্রহণ করা শ্রেয়ঃ। সকলেই জানেন যে বিদেশী লোকদের হিন্দী, উর্কু ইত্যাদি দেশী ভাষা শেথাবার জন্তে অনেক ন্ত্ৰ লেই আজকাল রোম্যান ভারতের অফরমালা ব্যবহার করা হচ্চে এবং লিপিহীন পাৰ্কতা জাতিকে છ অসভা তাদের নিজেদের ভাষা রোম্যান বর্ণমালার সাহায্যে শেখান হচ্ছে। আবার সকলে হয়ত জানেন না দে, ভারতীয় সামরিক-বিভাগের সকলেই "হিন্দুস্থানী" ভাষা এবং ঐ ভাষা রোম্যান অক্ষরমালায় পড়া শিখতে বাধ্য। এ আর একটা প্রমাণ বে রোমানি অকর-মালা আমাদের দেশে বিস্তৃতভাবে গ্রহণ করা হয়েছে একং সহজেই এটা চলতে পারে। আবার এই রোম্যান অক্ষর ভারতীয় সকল জ:তি গ্রহণ করলে নাগরী ও আরবী অক্ষরের যে উৎকট ঘন্দ সম্প্রতি আরম্ভ হয়েছে তার বিবাদভঞ্জন এতি সহজেই হয়ে বায়, কেননা, এ অক্ষরে কাহারও জাতি বা ধর্মজনিত বিদ্বেষগত কোন আপত্তি হওয়ার কথা নয়। উপস্থিত হিন্দুরা বিশুদ্ধ হিন্দীভাষা ও নাগরী বর্ণমালা প্রচার করতে যেমন ব্যগ্র, মুসলমানেরা উর্জ্ ভাষা ও ফার্সী বর্ণমালা এদেশে প্রতিষ্ঠিত করতে ততোধিক ব্যস্ত, ফ:ল কেবল বিবাদ-বিসম্বাদই বেড়ে যাচেছ, দেবনাগরী ও তদ্মস্থৃত লিপিগুলিতে যে ক্রটি-গুলির আলোচনা পূর্বেক করা হরেছে ফার্সীলিপিতে সেই দকল ত্রুটি পূর্ণমাত্রায় বিদ্যমান, উপরস্ক লেখনী একধারায় প্রায় এক পদও চলিতে পারে না। কিন্তু হিন্দু ও মুসলমান বদি সকল স্থবিধা ও অস্থবিধা বিবেচনা ক'রে নিজের নিজের সঙ্কীর্ণতা ছেড়ে "হিন্দুহানী" ভাষা ও রোম্যান অক্ষরমালা একযোগে গ্রহণ করেন তবেই এই বিশাল দেশের ভাষা ও লিপিসমস্তার একটি সহত্ত সমাধান হয়।

কি ভাবে ও কি উপায়ে তবে আমরা রোম্যান বর্ণমালা গ্রহণ করতে পারি? এখানে উল্লেখ করা প্রয়োজন যে, এ প্রস্তাব কিছু নৃতন নয়, কেননা, অনেক ক্ষেত্রে এ-বর্ণমালা ব্যবহার করা হচ্ছে; তাছাড়া অনেক দিন থেকেই প্রাচ্যবিদ্যানুরাগী পাশ্চাত্য পণ্ডিতদের মধ্যে রোম্যান বর্ণমালায় এদেশের ভাষা, বিশেষতঃ সংস্কৃত ও পালি, লিখবার প্রণালী প্রচলিত আছে। এই প্রণালীর তাঁরা নাম দিয়াছেন Transliteration, যার পরিভাষা 'করা যেতে পারে "প্রতিশিখন"। প্রাচ্যবিষ্ণা ফুগম করার উদ্দেশ্রে পণ্ডিতেরা সংস্কৃতের বর্ণমালা অবলম্বন ক'রে প্রত্যেকটি স্বর ও ব্যঞ্জন বর্ণের ধ্বনি এক বা ততোধিক রোম্যান অক্ষরের সাহায্যে স্থির ক'রে নিয়ে সেই প্রণালীতে সংস্কৃত ও পালিতে লিখিত দর্শন সাহিত্য ইতিহাস ইত্যাদি অনেক পুঁথি ও পুস্তকের প্রতিলিপি রোম্যান অক্ষরে ক'রে নিয়েছেন। এতে যে কত স্থবিধা হয়েছে বলা যায় না, কেননা, সভাঞ্জগতের সমস্ত পণ্ডিতই এখন বিনাক্লেশে ভারতের মৃশ শাস্ত্রাদি অধ্যয়ন করার সুযোগ চশিত প্রতিশিখন তাঁরা গেভাবে স্থির পাচ্ছেন। করেছেন তাহা নিপি-চিত্রে দ্রন্থবা। এই নিপি-চিত্র থেকে ব্রুতে পারা যাবে যে দেবনাগরী বর্ণমালার ক্রম, উচ্চারণ বা ধ্বনি, কোনটারই এখানে ব্যতিক্রম করা হয় নি, আমাদের প্রথাগত জিনিষগুলি সমস্তই রক্ষা করা হয়েছে, কেবল অক্ষরের রূপ পরিবর্ত্তিত করা হয়েছে মাত্র। তবে এ ব্যবস্থাকে একেবারে নিখুঁত বলা হয়ত যাবে না এবং ব্যাপকভাবে রোম্যান বর্ণনালা গ্রহণ করা স্থির হ'লে প্রয়োজনমত কিছু পরিবর্ত্তন ক'রে নিতে হবে।

আর একটি কথা এই সঙ্গে আসে। রোম্যান
বর্ণমালায় "বড়" ও "ছোট", অর্থাৎ Capital ও Small
অক্ষর ব্যবহারের রীতি আছে, কিন্তু কোন ভারতীয়
বর্ণমালায় তা নেই, সুতরাং যদি আমরা রোম্যান বর্ণমালা
গ্রহণ করি তবে ঐ "বড়" ও "ছোট" অক্ষর বাবহারের

রীতিও গ্রহণ করিব কি না বিবেচ্য। যদি তা না ক'রে কেবল ছোট অক্ষর ব্যবহার করি তবে অনুমান পঞ্চাশ-ষাট অক্ষরেই আমাদের কাঞ্জ হয়ে যায়, নতুবা তার দ্বিগুণ অক্ষরে লাগবে। অবশ্য লিপির এ পরিবর্তন যদি আমরা স্বীকার করে নিই তবে "অহ্ব"ও (numerals) আমাদের রোম্যান, অর্থাৎ ইংরেজী, গ্রহণ করতেই হবে। রোম্যান যতিচিক্ষ (punctuation)ত আমরা অনেকটা গ্রহণ করেছিই।

আমাদের লিপিবিভ্রনা ও অক্ষর-বাহুল্যের অস্থ্রবিধা অনেকেই অন্তত্ত্ব করেছেন এবং সেন্ধন্তে অনেকে অনেক রকম উপায় এ-পর্যান্ত উপস্থিত করেছেন। কেহবা দেবনাগরীর সঙ্গে যথাসাধ্য যোগ রেখে লিপি সংস্কার করতে চেয়েছেন, কেহবা মুদ্রণের জন্ত অক্ষরসংখ্যা কমাবার চেষ্টা করেছেন, কিন্তু এ-সকল চেষ্টায় বিশেষ কিছু লাভ আছে ব'লে মনে হয় না, কেননা, আমাদের লিপির প্রকৃতিগত বেসব ক্রটি ও অস্থ্রবিধার কথা পূর্ব্বে উল্লেখ করা হয়েছে, সেক্রটি থেকে উদ্ধার পাওয়ার উপায় কেহ এ-পর্যান্ত বলতে পারেন নি। অতএব রোম্যান বর্ণমালা গ্রহণই একমাত্র পথ ব'লে মনে হয়।

এখন সংক্ষেপে বিষয়টি এইভাবে উপস্থিত করা যেতে পারে:—

- ১। ভাষার প্রাণ ধ্বনি; দিপি ধ্বনির প্রতীক বা আকার মাত্র; ভাষার সঙ্গে দিপির কোন ঘনিষ্ঠ বা স্বাভাবিক যোগ নেই।
- ২। আমরা যে শিপি ব্যবহার করি ভাহা বহু পরিবর্ত্তনের পর বর্ত্তমান আকার ধারণ করেছে; তাতে মুল ভাষার ভাব বা চিস্তার কোন ব্যতিক্রেম হয় নি।
- ত। আমাদের লিপি জটিল এবং লিপির আদর্শ বা
 হওরা উচিত তার তুলনার এর নানা ক্রটি আছে।
- ৪। রোম্যান অক্ষরমালা আমাদের লিপির চেয়ে অপেক্ষাকৃত সহজ, জটিলতাহীন এবং আদর্শলিপির নিকটবর্ত্তী।
- ৫। স্বতরাং আমাদের এই রোম্যান বর্ণমালা গ্রহণ করা উচিত; গ্রহণের বিরুদ্ধে সাংঘাতিক কোন আপত্তি নেই, বরং এর সপক্ষে বলবার অনেক কিছু আছে।

*ক্ষ*প্রবাসী 🖔



উপসংহারে বলা থেতে পারে যে, কোন বর্ণমালাই ক্রটিহীন হ'তে পারে না, কিন্তু তুলনায় যেটি অপেক্ষাক্লত সহজ ও স্থবিধাজনক মনে হয় সেইটিই আমাদের গ্রহণ করতে হবে, বুগা কোন কারণে ভয় পেলে হবে না। যদিও এই পরিবর্ত্তন প্রথমে বিপ্লবজনক মনে হ'তে পারে, তবু এটা কঠিন বা অসম্ভব একেবারেই নয়। অনেক **प्राटम** विश्वत अ-विवास किष्टी प्राप्त विश्व कार्याक है রোশ্যান অক্ষর গ্রহণ করছে। তুর্কীতে কেমাল পাণা সম্প্রতি আরবী বর্ণমালা দূর ক'রে দিয়ে রোম্যান বর্ণমালা প্রচলন করেছেন, সকলেই জানেন। অতি অল্প সময়ের মধ্যেই তিনি এটা করতে সমর্থ হয়েছেন, কেন না, তিনি এখন তুর্কীর অপ্রতিষ্ণী শাসনকর্তা। তিনি আদেশ করা মাত্র পুরাতন বর্ণমালা দুর হয়ে গেল, বিভালয়ে ত কথাই নেই, পৰে ৰাটে নৃতন বৰ্ণমালার প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড পট স্থাপন ক'রে আবালবুদ্ধ দকলকে শেখান আরম্ভ হয়ে গেল এবং অল্পদিনের মধোই তুকীরা তাদের স্বীয় তুকীভাষা অনুধ রেখে নৃতন বর্ণমালা গ্রহণ করিল। জার্মানীতে বছকাল থেকে "গথিক" বর্ণমালার ব্যবহার চলে আসছে এবং এখনও চলছে, কিন্তু রোম্যান বর্ণমালার নানা স্থবিধার জন্ত জার্মানরাও ক্রমশঃ "গথিক" ছেড়ে দিয়ে রোম্যান বর্ণমালা গ্রহণ করছে। এতেই মনে হয় যে সকল প্রগতিশীল জাতিই ক্রমে ক্রমে রোমান বর্ণমালা গ্রহণ করবে এবং আমাদেরও উচিত মনের সঙ্কীর্ণতা দুর করে এই বর্ণমালা অবিলম্বে গ্রহণ করা। এ উদ্দেশ্য সাধনে ভারতীয় প্রধান ভাষাগুলির প্রতিনিধিদ্বারা গঠিত

একটি কেন্দ্রীয় সমিতিতে ভারতবর্ষের সকল প্রচলিত, বর্ণমালার বিশল পর্য্যালোচনা ক'রে সমস্ত ভারতের জ্ঞান্ত রোম্যান বর্ণমালামুয়ায়ী একটি সাধারণ বর্ণমালা—
Common Script—প্রস্তুত করাই প্রশস্ত।

এই নৃতন পথ অবলম্বন করতে হ'লে ভারতের কোন একটি প্রদেশকে সাহস ক'রে অগ্রসর হ'তে হবে, তাহলেই আশা করা যায় অন্তান্ত প্রদেশগুলি ক্রমশঃ এর স্থবিধা ও প্রয়োজনীয়তা হদয়ক্ষম করতে পারবে। বাংলা ভাষা ও সাহিত্য এথন অনেক স্থলেই আদৃত, সুতরাং বাংলা দেশ যদি এ-বিষয়ে অগ্রসর হয় ও রোম্যান লিপিতে পুস্তক ও পত্রিকা মুদ্রিত করতে আরম্ভ করে, তবে লেখক বা প্রকাশক কাহারও কোন ক্ষতি হওয়ার ভয় ত নেই-ই, বরং লাভ হওয়ার কথা, কেননা, এরপ করলে ঐ সকল পুস্তক ও পত্রিকার পাঠক-সম্প্রদায় অনেক বিহুত হয়ে বাবে এবং অক্তান্ত প্রদেশের লোক, ইরো বাংলা ভাষা বুঝতে পারেন অথচ পড়তে পারেন না, তারা আগ্রহ ক'রে বাংলা বই ও প্রিকাদি পড়বেন। এ-কথাও এখানে উল্লেখ করা যেতে পারে যে বাংলা ভাষা বুঝতে পারেন অথচ পড়তে পারেন ना, ध-त्रकम (नारकत मःथा। जनमाः थ्रवहे त्राष्ट्र । রোম্যান অক্ষরে মুদ্রিত পুস্তক বা পত্রিকার আপাততঃ কিছুকাল দেবনাগরী বর্ণমালা অনুসারে প্রতিশিখনের একটি লিপিপত্র প্রকাশ করা প্রয়োজন হবে। "প্রবাসী," "ভারতবর্ধ", "বিচিত্রা" ইত্যাদি পত্রিকায় এর পরীক্ষা ক'রে দেখলে ফুফল পাওয়া বাবে, আশা করা বায়।



দিদির ছঃখ

ब्रीथमीमा प्रवी

শাল-কাঁঠালের শাখায় শাখায় বনলতার শ্রামসমারোহে
পাহাড়ের কুঞী রুক্ষ মুর্ম্ভি আর দেখা নায় না। তারই
পাদদেশে ছোট বাড়ি, মনে হয় খেলাঘর। অদুরে
ব্রহ্মপুত্রের ধূসর বেইনী। নীলাকাশতলে বনানীর
শ্রামলতার সহিত গৈরিক বালুচরের মিলন-লীলায় মুঝ
অনিলের সেই ছোট বাড়িতে থাকিয়াও মনে হয় এ তার
কানন-স্বর্গ, আর শচী ভার বনলক্ষী।

শচীর মন কিন্তু ভোলে না—এর চেয়ে মনোহর তাদের সেই আমতলার বাড়ি। নাইবা রইল সেখানে নদী, পাহাড়, তবু কেমন ছায়াশীতশ--খন বৃক্ষছায়ায়। হোক-না ভাঙাচোরা তবুও শচীর জগতে তার চেয়ে মনোরম স্থান আর নাই। পাশেই সেনেদের পরিত্যক্ত বাড়ি। পাড়ার ছেলেমেয়েদের ধেলার আড্ডা সেখানে। শৃন্ত ভিটাগুলি তাহাদের কুমীরকে এড়াইবার উপযুক্ত ডাঙা, থেলার কুমীরের কাল্পনিক নদীটও অতি বৃহৎ। শৈশবের যত মাধুর্য্য সেধানেই ত সঞ্চিত! তুল তুলিতেও শচীরা দেখানে জুটিত। অয়ভুবদ্ধিত অপরাজিতার লতাটিও ফুলে নীল হইয়া থাকে, শিশুমন মুগ্ধ করিতে ক্ষীণকায়া কুঞ্জলতায় লাল কুল ফোটে। বাগানের শেষ প্রান্তে ঠিক পুকুরের ধারটিতে জলে ডুবিয়া-মরা সেনেদের ছোট্ট মেয়েটিকে যে বেদীতলে রাধা হইয়াছে—শচীরা নিতা সেধানে ঘুরিয়া আসিত একবার। রেলিঙে-শেরা স্থানটিতে ছোট মেয়েটিকে াসহ দিতে ঘিরিয়া আছে তথু ছ-চারিটি ফুলগাছ। আহা বাত্রাকালে অসহায়া কন্তাকে শ্বরণ করিয়া মেয়েটির মা'র কি কালা। মনে করিলে এখনও শচীর চোখে জল আসে। সেই একাকিনী বালিকার জন্তই অপরাহে অজ্ঞ সন্ধ্যা-মালতী জাগে। শচীরা কাহাকেও সে ফুল ছুইতে দিত না। রাত্রে সেই ফুলের দলে ভুরে-শাড়ীপরা খুকুরাণী পুরিয়া বেড়াইবে হয়ত। তাই কুনে দ্রোণফুলে-ছাওয়া ছোট গাছগুলি হইতে ধৈৰ্য্য ধরিয়া শচীরা খুটিয়া ফুলগুলি

তুলিত। ঐ ফুলের জগ্নফেন গুল্রভায়ই ত মহাদেব খুণী। শুধু মধুলোভে চঞ্চল ছোট ভাই-বোনদের ভয়ে কাঠি-দিয়া-**क्कांड़ा वर्षे** शांडा प्रकार क्रिक क्रिक मार्क न्वाहर हत्, এই या मुक्रिन। निःमक প্রবাদে মধুভরা সেই দিনগুলি শচীর স্বতিতে উজ্জ্বল হইয়া আছে। নিঃসঙ্গ বইকি! অনিলের সারাদিন কাজ, মধ্যান্তে একবার ধাইতে আসে শুধু। সন্ধার অবসরটুকুও তার পাশার আড্ডায় কাটে। দেহের ক্লান্তি গুচাইতে সেই তার একমাত্র স্থান। বাড়ি ফিরিয়া থাইতেও তার তর সয় না। সারা দিনে শচীর তাই প্রচুর অবসর। সামাত্ত কাঞ্জ—ছোট বাড়ি, হুখানি মাত্র ঘর শচীর নিপুণ করম্পর্শে **থকেথাকে** পরি**ছার।** কা**ন্ধ**শেষে পাহাড়ের দি**কে** রান্নার একচালার <mark>পাথরের</mark> সিঁ ড়িটিতে দাঁড়াইরা শচী পাহাড়ের দৃশু দেপে। পাহাড়ের গায়ে আরও সব বাড়ি। শচীদের বাড়ির মাথার সব চেম্বে কাছে লতাপাতা-যেরা যে বাড়িটি, শচীর মনে হয় হাত বাড়াইলেই ছুঁইতে পারিবে যেন সেটিকে। যে ফিরি**ন্সি**-পরিবার সে-বাড়িতে আছে তাদের গৃহিণীর চাল-চলন শচীর কাছে কৌতৃহলজনক দুখ্য বলিয়া মনে হয়। কিন্তু এদিকে তার বেশীক্ষণ থাকিবার ছকুম নাই। ফিরিঙ্গিদের উপর কেনই যে অনিলের এত অশ্রদ্ধা শচী তাহা ভাবিয়া পায় না। নিঃসঙ্গ সন্ধার ওদেরই হাসি-গান আর নাম-না-জানা কোন বাজনার টুং টাং শব্দ শচীর নিস্তব্ধ গৃছে সঙ্গী হইয়া দাঁড়ায়। নির্জ্জন মধাাহেও নিজেকে তার বড়ই একাকিনী মনে হয়, শোবার বর হইতে রালাঘরের মাঝখানের একফালি আঙিনায় ও ঘুরিয়া ঘুরিয়া বেড়ায়। এক কোণে তার স্লানের ঘর। একথানি কালো পাথর অবলীলায় কেমন সমতল মস্ণ হইয়াছে। তাহারই চারি দিকে বেড়া-দেওয়া, বেড়ার উপরে শচীও বুনো শতা তুলিয়া দিবে। তাহা হইলে কলিকাভার বড়দির বাড়ির আলোকোজ্জল তৈল-মত্র বাথরুমের চেয়ে শচীর স্নান্থর মন্দ হইবে না। নাঃ

(मण्डे) একেবারে मन्म नव, महीत विश्वत नमता क्वांड Cव সকলে এত ভয় পাইরাছিলেন! আসাম দেশটা নাকি ক্ষমত ব্দার বাঘ-ভাত্তকে ভরা। একটিবার চোধে দেখিলে তাঁহাদের ভূল ভাঙিত। তবু শচী ঐ ফিরিঙ্গি মেমটার মত সমস্ত রাস্তা, পাহাড় ঘুরিতে পায় না। বোমটার আড়াল হইতে ষভটুকু সে দেখে তাহাতেই শচীকে সম্ভুষ্ট বাজির সামনের দিকে বারান্দা হইতে থাকিতে হয়। নামিলেই পথ, আর তার পালেই খাড়া বালুচরের নীচে নদী; রাস্ভার ঐ দিকটার ফণি-মনসার ঝোপ আর মাঝে মাঝে আগাছার জঙ্গল ছাড়া নদীকে আড়াল করিতে আর किছू नारे। এই দিকের জানালা উন্মুক্ত করিয়া শচী সেখানে বসিয়া সারা দ্বিপ্রহর কাটায়, এই পথে যখন ষ্টামার ষায় শচীর মনও সেই সঙ্গে চলিতে থাকে। ডেকে আরাম-মগ্ন নরনারী ও কর্মবান্ত খালাসী হইতে চটের পর্দ্ধা-ঘেরা কামরায় বিছানা তোরক হাড়ি কুড়ির মধ্যবর্ত্তিনী কিশোরী ক্সবধূই ভাহাকে অধিক আকর্ষণ করিতে থাকে। ঘোমটায় ঢাকা কচি মুখ দেখিলে তাহার মনে কেমন সমবেদনা ব্রাগে। শচীরই মত এ বোটি ভাই-বোনদের ছাডিয়া আরও দুরে শাইতেছে হয়ত! কতদুরে যাইবে এরা? গোহাটী না আরও দুরে? জলপথে তাই কয়েক দিনের জন্ত কেমন সংসার পাতিয়াছে।

ষ্ঠীমার ক্রমে অদৃশ্য হইয়া যায়, শচীর মন তবু চলিতে থাকে, দেশ-দেশন্তর ছাড়াইয়া ছায়া-স্থানিবিড় শান্তির নীড় কোন্ পল্লীতে সে উপস্থিত হয়—বহু ১ অশান্তির মাঝে শচীর লক্ষীক্রমিপিনী মা যেখানে সহিষ্ণু স্লেহে সন্তানের মঙ্গল কামনায় রত। পর পর তিন মেয়ের বিবাহে জীর্ণ-শীর্ণ শচীর পিতা সন্তানগুলির উপর তিক্ত কক্ষ বাক্যবাণ অহর্নিশি বর্ধণ করিয়া যান, শচীর মাকেই তাহা ছই হাতে আবরিয়া চলিতে হয়। ক্ষমতাও তাঁহার অধিক নয়। শচীর দাদাই সংসারের কর্তা, অল্ল আরে সংসারের ফছেলতা যতই ছলভি হইতে থাকে সেজন্ত বোনগুলিকে দালী করিয়া দাদার বিরক্তি ততাই বাড়িয়া চলে। অভাবের গঞ্জনা যেন বোনদেরই প্রাপ্য। প্রাক্তশার মুখনিঃস্তত হলাহলের আস্থাদও তাহারা পায় সেই সঙ্গলে। সর্বন্ধ মেরেদের চালিয়া দিয়া এখন রাবণের গোন্ঠীর উদ্র চলে

কিসে,—সে চিস্তার তাহারও ঘুম হর না। প্রাতৃজায়াকে বিশেষ দোষ দেওরা বার না; বোল বছর হইতে সুরুক্তরিরা এই বাইশ বছর বরসে সে পাঁচটি সন্তানের জননী হইরা শরীরের সঙ্গে বচনের লালিতা একেবারে হারাইরাছে।উদয়াত তাহার ছেলেগুলিকে শান্ত রাধিবার চিন্তাতেই ব্যন্ত থাকিতে হয়। এখনও বিয়ে দিতে একটা বোন বাকী।দাদা বলে ভিটেটুকু যাবে তার পর। একথা ভাবিতেও শচীর বৃক্ শুকায়। ছোট ছোট আরও তিনটি ভাইকে কেবে মানুষ্ করে! শচী যদি একটি ভাইকে কাছে আনিয়া রাধিতে পারিত!তা কি অসম্ভব! স্বামীকে বলিয়া দেখিবে একবার! বোন বলিয়া ভাইদের হুংথে উদাসীন সে থাকে কি করিয়া? নিঃসঙ্গ দিন্যাপন না করিয়া একটি ভাইকে শচী নিশ্চর মানুষ করিতে আনিবে!

অনিলকে কথাটা বলিতে বিলম্ব হয় না। শচীর একক জীবনের কট অনিলও বোঝে।—কিন্তু অর্থমনর্থম্। সেই চিরদিনের অপূর্ণ অভিলাষের বিধাতা শচীর ইচ্ছা পূরণে বাধা হইয়া দাঁড়ায়। মাসান্তে চল্লিশটি টাকা আয় বার—একটি লোককে কুড়ি টাকা খরচ করিয়া আনিবার চেটায়ও তাহাকে বহু সঙ্কটে পড়িতে হয়। তবু অনিল সহদয়, টাকাটা কোনজপে জোগাড় করিতে পারিলেই শচীর সাধ সে পূর্ণ করিবে।

সব চেয়ে ছোট ভাইটিকেই শচীর আনিতে সাধ। মায়ের আদর নিংশেষে ভোগ করিতে পায় বিলিয়া স্বভাবটি তার মিষ্টি। অন্ত ভাইদের মত ক্লক্ষ মেলাজ ভার নয়! দিদিরা খণ্ডরবাড়ি গেলে সে-ই শুরু তাহাদের খুঁলিয়া বেড়ায়। আবার মাকে সান্তনা দিয়া বলে, "আমি বড় হয়ে ওদের নিয়ে আসবো দেখো।" শচীর আসার সময়ে এবার সে তার নিজের খেলার কড়িগুলি দিদির আঁচলে বাঁধিয়া দিয়া অশ্রুচাকা সলজ্ঞ হাসিতে কেমন বলিয়ছিল, 'আমার কড়িগুলি ভোমায় খেলতে দিলুম সেজদি,— একলাটি থাকবে কি না। আমার গোলোকধামখানা বে ছিঁড়ে গেছে ভাই, নইলে তাও দিলুম।'

শচীর সে কড়ি লইতে ইচ্ছা ছিল না, শুধু মা'র অস্রোধেই কড়িগুলি সে বাল্সে ভূলিয়াছিল। এখন বাল্যের ডালা ভূলিলেই কড়িগুলির সঙ্গে কালো ঝাঁকড়া চুলের মাঝখানে নিটোল ফুল্মর মুখের বড় বড় ছটি চোখের দৃষ্টি শচীর মনে পড়িয়া যায়। মুখথানাই তার অমন, নইলে শরীরে তার কিছু নেই। জরে ভুগিয়া ভুগিয়া অস্থিমার চেহারা, বুকের হাড় ক'খানি বৃঝি গুণিয়া বলা যায়। কড়িগুলি ফিরাইলা দিলে তার বড়ই হুঃখ হইত, সনিশাসে শচী মনে ভাবে।

শচীর অদৃষ্ট প্রসন্ন। উপরের সেই ফিরিঞ্চি বদশি হইয়া গেল। এবার বারা আসিয়াছে তারা বাঙ্গালী। শচীদের মতই স্বামী-স্ত্রী হ-জন শুধু। কিন্তু তাদের জীবনধারা নীতের বাভির মত নিঃশব্দে বহিয়া যায় না। দাস-দাসীর কোলাহলে সে বাডি প্রাণময়। নিত্যই উৎসব চলিয়াছে যেন! উহাদের দেখিতে শচীর কৌতূহল হয় কিন্তু সাহস হয় না, সমপদস্থ না-হইলে নাকি আলাপ করে না কেউ,—অনিল বলিয়াছে! তবু অজ্ঞাতে চোধ কেমন করিয়া উপরের দিকে যায়। এইরূপে একদিন বাভায়ন-পথে এক কিশোরীর ফুন্দর মুথের আভাস পাইয়া চোখ নীচু করিতেই শুনিতে পাইল, "চেয়ে দেখই না ভাই, তোমার চেয়ে এতই কি বিচ্ছিরি দেখতে?" শচী সপুলকে হাসিয়া বলে, কি যে বলেন! ইহার পরে উপরের জানালায় পাতার আড়ালের উজ্জ্বল গোলাপটির মত সে কিশোরীর মুখ অহরহই ভুটিয়া উঠিত। কিন্তু টেচাইয়া কভক্ষণ কথা বলা যায়? বাধাহীন আলাপের জন্ত উপরের বৌটি ছুটিয়া আসিত! অনেকটা পথ,— হুখানা বাড়ি ষেদিকে, রাস্তা দেদিকে নয়। পাহাড়ের অন্তদিকে ছায়াচ্ছা ঢালুপথে নামিয়া অনেকটা পথ ঘুরিয়া তবে তাহাকে আসিতে হয়। আলাপেও সে-ই পটু। অপ্রতিভ শচীকে লজা দিতে সেই বলে,—বসতে দেবে না ভাই? আপনি, আজে, বলা আমার চলবে না— আগেই বলে রাখছি কিন্তু। তোমার নামটি কি ভাই?

বৌটির অসকোচ আলাপে পরিভূষ্ট শচী হাসিরা বলে, আগে নিজের নামটি বলতে হবে যে। অপরা তথন চৌকী টানিরা অচ্ছক্ষ হইরা বসিরাছে। শচীর -কুঠার ভাব তাহার মিষ্টি লাগে, চোথে মুখে হাসির মধু বর্ষণ করিরা সে বলে,—দাঁতভাঙা নাম শুনতেই হবে?— বলে ভাহলে চেষ্টা ক'রে—ইন্সাণী—। সার্থক নাম!

চেহারায় স্বভাবে মিলাইয়া কে এমন নাম রাথিয়াছিল? নিজের নাম যেন শচীর উপহাস বলিয়াই মনে হয়। শৈশবে তার মুখে কি বৈশিষ্ট্য দেখিয়াই যে মা নাম রাথিয়াছিলেন, भिनीतानी। त्म नात्म भनीत दिन-दिन कूर्श वाजिया চলিয়াছে! রাণী হইয়াও বিয়ের বেলায় তার বাপ-মাকে বিনুমাত্র কম লাঞ্চনা দেয় নাই! তবু সেই নামই শচীকে বলিতে হয়।—শচী, ওমা, কি আশ্চর্যা মিল, ছাথে। তুমি আমি একই লোক তাহলে। ইন্দ্রাণীর আনন্দ ধরে না, বলে, এতদিনে এক হলুম আবার। তুমি ভাই নাম-করতে পাবে না আমার; নিজের নাম বলে কি কেউ? এদ মিলন পাতাই আমরা,—কি বল? হ'লবা পুরুনো তবু কেমন মিষ্টি,—শচী খুণী হইয়াই পাতানো ডাকটি মানিয়া শয়। এতটা তার সাহসই হইত না । তারপর চলে অজ্ञ গল্প। বাওয়ার বেলায় আবার দেখা হওয়ার অনুরোধ। ইন্দ্রাণী বলে,—একটিবার ভূমিও আসবে ভাই; নইলে ক্যাংলা ব'লে আমায় বড্ডই ঠাটা করবে যে!

ইক্রাণী চলিয়া যায়, কিন্তু তার সম্রেহ ক্লয়ের মধু-সৌরভ শচীকে আছেয় করিয়ারাথে। কি মিষ্টি তার কথাগুলি, নিংড়াইয়া সুখা ছানিয়া লয় শচী। স্থীত্বের বন্ধন ক্রমেই নিবিড় হইয়া আসে—শুরু মধ্যাহ্ছ আর শচীকে নদীর দিকে চাহিয়া কাটাইতে হয় না। স্থীর হাসি কথা তাহাকে ঘিরিয়া থাকে এথন। ইক্রাণীর মেহময় স্বভাব শচীর জীবনে ইক্রাণোক আনিয়া দিয়াছে খেন।

হাসাইতেও ইন্দ্রাণী ওস্তাদ। কথনও স্বামীর চালচলন তার বর্ণনার বিষয় হইয়া পড়ে! অশোকের সামান্ত ক্রটি লইয়া এত সে রং ফলায়!—হাসিয়া ক্লান্ত শচী বাধ্য হইয়া বলে—থামো ভাই, স্বামীকে অত বিজ্ঞপ করতেনেই।—

- —হুঁ, হেসে নিলে কেমন! আবার বাড়ি গিরে তোর কথাও বর্ণনা করব।—সেকি ভাই? সত্রাসে শচী বলে,— আমি আবার কি অপরাধ করলাম?
- আহা তোমারই যেন কোন খুঁৎ নেই! এই কেমন মিনমিনে ভাব—ভিনবার ডেকে ভবে সাড়া পাওয়া যায়।

কথাটা ঠিক, ইন্দ্রাণীর তুলনায় শচী বেন জীবনহীন। স্থীর হুরস্তপনা তার ধাতেই আসে না। বাড়ির মুন্দর স্বায়গা থাকিতে ইন্দ্রাণীর যধন পাশে এত বালুচরে পিকনিক করিতে সাধ যায়, তথন শচী বাধা না-দিয়া পারে না। কিন্তু ইন্দ্রাণীর অসীম উৎসাহ। জ্যোৎস্নালোকে জলে-ভেজা কালো বালুচরের ক্রপালি নদী ঝলমল করিতে থাকে, উতলা পবন কচিৎ বনকুলের মৃত্ মধুর সৌরভ বহিয়া আনে। তবু স্যত্ত্বপরিশ্বত তরকারিপাতিতে যথন বালি কিচ্ কিচ্ করিতে থাকে, তখন শচীর বিরক্তি ইন্দ্রাণীর কলহাম্মের ঝন্ধারকে ছাপাইয়া ওঠে। ইন্দ্রাণী সে-সব গ্রাহ্ম করে না। শচীকে একপাশে সরাইয়া সে নিঞ্চে হাতে সব করে। স্বামীরাও সেধানে নিমন্ত্রিত! রালার ভার ই<u>ক্রাণীর।</u> আনাডি হাতে রাধিয়া থাওয়াইবে বলিয়াই না এত আয়োজন! কিন্তু শচীকে একদণ্ড বসিতেও দেয় না সে। কথনও ডাকে-স্ভাগ্না ভাই, গেল বুঝি খিচুড়িটা ধরে, হাতা চালা না একটিবার। নদীর দিকে উপবিষ্ট অশোক হয়ত চেঁচাইয়া বলে,---রাল্লাটা না-হয় ওঁর হাতেই ছেড়ে দাও। দিনরাত যত খুণী উপদ্রব সম্লেই থাকি---রসনার উপর অত্যাচারটা না হয়—

ইক্রাণী ঝাঁঝিয়া উঠে; শচীকে বলে,—ছুস্ নে ত ভাই, দেখা যাবে পাতে কিছু প'ড়ে থাকে কি না। শচী হাসিয়া সিরিয়া বায়। পরমূহর্ত্তে আবার ডাক পড়ে, 'চাটনীতে কি-ফোড়ন দিতে হয় ভূলে গেলুম যে, ব'লে দেনা ভাই।' হাসি কথার ইক্রাণী সবাইকে অস্থির করিয়া তোলে। বেচারা অলোককেও তাহার কাছে হার মানিয়া চুপ করিতে হয়। তবু ইক্রাণীর বাবহারে লেশমাত্র তিব্রুতা শচী খুঁজিয়া পায় না। পৃথিবীর মালিন্ত তাহার স্বধীর অস্তরে কোখাও যেন ঠাই পায় নাই। ঘন বর্ষণশেষে নির্মেষ্ চক্রালোকের মতই তাহা সকলের মনকে ছুইয়া বায়। বাড়ি ফিরিয়াও শচী তাই স্বধীর ভূছত্তম হাসি কথাটুকু বার-বার অনিলের নিকট বর্ণনা করে। অনিল ব্রুবন বেলে, তোমার সই হাড়া জগতে আর কিছু আছে? তথন লক্ষিত হইয়া শচী চুপ করে। নিরূপায়! শচীর জীবনে স্বধীপ্রেমর ভাগীরথীধারায় এ বে তটপ্লাবন ৮ লে-ছথারস

তাহার ক্লরের কানার কানার উপচাইরা পড়িতেছে—শচীর সাধ্য নাই তাহাকে গোপন করিরা রাখে।

এত সুধের মধ্যেও তাইকে আনিবার কথা শচী ভোলে নাই। অনিগও চেষ্টার ছিল। কিছুদিনের মধ্যেই নটু আদিরা পড়িল। সে সবচেরে ছোটট নয়। কোলের ছেলেকে মা ছাড়িতে পারেন নাই। তাই সেজো ভাই নটু আদিরাছে। বছর-চৌদ্দ তার বয়স, কিন্তু মুথে অত পাকামী না থাকিলে চেহারায় বা শিক্ষায় তাহার বয়স আন্দাজ করা যাইত না। যা হোক শচীর উদ্দেশ্ত পূর্ণ হইবে এবার । লেখা-পড়া সে বয়স-অলপাতে কিছুই জানে না। পাঠশালায় যাইত কি না জিজ্ঞাসা করিয়া শচী উত্তর পাইল—পরনে যাদের বস্তোর জোটে না তার আবার স্তাকাপড়া। তবু শচীর খুণীর অস্তু নাই। মা'র কথা ভাইবোনদের কথা সে খুটিয়া জিজ্ঞাসা করে। তালু আদিতে পায় নাই বিশিয়া মা'র উপর অভিমানে কেমন মুথ ভার করিয়াছিল তাহা বার-বার গুনিয়াও তার ভৃপ্তি হয় না।

কথাবার্ত্তার অস্তরালে নটুর লেখাপড়ার কথা শচীর মনে সজাগ হইয়া আছে। অনিলের সঙ্গে স্থাব দেওয়ার পরামর্শ চলিতেছে। তার আগে একটু ঘসিয়া-মাঞ্জিয়া দিতে হইবে। নটুর কিন্তু শেখা-পড়ার দিকটা পছন্দ নয়। তার চেরে স্থামাই বাবুর সৌখীন জিনিযগুলি পছন্দ হয় বেণী। শচী সকরুণ চিত্তে ভাবে, আহা কথনও কিছু পায় নি ত। নটুর পড়ায় অনিচ্ছায় তাহাকে মনে মনে পীড়িত করিয়া তোলে। লেখা-পড়ায় একটু মন যদি ওদের থাকিত! মেজ ভাইটি নাকি পড়ার সংশ্রব একেবারেই ছাড়িয়াছে। নটুই বলে মেজদার কিছু হবে না-এর মধ্যেই সে মাকে জিজেন না-ক'রে কোখার যে চলে যায়, মা ভাগু काँ। एन । भिक्रमा वला, পরের বই নিয়ে কেউ আবার পড়তে পারে, লেখাপড়া লেখে-সব উপকথার গল্প। ইহাদের কথাবার্তা শুনিয়া শচীর ক্ষোভ-হঃখের সহিত বিশ্বয়েরও সীমা থাকে না। তারাও অনেক কটি ভাইবোন শৈশবে মার হঃখের অন্ন বাঁটিয়া থাইত। কিন্ত এমনি ধারা কথাবার্তা তারা শেখে নাই। মারই ছঃখ, নইলে ছেলেরা এমনিধারা হয়? শচী যেন মনে মনে দৃঢ়প্রতিজ্ঞ হয়। নটুকে লেখাপড়া শিখাইবেই সে! কিন্তু সমস্ভার শেষ নাই। নটুর কাপড়-চোপড় একেবারেই নাই বে। দেশে শতচ্ছিত্র বস্ত্রে গ্রন্থি দিলা পরা চলিত— বিদেশে ভাছাতে মাথা হেট হয়। স্বামীকে বেণী বলিতে লজ্জা বোধ হয়। নটুর আসার ধরচ অনিশ কন্ট করিয়াই জোগাড় করিয়াছে। তবু দে নিজেই নটুকে এফজোড়া ধুতি কিনিয়া দিয়াছে। এখন ছটি জামা তৈরি করাইতে পারিলেই হয়। শচী অনিলকে এখন আর কিছু বলিবে না। কোন রকমে ভাষার কাপড় কিনিবে সে। সেলাই मठी कात्म ना, किन्दु रेखाणी खात्म। ভাইকোঁটার সময় নিজ হাতে ভা**ইদে**র সে জামা তৈরি করিয়া পাঠায়। ইন্দ্রাণীর পাশে বসিয়া শচী কতদিন তার ছাঁট-কাঁট দেখে---সেলাইয়ের কলের শব্দের সঙ্গে ইক্রাণীর মুখও চলে। কত গল্প করে ইন্দ্রণী—স্বামীর জন্মদিনে তসরের পাঞ্জাবী সেলাই করিয়া দিয়া চরকা-ব্রোচ উপহার পাইয়াছিল--শচীর এসব অজ্ঞানা থাকে না। শুনিতে শুনিতে হঠাৎ তার কেন মনে হয়—গরিবদের যেন কিছুই শিথিতে नारे। तमनारे कानिज्य त्य गतित्वतरे काल मार्श तभी। নটুর জামার জন্ত তবু তার চিন্তা লাঘব হয় কতকটা। নিজের **অক্ষমতা** সে স্থীর নিকট পুরাইয়া **লই**বে। এখন কাপড়-কেনার টাকা হইলেই হয়। প্রতাহ আনাঞ্চপাতি কেনার কিছু পয়সা অনিল তার কাছে রাথে। সে-পয়সা বাঁচা**ইয়া কা**পড় কি**নিভে গেলে অনেক দে**রি। শচীর মনে পড়িয়া ধায়—খণ্ডরবাড়ি আস:র সময় মা সিন্দুরকৌটায় একটি টাকা রাধিয়া শতীর আঁচলে বাধিয়া দিয়াছিলেন। মা'র কষ্টদঞ্চিত মেহের দান শচী প্রাণ ভরিয়া সে টাকা খরচ করিতে পারে নাই। এখন ভার মনে হয় এর চেয়ে কি আর ভাল কাজে লাগিবে এটাকা! ভাবিয়া শচী উৎসূর হইরা উঠে। সেদিনই মৃশ্যবান রত্ত্বের মত যত্ত্ব করিয়া রাখা টাকায় নটুর জামার কাপড় কেনা হয়।— ইঙ্রাণীর দেলাই করিয়া দিতে যা দেরি।

ইন্দ্রাণী উৎসাহ করিয়াই সেলাই করার ভার লইরাছে। কিন্তু শচীকে কাছে থাকিয়া শিখিতে হইবে, এই তার সর্ত্ত। কঠিন সেলাই সে নিজে করিয়া দিবে। আর সব শচীকে করিতে হইবে। পরদিন শচী ভাড়াভাড়ি কাজ শেষ

করিয়া সধীর বাড়ি ছুটিল। এখন যাওয়ার সাধীর অভাব নাই, নটু আছে। ছই সধীর হাসি-গল্পের মধ্যে জামা যথন শেষ হইল শচী একেবারে মুদ্ধ। কে বলিবে দক্তি করে নাই? শচীর অপটু হাত কোখাও ধরা যায় না। ইন্দ্রাণীর নিপুণ হাতের গুণেই অবশু ইহ। সম্ভব হইল। বাড়ি গিয়া বোতাম কটি বসাইয়া লইলেই নটু জামা গায়ে দিতে পারিবে।

বেশা পড়িয়া গিয়াছিল। শচী যথন পাহাড়ের নীচে নামিল তথন পথে জনভার চাঞ্চলা পরিষ্টে। সধীকে বিদায় দিয়া ইক্রাণীও ব্যস্ত হাতে কালে মন দিল। অশোকের আসার সময় হইয়াছে। অশোকের জলথাবার নিজে তৈরি করে সে। আজ তাহা হয় নাই। শেষ করিবার আগেই অশোক আসিয়া পড়িল। পড়ীর অপরিচছর বেশ তার চোথে পড়িতেই সে সহাস্থ মুথে বলিল—সখী-সমাগম হয়েছিল ব্ঝি!

অশোকের পরিচর্যা শেষ করিয়া ইন্দ্রাণী নিজের দিকে একটু মন দিবার চেষ্টা করিতেছিল, অশোক ডাকিয়া বলিল— ঘড়িটা কোথায়? আজ নিয়ে বেতে মনে ছিল না। কোথায় তুলে রেপেছ বল ত ? ইন্দ্রাণী উঠিল না, চুলে চিক্লণী চালাইতে চালাইতে বলিল—ভাথো না ঐ দেরাজের কাছটিতেই তুমি যেখানে রাধ দেখানেই আছে ত!

—না-না নেই, সরিয়ে রেথে ছুইুমি করা হচ্ছে।—
ইক্রাণী তথাপি নড়িল না, এ শুগু তাকে কাছে লওয়ার
ফন্দী। ঘড়ি সে কিছুক্ষণ পূর্বে পানের ডিবা আনিতে
গিয়া দেখিয়াছে! কিন্তু আশোকের ব্যস্ততায় চুলবাধা
ফেলিয়া উঠিতে হইল শেষ পর্যান্ত। বাপের বাড়ি হইতে
আনা, প্রাতন দাসী মুখীও বলিতেছে, জামাই বাবু খুঁজে
হায়রান হলেন, ভূমি একবার দেখছ না দিদিমণি!

তার পর সকলের মিলিত তলাসেও প্রার্থিত দ্রবাটি কাহারও নয়নগোচর হইল না।

অশোক রাগিরাছিল। কেউ নিয়েছে ঘড়ি, ডাক চাকর-বাকর সবাইকে। ইন্দ্রাণীও শহিত হইরাছিল। কে নিতে পারে? জল যে দেয় সে ত ঘরেই আসে না। ঠাকুর রালা করিষাই ভ্রমণে যায়, সন্ধ্যায় ফেরে। শুদু ঐ নুতন চাকর 'আপা'।—উদ্যত ক্রোধে অশোক ভাহাকে দেরা করিতে লাগিল। তরুণ ভূত্য বালক বলিলেও চলে। ভরে সে বিবর্ণ হইয়া গিয়াছে। জবাব দিতে কথা জড়াইয়া বাইতেছে। অপরাধীর কুঞ্চিত ভাব। নিশ্চিত সন্দেহে অশোক তাহাকে হই চড় বসাইয়া দিতেই ইক্রাণী ছুটিয়া আসিল,—আহা দোষী কিনা ভার ঠিক নেই,—আগে থেকে মার-ধোর ক'রো না।'

ইন্দ্রাণীর মনে অন্ত সন্দেহ জাগিতেছিল।

অশোক ভৃত্যকে ছাড়িল বটে, কিন্তু রাগ কমে নাই তথনও। বলিল, ঘড়ি আমি আজই বার করতে চাই। অত দামী ঘড়ি-চোরকে আমি পালাতে স্থবিধা দিচ্ছি না। বাড়ের লোকজনের সামনে ঘড়ি উড়ে গেল? ঠাকুর কোথায়?

ইক্রাণী কুষ্ঠিত মুথে উত্তর দিশ, সে আসে নি ত। তার বাবার পরেও ঘড়ি দেখেছি আমি। বলিয়া ইক্রাণী আলনা হইতে স্বামীর গারের চাদরখানি টানিয়া পাশের দরজা দিয়া হঠাৎ কোথায় বাহির হইয়া গেল।

শতীর কাক্তেও সেদিন বিশৃত্বলা লাগিয়াছে। অনিল ফিরিয়া আসিল, রায়া তথন মোটে স্কুক্র হইয়ছে। অনিল বার-বার তাড়া দিয়া রায়াঘরের পাশেই পুরিতেছিল। শচী ঝোল নামাইয়া ভাত চড়াইয়াছে, এমন সময় তাহাদের বিশ্বিত করিয়া ইক্রাণী আসিয়া দাঁড়াইল। অনভ্যস্ত বেশে চাদর ভড়াইয়া সে আসিয়াছে—সঙ্গে চাকরও নাই। উভয়ে বিশ্বয়ে জিজ্ঞায় দৃষ্টিতে তাহার দিকে চাহিতেই ইক্রাণী বলিল—অনিল বার্, আপনি একটু বাইরে বান, শচীরে কাছে আমার দরকার।" অনিল বাহিরে গেলে সে শচীকে জিজ্ঞাসা করিল, নটু কোথায় ভাই? তাকেই আমার বড্ডে দরকার। শচী বলিল, সে ত এসেই বেড়াতে গেছে। একটি দিনও বাড়ি থাকে না, আর এর মধ্যে কিক'রে যে দলবল জুটিয়েছে। কিকাক্ত ভাই, বল না আমার।

ইক্সাণী বাবেক ইতগুত: করিয়া বলিল, ওঁর সোনার ঘড়িটা সেই থেকে পাওরা বাচ্ছে না। জ্ঞানত ভাই কি সোধীন লোক, ঘড়ি ছাড়া এক দণ্ড থাকেন না। সেই নটু বেথানে ছবি দেখছিল সেইখানে ঘড়িটা ছিল কি না। কিছু মনে ক'রো না ভাই,—ছেলেমানুষ ভূলে যদি হাতে

নিয়েই থাকে। শচী থরথর করিয়া কাঁপিতেছিল। সে শুহু কণ্ঠে কোন মতে শুধু বলিল—নটু ?

— হা ভাই, — নটু ছাড়া আর কেউ দে ঘরে বায়নি।
একবার ঘড়িটা তাকে নাড়তে দেখেছিলাম। ঘড়িটা
যদি এনেই থাকে চুপি চুপি আমার ফিরিয়ে দিও ভাই,
কেউ ক্লান্তে পাবে না। ইক্লাণী বেমন আসিয়াছিল তেমনি
ক্রতপদে ফিরিল।

অনিল শোবার ঘরে দাঁড়াইয়া ছিল। গাইত জানিরাও নে আড়াল হইতে ইক্রাণীর কথা শুনিরাছে! ইক্রাণী চলিরা যাইতেই সে শচীকে ত-একটি কথা জিজ্ঞাসা করিরা পথে বাহির হইয়া গেল। তার চোথে মুথে জালা ধরিয়াছে বেন। শরীরও কাঁপিতেছে। যদি মিথ্যা হয়—ভদ্রতার মুখোসকে চিনিয়া রাখিল এবার।

ঘণ্টা তৃই পরে অনিশ ফিরিল। নটুর হাত তাহার বক্তমুষ্টিতে আবদ্ধ। চন্দের পলকে শচী ব্যাপারটা সত্য বলিয়া বৃথিতে পারিল। ভাত ছটি নামাইরা সেই যে কথন শচী ভূঁত্বে বিসিয়াছে আর উঠে নাই। জল দিতে আনে যে লোকটি সে-ই শচীকে অপ্রকৃতিস্থ বৃথিয়া করুণায় একটি আলো জালাইয়া গিয়াছে।

অনিলের মুথ বেন ফাটিয়া পড়িতে বাকী। গরিব সে, কিন্তু সততার সম্মান যে তার জীবনের সম্পদের ভিত্তি। এই জন্তই না সে সকলের প্রিরপাত্ত। কিন্তু সে বিশাস দুরে থাক্, লোকে বলিবে চোর পরিবার। এই জায়গায় কেমন করিয়া সে আর থাকিবে, মুথ দেথাইবে?

শচী নিঃসাড় হইয়া বসিয়া ছিল। অনিল তাহাকে ভনাইল কি করিয়া নটু বড়িটাকে পাথরে ঠুকিয়া চূরমার করিয়াছে। ভাবিয়াছিল কেহ চিনিতে পারিবে না কিন্তু নামের অক্ষরগুলি যে ডালার পিছনে থোলা তা আর বৃদ্ধিমানের নজরে পড়ে নাই। ভাঙা বড়ি বলিয়া কর্ম্মকারকে বিক্রি করিয়া বয়ুবর্গ লইয়া মেঠাই থাওয়া হইতেছিল। ভাগ্যে অনিল সে সময় বায় নইলে কুড়ি টাকার মধ্যে পোনের টাকা ফিরিয়া পাওয়া হাইত না। কত কটে কর্মকারকে ভয় দেথাইয়া ঘড়ি আদায় করিয়াছে। এত লাঞ্ছনাও অনিলের পাওনা ছিল! অশোকের বাড়িতে ভাহার অবশিষ্ট-টুকু পূর্ণ হইয়াছে। বদিও অশোক ভাহার চিরাচরিত

ভদ্রতার ভাঙা ঘড়িট গ্রহণ করিয়া নটুর শাসনের ভার তাহার হাতেই দিয়াছে তবু তাহাদের দাসীর কণ্ঠ ভিতর হইতেই তাহাকে শুনাইয়া বিদিয়াছে, তখুনি বলেছিলুম— নিদ্দুসীর হয়রান শুশু, ওদের পেটে পেটে এত। ঐটুকুন ছেলে, কে জ্ঞানে ওদের শিক্ষা কেমন? নিজে থেকে কি আর অত কাণ্ড মাথায় আসে।

কেন যে অনিল স্ত্রীকে খুনা করিতে নটুকে আনিয়া-ছিল! নির্কোধ, নইলে অজানা একটা ছেলের ভার লইতে যায়? কম্পিত কঠে বলিতে বলিতে সে নটুকে ছই-চার থা প্রহার দিতে লাগিল। এ অপমানের জালা তাহাকে চিরদিন বহিতে হইবে। শচী সমস্ত শুনিল—শরীর মন তাহার শুক হইয়া গিয়াছে। নটুর আর্ত্ত রোদনেও সে নিস্পন্দ হইয়া বিসিয়া রহিল। নটু কাঁদিতে কাঁদিতে সেথানেই ঘুমাইলে অনেক রাত্রে অনিলকে ছটি থাইতে দিয়া শচী হাড়িতে জল চালিয়া দিল।

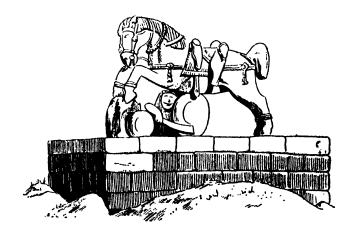
থেমন আনিয়াছিল সেইরূপ অন্তনয়ে শচী আবার নটুকে পাঠাইল দেশে। এবার যাওয়ার থরচ দিতে তার কানের মাকডীক্ষোড়া শচী বিক্রী করিয়াছে।

আবার সেই নিঃসঙ্গ দিনধাপন। ভাইকে মানুষ করা দুরে থাক্ শচীর জীবনে ঘূণ ধরিয়াছে যেন! কোন কাজে উৎসাহ নাই, দিনব্যাপী অবসাদ শুধু তাহাকে আছেয় করিয়া রাথে। সে আর উঠানে দাঁড়ায় না। ইক্রাণীর দিকে চোখ পড়িলে তথনি চোখ ফিরাইয়া নেয়। ইক্রাণীর চোথেও ইহা এডায় না। সনিখাসে সে ভাবে কিছু ত বিদ

নি আমি। সধীর ভাব দেখিয়া তারও কেমন সঙ্কোচ আসে।

শচীর কাজ এমনই অগোছাল হইয়াছে, কে বলিবে আগেকার সেই শচী। নানাবিধ রন্ধনে সে আর অনিলকে তৃপ্ত করে না। কুমড়ালতায় ফুল ধরিয়া আপনিই ভকায়, তিল পিঠালি মুড়িয়া ভাজিতে শচী ভূলিয়া গিয়াছে। অনিলের থাওয়া শেষ হইলে আর নড়িবার লক্ষণ দেখা যায় না। তবে পুরাতন সাধী সেই ব্রহ্মপুত্র, তাহার দিকে চোখ রাধিয়া কি যে ভাবে শচী! গত দিনগুলির সুখের চিত্র কলনায় গুৱাইয়া ফিরাইয়া দেখে কখনও, মনে জাগে মমতাময়ী ইন্দ্রাণীর করুণাসহাস হাসি। সেইখানে বসিয়াই বেলা শেষ হইয়া যায়। অনিল তাহার মান মুখ দেখিয়া কাজের ক্রটিগুলি মার্জ্জনা করিয়াই চলে। সন্ধ্যার অন্ধকার না ছাইলে শচীর উঠিবার তাড়া দেখা যায় না আরে। শচীর ভাই যদি মরিয়া যায়। শচী ভাবে যারা থেতে পায় না মরণ নাকি তাদের সহজ, ওরা যেন মরে যায় ঠাকুর। ভাবিতে ভাবিতে অজ্ঞাতে কথন শচীর চোথে জল ঝরিতে থাকে—পাহাড়ের অক্ত দিকে নরসিংহ-বাড়ির আরতির কাঁসর-ঘণ্টা বাজিয়া উঠে, শচীর তথন হু'স হয়। অঞ্সিক্ত আঁথি অঞ্চলপ্রান্তে বার-বার মুছিয়া করজোড়ে সে দেবতার উদ্দেশে প্রণাম করিয়া বলে— আমার ক্ষমা কর ঠাকুর, ক্ষমা কর।

ভাইদের অকল্যাণ-কামনার গ্রানিতে অমৃতপ্ত চিস্তে সেথানে বার-বার মার্জ্জনা ভিক্ষা করিয়া প্নরায় বলৈ—তাদের স্মতি দিও ঠাকুর, সুমতি দিও শুধু।



ভারতে মনঃসমীক্ষা

প্রীরবীস্ত্রনাথ ঘোষ

প্রতিশব্দ Psycho-analysis | মন:সমীক্ষার ইংরেজী প্রতিষ্ঠাতা, স্রষ্টা, এবং প্রচারক এই নববিজ্ঞানের তিনি নিজে ১৯১৪ গ্ৰীষ্টাব্দে ডাঃ সিগমুগু ফ্রন্থড। মনঃসমীকা আন্দোলনের ইতিহাস (On the History of Psycho-analytical Movement) নামক প্রবন্ধে লিখেছেন, "মনসেমীকা আমার সৃষ্টি" ("psycho-analysis is my creation")। মনঃসমীক্ষার স্ষ্টিতে প্রকারাস্তরে অনেকে সাহাগ্য করেছেন। ডাঃ ব্রয়র (Brewer), ডাঃ সারকো (Charcot) ও ডাঃ শ্রোবাক (Chrobak)-এর সাহায্যে ডাঃ ফ্রন্মড যথন মানসিক রোগের আলোচনা ও পরীক্ষা করছিলেন তথন থেকেই তিনি মন:সমীক্ষার ইঙ্গিত পান। কিন্তু যথন মনঃসমীক্ষা বিজ্ঞান হয়ে জ্ঞানী ও বিজ্ঞানীদের সামনে এসে হাজির হ'ল, তগন যে নিকা ও অপ্রশ্রম এই নবমুকুশিত বিজ্ঞানকে উদ্দেশ ক'রে এর স্রষ্টার ওপর বর্ষিত হ'তে লাগল, ক্রয়ডই হলেন তার একমাত্র লক্ষা।

জন্ম হয়েছে মানসিক রোগের মনঃসমীক্ষার ও নিরাময়তার উপায় অনুসন্ধান করার ফলে। ৮২ সালে ব্রয়র সাহেবের কাছে শিক্ষানবীশীকালে ক্রয়ড ষ্থন এক হিষ্টিরিয়াগ্রস্ত রোগীণীকে আরোগ্য করবার চেষ্টা করছিলেন তথন তিনি মনঃসমীক্ষার পথ খুঁজে পান। রোগীণী নিজের গত জীবনের ঘটনাবলী সহাত্রভৃতি-সম্পন্ন চিকিৎসকের কাছে নিঃসঙ্গোচে ব'লে যান। এই ব'লে বাওয়ার ফলে তাঁর মানসিক অবস্থা ক্রমশঃ স্বাভাবিক হয়ে আস্চিল। বে-ব্যক্তি কে। ঠবদ্ধতায় কষ্ট পাচ্ছেন, কায়িক চিকিৎসকেরা তাঁর শারীরিক ভোলাপের ব্যবস্থা ক'রে থাকেন। জোলাপের সাহায্যে দেহে আবদ্ধ মল নিক্রমণের পথ পার এবং এই নিঙ্গতি रेमहिक व्यवस्थारक महक्ष क'रत रमग्र। क्रुग्ने मस्ति निक्रक আবেগকে বাইরে আনবার জন্ত ঐরপ উপায়ের সাহায্য নিয়েছেন এবং এই পদ্ধতির নাম দিয়েছেন Cathersis বা বিরেচন।

এই বিদ্যার উদ্ভাবন ও প্রচশনের আগেও রোগের কারণ নির্ণয় ও আরোগোর চেষ্টা চিকিৎসকদের সাইকিয়েড্রী (Psychiatry) मर्था (मथा मिराइ जिला। নাম নিয়ে বে-বিদ্যা পিনেল (Pinel)-এর সময় থেকে চলে আসছিল, তারও একটা উদ্দেশ্য মানসিক আলোচনা। ফ্রয়ডের সময় ডাঃ সারকো এই নেতা। ফ্রন্থড তাঁর কাছে ছাত্র-হিসাবে যান। সাইকিয়েট্রীর যুগে মনের রোগ সারাবার ব্যবস্থা হ'ত রোগীকে সংবেশিত (hypnotize) ক'রে। সংবেশনের (hypnosis) সাহায্যে বোগীর স্বাভাবিক মনের বাধাকে নিষ্ক্রিয় ক'রে চিকিৎসক অভিভাবের (suggestion) ভার ওপর প্রয়োগ তার ফ**লে** রো**গে**র মাত্রার কিছু উপশম হলেও রোগী সম্পূর্ণভাবে স্বাভাবিক হ'ত না। পূর্ব্বতন মন-চিকিংসকগণ (Psychiatrists) রোগীর মনের বিকাশ ও প্রকাশের দিকে বিশেষ মনোগোগ দিতেন না। উক্ত উপায়ে চিকিৎসা করার পর রোগীর সেই মানসিক বাাধি থেকে পুনরাক্রমণের সম্ভাবনা থেকে যেত। আরও দেখা গেল, অনেক ব্যাধিগ্রস্তকে সংবেশিত করা সম্ভবপর নয়।

ডাঃ নিগম্ভ ক্রয়ডই প্রথম রোগীর মানসিক রোগের উৎপত্তির ইতিহাস ও ধারা অবলম্বন ক'রে তার মনের সংক্র পরিচয় স্থাপনের চেটা করলেন। তাঁর প্রথান্থামী মনের বিকার লক্ষ্য ক'রে মনের স্বাভাবিক অবস্থা সম্বন্ধে জ্ঞানলাভ ও ধারণা করঃ যায়। কি ক'রে তিনি এই বিস্থার ভিত্তি বিজ্ঞানের সংস্থার ওপর প্রতিষ্ঠিত করলেন সে-সব কথার বিশ্বদ আলোচনা বর্তুমান প্রবন্ধে সম্ভব নয়। ফ্রম্মড নিজে ভিনটি প্রবন্ধে তার আলোচনা করেছেন—প্রথম ১৯১০ সালে ফ্লার্ক বিশ্ববিদ্যালয়ে বক্তৃতাকালে The Origin and Development of Psycho-analysis শীর্ষক প্রবন্ধে, ন১৪ সালে On the History of Psycho-analytical Movement এবং তার পর The Problem of Lay-analysis প্তকে নিজের স্বৃতিকথার মধ্যে মনঃসমীকার ইতিহাস সম্বন্ধ যথেষ্ট আলোচনা করেছেন। এ ছাড়া তাঁর বছ ক্কতী ছাত্র এবং সহক্র্মী উক্ত বিষয়ে বছম্বানে যথেষ্ট বিচার করেছেন। এখানে ক্রম্বন্ডীয় ভ্রম্বের মূলকথা সংক্রেপে বলা আবগুক।

ক্রয়ডীয় তক্ত মানসিক ব্যাধিগ্রস্তদের স্থস্থ করার উদ্দেশ্যে আরম্ভ হয়েছিল, কিন্তু যথন এই বিদ্যা পরিবর্ত্তিত ও পরিবর্দ্ধিত হয়ে মনঃসমীক্ষা বিজ্ঞানে পরিণত হ'ল তথন তার প্রযোজ্যতা ও প্রয়োগের পরিধি অনেক বেডে গেল। আমাদের মানসিক বিকারকে ফুস্থ অবস্থায় এনে জীবন্যাত্রাকে সহল্প করবার প্রয়াস মনঃসমীক্ষার যেমন **এছে, তেমনই স্বাভাবিক মানুষের মন ও ব্যবহার সম্বন্ধে** পরিপূর্ণ জ্ঞান বিতরণে সে বিজ্ঞান সমর্থ। মন ও বস্তুকে নিয়ে সমস্ত পুথিবী গঠিত। বস্তুকে কেন্দ্র ক'রে বিভিন্ন বিজ্ঞান গড়ে উঠেছে, সেগুলির ব্যবহারিক ও জ্ঞানবিষয়ক ছই গুণ আছে। মন:সমীক্ষার বিষয়বস্তু মন হলেও এই বিজ্ঞান সেই প্রকার ঋণায়ক। কিন্তু প্রত্যেকে আমবা নিজ মনের ও তৎসম্বন্ধীয় গর্কের অধিকারী ব'লে মন-সম্বন্ধে জ্ঞানকৈ আমরা অপরের কাছ থেকে গ্রহণে পরাধ্যুথ। যদিবা সে বিদ্যার জ্ঞান-বিবৃত্তক গুণকে আমরা স্বীকার করি, তার ব্যবহারিক উপকারিতাকে নানা কারণে উপেক্ষা করি। এই উপেক্ষার মধ্য দিয়ে মনোবিস্থাকে বাচতে হয়েছে ও হচ্ছে। তাই এর প্রচার তত বহুণ নয়। চাণ্স্ মায়ার (Meyer) >>>> সালের মে মাসের 'রিয়ালিউ' (Realist) পত্রিকায় 'ইন্ডাইিয়াল সাইকলজি' নামক প্রবন্ধে সে-সম্বন্ধে সবিস্তার আলো5না মন:সমীক্ষাকে উপেক্ষা করার কারণ আরও গুরুতর। মনংস্মীকা নিভান মন নিয়ে আলোচনা করে, তাই তার স্ত্রগুলি সাধারণের কাছে প্রীতিকর নয় বরং পরিহার্যা, এবং নিরুদ্ধ ইচ্ছার স্থিতি নির্মান মনে ব'লে' তার জ্ঞান আমাদের কাছে স্বীকারবোগ্য নর। প্রবৃত্তির সঙ্গে মনংস্মীকা জড়িত ব'লে এবং কাম্জ প্রকৃত্তি আলোচনার সম্পূর্ণ অযোগ্য ব'লে थाङ्ग

সাধারণের মনে দৃঢ় থাকার মন:সমীক্ষা উপেক্ষার কারণ হয়েছে।

মনের বে-অংশটুকুকে এতদিন মাত্য মন ব'লে যে অস্পষ্ট কল্পনা ক'রে এসেছে সেই সংজ্ঞান (conscious) মনের সঙ্গে নিজ্ঞান মনের সম্বন্ধ আলোচনা করে মনঃসমীক্ষা। ভূলে যাওয়া প্রভৃত্তি লেখার ভল, বলার ভুল, এতদিন নিজ্ঞান মনের প্রকাশকে ভুচ্ছবোধে সভ্যতা আলোচনার বাইরে রেথে এসেছিল। কিন্তু মন:সমীকা এই ভূচ্ছ ব্যাপারকে অবশয়ন ক'রে নির্জ্ঞান মনের পরিচয় পায়। সাধারণতঃ যে-সব অভিজ্ঞতা আমাদের রুচ আঘাত দেয় এবং জীবনবাত্তার পথে বাধা হয়ে পড়ে, সেগুলিকে আমরা অস্বীকার করবার চেষ্টা করি, সম্ভব হ'লে ভূলে বাই। কিন্তু সেগুলি সংজ্ঞান মনে স্থান না-পেলেও নিজ্ঞান মনে বাসা ক'রে সংজ্ঞান মনে আসতে চার, কিন্তু প্রতি পদেই বাধা পায়, তাই তাকে চাতুরী ও ছ্লনার সাহায্য নিয়ে অতর্কিত ভাবে সংজ্ঞান মনে উপস্থিত হ'তে হয়। নিরুদ্ধ ইচ্ছার এই অতর্কিত আক্রমণ হ'তে চেতনা বাঁচতে গিয়ে সেগুলিকে ভুল বিকেনা ক'রে তার কারণ অনুসন্ধান থেকে বিরত থাকে। প্রত্যেক কাঞ্চের একটা কারণ আছে, কিন্তু সব সময়ই আমরা যে কারণকে উপলক্ষ্য ক'রে কাজের অনুসরণ ক'রে থাকি, তা নয়। অনেক কাজ ক'রে ফেলে পরে স্থবিধানুযায়ী তার একটা কারণ গড়ে নিই। সেই কারণ যদিবা সম্ভাব্য হয় তবু বাস্তব নয়। সভ্যতার গুণে মামুষ নিজেকে ছোট ভাবতে চায় না এবং পারে না, তাই নিজের ব্যক্তিত্বকে অক্স্ম রেখে তার অনুযায়ী একটা কারণ সৃষ্টি ক'রে নেয়। দৈনন্দিন ব্যাপারে নিজ্ঞ'ানের প্রভাব (Psycho-pathology of Everyday Life)এ ফ্রয়ড তার বিস্তৃত মালোচনা করেছেন। সেদিন পর্যান্ত অপ্ল আমাদের কাছে সমস্তার এবং বিশ্বয়ের বস্ত ছিল। মনঃসমীকা স্বপ্নতব্বের আলোচনা করে। আমাদের মনের নিরুদ্ধ ইচ্ছাগুলি আমাদের সংজ্ঞান মনের অগোচরে ছग्रायम निम्न खर्भ अस्म हासिन हम कथिए जुरु हन। স্থপ্নকে বিশ্লেষণ ক'রে মন:সমীক্ষক আমাদের নিজ্ঞান মনের কার্য্যকলাপ বুঝতে পারেন:। ভাষায় ধেমন আমরা বহুলোকের মনের ভাব একই রক্ষ প্রতীকের (symbol) সহায়তায় প্রকাশ ক'রে থাকি, স্বপ্নেও তেমনই যে-সব প্রতীক ব্যবহৃত হয়ে থাকে অনেক ক্ষেত্ৰেই সেগুলি সম্ভৰ্থবোধক। এই সব প্রতীকের ব্যাখ্যা ক'রে স্বপ্নের অর্থ আমাদের ব্দয়ক্ষম হয়। মন:সমীকাকে ধৌনতত্ত্ব ব'লে অনেকে দিরেছেন। মনঃসমীক্ষকের অপবাদ কামজ বৃত্তির ধারণা সাধারণের যৌনমতের মত নিরুষ্ট এবং হের নর। তা ছাড়া মানসিক ব্যাধির আলোচনা ক'রে দেখা গেছে. কামজ বৃত্তি আমাদের জীবনের এবং কার্য্যাবলীর অনেকখানি অধিকার ক'রে আছে। যৌন প্রবৃত্তি এবং ইচ্ছার ভৃপ্তির পথে সভাতা অনতিক্রমণীয় বাধার সৃষ্টি ক'রে রেখেছে। কাজেই সমাজে বাস করতে গিয়ে মানুষকে যৌনসংক্রান্ত অনেক ইচ্ছা দমন করতে হয়। পরে সেই সব ইচ্ছা নিক্ল'র হয়ে মানসিক ব্যাধির কারণ হয়ে পড়ে।

এদেশে পুরাকালে মন-সম্বন্ধে বছ আলোচনা হ'ত। কিন্তু
সে-সব আলোচনা দর্শনের প্রকৃতি ত্যাগ ক'রে বিজ্ঞানের
পর্য্যায়ে আসে নি ব'লে মনে হয়। যদিও একথা স্বীকার
করতে হবে যে, প্রাচীন ঋষি এবং যোগারা মনের ওপর
অধিকার স্থাপনে এবং মনের গতিকে সংযত ও সুসংবদ্ধ
করতে সমর্থ হয়েছিলেন, তব্ও একথা বলা চলে না যে
একালের মনঃস্মীক্ষা সে-ষ্গের জ্ঞানের প্ররাবৃত্তি বা
নবসংস্করণ।

বিংশ শতাব্দীর প্রারম্ভে ভারতবর্ষে মন:সমীক্ষা সম্বন্ধে আলোচনা ব্যক্তিগত ভাবে করেক জনের মধ্যে আরম্ভ হয়। ১৯০৯ গ্রীষ্টাব্দে ছাত্রাবস্থায় ডাঃ গিরীক্রশেশর বস্থ প্রথম এদেশে মন:সমীক্ষার চর্চা সুব্দ করলেন। ইউরোপে ক্রয়েডের মত, এদেশে বস্থ-মহাশয় মন:সমীক্ষার প্রথম প্রতিষ্ঠাবান প্রচারক।

১৯১০ সালে প্রীযুক্ত গিরীক্রশেখর বহু কার-চিকিৎসার (Medical) শিক্ষা শেষ করেন এবং তথন থেকেই তিনি মানসিক ব্যাধির কারণ অনুসন্ধানে ব্যস্ত। ফ্রন্থডের মতই তিনি গোড়াতে সংবেশনের সাহায্যে মানসিক ব্যাধির চিকিৎসাও চিকিৎসা আরম্ভ করেন। তিনি দৈছিক ব্যাধির চিকিৎসাও করতেন। তারও অনেক পরে কলিকাতা-বিশ্ববিদ্যালয় এম-এ পরীক্ষার পরীক্ষামূলক ম্নোবিদ্যা (Experimental Pychology) পড়বার ব্যবস্থা করলেন। ১৯১৩ জ্রীষ্টাব্দে

শ্রীবৃক্ত মন্মধনাথ বন্দ্যোপাধ্যার প্রথম ঐ বিষয়ে এম-এ পাস ঐ বিষয়ের ছাত্র-হিসাবে গিরীক্রবার তাঁর বিশ্ববিদ্যালয়ের শিক্ষামন্দিরে এসেছেন। কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের পাঠ্য-বিষয়ে মনঃসমীকার স্থান স্পষ্টতঃ ছিল না এবং উক্ত বিষয়ে শিক্ষার কোন ব্যবস্থাও ছিল না। পরে মনঃসমীক্ষা পরীক্ষামূলক মনোবিদ্যার মধ্যে লাঘা স্থান অধিকার ক'রে নের। মনংসমীক্ষাকে মনোবিস্থার অন্তর্গত ক'রে কলিকাতা-বিশ্ববিদ্যালয় মনোবিদ্যার সঙ্গে মনঃসমীকার অঙ্গাঙ্গী সম্পর্ক স্বীকার ক'রে নেন। একমাত্র ভারতবর্ষেই প্রায় প্রথম থেকে মনোবিদ্যার সঙ্গে মনঃসমীকা যোগ্য আসন পেয়ে এসেছে। পৃথিবীর অন্ত দেশে মনঃসমীক্ষাকে অন্ত ক্ষেত্রে বর্দ্ধিত হ'তে হয়েছে, পরে সেই বিকশিত বিজ্ঞান মনোবিদ্যার অন্তর্গত স্বীকৃত হয়েছে। যখন এদেশের মনঃসমীক্ষার নেতা প্রথম উক্ত বিষয়ে জ্ঞানাসুশীলন ও জ্ঞানার্জ্জন করছিলেন তথন তাঁর অসুবিধা আমরা এদেশে ইংরেজীর ছি**ল**—উপযুক্ত ব**ই**য়ের **অভাব**। সাহান্যে বিদ্যালাভ এবং পৃথিবীর অন্ত দেশের ভাবধারা বুঝে থাকি। ১৯•৯-১৯১**৽ সালে অদ্রীয়াতে মন:সমীক্ষার** চর্চা হ'ত এবং তার বাহন ছিল জার্মান ভাষা। সেই সব চর্চার বিবরণ ইংরেজী ভাষাতে প্রায় অনুদিতই হ'ত না, ইংলণ্ডে তথন মনঃসমীক্ষা প্রকট হয়ে ওঠে নি ব'লে। ১৯২১ সালে প্রকাশিত অবদমনতন্ত্র-সম্বন্ধীয় 'কনসেপ্ট অফ্রিপ্রেশন' (Concept of Repression) পুস্তকের ভূমিকায় গিরীক্রশেখর সে বাধার উল্লেখ করেছেন। এই অনতিক্রম্য বাধার সম্মুখীন হয়ে তিনি নিজের প্রতিভার অনুসন্ধিৎসাকে প্রকাশ করতেন নিজে রোগের পরীক্ষা এবং আলোচনা ক'রে। ইউরোপের মন:সমীক্ষার নেভার সক্ষে এদেশের মনঃসমীক্ষার নেতার সেদিক থেকে মিল আজ মন:সমীক্ষা-শিক্ষার বিধিমতে নিজের মনকে সমীক্ষিত হ'তে দিতে হয়। কিন্তু এঁদের আগে च-च (म) मनः मभीक्क हिम ना व'रम, निरक्षामत मनरक নিক্ষেরাই সমীক্ষিত করেছেন স্বপ্ন প্রভৃতি বিশ্লেষণ ক'রে। সে সময়ের অনেক পরে ডাঃ সরসীলাল সরকার এবং শ্রীযুক্ত রঙীন হালদার মনঃসমীক্ষার আলোচনা করেছেন বাংলা ভাষায় প্রবন্ধ লিখে, কিন্তু এঁদের ছ-জনকে যথার্থ সমীক্ষক বলা যায় কিনা সন্দেহ। ১৯১৯ সালে ডাং বার্কলে হিল রাঁচির পাগলাগারদের ভস্বাবধায়ক হয়ে এদেশে আসেন। ভিনি মনংসমীক্ষার চর্চা করেছেন এবং নিজে সমীক্ষক। তিনি বিলাতে সমীক্ষিত হয়েছিলেন। ১৯২১ সালে মনংসমীক্ষা সম্বন্ধে তাঁর প্রথম প্রবন্ধ প্রকাশিত হয় ইংরেজী ভাষায় এবং ইউরোপীয় পত্রিকায়। ১৯২২ সালে ডাং গিরীক্তশেশর বস্ত্ কলিকাতা-বিশ্ববিদ্যালয়ের অপমনোবিদ্যার (Abnormal Psychology) শিক্ষক নিযুক্ত হন। তিনি মনংসমীক্ষার শিক্ষা দিতে আরম্ভ করেন। অপমনোবিদ্যার শিক্ষক হিসাবে শ্রীযুক্ত মন্মথনাথ বন্দোপাধ্যায়, ডাং বিমলচক্র বোষ এবং তার পরে শ্রীযুক্ত হরিপদ মাইতির নাম উল্লেখযোগ্য। ডাং বিমলচক্র ঘোষ মনোচিকিৎসক (Psychiatrist), কিন্তু সমীক্ষক নন।

মনংসমীক্ষার কেন্দ্রীভূত আলোচনার স্থবিধার জন্ত ১৯২২ সালে ডাঃ গিরীক্রশেখর বত্ন তার করেক জন বন্ধ এবং সহকর্মীর সাহায্যে একটি পরিষৎ গড়ে তোলেন। এর প্রধান উদ্দেশ্য মনঃসমীক্ষা অনুশীলন, শিক্ষা ও প্রচার। ১৯২২ সালে মনঃসমীক্ষা-পরিষৎ (Indian Psychoanalytical Society) স্থাপিত হয়ে আন্তৰ্জাতিক মন:সমীকা - সমবারের (International Psychoanalytical Association) সঙ্গে সংযুক্ত হয়। ডাঃ বহু তার প্রতিষ্ঠাতা সভাপতি এবং তার বাডিতে পরিষদের কার্যালয় এবং সভা হ'ত। ডাঃ নরেন্দ্রনাথ সেনগুপ্ত, গোবিন্দ চন্দ্র বোরা, হরিপদ মাইতি, মুক্ত চন্দ্র মিত্র ও গোপেশ্বর পাল-ভারতীয় মনঃসমীক্ষা-পরিষদের প্রথম সভোর দল। তথন পৃথিবীর মধ্যে আটটি আন্তর্জাতিক मनः नभीका-नमवारम् माळ व्याप्टि नाथा-शतियम हिन। মামেরিকার তুইটি, ইংলণ্ডে একটি, জার্মানীতে একটি, এবং হলাণ্ড, সুইটন্তারল্যাণ্ড, হাঙ্গেরী এবং অদ্রীয়া প্রত্যেক দেলে একটি ক'রে শাখা-পরিষদ ছিল। এশিয়ায় একটিও ছিল না। জাপানে ভারতবর্ষের পরে শাখা হয়েছে। ঐ সমবায়ের মুখপত্র ভাবে জার্ম্মান ভাষায় একটি এবং ইংরেজীতে একটি পত্ৰিকা আছে। ১৯২২ সালে ভারতের মন:সমীক্ষার নেতা আন্তলাতিক মনংস্মীক্ষা-সমবায়ের ইংরেজী মুখপত্র ইন্টারন্তাশানাল জার্নাল অফ্ সাইকোএনালিসিস্-এর সাহায্যকারী-সম্পাদকমগুলীর মধ্যে গণ্য হন। এর অনেক আগে থাকতে তিনি বিলাতী কাগজে মনঃসমীকা সম্বন্ধে প্রবন্ধ লিথতেন।

ভারতীয় মন:সমীকা-পরিষদের একটি পুস্তকাগার আছে। মনঃসমীকা সম্বন্ধীয় পুস্তকই সেধানে থাকে এবং উৎস্থক ছাত্রগণের মধ্যে মন:সমীক্ষা-শিক্ষার জন্ত একটি কেন্ত্র আছে। শিক্ষিত ব্যক্তিমাত্রই সেখানে উক্ত বিষয়ে শিক্ষালাভ করতে পারেন। ভারতের নানা জারগা থেকে এথানে ছাত্র আসে। ভারতীয় মন:সমীক্ষা-পরিষদের সভাতাশিকায় অনেক ইউরোপীয় এবং সৈন্ত-বিভাগের চিকিৎসকেরা আছেন। ধারা চিকিৎসা-ব্যাপারে সম্যকভাবে মনঃসমীক্ষা প্রয়োগ করতে পারেন এমন বিশেষজ্ঞানর একটি তালিকা পরিষদ তৈরি করেছেন। ঐ তালিকাভক্ত উক্ল বাক্তিগণই পরিষদকর্ত্তক সমীক্ষক ব'লে গণ্য আন্তর্জাতিক মনঃসমীক্ষা-সমবায় দ্বারা অনুমোদিত। যারা শিক্ষার্থী হয়ে আসেন তাঁদের মানসিক ব্যাধি না-থাকলেও সমীক্ষার নিরম অনুযায়ী নিজের মন অপর সমীক্ষকের কাছে সম্পূর্ণভাবে সমীক্ষিত হ'তে দিতে হয়। তিনি প্রায় তিন বছর শিক্ষালাভের পর কাজে অধিকারী ব'লে গণ্য হন। এই সম্পর্কে বলা দরকার, এক ভারতবর্ষেই প্রথম থেকে মনঃসমীকা চিকিৎসক ব্যতীত অপরের মধ্যে আলোচিত ও ব্যবহৃত হয়ে আসছে। বারা কায়-চিকিৎসক নন অথচ সমীকা 'লে-এনালিষ্ট' থাকেন তাঁদের সাধারণতঃ (Lay-analyst) বলা হয়। এঁদের মানসিক ব্যাধির চিকিৎসার অধিকার নিয়ে ইউরোপে বিতর্ক উঠেছিল এবং তাঁদের অধিকার স্বীকার ক'রে ফ্রায়ড নিজে লিখেছেন। তবু তাঁদের সম্পর্কে 'লে-এনালিষ্ট' ব'লে তাঁদের সঙ্গে এক হ'তে বাধা আছে, প্রমাণ করা হয়েছে। ভারতবর্ষে সে ভাব সাধারণ কিংবা সমীক্ষকদের মনে আন্সেনি।

১৯২২ সালে ভারতীয় মনোবিদ্যা সমিতি (Indian Psychologicial Association) প্রতিষ্ঠিত হয় এবং ১৯২৫ সাল থেকে কলিকাতা-বিশ্ববিদ্যালয়ের সাহায্যে একটি বৈন্নাসিক মুখপত্ত 'ইণ্ডিয়ান জান'লি অফ্ সাইকলজী

ইংরেজী ভাষার প্রকাশিত হয়। ১৯২৬ সালেই মন:সমীক্ষাবিষয়ক একটি প্রবন্ধ—'মন:সমীক্ষার অবাধ ভাষাকৃষক পদ্ধতি'
(Free Association Method in Psycho-anlysis—
G. Bose) প্রথম প্রকাশিত হয় এবং তথন থেকেই
মন:সমীক্ষা সম্বন্ধে বহু প্রবন্ধ উক্ত পত্রিকায় বেরিয়েছে ও
মন:সমীক্ষার আলোচনার ক্ষেত্রাভাবে ভারতে মন:সমীক্ষা
আন্দোলনকে পত্রিকাধানি যথেষ্ট সাহাধ্য ক'রে
এসেছে।

ভারতের দেশীয় ভাষাগুলির মধ্যে একমাত্র বাংলা ভাষাতেই মন:সমীক্ষার প্রবন্ধ বেরিয়েছে। ১৩২৭ বঙ্গান্দের প্রাবণ মাসের 'ভারতবর্ষ' পত্রিকায় অধ্যাপক শ্রীশক্ত রঙীন হালদার লিখিত 'মনের রোগ', ১৩২৮ বঙ্গান্দের ভাদ্র সংখ্যার 'ভারতবর্ধে' ডাঃ গিরীক্রশেখর বস্থুর 'কারণতস্থ' (Causality) এবং সেই সালের পৌয় সংখ্যায় ডাঃ সরসীলাল সরকারের 'মনের ঘাতপ্রতিঘাত' প্রবন্ধ প্রকাশিত হয়। এর পরে প**ত্রিক**ায় 'প্রবাসী', 'ভারতবর্ধ' প্রভৃতি সম্বন্ধে অনেক বাংলা প্রবন্ধ বেরিয়েছে। তা ছাড়া বাংলা ভাষায় ঐ বিষয়ে তথানি বঁই আছে। ডাঃ সরসীলাল সরকারের 'মনের কণা' ১৩৩২ সালে এবং ডাঃ গিরীন্দ্রশেখর বতুর 'স্বপ্ন' ১৩৩৫ সালে প্রকাশিত হয়। সরসীবাবুর 'মনের কথা' বাংলা ভাষায় প্রাথম মনঃসমীক্ষা-বিষয়ক বই। ১৯২৪ সালে ভারতীয় বৈজ্ঞানিক সভা (Indian Science Congress) মনোবিদ্যাকে পৃথক বিজ্ঞান বিবেচনা ক'রে সর্ব্ধপ্রথম আলোচনার সুযোগ দিলেন এবং সেই বৎসর গিরীক্সবাব ইচ্ছা-ছন্দ্র তক্ত্ (The Theory of Opposite Wish) নামে প্রবন্ধ পাঠ করেন। সেখানে মনোবিদ্যা-শাখার অধিবেশনে মনঃসমীক্ষার আলোচনা হয়ে থাকে। ১৯৩৩ সালে মনোবিদ্যা-শাখার সভাপতির অভিভাষণে ডাঃ গিরীক্রশেশর বহু 'মনোব্যাপারের নৃতন ব্যাখ্যা' (A New Theory of Mental Life) পড়ে মন:সমীকা সম্বন্ধে তাঁর মত এবং মনঃসমীকার সাহায্যে মাসুবের মন সম্বন্ধে তিনি যে জ্ঞান শাভ করেছেন, তা ব্যক্ত করেন।

১৯৩১ সাল থেকে ইণ্ডিয়ান মিউজিয়মের বাৎসরিক স্বাস্থ্য-প্রদর্শনীতে নানসিক স্বাস্থ্য (Mental Hygiene) শাগা থোলা হয়ে আসছে। সেধানে মনঃসমীক্ষার জ্ঞান মনোবিদ্যার পাশাপাশি ছবি ও বিজ্ঞাপনের মধ্য দিয়ে সর্বসাধারণের মাঝে প্রচার করা হচ্ছে। মানসিক ব্যাধির কারণ-নির্ণয়ে এবং আরোগ্যলাভে মনঃসমীকা সাহায্য করতে পারে,—প্রতি বৎসর ডাঃ বহু তাঁর সহকর্মী এবং ছাত্রগণের সহায়তার ছবি, বিজ্ঞাপন, ও বক্তৃতার মধ্যে দিয়ে এ-কথা বৃঝিয়ে থাকেন। মনঃসমীকার জ্ঞান মানসিক উন্নতি ও স্বাস্থারকা বিষয়ে প্রয়োগ করা যেতে পারে এটা বোঝাবার জত্যে ত্ইখানি পুন্তিকা বিনামূল্যে প্রদর্শনীর দর্শকদের মধ্যে বিতরণ করা হয়।

মানসিক স্বাস্থ্য সহক্ষে আলোচনা এবং শিক্ষাদান কল্পে যে মানসিক স্বাস্থ্য সমিতি (Indian Association for Mental Hygiene) আছে তার ভারতীয় শাখার অধিবেশনে সমবেত ইউরোপীয় ও ভারতীয় নরনারীদের মধ্যে ডাঃ গিরীক্রশের বস্থু, ডাঃ বার্কলে হিল, ডাঃ বিমলচক্র ঘোষ প্রমুখ পণ্ডিভগণের হারা বক্তৃতার অন্প্রান হয়। প্রতি মাসে এক দিন ক'রে ঐ অধিবেশন হয়। যে-কোন ব্যক্তি উক্ত সভার অধিবেশনে উপস্থিত হ'তে পারেন এবং বক্তৃতার বিষয়বস্তু সম্বন্ধে প্রশাদি করতে পারেন। এ-সমিতি প্রথমে ইউরোপীয়ের হারা প্রতিষ্ঠিত হয়েছিল। শ্রীযুক্ত হরিপদ মাইতি এর বর্ত্তমান সম্পাদক।

মানসিক ব্যাধি ব্যাপারে যাতে মনোবিজ্ঞানের সাহায্য নেওয়া সর্বসাধারণের কাছে অসাধ্য হয় সেই জন্ত ১৯৩৩ সালের ১লা মে থেকে কারমাইকেল মেডিকেল কলেজের হাসপাতালে একটি মানসিক চিকিৎসাগার (Psychological Clinic) খোলা হয়। ডাং বয় এই অন্টানের উদ্যোক্তা এবং তিনি নিজে উপস্থিত থেকে প্রতি মঙ্গল ও বৃহস্পতি বার সকালে আটটা থেকে দশটার মধ্যে নিয়মিত ভাবে বিনাম্ল্যে চিকিৎসা ক'রে থাকেন। প্রয়োজন বিবেচনা করলে এবং রোগীর সামর্থ্য হ'লে মনঃসমীক্ষার সাহায্য দেওয়া হয়। অন্তান্ত চিকিৎসা-বিধির মত সমীক্ষণ কিন্তু 'আউট ডোর'-এ ব্যবহৃত হ'তে পারে না, তব্ সমীক্ষণের জ্ঞানের সাহায্যে তাদের রোগের কারণ বার করা হয় এবং যত দূর সন্তব তার সাহায্য দেওয়া হয়।

এই মানসিক চিকিৎসাগার খোলবার আগে ১৯৩১ সালের মার্চ্চ মাস থেকে কলিকাতা-বিশ্ববিদ্যালয়ের

মনোবিজ্ঞান-বিভাগের কর্ত্ব মানসিক রোগীদের পরীক্ষা করবার বাবস্থা হয়েছিল। প্রীমৃক্ত হরিপদ মাইতি ও প্রীযুক্ত মন্মথনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় বিশেষ ভাবে উক্ত কার্য্যে সাহায্য করেছেন। আজ পর্যান্ত অনেক রোগী এই 'ক্লিনিক'-এর দ্বারা উপকৃত হয়েছেন। বাংলা-সরকার তর্মণ অপরাধীদের অপরাধনির্ণয়ে এবং তাদের স্থাভাবিক মান্নযে পরিণত করবার জন্তে এই চিকিৎসাগারের সাহায্য নিয়ে মনোবিজ্ঞানের প্রযোজ্যতাকে স্থীকার করেছেন। যদিও এই রোগীদের প্রতি সমীক্ষণের যথার্থ রীতি প্রয়োগ করা হয় নি, তব্ও বলা যায় মনঃসমীক্ষার জ্ঞানের সাহাত্যে রোগকে বিচার করবার চেষ্টা হয়েছে।

মনঃসমীক্ষার প্রচারের জন্ম ভারতের মনঃসমীক্ষকগণ সাধারণ সভাসমিতেতে বক্তৃতা ও প্রবন্ধ পাঠ করেছেন। ডাঃ বার্কলে হিল,ডাঃ বস্তু, মন্মথ বাবু ও ডাঃ স্থাৎ চক্র মিত্রের নাম সেই সম্পর্কে উল্লেখযোগা।

ভারতবর্ষে মনংসমীক্ষার ওপর নিন্দা বা কটুক্তি বর্ষিত হয় নি, এমন কি মনঃসমীক্ষার নেতাকে বিজ্ঞপ পর্যান্ত সইতে হয় নি। মনঃসমীক্ষার বিরুদ্ধে আজ পর্যান্ত কোন সংবাদপত্র বা সাময়িক পত্রিকায় লেখা হয় নি। তাই ব'লে বলা যায় না, এদেশে মনঃসমীক্ষা যথেষ্ট আদৃত হয়েছে। ভারতবর্ষে অনেকগুলি বিশ্ববিদ্যালয় আছে, তার মধ্যে মাত্র কলিকাতা-বিশ্ববিদ্যালয়ে উচ্চশিক্ষায় মনঃসমীকা অপমনোবিদ্যার অধীনে অধীত হয়ে থাকে। ভারতবর্ষের অন্তান্ত দেশ থেকে এথানে শিক্ষার্থী আসছে এবং আশা করা योग किছू मित्नत मध्या এই विद्यान नव विश्वविना नाम छिक्र-শিক্ষার পাঠাবস্তগুলির মধ্যে স্থান পাবে। বাংলা-সাহিত্যে অনেক সময় মনঃস্মীক্ষার জ্ঞানকে ভূল বুঝে ব্যবহার করতে দেখা যায়। আগেই বলেছি, নিজে সমীক্ষক না-হ'লে সমীক্ষার জ্ঞান সমাকরপে উপশ্বন্ধি করা সম্ভব নয়। অনেক সময় দেখা গেছে কোন কোন লেখক ফ্রয়ডের মতকে বোঝবার চেষ্টা না-ক'রে বিরুদ্ধমতপোষক কোন ইংরেজ লেথকের বই পড়ে মনঃসমীক্ষার প্রতি অন্পা দিয়েছেন। কোন কোন উপস্তাস পড়ে মনে হয়, লেথক নায়ক-নায়িকার চরিত্র-অঙ্গনে মনঃস্মীকাকে ভ্রাপ্তভাবে ব্যবহার করেছেন। বিজ্ঞানের ধারা হচ্ছে, কতকণ্ডাল

বিশেষ শব্দ ব্যবহার ক'রে সংজ্ঞা তৈয়ার করা। মনঃসমীক্ষার সেরূপ সংজ্ঞাপূর্ণ শব্দ আছে। তাহাদের ব্যবহার
এবং অর্থ বিশেষ নিয়ম অনুষায়ী, তাই বিশেষজ্ঞ ব্যতীত অন্ত
লেখকের সেগুলি প্রয়োগ করবার সময়ে যথেষ্ট সতর্ক
হওয়া উচিত।

আগেই বলেছি, ডাঃ গিরীক্রশেখর বস্থর সঙ্গে ডাঃ সিগমুণ্ড ফ্রম্ম'ডর কিছু পার্থক্য আছে। ডাঃ গিরীক্রশেথর মন:সমীক্ষা-আন্দোলনের নেতা. এই কারণে তাঁর স্বাতন্ত্র্যের কিছু আভাস দেওয়া দরকার। ফ্রন্থডের ম:ত সমাজ, যশ, আচার, ধর্মের রীতিনীতি, ভয়, গুণা, ইত্যাদি মানসিক বৃত্তির অনুশাসন আমাদের মনের ইচ্ছার প্রকাশে বাধা দেয়। বাধাপ্রাপ্ত হয়ে আমাদের রুদ্ধ ইচ্ছা নিজ্ঞান মনে স্থিতি লাভ করে। ডাঃ বত্বর মতে ভয়, গুণা ইত্যাদি ইচ্ছানিরোধের ফল,—কারণ নয়। এই ইচ্ছানিরোধ (Repression) সম্বন্ধে ডাঃ বহু বলেন, যতক্ষণ-না ছইটি ইচ্ছা বিপরীতগামী হয়, ততক্ষণ তাদের মধ্যে বিরোধের সম্ভাবনা নেই। পদার্থবিজ্ঞানে শুনে থাকি তুইটি গতি একই ক্ষেত্রে অবস্থিত হ'লে এবং তাদের গতিদিগরেখা (Line of Force) সম্পূৰ্ণ বিপরীতমুখী না-হ'লে সম্পূৰ্ণ বিরোধ অসম্ভব। ইচ্ছার ব্যাপারে সেই সত্য আছে। ধন্দন, আমার মনে ইচ্ছা আছে, আমি রামকে মারতে চাই। এ ক্ষেত্রে, (১) আমি গ্রামকে মারতে চাই। (২) শ্রাম বামকে মারতে চায়। (৩) গ্রাম আমাকে মারতে চায়। (৪) রাম গ্রামকে মারতে চায়—এর একটিও 'আমি রামকে মারতে চাই' ইচ্ছার বিপরীতমুখী হ'ল না। এদের যে-কোন একটি এবং প্রাথমিক ইচ্ছাটি একসঙ্গে মনে বিনা-বিরোধে থাকতে পারে। এমন কি, 'আমি রামকে মারতে চাই না' প্রাথমিক ইচ্ছার বিপরীত হ'ল না, মাত্র এক্ষেত্রে ইচ্ছার বিরোধ অজানা রইন। কিন্তু মনে যদি ইচ্ছা থাকে আমি রামের দ্বারা প্রস্তুত হ'তে চাই তবেই বিরোধের সৃষ্টি হ'ল এবং এক্ষেত্রে বথার্থ নিরোধ সম্ভব । ডাঃ বসুর মতে এই ধরণের যুগা ইচ্ছা আমাদের মনে দেখা দিচ্ছে। শিশুর ক্রমোল্লতি লক্ষ্য করলে দেখা যায়, কি উপায়ে তার মন তৈরি মনঃসমীক্ষা-সম্বন্ধে ডাঃ বসু ব্রুম্বড প্রভৃতির চেয়ে কিছু পৃথক্। তিনি রোগীর কথাবলার ওপর ঝোঁক দেন এবং চিস্তা শিখতে উপদেশ দেন। এখন মনঃসমীক্ষার উপায় সম্বন্ধে কিছু বলব।

সমীক্ষাকাজ্জী এবং সমীক্ষক কোন নির্জ্জন স্বল্লালোকিত ঘরে বসেন। সমীক্ষকের দিকে মাথা ক'রে সমীক্ষার্থী সোজা এবং সহজভাবে ভয়ে চোখ বন্ধ ক'রে যা মনে আসে সব ব'লে যেতে থাকেন। এখানে সমীক্ষার্থীকে প্রতিজ্ঞাবদ্ধ ক'রে निट्ठ हम (य व्यट्योक्टिक, त्रहश्चकनक, वा व्यमःवक (य-কোন ভাব বা চিস্তাকে তিনি নিঃসঙ্কোচে ব'লে গাবেন। সমীক্ষক একথানি থাতায় সেগুলি ব্যাসম্ভব সমীকার্থীর কথার টুকে যাবেন। সমীক্ষার্থীর ভাব-ভঙ্গী ও অন্ত ব্যবহার তিনি শক্ষ্য ক'রে যাবেন, এবং পূর্ব্বোল্লিখিত চিষ্টা এবং এগুলির ভেতর দিয়ে সমীক্ষক নিজ্ঞান মনের যে খবর পেলেন সমীক্ষার্থীকে সব বুঝিয়ে যাবেন। দিনের পর দিন এই রকম ভাবে তু-স্থনে বসতে হবে যতদিন-না রোগ সারে। বিনা-পারিশ্রমিকে এই কার্য্য সম্ভবপর এবং ফলদায়ী নয়। দায়িত্বীন ব্যাপার নির্জ্ঞানের কাছে তাচ্ছিল্যের সঙ্গে গৃঞ্চীত হয়। শিক্ষার্থীর পক্ষে ৫০০ শত অধিবেশন প্রয়োক্তন। মানসিক ব্যাধি উপশ্মের জন্ত ২৫০ এর কম অধিবেশন আশা করা যায় না। সময়ানুবর্ত্তিত। অতি কঠোর ভাবে সমীক্ষার্থীর কাছ থেকে আশা করা হয়। সমীক্ষা-কার্য্যে নিজ গত

জীবনের গোপনীয় ব্যাপার প্রকাশ করতে স্বাভাবিক অনিচ্ছা ব্যতীত নিজ্ঞান থেকে শুরুতর বাধা এসে সমীক্ষণের অস্তরায় হয়ে দাঁড়ায়। জ্ঞাত ও অজ্ঞাত বাধা ধীরে ধীরে অপসারিত ক'রে রোগীকে সহজ্ঞ ক'রে নিয়ে আসতে হয়। সমীক্ষণ খুব সাবধানে এবং বিবেচনার সঙ্গে করতে হয়। সমীক্ষণ আরস্তের কিছুদিন পরে সময় সময় রোগীদের কাছ থেকে অত্যস্ত কঠোর নিন্দাস্টক বাক্য শুনতে হয়, সমীক্ষক এসব অবিচলিত ভাবে সহু ক'রে যাবেন, পরে দেখা গেছে এ-সব রোগী নিরাময় হয়ে সমীক্ষককে দেবতার মত ভাবেন।

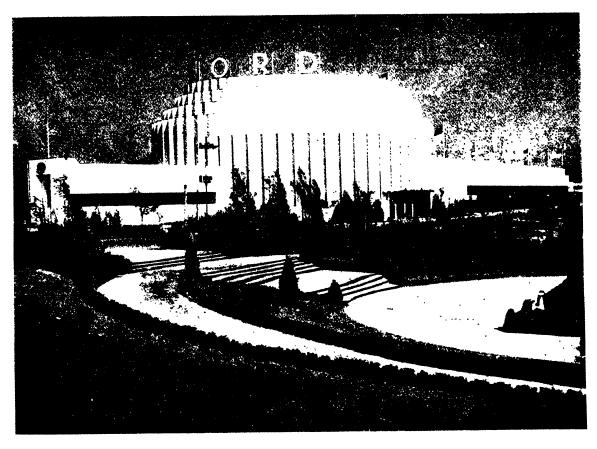
ভারতবর্ধে মনংসমীক্ষার কথা বলতে গিয়ে বাংলা এবং বাঙালীর কথা বলতে হয়েছে। অন্ত দেশের কথা বলতে পারলে স্থবী হতাম। তবে উপসংহারে একটা কথা মনে পড়ছে, সেটা আমাদের মাঝে সমীক্ষিণীর অভাব। শিশুদের মধ্যে মানসিক ব্যাধি দেখা যায় এবং এদের স্বভাববিক্কত শিশু (Problem Child) বলা হয়। বিক্কত (neurotic) শিশুদের মনংসমীক্ষা সমীক্ষিণীদের দ্বারা ভাল হয়। ইউরোপে আনা ক্রয়ড, মিলেইনে ক্লাইন, হেলেন ডয়েস প্রভৃতি সমীক্ষিণীরা শিশুদের সমীক্ষণ ক'রে থাকেন। বাংলায় এবং ভারতবর্ধের অন্তর স্বভাববিক্কত শিশুর অভাব নেই।

শিকাগো বিশ্ব-প্রদর্শনী

শ্রীবিমলেন্দু কয়াল, এম-এ

চল্লিশ বৎসর পূর্ব্বে শিকাগোয় নিথিল-বিশ্ব-প্রদর্শনীর প্রথম অধিবেশন হয়। তদবধি ইহা সভ্যতা ও সমরের সহিত সমভাবে পদবিক্ষেপ করিয়া দ্রুত ও অধিকতর উন্নতির পথে ধীরে ধীরে অগ্রসর ইইতেছে। এই স্থানেই একদিন আমাদের বিবেকানন্দ বন্ধনির্ঘোষে হিন্দু ধর্ম্মের সার্ব্যভৌমত্ব বিশ্ববাসীকে স্মরণ করাইরা দিয়াছিলেন। বিভিন্ন ধর্ম্মের অনুসরণ করিয়াও শানব কিরপে এক অবিচ্ছিন্ন ভ্রাতৃত্বের মহান বন্ধনে আবন্ধ হইতে পারে, তাহা আঁলোচনা করিবার জন্ত এই প্রদর্শনীতে পূর্বের ক্রায় গত বৎসরও পৃথিবীর সমগ্র ধর্মাবলম্বীদের এক মহাসম্মেলন হইয়া গিয়াছে।

গত বৎসরের বিশ্ব-প্রদর্শনী দেখিয়া দর্শকগণের স্পৃহা
সারও বাড়িয়া গিয়াছে; গত অধিবেশন যেন খণ্ডিত ও
অপর্যাপ্ত ছিল, সেইজন্ত বর্ত্তমান বৎসরে অধিবেশনের
অধিকতর স্থব্যবস্থা করা হইরাছে। গমনাগমন ও অন্তান্ত
নানা বিষয়ে পূর্বাপেকা অনেক স্থবন্দোবন্ত হওয়ায়
প্রদর্শনী আরও জনপ্রিয় হইয়া উঠিয়াছে। গত বৎসর



ফোড ঘোটর কোম্পানীৰ প্রদর্শনা-গৃহ। ইংবার-নিশাণকদ্দে ২০০০,০০০ ডলার বারিত হুইয়াছে

২৩,০০,০০০ থানা অগ্রিম থেবেশ-পত্র বিজ্ঞ হইয়াছিল;
এ-বংসর অগ্রিম বিজ্ঞ হইয়াছিল ৪০,০০,০০০ থানা।
গত গ্রীম্মকালে অধিবেশন আরম্ভ হয়: আ্মেরিকাবাসী
দর্শকের দল গ্রীম্মাবকাশে অন্তত্র ভ্রমণ করিতে না গিয়া
গৃহবাসী হইয়াছিলেন। এই কারণেই বর্তমান বংসরে এত
জনসমাগম হইয়াছে। এ-বংসরের অধিবেশন গত বংসরের
অন্তর্তি মাত্র। সেইজন্ত এথানে গত বংসরের প্রদর্শনীর
কিঞ্চিৎ পরিচয় দেওয়া নিতান্ত অপ্রাসন্ধিক হইবেনা।

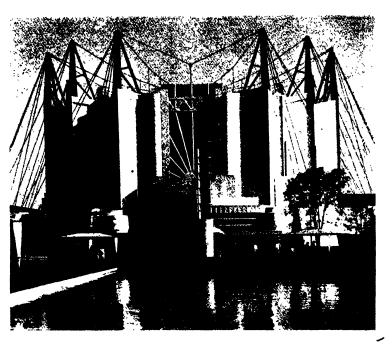
১৯৩৩ সালের অধিবেশন ১৭০ দিন স্থায়ী হইয়াছিল। তজ্জ্য কর্তৃপক্ষের ৪৭,৮৩,৮৩৯ ডলার ব্যয় হ'ইয়াছে। স্থানীয় সরকার ও অস্তান্ত প্রতিষ্ঠান প্রদর্শনীকে সাকল্যমণ্ডিত ক্রিবার জন্ম যথেষ্ট চেষ্টা ক্রিয়াছিলেন। তাঁহাদের সন্মিলিত ব্যয়ের সমষ্টি ২,০০,০০,০০০ ডলার। প্রদর্শনীতে ২২,৫৬৫,৮৫৯ জন লোকের সমাগম হইয়াছিল। আমেরিকার কোনও প্রদর্শনীতে পূর্ব্বে কথনও এত লোকের সমাগম হয় নাই। প্রবেশ-পত্র কিনিতে দর্শকগণের যাহা পরিমাণ হইবে সমষ্টিগত ভাহার বার •হইয়াছে ৩,৭২,৭০,০০০ ডলার। প্রত্যেক **প্রবেশ-পত্রের মূল্য ছিল** ডলার (১ ডলার ১৭ সেণ্ট)। প্রায় সওয়া-এক পরিচালকমণ্ডলী প্রতিষ্ঠানের ক্রিয়া চক্তিপত্তে সই করিয়াছিলেন তাহার পাণ গ্ৰহণ উন্নতিকল্পে পরিমাণ ১,০০,০০,০০০ ডলার। ১৯৩৩ দালের ১৩ই নভেম্বর ভারিথে তাঁহারা ঋণের অর্জেক পরিশোধ করিয়াছেন। অন্তান্ত ঋণ প্রভৃতি পরিশোধ করিবার পরও

পরবত্তী অধিবেশনের জন্ত কর্গপক্ষের হাতে ১২,০০,০০০ ডলার উদ্ভ ছিল। বেল্যোগে ৪০,০০,০০০ জন, মেটির্যান যোগে আরও এক লফ এবং অক্যান্ত যান-বাহনাদিতে ৪০,০০,০০০ গত অধিবেশনে উপস্থিত হইয়াছিলেন। এই নিমিত্ত সমস্ত রাদ্রপথ বিচিত্র আলোকমালায় বিভূষিত হইয়াছিল; পত্রপুপ-সুশোভিত সুরুহং তোরণদ্বারে ভাতীয় পতাকা বাযুভরে তরঙ্গায়িত হুইল: সমগ্ৰ রাজপথ ও পাত্শালা যানবাহনাদি ও বিচিত্র-বর্ণের নানা পোরাক-পরিহিত বিভিন্ন সম্প্রদায়ের জন-সমাগ্রমে বিকীর্ণ হইয়া উঠিল। জলরেগা-পরিবেষ্টিত নগরী দীপমালায় শোভিত হইয়া এক অপরূপ নী ধারণ করে। বিভিন্ন জাতির উপস্থিতি এই বৈচিত্র্যকে আরও বিচিত্রিত করিয়া ভোলে!

গত প্রদর্শনীর ত্ইটি বিশেষ অধিবেশনের সংক্ষিপ্ত পরিচয় নিমে প্রদন্ত হইল; একটি নিখিল বিশ্বের ধর্ম-সংগ্রেলন, অপরটি বিশ্বের স্থীমহামগুলের অধিবেশন।

বিচিত্র বর্ণের জনসমাগমে দীপাগিতা নগরী মুপরিত হইয়া উঠিল। হিন্দ্, বৌদ্ধ, গ্রীষ্ট, শিখ, জৈন, মুসলমান, সিণ্টে, কনকুসিয়ানী, য়িছদী, আশান্তি, নিগ্রোও পারসীকের বিচিত্র শোভা দর্শকের হৃদয়ে এক অনম্ভূত কৌতুহলের উদ্রেক করে। 'মহামানবের সাগরতীরে' দঙায়মান হৃইয়া এই মহাদ্ভ দর্শন করিলে চিত্ত আপনা- মাপনি উদ্বেলিত ও জাগরিত হইয়া উঠে।

মরিসন পান্থশালায় এই বিশ্বজাতির মহা-সম্মেলন বসিয়াছিল। ভারতবর্ষের প্রতিনিধিবর্গের ম:ধ্য বিদ্যাবিভূযণ
পণ্ডিত ডক্টর শ্রামশঙ্কর (হিন্দু), ডক্টর ভগৎ সিং (শিখ)
ডক্টর মানেক এঞ্জেল সারিয়া (পার্শী), প্রীয়ুক্ত চম্পৎ রায়
(জৈন), পণ্ডিত অনোধ্যাপ্রসাদ (আর্যাসমাজ), স্ফী
মৃতিহর রহ্মান (আহমদিয়া), ডক্টর মুলবাগলা (শঙ্করপন্থী)

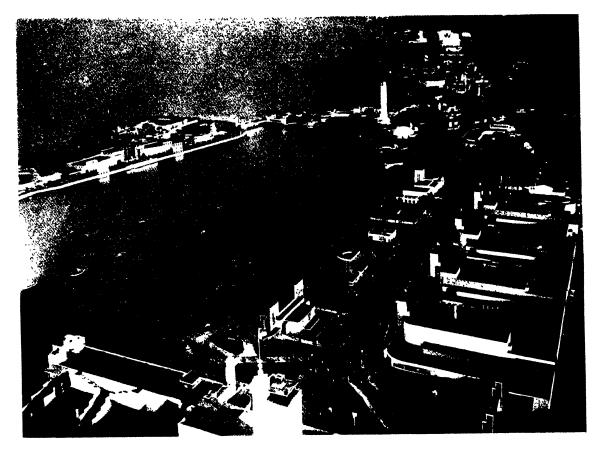


গান-বাংনাদির প্রদর্শনী গৃহ। উপরের ডাদকে রক্ষা করিবার জন্ত কোনও ওও নাই

প্রম্থ ব্যক্তিগণের নাম বিশেষ উল্লেখগোগা। প্রাচ্যের বহু সুপণ্ডিত ও বক্তা সভায় উপস্থিত ভিলেন। বরোদার মহারাজা গায়কোয়াড সভার উদ্বোধন-প্রাসঞ্জে এক সারগর্ভ বক্ততা করেন। স্থবিগ্যাত শ্রীগক্ত কেদারনাথ দাশগুপ্ত বেদাদি হইতে এক স্থোত্র পাঠ করিয়া সভায় মঙ্গলাচরণ করেন। নেপালের রাজা জয়পুথী বাহাছর সিংও সভায় বিশিষ্ট অংশ করিয়াছিলেন। গ্ৰহণ গান্ধী, স্থার অলিভার বিশ্বনিরস্ত্রীকরণ বৈঠকের 95. অ'পার হেগুারসন ও গঁসিয়ে রোগাঁ সভাপতি মিঃ রোঁলা সভার সাফল্য কামনা করিয়া তার ছিলেন। এই শেয়েক্ত মনীষী তাঁহার প্রেরিত বার্তা বলিয়াছেন•••

The subline cry of Vivekanand, "My God, the suffering people"—is a fitting appeal to our energies. He who loves God let him defend Him among the millions of those who are oppressed by injustice and social inequality.

অর্থাৎ, 'জেরা-ক্লজিরিত মানবের ছংগকট্ট শ্মরণ করিয়া তাহাদের:



দ্বিণ পাথ ২ইটে প্রদর্শনীর সাধারণ দুগ্

কলাণকল্পে শাবিবেকানন্দ বিধনিয়ন্তার কাছে গে কঞ্চ কামন ভানাইয়াছিলেন, আজি আমানেরও মধ-প্রদেশে ভাষারই আবেদন প্রনিত হউক। ধাষারা ভাষাকে ভালবাদেন ভাষার অসমতা ও থবিচারের ভারে প্রপাড়িত অসংগা থাতের মাঝে ভাষাকে রক্ষা কক্ষা"

প্রথম দিনের সভায় মিঃ চালস ফ্রেডরিক ওয়েলার সভাপতির আসন গ্রহণ করেন। তৎপরে অসংখ্য জয়৸বনির মাঝে বরোদার গায়কোয়াড় বক্তৃতা করিতে উঠিলেন। গাহার বক্তৃতার বিষয় ছিল 'পরিবর্ত্তনশীল পৃথিবীতে ধম্মের ধান।' বর্ত্তমান জগদ্বাপী অথনৈতিক, রাষ্ট্রিক ও সামাজিক ক্হেলিকার কালো মেঘ বিদ্রিত করিয়া অদূর ভবিষাতে এক জ্যোতিয়ান জগতের উদ্ভব হইবে বলিয়া তিনি সভাস্থ শকলকে আশ্বস্ত করেন। শ্রীযুক্ত কেদারনাথ দাশগুপ্ত মহাশয় সমগ্র ধন্মের উপধোগ: এক প্রার্থনা রচনা করেন। প্রথম দিনের বক্তৃতার বিষয় ছিল 'শান্তি'।

এই বিশ্বধন্ম সভার অবৈতনিক সভাপতি শ্রীষ্কা কেন য়াডামস উদ্বোধন প্রসঙ্গে বলিয়াছেন—

"I am sure the soul of this complex ago of ours must be discovered through the bringing together of many people from various parts of the earth."

''বৃত দূরবন্ত্রী দেশ-বিদেশ হউতে আগত বিভিন্ন ধর্মাবলখী ব্যক্তি-গণের একত্র সংমিশ্রণের ফলে বস্তমান কালের নিগুচ অস্তরায়ার পরিচয় পাওয়া যাইবে: এ-বিষয়ে আমি নিঃসন্দেহ।"

এ-কথা সত্য-বহু দ্রদেশ হইতে বহু জাতির প্রতিনিধি এথানে আসিয়াছিলেন। তাঁহাদের উদ্দেশ্য ছিল বিভিন্ন ধ্মান্সরণ করিয়াও কিরূপে এক বিশ্বজনীন ল্রাভূত্বে উপনীত হওয় যায়। প্রাচ্য ও প্রতীচ্য কথনও মিলিত হইবে না, কবি কিপ্লিডের এই অভিজাতস্থলভ সদস্ত উক্তি এখানে মিথ্যা প্রতিপন্ন হহয়া গিয়াছে। ফরাসী দেশের এক মহা মনীযী ভিক্টর হগো বলিয়াছেন—

There is one thing grander than the sea; that is the sky. There is one thing grander than the sky; that is the human soul.

অর্থাৎ, "সাগরের চেয়ে মহান একটা পদার্থ আছে, ভাহা নীলাকাশ। নীলাকাশের চেয়েও মহামহিমময় এক বস্তু আছে, ভাহা মানবের অস্তরায়া।"

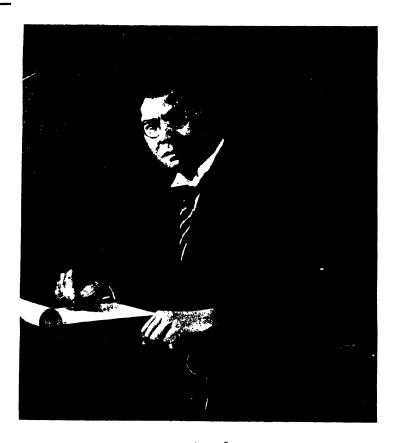
সেই মানবের অন্তরাম্মার অবেধণের জন্ত জাতিধর্মনির্বিশেয়ে এই মিলনভূমির আয়োজন হইয়াছে। সকলেই নির্বিবাদে অ-স্থ সম্প্রদায়গত মতামত প্রকাশ করিয়াছেন। ক্রীমতী ক্রন্দিনী অব্লণডেল ভারতীয় ব্রন্ধবাদের স্বিপ্তার আলোচনা করিয়াছেন। ভাহার বক্ততার বিষয় ছিল "অতীতে ও বর্তমানে বিশ্বের উন্নতিকরে ভারতের

দান।" অনামধ্যতি কুমারী মুরিয়েল লেষ্টার নানা তথোর পর স্বর্মতীর ঋ্বির প্রসঙ্গ উত্থাপন ক্রিয়া তাঁহার বক্তব্য ব্যয়ের উপসংহার ক্রেন।

পরিশেষে, ফুপ্রসিদ্ধ পুস্তক-প্রকাশক মিঃ ম্যান্লে হল বলেন,—

''ন্ধা, জিংহাৰা, আল্লা, গ্রীষ্ট, বৃদ্ধ প্রভৃতির মধ্যে এক বিয়াট পার্থকোর স্বষ্ট করিয়া থাকি বলিয়া আমরা প্রকৃত বন্ধবিধাসা আগাং পাইতে পারি না; তাঁহারা কেংই পৃথক নহেন—সেই একই প্রনেম্বের বিভিন্ন দেশ ও ভাষানুগত মানবীয় পরিকল্পনামাগ। এই কারণেই আমাদের মধ্য এত দ্বেষ-হিংসার স্বষ্টি ''

এই কারণেই আমরা আমাদের মধ্যে ভেদাভেদের এক সঙ্গীর্থ সীমারেখা প্রতিপ্র করিয়া আমাদের চারিপাশের দিগস্তবিস্থৃত বস্থুনরার কথা ভূপিয়া গিয়াছি। মি: সাণ্ডারল্যাণ্ড যথার্থই বলিয়াছেন—



রাজা জন্মপুণ্

To think the world is to be superior to the world. To know the stars is to be greater than the stars.

শিকাগোর পামার হাউসে মহিলা-মহামণ্ডলের অধিবেশন আরম্ভ হয়। সম্মেলন পাঁচ দিন স্থায়ী হইরাছিল। বিত্রিশটি দেশ তাহাদের প্রতিনিধি প্রেবণ করিয়াছিলেন। সভায় আলোচনার বিবয় ছিল "শান্তি ও সভ্যতা"। শ্রীযুক্তা লেনা ম্যাডেসিন ফিলিপস্এর নেতৃত্বে সভার কার্যা ফুলর ও স্চারুদ্ধপে সম্পন্ন হইয়াছিল। সভায় বৈচিত্রোর অপূর্ক সমাবেশ হয়। বিচিত্র বেশ-পরিহিতা এক চৈনিক, মহিলার পার্গে এক জন আমেরিকান মহিলা উপবিষ্ট ছিলেন, তাঁহার পার্গে বিচিত্র-বেশা এক ভুরস্ব যুবতী, তুৎপার্গে প্যারিসের ক্লচিমাজ্জিত বিভিন্ন বর্গে রঞ্জিত রোমানিরার এক মহিলা অধ্যাপক; তৎপরে আমেরিকার



বিখ-প্রদর্শনীর পতাকা-শোভিত তোরণ-দার

োাাকে বিভূষিতা এক শনিকাপ্রদারী ইতালীয় রূপদী; উথারই পারে হলাণ্ডের স্বাস্থ্যবতী এক মহিলা, গবশেষে আছেনি।র এক নমিতাঙ্গী তথী তরুণী, অদুরে ভারতের মহিমময় নারী-প্রগতির উদ্বোধনবাণী বহন করিয়া শ্রীমতী মুখুলুগদী উপবিষ্ট ছিলেন।

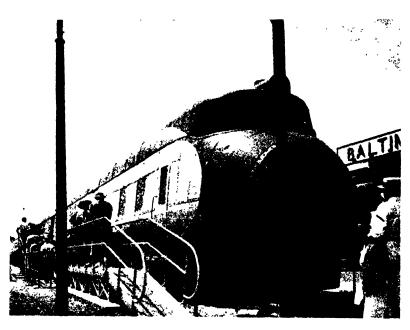
বিশ্বের নারী-প্রগতির বাবতীয় বিশ্বে সভার পুজারুপুজকপে আলোচিত হইরাছিল, শিল্প সাহিত্যসঙ্গীত ও কবিতা
গটনা বিধয়েও মহিলাগণের দানের প্রেসঙ্গ সভায় আলোচিত
হয়। তাঁহাদের বিজ্ঞপ্তির এক স্থানে লিগিত আছে---

Heree it is against social systems, not men, that we launch our second women movement.

''সমাজতন্ত্র সম্বন্ধীয় বাপোরে আমর! আমাদের দ্বিতীয় নারী গান্দোলন চালিত করিব—পুরুষদের বিকংশ্ধ নংহ।"

বর্ত্তমান বৎসরের অধিবেশন আরও রুহত্তর, জনপ্রিয় ও পুন্দরতর হইয়া উঠিয়াছে। গগনস্পর্শী অট্রালিকা, সাজসজ্জার পারিপাট্য, প্রদর্শিত দ্রবার বৈচিত্র অনেকারণে পূর্ব বংসর অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ বলিয়া প্রতিপন্ন হইয়াছে।

সন্ধাপেক্ষা মনকে আকৃষ্ট করে প্রদর্শনীর অগণিত সৌধশোণী। ইহারা নানা বর্ণের ও নানা কারুকার্যা-সম্বাহিত স্থপতিবিছা ও ভাস্কর্যা শিল্পের নিদর্শন-স্থরূপ সগলে দণ্ডায়মান রহিয়াছে। প্রদর্শিত ত্রবা অপেক্ষা ইহারা অধিকতর মনোহারী। গত ত্ই সহস্র বর্ষ ধরিয়া ইউরোপ ও আমেরিকার অবিবাংসগণ স্থাপত্ত-শিল্পে প্রাচীন গ্রীমের অক্সরণ করিয়া আসিয়াছে। ইজিপ্ট ও ব্যাবিলোনিয়ার মন্মর-সৌধ উংহাদিগকে কম আকৃষ্ট করে নাই, কিন্তু বত্তমানে লোহ প্রভৃতি ধাতু ও গৃহনিম্মাণের অন্তান্ত দ্ব্য পূর্নাপেক্ষা স্থাভ হওয়ায় এখানে সেই পোচীনতম রীতির আর অফ অফ্করণ করা হয় নাই। তৎ্ত প্রতিন বালিকা রীতির কোনও স্পর্শ বা লক্ষণ ইহাতে দৃষ্ট হয় না বলিয়া অনেকে প্রদর্শনীয়



সাংশূ আধ্নিক বৈজ্ঞানিক প্রণালীতে নিশ্মিত 'ইউনিয়ন প্যানিফিক' লাইনের ট্রেন। ইহা প্রদর্শনীর একটি বিশিষ্ট প্রব্য। ঘন্টায় ইহা ১১০ মাইল গায়

ভবন-শিল্প ফুন্দর হয় নাই বলিয়া মন্তব্য করেন। গৃহস্থালীর নানা দ্রব্য-সন্থারে ফুশোভিত ও আলোকমালায় বিভূষিত আদর্শ গৃহ (Model Homes), বিজ্ঞান-সৌধ (Hall of Science), শাসন পরিবং-সন্দির (Administration Building) প্রভৃতি সম্পূর্ণ আধূনিক প্রণালী ও কচি সম্মত। সর্বব্যোগার দর্শকদের মনোহরণ করিবার জন্ম কর্পক

সর্বদেশীর দর্শকদের মনোহরণ করিবার জন্ম কর্পক সবিশেষ আলোজন করিয়াছিলেন। একদিকে বিজ্ঞান প্রত্ত দ্রবাদি, অন্তর্গতে আবাদি, অন্তর করিয়াছিলেন। একদিকে বিজ্ঞান প্রত্তর দ্রবের প্রদর্শনী, অদ্রে ব্যবসা-বাণিজ্যের নিদর্শন, তৎপরে বিচিত্র চারুকলার সমারোহ! তাহার পারে, অদ্রে শিশুদের মনোহরণের জন্ম মারা-দ্বীপ। একদিন ৫০০,০০০ শিশু প্রদর্শনীতে এই কারণেই আগমন করিয়াছিল। আমেরিকার ক্রেসিক ভ্রন-শিল্পী মিশিগান হদের উপর এই মারা-কাননের রূপ পরিকল্পনা করিয়াছেন।

সমগ্র প্রদর্শনী ব্যাপিয়া অতি অভিনব ও আধুনিক বৈজ্ঞানিক প্রণাশীর সাহায্যে আলোকের বর্ণ-বৈচিত্র্য রচনা করা হইয়াছে। সভত পরিবর্ত্তনশীল বিচিত্র বর্ণের

আলোকসম্পাতে এথানে এক স্বপ্রীর পরিকল্পনা হইয়াছে। ইহা এক বিশ্বয়কর ঘটনা ৷ বিজ্ঞানের ভয়ব†কা কতদুর সফল হইয়াছে ইহা তাহারই প্রকৃষ্ট উদাহরণ। চল্লিশ বৎসর পুর্বে প্রেসিডেণ্ট ক্লিভল্যাও ওয়াশিংটনে একটি টিপিয়া দ রবতী বোতাম কলম্বিয়া-প্রদর্শনীর দ্বারোদ্যাটন করেন। এ-বৎসরও বহু বহু কোটী নাইল দুরবর্ত্তী আর্কটুরস (Arcturus) নামক অভি জ্যোতিয়ান নক্ষত্রমালার সম্পাতে প্রদর্শনী আলোকিত করা হইয়াছে। প্রতি সেকেও ১.৮৬,২৮৪ মাইল বেগে ধাবিত হইলে এই নক্ষত্রের আলোক-

রশিকে আমাদের পৃথিবীতে আসিতে দীর্ঘ চল্লিশ লাগে। চল্লিশ বৎসর পূর্নের যে আলোকরশ্মি এই বৎসর নক্ষত্ৰ হঠতে বিকীৰ্ণ হইয়াছে, তাহা অত্যস্ত উইসকনাসন নামক স্থানে অবস্থিত ইয়র্কস ক্রপে মানমন্দিরের সুপুহৎ দুরবীক্ষণ-যন্ত্রে প্রতিফলিত হয়; সেথান হইতে ফোটোইলেক্টি,ক সেলের সাহায্যে এই অতিফীণ আলোক-রেথাকে বৈহাতিক শক্তিতে পরিবর্ত্তিত ও রেডিয়োর সাহায়ে পরিবর্দ্ধিত করিয়া শিকাগোর পথে ধাবিত করা হইয়াছে। ইহাই প্রদর্শনীকে আলোকিত করিতেছে। বহু দুরাগত নীহারিকার এই আলোক-ধারায় সান করিয়া বিশ্ব-নগরী ধন্ত হইয়াছে।

বিজ্ঞান-সৌধে (Hall of Science) এক শত বৎসরের
মধ্যে বিজ্ঞানের সাহায্যে মানুষের কি-কি উপকার সাধিত
হইরাছে তাহারই নিদর্শন রক্ষিত হইরাছে। স্থানীয় কলেজের
বিশিষ্ট ছাত্রগণ দর্শকরন্দকে সমস্ত বিষয় বিশদরূপে বুঝাইরা
দিতেছেন। অঙ্কশাস্ত্রের যাবতীয় নিগৃঢ়তক্ব এক দিকে,
পদার্থবিদ্যার নিদর্শন অস্ত দিকে রহিয়াছে। হিলিয়ম

গাদ ও পারার সাহান্যে এক অভিনব গাদে গান্ধে মিটার রচিত হইয়াছে। শব্দ, আলোক ও বিত্যুতের পরাকাগ্র্যাও এই সৌধে প্রদর্শিত হইয়াছে। তৎপরে এক পার্ধে শত বংসরের মধ্যে রসায়ন-শার, চিকিৎসাবিদ্যা ও ভ্বিদ্যার কিরূপ উন্নতি হইয়াছে।

বিজ্ঞান-সৌধের অতি সন্নিকটে 'সমাজ-বিজ্ঞান-মৌধ' (Hall of Social Sciences) ৷ তোরণধারে ঠিন্দ পুরাণ হইতে নানা দেব-দেবীর মূর্ত্তি হইয়া.ছ। তাঁহারা সন্ধকার**, ঝটিকা** ও সালো, অগ্নির অধিষ্ঠাত্রী দেবতা। লিয়ো ক্রি এলাণ্ডার নামক স্থবিখ্যাত ভাঙ্কর এই শোভন কার্য্য সম্পন্ন করিয়াছেন। ্রাচীন সভাতার প্রথম নিদর্শন ফরাসী দেশের ম্যাগনন-গুহার চিত্র দেওয়ালে অশ্বিত রহিয়াছে । আমেরিকার ইণ্ডিয়ানগণের তিন যুগের **কৃষ্টির পরিচায়ক স্তুপাকৃতি** গুহু, গুহুণ বানর ও আদিম মানবের মাথার খুলি ও অক্তান্ত নানাবিধ

ুতবের কাহিনী এই অটালিকায় প্রদর্শিত হইয়াছে।

''দাধারণ প্রদর্শনী-গৃহে'' ১৪৩৮ দালে স্থাপিত জান্দানীর ঘোহদনেস গুটেনবুর্গের প্রথম ছাপাথানা প্রদর্শিত হুইয়াছে। তৎকালোচিত হ্যাণ্ড মেশিন এবং গুটেনবুর্গ টাইপও দাধারণের দৃষ্টি আকর্ষণ করে। গুটেনবুর্গ প্রকাশিত প্রথম বাইবেলের প্রথম পৃঞ্জাও প্রদর্শনীর সম্পদ জ্ব কর বৃদ্ধি করিয়াছে।

ষ্ঠ একটি গৃহে নানাবিধ মূল্যবান ও অধুনা-তৃত্থাপা মণি-মূক্তার সমারোহ বসিয়াছে। মেলিকোর সমাট মাাক্মিমিলিয়ানের একটি প্রকাও নীল হীরকথও, দক্ষিণ-



প্রদর্শনীদংলগ্র উচ্চান-বাটিকা--বিভিন্ন লতা ও বৃক্ষের সমারোহ

আফ্রিকার বহু মণি-মৃত্যা ও হীরকগণ্ড, হীরকপ্রস্থ কীম্বালির ত্রিশ টন ওজনের নীল মৃত্তিকা প্রাকৃতি এখা ন প্রদর্শিত হটয়াছে।

শন্ত এক কক্ষে চারি শত মহিলার নৃত্তি প্রতিষ্টিত আছে। এতদারা অতীত কাল হইতে আগুনিক বৃগ পর্যান্ত বিভিন্ন দেশের বিভিন্ন দাতির নারীগণের পোনাক-পরিচছদের পরিচয় পাওয়া নায়। শিকাগো-নিয়বিদ্যালয়ের শ্রীযুক্তা মিনা এম স্কিমট ইহার পরিচালন-ভার গ্রহণ করিয়াছেন। ভারতের পদ্মিনী, মীরা ব'ঈ, ম্মতাজ, ঝাঁসীর রাণী এবং তক্ক দত্তের মূর্ভি এই কক্ষে স্থান পাইয়াছে।



'বিজ্ঞান-সৌধে'র উত্তর প্রবেশ-পথে স্থাপিত বাঁরের মধ্মর মূর্ত্তি,—অজ্ঞতার অজগরকে প্রদলিত করিয়া জ্যোলাসে দাড়াইয়া আছে

মধাস্থলৈ হ্যাভেলিন থাম্মোমিটার প্রতিষ্ঠিত; উচ্চতায় ্রহা ২২৭ ফুট। পৃথিবীর মধ্যে ইহ; সর্ব্বোচ্চ ও অদিতীয়। রাত্রিকালেও ইহাতে টেম্পারেচার দেখা যায়।

কোড, জিনলার প্রভৃতি মোটর বিজেতাদের
থ্রহৎ অট্টালিকাও এথানে নিম্মিত হইয়াছে। অদ্রের
একটি বৃহৎ ঝরণা আছে; প্রতি মিনিটে ইহা হইতে
৬৮,০০০ টন জল নিঃস্ত হয়। শাদা, নীল, সবুজ ও লাল
রডের আলোক ইহার উপর প্রতিফলিত হইয়া এক অপূর্বর
দুশ্যের অবভারণা করে। আমেরিকার যুক্ত-রাষ্ট্রও
নিজেদের কার্যাবলীর প্রচারকল্পে এক বৃহৎ প্রদর্শনীগৃহ
এথানে নিশাণ করিয়াছেন।

টুয়েলভথ্ দ্রীটের গোড়া হইতে বিজ্ঞান-সৌধ পর্যান্ত প্রায় তিন মাইল বাাপী রাস্তার উভয় পার্গে বিভিন্ন জাতির বিভিন্ন বর্ণের পতাকা বায়্ভরে তরঙ্গায়িত হইনা এক বিচিত্র দৃষ্ণের উদ্ঘটিন করিয়াছে। ফরাসী, গ্রীস, আলাস্কা, সুইডেন, চেকোন্গোভাকিয়া, ইতালী ও অন্তান্ত বহু দেশের সরকার এখানে তাঁহাদের শিবির সরিবেশ করিয়া ছন।
চীন দেশও নানা দ্রব্যের পসরা বসাইয়াছে। প্রদর্শনীতে
স্থানাভাব বশতঃ যদি কোনও দেশের দ্রবাদি প্রদর্শিতী ক্যাভাব বশতঃ যদি কোনও দেশের দ্রবাদি প্রদর্শিতি না
হয় তবে প্রদর্শনীর মধ্যে এক বিশিষ্ট স্থানে সেই
দেশের আদর্শে ছোট-ছোট গ্রাম বিরচিত হইয়াছে। এখানে
সেই-সেই দেশের আচার-ব্যবহার রীতিনীতি প্রভৃতির
অনুশীলন হইতেছে। ইহাদের মধ্যে লামা-মন্দির বিশেষ
প্রসিক। ইহা জিহোলের স্বর্গ-শিবির নামে খ্যাত।
নিকটে যান-বাহনাদির উয়তি-বিধয়ক নিদর্শন এক প্রকাও
সৌধে রক্ষিত আছে। এই স্থানে ট্রাম, মোটর, বাস, রেল
প্রভৃতির বৈশিষ্ট্য ও উয়তির পরাকাঠা প্রদর্শিত হইয়াছে।

শিকাগোর আর্ট ইন্ষ্টিটিউটের ভবনে চাক্সশিল্পের প্রাদর্শনী বসিয়াছিল; গৃহে সর্বসমেত ৪৩টি গ্যালারী আছে: তাহাতে ৭৪৪থানি চিত্র ও ১৩১টি ভাস্কর্যাশিল্প প্রদর্শিত হয়। ছুই ভাবে চিত্রগুলি সজ্জিত হুইয়াছে। প্রথম অন্টাদশ শতাকী হুইতে বর্তুমান কাল পর্যান্ত আমেরিকার চিত্রকর্ম



ছুইটি জাপানী চিত্ৰ শীযুত বিষক্ষপ বস্থ কৰ্ড্বক প্ৰস্তুত কাঠের রুকের প্রতিনিপি ২ইতে

প্রবাসী প্রেস, কলিকাতা

গণের অঞ্চিত চিত্র; বিতীয় ইউরোপীয় চিত্রাবলী। নিমে কয়েকটি বিশিষ্ট চিত্রের সংক্ষিপ্ত পরিচয় বিবৃত হইল:—

- (>) ভ্ইস্টলারের 'মাদার'—ইহা >,০০০,০০০ ডলারে বীমা করা হইয়াছে।
- (২) 'হোৱাইট গাল'—অনেকে ব∶লন ইহা প্রথমটির অপেক্ষা ভাল হইয়াছে।
- (৩) এ**লগ্রোকো**র—'ভার্চ্চিন'। ইহা বিখ্যাত স্পেনীয় শিল্পীর পরিক্**লিত**।
- (৪) এতঘাতীত দোভিয়েট গভর্ণমেণ্টের নিকট হ**ই**তে নিঃলিধিত পাঁচটি চিত্র ক্রম করা হয়। তাহাও এথানে প্রদর্শিত হইয়াছে:—

রেম্যাণ্টের 'জোশেফ এণ্ড পটিফার্স ওয়াইফ,' টারবর্কের 'মিউজিক লেসন,' ওয়াটিউ-এর 'লে মেজ্জেটিন,' ফন্ গগের 'লে কাফে দা সুইট', সেজেনের 'ম্যাভাম সেজেন ইন দি কনজার-ভেটরী।'

(৫) জুলেদ বেটনের 'দি সঙ অব দি লাক' অতি থক্ষর হইয়াছে। (৬) স্থা এঞ্জেলিকোর 'গ্রেবিয়েল' ও 'ভার্ফিন'ও এখানে প্রদর্শিত হইয়াছে।

প্রাচ্যকলারও বহু নিদর্শন এথানে আছে। তন্মধ্যে প্রথম গ্রীষ্টান্দের রচিত গান্ধার-শিল্পের নিদর্শন-শ্বরূপ এক থণ্ড প্রস্তর বিশেষ উল্লেখযোগ্য। ক্যাম্বোডিয়া এবং পারস্তের শিল্প-প্রতিভার নিদর্শনও এথানে আছে।

এতদ্বাতীত আমোদ-প্রমোদের বহুবিধ ব্যবস্থা হইয়াছিল।

নৃত্য-গীতাদির সমারোহ প্রত্যেক রাস্তায় দৃষ্ট হইয়া থাকে।

বিভিন্ন দেশের অনুকরণে পরিকল্পিত যে ক্ষুদ্র প্রামের প্রতিষ্ঠা
এথানে হইয়াছে সেথানেও সেই-সেই দেশের প্রচিলত

নৃত্যগীতাদিরও আয়োজন হইয়াছিল। ইহা ছাড়া

শিশুদর্শকগণের মনোহরণের জন্ত শিশুসুলভ নৃত্যগীত
এবং আমোদ-প্রমোদেরও অনুষ্ঠান যথোচিতরূপে সম্পন্ন

ইইয়াছিল। এক কথায়, প্রদর্শনীকে সর্বাঙ্গস্থলর ও

সাফল্যমণ্ডিত করিবার জন্ত কর্তৃপক্ষ পৃথিবীর সর্বদেশের

বিশেষ ও কৌতৃহলোদ্দীপক দৃগ্য, সাজসজ্ঞা, নৃত্য-গীত ও

বস্থনিচয়ের একত্র সমাবেশ করিয়াছিলেন।

ৰাণীবন বালিকা-বিভালয়

ঞ্জীচিত্তরঞ্জন চক্রবর্ত্তী, বি-এ, বি-টি

গত করেক বৎসর যাবৎ বাংলা দেশে স্ত্রীশিক্ষার দিন্ত প্রথিষ্ট প্রেটিটা চলিতেছে। সহ-শিক্ষার প্রবর্তনের দারা ইহা আরও প্রসারশাভ করিয়াছে। কিন্তু এ-সমস্ত উল্ভোগই শহরবাসীদের চেটার ও তাহাদের জন্ত । প্রামের দরিদ্র বালিকাদের জন্ত এ-পর্যাস্ত খুব কম আরোজনই হইয়াছে। অথচ আমাদের দেশের বেশীর ভাগ লোকই প্রামবাসী ও দরিদ্র। প্রামে স্ত্রীশিক্ষা প্রচারের জন্ত বে-সমস্ত প্রতিষ্ঠান আক্ষকাল কাজ করিতেছে তাহাদের অধিকাংশই শহরে সংঘটিত ও প্রতিপত্তিশালী ব্যক্তিগণের সাহায্যে উহাদের কার্য্য সাধারণে স্পরিচিত। মাজ একটি বালিকা-বিদ্যালয়ের বিবরণ আপনাদের নিকট

উপস্থিত করিতেছি যাহ। একটি নগণা গ্রামের অধিবাসীদের দারা প্রতিষ্ঠিত হইরাও গত চল্লিশ বৎসর যাবৎ বাংলা দেশে স্কীশিক্ষা-প্রচারে গথেষ্ট সাহাগ্য করিতেছে।

বাণীবন' হাওড়া জেলার অন্তর্গত উলুবেড়িয়া মহকুমার একটি ক্ষুদ্র গ্রাম। উহা বেঙ্গল নাগপুর রেলওয়ের উলুবেড়িয়া ষ্টেশন হইতে এক মাইল উত্ত.র অবস্থিত। উলুবেড়িয়া কলিকাতা হইতে বিশ মাইল মাত্র দূরে। বাণীবন গ্রামটি ঐ বালিকা-বিদ্যালয়ের জন্তই প্রসিদ্ধি লাভ করিয়াছে। প্রায় চল্লিশ বংসর পূর্বেক করেক জন ব্রাহ্ম করেন। তাঁহারা তাঁহাদের পুত্রকতাদের জন্ত নিজেদের



্ৰা বাণীবন বালিকা-বিভালয়ের বালিকাগণ চরকায় প্রতা কাটিতেছে



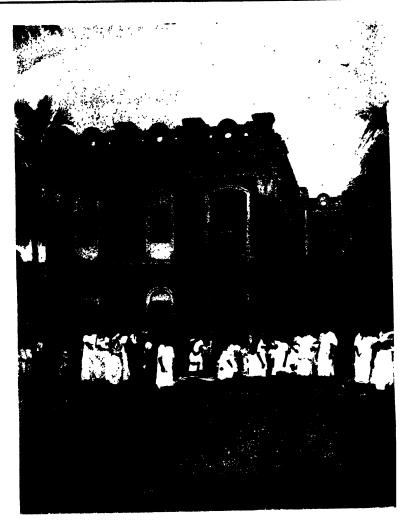
নালাকন বাজিকা-বিজ্ঞালয়ের বালিকাগণ ক্রি-শিকা করিতেও

প্রথমে শিক্ষার ব্যবস্থা বাডিতেই ক্রথে পল্লীতে ব্রাক্ষের কবেন। সংখ্যা বাড়িতে থাকে। শুধু নিজেদের নয় গ্রামের বালক - বালিকারাও যাহাতে শিক্ষার সুযোগ লাভ করে সেই জন্ত তাঁহারা একটি নিম্প্রাথমিক বিদ্যালয় স্থাপন করেন। স্থানটি কলি চাতার নিকটবর্ত্তী হইলেও শিক্ষায় অত্যন্ত পশ্চাৎপদ। সেই জন্ত কৰ্তৃপক্ষ ব্ৰাহ্ম বাতীত স্থানীয় অন্তান্ত বালিকাদিগের নিকট হই:ত কোন বেতন লইতেন না এবং এখনও ভাহারা বিনা বেতনেই পডিতেছে।

ক্রম বিদ্যালয়টির উন্নতি হইতে থাকে এবং গবর্ণমেণ্টের সাহায্য প্রাপ্ত হইয়া মধ্য-ইংরেজী বিদ্যালয়ে পরিণত হয়। সতের বৎসর হইল বিদ্যালয়-সংলগ্ধ একটি ছাত্রীনিবাসে বঙ্গদেশের বিভিন্ন দশ-বারোটি জেলার, এমন কি স্থদ্র আসাম ও মাক্রাক্ত হইতেও বালিকারা আসিলা বাস করিতেছে। ছাত্রীনিবাসে ক্মারী ও বিবাহিতা মল্লবন্ধলা বিধবাকে লওলা হয়।

মন্ধ-মান্ধ-বিশিষ্ট গরিব ভদ্রশোকদের পুবিধার জন্ত বেতন
যথাসম্ভব কম করা হাইয়াছে। বোর্ডিং ও স্ক্লের বেতন
একত্রে মাসিক সাত টাকা মাত্র। বেতন এত কম করাতে
বহু দরিদ্র বালিকা ও বালবিধবা আজ শিক্ষাপ্রাপ্ত হইয়া
আত্মনির্ভরশীল হইয়াছে।

সাধারণ শিক্ষা ব্যতীত এখানে সেলাই, অন্ধন, মডেলিং, চরকা ও তাঁত শিক্ষা দেওয়া হইয়া থাকে। বালিকাদের শারীরিক, মানসিক ও নৈতিক সর্বপ্রকার উন্নতি যাহাতে



ৰাণীৰন বালিকা-বিদ্যালয়ের বালিকাগণ খেলিতেছে

হয় সেই চেষ্টাই বিদ্যালয়ের শিক্ষয়িত্রীগণ ও কর্ত্পক্ষ সর্বদা করিয়া থাকেন। ছাত্রীনিবাসে বালিকাগণ বিলাদিতা-বিজ্ঞিত অনাড়ম্বর সরল ক্ষীবন যাপন করিতে শিক্ষা লাভ করে। গৃহের স্তায় এখানেও তাহাদের কিছু কিছু গৃহস্থালীর কান্ধ করিতে হয় এবং তাহারা যাহাতে সাংসারিক কর্ম্মে নিপুণা হইতে পারে সেইদিকে বিশেষ দৃষ্টি রাখা হয়। প্রতিদিন বিদ্যালয় হইতে ফিরিয়া বালিকাগণ খেলাধুলা করে এবং মধ্যে মধ্যে তাহাদিগকে নানা স্থানে বেড়াইতে লইয়া



বাণীবন বালিকা-বিদ্যালয়---ভাতের ঘর

যাওয়া হয়। যেরা-পৃষ্ধবিণীর মধ্যে বালিকাগণ সাঁতার শিক্ষা করে। তাহারা ইচ্ছাপুষায়ী সঙ্গীত ও নানা-প্রকার বাদ্যযন্ত্র শিক্ষা করিতে পারে। লিখিবার ও বলিবার শক্তি বিকাশের জন্ত ছাত্রীদিগের ঘারা পরিচালিত একটি জ্ঞানদায়িনী সভা' আছে এবং একটি স্থন্দর হস্তলিখিত মাসিক পত্রিকা আছে। ইহা ছাড়া ছাত্রীদের নৈতিক জীবনের উন্নতির জন্ত একটি 'নীতিবিদ্যালয়' আছে।

এই विमागस्त्रत स्थािि **हावीनिवास्त्र हावीस्त्र**

দারাই সর্বত প্রচারিত হইয়া আসিতেছে। তাহারা সুশিক্ষা ও চরিত্র গুণে সর্ব্বত্রই সমাদর লাভ করিতেছে অনেকেই উচ্চশিক্ষা লাভ করিয়া শিক্ষয়িতীর ও নানা প্রকার সমা**জ্ঞাবার** কাজে ব্যাপ্ত আছে। প্রসিদ্ধ নৃত্যকুশলা অমলা নন্দী ও অনুপমা রায় এই বিদ্যালয়ের প্রাক্তন ছাত্রী। গত বৎসর এই বিদ্যালয়ের একটি ছাত্ৰী মধ্য-ইংরেজী বুভি পরীক্ষায় বদ্ধমান-বিভাগে প্রথম স্থান অধিকার করিয়াছে। এই বিদ্যা**ল**য়ে অবনত শ্রেণী, বিশেষতঃ নমঃশুদ্র জাতি, বিশেষ সহানুভূতি ও সাহায্য পাইয়া আসিতেছে। কয়েক বৎসর পূর্বে একটি নমংশুদ্ৰ বিবাহিত বালিকা বজি-পরীক্ষায় বৰ্জমান প্রেসিডেন্সী উভয় বিভাগের মধ্যে প্রথম স্থান অধিকার করিয়া মধ্য-ইংরেজী বৃদ্ধি পাইয়াছে। আরও তুইটি নমংশুদ্ৰ বিবাহিতা বালিকা মধ্য-বাংলা বৃত্তি পাইয়াছে।

এক হিসাবে দেখিতে গেলে এই বিদ্যালয়টি বাংলা দেশে একক। কারণ একমাত্র এই মধ্য-ইংরেজী বালিকা-বিদ্যালয়েরই সংলগ্ন ছাত্রী-.

নিবাস আছে, অন্তত্ত্ব কোথাও তাহা নাই। এই-সব নানা কারণেই এক জন ডিষ্টাক্ট ইন্সপেক্টর ইহাকে 'ইউনীক ইন্সটিটিউশ্যন" (unique institution) বলিরা উল্লেখ করিরাছেন। বহু কমিশনার, ম্যাজিট্রেট, স্থল-ইন্সপেক্টর ও ইন্সপেক্ট্রেস এবং ডিষ্টাক্ট বোর্ডের সভাপতি অকুন্তিত চিন্তে এই বিদ্যালয়ের উচ্চ প্রশংসা করিরাছেন এবং বধাসাধ্য সাহাধ্যও করিরাছেন।

এই বিদ্যালরের একটি নিজম্ব খিতল স্থলর অট্টালিকা

আছে। বর্ত্তমানে ঐ মট্টালিকাতেই ছাত্রীনিবাস এবং বিশ্বালয় অবস্থিত। ছাত্রীনিবাসের জন্ত স্থান-সঙ্কুলান না হওয়াতে বিশ্বালয়ের জন্ত পৃথক্ ভবন নির্মাণের চেষ্টা চলিতেছে। ঐ ভবন নির্মাত হইলে বর্ত্তমান মট্টালিকাটি সম্পূর্ণভাবে ছাত্রীনিবাস রূপে ব্যবহৃত হইবে।

এই বিশ্বালয়ের সর্বপ্রেকার উন্নতির মৃলে আছেন রান্ধ সমাজের অন্ততম নেতৃস্থানীয় স্প্রেসিদ্ধ ডাঃ প্রীযুক্ত প্রাণক্তম আচার্যা। তিনিই এই বিশ্বালয়ের স্থায়ী সভাপতি। তাঁহারই আপ্রাণ চেষ্টায় এবং অর্থ-সাহায্যে এই বিশ্বালয়ের নিজম্ব অট্টালিকা ও অন্তান্ত উন্নতি সম্ভব হইয়াছে। শুশু তাহাই নয়, বহু দরিদ্র ছাত্রী তাঁহার অর্থ-সাহায়্য পাইয়া এই বিশ্বালয়ে বিদ্যালাভ করিয়াছে এবং করিতেছে।

এই বিদ্যালয়ের এক জন ভৃতপূর্ব্ব প্রধান শিক্ষক ডাঃ বঙ্গনীকান্ত দাস, এম-এ, এম-এস্সি, পিএইচ-ডি, বর্ত্তমানে লীগ্ অব নেগ্রন্থে কাজ করিতেছেন। আর এক জন ভ্তপূর্ব্ব প্রধান শিক্ষক প্রীযুক্ত ইন্দুপ্রকাশ বন্দ্যোপাধারে, এম-এ, আমেরিকা হইতে উচ্চ শিক্ষা লাভ করিয়া দেশে ফিরিবার পথে বিগত মহাযুদ্ধের সময় লুসিটানিগা জাহাজের সহিত মহাসমুদ্রে অতল সমাধি লাভ করিয়াছেন। বর্ত্তমান প্রধান শিক্ষক প্রীযুক্ত অনঙ্গমোহন রায় বিশ বৎসরের অধিক কাল যাবৎ বালিকাদিগকে পিতার ন্তায় শিক্ষাদান ও যত্ত্ব করিয়া আসিতেছেন। তাঁহার সময়েই বিদ্যাল যের সর্বপ্রকার উন্নতি সাধিত হইন্নাছে।

স্থানটি স্বাস্থ্যকর এবং গঙ্গা হইতে আমতা পর্যান্ত যে ক্বি-থাল গিয়াছে, তাহার উত্তর পাড়েই বিদ্যালয়টি অবস্থিত। কলিকাতার বাহিরে অথচ নিকটবর্তী স্থানে বালিকাদের এইরূপ একটি শিক্ষা-নিকেতন বাঙালীর জাতীয় সম্পান। এই দরিদ্র দেশের পক্ষে এইরূপ অল্প বেতনের বোর্ডিং-মূল আরও থাকা খুবই বাঞ্জনীয়।

স্বরলিপি

গান

কাছে থেকে দূর রচিল কেন গো আঁখারে মিলনের মাঝে বিরহ-কারায় বাঁধা রে। সমুখে রয়েছে হুধাপারাবার নাগাল না পায় তবু আঁথি তার কেমনে সরাব কুহেলিকার এই বাধা রে। আড়ালে আড়ালে শুনি শুরু তারি বাণী—
কানি তারে আমি তবু তারে নাহি কানি,
শুরু বেদনার অস্তরে পাই
অস্তরে পেয়ে বাহিরে হারাই
আমার ভূবন রবে কি কেবলি আঁধারে ॥

---শাপমোচন

স্বর্রলিপি - ঞীশৈলজারপ্তন মন্ত্রমদার

কথা ও সুর – শ্রীরবীশ্রনাথ ঠাকুর

[রারসা সন্া]

্বিসা সা সন্মান পা মাজ্জরা সা সা বা বা বিশ্লাগা গা মা পা ধ কাছে থে কে০ দুর র চি০ ল ০ ০ ০ কি ক গো আমা ধা ০

মা পা মা জ্ঞামা জ্ঞা । মামপা পা পা পা পা পা পা গা । ^বর্দাণস্থি। রে ০ ০ ০ ০ ০ মি ল০ নে রুমাঝো বি র হ কারা০ র০ পা -1 ধা । ^ধমা -1 পা ^মগা -1 -1 মা পা -1 । ^মপা মা আলা সা সা-শা বা ০ ০ ধা ০ ০ রে ০ ০ ০ ০ ০ কাছে খে০ কৈ দুৰ धर्म में नाना धा भा-ना भा-ना । धा भा-ना भाना । भाना ना । धा भा-ना । भाना ना শির্মার্শ শিলা । লখা ধলা পা শিলা শিলা শিলা শা গা গা সা না গা শা না পা কেম নে সত রা॰ ব কুহে লি কার এ ই বা ০ ০ খা ০ ০ मा भा मा छन मा छन। বা না না না না না -সা বিসা-ভলা -। ভারামভলারসা সারাভলা রাস্য -রা আ আ ভা লে ত ০ ভ নিত ০০ ভ ছু ভা রি বা ০ ना - न न न न न (म भ भ भ भ भ भ धर्माम् न धा भाषा नो ०० (य ००) (का नि छ। दि आ मि ७० त् ० । छ। दि ० श्रिमी-मी-मी मी -मी दी शर्मा-ना ना श्रा न ना मनाना ना शाना १९७० श्रू त्व न ना ब्र ७०० न् छ ति शा है एक न् छ ति १४ ति वित्र हो ब्राइट हा ००००० ब्रा० हे ००००० मा भा का मा उना



(১) প্রাচীন আসামী হইছে (২) **বিদ্যাস্থলর**— শীপ্রমধনাধ বিশী। রঞ্জন প্রকাশালর, ক**ন্দিকা**তা, ১৬৮। প্রাপ্তিস্থান, গুরুনাস চট্টোপাধ্যায় এণ্ড সন্স, কলিকাতা। মূল্য প্রত্যা**ক্টি** দ•।

কবি অমথনাথ বিশী বয়সে তরুণ হইলেও, ওাঁছার রচনা যে আধনিক ভারুণা-ব্যাধি হইতে আক্সরক্ষা ক্রিয়াছে, তাহা কম ্দৌভাগ্যের কথা নছে। কারণ, তাহার পূর্ববয়চিত 'বসস্তুদেন!'য় এবং আলোচ্য কাব্য ছুইটিতে যে শক্তির পরিচয় আছে, ভাহার আর अभिद्राव मञ्जावना वा कुर्जावना ब्रहिल ना । आधुनिक कवि इहेरलख, প্রমধনাথ প্রাচীনপত্ন। কিন্তু প্রাচীনপত্নী বলিয়া তিনি গভামগতিক যে প্রাচীন পম্থা কাৰ্যের চিরস্তন পম্থা, তিনি তালারই অনুসরণ করিয়াছেন: এবং ইহার ফলে তিনি যেটুকু সিদ্ধিলাভ ক্রিয়াছেন, তাহা এই ক্রিছবর্জিত কিন্তু বহুক্রি-সমাকুল যুগে আশা ও আখাসের বিষয়। যে কাবা-বোধ ও সৌন্দব্য-স্টের প্রেরণ! যুগ-প্রম্পরায় কবি-মানসের উপজ্ঞাব্য, তাহাই তাহার স্বভাবসিদ্ধ রুস-পিপাসাকে উৰুদ্ধ করিয়াছে; এবং তাহাকেই তিনি কাব্য-সাধনার দৃঢ়ভিত্তি স্বরূপ অবলম্বন করিয়াছেন বলিয়া বর্ত্তমান সাহিত্যিক ম্বেচ্ছাচার ও আক্সশৈধিল্যের যুগে তাহার ছইটি রচনা হস্ত-সবল গঠন-দোষ্ঠাবে ও প্রকাশভঙ্গীতে নিজম রসরূপ লাভ করিতে পারিয়াছে। বাঙ্গালা ভাষার সনাতন স্বরূপটিকে আয়ত্ত করিবার জন্ত থে-সাধনার নিদর্শন এই ছুইটি রচনায় রহিয়াছে, তাহা আধুনিক ভাষা-বিকৃতির যুগে হুলভ বলিয়াই বিশেষভাবে উল্লেখযোগ।। দেইজ্ঞ, কবির ভাব ও চিম্বার বৈশিষ্টা, সম্ভূল শব্দনির্বাচনে ও সতর্ক গ্রন্থন-রীতির সহজ্ঞ ভঙ্গীতে, আপনিই আপনার রূপ গ্রহণ করিরাছে।

প্রমধনাথ প্রাচীন পদ্ধী প্রলিয়া কেহ যেন মনে না করেন যে উাহার নব 'বিদ্যাধুন্দর' ভারতচক্রের ভাব, ভাষা ও ভঙ্গীর চর্বিত-চৰ্বণ মাত্ৰ। প্ৰাচীন বিদ্যাফন্দরের কল্পনা ও কামনার রসে অভিষিক্ত করিয়া, ব্রহ্মপুত্রের বালুচরে ধানশ্রী নদীর তীরে অভিনীত কোনও আধুনিক ব্যবন্তপুত্র ফুল্মবের ভাব-জাবনের চিত্র, কবি বাস্তব হুখ-ছঃপেদ্ন পাঢ়ভায় ও বৈচিত্রো অঙ্কিত করিরাছেন। 'প্রাচীন আসামী **২ইতে' এই ছম্মনাম গ্রহণ করিলেও, ধানশীতীরনিবাসিনী ফুল্মরী** এসমীয়ার উদ্দেশে রচিত কবিতাগুলি, ব্রহ্মপুত্রতীন্ননিবাসী আধুনিক কবিরই প্রীতিপুপ্পাঞ্জলি। বর্তমান যুগের ভাব-জীবন, যে সত্য ও শণের, যে বান্তব হুখ ও অহুখের ছারা আন্দোলিত ও উৎক্রিপ্ত গ্ইতেছে, তাহাই এই প্রেমিক কবির গভারতম চেতনা ও অস্তরতম অমুভৃতির মধ্যে অপূর্ব্ধ রস-পরিপতি লাভ করিরাছে। ^{হইলেও} কবি দেহ-বাদী ; কিন্তু দেহ-তান্ত্ৰিক নহেন। জীবন তাঁহার নিকট সত্যা, সেই**জন্ম দেহ ও** মন উভয়ই তাহার নিকট সত্য। কিন্তু জাবন সভা বলিয়া যে-সভা জীবনাভীত ভাহাকেও ভিনি স্থাহ্ করেন নাই। প্রমণনাধের কবিতা ভাবাবেশমরী, কবিত্ব-वधमत्रो, किन्तु এই ভাব ও वध हात्रा-मत्रोत्रो नरह, रूक्मात कवि-গদরের বান্তৰ অন্মভৃতির উপর প্রতিষ্ঠিত। স্বপ্নের ইক্রফাল তাহার

কৰি-দৃষ্টিকে বংশপ্ত প্ৰপুক্ষ করিরাছে, কিন্তু ইন্সিরের বার রুদ্ধ করিয়া তিনি কেবল স্থারাজ্যে বাদ করেন নাই, ধরণার মৃত্তিকার উপরই কাম্য শ্রেরনের সন্ধান করিয়াছেন। সেইজ্বস্তু, এই নবীন কবির প্রবীণ রচনা, বাত্তবদারিদ্বহান আন্তরিকতাবর্জিত অক্ষম লেখকের শিশ্বিল-ক্রিয় বাকাপরম্পরায় পর্যাবদিত হয় নাই। ইহা অকুস্থ চিত্তের মপৃষ্ট কাকলা নহে, সহজ্য অনুস্থ তির সবল উক্তি। ক্রতরাং আশা করা বার যে, এই ছুইখানি কাবা বর্ত্তমান বাঙ্গালা সাহিত্যে, স্বপ্প হইলেও একটি বিশিষ্ট্র স্থান অধিকার করিবে।

প্রীস্থালকুমার দে

যে শাবে ফুল ফোটে না— এতারাপদ রাহা প্রণাত। পি. সি. সরকায় এও কোং, ২ নং শুামাচরণ দে ব্লীট, কলিকাতা হইতে প্রকাশিত। মূল্য ছুই টাকা।

ইহা একথানি উপস্থাস, প্রেমের উপাধান। অল্প বরুসে বিধৰা 'বিধা' গোপনে ভালবাসিত, কিন্তু তাহার প্রেম ছিল নিরন্তরের। সম্ভবিবাহিতা 'নমিতা'ও দূরসম্পর্কীয় দেবর 'প্রভাত'কে ভালবাসিরাছিল। লেখক বলিয়াছেন যে তাহাদিগের প্রেম পরম্পরের সাহচর্বোও নিকল্ব রহিয়াছিল।, আখ্যায়িকার ছানে ছানে কিছু অস্বাভাবিকভা আছে বলিয়া মনে হয়। জ্বাবার দিক দিয়া প্রকথানি ক্লেশাঠা নহে, ভাবা সতেজ ও সরল। ছাপা, বাধাই ও কাগজ—সবই ফুলর।

চল্তি পথের বাঁশী- গ্রীনবংগাপাল দাস প্রণীত। ডি. এম. লাইরেরী, ৬১ কর্ণওয়ালিস ব্রীট্ট, কলিকাতা হইতে প্রকাশিত। মূলা দেড় টাকা।

ইহা একথানি উপস্তাস। আখাারিকা-ভাগে নৃতন্ত আছে।
নায়ক 'অসিত' এক জন ভাৰপ্রৰণ কর্মপাগল যুবক, কর্ম্মের উদ্যাদনা
ভিন্ন তাহার অন্ত দিকে লক্ষা ছিল না। কোন্ অক্তাত মুহূর্তে সে
পিতৃবন্ধুর কন্তা 'মীরা'র হন্দর অধিকার করিলাছিল, তাহা সে বুবিরা
উঠিতে পারে নাই। সে ভগিনীর মত তাহাকে দেখিরাছিল, ফ্তরাং
অন্ত ভাবে সে তাহাকে গ্রহণ করিতে চাহিল না, বিশেষতঃ তাহার
কর্ম্মের আদর্শকে ক্ষুত্র করিয়া। গ্রন্থখানি স্থপাঠ্য হইরাছে। ভাষাও
সহন্ত ও স্ববোধা। ছাপা, বাধাই ও কাগজ—সকলই ভাল।

ফরাসী-বিপ্লব—রেজাউল করীম, বি-এ। বর্ণ্যণ পাবলিশিং হাউদ, ২০৯ কর্ণগুয়ালিস ষ্ট্রাট, কলিকাডা। ১৯৩৩। এক টাকা!

লেখক চারিপর্সে বাঙালী পাঠককে করাসী-বিপ্লবের কথা জানাইরাছেন। ইউরোপ যাহা কিছু করে তাহাই দেখিবার লক্ত জামানের চকু একান্ত উৎস্থক, কিন্তু এই জ্বন্ধাগ থাকা সম্বেও জামানের ইতিহাসের শস্ত জানের অত্যন্ত অভাব। রেজাউল করীম সাহেব এই পুত্তকে করাসা-বিপ্লবের মূল কথান্তলি গুছাইরা বলিরাছেন, ইতিহাসের শিক্ষা পাঠক যাতে ভুল করিয়! না বসে সেজান্ত তিনি বার-বার তাহাকে সাবধান করিয়া দিরাছেন। পুত্তকে কিন্তু বহু মুলাকরপ্রমাদ রহিরাছে; জনেক ইংরাজী কথা আছে তাহানের

ৰাংলা দেওৱা হয় নাই; ছই জাগ্নগায় মডার্গ বিভিউন্নের প্রসক্ষকে নির্দ্ধেশ করা হইরাছে, কিন্তু কোন্ বংসারের কোন্ সংখ্যা ভাহা কিছু বলা হয় নাই। আলা করি পরবর্ত্তী সংস্করণে লেখক এই সকল বিবরে অবহিত হইবেন।

শান্তি-সোপান বা পান্ত প্রদীপ—অমুবাদক ও প্রকাশক গান বাহাত্বর মৌলবা চৌধুরা কাজেমুদ্দান আহমদ সিদ্দিকা, জমিদার, বলিয়াদা (ঢাকা)। প্রান্তিস্থান—প্রকাশক, ঢাকা, অথবা ইস্লামিয়া লাইব্রেরী, পাটুয়াটুলী, ঢাকা। মূলা ২।•।

শান্তি-সোপান, হজরত এমাম গাঞ্চালী প্রণীত মেন হাজোল আবেদিন ও চেরাঞােছ ছালেকিন নামক গ্রন্থের অমুবাদ। পুত্তকের উদ্দেশ্য তরুণ ইসলাম সমাঞ্জকে প্রকৃত ধর্মশিকা দান করিয়া ভাছাকে তথাক্ষিত নেতা ও ছন্মবেশী মৌলানাদিগের নিক্ট হইতে আন্মরকা করিতে শিপান। পুস্তকগানি সর্কৈব আক্ষরিক অনুবাদ নহে, ইহার আলোচনা সরস করিবার চেষ্টাও হইরাছে। ধর্ম, প্রায়শ্চিত, সাধন-ভজনের সংসারাদি বিল্ল, অলু-চিন্তাদি প্রতিবন্ধক, সাধন-ভজনের নিমিত্ত কারণ, অকপটতা, ভগবানের তব-আরাধনা প্রভৃতি বিষয় लहेशा खालाहन। भार्रक हेशार्क भाहेर्यन। हेशां हैभएमभावली धर्म-জীবনের পক্ষে সহায়তা করিবে: এপ্রের ভিত্তি সংযমের উপর কিরূপ প্রতিষ্ঠিত তাহা ছুইটি উপদেশ হইতে বুঝা যাইবে। (১) ''অনাস্থায়া ফুলরা যুবতী রমণার প্রতি দৃষ্টি নিক্ষেপ করা শয়তানের বিষ-নিষেবিত একটি তাকু শরবিশেষ।" (২) ''সর্ব্ব কাজে ও স্ব্বপ্রকার সর্ব্ববিষয়ে তমি তোমার নিজের জন্ত যাহা পছন্দ কর ও ভালবাস, অন্তের জন্তও তাহাই পছন্দ করিও, ও ভালবাসিও, এবং নিজের পক্ষে যাহা বাঞ্চনীয় মনে কর না, বা পছন্দ কর না, অস্তের পক্ষেত্ত তাহা বাঞ্চনীয় মনে করিও না বা পছন্দ করিও না।" যে-সমাজের হিতসাধনের জন্ত পান-ৰাহাছুর বুদ্ধ বয়নেও ''অক্লাস্তভাবে মোট চারি শত পঞ্চায় ঘণ্টা" পরিশ্রম করিয়া এই পুস্তক অথবাদ করিয়াছেন, ইহা পাঠে সেই সমাজের উন্নতি অবধারিত। পুস্তকের ভাষা প্রাঞ্জল ও খন্দর, এবং ইহাতে বাবহৃত আরবী পারসী শব্দের অর্থ পরিশিষ্টে দেওয়া হইরাছে, ফুডরাং অস্ত সমাজের ধর্মনীল পাঠকদেরও বোধ-সৌকর্য্য इट्टें(व ।

🖺 প্রিয়রঞ্জন সেন

আকাশ-পাতাল — এপগেক্সনাথ মিজ। প্রকাশক শীসলিলকুমার মিজ, ২২ নারিকেল বাগান লেন, কলিকাতা। পৃষ্ঠা-সংখ্যা ২১৪: মুল্য ৮০।

কৈলোরের প্রথম দিকে ছেলের। রোমাঞ্চকর কাহিনী পড়িতে ভালবাসে। ছঃথের বিষয়, বাংলা ভাষায় এরূপ কাহিনীর সংখ্যা বিরল। গ্রন্থকার সেই অভাব দূর করিবার উদ্দেশ্যে গ্রন্থকানি লিপিয়াছেন। আকালে, পাতালে, থনিগর্ভেও সমুদ্রের তলদেশে প্রকৃতির সহিত যুদ্ধ করিতে গিরা মাথুষ যে রোমাঞ্চকর অভিজ্ঞতা সঞ্চর করিতেছে তাহাই অবলঘন করিরা গ্রন্থকার এই কাহিনীচতুইর রচনা করিয়াছেন। বাংলা দেশের ছেলেদের পক্ষে চিন্তাকর্যক করিবার ক্ষম্ভ লেথক চারিটি বাঙালা ছেলেকে এই গ্রন্থভিলির নারকরণে কছনা করিরাছেন। গ্রন্থভারের উদ্দেশ্য সাধু, কিন্তু ছুর্ভাগ্যক্রমে কর্ত্রমান গ্রন্থভারার উদ্দেশ্য সাধু, কিন্তু ছুর্ভাগ্যক্রমে কর্ত্রমান গ্রন্থভার উল্লেখ্য হালার অনুক্রপ গ্রন্থ পড়িয়া দেখিতে পারেন, সেথানে ক্রেমন করিরা অতি সহক্ষে রোমাঞ্চকর ও বান্তবের

মিলনসাধন করা হইয়াছে। তাহা ছাড়া গ্রন্থের ভাষা অসংযত ও তব্দতভালা দোষত্বন্ত ৷ "উত্তরীয়"ও "মগডাল" একসঙ্গে চলে না।

শিশু-পরিচর্য্যা— শ্রিক্সরীমোহন দাস, এন্ বি. প্রণীত! পৃ: ৩২, মূল্য :০। প্রাক্সিস্থান—৫৭/১/১এ রাজা দীনেক্স ষ্ট্রীট, কলিকাতা।

যে বাংলা দেশে বাৎসব্রিক : আ লক্ষ শিশুর মধ্যে এক বৎসরের মধ্যেই শুধু "পেটের অপুনেই" অস্ততঃ পনরটি শিশু মারের কোল শৃশ্ব করে, সে-দেশে শিশুপালনের যে বিষম ক্রটি আছে, তাহা সভঃসিদ্ধবুৎ মনে হয়, এবং এই শিশুমেধ দেখিয়া প্রবীণ চিকিৎসক শ্রাদ্ধের ডাক্তার দাস যে চঞ্চল হইবেন, তাহাতে বিচিত্রতা কি? তাহার মত শিশু ও প্রস্তিক ল্যাণে একনিষ্ঠব্রতা অব্ধ শতাব্দীর ভূরোদর্শনের কল যে-ভাবে উক্ত পুস্তিকার সহজ ভাষায়, স্বন্দর ভঙ্গাতে, বিভিন্ন ''অধিকারে" (হেডিং-এ) সাজাইয়া প্রকাশিত করিয়াছেন, তঞ্চশ্ব বাঙ্গালা মারেই তাহার নিকট ক্রক্ত। পুস্তক্থানি ক্ষুত্রকলেবর ইইলেও অমূল্য। আশা করি, ঘরে ঘরে মারেরা এক পণ্ড রাধিয়া অনেক বিপদ বালাইডের হস্ত হইতে নিজ নিজ শিশুদিগকে রক্ষা করিতে পারিবেন।

<u>জীরমেশচন্দ্র</u> রায়

নারীজীবন ও প্রস্থৃতি-পরিচর্য্যা—ডাক্তার শ্রীমভয়কুমার সরকার, এম-বি, ডি-পি-এইচ প্রণীত। ৩২৫ পৃষ্ঠা। প্রাণিস্থান, দাসগুণ কোম্পানী, ৫৪/০ কলেজ খ্রীষ্ট। মূল্য ২১।

গ্রন্থকার করিদপুরের হেল্ছ্ অফিসার। আলোচিত বিষয় ৩২টি; বিষয় বুঝাইবার জন্ত স্থানে স্থানে কতিপায় চিত্র আছে। বিবাহ ও 'দম্পতি জাবন' সম্বন্ধে অনেক জ্ঞাতবা বিষয় সন্নিবিষ্ট ইইয়াছে। বাংলা দেশে বাল-বিধবার সংপা; উল্লেখ করিয়া গ্রন্থকার দেখাইয়াছেন প্রায় ৭ লক্ষ বালিক। ১৯২১ সালে সমাজের গলগ্রহস্করূপ ছিল। ভদ্মধো ২ বংসরের কম বয়পের সংপা। ছিল ২৮৩।

শ্রীস্থন্দরীমোহন দাস

বিংশ শতাব্দীর সেরা সাহিত্যিক— জ্ञামনোরঞ্জন চক্রবর্জী। প্রকাশক—জ্ञীদীনেলচক্র বর্মণ, আর্য্য পাবলিশিং কোং ২৬ নং কর্ণওয়ালিশ ষ্ট্রীট, কলিকাতা । মূল্য এক টাকা চারি আনা।

দে-সকল লকপ্রতিগ বিশ্বসাহিত্যিক বিগত ১৯৩০ সাল পর্যান্ত বিশ্ববিধ্যাত 'নোবেল প্রাইন্ধ' লাভ করিয়াছেন তাঁহাদের জীবন-কথা ও সাহিত্যস্টির সংক্ষিপ্ত বিবরণ এই পুত্তিকার প্রদন্ত হইরাছে। বিদের বিশাল সাহিত্য-ভাতার বাঙালীর নিকট এখনও একরণ অমুমুক্ত রহিরাছে। আশা করা যার, এই জাতীর আলোচনা-গ্রন্থ ক্রমে বাঙালীর চিত্তে বিশ্বের শ্রেষ্ঠতম সাহিত্যিক নিদর্শনের সহিত্য পরিচম লাভ করিবার আকাজকা জাগাইরা তুলিবে। স্থানে ভাবার জড়তা ও বর্ণাভদ্ধি এই পুত্তিকাকে কথিণত কলজিত করিরাছে সত্য, তবে ইহার মধ্যে নানা জ্ঞাতব্য বিষয়ের সমাবেশ হওয়ায় আমরা ইহার বহল প্রচার কামনা করি এবং আশা করি, ভবিবাৎ সংকরণে ইহা সম্পূর্ণ কলকমুক্ত হইবে।

প্রাচীন ভারতীয় বৌদ্ধ বিত্যাপীঠ — অধ্যাপক প্রীযুক্ত বেণীমাধব বড়ুয়া, এম্-এ, ডি-লিট লিখিত ভূমিকাসহ। প্রীধরচল বড়ুয়া প্রণীত। প্রকাশক — জীমন জিমু উত্তম, মহাবোধি সোসাইটি, ৪): নং কলেজ ফোরার, কলিকাতা।



উৰ্ব্বশী শ্ৰীশৈশেক ভ্ষণ দে

এই অছে ভক্ষশিলা, নালনা, পাটলিপুত্ৰ ও বিক্ৰমশিলা এই কলটি বিভাগীঠের যথাসভব বিশ্বত বিবরণ এবং তৈকুট বিহার, পণ্ডিত বিহার, কনকন্তুপ বিহার ও জগদল বিহারের সংক্রিয় বিবরণ প্রদত্ত ইইলাছে। অন্তিম পরিছেদে প্রাচীন ভারতের নিকাপন্থতি সংক্রেপ বিবৃত হইলাছে। একটি বতক্র পরিছেদে বৌদ্ধ মুগে আয়ুর্বেদ সম্বন্ধে যে আলোচনা করা হইলাছে তাহার মধ্যে জ্ঞাত্তব্য তথা খাকিলেও এই গ্রন্থে ভাহা ঠিক প্রাস্ত্রিক হইলাছে বলিয়া মনে হয় না। গ্রন্থানি পাঠ করিল! সাধারণ পাঠক অনেক নৃত্ন ধবর জানিতে পারিবেন এবং উপকৃত ও পরিতৃপ্য হইবেন।

শ্রীচিম্বাহরণ চক্রবর্ত্তী

পথ বিজ্ঞন — প্রানোরীজনার সুবোপাধার। গুরুদাস চট্টোপাধার এগু সন্ত্র, ২০৩১১১ কণিওয়ালিস ষ্ট্রীট, কলিকাতা।

খটনার বৈচিত্র্য আর সেই বৈচিত্রোর সংঘাতে মানব-মনের ন্তন নৃতন ভাবে সাড়া দেওয়া, নৃতন আলোকে এবং নবতর বিশ্বনে ফুটিরা ওঠা—বা লইয়া সৌরীক্রবাবুর যশ—বইপানিতে তা যথেষ্ট পরিমাণেই পাওয়া যায়। এক শুরু কাঁকা-লান্তিক লাটুবাবুর চরিত্রটা একট্ মতিরঞ্জিত ঠেকিল, তা ভিল্ল সব চরিত্রগুলিই বেশ হডোল হইয়া গড়িয়া উঠিয়াছে। প্রধান নারা-চরিত্রগুলিতে স্থসংযত আধুনিকতার 'টাচ্'বড় মিষ্ট লাগিল।

বইখানিতে চরিত্রগুলির মুগে বড় বেশীরকম 'নভেন,' 'উপস্থাস,' 'রোম্যান্স'-এর দোহাই দেওয়া হইরাছে। যেমন—'এ রোমান্সের পাতায়ই সাজে,' 'এ ভালবাসার পরিণতি উপস্থাস নাটকে যেমন হয়…' ইতাাদি চরিত্র বা ঘটনাগুলিতে বাস্তবিকতার ছাপ দিবার জক্ত উপস্থাসের পাতায় এ-ধরণের মস্তব্য এক-আধ বার চলে; কিন্তু বাড়াবাড়ি হইলেই বেখায়া শোনায়, ভাই সামাক্ত হইলেও এই ফাটটুকুর কথা উল্লেখ করিলাম।

ছাপা, বাধাই, কাগজ সবই ভাল। মূলা ছুই টাকা

মাসীমা--- এবোগেক্সনাথ সরকার। গুরুদাস চট্টোপাধ্যার এগু সন্ধ। ২০৩/১/১ কর্ণগুরালিস ব্রীট, কলিকাতা। মূল্য দেড় টাকা।

একটি ছোট গল্পের এটকে লেখক উপস্থানে লাগাইয়াছেন, কলে অনেক অবাস্তর কথা ঢুকিয়া পড়িয়া বইখানিকে ফিকা করিয়া দিয়াছে।

বইরের প্রথমাংশে ভাষার প্ররোগে কিছু কিছু তুল আছে, শেবের দিকে সেটা কাটিরা গিরাছে এবং এই লেথকেরই লেখা 'গথের ধূলি'র ভাষা বেশ উৎকর্মলাভ করিরাছে। এটা একটা আশার কথা। ছাগার অদ্বন্ধা লোব আছে। বহিরাবরণ ভালই।

পথের ধূলি— এই বাংগক্রনাথ সরকার ! গুরুদাস চট্টোপাধ্যার এগু সন্স, ক্রিকাডা। মুলা ৸•।

ছোট গল্পের বই, কিন্তু প্রটের অভাবে প্রথম দিকের করেকটি গল্প গল্পই হয় নাই। আর একটি বিবরে লেখকের দৃষ্টি আকর্ষণ করিব — বইটিতে অক্সবে পড়ার বড় বাড়াবাড়ি। বইখানি আগাগোড়াই করুণরসাল্পক তাহাতে অক্সবে-অক্সবে যেন আরও নির্ক্তীব হইরা পড়িয়াছে। গল্পের মোড় কিরাইতে হইলেই পাত্রপাত্রীদের ধ' করিয়া, অক্সবে কেলা বাংলা লেখকদের একটা রোগ হইরা দীড়াইতেছে, সেইজক্ত কথাটার উল্লেখ করিলাম। ছাপা, বাধাই ইত্যাদি সবই 'শাসীমাণ্ডর মত।

জ্ঞীবিভূতিভূষণ মুখোপাধ্যায়

ব্ৰহ্মপূত্ৰম্ — শ্ৰন্থ নিয়াৰচক্ৰ চটোপাধ্যাৰ কৃত সৰল সচীক ভাষাসমেতম্ । ৫ নং উড খ্ৰীট হইতে এছকাৰ কৰ্তৃক প্ৰকাশিত। মূল্য ২১ টাকা।

গ্রন্থকার পাশ্চাতা বিদ্যার হৃপণ্ডিত এবং শাস্ত্রক্ষা বলিরা পদ্নিচিত। তিনি 'স্বাধীন ভাবে' অর্থাৎ কোন বিশেষ আচার্যোর অনুসরণ না করিরা ব্রহ্মত্তর ব্যাধা করিতে প্রয়াসী হইয়াছেন, কিন্তু বিভিন্ন স্থরে বিভিন্ন আচার্যোর মতানুসরণে কুণ্ডিত হন নাই। ইহার কলে সমগ্র গ্রন্থের তাৎপর্যোর ঐক্য সংরক্ষিত হয় নাই।

পূর্ব ও উত্তর পক অবলখনে তিনি সরল বাংলা ভাষার স্বীর ভাষ্য রচনা করিয়াছেন। ঐ ভাষ্য তাহার পাঞ্চিত্যের পরিচারক হইলেও তাহা বারা প্রের মর্মার্থ সর্বাত্ত হব নাই—প্রের শক্ষার্থও সর্বাত্ত হর নাই, বরং স্থানে স্থানে তাহা ঐছকারের অনবধানভারই পরিচারক। দৃষ্টান্তস্বরূপ, ২০০৪৩ প্রের ভাষ্য প্রস্তা। পূর্বাভাসও স্থানে স্থানে অমপূর্ণ। এছে গুরুতর ভাষাগত দোষ ও মুলাকর-প্রমাদ বর্তমান। বিতীয় সংক্ষরণে দোষমুক্ত হইলে এছখানি সকলের আদর্শীয় হইবে আশা করা যায়।

গ্রীঈশানচন্দ্র রায়

পত্ৰলেখা — জ্বিনকলতা ঘোষ। প্ৰকাশক জীসলিলচক্ৰ খোষ, ৪৪ বাছড় বাগান খ্ৰীট, কলিকাতা। ৬৫ পুঃ, মূল্য।৮০।

অশ্রদিক্ত হৃদয়ের মর্মবেদনা প্রাকারে এই প্রছে প্রকাশ**লাভ** ক্রিরাছে। দ্রদী হৃদয়ের সহামুভূতি লেথিকা পাইবেন। বইখানির ভাষাও ভাল।

শ্রীমণ্ডগবদ্ গীতোপনিষদ্, দ্বাদশ অধ্যায়—
শ্রুকারোদনারারণ ভূমা, এম্-এ, বি-এল, এড্ডোকেট, কলিকাতা
হাইকেটি, প্রণীত। "অষ্টাবিংশতি কলিম্গে ৫০০৪ মপুব্যাদ্দেশ
প্রকাশিত। প্রকাশক বেধি হয় গ্রন্থকার নিজেই, কেননা তাহার কোন
উল্লেখ নাই।

নামেই ঐছথানার পরিচর রহিয়াছে। বাংলা টীকাটি স্হজ্বোধা ও সুথপাঠ্য হইয়াছে।

শ্রীউমেশচন্দ্র ভট্টাচার্যা

বিদ্রোহী বালক—গ্রীমোগেল্রনাথ ওপ্ত প্রমীত। প্রকাশক— শ্রীম্থাংগুলেখর ওপ্ত, ১০ ইল্ল রায় রোড, কলিকাতা। মূল্য এক টাকা।

এছখানি শিশুগাঠ্য উপঞ্চাস। ইহার মট বিলাতী, করেকটি চরিত্রেও খাঁটি বিলাতী। সেজস্ত এ-দেশের আবহাওরার তাহারা নিতান্ত বেমানান, এমন কি অন্তৃত। তবে গল্পটি প্রথম দিকে জমিরাছে বেশ; কিন্তু মাঝ হইতে শেব অবধি সেরূপ নর।

ছাপা ও কাগজ ভাল। প্রচ্ছদণটবানি বৰ্জন করিলে ভাল ইইত।

লক্ষ্যহারী— একেজমোহন বন্দ্যোপাধ্যার প্রশ্নীত। প্রকাশক— গোলাপ পাবলিশিং হাউস, ১২ হরীতকী বাগান লেন, কলিকাতা। মূল্য দেড় টাকা।

একথানি উপজ্ঞাস। দেশের ছঃখ-দারিন্ডো লেখকের গভার বেদনাবোধ ইহাতে জার্মত ; আর, ভাহাকেই আশ্রর করিরা প্রহুথানি স্বটিত হইরাছে। এ-শ্রেণীর উপক্রাস আমানের সাহিতো অতি অল। লেখকের উক্ষেপ্ত প্রশাসনীর। ছাপ্! ও কাগন্ত ভাল।

স্থাস্পরী — জীগদাধরসিংহ রার প্রণীত। শুরুদাদ লাইবেরী। ২০৭১।১ কর্ণপ্রবালিস্থাটি, কলিকাতা। মূলা। । এরাক নাটিকা।

রাজা গণেশ — শ্বীক্রেশচল মজুম্দার প্রণীত। প্রকাশক— বিজয়া সাহিত্য-মন্দির, কাশীধাম ও রাজসাহা ! দাম এক টাকা। নাটক।

শ্রীখগেন্দ্রনাথ মিত্র

উনপঞ্চাশং---- গ্রীগোপালদাস চৌধুরা প্রণীত। প্রকাশক---শ্বীবোপেক্রক্ষার চৌধুরী, এম-এ, বি-এল, ৩০ বীডন রো, কলিকাত!। পৃষ্ঠা ১২৮, মূলা বারো আনা!

গ্রন্থে উনপঞ্চালটি গান স্বর্জাপিসং প্রকাশিত ইইয়াছে। গ্রন্থকার ক্রমিণার, তাঁহার বন্ধু সঙ্গতিরছ জীগুক্ত বংগক্রনাথ মিত্র মহাশ্রম ভূমিকার গিবিয়াছেন—''গোপালদাস বাবুর এই সঙ্গাতগুলিতে প্রতিভার যথেষ্ট পরিচর বিদ্যমান রহিয়াছে।" ছুংথের বিষর, আমরা তাঁহার এই মন্তব্য সমর্থন করিতে পারিলাম না। গানগুলি মোটামুটি ভাল, এতদধিক প্রশংসার দাবি এই গানগুলি করিতে পারে না। জীযুক্ত ক্রিকেচক্র নন্দী গানগুলির হ্বর-যোজনা ও স্বর্জাপি করিরাছেন। তাঁহার স্বর্জাপি-প্রণালী অতি হ্বন্দর ও সহজে বোধসম্য। পুরুক্ধানা সঙ্গীতশিক্ষাধীর অনেক উপকারে আসিবে বলিয়া আমরা আশা করি।

শ্রীকামিনীকুমার ভট্টাচার্য্য

বাঙ্গালার পল্লীসংস্কার ও বেকারের উপায়— শ্রুমারলাপ্রসাদ দত্ত প্রণীত। প্রকাশক—শ্রীবনবিহারী চৌধুরী; ৭৮/১ ছারিসন রোড, কলিকাতা। পৃষ্ঠা ৬৮/০ মূল্য তুই আনা।

লেখক নিজের অভিজ্ঞতালক বিষয়সমূহ পৃস্তকে লিপিবছ করিয়! পানীসংস্কারকামীদের বিশেষ উপকারসাধন করিয়াছেন। বেকার-সমস্ত। বাংলার একটি কটিন সমস্তা। ইহার সমাধানকল্পে যতই আলোচনা হয় ততই ভাল। পৃস্তকগানিতে এ-বিষয়ে চিস্তার গোরাক যথেষ্ট মিলিবে।

শ্রীযোগেশচন্দ্র বাগল

বাস্কারভিল-কুকুর--- শ্রীকুলদারপ্লন রার। এম-সি,-সরকার এণ্ড সন্গ নিঃ কর্ত্তক প্রকাশিত। মূল্য ১৮০।

এই বইটি প্ৰসিদ্ধ লেখক কৰাৰ-ডায়েলের ইংরেজী ডিটেক্টিভ

উপজ্ঞানের অথবাদ। কুলদা বাবুর অথবাদে মূল বইরের চিন্তাকর্ধণশক্তিপার সমস্তই বজার আছে। ছেলে-বুড়া সকলের কাছেই এইরূপ বইরের সমান আদর পাইবার কথা। মূল বই পাশচাড় জগতে বিখ্যাত, এতদিনে এদেশেও তাহার খ্যাতি বিভার হইবে বলিরা মনে হয়। কুলদা বাবুর বিশেষণ্ড এই বে তিনি নির্দ্ধোবভাবে লিখিত রোমাঞ্চকর বিবর্দ্ধা বাংলা পাঠকের কাছে অনেকবার দিয়াছেন। আলোচ্য বইটিও সেই পর্বারে পড়িবে।

দক্ষিণ ভারতের তীর্থপ্রাসক — জ্ञারদাপ্রসর দাস।
২°1১ জাটিস্ চক্রমাধব রোড হইতে গ্রন্থকার কর্তৃক প্রকাশিত।
মূল্য ২১ টাকা।

ইহা অমপুরুৱান্ত। ইহাতে মাল্লাজ প্রদেশ, ত্রিবাছুর, কোচিন **ও** মহিশুরের ন্যুনাধিক দেড় শত তীর্থস্থানের বিবরণ লিপিবদ্ধ হইয়াছে। ইহাদের মধ্যে অতি অল্প কল্পেকটি তীর্থের বিবরণ ইতিপূর্বেব বাংলা পুত্তকে ও মাসিকপত্তে প্রকাশিত হইরাছে। দক্ষিণ-ভারতের একটি বিশুদ্ধ মান্চিত্ৰ এই পুস্তকে সংযোজিত হইরাছে, তাহাতে সমস্ত রেলপথ ও প্রধান প্রধান তীর্থ প্রদর্শিত হইয়াছে। এই গ্রন্থে তিনটি পরিশিষ্ট সন্নিবিষ্ট ২ইয়াছে, প্রথমটিতে ভৌগোলিক বিবরণ, দ্বিতীয়টিতে প্রধান প্রধান তীর্থসমূহে ভ্রমণের ক্রম, এবং তৃতীয়টিতে দক্ষিণ-ভারতে অচলিত চারিটি ভাষার প্রয়োজনীয় অনেক শব্দ ও তাহাদের বাংলা প্রতিশব্দ প্রদত্ত হইরাছে। এই পুস্তক পাঠ করিলে পরবর্তী ভ্রমণকারীর অনেক থবিধা হইবে:। কেবল ভ্রমণকাহিনী হিসাবে এই গ্র:মুব্ধ উপযোগিতা নহে, যাহাতে এই পুস্তক পাঠ করিয়া পাঠক বর্ণিত তীর্থসকলের মহিমা উপলব্ধি কবিতে এবং তাহাদের মাধ্যা আখাদন করিতে পারে তাহার দিকে লেখক মহাশর বিশেষ লক্ষ্য রাখিয়াছেন। তিনি ভীর্থমাহান্মা বর্ণনা করিতে করিতে বহু ভক্তি-ভাৰোদ্দীপক কৰিতা গান ও সংস্কৃত শ্লোক উদ্ধৃত কৰিবাছেন, তাহাতে তাঁহার রচনায় একটা বিশেষ মাধুর্বা ও হুদয়গ্রাহিতা ফুটিয়া উঠিরাছে। এই তীর্থগুসঙ্গ পাঠ করিতে করিতে মনে হর যেন কোন ভাবুক ভক্ত তীৰ্থমাহাস্থ্য কীৰ্ত্তন কব্লিতেছেন। গ্ৰন্থের ভাষা বেশ সরল এবং ভ্রমণবৃত্তান্ত-বর্ণনার একান্ত উপধোগী। শীমৎ শব্দরাচার্য্য ও ভারতের চারি জন প্রধান বৈক্ষরাচার্য্যের সংক্ষিপ্ত জীবনবভাস্ত সন্ধিবিষ্ট হওয়াম এই গ্রন্থের উপযোগিতা আরও বেশী হইয়াছে। বাংলা ভাষায় এইরূপ গ্রন্থ অতি বিরুল এবং ইহারু[,] সমধিক প্রচার বিশেষ বাস্থনীয়৷ কাগজ, ছাপা ও বাধাই অতি সন্দর হইরাছে।

শ্রীসুকুমাররঞ্জন দাশ্

অভিনৰ মেঘদূত এবং কালিদাসের অবমাননা*

ঞ্জীবীরেশ্বর সেন

মেষ্দৃত কালিলাসের এক চমৎকার সৃষ্টি। ইহার কবিছ যেমন অসাধারণ, ভাষার গৌল্পও তেমনই, বরং ইহার ক্রিছ অপেকা ইহার ভাবার পৌরবই অধিকতর চিত্তাকর্ষক ৷ কালিখাস বেমন কবি ছিলেন তেমনই ভাষার উপরও তাহার অসাধারণ আধিপত্য ছিল, কিন্তু তিনি যে নেখ্যুতের শ্বচনার অনবদ্যভাবে শব্দ-নির্বোচন করিয়াছেন সেই বিষয়ে প্ৰি:তন্ন একমত। এ-পৰ্যা**ন্ত কোন পণ্ডিতশ্বস্ত লোকই** এমন কৰা বলেন নাই যে মেৰ্দুতের ভাষায় দোষ আছে এবং তাহার সংশোধন হইতে পারে, তবে ভিন্ন ভিন্ন হন্তলিখিত পুন্তকে মেবদূতের করেকটা তানে ভিন্ন ভিন্ন পাঠ দেখিরা মনে হইতে পারে যে কালিদাসের ভাষার সেই সেই হানে হুষ্টু ছিল না ব্যলিয়া অন্ত লোকে ইচ্ছা করিয়া পরিবর্ত্তন করিয়া দিয়াছে। কিন্তু এই সকল পাঠ-ভেদের অল্প কারণও পাকিতে পারে। এক জনের হস্তাক্ষর আর এক জন কোন কোন স্থানে পড়িতে না পারিয়া সেই সেই স্থানে নুতন পাঠ প্রস্তুত করিয়া দিরাছেন। অধিকতন্ন সম্ভাবনা এই বে মেম্পুত ন্নচিত হইলে গুণগ্ৰাহিগণ তাহার প্রতিলিপি লইবার পর কালিদাস নিজেই তাহার সংস্কার করিয়া কোন কোন খলে কিছু কিছু পরিবর্ডন করিয়াছিলেন, এইরূপ হইরা পাকিলে মেবদূতের যত পাঠ-ভেদ দেখা বায়—সে**গুলি সমন্ত**ই কালিদাসের নিজের এবং সেই সকল পাঠ-ভেদের যেগুলি উৎকুষ্ট তাহাই কালিদাসের শেষ সংস্করণের ফল! কোন্ কোন্ পাঠ উৎকৃষ্ট তাহা মন্লিনাথ, ঈশ্বরচক্র বিদ্যাসাগর এবং অক্সান্ত বহু পণ্ডিত ঠিক করিরা

ভাহাদের নিৰ্দ্ধারিত পাঠই বহুকাল হইতে বিশুদ্ধ পাঠ বলিয়া চলিয়া আসিতেছে। তাঁহায়া কেহই নূতন পাঠ প্রস্তুত করেন নাই। এ-পর্যান্ত কেহই উদ্ধৃত্য প্রকাশ করিরা এমন কথা বলেন নাই যে প্রচলিত মেবদূতের অমুক অমুক স্থানে উক্ত মহোদরগণের পাঠ-নিৰ্ব্বাচন দোষ-শুষ্ট হইয়াছে এবং কেহই নৃতন পাঠ এণ্ডভ করিয়া মেঘ্যত প্ৰকাশ কৰেন নাই। কিন্তু সম্ৰাতি এক জন বাঙালী এই কাৰ্য্য করিরাছেন। তিনি শ্রীপ্রবোধচক্র সেন। তিনি মেষ্দৃতের এক শতেরও অধিক স্থানে ভাষা পরিবর্ত্তন করিয়া মেবদুতের এক সংস্করণ প্রকাশ করিয়াছেন i স্বীয় ভূমিকায় তিনি লিখিয়াছেন, ''এই পুস্তকে বঙ্গদেশে প্রচলিত পাঠকে নির্বিকায়ে এহণ করা হয় নাই। আধুনিক বিচারের আলোকে পাঠ-সংস্থারের একটা চেষ্টা করা হইরাছে। সেই দারিছ সামারই। এই সংস্কান্ত-কার্য্যে প্রধানতঃ বল্লভদেবের ও জিনসেনের ধৃত পাঠের উপরই নির্ভর করিরাছি। যে-যে ছানে আমাদের পাঠ বাংলার অচলিত মনিনাধের পাঠ হইতে পৃথক হইরাছে তাহা এছের শেষে 'মেখদূত প্রসঙ্গে' উল্লেখ করিয়াছি . বল্লভদেবের পাঠ বে ময়িনাৰের পাঠের চেরে অধিকতর সঙ্গত তাও দেখান হইরাছে। প্রকিপ্ত দ্লোকগুলিকে সম্পূর্ণরূপে বর্জন না করিয়া মনিনাধ-ধৃত বহু প্রচলিত সমস্ত প্লোকগুলিই ব্লাখা হইল, তবে মন্নিনাথ নিজে বে-গুলিকে প্ৰক্ষিপ্ত ৰলিয়াছেন সেইগুলি সৰ্ই পব্লিতাক্ত হইয়াছে।……বে-সৰ জারগার বাংলা দেশের অভান্ত পাঠ এইণ করিলে কাৰো ভাবগত কোন অসম্বতি ৰটে না সে-সৰ স্থানে পাঠ পরিবর্ত্তন করা হয় নাই। ্ব-সৰ স্থানে ঐ অসম্বতি-দোষ ঘটে কেবল সে-সৰ স্থানেই পদ্মিবর্ত্তন

করা হইরাছে ও 'নেবদূত-প্রসঙ্গে' তাহা নির্দেশ করা হইরাছে। সম্পূর্ণরূপে পাঠ-সংঝার করিয়া বাঙ্লা দেশে মেবদূতের একটি নৃতন সংশ্বরণ প্রকাশ করিবার বিশেব প্রয়োজন এখনও রহিল।"

কিন্তু প্রবোধ বাবু শতাধিক স্থানে পাঠ পরিবর্তন করিয়া মাত্র সাতটা পরিবর্তনের কথা স্বীয় "মেছদূত-প্রসঙ্গে" স্বীকার করিরাছেন। ভালারও কোন্টা বলভদেবের, কোন্টাই বা জিনসেনের ভাহার উল্লেখ করেন নাই। এই সকল পরিবর্তনের বে হেতুবাদ বা কৈছিল দিরাছেন ভাহা ipsc dixit ভিন্ন কিছুমাত্র অধিক নর। ভাহার প্রভাক কৈছিরতেরই মর্ম এই বে ভাহার বিবেচনার ভাহার যুভ পাঠই সঙ্গত এবং স্বাভাবিক। ভাহার স্বীকৃত সাতটা পরিবর্তন ব্যতীত তিনি আরও যে শতাধিক পরিবর্তন গোপনে 'বেমালুম'ভাবে করিয়াছেন ভাহা কোন স্থানেই উল্লেখ করেন নাই। ভাহার পরিবর্তনে কিন্তুপ অপকর্য সাধিত হইয়াছে তাহা সংস্কৃত কাব্যের মর্ম্মন্ত পাঠকেরা বৃশ্বিতে পারিবেন।

প্রথমে প্রবোধ বাবুর স্বীকৃত সাতটা পরিবর্তনের আলোচনা করিরা পরে ডাহার গোপনে কৃত পরিবর্তনগুলি বিবৃত করিব।

প্রবোধ বাবুর স্বীকৃত পদ্মিবর্তন—(>) পূর্বমেদের বিতীয় প্লোকে 'কোতুকাধান হেতু' ছিল : প্রবোধবাবু সে স্থানে 'কেতকাধান হেতু' করিয়া দিরা লিখিরাছেন যে তাঁহার পাঠই ''অধিকতর সক্ষত মনে হয়। বর্ধাকালে কেতকা বা কেরাফুল কোটে।' প্রবোধ বাবু ভাবিলেন না বে বর্ধাকালে কেবল কেতকী বা কেরা কোটে ন'। নীপ, কক্ট, কৃটন প্রভৃতি বহু ফুলের নাম মেবলুতেই আছে। এইগুলির মধ্য হইতে কালিদাস মেবক্তেকল কেরা ফুলের আধান হেতু বলিবেন কেন? অন্ত পক্ষেবর্বের আগমনে বে-কোন লোকের মনে অনস্ত কৌতুক বা কৌতুকল বা বিশ্বর উৎপাদন করে ইহা কেহই অবীকার করিবেন না।

- (२) নবম লোকে যক মেঘকে বলিতেছেন—'চাতক তে স্বগন্ধ' অর্থাৎ
 চাতক তোমার নিজেরই লোক: এরপ বলার কবিত্ব আছে, কিন্তু
 প্রবোধবাব এই পাঠছলে পাঠ দিরাছেন 'চাতক তোর গৃধু;'। এই পাঠে
 কবিছের লেশমাত্রও নাই! প্রবোধ বাবু ভাবিরাছেন 'তোর গৃধু;'ই
 পাঠ ছিল, লিশিকর-প্রমাদে 'তে স্বগন্ধঃ' হইর! গিরাছে। তিনি
 ভাবিরাছেন ইহা অপেকা বলবং প্রমাণ আর কি হইতে পারে।
 শক্তলার ত্বান্ত বলিতেছেন বে হরিণগুলা শক্তলার স্বগন্ধ এইজন্ত
 শক্তলা হরিণ ভালবাদেন।
- (:) ৰত্ৰিশ প্লোকে প্ৰবোধবাৰু 'ধূপ' ছানে 'ধূম' পাঠ দিলাছেন। কালিদাস যে এখানে ধূপ পৰা ছারা লক্ষণা নামক অলভার-প্রয়োগ করিরাছিলেন প্রবোধবাৰ তাহা ভাবিতে পারেন নাই। বর্তমান সময়ে আমরা ভাষাক খাওয়ার কথা বলি কিন্তু বাত্তবিক পক্ষে লোকে ভাষাকের ধুমই সেবন করে।
 - (৪) এই লোকের 'লক্ষীং পশান্' ছলে প্রবোধ বাবু 'নীছা রাত্রিং' পাঠ

শ্রীপ্যারীযোহন দেনগুপু কৃত বাংলা "নেষদৃত" সহিত মুক্তিত
ক্রীপ্রবোধচন্দ্র দেন সম্পাদিত সংকৃত ভাগের সমালোচনা।

ৰানাইরা দিরা এই বলিরা কৈকিরৎ দিরাছেন, "লক্ষ্মীং পশুন্ পাঠের কোন সদ্ধত অর্থই হর না। অধ্যাপক কে. বি. পাঠকও মিন্নিনাধের এই পাঠ গ্রহণ করিতে পারেন নাই।" 'লক্ষ্মী' শব্দের অর্থ বে 'শোভা' হর তাহা প্রবোধ বাবু অভিধান দেখিলেই জানিতে পারিতেন। হর্দ্মা অর্থাৎ প্রাসাদের লোভা দেখিতে বলার অসক্ষতিষ্টা কোখার হইরাছে? অধ্যাপক কে. বি. পাঠকও কি 'লক্ষ্মীং পশুন্' পাঠ কাটিরা দিরা নৃত্রন পাঠ সংবোজন করিরা মেবলুত ছাপাইরাছেন? যদি তাহা করিরা থাকেন তাহা হইলে পাঠক-মহালয়ও কম ধ্যুর্জর নহেন। সমস্ত চর্গাট এই 'লক্ষ্মীং পশুন্ ললিত বনিতা পাদরাগন্ধিতেরু।' ইহার অর্থ এই বে বন্দরী নারীদিপের পদচিহ্নুক্ত বাড়ীর শোভা দেখিরা। এখানে লক্ষ্মী শব্দের পর ললিত শব্দ থাকায় অর একট্ অমুপ্রাস হইরাছে। মেবলুতের প্রায় প্রত্যেক রোকেই অরাধিক অমুপ্রাস আছে ও প্রবোধ বাবুর পাঠে ই অমুপ্রাস নষ্ট হইরাছে। 'রাগান্ধিতেরু' শব্দটা বে পূর্ব্ব চন্ধণের 'হর্মোযু' শব্দের বিশেষণ প্রবোধ বাবু এবং পাঠক-মহালয় তাহা বুর্বিতে পারেন নাই।

- (c) একান্ন লোকে 'পশ্চাৰ্দ্ধলম্বী' মনে প্ৰবোধ বাবু 'পূৰ্বাৰ্দ্ধলম্বী' ক্ষিয়া দিয়া লিখিয়াছেন, ''এই পাঠ সম্পন্ত কারণবশতঃ পশ্চাৰ্দ্ধলম্বী পাঠের চেয়ে অধিকতর সম্পন্ত।'' কেন, তাহা লেখা প্ৰবোধ বাবু উচিত মনে করেন নাই।
- (৬) একষট্ট রোকে 'বলয়কুলিশেশঘট্টলোদগীর্ণভোরং' কাটিয়া দিরা প্রবোধ বাবু পাঠ দিরাছেন 'জনিতসলিলোলাার মন্তঃপ্রবেশান্।' এই পাঠ সম্বন্ধে বলিভেছেন যে প্রচলিত পাঠাপেক্ষা ইহা ''জনেক শান্তাবিক ও সঙ্গত বলিয়া মনে হয়।'' তিনি আরও লিখিয়াছেন, ''হিনালয়ের নানা স্থানে মেশ্ব শ্রের ভিতর প্রবেশ কল্পিয়া মুক্তিপাত করে তাহাতে ঐ গৃহ সভ্য-সভাই যন্ত্রধারা গৃহত্ব প্রাপ্ত হয়।'' পাঠ-পরিবর্জনের চমৎকার যুক্তি!
- (৭) উত্তর মেম্বের একাদশ লোকের 'তান পরিসরছির স্ট্রেশ্চ হারৈ:' কালিদাসের এই পাঠের পরিবর্ত্তে 'স্ক্রালগ্রন্তন পরিমলৈন্ছির স্ট্রেশ্চ হারৈ:,' করিয়া দিয়া প্রবোধবাবু লিখিরাছেন যে তাহার করিত পাঠ ''অধিকতর সঙ্গত ও ঝাভাবিক। পরিমল মানে চন্দনপর প্রভৃতি মর্দ্দনজাত স্থান্ধ অম্লেপন। মেরেরা তানেও পরিমল লেপন করিত। গতিকম্পানে স্তা ছি ডিরা যাওয়ার পথে হারের বৃক্তা পড়িরা রহিয়াছে, এবং ঐ মুক্তার তানের পরিমল লাগিরা রহিয়াছে।''

আমার দৃঢ় বিখাস যে উমিধিত সাতটা পরিবর্তন যাহা প্রবোধ বাবু প্রকাশাভাবে করিরাছেন তাহার একটাও বরভদেবের অথবা জিনসেনের বৃত পাঠ নহে, কেন-না পূর্বকালীন আচার্যাগণ মোটেই কাওজ্ঞানহীন ছিলেন না ৷ অতিদান্তিকতাবশতঃই প্রবোধ বাবু কালিদাসের উপর কলম চালাইরা এই সকল অপপাঠ সৃষ্টি করিরাছেন ।

প্রবোধ বাবু বে-সকল পরিবর্জন গোপন ভাবে করিরাছেন অর্থাৎ এমনভাবে করিরাছেন যে বাহারা প্রথমবার মেঘদুত পড়িতে ইচ্ছা করিরা তাহার সংকরণ পড়িবে তাহারা ভাবিবে যে তাহারা কালিদাসের স্বপ্রচলিত রচনাই পড়িতেছে এবং সন্দেহ মাত্র করিবে না যে তরাধ্যে আন্তেরও কৃতিছ আছে। এখন আমি সেই সকল পরিবর্জনের কথাই বিশিব। এই সকল পরিবর্জনের সংখ্যা এক শতেরও অধিক হইবে। এইরূপে কোন বিখ্যাত গ্রন্থকারের ভাবা কাটিরা দিয়। তৎস্থানে ক্রপিত পাঠ দিয়া পুর্ব করিবা পুত্তক ছাপাইরা বিক্রর করিবে ক্রেভাগণকে প্রতারণা করা হর কিনা তাহা পাঠক বিবেদনা করিরা দেখিবেন।

পূর্বমেযে গোপনে ক্বত পরিবর্ত্তন

- >। দশম প্লোকে 'সন্যঃশান্তি' ছলে অবোধ বাবু 'সন্তঃপাত' পাঠ দিয়াছেন।
- ২। বোড়শ রোকের 'ব্রজনপুস্তিঃ' ছানে প্রবোধ বাবু 'প্রবলমগতিম' এই জ্বপ্ত পাঠ দিয়াছেন।
 - । বিশ লোকে 'জয়ৢক্প্ল' ছানে প্রবোধবাবুর পাঠ 'য়য়ৢয়ও'।
 - ৪ | একুশ শ্লোকে 'নবজ্বল' ছলে 'জললব' এই দেওয়া হইয়াছে ।
- েতেইল লোকে 'পরিশত ফল' ছলে 'ফল পরিশতি' পাঠ দেওয়:
 হইরাতে।

উপরি উক্ত পাঁচটি পরিবর্ত্তন প্রবোধ বাবু কিরুপ বিচারালোকের সাহাব্যে সম্পন্ন করিরাছেন জানিতে ইচ্ছা হয়। কালিদাসের যে পাঠ ছিল তাহাতে প্রবোধ বাবু কি দোষ দেখিয়াছিলেন যে সেই পাঠ কাটিয়া নুত্রন পাঠ-বানাইয়া দিয়াছেন ?

- ৬। ছাব্দিশ লোকে 'নগনদী' ছানে প্রবোধ বাবুর পাঠ 'বননদা' : পার্বতা নামে একটা নদাকেই যে কালিদাস নগনদী নামে অভিহিত কল্পিয়াছেন, সে-বিষয়ে সন্দেহের অবকাশ নাই।
- १। বৃত্তিশ লোকে 'থেদং নয়েখাঃ' কালিদাসের এই পাঠ কাটিয়া
 দিয়া 'থিয়াভয়ায়!' পাঠ প্রস্তুত করা হইয়াছে।
- এই লোকে অপর ছুইটি পরিবর্তনের কথা পূর্বেই উল্লিখিত। হুইরাছে।
- দ। তেত্ৰিল লোকে কালিদাসের 'ৰীক্ষ্যমান' স্থলে 'দৃগুমান' পাঠ দিরাছেন। দৃগুমান বলিলে 'সাধারণভাবে দেখা' বুঝার, 'বাক্ষ্যমান' ৰলিলে 'মনোযোগের সহিত দেখা' বুঝার।
- ৯। সাঁই ত্রিশ লোকে 'তোরোৎসর্গাৎ' ছলে 'তোয়োৎসর্গ'। ইহাতে অর্থের অপকর্ষ হয় নাই বটে কিন্তু উৎকর্ষও কিছুমাত্র হয় নাই।
- > । একচলিশ শ্লোকে 'বিবৃত' কলে 'পুলিন' গাঠ দেওরা হইরাছে।
- ১১। বিয়ারিশ প্লোকে কালিদাসের 'ধ্বনিত' ছানে প্রবোধ বাবু 'স্তনিত' পাঠ দিয়াছেন।
- ২২। পাঁরতানিশ লোকে কালিদাসের 'সর বন ভব' ছলে প্রবোধ বাবু 'সরবন ভূব' পাঠ দিরাছেন। স্বন্দ বা কার্ত্তিকেরের জন্ম সরবনে হইয়াছিল বলিরা তাহাকে সরবনভব বলে। কিন্তু প্রবোধ বাবু নিশ্চরই এই ভাবিরাছেন বে সরবনটা স্কন্দের জমিদারী ছিল। এরূপ না ভাবিলে তিনি 'সরবন ভূব' পাঠ প্রস্তুত করিলেন কেন ?
- ২০। সাতচনিশ নোকে কালিদাসের 'কুকাশার' ছলে এবোধ বাবু। 'কুফসার' পাঠ দিরাছেন। 'ল' ই বে টেক সে-বিষয়ে মন্তিনাধের মন্তব্য জন্তব্য। এখানে কুকসার মুগের কোন প্রসঙ্গ নাই।
- ১৪। আটচন্নিশ লোকে 'অভ্যবৰ্থ' পাঠ কাটিরা প্রবোধ বাবু 'অভাসিক্ষ্থ' পাঠ বসাইরা দিরাছেন। অলধারা বৰ্বণ এবং অল্যধারা বৰ্বণ লোকে বলিরা থাকে। কিন্তু অল্যধারা সিক্ষ্য কথনও হইন্ডে-পারে না।
- >০। উনপ্ৰাশ লোকে চতুৰ্থ চয়তে 'গুল্ব' কাটিলা 'বচ্ছ' পাঠ বসাইলা দিলাছেন।
- ১৬ । একাল্প লোকে কালিদাসের 'অসৌ' পাঠ কাটিয়া দিয়া প্রবোধ বাবু 'গা' পাঠ দিয়াছেন । বদি 'গা' থাকিত তাহা হইলে প্রবোধ বাবু নিশ্চরই অসৌ করিয়া দিতেন।
- ১৭। বাহার লোকে 'জঅ' কাটিল দিরা প্রবোধবাবু 'রস্যাং' পাল ব্যাইরা দিরাছেন।

১৮-২৭। চুরাম্ন রোক্ষের এথম ছুই চরণ ছিল:— বে সংরক্তোৎ পতন রগুসা বাঙ্গ গুজার তামিন্ মুক্তাধানং সপদি শরতা লক্ষরেমুর্তবস্তম্।

প্রবোধ বাবু তৎস্থলে করিয়াছেন---

বে ত্বাং মৃক্ত ধ্বানমসহনাঃ কারভঙ্কার তন্মিন্
দর্পোৎসেকাত্বপরি শরভা লজ্বরিবাস্ত্য লজ্ব্যম।

আবার তৃতীয় চরণে 'পাদ' শব্দ ছানে 'হাস' করিরা দিরাছেন। কালিনাস মেন্দৃতেরই অক্সত্র খেতবর্ণ কেনের সহিত হাজের তুলনা করিরাছেন। করিরাছেন। প্রবাধ বাবু বৃষ্টির সহিত হাজের তুলনা করিরাছেন। জাহাকে ক্সিপ্রামান কাহাকে বলে? কালিদাস বিধিলিঙের প্ররোগ করিরা একটা সন্তাবনা বা চেষ্টার কথা বলিরাছেন, কিন্তু প্রবোধচক্র লৃঙ্ প্ররোগ করিরা বাহা লজ্পন করা বার না তাহাকেই লজ্পন করাইয়াছেন।

২৮-: ৯। পঞ্চার প্লোকের বিত্তীর চরণে 'উপচিত' স্থলে 'উপহত' করা হইরাছে। চতুর্থ চরণে 'সংক্রস্তে' স্থলে 'কল্লস্তেংস্ত' পাঠ দেওরা হইরাছে।

৩ - - ৩ । ছাপ্লাল্ল লোকের দ্বিতীয় চর: গংসক্ত' ছানে 'সংরক্ত' করায় কেবল যে অনুপ্রাস নষ্ট হইয়াছে তাহা নহে অর্থেরও কিছু পার্থক্য হইয়াছে। তৃতীয় চরণে 'নিছ্লি' হলে 'নিছ্লি' এবং ক্লেরের্' ছলে 'কলরাক্' এবং চতুর্থ চরণে 'সমগ্র' ছলে 'সমন্তঃ' এই পাঠ দেওয়া হইয়াছে।

৩৪। সাতাম লোকের তৃতীয় চরণে 'অনুসরেঃ' পাঠ ছিল, প্রবোধ বাবু সেধানে অভিসরেঃ পাঠ দিয়াছেন। অতএব মেনের যাত্রাটাকে প্রবোধ বাবুর মতে অভিসার বলা যাইতে পারে।

৩৫। উনবাট লোকের তৃতীয় চরণে কালিনাসের লিপিত 'শোভা' শব্দ কাটিয়া তৎস্থলে 'নীলা' শব্দ বসাইয়া দেওয়া হইয়াছে।

৩৬-০৯। ষাট প্লোকের প্রথম চরণে 'তস্মিন্' শব্দ কাটিয়া 'নীলং', দ্বিতার চরণে 'বিচরেৎ' কাটিয়া 'বিহরেৎ', তৃতীয় চরণে 'জলোম্মা' কাটিয়া 'জলোহস্তাঃ' এবং চতুর্থ চরণে 'পদস্থ' স্থানে 'স্থপদ' করা হইয়াছে :

৪•–৪৩; একষট্ট প্লোক ছিল,

ভত্ৰাৰশ্ৰং বলমকুলিশে। দ্বট্টলোদ্গীৰ্ণতোমং

প্ৰবোধ বাৰু করিয়া দিখাছেন—

তত্রাবশ্যং জনিতসলিলোলগারমন্তঃ প্রবেশান্।

88-88। বাবট্টি লোকে বিতীয় চরণে 'কামং' ছিল তাহার অর্থ সদৃচ্ছাক্রমে। প্রবোধ বাবু কল্লিরা দিয়াছেন 'কামাৎ' বাহায় অর্থ কাম-ভাব হইতে। তৃতীয় ও চতুর্গ চরণ এইরূপ ছিল,

ধূঘন করক্রম কিসলরান্তঃ শুকানীর বাতৈ নানা চেট্টের্জনদ ললিতে; নির্বিশেন্তং নগেক্রম্ । প্রবাধ বাবুদ্ধ পরিবর্জন এইরূপ,

> धूबन् वारेजः मजन शृवरेजः कत्नवृक्षाः छकानि ष्टांबाखिन्नः फाँग्रेक-विनगरः निर्वितमः भव्यज्य स्व ।

স্তরাং এক পূর্বনেষেই তিনি চুয়ারটা পরিবর্তন করিয়াছেন অবচ এই পরিবর্তনের কথা তাহার প্রকাশিত পুতকের কোনও ছানে । উল্লেখ করেন নাই।

শত:গর উত্তরমেৰে তিনি বে-সকল পদ্মিবর্তন না বলিরা কর্বাৎ গোপনভাবে করিয়াছেন তাহা বিবৃত করিতেছি।

উত্তরমেঘে গোপনে ক্লন্ত পরিবর্তন

>-২। বিত্তীর রোকের 'অলকে' ছলে 'অলকং' এবং 'আননে' ছলে 'আনন'। প্রবোধ বাবু নিশ্চরই ভাবিরাছেন বে 'অণুবিদ্ধ' শক্টা বিশেষণ এবং নির্কোধ কালিদাস ভূল করিরা বিশেষ্যরূপে প্ররোধ করিরাছেন:

এই ছুইট। পরিবর্গনে ক্লোকে যে ক্রমভক্ষ দোব হর তাহা প্রবোধ বাব্র বৃদ্ধিসমা হয় নাই। হত্তে, জলকে, জাননে, চূড়াপাশে, কর্পে এবং সামজে এই হয়টা শব্দেই কালিদাস সপ্তমা বিভক্তিদিয়াছিলেন, তাহার মধ্যে ছুইটায় প্রবোধ বাবু আধুনিক বিচায়ালোকের। সাহাব্যে সপ্তমা বিভক্তির লোপ করিয়াছেন। ইহাতে যে কেবল ক্রমভক্ষ হইয়াছে তাহা নহে, ভাষাগত ভুলও হইয়াছে।

:--। সপ্তম প্লোকে 'উচ্ছ্বুসিত' স্থানে 'উচ্ছ্বুসন', 'বিশাধরাণাং' স্থালে 'যক্ষাক্ষনানাং', 'কৌমং' স্থানে 'বাসং', 'রাগাৎ' স্থানে 'কামাৎ', 'প্রেরণাং' স্থালে 'প্রেরণাং' স্থালে 'প্রেরণাং' হলে 'প্রেরণাং'

কালিদাস যে 'উচ্ছু সিত' লিখিয়াছিলেন তাহার প্রমাণ এই যে আমরা এখন যতন্থানে অন্ভাগান্ত শব্দ ব্যবহার করি কালিদাস সেন্সমত স্থলেই ইত ভাগান্ত পদ ব্যবহার করিতেন। ইহার বাধে হর প্রায় এক শত দৃষ্টান্ত মেবলুত হইতেই সংগৃহাত হইতে পারে। করেকটা মাত্র দৃষ্টান্ত দিতেছি—গর্জিত, স্থলিত, কুলিত, প্রভৃতি স্থলে আমরাণ গর্জান, স্বলন, কুলন প্রভৃতি শব্দ প্রয়োগ করি।

৮-:•। অষ্ট্রম লোকের তৃতীয় চরণ 'জালমার্গৈং' কাটিয়া ছিয়া 'ব্যজালৈং' এবং চতুর্থ চরণে 'নিপুণাং' হুলে 'নিপুণাং' করা হইয়াছে।

১১-১৩। নৰম শ্লোকে প্ৰথম পংক্তিতে 'আলিঙ্গিড' ছানে 'আলিঙ্গন' এবং তৃতীয় চরণে 'চক্রপাদৈঃনিনীথে' ছানে 'চাভিতাশ্চশ্র- পাদৈঃ' করা হইয়াছে। '

১৯-১৬। এগার রোকে কালিদাসের 'পত্রচ্ছেট্নঃ' কাটিরা দিরা প্রবোধ বাবু 'রুপ্ডাচ্ছেট্নঃ' এবং 'মুক্তাঞ্জালন্তনপরিসর' কাটিরা দিরা 'মুক্তালগ্রন্থনার্থনিকঃ' করিয়া দিয়াছেন।

্ণ। অয়োদশ লোকে 'কিসলয়ান্' শুলে 'কিসলয়ৈঃ' কয়া হইয়াছে। -

:৮->৯। একবিংশ লোকে 'হরিণী' হলে 'হরিণ' এবং 'শ্রেকণা' ছলে 'শ্রেকণীঃ'।

२ - । चारिश्न झारक 'कानाथाः' इरन 'कानीबाः'।

২১–২২। তারবিংশ রোকে 'প্রিরারা' ছলে 'বহুনাং' এবং 'ব্যুসরণ' ছানে 'উপসরণ'।

২০। পঞ্চবিংশ রোকে 'তন্ত্রীমান্তাং' ছলে 'চন্ত্রীরাক্তা'।

২৪–২৬ ৷ 'বিহারদিবস' স্থলে 'এমনদিবস', 'স্থাপিত' স্থানে 'প্রস্তুত' এবং 'সংসক্তম' স্থলে 'সংবোগং' ৷

২৭–২৯। সংক্ষিণে ক্লোকে 'পীড়রেএ' স্থলে 'খেদরেএ', 'অলং' স্থতে 'অতঃ' এবং 'সৌধ' স্থলে 'আসরু'।

৩০। উন্ত্রিশ শ্লোকে 'ছানম্বন্তীং' হলে 'ছানম্বন্তাং'—এটি ছাপারু ভুলও হইতে পারে

৩১-৩২। ত্রিল লোকে 'অপিভবেৎ' ছলে 'উপনমেৎ'।

৩৩। একত্রিশ লোকে 'উব্ছেইনীয়া' ছলে 'উন্মোচনীয়া'।

৩৪। বত্ৰিশ মোকে 'গেশল' ছলে 'গেলৰ',

৩৫-৩৬। চৌত্রিশ স্লোকে 'কোভাৎচল' ছলে 'কোভাতুল'

্-৭-৩৮। ছত্তিশ লোকে 'বদিসা' স্থানে দরিতা, 'হুখা' স্থানে বদি।

৩৯–৪১। সাঁটনিশ শ্লোকে বিদ্যুৎগর্ভ স্থলে বিদ্যুৎগর্ভে, স্থিমিত স্থলে নিহিত, ধীয়ং স্থলে ধীয়ং ।

8২-৪৪। আটিরিল ব্লোকে সন্দেশৈ: ছলে সন্দেশাৎ, হানর ছলে মনসি, নিহিতৈ: ছলে নিহিতাৎ। এই লোকের পাঠ-পল্লিবর্তনটা মন্দ হয় নাই। কিন্তু তাহা হইলেও কালিদাসের পাঠাপেকা কিছুতেই উল্লেখনতে।

- 8 । हिस्म झारक खब्रनः एरल आब्रना।
- ৭৬। একচনিশ শ্লোকে প্রতম ছলে তমুচ। এই চ এখানে মোটেই ইইতে পারে না, কেননা তাহাতে ভাষার এবং ব্যাকরণে দোষ হয়।
 - ^{৪৭} বিয়ানিশ লোকে অদৃষ্ট স্থলে অগমা।
 - ৬৮। তেতানিশ রোকে চণ্ডি ছলে ভীক্ন।

বন্ধ বীয় প্ৰণয় কুপিতাৎ পড়ীয় কথা ভাবিতেছিলেন তাহা প্রবর্ত্তী লোক হইতে জানিতে পার' বায়। সেইজন্ত চণ্ডি বলিয়া সংঘাধন উপযুক্তই হইয়াছে। কিন্তু প্রবোধ বাবু উৎস্কা বলতঃ সে কথা ভাবিবার অবকাশ পান নাই।

- उरु । एक्टियिम श्रांत्क श्र्वाः इत्त श्र्वा ।
- 🕶। আটচঞ্চিশ লোকে নিতরাং স্থলে স্ভরাং।
- ৫-। উনপঞ্চাল লোকে শেষাণ্মাসান্ত্তে মাসান্তান্।
- ৫২ একান্ন লোকে ধাসিনঃ স্থলে হাসিনঃ।

::-:৪। বাহাম লোকে বিরহাৎ ছলে বিরহ, উএলোকাঃ

ছুলে উদগ্রশোকাঃ। তুলনীয়—ছিল কটেন, গুরুষহাশর কেটে করি:লন স্তকটিন।

উপসংহার

হুতরাং উত্তরমেন কালিদাস বে চুযান্নটি লোক রচনা করিরাছিলেন প্রবেধি বাবু তাহার চুরান্ন ছানে ভাবা পরিবর্তন করিয়া দিরাছেন। ইহা সাধারণ বাহাছরী নহে। পূর্কমেন্ডেও প্রবোধ বাবু চুরান্ন ছানের ভাবা গোপনভাবে পরিবর্তন করিয়াছেন। এতন্তির উত্তর মেন্ডে প্রকাশ্য ভাবে তিনি সাতটা পরিবর্তন করিয়াছেন, ফ্তরাং প্রবেধ বাবু কৃত পরিবর্তনের সংখ্যা এক শত পনের। আরও ছুই-চারিটা পরিবর্তন হরত আমার দৃষ্টিতে পড়ে নাই। এতগুলি পরিবর্তন করিয়া বই ছাপাইয়াও প্রবেধ বাবুর তৃথ্যি হয় নাই। কেননা তিনি ভূমিকার লিখিয়াছেন, যে 'সম্পূর্ণরূপে পাঠ সংক্ষার করিয়া বাঙ্লা দেশে মেষ্ট্তের একটি নৃতন সংক্ষরণ প্রকাশ করিবার বিশেব প্রয়োজন এখনও রহিল।"

ইহাতে বোধ হয় যে প্রবোধবারু কালিদাসকে নিভান্ত গর্মনত ছাত্র ভাবিরা তাহার রচনা কাটিয়া কুটিরা দিরাছেন্। কালিদাসকে বর্ধন প্রবোধ বাবু এমন নির্বোধ সর্মনতই মনে করেন, তথন কষ্ট করিরা তাহার রচনা প্রবোধ বাবুর প্রকাশ করাই একটা আশ্চর্যের বিষয়। যদি করিলেনই তাহা হইলে মোটে গাতটা পরিবর্জন করিরাছেন বলিরা বীকার করিরা অবশিষ্ট এক শত আটটা পরিবর্জনের কথা গোপন করিলেন কেন ?

দৃষ্টি-প্রদীপ

শ্রীবিভূতিভূষণ বন্দ্যোপাধ্যায়

দশম পরিচ্ছেদ

দেখতে দেখতে এখানে ছ-সাত মাস হয়ে গেল। এখানে সময় কাটে কোথা দিয়ে বুঝতে পারি নে। সকালে আথড়ার কাফ করি, বিকেলে গোটাকতক ছেলে নিয়ে ছোট একটা পাঠশালা করি, তাতে যা পাই উন্ধব বাবাজীর হাতে তুলে দিই। এক দিন মালতী আমায় বললে—ছেলে পড়িয়ে যা পান, তা আপনি উন্ধব-জাঠার হাতে দেন কেন? থাকা-খাওয়ার দক্ষন টাকা নেওয়া ত এখানে নিয়ম নেই, ও-টাকা আপনি নিজে রেখে দেবেন, আপনারও ত নিজের টাকার দরকার আছে। আমি বললাম—তা কি ক'রে হয় মালতী, আমি এম্নি খেতে পারি নে। আর আমি ত খাওয়া থাকা ব'লে টাকা দিই নে, বিগ্রহের সেবার জন্তে দিই। এতে দোব কি?

সেদিন মালতী আর কিছু বললে না। দিন-চারেক পরে আবার এক দিন ওই কথাই তুললে। টাকা আমি কেন দিই? আথড়া ত হোটেলখানা নর বে এখানে টাকা দিয়ে খেতে হবে? ওতে তার মনে বাখে। তা ছাড়া আমার ত টাকার দরকার আছে। আমি তাকে বৃধিরে বলি, টাকা না-দিতে দিলে আমার এখানে থাকা হবে না। চলে খেতে হবে। সেদিন খেকে মালতী এ-নিয়ে আর কিছু বলে নি।

পাড়াগাঁরের দিনগুলো অভ্ত কাটে। দীঘির পাড়ে রাঙামাটির উচু বাথে এ-সমরে একরকম মূল কোটে, ছারা প'ড়ে এলে মাঝে নাঝে একা গিরে বসি। বাগদীদের মেরেরা ইাট্পর্যাস্ত কাপড় ভূলে মাছ ধরে, আখড়ার গোরাল থেকে সাঁজালের খোঁরা ঘূরে ঘূরে ওড়ে—ভালের দীর্ঘ সারির ফাঁক দিরে এই সন্ধার কভদুর দেখতে পাই—দাদার দোকান,

দাদার বাতাসার কারধানা, সীতার খণ্ডর-বাড়ি, তুষারার্ত কাঞ্চনজ্ঞা, নিম্চাদের বৌ শৈলদি।…

মালতীর স্বভাব কি মধুর! কি থাটুনিটা থাটে আথড়ায়—এক দিন উচু কথা শুনি নি ওর মুখে—কারও ওপর রাগ দেখি নি—বাপের মেয়ে বটে!

আধড়ার ছোট একটা অবশ্ব-চারা আছে, উদ্ধব দাস রোজ লান ক'রে এসে গাছটা প্রদক্ষিণ করে, গাছটাতে জল দের। এ তার রোজ করাই চাই। এক দিন মালতীকে ডেকে বলি—তোমার উদ্ধব-জ্যাঠা পাগল নাকি? ও-গাছটার চারি পালে ঘোরার মানে কি? মালতী বললে—কেন ঘুরবে না; স্বাই ত আর আপনার মত নান্তিক না। অশদগাছ নারায়ণ—ওর সেবা করলে নারায়ণের সেবা করা হয়—জানেন কিছু? আমি বললুম—তাহ'লে তুমিও সেবাটা স্কুক্ষ ক'রে প্ণ্যি কিছু ক'রে নাও না সময় থাকতে? মালতী শাসনের স্থরে বললে—আছো, আছো থাক্। আপনি ও-রক্ম পরের জিনিষ নিয়ে টিটকিরী দেন কেন? ওদের ওই ভাল লাগে, করে। আপনার ভাল লাগে না, করবেন না। তা নয়, সারাদিন কেবল এর খুঁৎ ওঁর খুঁৎ—ছি, আপনার এ-স্বভাব সারবে কবে?

বলনাম—তোমার মত উপদেশ দেওয়ার মানুষের দেখা পেতাম যদি তাহ'লে এত দিন কি আর অভাব সারে না? তা সবই অদৃষ্ট !

কথা শেষ ক'রে দীর্ঘনিঃখাস ফেলতেই মালতী রাগ ক'রে আমার সাম্লে থেকে উঠে গেল।

বিকেলে কিন্তু ওকে আমার কাছেই আসতে হ'ল মাবার। নিকটে নকাশিপাড়া, গাঁরে একটা যাত্রার দল ছিল, তাদের অবিকারী এসে উদ্ধব দাসকে বলে—বাবাঞী, তিন মাস ব'সে আছি, বারনা-গন্তর একদম বন্ধ। দল ত আর চলে না। কাল্না থেকে ভাল বাজিরে এনেছিলাম—চোলকে বখন হাত দেবে, আঃ যেন মেঘ ডাকচে, বাবাজী। তা আপনাদের আধড়ার এক দিন শ্রামহন্দরজীউকে শুনিরে দিই। কিছু ধরচ দিতে হবে না, তেল তামাক আর কিছু জলধাবার—

— জ্বলধাবার-টাবার হবে না পাল-মশায়। তা ছাড়া আসর ধাটানো ওস্ব কে করে ? এখন থাক্। মালতী আমায় এসে বললে—উদ্ধব-জ্যাঠাকে বলুন, বাতে যাত্রাটা হয়। আমি জলখাবার দেব, জ্যাঠাকে সেজত্তে ভাবতে হবে না। আপনাকে কিন্তু আসরের ভার নিতে হবে। আমি বললাম—
আমার হারা ওসব হবে না। আমি পারব না।

মালতী মিনতির স্থরে বললে—লক্ষীট, নিভেই হবে।
যাত্রা বে আমি কতকাল শুনি নি! দেশের দলটা উৎসাহ
না-পেলে নই হয়ে যাবে। আপনি আসরের ভার নিলেই
আমি ওদের ব'লে পাঠাই।

- —না, আমি পারবো না, সোজা কথা। ভূমি ওবেলা ও-রকম রাগ ক'রে চলে গেলে কেন ?
 - —তাই রাগ হয়েছে বৃঝি? কথায় কথায় রাগ।
- —রাগ জিনিষ্টা তে!মার একচেটে যে! আর কারও কি রাগ হ'তে আছে ?
- —আছো, আমি আর কথনও ও-রকম করব না। আপনি বলুন ওদের—কেমন ত?

বাত্রা হরে গেল—মালতী ওদের ছানা থাওয়ালে পেট ভ'রে। বললে—বাবা রাস্তা থেকে লোক ডেকে এনে খাওয়াতেন আর আমরা মুখ কুটে বারা থেতে চাইছে, তাদের খাওয়াব না ? বলে ছোট ছোট ছেলেরা আছে, তারা রাত ক্ষেগে চেঁচিয়ে ভগু-মুখে ফিরে বাবে, এ কথনও হয় ?

মালতী ুঅনেক বৈক্ব-গ্রন্থ পড়েছে। সময় পেলেই বিকেলে আমার কাছে বই নিয়ে আসে, ত্-জনে পুকুর-পাড়ে গাছের ছারার গিয়ে বিসি। আমার হয়েছে কি, সব সমর ওকে পেতে ইচ্ছে করে, নানা কথাবার্তার ছল-ছুতোর ওকে বেশীক্ষণ কাছে রাখতে ইচ্ছে করে। কিন্তু বিকেলের দিকে ছাড়া সারাদিন ওর দেখা পাওয়া ভার। ওর কাছে ব্দ্ধের কথা বলি, সেণ্ট্ ফ্রান্সিসের কথা বলি। ও আমাকে প্রীচৈতন্তের কথা, প্রীক্ষের কথা শোনার।

এক দিন হঠাৎ আবিদার করা গেল মালতী বই লেখে।
কি কাজে পুকুরের গাটে গিয়েছি তুপ্রের পরে, দেখি
বাধানো-সিঁড়ির উপর জামগাছের ছায়ায় একখানা খাতঃ
প'ড়ে আছে—পাশেই দোয়াত কলম—খাতাখানা উপ্টে দেখি
মালতীর হাতের লেখা। এখানে ব'সে লিখতে লিখতে
হঠাৎ উঠে গিয়েছে। অভ্যস্ত কৌতৃহল হ'ল—না-দেখে

পারলাম না, প্রথমেই ওর গোটা গোটা মুক্তার ছাঁলে একটা দংশ্বত শ্লোক লেখা:—

অনর্পিত চরীং চিরাৎ করুণারবতীর্ণ: কর্লো

সদা জনমকন্দরে ক্রতু বং শচীনন্দনঃ

তার পরে রাধারুক্ষের দীদা-বর্ণন, বৃন্দাবনের প্রকৃতি বর্ণনা মাঝে মাঝে। খাতার ওপরে দেখা আছে— "পাষ্পুদ্দন গ্রন্থের অন্তকরণে দিখিত।"

দেখছি, এমন সময় মালতী কোণা থেকে ফিরে এসে আমার হাতে খাতা দেখে মহাব্যস্ত হয়ে বললে—ও কি? ও দেখছেন কেন ? দিন আমার থাতা—

আমি অপ্রতিভ হয়ে বলগাম—এইখানে পড়ে ছিল, তাই দেখছিলাম কার খাতা—

- --- ना मिन ७ (मथवात (या नाहे।
- যথন দেখে ফেলেছি তথন তার চারা নেই। কে জানতো ভূমি কবি! এ শ্লোকটা কিসের? মালতী সলজ্জ সুরে বললে— চৈতন্তচরিতামতের। কেন দেখছেন দিন—
- —শোনো মালতী—লিখছ এ বেশ ভাল কথাই। কিন্তু ভোমার এ লেখা সেকেলে ধরণের। পায়গুললনের অম্করণের বই লিখলে একালে কে পড়বে? তুমি আজকালকার কবিতার বই কিছু পড় নি বোধ হয়?

মালতী আগ্রহের স্থরে বললে—কোথার পাওরা যার, আমার দেবেন আনিরে? আমি ত জানি নে আজকালকার কবিতার কি বই আছে—আনিরে দেবেন? আমি দাম দেবো।

দাম দেওয়ার কথা বলাতে আমার মনে ঘা লাগল।
মালতী কাছে থেকেও যেন দুরে। বড় অজুত ধরণের
মেরে, ও একালেরও নয়, সেকালেরও নয়। এই পাড়াগাঁয়ে
মান্ত্র হরেছে, যেখানে কোন আধুনিকতার চেউ এসে
পৌছয় নি, কিন্তু বৃদ্ধিমতী এমন, যে, আধুনিকতাকে বৃন্ধতে
ওর দেরি হয় না। এমন স্থান্তর চা করে, প্রীরামপুরে
শৈলদিরা অমন চা করতে পারত না। নিজে মাছমাংস
ধার না, কিন্তু আমার জন্তে এক দিন মাংস্ রাঁধলে রালাঘরের
উন্নেই। আমার প্রায়ই বলে—আপনি বখন যা খেতে
ইচ্ছে হবে বলবেন। আপনি ত আর বৈক্ষর হন নি বে

মাছমাংস থাকেন না! আমায় বলবেন, আমি রেঁথে দেও এখন।

>

মালতী উজ্জ্বল ভামালী বটে, কিন্তু বেশ স্প্রী। ওর টান-ক'রে বাধা চূল ও ছেলেমাস্থের মত মুখন্তীর একটা নবীন, সতেরু স্কুমার লাবণ্য—বিশেষ ক'রে যখন মুখে ওর বিল্পু বিন্দু ঘাম দেখা দেয়, কিংবা একটা অজুত ভঙ্গীতে ও মুখ উচু ক'রে হালে—তখন সে বিজ্ঞানী, তখন সে প্রুয়ের সমস্ত দেহ, আত্মাকে স্লুন্রী মংভ্রনারীর মত মুগ্ম ক'রে ক্লের কাছের অগভীর জ্বল খেকে টেনে বছদুরের অথথ জলে নিয়ে যেতে পারে। কিন্তু ওর সে-রূপ যখন-তখন দেখা যায় না। কালেভন্তে দৈবাৎ হয়ত একবার চোখে পড়তে পারে। আমি একবার মাত্র দেখেছিলুম।

সেদিন সন্ধ্যার পরে সারাদিন খররৌজ ও শুমটের পরে উত্তর-পশ্চিম কোণ থেকে মেন্ উঠে সারা আকাশ জুড়ে ফেললে এবং হঠাও ভীষণ ঝড় উঠল। আথড়ার বাইরের মাঠে কাঠ, ধান, ছোলা, তুলো সব রোদে দেওরা ছিল। কেউ তোলে নি, আথড়ার আবার ঠিক সেই সন্ধ্যার সময়টাতে লোকজন কেউ নাই। আমিও ছিলাম না। মাঠের মধ্যে বেড়াচ্ছিলাম—ঝড় উঠ্তেই ছুটে আখড়ার এসে দেখি মালতী একা মহাবাস্ত অবস্থার জিনিষপত্র তুলছে। আমার দেথে বললে—দৌড়ে আলোটা জেলে আহ্ন, অন্ধ্যারে কিছু কি ছাই টের পাচ্ছি—সব উড়ে গেল—

সঙ্গে সঙ্গে এল বৃষ্টি · · ·

ওকে দেখলাম নতুন চোথে। কোমরে কাপড় জড়িয়ে সে একবার এখানে একবার ওখানে বিহ্যতের বেগে ছুটোছুটি করতে লাগল—অছ্ত কাজ করবার শক্তি—দেখতে দেখতে সেই বোর অন্ধকার আর রাজ্বৃষ্টির মধ্যে ক্ষিপ্রামিপ্রতার সঙ্গে অর্কেক জিনিষ তুলে দাওয়ায় নিয়ে এসে ফেললে। এদিকে আমি অন্ধকারে দেশলাই খুঁলে পাছিছ নে দেখে ছুটে এসে বললে—কোধার দেশলাই বেংধছিলেন মনে আছে? কোধা থেকে হাতড়ে দেশলাই বার করলে—তার পর সেই বাড়ের রাপটার মধ্যে আলো আলা—সে এক কাও। অন্ধকারে ছুলনে মিলে অনেক চেটার পরে শেষে ওরই কিবাতা ও কৌশলে আলো অল্ল।

আলো জেলে আমার হাতে দেশলাই দিয়ে আমার মুথের অসহায় ভঙ্গীর দিকে চেরে গলা কেমন এক ধরণে উচু ক'রে হেসে উঠল—ছুটোছুটির ফলে কানের পাশের চুল আলুথালু হরে মুথের ত্-পাশে পড়েছে, কুল্ল শ্রমোজল গওদেশে বিন্দু বিন্দু ঘাম। চোথে উজ্জল কৌতুকের হাসি—ত্-জনে মিলে আলো ধরাছি, ওর মুথ আমার মুথের অত্যন্ত কাছে—সেই মুহুর্তে আমি ওর দিকে চাইলাম—আমার মনে হ'ল মালতীকে এতদিন ঠিক দেখি নি, আমি ওকে নতুন রূপে দেখলাম, ওর বিজ্ঞানী নারী রূপে। মনে হ'ল মালতী সত্তিই কুন্দরী, অপুর্ব কুন্দরী।—কিন্ত বেশীক্ষণ দেখার অবকাশ পেলাম না ওর সের্মপে, আলো জেলেই ও আবার ছুটল এবং আমার আনাড়ি-সাহাব্যের অপেকা না ক'রেই বাকী জিনিব আধ-ভেজা, আধ-শুক্নো অবস্থায় অল্ল সময়ের মধ্যে দাওয়ার এনে জড়ো করলে।...

এক দিন পুকুরে সকালের দিকে ঘড়া বুকে দিয়ে সাঁতার দিতে দিতে মালতী গিয়ে পড়েছে গভীর জলে। দেই সময় আমিও জলে নেমেছি। আমি জানতাম না যে ও এ-সময়ে নাইতে এনেছে, কারণ সাধারণতঃ ও স্নান করে অনেক বেলায়, আখড়ার কাজকর্ম মিটিয়ে। নাইতে নাইতে একটা অস্পষ্ট শব্দ শুনে চেয়ে দেখি মালতী নেই, তার ঘড়াও নেই। আমি প্রণমে ভাবলাম মালতী মাঝপুকুরে ইচ্ছে ক'রে ডুব দিয়েছে বোধ হয়। বিশেষতঃ সে সাঁতার জ্ঞানে—কিন্ত থানিক পরে যখন ও উঠল না, তথন আমার ভয় হ'ল, আমি ভাড়াভাড়ি দেখানটাতে সাঁতার দিয়ে গেলাম, হাতড়ে **मिथ मानजी तारे, पूर्व मिरा अमिक-अमिक थुँकराज थुँकराज** ওকে পেলাম—চুলে কাপড় জড়িয়ে গিয়েছে কেমন বেকায়দায়, অভিকন্তে তাকে ভাসিয়ে নিজে ডুবে জল খেতে খেতে ডাঙার কাছে নিয়ে এনুম। মালতী তথন অর্ন-অচৈতন্ত, আমার ডাক শুনে আখড়া থেকে সবাই ছুটে এল—মিনিট পাচ-ছর পরে ওর শরীর হৃত্ব হ'ল। উদ্ধব বাবাজী বকলে, আমি বকলাম, সবাই বকলে।

এই দিনটা থেকে ওর ওপর আমার একটা কি যে মারা পড়ে গেল! সেদিন সন্ধ্যাকোনা কেবলই মনে হ'তে লাগল ও এখানে নিঃস্হান্ধ, একেবারে একা। ও স্কার ক্ষম্মে থেটে মরে। ওর বাপের ধানের জমির উপস্থ আধড়াহন্ধ বৈষ্ণব বাবাঙ্গীরা ভোগ করছে, কিন্তু ওর মুখের দিকে
চাইবার কেউ নেই? ও সকলের ময়লা জামা-কাপড় কেচে
বেড়াবে, ভাত রেঁধে থাওয়াবে—সর্বরকমে সেবা করবে,
ওকে ছেলেমান্ত্র পেরে স্বাই ওকে মুখের মিষ্টি ভোষামোদে
নাচিযে নিজেদের স্বার্থ যোল আনার ওপর সতের আনা
বজার রাখছে, কিন্তু ওর হ্রথ-ছঃখ কেউ দেগ্ছে? এই বে
আজ পুকুরের ঘাটে ভূবে মরে বাচ্ছিল আর একটু হ'লে
আমি যদি না থাক্তাম!

ভগবনে আমাকে এ কিসের মধ্যে এনে ফেললেন, এ কি জালে দিন-দিন জড়িয়ে পড়ছি আমি! এদের আথড়াতে যে বিগ্রহ আছেন, তাঁকে এরা মামুমের মত সেবা করে। সকালবেলা তাঁকে বাল্যভোগ দেওয়া হয়, হপুরের ভোগত আছেই। ভোগের পর হপুরে বিগ্রহকে থাটে ভাইয়ে মশারি টাভিয়ে দেওয়া হয়। বৈকালে বৈকালিক ভোগ দেওয়া হয়—ফল, মিটায়। রাত্রে আবার ধাটে ভাইয়ে মশারি টাভিয়ে দেয়—শীতের রাত্রে বিগ্রহের গায়ে লেগ, আশপানে বালিশ। উদ্ধব দাস বাবাজী সেদিন লাল শালু কাপড়ের ভাল লেপ ক'রে এনেচে বিগ্রহের ব্যবহারের জত্তে—আগের লেপটা অব্যবহার্য্য হয়ে গিয়েছিল।

এ-সব পুতুল-খেলা দেখলে আমার হাসি পার, সেদিন সন্ধার সময় একা পেরে মালতীকে বললাম—তোমাদের এতদিন হুঁস্ছিল না মালতী? ছেঁড়া লেপটা এই শীতে কি ব'লে দিতে ঠাকুরকে? যদি অস্থ-বিস্থ হ'ত, এই তেপাস্তরের মাঠে না ডাক্তার, না কবিরাশ্ব, দেখত কে তথন? ছিঁ: ছি:, কি কাও তোমাদের?

মালতী রাগে মুথ ঘুরিরে চলে গেল। ও এ-সব কণা আর কাউকে ব'লে দের না ভাগ্যে, নইলে উদ্ধব দাস আথড়া থেকে আমার বিদের ক'রে দিতে এক বেলাও দেরি করত না। অনেক কথা আমি বলি ওদের আথড়া সহস্কে, উদ্ধব দাস সহস্কে—যা অপরের কানে উঠলে আমার অপমানিত হয়ে বিদের হ'তে হ'ত, কিন্তু মালতী কোন কথা প্রকাশ করে নি কোনদিন। আক্রকাশ মালতী আমার দিকে একটুটেনে চলে ব'লে আথড়ার অনেকের কাছে দেটা চকুশুলের ব্যাপার হয়ে উঠেছে—আমি তা বুঝি।

একাদশ পরিচ্ছেদ

শ্রাবণ মাসের প্রথমে আমার পাঠদালা গেল উঠে। আর আমার এথানে শুধুহাতে থাকা অসম্ভব। মালতীকে এক দিন বলনাম—শোন, আমি চলে যাচ্ছি মালতী—

সে অবাক হয়ে বললে—কেন চলে যাবেন ?

—কতদিন এসেছি ভাবো ত এখানে ? প্রায় দশ মাস হ'ল—

মালতী চুপ ক'রে থেকে বললে—ঘুরে আবার আসবেন কবে ?

—ভগবান জানেন। নাও আসতে পারি।

মালভীর মুখের স্বাভাবিক হাসি-হাসি ভাবটা যেন হঠাৎ নিবে গেল। বললে—কেন আসবেন না? আথড়ার কত কাজ বাকী আছে মনে নেই? ওর মুখ দেখে আমার **জাবার মনে হ'ল ওর কেউ নেই, এখানে ও** একেবারে একা। ওকে বুঝবার মানুষ এই গ্রাম্য অশিক্ষিত বৈফব-বৈক্ষবীদের মধ্যে কে আছে? আমার কাছেই ওর যা-কিছু অভিমান আবদার থাটে—ওর মধ্যে যে লীলাময়ী কিলোরী আছে, সে তার নারীত্বের দর্প, গর্ব্ব ও অভিমান প্রকাশ ক'রে স্থ পার একমাত্র আমার কাছে—খামি তা জানি। তা ছাড়া, ও এখনও বালিকা, ওর ওপর আমার মনে কি যে একটা অনুকম্পা জাগে তথকে সকল তুঃখ, বিপদ থেকে আড়াল ক'রে রাখি ইচ্ছা **হ**য়। প্রাবণ মাসে নীল মেঘের রাশি দার-বাসিনীর চারি ধারের দিগস্তবিস্থৃত তালীবনশোভী মাঠের ওপর দিয়ে উড়ে যায় রোক রোক...আমি দীঘির ধারে मैं फ़िर्म मैं फ़िर्म सिथ, सिथ सिथ मत्न करू कि व्यनिर्मिष्ठे অস্পষ্ট আকাজ্ঞাজাগে—মনে হয় ছোট্ট কোন কলম্বনা গ্রাম্য নদীতীরে খড়ের ঘরে মালতীকে নিয়ে ছোট্ট সংসার পাতবো পামরা ছ-জনে এম্নি সব বর্ষা-মেছ্র প্রাবণ-দিনে ব'সে-ব'সে কত কথা বলব, কত আলোচনা করব, ওকে র'বাংতে দেব না, কাজ করতে দেব না, আমার কাছ থেকে উঠতে দেব না—কভ বিশাসের কথা, ভত্তির কথা, क्यात्नद कथा, छशरात्नद कथा, माधू-त्मार्खलद कथा, আকাশের তারাদের কথা—ও আমার বুরুবে, আমি ওকে ্রিড তা হবার নর। সালতী ওর বাপের

আধড়া ছেড়ে কোথাও যেতে পারবে না—আমি অনেকবার ঘুরিয়ে প্রশ্ন ক'রে ওর মনের ইচ্ছা বুঝেছি। আমি ওকে চাই একাস্ত আমার নিজন্ম-ভাবে—এধানে থাকলে ও দিনে রাতে কাজে এত ব্যস্ত থাকে যে ওকে সে-ভাবে পাওয়। অসম্ভব। এই আধড়াই হয়েছে ওর আর আমার মধ্যে ব্যবধান। আমি এখান থেকে ওকে নিয়ে য়েতে চাই। আমিও এধানে থাকতে পারব না চিরকাল। মালতীকে ভালবাসি, কিন্তু ওকে বিবাহ ক'রে এই রাঢ়-অঞ্চলের এক গ্রাম্য আধড়ায় চিরকাল.কি ক'রে কাটাবো বৈশ্বব-বৈশ্ববী সেজে? আমি ওকে নিয়ে যাব এখান থেকে।

এক দিনের একটা ব্যাপারে মানতীকে আরও ভাল ক'রে চিনলুম। দারবাসিনী গ্রামের বৃদ্ধ শস্থ্ বাড়ুয়ো চার-পাঁচ দিনের জরে মারা গেলেন। তিনি এখানকার সমাজে একঘরে ছিলেন—এটা আমি আগেই জানতাম। তাঁর একমাজ বিধবা কলাকে নিয়ে কি-সব কথা নাকি উঠেছিল—তাই থেকেই গ্রামে শস্থ্ বাড়ুয়ো একঘরে হন। শস্থ্ বাড়ুযো কোথাও থেতেন না, কারও সঙ্গে মিশতেন না, তাঁর হাতেও ত্-পর্সা ছিল—স্বাই বলত টাকার শুমর।

া বেলা পাচটার সময় মালতী এসে বললে—ভনেছেন ব্যাপার? শস্তু বাঁড়ুয়েকে এখনও বের করা হয় নি— আমি এতক্ষণ ছিলাম সেথানে। সেই ত্রপুর থেকে এক জ্ঞ লোকও ওদের বাড়ির উঠোন মাড়ার নি। মড়া-কোলে মেয়েটা হপুর থেকে ব'সে আছে —ওর মাত বাতে পঙ্গু, উঠতে পারে না। **আ**পনি আহ্ন, ছ-জনে মড়াত দোতলা থেকে নামাই—তার পর উদ্ধব-জ্যাঠাকে বলেছি আথড়ার লোকজন নিয়ে আমাদের সঙ্গে বাবে—ব্রাহ্মণের মড়া অপর জাতে ছুলে ওদের মনে কট হবে—তাই চৰুন আপনি আর আমি আগে নামাই-তার পর আমাদেরই নিম্নে যেতে হবে অজয়ের ধারে—পারবেন ত ? তিন জনে ধরাধরি ক'রে সেই ঘোরানো ও সঙ্কীর্ণ সিঁড়ি দিয়ে মড়া নামানো—ও: সে এক কাণ্ড আর কি! মালতী আর मञ्च वीजृ (यात्र त्यात्र नीत्रमा अक मिक्क-व्यामि व्यञ्ज मिक्क। नीत्रमा (मर्थनूम थ्व भक्त स्मात्र-चत्रस्म मान्छीत किस्त वड़--বছর বাইশ হবে ওর বরেস, মালতীর মত মেরেলী-গড়নের মেরে নয়, শক্ত, জোরালো হাত-পা, একটু পুরুষ-ধরণের।

মালতী থ্ব ছুটোছুটি করতে পারে বটে, কিন্তু ওর গায়ে তেমন শক্তি নেই। নীরদার সাহায্য না পেলে সেদিন

* গুরু মালতীকে নিরে মড়া নামানো সম্ভব হ'ত ব'লে মনে
হয় না। শেষপর্যান্ত গাঁরের লোক এল এবং ভারাই মৃতদেহ
খাশানে নিয়ে গেল। আমিও সঙ্গে গেলুম, মেয়েদের যেতে
হ'ল না, মালতী রইল নীরদার কাছে। নীরদা আমায়
বললে—দাদা, প্রান্ধের সময় কিন্তু আপনাকে সব ভার নিতে
হবে। আর কারও হাতে দিয়ে আমার বিখাস হবে না।
ক্রণি ত আছেই, আপনাকে অন্ত কিছু খাটাবো না,
ভাঁড়ারের ভার আপনাকে হাতে নিতে হবে, নইলে এ-সব
পাডাগাঁরের ব্যাপার আপনি ক্রানেন না।

বেশ ঘটা ক'রেই শ্রাদ্ধ হ'ল। মালতী বুক দিয়ে পড়ে কি খাটুনিটাই খাট্লে! মালতী তুমি আমার চোগ খুলে দিলে। ঘুম নেই, নাওয়া নেই, খাওয়া নেই, বদা নেই—কিদে কাঞ্জ সর্বালপ্রন্দর হবে, কেউ নিন্দে করবে না ওদের, কোন জিনিয় অপচয় না হয় ওদের, সে-ই একমাত্র লক্ষ্য। পরের কাজে এমনি ক'রে নিজেকে চেলে দিতে তুমি পার ভোমার বাবার রক্ত ভোমার গায়ে বইছে বলে।

नीत्रमारकः हिनन्य रमिन।

রাত দশটা। রাশ্লাবরের দরজার কাছে শৃষ্ঠ ডালের গামলা, লুচির ধামা, ডাল্নার বাল্তির মধ্যে নীরদা দাঁড়িয়ে আছে। সারাদিন কি থাটুনি থেটেছে সে! চর্কীর পাক ঘুরেছে মালতীর সঙ্গে সমানে সেই সকাল থেকে—এর মধ্যে আবার পীড়িতা মায়ের দেখান্তনা করেছে ওপরে গিয়ে। ঘামে ও শ্রমে মুথ রাঙা, (নীরদার রং বেশ ফর্সা) চুল আল্থালু হয়ে মুথের পালে কপালে পড়েছে।

আমি বাইরের ক-জন লোককে থাওরাব ব'লে কি আছে না-আছে দেখতে রামাঘরে চুকেছি। নীরদা বললে—দাদা, কিছু নেই আর। ক-জন লোক? আছা দাঁড়ান, মরদা মাধুছি, দিছিছ ভেজে।

আমি বলনুম—আর তুমি আগুনের তাতে বেও না নীরদা। তোমার চেহারা যা হরেছে! আছো দাঁড়াও— মালতীকে বলি একটু মিছরির সরবৎ তোমার বরং দিয়ে—

নীরদা বললে—দাঁড়ান, দাঁড়ান দাদা। কণি কতবার খাঁওরাতে এসেছিল—সে কি চুপ ক'রে থাকবার মেয়ে ? তার পর হেসে বললে—আব্ধ যে একাদণী, দাদা।

আমার চোথে জল এল। আর কিছু বললাম না। মেরে-মান্নবের মত সহু করতে পারে কোন্ জাত ? অনেক শিথলাম এদের কাছে এই ক-মাসে।

মাকে দেখেছি, বৌদিদিকে দেখেছি, সীতাকে দেখেছি, শৈলদিকে দেখেছি, এদেরও দেখলাম। অথচ এই নীরদাকে ভেবেছিলুম অশিক্ষিতা গ্রাম্য মেয়ে, ওর কথাবার্ত্তার রাচ দেশের টান বড় বেশী ব'লে।

মানতী আথড়ার ফিরে এসে আমায় বললে—আনেক-গুলো সন্দেশ এনেছি, খান—নীরদা-দিদি জোর ক'রে দিলে। ভাল সন্দেশ, দারবাসিনীতে এ-রকম করতে পারে না, শিউড়ি থেকে আনানো।

তার পর কেমন এক ধরণের ভঙ্গি ক'রে হাসতে হাসতে বললে—বহুন, ঠাই ক'রে দিই আপনাকে। ওবেলার লুচি আছে, দই আছে,—নীরদা-দিদি এক রাশ খাবার দিয়েছে বেধে—

ওকে এত ছেলেমানুষ মনে হয় এই-সব সময়ে!

ঘরে কেউ নেই, নিঃসঙ্কোচে আমার কাছে ব'সেও আমার বাওয়ালে—ধেতে থেতে একবার ওর মুথের দিকে চাইলাম। কি অপূর্ক স্নেহ-মমতামাধা দৃষ্টি ওর চোধে! মালতীর কাছে এত ঘনিষ্ঠ যত্ব এই কিন্তু প্রথম। বললে—আমি কি আর দেখি নি যে আজ সারাদিন আপনি শুধু থেটেছেন আর পরিবেশন করেছেন, খাওয়া যা হয়েছিল ওবেলা আপনার, তার আমি সন্ধান রাখি নি ভেবেছেন? খান,—না—ও লুচি ক-থানা থেতেই হবে।

থাবো কি, লুচি গলার আটকে নেতে লাগল—সে কি অপূর্ব উল্লাস, আমার সারাদেহে কিসের যেন শিহরণ। আরু সারাদিনের ভূতগত খাটুনির মধ্যেও মালতী দৃষ্টি রেথেছিল আমি কি থেয়েছি না-খেয়েছি তার ওপর।

ર

ঘন বর্ধা নামল। সারা মাঠ আঁধার ক'রে মেঘ ঝুপসি হয়ে উপুড় হয়ে আছে। এই-সব দিনে মালতীকে সর্বদা পেতে ইচছা করে—ইচছে করে ঘরের কোণে বসে ওর সচ্ছে সারা দিনমান বাজে বকি। কিন্তু ও আসে না, এমনই সব বর্ধার দিনে আথড়ার যত সব খুচ্রো কাজে ও ব্যস্ত থাকে।

মালতী বলে সে আসবে। তার পর এক ঘণ্টা, ত্-খণ্টা কেটে বার, ও আসে না। আমার রাগ হর, অভিমান হয়। ও বদি আমার জল্তে একটুও ভাবত, তাহ'লে কি আর না-এসে পারত। ওর কাছে কাজই বড়, আমি কেউ নই। কিন্তু হরত অপ্রত্যাশিত ভাবে হঠাৎ মালতী এসে পড়ে। প্রায়ই আসে বিকেলের দিকে এমন কি সন্ধ্যার সময়। চুলটি টান-টান ক'রে বেধে, পান থেয়ে ফুল্ল ওষ্ঠাধর রাঙা ক'রে হাসিমুখে আমার দাওয়ার সামনে এসে বলে—কি করছেন?

- अत्र भानजी, त्रात्रामिन मिथि नि य ?
- আপনার কেবল—সারাদিন দেখি নি, আর এই তথন ডাকলুম এলে না কেন, আর কেন আস না—এই-সব বাজে কথা। আসি কখন? দেখুছেন ত। খেরে উঠেছি এই ত হণ্টাখানেক আগে। কাজ ছিল।
- কি কান্ধ ছিল আমি আর জানি নে মালতী? উদ্ধৰ-বাবান্ধীর কোণের ঘরে মেজেতে চেটাই পেতে ব'সে তোমার সেই কবিতার বই লিখছিলে—আমি দেখি নি বুঝি?
- —বেশ দেখেছেন ত দেখেছেন। আফুন বিষ্ণুনন্দিরে সন্ধ্যা দেখিয়ে আসি—একা ভয় করে।

বান্তবিকই আমি ওকে একমনে বই লিখতে দেখেছিলাম। প্রায়ই দেখি। মালতী ঠিক পাগল, আচ্ছা, পায়ওদলনের অনুকরণে লেখা ওর বই কে পড়বে যে রাত নেই দিন নেই বই লিখ ছে! ওর মুখ দেখলে আমার কট হয়। ওই এক থেয়াল ওর। মালতীর সঙ্গে বিষ্ণুমন্দিরে গেলাম। মালতীর এই এক শুল, ও বথন মেশে, তখন মেশে নিঃসংকাচে, উদার ভাবে। সে-সম্বন্ধে কোনো বাধা বা সংস্কার ও মানে না। কেন এই সন্ধ্যাতে আমার সঙ্গে একা যাবে পুক্রপাড়ের বিষ্ণুমন্দিরে—এ-সব সঙ্কোচ নেই ওর। মন্দিরের পথে বেতে বেতে মনে হ'ল মালতীকে পেয়ে আমার এই বর্ষাসন্ধ্যাটি সার্থক হ'ল। ওকে ছেড়ে আর কিছু চাই নে। কাঞ্চনজ্যতলার গিয়ে বললাম—সে গানটা গাও না, সেদিন গাইছিলে শুণগুল ক্রেং!

মালতী ছেলেমানুষের মত ভলিতে বললে—উদ্ধব-স্থাঠি বে শুনতে পাবেন ?

- —তা পাবেন, পাবেন।
- —তবে আহ্ন পুকুরের খাটে গিরে বসি।

 মালতীর মুখে গানটা বেশ লাগে—হু-ভিন বার তনলা

 আমার নরনে কৃষ্ণ নরনতারা হলরে মোর রাধা-প্যারী

 আমার বুকের কোমল ছায়ার লুকিরে খেলে বনবিহারী

গান শেষ হ'লে বলগাম—শোন একটা কথা বলি
মালতী, তুমি এস না কেন? তোমাকে না-দেখলে
আমার বড় কট হয়। আজ সারাদিন বসেছিলুম ঘরের
দাওরায়, এমন বর্ধা গেল—তুমি চৌষটিবার আমার ঘরের
সামনে দিয়ে যাও, একবার ত এলে পারতে? তোমার
সে-সব নেই। শুধু কাজ আর কাজ। এই যে তোমাকে
পেয়েছি, আর আমার যেন সব ভূল হয়ে গিয়েছে—সভিয়
বলছি মালতী।

মাণতী মুখ নীচু ক'রে হাসি-হাসি মুখে চুপ ক'রে রইণ।
আমি বলনাম—হাসলে চলবে না মানতী। কথার
আমার উত্তর দাও। তুমি কি ভাবো আমি তোমার
এখানে পড়ে আছি খেতে পাই নে ব লে তাই ? তা নয়।

- —কে বলেছে আপনাকে যে না-খেতে পেয়ে এখানে আছেন ? বলেছি আমি আপনাকে নাকি ?
- নাক ওসব বাজে কথা। আমার কথার উত্তর দাও।
 মালতী আবার ছেলেমানুষী আরম্ভ করলে। মুখ নীচু
 ক'রে হাটুর কাছে ঠেকিয়ে মৃহ মৃহ হাসিমুখে হাত দিয়ে
 সানের ওপর কি আঁকজোক কাটতে লাগল, কথনই ওর
 কাছে আমার কথার সোজা জবাব পেলাম না।

এক দিন বেড়াতে গিয়ে বাঁধের ওপর ব'সে আমার অবস্থাটা ভেবে দেখলুম। আমি এমন অভিরে পড়েছি যে নড়বার সাধ্য নেই এতটুকু। ও আমার জীবনের সবক্ছি ভূলিয়ে দিরেছে—কি উদ্দেশ্যে এই ছ্-বছর পথে পথে ঘুরেছি সে উদ্দেশ্য এখন হয়ে পড়েছে গৌণ। এখন মালতীই সব, মালতীই আমার বিশ্বের কেন্দ্র, ও যথন আসে তথন জীবনে আর কিছু চাইবার থাকে না, ও বেদিন আসে, বেদিন হেসেকথা বলে—আমার মত স্থবী লোক সেদিন জগতে আর কেউ থাকে না, মাঠের ওপর স্থ্যান্ত সেদিন নতন রঙে রঙীন হয়, বিচালি-বোঝাই গাড়ীগুলো ঘার-

বাদিনীর হাটের দিকে বার, তাদের চাকার শব্দও তাল লাগে,
আথড়ার বাবাজীরা নিমগাছে উঠে নিমপাতা পাড়ে—
কাই বেন এক নতুন দৃগু। মালতী বেদিন আসে না,
কি ভাল ক'রে কথা বলে না, সারাদিন আমার মনে শান্তি
থাকে না, ওরই কথা ভাবি সারাক্ষণ—কতক্ষণে দেখা হবে,
কতক্ষণে কথা বলবো। মালতী আমার এমন জালেও
জড়িরে ফেলেছে।

হয়ত আমি এখান থেকে ষেতাম না--হয়ত শেষ-পর্যান্ত থেকেই বেভে হ'ত—কিন্ত বেদিন মালতী আমার কাছে ব'সে পুকুরঘাটে গান গাইলে পরদিনই ছপুরের পরে উদ্ধব-বাবাজী আমায় ডেকে বললে—একটা কথা বলি আপনাকে—কিছু মনে করবেন না। আপনার এখানে অনেক দিন হয়ে গেল, আমাদের আখড়ার নিয়ম অনুসারে তিন দিন মাত্র এথানে অতিথ্-বোষ্টমের রাধবার কথা। আপনার প্রায় এগারো মাস হ'ল-আমি চুপ ক'রে রইলাম, কারণ ওর মুখ দেখেই আমার মনে হ'ল এটা কথার ভূমিকা-আসল কথাটা এখনও বলে নি। ঘটনও তাই। একটু ইতন্ততঃ ক'রে বললে—তাতেও কিছু না—কি জানেন, আপনার কণির সঙ্গে এই মেলামশাটা ভাল দেখাছে না। কাছে ব'সে পুকুরবাটে বিকেলে গান গেয়েছিল-একথা निष्म नवाहे--- व्यानन ना, त्यास्याक्रावत नात्य রটতে দেরি লাগে না। আমি ওর অভিভাবক-এসব বাতে না হয় আমার দেখা উচিত ব'লেই আপনাকে জানাচ্ছি এ-কথা। ক্লপি-মা সেরকম মেয়ে নয়। আমি সেটা খুবই জানি, কিন্তু লোকে ত- রাগ করবেন না, ভেবে দেখুন। লোকে যদি ওর নামে পাঁচটা কথা ওঠার বা বলে সেটা আমার উচিত, হতে না-দেওয়া—নয় কি ?

আমি বলনাম—সেটা আমার অস্তার হয়েছে স্বীকার করি। কিন্তু আমি ওকে বিরে করতে চাই। আপমি ত বলেছিলেন, মালতীর যদি ইচ্ছে হর—ওর বাবার ওর ওপর আদেশ আছে—

—কিন্ত ওর বাবা কণ্ঠীধারী বৈষ্ণব ছিলেন—আপনি বান্ধণ বটে, বৈষ্ণব নন, তার ওপর আপনি খৃষ্টানী মতের শোক, আপনার সঙ্গে কি ক'রে ওর বিয়ে হ'তে পারে ?⋯

ও বৈশ্বরে মেরে, বৈশ্বরে সঙ্গেই ওর বিয়ে হবে। তবে মালতীর এতে কি ইচ্ছে জামুন, সে যদি বলে আমার আপত্তি নেই। ওর বাবা ওরই ওপর সে ভার দিরেছিলেন।

সেদিনই সন্ধার সময় ওকে নির্জ্জনে পেলাম। ওকে বললাম—একটা কথা বলব মালতী? তুমি অভয় দেবে?

মালতী কৌভূকের সুরে বললে—উঃ মাগো—যাত্তার দলের মত কথা শুনে আর বাঁচি নে। কি বলবেন বলুন না?

—ভূমি কি চিরকাল এই ভাবে জীবন কাটাবে? না ছাসিখুনী না, দরকারী কথা। সব তাতেই হাস কেন— ভেবে দেখ আমি কি বলছি—

—কেন এ জারগা কি থারাপ? এমন চমৎকার মাঠ,
দীঘি—আপনি সেদিন কি কবিতাটা বলছিলেন সেই—

মানতী কথা শেষ না-ক'রেই ছেনেমান্নী হাসি কুরু করনে। আমি বলনাম—না, মানতী নন্ধীট, ওভাবে কথা উড়িয়ে দিও না। আমি ভোমায় চাই। ভোমায় বিয়ে ক'রে এখান থেকে নিয়ে বেতে চাই। কি বন ভূমি?

মালতীর মুখের হাসি হঠাৎ বন্ধ হয়ে গেল—সে কেমন বিশ্বর-দৃষ্টিতে আমার দিকে চাইলে—তার পরেই তার মুখে-চোখে ঘনিয়ে এল লজা। ওর এ-ধরণের লজা আমি কথনও দেখি নি। বেশ থানিক ক্ষণ কেটে গেল। মালতীর মুখে উদ্ভর নেই। বললাম—ভেবে উদ্ভর দিও। এখুনি চাইনে তোমার উদ্ভর। তাড়াতাড়ি কিছু না-বলাই ভাল।

মালতী এতক্ষণ মূখ নীচু ক'রে ছিল—এইবার মূখ ভুলে কিন্তু অন্ত দিকে চেন্তে বললে—কিন্তু এ-কান্নগা ছেড়ে বেভে ছবে কেন?

ছেড়ে বে:ত হবে এই জন্তে মালতী যে, আমি ত তোমাকে এখানে আবড়ার থাকতে দিতে পারব না। আমিও এখানে চিরদিন কাটাতে পারি নে। মালতীর মুখের ভাবে আমার মনে হ'ল আমার মুখে এ-কথা বেন ওর পক্ষে অপ্রত্যাশিত। ও কি ভেবেছে আমিও চিরকাল এই আথড়াতেই থেকে বাব? ওর মুখ দেখে মনে হ'ল আমার এ-কথার ও মনে বেদন্। পেয়েছে। আমার মন মমতার ভরে উঠল। আমি কথাটা ধতদুর সম্ভব নরম করতে পারা বার ক'রে বললাম—তুমি এখনও ছেলেমানুষ। নিজের সম্বন্ধে বিচার ক'রে দেখতে পারার ক্ষমতা এখনও হর নি। তুমি একা এখানে কি করবে বল? উদ্ধব-বাবাঙ্গীও চিরকাল থাকবেন না। এই মাঠের মধ্যে আখড়ায় চিরজীবন কাটাবে একা একা?

মালতী মুখ নীচু ক'রেই আন্তে আন্তে নরম হুরে বললে— বাবা মরণকালে এর ভার সঁপে দিয়েছিলেন উদ্ধব-স্থাঠার ওপর নয়, আমারই ওপর। বাবার বিষ্ণুমন্দির আমায় শেষ ক'রে তুলতে হবে। উদ্ধব-বাবাজী চিরদিন থাকবেন না বলেই ত ভামার এখানে আরও থাকা দরকার। বাবার ধানের ক্রমি পাঁচ জনে লুটেপুটে খাবে অথচ আধড়ার দোর থেকে অতিথ্-বোইম গরিব লোকে ফিরে যাবে খেতে না পেয়ে, এ আমি বেচে থেকে দেখতে পারব না। ভাতে কোথাও গিয়ে আমার শান্তি হবে?

মালতীর মুথে এ-ধরণের গন্তীর কথা—বিশেষ ক'রে ওর
নিজের জীবন নিয়ে—এই প্রথম শুনলাম। সব জিনিষ নিয়ে
ও হাল্কা হাসি-ঠাট্টা ক'রে উড়িয়ে দেয়, এই ওর স্বভাব।
ও এ-ধরণের কথা বলতে পারে তা আমি ভাবি নি।
বললাম—মালতী, এটা কি তোমার মনের কথা? জীবনটা
এই ক'রে কাটাবে? এতেই শান্তি পাবে? আমি যে
প্রেপ্তাব করেছি, তাতে তুমি তাহ'লে রাজি নও? কারণ
আমি এখানে ধাকতে পারব না তিরকাল এটা নিশ্চয়।

শেষ কথাটা বলতে আমার বুক বেদনায় টনটন ক'রে উঠল, তবুও বলতে হ'ল।

মালতী অনেক ক্ষণ বিমুখী হয়ে ব'সে রইল। কাপড়ের একটা আঁচল পাকিয়ে অন্তমনন্ধ ভাবে ছেলেমান্থের মত সেটা নিয়ে নাড়া-চাড়া করলে অনেক ক্ষণ। আমার মনে হ'ল ও হয়ত কাঁদছে, নয়ত কালা চেপে রাখবার চেটা করছে

তার পরে আমার দিকে একবার চেয়েই আবার অন্ত দিকে মুথ ফিরিয়ে বললে—কি করব বলুন, আমার অদৃষ্টে ভগবান এই লিখেছেন, এই আমার করতে হবে।

আমার কেমন একটা অভিমান হ'ল, বললাম—এই তাহ'লে তোমার শেষ কথা? বেশ মালতী। মালতী কথার উত্তর না-দিয়ে চুপ ক'রে রইল, মুখ নীচু ক'রে। আবার আমার মনে হ'ল ও কাদছে, ফিবো কারা চেপেরাধবার চেটা করছে—একবার মনে হ'ল ওর ভাগর চোখ

ছটি জলে ভ'রে এসেছে—কিন্ত অভিমানের আবেগে আমি সেদিকে ফিরেও চাইলাম না।

রাত্রে বাইরে ব'সে ভাবলুম। সারারাত্তিই ভাবলুম মালভীকে ছেড়েই যেতে হ'ল শেষ-পর্যাস্ত ?

ও না এক দিন আমায় বলেছিল···আথড়ার কত কাজ বাকী আছে মনে নেই?

আমার ওপর কিসের দাবিতে একথা বলেছিল ও ? সে-দাবি অগ্রাহ্য ক'রে নিষ্ঠুর ভাবে যাব চলে ?

যদি না থাই—তবে এখানে আথড়ার মোহান্ত সেজে চিরকাল থাকতে হবে। এই গ্রাম্য বৈষ্ণবদের সঙ্কীর্ণ গণ্ডী ও আচার-সংস্কারের মধ্যে নিজেকে জড়িয়ে ফেলতে হবে।

নিস্তব্ধ তারাভর রাত্রি। দীঘির পার থেকে হ-ছ-হাওয়া বইছে।

নীল আকাশের দেবতা, বার ছবি এই বিশাল মাঠের মধ্যে সন্ধ্যার মেবে, কালবৈশাখীর ঝোড়ো হাওয়ায়, এই বকম তারাভরা অন্ধকার আকাশের তলে কতবার আমার মনে এসেছে তাঁকে পাওয়া আমার হঠাৎ কুরিয়ে না বায়৽৽৽বেলবতা সকল ধর্মের অতীত, দেশ কালের অতীত•৽৽বায় বেদী বেমন এই পৃথিবীতে মালুবের বুকে, তেমনি ওই শাখত নীলাকাশে, অনস্ত নক্ষত্রদলের মধ্যে••মর্ত্য ও অমর্ত্য তাঁর স্পষ্টি-বীণার হুই তার••অমার মনে হোমের আশুন তিনি প্রজ্ঞানত রাখুন হুদীর্ঘ ফুগসমূহের মধ্যে••শাখত সম্য ব্যেপে। আমার বা-কিছু মনের শক্তি, বা-কিছু বড়, তাই দিয়ে তাঁকে বুঝতে চাই। গণ্ডীর মধ্যে তিনি থাকেন না ।

পরদিন থ্ব ভোরে—আথড়ার কেউ তথনও বিছানা থেকে উঠে নি—কাউকে কিছু না-জানিয়ে আমি ছারবাসিনীর আথড়া থেকে বেরিয়ে পড়লুম। কিসের সন্ধানে বেরিয়েছি তা আমি জানি নে—আমার সে সন্ধানের আশা আলেয়ার মত্ত হয়ত আমাকে পথভাস্ত ক'রে পথ থেকে বিপথে নিয়ে গিয়ে ফেলবে—ভগু আমি এইটুকু বৃদ্ধি বে, বে-কোন গভীর মধ্যে আবদ্ধ হয়ে থাকলে আমার চোধের অস্বচ্ছ দৃষ্টির সামনে তার প্রবৃদ্ধনান রূপ ক্ষীণ হয়ে আস্ববে—আমার কাছে সেইল সন্ধানই সত্য—আর সব মিণের, সব ছারা।

(ক্রমশঃ)

নৃত্যধৰ্ম

<u>জীরাজেন্দ্র</u> শঙ্কর

ক্ষারে আবেগের যে উত্তাল তরক উঠে, ঘটনা-পরম্পরায় যে অভিজ্ঞতা জন্মে, প্রকৃতি যে সৌন্দর্যাবোধ জাগ্রত করে, অভিনয়ে, পদ-সঞ্চালনে, অঙ্গ-ভঙ্গীতে ও প্রচলিত মুদ্রান্যাসে ভাহার অভিব্যক্তিই নৃত্য।

ভারতবর্ষে দেবগণ হইতে এই নৃত্যের প্রথম প্রচলন। ধর্মান্টানে ও শুভ পর্কা পুণ্যাহে যে তাগুব নৃত্য প্রচলিত, তাহা আজও 'তণ্ডু'র নামই বহন করিতেছে। মহাদেবের অন্তর নন্দীই তণ্ডু নামে পরিচিত।

কলাত্মভৃতি সৌন্দর্য্য উপভোগ করিবার ক্ষমতার উপর
নির্ভর করে। হয়ত সে উপভোগ হয় সৌন্দর্য্যের
অস্তনির্হিত ভাবের উপলব্বিতে, হয়ত বা বাহিরে মূর্ত্ত
বিকাশে, হয়ত বা উভয়ের একত্র-সমাবেশে। যুগে-যুগে
এই সৌন্দর্য্যাত্মভৃতি সম্পর্কে মানুষের মনোরতির পরিবর্তন
হইয়াছে। জগতের চিস্তানায়কগণের মতবাদ আলোচনা
করিলে ইহার রহস্ত উদ্বাটিত হইতে পারে।

ফরাসী লেখক ভেরোঁ বলেন যে, প্লেটোর যুগ ছইডে বর্তমানকাল পর্যান্ত রসকলা প্রাকৃষ্ট কল্পনা ও মানবজ্ঞানাতীত রহস্তের অপূর্বে মৃত্যমিশ্রণ! এই খেয়াল ও রহস্তেই সৌন্দর্য্যের কল্পনা; এই সৌন্দর্যা স্বর্গীর, বাস্তব পদার্থের আদর্শ!

বোজার ফ্রাই বলেন, রসকলা ইন্দ্রিরভোগ-মুখ-পরারণতা হইতেই অঙ্কৃরিত। কিন্ধু সামাজিক রীতিনীতি, দর্শন ও ধর্ম বারা ইহার উৎকর্ষসাধন বা বিশুদ্ধিতেই ইহার মূল্য। প্রতীচ্য দেশের ন্তান্ধ ভারতীয় ইন্দ্রিরপ্রভোগ-ারারণতা অনুধ্যান বারা রূপান্তান্ধিত হয় না, ইহা একাধারে ধর্মগ্রাবপ্রবন্ধ এবং প্রধানতঃ প্রেমমূলক।

বমগারটেন বলেন যে, কামনা উদীপ্ত ও তৃপ্ত করাই . সৌন্দর্যোর লক্ষ্য, গ্রন্থভিতেই সৌন্দর্যা পরিদুশুমান, প্রকৃতি অমুক্রন করাই রসকলার সর্ব্যোচ্চ আদর্শ। পক্ষাস্তরে বিনু কেলম্যানের মৃত এই যে, স্কৃল কলারই লক্ষ্য ও নীতি

একমাত্র সৌন্দর্য্য—মূর্জিতে সৌন্দর্য্য, ভাবে সৌন্দর্য্য, বিকাশে সৌন্দর্য্য। তিনি ইহাও বলেন যে, বিকাশে সৌন্দর্য্যই রসকলার শ্রেষ্ঠ আনর্শ এবং প্রাচীন কালেই ইহা উৎকর্য লাভ করিয়াছিল, আধুনিক শিল্পিগণ প্রাচীন কলার অনুসরণ করিলেই ভাল হয়। কুমারস্বামী বলেন যে, জীবনবাপনে যেমন বিবেকবৃদ্ধি প্রকাশ পায়, বিতর্কে বেমন চিস্তার গভীরতা প্রকাশ পায়, ঠিক তেমনি প্রমাণও বিশ্বু বা নিয়মে ও লক্ষণে প্রকাশ পায়। যে-কলা এইয়প শাস্ত্রমান অনুসারে পরিকল্পিত তাহাই প্রকৃতপক্ষে মনোহর, কমনীয়—অপরগুলি কিছুই নহে।

সেফ্টেস্বারী বলেন যে, যাহা স্থক্তর তাহা সোর্চবসম্পন্ন, সামঞ্জ্ঞাবিশিষ্ট, স্তরাং সত্য। যাহা স্থক্তর ও সত্য তাহাই প্রীতিপ্রাদ, উত্তম ও স্থাক্তসক্তনক।

লর্ড কামেস্ বলেন, যে, সংকীর্ণতম আয়তনে ভাবের ঐশ্বর্যা, পূর্ণতা, বলিগ্র্তা ও বৈচিত্রোর চরম সমাবেশই রস্কলা।

শিবনৃত্য অনুশীলন করিলে দেখা যায় যে, আদি ছন্দোবদ্ধ ওন্ধোভাব প্রকাশ করাই ইহার উদ্দেশ্য। হিন্দু-প্রতিমা-বিজ্ঞানে শিব লুসিয়ানের এরস্ প্রটোগোনাসের সহিত তুলনীয়। তিনি বলেন যে, সর্বর পদার্থের আদিতে লৃত্যের সৃষ্টি। এরসের সঙ্গে সঙ্গোর প্রকাশ, কারণ নক্ষত্রপুঞ্জের ঐক্যনৃত্যে, গ্রহতারার নির্মাবদ্ধ স্থান-বিনিময়ে আমরা এই আদি নৃত্যের বিকাশ দেখিতে পাই।

গোপীনাথ বলেন যে, বাঁহারা প্রাথম প্রাক্-আর্য্য পর্বাত-দেবতার পূজার জন্ত প্রাত্ত হরত বা প্রমন্ত ওজোবশতঃ নৃত্য করিরাছিলেন, তাঁহারা শিবনৃত্যের এই অভিগভীর ভাব ক্লরকম করিতে সমর্থ হইরাছিলেন, এরূপ মনে করিবার কোন কারণ নাই। এই পর্বাত-দেবতাই পরব্র্তী রূগে শিবে পরিণত হইরাছে। ধর্মে বা রসকলার 'মোটিফ্'ও সক্ষেত-কালে সার্বাজনীন হইরা পড়ে, লোকে ক্লরে যে ভাবৈষ্বা পোষণ করে, ইহাতেও তাহার বিকাশ দেখিতে পার।
শিবনৃত্য-সম্পর্কে এরপ কথিত হইরাছে বে, আমাদের পাপ
দূরীকরণার্থ আয়ার পূর্বজ্ঞান নৃত্য করে। ইহাতেই মায়ার
অন্ধকার কাটিয়া বার, কর্মমালার স্থ্র ভঙ্ম হর, ভগবৎক্লপা
বর্ষিত হয়, এবং আত্মা আনন্দসাগরে অবগাহন করে। এই
নিগৃঢ় রহস্তাব্ত নৃত্য দর্শনের সামর্থলাতে আত্মার আর
পুনর্জন্ম হয় না।

ফিক্টের মতে প্রকৃতি বৈত্তভাবের বিকাশ—এক দিকে
ইহা আমাদের অক্ষমতা, সীমাবদ্ধতা প্রকাশ করে, অপর
দিকে চিন্তাধারা ও কর্মক্ষমতার অসীমতা ও স্বাধীনতা
প্রদান করে। ফ্তরাং স্বন্ধরের অন্তৃতি আমাদের
সনোবৃত্তির উপরেই নির্ভর করে। এই ফ্রন্ধরের প্রদর্শনই
রসকলার উদ্দেশ্য; সমগ্র মানবকে জ্ঞানদানই ইহার
অভিপ্রায়। শিল্পীতে ফ্রন্ধর আত্মার অবস্থিতিতেই—
বাহিরের কিছুতেই নহে—সৌন্ধর্য-ধর্ম নিহিত।

হাচিনসন মনে করেন থে সৌন্দর্যপ্রকাশই রসকলার উদ্দেশ্য; সাম্য ও বৈধ্যাের অন্তভৃতি জাগ্রত করাই ইহার মূলমন্ত্র। বার্ক বলেন যে, আগ্ররক্ষা ও সমাজের নির্দেশেই মহান্ ও স্ক্রের করনা জাগে এবং ইহার প্রদর্শনই রসকলার লক্ষা।

ইংরেজদের মত ফরাসীগণও মনে করেন যে, সৌন্দর্য্যজ্ঞান ক্ষচির উপরই নির্ভর করে—এই ক্ষচি স্বেচ্ছাচারী, কোন
বিধিনিষেধ মানিরা চলে না। পেরী আঁদ্রে সৌন্দর্য্যের
শ্রেণী বিভাগ করিরাছেন—স্বর্গীর, প্রাক্ষতিক, ক্লঞ্জিন। বেজু,
বলেন যে, উপভোগই টুরসকলার উদ্দেশ্য এবং প্রকৃতিজ্মুকরণই উপভোগ।

ইটালীর মনোর্ত্তি অন্তর্গ। স্পালেটি বলেন বে, আত্মরকার অভিশ্রোরে বে আত্মানুরাগপ্রদর্শী অনুভৃতি জন্মে তাহাই রসকলা। বার্কও প্রার অন্তর্গ মত পোষণ করেন।

ওললাজ-লেখক হেম্স্টার লুইস্বলেন যে, যাহা স্থানান করে তাহাই রস্কলা, সংকীর্গতম কালে বছলপরিমাণে যাহা অস্তৃতি জাগ্রত করিতে পারে তাহাই স্থানানে সমর্থ।

কান্টের মডে মাহ্ম্য নিজের বা**হ্ম্যির প্রকৃতি**র জান -প্র প্রকৃতিতে আত্মলান লাভ করে। বহিঃপ্রকৃতিতে

সে বৌজে সভাঁ, আপনাতে সে চায় মদল। বান্তব যুক্তি ব্যতীভও একটা বিচার-ক্ষমতা আছে, ইকু যুক্তিন্র অপেকা রাখে না, ইহা প্রবৃদ্ধি ব্যতীতও সুখদনি করে। কাণ্ট ইহাকেই সৌন্দর্যাহভূতি বলিতে চাহেন। বান্তব স্থবিধা বা যুক্তিতৰ্ক ব্যতীত সুৰদান আয়োগলনিলন বা আখ্যাত্মিক সৌন্দর্য্য। কিন্তু কোন বন্ধর ব্যবহারিকতা অথবা হিতকারিতার ধারণা ব্যতীত ভাহার বোগ্যতার রূপদানই বাস্তব সৌন্ধ্য। বোধ হয় কাণ্টের অনুসরণ করিয়াই শিলার বলেন যে, বাস্তব স্থবিধা ব্যতীত স্থের স্রত্তা সৌল্লর্যাই রসকলার লক্ষ্য। শিলাবের মতে নৃত্য ক্রীড়ামাত্র, অবশ্র এই ক্রীড়া বঘু কার্য্য নহে, শুধু রূপ-বিকাশের জন্তই অপর উদ্দেশ্য ব্যতীত জীবনের সৌন্দর্যা-প্রদর্শন। হেগেল বলেন যে, ভগবান আমিনাকৈ স্থকরের রূপে প্রক্ল**তিতে ও শিল্পে বিকাশ করিরাছেন**। ভারতবাসীর মনের কথাই যেন এই বৈদেশিক পণ্ডিতের রসনায় ভাষা পাইয়াছে।

টলষ্টরের মতে আধ্যাত্মিক অন্তভ্তিতে সৌন্দর্য্য এক বিশেষ শ্রেণীর পূথ দান করে, কিন্তু বাস্তব অন্তভ্তিতে পদার্থের পূর্ণাঙ্গতার ধারণা জরে। এই ধারণাতেও একটা প্রথের উপলব্ধি হয়। এক কথার উভর অন্তভ্তিতেই একই প্রকার সৌন্দর্য্যের ধারণা জাগে—কিন্তু কামনা জাগে না। অনেকের নিকট ইংা ভাববিহ্বলতা একং কলে তাহারা রসকলার একমাত্র ও চরম আদর্শক্রণে সৌন্দর্য্যকে গ্রহণ করিতে পারেন না।

বর্ত্তমান যুগের শিল্পীর—তিনি যতই ধর্মতীক্ষ হউন না
কেন—সমূবে অনতিক্রম্য বাধাবিপত্তি। বে-শিল্পী প্রাচীন
হিন্দুন্ত্যের প্নক্ষাবন-প্রয়াসী তাঁহার পক্ষে প্রাচীন পৃত্তকে
নির্দিষ্ট স্থাঠিত সমাজের ও দর্শক্ষওলীর অভাবে এবং
অক্ততা ও মতবাদের অনৈক্য ইত্যাদির প্রাচুর্বো—এই উভরসম্বটে বিধিনিধেধ ভক্ষ করা ব্যতীত অন্ত উপার নাই দ্
প্রাচীন পৃত্তকাদিতে বে বিধান আছে, সে মতে বর্ত্তমান যুগে
কোন নৃত্য প্রচিনিত নাই। স্তরাং প্রত্যক্ষ শিক্ষালাভের
কোনই সন্তারনা নাই। প্রক্রাদিয়ারা কি জান লাভ
সন্তব ? ভরতের নাট্যপান্ত এ-মশ্বর্কে আছর্ল পৃত্তক;
নৃত্য, সঙ্গীত ও অভিনর সম্পর্কে অভি বিশ্ব বিধান ইহাতে











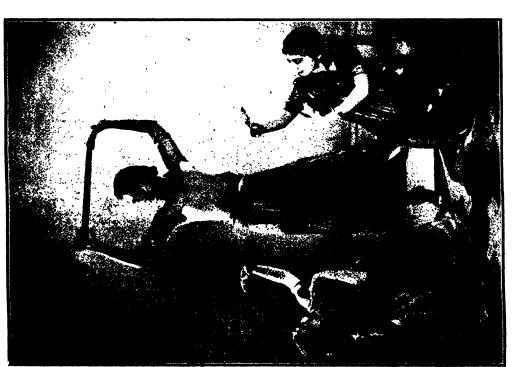


শিবনৃত্য--গঞ্জাস্থরবধ--নটরাজ ভঙ্গিমাধ উদর্শকর হস্তম্বরে, 'অভয়া' ও 'ব্রুন' বিস্থাস, উত্তোলিত ৰামণদে আশ্রমদান, দক্ষিণপদে ধর্মীর পাপদমন

२ । রাসলীল'—কৃঞের ভূমিকার উদরশক্ষর প্রথম সারি (বাম হইতে) কুমারী সিন্কা, কুমারী কনকলতা, উদরশক্ষর, দেবেক্স বিতীয় সারি (বাম হইতে) রাক্ষেক্স, বিঞ্চাস, তিমিরবরণ, রবাক্স, শিশিরশোভন



নৃত্যভিদিম৷ . (বামে) কুমারী সিষ্কী (দক্ষিণ) কুমারী কনকলতা



তরবারি-নৃত্য বাষ হইডে—কুমারী কলকলতা, উদয়লকয়, কুমারী সিম্কী

আছে, কিন্তু পূর্ণভাবে ইহার অমুবাদ করিতে কেহই সমর্থ ব্রন নাই। ইহার ধে-সকল অমুবাদ প্রচলিত আছে, তর্কের থাতিরে তাহা নির্ভূল ধরিয়া লইলেও, প্রাশ্ম দাঁড়ায় যে, ইহ**ি**র সাহায্যে কেহ উচ্চ শ্রেণীর নর্ত্তক, গায়ক বা অভিনেতা হইতে পারে কি? প্রথমে নতে। অঙ্গ-ভঙ্গীর কথাই ধরা যাক। পুস্তকে বছ প্রাকরণের উল্লেখ আছে-কিন্তু বিশদ বিবরণের একান্ত অভাব। ইহা যেন হুরূহ শব্দাদির অর্থসংগ্রহ। মুদ্রাপ্রকরণে আদর্শের নাম এবং হস্ত-বিন্তাসের প্রক্রিয়ার উল্লেখ আছে, কিন্তু শিল্পীকে অনেক জিনিষ্ট কল্পনা করিয়া লইতে হয়। অনেক ক্ষেত্রে প্রধান প্রধান অঙ্গুলিবিক্যাসের নির্দ্দেশ থাকিলেও অপরাপর অঙ্গুলি-সম্পর্কে কোনই উল্লেখ নাই। একই মুদ্রা বছ ভাবের দ্যোতক। তখন অঙ্গুলি-বিক্তাদের নির্ণয় করা বড়ই হুরহ। অঙ্গুলিসমূহ পরস্পর সংশ্র করিয়া প্রদারিত করতল পতাক-হস্ত। এই পতাক-হস্ত নিয়লিথিত ভাব প্রকাশ করে বলিয়া উল্লেখ আছে---ক্রোধ, প্ররোচনা, উল্লাদ, গর্ব্ধ, আত্মস্তরিতা, অগ্নি, পুপ্রবৃষ্টি, অভিশাপ, অনুমতি, উপঢ়োকন, ঘাস, ভূমিতে ছড়ানো জিনিবপত্র, লুকায়িত বস্তু, গুচ্ছ, আত্মগোপন, ঝড়, চেউ, উৎসাহ, মহৎ ব্যক্তি, তরবারির আ্বাত, পক্ষসঞ্চালন, খাসপ্রখাদ, ধৌত করা, পরিষ্কৃত করা, নমনীয় করা, চুর্ণ করা, পর্বত উত্তোলন, উন্মোচন। কথন কিন্নপ ভঙ্গীতে এই পতাক-হন্ত রক্ষা করিতে হইবে, তাহার কোনই উল্লেখ নাই। অপর দিকে একই ভাব প্রকাশার্থ বহু প্রকার সঙ্গীতরত্বাকর, মুদ্রার বিধান আছে। নাট্যশাস্ত্র. চিলাপ্রতিকরম, হস্তলক্ষণপ্রদীপিকা, অভিনয়দর্পণ প্রভৃতি পঠি করিলে ইহাই প্রতীয়মান হয় যে, সর্ববাদিসমতে কোন সক্ষেত নাই। মালাবারে কটু, কথাকলি, উত্তম তুলাল প্রভৃতি নৃত্য প্রাচীন পদ্ধতির অনেকটা অমূরপ, কিন্তু ইহানের মধ্যেও বৈষম্য অনেক। ত্রিবন্দ্রামে কথাকলিতে এক ভঙ্গী যে ভাব প্রকাশ করে হয়ত ইহা কোচিনরাক্ষ্যে কেরল ক্লমণ্ডলমে ভিন্ন ভাব প্রকাশ করে। নীরব অভিনয়ে

আখ্যানবস্ত হয়ত এক, অন্তর্নিহিত গুঢ় ভাব কিংবা অভিপ্রায় একই, কিন্তু প্রদর্শনে অনৈক্য জাজন্যমান। ইহাতে এই প্রমাণ হয় বে কোন এক বিষয়ে গুই জনে একমত না হইতেও পারে; সামাজিক রীতিনীতি, যুগ, পারিপার্ঘিক অবস্থা, একই ভাবের ভিন্ন ভিন্ন রূপ দান করে। ইহা হইতে এই সিদ্ধান্ত হয় যে, একই ভিত্তি হইতে গতি আরম্ভ হইলেও এবং একই ধর্মভাবে অনুপ্রাণিত হইলেও কাল, রাষ্ট্রশাসন এবং ধর্মোৎসাহে ইহার পরিবর্ত্তন ও পরিবর্দ্ধন ঘটিয়াছে। স্থতরাং প্রাচীন নৃত্যের নিম্কাক স্বরূপ সম্ভবপর হইলেও পুনঃপ্রবর্তন সমীচীন নছে। कामधार्य व्यामात्मत कृतित यथहे পরিবর্ত্তন হইয়াছে। প্রাচীন ধর্মবিশ্বাস আমরা আর অবনতশিরে স্বীকার স্মরণাতীত যুগের প্রভাবান্বিত পদ্ধতি এখন সম্ভোষবিধান করিতে পারে না। আর আমাদিগের প্রাচীন গুগে যেমন, বর্ত্তমানে আর তেমন ভাবে মৃত্যের সমুম নাই। এখন দুত্যে চিত্তরঞ্জনের ই রস্কলার বাণী দারা লোকের মনোবৃত্তির উল্মেখসাধন নহে।

রসকলা প্রগতিশাল, ইহা স্থলক্ষ। প্রকৃতির সীমাহীন আয়তন ইহার সামাজ্য, কল্পনার গতিতে ইহার অনুভৃতি, অনুধাবন-ক্ষমতায় ইহার সাধনা, মানবদেহ ইহার কর্মাক্ষেত্র, অঙ্গসঞ্চালনে ইহার বিকাশ। প্রাচীন কাহিনী ও উপকথা এবং ভাবপ্রকাশের বিধিবদ্ধ প্রণালী আমাদের যাত্রাস্থান, প্রগতির বিস্তৃত বীথিকা আমাদের সীমাবদ্ধ পথ, আদর্শের পরিপূর্ণতা আমাদের লক্ষ্য।

বর্তনান যুগের প্রব্যোজনীয়তা অমুসারে ইহাকে পুনরায় গঠন করিতে এবং বর্তনান যুগের সৌন্দর্যাঞ্জান দারাই ইহার বিচার করিতে হইবে। এই জন্ত চাই আমাদের যাবতীয় নৈপুণা ও সৌকর্যোর প্রয়োগ। আমরা চাই মৃতদেহে প্রাণস্কার; যুগধর্মামুগায়ী প্রেম ও শক্তি বলেই তাহা সঞ্জবপর

মহিলা-সংবাদ

কর্নাটকের শ্রীমতী কমলা জামখণ্ডী শিক্ষা-বিভাগে কার্য্য করিয়া দশ অর্জন করিয়াছেন। লণ্ডন বিশ্ববিদ্যালয়, কেম্বিজ বিশ্ববিদ্যালয় ও ডব্লিন বিশ্ববিদ্যালয় হইতে শিক্ষা-বিষয়ে গবেষণা করিয়া তিনি উচ্চতম উপাধি লাভ করেন।



শীমতী কমলা জামথণ্ডা

তিনি বিজ্ঞাপুরের মহিলা-স্বাস্থ্যবিধারিনী সমিতির অবৈতনিক সম্পাদিকা এবং কর্ন'টক শিক্ষক-সজ্পের ও নিথিল ভারতীয় শিক্ষক সমিতির কার্য্যনির্বাহক-সমিতির সভ্য।

সম্প্রতি লক্ষ্ণে শহরে অবোধ্যা নারী-সম্মেলন হইরা গিয়াছে। শেরকোটের রাণী ফুলকুমান্ত্রী সভানেত্রীর কার্য্য করেন।



রাণী ফুলকুমারী



শীমতী এ লতিকি
শ্রীমতী এ কতিফি পঞ্জাব স্ত্রী-শিক্ষাবিধায়ক
সম্মেলনের সভানেত্রী হইয়াছিলেন।



বিদেশ

ভিয়েনা শহরে দীপালী উৎসব—

ভিডেনা-প্রবাসী ভারতীয়েরা গত ৬ই নবেম্বর দীপালী উৎসব সম্পন্ন করিয়াছেন। এই উপলক্ষ্যে শ্রীযুত হুভাষচক্র বহর অধিনায়কত্বে একটি ভোজ অনুষ্ঠিত হইয়াছিল। হুভাষবাবু এই ভোজসভায় একটি নাতিদীর্ঘ বক্তনা করেন। ভিয়েনার ভারতীয়ের; সংখ্যা মেশা করিতে পারেন সেই উদ্দেশ্যে হিন্দুখান একাডেমিক্যাণ নু য়্যাসোসিয়েগ্যন নামে একটি সমিতি গঠিত হইয়াছে। বহু মহাশর সমবেত সকলকে সময় ও অর্থ দিয়া এই সমিতিকে সাহাষা করিতে। অমুরোধ জানান। উপস্থিত বাজিগণের মধ্যে স্ভাষবাবু ছাড়া শ্রীযুত তুর্গাপ্রসাদ খৈতান, মেজর মিশ্র, ডক্টর শর্মা, ডক্টর পাল, ডক্টর লেশাই, ডক্টর চোকসি, শ্রীযুত হাঁরালাল ও ডক্টর শ্রীমতী মহাস্তের নাম উল্লেখযোগা।



खिरत्रना महरत मोशानी छै८मव छेशनरक खांक

ক্রমশঃ বন্ধিত হইতেছে। এই ব্যস্ত এই সামাজিক উৎসবের অমুষ্ঠান প্রতি বৎসর হওয়া বাঞ্চনীয়। বাহাতে ভারতীয়গণ পরস্পর মেলা- ন্ধাৰ্মানীতে ভারতীয় ছাত্র— ন্ধাৰ্মানীয় অস্তৰ্গত ম্যুনিকেয় ডয়টুলে একাড়েমি প্রতি বংসর কমেকটি ভারতীর ছাত্রকে বৃত্তি দিয়া থাকেন। এই বৃত্তির সাহাষ্যে উাহারা জার্মানীর বিভিন্ন শিক্ষাকেক্সে নানা বিদ্যা আয়ত্ত করিবার ম্বােগা লাভ করেন। গত ২৭এ অস্টোবর ডয়ট্শে একাডেমির বৃত্তিভোগী ছাত্রগণ মাূনিকে সমাগত হটয়া গত ব্দ্ধে যে-সব সৈনিক জাবন দিয়াছেন ভারাধের শুতিকলকে মালা প্রদান করেন। এই উৎসবে মাূনিকের মেয়রের প্রতিনিধি, মাূনিক বিখবিদ্যালয়ের ভাইস্চ্যাকেলার, জার্মানীস্থিত বিলাতের সহকারী রাজস্ত ও অঞ্জান্ত বিশিষ্ট বাক্তি যোগদান করিয়াছিলেন।



গত যুদ্ধে মৃত জার্মান দৈনিকদের স্মৃতি-ফলকে ম্যুনিকে অবস্থিত ভারতীয় ছাত্রগণ কর্তুক মালা প্রদান

ভারতার ছাত্রগণ প্রধানতঃ বিবিধ বিদ্যা আয়ত্ত করিবার জঞ্জ দোলানীতে গেলেও গাহাতে উহিরা জালানগণের সঙ্গে সামাজিক মেলা-মেলা ২ইতে বঞ্চিত না হন, মুানিকের ডয়ট্লে একাডেনি সেদিকে বিশেষ লক্ষ্য রাথিয়াছেন। এই জঞ্জ উহিরা মাঝে মাঝে অন্তঃতিক ভোজের আংয়াজন করিয়া থাকেন। সম্প্রতি এইরূপ হুইটি ভোজে আধুনিক জার্মানির উপর ভারতায় দর্শনি ও ভারতীয় চিস্তাধারার প্রভাব আলোচিত হয়।

গত বংসর ডয়ট্লে একাডেমির বৃত্তিভোগী সাত জন ভারতায় ছাত্র সর্কোচ্চ উপাধি লাভ করিয়া স্বদেশে প্রত্যাগমন করিয়াছেন। ভারদের নাম ও উপাধির বিবরণ এইরূপ—

দি আর বরাট (কলিকাতা), ডক্টর ইং (টেক্নিকাল ইউনিভাসিটি, মানিক); এস কে মজ্মদার (কলিকাতা), ডক্টর ফিল্ (ইউনিভাসিটি, মানিক); জে এন্ মুখ্জো (কলিকাতা), ডক্টর ইং (টেক্নিকাল ইউনিভাসিটি, হাটগাট); আর কে এন্ আরাকার (মহাশ্র), ডক্টর ইং (টেক্নিকাল ইউনিভাসিটি, হানোভার); আর কে দত্তরার (মর্মনসিংহ), ডক্টর ইং (টেক্নিকাল ইউনিভাসিটি, হানোভার); জে মিশ্র (গাটনা), ডক্টর কিল্ (ইউনিভাসিটি, কানোল্বর্ক); বি পিলানি (লাহোর), ডক্টর ওয়েক (ক্মাশ্যাল ইউনিভাসিটি, মানবের্ক)।

বিদেশে বাঙালীর সম্মান-

বে-সব বাঙালা বিদেশে কৃতিত্ব অর্জন কর্ম্বিয়াছেন উাহাদের মধ্যে ডক্টর তারকনাথ দাস এক জন। তিনি গ্রন্থকার ও সাময়িক পত্রের লেখক বলিয়াও প্রবিদ্ধ। ডক্টর দাস ভারতব্বের বাহিয়ে থাকিয়াও



ডক্টর তারকনাথ দাস [অধ্যাপনা-গৃহ ২ইতে নিজ্ঞমণকালে গৃহতি চিত্র]

বদেশের শিকা, সংস্কৃতি ও নানা সমস্তার কণ! আলোচনা করিরা থাকেন। তিনি সম্প্রতি আমেরিকার ওরাশিংটন বিম্ববিদ্যালয়ের রাজনীতি-বিভাগে 'প্রাচ্য রাজনীতি'র লেক্চারার নিযুক্ত হইরাছেন। অস্থ্যিকাডের উপায়—

ডাঃ শৈলেক্সচক্ৰ নন্দী, এল-এম্-এক্ লিখিতেছেন—

পৃথিবীর ক্রোড়ে জন্মগ্রহণ করিবার সলে সজে প্রধানত: তিনটি অমৃল্য সম্পদ আমানের জাবনধারণে সাহাব্য করিরা থাকে—প্রথমত: পিতামাতা, বিতীমত: ব্যাহ্য, তৃতীমত: প্রকৃতির দানসমূহ। একের অভাবে অক্সটি সম্যক কার্য্যকরি হর না। প্রভিনিয়ভ এই তিন্টির কার্য্যের সামগ্রস্থ থাকে বলিয়া দেহ ক্রমশঃ বৃদ্ধি পাইতে থাকে। সবল সন্থ জনসমন্ত জাতির মেরুপও।

বর্ষমান ভারতে বে ভাতীয়. নৈতিক. সামাজিক, আর্থিক ও খারীব্রিক পুনর্গঠনের একটি অদম্য উৎসাহ সকলের প্রাণে জাগিরাছে তাহা দেশের মঙ্গলের সাঙ্গেতিক চিহ্ন বলিয়া ধারণা করা যাইতে পারে: সান্ত্যকর স্থানে বসবাস করিবার ইচ্ছা **पिन-पिन** বাডিতেছে। চেকোলোভেকিয়ার সোকল (Sokol) প্রতিষ্ঠান, ইটালার জনসাধারণের খালা রকার চেষ্টা, জার্মানির যুব-সজন, কাপানের স্বাস্থ্যনীতি, সুইজারল্যাণ্ডের চিকিৎসা-প্ৰণালী ও নানা সভা **मिल्ला विविध श्रारुष्टीत जामार्ज** আমাদের দেশেও কিয়ৎ পরিমাণে কার্যা আরম্ভ হইয়াছে। শহরে ও গ্রামে স্বাস্থ্যকার ও উৎকর্মের চেষ্টাই हेरात्र निषणनि । एउंध् गृरहालीहें नहर, লাঠিখেলা, ছোৱা-খেলা ও নৃত্যচর্চ্চা দারা বালিকাদের মধ্যেও শর।র-গঠনের চেষ্টা লক্ষিত হইতেছে। এ-সকল থায়োজন সত্ত্বেও খাসরোগে মৃত্যু বা শিশুসুভার সংখ্যা তেমন হাস পার নাই ৷ অনেক কেতে স্বান্তারকা সম্বন্ধে প্ৰাথমিক জ্ঞান না থাকায় বা প্রথমাবস্থায় স্থচিকিৎসার ব্যবস্থা না করায় অসংখ্য লোক মুভামুধে পতিত হয়। বিশেষতঃ বাংলা দেশে ফলারোগের প্রাছভাব-বশতঃ অনেক কার্যাক্ষম নর-নারী যৌৰনেই অকাল মৃত্যুতে, অথবা কুল অবস্থার কার্যো অক্স হইরা আমরণ শ্যাশারী থাকিয়া সাংসারিক ক্ষতি ও দারিদ্র্য প্রতিনিয়ত বুদ্ধি করিতেছে। পৃথিবীর প্রগতিশীল দেশসমূহ এক একটি জীবনকে অমৃদ্য

সন্পদ জ্ঞান করে। জাতির ও দেশের পক্ষে এরপ মূলাবান্ সন্পদ রক্ষার উপায়সমূহের দিকৈ দৃষ্টিপাত করিলে আন্চর্গাবিত হইতে হয়। কেবলমাত্র তাহাই নহে, বিভিন্ন দেশের স্বাস্থারকার পদ্ধতি হইতে আমরা স্বদেশে থাকিরাও অনেক মূল্যবান্ তথ্য আহরণ করিতে পারি।

উপরের চিত্রথানি স্ইলারলাাতের ডাভস্ (Davos) নামক একটি মনোরম ছানের। বংসরের মধ্যে পাঁচ মাস ছানটি ত্বারাবৃত থাকে। গাছ, মাঠ, পথ প্রভৃতি সকলই বরকে ঢাকা। এথানকার আবহাওরা শুক, অথচ কুরাণার নামগন্ধ নাই। বরকের মধ্যে স্থা-কিরণেরও কিছুমাত্র অভাব নাই। ডাভস্ পৃথিবীর মধ্যে একটি শ্রেট আছানিবাস বিলিরা প্রসিদ্ধ। বংসরের সব সমর পৃথিবীর বিভিন্ন দেশ হইতে বন্ধা, ইাপানি, সন্ধিকাশি প্রভৃতি রোগের চিকিৎসার লক্ত বহু লোক আসিরা ব্যাসন্ধব শীর পূর্ণবাহ্য লাভ



ডাভদ শহারর একটি দৃখ্য—তুমার-ক্রাড়া

করিরা থাকে। যক্ষা ও ক্ষয় রোগ সম্বংক্ষ গবেষণা করিবার জস্ত এখানে একটি রিসাচ´ ইন্স্টিটিউট আছে।

ডান্ডস্ একটি কুদ্র স্থান হইলেও এখানকার অধিবাসাদের আদ্ধারকার জ্ঞান্ত বিবিধ উপায় অবলম্বন করা হইয়াছে। সরকারকর্তৃক দ্বধ সরবরাহ, আবর্জন! পরিফার, পাহাড় হইতে শহরের মধ্যে বরণার জল সর্কারণ আনরন করা হইতেছে। রোগীদের জপ্ত পরিফার-পরিচ্ছা ফ্নার হাসপাতাল রহিয়াছে। ধনী দরিত্র সকলের উপবোগী হোটেল, যাস্থাবাস বা আবাসস্থল এখানে আছে। সাধারণতঃ লগুন হইতে চবিশা ঘটার মধ্যে সম্ভল ও পার্বত্য রেল বোগে ডান্ডস্ পনী ও ডান্ডস্ শহরে পৌছান যায়।

স্বাস্থ্যকামী রোগীরা আরোগ্যলাভের সময়ে বিবিধ প্রকারের ক্রীড়া করিয়া বাকেন। এই সব খেলা বা ইহাদের অনুরূপ কিছুই আমাদের দেশে এখনও প্রচলিত হয় নাই। অবশ্য আইস্ রিক্স, বব্-রান, টোৰোগান্ রান্, বা দ্বি জাল্প প্রভৃতি আমাদের দেশে সম্ভবপর না হইতে পারে। এখানকার জনসাধারণ ক্রীড়াকোতুক দারাও স্বান্থ্যাম্নতি বিষয়ে সম্পূর্ণ উদাসীন। এমন অনেক স্বান্থ্যকামী নরনারী দেখিয়াছি থাঁহারা অনেক অর্থবায় করিয়া ক্লোন পার্বত্য অঞ্চলে গিয়াও মোটেই পাহাড়ে উঠেন নাই; পাদদেশ হইতেই গিয়ির উচ্চ শিধর দর্শনে আনন্দলাভ করিয়া গৃহে ক্রিরিয়াছেন।

প্রত্যেক মানুষের সৰদ হস্থ অবস্থার বাঁচিয়া থাকিবার একটি ইচ্ছা আছে, এমন কি মৃত্যুর পূর্ব্ধ মৃত্রুর পর্যান্ত আরও কিছুদিন বাঁচিবার ইচ্ছা পোষণ করিতে অনেক রোগীকে দেখিরাছি। উপরিউক্ত হইজারল্যাণ্ড নেশের ডাজ্স্ ফলা স্বাস্থানিবাস পৃথিবার মধ্যে প্রসিদ্ধ বলিয়া বহু কলা ও অক্সান্ত যাসরোগাক্রান্ত রোগী চিকিৎসার জক্ত আসিয়া থাকে। বিশেষজ্ঞ চিকিৎসক্রণ ঐ সকল চিকিৎসা-আবাসে বিখ্যাত সিরোলিন রিট ইত্যাদি নির'পদ ও কার্যাকরা উষধ ব্যবহার ও অপ্প্রকার চিকিৎসা—যথা, অন্ত্রপ্রোগ—করিয়া থাকেন। এই উরধ ব্যবহার করিলে ফলাক্রান্ত রোগীদের প্রভৃত উপকার হইবে। ইন্ক্রুরেঞ্জা, নিউমোনিয়া, ভ্পিংকাফ্, সর্দ্ধি কাশি প্রভৃতি রোগেও ইবার ব্যবহারে বিশেষ উপকার পাওয়া গিয়াছে।

বাংলা

বন্ধীর-সাহিত্য-পরিষদ হইতে পদক ও পুরস্কার বোষণা—
নিম্নলিখিত বিবরে প্রবন্ধ-রচনার জন্ম বন্ধীর-সাহিত্য-পরিষদ
হইতে নিমোক্ত পদক ও পুরস্কার দেওয়া হইবে :—

| | • • • | |
|----------|---------------------------------|---|
| | পদক | धवः सन्न वि वय |
| ۱ د | হরপ্রসাদ হ্বর্ণপদক | হিন্দু-রাজছে রাচ়। |
| ۱ د | ৷ অক্ষয়কুমার বড়াল স্থবর্ণপদক— | অক্ষয়কুমার বড়ালের কাব্যের |
| ত। | কালীকৃষ্ণ হৰৰ্ণপদক— | বৈশিষ্ট্য বিশ্লেষণ ও আলোচনা। আধুনিক বাঙ্গালা গছ্য- নাহিতোর গতি। |
| 8 | হেমচন্দ্র স্থবর্ণপদক | ৰঙ্গদাহিত্যে হেমচক্ৰের স্থান। |
| e i | অক্ষয়কুমার বড়াল রোপ্যপদক— | অক্ষরকুমার বড়ালের কাব্যে |
| | • | করুণ রস ! |
| 6 | হুরেশচন্দ্র সমাজপতি রোপ্যপদক— | মাসিক-সাহিত্য সমালোচনার |
| | | ধারা ৷ |
| 9 | । বিপিনচক্র পাল রোপ্যপদক— | বৈষ্ণৰ-সাহিত্যে বিপিনচন্দ্রের |
| | | नान । |
| | | |



পরলোকগত বীরেজনাথ শাসকল মহাশরের শব দইরা কেওড়াতল। খাশানঘাটের অভিমূপে যাত্রা



শীযুত জ্যোতিরিক্স রামের আরতি-নৃত্য পুরস্কার

) রামেক্রপ্রকর ত্রিবেদী স্মৃতি-প্রস্কার (১০০ ্)—বৈদিক যুগে আর্ঘা ও অনার্ঘা।

প্রবন্ধগুলিতে গবেষণা ও বিচার-শক্তির পরিচয় থাকা আবশুক। ৪র্থ বিষয় ছাত্রগণের জম্ম এবং ৫ম বিষয় মহিলাগণের জম্ম নির্দিষ্ট। অম্মাম্ম বিষয়ে সর্ব্বসাধারণে প্রবন্ধ লিখিতে পারেন। বর্তমান বর্ধের চৈত্র-সংক্রান্তির মধ্যে বন্ধান-সাহিত্য-পরিষদের সম্পাদকের নামে ২৪৩১ আপার সাক্লার রোড, কলিকাতা—এই ঠিকানায় প্রবন্ধ পাঠাইতে হইবে।

ভারতবর্ষ

পরলোকে প্রবাসী বাঙালী--

মণ্টগোমারির সিবিল সার্জ্জন পঞ্জাব-প্রবাসী ক্যাপ্টেন কুপাফ্লর বস্থ মহালর সম্প্রতি পরলোকগমন করিরাছেন! কর্মপ্রতা নানা ছানে গমন করিরা তিনি ধর্মপ্রতা সভ্যাপ্রিয় ও সেবাপরারণ ব্যক্তিব বিলয় সাধারণের নিকট পরিচিত ছিলেন। তিনি বঙ্গের বাহিরের বাঙালীর মর্যাদা বাড়াইতে যথেষ্ট সহারতা করেন।

বহু মহালর ১৮৮০ সনে ভাগলপুরে জন্মগ্রহণ করেন। ভাঁহার পিতা কার্য্যোপলক্ষে ঢাকা—বিক্রমপুর হইতে ভাগলপুরে আসেন ও তথার ছায়িভাবে বসবাস করেন। কুপাফুলর ভাগলপুর হইতে



শীযুত জ্যোতিরিক্স রায়ের আরতি-মৃত্য



কাপ্টেন কৃপাহন্দর বহ

এক —এ পরীক্ষার উত্তার্গ হইরা ১৮৯৮ সনে লাহোর মেডিকাল কলেজে প্রবেশ করেন। ১৯০৩ সনে ডাক্তারী পরীক্ষার উত্তীর্গ হইরা ছই বৎসর পরে এসিষ্টাণ্ট সার্জ্ঞনরূপে পঞ্জাব-সরকারের মেডিক্যাল সার্ভিনে প্রবেশ করেন। বিগত মহাযুদ্ধে তিনি বস্রায় ডাক্তার হইরা যান ও চারি বৎসর পরে আবার ব্যদেশে ফিরিরা আসেন। তিনি ১৯০১সনে সিবিল সার্জ্জনের পদে উন্নীত হন। এই পদে থাকা কালীন তাঁহার মৃত্যু ইইরাছে।

রাঁচি বঙ্গদাহিত্য-সন্মিশন ও শিল্প-প্রদর্শনী---

- গত ৭, ৮, ৯, ও ১০ই নভেমর রাচিছ হিন্দু ফেণ্ডস্ ইউনিয়ন ক্লাব



বাম দিক হইতে (দঙায়মান) শীগুক নলিনাকুমার চৌধুরী, শীগুক কালীশরণ মুপোপাধায়, শীগুক ব্রহ্মানল দেন (সন্মিলনীর সম্পাদক)। (উপবিষ্ট) শীগুক নীরদকুমার রাগ, শীথুক স্থনীতিকুমার চট্টোপাধ্যায়, শীগুক কেব্রনাথ চৌধুরী।

সাহিত্য-সন্মিলনের উচ্চোগে বঙ্গদাহিত্য-সন্মিলনের তৃতীয় বার্ষিক অধিবেশন অসম্পন্ন হইয়াছে। এই সঙ্গে প্রত্নতন্ত্রীশিল্প ও চিত্রশিলের একটি প্রদর্শনীও ইট্যাছিল। সভাপতির আসন এহণ করিয়াছিলেন বিখনত ভাষাত্ত্রবিৎ, কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের সনাম্পাত অধ্যাপক ডা: শীগুক্ত ফুর্নাভিক্মার চট্টোপাধ্যার, এমৃ-এ. দ্রি-লিট মহাশয়। ফুনীতি বাব তাঁহার অভিভাষণে বাংলা-সাহিত্য ও বাঙালী জাতির উৎপত্তি ও ক্রমোল্লতি সক্ষে বিশদভাবে বর্ণন করেন। অভার্থনা-সমিতির সভাপতি হইয়াছিলেন স্থাসন্ধান্তার্বিং রায়-বাহাত্র শর্ম চক্র রায়, এম্-এ, এম-এল্-সি মহাশয়। সমাগভ ভ্রমণ্ডলাকে সাদরে অভার্থিত ও অভিনন্দিত করিয়া তিনি নতর সম্বন্ধে একটি উচ্চাক্তের অভিভাবণ পাঠ করেন। স্থনীতি বাব ভাহার অভিভাষণ ছাড়া সন্মিলনীতে ছায়াচিত্রসহযোগে আরও বিষয় যথাক্রমে—'ভারতীয় বিষয়ে वरूठा करत्रन, এবং 'গ্ৰীক ভাস্বর্যা'। সংস্কৃতি ও বৃহত্তর ভারত' স্থানীয় বহু সাহিত্যিক এই সম্মিলনীতে যোগদান করিয়া সভার সোহব বর্দন করিয়াছিল্লের।

প্রবাসী বনীয় সঙ্গীত-সম্মেশন, পাটনা---

বিগত অক্টোবর মাসে মহাল্যার ছুটিতে পাটনার এই সম্মেলনের প্রথম বাবিক অধিবেশন হইয়া সিয়াছে। সঙ্গীতক শীযুক্ত দ্র্ণীয়চক্র বোব দন্তিদার মহাশ্রের অক্লান্ত পরিশ্রনে ও অপরিসীন বত্নে ইহা সক্লব হইরাছে। পার্টনা হাইকোর্টের প্রধান বিচারণতি ক্লর কোর্টনী টেরেল মহোদর এই সংস্থাননের সভাপতিত্ব করেন। সম্মেলনে সঙ্গীত সম্ব ক্ল বক্তৃতা ও বিভারিত আলোচনা হইরাছিল। পরে সঙ্গীত-প্রতিযোগিতায় বে-সব ছাত্রছাত্রী বোগদান করিয়াছিলেন ভাহারা ভণ্যসারে নিম্নোক্রমণ রোগ্য-পদক লাভ করিয়াছেন—

হারী

শ্রানা
শ্বিনা

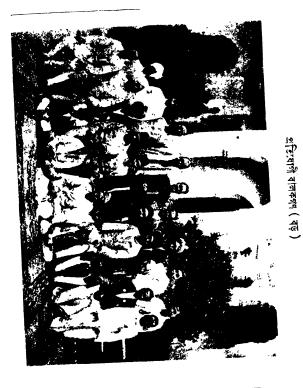
ধ্রণদ-- প্রথম--- শীমান্ অরণকুমার চট্টোপাধ্যার, পাটনা।
দ্বিতীয়--- শীমান্ গিরিশকুমার সিংহ, পাটনা।
পেয়াল -- উচ্চপ্রশংসিত--- শীমান্ অরুণকুমার চট্টোপাধ্যার, পাটনা।
বাঁশের বাঁশী--- প্রথম--- শীমান্ মণ্টু, পাটন।

এই সম্মেলনে একটি ছায়া সমিতি গাঠত হইয়াছে। সমিতির নাম "দি মিউজিক্যাল সোসাইটা অব বিহার এও ওড়িয়া, পাটনা।" পাটনার বিশিষ্ট রাজিগণ ইহার সভাপদ গ্রহণ করিয়াছেন :

এলাহাবাদ ইউনিভার্মিট সঙ্গীত-সম্মেলন-

গত নবেষর মাসে এলাহাবাদে ইউনিভাসিটি সঞ্চীত-সংশ্বলনের পঞ্ম অধিবেশন হইয়া গিয়াছে। পূর্ব্ব পূর্ব্ব বারের মত এ-বৎসরেও প্রধানতঃ ডক্টর দক্ষিণারঞ্জন শুট্টাচাঘোর চেষ্টা-যত্নে ইহা সাক্ষলামিওত হইয়াছে। আগ্রা-অঘোধার লিক্ষা-সচিব শীবৃত জে পি শীবান্তব সম্মেলনের উরোধন করেন। সন্তাপতি হইয়াছিলেন পাটনার শীবৃত সচিদানন্দ সিংহ মহাশয়। সকলেই একবাক্যে ডক্টর দক্ষিণারঞ্জন শুটাচাঘ্যের কর্মকুললতার প্রশংসা করেন। শুটাচার্ঘ্য মহাশয়ের পুরক্ঞারা সসীতে বিশেষ পারদর্শী। গত বৎসরের স্কায় এবারেও ভাহারা সঙ্গাত-প্রতিযোগিতার সক্ষপ্রধম স্থান অধিকার করিয়াছেন। মাহারা নৃত্যা, বান্ত ও স্থাত প্রভিয়োগিতার করিয়াছেন। মাহারা নৃত্যা, বান্ত ও স্থাত প্রভিয়ার প্রশান্ত ভারারা সক্ষার প্রভারের স্থাতার স্বিতিয়ার স্থাতার স্থায় স্থাতার স্থাতার স্থাতার স্থাতার স্থাতার স্থাতার স্থাতার স্থানার স্থাতার স্থাতার স্থাতার স্থাতার স্থাতার স্থাতার স্থাবার স্থাতার স্থাতার

কঠসলীতে—শ্রীমতী শান্তিলতা বাঁড়ুজ্যে, প্রীমতী প্রভাবতী মিত্র, প্রীমতী সান্ধনা ভট্টাচার্য্য, প্রীমন্ স্থারলাল চক্রবর্ত্তী, প্রীমতী চম্পক লক্ষ্মী, প্রীযুত এন আর ভট্টাচার্য্য, প্রীযুত চক্রশেশর পন্ত, শ্রীমতী গৌরীরাগী খোব, প্রীমতী স্বমা দে, প্রীমন্ দেবীপ্রসাদ ভট্টাচার্য্য, প্রীযুত রবীক্রনাথ চাট্জ্যে, প্রীযুত কে সি মন্ত্রমার, প্রীযুত ভি জে জোশী। নৃত্যে—শ্রীমতী সান্ধনা ভট্টাচার্য্য, প্রীযুতী শোভা ভট্টাচার্য্য। স্বোলন প্রীমতী ভাগেলী। প্রীযুতী শোভা ভট্টাচার্য্য। সোলল শ্রীমতী উষাধেরী গোভিল, শ্রীমতী বেণুকা সাহা, প্রীযুত এন আর ভট্টাচার্য্য। বেহালা—শ্রীমান্ দেইতক্স









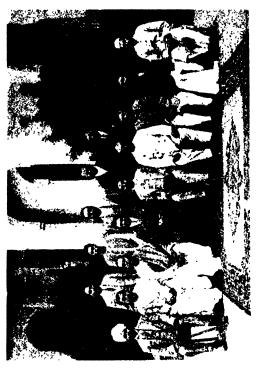
প্ৰতিযোগী বালকগণ (ছোট)

هر--ده

भाजेरद वान्ति मन



は



ामिडि, विहा अ षाडार्थना-





कात्र आश

জানী, প্রীমান্ অগদীন, প্রীমতী বাণাপাণি মুণ্জ্যে, প্রীমতা বিন্দ্বাসিনী রার; তবল!—শ্রীমান্ ফুলু মুণ্জ্যে, প্রীমান্ হেমচক্র জোনী, প্রীমান্ নিশিতেল বাড়ুজো, প্রীয়ত অর্থাকুষার পাল, প্রীমূত এম্ আর ভট্টাচার্য্য, প্রীয়ত অনাধনাথ মুণ্ড্রা, প্রীয়ত জ্ঞানদানাথ মঙ্মদার; সারেক—শ্রীয়ত রাধিকামোহন মৈত্র; পাথোরাক্ত—শ্রীয়ত প্রতাপনারারণ মৈত্র।

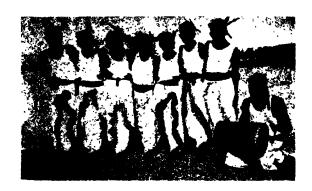
এলাহাবাদে অন্ধ-গায়ক কুফচন্দ্ৰ দে----

এলাহাবাদ বিশ্ববিদ্যালয়ের উদ্যোগে এলাহাবাদে যে পঞ্চম সঙ্গাত-সম্মেলন হইরাছিল, ভাহাতে কলিকাতার থাতনামা অন্ধ-পায়ক শীযুক্ত কুক্চক্র দে গত ৭ই ও৮ই নবেম্বর গান করিয়া সকলকে মুগ্ধ করিয়াছিলেন। তিনি যুক্তপ্রদেশের মন্ত্র। নবাব সার মহম্মদ ইউম্বফ, সরকারী উকীল মিঃ মজিদ প্রমুখ প্রদন্ত বহু স্বর্ণপদক প্রাপ্ত ইউয়াছেন। এই পার্ক রোড ক্লাবে ও১০ই লরেলগঞ্জেও তাঁহার গান হইরাছিল। কৃষ্ণবাবু১৮৯৪ খৃষ্টাব্দে জন্মগ্রহণ করেন—তের বৎসর ব্যুসে তাঁহার চক্ষ্মপ্র নত্ত হইয়া যায়। ভাদবিধি তিনি সঙ্গাত্তচটো করিতেছেন। ভাহার এই সাক্ষলো বাঙালীমাত্রেই গৌরব অমুভ্ব করিবে।

রেঙ্গুনে বেঙ্গণ একাডেমীর উৎসব—

গত ১১ই অগ্রহায়ণ রেঙ্গুনের বেঙ্গল একাডেমির পঞ্বিংশতি বংসর পূর্ণ হর। এতত্বপলক্ষ্যে একটি উৎসবের আয়োজন হইয়াছিল।

কলিকাতার মৃষ্টিযোগা ও তরুণ ব্যায়াম-শিক্ষক শারবীক্রনাথ সরকার লোক-নৃত্য ও অক্সাপ্ত নৃত্যাদি শিক্ষা দিবার জন্ত সেথানে নিমন্ত্রিত হন এবং তাঁহার কার্যোর দক্ষতার পরিচয় দিয়া বহু প্রশংসাপন ও পুরস্কার লাভ করেন।



রেবুনস্থ বেক্সল একাডেমি—সিলভার জুবিল: উৎসব

মাননীয় প্রধান বিচারপতি মি: পেল ও তাহার সহধর্মিনা সভাপতির আসন অলম্কত করেন। সভাপতির বক্ত া শেষ হইলে উৎসব আরম্ভ হয়। ছাত্রদের মৃষ্টিনুদ্ধ, মন্ত্রুদ্ধ, রোমান-রিং ও ছাত্রাদের ভারত-বরণ, বর্গামকল, বর্গাহক প্রভৃতি নৃত্য আমোদ-প্রমানের প্রধান আল ছিল। প্রীযুক্ত শুক্তমদর দত্ত মহাদার প্রবর্ধিত পরামুক্ত রেকুনের প্রবাসী বাঙালী ও অভাক অধিবাসি-গর্ণক স্কীমান্ রবীজনাথ এই প্রথম দেখাইলেন। উক্ত বিভালরের ছাত্র জীমান্ ক্রোথ চৌধুনী রোমান-রিং দেখাইরা শ্রীমতা ল্যোভির্মান রুগোপাধ্যারের নিকট ইইতে একটি বর্ণ-গর্জ ছৌপ্যপ্রশ্ব



রেঙ্গুনম্ব বেঙ্গল এক!ছেমি —দিলভার জুবিলী উৎসব



রেঙ্গুনস্থ বেঙ্গল একাডেমি —দিল গর জ্বিলী উৎসব



শ্রীযুত ননী চক্রবর্ত্তী--কাশী হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয়। ইনি সম্ভরণে
১৯৩৪ সনে সর্ব্বপ্রধান স্থান অধিকার করিয়াছেন

লাভ করেন। উক্ত বিনালেরের বারাম-শিক্ষক শ্রীযুক্ত শিশিরকুমার চক্রবর্ত্তী ও তাঁহার স্থবোগ্য ছাত্র শ্রীমান জ্যোতিষ খান্তগীরের জাপানী যুব্ৎস্পুও বিশেষ উল্লেখযোগ্য। কিন্তু সর্বাপেকা উপভোগ্য হইয়াছিল বালিকাদের নৃত্য; ছোটনের নমস্মার 'হে স্বিয়মাম!' এবং কিশোরাদের 'বর্ষামঙ্গল' নৃত্যটি সকলের ভাল লাগিয়াছিল। শ্রীমতী অন্নপূর্ণা সান্ন্যালের 'ব্রপ্নভক্ত' নৃত্যটি সকলের মনে সর্ব্বাপেকা বিশ্বর উৎপাদন করে।

পরে পুরস্কার বিভরণ ও শক্ষেয় যতীশরঞ্জন দাসেরপ্রভিক্তি প্রভৃতি উদ্যোচন করা হয়।

অর্থনৈতিক প্রাসঙ্গ

জম্বেট-পার্লামেন্টরী রিপোর্ট ও ইঙ্গ-ভারত বাণিজা সম্পর্ক--

ভারতবর্ধকে পূর্ণ সায়ত্ত শাসন দেওরা হইলে আশক্ষা আছে যে,
(ক) ভারতে ব্রিটনীয় বাণিজ্য-স্বার্থের বিরোধিতার এবং (ধ) ইংলও
হইতে ভারতে আমদানী সম্পর্কে আইনগত ও শাসনগত বৈশন্যের
স্ষষ্ট হইতে পারে। স্তরাং জ্যেন্ট-পার্লামেন্টরী কমিট ভারতে
ইংলওার বাণিজ্য-স্বার্থ রক্ষার জন্ত ক্তিপ্য স্থপারিশ ক্রিরাছেন--

(১) বুক্তরাজ্ঞা (ইংলগু, ওয়েল্স্, স্কটল্যাণ্ড ও উত্তর আয়ল্যাণ্ড) হইতে ভারতে যে সকল পণ্যাজ্ঞবা আমদানী হইবে তাহার বিরুদ্ধে আইনগত কিংবা শাসনগত বিধান নিরোধ করিবার ক্ষমতা গ্রহণ্র-জেনারেলের থাকিবে।

ভারতীয় কোন আইন পরিষদ কিংবা কোন সরকারের অধিকার ধর্মক করিবার জন্ম এই বিশেষ ক্ষমতা দানের প্রস্তাব নংহ! পদি এমন অবস্থা দাঁড়োয় যে, কোন আইনের উদ্দেশ ভারতের পার্থ বৃদ্ধি বা রক্ষা নহে, যুক্তরাজেরে স্বার্থহানি, তবেই এই বিশেষ ক্ষমতার প্রয়োগ করা ইইবে।

- (২) যুক্তরাজ্যের অধিবাসা কোন "ব্রিটিশ" প্রজার ভারতবংম প্রবেশ করিবার অধিকার থকা করিয়া কোন আইন পাটিবে না । ত:ব কোন অবাঞ্চনীয় ব্যক্তিকৈ বহিষ্ণার করিবার অধিকার ভারতীয় কর্ত্তপক্ষের থাকিবে।
- (৩) বাসছল, স্বদেশ, বাসকাল, ভাষা, জাতি, ধলু ব! জল্মভূমি ইত্যাদির উপর ভিত্তি করিয়া কোন সর্ত্ত বা নিষেধমূলক কোন আইন যুক্তরাজাবাসী কোন ব্রিটিশ প্রজার উপর ট্যান্ত, ত্রমণ, বাস, বিত্তরখা, চাকুরী, ব্যবসা বা বৃত্তি সম্পর্কে প্রযোজ্য হইবে না।

- (*) যুক্তরাজ্যে বে সকল যৌথমগুলী গঠিত হইরাছে বা হইবে, সেগুলি ভারতে যদি বাবসা কার্য্যে রত হর তবে ডাইরেক্টর, অংশীদার, এজেন্ট ও কর্মচারীদের বাসস্তল, ভাষা, জাতি, ধর্ম, জম্মদান কিংবা মণ্ডলার গঠনস্থান সম্পর্কে ভারতীয় আইন মাস্ত করা হইরাচে বলিয়া গণ্য হইবে।
- (৫) ভারতে যে সকল যৌখনওলী গঠিত ইইছাছে বা হইবে,

 যুক্তরাজ্যবাসী ব্রিটিশ-প্রজা যদি তাহাদের ডাইরেক্টর, অংশীদার, এজেন্ট বা কর্মচারী হয় তবে ঐ সকল সম্পর্কে ভারতীয় আইনে নির্দিষ্ট সর্বগুলি পুরণ করা হইয়াছে ধরিতে হইবে।

দি নিউ ইণ্ডিয়া এসিওরেন্স কোম্পানি লিমিটেড—

গত ৩ লৈ মাৰ্ক্ত ১ তেঃ এই কোম্পানীর পঞ্চল বৎসর পূর্ণ হইল : এই বৎসরের জ্ঞ বিবর্ণী প্রকাশিত হইয়াছে। ''অগ্নি"-শাখায় আলোচা বর্ষে নিট প্রিমিয়ামের পরিমাণ মোট ৩৪,৭৯,৪১ % আনা, পুর্বর বংসর অপেকা ৯,৫৯,০৫৮॥ ৮৪ পাই কম। ব্যক্সভার পূর্ব বংসরের প্রিমিয়াম আয়ের শতকরা ৪০০ ভাগ হইতে বাডিয়া ৪০০০ ভাগ হইয়াছে। কিন্তু এই বিভাগের সর্বাপকার রিজার্ড ফাও নিট প্রিমিয়ামের পূর্বে বংসরের শতকরা ৭৯৮ হইতে বাড়িয়া ৯৮৫ হছরাছে। "সমুদ্র"-বিভাগে নিট প্রিমিয়াম পূর্ব্ব বৎসরের অপেকা ১, ৩৫, ৩০৮। /১১ পাই কমিয়া ১৯,৩৬, ০২৮ এণ পাই দাঁড়াইয়াছে। বায়ভার প্রিমিয়াম-আয়ের ১৬: ভাগ হইতে বাডিয়া ১৭:৭ ভাগে উঠিয়াছে। মোট তহবিল পূর্ব্ব বৎসর ছিল প্রিমিয়াম-আন্মর শতবর্ ১১৩°৫ ভাগ, আলোচ্য বর্ষে ১২৮'১ ভাগ। "ছুখটনা"-বিভাগে নিট প্রিমিয়াম পূর্বে বৎসর অপেকা ২৩,১৪৭৮৯ • বাডিয়া ৫,৪১,৯৪৪॥২ পাই দাঁড়াইয়াছে। বায় প্রিমিয়াম-আয়ের শতকরা ৩ । ৮ হইতে ৪১ র উঠিয়াছে। ইহার রিজার্ভ পূর্ব্ব বৎসরে ছিল প্রিমিয়াম-আয়ের শতকরা ৮৮২, এবার শতকরা ৯০৩। "জাবন"-বিভাগে আলোচাবর্ধে ১,৪২,৯৯,৫৫• টাকার পরিমাণে ৬,৬১৪ প্রস্তাব আসিয়াছে। পূর্বা বৎসরের বকেয়া প্রস্তাব ও এ-বংসরের প্রস্তাব **২**টতে মোট ৽,০৯০ "পলিসি" হইয়াছে, টাকার পরিমাণ ১,১১,৬♦,৪০০ মার। এওখাতীত ২০,০০০ টাকার ছটে এমুয়িট বত ও ২০০০০০ টাকার একটি "দীজহে।ত বিডেম্পেশন পলিসি" হইয়াছে। ১১,৮০৮ সংখ্যক সাধারণ পলিসি আলোচাবর্ধে বলবৎ, দাবির পরিমাণ ২,৮৪,২৫,৮০৪_{। সার ।} কোম্পানীর সর্বপ্রকার মোট তহবিলের পরিমাণ ১,৬৫,১৪,৯৪৭৮৪ পাই মাত্র। আলোচ্যবর্ষের কার্য্যদারা ভহবিলের পরিমাণ ন, •৩,১১৪৮৮/১ পাই বাডিয়া ছ।

ভারতার বামা মওলীর মধ্যে নিউ ইণ্ডিয়া এসিপ্তরেন্স কোম্পানা লিমিটেড অন্ন সময়ের মধ্যেই বেশ উচ্চন্থান অধিকার করিয়াছে।



বহিৰ্জগৎ

সারের ভবিষ্যৎ---

ফান্স ও জার্মানীর সীমান্তে, সার নদীর উপকৃলে, যে ক্মুদ্র উপতাকা আছে কিছুকাল যাবং জগতের দৃষ্টি তার ওপর নিবন্ধ হয়েছে। এই সার (Saar) প্রদেশ বাংলার অনেক জেলার অপেক্ষা ছোট এবং যদিও জারগাটি জনবহুল, এর লোকসংখ্যা আট লক্ষের বেণী হবে না। কিন্তু বর্তমান বছরে যুরোপের অন্ত কোন প্রদেশ সার উপত্যকার অর্কেক প্রসিদ্ধি লাভ করে নি। এই অসাধারণ খ্যাতির কারণ—আগামী ১৩ই জামুয়ারী সারের অধিবাসীবৃন্দের ভোটের ঘারা নির্দারিত হবে তাদের দেশ জার্মান রাইশের সক্ষে সংযুক্ত হবে, না ফ্রানের সঙ্গে সংযুক্ত হবে, অথবা যে ভাবে আছে সেই ভাবেই থাকবে।

১৯১৯ সনের ভার্সাইরের সন্ধিতে এই কুদ্র প্রদেশটিকে জার্মানী খেকে বিচ্চিত্র করে যতম শাসনাধীনে আনা হয়।

সার করলার পনিতে ভরা। যুদ্ধের আগে এই করলার পনিগুলি প্রধানতঃ প্রশিষ্যা ও বাভেরিয়া গভর্ণমেটের হাতে ছিল। এই সব করলার থনিতে ষাট হাজার লোক খাটত এবং ১৯১২-১৩ সনে বছরে এক কোটি ত্রিশ লক্ষেরও বেণী করলা উৎপন্ন হত। প্রভূত অর্থনৈতিক উন্নতির ফলে জার্মানার বিভিন্ন স্থান থেকে প্রায় দেড় লক্ষ লোক এখানে এসে নৃত্ন করে বসবাস স্থাপন করেছে।

যুদ্ধের পর ফ্রান্স জার্মানীর নিকট ক্ষতিপুরণ-সর্রূপ করলার থনিগুলি দাবি করে। ফলে, করলার থনিগুলি, বিদ্বাৎ সরবরাহের কেন্দ্র, রেলপথ, স্কুল, ঘর-বাড়ি, হাসপাতাল ইত্যাদি ফ্রান্সের সম্পত্তি হয়ে যায়। এই সবের মূলা জার্মানীর নিকট প্রাপা ফ্রান্সের ক্ষতিপুরণের টাকা খেকে বাদ দেওরা হয়।

মার্কিনের প্রেসিডেণ্ট উড়ো উইলসনের ইচ্ছামুসারে ইহার শাসনভার বিশ্বরাষ্ট্রসভেবর হাতে স্তম্ভ হয়। তিনি প্যালেসটাইন কিংবা সিরিয়ার স্থান্ন সারকে কোন বিশেষ রাষ্ট্রের তত্বাবধানে রাগতে চান নি, কারণ সার স্বায়ন্ত-শাসনের অযোগ্য এ কথা বলা ভূল। পকান্তরে, ডানসিগ শহরের শাসনপদ্ধতি বেশী স্বাতস্ত্রামূলক মনে হওয়ার, অস্ত ৰাৰত্বা করা তিনি যুক্তিসঙ্গত মনে করেন। অতএব, বিশ্বরাষ্ট্রসজ্বের ওপর এই দেশের শাসনের দায়িত্ব অর্পিত হয়। বিধরাষ্ট্রসভেবর পক্ষ থেকে একটি শাসন-পরিষদ (Governing Commission) সারের গভর্ণমেণ্ট পরিচালনা করেন। এই পরিষদের পাঁচ জ্বন সদস্ত —এক জ্বন क्त्रोगी, এक जन मात्रवामा. এक जन किन् (किन्ला) एउद लाक), এक जन যুগোলাভ ও এক জন আইরিশমান। আইরিশমান জেওফে জর্জ নকস্ শাসন-পরিষদের বর্ত্তমান স্ভাপতি। তিনি এই কাজে ছু-বছরের বেশী নিযুক্ত অছেন। এই পরিষদ সকল কর্মচারী নিয়োগ ও বর্ষান্ত করতে পারেন এবং যে-কোন প্রয়োজনীয় শাসন-ব্যবস্থা অবলম্বন করতে পারেন। সার সম্বন্ধে ভার্সাইয়ে-সন্ধির নির্দ্ধেশের ব্যাখ্যা ভোটাধিক্যে নিরূপণ করার ক্ষমতাও তার আছে। ষনে রাখা দরকার, সর্বেবাচ্চ ক্ষমতা রাষ্ট্রসজ্বের হাতে। সারের আইন ও তার পরিচালনা-ব্যবস্থা পূর্ববিৎ আছে, **उ**ष् क्रिक बन

আম্বর্জাতিক আইনজীবী নিয়ে একটি উচ্চতম আদালত ন্তন করে স্থাপন করা হয়েছে।

জার্মানী এই ব্যবস্থার বিরুদ্ধে ব্রাবরই আন্দোলন করে এসেছে। হিটলারের শাসনভার নেবার পর পেকে এই আন্দোলন বিশেষভাবে





সার। ওয়ামবাগ। এই মার্কিন মহিলা সারের ভোটগুণনা পদ্ধতির নির্দেশ দিবেন

সারের শাসন-পরিষদের সভাপতি নক্স

বেড়ে উঠেছে। যে জারগার অধিবাসীদের মধ্যে শতকরা মান ছু-জন ফরাসী সেই জারগা জার্মানা থেকে বিছিল্প করে রাখা যুক্তিহান, কিন্তু জার্মানর। ১৮৭০-৭১ সনের ফাঙ্গো-জার্মান যুদ্ধের পর থেমন আলসেস্-লোর। নিজেরা দখল করে বসেছিল ফরাসাদেরও গত মহাযুদ্ধের পর সেইরকম কিছু করবার ইচ্ছা যে ছিল না, তা বলা যার না। কিন্তু যুদ্ধের ফলে ফাঙ্গা যে পরিমাণে ক্তিপ্রস্ত হর জার্মানীর কাছ থেকে কতিপুরণ আদার করে সে ক্ষতির অর্ধেকও পুরণ হরনি। সে যা হোক, ভাসাইরে-সন্ধির সর্ত্ত অনুযারী রাষ্ট্রসভ্য ১৯২০ সনের ১০ই জানুরারী থেকে পনের বছর অতীত হবার পর থত শীপ্র সম্ভব সারবাসী কার শাসনাধীনে থাকতে চায় ভোট নিয়ে তা জান্তে এবং সেই নির্দ্ধেশমত ব্যবস্থা করতে বাধ্য ।

গত লা জুন ফ্রান্স ও জার্মানীর মধ্যে ঠিক হয়েছে যে আগামা ১৩ই জামুমারী এই ভোট নেওরা হবে। রাষ্ট্রসজ্বের মন্ত্রণা-সভা এটা মেনে নিয়েছেন এবং ভোট নেবার ব্যবস্থা করার জস্তু কতকগুলি ট্রাইবিউঞ্জাল, কমিটি, কমিশন, ইত্যাদি নিযুক্ত করেছেন।

এই ভোট গণনা সাধারণ নির্কাচন নর। জার্নানীর বিপক্ষে ফাল ও অস্থান্ত "মিত্র" শক্তি এই প্রদেশ বর্তমান শাসনে রাবতে চান। যদিও সারবাসী ফ্রান্সের অন্তর্ভুক্ত হবার ইচ্ছা প্রকাশ করলে তাই-ই হবে, তথাপি সেইরূপ ইচ্ছা প্রকাশ কিন্তু কেহ আশা করেন না। জার্নানীও নিজের জারগা কিরে পেতে দৃঢ়প্রতিক্ত। জার্মানী সার প্রদেশ কিরে পেতে কতটা উদ্পীব তা বোঝা যার হের হিট্লারের কথা থেকে। তিনি বলেছেন, একমাত্র সার ছাড়া



সারের অধিবাসিদের মনে দেশার্রবোধ উদ্বোধনকল্পে ডক্টর গোরেবলস্ একটি সার বালিকার নিকট হইতে মুক্তিকা গ্রহণ করিভেছেন

আর কোন প্রদেশ নিরে ফান্সের সক্রে জান্মানীর বিবাদ নেই। তিনি একখাও বলে:ছন যে, যদি কোন গোলমাল না হয়ে এই সমস্তার মীমাংসা হরে যার-ত্র্থাৎ, জার্মানী যদি সার ফিরে পায়, তাহলে ছই নেশের মধ্যে বাগড়া করার কিছু থাকবে না। অতএব নির্বিবাদে সার-সমস্থার মীমাংসার ওপর বর্ণমানে মুরোপের শান্তি অনেকটা নির্ভর করছে এবং এইজন্ম সার এত প্রাধান্য লাভ করেছে। ফ্রান্সের প্রতি হের হিটলারের এইরূপ অনুরোধের কারণ, সারবাসা কোনদিকে ভোট দেবে সে-বিষয়ে জাশ্মনীর যথেষ্ট আশহা আছে। বদিও সারবাসীরা বেশীর ভাগই জান্মান, তাদের মধ্যে অনেকে জান্মানীর অন্তত্ত হ'তে নারান্ধ। এর প্রধান কারণ, বর্তমান জাগ্নানীতে নাৎসিদের আধিপতা। গত ছ-বছরের মধ্যে জনেক কমিউনিষ্ট ইত্রীও অক্সাক্ত রাজনৈতিক পলাতক সংরে আশ্রয় নিয়েছে। তাদের মুখ খেকে নাৎসিদের কীর্ত্তি-কাহিনী অনেকেই শুনেছে এবং তাদের মধ্যে সেধানকার রাইশ গভর্গমণ্টের প্রতি একট। প্রবল বাতম্পুধা **एकरत एट्टिश्ट। विष्यवः काश्यमिक धर्मावनयो, हैं: मो, मामावामी** ও সমাজতান্ত্রিক প্রভৃতি করেকটি শ্রেণীর লোক কোন মতেই নাৎসিদের হাতে পড়তে নারাজ! প্রতিকৃল ভোটের ভয়ে কিন্ত নাৎসিদের উদ্ভাম আরও বেড়ে গেছে ৷ সারের মধ্যে একটি নাৎসি ৰল ও তাদের বুংৎ প্রভিষ্ঠান গড়ে উঠেছে। হের হিটলার ও তার দল সর্বাপ্তকারে সারেম্বিত তাদের পক্ষপাতী দলকে সাহায্য করতে চেষ্টা করছেন। তুই দিকেই সভা, সমিতি ও আন্দোলন খুব প্রবলভাবে চলেছে। নাৎসি গভর্ণমেণ্ট সারের আন্দোলন চালাবার জক্তে গভ বছর ভাইস্-চ্যান্সেলার হের ফন্ পাপেনকে নিযুক্ত করেন, এ বছর পাপেন মন্ত্রিমণ্ডল ত্য:গ করবার পর পালাটিনেটের নেতা হেন্দ্র জোদেফ বুরেকেলকে সেই পদে নিযুক্ত করেছেন। নাৎসি গভর্ণমেণ্টের প্রচার বিভাগের মন্ত্রী ডাক্টোর জোগেল গোরেবেলস্ এই কাল্লে বিশেষ অর্থনী। তার কাল বেতার ও সংবাদপত্রের সাহা:বা সারবাসীদের পিতভূমির প্রতি দেশপ্রেম জাঙ্গিরে তোলা। বড় বড় সভা ক'রে সারের मार्शितन कट्ड वर्ष सुर्गिता, मात्रत (वकात यूवक्रमत सामामोत्र अधिक-আন্টোর এনে তাদের ভরণ-পোষণ ক'রে সারবাসীদের গত নেড

বছরে জানানো হয়েছে সার জার্মানীর কত প্রির।* কিন্তু এতেও সারবাসীর ভোটের সম্বন্ধে নি:সন্দেহ হতে না পেরে নাৎসিরা ভোটের দিনে বিপক্ষদলকে বাহবলে হারাতে মনত ক'রে ভিডরে ভিডরে বড়বন্দ্র করেছে। সারের প্রেসিডেট নকস নাৎসি দলের এই সব অপ্তায় আচরণের পক্ষপাতী নন, তাই তিনি এই বডবপ্ত দমন করতে প্রবাসী হয়েছেন। কিন্তু সারের পুলিস ও অক্সান্ত সরকারী বিভাগের বেশীর ভাগ লে৷কই নাৎসিদলভুক্ত, তাই শান্তি রক্ষা ক্রমশ:ই ক্রিম হয়ে উঠেছে। : ৩ই জান্তবারী যতই এগিরে আসংছ শান্তিভঙ্গের সপ্তাবনা ততই বাড়ছে। কিছুকাল আগে নক্স সাহেব রাট্র-সজ্বকে জানান যে, ভোট গ্ৰহণ করার দিন তিনি বাইরের বিনা সাহাথ্যে শান্তিরক্ষা করতে সমর্থ হবেন না। যদিও একথা সত্য ধে, অত্যস্ত সঙ্গীন অবস্থায় তিনি করাসী-সৈম্প্রের সাহায্য নিতে পারেন, তথাপি দ্বার্থানীর এতে প্রবল আপত্তি থাকাতে এই পদ্ধা কেহ যুক্তিসঙ্গত -মনে করেন না। অতএব ঠিক হরেছে, বুটেন, ইটালী, বেলজিয়ম প্রভৃতি দেশের সৈক্ত সারের ভাগ্য-নিরম্নণের দিন শাস্তি রক্ষা করতে সাহায্য করবে।

যদিও সাবে জার্পানদের বড়বন্ধ প্রকাশ হরে পড়েছে, শান্তিরক্ষার ব্যবহা হয়েছে এবং ফ্রান্স ও জার্পানীর পররাষ্ট্র সচিব এম্ লাভাল ও হের ফন্ নয়রাথ উভয় রাষ্ট্রের পক্ষ থেকে অঙ্গীকার করেছেন বে, কোন প্রকারে কোন পক্ষ হইতে অস্তায় চেষ্টা হবে না, তবুও ভবিষাৎ সম্বন্ধে নিক্রম্বির হওয়া কঠিন। প্রথমতঃ, জার্পানীর কথার তেমন মূল্য নেই। ভোট যদি তার বিক্রম্বে বায় তা হলে তার ক্রোধ ও অসস্তোষ বিশুণ হয়ে জ্বলে উঠ্বে। অন্তীয়াতে নাৎসিদের আচরণে প্রমাণিত হয়েছে যে, নাৎসিরা যেখানে আইনতঃ উদ্দেশ্য সাধন করতে পারে না সেখানে পাশবিক শক্তি নিয়েণ করতে তাদের বিধা নেই।

দ্বিতীয়তঃ, ভোট গণনার বারা সারবাসীর কি নির্দেশ বোঝা যাবে? সারবাসীর সামনে এখন তিনটি পথ রয়েছে তা আগেই উরেখ করা হয়েছে। এখন বিদি আর্থানীর পক্ষে ছ-জন, সার বড়ন্ত থাকবাব পক্ষে চার জন ও ফ্রান্সের পক্ষে তিন জন—এই অপুপাতে সারবাসীরা ভোট দের তাহলে কি সিদ্ধান্ত হবে? প্রার্থানীর পক্ষে সবচেরে বেশী ভোট, অতএব জার্থানী দাবি করবে সার তাকে কিরিয়ে দেওয়া হোক, কিন্ত যেহেতু তার বিরুদ্ধে মিনিত ভোট-সংখ্যা বেশী, সেইজঙ্ক দিতীরবার ভোট নেওয়া দরকার হবে এবং এই দিতীর বারে বদি সারের পক্ষে এবং জার্থানীর বিপক্ষে ভোটের সংখ্যা অধিক হর, তথনও আর একবার ভোট নিরে দেওছে হবে যে যথন ফ্রান্স ও জার্থানীর সঙ্গে মিনিত হওয়াই ছুটি মাত্র উপার তথন সারের জনমত কোন্ দিকে।

র।ট্রসজ্ব কিন্তু এ কথা বলেছেন বে, সন্ধির সর্ব্র অনুসারে সারের ভিন্ন ভিন্ন অংশের মত নিয়ে ঠিক হবে সেই সেই অংশ ভবিব্যতে কোন্ শাসনাধীনে থাকতে চার। জার্মানী বে এতে আপত্তি করবে সে বিবরে কোনও সন্দেহ থাক্তে পারে না।

আর একটি প্রশ্ন উঠতে পারে বে, ভোট দেবার দিন অনেকে জার্মানীর বিরুদ্ধে ভোট দিতে সাহস করবে কি-না, কারণ নাৎসিরা অনেক দিন ধরেই তাদের বিশক্ষণনকে শাসিরে আসছে এই বলে বে

* প্যারীর বিশ্যাত সংবাদপত্ত ল্য মাড্যা (Le Matin) বলেছেন, এই প্রীতি কিন্তু বুলের আগে ছিল না, এবং সাম্ব কিংল পারার পারু থাকবে কি-না সলেহ। 'সার একবার আমানের হাতে আহ্ব, তারপর তোমানের দেখে নেব।"
নাৎসিরা বে অনেককে ভর দেখিরে ভোট আদারের চেটা করবে সে
বিবরে সন্দেহ নেই। এইরপ আত্তর-স্টির কলে থদি বেশীসংখ্যক ভোট জার্মানীর পক্ষে বার ভাহলে প্লেবিসাইট ট্রাইবিউনাল তা নাকচ করে দিতে পারেন।

এक सन সাংবাদিক রোম থেকে খবর দিচ্ছেন যে, সিনর মুসোলিনী সারবাসীদের একটি স্বাধীন শাসনতম্ব উপহার দিতে মনস্থ করেছেন! এই খবর সভা কি মিখ্যা এখনও জানা যায় নি. তবে এটা নিশ্চয় করে বলা যেতে পারে ১৩ই জামুয়ারার ভোটের ওপর সব নির্ভন্ন করবে। একজন বিচক্ষণ সংবাদসাতা বলছেন ৩০এ জুন জার্মানীতে যে হত্যাকাও সাধিত হরেছে তাই দেখে অনেকে "পিতৃভূমির" প্রতি বিমুধ হয়েছে এবং আগে এই ভোট-যুক্ষ जार्जानीत अत्र श्वाद य मञ्चादना हिल ठा এथन विलोन श्राह । সাম্যবাদ ও সমাজতন্ত্র মতাবলম্বীরা ও ক্যাথলিক পাদরীয়া ভাদের মতভেদ ভুলে গিয়ে আশ্চর্য্যরূপে মিলিত হয়েছে। সাধারণ ক্যাথলিকনের ওপর সায়ের ভাগা-নির্ভর করছে। অনেকে আশা করেন, ক্যাথলিক ধর্মগুরু পোপ এই বিষয়ে সারের ক্যাথলিক-দে**র জার্মানীতে ফিরে** যাবার বিরুদ্ধে ভেটি দিতে আজা দিতে পারেন, কারণ গত বছর হিটলারের সঙ্গে যে চক্তিপত্র স্বাক্ষরিত হয় সেই চুক্তি হিটলার ভক্ত করেছেন। কিন্তু পোপের ইচ্ছা থাকলেও এইরূপ কোন নির্দেশ দিতে বোধ হয় সাহস করবেন না কারণ, তাহলে তার্মানাতে লক্ষ লক্ষ ক্যাথলিকদের ওপর আরও অত্যাচার ২তে পারে।

নাৎসিদের পথে যতই বাধাবির থাকুক তারা কিন্ত চুপ করে বসে নেই। জার্মানী সকল জারগায়, এমনকি ফুপুর কানাডায় পর্যাস্ত, যে সকল লোকের সার প্রদেশে ভোটাধিকার আছে তাপের খুজেবের করছে। জার্মান গভর্গমেট তাদের যতোয়াতের ধরত বহন করবেন। এই উৎসাহ দেখে মনে হয়, শেষ পর্যাস্ত হিট্লারই জয়া হবেন। কিন্তু তায় এই আশা যদি সফল না হয় তাহলে সায় য়ৢয়য়াপে আয় একটি মহায়ুদ্ধের কায়ণ হয়ে দাড়াতে পারে। ফ্রান্স, বৃটেন, ইটালা—বায়া ১৯১৪ সনে নিপাড়িত বেলজিয়ানদের পেছনে দাড়িয়েছিল, আজ বিপদগ্রস্ত নাৎসি-বিরোধা সারবাসাদের পিছনে দাড়িয়েছে। ফলাফল কি হয় দেখতে জগতের লোক উৎস্ক হয়ে অপেকা করচে।

শাস্থিয় হত্যার জের---

মার্শাইরেডে অক্টোবর মাসের প্রথমে বে হত্যাকাও ঘ.ট ভার কলে হাঙ্গেরী ও মুগোলাভিয়ার মধ্যে বিরোধ আরও প্রকটাকার ধারণ করেছে:

র্গোলাভিয়ার রাজা আলেকলাঙার ও ফ্রান্সের পররাই-সচিব এন বার্থ্ রুগোলাভিয়ার অন্তর্গত্তী ক্রোট প্রদেশের বিপ্লবাদের বড়বন্ধে নিহত হন । এই ঘটনার পর আততারী কালেমানের বে-সকল সহকারী ধৃত হরেছে তাদের স্বীকারোক্তিতে প্রকাশ, তারা এই কার্যা করার লগু হাঙ্গেরীতে বিশেষ ভাবে তৈরী হরেছিল। হত্যাকারী কালেমান ও তার সহচরবৃন্দ সকলেই ইতিপূর্বেন নানা দোবে দণ্ডিত হরেছিল। কিন্তু দণ্ড প্রহর্ণের পূর্বেই তারা পালিরে গিরে হাজেরীতে আলের নের। গত নাসে রুগোলাভিয়ার পররাই-সচিব এন্ রেণ্ড টিট্চ গর্জারেক্তার পন্দ থেকে হাজেরীর ওপর দোবারোপ ক'রে বিষরাইসকো বে লিপি পেশ করেছেন করেক দিন হ'ল এর কাইজিলে ভাল আলোচনা হরে গেছে। হাজেরীর এপতিনিধি

হের এক্ছাড় ড্ এন্ লেভ ফড্তের জ্বালান্ত করেন। এই আলোচনার সময় বিশেব চাঞ্লোর ভঙ্কি হয়।



করাসী পরগাই-সচিব বাথ



যুগোলাভিয়ার রাজা আলেকজাণ্ডার ও রাণা মারি

এন গ্রেভ্টিট্ রাষ্ট্রসংজ্ব এই মর্ম্মে অমুযোগ করেন বে,
য়্গোল্লাভিয়া থেক বিপ্রবা পলাভকেরা হালেরীতে সর্বনাই আশ্রর
পেরে থাকে। গত হ-বছরের মধ্যে হালেরীর সীমাজের নিক্টবর্ত্তী
য়্গোল্লাভিয়ার ছানবিংশবে বহু হত্যাকাও ও অক্সাক্ত সম্ভাসবাদমূলক ঘটনা সংঘটিত হরেছে। এই অপকর্মকারীরা সকলেই
হালেরী থেক ওথানে ওপভাবে এসে থাকে। ইহারা হালেরীতে
থেকে বিপ্লব ঘটাবার জল্পে যথোপযুক্ত শিক্ষালাভ করেছে।
এই সকল অভিবোগ দলিল-দন্তাবেজ ও অ্বালাক্টিতের সাহায্যে
সমর্থিত হরেছে। বে বড়যন্তের কলে মার্সাইরে হত্যাকাও সংঘটিত
হরেছে তাতেও হালেরীয় অনেক রাজ-কর্মচারী সংশ্লিষ্ট ছিলেনঃ।

হাঙ্গেরীয় প্রতিনিধি বলেন, এই অভিবোগ তাদের বিপক্ষ কুদ্র মিত্রশক্তিবর্গের* (Little Entente) রাজনৈতিক চাল, কিন্তু গরিশেষে রাষ্ট্রসভ্যের সদস্তদের মিলিত অস্করোধে হাঙ্গেরিয়ান্ ও পলাতক ক্রোটিয়ান্দের দোষ তদস্ত করতে এবং তার পর অপরাধীদের শাস্তি দিতে সীকৃত হরেছেন। এই সিদ্ধান্তের ফলে মধ্য বুরোপীর শক্তিবর্গ একটা অংসর বিপদের হাত হতে মুক্ত হরেছেন।

১৯১৪ স.ল সাবিষার অন্ত্রীয়া-হাক্সেরীর যুবরাক্স ফার্ডিক্সাণ্ডের হত্যার ফলে মহাসমরের আগুল অবল ওঠে। এবার হাক্সেরী ও মুগোগ্নাভিয়ার বিরোধ বিশ্বরাষ্ট্রসভব আপোবে লিম্পত্তি করেছেন। বিশ্বরাষ্ট্রসভব না ধাক্লে এর ফল যে কি ভরাবহ হত তা সহজেই অনুমেয়। লাগুল লৌ-শক্তিক সম্মোলন—

বিগত মহাযুদ্ধের পর জগতের বিভিন্ন রাষ্ট্রের অন্ত্রসম্ভার এত ক্রন্ত গতিতে বেড়ে উঠেছে গে, কোন প্রকার আন্তর্জাতিক চুক্তির দার। ইহা নিরোধ বা হাস করার পদ্মা অবলখন করতে সকল রাষ্ট্রই এখন উইস্ক। কিন্তু ছুংখের বিষয়, রাজনৈতিক কারণে সকলের আর্থিক অবস্থা নিরতিশ্য় শোচনীয় হওয়া সত্ত্বেও শক্তিবর্গের অন্তর্সম্ভার ক্রমশংই বেডে উঠছে।



এনড্মিঝাল ষ্ট্যাউলি নুজুঝাষ্ট্রের প্রতিনিধিগণের প্রধান উপদেষ্টারূপে লগুনের নৌ-সম্মেলনে যোগদান করেন

১৯৩২ সনের কেরেয়ারী মাস থেকে জেনিভায় নিরন্ত্রীকরণ সভার আলোচনা চলে আসছে কিন্তু ভার কলে আজ পর্যান্ত জগতের এই ভয়াবহ অল্প-সমস্তার কোনও মীমাংস! হয় নি। সম্প্রতি মার্কিনের রাইসচিব মি: কর্টেল্রাল্ ও বৃটেনের প্রধান মন্ত্রী মি: র্যামজে ম্যাক্ডনাল্ড্ থেরপ মতামত প্রকাশ করেছেন তাতে মনে হয় নিরন্ত্রীকরণ-প্রচেষ্টা ব্যর্থ হয়েছে। কিন্তু গত জুল মাসে জেনেভায় শেষ চেষ্টা করে এসে বৃটেন, আমেরিকা, ফ্রান্স, ইটালী ও জাপান প্রকার কথাবার্ড্রা জারস্ত করেন। গত জুলাই থেকে অক্টোবার পর্যান্ত উল্লেম্ব নো-বহর সীমার মধ্যে রাধার্ম কথাবার্ড্রা বন্ধ ছিল। গত নবেম্বর মাসে লগুনে এই আলোচনা আবার আরম্ভ হয়। !

ওয়াশিংটনে ১৯২২ সনে বৃটিশ সাম্রাজ্ঞ্য, আমেরিকা, জাপান,

ক্রান্স ও ইটালী—এই পাঁচটা শক্তি তাদের তথনকার নৌ-শক্তি অনুযারী প্রত্যেকের নৌবহর এক একটা বিশিষ্ট সীমার মধ্যে রাখতে স্বীকৃত হন। পরস্পরের নৌ-শক্তি রেবারেরি করে না বাড়িরে আপোবে এই সমস্তার মীমাংসা করার এই প্রথম চেষ্টা—এবং ইহা



জাপানের প্রধান মন্ত্রী এয়াডমিরাল ওকাড়া

আংশিক ভাবে সফল হয়। বৃহত্তম যুদ্ধজাহাজগুলির সংখা ও মিলিত 'টনেজ' এই সম্মেলনে নির্দ্ধান্তিত হয়। কিন্তু সকল শ্রেণীর রণপোতের সংখা ও টনেজ সীমাবদ্ধ না হওয়ায় ১৯২৭ সনে যথন জেনেভায় নিরন্ত্রীকরণ বৈঠকের প্রারম্ভিক আলোচনা চলছিল তথন মার্কিন প্রেসিডেট কুলিজের আহবানে একটি নৌ-বৈঠক বুসে। কিন্তু এই বৈঠক সম্পূর্ণ বিফল হয়। পরে, ১৯৩০ সনে লওনে আর একটি নৌ-বৈঠক বুসে। তাহাতে ১৯২৭ সনে জেনেভায় উপস্থাপিত সমস্তাভিনির সমাধান হয় ও কুজার, ডেস্ট্রগার ও সাব্দেরিন সম্পূর্ণে এক চুক্তি হয়। গুধু প্রথম শ্রেণীর যুদ্ধজাহাজ সম্পর্কেই পাঁচটি শক্তিনিজেদের মধ্যে একপ্রকার ব্যবস্থা অনুমোদন করেন।

লণ্ডন-চুক্তির নির্দেশ মত ১৯০৫ সনে আবার মিলিত হয়ে এই পাঁচটি প্রধান নৌ-শক্তির আগেকার হুই চুক্তিই আলোচনা করবার কথা! এই সভায় যদি কোন নৃতন চুক্তি খাড়া না করা থায় তাহলে ১৯০৬ সনের শেষ দিনে দণ্ডন নৌ-চুক্তির মেরাদ স্বতঃই শেষ হবে। যদি একটি কিংবা একাধিক শক্তি তার বা তালের ইচ্ছা :৯৩১ সন শেষ হবার আগে জ্ঞাপন করেন তাহলে ওয়াশিংটন নৌ-চুক্তি এই সঙ্গে রদ হবে। ১৯৩৩ সনের মে মাসে নিরন্তীকরণ বৈঠকে জাপান অক্সান্ত স্বাকরকারীদের জানায় যে, সে অক্সদের তুলনায় নিজের জক্ত বৃহত্তর নৌৰহারের দানি করবে। জলপণে আমেরিকা ও বুটেন তার ছই প্রতিষ্কা। এরা এই দাবি মেনে নিতে অস্বাকৃত হয়েছে। অতএব আশা করা যায় যে, জাপান যথাসময়ে ওয়াশিংটন-চুক্তি নাকচের বিষয় বিজ্ঞাপিত করবে: এমন কি, এই চুক্তি স্বাক্ষরকারী করাসী ও ইটালীকে সে এই কার্য্যে যোগ দান করতে আহ্বান করেছে, কিন্তু এই ছুই শক্তিই এই বিষয়ে জাপানের সঙ্গে একমত হতে পারে নি।

আগেই বলা হয়েছে যে, বিভিন্ন শক্তিবৰ্গের মধ্যে জন্ত্র-শব্ধ সম্পর্কে প্রতিবোগিতার মূলে রাজনৈতিক কারণ বর্তমান। অভএব

[#] রুমানিরা, যুগোলাভিরা ও চেকোলোভাকিরা।

[†] লণ্ডন হইতে শ্রেরিত গত ১২ই ডিসেম্বরের রন্নটারের সংবাদে প্রকাশ, এই অলোচনা আবার অনির্দিষ্ট কালের জপ্ত হুগিত রাখা হইরাছে। প্রবাসীর সম্পাদক।

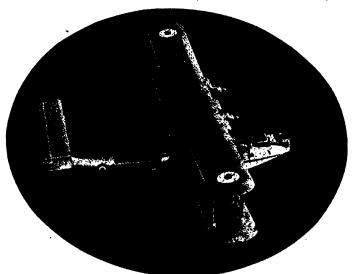
ল্লাপানের গাবির পেছনে কোন অভিস্থিত নিহিত আছে কি-না জান। প্রয়োজন।

১৯২২ সনে ওয়ালিংটনে বে-সকল চুক্তিপত্ৰ আক্ষরিত হয় নব-শক্তি-চুক্তি (Nine Powor Treaty) ও চতু:শক্তি-প্রশাস্ত-মহাসাগরিক-চুক্তি (Four Power Pacific Treaty) ভাগের অম্বতম। এইগুলিকে ভিত্তি করেই ওয়ালিটেন নৌ-চক্তি রচন! হয়: প্ৰথম ছটি চক্তিৰ প্ৰধান উদ্দেশ্য ছিল পৰাধীন চীনকে ভার পুরোপুরি বাধীনতা অর্জন করতে সাহায্য করা। শক্তিবর্গ গত মহাযুদ্ধে ওতপ্রোতভাবে লিংগ থাকার জাপান মাঞ্রিয়ায় তার আধিপত্য বিস্তার করে এবং একুশটি দাবি ক'রে চীনের কাছ থেকে নানা ব্লক্ষ স্থবিধা আদার করতে সক্ষম হয় ৷ স্থানটাঙের জার্মান উপনিবেশও সে দখল করে। ১৯২১-২২ সলে ওয়াশিটেনে এইজন্ত क्षांभानी माञ्जाकावात्वब्रहे (बनी ममात्लाहना इब्नः भवित्यस्य, नव--শক্তি-চুক্তিতে চানদেশে "খোলা দরজা"র ("open door"-এর) নীতি বিশেষভাবে বর্ণিত হয় এবং স্বাক্ষরকারী নয়টা শক্তি-বৃটিশ সাম্রাজ্য, মার্কিন যুক্তরাষ্ট্র, জাপান, ফ্রান্স, ইটালী, চীন, হল্যাও, বেলজিয়াম ও পটু গাল-প্রতিশ্রত হন যে, তারা প্রান্তিক প্রাচীতে (Fur East) শান্তি স্থাপনের চেষ্টা করবেন, চীনের স্বার্থ ও দাবি মেনে চল্বেন এবং চীন ও অস্তাক্ত শক্তির ভেতর সমভাবে মেলামেশার পুত্ৰ স্থাপন করবেন।



'হড' রণপোতে যুদ্ধনীতি শিকা

এর আগে অস্তান্ত সকলেই স্থবিধানত পরের দেশ অধিকার করেছে; জাপানও ১৯৩১ সনে মাঞ্রিরায় ঠিক ডাই করেছে। বিদেশী শক্তিবর্গের সধ্যে আমেরিকাই জাপানের এই অস্তায় অধিকারের সবচেয়ে বেশী আপত্তি করেছে। এবং মার্কিন



ব্রিটিশ আকাশ-বাহিনীর জন্ম নবনির্দ্ধিত তিনটি বোলস্-রয়েস্ যন্ত্রবিশিষ্ট সামুক্তিক বিমানপোত। সমুধভাগে সোলাবর্ধণ করিবার স্থান আছে

কিন্ত কাপান তার এই অলাকার রকা করে নি। তার সামাল্য-লালসা তাকে বে-সকল অপ্তার কাজে প্রপুক্ষ করেছে সেই-ছলিই আল প্রশান্ত মহাসাগরে এক প্রকাণ্ড সমস্তার স্থাই করেছে। 'লাপানী বয়কট' প্রভৃতি আন্দোলনে চীনের অপ্তার আচরণ হরেছে, এই অক্ষাতে জাপান চীন আক্রমণ ক'রে তার মাকুরিরা প্রবেশ ও জেহোল দখল করে ব্লেছে। এর কলে অপ্তার্জ লক্তির মার্থের হানি হরেছে এবং সকলেই আগত্তি ক্রেছে। বে তার নৌ-বাহিনী বাড়াবার সকলে করেছে তার মূলে বে প্রধান কারণ বর্ত্তমান তা এই—জাপানকে সে চীনে ও প্রশান্ত মহাসাগরে ইচ্ছাম্মারে রাজাবিস্তার করতে দিতে চার না। জাপানের মাঞ্কুরিল্লা-জিবিরে ওয়ানিটেন কন্লারেক্সের সেই প্রাক্তন সমস্তার (কি তারে জাপানের সাম্রাক্ট্যবাদকে প্রতিহত করা বার) আবার উদয় হরেছে। এই ব্যাপারে জাপান বে নব-শক্তি-চুক্তির বিরুদ্ধান্তরণ করেছে, তা অস্থীকার করা বার না। সেইজক্ত আর পর্যন্ত একটি মূল্ল রাই ছাড়া

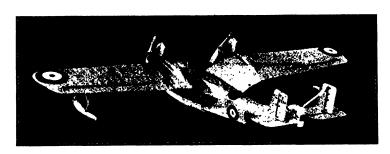
ৰুগতের অস্ত কোনও রাই জাপানের প্রতিষ্ঠিত 'মাঞ্কুরো'কে স্বতম্ভ রাই বলে সীকার করে নি।

ওয়াশিংটনের চত্র:শক্তি-প্রশাস্তমহাসাগরিক-চুক্তি কথ করা হয়েছে। এই চক্তি অপুৰায়ী যুক্তরাষ্ট্র, বুটেন, জাপান ও ফ্রান্স প্রশান্তমহাসাগরে পরম্প:রর সার্থের মর্য্যাদা রক্ষা ক'রে চলবে স্থির নুতন চুক্তির সংক্লেই ১৯০২ সন থেকে যে ইক্ল-জাপান মিত্রতা চলে আস্ছিল ভারেদ করা হয়। আমেরিকা এই চুক্তির ফলে আগের চেয়ে নিরাপদ হয় বটে, কিন্তু বুটেন এই নৃতন বাবস্থায় প্রশান্তমহাসাগরে তার শক্তিবৃদ্ধির প্রয়োজনীয়তা উপলব্ধি করে এবং বৈঠকের ছ-বছর পরেই সিঙ্গাপুরে তার নৌবাহিনীর নুতন ঘাঁটি নির্মাণ আরও করে। এই ঘাটি প্রধানতঃ ভারতবর্ষ खादिलियां कि तकः कत्रवाद क्रम्म देख्यो अवस्थाः । होनामाना জাপানের কাষ্যবেলী ছারা প্রমাণিত হায়:ছ যে, বুটে নর এই ভয় ব। অবিযাদ অনূলক নয়। পকান্ত/রে,জাপান কিন্তু এই নূতন ঘাঁটি রচনাকে হ্নজ্রে দেখাত পারে নি। এই আয়োজন যে তার সঙ্গে ভবিষাৎ সংখ্যামের সরস্কাম, একথা নিয়ে জাপান। সাংবাদিকেরা

কোন শক্তির না থাকে তাহলে যতই কেন না আপোৰ বা চুক্তি হোক কোনটিতেই কোন ফল হবে না। সাংঘাইতে যথন বিনা দোৰে হাজার হাজার চীনের জীবন জাপানী গোলা-বারুরে লেব হল এবং তারপর যথন জাপান চীনরাষ্ট্রের ফুর্পলতার স্থবিধা নিয়ে তার এক বিশাল ভূথণ্ড দথল করল তথন বিশ্বরাষ্ট্রসভ্সের চুক্তি, নব-শক্তি-সন্ধি ও কেলগ-রিয়া প্যাক্ত সকলই উবিয়ে গেল। বিশ্বরাষ্ট্রসভ্সের লিটন্ কমিটির নির্দ্ধেশ ও অঞ্চাঞ্চ রাষ্ট্রের চীনের পক্ষ সমর্থন তার পছন্দ না হওয়ার সে এই সভ্যাঞ্চ করল।

যদি বিশ্বরাষ্ট্রসজ্যের নির্দ্ধেশ বা কেলগ-রিয়া। প্যাক্টেরই এই পরিণতি হয় ভাহলে লণ্ডন নৌ-চ্ফিরই বা কছটুকু সার্থকতা থাকতে পারে ?

আরও মনে রাণতে হবে যে, যদি বা বড় বড় রণতরীর কামান ও টলেজ নির্দারিত ও সীমাবদ্ধ করা সম্ভবপর হয় তথাপি ভবিষ্যং নৃংদ্ধর ভরগরতা বা তার আশ্রা কিছুমাত্র কমবে না। কারণ নৃদ্ধের উপকরণ শুধু এইগুলিই নয়। এরোপেন ও বিষাক্ত গ্যাসের কমতা এদের চেয়ে অনেক বেনী। সাধারণ এরোপেন কয়েক ঘটার মধ্যে যুদ্ধের উপ্যাগী করিয়া লওমা যায়। বিষাক্ত গ্যাস



আধুনিক সামুদ্রিক বিমানপোত ৷ ইহার বিস্তারিত পক্ষর সাধারণের দৃষ্টি আকর্ষণ করে

তাদের দেশে প্রভূত আন্দোলন করেছেন। ্বর্মানে জাপান ওয়াশিংটন ও লওন চুক্তি অনুযায়া আমেরিক! ও বৃটেনের নৌবাহিনার মাত্র তিনপঞ্চমাংশ স্থাপতে পারে। জাপানের নৌবিজ্ঞান-বিশারদগণ করেক বছর আগে বলেছিলেন ভানের দেশের শক্তি আর একট বর্দিত করলেই তাবহিরাক্রমণ পেকে আব্রেল।র প্রক্র যথেই হবে। এখন কিন্তু জাপান দাবি করছে—বৃটেন ও আমেরিকার সকে তার সমতা চাই! জাপানের এই নূতন দাবির অন্তর্নিহিত কারণ, জাপন মার্কিনকে যেমন এতদিন ভবিষ্যতের শব্রু ব'লে মনে করে এসেছে, বুটেনকেও বর্ত্তমানে সেইরূপ একটি শক্ত মনে করে ! যুক্তরাষ্ট্র, বুটেন ও জাপানের শক্তি ওয়ালিটেন চুক্তি মতে ৫:৫:৩ এই অমুপাকে ধাষা হয়েছে, মধাপ্রশাক্ষমহাসাগর কেন্দ্রে এদের শক্তি ৪:২:০ অঙ্কে ফেলা যায়। অধিকত জাপান আমেরিকা ও সিঙ্গাপুর খেকে প্রায় তিন হাঞ্চার মাইল দুরে এবং এতদুর থেকে তাকে আক্রমণ কর! সহজ নয়। তা ছাড়া বুটেন ও আমেরিকার স্বার্থ জগদাণী এবং তা রক্ষণাবেক্ষণের জন্ত তাদের বুছত্তর নৌবাহিনী প্রয়োজন। অতএব ইহা নিশ্চর বলা বেতে পারে যে, জাপানের দাবি মেনে নিতে বুটেন কিংবা আমেরিকা কেহই त्रांखि इत्त ना

এ कथा मत्न ताथा धातालन त्य, माखितकात गाँधू हेल्हा विन

মেয়েদের জক্ত হুগন্ধি প্রবাদি, মেটিরের তেল অথব।
রোগীদের জক্ত ও্যুধ তৈরীর কারখানায় প্রস্তুত ক'রে অনায়াসে পুকিয়ের রাপা যায়। তারপার এ কথাও ঠিক যে, সন্ধিসর্ভক্তিল লজ্মন
না করেও প্রভূত অর্থবায়ে যে-রক্ষ যুদ্ধোপকরণ নির্মাণ করা
যায় তা এই প্রকার সন্ধির মূলে কুঠারাঘাত করে। জার্মানীর
পকেট রণতরীগুলি এর জলস্ত দৃষ্টাস্তা। ভাসাইয়ে সন্ধির যুদ্ধ্যন্দর্শন নার
ধারাগুলি কঠোরতর ক'রে মিত্রশক্তিবর্গের দৃচ্বিবাসকা ইয়েছিল যে,
জার্মানীর যুদ্ধ করবার ক্ষমতা একেবারে বিনম্ভ হল। কিন্তু ইদানীং
জার্মানী গবেষণা ও অর্থবায় ক'রে যে যুদ্ধসন্থার রচন টিকরেছে তার ভয়ে
জার্মানীর প্রতিবেশী রাইওলি আজ উন্ধিয় ।

এইসব কারণে আগামী বছরের নৌ-সম্মেলনের ন্^{কার্য্} কারিতা সম্বন্ধে সন্দেহ করা অযৌজিক নর। কিন্তু আগামী ন্^{ছরের} নৌ-বৈঠক বসবে কি-না সেই বিষয়েও ষথেষ্ট সন্দেহ পোষণ করা বৈতে পারে! জাপান যে তার নৌবহরে ইংলও ও আমেরিকার সঙ্গে সমতার দাবি করেছে অগতের শান্তির ওপর তার কলাকল উপেকা করা যায় না। একথা মনে রাখা দরকার যে, একমাত্র জার্মানীর অসম্মতিতে কিছুকাল আগে নিরপ্তীকরণ-সম্মেলন যে সমস্তার পড়েছেন সে সমস্তার আজও সমাধান হয় নি।



সিঙ্গাপুর নৌ-বহরের ব্রিটিশ ক্রুকার 'কেণ্ট'



সিঙ্গাপুরের তীর শ্রদেশ রক্ষাকল্পে নিরোজিত ব্রিটিশ রণপোত—'টেরর'



সিঙ্গাপুরে বিমানপোতবাহী রণ্ডরী 'ঈগল্'



দিকাপুর **২ইতে নৌ**ধাটিতে যাইবার পথ



সিকাপুরের ভিক্টোরিয়া উচ্চানের দৃশ্য



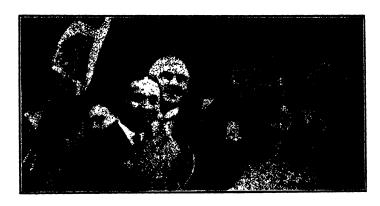
সিকাপুর বন্দরের দৃগু

াপানের বর্তমান দাবির পেছনে কঠোর দৃঢ়তা রহিয়াছে। হর-সমস্তা জাপানের জাতীর সমস্তা। তু-বছর আগে প্রধান हेशकांत्री य व्याञ्जात्रेत राख निश्ठ रन जात छाला हिन কার্যাছারা জাপানের মৌ-শক্তিও সামরিক শক্তির বল্পতার দিকে व भक्तभा ही त्नीवश्रवेद गाँउ अन एक भन्न कर्महाद्वी छाएम प्र मार्टिव হনৌবহরসম্পর্কিত সন্ধিগুলি ছি'ডে কেলবারও আমেরিকাও

ইংলভের সমান নৌ-পক্তি দাবি করবার জন্ত যে লিপি পেশ করেন তার্ট কলে ব্যাড় মির্যাল ভাইকাউট সাইটোর সভিষ্ঠলের পতন হর। বর্ত্তমানমন্ত্রিমণ্ডলের প্রধান কাজ সেই দাবি কার্য্যে পরিশত করা: অতএব জাপান বে সর্বপ্রকার আপোবের প্রস্তাব অগ্রাহ্ন করবে, মাকর্ষণ করা। গত জুলাই মাসে জাপানের একটি সূবৃহৎ নৌবাহিনী তা আর আশত[্]য কি? কিন্ত যুক্তরাষ্ট্র যে অর্থবলের ছাছা পুৰিবীর শ্ৰেষ্ঠ নৌ-বাহিনী লচনা করতে সক্ষম সেই অর্থবলের কাছে একে হার স্বীকার করতে হবে।

প্রীকরুণা মিত্র

গরাজ্যের সমস্তা---

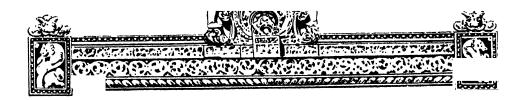


গুমরজের রাজা প্রজাধিপক ও রাজ্ঞা রমাবাঈ

নে। স্বরাজ্যে উাহাকে ফিরাইরা আনিবার জস্ত করেকজন প্রতিনিধি হয় নাই।

আমরা গতমাসে গু।ররা:জাম কথা আলোচনা করিয়াছি। তথায় গমন করিরাছেন। সপ্ততি সংবাদ আসিরাছে যে, প্রতিনিধিগণ মন্ত্ৰাঞ্জার রাজা প্রজাধিপক বার্তমানে ইংলতে অবস্থান করিতে- তাহার সহিত সাক্ষাৎ করিয়াছেন, কিন্তু এখনও কিছু দ্বির সিদ্ধান্ত

1 PM





ডোমীনিয়নত্বের অভিমুখে, না উল্টা দিকে ?

ইংল:গুর রাজা ও ভারতবর্ষের স্মাট কালক্রমে ব্রিটিশ সামাজ্যের অন্তর্গত অন্ত ডোমীনিয়নগুলির মধ্যে ভারতবর্ষের স্থানপ্রাপ্তির আশা দিয়াছিলেন। ভারতবর্ষের বড়লাট শর্ড অংক্তইন ও শর্ড উই শিংডন এবং প্রধান মন্ত্রী মিঃ রামজে ম্যাকডোক্তাল্ডও এইরপ আশা দিয়াছিলেন। আরও যে যে রাজপুরুষ এই রকম লোভ দেখাইয়াছিলেন, তাঁহাদের নামের উল্লেখ অনাবশুক। বাঁহারা আশা দিয়াছিলেন, তাঁহারা লায়িত্ববিহীন লোক নছেন, অন্ধিকারচর্চ্চা করেন নাই। তাঁহারা যাহা বলিয়াছিলেন, তাহা বলিবার অধিকার তাঁহাদের ছিল। তাঁহারা কেবল যে ভারতবর্ষের প্রতি দয়া ণরিয়া এরপ কথা বলিয়াছিলেন তাহা নহে, ব্রিটেনেরও াণ-উদ্দেশ্যে ইহা বশিয়াছিলেন। এই জন্ত ভারতবর্ষের ^{ুহ}্দাক ভাবিয়াছিলেন, (আমরা তাঁহাদের মধ্যে কথনও কৰ_{া-ই} অনেক েছিল না ক্রাফেনি না-হউক, ভারতবর্ষ ধাপে ধাপে লাভ ঘটিবে--এ রাজনৈতিক মধ্যাদা লাভ করিবে। ধীরে ধীরে উচ্চ^{াশ}় করিয়াছিলেন, এবার জয়েণ্ট স্তরাং তাঁহার ভারতবর্ষের জন্ত যে শাসন-পদ্ধতির পার্লে মেণ্টারী কমিছা খুব কম পরিমাণে হইলেও প্রস্তাব করিবেন, স্তুর দিকে কিছু অগ্রসর করিয়া ভারতবর্বকে ডোমীনিয়ন^{ৈতবর্ষকে দিবে। কিন্তু দেখা} দিবে—কিছু চূড়ান্ত ক্ষমতা ^{ট্} বাহা প্রস্তাবিত হ**ই**রাছে, যাইতেছে, ঐ কমিটির রিপের বিপরীত দিকে লইয়া তাহা ভারতবর্ধকে ডোমীনিয়^{নিয়ন}ম্বের বিপরীত দিকে বাইবে। হোরাইট পেপার ডেইরাছিল, উক্ত কমিটির ভারত:ক যতটা দইয়া যাইতে বেণী উণ্টা দিকে দইয়া রিপোর্ট ভার চেয়ে আরও অনেক

বাইতে চার। হংখিত হই নাই।

ইহাতে আমরা বিশ্বিত, নিরাশ হৈ, পার্সেমেণ্টের কিন্তু এ-কথাটা নিশ্চরই আমারের মনে বড় বড় সভা (তাদের মধ্যে ভারতবর্ষের বড়লাট মেফলাট ছোটলাট কয়েক জনও আছেন) লইয়া গঠিত কমিট নিজেদের দেশের রাজার কথার, প্রধান মন্দীর কথার, রাজপ্রতিনিধিদের কথার মান কেমন রাখিয়াছেন! রাজা বলিলেন, ভারতবর্ষ কালক্রমে ডোমীনিয়ন হইবে; ঐ কমিট ডোমীনিয়ন কথাটি পর্যাস্ত তাঁহাদের প্রকাশু রিপোর্টে কোথাও একবার ব্যবহার করিলেন না এবং প্রস্তাবগুলি এমন করিয়াছেন গাহা ডোমীনিয়নত্বের ঠিক্ উণ্টা!

এখন ভারতবর্ষের বড়লাট ও প্রাদেশিক লাটেরা এবং দিবিলিয়ান ও পুলিস যেরপ ক্ষমতাশালী, হোয়াইট পেপারের প্রস্তাবাবলীতে তাঁহাদিগকে তার চেয়েও নিরক্কুশ ক্ষমতাশালী করিতে চাহিয়াছিল। ভরেত পালেমিণ্টারী কমিটির রিপোর্ট তাঁহাদিগকে আরও বেশী ক্ষমতা দিতে বলিয়াছে এবং ভারতবর্ষের ব্যবস্থাপক সভাগুলিকে ও মধীদিগকে চূড়ান্ত ক্ষমতা দামান্ত কোন বিষয়েও দিতে বলে নাই।

ভারতবর্ষের ঐক্য উৎপাদন ও বিনাশ

ভারতবর্ধ কি কি কারণে পরপদানত হইরাছে, তুই-এক কথায় তাহা বলা যায় না। কিন্তু ভারতবর্ধে অনেক রক্ষ অনৈক্য থাকা যে একটা কারণ, তাহাতে সন্দেহ নাই। এখানে প্রদেশভেদ, ধর্ম্মভেদ, জাতিভেদ, ভাষাভেদ প্রভৃতি আছে। তাহার উপর আঠার রক্ষ নির্বাচক-মণ্ডলীতে দেশের লোককে ভাগ করিয়া হোয়াইট পেপারের অঙ্গীভৃত সাপ্রাদায়িক বাটোয়ারা ছাড়াছাড়ির ভেদবৃদ্ধির আর একটা প্রবদ কারণ কুটাইয়াছে।

ভাষেত পালে মেতারী কমিটির রিপোটে আছে—"We have spoken of unity as perhaps the greatest gift which British rule has conferred

on India." "আমরা বলিয়াছি, বে, বোধ হয় একছ ব্রিটিশ শাসনের ভারতবর্ধকে প্রণত্ত সকলের চেয়ে বড় দান।" ভাহার পর কমিটি বলিভেছেন, "but, in transferring so many of the powers of government to the provinces, and in encouraging them to develop a vigorous and independent life of their own, we have been running the inevitable risk of weakening or even destroying that unity." "কিন্তু গ্রন্মেণ্টের এতগুলি ক্ষমতা প্রদেশগুলিকে হওান্তর করিয়া এবং তাহা দর এক-একটা সতেন্দ্র ও স্বাধীন জীবন বিকাশ করিতে তাহাদিগকে উৎসাহ দিয়া আমরা প্রি.ক্লাক্তা একস্বকে গণ্ডিব করিবার অথবা এমন কি তাহাকে বিনষ্ট করিবার বিপদের মধ্যে যাইতেছি।"

এই কথাগুলি বি:শ্য চিস্তার বিষয়।

ভারতীয় অনেক রাজনৈতিক নেতা প্রভিন্সাল অটনমি বা প্রাদেশিক আয়কর্তত্ত্বে নামে থেন দিশাহারা হইয়া পড়েন। তাঁহারা ভাবিয়া দেখেন না, বে, অতীত কালে ভারতবংর্বর অন্তর্গত ভিন্ন ভিন্ন অঞ্চল বা ভূভাগ পরস্পর হইতে বিচ্ছিন্ন শ্বতম ছিল বলিয়াই, অ'ক্রমণকারীদের প্রক ভারতবর্ষ জয় করা সহজ হটয়াছিল। বহুপূর্বেই অনেক ইংরেজ বুঝিয়াছিল, ভারতবর্ষের ভিন্ন ভিন্ন অংশের পার্থক্য রক্ষা করা এবং তাহাদের আন্দোলনের কারণীভূত কোন অভিযোগ এক হইতে না-দেওয়া আবগুক। ১৮৫৮ সালে ভারতবর্ষে ত্রিটিশ লোকদের উপনিবেশ স্থাপন সম্বন্ধে বিবেচনার জন্ত পালে মে: তার যে কমিটি নিযুক্ত হয় তাহার সমক্ষে ১৩ই জুল'ই মেজর উইনগেট সাক্ষা দেন। তাঁহাকে জিজ্ঞাসিত প্রশা ও তাহার উত্তর কিছু কিছু উদ্ধৃত করিয়া দিতেছি। তাহাতে প্রাদেশিক স্বাত:ক্সার নিগৃঢ় মন্ম বুঝা গাইবে। म्बद उद्देन:शहरक किछाना कदा इदेन:- "You speak of the dangers that arise from a central government and you say that it leads to a community of aims and feelings that might be dangerous?" "আপনি কেন্দ্রীয় গবনে তি হইতে যে-সব বিপদের উৎপত্তি হয় তাহার কথা বলিতেছেন? আপনি বলিতেছেন, যে, তাহা হ**ইতে প্রজাদৈর মধ্যে** যে

উ:দশ্র ও ভাবের সাধারণত্ব বা একত্ব জ্বন্মে তাহা বিপজ্জনক হুইতে পারে?"

মেজর উইনগেট উত্তর করিলেন, "Yes I think that if there be any one subject in which the whole population of India would be interested, that is more likely to be dangerous to the foreign authority, than if a question were simply agitated in one division of the empire; if a question were agitated throughout the length and breadth of the empire, it would surely be much more dangerous to the foreign authority than a question which interested one Presidency only." "হা। আমি ম:ন করি, যদি একটা কোন বিষয়ে ভারতবর্ষের সব লোকের লাভালাভ মঙ্গলামঙ্গল স্থবিধাঅস্থবিধা জ্বড়িত থাকে, তাহা হইলে তাহা বিদেশী [ব্রিটিশ] কর্ত্পক্ষের পক্ষেয়ত বেশী বিপক্ষনক হইবার সম্ভাবনা, একটা প্রাশ ভারত-সামাজ্যের একটা কোন অংশে আন্দোলিত হই তত বিপজ্জনক হইবে না; একটা প্রশ্নে যদি কেবল প্রেসিডেন্সীর লোকদের স্বার্থ জড়িত বা আক্কুট হয়, তাহা হইলে তাহা তত বিণ্^{ন্য} ^{মনে!}বোগ যত বিপজ্জনক উ**হা বিদেশী** [ব্রিটিশ] ^{জনক} হইবে ন', निक्त इंट्रेंट्र यिन विषय्रो नहेश (नत्नेत्र कर्ड्न एक ৰ্বত আন্দোলন হয় **।**''

এই প্রশোভারের পর ১৮৫৮ সালে নর ঐ পালেমেণ্টারী কমিটির অন্ততম সভ্য মিঃ ডানেকী শীমুর মেজর উইনগেটকে প্রশান করিলেন, "Is what all the people of Indir. mean this, that the same thing at might be excited about same time?" "আপনি যাহা বলিতেছেন তাহার নে কি এই, যে, ভারতবর্ষের সমস্ত শোক একই বিষয় ।সজে একই সময়ে উত্তেজিত হইতে পারে?" ् ब्र উত্তরে (মজর উইনগেট विनित्नन, "रा।"

ভাহাতে ভিন্ন ভিন্ন প্রদেশের লোকদের জীবনের গতি ও আদর্শ, তুঃধ অভিযোগ, আন্দোলন আলাদা আলাদা রকমের হুইবে। সূতরাং একটা কোন বিষয়ে সমগ্র ভারতবর্ষের লোকেরা উত্তেজিত হইয়া একদক্ষে আন্দোলন করিলে ব্রিটিশ গবরেণ্টকে যতটা উদ্বিগ্ন বা বিপন্ন হ'ইতে হয়, ভাহা হই ত হইবে না। তা ছাড়া, প্রাদেশিক আংস্কর্ত্ত হইলে বে-বে প্রদেশের বে-বে বিষয়ে গবনোণ্টের প্রতি অসন্তোধ নাই, ত'হারা সেই-সেই বিষয়ে অসম্ভূষ্ট অন্ত প্রদেশগুলির প্রতি সহামুভূতিদম্পন্ন হইবে না। তাহার প্রমাণ এখনই পাওয়া গাইতেছে। এখন প্রাদেশিক আয়কর্ত্তর প্রতিষ্ঠিত হয় নাই। তথাপি, বাংলা দেশের জন্ত যে-যে রকম কড়া আইন হইয়াছে, অক্তান্ত প্র.দশের জন্ত তাহা হয় নাই। সেই জন্ত, অন্ত কোন প্রাদেশের নেতারা এবং অথাকথিত সমগ্রভারতীয় নেতারা বঙ্গের প্রতি সহামুভূতি-সম্পন্ন নাহন—াদিও প্রত্যেক প্রাদশের লোকদেরই বঙ্গের ছু: খে চু:খী হওয়া উচিত, কারণ প্রত্যেক প্রদেশের লোক বাংলা হইতে যত ধন উপাৰ্জ্জন করেন, ব'ঙালীরা কোন প্রাদশ হইতেই তত টাকা রোদ্রগার করে না।

জ্মন্ট পালে দেণ্টারী কমিটির রিপোর্ট হইতে আমরা এই নিবন্ধিকাটির গোড়ায় বে কথাগুলি উদ্ধৃত করিয়াছি, তাহা হইতে স্পষ্টই ইহা ব্ঝা যায়, যে, ব্রিটিশ শাসন ভারতবর্ষের একত্ব সম্পাদন করিয়াছেন বা করিতেছিলেন ইহা তাঁহারা জানেন, এবং ইহাও তাঁহারা জানেন, যে, প্রদেশগুলির শাসনবাবস্থার প্রস্তাব তাঁহারা এ প্রকার করিতেছেন যাহাতে ভারতীয় ঐ ঐক্য অভি ক্ষীণ, এমন কি বিনষ্টও হই.ত পারে।

এই কুফল নিবারণ করিতে হইলে ভারতবর্ষের কেন্দ্রীয় জর্থাৎ সমগ্রভারতীয় গবন্মেণ্টকে এমন করা চাই, যাহাতে প্রাদেশিক আত্মকর্ত্ত্বের দক্ষন যাহারা স্ব-স্থ পথে পরস্পর হইতে দুরে যাইতে পারে তাহাদিগকে সংঘবদ্ধ রাখা যায়। জড় জগৎ বিনাশ হই.ত রক্ষা পাইয়া আসিতেছে এবং সক্রিয় আছে হাট বিপরীত শক্তির প্রভাবে। একটি কেন্দ্র-বিমুখ বল (Centrifugal force), অস্তটি কেন্দ্রালিয় বার্ষার প্রাদেশিক আত্মকর্ত্তে প্রথম শক্তিটি কার্য্য করিবে।

প্রাদেশিক আত্মকর্তৃ'ত্বের প্রভাবে প্রদেশগুলি পরস্পর হইতে দুরে যাইবে ও সম্পর্কশুক্ত হইবে। যদি ভারতবর্ষের এই সমুদ্য অংশকে শইয়া একটি ফেডারেখন বা রাষ্ট্রসংঘ স্থাপিত হয়, তাহা হইলে কেন্দ্রাভিমুখী শক্তি কার্যা করিবে এবং যাহারা পরস্পার হইতে দূরে ঘাইতেছিল, তাহাদিগকে পরস্পারের প্রতি আক্কন্ট ও পরস্পারের সহিত মিলিত করিয়া রাধিবে। কিন্ত পার্লেমেণ্টারী কমিটির রিপোর্টের প্রস্তাবে প্রাদেশ-গুলিকে অবিলয়ে আলাদা করিয়া দিবার তাগিদ আছে, ফেডারেখন কথন হইবে তাহার কোনই স্থিরতা নাই--ক্রমন্ত না-ও হইতে পারে। অর্থাৎ ব্রিটিশ শাসনের বলেই হউক, বা অন্ত নে-নে কারণেই হউক, ভারতব:র্মর নে একত্ব আগে হইতেই ছিল, বা ইংরেজ রাক্ষত্বে জনিয়াছিল, বা জনিতেছিল, কমিটি তাহা জানিয়া শুনিয়া কমাইবার, এমন কি বিনষ্ট করিবার ব্যবস্থা করিয়াছেন; কিন্তু যাহা করিলে ঐ একত্ব ক্ষীণ বা বিনষ্ট হ'ইত না, সেই ফেডারেশ্রন জিনিষ্টিকে প্রাদেশিক আয়ুকর্তত্বের সঙ্গে সঙ্গে প্রতিষ্ঠিত করিবার ও অবগুম্ভাবী করিবার প্রস্তাব ও ব্যবস্থা তাহারা করেন নাই।

ক মিটির প্রস্তাবিত প্রাদেশিক আত্মকর্তৃত্বের স্বরূপ সকল প্রদেশকে লইয়া একটি ফেডারেশ্রন বা রাষ্ট্রসংঘ গঠিত না হইলে বে শুধু প্রাদেশিক আত্মকর্ত্ত্বের দ্বারা ভারতবর্ষের মহা অনিষ্ট হইবে, তাহা আগে লিথিয়াছি। সে কথা ছাড়িয়া দিয়া, জয়েন্ট পালেমেন্টারী কমিটি বে-প্রকার প্রাদেশিক আত্মকর্ত্ত্ব দিবার প্রস্তাব করিয়াছেন, তাহার আলোচনা করিলে দেখা যায়, যে, তাহাতে প্রাদেশিক গবর্ণরদের এবং তাহার অধীনস্থ সিবিলিয়ানদের ও প্রনিসের আত্মকর্ত্ত্ব প্রতিষ্ঠিত হইবে বটে, কিন্তু প্রেদেশের, প্রাদেশিক জনগণের, ও প্রাদেশিক ব্যবস্থাপক সভায় তাহাদের প্রতিনিধিদের কোন বিষয়ে চূড়ান্ত ক্ষমতা থাকিবে না। নানা সেফ্গার্ড বা "রক্ষাকব্ট" দ্বারা এবং গবর্ণরের বহুবিধ বিশেষ দায়িত্ব দ্বারা তাহাকে প্রভ্তুত্ত নিরঙ্কণ ক্ষমতাশালী করা হইয়াছে। তাহার উপর তিনি ইচ্ছা করিলেই অর্ডিভাল জারি করিতে পারিবেন,

ব্যবস্থাপক সভার সহযোগ ব্যতিরেকে, এমন কি আপত্তি সন্তেও, "গবর্ণরের আইন" নামক নানা স্থায়ী আইন বিধিবদ্ধ করিতে পারিবেন, ব্যবস্থাপক সভার পাস-করা আইন নামগ্রর করিতে পারিবেন, যে-কোন বিভাগের কোন মন্ত্রীর বা সকল বিভাগের সব মন্ত্রীর হস্তে ১ ব্রবিষয় সকলের ভার নিক্ষে লইতে পারিবেন, এবং মূল শাসনবিধি (constitution) একেবারে রদ করিয়া যত দিন আবশ্যক মনে কবিবেন নিজ ইচ্চা অনুসারে দেশ শাসন করিতে পারিবেন। সিবিলিয়'ন দর ও পুলিস সাহেবদের নিয়োগ, বেতন, পেন্স্যান, পদের উন্নতি অবনতি প্রভৃতি সম্বন্ধে মধীদের কোন ক্ষমতা থাকিবে না। মন্ত্রীরা গবর্ণরকে রাজী না করিয়া পুলিস আইন কানুনের (Police Acts Regulationsএর) কোন প্রকার রদ বদশ বা তাহার প্রস্তাব করিতে পারিবেন না। বর্ত্তমান বৈরাজ্য বা ভাষার্কি বিলপ্ত হ'ইবে বলা হইয়াছে বটে; কিন্তু ভাষা কেবল মাত্র নামে। এখন রিজার্ড্ড্ ("সংরক্ষিত") বিষ্পত্ত মন্ত্রীদের কোন ক্ষমতা নাই, টান্সকার্ড বা ছমান্তবিত বিষয়গুলিতে আছে, এইরপ বলা হয়: কমিটিব প্রস্তাব অনুসারে সকল বিষয়েই মন্ত্রীদের হাত থাকিবে বলা হইয়াছে; কিন্তু আমরা উপরে বলিয়াছি, বস্তুতঃ কোন বিষয়েই মন্ত্রীদের চূড়ান্ত কোন ক্ষমতা থাকিবে না। এখন প্রাদেশিক গবনেণ্ট প্রাদেশিক রাজস্ব হইতে সংরক্ষিত विशयक्षित अन्य गर्थहे है कि आर्श तिथिया नहेंगा वाकी অযথেষ্ট টাকা মন্ত্রীদের হাতে হস্তাস্তরিত বিষয়সমূহের জ্ঞারাথেন। কমিটির প্রস্তাবিত ব্যবস্থাতেও অন্ত নাম দিয়া ঠিক এই প্রকার বরাদ্দ হইবে – গবর্ণর তাঁহার "বিশেষ দায়িত্ব"-সমূহ অনুযায়ী ক'জ করিবার নিমিত্ত যথেষ্ট টাকা প্রাদেশিক রাজম্ব হ'ইতে লইবেন, তাহাতে প্রাদেশিক ব্যবস্থাপক সভার মত থাক্ বা না-থাক্।

জ্বেণ্ট পার্লেমেণ্টারী কমিটির সভ্যেরা তাঁছাদের রিপোর্টে এইপ্রকার 'বোকা বুঝাইব র' চেটা করিয়াছেন, যে, গবর্ণরদিগ.ক বে-সব ক্ষমতা ও বিশেষ দায়িছ দিয়া সৈরাচারী শাসনকর্তা করা হইয়াছে, সেইরূপ ক্ষমতা প্রভৃতি ইংলপ্তে রাজ্ঞার আছে, আমেরিকার নির্বাচিত দেশপতির (প্রোস্তেণ্টের) আছে, ইত্যাদি। ভারতবর্ষের এইলো-

কাগজওয়ালারাও এইরূপ বলিভেছে। ঠিক **ইণ্ডি**য়ান আদি তাঁহাদের আছে. কি কি ক্ষমতা ভাহার নাই, বিস্তারিত আলোচনার স্থান প্রয়োজনও নাই। মানিয়া লওয়া যাক্, যে, ইংলভের র'জার এবং আমেরিকার প্রেসিডেণ্টের ঐব্লপ সব ক্ষমতা আছে। কিন্তু মনে রাধিতে হইবে, তাঁহারা তাঁহাদের দেশের শোকদের সম্বতি ক্রমে এ সকল ক্ষমতা ভোগ করেন, অন্ত দিকে আমাদের বিদেশী গ্রব্রিদিগ্রে বে-সর ক্ষমতা দিবার প্রস্তাব হইয়াছে, তাহাতে ভারতবর্ষের লোকদের সম্মতি নাই: ইংলও ও আমেরিকার কল্যাণের জন্ত ঐ সব ক্ষমতা তথাকার স্থদেশী রাজা ও প্রেসিডেণ্ট ভোগ করেন, কিন্ত অ'মা'দর বিদেশী গবর্ণরদিগকে থে-সব ক্ষমতা দেওয়া হইতেছে, তাহা ইংলওের প্রভৃত্ব ও স্বার্থ রক্ষাব জন্ত, ভারতের কলাণের জন্ম তৎসমুদদ্ধের প্রয়োজন নাই; ইংলভের রাজা বছকাল ঐ সব ক্ষমতার ব্যবহার করেন নাই, করিলে ইংলও সাধারণতম হইয়া বাইবার সম্ভাবনা আছে, কিন্তু ভারতবর্ষে সঙ্কট অবস্থায় কচিৎ ব্যবহার্যা বলিয়া শাসকদিগকে যে ক্ষমতা দেওয়া হয়, তৎসমুদয়ের ব্যবহার সাধারণত প্রায়ই হয় এবং যে গবর্ণর বা গবর্ণর-জেনার্যান তাহা করেন তিনি অপসারিত হন না বা তজ্জ্ঞ ভারতবর্ষের সাধারণতন্ত্র হইয়া যাইবার কোন সম্ভাবনা নাই ; আমেরিকার কোন প্রেসি:ডণ্ট ক্ষমতার অপব্যবহার করিয়া জ্বরদন্ত হইলে তাঁহার পুনর্নির্বাচনের সম্ভাবনা থাকে না, অন্ত দিকে ভারতবর্ষের জ্বরদন্ত গ্রব্র ও গ্রব্র-জ্বোর্যালদের খ্যাতি তাঁহা দর স্বদেশে খুব বাড়ে, এবং আমাদের সমালোচনাঃ তাঁহাদের কিছুই আসে যায় না।

পাটের চাষ কমাইবার চেন্টা

পাট বাংলা দেশের প্রধান বাণিজ্ঞিক ফসল। ইহা চাষীরা সামান্তই নিজেদের কাজে লাগায়, প্রায় সমস্তই বিক্রী করে। বে বৎসর চাহিলা বেরপ হয়, তার চেয়ে বেশী পাট উৎপন্ন হইয়া থাকিলে, চাষীরা ভাল রকম দাম পায় না। এই যুক্তিমার্গ অবলম্বন করিরা মোটামুটি মনে করা হইয়া থাকে, বে, যদি পাটের চাষ কমাইয়া উৎপন্ন ফসল কমাইতে পারা যায়, ভাহা হইলে চাষীরা ভাহাদের মাল চড়া দরে বিক্রী করিতে পারিবে। কিন্তু অন্ত দিকে হ্হা বলিতে পারা যায়, যে, চাহিলা যত হইবে মনে করা যায় উৎপন্ন ফদল তার চেয়ে খুব কম হইলে চাষীরা দর চড়া পাইতে পারে বটে, কিন্তু যথেষ্ট মাল তাহারা দিতে না-পারায়, যথেষ্ট দিতে পারিলে গ্রাহারা পাট বিক্রী করিয়া মোট যত টাকা পাইতে পারিত তত পাইবে না। এই জন্ত চাহিদা গত হইবে তদমুণায়ী াল তাহারা যদি উৎপন্ন করিতে পারে এবং নিজেদের দিষ্ট লাভজনক দরে তাহা বিক্রী করিতে পারে, তাহা . হুইলেই তাহাদের সুবিধা হয়। প্রতরাং কোনু বৎদর চাহিদা কত হই বে, তাহা স্থির করা একান্ত আবগুক। চাহিদা প্রির করিতে হইলে কাঁচা মাল এদেশে কত মজুদ নাছে ও ভারতবর্ষের বাহিরে কোণায় কত মজুদ আছে এবং ভারতবার্ধর পাটকলগুলি ও বাহিরের পাটকলসমূহ কত চাচামাল ব্যবহার করিবে, জানা আবগুক। নিরপেকভাবে এবং ব্যাসন্তব নিভ'ল ভাবে এই সকল সংখ্যা সংগৃহীত ও

পাটের চায় ও ব্যবসা সম্বন্ধে আমাদের কোন ব্যক্তিগত সাক্ষাৎ জ্ঞান নাই। কিন্তু ইহা দেখিতেছি, দে, পাট কোন বংসর কম উৎপন্ন হইলেই যে দর বাড়ে বা বেশা উৎপন্ন হই লই যে তাহা কমে, ইহা স্বতঃসিদ্ধ নহে। তাহার দৃষ্টান্ত- সন্ধান নীচে কতকগুলি সংখ্যা দিতেছি। কোন বংসর কত হাজার একর জমীতে পাটের চাষ হইনাছিল, ৪০০ পৌতের এক এক গাঁটের কত হাজার গাঁট পাট উৎপন্ন হট্যাছিল এবং কলিকাতায় এক এক গাঁটের দাম কত টাকা হট্যাছিল, তাহা নীচের তালিকায় লিখিত হইল।

প্রকাশিত হইগা থাকে কি না জানি না।

বৎসর। হাজার একর। হাজার গাঁট। গাঁটের দাম।

| • | | | |
|--------------|--------------|----------------|-----------------|
| ১৯২২ | 2200 | 68°F | ৮ 9५/৫ |
| ১৯২৩ | ২ ৭৮৮ | ৮8 •১ . | ७८ ।/५• |
| ১৯২৪ | ২ ৭৭• | ৮০৬২ | 9 ch/c |
| >>₹ ¢ | 9550 | ₽ %8° | ८/॥८८८ |
| ১৯২৬ | ৩৮৪৭ | ১২১২৩ | છે. આત |
| ১৯২৭ | ৩৩৭৪ | 20284 | ৭৬।৵৬ |
| ४ ३२४ | 9 88 C | ৯৯৽৬ | 9 ৫ <>>> |
| \$25 | 9680 | ১৽৩৩৫ | 9510 |
| | | | |

১৯৩০ ৩৪৯২ ১১২০ ৫০।৯ ১৯৩১ ১৮৫৯ ৫৫৩৫ ৩৭।১/১

পাটের কল আগে কেবল ভারতবর্ষে (কলিকাতার আশেপাশে) এবং বিলাতের ডাণ্ডী শহরে ছিল। এথন জ্ঞাপানে এবং মধ্য-ইউরোপ ও দক্ষিণপূর্ব্ব-ইউরোপেও অনেক হইয়াছে। তাহাদের যমুপাতি এদেশের কলগুলার নম্পাতির চেয়ে আধুনিক ও উৎক্রু । সেই জন্ত তাহারা এথানকার চেয়ে কম বায়ে চট ও গলি প্রস্তুত করিতে ও কম দামে বিক্রী করিতে পারে। এই বিদেশী অব্রিটিশ চটকলওয়ালারা যাহাতে পাটের কাঁচা মাল না-পায়, সেই উদ্দেশ্যে এথানকার চটকলওয়ালারা ও ডাণ্ডীর চটকলওয়ালারা একখোগে চায়, যে, যাহাতে তাহাদের নিজেদের দরকারের চেয়ে বেণা পাট ভারতবর্ষে না-জন্মে। ভারতের প্রায় সব চটক**লওয়ালা** এবং ডা**ণ্ডী**র চটকলওয়ালারা এক জাতি—ব্রিটিশ। জাগান এবং মধ্য ও দফিণপুর্ব্ব ইউরে†পের চটকলওয়ালাদিগকে জব্দ করিবার জন্ম ভারতের ও ডাণ্ডীর এই ত্রিটিশ চটকলওয়ালারা গবন্মেণ্টকে আর একটা উপায় **অবল**ধন করা**ইতে** চার। विनाजी किनाक्तान छे।हेगम এই वर्गत क्नारे मारम লিথিয়া ছিল ঃ—

"Dundee traders have an important scheme, for which they are seeking Calcutta's co-operation, believing that, in the face of foreign competition, the producers of both centres should combine in persuading the British and the Indian Governments to impose an additional export duty on raw jute from India in parts not within the British Empire.

"As jute is produced within the Empire, it is contended that Empire manufacturers should have preference over foreign competitors. The unsatisfactory condition of trade both in Dundee and Calcutta has influenced manufacturers in these centres towards co-operation.

ভাৎপর্যা। ডাওীর পাট বাবসায়ীদের একটা বড় রক্ষের কন্দী আছে, যাতে তারা কলিকাতার বাবসাদারদের সহবোগিতা চার। ডাওীওরালাদের বিযাস, যে, যথন কলিকাতার ও ডাওীর ব্যবসাদার-দিগকে বিদেশীদের (অর্থাৎ জাপানী ও অবিটিশ ইউরোপীরদের) প্রতিযোগিতার সমুখীন হইতে হইরাছে, তখন উভয় কেক্সের বিটিশ চট-উৎপাদকদের উচিত বিটিশ গবরোণ্ট ও ভারত-গবরোণ্টকে বিটিশ সাম্রাজ্যের বাহিরে রক্ষানা পাটের উপর অভিরিক্ত শুক্ষ বৃদ্ধিতে প্রস্তুত্ত করা।

বেছেতু পাটের চাব কেবল সাত্রাজ্যের মধ্যে হর, সেই জঞ্চ এই তর্ক করা হর, বে, সাত্রাজ্যের চট-উৎপাদকদের সাত্রাজ্যের বাহিরের চট-উৎপাদকদের চেরে অতিরিক্ত স্থবিধা পাওরা উচিত। ডাঙী ও কলিকাতা উভরত্র ব্যবসার অসজ্যোককর অবস্থা উভর কেন্দ্রের কল-ভরালাধিগকে পরস্পরের সহযোগিতা করিতে প্রভাবিত করিরাছে।

গত ২৯শে এপ্রিলের টেট্সম্যানেও পাট সম্বন্ধে একটি প্রবন্ধ এই বলিয়া শেষ করা হইয়াছে,

"...in practice the manufaturer is often not averse to a situation the immediate result of which is that he gets his raw material cheap. In so far, therefore, as he does nothing to promote a crop restriction scheme, he may be said to be the aider and abetter of his foreign competitor, who fights him with all his booms and not with a percentage only."

তাৎপর্যা। অনিয়ন্ধিত পাটচায়জনিত যে অবস্থায় বঙ্গের চটকলওল্পালারা সন্তায় তাহাদের কাঁচা মাল পায়, তাহার প্রতি কার্য্যতঃ তাহার।
বিরূপে নহে। [কিন্তু অনিয়ন্ধিত ভাবে পাটচাস হইলে ভারতবর্ষের ও
বিলাতের বাহিরের অত্রিটিশ চটকলওয়ালারাও সন্তায় কাঁচা মাল পায়,
এবং তাহাদের যন্ত্রপাতি আধুনিক ও উৎকৃষ্ট হওয়ায় তাহারা চট অপেক্ষাকৃত সন্তায় উৎপাদন করিতে ও বেচিতে পারে।] অতএব, বঙ্গের
চটকলওয়ালারা পাট-নিয়ন্তরণক্ষতির প্রবর্জন ও বিস্তৃতির জন্ত কিছু
না-করিলে অরিটিশ বিদেশী চটকলওয়ালাদের সাহায্যকারীই হয়।
এই বিদেশী চটকলওয়ালার। ভারতের ও ভাতার বিটিশ
চটকলওয়ালাদের সহিত প্রতিমাগিতা করে তাহাদের সমুদ্র
ভাতের স্বারা—শতকরা কেবল কয়েকটি দ্বারা নহে। [বঙ্গের
বিটিশ চটকলওয়ালার! নিজেদের চটের দাম বাড়াইবার জন্ত সব
ভাত না চালাইরা কিছু চালায় ও উৎপন্ন চটের পরিমাণ কমাইয়া
তাহার দাম বাড়াইবার চেষ্টা করে।]

পাটের চাষ কমাইয়া কাঁচা মাল কম উৎপাদন করিলে পাটের দর বাড়িতে পারে না. আমরা এরপ মনে করি না। কিন্তু ইহাও মনে করি না, যে, কাঁচা মাল কম উৎপন্ন হইলেই তাহার দর চড়িবে, বা বেশী উৎপন্ন হইলেই দর নামিবে। পাটচাষী চটকলওয়ালাদের মধাবকী ব্যাপারীরা ও স্পেকুলেটাররা নিজেদের সুবিধার জন্ত কৌশল অবলম্বন করিয়া পাটের দর কম করিতে ও রাখিতে পারে। তত্তির, ষ্টেট্সম্যান ও বিলাতী ফিনাজ্যাল টাইম্সে বাহা লেখা হ'ইয়াছে, তাহা পড়িয়া এরপ ধারণা জুমো না. যে. কেবল পাটচাষীদেরই হিতের জ্বন্ত পাটচাষ নিরন্ত্রণের চেষ্টা হইডেছে। ভারতীয় ও অভারতীয় ব্রিটিশ চটকলওয়ালারা নিরন্ত্রণের চেষ্টার স্থায়। ভাহাদের প্রাণ পাটচাষীদের জন্ত বরাবর কাঁদিয়াছে বলিয়া সমসাময়িক ইতিহাস সাক্ষ্য দের না।

পাটচাধ-নিরপ্রণ সম্বন্ধে বিস্তারিত মস্তব্য ডিসেম্বরের মডার্ণ রিভিয়ু পত্তিকায় আছে।

পাটের বদলে অন্য ফসল

পাটের চাষ না করিয়া পাটের কতক জমিতে অন্ত ফসক্র উৎপাদনের জন্ত সরকারী ক্রযি-বিভাগ হইতে পরামর্শ দেওয়া হইতেছে। ক্লযি সম্বন্ধে আমাদের পু"থিগত বা কার্য্যক্ষাত জ্ঞান না-থাকায় এই সব পরামর্শ সম্বন্ধে দুঢ়তার সহিত কোন মত প্রকাশ করিতেছি না। তবে, যে-রকম জ্মিতে চীনে বাদাম হইতে দেখিয়াছি, পাটের জ্মি সেইরূপ কিনা দে-বিষয়ে সন্দেহ হইতেছে। পাটের জ্ঞ্ যে জমি ভাল, তামাকের জ্ঞাও কি তাহা সমান ভাল? পাটের বদলে রবিশস্তোর ব্যবস্থা দেওয়া হই তছে। কিন্তু শুনিয়াছি, পাট উৎপাদন ও কর্ত্তন করিয়া, তাহার পরও সেই জমিতে অনেক চাষী রবিশস্ত দেয়; অর্থাৎ একই জমিতে একই বংসর পাট ও রবিশস্ত পরে পরে উৎপাদিত इम्र। इंहा ठिंक इट्रेंटन, राशात इंहा कमन হুইত দেখানে কেবল একটা ফসল উৎপাদন করিবার পরামর্শ দেওয়া হইতেছে। অন্ত যে-সব ফদল পাটের পরিবর্ত্তে আর্জ্জাইবার উপদেশ দেওয়া হইতেছে, তাহা উৎপাদন করিয়া কিরূপ লাভ হইবে, তাহাও বিবেচা।

হুভাষচন্দ্র বহুর স্বদেশ আগমন

শ্রীযুক্ত মুভাষচক্র বস্ত্র পিতা অত্যন্ত পীড়িত থাকার তাঁহার মাতা তাঁহাকে বাড়ি আসিবার জক্ত টেলিগ্রাম করেন এবং গব:রাণ্টকে অনুরোধ করেন, যে, তাঁহাকে যেন আসিতে দেওয়া হয়। খবরের কাগজে এইরপ সংবাদ বাহির হয়, য়ে, গবরেণ্ট তাঁহাকে আসিবার অস্মতি দেন নাই। মুভাষচক্র নিজেও বহুবৎসর কঠিন পীড়ার ভূগিতেছেন এবং অস্ত্রোপচারের জন্ত ভিয়েনার বাস করিতেছিলেন। এরপ ব্যক্তিকে কেবল পিতাকে দেখিতে আসিবার অস্থ্যতি না-দিবার অতি-প্রায়েজনীয়তা উপলব্ধি করিতে আমরা অসমর্থ—বিশেষতঃ যথন দেখিতেছি কর্ম্বপন্ধীর উচ্চতম ব্যক্তিদের বারা



দম্যম বিমান-মাটি হইতে পুলিশের মোটর গাড়ীতে শ্রীযুত স্কভাষতক্র বস্তুর স্বাগৃহে যাত্রা [কোটো আনন্দ বাজার পত্রিকার মৌজক্তে প্রাণ্ড ।]



বামরাউলি ষ্টেশনে স্থভাবচক্র ও গোবিন্দ মালবীর।
'লাডার' কর্ত্তক গৃহীত চিত্র

বিপজ্জনক ব্যক্তি বলিয়া ঘোষিত (যদিও দেশের লোকেরা তাহা মনে করেন না) তাঁহার প্রাতা শরচক্রকে পিতার নিকট একাধিক বার আসিতে দেওয়া হইয়াছে। যাহা হউক, ভিয়েনার ব্রিটিশ কলালকে স্থভাষচক্র মাতার টেলিগ্রাম দেখানতে তিনি তাঁহাকে এরোয়েনে ভারতবর্ষ আসিবার ছাড়পত্র দেন। কিন্তু স্থভাষ বাবু করাচী পৌছিয়া অবমত হন, বে, তাঁহার পিতা জীবিত নাই। তাহার পর তিনি দমদমা পৌছিবামাত্র গবর্মেণ্ট তাঁহাকে তাঁহাদের বাড়িতেই কলী করেন। তাহার পর আবার তাঁহার উপর এই হকুম হয়,

কলিকাতা পৌছিবার সাত যে, ভাঁহাকে মধোই ভিয়েনায় ফিরিয়া যাই ত হইবে। তাঁহাকে রাথিয়াও তাঁহার পিতার কডা পাহারার **অবরু**দ্ধ অ'গেই ইউ.রাপ যাটবার শ্রাদামূর্গ্রান হইয়া চালান না-দিলে ব্রিটিশ গ্রন্মেণ্টের কি বিপদ ঘটিতে পারে আমরা তাহা অনুমান করিতে অসমর্থ। প্রাদ্ধস্থলে উপস্থিত शांकिश्रां आह इहेश गांहेबात शृद्धि हानिश यां आह तय हिन्सू সংস্ক রের কত বিরুদ্ধ, তাহা গবরেরণ্ট কি কোন হিন্দু প্রামর্শদাতার নিকট হইতে গুনেন নাই? সুভাষ বাবু গৰনেনিটের নিকট পিতৃশ্রাদ্ধ হইয়া যাওয়া পর্যান্ত কলিকাভায় থাকিবার অনুমতি চাহিয়াছেন। গবন্দেউ এই আবেদনের কোন উত্তর না দিয়া তাঁহার রোগের পরীক্ষার জন্ত একটি মেডিক্যাল বোর্ড নিযুক্ত করিয়াছেন। ১৪ই ডিসেম্বর ২৮শে অগ্রহারণ তাঁহারা তাঁহাদের কাজ করিবেন।

ফ্রান্সের রবীন্দ্রবান্ধর সমিতি

প্রাচ্য ও প্রতীচ্যের মধ্যে মিশন-স্থাপনের নিমিত্ত ফ্রান্সেরবীন্দ্রবান্ধর সমিতি স্থাপিত হইরাছে। এই সমিতি কি কি কাল্প করিতেছেন, তাহা রবীন্দ্রনাথকে জ্ঞানাইবার জন্ত ঐ সমিতির ত্ব-জন সভ্য সম্প্রতি শান্তিনিকেতনে আসেন। তাঁহারা বৎসরাধিক পূর্বের প্যারিস হইতে স্থলপথে রওনা হন এবং স্থলপথেই ইউরোপ ও এশিয়ার নানা দেশ অতিক্রম করিয়া বালুচীস্থানের অন্তর্গত কোয়েটার পথে ভারতবর্ধে প্রবেশ করেন। তাঁহারা মানবদ্ধাতির ক্লপ্টিগত ঐক্য প্রতিষ্ঠিত করিবার বিশেষ চেষ্টা করিবেন। শান্তিনিকেতনের প্রতি তাঁহাদের প্রগাঢ় অনুরাগ আছে।

হিন্দুদের "নৈশ অবরোধ" ও হিন্দুনারী হরণ
সন্ত্রাসনবাদ ও সন্ত্রাসক কার্যা দমনের জন্ত বাংলা-গবন্ধে তি
কোন কোন স্থানে দীর্ঘকালের জন্ত এইরূপ ছকুম
জারি করেন, বে, হিন্দুরা স্ব্যান্তের পর ও স্ব্যোদর পর্যন্ত
বাড়ির বাহিরে ঘাইতে পারিবে না। ইহাকে কেহ কেহ
"পাদ্ধ্য আইন" বলেন। কিন্ত এই নাম হইতে উক্ত হকুমের
স্বন্ধণ ব্রা বায় না। এইরূপ হকুম দারা হিন্দুদের ইছোর
বিক্লদ্ধে তাহাদের উপর নৈশ অবরোধের হকুম চাপান হয়।
গবর্ষে তৌহাদের উদর বোধ হয় এই, বে, কোন হিন্দু বেন

নিশাচর না হয়। কিন্তু ফলে অনেক অঙিন্ ছুর্ত্তের হিন্দুনারী হরণের সুবিধা হয়। দুষ্টান্ত দিতেছি।

মেদিনীপুর শহরে গুণ্ডা-প্রকৃতির মুসলমানগণ চারি-পাঁচ মাসের মধো বহু নারী অপহরণ করিয়া নিকাগ করিয়াছে অথচ কাহারও শান্তি হর নাই। মেদিনাপুর শহরের কতকগুলি মুসলমানের বাড়ি হঠাৎ ভল্লাস করিলে যে অনেক অপসতা হিন্দু রমণীকে পাওয়া ঘাইবে ভাহার প্রমাণ পাওয়া গিয়াছে।

(২) চৌদ বৎসর বয়সা সরস্বতী দাসীকে স্বামী ও অভিভাবকগণের অম্বপশ্বিতিতে কয়েক জন মুদলমান প্রায় এক মাদ পূর্কো অপহরণ কবিয়া লটয়া গিয়াছে। অনেক চেষ্টাণ্ডেও ভাষার উদ্ধার হয় নাই। (২) ভাহার জন্ম সার্চ্চ ওয়ারেণ্ট লইয়া ভ**াস করিণ্ডে গিয়া কর্নেলগোলা**য় এক মুসলমান ভাড়াটিয়া গাড়ার কোচমানের গৃহে অমল নামে এক হিন্দুনারীকে দেখা যায়। অসলার আত্মীয়গণ তাহার উদ্ধারের কোন চেষ্টা করে নাই, এমন কি পুলিমে ডায়েরীও করে নাই। (৩) কডি বৎসর বয়পা সধবা শিবানা দাসী সরপতীর নিপট-আস্থীয়া, উভায়ত এক বাড়িতে থাকিত। প্রায় এক বংসর পূর্ণের "সাল্লা আইন" বলবং থাকার সময় এক সন্ধাায় মুসলমানগণ ভাহাকে অপহরণ করিয়া নিকাত করিয়া নিরাপদে ও নিংশকভাবে বাস করিতেছে । এক বংসর পূর্বের এক বাড়িক্তেই এই ছুইটি নারীহরণ ঘটয়াছে। (৭) সিপাই বাজারের এক বাড়িতে আর এক হিন্দু নারাকে মুসলমানগণ সন্ধানে পর অপহরণ দরিয় পুকাইয়া রাপিয়া ঐ বাড়ির বাহির হটতে ভালা বন্ধ করিয়া দিয়াছিল। তাহাকে উদ্ধার করিয়া গাঁও মাস পুরেপ হিন্দু অবলা আশ্রমে পাঠান ২ইয়াছে। নালিশ করার সাংস না থাকায় অপ্তরণকারীদের বিরুদ্ধে কোন মামলা হয় নাল। — সঙ্কাবনা।

এরূপ অবস্থার প্রতিকার অবগ্রহাক। কিন্তু তাহা কে করিবেন ? হিন্দ্রা ? মুসলমানরা ? গব এণ্ট ? না, সকলেই ?

প্রবাসী বাঙালীর সম্মান

ইন্দোরের হোলকার কলেজের প্রিক্সিপ্যাল ডক্টর প্রক্লিচন্দ্র বহু আগ্রা-বিশ্ববিভালয়ের ভাইস-চ্যান্সেলার নির্বাচিত হইয়াছেন । কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ের ভাইস-চ্যান্সেলার যেমন গবন্মেণ্ট কর্ত্ত্ক মনোনীত হন, আগ্রায় সেরূপ নহে। তথায় ভাইস-চ্যান্সেলার বিশ্ববিভালয়ের সদশু-দিগের ছারা নির্বাচিত হন,। এই কারণে তথাকার ভাইস-চ্যান্সেলার হওয়া সদশু দিগের আস্থার পরিচায়ক।

ডক্টর বহু কলিকাতার প্রেসিডেন্সী কলেজে শিক্ষা লাভ করেন। তিনি ১৯১১ সালে ধনবিজ্ঞানে এবং ১৯১৬ সালে পুনর্বার ইতিহাসে এম-এ উপাধি পান। মধ্যে ১৯১৩ সালে তিনি বি-এল পরীক্ষায় উদ্বীর্ণ হন। ১৯২০ সালে ডিনি ইতিহাসে গবেষণার জন্ত "শুর আন্ততোব মুধোপাধায়



প্রিশিপান ওক্টর প্রন্তাক্ত বন্ধু, আগ্র' বিশ্ব বিদ্যালয়ের ভাইস-চ্যানেলার ও প্রবাসী বঙ্গসাহিত্য সংখ্যলনের 'পুহত্তর বঙ্গ' শাখার সভাপতি।

অর্ণপদক" প্রাপ্ত হন। ১৯২৩ সালে তিনি ধনবিজ্ঞানে
পিএই০-ডি উপাধি লাভ করেন। তিনি কিছু কাল
কলিকাতা-বিশ্ববিদ্যালয়ে ধনবিজ্ঞানের ও ইতিহাসের অন্ততম
অধ্যাপকের কাজ করিয়াছিলেন। ১৯১৭ সাল হইতে তিনি
ইন্দোরের হোলকার কলেজে ঐ হুই বিষয়ে অধ্যাপনা করিয়া
আসিতেছেন। ১৯২৪ সালে তথাকার সহকারী প্রিন্সিপ্যাল
নিযুক্ত হন, এবং ১৯২৬ সাল হইতে উক্ত কলেজের
প্রিন্সিপ্যালের কাজ করিতেছেন। আগ্রা-বিশ্ববিদ্যালয়
স্থাপিত হইবার পূর্বে তিনি ১৯২৬ সালে এলাহাবাদ

বিশ্ববিদ্যালয়ের কার্যানির্ন্ধাহক কোন্সিলের সদস্য ছি'লন ! আগ্রা-বিশ্ববিদ্যালয় স্থাপিত হইবার পর তিনি ১৯২৭ হইতে ১৯৩৩ স'ল পর্যান্ত তুই ব'র আগ্রার ফ্যাকাল্টি অব্ আর্ট্সের ডীন নির্বাচিত হন। ১৯৩১ সালে এডিনবরায় ব্রিটিশ সামাজ্যের বিশ্ববিদ্যালয়-সকলের যে কংগ্রেস হয় তিনি আগ্র-বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রতিনিধিরপে ত'হাতে গেগা দিয়াছিলেন। রাজপুতানা ও মধাভারতের উচ্চ বিদ্যালয় ও ইণ্টার্মী দিরেট শিক্ষা-বোর্ডের তিনি ১৯৩২ সাল হইতে সভাপতি অ'ছেন। ইন্দে'রে হোলকার সিবিল স'বিস্পবীক্ষা বে গ্রে সভাপতিরও তিনি ১৯৩২ স'ল হইতে করিয়া আসিতে ছন। বর্তমান বংগরে তিনি আগ্রা-বিশ্ববিদ্যালয়ের চ**ান্সেলা**র নির্বাচিত হইয়াছেন। একার উচ্চার ৪৪ বৎসর। ইংরেজীতে তিনি 'Indo-Aryan Polity,'' "Economic Development of India," "Principles of Economics," & "Economic Condition of the Middle Class People in Calcutta" লিখিয়াকেন। ক্লাপের প্রসিদ্ধ হাজ্ঞরসিক নাট্যকার মোলয়ার প্রণত একথানি নাটক এবলম্বন করিয়া তিনি বাংলায় "রূপ্র" নামক একপানি নাটক লিখিয়াছেন ও প্রকাশ করিয়াছেন। ইহা প্রশংসিত হইয়াছে।

ডক্টর বপু কলিক।তায় প্রবাসী বঙ্গদাহিত্য সংগ্রেলনের দাদশ অধিবেশনে "বৃহত্তর বঙ্গ' শাখার সভাপতি নির্দ্যাচিত হইয়াছেন।

প্রবাদী বঙ্গদাহিত্য দন্মেলন

অগ্রহারণের 'প্রবাসী'তে আমরা কলিকাতায় প্রবাসী বঙ্গসাহিত্য সম্মেলনের দ্বাদশ অধিবেশনের ফতকগুলি সংবাদ দিয়াছি। এই অধিবেশন সম্বন্ধে বে-কোন সংবাদ জানিতে হইলে ইহার সম্পাদক এীযুক্ত স্বেশচক্র রায়কে ৪৪।১, বৌবাজার ষ্ট্রাট, কলিকাতা, ঠিকানায় চিঠি লিথিতে হইবে।

গাঁহারা প্রতিনিধি হইয়া আসিবেন তাঁহাদের প্রত্যেকের প্রবিদিকা পাঁচ টাকা করিয়া লাগিবে, প্রবিদ্যা ছাত্র প্রতিনিধিদের তিন টাকা। প্রবাসী মহিলা প্রতিনিধিদিগকে কান প্রকার চাঁদা দিতে হইবে না। অভ্যর্থনা-সমিতি



শ্বক্ষর নালগোপাল মুখোপালাই শ্বদী বন্ধস্থিত সংখ্যালনের সভাপতি।

সমুক্ত প্রতিনিধির বাসন্থান ও আহারের বন্দোবস্ত করিবেন। ২৬৫ন ডিসেম্বর হইতে ৩০শে ডিসেম্বর এই পাচ দিনের ব্যবস্থা করা হইবে। কে করে কোন্ টেনে আসিবেন, এইতাহ করিলা সম্পাদক মহাশয়কে জানাগ্রেন। প্রতিনিধিরা দ্যা করিলা বিচানা লেপ কম্বল ও মনারি আনিবেন।

বঙ্গদেশের সাহিত্যিকদিগের ছই টাকা প্রবেশিকা ও অভাগনা-সমিতির সভাগুনেশর অনুনে পাঁচ টাকা চাঁদা দিবার নিয়ম করা হইয়াছে।

দর্শকদিগকে প্রথম দিনের জন্ম এক টাকা প্রবেশিক।
দিতে হইবে। অন্তান্ত দিনে তাঁহাদিগকে কিছু দিতে
হইবে না, আপাততঃ এই রূপ স্থির আছে; কিন্তু স্থানাভাবের
সম্ভাবনা ব্ঝিতে পারিলে কিছু প্রবেশিকা লইবার
বংশাবস্ত হইতে পারে।

মহিলা প্রতিনিধিদের জন্ত ডাঃ শুর নীলরতন সরকারের সহপর্মিণী শীয়কা লেডী নির্মালা সরকার প্রণীতি-সন্দিলনীর



শাৰ্ক কেদারনাপ বন্দ্যোপাধনার প্রবাদী বঙ্গদাহিত্য দক্ষেত্রনের দাহিত্য শাধার দুভাপতি।

২৬শে বঙ্গীয়-নাহিত্য-পরিয়দ মন্দিরে আচার্য্য প্রাকুল্লচন্দ্র রায় প্রাপর্শনীর ধার উদ্যাটন করিবেন। ইহার পর আর চারি দিন সম্মেলনের পূর্ণ অধিবেশন ও শাখা সভার অধিবেশনশুলি কলিকাতার টাউন হলের দ্বিত্তে হইবে।

প্রতিনিধিদিগের অভার্থনার জন্ম কয়েকটি প্রীতি-সন্দিলনীর বাবস্থা করা হইয়াছে। যাঁহারা ইহার ভার শইয়াছেন, অভার্থনা সমিতি তাঁহাদের নিকট বিশেষ কুতভা | একটি প্রীতি-সম্মিলনীর ভার লইয়াছেন কলিকাভার মেরর প্রীযুক্ত নলিনীরঞ্জন সরকার। আর একটির ভার শইয়াছেন ডক্টর শ্রীসতাচরণ শাহা তাঁহার আগরপাডান্থিত বাগান-বাডি ও চিডিয়াথানায়। তিনি সেধানে প্রতিনিধিদিগকে তাঁহার পোষা পাধী সব দেশাইবেন এবং পক্ষিত্ত সম্বন্ধে কিছু বলিবেন। তৃতীয় সন্মিলনীটি হইবে ষ্টামারে। কলিকাভার মিলনী ক্লাব ইহার ভাক্ক শইরাছেন। চতুর্য প্রীতি-সন্দিশনী বন্দীয়-সাহিত্য-পরিষদ मिन्दित পরিবদের উদ্বোগে ও কর্ডছে হইবে। কেবল



শীণুক্তা শৈলবালা দেবী প্রবাসা বঙ্গসাহিত্য সম্মেলনের মহিলা-বিভাগের সভানেত্রী।

ভার গ্রহণ করিপ্লাছেন। তম্ভিন্ন রবীক্রনাথের "তপতী" নাটকের অভিনয়েরও বাবস্থা হইতেছে।

এই দ্বাদশ অধিবেশনের উদ্বোধন করিবেন কবিসার্কভৌম রবীক্রনাথ ১১ই পৌষ ২৭শে ডিসেম্বর। প্রবাসী
বাঙালী সাহিত্যান্তরাগীদিগের সহিত বঙ্গের মনীয়ীদিগের
সাক্ষাৎ পরিচয় জল্ল এই সাধারণ উদ্বোধন এবং প্রত্যেক
শাখার উদ্বোধনের বন্দোবস্ত হইয়াছে। এ পর্যান্ত এইরূপ
স্থির হইয়াছে, যে, বিজ্ঞান শাখার উদ্বোধন করিবেন আচার্য্য
জগলীশচক্র বহু; মহিলা-বিভাগের উদ্বোধন করিবেন
তাহার সহধর্মিণী লেডী প্রীমতী অবলা বহু; সাহিত্যশাখার উদ্বোধক হইবেন প্রীযুক্ত প্রমথ চৌধুরী; ইতিহাসশাখার প্রীযুক্ত শুর বহুনাথ সরকার; শিক্ষাবিজ্ঞান-শাখার
প্রীযুক্ত শুর দেবপ্রসাদ সর্কাধিকারী: ধনবিজ্ঞান-শাখার



শীযুক্ত ভটার ভাহতুষণ দাশগুণ্ণ প্রবংশ: বক্ষসাহিত্য সংম্মলনের ধনবিজ্ঞান-শাধার সভাপতি

শীবৃক্ত ডক্টর প্রামথনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়; ললিতকলা ও শিল্প-শাধার শ্রীযুক্ত অর্দ্ধেক্রকুমার গঙ্গোপাধ্যায়; বৃহত্তর বঙ্গ-শাধার শ্রীযুক্ত নলিনীরঞ্জন সরকার; এবং দর্শন-শাধার শ্রীযুক্ত স্থরেক্রনাথ দাশগুপ্ত। শ্রীযুক্তা সরলা দেবী চৌধুরাণী সঙ্গীত-শাধার উদ্বোধন করিবেন।

কোন্দিন কোন্ অধিবেশন বা অন্ত অনুষ্ঠান হইবে, তাহার তালিকা নীচে দেওয়া হইল। আবগুক হইলে ইহার অক্লাধিক পরিবর্ত্তন হইতে পারিবে। সমুদ্র অনুষ্ঠানের তালিকা ও ক্রম শীঘ্র মুদ্রিত হইবে।

>০ই পৌষ ২৬শে ডিসেম্বর অপরাত্নে বঙ্গীয়-সাহিত্য-পরিষদ মন্দিরে আচার্য্য প্রফুলচক্র রায় কর্তৃক প্রদর্শনীর উদ্বোধন; সন্ধ্যায় রেডিও বারা সঙ্গীতাদি; তৎপরে পরিচালক সমিতির অধিবেশন।

১১ই পৌষ ২৭শে ডিসেম্বর কবিদার্বভৌম ঐীযুক্ত রবীক্রনাথ ঠাকুর কর্ত্বক সমগ্র সম্মেলনের উদ্বোধন, অভ্যর্থনা-সমিতির সভাপতির বক্তৃতা, সভাপতি ঐীযুক্ত শুর লালগোপাল মুখোপাধ্যারের অভিভাষণ, ইত্যাদি। এই দিন গত অধিবেশনের কার্য্যবিবরণপাঠও হইবে। সাহিত্য-শাখার উদ্বোধন এবং তাহার সভাপতির অভিভাষণ-পাঠও এই দিন হ'ইবে। অপরাফ্লে কলিকাতার মেরর গ্রীযুক্ত নলিনীরঞ্জন



শ্রাযুক্ত ডক্টর হবিমলচক্র সরকার
প্রবাসা বঙ্গদাহিত্য সম্মেলনের শিক্ষাবিজ্ঞান-শাধার সভাপতি
সরকারের প্রীতি-সম্মিলনী। সন্ধ্যার পর সম্মেলনের বিষয়নির্বাচন সমিতির অধিবেশন।

২২ই পৌয ২৮শে ডিসেম্বর দর্শন-শাধার উদ্বোধন ও তাহার সভাপতির অভিভাষণ, এবং প্রবন্ধপাঠ। সাহিত্য-শাধার প্রবন্ধপাঠ। "বৃহত্তর বঙ্গ" শাধার উদ্বোধন ও তাহার সভাপতির অভিভাষণ, এবং প্রবন্ধপাঠ। ইতিহাস-শাধার উদ্বোধন, তাহার সভাপতির অভিভাষণ, এবং প্রবন্ধপাঠ। স্থীমারে মিলনী ক্লাবে প্রীতি-সন্মিলনী। সন্ধ্যার পর সঙ্গীত ও অভিনয়।

১৩ই পৌষ ২৯শে ডিসেম্বর শশিতকলা ও শিল্প-বিভাগের উদ্বোধন, সভাপতির অভিভাষণ ও প্রবন্ধপাঠ। ধামিনীরঞ্জন রায়ের চিত্রাগার দর্শন। শিক্ষাবিজ্ঞান-শাধার উদ্বোধন, তাহার সভাপতির অভিভাষণপাঠ, ও প্রবন্ধপাঠ। বিজ্ঞান- ুশোধার উ**ষোধন,** তাহার সভাপতির অভিভাষণ ও প্রবন্ধপাঠ। ডক্টর শ্রীযুক্ত সত্যচরণ শাহার উদ্যান ও পক্ষিনিবাসে গ্রীতি-সন্মিলনী ও পক্ষিতক্ষের আলোচনা। মহিলা-সভার উদ্বোধন, তাহার সভানেতীর অভিভাষণ, প্রবন্ধপাঠ এবং



জীয়ত দেবী গ্ৰসাদ রয়ে চৌধুর, প্ৰৰাসী ৰঙ্গসাহিতা ফলেলমের ললি হবলা ও শিল্প

শ্রীযুক্তা লেডী নিমালা সরকারের মহিল'দের জ্ঞ প্রীতিসম্মিল্নী। বিষদ-নিকাচন সমিতির অধিবেশন।

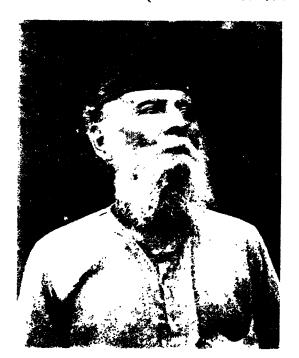
১৪ই পৌষ ৩০ণে ডিসেম্বর শেন দিবস ধনবিজ্ঞান-শাগার উদ্বোধন, তাহার সভাপতির অভিভাগণ, ও প্রবন্ধ পাঠ। সঙ্গীত-শাথার উদ্বোধন, তাহার সভাপতির অভিভাগণ ও প্রবন্ধপাঠ। মূলসভার অধিবেশনে প্রস্তাবাদির অলোচনা ও গ্রহণ, এবং ধন্তবাদ প্রদান। বঙ্গীয়-সাহিত্য-পরিষদ মন্দিরে প্রীতিসন্মিলনী।

"তগতী" অভিনয়। শ্রীযুক্ত শরৎ চক্র চট্টোপাধ্যায়ের সভাপতিত্বে বিদায়-বাসর। বিদায়-ভোক্স। একই দিনে কতকটা একই সময়ে ছুই শাধার অধিবেশন বে-নে স্থলে হইবে, তাহা টাউন হলের দ্বিতলের ভিন্ন ভিন্ন কক্ষে হইবে।

বাংলা-সাহিত্যের ও বঙ্গীয় সংস্কৃতির অনুরাগী বাংলা দেশের ও বঙ্গের বাহিরের বাঙালী সুধীবৃন্দকে এই সম্মেলনে বোগ দিবার জন্ম অভ্যর্থনা-সমিতি সাদর ও সামূনয় আহ্বান করিতেছেন।

. অধ্যাপক দ্বিজ্ঞদাস দত্ত

কুমিলার এধাপিক দ্বিজ্ঞাস দত্ত ৮২ বংসর বন্ধসে দেহতাগি করিয়াছেন। তিনি শেষ পর্যান্ত কর্ম্মিষ্ট ছিলেন। কলিকাতা-বিশ্ববিদালেয়ের এম্-এ পরীক্ষায় উত্তীৰ্ হইবাব



৺বিজ্ঞদাস দত্ত

পর তিনি ক্ষিবিদ্যা শিথিবার জন্ত সরকারী বৃদ্ধি লইয়া ইংলতে যান। ফিরিয়া আসিয়া তিনি তেপ্টী কালেক্টর নিযুক্ত হন। পরে তিনি শিবপুর এঞ্জিনিয়ারিং কলেজে অধ্যাপক হন। তিনি চাষীদের পরম হিতৈষী ছিলেন, এবং ভাহারাই ক্ষীর মালিক, হয়, তাঁহার এই মত নানা প্রকারে প্রচার ক্রিতেন। ক্রবিবদায় তাঁহার অধ্যমলক ও কার্যগত অভিজ্ঞতা-প্রস্ত জ্ঞান ছিল। তিনি প্রামী'তে বহুবৎসর পূর্বে ইহা দেখাইয়াছিলেন, প্রেটর চাষ করিয়া চাষীদের বাস্তবিক লাভ হয় না। য়য়ন "লাভ" হয়, তখন মাহাকে লাভ বলা হয়, তাহা মজুরী মাত্র; এবং অনেক বৎসর সেই পারিশ্রমিক এবং চাষের গোক্ষ রাখিবার খরচও পোষায় না। তাঁহার লিখিত "পাট বা নালিতা" শীর্ষক ধারাবাহিকরূপে প্রকাশিত প্রবন্ধ-শুলি প্রকাকারে মৃত্রিত হইয়াছিল। অক্সান্ত বিষয়েও তাঁহার অনেক প্রক্ত আছে।

গত করেক বৎসর ধরিষা তিনি হিন্দু-মুসলমানের মিলনসাধনের জন্ত পরিশ্রেম করিতেছিলেন। তাঁহার সংস্কৃত ও আরবী ভাষার প্রগাঢ় জ্ঞান ছিল। তিনি বৈদিক ধর্ম্মোপদেশ ও কোরানের ধর্ম্মোপদেশের ঐক্য বিস্তারিতরূপে পাণ্ডিতার সহিত দেখাইতেছিলেন।

তিনি ট্রিশ্রল চরিত্র ও স্বাধীনচিত্ততার জন্ম পরিচিত ছিলেন।

সিভিল সার্ভিস প্রতিযোগিতার পরীক্ষিতব্য বিষয়

ভারতীয় সিভিল সার্ভিস প্রতিযোগিতার যে-সকল বিষরের পরীক্ষা হর, তাহা হইতে দেশী ভাষা, দর্শনশাস্ত্র, মনোবিজ্ঞান ও নৃতস্থ বাদ দিবার প্রস্তাব বিবেচিত হইতেছে শুনা যায়। পাস-করা সিভিলিয়ানরা যে-দেশের শাসন ও বিচার কার্য্যে নিযুক্ত হইবেন, সেই দেশের কোন ভাষার তাঁহাদের ব্যুৎপত্তি না-ধাকা খুবই উচিত! শাসক ও বিচারকদের পক্ষে মানব-প্রকৃতি সম্বন্ধে বিশেষ জ্ঞান ধাকাও সম্পূর্ণ জ্ঞনাবশ্রক! স্থতরাং দর্শনশাস্ত্র, মনোবিজ্ঞান ও নৃতস্থ তাঁহাদের পক্ষে জ্ঞান্ত জ্ঞাক্ত ক্ষেক্তা জ্ঞিনিষ!

কোন দেশে জন্মিলেই বা বাস করিলেই বে সেই দেশের ভাষা সম্বন্ধে জানী হওরা যার, ইহা সত্য নহে। সত্য ইইলে ইংরেজদের ছেলেরা স্থলে কলেজে ইংরেজী পড়িত না।

বে-কর্মট বিষয় বাদ দিবার প্রস্তাই ইংক্সছে, লে-ক্সাট কলিকাতা-বিশ্ববিদ্যালয়ে শিথান হয়; অন্ত কোন-কোন বিশ্ববিদ্যালয়েও হয়, কিন্তু কলিকাতাতেই বেশী করিয়া ও বিশেষ ভাবে হয়। এই বিষয়গুলি বাদ দিয়া বাঙালী প্রতিযোগীদিগকে অস্থবিধায় ফেলা উচিত নয়—যদিও সেরপ উদ্দেশ্য না-থাকিতে পারে।

প্রাচীন ভারতীয় পুথির পরিচয় ও সূচী

অনেক বৎসর থাটিয়া মহামহোপাধ্যায় হরপ্রাসাদ শাস্ত্রী ভারতবর্ধের সংস্কৃত পালি প্রভৃতি ভাষার বিস্তর প্রাচীন পূঁথি সংগ্রহ করিয়াছিলেন। এগুলি ইপ্তিয়ান মিউজিয়মের প্রত্নতক্ত্র-বিভাগে এবাবৎ রক্ষিত ছিল। বহু বৎসরের চেষ্টায় কলিকাতা-বিশ্ববিদ্যালয় এইগুলি ঋণ-বর্মপ গ্রহণ করিয়া নিরাপদে রক্ষণাবেক্ষণপূর্বক তৎসমূদ্দের পরিচয় ও স্চী প্রস্তুত করিবার অনুমতি পাইয়াছেন। বিশ্ববিদ্যালয়ের ঘারা এই কাজটি স্থনির্বাহিত হইলে প্রাচীন ভারতীয় ইতিহাস ও ক্লিপ্তির আলোচনা অপেক্ষাকৃত স্থগম হুইবে।

ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক সভায় স্বাজাতিক সভ্য

ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক সভার নৃতন করিয়া যে সদস্ত নির্ব্বাচন হইয়া গেল, তাহার ফলে চুই প্রকারের কংগ্রেসওয়ালা ও অন্ত খাঞাতিক সভ্য কত জন নির্ব্বাচিত হইলেন, তাহার সংখ্যা এখন ঠিক্ করিয়া বলা যায় না। কংগ্রেসওয়ালারা বলিতেছেন, তাঁহারা অয়ং ও অন্ত খাঞাতিকেরা মোট সভ্যসংখ্যার অর্দ্ধেকের কিছু অধিক হইবেন, ব্যবস্থাপক সভার জয়েণ্ট পার্লেমেণ্টারী কমিটির রিপোর্টের প্রতিকৃত্স সমালোচনা করিবার লোক পঁচাত্তর জন পাওয়া যাইতে পারে। কিছ এক্লপ সমালোচনা খারা সাম্প্রদারিক বাটোয়ারাটা বিনট হইবে না—ভাহার জন্ত প্রবল, ব্যাপক ও দীর্ঘকালভায়ী চেটা করিতে হইবে। এই বাটোয়ারা খারী হইলে ভাহার সকলের চেয়ে কৃষণ এই হইবে, যে, তাহা সম্দর ভারতীয় লোককে উচ্চতর রাষ্ট্রীয় অবস্থায় উপনীত হইবার জন্ত সন্দিলিত ভাবে চেষ্টা করিতে বাধা দিবে। স্তরাং এখন যে মুসলমান ও 'অবনত" হিন্দুরা উল্লাসত হইরাছেন তাঁহারা জানিয়া রাখুন, সাম্প্রদায়িক বাঁটোয়ায়া যত দিন আছে, তত দিন তাঁহারা, অমুসলমান ও অনবনত হিন্দুদেরই মত দাস-জাতিরই অঙ্গীভূত থাকিবেন, খাধীন জাতি বলিয়া পরিচিত হইতে পারিবেন না, এবং খাধীনতামূলভ জ্ঞানবন্তা, পৌরুষ ও বাণিজ্যাদি-সভ্ত ঐশ্বর্য্য লাভ করিতে পারি বন না—প্রভুর উচ্ছিট একটু বেশী করিয়া হয়ত পাইবেন।

সমগ্রভারতের জন্ম একীকৃত শাসনব্যবস্থা কি অসম্ভব গ

ভারতবর্ধকে একত্ব দান ব্রিটিশ-শাসনের মহন্তম দান, এই দাবি জয়েণ্ট পালে মেণ্টারী কমিটি করিয়াছেন। অগচ এই কমিটিই তাঁহাদের রিপোর্টে অন্তত্ত্ব বলিতেছেন—

"A completely united Indian polity cannot, it is true, be established either now or, so far as human foresight can extend, at any time."

"ইহা সত্য, যে, বর্ত্তমান সময়ে অথবা, যত দুর পর্য্যস্ত মানবীয় ভবিষ্যদৃষ্টি যাইতে পারে, কোন সময়েই সম্পূর্ণরূপে একীকত শাসননীতি বা শাসনব্যবস্থা ভারতবর্ষের জন্ম প্রতিষ্ঠিত হইতে পারে না।"

ইহা কি সত্য ? ভারতবর্ধকে সত্য সত্যই যদি ব্রিটিশশাসন একত্ব দিয়াছে, তাহা হইলে এক শাসননীতি ও
শাসনব্যবস্থা, বর্ত্তমানে না-হউক, ভবিষ্যৎ কোন সময়েও
কেন কল্পনাতীত ?

মোগল-সাআব্দ্যের জাঁকজমক ও প্রজাদের দারিত্র্য

জন্মেণ্ট পালে মেণ্টারী কমিটির রিপোর্টে মোগল-সাম্রাজ্ঞা সমক্ষে বলা ক্ইরাছে, বে, "The imperial splendour became the measure of the people's poverty," "সাম্রাজ্ঞিক জ'াকজমক প্রজাদের দারিজ্ঞের মাপকাঠি হইরাছিল।" অর্থাৎ সম্রাটদের জাঁকজ্মক যত বাড়িতেছিল, প্রাক্ষাদের দারিত্যন্ত সেই পরিমাণে বাড়িয়া চলিয়াছিল।

এইরপ মন্তব্য অতীত ও বর্তমান সমুদয় সামাজ্যের পক্ষে সত্য কিনা বলিতে হইলে সব সামাজ্যের অধীন প্রজাদের অবস্থা পর্য্যালোচনা করিতে হয়। তাহা আমরা করি নর্নই। স্থুতরাং এমন কোন মস্তব্য প্রকাশ করিতে পারি না যাহা সকল সামাজ্যে প্রযোজ্য। তবে, ইহা দেখিতেছি বটে, যে, ভারত-সাথ্রাজ্যে শাসকদিগের জ"াকক্ষাকের অভাব নাই। সামাজ্যিক দরবার খুব ঘটার সহিত দিল্লীতে আগে হইয়া গিয়াছে। সমুটি পঞ্ম জর্জের রাক্ত্কাল পঁচিশ বৎসর পূর্ণ হওয়া উপলক্ষ্যে আগামী বৎসর যে দরবার হইবে, ভাহাতে জ'কজমকের অভাব হইবে না। ভারতবংর্বর লোকদের অবস্থা সম্বন্ধে মণ্টেগু-চেম্স্ফোর্ড রিপোর্টে লিখিত হইরাছিল, বে. "The immense mass of the people are poor, ignorant, and helpless far beyond the standard of Europe," "ভারতবর্ষের বিশাল জনপঞ্জ এরপ দরিদ্র, জম্জ ও অসহায় যে ইউরোপে তাহার তুলনা মিলে না।" আবার বর্ত্তমান গ্রীষ্টীয় অব্দের গত নবেম্বর মাসে প্রকাশিত জয়েণ্ট পার্লেমেণ্টারী কমিটির রিপোর্টে ভারতবর্ষ সম্বন্ধে শিখিত হইয়াছে, যে, 4 The average standard of living is low and can scarcely be compared even with that of the more backward countries of Europe," "গড়ে এদেশের লোকদের বাসগৃহ, গ্রাসাচ্ছাদন ও চালচলন এমন গরিবানা রকমের, যে, তাহার সহিত ইউরোপের অধিকতর অনুরত দেশগুলার লোকদের সেই সমুদরেরও তুলনা করা ষায় না।"

অথচ জয়েণ্ট পালেমেণ্টারী কমিটির এই রিপোর্টেই অন্তত্ত বলা হইয়াছে,

"... it can be claimed with certainty that in the period which has elapsed since 1858, when the Crown assumed supremacy over all the territories of the East India Company, the educational and material progress of India has been greater than it ever was within her power to achieve during any other period of her long and chequered history."

তাৎপর্যা। ' ভারতবর্ষের দীর্ঘ ও দশাবিপর্যারপূর্ণ

ইতিহাসের কোন যুগে এদেশের বেরূপ আর্থিক ও শৈক্ষিক প্রগতি করিবার ক্ষমতা ছিল না, তার চেরে ইহার অধিকতর প্রগতি ১৮৫৮ সালে কোম্পানীর হাত হইতে রাজত্ব ব্রিটিশ রাজশক্তির অধীনস্থ হওয়ার পর হইয়াছে, ইহা নিশ্চয় করিয়া দাবি করা হয়।"

ভারতবর্ষ অতীত কোন কালেই তত ধনী ও জ্ঞানী ছিল না যত ধনী ও জ্ঞানী ইহা ১৮৫৮ হইতে ১৯৩৪ সাল পর্যান্ত ৭৬ বৎসরে হইয়াছে, ইহা সত্য কিনা বলিতে হইলে ভারতবর্ষের অতীত ইতিহাসের করেক হাজার বৎসরের এরপ নিশ্চিত জ্ঞান থাকা আবশ্যক যাহা নাই---এবং বেয়াদবী মাপ করিলে আমাদের বলিতে চাই, যে, জয়েণ্ট পালেমেণ্টারী কমিটির সভাগণেরও এবং কোন সভােরই নাই। তাহার একটা কারণ এই, যে, ভারতবর্ষের পুরাকালের ইতিহাস এখনও তেমন করিয়া, আধুনিক রীতি অনুসারে, লিখিত হয় নাই, যেরপ লিখিত হইলে সেই ইতিহাস পড়িয়া এত বড় একটা দাবি করা যায় বা তাহা খণ্ডন করা যায়। তবে একটা প্রশ্ন আমাদের মনে অবগ্রই উদিত হইতেছে, যে, প্রাচীন কাল হইতে যে নানা দেশের লোকেরা এদেশে বাণিজ্ঞা কবিতে আসিয়াছিল তাহা কি তবে বাণিজ্ঞা নহে? তাহা কি বাণিজ্যব্যপদেশে মক্ষভূমিতে স্বর্ণ-বৃষ্টির নামান্তর ছিল? না, বাণিজাবাপদেশে বুভুক্ষিত অতি নি:স্ব অতি অসভ্য দেশে অন্নদত্ত খুলিবার জন্ত আগমন ছিল ?

যাহাই হউক, দাবিটা থাটি সভ্য বলিয়া মানিয়া লইলেও, ভারতবর্ষের লোকদের ধনশালিতা সম্বন্ধে মণ্টেপ্ত-চেম্স্ফোর্ড রিপোর্ট ও জয়েণ্ট পালেমেণ্টারী কমিটির রিপোর্ট হইতে বে-ছটি মস্তব্য উদ্ধৃত করিয়াছি, ভাহাকে ভিত্তি করিয়া কোন সাহস্কার দাবি করা চলে কি?

কোন্দেশের লোক গড়ে কভ বংসর বাঁচে বা বাঁচিবার আশা করিতে পারে, তাহা সেদেশের লোকদের ধনশালিতার একটা প্রমাণ। ১৯৩১ সালের ভারতবর্ষীর সেলস্ রিপোর্টের প্রথম ভল্যমের প্রথম ভাগের ১৭১-৭২ পৃঠার একটি তালিকা দেওরা আছে, ভাহাতে লেখা আছে, জন্মকালে গড়ে শিশুরা কোন্ দেশে কভ বংসর বাঁচিবার আশা করিতে পারে। বংসরের সংখ্যাগুলি বালিকা-শিশু ও বালক-শিশুদের আলানা করিয়া দেওরা হইয়াছে। ভারতবর্ষের বাহিরে স্ত্রীক্ষাতীয় শিশু ও প্রকাষাতীয় শিশু ও প্রকাষাতীয় শিশু সকলের চেয়ে বেশী বৎসর বাঁচিবার আশা করিতে পারে অষ্ট্রেলিয়ায়—যথাক্রমে ৫৮.৮৪ ও ৫৫.২০ বৎসর, এবং সকলের চেয়ে কম বাঁচিবার আশা করিতে পারে জাপানে—যথাক্রমে ৪৪.৮৫ ও ৪৩.৯৭ বৎসর। কিন্তু ভারতবর্ষে তাহারা বাঁচিবার আশা করিতে পারে—যথাক্রমে ২৩.৩১ ও ২২.৫৯ বৎসর!

ভারতবর্ষের এই ধনশালিতা কি গর্ব করিবার বিষয় ?

ভারতবর্ষে শিক্ষার প্রগতি

কোন্ দেশে শিক্ষার প্রগতি কিরপ হইয়াছে, তাহা
ছির করিতে হইলে জন-কয়েক ডি-এস্সি, পিএইচ-ডি,
এম্-এ, বি-এ কে গণিলে চলিবে না, সর্বসাধারণের মধ্যে
শিক্ষাবিস্তার কত দুর হইয়াছে, তাহাই ছির করিতে
হইবে। ভারতবর্ষে শতকরা ৯২ জন মানুষ নিরক্ষর।
পৃথিবীর অন্ত কোন সভাদেশের শতকরা এত জন লোক
নিরক্ষর নহে। ইহা কি অহল্পারের বিষয়? এবং ইহাও
সত্য নহে, যে, ব্রিটিশ-শাসনকালের পূর্বে নিরক্ষরতার
পরিমাণ বরাবর ইহা অপেক্ষা বেশী ছিল। নিরক্ষরতা
যে ইহা অপেক্ষা কম ছিল তাহার প্রমাণ আমরা আগে
আগে অনেকবার ইংরেজদের লেখা হইতেই উদ্ধৃত
করিয়াছি।

বীরেন্দ্রনাথ শাসমল

মেদিনীপুরের বীরেক্সনাথ শাসমল মহাশর যোগ্য প্রতিষ্ণী থাকা সন্থেও অনেক বেশী ভোট পাইরা ভারতবর্ষীর ব্যবস্থাপক সভার সদক্ষ নির্বাচিত হইরাছিলেন। কিন্তু তাঁহার নির্বাচন যথন জানা গেল, তথন এই সংবাদও পাওরা গেল, বে, তিনি সাংঘাতিক পীড়াগ্রস্ত। তাহার ছয় দিন পরে অকালে তাঁহার মৃত্যু হয়। ইহা অভি শোকাবহ ঘটনা।

তিনি তেজখী, সাহসী ও বুদ্ধিশান্ ছিলেন। দেশের স্বাধীনতার জন্ত তিনি অনেক স্বার্থত্যাগ করিয়াছিলেন ও অনেক ত্রংথ সহিরাছিলেন। তিনি অনেক গরিব লোকের পক্ষে বিনা পারিশ্রমিকে ব্যারিষ্টরী করিতেন।

জানকীনাথ বস্থ

কটকের ভূতপূর্ব্ব গবন্মেণ্ট উকীল শ্রীযুক্ত জানকীনাথ বস্থ প্রায় ৭৫ বৎসর বয়সে দেহত্যাগ করিয়াছেন। মৃত্যুর সময় তাঁহার অন্ত সকল সম্ভান নিকটে ছিলেন, কেবল শ্রীযুক্ত মুভাষচন্দ্র বম্ন ভিয়েনা হইতে এরোপ্লেনে আসিয়াও ঠিক সময়ে পৌছিতে পারেন নাই। বাল্যকালেই জ্ঞানকীনাথের পিতৃবিয়োগ ঘটে। কিন্তু তিনি নিরুৎসাহ না হইয়া জ্ঞানলাভে ব্যাপুত থাকেন। কেশবচন্দ্র সেন মহাশয় তাঁহার শিক্ষার অনেক সাহায্য করেন। বি-এ পাস করিবার পর জানকীনাথ জেনার্যাল এসেম্ব্লীজ্ইনষ্টিউশ্যনে ইতিহাসের অধ্যাপক নিযুক্ত হন। ইহা এক্ষণে স্কটিশ চাৰ্চ্চ কলেজ নামে পরিচিত। অতঃপর তিনি বি-এল পাস করিয়া কটকে ওকালতী আরম্ভ করেন। তাহাতে তাঁহার খুব পদার ও প্রভূত অর্থাগম হয়। গবন্মেণ্ট তাঁহাকে সরকারী উকিল নিযুক্ত করেন ও পরে রায় বাহাহর উপাধি দেন। অসহযোগ-আন্দোশনের সময় তিনি ঐ উপাধি পরিত্যাগ করেন। তিনি কম্বেক বৎসর হইতে হৃদরোগে ভূগিতে-ছিলেন। গত বৎসর বধন আমরা রামমোহন শতবার্ষিকী উপলক্ষ্যে কটক গিয়াছিলাম, তথন তিনি অসুস্থতা সত্ত্বেও সেই উৎসবে যোগদান করিয়াছিলেন।

তাঁহার পুত্রেরা সকলেই কৃতী। তাহার মধ্যে রাজ-নৈতিক কর্মিঞ্চতার জন্ত শরৎ চন্দ্র ও স্কৃতাষ্চন্দ্র সমধিক বিখ্যাত।

রাথালচন্দ্র সেন

আলিপুরের অতিরিক্ত দায়রা জ্বজ প্রীযুক্ত রাখালচক্র সেনের অকালে নিউমোনিয়া রোগে মৃত্যু হইরাছে। তিনি বিঘান্ ও সাহিত্যাল্রাগী ছিলেন। কবি শ্রীমতী কামিনী রায়ের মৃত্যুর পর তিনি তাঁহার গ্রন্থাবদীর স্থেলর সমালোচনা করিয়াছিলেন। প্রীযুক্ত বিজ্বচক্র মন্ত্র্মদারের নৃতন বাংলা বহি "জীবনবাণী"র যে ইংরেজী সমালোচনা তিনি করিয়াছিলেন, তাহা তাঁহার গুণগ্রাহিতা ও নানা বিদ্যায় পারদর্শিতার পরিচায়ক।

হাউস অব্কমন্সে রক্ষণশীলদের জয়

এখন ইংলণ্ডে যে গবন্দেণ্ট চলিতেছে, তাহাকে ন্যালন্তাল গবন্দেণ্ট অর্থাৎ সমগ্রজাতীয় গবদ্দেণ্ট বলা হয়, কারণ তাহাতে রক্ষণশীল, উদারনৈতিক ও শ্রমিক তিন দলেরই কিছু কিছু লোক আছে এই দাবি করা হইয়া থাকে। কিছু বস্তুত: ইহা রক্ষণশীল দলেরই গবদ্দেণ্ট, ঐ দলের সভাই হাউস অব কমন্দে খ্ব বেশী। উদারনৈতিক দলের এক-আম জন মন্দ্রীসভায় থাকিতে পারেন, কিছু তাহাদের খ্ব বড় এক জন রাজনীতিজ্ঞ মি: লয়েড জর্জ্জ এই গবন্দেণ্টের বিরোধী। প্রধান মন্দ্রী মি: রামজে ম্যাকডোভাল্ড নামে শ্রমিকদলের, কিছু বাস্তবিক তিনি নিজের পদটি বজায় রাখিবার জন্ম বছরপী।

হাউদ অব্ কমন্দে ভারত-সচিব শুর সামুরেল হোর এই
মর্মের প্রস্তাব উত্থাপন করেন, যে, জয়েণ্ট পার্লেমেণ্টারী
কমিটির রিপোর্ট অসুমোদিত হউক এবং ভারত-শাসন আইনের
তদনুযারী একটি পাঞ্লিপি পার্লেমেণ্টে পেশ করা হউক।
শ্রমিকদলের সভ্যেরা ইহার বিরোধিতা করিয়া অনাস্থাস্টক
একটি প্রস্তাব উপস্থিত করেন। স্বাই স্থানিত, আমরাও
জানিতাম, শ্রমিকদল পরাজিত হইবেন। তাঁহাদের
প্রস্তাবের পক্ষে ৪৯ এবং বিক্লজে ৪৯১ জন পার্লেমেণ্ট-সভ্য
ভোট দেন। শুর সামুরেল হোরের মূল প্রস্তাব গৃহীত হয়।
ইহার পক্ষে ৪১০ ও বিক্লজে ১২৭ জন ভোট দেন।

তিন দিন ধরিয়া এই বে সাড়ম্বর তর্কবিতর্কের অভিনয় হইল, এ-বিবরে আমাদের বিশেষ কোন কৌতুহল না-থাকায় রয়টার বক্তাগুলির যে চুম্বক টেলিগ্রাফ-যোগে পাঠাইয়াছেন, আমরা তাহা এ-পর্যান্ত পড়ি নাই। পারি ত অবসরমত পড়িব। হাউস্ অব লগুনের তর্কবিতর্কাভিনয়ের পরিসমাপ্তির থবর অন্য ২৮শে অগ্রহায়ণ তারিথের প্রাতঃকালীন ধবরের কাগজে পাওয়া যায় নাই।

রাজ্বন্দী মানবেন্দ্রনাথ রায়

রাজবন্দী মানবেজনাথ রায় বরেলী জেলে কঠিন পীড়ায় ্জুণিতিছেন । তাঁহার রোগের সেখানে উপশম হইতেছে না। এই জন্ত ভারতবর্ষের ভিন্ন ভিন্ন প্রদেশ হইতে তাঁহার মুক্তির দাবি করা হইতেছে। বঙ্গের অনেক সংবাদপত্তে এবং কোন কোন জনগণ-সভাতেও তাঁহার মুক্তির প্রয়োজন উক্ত হইয়াছে। এই প্রদক্ষে আমরা বলিতে চাই, যে, কয়েক দিন আগে কলিকাভার শ্রদ্ধানন্দ পার্কে এভদর্থে যে সভা হয়, তাহার বিজ্ঞাপনে বক্তাদের মধ্যে 'প্রবাসী'র সম্পাদকের নাম ছিল। কথন কখন আমাকে না-বিজ্ঞাপনে জানাইয়া কোন কোন সভার ইহা অবাঞ্চনীয়। ্মধ্যে আমার নাম দেওয়া হয়। কিন্তু এই সভাটির বিজ্ঞাপনে আমার নাম দেওয়া আরও অন্তায় হইয়াছিল এই জন্ত, যে, আমাকে টেলিকোনে জিজাসা করার আমি তাঁহাকে একজন উদ্যোক্তা আমার নাম দিতে নিষেধ করিয়াছিলাম। কারণ, ঐ সভার নির্দ্ধারিত সময়ের কিছু পরেই ভবানীপুরে অন্ত একটি সভায় আমার বক্ততা করিবার প্রতিশ্রতি ছিল, এবং আমি অফুস্থও ছিলাম। সেই জন্ত আমি নাম দিতে নিষেধ कतिबाहिनाम, यनिও नेत्रीत ভान थाकितन अञ्चनंभरतत करा হয়ত প্ৰদানন্দ পাৰ্কে যাইতাম।

প্রীয়স্বজন বর্ত্ত্বাহ্ববিদিগকে তাঁহাদের সাধানত তাঁহার আরীয়স্বজন বর্ত্ত্বাহ্ববিদিগকে তাঁহাদের সাধানত তাঁহার উৎকৃষ্টতম চিকিৎসা করাইবার প্রবোগ দেওয়া উচিত। তাঁহাকে ছয় বৎসরের জন্ত কারাক্ষক করা হইয়াছে। এই স্থানের অধিকাংশ তিনি ইতিমধ্যেই কারাগারে বাপন করিয়াছেন। প্রতরাং কিছুকাল পরে তাঁহাকে ত মুক্তি দিতেই হইবে, এখন মুক্তি দেওয়ায় ক্ষতি কি? এক দিকে তাঁহার বৈমন কারাবাসের কিছু বাকী আছে, তেমনি ক্ষিত্ত দিকে তার চেয়েও বেশী হঃবকর রোগভোগ তাঁহার রাছে ও হইতেছে। প্রতরাং বদি এখনই তাঁহাকে ছাড়িয়া ওয়া হয় তাহা হইলেও হয়েদরে ছয় বৎসর কারাবাসের রে কম শান্তিভোগ তাঁহার হইবে না। বিচারক যথন হাকে ছয় বৎসরের জন্ত কারাদও দেন, তথন ওপু কারাদও রাছিলেন, রোগভোগের দও দেন নাই। অবশ্র জেলের

কর্ত্পক তাঁহার রোগ জন্মাইয়াছেন এরপ বলিতেছি না. ভিনি রোগভোগ করিবেন, বিচারকের ইহা অনুমান বা অভিপ্রায় ছিল না ইহাই বলিতেছি। বিচারে যথন তাঁহার ছম্ব ৎসর কারাবাসদণ্ড হইয়াছিল, প্রাণদণ্ড হয় নাই, তথন তাহা হইতে বুঝা ঘাইতেছে, যে, বিচারকের মতে তিনি এমন কোন অপরাধ করেন নাই যাহাতে আইনত: তাঁহার মৃত্যু হওয়া আবশুক। অতএব জেলে তাঁহার মৃত্যু সাইনের ও বিচারকের অভিপ্রেত নহে। স্তরাং যদি তাঁহার রোগ এরপ যে জেলে তাঁহার যথোচিত চিকিৎসার ও রোগমুক্তির অন্তান্ত অবস্থার সমাবেশ ঘটিতে না-পারে, তাহা হইলে তাঁহাকে ছাড়িয়া দেওয়া গবনেটের একান্ত কর্ত্তব্য। তাঁহার রোগের প্রকৃতি ও অবস্থা নির্দ্ধারণের জন্ত বেসরকারী ও সরকারী বড করেক জন ডাক্তারের একটি বোর্ড গঠন করিয়া তাহার দ্বারা তাঁহার পরীক্ষা গ্রন্মেণ্টের অন্ততঃ নিশ্চয়ই করান উচিত। এরপ বোর্ড দ্বারা এরকম পরীক্ষা গবন্মেণ্ট অক্ত কোন কোন রোগী রাজবন্দীর করাইয়াছেন।

সাবিত্রী শিক্ষালয়

কলিকাতার বাগবাজার অঞ্লের সাবিত্রী শিক্ষালয় একটি বালিকা-বিদ্যালয়। প্রাচীনপন্থী হিলুরাই প্রধানতঃ এই অঞ্চলের বাসিন্দা। বিদ্যালয়টিতে এখন প্রায় তিন শত ছাত্রী পড়ে। আম্বকা**ল, কতকটা মত-পরিবর্তন-বশতঃ,** কতকটা অন্তান্ত কারণে, হিন্দু বালিকাদের আগেকার মত অল্প বন্ধসে বিবাহ হয় না। তাহাদিগকে অশিক্ষিত অবস্থায় বাডিতে বসাইয়া রাখা উচিত নয়। এই জ্বন্ত কলিকাতার বালিকা-বিদ্যালয়ের সংখ্যা বাড়িতেছে, ক্রত নৃতন পাড়াগুলিতে ত বাড়িতেছেই, পুরাতন পল্লীগুলিতেও বাড়িতেছে। সাবিত্রী শিক্ষালয়ে এরপ বরসের হিন্দু ছাত্রী দেখিয়া প্রীত হইলাম, আগেকার যাহাদের নিশ্চরই বিবাহ হইয়া যাইত ও যাহারা নিরক্ষর থাকিত। ইহা বলিবার অর্থ এ নহে, যে, আমরা বিবাহের বিরোধী! বিবাহের আমরা বিরোধী ত নই-ই, বরং স্থালিকার পর উপযুক্ত ও জনধিক বয়সে বিবাহ হওয়াই স্বাভাবিক ও বাছনীর মনে করি।

সাবিত্রী অধ্যাপনা শিক্ষালয়ের কাশিমবাজারের বাড়ি হুটিভে প্রাতঃকালে यहोद्रोकोद भिद्यविमान्द्रवद হয় বলিয়া এবং সেই জ্বন্ত ইহার অধিকাংশ শিক্ষয়িত্রী ও শিক্ষক নামমাত্র বেত.ন কান্ধ করিতে পারেন বলিয়া ইহা চলিতেছে। ক্রমশ: ইহাকে নিঞ্জ বাড়ি ক্রীড়াক্ষেত্রের অধিকারী হইতে হইবে ৷ সেই বাড়িতে ইহার নানাবিধ কাজ সময়ে শিক্ষয়িত্রী ও শিক্ষকদিগকে চলিবে. এবং বেতনও দিতে इंदेर्द। किंद्ध ये पिन म अवश्रो ना घटि. তত দিন যে এই ভাবে ইহা চলিতে পারিবে. ইহা দেশের সর্বত্ত যেখানে যেখানে ছেলেদের বিদ্যালয় আছে ও তাহার বাডি আছে, সেইখানেই মেয়েদের বিদ্যালয়ের স্বতম্ভ বাডি নির্মাণ করিবার বা ভাড়া লইবার এবং পূর্ণ বেতনে শিক্ষয়িত্রী ও শিক্ষক নিযুক্ত করিবার টাকা না-থাকিলে, সাবিত্রী শিক্ষালয়ের **यक वत्सावएक श्रीकःकारम (ছरमरमंत्र विमागः) प्रत श्रह** মেরেদের বিদ্যালয় চালান উচিত। এই প্রকারের নানা উপায় অবলম্বিত না হইলে আমাদের দরিদ্র দেশে

"বিশ্বকোষ"

বালিকাদের মধ্যে শিক্ষার বিস্তার হইতে বহু বিলম্ব ঘটিবে।

প্রাচ্যবিদ্যামহার্ণব শ্রীযুক্ত নগেন্দ্রনাথ বহু কর্ত্ক সঙ্গলিত "বিশ্বকোষের" দিতীয় সংস্করণ বাহির হইতেছে। ইহার প্রথম ভাগের অরোদ্ধশ সংখ্যা পর্য্যন্ত আগে বাহির হইরাছিল। তাহার পরিচর আগে 'প্রবাসী'র কোন কোন সংখ্যার দিরাছি। সম্প্রতি চতুর্দ্ধশ ও পঞ্চদশ সংখ্যা পাইরাছি। এই তুই সংখ্যার ৪১৭ হইতে ৪৮৪ পূর্জা পর্যন্ত আছে। এই তুই সংখ্যাও পূর্ব্ব পূর্ব্ব সংখ্যার মত নানা জ্ঞাতব্য বিষয়ে পূর্ব। আবশ্রক-মত চিত্রপত ইহাতে দেওরা হইরাছে। ইহা সম্পূর্ণ হইলে বাংলা ভাষার একটি বিশিষ্ট সম্পদ বশিরা পরিগণিত হইবে, তাহাতে সন্দেহ নাই।

ভারতবর্ষ হইতে ব্রহ্মাদেশ পৃথক্-করণ দরেণ্ট পার্লেমেণ্টারী কমিটির রিপেটে ব্রহ্মদেশকে ভারতবর্ষ হইতে, আলাদা করিরা ফেলিবার প্রভাব আছে। ব্রিটিশ গবর্মেণ্ট এই প্রস্তাব কার্ব্যে পরিণত করিবেন।
ব্রহ্মদেশীরদের অধিকাংশ রাজনৈতিকজ্ঞানবিশিষ্ট লোক এই
বিজেদের বিরোধী, কতক লোক ইহার সপক্ষেঃ রক্ষপ্রেরাদী,
ভারতীরেরাও ইহার বিরোধী। যদি কেবল উাহারাই
ইহার বিরোধী হইতেন, ভাহা হইলে মনে করা মোইতে
পারিত, বে, ভাঁহারা কেবল নিজেদের আর্থবৃদ্ধি হইতে
বিরোধিতা করিতেছেন। কিন্তু ব্রহ্মদেশীর বছ শিক্ষিত লোকর্ও
ভারতবর্ষ ও ব্রহ্মদেশের বর্ত্তমান মিলিত অবস্থার পক্ষপাতী
হওয়ার ব্রা বাইতেছে, বে, এই মিলনে ভারতবর্ষ ও ব্রহ্ম
উভয়েরই লাভ আছে। এই ছই ভূষগতকে আলাদা
করিরা দিলে ইংরেজদের তাহা শোষণ করিবার স্থবিধা
বাড়িবে।

বর্ত্তমান ডিসেম্বর মাসের শেষ সপ্তাহে ব্রহ্মপ্রবাসী ভারতীয়েরা একটি কন্ফারেন্সে ব্রহ্ম-বিচ্ছেদের কুফল্ আলোচনা ও ভাহার বিরুদ্ধে আন্দোলনের বন্দোবস্ত করিবেন।

ভিক্ষু উত্তমকে হিন্দু মহাসভার ^{কি} সভাপতি নির্বাচন প্রস্তাব

ভিক্ উত্তমকে হিন্দু মহাসভার আগামী অধিবেশনের সভাপতি নির্বাচন করিবার প্রভাৰ হইরাইটি হিন্দু মহাসভার সংজ্ঞা অনুসারে, বে-কেহ ভারতবর্ষরাত কোন ধর্মে বিখাস করেন, তিনিই হিন্দু। এই সংক্রাংক্রীন্সগারের ভিক্ উত্তমকে সভাপতি নির্বাচন করিতে বাখা নাই। তিনি শিক্ষিত ব্যক্তি এবং ভারতবর্ষীর কোন কোন ভাষাং জানেন—ভাঁহাকে বাংলা বলিতে তানিয়াছি। বৌং হিন্দুদের মধ্যে কৃষ্টিমূলক মিলনের তিনি পক্ষপাতী বহু তুঃপভোগ ও স্বার্থত্যাগ তাঁহার মন্ত্রাত্ব প্রাণ্টিং করিরাছে।

সিংহলের শিল্পবিভাগে বাঙালী নিয়োগ বলীর শিল্পবিভাগের শ্রীষ্ক্ত করণাদাস গুরু সিংহল গ্রুবের্গেটের শিল্প-বিভাগে বার্ষিক ৮,৪০০ টাকা বেড পরামর্শদাতা নিযুক্ত হইরাছেন। তিনি বঙ্গে, মহীপুরে ইংলঙে শিক্ষালাভ করেন। আর্ফেনীভেও তিনি অন্ত



"স্তাম্ শিবম্ স্করম্" "নায়মাত্রা বলহীনেন লভাঃ"

৩৪**শ ভা**গ ২য় খণ্ড

সাঘ, ১৩৪১

৪র্থ সংখ্যা

প্রশ

রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

দেহের মধ্যে বন্দী প্রাণের ব্যাকুল চঞ্চলতা দেহের দেহলীতে জাগায় দেহের অতীত কথা। খাঁচার পাখী যে বাণী কয় সে তো কেবল খাঁচারি নয়, তারি মধ্যে করুণ ভাষায় স্থাদূর অগোচর বিশ্বরণের ছায়ায় আনে অরণ্য মর্শ্বর॥

চোথের দেখা নয় তো কেবল দেখারি জাল-বোনা, কোন্ অলক্ষ্যে ছাড়িয়ে সে যায় সকল দেখাশোনা শীতের রোজে মাঠের শেষে দেশ-হারানো কোন্ সে দেশে বস্থন্ধরা ভাকিয়ে থাকে নিমেষ-হারা চোখে দিশ্বলয়ের ইক্সিভ-লীন উধাও কল্পলোকে॥ নানা ঋতুর ডাক পড়ে যেই মাটির গহন তলে

চৈত্রতাপে, মাঘের হিমে, শ্রাবণ বৃষ্টিজলে,
শ্বপ্প দেখে বীজ সেখানে
অভাবিতের গভীর টানে,
অন্ধকারে এই যে ধেয়ান স্বপ্পে কি তার শেষ ?
উষার আলোয় ফুলের প্রকাশ, নাই কি সে উদ্দেশ

১৫ वरबञ्चत



ছোটনাগপুরে সাহিত্য-সেবার উপাদান

শ্রীশরৎ চন্দ্র রায়

ছোটনাগপুরে সাহিত্য ও বিজ্ঞান চর্চার অপরিণত ও অপরিপক উপকরণ প্রচুর পরিমাণে বিদ্যমান। পরিতাপের বিষয়, সে-সব উপাদান অস্পৃগ্য হরিজনদের মত বছ যুগ হইতে অনাদত, অনাইত ও অস্পৃষ্ঠ অবস্থায় পড়িয়া আছে।

ভূবিদ্যা, প্রাণিবিদ্যা, উদ্ধিদ্-বিদ্যা, থনিজ-বিদ্যা, প্রাগৈতিহাদিক প্রাকৃত্ব, ভাষাত্ব, দৃত্ব, সমাজতব প্রভৃতির অনুশীলনের পক্ষে ছোটনাগপুর একটি প্রশস্ত ক্ষেত্র। কিন্তু গদিও এই ক্ষেত্রে 'আবাদ করিলে সোনা কলিতে' পারিজ, ছুংথের বিষয় আজ পর্যান্ত 'চাষের মতন চাষ করার' লোকের অভাবে এই বিস্তীর্ণ ক্ষেত্র পতিত বা একর্মিত অবস্থায় রহিয়াছে। কেবল গত শতাব্দীর তই-চারি জন উচ্চপদস্থ ইংরেজ সরকারী কর্ম্মচারী এই ক্ষেত্রে উপর-উপর আঁচড় দিয়াছেন মাত্র। কিন্তু যদিও ভাহারা এই ক্ষেত্র গভীর ভাবে কর্ষণ করিবার অবকাশ বা স্থ্যোগ পান নাই, তব্ও সমাক ক্ষ্মণে কিরপ সোনার ফ্সল লাভ হইতে পারে ভাহার আভাস দিয়া ভাহাদের পরবর্তী ক্রমক্ষের ক্রজ্ঞভাভাজন হইয়াছেন।

ভূবিদ্যা, উদ্ভিদ্-বিদ্যা ও প্রাণিবিদ্যা সম্বন্ধে বল্ (V. Ball), ব্লাপ্তকোড় (W. T. Blandford) ও কর্ণেল টিকেল (Col. Tickell) প্রমুখ কয়েক জন উচ্চপদস্থ সরকারী কর্মারী এবং নৃতব্ব সম্বন্ধে ছোটনাগপুরের ভূতপূর্ব্ধ কমিশনার কর্ণেল ডান্টন (Col. Dalton) এবং মানভূমের ভূতপূর্ব্ধ সহকারী কমিশনার এবং পরে ভারত-গবর্মেন্টের হোম মেম্বার স্তর হারবার্ট রিজ্ লি(Sir Herbert Risley) পথ-প্রদর্শকের কাজ করিয়া আমাদিগকে চির্ঝাণ করিয়াছেন। অবশু ইহারা দেশীর সহকারী ও পত্তপ্রেরকদের সহায়তায় তবামুসন্ধান করিয়াছিলেন। কিন্তু তাঁহাদের অনেকেরই নাম অজ্ঞাত। .

১। প্রাগৈতিহাসিক যুগ

প্রাগৈতিহাসিক প্রত্নত্তব সম্বন্ধে ছোটনাগপুরে এখনও সবিশেয অনুসন্ধান হয় নাই। কাপ্তেন বীচীং (Captain Beeching), বল (V. Ball), কর্ণেল টিকেল এবং আরও ত্ই-এক জন অনুসন্ধিৎ প্র ইংরেজ কর্ম্মচারী অন্ত তত্ত্বের অনুসন্ধান উপলক্ষে দৈবক্রমে ত্ই-চারিটি প্রস্তর-যুগের কুঠারফলক প্রাপ্ত হন এবং আমুষ্ফিক ভাবে সেপ্তলির পরিচয় দেন।

ছোটনাগপুরের ভাষাতত্ব সম্বন্ধেও ভূতপূর্ব ইংরেজ দিবিলিয়ান স্প্রাসিদ্ধ ভাষাতত্ববিৎ শুর জর্জ প্রীয়ারসন (Sir George Grierson) এবং তুই-চারিটি ইউরোপীয় পাদ্রীর (Father Hoffmann, Rev. Dr. Noltrott, Rev. Hahn, ও Father Grigmard-এর) নিকট আমরা ঋণী। এই সব বিদেশীয় পণ্ডিত থে-জ্ঞানভাণ্ডারের হার ঈষ্ৎ উন্মুক্ত করিয়া দিয়াছেন আমরা এখানে তাহার সমুধে থাকিয়াও এত দিন সেই উন্মুক্ত হারের আহ্বান অবহেলা করিয়া আসিতেছি।

সম্প্রতি ভারতে রাজনৈতিক, সামান্দিক, বাণিজ্ঞািক ও কলকারথানা ছারা উৎপাদন সম্বনীয় ব্যাপারে যেরূপ স্বাবশন্ত্র স্পৃহা জাগ্রত হইয়াছে, বৈজ্ঞানিক গবেষণা সম্বর্ধেও তার জগদীশচন্দ্র বস্থ, তার প্রাকৃলচন্দ্র ভক্তর মেখনাদ সাহা প্রমুখ বিজ্ঞানাচার্য্যেরা সেইরূপ আয়নির্ভরতার দুষ্টান্ত দেগাইতেছেন এবং সাহিতা ও ইতিহাসাদি সেবার ডক্টর মুনীতিকুমার চটোপাধ্যায়, শুর যতুনাথ সরকার, অধ্যাপক ক্ষিতিমোহন সেন, ডক্টর রাধাকুমুদ মুংবাপাধ্যায়, ডক্টর র**মেশচন্দ্র মজুমদার** প্রমুখ সাহিত্যিক ও ঐতিহাসিকগণও সেইরূপ আত্মনির্ভরের পরিচয় দিতেছেন। এথন আর গত শতাব্দীর অধিকাংশ শিক্ষিত ভারতবাসীর স্থায় আমরা ভারতের প্রাচীন সাহিত্য, দর্শন, শ্রুতি ও শ্বুতি শাল্লের মুশতৰ উজ্বাটনের ও ভারতের প্রাচীন ইতিহাসের উদ্ধারের জন্ত এবং আধুনিক সাহিত্য ও বিজ্ঞান সম্বন্ধে গবেষণার জভ বিদেশীয় পণ্ডিতদের সম্পূর্ণ মুখাপেক্ষী নহি। বদিও পূর্ব্বগামী বিশেষজ্ঞ কভকগুলি বিদেশীয় পণ্ডিভের ও তাঁহাদের মতাত্বতী কোন কোন ভারতীয় পণ্ডিতের









জ্यात्र गुरुक ()

জুয়াঙ্গ যুৰকের (২) পার্থভাগ

নিকট ভারতবাসী চিরস্কতজ্ঞ পাকিবে, তথাপি স্বীকার

করিতে হইবে যে প্রাক্তপক্ষে ভারতের প্রাচীন জ্ঞানভাঞারের উদ্ধার ও সমাক অর্থবোধ ও বাণ্যান এবং
নৃতন বা অনাহত ত:থার আবিষ্কার বা আহরণ দেশীর
বিষমগুলীর ঘারা নেরূপ স:স্তাযজনক ভাবে সম্পন্ন
হওরার সম্ভাবনা, বিদেশীর পণ্ডিতদের নিকট হইতে সেরূপ
প্রত্যাশা করা যায় না।

বৈ নবা বিহুৎগোষ্ঠী বাংলা দেশে সাহিত্য ইতিহাস বিজ্ঞান প্রভৃতির গ্রেষণার নৃতন যুগ প্রবর্তন করিয়াছেন, তাঁহাদের দৃষ্টি আজ এই 'পাগুববর্জ্জিত' ছোটনাগপুরের দিকে আরুই হওয়ার স্থানীয় সাহিত্যসেবীদের মনে বিশেষ আশার সঞ্চার হইয়াছে। তাই আশা করি, বিজ্ঞান, প্রভৃত্ব ও সাহিত্য সম্বন্ধে গ্রেষণার কিরূপ উপকরণ ছোটনাগপুরে পাওয়া যাইতে পারে—এই প্রসঙ্গ এই অভিভাষণের অনুপ্রোগী হঁইবে না। তবে ভাষার দারিদ্রোর জন্ম ও যথায়থ ব্যাখ্যানের শক্তির অভাবে আমার এই অভিভাষণ হয়ত শ্রোভাদের ক্লেশদায়ক হইয়া পড়িবে।

ছোটনাগপুরের ভূতৰ সম্বন্ধে সরকারী ভূতৰ-বিভাগের অনুসন্ধানের ফলে জানা গিরাছে যে, ছোটনাগপুর ভারতের মধ্যে একটি সূর্ব্বপুরাতন প্রদেশ। যথন পৃথিবীর অধিকাংশ বর্ত্তমান স্থলভাগ সমুত্রগর্ভে নিহিত ছিল তথনই ছোটনাগপুরের ভূপঞ্জর গঠিত হইরাছে। যে-মুগে পৃথিবীতে জীবনের উল্লেষ্
হর নাই, সেই জীবহীন (Archaean বা Azoic) মুগে

জুয়াক যুবক (:)

জুয়াক যুৰকের (১) পার্যভাগ

Gneiss, Granite, Quartzite ও Epidiorite প্রস্থৃতি প্রস্তরে ছোটনাগপুর, বিশেষতঃ র*াচি ও হাজারিবাগ জেলা, পরিপূর্ণ। আর কেবল কোন কোন অংশে পুরাতন জীব-যুগের (Lower Paleozoic) ধারোয়ার ও গোণ্ডোয়ানা শ্রেণীর প্রস্তর বর্ত্তমান। স্থৃতরাং ভারতের এই একটি প্রাচীনতম প্রদেশে ভূবিদ্যার আলোচনা ও গবেষণার প্রচুর উপাদান পাওয়া যাইতে পারে।

আর এথানে লোহ-অল্র-কয়শা-চুণ প্রভৃতির অনেক থনি থাকাতে থ নিজ-বিদ্যা স্থপ্তে গবেযণার স্বযোগ আছে। উদ্ভিদ-বিদ্যা ও প্রাণিবিদ্যা সম্বন্ধেও অরণ্যবহুল ছোটনাগপুরে অনুসন্ধান ও গবেষণার বিস্তীর্ণ ক্ষেত্র বর্ত্তমান। তারপর প্রাগৈতিহাসিক গবেষণার জন্ত ছোটনাগপুরে যেরূপ প্রচুর উপকরণ আছে, উত্তর-ভারতে সিন্ধু-নদের উপত্যকা ছাড়া সম্ভবতঃ আর কোথাও সেরূপ নাই। যে-প্রাদেশের ভৃস্তর-সংগঠন (land formation) ভারতের বা পৃথিবীর মধ্যে প্রাচীনতমের একটি সেই স্থান যুগ্যুগান্তর হইতে মানবের আবাদ-ভূমি হইয়া আদিতেছে, এ তথ্য কেবল অনুমানসাপেক্ষ নয়। পুরাতন প্রস্তর-যুগ, মধ্য-প্রস্তর্যুগ, নৃতন প্রস্তর-যুগ, প্রস্তর ও তামের মিশ্রযুগ, তাম-যুগ ও পুরাতন লোহ-যুগ—ইহার নিদর্শন ছোটনাগ-পুরের মালভূমিতে পর্যাপ্ত পরিমাণে বর্ত্তমান। কেবল অনুসন্ধানকারীর কোদালীর অপেক্ষা করিতেছে।

আপনার। সকলেই জানেন যে আদিমানবের বিশেষ

কোন অন্ত্ৰ-শস্ত্ৰ ছিল না। আদিমানৰ স্বাভাবিক অস্ত্ৰ ব্যবহার করিত, অর্থাৎ নিজের হাত পা নথ এবং গাছের ডাল বা পাথরের টুকরাই তাহার একমাত্র অন্ত্র ছিল। হয়ত ন্ধলম্রোতে ঘষিয়া কিংবা নৈসর্গিক কোনরূপ চাপে ছচালো বা তীক্ষ ধারযুক্ত তই-চারখানা পাথর দেথিয়া কোন আদিম মানবের মনে প্রস্তরগণ্ডকে কৌশলে ভাঙিয়া বা ব্যায়া ধারাল করিবার কল্পনা প্রথমে উদিত হয়। এই প্রথম মানব-হস্তনির্মিত শিলা-অন্তর্গুলির উধা-শিলা (Eolith) নাম দেওয়া হইয়াছে। এইরূপে মান্ব-সভাতার বিকাশ আরম্ভ হইল। ক্রমে এক-একগানা অন্ত প্রস্তরের দ্বারা বিশেষ আকারে ভাঙিয়া লইয়া কিনারা-গুলি সেই মূপে ছিলিয়া (chipping) ও ধ'র-বৃক্ত করিয়া বিশেষ আদর্শ (pattern) অন্যায়ী আদিম ম'ন্বেরা কুঠারফলক প্রভৃতি নির্মাণ করিতে লাগিল। এ রকম ফলকযুক্ত ছিলা (chipped) বা অসমান (rough) প্রস্তরাস্ব বহু সহস্র বৎসর যাবৎ ব্যবহৃত হইত। ঐ গুগকে পুরাতন প্রস্তর-ৰুগ (Rough Stone Age বা Palacolithic Age) বৰা হয়। তার পর ক্রমান্বয়ে গঠন-প্রণাশীর ও নমুনার উন্নতি ও কার্য্যোপযোগিতা ও সৌন্দর্য্যের উৎকর্ষ অনুসারে মধ্য-প্রস্তরযুগ (Mesolithic Age) ও নৃতন প্রস্তর-যুগ (Neolithic Age)-এর উদ্ব হইল। এই যু:গ পাথরের ধার অন্ত পাথরে ঘষিয়া করা হইত;—ছিলিয়া নয়। এইরপে আবার কত সহস্র বৎসর কাটিল; সভ্যতার স্ফুরণ মন্দ গভিতে চলিতে থাকিল। তার পর মাত্র কয়েক সম্প্র বৎসর হইশ তামের এবং পরে ব্রোঞ্জের (টিনমিশ্রিত তামার) আবিদ্ধার হইল। আর পাথরের অস্ত্রের অনুকরণে তামার অস্ত্রাদি প্রস্তুত হইতে সুরু হইল। প্রথম প্রথম কিছুকাৰ প্রস্তরাস্ত্র ও তাম-অস্ত্র হুই-ই ব্যবহার হইতে লাগিল! ঐ যুগকে তাম-প্রস্তর-যুগ (Chalcolithic Age) নাম দেওয়া হইয়াছে। পরে, ভারতের বিমিশ্র তাম-যুগ ও ইউরোপের ব্রোঞ্জ-যুগ। যখন আর্য্যেরা ভারতে প্রথম আগমন করেন তথনও হয়ত ভারতে তাম্র-যুগ শেষ হয় নাই; সম্ভবতঃ তথন তাম ও লোহ যুগের সন্ধিকাল। কারণ, ঋথেদে যে 'অয়সে'র উল্লেপ আছে তাহাকে কোন কোন পণ্ডিত ভামা অর্থে গ্রহণ করেন।

সর্বশেষে লোহার বাবহার আরম্ভ হইল। এই লোহযুগকেও ছুই ভাগে বিভক্ত করা হয়; প্রথম বিভাগ পুরাতন
লোহ-যুগ (Early Iron Age) ও অপরটি নৃতন লোহ-যুগ
(Later Iron Age) নামে অভিহিত হয়। এখন আমরা
এই নৃতন লোহ-যুগে আছি।



একটি জুয়াক্ষ গ্রাম

২। নৃতত্ত্ব

আর্থ্যদের আগে ভারতে পর-পর এই প্রসঙ্গে কোন কোন জাতি আসিয়াছিল, সে-সম্বন্ধে ছই-এক কথা বলা বোধ হয় অসমীচীন হইবে না। নৃতত্ত্ববিৎ পণ্ডিতদের অনেকেই অফমান করেন যে, দর্কপ্রেণমে কালো, বেটে মেলেনেসিয়াবাসী কিংবা আন্দামানবাসী কর্তমান নেগ্রিটোদের মত এক বা বহু জাতি ভারতের অধিবাসী ছিল। তাহারাই ভারতের পুরাতন প্রস্তর-যুগের অস্ত্রশস্ত্র নিৰ্মাণ করিয়াছিল। তাহারা মৃগয়ালক পশুপক্ষী বা বল্ল ফলমুল থাইয়া জীবনধারণ করিত। এখন ভারতের দক্ষিণ প্রান্তে যে কাডার (Kadar), উরাশি (Urali) প্রভৃতি জাতি আছে, তাহারাই ভারতের দেই সর্বপ্রথম অধিবাসীদের, অমিশ্র না হইলেও বিমিশ্র (remnants) বংশধর। তার পর বর্ত্তমান মুণ্ডা-গোষ্ঠীর জাতিদের পূর্ব্ব-পুরুষেরা ভারতে আদে। কোথা হইতে এবং কোন পথে আসে সে-সম্বন্ধে পণ্ডিতদের মতের অমিল আছে। পণ্ডিতেরা মনে করিতেন এবং আগেকার নৃতন্ত্রবিৎ এখনও কোন কোন পণ্ডিত মনে করেন, তাহারা ভারতের উত্তর পূর্ব্ব দিক হইতে ব্রহ্মদেশ ও আসাম হইয়া এ-দেশে আদিয়াছিল; কিন্তু ইদানীস্তন অনেক পণ্ডিতের মতে উহারা উত্তর-পশ্চিম দিক্ হইতে ভারতে প্রবেশ করিয়াছিল। উহাদের উত্তর-পূর্ব্ব পথে আগমনের সপক্ষে বলা যায় যে, প্রথমতঃ ভারতের পূর্ব্বন্থ মলয়-দ্বীপের সাকেই (Sakei) ও সেমাং (Semang) জাতিদের ভাষা ব্রহ্মদেশের ওয়া (Wa), পালোক (Palaung) প্রভৃতি ভাষা, পেশুর মক্ষ (Mons) বা তেলাইক্স (Telaing) ভাষা ও আসামের গাদি ভাষার দহিত ভারতের মুখা-গোলীর ভাষাগুলির গঠনে ও কিছু কিছু বিশেষ প্রয়োজনীয় শক্ষাবলীতে সাদৃশ্য দেখা যায়। দ্বিতীয়তঃ, ব্রহ্মদেশে নৃতন প্রস্তর-মুগের বে ক্ষমযুক্ত কুঠারফলক পাওয়া গায়, ছোটনাগপুর ও সাঁওতাল



জুয়াঞ্চ রমণা

পরগণাতেও সেইরূপ প্রস্তারা পাওয়া গিয়াছে। আর আসামেও তদক্রপ স্কর্ত লোহার অস্ত্র ও থানিকটা তদক্রপ প্রস্তারের অস্ত্র পাওয়া গিয়াছে। তৃতীয়তঃ, কোন কোন মুগুাজাতির মধ্যে মোজোলিয়ান্দের মত ক্ষুত্র চক্ষু ও বাঁকা চকু কিংবা অপর কোনও অস্পষ্ট বা অনির্দিষ্ট মোজোলিয়ান লক্ষণ কথনও কথনও দেখা বায়।

এই মতের সপক্ষে আরও হুই-একটি তথ্যের উল্লেখ করা

ষাইতে পারে। উড়িষাার জুরাল ও পাহাড়ী ভূঁইয়া রমণীদের জাতিত্ব অনুসদানকালীন জুরাল ও পাহাড়ী ভূঁইয়াদের গলায় পাকে-থাকে যে লাল অনেকগুলি করিয়া কাঁচ-বর্তুলেন মালা দেবিয়াছি তাহা নাগা প্রভৃতি মোলোলীয় রমণীদের গলার ঐরপ পৃঞ্জীকত মালার কথা মনে করাইয়া দের। আর কোন কোন জুয়াল ও পাহাড়ী ভূঁইয়া যে শূকর ও ছাগলাদি রাথিবার জন্ত ছোট ছোট মাচার উপর ঘর নির্মাণ করে, সেগুলিও আসামের নাগাদের আবাসগৃহ বা "চাল" পরের স্থারক।

অপর পক্ষে, অনেক নৃত্রবিৎ পণ্ডিত মুণ্ডা-গোষ্ঠার জাতিদিগকে বে উত্তর-পশ্চিম দিক্ হ**ই.ত** ভারতে আগত ককেসীয় জাতির একটি নিম্নস্তরের ক্ল-ছচশংখা (low form of Caucasian Melanochroi) বলিয়া নির্ণয় করিয়াছেন। এই মতের সপক্ষে প্রমাণ-স্বরূপ প্রদর্শিত হয় বে, ১৯২৫ খ্রীষ্টান্দে টার্ণভিল পাঁটার (Turnville Petre) গ্যালিলি প্রদেশের 'রবাদ কেভ' নামক গিরিগুহায় ্ব-ধ্রণের (Neanderthaloid) নরকন্ধাশ প্রাপ্ত হন এবং ১৯২১ গ্রাষ্টাব্দে ব্যারি (W. E. Barrey) দক্ষিণ-আফ্রিকার রোডেসিয়া প্রাদেশের 'ব্রোকেন হিল্' পাহাড়ের গুহায় রোডেসিয়ান মানুষের যে কদ্ধাল প্রাপ্ত হন তাহার গঠন অষ্ট্রেলিয়ানদের দৈহিক গঠনের অন্রূপ, এবং মুণ্ডা-গোষ্টীর জাতিদের সঙ্গে অষ্ট্রেলিয়ার আদিম অধিবাসীদের স্রদূর সম্পর্ক থাকা অসম্ভব নয়। যদিও অষ্ট্রেলিয়ার অসভা জাতিদের সঙ্গে প্রাগৈতিহাসিক কালের নিয়াগুরিথাল-মানবের কোনো সম্পর্ক থাকার কথা আধুনিক নৃতত্ববিৎ পণ্ডিতের: অনেকেই অশ্বীকার করেন, তণ্ও সম্প্রতি আমেরিকার বিখ্যাত নৃতত্ত্ববিৎ হাণ্ডলিসকা (Hardlicka) এবং ভারতীয় প্রাণিতত্ত্ব-বিভাগের ভূতপূর্নন ডিরেক্টর কর্নেল সিউয়েল ঐ পুরাতন মতের পুনরুখাপন ও সমর্থন করিয়াছেন। কিন্তু গ্যালিলিতে প্রাপ্ত নিয়াগুারথাল-মানবের করোটি ব্যতীত প্যালেসটাইনের মাউণ্ট কার্মেলের য়াথলিট (Athlit) ভাষা এবং ভাষা (Shukhah) গুহাতে যে নরকন্ধালাবশেষ পাওয়া গিয়াছে. সেগুলি পরবর্ত্তী যুগের Neanthropic বা নৃতন মালুষের। অষ্ট্রেলিয়ায় বে তুইটি প্রাগৈতিহাসিক যু.গর কন্ধালাবশেষ (Talgai skull ও Cohuna skull) এ-পর্বান্ত পাওয়া গিরাছে তাহা উভরেই সমজাতীর এবং অনেকাংশে নিরাণ্ডারথাশ আদিন মানবের (Homo Primigenius-এর) গ্রহরপ। স্তর আর্থার কীথের মতে :—

"Both skulls represent the proto-Australian type and of which the modern aboriginal type has been evolved."—New Oiscoveries relating to the Antiquities of a Man, p. 308.

দ্বিতীয়তঃ, মুগুজিতির মধ্যে যেটুকু মোঙ্গোলিয়ান সংমিশ্রণের আভাস পাওয়া ধার তাহা, সম্ববতঃ সমুদ্রবারে, দক্ষিণ-মোঙ্গোলীয় (l'arecean) জাতির লোকেরা এথানে আনিরাছিল। তৃতীয়তঃ, কোন কোন ভাষাত্ত্ববিৎ পণ্ডিত মুগ্রা-গোষ্ঠীর agglutinative ভাষাপ্রালির সহিত প্রেক্ষ-দেশায় ভাষার সম্বন্ধ আতে এরপ মনে করেন।

সে যাহাই হউক, মৃত্যা-গোষ্ঠীর জাতিদের পূর্বপুরুবেরা সম্ভবতঃ পূর্ববর্তী নেগ্রিটো জাতিদের আংশিক উচ্ছেদসাধন করে এবং অবশিষ্ট অংশের কতক প্রতিকৃল পারিপার্শ্বিক অবস্থার প্রভাবক্রমে শয়প্রাপ্ত হইশ, কতক বা মুণ্ডা-গোষ্ঠীয়দের সংমিশ্রণে পূথক অস্তিত্ব হারাইয়া ফেলিল। কেবল তাহাদের কিছু কিছু অংশ দক্ষিণ-ভারতের উক্লশা, কাড়ার, চেঞ্চ প্রভৃতি ভ'তিদের মধ্যে সম্ভবতঃ রহিরা গিয়াছিল। মুণ্ডা-গোষ্ঠায়দের কিংবদন্তী হইতে জানা যায় যে, এক সময় তাহারা—অন্ততঃ াহাদের মধ্যে প্রধান জাতিগুলি—শোণ, গঙ্গা, যমুনা প্রভৃতি নদনদীর উপতাকায় বাস করিত এবং ক্লযিকার্য্য দ্বারা কিয়ৎ-পরিমাণ স্থাথে-স্বচ্ছন্দে বাস করিত। ইহারাই সম্ভবতঃ ভারতে প্রথম ক্ববিকার্য্য করে। উত্তর-ভারতের পশ্চিম হইতে পূর্ব্ব সীমা পর্যান্ত পরিবাপ্তে হটরা ইতাদেরই শাখা-প্রশাখা ব্রহ্মদেশ অতিক্রম করিয়া পূর্ব্ব-মহাসাগরের মলয়-উপদ্বীপ হ'ইয়া আরও नेद्र यात्र । দক্ষিণে লক্ষাদীপের বেদ্দারাও (Vedda) ইহাদেরই একটি প্রশাখা এইরূপ অনুমান হয়। ইহাদের মধ্যে শাহারা আসাম ও ব্রহ্মদেশ হইয়া আরও পূর্বের চলিয়া নায়, তাহাদের এক দল মোলোলীয় জাতির সংমিশ্রণে ইণ্ডো-নেসিয়ান জাভিতে পরিণত হইল। ইহার অনেক পরে গাবার সেই ইণ্ডোনেসিয়ানদের মধ্যে কতক আসংমে গিরাছিল এবং দক্ষিণ-ভারতের উপকৃলেও ভাহাদের কিছু নিদর্শন পাওরা যার।

যপন মুখাগোষ্ঠীর বিভিন্ন শাখা সমগ্র ভারতে

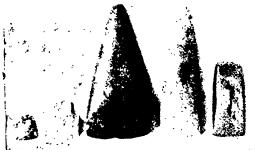


জুয়াঙ্গদের ছাগল শৃকর প্রভৃতি রাধিবার মর। ইহা নাগা (মোজোলিয়ান) জাতির মাচার উপেরে নিমিত 'চাঙ্গ' গৃহের অপুরূপ

পরিবাপ্তি ছিল এমন সময়ে এদেশে আর একটি নৃতন জাতির আবিভাব হয়। ইহাদের পূর্ববাসস্থান এবং কৃষ্টিগত উদ্ভবস্থল (area of characterization) ভূমধাসাগরের বেলাভূমি বা ভল্লিকটবৃত্তী স্থানে। এই জন্ত ইহাদিগকে অসুর জাতি (Mediterranean race বা Proto-Mediterranean race) বলা হয়। ইহারা দলে দলে ভারতের উত্তর-পশ্চিমে সম্ভবতঃ বেলুচিম্থান হইয়া ভারতে প্রবেশকরে। বেলুচিম্থান ও ভারতের সীমান্ত-প্রদেশে বে ব্রাছই (Brahui) ভাতি আছে তাহাদের ভাষা ইহাদেরই ভাষার সমজাতীয়। হয়ত পরে জলপথেও এই অসুর জাতির কোন কোন দল ভারতে আগমন করিয়াছিল।

এই নবাগত অসুর জাতির কোন কোন দল উদ্ভরভারতে মুণ্ডাগোষ্ঠার কাতিদের প্রভাব দেখিরা দক্ষিণভারতের দিকে অগ্রসর হইল এবং সেখানকার অপেক্ষারুত
হীনবল নেগ্রিটো জাতিদের বিপরত করিয়া ক্রমে সমস্ত
দক্ষিণ-ভারত অধিকার ও জাবিড়-সভ্যতার পত্তন করিল।
দক্ষিণ-ভারতে মুণ্ডাগোষ্ঠার বে-সব জাতি ছিল তাহারা ক্রমে
নবাগত অসুর জাতিদের মধ্যে বিলীন হইয়া গেল।
আর অসুর জাতির মধ্যে ধাহারা উত্তর-ভারতে বসবাস
করিল তাহাদের এক দল সিন্ধু-উপভ্যকার ক্রমে
আধিপত্য স্থান করিয়া ভারতের বাহিরের অস্তান্ত জাতির











সংস্পর্শে ও সম্ভবতঃ আংশিক সংমিশ্রণে সভ্যতার সাতিশয় উৎকর্মসাধন করিয়াছিল, মহেঞ্যোদাড়ো ও হারাপ্লার ধ্বংসাবশেষ হইতে এরপ অনুমান হয়। ভারতের আরও পূর্বে অর্থাৎ গঙ্গা, গমুনা, তাগুী, নশ্মদা প্রভৃতি নদীর উপত্যকায় যে মেডিটারেনিয়ন জাতির দলেরা বসবাস করিয়াছিল ভাহাদের সংঘর্ষে অপেক্ষাৰত বর্কার : মুঙা-জাতিগুলি (জুয়াঙ্গ, বিরহোড় প্রভৃতি) পাহাড়-পর্বতে আশ্রয় শইশ; কেবল মুণ্ডা, শবর, গাঁওতাল প্রভৃতি ্রিকয়েকটি অপেক্ষাক্বত শক্তিমান মুণ্ডা-গোষ্ঠীয় 'কোলভাতি' শোণ, গজা, যমুনা প্রভৃতি নদনদীর উপত্যকায় স্থানে স্থানে নিধ্বেদের প্রভাব কোন: রক্ষে বজায় রাখিতে সমর্থ হইল এবং কালে আশ্পাশের 🖟 অস্থর জাতিদের সঙ্গে তাহাদের কতক কতক সংমিশ্রণও रुहेन।

মুণ্ডাগোষ্ঠীয়: জাতির ভারতে আগমনের বহু কাল পরে এবং দত্তবতঃ দাবিড়-ভাতীঃদের আগমনের কিছু পরে ককেসীয় জাতির আরও একটি শাখা ভারতে আসিয়াছিল এরপ অনুমান হয়। ইহারাই বাঙালী, শুক্তরাটী, মহারাষ্ট্রীয় প্রেত্তি জাতির পুর্ব্বপুরুষ। পুরুষ-পরস্পরা আল্পায় পর্বত-শ্রেণীর মালভূমিতে পুলীর্থকাল অবস্থিতি করায় ইহাদের গোলাক্তি মন্তক এবং দৈহিক গঠনের আরও কয়েকটি বৈশিষ্টা জন্ম; সেই জন্ম ইহারা এবং ইহাদের জ্ঞাতি-জাতিরা ইআলপাইন জাতি নামে পরিচিত। সন্তবতঃ উত্তর-ভারতে অপুর ও মুঙা-গোষ্ঠীর জাতিদের প্রাহ্রভাব ও প্রাধান্ত দেখিয়া ভারতে আগত এই আলপাইন জাতির এক

চিত্র-পরিচয়

(উপন্ন হইতে)

- ়। ছোটনাগপুরের প্রাগৈতিহাসিক ''অহ্বর''-ধ্বংসাবশেষ প্রাণ্ড প্রস্তর-নিশ্মিত বুষ।
 - ২। ছোটনাগপুরে প্রাপ্ত নৰ-প্রন্তর-যুগের কুঠার-ফলক।
 (বাম ছইতে বিভারট 'স্বন্ধ'-যুক্ত)
 - ়। ছেটিনাগণুরে প্রাপ্ত ভাষ-কর।
 - ৪। ছোটনাগপুরে প্রাপ্ত পুরাতন-প্রস্তর-নুগের অর।
- ে। ছোটনাগপুরের ''অহর''-ধ্বংসাবশেবে প্রাপ্ত দগ্ধ মৃত্তিকায় (terra cotta) স্তব্যাদি। দিতীয়টি লিকের প্রতাক।

দুল গুল্করাটে অবস্থান করে; এক দল আরব-উপসাগরের উপকৃষ দিয়া দক্ষিণ দিকে মহীশূর, কুর্গ প্রভৃতি প্রদেশে ধার ও আর এক দল মধ্যভারত ও বিহারের পূর্ব প্রান্ত হইরা বাংলা দেশে যায়। ইহারাই গুজরাতী, মহারাষ্ট্রী ও বাঙা**লী জাতিঃ পূর্ব্বপুরু**ষ। 'ঘোষ' 'মিত্র' 'নাগ' 'পা**ল**' প্রভৃতি কয়েকটি পদবী বাঙালী কায়স্থদের মধ্যে এবং গুরুরাটী নগর-ব্রাহ্মণদের মধ্যেও দেখা যায়। ইনা হইতে এরপ অনুমান হয়ত অসকত হইবে না যে আর্য্যদের সকে সংমিত্রণের পূর্বে বাংলা দেশের কায়স্থগণ বাঙালী সমাজে এবং গুদ্ধরাটের নগর-ব্রাহ্মণেরা গুল্করাটী সমাজে শ্রেষ্ঠ আসন অধিকার করিত; সম্ভবতঃ বাংলা দেশে ব্রাহ্মণ্যধর্ম ও জাতিভেদ সংস্থাপিত হুইবার পর তথনকার সর্ব্বোচ্চ শ্রেণীর বাঙালীদের মধ্যে যাঁহারা যজন-যাজন করিতেন তাঁহারা ব্রাহ্মণশ্রেণীভুক্ত হইলেন, আর ঐ সর্কোচ্চ শ্রেণীর মধ্যে গাহারা বৈষ্ট্রিক ব্যাপারে লিপ্ত ছিলেন তাঁহারা কায়স্থ পদবাচ্য হইলেন। বর্ত্তমান কাম্বস্থ জাতির পূর্ব্বপুরুষদের এক দল জ্ঞাতি বা স্বশ্রেণী ছাড়াও কান্তকুক্ত প্রভৃতি হইতে আগত কতিপয় আর্য্য ব্রাহ্মণ-বংশ ও এই উভয়ের সংমিশ্রণ-সম্ভূত বংশগুলি মিলিয়া বাঙালী ব্রাহ্মণের উদ্ভব হয়। ভারতের নৃতত্ত্ব সম্বন্ধে সরকারী তদন্তে রিজ্লি সাহেবের Anthropometrical measurements-এর মাপ হইতে জানা গিয়াছে যে, পূর্ববঙ্গের ও পশ্চিম-বঙ্গের ব্রাহ্মণদের Average Cephalic index গড়পড়তা ৭৮'২ এবং বাংলা দেশের কায়স্থদের মাথারও ঠিক ঐ মাপ (৭৮ ২), কেবল নাসিকার মাপ বাঙালী কায়স্থ এবং পূর্ববঙ্গের ব্রাহ্মণ হুয়েরই গড়পড়তা ৭০'৩ অর্থাৎ লম্বা ও সরু; কিন্তু পশ্চিম-বঙ্গের ব্রাহ্মণদের গড়পড়তা ৭১ ৯ অর্থাৎ ঈষৎ বেশী মোটা নাক। পরে কোন কোন নৃতত্ত্ববিৎ যে মাপ করিয়াছেন ভাহাতে কিছু পার্থক্য দৃষ্ট হয়। সে বাহা হউক, বঙ্গদেশের কারত, ত্রাহ্মণ ও বৈদ্যাদের মধ্যে দৈহিক গঠনে বা সহক মানসিক ক্ষমতায় বা সংস্কৃতিতে বিশেষ কোন প্রভেদ দেখা যায় না।

অঞ্চিক ভাষাভাষী মুগুাগোষ্ঠীয় জাতি, মেডিটারেনিয়ন-গোষ্ঠীয় ক্রাবিড়ভাষী অসুর জাতি ও আল্পাইন-গোষ্ঠীয় জাতিশুলি ছাড়া ভারতে আর একটি প্রধান স্কাতি

মোঙ্গোলীর গোষ্ঠীর। ঐতিহাসিক যুগেই ইহাদের
ক্ষরিকাংশ উদ্ভৱ-পূর্ব অভিমুখ হইতে আসামে এবং
সামান্ত কতক হিমালরের উদ্ভর দিক হইতে হিমালরের
দক্ষিণ-পাদমূলে আসিয়া উপনিবেশ স্থাপন করে। উদ্ভরপূর্ব হইতে মোঙ্গোলীয়দের আগমন এখনও একেবারে
কাস্ত হয় নাই। আসামের অধিকাংশ অধিবাসী ইহাদের
বংশসন্ত্ত; উত্তর-বঙ্গের কোচ জাতি এবং উত্তর-বিহারের
থাড়, জাতির মধ্যে মোঙ্গোলীয় রক্তের সংমিশ্রণ দেখা
যায়। রিজ্লি-প্রমুখ সাবেক নৃত্তববিদেরা বাঙালী জাতির
যে মোঙ্গোলিয়ান ও জাবিড় জাতির সংমিশ্রণে উৎপত্তি
নির্দ্দেশ করেন তাহা ভ্রমাত্মক বলিয়া আধুনিক নৃতত্ববিদেরা
স্থির করিয়াচেন।

পরিশেষে সম্ভবতঃ খৃষ্টপূর্বে দিতীয় কি তৃতীয় সহস্রকে, হয়ত বা তৎপূর্বেই, ফার্যাজাতি উত্তর-পশ্চিম দিক হইতে ভারতে আগমন করেন! প্রথমে পঞ্চনদতীরে আর্য্যদের সঙ্গে ভারতের অথুর (Mediterranean) জাতির সংঘর্ষ হইল। স্ব-দেবতার উপাসক আর্য্যেরা **উন্তর**-ভার**তে**র এই আর্যাদেবধেয়ী মেডিটারেনিয়ন্ জাতিদের 'অস্থর' নামে অভিহিত করেন। **নিম্মু-উপত্যকা**য় মহে**গ্রোদাড়ো ও** হারাপ্লা প্রভৃতি স্থানের অস্থরেরা কোন অজ্ঞাত কারণে তৎপূর্বেই লুপ্ত হইয়াছিল এরূপ অনুমিত হয়। মুণ্ডা, সাঁওতাল প্রভৃতি মুণ্ডাগোষ্ঠীর মধ্যে যে অপেকারত উন্নত জাতিরা শোণ-নদ ও গঙ্গা, যমুনা প্রভৃতি নদীর উপত্যকার তথন বাস করিত তাহারাও আর্যাদের তাড়নায় ক্রমে পূর্বের ও দক্ষিণে সরিয়া যাইতে লাগিল। উত্তর-ভারতের পঞ্চাব হইতে মগধ পর্য্যস্ত মেডিটেরেনিয়ন-গোষ্ঠীর বে-সব অস্তর আর্যাদের আগমনের পূর্ব্বে আধিপতা করিত তাহারা ক্রমে ক্রমে আর্যাদের নিকট পরাভূত ও কতক বশীভূত হইয়া কালে নিজেদের স্বাত্ত্ব্য হারাইয়া ফেলিল। অনুমান হয় ধে, ভাহাদের মধ্যে উচ্চবংশীয় কতকগুলি পরিবার আর্যাদের সঙ্গে সংমিশ্রিত হইয়াছিল; কতক বা পূর্ববর্ত্তী আলপাইন ব্যতিদের মধ্যে মিশিরা গেল। আর নিয়ন্তরের অস্থরেরা মুঞা-গোষ্ঠার জাতিদের মধ্যে লীন হইয়া গেল।

সম্ভবতঃ এই অসুর জাতিরই একটি প্রশাখা প্রাগৈতিহাসিক যুগ হইতেই ছোটনাগপুরের পার্বতা প্রদেশে অধিষ্ঠিত

হইরা বহুকাল হইতে নির্কিবাদে বাস করিত। ছোটনাগপুরের मुखारनत किःवनछी এই इप य भूताकारन एका हैना शभू दात মাশভূমিতে 'অহ্ব'দের একটি ফুদুর বিচ্ছিন্ন দলের বাস ছিল; যধন মুণ্ডারা গলার-পরে শোণ-নদের-উপতাকা হইতে ক্রমে ক্রমে বিভাড়িত হটয়া ছোটনাগপুরের মালভূমিতে প্রার্থ করে তখনও এই অমুরদের এখানে পূর্ণ প্রভাব। ছোটনাগপুরের ধাতব জ্রার নির্মাণ ও क्षात्रम्म এই चार्त्रतापत्र बात्रारे रुत्र, किःवमछी এरेक्रा । ভামু-যুগের এবং পুরাতন লোহ-যুগের বে-সব নিদর্শন এখানে পাওয়া যায়, জন#তি এই যে সেগুলি এই অস্বদের নির্মিত। এই জন্তই তাহাদের পরবর্তী কালের মুগুভাষাভাষী অসভা জাতি এখানে এখনও আছে এবং আকরছাত ধাতু (ore) হইতে লোহা-গলানো পেশা অবলয়ন করিয়াছে ভাহাদিগকে 'অমুর' নামে অভিহিত করা হয়: বস্ততঃ, তাহাদের দক্ষে ছোটনাগপুরের তাম-যুগের অমুরদের কোন জাতিগত সম্বন্ধ আছে এরপ মনে হয় না। পুর্বেই বলিয়াছি, ঋথেদে অমুর জাতির সঙ্গে আর্ব্য জাতির দীর্ঘক:লব্যাপী সংঘর্ষের উল্লেখ আছে। ছোটনাগপু:রর ভাম-যুগের অত্বেরা সম্ভবতঃ তাহাদেরই সুদুরবিক্ষিপ্ত একটি বিচ্ছিন্ন শাখা। ঋথেদে অসুরদিগকে 'भिश्वामवाः' वना इदेशारहः সাধারণতঃ পণ্ডিতেরা 'শিশ্র দ্বাঃ' শব্দের অর্থ করেন 'শিক্ষ-উপাসক'। ছোটনাগ-পুরের অমুরদের ধ্বংসাবশেষগুলিতে প্রস্তর-লিঙ্গ ও অনেক পোড়ামাটির লিক্স-প্রতীক পাওয়া যায়।

সে যাহা হউক, সন্তবতঃ নব প্রান্তর-যুগ হইতে লোহ-যুগের প্রারন্ত পর্যান্ত এখানে এই তথাকণিত অসুর জাতির প্রভাব ছিল; মুণ্ড'দের কিংবদন্তী এইরূপ সাক্ষ্য দের এবং তাহার বন্তগত প্রমাণও পর্যাপ্ত পরিমাণে পাওরা বার। আব'র ঐ যুগে প্রাপ্ত প্রস্তরান্ত প্রভৃতির হই-এ⊅টিতে মোর্যা-যুগের ধ্বজন্তন্ত বা 'লাট' এবং মোর্যা

দৃষ্ট হয়। ঐ পালিশ যদি প্রস্তরবি:শবের স্বাভাবিক পালিশ না হয় তাহা হইলে মৌর্যা-যুগের ঐ শিল্প-বৈশিষ্ট্য পূর্ণবর্ত্তী প্রস্তর-তাত্র-যুগের দান বলিয়া অন্ত্যিত হইতে পারে।

অবদর-মত ছোটনাগপুরের প্রাংগিতিহ'দিক কালের সমাধিস্থানগুলি ও আবাদস্থানের ধ্বংদাবশেষগুলি ধনন ও অ্যোপ করিয়া পুরাতন ও নৃতন প্রেগুর-মূ.গর, মিশ্র প্রেগুর ও তাম-যুগের ও অবিমিশ্র তাম-যুগর অন্ত্রশন্ত্র, অলঙার ও তৈজদপত্রাদির কিছু কিছু নিদর্শন পাইয়াছি; তাহার অধিকাংশই পাটনার সরকারী যাহ্বরে রক্ষিত আছে।

পূ.র্বাই বলিয়াছি, তাম ও টিনের সংমিশ্রণে যে ব্রোট ধাতু প্রস্তুত হয় ইউরোপে বিমিশ্র ভামু-অ'ক্তর পরিবর্ত্তে সেই ত্রোঞ্চের অন্তাদিই বেণী পাওয়া যায়। টিনের **ধ**নি ভারতে তেমন বেণী নাই। সেই জ্বন্ত সম্ভবত: ভার ভ ব্রোঞ্জ-যুগের পরিবর্ত্তে তামু-যুগ প্রচলিত ছিল। তবে হোটনাগপুরের এবং ভারতের অন্ত কোন কোন স্থানে ব্ৰো: নিৰ্দ্মিত তৈৰূদপত্ৰ কিছু কিছু আবিষ্ণৃত হইয়াছে। ছোটনাগপুরে এমন কি একটি ব্রোঞ্চের কুঠার-ফলকস্ত পাইরাছি। ইহা বর্ত্তমানে পাটনার সরকারী যাজতের আছে। ভারতের আর কোথাও ব্রোগ্রের অস্ত্র আবিদ্ধারের কথা আম'র জানা নাই। যদি এগুলি সেকালে ভারতের বাহির হইতে অ'মদ'নী হইয়া থাকিত, ভাহা হই ল ছোটনাগপুরের দক্ষে প্রাগৈতিহাসিক যুগে বহির্ভগতের तांश हिन वृक्षि: **इहार । यमिश्र शाख्यमद मिधिक्रव-**যাত্রার পথে ছোটনাগপুর সম্ভবতঃ বাদ পড়িয় ছিল, তথ:পি বাহিরের স:ক ছোটনাগপুরের বেগ এ.কবারে বিচ্ছিত্র হইয়াছিল এরপ মনে হয় না।

^{*} বিগত ২২শে কার্ত্তিক (রাঁচি) হিন্দু ফ্রেণ্ডস্ ইউনিয়ন ক্লাৰ সাহিত্য-সন্মিলনার বার্ণিক অধিবেশনে অন্তর্থনা-সমিতিয় সভাপতির অভিভারণ

দৃষ্টি-প্রদীপ

শ্রীবিভৃতিভূষণ বন্দ্যোপাধ্যায়

একাদশ পরিচ্ছেদ

;

লোচনদাসের আখড়া ছেড়ে বেরিয়ে পড়লাম। কোন্
দিকে বাব তার কিছুই ঠিক নেই। বর্ধাকাল কেটে
গিয়েছে, আকাল নির্মাল, শরতের শাদা লঘু মেবেওও নীল
আকাশ বেয়েউ:ড় চলেছে, মণিহারী ঘাটের কাছে গলা পার
হবার সময় দেখলুম গলার চরের কাশ-বনে কি অক্ষম্র
কালফুলের মেলা! থানিকটা রেলে থানিকটা পায়ে হেটে
এলাম কহলগায়ে। গলার ধারে নির্জ্জন স্থানটি বড় ভাল
লাগল। উেশানর কাছেই পাহাড়, সংম্বনে যে পাহাড়টা,
তার ওপরে ডাক-বাংলা—এখানে একটা রাত কাটালাম।
ডাক-বাংলার কাছে কি চমৎকার এক প্রকার বস্তুল ফুটেছে,
ক্লোৎমা রাত্রে তার স্থগদ্ধে ডাক-বাংলার বারান্দা আমাদ
ক'রে রেথেছে।

এক দিন কহলগাঁরের খেরাঘাটে শুন্লাম ক্রোশখানেক দূরে গন্ধার ধারে বটেশ্বনাথ পাছাড়ে এক জন স'শু থাকেন। একগানা নৌকা ভাড়া ক'রে বেরিয়ে পড়লাম। বটেশরনাথ পাহাড় দুর থেকে দেথেই আমার মনে হ'ল এমন স্ন্র জায়গা আমি কমই দেখেছি, এথানে শাস্তি ও আনন্দ পাব। গন্ধার ধারে অনুচ্চ ছোট পাহাড়, পাহা ড্র মাগায় জন্মল, নানা ধরণের বুনো গাছ, এক ধরণের হলদে পাপড়ি বড় বড় ফুল ফুটেছে পেয়ারাগাছের মত গাছে, নাম জানি নে। একটা বড় গুহা আছে পাহাড়ের দক্ষিণ দিকের ঢালুতে জঙ্গলের মধ্যে। ওহার মুখের কাছে প্রাচীন একটা বটগাছ, বড় বড় ঝুরি নেমেছে, ঘন ছায়া, পাকা বটফল তলায় প'ড়ে আছে রাশি রাশি। সাধুটির সঙ্গে আলাপ হ'ল, বাড়ি ছিল তাঁর মাজাজে, কিন্তু কথাবার্তায় চেহারায় হিন্দুখানী। সাধুটা খুব ভাল লোক, লম্বাচওড়া কথা নেই মুখ, বাঙালী বাবু দেখে খুব খাতির করলেন। নিজে কাঠ কুড়িয়ে এনে চা ক'রে থাওয়ালেন, আমার সম্বন্ধে ত্-একটা কথা জিগ্যেস

করলেন। বললেন, আপনি এধানে যত দিন ইচ্ছে থাকুন, এখানে থরচ খুব কম। আমি এর আগে মু:করে কট-হারিণীর ঘাটে ছিলাম, শহরবাজার জারগা, এত থরচ পড়ত যে টিকতে পারলাম না। তাও বটে, আর দেখুন বাবুজী, সাধুরা চিড়িয়ার জাত, আজ এথানে, কাল ওথানে—এক জারগার কি ভাল লাগে বেশী দিন?

লোকজন বিশেষ নেই, স্থানটি অতিশয় নিৰ্জ্জন, কথা বলবার শোক নেই, তার প্রয়োজনও বোধ করি নে বর্তমানে---সারা দিনের মধ্যে সন্ধার সময় সাধুজীর সঙ্গে ব'সে একটু আলাপ করি। এত দিন কোথাও যে-শান্তি পাই নি, এখানে তার দেখা মিলেছে, এক দিন পাহাড়ের ওপরে বেড়াতে বেড়াতে জঙ্গলের মধ্যে একটা সুঁড়ি-পথ পেলাম। পাহাড়ের গা কেটে পথটা করা হয়েছে, ডাইনে উঁচু পাহাড়ের দেওয়ালটা, বায়ে অনেক নীচে গলা, ঢালুটাতে চামেলীর বন, একটা প্রাচীন পুপিত বকাইন গাছ পথের ধারে। কিছু দুর গিয়ে দেখি, পাহাড়ের গায়ে খোদাই-করা কতকগুলো বৌদ্ধ দেবদেবীর মূর্ত্তি—পবর্ণমেণ্টের নোটিশ টাঙানো আছে এই মুর্বিগুলো কেউ নষ্ট করতে পারবে না ইত্যাদি। আমি জানতাম না এদের অভিছ। জায়গাটা অতি চমৎকার, স্থ্যাত্তের সময় **শেদিন পীর**পৈতির অন্নচ্চ শৈলমালার ওপরের আকাশটা লাল হয়ে উঠল, গঙ্গার বুকে আকাশজোড়া রঙীন মেবমালার ছায়া, খোলাই-করা দেবদেবীর মূর্ত্তি গে:ধুলির চাপা আলোর কেমন একটা অনির্দেশ্য শ্রী ধারণ করেছে—সে শ্রী বড় অছুত, কোন মূর্ত্তির নাক ভাঙা, কোনটার হাত নেই, বেশীর ভাগ মুর্ভিরই মুথ থসে গিয়েছে—কিন্ত গোধুলি রক্ত-পিলল আকাশের ছায়ায় যক্ষিণী যেন জীবস্ত হয়ে উঠন; পাথরে क है। श्रीन खनयूशन (यन द्रक्रमां रत्र व'ता मत्न इ'न, नृथिनी উদানের ছায়াতরুমু.ল শায়িতা আসন্ধ-প্রস্বা মায়া দ্বীর চোধের পলক যেন পড়ে প:ড়∙∙•তার পর চামেলীর বন কালো

হরে গেল, গঙ্গার বৃকে নোঙর-করা বড় বড় কিন্তীর মাঝিরা হসুমানজীর ভজন গাইতে প্রস্কু ক'রে দিলে, পাহাড়ের পূব দিকে ছোট কেওলিন থনিটাতে মজুরদের ছুটির ঘণ্টা গড়ল—আমি তথনও অবাক হয়ে দাঁড়িরেই আছি।…রাঢ় দেশের মাঠে সেই থালের ধারের তালবনে সেদিন যে অন্ত্রত ধরণের শান্তিও আনন্দ পেরেছিলুম, সেটা আবার পাবার আশায় কত ক্ষণ অপেক্ষা করলুম—কিন্তু পেলাম কই? তার বদলে একটা ছবি মনে এল।

আমি জানি এ-সব কথা ব'লে কি কিছু বোঝানো যায়?
যায় না হয়েছে, সে কি ঘরের লেখা পড়ে কিছু ব্রুতে পারবে, না আমিই বোঝাতে পারবো ? মনে হ'ল কোথায় যেন এক জন পথিক আছেন ঐ নীল আকাশ, ঐ রঙীন মেঘমালা, এই কলরবপূর্ণ জীবনধারার পেছনে তিনি চলেছেন...চলেছেন...কোথায় চলেছেন নিজেই হয়ত জানেন না। তাঁর কোন সঙ্গী নেই, তাঁকে কেউ বোঝে না, তাঁকে কেউ ভালবাসে না। অনাদি অনস্তকাল যরে তিনি একা একা পথ চলেছেন। এই দৃশুমান বিশ্ব, এদের সমস্ত সৌন্দর্যা,—তিনি আছেন বলেই আছে।

আমি তাঁকে ছোট ক'রে দেখতে চাইনে। তাঁকে নিয়ে পুতুলখেলার বিরুদ্ধে ছোটবেলা থেকে আমি বিদ্রোহ ক'রে আসছি। তিনি বিরাট, মানুষে দশ হাজার বছর তাঁকে যত বুঝে এসেছে আগামী দশ হাজার বছরে তাঁকে আরও ভাল ক'রে ব্ঝবে। এক-আধ জন মানুষে কি করবে? সমগ্র মানব জাতি যুগে যুগে তাঁকে উপলব্ধির পথে চলেছে। আমি তাঁকে হঠাৎ বুঝোশেষ করতে চাই নে—কোটী ধোজন দূ:রর তারার আলো ধেমন লক্ষ বৎসর ধরে পৃথিবীতে আস্ছে···আসছে···তেমনি তাঁর আলোও আমার প্রাণে আস্ছে--- জয়ত সিকি পথও পৌছয় নি-ক্ত যুগ, কত শতাব্দী, এখনও এসে এখনও দেরি আছে পৌছবার। এই ত আমার মনের আসল স্থাডভেনচার (adventure), এ যেন আমার হঠাৎ ফুরিয়ে না যায়। আমি খুঁজে কেড়াকো … এই খোঁজাই আমার প্রাণ, বৃদ্ধি, হলয়কে সঞ্জীবিত রাধ্বে, पृष्टिक हित्रनवीन त्रांश्राव ।

আমি হয়ত এজন্মে তাঁকে বুঝাবো না, হয়ত বহু জন্মেও

বুরবো না—এতেই আনন্দ পাব আমি, বদি তিনি আমার মনের বেদীতে হোমের আগুন কখনও নিবে বেতে না-দেন, শাখত ব্গদমূহের মধ্যে, স্থার্থ অনাগত কাল ব্যেপে। আমি চাই ওই নীল আকাশ, ওই সব্জ চর, কলনাদিনী গঙ্গা, দূরের নীহারিকা পুঞ্জ, মাস্থের মনোরাজ্য, ওই হল্দে-ডানা প্রজাপতি, এই শোভা, এই আনন্দের মধ্যে দিয়ে তাঁকে পেতে।

লোচনদাসের আধ্ড়াতে সব ই বললে, আমি নাস্তিক, কারণ আমি বল্তাম নাম-জপ করা কেন? ঈশ্বরের নাম-দিতে পেরেছে কে? শেষ-পর্যন্ত উদ্ধব বাবাজী আমাকে আথ্ড়া ছাড়িয়ে দিল এই জন্তে বোধ হয়।

এক দিন বৈকালে গঙ্গায় নাইতে নেমেছি — কাটারিয়ার ওপারের বহুদ্র দিকচক্রবালের প্রাপ্ত থেকে কালো মেঘ ক'রে ঝড় এল, গঙ্গার বুকে বড় বড় টেউ উঠ্ল, আমার মুথে কপালে মাথায় বুকে টেউ ভেঙে পড়ছে, ওপারের চরের উপর বিহাৎ চম্কাচ্ছে, জলের হুম্মাণ পাচ্ছি—এরকম কত ঝটিকাময় অপরাষ্ট্র ও কত নীরন্ধ, অন্ধ্বারময়ী রাত্রির কথা মনে এল—আমারই জীবানের কত স্থহঃশময় মুহুর্ত্তের কথা মনে এল—

মনে কেমন একটা অপূর্ব ভাবের উদয় হ'ল, তাকে আনন্দও বল্তে পারি, প্রেমও বল্তে পারি, ভক্তিও বল্তে পারি। তার মধ্যে ও তিনটেই আছে। বটেশ্বরনাথের পাহাড়টার ঠিক ধূসর স্তুপের দিকে চেয়ে, দুর, দুর, দিগস্তের দিকে চেয়ে যেথানে বাংলা দেশ, ষেধানে মালতী আছে, যেথানে এমন কত সুন্দর বর্ষার সন্ধ্যা মধুর আনন্দে কাটিয়েছি, কত ভ্যোৎসারাত্তে শুক্নো মকাই-ঝোলানো চালাঘরের দাওয়ার তলায় ব'নে হ-জনে কত গল্প করেছি, তার মুখে জ্যোৎস্নার আলো এসে পড়েছে···কভবার অপ্রভ্যাশিত মুহুর্ত্তে দে এদেছে—আবার কতবার ডাকলেও আদে নি. ক্তবার চোখোচোধি হলেই হেসে ক্ষে**লেছে—এ** কথ: मत्न इरात्र व्यामात्र मत्न त्कमन अक्टी जिन्नामना, व्यानमा, প্রেম, ভক্তি আরও কত কি ভাবের উদয় হ'ল একটা বড় ভা:বর মধ্য দিরে। ওই একটার মধ্যে সবঁটা ছিল। তাদের আলাদা আলাদা করা ধায় না—কিন্তু তারই প্রেরণায় আমার আঙুল আপনা-আপনি বেঁকে গেল, গঙ্গার জলে

মা. বাবা, হীক্স-জ্যাঠার নামে তর্পণ করলুম, ভগৰানের রামে সমস্ত (त्रह-मन নু শ্বে এল, **জলে**র ওপরই ক'রে তাঁর উদ্দেশে সাথা প্রণাম করলুম। ব্দুন্ত করুণ সহামুভূতিতে চোখে ব্দুণ এশ। জ্যাঠামশায়ের হঠাৎ ঘোর বৈষয়িকতার জন্ত অনুকম্পা ২'শ—আবার সেই স্ষ্টিছাড়া অপরূপ মুহুর্ত্তেই দেখনুম মালতীকে কি ভালই বাসি, মালতীর সহায়হীন, সম্পদহীন, ছল্লছাড়া মূর্জি মনে ক'রে একটা মধুর স্লেহে, তাকে সংসারের হঃথকষ্ট থেকে বাঁচাবার আগ্রহে তাকে রক্ষা করবার, আশ্রয় দেবার, ভালবাস্বার, ভাল করবার, তার মনে আনন্দ দেবার, তার সঙ্গে কথা বলবার আকুল আগ্রহে সমস্ত মন ভরে উঠ্ন-কি জানি সে মুহূর্ত কি ক'রে এল সেই মেবাল্ককার বর্ষণমুখর সন্ধ্যাটিতে, সমস্ত বিশ্বপ্রকৃতি নেন সেই মহামুহুর্ত্তে আমার মধ্য দিরে তার সমস্ত পুলকের, গৌরবের, অনুভূতির সঞ্চয়হীন বিপুল দানে আত্মপ্রকাশ করলে। সেদিন দেথ্লুম ৮খরের প্রতি সত্যিকার ভক্তির প্রকৃতি মা**লতী**র প্রতি আমার ভালবাসার চেয়ে পুথক নয়। ও একই ধরণের, একই জাতীয়। যেথানে হৃদয়ের অমুভূতি নেই, ভালবাসা নেই, দেখানে ঈশ্বরও নেই। ভগবানের প্রতি দেনিন যে ভক্তি আমার এশ—তা এল একটা অপূর্ব্ব আনন্দের ব্রুপে—সন্ত্যিকার ভক্তি একটা Joy of life... আত্মা, দেহ, মন সেথানে আনন্দে, মাধুর্য্যে অপ্লিত হয়ে যায়।

ঠিক মাণতী আমাকে ভালবেদেছে বা আমি মাণতীকে ভালবেদেছি এই ভেবে থেমন হয় তেমনি। কোন পার্থকা নেই। একই অনুভূতি—ছটো আলাদা আলাদা নাম মাত্র। এতেও মন অবশ হয়ে থায় আনক্ষে—
'ওতেও।

উপলব্ধি ক'রে বুঝালুম যদি কেউ আমাকে আগে এ-সব কথা বল্ত, আমার কথনই বিশ্বাস হ'ত না। হওয়া সম্ভবও নয়।

সাধুজী সন্ধাবেলা রোক ধর্মকথা পড়েন। আমি

মনে মনে বলি সাধুজী আপনি জীবন দেখেন নি। ভালবেসেছেন কথনও জীবনে? প্রাণ ঢেলে ভালবেসেছেন?

বে কথনও নকণ হাতে নিতে সাহস করে নি, সে যাবে

তলোয়ার খেল্তে? শুক্নো বেলান্ডের কথার মধ্যে ঈশ্বর নেই—যেথানে ভাব নেই, ভালবাসা নেই, শুদরের দেওয়া-নেওয়া নেই, আপনাকে হারি:য় ফেলা, বিলিয়ে দেওয়া নেই—সেথানে ভগবান নেই, নেই, নেই। শুদরের খেলা যে আশ্বাদ করেছে, ও রস কি জিনিষ যে বোঝে—ভগবানকে ভালবাসার প্রথম সোপানে সে উঠেছে।

আমি মালতীর কথা এত ভাবি কেন? সে আমাকে এত অভিভূত ক'রে রেখেছে কেন দিন, রাত, সকাল, সন্ধ্যা ? • • এই বিক্রমশিলা বিহারের পাহাড়মালা, বন-শ্রেণী, পাদমূলে প্রবাহিতা পুণ্যস্রোতা নদী, সন্ধ্যার পটে রাঙা স্থ্যান্ত, বনচামেশীর উগ্র উদাস গন্ধ-এ-সবের মধ্যে সে আছে, তার হাসি নিয়ে, তার মুখভঙ্গি নিয়ে, তার গলার হুর নিয়ে, তার শতদহস্র টুকুরো কথা নিয়ে, তার ছেলেমানুষী ভঙ্গি নিয়ে। কেন তাকে ভূলি নি, কেন তার कर्ल आभात मन मर्क्साई উमाम, উत्रुष, व्याकृत, त्वमनाम् छत्रा, স্থৃতির মাধুর্য্যে আপুত, নিরাশার যথণাময়—হঠাৎ তাকে এত ভালবাদলুম কেন? তার কথা মনে যথন আদে, তথন কেওলিন থনির উপরকার পাহাড়চ্ড়াটায় একটা বকাইন গাছের শুড়ি চেদ্ দিয়ে সারাদিন তার কথা ভাবি-ধাওয়া-দাওয়ার কথা মনে থাকে না, ভালও লাগে না-ভার মুখের হাসির স্বৃতিতেই যেন আমার শাস্তিময়, নিভূত, গুহকোণ, ভার কথার স্থর দুরের বাবধান মাঠ নদী বন পাহাড় পার হয়ে ভেলে এলে আমায় প্রদীপ-জালানো, শান্ত আঙিনায় ছোট্ট থড়ের রান্নাগরের এক পালে উপবিষ্ট নিরীহ গৃহস্থ সাজায়—জীবনে তাই যেন চেয়ে এসেছি, সব হুৱাশা, সব-কিছু ভূলিয়ে দেয়, অভীত বর্ত্তমান ও ভবিষ্যৎ একাকার হয়ে যায়…এদিকে রোদ চড়ে ওঠে কিংবা সূর্য্য চলে পড়ে, বটেশ্বরনাথের পাহাড় রঙে রঙে রাঙা হয়, পাথীর গান হঠাৎ নায় থেমে-সাধুজীর চেলা বর্মানারায়ণ আমাকে খুঁজুতে আসে চা খাবার জন্তে · · তথন অনিচ্ছা সত্তে উঠতে হয়…গাঁজার ধেঁীয়ায় অন্ধকার সাধু-বাৰাক্ষীর গুহার সাম্নে ব'সে হুধবিহীন কড়া চা খেতে থেতে হন্তুমানচরিত শুনতে হয়।

সাধুঞী আমাকে ভালবাসে। এই জ্বন্তেই ওর এখানে আছি। এখানে পরসার ধরচ নেই বললেই হয়। বাবোটা, টাকা এনেছিলুম, সাধুজীর হাতে তুলে দিয়েছি—নিতে চান্ নি—আমি পীড়াপীড়ি ক'রে দিয়েছি। একবেলা খাই মকাইরের ছাতু, একবেলা কটি আর চেঁড়সের তরকারী। অন্ত কিছু এখানে মেলেনা। কেওলিন খনির ম্যানেজার মাঝে মাঝে কহলগাঁও থেকে মাছ আনার, সেদিন ওর বাংলোত আমার খেতে বলে—কারণ সাধুর এখানে ওসব কারবার হবার যো নেই।

মালতীর সঙ্গে আবার দেখা হবে না? কিন্তু কি ক'রে হবে তা ত বৃঝি নে। আমি আবার সেখানে কোন ছুতোর যাবো? উদ্ধবদাস বাবাঞী আমার ভাল চোথে দেখ তা না। ত্ৰ-একবার অসম্ভোষ প্রকাশও করেছিল, মালতীর সালে যথন বড় মিশছি—তথন। ছ-একবার আমায় এমন আভাসও দিয়েছিল যে এগানে বেশী দিন আর থাক্লে ভাল হবেনা। ও সবে আমি ভয় করিনে। সপ্তসিদ্পারের দেশ থেকে, মালতীকে আমি ছিনিয়ে আনতে পারি, যদি আমি জান্তাম যে মালতীও আমার চায়। কিন্তু তাতে আমার সন্দেহ আছে। সেই সন্দেহের জন্তেই ত বেদনা, ঘা-কিছু যন্ত্রণা। কি জানি, বুঝতে রহস্তমন্ত্রী মালতীর মনের খবর পারি নে স্বধানি। পুরো এক বছরেও পাই নি। এক-একবার কিন্তু মনে কোন সন্দেহ থাকে না। ম.ন হয় তা নয়, আমি তাকে পেয়েছিলাম। আমার মনের গভীর গোপন তল থেকে কে বলে, অত সম্পেহ কেন তোমার মনে? কোৰ ছিল কে'থায় ? মালতীকে বে'ঝে নি এক বছারও ?

মালতী—কি মাধুর্যোর রূপ ধরেই সে মনে আসে! তার কথা যথনই ভাবি, অন্ত-আকাশের অপরূপ শোভার, পাহাড়ের ধুসর ছারার, গঙ্গার কলতানের মধ্যে, ওপারের ধাসমহলের চরে কলাইওয়ালীরা মাধার কলায়ের বোঝা নিয়ে ঘরে যথন ফেরে, যথন শাদা পাল তুলে বড় বড় কিন্তি কহলগাঁরের ঘাট থেকে বাংলা দেশের দিকে যায়—কিংবা যথন গঙ্গার জলে রঙীন মোহর ছারা পড়ে, থেয়ার মাঝিরা নিজে দর নৌকাতে বসে বিকট চীৎকার ক'রে ঠেট্ হিন্দীত ভজন গায়—সমন্ত পূলিবী, আকাশ পাহাড় একটা নতুন রঙে রঙীন হরে ওঠে আমার মনে—ওই দূর বাংলা দেশের এক নিভৃত গ্রামের

কোণে মানতী আছে, বখন আবার বর্ধা নামে, পুর ঝড় ওচে, কিংবা পুকুরের ঘাটে একা গা খুড়ে ধার, কি বিকুমন্দিরে প্রদীপ দেধার সন্ধার—আমার কথা তার মনে পড়ে না? আমার ত পড়ে—সব সময়ই পড়ে, তার কি পড়ে না?

মালতীকে নিরে মনে কন্ত ভাঙা-গড়া করি, কন্ত অবস্থায় ত্-জনকে ফেলি মনে মনে, কন্ত বিপদ থেকে তাকে উদ্ধার করি, আমার অত্থ হয়, সে আমার পাশে থ'সে না ঘূমিয়ে সারারাত কাটায়—কন্ত কর্থকটের মধ্যে দিয়ে ত্-জনে সংসার করি—সে বলে—ভেবো না লক্ষ্মীট, মদন:মাহন আবার সব ঠিক ক'রে দেবেন! ভার ছোটধাটো স্থত্থে, আধড়ার বিগ্রহের ওপর গভীর ভক্তিও বিশ্বাস, তার সেবা—আমার ভাল লাগে। মান হয় কন্ত মেয়ে দেখেছি, স্বারই খুৎ আছে, মালতীর খুঁৎ নেই। আবার মেয়েরা যেখানে বেশী রূপসী, সেধানে মনে হয়েছে এত রূপ কি ভাল সমালতীর লিম ভামল স্কুমার মুখের তুলনায় এনের এত নিখুঁৎ রূপ কি উগ্র ঠেকে! মোটের ওপর থেদিক দিয়েই যাই—সেই মালতী।

এক-এক বার মনকে বোধাই মালতীর জন্তে অত ব্যস্ত হওয়া হঃথ বাড়ানো ছাড়া আর কি? তাকে আর দেখতেই পাব না। তাদের আধড়াতে আর যাওয়া ঘটবে না। স্বপ্ন.ক আঁকড়ে থাকি কেন? কিন্তু মন যদি অত সহক্ষে বুৰতো!

মালতী একটা মধুর অপ্নের মত, বেদনার মত, কত দিন কানে-শোনা গানের প্রের মত মনে উদর হয়। তখন সবই প্রক্রের হয়ে যায়, সবাইকে ভালবাস্তে ই.চছ করে, সাধুর বকুনি, পাণ্ডা-ঠাকু রর জ্ঞাতি-বি.রা.ধর কাহিনী—অর্থাৎ কি ক'রে ওর জ্যাঠভুতো ভাই ওকে ঠকিয়ে এতদিন বটেম্বর শিবের পাণ্ডাগিরি থেকে ওকে বঞ্চিত রেখেছিল তার প্রদীর্ঘ ইতিহাস—সব ভাল লাগে। কিন্তু কোন কথা বলতে ইচ্ছে করে না তখন, ইচ্ছে হয় তয়ু বসে ভাবি, ভাবি— সারা দীর্ঘ দিনমান ওরই কথা ভাবি।

9

বটেশ্বনাথ পাহাড়ের দিনগুলো মনে অক্ষয় হরে থাকবে। রূপে, বেদনায়, শ্বতিতে, অমুভৃতিতে কানায় কানায় ভর! কি দে-দ্ব অপুর্ক দিন! অনেক দিন হার গিয়েছে। কিন্তু প্রেমের অমর মধু মুহূর্ত্তভানির ছারাপাতে তাদের স্মৃতি আমার কাছে চিরস্থামল। শরতের ছুপুরে নিভূত পিরালতলার, নিভূত বননিবিড় অবিত্যকার চুপ ক'রে ঝরা পাহাড়ী কুড়িচি ফুলের শব্যায় ব'দে চারি দিকে রৌদুদীপ্ত পাহাড়প্রেণীর রূপ ও শরতের আকাশের শাদা শাদা মেবখণ্ডের দিকে চেয়ে চেয়ে মালতীরই ভাবনাতে দার দিন কাটিয়ে দিতাম। তিনটাঙার মাঠে বটগাছের সবুত্ত মগড়লে শাদা শাদা বকের সারি ব'দে আছে, যেন শাদা শাদা অজন্ম ফুল ফুট আছে—কত কি রং, প্রথমে মাটির ধুসর রং, তার পর কালো সবুত্ত গাছপালা, তার ওপরের পর্দার নীলক্ষণ পাহাড়, তার ওপরে স্থনীল আকাশ ও শাদা মেবস্তুপ, সকলের নীচে কুলে ফুলে ভ্রা গৈরিক জলরানি। কিদে যেন পড়েছিলুম ছেলেবেলার মনে পড়ে—

অলসে বহে তটিনী নীর, বুঝি দূরে—অতি দূ:র সাগর, তাই গতি মহুর, প্রান্ত, পদসঞ্চার ধীর:

আগে প্রেম কা'কে বলে জানতাম না, জীবনে তা কি
দিতে পারে, তা ভাবিও নি কোনদিন। এখন মনে হয়
প্রেমই জীবনের সবটুকু। স্বর্গ কবির কর্মনা নয়—স্বর্গ এই
পিয়ালতলায়, স্বর্গ তার স্বতিতে। নয় ত কি এত রূপ হয়
এই শিলাস্থত অধিত্যকার, ওই উচ্চ মেবপদবীর, ওই
পুগাদলিলা নদীর, ওই বননীল দিগস্তরেখার!

দিনে রাতে মালতী আমার ছাড়ে কথন ? সব সময় সে আমার মনে আছে। এই চপুর, এখন সে আখড়ার দাওয়ার পরিবেশন করছে। এই বিকেল, এখন সে কাণড় সেলাই করছে নয় ত মুগকলাই ঝাড়ছে। এই সদ্ধা, এখন সে টান-টান ক'রে তার অভ্যন্ত ধরণে চুলাট বেঁধে, জুলাধরে মুত্ হেনে বিকুমন্দিরে প্রদীপ দেখাতে চলেছে। আজ মঙ্গলধার, সারাদিন সে উপোস ক'রে আছে, আরতির পরে ত্থ ও ফল খাবে। সেই নিঃসকোচে পুকুরের ঘাটে বসে বসে আমাকে গান-শোনান, আমার সঙ্গে শিবের মন্দিরে বাওয়া—খাতা পড়ে শোনান—সকলের ওপরে তার হাসি, তার মুখের

সে অপূর্ব হাসি! কত কথাই মনে এসে নির্জ্জনে বাপিত প্রতি প্রহরটি আনন্দবেদনায় অলস ক'রে দিত।

দুরের গিরি-সাহর গারে ক্রীড়ারত শুল্র মেবরাঞ্চির
মধ্যে এমন কি কোন দরালু মেব নেই যে এই কুটঞ্চ
কুমুমান্তীর্ণ নিভত অধিত্যকার ওপর দিরে বেতে বেতে
পিরাশতশার এই নির্বাসিত যক্ষের বিরহ্বার্তাটি শু.ন ক্লেনে
নিরে বাংলা দেশের প্রান্তরমধ্যবর্তী অলকাপুরীতে পৌছে
দের তার কানে?

কতবার মনে অন্থশোচনা হয়েছে এই ভেবে যে কেন চলে আসতে গিয়েছিলেম অমন চুপি চুপি ? তথন কি বুঝেছিলুম মালতী আমায় এত ভাবাবে! কি বুঝে আথড়া ছেড়ে এলাম পাগলের মত! এমনধারা খামথেয়ালী স্বভাব আমার কেন যে চিরকাল, তাই ভাবি। আমার মাথার ঠিক নেই সবাই যে বলে, সতিটে বলে। এখন বুঝেছি কি ভুলই করেছি মালতীকে ছেড়ে এসে! ওকে বাদ দিয়ে জীবন কল্পনা করতে পারছি নে—এও যেমন ঠিক, আবার এও তেমনি ঠিক যে আর সেখানে আমার ফেরা হবেনা।

না—মালতী, আর ফিরে যাব না। কাছে পেরে
তুমি যদি অনাদর কর? তা সইতে পারব ন । তে:মার
থামথেয়ালী স্বভাবকে আমার ভর কর। তার চেরে
এই ভাল। আমার জীবনে তুমি পুকুরের ঘাটের কতঃ
ভ্যোৎস্না-রাত্রি অক্ষয় ক'রে দিয়েছ, সেই সব জ্যোৎস্না-রাত্রির
স্থৃতি, তোমার বাবার বিকুমন্দিরে কত সক্ষার প্রাদীপ
দেওয়ার স্থৃতি—তোমার সে সব আদরের স্থৃতি মৃত্যুগ্রী
হরে থাক।

দ্বাদশ পরিচ্ছেদ

>

এক বছর কেটে গেল, আবার প্রাবণ মাস।

হঠাৎ দাদার শালার একথানা চিঠি পেলেম কলকাতা খেকৈ। দাদার বড় অস্থ্য, চিকিৎসার জ্ঞতোকে আনা হরেছে ক্যামেল হাসপাতালে।

পত্র পেরে প্রাণ উড়ে গেল। সাধুকীর কাছে বিদার নিরে কলকাতার এলাম। হাসপাতালে দলের সংস্ দেখা করলাম। সামান্ত ত্রণ থেকে দাদার মুখে হরেছে ইরিসিপ্লাস, আজ সকালে অন্তপ্ত করা হয়ে গিয়েছে। দাদা আমার দেখে শরীরে যেন নতুন বল পেলে। সন্ধ্যা পর্যান্ত হাসপাতালে বসে রইলাম দাদার কাছে। দাদা বললে, এখানে বেশ খেতে দেয় জিতু। রোজ প্রতিবেলায় একখানা বড় পাঁউকটি আর আধ সের ক'রে ত্রধ দিয়ে যায়। দেখিস এখন, এখুনি আনবে। খাবি কটি একখানা?

পরদিন সকালে আবার গেলাম হাসপাতালে। আঙুর কিনে নিয়ে গিয়েছিলাম, বৌবাঞ্চারের মোড় থেকে, দাদাকে ব'সে ব'সে থাওয়ালাম। তুপুরের আগে চলে আসছি, দোর পর্যাস্ত এসেছি, দাদা পেছু ডাকলে—জিতু, শোন।

দাদা বিছানার ওপর উঠে বদেছে—তার চোথ ছটিতে যেন গভীর হতাশা ও বিষাদ মাধানো। বললে—জিত্, তোর বৌদিদি একেবারে নিপাট ভালমান্থ, সংসারের কিছু বোঝেনা। ওকে দেখিস—

আমি বিশ্বরের সক্ষে বলনাম—ও কি কথা দাদা!
ভূমি সেরে ওঠ, তোমার বাড়ি নিয়ে যাব, তোমার
সংসার ভূমিই দেখবে।

मामः চুপ क'द्र द्र**ेण**।

বিকেলে দাদার গুয়ার্ডে চুকবার আগে মনে হল'
দাদা ত বিছানাতে বসে নেই! গিয়ে দেখি দাদা
আগাগোড়া কম্বল মৃড়ি দিয়ে গুয়ে আছে। মাথার কাছে
চাটে দেখি জর উঠেছে ১০৪ ডিগ্রির ঘরে। পাশের
বিছানার রোগী বললে—আপনি চলে যাবার পরে খুব জর
এসেছে। কোন কথা বল্তে পারেন নি, আপনি
আসবার আগে ডেকেছিলাম, সাড়া পাই নি।

সেদিন সারাদিন তেম্নি ভাবে কেটে গেল। পরদিনও তাই, দাদার জ্ঞান মার ফিরে এল না—জরও কম্ল না, পরদিন রাত্রে আমি রোগীর কাছে রইলাম।

ও:, কি বর্ষা সেরাত্রে! ঘনক্ষণ শ্রাবণের মেঘপুঞ্জে আকাশ ছেরে গিয়েছে, নির্ণিরীক্ষ্য অন্ধকারে কোথাও একটা তারা চোথে পড়ে না। একথানা বই পড়ছিলাম দাদার বিছানার ধারে ব'সে। রাত বারোটার একবার নার্স এল। আমি তাকে বল্লাম—রোগীর অবস্থা

খারাপ—একবার রেসিডেণ্ট মেডিকেল অফিসারকে ডাকাও। ডাক্টার এল, চলেও গেল। রাত তথন দেড়টা। বাইরে কি ভীষণ মুবলধারে বৃষ্টি নেমেছে। আকাশ ভেঙে পড়বে বৃদ্ধি পৃথিবীর ওপরে—স্ষ্টি বৃদ্ধি ভাসিরে নিমে যাবে।

একজন ছাত্র এসে রোগী দেখে বললে—ইন্জেক্শন্ দিতে হবে।

আমি বললাম—বেশ দিন—

তার পর আমি বাইরে এসে দাঁড়াসুম। ঘন মেঘে
মেঘে আকাশ অন্ধকার। হাসপাতালের বারান্দাতে
কুলিরা ঘুমুছেে। টিটেনাস্ ওরার্ড থেকে অনেক ক্ষণ থেকে আর্ত্ত পশুর মত চীৎকার শোনা বাচ্ছে—একবার সেটা থাম্ছে, আবার জোরে জোরে হচ্ছে। ডিউক-অফ্-কনট্ ওয়ার্ডে মেম নার্সটা ঘুরে কেড়াছে বারান্দাতে।

বৃষ্টিতে ভিন্ধ তৈ ভিন্ত হুড্ লাইট জালিয়ে একখানা মোটর এদে ওয়ার্ডের সাম্নে দাঁড়াল। স্থারিন্টেণ্ডেণ্ট তদারক করতে এসেছেন। দাদাকে তিনি দেখ্লেন। নার্সকে কি বললেন। ছাত্রটিকে ডেকে কি জিগোস করলেন। ছাত্রটি আর একটা ইনজেক্শন দিলে।

রাত আড়াইটা। বৃষ্টি আবার স্থক্ক হয়েছে। হাস-পাতালের বারান্দায় ওদিকের আলোগুলো নিবিয়ে দিয়েছে—অনেকটা অন্ধকার।

দাদার সঙ্গে অনেক কথা বলবার ইচ্ছে হচ্ছিল। ছেলেবেলাকার কথা, দার্জ্জিলিঙের কথা। সেই আমরা কার্ট রোড ধ'রে উম্লাং-এর মিশন-হাউস্ পর্যাস্ত বেড়াতে বেড়ুম, মনে আছে দাদা? একদিন থাপা ভোমাকে আমাকে কাদার পুতুল গড়িয়ে দিয়েছিল! মুরগীর গরে লুকিয়ে তুমি আর আমি মিছরী চুরি ক'রে সরবৎ খেতুম? তুমি দোকান করলে আটগরাতে বাবা মারা ষাওয়ার পরে পাচ সের হ্ন, আড়াই সের আটা, পাঁচ পোয়া চিনি নিয়ে—সবাই ধার নিয়ে দোকান উঠিয়ে দিলে! বৌদিদিকে কি বলব দাদা?

এবার এসে দাদার খাটের পাশে বসে রইলাম। একটানা বৃষ্টিপতনের শব্দ ছাড়া আর কোন শব্দ নেই। মাঝে মাঝে কেবল টিটেনাস্ ওয়ার্ড থেকে বৃষ্টির শব্দ ছাপিরেও সেই আর্ন্ত চীৎকারটা শোনা বাচ্ছে। একটা ছোট ছেলের টন্সিল কাটা হয়েছিল—সে একবার খুম ভেঙে উঠে থাবার জল চাইলে। কুলিটা উঠে তাকে জল দিলে।

এই কুলিগুলো, ওই বুড়ো মেথরটা, নার্সেরা—এরা ঘুমোয় কথন? সারারাত জেগে জেগে রোগীদের ফাইফরমাজ থাটছে। দ দার অবস্থা থারাপ ব'লে সবাই এসে একবার ক'রে দেখে যাছে। নার্স বে কতবার এল! সবাই তটস্থ...দাদাকে বাঁচাবার জন্ত সবারই যেন প্রাণপণ চেষ্টা। বাঁচলে সবাই খুশী হয়। নার্স একবার আমায় বললে—তুমি একটু ঘুমিয়ে নাও বাব্। সারারাত জেগে ব'সে থাকলে অসুথ করবে তোমারও।

হাসপাতালটকে আমার মনে হ'ল শ্বর্গ। আর্ত্তের সেবা বেথানকার মানুষে মনপ্রাণ দিয়ে করে, সে শ্বর্গই। ওই বৃড়ো মেথরটা এথানকার দেবদূত। থেদিন কয়েক শতাবদী আগে শ্রীচৈতন্ম গৃহত্যাগ করেছিলেন, কিংবা শঙ্করাচার্য্য সংসারের অসারত্ব সন্থন্ধে চিন্তা করেছিলেন—তাঁদের শ্বপে এই শ্বর্গের কল্পনা ছিল। চৈতন্তদেবের সন্ধীর্ত্ত.নর দলে নবছীপের গঙ্গার তীরে এই বৃড়ো মেথরটা যোগদান করতে পারত, তিনি ওকে কোল দিতেন, ঝাড়খণ্ডের পথে শ্রীক্ষেত্র রওনা হবার সময়ে ওকে পার্যচর ক'রে নিতেন। রাত সাড়ে তিনটে। রাত আজ কি পোয়াবে না গ্রিষ্ট একটু থেমেছে। আকাশ কিন্তু মেঘে মেঘে কালো।

এই সময়ে দাদার নাভিখাস উপস্থিত হ'ল! কলের বে'লা জল দাদার মূথে দিলাম। কানের কাছে গঙ্গানারায়ণ ব্রন্স নাম উচ্চারণ করলাম। এই বিপদের সময় কি জানি কেন মালতীর কথা মনে পড়ল। মালতী যদি এখানে থাক্ত! আটঘরার অশ্বশুতলার সেই বিষ্ণুমূর্ব্ভির কথা মনে পড়ল—হে দেব, দাদার যাওয়ার পথ আপনি সুগম क'द्र मिन्। <u> পাশীর্কাদে</u> আপনার ভার জীবনের সকল জটি, সকল গানি ধুয়ে মুছে পবিত্র হোক্; যে সমুদ্র আপনার অনস্ত শ্যা, যে লোকালোক পর্বত আপনার মেধলা---সেব পার হয়েও বহুদূরের যে পথে দাদার আক্ষ যাত্রা, আপনার কুপার সে পথ তার বাধাশৃন্ত হোক, নির্ভন্ন হোক্, মঙ্গলমন্ন হোক্।

পাশের বিছানার রোগী বললে - একবার মেডিকেল অফিসারকে ডাকান না ?

আমি বললাম—আর মিথ্যে কেন ?

তার পর আরও ঘণ্টাধানেক কেটে গেল। আমার ঘুম এনেছে, ভয়ানক ঘুম, কিছুতেই আর চোধ খুলে রাধ্তে পারি নে। এর মধ্যে নার্স ছ-বার এল, আমি তা ঘুমের ঘোরেই জানি—আমায় জাগালে না। পা টপে টপে এল, পা টিপে টিপেই চলে গেল।

হঠাৎ আমার ঘুম ভেঙে গেল। ভোর হ্বার দেরি নেই, হাসপাতালের আলো নিম্পত হয়ে এসেছে-কিন্ত খন কালো মেথে আকাশ ঢাকা দিনের আলো যদিও একটু थाक, विशा याच्छ ना। मामात थाटित मिक कुछ आमि বিশ্বয়ে কেমন হয়ে গেলাম। এখনও ঘুমিয়ে শ্বপ্ন দেখছি নাকি? দাদার খাটের চারি পাশে অনেক লোক দাঁড়িয়ে। অর্ন্নচক্রাকারে ওরা দাদার খাটটাকে ঘিরে দাঁড়িয়েছে। শিয়রের কাছে মা, ডানদিকে বাবা, বাবার পাশেই আটঘরার সেই হীক রায়—ভালাইনের টিনটা বেধানে ঝোলানো, সেথানে দাঁড়িয়ে আমাদের চা-বাগানের নেপালী চাকর পাপা, ছেলেবেলায় দাদাকে সে কোলে-পিঠে ক'রে মামুষ করেছিল। তার পরই আমার চোথ পড়ল খাটের বা-দিকে, সেখানে দাঁড়িয়ে আছে ছোটকাকীমার মেয়ে পানী। এদের মুর্ত্তি এত স্ম্পাই ও বাস্তব যে একবার আমার মনে হ'ল ওদের সকলেই দেখছে বোধ হয়। পালের খাটের রোগীর দিকে চেয়ে দেখলুম, সে বদিও ভেগে আছে এক: মাঝে মাঝে দাদার থাটের দিকে চাইছে-কিন্তু ভার মুখ চোখ দেখে বোঝা বাচ্ছিল মুমুষু দাদাকে ছাড়া দে আর কিছু দেখছে না। অথচ কেন দেখতে পাচ্ছে না, এত স্পষ্ট, প্রত্যক্ষ, সন্ধীব মানুষগুলোকে কেন যে ওরা দেখে না---এ ভেবে ছেলেবেলা থেকে আমার বিশ্বরের অস্ত নেই।

আমি জানি এসব কথা লোককে বিশ্বাস করানো শক্ত।
মানুষ চোথে যা দেখে না, ব্যক্তিগত অভিজ্ঞতার যা পারে
না—তা বিশ্বাস করতে সহজে রাজি হয় না। এই জন্ত
হাসপাতালের এই রাজিটির কথা আমি একটি প্রাণীকেও
বলি নি কোনদিন।

ছ্-তিন মিনিট কেটে গেল। ওরা এখনও রয়েছে।

জামি চোধ মুছলাম, এদিক-ওদিক চাইল.ম—চোধে জল দিলাম উঠে। এখনও ওরা রয়েছে। ওদের স্বারই চোধ দাদার থাটের দিকে। আমি ধীরে ধীরে উঠে গিয়ে পানীর কাছে দাঁড়ালাম। ওরা স্বাই হাসিমুথে আমার দিকে চাইলে। কত কথা বলব ভাবলাম মাকে, বাবাকে, পানীকে—থাপা কবে মরে গিয়েছে জানি নে—সে এখনও তাহ'লে আমাদের ভোলে নি?…তাকেও কি বলব ভাবলাম—কিন্তু মুখ দিয়ে আমার কথা বেফল না। এই সমরে নার্স এল। আমি আশ্রুয়া হয়ে ভাবছি নার্স কি এদের দেখতে পাবে না? এই ত স্বাই এরা এখানে দাঁড়িয়ে। নার্স কিন্তু এমন ভাবে এল বেন আমি ছাড়া সেখানে আর কেউ নেই। দাদার মুখের দিকে চেয়ে বললে—এ ত হয়ে গিয়েছে—এ কুলি, কুলি—

কুলি বাটটাকে বেরাটোপ দিয়ে চেকে দিতে এল। তথনও ওরা রয়েছে।…

তার পর আমার একটা অবদন্ধ ভাব হ'ল—আমার সেই মুপরিটিত অবদন্ধ ভাবটা। যথনই এরকম আগে দেখতাম, তথনই এরকম হ'ত। মনে পড়ল কত দিন পরে আবার দেখলাম আজ—বহুকাল পরে এই জিনিষ্টা পেরছি—হারিয়ে গিয়েছিল, সন্ধান পাই নি অনেক দিন, ভেবেছিলুম আর বোধ হয় পাব না—আজ দাদার শেষশ্যার পাশে দাঁড়িয়ে তা ফিরে পেয়েছি। আমার গা যেন ঘুরে উঠল—পাশের চেয়ারে ধপ্ক'রে ব'দে পড়লাম।

नाम वामात निःक (bt वनान-भुवत वह !

5

জীবনে নিষ্ঠুর ও হাদয়হীন কাজ একেবারে করি নি
ভ: নয়, কিস্তু বৌদিদিকে দাদার মৃত্যু-সংবাদটা দেওয়ার মভ
নিষ্ঠুর কাজ আর যে কখনও করি নি, একথা শপথ ক'রে
বলতে পারি। বেলা ছটোর সময় দাদার বাড়ি গিয়ে
পৌছলাম। পথে দাদার শশুর-বাড়ির এক সরিকের সঙ্গে
দেখা। আমার মুখের খবর শুনেই সে গিয়ে নিভের বাড়িতে
জবিশবে খবরটি জানালে। বোধ হয় যেন বৌদিদির ওপর
আড়ি করেই ওদের বাড়ির মে:য়রা—য়ারা দাদার অত্থের
সময় কখনও চোখের দেখাও দেগতে আসে নি—চীৎকার

করে কারা জুড়ে দিলে। বৌদিদি তথন অত বেশার ২টো রেঁধে ছেলেমেয়েকে খাইরে আঁচিয়ে দিছে। নিজে তথনও খায় নি। পাশের বাড়িতে কারার রোল শুনে বৌদিদি বিশ্বারর হারে জিগ্যেস করছে—ইটা রে বিহু, ওরা কাঁদছে কেন রে? কি খবর এল ওদের?, কারও কি অহুধ-

এমন সময়ে আমি বাড়ি দুকলাম। আমায় নেথে বৌদিদির মুখ ওকিয়ে গেল। বল:ল—ঠাকুরপো তৈমার দাদা কোথায়?

আমি বল্লাম—দাদা নেই, কাল মারা গিয়েছে।
বৌদিদি কাঁদলে না। কাঠ হয়ে দাঁড়িয়ে রইল আমার
মুখের দিকে চেয়ে।

পাশের বাড়িতে তথন ইনিয়ে-বিনিয়ে নানা ছলে ও হরে শোকপ্রকাশের ঘটা কি! পাড়ার অনেক মেয়ে এলেন সাম্বনা দিতে বৌদিদিকে। কিছু একটু পরে বখন বৌদিদি পুকুরের ঘাটে নাইতে গেল সঙ্গে এক জন যাওয়া দরকার নিয়মমত—তথন একটা অজুহাতে যে যার বাড়িতে গেল চলে। আমি বিশ্বিত হ'লাম এই ভেবে বে এরা তো বৌদিদির বাপের বাড়িরই লোক! তার একটু পরে বৌদিদি থানিকটা কাঁদলে। হঠাৎ কালা থামিয়ে বললে, শেঘকালে জ্ঞান ছিল ঠাকুরপো? আমি বললাম, বৌদিদি তুমি ভেবো না, এখানে যে-রকম গতিক দেখছি তাতে এখানে থাকলে দাদার চিকিৎসাই হ'ত না। এখানে কেউ তোমায় তোদেখে না দেখছি। হাসপাতালের লোকে যথেষ্ট করেছে। বাড়িতে সে রকম হল্প না। আমাদের অবস্থার লোকের পক্ষে হাসপাতালেই ভাল।

বৌদিদির বাবা মা কেউ নেই—মা আগেই মারা
গিয়েছিলেন—বাবা মারা গিয়েছেন আর-বছর। একথা
কলকাতাতেই বৌদিদির ভাইয়ের মুখে শুনেছিলুম।
বৌদিদির সে ভাইটিকে দেখে আমার মনে হয়েছিল
এ নিতান্ত অপদার্থ—তার ওপর নিতান্ত গরিব, বর্ত্তমানে
কপর্কহীন বেকার—তার কিছু করবার ক্ষমতা নেই।
বয়েসও অর, সে কলকাতাছেড়ে আসে নি, সেধানে চাকুরীর
চেষ্টা করছে।

ভেবে দেখলাম এদের সংসারের ভার এখন আমিই

না-নি:ল এতগুলি প্রাণী না খেরে মরবে। দাদা এদের একেবারে পাও বসিরে রেখে গেছে। ক'লাকি করে চলবে সে সংস্থানও নেই এদের। তার ওপর দাদার অসুথের সময় কিছু দেনাও হয়েছে।

O

এদের ছেড়ে কোথাও নড়তে পারলুম না শেব পর্য্যন্ত । কালীগঞ্জেই থাক্তে হ'ল। এখান থেকে দাদার সংসার অন্ত স্থানে নিম্নে গেলাম না, কারণ আটবরা ত এদের নিম্নে যাবার যো নেই, অন্ত জায়গায় আমার নিজের রোজগারের স্থবিধা না-হওয়া পর্যান্ত বাড়িভাড়া দিই কি ক'রে?

এ সময়ে সাহায্য সন্তিয় সন্তিয়ই পেলুম দাদার সেই
মাদীমার কাছ থেকে—দেই যে বাতাদার কারখানার
মালিক কুণ্ডু-মশায়ের তৃতীয় পক্ষের স্ত্রী—দেবার যিনি
আমাদের নিমন্ত্রণ ক'রে খাইয়েছিলেন। এই বিপদের সময়
আমাদের কেল ব্রাহ্মণ প্রতিবেশার কাছ থেকে সেবকম
সাহায্য আসে নি।

ক্রমে মাসের পর মাস যেতে লাগল।

সংসার কথনও করি নি, করবো না ভেবেছিলুম। কিন্তু
বধন এ-ভাবে দাদার ভার আমার ওপর পড়ল, তথন
দেখলাম এ এক শিক্ষা—মানুযের দৈনন্দিন অভাব-অনটনের
মধ্যে দিয়ে, ছোটখাটো ভ্যাগন্ধীকারের মধ্যে দিয়ে, পরের
জন্তে খাটুনি ও ভাবনার মধ্যে দিয়ে, তুচ্ছ ও একিঞ্চিৎকর
পারিপার্দিকের মধ্যে দিয়ে এই বে এভগুলি প্রাণীর
স্থেষাচ্ছল্য ও জীবনবাত্তার গুরুভার নিজের ওপর নিয়ে
সংসার-পথের চলার হংশ—এই হংথের একটা সার্থকভা আছে।
আমার ভীবন এর আগে চলেছিল গুরু নিজেকে কেন্দ্র
ক'রে—পরকে স্থী ক'রে নিজেকে পরিপূর্ণ করার শিক্ষা
আমার দিয়েছে—মালভী। পথে বেরিয়ে অনেক শিক্ষার
মধ্যে এটিই আমার জীবনে সব চেয়ে বড় শিক্ষা।

কত জারগার চাকরি খুঁজলাম। আমি যে লেখাপড়া জানি বাক্সারে তার দাম কাণাকড়িও না। হাতের কোন কাজও জানি নে, দব ত'তেই আনাড়ি। কুণ্ডু-মশারের স্ত্রীর স্থারিশ ধরে বাতাদার কারধানাতেই থাতা লেখার কাজ জোগাড় করলাম—এ কাজটা জানতাম, কলকাভার চাকরির সমন্ন মেজবাবুদের জমিদারী সেরেন্ডায় শিংপছিলাম তাই রক্ষে। কিন্তু তাতে ক'টা টাকা আসে? বৌদদির মত গৃহিণী তাই ওই সামান্ত টাকার মধ্যে সংসার চালানো সম্ভব হয়েছে।

ফাস্কন মাস পড়ে গেল। গাংনাপুরের হাটে আমি কালে বেরিয়েছি গক্ষর গাড়ি ক'রে। মাইল-বারো দূর হবে, বেশুন-পটলের বাজরার ওপরে চটের থলে পেতে নিয়ে আমি আর তন্ন চৌধুরী ব'সে। তন্ন চৌধুরীর বাড়ি নদীয়া মেহেরপুরে, এখানকার বাজারের সাহাদের পাটের গদির গোমস্তা, গাংনাপুরে খরিদারের কাছে মাল দেখাতে যাছে।

গল্প করতে করতে তনু চৌধুরী ঘুমিয়ে পড়ল বাজরার ওপরেই। আমি চুপ ক'রে ব'দে আছি। পথের ধারে গাছে গাছে কচি পাতা গঙিয়েছে, ঘেঁটুকুলের ঝাড় পথের পাশে মাঠের মধ্যে সর্বত্র।

শেষবাত্তে বেরি য়ছিলুম, ভোর হবার দেরি নেই, কি সুন্দর ঝিরঝিরে ভোরের হাওয়া, পূব আকাশে জলজলে রুশ্চিক রাশির নক্ষত্রগুলা বাশবনের মাথায় ঝুঁকে পড়েছে—বেন ওই দ্যুতিমান ভারার মণ্ডলী পৃথিবীর সকল স্থাহাথের বাস্তবভার বন্ধনের সঙ্গে উর্জ আকাশের সীমাহীন উদার মুক্তির একটা বোগ-সেতু নির্দ্ধাণ করেছে— যেন আমাদের জীবনের ভারক্লিই যাত্রাপথের সংকীর্ণ পরিসারের প্রতি নক্ষত্রজগৎ দরাপরবশ হয়ে জ্যোতির দৃত পাঠিয়েছে আমাদের আশার বাণী শোনাতে—বে কেউ উর্চু দিয়ে চেয়ে দেখবে, চলতে চলতে সেই দেখতে পাবে ভার শাহ্মত মৃত্যুহীন রূপ। যে চিনবে, যে বলবে আমার সঙ্গে ভোমার আধ্যায়িক বোগ আছে—আমি জানি আমি বিশ্বের সকল সম্পাদের, সকল সৌন্দর্য্যের, সকল কল্যাণের উত্তরাধিকারী—ভার কাছেই ওর বাণী সার্থকভা লাভ করবে।

এই প্রক্ট বন-কুন্ন-গদ্ধ আমার মনে মাঝে মাঝে কেমন একটা বেদনা জাগায়, বেন কি পেয়েছিলুম, হারিয়ে ফেলেছি। এই উদীয়মান স্থ্যের অরুণ রাগ অতীত দিনের কত কথা মনে এনে দেয়। সব সময় আমি সে-সব কথা মনে ছান দিতে রাজি হই নে, অতীতকে আঁকড়ে ধরে বসে থাকা আমার রীতি নয়। তাতে হংখ বাড়ে বই কমে না। হুঠাৎ দেখি অন্তমনত্ক হয়ে কথন ভাবছি, ছারবাসিনীর আথড়া থেকে সেই ভোরে বে আমি চুপি চুপি পালিরে এসেছিলাম—কাউকে না জানিরে, মালতীকে ত একবার জানালে পারতাম— মালতীর ওপর এতটা নিষ্ঠর আমি হয়েছিলুম কেমন ক'রে।

ওকথা চেপে বাই-মন থেকে ঝেড়ে ফেলবার চেষ্টা করি। আগে যতটা কষ্ট হ'ত এসব চিস্তায় এখন আর ততটা হয় না, এটা বেশ বুৰতে পারি। মালতীকে ভূলে থাকি---किष्ट्रिमिन शरत व्यात्र शाव। এक नमत्र ८१ व्यक कार्ष्ट এসে দাঁড়িয়েছিল সে আজ সপ্তসিম্বুপারের দেশের রাজকন্তার মত অবাস্তব হয়ে আসছে। হয়ত এক দিন একেবারেই ভূলে যাব। জীবন চলে নিজের পথে নিজের মর্জ্জিমত-কারও জন্তে সে অপেকা করে না। মাঝে <u> শাঝে</u> আনক্ষ আগে—যথন ভাবি বহুদিন আগে রাডের বননীল দিথলয়ে খেরা মাঠের মধ্যে যে-দেবতার স্বপ্ন দেখেছিলুম তিনি আমায় ভূলে যান নি। তাঁরই সন্ধানে বেরিষেছিলাম, তিনি পণও দেখিয়েছেন। এই অনুদার ক্লম্বগতি জীবনেও তিনি আশার মনে আনন্দের বাণী পাঠিয়েছেন।

এতেও ঠিক বলা হ'ল না। সে আনন্দ যথন আসে তখন আমি নিজেকে হারিয়ে ফেলি, তথন কি করি, কি বলি কিছু জ্ঞান থাকে না—সে এক অন্ত ব্যাপার। আজও তাই ঠিক হ'ল। আমি হঠাৎ পথের ধারে একটা ঝোপের হারায় নেমে পড়নুম গাড়ী থেকে। তম চৌধুরী বললে—ও কি, উঠে এস। তম চৌধুরী জানে না আমার কি হয় মনের মধ্যে এ-সব সময়ে, কারও সাহচর্য্য এসব সময়ে আমার অসহ হয়, কারও কথার কান দিতে পারি নে—আমার সকল ইন্দ্রিয় একটা অম্ভূতির কেন্দ্রে আবদ্ধ হয়ে পড়ে—একবার চাই শালিথের ছানাশুলো খাদ্যকণা খুঁটে খাছে খেদিকে, তাদের অসহায় পক্ষভিন্ধতে কি যেন লেখা আছে—একবার চাই তিসির ফুলের রঙের আকালের পানে—ঝলমল প্রভাতের স্থ্যকিরণের পানে, শস্যশ্রামল পৃথিবীর পানে—কি রূপ! এই আননন্দের মধ্যে দিয়ে আমার বিজন্ধ, এক গৌরবসমুদ্ধ, পবিত্র নবজন্ম।

মনে মনে বলি, আপনি আমার এ-রক্ম করে দেবেন না, আমার সংসার করতে দিন ঠাকুর। দাদার ছেলেমেরেরা, বৌদিদি আমার মুখের দিকে চেরে থাকে ওদের আরের ক্সন্তে, ওদের আমিত ফেলে দিতে পারব না! এখন আমায় এ-রকম নাচাবেন না।

বৈকালের দিকে পায়ে হেঁটে গাংনাপুরের হাটে পৌছলাম। তন্ম চৌধুরী আগে থেকেই ঠিক করেছে আমার মাথা থারাপ। রাস্তার মধ্যে নেমে পড়লাম কেন ওরকম ?

ফিরবার পথে সন্ধ্যার রাঙা মেঘের দিকে চেয়ে কেবলই মনে হ'ল ভগবানের পথ ওই পিঙ্গল ও পাটল বর্ণের মেঘ-পর্বতের ওপারে কোনো অজানা নক্ষত্রপুরীর দিকে নয়, তার পথ আমি যেখান দিয়ে হাটছি, ওই কালু-গাড়োয়ান त्य भथ मिरत शांड़ी हानित्त नित्त यांक्डू—এ পথেও। আমার এই পথে আমার সঙ্গে পা ফেলে তিনি চলছেন এই মুহুর্ত্তে—আমি আছি তাই তিনিও আছেন। আমার অসাফল্য, সেখানে তাঁরও অসাফল্য, আমার আমি যথন বেধানে জয়, সেধানে তাঁরও জন্ম ৷ ফুল্বের শ্বগ্ন দেখি, ছোট ছোট ছেলে-মেয়েদের আদর করি, পরের জ্বন্তে থাটি—তথন বুঝি বিরাট শক্তির সপক্ষে আমি বাঁড়িয়েছি-বিপক্ষে নয়। এই নীৰ আকাশ, অগ্নিকেতন উল্লাপুঞ্জ, বিহাৎ আমায় সাহায্য করবে। বিশ্ব যেন সব সময় প্রাণপণে চেষ্টা করছে শিব ও ফুল্লারের মধ্যে নিজের সার্থকতাকে পুঁজতে, কিন্তু পদে পদে সে বাধা পাচ্ছে কি ভীষণ! বিশ্বের দেবতা তবুও হাল ছাড়েন নি-তিনি অনন্ত ধৈৰ্য্যে পথ চেয়ে আছেন। নীরব সেবারত সূর্য্য ও চক্র আশায় আশায় আছে, সমগ্র অদৃগুলোক চেয়ে আছে—আমিও ওদের পক্ষে থাকব। বিশ্বের দেবতার মনে হুঃখ দিতে পারব না। ন্দীবনে মানুষ তত ক্ষণ ঠিক শে:থ না অনেক জিনিষই, যত ক্ষণ সে তুঃথের সমুখীন না-হয়। আগে শ্রোতের শেওলার মত ভেনে ভেনে কত বেড়িয়েছি জীবন-নদীর ঘাটে ঘাটে—তটপ্রাস্তবর্ত্তী যে মহীক্ষহটি শত শ্বতিতে তিলে তিলে বৃদ্ধিত হয়ে স্নানাথিনীদের ছায়াণীতল আশ্রয় দান করেছে—দে হয়ত বৈচিত্রা চায় নি তার জীবনে— কিন্তু একটি পরিপূর্ণ শতাব্দীর সূর্য্য তার মাথায় কিরণ বর্ষণ করেছে, তার শাখা-প্রশাখায় ঋতুতে ঋতুতে বনবিহলদের কৌতুক বিশাস কলকাকলী নিজের আশ্রয় খুঁন্দে পেয়েছে— ভার মৃত্ ও ধীর, পরার্থমুখী গন্তীর জীবন-ধারা নীল আকাশের অনৃভ আলির্কাদতলে এই একটি শতাবদী ধরে বরে এসেছে—বৈচিত্রা বেধানে হয়ত আসে নি—গভীরতায় সেধানে করেছে বৈচিত্রোর ক্ষতিপূরণ। প্রতিদিনের ক্যা শুক্তভারার আলোকোচ্জ্বল রাজপথে রাঙা ধূলি উড়িয়ে রজনীর অন্ধলারে অনৃভা হন—প্রতিদিনই সেই সন্ধায় আমার মনে কেমন এক প্রকার আনন্দ আসে—দেখি যে পুক্রের ধারে বর্ধার ব্যাঙের ছাতা ক্রেরে তিবিতে নতুন শাবা ওঠা উইয়ের দল অজানা বায়ুলোক ভেদ ক'রে হয়েছে মরণের যাত্রী, শরতের কাশবন জীবন-ক্ষির বীজ দুরে দুরে, দিকে দিগন্তে ছড়িয়ে দিয়ে রিক্তভার মধ্যেই পরম কামা সার্থকভাকে লাভ করেছে—দারিল্য বা কষ্ট

তুচ্ছ, পৃথিবীর সমস্ত বিশাস-লালসাও তুচ্ছ, আমি কিছুই প্রাহ্ম করিনে যদি এই জাগ্রত চেতনাকে কথনও না হারাই—
যদি হে বিশ্বদেবতা, বাল্যে ত্যারাবৃত কাঞ্চনজ্জ্মাকে
যেমন সকালবেলাকার সূর্যোর আলোয় সোনার রঙে
রঞ্জিত হ'তে দেখতুম—তেমনি যদি আপনি আপনার
ভালবাসার রঙে আমার প্রাণ রাঙিয়ে তোলেন—আমিও
আপনাকে ভালবাসি যদি—তবে সকল সংকীর্ণতাকে,
তুংখকে জয় ক'রে আমি আমার বিরাট চেতনার রখচক্র
চালিয়ে দিই শতাকী থেকে শতাকীর পণে, জয়কে
অতিক্রম ক'রে মৃত্যুর পানে, মৃত্যুকে অতিক্রম ক'রে
আবার কোন আনন্দ-ভর্গ নবজন্মের অজানা রহস্তের
আশায়।

(ক্রমশঃ)

শের শাহের সিংহাসনারোহণ বৎসর

শ্রীনলিনীকান্ত ভট্টশালী, এম-এ, পিএইচ্-ডি

ভ্মায়্ন-বিজয়ী পুরুষসিংহ শের শাহের সিংহাসনারোহণ বংসর শইয়া গোলবোগ বিদ্যমান। এই ক্ষেত্রে ডক্টর কার্নুগো মহাশয়ের অশেষ পরিশ্রমের ফল "শের শাহ" নামক পুস্তকই প্রামান্য। কিন্তু কার্নুগো মহাশয় শের শাহের সিংহাসন আরোহণের বে বৎসর অনেক বিচার-বিতর্ক করিয়া নির্দ্ধারিত করিয়াছিলেন, নৃতন আবিশ্বারের ফলে দেখা যাইতেছে যে তাহা এক বৎসর গিছাইয়া দিতে হইবে। কার্নুনগো মহাশয়ের নির্দ্ধারিত বৎসর ৯৪৬ হিজরি,—এই হিজরি বৎসর ১৫৩৯ খ্রীষ্টাব্দের ১৯শে মে ভারিখে আরক্ষ।

এখন, নৃতন আবিষ্কার কি হইল, বলা দরকার। গত বৎসর ঢাকার বিধ্যাত প্রাত্ত্বতাত্ত্বিক এবং হাকিম খ্রীমৃক্ত হবিবর রহমন খাঁ তাঁহার নিজস্ব সংগ্রহের কতকশুলি প্রাচীন মৃদ্রা ঢাকা মিউজিয়মে উপহার প্রদান করেন। এই সংগ্রহে শের শাহের মোট ৫১টি মৃদ্রা আছে,

উহাদের কতকগুলিতে সাতগাঁ, শরিফাবাদ (বর্দ্ধমান), ফথাবাদ (ফতেহাবাদ—ফরিদপুর) ইত্যাদি টাকশালের নাম আছে, কতকগুলিতে আবার কোন টাকশালের নাম নাই। একটি ছাড়া বাকী সমস্ত মুদ্রারই তারিথ ৯৪৬ হিঃ হইতে ৯৫২ হিঃ পর্যাস্ত। কিন্তু উক্ত একটি মুদ্রাই ঐতিহাসিক হিসাবে অমুল্য গণিত হইবে, কারণ উহার সনাক্ষ স্পাষ্ট ৯৪৫ হিজরা। নিম্নে মুদ্রাটির বর্ণনা দেওয়া যাইতেছে। মুদ্রাটির তারিথযুক্ত ঘিতীয় পুঞ্রের ছবি দেওয়া গেল, পারস্য ভাষায় অভিজ্ঞ পাঠক ছবির সহিত বর্ণনা মিলাইয়া লইতে পারিবেন।

মুদ্রাটির কিনারায় বৃত্তরেখা বা অন্ত কোন অলম্করণ-রেখা নাই। প্রথম পূর্চে একটি সমচতৃক্ষোণের অভান্তরে মুসলমান-ধর্মের মূলস্ত্র কলিমা অর্থাৎ "লাইল্লাহ্ ইলিল্লাহ্ মুহম্মদ রম্ব আল্লাহ্" লিখিত আছে। ইহার পরে একটি সরল রেখা টানিয়া চতুক্ষোণকে হই ভাগ করিয়া নীচের ভাগে সোপাধি সমাটের নাম আরক হইয়াছে—"আল ফুলতান আল আদিল।" মুদার কিনারা এবং চতু:ছাণের চারি বাছর মধ্যে বে চারিটি কক্ষ আছে, তাহাতে মুহত্দের চার-ইয়ারর নাম, যথা "আবু বকর, ওমর, ওস্মান, আলি" লিখিত আছে। দিতীয় পুটেও লেখার বিতাল প্রথম পুটেরই মত।







''ভাইফুর''

''वक्त''

''হাকিম'

কিনারার চারিট কক্ষে সুলতানের নাম! শ উৎকীর্ণ, যথা—
"ফরিদ। আল ছনিয়া। ও আলদিন। আর্ আল্ মুক্দের।"
পড়িবার কালে ইহার উচ্চারণ হয়—"আস্প্লতান আলাদিল্
ফরিক্দুনিয়াউদ্দিন আংল্ মুক্দের।" পরে চতুংদ্ধাণের
অভাস্তরে রাজার আসল নাম, তাঁহার রাজতে হায়ি দ্বর জন্ত
প্রার্থনা এবং সনাক্ষ আছে, যথা—"শের শাহ আস্প্লতান্
থলহলাহ্ মুক্তর্ ৯৪৫।" ইহার পরে আবার দেবনাগর
অক্ষরে সমাটের নাম আছে—"ল্রী শের শাহ্নী।" মুসলমানঅধিকারের আদিযুগে মুসলমান স্লভানগণ মুদায় পারসীর
সঙ্গে সঙ্গে দেবনাগর অক্ষরেও নিজেদের নাম নিবিতেন।
বহুকাল অবধি এই প্রথা লুপ্ত ছিল। শের শাহ্ আবার এই
প্রথার প্রবর্তন করেন এবং শের শাহ্-বংশীয় প্রত্যেক
স্লভানই এই হিন্দুর মনোর এক প্রথা মানিয়া চলিয়াছিলেন।
মোগল-বংশের প্রতিগার সঙ্গে প্রাই প্রথা আবার
অদুগ্য হয়।

শের শাহের এই মুদ্র'টি ভারতের রাজনৈতিক ক্ষেত্রে যে কত বড় পবিবর্তনের স্টক, তাহা মুদ্রাতরবিৎ মাত্রেই জানেন। মুদ্রাটি প্রায় নিখুঁৎ গোলাকার,—উপাদান বিশুদ্ধ রৌপা,—অকরগুলি স্কুল্টাই ও পরিছল্প এবং সর্করকমেই ইহা মুদ্রানির্মাণ-শিল্পের অতি উৎক্লাই নিদর্শন। বাংলায় স্বলতানগণের মুদ্রা লইয়া ইহারা নাড়াচাড়া করিয়াছেন এবং উহাদের পাঠেদ্ধার করিয়া ঐতিহাসিক সভার প্রতিষ্ঠাকরিতে চেষ্টা করিয়াছেন উহাদের নিকট এই মুদ্রাটি অপ্রত্যাশিত সম্পাদের মত। গঠন-নৈপুণ্য এবং পরিচ্ছন্পতার

বাংলায় স্থলত নগণের মধ্যে একমাত্র ফধক্ষদিন মুবারক শংহের মুদ্রা শের শংহের মুদ্রার সহিত উপমিত হইতে পারে। পরবর্ত্তী সুলতানগণের কাহারও মুদ্রাই বিশেষ প্রশংসনীয় পূর্ববর্ত্তী হুদেনী স্থলতানগণের শের শাহের অধিকংশ মুদ্রাই গাঁয়ন-পারিপাট্যহীন। তাহার উপরে আবার এক বিমম বিপদ ছুটিয়াছিল। এই স্থলতানী অ'মলে মুদা জাল হই:ত আরম্ভ করিয়াছিল,— জালিয়াৎগণ ভিতরে তামা ভরিয়া উপরে কৌশ ল পাতলা রূপার পাত দিয়া মুদ্রা তৈয়ার করিয়া ভাহা গাঁটি রৌপ্য-মুদা বণিয়া চালাইতে আরম্ভ করিয়াছিল। তাই টাকা ভাঙাইবার সময় পোদারগণ ছেনি দিয়া পাঁচ সাত স্থানে না-কাটিয়া আর কোন টাকা ভাঙাইয়া দিত না। ফলে মুদ্রাগুলির এমন তুর্না হইত যে উহাদের সন, তারিথ, টাকশালের নাম ত পড়া ঘাইতই না, কোনু রাজার মুদ্রা তাহা ঠিক করিতেই গলদেশ্য হইতে হইত! এই ত গেল বাংলার স্থলতানগণের মুদ্রার অবস্থা।

দিনীর ত্লতানগণ মিশ্র ধাতুর মুদ্রার (Billion Coins) প্রচলন করিয়াছিলেন-সাধারণ ক্রয়-বিক্রয়ে ঐ মুদ্রারই প্রানন বেণী ছিল। এই মুদ্রাগুলি তে কতথানি সোনা আছে বা কতথানি রূপা আছে, সাধারণ লোকের পক্ষে তাহা খির করা প্রায় অসম্ভব ছিল। কাজেই ওজনে সমান হইলেও কোন মুদার মূল্য কি, পোদারগণই তাহার ইহ:তে জনসাধারণের যে কি পরিমাণ নির্দ্ধ:র⊅ ছিল। জ্মুবিধা হইত, তাহা সহজেই অনুমেয়। শের শাহ বিশুদ্ধ স্বর্ণে, বিশুদ্ধ রৌপ্যে এবং বিশুদ্ধ তাত্ত্রে মুদ্রা প্রচলিত করিয়া নি:মায়ে এই সমস্ত গলদ দুর করিয়া দিলেন। স্থার শের শাহের মুদ্রাকে জনদাধারণ এবং পোন্দারগণও কি পরিমাণ সম্ভ্রম ও শ্রন্ধার চোথে দেবিত তাহার প্রমাণ এই যে আমি শের শাহের শত শত মুদ্রা পরীক্ষা করিয়াছি, কিম্ব পোদ্দারের ছেনি-কাটার দাগ উহাদের প্রায় কোনটিতেই এযাবৎ দেখি নাই।

পূর্বেই বলিয়াছি, ডক্টর কাত্নগো তাঁহার 'শের শাহ' নামক পুস্তকে (পৃ. ২০৬ এবং পরবর্ত্তী) ১৪৬ হিচ্ছরা সনকে শের শাহের সিংহাসন-আরোহণের বংসর বলিয়া নির্দারিত করিয়াছিলেন। এই মুদ্রার সনাম্ভ হইতে

দেখা বার বে, উহা এক বছর পিছাইয়া দিতে হইবে। যদি মাত্র একটি মুদ্রাতেই এই তারিখ পাওয়া বাইত তবে সালাহ করা চলিত, কিন্তু সোভাগ্যক্রমে অনুরূপ আরও তুইটি মূদ্রা এ-বাবৎ পাওয়া গিয়াছে। হাকিম সাহেব তাঁহার মুদ্রা-সংগ্রহ ঢাকা মিউব্লিয়মে উপহার দিবার অব্যবহিত পরেই আবার আর একটি মুদ্রা সংগ্রহ ঢাকা মিউজিয়মে উপহার প্রাণ্ড হয়। এই বিতীয় উপহারদাতার নাম প্রীযুক্ত দৈয়ৰ এ-এদ-এম্ তাইকুর। ইনি ঢাকার একটি প্রাচীন এবং সম্মানিত জমীদার-বংশসমূত। হাকিম সাহেব তাহার সংগ্রহ-গঠনে তাইত্র-সাহেবের নিকট যথেষ্ট সাহায্য পাইয়াহিলেন এবং উভয় সংগ্রহে মুদ্রাবলি প্রায় একই রকমের। তাইকুর-সাহেধের উপহত মুদ্রার মোট সংখ্যা ২০৯। এই মুদাগুলির মধ্যেও শের শাহের ১৪৫ হিডরার একটি মুদ্রা আছে। তাইছুর-সাহেবের সংগ্রহে আরও একটি হিজরার মুদা ছিল, কিন্তু এই মুদাটি তিনি এক বরুকে উপহার দিয়াছেন। হস্তান্তর করিবার পূর্বের তিনি আমাকে এই মুদ্রাটির একটি ফটো রাখিতে অনুমতি দিয়াছিলেন, এবং তাঁহার অনুমতি অনুসারেই সেই ফটোগ্রাফ এখানে মুদ্রিত হইল। এই মুদ্রা তিনটি যথাক্রমে "হাকিম" "তাইফুর" এবং "বন্ধু" ব**লি**য়া বিশেবিত হইল।

মুদ্রা তিনটি পরীক্ষা করিলে দেখা বাইবে যে 'হাকিম' এবং 'বরু'-চিহ্নিত মুদ্রা ত্ইটি একই ছাঁতের, কিন্তু 'তাইত্র' চিহ্নিত মুদ্রাটি তির ছাঁতের। এই ত্বই ছাঁতের মুদ্রার লিপি যদিও অবিকল একই, কিন্তু অক্ষরগুলির সংস্থান এক নহে। ৯৪৫ সনায়টি প্রথম ছাঁচে লিপির শেঘ ছত্তের সহিত একই লাইনে লিখিত, দ্বিতীয় ছাঁচে উহা তির আর এক লাইনে লিখিত। ৫ অয়টির আরুতিও উভয়ত্র এক রকম নহে। যাহা হউক, বিচার্য্য এই যে, ৯৪৫ হিজরার মুদ্রা ছাপিতে যথন একাধিক ছাঁচের প্রয়োজন হইয়াছিল তখন বুঝিতে হইবে যে মুদ্রিত মুদ্রার সংখ্যা নিভান্ত অর না-হওয়ারই সম্ভাবনা,—বদিও মাত্র এই প্রকারের তিনটি মুদ্রা আমরা এ-যাবং পাইয়াছি। ঢাকা জেলায় নবাবগল্প থানার অন্তর্গত রাইপাড়া গ্রামে করেক বংসর আগে শের শাহ—ইনলাম শাহের এবং তাঁহাদের পূর্ববর্ত্তী

বাংলার হোসেনী ফ্লভানগণের বহু মুদা পাওয়া গিয়।ছিল।
এই মুদ্রপ্রাপ্তির' সম্পূর্ণ বিবরণ প্রীযুক্ত ষ্টেপল্টন সাহেব
বঙ্গীয় এশিয়াটক সোসাইটর পত্রিকায় ১৯২৮ সনের
মুদ্রাবিষয়ক ক্রোড়পত্রে দিয়াছিলেন। এই সকল মুদ্রার
কতক অংশ মাটি কাটিতে নিযুক্ত কুলি দর হত্তগত হইয়াছিল,
এবং ক্রমে ক্রমে সেওলি ঢাকার বাজারে পোদ্রারগণের
হত্তে আসিয়া উপস্থিত হইয়াছিল। এই ৯৪৫ হিজরার
মুদ্রা তিনটি তাই মূলতঃ রাইপাড়ায় পাওয়া মুদ্রা
বলিয়াই মনে হয় এবং তাই এরপ অনুমানও অসকত নহে
যে মুদ্রা তিনটি সন্তবতঃ বাংলা দেশেই মুদ্রিত মুদ্রা, গণিও
উহাদের গায়ে কোন টাকশালের নমে লিখিত নাই।

১৪৫ হিজরার কোন্ মাসে এই মুদাগুলি মুদ্রিত হওয়া
সম্ভব, এইবার তাহার একটু বিচার করা যাউক। ডক্টর
কান্তনগোর 'শের শাহ' হইতে এই স্গের ঘটনাবলি নিয়ে
সক্ষলিত হইল। নৃতন স্থাটেরা নিজ নিজ নামে মুদ্রা মুদ্রিত
করাইয়া এবং মসজিদে প্রার্থনা করাইয়া নিজেদের রাজ্যপ্রাপ্তি বিঘোষিত করাইতেন। প্রথমটির নাম সিকা,
দিতীয়টির নাম খুত্রা। কাজেই সিকা যথন প্রচারিত
হইয়াছিল, শের শাহ সিংহাসনেও সেই সময়ই আরে হেণ
করিয়াছিলেন,—এই সিদ্ধান্তই করিতে হই.ব।

জারুয়ারী-->৫০৬। শের খার বঙ্গাভিয়ান। (১১৮ পৃ:)

মাচ্চ—১৫০৬। শের খাঁ গোড়ের সমুখে উপস্থিত হউলেন। বাংলার ফ্লতান মাহমুদ শাহ বত অথি উপহার দিরা তাঁহাকে কিরাইলেন।

ডি:সম্বর—: ৫০৬। হুমায়ুনের গুজরাট-অভিযান হইতে প্রত্যাবর্ত্তন (১৩২ পুঃ)।

অক্টোবর—:৫৩৭। শের খার দিতীয় বার বঙ্গাভিযান।

ডিপ্ৰের— ৫০৭। ভ্নায়ূন আগ্রা ইইতে শের খার বিরুদ্ধে অগ্রসর হইলেন। (২০ পৃ:)

জানুরারী— ১০৮। হুমার্ন চ্ণার পৌছিলেন। (১৪২ পৃঃ) আনুমানিক মার্চচ—১১৩৮। শের ধার রোধ্তাশ-তুর্গ অধিকার। (১৫২ পুঃ)

৬ই জুলকারা, ৯৭৪ হি:। } গৌড়ের পতন এবং বাংলার ফুলতান ৬ই এপ্রিল, ১৫১৮। সাহমুদ শাহের পলায়ন। (১৫৪ পৃ:)

মে—১৫৩ । চুণার-ছর্গের পতন। (পৃঃ ১৫৮, পাদটীকা)

জুন—১৭৩৮। তমায়ুন বঙ্গাভিমুখে অর্থসর হইলেন। (৯৪৫ ক্রিজরা ১৫০৮ খ্রীস্টাব্দের ৩০শে মে আরক হইরা ১৫৩৯ খ্রীস্টাব্দের ১৮ই মে শেব হইরাছিল)

জুনের শেব, ১৫৩৮। নৌকাবোগে শের থাঁ গোড়ে পৌছিলেন। (পু: ১৬৯) জুলাই মধ্যভাগ—১৫০৮। লের খা গোড় পরিত্যাগ করিলেন এবং অবাবহিত পরেই হুমায়ুন গোড়ে প্রবেশ করিলেন।

মার্চ্চ—২৫৩৯। হুমাযুন গোড়ে এক দল দৈক্ত রাখিয়া আগ্রার দিকে অগ্রসর হইলেন। (১৮: পৃঃ)

জুন ২৭, ১৫৩৯ ৷ চৌসার ক্ষেত্রে শেরের হত্তে ছমায়্নের সম্পূর্ণ প্রাজয় ৷

শের শাহের সিংহাসনারোহণ-প্রসঙ্গে ডক্টর কামুনগো মস্তব্য করিয়াছেন যে, শের শাহের রাজত্বকালের বিবরণ-শারওয়ানী, শেথক আব্বাস কথন শের শাহ সিংহাসনে আরোহণ করেন তাহা পরিষ্কার করিয়া বলেন নাই। এই কথা ঠিক বলিয়া মনে হয় না। আব্বাস শারওয়ানীর পুস্তক এলিরট (Elliot) ডাউসন (Dowson) সাহেবদ্বয়ের সম্পাদিত History of India by its own Historians নামক অষ্ট্রপণ্ডাত্মক প্রস্থের চতুর্ব খণ্ডে অনুদিত আছে। শারওয়ানী-প্রদত্ত শের শাহের সিংহাসনারোহণের বর্ণনা উহার ৩৭৬-৭৭ পুর্গায় প্রাপ্তব্য। তাহাতে দেখা যায়, শারওয়ানীর মতে এই ঘটনা ১৪৬ হিন্দবায় চৌসার বুদ্দের (১০ই সফর, ১৪৬ হিজরা—২৭শে জুন, ১৫৩৯ খ্রীষ্টাব্দ) অব্যববহিত পরে সম্ভবতঃ যুদ্ধক্ষে:ত্রর নিকটেই কোপাও ঘটিয়াছিল। কাজেই দেখা যাইতেছে, শারওয়ানী স্থান এবং কাল গুই-ই দিয়াছেন বা ভাহার বর্ণনা হই ত ধরিয়া **লও**য়া যায়,—এবং এই বিষয়ে আব্বাস শারওয়ানী বিশ্বাসযোগ্য নহেন। তারিথ-ই-দাউদী মতেও (শের শাহ্-২০৭ পুঃ) চৌসার যুদ্ধের পরেই সিংহাসনারোহণ এবং সিশা-প্রচার ও খৃত্বা-প্রচলন সঙ্গটিত হইয়াছিল-কাক্তেই তারিখ-ই-দাউদীর গ্রন্থকারও আব্বাদ শারওয়ানীর মতই ভূল থবর লিপিবদ্ধ করিয়া গিয়াছেন।

কিন্তু শের শাহ বে বাংলা দেশে সিংহাসনারোহণ করিয়াছিলেন, অনেক গ্রন্থেই তাহার সমর্থন আছে।
ডক্টর কাম্নগো বলেন, তাঁহার নিকটে 'মধ্জান্-ই-আফ্ধানা'
নামক ইতিহাসধানির যে হাতে-লেখা পুঁথি আছে,
তাহাতে দেখা যায়, শের শাহ বাংলা দেশে সিংহাসনে
আরোহণ করিয়াছিলেন। তিনি আরও বলেন যে,

निकाभूमिन-श्रीज जवका९-इ-व्याकवती, स्वितिश-श्रीज ইতিহাস এবং বদাওনী-প্রণীত মুস্তাখাব-উৎ-তওয়ারিখ মতে শের শাহের সিংহাসনে আরোহণ বাংলা দেশেই সঙ্ঘটিত হইয়াছিল। এ-যাবৎ সারা উত্তর-ভারতময় শের শাহের বহু সহস্র মুদ্রা আবিশ্বত হইয়াছে, কিন্তু অন্ত কোথাও আর ৯৪৫ হিজরার মুদ্রা পাওয়া যায় নাই। এখন বাংলা দেশ হইতেই ১৪৫ হিজরার তিনটি মুদ্রা বাহির হইল দেখিয়া বাংলা দেশেই প্রথম শের শাহের মুদ্রা প্রচারিত হইয়াছিল বলিয়া ধরা যুক্তিসক্ষত; কাজেই বাংলা দেশেই অর্থাৎ গৌডেই শের শাহ সিংহাসন আরোহণ করিয়াছিলেন. ইহাই সত্য বলিয়া মনে হয়। তাহা হইলে কোন্মাসের কোন তারিথ হইতে কোন তারিথের মধ্যে শের শাহ সিংহাসনে আরোহণ করিয়াছিলেন, তাহাও নির্দিষ্ট করিয়া সহজেই বলা যায়। পূর্বেই দেখিয়াছি, ৯৪৫ হি:, ১৫৩৮ খ্রীষ্টাব্দের ৩০শে মে আরক্ষ হইয়া ১৫৩৯-এর ১৮ই মে শেষ হইয়াছিল। পূর্ব্ধসঙ্কলিত ঘটনা-পঞ্জী হইতে দেখা যাইবে, এই ছুই তারিখের মধ্যবন্তী অধিকাংশ সময়েই শের শাহ দৈন্ত শইয়া অথবা অন্ত উদ্দেশ্যে নানা স্থানে ঘুরিয়া বেডাইতেছিলেন। ১৫৩৮ খ্রীষ্টাব্দের এপ্রিল মাসে গৌডের পতন হইলেও তিনি তৎক্ষণেই গৌড়ে যাইতে পারেন নাই। জুন-১৫৩৮ গ্রীষ্টাব্দে চুণারের পতনের পর হুমায়ুন যথন বাংলা দেশের দিকে অগ্রসর হইলেন, তথন তেলিয়াঘরি-সঙ্কটে তাঁহাকে বাধা দিয়া আটকাইয়া রাখিবার ব্যবস্থা করিয়া শের দ্রুতগামী নৌকাযোগে গৌড় পৌছিলেন। জুনের শেষে শের গৌড়ে পৌছিলেন এবং জুলাইয়ের মাঝামাঝি তিনি গৌড় পরিত্যাগ করিয়া গেলেন। এই এক পক্ষকাল সময়ের মধ্যেই, অর্থাৎ ১৫৩৮-এর জুলাই মাসের ১৫ তারিখের মধ্যেই, তিনি গৌড়ে সিংহাসনে অভিধিক্ত হইয়া ৯৪৫ হিন্দুরায় মুদ্রাবলি প্রচারিত করিয়া থাকিকে। এই সময় ১৪৫ হিজবির দিতীয় মাস সফর চলিতেছিল। কাজেই দেখা ধাইতেছে, ১৫৩৮ গ্রীষ্টাব্দের জুলাই মাসের মধ্যভাগে এবং ১৪৫ হিজবির সফর মাসের মধ্যভাগে শের শাহ সিংহাসনে আরোহণ করিয়াছিলেন।

অভিযান

গ্রীতারাপদ মজুমদার

প্রকৃসির ব্যবস্থা করিয়া কলেজ-পশায়ন করিলে ফাঁসির তুকুম হয় না;—কিরীটি সটান হোষ্টেলে আসিয়া উপস্থিত।

ঐ একথেয়েমি কি প্রত্যেক দিন ভাল লাগে? সংস্কৃতের কাস্টার বরং একটু রসের আসাদ পাওয়া যায়। শাস্ত্রী-মহাশয় যথন মৃত্রররে স্কুক্ক করেন,—'কাক্ষতান্যো বদন-মদিরাং—', নাং, এই সমস্ত ভাবিয়া এই বাদ্লার দিনে হা-হতাশনা বাড়াইলেও চলি:ব। কালিদাস নিশ্চয়ই কেরানী ছিলেন এবং ম্থর। গৃহিণীর ম্থনাড়ার চোটে, অধিকল্প বড়বাব্র তাড়াহড়ো থাইয়া দেশতাগ করিয়াছিলেন। তার পর বিক্রমাদিত্যের বদাস্তায় ভ্রিভোজনে ভুঁড়ি পাকাইয়া স্ঠী করিয়াছিলেন এই সমস্ত আদিরস।

শেপে । ইরদৃষ্ট ! সে-ও আজ আসে নাই । কি বোকামি !

আজ এই অবিশ্রান্ত বৃষ্টিতে চুলগুলি ভিজাইতে আসিবে
না কি? কিন্তু ঐ জানালাটির পালে আসিয়া নাদাঁড়াইবার ক্ষন্ত কে তাহাকে মাথার দিবা দিয়াছিল? বহু
পূর্বে একদিন, মাত্র একদিন তাহাকে ঐ বাতায়ন-পার্গে
উপবিষ্টা দেখা গিয়াছিল ; মুখখানি সেদিন তাহার এই বর্ধার
মেবের মতই ছিল অন্ধকার । স্থক্ষর মুখে অভিমানও
মানায় বেশ । সেদিন নিশ্চয়ই বাড়িতে কাহারও সহিত
ঝগড়া করিয়া সে- কিন্তু আজ কি একবার ঝগড়াও করিতে
নাই? বাড়ির লোকগুলি কি তাহার কোন কাজে
কোনও ক্রটি দেখিতে পাইয়া একটা ধমক দিতেও জানে
না?—ধালি খালি রাগাইয়া দিতেও জানে না ?

•••দেশে গেলে, বৌদিদি হাসি-ঠাটা করিতে খুবই
মঞ্জ, কিন্তু কই একটি বিবাহের ব্যবস্থা ত তাঁহার মন্তিকে
মাসে না? ক্ষমতা নাই এক তিল, কেবলই মুখ-ভাগবত!
বেশ, একবার রাগিয়া চটিয়া একটা গলায় ঝুলাইয়া দিন
দেখি! তবে জানা ঘাইবে তাঁহার বোগাতা, হাা•••!

—বাবু রইছেন না কি?—ভেঞ্চানো দরজা ঈষৎ ঠেলিয়া ভতাট দশন-পংক্তি বিক্ষিত করিল।

কিরীটি ভেঙাইয়া উঠিল,—রইছেন কি রইছেন না, দেশ্তে পাইছন্ না?···কি ছকুম শুনি? একটু যদি ঘুমবার চেষ্টা করব, তাও আদরে বাবা বাগড়া দিতে!

ভূতাটি নিতান্তই ভূতা, নচেৎ মেসের ধর ঝাঁট দিতে আসি ব কেন ? চিলেকোঠায় বসিয়া বুকে বই রাধিয়া কাব্যি করিতেও ত পারিত! স্থাক্ষা কিরপে নিজার চেষ্টা করা বায়, ভূতাটির তাহা বোধগমা হইল না; বলিল—চিঠির বাল্লে এই পুটকাড্খানা ছিল, কার দেকুন দিকি ?

কিরীটি হাত বাড়াইয়া কার্ডথানি লইল; তাহারই রুম-মেট্ অখিনীর চিঠি[°]। একেবারে বাজে! অ**খিনী**র তক্তপোষের উদ্দেশে চিঠিখানি ছুড়িয়া ফেলিয়া দিতে গিয়া, কেন বলা যায় না, চিঠিখানা একবার সে না পড়িয়া পারিল না। পড়িতে পড়িতে তাহার ললাট স্ফুচিত হইন, চকুৰ য় অপেকাকত বড় হইন ; অফু টে উচ্চারিন,— হু। লাকী চাপু এই অখিনীটা। হই মাসও द्य नार, युन्नती পত्नी नां कित्रवाहि, आंत्र देशतंरे मक्षा বার-হুই অন্ততঃ সেই এীধামে পাড়ি দিয়াছে। এবার আবার কোন এক দিদি-শাশুড়ীর নিমন্ত্রণ। বিবাহের সময় তাঁহারা পশ্চিমে ছিলেন, নবজামাতাকে দেখিতে পান নাই, তাই এই আবাহন। আবার লিখিয়াছেন, খণ্ডরবাড়ির পরিবর্তে দিদি-শাশুড়ির বাড়ি গেলেও অখিনীর লাভ বই লোকসান হইবে না। তার পর কি লিখিয়াছেন, কাটিয়া দিয়াছেন, পড়া যায় না। ••• লাভ ভ যোল আনা! হুধের তেষ্টা ঘোলে? ফু:! অখিনী যদি নিরেট্ হয়, তবেই গরদের পাঞ্জাবী গায় চড়াইবে। ... কিন্তু ... আচ্ছা, এক কাজ कतिरम इम्र ना? देंशत! (कहरे ७ अधिनी क (हानन ना! •••অল্ রাইট্ !•••

কার্ডপানি পকেটে ফেলিয়া কিরীট স্মিতমুখে উঠিয়া গডিল।

— কি রে থিয়েটারে না কি ? একবারে যে জামাই-বাবটি সেজে!

কেমন এক রকম হাসিতে হাসিতে কিরীটি জ্বাব দিল,—আর বলিস কেন ভাই, বাবার হুকুম, বাড়ি নেতে হবে একবার।

— ভর্রে, বলিয়া অখিনী লাফাইয়া উঠিল,— আমার বাতাস গায়ে লাগ্ল না কি? তা আগে থেকে বলিস্ নি কেন ভাই? একেবারে পাকা দেখা না কি? গাই হোক, যথাসময়ে ইতর জনদের থেন স্মরণ রাথিস্?

— নিশ্চয়ই। এখন পাকাপাকি হয়ে গেলেই মঞ্চল। না জাঁচালে ত বিধাস নেই। যে আমার ভাঙা কপাল! আয়রন্ সেক ভর্ত্তি করতে না পেলে কোন কথাই কইবেন না বাবা।

থাসিতে হাসিতে অশ্বিনী উত্তর দিল—মুধ্ডে বেয়ো না ভায়া, এখন থেকেই মুধ্ডে বেয়োনা। আছো, এখন এম, উলু-উউ···

বৃক ছুক্ক ছুক্ক করে। তবু ইহার মধ্যে আছে রোম্যাংশ, নিছক জালিয়াতি। অখিনীর গৃহলক্ষীটি ওগানে থাকিলেই বিপদ। বন্ধ-পঞ্জীর উপর গ্রেন্দৃষ্টি আদে যুক্তিযুক্ত নয়। তা ছাড়া চিনিয়া ফেলিবে যে! তথন ত লজ্জার পরিসীমা থাকিবেই না, উপরস্ক পৃষ্ঠদেশটিও অক্ষত লহয়া ফিরিভে হইবে না। এই ত বেশ! ছই-তিন দিন দিদিমার সহিত হাস্ত-পরিহাস করিয়া ঘরের ছেলে গরে কেরা বাইবে। কেইই ধরিয়া-ছুইয়া পাইবে না। লাভ হইবে তাহার দিনক্ষেক জামাই-আদ্বে ভোজন; চাই কি, শ্রালিকা-রত্ব থাকিলে একটু আধটু খুনুস্টি! মন্দ কি?

··· প্রেশন হইতে প্রামের দিকে চলিতে চলিতে কিরীট শুন্থন্ করিয়া স্থর ভ'াঞ্জিতে লাগিল,—'অতিথি এসেছে ঘারে···'

পাঁচহাতি ধৃতি-পরা একটি ব্রাহ্মণ একগাছা দড়ি-

হাতে আসিতেছিলেন। কিরীটি হাঁকিল,—ও মশাই, শুন্ছেন?

- —এ রাগিণী আবার কে শুন্তে পাবে না মশাই বলুন ?
- কৈলাস বাবুর বাড়িটি কোন দিকে ?
- त्कान् देकत्वम् ? नाद्यत-देकत्वमः, ना शांवा देकत्वमः,

কৈলানের পূলপরিমাণ! কিরীটি হাসিয়া ফেলিল,—
ক'টা কৈলেস আছে মশাই এখেনে ? আপনি কি কৈলেস ?
দিডি কৈলে…

— যান্ যান্ মশাই, দেখে নিন্ গে, আমি জানি নে। · · · আমার ছাগলটাকে ধেতে দেখেছেন ইদিকে? বলিয়া ব্যাহ্গণিট হনু হনু করিয়া চলিয়া গেলেন।

ভদ্রলোকটিকে রাগাইয়া দেওয়া ভাল হয় নাই।
কিন্তু কৈলাদের নামের তালিকাথানিরও তারিফ্ করিতে
হয়। বাপ্! গড়গড় করিয়া যেন গুরুমহাশয়ের সম্মুণে
পড়া দিতেছে!

অদুরে একটি ছেলে গরু চরাইতেছিল, তাহার সমীপস্থ হইয়া কিরীটি জিজ্ঞাসা করিল,—বাপধন, কৈলাস বাবুর বাজি চেন?

একগাল হাসিয়া বাপধন উত্তর দিল,—তা আর চিনি
না! আমি বে তেনাদেরই কির্যেণ গো। আপনি কুন্
গা থেকে আসছ ? তের পাঁচন গাছটি উচাইয়া ধরিয়া
বিলল, --উই যে টিনের আটচালা খানা দেক্চেন, উরই
পাশে; চলে যাও নাকের সোজা।

নাকের সোজা গিয়া কিরীট একটি দাওয়ায় একটি ভদ্রলোককে উপবিষ্ট দেখিল।

- —মশাই, কৈ**লা**স বাবুর বাড়িটা···
- ওই যে গেটওলা ওই বাড়িখানা। · · · ওরে সুরো, চাবুকগাছটা আন ত !

চাবৃক । কিরীটি চমকিয়া ফিরিয়া চাহিল। তর্ ভাল। ভদ্রলোকটির বিশাল বপুর অন্তরালে ছুইটি বালক পাঠাভ্যাস করিতেছে; সম্ভবতঃ তাহাদেরই কাহারও পুটদেশের সহনশীলতা পরীক্ষার জন্ত বেত্রপ্রার্থনা!

গলা শুকাইরা আসিতেছে। প্রথম-দর্শনটা ভগবানের

ইচ্ছায় নির্ব্বিয়ে কাটাইতে পারিলেই···কিরীটি দরজায় করাঘাত করিল।

প্রশ্ন আসিল,—কে?

—আ্তে আমি এই⋯

দরজা খুলিয়া একটি সৌমাদর্শন বৃদ্ধ কিরীটিকে দেগিয়া যেন একটু হক্চকাইয়া গেলেন।

কিরীটি কি বলিয়া পরিচয় সুক্ষ করিবে, মনে মনে ভাহারই মুসাবিদা করিতেছে। সংস্ক সঙ্গে নানা প্রকার দুর্নিবার ছন্দিন্তাও! — কি দাদ্ সাহেব, চিনিয়া ফেলিলে না কি? দোহাই বাবা, ভোমার নাৎজামারের দিবা, চিনিতে পারিও না নেন। তাহা হইলে আমাতে আর আমি থাকিব না। বৃদ্ধ তুমি, কেন এই সব চেনাচেনির নগাটে যাইতে চাও? ত্-দিন ভালটা-মন্দটা, একট্-আবট্ হাসি-তামাশা, এর বেনা আশাত আমার নাই। প্রকাঞ্ডে হাসিরা বলিল—আমার চিন্তে তেইং, আমি অশ্ত

দাদাসাহেব লাফাইয়া উঠিলেন—আরে এস ভায়া এস।
দোব নিয়ো না ভায়া। আমি ত তোমায় দেখি নি ভাগে।

থাক্, বাচা গেল। মৃত্ হাদিতে হাদিতে কিরীটি বলিল,—না দেখলে কি কেউ কাদ্ধকে চিন্তে পারে? আমিও ত চিন্তাম না। হাজার জারগার জিজ্ঞেদ্ করতে কর্তে…

কিরীটি দাদরে অভ্যর্থিত হইল। সন্দেশ রসগোলা, ফীর, পায়েদ, পরমান্ন কিছুর অভাব হইল না।

পায়ে থড়ম, হাতে হঁকা,—কৈলাস চাটুজ্জে তদীয় গৃহিণীর নিকট উপস্থিত হঁইলেন ; হা গা ?

- ---কি গা ?
- —নাৎজামায়ের ত থুবই থাতির সুক্ষ করলে, কোল্কাতার দব ছোঁড়াগুলোই তোমার নাৎজামাই নাকি ?
 - -তার মানে ?
- মানে অতি সহজ। আমরা কেউই ত অধিনীকে চিনি নে। এখন এই শালাই যে জোচ্চুরি ক'রে আসে নি তাই বা কে বললে? ললিতা তোমায় লিথেছিল না, 'সত্যি দিদিমনি, কপালের উপর কাটা দাগটুকু না থাকলে

তোমার কথামতই মেনে নিতাম তোমার নাৎজামাইটি ময়র-ছাড়া কার্ত্তিক ?'

বিশ্বরে মাথা তুলিয়া কৈলাস-গৃহিণী ক**হিলেন,— ই্যা** তাত লিখেছিল ?

- কিন্তু এ-শালার কপাল একেবারে সমতল। কোথাও কাটাকুটি নেই, তবে লাঠালাঠি আছে কিনা কে জানে ?
 - --ভাই নাকি গা?
- —তাই ত মনে হচ্ছে। তবে অশ্বিনীর বিশেষ বন্ধটকু কেউ হবে নোগ হয়। বাক্ ভূমি নেন এখন থেকে ওর বেথাতির কিছু ক'রো-টরো না। আগে ভাল ক'রে দেখি।

বৃদ্ধের কম্মভোগ!——অদ্ধি মাইল দূরে ষ্টেশনে গিয়া 'ভার' করিলেন :—

"অধিনী মুথাৰ্ছি, স্প্ৰিং হোষ্টেল, রাজাবাজার, কলিকাতা, ললিতা বিপন্না, শীত্র এস।—কৈলাস, রাজগাঁও।"

সন্ধ্যার প্রাক্ষালে বেচারা অখিনী শুক্ষমুথে রাজগাঁও ষ্টেশনে অবতরণ করিল।

শুদ্দ ষ্টেশন্। মাত্র চারি-পাঁচটি যাত্রী দ্রেন হইতে
নামিল। তাহাদের মধ্যে অখিনীকেই কেবল ভদ্রেশপরিহিত দেখিয়া দাদামহাশয় অগ্রসর হইলেন। অখিনীর
ছশ্চিস্তাক্লিউ মুখখানি দেখিয়া দাদামহাশয় ব্ঝিলেন, তাঁহার
সংশয় অমূলক নহে। মনে মনে বলিলেন,—বহুৎ আছো,
তুমি আসিতেছ বুক চাপড়াইতে চাপড়াইতে; আর এদিকে
এক জন আমার বাড়িতে বিদিয়া লুচি চিবাইতেছে!

অধিনীর বুকের মধ্যে তথন তৃফান চলিতেছে।

ঐ বে বৃদ্ধটি আগাইয়া আদিতেছেন, নিশ্চয়ই কোন
আগ্রীয়। 'বিপল্লা'! কি বিপদ্? অস্থ ? তবে কি
ললিতা একেবারে…য়াঁ! তাই পূর্বাহেই একটু সাম্বনা
দিতে ইনি…তাহা হইলে সে কিছু এক পাও টেশন
হইতে নড়িবে না। ললিতা, কিসের জন্ত এই জংলা
দেশে আদিয়া বিধোরে প্রাণটা ধোয়াইলে? অম্বিনীর
অজ্ঞাতসারে গ্রই ফোঁটা অশ্রু তাহার গণ্ড বাহিয়া পড়িল।

দাদামহাশয় অপ্সন্ত ! গাছে না-উঠিতেই এক কাঁদি! শালার চক্ষে একেবারে বান ডাকিয়া গেল। এদিকে যথন ললিতাসখী ঘণ্টাথানেক পরে সদলবলে হাজির হইবেন, তথন ? তথন শালার চকু ছইটি শুকাইরা আমচ্র হইরা বাইবে বে! সমীপস্থ হইরা কহিলেন, আপনি—ভূমিই অমিনী বাবু?

- —আজ্ঞে হা, আপনি… ?
- অধীন তোমার ললিতের থাসমহলের থিদ্মদ্গার, নাম কৈলাস চাটুজে ।

অধিনী নত হইরা বৃদ্ধের পদধৃলি লইল। এক ফোঁটা
অশ বৃদ্ধের পদচুম্বন করিল। তিনি হাসিরা বলিলেন—
এটাকে আমি বিরহাশ বলেই মেনে নিলাম, কারণ শ্রীমতী
ললিতে বহাল-তবিরতে আছেন এবং আর কিছুক্ষণ পরেই
হজুরে হাজির হবেন।

অমিনী 'থ' !—অর্থাৎ ? পকেটের মধ্যে হাত পূরিয়া টেশিগ্রাম হাতড়াইতেছে।

— ইা, টেলিগ্রামটি নকল নয়, তবে তার বিষয়টুকু নকল। তুমি 'ধৈর্যাং ধর'—বলিয়া তিনি আন্পূর্কিক সমস্তই বলিলেন।

অখিনী চোথ পাকাইয়া উঠিল।—স্কাউণ্ডেল্!
চেহারাটা কেমন বলুন ত লোহারা? বড় বড়
চুল? ডান চোথটা সামান্ত ছোট দেখায়? (একটু
ভাবিয়া) গায় একটা মুগার পাঞ্জাবী? য়ঁটা? তাই?
ঠিক হয়েছে। কিরীটি। আমার কম-মেট্। উঃ, কি
শয়তান! আজ কিলিয়ে ওর ঘাড়ের ভূত নামাব আমি।
এখিনীর মুষ্টিবদ্ধ হস্ত উথিত হইল।

পশ্চাতে মন্তকটি ঈষৎ হেলাইয়া বৃদ্ধ কহিলেন—
একটু সাম্লে ভায়া। তোমাদের ওই স্কুল-উপস্কুলের
ঘল্বের মধ্যে আমায় যেন নিমিত্তের ভাগী ক'রো না। বুড়োথুড়ো মানুষ আমি। আর ডা'ছাড়া সে বন্ধুই ত।
একটুথানি মন্ধাই না-হয় করলে। তোমারও ত লাভ
বই লোকসান হচ্ছে না; ললিতা লাভ হচ্ছে ত ?

—কি যে বলেন আপনি। এটা কি ভদ্রলোকের কাজ ? আর যদি লল্-ললিতা সেধানে থাক্ত! নিতান্ত কাতর কঠে অখিনী কধাটা লেষ করিল।

বৃদ্ধ হাসিতে হাসিতে বলিলেন,—থাক্লেই বা? ভৰ্জনী উচাইয়া ললিতা-স্থলরী তাহাকে কহিতেন, 'বেরোন্ এক্ননি।' সে ত সনাক্ত করতে পারত? বিরে ত ভূমিই করেছিলে না কিরীটিকে প্রতিনিধি পাঠিরেছিলে সে সময়!

— দূর, তা কেন!

— তবে ? • • অতএব মেজাজ সরিফ্রাণো। সম্পর্ক ধরতে গেলে কিরীটির সঙ্গেও ত আমার তামাশার স্থাদ হচ্ছে। বাটপাড়ি একটু করাই যাক্ না? একান্তই আমানের গেঁয়ো বানিয়ে যাবে ?

পথ চলিতে চলিতে উভয়ের মধ্যে কত কি যুক্তি হইয়া গেল। অ্থিনী দাদামহাশয়ের গৃহে না উঠিয়া দিতীয় একটা গৃহে আন্তানা লইল।

পরবর্ত্তী ট্রেনে অগ্রন্ধ প্রভূলের সহিত ললিতা আসিয়া অখিনীর রশ্মি টানিয়া ধরিল।

কিরীটির শুর্ভি দেখে কে? এই গেঁরো ভূতকরটির চোখেই যদি ধূলি নিক্ষেপ করিতে না-পারিল ত রুপাই সে এত দিন ডিটেক্টিভ্ নভেল্গুলি চর্বাণ করিয়াছে, গল্প লিখিয়া মাসিকের পূর্ভা পূর্ণ করিয়াছে।...কিন্তু অশ্বিনীর শালীটালী কেহুই তেমন ঘেঁষিতেছে না। পল্লীগ্রামের লাজুক মেয়ে আর কাহাকে বলে? জামাইবাবুদের উপর খালিকা-সম্প্রদায়ের যে অথও প্রতাপ তাহা কি ইহাদের জানা নাই? আমার কাছে আসিলে কি কুম্ভকর্ণের মত উদরসাৎ করিয়া ফেলিব? কাল বৈকালে সেই যে একবার আসিয়াছিল, টুলি না কি ভাহার নাম? ভাল নাম এই যেমন রেবা কি তপতী নিশ্চয়ই একটা আছে। বেশ মেরেটি! সবচেরে বেশ তাহার চক্ষু হুইটি, আর ঠোট ছইখানি! সেই যে, "তম্বী গ্রামা শিথরদর্শনা বিশ্বাধরোঞ্জী"। কালিদাস বাঁচিয়া থাকিলে তাঁহাকে আমার বিবাহের ঘটক নিযুক্ত করিতাম ৷...দোতলায় ড্রেসিং টেব্লের সম্মুথে কিরীটি ক্ষৌরকার্য্য করিতেছিল। আয়নাতে একথানি ফুল আননের প্রতিবিদ্ব পড়িতেই সে কুচ্ করিয়া ভাহার গণ্ডের একাংশ কাটিয়া ফেলিল। গ্রাহ্ম না করিয়া ফিরিয়া চাহিল, টুলি – শিধরদশনা! চোখ নামাইয়া কহিল,—কি খবর ? কাল থেকে আর দেখাই নেই যে? বেচারা 'মরল্ কি বাঁচল একটু থোঁজও নিতে নেই?

—দাদামণি আপনাকে একবার ডাক্চেন নীচেয়, আস্তন শীগসির। কিরীটির বুকটা ধড়াদ্ করিরা উঠিল। ধরা পড়িয়া গেল না কি ! চাবুক প্রস্তুত ?···বারকয়েক চে কৈ গিলিয়া গলাটা একটু ভিজাইয়া লইল।···হুভোর কি ছাইভক্ষ সে ভাবে দিন-রাজ্তির! চেষ্টাক্কত সহজ কর্গে কহিল একুনি ? দাড়িটা কামিয়ে নিয়ে•··

ঘাড় নাড়িয়া টুলি বলিল—উন্ত, এক্সুনি চলুন, এসে। কামাবেন।

কি সুন্দর প্রীবাভঙ্কি ! কিরীটির মন্তক ঘুরিয়া গিয়াছে। একদিক্ কামানো অবস্থাতেই কলের পুতুলের মত উঠিয়া বলিল—চল, শুনেই আসি ?…কিন্তু এত জক্ষরি ! ব্কটা বারণ মানে না, চিপ্ চিপ্ করিয়াই চলিয়াছে।

দাদামহাশয় বিষাদ-গন্তীর মুথে একথানি মোড়ায় বসিয়া রহিয়াছেন। সন্মুথে বেশ হস্টপুষ্ট একটি ভদ্রলেকে একথানি চেয়ারে উপবিষ্ট; স্তীক্ষভাবে চারিদিকে চাহিতেছেন।

- —আমায় ডেকেছেন ?
- **হাা বোস। · · · ওরে আ**র একথানা চেয়ার দিয়ে শা ত ?
- থাক্ বদ্ছি আমি।—ভদ্রলোকটির দিকে চাহিয়া হাসিতে হাসিতে বলিল—কামাতে কামাতেই ···হেং···

ভদ্রলোকটি চাহিলেন—হাা, মানাইয়াছে বেশ! একটি গাল দিব্য পরিষ্কৃত, অন্তটিতে সাবানের ফেন প্শ্লীভূত।

দাদামহাশয় খুবই কাতর কপ্নে কিরীটিকে কহিলেন,— কি সাংঘাতিক বাপার শোন এঁর কাছে, বলিয়া ভদ্রলোকটিকে দেখাইয়া দিলেন।

ভদ্রলোকটি ঈধৎ হাসিয়া, ঈধৎ নড়িয়া-চড়িয়া শুরু করিলেন,—কর্ত্তব্যের থাতিরে কত অপ্রিয় কাজই করতে হয় আমাদের…

দাদামহাশয়ের দিকে চাহিয়া বলিলেন,—পেটের দায়ে চাকুরী করতে হয়, নইলে এই সব পাজি কাজ কি মাহুষে করে? উনি আজ এখানে এসেছেন, ওঁকে নিয়ে আপনারা কোণায় একটু আমোদ-আজাদ করবেন, তা না…

কিরীটির দিকে পুনরায় চাহিলেন,—আপনার নাম অখিনী মুখার্জ্জি? খুবই হঃখের সহিত জানাচিছ, আপনার নামে একটা গুয়ারেণ্ট আছে। দয়া ক'রে একবার থানায়

থেতে হবে আমার সঙ্গে। আমি ইন্ভেষ্টিগেশন্ বাঞ্রের লোক।

বিষাদভরে দাদামহাশয়ের মস্তক নত হ**ইয়া** পড়িল।

কিরীটির অবস্থা? সে তথন অত্যুচ্চে উড্ডীরমান এরারোপ্রেন্ হইতে সূদ্র নিরস্থ ভীষণ সমুদ্রবক্ষে পড়িরা বাইতেছে এবং নিরেও একটি বৃহদাকার কুন্তীর বিশাল মুখবাদান করিয়া তাহাকে যেন সাদরে অভার্থনা করিতেছে, আমি প্রস্তুত, এস!—

বলিয়া উঠিল,—আমি কিরী···আমি—আমি যদি অখিনী নাহই :

গন্ধীর হাসি হাসিয়া ভদ্রলোকটি বলিলেন—প্রমাণ না পেয়েই কি একটা ভদ্রলোককে মিছামিছি অপমান করতে এসেছি, শুর ?—কি চাটুজ্জে-মশাই, আপনার কিছু বল্বার আছে এতে ?

—আমি ঝার কি বল্ব? জামিনও চল্বেনা, ভন্লাম্।
দাদামহাশয় বাগিত দৃষ্টি অন্ত দিকে ফিরাইলেন।

কিরীটি সোৎসাহে বলিয়া উঠিল—কিন্তু আমি গদি প্রমাণ ক'রে দিতে পারি, আমি অধিনী নই ?

—দে কি মশাই, কৈলাসবাব্র নাৎজামাই, আপনি অশিনীবাব্, কাল এথানে এগেছেন; এখন আবার এসব কি বল্ছেন? শেলবু রগড়ালে তেতো হয়; শেএসব ব্যাপারে চুপটাপ আত্মসমপণ করাই বৃদ্ধিমানের কাজ।

কিরীট আর আত্মসমর্পণ করিতে পারে না।
দাদামহাশরের একথানি হাত চাপিয়া ধরিয়া বলিয়া উঠিল,
—মাফ্ করুন, দাদামশাই, আমি আপনাদের সঙ্গে জোচ্চুরি ক'রেছি। আমার নাম কিরীট বাড়ুজ্জে।
অধিনীর বন্ধু আমি, সেথানে এক হোষ্টেলেই থাকি।

দাদামহাশারের নেত্রম্বর বিক্ষারিত !—েদে কি মশাই ? আপনি, আপনি ভদ্রাকের মান-সম্ভ্রম নষ্ট কর্তে এসেছেন ? যুঁগা, আপনি···

· ভদ্রলোকটি অবাক্! বলিলেন—উঃ কি সাংঘাতিক, দাদামহাশয়ের দিকে চাহিয়া কহিলেন, বলেন তো এই অপরাধেই একৈ…

দরজার ওপাশ হইতে শশিতার হাসি মুধ্বানি দেখা

গেল। ওঁর মামলাটা এবার আমাদের এজলাসেই ছেড়ে দিন্ দাদামশাই ? শাস্তির ব্যবস্থা আমরাই করছি।

কিরীটির সব গোলনাল হইয়া গেছে। গুরুহ রহস্ত !
মুণ তুলিয়া বক্ত্রীর দিকে চাহিতে বাইবে, সমুখে অখিনী!
ভদ্রলাকটির পিঠে হাত দিয়া বলিতেছে—আর না প্রতুল-দা,
একটু দয়ামায়াও কি নেই আপনাদের ?...চল রে কিরীটি,
উপরে চল।

ওঃ ! েপ্রতুল ত এখিনীর বড় গুলিকের নাম!

চেয়ারের পিঠ ধরিয়া কিরীট সমূথের দিকে থানিকটা ঝুঁকিয়া
পড়িল।...সমস্ত বাড়িথানির মধ্যে তথন হাস্য-বৃষ্টি পুরু
হইয়া গিয়াছে। দরজার ফাঁকে ফাঁকে, থামগুলির আড়ালে
আড়ালে, পাতকুয়ার ওপাশে যেন হাজারো সংঘত কঠ একসঙ্গে হাসির ঐকতান ফুড়িয়া দিয়াছে।—হা-হা, হো-হো,
হি-হি। টুলির ভোটভাহটি, কি ব্রিয়াছে সেই জানে,
অথবা দেখাদেথি, ছোট মাথাটিকে প্রবল ভাবে দোলাইয়া
দোলাইয়া হাসিতেছে থিথ্থি—থি—খ্বি।

বহুমতী আশ্রেষ দাও মা! কিরীটির মন্তকের মধ্যে ধন ধন করিতেছে, কর্ণাভান্তর হইতে যেন অগ্নি বাহির হইয়া আসিতেছে। চোথেও যাহা দেখা যায়, সব বিকৃত, যেন দাদামহাশয়, প্রভূল, অশ্বিনী, চেয়ার, মোড়া সব গশিয়া এক স্থানে পিণ্ডীভৃত!

কিরীটি পলায়নের উদ্দেশ্যে স্থাটকেস গুছাইতেছে। অম্বিনী প্রবেশ করিল।—কিরীট ?

- —কেন ?
- —কিরীটি, শুনছিস ?
- --বলই না ছাই ?
- —তোর কি শান্তি হয়েছে জানিস ?
- উদাস কণ্ঠেই কিরীটি বলিল,—ছ-মাস কাঁসি!
- —ঠিক অমনটি নয়। যাবজ্জীবন তাঁবেদারি।

- -- ठाँदमाति? कात ?
- —টুলির।

'তথী খ্রামা'। মন্দ কি ?—কিরীটিকে নির্লজ্জই বলিতে হয়। কহিল,—সত্যি, না এবার আবার কোন নতুন চাল ? তাহ'লে কিন্তু...

ওঠাধরে তর্জনী রাথিয়া অধিনী বলিল—চুপ!
পাখবর্তী কক নির্দেশ করিয়া মৃহস্বরে কহিল—শুনতে
পাচ্ছিদ!

তথায়-ললিতার কণ্ঠ গুনা গেল,—সব ঠিক।

টুলি বলিল--হ"!

- -- कि व्यामि (य इ[®] वननि ?
- --- যা তোমাদের ঠিক।
- -कि ठिंक वन् मिकि?
- —তুমিই বল দিকি ?
- —তবে না-জেনেশুনে উত্তর দিস্ কেন ?···বিয়েব সব ঠিক।
 - —কা'র বিষে, অধিনীবাবুর ?

ঝাঁজালো গলায় উত্তর হইল,—এমন এক চড় লাগাব তোকে!

- —তবে সোদ্ধামুদ্ধি বল্লেই ত হয়, বাবু!
- তোর বিয়ে, তোর তোর, মা গো, মেয়ে থেন শোনবার্জন্তে নিস্পিস্ কর্ছে!
- —তাই না কি ? কিছু নেই দিদি, নইলে মিষ্টি মুখ করাতাম তোমায়, এমন খবরটা…
 - —ইয়ারকি নয়, সতি।।
 - --কার সঙ্গে ?
 - —কিরীটিশবের সঙ্গে।
 - —ৰয়েই গেছে ওই জোচোরটাকে বিয়ে করতে।
 - —তা হ'লে মানা ক'রে দিচিছ গে?
- —বা রে! শেষটায় আমার ঘাড়ে দোষ চাপাতে চাও ? ফিক্ করিয়া টুলি হাসিয়া ফেলিল।

অপচয়-নিবারণে রসায়ন-বিদ্যা

শ্রীপুলিনবিহারী সরকার, এম্-এসসি

অনেক মনীবীর মতে মালুষের অভাববোধ জনাইয়া দেওয়া মানেই তাহাকে সভা করিয়া তোলা। প্ফাস্তরে যে-জাতির **প্রয়োজন** যত বেশী, সে-জাতি তত সভা। ভগবানের প্রথম স্টু মানব-দম্পতি ২১তে আরম্ভ করিয়া বিংশ শতাকীর অতি আধুনিক নরনারীর সাজসজা, বসনভূষণ, আহার-বিহার প্রভৃতির ক্রমোল্লতির ইতিহাস পর্যালোচনা করিলে ইহা অনেকটা সত্য বলিয়াই মনে হয়। জ্ঞানের প্রথম উন্মেয়ে স্মৃষ্টিকর্তা মাত্রয়কে অভিশাপ দিয়াছিলেন--মাধার ঘাম পায়ে ফেলিয়া ভাহাকে পেটের অন সংগ্রহ ক্রিতে হইবে। মানব-জ্ঞানের পরিধি তার পর অনেকথানি বৃদ্ধি পাইয়াছে--বিধাতার অভিসম্পাতও সেই অনুপাতে কঠোরতর হইষাছে। গুণু মস্তকের নয়, সর্বাশরীরের ঘাম কেবল প্রদুগল নয়, নিমুস্থ ধ্রণীতল সিক্ত করিয়াও আজ মানুষ গুট বেলা তুই মুঠা থাবার জোগাড় করিতে পারিতেছে না। জ্ঞানপুদ্ধির দক্ষে সঙ্গে দভ্যতা হয়ত উন্নতির প্রায় চরম সীমায় পৌছিয়াছে নতুবা চারিদিকে এত হাহাকার, এত অসন্ডোগ, এত মারামারি কাটাকাটি কেন ? তারপর, মা-ষ্ঠীর রূপায় "প্ত্রকন্তা বন্তার মত" নামিয়া আসিয়া সমগ্র ধরণীতল চাইয়া ফেলিতেছে-এক শতান্ধীতে পৃথিবীর লোকসংখ্যা ৬০ হইতে ২০০ কোটীতে আসিয়া দাঁড়াইয়াছে। জন্ম-নিরোধের প্রতি ক্ষচিবাগীশদের প্রবল বিভূষণা, শাস্তিকামী মহাপুরুষদের পৃথিবী হইতে যুদ্ধ-বিগ্রহ চিরতরে বিদ্বিত করিবার প্রাণপন চেষ্টা, উন্নত চিকিৎসাশাস্ত্রের সাহায্যে মানবের মৃত্যুহার হাস ও নববোবন-বিধান প্রভৃতির ফলে পৃথিবীর জনসংখ্যা দ্রুত বাড়িতেছে। পেটের তাড়নায় ক্লম্বসের আবির্ভাব হইয়াছে ইদানীং অনেক—কিন্ত আমেরিকা আর কোথায়? অতি হুর্গম মেরুপ্রদেশবয়ও শিয়ারী (Peary) ও আমুনদেন (Amundsen) আবিষ্কার করিয়া গিয়াছেন। স্থানবৃদ্ধির একমাত্র উপায় গ্রহাস্তরে 5লিয়া যা**ওয়া—আকাশ্যান মঙ্গলগ্রহ**বা**তাা সুগম করিবে** কিনা, আর করিলেও, সে ছোট তরীতে আমাদের ভবিষাৎ বংশধরদের সাঁই হইবে কিনা, কে জানে? তাই বর্তমান যুগের মানব জাতির সর্বশ্রেষ্ঠ সমস্থা-পুনরায় অসভ্য হওয়া নয়, অজ্ঞান-তিমিরে ফিরিয়া গিয়া পূর্ব্বপুরুষ-ক্লভ পাপের প্রায়শ্চিত্ত করাও নয়—সমস্তা আজ, জাতি-ধর্মা-নির্মিশেষে নকলের গ্রামাচ্ছাদন ও পুথস্বাচ্ছনেদার ব্যবস্থা করা। জ্ঞানরক্ষের ফলভক্ষণহেতু যে হৃঃপের উৎপত্তি, জ্ঞানের চর্চা ও পরিবর্জন শ্বারাই তাহার প্রতিকার করিতে মাসুদ বন্ধপরিকর। ভারই ফল আজিকার জ্ঞান-বিজ্ঞান ললিতকলার অত্যন্ত্ত বিকাশ। উন্নত কৃষি, পণ্যোদ্ধতি ও অপচয়-নিবারণ **দা**রা এই কঠোর সমস্যার কথঞ্চিৎ সমাধান হইতে পারে। বলা বাতুলা, এই ত্রিবিধ উপায়ের মূলে রসায়ন-বিস্থার জ্ঞান। অপচয়-নিবারণে রদায়ন-শাস্ত্র কতথানি সাহান্য করিয়াছে এবং তাহার কলে নিতান্ত ভুচ্ছ ও অব্যবহার্যা দ্রব্য হইতে কেমন পুদুগু ও মূলবোন জিনিষ প্রস্তুত হইয়া দেশের ধনবৃদ্ধি ও বেকার-সমস্তা দুর করিতেছে, এই প্রবন্ধে তাহাই সংক্ষেপে আলোচিত হইবে।

আল্কাত্রার সঙ্গে আমাদের সকলেরই পরিচয় আছে। বর্ণের উক্তলো, আণের তীব্রতায়, অঙ্গরাগের যোগাতায়— রূপে-রুদে-গরে-স্পর্ণে জিনিয়টি একেবারে মালোকিত করিবার **অনবস্তু। যেথানে ন**গ্র পাণরকর্মলা গ্যাসে পরিণত করা হয় সেই কারখানায় এবং লোহ প্রভৃতি ধাতু প্রস্তুত করিবার জন্ত ষেখানে কাঠ কিংবা পাথর-কয়শা আংশিক পুড়াইয়া কোক তৈয়ারী হয় দেই কোক-ওভেনে এই রূপে-গুণে অতুশনীয় বন্ধটি একান্ত অবাঞ্চিত (by-product)ব্লুপে প্রচুর পরিমাণে উৎপন্ন হয়। কারথানার মালিকগণ ইহা কি ভাবে এবং কোথায় ফেশিয়া দিয়া নিষ্ণৃতি পাইবেন কিছুদিন আগেও তাহা ভাবিয়া পাইতেন না। আল্কাত্রার সদগতির ক্থা তাছাদের কল্পনায়ও আসিত না-কেহ ইহা লইতে

শীক্বত হইলে তাহাকে বরং কিছু দিতেও আপত্তি ছিল না। কিন্তু রসায়ন-শাস্ত্রের রূপায় আন্ত ইহা মাক্ষের অনেক কান্দ্রে লাগিতেছে। আল্কাতরা হইতে প্রত্যক্ষ ও পরোক্ষ ভাবে বে-সব মূল্যবান জিনিষ প্রস্তুত হইতেছে তাহার ভুগু তালিকা দিলেই পাঠক-পাঠিকার ধৈর্য্চ্যুতি ঘটিবার আশঙ্কা আছে। তাই মাত্র অতিপ্রয়োজনীয় করেকটি দ্রব্যের উল্লেখ করা গেল।

বায়ু-বিহীন পাত্রে আৰকাত্রা উত্তপ্ত করিলে কঠিন ও তর্ল কতকগুলি যৌগিক দ্রব্য পাওয়া যায়—বেমন বেনজিন (benzene), কার্মলিক্ এসিড,, স্থাপথেলিন, ক্রিয়োন্দোট য়ানগ়্াসিন (creosote), টোলুইন (toluene), (anthracene) ইত্যাদি। প্রায় অর্দ্ধেকটা পীচরূপে পাত্রের তলদেশে পড়িয়া থাকে। রাস্তানিশ্মাণ-কার্যো ও 'ব্রিকেট' (briquette) তৈয়ারী করিতে ইহা প্রচুর পরিমাণে বাবছত হয়। আজ পর্যান্ত আবিষ্ণুত কেরোসিনের থনি সংখ্যায় খুব বেশী নয়, কিন্তু পাথর-কয়লা অনেক দেশেই প্রভৃত পরিমাণে আছে। অধুনা শুধু যান-বাহন হিদাবেই নয়, অন্তান্ত অনেক কাব্দেও মোটর ব্যবহৃত হইতেছে। ফলে পেটোল-সমস্তা জটিল হইয়া উঠিয়াছে। আমেরিকা ও ইউরোপে পেট্রোলের স্থিত বেনজ্পিন মিশ্রিত হইয়া মোটারের ব্যবহৃত হই:তছে। পোবাক-পরিচ্ছদ জলে না ভিজাইয়া অতাল্পকাল মধ্যে পরিষ্কার করিতে বেন্জিন যথেষ্ট পরিমাণে প্রয়োজন হয়। ইহাকে 'ড়াই ক্লিনিং' ব.ল। জিনিষ্টির সহিত ক্তাপথে লিন আমরা অনেকেই পরিচিত—পোকার উপদ্রব নিবারণ করিতে স্থাপণেলিন-শুটিকা আমরা কাপড়ের ভাঁজে রাথিয়া দিই। কিন্ত ইহার চাহিদা সবচেয়ে বেণী হয় ক্লুত্রিম রং প্রস্তুত করিতে। বেনজিন ও য়াানগ্রাসিনও সেজন্ত দরকার হয়। বাজারে যত রকম রং দেখিতে পাওয়া যায় তাহার অধিকাংশ আলকাতরা হইতে প্রস্তত। যে-সকল রঙের স্থায়িত্ব, ঔজ্জ্বলা ও মনোহারিত্ব সম্বন্ধে একবাক্যে প্রথম শ্রেণীর প্রশংসাপত্র দিবেন আমাদের তরুণীরা—শাড়ী ব্লাউজের রং করিতে যাঁহাদের ঘর্মাক্ত-কলেবর হইতে অতি-কুৎসিত আলকাতরা হইতে সেই সকল রঙের উৎপত্তি তাঁহারা হয়ত নাসিকা কুঞ্চিত করিকে। ভূনিয়া

আরব্য-উপন্তাস-বর্ণিত আলাদিনের প্রদীপ ব্যতীত অন্ত কোন উপায়ে যে ইহা সম্ভব হইতে পারে জনসাধারণকৈ তাহা বিশ্বাস করান শক্ত। জার্মানী ও ইংল্ডের স্থরহৎ বছ-সংখ্যক রঙের কারখানার শত সহস্র লোক কাব্দ করিয়া জীবিকা উপার্জ্জন করিতেছে। লক্ষ লক্ষ টাকার রং বিক্রী করিয়া দেশ সমুদ্ধ হইতেছে। জীব-রসায়নের (Organic Chemistry) উন্নতির সঙ্গে সঙ্গে প্রেক্ষাগারে যৌগিক পদার্থ রোগ-নিবারণে নানাবিধ মানবের ব্যবহৃত হ**ইতে**ছে। ক্ষত আরোগ্য করিতে ও সাপ মারিতে আমরা কার্বলিক এসিড় ব্যবহার করিয়া থাকি। ইহা রোগের বীক্ষাণুনাশক। ফিনাইল জিনিষটি কার্কলিক্ এসিড্-জাতীয় কতকগুলি পদার্থের সংমিশ্রণ মাত্র। নর্কমা পরিকার করিতে ফিনাইল্ নিতা বাবগুত হয়। এ-সকলই আল্কাত্রা হইতে উৎপন্ন হয়। উপদংশের একমাত্র মহৌবধ স্থাপভার্সন (অথবা ৬০৬) এবং অনিদ্রা-নিবারক নানা প্রকার উষ্ধও আলুকাতরা হইতে তৈয়ারী হয়। স্ব-চেয়ে অন্তুত ব্যাপার—হুনিয়ার মিষ্টতম জিনিষ স্যাকেরিনও আল্কাতরা হইতে প্রস্তুত হইতেছে। ইহা চিনি অপেকা অন্ততঃ ৫০০ গুণ বেণী মিষ্ট। বহুমূত্র রোগীরা চিনি হঞ্জম করিতে পারে না—প্রায় সমস্তটা প্রস্রাবের সহিত অপরিবর্ত্তিত অবস্থায় নির্গত হয়। অথচ দৈনন্দিন আহারে মিষ্টি ছাড়া চলে না। স্যাকেরিন তাহাদিগকে এ বিপদ হইতে উদ্ধার করিয়াছে। গত মহাযুদ্ধে বিবিধ বিস্ফোটক ও বিষাক্ত গ্যাস অপর্যাপ্ত পরিমাণে ব্যবহৃত হওয়াম যুদ্ধ দীর্ঘকাল স্থায়ী হইয়াছিল। এই বৈজ্ঞানিক যুদ্ধের স্থবিধাও অনেক। তাই ভবিষ্যৎ কালে যুদ্ধে (যদি সত্যই যুদ্ধ কথনও আবার বাধে) এই সকল দ্রব্যের প্রচুরতর প্রয়োন্ধন হইবে বলিয়া মনে হয়। আলুকাতরা হইতে প্রস্তুত নানা রক্ম বৌগিক পদার্থ হইতেই অধিকাংশ বিষাক্ত গ্যাস ও বিক্ষেটিক তৈয়ারী হইয়াছে। গত যুদ্ধের সময় একা ইংলগুই আলুকাতরা হইতে ৩,০০,০০০ টন টি. এন. টি. (T. N. T.) এবং পিক্রিক এসিড উৎপন্ন করিয়াছিল। টোলুইন হইতে টি এন টি এবং কার্ব্বলিক এসিড হইতে পিক্রিক এসিডের জন্ম। ছেলেদের নানা প্রকার খেলনার উপাদান ব্যাকেলাইট (backelite)—ইহা কার্ম-এসিড্-সম্ভূত।

শহরের আবর্জনার হ্বাবস্থা করা মিউনিসিপাশিটির একটা বড সমস্যা—স্বাস্থ্যের দিক দিয়াও বটে, সৌন্দর্যোর দিক দিয়াও বটে। আমাদের দেশের শহরগুলিতে পোড়ো জারগার আবর্জনারাশি স্ত,পীক্বত করিয়া রাখাই সনাতন প্রথা। উৎকট হুর্গন্ধে এগুলি চারিদিকের বাতাস মু ষিককুৰ আসিয়া ইহার দ যিত করে। মধ্যে উপনিবেশ স্থাপন করে। কিন্তু পাশ্চাত্য দেশে এই সকল আবর্জনা হইতে বৈজ্ঞানিক প্রক্রিয়ায় নানাবিধ মল্যবান দ্রব্য প্রস্তুত হয়। শিশি-বোতলগুলি পরিষ্কৃত করিয়া ব্যবহৃত হয়, ভাঙা কাঁচ দ্রবীভূত করিয়া নৃতন জিনিষ তৈয়ারী হয়। হেঁড়া কাপড়ের টুক্রা হইতে কাগজ প্রস্তুত হয়। অব্যবহার্যা লোহণও হইতে হীরাকশ (Ferrous Sulphate) তৈয়ারী হয়। কালি প্রস্তুত করিতে ইহার চাহিদা। ছিন্ন পাগ্রকা চুণীক্বত হইয়া জমির উর্বারা-শক্তি বৃদ্ধি করে। টিনের টুক্রা হইতে ক্লোরিন-সংযোগে 'টিন ক্লোরাইড' প্রস্তুত হয়। কাপড়ের কলে ইহার প্রয়োজন। অবশিষ্ট দ্রব্য পোডাইয়া যে তাপ পাওয়া মায় তাহা বৈত্বাতিক শক্তিতে পরিণত হইয়া কল চালায়, শহর আ**লো**কিত করে। যে ভস্ম পডিয়া তাহা দিয়া প্রস্তুত কন্ত্রিট (concrete) গৃহনিমাণকার্য্যে বাবহৃত হয়। যে অংশ ধুলিতে পরিণত হয় তাহারও নিস্তার নাই—বৈহাতিক উপায়ে তাহা একতা করিয়া শুদ্ধ ফসফরিক এসিড এবং সোরার সহিত মিশ্রিত হইয়াজমির সার হয়। আমেরিকায় এই সকল আবর্জনা হইতে প্রাচুর স্নেহ-পদার্থ (fat and grease) উদ্ধার করা হয়। সাবান ভৈয়ারী করিতে ইহা লাগে। হালিফাক্স শহরে ক্সাইথানার রক্ত হইতে ব্লাড সিরাম (blood serum) প্রস্তুত হইয়া থাকে। রুসায়ন-বিদ্যার কুপায় আবর্জনাও মিউনিসিপালিটির একটা আয়ের পছা হইয়াছে। বার্মিংহাম শহরে আবর্জনা হইতে বার্ষিক আর প্রায় ৫৩,০০০ পাউত্ত— গ্রাসগো নগরের আর আহুমানিক ৪০,০০,০০০ পাউও। আশ্চর্য্যের বিষয়, এশিয়ার বৃহত্তম শহর কলিকাভায়ও (বে কর্পোরেশনের আয় আসাম প্রাদেশের চেয়ে বেশী) বিপুল মাবর্জ্জনারাশি আদি ও সনাতন প্রথায় স্থানে স্থানে প্রীভূত হইয়া এখনও নগরের শোভা বর্জন করে।

জার্মান বৈজ্ঞানিক লিবিগ (Liebig) বলিয়াছিলেন-যে-দেশ যত সাবান ব্যবহার করে সে-দেশ তত সভা। সভ্যতার বিস্তারের **সঙ্গে সঙ্গে সাবানে**র চা**হিদা অসম্ভব** রকম বাড়িয়া গিয়াছে। নানা প্রকার প্রাণিজ ও উদ্ভিজ্জ তৈল হইতে কষ্টিক সোডা সংযোগে সাবান প্রস্তুত হয়। এই সকল তৈলের অন্ততম প্রধান উপাদান—গ্লিসারিন। সাবান তৈয়ারী ব্যাপারে ইহা কোনই কাব্দে লাগে না। আগেকার দিনে সাবানের টুকুরা শইয়া গেশে জলের সহিত মিশিয়া এই গ্লিসারিন নর্দ্দায় স্থান লাভ করিত। নোবেল সাহেবের ডিনামাইট আবিষ্কারের পর হইতে গ্রিসারিনের চাহিদ। বাড়িয়া গেল। তাহারই আজকাল দাবানের কারথানা হইতে গ্লিসারিন উদ্ধার করা হয়। সার: পৃথিবীতে গড়ে প্রতি-বছর ৮০,০০০ টন মিদারিন উৎপন্ন হয়। গত মহাযুদ্ধের আগে ইহার শেষ বিন্দু আসিত সাবানের কারথানা হইতে। বর্ত্তমানে এই প্রতিযোগিতার দিনে সাবানের কারখানার উন্নতি অনেকটা নির্ভর করে এই গ্রিসারিন উদ্ধারের উপর। বস্তুতঃ, গ্রিসারিন হইতে সাবান-তৈয়ারী থরচ উঠিয়া বায়—সাবান থাকে লাভের অঙ্কে। কলিকাভায় অনেক সাবানের কারখানা হইয়াছে, কিন্তু কোনও কারখানায় গ্লিসারিন উদ্ধার করে বলিয়া অবগত নহি।

সালফিউরিক এসিড-সংযোগে কাপড় কাচিবার সোডা প্রস্তুত করিতে প্রভূত পরিমাণে হাইড্রোক্লোরিক এসিড গ্যাস উন্ধিত হইয়া আগেকার দিনে চতুপার্মস্থ অধিবাসীদের স্বাস্থ্য হানি করিত—এর-বাড়ি ও গাছপালা নই করিত। এজন্ত ১৮৬৬ গ্রীপ্টান্দে ব্রিটিশ পার্লেমেণ্ট কর্ত্বক আইন (Alkali Act)বিধিবদ্ধ হইল—হাইড্রোক্লোরিক এসিড গ্যাস বাতাসে ছাড়িয়া দিলে আইনতঃ দণ্ড পাইতে হইবে। তথন সোডার কারখানা সংখ্যায় কম ছিল—লাভ হইত প্রচুর। হাইড্রোক্লোরিক এসিড উদ্ধার করিবার প্রয়োজনীয়তা কারখানার মালিকগণ অন্তত্ব করিত না। কিন্তু জগতের বৃহত্তম সোডার কারখানা—ক্রণারমণ্ড এণ্ড কোং নৃতন উপারে সন্তায় সোডা প্রস্তুত করিতে আরম্ভ করিয়া দিল। পুরাতন কারখানাগুলির অবস্থা শোচনীয় হইয়া উঠিত হাইড্রোক্লোরিক এসিড উদ্ধার করিতে না-

পারিলে। শাপে বর হইল—হাইড্রোক্লোরিক এসিড বিক্রী করিয়া কারখানাগুলি টিকিয়া রহিল। আজকালও বছ পরিমাণে হাইড্রোক্লোরিক এসিড এই ভাবে প্রস্তুত হয়। ব্লিচিং পাউডার তৈয়ারী করিতে ক্লোরিন লাগে— হাইড্যোক্লোরিক এসিড হইতে এই ক্লোরিন পাওয়া যায়।

ভারতের নানা স্থানে অনুরম্ভ কাঁচা মাল রহিয়াছে, কিন্তু দে তুলনায় কারখানার সংখ্যা অতি অল্প। ভারতবর্ষ ক্ষিপ্রধান দেশ, কিন্তু আজকাল শুধু কৃষির উপর নির্ভর করিয়া কোন জাতির চলিতে পারে না। দেশের ধন-বুদ্ধির উপায় ত্রিবিধ-কৃষি, পণ্যোৎপাদন ও সরবরাহ্ এবং যাতায়াতের উপায়-বিধান। দেশের লোকবৃদ্ধির সক্ষে সক্ষে অন্ত ভিবিধ উপায়ে ধনবৃদ্ধির চেষ্টা না-করিলে দেশের আর্থিক ছুর্গতি দুর হুইবার নহে। সেগ্রন্থ সর্বাত্তো প্রেয়েজন ফলিত-রুদারনের জ্ঞান। রুদারন-বিদারে সাহায়ে। অতি অল্ল মায়াদেও মল্ল অর্থ বায়ে মনেক ক্ষেত্রে প্রভৃত ধনাগ্রম হঠতে পারে। মান্তাব্দের মালাবার উপকূলের মংগ্র-ব্যবসায়ীরা প্রকাণ্ড সামুদ্রিক মংস্থ উন্মুক্ত সমুদ্রের তীবে বৌদে শুক।ইয়া জমির সার প্রস্তুত করিয়া বিক্রী কবিত। এর সকল মৎস্তে তৈলের পরিমাণ অত্যধিক বলিয়া থাদ্য-হিদাবে অব্যবহার্য। উগ্ৰ গন্ধও অন্ততম लाबान कारण वरहे। ১৯০১ माल मान्या**रक**त महकादी মংস্ত-বিভাগ এতাও সহজ উপায়ে মাচ হইতে তৈল নিষ্কাসন করিবার এক অভিনব প্রণালী প্রচলিত করেন। সুরুহং লৌহপাত্রে মাছের টুক্রা বাপে দারা উত্তপ্ত করিয়া তাহা পলিয়ার পুরিয়া চাপ দিয়া তৈল বাহির করা হইতে লাগিল। বে তৈল আগে পচিয়া গুৰ্গন্ধে সন্নিকটস্থ অধিবাসীদিগকে অতিষ্ঠ করিয়া তুলিত, তাহার শেববিন্দু ই: বণ্ড ও গামানীতে দাবান, মোমবাতি প্রভৃতি প্রস্তুতের জন্ম উপৰক্ত মূলো রপ্তানী হইতে লাগিল। থলিয়ার অবশিষ্ট কঠিন অংশ (fish guano) জমির উৎকৃষ্ট সার-রূপে সিংহলে প্রেরিত হইল। গত বিশ বছরে অন্যুন আড়াই শত কারধানা গড়িয়া উঠিয়াছে। সে দেশের অধিবাসী-দিগের আয়ের একটা নৃতন পণ খুলিয়া গিয়াছে—জন-সাধারণের অবস্থাও এজন্ত কথঞ্চিৎ সচ্চল হইয়াছে। প্রতি-৬,০০০ টন তৈল প্রস্তুত হইতেছে।

১৯১৯-২০ সালেব সরকারী বিবরণ হইতে জানা বায়—
১,০৫,৩১৩ টাকার তৈল এবং ১১,৫৭,৮৮৪ টাকার সার
বিদেশে রপ্তানী হইয়াছিল। ইহাতে কোন দক্ষ
রাসায়নিকের প্রয়োজন হয় নাই—রসায়ন-শাস্ত্রের সামাত্র
জ্ঞান কাজে লাগান হইয়াছে মাত্র।

এই মৎশ্ৰ-তৈল কিছুদিন আগেও বিশেষ কোন কাজে লাগিত না। উগ্ৰ হুৰ্গ্ৰহেতু ইহা সাবান, প্রভৃতি নির্মাণ-কার্যো ব্যবহৃত হইতে পারিত না। সমুদ্র-তীরবর্ত্তী দে:শ প্রচুর পরিমাণে দামুদ্রিক মৎশু পাওয়া যায়—নরওয়ে, সুইডেন প্রভৃতি দেশের অনেক লোকের জীবিকা নির্বাহের উপায় মৎস্ত ধরা। পুদীর্ঘকালব্যাপী বার্থ চেষ্টার পর রাসায়নিক ইংার গন্ধ দূর করিবার উপায় উদ্ভাবন করিয়াছেন। অতি স্থা নিকেশকণার বর্ত্তমানে हाई छाटलन-मः(याण এই मक्न टेज्ला गम नहे करा হয়। খনীভূত তৈলের কাঠিল সংখুক্ত হাইড্রোজেনের পরিমাণের উপর নিভর করে। এই আবিষ্কারের পর হইতে গুর্গন্ধবৃক্ত নানা প্রকার তৈল সাবান, মোমবাতি তৈয়ারী করিতে, এমন কি খাদ্যহিদাবে ব্যবহৃত হইতেছে। এদেশে উদ্ভিক্ত খিয়ের আবিভাব খুব বেশী দিনের কথা নয়। ক্বত্রিম মাথন অবশ্য আমাদের দেশে প্রায় অচল। থনীভূত তৈল এজন্ত ব্যবহৃত হয়—খাদ্যহিদাবে এগুলি নিরুষ্ট নয়, দামেও যথেষ্ট সন্তা। ভারতের তৈলবীদ্ধের সংখ্যা যেমন বহুল, উৎপাদনের পরিমাণও তেমনি বিপুল। অথচ অধিকাংশ তৈলবীজ বিদেশে প্রেরিত হইয়া থাকে। কুত্রিম মাধন বা থি সম্বন্ধে লোকের ভুল ধারণা জ্ঞমশঃ দুরীভূত হইতে:ছ—এ দরিদ্রের দেশে এই স্থলভ খাদ্যের শীঘুট যথেষ্ট প্রচলন হইবে আশা করা যায়।

জমিতে সার দেওয়া আজকালও আমাদের দেশে বিলাসিতা বলিয়া গণ্য হয়। অথচ এদেশের শতকরা ৯০ জন ক্রমক। দিন দিন লোকসংখ্যা ধেমন হু হু করিয়া বাড়িতেছে তাহাতে অদুর ভবিষ্যতে এ-দেশে ছভিক্ষ চিরস্থায়ী হইবে বলিয়া মনে হয়, কারণ জমির উর্বরতাও ক্রমশং কমিয়া আসিতেছে। অব্যবহার্যা জিনিধ হইতে প্রস্তুত হয় বলিয়া ক্রমির সার সাধারণতঃ খুব সস্তা। গাশ্চাত্য দেশে মৃত পশু, কসাইখানার রক্ত, পশুর শিঙের টুক্রা, ক্রম, ছেড়া পশমী

বস্ত্র, চামড়ার কারধানার পরিতাক্ত অংশ, নরবিসা প্রভৃতি রাসায়নিক প্রাক্তিরায় কথঞিৎ পরিবর্টিত হইয়া সার্রূপে বিক্রী হয়। বলা শহলা, এগুলি আবর্জ্জনামাত্র, কিন্তু রসায়ন-বিদ্যা এই জঞ্জাল শুধু দুর করিবার উপায় বাহির করিয়াই নিরুত হয় নাই--এগুলি হইতে অর্থাগমের ব্যবস্থাও করিয়াছে। ফুলভ বলিয়া সে নেশের রুষকগণ জমির সার যথেষ্ট পরিমাণে ব্যবহার করিয়া থাকে। সার্যোগে জমির উৎপাদিকা শক্তি কেমন অবিখাসা রক্ষে বুদ্দি পায়, একটি দৃষ্টান্ত দিলেই তাহা বুঝা যাইবে। বিলাতী বেওন নাশিকে আগাচার মত অপর্যাপ্ত জন্ম। কিন্ত এ-পর্যাস্ত বছরে প্রতি একরে নয় টনের বেশী পাওয়া নায় নাই। ইংলভের ওয়ালথাম-ক্রমে পচা থাস সার দিয়া এক একর জমিতে পঞ্চাশ টন উৎপন্ন কবা হইয়াছে। আর আমেরিকার এক জায়গায় উৎকৃষ্টতম সার দিয়া একই পরিমাণ জমিতে এক বছরে আঠার হাজার টাকার বিলাভী বেগুন উৎপাদন সম্ভব হইয়াছে।

আমাদের দেশে মোটর গাড়ী ও দিঠক যানের আমদানীর পরিমাণ দ্রুতবেগে বৃদ্ধি পাইতেছে। রবার-টায়ার-**ওয়ালা** ঘোডার গাডীর সংখ্যাও নিতাত কম নয়। চেঁড়া টায়ারের পরিমাণও তদক্পাতে বাড়িয়াছে। এ-দেশে অন্তান্ত অকেজো জিনিধের ন্তায় ইহা আবর্জনাস্ত,পে স্থান লাভ করে। কিন্তু ইউরোপ ও আমেরিকায় এই সকল অব্যবহার্য্য টায়ার নৃতন রবারের সঙ্গে মিশ্রিত করিয়া নৃতন টায়ার প্রস্তুত হহতেছে। পরীক্ষাদ্বারা গিয়াছে শতকরা পচিশ ভাগ পুরাতন রাবার মিশাইলে তৈয়ারী টায়ার কিছুমাত্র কম-টেকসই হয় না। বস্ততঃ, সেগুলি যে পুরাতন টায়ার সংমিশ্রণে প্রস্তুত হইয়াছে তাহাও ধরা শক্ত। ১৯২৬ সালে গুধু আমেরিকায় ৯২,০০০ টন পুরাতন টায়ার এই ভাবে কাব্রে লাগান হইয়াছে। আন্ধকাল কৃত্রিম রবার প্রস্তুত হইতেছে সভা, কিন্তু এই ভাবে অপচয় নিবারণ করিতে না-পারিশে তাহা সক্তেও টায়ারের দাম বাড়িয়া যাইত সন্দেহ নাই।

লৌহ ও স্বর্ণের বিবাদ আমরা ছোটবেলার কবিতার পড়িরাছি। তার পর যান্ত্রিক সভ্যতার প্রদাব ও উন্নতির সঙ্গে বাক্তর প্রান্ত্রনীয়তা আরও বাড়িয়া গিয়াছে।

লোহা এবং কয়লা--এই চুইটি অত্যাবশুক বস্তুতঃ, জিনিযের জন্য পরমুখাপেক্ষী হইতে হইলে জাতির ভবিষাৎ ঘোর অন্ধকারময়। হাজার হাজার টন লোহা টাটার কারথানায় দৈনিক প্রস্তুত হইতেছে। আর (slag) কার্থানার প্রভূত পরিমাণে ভক্মাবশেষ চারিদিকে শুপীরুত হইতেছে। বিশ বছর আগেও **লোহ-**নির্ম্মাতারা এই ভম্মের কি উপায় করা যায় তাহা ভাবিয়া পাইতেন না। চারি দিকে ইহা বিক্ষিপ্ত করিয়া জমির উর্বরা শক্তি নষ্ট করা ছাড়া গতান্তর ছিল না। ফ**েল** চতুপ্রারের জনপ্রদের নাম হইয়াছিল কৃষ্ণদেশ (Black Country), কিন্তু রাসায়নিক এ সঙ্কট হইতে তাহাদিগকে ত্রাণ করিয়াছে। আজকাল এই ভন্ম হইতে বহুল পরিমাণে পোর্টব্যাও সিমেণ্ট প্রস্তুত হুইতেছে। গত খুদ্ধের পর হুইতে ইহা রাস্ত:-নিম্মাণ ও অন্তান্ত কাজের জন্ত কন্ট্রিট (concrete) প্রস্তুত করিতে ব্যবহৃত হইতেছে। বলা অনাবগ্রক, করিথানার মালিকগণ শুধু স্বস্থির নিঃশ্বাস ফেলেন নাই, আয়ের একটা নৃতন পস্থা হওয়ায় উৎভূলও হইয়াছেন। দার্শনিক দের মতে আবর্জ্জনা মানে অস্থানে কোন দ্রব্যের অবস্থিতি। বস্তুতঃ ষেখানে যে-জিনিষের কোন প্রয়োজন নাই সেখানে তাহা থাকিলেই তাহাকে আমরা জঞাল বলি। যথোপযুক্ত ক্ষেত্রে স্থানাস্তরিত করিলেই তাহা আবার মূল্যবান কাঁচা মালে পরিণত হয় এবং তাহা হইতে দামী জিনিধ প্রস্তুত হইতে পারে।

'Waste not, want not' কথাটা পাশ্চাতা দেশ ষতটা মানিয়া চলে আমরা ততটা চলি না, আর সেই ভ ন্থই কমলার কপাকটাক্ষ তাহাদের ভাগ্যে লাভ হইয়ছে। আংশিক পচা ফল আমরা নর্জমায় ফেলিয়া দি। কিন্তু সে-দেশের লোকেরা তাহা হইতে রাসায়নিক উপায়ে 'পেক্টিন' বাহির করিয়া লয় এবং তাহা দিয়া নানা প্রকার ফলেব আচার তৈয়ার করিয়া থাকে। স্ভুল্ বিলাভী বোতলে অয়িম্লো আমরা সেই সব কিনিয়া থাকি। স্ক্রুভৃষ্টিতে দেখিতে গেলে বাতাসের নাইটোজেনও সিদিন পর্যান্ত অব্যবহার্য্য দেবের পর্যায়ভুক্ত ছিল। বায়ুমগুলের শতকরা প্রায় ৮০ ভাগ নাইটোজেন। অক্সিজেন-তরলীকরণ (dilution) ছাড়া আর কোন কাজেই ইহা লাগিত না। যুদ্ধের সময় বাতাসের নাইটোজেন জার্মান বৈজ্ঞানিক হাবার হাইড্যোজেন-

বোগে এমোনিয়া তৈয়ারী কাজে লাগাইলেন। একদিকে ইং। হংতে নাইটি ক এসিড, ও অন্ত দিকে সাল্ফিউরিক এসিড, সংবোগে জমির সার প্রস্তুত হংতে লাগিল। তাহার পর হংতে নানা দেশে এই ভাবে নাইটোজেন্ কাজে লাগান হংতেছে। বিশাল ভূখণ্ডের এই সর্ক্ব্যাপী কাঁচা মাল ভগবান অপক্ষপাতে সকল জাতিকে দিয়াছেন—ইং। মূল্যবিহীন। ইংা কাজে লাগাইয়া দেশের ধনর্দ্ধির চেটা সকল জাতিই করিতে পারে। বাংলা দেশের প্রকৃতির অবাচিত অপ্যাপ্ত দান—কচুরীপানাসমূহেও এই কথা

খাটে। সরকারী বিবরণে প্রকাশ, শুরু বাংলার ৪২৬৯ বর্গমাইল ব্যাপিয়া ইহা অপ্রতিহত প্রভাবে বিরাজ করিতেছে।
প্রাক্তির এই অহেতুক কুপার কুষককুলের প্রাণ ওঞ্গাগত
হইয়াছে। আর্দেনিক-যোগে কচুরী ধ্বংস করিবার সরকারী
চেটা ব্যর্থ হইয়াছে। এই জিনিষ্টির স্দাতি-বিধানের ভার
বাংলার রাসায়নিকদের উপর। ইহা হইতে প্ররা ও
পটাশ ঘটিত লবল প্রস্তুত করিবার উপার ইতিমধ্যেই
আবিশ্বত হইয়াছে। তাহা শাঘ্র কার্য্যে পরিণত হইলে
স্থেবের বিষয় হইবে।

স্থনন্দার বিয়ে

🖣 শান্তিময়ী দত্ত

()

পুনৰা যথন বি-এ পাস করিয়া বর্দ্মাদেশে পিতা-মাতার গৃহে ফিরিল, তথন ঘুমস্ত শহরটির মধ্যে একটা সাড়া পড়িয়া গেল। বংঙালীবিরল অঞ্চলে এমন ধরণের মেয়ে কেছ আর দেখে নাই। একটি মাত্র মেয়ে পুনলা যথন বালিকা, তথন হইতেই ইন্বাব্ কভাকে কলিকাভায় ডায়োসেদন্ কলেজের বোর্ডিঙে রাখিয়াছিলেন। সেই-খানেই সে ফুলের এবং কলেজের পড়া শেষ করিয়াছে।

স্নন্দা যথন আই-এ পাস করিল, তথন হইতেই ই-দুবাব্র ক্রী সরলা স্বামীকে ব্যতিবান্ত করিয়া তুলিয়াছেন,
"মেয়ের আমার বিয়ে হ'ল না, এর পরে বুড়ো মেয়ের বর
কোথা পাবে," ইত্যাদি অসংখ্য অভিযোগে। ইন্দুবাবু ক্রীর
কথার কোনদিনই মনোয়োগ দিতেন না, মেয়েকে স্থাশিকা
দেওয়া প্রাক্তন, এইটুকুই সব চেয়ে বড় সত্য বলিয়া
বৃঝিতেন। এইবার যথন মেয়ে ইংরেজীতে অনাস্লাল
উদ্ভীণ হইল, তথন ইন্দুবাবু উৎসাহে বলিয়া
ফোলিলেন, "এম-এ-টাও পাস ক'রে ফেলুক, আর ত তুটো
বছর, দেখতে দেখতে কেটে যাবে"—গৃহিণী সরলা মুধ
খিঁচাইয়াহাত নাড়িয়া কর্তাকে শোনাইলেন, "ভোমার সব যত

অনাচ্ছিষ্টি কথা, এতদিন পরে মেয়েটাকে ম্যাণ্ডালে বেড়াতে নিয়ে যাবার লোভ দেখিয়ে বাড়ি আনিয়েছি, এখন আবার উনি এম-এ পড়ার ফ্যাচাং ভূলছেন। জন-মনিধ্যির সলে বরকল্লার একখানা কাজ জ্বানে না। আদব-কায়দা রেথে কথা কইতে শেখে নি, কেবল ধিঙ্গিপনা শিথেছেন মেমেদের ইস্থুলে থেকে। এবার আর বেতে দিচ্ছি না আমি।

ইন্পুবাবু মাথা চুলকাইতে চুলকাইতে বলিলেন, "আর ত ছটো বছর মাত্র, কেন মেয়েটার মনে ছঃধ রাধব? বিয়ে ত হবেই; ঘরকয়াও সারাজীবন করবে, কেনেল একবার চুকলে কি আর ওসব হবে? কি আর বয়েস হয়েছে এমন?"

গৃহিণী হঠাৎ আঁচলে চোথ ঢাকা দিরা কাঁদ-কাঁদ সুরে বলি:লন, "হবে গো সবই হবে, কেবল আমার অদেষ্টে দেখার স্থা ঘটবে না। ঐ ত পাশের বাড়ির ছর্জ্জন সিংরের মেরে আঠার বছরে পড়েছে, তিন-চারটা ছেলের মাহরে কেমন ঘরকরা করছে।" কর্তা এমন স্থাক্তিপূর্ণ অভিযোগের উন্তরে কি বলিবেন ব্রিতে না-পারিয়া সম্প্রতি গৃহিণীকে খুণী করিবার জন্ত বলিলেন, "তোমার অদেষ্ট ওদের চেয়ে কি কম ভাল? হর্জ্জন সিং মাধার ঘাম পার ফেলে যা' হু-পর্যা আনছে, ঐ

গুষ্টির পেটও ভরছে না তাতে; এমনই জামাই এনেছে, হতভাগা কাণাকড়ির বিদ্যে ধরে না পেটে, অথচ খণ্ডরের পরদায় মদ খেরে মাতলামি করতে বাধে না। ঐ কচি মেরেটাকে দেখলে বৃক ফেটে বায়। তোমার মেরে আজ বি-এ পাস ক'রে ঘরে এসেছে, কত জন ঈর্ষাও করছে, আবার কত লোক প্রশংসাও করছে। সেদিন জ্বজ্ব সাহেব বললেন, তোমার মেরেকে দেখে বড় খুশী হয়েছি। তোমার মত সব বাঙালী-বাপ যদি এমনি ক'রে মেয়েকে লেখা-পড়া শেখত! ক'ল ত ডেপ্টি কমিশনার উ-পের বাড়ি একটা টি-পার্টি আছে, আমাকে মেয়ে নিয়ে যেতে নিমন্ত্রণ করেছেন। তোমাকেও নিয়ে বেতে বলেছিলেন, আমি বলেছি তুমি কোথাও বেরোও না।''

মুহু তির মধ্যে সরলার মুথ প্রাদীপ্ত হইয়া উঠিল, উৎসাহে বলিলেন, "ওমা, এ কথা ত আগে বল নি। কাল টি-পার্টি? গ্রনার কি হবে? তোমার মেয়ে ত আবার সেকেলে গ্রনা প্রবে না, নইলে কি আমার গ্রনার অভাব? মুক্তোব্যানা, পাতলা পিনপিনে চুড়ী ছ্-গাছা হাতে দিয়েই সব জায়গায় য়য়। সামনের বাড়ির মা-চির একটা মুক্তোর কণ্ঠী দেখে খুব পছলা করেছে, তাই সেই রকমই এক ছড়া গড়াতে দিয়েছি। তুমি এখুনি স্থাকরার বাড়ি তাড়া দিয়ে লোক পাঠাও। বড় মেয়ে ওকে একা পাঠানো কি ভাল দেখায়? আমিই সঙ্গে নিয়ে যাব। বন্ধী বাড়ি ত; বঙালী কেউ না থাকুলেই হ'ল।"

ইন্দ্বাব্ বলিলেন, "বাঙালী বড় বড় নামজালা হ-চার জন থাকবে বইকি। তবে মেয়েটাকে ডাক-ধ্যক ক'রো না পেশানে, পাঁচ জনের সঙ্গে আলাপ-প্রিচয় করতে দিও।"

(२)

প্রশার সব্দ্র থাসে ঢাকা লনে টি-পার্টি চলিতেছে। এক নিকে টেনিস কোট, এক দল খেলিতেছেন, এক দল খেলা দেখিতে দেখিতে চা পান করিতেছেন।

গৃহস্বামিনী মিসেদ্ উ-পে গাড় সর্জ রঙের লুঙ্গী পরিয়াছেন—লুঙ্গীধানির প্রায় অর্জেক অংশ ফুন্দর ফুল লতা-পাতা আঁকা। তানাধা-মাধা পা ছইখানিতে সোনার ছই গাড়ি মল, সরজ তেলভেটের কর্মা ফানা পরিয়া, বেশ দ্রুত

চলাফেরা করিতেছেন। বিরাট টোপর-খোঁপাটির ডান
দিকে এক গোছা মেইড্ন্-ছেয়ারের মধ্যে কয়েকটি
বেলফুল গোঁজা রহিয়াছে, বাতাসে ফল্ম সব্ল পাতাশুলি
উড়িয়া উড়িয়া কপালের উপর পড়িতেছে—কাজের
ফাঁকে ফাঁকে একবার করিয়া ফুলগুছুটি যথাস্থানে আছে
কিনা গাঁত দিয়া দেখিতেছেন। উ-পের মেয়েট মায়ের
সঙ্গে সঙ্গে টে-হাতে ঘুরিতেছে। তাহার পরনে উঁচু ফ্রক,
হাই-হিল্ জুতা ও মোজা, বব্ করা চুলের এক পাশে ছোট
একটি ফুলের শুছুছ ক্লিপে আঁটা রহিয়াছে। মায়ের সহিত
এবং নিমম্বিতদের সহিত মিহি মুরে ইংরেজী বলিতেছে।

স্নন্দা একটি টেবিলের নিকেট বসিয়া চা খাইতেছিল, দৃষ্টি তাহার টেনিস্ কোর্টের দিকে। সরলা দেবীর হুই জন মহিলাবন্ধু স্নন্দার সহিত আলাপ করিবার জন্ম উৎস্ক। স্নন্দা উত্তর দিবার আগেই তাহার মা সব কথার জবাব দিয়া ফেলিতেছেন, কাজেই সে নিশ্চিস্ত মনে টেনিস্ গেলা দেখি:তছে।

এমন সময় গৃহস্থামী উ-পে স্থনন্দার নিকটে আসিয়া বলিলেন, "মিস্ দে, আপনার সঙ্গে আলাপ করব'র জন্তে আনেকেই উৎপূক, একবার এদিকে আস্বেন কি?" সুনন্দা মাকে বলিল, "মা, আমাকে ওঁরা ডাকছেন, আমি বাচিছ।" সরলা দেবী একটু বিরক্ত হইয়া বলিলেন, "যাও, তবে বেশাক্ষণ পুরুবদের দিকে থেকো না, এ জায়গা বড় ভাল না, একটা নিলে তুলে দিতে দেরি হবে না।"

টেনিদ্ খেলা শেব হইয়াছে, খেলোয়াড়রা এক এক গ্লাস বরফ-পানীয় হাতে লইয়া বিশ্রাম করিতে বিদয়াছেন। ফুনন্দাকে লইয়া উ-পে দেখানে উপস্থিত হইতেই সকলে চেয়ার ছাড়িয়া দাঁড়োইলেন।

উ-পে উপস্থিত সকলকে উদ্দেশ করিয়া বলিলেন, "ইনি মিস্ দে, আমাদের সরকারী উকিল মিঃ দের কন্তা, এই বংসর ইংরেজীতে অনাস লইয়া প্রথম শ্রেণীতে উত্তীর্ণ হইয়াছেন।" তার পর একে একে নানা জাতীয় ভদ্রলোকের সহিত করমর্জন করিয়া স্থনন্দা হাপাইয়া উঠিল। এমন সময় দীর্ঘাক্তি, গোরবর্ণ, সুন্ত্রী একটি যুবক র্যাকেট-হস্তে সেধানে উপস্থিত হইতেই উ-পে বলিলেন, 'মিস্ দে,—মিঃ দলীপ সিং, ইনি বর্ষার টেনিস্ চ্যাম্পিয়ন—

এথানকার ডি**ট্রিক্ট**্ এন্জিনীয়র"—উভয়ে পরস্পারকে অভিবাদন করিশেন।

কিছুক্ষণ কথাবার্ত্তার পর মিঃ সিং স্থনন্দার নিকটে আসিয়া বলিলেন, "থাপনি কি টেনিস্ থেলেন ?"

স্নন্দা বলিল, "থেলি বটে, কিন্তু আপনাদের মতন চ্যাম্পিয়ন্দের সঙ্গে কি থেলতে পারি? সভিা, আপনি কি স্নার থেলেন! আমার ভাল থেলা দেখতে থ্য ভাল লাগে।"

মিঃ সিং উৎসাহিত হট্য়া বলিলেন, "আসুন না—এক সেট্ খেলি।"

স্থানকা শজার রক্তিম হইরা বলিল, "না-না, আপনার সঙ্গে কিছুতেই না।" মিঃ সিংরের দ্ধিন বাড়িয়া গেল, সেইন্দুবাবুকে গিয়া ধরিল স্থাননার সঙ্গে একবার থেশিবেই। ইন্দুবাবু সানন্দে সম্মতি দিলেন কিন্তু স্থাননা বলিল, "আজ নর, আমার পারে গ্রিপার রয়েছে, আর এত লোকের সামনে আমি থেশতে অভ্যস্ত নই।"

মিঃ সিংরের আবদা∷র অগত্যা স্নন্দাকে রাঙী হইতে হইল—পর দিন সেই বাড়িতেই আসিয়া খেলিবে।

সেই দিন সন্ধায় বাড়ি ফিরিবার পর স্থনন্দা মা-বাবার নিকট বলিল, "এ জায়গাটা যত বিশ্ৰী লেগেছিল প্ৰথমে এখন দেখছি ভত ধারাপ নয়। একেবারে ভঙ্গণ ত নয়, বেশ ভাল ভাল শিক্ষিত লোকও ত অনেক আছেন। বে-কয়টি বন্ধীদের বাড়ি গি.য়ছি—কি স্থন্দর অভার্থন।! মিসেস উ-পেও ভারী নম্র, বিনয়ী মেয়ে। কর্তব্যের ক্রটি কোথাও খুঁজে পাবে না। উ-পের মেরে, এখানকার কন্ভেণ্টে পড়ে। বেশ বৃদ্ধিমতী মেয়ে, ধরণ-ধারণ একেবারে মেম-সাহেবী, লুক্ষী পরে না ত দেখুলাম। ইন্দ্বার্ বলিলেন, "শিক্ষিত লোক যাঁরা আছেন এখানে তাঁদের সঙ্গে মিশুলে ভালই লাগবে। বাঙালী যারা আছেন, তাঁরা লোক যে ভাল নয়, ত: वन् हि ना किन्द वहकान विस्तरन পড়ে আছেন, দেশের অবস্থার উন্নতির সঙ্গে কোনো যোগ রাথেন না, থবরও রাথেন না ব'লেই বোধ হয় মন বড় দদ্বীর্ণ হ.য় গে:ছ। এই দেখ না, সেদিন ক্লাবে চুকে দেখি মহা আলোচনা চল্ছে। আমি যেতেই সব থেমে গেল। মল্লিকবাবু বললেন, 'এই যে দে-বাবু! আপনার মেয়েটি ত তিন-গার মাসের মধ্যে এখানে খুব নাম ক'রে ফেলেছে। বার-লাইত্রেরীতে সকলের মুথেই

মিস্ দে-র কথা। মেয়েকে পাস ত করালেন, এখন যোগা বর জোটাতে ত প্রাণ বের বে।

ফুনন্দা পিতার কথায় বাধা দিয়া বলিল, "আচ্ছা বাবা, ওঁদের এত মাথা-ব্যথা কেন?"

পিতা বলিলেন, "বন্ধু-মানুষ, বা বল্ছেন কিছু মিথো নয়। সতিটে আজকাল পণ ছাড়া ভাল ছেলে পাওয়া গ্ৰহ ।"

পুনন্দা বলিল, "আচ্ছা, বাবা, আমাদের ছেলেরা এমন অপদার্থ কেন ? বিয়ে ক'রে খণ্ডরের ট'কা নিয়ে ভিক্তে ক'রে বড়লোক হ'য়ে কি স্থান বাড়ে তাদের ?"

ইন্দ্বাব্ বলিলেন, "ভিক্ষা কই? দস্তর-মত জ্ঞোর-জবরদন্তি করেই ত নের। এমন ভাব—থেন তোমার মেয়ে বিয়ে ক'রে আমি তোমার এবং তোমার চোদ্দপুরুষ উদ্ধার করলুম।"

সুনন্দা বলিল, "বাবা, আমি তোমাকে ব'লে বাখছি আমি কিন্তু এক কভি পণ দিয়েও বিয়ে করব না।"

মেয়ের কথাটুকু গুনিতে পাইয়া সরলা ছুটিয়া আসিয়া চীৎকার করিয়া বলিলেন, "কি বেহায়া মেরে হরেছিস্ তুই ? তোর বি.রর ধবর তুই কি জানবি? আমরা যা ভাল বুঝে বাবস্থা করব, তাই করবি তুই।"

সুনন্দা বিরক্ত হইয়া বলিল, "মা, বাবার কাছেও নিজের মনের কথা বলব না ত কার কাছে বলব ? দে যা বলবে, মুখ বুজে করব, এই যদি চেয়েছিলে, দশ বছর বয়সে বিজে দাও নি কেন ? রাগ কর আর যাই কর, আমি চিরদিন অবিবাহিত থাক্ব, তবু পণ দিয়ে কখনও বিয়ে করব না।" সুনন্দা সজোলে পা ফেলিয়া নিজের ঘরে চলিয়া গেল।

ইন্দবাব্ গৃহিণীর দিকে ফিরিয়া বলিলেন, "তুমি বড় বকো মেয়েটাকে। ও এখন বড় হয়েছে, বৃদ্ধি বিবেচনা হয়েছে, ওর সঙ্গে সাবধানে ব্যবহার ক'রো।"

সরলা ঠোঁট উন্টাইয়া বৃদ্ধাসূলী প্রদর্শন করিয়া বলিলেন, "রাগ করলে ত বয়েই গেল—ভোমার মতন আমি মেরেকে অত আস্কারা দিই না।"

(0)

পরদিন বিকালে চারটার সময় মি: দলীপ সিংয়ের গাড়ীখানা দরজায় দাঁড়াইল। ইন্দুবাবু কোট হইতে ^{ইন্}ন

মাম

ফিরিয়া স্থননাকে উ-পের বাড়ি লইয়া যাইবেন, স্থির ছিল।
মিঃ সিংয়ের গাড়ী দেবিয়া স্থননা নীচে নামিয়া আসিল।
মিঃ সিং গাড়ী হইতে নামিয়া সমন্ত্রমে অভিবাদন করিয়া
বলিলেন, "আপনাকে নিতে এসেছি, খেলার কথা মনে
হাছে ত ?"

সুনন্দা বলিল, "আমার বাবা আমাকে অপেক্ষা করতে বলেছেন, তার সঙ্গে বাবার কথা ঠিক্ আছে। আপনিও এসে বস্থন না।"

মিং সিং বিলিলেন, "থেশার ত একটু দেরি আছে, আমরা একটু ডাইভে বেতে পারতাম, আপনি এথানকার পাহাড়ে উয়েছেন কথনও ?"

ত্নক্ষা বলিল, ''না, আমার এখনও বিশেষ কোথাও বেড়ানো হয় নি। আপনার স্ত্রী ব্বি থেলেন না? আপনাকে সর্বলা একা বেয়োতে দেখি যে ?'

মিঃ সিং স্থনকার বেড়াই.ত গাইবার সক্ষোচের কারণ ব্ঝিতে পারিয়া বলিল, "আমি তিরদিনই একা। বিয়ে এখনও করি নি।"

স্নন্দা অপ্রস্ত হইয়া আলোচনার বিষয় বদ্লাইবার ইচ্ছায় বলিল, "আমাদের বাগানটায় কি স্ন্দর গোলাপের বেড হয়েছে, দেখবেন আম্ন। আমার বাগান করতে বড্ড ভাল লাগে।"

মিঃ সিং বলিলেন, "আমারও বাগান করা একটা 'ছবি'। অন্তুত! আমাদের ভ-জনের থেয়াল দেখছি একই রকমের।

প্নকা মহা উৎস:হে মিঃ সিংকে বাগান দেখাইতে দেখাই.ত বলিল, "কলকাতায় আমাদের কলেভের কল্পাউণ্ডে আমরা কয়েক জন মেয়ে মিলে কি প্রকার বাগান করেছিলাম। এখানে একা-একা কোন কাব্দে উৎসাহ লাগে না।"

মিঃ সিং বলিলেন, "যদি অনুমতি দেন, আপনাকে আমি সাহাব্য করতে পারি। আমাদের পি-ডব্লিউ-ডি আপিসের বাগান দেখেছেন ? আমি অবসর সময় ঐ বাগান নিয়েই কাটাই।"

স্থনন্দা বলিল, "আমি বাবার সঙ্গে যাব এক দিন আপনার বাগান দেখতে।"

মি: সিং স্থনন্দার চোখের উপর নিজের অভিমানপূর্ণ

দৃষ্টি নিক্ষেপ করিয়া বলিলেন, "কেবল বাবা আর বাবা! কেন আপনি কি কচি খুকী যে বাবা-ছাড়া এক পা চল্তে পারেন না?"

স্নন্দা চকু নামাইয়া পা দিয়া একটা ইট সরাইতে সরাইতে বলিল, "আমরা যত বড়ই হই না, যতই লেখা-পড়া শিখি না কেন, আমাদের পায়ের বেড়ী কোনদিন থস্বে না।"

ফটকের সম্মুণে একথানি মোটর থামিল। ইন্স্বার্ গাড়ী হইতে নামিয়া ডাকিলেন, "সূত্, তুমি প্রস্তুত ত? আমার কি দেরি হ'য়েছে?"

ইপুৰাবু এন্জিনীয়র সাহেবের করমর্কন করিয়া ব**লিলেন,** "ফুনন্দার দেরি দেঁথে বুঝি আপনি নিয়ে বেতে এসেছিলেন ?"

মিঃ সিং বলিলেন, "আপনার মেরেকে নিরে যাবার সৌভাগা আমার হ'ল না, তিনি আমার সঙ্গে বেতে রাজী হন নি।"

ইন্বাৰ্ একটু অপ্রান্তত হইয়া বলিলেন, "না-না, সে কি কথা ? আমার মেয়ে আপনার সঙ্গ পেলে খুবই পুষী হ'ত নিশ্চয়ই, তকে আমার সঙ্গ যাবে কথা ছিল ব'লে বোধ হয় যায় নি । আপনি ছঃবিত হবেন না ।

ইন্বাৰ্ মিঃ সিংকেও নিজের গাড়ীতে আহ্বান করিলেন। প্নকাও বলিল, "চলুন না একসঙ্গেই ধাই।''

মিঃ সিং আপত্তি না করিয়া ছাইভারকে গাড়ী লইয়া বাইতে তকুম দিয়া ই দ্বাবুর পাশে উঠিয়া বসি:লন।

স্নন্দা আজকাল আর বর্মাদেশের প্রতি বিরপে নয়। বাবা যথন বলেন, "এই মগের ন্লুক ছাড়তে পারলে বাচি। দিন-দিন যা অবস্থা দাঁড়াচ্ছে, ভারতবাসীদের অল্লেল বেশীদিন এদেশে নেই বোধ হয়।"

তথন জনন্দা বলে, "তঃ ও দর দেশ, ওরা নিছেদের লোকেদের ব্যবস্থা কল.বই ত ? তোমরা রাগ করলে চলবে কেন ?"

ইন্দ্বাবু বলিলেন, "হাঃ, সে কথা ঠিক্, তবে বারা চাকরি:ত খাগে দুকেছেন, তাঁদের ত স্তায় পাওনা এবং দাবি থেকে বঞ্চিত করা উচিত নয় ?"

গৃহিণী বংলন, "এদেশটা মন্দ কি ? আমার ত বেশ ভাল লাগে বাপু। মেয়েটার বিঃয়র ক্ষন্তেই ঘন ঘন দেশে যাবার দরকার, নইলে এখানে যেমন রাজার হালে আছি, দেশের বাড়িবরে সে আরাম কোথার? এখানে যদি ভাল পাত্র একটি পেতাম, ত:ব বড় স্থবিধাই হ'ত। হাজার টাকা জলে ফেলে যাওরা-আসা করি, ঘটকের ফিও কিছু কম দিই না। তবু যদি একটা পছলদসই জামাই জুট্ত!"

সুনন্দা বলে, "তোমার শুধু ঐ এক কথা, মা। কে বলে তোমায় বাজে ধরচ করতে ?"

মারেগে জ্বলে উঠেন—এসব বাজে ধরচ, আর ওঁর বি-এ, এম্-এ পড়ার ধরচগুলোই সব কাজের হ'ল? স্বামীকে জিজ্ঞাসা করেন, "হাগো, বিলেত-ফেরৎ সেই ডাক্তার ছেলেটির ধবর নিয়েছিলে? কত চায় সে?"

ইন্দ্বাব্র ইচ্ছা নয় মেয়ের সাক্ষাতে তাহার বিবাহের আলোচনা হয়। স্ত্রীকে বশিলেন, "দ্যাখ, আমি কিন্তু কালকে হই তিনটি বন্ধুকে চা খেতে বলেছি। সুনু, তুমি কিন্তু মা,কাল হোষ্টেদ্ হবে, কোথায় চা খাওয়াবে বল ত ?"

সুনন্দা বলিল, "বাবা, আমাদের ফুলবাগানে করলে হয় না? ওথানে ছোট ছোট টিপয় দিয়ে ব্যবস্থা করলে দশ-: বার জনকে চা থাওয়ান যায়।"

গৃহিণী বলিলেন, "ঐ দ্যাথ, মেরের যত বিদ্যুটে পছন্দ। অমন ভাল চেরার, সোফা, টেবিল, বড় বড় আয়না, ছবি দিয়ে সাজানো কাম্মীরী কার্পেট পাতা ডুফিংর্রমটা ভোমার পছন্দ হ'ল না, পছন্দ ঐ ঝোপে, ঝাড়ে আর জঙ্গলে! নেমগুল করছ কা'কে ভনি ?"

ইন্দ্বাব্ বলিলেন, "রেঙ্গুন থেকে আমার এক ব্যারিষ্টার বন্ধু মি: গুপ্তের ছেলে এখানে এসেছে, সে, এখানকার হাসপাতালের ডাক্তার, আর আমাদের সিং সাহেব।"

মি: সিংরের নাম উচ্চারিত হইবার সঙ্গে সলে স্থননার মুখখানা একটু বিশেষ রকম প্রফুল হইগা উঠিল, ইন্দ্বাব্ তাহা শক্ষ্য করিলের।

স্নন্দা বলিল, "বাবা, আমাদের বাগানের ও-পাশে যে অনেকথানি জারগা জঙ্গল হরে পড়ে আছে, সেখানটা পরিষার করিয়ে, সমান ক'রে নিয়ে একটা মাড্-কোর্ট করা বার না?"

ইন্পুবাবু ৰলিলেন, "শুড্ আইডিয়া, খেলবে কে ?" স্থানলা বলিল, "আছা, বাবা, মিঃ সিংকে বলুলে তিনি নিশ্চর এধানে থেল্ভে আসেন, আরও কত লোককে থেল্ভে দেখি, থেলার লোক জু.ট যাবেই।"

ইন্দুবাব বলিলেন, "বেশ, কাল চায়ের টেবিলে কথাটা তুলো।"

(8)

স্থানকা ডে সিং-টেবিলের সমুখে দাঁড়াইরা প্রসাধনে ব্যস্ত।
ক্ষুদ্দের একটি টিপ্ কতবার পরিতেছে, আবার মুছিতে ছ।
বড় মুক্তোর এক ছড়া লম্বা হার, গাঢ় নীল রঙের মারাঠী
শাড়ী, আধ হাত চওড়া লাল রেশমের পাড়ের নীচে শাদা
রেশমী স্থতোর কল্কা, ভয়েলের ছোট হাতার ব্লাউসের
ভিতর দিয়া স্ক্র লেসের এম্ব্রয়ডারীর কাক্ষকার্য্য, কানে
ছটি বড় বড় মুক্তোর ছল, পায়ে এক জ্লোড়া গাঢ় নীল
ভেলভেটের উপর সাদা প্তির কাক্ষ করা কর্মা চটি।

ত্বনন্দাকে ত্বন্দরী বলা যায় কিনা, সে-বিষয়ে মতভেদ থাকিতে পারে। সে গৌরবর্ণ নয়, কিন্তু কালোও বলা যায় না। চোথের তারা ছটি ঘন ক্লফবর্ণ, তাহার চাউনির মধ্যে এমন একটু মাধুর্য আছে, যাহাতে তাহার মুথের অন্ত সকল খুঁৎ ঢাকা পড়ে। মুথথানি বৃদ্ধির প্রাচুর্য্যে উক্জ্বন, স্থভাবের কোমলভায় মোলায়েম।

জানাশার পর্দার ফাঁক দিয়া দেখা গেল একটি ট্যাক্সি বাগানে চুকিতেছে। অভ্যাগতদিগকে অভ্যর্থনা করিতে হুইবে, সে কথা মনে পড়িতেই আয়নায় শেষ একবার মুখখানা দেখিয়া লইয়া সুনন্দা ক্রুভ সি^{*}ড়ি দিয়া নামিয়া গেল।

ট্যাক্সি হইতে খিনি নামিলেন, প্রনন্ধা ভাহাকে চেনে না। ইন্দুবারু ভাহার হাত ধরিয়া ঝাঁকিয়া বলিলেন, "এই থে এদ, এই আমার মেরে প্রনন্ধা, আর ইনি আমার বন্ধুপুত্র প্রবিমল।" প্রনন্ধা বলিল—বাবা, একেবারে বাগানে গিয়েই বিদি, এখানে বড় গরম, না?

অতিথিরা একে একে উপস্থিত হইলেন। সরকারী ডাজারট হাসিখুশী মাম্য, নানা দেশ ঘুরিয়া, নানা জাতীয় থবর জানেন, গল্প করিয়া সকলকে আপ্যায়িত করিতে লাগিলেন। ফুনন্দা বলিল—ডাঃ চ্যাটার্জ্জী, আপনি ত কিছুই থাচ্ছেন না, আর এক প্লেট আইস্ক্রীম নিন্ না! ডাঃ চ্যাটার্জ্জী বলিলেন—নিতে পারি, যদি আপনি



বাণী উচ্চ**েলন্দ**ভূষণ **দে**

একটা গান শোনান। কল্কাতা ছেড়ে অবধি জঙ্গলে জঙ্গলে ঘুরছি, ভাল বাংলা গান শুন্তে পাই না।

্ৰক জন অ-বাঙালী উপস্থিত থাকান্ন কথাবাৰ্তা সৰ ইংরেজীতেই চলিতেছিল।

মিঃ সিং বলিয়া উঠিলেন—ইয়া একটা ইংরেজী গান হোক্। বাংলা গান আমি কি বুঝুব ?

স্বিদশ বলিশেন—বাংশা আর ইংরেজী ছটোই আপনার কাছে বিদেশী ভাষা, বাংশা তর্ভারতবর্ষীয় দ্দিনিষ, থানিকটা রস গ্রহণ করতে পারবেন।

মিঃ সিং বলিলেন—স্থবিমলবাৰু বৃদ্ধি ইংরেঙ্গী সূর ভাল-বাসেন না ? আমার কিন্তু খুব ভ'ল লাগে ইংরেজী সুরগুলি।

প্রকা বলিল—আমি ইংরেজী পুর ভালবাসি না, তা'নর, কিন্তু গাইতে বিশেব ভাল লাগে না, ওতে বেন আমাদের মন থোলে না। মিঃ সিং, আপনাকে বরং আমি ভাল ভাল ইংলিশ রেকর্ড শোনাব।

সিং সাহেব বিরক্তির প্ররে বলিলেন—রেকর্ড কে শুনুতে চায় ? আপনার গান শোনাটাই আসল।

মিঃ সিং আজ লক্ষ্য করিয়াছিলেন, স্থনন্দা ছইটি যুবক বাঙালী বন্ধ পাইয়া, তাহাদের লইয়াই একটু বাস্ত হইরাছে। তাঁহার মনে বেশ একটু ঈর্ধার উদ্রেক হইতেছিল। স্থনন্দাও নিজের ক্রটি ব্ঝিতে পারিমা লজ্জিত হইল এবং চেয়ার ছাড়িয়া উঠিয়া বলিল—চলুন ঘরে যাই, এখানে ত বাজনা নেই?

মিঃ সিং বলিলেন—আমি তা'হলে এথান থেকেই বিদায় নি, আমার এক জায়গায় ডিনারের নিমন্ত্রণ আছে, আর একদিন আপনার গান শোন্বার ইচ্ছা রইল।

স্বিমল ছেলোট বি-এ পাস করিয়া ব্যবসা করিতেছিল।
বর্মাদেশেই তাহার জ্বন্ধ. পিতা আইন-ব্যবসা করিয়া বিস্তর
মর্থসঞ্চয় করিয়াছেন। প্রকে বিলাত পাঠাইয়া উপযুক্ত
করিবার সংকল্প ছিল, কিন্তু প্রের অভিপ্রায় অন্তর্মণ ছিল।
সে শান্-ষ্টেটে আলুর চাষ করিত, সেই আলু সমস্ত বর্মার এবং
ভারতবর্ষের নানা স্থানে চালান দিয়া বেশ উপার্জ্ঞন করিত।

নর্থ উপার্জন যথেষ্ট হইলেও পুত্র জঞ্চ, ম্যাজিষ্টেট, ডাক্টার বা এন্জিনীয়র কিছুই হইল না বলিয়া পিতা এবং বন্ধগণও প্রায়ই হঃধপ্রকাশ করিতেন। সুনন্ধাও তাহাকে প্রশ্ন করিয়া ফেলিল—মাপনি এত ভাল স্কলার ছিলেন। বিলেত গেলে ত একটা ডক্টরেট নিয়ে আস্তে পারতেন। এসব ব্যবসা কি শিক্ষিতদের ভাল লাগে?

স্বিমল বলিল—আমার এরকম স্বাধীন ব্যবসা করতে বেশ লাগে। মাটি চাষ ক'রে ফদল তুলে কি আনন্দ তা দে না করে, দে বোঝে না।

সুনন্দা সুবিমলকে শ্রদ্ধা করিলেও তাহার পছন্দকৈ প্রাশংসা করি:ত পারিল না।

(¢)

স্নন্ধার দিন বেশ কাটিতেছিল, তাহার আর এখন সঙ্গীর অভাব বোধ হয় না। ইন্দ্বাব্ গৃহিণীর আবদারে মাঝে মাঝে পাত্রের অনুসন্ধান করেন। উপযুক্ত পাত্র পাওয়া নায় না এমন নয়, কিন্তু সকলেই পাঁচ হাজার সাত হাজার হাকে। মেয়ের কাছে প্রভাব আসিলেই মেয়ে ক্ষেপিয়া উঠে। ইন্দ্বাব্ গৃহের অশান্তি সহা করিতে নাপারিয়া বলেন—কি ঝক্মারি করেছি এই বশ্বাদেশে এসে! সমুজের এপার পেকে কি ওপারে ছেলেমেয়ের বিয়ে ঠিক করা যায় ? চেষ্টার ত ক্রটি করছি না।

কত ছেলের নামের লিপ্ট আসছে, কিন্তু যাদের পছক্ষ হয়, তাদের কেউ চার পাঁচ হাজার নগদ, কেউ চার মোটর গাড়ী, হীরের গরনা, স্থন্দরী মেয়ে। কেউ বলে বিনয় ক'রে, নগদ টাকা চাই না, ডিস্পেজারী সাজিবে বসিয়ে দাও। আমার ত তব্ একটা মেয়ে, যার ঘরে পাঁচ ছরটি, তাদের কি ত্র্দশা! তাই আজকাল মেরের বাপেরা এখানেই যেমন-তেমন ছেলে ধ'রে বিয়ে দিয়ে দিছে।

হুনন্দা বলৈ—সে কি মন্দ কথা, বাবা ? এথানে বিয়ে দি:ত পার্লো কি করতে দেশে গাবে অত ধরচ ক'রে ?

বাবা বলেন—ইটা মা, ভাল পাত্র সকলের মেলে কই? এই ত দেদিন এক বন্ধু মেরের বিয়ে দিলেন, পাত্রেটির বয়সও বেশী, আর জলজ্যান্ত একটি বন্ধিণী, চার পাত্রি ছেলেমেয়ে নিয়ে ঘরসংসার করছিল।

স্থননা শিহরিয়া উঠিয়া বলিল—বাবা, কি বল্ছ? এমন জেনেও বিয়ে দিলেন?

ইন্বাবু বলিলেন—জেনে কি আর দিরেছেন ? ভদ্রলোক থাকেন সেই মিচিনার—মেরেটির উনিশ বছর বরেস হয়েছিল, লেখাপড়াও শেখে নি কিছু। চোদ বছর দেশে যান নি, অনেকগুলি ছেলেমেরে। মিয়ং সিয়াতে এক বন্ধুর কাছে এই পাত্রের ধবর পেয়ে বিয়ের ব্যবস্থা ক'রে ফেলেন। বিয়ের পর মেয়ে স্থামীর ঘর করতে গিয়ে দেখে স্তীন সংসার গুছিয়ে রেখেছেন।

গৃহিণী চটিয়া উঠিয়া বলেন, যত সব বাজে গল্প মেয়েকে শোনাছঃ! এম্নি মেয়ে ত বিলের নাম শুন্তে চায় না। এসব শুন্লে কি আর রক্ষে আছে ? ব স্নন্দা, ভোর কাজকর্মা কর গিয়ে।

প্নকা মায়ের কথায় মনোযোগ দিল না। বলিল—
আচ্চা, বাবা, এদেশে ত নানা দেশীয় লোকের বাস, বেশ
মেলামেশাও চলে। অ-বাঙালীর সঙ্গে মেয়ের বিয়ে
দিলেই পারে।

ইন্বার্বলিলেন—অ-বাঙালীর সঙ্গে কি আমাদের খাপ থায়, মা ? এক ভাবাভাষী না-হ'লে কি মনের মিল হয় ? বাক সে কথা।

আগামী সপ্তাহে আমাদের কোট ছুটি হবে, দিন-দংশক বন্ধ থাক্বে। চল, আমরা ম্যাণ্ডালে, মেমিও বেড়িয়ে আসি।

প্নন্দা বেড়াইতে বাইবার আনন্দে উঠিয়া পড়িল। পড়ির দিকে চাহিয়া বলিল—"পাঁচটা বাজে, মিঃ সিং আজ খেলতে এল না যে? দেয়ালে ঝোলানো রাকেটটি নামাইরা লইয়া বলিল—এস না বাবা, তুমি আর আমি তত ক্ষণ সিংগলস্ থেলি।

ইন্বাবৃ মেয়ের আবদারে পড়িয়া টেনিস থেলিতে আরস্ত করিয়াছেন। গৃহিণী সর্বারও অনেক উন্নতি হইয়াছে। টেনিস কোর্টে বসিয়া থেলা দেখেন, থেলার পর ঘোলের সরবৎ, রসগোল্লা, পীপর-ভাঙ্কা প্রভৃতি পরিবেশন করিয়া সকলকে আপ্যায়িত করেন। বছকাল বর্মাদেশের মকস্বলে থাকিয়া বর্মা ভাষা বলিতে শিণিয়াছেন, আলাপ জ্লাইতেও পারেন তাই।

মাণ্ডালের প্রাসিদ্ধ উকীল গ্রীরমানাথ দাস মহাশয়ের বাড়িতে ইন্দ্বাব সপরিবারে অতিণি হইরাছেন। দাসবাব্র ছোট ভাই স্ধীক্র এম-এ পাস করিরা কলিকাতা হইতে সম্প্রতি আসিরাছেন। ইন্দ্বাবু ছেলেটির সঙ্গে কথাবার্তা বলিয়া বেশ খুনা হইলেন। দাসবাবু বলিলেন— মুবীক্ত আপনাদের সক্ষে নিয়ে মেমিওর গোটিক ব্রিজ দেখিরে আন্বে। আজ বিকেলে এখানকার প্যালেসটা দেখে আগ্রন। আপনার মেয়েটি ত বেশ ধুন্দর গান করে, মেয়েটিকে ত সব রকমেই আকম্প্রিশ্ছ করেছেন।

ইন্দ্বাব্ মেয়ের প্রশংসায় বিশেষ গৌরবাখিত মনে করিতেছিলেন, একটু বিনয়সহকারে বলিলেন—এই ত শিক্ষার নয়েদ, বেনা আর কি শিথেছে। শিক্ষার আরম্ভ হয়েছে বলতে পারেন ?

আপনার ভাইটিকে দেবেও আমি বড় সুখী হয়েছি। বেশ বুদ্নিমান, বিনয়ী ছেলেটি, কি করবেন এখন ?

দাসবাব্ বলিলেন—বিলেত পাঠাবার ইচ্ছা আ'েও। বিলিতি ছাপ একটা না-মেরে আসলে কোগাও ভাল চাকরি হয় না।

বিকালে স্থীক্ত ইন্বাব্দের লইয়। মাডোলে শংরের গা-কিছু দর্শনীয় আছে, সব দেগাইয়া আনিল। মেমিও বেড়াইয়া আসিয়া স্নন্দা বলিল—এই আগনাদের মেমিও! এত বার প্রশংসা শুনতাম ওব চেয়ে শিলং দার্ভিলিভ অনেক সুন্দর।

স্থীন্দ্র বলিল—এইটেই বন্দার দার্জিলিঙ। হিমালয় পর্বতের সৌন্দর্য্য এখানে কোথায় পাবেন ?

হন্বাণ্র ছুটি ক্রাইয়া গেল, তাঁহারা ফিরিয়া আসি লন, স্থীলও তাহাদের সহিত রেম্বন পর্যান্ত আসিল।

প্রীক্র কলিকাতায় অনেক মেয়ে দেখিয়াছে, ভাহাদের কলেজেই ত কত মেয়ে পড়িত কিন্তু তাহাদের সহিত আলাপ-পরিচয়ের প্রযোগ হর নাই। প্রনশাকে দেখিয়া এবং একত্রে বেড়াইবার স্থযোগ পাইয়া সে অত্যন্ত খুশী হইয়াছিল। প্রনশারও প্রীক্রকে বেশ পছন্দ হইল।

গৃহে ফিরিয়া কর্তা গৃহিণী নিভ্তে যেন কি আলাপ করেন, হুনন্দা আসিলেই চুপ করিয়া যান। হুনন্দা বুদ্ধিমতী মেয়ে, সে ঠিকই অনুমান করিল। গৃহিণী হুনন্দাকে কাটালগ দেখাইয়া গহনার অর্ডার দেন, শাড়ী, ব্লাউস করান।

প্রতিবেশিনী মা-চির ফুন্মর পছন্দ, তাহাকে ডাকাইরা

গৃহিণী সুনন্দার জন্ত মুর্শিদাবাদ-সিন্ধের থানের উপর পাড় আঁকাইরা শাড়ী করাইবার ফরমাস দিলেন। মা-চি গরিবের মেরে, লুঙ্গীতে এমব্রয়ডারী করিয়া দোকানে বিক্রয় করিয়া অর্থোপার্জন করে। লেখাপড়া কিছুই জানে না, তব্ কারও গলগ্রহ হয় নাই। বিধবা মা এবং ত্ই ভাইবের সব পরচ চালায়।

মা-চি এক দিন সরলাকে বলিল—মা, তুমি কেন মিঃ
সিংয়ের সঙ্গে নেয়ের বিয়ে দাও না ? সে তোমার মেয়েকে বড়
ভালবাসে। বিলেত-ফেরৎ সাহেব, পাঁচ-শ টাকা মাইনে পায়,
সরকারী ঘর, চাকর-বাকর সব পায়, কত সন্ধানও তার।
তোমাদের একটিই স্তান, কাছেও রাখতে পারতে।

সরলা বলিলেন – ওমা, ও যে পাঞ্জাবী, ভিন্ন জাতে আমরা মেয়ে বিয়ে দিই না।

মা-চি বলিল—তবে ঐ ডাঃ চ্যাটাজ্জীকে দাও না। সেও ত ভাল চাকরি করে। সে তোমাদের জাতের ছেলে, না?

সরলা হাসিয়া বলিলেন—না না, ও বাঙালী বটে কিন্তু ব্রাগ্রণ যে, অন্ত ভাতের। তুমি ওসব ব্রবে না। ওদের স.ক্ষ আমাদের বিরে চলে না, নইলে অমন সোনার টাদ ভেলে দ্বামাই পেলে আমি থুবই থুণী হতুম।

মা-চি বলিল—বাপ রে বাপ! তোমাদের এতও বাচ-বিচার আছে! ভাল ছেলে, ভাল রোজগার করে, পছলও হয়, তবু বিয়ে দেবে না। এত জাত, জাত কর কেন? ফায়ার কাছে সবাই সমান। বলিয়া দেয়ালের ক্লুকীস্থিত বৃদ্ধমূর্ত্তির দিকে উদ্দেশ করিয়া যুক্তকরে নমস্কার করিল।

একদিন ইন্বাব্ আপিস হইতে আসিয়া স্থনন্দাকে ডাকিয়া কাছে বসাইয়া বলিলেন—"মা, স্থীন্দ্র ছেলেটি বেশ ভাল, নয়? ওর দাদা ভোমাকে থুব পছন্দ করেছেন, আমাদেরও ছেলেটি পছন্দ হয়েছে। তুমি এ-বিয়েতে আপত্তি করবে না ত? আমরা কিন্তু হই ফাল্কন বিয়ের দিন ছির করেছি, এই দ্যাথ টেলিগ্রাম এসেছে। আর পনের দিন মাত্র সময় আছে। রেল্নে গিয়ে বিয়ে দিতে হবে, ছেলের পক্ষ এখানে আস্তে রান্ধী নন। বিয়ের পরে একবার ভোমাকে ম্যাঙালে গিয়ে দিনকতক থাকতে হবে।

তার পর ছেলে বিলেত যাবে, তখন ভূমি আমাদের কাছে চলে আসবে। এব্যবস্থায় তুমি খুশী নিশ্চয়।

স্থনন্দা অনেক ক্ষণ মাথা নীচু করিয়া র**হিল, কোন** উত্তর দিল না।

পিতা বলিলেন—বেশ, ভোমার সম্মতি আছে ধ্**রলাম।** স্থনন্দা বলিল—বাবা তুমি কি এ-সম্বন্ধে একেবারে কথা-বার্ত্তা ঠিক ক'রে ফেলেছ ?

हेन्दूरातू राजित-इंग मा, मरह क्रिक।

স্থনন্দা নীরবে উঠিয়া গেল। নিজের ঘরে একা বসিয়া খনেক ভাবিল। স্থীক্রকে যতটুকু দেখিলাছে, মাসুষটাকে তাহার ভালই লাগিয়াছে। কিন্তু হুই-এক দিনের দেখার কি হয়? একেবারে অপরিচিত একটি বুবকের সঙ্গে আজীবনের অচ্ছেম্ব বন্ধনে বাধা পড়িতে যাইতেছে, অথচ তাহাকে চিনিবার স্থযোগও সে পাই**ল না**। বিয়ের পরই আবার বিশাত বাইবে, তুই বৎসর পরে যথন ফিরিবে তথন হয়ত আরও কত পরিবর্ত্তন হইবে। এক-এক বার ভাবিল পিতাকে গিয়া বলে, এ বিবাহ সে করিবে না, অন্ততঃ এখনই না। বরং এত দিন বাহাদের সঙ্গে বন্ধুভাবে মিশিয়াছে, তাহাদের কাহাকেও বিবাহ করা তাহার পক্ষে সহজ। কিন্তু সে ত হইবেনা। মা, বাবা বলেন, স্ববর্ণে ছাড়া বিয়ে হইতে পারে না। আচ্ছা, মি: সিং এই সংবাদ পাইয়া খুশী হইবেন কি? কথনও নয়। আর ডা: চ্যাটাজ্জী ? আ:, কেন যে এসৰ কল্পিত বাধা আমাদের সমান্দের ?

সুধীক্র থেন কেমন একটু ভীক্রংগাছের। সব সময় বলেন, "দাদা য়া ঠিক্ করবেন।"

মোটরের হন' কানে আসিতেই স্নন্দা চম্কাইরা উঠিল, এখনও সে পোযাক করে নাই। আব্দু যেন তাহার খেলার উৎসাহ নাই। মা আসিরা বলিলেন, "কি রে স্ক্র্যু, চুল বাধিস্ নি এখনও? শুনেছিস্ সব? বর পছন্দ হয়েছে? সুখীক্র ছেলে ভাল, তবে বিলেত পাঠাবার খরচটি বড় কম পড়বে না। অর্জেক খরচ দেব বলেছি, ভাতেও খেন দাদাটি সম্ভষ্ট নয়। পারলে স্বটুকু আদার করতেন। আমাদেরও ত খরচ কম নর, ভাগ্নে-ভাগীশুলি যে ঘাড়ে পড়েছে, নইলে কি আর টাকার ভাবনা? স্নন্দা গন্তীর হইরা বলিল, "মা, আমি কি তে:মাকে বলি নি পণ দিয়ে আমি কোন ছেলেকে বিয়ে করব না? তোমরা এ-বিরের আয়োজন ক'রো না।"

মা বলিলেন, "পাগলামী করিস্না। পণ কেন? তোর বাপ যদি দিতে পারেন, দেবেন না কেন?

স্থনন্দা বলিল—ইচ্ছা ক'রে কি তোমরা এত টাকা
দ্বিচ্ছ? আর তোমরা হয়ত দিতে পার, যার ঘরে পাঁচটি মেয়ে,
সে কি ক'রে প্রত্যেক মেয়ের জন্তে এত টাকা দেবে?
না-দিতে পারলে সে ভাল পাত্র পাবে না? তুমি কি
বল্তে চাও বরপক্ষ টাকা দাবি করেন নি ?

মা বলিলেন—তোমার অত গোঁজের দরকার কি? বিয়ের কনে, চুপ ক'রে থাক্বে। অত বাড় ভাল নয়।

স্নন্দা রাগ করিয়া সেদিন ঘরে দরজা বন্ধ করিয়া রহিল, থেলিতে গেল না। ইন্দুবাব্ বার-বার ডাকিয়াও মেরেকে ঘর হই:ত বাহির করিতে পারিলেন না। অসুথ হইয়াছে, অজুহাত দিয়া বন্ধ্বান্ধবের হাত হইতে নিম্বৃতি পাইলেন।

পরদিন ইন্বাবু সুনন্দাকে অনেক বুঝাইলেন। সুনন্দা শাস্ত ধীর ভাবে উত্তর করিল, "তোমরা যা ভাল বোঝ ভাই কর, আমি আর আপত্তি করব না।"

ইন্বাবু মেয়ের সুমতি হইরাছে ব্রিরা নিশ্চিস্ত হইলেন।

(9)

রেঙ্গুনের বন্ধুবান্ধবের পরামর্শে "শনা নিয়োগা হলে" গুই দিনের জন্ত পঞ্চাশ টাকা ভাড়া দিয়া বিবাহের স্থান ঠিক্ হইয়াছে। ইন্দ্বাবু মফদ্বলের বাসিন্দা, কাজেই রেঙ্গুন শহরে পরিচিত বন্ধুবান্ধব খুব কমই ছিল। কিন্তু বরপক্ষীয়েরাই চার শত বর্ষান্তীর অভ্যর্থনার আয়োজন করিতে আদেশ করিয়াছেন।

স্নন্দার স্থলের সহপাঠিনী হুই তিনটি বিবাহিত মেরে নিমন্তিত হইরা আসিরাছিল। তাহাদের সহিত বছকাল পরে স্নন্দার সাক্ষাৎ হওগার সে খুব আনন্দিত হইল। তাহারা স্নন্দাকে সাজাইতে মহা ব্যস্ত। স্থনীতা বলিল, "হা, রে তুই না বল্তিস, বে-ছেলে প্ল চাই:ব, তাকে কথনও বিরে

করবি না, এখন যে রাজী হলি? ছেলেটিকে পুব পছৰ বুঝি?"

স্থনন্দা বলিল-কে বলেছে পণ নেবে?

ফুনীতা বলিল—উনি ত বল্ছিলেন, সুধীক্ত বাবু নাকি বিলেত যাবার টাকা না-পেলে বিরেই করবেন না, বলেছিলেন। তোর বাবা নগদ হু-হাজার টাকা, গয়না, বিরের দিন দেবেন আর ছু-বছর মাসে মাসে তিন-শ টাকা ক'রে বিলেতের পড়ার ধরচ পাঠাবেন, এই কড়ারে নাকি ছেলে রাজী হয়েছে। কি জানি ভাই, সত্যি কি মি:থা!

নীরজা বলিল—এ আর আক্র্যা কি? আজকাল পাস-করা শিক্ষিত ছেলেদেরই ত হাঁকটা বেলী। মনে করেন, পাস ক'রে যেন সকলের মাথা কিনে নিয়েছেন। আমরা বেন মুখা মেয়ে, আমাদের জ্বস্তে টাকার দাবি তর্ মানায়, তোদের মতন পাস-করা মেয়ের জস্তেও টাকা চাইতে লজ্জা করে না ওদের ?

স্নন্দার মুথ লজ্জার, অপমানে রাঙা হইয়া উঠিল। তাহার মনে হইতে লাগিল, সে কি নির্ব্ধ, দ্বিতা করিয়াছে, কেন সে পিতার নিকটে সম্মতি দিল? বাবা বলিলেন, সব ঠিক হইয়াছে, তারিখ পর্যাস্ত। মায়ের কাচে কিছু বলিতে যাওয়া অসম্ভব। কেন সে পিতাকে নিদ্ধের অসম্মতি জোর করিয়া বলিতে পারিল না? সুধীক্রকে তাহার ভাল লাগিয়াছিল সতা, কিন্তু সে ত সুনন্দাকে ভালবাসিয়া বা পছন্দ করিয়া বিবাহ করিচেছে না। সে বিশাত ধাইবার টাকা চায়। ধদি স্থনন্দার বাবা অর্থ **बिए** मर्भ ना-श्रेराजन जात कि एम स्थनकारक विवाह করিত? অর্থের মূল্যে আজ সে নিজেকে বিক্রয় করিতেছে? কোথায় গেল তাহার আদর্শ, কোথায় গেল তাহার শিক্ষা? যতই সে চিস্তা করিতে লাগিল, ভডই তাহার হ:খে, অপমানে, ক্রোধে দেহ মন উত্তপ্ত হইয়া উঠিল। সাজ-সজ্জা ছি"ড়িয়া ফেলিতে ইচ্ছা হইল। কেবল মনে হইতে লাগিল, এখনও কি কোন উপায় নাই ?

বন্ধা তাহার মুখের ভাব দেখিরা ব্রিভে পারিল ভাহার মনে কোন সংগ্রাম চলিতেছে। অরুণা বলিল— কেন ভাই, ভোরা ওসব কথা এখন তুললি? দ্যাধ ত ওর মনটা কি রকম বিমর্ধ হয়ে গেল? মেয়েদের কভ রকম আশা, আকাজ্ঞা, মতামত গ'ড়ে ওঠে, কিছু দে-সব কি আর পূর্ণ হয় কোনদিন ? ছেলেবরদে মান্ত্র কত স্থপ্ন দেখে, কত আদর্শের পূজা করে, বাস্তব-জগতে বথন জেগে ওঠে, তথন সে-সব কোথায় মিলিরে বায়, তেঙে-চূরে বায়! মেরেমান্থ্রের নিজস্ব ব'লে কি কিছু বজায় থাকে ? কিছু না—কিছু না। স্থননা, তুই ভাই বিয়ের কনে, ও-রকম গোম্ডা-মুখ ক'রে থাক্লে চলবে না। ও কি, চোখে জল কেন? চন্দনের ফোঁটা মুছে বাবে বে? ঐ বুঝি বর এল—শাক বাজছে, চল্ স্বাই বারাণ্ডায় গিয়ে দেখে আদি। স্থননা কাঁদিস্ না কিন্তু। আর হাসি ফুটতে দেরি হবে না, বরের মুখ দেখলে।

অন্ধরের শান-বাধানো উঠানে বরকে দাঁড় করান হুইয়াছে। চারি দিকে মেয়ের ভিড়, স্ত্রী-আচারের জ্ঞ এয়েস্ত্রীরা ডালা-কুলো-হাতে দাঁড়াইয়া আছেন। এমন সময় এক জন মহিলা চীৎকার করিয়া উঠিলেন, "ওমা কনে কেন এখানে? যাও যাও ভূমি ঘরের ভিতর, একি সব বেহায়া কাও!"

স্থনন্দা সকলকে ঠেলিয়া সোজা বরের নিকটে আসিয়া বলিল, "মিঃ দাস, একবার এই দিকের ঘরে আসবেন? বিশেষ কথা আছে।"

শুখীক্র হতবৃদ্ধি হইয়া চারি দিকে চাহিয়া বলিল-এখন কি কথা? আপনি ঘরে নান, পরে হবে।

স্থনন্দা কঠিন স্বরে বলিল, 'পেরে নয়, এখনই প্রয়োজন, আপনি না-গেলে আমি এধানেই বলছি শুনুন—
সাপনি আমার বাবার কাছে একটি পয়সাও দাবি
না-ক'রে আমাকে গ্রহণ করতে প্রস্তুত কি না, আমি এখনই জানতে চাই।"

ষ্ণীক্র বলিল—ওসব বিষয়ে আমার কোন সাধীন মতামত নেই, সব আমার দাদা জানেন। আপনি কি পাগলামী করছেন, সকলে কি ভাব ছেন বলুন ত!

হনন্দা বলিন, "আমি আবার বল্ছি—আপনি বনিবিনা-পণে আমাকে আপনার জীবনের সহধাত্তিনী ক'রে নিতে সন্মত থাকেন, তবেই আমাদের বিয়ে সম্ভব, নইলে আমি এ-বিয়েতে প্রস্তুত নই।"

স্থীক্র বিশ্ব—আমার দাদার অস্মতি ব্যতীত আমি কোন কান্ধ করতে পারি না, আপনি আমার ক্ষমা করন।

"তবে আমায়ও ক্ষমা করবেন আপনার।" বিনিয়া স্থানন্দা সবেগে বিবাহ-সভার মধ্য দিয়া ছুটিয়া রাস্তায় বাহির হইয়া গেল।

স্থীক্র মাথার হাত দিয়া উঠানে বসিঃ। পড়িল। বর্ষীরসী মহিলাগণ "আহা আহা! প্রক্রমাস্থ্রের একি অপমান গো! অন্ত ছেলে হ'লে লাথি মেরে মেরেটাকে দ্র ক'রে দিয়ে চলে বেত" ইত্যাদি সান্তনা-বাক্য বলিয়া স্থীক্রের পিঠে হাত বুলাইতে লাগিলেন। যুবতী মেরের দল মুথে কাপড় দিয়া হাসিতে লাগিল, বলিল—"বাবা মেরের কি তেজ!" স্থনন্দার মা ভাঁড়ার-ঘরে ব্যস্ত ছিলেন, থবর পাইয়া উঠানে আছড়াইয়া পড়িয়া আর্জনাদ করিতে লাগিলেন।

সভার তত ক্ষণে সকল সংবাদ পৌছিয়াছে। ইন্দ্বাব্ এবং তাঁহার বন্ধুবান্ধৰ ক্ষিপ্ত বরণাত্রীদের শান্ত করিতে বান্ত ! রমানাণ বাব্ স্পীক্রের হাত ধরিয়া টানিতে টানিতে গাড়ীতে উঠাইয়া বসাইলেন। বাইবার সমন্ন ইন্দ্বাব্কে অভদ্র ভাগায় কিছু শুনাইয়া বাইতে ক্রটি করিলেন না।

স্নন্দার দিকে কাহারও দৃষ্টি পড়ে নাই। সে বিবাহআসরে প্রবেশ করিয়াই পিতাকে খুঁজিয়া না-পাইয়া
পাগলের মত রাস্তায় বাহির হইয়া গিয়াছে! দিয়িদিক
জ্ঞানশূল হইয়া ভিড়ের মধ্য দিয়া সে কোথায় চলিয়াছে,
ত'হা সে নিজেই জানে না। পিছন হইতে কে যেন
বলিল—"কোথায় যাচেছন মিস্দে, বলুন কোথায় যাবেন,
আমি পৌছে দেব!"

স্নকা ফিরিয়া বলিল—সুবিমল বাবু! আপনি আমায় রক্ষা করুন, আমার আর কোথাও স্থান নেই; কোথায় যাব বলুন। আমি যা করেছি, এর পর আমার বাবা, মা, আত্মীরস্থজন, সমাজ, কেউ আমাকে ক্ষমা করবেন না, জানি।

সুবিমল সমুথে একথানি • গাড়ী দেখিয়া ভাকিয়া সুনন্দাকৈ হাত ধরিয়া গাড়ীতে:বসাইল। তারপর বলিল, "আপনি এখন এত উত্তেজিত,: এখন কোন কণা বলা চলে না। কান্দটা উত্তেজনার বশে ক'রে কেলেছেন এখনই, ৰবি ধাৰা সাম্লান সোজা ব্যাপার নয়। আপনার মা, আপনার ঋণ শুধতে পারব না। সুবিমল হাত বাড়াইয়া বাবা, আপনাকে না-পেয়ে আরও ব্যস্ত হবেন, চলুন ঘাই अवात ।

স্থনন্দা বৰিল, "না, না, ওখানে কিছুতেই নয়। আমি এ-বিমে কিছুতেই করব না। আমাকে আমার মামার বাসায় পৌছে দিন, আমি একটু বিশ্রাম চাই।"

স্থ্যিশ স্থননাকৈ তাহাদের গৃহে শইয়া গিয়া একথানা সোফার বসাইল এবং পাথাটা খুলিয়া দিল। সুনন্দা কিছু ক্ষণ মাণাটা তাকিয়ার উপর রাখিয়া চোথ বুজিয়া রহিল।

স্থবিমল বলিল-আপনি কি অসুস্থ বোধ করছেন ?

एनना विनन-विभाग नाम, माथांना त्कमन विम्यिय করছে, আপনি ধাব'র সময় আমার আয়াটাকে ভিতর (अरक अकट्टे एए कि भिरंग गार्यन ?

ত্বিমল বলিল-আমি যাবার জন্ত বিশেষ ব্যস্ত নই, তবে ওঁরা আপনার জন্ম উদ্বিগ্ন হবেন, তাই ভাবছি খবরটা দিয়ে আসি।

স্নন্দা বলিল-অাপনি কি আমাকে গুণা করছেন এরকম কেলেঙ্কারী কর্লাম ব'লে ?

সুবিমল বলিল—রণা! মোটেই না, আপনার মনের বলকে আমি শ্রদ্ধা না-ক'রে পার্ছি না। স্থামি মনে করি It is never too late to mend. ভূল বুঝতে পারা মাত্রই শোধরাণোর চেষ্টা করা উচিত। মনের বিশ্বদ্ধতা নিয়ে কোন কাঞ্চই করতে নেই, আর এত সারাজীবনভরা সমস্তা! তবে আমি আশা করেছিলাম আপনার মত শিক্ষিত মেয়েরা আরও একটু সাহসী এবং বিবেচনাশীল হবেন। নিজের মতামত, নিজে ষা বিচার দারা সভা ব'লে বুঝাবন, তা প্রকাশ করা এবং নিজ মতে দুঢ় থাকার নৈতিক সাহস চাই। অল্প কয়েক দিন আগে আপনি যদি এ-বিষয়ে দৃঢ়তার সহিত অসম্রতি জানাতেন, তবে আঞ্জকের এই অতি অশোভন ব্যাপারটি ঘট্ত না। বাক-আমি আবার নীতি উপদেশ দিয়ে ফেল্ছি, ক্ষমা করবেন। আপনি বিশ্রাম করুন, উঠবেন না একেবারে, এই প্রতিশ্রতিটুকু দাবি করতে পারি কি ?

স্নন্দা কৃতজ্ঞতা-ভরা কঙ্কণ কোমল দৃষ্টিতে স্থবিমলের मिटक ठाहिशा विनिन-निन्ध्यहै। आंश्रनि आमात्र श्रद्ध,

দিতেই ফুনন্দা আগ্রহে হাতথানি ধরিয়া বলিল-আপনি আজ আমায় যা দিয়েছেন—কি বলব ? এমন বন্ধুর সহায়তা পেলে জীবনে ভূল হয় না বোধ হয়।

সুবিমল সুনন্দার কোমল স্পর্শে রোমাঞ্চিত হংয়া উঠিল-হাতথানি একটু চাপিয়া বলিল-নেবে কি ভোমার জীবনসন্ধী ক'রে? আমি ত এক বৎসর আগে ভোমার যেদিন প্রথমে দেখেছি, সেদিন থেকেই তে:মায় ভাল-বেসেছি। স্থানলা, আজ এই সাজেই আমাদের মালা বদল হয়ে যাক্ না।

স্নন্দা মালাটি খুলিয়া হাতে লইয়া বলিল-মা-বাবার আশীর্কাদ চাও তবে।

আয়া এক পেয়ালা গরম কানি হাতে ঘরে প্রধেশ করিয়া সুবিমলকে ও সুনন্দাকে ঐ ভাবে দেখিয়া বিশ্বিত হুইল। টেবিলের উপরে পেয়ালাট বাথিয়া ধীরে ধীরে বাহির হইয়া গেল। এমন সময় দরজায় গাড়ী থামিল। ইন্সুবাবুর গলার আওয়াক ভনিয়া স্থবিমল নীচে নামিয়া গেল। ইনুবাবু বলিলেন—এই যে স্বিমল, স্থুর নাকি বাড়ি এসেছে ?

সুবিমল বলিল্—আজ্ঞে হাা, ভাকে রাস্তায় একা ছুটতে দেখে আমি গাড়ী ক'রে বাড়ি এনেছি। এত ক্ষণে একটু সুস্থ হয়েছেন। সরলাকে হাত ধরিয়া নামাইয়া ইন্দুবাবু সিঁড়ি দিয়া উঠিতে উঠিতে বলিলেন, "বরপক্ষ ত তথুনি গালি-গালাজ ক'রে বর উঠিয়ে নিয়ে চলে গেলেন। বরের এক আগ্রীয় ব'লে গেলেন, "ডিফামেশন সুট আনুবে।" আমার ত লোক্সান গা হ'ল তা বল্বার নয়, মেয়েটিরও আর গতি হবে না! মুথ দেখাবে কি ক'রে সংসারে তাই ভাবছি।"

গৃহিণী কপাৰ চাপড়াইতে চাপড়াইতে বলিলেন, "আমার পোড়া অদেষ্ট, নইলে এমন মেয়ে পেটে ধরি? এখন রেকুন শহর ছেড়ে জঙ্গলে পালাতে ঐ পোড়ারমুখীকে কলকাতার পাঠিরে দাও, এম-এ পড়ুক গিয়ে, চাকরি ক'রেই ত আজীবন খেতে হবে !"

কর্তা গৃহিণী ঘরে আসিয়া বসিয়া একটু শাস্ত হইগে

পর সুবিমশ বশিশ—"এস স্থনন্দা, আমরা মা-বাবাকে প্রণাম ক'রে আশীর্কাদ ভি.ক্ষ করি।"

সুনন্দা সোকা ছাড়িয়া উঠিয়া আসিয়া সুবিমলের পাশে দাঁডাইল এবং তু-জনে একত্রে মা-বাবাকে প্রণাম করিল।

ইন্দ্বাব্ জিজ্ঞায় দৃষ্টিতে উভয়ের দিকে চাহিতেই প্রবিষণ বলিল—আমাদের ত্-জনের মিলিত জীবনে আপনার আশীর্ঝাদই সব চেয়ে বড়। মা, আপনিও অনুমতি দিন। সরলা বলিলেন—ও মা, তুমি যে বদার ছেলে, কি ক'বে আমাদের মেয়ে নেবে ? স্থবিদল বলিল—মা, ভগবান্কে দাক্ষী ক'রে আমরা ছ-জনে মিলিত হব, দমাজের নিয়ম না-ই বা মান্লাম!

ইন্দ্বাব বলিলেন—ভাহ'লে কাল একবার ম্যাজিট্রেটের আপিসে এ-সম্বন্ধে খোঁজ থবর করতে হবে। একটা আইনের আশ্রম ছাড়া দাঁড়াবে কোথায়, বল ?

গৃহিণী হাসিমুথে কন্তার কানে ফিস্-ফিস্ করিয়া বলিলেন—"আমি জান্তুম, গুবিমল গুরুকে ভালবাসে। আমারও ছেলেটিকে বেশ পছন্দ ছিল। তবে সমাজে আর গাক্তে পারলুম না!"

মিলের অভাব

শ্রীগো কুলেশ্বর ভট্টাচার্য্য

ক্রমকেরে ডাকি বলিলেন বাণ্
মিষ্টমূপে,—

"জীবন তো দর কাটাস্ নাকি রে
অপার স্থাব ?
ভোদের স্থাবর কথা যে কবিরা
করেন গান—"

ক্রমক বলিল,—"অনাহারে মোরা
ক্রিউপ্রাণ!"

প্রামবাসীদের ডাকিয়া বলিল
শহরবাসী,—
"তোমরাই ভোগ কর প্রকৃতির
রূপের রাশি;
প্রকৃতির রূপ শহরে মোদের
নাই বে, হায়—"
ভাহারা বলিল,—"ম্যালেরিয়া ভূগে
প্রাণ যে যায়!"

প্রাসাদ-মালিক ক্টীর-মালিকে বলিল ডাকি,— "কত প্রথ ভূমি পাও বল দেখি কুটী র থাকি ? কবিরা বলেন, কুটীরগুলিতে শাস্তি ভরা—" উত্তর এল,—"গল-ঝড়ে হেথা বাচিয়া মরা !"

কবির কাব্যে এমনি কত কি
স্মাচে দে লেপা,—
বাপ্তব সংথে সে কল্পনার
হয় না দেখা।
হতাশ হইয়া ভাবিতেছি ব'সে
আজিকে তাই,
বাস্ত:ব আর কবির কাব্যে
মিল বে নাই!

খাইবার-সীমাস্তে

শ্রীনন্দলাল চট্টোপাধ্যায়, এম-এ, পিএইচ-ডি

উত্তর-পশ্চিম সীমান্তে যে প্রাসিদ্ধ গিরিসঙ্কট ভারতের ইতিহাসে অমর হয়ে আছে, সেই থাইবার স্বচক্ষে দেখবার আকাজ্ঞা বহুদিন হতেই ছিল; এবার পূজার ছুটিতে বখন লক্ষ্ণো-বিশ্ববিদ্যালয়ের এম-এ ক্লাদের ছাত্রদের উত্তর-ভারতের মুঘল স্থাপতা দেখাবার জন্ত রওনা হলাম, তথন স্থির ক'রে ফেললাম যে খাইবার অবধি পাড়ি দিতে হবে—ভাগ্যে বাই ঘটুক। ছাত্রেরা আনন্দে দিলে, মনে হ'ল তাদের কাছে পাইবার ভাজের চাইতেও বেশী লোভজনক। আমাদের সহিত বিশ্ববিদ্যালয়ের আর তিন জন অধ্যাপক ছিলেন, শ্রীসুকুমার বল্লোপাধার, ত্রীলৈলেন দাশগুপ ও মিন্তার এফ্-টি-রয়, তাঁরাও আমার মতই সীমান্ত-প্রদেশ দেশবার জ্ঞ্জ দিল্লী, শাহোর প্রভৃতি সমুৎসুক। অতএব আগ্রা, পর্ই **সদলবলে** পে**লো**য়ার অভিমু**থে** বা**তা** দেখার করা গেল।

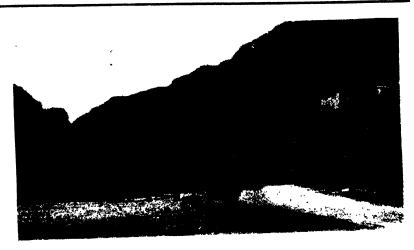
নৈশ অন্ধকার ভেদ ক'রে ট্রেন গখন দীর্ঘ প্রতীক্ষার পর পেশোয়ার ক্যাণ্টন্মেণ্ট্ ষ্টেশনের আলোক্ষেত্রল প্লাটফর্মে এসে দাঁড়াল, আমরা সভাই সচ্কিত হয়ে উঠেছিলাম। থাইব'রের তলদেশে অবংশ্যে এসে পৌছেছি এই উল্লাসে ও তৃপ্তিতে তথন আমরা মশগুল। নমণের ক্লান্তি, অবসাদ ও বিরক্তি নেন এক নিমেয়ে অন্তর্হিত হ'ল। পে**লোয়ার-প্রবা**দী অ'মাদের একটি মুদলমান ছাত্র বাসোপযোগী একটি বাড়ি আমাদের জন্ত কালীবাড়ি অঞ্চলে আগে থেকেই স্থির ক'রে রেখেছিল--সেইখানেই আন্তানা নিলাম। ছাত্রটির পিতা মিষ্টার আহমাদ-রার খাঁ স্থানীয় মিলিটারী-বিভাগে চাকরি করেন। তিনি অতি সদাশয় ও ভদ্র বাব্জি। তাঁর অতিথি-সংকারের আয়োজনে আমরা ধেমন বিশ্বিত তেমনই প্রীত ও মুগ্ধ হরেছিলাম। পেশোরারে বে-ক'টা দিন আমরা ছিলাম তিনি সর্বাদা আমাদের স্থামছন্যের প্রতি তীক্ষ দৃষ্টি

রেখেছিলেন ও শ্বরং আমাদের সেবার তৎপর থাকতেন।
মূসলমান আতিথেয়তা, সভ্যতা ও রীতিনীতির একটি
খাঁটি প্রভীক শ্বরূপ তাঁকে আমাদের চিরদিন মনে
থাকবে।

পরদিন দকালে একটি ভাড়াটে মোটর-বাদ্ রিজার্ভ করা হ'ল তাতেই আমরা প্রাতরাশ সেরে থাইবারের পথে বেরিয়ে পড়লাম। ক্যাণ্টনুমেণ্টের পাশ দিয়ে বাস চলল, প্রশস্ত পিচঢ়ালা রাস্তা। দুরে শৈলপ্রেণী মাথা উ"চু ক'রে দাঁড়িয়ে রয়েছে ভারতের তোরণদ্বারের রক্ষীর মত। ত্ব-ধারে বিস্থৃত উপত্যকাভূমি—ধার বুকের ওপর দিয়ে মতীত সুগ হ'তে কত অসংখ্যবার শত্রু ভারত আক্রমণ করেছে। **অল্পক্ষণ** পরেই আমরা কাঁটাতারের বেড়া পার হলাম। এথানে বলা আবশ্রক, পেশোরার ক্যাণ্টন্মেণ্টের চারি দিকে সম্প্রতি কাঁটাভারের বেড়া দেওয়া হয়েছে সীমান্তবাসীদের অতর্কিত আক্রমণ প্রতিরোধ করবার উদ্দেশ্যে, প্রয়োজন হ'লে তা তড়িংযুক্ত করা বায়। মাঝে মাঝে যে প্রবেশ-পথ বা ফটকগুলি আছে তা রাত্রে নিয়মিত ভাবে বন্ধ করা হয়। রাত্রে তার যাওয়া নিরাপদ নয়, সীমান্ত-প্রদেশের এমনি ব'হিরে আপৎসঙ্কুল অবস্থা।

পথে ইস্লামিরা কলেজ দেখা গেল। এ-প্রদেশের শ্রের্ন শিক্ষা-প্রতিষ্ঠান এইটি। মনোরম ও বৃহদায়তন উদ্যানের মাঝে প্রকাণ্ড অট্টালিকাটি সমস্ত উপত্যকার মাঝে একটি দর্শনীয় জিনিষ। পাশ্চাত্য শিক্ষা ও সংস্কৃতির এই কেন্দ্র হয়ত দূর ভবিষ্যতে এই দেশে উচ্চশিক্ষা বিস্তারের সহিত জীবনের ধারা পরিবর্জিত ক'রে দেবে। তবে যুদ্ধবিলাসী হর্মের প্রিটান কবে যে বন্দুক ছেড়ে কেতাব পছক্ষ করবে তা বলা শক্ত।

পেশোরার থেকে দশ মাইল পরে বিধ্যাত জামরুণ-ছুর্গ। স্বনামধন্ত শিখ-সেনাধ্যক্ষ হরিসিং নালবা কর্ড্ক এই হুর্গ নির্দ্মিত হয়। রণঞ্জিৎ সেনানী হরিসিং সিংছের নালবার নামে **সীমান্তবাসী** ভয়ে কম্পমান হ'ত, এখনও এ-দেশের পাঠান-জননী হরস্ত শিশুকে বুম-পাড়াবার সময় "হরিয়া"র নাম করে, এইরপ প্রবাদ আছে। জামরুদ থাইবার-গিরিপথের ে কে প্রারম্ভ : সেই জন্ত এখানকার তুর্গের প্রয়োজনীয়ত্ব সহজেই এইথানে পথের অনুমেয়। ফটক উপর একটি প্রকাণ্ড



খাইবার-গিরিপথের একটি দুর্গ



জামরুদ-ছুর্গ ও পথের ফটক

আছে—সন্ধার বন্ধ করা হয়, তার পর এ পথে বাওয়া-আসা
নিষিদ্ধ। জামকদে সরকারী কর্মচারী আমাদের যাত্রার
উদ্দেশ্য প্রভৃতি জিজ্ঞাসা ক'রে যাবার অনুমতি দিলে, ও
বিকাল সাড়ে পাঁচটার ভিতর যে আমাদের অবশ্য ফেরা
উচিত দে-বিষয়ে আমাদের সচেতন ক'রে দিলে।

জামকদ থেকে বাস্ ক্রমশঃ পাহাড়ের পথে ছুটে চলল, আঁকাবাকা তুর্গম গিরি-বর্ম শৈলশিধরের গা বেরে চলেছে। সে এক অভিনব দৃশু। চারি দিকে একটা রহস্তপূর্ণ নিস্তর্মতা, ওধু মাঝে মাঝে কাবুলগামী ত্-একটি বাস্ পথের সেই মৌনগান্তীয়া ক্ষণেকের তরে ভেঙে দিচ্ছিল। পথের পাশে কথনও বা দুরে দেখা যায় থাইবার রেশের লাইন মেখলার মত পাহাড়ের কটিভট বিরে রয়েছে। ক্রেক মাইল চড়াই ওঠার পর সাহগাই-তুর্গ দেখা গেল।

াটি আধুনিক ব্রিটিশ হুর্গ, ইহাতে বৃহৎ দেনানিবাস আছে।
কাছেই সাহগাই রেল-ইেশন, সেটিও একটি হুর্গবিশেষ
ও তার প্রাচীরগুলি সুরক্ষিত। এই স্থানটি সমুদ্রতীর
থেকে প্রায় এক হাজার কৃট উচু। এর পর ক্রেমশং পথ
এ কে-বেকে উপরে উঠেছে—স্থানে স্থানে শৈলশিগরের
ওপর ছোট ছোট দেনানিবাস। শোনা গেল,
সেগুলির মধ্যে কয়েকটি থাসাদার-সৈন্ত কর্ত্বক অধিকৃত ও
বাকীগুলিতে ব্রিটিশ কৌজ আছে। প্রত্যেক শিবিরে
বেতার, টেলিগ্রাফ, টেলিফোনের ব্যবস্থা আছে ও তিন
মাসের উপযোগী রসদ সর্বাদা ভর্ত্তি থাকে। এই ছোট
ছোট কাঁড়িগুলির দ্বারা থাইবার-গিরিপথ আগাগোড়া
রক্ষিত হচ্ছে, তা বলাই বাহলা।

সাহগাই ছাড়িরে আমরা বণিকদের একটি উট্রবাহিনী দেখলাম,—অসংখ্য উদ্র, বলন, গর্নত প্রভৃতি মাল-বোঝাই হয়ে চলেছে মহরগতিতে পেশোয়ার অভিমুখে। মধ্য-এশিয়ার বাণিজ্ঞা-কেন্দ্র থেকে দ্রবাসামগ্রী তারা এমনি করে প্রাচীন যুগ হ'তে ভারতে বহন ক'রে আসংছ। শুনলাম সীমান্ত-প্রদেশে প্রবেশ করবার পূর্বে নির্দারিত হানে সরকারী নিয়মান্ত্রসারে বণিকদলকে নিজেদের অস্ত্র-শস্ত্র বন্দুক প্রভৃতি ক্ষমা রাধতে হয়, তার পর তাদের জামুকদ অতিক্রম করতে দেওয়া হয়। প্রত্যাবর্ত্তনের দমর তারা সেগুলি ফেরত পায়। এখানে বলা অপ্রাস্কিক



খাইবার-সিরিসফট

হবে না নে, পেশোয়ারের আর্থিক সমৃদ্ধি অনেকটা নি ইর করে মধা-এশিয়ার সহিত এই বহির্নাণিজ্যের ওপর। পারস্থা, আফগানিস্থান প্রভৃতি থেকে কার্পেটি, মেওয়া, ফল, প্রভৃতি অনুদানি হয় ও পেশোয়ার পেকে তা সমগ্র ভারতে প্রেরিত হয়। এই বৈদেশিক বণিকেরা আবার পেশোয়ার পেকে ভারতের দ্রাস্থার আহরণ ক'রে নিয়ে য়য়। য়াতে এই বাণিজ্য গুরস্ত সীমান্ত-বাসিগণ কর্ত্বক বাধাপ্রাপ্ত বা ন্তিত না-হয় সেজ্ল সরকারী ফৌজ ও থাসাদারদের স্বাদা স্তর্ক থাক্তে হয়।

নিবিড় গিরিশ্রেণী ছ-ধারে উন্নতশিরে আকাশ পানে চেয়ে আছে—পথ যেন সংকীর্ণ ও ভরাবহ মনে হয়। অদুরে রেলের লাইন সাংগাই-এর পর প্রজ্ঞাবহ মনে হয়। অদুরে রেলের লাইন সাংগাই-এর পর প্রজ্ঞাব ভিতর দিয়ে চলেছে। পাশে গভীর খাদ, তার তলায় দীর্ণ থাইবার-নদী দেখা যায়। মাধার ওপর ফৌজশিবির স্থানে স্থানে পথ রক্ষার জন্ত অবস্থিত। এচটু পরেই ইতিহাস-প্রসিদ্ধ আনিমাসজিদ-হর্ম ও গিরিসফট। এইখানে রেলপথ অনেকগুলি প্রভৃত্ম ভেদ ক'বে খাড়াই হয়ে লাজিকোটাল অভিমুখে গিরেছে। পথের সৌন্দর্যা অতি মনোরম। প্রাকৃতির এক ধানস্তিমিত বিরাট রূপের সন্ধান মেলে এখানে, তা সেমন প্রন্দর, তেমনই ভীতিজনক। পাহাড়ের গায়ে গাছের নামমাত্র নেই—শুরু নিম পাষাণশিলা ও কোথাও বা মাত্র কণ্টকগুলা দেখা যায়, তা সংস্থে সমন্ত দুশ্রে এমন

একটা অব্যক্ত গান্তীর্য্য আছে যা
সহজেই মনকে অভিভূত করে।
হঠাৎ চোথে পড়ে দুরে সুরক্ষিত
হর্গদদৃশ আফ্রিদিদের গ্রামসমূহ।
প্রত্যেক গ্রাম উচ্চ প্রাচীরে
ঘেরা, ও তার মাঝে একটি ক'রে
উঁচু বুরুজ দেখা গায়। অপর
গ্রামবাসীদের সহিত যথন বিবাদ
বাধে, তথন সেই বুরুজ থেকে
গ্রামস্থ লোকে পালা ক'রে
পাহারা দেয়।

আলিমাসজিদ পার হওয়ার পরেই থাইবার-গিরিসঙ্কট চোথের

প্রুপে ভেলে উঠে। ছ-পাশে প্উচ্চ গিরিপুঙ্গ গেন পরস্পরে কোলাকুলি করবার জন্ম অগ্রদর—মাঝ দি.ম সাপের মত সক্ষ লিকলিকে পথ পাহাড়ের তলা বে:য় দৃষ্টির অন্তরালে অন্তর্হিত হয়েছে। সেইটিট হচ্চে থাইবার-গিরিস্পটের অন্তত্ত্ত্ত হানে। তাঁধারের বেন লুকোচুরি খেলা চলে। শৈলশৃঙ্গে এখান একটি ছুর্গ রয়েছে। এই ছুর্গ থেকে শুধু গিরিপথই রশিত হয় না, দুরে তীরা, মোহমান্দ, প্রভৃতি প্র.দনেও নজর রাখা হয়। পথ এর পর খাইবার-গিরিব উচ্চতম প্রান্তে এদে পৌছায়, বেথানে লাণ্ডিকোটাল-হুর্ন 😸 সেনানিবাস অবস্থিত। লাণ্ডিকোটাল সমুদ্র থেকে প্রায় সাড়ে তিন হাজার তুট উ'চ। এখানকার তুর্গ ও শিবির সম্ভ থাইবার প্রাদেশ ও ভারতের প্রারশন্বারকে রক্ষা করছে। লাণ্ডিকেটাল-ছুর্গ বৈজ্ঞানিক পদ্ধতিতে নিশ্মিত--এর সুরক্ষিত প্রাচীরগুলি দেধবার মত জিনিয়। বহির্ভাগে বড় বড় গুদাম ও বাজার। গুদামগুলিতে গুনলাম দব দময়ে তিন মাদের উপস্কু পাদা ও অক্তান্ত মাল মজুত পাকে। যুদ্ধ বা বিদ্রোহ বাধলে, বা কোন কারণে খাইবার অবক্ষ হ'লে ফৌজের বহুদিন খাদ্যাভাব হয় না।

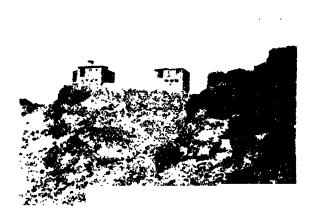
লাণ্ডিকোটালে দলের অনেকেই স্থানীয় পোষ্ট-অফিসে থাম পোষ্টকার্ড কিনে আগ্নীয়-বন্ধুবর্গকে চিঠি লিখলেন এথানে আসাটা স্মরণ রাথবার জন্ত। বাসের চার ধারে পাঠানরা থিরে দাঁড়াল, তাদের চক্ষে আমরা থেন এক অপ্রপ জীব। এইথানে কাবুল থেকে আগত অনেকগুলি मानवारी वाम् (नथा (शन, এकि (शक् आमता कार्नी থরমুক্ত বা সর্দা কিনলাম খুব সন্তায়। সর্দার স্থমিষ্ট আস্থাৰ বারা জানেন তাঁদের অধিক বলা নিপ্রয়োজন। লাভিকোটাল থেকে বাদ্চলল ভারতের সীমান্তের অভিমুখে। এথান থেকে পথের উৎরাই আরম্ভ হয়। ঈষৎ বক্রগতিতে গিরিপণ পাহাড়ের গা বেয়ে নীচের দিকে যেন গড়িয়ে চলেছে। শীঘুই লাণ্ডিখানা সেনানিবাস দেখা গেল-এটি লাভিথানা থেকে আরও মাপাতত পরিতাক হয়েছে। ক্রেশিখানেকের পর বাস্টোরপান্নামক পল্লীতে এসে দাড়াল-—এইটিই ব্রিটিশ ভারতের সীমানা। পথের উপর প্রকাণ্ড কটক —ভাব এক দিকে স্বস্থ বিটিশ থাসাদার-প্রহরী, অপর দিকে ছটি আফগান সৈনিক – মাথায় তাদের লোহার হেল্মেট্, যদিও পরনের পোঘাক দেখে শ্রন্ধা হ'ল না, তা এমনই শ্রীহীন ও দারিদ্রাব্যঞ্জ । কাব্ল-রাজ্যের দৈল ও



খাইবার-পথে ব্লেল

বিশুখালা বেন তাদের আকারে ও পরিচ্ছদে সম্পূর্ণ প্রতি-কলিত। থাক্কতিতেও তারা মোটেই বলিও বা দীঘ নয়।
ক্ষীণাক্কতি বাঙালীকে সামরিক সাজে বেরূপ দেখায় অনেকটা সেইমত তাদের বোধ হচ্ছিল।

আমাদের দলের কয়েক জন তাদের ফোটো তুলতে চাইলেন, কিন্তু তারা ইঙ্গিতে অসন্ধতি জানালে। বন্ধুবর শ্রীশৈলেন দাশগুপ্ত ও মিষ্টার এফ টি রয় কিন্তু কৌশলে তাদের ছবি তুলতে সক্ষম হয়েছিলেন। ব্রিটিশ খাসাদার-প্রহরী কিন্তু বেশ সপ্রতিভ ও অমায়িক লোক, আফগান সৈনিকদের মত অস্বাভাবিক রকম গভীর নয়। সে স্থিতিভ ভাবে আমাদের সহিত আলাপ করলে, ও আমাদের সহিত



শৈল্পিথরে ছোট ছোট সেনানিবাস

ছবি তোলাতে সাগ্রহে সক্ষত হ'ল। কটকের পাশে আমাদের একটি 'গ্রুপ' কোটো তোলা হ'ল। কটকের এক পাশে একটি ইস্তাহার দেখা গেল—দেটি বাংলায় অনুবাদ করলে এইরপ দাঁড়ায়।—

''ভারতের সামান্ত—

পাসপোর্টের নিয়ন না নেনে যাত্রীগণের এই নোটিশবোর্ড অতিক্রম করা নিষিদ্ধ।"

ফটকের দক্ষিণ দিকে একটি উটু টিলা আছে, সেখানে থানিক ক্ষণ বিশ্রাম ও সর্দাগুলির সদ্বাবহার করা গেল। দ্রে চোথে পড়ে জালালাবাদ ও কার্লগামী মোটর-বাস একটির পর একটি আসছে বা থাছে। কার্ল সরকারের পেটোলবাহী ব'স্ অনেকগুলি চোথে পড়ল, কারণ শুনলাম প্রতাহ পেশোয়ার থেকে পেটোল কার্লে পাঠানো হয়। টোরখান্ পাহাড়ের মাঝে উপভ্যকাবিশেষ। এইখানে এক পাশে ভারতবর্ষের সীমানা, অপর দিকে কার্ল-রাজ্যের আরস্ত্র। স্থানমাহাত্মা এমনই যে মনের ভিতর একটা অপূর্ব্ব বিশ্বয় ও আনন্দের ভিড় লেগেছিল। নিজের দেশকে এমন ভাবে এর পূর্ব্বে কখনও অন্তব করি নি—বিমন সেদিন দেশের সীমানায় এসে করতে পেরেছিলাম। সেই নির্জ্জন নিস্তক্ব স্থানে সকলেই ক্ষেন যেন আন্মনা হয়ে পড়েছিলাম, হঠাৎ কানে এল বাস্-চালকের চীৎকার,—"বাবু দেরি করবেন না, ক্লামকদের কটক বন্ধ হয়ে যাবে।"

বাধা হয়ে ত'ড়াতাড়ি সকলে বাসে এসে বসলাম। স্থানটি ছেড়ে আসতে মন কেমন করছিল; তার ওপর কাবুলের পথ বেন বার-বার হ।তছানি দিয়ে অ'হ্বান করছিল—সে আহ্বান আমাদের দলের অনেকেরই মনে এমনই গভীরভাবে



থাইবার-পথে গিরিওহা



विविष्ण ও উट्टेवाहिनी

বেজেছিল যে তাঁরা সোৎসাহে প্রস্তাব করেছিলেন, "কাব্ল গেলে কেমন হয় ?" কিন্তু বলা যত সহজ, কার্য্যতঃ ততটা নয়। পাস্পোর্ট জোগাড় করতে সময় লাগে অনেক, এবং যথেষ্ট হালামা পোয়াতে হয়। তার ওপর শোনা গেল, এ-সময়ে কাব্ল বিদেশীর পক্ষে নিরাপদ নয়, যেহেতু নাদির শাহের মৃত্যুর পর রাজ্যের অবস্থা খুবই অশাস্ত ও সক্ষটময় যাচেছ।

ফেরবার পথে আমরা লাণ্ডিকোটালের বাজার দেখলাম।
মন্দ নয়। মিন্টার আহ্মাদ-যার খাঁ আগে থেকে এখানে
তার এক সহকর্দ্মীকে টেলিফোনে ব'লে রেখেছিলেন—
তারই সুবাবস্থায় চা-পান ও জলযোগ সমাধা করা গেল।
আমাদের নৃতন বন্ধু মিন্টার আবিগ্লুবাকী খাঁ যতুসহকারে
লাণ্ডিকোটালের প্রায় সমস্তই দেখিয়ে দিলেন। অবশ্র



সাহগাই-ছুৰ্গ

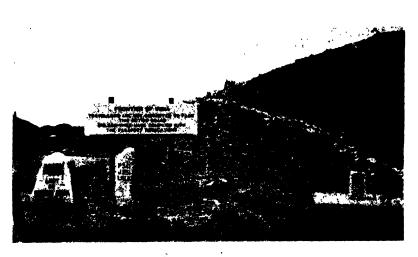
সময় অল্প ছিল ব'লে হুর্গের ভিতর যাওয়া হয় নি। চা-পানের পর আমরা পেশোরার অভিমুখে রওনা হলাম। এবার সঙ্গী ও পথপ্রদর্শক হলেন মিষ্টার আবহল বাকী খাঁ শ্বয়ং। তিনি বহুদিন যাবং এদেশে রয়েছেন, কাজেই অভিজ্ঞতা তার নথেষ্ট, তিনি পথে থাইবারের সমস্ত বৃত্তান্ত ও খুটিনাটি আমাদের সমাক্রপে বোঝাতে লাগলেন। সে-সমস্ত কথা স্থানাভাবে এখানে উল্লেখ করা অসম্ভব। তবে সীমান্তের পাঠানদের জীবন্যাত্রা, আচার-ব্যবহার ও রীতিনীতি সম্বন্ধে গুটিকয়েক কথা সংক্ষেপে এখানে বলা অন্তিতি হবে না।

সামান্তবাসীদের বিভিন্ন উপজাতির মধ্যে বা একট গোষ্ঠীঃ ভিতর রেষারেষি ও বিবাদ সর্বাদাই লেগে আছে বললে অত্যুক্তি হয় না। তুচ্ছ কারণে শোণিতপাত তাদের মধ্যে প্রাত্যহিক ব্যাপার। লোকেরা সাহসী, নির্ভীক ও বেপরোয়া,—জীবন নিম্নে তাদের চিরস্তন থেলা। এর মূল কারণ অবশা তাদের দারিদ্রা। অমুর্বার পার্বাত্য দেশের ও নির্দ্দা পারিপার্থিকের মাঝে তারা শাস্তশিষ্ট জীবনমাপন করবার সুযোগ বা প্রেরণা পায় না, সেই জন্তই সীমান্ত দেশে রক্তপাত, বিজ্ঞোহ, লুঠন, মানুষচুরি প্রভৃতি নিত্যনৈমিত্তিক ব্যাপার। ভারতের উত্তর-পশ্চিম সীমান্তে এই অশান্তি অনাদি ও অনস্ত বলেই মনে হয়, এর প্রতীকারের সন্তাবানা দেখা যায় না, অস্ততঃ যত দিন না এ-অর্থনে সভ্যতার আলোকপাত ঘটে।

পাঠানদের নৈতিক জ্ঞান যত**ই** নিম্নস্তরের হোক্, তার: তিনটি বিষয় অবশ্যকর্ত্তবা মনে করে। প্রথম, তার:

আশ্রয়প্রার্থীকে কথনও বিমুখ করে না; দ্বিতীয় নিদাকণ শত্ৰু হ'লেও ভার যথোচিত সৎকার করে; তৃতীয়, অপমানের প্রতিশোধ ভারা জীবনে ভোগে না ৷ পেশোয়ার-প্রবাসী বাঙালী কংগ্রেদ নেতা ডা: চাক্লচন্দ্র ঘোষ মহাশয়ের সহিত আলাপ হবার সৌভাগ্য হয়। তিনি বহুকাল পাঠানদের সহিত ঘনিষ্ঠভাবে মি.পছেন। তার মত এই যে. পাঠানদের লোকে যতটা থাবাপ

ব'লে মনে করে, ততটা মন্দ তারা নয়। মিষ্টার আবহুল ব কী খাঁ ও মিষ্টার আহমাদ-য়ার।।খাঁ কিন্তু বলেছিলেন, "বোব-মহাশয় ডাক্তার মানুষ, রোগের চিকিৎসা করেন বা বিপদে মুক্তহন্তে সাহায্য করেন জন্তই পাঠানরা তাঁকে থাতির করে স্বার্থের বশে।" নাই হোক, সাধারণ পাঠান যে অতিশয় প্রতিহিংসাপরায়ণ ও নিষ্ঠুর সে-বিব্রয়ে সন্দেহ নেই। মিষ্টার আবতুল বাকী খাঁ বলেছিলেন যে, তিনি এমন অনেক ঘটনা জানেন যা শুনলে আমাদের বিশ্বয়ে অবাক হ'তে হয়। পারস্পরিক বিবাদে পাঠানবা শত্রুপক্ষীয় শিশুদের বা মেয়ে:দর গুলি ক'রে মারতে কুন্তিত হয় না-এমনি তাদের দাক্ষণ বৈরনির্যাতন-প্রবণতা। প্রতিশোধগ্রহণার্থ তারা শত্রুকে কন্যাদান পর্যান্ত করে, পরে নিমন্ত্রিত জামাতাকে সুযোগ পেয়ে কৌশলে হত্যা করে—প্রতিহিংসাচরিতার্থ করে—এরূপ ব্যাপার মিষ্টার আবর্ত্তশ বাকী গাঁ অনেক দেখেছেন। শত্রতা ও হত্যার জের এমনই ক'রে বংশানুক্রমিকভাবে চ**লে**—এর **অব**সান কথনও কখনও অথদারা ক্ষতিপূরণ করার পর হয়ে থাকে। আক্ষকান হত্যার পর নির্দ্ধারিত একটা মূল্য দেওয়ার প্রথা ক্রমশঃ প্রচলিত হচ্ছে। পথে আমাদের সহিত মিষ্টার আবহুল বাকী খাঁর পরিচিত এক আফ্রিদি 'মালিক'-এর সহিত দেখা হ'ল—তিনি নিজের মোটর নিজেই চালিয়ে পেশোয়ারের দিকে যাচ্ছিদেন। তাঁকে অতি ভদ্র ও শিক্ষিত



টোরখান, সামান্তে বিজাপন



নামান্তে থাসাদার প্রহরী

ব'লে মনে হ'ল। পরে কিন্তু শুনলাম ইনি অনেকগুলি
নরহত্যা করেছেন স্বহস্তে—তবে প্রত্যেক বার টাকা দিয়ে
ক্ষতিপূরণ করতে ভোলেন নি। গ্রামে গ্রামে, পরিবারে
পরিবারে, বংশে বংশে বিবাদ বাদে হয় "দুর্" (স্বর্ণ), বা
"দ্ধন্" (স্ত্রীলোক), বা "দ্ধমীন" (ভূমি) নিয়ে। কোন
কোন গোষ্ঠীতে নিজেদের ভিতরই এত রেষারেষি যে তারা



আমাদের দলের কয়েক জন

৯পর গোষ্ঠার সহিত ঝগড়া বাধাবার, বা শক্তা করবার এবসরই পায় না। সাধারণতঃ স্বগোর্টায়দের ভিতর ঐক্য সহক্ষেই স্থাপিত হয়, কারণ প্রত্যেক গোষ্ঠার "জির্গা" না সমিতি সর্বলা শান্তিরকার চেষ্টা করে।

পাঠান জ্নিয়ায় ভয় ও শদ্ধা করে একমাত্র ভাদের মোল্লাদের ও ধন্মে বিদ্যাস ভাদের প্রগাড়। প্রত্যেক গোলীর কভকগুলি ক'রে মোল্লা পাকে, ভারা থেমন গৌড়া, ভেমনই স্মাদ্ধ—ভাদের প্রতিপত্তিও অপরি ময়। ভাদের প্ররোচনায় প্র্যের নামে সীমান্তে কভ বে বিজ্ঞোহ ও রক্তপতি আঞ্চ অবি হয়েছে ভার ইয়জা নেই। মোল্লাদের একটি কপায় সীমান্তবাসী ধ্যায়ুদ্ধের জন্ত প্রাণভাগি করতে কভির হয় না। কাজেহ মোল্লারা ভাদের একাধারে পুরোহিত ও নেভা।

আমরা একটি বিষয় সকলে লক্ষা ক'রে বিশ্বিত হয়েছিলাম সেটা হচ্চে এই সে, কোন পাঠানকে আমরা বন্দ্ক-ছাড়া দেখিনি। প্রত্যেকের নিজস্ব বন্দ্ক বা রাইফ্ল আছে। থারা অর্থনালী 'মালিক' তাদের পিস্তলও থাকে। এগুলি তাদের শ্রেষ্ঠ সম্পত্তি রূপে বিবেচিত হয়। ছোট ছোট ছেলেদের হাতেও বন্দ্ক দেগলাম। মিষ্টার আবহল বাকী খাঁ বলগেন আক্সকাল পাঠানরা এমন-সব বন্দ্ক নিজেরা তৈরি করছে, যা বিলাতী বন্দ্কের চেয়ে কোন অংশে নির্ম্ন্ত নয়। আমাদের দলের একটি ছাত্র কয়েকটি পাঠানের স্থিত আলাপ ক'রে তাদের বন্দ্ক পরীক্ষা করলে। তার মুখেও শুনলাম যে এত বড় চোঙ্ ও ছিদ্র-যুক্ত রাইফ্ল সে কথনও দেখেনি। আগে এ-দেশের লোকে সাধারণতঃ বিটিশ সেনাদলে ভর্তি হয়ে বন্দুক চুরি করত, বা প্যোগ পেলে ল্ফ করত। সামরিক-বিভাগে বিশ্রেষ সতর্কতা অবলম্বিত হওয়ায় পাঠানরা পারস্থ উপসাগর থেকে আনা বন্দুক অসম্ভব রকম মূল্য দিয়েও কিনতে আরপ্ত করে। সম্প্রতি অনেকে নিজেরা বন্দুক ও রাইফ্ল প্রস্তুত করছে। মিঃ আবঞ্জ বাকী থা নিজে একটি বন্দুকর কারখানা দেখেছেন

বললেন। ডাক্তার ঘোষ মহাশয়ও এই রক্ষের কার্থানা অনেকগুলি জানেন তিনি বললেন। ্একটি আমাদের দেখাবার জ্ঞাও ছিলেন. প্রস্ত ত্তবে সময়াভাবে ও বিশ্ৰন্থনক ব'লে আমাদের তা দেশা সম্ভব হয় নি। সন্ধার পূর্বেই

আমরা জামকদের



আফিদি পাঠান

ফটক পার হয়ে হাঁফ ছেড়ে বাঁচলাম নিরাপদে ও বাহাল-তবিয়তে ফিরে আসার আনন্দে। তার পর সকলে নগন শ্রান্ত ও অবসর অবস্থায় বাসায় এসে উপস্থিত হলাম, তথন শুধু এই কথাই মনে হয়েছিল বে, এমন দিনের শ্বৃতি মনের মণিকোঠায় চিরদিন সঞ্চিতথাকবে। সীমান্ত-রক্ষণ-নীতির বে: চিরন্তন ও বিচিত্র সমস্থার কথা এত দিন কেবল বইয়েই পড়া ছিল, সে-সম্বন্ধে বাস্তবের সহিত আংশিক পরিচয় কম লাভের কথা নয়।

ভারতের লিপিসমস্থা

শ্রীব্রজেন্দ্রনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়

া গত মাসের 'প্রবাসী'তে ভারতের লিপিসমস্থা সম্বন্ধে
একটি প্রবন্ধ প্রকাশিত হইয়াছে। প্রবন্ধকার বাংলা
বর্ণমালার স্থলে রোমান্ বা ইংরেন্দ্রী বর্ণমালা গ্রহণের
পক্ষপাতী, কারণ বাংলা বর্ণমালা অপেক্ষায়ত ভাটল।
ইয়ার পূর্বেও কেহ কেহ বাংলার পরিবন্দ্রে রোমান্
বর্ণমালা প্রচলনের সপক্ষে আলোচনা করিয়াছেন।

লিপিসংস্কারের এই আন্দোলন নৃতন নহে। শত বন পূর্বেও কেহ কেহ লিপিসংস্কারের এবং দেশার বর্ণমালার ধলে রোমান্ বর্ণমালা প্রচলনের আবজ্ঞকতা উপলব্ধি করিয়াছিলেন। এমন কি অনেকগুলি বাংলা প্রক্তও সে-সময় রোমান্ অক্ষরে মুদ্রিত হইয়াছিল। লিপিসংস্কার সম্বার এই-সব আলোচনা প্রকাশিত হয় শ্রীরামপুরের সমাচার দর্পনি নামক সংবাদপত্তে। ১৮৩৪ সনের মই আগেও তারিথেব সমাচার দর্শনি রোমান্ বর্ণমালা প্রচলনের সপক্ষে একটি দীগ প্রস্তাব মুদ্রিত হয়: প্রভাবটি নিয়ে উদ্ধৃত করিয়া দেওলা হইল :—

(সমাচার দর্পন, ৯ আগেষ্ট ১৮৩১,২৮ জাবন ১২৪১)

ভারতবর্ষীয় মহাবাদিগের জ্ঞাপনার্থ লেখা বাইতেছে।

গের বিশাস পর পাগতে স জ্ঞা নিশ্ব গোধা বিভাগ পাকেন গোরা কানেন হা কি সপক্ষ দৃত্রপ থবরের কাগজ পাঠ করিয়া পাকেন গোরা কানেন যে সংস্কৃত ও পারক্ত ও বাঙ্গালা ও অগুও ভারতবনায় গানা ইকরেজা অক্ষরে লিখিবার উপায় সকলকে নিবেদন করা গিয়াছে কিন্তু অনকেই ইহা কিরুপে হইবে ও কি নিনিত্তে হইবে ইহার যথাওঁ চাংপর্যা বোধা করেন নাই এপ্রযুক্ত ভাহারদিগের প্রগাচর জল্প সংক্ষেপে লেখা যাইতেছে অত্যব এই নিবেদন যে এতদ্দেশীয় বিজ্ঞা ও পত্তিত মহাশয়েরা মনোযোগপুকাক ভাহা কর্ণ প্রদান করেন।

প্রথম ঐ নিবেদনের মর্ম এই যে সংস্কৃত ও পারস্থ ও বাসলা গড়াদি ভাগার বাক্য ও প্রোক অথবা গ্রন্থ দেবনাগরী ও পারস্থ প্রথম বিদলা অকরে লিখিত না হইয়া সকলি ইপরেজা অকরে লেখা যায় বলা কিন্দা এ একটি হিন্দুছানী কথা নাগরী অকরে লিখিত না হইয়া করে লিখিত কা হইরা ইকরেজা অকরে এইরূপে লেখা যায় (Kisi).....পারস্থ অপর নিখিত না হইরা ইকরেজা অকরে এইরূপে লিখিত হয় (Bapso') গাঁপিতাকে' বাক্লা অকরে লিখিত না হইয়া ইকরেজা করেরে এইরূপে লেখা গায় (Pita/ke) এইপ্রকারে অস্থ সম্বায় ওারদেশীয় ভাষার ভার্থ শব্দ ইকরেজা অকরে লিখিত হয় । এইরূপে এক ইকরেজা বর্ণমালা সর্ব্বর প্রচলিত হইলে ভদ্মারা ভারতবর্ষীর ভাব্ধ বর্ণমালার যে কার্য্য হয় তাহা হইলে ।

অভ্এৰ ইহার ভাব কি যে এমত নিবেদন এতদেশীয় লোকদিগের প্রতি আশ্চন্য বোধ হয়। তাঁহারা কি বচকালাবধি এক ভাষার শব্দ অক্স ভাষার অক্ষরে লিপিয়া আসিতেছেন না৷ এবং এ বিষয় হাড়া মজুর ধাঙ্গড় ইত্যাদি নাচ ও অজ্ঞান লোকবাতিরেকে কি অন্ত সকলে জাতনংখন। ইথার প্রমাণ হিন্দুখনী কণা পারস্ত অক্ষরে সচরাচর লিপিত হয় বিশেষতঃ পশ্চিম দেশে ইহার চলন অধিক আছে এবং নাগরী অকলে পারতাও আরব। কথা লিখিত হয় এবং উর্ভ ভাষা অর্থাৎ পারত ও হিন্দৃস্থানীমিলিত যে ভাষা তাহা প্রায় পারত অথবা নাগরী গকরে লেখা যায়। তবে কিজন্ত এতদেশীয় সকল ভাষ। *ইক্*রেজীঅকার লেগা হইতে পারিবে না। তদ্রির বাফাণ পণ্ডিত ও চন্দিকাসম্পাদক কুলান মহাশ্ব ও মহারাজ কালীকুণ বাহাছুর এবং এতা বিজ্ঞ থাতি ব্যক্তিরা সংস্কৃত কথা ও শ্লোক ইত্যাদি কি বাঙ্গল। অকরে লিখিয়া থাকেন না। তবে হাহারা কিজন্ত সংস্কৃত গ্রোক ইঙ্গরেড। অঞ্জে লিখিতে পারিবেন না। এই অঞ্জর দেশার ফ্রিগ্রে ভাষার বর্ণ এবং এ ভাষা অসাম জানভাণ্ডারপ্রয় অতিশয় বিখ্যাতহওয়াতে ইহাতে বিভা জ্বিলে মঞ্যা উত্থ ও জ্ঞানীও প্রধান এবং ক্ষমতাপর হয়।

ণেরপ খনারাসে ইঙ্গরেজী অঞ্চরে লিপিতে হইবে ভাহার ছুই এক দুঠান্ত এতানে লিপিলাম।

> সংস্কৃত শ্লোক নাগরী অক্ষরে লিখিত। নাগর: অক্ষরে।

अनेकसंशयोच्छेदि पगक्षार्थस्य दर्शकं। सर्व्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यंध एव सः॥

বাঙ্গলা অফরে । অনেক সংশ্যোচ্ছেদি পার।ফার্থল দশকং । মধ্বস্য লোচনং শাস্তং বস্যু নাপ্তান্ধ এব সা ।

রোমাণ অক্ষরে পুর্বোক ।

Aneka sunshay ochchhedi paroksbarthasya darshakang Sarvasya loch mong sha strang yasya'na'styandha eva sah,

দ্বিতায় দি নিবেদনকরণের তাংপ্যা এই যে তাহা মুখ্যাদিগের উপকারক হয়।

কেহং বা অজ্ঞানতার দার। এবং কেইং বা কুটলতাদ।রা প্রকাশ করিরাছেন গে ইহার অভিপ্রায় এই গে বং দেশায় তানা পরিত্যাপ করিবাতে ভারতবর্মীয় লোকদিগের যথেপ্ত বৈর্ভি ও ক্লেশ উপস্থিত হইবে। কিন্তু এই বি:বচনা বিপরীত সেই গোহার যথার্থ তাৎপর্যা জানিবেন এই পরামর্শের প্রধান কারণ এই যে এতদেশীয় মনুষাদিগের বদেশীয় ভাষা বিভাগ্যাসের পথ স্থপম করিলে এ ভাষা রক্ষা পাইরা সর্বনা প্রবল হয় এবং তদ্বারা তাহার। লভা প্রাণ্ড হন বর্ণমালা সমূহহইতে লিপির কারণ এক বর্ণমালা দ্বির হইলেই মনুষাদিগের

অন্ত:করণে বৈরক্তি থাকিতে পারে না বরং ইহাতে তাঁহাদের তাবৎ বৈরক্তির নিবারণ হয়।

বদি এক ব্যক্তি উচ্চানে অনেক খেজুর বৃক্ষ থাকে এবং তাহার প্রতিবাসী ঐ সকল বৃক্ষ কাটিয়া ফেলিয়া একটি নিম্ব বৃক্ষ দ্বোপণ করিতে চাহে তবে তাহার এমত প্রার্থনা অবশ্য ক্ষতিজনক হইবে কিন্তু বদি সেই ৰাক্তি থেজুৱ বৃক্ষ কাটিয়া ফেলিয়া প্ৰতিবৎসর বহুফলদায়ক একটি উত্তম আমবুক্ষ সেই স্থানে স্নোপণ করিতে চাহে তবে কি তাহার এমত প্রার্থনা ক্ষতিকারক হইবে। তাহা কথনো নহে বরং সকলে ঐক্যপূর্বক কহিবে যে ইছাতে ক্ষতি হওনের সম্ভাবনা নাই বরং যথার্থ লভ্য হইবে। পর্শ্লোক্ত প্রার্থনারও ঠিক এই ভাব জানিবেন। এমত ইচ্ছান্তে যে কোন সামাপ্ত বৰ্ণমালা প্ৰবৃত্তকরণের দারা অক্ত সমস্ত এতকেনীয় বর্ণমালার লোপ করা যায় এ কারণ প্রার্থনা ভাল নহে কিন্তু বাঞ্চা এই যে বৰ্ণমালার দারা অসংখ্য লভোর উৎপত্তি হইতে পারে এমত একটি বর্ণমালা নিরূপণ করুণের দারা অঞ্চসকল বর্ণমালার নিরাকরণ হয়। যে অঞ্চলমন্ত বৰ্ণমালা একত্ৰিত হইলেও তাহাতে সম্ভাবনা হয় নাএমত লভাজনক যে বস্তু তাহাকে অবশ্য উত্তম বলিয়া মাশ্য করিতে হইবে এ ৰিষয়ে যেন ভোমাদিগকে কেহ আরু না ভুলায় এ কারণ ঐ প্রার্থনা-হ**ট**তে যে লভা উৎপত্তি *হইবে* তাহার কিঃদংশের ব্যাগ্যা করা যাইতেছে। আমরা জ্ঞানবান্ ও পণ্ডিত হিন্দুনীয় মহাশয়দিগকে নিবেদন করিতেছি ভাষার! শ্রবণ করিয়া ইথার বিচার করুন।

- ১ এতদেশীয় অনেক বর্ণমালাতে পঞ্চাশ বর্ণ এবং প্রায় অসংখ্য নুক্ত বর্ণ আছে ইহাতে শিক্ষকদের অতিশয় বৈরক্তি ও বিলম্ব জন্মে কিন্ত এই তাবৎ বর্ণ ইন্সন্তেজা ২৪ অনুক্ত বর্ণের দারা প্রতিরাপিত হইতে পারে কেবল মধ্যেং এই চিচ্ছের ব্যবহার করিতে হয়। এ মতে ছাত্রদিগের বিদ্যান্তনাদ অতি ত্বায় এবং অনায়াদে হইতে পারে।
- ২ গ্রাহারা কর্মোপযুক্ত ও থাতাপেন্ন এবং উচ্চ পদ প্রাপ্ত হইও প্রার্থনা করেন তাঁহারদিপের ইঙ্গরেজী শিক্ষা করা আবগুক হয়। ইহাতে যদি উংহারা বালককালে আপন জাতীয় ভাষা অভাগে করিয়। ভদবধি ইঙ্গরেজী লেপা পড়া করিয়া আসিতে থাকেন তবে তাঁহারা অত্যপ্ত কালে এবং অনায়াসে ইঙ্গরেজী বিদ্যা উপার্জন করিতে পারেন।
- ত ইন্ধান্তা বিদ্যা উপার্জন ব্যতিরেকে অ:নক ভারতব্যীয় ভাষা নিকা করা হিন্দুখানস্থ লোকের আবগ্যক কিন্তু ইহা উত্তম রূপে বিদিত আছে যে নৃত্যন বর্ণ অভ্যাস করিতে অনেক কালজেপ হর এবং স্থীয় ভাষার ভার সেই নৃত্য অক্ষর লেখাতে তংপর হইতেও অনেক কাল অপেকা করে কিন্তু সর্পত্র ইন্ধরেন্তা অক্ষরে লিখনের চলন হইলে সক্ষাদিগকে বহু কালান নিষ্কৃল পরিশ্রম করিতে হইবে না।
- ৪ এতদ্দেশীর সকল ভাষার মূল সংস্কৃত কিন্তু সম্প্রতি প্রত্যেক ভাষার বর্ণের পূখকং আকার হইয়াছে এই প্রযুক্ত এ দেশের হিন্দু লোক অনুমান করে যে অক্স দেশীর হিন্দুদের ভাষা সম্পূর্ণ পূথক এমত প্রকারে তাহারা পরশার আপনারদিগকে ও বিদেশীর উমা জ্ঞান করে। এইকণে যদি এ সকল দেশীর ভাষা-ইকরেজী অক্ষার লিখিত হয় তবে দেখা যাইবে ও শাস্ত বোধ হইবে বে ভাছারা পরশার এত বিদেশীর উমা নহে ও ভাহাদের আদি ভাষাও এক এবং বে প্রশার ও অক্তঃকরণের ঐক্য আমরা এইকণে কহিতে অক্ষম এবং এত ভিন্নং জাতীর বর্ণের সত্তা নিতান্ত অসক্তব বোধ হয় এমন ভাছাদিগের পরশার প্রণার ও অক্তঃকরণের ঐক্য এ রূপে হইবে।
- প্রস্তুত্থতৈ থার সকল হিন্দুখানত্ব লোকের ভাষার উৎপত্তি
 কানিবেন একারণ কোন ব্যক্তি উত্তমরূপে এফ ভাষাতে ব্যুৎপত্ন হইলে
 অক্তং প্রত্যেক ভাষার বহুতর শক্তের অর্থ বৃথিতে পারেন অতএব
 বৃদ্ধি সকল ভাষা ইসরেক্ত্রী অক্তরে লিখিত হক্ত তবে কোন পণ্ডিত

কিব। সুন্সি কেবল এক কিবা ছই তিন বিণা। বর্ত্তমান কালের ছার উপার্জ্জন না করিরা অনায়াসে তাবৎ হিন্দুদিগের ভাষাতে ব্যুৎপন্ন হইতে পারিবে। যে প্রার্থনাহারা এক আধারে এ রূপ সমূহ তপ্রোগৃ ১র তাহাকে অবশ্য উত্তম প্রার্থনা কহিতে হইবে।

- ৬ ইন্সরেজী বর্ণমালার বড় অকর্ম ও ইটালিক বর্ণ লিগনের হার বধার্থরূপে পড়িবার এবং নামাণিও বিশেষ ভারি কথা প্রকাশ করিবার অধিক হগম আছে কিন্তু হিন্দুহানীরদিগের বর্ণের স্বভাব ও আকার-হেতুক ইহা তন্তাবাতে হইতে পারে না। তবে যদি ইন্সরাজী বর্ণে ক্ষমন্ত্র ভানা লেগা যার তবে এমত কল্পনার হার। সহত্রুহিন্দুহানার বালকদিগের আপনহ ভাষা লিখিবার জন্তু অকথনীয় উপকার হয়। তাবং প্রকার বিচ্ছেণ চিহ্ন এবং ক্সিজাসা ও আশ্চয্য-বোধক চিহ্ন এবং পরের লিখিত কি কথিত বাক্যবোধক চিহ্ন উত্যাদি মুদ্রিত কি লিখিত পুত্রুকে সহজে পাঠ করিবার ও বাটিভি অবগ্রুহিত কি লিখিত পুত্রুকে সহজে পাঠ করিবার ও বাটিভি অবগ্রুহিত কি লিখিত পুত্রুকে সহজে পাঠ করিবার ও বাটিভি অবগ্রুহিত কি লিখিত পুত্রুকে সহজে পাঠ করিবার ও বাটিভি অবগ্রুহিত কি লিখিত পুত্রুকে সহজে পাঠ করিবার ও বাটিভি অবগ্রুহিত কালার ইন্যুহানীয় ভাষাত্র নাই কিথা বিদিও থাকে তথাচ সে সম্পূর্ণরূপ নহে। এই সকল এই রোমাণ অক্সরে অনারাসে দেওয়া যাইবে এবং তাহাতে কালক্ষেপ না হইয়া কালের রক্ষা ও জ্ঞান বৃদ্ধি হইবে এবং এই উপকারবাভিরেকে যে অল্পকালেতে হিন্দুম্বানীয় ভাষাসকল কোনপ্রকারে হৈর্ঘ্য কিয়া অলম্বারবিশিত্ত হইতে পারিবে না এই উপকারবার। সেই অপ্রকালেই তাহা অনায়াসে হইতে পারিবে না এই উপকারবার। সেই অপ্রকালেই তাহা অনায়াসে হইতে পারিবে না এই উপকারবার। সেই অপ্রকালেই তাহা অনায়াসে হইতে পারিবে না
- ব ইং বাস্তবিক বটে যে যেরূপ ইসরেঞা অক্ষর ক্ষুদ্র অথচ প্পট্ট করিয়া লেখা যাইতে পারে তজ্ঞপ হিন্দুখানীয়দিগের বর্ণের অনেকেরি যুক্ততাপ্রযুক্ত ক্ষুদ্র হইতে পারে না। ইহাতে মুদ্রান্ধিতকরণে দ্বিশুণ কাগজ এবং প্রায় দ্বিশুণ জ্বেল্ড্ গাঁধিবার শ্রম ও অব্যাদির প্রয়োজন হর অর্থাৎ নাগরী পার্দী ইত্যাদি অক্ষরে যে গ্রন্থ মুদ্রান্ধিত হয় তাহার বার ইসরেজী অক্ষরে মুদ্রান্ধিত প্রস্থাহিত প্রস্থাহিত প্রায় দ্বিশুণ হয়। অতএব এমঃ পথে প্রযুক্তবেন বালক্দিগের পিতা মাতারা কি সন্তই হইবেন না: এই মতের দ্বারা তাহারিদিগের সন্তানের বিদ্যান্তাসকল্প কেবল আর্ক্রেক মুল্যে গ্রন্থ পাইতে পারিবে এবং যে মতের দ্বারা প্রত্যেক বালকের পিতার প্রতিবংশরে এত টাকা বাঁচিবে সে মত কি এপ্রদেশের মধ্যে অভিউত্তমরূপে গণা হইতে পারিবে না।
- ৮ বছবিধ বর্ণপ্রব্রু এদেশীয় ভাষার অভ্যাসবিষয়ে অতিশয় কটিন-হওরাতে তদ্বিভার আকর বুগবুগান্তরাবণি অপ্রকাশ রহিয়াছে ভরিমিত জ্ঞানরূপ ধন যাহাতে বর্ত্তে তাহা অগোচর হইয়াছে সে কেবল ইউরোপীয় भन्नसामिशहरेख नरह किन्तु अपनीम भन्नसामित हरेख **अां**नियन। এদেশীয় কোন ব্যক্তি বন্ধং কোন ভট্টাচার্যা ও পত্তিত বিনি মহামহোপাধ্যায়রূপে বিখ্যাত তিনিও যেপর্যাম্ভ এতম্বন্থবিধ বর্ণের বাবহার থাকিবে দেপর্যাস্ত কথন আপন পূর্ববপুরুষের লিখিত শান্তের দশমাংশ জ্ঞাত হইতে পারিবেন না। এবং আশচ্যা ইতিহাস ও অলম্বারশান্ত্র ও তর্কশান্ত্র ও আহাক্ষিকী ও জ্বোতির্বিদ্যা ও ভূগোলবিদ্যা ও পারমার্থিকবিদ্যা যাহা পুর্বেষ জ্ঞানবান লোকেরা সংগ্রহ করিয়াছেন যদি এইক্ষণে কোন পণ্ডিত তাহার দশমাংশও জাত হইতে অক্ষম হন তবে ইহাতে আরুং দেশীর বিজ্ঞাবিজ্ঞ লোকের! কি সন্দেহ করিবে না. एव हिन्सु ल्लाक्बापत विद्या कथन हत्र माहै। ठाहात्रा खबचा अग्रज मत्मव. করিবে তবে এ সন্দেহ কিপ্রকারে নিবারিত হইতে পারে এবং সকশ দেশের মনুষ্যনিগকে কিপ্রকারে জামান যাইতেও পারে যে ছিন্দদিগের এত রাশিং শাস্ত্র লিখিত আছে; কিন্তু তাহা এইকণে বন স্বরূপ ব্রুবিধ নৃতন এবং নানারূপ বর্ণের ব্যবহারের দারা অবিদিত আছে। এইক্ষণে এইমত কল্পনা করা যাইতেছে বে যদি হিন্দুলানীর্দ্ধিপের ইচ্ছ **रह जर्द जाराबनिश्वत अमूनाब भाव এक्ट्रेशकांद्र व्यक्ताब लागा** गार এবং সে জক্ষর সর্বত্তে বিখ্যাত ভাছে ইউরোপ ও আসিরা ও ভাফিক'

ও আমেরিকা এই চারি শণ্ডের ভাবৎ শিষ্ট ও পণ্ডিত লোকদিগের নিকট সে অক্ষর বিদিত আছে।

৪দি তিন্দগণ এই পরামর্শ গ্রহণ করিয়া আপন্য বিশেষ্য অব্যন্ত তাগি করিয়া ইঙ্গরেজী অক্ষর স্থাকার করেন তবে কেবল ইঙ্গরেজ লোকের সদশ কর্ম করিবেন। তাহার প্রমাণ এই বে সাল্পেন ও জর্মণ টেক্ট ইত্যাদি বিশেষ অক্ষরেতে ইঙ্গরেজ লোক আপন ভাষা লিখিতেন কিছু ক্রমেং সে সকল অকর দূর করা গেলে রোমাণ অকর অর্থাৎ যে শ্ৰহ্মৰ এইকণে ব্যবহার করিতে পরামর্শ দেওয়া গিরাছে সেই অকর অন্তঃ তাবৎ অক্ষরের পরিবর্ত্তে ব্যবহার করা গেল তাহাতে সেই সময়ের সেই অক্ষরের পরিবর্জনে কি ইঙ্করেজী পুস্তকসকল লুপ ২ইরাছে এমত বোধ কর তাহা নয় বরং যে অক্ষর ইউরোপীয় তাবৎ লোক চিনিতে পারিল সেই অক্ষরে ঐ সকল পুস্তক প্রকাশিত হওনপ্রযুক্ত ভাহা আরও ক্ষুদ্মরুমপে বিখ্যাত হইল এবং অদাব্যতিও পুরাতন অক্ষরেতে যে কোন লিখিত ও মুদ্রিত পুত্তক জ্ঞাত করাইবার কাহারও প্রয়োজন হয় সেই পত্তক ভাহারা রোমাণ অক্ষরে পরিবর্ত্তন করে ভাহাতে প্রায় জ্বগতের সীমাপধান্ত ভাৰৎ জ্ঞানি লোক ভাহা জ্ঞাত হয়। এই কারণ যদি কেহ এই পরামর্শামুসারে অক্ষরে পরিবর্তনের দোষ করে তবে তাহাকে তৃমি এই উত্তর দেও যে এই জগতের মধ্যে অধিক সভ্য ও সর্কবিজ্ঞরি ইক্রেজ লোক এই পরামর্শের পরীক্ষা করিয়া যথার্থ পাইয়াছেন। পরীকাষারা জ্ঞানি লোকেরদের বিচার কি কর্মের ভদ্রাভদ্র স্থির করা যায় ন!।

অজ্ঞানতাপ্ৰযুক্ত কোনং ব্যক্তি অনুমান করেন যে এই বর্তমান কল্লিত নক্শার ব্যবহার হইলে হিন্দুশাল্প অপ্পষ্ট থাকিবে এবং তদ্রস্থকর্ডাদিগের ভণেরও বিবেচনা হইবে না কিন্তু ইহার দারা তাহা না হইরা তাবৎ হিন্দুশান্ত উত্তমরূপে স্পষ্ট হইতে পারিবে এবং তৎশান্তের প্রস্থকারদিগের উচিত সম্ভ্রম ও মর্যাদা হইবে। অক্রের পরিবর্ষ হইলে কথার কিমা তারিখের অথবা নামের পরিবর্ত হইবে না। এদেশীয় ভাষার তাবৎ শব্দ ও সমুদায় ইতিহাসসম্বন্ধীয় তারিখ এবং তাবৎ মহুবোর ও স্থানের এবং ঘটনার নামের পরিবর্ত্ত হইবে না এবং ^{াঁ}ষেপৰ্য্যন্ত এই নক্ষাৰ ব্যবহার হ**ই**বে সেপৰ্য্যন্ত তাহারা অপরিবর্জনীর থাকিবে। যদি হিন্দুর। ১থার্থরূপ প্রার্থনা করেন যে তাঁহার। আর অধিককাল অজ্ঞান ও মুধ্বলপে গণা না হন এবং পৃথিবীর তাবৎ ামুবাই জানেন যে তাহারদিগের এত আশ্চর্য্য রাশিং এছ আছে তবে তাঁহামুদিপের উচিত হয় যে তাঁহারা শীব্র এক প্রধান সভার একত্র হইয়া তাঁহায়দিগের এর ইঙ্গরেজী অক্ষরে লিখিতে ও মুদ্রান্ধিত করিয়া প্রকাশ ক্রিতে স্থির করেন। যদি তাঁহারা ইহা করেন তবে তাবৎ হিন্দন্তানীয় ৰ্বান্থকৰ্তার উপযুক্ততা জানিতে পারগ হইবেন।

এ নিবেশনের বিবরে কাহারও যে কোন সন্দেহ না জন্ম তৎপ্রযুক্ত কোরাটিলি রিবিউ নাম গ্রন্থ বাহা গত অক্টোবর মানে লওনেতে প্রকাশিত হর তাহার প্রয়োগ আমরা এ হানে করিতেছি। অনেক হিন্দুছানীর পণ্ডিত জানেন যে কেবল ইউরোপ দেশের মধ্যে নহে কিন্তু সমুদার পৃরিবীর মধ্যে এ গ্রন্থ অভিপ্রেষ্ঠ। ঐ গ্রন্থে বাহা উক্ত আছে তাহা প্রবণ করুন ''যদি সংস্কৃত ইকরেজী অক্সরে মুন্তাভিত হইত তবে অনেক লোক নিদান সে বিদাার প্রধান সোপান পাইতে পারিত কিন্তু প্রথমই নৃতন রর্ণের কাঠিয়দর্শনে এ বিদ্যা উপার্ক্তে তাহারদের উদ্যোগ ভঙ্গ হর'' এইক্ষণে হিন্দুদিগের মধ্যে বাহারাং আনবান্ ও পণ্ডিত তাহারদিগের এই অভিলাবের এই উত্তম পথ খোলা আছে। বদি তাহারদিগের বিদ্যা তাহারদিগের সকল গ্রন্থ ইসম্বাজী অক্সরে লিখেন তবে তাহারদিগের বিদ্যা ও বিজ্ঞতা এবং ধর্ম সর্ক্তের ইউরোপে এবং অক্স তাবৎ শিষ্ট বেশে বিশ্যাত হইবে।

তবে এমত অন্ধ কে আছে বে এই বর্জমান কল্পিত নক্শার আশ্চর্য্য গুণ বিবেচনা করিতে অকম হইবে :

হিন্দ্দিগের বর্ণমালার পরিবর্তে ইংলরেজী আকার লিখনের **যারা** আনেক লভ্য হইবে তাহার কিয়দংশের বিবরণ উপরে কথিত হইরাছে সে সমস্ত লভ্যের সংখ্যা সংক্ষেপরূপে লেখা যাইতেছে।

- ইলবেজা বর্ণে লিখনের খারা প্রত্যেক হিন্দুছন র লোকের খার ভাবা অভ্যানের যথেষ্ট ফুগম হইবে।
 - ২ তদ্ধারা তাহার ইঙ্গরেজী শিখিবারও যথেষ্ট সুগম হইবে।
- ও তদ্বারা ভাষার বাবহার্যা অনেক অক্তং দেশীয় বিদ্যাপাদ্র'ন স্থপম হইবে।
- ৪ হিন্দুদিগের মধ্যে এইকণে যে পরন্পর বিচ্ছেদ পৃথকত। আছে তদ্বারা তাহার নিবারণ হইরা তাহারদিগের পরন্পর অনারাদে ঐক্য ও কথোপকথন ও লিপির ঘারা আলাপ ও আপন ইচ্ছা প্রকাশ সমুনার দেশে হইবে।
- তদ্বারা সামাঞ্জ কমতাপল্ল বৈর্থাবলদ্বি হিন্দুরা এলেশ্ব প্রান্ধ
 তাবৎ বিদ্যাতে ব্যৎপল্ল হইবে এবং তদ্বারা তাহারা অসংখ্য জ্ञাতি ও
 বংশের উপকার করিতে পারপ হইবে।
- ৬ তদ্ধার! বালক ও প্রাচীন ব্যক্তিরা কোন ভাষ! যথার্থন্ধণে লিখিতে ও পড়িতে বিলক্ষণ পারগ হউবেন ,
- ৭ ইছা হইলে বালকের প্রয়োজনীয় পুস্তকের মূল্য অনেক কম্-ছওয়াতে প্রতোকের পিতা মাতার অধিক লভা হইবে।
- ৮ তাহাতে হিন্দুখানীয় তাবৎ পূর্বকালীন হিন্দু লোকেরদের কিং শাস্ত্র আছে তাহা জ্ঞাত হইবে এবং পূর্বকালের জ্ঞানি গ্রন্থকর্দারদের জ্ঞান কত দ্রপর্যান্ত তাহা জগৎসীমাপর্যান্ত তাবৎ জ্ঞানি লোকেরদের নিকটে প্রকাশিত হইবে।

অতএব প্রার্থনা যে অতিউত্তম তাহা এ সমস্ত বিবরণের দারা কি সঞ্চমাণ হইবে না এবং তদ্ধারা যে এদেশীর মন্ত্রণার যথেষ্ট উপকার ও মক্ষল হইবে তাহার প্রমাণ কি এ সমস্ত বিবরণকত্ ক হইতে পারে না ! যদি তাহা হর তবে হাঁহারা ইহাতে প্রতিবাদ। আছেন তাহারা বিপক্ষ অভিপান না থাকিলেও কি এদেশীর মনুবাদিগের বিপক্ষ নহেন। এবং হাঁহারা ইহাতে উচ্চোগী ভাহার! কি তাহার্দিগের মিত্র নহেন।

আমরা মহাশর্মিগকে বিজ্ঞ জানিয়া নিবেদন করিলাম মহাশরেরা ইহার বিবেচনা করিবেন

হিন্দুহানীয় লোকেরদের পরমবছু।

ু", বাজলা ও হিন্দুহানীয় কতক কেতাৰ এইকণে রোমাণ অকরে ছাপা হইয়াছে ঐ পত্রের অনেক পাঠক মহাশরেরা সেই পুত্তক কিনিতে চাহিবেন অতএব তাহারদিগকে লানান বাইতেছে বে কলিকাতার লালদীবীর উত্তরপূর্ককোণে পুত্তকালয়কর্বা অষ্ট্রেল সাহেবের নিকট চিঠা লিখিলে কিবা তাহার নিকট গেলে অতিঅগ্ন মূল্যে পাওয়া বাইবে!

'সমাচার দপ্ণ'-সম্পাদক মার্শম্যান সাহেব রোমান্ বর্ণমালা গ্রহণের অমুকৃল ছিলেন না ; তিনি এই আলোচনা সম্পর্কে বে মস্তব্য করেন, ভাহাও এধানে উদ্বভ করা হইল:— 'বিশেষ অন্মরোধক্রমে দেশীর প্রাচান অকরের পরিবর্তে ইঙ্গরেজী অক্ষর ব্যবহারকরণ বিবরে এতদেশীর লোকেরনের প্রতি এক আবেদন পত্র আমরা এই সপ্নাহে প্রকাশ করিলাম। তথামারদের সন্মত মিত্রগণ ও আমরা বদাপি এতক্রপ অক্ষর পরিবর্তনের উচিতা বিশরে এবং তাহাতে কৃতকার্য্যতার সম্ভাবন! বিবরে ঐ পত্র লেখকের প্রতিকৃল বোধ হয় তথাপি ঐ নিয়মের পক্ষে বে অতিপ্রবল যুক্তিক্রমে বাহা কহা বাইতে পারে তাহার চুম্বক আমারদের পাঠক মহাশ্রেরদের নিক্টে প্রস্তাব

করপের যে এই ফ্রেণে হইল ইহাতে আমারাদের পরমানন্দ আছে ফলত: এই নূতন নিগমের দোবস্চক ছুই এক পত্র পূর্বে আমারা দর্পনে প্রকাশ করিরাছি এবং ঐ পত্র বফাপিও লঘুতর তথাপি তাহ। প্রকাশ করপের এই উত্তর আমাদের দর্পনে অবগুই প্রকাশ করিতে হইল। যদাপি এই নতন নিরমের ছারা এতদ্দেশীর তাবৎ প্রচলিত আক্রের সম্পোৎপাটন না হব তবু উদোগাভাব বলিরা যে ঐ নিরম নিফল হইবে এমত কহা যাইতে পারা যার না।

সাহিত্যের ভাষা ও বস্তু

শ্ৰীসীতা দেবী

মাস্থ্যের জীবনের নানা কর্মক্ষেত্রে, অর্থাৎ সামাজিক, রাষ্ট্রীয়, সাহিত্যিক, বৈজ্ঞানিক প্রভৃতি সকল ক্ষেত্রেই হুইটি সম্পূর্ণ বিভিন্ন ধর্ম্ম কাজ করি:তছে দেখা যায়। এক রক্ষণনালতার ধর্মা, আর একটি নৃতনকে আহ্বান করিয়া আনার ধর্ম। এই হুইটিরই প্রয়োজন আছে। সময়-বিশেষে একটি আর একটির অপেক্ষা অধিক প্রয়োজনীয় হুইয়া উঠে। পুরাতন যাহা-কিছু তাহাই শুধু আঁকড়াইয়া ধরিয়া ক্রমাগত তাহারই জয়গান করিলে যেমন চলে না, নৃতন যাহা-কিছু তাহাকেই নির্বিচারে ডাকিয়া আনিলেও সেইরপ চলে না।

আমাদের আজ বঙ্গদাহিত্যের বিষয় আলোচনা করিবার দিন। সাহিত্যকে নানা দিক দিয়া দেখিয়া, নানাভাবে তাহার আলোচনা করিয়া অনেকে অনেক কথা লিখিয়াছেন। আমি ইহার মধ্যে সংক্ষেপে থালি কয়েকটি কথা বলিতে চাই। বাংলা-সাহিত্যের বর্তমান অবস্থায় আজ আমরাকোন, ধর্ম অবলম্বন করিব? পুরাতন বাহা ছিল, দিধামাত্র না করিয়া, তাহার দিকে সমালোচকের দৃষ্টিতে একেবারেই না-তাকাইয়া, ভিয়দেশীয় সাহিত্যের সহিত তাহার তুলনামাত্র না-করিয়া, ভাহাকেই রক্ষা করিবার চেটা করিব, না কোথায় ইহার অভাব, কোথায় ইহার অভাব, কোথায় ইহার আটি ভাহা বিয়েষণ করিয়া সে কটিগুলি মোচনের চেটা করিব? সাহিত্যের ভাষা এবং সাহিত্যের বস্তু ছুইটির বিষয়ই এথন ভাবিবার সময়

সাহিত্যের ভাষা কি হওয়া উচিত তাহা শইয়া ত আজকাল যথেষ্ট আলোচনা চলিতেছে, কিন্তু এখন পর্যান্ত কোনো স্থিরসিদ্ধান্তে উপনীত হওয়া যায় নাই। দাক্রণ সংস্কৃতগন্ধী পুরাতন যে বাংলা ভাষা আমরা শিশুকালে দেখিয়াছি, এবং এখনও মধ্যে মধ্যে দেখিতেছি, তাহাই কি बक्षा कतिवाब (ठहा कबा इटेंद, ना, अठि हालका ও পलका, মেরুদগুহীন, প্রাদেশিকতাগ্রন্থ অভিনব যে বাংলা ভাষার আজকাৰ আবিভাব হইঃাছে তাহাকেই যথাৰ্থ বাংলা ভাষা বলিয়া বরণ করিয়া লইতে হই ব ? উভয় পক্ষেই মহমেহা রুণী তর্ক করিতে প্রস্তুত আছেন। আমাদের মত বাঁহার। যুদ্ধে অবতীর্ণ হই:ত নারাজ, তাঁহারা ব্যাকুল ভাবে অপেক্ষা করি:তভেন এই তর্কযুদ্ধের ফলাফলের জন্ত। কিন্তু ভাষা ও সাহিত্যের নিজম্ব একটা প্রাণশক্তি আছে, উহা কাহারও অপেকানা-করিয়া কাজ করিয়া যায়। সম্ভবতঃ ইংারই ফলে আমরা ঐ উভয় শ্রেণীর ভাষা ভিন্নও বাংলা ভাষার আর একটি রূপ দেখিতে পাইতেছি, যাহা:ত কাজ বেশ চলিয়া যাইতেছে, এবং যাহাকে লইয়া কোন ভুমূল তর্ক বাধিয়া উঠিবারও সম্ভাবনা দেখা যাইতেছে না। ভাষার গঠনপ্রণালী পুরাতন বাংলার মত, কিন্তু শব্দস্ম্ভার এত গুলুভার নয়, সচরাচর দে-ভাষায় আমরা কথা বলি, তাহার সহিত সাদুশু ইহার অনেকটাই আছে। ইহা পড়িতে চকু কাতর এবং মন ভারাক্রান্ত হয় না এবং শিশুদিগকে এই

ভাষা শিক্ষা দি.ত গেলে পদে পদে (হাঁচট খাইতে হয় না। শব্দের বানান-প্রণাশীতেও বৈচিত্র্য ইহার মধ্যে তত ধানি নাই, যত থানি আছে আমাদের আধুনিকতম বাংশা ভাষার মধ্যে। তবে ভাষার এই রূপটি শইয়া তুমুল তর্ক হয় না লিখিয়াছি বটে, তাই বলিয়া ছোটখাট তৰ্ক যে নাই তাহা নহে। এ ভাষায় যত ক্ষণ প্রবন্ধ রচনা করা হইবে. তত ক্ষণ কোনো ভাবনা নাই. কিন্তু গল্প বা উপভাস দিখিতে গেলেই মহা গোলঘোগ বাধিয়া যায়। গল্প-উপস্থাসের পাত্র-পাত্রীরা কথা কহিবেন কোন্ ভাষায়? যদি শেখ্য ভাষায় বলেন তাহা হঠলে পড়িতে ভাল লাগে না, যথেষ বাস্তবসদৃশ (realistic) হয় না। যদি কথ্য ভাষায় বলেন তাহা হই.ল কোথাকার কথা ভাষা ব্যবহার করিবেন? কলিকাতার ভাষা হইবে, না ঢাকার ভাষা হইবে এই লইয়া বিবাদ বাধিয় যায়। এক্ষেত্রে তর্ক করিয়া কিছু স্থির করা অসম্ভব, কারণ মানুযের মন তর্কের যক্তিকে স্বীকার করে না. নিজের ইচ্ছাকেই প্রাধান্ত দেয়। স্বতরাং এ,ক্ষত্রে মহাজনগণ বে পথে গমন করিয়াছেন, তাহাই গ্রাছ, এই নীতির অনুসরণ করাই নিবাপদ।

সাহিতোর বস্তু লইয়াও চিন্তা করিবার দিন আসিয়াছে। পাশ্চাত্য জীবনযাত্তার প্রভাব আরু বাঙালীর মনকে বিশেষরূপে বিচশিত করিয়াছে দেখা যাইতেছে। সাহিত্যে, শিল্পে, চিত্রকলায় সর্বত্ত পাশ্চাত্য চিস্তার স্রোত আমাদের সনাতন যাহা-কিছু ছিল তাহা ভাসাইরা লইয়া যাইবার উপক্রম করিয়াছে। এতটাই কি সঙ্গত? ইহাকে বাধা দিবার কোনো চেষ্টাই কি করিতে হইবে না? এখন চিত্রকর আঁকিতেছেন ভিনাসের ছবি, কবি লিখিতেছেন আটিমিস (Artemis)ও হেলেন (Helen) সম্বন্ধে কবিতা, গল্পে এবং উপস্থাদে নায়ক-নায়িকারা ভূল বা ঠিক ইংরেজী ভাষায়, মধ্যে মধ্যে ফরাসী ভাষার, কথা বলিতেছেন এবং তাঁহাদের চাল্চলনে, সাজসজ্জায়, এমন-কি প্রসাধন-দ্রব্যগুলির উৎকট বিজাতীয় নামে সকলকে চমক লাগাইয়া দিবার প্রাণপণ প্রদাস করিতেছেন। আনন্দের বিষয় যে, এইরপ আক্তন্তবি শাহিত্য এখন পর্যাম্ভ একটি বিশিষ্ট দলের মধ্যেই আবদ্ধ আছে, দেশবাপী মহামারী রূপে দেখা দের নাই। কিন্তু মহামারী উপস্থিত হইবার পূর্বে থেমন সতর্ক নগরবাসী প্রতিষেধক সেবন ও টীকা লইবার বাবস্থা করিয়া নিজেদের রক্ষা করিবার চেটা করেন, আমাদেরও সেইরূপ প্রতিষেধকের ব্যবস্থা করা প্রয়োজন হইয়াছে।

কিন্তু পাশ্চাতোর মে:ছে ভাসিয়া যাওয়ার বিপদ যতথানি, কেবল মাত্র প্রাচ্যকে আঁকড়াইয়া বসিয়া থাকিয়া, ছই চোখ বুক্তিয়া বাহিরের বাহা-কিছু, সমস্তই ঠেলিয়া ফেলিয়া দিলে, তাহাতেও বিপদ কম নয়। আমাদের দেশ স্বভাবতই রক্ষণনীল, নৃতন সমস্ত-কিছুকেই অতি সন্দেহের চক্ষে দেখা আমাদের অভ্যাস। সাহিত্যের ভিতরেও এই অন্ধতার পরিচয় যথেষ্টই পাইতে হয়। স্থতরাং **ইহাকে সমর্থন** করিবার চেষ্টা করা সকল দিক দিয়া দেখিতে গেলে নিরাপদ নয়। দেশ-বিদেশের সমস্ত জিনিষ সমান আদরে গ্রহণ না-করিয়া তাহার ভিতর হইতে সার জিনিষ্টুকু গ্রহণ করিয়া লই.ত পারিলে সর্বাপেকা ভাল হয়। কিন্তু সে ক্ষমতা আমাদের আছে কই? বাহিরের স্রোতকে আমরা এত ভয় করি বে, তাহাকে ঠেকাইয়া রাখিবার চেষ্টায় নিজেদের ভাষার ও সাহিত্যের স্রোতটির চারিদিকে মাটির বাধন দিয়া তাহাকে পানাপুকুরে পরিণত করিতেও আমাদের বাথে না। ফলে বাহিরের বিশ্বের সহিত সকল সম্পর্ক আমাদের দুর হইয়া যায়, সাহিত্যের সঙীবতা নষ্ট হয় এবং সাহিত্য জীবনের প্রতিরূপ না হইয়া শাশানের ছবি হইয়া দাঁড়ায়। একেতে কি করা কর্ত্তব্য তাহা প্রত্যেক সাহিত্যদেবীকে ভাবিয়া দেখিতে হহবে। আগন থেয়াল-খুশীতে মার্ষ লেখে বটে, কিন্তু সাহিত্যিকের ব্যবসায়ে দায়িত্বও আছে অনেকথানি। সাহিত্যই বে স্বস্ময় জীবনকে অনুসরণ করিয়া চলে ভাহা ত নয়, জীবনও মধ্যে মধ্যে সাহিত্যকৈ অনুসরণ ও অনুকরণ করিতেছে। তাহার দৃষ্টাস্ত ভিন্নদেশেও দেখা গিয়াছে. व्यामारमञ्जल एए १९ ७ ० ० वर्षा द्वार प्राप्त नारे, अमन नम्र ।

রবীজ্রনাথ "গোরা" নিধিবার আগে, "গোরার"
মত ভাষায় কোনো যুবককে কথা কহিতে আমরা শুনি
নাই, বা তাহার মত দৃষ্টিতে ভারতবর্ষকে দেখিতেও
কোন মাহ্যকে দেখি নাই। হ্রচরিতা বা ললিতার
মত মেয়েও যে ঘরে ঘরে দেখা যাইত তাহা নয়।
কিন্তু মধ্যে এই যে কতকগুলি বংসর কাটিয়া
গিয়াছে, ইহারই মধ্যে ত দেখিতেছি বইয়ের পাতা হইডে

এই মানুষভাল মাটির পুথিবীতে নামিয়া, চলিয়া ফিরিয়া বেড়াইতেছে। তাহারা গোরা, সুচরিতা, শশিতার নিখুঁৎ কোটোগ্রাফ না হইলেও, একই জাতের যে মানুষ তাহা বুবিতে বিশন্ব হয় না। কিন্তু তুর্ভাগ্যের বিষয়, সংসারে ভাল জিনিষের অসুকরণের বহু পূর্বেই মন্দ জিনিষের অনুকরণটা আরম্ভ হয়। তাই আধুনিকতম লেথকদের এক দল যে অতি বিক্লত ও অতি অসার কতকগুলি নরনারীর চরিত্র অহিত করিতেছেন, তাহাদেরও অনুকরণে ঐরপ স্ত্রীপুরুষ গড়িয়া উঠিয়াছে ও দেশের হুর্ভাগ্যবশত: এদিক-ওদিকে দিতে আরম্ভ করিয়াছে। কয়েক বৎসর পূর্বে গল্পের পাতার যথন এই সব অতি-আধুনিক ছেলেমেরের সাক্ষাৎ পাইতাম, তথন হাসিয়াই উড়াইয়া দিতাম বে এ রকম ক্ষীবের আবির্ভাব আমাদের দেশে অসম্ভব। কিন্তু ইংরেজীতে প্রবাদ আছে, Talk of the devil, and he appears," "শয়তানের কথা বলিতে-না-বলিতে শয়তানের আবির্ভাব আমাদেরও অবস্থা হইয়াছে তাই। ক্রমাগত শয়তানের কাহিনী বর্ণনা করিয়া করিয়া আমরা আঞ শন্নতানকে মর্ত্তালোকে স্পরীরেই টানিয়া আনিয়াছি। ইহার জন্ত ঐ অসৎ ও অসার সাহিত্য একেবারেই যে দারী নর, তাহা কোনোক্রমেই বলা যার না। স্থতরাং

আদ্রকাল সাহিত্যসেবী মাত্রকেই কলম ধরিবার পূর্বে ভাবিতে হইবে। নিজের সংসারে, ভাই-ভগিনী, পতি-পত্মী বা পুত্র-কন্তা রূপে যাহাদের কল্পনা করা অসম্ভব, সেইরূপ কতকগুলি অতি-বিক্বত চরিত্রকে ছাপার অক্ষরে চিরস্থায়ী করিবার ইচ্ছাটাকে ষথাসাধ্য দমন করিয়া যাওয়াই উচিত। বস্তুতান্ত্রিকভার (Realism-এর) নামে অস্বাভাবিক জ্বিনিয়ই যে আজকাল সাহিত্যে স্থান পাইতেছে তাহার ঠিকানা নাই। বাস্তব (Real) ত অনেক জিনিষই। ভদ্ৰ, শ্লীল, ও সৎ হইলেই সে জিনিষগুলির বাস্তবতা কিছু নষ্ট হইয়া যায় না। তবে সেগুলি বাদ দিয়া যত অভদ্ৰেও অল্লীৰ বাস্তবের প্রতি এত পক্ষপাত কেন, তাহা ত বুঝিয়া উঠিতে পারি না। মাদার ইগুরার (Mother India র) কুখ্যাতা লেখিকা মিদ মেয়োকে যে-কারণে মহাত্মা গান্ধী নর্দাম'-ইন্সপেক্টর (Drain Inspector) বলিয়াছিলেন, সেই কারণেই এই ধরণের বাস্তব চিত্রের চিত্রকরদের নর্দামা-ইন্সপেক্টর এবং পাগলাগারদের পরিদর্শক বলা চলে। যাহা লিখিব তাহা চিরকাল শুধু কাগজের উপরে ছাপার অক্ষরে থাকিয়া যাইবে না, মনুষ্যদমাজে মুর্ব্তি ধরিয়াও বিচরণ করিবে, এই সম্ভাবনাটা আজকাল সকলেরই মনে ৱাখিয়া চলা ভাল।



রপান্তর

শ্রীহেমচন্দ্র বাগচী

অণিম'র দেহ গখন উঠানে নামানো হ'ল, বীরেশরকৈ সারা বাড়িমর কোথাও পাওরা গেল না। মৃত্যু-মন্ত্রণার ধখন অণিমার মুখ বিবর্ণ হয়ে এ সছে, ঘন ঘন নাভিশাস উঠছে, ধীরে ধীরে পা হ'টো শক্ত হ'য়ে এল, তার পর হাত, তার পর ধীরে ধীরে সমস্ত দেহ হ'য়ে আল্ছে হিমণীতল
—এ দৃশ্য সহু করার মত শক্তি বীরেশরের নেই। তাই ভা'কে সারা বাড়িমর কোথাও পাওরা গেল না।

একথানা সাদা চাদরে অণিমার দেহ ঢাকা হরেছে, তদু পা চটি আর মুখখানি এবং একরাশ রুকু চুল দেই মুখখানির হুই পাশে—এই দৃশু! এরোরা আল্তা নিরে এসে পা হুটিতে মাখিরে দিলেন, সঁীথির উপর চেলে দিলেন সিঁহুর—মনে হ'ল যেন অণিমার দেহ জীবস্ত হ'রে উঠেছে, লাল রঙ্টা এম্নি জিনিষ!

'ওরে, কাগজ নিয়ে আয় রে, একথানা কাগজ নিয়ে আয়, মা'র আমার ফটো নেই, পায়ের ছাপ-হ'টো তুলে রাথ্ব! তবু কেন্ট বড় হ'য় বল্তে পারবে, আমার মা'র পায়ের ছাপ!—কি বলো দিদি!'—অণিমার শাশুড়ীর কণ্ঠত্বর ভারী হ'য়ে এল।

'ওগো, ঐ সিঁহুর ঋ্মাকে একটু দিতে পার?' সভীলন্দ্রী মেন্নের মাধার সিঁহুর, ও গা, দেবে একটুখানি ?'

কা মর পাগলী, ছুস্ নে—ছুস্ নে, আমার কেটর অকল্যাণ হবে! যা, যা, স'রে বা, দিচ্ছি আমি সিঁহর— যা সর এখন!

কেন্টর বরস তিন বছর, বীরেশবের একমাত্র সন্তান, অণিমার শেব স্থৃতি। তার পর কতকগুলি বলালী কঠের সমবেত হারধবনি! নারীকঠের ক্রন্সনের রোল—তার পর অণিমার দেহ খারে ধীরে তার থোবনের শীলানিক্তন থেকে চিরবিদার নিল।

প্রতিবেশিনীরা ফুঁপিরে কাঁদ্ছে গাছতলার, চাঁদের

আলোর! অমন মেরে আর হবে না গো, আহা সতীলন্দী মেরে!

শ্বশান থেকে ফিরে এসে বীরেশরের মনের আঞ্চন আর নেবে না। অমন ফুল্বর দেহ কি হ'রে গেল আঞ্চনে, ফট্ ফট্ বাশ ফাটার মত সমস্ত দেহটা দেখতে দেখতে ফেটে চৌচির হ'রে গেল, কত কথা বীরেশরের মনে পড়ল—কত প্রেম, কত কাব্য ঐ দেহ নিরে। দুর ছাই, কি হবে আর সংসার ক'রে?

সেই থে:ক বীরেশ্বর সন্ন্যাসী, মাধান্ন দীর্থ জ্ঞা, পরপে গেরুরা! মুখমন্ন দাড়ি—চোথের দৃষ্টি উদাসীন! মা আছেন এখন, তখনু কেটর সন্ধকে চিন্তা করাই বুথা! আজ কাশী, কাল গলা, পরশু হরিদার—এই ভাবে বীরেশ্বর জীবন কাটাতে লাগ্ল।

একবার হরিধার থেকে বীরেশ্বর বাড়ি এলে পর, তার
মা গোপনে চোথের জল মৃছ্লেন। 'আহা, ছেলের
আমার কি চেহারা হয়েছে গো! এ হঃধ বে আমার ম'লেও
যাবে না।'—ভাবতে লাগ্লেন তিনি আপন মনেই।
মারের প্রাণ, এই বয়সে ছেলে সয়াসী হ'রে সংসার ছেড়ে
চলে যাবে—একথা ভাব্তেও বে কেমন করে! বুকের
ভেতরটা বেন মোচড় দিয়ে ওঠে—কত সাধের সংসার!

মারের এই ভাবনা বীরেশ্বরকে বোধ হয় তার নিক্সের অজ্ঞাতসারেই আবাত কর্তে লাগল। পরদিন দেখা গেল, সে দীর্ঘ জটা ছেঁটে ফেলেছে, সবজুে দাড়ি কামিয়েছে। স্নান করে উঠে সে মার কাছে যখন একখানা ধোয়া কাপড় চেরে বস্ল তখন মা আপন মনেই ভাব্লেন, ছেলেকে সংসারী দেখে না গেলে স্বর্গে গিয়েও বোধ হয় তাঁর তৃথি হ'ত না।

(थट व'म वीदायत वनन, 'मा, ছ-व्यना ताज्ञा-वाज्ञा

করতে বোধ হয় তোমার কট হচ্ছে। তা ছাড়া, রারাও ত আগের মত আর ফ্সাদ হয় না মা! বীরেশ্বের ওর্চের এক প্রান্তে একটু হাসির বিহাৎ খেলে গেল।

মা ঈবৎ আহত হলেন। বললেন, 'আর পারিনে বাপুর্ড়ো হ রচি তোমাকে সংসারী দেখে যেতে পারলে আমি নিছতি পা ।'

জনশং বীরেশর তার অবহেশিত সংসারধর্মের প্রতি আহাবান হরে উঠতে লাগল। কেইর সম্বন্ধে একসাৎ সে অতি সচেতন হ'রে উ'্তে লাগল। তাকে এখন থেকে পড়াশুনার দিকে আরু ই করা দরকার নইলে তার ভবিষাতের কি হবে? পুত্রের ভবিষাৎ বীরেশরের মনকে বিচলিত ক'রে ভূলল। বীরেশর এত বেশী বিচলিত হয়ে উঠল বে, তার মা'র কো না কাজই আর তার পছল হয় না। কেইকে যদি তার ম কিছু বলেন, অমনি সে রেগে অগ্নিশর্মা হয়ে ওঠে। অবশেযে এক শুলনিনে দীর্ঘশিবা-সমন্বিত এক ঘটকের শুভাগমন হ'ল বাড়িতে। তার যাতায়াত চলতে থাক্ল।

একদা প্রাবণের মেঘাছের সন্ধায় বীরেশ্বর বড় আশা ক'রে সংসারী হয়েছিল। আবার এক ফান্তনের প্রসর সন্ধায় বীরেশ্বর সংসারে পুনং প্রবেশ করল। সংসার যাকে ডাকে, তাকে এমনি ক'রেই ডাকে। সকলেই বলল, আহা বীরেশ্বরের বরাত খুব ভাল, সেবারও একটি লক্ষ্মী মেয়েকে বিয়ে করে এনছিল, এবারেও বৌটি এসেছে খাসা!

বীরেশ্বরের মা বেশা ধুমধাম করতে দেন নি বিরেতে। বেশী থরচপত্র করে জাঁকজমক দেখিয়ে কোনো শাভ নেই। ছেলের যে বরাত, ভাতে কোনো কিছুই ভরসা হয় না।

একদল ব্যাগপাই ওয়ালা বাইরের বাড়ির সমুখে আশ্রয়
নিয়ে সারাক্ষণ বাজিয়ে চলেছে। সন্ধা হরে এসেছে, এমন
সময় চারিদিকে হলুধানি প'ড়ে গেল। বৌ এসেছে,
নতুন বৌ! বীরেশরের মা তাড়াতাড়ি বাইরে বেরিয়ে
এলেন। তাঁর কোলে রয়েছে কেট, সে ব্যাগ্পাইপের সক্ষে
সক্ষে কারার বাজনা আরম্ভ করেছে। তাকে একটি মেয়ের
কোলে ছেড়ে দিয়ে তিনি বাইরে বেরিয়ে এলেন।
নতুন বৌ-কে তথন সব এয়োরা বরণ করছে।

বরণ করার সমায় তিনি স্থির হ'রে ছান্লাতলার পাশে দাঁড়িয়ে রইলেন। তাঁর আর এক দিনের দৃশু মনে প'ড়ে গোল। এম্নি ক'রেই আর একটি বধু এসেছিল, যাবার সময় সে বড় দাগা দিয়ে গেছে, তার কথা সহজে ভোলা যায় না। বরণ শেষ হ'য়ে গেছে, গাঁটছড়া-বাধা অবস্থায় বীরেশ্বর ও বধুর এখন ঘরে ওঠার কথা। সহসা বীরেশ্বরের মা ব'লে উঠলেন, 'ও:গা, ভোমরা গাাদের আলোটা একবার ভূলে ধরো, মা'র মুখবানি আমি একবার দেখ্ব।'

া গ্যাদের আলো তুলে ধরা হ'ল। বধুর মাধার চেলির গুঠনের চারিদিকে কলাপত্রিকা। সেটকে একটু সরিয়ে গুঠন তুলে ধরা হ'ল। বধু নতনেত্রে শাশুড়ীর পদপ্রান্থে চেয়ে রইল। মা'র বৃক্টি একবার ধক্ ক'রে উঠ্ল। ধীরে ধীরে তিনি বধুর চিবুকে হাত দিয়ে বলালন, 'মুখটি একবার তোলো ত মা, তাকাও, তাকাও আমার দিকে, ভয় কি তোমার?'

টানা টানা স্বন্দর হটি চোধ !

ভুক্ক:টি বেন কোনো শিল্পীর হাতে রূপ নিমেছে!

সি'থির প্রাস্ত থেকে চুর্ণ চুর্ণ কালো চুল নেমে এসেছে
মাথার ছ-পাল দিয়ে—সেইদিকে একবার চেয়ে বীরেশ্বরর
মা'র চোখে জল এল! এমন সাদৃশ্য ত স্বপ্নেও ভাবা যায়
না—এ যেন অণিমাই আবার ঘুরে এল! ব্যুকে কোলে
টেনে নিয়ে কালা তার যেন আর থাম্তেই চার না।

বধুর নাম স্থরমা।

প্রকাণ্ড বড় দালানের ভিতর দিরে স্থরমা হৈটে যাচেছ, হঠাৎ পিছন থেকে কে ডাক্ল, 'অণিমা'। স্থরমা তাকিরে দেখ্ল, তার শাশুড়ী। তিনি ঈযৎ হেসে বল্লেন, 'ওমা, এমন ভ্লও ম সুযের হয়! হঠাৎ কেমন থেন মনে হ'ল—কিছু মনে ক'রো নামা!'

সুরমা শজ্জার আড়ন্ট হ'রে দাঁড়িরে রইল। সে বে সুরমা, এ-কথাটি মেনে নিতে এ-বাড়ির লোকদের বোধ হর কিছু দেরি হ ব। সুরমার কেমন বেন অম্বন্তি বোধ হ'ল। কে অণিমা? ভার ব্যক্তিছের সঙ্গে সুরমার কি যোগ আছে?

মৃত্তকঠে সুরমা জানাল বে, সে কিছু মনে করে নি :

কিছু ভার মন বে ভারাকোন্ত হ'মে উঠেছে এরই মাধ্য! যে এখানে ছিল, সে অধিনা তার সেই শুক্তম্বানে দাঁড়িয়ে সুরমার আজ অবশয়ন কোথায়? দেওরালে অণিমার আঙুলের দাগ, প্রানো বাল্লের চিঠিপত্র—বীরেশ্বরকে একদিকে অণিমার অঙ্গ্ৰ লেখা! শেল্ফের এক দিকে চুল-বাংবার একটা ফিতেয় কতকগুলি মাথার ক:টা রুড়ানো। অণিমার দেহ-গন্ধ যেন আক্সও নিঃশেষ হ'রে ধার নি—ছোটধাট বহু তুচ্ছ কিনিয়ে তার আভাস যেন আজও পাওয়া যাচেছ। প্রমা ভাব্লে, তার স্থান এর মধ্যে কোথায় হ:ব? নির্জ্জন ঘরের মধ্যে জানালার শিকগুলিতে মাথা রেখে স্রুমা ভাব্তে লাগ্ল, "বৌ ম'রে গেলে, মানুয কেন আবার বৌ নিয়ে আসে ?"

সেই অবস্থায় হ্রমা অনেক ক্ষণ দাঁড়িয়ে রইল। বাইরের বারান্দা থেকে শাশুড়ীর কর্মস্বর শোনা গেল, 'বৌমা, একা একা চুপ্টি ক'রে ২রের মধ্যে থেক না! রালাঘরে এস— আমার কাছে এসে ব'দ মা।'

সুরমা তবু সেই অবস্থার অনেক ক্ষণ বরের মধ্যে দাঁড়িয়ে রইল। তৈত্র মাসের শেষ, আমের মুকুলের গন্ধ ভেসে আস্ছে বাতাসে! ঘরের মধ্যে প্রবলবেগে সেই হাওয়া প্রাবশক'রে ছোটবাট হাল্লা দ্দিনিষ এবানে-ওবানে সরিয়ে দিচ্ছে। সন্ধ্যার অন্ধক'রে স্থরমার মনে হ'ল ঘবের মধ্যে কে যেন নিঃশব্দে ঘুরে বেড়া চ্ছে। হঠাৎ কে যেন কালার স্থরে ভেকে উ দ্লা, 'মা, ও মা!'

মুবমা সচকিত হ'বে পিছন কিরে দেখে,—কেট দাঁড়িয়ে দাঁড়িয়ে ছ-হাত দিয়ে চোথ রগড়াছে । ঐ মা-ডাকটির মধ্যে এমন কিছু অ'ছে, যা হঠাৎ অবহেলা করা যায় না। ম্বনা ডাড়'তাড়ি জানালার কাছ থেকে স'রে এসে কেইকে কোলে তুল নিল। তার চোথ মুছিয়ে কোলের কাছে টেনে নিয়ে মুবমা বল্ল, 'কেই, আমি ত তোমার মা নই!'কেট সেই অন্ধকারের মধ্যে প্রাণপণ শক্তিতে ম্বনার মুথের দিকে চেয়ে ব'লে উল, 'বাঃ, তুমিই ত মা, মামা-বাড়ি ছিলে ছ্মি, ঠাক্মা ব'লেছে।'

স্থরমার মন মৃহুর্ত্তে বিদ্রোহ ক'রে বস্ব। কেইকে কোল থেকে সরিয়ে দিয়ে বল্ল, 'ঠাক্মা বলেছে, ঠাক্মা কি বলেছে—ঠাক্মা বলেছে আমি ভোর মা! কণ্ণনো না, আমি তোর মা নই—'। তারপর কণ্ঠন্বর একটু নামিরে স্রুমা বন্দ, 'ভাল ক'রে দেখো ত কেট, আমি ভোমার মা কি না!'

কুজ নিশু অনাদরের কারণ বৃঝ্তে পারে না, কিছু কণ শ্রুদৃষ্টিতে স্রমার দিকে চেয়ে থাকে, তার পর উচ্চ চীৎকারে ঘর ভরিয়ে তোলে।

তথন বাধা হ'রে হ্রেমা তাকে কোলে নিয়ে আদর করতে থাকে। বলে, না বাবা, লক্ষ্মী মাণিক আমার, চুপ করো, চুপ করো—আমি তোমার মা, তোমার মা, তোমার মা।' কেই এততেও শান্ত হ'ল ব'লে মনে হ'ল না। শুক্ষকারের মধ্যে মায়ের হাত বুলিয়ে সে দেখ্ল যে, এখানে কিছু ফাঁকি নেই; তথন সে দন্তই হ'য়ে বল্ল, 'মা, চাঁল দেখ্ব।'

এই চাঁদ দেখাটি তার অভ্যাস। অণিমার সন্ধার একটি কান্ধই ছিল কেন্তকৈ চাঁদে-দেখানো। অখথ আর বাশ গাছের মাথার ওপর দিয়ে ধীরে ধীরে চাঁদ উঠ্ছে—এই দৃশুটি কেন্টর দেখা চাই।

পুরমা বল্ল, 'চল, চঁ:দ দেখে আসি।'

কেইকে সঙ্গে নিয়ে সুরমা ছাদে উঠ্ছে, দালানের মধ্য
দিয়ে খানিকটা হেঁটে গিয়ে সিঁ ড়ি বেয়ে উপরে উঠ্ভে হয়।
বেতে বেতে সুরমা শুন্তে পেল কে বেন বল্ছে, বৌদিদির
আমাদের হেঁটে বাওয়ার চংটাও তাঁরই মত—আহা বৈচেবর্ত্তে থাক্। একটি লঘু নিঃখাসের শক্ত সুরমার কানে
এল।

না আর ভাল লাগে না বাপু! কেবলই সে, আর সে!
মান্যের সঙ্গে মান্যের কথনও কি মিল হয়? এরা কেন
তার পিছনে লেগেছে এমন ক'রে? ঝি-চাকর পর্যান্ত সেই
একই মন্তব্য করছে—মনের বির্তিক মুখে প্রাকাশ হ'রে
গোল—'ছেলে যেন বাহাছর! আবার চাঁদে দেখ্বার স্থ্
কেন হ'ল রে বাপু?'

'ও মা, তা বৃথি জানেন না বৌদিদিমনি। ওর মা বে ওকে রোক্ষ কোলে ক'রে নিয়ে ঐ কাণ্ড করতেন ?'— ক্ষান্তমণি প্রদীপের স্বশ্লালোকে দালানের এক কোণ থেকে এই মন্তবাটি ক'রে বসল।

हैं।त-लब्धेनांत्र मधाख त्मरे व्यक्ति ! व्याष्ट्रा लक्षा यांक्,

চাঁদ-ই ও কত দেখ্তে পারে ?—মনে মনে এই ভেবে হরমা কেইকে নিয়ে তাড়াভাড়ি সি°ড়ি বেয়ে উপরে উঠে গেল।

অশ্ব আর বাশ বনের জটলার পার থেকে চারি দিক আলো ক'রে চাঁদ উঠছে। করেকটি ছোট ছোট পাধী সেই সম্ভবিকশিত আলোক-পথটির উদ্দেশে কলকণ্ঠে অভ্যথনা জানাচ্ছে। ছাদের উপর থে:ক কেইকে চাঁদ দেখাতে হবে। স্বরমা আল্সের কাছে দাঁড়িয়ে কেইর দিকে চেয়ে বলল, 'থৌ দেখো কেই, চাঁদ উঠছে।'

কেই তৎক্ষণাৎ ব'লে উঠ্ল, 'আর, তারা !'

'আবার তারাও দেখাতে হবে ?'—সুরমা বলে উঠ্ল। 'হা, হবে, তারাও দেশতে হবে !'—কেইর চেয়ে এ কণ্ঠম্বর চের বেশী গন্তীর; বীরেশ্বর ছাদে ব'সে বই পড়ছিল, সুরমাকে দেখে উঠে এসেছে।

স্থরমার আর তারা-দেখানোর ধৈর্য্য রইল না। ভাড়াভাড়ি কেটকে বীরেশ্বরের পায়ের কাছে নামিরে দিয়ে ফ্রন্ডপদে সি^{*}ড়ি বেয়ে নীচে চ'লে গেল।

বীরেশর ছেলেকে কোলে তুলে নিল। প্রকাপ্ত ছাদের উপর তাকে কোলে নিরে বীরেশর ঘুরতে লাগল। একটি ছটি ক'রে অনেকগুলি তারা উঠেছে আকাশে। কেইকে আদর করতে করতে বীরেশর বলল, 'কেই, কোন্তারাটি তোমার ?'

কেন্ট বিহ্বলভাবে আকালের দিকে আঙুল দেখিয়ে বলল, 'ঐ যে।'

বীরেশর দেখল বাশগাছের পিছনে খুব বড় একটা ভারা দপ্-দপ্ক'রে জলছে। কেইর দিকে তাকিরে চেরে সে বলল, 'কেই ঐটে ভোমার?'

কেন্ট তথন আর একদিকে আঙ্গুল দেখিয়ে ব্লল, না, ঐ যে।

বীরেশবের মনে পড়ল ঠিক অমনি ক'রেই অণিমা তার ছেলেকে নিয়ে তারাদের সঙ্গে থেশা করত। বীরেশর কেইকে ভিজ্ঞাসা করল, 'কেই, তোমার মা কোথায় ?'

क्टे उरक्नार উखत मिन, 'मा ? मा नीटा चाहि।'

বীরেশর বলল, 'না কেউ, মা ডোমার ঐথানে আছে।'
—ব'লে সে আকাশের দিকে বাদগাছের পিছনের সেই বড় ভারাটির দিকে আঙুল দিরে দেখিরে দিল্। কেট কিছু,তই তা স্বীকার করে না। সে ক্রমাগত ব'লে চলল, 'মা নীচে আছে!'

বীরেশ্বরের মনটা প্রসন্ন হ'ল এই ভেবে বে, ছেলে যদি স্থরমাকে এখনই মা ব'লে চিনে নিম্নে থাকে, ডা'হলে পরিণামে ভয়ের আর কেনো কারণ থাকে না। অবশেষে সে ছেলের কাছে পরাজয় খীকার ক'রে বলল, 'হাা কেই, মা ভোমার নীচেই আছে।'

ঁ শৃত স্থান ক্রমশঃ পূর্ব হয়ে আসছে। শাশুড়ী, কেট ঝি-চাকর সকলেই সুরমার মধ্যে অণিমাকে প্রতিক্ষ:ণ দেখতে পাচ্ছে। সেই হাসি, সেই মধুর কণাবলার ভঙ্গী, সেই কর্মনালতা--- খার কোনো কিছুর প্রয়োজন নেই। সংসার প্রতিদিন প্রতিনিয়ত মাসুযের কাছ থেকে যা আশা করে, দাবি করে, স্থরমার কাছ থেকে তা পাওয়া যাচ্ছে-আর কোনো কিছুর প্রয়োজন নেই। যেটা অণিমার প্রাপ্য, মেটা তাই সুবমার পদতলে অনায়াসে সমর্শিত হ'তে থাক্ল। অত শান্তির ম ধাও কিন্তু সুরমার মনের ক্লোভ মেটে না। অণিমার ব্যক্তিত্বের কাছে তার হ'ল পরাজয়, তার যে একটা স্বাভন্তা ছিল, সেই রূপটির দি.ক কেউ ভূলেও চাইল না। একটা মনগড়া, সান্ধনার সাদৃখ্যের মধ্যে সেটা লুপ্ত হ'য়ে যেতে উদ্যত। অণিমাকে তার সক্ষে মিশিয়ে দিয়ে এরা অণিমাকে ভুলতে চায়, কিল্ক যেদিন সমস্ত শাস্তি আর প্রসন্নতার মধ্যে স্থরমার ভুচ্ছতম কোনো জটি ^{ঘট}েব সেদিন অণিমা তার সমস্ত বিগত ঔ**জ্জনা** নিয়ে ক্রেগে উঠবে। হায়, সেদিন স্থরমার স্থান কোথার হ.ব?

একটা স্থান যদি কোথাও তার থাক্ত,—তার নিজের।

বীরেশ্বরকে স্থরমা আঞ্ড চিন্তে পারে নি—প্রচ্ছর, গন্ধীর; নিজের চারি দিকে সে যেন একটি হুর্ভেল্য গণ্ডীরচনা করেছে। স্থরমার ভৃত্তিংখীন ক্ষম মন সেই গণ্ডী অভিক্রম করতে পারে না।

অনেক সমর বীরেশ্বরকে দেশলে সুরমার কেমন বেন ভর হর। বীরেশ্বর বেন ভীবনের বহু অভিক্রতার প্রান্তে এসে ইাড়িরে ছির হ'রে আছে। সেই অবিচলিত প্রাণাত্তি সুরমাকে বেন আঘাত করে—এই লোকটির জীবনের বে অধারটি প্রমার কাছে অজ্ঞাত, সেই অধারটির সমস্ত

খুটিনাটি প্রমার জান্তে বড় ইচ্ছা করে; কিন্তু বীরেশ্বর

তার মনের সমস্ত ধার বন্ধ ক'র সেথানে অতি সতর্ক
পাহারা বসিয়েছে। ভূলে বেতেই চার বীরেশ্বর, ভূলে গিয়ে

তার নৃতন জীবনের আনন্দ সে পেতে চায়—বীরেশ্বরের

এই অভিলাষ প্রমার কাছে অজ্ঞাত। কিন্তু বীরেশ্বরের
সমস্ত উৎসাহ এই সতর্ক পাহারার নিঃ শ্যিত হয়ে যায়—

মনের বে নৃতন শাখাটিতে পল্লব মুঞ্রিত হবে, মুকুল ধরবে,
সেদিন বীরেশ্বের কেমন থেন একটা সঙ্গোচ।

সংসারের এক দিকে এই সঙ্কোচ, সাবধানতা আর গান্তীর্য্য আর একদিকে শুর্ 'অণিমা' 'অণিমা' রব—প্রমার জীবনে অবিমিশ্র শান্তি আনতে দিল না।

'দেখ, স্থরমা, কেষ্টকে একটু-আধটু পড়িও, মা'র কাছ থেকেই ছেলেরা শিক্ষা পায় প্রথম'—বীরেশ্বর একদিন বলল স্থরমাকে।

সুরমা তথন অতি যত্নে কাপড়গুলি কু চিয়ে রাখছিল। তার মনের সেই মধুর নির্দার ভাবটি যেন আছত হ'ল বীরেখরের কথায়। সুরমা অতি ধীরভাবে বলল, এত অল্পবয়সেই কি পড়বে, আরও কিছুদিন যাক, তবে ত!

'দেখ ঠিক ঐ কথাই অনিমা বল্ত, বল্ত—।' বীরেশ্বরের মুখের কথা অর্দ্ধ পথে থেমে গেল, কারণ, এর আগে ছ-এক বার অনিমা-সম্বন্ধে হ্রমার অসহিক্তার পরিচয় সে পেয়েছিল। অনিমার নাম শুনেই হ্রমা ভাড়াভাড়ি কাপড়-কোঁচানো শেষ ক'রে ঘর পেকে বেরিয়ে গেল। উভরের মধ্যে কেইকে কেন্দ্র ক'রে কথাবার্ত্তা আর ভেমন জম্তে পেল না।

নদীর স্রোতের মাঝখানে কে যেন বাধ বেধে দিয়েছে। উপচীয়মান জগভার বাধের প্রাস্তদেশে এসে ক্লরোল তুলেছে। প্রবাহের বাধাহীনতার ভাবটা যেন আর আসে না কিছুতেই।

শা এসে সন্মুখে বসেছেন, বীরেশর খেতে বসেছে। বীরেশরের থাওয়া প্রায় অর্জেক হয়েছে, এমন সময় মা বললেন, 'একটা কথা বলি বীক্ল তোমাকে! বৌমার আমার শরীর শুকিরে বে আধধানা হয়ে সেল, অথচ তুমি কোনো ব্যবস্থাই করলে না, না ডাক্টার, না বন্ধি, কিছু !'
—তার পর কণ্ঠস্থর ঈষৎ নামিয়ে বললেন, 'অণিমাও ঐ রকষ
শুকিরে যাচ্ছিল, তার পর এক দিন কঠিন রোগ দেখা দিল ;
পত্মীঘাতী-যোগ আছে তোমার—আমি যা বলি শোন,
ভাল ডাক্টার নিয়ে এসে স্থরমাকে দেখাও, এই বরসে
আর রোগ-তাপ ভাল লাগে না বাপু ।'

বীরেশর কোনো কথা না ব'লে একমনে খেরে বেতে লাগল। তার মনে হচ্ছিল সমস্তই ব্যর্থ হবে, স্থরমাপ্ত একদিন হয়ত এ বাড়ি থেকে বিদায় নেবে। কিছুক্ষণ পরে মুখ তুলে সে বলল, 'কি আর হবে ডাক্তার দেখিয়ে মা? সারবার হ'লে ও আপনিই সেরে যাবে, তোমরা অণিমার নামটি ওর কাছে বেশীবার ক'রো না। তাকে ভূলে যাও।'

মা ঈষৎ আর্দ্র কঠে বললেন, 'ভোলা কি সহজ কথা পাগল? তবে স্বমাও তার কাছে কোনো আংশে খাটো নয়। তাকে হয়ত ভূলে বেতে পারি, কিন্তু একে ভূলতে পারব না, আমি বলি, ভূমি শীক্ষীর ডাক্তার আনবার ব্যবস্থা করে।'

বী রখর শুধু সংক্ষেপে বললে, 'আচ্ছা তাই হবে।' সেদিন
সন্ধ্যায় বীরেখন আর বাড়ির বার হ'ল না। নির্জ্ঞান
ঘরের ম:ধ্য ধুপের একটা চমৎকার গন্ধ আস্ছে; কেউ
কোপ ও নেই! এই অবকাশে সে স্বন্ধার একটু সভ্যিকার
সালিধা অন্তব্য করতে চায়।'

স্রমা ঘরে ধুপ দিয়ে জানালার বাইরে চেয়ে আছে।
মনটা তার নিরুদ্দেশের দিকে ভেসে বেতে চায়। কোথার
তার ঘর? ঘরের অন্তিত্ব তার কাছে নিরর্থক—আর
এক জনের শৃন্ত আসনের উপর সে প্রাণপণে নিজের
অধিকার দাবি করবার চেটা করছে, কিছ সে চেটা রুণা,
সে আসনের কিছুমাত্র মর্যাদা তার কাছে নেই। তার একটা
নিজের স্থান কি কোথাও নেই?—আজও তার মনের
মধ্যে সেই একই চিন্তা বারে বারে জেগে উঠছে।

এই রকম ভাবছে তুরমা, এমন সমরে বীরেশর নিঃশব্দে ঘরে এসে দাঁড়াল। ঘরে আলো নেই, গুরু ধূপের একটা মৃহ সৌরভ আস্ছে এবং জানালা দিয়ে বাইরের সন্ধান্দাশের

বেটুকু মান বিবাধ আলো আস্ছে, তারই সন্মুবে সুর্মাকে বেন একটা অস্পষ্ট ছায়ামুর্ত্তির মত মনে হ'ল বীরেশ্বরের।

শান্তকঠে বীরেশ্বর বণণ, 'ওথানে দ'াড়িয়ে কে?— স্বরমা কি?'

প্রমা সরস্ত হ'ল না, বিচলিত হ'ল না, সূদ্র রহস্তলোক্বাসিনীয় মত নিঃশক্তে বেমন গাড়িয়েছিল, তেমনি গাড়িয়ে রহল।

বীরেশ্বর ধীরে ধীরে প্রমার কাছে এসে দাঁড়িয়ে তার মাধাটি বুকের উপর টেনে নিয়ে স্লিগ্ন কণ্ঠে বলল, 'কি হয়েছে তোমার প্রমা? অনায় বলুবে না কি ?'

সুরমাবল্ল, 'কই, কিছুই তহয় নি! আমি তবেশ ভাল আছি।'

'কোথাৰ ভাল আছ তুমি? শরীর এত খারাপ হ'ল কি করে?'

युत्रमा मः क्लिप्त वन् न, 'ना, ७ किছू नव ।'

দিশট দেধ্তে পাছিছ শরীর ধারাপ হয়ে যাছেছ ভোমার। অথ্য ভূমি বশৃহ, কিছুই হয় নি—আমি ড এ-কথা বিখাস কর্তে পারি নে।'

'আমি জানি, আমার কিছু হয় নি, তুমি বিশাস না কর্লে কি হবে ?'

'না, বলো লগ্নীট, ডাক্তার ডাক্তে হবে—অহথ বদি স্ত্যিই কিছু হ'য়ে থাকে, তার ব্যবস্থাত আমার করা দরকার।'

'ব্যবস্থা কর্বে, ব্যবস্থা? কি ব্যবস্থা কর্তে পার তুমি? মরে গেলে আবার একটা বিয়ে কর্বে, এই ত ডোমাদের পেশা?'

স্বনার কণ্ঠস্বর দৃঢ়, সতেজ। বীরেশ্বর সহসা কোনো উত্তর খুঁজে পেল না এ-কথার। যে কথা বল্বে ব'লে ভেবেছিল, সব কোথার গোলমাল হ'রে গেল। প্রাণপণ চেন্টার সে শুধু বল্ল, 'এখানে তোমার ভাল লাগছে না স্বরমা, কোথাও চেঞে যা'বে কি?'

সেই নির্জ্জন ঘরের মাধ্য হ্রেমা থিল্থিল্ ক'রে ছেসে উঠল! বল্ল, 'চেঞ্জ? কিসের চেঞ্জ? না, সে সব দরকার নেই, এইথানেই বেশ আছি।'

ৰীরেশ্বর কোন কথা না বলে আন্তে আন্তে সুরুমার

কাছ থেকে স'রে দ'ড়োল। তারপর শান্ত বি.র কঠে বল্ল, 'তাই হ'বে স্থরমা, এইখানেই থাক!' আরও বেন কিছু তার বল্বার ছিল, কিন্তু সে কথা আর সে বলতে পারল না—ভারাক্রাস্ত হলরে বীরেশ্ব ঘর থেকে বেরিয়ে গেল।

স্বনার হাসিটা বীরেশ্বর ভ্লতে পার্ল না, ঐ রকম অভ্ত হাসি ছিল অণিমার—মন বধন তার ক্ষ্ হ'ত, তধন সে ঐ ভাবে হে স উঠত, শাণিত ক্ষ্রধারের মত সেই হাসি, বিচ্যুতের ক্ষাণাতের মত সেই হাসি —মনের এবং ২রের বিরস নিত্তরতাকে কেটে খণ্ড থণ্ড ক'রে দেয় বেন সেই হাসি। নিজ্জন ছাদের উপর পায়চারি ক্রতে ক্রতে বীরেশ্বর কিছুতেই অণিমার হাসির সঙ্গে স্বনার হাসির অভ্ত সাদৃঞ্জের কথা ভূল্তে পারে না!

ইজি-চৈরারটা বারান্দরে এক পাশে টেনে নিয়ে চাকরকে চা আনবার কথা ব'লে দিয়ে বীরেখর তথ্য হ'য়ে ভাবতে লাগল।

'এ-ও কি কথনও সম্ভব হয় ?—একজনের স.ক আর এক জনের সাদৃগু—এও কি সম্ভব ? মানুঘের মনগড়াঃ কল্লনার শক্তি কি এত বেণা ?'

'কিন্তু মা ওকে অণিমাব'লে ডাক্লেন কেন? আর, অম্পট সন্ধায় তারার প্লান আলোয় কেট কি ক'রে স্রমাকে মা ব'লে চিন্তে পার্ল? কই, আমার ত তেমন মান হয় নি কথনও! কিন্তু ঐ দি নর সেই হাসি, ওঃ, ভাবতে পারা যায় না একেবারেহ!'

টি-পরের উপর চাকর কথন চা দিয়ে গেছে, বীরেশরের সে ধেরাল নেই। সম্মুখের নরেকেল গাছের একটি মাত্র পাতা অকারণে তুলছে। বীরেশরের ম.ন পড়ল ঠিক এই রকম সময়টাতে অণিমা এসে ভার কাছে বসত। মাথার মধ্যে হাত বুলিরে দিতে দিতে কত গল্প সে করত—কই, এখানে ত স্থরমার দেখা পাওলা যার না। ভবে, আরু সাদৃগু কি ক'রে সন্তব ?

'না, ওসব একেবারে বাজে কথা! কোথাও ভিত্তি নেই ওর! এই সব পাগলামি চিস্তা যত কম হয়, ততই ভাল! পুব কাজের মধ্যে থাকা দরকার, যাতে এক মুহুর্ত্তের জন্তও ওসব চিস্তা মনে না আসে, সেই রকম ব্যবস্থার দরকার।'—বীরেশ্বর এই রকম ভাবতে ভাবুতে ইঞ্চিতেয়ার ছে.ড উঠে আবার ছাদে পায়চারি কর্তে আরম্ভ কর্শ।

স্বনার মনটা আজ ভাল নেই। চেঞ্জে যাওয়ার কথা বলেছিলেন, সে সময়টায় ও-রকম হাসা তার উচিত হয় নি, আর সেই কথাটা বলা একেবারেই ঠিক হয় নি—কেমন খেন হ'ল ভা'র সেই সময়ে, নিজেকে সে সাম্লাভে পারল না। ভার যে ঠিক কি হয়েছে, সে ব্যতে পারে না, শুধু শুধু সকলের উপর সে অকারণে বিরক্ত হ'য়ে ওঠে। দিদির নাম ওঁরা করেন, ভাতে এমনি কি হয়েছে; —কিন্তু বড় বেশী বার সেই নাম তাকে শুনতে হয়, ভাতেই মনটা ধারাপ হয় কি না! আচ্ছা, এবার বদি চেঞে যাওয়ার কথা বলেন, ভা হ'লে বেশ ভাল হয়। এক কথাতেই স্বনা বাজি হ'য়ে যাবে।

উ:, মাথাটা তার বড়ত ধরেছে, একটুও ব'সে থাকা বার না। এই সময়টায় যদি তিনি আস্তেন একবার! বল্তেন, তোমাকে ক্ষমা করেছি সুরমা, মনে আমার কোনো গ্রানি নেই, তা হ'লে বেশ হ'ত, না?

এই রকম ভাবৃতে ভাবৃতে কথন যে সুরমা তার
স্থলর বিছানার এক পাশে শুরে পড়েছে, তার নিজেরই
সে শের'ল নেই। মা এসে কতবার ডাক্লেন থাওয়ার জন্ত,
স্থার তথন গভীর তক্রা। গায়ে মাধায় হাত দিয়ে মা
বললেন 'না বাপু, কিছুই ভাল ব্রাছি নে আমি।
বীরেশ্বরকে বললাম এক-শ বায়, ডাক্রার নিয়ে এসে দেখাও,
আমার কথা কি ও শুন্বে ?'—এই ব'লে তিনি নী.চ চলে

স্থরমার বিছানার পাশে তারই মত আর একটি মেরে এসে বস্ব। এক রাশ এলো চুল তার মাথায়, অপরূপ তার চোপের চাহনি!

সুরমণর মাথায় হাত বুলিয়ে দিতে লাগল সেই মেয়েট।

কি হয়েছে ভোমার সুরমা ?' সুরমা ভার মুখের দিকে
চেয়ে পাকে অপলক দৃষ্টিভে। কথা কইতে পারে না।

' এসুধ করেছে তোমার ? আমি ত ছিলাম এই-খানেই, আমাকে ডাক নি কেন ?' স্থান স্থির হয়ে তার কথা শোনে। গভীর জ্যোৎসা রাত্রে বে পাখী ডাকে, সেই পাখীর স্বরের মত তার কণ্ঠসর! কত অরণ্য, কত পর্বত, কত স্বচ্চসলিলা নদীর পরপার থেকে সেই স্বর বেন ভেসে আদ্ছে। অজ্ঞাত বিশ্বরে সর্বশ্রীর রোম:কিত অবস্থার স্বরমা সেই স্বর শুন্তে থাকে, মুখে তার ভাষা কোগার না!

'ঝামাকে ডাক্লেই ত পার্তে সুরম, আমি তোমার অসুধ সারিয়ে দিতাম। কিন্তু আমার কেন্ট কোথার? তাকে ত দেবতে পাচ্ছিনে আমি!'

'কি বললে? এইখানেই আছে, ভাল আছে! অনেক দিন তাকে দেখি নি আমি,—তা ভোমার কাছে আছে, ভাল আছে ওনেও হুখ। কিন্তু ভোমার অহুখ আমি সারিয়ে দেব হুরমা! তুমি উঠে এস আমার সঙ্গে!'

স্থ্যমা ষ্প্রচালিতের মত উঠে গাঁড়াল। তার সর্ব্ব শরীর তথন একটি লতার মত কাঁপেছে।

'কাঁপছ কেন? এন, আমার সজে—ভর কি? আমাকে চিন্তে পার্ছ না তুমি, আমি যে অণিমা, দেখ না আমার দিকে চেয়ে! দেখ।'

স্থান চেয়ে দেখল, গভার ছটি কালো চোথের দৃষ্টি।
সেদিন কেইকে সে যে তারা দেখিয়েছিল, অখ্যাছের
ওপারের সেই বড় তারাটি—সেই তারার দীপ্তি যেন তার
হু চোথে জল জল কর্ছে।

থোলা দরজার বাইরে ছাদ, দেই ছাদের উপর থেকে অণিমা ডাক্ছে থেন সুরম।কে, 'এস, এস—বাইরে বেরিয়ে এস, দেখ, এখানে কত আলো, ধরের মধ্যে থেক না।' স্থরমা নিংশব্দে ছাদে এদে দাড়াল।

একটি বড় প্রজাপতি বেন তার সমূপে ভেসে বেড়াছে। সাদা, মচহ, শবু এবং স্কার প্রজাপতি।

'দেখ, আর বেশী দূর এস না! এই আলসের পাশে চুপ ক'রে শুরে থাক। গারের কাপড়টা দিরে পা তুটা চে:ক ফেল। জোৎসা এসে পড়ুক ভোমার শরীরে, হাওরা এ:স লাশুক। সব অসুগ সেরে বাবে।'

স্থানা বড় আলসের পালে পা ছটি চেকে শুরে পড়ল। শুরে শুরে দেবেল সেই বড় প্রকাপতিটি ছাল পেরিরে জামগাছ পেরিয়ে বাশবন পার হয়ে অনেক দুরে চলে গেল, জনেক দুর।

ভারার ভরা আকাশ। হ্রমা ভারা শুন্তে লাগল, এক, ত্ই, তিন—এক, ত্ই, তিন—তার পবে আর গোণা বার না। সর্বশরীর ধীরে ধীরে হির হরে আস্ছে, ঘুম, গভীর ঘুম হ্রমাকে বেন জড়িরে ধরেছে, হ্রমা নিশ্চেতন হরে ঘুমিরে পড়ল।

বীরেশ্বর দেদিন একটু বেশী রাত্রে বাড়ি এসেছিল।

শবের মধ্যে গিয়ে দে: শ সুরমা ঘুমুচছে। তার মাথার একটু

শাত বুলিয়ে দিয়ে বীরেশ্বও ঘুমিয়ে পড়ল পাশেই।

রাত্রে খে:লা জানালাটা দি:র হু-ছু ক'রে হাওয়া আস্:ছ ভিতঃর। বীরেখর হঠাৎ ক্লেগে উঠে পাশে চেয়ে দেখে স্বরমা নেই।

সচকিত হরে বীরেশ্বর কয়েক বার ভাক্ল, 'প্রনা, প্রনা।'

কিন্ধ কোনো উত্তর না পেরে সে তাড়াতাড়ি খাট থেকে নেমে বাইরে ছালে বেরিয়ে এল।

পশ্চিম আকাশের প্রান্তে চাঁদ অন্ত যাছে। বাতাদের দোলা লে:গ বাঁশের বন ত্লে ত্লে উঠ্ছে। ছাদের উপর দাঁড়িয়ে বীরেশ্ব ডাক্ল, 'সুরমা!'

কোন উত্তর নেই!

কোথায় গেল সূরমা? কই, কোনোদিন ত সে রাত্রে থামন সময় বাইরে যার না। এখনই হা ত ফিরে আস্বে এই মনে ক'রে বীরেশ্বর ছাদের ওপর ঘুরে বেড়াতে লাগ্ল। ঘুরুতে ঘুরুতে দে:খ প্রদিকের আল্সের পাশে কে যেন ওয়ে আছে চালরমুড়ি দিয়ে।

কাছে গিয়ে দেখে সুরমা অকাতরে ঘুমুচছে। মাণার চুলগুলো ইতস্ততঃ ছড়িয়ে পড়েছে। মুখখানা মুতের মত পাণুর, বিবর্ণ।

বীরেখরের বৃক্তের ভিতরটার তথন যেন নিদাক্রণ যন্ত্রণা ছচ্ছে। মান টাদের আলোর তার মনে হ'ল, গেল, গেল সব গেল—আবার তাকে সন্নাসী হতে হবে! আবার সেই গমা, কাশা, হরিছার।

ভাড়াভাড়ি সুরমার পাশে ব'নে সে'ভার কানের কাছে

মূধ নিবে গিরে প্রাণপণে ডাক্.ত লাগ্ল, 'হরমা, হরমা !'

সুরমা ধীরে ধীরে উঠে বসল। অসমূত বেশ-বাস।
দীর্ঘ চুলগুলো মুখের উপর এলোমেলো হ'রে পড়েছে;
চাহনি অন্তত-ধেন স্বপ্নাবিষ্টের মত!

ধীরে ধীরে তার হাত ধরে বীরেশর তাকে ঘরের মধ্যে নিয়ে এল। আর এক রাত্তির কথা তার মনে পড়ল। অনিমা ঠিক এইরকম তাবে এক দিন ঐ পূব দিকের আল্সের পাশে এদে ভয়েছিল। সর্বাক্তে সাদা চাদর মৃড়ি দিয়ে অনিমা ভয়েছিল। তার ঠিক এক মাদ পরেই তার সেই নিদারুণ অস্থ আরম্ভ হ'ল। বীরেশরের সর্বাঙ্গ থর-থর ক'রে কাঁপছে—এমন অলৌকিক ব্যাপার যে ঘট্তে পারে, এ তার স্থপ্লেরও অগোচর। কি জানি এর পরে কি আছে? আশক্ষার বীরেশরের মন যেন মৃথ্ছাহত।

খাটের উপর স্থরমাকে বসিয়ে বীরেশ্বর নিজে তার পাশে ব'দে তার একথানি হাত হা তর মধ্যে নিয়ে ধীরে ধীরে বলল, 'পুরমা, হঠাৎ হাদে গিয়েছিলে কেন?'

তড়িৎস্পৃষ্টের মত স্বমা উঠে দাড়াল, খাট থেকে নেমে
ঠিক বীরেশ্বের সম্মুধে দাড়িয়ে দে বলল, 'আমি স্বমা নই,
আমি অনিমা—ভাল ক'বে চেয়ে দেখ, দেখ, তুমি।'

বীরেশর নির্বাক্ বিশ্বয়ে সুরমার দিকে চেরে রইল।
মৃতের মত পাণ্ডুর, বিবর্ণ বিশ্রী—কপালের পাশে বিন্দু বিন্দু
ঘাম দেখা দিয়েছে। পায়ের নথ থেকে মাথার চুল পর্যান্ত
সমন্ত শরীরটা তার বেতসলতার মত কম্পমান। আর, সব
চেরে আশ্চর্যা, মৃত্যুর ছল্ল জ্যা ব্যবধান পার হয়ে অণিমার
ঘটি দীপ্ততারা চোপ্ যেন স্বরমার ঘটি স্লিয় চোপের মধ্যে
আবির্ভূত হয়েছে। ঘটি বড় শুক্তারা ষেন অল্-অল্
ক'রে অল্ছে।

বীরেশ্বর স্থিরদৃষ্টিতে সুরমার দিকে চেয়ে বলল, 'ভূমি অণিমা—ভূমি সুরমা নও ?'

তেমনি দৃঢ় কঠে স্থরমা উত্তর দিল, 'না, স্থরমা মরেছে, আমি অণিমা!'

বীরেশ.রর ভর হ'তে লাগল, কিন্তু সে কাউকে জাগাল না। সেই নিস্তিত প্রীর মধ্যে বীরেশর ভক্রাহীন চোধে প্রহর জাগতে লাগল। সুরমাকে বুকের মধ্যে টেনে নিয়ে তার মাথায় মুধে কপালে হাত বুলিরে দিতে দিতে বীরেশ্বর বলতে লাগল, 'অনিমা, কতদিন পরে তুমি এলে! আমার জীবনে যে কোনো স্থধ নেই অনিমা! তুমি আস নি ব'লে আমার জীবন শ্রীহীন—দেধ, মনে আমার স্থধ নেই অনিমা! কত বুরে বেড়ালাম, কত তীর্থ, কত দেশ—কোথাও ত তোমাকে দেখতে পাই নি! আজ এতদিন পরে তুমি দেখা দিলে! আমি বাচলাম অনিমা, তুমি এসেছ, তোমাকে এইবার সব বুরিয়ে দিয়ে আমি বিদায় নেব। আমি আবার বেরিয়ে পড়ব অনিমা,—তোমার ছেলে, তোমার সংসার তুমি বুঝে নাও, এ সব বোঝা আমার বইবার শক্তি নেই!'—বীরেশ্বরও বেন অরাবিষ্ট, কথার তরঙ্গ বেন তার বুকের মধ্যে তোলপাড় করছে। অশ্রসজল চোগে বীরেশ্বর তার ফদয়কে নিংশেষে উছাড় ক'বে দিতে চার।

বীরেশবের বাছবজনের মধো সুরমা ফুঁপিয়ে ফুঁপিয়ে কাঁদছে, নিশুদ্ধ রাত্তে শিশির ঝ'রে পড়ছে বাইরে ঘাদের উপর।

বীরেশরের কথায় তার স্বপ্নের বোর কেটে গেছে—সে বে স্থরমা এই বোধ ধখন তার ফিরে এল, তখনও বীরেশর ব'লে চলেছে, 'আমার জীবনে বে কোনো সুখ নেই জণিমা —কোনো সুখ নেই।'

স্বনার সমস্ত মনের মধ্যে একসঙ্গে কারা ধেন উচ্চরবে হাহাকার ক'রে উঠল। তথন তার চোধের দৃষ্টি হয়ছে শান্ত, প্রাকৃতির স্বপ্লাবিষ্ট উগ্রতা কেটে গেছে। বীরেশরের দিকে শান্ত ভাবে তাকিয়ে সে বলল, 'আমিই ভোমার সেই অণিমা! মনে আমার কোনো ক্ষোভ নেই আর! দিদি আমাকে দেখা দিয়েছেন আজ, তাঁকে আমি স্পষ্ট দেখেছি।'

রাত্রি ভোরের দিকে এগিরে চলেছে। প্রতিদিন ভোরে কেই ঠাক্মার বিছানা ছেড়ে দিয়ে তার বাবার দরজায় একে ধাকা দিয়ে তাদের জাগিয়ে তোলে। প্রতিদিনের অভাাদ মত কেই একটা কোট গায়ে দিয়ে এদে বাইরের দরোজায় ধাকা দিছে। ডাক্.ছ, 'মা, ওমা, ওঠ—দর্ভা খুকে দাও।'

'এই বে, যাই বাবা'—ব'লে স্থরমা বিছানা ছেড়ে দিয়ে দর্জা থুলতে গেল। এতক্ষণ পরে বীরেশ্বর নিশ্চিন্ত মনে ভাল ক'রে গুমবার চেষ্টা করতে লগেল।

মহিষ দেবেন্দ্রনাথ ঠাকুরের বৈরাগ্য

পরলোকগত পণ্ডিত প্রিয়নাথ শাস্ত্রা
[৺ পণ্ডিত ত্রিয়নাথ শাস্ত্রী কর্ত্তক প্রায় ৩০ বৎসর পূর্বে লিখিত]

আজ মহর্ষিদেবের বৈরাগ্যের ও তব্বজ্ঞানের কথা কিছু বিল—বৈরাগ্য না জন্মিলে আত্মানন্দের আত্মাদ পাওয়া বায় না, বেমন তঃথের জ্ঞান না হইলে স্থেবর জ্ঞান হয় না, অরুকারে না পড়িলে আলোকের শুল্র রশ্মির রমণীরতা উপলব্ধ হয় না। সংসারে মহর্ষির বৈরাগ্য জন্মিরাছিল, এমন কি বে-ব্রাহ্মধর্ম-প্রচারে তিনি জ্ঞীবন উৎসর্গ করিয়াছিলেন সেই ব্রাহ্ম সমাজের লোকেদের অনেকের মধ্যে ধর্মজাব ও নির্মাভাব দেখিতে না পাইয়া তাহার বৈরাগ্য তীব্রতর হইল। তিনি সমান্দের কর্ম ইইতে অবসবগ্রহণ করিতে ইফ্রা প্রকাশ করিলেন। তিনি

বলিলেন, "প্রকাশ হ'ল না যে, কোথার ছিলাম, এথানে কেন্দ্র আসিলাম। ছংগ ও পরিতাপ যে আপনার কাজ আপনি ভূলে রয়েছি। কোথার ছিলাম, কেন এথানে আসিলাম, আবার কোথার যাইব, অন্তাপি আমার নিকট প্রকাশ ছইল না। অল্যাপি এখানে থাকিয়া ব্রহ্মকে যতটা জানা যায় তাহ: আমার স্থানা হইল না। আর আমি লোকের সঙ্গে হো-হো করিয়া বেড়াইব না, বৃথা জন্ধনা করিয়া আর সমর নই করিব না। একাগ্রচিত্ত হইরা একান্তে ভাঁহার জন্ত কঠোর তপন্তা করিব। আমি বাড়ি ছইতে চলিয়া বাইব, আর ফিরিব না। শ্রীমৎ শহরাচার্যা আমাকে

উপদেশ দিতেছেন,—কশুস্থং বা কুত আয়াতঃ। তবং ভদিদং চিম্বয় ভ্রাত:-কার ভূমি এবং কোথা হইতেই বা আসিয়াছ হে ভ্রাতঃ, এই তব্টি চিন্তা কর।" এই সময়ে ১৭৭৮ শকের প্রারণ মাসে তিনি বরাহনগরে গোপাললাল ঠাকুরের বাগানে থাকি:তন এবং এথানে শ্রীমন্তাগবত পড়ি:তন। পড়িতে পড়িতে এই শ্লোকটি তাঁহার মনে লাগিয়া গেল, "আমায়া যাচ ভূতানাং জায়তে পুত্ৰত তদেব জ্ঞামরং প্রবাং ন পুনাতি চিকিৎসিতং।" অর্থাৎ হে পুত্রত, জীবদিগের যে-রোগ বে-ক্রবা দ্বারা জন্মে -দে-দ্রব্য কগনও রোগীকে আরাম দিতে পারে না। অতএব তিনি ভাবিলেন যে, "মামি সংসারে থাকিয়াই এই বিপদ-বোরে পড়িয়াছি। অতএব এ-সংদার আর আমাকে এই বিপদ থেকে রক্ষা করিতে পারিবেনা। অতএব এখান হুইতে পালাও।" সন্ধার সময়ে তিনি এই বাগানে গঙ্গাতীরে বন্ধনিগের দঙ্গে বদিতেন। বর্ধার ঘনমের তাঁহার মাথার উপর আকাশ দিয়া উড়িয়া চলিয়া বাইত। সেই নীল নীরদ তথন তাহাকে বড়ই মুথ দিত। বড়ই শান্তি দিত। তিনি মনে করি.তন, এই মেন কেমন কামচার, কেমন মুক্তভাবে থেখানে-সেণানে ইচ্চামত চলিয়া যাইতেছে। আমি যদি ইহাদের মত কামচার হইতে পারি, ইচ্ছামত যেখানে-দেখানে চলিয়া যাইতে পারি তবে আমার বড়ই অ'নৰ হয়। ছালোগা উপনিধদে আছে যে, "ৰ ইহায়ান-মন্বিদা ব্ৰহস্তোতাংক্ত সত্যান্ কামাংস্কেষাং সর্বেষু লোকেষু ক:ম5'রো ভবতি।'' অর্থাৎ, যাহারা এই মর্ক্তো পাকিয়া**ই** প্রমায়াকে জানে এবং তাঁহা:ত বে-সকল সভা কামনা অ.ছে ত'হা ক্লানে তাহারা পরকালে সকল লোকেই কামচার হয়, সকল লোকেই ইচ্ছানুসারে যাতায়াত করিতে পারে। এইটিই তাঁহার বড় লোভনীয় হইয়াছিল। তিনি ভাবিয়াছিলেন যে, আমি এধান হইতে গিয়া লে কলোকান্তর ঘুরিয়া বেডাইব। অব'র উপনিষদের ভাযো पिशिन्न (४. "न धानन न श्रे**ब**र्या न कर्यमा छा:शिनिकना মৃত্তত্ব মনিত:"--না ধনের ছ'রা না পুত্রের ছারা না কর্ম্মের ঘারা কিন্তু কেবল এক ভাগের **ঘা**রাই সেই অমুভ ভত্তকে ভোগ করা যায়—তথন এ-পৃথিবী স্থার তাহার মনকে ধরিয়া রাধিতে পারিল না। সংসারের মেহেগ্রাই সকলই তাঁহার

ভাঙিয়: গেল, তথন তিনি প্রতীক্ষা করি:ত লাগিলেন কথন আখিন মাস আসি.ব—কথন এখান হইতে পলাইবেন, সর্বাত্র ঘুরিয়া বেড়াইবেন, আর ফিরিবেন না ৷ তিনি হাফেজের ভাষার নিজেকে সম্বোধন করিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন—

> ''তোর। জংক্রি বারে অধ-সেজনন্দ স্কির নদানমৎ কে ইবীদামগাংহ দে ওঞ্ভাদ অস্ত্র।

সংসম অৰ্গ থেকে ভোষার আহ্বান আসি:তছে না জানি এই পুৰিবীর মোহপাশে তোষার কি কাজ আটকাইয়াছে।

তিনি যে আখিন মানের জন্ত প্রতীক্ষা করিতেছিলেন, ত'হা উপস্থিত হইল। তিনি কাশী পর্যন্ত একখানি বোট ভাড়া করিলা ভাহাতে আবোহণ করিলেন। তিনি সংসার ছাড়িয়া তাঁহার প্রিয়তমের উদ্দেশে চলিয়া বাই তেছেন। শ্ ভাহাতে তঁ'হার কি আনন্দ, কি উৎসাহ! তিনি বলিয়াছেন, "১৭৭৮ শকের ১৯শে আখিন বেলা ১১টার সময়ে গঙ্গায় জোয়ার আইল আমার মনেও নব উৎসাহের উৎস ছুটল। আমি গিয়া নৌকাতে আবোহণ করিলাম। নোল্যর উঠিল, বোট চলিল। আমি ঈখরের দিকে ভাকাইয়া বলিলাম,

কীন্ত এ নসিম্ভগানহম অ্যায় বাদ সরত বার্থজ্ঞ বাসদ কে বাজ বিনয়ীম দীদায়ে আসনারা।''

আমরা এখন নৌকাতে বসিহাছি, হে অমুকূল বায়ু; তুমি ওঠ হয়ত আবার আমা দর সেই দর্শনীয় বন্ধুকে দেখিতে পাইব।''

মহবি মহিমাতে সেই মহিমময়কে দেখিতে বড়ই আনল উপভোগ করিতেন। মুক্তেরে গিয়া প্রথমে তিনি সীতা-কুণ্ড দেখিতে যান। মন্দির হইতে ভোরে চারিটার সময় রওনা হইয়া ই টিয়া তিন ক্রোশ দু.র, স্থালিয়ের সঙ্গে সঙ্গে সীতাকু**তে** উপস্থিত হ*ইলেন* এবং সেখানকার সমস্ত পর্যাবেক্ষণ করিয়া আবার সেই তিন ক্রোশ হাটিয়া ক্ষুধিত ত্যিত ও পরিশ্র ন্ত হইয়া বোটে ফিরিলেন। "পরিশ্রান্তে-ক্রিয়াআইহং ভূট পরীতো বুভূক্ষিত:।" ত'হার পরে ফতুয়ায় বিতীণ গঙ্গার মধ্য দিয়া যাইতেছেন এমন সময় প্রব**ণ থ**ড় উঠিল। ত:ড়:তাড়ি বোট ডাঙার দিকে শইয়া গেল। ডাঙায় ত গেল, কিন্তু প্রতিত্বল বড় গলার উচ্চ পাছে নৌকাকে আছড় ইতে नागिन। तोका ভাঙে, আর কিছতে রকা পার না। মহর্ঘি সেই দোলারমান নৌকা হইতে উঠিয়া পাড়ের উপরে দাঁডা**ইলেন। মহ**র্ষি বলিয়াছেন, সেধানে ভূমিতে যদিও আমার প্রতিহা হইন,

কিন্তু প্রড়ে আমি ঝুন্থির, চড়ার বালু বেন ছিটার গুলির মন্ত
আমার শরীরে বিদ্ধ হইতে লাগিল। আমি একটা মোটা
চাদর গারে দিয়া পাড়ে দাড়াইরা গঙ্গার সেই ভীয়া প্রমন্ত
মুর্তির মধ্যে সেই "মহত্তয়ং বক্তম্বাং" পরমেশ্বরর মহিমা
অন্তব করিতে লাগিলাম। আমাদের সঙ্গের পানসীধানা
সকল আহার্যা সামগ্রী লইয়া গঙ্গার গর্ভে ডুবিয়া গেল।
মহ্যি এই ভাবে ঈশ্বরের মহিমা দেখিতে দেখিতে কখন বা
ডুলিতে চড়িয়া আখালা হইয়া লাহোর প্রছিলেন।

এলাহাবা দ এক রাত্রি গঙ্গার পূর্বে পারে পেয়া-নৌকাতে রাত্রিবাপন করিয়াছিলেন। দিনীতে সুধানন্দ স্বামীর সঙ্গে তাহার সাক্ষাৎ হইয়। হিল। এই প্রধানন্দ, হরিহরানন্দ তীগম্বামীর শিবা, ইহারই কনিষ্ঠ ল্রাডা আমাদের व्यापि नमादकत व्यथम आहारी त्रामः व विभावाती । युर्यानम महर्वितक विनिद्राष्ट्रितन त्य, "आमि अवः वामत्माहन রায় উভরে**ই হরিহরানন্দেব শি**ব্যা" সুদীর্ঘ কত পথ কত ক্লেশ সহ্য করিয়া মহর্ষি তথন সিমলা পাহাড়ে উপস্থিত হইয়াছিলেন। সিমলা হগতে যথন তিনি আরও উত্তর হিমাদ্রিতে পর্যাটনে গিয়াছিলেন তথন একদিনের পথের বুত্তান্ত তিনি এই ভাবে ব্যক্ত করিয়াছেন—"…পর্বতের গাত্তেতে বিবিধ প্রকারের তুণশতাদি যে জন্মে তাহারই শেভা চমৎকার। তাহা হইতে যে কত জাতের পুপা প্রফুটিত হইয়া রহিয়াছে ত হা সহজে গণনা করা বায় না। খেতবর্ণ, রক্তবর্ণ, পীতবর্ণ, স্বর্ণবর্ণ সকল বর্ণেরই পুষ্প যথা-তথা হই ত নয়ন.ক আকর্ষণ করিতেছে। এই পুষ্প সকলের সৌন্দর্যা ও লাবণা ভাছাদের নিঙ্কলক পবিত্রতা দেখিয়া দেই পরম পবিত্র পুরুবের হন্তের চিহ্ন তাহাতে বর্তমনে বোধ हरेग। यनिও তাহ'দের (⊲মন রূপ তেমন গন্ধ নাই। কিন্তু আর এক প্রাকার শ্বেতবর্ণ গোলাপ পু পার গুচ্ছদকল বন হট:ত বনাস্তরে প্রক্টিত হইয়া সমুদয় দেশ গব্দে আ'মোদিত করিয়া রাখিয়া ছ। আমার সঙ্গের এক ভূত্য এক বনলতা হইতে ভাহার পুপিত শাখা আমার হতে দিল। এমন ফুন্দর পুলিত শাধা আমি আর কথনও দেখি নাই। অমার চকু খুলিয়া গেল, আমার হৃদয় বিকশিত হইল। আমি সেই ছোট ছোট খেত পুপগুলির উপরে অধিল ^{মাতার} হন্ত পড়িরা রহিরাছে দেখিলাম। এই বনের মধ্যে কে বা সেই সকল পুশের স্থান্ধ পাই ব, কে বা ভাছাদের।
সৌল্বর্যা দেবিবে। ভথাপি ভিনি কভ যত্ত্বে, কভ স্লেহে,
ভাহাদিগকে স্থান্ধ দিয়া লাবণা দিয়া, শিশিরে সিক্ত করিয়া
লভাতে সাঞ্চাইয়া বসাইয়াছেন। ভাঁহার করুণা ও স্লেহ্
আমার ফলয়ে জাগিয়া উঠিল। নাথ! যথন এই ক্লুড কুড
পুশগুলির উপরে ভোমার এত করুণা তথন আমা দর
উপরে না জানি ভোমার কভই করুণা। ভোমার করুণা
আমার মন-প্রাণ হইতে কথনই যাইবে না। ভোমার করুণা
আমার মন-প্রাণ হইতে কথনই যাইবে না। ভোমার করুণা
আমার মন-প্রাণ এমনই বিদ্ধ হয়য়া আছে যে যদি আমার
প্রাণ যায় তথাপি প্রাণ হইতে ভোমার করুণা যাইবে না।"
এই পুশগুচ্ছ হা ত করিয়া এবং হাফেজের উপরি উক্ত
ভাষাপন্ন কবিতা পথে সমস্ত দিন উচ্চাংশ্বরে পড়িতে পড়িতে
ভাহার করুণা রসে নিম্ম হইয়া স্র্যাণ্ডের কিছু পূর্বের্বি সায়ংকা ল হকুনী নামক পর্বত-চূড়াতে উপস্থিত হইলেন।
দিন কথন চলিয় গেল কিছুই জানিতে পারিবেন না।

যথন মহর্ষি সিমলাতে ছিলেন তথন এক দিন পৌয মাসের প্রাতঃকালে দেখেন যে রাত্রে তুই-ভিন হাত পুরু বরফ পড়িয়া সকল পথনাট বন্ধ করিয়া ফেলিয়াছে। তিনি কৌতুহলের বশবর্তী হইয়া সেই বরফের পথেই বেড়াইতে বাহির হন। ম_্র্ত্তি ও আনন্দে তিনি এতদুর এত বেগে চ**লি**য়া গেলেন যে সেই শাতকালে বরফের মধ্যে তিনি গ্রীয় অনুভব করিলেন এবং ভিতরের বস্ত্র থামে আর্দ্র হরষা গেল। তথনকার ভাহার শরীরের বল ও এস্থতার এই পরিচয়। তুই প্রহরের সময় তিনি স্নানে বসিয়া বরফমিশ্রিত জল আপেনা-আপনি মন্তকে ঢালিয়া দিতেন। নি.মবের জন্ত তাহার দেহে শোণিত-১লাচল বন্ধ হইয়া যাইত এবং পরক্ষণেই তাহা দিওণ বেগে চলিয়া তাহার পরী র সমধিক ক্ষুর্স্তি ও তেকের সঞ্চার করিত। পৌষ মাব **মাসের** শীতেও তিনি গৃহে আগুন জালাইতে দিতেন না। শাভ শরীরে কতদূর সহু হয় তাহা পরীক্ষার জ্ঞ্জ এবং তিতিক্ষা ও সহিষ্ণুতা পরীক্ষা করিবার জ্বন্ত তিনি এইরূপ নিয়ম অবলম্বন করিয়াছিলেন। তিনি রাত্রে শয়ন-বরের দরজা খুলিয়া রাখিতেন, রাত্রির সেই শীতের বাতাস তাঁহার বড়ই ভাল লাগিত। তিনি কম্বল কড়াইয়া বিছানায় ব্যিয়া সকল ভূলিয়া অর্দ্ধেক রাত্রি পর্যান্ত ব্রহ্মসঙ্গীত ও হাফেজের কৰিতা গান করিতেন—"বোগী জাগে,—ভোগা রোগা কোথায় জাগে। ব্রন্ধজ্ঞান ব্রন্ধান ব্রন্ধানন্দ রস পান প্রীতি ব্রন্ধে যার সেই জাগে।

> ''ইয়ারৰ আ সামা বহাক রোজ কাসনাএ কীড্। জানমা সোধৎ ৰপোসীয় কে জানানএ কীড়া।

"বে-দাপ রাত্রিকে দিন করে সে-দীপ কাহার ?···আমার ত ভাতে প্রাণ দম্ম হ'ল। বিজ্ঞাসা করি তাহা প্রির হ'ল কার ?''

বে-রাত্রে মহর্ষিদেব ঈশরের ঘনিট সংবাস অনুভব করিতেন, মন্ত হইরা অতি উচ্চৈশ্বরে বলিতেন, "আজ আমার এ সভাতে দীপ আনিও না। আজিকার রাত্রিতে সেই পুর্ণচন্ত্র আমার বন্ধু এধানে বিরাজমান।"

তিনি রাত্রি ত এইরূপ আনন্দে কাটাইতেন, দিনের বেলায় গভীর ত্রন্সচিস্তায় নিম্ম থাকিতেন, প্রতিদিন হুই প্রাহর পর্যাস্ত তিনি দৃঢ় আসনবদ্ধ হুইয়া একাগ্রচিছে আত্মার মূল তত্ত্বের আলোচনাও অনুসন্ধানে প্রবৃত্ত থাকিতেন। এই সাধনবলে তিনি এই সিদ্ধান্তে উপনীত হইলেন যে, যাহা মূল তৰ উহার উন্টা ভাবনা মনেতেও স্থান পাইতে পারে না, তাহা কোন মনুষ্যের ব্যক্তিগত সংস্কার নহে, কালনির্ব্ধিশেয়ে সব্ববাদিসম্বত। মূল তত্ত্বের প্রামাণিকতা আর কাহারও উপরে নির্ভর করে না, তাহা আপনি আপনার প্রমাণ, তাহা স্বতঃসিদ্ধ, যেহেতুক আধাাত্মিক প্রভিষ্টিত। এই মূপ তত্ত্বের উপর নির্ভর প্ৰস্তাতে করিয়া উপনিষদের পূর্ব্ব ঋষিরা বলিয়া দেবল্মৈয় মহিমাতু লোকে যেনেদং ভ্রাম্যতে ব্রহ্ম চক্রং। প্রমদেবেরই এই মহিমা বাহার দারা এই বিশ্বচক্র: ভ্রাম্যান কোন কোন পণ্ডিত মে'হে মুগ্ধ হইয়া বলেন, প্রকৃতির স্বভাবেতে ক্সড়ের অন্ধশক্তিতে কেহ কেহ বা বলেন কোন কারণ ব্যতীত কেবল কালেরই প্রভাবে এই প্রকাণ্ড জগৎ চলিতেছে, কিন্তু আমি বলি পরমদেবেরই এই মহিমা থাহার দারা এই বিশ্বচক্ত চলিতেছে।

"বভাৰ মেকে করারা বদস্তি কালন্ত বাল্তে পরিমহ্ন মাত্রাং দেবক্তৈব মহিমা তু লোকে বেনেদং আম্যতে ব্রহ্ম চক্রং বদিদং কি**ক এগৎ সর্বাং প্রাণ এন্ধ**তি নিঃস্তাং।

— বাহা কিছু এই সমূদর স্তুপও প্রাণস্বরূপ গরমেশ্বর হইভেই নিংস্থত হুইরাছে এবং প্রাণ-শুরূপ গরমেশ্বরকে অবলম্বন করিরা চলিতেছে।

এই দেবতা বিশ্বকর্মা মহাত্মা সর্বদা লোকদিগের জারে সন্নিবিষ্ট হইরা আছেন। মুলতত্ত্বের এই অকাট্য সত্য-সকল শ্ববিদিগের পৰিত্ব জারের উচ্ছান।

সমুধে সে বৃক্ষ যে আছে ভাহাকে দেখিভেছি ও স্পর্শ করিতেছি, কিন্তু দেই বৃক্ষ যে-আকাশে আছে সে-আমরা দেখিতেও পাই না, স্পর্শ করিতেও আকাশকে পাই না। কালে কালে বুকের শাখা হইতেছে, পল্লব হই-তেছে, कुन क्टेरजर्फ कन क्टेरजर्फ, এ সকन দেখিতেছি किन्द তাহার সেই মূল কারণকে দেখিতে পাই না, বুক্ষ ষে-জীবনী-শক্তির প্রভাবে মূল হইতে রস আকর্ষণ করিয়া আপনাকে পুষ্ট করিতেছে, যে-শক্তি তাহার প্রতি পত্তের শিরায় শিরায় কার্য্য করিতেছে, সেই শক্তির প্রভাব আমরা দেখিতেছি কিন্তু সেই শক্তিকে আমরা দেখিতে পাই না এষ সর্বেষু ভূতেষু গুড়োত্মান প্রকাশতে। এই গুঢ়পরমাত্মা সর্বভূতে ও সর্ব বস্তুতে আছেন। কিন্তু তিনি প্রকাশিত হন না। ইক্রিয়সকল বাহিরের বস্তুই দেখে, অস্তরের বস্তকে দেখিতে পায় না— ধিক ইন্দ্রিয় সকলকে।

"পরাঞ্চিথানি ব্যতৃণং স্বয়স্ত্রুসাৎ পরাঙ পশুতিনান্তরা মন্ কশ্চিমীরঃ প্রত্যগায়ানমৈক্য আবৃত চক্ষুরমৃতত্ব মিচ্ছন্।

শ্বরস্থ ঈশ্বর ইন্দ্রিয়দিগকে বহিমুখি করিয়াছেন, সেই হেতু তাহারা বাহিরেই দেখে, অস্তরায়াকে দেখেনা। কোন ধীর অমৃত তবকে ইচ্ছা করিয়া, মুদ্রিত চকু হইয়া সর্বাস্তর্গত এক আয়াকে দেখেন। উপনিষ্দের এই উপদেশ শ্রবণ করিয়া, মনন করিয়া নিধিধ্যাসন করিয়া ঐ ব্রন্ধত্যক্ত দিহালয় হইতে মহর্ষি দেবেক্রনাথ ঈশ্বরকে দেখিতে পাইলেন। চর্মাচক্ষুতে নয় জ্ঞানচক্ষুতে। মহর্ষির প্রতি উপনিষ্পেদের আদেশ এই—''ঈশ্বাস্থা মিদং সর্বাং।'' ঈশ্বরের ঘারা এই সকল আচ্ছোদন কর। তিনি ঈশ্বরের ঘারা এই সকল আচ্ছাদন করিলেন। এবং বলিলেন—বেদাহান্দেতং পুরুষং মহাস্তং আদিত্য বর্ণ তমসঃ পরস্তাৎ। আমি এই তিমিরাতীত আদিত্য বর্ণ মহানু পুরুষকে জানিয়াছি—

''বাদ আজি মুর বা একাক্দহম্ অঞ্চ দিলে থেব। কে বণুর্বেদ রসীদঃন গোবার আথের সোদ।"

—এখন অবধি ক্যোতি আমার জ্বন্ন হইতে পৃথিবীতে ছড়াইব। বেহেডুক আমি সূর্যোতে পৌছিরাছি ও অন্ধকার বিনাশ হইরাছে।

মহর্ষি দেবেজনাথের এই বৈরাগ্য ও সাধনের ফলই ব্রাক্ষধর্ম্মের পূর্ণাক্ষতা ও ব্রাক্ষধর্মের ব্যাখ্যান।



আলাচনা



কলিকাতা ও মফম্বলের কলেজসমূহের তুলনা

প্রীঅনিলচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়, এম**-এ**

গত অগ্রহারণ মাদের প্রবাসাতে শ্রীসূক্ত যোগেশচক্র রার "কোন্টি চান ?" নামক একটি ফুচিস্তিত প্রবন্ধে কলিকাতা ও মকষলের কলেজসম্বার তুলনা প্রসাস্ত কার্যকটি কথা বুলিয়াছেন। উাহার মতে কলিকাতার স্বান্থা ভাল নয়, সেখানকার থরচ বেশী, দেখানে বিলাসিতার প্রবেলা ভয়ানক, এবং সেখানকার কলেজগুলির শিক্ষাপ্রণালী মক্ষরলের কলেজগুলির শিক্ষাপ্রণালী মক্ষরলের কলেজগুলির শিক্ষাপ্রণালী হউতে যে উইক্টেরর এমন গুমাণ নাই। কাজেই তিনি অল্ল করিয়াছেন—এত বেশী ছাত্র কলিকাহার কেন আনে ?

রায় মহালয়ের উন্নিপিত কারণসমূহে এবং অঞ্চান্ত কারণে (যেমন অত্যানিক ছার বিশিষ্ট কলেজসমূহের অধ্যাপক ও ছাত্রের মধ্যে জানাশোনা থানিবার স্থাগ্যের অভ্যাব) কলিকাতার প্রতি ছার্নের এতটা আকর্ষণ অবাঞ্চনীয় সন্দেহ নাই, এবং সরকারী পঞ্বাধিক শিক্ষা-রি পার্টিও (১৯০০-১২) তাহা স্থীকৃত হইগছে। কিন্তু ছাত্রেরা যে মফস্বলে থাকিতে চায় না তাহার কয়েকটি কারণ আছে।

প্রথম কারণ—'থিখবিদ্যালয়ের গত বার্ষিক সমাগনে, ভাইস্-চেন্দলার স্তর হুসেন ফ্রওয়ার্দ্ধি বলেছিলেন, কলিকাতার বাইরের কলেজে গুণী শিকক নাই, কলিকাতার কলেজে আছেন।''

এ-কথা সকল স্থানে সত্য না ইইলেও অনেক স্থালে সত্য। মফখনের কলেছের কর্তৃপক্ষণণ আর্থিক অভাববশতঃ অনেক সময় যোগাতম অধ্যাপক নিয়োগ করিতে পারেন ন'। যোগা বাক্তিরা অনেক সময় ভাল বেতন পাইলেও নক্ষলে খাকিতে চাহেন না কারণ সেধানে গবেবণা করিবার স্থাগি নাই এবং যথেপ্রসংখ্যক উচ্চলিক্ষিত বাক্তির সাইচর্যা পাওয়া বায় না! তার পর বর্ষমান সময়ে স্থানীয় প্রভাব, দলদেলি, সাপ্রায়িক বর্গে প্রভৃতি বিবিধ কারণে অনেক সময় যোগাতম প্রথানের দাবি উপেক্ষিত ইয়়। রায় মহালায় বলিয়াছেন বে বিষবিভাগের কলেজের ''গুণহান লিক্ষককে ইন্ধিতে সন্থাতে পারেন।'' ইয়া সব স্থলে সতা নয়; কারণ অধ্যাপক নিয়োগ সম্থান বিষ্
বিভালয়ের কোন কর্তৃত্ব নাই। যদি বিষ্
বিদ্যালয়ের এবং গ্রন্থিনিট সম্মিলিতভাবে এমন একটি নিরপেক বোড গঠন করেন যাহার অন্থ্যাদন ব্যতীত কোন বেসরকারী কলেজে কোন অধ্যাপক নিয়োগ হইতে পারিবে না, তবে এই সমস্যার অস্তঃ আংশিক সমাধান হইতে পারে।

ষি ভারতঃ, মফবল শহরের আবহাওরা সাধারণ তঃ জ্ঞানপিপাসা বৃদ্ধি ও তাহার তৃথির পক্ষে অমুকুল নয়। ''কলিকাভার কত সাধু পুণাস্থা আছেন, বিশ্বান্ মহাবিদ্ধান্ আছেন, উপাধ্যায় মহা-মহা উপাধ্যায় আছেন, কত বিস্তালর মহাবিস্তালর, অছ্শালা পাঠশালা আছে, কত সন্তা, সন্মেলন, বস্তৃতা, ব্যাথ্যান চ'লছে! এ সব দেখা ও শোনা বে মড শিকা।'' রায় মহাশ্রের মতে এই 'যুক্তিটা কিছু সত্যা, বেণীর' ভাগ কাঃনিক।'' কিন্তু আমার মত হাঁহারা মফবল ও কলিকাতা, এই মুই ছানেই পড়াংশানা করিয়াছেন, তাঁহারা জানেন বে মফবলে ব্যার্থ শিক্ষার্থীর অমুবিধা কত বেণী। সেধানে অধ্যাপক-চত্রের বাহিরে এমন লোক কমই থাকেন বাহাদের সংক্রার্থ, উপদেশ ও সাহায্যে মানসিক উন্নতিলাভ সভবপর হর।

ভূতীয়তঃ মকস্বল কলেজসমূহে বিশ্ববিদ্যালয়ে আইনমত স্বেচ্ছা-পঠিতবা সমস্ত বিষয় পড়াইবার বন্দোবন্ত থাকে না, এবং সেধানে ইংরেজী প্রভৃতি করেকটি সাধারণ বিষয় বাতীত অন্ত বিষয়ে 'জনাস' নেওরা যায় না। কোন কোন কলে:জ বিঞান-অণ্যাপনার ব্যবস্থাই নাই; আবার যেগানে আছে সেথানেও প্রায়ই পনাথবিদ্যা ও রুসায়নী-বিদ্যা ব্যতীত অন্ত বিষয় পড়া যায় না, এবং যন্তাদির বিশেষ অভাব থাকে। এই করে:৭ বঠ ছাত্র বাধা ২ইয়া কলিকাতায় যায়।

উপদংহারে বলা যায় যে মফস্ব.লর উৎকৃষ্ট কলেজগুলিতে ছাজের অভাব হয় না, এবং সেধানে রায় মহাশয়ের আদর্শ অমুসারে পীচ শতের বেশী ছাত্র না-লইবার বাবস্থা হইলে বহু প্র:বশার্থীকে নিরাশ হইতে হয়। দৃষ্টান্ত-স্বরূপ বলিতে পারি যে, ১৯০০ সনে বরিশাল ব্রজমোহন কলেকে এক হাজারের বেশী, কুমিলা ভিক্টোরিয়া কলেকে 🦫 😁 (১৯২৭ সান ১৯০), দৌল চপুর হিন্দু একাডেমি-তে ৫২০ (১৯২৬ সান १०४), वस्त्रप्र कृष्याच कलाः ७०. ब्रज्ञपुत कात्रपारेक्न कलाः ৫৫ . এবং ময়মনসিংহ আনন্দমোহন কলেজে ৭১৩ জন ছাত্র ছিল। সরকারী কলেজগুলির মধ্যে গুগলীতে ছাত্রসংখ্যা ক্রমশং বাড়িতেছে, কুঞ্নগার বৈজ্ঞ নিক যন্তাদি ক্রয় করিলে এবং কয়েকটি নুভন বিষার অধ্যাপনার ব্যবস্থা করি লৈ আরও ছাত্র পাওয়া যাইত, চট্টগ্রামের স্থানাভাব সংৰও ছাত্ৰসংখ্য: অত্যন্ত বৃদ্ধি ২ওগতে এখন কম-সংখ্যক ছাত্ৰ ভবি করিবার ব্যবস্থা হুর্রয়াছে, এবং রাজসাহীতে ১৯৩২ সনে ৬১৭ জন ছাত্র ছিল (১৯:५-:২ সনের পঞ্মবাধিক শিক্ষা-রিপোর্ট ড্রন্টব্য !) মকস্বল कलाक्षमम्'रुत मान्। महारेल (इंग्जिम्था। ३००), रिजम्पूत (३०३), উত্তরপাড়া (৫০) এবং কার্যা (৪৬) প্রভৃতি যে-সব স্থানে ছাত্র অত্যন্ত কম, দেখানে পড়াংশানার ব্যবস্থাও অত্যন্ত ধারাপ।

"বাংলা দেশে ব্যায়াম-চর্চ্চা" শ্রীদমরেক্রকিশোর বহু

বিগত অর্থায়ণ মা.সর প্রবাসীতে শ্রম্মে শ্রীবৃক্ত রাজেক্সনারায়ণ গুহ ঠাকুরতা মহাশয় বাংলা দেশে ব্যায়াম চর্চচা নামে বে প্রবন্ধটি লিখিয়াছেন, উহার একস্থানে (१९৪ পূগা, ব্যায়াম করিবার নিষম) আছে, "বেদিন যে ব্যায়াম করিতে ভাল লাগে সেইদিন সেইরাপ ব্যায়াম করা উচিত। ইচ্ছার বিক্ষো ব্যায়াম করিলে লাভ না-হইরা ক্ষতির সপ্রাবনা বেশী।" একখা সত্য বলিরা আমার মনে হয় না! এ-স্থাক্ষ আমার যাহা অভিনত, সংক্ষেপে ভাহা এই:—

প্রত্যেকের শরারের বাধুনী, শক্তি ও সহনশীলতা একরপ নর ;—
বিশেষতঃ কোন্ ব্যায়ামে কিরপ ফল লাভ হর, বলিতে গেলে বাংলা
দেশের শতকর। ৯৯ জনেরই সেই জ্ঞান নাই। সেই অবস্থার নিজ্
অভিফচি-মত ব্যায়াম করিলে লাভ না-হইয়া গুরুতর ক্ষতিও হইডে
পারে। ধরা গেল, কোনো এক ক্ষাপনায় ব্যক্তির ফুস্ফুসের জ্ঞার
বেন গুবই কম; অবচ, সে যদি কোন উপযুক্ত গুরুর উপদেশ ছাড়া
কেবল মাত্র নিজে শেগালের বলবর্ত্তী হইরা বড় বড় বারবেল লইরা
কঠিন কঠিন ব্যায়াম করিতে ফুরু করে, তবে তাহার যে অকাশ মৃত্যু
ছটিবে, তাহাতে আর সন্দেহ কি আছে? রোগী বেমন কুপন্য গ্রহণের
লগ্ধ রান্ত হর, তেন্নি ছুর্বাল লোকেরও অনেক সমর কঠিন কস্বত্ব

কৰিবাৰ ইচ্ছ। হয়; সেইজন্ত কি তাহাকে দেই কদ্যুৎই কৰিবাৰ ক্ষমতি দেওয়া উচিত ?

প্রত্যেক কার্যোর মধ্যেই একটা শুঝলা ও নিরমান্নর্মিত। থাকা চাই। তাহা না হইলে সবই বৃধা হইবার কথা। একই ব্যক্তি যদি কৃষ্টি, ভারোভোলন, সম্ভরণ, নৃত্য প্রভৃতি নানা প্রকার ব্যারাম করে তবে সে কোনদিনই উহার কোন একটি বিবরেও নৈপুণ্য অর্জ্জন করিতে সমর্থ হইবে না—তবে, তাহার সহনলীলতা সাধারণত: অন্ত সকলের চেরে বেলী হইবে। বাহারা কোন একটা বিদেষ বিষয়ে কৃতিত দেখাইতে ইচ্ছুক, তাহাদিগকে ওধু সেই বিষয়টি শিকা না দিলে উদ্দেশ্য সিদ্ধ ইইবে না। শিকা বেওরা আরম্ভ করিবার পুর্কে শিক্ষককে ইহাও পরীক্ষা করিতে হইবে যে, কোন্ বিষয় শিক্ষা দিলে তাহার ছাত্রের প্রকৃত উন্নতি হইবে।

বাজেনবাবু বলিরাছেল বে, খাডের পরিমাণ ঠিক রাখিয়া ও ব্যারামের মাত্রা কমাইরা এবং বিশ্রামের মাত্রা কমাইরা এবং বিশ্রামের মাত্রা বাড়াইরা দিলেই কুজিগীরগণ ক্রমলং মোটা হইরা পড়ে। ইহা আংশিক সত্য হইলেও প্রকৃত কারণ নর। পঞ্লাবী মুসলমাল পালোরানগণ বৃদ্ধ বরুসেও বেরূপ ব্যায়াম করিরা খাকে, তাহা দেখিলে অবাক হইতে হয় এবং প্রায়াম করিরা খাকে, তাহা দেখিলে অবাক হইতে হয় এবং প্রায়াম করিরা খারে কেটার মধ্যে এমন একটা রস আছে, যাহার সংক্রাশে শরীর ধারে ধারে মোটা হইরা উঠে এবং কুস্তিগীরগণ কুন্তি লড়িবার সময় মুখ দিয়! পুব জোর খাস-প্রখাস গ্রহণ করে ও ছাড়ে বিলায় সময় মুখ দিয়! পুব জোর খাস-প্রখাস গ্রহণ করে ও ছাড়ে বলিয়াও উহা তাহাদের শরীর ভারা করিবার সহায়তা করে। যাহারা ধ্ব বড় পালোরান, তাহারা উপরি উক্ত অবস্থায় অনেক কণ কুন্তি লড়ে বলিয়াই শীঘ্র শীঘ্র মুলকার হইরা পড়ে। আমি ব্যক্তিগতভাবে বড়-গারাকে জানি, পুর্বাপেকা এখন তিনি বাায়াম অনেকটা কমই করেন, তবু তাহার শরীরের এখনকার মাণ পুর্বাপেকা কিছু ক্ম।

গোঁদজাতি

গ্রীপ্রমধনাথ পাল

অগ্রহায়ণের প্রবাসীতে শ্রীযুক্ত সত্যক্তির চট্টোপাধ্যায় মহাশন্ন গোঁদজাতি সম্বন্ধ কিছু লিখিরাছেন। গোঁদজাতি সম্বন্ধ তাঁহার ব্যক্তিগত অভিজ্ঞতা আছে কিনা জানি না। তবে তিনি প্রবন্ধের মধ্যে কতকণ্ডলি নঞ্জীরের উমেশ করিরাছেন। আমি গভ বোল বৎসর মধ্যপ্রদেশের পমীতে বাস করিতেছি এবং গোঁদবহল তিনটি জেলার বিভিন্ন গমীপ্রামে বাস করিয়াছি এবং করিতেছি। গোঁদজাতি সম্বন্ধে আমার অভিজ্ঞতা ব্যক্তিগত। প্রকৃত উচ্চারণ গোঁদ, গোঁড় নর।

পোঁদরা অবিড়ী বা অনাযা ভাষার কথা বলে এবং ভাষারা সাতপুরা পর্বতক্ষেণার উপত্যকাভূমিতে অনাদিকাল হইতে বসবাস করিতেছে। ভাষারা মধ্যপ্রদেশের আদির অধিবাসী। চট্টোপাধ্যার মহালরের "সম্ভবতঃ ভাষারা দাকিলাত্য হইতে মধ্যপ্রদেশে আদির্ধা বসতি ছাপন করিরাছে"—এই উক্তি অনুমান বা প্রক্ষেণ। দাকিলাত্যের কোন আদির অধিবাসীদের সহিত ইহাদের কোন প্রকার শারীরিক, মানসিক ও সামাজিক সাদৃশু নাই। ইহারা অভ্যন্ত ঘরকুণো ও রক্ষণশীল। ইহারা সাধারণতঃ মুই শ্রেণীতে বিভক্ত—রাজ-গোঁদ ও সাধারণ সোঁদ।

রাজ গৌদদের পূর্বপ্রক্রবরণ আদিনকাল হইতে মধাপ্রদেশ শাসন করিয়া আসিতেছিল, কিন্তু আগ্যিরাজগণের সংঘর্ষে ভাহারা পরাজিত, নিহত এবং ছিন্ন-বিচ্ছিন্ন হইনা গিরাছে। এখনও রাজ-পৌদদের বংশধরগণ করদমিত্র রাজারূপে মধাপ্রদেশে বাস্তার, রারগড়, সারণগড় প্রভৃতি রাজ্য শাসন করিতেছে।

চটোপাধ্যার মহাশর লিখিত গোঁদলাতির উৎপত্তি সম্বন্ধে পৌর।ণিক কাহিনীর ঐতিহাসিক কোন মূল্য নাই।

সোঁদদের সভ্যতা, সামাজিকতা ও আচার-ব্যবহার সম্বন্ধে পাঠক-গণকৈ কিছু জানাইতেছি। মধ্যপ্রদেশ পৌরাণিক শুগ বা প্রাচীনকাল হইতে ছোট ছোট বহু কুদ্র গোঁদ-রাজ্যে বিভক্ত ছিল। সকল রাজ্যণবেরই নিজ রাজ্য রক্ষণবেক্ষণের জল্প কেলা ও সৈক্ত-সামস্ত ছিল এবং তাঁহোরা আপন আপন স্বাধীনতা অকুর রাখিতে চেন্টা করিতেন। এখনও বলে জললে অনেক স্থানে প্রাচান মুগের কুদ্র কুদ্র কেলা দেন নাই বাবড় রক্ষের দিখিজর করেন নাই। গোঁদ-রাজগণ রাম-রাজ্যজ্ব সমরও নিজেদের আবাসভূমিতে স্বাধীন ভাবে বাস করিয়াছিলেন। মধ্যপ্রদেশ সাধারণতঃ পাহাড় ও জললে পরিপূর্ণ ও জমিও অনুর্বার, সেই-জল্প ভারতের একছতের রাজাদের দৃষ্টি আকর্ষণ করে নাই।

গোঁদরা স্বভাবত:ই শান্তিপ্রিয় ও রক্ষণশীল। সমাজে স্ত্রা-পুরুষের দাবি সমান, বরং সমাজে নারীর মর্যানা উপরে। কপ্তার মাতাপিতা বা অভিভাৰকদের নিকট বরপক্ষের লোকেরা বিবাহের প্রস্তাব করিয়া পাকে। কন্তাপক্ষের অভিভাবকণের বিবাহ-প্রস্তাব মর্যাদাহানিকর। वनियानी श्रीन-वश्त्मत कक्षात्रा व्यत्नक श्रात हित्रकूमात्री बाक এवः ইহাসমাজে আংগৌ নিন্দনীয় নয়। সমাজে নার!র কোনরূপ পর্জ! নাই। সামাজিক ভোজে নর-নারী একসজে বিভিন্ন পংক্তিতে ভোজন করে। আহার্য্য-দ্রব্যের কোন বিধিনিষেধ নাই! মদ্য, শুকর-মাংস, গো-মাংস প্রভৃতি ভক্ষণ করে। তাহারা নিজেদের দেবদেবী, ভূতপ্রেত ছাড়াও হিন্দুদের মহাদেব, শ্রীকৃষ্ণ, রামচন্দ্র প্রভৃতি দেব-দেবীদের মাস্ত বা পূজা করে। চুরি, জুয়াচুরি, বাহ্নাড়ঘর ও অমিত-বারিতা গোঁদ-জাতির স্বভাবে নাই। তবে যে-সমস্ত তরুণ গোঁদ শংরের বা কারখানার আবহাওরার বর্দ্ধিত হইতেছে, তাহারাও অক্সাগ্র ভারতীয়দের মত আধুনিক সভাতার আবর্জনা মাধিতেছে। পৌদদের প্রকৃতিগত ধর্ম বা সভাব—সহাত্তণ, ধৈর্যা, শান্তিপ্রিয়তা ও মিতবারিতা।

যদি পৃথিবাতে কোন লাতির প্রকৃত মনুষ্যন্ত থাকে, তাহা গোঁদ-লাতির আছে। তাহাদের যাহ্য অট্ট, রোগে তাহারা প্রভীবৃটীর চিকিৎসার বিনা-ধরচে আরোগ্যলাভ করে। তাহাদের আহার ও জীবনবারা-প্রণালী অত্যন্ত সাদাসিধে। তাহাদের পেশীতে বাঙালীর চেরে দশ গুণ বল। স্ত্রী-পুরুষে স্মানভাবে পরিশ্রমে অভ্যন্ত বলিরা গোঁদ-নারী অবলা নয়, সাকাং শক্তিরাপিনী। স্থামীর মৃত্যুতে বা পুরুষের মুর্দিনে গোঁদ নারী নিজ নিজ পরিবার প্রতিপালনে সমর্থ। গোঁদদের আল্পন্মানজ্ঞান সভ্য-নামধারী বাবুভারাদের চেরে অনেক বেশী। ভারতবর্ষীর রাজকর্মচারিগণ কেবলমাত্র গোঁদদের উপর অবথা অভ্যাচার ক্রেন, এই উক্তি অমুলক। রাজভ্তাগণ চিরকালই প্রভাগণের নিকট অভ্যার আবদার ও প্রতিপত্তি ভোগ ক্রিয়া আসিতেছে।



'শীশীশচক্র সেন। প্রকাশক—শীন্সিংহপ্রসাদ সেন। ২০ নং কৈলাস বোস ষ্টীটা দাম বারো আনা।

নাটক। শুধু টানা টানা বস্তৃতা এবং ভাবের উচ্ছ_নাস। আবান-ভাগও নিতান্ত স্থুল, মোটেই কৌতৃহল জাগে না। ভাবাও স্থানে স্থানে নিতান্ত পণ্ডিতী রকমের **হ**ইরা পডিরাছে।

নাটকের মর্যাল টোন বা নৈতিক স্বরটি প্রশংসনীয় ; কিন্তু লেখক মনে রাখি:বন শুধু ঐটুকু দিয়াই আজকাল দশক্তির মন ভরান যায় না।

বহিরাবরণ মামুলী।

কুপণের দ্বিতীয় পক্ষ—ডা: অজিতকুমার দে, প্রকাশক—ভারত লাইরেরী, ২০৮ নং বহুবাঞ্জার ষ্ট্রীট। দাম তিন আনা।

ছোট একটি কৌত্ক-নটা। এক বিয়ে-পাগলা কুপণের এক চানাচ্রওয়ালার সঙ্গে বিবাহ হইরা গেল—কতকণ্ডলি ছেলেছোকরার বড়বংল মাবে মাবে প্রকৃত হাস্তরসের ছিটেঞেটা আছে, তবে বেশীর ভাগই মামুলী।

মানবের শত্রু নারী — এফবোধ বহু : প্রকাশক— পি. সি. সরকার এও কোং, ২ বং ভাষাচরণ দে ব্লীট। দাম ১০

নারীকে, প্রেমকে অস্বীকার করিতে করিতেও তাহাদের পানে
অগ্রসর হইতে হয়, এমনই ভাহাদের অনতিক্রম্য মোহ—লেথক এই
ভাবটি বইখানিতে মূর্ব করিরা তৃলিতে চাহিরাছেন। গল্পাংশটা বৈচিত্রাহান হওয়ায় এবং ভাষার মধ্যে অতিরিক্ত শিবিশতা আর
ফ্রাকামি ধাকার বইধানি জমে নাই।

ছাপা, বাঁধাই, কাগঞ্জ ভাল।

বিবর্ত্তন জীবাহনের বন্দ্যোপাধ্যায়। প্রকাশক—পি. সি. সরকার এও কোং। দাম এক টাকা।

সাতটি ছোট গল্প লইয়া বইখানি ১১২ পাডায় শেষ ২ইয়াছে। গল্পখলি সব দিক দিয়াই বেশ ভাল লাগিল। ভাষার ঋলু গতি এবং গান্তীর্যা মনে বেশ ভৃপ্তি আনে। সবচেয়ে বড় কথা এই যে লেথক কি ভাষা, কি ভাব উভয় বিষয়েই বেশ মিতবায়ী।

সঁটগুলিও বেশ স্বাভাষিক অখচ নিতান্ত গতামুগতিক নয়। মোটের উপর বইগানি বেশ ভালই হইয়াছে। ছাপা, বাধাই, কাগৰ ভাল।

অমুচ্চারিত — এঅবনীনাথ রায়। প্রকাশক—পি. সি. সরকার এও কোং। দাম এক টাকা।

লেপক জীবনের ছোটখাট ঘটনা এবং করেকটা কিম্বনস্তাকৈ আত্রর করিরা বাহা লিখিরাছেন তাহার সবগুলি টেক্নিক্-ছ্রন্ত গল্প না ইইলেও স্প্পাঠ্য হইরাছে—কেননা বেশ দরদ দিরা লেখা। প্রথম গল্প 'জ্মফারিড' পাকা হাডের পরিচর দের।

ছাপা, বাধাই ফুলচিসকত।

ছুই নারী—এআশালভা দেবী। কাত্যারিনী বুক ষ্টল, ২০০ কণ্ডরালিস ট্রাট, কলিকাতা। মূল্য সাত সিকা।

বেশ সরেশ একথানি ইণ্টেলেক্চ্যাল নভেল অর্থাৎ সেই জাতীয় উপঞাস যা বৃদ্ধিকে কোতৃহলী করিয়া তুলিয়া সঙ্গে সঙ্গে পরিতৃপ্ত করিতে প্রয়াস পার। বিষয়, সেই ইটারস্ভাল ট্র্যাঙ্গল বা অরাজিকা প্রেমের সমস্তা; কিন্তু প্রতিভার আলোর যে ওটাকে নিতৃই নৃতনভাবে দেশান যায়, এই বইথানি তাহার প্রমাণ। অবঞ্চ লেগিকা যাহা বলিরাছেন তাহার সবটুকুতে সায় দেওরা যার না—ভাহা হইলেও ওাহার বিশিবার ভিন্ন মোহন এবং আত্মপক সমর্থন করিবারও সাহস ও কমতা আছে। এই বইরে কাহারও প্রেম ই একনিষ্ঠ নম—বৃদ্ধি দিরা ক্রমাগতই তাহাকে যাচাই করিতে গেলে এবং স্বাধীনতার সঙ্গে পদে পদে ভাহার সামঞ্জল্প রাখিতে গেলে দে প্রেম সপ্তব নর। তবু এই যে নিত্য-পাওরা আর নিত্য-হারাণোর প্রেম, যা আদর্শ না হইলেও এই ধ্লিমলিন পৃথিবীর নিতাবস্ত—ভাহাই কি কম মধুর? বইথানিতে এরই মাধুগ্য কুটিরাছে। এর ট্র্যান্ধেডি, আধুনিক আধুনিকার অতি ক্র্যান্ড্ডির ট্র্যান্ধেডি—এই অ্বভৃতি বিরেষণে লেগিকা শক্তির পরিচর দিয়াছেন। প্রাস্কিকভাবে শিক্ষিত অভিজাত সমাজের ছবিট স্কন্ধ ফুটিরাছে।

ছাপা, বাঁধাই উংকৃষ্ট।

অন্সা— এঅচিন্ত্যকুমার দেনগুল। প্রবর্ধক পাবলিশিং হাউস। ১০ বছবালার খ্রীট, কলিকাতা। মূল্য ২১

একটি প্রতিভাসম্পন্না আধ্নিকার জাবন সমাঞ্জের তথা দরিদ্র সংসারের পাওনা মিটাইতে মিটাইতে কেমন করিয়া নিজল হইয়া গেল —লেথক উপস্থাসগানিতে ভাহাই দেপাইয়াছন। চরিত্রগুলির অধিকাংশই এবং ঘটনাগুলিও বেশীর ভাগ টাইপ্ হিসাবে লওয়া, স্তরাং নালিসটা তাঁহার ব্যাপকই। সমাজ যে এখনও নারীপ্রতিভা-বিকাশের অমুকূল হয় নাই তাহা সভাই এবং তাহার চৈতন্যোদয়ের জম্ম এয়কম লেগার দরকারও যথেষ্ঠ। তবে যে-পিতা শত বাধা ও নারিজ্যের মধ্য দিয়া কল্পার প্রতিভা বিকশিত করিয়া তুলিল তাহাকে লেপক শেষ পর্যান্ত অমন কদ্যাভাবে স্বার্থপর করিয়া তুলিলেন কেন ব্রা গেল না। পিতার চরিত্রের এই অসামঞ্জপ্তে বইরের এক দিকটা বিকৃত হইয়া গিরাছে।

গুৰ বেশী রকম এগ্রাবস্ট্রান্ট (abstract) করিতে গিয়া ভাবং মাঝে মাঝে এই রকম হইয়া দাঁড়াইরাছে—"বীধি নিঃশব্দে একটা আর্ত্তনাদ করে উঠল," "তার শরীরে ছিল না এডটুকু শারীরিকতা," "কথা কি মাত্রের অনেকগুলির মধ্যে আরেকটা ব্যর্থ আধিকার নয় যা তার অতীত সেই ইসারাকে স্বধু কথা দিয়ে বোঝাতে গিয়ে সেই অকথনীয়তা কেলে হাবিয়ে ?"

—লেবের এই গোলকধাধার পড়িরা কি মনে হয় না বে ও-ছাই-ক্থার আবিছার না হইলেই ছিল ভাল ?

বঁ। ৰাই, কাগজ, ছাপা ভাল।

কৃষ্টিপাথর—জ্ঞানেক্রনাথ ওপ্ত। আর, পি, নিত্র এও সগ, ৩৩ বীড্ন্ ব্লীট, কলিকাতা। দাম এক টাকা। তিন অংকর একটি সামাজিক নাটক। বইখানি বেশ ভাল লাগিল। সব চরিত্রগুলি বেশ শাভাবিকভাবে ফুটিরা উঠিরাছে, কোধাও কট্ট-কছনা গীড়া দের না। সমন্ত নাটকটির পট্ভূমিকা পেশ্চরা উঠিরাছে। মধ্যে তিনটি হৃদহের প্রেমের কাহিনীটি ফুম্মর ভাবে ফুটিরা উঠিরাছে। লেখকের ফুম্ম অমুভূতিও আছে এবং প্রকাশের ভাষাও সাবললৈ।

শেষের দিকে এক সন্নাসীর অবতারণা করা হইরাছে; এমন কিছু দোষের কথা নর, তবে সন্নাসী আসিলেই যেন ননে হয় সব দিকটা সামলাইয়া লইবেন; ইহাতে পাঠকের স্বাভাবিক উৎকঠা নষ্ট হয়। এ-মুগ ওঁদের ছুটি দেওয়াই ভাল।

শ্রীবিভৃতিভূষণ মুখোপাধ্যায়

বৈষ্ণবপদাবলী (চয়ন)— এদীনেশচন্দ্র সেন এবং শীধগেক্সনাথ মিত্র সম্পাদিত। কলিকাতা বিধ্ববিদ্যালর কর্তৃক প্রকাশিত; ১৯০০। মূলোর উল্লেখ নাই।

বিষ্বিদ্যালয়ের পরীক্ষাধীদিশের জন্ত সকেলিত আলোচ্য পানসংগ্রহমন্থাটিতে ভূমিকাংশ ।/• পৃঠা হইতে ১া• পৃঠা এবং পাদটীকা সমেত মুলাংশ :-১৫• পৃঠা । গৌরাজ-বিষয়ক পদ, প্রার্থনা, বলোলীলা ও কালীয়দমন, প্রেরাগ, অভিসার, মিলন, বংশীশিকা নৃত্য ও মান, আল্পনিবেদন, মাথুর, মিলন ও ভাবন লালন—এই কয়টি নীর্ধকে মূল ংশে স্বাসমেত ১২•টি পদ সংগৃহীত হইবাছে। ইহার মধ্যে একটি দাশের থি রাজের গান এবং একটি কৃষ্ণকমল গোলামীর ভুক্ত বা অ্থিরসম্প্তিও আছে। পৃত্তকটির কাগল, ছাপা ও বাধাই উত্তম।

শ্রীস্থকুমার সেন

বার্ষিক শিশুসাথী— ৯ম বন ১৩১১ সাল। সম্পাদক শ্রীম্বনির রাষচৌধুরা। প্রকাশক—আশুতোর লাইত্রেরী, কলিকাতা ও ঢাকা মূল্য দেড় টাকা।

বার্ষিক শিশুসাধী, শিশুসাধী নামক মাসিকপানের বাবিক সংগ্রহণ।
বইথানি প্রকাণ্ড। স্থান কাগজ, ছাপা অতি পবিপাট, ছবিও
বিত্তর। ছেলেমেরেদের শিকনীয় বিষয় এতে অনেক আছে। গর
ও কবিতাগুলি থেকে তারা আমোদও পাবে প্রচুর। কিন্তু বইথানি
নামে শিশুসাধী হলেও, শিশু বলতে যাদের বোঝার ঠিক তাদের
উপবোগী হরেছে ব'লে মনে হয় না। আনক প্রবন্ধ ও গাঙ্কের ভাব ও
ভাবা সুর্বোধা; কোন-কোন ছাল প্রাদেশিকতা দোবে ছুই। শিশুনের
কি বিষয় দিতে হবে, আর কি ভানেই বা তা দিতে হবে, এই এক মন্ত
সমস্তা রায়ছে লেখকদের সামনে। এই বইথানির বহন্ত্বলে তার
সমাধানের অভাব ররেছে ব'লে মনে হয়।

শ্ৰীযামিনীকান্ত সোম

বৈজ্ঞানিক ভোজ ডক্টর শীংশীলচক্ত মিত্র প্রণীত, ২৭৷১ কড়িয়াপুরে ব্লীট, কলিকাতা হইতে প্রকাশিত। মূলা ॥•

ইহা একখানি শিতপাটা গছের বই; ইহাতে সক্ষ্যক চারিটি গল্প সন্নিবিট হইগাছ,—বৈজ্ঞানিক বর্ষাত্রী-সম্বর্জনা, অন্চনা সই, ভাবী রায়-বাহাত্রর ও ফুলের পরী। শেষেক্তে গল্পটি একটি জাপানী রূপকথার ছায়া অবলম্বান লিম্বিত। গল্পলৈ বেশ সহল সমল ভাষার এবং বালক-বালিকাদের মনোরঞ্জনের উপধােগী করিলা লিম্বিত, উহাতে হাসারস ও বৈচিত্রা উভয়ই আছে। ইহাদিগের মধ্যে "বৈজ্ঞানিক স্থেল্ড" গল্পটি একেবারে মৌলিক এবং বিশেষ আমোদিকে। ছাপা, কাগল ও বাঁধাই বেশ কুম্বর। মহামামুষ মূহ্ সিন--- মোহাম্মদ ওয়ায়েদ আলী প্রণীত।
২০ ক্রেমেটোরিয়াম ট্রীট, কলিকাতা, বুলবুল পাবলিশিং হাউস ইইডে
প্রকাশিত। মূল্য বারো আনা।

হাজী মুহম্মদ মুহ্ সিন বাংলা দেশের এক জন বংরণা সন্তান, শ্রেষ্ঠ ভাগী ও দানবীর; তাঁহার তাাগ, সন্ত্যাস ও দানশীলতা, তাঁহার পারত্বংথকাতর নিরহকার চিত্ত, ধার্মিক শার সহিত অপূর্ব্ব উদার দৃষ্টি, তাঁহার বিদ্যা, জ্ঞান ও ভূরোনশ্ন—সবলই উত্থাকে চিরম্মরণীর করিয়া রাখিরাছে। ফতরাং হাজী মুহম্মদ মুহ্ সিনের একটি বিশদ জীবনার বিশেষ প্রয়োজন ছিলা, ওয়াজেদ আলী সাহেব সেই অভাব পূর্ণ করিয়াছেন। লেথকের ঘটনাসন্থিবেশ ও বর্ণনার ক্ষমতা অতি ফ্রম্মর, ভাষা সরল ও সভেন্ন, সমস্ত পুত্তকগানি পাঠ করিতে একট্ ও ক্রেশ হর না। ওয়াভেদ আলী সাহেব বাংলা ভাষার এক জন লকপ্রতি লেপক, এই গ্রন্থ রচনায়ও ভাষার সেই যশ অক্ষুর রহিয়াছ। বাংলা দেশের হিন্দু-মুস্লমান বালক ও মুবকগণ এই পুত্তকপানার ছাপা, কাগজ ও বাধাই বেশ ফ্রমর।

ছুতোরের ছেলে রাজা—জ্ঞীনেশচন্দ্র চক্রবর্ত্তী প্রণীত এবং গ্রন্থকার কর্ত্তক কাণীধাম হইতে প্রকাশিত। মূল্য নয় আনা।

ইহা আমেরিকার যুক্ত-রাজ্যের ভূতপুর্ব্ব সভাপতি এতাহাম লিকল্নের জাবনচরিত। এই পুত্তকথানি W. M. Thayer প্রণীত "Abraham Lincoln And How He Became President" শীর্ষক প্রাপ্তর সংভাযো লিগিত। কিরুপে ছুংগুলারিন্ত্যের সহিত সংগ্রাম করিয়াও নিজের চেষ্টাও অধ্যবসায়ের গুণে মানুষ বড় হইতে পারে লিকল্নের জীবনী তাহার শ্রেষ্ঠ নিদর্শন। বাংলা ভাষায় তাহার জ বনী প্রকাশ করিয়া লেখক মহাশার বালো দেশের বালক ও যুবকদিগের বিশেষ উপকার সাধন করিয়াছেন। পুত্তকথানি বেশ স্বুখপাঠা হইয়াছে। ভাষা সরল, বর্ণনাহাললা নাই। জীবনের মূল ঘটনাঙলি সহজভাবে বিহুত করা হইয়াছে। এই পুত্তকের বহল প্রচার বাঞ্জনীয়া কাগজ ও ছাপা ক্রম্মর।

মায়াপ্রদীপ — জাহেমচক্র বাগচা। পি, সি, সরকার এও কোং, ২ শ্যামাচরণ দে খ্রীট, ধলিকাতা।

ইহা একগানি শিশুপাঠা গল্পপুতক; ইহাতে সর্বাহন্দ্র পাঁচটি গল্প
আছে— তপনকুমারের একরাত্রি, পাংগ লা জ্ঞগাই হর কাহিনী,
একাদনী দানা, গেল সিঁ ড়ি ও ফকিরের ভিটে! গল্পঙাল বালক ও
কিলোর দের জন্ত লিখিত হইলেও ছই একটি গল্প প্রবাশনেরও ভাল
লাগিবে, বিশেষতঃ গোল সিঁ ড়ি ও ফকিরের ভিটে এই ছুইট গল্পে
বেশ নৃতনন্দ্র আছে। গল্পজিল সহজ ও সরল ভাষায় লিখিত এবং বালকবালকাদিংগর মনোরঞ্জন করিতে পারিব। তথু একাদশী দাদা গল্পটি মাঝে
মাঝে অবাস্তর কথার অবতারণায় ভেমন জমিতে পারে নাই। মোটের
উপর পুত্তকথানি স্থপাঠা হইরাকে। কাগজ, বাধাই, ছাপা ফুলর।

শ্রীসুকুমাররঞ্জন দাশ

(১) হায়দার আলী, (২) টিপু স্থলতান— শ্রীতাবহুল কাদের। প্রবাদক—ইতিকথা ব্রডিপো, ৩৮ কড়েয়া রোড, কলিকাতা। প্রত্যেকধানির মূল্য ।৮০।

আমরা ভারতবানী আস্ববিমূত জাতি। ভারতবর্গের অভীত **∌িচাস সমাৰ আমাদের অজভার অব্ধি নাই।** ••• যে সকল পুণালোক बीख़ब काहिनी आमालब हैटिशास्त्र शृष्टे! উच्छन कब्रिया ब्राथिबाए তাহানের কথা আমরা প্রায়ই ভূলিরা বাকি। সুত্রাং যথন কোন লেখক সে কথা স্মরণ কর।ইয়া দেন তিনি আমাদের কৃতজ্ঞতা-ভাজন হন। মৌলভি আব্দুল কানের সাহেব এই গ্রন্থ ছুইটিতে সেই চেষ্টা করিবাছেন। ইংরেজের শক্তিবিস্তারের প্রথম আমলে হায়দার আলী ও টিপু স্থলতান যে অপুনা বীরত্বসহকারে সেই শক্তির প্রতিশ্বলিতা করিয়া সাময়িক সাফলা লাভ করিয়াছিলেন, সেই কাহিনী অবলম্বন করিয়াই গ্রন্থকার এই ছুইটি গ্রন্থ রচনা করিয়াছেন। গ্রন্থ-তুইটে ইতিহাস-সম্মত প্রণালীতে লিখিত : তাহাদের ভাষা প্রাঞ্চল ও ফুন্দর, বর্ণনা হুদর্গ্রাহী হইয়াছে। অধুনাথে এক প্রকারের উদ্দু-মিএিত বাংলা বাংলার মুসলমান-সম্প্রদায়ের মধ্যে চালাইবার চেষ্টা হইতেছে, গ্রন্থকার সেরূপ ভাষা ব্যবহার না করিয়া স্বাধীন বিচারবৃদ্ধির পরিচয় নিয়াছেন। জাতিধর্মভেনে আমাদের মাতভাষার রূপভেন না করাই উচিত। তেমনি ভারতবর্ষের অভাত ইতিহাসেরও জাতিধর্ম-ভেন না করাই উচিত! ধর্মনিবিবেশ্যে ভারতবর্গের ইতিহাসের সকল বীরই অন্মাদের পূজার্হ। হায়েদার আলী ও টিপু স্থলতানের এই কাহিনী তুলট হিন্দু মুদলমান দকল পাঠকেরই পক্ষে উপভোগ্য হইয়াছে, এ-কথা নিঃসন্দেহে ৰলা যাইতে পারে। ছাপা ও বাঁধাই ভাল।

জপজী— ওরু নানক কৃত ও কিরণটাদ দরবেশ কর্ত্ত অন্দিত। দিনীয় সংস্করণ। প্রকাশক শ্রীস্থবোধগোপাল বন্দোপাধ্যায়, আউধ ধরবা, বারাণসা। মূলা আট আনা।

শুক নানক কুত শ্রীজ্প**জী-**সাহেব শিথগণের অতি প্রিত্র ধর্মগ্রপ্ত। ভক্ত সাধক কিরণ্টাদ দরবেশ কবিভায় ভাহার অনুবাদ করিয়াছেন। অওবাদের সহিত মূলও দেওয়া হইয়াছে। মুখবলে গুরু নানকের জীবনকাহিনী ও সাধনার একটি সংক্ষিপ্ত আলোচনা আছে। এপ্ত-গানির দ্বিতার সংকরণ করার প্রয়োজন হইরাছে দেখিলেই বোঝা যায় যে ভক্ত পাঠকগণের নিকট ইহার যোগা আদর হটয়াছে। অমুবাদক ভক্তগণের কথা মনে রাখিয়াই এই অনুবাদ করিয়াছেন; স্বভরাং দাধারণ পাঠকের প্রয়োজন-অপ্রয়োজন বিচার করেন নাই। সাধারণ পাঠক বোধ করি মল গুরুম্ধীর বিশুদ্ধ পাঠ ও আক্ষরিক অনুবাদ (ধতদুর সম্ভব) পাইলে খুশী হইতেন। অবগ্র একথা সত্য যে, আক্রিক অনুবাদে প্রসাদন্তশের অভাব হইবে ও মূল গুরুমুখীর বাংলা-লিপান্তর সহজ হইবে না। শুরু নানককে শুরুবাদী বলিলে বোধ করি তাহার মতের প্রতি উচিত বিচার করা হয় না। অক্ততঃ গুরুবাদ বলিতে আমরা সাধারণতঃ বাহা বুঝি, নানক সে ভাবের ভ্রুকাদ স্বীকার করেন নাই। শিথধর্গে গুরু ও ব্রহ্ম এক নহে। শেব গুরু একথা শ্যুট্ট বলিয়া গিয়াছেন যে, যে তাহাকে ভগৰান ৰলিয়া মনে করিবে সে ভুন করিবে। শিথধর্ম আলোচনা করিলে বুম্বিতে পারা হাইবে বে, নানক সুলতঃ ব্ৰহ্মবাদীই ছিলেন :

বিজ্ঞানকাহিনী— শ্রীখণীলচক্র রারচৌধুরী। প্রকাশক— দি বুক টুল, :৬৯ রসা রোড, কলিকাতা। পু: ১৪৬। মূল বারো আনা।

(১) বিজ্ঞানের নানা কথা, (২) বিজ্ঞানের খবর — শীংশীলচক্র রার:চাধ্রা। প্রকাশক—এম সি সরকার এও সন্স ংক্রের ঝোরার কলিকাতা। প্র: ১২৯। মুল্য বারো আনা।

ব'ংলা ভাষার ছেলেমেরেরের পড়িবার উপবোদী বিজ্ঞান-এরের জভাব এখনও দূর হয় নাই। জগদানক রার মহালর এ জভাব দূর করিবার বংশষ্ট চেষ্টা করিরাছিলেন। অতি সহজ্ঞভাবে নিগৃড় বৈজ্ঞানিক তথগুলি বুঝাইয়া বলিবার অসাধারণ ক্ষমতা উহার ছিল। উহার রুতার পর ভর ইইয়াছিল ব্বিবা উহার পৃত্তছান অধিকার করিবার লোকের অভাব ঘটিবে। কিন্তু এই প্রস্থু কয়টি দেখিয়া সেই ভয় পূর হইয়াছে। অধাপক শ্রীক্ষণীলচক্র রায়চৌধুরী মহাশন্ত এই ভিনটি অতি মনোজ্ঞ শিশুপাঠ্য গ্রন্থ রচনা করিয়া শুধু ছেলেমেংছের নর আমাদের সকলেরই কৃত্তভাভাজন ইইয়াছেন। এই বিজ্ঞানের যুগ্গ আমাদের দেশের ছেলেমেংয়দের ইইয়াছেন। এই বিজ্ঞানের যুগ্গ আমাদের দেশের ছেলেমেংয়দের টিন্ত ছোটবেলা হইতেই থারাতে বিজ্ঞানের শুভি আকৃষ্ট হয় ভাগার জম্ভ কোন বিশেব আয়োজন আমাদের শিক্ষাপ্রণালীতে ছুর্ভাগারুমে নাই। অধ্যাত চারি দিকে প্রকৃতির কুন্তবৃহৎ যে নানা রহস্ত অহরম্ব আমাদের চোগে পড়ে ভালাদের সম্বন্ধে জিল্ঞাসা হইতেই গুধু বিজ্ঞান-শিক্ষার নহে সকল শিক্ষার্মই আরম্ভ। সেই কম্ভ শিক্ষার ক্ষেত্রে বিজ্ঞানের স্থান এত উচ্চে। স্বত্রাং ছেলেমেংশদের উপযোগী বিজ্ঞানগ্রন্থর এত প্রয়োজন। যিনিই সে অভাব দূর করিবার চেষ্টা করিবেন তিনিই আমাদের কৃতজ্ঞতা লাভ করিবেন।

'বিজ্ঞানকাহিনী' নামক গ্রান্থ লেপক আর্কিমিডিস, গ্যালিলিও, এডিসন প্রমুখ করেক জন বৈজ্ঞানিক মনীবার জীবনকাহিনী বর্ণনা-প্রসঙ্গে ভাগাদের আবিকার ওলির সংক্ষিপ্ত ও সরল ইতিহাস মোটামুটি ভাবে দিয়াছিন। ''বিজ্ঞানের নানা কথা" ও ''বিজ্ঞানের থবর'' নামক গ্রন্থ ছুইটিছে ফ্নীলবাবু আমাদের দৈনন্দিন জীবনের বে-সকল প্রাকৃতিক ঘটনা (যথা, লোহা জলে ভাসে কেন, জল আন্তন নিবায় কেন, গাছপালার সহিত্য মাঞ্চরের সম্বন্ধ, রাঙর কথা, দিনের বেলায় নকত্র দেখা যার না কেন, ইত্যাদি) আমাদের মনে কৌতুহল ও জিজ্ঞাসা উদ্রেক কবে ভাগানের বৈজ্ঞানিক ব্যাখ্যা প্রাঞ্জল ভাষার অভি সহজভাবে বর্ণনা করিয়াছেন।

প্রত্যেকটি অস্থাই অতি ফুলর হইয়াছে। ফুললবাবুর ভাষা মনোক্ত ও বর্ণনা চিত্তাক্ষক। ছেলেমেয়েদের মধ্যে যে গ্রন্থগুলির আদর হাইবে সে-বিবরে কোন সন্দেহ নাই। বইগুলির ছাপাও বাধাই ভাল, মূলাও কম। তবে 'বিজ্ঞান কাহিনীর' কাগজ ও ছাপার কালির নির্কাচন ভাল হইতে পারিত বলিরা মনে হয়। ত্-এক জায়গার ছাপার ভুল ও 'বাপীভবন' প্রভৃতি কয়েকটি কঠিন শব্দ চোপে পড়িল।

শ্রীঅনাথনাথ বস্থ

ধর্মাবোড়শী— জ্ঞানীতলচল চক্রবর্তা, এম্-এ, বিদ্যানিধি প্রশীত। প্রস্থকার কর্তৃক আগরতলা (ত্রিপুরা ষ্টেট) হইতে প্রকাশিত। মুল্য ৮০ আলা।

হিন্দুধর্মের বিভিন্ন দিকের মূল তথা সবংজ বোলটি স্থানিবিত প্রবজ্জের সমাবেশে এই পুস্তক প্রথিত। হিন্দুধর্মের ব হিন্দুক আচান্ত্র আপাতত: নির্ম্বক বলিলা প্রতীয়মান হয় সত্যা, কিন্তু স্কলতারে বিচার করিলে দেখিতে পাওরা যায়, যে, এইন্ডনির অন্তরালে এক সভীর রহস্য বর্ষমান রহিয়াছে। এই কথাই প্রস্কার এই সুন্দ্র প্রস্কের মধ্যে প্রাচ্য ও পাশ্চান্ত্য সাহিত্যে উহার স্বস্তার পাভিত্যের সাহার্ষ্যে প্রতিপাদন করিতে চেটা করিয়াছেন।

শ্রীচিন্ডাহরণ চক্রবর্ত্তী

শ্ৰী শ্ৰী ব্ৰজন শনি — গ্ৰীপৃণ্চক্ৰ বিষাস, এম্-এস্সি ! প্ৰকাশক — শ্ৰীসভাৱপ্লন বিষাস, ৪ সেণ্ট লেম্স্ সোয়াৱ, ক্লিকাভা । ১৭৬ পৃষ্ঠা, মূল্য ১৪০ টাকা মাত্ৰ।

বইখানা বুন্দাবন অমণের বুডান্ত। এত্থার উচ্চশিক্ষিত অধ্যাপক

এবং পরম বৈষ্ণৰ ও ভগবদ্বিখাসী। গ্রন্থে তাহার পাঞ্জিভার পরিচরও যথেষ্ট রহিয়াছে। গ্রন্থপেবে প্রদত্ত ব্রজমগুলের মানচিত্রটি নৃত্ন তীর্থবাত্রার উপকারে আসিবে।

বৈক্ষৰীয় শ্ৰদ্ধান্ত নিদৰ্শন শ্ৰন্থকাৰের ভাষারও রহিয়াছে। প্রভাকটি বৈঞ্ব-নামের পূর্ণের অন্ততঃ একটি জী শব্দ তিনি প্রয়োগ করিয়াছেন-এমন কি, নবছীপ, শান্তিপুত্ব, নামের পুর্বেও (৭ পৃ.)। বিশেষ বিশেষ 'ঞী'ও বাবহুত হইয়াছে; যেমন, নামের পূর্বে একাধিক 'শ্ৰীশীরাধামদনগোপাল' ইত্যাদি। মোটের উপর, 'শীশীবলধান,' 'এদান' 'মুখ্রী' প্রভৃতি শব্দের 'শী' এবং গ্রন্থকার ও প্রকাশক প্রভৃতির নামের পুর্ফোর 'শা' কয়টি বাদ দিয়াও ২৭৬ পৃষ্ঠার বইয়ে অন্যুন ৫০০টি 'শী' বাবদ্রত হইমাছে ; অর্থাৎ গড়ে প্রতি প্রায় প্রায় ৩ইটি এবং প্রতি ৭ ছত্তে একটি করিয়া 'শী' রহিয়াছে। কিন্তু অ-বৈশ্ব নামের পূর্বে 'শী'র ব্যবহার তত উদারভাবে করা হয় নাই; যথা, ৫৫ পৃঠায় করেকটি মহাদেবের উল্লেখ রহিয়াছে, তারা সবই স্বর্গীয়-অর্থাৎ ৺চিহ্নযুক্ত; অথচ 'শ্ৰী'কৃষ্ণের প্রপৌত ব্রজনাভ এখনও স্বর্গীয় হন নাই, 'শ্ৰী'যুক্ত !

এছকারের ভক্তিও বিশাস অসাধারণ। গোবর্দ্ধন গিরিকে তিনি ছধ কিনিয়া পাওরাইরাচেন, কিন্তু পাহাড়টির যেটি মৃথ কল্পনা কর। হয়, সেথানে ছধ ঢালিতে হইলে পাহাড়ের গায়ে পা ঠেকে, তাই তিনি নিজে ছধ ঢালিতে পারেন নাই; পাওা কিন্তু অম্লান বদনে তাহা পারিরাছে। "ব্রজবাসী সেবাইতের অবশ্য এতে কোন দোষ হর না, নচেৎ সেবাই চলে না" (২২২ পু.)।

বৃশ্দবিনে কল্লেকটি তমালবৃক্ষে গ্রন্থকার শালগ্রাম দেখিরাছেন। তাঁহার মতে "পুৰ সম্ভব এণ্ডলি অতি প্রাচীন ভগন্তত, ভগবান্ এঁদের অক্সকে আপনার অক্স বংলই মনে করেন, তাই এঁদের অক্সে আপনার অক্স প্রকাশ করেছেন (২৭৬ পৃ.)। বর্ত্তমান সমালোচকও এ-সকল দেখিরাছেন, কিন্তু তাঁহার মনে এ-সিদ্ধান্ত জাগে নাই। এইখানেই ভক্তির তকাং!

শ্রীউমেশচন্দ্র ভট্টাচার্য্য

সঙ্গীত পরিবর্ত্তন—জীংরিনারায়ণ মুখোপাধ্যায় প্রণীত।
গ্রন্থকার প্রসিদ্ধ গায়ক, তিনি জীবনে সঙ্গীতে যে পরিবর্ত্তন
লক্ষ্য করিয়াছেন তাহা বলিতে গিয়া অনেক প্রসিদ্ধ সঙ্গীতাচার্য্যগর্ণকে নিন্দা করিরাছেন। গ্রুপদ গানের হুর পরিবর্ত্তিত করিয়াছেন
বলিয়া তিনি সঙ্গীতাচার্য্য কৃষ্ণধন বন্দ্যোপাধ্যায়কে দোষারূপ করিয়াছেন।
যদি হুর স্কন্দর ইইয়া থাকে তবে পরিবর্ত্তন অমার্ক্তনীয় অপরাধ নহে।
বছ্তট্ট ও কৃষ্ণধন বাবু ইহজগতে নাই। তাহাদের সম্বন্ধে তিনি যে ভাবে
সমালোচনা করিয়াছেন তাহা না-করাই ভাল ছিল। সঙ্গীতাচার্য্য
ভাতবত্তের সম্পর্কে তিনি যাহা লিধিয়াছেন তাহাও না লিধিলেই
শোভন হইত। মোটের উপর নিজের প্রাধান্ত দেখাইতে পিয়া অপরকে
ছোট করিবার চেন্টা সকলের পক্ষেই পরিহার্যা।

বৈজু বাওরা ও তানসেন—জীহদ্বিনারারণ মুপোপাধ্যায়।
গ্রন্থকার সঙ্গাত-রাজ্যের ছাই জন দিকপালের জীবনী তাহার
নিজ অনুসন্ধান ও কিখদন্তীর উপর নির্ভর করিয়া শিশিবদ্ধ করিয়াছেন।
বহিধানা বিশেবত্ববিজ্ঞিত, তবে কিখদন্তীগুলি ফুল্মর বলিয়া গল্পের স্থায়
একটানা পড়িয়া ফেলিতে কষ্ট হয় না।

শ্রীকামিনীকুমার ভট্টাচার্য্য

অতি বোগাস্— ঐকেশবচন্দ্র শুরু। শুরুদাস চট্টোপাধ্যায় এও সন্স, ২০০১-২ কর্ণওয়ালিস্ ব্লীট্, কলিকাতা। মুধ্যা এও

ছোটগল্পের বই। বিশেষ কোনো বৈচিত্র্য নাই। বইখানির ছাপা ভাল, অনেকগুলি ছবিও আছে।

প্রতি জমি— স্বাবুল কালাম শামহন্দীন। মোহাম্মনী বুক একেন্সী। ৯২, আপার সাকুলার রোড়, কলিকাতা। দাম পাঁচ সিকা। বইখানি টুর্গেনিভের Virgin Soilএর অমুবাদ। মূলপুস্তকের পরিচর দেওরা অনাবশুক—সাহিত্যরসিক হুথীগণ উক্ত বিশ্ববিধ্যাত উপস্থাসের সহিত হুপরিচিত। অমুবাদটি সরুস ও প্রাঞ্জল হইরাছে।

স্থানকুত্ত্লী—শীগোপেল্লনান রায় । প্রকাশক—সত্যেশ্র-নাথ রায়, ১০নং ভূবন সরকার লেন, কলিকাতা । মূল্য ১॥•

একথানি কবিভার বই। অনেক হুলে রবীক্রনাথের বর্থ অনুকরণ। কিন্তু লেথকের নিজম্ব শক্তির যথেষ্ট পরিচয়ও নানা ছুলে ফুপ্টে। প্রথম রচনার তিনি বে প্রভাব কাটাইয়৷ উঠিতে পারেন নাই, মনে হয় বে পরবর্ত্তী জীবনে সেই প্রভাবই ভাহাকে নিজের পথটি চিনিয়া লইতে সাহায্য করিবে। বইথানির কাগজ, ছাপা, বাধাই অতি ফুলর। ব্রতীক্রনাথ ঠাকুরের অফিত প্রচ্ছদপটটি ভাল লাগিল।

ব্রোত—জ্ঞাভুবনমোহন মিত্র। নারায়ণ সাহিত্য-মন্দির, ৮ নং রাধমাধ্ব গোস্থামীর লেন, বাগবাঞ্জার। দাম দেড় টাকা।

আলোচ্য উপস্থাসধানিতে নীলাদ্রি ও ঝরণার চরিত্রটি আমাদের ভাল লাগিরাছে। শ্যামলার ছবিটিও বরদ দিরা আঁকা। তবুও বলিতে হয় উপস্থাস হিসাবে বইখানার সার্থকতা তেমন নাই— উপস্থাস না-বলিরা বড় গল্প বলিলে ইহার স্বরূপ ঠিক বোঝা যাইবে। ভাষা ভাল ও ব্যবহার।

ছায়াপথ — শীল্পোতিশ্বরী দেবী। গুরুদাস চট্টোপাধ্যার এও সনস। ২০৩|২|২ কর্ণগুরালিস ষ্ট্রীট, কলিকাতা। দাম পাঁচ সিকা।

আলোচ্য উপস্থাসধানি আমাদিগকে আনন্দ দিয়াছে। লেখিকা চরিত্র-অঙ্কনে কৃতিত্ব দেখিরেছেন—সুম্মিরা ও বিভাসের ছবি অন্তান্ত স্পষ্ট ও অকৃত্রিম। প্রকৃতির বর্ণনাতেও লেখিকার পাকা হাত। ছাপা ও বাধাই ভাল।

শ্রীবিভূতিভূষণ বন্দ্যোপাধ্যায়

বাঘ আসিয়াছে—

ঞীবিমল মিত্র

ববরট। প্রামময় রাষ্ট হইয়া গিয়াছে।

মতি মল্লিক বৃদ্ধ অথবর্ধ মানুষ। বাতে ভাল নড়িতে পারেন না বলিয়া দাওয়ায় বসিয়া দড়ি পাকাইতেন; করেক দিন হইল তাঁহাকেও আর দেখা গেল না। বলেন— হা বাপু, প্রাণ অম্নি সন্তা নয়—খাই-না-খাই ঘরে পড়ে খাকব, তা ব'লে বাই:র বেরুচিছ নে—

নন্দ কলুর ডোবাটার পাশের দিকে একটু জ্বন্সল মতন।
করেকটা শাঁড়া আর আস্থাওড়া গাছ জন্মিয়া বছদিন
হইতে জারগাটি অগমা। তথাপি বর্ধার দিনে ডোবার
বখন জ্বল ভরিয়া উঠিত, পাড়ার বৌ-ঝিরা ওই ডোবা
হইতে কলসী-কলসী জ্বল বহিয়া লইয়া বাইত; ভয়
বিলিয়া কোন দিন কিছু ছিল না। কিছু খবরটা
জানাজানি হইবার পর হইতে ঐদিকে আর কেহ মাড়ায়
না,…বিকাল হইতে-না-হইতে গ্রাম বেন খাঁ-খাঁ করিতে
থাকে!

রাত্রে সারা গ্রাম যথন নিশুভি—অন্ধকারের তন্ত্রা ভেদ করিয়া কত বিকট শব্দ সকলের কানে আসে—সকলেই শুনিতে পায় যেন কাছাকাছি পোয়াটাক পথ দুরেই সারা পল্লী চকিত সম্বস্ত করিয়া দিয়া শব্দ হইতেছে— ফেউ-ফেউ—

শক্টা কানে আসিতেই সকলের ঘুম ভাঙিয়া দায়।
জানালা দরজা বন্ধ করিয়া দিলে গ্রীয়কালে ঘরের ভিতর
থাকা বায় না, কিন্তু উপায় নাই। ঘরের ভিতর গরমে
বন্ধ থাকিবে তবু অপঘাতে কেহ প্রাণ দিবে না! সদ্ধা
হইতেই সকলে শ্যাগ্রহণ করে, আবার ওদিকে রৌজ
উঠিয়া বেলা হইলে তবে সকলে বিছানা ছাড়িয়া উঠে।
দিনের আলো থাকিতে থাকিতে যে-যাহার কাজ সারিয়া
লয়—সন্ধ্যাবেলা বাহির হইয়াছে কি অম্নি গলার টুটি
চাপিয়া ধরিয়া প্রাণটি বাহির করিয়া লইবে।

প্রথম প্রথম ত্-এক জন বিখাস করিতে চায় নাই।

শশিনাথ ছেলেবেলা হইতেই ডান্পিটে, বলিত,—হাা, বাঘ অম্নি বল্লেই হ'ল কি না—ও বাঘ-টাঘ নর, ব্রালি অমেরতো—কু'লো খাল্-টাাল হবে আর কি—

কিন্ত এক দিন সকলেই বিশ্বাস করিল। গ্রামের চৌকীদার গিরিধারীকে করেক দিন ধরিয়া পাওয়া বাইতেছিল না। চারিদিকে থেঁাজ পড়িল। পরের দিন দেখা গেল বিলের ধারে শুক্নো নল্ধাকড়ার গাদার ধারে মরিয়া পড়িয়া আছে। কতকগুলি শক্নি শেয়াল দেহটি গাইয়া অর্জেক নিঃশেষ করিয়া দিয়াছে।

অমৃত বলিল,—এ যদি সেই শালার কীর্ত্তি না হয় ত এই দিককার গোঁফ আমি কামিয়ে ফেলে দেব—দিবিয় করলাম—

থবরটা যে মিথ্যা নয় তাহার প্রমাণ পাওয়া গেল আর এক দিন। নিত্যানন্দ পিওন গ্রামে গ্রামে চিঠি বিলি করিয়া দিয়া পোষ্টাপিসে ফিরিয়া যায়। গোষ্টাপিদ সেই গাজনায়। ফিরিতে তাহার রাতই হইত। সেইদিন সন্ধ্যাবেলা জলাহাটির ধানক্ষেত হইতে ডাঙ্গার উপর উঠিতেই কি রকম একটা গৌ গৌ শক্ষ নিত্যানন্দের কানে আসিয়াছিল।

নিত্যানন্দ বলিল,—ব্ঝলি অমেরতো, ভয় ত আমার কোনও কালে নেই ভাই—কিন্তু এই তোর গা ছুঁরে বলছি, সেই শব্দ না শুনে যেন ঠিক থর থর ক'রে কাঁপতে লাগলাম, ব্ঝলি—পাশে ছিল একটা তেঁতুলগাছ, আর কিছু নেই—পেছন পানে কেবল ধানক্ষেত আর সম্মুথে কেবল ছাড়াছাড়া জঙ্গল—ছগ্যা ব'লে গাছের ওপর উঠে গে পড়লাম—তার পর দেখি কি জানিস্—বেখানটায় ঢালু জায়গাতে একটুখানি জল জমেছে, ঠিক সেপেনে একটা ছাগল ধ'রে চিবোচ্ছে—তোকে বলবো কি—বেমন তেমন নয়—মাপলে যদি প্রোপুরি দশ হাত না হয় ত…

মতি মল্লিক ঘরের ভিতর বসিয়া পথের লোককে জিজ্ঞাসা করিতেছিলেন, কাল কাকে নিলে গা, পাঁচুর মা ? পাঁচুর মা বলিন,—আমার র'মীর বাছুরটাকে পাচ্ছিনে মতিকাকা, সেই কালোপান। বক্না বাছুরটা—দেখি একবার ও-পাডায় খোঁজ ক'রে—

মতি মল্লিক বলিলেন,—ও উলোর বাঘ, ব্রাংল পাঁচুর মা, নোনাগাটির জঙ্গল কাটা হচ্ছে কি না, তাই এংখনে এরেছে পেলার বড় বড় বংঘ—বাছুরটাছুর আর ছেড়ো না—

বারোয়ারীতলায় একটা মাচার উপর বছকাল হইতে আড্ডা বসিত, অমৃত, শশিনাথ, এমনি আরও আনকে আসিয়া সেই আড্ডায় জুটিত। ত্ই হাতে চলিত তাস, সকাল চপুর এবং রাত্রি বারোটা অবধি। নিত্যানন্দ-পিওন চিঠি বিলি করিয়া ফিরিয়া যাইবার সময় এক হাত তাসও মা ঝ মাঝে পেলিতে বসিত। কোনকোন দিন ভূগি তব্লা হারমোনিয়ম লইয়া গান-বাজনাও চলিত। কিয় বাব আসিবার পর হইতে সেই আড্ডাট মৃতপ্রায়। দিনের বেলা কেহ কেহ আসিয়া হয়ত নামমাঞ দেখা দিয়া য়য়—কিয় আড্ডা আর জমে না—এ যেন বর্গী-আসারও বাড়া!

সেদিন ছপুরবেলা জনকরেক মিলিয়া মিলিয়া মাচায় বিসিয়া সেই কথাই বলিতেছিল। এমন করিয়া আর কত দিন চলে? 'এখন না-হয় একটি হুইটি বাঘ আছে—কিন্তু এম্নিভাবে চালালে গ্রামে কি জার মানুব থাকিবে! আজ হুটি বাঘ আছে—কাল তাহাদেরই বাচ্ছা হইয়া হইবে তিনটি! এমনি করিয়া বাথের বংশ বাড়িতে চলিলে গ্রামে বে বাস করা দায় হইয়া উঠিবে! এইবেলা সকাল সকাল একটা কিছু উপায় করিতে না পারিলে চলিতেছে না আর!

শশিনাথ বশিন,—থাঁচা বানাও—আর সেই থাঁচার ভেতর রাথো ছাগল-ছানা বেঁধে—তারপর যা ব্যবস্থা করবার আমি করবো'ধন—

বুড়ো অক্ষ.রর তিন-চারিটা ছাগল-ছানা আছে। এই সেদিন দবে হইয়াছে। অক্ষয় জানে তাহার ছাগলগুলির উপরই সকলের লোভ! বলিল-—গাঁচা যেন হ'ল—ছাগল-ছানা কে দেবে?…আককাল যা দর ছাগলের—

পূর্বা কামার বলিল,—তুমিই দাও না খুড়ো একটা, ভোমার অভগুলো **ইনিল**, কোনদিন গোয়ালম্ভ, ধরে নিয়ে যাবে—তা'র চেয়ে একটা দিয়ে যদি হয়, দেখনা—

বুড়ো অক্ষয়ের রাগ বেণী। বিলিল,—কেন গুনি, চাঁদা তোল না, কত আর পড়বে—তিন্টে টাকা দিলে একটা ছানা ছাড়তে পারি—নইলে এই মাগ্যিগণ্ডার বাজারে—ছেলেপ্লে নিয়ে আমায় বাস করতে হয়—ছাগল আমি মাগনা দিতে পারবো না, তা ব'লে রাগছি—বলিয়া আর কোন উপায় না দেখিয়া অক্য অভিডা ছাড়িয়া এক-পা এক-পা করিয়া বাড়ি মুধে চলিতে আরম্ভ করিল—

সেদিনকার মত কোনও কিছুই মীমাংসা হইল না—
এমন কি, তথু সে দিনই নর কতদিন ধরিয়া বে এম্নি
কথাবার্তা চলিল—পরামর্শ হইল, তাহার ইয়তা নাই।
কিন্তু একটা-না-একটা কিছু বিশ্ব আদিয়া সমস্তই পভ
করিয়া দেয়। কেহ এতটুকু স্বার্থতাগ করিবে না,—
কাহারও ব্যক্তিগত দায় হয় বলিয়া কেহ নি:জর ঘাড়ে
দায়িত্ব লইতে চায় না। পরের উপর দিয়া কাজটা স্থসমাধা
হইয়া গেলেই বেন সকলে পুলী!

কিন্তু অস্থাবিধা হইল সকলের চেয়ে বেণী প্রানন্ধ ঠাকুরের।
প্রামের এক দিকে বছদিনকার এক দেবীর মন্দির আছে।
সারদেশ্বরী বলিতে দশবানা প্রামের লোক অজ্ঞান।
এ-অঞ্চলকে বাঁচাইয়া রাধিয়াছেন দেবী সারদেশ্বরী।
প্রীয়াকালে আকাশে এক থণ্ড মেব নাই—এক কোঁটা বৃষ্টি
নাই—মাঠের ধান মাঠে শুকাইয়া ঘাইতেছে—দশধান গাঁয়ের
লোক আসিয়া দেবীর পূজা দিয়া গেল; তার পর দিন
দেবিতে দেবিতে বাম্ বাম্ করিয়া বৃষ্টি আসিয়া মাঠ ঘাট
পুকুর ডোবা ভাসাইয়া দিয়া গেল। তেনারের এম্নি কপা!
প্রকাণ্ড গছ্জপ্রালা মন্দির; মন্দির বহু প্রান কালের—
মাহায়্যাও তাই অনেক বেশী—

প্রসন্ন ঠাকুর সেই মন্ধিরেরই পুরোহিত।

প্রসন্ধ ঠাকুরের ঘরবাড়ি সবই আছে—একটু দুরে।
কিন্ত দিনের বেলা প্রসন্ধ ঠাকুর বাড়িতে গিরা খাওয়া-দাওরা
দেখা-শুনা সবই করিয়া আসে। রাজে মন্দিরের দাওয়ার
উপর শুইয়া পড়িয়া থাকে! মন্দিরের দরজার একটা
প্রকাশু ভালা লাগানো থাকে—মার বাহিরে প্রসন্ধ গুরুর
ঘুনার!

বউ কত দিন বশিয়াছে—বাড়িতে তোমার কে শন্তুর আছে শুনি যে বাইরে যাবে খুমুতে ?

প্রদন্ন ঠাকুর বলিভ,—ঘুমুই কি দাধ ক'রে ?…

সে কথা সত্য! শীত নাই, গ্রীম্ম নাই, বর্ষা নাই, প্রসন্ন
ঠাকুর যে মন্দিরের ভাঙা দাওরার উপর শুইরা থাকে তাহা
সাধ করিয়া নয়। তাহার কারণ আছে। সে-কারণ সকলকে
প্রকাশ করিয়া বলা যায় না!

চুপি চুপি প্রাসর ঠাকুর বউ:য়র কানে কানে বলিত,—
চল্লিশ ভরি সোনার গয়না ঠাকুরের গায়ে আছে—এই
ফুভিক্সের বাজারে—এ-দে:শর যে আকালে লোক—এরা
সব পারে—

চল্লিশ ভরি সোনার লোভে বে এ-দেশের লোক ঠাকুরের গায়ে হাত দিবে ত'হা বউ বিধাস করিত না। কিন্তু প্রসন্ন সে-কথা শুনিবার পাত্র নয়! মাসুযে কি না পারে? পরসার জন্ত লোকে যথন নিজের বাপকে খুন করিতে পারে—তথন পাথরের দেবতা কোন্ ছার! মাসুযে সব পারে।

তুপুরবেলা সেই আডের আসিরা প্রসন্ন ঠাকুর বসিল। বলিল,—একটা উপার তোমরা ক'রে ফেল শলি, ডোমরা হচ্ছ জোরান লোক, গায়ে ক্ষমতা আছে—আমি ত আর পারি নে,…রাতের বেলা লাওয়ার শুরে থাকি, কোন্দিন টেনে নিয়ে যাবে বাবে,…দেইটিই ভাল হবে?…

শশিনাথ বলিল,—শিণ্ঠারই একটা ব্যবস্থা করছি
ঠাকুর মশাই—কিন্তু দাওয়ায় শে'ওয়া তে'মার আর চলবে
না—বাড়িতে ঘরে গি:য় শুতে হবে—মন্দিরের দরক্রায়
তালা দেওয়া থাকে ত, তবে আবার ভয় কিলের
তোমার, শুনি ?

প্রসন্ধ ঠাকুর বলিল,—চোর-টোর—ব্ঝলে না,—বলা যায় কি, কার মনে কি আছে ?

— চোর ? অমৃত ভাবিতেছিল। বলিল— চোর হাত দেবে ঠাকুরের গায়ে। বল কি ঠাকুর মশাই ? দেব্ভার গারে হাত ?...কুঠ হবে না ? হাত বে খ'সে পড়বে—ভার কি গতি হবে ?… ভর মা সারদেশ্বরী— কি যে বল ঠাকুর মশাই ! আর চোরের কি বাঘের ভর নেই ভেবেছ? দেব্তা না-হর যদি রেহাই দের, বাব ত আর ছাড়বে না তা'বলে—?

উপস্থিত সকলেই সেই কথা বলিল। চোরই হোক্—আর যাহাই হোক বাঘের ভয় করে না, এমন প্রাণী ত ত্রিভ্বনে নাই! প্রাণের মারা সকলেরই আছে। তেরাণ অমন কাহারও সন্তা হয়। ত

সেদিন সত্য সতাই মন্দিরের দাওয়ার আর শোওয়া হইল না। পুরোহিত বলিয়া বাঘ ত আর তাহাকে ছাড়িয়া দিবে না! বাথের যদি অত বুদ্ধিই থাকিবে, তবে আর ভগবান তাহাকে বাঘ করিয়া স্থাষ্ট করিয়াছেন কেন! প্রসন্ধ গ্রহর সেদিন বাড়ি আসিয়া ভইল।

রাত্রিবেলা ছই প্রাহরে শশিনাথ আসিরা অমৃতকে ডাকিল,—ও অমের্তো, অমের্তো, অমের্তো রে, ওঠ্— উঠে পড়—

অমৃত ধড়ফড় করিয়া বিছানা ছাড়িয়া উঠিয়া পড়িয়াছিল। আগে হইতেই সমস্ত ব্যবস্থা ঠিক হইয়া ছিল। বাহিরৈ আদিয়া অমৃত বিশিল—লোহার ডাগুটা নিয়েছিদ্ত ? সমস্ত ঠিক্।

নিঝুম পল্লীর দ্বিপ্রহরের নিজ্ঞা—তন্ত্রাচ্চন্ন আকাশ! বাঘের ভয়ে সারা পৃথিবী যেন এবশ হইয়া আছে! যে-যাহার বাড়ির দরজা জানালা বন্ধ করিয়া অংঘারে ঘুমাই তছে। কোথায় এতটুকু টু-শব্দ নাই—নিগুক্তার সমুদ্র এখন নিটোল নিগুরক!

তালা ভাঙিয়া মন্দির চুকিতে হইবে।

তা শশিনাথ ওঞাদ লোক! তালা ভাঙিতে তাহার দেরি হইল না; দরজা খুলিয়া শশিনাথ আর অমৃত ভিতরে চুকিল। ফস্ করিয়া একটা দেশলাই-ঞাটি জালিতেই যরের ভিতরটা আলোময় হইয়া উঠিল।

কিন্ত বিশ্বরের উপর বিশ্বর ! • • • শশিনাথ দেখিল—
অমৃতও দেখিল । • • • দেখিলা ঘূই জনের চকুই কপালে উঠিল ।

এমন ঘটনা যে ঘটিবে তাহা ছ-জনের মধ্যে কেহই
করনা করিতে পারে নাই। শশিনাথ অমৃতর দিকে চাহিল,
অমৃত চাহিল শশিনাথের দিকে। দেশলাই-কাটিই
পুড়িয়া নিঃশেষ হইয়া গেল। • •

অতকালের প্রান স্বাপ্ত দেবী! সকলেই দেখিগছে সোনার মোড়া তাহার দেহ! চল্লিশ ভরি সোনা কম নর। কিন্ত আশ্চর্যোর বিবয়—এক তিল সোনা তাহার গায়ে নাই। নিরশকার পাধরের দেহ বড় সান!

শশিনাথ বলিল-এ ঐ বেটার কাজ !…

- —কোন্ বেটার ?
- —এ পুরুত বেটার।

সভাসতাই ত্-লনের কাহারও সন্দেহ রহিল না যে, প্রসন্ধ ঠাকুরই নিজের বাড়িতে সব সরাইরা ফেলিরাছে। করেকটা বাসনপত্র—বটি নৈবেদ্যের থালা ইত্যাদি যাহা ছিল ভাহাই ত্-একটা নিল শশিনাথ, ত্-একটা নিল অমৃত !

পরের দিন প্রসন্ন কাঁদিয়া-কাটিয়া অন্তির।

লোকের সামনে গিয়া বুক চাপড়ায়, আর বলে,—হায় হায়, কি হ'ল—কি হ'ল—

ব্যাপারটা লঘু নয়, সারদেয়রীর গছনা চুরি ! গ্রাময়য় হৈ চৈ পড়িয়া গেল সেই দিনই। প্রাসয় চোথের জলে বৃক ভাসাইয়া কেলে আর বলে—মা'র গয়না চুরি ক'রে সে ভোগ করতে পারবে না, তা দেখো! কুর্গ হবে না ?…বে-ছাভ দিয়ে নিয়েছে সে-ছাত খ'সে পড়বে না? কদ্দিন খাবে খাক্ না—মা'র ঠিক দৃষ্টি আছে—উপরে উপরওয়ালা বিনি আছেন—তিনি দেখছেন ঠিক—

গুপুর বলা কাদিয়া আদিয়া পড়িল বারোয়ায়ীতপার আডোয়। বলিল—তোমরাই ত বললে শনি, আমায় ঘরে গিয়ে শুতে, এখন দেখ ত !…তা এ আর দেখতে হবে না, মা'র রাগ চড়ে গেছে। কি যে ক'.র বসেন কে জানে! শীলিয়রই একটা কিছু বিপদ ঘটবে!…কাল রাতে, মা কি শ্বপ্ন দিয়েছেন, জান ?…আমার বুকের উপর পা দিয়ে বললেন—যেখান থেকে পারিল্ আমার গয়না আবার গড়িফ্লে দে…এখন কি করা যায় বল ত—গয়না না দিলে ত সব রসাতলে যাবে, কিছু কি আর থাকবে? হয় আবার গয়না গড়িয়ে দাও—নয় ত—

শশিনাথ আর অমৃত ত্-জনে চোথ-চাওয়াচাওয়ি করিব।

বুড়ো অক্ষয় বলিল—বেটা চোরের কি বাবের ভয়ও নেই রে?

বেখানে যত লোক ছিল—কেবল শশী আর অমৃত ছাড়া:
—আর সবাই তথন সেই কথাই ভাবিতেছিল...বেটা:
চোরের কি বাঘের ভয়ও নাই ?

প্রসন্ন ঠাকুর আবার বলিল—তোমরা আমায় ঘরে: শোওয়ালে, গরনা-চুরির অপরাধ তোমাদের যদি লোকে দেয় লোককে 'না' বলব কোন মুথে ?

শশী ও অমৃতর মুখে জবাব আটকাইরা গেল।



সাম্প্রদায়িক বিদ্যালয় শিক্ষা-বিস্তারের অন্তরায়

(সরকারী রিপোর্টের সাক্ষ্য)

গ্রীরমেশচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়

রাজনীতিক উদ্দেশ্যের বশবর্তী হইরা বর্ত্তমান ব্রিটেশ গবর্ণমেণ্ট মুদলমান দাম্প্রদায়িক বিদ্যালয়সমূহের জন্ত অপরিমিত অর্থবার করিরা আদিতেছেন। কিন্তু ইহাদ্বারা কি মুদলমানদিগের মধ্যেই শিক্ষার উপযুক্ত রূপ বিস্তার হইতেছে? সরকারী শিক্ষাবিবরণীগুলি ঐ প্রশ্নের উত্তরে বলিতেছে—না। কেবল ইহাই নহে, উহাদিগের দ্বারা দাধারণের অর্থের (যাহার অধিকাংশ হিন্দুর প্রদত্ত) উক্ত প্রকার অপব্যয়ের জন্ত এবং দাম্প্রদায়িক বিদ্বের ও পার্থক্য ভাব বৃদ্ধি:হ্য বলিরা, দেশের অদাম্প্রদায়িক দাধারণ

ভারত-গবর্ণমেণ্টের ১৯২৭-৩২ সালের পঞ্চবার্যিক শিক্ষা-বিবরণীতে মুসলমানদিগের শিক্ষা সম্বন্ধে আলোচনা করিয়া উপসংহারে বলা হইয়াছে:—

যত দিন পর্যান্ত পৃষক বিশেষ (সাম্প্রদায়িক) বিদ্যালয়সমূহ এত অধিক সংখ্যান বিদ্যানান ধাকিবে, তত দিন মুসলমানদিগের (শিক্ষার) উন্নতি গুরুতরক্ষপে বাধাপ্রাপ হইতে থাকিবে। (পৃ. ২৪৪)।

উক্ত রিপোর্টেই শিক্ষার অপব্যয় সম্বন্ধে আলোচনা-প্রসঙ্গে, বিহার-উড়িয়ার ডিরেক্টর সাহেবের মত উদ্ধৃত করিয়া সাম্প্রদায়িক বিদ্যালয়সমূহের কৃফলের বর্ণনা করা ইইয়াছে:—

বিহার-উড়িবার ডিরেক্টর অব্ পারিক্ ইন্ট্রাক্শন : ১২২-২৭ সালের পঞ্বার্থিক বিবর্গাতে, সাম্প্রদায়িক পার্থকাভাবের প্রতি ক্রমবর্জনদীল অমুঝাংগর ফলে (শিক্ষায়) যে অনাবগুক অর্থবায় ইইতেছে, তৎপ্রতি মনোবোগ আকর্ষণ করিয়াছেন:—

'থামের সাধারণের বাক্ত একটি বিদ্যালয়ের পরিবর্জে বাহাতে বিশেষ
বিশেষ সম্প্রদারের বাক্ত বহু বিদ্যালয় স্থাপিত হয়, সেই বাক্ত একটি
আন্দোলন চলিতেছে—আমরা এখন এমন একটি অবস্থার উপনীত
হাতেছি যে প্রত্যেক প্রামই একটি প্রাথমিক বিদ্যালয়, একটি মক্তব, ও
একটি পাঠশালা চাহিতেছে। অধিকন্ত, ইহাও গাবি করা হয় যে নিয়প্রাথমিক ক্ষেত্রেও বালিকানিগের ক্রন্ত পৃথক্ বিদ্যালয় দরকার, এবং
অনেক স্থানে, অসুন্তত শ্রেণীর বালক-বালিকাদিগের ব্রন্তও পৃথক্
বিদ্যালয় আবস্তুক। এইরনে, ভারতের দরিক্রতম প্রদেশে, প্রতি
থামে পাঁচটি প্রাথমিক বিদ্যালয় বিতে আমাদিগকে বলা হইতেছে।'

ছুর্ভাগ্যবশতঃ, তীব্র আর্থিক অন্টনের সমরেও, এই সত্তকতা-স্কুক কথাগুলির প্রতি মনোযোগ দেওরা হয় নাই। তাঁহার সদ্য-প্রকাশিত রিপোটে ডিরেক্টর মহাশ্বর ৰলিয়াছেন বে—

'পাঁচ বংসর পূর্বে আমি বে মন্তব্য প্রকাশ করিরাছিলাম ভাষা এখনও প্রবোজ্য। বিহার-উড়িবাা একটি দরিজ প্রদেশ এবং অতিব্যর সহু করিতে পারে না ; এবং সাম্প্রদায়িক বিদ্যালয়গুলি অতিব্যরের কারণ। অপরিমিত ব্যয়ের কথা ছাড়িয়া দিলেও, এই অতিব্যয়মূলক বিদ্যালয়গুলি উপকারপ্রস্থান্ত, কারণ মক্তব ও পাঠশালাগুলির শিক্ষকদের মধ্যে অনেকেই সাহিত্য ব্যতাত অস্ত বিষয় পড়াইতে এত অক্ষম বে তাহা সর্বাজনবিদিত।'

তার পর, পূর্বে পূর্বে বিবরণীতে ইহা লক্ষ্য করা হইরাছে যে পঞ্চাবে অতাধিক সংগ্যক সাম্প্রদায়িক মধ্য-বিদ্যালর (Socondary schools) আছে বলিরা উহার কলে অতিরিক্ত নাত্রার প্রতিবোসিতা হর, এবং তাহার প্রক্ত প্রায় সব ক্ষেত্রেই বিদ্যালয়গুলিতে নিরমামুবর্ত্তিতা (discipline) লোপ ও কর্মক্ষমতা (efficiency) হ্রাস পাইরাছে; তথাপি, এই নির্ব্ব দ্বিতাপূর্ণ বারের প্রতিকারের স্বস্তু কোনরূপ সংহত্ত প্রাংসিকতাপূর্ণ চেষ্টা হইরাছে, এরপ ইক্ষিত পঞ্চাবের রিপোর্টে নাই। (ভারত-গ্রণমেন্টের দশম পঞ্চবার্থিক বিবরণী, প্রথম থণ্ড, পূ. ৫)*

উদ্ধৃত কথাগুলি পড়িতে পড়িতে মনে এক কৌতুহলের উদ্ধৃত্ব হয়। ভারত-গবর্ণমেণ্টের শিক্ষা-বিভাগের কমিশনার মহোদয়, এবং অন্ততঃ একটি প্রাদেশিক ডিরেক্টর (বাংলার রিপোটেও ঐরপ মত দেখা যায়) সাম্প্রদায়িক বিদ্যালয়-শুলিকে অবাঞ্চনীয় বস্তু মনে করিবেন এবং ঐগুলিম্বারা ঘটিত অপব্যয়ের প্রতিকার হয় নাই বলিয়া ত্রংখিত। অপচ সাধারণে জানে যে সাধারণের অর্থের ঐ অপব্যয়ের প্রতিকার, হাভাল' করিতেছেন, সেই উচ্চ-পদস্থ সরকারী কর্ম্মচারীদেরই হাতে। তাঁহাদের ঐ সব সহজ্কি প্রশংসনীয় বটে, কিন্তু তাঁহাদের কার্য্য বর্ত্তমান কংগ্রেস-ওয়ার্কিং-কমিটির সাম্প্রদায়িক বাঁটোয়ারার প্রস্তাবের মত, "ধরি মাছ না ছুই পানি," এই নীতির পরিচায়ক।

যাহা হউক, ভারত-গবর্ণমেণ্টের উক্ত রিপোর্টের ৩০ পুর্নায়, পুথক্ পুথক্ সম্প্রদায়ের বালক-বালিকার জন্ত পুথক্

^{*} Tenth Quinquennial Review (Progress of Education in India, 1927-32, Vol. I.)

পৃথক্ বিদ্যালয়ের (Segregate Schools for Children of particular communities) সম্বাদ্ধ বলা হইরাছে:—

এই শ্রেণীর বিদ্যালয়ের মধ্য প্রধান এইগুলি মুসলমানদিগের জন্ম মন্তব-মাজাসা ও মোলা-বিদ্যালয় (Mulla school) এবং হিন্দুদিগের জন্ত পাঠদালা; এবং ত্রহ্মদেশে বহসংখ্যক (বৌদ্ধ) মঠাজিত (nonastic) বিদ্যালয়…

বে ছাত্রদিগকে বর্গমান বৃগের জীবনধাত্রার উন্নতি করিতে হইবে, তাহাদের পক্ষে ঐ সকল বিদ্যাল যার শিক্ষা অসম্পূর্ণ (অথবা ক্রটিপূর্ণ)। শিক্ষা-বিভাগের গুরুতর অর্থ-অপচয়ের লগুও ঐ সকল বিদ্যালয় ব্হলাংশে দায়ী, কারণ উহাদের লগু একই কাল দুইবার করার দরকার (overhapping) হয়।

এই স্থলে, রিপোর্টে উল্লিখিত "পাঠশালার" কথা আলোচনা না করিয়া থাকা যায় না। রিপোর্টে বলা হুইয়াছে সে, "মুদলমানদিগের জ্বন্ত মক্তব-মাদ্রাসা আর হিন্দদিগের জ্বন্ত পাঠশালা"। ইহাতে ব্রা যায়, যেমন মক্তব-মাদ্রাসা কেবল মুদলমানদিগের জ্বন্ত, তেমনি পাঠশালা-ভালিও কেবল হি দ্দিগের জ্বন্ত। এই উক্তি অসত্য অথবা অতিরভিত মনে করিবার যথেষ্ট কারণ আছে। অস্ততঃ, বাংলা দেশে সাধারণ শিক্ষার জ্বন্ত বে-সকল পাঠশালা আছে, তাহা হিন্দ্-মুদলমান-গ্রীন্তান সকলের জ্বন্ত। অন্ত কোন প্রাণেশেও সরকার এই অত্লনীয় মুদলমান-প্রীতির ও প্রাক্তি ধারাবাহিক হিন্দ্-উপেক্ষার দিনে কেবল হিন্দ্ বালক-বালিকার জ্বন্ত মক্তব-মাদ্রাসার ক্তায় বহুসংগ্যক বিদ্যালয় সাধারণের অর্থে চালাইবেন, বা চালাইতে দিবেন, ইহা অবিশ্বান্ত।

যদি "পাঠশালা" অর্থে সংস্কৃত-বিদ্যালয় অর্থাৎ টোল বৃঝি, তথাপি একই সিদ্ধান্তে উপনীত হইবার কথা। বাংলা দেশের দৃষ্টান্ত ধরিলে, ১৯৩১-৩২ সালে টোলের ক্রন্ত সাধারণ ধনভাগুরের (public funds) অর্থাৎ গবর্গমেণ্টের নিজস্ব, ডিপ্লিক্ট-বোর্ড ও মিউনিসিপালিচীর টাকা যে-পরিমাণে বার হইরাছে, তাহার বোল গুণ অর্থ মক্তব-মাদ্রাসার জন্ত বার হইরাছে (১৯২৭-৩২ স:নর বঙ্গ দেশের পঞ্চবার্থিক, শিক্ষাবিবরণী)। ভার তর অন্ত কোন প্রদেশে বে সরকার মুসলমানদিগের প্রতি এই বিষয়ে কম পক্ষপাতিত্ব দেখাইরাছেন, এবং হিন্দুদের প্রতি অধিক উদারতা

শুনুলমানদিগের ইন্লানিয়া কলেজ ও হিন্দুদের সংস্কৃত-কলেজের ব্যয় পরিলে, পার্থক্য হয় ১৭ গুণের বেশী!

দেখাই রাছেন, এইরপ মনে করিলে শিক্ষা-বিভাগের বর্ত্তমান চরিত্রে কলকারোপ করা হয়। স্তরাং, মক্তব-মান্তাসার সঙ্গে সঙ্গে "হিন্দুদের কন্ত পাঠশালা" এই দুপ বালবার কারণ বোধ হয় এই যে, মুসলমানদিগের সাম্প্রদায়িক শিক্ষার निन्नात भक्त मान यनि हिन्नूरनत मक:त्व वा अकातन এकहे। निन्ता कुड़िया ना-(मध्या यात्र छ:व ला: कि विनाद ? এই সম্বন্ধে আর একটি শক্ষ্য করিবার বিষয় এই যে. मक्रोबी कान विशासि क्रांशि हेश बना हव नाहे स्व সাম্প্রদারিক বিদ্যালয়ের সংখ্যাবভিল্যবশতঃ শিক্ষার উন্নতি কুন হইয়াছে। কিন্তু সরকারী রিপোটেই বারংবার এই কথা লিখিত হইয়াছে যে, সাম্প্রদায়িক বিদ্যালয়"গুলির সংখ্যাধিক্য মুদলমান-সমাকের শিকার অনুন্নতির একটি কারণ। যগা. বাংলা-গবর্ণ মণ্টের পঞ্চবার্যিক ৭ম শিক্ষ বিবরণীতে 🕆 (১৯২২-২৩---১৯২৬-২৭ সালের) এইব্রপ লিখিত দেখা योष्ट्र :---

...পশম পশ্বাধিক বিবরণীতে বাহা বাহা প্রদর্শিত ইইয়াছে সেই শক্তিগুলিই উন্নতির বাধা ঘটাইতেছে—জনসাধারণের (অর্থাৎ মুসলমান সাধারণের) উনাসানতা স্কলমান দিগের কর্ত্ত্বাধান মক্তব-মাদ্রাসা প্রভৃতি বিশিষ্ট প্রকারের বিদ্যালয়, বাহাতে ইসলাম ধর্ম ও অনুষ্ঠান শিকা দেওয়া হয়, তৎ প্রতি (মুসলমান দিগের) অনুরাগ। এই কারণগুলি এখনও বর্বমান এবং, আপাতঃ দৃষ্টিতে বোধ হয় বে, অকুর শক্তিতেই বর্ধমান (পু. ৭২)।

উদ্ধৃত কথাগুলি হইতে বুঝা যায় যে ১৯১২-১৭ সালের বিপোটে, মুদলমানদি গর মক্তব-মাদ্রাসা প্রভৃতি যে তাঁহাদেরই শিক্ষার উন্নতির অন্তরায়, শিক্ষা-বিভাগের চিন্তা ও অভিজ্ঞতা প্রস্ত এই সিদ্ধান্ত প্রকাশিত হইয়াছিল। আবার, অইম পঞ্চবার্ষিক রিপোটে (Eighth Quinquennial Review) অর্থাৎ ১৯২৭-৩২ সালের বিপোটেও সেই একই কথা:—

মুসলমানদিগের শিক্ষার উন্নতিতে বে-সকল শক্তি ৰাধা দেয়, তাহা পূর্ববং রহিরাছে। সেগুলি এই—সাধারণ বিস্তালরে বে অ-সাপ্রাদারিক (liboral) শিকা দেওরা হর, সেই বিস্তালর্চর প্রতি উদাসীনতা--মন্তব-মান্তামার স্তার বিশিষ্ট শ্রেমার বিস্তালর, যেখানে সাধারণ শিক্ষার সঙ্গে ইস্লাম ধর্ম ও আচার-অমুষ্ঠান শিক্ষা দেওরা হয়়, তৎপ্রতি মুসলমান অভিভাবকরণের পক্ষপাতিত্ব। (পু. ৭৯)

[†] Seventh Quinquennial Review on the Progress of Education in Bengal for the years 1922-23—1926-27.

দেখা বাইতেছে বে, মক্তব-মাদ্রাসা প্রভৃতি সাম্প্রদারিক বিদ্যালয়ের প্রতি অন্তরাগ মুসলমান-সমাজের শিক্ষার উন্নতির বাধা ঘটাইতেছে। এই বাধা অকস্কাৎ এখন উপশ্বিত হইরাছে, এমন নহে। ইহা অন্ততঃ কুড়ি বৎসারের পুরাতন; এবং সরকারী বিপোটে ইহার বারংবার উল্লেখ করা হইরাছে। একণে প্রশ্ন উঠিতে পারে, বাংলার শিক্ষাবিভাগের যদি এই মত হা, তবে সেই বিভাগই আবার ঐ প্রেণীর বিদ্যালয়ের জন্ত সাধারণের অর্থ অপরিমিত মাত্রায় বায় করিতেছেন কেন? এই বিষয়ে শিক্ষা-বিভাগের শেল এত বেণী লে, বাংলা দেশে এখন প্রাথমিক শিক্ষা "আবশ্রিক" (compulsory) হইতে চলিলেও, মক্তবশুলি যে অনুর্থ থাকিবে, এই আখাস সম্প্রতি দেওয়া হইয়াছে।

এক্ষণে ভাল করিয়া দেখা যাউক, ভারত-গর্কনেণ্টের অভিমত কি। দশম পঞ্চবার্থিক রিভিউ.ত* মুসলমান-দিগের শিক্ষার আলোচনা প্রসঙ্গে নিয়লিথিত উক্তিগুলি দেখা যায়:—

হার্টগ্ কমিটি (Hartog ('o munittee) 'পৃথক্' (separate) ও 'বিলিষ্ট' (special) বিদ্যালয়ের প্রভেদ দেখাইরাছেন। দের মক্তব, মাদ্রাসা, কোরাণ বিদ্যালয়, মোল্লা বিদ্যালয় এইগুলি বঙ্গমংখ্যায় বিস্তভাবে বিদ্যাল; এইগুলি 'বিলেষ্ট বিদ্যালয়'। এই সকল বিদ্যালয়ে যে ছানেরা পড়ে তাহাদের মধ্যে মাত্র নগ্রা মংখ্যাই পরবন্তী ক্লাবনে উন্নতি করিবার মত উপযুক্ত পরিমাণে সাধারণ বিদ্যালান্ড করিরা থাকে।' (পু.২৪২)।

পুনরায়:---

কিন্তু শিক্ষার উচ্চ স্তরে উন্নতির বৃহস্তম অস্তরার ২ইতেছে এই যে, ক্রমবৃদ্ধিশীল সংখ্যার (মুসলমান) বালক-বালিকারা পৃথক (segregate) বিদ্যালয়ে ভর্ত্তি হইরা থাকে।

হার্টিগ্ কমিটি এই মত লিপিবদ্ধ করিয়া গিয়াছেন বে অসাম্প্রদারিক ও সাধারণের কর্তজ্ঞাধান বিভালরসমূহে বে থবিগা পাওরা বার তাহা বলি একমাত্র হবিধা হইত, তাহা হইলে বাহা হইত, এই সকল বিদ্যালয় (মন্তব-মাত্রাসা ইত্যাদি) বে তদ পকা অবিকতর বিদ্যালয়ের (অর্থাৎ বেনী সংখ্যার) এবং ক্ষততর মুসলমান ছাত্রদিগকে বিদ্যাশিকার প্রতী করিয়াছে, ইহাতে সন্দেহ নাই। কিন্তু অপ্রাপ্ত সম্প্রদারের সহিত তুলনার, মুসলমানদিগের মধ্যে শিকার সাধারণ নিরিধ উন্নত করিবার মত প্রার কিছুই এই সকল বিভালয়ের ছারা করা হয় নাই। এই সকল বিভালয় বহ

সংখার চালাইতে থাকিলে তদ্বারা মুসলমানদিপের নিজের এবং জনসাধারণেরও আর্থের অন্টি করা ছইবে। (পু ২৪৩-২৪৪)†

হাটগ্ কমিটির এই মত উদ্ধৃত করির। ভারত-গবর্ণমেণ্টের রিপোর্টে মুসলানদিগের শিক্ষার আলোচনার অধ্যারের উপসংহারে যাহা বলা হইয়াছে, তাহা এই প্রাবদ্ধের: প্রথমেই দেখান হইয়াছে।

মুসলমান ছাত্রদিগকে হিন্দু ছাত্র অপেক্ষা বেশীসংখ্যক ভাষা পড়িতে হয়, এবং ইহা উহাদি:গর শিক্ষার উন্নতির একটি বাধা এইরূপ বলা হয়। সে-সম্বন্ধে বোম্বাই প্রাদেশের রিপোর্টে এইরূপ আছে:—

এইরপ বলা হট্যা থাকে যে চুইটি ভাষা শিক্ষার আবেগকতা মুদলমান বালক-বালিকাদিগের উন্নতির বাগা জন্মায়। কিন্তু, এ-বিবয়ে গ্রবর্গিন্ট, ঐ দম্প্রদায়ের ইচ্ছাদ্বরা পরিচালিত হট্যাছেন এবং শিক্ষা-বিভাগ বিপন্ত হার সহিত (lovally) এই ইচ্ছা কাষো পরিপ্র করিয়াছেন—যদিও ইচা উপলব্ধি করা হট্যাছে যে, মুদলমানেরা যদি স্থানার মাতৃভাষা ক বিশালারে শিক্ষার বাহনরূপে থীকার করিরা লয়েন এবং অন্ত দম্প্রদাযের সহিত প্রতিযোগিতা করেন, তবে উাহাদেরই অধিকতর প্রিধালাভ হইবে। (ভারত-গ্রব্গমেন্টের রিগোর্টি পুঃ ২৪২)।

বোদ্ধ'ই প্রদেশে অন্তর্জ্ঞও যাহা মুস্লমান সম্প্রদারের অপেক্ষাক্ত অধিকতর হিতকর, তাহা না-করিয়া যাহা অহিতকর, তাহাই করা হইতেছে; কারণ মুস্লমানেরা শেযোক্ত ব্যবস্থাই চাহেন। এই উন্প্রতির কারণ ভারত-গ্রথশিণ্টের ভৃতপূর্ব সেক্রেটারী শার্প (Sharp) সাহেব স্পষ্ট উল্লেখ করিয়া গিয়'ছেন:—

উহাদিগের সংখ্যান্ততা কথন কথন উহাদিগকে (মুসলমানদিপকে) নিজেদের দৃঢ় একতা ও আন্ধরকার জন্ত উর্দ্দুভাষার সংরক্ষণ অথবা পুনক্ষাপন করিতে প্রাচিত করে, যথা, মাদ্রাজের দক্ষিণাঞ্জের মুসলমানের!, যাহাদের মাতৃভাষা তামিল, উর্দুরু দিকে অপ্রসর্হতৈছে; বোষাই প্রদেশের সেই জেলাসমূহে, যেখানে সাধারণ লোকের কাচে উর্দু প্রায় অজ্ঞাত, সেখানেও উর্দুর জন্ত একটা আন্দোলন চলিতেছে ।

যেথানে উর্মুস্লমানদিগের মাতৃভাষা নহে, সেধানেও উহা তাঁহারা মাতৃভাষা করিংত চাহেন কেন, তাহার কারণ শার্পি সা.হবের কথায় বুঝা গেল। আমরা, হিন্দুরা, অমুমান করিলেও, সে কথা হয়ত "বিহেষের" কথা হইত।

^{*}Touth Quinquennial Review on the Progress of Education in India for the Years 1927-32, Vol I.

⁺ Hartog Report, page 199.

[†] Progress of Education in India 1907-12, Vol. I, p. 249.

ব্রাহা হউক, বাংলা দেশে মৌলবী ফদ্ধলল হক প্রভৃতিরা যে উর্দুর অন্ত এত আগ্রহ দেখান, তাহারও উদ্দেশ্ত মুসলমানদের সংগঠন (cohesion)। মক্তব-মাদ্রাসা প্রভৃতি সাম্প্রদারিক বিদ্যালয়ের উদ্দেশ্ত প্রধানতঃ ঐ সংগঠন, ইহাও সহছেই বুঝা যার। মুসলমানদের "আয়রক্ষার" কথার কোন অর্থ নাই। যে-যুগে, ব্রিটিশ গ্রগণ্যেণ্টের প্রধান মন্ত্রী হইতে আরম্ভ করিরা নিম্নতম কর্ম্মচারী গ্রন্ত, এবং ভারতের পূর্ণ্যরাজে"র অভিলাধী শ্রেষ্ঠ খনেশ্যেবক মহাম্মা গান্ধী হইতে আরম্ভ করিরা ছোট ছোট নেতা পর্যান্ত অনেকেই মুসলমানদিগের আবদার-পূরণে অভি ব্যপ্ত, দে-যুগে "আম্বর্ক্ষা"র জন্ত মুসলমানদিগেকে মোটেই চিন্তা করিতে হইবে না।

বাহা হউক, আমরা দেখিলাম বে মক্কব-মাদ্রাসা প্রভৃতি
সাক্ষাদারিক বিদ্যালয় মুসলমানদিনের শিক্ষায় উন্নতির
অন্তরায়—এ-কণা শিক্ষা-বিভাগের উচ্চ কর্ম্মচারীরা স্বীকার
করিয়া আসিতেছেন। হার্টগ কমিটি বলেন যে, ঐ সকল
বিদ্যালয় বহু সংখ্যায় রাখা শুধু মুসলমানদের নহে,
সর্বসাধারণের স্বার্থহানিকারক (কারণ, ঐরপে ব্যয়িত অর্থ,
সাধারণ শিক্ষায় বায় করা যাইত।) অভিজ্ঞ ব্যক্তিদিগের
ও সরকারী কর্ম্মচারীদিগের এই সিদ্ধান্ত সংব্দেও গ্রন্থেকি

পোষণ করিরা আসিতেছেন। কারণ বেধি হর, এই যে মুসলমানেরা উহা চাহেন, এবং তাঁহাদের ঐ ইচ্ছা "সভজ্জি" (loyally) পূরণ করা শিক্ষা-বিভাগের কর্তব্য!

মক্তব-মাত্রাসাগুলির গুণবন্তা সম্বন্ধে একজন ইন্ স্পান্তর যাহা বলিয়াছেন তাহা উদ্ধৃত করিয়া এই প্রবন্ধ সমাপ্ত করিব:—

ভিন্ন ভিন্ন সপ্রদারের জন্ত পৃথক পৃথক বিদ্যালরে শিক্ষাদানের মত অন্ত কিছু বারাই বর্তমান, ছুর্ভাগ্যস্চক সাম্প্রদারিক মনোমালিক্ত এত অধিক্রপে চিক্তারী করা হইতে পারে না।

•••মক্তব-মাদ্রাসাপ্তলি অতিশব (শিক্ষাদানে) অগট্। ইহা বিষেবমূলক সমালোচনা নহে, কিন্তু মূসলমান ইন্ম্পেক্টরদিগের সর্কসন্মত অভিমত।•••এরপ প্রতিষ্ঠানের কল-স্বরূপ ছাত্রেরা যে সাধারণ উচ্চবিদ্যালয়ে শিক্ষাপ্রাপ্ত ছাত্রদের সক্ষে প্রতিযোগিতার কদাশি কুতকার্য্য হইবে ইহার সম্ভাবনা থুবই কম।†

সাম্প্রদায়িক শান্তির জন্ত অ-মুসলমান সম্প্রদায়ের প্রতি
ন্যায় বিচারের খাতিরে এবং সংবাপরি মুসলমানদেরই
মধ্যে শিক্ষার বিস্তার ও উন্নতির জন্ত গবর্ণমেন্টের মস্তবমান্তাসার প্রতি অভাধিক অনুরাগ কমান উচিত।

- * অধিকন্ত মুসলমান ছাত্রের সংখা বেশী হইলে, যে-কোন সাধারণ প্রাথমিক বিদ্যালয়কে কাষ্যত: মক্তবে পরিণত করার জন্ম বাংলার শিক্ষা-বিভাগের একটি নিয়ম আছে। সম্ভব হইলে তাহা পরে আলোচনা করা হইবে।
- † Seventh Quinquennial Review on the Progress of Education in Bengal for the years 1922-23-1926-27.



যশ্চায়ম্ আত্মনি

রবীশ্রনাথ ঠাকুর

বিজ্ঞানের পথে মানুষের শক্তি যে আশ্চর্য্য উন্নতি লাভ করেছে তার তুলনা নেই। বহু শতাব্দীর চেষ্টায় জ্ঞান-সাধনা যে ফল লাভ করেছিল এই অল্পকয়েক বৎসরে মাতুষ তার চেয়ে অনেক বেশি অগ্রসর হয়েছে। 😘 যে নৃতন তথ্য অ'বিষ্ণার করেছে তা নয়, পূর্বে বিজ্ঞানের যে ভূমিকা ছিল তা পর্যান্ত নৃতন করে তৈরি করেছে। সভাতার প্রথম যুগে মাক্র সভাকে খুঁজেছিল বাইরে; আহার বাসস্থান প্রিয়জনের সঙ্গ ও শকর আক্রেমণ থেকে আবারকা, এই দিকেই তার শক্তি ধাবিত হয়েছিল। এই চেষ্টার ভিতর দিয়ে বাহ্য প্রকৃতির সঙ্গে ত র পরিচয় হয়েছে। নানা প্রক্রিয়ার অনুবন্তী হয়ে প্রাক্ততির সঙ্গে তার এই প্রথম বন্দ, তার वृक्षित ও मस्तित नीमात अहे श्रथम व्यातस्थ। मकीर्ग সীমার মধ্যে মাত্র্যের জ্ঞানবৃদ্ধি তথন নিবিষ্ট ছিল-মতটুকু ইন্দ্রিয়প্রতাক্ষ তারই আবেষ্টনে তার সকল পরীক্ষা সকল আশকা ছিল আবদ্ধ। সেই এক দিন স্বল্প পাথেয় নিয়ে মানুষ জ্ঞানর সাধনায় প্রাবৃত্ত হয়েছিল, তার পর বহু পথ অতিক্রম করে মহাবিশ্বের যে-পরিচয় প্রচন্তর আছে গভীরে উর্দ্ধে, দূরে নিকটে, ক্ষুদ্রে বৃহতে, মামুষ এক দিন সেই পরিচয় পেয়েছে—ভার শক্তির সীমা এখন কল্পনা করাও যায় না ; মাহ্ব যে বড় ভাতে কোনো সন্দেহ নেই—সে কথা নিয়ে আমাদের উৎসব করবার কারণ আছে।

কিন্তু কী আশ্চর্যা, মান্নবের বধন এই অপরিসীম উন্নতি ঠিক সেই সময়ে তার এ কী পরিচয়, এ কী হানাহানি, এ কী অসামান্ত হিংল্রতা! মান্নবের প্রতি মান্নবের অস্তহীন শক্রতা! সমস্ত যুরোপধণ্ডে মানব-স্বাধীনতার বিৰুদ্ধে এ কী অভিযান! গৌরব করব কিসের?

এই থেকে ব্রুতে হবে, হওরাটাই বড়ো কথা, পাওরাটা নর। পাওরার দিকে জানার দিকে সংগ্রহের দিকে করী হরেছে মাসুষ, বাইরের দিকে যত ঐবর্যা সে জড়ো করেছে— ভার সমন্ত সাধনা চেষ্টা সে দিরেছে বাইরের পাওরা ও কাজের দিকে, বিশ্বশক্তিকে আহাগত করে স্বশক্তিকে বড়ো প্রাক্কতবিজ্ঞানীরা অসীম আকাশে করার দিকে। মনকে বিস্তৃত করে দিয়েছেন, পৃথিবীর দেশে দেশে তারায় তারায় বৃদ্ধিকে মৃক্তি দিয়েছেন। কিন্তু ভূলে যাই, আরেক অসীম আছে, যা'র পথ রুদ্ধ হ'লে বাইরের ঐর্থয় অপরিসীম হ'লেও দারিদ্রা ঘূচতে চায় না। বাইরের দীনতায় তো শুধু অন্নবস্ত্রের হঃখ, কিন্তু অস্ত:রর দীনতায় দেখা দেয় দৰ্বনেশে দানবিক হিংস্ৰতা। সভ্যতা আপনি আপনার বিষ উৎপন্ন করছে; বৃদ্ধির যোগেই মাসুষ মরবে এমন আশকা দেখা দিয়েছে। প্রত্যহ মাসুষ প্রথরতর অস্ত্র আবিষ্কার করছে—এমনি ক'রে জোরে বিনাশের দক্ষতা র পথে शक्टा **2**15 9 আলোকে যিনি আছেন, যিনি আছেন "আত্মনি,'' তাঁকে অস্বীকার ক'রে মানুষের কী পরাভব প্রতাহ তা দেখতে পাচিছ। সে অসীম তো বস্তব্যক্ত নয়, তাঁকে উপলব্ধি করা যায় কিন্তু তাঁকে তো সঞ্চয় করা যায় না। অন্তরতম তাঁর উপলব্ধি আপনার মাঝখানে, বেখানে "হওয়ার" জায়গা। বাইরের শব্ধিতে আমরা ধন পাই, অস্তরের সংত্য পাই মুক্তি--সে আরেক ঐর্থা। সেই ঐবর্যাকে পেয়েছিলেন আমাদের দেশের সাধকেরা; বিজ্ঞান যেমন পেয়েছে দেশগত কালগত অসীমকে তেমনি আমাদের দেশের ঋষি পেয়েছিলেন আত্মগত অসীমকে। কত বড়ো সাহংসর সঙ্গে তাঁরা বলেছিলেন, আমরা ত্রন্ধের মধ্যে আপনাকে পাব। অসীমের মধ্যে পরম পুরুষের মধ্যে ব্দাপনার ব্যক্তিরপকে দেখে মৃক্তি লাভ করব। বলেছিলেন—

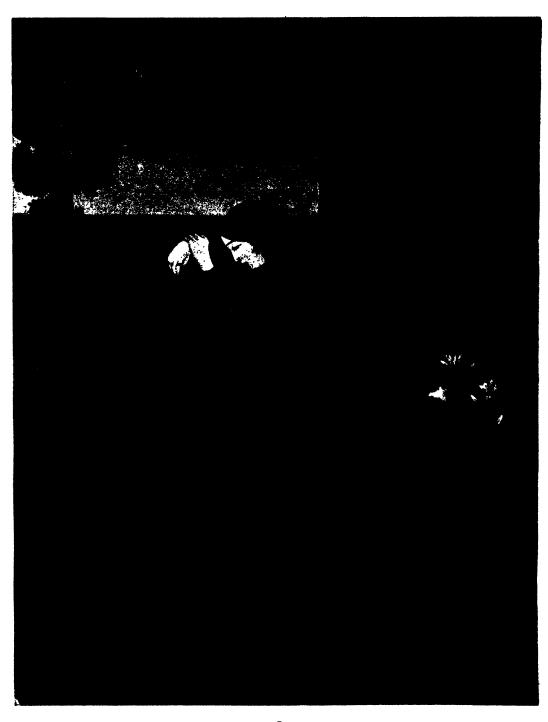
বেদাহমেতং পুরুষং মহাস্তম্।

দেশবিদেশে কত তথ্য আজ আবিষ্ণৃত হয়েছে—সে তো বৃদ্ধিগত দৈহিক জগতের। কিন্তু এ কী কথা! মহান পুরুষকে দেখেছি, বার বাহিরের ধর্ম নেই, আপনাতে যিনি আপনি আলোকিত। এ তো বস্তুর জগতের কথা নয়, আমার দেহ থেখানে আছ, থেখানে আছে নানা আয়োকন, তার কথা নয়। এর রূপ নেই ভার নেই: এর আশ্রয় চক্ত সূর্য্য বিশ্ব ক নিয়ে নয়। এই কথ: বৰতে পারিনে বলেই আরু এত হানাহানি। পুথিবী রসভেলের দিকে চলেছে, কী কলুষ ভাই আজ চার দিকে! রক্তে রক্তাক্ত আজ এই মুন্দর পুণিবী। আহার মধ্যে পরমায়ার যোগ, আশ্রহ্যা আমাদের এই কথাটি কবে অম্বকার বিশ্বব্যাপী দ্বন্দকোলাহলের উদ্ধে ধ্বনিত হবে ! পুজা দেব কোপায়? ছোটো ঘর পেকে মানুষ বাই র ষয়, কারণ দেখানে দেয়ালের মধ্যে দে হর মুক্তি-আকাজ্যা ছাড়া পায় না, মন ক্লান্ত হয়, ভাই অবারিতকে আমরা চাই।— ঘরের মধ্যে বদ্ধ মন যেমন বৃহদাকাশকে থোঁজে তেমনি মহান পুরুষকে সন্ধান করে সংসারে বদ্ধ মন। কোথায় রাথব আমাদের পূজা? এই দেশকালের সীমানায়? উপনিয়ত বলে.ছন, -- না, বাইরের সংসারে এই দেশকালের আয়তনের মধ্যে তো আত্মার মুক্তি নেই—মহান পুরুযের মধ্যে যে অসীম আশ্রয় সেই তো বড়ো অ শ্রয়। বিজ্ঞান প'ড়ে দেশকাশগত বিশ্বপ্রকাতর বহৰে আমরা অভিভূত হই--কিন্তু সেও আগার **তুচ**চ্চ অসীমতার কাছে দেহখানে যে-মুক্তি মানুষ তারই সন্ধান করেছে, এই কথা দেখি ইতিহাসের মধ্যে। সে-পথে তার কত বিঠ্রতি কত পতন, কিম্ব তার মধ্যে এই এর্থই নিহিত, এই ভূমার ভাকাঞ্জা। সমন্ত বিক্লতির মধ্য দিয়ে চিরদিন মাত্য এরই সন্ধান করেছে। অবশেষে দেখলে, আত্মার তৃপ্তি বস্তুরূপে না, দেশকালের মধ্যে না। আত্মার মধ্যে তাঁকে দেখো, সেধান যদি তাঁকে পাও তবে সব সত্য হবে-এই কথাটি বেমন ক'রে ভারতবর্ষের ঋষি বলেছেন তেমন আর কে:খাও কেউ বলেন নি। ব'ইরের অ**র্**ঘ্য আমাদের পূজা নয়, হওয়ার দিকেই আত্মার পূর্ণতা আমাদের চিরকালের বাঞ্চিত। সেধানে সভা হ'তে পারলে আমাদের

সব পুজা সংর্থক। অন্তের আগ্নায় আপনার আত্মাকে এক ক'রে দেখো—উপনিষদের এই তম্বটি বুদ্ধ ব্যবহারে রূপ দিয়েছিলেন "মৈত্রীর" তবে। বাইরের জগতে আলোক বে ঐক্য আনে অধাত্মলোকে সেই আলোকই প্রেম, সেই আনন্দ, সকলের প্রতি প্রসারিত আনন্দ। বিজ্ঞান বলে, ক্যোতি:-কণার সন্ধিবেশেই অণুপরমাণু, তাতেই সৃষ্টি, উপনিষ্ বলেছেন আনন্দেই সৃষ্টি। বিজ্ঞানের পরীক্ষাগারে উপায় নেই, ব:ইরের তো ভার দেখা পা**ব**'র থেকে সে প্রতিহত হয়ে ফিরে আসে। আত্মার মধ্যে ত'র সন্ধান করতে হবে। বাইরের সাধনা রুট্ডিম— আনক্রপমমূত্য স্ক্তি তার আনক চাই। প্রেমের হারা আত্মার ঐকাধর্ম প্রতিগা করতে হবে, সেইখানেই তো অধ্যাত্মশেক। সেইখানে পৌছতে পারে নি ব.শই তো মানুযের এত ছঃখ। ভার বেদনা, কিন্তু দে পায় নি, যেমন ক'রে সে বাইরের এই মহাবিশ্বকে পে:য়ছে তেমন ক'রে আত্মাকে পায় নি। তাকে লাভ করবার জন্তই তো মহাপুরুষের আহ্বান-সে আহ্বান জপতপের জন্ত নয়, পরম মুক্তির জন্ত সে আহ্বান। কত ব:ড়া বিশ্বাদে বুদ্ধ আহ্বান করেছিলেন, বলেছিলেন "যেমন ক'রে এক পুত্রকে মাতা ভালবাদেন, তেমনি করেই মৈত্রীর সাধনা করতে হবে।"

আখার অর্থা প্রেম। সেই বাণী ভূলিনে যেন।
সংসার আক্র পীড়িত। আথাত-প্রতিথাতের মধ্য দিরে
সত্যভ্রষ্ট হয়েছি এই বেদনা মনে জাগা চাই—অধ্যাত্মলোকে
আশ্রমর অভাব যদি আমাদের পূর্ণ হয় তবেই আমরা
বাচলুম। সেই সভোর কামনা মনের মধ্যে রেখে সাধনাকে
বেন অংমরা ভাগ্রত ক'রে রাধ'তে পারি।

^{*} গত ৭ই পৌৰেন্ন উৎসৰে শান্তিনিকেতনে মন্দিরে আচার্য্যের উপদেশ।



উপেকিতা উাক্তঞ্চ মিশ্র

উদ্বোধন

রবীশ্রনাথ ঠাকুর

গান—''তুমি আপনি জাগাও মোরে।''

ছাজ এথানকার কথ্যসংসারে আমাদের নববনের প্রথম দিন। প্রতি বর্ণে আজকের দিনে আমাদের অন্তরের এই পার্থনা। সব সময়ে দে প্রার্থনা সকল না হ'তে পারে, বারেবারেই তা জামরা বিশ্বত হই, জাগ্রত চিত্ত নিয়ে কথ্যক্ষেত্রে প্রবেশ করতে পারি নে, চিত্তকে সরিয়ে দিয়ে জাত্রত নৈপুণা মন্তর মতো কাছ করি হাদয় তাতে শোগদেয় না। কথ্যই শেখানে শেষকল সেগানে এতে কোনো ফাতি হয় না, নৈপ্লোর গোগে সেগানে সিদ্ধি লাভ ঘটতে পারে, কাজ হয় নিযুঁত, বরাবরকারে অভ্যাস বশত সহজেই কাজের চাকা চলে। কিন্তু এই আশ্রমের কাজে বাইরের সম্পর্বিটাকৈই তো জামরা মুগ্য ব'লে স্বীকার করি নি, সভ্যের সাধনাকেই উর্জে ভুলে রাগতে চেয়েছি।

এখানে আমরা কম্মের গোগে মিলিত। কিন্তু গুর লক্ষ্য হচ্ছে এমন একটি পুরুষ সম্ভাকে উপলব্ধি করা াতে এই মিলনের পথে জীবন সার্থক হয়। তার তৌ আর কোনো উপায় নেই। এক্লা ব'নে পূজা ধানি, একলার মধ্যে অধ্যায়রস সম্ভোগ—তার কোনো মূল্য নেই, ্রমন কথা বলছি নে। কিন্তু সভাকে পাবার প্রথম সোপান, তাগের দারা সকলের মধ্যে আত্মাকে উপলব্দি করা। ারই উপলক্ষা আমরা এথানে রচনা করেছি; এই জন্মই আমরা একে বিদ্যালয় বলি নে, বলি আশ্রম, কেন-না এর মধ্যে আশ্রয়ের ভাব আছে। এথানে মিলনের স্থচনা হয়েছে—সেই মিলন বাতে প্রম মিলনের বার্তা আনে; তারই জন্ম আমাদের দাধনা। আফিসে অনেক স্থানেই তো নামরা অনেক মানুধ জড়ো হই, কিন্তু সেধানে আমরা একত্র হ**ই, মিলিত হই নে। সকলে**র শক্তিকে কম্মের রঙ্গুতে নিশিয়ে কর্মকর্তা আল্লাকে উপলব্ধি করতে পারে না। तिलू (मर्थात शत्रम्भद्र भिन्त वांधा एत्य, देशी विष्वत नितर्छ হয় না। সেই জন্তই আজ আমাদের এই প্রার্থনা—"তুমি

আপনি জাগাও মোরে"--সমস্ত জড়তা হ'তে তুমি আমাদের জাগাও, কর্মের মধ্যে পরম মিলনে তুমি আমাদের চিত্তকে জাগাও, একান্ত অবাবহিত যে উপলব্ধি, সভোৱ আলোকে সেই সহজ উপলব্ধি আমাদের মনে উদ্বাধ করো। এই আশ্রমের চারিদিকে বিধপক্তির মধ্যে সে-সাধনার অক্তেকলা অ'ছে –আজকের প্রভাতের সেই নিগ্ধ সৌন্দ্র্যা সেই বাভাত বহন করে আনছে। সকল সাধনার উপরে সভার সাধনা, অন্তঃকরণকে জাগিয়ে তুলে দেই কথাটিই বলতে হংব---সংকল্প যেন বার্থ না হয়, সমস্ত চৈত্তল যেন গান্ধকের প্রভাতের এই আলোকে উদ্বোধিত হয়। সমস্ত পুণিবী আজ বাধায় সংশয়ে আবিলঃ উপর গেকে আলোক নামুক আমাদের খন্তরে। রাত্রির খন্দকারকে ভয় করি নে, সে তো আনে বিশ্রাম: ভয় করি সংশয়ের ক্ৰেলিকাকে, অহমিক¦কে, বাইরেই য়ে আপনার শক্তি বায় করে কেলে। পূথিবীর খরে গরে আজ এই সংশয়; এমন মাত্র ক'জন খাছে বে নিসূতি পেয়েছে এই বিশ্ববাপী কুহেলিকা থেকে, থে-কুহেলিকা প্রভাতের নিমালভাকে অস্বীকার করে, গে-তর্কভাল আপন আকাশকে সম্বচ্ছ করে পুথিবীতে স্কত্রই এই সংশয় আদ গল্প-বিস্তর প্রবেশ করেছে — নাদের সঙ্গে, নাদের জভা কাজ করি সর্পাত্রই এই বিদ্যাপের হাসি। সহজ উপলব্ধি নিয়ে বিশ্বাস করি, একপা বলতে বুদ্ধি মতিমানী সাহস করে না। এই চারিদিকের ভীরুতাই সাধনায় খামাদের বাধা। সেই বাধাকে অতিক্রম করে আমরা মেন সভাকে গন্তরে প্রবেশ করতে দিই, যে আলোক আপনি নেমে আস্ছে তাকে স্বীকার করি। চারিদিকের কোলাহল **ছ**ন্ধবিদেয় যেন আমাদের ক্ষাকে নিপ্রভ না করে। কমলোভী না হয়ে তার চেয়েও বড়ো ফল যেন আমরা আকাজ্ঞা করতে পারি। নবনর্মের সর্ব্বপ্রথম দিনে এই আমাদের প্রার্থনা। বাইরে যিনি বিশ্বকে জাগানু আলোকে, আমাদের চিত্তকেও তিনি জাগরিত

কঙ্কন। আলোককে প্রমাণ করবার জন্ত যুক্তিতর্কের প্রয়েজন হয় না, কোনো পণ্ডিতের কাছে থেতে হয় না— অবিনাকে সে আপনি স্প্রমাণ করে; সভ্যের আলোক, সেও তেমনি চিত্তের মধ্যে আপনাকে স্থামাণ করে—

সহজে যেন তাকে হদয়ে গ্রহণ প্রার্থনা।*

*গত ৭ই পৌষের উৎসাব শান্তিনিকেতনে মন্দিরে আচায্যে উদোধিনী বক্ততা।

মহিলা-সংবাদ







জীমতী লাবণালতা সেনগুপা

শ্রীমতী লাব্যালতা সেমগুপ্তা ঢাকা বে'র্ডের অধীনে মহিলা ছ:ত্রী:দর মধ্যে প্রথম ইইয়া কুড়ি টাকা করিয়া বুত্তি লাভ করেন। ১৯৩০ সনে বেখুন কলেজ হইতে গণিতে অনাৰ্স লইয়া তিনি বি-এ পরীক্ষা উত্তীৰ্ণ হন এবং

'শান্তিলতা বহু রায়' স্বর্ণপদক লাভ করেন। পর ১৯২৬ সনে মাট্রেক্লেগুন ও ১৯২৮ সান আই-এ পরীক্ষায় বৎসর ডা.য়াসেসন কলেজে বি-টি পরীক্ষায়ও উত্তীণ হইয়াছিলেন। তিনি কণিকাতা-বিশ্ববিদ্যালয় হইতে গত এম-এ পরীকাষ গণিতশাল্তে সর্বোচ্চ স্থান লাভ করিয়াছেন।

বহিৰ্জগৎ

নৌবহরের কথা ও জাপানের দাবি

বৎসর-দিনেক প্রের্ব এক বিশিষ্ট বন্ধু ইউলোপ-অমপের পব সাদশে ফিরিয়া বিলয়ছিলেন, পাশ্চান্ডোর যুবকগণ আবার কৃত্বের জন্ম উৎস্ক হল্ট্যা উটিয়াছ। তাহার কথার তপন কর্পপাত কবি নাই। কিন্তু গছ কিন বংশরের ঘটনাপরন্পরায় এখন আর একখা অবিশাস কবা যায় না। লুলবাহিনীর স্থায় নোবাহিনী ও নব নব আবিক্ষত অস্পান্ধ আধুনিক কালের রাইবর্গের প্রধান সম্পদ —আধুনিক কৃত্বের রাইবর্গের প্রধান সম্পদ —আধুনিক কৃত্বের রাইবর্গের প্রধান সম্পদ — আধুনিক কৃত্বের সময় বেশা কাল্কে লাগিয়া খাকে। সাবমেরিলের মহিমা গ্রুত্ব প্রধার ক্রত ইন্ট্রাছিল। ইন্দানীং পশ্চিমের রাইগুলি নিজেনের র্শম্মার বাডাইবার জন্ম উঠিয়া পড়িয়া লাগিয়াছে। নহাগদ্ধ আসর কিন্না কে বলিতে পালে ?

রি টন, মার্কিন ও জাপান এই তিনটি রাষ্টের মধাে নৌবহর
নিয়ন্ত্রপর জপ্ত বর্ষমান বংসার একটি বৈঠক হউবার কথা। গাঁও
১০০ঃ সানের শেষভাগে লণ্ডনে জাগামী বৈঠকেব বিবেচা বিষয় সম্পর্কে
ইয়ান্তর প্রতিনিধিদের মধ্যে আলাপ-আলোচনা হয়। কিন্তু কোন
ভিব-সিন্ধান্ত উপনীত হউবার প্রেইট ইয়া জুলিত রাপাং হইয়াছে।
গুট আলোচনার ফলে যে-সব সমস্তার উত্তব হইয়াছে ভাংগতে মনে
হয় খাগামী নৌবৈঠকও বার্থ হইবা। ভাপান কিছুকাল যাবং
নৌবহর সম্পর্কে রিটিন ও মার্কিনের সমান ইইবার দাবি করিছেছে।
থকান, লাপানের এই অহাধিক দাবিতেই আলোচনা স্থানিত রাখিতে
হরয়ছে। ইহার উপর গাঁত ২১এ ডিসেম্বর জাপান মার্কিনকে
১৯২২ সনের ওয়ানিংটন নৌচুন্তির অস্বীকৃতি জ্ঞাপন করিরছেছে।
গুট সব কারণে নানা লোকে নানা পরে নিজ নিজ মতামত প্রকাশ
করিজেছেন।

এই সব আলোচনার মধ্যে একটি বিষয় লক্ষ্য করিবার মত।
বিটেন ও মার্কিনের পক্ষে ওকালভির অভাব নাই। বেচারা জাপানই
শন সকলের কোপে পড়িরাছে। ইহার কারণও ফুল্পন্ত। আমরা
বিদেশ হইতে সংবাদ পাই রয়টারের মার্ফত। বিদেশী মতামতের
পরিচর পাই প্রধানতঃ ইংরেজা ভাষায় লিপিত পুত্তক-পুত্তিকা ও
নাম্যিক পত্রের মধ্য দিয়া। এগুলির অধিকাংশই আবার ইংরেজ
ও মার্কিনাদের লেখা। ইহানের মধ্যে জাপানের বিহোধী ভাবই বেশী
করিরা ফুটিয়া উঠে। সেদিন এক ভুদ্রলোকের সঙ্গে আলাপে
বৃষ্ণিলাম, জাপানের বিক্রন্ধা মতামত প্রাচাবাসীদের চিন্তাধারাও
মাছেমু করিয়া কেলিয়াছে। তিনি ল্পন্তই ব্ললেন, নৌবহর সক্পর্কে
জাপানের কোন দিকই নাই। অর্থাৎ তাহার তর্ক হইতে বলিবার
কিছুই নাই। এই জন্ত জাপানের বর্ত্তমান দাবির কথা আলোচনা করাও
বিশেষ প্রয়োজন।

গত শতাব্দীতে বঙ্গকৰি জাপানকে অসভ্য বলিগছিলেন। কিন্ত আৰ্দ্ধ শতাব্দীয় চেষ্টায় তাহার সে অপৰাদ যুচিয়া গিয়াছে। জাপান

বর্তমানে অক্তচম স্পভা দেশ। ধর্ম, রাই, সমাজ ও সংস্কৃতি সৰ্ দিকেই সে অগ্রসর। জাপান সৌন্দর্যোর উপাসক, এবং এই কারণে জগতের আদেশস্থল। ইউরাপীঃ শক্তিবর্গ যথন প্রাচাষও লট্রা চিনিমিনি বেলিতেছিল তথন জপান মা ভৈ: রাব মাথ ত্লিয়া



য়াতিমিরাল টেগো। ইনি: ১০৪ সনে রুশ-জাপান বুছর সময় পোট আর্থার কশ রুপতরা ছত্তজ্জ করিরা দেন। ইনি গত মে মালে পর:লাকগমন করিবাছেন।

তাহা রোধ করিয়াছিল। ১৯০৪ সনে পোট আর্থারের বৃদ্ধে এটাড় মিরাল টোগো ক্রস নৌবহর ছত্রভঙ্গ করিয়া নিষা অগদ্বাদী ক দেখাইয়াছি লন, আধুনিক বৈজ্ঞানিক রাতি অবলখন করিলে প্রচৌও পাশ্চাত্য রাইগুলির সমশক্তি ফর্জন করিতে পারে—এমন কি প্রয়োজন হটলে ইহানিগকে হারাইরা নিতেও সক্ষম। প্রাচ্যের বহু ভূবও ইতিপুর্বে বিদেশীর করতলগত হইলেও নবাঞ্গ রঙে রঞ্জিত স্বাধীন জাপানের নিকে চাহিয়া তাহারা আমত হইয়াছিল। ধর্ম ও সংস্কৃতিতে প্রাচ্যপ্ত একই হবে গাঁথা, কাজেই একের শীর্ষাক্তি অক্টের উৎফুল্ল হওয়া স্বাভাবিক।

জাপানের 'অত্যধিক লাবি'র সরপ জানিতে হউলে ওয়ানিংটন নৌচুক্তির কথা আলোচন! করা আবশুক। গত মহানুদ্ধের বিভাষিকার ছায়ায় : ১১১ সনের ৬ট কেব্রুয়ারি ওয়ানিংটন নৌচুক্তি থাক্ষরিত হয়়। তথন জ্বেতা বিজ্ঞিত সকলেই পরিপ্রান্ত ও হানবল। নিছক জায়রকা ছাড়া বৃদ্ধার হিসাবে নৌবহর মাহাতে না বাড়ান হয় সেদিকে সকলেরই শোন দৃষ্টি।

এইরাপ আবংগওয়ার মধ্যে ওয়াশিটেন নোচুক্তি যাগরিও হইয়াছিল। এই সময়ে আরও কতকগুলি চুক্তি সাক্ষরিত হয়।
কিন্তু নোচুক্তিকে খিরিয়াই ব্রমানের আন্দোলন। এই চুক্তির
অন্ত নাম পঞ্চলক্তি-চুক্তি। কারণ বিটেন, মার্কিন, জাপান, ফ্রান্স
ও ইটালি এই পাঁচটি শক্তির প্রতিনিধিগণ ইহাতে সাক্ষর করেন। পরে
শোষাক্ত ভুই সরকার এই চুক্তি স্বীকার করিতে অসম্মত হইলে ইহা
ওয়াশিটেন নোচুক্তি বলিয়াই অভিহিত হয়। কাজেই, বিটেন মার্কিন ও
লাপান সম্পুক্ত সর্বস্থলিই এগানে বিবেচা।

গুয়াশিংটন নৌচ্জিতে বড় যুদ্ধজাহাজগুলির এমুপাত নিদ্ধারিত হয় বের হা অর্থাথ বিটেন ও মার্নিন প্রত্যেকে কেন্দ্রুত উন ও জাপান ৩১০, ০ টন পরিমাণ রণপাত রাখিতে পারিবে। এই রণপাতগুলির প্রত্যেকথানি ২ইবে ২৫, ০০ টনের অন্ধিক ও ইহাদের কামানের ভিতরকার ব্যাস ২৬ ইঞ্চি। কুলার, ডেইয়ার প্রভৃতি অপেকাকৃত ছোট রণপোতগুলির অনুপাত ও পরিমাণ এ বৈঠকে নিশীত হয় নাহ, কিন্তু ইহাদের প্রত্যেকথানি ২০,০০০ টনের মধ্যে ও

কামানের মুগ ৮ ইঞ্চির মধ্যে হইবে দ্বির হয়। বিমানপোত্রাহী জাহাজের অনুপাত বড় রণপোতের মতই হইবে, ইহার প্রত্যেকশানি হইবে ২৭,০০০ টনের মধ্যে। ব্রিটেন ও মার্কিনের মোট পরিমাণ ২০৫,০০০ টন করিয়া, ও জাপানের ৮২,০০০ টন (অনুপাত ঠিক ৫২০২০)।

ওয়াশিংটন বৈঠকের অমামাংসিত বিষয়গুলি ১৯০০ সনের প্রথম ভাগে লগুন নোবৈঠকে স্থির হয়। বহু দিনের আলোচনার ফলে কুলার, চেইয়ার ও সাব্দেরিনের প্রিমাণ নিম্নণ ধান্য হয়।--

| C⊊le्∥ | ম!ৰ্কিন | রিটি শস াখ্রাজ্য | জাপান |
|---------------|---|-------------------------|---------------|
| কুজ!র | | | |
| (ক) : ইঞ্চি | র | | |
| অধিক মুগের কা | মান ১৮০,০০০ টন | ১৪৬,৮০০ টন | ১ ০৮,৯০০ টন |
| (খ) ৬০: ইঞ্চি | ৰ্! | | |
| ভাহার কম মুপে | র কামান ১৪০,০০০ " | > à₹,₹ / ∞ " | " ۱۶۶۰ • د |
| ডেইয়ার | ٧ . • • • • • • • • • • • • • • • • • • | > 0 0 , 0 0 0 " | > 0,000 " |
| সাব্ধেরিন | ^*,900 " | @>,9•0 " | . = , 9 • • " |

কুজার, ডেইয়ার ও সাবনেরিন প্রত্যেকথানা কত পরিমাণের ১ইবে তাহাও এই বৈথকে নির্দারিত হইয়াছে: ১৯০৬, ৩২এ ডিসেবর প্রান্ত এই চুক্তি বহাল থাকিবার কথা! আর একটি মতে স্থির হয় যে, ১৯০১ মনে আবার নোচুক্তি সম্পত্তে বৈধকের আহ্বান করা হইবে। ওয়াশিংটন নোচুক্তিও ১৯০১ মনের শেষ দিন প্রান্ত বলবৎ থাকিবে। তবে ইহার অদল-বদল করিতে হইলে ছই বংসর প্রক্ষা শক্তিবর্গকে জানাইতে হইবে। এই সর্ব অনুসারেই জাপান ওয়াশিংটন নোচুক্তির অবীকৃতি গত ১২এ ডিসেম্বর ঘোষণা করিয়াছে।



লওন নৌবৈঠক ১৯০০। ব্রিটেনের প্রধান মন্ত্রা র্যাশ্সে ম্যাক্ডোনান্ত এই বৈঠকে সভাপত্তিত্ব করেন। এখানে যে নৌ চুক্তি স্বাক্ষরিত হয় তাহা ১৯৩৫ সনের পরে আরু বহাল থাকিবে ন!।

9

১৯৩০, ২০এ এপ্রিল লণ্ডন নৌচুক্তি স্বাক্ষরিত হয়। তাহার পর ভটতে এই পাঁচ বৎসর বিভিন্ন মাধের কাথ্যকলাপে একটি বিষয় ক্ষাই হইয়া উঠিহাছে। ইহারা বিগত মহাবৃদ্ধের শুতিবিমুক্ত হইয়া ভাবা ভাষণতর নদ্ধের দিকে ঝুঁকিয়া পড়িতেছে। বিভিন্ন দেখের আর্থের মুখে রাষ্ট্রসংখের মিলন প্রচেষ্টা, নিরন্ত্রীকরণ-বৈঠক প্রভৃতি সকলই ব্যাহত। ইউরোপীয় দায়িথশীল রাষ্ট্রনায়কের। সভাসমিতিতে দলের মহিমা যোষণা করিয়া জনগণকে আদল মহাসমরের জন্ম প্রস্তুত ২উতে বলিতেছেন। ইটালীর সর্ববাধ্যক্ষ সিন্ব মুসোলিনী এক বক্তায় বলিয়াছেন-"War is for man what maternty is for woman." নারীর পক্ষে মাতত্ব, পুরুষের পক্ষে সংগ্রাম চুই-ই সমপ্যাারভুক্ত-সিন্র মুদোলিনীর ইহাই অভিমত। ইংলণ্ডের রক্ষণশীল নেতা মিঃ বল্ডুইন আসন্ত্র সংগ্রামের স্থান নির্দ্ধেশও করিয়া দিতেছেন। তিনি পার্লামেটে রণসন্তার বাড়াইবার প্রস্তাব নমর্থন করিতে গিয়া বলেন—"When you think of the defence of England, you no longer think of the chalk cliffs of Dover but of the Rhine." অর্থাৎ 'ভোমরা যুখন ইংলণ্ড রুফার কথা চিন্তা কর তথন আর তোমরা ্দ্রশিগরবিশিষ্ট ডোভার শহরের কথা ভাব না, রাইন নদার কথাই তোমাদের মনে আসে।' দায়িত্বজ্ঞানসম্পন্ন লোকের মুখনিংসত এই সকল বাণা লোকের মনে আত্ত্যের উদ্দেক করিতেছে। সন্দেহ নাই। ইংলণ্ড, ফাঙ্গ ও ইটালী অথুশন্ত-সংগ্রংহ ও রুণপোত-নিম্মাণে কোটি কোট টাকা ব্যয় করিতেছে। সম্প্রতি প্রকাশ, জার্মানাও এবিষয়ে এখন আর কিছমার পশ্চাংপদ নহে।

ইউরোপের প্রধান রাইগুলির কায়াকলাপ জগতের অস্তান্ত রাইকেও সজাগ করিয়া দিতেছে। ইংলণ্ডের সহিত মার্কিন ও জাপান নোচুল্ডিতে গাবদ্ধ! প্রেনই বলা হইয়াছে, অন্ত রাইগুলি নোবৈসকে যোগ দিলেও তাহাদের সরকার ইহার চুক্তি স্বীকার করে নাই। কাজেই ইহারা গগন ন্তন কিছু করিতে চাহে তথন মার্কিন বা জাপানের কিছু বলিবার থাকে না। কিন্তু ইংলেও যথন এই সম্পর্কে কিছু করিতে অগ্রসর হয়

ভগনই চুক্তিবদ্ধ অপর ছই রাষ্ট্রের উপর ইহার প্রতিক্রিয়া আরপ্ত হয়। ইংল্ডের নৌবহর-মন্ত্রা এক জনসভার বলেন, "I believe a strong Navy helps more than anything towards world peace." 'বিষের শাস্তি গুপনে শক্তিশালী নৌবহর সর্ব্যাপেকা অধিক শাহালা করে।' প্রকাশ, ইংল্ড-সরকার ১৯০৪ দলে ১৪,০০,০০০ পাউও ব্যায়ে নুভন রগপোত নির্মাণ করিতে মনস্থ করিয়াছিলেন, এবং ঐ বংস্বের শেষে ১০ পানা কুজার, ১৭ খানা ডেষ্ট্রবার, ৮ খানা সাবমেরিন, ১৪ খানা রাগুপ ও একথানা বিমানপোত্বাহী

জাহাজ নির্মাণ আরম্ভ হইবে জানা গিয়াছিল। ইনানিং নিমাণকানা অনেকটা অগ্রসর হইরা থাকিবে। : ৯০৫ সনে নোবৈঠকের অধিবেশনের প্রাকালে বিলাতের এইরূপ কার্য্যের উদ্দেশ্য ও কলাফল স্থান্ধে নিম্মের উক্তি যথেষ্ট আলোকপাত করিবে। 'মাঞ্চেষ্টার গার্ডিয়ান' পত্রের নিজন্ম সংবাদদাতা নিউ ইয়র্ক হইতে লেখেন,—

"While it may be argued that the new British programme would discourage the Japanese, making them feel they cannot afford equality on

such an expensive scale, it is feared here that the result may be just the contrary and may embolden the Japanese to demand a tremendous increase in their fleet."

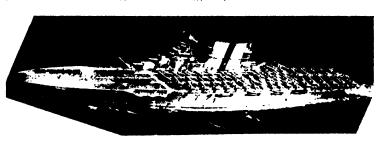
ইহার মর্মা এই বলা হইতেছে ইংলণ্ডের অমুকরণে জাপান সমুরূপ আয়োজন করিতে নিরস্ত হইবে। কারণ বিপুল অর্থবারে সমশক্তি লাভ করা ভাহার পক্ষে সম্ভব নয়। কিন্তু লোকে আশগা করিতেছে, ইহার ফল বিপরাতই হইবে—জাপানারা নৌবহর বাড়াইতে অধিকতর বশ্বপরিকর হইবে।

গত কয়েক মাসের ঘটনায় এই আশগা সত্য বলিয়া প্রতিপন্ন হইবাছে: কিন্তু ইংলতের নৌবহর-বৃদ্ধিই জাপানের বর্ধমান সক্ষরের একমাত্র কারণ নহে! মার্কিনও তাহার নৌশক্তি এরপে বাড়াইয়া চলিয়াছে যে, পূর্ক অনুপাত মানিয়া লওয়া জাপানের প্রফা এখন অসম্ভব: এশানে যে তালিকাটি দিলাম তাহা হইতে ১৯৩৪ সনের ফেক্রারি প্রান্ত প্রধান রাইগুলির নৌশক্তির সন্ধান মিলিবে। রব:পাতের প্রধান প্রধান ক্রেক্টি শ্রেণীর মার এপানে উল্লেখ করিব।

বিভিন্ন রাধ্রের রণভ্রীর হিসাব

| শেল বিটিশস | (ামাজ) | মাকিন | জাপান | ্য াস | रे डे। नि | কৃশিয়া | জাম্মানী |
|---------------------|--------|-------|--------------|--------------|------------------|------------|----------|
| রণপোত (বড়) | ۶٤ | 2 @ | | ü | 8 | ૭ | ৬ |
| ক্জার (নোট |) «s | 35 | દહ | 2.00 | 28 | b | ۲ |
| विभानः भा ७व(३) | | | | | | | |
| জা হাজ | b | 9 | | 2 | > | | _ |
| ডে ষ্ট্রয়ার | 1.58 | = 100 | 5 • • | r 10 | 18 | <u>: 1</u> | : 19 |
| সাৰমেব্রিন | ¢ > | レマ | 62 | 6.8 | 8 % | 33 | |
| ল ুপ | 9. | | _ | | 20 | 8 | |
| মাউন সুইপার | રં૧ | 4 5 | ٠. ج | २ : | 80 | ٠٠, | 2 % |

এই তালিকাটি সপূৰ্ণ নহে। তথাপি ইহা ২ইতেও বুরা যাত্র দাপান নৌশান্তিতে তৃত্য়ে গুল অধিকার ক্রিয়াছে। ইংলণ্ডে নব্নিস্থিত পোত্তলি অব্যা ইহার বাহিরে।

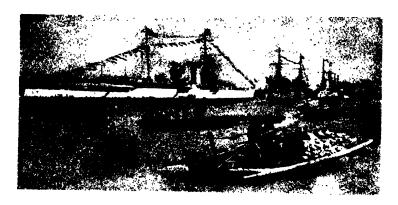


''দারাটোগা''—মাকিনের একগানি বিমানপোত্রাহী জাহাজ। বিমানপোত্তলি এই জাহাজ হইতে উড়িতে পারে ও ইহার উপর নামিতে পারে।

পূর্ব্বে বলিয়াছি, নিটেন, মার্কিন ও জাপানের নৌবহর সম্প্রুত অমুপাত ৫: ৫: ৩। জাপানের বর্তমান দাবি ৫: ৫: ৫— অর্থাৎ তিনটি রাষ্ট্রই নৌশক্তিতে সমান হওয়া চাই। জাপানের এই দাবির বিরুদ্ধে নানা যুক্তি উত্থাপিত হইয়াছে। মার্কিনের এটাড্নিরাল প্রাট্ নামক নৌবহরে বিশেষজ্ঞ ও ইহার অক্সতম নামক গত জুলাই সংখ্যা Livroign Affairs পত্রে জাপানের এই দাবির অ্যোক্তিকতা প্রতিপাদন করিয়া একটি প্রবন্ধ লিবিরাছেন। প্রধানতঃ ইহার উপর নির্ভর করিয়া

এদেশে জাপানী-বিরোধী মত প্রচারিত হইরাছে। প্রাটের মতবাদের জবাব দিয়াছেন নৌবহর-বিশেষজ্ঞ মাসানরী ইতো এক জাপানী পরিকার। তাঁহার কথাও আমাদের প্রণিধানযোগা।

জাপানের দাবির বিরুদ্ধে যে-সব যুক্তির অবতারণা কর। হইয়াছে তাহার মধ্যে একটির উপর বিশেব জোর দেওয়া হয়। ব্রিটেন চারিটি সমুদ্রের মালিক, মার্কিনকেও ছুইটি সাগ্রের উপর



সাংঘাইয়ের নিকটবর্ত্তা হোয়াংপু নদীতে স্থিত রণপোত্তসমূহ। এই চিত্রে ব্রিটেন, ফ্রান্স, জাপান ও মার্কিনের রণতর। দেখা যাইতেছে।

কর্জুজ করিতে হয়; অপর পক্ষে জাপান মাত্র একটি সম্পের উপর থবরদারি করিয়া পাকে। এই জঞ্চ ব্রিটেন ও মার্কিনেরই বর্জিত সম্পাত আবিশুক, জাপানের ইহার প্রয়োজন নাই। মাসানরী ইংহার মতে এই যুক্তি ভ্রমাস্থক। ইংরেজের। সচরাচর বলিয়া থাকেন, উহিপের সম্পুত্র রক্ষা করিতে হয়, ইছার বস্তুতঃ অর্থ—শক্র বিফজে সমুদ রক্ষা করা। শক্র শক্তি বিবেচনা করিয়াই নৌশক্তি বাড়াইতে কমাইতে হয়। চারিটি কি ভুইটি কি একটি সম্প্রের উপর কর্তৃত্ব করিতে হয় বলিয়া ইহা প্রয়োজন হয় না। এই দিক দিয়া বিটেন মার্কিন জাপান সকলের প্রয়োজনই অন্তর্গণ।

বর্ষমানে ব্রিটেন ও মার্কিনের জলপথে শক্রপক্ষ কেছ নাই। তথাপি তাহারা এরূপ বিরাট নোবহর পোষণ করিতেছে কেন । ভাবী শক্রর (hypothetical enomy) আক্রমণে বিকল্পেই এই আয়োজন। নৌশক্তিতে ইংারা প্রাধান্তলাভ করিয়াছে। ইছাদের বিরুদ্ধে লঁড়তে এখন আর কোন রাষ্ট্র ভংসা পায় না। অব্ধ্র সাবমেরিন বা বিমানপোতের সাহায্যে বড় বড় রশগুরী খায়েল করা সম্ভব। কিন্তু ইগাও শেব পর্যান্ত লাভজনক নয়। সেজক্ত এগুলির কথা এ-প্রসক্রে উল্লেখযোগ্য নহে।

বর্তমান অনুপাত সমুদ্রপথে প্রাথান্ত লাভ ইউডেট নং, আয়রকার রুপ্ত যে-লক্তিলাভ পরোজন তাহা ইইডেও জাপানকে বন্ধিত করিয়াছে। অথব সমুদ্রপথে ব্রিটেন বা মাঝিনের যেরপ বিপদের আশবা আছে বর্তমান অপ্রান্তরও তাহাট রহিয়ছে। ইহাদের মত জাপানেরও এরপ শক্তি প্রেরাজন যাহাতে শত্রপক্ষ কোনরূপে তাহাকে আক্রমণ করিতে সাহস না-পায়। জগতের অন্তর্গত রাষ্ট্রের অন্তর্গত বোশিস্তি এত ক্রন্ত বাড়িয়া চলিয়াছে যে, বর্ত্তমান অনুপাতে সে কিছুতেই সম্ভব্ত বাক্রিকত পারে না। জাপানের জনসাধারণের আর্থপ্তার

কিরাইয়া আনিতে হইলে উচ্চতর অমুপাত অবগ্রই নির্দারিত করিতে হইবে।

বর্জনান অমুপাতের অস্তায্যতা আর একটি দিক হইতেও বিচার্য। এখন বড় রণপোতের যে অমুপাত ও সংগা নির্দ্ধারিত আছে, তাহাতে ব্রিটেন ও মার্কিন নিরাপন। ইহারা প্রত্যেকে ১০ খানা। পর্যান্ত বড় রণপোত রাধিতে পারে, ভাপান রাধিতে পারে ১ খানা।

রণপোত্সংখ্যা অধিক হইলে জাপানের পক্ষে বিপদের সন্তাবনা কম হইত। ধক্ষন, বিটেন ও মার্কিনের রণপোত্র যদি ১০০ খানা করিয়। থাকিত, তাহা হইলে জাপানের থাকিত ৬০ খানা রণপোত্রই যুদ্ধজয়ের পক্ষে যথেই। কিন্তু ১০ খানার বিকদ্ধে ৯ খানার পারিয়া উঠা অসম্ভব। এ অধুপাতে জাপান বস্তুতঃই ত্বর্বল হইয়া পভিয়াছে।

কাহারও কাহারও মতে জাপানের এই দাবির মূলে ভাহার সাম্রাক্স-কুধা। ইহা সভ্য হইলে জগতের শাস্তি বিন্দ্র হইবে। জাপান কর্তৃক মাঞ্বিয়া ও জেংহাল প্রদেশ কাগ্যতঃ অধিকারের শ্রতি এই উক্তির ইক্সিড আছে। ইতো বলেন, সম অবস্থা পড়িলে সকল

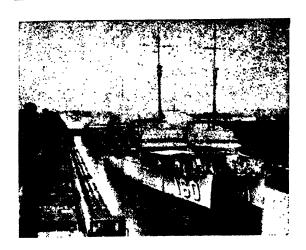
রাইট অগ্রেপ কাষা করিয়া থাকে। ইটালী কর্ত্তক ট্রীপর্ন', বেলজিয়ম কর্ত্তক কঙ্গো, ফ্রান্স কর্ত্তক কাম্বোভিয়া অধিকার একই প্যায়ভূক। আরও শত শত দঙ্গান্ত দ্বারা এই তালিক! বাড়ান যায়।

অবশু এখানে একথা বলা দরকার সে, বর্ণনান সাম্রাজ্যবাদই পররাজ্য-হরণ কি স্বরাজ্য-বর্দ্ধন-স্পৃষ্টার জস্তু দরৌ। গত তিন শত বংসর ধরিয়া বর্ত্তমান সাম্রাজ্যবাদ পুষ্ট হইয়া উঠিয়াছে। সকল শক্তিশালী রাষ্ট্রই অপুরূপ অপরাধে অপরাধী। বর্ত্তমান চিন্তাধারা সাম্রাজ্যবাদ আদৌ সমর্থন করে না। কিন্তু সাম্রাজ্যবাদক বায়েল করিতে যে শক্তি প্রোক্তন তাহা মনুবাসমাজে এখনও জাগ্রত হয় নাই। সাম্রাজ্যবাদের উচ্ছেদ করিতে হইলে স্বর্বাগ্রে শক্তিসঞ্জয়ের প্রয়োজন। কোন রাষ্ট্রবিশেষকে দোষা সাবান্ত করিলেই ইহার উচ্ছেদ সাধিত হইবে না;

ইলো মাহাদয়ের মতে আর এক কারণে সমান অমুপাত একান্ত আব গক। বিখের রাইগুলির রণসভার ক্রমশা বাড়িয়াই চলিরাছে। সকলের শক্তি যদি সমান হয় তাহা হইলে সবল তুর্কলের তারতম্য আর থাকিবে না। পাঁচ লক্ষ টনই বলুন কি ছুই লক্ষ টনই বলুন—রণপাতের পরিমাণ সন্মিলিতভাবে যদুচ্ছা হ্লাস করা সম্ভব হইবে। ইতো বলেন, জগতে শান্তি প্রকিট্র ইহাই প্রকৃষ্ট পদ্ধা। নিরন্ত্রীকরণ বৈঠক তথন সাক্ষলমন্তিত হইবে—কেলগ-রিয়াঁ চুক্তি ও রাইসংঘের নির্দেশ কিছুই মানিরা লইতে বাধা খাকিবে না। কারণ সকলের মন ২ইতে বৈব্যার ভাব বিপুরিত হইবে।

ৰিস্ক এই বৈষম্য নিয়াকরণের প্রধান অন্তরায় ব্রি'টন ও মার্কিন। মি: ফ্রান্ক সিমন্ত সৃ Can Europe keep the Peace (ইউরোপ কি শান্তি রক্ষা করিতে পারে?) নামক পুরকে সন্তাই লিখিয়াছেন,—

"Anglo-Saxon concertions are, however, a curious mixture of hypocrisy and blindness. The



ফাকিনে নৌবহরের মহড়া। চারখানি ডেইয়ার একই
সময়ে যাত্রা করিতেছে। সাতচলিশ ঘটার মধ্যে
স্কান্মত এক শত দশখনো রণ পাত পানামা—
ক্যানেল দিয়া চলিয়া গিয়াছিল।

hypocrisy is disclosed in the fact that for themselves both Great Britain and the United States claim complete and overwhelming naval supremacy in those waters which are vital to them.....And, although both nations discuss disarmament, neither has any intention of modifying, in the smallest degree, the relative superiority it maintains."

সিমশুস্ সাহেবের মতে ভগুমি ও আছতার আশ্চর্যা সংমিশ্রপ এয়াংলো-স্থাকশন ধারণাগুলি গঠিত। ভগুমি একটা বিষয়ে বেশ ধরা পড়ে। যে-সব সমৃত্রে নিজেদের স্বার্থ রহিয়াছে সে-সব স্থলে ব্রিটেন ও মাকিন নৌবহরের প্রাধান্ত সম্পূর্ণরূপে অবাহিত রাধিবার দাবি করে এবং যদিও উভন্ন রাষ্ট্রই নিরস্থাকরণ বিষয়ক আলোচনান্ন যোগ দিয়া থাকে তথাপি তাহারা তাহাদের বর্জনান প্রাধান্ত বিন্দুমান্ত হ্রাস্করিতে ইচ্ছুক নহে।

এই সব কারণে মনে হয়, ব্রিটেন ও মার্কি.নর স্থায় প্রবল প্রতিপক্ষের সন্মধে জাপানের সমান অনুপাতমূলক দাবি এতটুকুও অসঙ্গত নহে।

গ্রীযোগেশচন্দ্র বাগল

জীবনায়ন

শ্রীমণীন্দ্রলাল বস্থ

ধড়ির দলী সশব্দে বাজিয়া উঠিল। অরুণ বিছানাতে চোথ বুজিয়া নিজাজাগরণের স্বপ্লাবেশময় আবছায়ায় অলস প্রথম শুইয়াছিল; কি এক প্রথমপ্র-শেষে ভাষার গ্রম ভাঙিয়া গিয়াছিল। স্বর্গাট কি ভাষার ঠিক মনে পড়িতেছিল না, স্মৃতির পটে অতি হাকা রঙীন ছোপ, বালুকাতটে সম্ভূতরক্ষের কেনিল লিপির মত ক্ষণিকের মধ্যে মিলাইয়া বায়—এক গানের মধ্র প্রর, অজানা প্রপালের মৃত্ গাজাছ্লাস, এক কিশোরীর রিশ্ব মৃথ কখনও হাস্তে, কখনও কৌতুকে ভরা। স্থেক্সম্মৃতিকে সে জীবন্ত করিয়া ভলিতে চাহিতেছিল।

ঘড়ির এলার্ম-ধ্বনিতে অরুণ চমকিয়া উঠিল, স্বপ্রস্থতিজাল হিল্ল হইয়া গেল। ঘড়ির দিকে কটাক্ষণাত করিয়া তরল অন্ধকারময় থরের দিকে চাহিল। ভোরের বাতাদে বড় থাটের পায়ের দিকে ডানপাশে পূর্বের জানালা খুলিয়া গিয়াছে, পঙ্গের কাজ-করা পুরাতন বিবর্ণ দেওয়ালে উবার পাড়র আলো বড় করুণ দেখাইজেছে, সুরুহৎ গৃহ আলোছায়াময়।

এলার্ম বাজিতে লাগিল। স্থুলের অনেক পড়া মুখস্থ করিতে হইবে। আদ্ধ আবার ইতিহাসের মাসিক পরীক্ষা, দিল্লীর বাদশাহগণের নাম, ভারতের গবর্ণর-জেনেরাল-গণের নাম ও শাসনকাল, নানা সন ভারিথ মুখস্থ করিতে হইবে; ভার পর সংস্কৃত-ক্রিয়ার ধাতুরূপ, য়ালজ্যান্তার ফরমূলা, কবি শেলির একটি কবিতা। যাক, এখনও পাচটা বাজে নাই, আরও পনের মিনিট সে বিছানাতে ভইয়া থাকিতে পারে। কাল রাভ সাড়ে এগারটা পর্যান্ত

জাগিয়া পড়িয়াছে, ধূলের বই নয়, ডেভিড কপার্ফিল্ড নামে এক গল্পের বই, তাহার কাকার লাইব্রেরী হইতে আনিয়াভিল; কাকা কিন্তু রাত বারোটার মধ্যেও ফেরেন নাই। বড় কন্ধণ ডেভিডের জীবন, কিন্তু সে বড় বোকা, য়াগনেস যে তাহাকে ভালবাসে, তাহা সে বৃথিতে গারিতেছে না, ডোরাকে বিবাহ করিয়া সে কি প্র্থী হইবে? বে.কারা জীবনে ত অস্থীই হইবে। আছো, য়াগনেস কাহাকে বিবাহ করিবে? সে বড় ভাল মেয়ে। ঢার্লস ডিকেন্স লেখেন ভাল।

াজির শক্ষ ধীরে অন্ধকারে মিলাইয়া গোল। বাজির পুন দিকের বাগান পাখীর গানে ভরিয়া উঠিল। অন্ধনের আর পুম আসিল না। চোগ মেলিয়া সে শুইয়া রহিল। নানা কান্ধকার্যাময় বৃহৎ খাট, ঘরের এক-তৃতীয়াংশ জুড়িয়া তাহার মায়ের বিবাহের খাট, মেহগনী পালিশ প্রায় কালো হইয়া গিয়াতে।

গাটের মাণায় দক্ষিণ দেওয়ালে অরুণের মাতার বৃহৎ
অরেল-পেণ্টিং; মায়ের মৃত্যুর পর তাহার পিতা এক
কণাসী চিত্রকর দিয়া ফটো হইতে এই ছবি আঁকাইয়াচিলেন। এ গরে পিতার বৃহৎ রোমাইড এনলার্জুমেণ্ট রাপিবার আর স্থান নাই, আর তাহার ছোটবোন প্রতিমা
তাহার গরে একটি ফটো রাখিতে চায়; স্বর্গত জনকজননীর ছবি আস্বাবপত্র জিনিয় তৃই ভাইবোনে ভাগ
করিয়া শইয়াছে।

ভোরবেলায় গৃম ভাঙিয়৷ গেলে এক্কলারময় লিগ সক্ষারা অকণের ছেলেবেলার কথা ভাবিতে ইচ্ছা করে, —বগছবির পর স্বপ্রছবি। সোনালী শশুভরা অবারিত মাঠের মধ্য দিয়া নদীর রক্ষতধার। আঁকিয়া-বাকিয়া স্নীল প্রাস্তরে গিলা মিশিয়াছে, তাহার তীরে তাহাদের বাংলো-বাড়ি ছবির মত; সেথানে বাবা ও মায়ের সঙ্গে সে ও টুলি কি স্থে আনলে দিন কাটাইয়াছে,—নদীতে সাঁতারকাটা, বাগানে ফলপাড়া, বাবার সঙ্গে বজরাতে 'টুরে' যাওয়া, আমগাছে বাধা দোলনাতে দোলা, সেই ব্ডোবটগাছের তলায় চড়ুইভাতি, সন্ধায় মায়ের গল্প বলা—তথন তাহারা ডেপ্টি সাছেবের ছেলেম্নে, কত ষত্ন, কত আদর।

মা কি তুল্বী দেখিতে ছিলেন, তেমনি তুল্বর রাঁথিতে পারিতেন। ফরাসী চিত্রকর অরুণের করমর্দ্ধন করিলা জিজ্ঞাসা করিলাছিল,—কি হে, ঠিক হয়েছে, তোমার মা'র ছবি? সে উত্তর দিয়াছিল আমার মা এর চেয়ে অনেক তুল্বরী ছিলেন, সে ভূমি আঁকতে পারবেনা। সে স্লিয় সৌলর্ম্য অয়েল-পেণ্টিঙে কেমন করিয়া আসিবে! এ-দৃষ্টিতে সে সেহ-মমতা কই?

দরকায় করাবাত হইল। অরু, উঠেছিস—ওঠ্ অরু— উঠেছিস অরু। ঠাকুমার গলা। ঠাকুমাকে সে বলিয়াছিল, ভোরে জাগাইয়া দিতে। দরজা ধাকা দিয়া খুলিয়া জল-ছড়া দিয়া ঠাকুমা চলিয়া গোলেন। অরুণকে এবার উঠিতেই হইল।

সিঁড়ির উত্তরে প্রতিমার ও দক্ষিণে অক্লণের থর, মধ্যে ধোরান-সিঁড়ে পূজার দালানের পাশ দিয়া ছই মধল বিভাগ করিয়া ছাদ পর্যন্তে উঠিয়া সিয়াছে; ছই মহলওয়ালা রহৎ বাড়ি প্রাান করিয়া তৈরি নয়, গত নবরই বৎসর ধরিয়া বোগ-বংশের নানা কর্ত্তার গুলামত গড়িয়া উঠিয়াছে—ছোট-বড় ঘর, নানা বারান্দা, জাকোবাকা অক্লকার করিছর, অক্লক্ট্রী, বাড়িটি বিচিত্র গোলকণালা।

হাত-মুখ ধুইয়া অরুণ সিঁড়ির গরে আসিয়া গাঁড়াইল।
প্রতিমার ঘরের দরজা বন্ধ, কোন সাড়াশন্ধ নাই।
প্রতিমা ভোরে উঠিয়া গান গায়, গলা সাধে। আজু কোন
অত্থ করিল কি? কাল রাতে সে ভাল করিয়া খায় নাই।
মাঝে মাঝে প্রতিমার জন্ত তাহার বড় ভাবনা হয়, বড়
রোগা সে।

তেতলার ছাদে সিঁড়ির পাশে এক ছোট ঘর ভাঙা চেয়ার ঝাড়লগন ছেঁড়া সতরঞ্চি কার্পেট ইত্যাদি সভা সাজাইবার নানা বহুব্যবহৃত দ্রবো পূর্ণ ছিল, সেই ঘর সাফ করিয়া অব্ধন তাহার পড়িবার ধর করিয়াছে। এ-বংসর তাহার মাাট্রিক পরীক্ষা, এখন তাহার সকল প্রকার স্থবিধা করিয়া দিবার জন্ত সকলে উদ্যোগী।

অরণ পড়ার খবে গেল না, এক তলায় নামিল। বড় লাইবেরী-খবের পাখ দিয়া পূর্ক দিকের বাগানে বাহির হইয়া গেল। ক্লাসের কোন পড়া ভাল করিয়া হয় নাই, তবু পড়িতে বসিতে ভাহার মন লাগিতেছিল না। আপন মনের চঞ্চলতা বিষয়তা তাহার নিজের কাছে অঙ্কৃত লাগে। কোন দিন সে নিবিট মনে সমস্ত সকাল পড়ে, কোন সকাল পড়ায় মন বসে না, বাগানে অকারণে ঘ্রিয়া বেড়াইতে, পুকুরের ধারে চুপ করিয়া বসিয়া থাকিতে বা প্রতিমার সহিত খুনস্টি করিতে বড় ভাল লাগে।

কলিকাতার কোন বাড়িতে এত বড় বাগান ও পুকুর নাই বলিলেই হয়। ও বাগানের প্রতি বৃক্ষ রোপণের ইতিহাস অবল তাহার ঠাকুমার নিকট শুনিয়াছে। তাহার প্রাপতামহী যে পুকরিণী প্রতিষ্ঠা করিয়াছিলেন, এখন তাহার অর্থেক বৃদ্ধান হইয়া গিয়াছে। তাহার কোন পুর্বপ্রশ্নয মালদং হইতে কোন আমগাছের কলম আনিয়া পুঁতিয়াছিলেন, হটহাউস তৈরি করিয়া নানা জাতীয় ফার্ণ, ইংরেজী ফ্লের গাছ করিয়াছিলেন, সে-সব গল্প তাহার জানা। এখন সে-হটহাউস ভাঙিয়া গিয়াছে, পরীওয়ালা ফোয়ারা-গুলির জলধারা নিঃশেষিত, ইতালীয় মার্বেলের অর্কভয় ন্যা নারীমৃত্তিশুলি জললে লজ্জায় লুকাইয়া।

ফান্তনের প্রভাত মিশ্ব স্থন্দর; তালপুকুরের স্থির জলে নবীন রৌজালোক কচি শিশুর হাসির মত; নারিকেল গাছগুলির শুামমস্থা পাতা ঝিকমিক করিতেছে; এক মর্মারের পরী-শিশুর ভগ হস্তে মাকড্সার জাল বোনা, তাহার উপর শিশিরবিন্দু মুক্তার মত; নব বসন্তের তৃণ— পূল্প-শোভিত পৃথিবীর অপুর্ব্ব গদ্ধোচ্ছাস বর্ণোৎসব অরুণকে মেন অভিভূত করিল। তাহার অন্তর কি অজানা বিধান্দে এ-প্রভাতে আরও উদাস হইয়া গেল।

অরুণ যখন তেত্তলার পড়িবার ঘরে আসিল, প্রভাত আতপ্ত হইরা উঠিরাছে, চারি দিকে প্রথর স্থালোক। টেবিলের উপর চাকর যতু গরম হুধের বাটি, ক্লটি ও মোহন-ভোগ রাখিরা গিরাছে। হুধ ও একধানি বাসি ক্লটি থাইরা অরুণ আওরদক্ষেবের পর দিল্লীর পাতশাহগণের নাম মুখন্থ করিতে বসিল।

স্থলের বই-খাতা লইরা প্রতিমা তাহার খরে আসিল।

—দাদা, অ-দাদা, আমার অকগুলো কবে দাও, তা না হ'লে সুধাদি আমার আফু ধেরে ফেলকেন।

- সুধাদির তুই প্রিন্না ছাত্রী, সুধাদি তোমার ধেরে ফেলছেন!
 - —স্ত্যি।
 - —হ্যারে টুলি আজ তোর গলা শুনলুম না?
 - —वा, शना कि त्रकम धत्त्र ए एथह ना!
- —সর্দ্দি করেছ ত, রাতে কেশেছিলে—শোন্, আমার ঘরে পাথরের টেবিলে সেই পুরনো ফ্রেঞ্চ ঘড়িটার পাশে এক লাল রঙের শিশি আছে, চলু, আমিই যাই।
- —বাবা, তোমার ডাব্রুরি আর করতে হবে না, আমি ওযুধ থাচ্ছি।

অরুণ স্নেহসিক্ত নয়নে প্রতিমার মুখের দিকে চাছিল। কেন তাহাকে সে এত ভালবাসে, তাহার জন্ত মনে বড় ভয় হয়, বড় রোগা সে।

- —আছো, দাদা, বল ত, থার্ড ক্লাসে কথনও এত শব্দ অঙ্ক দেয়, প্রধাদি কেবল হেড-মিষ্ট্রেসের কাছে নাম কিনতে চান।
- —বেশী জ্যাঠামি করিস না, অঙ্ক পার না, স্থাদির দোষ, ওধুৰ খেয়েছিস আজ সকালে ?
 - —(ধরেছি গো, অঙ্কগুলো কষে দাও।

অঙ্ক ক্ষিতে ক্ষিতে অরুণ বলিতে লাগিল—টুলি, অঞ্জন্তের বোনেরা ভোর স্থলে পড়ে ?

—হ্যা, পড়েই ত !

উচ্চ স্বরে প্রতিমা হাসিরা উঠিল। হাসিলে তাহার গালে স্থল্বর টোল পড়ে।

- —উমা কি তোর সঙ্গে পড়ে?
- —বা! উমাদি আমার সঙ্গে পড়ে! উমাদি ত সেকেণ্ড ক্লাসে পড়ে, আমার সঙ্গে খুব ভাব, জান—হুন্দর গান গার।
 - ভোর চেম্নে ভাল ?
 - —অত জানি না বাপু।
 - —আর **শীলা** ?
 - --- শীলা, বোধ হয় ফিফ্থ ক্লাস।
 - —হ", দেখ দেখি, রেজান্ট মিলল কিনা।
- —মিলেছে। আর এইটা। জান **দাদা,** একটা ভাল গান শিংগছি, ভোমার রবিবাবুর নতুন টাটকা গান,

স্থরটা কিন্তু আমার তেমন ভাল লাগলনা, তবে কথা চমৎকার, তোমার খুব ভাল লাগবে।

- —রোস, অঙ্কটা শেষ করি।
- —আৰু আমি গাইতে পারব না কিন্তু, যা গলাব্যথা।
- —ব্যথা! তা ত ব্যাস নি এতক্ষণ, আজ আর স্থ্রে বার না, আমি ঠাকুমাকে ব'লে দিছিছ।
- —না, না, আৰু স্থূলে বেতে হবে, আৰু বড় মন্ধা আছে, শোন, দাদা, আন্তে গাই।

প্রতিমা ধীরে গাহিতে লাগিল-

প্রাণ ভরিনে, তৃষা হরিরে মোরে আরও আরও দাও প্রাণ

আর্দ্ধেক গাহিয়া সে থামিয়া গেল। আর তাহার কথা মনে পড়িতেছে না।

- —অঙুত তোমার শ্বরণশক্তি!
- —আছা দাদা আজ উমাদির কাছ থেকে দিবে নিয়ে আসব। থাক, ওই তুটো অঙ্কতেই হবে। মেনি থাঙ্কিন, তোমার পড়ার অনেক ক্ষতি হ'ল।

প্রতিমা চলিরা গেল। অরুণের আর পড়া বিশেষ কিছু হইল না। গানের হুর তাহাকে উন্মনা করিয়া দিল। উমা নিশ্চর এ গান থুব চমৎকার গায়।

ş

অরুণ যখন স্থলের গলির মোড়ে, স্থলের ঘণ্টা বাজিভেছে। ছুটিয়া সে স্থলের দিকে চলিল।

প্রথম ঘণ্টা, ইংরেজী, 'নাকুর' ক্লাস। 'নাকু' একটু দেরি করিয়াই আসেন, আর দেরি হইলেও অকণকে তিনি কিছুই বলিবেন না।

বস্ততঃ, এই নম্ম সন্ধানী ফুদর্শন ছাত্রটিকে সকল মান্টারই ভালবাসেন; বোধ হয় তাহার বংশের আভিজাতিক গৌরবের জন্ত একটু সন্ধানও করেন। সহপাঠাদিগের মধ্যেও অরুণ প্রিয়। বন্ধু তাহার খুব বেণী নাই, সে বড় লাজুক; কিন্তু বে-করজন বন্ধু আছে তাহারা তাকে সত্যি ভালবাসে, আপন স্থ-হংথের কথা বলে। কাহারও সহিত থগড়া মারামারি করিতে তাহার কেমন লক্ষা হর, জন্ত ছাত্ররাও তাহার সহিত অভজাচরণ করিতে সন্ধোচ বোধ করে। স্কুলের গেটে পৌছিতেই জয়ন্ত হাপাইতে হাপাইতে তাহার সঙ্গ শইশ।

অৰুণ বলিল—ঘণ্টা বেজে গেছে!

জন্নন্ত গানের স্থরে বলিন্না উঠিল—আমার ভাগ্যে ত বকুনি আছে।

তার পর অরুণের হাত ধরিয়া বলিল—চল অরু, শেষ বেঞ্চিতে আমার পাশে বসবে, তোমার সঙ্গে ভয়কর দরকার।

- . —কি নতুন কবিতা লেখা হ'ল ?
 - --না, কবিতা নয়, সে ভীষণ ব্যাপার।

ভয়স্ত চৌধুরীকে ক্লাসে স্বাই 'কবি' বলিয়া ডাকে।
সে লম্বা চুল রাখিয়া কোঁকড়ায়, চিলে পাঞ্জাবী পরিয়া
গায়ের চাদর লুটাইয়া চলে, পায়ে জরির নাগরা। লম্বা,
খ্যামবর্ণ, চোথে উদাস স্থপ্রভরা দৃষ্টি রচনা করিবার প্রশ্নাস,
মন বড় কোমল, বেদনাপ্রবণ।

অরুণ ক্লাসে চুকিয়া দেখিল, মান্টার মহালয় আসেন
নাই। ভূদো বুলাবনকে লইরা থুব হৈ রৈ চলিতেছে।
বুলাবন গুপু ছেলোট বেমন মোটা তেমনই কালো, লম্বা
হইলেও বেঁটে দেখার, পারে কালো বুট, থাকি হাফপ্যান্ট ও
সব্স্থ রঙের বুক-কাটা কোট পরিয়া সে স্থলে আসে,
'বাস্কেট বল' খেলার বলের মত দেখার, ছোটবেলা হইতে
কলিকাভায় থাকিলেও রাগাইয়া দিলে ভাহার পৈতৃক
গ্রামের ভাষা মুখ দিয়া বাহির হইয়া পড়ে। স্থলের
ছেলেদের মধ্যে হাফপ্যান্ট পরার রেওয়াজ তখনও হয়
নাই। নাম, চেহারা, বেল ও ভাষা, বাঙ্গ করিবার এতগুলি
বিষয়। ছেলেরা ছাড়িবে কেন? অরুণ দেখিল, ক্লাসের
মধ্যে বুলাবন পৈতৃক গ্রাম্য ভাষায় তর্জ্জন-গর্জ্জন করিতেছে
আর কেহ স্থর করিয়া বলিতেছে, আমি বুলাবনে বনে বনে
ধেম চরাব। কেহ বলিতেছে, ওহে হাফপ্যান্ট-পরা ধেমু,
মোদের ক্লানে চরতে এল কেমু?

ত্থাস সেন ক্লাসের আটিউ। পিছনের বেঞ্চে বসিয়া সে মাটার ও ছাজদের নানা ব্যক্তিত্র আঁকে। তাহারই আঁকা বৃক্ষাবনের একটি সরস চিত্র হাতে হাতে ঘুরিতেছে।

চালিরাৎ চট্টো **জু**তা মসমস করিতে করিতে প্রবেশ করিল। **ছেলেটির নাম** অরবিন্দ চট্টোপাধ্যার, লখা, ফর্সা, নিধ্ত ভাজ-করা হট পরিয়া হাতে বইবাতা-ভরা চামড়ার ব্যাগ লইয়া আদে, কোটের বুক-পকেটে রঙীন কুমালে এসেলের গন্ধ, পিলনে চলমার কালো চওড়া ফিতা কানের পিছনে দোলে। তাহার বাবা ইংরেজী সওদাগর আপিসের বড়বাবু না সেজবাবু, ইহা লইয়া ছেলেদের মধ্যে তর্ক হয়। চালিয়াৎ চট্টো ইংরেজীতে কথা বলে। সে ক্লাসে প্রবেশ করিয়া গন্ডীর ভাবে বিশিল, হোয়াট ইজ-দি মাটার ?

ছেলের দল হাসিয়া উঠিল। এক জন বলিল, চালিয়াৎ চটো বড় কঠিন প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করেছে, বস্তু কি? কোপায় হে বাণেশ্বর তর্কচঞ্চ—

অরবিন্দ আসাতে বৃন্দাবন একটু রেহাই পাইল। সে গজগজ করিয়া ধিজেনের পাশে বসিল। ধিজেন্দ্রনাথ মিত্র ক্লাসের 'ভাল ছেলে', প্রায় সব বিষয়ে প্রথম হয়।

অক্সণ চারিদিকে চাহিয়া দেখিল, বন্ধু অজয় আদিয়াছে কিনা। অজয় তাহার সীটে বদিয়া কি লিখিতেছে, নিশ্চয় কোন স্থলকে ম্যাচ চ্যালেঞ্জ করিয়া চিঠি। অক্সণ নিশ্চিম্ত হইল। যতীনকে ডাকিয়া তাহারা পাশাপাশি বদিল।

যতীনকে তাহার বড় ভাল লাগে। খুব গরিবের ছেলে হইবে, ফ্রী পড়ে। পায়ে কাদাভরা চট, ময়লা কাপড় ও ছেঁড়া শার্ট পরা, শীর্ণ দেহ, কিন্ত মুখখানি বৃদ্ধিতে ভরা, টানা কালো চোখ ছটিতে তীক্ষ্মী। সেও অফণের মড অয়ভামী, শাস্ত; কাহারও সহিত মিশিতে চায় না। সে যে দরিজ এই হীনভাবোধ তাহার চিত্তকে সর্বাদা বেদনা-প্রবণ করিয়াছে।

যতীনের সহিত অরুণের বেশভ্ষার অত্যন্ত পার্থক্য।
অরুণ মরলা কাপড় পরিতে পারে না, মরলা জামা গারে
দিলে তাহার গা বিন-বিন করে, সহজ সৌন্দর্য্য ও ওচিতার
বাধ তাহার জন্মগত। কিন্তু চেহারার ও মানস
প্রকৃতিতে যতীনের সহিত তাহার বোগ রহিয়াছে। তাহার
দেহ যতীনের মতই কুল, ভঙ্গুরতার ভাষমর; পাভূর
মুখনী কখনও বেদনার করুণ, কখনও বৃদ্ধিতে উজ্জ্বব।
সতীন অরুণের সহিতও বেশী কথা কর না, কিন্তু করেকটি
কথাতেই তাহাদের চিন্তের কোন গভীর গোপন বোগ
স্থাপিত হইয়া যার।

ইংরেজী মান্তার-মহাশরের চোগাচাপকান-পরা দীর্ঘ মুর্দ্ধি বারান্দার দেখা বাইতেই ক্লাস নিশুক্ক হইরা সেল। লখা রোগা কালো চেহারা, লখা মুধের উপর খাঁড়ার মত নাক, অজীর্ণতাশীর্ণ জলজলে চোথ; অতি গন্তীর প্রকৃতির লোক; কেহ কথন তাঁহাকে ক্লাসে হাসিতে দেখে নাই। বেশের ক্রফতায়, দেহের দৈর্ঘ্যে, শীর্ণচন্দের স্থতীত্র দীপ্তিতে সর্কৃত্যন ভারাহ গুকুতা স্পষ্টি করিয়া তিনি কিশোর-মনে ভয়ের শাসন স্থাপন করিতে ক্লভ্রনার্য্য হইয়াছেন। ছেলেরা পিছনে তাঁহাকে নাকু বলে, কিন্তু তাঁহাকে বাঘের মত ভয় করে। আত্তিকত কিশোর-চিন্তের কল্পনার তিনি ক্রদ্রদেবতার রূপ।

চেয়ারে বসিয়া নাকু ক্লাসের দিকে চাহিলেন। সবাই ভীত মধমুগ্ধ হইয়া পুছালিকার মত তাঁহার দিকে চাহিল। তাঁহার দীর্ঘ শীর্ণ তর্জ্জনী বাহার প্রতি নিক্ষেপ করিবেন, তাহাকে সোজা দাঁড়াইয়া আজিকার ইংরজী-পাঠ রীডিং পড়িতে হইবে। তিনি কোন কথা বলিবেন না, ভশু তর্জ্জনীর ইন্সিত।

নাকুর তর্জনী অরবিন্দের প্রতি পড়িল। চালিয়াৎ চট্টোকে পড়িতে হইবে ক্লাসের সবাই খুনী।

জিল-সার্জ্জেন্ট যেরূপ গন্তীর তীক্ষম্বরে হুকুম করিরা শিক্ষানবীশ দৈনিকদের কুচকাওয়াজ শেখায়, সেইরূপ অর্ডারের মত নাকুর এক-একটি ইংরেজী কথা বাহির হয়, ছেলেদের বুক হুরহুর করে—সোজা, সোজা দাড়াও, সোজা বই।

অর্থিক কম্পিত হত্তে চশমার ফিতা ঠিক করিয়া লয়। টানা হরে পড়িতে লাগিল; ক্লাসের সকলে চুপ। যথন এক প্যারাগ্রাফ পড়া শেষ হইল, অর্থিক নূতন প্যারাগ্রাফ পড়িতে ঘাইবে, অর্ডার আসিল,—থাম। একি গান ? গানের হার। প্রোক্ত, প্রোক্ত!

অরুণ অন্তাত ভাবে হাসিয়া উঠিল। রুফ শীর্ণ তর্জনী অরুণের বেঞ্চের দিকে পড়িল। অরুণের বুক কাঁপিয়া উঠিল, রীডিং দে বেশ পড়িতে পারিবে, কিন্তু শুক্ত কথার অর্ধগুলি দেখিয়া আসে নাই। সহসা তাহার পাশ হইতে বতীন দাঁড়াইয়া উঠিল। বাঁচা গেল। যতীন বেশ ইংরেলী পড়ে।

অরবিন্দ বসিতে যাইতেছিল, অর্ডার হইল, দাঁড়িরে শোন। তর্জনী বেঞির পর বেঞ্চি ঘুরিতে লাগিল। ক্লাস যথন শেষ হইল, সকলে ঘামিয়া উঠিয়াছে।

বিতীর ঘণ্টা সংস্কৃত, হেড্পণ্ডিতের ক্লাস। সকলে পঞ্জন্ত্র শুলিক।

যজ্ঞের তর্কাল্ডার মহাশর প্রসিদ্ধ নৈরারিক পণ্ডিত, ভাটপাড়ার এক প্রাচীন পণ্ডিত-বংশের। এ-যুগে টোল করিয়া চলে না, স্থল-মান্টারি লই তে হইরাছে। তাঁহার প্রতি সমাজের অবিচারের জন্ত তাঁহার চিত্ত সর্বাহাই কুপিত; চারিদিকে আধুনিক অনাচার-ক্লেছাচারের জন্ত তিনি অত্যন্ত বিরক্ত। তাঁহার প্রগাঢ় সংস্কৃত বিদ্যাতেও আর্থিক উন্নতি থুব বেশী হইল না, স্থতরাং ছাত্ররা মন দিরা সংস্কৃত না-পড়িলে তিনি কুল্ল হন না। তবে পাস করিবার মত পড়িলেই হইল।

পারে ভালতলার চটি, মোটা থান কাপড় পরা, গারে গলাবন জ্ঞামার উপর চাদর, মাখার শিখা, চোখে ষ্টিল্-ফ্রেমের চশমা। পণ্ডিত-মহাশয়কে ছাত্ররা পছন্দ করে।

পণ্ডিত-মহা- য় ক্লাসে প্রবেশ করিলে, ছাত্ররা দেখে, পণ্ডিত-মহাশরের শিখা উর্দ্ধে বাঁধা না অধাতে। আর পণ্ডিত-মহাশর দেখেন তাঁহার পুত্র বাণেশর ক্লাসে আসিরাছে কি না। পণ্ডিত-মহাশরের শিখা ধদি উর্দ্ধেতে থাকে তাহা হইলে তাঁহার মেক্সাক্ষ ভাল নাই, আর ধদি নিম্নে থাকে, তাহা হইলে, হয়ত অর্দ্ধণটা ছটিও দিতে পারেন।

ছাত্ররা দেখিল, শিখা উঁচু করিয়া বাঁধা; সকলে প্রমাদ গণিল। বাণেখরের মুখ গজীর হইরা গেল। পিতা প্রথমেই তাহাকে পাঠ জিজ্ঞাসা করিবেন। সেজত সে ভীত নর, কিন্তু তাহাকে যথন তিনি বাড়ির ডাকনাম ধরিয়া গজীর স্বরে ডাকেন, তাহার ভরকর রাগ হয়। নামটিও স্মপুর নয়—ইাদা!

পণ্ডিত-মহাশয় পুত্রকে রেহাই দিলেন। আরবিন্দকে ডাকিলেন, ওহে সাহেব!

পণ্ডিত-মহালয় নিজ পুত্রকে বেমন ডাকনামে ডাকেন, তেমনই ক্লাসের আর সকলকেও একটা নাম তৈরি করিয়া ডাকেন।

সাহেব সমাসটি ঠিক বলিল। ভার পর 'মাকাল-ফলে'র

আহ্বান হইল। কাশীপ্রসাদ মল্লিকের নাম মাকাল-ফল।
পাড়ার মল্লিকেরে বাড়ির ছেলে। মোটা, গোলগাল
মুথ, ফুটকুটে দেখতে, সব সময়ে হাসিখুশী ভাব; পায়ে
পাম্পায়, কোঁচান দেশী পুতি ও রঙীন সিক্রের পাঞ্চাবী
পরিয়া আসে। মাকাল-ফল বড় মুদ্ধিলে পড়িল, সব সময়
স্থপারি চিবাইয়া সে একটু তোভলা হইয়া গিয়াছে,
দীর্ঘ সমাসংযুক্ত সংস্কৃত ভাষা ভাহার জিহ্বার উচ্চারণের
জন্ত নয়। সে দাঁড়াইলে পণ্ডিত-মহাশয় জিল্লাসা করিলেন—
পড়া ভৈরি হয়েছে?

কাশীপ্রসাদ অমানবদনে উত্তর দিশ—শুর, ভাল হয় নি।
পণ্ডিত-মহাশয় মাথা নাড়িয়া বলি:লন, আচ্ছা বোস্,
কেন স্থলে আস? বাবার আপিসে বেরুতে আরম্ভ কর্।
বিদ্ধে!

বৃন্দাবন বৃটের শব্দ করিয়া দাঁড়াইয়া গড়গড় পড়িতে আরম্ভ করিল।

পণ্ডিত-মহাশয় আবার মাথা নাড়িয়া বলিলেন—আন্তে আন্তে, দেবভাষা শ্লেচ্ছের মত পড়িস্ না।

এ-বণ্টাতেও অৰুণকে কিছু পড়িতে হ**ইল না**।

ভূতীয় ঘণ্টা অঙ্কের। অঙ্কের মান্তার গোপালবাব্ ক্ষীণজীবী, অভি ভালমান্ত্য। তিনি ক্লাসে ঢুকিয়াই বোর্ডে গুইটি অঙ্ক লেখেন, ছেলেদের নিজ নিজ খাতায় অঙ্ক গুইটি ক্ষিতে বলিয়া নিজে একটি বই বা খাতা লইয়া চেয়ারে বসেন। অনেকে অঙ্ক ক্ষে, অনেকে অঙ্কণ্ডলি খাতায় টুকিয়া বসিয়া গল্প করে। তবে কেহ গোলমাল করে না। মান্তার-মহাশ্যের সজে ছেলেদের যেন বন্দোবস্ত হইয়া গিয়াছে। তিনি ছাত্রদের জালাবেন না, ছাত্ররাও যেন তাঁহাকে বিরক্ত না করে। তাঁহার চাকরি যেন বজায় থাকে। উৎসাহী ভাল ছেলেরা অঙ্ক ক্ষিয়া তাঁহার কাছে লইয়া যায়। আর ক্লাসে মাকাল-ফলের স্থপারির কোটা, স্কাস সেনের নাকু বা পণ্ডিত-মহাশ্যের সরস রেখাচিত্র বেঞ্চি হইতে বেঞ্চে চালিত হয়।

কিছু ক্ষণ পর গোপালবাবু নিজে উঠিয়া বোর্ডে ক্ষর কবেন ও ছেলেদের থাতার টুকিতে বলেন। এ-বিষর তাঁহার বিশেষ দৃষ্টি। বলেন—বাপু, পরীক্ষার রেজা^{ন্ট} ধারাপ ক'রো না। অধিকাংশ ছেলেই টুকিরা লয়। অঙ্কবা শেষ হইলে অনেক সমগ্ন তিনি ঘণ্টা বাজিবার আগেই চলিয়া যান। ছেলেরা কোন গোলমাল করে না, তবে ভূদো বিন্দেকে চিমটি-কাটা চলে।

টিফিনের সময় অরুণ অজয়কে খুঁলিবতে বাহির হুইল।

অদ্ধরের সহিত তাহার গভীর বন্ধুত্ব। এক বছর হইল অজর স্থূলে আসিরাছে। ইহার মধ্যে তাহাদের কিরুপে এরূপ ভাব হইল, ভাবিলে অরুণ অনেক সময় আশ্বাহয়।

অজয় অফুণের চেয়েও লম্বা, তরুণ শালবুকের মত সুঠাম দৃঢ় দেহ, বীর্যাবাঞ্জক সজীব স্বাস্থ্যের প্রতিমূর্ব্ডি। মৃথ তারুণামণ্ডিত বটে, কিন্তু অরুণের মুপঞ্জীর পাণ্ডুর ভাবপ্রবণতা, স্বপ্নময় উদাসতা নাই। তাহার দেহের মত ভাহার মনও সরল, ঋজু। সে হৈ চৈ করিয়া কথা বলে, সারাক্ষণ চেঁচায়, হাসে, কিশোর প্রাণের উচ্ছাসে ভরা। 'ফাটি' বিন্দের পেটে ঘৃদি মারিতে, চালিরাৎ চট্টোর চশমার ফিতা টানিয়া দিতে, ছেলেদের সহিত ঘুসোঘুসি করিতে, অত্যাচরিত হর্মণ ছেলের জ্বন্ত লড়িতে সর্মদাই প্রস্তত। ক্লাদের মধ্যে সে সবচেয়ে বড় খেলোয়াড়, স্থুলের ফুটবল ক্লাবের ক্যাপ্টেন। স্থূলে বিদ্যাচর্চ্চা অপেক্ষা খেলার মাঠে দেহচর্চা করিতে বেণী ভালবাসে। তবে পড়াশোনাতেও অমনোযোগী নয়। এক শতের মধ্যে পঞ্চান্ন পাইবার মত পড়া পড়ে। তার বেশী পড়া, তার মতে পণ্ডশ্রম। সে কল্পনাপ্রিয় নয়, বলে, আমি রিয়ালিষ্ট। জয়ন্তের কবিতাকে সে বলে, প্যানপ্যানানি ও বা**ণেখ**রের তর্ককে বলে জ্যাঠামি, তবে সুহাসের ব্যঙ্গচিত্রগুলিকে প্রশংসা করে।

অজয়কে নিভূতে ডাকিরা অরুণ বলিল—মামাবাবু কেমন আছেন ?

অন্ধন্ন একটু গন্ধীর হইরা উন্তর দিল—বাবা, বাবা সেই রকমই আছেন। কাল রাতে ভাল বুম হর নি। ভাছাড়া অন্ত কোন নজুন উপসর্গ নেই। শোন, মা ব'লে দিরেছেন, আন্দ্রবিকেলে ভূমি বেও নিশ্চর। ছ্-দিন বাও নি কেন, স্থল থেকেই বেও, ওখানে চা থাবে।

অহণ জিজাসা করিল—তুমি থাকবে ত?

অজয় ঘাড় নাড়িরা বলিল—আমার ফিরতে রাত হবে, আজ স্থূলের মাাচ, আমি ক্যাপ্টেন, বাওরা চাই। আছো, এখুনি টীম তৈরি করতে হবে। বেও, না হ'লে মা ভাববেন।

মামীমা তাহাকে সত্যই বড় স্নেহ করেন। এক বৎসরের পরিচয়, কত আপন করিয়া লইয়া:ছন, যেন জন্মজন্মান্তরের জানা।

অজয় চলিয়া গেল। জয়স্ত আসিয়া তাহার হাত ধবিল, চোথ ছল ছল করিতেছে। জয়স্ত সামান্ত আবেগেই কাঁদিয়া ফেলে।

অরুণ ধীরে বলিল—কি হয়েছে ভাই ?
ভগত্বরে জয়ন্ত বলিল—চল ক্লাদে, বলছি।
ক্লাস প্রায় শৃক্ত। তুই জনে এক কোণে বসিল।
ক্রয়ন্ত কিছু ক্ষণ নীরব থাকিয়া বলিল—বাবা চলে
গেছেন।

বিবৰ্ণ বিশ্বিত মুখে অৰুণ বিশ্বি—ভোমার বাবা, কি হ'ল হঠাং!

- —তিনি সন্নাসী হয়ে গৃহ ত্যাগ ক'রে চ'লে গেছেন।
- —ও, তাই বন, আমি ভাবছিলুম —
- —কিন্তু আমাদের অবস্থাটা কি হ'ল!
- —তোমার ত মা নেই।
- —না, কিন্তু ছোট ভাই এক আছে।
- —ভোমাদের এক দোকান আছে না?
- —হা, ঘড়ির দোকান, রাধাবাঞারে। বাবার মন্ত অমন ঘড়ি নাকি কেউ সারতে পারত না, ঘড়ি সেরে সেরে তাঁর চোধ ধারাপ হয়ে গেছল। তিনি আর বড় মেসোমশাই ছ-জনে দোকান করেছিলেন, দোকান ত মেসোমশাইকে দিয়ে গেছেন।
 - —ভোমরা ত একদঙ্গে থাক।
- হাা, বড় মাসীর সঙ্গে, বাবাই বেশীর ভাগ ধরচ দিতেন। আমার জন্তে ভাবি না, কিন্তু মণ্টুর কি হবে, ছ-বছরের ছেলে সে—বাবা একটু ভাবলেন না।
 - ---मानी (मथरवन।
- হাা, মাসীর চার ছেলে চার মেরে—মাসী দেখকে।
 শোন, তোমার ব্যারিষ্টার-কাকার সঙ্গে আমি পরামর্শ করতে

চাই। দোকানে আমাদের অংশ কি, মণ্টু ত নাবালক, সব ঠিক ক'রে নিভে হবে।

- —আছা, আমি বলব।
- —শীপ্সির একটা ব্যবস্থা করা চাই। মেশো কোন্ দিন বলবেন, চরে থাও গে।
 - —আচ্ছা, আমি নিশ্চয় বশব।
 - —বাবা বেশ, সন্ন্যাসী হয়ে চলে গেলেন।

টিফিনের শেষে গৃই ঘণ্টা ইতিহাসের মাসিক পরীক্ষা হইল। প্রশ্নগুলি সহজ্ঞই ছিল। কলিকাতা-স্থাপনের ইতিহাস, শেষ পানিপথ যুদ্ধ মারাঠাশক্তি পতনের কারণ, ইত্যাদি। অরুণ উত্তরগুলির সঙ্গে নিজের নানা মস্তব্য জুড়িয়া দিল। ইতিহাসের শিক্ষক জগদীশবাবুর সে প্রিয় ছাত্র। সে নির্ভয়ে প্রশ্নের উত্তর লেখে। জগদীশবাবু নিক্ষেও ছাত্র, এম-এ পাস করিয়া ল' পড়িতেছেন। সেজ্জা বোধ হয় কিশোর-মনের উচ্ছাস স্লেহের চোখে দেখেন। অরুণ লিখিল, শেষ পানিপথ-যুদ্ধে যদি আ'মদ শা ছ্রানীর পরাজর হইত, তাহা হইলে ভারতবর্ধের ইতিহাস কি হইত কে জানে। হরত কি হইতে পারিত, এ প্রশ্নের সে নানা কাল্পনিক উত্তর লিখিল। আর এক প্রশ্নোত্তরে সে লিখিল, জব চার্ণক যদি কলিকাতার কুঠিছাপন নাকরিতেন তাহা হইলে পলাশীর যুদ্ধ হইত কি? ইতিহাস পড়িতে পড়িতে তাহার মনে এইরপ নানা প্রশ্ন জাগে।

স্থূলের শেষে অরুণ অঞ্জরকে খুঁ জিরা পাইল না।
স্থূলের বই লইরা একা অজরদের বাড়ি যাইতে তাহার লজ্জা
বোধ হইল। বইগুলি বাড়িতে রাথিয়া ঠাকুমাকে বলিরা
যাইবে, ঠিক করিল। হয়ত, মামীমা রাতে খাইরা যাইতে
বলিবেন।

একা পথ দিয়া বাড়ি ফিরিতে প্রতিমার সকালে গাওয়া গানের স্থর তাহার কানে বাজিতে লাগিল। গানের কথাগুলি প্রতিমাকে দিয়া লিখাইয়া লইতে হইবে।

(ক্রমশঃ)

নিশীথে

গ্রীস্ধীরচন্দ্র কর

কী পাখী ডাকে!
গান কার বেখে গেল পথের বাকে॥
অঙ্গন ছায়া ঢাকা
কীণ কাঁপে বাউশাধা,
সহসা খসিয়া বায়ু থমকি থাকে॥

উৎস্থকে বিকশিত শুলা বেলি
শৃক্তে দিয়েছে মৃত্ গন্ধ মেলি।
দীবিতে অথৈ কল
থেকে থেকে টলমল,
উকি ঝুঁকি মারে চাদ মেদের কাঁকে।

বিলির বি বি-রব্চলিছে টানা, অজানার বাঁলি বেন না বানে মানা। মৌন গভীর করি মাতায় সে বিভাবরী কত কী বলিতে চায় কে যে কাছাকে॥

শিশু কেঁদে লেগে রয় মারের বৃকে,
প্রিয় জেগে চেয়ে রয় প্রিয়ার মৃথে।
কেহ বা অপনবোরে
বাঁথে তারে বাছডোরে,
জল ভ'রে আসে কারো বিনিদ আঁথে॥

কুকুরের ভাঙা গলা মিলার দূরে,
ঝোপে ঝাড়ে মিটিমিট জোনাকি উড়ে।
পাতা ঝরে টুপ্ টুপ্
আবার সবাই চুপ,
বেল সবে কাল ছটি পাতিয়া রাখে ।

স্বরলিপি

গান

হে সথা, বারতা পেরেছি মনে মনে
তব নির্মাস পরশনে
এসেছ অদেখা বন্ধু দক্ষিণ সমীরণে।
কেন বঞ্চনা কর মোরে
কেন বাধ অদৃশু ডোরে
দেখা দাও দেহ-মনভরে
মম নিকুঞ্চবনে॥

দেখা দাও চম্পকে রক্তণে
দেখা দাও কিংগুকে কাঞ্চনে।
কেন গুধু বাশরীর হুরে
ভূলায়ে লয়ে যাও দুরে
ধৌবন-উৎসবে ধরা দাও
দৃষ্টির বন্ধনে।

-- "শাপমোচন"।

কথা ও স্থার – রবীশ্রনাথ ঠাকুর

স্বরলিপি - এশৈলজারখন মসুমদার

मा-बामामा मा-ा^मशाशा मा-1-1-1 मा-ाशाशा माधा-1 ना र्गा-ा^मधाना इ.० जल था० व न् धू०००। ए० किंग रुमी० त लि० दिश

1 1

্রণ^সরণরণ-রণ্রণরণ শ[্]রণপ্রণ্যার্রণ।রণ-গ্রণ-রণ-রণ-রা-বা-প্রণ। ধাধানানা 'কেন ব ন্চনাকর লো০০রে কে০।ন ০ বা ধ ০ অ০। দৃ০ ভাডো

नानन्। नन्। नन्। भाग नाना भाषा भाषा भाषा नामानन्। नन्नन्। दा ०००। ०००० क्रिया ना ७ त्या ना ७ त्या ना ७ त्या ना ७ त

"এসেছ অদেখা বন্দ ক্ষিণ সমীরণে" পূর্বের ভার



সিংভূমের তাত্রখনি

গ্রীপিণাকীলাল রায়

ত্বৰ্ণবেশা নদীর প্রায় সমাস্তরালে লীলায়িত পাহাড়ের শ্রেণী সিংভূম জেলার পশ্চিম প্রান্ত হইতে পূর্ব প্রান্ত পর্যন্ত বিস্তার লাভ করিয়া দিঙ্মগুলকে গাঢ় আলিঙ্গনে আবদ্ধ করিয়া দাঁড়াইয়া আছে। এই সকল পাহাড় ব্যাপিয়া বে একটি তাত্র-প্রস্তরের স্তর (Singhbhum Copper Belt) বিদ্যান আছে, কাননকুস্তলা ধরিত্রীর কটি-মেথলার মত, তাহার অন্তিত্ব পাশ্চাত্য থনিতব্বিদেরা আবিদ্যার করিয়াই ক্যান্ত হন নাই, পরস্ক এই সেদিন, তুই ক্ষম জর্মান বিশেষজ্ঞ (Geo-physicist) তাহাদের

ও রুষ্টির লীলাভূমি রূপে সমগ্র জগতের দৃষ্টি আকর্ষণ করিতে সক্ষম হইরাছিল, সেই সময় এই সকল পাহাড় হইতে তাম-প্রজনন ক্রিয়া যে যথেষ্টই চলিয়াছিল তাহার প্রমাণের অভাব নাই। তাম-প্রস্তর উত্তোলনের গহরর (shaft), ফারনেদ্ হইতে তাম-নিছাসনের পর পরিত্যক্ত ময়লার স্তুপ (slags), এবং গলিত তামা ঢালিবার জন্স তৈরি বড় বড় মুচির (crucibles) ভগ্ন খণ্ড, এখনও পার্বত্য অঞ্চলের স্থানে স্থানে প্রচুর দেখিতে পাওয়া যায়। মহারাজ্যা অশোকের নামারিত তাম্মুদ্রা ও তাম্ফলক ক্রচিৎ



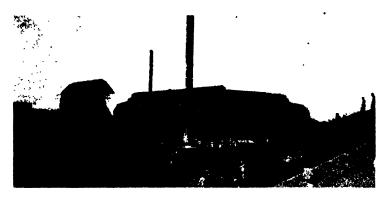
মোভাঙার কারধানার এক পার্যের সাধারণ দৃশ্য

নবাবিদ্ধত ষত্রপাতির সাহায্যে এই তাত্র-প্রস্তরের প্রধান ন্তর ও তাহার শাখা-উপশাখার সঠিক অবস্থান হাতে-কলমে দেখাইয়া দিয়া গিয়াছেন, এই ধরিত্রীরই পিঠের উপর বসিয়া —বেমন কোন অভিজ্ঞ অন্ত্র-চিকিৎসক দেহাভান্তরম্থ শিরা-উপশিরাশ্তনির অবস্থান ব্রিতে পারিয়া ছুরি চালাইতে স্মর্থ হন।

অতি প্রাচীনকালে, বধন ভারত তৎকালিক সভ্যতা

কোন জংলী সাঁওতাল কিংবা খেরোয়াল দেখিতে পাইলে এখনও কুড়াইয়া আনে, আমাদিগকে দেখাইবার জন্ত।

কালমাহায়্যে ও অনুশীলনের অভাবে এই ধনিজ শিল্পের কথা লোকে প্রায় ভূলিরাই গিরাছিল, যদিও এই মূল্যবান সম্পদের বিষয় ভূলিরা যাওয়ার মত আশ্চর্যাও জগতে কিছু নাই। তত্তাচ বলিব, এই আত্মবিশ্বত জাতির পক্ষে এটা বিশেষ রকম আশ্চর্যা নর, বরং ইহা শ্বাভাবিক বলিলেও অত্যুক্তি হয় না; নতুবা, ইহার চেয়েও কত শত অমৃদ্য সম্পদ এই জাতি হেলায় হারাইয়া আজ সর্কহারা হইয়া পড়িয়াছে। তবুও এই জাতি আয়বিমরণের অভিশাপ হইতে মুক্ত হইয়া যদিই বা কোন দিন জাগিয়া উঠে—যদিই বা কোন দিন এই মেব-ভরা রজনীতে, কোন্ হাজার বংসর আগে হারিয়ে-বাওয়া বিহাৎ-ঝাকা পথটির সন্ধান সে ফিরিয়া পায়, তাহা হইলে তাহাকে সেই শুভদিনের অত্য অংপকা করিতেই হইবে।



রোলিং মিল ও ওর-বিনের এক পার্বের দৃষ্ঠ

বছকাল পরে সিংভূম জেলার সেই নট শিল্পের আবার প্রক্রনার হরাছে, উদামণীল ব্রিটিশ জাতির উদ্প্র চেটার ও তাহাদের কর্মকুশনতায়। গত শতাব্দীর প্রথম ভাগে তাহারা জানিতে পারে যে, এই সকল পাহাড়ে তামার অভিত্ব আছে এবং প্রায় শত বৎসর পূর্বে ১৮০০ সালে মি: জোনস্ (Mr. Jones) নামক জানৈক ইংরেজ ধনিতাবিক্ নানা রকম কারণ দর্শাইয়া প্রতিপন্ন করেন যে, এই সকল পার্বত্য অঞ্চলের কোন-না-কোন স্থানে নিশ্রের প্রত্ব তাম-প্রত্বের তার বিদ্যান আছে।

পরে ১৮৪৭ খ্রীষ্টাব্দে ভারতের দক্ষিণ-পশ্চিম সীমান্তের গভর্ণর জেনের্যা নর একেট ক্যাপটেন্ কে, সি, হটন্ (Captain J. C. Haughton) এই সব পাহাড় যন্ত্রপাতির সাহাব্যে খনন কর ইয়া ভূমি-প্রত্তরের নমুনা সংগ্রহ করেন ও এই ভঃটির সঠিক অবস্থিতির বিষয় জানিতে পারেন। ইহার ফলে ১৮৫৭ খ্রীষ্টাব্দে সর্বপ্রথম, একটি ভাশ্র-সমবারের ভক্ষি হয় কলিকাভার কোন প্রসিদ্ধ মহাজনের চেষ্টার। এই কোম্পানীটি ১৮৫৯ ব্রীষ্টাব্দে বন্ধ হইয়া বার।

১৮৬২ খ্রীষ্টাব্দে "দি হি দুস্থান কপার কোম্পানী" নামে আর একটি বিভীয় কোম্পানী এক লক্ষ কুড়ি হাজার পাউও বা প্রায় যোল লক্ষ টাকা মূলখন লইয়া রাজদোহা নামক স্থানে তাহাদের কারখানার পক্তন আরম্ভ করেন। কিম্ব কোন অজ্ঞাত কারণে ১৮৬৪ খ্রীষ্টাব্দে ইহাদের অন্তিত্ব বিনুপ্ত হইয়া যায়।

ইহার পরে ১৮৬৯ গ্রীষ্টাব্দে এক জন স্প্রাসিদ্ধ ভূতাব্দিক (Geologist)
মিঃ ভ্যান্তেন্টাইন্ বল্ (Mr. Valentine Ball) সিংভূমের তাম্রথনির বিষয়ে একটি ক্ষরগ্রাহী প্রবন্ধ লেখেন। তাহাতে তিনি প্রতিপর করেন বে, প্রাচীন কা.ল রাজপুতানা অঞ্চল হইতে কৈনধর্ম্মাবলম্বী জ্ঞাট্ বা শরাক্ জাতীয় এক দল লোক প্রতিবংসর বাণিজ্যব্যপদেশে এদেশে আসিত এবং তাহাদের আনীত মালত

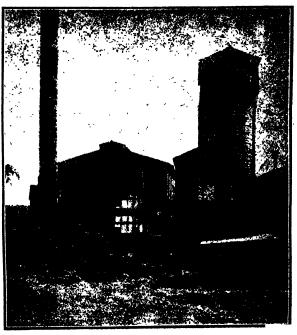
মশলার বিনিময়ে ত'হারা লইয়া যাইত এদেশের তাম। ফলে তাহারাই এদেশে প্রধান উৎপন্ন পণ্য বসবাস করিয়া ভামা ভৈরি করিবার প্রণাশীট শিখিয়া শয়, কতকটা কুটীর-শিলের আকারে ভূষামী ঘাটশিলার রাক্ষার নিকট এমন একটা পাকাপাকী নাছাতে এই কাৰ্যাট বক্ষের ব্লোবস্ত ক্রিয়া শ্র বহুকাল ধরিয়া ভাহাদের মধোই নিবদ্ধ ছিল। ভার পর কোন কারণে এই ব্যবসা-সংক্রোস্ত বিষয় শইয়া রাজার সহিত মনোমালিক ঘটার ভাহারা চিরদিনের ক্ষক্ত এদেশ ভাগি কোন কোন স্থানে উক্ত চলিরা ধার। শরাক্দের স্থাপিত পুষ্রিণী, বাংধ, কুপ, রাস্তা প্রভৃতি এখনও তাহাদের এদেশে অবস্থিতির ও কীর্ষির পরিচয় প্রদান করিয়া আসিতেছে। ভাহারা চলিয়া বাওয়ার পর এই খনিজ শিল্পটি যাহা কুটীর-শিল্পের আকারে কোনরণে জীবিত ছিল ভাহা একেবারেই লোপ পাইরা যার।

পুনরার ১৮৯১ গ্রীষ্টাব্দে "দি রাজদোহা মাইনিং

কোম্পানী" নামে আর একটি কোম্পানী সংগঠিত হয়।
তাহারা সরাসরি গবর্গমেন্টের নিকট হই:ত ধলভূম তাত্রপ্রস্তর স্তরের কতকটা অংশ ইন্ধারা লয় এবং রাখা হইতে
রাল্পদোহা পর্যান্ত প্রায় ২৪ বর্গ-মাইল পরিমিত স্থানের উপর
তাহালের কর্মস্থ:লর সীমানা ধার্য্য করে। এই নূতন
কোম্পানী রাজদোহা ও রাখা এই উভয় স্থানেই
একসঙ্গে তাহালের কার্য্য আরম্ভ করে, কিন্তু অল্পদিনের মধ্যে
তাহারান্ত পাততাজি প্রটাইতে বাধ্য হয় তাহালের মূলধনের
অসচ্ছলতার দর্শ।

তার পর ১৯০৫ হইতে ১৯০৯ সালের মধ্যে শুর টমাস হল্যাপ্ত (Sir Thomas Holland) এই সিংভূমের তাম-প্রস্তর সম্বন্ধে অনেক গ:বয়ণার পর একটি ধসড়া প্রস্তুত করিয়া তাহা ভারত-গবর্ণ মণ্টের দরব:রে করেন। ইহার ফলে ভারত-গব্দেণ্টের জ্বীপ-বিভাগ (Geological Survey of India) এই ডাম্র-প্রস্তর ন্ত:রের উপর যান্ত্রিক পরীকা চালাইয়া তামার অন্তিত্বের **৫**ট বিপোর্টটি প্রমাণ প্রাপ্ত হয়। প্রকাশিত হইবার পর দি কেপ্ কপার কোম্পানী (The Cape Copper Co., Ltd.) নামে আর একটি কোম্পানী ইংল,গুর জন টেশার এণ্ড সম্পের (John Taylor & Sons) তত্বাবধানে পরিচাশিত হইয়া "দি রাজদোহা মাইনিং কোম্পানী"র নিকট হইতে পরীক্ষা-স্বরূপ ধনির কার্যাভার গ্রহণ করে এবং খনিটি কার্য্যকরী বিবেচিত হইলে স্থায়িভাবে ইহার ইজারা বন্দেবিত করিয়া শইবে এই প্রতিশ্রুতিও প্রদান করে।

পরে ১৯•৭-০৮ সালে উক্ত কেপ্ কপার কোম্পানী "রাঙ্গদোহা মাইনিং কোম্পানী"র নিকট হইতে ১৪০০০ পাউও বা প্রায় এক লক ছিয়ানী হাজার টাকার ইফারাটি স্থারিভাবে কিনিয়া লয় এবং ১৯১৪ সালে ইহা ধনির আকারে পরিণত হইয়া সম্পূর্ণরূপ কার্য্যকরী হইয়া উঠে। এই ১৯১৪ সালেরই এপ্রিল মাসে মিলের কার্য্য আরম্ভ হয় এবং বহুকাল পরে, আধুনিক বিজ্ঞানসম্মত প্রাণীতে ব্রিটিশ জাতি ভারতে প্রথম তাম্র উৎপাদন করিয়া রাখা পাহাজের শীর্ষদেশে তাঁহাদের স্বাতীয় পতাকা সগৌরবে প্রোধিত করেন।



পালভারাইজড় কোল্-প্রাণ্ট্ও বয়লার-হাউসের এক অংশ

এই কোম্পানীর তাত্র-প্রজনন জিয়া ১৯২১ সালের ২০শে জুন পর্যান্ত কোনরকমে চলিয়াছিল; তারপর, ইহার আয় ও বায় সঙ্কুলান হাবিধাজনক না-হওয়ায় রিনিভারেরা এই খনিটির কার্যভার স্বহ:তঃ গ্রহণ করেন। ইহার পর-বৎসর ১৯২২ সালের ৩১শে মার্চে তারিপে খনির তায়-প্রজনন জিয়া একেব রেই বন্ধ হটয়া বায়, যদিও খনিট ১৯৩১ সাল পর্যান্ত কার্যোপ্রোগী করিয়াহ রাখা হইয়াছিল।

এই শেবোক্ত করেক বংসরের শেয দি.ক ১৯২৯ সালে ইনডিয়'ন কপার কর্পোরেশন্ কে'ম্পানী এই থনিটি পরীক্ষা-স্বরূপ লইয়াছিল মাত্র, কিন্তু শেয-পর্যান্ত মোটেই ইছা পরিচালিত করে নাই।

১৯২০ সালে "দি করডোবা কপার কোম্পানী" মোযাবনীর ধনিটি পরীক্ষা-স্বরূপ লইয়াছিল। এই ধনিটিও সম্পত্তি কেপ কপার কে'ম্প'নীরই এবং ইহার আংশিক টেলার छन **এ** কার্যা ভন্ক:বধানে পরিচালিত হইডেছিল। ১৯২৪ স'লে উভাদের পরীকার কাল শেষ হইলে ২০ বর্গ-মাইল



হ্বর্ণরেখা নদীর দক্ষিণ তার হইতে গুলীত আলোকচিত্রেইকারখানার সাধারণ দৃষ্ঠা এরির্যাণ রোপ ওরের ছুইটি টাওয়ার ও থুলন্ত বাকেইভুলি দেখা যাইতেছে।

পরিমিত স্থানের থনি-মত্ব কেপ কপার কোম্পানীর নিকট হইতে কর ডোবা কপার কোম্পানী কিনিয়া লয়। পরে এই বৎসরেরই ২১শে জুলাই তারিথে এই কোম্পানীটর পুনর্গঠন হয় "দি ইনডিয়ান কপার কর্পোরেশন্ লিমিটেড" এই নামে, প্রায় উনত্রিশ লক্ষ বিরাশী হাজার টাকা মূলধন লইয়া। এই নৃতন কোম্পানী সেই সঙ্গে পেই একই সময়ে "দি নর্থ অনস্থপুর গোল্ড মাইনিং কোম্পানীর এবং "দি ওরিগাম্ গোল্ড মাইনিং কোম্পানীর এবং "দি ওরিগাম্ গোল্ড মাইনিং কোম্পানীর কামক স্থান ভইটির ধনি-স্বত্বও কিনিয়া লইয়াছিল।

এই নব-গঠিত কোম্পানীর কাজ মোযাবনী অঞ্চলেই এত দিন নিবদ্ধ ছিল এবং খনিটি কার্যাকরী করিয়া তুলিবার **চ**निशां जिन সালেব পুরা ल्टंग ফেব্ৰুৱারী মাস পর্যান্ত । രള हेश द পূৰ্ পরিচালনের ভার "দি এাংলো ওরিয়েণ্টাল এণ্ড বেনেরাল ইন্ক্টেমেণ্ট ট্রাষ্ট লিমিটেড"-এর হস্তে অর্পিড হয়। তার পর উপরি উক্ত মূলধনের উপর পুনরায় প্রায় ছেচল্লিশ লক্ষ আট ত্রিশ হার্কার টাকা ঋণ গ্রহণ করা হয়, খতম ভাবে কোম্পানীর নুতন কারণানা

খুলিবার জন্স। এই কারখানাটি ঘাটলিলার নিকট স্বর্ণরেথা নদীর উত্তর তীরে স্থাপিত; এথানে বে-সকল যম্পাতি নির্মিত হইয়াছে তাহার মধ্যে পাওয়ার প্রাণট, কন্সেন্টেশান্ মিল্, স্মেল্টার এবং রোলিং মিল বিশেষ উল্লেখবোগ্য।

যাহা হউক, ১৯২৭ সালেই বিশেষ ক্ষিপ্রতার সহিত উক্ত যন্ত্রপ্রনির পত্তন আরম্ভ হয় এবং পর বৎসর নভেম্বর মাসে ঐ সকল যন্ত্রের নির্মাণ-কার্য্য শেষ হইয়া ডিসেম্বর মাসের মধ্যেই এই কোম্পানীর প্রথম তাত্র-প্রক্রনন । ক্রিয়ার স্ত্রপাত হয়।

এই এত বড় বৃহৎ ব্যাপার এত অল্প সমরের মধ্যে কার্যাকরী করিয়া তোলার জন্ত যদি কেই যশ-গৌরবের প্রার্থী হয় তাহা হইলে সর্ব্বাগ্রে এই কোম্পানীর তিনটি প্রতিভাবান লোকের উপর সর্ব্বসাধারণের মনোযোগ আকর্ষণ করিতেছি। প্রথম এই কোম্পানীর বড়সাহেব, রাসেল. বি. ওক্স্ (R. B. Woakes); ইনি এই কোম্পানীয় জন্মদাতা বলিলেও অত্যক্তি হয় না। বিতার, কারখানার ম্যানেজার, এইচ. সি. রবসন্ (H. ('Robson)। ইনি এক দিন গর্বা করিয়া বলিয়াছিলেন, "বর্দি

এই কোম্পানীকে সাফল্যমণ্ডিত করিতে না-পারি তাহা হইলে আমার এই মন্তকের টুপি স্বর্গরেধার জলে ভাসাইয়া দিয়া চলিয়া যাইব।" ভূতীয়, সন্তোয ভট্টাচার্যা,— এস্. ভট্টাচারীয়া নামে পরিচিত—এই কোম্পানীয় গঠনমূলক কার্য্যের ছিলেন অক্লান্তকর্মী অগ্রদূত। বাস্তবিকই যত দিন এই কোম্পানীর অস্তিত্ব বজায় থাকিবে তত দিন পর্যান্ত এই তিনটি লোকের হাতের ছাপ ইহার প্রত্যেক কার্য্যের ও কার্য্যপ্রণালীর উপর অক্ষম্ম হইয়া বিরাজ করিবে।



রোলিং মিলের একটি ফারনেস্ ও তাহার বামপাথে ক্লেপিং মেশিন

বাহা হউক, ইহার প্রায় দেড় বৎসর পরে এই তামার কারথানার পাশেই রোলিং মিল নামে আর একটি ফুর্ছৎ কারথানা স্থাপিত হইল। পিতল ও পিতলের শিট তৈরি করিবার জন্তই এই যমুটির পরিকল্পনা এবং এই সময়েই ভারতে সর্বপ্রথম পিতলের শিট এই কারথানায় প্রস্তুত হইতে আরম্ভ হয়।

ইহার পর ১৯৩১ দালে কোম্পানীর টেক্নিক্যাল-বিভাগের কাক্ত 'দি নিউ কন্সোলিডেটেড গোল্ড ফিল্ড, দাউথ্ আক্রিকা লিমিটেড্" নামীয় একটি কোম্পানীর উপর গুন্ত হয় এক অদ্যাবধি উক্ত কোম্পানীরই তত্ত্বাবধানে কর্পোরেশনের কাক্ত চলিয়া আদিতেছে।

যাহাতে তামা ও পিতলের প্রজনন-ক্রিয়া বর্ত্তমানের চেয়ে শতকরা ৫০ ভাগ বৃদ্ধি পার, এই আশার কোম্পানী পুনরার প্রার বোল লক্ষ্য সাত্যটি হাজার টাকা ঋণ প্রহণ করিয়াছে। ১৯৩০ সালের অক্টোবর মাসে কারখানার এই ক্রমবর্ত্তমান অংশের নির্মাণ কার্যোর পরিসমাথি ঘটে। এক্ষণে এই কোম্পানীর সর্বসমেত মৃশধনের পরিমাণ দাঁড়াইয়াছে প্রার এক কোটি কুড়ি লক্ষ টাকা।

এই কারখানাটি স্থাপিত হইবার পর হইতে উৎপন্ন পণ্যের একটি তালিকা নিম্নে প্রদত্ত হইল:—

| স†ল | ধনি | া হইতে উণ্ডোশিত তামু-প্রস্তর টন্ | বি ভ দ্ধ ত!মার ইন্গট্ টন্ | পিত েব র শিট টন্ |
|---------------|-----|---|--|-------------------------------|
| >>> | | ೧೭ ೨೮೯ | ১.৯৯৫ | • |
| ১৯৩० | | ১১৯৭৮৭ | ২৯৭৪ | 9 6 |
| ८७५८ | | >88200 | ৪০৬৯ | ৩৬৩৭ |
| ১৯৩২ | | १९८३९९ | 8889 | ¢88• |
| ১৯৩৩ ৯ মাস | } | ১ <i>২৮২</i> %৩ | ૭૯૭૦ | 8850 |
| | C | মাট ৬০১,৭৯৬ | . ૭, ૭૯ ૪ | :8,२>@ |



রোলিং মিল ফাউণ্ডি,তে—'রুম' (পিতলের রুক) তৈরি করিবার লম্ভ গালিত ও ফুটন্ত পিতল পরিপূর্ণ একটি মুটি ইলেক্টি,ক্ কেনের বারা চালিত হইতেতে:

এক্ষণে গড়পড়তা হিসাব করিয়া দেখিতে গেলে, বংসরে পঁচানবাই লক্ষ ভেত্তিশ হাজার সাত শত তেইশ



মোৰাৰনা খনির প্রান ভাক্টের উপরের দৃগ: হেড্গিরার, প্রাইমার্ট, কাশার, কম্প্রেস্ড্ এয়ার বেল্ট্-কন্ভেয়ার, ওর-বিন ইত্যাদি

টাকার পিতলের শিট্ এবং সাত্যটি লক্ষ্পনর হাজার সাত শত বিয়াল্লিশ টাকার তামার ইন্গট্ উৎপন্ন হইতেছে, অবশ্য ৯১৪১ টন্ তামা বাদে যাহা পিতল তৈরি করিতে খরচ হইনা থাকে।

এইবার মোষাবনীর থনি হইতে উদ্ভোলিত তাম-প্রান্তরগুলি কি উপায়ে মৌভাণ্ডারের কারথানার আনীত হইতেছে সে-সম্বন্ধে করেকটি জ্ঞাতব্য তথ্য সংক্ষেপে উল্লেখ করিব।

প্রথমতঃ তাত্র-প্রত্তরগুলি প্রাহমারী কালিং প্লাণ্টে চূর্লীক্কত হইরা বেন্ট্ কন্তেমারের দ্বারা এরিয়াল্রোপওয়ের 'বিনে' আসিয়া সফিত হয়। তার পর সেগুলি বড় বড় ব্লুলত বালতিতে বোঝাই হইলা এরিয়াল রোপের সাহায়ে ছয় মাইল দ্ববর্ত্তী মৌভাগ্ডারের ওর-বিনে আসিয়া পড়ে। পরে কন্তেয়ার-বেন্ট সেগুলিকে কন্স.ন্ট্রশন্ মিলে আনিয়া দেয়। মে'যাবনীর ধনির উপরিভাগে ই লকট্রিক হয়েই, ক্রাণিং প্লাণ্ট, ক্মপ্রেস্ড্ এই কয়েকটি বিভাগ আছে। এই য়য়পাতিগুলি বৈহাতিক শক্তির দ্বারা মৌভাগ্ডারন্থ কারথানার পাওয়ার হাজার ভোন্ট, ছইটি লাইন দ্বারা সঞ্চালিত হয়ারে থেলার হাজার ভোন্ট, ছইটি লাইন দ্বারা সঞ্চালিত হয়ারে মোষাক্ষী খনির য়য়ভলিকে সচল করিয়া রাখে।

এখন মোযাৰনী ও ধৰানী প্ৰায় পালাপালি

হুইটি থনিতে কাজ চলিতেছে। এক জন সাহেব মাইন্-সুপারিন্টেন্ডেন্ট্ নিযুক্ত আছে এতদঞ্লের থনি-সংক্রান্ত যাবতীয় কার্য্য পরিচালনার জন্ত। তাঁহার অধীনে মেকানিক্যাল এত্নিনিয়ার, ইলেকটি শিয়ান্, মাইনার, ডাক্তার প্রভৃতি ২৮ জন দেশীয় ও বিদেশীয় শিক্ষিত কর্মচারী ও প্রায় ২০০০ জন দেশীয় শ্রমিক নিযুক্ত আছে। ১০০ টন্ হইতে ১০০০ টন পর্যন্ত তাত্র-প্রস্তর দৈনিক থনি হইতে উভোলিত হইয়া থাকে।



পাওয়ার গ্লাণ্টে টারবাইনের দৃত্ত

এই প্রস্তরগুলি এরিয়াপ্রোপওরের সাহায্যে মৌভাণ্ডারস্থ কারধানার ওর-বিনে আসিয়া পড়ে। তার পর কনভেয়ার-বেণ্টের ছারা "হাডিএ-বল্ মিলের" মধ্যে আপনা-আপনি উপনীত হয় এবং এই চুর্ণ প্রস্তরগুলি এই মিলে শু[®] ড়া হইয়া ঠিক ধ্লির আকারে পরিণত হয়। তথন ইহা মিল্ হইতে বাহির হইয়া উপরিউক্ত প্রণালীতে মিনারেল সেপারেশন বা অয়েল্ ফ্লোটেশন্ যত্ত্বে চালিত হয়। তথায় তেল জল ও অস্তান্ত রসায়ন সংযোগে উক্ত ধ্লিবৎ প্রত্তর খুব পাতলা কালার আকারে পরিণত হয় এবং খ্রাট প্রস্তরের অংশ ত'মা হইতে বিশ্লিষ্ট হইয়া উপরে ভাসিয়া উঠে। এই ভাসমান ময়লাগুলি তেল ও

ভলের সঙ্গে অনবরত পয়ংপ্রণালী দ্বারা বাহির হইয়া গিয়া সুবর্ণরেখা নদীতে পতিত হইতেছে।

ময়লাগুলি বাহির হইয়া গেলে যাহা নীচে থিত।ইয়া থাকে ত'হা 'ড্ৰাইং সেক্শেনে' লইয়া গিয়া ওছ করা হয় এবং এইথানেই মি:লর কার্যা শেষ হইয়া যায়। এক:ণ



ইঙিয়ান কপার কর্ণোছেশন কোম্পানীর জেনের্যাল আপিসের এক পার্বের সাধ্যেণ দৃগ্য

ভাম-প্রস্তরগুলি বে-অবস্থার উপনীত হইল ইহাই 'কন্:সন্ট্রেট ওর' নামে অভিহিত। ইহার মধ্যে শতকরা প্রান্ন ৩০ ভাগ থাকে তামা আর ৭০ ভাগ থাকে মন্তান্ত থাক্ত—বেমন লোহা, নিকেল, সাল্ফার ইত্যাদি।

এই শুদ্ধ কন্সেনট্রেট ওর গালাই করিবার জ্বন্ত রিভারবারেটোরি ফারনেদে ঢালিরা দেওয়া হর এবং তথার গদ্ধকের অংশ স:ল্ফার ডাইওকসাইড্ গ্যাসে পরিণত ইয়া চিমনী দারা বাহির হইয়া গেলে, অবশিষ্ট লোহা, নিকেল ও অন্তান্ত পদার্থগুলি দ্রবণীয় অবস্থার রূপাস্তরিত হয়। তারপর সেগুলি মুয়লার গাড়িতে



फ़िन्-मार्शिनः मन्

ঢালিয়া লইয়া বাহিরে ফেলিয়া দেওরা হয়। এই রকম প্রক্রিয়া দারা এক্ষণে বাহা অবশিষ্ট রহিল তাহাই বিশুদ্ধ তামা বলিয়া পরিগণিত এবং এই গালিত অবস্থাতেই তাহা ছোট ছোট লোহার ছাঁতে ঢালিয়া ইউকাকারে পরিণত করা হয়।

শ্বেল্টার প্লাণ্টাট পর-পর কয়েকটি ভাগে বিভক্ত।
প্রথম—মেক্যানিক্যাল রোষ্টার, বিভীয়—পাল্ভারাইজ্ড
কে!ল্ ফারারড্, রিভারবারেটোরি ফারনেদ্, ভৃতীয়—
বেসিমার কনভারটাদ এবং চভূর্য—পালভারাইজ্ড্
কোল্ফায়'ড রিফাইনারী ফারনেদ্।

এক্ষ: ৭ এই যে নানা রক্ষ প্রণাণী দারা বিশুদ্ধ তামা উৎপন্ন হইল ইহার নাম দেওরা হইনাছে বি এদ কিংবা বেট দিলেকটেড্ কপার ইনগট্দ্রাসায়নিক বিশ্লেষণ দারা ইহাতে পাওরা গিরাছে শতকরা ৯৯ ৫ হইতে ৯৯ ৭ ভাগ পর্যান্ত বিশুদ্ধ তামা। আজকাল কলিকাতার বাজারে বি এদ্ এবং আই. দি দি অক্ষর গুলিদ্বারা চিহ্নিত যে তামার ইউকগুলি সচরাচর দেখিতে পাওরা যায় তাহা এই কোম্পানীরই তামা। এই সমস্ত তামা ভারতবর্ধের বাজারেই বিক্রের হইনা থাকে এবং ইহার পরিমাণ বংসরে প্রায় ২২০০ টন হই:ত ১৫০০ টন পর্যান্ত। ইহা ছাড়া আরও তামা ব্যবহৃত হইনা থাকে পিতল বা ইরোলো মেটাল্ শিট তৈরি করিবার জন্ত। শতকরা ৬২ ভাগ তামা এবং ৩৮ ভাগ দন্তার সংযোগে এই পিতল বা ইরোলে: মেটাল শিট প্রস্তুত হইনা থাকে।

পিতলের কারখানার তামা ও দন্তার ইউকশুলি
ইলেকটি ক ইন্ডাকুশন্ ফারনেসে গালাই হইয়া ঠাণা
ফলসিন্ধ চাঁচে ঢালাই করা হয়। এইরপ প্রক্রিয়ায় তৈরি
পিতলের ইউকশুলির নাম দেওয়া হয় "রুম্স"(Blooms)।
যথন এই রুম্শুলি চাঁচ হইতে বাহির করা হয় তথন
সেগুলির উপরি ভাগ এব্ডো-থেব্ডো ও ময়লায় ভর্তি
থাকে। তথন, ফ্রেপিং মেশিনের ধারা রুমের উপরিভাগের
এক পদ্দা চাঁচিয়া ফেলিয়া মস্ত্রণ ও বাক্বাকে করা হয়,
সেগুলিকে রোলিং মিলের উপ্রোগী করিয়া লইবার জন্ত।

রুমগুলি প্রথমে রোলিং মিলের একটি ফারনেসে উদ্ভপ্ত করিয়া লইয়া "রাফ রোলের" দারা সেগুলি মোটা প্রেটের আকারে পরিবর্ত্তন করা হয়! তার পর, তাহা প্নরায় গরম করিয়া ও "য়ুথ্ রোলের" সাহাযো সেগুলিকে থরিদারদের অর্ডার অনুযায়ী প্রয়োজনীয় 'গেঞে' পরির্ভিত করিয়া চারি বর্গকৃটের আকারে কাটিয়া ল্ওয়া হয়।

ইহাই এই শিট্পুলির চরম অবস্থা নহে। বাজারে বিক্রয়োপযোগী করিবার পূর্বে থার একটি ফারনেসে শিটপুলি টেম্পার করিয়া লইতে হয় এবং ক্রেভার দৃষ্টি আকর্ষণ করিবার জন্ত রাসায়নিক জাবকে গুইয়া লইয়া ইহার সর্বাশেষ প্রসাধন-ক্রিয়া সম্পন্ন করিতে হয়। এক্ষণে মাসে মাসে প্রায় ৭০০ টন্ করিয়া এই পিতলের শিট তৈরি হইতেছে এবং এই বাবতীয় শিট কলিকাতা, বোহাই ও মাস্ত্রাজের বাজারে বিক্রেয় হইতেছে।

বি এন্ রেপওয়ের বাট শিলা টেশন্ হইতে একটি দাইডিং লাইন বাহির হইয়া মৌভাণ্ডারের কারধানা পর্যান্ত আদিয়াছে এবং বাহা কিছু প্রয়োজনীয় আমদানী ও রপ্তানী পণ্যের যাতায়াত-কার্য্য নির্কিবাদে সম্পন্ন হইতেছে।

্যাটিশিলার নিকটবর্ত্তী মৌভাণ্ডারে কোম্পানীর প্রধান আপিদ স্থাপিত হইরাছে। এই মৌভাণ্ডার কারখানাটি ২০ জন দাহেব ও ভারতীয় কর্ম্মচারী এবং ১৫০০ জন দেশীয় প্রমিকের দ্বারা পরিচাশিত হইতেছে। মৌভাণ্ডার ও মোধাবনী উভয় ক্যাম্পের দর্ম্মমত কর্ম্মচারীর সংখ্যা হইতেছে ৪০ জন দাহেব এবং প্রায় ৪০০০ জন ভারতীয়। সম্বৎসরে কোম্পানীর উৎপন্ন পণ্যের পরিমাণ ৬৫০০ টন বিশুদ্ধ তামা এবং ৮০০০ টন পিত্রের শিট।

কশিকাতার সূপ্রসিদ্ধ গিল্যানডার্স আরব্ধ্নট এও কোম্পানী এই সমস্ত পণ্য ভারতের বাজারে বিক্রম করিবার জন্ত কোম্পানীর সোল্ সেশিং এক্ষেণ্ট রূপে নিযুক্ত হইয়াছেন।*

* ছবিগুলি কোম্পান।র জেনের্যাল ম্যানেজারের সৌজস্তে প্রাপ্ত।





বাংলা

প্রলোকে সঙ্গীতজ্ঞ হরিমোহন বন্দ্যোপাধায়—

বজের শ্রেষ্ঠ বরসঙ্গাতকলাবিদ্পণের মধ্যে বহরমপুরের হরিমোহন বন্দ্যোপাধাার মহাশর অক্সতম। ইউরাপীর সঙ্গাতকে বাংলার এবং বাংলা সঙ্গাতকে ইংরেজ বরলিপির দ্বারা নৃতন ভঙ্গাতে রপান্তরিত করিয়া তিনি অন্তুত কৃতিছের পরিচর দিয়াছিলেন। ভারতীয় ইংরেজ গণর সঙ্গাতকর আসরে উহোর বয়সঙ্গাত সাধনার নৃতন ভঙ্গাইউরোপীর সঙ্গাতকলাবিৎ ও দেশীর রাজগুর্ব্গকে মুদ্ধে করিত। বহরমপুরের অনেক উচ্চ শ্রেণীর ইংরেজ রাজপুক্ষকে তিনি ভাষার বরভাব প্রবর্ত্তির বহুসঙ্গাই শিক্ষা দিয়াছিলেন, সেই সব ইংরেজ হারপার দ্বারা ভাহার নাম স্বানু ইউরোপেও বিস্তৃত হইয়াছিল। মহারাজ মণীশ্রেচন্ত্র, রাজা জগুরুকিশোর এবং শ্রীষ্টাইনের বিশ্বাত তিন জন ডাহাকে বিশ্বার স্বান্তর কন্সাতি পার্টি"র তিনি একমার প্রধান শিক্ষক ও কর্পধার

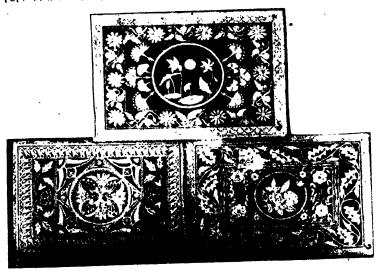
শ্রেষ্ঠ মহসঙ্গতি সংক্ষা (concort: party) তিনি অনেক-ৰোৱ ভারতীয় সঙ্গতিকলা শিক্ষা দিবার জল্প আহত ইইয়াছিলেন। গত ২১শে ডি:সম্বন্ধ তিনি দেহভাগ করিয়াছেন।

সাইকেলে মেয়েদের বর্জমান যাত্রা---

কলিকাত। ছাত্রীসজ্পের উণোগে গ্রীমতী আন্তা দে, গ্রীমতী বিজ্ঞলী
মিন ও গ্রীমতী গাল ইংার শিক্ষক গ্রীযুক্ত অমুলাকুমার বোবের
ভবাবগানে সম্প্রতি সাইকেলে বর্জমান যানা করেন। বর্জমান কলিকাতা
হইতে চুরাওর মাইল। এই দীর্ঘপথ গমনে ছাত্রাদের কোনই কষ্ট হয়
নাই। ছাত্রীসজ্গের মেরেরা ছাড়া এপর্যান্ত আর কেহ সাইকেল বোগে
এত পথ গমন করেন নাই।

আলপনা-চিত্রে প্রতিযোগিতা—

বঞ্চা হইতে শ্রীযুক্ত ননীগোপাল নাস লিখিতেছেন---



वानगन:-जिब

(:) কুমারী ইন্দিরা বহু--এখম, (২) কুমারী পারুল খাস্ববিশ--ছিতার, (০) কুমারী লালা বহু--ছিতার

টি গন। বঙ্গীর সাহিত্য সন্মিলনের প্রথম অধিবেশনের সভাকেত্রে িনি কবি সম্লাট রবীজনাথকে—''অরি তুবনমনোমোহিন।"র ইংরেজা গং তনাইরা মুদ্ধ করিয়াছিলেন। বিলাত ও ফ্রান্সের করেকটি "অপ্রয়োজনের আনন্দে মাথুৰ বা গড়ে, সেধানে মেলে ভার শিল্প ও কবি-মনের পরিচয়। আর এই স্নসকলাক্ষেত্রে মেরেদের প্রতিভার দান অমূল:। ছড়ায়, গাঁধায়, বিবাহে, ব্রতক্ষার, ব্রতন্তা, আল্পনায়, কাঁথাচিত্রে, মুৎশিল্পে ওক্তির ছাচে, জীবনের প্রত্যেক গু টিনাটিতে আনাদের মেয়েদের হাতের ছাপ মেলে।

"চেচ্চার অভাবে বছ গৃহনিদ্ধের সঙ্গে সংক্র আল্পনা-লিন্ধেরও অকাল সমাধি হতে বংস:ছে; এই সমস্ত লুপ লিঙ্কের পুনরুদ্ধার চেন্তায় কিছুদিন পূর্পে বস্তুড়া শহরে 'এমেচার আটিট এসোসিরেসনে'র উজ্যোগে মেরেদের মধ্য একটি আলপনা-অভিযোগিতা হয়। কলিকাতার বাহিরে ও উত্তর বাংলায় এই প্রচেষ্টা অথম। সুধের বিষয়, প্রভিযোগিনাদের মধ্যে আজকালকার মেয়েদের সংখ্যাই ছিল বেশী।"

তিনি আরও লিলিয়াছেন, এই অভিযোগি গ্র শীমতী ইন্দিরা বহ প্রথম এবং শীমতী পাকল বাস্নবিশ ও শামতী লীলা বহু দিত্র ছান অধিকার ক্রিয়াছিলেন।

পরলোকে প্রিয়ম্বনা দেবী-

পাবনার অন্তর্গত তাড়াশের জমিনার শাঁযুক্ত কুমার রাধিকাভূষণ বার মহাশারের পত্নী প্রির্থনা দেবা মহাশয়। সম্প্রতি পর লাকগমন করিয়াছেন। তাড়াশের জমিনার পরিবার দানশীলতার জন্ত প্রসিদ্ধা বহু শিক্ষা



প্রিয়খন: দেবী

প্রতিষ্ঠানে এই পরিবারের বিতর দান আছে। প্রিয়বদা দেবী ওধু দানশীলাই ছিলেন না, তিনি ধর্মপরায়ণা বলিয়াও পরিচিত ছিলেন। মৃত্যুর দিনেও তাঁহার ধর্মালোচনা জনিয়া সকলে স্তম্ভিত হইয়াছিলেন।

শ্রীমতী অমশা নন্দীর কৃতিত্ব—

এলাহাবাদ ইউনিভাসিট সঙ্গীত-সম্মেলনের বিষয় গত মাসে প্রকাশিত হইরাছে। এই সম্মেলনে ভারতবংগর বিভিন্ন অঞ্চল হইতে নৃত্যবিদ্যপণ্ড যোগদান করিয়াছিলেন। ইইাদের মধ্যে কলিকাভার শ্রীমতা অমলা নন্দীর প্রাচীন ভারতীয় নৃষ্টা সর্বাপেকা অধিক প্রশংসিত



শ্ৰিমতী অমলা নন্দী

হইয়।ছিল। তিনি ডাহার কৃতিছের প্রথারস্থাপ সাত্থানি হবর্ণ পদক ও তিন্থানি রৌপাপদক লাভ করেন।

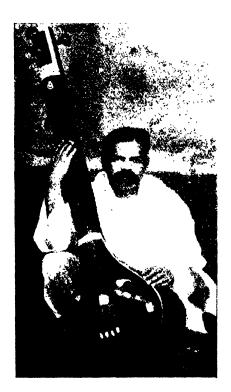


শ্রীযুক্ত রাসবিহার। দে

বিদেশে বাঙ্গলীর ক্ষতিত্ব-

শ্রীমৃত রাদবিহায়ী দে গত ইং ১৯০০ সালে যাদবপুর ইঞ্জিনিরারিং কলেজের শেব পরীক্ষায় প্রথম স্থান অধিকার করিয়া উত্তঃর্ণ হন। ১৯৩২ সালের গাঁর তিনি উক্ত শিক্ষা লাভার্থ জার্মানী গমন করেন। সেগানে প্রথমতঃ কংরক মাস প্রসিদ্ধ এম-এ-এন্ এর কারপানায় ইঞ্জিন সম্বাদ্ধ শিক্ষা লাভ করিয়া বিবাহি সিমেল ফ্রকার্টের (বৈছাতিক যন্ত্র প্রত্নতরাই) কারপানায় এক বৎসারের উপর কাজ করেন। ভাহার পারেনশিতার প্রস্থার বর্মা হিনি গত ১০৬৪ সালেলর কামুরারী মাসে "জার্মান ইলেক্ট্রিক ইঞ্জিনিয়াব সমিতির" ও গত নভেম্বর মাসে "আ্রামির কার ইলেক্ট্রক ইঞ্জিনিয়াব সমিতির" ও গত নভেম্বর মাসে "আ্রামিরকার ইলেক্ট্রক ইঞ্জিনিয়াব সমিতি"র সভা মনোনীত হইয়াছেন।

ভারতবর্গ



डीयूक (गारमयत बल्ला) भाषात्र

নিধিল-ভারত সঙ্গাত সম্বেশন-

সম্প্রতি কানীধামে নিধিগ-ভারত সঙ্গাত সম্মেল:নম্ন ষ্ট বাণিক অধিবেশন হইয়া গিয়াছে, কাশীর মহারাজা ইহার উদ্বোধন করেন। ভারতব্যের বিভিন্ন অঞ্চন হইতে বত সঙ্গীতক্ত রাজ্ঞা ও ওজুমোহণুর

ইহাতে যোগদান করিয়া নিজ নিজ গুণপ্ণ প্রদর্শন করেন: স্থানীয় **বিও**সকিকাাল স্থূলের বালক-বালিকারা গীত-ৰভা সহযোগে 'সঙ্গাতোৎপত্তি' দৃগ্য দেখাইয়াছিল। এই সম্মেশনে বাংলা দেশ হইতেও व्यत्निधिश्रं रवाशमान कत्रियाहित्सन । जैहारमञ्ज माधा करत्रक सन বি:শ্ব সম্মান লাভ করিয়াছেন; বাংলার সঞ্চীতনায়ক শ্রীযুক্ত গোপেমর বংশ্যাপাধ্যায় ভৈরব ও আশাবদীর আলাপ ও গান গাহিতা উপস্থিত সকলকে আপায়িত করেন। তিনি গানের মধ্যে অসাধারণ পাণ্ডিতা ও সাধনার পরিচয় দিয়াছিলেন। এই প্রসক্তে 'সঙ্গীত-ভারতী'র প্রতিগাতা ও অধ্যক্ষ শারুক সংরক্ষনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়, আবতুল আজিজ পা, শীবুক তুল ভচক ভট্টাচাণা ও শিবুক ভগৰানচক্ৰ সেন মহাশয়গণের নামও উল্লেখযোগ্য । এই সম্মেলনের একটি বিশেষত্ব—হারমনিরমের সাহায়ে উচ্চাক্রর স্থাত নিধিত্ব ছিল। অধিবেশনের শেষ বিন জীযক্ত রবীক্রনাথ সাকুর উপস্থিত থাকিয়া সম্মেলনকে গৌরবাদ্বিত করেন। সম্মেলনের সেতে টারী ডক্টর মতিচনা চৌধরী মহালয়ের অক্রাল্ড পরিশ্রমে ইহা সাফলামণ্ডিত হইয়াভে।

মাদ্রাজে নিথিল-ভারত গ্রাগার স্থেলন, নবম অধিবেশন-



কুমার মুণীক্রদেব রায় মহাশয়

বিগত ৮ই ও এই পৌষ মাজাজে কংগেদ ভবনে কুমার মুনীজনেব রায় মহাশর, এমৃ. এল সির সভাপতিত্বে নিধিল-ভারত গ্রহাগার সম্মেলনের নব্ম অধিবেশন মহাসমারোতে স্মেশ্পার হইরাছে। সভায় ভারতের নানা ভান হইতে প্রতিনিধি সমাগ্য হইরাছিল, সেই সঙ্গে এক চি প্রদর্শনাও হইরাছিল। তাহার ছারোজনাটন করেন মালাজের ভূতপুকা

"MECULIUM"

মেরে মাননীয় দেওরান বাহাছর জি. নারাবে আমা, কে টা. সি. আই. ই ।
অন্তর্গনা সমিতির সভাপতি মি: নরসিংর রাও সম্বর্জনাস্চক বস্তুতা
করিলে পর কলিকাতা ইন্পিরিরাল লাইরেরার লাইরেরারান মি:
আনার্মা সংল্লেন উরোধন করেন। তাহার পর সভাপতি কুমার
মূনীক্রেনের রার মহাপর উহোর সারগর্ভ অভিভারণে ভারতবর্গর
লাইরেরী আন্দোলনের ইভিহাস সংক্রেণে বিবৃত এবং এতং সন্পার্ক
করেকটি মূল্যনান প্রস্তাবের অবভারণা করেন। পরিপোর তিনি বংলন,
রানার কৃত্তির উন্নতিকরে প্রস্থাগার এবং প্রানার অঞ্চান্ত অভিগনের সহিত
সহকারিতা ও সাহচর্চ্চা আংবগক। প্রস্থাগার ভালারপে পরিচালন করিতে
হুইলে প্রয়াগারবিক্রান শিকার বাবস্থা থাকা প্রয়োজন। প্রায়ামেই
ইউক আর নগরেই ইউক, প্রত্যেব মূনিয়ান বোর্ড ও মিউনিসিগালিটির
মধ্যে অন্ততঃ একটি ভাল প্রস্থাগার থাকা আবণক। প্রয়াগারগুনির
রধ্যে পর্যাপর পুস্তুক লেন-দেন এবং ছেটেনাট প্রস্থালয়ের অভাব পূর্ণ
লক্ত ইন্পিরাল লাইরেরীতে ব্যবস্থা থাকা আবগ্যক।

অথ নৈতিক প্রসঙ্গ

ভারত-ত্রম বাণিজ্ঞা-চুক্তি —

ন্তৰ শাসন-সংখারের সংক্ল সংক্ল ব্রহ্মদেশকে ভারতবর্ষ হইতে বিভিন্ন কর। হইবে, কিন্তু উভর দেশের মধো একটি বাণিজা চুক্তি সাপিত হউবে। এই চুক্তি সম্পক্তে আলোচনা-বৈঠক নরা দিমীতে বসিরাছে (১০৪ জাত্মারী ১৯৩৫)। এই বৈঠকে ব্রহ্ম ও ভারতবর্ধের মধ্যে বাণিজ্যের ত্লনামূলক আলোচনা হইরাছে। ১৯৩২—৩০ সনে ভারতে ব্রহ্মদেশর রুগানি এইরাপ—

| প ণ্য | | লক টাকা | |
|--------------------|-----|-----------------|--|
| ধাৰ | ••• | ·a | |
| চাৰ | ••• | ৬,৩৭ | |
| ডাল | ••• | ંકર | |
| কেংরণসিন | ••• | b ~, 4 ≷ | |
| ৰেঞ্জিনো ও পেট্ৰোল | ••• | • 08 | |
| সঙ্গ কঠি | ••• | ۈى,د | |
| মেশিন হৈল | ••• | 9. | |
| শ | ••• | ٥ | |
| অক্ত কাঠ | ••• | 24 | |
| মোট (অক্সাক্ত সহ) | | ર, ૭૯ રુ | |

ঐ বংসর ব্রহ্মদেশ ভারতবর্ষ হইতে আমদ।নি করে---

| শশ্য | | | লক | है। क | |
|------------------------|--------------|-----|----|-------|--|
| করলা | | ••• | | e a | |
| কার্ণাস হ কার্ণাস ব | (3) | ••• | | 40 | |
| কাৰ্ণাদ ৰ | ৰ কোৱা | ••• | | ₹ | |
| . 39 | ধোলাই | ••• | , | >8 | |
| , | शान, दक्षीन, | FEB | * | ۹. | |

| গাটের ছালা, ধলি | ••• | >,>> |
|-----------------|-----|------------|
| হুপারী | | •8 |
| ভাষাক | | ર મ |
| ভাল | | ą• |
| ময়দা ও আটা | | ٥. |

এতদাত তৈ ১০ লক টাকার বিশেশী বস্ত্র ভারতবর্ষ হইরা ব্রহ্মণেশ বায়। ইহা সর্বস্থেত মেটি দ্বাড়োর মাত্র ৪৬৮ লক টাকা।

পাটচায নিয়গণ---

পাটির চাব কি পরিমাণ এবংসর কমানো উচিত এ-সম্পর্কে বঙ্গার গতর্গ মন্ট এইবার দির সিদ্ধান্তে উপনীত হইয়াছেন। রারান ডেভালপমেণ্ট কমিশনার ইস্তাহার জচার করিরাছেন বে, ১৯৩৪ সানে বে পরিমাণ জমিতে পাটির চাব চইয়াছিল তাহাকৈ বোল আনা ধরিরা ১৯০২ সালে পাঁচ আনা কম জমিতে পাট উৎপাদন করা উচিত।

ই ওিয়ান জ্টীমিল এ সাসি য়সন পাট হইতে নানাবিধ প প র উৎপাদন কমাইবার জস্ত গত ১৯২১ সন হইতে এক চুক্তি করিয়া সমিতির অধীনত্ত যাব তীয় কলগুলিকে শতকরা ২ টি উাত বন্ধ রাখিতে এবং সংগাহে ১০ ঘটা মার কাজ করিতে বাধ্য করিয়াছিলেন। কিন্তু গত নবেম্বর মাসে এই সমিতি শতকরা ২ ইটি তাঁত পুলিতে অমুমতি দিয়াছিলেন, এখন শতকরা আরও ২ ইটি তাঁত পুলিবার সিদ্ধান্ত করিয়াছেন।

গ্রেটব্রিটেন-ভারত চুক্তি---

মান্চাষ্টার চেঘার অব কমাস এবং কার্পাস বক্স বাবসায় দের
শক্ষ হইতে একদল প্রতিনিধি ইংলপ্তের বাণিক্সা-নচিব (প্রেসিডেণ্ট,
বোর্ড অব ট্রেড) স্তর ওরালটার রান্কিম্যানের সহিত সাক্ষাৎ
করেন। ওাহাদের প্রধান অভিযোগ এই বে, গত বংসর স্তর
উইলিয়ম ক্রেয়ার লিজ ও মি: এইচ, পি. মোদীর মধ্যে যে চুজি
ইইয়াছে তাহা অনুসরণ পূর্বক কোন সরকারী বাবস্থা হয় নাই।
লাকাশারারের আর্থ রক্ষার জক্ত ভারতবর্ষ ও লাকাশারারের মধ্যে
কোনই বাণিজাচুজি নাই—প্রতিনিধিগণ ইহাতে বড়ই ছংখ প্রকাশ
করেন। মি: রান্কিম্যান প্রতিনিধিগণকে আত্মাস দেন যে,
যত শীন্ত সত্তব একটি বাশিক্সা-চুক্তি হাহাতে ভাপিত হয় সে বিবরে
বি.শ্ব চেটা করা হয়ার হয়ব।

সম্প্রতি ভারত-সরকারের বাণিজ্য বিভাগ প্রচার করিয়াছেন যে, গত ই জাত্যারী তেট ব্রিটা স্বকারের পক্ষে প্রব ওয়ালটার রানকিমাান ও ভারত-সরকারের পক্ষে স্তর ভূপেক্রনাথ মিত লওন নগরে এক চুক্তিপত্র সামর করিয়াছেন। অটারা চুক্তি যতকাল বলব থাকিবে এই নৃত্ন চুক্তি তাহারই অনুপুরকর প অবাংহত থ কিবে। এই চক্তিপত্তে সাহটি দকা আছে। ভারতের কোন শিল্পক সংরক্ষানীতি র আমলে আনিবার প্রশ্ন ব্যন্ত আলোচিত হটবে, খেট ব্রি টানর ঐ শিহের পরিচালকগণকে ভাঁহা দর বস্তুতা উপস্থিত করিতে সাশর্শ ফ্রোগ দিতে ভারত সরকার অক্সকারবদ্ধ হট'লন। বর্ণমা'ন যে সকল ভারতীয় শিল্প সংহক্ষণ-ন তির হবিধাভোগ করিত্তেছ, ভাষাদিগের অবস্থার বিশেষ পরিবর্তন ঘটিলে, সংরক্ষণ কাল মতীত হটবার পূর্কোই স্বেট ব্রিটন সরকারের অন্যুদ্ধানে 🗗 শিহ্নকে সংৰক্ষণের স্ববিধান্ডাপ করিনত দেওরা যুক্তিযুক্ত কি না এ সম্পাক তদম্ভ করিতে এবং এরপ ভদস্তকালে মেট ব্রি টানর ঐ শিচে ৰাৰ্থ সংলিষ্ট লোকদের বন্ধনা উপস্থিত করিতে স্থবোপ দিতে ভারত मन्याच ठुकियक श्रेतिम ।

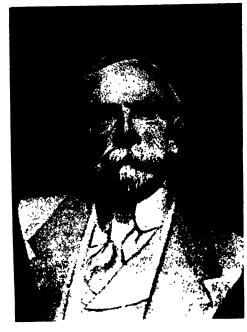
পরলোকগত ঈ বী হাভেন

ঈ বী হ্যাভেন

গ্রী অবনী জ্রনাথ ঠাকুর

দে তথনকার কথা যথন এক দিকে বড় বড় নামজাদা প্রভারিকরা (archæologist) আমাদের প্রাচীন মন্দির মঠাদির বর্ণন ও ব্যাখা দিয়ে চলেছেন, আর এক দিকে আর্ট-ক্লে প্রাচীন গ্রীক রোম্যান মুর্ত্তির মাটর ছ'াচ এবং প্রাচীন ইউরোপীয় চিত্রকলার মাঝারিগোছের मछ। नमून। (थरक नकन निरम्न निरम्न वामारनत रन: * শিল্পশিকার্থিদের ক'রে তোলা হচ্ছে ইউরোপীয় পদ্ধতিতে oil-painter, water-colour painter-নকল ব্যাফেল, টিশিয়ান হয়ে ওঠবার অভিনয় চলেছে, যেন বাঙালী ছেলে ক্রটাস সেজে মুখস্থ-করা স্পীচ আউড়ে যাচেছ আর ভাবছে নিক্লেকে সতাই সে রোম্যান সেনেটের এক জন। আমরা বে কেবলই আর্টিষ্ট হবার অভিনয় ক'রে চলেছি সেটা ভ্রমেও মনে হ'ত না কাক। তথু প্রভুতাত্তিক ব্যাখ্যা যে আর্টের সৌন্দর্য্য বোঝার পক্ষে একেবারেই কান্ডে আদে না এটা বঝলেম আমরা প্রথম হাভেন (Havell) সাহেবের লেখা থেকে—এ যেন এতকাল আমাদের ভাস্কর্যা-শি ব্লর বহিরক্ষীন অংশের দৈর্ঘ্য প্রস্থ বয়েদ ইত্যাদির হিসেব ধরা হচ্চিল আমাদের আগে প্রভুতব্বিদ্গণের ছারা--ঠিক বে-ভাবে ঘোডার দালাল ঘোডার দাঁত ল্যাজের দৈর্ঘ্য কাঠামোর শ্বাই চওডাই দিমে ঘোডার সৌন্ধ্য কনি করে সেই ভাবে কাজ হচ্ছিল। কিন্তু হাভেল সাহেব তাঁর লেখায় একাধারে প্রাক্তর, সৌন্দর্য্যতন্ত্ব, ভারতীয় শিল্পের নিগৃঢ় রুদ পরিবেশন করলেন আমাদের।

সঙ্গে সঙ্গে নির্মানিকা-পদ্ধতিও তিনি দেশী প্রথার এ-দেশের ছাত্রগণের উপযোগী ক'রে তে'লবার চেটার রইলেন। থাঁচা থেকে পাথীকে টেন বার ক'রে বনম্পতির ডালে ভাকে বসিরে দি.ভ গেলে সে থেমন মাস্যটাকেই কামড দিভে থাকে ভেমনি ঘটনা ঘটল এ-দেশীর শিল্পী ও



ন্ধ বী হ্যাভেল

কলিকাতা গ্রন্থেন্ট-এটি-ফুলে স্থাপিত হা**ভেল সাংহরের** আবক্ষমূর্ত্তির প্রতিনিপি। এই মূর্ত্তিটির নির্মাতা গ্রীবৃক্ত কে. ভে**ংটাপ্লা।** চিত্রধ,নি গ্রীবৃত মুকুলদের সৌজক্তে প্রাপ্ত।

হাতেল সাহেবের মধ্যে—আট-মূলের প্রথম শিক্ষাসংস্কার কালে। তথন আমাদের কোন শিক্ষাসদনে কিংবা বিশ্ববিদ্যালয়ে আট-শিক্ষার স্থান ছিল না,—আভ কাল নৃত্যকলা শিক্ষা নিয়ে যে হৈ চৈ বেগেছে তার চেয়ে অধিক আপত্তি উঠেছিল তগনকার কলিক তা-বিশ্ববিদ্যালয়ের কর্তানের মধ্যে শিক্ষাগারগুলোর মধ্যে ভুয়িংশিক্ষার প্রথম প্রচলন ব্যাপার নিয়ে। অক্লান্ত চেটার কলে সে-বিয়ের সফলকাম হলেন হাতেল। যে চোপে হাতেল সাহেব আমাদের দেশের শিক্ষা, দীক্ষা, শিল্প, ইতিহাস প্রভৃতি দেখে গেছেন তা এক জন ঋষির পক্ষেই সম্ভব, সেই কারণেই আমরা না ব্রালেও তিনি কগতে শ্রুদ্ধার পাত্র এবং এ-দেশের

শিল্পশিকার মূল প্রতিগাতা বলেই তার প্রতি শ্রদ্ধাঞ্জলি অর্পণ করতে হবে আমাদের।

শিক্ষ-শিক্ষার্থী ছোট ছোট ছেলেমেরেদের ডুরিংশিক্ষার জন্ত ডুরিংবৃক এবং শিল্পসৌন্দর্য্য ব্ঝিরে
আমাদের এবং বিদেশের রসপিপাত্গণের মধ্যে তুচিস্তিত
প্স্তকাদি লেগা হাভেল সাহেবের সারা জীবনের ব্রত ছিল—
এমন ক'রে আমাদের শিল্পের আর শিল্পিগণের জন্তে নিংস্বার্থ
প্রোণপণ পরিশ্রম অন্ত কে করেছে ০

হাভেল সাহেবের সঙ্গে সাক্ষাৎ শ্রীমুকুশচন্দ্র দে

তথন আমি ছেলেমানুষ—বোলপুরে পড়ি: ইণ্ডিয়ান আটের বই হাভেল সাহেবের সেই প্রথম বের'ল। তথন ভাব্তেও পারি নি বে ঠার সঙ্গে কোনদিন আমার দেখাসাক্ষাৎ বা আলাপ-পরিচয় হবে।

১৯২০ সালে ইংলওে গখন গেলুম, তখন খুব ইছা হ'ল যে হাভেল সাহেবকে একবার দেখব। লগুনে থাক্তে হাভেল সংহেব যদিও তু-চার বার এসেছিলেন, কিন্তু নানা কারণে তাঁর সঙ্গে সাক্ষাৎ ঘটে ওঠে নি। ১৯২৩ সালের অক্টোবর মাসে তিনি অ'মায় একথানি চিঠি লেখেন, তাতে রলেন, আমি ক্রফোর্চে গিয়ে তাঁর সঙ্গে দেখা করলে তিনি বড় খুণী হবেন। কিন্তু তাও নানা কারণে তখন হয়ে ওঠেনি।

১৯২৬ সালের নভেম্বর মাসে কলিকাতা হাইকোটের ভূতপূর্ব্ব জল হার জন্ উড্রক আমাকে তার বাড়িতে নিমন্ত্রণ করেন। উড্রক সাহেব সেই সমার জ্জের কাজ থেকে অবসর নিয়ে অক্যকোচে বসবাস করছিলেন। সেধানে তথন তিনি ভারতবর্থীর আইনের অধ্যাপক। তার বাড়িতে আমাদের দেশের আটের ন্তন প্রাতন অনেক রকম খ্ব ভাল ভাল সংগ্রহ আছে দেখলুম। সেই সময়ে একদিন হার জল্ উড্রক হাতেল সাহেবের সঙ্গে আমার দেখা করার জন্ম সমন্ত্রিক ক'রে এলেন। পরের দিন সকালবেলার স্ক্রামরা প্রাতর্ভোজন সেরে হেটেই হিডিংটন-হিলের দিক্তে রঙনা হলুম। মাইল-হই পথ ধেটে শহরের বাইরে—উচ্-নীচ্ থেলা মাঠে—বন-জ্লেলের ধ্রাপ-ঝাড়ের ধারে ছোট একটি ফেরোকংক্রীট ও

কাঠের তৈরি আমাদের দেশা ধরণের একতালা বাংলায় পৌছলুম। বাড়িটির নাম "Hvide Hus."

আশপাশে আর কারও বাড়ি নেই বললেই হয়,দূরে দুরে ছ-একটি বাজি দেগলুম। এই খোলা মাঠে বন-ঝোপের ধারে নিরাশা ছোট্ট একটি নৃতন ঘর, শীতকাশ, বাইরে প্রচণ্ড শীত। বাড়ির দরজার সাম্নে গিয়ে বন্ধ দরভায় স্থার জনু ঠক্ ঠক্ কর'তেই--বুদ্ধা মিসেদ্ হাভেল এ'দ দোর খুলে দিয়ে আমাদের ভিতরে ডাক্লেন। ঘরে চুকে দেখি ম্যাণ্টেলপিলের সাম্নে মাথার হাত দিয়ে ঝুঁকে পড়ে বুদ্ধ হাভেল ব'সে আছেন। বললেন, "এস ব'সো," কিন্তু ব'লে কিছুক্ষণ ঐরকম ভা.ব বদেই রইলেন। তাঁর মূথ আমরা দেখতে পেলুম না, হাতের মধ্যে গৌজা কেশহীন শাদা মাথাটি শুধু দেখতে পাঞ্চিলুম। একটি বেতের চেয়ারে ব,স্চিলেন-পায়ের গোড়ায় ছোট একটি কার্পেট পাতা. ঘরে আসবাবপত্র কিছুই প্রায় ছিল না। ঘরে আগওন নেই-কনকনে ঠাণ্ডা ঘর, ফায়ারপ্লেসের উপর একথানি ওর নিঞ্জের হাতে আঁকা ছবি—দার্জ্জিলিং থেকে কাঞ্চন-জনার দুগু। ছবিখানি শুক্নো অম্বেলপেন্টিং ছবির মত **(मश्ट मत्न इ'म। বরফের মধে। काঞ্চনজ**ল্বাই বিশেষ ক'রে দেখা গেল। পালে একটি টেবি:লর উপরে একথানি প্রকাণ্ড মোটা নিউজ কাটিং-এর বই (খবরের কাগজ থেকে কাটা প্রবন্ধাদির বই) দেখতে পেলুম। তাতে ভারতবর্ষের চিত্রকলার সম্বন্ধে যত খবর বাদ-প্রতিবাদ বেরিয়েছে সব, এবং তাঁর নিজের লেখা ধবরের কাগজে প্রকাশিত আলোচনাদিও রয়েছে। মনে হ'ল বুদ্ধ ঋষি হিমালয়ের পাদন্দে ব'সে ভারতের বিষয় নিয়ে তপ্সা করছেন!

নামাকে দেখে খুণা হ'য়ে বললেন, "আমি ভারতের কথাই ভাব্ছিলুম। তোমার ছেলেবেলার কান্ধ আমি কিছু কিছু জানি।" গগনেন্দ্রনাথ, অবনীন্দ্রনাথ ও তাঁর অস্তান্ত বন্ধুদের কথা জিজ্ঞাসা করলেন। দিল্লীর নৃত্ন রাজধানী গঠন ব্যাপার নিয়ে তিনি মনে বড়ই কয় পাজিলেন। ভারতের কত টাকা ধরচ ক'রে দিল্লীতে, নৃত্ন রাজধানী তৈরি হছিল, আর সেও লওনের অফিনে ব'সে! ভারতের বছ শিল্লী ধে কিছু কান্ধ কর্লে পাছিলেনা, ভাই নিয়ে তিনি হঃধ কর্লেন, স্তর এড়ক্ট্র

লাটনস যে প্রকাণ্ড ভূল করছিলেন, সে-কথাও তিনি বললেন। তিনি আমান্ন বার বার বললেন, "তুমি ভোমার দেশে গিরে দিল্লীতে এবং কলকাতায় শিক্ষাদানের ভার নিয়ে কাজ শিথাও, তাতে খুব বড় কাজ ও উপকার হ.ব।" লগুনে যে ইণ্ডিয়া অফিস হবে, তাও তিনি জানতেন, এবং তাতেও দেশী শিল্পীদের কাজ করা এবং দেশী ভাবের স্থাপতা হওয়া উচিত সে কথাও তিনি আমাকে বলেছিলেন। তিনি এই সব বাপার নিয়ে সেই সময়ে কাগজপত্তে খুব লেখালেখি করছিলেন; সেই সব কাগলপত্রও আমায় দেধালেন। চ'ল অ'স্ব'র সময় হাভেল সাহেব তাঁর লেখা "The Himalayas in Indian Art" ("ভারতীয় লবিত-কলায় হিমান্তি") বইগানি আমায় উপহার দিলেন; বইগানি মাথায় ছ"ইয়ে আমি বিদায় নিলাম। আমার সংক তাঁব দেখাস সাৎ এই একবারই হয়েছিল, কিন্তু ভারতের ছংখে ছঃখী এবং ভারতের চিম্ভায় নিমগ্ন সেই ঋষিম্র্বি চোখের দ'ম নে আমি এখনও দেগতে পাচিছ।

ভারতবর্ধকে নানা দেশের নানা শোকে নানা ভাবে ভালবেদে এদেছেন, কিন্তু ভারতীয় শিল্পকে হাভেল সাহেবের মত এমন গভীর ও একনিষ্ঠ ভাবে জীবনের সব সমরে কেউ ভালবেদেছেন কি না আখার জানা নেই। বিদেশীর মধ্যে তিনিই প্রাপম ভারতবর্ধের শিল্পকে বিদেশীর হাত থেকে উদ্ধার ক্ল'রে তার নিজম্ব মূর্ত্তিতে প্রকাশ হ্বার সাহায়া করেন। সেই জন্ত তিনি বর্তমান কালের সমন্ত শিল্পীরই আন্তরিক শ্রার পাত্র।

আর্মে ফ্রিন্ফীল্ড্ হাভেল গ্রীঅর্ক্সেকুমার গলোপাধাার

এক জ:তির পক্ষে অন্ত কাতির বিভিন্ন প্রাকৃতির সভ্যতার, কৃষ্টির ও শিল্পসাধনার বিশিষ্ট রস আখাদন করা একটা ছংসাধ্য ব্যাপার। জগতের নানা ছানে নানা দেশে, বিভিন্ন জাতি, বিভিন্ন পরিবেটনীর মধ্যে আপন আপন বিভিন্ন শক্তিও চিঞ্জাধারার আদর্শে, বিভিন্ন প্রকৃতির কৃষ্টি ও শিল্পসাধনার সৌধ নির্মাণ করিলা চিলিয়াছে। এই বিভিন্ন জাতি ও বিভিন্ন প্রাকৃতির সাধনার সংস্পর্শে, বিনিমরে ও প্রভাবে

বিশ্বমানবের বিরাট সাধনার কলেবর, বিধাতার বিধানে
যুগে যুগে, দেশে দেশে, পরিণতির পথে অগ্রসর হইতেছে।
বাণিজ্যের স্বার্থ, রাজনৈতিক স্বার্থ, ব্যক্তিগত স্বার্থ ইত্যাদি
নানা স্বার্থবাদের বিপাকে পড়িয়া মাফ্ষের সম্মিলিত সাধনার
জয়বাত্রা পদে পদে বাধা পায়, পদে পদে পথ হারায়। এই
জয়্ম মধ্যে এক জন নেতার আবগ্রক হয়, যিনি এই
পথ-হারান সভ্যতার পথ-প্রদর্শক হইয়া, বিভিন্ন পথের বিভিন্ন
যাত্রীদের মধ্যে পরিচয়ের ব্যবস্থা করিয়া দিয়া— য়থপ্রস্থ
যাত্রীদের একত্র করিয়া, সম্মিলিত করিয়া দিয়া— য়থপ্রস্থ
য়াত্রীদের একত্র করিয়া, সম্মিলিত করিয়া, বিশ্বমানবের
য়াত্রীর পথে আবার পরিচালনা করেন। য়ুরোপ ও ভারতের
সাধনার সম্মিলনক্ষত্রে হাভেল সাহেব ছিলেন বিধাতার
প্রেরিত এক জন বিশিষ্ট অগ্রশৃত।

ভারতের শাসনতথের উপযোগী যে কয়টি মন্ত্র ব্রিটিশ-শাসকের কার্থানায় উদ্লাবিত হইয়াছে 'ভারতীয় শিক্ষা-তথ্ তার মধ্যে সর্বাপেকা মারাত্মক ব্যাপার। হাভেল দাহেব এই শিক্ষাতম্বের এক জন যথচাশক হইয়াও, এই শিক্ষানম্বের বিরুদ্ধে যুদ্ধ ঘোষণা করিয়া বড় কর্তাদের বিরাগভাজন হইয়াছিলেন। অনেকের বিশাস, হাভেল সাহেবের প্রদর্শিত শিক্ষানীতি অবশয়ন করিয়া যুবক ভারতের জাগ্রত জাতীয়তাকে 🛊 🛭 ও সাধনার নৃতন কর্মক্ষেত্রে পরিচালিত করিলে ভারতের রাজনৈতিক সন্ধানবাদের গুনুবটার কাল-ছায়ার আবিভাব আকাশে হইত না। হাভেল সাহেব যে দৃষ্টিশক্তি লইয়া ভারতের সাধনা ও সভাতার গভীরতম অন্তর্দেশ অনুসন্ধান করিয়া তাহার রহস্ত উদ্যাটন করিয়াছেন, সাধারণ শিকিত ইংরেজের মধ্যে এই শ্রেণীর পর্যালোচকের একান্ত অভাব। দ্বাপানে লফকদিয় হীয়রন্ ও ফেনেলোসা, পারস্তে বাটন ও নিকল্সন কৃষ্টির ক্ষেত্রে যে উদার দৃষ্টির পরিচয় দিয়াছেন, ভারতের প্রাচীন সাহিত্য আলোচনাদির ক্ষেত্রে মোক্ষমুলার ও শুর উলিয়ম জোন্স যে অস্তর্ষ্টির পরিচয় দিয়াছেন তাহার তুলনায়, ভারতের শিল্প সাধনার ক্লেত্রে হাভেলের গভীরতর অধ্যায় দৃষ্টি সর্কাপেক্ষা মূল্যবান্। ভারতের শিল্পের অন্তর্নিহিত রদের অমুদদ্ধান দিয়া, ভারতীয় সাধনার শ্রেষ্ঠ ফল জগতে সুপরিচিত করিয়া, হাঙেল সাহেব ভারতের সভ্যতাকে নৃতন গৌরবের আসনে সুপ্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন। **এই हिनादि झांडिन नारह. दत्र था:581 कांछीत नार्यक** क्लान अविज्ञासन एडा हरे. उक्त मूनावान नहर। পক্ষান্তরে, ইংরেলী শিকার অভি-প্রভাবে বিশ্বাভীর ভাব-গ্রন্থ 'নিকিত' ভারতীয়কে আপনার দেশের শিল্পাধনার मर्चप्रांन উक्ताउन कतिवात शथ (प्रशाहेबा पिबा, शास्त्रन मार्ट्य छात्र: छत्र नृष्ठन दम्माञ्चरवारधत्र देवन दमाशाहेशा, জাতীরতার শ্রেঠ পুরোহিতের স্থান অধিকার করিয়াছিলেন। ভারতের প্রাচীন শিল্পের বিশিষ্ট রূপ ও প্রকৃতির রহস্ত উন্যাটন করিয়া, ক্ষগতের শিল্পের দরবারে ভারতীয় শিল্পের জন্ত শ্রেষ্ঠ আসন দাবি করিয়া, ভারত এবং যুরোপের শিকিত সমাজে নানা অপমান ও লাজনা হাভেল সাহেবকে বরণ করিতে হইয়াছিল। সর্বাপেক্ষা কৌ চুকের বিষয় এই, যে, শিক্ষিত ভারতবাসী তাঁহার ভারতীয় শিল্পের স্কতিবাদ প্রথমে বি**রো**ধের দৃষ্টিতে এবং চিরকাশই কিছু সন্দেহের চক্ষে দেখিরা আসিয়াছে। আঞ্জ শিক্ষিত ভারতবাসীদের মধ্যে পুর কম লোকই আছেন, বাঁহারা হাভেল সাহেবের ভারত-শিল্পের মূল্যের দাৰি অকপটে ও সম্পূৰ্ণভাবে মানিয়া লইতে প্ৰস্তুত আছেন। ভারতের অক্তরিম স্থান হাডেল সাহেবের জীবন ও কর্মাপদ্ধতি ভারতের সাধনার বিশিষ্ট গুণাবলীর ব্যাখ্যা ও প্রচারে একামভাবে নিয়োজিত হিল। তাঁছার লিখিত নানা গ্রন্থ পুত্তকাদিতে ভারতীয় সাধনার উপর ওাঁহার গভীর প্রেম ও ভক্তির পরিচয় লিপিবদ্ধ আছে। কলিকাতার সরকারী শিল্প-বিদ্যালয়ের অধ্যক্ষের পদ নানা কর্ত্তব্য ও নানা দারিছের পদ। এই পদের নানা কর্তব্যের মধ্যে অবসর খুঁ জিয়া লইয়া তিনি খেরপে ভারতের শিল্প-সাধনার ঐকান্তিক অনুশীলন ও সেবা করিয়াছেন তাহা বাণ্ডবিকট বিশ্বয়ের ব্যাপার। অধ্যক্ষতার অনবসরের অবকাশের মধ্যে তাঁহার ভারতীয় ক্লষ্টির নানা বিভাগের গভীর অনুশীলন ও অনুসন্ধানের চেটার পরিচয় তাঁহার রচিত এক একটি পুত্তকে ভারতের প্রাচীন শিল্প-মন্দি:র ভক্তের অর্থ্যের মত বিধামান রহিয়াছে। তাঁহার প্রথম পুস্তক 'প্রাতীন বাংশার প্রস্তর-শিল্প' (Stone-Carving in Bengal)। এই পুস্তক প্রণয়ন করিব্;র সময় তিনি প্রথম পরিচর পান, বে, প্রাচীন পদ্ধতির প্রস্তর-শিল্প ও বাস্তবিদ্যা

কুড়ি-শতকেও জীবিত আছে। এই সমরে পুরীর 'এমার-মঠে,' অপূর্ব কাককার্যাধটিত একটি নৃতন পাছশালা স:বমাত্র নির্দ্ধিত হইর'ছিল। ইতিমধ্যে অনেক শিকিড বাঙালী পুরীতে তীর্থনাতাদি ও যাভায়াত সুক্ষ করিয়াছিলেন। কিন্তু এই নৃতন পাছশালার অপুর্ন স্থাপত্যের পরিচয় হাভেল সাহেবের পূর্বে কোনও বাঙালীই দিতে পারেন নাই। ভারতের সাধনার অরুত্রিম ভক্তের দিতীয় উপহার—"বারাণদীর পবিত্রপুরী: হিন্দু-कीवन ও धर्मात किंव" (Benares, the Sacred City : Sketches of Hindu Life and Religion, 1905)। এই গ্র:इ তিনি দেখাইতে তেওা করিয়াছিলেন, যে, হিপুর জীবন ও কর্মপদ্ধতি অন্ধ-বিশাস ও কুসংস্কারের সমষ্টি-মাত্র নহে, পরস্ক, হিদুর কর্মজীবনে ও আচারের মধ্যে উচ্চ-অঙ্গের ভাবুকতা ও আধাায়িক দার্শনিকতা ফুলবের রূপ শইরা প্রক্রিত হইয়া আছে। ৺কাণীধামের সাধারণ জীবন-যাত্রার নানা খু'টিনাটির সাহাযো, তিনি হিন্দুর ধর্মজীবনের গভীর আধাত্মিকভার চিত্র অপূর্ব্ব কৌশলে ফুটাইয়া ভূলিয়াছেন। সামান্ত উপকরণে, তৈজসাধারে, স্নান-ঘাটের আকস্মিক দৃশ্যে, পথের ধারে একটি উপেক্ষিত পাথরের নক্সায়, মন্দিরের প্রবেশ-পথের স্তিমিত-আলোকের ফাঁকে ফাঁকে যাত্রীদের নানা ভঙ্গীতে, ভজনারত সাধু-সন্ন্যাসীদের নিবিট িত্রানিতে, হ্যাভেল সাহেব হিন্দুর আধ্যাত্মিক জীবনের রহজের বে সমগ্র মূর্তিটি আমাদের চক্ষে উপস্থিত করিয়াছেন, তাহা আর কোনও শিক্ষিত বিদ্বাতীয়ের পক্ষে সম্ভব হয় নাই। তাঁহার তৃতীয় পুত্তক "আগ্রা ও ডাঞ্জ" (Hand Book to Agra and the Taj, 1st ed., 1907, Revised Edition, 1912)। এট একখানি 'বাত্রী'দের উপৰোগী পরিচয় পুঞ্জিকা মাত্র। কিন্তু এই পুস্তিকায় হাভেল সাহেব নিপুণ বিলেনকের কৌশলে সহলে প্রতিপন্ন করিরাছেন, বে, মোগল-যুগের স্থাপত্য-কলা পারশুলিরের জারজ সন্তান নহে, কিংবা ইতালীর ওতাদশিলীর বিভাতীয় পরিকল্পনা নহে, পরন্ধ, ভারতের মানস-সরোবরের সহজাত শ্রেষ্ঠ সর্বসিদ্ধ। মোগল-স্থাপড্যের রসামুসদ্ধানের প্রথম-স্ক্রা এই পৃত্তিকার প্রথম পাওরা বার। এই কুল পৃত্তিকাটি প্রাচীন-পদ্মী পুরাভাবিকদের অঙ্ধবিধাসের প্রর্গে প্রচণ্ড আবাত

ন্রিরা নুতন দৃষ্টিতে ভারত-শিলের বিশ্লেষণ-রীতির প্রথম হত্রপাত করিরাছিল। ইহার ঠিক পরেই ভারত-শিল্পের রস-বাধক যুগপ্রবর্ত্তক গ্রন্থ "ভারতের চিত্র ও ভাস্কর্যা" Indian Sculpture and Painting, January 1908) প্রকাশিত হইল। এই গ্রন্থে হাভেল সাহেব ভারত-শিরের সৌন্দর্যাতবের অলৌকিক স্বাতন্ত্রা ও গৌরবের ইতিহাসে নানা শ্রেষ্ঠ নিদর্শনের প্রতিলিপির সাহায্যে সাহস ও গভাামুভূতির শক্তি দিয়া হাতে-কলমে প্রমাণ করিয়া দিলেন, বে, ভারতের শিল্পের চাবিকাটি তাহার অভিনব আধাাত্মিক ইতিহাসের মধ্যেই অমুসন্ধান করিতে হইবে। ভারত-শিলের সৌন্দর্যোর আদর্শ ও প্রকাশ-রীতি তাহার বিশিষ্ট আধ্যাত্মিক সৌন্দর্য্য-তত্ত্বের মধ্যেই নিহিত আছে। প্রাচীন প্রীক বা ইতালীর নব যুগের আদর্শের পরকলা চোখে আঁটিয়া ভারত-শিল্পের সৌন্দর্য্য বিচারের চেষ্টা, অন্ধের চেষ্টা। অর্দ্ধ শতাব্দীর অমুসন্ধানে ভারতের পুরাতাত্ত্বিক কনিংহাম, ফর্ডসন, বর্জেস ও মার্শ্যাল প্রমুখ দিগগঙ্গ পণ্ডিভগণের চক্ষে যে সভা অবগুণ্ডিভ ছিল, যথার্থ সৌন্ধর্যারসিক ও ভত্তের চক্ষে ভারতের রূপলন্ত্রী আত্ম-প্রকাশ করিলেন। ভারতে শিল্পের পক্ষ হইতে এই স্বাতন্ত্র, সম্মান ও গৌরবের দাবি যুরোপের শিক্ষিত সমাজে যে কোলাহল ও প্রতিবাদের কলরব তুলিরাছিল আৰুও তাহার প্রতিধানি স্তব্ধ হয় নাই। হাভেশ সাহেবের দাবি স্বীকার করিয়া লইয়া তাঁহার প্রদর্শিত পথে একাধিক জর্মন শিল্পবিৎ ভারতের শিল্পের অমুশীলনে যে অক্লান্ত সাধনা ও গবেষণায় আজ পঁচিশ বৎসর নিযুক্ত আছেন তাহার অমুরূপ সাংনা ভারতের কোনও শিক্ষাকেন্দ্রে অন্থাপি প্রবর্ষিত হয় নাই। কারণ, এই নৃতন দৃষ্টিশক্তির কেবল যে যুরোপীয় मनीवीसित अछास अखाव हिन छाहा नरह, हेरदिकी শিক্ষার মাদকভার সংস্থাহীন ও দৃষ্টিহীন বিজ্ঞাতীয় ভাবাপর শিক্ষিত ভারতবাসীর পক্ষে এই সভাদৃষ্টির চক্ষুলাভের একান্ত প্ররোজন ছিল। হাভেল সাহেবের অঙ্গুলীসঙ্কেতে ভারতবাসী তাহার নিজের দেশের শিল্পকে নৃতন করিয়া দেখিতে, বৃক্কিতে ও চিনিতে শিখিল। ভারতের ভাতীয়তার ইতিহাসে এই নৃতন শিক্ষার দিন, একটি নবজাগরণের তভদিন। এই ভঙদিনে হাভেল সাহেবের পরিচালনার

ভারতের নবযুগের শ্রেষ্ঠ শিল্পী অবনীস্রনাথ ভারতীয় শিল্পের নৃতন পদ্ধতির প্রবর্তন করিলেন। ভারতের প্রাচীন ও সভ্য আদর্শ নুতন রূপে যুগের উপবোগী আকারে ফুটাইর। তুলিলেন। এই প্রাচীন ভারতকে বর্ত্তমানের মধ্যে মূর্ত্তিমান ও জীবস্ত করিবার গৌরব অবনীস্ত্রনাথ বাঙালী শিল্পীদের কপালে উজ্জ্বল করিয়া লিখিয়া দিয়াছেন। বাংলার নুজন চিত্রকলার বিচিত্র ও গৌরবজনক ইতিহাস "প্রবাসী"র পাঠকদের অবিদিত নাই এবং এই নৃতন আন্দোলন ও সাধনার গৌরবের একাংশ যে 'প্রবাসী"র সম্পাদকের প্রাপ্য এ কথা সকলেই স্বীকার করিবেন। হাভেলের প্ররোচনায় করেকটি রূপর্সিক ইংরেজের উৎসাহে কলিকাতার "প্রাচা-শিব্বের ভারতীর সংঘে"র (Indian Society of Oriental Art) ex Soli et 1 এই পরিষদের নানা চেষ্টার ভারতের নৃতন পদ্ধতির চিত্রকলা দেশে বিদেশে পরিচিত হইরা হাভেলের প্রদর্শিত সক্ষেত সার্থক ও সফল করিয়া তুলিয়াছে।

১৯০৮ সালে প্রকাশিত হাভেল সাহেবের "ভারতের ভাস্বর্যা ও চিত্র" পুস্তকে যে একটু ভর্কবাদের স্থর ছিল, বে একটু প্রতিবাদের গর্জন ছিল, ভারত-শিরের প্রতি স্থায় বিচারের দাবি ছিল, পক্ষপাতী ও প্রতিবাদীর সেই স্থর সংযত ও উচ্চ শ্বর মধুর করিয়া শইরা তাঁহার বিতীয় পুস্তক প্রকাশিত হইল—"ভারত-শিল্পের আদর্শ" (Ideals of Indian Art, 1911)। তাঁহার প্রথম পুস্তকে ভারত-শিরের আদর্শের অমুসদ্ধান ভারতের প্রাচীন শিরের নিদর্শনের মধোই নিবদ্ধ ছিল। তাঁহার বিতীয় পুস্তকে ভারতের দর্শনশাস্ত্র ও প্রাচীন ধর্মসাহিত্য আলোচনা করিরা তিনি দেখাইরাছেন, যে, ভারতের প্রাচীন বৈদিক যুগ হইতে আরম্ভ করিয়া, নানা প্রভাব ও প্রগতির মধ্য দিরা আর্য্য সভ্যতার মূল ধারাট কি সাহিত্যে, কি শিল্পে সমান ভাবে আত্মপ্রকাশ করিয়াছে। ভারতের শ্রেষ্ঠ সাহিত্য ও শ্রেষ্ঠ শিল্পের আদর্শ অভিন্ন। মধ্য যুগের ত্রাহ্মণ্য ভাত্মর্য্য ও "পৌরাণিক" শিল্প বৈদিক সাধনার ভাব ও ধারা অকুর রাধিরাছে। ভার পর স্থাপত্য শিরের পালা। ১৯১০ সালে মোগল বুগের স্থাপত্য **সম্বন্ধে** এক বৃহৎ পুত্তক প্রকাশিত হইল। ইহার নান 'ভারতের স্থাপতাঃ তাহার মনতত্ত্

গঠনরীতি ও ইতিহাস" (Indian Architecture, Its Psychology, Structure and History, 1913) | 42 গ্ৰন্থে শতাধিক চিত্ৰ সহযোগে হাভেল সাহেব দেখাইরাছেন যে মোগল-যুগের স্থাপত্যরীতি পারস্ত দেশের আমদানী নহে, মোগল-যুগের নৃতন সামাজিক রান্ধনৈতিক ও ধর্ম-উপাসনার উপযোগী আকার ও রীতিতে প্রাচীন ভারতের স্থাপত্য শিল্পের নৃতন বিবর্তন। যুগে যুগে, স্থানে স্থানে, সামাজিক ও ধর্ম উপাসনার নৃতন রীতি-পদ্ধতির আবশ্রক অনুসারে কথনও ব্রাহ্মণ্যধর্ম, কথনও জৈনধর্ম, কথনও বৌদ্ধর্ম্ম, কথনও ইসলামধর্ম্মের বিভিন্ন উপাসকগণের ধর্মসাধনার উপবোগী, বিভিন্ন মন্দির, বিহার ও মসজিদ প্রস্তুত করিয়া দিয়া ভারতের স্থপতিরা তাহাদের অপূর্ব সৌন্দর্যাবৃদ্ধির ও স্ঠি-শক্তির প্রতিভার পরিচয় দিরাছে। তিনি আরও প্রমাণ করিলেন বে, মোগল বাদশাহরা ভারতের স্থাপত্য শিল্পীদের নৃতন ক্ষেত্রে নিযুক্ত করিয়া ভারতের প্রাচীন শিল্পবিদ্যাকে উন্নতি ও পরিণতির পথে চালিত করিয়াছিলেন এবং ব্রিটিশ শাসনকালেও সেই প্রাচীন শিলের ধারা সম্পূর্ণ শক্তি ও প্রতিভা শইরা জীবিত রহিরাছে এবং এই প্রাচীন শিল্পধারাকে নৃতন যুগের প্রশস্তভর ক্ষেত্রে নিযুক্ত করিরা ভাহার নৃতন পরিণভির অবসর দেওরা ব্রিটিশ সরকারের অবশ্র কর্ত্তব্য। এই স্থক্তে হাভেল সাহেব বিলাতে এমন এক বুহৎ আন্দোলন উপস্থিত করিলেন, बाहात करन म्हादकोती अरु रहें धक्छि विस्तव क्रिमन বদাইরা বর্তমান কালে ভারতের স্থাপত্য শিল্পের অবস্থা সম্বন্ধে অনুসন্ধান ও পরিচয় লইতে বাধ্য হইলেন। গর্ডন সাভার্সন তাঁহার লিখিভ রিপোর্টে (Modern India Building, 1913) ছাভেল সাহেবের দাবি স্বীকার করিয়া অভিমত প্রকাশ করিলেন যে, ভারতের স্থপতিরা ভাছাদের প্রাচীন শিল্পের ধারা ও গৌরব অকুর রাখিয়া এখনও জীবিত বহিরাছে এবং অছত্রপ সুযোগ পাইলে মোগল-যুগের মাপতা কলা অভিক্রম করিয়া নববুগের উপবোগী নৃতন ধারার স্থাপভ্য শিরের প্রবর্তন করিবার সামগ্য ভারতশিলীরা (मशरिए शांत्र । **এই मावित সমর্থন করি**রা হাভেল সাহেব তাঁহার বিভীয় প্তক নিধিলেন ১৯১৫ সালে। প্তক থানির নাম 'প্রাচীন ও মধ্য মুগের ভারতীর স্থাপত্য শিল্প'

(The Ancient and Mediaeval Architecture of India, 1915)। এই পুতকে তিনি বৌদ্ধ, ব্ৰাহ্মণ্য ও জৈন মনিরাদির রূপ বিশ্লেষণ করিয়া দেখাইলেন, যে. ভারতের অলৌকিক শিল্পবৃদ্ধি প্রাচীন 'ভাষা' ও ধারা অকুর রাধিরা নিতানুতন রূপে আত্মপ্রকাশ করিরাছে এবং ভাহার স্টের প্রভিভা এখনও জীবস্ত ও জাগ্রত আছে এবং নৃতন ক্ষেত্রে নৃতন সুবোগের অপেক্ষা করিছেছে। ব্রিটিশ সরকার ভারতের সভ্যতার বিকাশ ও পরিণতির স্থােগ না দিলে, ভারতবাসীকে তাহার নূতন জীবনের নানা ক্ষেত্রে আত্মপ্রকাশের পথ না দিলে, ভারত ও ভারতীয়দের উপর বিশেষ অন্তায় বিচার করা হইবে। হ্রাভেল সাহেব বিশ্বাস করিতেন বে, কেবল চাক্ল কলার পুনক্ষানে নহে, পরস্ত নিত্য-ব্যবহার্য্য নানা শিল্পাদির (handicrafts) পুন: সংস্থাপনের ব্যবস্থা না হইলে ভারতের অন্ধ-সমস্তার সমাধান হওয়া অসম্ভব এবং এই হস্ত-জাত শিল্পের পুনক্ষারের প্রথম চেষ্টা ও উপায় হাতের তাঁত ও বস্ত্রশি**রে**র (hand-loom) উন্নতি সাধন। কিন্তু এই বস্ত্রশিক্ষের উন্নতির উপদেশ দিয়াই তিনি ক্ষান্ত হন নাই। আপন উদ্যোগে "Havell-Hattersley Loom" নামক উন্নত-পদ্ধতির তাঁতের আমদানী করিয়া তিনি হাতে-কলমে প্রমাণ করিয়াছিলেন, কিরূপে ভারতের প্রাচীন বয়ন-শিক্ষ মিলের যন্ত্ৰ-চালিত তাঁতের প্রতিবোগিতার আত্মরক্ষা করিতে পারে। এই সম্বন্ধে তাঁহার প্রচেষ্টার ফল তাঁহার "Hand-loom Weaving" প্রবন্ধ লিপিবদ্ধ আছে। 'বয়নশিলের উন্নতিই ভারতের অন্ন-সমস্তার একমাত্র পথ'-এই বাণী হাভেল সাহেব মহাম্মা গান্ধীর অস্ততঃ পনর বৎসর পূর্ব্বে প্রচার করিয়া গিয়াছেন।

কেবল শিল্পের ক্ষেত্রে নহে, শিক্ষার ক্ষেত্রে স্থাভেন সাহেবের আন্দোলন ভারতের স্থায় দাবীর সমর্থন করিরাছে। ভিনি পুন: পুন: এই কথাই গবর্ণমেন্টকে উপদেশ দিরাছিলেন বে, ভারতে প্রচলিত ব্রিটশ শিক্ষাতম্ভ ভারতীয় সভ্যতা ও সাধনার বিকাশের উপযোগী নহে, পরস্ক ভারতীয় সাধনার হানিকারক। ভারতের সভ্যতা কেবল ভারতবাসীর সম্পত্তি নহে, পরস্ক, যুরোপের স্ভ্যতার নানারপ যাধির আরোধ্যের অবার্থ ঔবধ এবং এই হিসাকে ভারতের সভাতার বিকাশ ও বিশ্বতি-সাধন ভারতের ভাসরক্ষক হিসাবে ব্রিটিশ সরকারের অবশুকর্ত্তবা। ব্রিটিশ সরকারের ভারতীর শাসনরীতির এক্ষপ নির্ভীক সমালোচক সে সমরে কংগ্রেস দলের মধ্যেও বোধ হয় খুব অক্সসংখ্যক লোকই ছিলেন।

শিকা ও শিল্পের কেত্রে ভারতের পক হইতে সম্পূর্ণ স্বাতন্ত্রোর দাবি হাভেল সাহেবই বোধ হয় প্রথম উপস্থিত করেন। শেষ বয়সে ভারতের শিক্ষার ক্ষেত্রে ভিনি ছুইটি পান দিয়া গিয়াছেন। এই হুইটি নূতন পদ্ধতিতে শিখিত ভারতের ইতিহাস। প্রথমটির নাম ঃ—''আর্য্য শাসনের ইতিহাস" (History of Aryan Rule in India). বিতীয়টি স্থল-পাঠ্য পুস্তক---"ভারতের সংক্ষিপ্ত ইতিহাস" (A Short History of India, 1924)। এ-কথা শিক্ষিত ভারতবাসী সকলেই জানেন, যে, ইংরেঞ্কের লিখিত ভারতের ইতিহাস নানা ভুল**ভ্রান্তি প্রমাণাদির** পরকলার মধ্য দিয়া অন্ধ বিশ্বাস ও আপনাদের জাতীয় অহঙ্কারের লেখনীতে লিখিত এক উভ্তট রচনা। ভারতের সভাতার মর্মান্থান বাঁহারা খুঁজিয়া পান নাই, ভারতের সভাতাকে যারা শ্রদ্ধার চক্ষে দেখিতে শিখেন নাই, তাঁহাদের পক্ষে ভারতের ইতিহাস রচনা যে বিজয়না মাত্র হ্যাভেল সাহেব তাঁহার এই তুইটি পুস্তকে উত্তমরূপে প্রমাণ করিয়াছেন। তিনি ভারতের ঐতিহাসিক ঘটনাবলীর শর্মস্থান অনুসন্ধান করিয়া দেখাইতে চেষ্টা করিয়াছেন যে, ভারতের সামাজিক নীতি, সাম্রাজ্ঞানীতি, শাসননীতি ও धर्मनीिक किकार यूरा यूरा, खालाम खालाम, नाना ক্ল্যাণের মৃষ্টিতে আত্মপ্রকাশ করিয়াছে; ভারতের সভ্যতাকে সার্থক করিরাছে, সফল করিয়াছে।

তিনি আরও দেখাইয়াছেন যে, পাঠান ও মোগল-যুগের বিদেশী বাদশাহরা তাঁহাদের তথাকথিত যথেচ্ছাচারী শাসন-তন্ত্র দারা আর্য্য সভ্যতার বিকাশ-লাভের বাধা প্রদান করা দুরে থাকুক, তাঁহাদের সমস্ত শক্তির দারা আন্তরিক ভাবে তাহার পরিণতির সাহায্য করিয়াছেন এবং নুতন নুতন পথে তাহার সফলতার অবকাশ দিরাছেন। তিনি নানা প্রমাণ অবলম্বন করিয়া অক্ষরে অক্ষরে প্রমাণ করিয়াছেন, যে, টুগ্লকের শাসন, সেরসাহের শাসন, আকবরের শাসন বিজেতার শাসন নহে, ভারতীয় নীতিতে, ভারতীয়ের সম্পূর্ণ সহযোগিতায়, ভারতের কল্যাণের উদ্দেশে ভারতীয় রাজার ধর্ম-শাসন।

ভারতের সভ্যতার মূলস্ত্র ও আদর্শে তাঁহার যে গভীর ও অবিচলিত বিশ্বাস ছিল তাহা কোনও ভারতবাসী অপেক্ষা কিছু মাত্র হীন নহে। এই বিশ্বাস ও গর্ম তাঁহার একটি মাত্র বাণীতেই ফুটিয়া রহিয়াছে,—

"ভারতবর্ধ, আল তাহার শ্রেষ্ঠ জাতীর আহর্শ হইতে বিচ্নুত হইরাই বিৰমানবের সভার জাতীরতার আসন হারাইরাছে এবং ভারতবর্ধ আবার উচ্চ আসনে তথনই প্রতিষ্ঠিত হইবে, বখনই ভারত বর্তমান ব্রুরোপ বে আহর্শে তাহাকে মৃগ্রু করিরাছে তাহা অপেকা উচ্চতত্ব আনর্শের পতাকা ভাহার নিজের লক্ত সমর্শ মানবের কলাপের লক্ত উচ্চ করিরা তুলিরা ধরিবেশ ("India has sunk in the scale of natio s, because, she has been false to her highest ideals, and India will rise again, when she holds up for herself, and for humanity, higher ones than modern Europe now brings her.")

ভারতের সভ্যতার এইরপ দরদী প্রেমিক, ভারতীয় সাধনার আদর্শের এরপ বিশ্বাসী ভক্ত, ভারতীয় শিল্প ও কৃষ্টির এরপ সক্ষয় ও স্থনিপুণ ব্যাখ্যাকার, ভারতের সর্বাঙ্গীন কল্যাণের এরপ অকৃতিম স্কান, নবজাগরণের ও দেশ-পূজার এরপ স্থাণাগ্য প্রোহিত ভারতের সমসাময়িক ইতিহাসে অতি তর্ন্ত দেখা দিয়াছে। কটন, ওরেভারবরণ, বেশান্ট, নিবেদিতা প্রমুখ ভারতের অভান্ত বিদেশী বন্ধুগণের শ্বৃতি বে-সন্মানের আসনে অধিটিত, তাহারই পার্শে ভারতের এই বরেণা বন্ধুর শ্বৃতি-চিত্ত স্থাত্র প্রভান্ন ইকাল উজ্জ্বল থাকিবে।

চার অধ্যায় •

প্রীরাজশেখর বস্থ

বিখ্যাত লেখকের গল্প পড়বার সময় কেউ কেউ একটা ভুল ক'রে ফেলেন। লেখক তাঁর পাত্র পাত্রীকে দিরে বে কথা বলান ভার অনেক কথা পাঠক অকারণে লেখকের মতামত ব'লে মনে করেন। গল্পে যদি সেকেলে রীতিতে কেবল আদর্শচরিত নায়ক নায়িকা আর থাঁটী হুরাত্মা চিত্রিত হয় তবে লেখকের টান কোন দিকে তা বুরুতে বাধা হর না। কিন্তু লেখক যদি এমন চরিতা আঁকেন যারা স্বাভাবিক সদসৎ-নরধর্মী এবং যাদের মনের স্কন্ম দল মনোহর ভাষায় প্রকাশ পার, তবে অসাবধান পাঠক পাত্র পাত্রীর অনেক উব্জি নির্বিচারে লেথকের উপর আরোপ ক'রে বসেন। যে **লেখ**ক অনতিখ্যাত তাঁর রচনা পড়বার সময় এই ভূল বড় একটা হয় না, কারণ পাঠকের কৌতৃহল পাত্র পাত্রীর উপরেই নিবদ্ধ থাকে, লেখক অন্তরালে থেকে নিস্তার পান। কিন্তু যেখানে লেখক স্বয়ং পরম কৌতৃহলের বিষয়. সেখানে পাত্র পাত্রী সাধারণের কাছে সব সময়ে স্থবিচার পায় না। পাঠক ছত্তে ছত্তে লেখককেই সন্ধান করে এবং তার ফলে সৃষ্টিকেই স্রষ্টা ব'লে ভূল করে। রবীক্রনাথের পাত্র পাত্রী এই কারণে একটু বিপন্ন। ভাই একদল পাঠক সন্দীপের উক্তি সইতে পারেন না এবং আর এক দল অসুধোগ করেন যে গ্রন্থকার কমলার সহজ নারীধর্ম হঠাৎ ঘুচিয়ে দিয়ে বেচারীকে সনাতনী সভী বানিরেছেন।

রবীক্রনাথ পূর্বে যে সব গল্প লিখেছেন ভাতে তিনি

নিরপেক্ষ স্রষ্টা, তাঁর পাত্র পাত্রীর মতিগতির তিনি অমুমস্তাও নন অবমন্তাও নন। কিন্তু 'চার অধ্যার' গল্প ভিন্ন পদ্ধতিতে লেখা। ভার লকণ-ভাভাস' শীর্ষক মুখবন্ধ। তাঁর কোনও আধুনিক গল্পে মুখবন্ধ নেই। 'চার অধ্যায়'এর উদ্ধেশ কি তার আভাস প্রথমেই পাওয়া বায়। গল্পের প্রধান পাত্র পাত্রীরা ঘোরাচারী বিপ্লবী। রাজনৈতিক বিক্ষোভের ফলে আমাদের দেশে যে বিজ্ঞাতীয় হিংস্রতা দেখা দিয়েছে, গ্রন্থকার তারই ব্যর্থতা চিত্রিত করেছেন। শরৎচক্রের 'পথের দাবী' গল্পেও নরনারীর সাক্ষাৎ পাই। কিন্তু ভাভে ষে বিবরণ আছে তা গল্পের স্থা মাত্র, মুখ্য বিষয় নয়। সেই নিরীহ গল্পটির প্রধান ব্যাপার চরিত্র-চিত্রণ, আর কিঞ্চিৎ রোমহর্ষণ। 'চার অধ্যায়' গল্পের ধারা অন্ত রকম। নায়ক অতীক্ত্র নায়িকা এলা ও উপনায়ক ইক্সনাথের বিচিত্র আলাপে তাদের চরিত্র ও মানসিক ছন্দ্র যেমন আমাদের চোখের সামনে ফুটে উঠেছে, সেই সঙ্গে লেখকের মতামতও निः भारतस्य थता मिरावर्षः। व्यापन्धर्णातं क्रप धरत व्यामारमञ দেশে যে সব অপধর্ম মাথা থাড়া করেছে, গ্রন্থকার তার উপর তাঁর তীব্র বিরাগ গোপন করেন নি।

এই গল্পে রবীশ্রনাথ একাধিক মৌচাকে কাঠি দিরেছেন, তার ঝকার শোনবার জন্ত আমরা অপেকা করছি।

^{*} চার অধ্যার |—রবীজনাথ ঠাকুর প্রদীত । বিবভারতী প্রস্থালয় কর্ত্তক প্রকাশিত। ৭২^{০০}× ০০০ পৃষ্ঠা। মূল্য ১০ ও ১৪০।



বঙ্গের গবন্মে কি-তপশীলভুক্ত জাতিসমূহ

গত ২৮শে ডিসেম্বর বঙ্গের গবর্মেণ্ট-"তপশীশভ্রু জাতিসমূহে"র একটি তালিকা বাংলা-গবর্মেণ্ট প্রকাশ ক্রিয়াছেন। তৎসম্বায় নির্দারণ্টিতে বলা হইয়াছে—

১৯৩৩ খ্রীষ্টাব্দের ১৬ই জামুমারী তারিথের নং ২২২ এ, আর,
নির্দ্ধারণ দারা বঙ্গদেশের গন্তর্গমেট তপদীলভুক্ত জাতিসমূহের একটি
থসড়া তালিকা প্রকাশিত করিরাছিলেন। অবনত শ্রেণীসমূহের
ভোটাধিকার সবজে সাম্প্রদারিক মীমাংসার প্রথমে যে-সকল প্রভাব
ছিল ও তৎপরে পুণাচুক্তি অমুমারী উহাদের যে পরিবর্ত্তন হইরাছিল, তাহা কার্য্যে পরিপত করিবার জন্য যে প্রণালী অবলবন
করা হইবে তাহার ভিত্তিস্বরূপ গ্রহণার্থ ঐ তালিকা প্রভাবিত
হইরাছিল। ঐ সকল জাতির সামাজিক ও রাজনৈতিক অবনত
অবস্থা ও উহাদের বার্থ রক্ষার্থ উহাদিগকে বিশেব ভোটাধিকার
দেওরা আবশ্রক বোধে উক্ত ভালিকা প্রস্তুত করা হইরাছিল।

২। উক্ত তালিকার কোন একটি বা একাধিক জাতিকে অন্ততুক্ত করা বা না-করা দখনে মতামত জানাইবার জন্ম গভানিকৈ
সাধারণ প্রতিষ্ঠান, জাতিবিলেবের সমিতি বা বাজিবিগকে অন্তরোধ করিরাছিলেন। বিভাগের কমিশনার ও জেলার কর্মচারীদিগকে ভাহাদের বিভাগে বা জেলার বে-সকল জাতির লোক
বেশী সংখার আছে সেই সকল জাতির বিষর পরীকা করিরা
দেখিতে ও গভানিক নির্মিষ্ট আদর্শের হিসাবে ঐ সকল জাতি
তালিকাভুক্ত করা সলত কি না সে-বিবরে ভাহাদের মতামত প্রকাশ
করিতে বলা হইরাছিল। ভাহাদিগকে আরও বলা হইরাছিল বে,
বাহার নাম ভালিকাভুক্ত করা হর নাই কিন্তু ভাহাদের মতে
তালিকাভুক্ত হওরা উচিত, ভাহাদের বিভাগে বা জেলার এরগ
কোন জাতি আছে কি না তাহা জানাইবেন।

০। গভাগেবেটের আহ্বানের উত্তরে সাধারণ প্রতিষ্ঠান, কাতি-বিশেবের সমিতি ও ব্যক্তিদিপের দিকট হইতে গভাগেবট বহু আবেষন প্রাপ্ত হইরাছেন। ঐশুলি এবং বিভাগীর কমিদনার ও কোল কর্মচারীদিপের মতামত এক্ষণে বিশেবভাবে বিবেচনা কছিল। দেখা হইরাছে, এবং এতৎসংলগ্ন কাতিসমূহের তালিকাট বলবেশের কন্ত তপশীলভুক্ত কাতিসমূহের তালিকার অর্ভাভুক্ত হইবার বোগ্য বলিরা মহামাক্ত সমাটের গভাগিবটের বিবেচনার কন্ত স্থাারিশ করিবেদ বলিরা গভাগিবটি ছির ক্ষিরাছেন।

উদ্বত বাংলা বাকাঞ্চলি সরকারী দপ্তর হইতে প্রাপ্ত।

"ভগশীলভুক্ত জাতিসমূহের তালিকা" নীচে দিতেছি। তাহাতে সাডাভরট জাতির নাম আছে। তাহাবের মধ্যে বে-সব জাতির মধ্য হুইতে ভগশীলভুক্ত হওয়ার বিক্লছে

গবন্মে'ণ্টের কাছে আপত্তি গিরাছিল, তাহাদের নাম ও লোকসংখ্যা তাহার পর দিব।

| • | | | |
|---------------|--------------------|------------------|--------------------|
| | তপশীলভুক্ত জাতিস | | |
| আগরীরা | बाश् मो | ৰাহেলীয়া | ৰাইতী |
| বাউন্নী | বেদিরা | বেলদার | বেরুরা |
| ভাতিয়া | ভূঁ ইমালী | ভূঁ ইয়া | ভূমিজ |
| বিন্দ | বিন্ ৰি য়া | চামার | ধেত্রসাম্ব |
| ধোৰা | দোন্নাই | ডোম | দো শাধ |
| গারো | ৰা সী | গো প রী | হাড়ী |
| হাজ: | হালালখোর | হরি | হো |
| वाणिश के बर्ड | ৰালোমালো ৰা মাৰে | না কাদার | কাণ |
| কাধ | কাদরা | কেওক্লা | কাপুরিরা |
| করেক। | কান্থা | কাউন্ব | খরস্থা |
| থাতিক | কোচ | কোনাই | কোন্তার |
| কোডা | কোটাল | লালবেগী | লোধা |
| লোহার | মাহা র | মাহ লী | মাল |
| শালা | শ্মাল পাহাড়িয়া | মেচ | মেশব্ |
| भूठो | মু ণা | মূসহর | নাগে সি য়া |
| नमः भूज | न्हे | মুনির: | প্ৰয়াপ্ত |
| পলিয়া | পাণ | পাসি | পাটনী |
| পোদ | বুভা | রা জবং শী | দাকবার |
| সাওতাল | ৰ্ভ ড়ি | সূত্রধন্ন | ভিন্নন |
| ভুন্নি | - , | | |

১৯৩৩ সালের ২৯শে আগষ্ট বলীর ব্যবস্থাপক সভার একটি প্রশ্নের উন্তরে বাংলা-গবন্মে থেটর পক্ষ হইতে শুর উইলিরম প্রেন্টিস্ বলেন, বে, নিরমুক্তিত ছাব্বিশটি জাতির মধ্য হইতে তপশীলভুক্ত হওরার বিরুদ্ধে আপত্তি আসিরাছিল।

| ৰালো মালো কালোআৰ | ১,৯৮, ৽৯৯ ১৩,৫৪ • | ওয়াওঁ পোদ | ` ૱૱ ,১৬১ ৬,6 4,4৬ ১ |
|---------------------|------------------------------------|---------------|--|
| वानियं देवर्ड | ٠, ٤२, • ٩٩ | পুলিয়া | 5×,2•• |
| হাড়ী | >,02,80> | নাৰ ` | 0,58,608 |
| cetal | २,२ »,७ १ २ | নৰ:পুঞ | ₹•,৯8,৯৫٩ |
| ভূ ইমালী | 92,608 | নাগৰ | ` > %, > \$ 8 |
| ৰাগু দী | a,69,49• | ৰু চী | 8,>8,22> |
| লাতি | লোকসংখ্যা | ৰাতি | লোকসংখ্যা |
| | | | |

কোন্তার :৩০ রাজু ৫৬,৭৭৮ বোধা ১১,০০১ শারিদ গৈশা ৩৩০ নোহায় ৫০,১৮২ তফ্লি ৩,৮৫০ মারা ১,১১,৪২২ তভ্তী ৭৬,৯২০

এই ছাবিবশটি জাভির লোকদের মোট সংখ্যা ৮১,৬৯,৬৬৯। লোকসংখ্যাগুলি আমরা সেজস্ রিপোর্ট হুইতে বসাইয়া দিয়ছি। গবন্দেণ্ট "অবনত" জাভিদের যে খসড়া ভালিকা প্রকাশ করিয়াছিলেন, ভাহাতে ৮৭টি জাভির নাম ছিল। ভাহাদের মোট লোকসংখ্যা এক কোটির কিছু উপর ছিল। সুভরাং দেখা যাইতেছে, ভাহাদের মোটামুটি চারি-পঞ্চমাংশ লোকদের অনেকে অবনত বলিয়া গণিত হুইতে আপত্তি করিয়াছিল। যে ছাবিবশটি জাভির মধ্য হুইতে আপত্তি করিয়াছিল। যে ছাবিবশটি জাভির মধ্য হুইতে আপত্তি করিয়াছিল। বে ছাবিবশটি জাভির মধ্য হুইতে আপত্তি করিয়াছিল। বা ছাবিবশটি জাভির মধ্য হুইতে আপত্তি করিমাছিল। কাভিদের সম্বন্ধ আপত্তি না শুনিয় ভাহাদের নাম "অবনত" জাভিদের পাকা ভালিকার অন্তর্ভুক্ত করিয়াছেলঃ—

| ৰাতি | লোকসংখ্যা | বাতি | লোকসংখ্যা |
|------------------|-------------------|--------------|----------------------------|
| वात्र मा | ৯,৮৭,৫৭• | লোহান্ত্ৰ | e •, : ৮২ |
| जू हेमानी | 92,608 | <u> শালা</u> | ১,১১,৪২ ২ |
| त्यांचा | ২,২ ৯,৬৭২ | সূচী | 8, ३ 8, ३ २३ |
| হাড়ী | > ,७२, ৪•> | নম:শুদ্র | २•, ৯৪,৯৫ ৭ |
| জালিয়া কৈৰ্ড | ٠, ٤٩, •٩٠ | মুনিয়া | २४,:•• |
| ঝালো মালো | ۵, ۵۴,۰۵۵ | ওরাও | २,२৮,১७১ |
| কোঙাম | ડલ્લ | গোদ | ৬,৬৭,৭৩১ |
| লোধা | 33,033 | द्राख्य:नी | ১৮, ৽৬,৩৯ • |
| | | छ ड़ो | 96,25 · |

ইহাতে দেখা যাইতেছে, যে-সব জাতির লোকসংখ্যা
এক লাখের বেলী, তাহাদের মধ্যে কেবল কপালী ও
নাথদের সম্বন্ধে সরকার আপত্তি শুনিয়াছেন, আর কাহারও
সম্বন্ধে শুনেন নাই। সকলের চেরে সংখ্যার বেলী যাহারা
তাহাদের সম্বন্ধে আপত্তি মোটেই শুনেন নাই—যথা নমঃশুদ্র,
রাজবংলী, পোদ, বাগ্দী, জালিয়া কৈবর্ত্ত, মূচী, ধোবা,
ইত্যাদি। তাহাতে মনে হইতেছে, যে-সব সরকারী কর্মচারী
তালিকাপ্তরু জাতিসমূহের সামাজিক মর্য্যাদার বিচার
করিয়াছিলেন, তাহারা অনেকটা এই মানদণ্ড ব্যবহার
করিয়াছিলেন, বে, যাহারা সংখ্যার বেলী তাহারা নিশ্রুর
অবনত। অবশ্র সকল জাতি সম্বন্ধে এই নির্ম প্ররোগ
করিল তাহারা নিভান্তই ধরা পড়িয়া যাইতেন বলিয়া

বোধ হর ছই-এক স্থলে ব্যতিক্রম করিরাছেন!! তাঁহাদের মনে জ্ঞাতসারে বা অজ্ঞাতসারে একটা এই রূপ ঝোঁক থাকার আভাস ইহা হইতে পাওরা যার, বে, "অবনত" জাতিদের লোকসংখ্যা কম দেখাইতে দেওরা চলিবে না।

त⁸ श्रेताञ्चे %

আমরা আগে আগে অনেক বার বলিয়াছি এবং আবার বলিভেছি, যে, যিনি আপনাকে "অবনত" বলিয়া খীকার করেন না, এরূপ এক জন লোককেও অবনত তালিকাভূক্ত করিবার অধিকার কাহারও নাই, অথচ গবন্দেণ্ট এরূপ বিস্তর লোককে "অবনত" বলিয়া অভিহিত করিবাছেন।

মাক্রাজ প্রেসিডেন্সীতে বে-রকমের অস্পৃগু জাতি আছে বলে সে-রকমের অস্পৃগু অল্পই আছে। অথচ মি: ম্যাক্র-ডোনাল্ডের বঙ্গের হিন্দুদিগকে বিশ্ভিত ও হীনবল করা চাই-ই! স্তরাং বঙ্গের ও অন্ত কোন কোন প্রাদেশের পক্ষে ফরমাইস হয়, বে, এখানে সামাজিক ও রাক্ষনৈতিক হিয়াবে অবনতদের একটা ভালিকা প্রস্তুত করিতে হইবে।

বাংলা-গবর্মেণ্ট যথন ১৯৩০ সালের জানুয়ারী মাসে থসড়া তালিকা বাহির করেন, তথন লিথিয়াছিলেন, যে, তেলী ও কলুদের মত জাতিদিগকে ঐ তালিকাভুক্ত করা হয়নাই, কারণ তাহাদের নিকট হইতে আপজ্ঞি আসিয়াছিল। কিন্তু এই স্তায়সক্ষত বিচার ১৭টি জাতি সম্বন্ধে করা হয়নাই, যদিও তাহাদের মধ্য হইতেও আপজ্ঞি আসিয়াছিল। ইহা সরকারী অসক্ষতির একটি প্রমাণ।

"অবনত" জাতিদের জন্ত বলীয় ব্যবস্থাপক সভায় বিশটি আসন রক্ষিত আছে। কিন্তু "অবনত" ''তপশীলভুক্ত'' জাতির সংখ্যা ৭৭টি। ইহার মধ্যে নমঃশুদ্ধে ও অন্ত ত্ই-একটি জাতি নিশ্চয়ই প্রভ্যেকে একাধিক আসন দখল করিতে পারিবে। কিন্তু ইহা না ধরিয়া যদি মনে করা যায়, যে, কোন জাতির লোকই একটির বেশী আসন অধিকার করিতে সমর্থ হইবে না, তাহা হইলেও কেবল ত্রিশটি জাতির ব্রিশ কন লোক ব্যবস্থাপক সভার সভ্য হইবে, বাকী ৪৭টি জাতির এক জনও একটি আসন পাইবে না—ভাহাদের "জা'ত যাইবে অণচ পেট ভরিবে না।" সোজা বাংলার বলিতে সেলে, ভাহারা সরকারী ভালিকার ''নীচ জা'ও" ও "ভোট লোক" বলিয়া গণ্য

হইবে, কিন্তু ব্যবস্থাপক সভার সভাত্ব রূপ প্রশোভনের জিনিষের কোন অংশ পাইবে না।

আমরা সম্পাদক রূপে জানি, "প্রবাসী"র কোন শেখকের কোন গল্পে যদি কোন পাত্র বা পাত্রী অপর কোন পাত্র বা পাত্রীকে "ছোট লোক" বলিয়া উল্লেখ করে. তাহা হইলে এইরূপ অবজ্ঞাব্যঞ্জক কথায় অভিহিত কাল্লনিক বাব্দিদের স্বন্ধাতীর ব্যক্তিরা "প্রবাসী"র আক্রমণ করেন। কিন্তু সেই সব স্থাতিরই মধ্যে কোন কোন জাতি এখন সরকারী "তপনীলভুক্ত" হওয়াতে আপত্তি করিতেছেন না, যদিও "তপশীলভুক্ত" মানে সোজা কথায় "নীচ জা'ত" বা "ছোট লোক"। গল আছে, বে, কোন এক ব্যক্তি পাত্ৰকা দারা প্রহত হইয়া আপনার মনকে এই বলিরা প্রবাধ দিয়াছিল, যে, ফুডাটা ডসনের ফুডা। যাছাদের খদেশবাসীরা তাঁহাদিগকে "নীচ জা'ত" বলিলে তাঁহারা কুদ্ধ হন (এবং তজ্জ্জ কুদ্ধ হওয়া পুবই স্বাভাবিক ও ন্তায়সঙ্গত) এবং আপনাদের দ্বিদ্ব প্রমাণ করিতে চান, ইংরেজরা তাঁহাদিগকে পরোক্ষভাবে "নীচ জা'ত"-তালিকাভুক্ত করিলে দেখিতেছি সকলের थुनी इन ।

"তপশীলভুক্তা" কতকগুলি জাতির কতকগুলি লোক বে তপশীলভুক্ত হইতে আপত্তি করিয়াছিলেন, তাহা তাঁহাদের বহুবৎসরব্যাপী দাবীর অনুষায়ী হইয়াছিল। এই প্রকারে সৃষ্ঠি রক্ষার জন্ম তাঁহারা প্রশংসার্হ।

১৯৩১ সালের বলের সেলাস রিপোর্টে দেখিতে পাই, কতকগুলি জাতি ব্রাহ্মণত ক্ষত্রিরত্ব বা বৈশুত্বের দাবী করিয়ছিলেন। তাঁহারা কখনও অবনতত্ব স্বীকার না করিয়া পূর্বে দাবী বজার রাখিলে তাঁহাদের কোনই ক্ষতি হইবে না, বরং তাঁহারা আত্মসম্মান রক্ষা করিতেও আত্মপ্রদাদ লাভ করিতে পারিবেন এবং সঙ্গতি রক্ষার ক্ষত্র অপরেরও সন্মানভাজন হইবেন। করেকটি জাতি আপ্নাদিগকে কি নামে অভিহিত করেন, তাহা নীচে লিখিত হইল।

বাগদী, ব্যক্তক্তির; ভূঁইমালী, বৈশ্রমালী; ঝালো, বলক্তির; মালো, মলক্তির; নম:শুজ, নমত্রাহ্মণ, নমত্রর; পোধ, পৌও,ক্তির; পুঙ্কী, পুঙ্কতির; রাজবংশী, রাজবংশী ক্ষত্রির বা ক্ষত্রির রাজবংশী; ও ড়ী, শৌতিক ক্ষত্রির, শোভিয়া ক্ষত্রির; হাড়ী, হৈহর ক্ষত্রির।

সামাজিক ও রাজনৈতিক অবনতত্ব

গবমেণ্ট সামাজিক অবনতত্ব বোধ হয় এই অর্থে ব্যবহার'
করিয়াছেন, যে, কতকগুলি জাতির দেওয়া বা ছোঁয়া
জল অপর জাতির লাকেরা পান করে না, এবং কতকগুলি
জাতির পাক করা বা ছোঁওয়া অন্নব্যপ্রন অন্ত জাতির
লোকেরা খায় না। এই যে অবনতত্ব-বোধ, ইহার
জন্ত হিন্দু সমাজ অবগুই দায়ী। কিন্তু সামাজিক অবনতত্বত শুধু অন্নজনেই আবদ্ধ নহে। অতিশন্ধ আচারনির্চ
রোজণেরা অন্ত কোন জাতির অন্নজন গ্রহণ করেন না;
কিন্তু তা বলিয়া অন্ত সব জাতিই অবনত নহেন, গবমেণ্ট ও
তাঁহাদের সকলকে তপশীলভুক্ত করেন নাই। এই
রূপ, রাজণেতর কোন কোন জাতিও অন্ধাতির ও রাজ্মণ
তির অন্ত কোন জাতির অন্ধলন করেন না। কিন্তু
শেষোক্ত এই সকল জাতিই অবনত বলিয়া গণিত বা
সরকারী তপশীলভুক্ত হন নাই।

শিক্ষার অভাব এবং দারিদ্রাও সামাজিক অবনতত্ত্বর কারণ। এই শিক্ষাভাব ও দারিদ্রোর জন্ত দারিছের ভারা অংশ গবনেনিটকেও লইতে হইবে, সব দোষ হিন্দুসমাজ এবং অশিক্ষিত ও দরিদ্র জাতিদের ঘাড়ে চাপাইলে চলিবে না—তাহা ভারসক্ষতও হইবে না। শিক্ষা ও আপেক্ষিক ধনশালিতার প্রভাবে অবনতত্ব হইতে মুক্তিণ পাইরাছেন, এরূপ জাতির নাম করা কঠিন নয়। তাঁহারা, বেমন সামাজিক উন্নতি লাভ করিয়াছেন, শিক্ষা ও আর্থিক অবস্থার উন্নতির ধারা অন্তেরাও তেমনি সামাজিক উন্নতি লাভ করিতে পারেন।

রাজনৈতিক হিসাবে অবনত ত আমরা স্বাই।
আমরা অবনত বলিয়াই নেশুন হিসাবে বিদেশে কোথাও
সম্মানিত নহি—মাদেও নহি, মুডরাং "পলিটক্যালি
ব্যাক্ওয়ার্ড" "রাজনৈতিক হিসাবে জ্মনগ্রসর" বলিয়া
কতকগুলি জাতিকে আলাদা করার ঠিক্ কোন মানে
হর না। যেন আর স্বাই রাজনৈতিক হিসাবে স্বাধীন
ও জ্ঞাসর! তবে যদি বলেন, যাহারা রাজনীতি

কিছু বুৰে, রাজনৈতিক আন্দোলন করে ও চেঁচার. ভাহা হইলে সেটা ভ লেখাপড়া তাহারাই অগ্রসর, শেখার ব্যাপার, লেখাপড়া শেখার নির্ভর करव । সরকার ''অবনত'দিগকে দশটা বা ত্রিশটা আসন না দিয়া, সকলের শিক্ষার ব্যবস্থা করুন, তাহা **হুইলে স্বাই ঐ অর্থে** রাজনৈতিক হিসাবে হইয়া যাইবে। আর এক অর্থে কডকণ্ডলি লোককে বান্ধনৈতিক হিসাবে অগ্রসর বলা যায়—যাঁরা দেশের স্বাধীনতার জন্ত স্বার্থত্যাগ করিয়াছেন, আন্মোৎসর্গ করিয়াছেন, গু:খ বরণ করিয়াছেন তাঁহারা অগ্রসর। কিন্তু ইহাদের মধ্যে হয়ত বেশা লোক "উচ্চ" জাতির হইলেও অন্ত জাতির শোকও আছেন-এখানে জাতিভেদ নাই।

গৰমেণ্ট হয়ত অন্ত একটা মানদণ্ড বারা অবনতত্ব ও উন্নততার নির্দ্ধারণ করিয়া থাকিবেন, মনে করিয়া থাকিবেন, যাহাদের মধ্যে কেছই ইউনিয়ন বোর্ড, লোক্যাল বোর্ড, ডিট্রীক্ট বোর্ড, মিউনিসিপ্যালিটি, বা ব্যবস্থাপক সভার সভ্য নির্ব্বাচিত হন নাই, তাঁহারা অবনত। কিন্তু দেখা গিরাছে, সরকারী তপশীলভুক্ত নমংশুদ্র, রাজবংশী, পোদ, চামার, মেথর প্রভৃতি জাতির লোকেরা এই প্রকার কোন কোন প্রতিষ্ঠানের সভ্য নির্ব্বাচিত হইয়াছেন। স্তরাং এই সব জাতিকে উক্ত অর্থে অবনত বলা চলে না।

কোনু জাতি কাহার হিত করেন

এইরপ একটা যুক্তি শুনিয়ছি, বে, যে-সব ফাতি অবনত, তাহারা পরস্পারের প্রতি সহামুত্তিসম্পন্ন হইবে ও পরস্পারের হিত করিবে; "উচ্চ" ফাতিরা তাহাদের তেমন দরদী ও হিতেষী নহে। কিন্তু বাস্তবিক কি "উচ্চ" ফাতিদের চেরে অক্স ফাতিরা এ-বিষরে শ্রেষ্ঠ? "নিয়" ফাতিসমূহ পরস্পারকে যতটা "অস্পৃশ্রু" মনে করে, "উচ্চ" ফাতির লোকেরা তাহাদিগকে তার চেরে বেশী অস্পৃশ্রু মনে করে কি? কোন কোন ছলে বরং কম করিতেই দেখা যায়। অশিক্ষিত ও দ্বিম্ম লোকদের শিক্ষার ও আর্থিক উন্নতির চেটা "উচ্চ" ফাতির লোকদের শিক্ষার ও আর্থিক উন্নতির চেটা "উচ্চ" ফাতির লোকেরাও করিরা থাকে । অক্স ফাতির লোকেরা এরপ চেটা বেশী, করিরা থাকে বলিরা শুনি নাই। "তেপশীলভুক্ত" ফাতিরের বথ্যে বাঁহারা

ব্যবহাপক সভার সভা হইরাছেন, এ-বিব্রে উহিলের কৃতিছ বা চেটা "উচ্চ" জাতির লোকদের চেরে বেশী হইলে দেশের মঙ্গল হইবে। কিন্তু এ-পর্যান্ত বে তাহা বেশী হইরাছে, তাহার কোন প্রামাণ আমরা অবগত নহি।

পরস্পরনির্ভরশীলতা

সমস্ত জাতের লোক যদি পরস্পরনির্ভরণীল হন, তাহা হইলেই সকলের কল্যাণ ও উন্নতি হইতে পারে। থাছারা আপনাদিগকে উন্নত মনে করেন কেবলমাত্র তাঁহাদের চেষ্টায় দেশের উন্নতি হইতে পারে না—এমন কি তাঁহাদের নিজেরও সমাক উন্নতি হইতে পারে না। বাঁছাদিগকে অক্তেরা "অবনত" মনে করে, "অম্প্রভা" বা নীচ জা'ত মনে করে, এবং হয়ত যাঁহারা নিজেও আপনাদিগকে হীন মনে করেন, তাঁহারাও কেবল নিজেদের চেষ্টার আত্মোরতি করিতে পারিবেন না, দেশের কল্যাণ সাধন করিতে পারিবেন না। বিদেশীদের সম্পূর্ণ সাহাষ্য পাইলেও তাহা করিতে পারিবেন না, এবং তাহাদের সম্পূর্ণ সাহায্য পাইবেনও না। তাঁহাদের অনেকেরই শিক্ষার ও জ্ঞানের অভাব এত বেশী, যে, তাঁহাদের মনে ব্যক্তিগত বা সমষ্টিগত উন্নতির চিন্তাই উদিত হর না। তাঁহারা যে এইরূপ অবস্থায় পড়িয়া আছেন, তাহার জন্ত প্রধানত: হিন্দুস্মাজের গঠন দায়ী, হিন্দুস্মাজের "উচ্চ" জাতিরা দারী। সমগ্র হিন্দুসমাজের মধ্যে, সব জাতির মধ্যে যে পরস্পরনির্ভরশীলতা নাই, তাহার জন্তও আমাদের সমাজ बात्री।

ব্যবস্থাপক সভার সভ্যের কাজ করিবার জন্ত যোগ্যতম বাহারা, তাঁহারা বে-জাতির লোকই হউন, সকল জাতির লোকে সম্মিলিত ভাবে তাঁহাদিগকে নির্মাচন করিলে তবে দেশের কল্যাণ হইতে পারে। প্রায়বৃদ্ধি ও কল্যাণ বৃদ্ধি দারা প্রণোদিত হইরা বিদেশীরা এইরপ ব্যবস্থা করিয়া দিবেন, এরপ আশা করা মৃঢ্তা। তাঁহাদের নিজের প্রভূষ রক্ষা ও স্বার্থ রক্ষা বাহাতে হর, তাহাই তাঁহারা করিবেন, এইরপ আশা করাই স্বাভাবিক ও উচিত।

আমাদের তুর্বলতার জন্ম আমরা দায়ী আমরা বে স্প্রের সংহত অথও জাতি নহি, তাহার জন্ত আমরা দায়ী। আমরা আগে কভকগুলি লোককে "নীচ জা'ত" ও "ছোট লোক" ভাবিয়াছি, বলিয়াছি ও তজ্ঞপ বাবহার করিয়াছি, তবে বিদেশীরা হিন্দু সমাজকে তুটা শ্রেণীতে ভাগ করিতে পারিয়াছে। সরকারী যে "তপ্শীৰভুক্ত জাতিসমূহের তাৰিকা" বাহির হইয়াছে, তাহার সমালোচনা আমরা করিয়।ছি, অপরেরাও করিবেন। কিন্তু তাহার একমাত্র প্রকৃত ও ফলপ্রদ উত্তর হিন্দুসমাজ হইতে "অশ্যুখ্যতা" ও অরক্তর সম্বন্ধে সামাজিক "অনাচরণীয়তা" উঠাইয়া দেওয়া। হিন্দুদমাজে প্রাকৃত বৃদ্ধিমতা, বিচক্ষণতা, প্রাণবতা ও শক্তিমতা এবং তদ্রুযায়ী ন্তারপরারণতা ও সাহস থাকিলে ইহা অচিরে করা যাইত। আমরা অনেকেই জাপানের অভাদরের কথা ভাবি ও বলি, কিন্তু সব সময় মনে রাখি না যে, জাপান প্রাণবত্তা ও শক্তিমতা এবং সামাজিক স্তায়পরায়ণতা ও সাহস দারা স্বীয় অভ্যাদয় আনয়ন করিয়াছে। জাতীয় কল্যাণের ব্দুন্ত যখন আবগুক হইল, ব্ধন মান্বতার ও স্বাজাতিকতার আহ্বান আসিল, ত্থন সামুরাই নামক জাপানী অভিজাত সম্প্রদায় অচিরে আপনাদের সমুদয় বিশেষ অধিকার পরিত্যাগ করিলেন, তাঁহাদের ও জাপানের "এতা" নামক অস্পুশু লোকদের মধ্যে সামাজিক মর্যাদার কোন পার্থক্য রহিল না। আমাদের সমাজে এরপ স্থায়পরায়ণতা, সাহস, মহাপ্রাণতা ও বৃদ্ধিমন্তা থাকিলে বা কখন জন্মিলে তবে আমরা টিকিয়া থাকিতে ও বড় হইতে পারিব, নতুবা হিন্দুসমাজের আরও ক্ষয় এবং বর্তমান প্রকারের হিন্দুত্বের লোপ অবগ্রস্তাবী।

সাম্প্রদায়িক ভাগবাঁটোয়ারার বহু প্রতিবাদ হইয়াছে,
আরও হইবে। পণ্ডিত মদনমোহন মালবীর প্রভৃতি
বড় নেতারা তাহার আ্যোদ্ধন করিতেছেন।
কিন্তু অবনত শ্রেণী সকলকে গবন্মেণী যাহা দিয়াছেন ও
দিবেন বলিয়াছেন, তাহা তাঁহারা ছাড়িবেন কেন? আমরা
বলি, আমরা তাঁহাদের বন্ধু ও হিতৈথী। কিন্তু তাহর
কার্য্যাত প্রমাণ কোথার? সামান্ত প্রমাণ সেইসব
অন্ধ্রসংখ্যক লোকেরা বছবৎসর ধরিয়া দিয়া আসিতেছেন
বাঁহারা কোন জাতিরই লোককে হীন মনে করেন না, অবজ্ঞা

করেন না, এবং সীয় আচরণ ছারা "অস্পৃখ্যতা" ও "অনাচরণীয়ডা''র প্রতিবাদ করিয়াছেন। কিন্তু বিশাল হিন্দুসমাজের ভূলনায় তাঁহারা সংখ্যার কয় জন? সকলের সহিত সামাজিক সাম্য স্থাপন ব্যতিরেকে সাম্প্রদারিক ভাগবাটোয়ারার সম্পূর্ণ উচ্ছেদ সাধিত হইবে না।

সমগ্র হিন্দুসমাজ জাগ্রত হউন। বিশেষ করিয়া জাগ্রত হউন খাহারা আপনাদিগকে সনাতনী বিশিষা থাকেন। তাঁহাদের অনেকে আমদের চেয়ে ভাল করিয়াই জানেন, বে, শাস্ত্র অনুসারে খাঁহারা মুনি ঋষি বলিয়া পুজনীয় ও পুদ্ধিত তাঁহাদের মধ্যে অনেকে সেইরূপ পিতা বা মাতার সম্ভান খাহাদের মজাতিদিগকে এখন সনাতনীরা অনাচরণীয় মনে করেন। আধুনিক সনাতনী মত ও আচার বাস্তবিক সনাতনী মত ও আচার নহে।

"হে মোর তুর্ভাগা দেশ"

অগ্ন প্রাতে "গাতাগ্লনি" খুলিতেই রবীক্রনাথের "হে মার ত্র্লাগা দেশ" শার্ষক কবিতাটি চোধে পড়িল। কবিতাটি ভারতীয় মহাঞাতির বর্ত্তমান প্রধান কর্ত্তব্যের শ্রেষ্ঠ স্মারক বলিয়া সকলের পড়িবার স্থ্বিধার ক্ষন্ত উদ্ধৃত করিয়া দিতে ছি।

হে মোর ছুর্ভাগা দেশ, খাদের করেছ অপমান অপমানে হতে হবে তাহাদের সবার সমান। নামুখের অধিকারে বঞ্চিত করেছ যারে, সমূবে গাড়ায়ে রেগে তবু কোলে দাও নাই স্থান, অপমানে হতে হবে তাহাদের সবার সমান।

মাথুষের পরশেরে প্রতিদিন ঠেকাইয়া দূরে
ঘূণ করিয়াছ তুমি মাথুষের প্রাণের ঠাকুরে।
বিগাতার রুদ্র রোবে
ছর্ভিক্ষের ছারে বনে
ভাগ করে থেতে হবে সকলের সাথে অপমান ।
অপমানে হতে হবে তাহাদের সবার সমান ।

ভোমার মাসন হতে যেখার তাদের দিলে একে সেখার শক্তিরে তব নির্কাসন দিলে অবংহলে। চরণে দলিত হরে খ্লার সে বার বরে, সেই নিমে নেমে এস নহিলে নাহিরে পরিআণ। অপমানে হতে হবে আজি ভোরে সবার সমান। বারে তুমি নীচে কেল সে ভোমারে বাঁণিবে যে নীচে। পশ্চাতে রেপেছ বারে সে ভোমারে পশ্চাতে টানিছে।

অজ্ঞানের অস্থকারে আড়ালে ঢাকিছ যারে ভোমার মঙ্গল ঢাকি গড়িছে সে খোর ব্যবধান , অপমানে হতে হবে ভাহাদের সবার সমান !

শতেক শতাকী ধরে' নামে শিরে অসম্মানভার,
মামুবের নারারণে তবুও কর না নম্মার '
তবু ন হ করি আঁথি
দেখিবারে পাও না কি
নেমেছে ধ্লার তলে হীন পতিতের ভগবান,
অপমানে হতে হবে দেখা তোরে স্বার সমান ॥

দেখিতে পাও না তুমি মৃত্যুদ্ত দাঁড়ায়েছে দারে,
অভিদাপ আফি নিল তোমার জাতির অংকারে :
সবারে ন' বদি ডাক,
এখনো সরিয়া থাক,
আপনারে বেঁথে রাখ ১টাদিকে জড়ারে অভিমান—
মৃত্যুমাঝে কবে তবে চিতাভাগ্র স্বায় নান ॥

এই কবিভাটি সাজে চিনিশ বংসর পূর্বে ১৩১৭ সালের ২০শে আষাঢ় রচিত হয়। এখন কতকগুলি লোক সচেতন হইয়াছেন। ভাহাতে ভারতবার্রর ভবিষ্যৎ সম্বান্ধ কিঞ্চিৎ আশান্বিত হইতে পারা যায়। এখন ঐ ১৩১৭ সালেরই পর দিন, ২১শে আষাঢ়, রচিত কবির নিয়মুদ্রিত কবিতাটি আশাস-বাণী বিবেচিত হইতে পারে।

ভাড়িস্ নে গরে পাক্ এঁটে,
থরে হবে তোর জর :
অক্ষকার যার বুকি কেটে,
থরে আর নেই ভর ।
ওই দেখ প্রাশার ভালে
নিবিড় বনের অন্তরালে
ডকভার: হরেছে উদর ।
ধরে আর নেই ভর :

এরা যে কেবল নিশাচর—
সবিখাস আপনার পর,
হতঃদাস, আপেন্ত, সংশর,
এরা প্রভাতের নর।
ছুটে আর, আর.র বাহিরে
চেরে দেখ্, দেখ্ উদ্ধানরে,
আকাশ হতেছে জ্যোতির্মর,
ভরে আর নেই ভর।

অবনতত্বস্বীকারে সূত্রধরদের স্থায্য ও স্বাভাবিক আপত্তি

ঢাকার স্ত্রধর সমিতির এক অধিবেশনে সম্প্রতি (৬ই জামুহারী) স্ত্রধর জাতি তাঁহাদিগকে সরকারী অবনত জাতিদের তপশীলভুক্ত করার তীত্র প্রতিবাদ করিরাছেন। তাঁহারা বলেন—বহুপূর্বের যখন রিজলী সাহেব ভারতীয় লাতিসমূহের শ্রেণীবিভাগ করেন, তখন তিনি স্ত্রধরদিগকে "এ ক্লীন্ কাই" অর্থাৎ গুদ্ধাচারবান্ জাতি বলিয়াছেন; ১৯৩১ সালের সেলসে তাঁহাদিগকে অবনত বা অমুন্তর বলা হয় নাই; বাংলা-গর্মপিটের ১৯৩৩ সালের জামুন্তরী মানের "অবনত"দের খদড়া তালিকার স্ত্রধরদের নাম ছিল না; এই তালিকা প্রকাশের নাম তালিকাভুক্ত হয় নাই, এমন কোন জাতি তপশীলভ্ক্ত হইতে চান কি না, তাহার উক্তরে স্তর্থর জাতি তপশীলভ্ক্ত হইবার অভিশ্রোর প্রকাশ করে নাই; তবে কেন স্ত্রধরদিগকে পাকা তালিকায় ফেলা হইল ?

তাঁহারা আরও বলেন, শান্তাহসারে তাঁহারা দেব-শিল্পী। কাঁচড়াপাড়াতেও হুত্রধরদিগের এইরূপ প্রতিবাদ-সভা হইয়া গিয়াছে।

সম্ভবতঃ নানা জারগাতেই গনেক জাতির প্রতিবাদ-সভা হইবে।

আমরা আগেই বলিয়াছি, বে-কেহ বলিবেন তিনি বা তাঁহার জাতি অবনত নহেন, তাঁহাকে অবনত বলিয়া তপশীলভুক্ত করা অমুচিত।

হিন্দুসমাজের কর্তব্য

বে-কোন জাতি আপনাদিগকৈ হিন্দুবলিবেন, তাঁহাদেরই অরপন গ্রহণীর বলিয়া সিদ্ধান্ত করা ও তাহা প্রকাশ করা হিন্দুনেতাদের কর্তব্য। অবশু সেই সঙ্গে ইহাও বক্তব্য, বে, নেশাবোর ও কুক্তিরাসক্ত ব্যক্তির; বে-কোন জাতিরই হউক তাহাদের অরপন গ্রহণীর বলিয়া তাহারা দাবী করিতে পারিবে না। প্রকৃত শুভিতা সকলেরই আদর্শ হওরা উচিত!

প্রবাসী বাঙালীর সম্মান

বাংলা দেশে ও ভারতবর্ষে ভারতীয় চিত্রকলার পুনরুজ্ঞীবন দাধন করিয়াছেন শ্রীযুক্ত ডক্টর এবনীক্রনাথ ঠাকুর।
তাহার শিষ্যাতুশিষা হইয়াছেন অনেক। তাহার পরই
তাহা অপেক্ষা বরংকনিও বাহারা প্রদিদ্ধি লাভ করিয়াছেন,
শ্রীযুক্ত অসিতকুমার হালদার তাহাদের মধ্যে অন্যতম।
ইহার জাকা উৎকৃষ্ট অনেক ছবি আমরা প্রবাসীতে প্রকাশ



ঐঅসিতকুমার হালদার

করিরাছি। ইনি অনেক বৎসর হইতে লক্ষ্ণোরের সরকারী লিভিকলা ও কাঞ্চলিয় বিদ্যাল্যের (Government School of Arts and Crafts এর) অধ্যক্ষের কাঞ্চ বোগ্যতার সহিত করিয়া আসিতেছেন। সম্প্রতি তিনি বিলাতী রয়াল সোসাইটি অব্ আটসের সদস্ত (Fellow of the Royal Society of Arts) মনোনীত হইয়াছেন। আমরা গত নবেম্বর মাসে হথন লক্ষ্ণো গিয়াছিলাম, তথন অধ্যাপক রাধাক্ষল মুধোপাধ্যায়ের বাড়িতে ন্তন রীতিতে অসিতবাব্র দারা অন্ধিত একথানি ছবি দেখিয়াছিলাম।

বাঙালী বৈশনিকদের ভূপ্রদক্ষিণ সঙ্কল

গত অগ্রহারণের প্রবাদীতে শশুন হইতে মেলবোর্ণ পর্যান্ত বিদান-চালনার প্রতিযোগিতার বৃদ্ধান্ত দিবার উপলক্ষ্যে আমরা লিখিরাছিলাম, "দিন আগত ঐ, ভারত তবু কৈ।" কাহারও সহিত প্রতিযোগিতার না হইলেও



শুদেবকুমার রার

इंडा कुनःवान, त्यं, मुख्यां इरे अन वांडानी यूवक विमानदेशात्र ভূপ্রদক্ষিণ করি ত অগ্রসর হইয়াছেন। ইংগ্রা কলিকাতা হুইতে লওন, লওন হুইতে জাপানের রাজধানী তোকিয়ো, এবং ভোকিয়ো হইতে কণিকাতা বিমানবোগে ভ্ৰমণ ইহাতে মোটামুটি পঁচিশ হাজার মাইল করিতে চান। আকাশপথে ভ্রমণ করা হইবে। ইহিংদের এক অনের নাম এীযুক্ত বীরেক্তনাথ রায়। বৈমানিক বলিয়া বঙ্গে ইনি পরিচিত। ইনি বেহালা মিউনিসিপালিটির সভাপতি। অন্ত যুবকটির নাম শ্রীস্কুল দেবকুমার রায়। ইনি বিজ্ঞানে কলিকাতা-বিশ্ববিদ্যালয়ের গ্রাভুয়েট হইবার পর বিলাভ যান এবং সেখানে ব্রিষ্টল বিশ্ববিদ্যালয়ে ছুই বৎসর যান্ত্রিক এঞ্জিনিয়ারিং শিক্ষা করেন। ভাহার ৭র বৈমানিকের সব রকম কাজ শিধিয়া ও অভিজ্ঞতা লাভ করিয়া বিমান-চালনার "এ" ও "বী" উভয়বিধ লাইদেকা পাইয়াছেন। ইনি মিঃ এন্ কম্পার্ নামক ইংলণ্ডের প্রাসিদ্ধ বিমানচালকের প্রাশংসা লাভ করিয়াছেন।



শ্ৰীবীবেজনাথ বায়

এই ছই যুবকের সকল্প প্রশংসনীয়। আমরা ইঁহাদের সাফলা কামনা করি। এই কাজ কিছু বায়সাধা, তবে বেণা বায়সাধা নহে। বিমান ক্রয় করিতে ও অন্তান্ত বায় বাব:ত ইহাদের ত্রিণ-প্রত্রিশ হাজার টাকা আবশুক হইবে। আশা করি সৃক্তিপ্ল লোকেরা ইহাদের সহায় হইবেন।

স্বৰ্গীয় মহিতকুমার মুখোপাধ্যায়

মহিতকুমার মুখোপোধ্যায় ত্রহ্মদেশের রাজধানী রেঙ্গুনে বাঙালী বালকদের বেঙ্গল একা.ডমী নামক বিদ্যালয়ের প্রধান শিক্ষক ছিলেন। তিনি কলিক'তা-বিশ্ববিদ্যালয়ের এম এ, বি এল, ও বি টি উপাধি লাভ করিয়াছিলেন। শিক্ষাদান-বিষয়ে তাঁহার বিশেষ দক্ষতা ও অনুরাগ ছিল। মৃত্যুকালে তাঁহার বরস ৪৪ বৎসর ম জ হইয়াছিল। তাঁহার স্কলা মৃত্যুতে কেলল একাডেমী ও বক্ষপ্রবাসী ভারতীয়

সমান্দ্র ক্ষতিপ্রস্ত হইল। সংক্রমান্ত্রাগ, চরিত্রবন্তা ও বিদ্যাবন্তার জন্ত তিনি শ্রদ্ধাভাজন ছিলেন। এই জন্ত, তাঁহার মৃত্যুর পর তাঁহার প্রতি সম্মান প্রদর্শনার্থ বে-সভা আহত হইয়াছিল, তাহার আহ্বানকারীদের মধ্যে ব্রহ্মদেশীয় ও ব্রহ্ম-প্রাসী নানা প্রদেশের ভারতীয়দের নাম ছিল।



ৰগাঁর মহিতকুমার মুখোপাধ্যায়

মহিত বাবু বক্সদেশে স্পরিচিত ছিলেন না; কারণ দ্বস্থ ব্রহ্মদেশ তাঁহার কর্মক্ষেত্র ছিল, বঙ্গে তিনি কচিৎ আসিতেন। আমরা তাঁহাকে জানিতাম। যখন কলিকাতায় প্রবাসী-বঙ্গসাহিত্য-সম্মেলনের অধিবেশনের আয়োজন করা হইতেছিল, তখন উদ্যোক্তারা দ্ব দ্ব জায়গার প্রবাসী বঙালীদিগকে কলিকাতায় আনিবার ইচ্ছা করিয়াছিলেন। এই অভিপ্রায় অয়সারে মহিত বাবুকে সম্মেলনের একটি শাখার সভাপতি নির্মাচন করা হয়। কিন্তু তিনি অত্যন্ত পীড়িত বলিয়া অভ্যর্থনা-সমিতির নিমন্ত্রণ গ্রহণ বরিতে পারেন নাই। আমরা যখন পায় ৮ বৎসর পূর্ব্বে রেকুনে গিয়াছিলাম, তাহার পূর্ব্ব হইতেই তিনি কঠিন পীড়ায় ভুগিতেছিলেন।

পোহের নানা সভা-সমিতি

আমাদের শাসনকর্তার। গ্রীষ্টীয় ধর্মাবলম্বী। তাঁহাদের প্রধান পর্বাকে (Christmas কে) বড়ানিন বলা হয়, এবং এই বড় দিন উপলক্ষ্যে ও খ্রীষ্টীয় নববর্ষের প্রাথম দিন উপলক্ষ্যে সমুদয় সরকারী আফিস আদালত ও স্কুল কলেজ আদির দিন-দশ ছুটি থাকে। এই প্রযোগে ভারতবর্ষের নানা জায়গায় নানা সভা-সমিতির অধিবেশন হয়। সমুদয় সভা-সমিতির বিস্তারিত বিবরণ দৈনিক কাগজসমূহও চাপিরা উঠিতে পারেন না—মাসিক কাগজের পক্ষে ত তাহা অসম্ভব। যাহা ঘটে ভাহার বুজান্ত ও সংবাদ দেওয়া দৈনিক কাগন্ধের একটি প্রধান কাজ। গাহা ঘটে এবং সভা-সমিতিতে যাহা বলা হয় এবং বে-সব প্রস্তাব গৃহীত হয়, তাহার উপর মন্তব্য প্রকাশ ও টিগ্লনী করা মাসিক কাগজের একটা কাজ। কিন্তু এতগুলি সভাসমিতির বক্তৃতাসমূহ ও প্রস্তাবাবলীর উপর মন্তব্য প্রকাশ করিবার জায়গা মামাদের নাই। প্রধান প্রধানগুলির উপরও কিছু বলা সাধাতীত। সভাসমিতিগুলির আমাদের বংসরের ভিন্ন ভিন্ন সময়ে হইলে সর্ব্বসাধারণ অনেকগুলিতে কতকটা মন দিতে পারে, আমরাও পারি। কিন্তু সব মাসে ত ভারতবাাপী অন্যুন আট দশ দিন ছুটি পাওয়া বার না। সুক্তরাং একই মাসে:এক ই সপ্তাহে বহু সভা-সমিতির অধিবেশন হয়।

কংগ্রেসের জন্ম হইতে বহু বৎসর উহার অধিবেশন হইত পৌষ মাসে। করাচীতে শেষ যে অধিবেশন হয়, তাহা হয় চৈত্র মাসে। তাহার পর রীতিমত অধিবেশন হইয়াছে বোহাইয়ে গত কার্দ্তিক মাসে।

এবার পৌষ মাসে থঁ।টি সমগ্রভারতীয় রাজনৈতিক সভার অধিবেশন হইয়াছিল পুনায় উদ্বানতিক সংঘের। সভাপতি ছিলেন পণ্ডিত হলয়নাথ কুঞ্জর। ইনি জনহিতকর কাজে সর্বাদা ব্যাপৃত থাকেন। গোপালক্তক গোখলে প্রতিষ্ঠিত ভারতভ্ত্য সমিতির ইনি এক জন প্রধান সভা। ইহার বক্তভায় জয়েণ্ট পার্লেমেণ্টারী কমিটির রিপোর্টের বিশ্লেষণ ও তীত্র নিন্দা ছিল। প্রীযুক্ত শ্রীনিবাস শাস্ত্রীও খুব মাঝাল বক্তৃতা করেন, বলেন, "আমরা জমেণ্ট পার্লেমেণ্টারী কমিটির রিপোর্ট অম্থায়ী আইন হইলে তদমুধায়ী কাব্দে গ্রুমেনিটর সহিত বিন্দুমাত্রও সহযোগিত। করিব না।" এলাহাবাদের লীডারের প্রধান সম্পাদক প্রীযুক্ত চিস্তামণি বলেন, ''তোমাদের প্রস্তাবিত কলাটিউগুলটা চাই না, এখন যেটা চলছে বরং তাও ভাল।" অস্ত দিকে কিন্তু আর এক উদারনৈতিক নেতা স্তর তেজ বাহাহুর সপ্র্ণ বলিয়াছেন, "নৃতন যে শাসনবিধি হইতেছে, সেটা অম্পারে কাব্দ যে করা যায় না তা নয়। আর, আমরা যদি সেটাকে না চালাই, সেটা আমাদিগকে চালাইবে।" স্থভরাং উদার-নৈতিক কেহই গবলেনিতির সহায় হইবেন না, এমন মনে হয় না।

করাচীতে সমগ্রভারতীয় মহিশা-কন্ফারেন্স হইয়া গিয়াছে। ইহাতে শিক্ষাবিষয়ক, সামাজিক, রাজনৈতিক প্রভৃতি নানা প্রকার বিষয়ের আলোচনা হইয়াছিল। এই কনফারেন্সেও ক্ষয়েণ্ট পার্লেমেণ্টারী কমিটির রিপোর্ট খ্র নিন্দিত হইয়াছে। তা ছাড়া নারীদের শিক্ষা, উত্তরাধিকার, প্রভৃতি বিষয়ের আলোচনা হইয়াছে। রুজিম উপারে জন্মনিরোধের সমর্থক প্রস্তাব অনেক মহিলা-কন্ফারেলে গৃহীত হইয়া গিরাছে, করাচীতেও হইয়াছে। অনেক নারী কেন ইহার সমর্থন করেন, তাহা বুঝা কঠিন নর। কিন্তু मधर्यक्रित (र मुब कात्रण वना रुप्त, जारा नव खालान পরিবারে সব সংবা নারীর পক্ষে খাটে না। ভারতবর্ষের সর প্রাদেশের বসতি ঘন নয়: সর পরিবার দরিত নয়: জন্মনিরোধ দরিতা নারীদের চেয়ে সৌখীন ধনী নাবীরাই বেণা করিয়া থাকে: কোন কোন রোগে চিরক্রগা হর্বনাদহা মাভাদের পক্ষে চিকিৎসকের পরামর্শ অনুসারে জন্মনিরোধ আবশুক; কিন্তু অনেক সুস্থ স্বল বিবাহিতা নারী ইহা করিয়া থাকে। জন্মনিরোধের প্রতিকারের জন্ম ইটালীতে ও স্থার্মেনীতে নানা উপায়ে বিবাহে ও বহুসন্তানপাশনে উৎসাহ দিতে । खाळाइंड

পাটনায় যে নিধিশভারতীয় ধনবিজ্ঞান সভার অধিবেশন হয়াছিল, তাহাও বিশেষ উল্লেখযোগ্য।

কলিকাতার প্রবাসী-ব্রুসঃহিত্য-সম্মেলনের অধিবেশনে সর্ব্যাধারণের খুব কৌতুহল দেখা গিয়াছিল / ভারতীয় বিজ্ঞান কংগ্রেসের অধিবেশনও পৌষ মাসে কলিকাভার হইরাছিল। ভ'রতবর্বের নানা প্রদেশ হইতে বিজ্ঞানবিদ্রা আসিরা ইহাতে বোগ দিয়াছিলেন।

আরও নানা সভা-সমিতির অধিবেশন নানা স্থানে হইয়াছিল।

ভারতীয়দের পরিচ্ছদ

খবরের কাগন্দে আজকাল ছবি দেওয়ার রীতি খব वाजिबाह्य। এই भव भाषा-कान ছবি यে-भव मानूरखत, তাঁহাদের গায়ের রং তাহা হইতে বুঝিবার যো থাকে না, নাম দেখিয়া ও পরিচছদ দেখিয়া বুঝিতে হয় তাঁহারা কে। অনেক সভার লোকদের, স্থূল-কলেজের ছাত্রদের ও অধ্যাপকদের ছবিও কাগজে বাহির হয়। তাঁহাদের অধিকাংশের কেবল পরিচছদ দেখিয়া বিচার করিতে হই ল, নাম ছাপা না থাকিলে, মনে হইত তাহারা ইউরোপীয়। অনেক সভার গেলে অবশ্য গারের রঙে প্রারই বুঝা যায় কে ইউরোপীয় কে নছে: পাগড়ী ও হাট হই তও তাহা বুঝা যার। বাংলা দেশ ছাড়া ভারতের অন্তত্ত ইউরোপীয় কোট, টাই ইত্যাদির সাক্ষ পাগড়ীও দেখা যায়, কিন্তু ছাটও কম দেখা যার না। মোটের উপর বলা যাইতে পারে, "শিক্ষিত" ভারতীরেরা পরিচ্চদে ইউরোপীর বনিরা গিরাছে। কিন্তু ভারতীয় মছিলারা পরিচ্চদে ইউরোপীয় বনেন নাই—যদিও অনেকের জ্যাকেট ব্ল'উদ কতকটা ইউরোপীয় ধরণের বটে। তবে, ইহা লক্ষ্য করিবার বিষয়, যে, কোন কোন মেম-ঘেঁষা ভারতীয়া শাড়ীটাকেই পরেন আঁট-সাঁট-খাট স্থার্টের মত করিয়া।

সম্প্রতি কলিকাতার যে ছটি বৃহৎ সভার অধিবেশন হইরছিল, তাহার মধ্যে প্রবাসী-কলসাহিত্য-সম্মেলনের অধিবেশনভালিতে সব উদ্বোধক, সভাপতি ও প্রতিনিধি এবং প্রায় সব দর্শককে বাঙালী বলিরা বুঝা গিরাছিল। বিজ্ঞানকংগ্রেসের বে-ছটি জলখোগ-সভার গিরাছিলাম, তাহাতে বাঙালী বিজ্ঞানবিদ্দিগের মধ্যে করেক জন এবং পঞ্জাবের বৃদ্ধ বৈজ্ঞানিক অধ্যাপক ফচিরাম সাহনী ছাড়া (অবশ্র ভারতীর মহিলাদেরও ছাড়া) আর সকলের পদ্ধিছেদ ছিল বোল আনা বা চৌদ-আনা ইউরোপীর।

ইউরোপীর বলিরা কোন কিছুর নিন্দা করা আমাদের অভিপ্রেত নহে। বাহা কাজের পক্ষে স্বিধাজনক, যাহা আহাব্যরসাধ্য, য'হাতে শ্লীলতা রক্ষা হয়, বাহা জটিল ও নানা অঙ্গ বা অজের সমষ্টি নহে, পরিচ্ছদ এইরপ হওয়া ভাল। ভালার উপর তাহা স্ক্রন্ধর এবং জাতীর হইলে আরও ভাল। জাতীর বলিতেছি এই জন্ত, বে, তাহা হইলে দেশের সর্বসোধারণের স'ঙ্গ পার্থক্য কম হয়। অন্তদের সঙ্গে অনাবশ্রক অসাদৃশুর্দ্ধি বাহ্নীয় নহে—তাহাতে ভাতীয় সংহতি নই হর।

খদরের চলন যে কোন সময়েই খুব বেশী হইয়াছিল, তাহাও বছ পরিমাণে কমিয়া গিয়াছে।

খবরের কাগজের ছবি এবং নানা প্রাদেশিক সভা-সমিতি দেখিয়া মনে হয়, বাঙালীরা এখনও দলবলে ধুতি ত্যাগ্র করে নাই।

হুভাষচন্দ্ৰ বহু

ফুভাবচন্দ্র বহু পিতৃপ্রান্ধের পর ভিরেনা মাত্রা করিরাছেন। তাঁহার পীড়া বৃদ্ধি পাইরাছে, ইহা উদ্বোজনক সংবাদ। ভিরেনার ভাঁহার অংক্রাপচার হুইবে। এথানে তাহা হুইবার বোধ হয় উপার ছিল না। তাঁহার নিজের বায়ে পুলিস তাঁহাকে ভিরেনা যাভায়াভের টিকিট কিনিয়া দিয়াছে, ইহা মন্দের ভাল। ইহাতে মনে হয় দেশে ফিরিডে তাঁহাকে বাধা দেওয়া হুইবে না। ভিনি ফুছ হৢইয়া দেশে ফিরিয়া আফ্ন এবং দেশের কল্যাণ কল্পন, ইহাই আমরা চাই।

শরৎ চন্দ্র বস্থ

শরৎ চন্দ্র বসু ভারতীয় ব্যবস্থাপক স্ভার সভ্য নির্বাচিত হইরাছেন বলিয়া ব্যবস্থাপক স্ভার উপস্থিত হইবার ক্রন্ত গবর্ণর-জেনার্যালের সমন পাইরাছেন। আবার,: তিনি গবর্ণর-জেনার্যালেরই হকুমে রাজ্বনী হইরা এক জারগায় (কামিরিঙে) আটক আছেন। স্থুজরাং একই কর্ড্পক্ষ গ্রহার উপর পরস্পর-বিরোধী গুটা ছকুম জারি করিয়াছেন!
অবশু এই বিরোধভঞ্জনের ক্ষমতাও ঐ কর্তৃপক্ষের আছে।
গাঁহাকে পীড়িত পিতাকে দেখিবার ও পরে পিড়ুশ্রাদ্ধ
করিবার নিমিত্ত অনুমতি ও ছুটি দেওরা হইয়াছিল।
ব্যবস্থাপক সভায় উপস্থিত হইবার জন্তও গবর্নোণ্ট তাঁহাকে
অনুমতি ও ছুটি দিতে পারেন।

বিচারান্তে অপরাধ প্রমাণিত হইবার পর মানুষের বেরপ শাস্তি হয়, বিনা বিচারে এবং কোন অপরাধ প্রমাণিত না-হইলেও ভাহার শান্তি ভার চেয়ে বেণী হইতে পারে তাহার দৃষ্টাস্ক ভারতবর্ষে-- বিশেষতঃ বাংশা দেশে---অনেক আছে। শরৎ বাবুর বিশ্বদ্ধে ভারত-গবনের্টের স্বরাষ্ট্র-সচিব বাজা বলিয়াছেন, ভাজার কোন প্রমাণ তিনি দেন নাই —প্রমাণ থাকিলে ও দিতে পারিলে আদালতে শরৎ বাবুর বিগার হইত। কিন্তু যদি ধরিয়া লওয়া যায়, যে, তাঁহার বিৰুদ্ধে যাহা বলা হইয়াছে তাহা সত্য, তাহা হইলেও নিশিষ্ট কয়েক বৎসরের জন্ত তাহার স্বাধীনতা লোপ এবং কতক **অর্থান্ড হইত। কিন্তু তাঁহার ব্যারি**ষ্টারির আয়ে দীর্ঘ কলের জ্ঞানষ্ট হওয়ায় প্রকারাস্তরে তাঁহার যে ভরিমানা হইয়াছে নেক্লপ প্রভৃত অর্থনগু পীন্তাল কোড অনুসারে কোন अभवाधीत इ इस ना, এवः निक्षिष्ठ करत्रक वरमत्त्रत अञ খাধীনতলাপের পরিবর্কে অনিনিষ্ট কালের ব্রুত তাঁহার ষাধীনতা লুপ্ত হইয়াছে। শাসনবন্দ্রের মহিমা।

হুভাষচন্দ্রের পুস্তক বাজেয়াপ্তী

হভাষ্ট্র করাটী পৌছিবার পর তাঁহার জিনিষপত্র হাতড়াইরা তাহার মধ্য হইতে তাঁহার জাটরে প্রকাশিতব্য ভারতীর স্বাধীনত। প্রচেষ্টা-বিষয়ক রাজনৈতিক প্রকের টাইপ-লিপি প্রিস হস্তগত করে, এবং পরে তাহা সরকার কর্তৃক বাজেরাপ্ত হইরাছে। প্রকাশিত হইবার আগেই বাজেরাপ্ত! শাসন-বদ্দের ঘূর্গনের ফল নানা রকম হইরা থাকে। বাহা হউক, সভাষ বাব্র প্রকের উহাই একমাত্র টাইপ-লিপি ছিল না কিনান বৃদ্ধিমান ভারতীয় লেখকই স্বাধীনতা-প্রচেষ্টা-বিষয়ক বিছর একমাত্র পাঙ্লিপি সঙ্গে লইরা বেড়ান না), অন্ত

বলিয়াছেন, উহা বর্ত্তমান স্থানুমারী মাসের মাঝামাঝি বাহির হইবে। ভাহাভেও বে বাধা জানিতে না-পারে, এমন নয়। সাঙালগাও সাহেরের বে "ইন্ডিয়া ইন বঙ্জেল" পুস্তকের প্রকাশক বলিয়া প্রবাসীর সম্পাদককৈ হই হাজার টাকা জারিমানা দিতে হইয়াছিল, ভাহা বিলাভের জর্জ য়ালেন এও আন্উইন নামক প্রকাশকদের ছাপিবার কথা ছিল। সব আরোজন ঠিক হইয়াছিল, ভথাকথিত গোলটেবিল বৈঠক আরম্ভ হইবে এবং ঐ বহির বিলাভী সংস্করণও বাহির হইবে। পরে থবর পাওয়া গেল, বিলাভী কর্ত্তপক্ষের ছকুমে উহার প্রকাশ বন্ধ হইয়া গিয়াছে। মৃতরাং বিলাভেও মুদ্রায়ন্তের ও প্রকাশকদের মাধীনতা স্বদেশ-সম্বনীর ব্যাপারে বভটা আছে, ভারতবর্ষীয় ব্যাপারে কার্য্যভঃ ওভটা নাই।

কাগন্ধে বাহির হইয়াছে, বিলাতের বার্ণার্ড শ, এইচ জি ওয়েল্ন, য়াল্ডন্ হয়লী, এবং আল রাসেল প্রমুখ লেখকগণ এবং ভারতবর্গের রবীক্ষনাথ স্থভাষ বাবুর বহির টাইপ-লিপি বাজেয়াপ্ত করার জোরাল প্রতিবাদ করিয়াছেন বা করিবেন। এরূপ প্রতিবাদ • প্রতিবাদকারীদের পক্ষে প্রশাসার বিষয়, কিন্তু সম্পূর্ণ বার্থ। ইণ্ডিয়া ইন্ বণ্ডেজ প্রকাশ সম্পর্কে প্রথাসীর সম্পাদকের দণ্ডের বিক্লছে আমেরিকার প্রধান প্রধান উদারনৈতিকেরা মিঃ ম্যাকড্ঞাল্ডের কাছে তীত্র প্রতিবাদ পাঠাইয়াছিলেন, কিন্তু কোন ফল হয় নাই।

বঙ্গে মুসলমানদের শিক্ষা

বঙ্গে মুস্লমানদের শিক্ষা বিষয়ে পরামর্শ দিবার জন্ত গবন্ধেণ্ট একটি কমিট নিযুক্ত করেন। তাঁহারা ১৭২ পূর্গাব্যাপী একটি রিপোট পেশ করিরাছেন। উহাতে তাঁহারা প্রাথমিক শিক্ষা আইন অমুসারে অবৈতনিক আবস্তিক শিক্ষা প্রবর্তন না-হওরা পর্যান্ত মক্তবগুলি এখনকার মতই চালাইতে বলিরাছেন। সাম্প্রদারিক শিক্ষার ফলাফল সম্বন্ধে অমুসলমান ভারতীরদের মতের মধ্যে মুস্লমানরা কুঅভিসন্ধির অভিছ সন্দেহ করিতে পারেন। সরকারী ইংরেজ কর্মচারীরা তাঁহাদের বন্ধু; তাঁহাদের মত হয়ত তাঁহারা ছরভিসন্ধিহীন মনে করিবেন। সেই

সব মত প্রবাসীর বর্ত্তমান সংখ্যার প্রীবৃক্ত রমেশচন্ত্র বন্দ্যোপাধ্যারের প্রবন্ধে তাঁহারা সঙ্কলিত দেখিতে পাইবেন।

কেশবচন্দ্র সেনের স্মৃতিসভা

বাঁহারা ধর্মানুরাগী ও ধর্মের প্রয়োজনীয়তা স্বীকার করেন, তাঁহারা কেশবচন্দ্র সেনকে প্রতি বৎসর স্থাবণ কবিয়া সমবেত ভাবে তাঁহার প্রতি শ্রদ্ধা প্রদর্শন কর্ত্তব্য বলিয়া বুৰেন। যাঁহার। সমাজ-সংস্কার আবশুক মনে করেন কিন্ত ধর্ম সম্বন্ধে উদাসীন, তাঁহারাও এই সংশ্ব পুরুষের প্রতি শ্রদ্ধা-প্রদর্শন কর্ত্তব্য মনে করেন। আধুনিক খুগে রামমোছন রার সভীদাহ নিবারণের চেষ্টা করিরা এক দিক দিয়া সমাজ-সংস্থার আরম্ভ করিয়াছিলেন বটে, কিন্তু অসবর্ণ-বিবাহ-প্রচলন, বালিকাদের বিবাহের বয়সর্দ্ধি, হুরাপান-নিবারণ, প্রভৃতির চেষ্টা বিশেষ করিয়া কেশবচন্দ্রই প্রবর্ত্তন করেন। বাংলা ভাষা ও সাহিত্যের উন্নতিও কেশবচক্রের দ্বারা হইরাছিল। মহর্ষি দেবেজনাথ প্রধানতঃ ধর্মাচার্য্য বলিয়াই স্থবিদিত হওয়ায় তিনি যে বাংলার স্থলেখক ছিলেন তাহা বেষন লোকে ভাবে না, তেমনি কেশবচন্দ্রকেও লোকে কেবল ধর্মাচার্য্যই মনে করায় ভিনি যে সরল ও প্রাণস্পশী বাংলা বলিতেন ও লিখিতেন, তাহা আমরা অনেক সময় ভূলিয়া থাকি। সম্ভায় বাংলা থবরের কাগজের বছল প্রচার তিনিই প্রথমে "সুলভ সমাচার" ছার। করেন। উহার দাম ছিল এক পয়সা। আমাদের মনে পড়ে আমরা যথন বাকুড়া জেলা-ছুলে পড়ি তথন উহার অন্ততম শিক্ষক ভোলানাথ অধ্বর্গু সপ্তাহে ১৪০খানা পর্যান্ত ঐ কাগজ আনাইয়া বিক্রী 'করিতেন। প্রথম পুগায় উহার নামের নীচে চারি পংক্তি পদ্য ছাপা থাকিত। প্রথম হুই ছত্র-

> "স্হজে পাইতে যদি চাও জ্ঞানধন স্কভ সংবাদপত্র কর অধ্যয়ন।"

অন্ত তুই পংক্তি ঠিক্ মনে নাই। উহার পূজা-সংখ্যা রঙীন কাগজে ছাপা হইত ও আমাদের বড় প্রির ছিল। ছংরেঞীতে ইণ্ডিয়ান মিরারও কেশকত প্রতিষ্ঠিত করেন। মাবেক আলবাট-হল তাঁহার আর একটি কীর্দ্তি। তাঁহার প্রতিষ্ঠিত তারত-আশ্রমে অদেকভলি পরিবার সামাবাদী রীতিতে (communistic principled) ৰাস করিতেন। উহা অবগ্র রুণিয়ার কয়ুনিজমের মত হিংসার ছারা প্রবর্তিত হয় নাই—মানবপ্রাতিরই উহা বাহ্য প্রকাশ ছিন্স।

ব্রাক্ষসমাজের বাহিরেও কেশকজের প্রভাব বিশেষরূপে অমূভূত হইরাছিল। বাহারা পরমহংস রামরুফের মণ্ডলীভূজ বা মণ্ডলীভূজ না হইলেও তাঁহার প্রতি ভজ্সিনান, তাঁহারা পরোক্ষভাবে কেশকজেরও নিকট ঋণী। কারণ রামরুফ ও কেশব উভরের আধ্যাত্মিকতা যেমন নিজ নিজ স্বতন্ত্র ও স্থাধীন সাধনার তেমনি অংশতঃ পরস্পরের প্রভাবে বিকশিত হইরাছিল।

শ্রীযুক্ত করুণাদাস গুহ

শ্রীযুক্ত করুণাদাস গুহু যে সিংহল গরন্মেণ্টের পণ্য-শিল্পবিষয়ক পরামর্শদাতা নিযুক্ত হইরা সিংহল গিয়াছেন,



শ্ৰীযুক্ত কৰুণাদাস গুৰু

তাহা প্রবাসীতে আগে লেখা হইরাছে। তিনি বলের সরকারী পণ্যশিল-বিভাগে সার্ভেরার অব্ ইঙাল্লীভের কাল করিতেন। তিনি প্রথমে বাদবপুরের এঞ্জিনিরারিং স্থূলে শিক্ষালাভ করেন, পরে লিভারপুল গিরা সেখানে পণ্যশিল্পবিষরিনী রসায়নীবিদ্যার এম্ এস্সী উপাধি লাভ করেন। বান্ধালোরে গ্রেষকের কাজও তিনি কিছু দিন করেন। তাঁহার জার্মেনীর অভিক্ষতাও আছে।

পাটের চাষ কত কমাইতে হইবে

সরকারী একটি আপন-পত্ত হ'ইতে জানা যায়, যে, সরকার পাটচাষী দিগকে পাটচাষের রক্ষ পাঁচ আনা জমিতে এবার "স্বেচ্ছায়" পাটচাষ না-করিতে "পরামর্শ?" দিবেন।

পাটচায় বস্তুতঃ কত কমি:ব এবং পাটের দর তাহাতে বাড়িবে কিনা, পরে তাহা বুঝা যাইবে।

"অবনত"দিগের জন্ম আসন সংরক্ষণের কুফল

"অবনত"শ্রেণীসমূহের স্বন্ত আসন সংরক্ষণের একটা কৃষ্ণ এই হইরাছে, বে, বাঁহারা আগে অবনতত্ব অস্বীকার করিয়া আগনাদের সামাজিক মর্যালা বাড়াইবার চেটা করিডেছিলেন তাঁহারা অনেকে এখন সংরক্ষিত আসনগুলির প্রণাভনে সে চেটা ছাড়িয়া দিয়াছেন। ভবিষ্যৎ কৃষ্ণ এই হইবে, বে, তাঁহারা সংরক্ষিত আসনের "স্থবিধা" হারাইবার ভয়ে অবনতত্ব অস্বীকার করিয়া তাহার বন্ধন হইতে মুক্ত হইতে চাহিবেন না। "উচ্চ" জাভির লোকেরা "অবনত"দের উরয়ন চেটার ক্রমশং অধিক পরিমাণে ঘোগ দিভেছিলেন। ইহাতে অভাপর বাধা পড়িতে পারে।

এই সকল আশকা ও বাধা সক্তে সমূদর হিন্দ্র মধ্যে সংহতির্দ্ধির বিশেষ চেষ্টা করিতে হইবে।

গ্রামশিল্পসভা সম্বন্ধে গুব্দব

দিল্লী হইতে আগত এই একটা গুজৰ সৰ কাগজে স্থান পাইরাছে, বে, মহারা। গান্ধী সমগ্রভারতে প্রামশিল্প শুনকজ্জীবনের নিমিত্ত একটি সভা স্থাপন করায় ভারত-গবত্মেণ্ট প্রাদেশিক গবন্ধেণ্ট-সমূহকে এ-বিষরে সচেতন করিয়া

দিরাছেন। তাহার কারণ ও উদ্দেশ্<mark>ড সম্বন্ধেও ওজবটা</mark> নীরব নছে। অনুমান এই, বে, গবন্মেণ্ট চান না, বে, ভারতবর্ষের প্রামবাসীদের উপর (অর্থাৎ ভারতের অধিকাংশ লোকের উপর) গান্ধীন্দীর প্রভাব বর্দ্ধিত হর। প্রামশিশ্ব-সকল পুনঃপ্রবৃত্তিত হইলে গ্রামের লোকেরা উপকৃত হইবে, এবং তাহাদের উপর গান্ধীনীর (মুভরাং কংগ্রেসের) প্রভাব বাড়িবে। গুলব এই, বে, সরকার তাহা পছন্দ করেন না, এবং এই জন্ত সরকার নিজেই সব প্রামশিয় সংরক্ষণ ও পুন:প্রবর্তনের ভার শইবেন। বাস্তবিক ভাহা লইলে ত ভালই হয়, এবং গান্ধীজীও তাহাই মনে করেন। কিন্তু সে-বিধয়ে আমাদের সংনাহ আছে। ভারতবর্ষের অনেক শিল্প ধে মৃতপ্রায় তাহা পাশ্চাত্যের (প্রধানত: ইংলণ্ডের) বড় বড় কারখানা-সকলের প্রতিযোগিতার ফলে। গ্রামশিল্প পুন:প্রবর্তনের মানে ইংলগুীর অনেক কারখানার ব্লিনিষের কাট্তি কমান। যাহাতে হইতে পারে, যাহাতে ইংরেজ কারখানাওয়ালা ব্যবসাদারদের ক্ষতি হইতে পারে, সেক্সপ কাঞ্চ ভারতীয় ব্রিটিশ গবন্দেণ্ট করিতে পারেন কি?

শুজবের আর একটা অংশ এই, যে, গবল্পেণ্ট সন্দেহ করেন, গান্ধীনীর আসল মতলব প্রামনিরের সংরক্ষণ ও পুন:প্রবর্ত্ত:নর বাপদেশে তিনি গ্রাম্য লোকদের উপর প্রভাব স্থাপন করিয়া ভবিব্যতে খুব বাপকভাবে আইন-লঙ্গন প্রচেষ্টা চালাইবেন। গবর্নেণ্ট বাস্তবিক এরূপ সন্দেহ করিয়া থাকিলে পুলিসের লোকেয়া গান্ধীন্দীর প্রতিষ্ঠিত ভারতবাপী সমিতিটির কান্ত পণ্ড করিবার চেষ্টা করি:ত পারে। গান্ধীজীর মনে যে এরপ আশক্ষা না আসিরাছে এরূপ বোধ হয় না। তিনি আগে হইতেই সমিতিটিকে কংগ্রেম হটতে স্বতর্ম্ব প্রতিষ্ঠান রূপে স্থাপিত করিয়াছেন।

কংত্রেস ওয়ার্কিং কমিটির অণিবেশন

বোষাইরে গত অক্টোবর মাসে যে কংগ্রেস ওরার্কিং কমিট গঠিত হর, ভাহাতে বাংলাভাষী সভ্য এক জনও নাই; মধাৎ ব্রিটিশ-ভারতের অঙ্গীভূত কংগ্রেস-প্রাদেশসমূহ ভাষা অনুসারে গঠিত হইরা থাকিলেও উহার এক-পঞ্চমাংশ যে বাংলা ভাষা ব্যবহার করে তাহাদের এক জনও ঐ কমিটিতে নাই। কংগ্রেস ওরার্কিং কমিটির সভাসংখ্যা ২৫ জন বা অন্ততঃ ২১ জন করিবাকৈ প্রতিনিধি উহাতে থাকিতে পারেন। তাহা করা হয় নাকেন?

বাঙালী এক জনও যে কংগ্রেস ওরার্কিং কমিটিতে নাই, সেই দোষটি সারিরা লইবার জন্ত কমিটির অধিবেশনে ২।১ জন বাঙালী কংগ্রেসওরালাকে ডাকা হয়। এবারও ডাকা হইরাছে। কিন্তু কংগ্রেস কর্তৃপক্ষের মনে রাণা উচিত, যে, এমন কংগ্রেসওরালারাই বঙ্গের প্রতিনিধি বাহারা অস্তরে ও বাহিরে ম্পাইত: সাম্প্রদারিক বাটোরারার বিরোধী। বঙ্গে ভারতীর ব্যবস্থাপক শভার সভ্যানির্বাচনে তাহা প্রমাণিত হইরাছে, মুভাব বাবুকে বলীর প্রাদেশিক কংগ্রেস কমিটির সভাপতি-নির্বাচনে ভাহা প্রমাণিত হইরাছে, এবং এবার বঙ্গের ছই কংগ্রেস দিশের মধ্যে রফার ছারা মিলিত প্রাদেশিক কংগ্রেস কমিটি গঠিত হওয়ার ছারাও তাহা অংশত: প্রমাণিত হইরাছে।

ভারতীয় বিজ্ঞান কংগ্রেসে বড়লাট

কলিকাভায় বিজ্ঞান কংগ্রেসের যে অধিবেশন হইয়া গেল বড়লাট তাহার প্রারম্ভিক বক্ততা করেন। উহা পড়িলে শোকের মনে হইতে পারে, যেন ভারতবর্ষের ব্রিটিশ গৰনে টি ভারতে বৈজ্ঞানিক শিক্ষা বিস্তার ও বৈজ্ঞানিক গবেষণার জন্ত নিজের কর্ত্তবা করিয়াছেন, এখন অন্তেরা ষাহা করিবার করুক। আমাদের ধারণা সেরপ নতে। আমরা মনে করি, গব্রেকট "পিভিরক্ষা" মাত্র করিরাছেন। সব প্রাদেশে প্রাথমিক বিভাগর হুইতে আরম্ভ করিয়া বৈজ্ঞানিক শিক্ষার ব্যবস্থা করিলে তবে দেশে বৈজ্ঞানিক বাডিবে এবং বৈজ্ঞানিক গবৈষণার ভিদ্তি স্থাপিত হইবে। গ্রন্মেণ্টের নিজ ব্যবে দেশে বৈজ্ঞানিক গৰেষণা-মন্দির অৱই স্থাপিত হইরাছে **ঁহইতেছে**। কলিকাতা-বিশ্ববিদ্যালয়ের পরিচালিত বিজ্ঞান কলেজ স্থাপন ও তাহার কার্ক চলা ভারক্রাথ

পালিত, রামবিহারী ঘোষ ও ধয়রার কুমারের দান বাতীত হইতে পারিত না।

বিজ্ঞান কলেজের সকল বিভাগ এক জারগার একত্র করিলে তবে উহার কাজ ভাল করিয়া চলে। আপার সাকুলার রোডে বিজ্ঞান কলেজের কাছে জমিও প্রায় আট-নয় বিঘা আছে। দাম আনুমানিক তিন লাখ টাকা পড়িবে। তাহার পর ঘর-বাড়ী নির্মাণের ধরচ আছে। ভারত-গবর্মেণ্ট অন্ততঃ ঐ তিন লাখ টাকা ত অনায়াসেই দিতে পারেন। তাহা হইলে ব্রিব, ভারত-গবন্মেণ্ট খুব বিজ্ঞানোৎসাহী।

জাতীয় বৈজ্ঞানিক প্রতিষ্ঠান

শুর চন্দ্রশেখর রামন্ বাঙ্গালোরে একটি বৈজ্ঞানিক পরিষদ স্থাপন করিয়া ও তাহার নাম ভারতীয় বিজ্ঞান পরিষদ (Indian Academy of Science) দিয়া সমগ্র ভারতীয় বৈজ্ঞানিক পরিষদটি নিজের প্রভূত্তের অধীন রাখিবার চেষ্টা করেন। ভারতীয় বৈজ্ঞানিকদের মধ্যে এই বিষয়ে তর্ক-বিতর্ক ও বাগ-বিততার ইহাই স্ত্রপাত। স্থেবের বিষয়, যে, এই ঝগড়া মিটিয়া গিয়াছে, এবং সমগ্র ভারতের জন্ত "জাতীয় বৈজ্ঞানিক প্রতিষ্ঠান" (National Institute of Science) কলিকাতার স্থাপিত হইরাছে। তনিলাম এই মিটমাট প্রধানতঃ এক জন ইংরেজ বৈজ্ঞানিক কর্ম্মচারীর মধ্যস্থতায় হইরাছে। কেবল দেশী লোকদের স্বান্ধিতে হইলে আরও সম্ভোবের বিষয় হইত।

এই "জাতীয়" প্রতিষ্ঠানটির প্রথম (অবৈতনিক)
কর্মাচারী ও সদক্ষদের তালিকা ক্রন্টবা। ইহাদের মোট
সংখ্যা ৩০। তাঁহাদের মধ্যে ১০ জন ইংরেজ। সভাপতি
ইংরেজ ও সরকারী কর্মাচারী, সহকারী সভাপতি ইংরেজ ও
সরকারী কর্মাচারী। ২০ জন ভারতীয়ের মধ্যে ৬ জন
বাঙালী। ছ-জন সাধারণ সেক্রেটরীর মধ্যে এক জন সরকারী
ইংরেজ কর্মাচারী।

ভারতবর্ষে বৈজ্ঞানিক গবেষণা এত বেশী পরিমাণে ইংরেজদের দারা হইরাছেও হয়, তাহা সর্বসাধারণের জঞ্জাত।

প্রবাসী-বঙ্গসাহিত্য-সম্মেলন

গোরপপুরে প্রবাদী-কলসাহিত্য-সন্মেলনের অধিবেশন সহরে আমরা গত বৎসর ফান্তনের প্রবাদীতে একটি প্রবন্ধ লিখিরাছিলাম। এ-বংসর কলিকাতার যে অধিবেশন হইরা গেল, তাহার সম্বন্ধেও অনেক কথা লিখিবার আছে। কিন্তু এখনই তাহা লিখিতে পারিতেছি না, পরেও সব কথা পারিব কিনা বলিতে পারি না। তাহার কারণ, এবাব প্রবাদীর সম্পাদককে অভ্যর্থনা-সমিতির সভাপতির কাজ করিতে হইরাছিল, স্বতরাং দোষ ওল উদ্বাদিন, এবারকার অধিবেশন খে-ভাবে হইরা গেল তাহার জন্ত দায়ী নহেন এমন কোন লোকের দাবা হইলেই ভাল হয়।

বাংলা দেশের বাহির হইতে বাঁহারা আসিয়াছিলেন, ঠাহাদিগকে বঙ্গে বাঁহারা বিদ্যা ও কৃষ্টির নানা বিভাগে কৃতী তাঁহাদিগকে দেখিবার ও তাঁহাদের কিছু কথা শুনিবার মুযোগ দিবার চেটা করিয়াছিলাম। তাঁহাদের করেক জন কোন-না-কোন অধিবেশনে আসিয়াছিলেন। তাউয় বাঙালীদের কলিকাতার কোন কোন প্রতিষ্ঠান দেখাইবার ও দেখিবার সময় ছিল না। প্রবাসী বাঙালী ও বাঙ্গের অধিবার সময় ছিল না। প্রবাসী বাঙালী ও বাঙ্গের অধিবারীদের মধ্যে যে আত্মীয়তার সময় আছে, এই বোধটি উক্জল করিবার অভিপ্রায়ও আমাদের ছিল।

ব্রহ্মদেশবাসী ভারতীয়দের দাবী

জরেণ্ট পার্লেমেণ্টারী কমিটির রিপোর্টে পরিষার করিয়া বলা হইয়াছ, বে, এক্সদেশকে ভারতবর্ষ হইডে পৃথক্ করা হইবে ও পৃথক্ দেশ বলিয়া শাসন করা হইবে। তাহার সঙ্গে ইহাও বলা হইয়াছে, বে, ব্রিটিশ সমাটের বিটিশ-বংশীর প্রজ্ঞারা বা ব্রিটেনের স্থারী অধিবাসী অন্ত প্রজ্ঞারা মবাধে ব্রক্ষদেশে ঘাইতে, বসবাস করিতে ও তথায় কোন চাকরী ব্যবসার বা অন্ত কাজ করিতে পারিষে; তাহাতে, বাধা হয় এরূপ কোন আইন ব্রক্ষদেশের ভবিষ্যৎ ব্যবহাপক সভা প্রশন্নন করিতে পারিষে না। কিছু ভারতীয়দের সম্বন্ধে উক্ত রিপোর্টে তাহাজের স্বার্থরক্ষার অন্ত এরূপ কিছু বলা হয় নাই, বরং বলা হইয়াছে, বে, ব্রের্মার গ্রপ্রের সম্বৃতি

শইরা ভারতীয়দের ব্রহ্মদেশ-প্রবেশে বাধান্সক আইসের
থসড়া ব্রহ্মদেশীর ব্যবস্থাপক সভার উপস্থাপিত হইডে
পারিবে। বলা বাহুল্য, ব্রহ্মদেশের গবর্ণর হইবেন জয়েন্ট পারেবি। বলা বাহুল্য, ব্রহ্মদেশের গবর্ণর হইবেন জয়েন্ট পারেশেটারী কমিটির সভাদের জা'ওভাই ইংরেজ। স্তরাং কমিটি ভারতীয়দের প্রতি থেরূপ স্থায়পরায়ণতা ও সহাস্তৃতি দেখাইয়াছেন, গবর্ণর তাহা অপেকা বেশা পরিমাণে ঐ হুটি গুণের পরিচয় দিবেন, আশা করা বার না—তিনি ওরূপ আইন ব্যবস্থাপক সভার পেশ করিবার অনুসতি সহজেই দিবেন।

আমরা এরপ একচোথো স্থপারিশের সম্পূর্ণ বিরোধী। ভারতবর্ষের লোকদের ব্রহ্মদেশে এবং ব্রহ্মদেশের লোকদের ভারতবর্ষে যাতায়াত, বাস, ব্যবসা-বাণিক্ষ্য, চাকরী প্রভৃতি করার সম্পূর্ণ ও অবাধ অধিকার থাকা উচিত।

ব্রহ্মদেশের আয়তন ২,৩০,৪৯২ বর্গ-মাইল, লোকসংখ্যা
মাত্র ১,৩২,১২,১৯২। অর্থাৎ তথায় প্রতি বর্গ-মাইলে ৫৬
জন করিয়া লোক বাস করে। স্তরাং এরপ বিরলবস্তি
বৃহৎ দেশে আরও অনেক লোকের জায়গা হইতে পারে।
অব্যবহিত নিকটেই খনবস্তি ভারতবর্ষ—বলদেশ ও আসাম।
ব্রন্ধের ধর্মা ও ক্লাষ্ট ভারতবর্ষ হইতে তথায় গিয়াছে।
ভারতবর্ষের অনেক অর্থ ব্রহ্মদেশে ব্যয়িত হইয়াছে ও
ধাটিতেছে। ব্রহ্মদেশ শীতপ্রধান দেশ নহে, যে, সেধানে
কেবল ইউরোপীয়রাই উপনিবেশ স্থাপন করিতে পারে।
স্তরাং আইনের জোরে ভারতীয়দিগকে ব্রহ্মে যাইতে নাদেওয়া বা ভাহাদিগকে সেধানে অতিষ্ঠ করিয়া ভূলিয়া
ভাড়ান অভ্যন্ত অন্তায় ও অস্বাভাবিক হইবে।

ব্রহ্মদেশবাসী ভারতীয়ের। গত গ্রীষ্টমাসের সময় কন্ফারেজ করিয়া রিপোটের প্রতিবাদ করিয়াছেন, এক ব্রহ্মদেশে ভারতীয়দের স্থার্থককার্থ যে যে ব্যবস্থা হওয়াউচিত ভাহাও বলিয়াছেন। আমরা এই কন্ফারেজের প্রভাবগুলি ভারসক্ত মনে করি। আশা করি ভারতীয় দৈনিক কাগজ-গুলিতে সেই সকল প্রস্তাবের সম্চিত আলোচনা ও সমর্থন হইবে।

লগুনে ভারতীয় ললিতকলা প্রদর্শনী লগুনে ইণ্ডিয়া সোগাইটি নামক একটি সমিতি আছে। এই সমিতিই প্রথমে রবীক্সনাথের ইংরেজী স্মীতাঞ্চলি প্রকাশিত করিয়াছিলেন। ইহারা ভারতবর্ধের এবং বে- সব প্রাচ্য দেশ ভারতবর্ধ হারা প্রভাবিত ও ভারতবর্ধ বাহাদের হারা প্রভাবিত, সেই সব দেশের ললিভকলা ও সাহিত্যাদির অফুশীলন করিয়া থাকেন। "ইণ্ডিয়ান আর্ট এও লেটার্স" নামক ইহাদের একখানি পত্রিকা আছে। তাহা বৎসরে তুই বার বাহির হয়।

এই সমিতি গত ডিসেম্বর মাসে লগুনে ভারতীর নানা প্রকারের চিত্র, মূর্ত্তি, এবং স্থাপত্যের ফোটোগ্রাফ ও রেথা-চিত্রের প্রদর্শনী খুলেন। প্রদর্শিত জিনিষগুলির সংখ্যা ছিল প্রায় ৫০০।

প্রদর্শনীট খুলিবার তারিধ নির্দিষ্ট ছিল ১০ই ডি:সম্বর। উহা ধোলা হইবার আগে ঐ তারিখের টাইমৃদ্ উহার সম্বন্ধে একটি প্রাবন্ধ প্রাকাশ করেন। তাহাতে লিখিত ছিল:—

"It is a much better exhibition than the somewhat scrappy representation of contemporary Indian art that we have had hitherto in London would have led any-body to expect, which is to say that it has completely fulfilled its purpose."

টাইমৃদ্ আরও বলেন :---

"So far as can be judged the representation of the different parts of India is fairly well balanced, and it is unlikely that anything of special significance has been ignored."

টাইম্সে লিখিত হইরাছে, বে, "A good many of the works are loans," "প্রদর্শিত সামগ্রীসমূহের অনেকগুলি ঋণ দেওরা," অর্থাৎ সেগুলি আটিইরা স্বয়ং পাঠান নাই, তৎসমূদ্রের ক্রেতা বা অন্ত প্রকারের অধিকারীরা পাঠাইরাছেন। বাঁছারা খাছারা ঋণ দিয়াছেন, তাঁহাদের ক্রেক জনের নাম ক্রিবার পর টাইম্স্ লিখিতেছেন:—

"The works are grouped according to States and Provinces. This makes for convenience, though it would be extremely rash for anybody but a person thoroughly acquainted with the whole history of Indian art to attempt a definition of local styles. The broad division is that between the work of the Bombay school and that from other parts of India. It is at Bombay that the application of Western methods of teaching has gone farther. Speaking generally it can be said that the results—in the first gallery—seem to show that such teaching can be digested without serious disturbance to the native tradition. A fair statement of the case would be to say that, having regard to contemporary conditions, the work from Bombay strikes one as being more businesslike,

but that many of the things of the highest artistic interest are to be found elsewhere."

শেষ উদ্ধৃত বাকাটিতে বোদাইরের কাজের সম্বদ্ধে
মন্তব্যটিকে, আর্টের দিক্ দিরা, বোদাইরের শিল্পীরা
আপনাদের প্রশংসা মনে করিবেন কিনা জানি না।
তাহাতে যাহা বলা হইরাছে সোজা কথার তাহার মানে,
বোদাইওরালারা ব্যবসা বুরে ভাল, কিন্তু উচ্চতম আর্টের
নিদর্শন দেখিতে হইলে প্রদর্শনীর অন্তত্র বাইতে হইবে।

১. ই ডিসেম্বর টাইম্সে প্রদর্শনী খুলিবার সভার বৃদ্ধান্ত দেওরা হয়। ডাহার সভাপতি ছিলেন বলের ভৃতপূর্বল গ্রবর্ণর লর্ড জ্বেটলাণ্ড। পূর্ব্বে তিনি লর্ড রোনাল্ডশে ছিলেন। তিনি বলেন :—

"The art movement noticeable in India during recent years was the outcome of an instinctive impulse towards self-expression. Indian art had certainly been affected by contact with the art of Europe—more so in the West of India perhaps than in the East—and there had been occasions on which it had been in danger of becoming little more than imitative. But when such a tendency had shown itself the movement had always languished, and he had little hesitation in saying that the recent art of India remained true to what, broadly speaking, might be said to have been throughout the centuries the distinguishing characteristic of Hindu as compared with European art—that the artist had aimed at giving expression to mental concepts than at reproducing the objects of the external world around him.

at giving expression to mental concepts than at reproducing the objects of the external world around him.

"It was the same spirit of revolt against the Westernization of India which had played so large a part in the National Movement that inspired the little circle of men who brought into being the new school of painting in Bengal."

বিশাতের রয়াশ একাডেমীর সভাপতি স্তর উইশির্ম নিউরেনিন **অ**ভঃপর বলেন :—

"The exhibition was the first complete survey of modern Indian art that had been held in this or any other country, and he thought it would be of great interest to British artists. He quoted a comment made in *The Times* yesterday that the exhibition proved that 'practically all over India the native talent familiar to us in works of the past survives, and is well worth cultivating.' This, he thought, was a very important matter. The tendency today was to universalize everything in all matters of life, and art had not escaped. They were glad to see work that indicated that India had developed on its own lines and not on Western lines."

অতংপর সহকারী ভারত-সচিব মি: বাটলার কিছু বলেন। তাহাতে বোৰাই বা বাংলা কিংবা বলে ভারতীঃ আর্টের বা তাহার ইউরোপীর বা বাঙালী প্রবর্ত্তক্ষের নিলা বা প্রাণ্ডাল কিলা। তাহার বক্তা হইতে কেবল ছটি বাক্য উদ্ধৃত করিলেই চলিবে। "We in this country were apt to hear of India and her doings mainly in connection with politics, and it was a welcome change to politicians as much as to anybody to have an opportunity of assessing the great achievements of modern India in some other field. He was afraid that hitherto only those who had had the chance of visiting India had been able, apart from isolated examples, to realize that India today had an art that was the legitimate successor of all those priceless treasures which dated from the times before the British came to her country."

টাইম্সে বাহাদের বক্তা বা তাহার সংক্ষিপ্রার বাহির হইরাছে তাহার মধ্যে কেবল মাত্র বর্জমানের মহারাজ্যা, আর কাহারও প্রশংসা বা নিলা না করিয়া, বোহাইয়ের আর্ট-সূলের প্রিজিপ্যাল মিঃ সলোমনের উল্লেখ করিয়া বলিয়াছিলেনঃ—

"He was glad to see the vigorous development of art in Western India under the guidance of Mr. Gladstone Solomon, the Principal of the Bombay School of Art."

অন্তান্ত বিষয়ের মত আর্টের সম্বন্ধেও বর্জমানের মহারাজার মন্তব্যের মূল্য বাচাই করা অনাবগুক।

পরম্পরাগত ঐতিহ অনুধারী রীতির প্রশংসা কেছ কেছ করিয়াছিলেন। কিন্তু এখন ইংরেজদের মধ্যেও অনেকে তাহা করিলেও হাভেল সাহেব প্রথমে তাহা করিয়া নিন্দাভাজন হইয়াছিলেন। স্তরাং আয়ুনিক সময়ে ভারতীয় আর্টের পুনক্ষজীবন সম্পর্কে হাভেল সাহেবের প্রশংসা কেছ প্রসক্ষজমে করিলে তাহা বেখাপ হইত না। কিন্তু কেছ তাঁহার প্রশংসা করিয়াছিলেন দেখিভেছি না; ভবে তাঁহার নিন্দাও চোখে পড়িল না।

অনেক্টে মনে করেন, বিলাতী দৈনিক ম্যাঞ্চার গার্ডিয়ানের মতের গুরুত্ব আছে। প্রদর্শনীটি সম্বন্ধে থ কাগন্ধে লিখিত হইয়াছিল:—

"Indian art today is still conscious of its past and its rather muddled present. As a general criticism it may be justly said that those artists who have worked on traditional lines—whether of Buddhist or Hindu or Moslem inspiration—are in a fair way to laying the foundations of modern Indian art, which may well be no less than the great art of her past. Unfortunately, in this renaissance, with few teachers and a sub-conscious feeling that Indian art was Indian rather than universal, many Indian painters turned to Europe or the Far East. Although Indian art in the past has shown that it is capable of assimilating foreign pictorial modes, up to the present the influence of the West and of Japan has been deplorable. This exhibition shows that, if Indian artists are content to work on the basis of the great Buddhist, Hindu, and the Mogul schools, they may succeed in creating an art at least equal to the great art of India's past."

এই ৰত ঠিক হইলে বাঙালী চিত্ৰকরেরা ঠিক পধ

ধরিরাছেন বলিতে হইবে। শুর মারে হামিক্ এক সমর ভারতবর্ধে কাজ করিতেন। তিনি কোন বাঙালী ভদ্রলোককে যে ব্যক্তিগত চিঠি লিখিরাছেন, তাহাতে প্রদর্শনীট সহস্কেও কিছু কথা আছে। তিনি লিখিরা-ছেন:—

"We thoroughly enjoyed our visit to the opening and seeing your work and the pictures from your students. It is a beautiful Exhibition and much appreciated by many visitors. For myself, I think you in Bengal are working on better lines than Bombay—though I dare say for those who have not been to India the Bombay pictures have the greater appeal."

প্রদর্শনীটি সম্বন্ধে টাইম্স্ ও ম্যাঞ্চোর গার্ডিরান ছাড়া অন্তান্ত বিলাতী কাগজে মন্তব্য বাহির হইরা থাকিলে তাহা আমাদের হস্তগত হয় নাই। উপরে বাহাদের মত উদ্ধৃত হইরাছে, তাঁহারা ছাড়া প্রদর্শনীর প্রত্যক্ষদর্শী অন্ত কোন ইংরেজের মতও আমরা অবগত নহি।

কোথায় কত জন ভোট দিয়াছে

সম্প্রতি ভারতীয় ব্যবস্থাপক সভার যে সভানির্বাচন হইয়া গিয়াছে, তাহাতে ভিন্ন ভিন্ন প্রদেশের নির্বাচকদের মোট সংখ্যা, তন্মধ্যে কত জন ভোট দিয়াছিলেন এবং শতকরা কত জন ভোট দিয়াছিলেন, তাহার তালিকা নীচে দেওয়া হইতেছে। ইহাতে সব প্রদেশের সংখ্যা দেওয়া হর নাই।

| প্রদেশ | মোট সংখা | ভোট দিয়াছিলেন | শতকরা অমুপাত |
|----------------------|----------------------|-----------------|---------------------|
| আজমীর | ७€ ≈ ७ | «৮৫ ৪ | 9 5.5 |
| অাসাম | ₹₽8€• | : 3.96 | 80.53 |
| বাংলা | : 0064P | 42 2. | २৮.१ |
| ব্ৰহ্মদেশ | « • e 9 9 | 56242 | ₹•.৯৯ |
| মধ্যপ্রদেশ | 80005 | ÷ ७७ ₹ 4 | ev. |
| शि धी | 32093 | 8 % २ | ৩৮.৬২ |
| উ- भः मोः श्र | 9670 | ¢128 | 90.00 |
| পঞ্জাৰ | *8-99 | 8; 200 | 60.0 |

দেখা যাইতেছে, যে, বংক শতকরা কম লোক ভোট দিরাছে।

नात्री निसांविकारमत जानिका नौरह मिरजहिं। মোট সংখ্যা ভোট দিয়াছিলেন শতকরা ছানুপ্রার্ড প্রদেশ ::2 4.8 আসাম 2012 6 A F ৰাংল' 6.26 1222 34779 : 4.80 মধ্যপ্রদেশ 21269 २७१ निही 250 209 ₹6.0€ প্ৰভাব 2489 296 22.9

নারীদের মধ্যেও বঙ্গে শতকরা কম নির্কাচিকা ভোট দিয়াছিলেন।

বাংলা দেশে নান। বিষয়ে অবসাদ ও ওদাসীন্ত আসিয়াছে। বাঙালী পুরুষ ও নারীর জাগরণ আবশুক।

"চার অধ্যায়"

কম্বেক মাস পূর্ব্বে রণীক্রনাথ তাঁহার যে ছোট উপস্তাসটি পড়িয়াছিলেন, তাহা "চার অধ্যায়" নাম দিয়া সম্প্রতি বিশ্বভারতী গ্রন্থানর হইতে প্রকাশিত হইয়াছে। প্রধান নায়ক বিভীষিকাপদ্বী অতীক্র, যদিও সে দলের সর্দার নয়। দলের সন্ধার ইন্দ্রনাথ এক জন উপনায়ক। অন্ত করেক জন উপনায়কেরও দেখা পাওয়া যায়। নায়িক: এলা। এলা দলে থাকিলেও তাহার ক্লত কোন বিভীষিকা-পছাতুদারী বৈপ্লবিক কাজের বর্ণনা বা উল্লেখ পুস্তকে নাই। অতীক্সের নিজের মুর্থেই তাহার কোন কোন কাজের বৃত্তান্ত পাওয়া যায়। যথন রবীক্রনাধ কলিকাভায় গলট পড়া শেষ করেন, তখন শ্রোতাদের মন এরপ অভিভূত হইরাছিল, যে, কেহ কোন মন্তব্য প্রকাশ করেন নাই। **একা** আবার পড়িয়া মনের অবস্থা সেইরপই হইল। একবার শুনিয়াছিলাম, তথাপি কৌতূহল হাস পায় নাই। যথন পড়া শেষ করিলাম, তথনকার মনের অবহা প্রকাশ করিবার মত কথা খুঁজিয়া পাইতেছি না।

নাগপুরের কংগ্রেস-নেতা অভ্যঙ্কর

নাগপুরের প্রাসিদ্ধ কংগ্রেস-নেতা শ্রীবৃক্ত অভাঙ্গরের অকালমৃত্যুতে মধাপ্রদেশ বিশেষ ক্ষতিগ্রস্ত হইয়াছে। তিনি ১৯২১ সালে ব্যারিষ্টরী ত্যাগ করিয়া অসহযোগ-আন্দোলনে যোগ দিয়াছিলেন। ১৯২৬ সালে তিনি ভারতীয় বাবস্থাপক সভার বিভাগি নির্বাচিত হইয়াছিলেন। এবারও তিনি উহার পাত্য নির্বাচিত হইয়াছিলেন। তাহার প্রতিক্ষণী ছিলেন ভাঁভার মুঞ্জে অপেক্ষণ অনেক বেলী ভোট পাইয়াছিলেন তাহা হইতেই তাহার লোকপ্রিয়তা অমুদিত হইডে পারে।

আনে ফ বিন্ফীল্ড হাভেল

ভারতীয় দলিতকলার প্রথম ও প্রধান ইউরোপীর ব্যাধ্যাতা ও সমর্থক, ভারতীয় কাক্ষণিয়ের প্রকল্পীবনপ্রয়াসী, এবং ভারতীয় আর্যা-ইভিহাসের অস্ততম লেখক কলিকাতা গবন্দেও আর্ট-মূলের ভূতপূর্ব অধ্যক্ষ আনে ই বিন্দীল্ড হাভেল সাহেবের সম্প্রতি ইংলওে ৭০ বৎসর বয়সে মৃত্যু হইয়াছে। তাঁহার সম্বন্ধে তিনটি লেখা অস্তত্ত প্রকাশিত হইল। তাঁহার সম্বন্ধে তিনটি লেখা অস্তত্ত প্রকাশিত হইল। তাঁহার মূর্জির ফোটোগ্রাফথানি কলিকাতা গবন্দেও আর্ট-মূলের বর্তমান অধ্যক্ষ শ্রীষ্ক্র মৃকুলচক্র দে সৌজন্য সহকারে ভূলিয়া দিয়াছেন। মূর্জিট শিল্পী শ্রীষ্ক্র কে বেঙ্গুলা নির্মিত। উহা গবন্দেও আর্ট-মূলে আছে।

বঙ্গে তুর্ভিক

কোথাও অনাবৃষ্টি, কোথাও বা অতিরিক্ত প্লাবনে বঙ্গের অনেক জেলায় ছভিক্ষ হইয়াছে। অনাবৃষ্টির কুফল দেখা দিয়াছে প্রধানতঃ মুর্শিদাবাদ ও বীরভূম জেলায়। বাকুড়া জেলাভেও অন্নাভাব উপস্থিত হইয়াছে। প্লাবন হইয়াছিল মালদহ, রাজসাহী, নদীয়া, যশোহর, ত্রিপুরা এবং ময়মনসিং জেলার কোন কোন অঞ্চান।

অক্সমন্ত্র সরকারী সাহায্য কোথাও কোথাও দেওরা হইয়াছে। কিন্তু অধিকতর সাহায্য আবগুক।

নিখিলবঙ্গ বেকার যুবক সম্মেলন

গত ২৬শে ও ২৭শে ডিসেম্বর কলিকাতার আলবাট-হলে নিধিলবঙ্গ বেকার গুবক সম্মেলনের মিডীর বাহিক অধিবেশন হয়। কলিকাতার মেরর শ্রীযুক্ত নলিনীরঞ্জন সরকার সভাপতির আসন গ্রহণ করেন এবং বাংলা-গবর্নোণ্টের ক্লমি ও শিল্প বিভাগের মন্ত্রী নবাব কে জি প্লম ফারোকী সম্মেলনের উল্লোধন করেন।

বেকার-সমস্তা সমাধানের জন্ত গবর্মেণ্ট কি কি উপার অবলয়ন করিরাছেন মন্ত্রী-মহাশর তাহা বলেন। মেরর মহাশর, সরকারী ও বেসরকারী কি কি উপার অবলম্বিত হুইতে পারে, তাহা নির্দেশ করেন। বেকার সমস্তা ছাই প্রকার। "শিক্ষিত" ও মধ্যবিদ্ধ শ্রেমীর লোকদের মধ্যে উপার্জনের উপারের অভাব এক সমস্তা, এবং অশিক্ষিত ও নিম্ন শ্রেণীর মধ্যে জীবিকার অভাব আর এক সমস্তা। ছটিরই সমাধান আবগুক। আগ্রা-অবোধ্যা প্রদেশে বে বেকার-সমস্তার সমাধানকরে তথাকার গবর্মেণ্ট স্তর তেজ বাহাছর সঞ্চকে সভাপতি করিয়া একটি কমিটি নিযুক্ত করিয়াছেন, তাহা "শিক্ষিত" শ্রেণীর মধ্যে বেকার-সমস্তা।

অবশু হুই প্রকার বেকার-সমস্থারই পরস্পরের সহিত সম্পর্ক আছে, এবং রোজগারের কোন্ কোন্ উপার শিক্ষিতদের ও কোন্ কোন্ উপার অশিক্ষিতদের অবশয়নীয়, তাহা ঠিক্ করিয়া নির্দেশ করিয়া দেওয়া যায় না। তথাপি বেকার-সমস্থা যে হ্-রকমের তাহা মনে রাধা দরকার।

লেখাপড়াজানা লোকদের বেকার অবস্থা নানা কারণে লোকের অধিক মনোযোগ আকর্ষণ করে। ভাহা দুরীকরণের উপায় অনেকে অনেক রকম বলেন যাহা অনুসারে কাজ বেশী হয় না। তাহার সব দোষ অবভা বক্তাদের নয়। আমাদের মাথাতেও নানা বৃদ্ধি, থেয়াল বা ম্বপ্ন আসিয়া থাকে। তাহার একটা অনেক বার বলিয়াছি, **भावात विन-विभिध छमञ्जा**ति कांक गवत्त्र के कतिरवन ना । দেশময় প্রাথমিক শিক্ষা বিস্তারের জন্ত এত প্রাথমিক বিদ্যালয় স্থাপিত হউক, বাহাতে পাঁচ বৎসরের উর্ধবয়স্ক ছে**লেমে**রেরা সবাই বিনা বেতনে পড়িতে পারে। এইগুলিতে অনেক হাজার শিক্ষক-শিক্ষয়িত্রী নিযুক্ত হইতে পারিবেন। বার নির্মাহ করিবার জন্ত বাংলা-গবরেণ্ট আবশুক-মত মূলধন ধার করুন। তাহার হৃদ ও আসল সিহিং ফণ্ড স্থাপন ছারা শোধ করিবার ব্যবস্থা কক্ষন। জানি, বলা হইবে বাংলা-গবনের্থের টাকা নাই। বেক্তারত-গবদ্মে তেটর অক্তার শোষণে বাংলা-গবদ্মে ট দরিন্ত, নেই ভারত-গবদ্মেণ্টকে বাংলা-গবদ্মেণ্ট চাপিয়া ধকন। •

ব্রিটেনে-ভারতে বাণিজ্যচুক্তি

ব্রিটেনে-ভারতে আবার একটা বাণিশাচুক্তি হইরা গিরাছে। ভারতীয় কোন ব্যবস্থাপক সভার, ভারতীয় লোকদের প্রতিনিধিস্থানীর কোন সভার সম্বৃতি লইরা
এই চুক্তি হর নাই। ইহা ভারতবর্ধের ব্রিটিশ গবর্মেণ্ট
এবং ব্রিটেনের ব্রিটিশ গব্মেণ্টের মধ্যে চুক্তি। অথচ
ইহার নাম ইংগো-ব্রিটিশ পাক্টি! এটা অটোরা-চুক্তির
ছোট ভাই—সহোদর কিংবা মাসভূতো, বা বল তাই।
ইহাতে ব্রিটেনের স্বার্থের দিকে বে খুব দৃষ্টি রাখা হইরাছে,
তাহা বলাই বাহুলা, ভারতবর্মের স্বার্থের কথা না-তোলাই
ভাল।

বেলুড়ে লোহার কারথানা

বেলুড়ের কাছে যে বৃহৎ লোহার কারধানা স্থাপিত হইতেছে, তাহাতে বাঙালীদের মূলধন বোধ হয় বেলী নাই। তাহার জন্ত উল্যোক্তাদিগকে দোব দেওলা বার না। তাহার ডিরেক্টরদের মধ্যে এক জন বাঙালী, এক জন ইংরেজ, হু জন জাপানী ও তিন জন মাড়োরারী। কারধানাটি যধন বাংলা দেশে স্থাপিত হইরাছে, তথন শিক্ষিত ও অশিক্ষিত বাঙালীদিগকে ইহার কাজে নিযুক্ত করিলে তাহা অন্তায় ও অস্বাভাবিক হইবে না।

ছেলেমেয়েদের একত্র শিক্ষা

করাচীতে সম্প্রতি যে সমগ্রভারতীয় নারী-সংশ্রনন হইয়। গিয়া:ছ, তাহাতে ছেলেমেয়েদের একত্র শিক্ষা সমর্থিত হইয়াছে। ইহা প্রাচীনপদ্দীদের মনঃপৃত হইবে না। কিন্তু তাঁহাদিগকেও মনে রাখিতে হইবে, যথন ছাত্রছাত্রীদের একত্র শিক্ষার উচিত্যান্তিত্যের কথা কেহ তুলে নাই, তখন হইতে পাঠশালায় ছেলেদের সঙ্গে অনেক মেয়ের লেথাগড়া শেখা চলিয়া আসিতেছে। অতএব, অত্তঃ প্রাথমিক শিক্ষার ক্ষেত্রে তাহাদের একত্র সম্প্রতি ও উৎসাহ দান কক্ষন। নতুবা ব্যক্তিটির সকলের শিক্ষার ব্যবহা কবে বে বালিফা-কিন্তালয়সকলে হইবে, তাহা ভবিষ্যৎ ইতিহাসের অধ্যায়বিশেবে থাকিতে পারে, না-ধাকিতেও পারে।

প্রাচীনপদীরা জানেন, কণুমুনির আশ্রমে পালিতা।
শক্ষলার সধী বেমন অনস্থা ও প্রিয়ংবলা ছিলেন, তেমনি
সতীর্থ ছিলেন শার্কধির ও শার্হত। শক্ষলা কিন্ত ইহালের কাহারও প্রণয়পাশে বদ্ধ হন নাই—হইয়াছিলেন হল্পান্ত নামক এক আগন্তকের।

বঙ্গে নৃতন ট্যাক্যের প্রস্তাব

ভারত-গবনে দি বন্ধদেশে সংগৃহীত রাজ্পের থ্ব বেশী অংশ শোষণ করার বাংলা-গবনে দি বরাবরই দরিদ্র। সেই দারিদ্রা কিঞ্চিৎ দুর করিবার জন্ম গোটা চার পাঁচ নৃতন ট্যাক্স বিদিনে শুনা ঘাইতেছে। ঘণা—(১) যত বৈহাতিক শক্তি গৃহস্থালীতে বাবহুত হয়, ভাহার একক (unit) প্রতি অভিরক্তি নৃল্য আদার; (২) থিয়েটার সিনেমা সার্কাস প্রভৃতির এক টাকার কম ম্লোর টিকিটেরও উপর আমোদ-কর; (৩১) প্রোবেট-টাারা বৃদ্ধি; (৪) কোট-স্বিদ্ধি; (৫) ভামাক ইত্যাদি বিক্রীর জন্ম লাইদেশ দী।

যাদবপুর যক্ষা-হাসপাতাল

নাদবপুর যক্ষা-হাসপাতালে এ-পর্যান্ত ৬১৩ জন রোগী ভর্ত্তি করা হইয়াছে। চিকিৎসায় ফলে প্রায় ২০০ কর্থাৎ প্রায় এক-ভৃতীয়াংশ আরোগ্য লাভ করিয়াছে। ইহার দ্বারা ইহার উপকারিতা বুঝা যাইতেছে। ইহাতে মোট ৭৫টি শ্যা আছে, তাহার মধ্যে ২৫টির জন্ত রোগীদের কাছ পেকে টাকা লওয়া হয় না। সঙ্গতিপন লোকেরা সাহায্য করিলে ইহার ছই রকম শ্যারই সংখ্যা বাড়িতে পারে। নাড়া আবশ্রুক ও উচিত। ডা শ্রুর নীলরতন সরকার মহাশ্য ইহার পরিচালক-সমিতির সভাপতি।

্বার প্রভাব বাবুর কয়েকটি মন্তব্য

স্ভাষ বাৰু ইউরোপ ঘাইবার জন্ত বোম্বাই বন্দরে জাহাজে উঠিবার পূর্বে সংবাদিকদিগের প্রশ্নের উত্তরে ভারতীয় রাষ্ট্রনীতি সংশীয় কোন কোন কিবনে নিজের মত প্রকাশ করিয়াছিলেন। পুলিস ভাছাতে বাধা দের নাই। ভাছাতে বুঝা যায়, তিনি তখন রাজবলী ছিলেন না।

মহাত্মা গান্ধীর রাজনীতিক্ষেত্র হইতে অবসরগ্রহণ ফলে বাবু কার্যাতঃ প্রকৃত অবসরগ্রহণ মনে করেন মা। কারণ, কংগ্রেস তাঁহার নির্দিষ্ট কার্যাতালিকা প্রহণ করিয়াছেন, তাঁহারই গোঁড়া অমূচরেরা এখন উহার কার্যানির্বাহক সমিতির সভা, তাহাতে ভিন্নতাবদম্বী কংগ্রেসওয়ালাদের স্থান হয় নাই, এবং কংগ্রেসের কার্যানির্বাহক সমিতির প্রধান কর্মীরা এখনও গান্ধীকীর পরামর্শ গ্রহণ ও অনুসরণ করেন এবং তিনি পরামর্শ দিয়া থাকেন। মুভাব বাবুর মন্তব্য ভিত্তিহীন বলা বায় না।

তিনি বলিয়াছেন, জাতীয়তার সার বস্তু বাদ দিয়া ঐক্যন্থাপনের বা ঐক্যের কোন মূল্য নাই। জাতীয়তার উপর দাঁড়াইয়া যদি একতা পাওয়া বায়, তাহা হইলে তাহা বাঞ্জনীয়। বাস্তবিক, সাম্প্রদায়িক বাটোয়ারা কার্যতঃ মানিয়া লইয়া ঐক্যন্থাপনের কোনই মূল্য নাই।

প্ভাষ বাবুর অন্তান্ত কথাও মুল্যহীন নহে।

় মডার্ণ রিভিয়ুর **উনতিংশ বৎসর**

মানাদের ইংরেকী মাসিকপত্র মডার্গ রিভিয়ুকে ভারতবর্ষের বাহিরে, ভারতবর্ষের অনেক প্রাদেশে, এমন কি বাংলা দেশেও অনেকে ভারতবর্ষের শ্রেষ্ঠ মাসিকপত্র বলেন। আমেরিকার ভারত-বন্ধু সাণ্ডালাণ্ড সাহেব ত বলিয়াছেন, এত ভিন্ন ভিন্ন বিষয় সম্বন্ধে উৎকৃষ্ট প্রবন্ধ ও আলোচনার পূর্ণ ইহার মত মাসিক কাগজ আমেরিকার নাই, ইংলণ্ডেও নাই। এই সব প্রালংসায় আমাদের আনন্দ হয় না বলিলে ঠিকু বলা হইবে না। ইহার গ্রাহকসংখ্যাও কম নয়। কিন্ত ইহা বেরূপ বহুবায়সাধ্র্যাও বহুপ্রমাধ্যা, তাহাতে ইহার গ্রাহকসংখ্যা বিশ্বণ হইলে তবে নিশ্বিষ্ঠ হওয়া য়ায়। পত্রিকাটি ২৯শ বৎস্বের পড়িয়াছে।



"সত্যম্ শিবম্ স্থন্দরম্" "নায়মামা বদহীনেন শভ্যঃ"

৩৪শ ভোগ ` ২য় খাণ্ড

কাজ্ঞন, ১৩৪১

৫ম সংখ্যা

ভুল

রবীশ্রনাথ ঠাকুর



সহসা তুমি করেছ তুল গানে
বেধেছে লয় তানে,
শ্বলিত পদে হয়েছে তাল ভাঙা
সরমে তাই মলিন মুখ নত
দাঁড়ালে থতমতো
তাপিত ছটি কপোল হ'ল রাঙা।
নয়নকোণ করিছে ছলোছলো
শুধালে তবু কথা কিছু না বলো,
অধর থরো থরো
আবেগভরে বুকের 'পরে মালাটি চেপে ধরো॥

অবমানিতা জানো না তুমি নিজে
মাধুরী এল কী যে
বেদনাভরা ক্রটির মাঝখানে।
নিখুঁৎ শোভা নিরতিশয় তেজে
অপরাজেয় সে যে
পূর্ণ নিজে নিজেরই সম্মানে।

একট্থানি দোষের ফাঁক দিয়ে সদয়ে আজি নিয়ে এসেছ প্রিয়ে করুণ পরিচয়, শরংপ্রাতে আলোর সাথে ছায়ার পরিণয়।

ভূষিত হয়ে ঐটুকুরই লাগি
আছিল মন জাগি
বুঝিতে তাহা পারি নি এতদিন।
গৌরবের গিরিশিখর 'পরে
ছিলে যে সমাদরে
ভূষার সম শুভ্র স্থকঠিন।
নামিলে নিয়ে অঞ্চজলধারা
ধূসর স্লান আপন মান হারা
আমারো ক্ষমা চাহি
তখনি জানি আমারি ভূমি নাহি গো দ্বিধা নাহি।

এখন আমি পেয়েছি অধিকার
তোমার বেদনার
কংশ নিতে আমার বেদনায়।
আজিকে সব ব্যাথাত টুটে
জীবনে মোর উঠিল ফুটে
সরম তব পরম করুণায়।
অকুষ্ঠিত দিনের আলো
টেনেছে মুখে ঘোমটা কালো;
আমার সাধনাতে
এল ভোমার প্রদোধবেলা সাঁবের ভারা হাতে।

७ दिवान ३०४:

সাহিত্যবিচার

শ্রীরাজদোখর বস্থ

নানুষের মন একটি আশ্বর্যা বস্তা। কোন্ আঘাতে এ যম কি রকম সাড়া দের তা আমরা অল্পই জানি। রাম একটি কড়া কথা বললে, অমনি শুাম ক্ষেপে উঠল; রাম একটু প্রশংসা করলে, শ্রাম থুলী হরে গেল। মনের এই রকম সহজ্ব প্রতিক্রিয়া আমরা মোটামুটি বুঝি এবং তার নিয়মও কিছু কিছু বলতে পারি। কিন্তু রাম যদি ব্যক্তি বা দল-বিশেষকে উদ্দেশ না ক'রে কিছু লেথে বা বলে, অর্থাৎ কবিতা গল্প প্রবন্ধ রচনা করে বা বক্তৃতা দেয়, তবে তাতে কোন্ শুণ থাকলে সাধারণে খুলা হবে তা নির্ণয় করা সোজা নয়। পাঠক বা শ্রোতা যদি সাধারণ না হল্পে অসাধারণ হন, যদি তিনি সমঝদার রসজ্ঞ বাক্তি হন, তবে তার বিচারপদ্ধতি কিল্পে তা বোঝা আরও কঠিন।

একটা সোজা উপমা দিচ্ছি। চা খামরা অনেকেই গাই এবং তার স্বাদ গদ্ধ মোটামুটি বিচার করতে পারি। কিছু চা-বাগানের কর্তারা চায়ের দাম স্থির করেন কোন উপায়ে ? এখনও এমন যন্ত্র তৈয়ারী হয় নি থাতে চায়ের স্বাদ গন্ধ মাপা যায়। অগত্যা বিশেষজ্ঞের শরণ নিতে হয়। এই বিশেষজ্ঞ বিশেষ কিছুই জানেন না। এঁর সম্বন শুধু জিব আর নাক। ইনি গরম জলে চা ভিজিয়ে সেই জল একটু চেথে বলেন-এই চা ছ-টাকা পাউও, এটা পাঁচ সিকে, এটা এক টাকা তিন আনা। তিনি কোন উপায়ে এই রকম বিচার করেন তা নিডেই বশতে পারেন না। তার আণেক্রিয় ও রসনেক্রিয় অতান্ত তীক্ষ, অতি অল্ল ইতরবিশেষও তার কাছে ধরা পড়ে। এই বিধিদত্ত ক্ষতার খ্যাতিতে তিনি টি-টেসটারের পদ শাভ করেন এবং া-ব্যবসায়ী তাঁর যাচাইকেই চূড়ান্ত ব'লে মেনে নেয়। তিনি াদি বলেন এই চায়ের চেয়ে এ চা ঈষৎ ভাল, তবে ছ-দশ ক্ষন নাধারণ লোকে হয়ত অন্ত মত দিতে পারে। কিন্তু বহু শত বিলাসী লোক যদি ঐ হুই চা থেয়ে দেখে তবে অধিকাংশের অভিমত টি-টেস্টারের অন্ত্বর্তী হবে।

ধারা সাহিত্যে বৈদ্ধের খ্যাতি লাভ করেন তাঁরা টি-টেস্টারের সহিত তুলনীয়। টি-টেস্টারের লক্ষণ— স্বাদ-গন্ধের স্ক্র বোধ আর অসংখ্য পেরালার সঙ্গে পরিচয়। বিদগ্ধ ব্যক্তির লক্ষণ—হক্ষ বসবোধ আর সাহিত্যে বিপুল অভিজ্ঞতা। স্বাদ গন্ধ কাকে বলে তা ভাষায় প্রকাশ করা যায় না, আমরা কেবল মনে মনে বুঝি। কিন্তু রুসের স্বরূপ সম্বন্ধে মনে মনে ধারণা করাও শক্ত। সাহিত্য-বিচারককে যদি জিল্ঞাসা করা যায়—আপনি কি কি গুণের জন্ত এই রচনাটকে ভাল বলছেন—তবে তিনি কিছুই স্পষ্ট ক'রে বলতে পারবেন না। খদি বলতে পার**তেন** তবে রসবিচারের একটা পদ্ধতি খাড়া হ'তে পার**ত**। তাঁর যদি বিদ্যা জাহির করবার লোভ থাকে (থাকতেও পারে কারণ, বিদ্যা দদ:তি বিনয়ং সব ক্ষেত্রে নয়), তবে তিনি হয়ত व्याटिंत छेशत वकुछा (मरवन, अनकात्रभाक छेत्याहेन कतरवन, রসের বিশ্লেষণ করবেন। সেই ব্যাখ্যান শুনে শ্রোতা হয়ত অনেক নতন জিনিষ শিগবে। কিন্তু রস্বিচারের মাপকাঠির সন্ধান পাবে না।

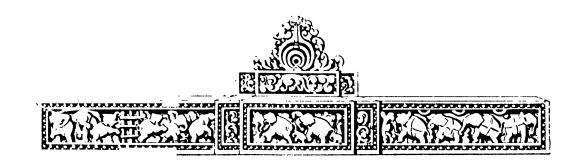
সাহিত্যের যে রস তা বত উপাদানের জাটল সমন্বরে উৎপন্ন। সঙ্গীতের রস অপেকারত সরল। আমরা লোকপরম্পরায় কেনে আসচি যে ধমুক স্বরের সঙ্গে আমৃক স্বর মিই বা কটু শোনায়, কিন্তু কিজ্ঞ এমন হয় তা ঠিক জানি না। বিজ্ঞানী এইটুকু আবিষ্কার করেছেন যে আমাদের কানের ভিতরেব শুতিবন্তু কতকগুলি তন্তু আছে, তাদের কম্পানের বীতি বিভিন্ন কিন্তু নির্দিষ্ট। বিবাদী স্বরের আঘাতে এই তন্তুগুলির স্বাচ্চন্দ্র বিশ্বাধা হয়, কিন্তু সংবাদী সরে হয় না। শ্রবণে শ্রিন্তুর রহন্তু বিদ্যারপ্ত জানা গায় তবে হয়ত সঙ্গীতের অনেক তন্ত্র বোধগমা হবে। যাত দিন তা না হয় তত দিন সঙ্গীতবিদ্যাকে কলা বা আটি বিশ্বা চলবে কিন্তু বিজ্ঞান বলা চলবে না।

সাহিত্যের রসতত্ত্ব সম্বন্ধে আমাদের জ্ঞান নিতান্তই

অস্পষ্ট। স্থলণিত বর্ণনার মায়াজালে এই অজ্ঞতা ঢাকা পড়েনা। কেউ বলেন—art for art's sake, কেউ বলেন—মাস্থ্যের কল্যাণই সাহিত্যের কামা, কেউ বলেন— সাহিত্যের উদ্দেশ্য মানুষের সঙ্গে মানুষের মিলনসাধন। এই সমস্ত ঝাপ্সা কথায় রসতব্বের নিদান পাওয়া যায় না। আমরা এইটুকু ব্ঝি যে সাহিত্যরসে মান্য আনন্দ পায়, কিন্তু রদের বিভিন্ন উপাদানের মাত্রা ও যোজনার বিষয় আমরা কিছুই জানি না। যে যে উপাদান সাহিত্যরসের উপদ্ধীব্য তার কয়েকটির সম্বন্ধে আমরা অস্পণ্ট ধারণা করতে পাবি. বুথা --- জ্ঞানেন্দ্রিয় ও কর্ম্মেন্দ্রিয়ের **₹**চিকর বিষয় বর্ণন, চেরাগত সংস্কার ও অভ্যাসের আত্রকুশ্যা, মানুযের প্রচ্ছন্ন কামনার তপণ, অপ্রিয় বাধার খণ্ডন, অক্টুট অনুভূতির পরিক্টন, জ্ঞানের বর্নন, আগমর্যাদার প্রতিষ্ঠা ইত্যাদি। এই স্কল উপাদানের কতকণ্ডলি পরস্পর বিরুদ্ধ, কতক**ণ্ড**লি নীতিবিক্নন্ত। কিন্তু সাহিত্যরচয়িত। কোনও উপাদান বাদ দেন না। পাচক বেমন কটু অন মিষ্ট সুগন্ধ তুর্গন্ধ নানা উপাদান মিশিয়ে বিবিধ সুখাদা তৈয়ার করে, ওস্তাদ সাহিত্যিকও সেই রক্ম করেন। থাদ্যে কতটা वि मित्न छेशांत्मय हत्त, कठी नक्षी मित्न मूथ जाना कत्रत না, কতটুকু রম্বন দিলে বিকট গন্ধ হবে না,—এবং সাহি:তা কত্তুকু শান্তরদ বা বীভৎসরদ, তত্ত্বকণা বা হুর্নীতি বরদাস্ত হবে, এ সবের নির্দারণ একর পদ্ধতিতে হয়। কয়েক জন ভোক্তার হয়ত বিশেষ বিশেষ রসে অনুরক্তি বা

বিরক্তি থাকতে পারে, কিন্তু তাদের পছন্দই জগতে চরম ব'লে গণ্য হয় না। যিনি কেবল দলবিশেষের ভৃপ্তিবিধান করেন অথবা কেবল সাধারণ ভোক্তার অভ্যন্ত ভোজ্য প্রান্তত করেন, তিনি সামান্ত পেশাদার মাত্র। যিনি অংস্থ্য খোশখোরাকীর ক্ষচিকে নিজের অভিনব ক্ষচির অন্থত করতে পারেন তিনিই প্রকৃত সাহিত্যস্রস্থী; এবং দিনি অন্তের রচনায় এই প্রভাব স্বয়ং উপলব্ধি ক'রে সাধারণকে তৎপ্রতি আক্রম্ভ করতে শারেন তিনিই সমালোচক হবার যোগা।

তামাক একটা বিদ, কিন্তু ধুমপান অসংখ্য লোকে করে এবং সমাজ তাতে আপন্তি করে না। কারণ, মোটের উপর তামাকে দতটা স্বাস্থাহানি হয় তার তুলনায় লোকে মজা পায় চের বেশা। পাশ্চান্তা দেশে মদ সম্বন্ধেও এই ধারণা, এবং অনেক সমাজে পরিমিত ব্যক্তিচারও উপভোগ্য ব'লে গণ্য হয়। মজা পাওয়াটাই প্রধান লক্ষ্য, কিন্তু তাতে গদি বেশা স্বাস্থাহানি ঘটে তবে মজা নই হয় এবং রসের উদ্দেশ্যই বিদল হয়। সাহিত্যরসের উপাদান বিচারকালে স্থাজন এ-বিষয়ে স্বভাবতং অবহিত থাকেন। যিনি উত্থর বোদ্ধা বা সমালোচক তিনি মন্ধা ও স্বাস্থ্য উভয়ের প্রতি লক্ষ্য রেখে রসের যাচাই করেন। তার যাচাইয়ের নিক্তি আর ক্ষিপথের কি রকম তা তিনি অপরকে বোঝাতে পারেন না, নিজ্বেও বোঝেন না। তথাপি তার সিদ্ধান্তে বড় একটা দল হয় না, অর্থাৎ শিক্ষিত জন সাধারণতং তার মতেই মত দেয়।



ধারাবাহী

রবীদ্রনাথ ঠাকুর

.

এক সময় তোমরা এই বিস্থানয়ে ছিলে—দুরে গেলে মনের বিচ্ছেদ ঘটতেও পারে, সেইজন্ত ত্-একটি কথা তোমাদের কাছে বলা প্রয়োজন মনে করি।

আমাদের এই বিশ্বালয় নানারকম যোগাযোগে গড়ে উঠেছে, কিন্তু সর্বালই এর মধ্যে একটা মূলতব কাল করছে। আমি যদি বলি সে তব আমার, কঠিন ছাঁচে চালাই ক'রে তাকে রক্ষা করতে হবে—তা হবার নয়; আমি বলব না গে এমন একটা কাঠামো তৈরি করতে হবে যা চিরকাল থাকবে। এর ভিতরকার সে নূল কথাটি এই গে একটি বৃহত্তর জীবনের ভূমিকায় আমরা আনেকে একসঙ্গে এখানে মিলিত হয়েছি—নানা বিচিত্রতা বিশ্বন্ধতার মধ্য দিয়ে একটি প্রাণবান অফ্রষ্ঠান গড়ে উঠেছে, সে নিজেও জানে না কোন পথে যাবে, তার কোনো নাধা পথ নেই।

একলা যথন ছিনুম তথন আমার এ অনুষ্ঠানের মধ্যে কাজ করেছে। পথ তথন সহজ ছিল। যথন কথা হ'ল যে সাধারণের হাতে সমর্পণ না করলে এ বেশি দিন স্থায়ী হবে না দেশের যোগ থাকবে না তথন একটা কনষ্টিট্যশুন করতে হয়েছিল—তৎপূর্ব্বেই অন্তান্ত দেশের সঙ্গে এর যোগ ঘটেছিল, অনেকে জেনেছিল এর কথা। আমার মতে, এই কলকৌশলের মধ্যে প্রাণসঞ্চার করবার প্রয়োজন আছে। তোমরা অনেকে জানো এই বিদ্যালয়ের জন্ত নিজেকে আমি অনেক বঞ্চিত করেছি—সাহিত্য যে আমার পন্থা তাতেও আমি আগত সয়েছি। আমার অবর্তমানে এ যদি একটা কল মাত্র হয়, তবে কেন এত করেছি। আমার দেই গোপন ছঃথের ইতিহাস কখনো কেউ জানবে না। আনুকৃলোর চেয়ে অধিক মিথ্যে উক্তি আমি লাভ করেছি—বহু বিজ্ঞপ নিশা মাথায় ক'রে এখন আমার **জীবনের শে**বভাগ উপস্থিত। এখন যদি এ একটা জীবনাত পদার্থে পরিণত হয়, এর প্রাণশক্তি না থাকে, তবে বার্থ হলুম। যতটা দিয়েছি তার কিছুই ফল পাব না তা ইচ্ছে করে না।

তোমরা সবাই অনুকৃশ হবে এমন আমি আশা করি নে, তবে আশা করি এক দল আছ যাদের এর সম্বন্ধে মমতা থাকা স্বাভাবিক। এতে কোনো সন্দেহ নেই যে এ বিদ্যালয় প্রাণবান্, এর মধ্যে অসঙ্গতি পাকতে পারে, কিন্তু এর অন্তরে প্রাণ সঞ্চারিত। তোমরাও যদি তাই মনে করো তবে এর অঙ্গীভূত হয়ে এর সঙ্গে যুক্ত হয়ে একটা স্থায়ী প্রভাব এর উপরে বিস্তার করতে পারে।

বিরুদ্ধতাকেও আমি স্বীকার করি—তোমাদের কাছে আমি শুধু এইটুক চাই যে অক্তব্রিম মমতার সঙ্গে একে তোমরা গ্রহণ করো।

কী করে তার অবকাশ হ'তে পারে তা থামি জানি নে—
কনষ্টিট্যখন দক্ষে কিছু বলতে আমি অধ্য —আমি শুধু
আমার ইচ্ছাপ্রকাশ করতে পারি; যথন আমি থাকব না
তথন এর মধ্যে প্রাণকে জাগিয়ে রাখতে পারে এমন একটা
শক্তি থাকা দরকার—তোমরা যদি থগ্রসর হয়ে একে গড়ে
নাও তবে সেই অভাব মোচন হ'তে পারে।*

>

প্রৌঢ় বর্ষে একদা থখন এই বিদ্যায়তনের প্রতিষ্ঠা করেছিলেম তথন আমার সন্মুখে ভাসছিল ভবিষ্যৎ, পথ তথন লক্ষের অভিমুপে, অনাগতের আহ্বান তথন ধ্বনিত—তার ভাবরূপ তথনও অস্পর্ট, অণচ একদিক । দয়ে তা এখনকার চেয়ে অধিকতর পরিক্ষুট্ ছিল কারণ তথান খে-আদর্শ মনে ছিল তা বাস্তবের অভিমুপে আপুন অথও আনন্দ নিয়ে অগ্রসর হয়েছিল। আজ আমার আয়ুকাল শেষপ্রায়, পথের অন্ত প্রাস্তে পৌছিয়ে পথের আরম্ভ-সীমা দেখবার থ্যোগ হয়েছে, আমি সেই দিকে গিয়েছি,

আশ্রমিক-সভ্বের প্রতিনিধিমণ্ডলীর নিকট কথিত।

বেমনতর স্থ্য বধন পশ্চিম অভিমুখে অন্তাচলের তটলেশে তথন তার সামনে থাকে উদয়দিগন্ত, বেথানে তার প্রথম যাত্রারস্ত।

অতীতকাল সম্বন্ধে আমরা যথন বলি তথন আমাদের স্থারের পূর্ববাগ অত্যক্তি করে, এমন বিশ্বাদ লোকের আছে। এর মধ্যে কিছু সভ্য আছে, কিন্তু সম্পূর্ণ সভ্য নেই। যে ·দুরবন্তী কালের কথা আমরা স্মরণ করি তার থেকে যা কিছু অবাস্তর তা তথন স্বতই মন থেকে ঝরে পড়েছে। বর্ত্তমান কালের সঙ্গে যত কিছু আকস্মিক যা কিছু অসঙ্গত সংস্কু থাকে তা তথন খাণিত হয়ে ধুলিবিহীন; পূৰ্বেনানা কারণে যার রূপ ছিল বাধাগ্রস্ত তার সেই বাধার কঠোরতা আত্র আর পীড়া দেয়না। এই জন্ত গতকালের যে-চিত্র মনের মধ্যে প্রকাশ পায় তা সুসম্পূর্ণ, বাতারত্তের সমস্ত উৎসাহ স্থাতিপটে তথন ঘনীভূত। তার মধ্যে এমন অংশ থাকে না যা প্রতিবাদরূপে অন্ত অংশকে খণ্ডিত করতে ণাকে। এই জন্তই অতীত শ্বতিকে আমরা নিবিড়ভাবে মনে অনুভব ক'রে থাকি। কালের দুরত্বে, যা বণার্থ সত্য ভার বাছরপের অসম্পূর্ণতা ঘুচে যায়, সাধনার কল্পমুর্ত্ত অফুর হয়ে দেখা দেয়।

প্রথম যথন এই বিদ্যালয় আরম্ভ হয়েছিল তথন এর অাষ্ট্রেন্সন কত সামান্ত ছিল, সেকালে এথানে যার৷ ছাত্র ছিল তারা তা জানে। আজকের তুলনায় তার উপকরণ-বির্ণতা, সকল বিভাগেই তার অকিঞ্চনতা অত্যন্ত বেশি हिन। क'ि वानक ও इहे-अक अन व्यथाभक निया कड़ জামগাছতশায় আমাদের কাজের সূচনা করেছি। একান্তই সহজ ছিল তাদের জীবনযাত্রা—এখনকার সঙ্গে তার প্রভেদ গুৰুতর। এ কথা বলা অবশুই ঠিক নয় যে এই প্রকাশের ক্ষীণভাতেই সভোর পূর্ণতর পরিচয়। শিশুর মধ্যে আমরা বেরপ দেখি তার সৌন্দর্যো আমাদের মনে আনন্দ জাগার্য় কিন্তু তার মধ্যে প্রাণরূপের বৈচিত্রা ও বহুধাশক্তি নেই। তার পূর্ণ মূল্য ভাবী-কালের প্রত্যাশার মধ্যে। তেমনি আশ্রমের জীবনযাত্তার যে প্রথম উপক্রম, বর্ত্তমানে সে ছিল ছোট, ভবিষাতেই সে ছিল বড়। তথন যা ইচ্ছা করেছিলাম তার মধ্যে কোনো সংশয় ছিল না। তথন আশা ছিল অমুতের অভিমুখে, যে-সংসার উপকরণ-বছলতার প্রতিষ্ঠিত তা পিছনে রেখেই সকলে এসেছিলেন। যারা এথানে আমার কর্মসঙ্গী ছিলেন অত্যন্ত দরিম্র ছিলেন তাঁরা। আজু মনে পড়ে, কী কট্ট না তাঁরা এখানে পেরেছেন, দৈহিক সাংগারিক কত দীনতাই না তাঁরা বহন করেছেন। প্রলোভনের বিষয় এথানে কিছুই ছিল না, জীবনযাত্রার স্থবিধা তো নয়ই, এমন কি খ্যাতিরও না, অবস্থার ভাবী উন্নতির আশা মরীচিকারপেও তথন দুরদিগন্তে ইন্দ্রজান বিস্তার করে নি। কেউ তখন আমাদের কথা জানত না, জানাতে ইচ্ছাও করি নি; এখন যেমন সংবাদপত্তের নানা ছোটবড় জয়ঢাক আছে যা সামাল ঘটনাকে শব্দায়িত ক'রে রটনা করে তার আয়োজনও তখন এমন ব্যাপক ছিল না। এই বিষ্ণালয়ের কথা ঘোষণা করতে অনেক বন্ধ ইচছাও করেছেন, কিন্তু আমরা তা চাই নি। লোকচকুর অগোচরে, বহু ছঃবের ভিতর দিয়ে সেছিল আমাদের ষ্থার্থ তপ্সা। অর্থের এত অভাব ছিল যে আৰু জগদ্বাপী হুঃসময়েও তা কল্পনা করা যায় না। আর সে কথা কোনোকালে কেউ জানবেও না, কোনো ইতিহাসে তা লিখিত হবে না। আশ্রমের কোনো সম্পত্তি ছিল না সহায়তা ছিল না— চাইও নি। এই জন্তই, যারা তথন এথানে কাজ করেছেন তারা জন্তরে দান করেছেন, বাইরে কিছু নেন নি। যে আদর্শে আরুষ্ট হয়ে এখানে এসেছি তার বোধ সকলেরই মনে বে স্পষ্ট বা প্রবল ছিল তা নয় কিন্তু জ্বা পরিসরের মধ্যে তা নিবিড় হ'তে পেরেছিল। ছাত্রেরা তথন আমাদের অত্যস্ত নিকটে ছিল—অধ্যাপকেরাও পরস্পর অত্যস্ত নিকটে ছিলেন, পরস্পরের ফুছৎ ছিলেন তারা। আমাদের দেখের তপোবনের আ**দর্শ আমি নিয়েছিলাম। কালের পরিব**র্তনের সঙ্গে সে আদর্শের রূপের পরিবর্তন হয়েছে, কিন্তু তার মূল সভাটি ঠিক আছে—সেটি হচ্ছে, ভীবিকার আদর্শকে স্বীকার ক'রে তাকে সাধনার আদর্শের অনুগত করা। এক সমতে এটা অনেকটা ফুসাধা হয়েছিল, যথন জীবনবাতার পরিধি ছিল অনতিবৃহ্**। তাই বলেই সেই স্বন্না**য়তনের মধ্যে সহজ জীবনবাত্রাই শ্রেষ্ঠ আদর্শ একথা সম্পূর্ণ সত্য নয়। উচ্চতর সঙ্গীতে নানা ত্রুটি ঘটতে পারে, একভারার ভূলচুকের সম্ভাবনা কম, ভাই ব'লে একভারাই শ্রেষ্ঠ এমন

নয়। বর**ঞ্কর্ম যথন বছবিভূত হরে ব**রুর পথে চ**ল**তে থাকে তথন তার সকল ভ্রমপ্রমান সত্ত্বেও যদি তার মধ্যে প্রাণ থাকে তবে তাকেই শ্রহা করতে হবে। শিশু অবস্থার সহজ্বতাকে চিরকাল বেঁধে রাখবার ইচ্ছা ও চেষ্টার মতো বিজ্যনা আর কী আছে? আমাদের কর্ম্মের মধ্যেও সেই কথা। যধন একলা ছোট কার্যাক্ষেত্রের মধ্যে ছিলুম তথন সব কন্দ্রীদের মনে এক অভিপ্রায়ের প্রেরণা সহজেই কাজ করত। ক্রমে ক্রমে যথন এ অপ্রেম বড হয়ে উঠন তথন এক জনের অভিপ্রায় এর মধ্যে সম্পূর্ণভাবে ্রকাশ পাবে এ সম্ভব হ'তে পারে না।—অনেকে এথানে এসেছেন, বিচিত্র তাদের শিক্ষাদীকা-সকলকে নিয়েই আমি কাজ করি, কাউকে বাছাই করি নে বাদ দিই নে, নানা ভূলফুটি ঘটে নানা বিজ্ঞোহ-বিরোধ ঘটে—এ সব নিয়েই জটল সংসারে জীবনের যে-প্রকাশ ঘাতাভিঘাতে সর্বলা খান্দোলিত তাকে আমি সম্মান কবি। প্রেরিত আনর্শ নিয়ে সকলে মিলে একতারায়য়ে গুঞ্জরিত করবেন এমন অতি সরল বাবস্থাকে আমি নিজেই শ্রহা করিনে। আমি বাকে বড়ব'লে জানি, শ্রেট ব'লে বা বরণ করেছি অনেকের মধ্যে তার প্রতি নিষ্ঠার অভাব আছে স্থানি, কিন্তু তা নিয়ে নালিশ করতে চাই নে। আজ আমি বর্তমান থাকা সত্তেও এখানকার যা কল্মতা নানা বিরোধ ও অসক্ষতির মধ্য দিয়ে প্রাণের নিয়মে আপনি তৈরি হয়ে উঠছে; আমি যধন থাকব না, তথনও অনেক চিত্তের সমবেত উদ্যোগে য। উদ্লাবিত হ'তে থাকবে তাই হবে সহজ সতা। কুত্রিম হবে যদি কোনো এক ব্যক্তি নিজের আদেশ-নির্দ্ধেশ একে বাধা ক'রে চালায়-প্রাণধর্মের মধ্যে সতোবিরোধীতাকেও স্বীকার ক'রে নিতে হয়।

অনেক দিন পরে আজ এ আশ্রমকে সমগ্র ক'রে দেখতে পাছি; দেখছি, আপন নিয়মে এ আপনি গড়ে উঠেছে। গঙ্গা বথন গঙ্গোত্তীর মুখে তথন একটিমাত্র তার ধারা। তার পর ক্রমে বছ নদনদীর সহিত যতই সে সম্ভত হ'ল, সমুদ্রের যত নিকটবর্তী হ'ল, কত তার রূপান্তর ঘটেছে। সেই আদিম স্বছতো আর তার নেই, কত আবিশতা প্রবেশ করেছে তার মধ্যে, তরু কেউ বলে না গঙ্গার উচিত ফিরে যাওয়া, বেহেড় অনেক মলিনতা চুকেছে তার মধ্যে, সে

সরল গতি আর তার নেই। সব নিয়ে যে সমগ্রতা সেইটিই বড়—আশ্রমও স্বতোধাবিত হয়ে সেই পথেই চলেছে, অনেক মানুযের চিত্তদন্মিলনে আপনি গড়ে উঠছে। অবগ্র এর মধ্যে একটা ঐক্য এনে দেয় মূলগত একটা আদিম বেগ; তারও প্রয়োজন আছে, অথচ এর গতি প্রবল হয় সকলের স্থালনে। নিত্যকালের মতে কিছুই কল্পনা করা চলে না—তবে এর মূলগত একটি গভীর তত্ত্ব বরাবর থাকবে একথা আমি আশা করি-সে-কথা এই যে এটা বিদ্যাশিক্ষার একটা খাঁচা হবে না, এখানে সকলে মিলে একটি প্রাণলোক সৃষ্টি করবে। এমনতরো স্বর্গলোক কেউ রচনা করতে পারে না ধার মধ্যে কোনো কলুষ নেই তুঃধজনক কিছু নেই—কিন্তু বন্ধুরা জানবেন যে এর মধ্যে শ নিন্দনীয় সেইটাই বড় নয়। চোণের পাতা ওঠে, চোঝের পাতা পড়ে; কিন্তু পড়াটাই বড় নয়, দেটাকে বড় বললে অন্ধতাকে বড় বলতে হয়। যার। প্রতিকৃল, निकात विषय छाता शास्त्रन ना धमन नय-निकारीय छात হাত থেকে কেউই রক্ষা পেতে পারে না। কিন্তু তাকে পরান্ত ক'রে উত্তীর্ণ হয়েও টিকে থাকাতেই প্রাণের প্রমাণ। আমাদের দেহের মধ্যে নানা শক্র নানা রোগের বীকাণু-তাকে আলাদা ক'রে যদি দেখি তো দেখব প্রত্যেক মাত্রয বিক্লতির আলয়। কিন্তু আসলে রোগকে পরাস্ত ক'রে বে স্বাস্থ্যকে দেখা বাচেছ সেইটেই সভা। দেহের মধ্যে যেমন লড়াই চলছে প্রত্যেক অনুয়ানের মধ্যেই তেমনি ভালমন্দের একটা ছার আছে-কিন্তু সেটা পিছন দিকের কথা। এর মধ্যে স্বাস্থ্যের তক্টাই বড়।

আমি এমন কথা কখনও বলি নি আজও বলি নে যে
আমি যে-কথা বলব তাই বেদবাক্য— সে রকম অধিনেতা
আমি নই। অসাধারণ তত্ত্ব তো আমি কিছু উদ্ভাবন
করি নি; সাধকেরা যে অথও পরিপূর্ণ জীবনের কথা
বলেন সে-কথা যেন সকলে স্বীকার করে নেন। এই
একটি কথা এব হয়ে থাক। তার পরে পরিবর্ত্তমান
পরিবর্ত্তমান স্টের কাদ্ধ সকলে মিলেই হবে। মাগুষের দেছে
যেমন অস্থি, এই অন্থানের মধ্যেও তেমনি একটি যান্ত্রিক
দিক আছে। এই অন্থান যেন প্রাণবান হয় কিন্তু যক্রই
যেন মুখ্য না হয়ে ওঠে, হলয় প্রাণ কল্পনার সঞ্চরণের পথ

८वन थां क । जामि कद्मना कर्त्रि, अथानकांत्र विमानदात्र আঝাদন এক সময়ে যারা পেয়েছেন, এধানকার প্রাণের সঙ্গে প্রাণকে মিলিয়েছেন—অনেক সময় হয়তো তাঁরা এখানে অনেক বাধা পেয়েছেন, ছঃখ পেয়েছেন, কিন্তু দূরে গেলেই পরিপ্রেক্ষিতে দেখতে পান এখানে যা বড় যা সত্য। আমার বিশ্বাস সেই দৃষ্টিবান অনেক ছাত্র ও কম্মী নিশ্চয়ই আছেন, নইলে অস্বাভাবিক হ'ত। এক সময়ে তাঁরা এখানে নানা আনন্দ পেয়েছেন, স্থ্যবন্ধনে আবদ্ধ হয়েছেন, এর প্রতি তাঁদের মমতা থাকবে না এ হ'তেই পারে না। আমি আশা করি, কেবল নিজিয় মমতা ধারা নয় এই অনুষ্ঠানের অন্তর্কভী হয়ে গদি তাঁরা এর ওভ ইচ্ছা করেন তবে এর প্রাণের ধারা অব্যাহত থাকতে পারবে, যম্রের কঠিনতা বড় হয়ে উঠতে পারবে না। এক সময়ে এখানে যারা ছাত্র ছিলেন, যারা এখানে কিছু পেয়েছেন কিছু দিয়েছেন, তারা যদি অস্তরের সঙ্গে একে গ্রহণ করেন ভবেই এ প্রাণবান হবে। এই জন্ত আব্দু আমার এই ইচ্ছা প্রাকাশ করি যে থারা জীবনের অর্থ্য এখানে দিতে চান ধারা

মমতা ছারা একে গ্রহণ করতে চান তাঁদের অন্তর্ক্ষী ক'রে নেওয়া যাতে সহজ হয় সেই প্রণাণী যেন আমরা অবলখন করি। যাঁরা একদা এবানে ছিলেন তাঁরা সন্মিণিত হয়ে এই বিদ্যালয়কে পূর্ণ ক'রে রাখুন এই আমার অন্তরোধ। অন্ত সব বিদ্যালয়ের মতো এ আশ্রম যেন কলের জিনিষ না হয়—তা করব না বলেই এথানে এসেছিলাম। যন্ত্রের অংশ এসে পড়েছে কিন্তু স্বার উপরে প্রাণ যেন সত্য হয়। সেই জন্তই আহ্বান করি তাঁদের যাঁরা এক সময়ে এথানে ছিলেন, যাঁদের মনে এখনও সেই স্মৃতি উজ্জ্বল হয়ে আছে। ভবিষ্যতে যদি আদর্শের প্রবলতা ক্ষীণ হয়ে আসে তবে সেই পূর্বতনেরা যেন একে প্রাণধারায় সঞ্জীবিত ক'রে রাথেন, নিচাঘারা শ্রমাঘারা এর কর্মাকে সফল করেন—এই আখাস পেলেই আমি নিশ্চিত্ত হয়ে যেতে পারি।*

কান্তা

ঞ্জীসুধীরচন্দ্র কর

বৃঝি, তোমার কতই কট হয়! সবচেয়ে যে আপন তারেই

পর না করলে নয়!
কোণায় ভোমার কৃষ্ণ কেশের সবত্ব বিস্তাস
রঙীন বসন, আঁথির কোণে বিচাৎ উল্লাস,
কেন বে নাই আয়োকনের একটুকু আভাস

সহজ সমুদর,
সব-ই বুঝি ;—ভোমার কাছে ওসব সজ্জা আজ
প্রেমের সজ্জামর ॥

স্বার কাছে সকল সময় মুক্ত তোমার গতি পূর্ব্ব হ'তে কথার বেগও বেড়েছে স্প্রতি, কেন, কেবল আমার বেলায় ক্রমেই তোমার মতি
উদাস অতিশয় ;
জানি, তোমার সিকু করে কোন ডুব্রির তরে
কীরতু সঞ্চয় !

ভূবেও তোমার নাম-সে আমার নিন্দা ঘটার পাচে, সে উবেগের তলায় দরদ সদাই চাপা আছে, এই ক'রে কি প্রথম প্রেমের কান্তাপরাণ বাচে, মৃত্যু কারে কয় ? আপনি ম'রে আমার ভূমি রাথবে মহীয়ান, —জর তোমারই জয় ॥

 ^{*} গত ৮ই পৌষ (১৩৪১ সন) বিশ্বভারতী পরিবদের বাধিক অধিবেশনে আচার্ব্যের অভিভাবণ।

ছই-টি অভিভাষণই শীনৃক্ত পুলিনবিহারী সেন কর্তৃক অমুলিখিত ও তদনস্তর বিশ্বকবি কর্তৃক সংশোধিত ও অমুমোদিত।

দৃষ্টি-প্রদীপ

ঞ্জীবিভৃতিভূষণ বন্দ্যোপাধ্যায়

ত্রয়োদশ পরিচ্ছেদ

•

দাদার মৃত্যুর মাস-তিনেক পরে বাতাসার কারখানার ক্রুমণার হঠাৎ মারা গেলেন। এতে আমাকে বিপদে পড়তে হ'ল। কুণ্ডুমণায়ের প্রথম পক্ষের ছেলেরা এসে কারখানা ও বাড়িযর দখল করলে। কুণ্ডুমণায়ের তৃতীয় গক্ষের স্তীকে নিতান্ত ভালমান্ত্র পেয়ে মিষ্টি কথার ভূলিয়ে ভার হাতের হাজার তই নগদ টাকা বার ক'রে নিলে। টাকাগুলো হাতে না-আসা পর্যান্ত ছেলের বৌয়েরা সৎশাশুড়ীকে থ্ব সেবায়ত্ব করেছিল, টাকা হস্তগত হওয়ার পরে ক্রমে ক্রমে তাদের মূর্ছি গেল বদলে। যা ছর্দিশা তার ক্রমে ক্রমে তাদের মূর্ছি গেল বদলে। যা ছর্দিশা তার ক্রমে ক্রমে তাদের মূর্ছি গেল বদলে। যা ছর্দিশা তার ক্রম করলে ওরা! বাড়ির চাকরাণীর মত থাটাতে লাগল, গোলমল্প দেয়, তুচ্ছতাচ্ছিল্য করে। আমি একদিন গোপনে বললাম—মাসীমা, পঞ্চে ডাক্মরের পাস-বই দিও না বা কোন সই চাইলেও দিও না। তুমি অত বোকা কেন তাই ভাবি। আগের টাকাগুলো ওদের হাতে তুলে দিয়ে বসলেই বা কি বুঝে?

ভাকখরের পাস-বইয়ের জন্তে পঞ্ অনেক পীড়াপীড়ি করেছিল। শেষ পর্যস্ত হয়ত মাসীমা দিয়েই দিত—আমি সেগানা নিজের কাছে এনে রাথলাম গোপনে। কত টাকা ঢাকঘরে আছে না জানতে পেরে পঞ্ আরও থেপে উঠল। বেচারীর দুর্ফণার একশেষ ক'রে তুললে। কুড়ুমশারের স্ত্রীর বড় সাধ ছিল সংছেলেরা তাকে মা ব'লে ডাকে, সে সাধ তারা ভাল করেই মেটালে। একদিন আমার চোথের সামনে সংমাকে ঝগড়া ক'রে থিড়কীদোর দিয়ে বাড়ির বার ক'রে দিলে। আমি মাসীমাকে নিজের বাড়িতে নিমে এলাম, চিঠি লিথে তার এক দুরসম্পর্কের ভাইকে আনালাম—সে এসে মাসীমাকে নিয়ে গেল। আমার অসাক্ষাতে মাসীমা আবার বৌদিদির হাতে একখানা একশো টাকার নোট উল্লেদিরে ব'লে গেল ধাবার সময়—জিতু মাসীমা বলেছিল,

আমি তিলির মেয়ে, কিন্তু বেঁচে থাক সে, ছেলের কাজ করেছে। আমার জন্তেই তার কারথানার চাকরিটা গেল, যত দিন অন্ত কিছু না-হয়, এতে চালিয়ে নিও, বৌমা। আমি দিচ্ছি এতে কিছু মনে ক'রো না, আমার তিন কুলে কেউ নেই, নিতুর বৌয়ের হাতে দিয়ে যদি মুখ পাই, তা থেকে আমায় নিরাশ ক'রো না।

পঞ্ কারথানা থেকে আমায় ছাজিয়ে দিলেও আমি আর একটা দোকানে চাকরি পেলাম সেই মাসেই। সংমায়ের সঙ্গে ওরকম ব্যবহার করার দক্ষন কালীগঞ্জের কেউই ওদের ওপর সন্তুষ্ট ছিল না, মাসীমার অমায়িক ব্যবহারে স্বাই তাকে ভালবাসত। তবে পঞ্চদের টাকার জোর ছিল, সব মানিয়ে গেল।

ইতিমধ্যে একদিন সীতার খণ্ডরবাড়ি গেলাম সীতাকে দেখতে। দাদা মারা যাওয়ার পরে ওর সঙ্গে আমার দেখা হয় নি, কারণ এক বেলার জক্তেও ওরা সীতাকে পাঠাতে রাজী হয় নি। সীতা দাদার নাম ক'রে এনেক চোথের জল ফেললে। দাদার সঙ্গে ওর শেব দেখা মায়ের মৃত্যুর সময়ে। তার পর আমার নিজের কথা অনেক জিগ্যেদ করলে। সন্ধ্যাবৈলায় ও রাশ্লাঘরে বসে রাঁধছিল, আমি কাছে বদে গল্প করছিলাম। ওর খণ্ডরবাড়ির অবস্থা ভাল না, বসতবাটীটা বেশ বড়ই বটে, কিন্তু বাস করবার উপযুক্ত কুঠুরী মাত্র চারটি, তাদেরও নিতান্ত জীর্ণ অবস্থা, চুণবালি-খসা দেওয়াল, কানিসের ফাটলে বট অখথের গাছ। রালাঘরের এক দিকের ভাঙা দেওয়াল বাঁশের চাঁচ দিয়ে বন্ধ, কার্ত্তিক মাসের হিম তাতে আটকাচ্ছে না। সীতার বড়-জা ওদিকে আর একটা উন্ননে মাটির খুলিতে টাটকা পেজুর-রস জাन निष्क्रितन, তিনি বললেন—या श्वात श्रात जान ভाই, এইবার তুমি একটা বিম্নে কর দিকি? এই গাঁম্বেই বাড়ুযো-বাড়িতে ভাল মেরে আছে, যদি মত দাও কালই মেয়ে দেখিরে দিই। সীতা চুপ ক'রে রইল। আমি বললাম-

একটা সংসার ঘাড়ে পড়েছে, তাই অতি কটে চালাই, আবার একটা সংসার চালাব কোথা থেকে দিদি? সীতা বললে— বিয়ে আর কাউকে করতে বলি নে মেজদা, এ অবস্থার বড়দারও বিয়ে করা উচিত হয় নি। তোমারও হবে না। তার চেয়ে তুমি সমিলি হয়ে বেড়াচ্ছিলে, চের ভাল করেছিলে। আচ্ছা মেজদা, তুমি নাকি খুব ধার্ম্মিক হয়ে উঠেছ সবাই বলে?

আমি হেসে বলগাম—অপরের কথা বিশ্বাস করিস্ নাকি তুই? পাগল! ধার্ম্মিক হলেই হ'ল অমনি—না? আমি কি ছিলাম না-ছিলাম তুই ত সব জানিস সীতা। আমার ধাতে ধার্ম্মিক হওয়া সম না, তবে আমার জীবনের আর একটা কথা তুই ভানিস নে, তোকে বলি শোন।

ওদের মাণতীর কথা বলনুম, ত্র-জনেই একমনে শুনলে। ওর বড়-জা বললে—এই ত ভাই মনের মত মানুষ ত পেরেছিলে—ওরকম ছেড়ে এলে কেন?

আমি বললাম—এক তরফা। তাতে হঃথই বাড়ে, আনন্দ পাওয়া যায় না। সীতা ত সব শুন্লি, তোর কি মনে হয়?

সীতামুথ টিপে হেসে বললে—এক তরফা ব'লে মনে হয় না। তোমার সঙ্গে এত মিশত নাতা হ'লে—বা তোমার সঙ্গে কোথাও বেত না।

একটু চুপ ক'রে পেকে বললে—তুমি আর একবার সেখানে যাও, মেজদা। আমি ঠিক বলছি তুমি চলে আসবার পরেই সে ব্রতে পেরেছে তার আবড়া নিরেথাকা ফাঁকা কাজ। ছেলেমানুষ, নিজের মন ব্রতে দেরি হয়। এইবার একবার যাও, গিয়ে তাকে নিয়ে এস ত ?

সীতা নিজের কথা বিশেষ কিছু বলে না, কিন্তু ওর ওই শান্ত মৌনতার মধ্যে ওর জীবনের ট্যাক্তেডি লেখা রয়েছে। ওর স্বামী সূত্যিই অপদার্থ, সংসারে যথেষ্ট দারিদ্রা, কথনও বাড়ি থেকে বেরিয়ে ছ-পয়না আনবার চেটা করবে না। এক ধরণের নিজ্মা লোকের: মনের আলস্ত ও ছর্মণতা প্রস্তুত ভয় থেকে প্র্লো-মাচ্চার প্রতি অন্তরক্ত হয়ে পড়ে, সীতার স্বামীও তাই। সকালে উঠে ফুল ভূলে প্র্নো করুবে, সানের সময় ভূল সংস্কৃতে তাবপাঠ করবে, সব বিষয়ে বিধান দেবে, উপদেশ দেবে। একটু আদা-চা

থেতে চাইলাম—সীতাকে বারণ ক'রে ব'লে দিলে রবিবারে আদা থেতে নেই। ছুপুরে খেরে উঠেই বিছানার গিরে শোবে, বিকাল চারটে পর্যান্ত ঘুমুবে—এত ঘুমুতেও পারে! এদিকে আবার ন'টা বাজতে না-বাজতে রাত্রে বিছানা নেবে। সীতা বই পড়ে ব'লে তাকে যথেই অপমান সহ করতে হয়। বই পড়লে মেয়েরা কুলটা হয়, শাস্তে নাকি লেখা আছে।

দেখলাম লোকটা অত্যন্ত ছর্ম্থও বটে। কথায় কথায় আমার মুথে একবার যীশুগ্রীষ্টের নাম শুনে নিতান্ত অসহিষ্ণুও অভদ্র ভাবে ব'লে উঠল—ওসব শ্লেচ্ছ ঠাকুরদেবতার নাম ক'রো না এথানে, এটা হিন্দুর বাড়ি, ওসব নাম এথানে চলবে না।

সীতার মুথের দিকে চেয়ে চুপ ক'রে রইলাম, নইলে এ-কথার পর আমি এ বাড়িতে আর জলম্পর্শ করতাম না। সীতা ওবেলা পায়েদ পিঠে থাওয়াবার আয়োজন করছে আমি জানি, তার আদরকে প্রত্যাখ্যান করতে কিছুতেই মন সরল না। আমি রাগ ক'রে চলে গেলে ওর বুকে বড় বিঁধবে। ওকে একেবারেই আমরা জলে ভাসিয়ে দিয়েছি সবাই মিলে। সীতা একটাও অনুযোগের কথা উচ্চারণ করলে না। কার্ম্বর বিরুদ্ধেই না। বৌদিদিকে ব'সে ব'সে একথানা লম্বা চিঠি লিখলে, আসবার সময় আমার হাতে দিয়ে বললে—আমায় পাঠাবে না কালীগজে, ভূমি মিছে ব'লে কেন মুখ নই করবে মেজদা। দরকার নেই। তার পর জল-ভরা হাসি-হাসি চোবে বললে—আবার কবে আসবে? ভূলে থেক না মেজদা, শীগগির আবার এসো।

পথে আসতে আসতে গুপুরের রোদে একটা গাছের ছায়ায় বসে ওর কথাই ভাবতে লাগলুম। উম্প্লাঙের মিশন-বাড়ির কথা মনে পড়ল, মেমেরা সীতাকে কত কি ছুঁচের কান্দ, উল-বোনার কান্ধ শিথিয়েছিল যত্ত্ব ক'রে। কার্ট রোডের ধারে নদীখাতের মধ্যে বসে আমি আর সীতা কত ভবিষ্যতের উজ্জল ছবি এঁকেছি ছেলেমাসুষী মনে—কোথায় কি হয়ে গেল সব। মেয়েরাই ধরা পড়ে বেশা, জগতের গুংখের বোঝা ওদেরই বইতে হয় বেশী ক'রে। সীতার দশা যখনই ভাবি, তথনই তাই আমার মনে হয়।

মনটাতে আমার ধুব কট হরেছে সীতার স্বামীর একটা

কথার। সে আমার শক্ষা ক'রে একটা শ্লোক বললে কাল রাত্রে। তার ভাবার্থ এই—গাছে অনেক লাউ ফলে, কোন লাউরের থোলে রুঞ্নাম গাইবার একভারা হয়, কোন লাউ আবার বাবুর্চিচ রাঁধে গোমাংসের সঙ্গে।

তার বলবার উদ্দেশ্য আমি হচ্ছি শেষোক্ত শ্রেণীর লাউ। কেন-না, আমি ব্রাহ্মণ হরে ব্রাহ্মণের আচার মানি নে। দেবদেবীর পূজো-আচা করি নে ওর মত। এই সব কারণে ও আমাকে অতান্ত ক্লপার চক্ষে দেখে ব্রলাম এবং বোধ হয় নিজেকে মনে মনে হরিনামের একতারা বলেই ভাবে।

ভাবুক তাতে আমার আপত্তি নেই। কিন্তু তার মতের সঙ্গে ামল না হ'লেই সে যদি আমায় সুণা করে তবে আমি নিতান্ত নাচার। কোনু অপরাধে আমি বাবুর্চিচর হাতে-রাঁধা লাউ? ছেলেবেলায় হিমালয়ের ওক্ পাইন বনে তপস্থাস্তব্ধ কাঞ্চনজঙ্বার মূর্ত্তিতে ভগবানের অন্ত রূপ দেখেছিলাম, তাই ? রাচুদেশের নির্জ্জন মাঠের মধ্যে স্দ্রায় সেবার সেই এক অপ্রপ দেবতার ছবি মনে এঁকে গিয়েছে, তাই? সেই অজানা নামহীন দেবতাকে উদ্দেশ ক':র ব**লি—**যে যা বলে বলুক। আমি আচার মানি নে, অনুষ্ঠান মানি নে, সম্প্রদায় মানি নে, কোন সাম্প্রদায়িক ধর্মত মানি নে, গোঁডামি মানি নে, আমি আপনাকে মানি। আপনাকে ভালবাসি। আপনার এই বননীল দিগন্তের রূপকে ভালবাসি, বিশ্বের এই পথিক রূপকে ভাশবাসি। আমার এই চোধ, এই মন জন্মজনাস্তরেও এই রকমই রেখে দেবেন। কথনও যেন ছোট ক'রে অপিনাকে দেখতে শিখি নে। আর আমার উপাসনার মন্দির এই মুক্ত আকাশের তলায় যেন চিরযুগ অটুট পাকে। এই ধশ্বই আমার ভাল।

ર

বাড়ি ফিরে দেখি বৌদিদি অত্যন্ত অস্থে পড়েছে।
মহাবিপদে পড়ে গেলাম। কারও সাহায্য পাই নে,
ছেলেমেরেরা ছোট ছোট —দাদার বড় মেরেটি আট বছরের
হ'ল, সে সমন্ত কাজ করে, আমি রাঁধি আবার বৌদিদির
সেবাগুশ্রমা করি। রোগিণীর ঠিকমত সেবা পুরুষের

ধারা সম্ভব নর, তবুও আমি আর ধুকীতে মিলে ষতটা পারি করি।

বৌদিদির অন্থ দিন-দিন বেড়ে উঠতে লাগল।
সংসারে বিশৃদ্ধলার একশেষ—বৌদিদি অটেডন্ত হরে
বিছানায় শুরে, ছেলেমেরেরা যা খুলী তাই করছে, ঘরের
জিনিষ্পত্র ভাঙ্ছে ফেলছে ছড়াচ্ছে—এখানে নোংরা,
ওখানে অপরিষ্কার—কোন্ জিনিষ কোথায় থাকে কেউ
বলতে পারে না, হঠাৎ অসময়ে আবিষ্কার করি ঘড়ায়
থাবার জল নেই, কি লঠন জালাবার তেল নেই। বান্ধার
নিকটে নয়, অন্ততঃ দেড় মাইল দুরে এবং বান্ধারে যেতে
হবে আমাকেই। স্থতরাং বেশ বোঝা যাবে অসময়ে এসব
আবিষ্কারের অর্থ কি।

প্রায় এক মাস এই ভাবে ক'ট্ল। এই এক মাসের কথা ভাবলে আমার ভর হয়। আমি জানতুম না কথনও যে ভগতে এত তুঃথ আছে বা সংসারের দায়িত এত বেলা। রাত দিন কথন কাটে ভুলে গেলেম, দিন, বার, তারিবের হিসেব হারিয়ে কেলেছিলাম—কলের পুতুলের মত ডাক্তারের কাছে যাই, রোগীর সেবা করি, চাক্রি করি, ছেলেমেয়েদের দেখাওনা করি। এই তুংসময়ে দাদার আট বছরের মেয়েটা আমাকে অভুত সাহায্য করলে। সে নিজে রাধে, মায়ের পথা তৈরি করে, মায়ের কাছে বসে থাকে—আমি যথন কাজে বেরিয়ে যাই ওকে ব'লে নাই ঠিক সময় ওয়ুধ খাওয়াতে কি পথা দিতে।

মেজাজ আমার কেমন থারাপ হয়ে গিয়েছিল বোধ হয়,
একদিন কোথা থেকে এসে দেখি রোগিগার সামনের ওষুধের
মাসে ওষুধ রয়েছে, খুকীকে ব'লে গিয়েছি থাওয়াতে কিন্তু
সে ওষুধ গ্লাসে চেলে মায়ের পালে রেথে দিয়ে কোথায়
চলে গিয়েছে। দেখে হঠাৎ রাগে আমার আপাদমন্তক জলে
উঠল আর ঠিক সেই সময় খুকী আঁচলে কি বেঁধে নিয়ে ঘরের
মধ্যে চুকল। আমি কক্ষ ফ্রের বললাম—খুকী এদিকে এস—

আমার গলার হর গুনে খুকীর মুধ গুকিরে গোল ভরে। সে ভরে ভরে ত্-এক পা এগিরে আসতে লাগল, বরাবর আমার চোথের দিকে চোখ রেখে। আমি বললাম—তোর মাকে ওব্ধ খাওরাল্ নি কেন? কোথার বেরিরেছিলি বাড়ি থেকে? সে কোন জবাব দিতে পারলে না—ভরে নীলবর্ণ হরে আমার মুথের দিকে চেরে দাঁড়িয়ে রইল। হঠাৎ কি যে রাগ হ'ল চণ্ডালের মত! তাকে পাখার বাট দিয়ে আথালি-পাথালি মারতে লাগলাম—প্রথম ভরে মার খেরেও সে কিছু বললে না, তার পরে আমার মারের বহর দেখে সে ভরে কোঁদে উঠে বললে—ও কাকাবাব আপনার পারে পড়ি, আমার আর মারবেন না, আমি আর কখন এমন করবোনা—

তার হাতের মুঠো আলগা হয়ে আঁচলের প্রান্ত থেকে ছটো মুড়ি পড়ে গেল মেল্লেডে। সে মুড়ি কিন্তে গিয়েছিল এক পর্যার থিদে পেয়েছিল ব'লে। ভয়ে ডাও বেন তার মনে হচ্ছে কি অপরাধই সে ক'রে ফেলেছে!

আমার জ্ঞান হঠাৎ ফিরে এল। মুজিক'টা মেজেতে পড়ে যাওয়ার ঐ দৃশ্যে বোধ হয়। নিজেকে সামলে নিয়ে ঘর থেকে বার হয়ে গেলাম। সমস্ত দিন ভাবলাম— ছিঃ এ কি ক'রে বসলাম! আট বছরের কচি মেয়েটা সারাদিন ধরে থাটছে, এক পয়সার মুজি কিনতে গিয়েছে আর তাকে এমনি ক'রে নিশ্মভাবে প্রহার করলাম কোন্প্রাণে?

জীবনে কত লোকের কত বিচার করেছি তাদের দোষগুণের জন্তে—দেখলাম কাউকে বিচার করা চলে না— কোন্ অবস্থার মধ্যে প'ড়ে কে কি করে সে কথা কি কেউ বুধে দেখে ?

বৌদিদির অত্থ ক্রমে অতান্ত বেড়ে উঠল। দিন-দিন বিচানার সঙ্গে মিশে থেতে লাগল দেখে ভরে আমার প্রাণ উড়ে বাচ্ছে; এদিকে, এক মহা ছালিন্তা এসে জুটল, যদি বৌদিদি নাই বাচে—এই ছোট ছোট ছেলেমেয়ে নিয়ে আমি কি করব? বিশেষ ক'রে কোলের মেয়েটাকে নিয়ে কি করি? ছোট খুকী মোটে এই দশ মাসের—কি ফুলর গড়ন, মুখ, কি চমৎকার মিষ্টি হাসি! এই দেড় মাস তার অয়জুর এক শেষ হচ্ছে—উঠোনের নারকোলতলায় চটের থলে পেতে তাকে রদ্দুরে শুইরে রাখা হয়—বড় খুকী সব সময় তাকে দেখতে পারে না—কাদলে দেখবার লোক নেই, মাতৃত্তক্ত বছ এই দেড় মাস—হর্লিক থাইরে অতি কটে চলছে। রাত্রে আমার পালে তাকে শুইরে

রাথি, মাঝরাত্তে উঠে এমন কারা স্থক্ক করে মাঝে মাবে—ঘুমের বোরে উঠে তাকে চাপড়ে চাপড়ে গুম পাড়াই-কড় খুকীকে আর ওঠাই নে। রাত্তেত প্রায়ই ঘুম হয় না, রোগীকে দেখা-শুনো করতেই রাভ কাটে---মাঝে মাঝে একট ঘুমিয়ে পড়ি। পাড়ায় এত বৌ-ঝি আছে —দেখে বিশ্বিত হয়ে গেলাম কেউ কোনদিন বললে না ে খুকীকে নিয়ে গিয়ে একবার মাইয়ের তথ দিই। আমি একা কত দিকে যাব-তা ছাড়া আমার হাতের পর্যাও ফুরিয়েছে। এই দেড মাসের মধ্যে সংসারের রূপ একেবার বদলে গিয়েছে আমার চোখে—আমি ক্রমেই আবিকার করলাম মানুষ মানুষকে বিনা স্বার্থে কথনও সাহায্য করে না—আমি দরিন্ত্র, আমার কাছে কাক্সর কোন স্বার্থের প্রত্যাশা নেই, কাজেই আমার বিপদে কেউ উকি মেরেও দেখতে এল না ना जायूक, किन्ध त्कारनत थुकी है। कि निरंत्र त्व क् मूर्जितन পভে গেলাম! ও দিন-দিন আমার চোথের সামনে রোগা হয়ে যাচেছ, ওর অমন কাঁচা সোনার রঙের ননীর পুতুলেব মত কুদে দেহটিতে যেন কালি মেড়ে দিচ্ছে দিন-দিন—ি করবো ভেবে পাই নে, আমি একেবারেই নিরুপায়। শুক্তছ আমি ওকে দিতে ত পারি নে?

কিন্তু এর মধ্যে আবার মুস্কিল এই হ'ল যে শুস্তত্থ্য ত দুরের কথা, গন্ধর ত্থপু গ্রামে পাওরা ত্ত্বর হরে উঠল। গোয়ালারা ছানা তৈরি ক'রে কল্কাভার চালান দের, ত্থ কেউ বিক্রী করে না। এক জন গোয়ালার বাড়িতে ত্থের বন্দোবস্ত করলাম—সে বেলা বারোটা-একটার এদিকে ত্থ দিত না। থুকী বিদেতে ছট্-ফট্ করত, কিন্তু চুপ ক'রে থাকত—একটুপু কাঁদত না। আমার বুড়ো-আঙ্লটা তার মুখের কাছে সে সময় ধরলেই সে কচি অসহার হাত ছটি দিয়ে আমার আঙ্লটা ধরে তার মুখের মধ্যে পুরে দিয়ে বাগ্র, কুখার্ত্ত ভাবে চুযত—তা থেকেই বুয়তাম মাতৃষ্টের

ওকে কেউ দেখতে পারে না—ত্-একটি পাড়ার মে: যারা- বেড়াতে আসত, তারা ওকে দেখে নানা রক্ম মস্তব্য করত। ওর অপরাধ এই যে ও জ্ল্লাতেই ওর বাবা মারা গেল, ওর মা শক্ত অসুথে পড়ল। খুকীর একটা অভ্যাস বধন-তথন হাসা—কেউ দেখুক আর নাই দেখুক, সে াপন মনে ঘরের আড়ার দিকে চেয়ে ফিক্ ক'রে একগাল সবে। তার সে ক্ষ্ধাশীর্ণ নুষ্থের পবিত্র, স্থলর হাসি তবার দেখেছি—কিন্তু সবাই বল্ড, আহা কি হাসেন, ার হাসতে হবে না, কে তোমার হাসি দেখছে? উঠানের ারকোলতলায় চট পেতে রোজে তাকে ভইয়ে রাখা হয়েছে, ত দিন দেখেছি নীল আকাশের দিকে চোখ ঘট তুলে সে াপন মনে অবোধ হাসি হাসছে। সে অকারণ, অপ্রার্থিত দিন কর্ম্ব অর্থহীন খুণীতে ভরা! হোট দেহটি দিনকন হাড়সার হয়ে যাছে, অমন সোনার রং কালো হয়ে গল, তব্ও ওর মুখে সেই হাসি দেখেছি মাঝে মাঝে—কেনাসে, কি দেখে হাসে কে বলবে?

এক এক দিন রাত্রে যুম ভেঙে দেখি ও খুব চেঁচিয়ে গদছে। মাধা চাপড়াতে চাপড়াতে আবার ঘুমিয়ে পড়ত। ড় খুকীকে বলতাম, একটু হুধ দে ত গরম ক'রে, হয়ত বিদেয় কাঁদছে। সব দিন আবার রাত্রে হুধ থাকত না। সদিন আঙুল চুষিয়ে অনেক কটে যুম পাড়াতে হ'ত। একদিন সকালে ওর কালা দেখে আর থাকতে পারলাম না—বোগার সেবা ফেলে ছু-ক্রোল তফাতের একটা গ্রাম থেকে নগদ পয়সা দিয়ে আধ সের হুধ জোগাড় ক'রে নিয়ে এসে ওকে বাওয়ালুম। গোয়ালাকে কত খোসামোদ করেও বেলা বারোটার আগে কিছুতেই হুধ দেওয়ানো গেল না।

মান্ন্য যদি বিবেচনাহীন হয়, নির্বোধ হয় তবে বাইরে থেকে তাকে পশুর চেয়েও নিষ্ঠুর মনে করা দোষের নয়। বখন খুকীর হুধের জন্তে আমি সারা গ্রামখানার প্রত্যেক গোরালাবাড়ি খুঁলে বেড়িয়েছি যদি সকালের দিকে কেউ একটু হুধ দিতে পারে—যে বলেছে হয়ত ওথানে গেলে পাওরা বাবে সেধানেই ছুটে গিয়েছি, আগাম টাকা দিতে চেয়েছি কিছু প্রতিবারই বিফল হয়ে ফিরে এসেছি—সে সময় ঠিক আমার বাড়ির পাশেই স্থরপতি মুখুয়ের বাড়িতে দেড় সের ক'রে হুধ হ'ত। স্থরপতি সন্ত্রীক বিদেশে থাকেন, বাড়িতে থাকেন তাঁর বিধবা বড় ভাজ নিজের একমাত্র বিধবা মেয়ে নিয়ে। এঁদের অবস্থা ভাল, দোতলা কোঠা বাড়ি ছ-সাতটা গল্প, জমিজমা, ধানভ্রাগোলা। সকালে মারে-বিয়ের চা থাবার জন্তে হুধ দোয়া

হয়, মেরেটি নিজেই গাই ছইতে জানে, সকালে আধ সের ছধ হয়, ছপুরে বাকী এক সের। ওঁরা জানেন যে ছথের জল্তে খুকীর কি কট যাচ্ছে, তাঁদের সঙ্গে আমার এ সম্বন্ধে কথা হয়েছে অনেকবার, আমার অনেকবার প্রৌচা মহিলাটি জিগ্যেসও করেছেন আমি ছথের কোনো স্থবিধে করতে পারলাম কি না—ছ-চার দিন সকালে ডেকে আমার চাও ধাইয়েছেন কিন্তু কথনও বলেন নি এই ছধটুকু নিয়ে গিয়ে খুকীকে থাওয়াও ততক্ষণ। আমিও কথনও তাঁদের বলি নি এ নিয়ে, প্রথমতঃ আমার বাধ-বাধ ঠেকেছে, দ্বিতীয়তঃ, আমার মনে হয়েছে এঁরা সব জেনেও থবা ছলছুতো তুলে ছধ দেবেন না। তব্ও আমি এঁদের নিষ্ঠুর বা স্বার্থপর ভাবতে পারি নে—বিবেচনাছীনতা ও কল্পনাভিত্র অভাব এঁদের এরকম ক'রে তুলেছে।

কতবার ভগবানের কাছে প্রার্থনা জানিরেছি—"ওর কট আমি আর দেখতে পারি নে, আপনি ওকে একটু হুধ দিন।" ওর মুখের সে অবোধ উল্লাদের হাসি প্রতিবার ছুরির মত আমার বুকে কিঁধেছে। কতবার মনে মনে ভেবেছি আমি যদি দেশের ডিক্টেটর হতাম, তবে আইন ক'রে দিভাম শিশুদের হুধ না-দিয়ে কেউ আর কোন কাজে হুধকে শাগাতে পারবে না।

কতবার ভেবেছি বৌদিদি যদি না বাচে, এই কচি
শিশুকে আমি কি ক'রে মানুষ করব? স্তত্যুগ্ধ একে
কেউ দেবে না এই পাড়াগায়ে, বিশিয়ে দিশেও মেয়েসস্তান
কেউ নিতে চাইবে না—নিতান্ত নীচু জাত ছাড়া।
আটঘরাতে থাক্তে ছেলেবেলায় এরকম একটা ব্যাপার
ভনেছিলুম—গ্রামের শশিপদ ভট্চাজের ক্রী মারা যায় ছটি
শিশুসন্তান রেখে। শশিপদ ভট্চাজের কেউ ছিল না—
এদিকে শিশু হুটিই মেয়ে, অবশেষে যহু মুচির বৌ এনে
মেয়ে হুটিকে নিয়ে গিয়েছিল।

এই সোনার খুকীকে সেই রকম বিলিয়ে দিতে হবে পরের হাতে? কত বিনিজে রজনী কাটিয়েছি দুমস্ত শিশুর মুখের দিকে চেয়ে এই ভাবনায়। এই বিপদে আমার প্রায়ই মনে হয়েছে মালতীর কথা। মালতী আমায় এ বিপদ থেকে উদ্ধার করবে, সে কোন উপায় বার করবেই, যদি

থুকীকে বৃকে নিয়ে তার কাছে গিয়ে দাঁড়াই। সে চুপ ক'রে থাকতে পারবে না। তার ওপর অভিমান ক'রে চলে এসেছিলাম, দেখা পর্যান্ত ক'রে আদি নি আসবার সময়— আর তার পর এতদিন কোনো থোঁভখবর নিই নি—একখানা চিঠি পর্যান্ত দিই নি, আমার বিপদের সময়ে সে আমার সব দোয় ক্ষমা ক'রে নেবে।

কিন্তু থুকী আমায় সব চিন্তা থেকে মুক্ত ক'রে দিলে।
তার বে হাসি কেউ দেখতে চাইত না, একদিন শেষরাত্রি
থেকে সে হাসি চিরকালের জন্ত মিলিয়ে গেল। অল্পদিনের
জন্তে এসেছিল কিন্তু বড় কট পেয়ে গেল। কিছুই সে
চায় নি, শুধু একটু মাতৃস্তন্ত, কি লোলুপ হয়ে উঠেছিল তার
জন্ত, তার কুল কুদে হাত ছটি দিয়ে বাগ্রভাবে আমার
আঙ্লটা আঁকড়ে ধরে কি অধীর আগ্রহে সেটা চ্যত
মাতৃস্তন ভেবে! আমারও কি কম কট গিয়েছে অবোধ
শিশুকে এই প্রভারণা করতে? ভগতে কত লোক
কত সঙ্গত অসঙ্গত পেয়াল পরিতৃপ্ত করবার স্বোগ ও
স্বিধা পাছে, আর একটি কুদ্র, অক্ট্রাক্ শিশুর নিভাস্ত
ন্তায় একটা সাধ অপূর্ণ রয়ে গেল কেন তাই ভাবি।

চতুর্দ্দশ পরিচ্ছেদ

``

বৌদিদি ক্রমে সেরে উচলেন, কিছুদিন পরে আমার হঠাৎ একদিন একটু জর হ'ল। ক্রমে জর বেকে দাড়াল, আমি অজ্ঞান অচৈতক্ত হরে পড়লাম। দিনের পর দিন যায় জর ছাড়ে না। একুশ দিন কেটে গেল। দিনের রাতের জান হারিয়ে ফেলেছি যেন, কখন রাত কখন দিন ব্রুতে পারি নে সব সমর। মারে মারে চোখ মেলে দেখি বাইরের রোদ একটু একটু ঘরে এসেছে তখন ব্রি এটা দিন। বিছানার ওপালটা ক্রমশঃ হয়ে গেল বছ দুরের দেশ, আফ্রিকা কি জাপান, ওখানে পৌছানো আমার শরীর ও মনের শক্তির বাইরে। অধিকাংশ সময়ই ঘোর-ঘোর ভাবে কাটে—সে অবস্থায় যেন কত দেশ অ্যায়, কত জায়গায় যাই। যথন যাই তখন যেন আর আমার অস্থ থাকে না, সম্পূর্ণ স্থ আনক্ষে মন ভরে ওঠে, রোগশ্যা স্থপ্প ব'লে মনে হয়। ছেলেবেলাকার সব জারগাগুলোতে আবার গেলাম যেন,

আট্বরার ব'ড়িও বাদ গেল না। হঠাৎ ঘোর কেটে যায়, দেখি কুলদা ডাক্তার বুকে নল বসিয়ে পরীক্ষা করছে।

একবার মনে হ'ল হপুর ঝাঁ-ঝাঁ করছে, আমি ছার-বাসিনীতে যাচিছ ছোট খুকীকে কোলে নিয়ে! হুর্গাপুরের ডাঙা পার হয়ে গেলাম, আবার সেই কাঁলোড় নদী, সেই তালকন, রাঙা মাটির পথ। মালতী বড় ঘরের দাওয়ার বসে কি কাজ করছে। উদ্ধবদাস আমায় দেখে চিনলে, কাছে এসে বললে—বাবু বে—কি মনে ক'রে এডদিন পরে? আপনার কোলেও কে? মালতী কাজ ফেলে মুখ তুলে দেখতে গেল উদ্ধবদাস কার সঙ্গে কথাবার্তা কইছে। ভার পর আমায় চিনতে পেরে অবাক ও আড়ষ্ট হয়ে সেইখানেই বলে রইল। আমি এগিয়ে দাওয়ার ধারে গিয়ে বললাম-তুমি কি ভাববে জানি নে মালতী, কিন্তু আমি বড় বিপদে পড়েই এসেছি। এই ছোট খুকী আমার দাদার মেয়ে, এর মা সম্প্রতি মারা গিয়েছে। একে বাঁচিয়ে রাথবার কোন ব্যবস্থা আমার মাথায় আদে নি। আর আমার কেউ নেই— একমাত্র তোমার কথাই মনে হ'ল, তাই একে নিয়ে তোমার কাছে এদৈছি। একে নাও, এর সব ভার আৰু থেকে তোমার ওপর। তুমি ছাড়া আর কারও হাতে একে দিয়ে আমি নিশ্চিস্ত হ'তে পারব না।

মানতী যেন তাড়াতাড়ি খুকীকে আমার কোন থেকে তুলে নিলে। তার পর আমার ক্লক চুল ও উদ্ভান্ত চেহারার দিকে অবাক হয়ে চেয়ে রইন। পরক্ষণেই সে দাওয়া থেকে নেমে এদে বললে—আপনি আমুন, উঠে এসে বসুন।

আধিড়ার আর যেন কেউ নেই। উদ্ধবদাসকেও আর দেখলাম না। তথু মালতী আর আমি। ও ঠিক সেই রকমই আছে—সেই হাসি, সেই মুধ, সেই ঘাড় বাঁকিরে কথা বলার ভঙ্কি। হেসে বললে—তার পর ?

আমি বলনাম—ভার পর আর কি? এই এলাম।

- —এতদিন কোথায় ছিলেন ?
- —নানা দেশে। তার পর দাদা সারা গেলেন, আমার ওপরে ওলের সংসারের ভার।
 - -- উ: कि निष्ठंद्र व्यापनि !

তার পর দে বললে—আপনি বসুন খুকীর সম্বন্ধে একটা ব্যবস্থা ত করতে হবে। একবার নীরদা-দিদিকে ডাকি। আমি বললাম—আমি কিন্তু এখনই ধাব মালতী। ছোট ছোট ছেলেমেয়েদের কেলে রেথে এসেছি পরের বাজিতে। আমাকে যেতেই হবে।

মালতী আশ্চর্যা হয়ে বললে—আজই? আমি বললাম—আমার কাজ আমি শেষ করেছি, এখন তুমি যা করবে কর খুকীকে নিয়ে। আমি থেকে কি করব? আমি ষাই।

মালতী স্থিরদৃষ্টিতে আমার দিকে চেন্নে বলন—আমার নিয়ে বান তবে।

আমি অবাক হয়ে বললাম—দে কি মালতী ? তুমি বাবে আমার সঙ্গে ? তোমার এই আধড়া ?

মালতীর সঙ্গে ধেদিন ছাড়াছাড়ি হয়েছিল, সেদিনটি বেমন ও চোথ নামিয়ে কণা বলেছিল—ঠিক তেমনই ভঙ্গিতে চোথ মাটির দিকে রেখে স্পাই ও দৃঢ় স্থরে বললে—আপনি আমায় নিয়ে চলুন সঙ্গে যেখানে আপনি বাবেন। এবার আপনাকে একলা বেতে দেব না।

ত্রীএকচল্লিশ দিনে জর ছেড়ে গেল। সেরে উঠলে বৌদিদি একদিন বললেন—জরের বোরে 'মালতী' 'মালতী' ব'লে ভাকতে কাকে? মালতী কে ঠাকুরপো?

আমি বললাম—ও একটি মেরে। বাদ দাও ও-কথা। রোজ বলতাম? কত দিন বলেছি?

এই অন্তথ-বিত্থে মাসীমার দেওয়া সেই একশো টাকা ত গেলই, বৌদিদির গারের সামান্ত যা ছ-একথানা গহনা ছিল তাও গেল। নভুন চাকুরীটাও সঙ্গে সঙ্গে গেল।

এখান থেকে তিন ক্রোশ বুরে কামালপুর ব'লে একটা প্রাম আছে। নিতান্ত পাড়াগাঁ এবং জললে ভরা। সেখানকার ছ-এক জন জানাশোনা ভদ্রগোকের পরামর্শে সেখানে একটা পাঠশালা খুললাম। বৌদিদিদের আপাততঃ কালীগঞ্জে রেখে আমি চলে গেলাম কামালপুরে। একটা বাড়ির বাইরের ঘরে বাসা নিলাম—বাড়ির মালিক চাকুরীস্থানে থাকেন, বাড়িটাতে অনেক দিন কেউ ছিল না। বাড়ির পিছনে একটা বড় আম-কাঁটালের বাগান।

পাঠিশালার অনেক ছেলে জুট্ল—কতকশুলি ছোট। মেরেও এল। যা আর হয়, সংসার একরকম চলে হার। সময় বড় বড় মনের দাগ মুছে দেবরৈ মন্ত্র জানে। আবার নতুন মন, নতুন উৎসাহ পেলাম। সঙ্গে সঙ্গে জীবনের একটা নতুন অধ্যায় কি রকমে স্থক হ'ল তাই এখানে বলব।

পাঠশালা খুলবার পরে প্রায় ছ-বছর কেটে গিয়েছে। ভাজ মাস। বেশ শরতের রোদ ফুটেছে। বর্ধার মেঘ আকাশে আর দেখা যায় না। একদিন আমি পাঠশালার গিয়েছি একটা ছোট মেয়ে বলচে—মাষ্টার মশায়, পেনো হিরণদিদির হাত আঁচিড়ে কামড়ে নিয়েছে, ওই দেখুন ওর হাতে রক্ত পড়ছে।

যে মেরেটির হাতে আঁচিড়ে নিয়েছে তার নাম হিরময়ী,
বয়স হবে বছর চোদ্দ, পাঠশালার কাছেই ওদের বাড়ি—
কিন্তু মেয়েটি আমার পাঠশালায় ভর্ত্তি হয়েছে বেশী দিন
নয়। ওর বাবার নাম কালীনাথ গাঙ্গুলী, তিনি কোথাকার
আবাদের নায়ব, সেইখানেই থাকেন, বাড়িতে থুব কমই
আসেন।

আমি শক্ষ্য ক্রেছি এই মেয়েটি সক্লের চেয়ে সঞ্জীব, বুদ্ধিমতী, অত্যস্ত চঞ্চশা। সক্লের চেয়ে সে বন্ধসে ধেমন বড়, সক্লের চেয়ে সে সভ্য ও সৌখীন। কিন্তু তার একটা দোষ, কেমন একটু উদ্ধৃত স্বভাবের মেয়ে।

একদিন কি একটা অন্ধ ওকে দিলাম, স্বাইকে দিলাম। ওর অন্ধটা ভূল গেল। বললাম—ভূমি অন্ধটা ভূল করলে হিরণ? অন্ধটা ভূল গিয়েছে শুনে বোধ হয় ওর রাগ হ'ল— আর দেখেছি সব সময়, অপর কারোর সামনে বকুনি খেলে ও পেপে ওঠে। খুব সম্ভব সেই জন্তই ও রাগের হুবে বললে—কোথায় ভূল? কিসের ভূল? ব'লে দিন না? আমি বললাম—কাছে এস, এতদুর থেকে কি দেখিয়ে দেওয়া যায়? আমি দেখে আসছি যে কদিন ও এসেছে, আমার কাছ থেকে দুরে বদে।

ও উদ্ধতভাবে বললে—কেন এধান থেকেই বলুন না ? আপনার কাছে কেন যাব ?

আমার মনে হ'ল ও বড় মেয়ে ব'লে আমার কাছে আসতে বোধ হয় সঙ্কোচ অমূভব করে। কিন্তু তার জনো ওরকম উদ্ধত সুর কেন? বললাম—কাছে এসে আঁকি দেখে নিতে দোব আছে কিছু? ও বললে—সে-সব কথার কি দরকার আছে? আপনি দিন অঙ্ক ওথান থেকেই বুরিয়ে।

রাগে ও বিরক্তিতে আমার মন ভ'রে উঠল। আচ্ছা মেরে ত? মাষ্টারের সঙ্গে কথাবার্তার এই কি ধরণ? আর আমার যথন এত অবিশাস তথন আমার স্থলে না-এলেই ত হয়? সেদিন আমি ওর সঙ্গে আর কোন কথাই বললাম না। পরদিনও তাই, স্থলে এল, নিদ্ধে ব'সে ব'সে কি লিখলে বই দেখে, একটা কথাও কইলাম না। ছুটির কিছু আগে আমার বললে—আমার ইংরিজিটা একবার ধরুণ না? আমি ওর পড়াটা নিয়ে তার পর শান্তভাবে বললাম—হিরণ, তোমার বাড়িতে ব'লো, আমি তোমাকে পড়াতে পারব না। অন্য ব্যবস্থা করতে ব'লো কাল থেকে।

হিরণশ্বীয় মুথে বিশ্বয় ক্টে উঠন—বলনে—কেন ?
আমি বলনাম— না—তুমি বড় মেয়ে, এখানে ভোমার
সূবিধা হবে না।

ও বললে—রাগ করেছেন নাকি? কি করেছি আমি?
আমি বললাম—কাল তোমার ও-কথাটা কি আমায় বলা
উচিত হয়েছে হিরণ? কি ব'লে তুমি বললে আপনার
কাছে কেন যাব? অধান থেকেই বলুন না? তুমি আমার
কাছে তবে পড়তে এসেছ কেন? …

হিরণয়ী হেসে বললে—এই ! তা কি এমন বলেছি, আমি ? তা যথন আপনি বলছেন দোষ হয়েছে বলাতে, তথন দোষ নিশ্চয়ই হয়েছে ।

—কেন তুমি বললে ও রকম? তোমার হংখিত হওয়া উচিত ওকথা বলার জনো, তঃ জান?…

হিরমন্ত্রী বললে—হা, হয়েছি! হ'ল ত ? এখন নিন।
তার পর খখন ওর অঙ্ক দেখছি, তখন হঠাৎ আমার মুখের
দিকে কেমন একটা ব্থতে না-পারার দৃষ্টিতে চেয়ে বললে—
উ: আপনার এত রাগ ?…আগে ত কখন রাগ দেখি নি
এ রকম ?…তখনও সে আমার মুখের দিকে সেই রকম দৃষ্টিতে
চেয়ে কি যেন ব্থবার চেটা করছে। ওর রকম-সকম দেখে
আমি হাসি চাপতে পারলাম না—সঙ্গে সঙ্গে সেই মুহুর্তে
হিরমন্ত্রীকে নতুন চোথে দেখলাম। দেখলুম হিরমন্ত্রী
অত্যন্ত লাবণামন্ত্রী, ওর চোখ হুটি অত্যন্ত ভাগর, টানা-টানা

জোড়া ভুক্ক হাটি কাল দক্ষ রেখার মত, কপালের গড়ন ভারী স্কার, চাঁচা ছোট, অর্দ্ধচন্দ্রাকৃতি। মাথার একরাশ ঘন কাল চল।

ও তথনও আমার দিকে সেই ভাবেই চেয়ে আছে। এক মিনিটের ব্যাপারও নয় স্বটা মিলে।

পরদিন থেকে একটা ব্যাপার লক্ষ্য করলাম, হির্মন্ত্রী আমার কাছ থেকে ততদূরে আর বসে না—আর না-ডাকলেও কাছে এলে দাঁড়ার।

একদিন আমায় বললে—জানেন মান্টার-মশায়, আমার সব দল এরা—আমায় এরা ভয় করে।

অবাক্ হয়ে বললুম-কারা ?

হাত দিয়ে পাঠশালার সব ছাত্রছাঞীদের দেখিয়ে দিয়ে বললে—এরা। আমার কথা না-শুনে কেউ চলতে পারে না।

--ভয় করে কেন?

— এম্নি করে। আমি যা বলব ওদের শুনতেই হবে।
গাঠশালার সকলেরই ওপর সে ত্কুম ও প্রভুত চালার,
এটা এতদিন আমার চোথে পড়ে নি—সেদিন থেকে সেটা
লক্ষ্য করলাম। তবে পেনো যে সেদিন ওর হাত আঁচড়ে
নিম্নেছিল সে আলাদা কথা। দেশের রাজার বিরুদ্ধেও
ত তাঁর প্রজারা বিজ্ঞাহী হয় ?

রোক্ষ রাজে বাসায় এসে সন্ধ্যাবেলা পরোটা গড়ি। ছ-এক দিন পরে সন্ধ্যাবেলা ময়দা মাধতি একা রায়াবরে বসে, সন্ধ্যা সাড়ে সাভটার বেলা নয়, একট: হারিকেন-লঠন জলছে ঘরে। কার পায়ের শব্দে মুথ ভূলে দেখি ঘরের মধ্যে দাঁড়িয়ে হিরমনী। শশ্বান্তে উটে বিশ্বিত মুখে বললাম—হিরণ এস এস, কি মনেক'রে?…

হিরমন্ত্রীর একটা স্বভাব গোড়া থেকে লক্ষ্য করেছি, কথনই প্রশ্নের ঠিক জবাবটি দেবে না। আমার কথার কোন উত্তর না দিয়ে বললে—মন্ত্রদা মাথেন বুরি নিজেরোক ? ওই বুরি মন্ত্রদা মাথা হচ্ছে?

আমি বিপন্ন হয়ে পড়লুম—চোদ্দ বছরের মেয়েকে পাড়ার্গায়ে বড়ই বলে। আমার কাছে এরকম কবস্থা আসাটা কি ঠিক হ'ল ওর? এসব জায়গার গতিক আমি জানি ভ?

বললাম-ভুমি যাও হিরণ, পড়গো।

হিরময়ী হেসে বললে—তাড়িয়ে দিচ্ছেন কেন?
আমি যাব না—এই বদ্লাম। বেজায় একগুঁয়ে মেয়ে,
আমি ত জানি ওকে! বললে—একটা অফ ক্ষে
দেবেন? না—থাক্, একটা গল্প বলুন না?…ও আপনি
বৃঝি ময়দা মাখবেন এখন! সক্ষন, সক্ষন দিকি! আমি
মেখে বেলে দিছি। কি হবে কটি না লুচি?…আপনি
এই পিঁড়িটাতে বাস গুরু গল্প কক্ষন।

সেই থেকে হির্মন্ত্রীর রোজ সন্ধ্যাবেশা আমাকে সাহায্য করতে আসা চাই-ই। মৃত্ প্রদীপের আলোতে ও হাসি-হাসি মুখে সে তার থাতাখানা খুলে নামে অক্ষ কবে—কাজে কিন্তু সে আমার কৃটি পরোটা তৈরি ক'রে দের। কিছুতেই আমার বারণ শোনে না—ওর সঙ্গে পারব না ব'লে আমিও কিছু আর বলি নে। ওর মারের বারণও ও শোনে না, একদিন কথাটা আমার কানে গেল।

শুনলাম একদিন মাকে বলছে ওদের বাড়ির উঠোনে দাঁড়িয়ে—কেন যাই তাই কি? আমি লক্ষ কয়তে যাই। বেশ করি—যাও।

হিরণারীকে কল্লাম—শোন হিরণ, আমার এখানে সক্ষোবেলা আর এদ না—যথন ভোমার মা বকেন। আমার কথাটা অন্ততঃ তোমার মানা উচিত। ব্যবেল ?

পরদিন হির্ময়ী সভিত্ত আর এল না। আমার সদ্ধাটা কেমন যেন ফাঁকা হয়ে গিয়েছে ওর না আসাতে, সেদিন প্রথম লক্ষ্য করলাম। সাত-আট দিন কেটে গেল—হির্ময়ী গাঠশালাতে রোক্ষ্ট আসে। তাকে জিজ্ঞাসা করি না অবিখ্যি কেন সে সন্ধাবেলা আসে না।

একদিন সে পাঠশালাতেও এল না। ছ-তিন দিন পরে জিগ্যেস্ ক'রে জানলাম সে মামার বাড়ি গিয়েছে তার মারের সঙ্গে।

দেখে আশ্চর্যা হলাম যে আমার পাঠশালা আর সে পাঠশালা নেই—আমার সন্ধ্যাও আর কাটে না। হিরণের বিরের স্থন্ধ হচ্ছে ওর মামার বাড়ি থেকে, মেরে দেখাতে নিরে গিয়েছে—বরপক্ষ ওথানেই মেয়েকে আশীর্কাদ করবে

মানুষের মন কি অভুত ধরণের বিচিত্র! হঠাৎ কথাটা শুনেই মনে হ'ল এ গাঁয়ের পাঠলালা উঠিয়ে দেব, অন্তত্ত্ব চেষ্টা দেবতে হবে। কেন, বধন প্রথম পাঠলালা খুলেছিলাম এ গাঁয়ে, তখন ত হিরণের অপেক্ষায় এধানে আসি নি, তবে দে থাক্লো বা গেল—আমার তাতে কি আদে যায় ?

মাসথানেক কেটে গিরেছে। আমি কলের মত কাজ করে যাই, একদিন সামান্ত একটু বাদলামত হয়েছে— পাঠশালার ছুটি দিয়ে সকাল-সকাল রায়া সেরে নেব ব'লে রায়াঘরে চুকেছি, বেলা তথনও আছে। এমন সময় দোরের কাছে দেখি হিরময়ী এসে হাসিহাসি মুথে টাড়িয়েছে। আমি বিশ্বয়মিশ্রিত খুণীর হুরে ব'লে উঠলাম—এস, এস হিরণ,—কথন এলে তুমি ? ব'গো।

হিরময়ী বললে—কেমন আছেন আপনি ? তার পর সে এগিয়ে এসে দলজ্জ আড়ষ্টতার সঙ্গে ঝপ্ক'রে আমার পায়ের ধুলো নিয়ে প্রণাম ক'রে আবার সোজা হয়ে দোরের কাছে দীভাল।

আমি এত খুনী হয়েছি তথন, ওকে কি বদরো ভেবেই পাই নে যেন। বলনাম—ব'সো হিরণ, দাঁড়িয়ে কেন ?

হিরময়ী বোধ ইর একটু সক্ষোচের সঙ্গেই এসেছিল, আমি ওর আসাটা কি চোথে দেখি—এ নিয়ে। আমার কথা শুনে—হাজার হোক্ নিতান্ত ছেলেমান্ত্য ত ?—ও যেন ভরসা পেল। ঘরের মধ্যে চুকে একটা পিঁড়ি পেতে বস্ল। আমার মুখের দিকে চেয়ে বললে—কি সেই শিথিয়ে দিলেন, 'নয় পরিত্যাগ-প্রণালী' না কি ? সব ভূলে গিয়েছি—হি-হি—

দেখলাম ওর বিয়ে হয় নি—ওকে আর কোন কথা বলি নি অবিখ্যি তা নিয়ে। দেনা-পাওনার ব্যাপার নিয়ে দে-দম্বদ্ধ ভেঙে গিয়েছে—ছ-চার দিনে অপরের মুখে শুনলাম। আবার হিরময়ী আমার পাঠশালাতে নিত্য আদে বায়—সন্ধ্যাবেলাতেও রোজ আদে—ঝড় হোক্, বৃষ্টি হোক্, তার সন্ধ্যায় আসা কামাই ধাবে না। কেন তার মা এবার তাকে বকেন না—সে কথা আমি জানি নে— তবে বকেন না বে এটা আমি জানি।

বরং একদিন হিরময়ী বললে—মাজ আলো জেলে

একটা বই পড়ছি, মা বললে আজ যে তুই তোর মাষ্টারের কাছে গৌল নে বড়? তাই এলুম, মাষ্টার মশায়। আমি বললাম—তা বেশ ত, গল্পের বই পড়লেই পারতে। মা না ব'লে দিলে ত আজ আসতে না?

কথাটা বলতে গিয়ে নিজের অলক্ষিতে একটা অভিমানের স্থ্য বার হয়ে গেল—হির্মায়ী দেটা বুঝতে পেরেছে অমনি!

এমন বুদ্ধিমতী মেয়ে এইটুক্ বয়সে!—বললে—নিন্, আর রাগ করে না। ভেবে দেখুন, আপনিই না আমায় এখানে এ.ল তাড়িয়ে দিতেন আগে আগে?

তুঃখিত ভাবে বলগাম—ছিঃ ও-কথা ব'লো না হিরণ, তাড়িয়ে আবার তোমায় দিয়েছি কবে? ও-কথাতে আমার মনে কট দেওয়া হয়।

হিরময়ী মুথে কাপড় দিয়ে থিল্ থিল্ ক'রে উচ্ছৃদিত চেলেমালুধী হাদির বস্তা এনে দিলে। থাড় ছলিয়ে ছলিয়ে বলতে লাগল—না—না দেন নি ? ব.ট ? একদিন—দেই— তাড়ালেন না! আজু আবার বলা হচ্ছে—পরে আমার হুরের নকল করতে চেষ্টা করে—'ওতে আমার মনে কষ্ট দেওয়া হয়'—কি মান্য আপনি!—হি-হি-হি-হি-

আমি মৃগ্ধলৃষ্টিতে ওর হাসি:ত উদ্ভাসিত স্ক্মার লাবণ্যভরা মুথের দিকে চেয়ে রইলাম—চোথ আর ফেরাতে পারি নে—কি অপুর্বা হাসি! কি অপুর্বা চোথ মুথের 🗐!

যথন চোখ নামিয়ে নিলাম তথন সে আমার বেলুনটা তুলে নিয়ে কটি বেলতে ব'সে গিয়েছে। সেদিন ও যথন চলে যায়, ঝোঁকের মাথায় অগ্র-পশ্চাৎ না ভেবেই ওকে আবার বললাম—এ রকম আর এস না, হিরণ। না সত্যি বলছি ভূমি আর এদ না।

মনকে খুব দৃঢ় ক'রে নিয়ে কখাটা ব'লে ফেলেই ওর মুখের দিকে চেমে আমার বুকের মধ্যে যেন একটা ভীক্ষ ভীর খচ, ক'রে বিখলো। 'দেখলাম ও বুঝতে পারে নি আমি কেন একথা বলেছি—কি বোধ হয় দোষ ক'রে ফে:লছে ভেবে ওর মুখ বিষর্গ হয়ে গিয়েছে উদ্বেশে ও ভয়ে।

আমার মুখের দিকে একটুখানি চেয়ে রইল—

যদি মুখের ভাবে কারণ কিছু বুঝতে পারে। না-বুঝতে

পেরে বাবার সময় দেখলাম শুদ্ধ বিবর্ণ মুখে বললে— আমায়

ভাড়িয়ে দিলেন না? এই দেখুন—ভাড়ালেন কি না।

হংশে আমার বুক থেনটে যেতে লাগল। নিমগাছটার তলা দিয়ে ও ওই যাচ্ছে, এখনও বেশী দূর যায় নি, ডেকে হটো মিষ্ট কথা বলব, ছেলেমাকুষকে একটু সাস্থনা দেব ?…

ভাকলুম শেষটা না-পেরে।—শোনো ও ইরণ —শোনো—
ও দাঁড়াল না—শুনেও শুন্লেনা, হন্হন্ ক'রে ছেটে বাড়ি
চলে গেল। পরদিন খ্ব সকালে উঠে বারান্দাতে ব'সে
বাউনিঙের A Soul's Tragedy পড়ছি—হিরণ এসে দাঁড়িথে
বল্ল—কি কচেছন শ—এস, এস হিরণ। কাল ভোমাকে
ভাকলাম রাত্রে, এলে না কেন ? ভূমি বড় একগুঁরে মেয়ে—
একবার শোনা উচিত ছিল না কি বলছি ?

নুধরা বালিকা এবার নিজমূর্ত্তি ধরলে। বললে—
আমি কি কুকুর না শেয়াল, দূর দূর ক'রে তাড়িয়ে
দেবেন, আবার তু ক'রে ডাকলেই ছুটে আস্ব ?
আপনি বুঝি মনে ভাবেন আমার শরীরে ঘেয়া নেই, অপমান
নেই—না? আমি বলতে এলাম সকালবেলা যে আপনার
পাঠশালায় আমি পড়তে আসব না—মা অনেক দিন আগেই
বারণ করেছিল—ভবুও আস্তাম, ভাদের কথা না-শুনে।
কিন্তু যথন আপনি কুকুর-শেয়ালের মত দূর ক'রে ভাড়িয়ে—
ওর চোঝে জল ছাপিয়ে এসেছে—অথচ কি তেজ ও দর্পের
সক্তে কথাগুলা বললে সে! আমি বাধা দিয়ে বললাম —
আমায় তুল বুঝো না ছিঃ হিরণ—আছো, টেচিও না বেশী,
কেউ শুন্লে কি ভাববে। আমাব কথা শোন—রাগ করে
না ছিঃ।

হিরণ দ। ড়াল না এক মৃত্রুর্ত। অতটুকু মেয়ের রাগ দেখে যেমন কৌতুক হ'ল, মনে তেমনই অভ্যন্ত কইও হ'ল। কেন মিথ্যে ওর মনে কই দিয়েছি কাল? আহং, বেচারী বড় হুংধ ও আবাত পেরেছে। আমার জ্ঞান আর হবে কবে? ছেলেমাপ্রকে ও-কথাটা ও-ভাবে বল। আমার আদৌ উচিত হয় নি।

মন অত্যন্ত ধারাপ হয়ে গেল—ভাবলাম, এ গ্রামের পাঠশালা তুলে দিয়ে অন্তত্ত যাবই। এদিকে হির্মমীও আর আমার পাঠশালাতে আসে না। মাদের বাকী আটটা দিন পড়িয়ে নিমে পাঠশালা তুলে দেব ঠিক ক'রে ফেল্লাম। স্বাইকে বলেও রাখ্লাম কথাটা। আগে থেকে যাতে স্বাই অন্ত ব্যবস্থা ক'রে নিতে পারে।

য়ুরোপে স্ত্রীধর্মনীতি

রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

Š

শাস্তিনিকেতন

শ্রদ্ধাস্পদেষু

আপনার প্রেরিত বইখানি পেলুম।

পৃথিবীতে যুগান্তর এলো। তার লক্ষণ যুরোপে দেখা দিচ্ছে। কারণ যুরোপে মানুষ ভালোয় মন্দয় বেঁচে আছে সম্পূর্ণরূপে।

অভীত ইতিহাস যদি সন্ধান করি তবে দেখতে পাব, কী আর্থিক কী সামাজিক পদ্ধতি মানবসংসারে একটানা চ'লে আসে নি। এক মহাভারত আলোচনা করলে তার যত পরিচয় পাই তেমন কোনো একখানা বইয়ে পাওয়া যায় না। যে সব রীতি সব শেষে পরিণত হয়েতে তাই যে সব চেয়ে ভালো আমাদের চার দিকে চেয়ে দেখলে সে কথা মানা যায় না।

মান্ত্ৰ অনেক প্রথা তৈরি ক'রে তুলেছে যা মোটের উপর কাজ-চালানে, অথচ যা নানা ব্যক্তিগত ক্ষেত্রে হুঃথকর, এমন কি, মন্ত্যান্ত্রে অপমানজনক। জীবন্যাত্রা যথন সংকীপ পরিধিতে শুরু হুরে জটাবহল ছিল না তথনকার প্রত্যেক গীতিনীতি ধর্ম্মের নামে সনাতন চেহারা ধারণ করবার শাস্ত অবকাশ পেয়েছিল। যেখানে অবস্থা আজও প্রায় সেই রকমই অচঞ্চল, নব যুগের আবর্ত্ত যেখানে ক্ষুরু হুরে ওঠে নি সেথানকার স্থাবরতার পুরাতন নীতির ভিত্তি কাঁপে নি—সেথানে অবস্থাস্তরের তাওবনৃত্যে পুরাতন অন্স্পাসনপাশ ছিল্ল হয় নি। সেই অবস্থার ভাষায় অন্ত অবস্থাকে বিচার করা চলে না।

যুরোপে আর্থিক নীতি অনেক দিন থেকেই বিশেষ গছার চলছিল। সেধানে ধনস্থি ও ধনভোগে ব্যক্তিগত প্রতিবোগিতাই ছিল প্রবল। তার প্রথম আঘাত লেগেছে গার্হয়ে। গৃহ্যাত্রার স্বভাবতই স্ত্রীপুরুষের অধিকারভাগ আছে। পুরুষের কর্ত্তব্য ধন আহরণ, মেরের কর্ত্তব্য দংসারের

প্রয়োজনে তার বায়ের বাবস্থা। মেয়েকে আর্থিক দিকে পুরুষের অধীন থাকতেই হয়। সেই অধীনভার পুরুষের ইচ্ছা ও আদর্শের সঙ্গে নিজেকে নম্রভাবে না মেলাতে পারলে (म वीरिक्ट ना। किছूकान (शक्क सूद्रारिश क्वीवनशाजांत्र আদর্শ বছব্যরদাধ্য হওয়াতে পুরুষেরা অনেকেই স্ত্রীর দায়িত্ব সীকার করতে কৃষ্ঠিত। সেধানে ঘর ভেঙে বাসার বিস্তার বেড়ে চলেছে। মেয়েরা তাদের চিরকালের আশ্রয়চ্যুত হয়ে স্বয়ং জীবিকা-উপাৰ্জ্জনে বাধ্য **হয়েছে। আর্থিক স্বাত**ন্ত্র্য **যে** লাভ করে সে স্বভাবতই ভীক্ষভাবে পরের ম**ন জোগায় না।** পাশ্চাত্য মহাদেশে এই অর্থোপার্জ্জনরীতির বিপর্য্যয় ঘটাতেই ক্রমশই স্ত্রীধন্মনীতির পরিবর্তন স্বতই ঘটে আসছে। এর প্রভাব পুরুষের উপর পড়তেও বাধ্য। তারা **অনে**কেই গার্হস্থোর দায়িত্বকন থেকে মুক্ত, অপর পক্ষে বহুসংখ্যক মেয়েও তাই। এরা উভয়েই স্বাত্যা রক্ষা করতে চায়; অতএব এদের বিবাহ ঠিক কোন নীতির উপর প্রতিষ্ঠিত হ'তে পারে এই নিয়ে সে দেশে আন্দোলনের সীমা নেই।

এর সংক্র বোগ দিয়েছে বিজ্ঞান—বিশেষত মনোবিজ্ঞান।
স্ত্রীপুরুষের প্রস্কৃতি পর্যালোচনায় সমস্ত আব্রু সে ধসিয়ে
দিয়েছে। উপন্তাস নাটক রক্ষভূমি সব ভারগাতেই মানবপ্রাকৃতি আক্ষ অনাবৃত। মানব-ইতিহাসের আদিযুগে দেহ
ছিল নগ্ন। আজু মানুষের মনের রইল না বস্ত্র।

এমন সময় য়ুরোপে এল সর্বনেশে এক যুদ্ধ। অভিকাষ
মৃত্যু এসে মানুষের মনকে দিয়েছে নিল'জ নির্দ্ধম ক'রে।
সেই কয় বৎসর বহুসংখ্যক মানুষ এমন এক জনিভ্যভার
মধ্যে দিনযাপন করেছে যেখানে সে আজ আছে কাল নেই।
মৃত্যু ব্যাপারটা যদিও চিরসভা তব্ মানুষ যখন সংসার্যাত্রা
করে তথন মৃত্যু যেন নেই এইভাবেই সংসার্যাত্রা নির্বাহ
করে। মৃত্যুকে কাছে দেখা সন্তেও মৃত্যুকে যদি ভূলে না
পাকতে পারে তবে কোনো বিশ্বাস কোনো ব্যবস্থার উপরেই
সে বাসা বাধতে পারে না। কিন্তু মুরোপে এত বৎসর ধরে

এত বিরাটক্রপেই মৃত্যুকে সামনে রাখতে হয়েছে যে সংসারের সমস্ত স্থিতিপ্রবণ নীতির পরেই তার আহা গেছে শিথিল হয়ে। এই সমস্ত কারণ জড়িয়ে মানুষ আজ আপন স্থাবাবস্থা ও সমাজব্যবস্থা একেবারে মূলের থেকে পরথ ক'রে দেখতে প্রস্তা যথন মানুষের ছিল সম্পন্ন অবস্থা, তার ভোগের অধিকার ছিল ব্যাপক, তথন পুরাতন নিয়মকে নাড়া দিতে তার ভয় ছিল, পাছে কোনো জায়গায় তার আরামে তার ঐর্যো ভাঙন লাগে—আজ সেই ভয়ের দশা গেছে—যার যার পুরোনো আশ্রারের জীর্ণ ভিত্তি থেকে স্বাই বেরিয়ে পড়ছে। নতুন ক'রে পরীক্ষা করবার ভয় আর রইল না কারো।

যুরোপে যে ভোলাপাড়া চল্চে সে স্বভাবের নিয়মে, বহু লোককে নিয়ে—কেবল বহুপড়া কয়েক জন চ্যমাপরা লেথক-পাঠকের সৌধীন বিচার নিয়ে নয়। ভীষণ তাদের আগ্রহ, রুশিয়ার দিকে তাকালেই তা দেখা যায়। এই আগ্রহ সম্ভবপর হ'ত না যদি ন্তন অবস্থায় মানুষের কাছে একাস্কভাবে ধরা না পড়ে থাকে যে, যে-সব বাধন একদা ছিল স্থিতির অনুকৃদে, আফু তাতে স্থিতির সহায়তা আর করছে না কেবল তা বন্ধনরূপেই আছে। বলা বাহল্য, সেথানেও সনাতনী আছে মানবস্বভাবে। সেও রীতিমাত্তকেই পবিত্র প্রত্যাদেশ ব'লে মানে। তাদেরকেও সমাত্তে প্রয়োজন আছে। পরথ করবার দিনে তাদের বিরুদ্ধতাও সত্যের পরিচয়ে সহায়তা করে।

আদ্ধ যুগান্তরের দিনে আমরা বইপড়া পণ্ডিতরা অপেক্ষাক্কত দুরে আছি। জিনিষটাকে কেউ বা দেখছি বন্ধমুক্ত প্রাবৃত্তির দিক থেকে, কেউবা অশ্বদৃষ্টি সনাতনের মোহের থেকে। আমার মন বল্ছে, নিশ্চিত জানি নে মানুষ কী ক'রে আপন অপরিহার্য্য সমস্থার সমাধান করে—পাশ্চাত্যে সমুল সমাধানের যে প্রচণ্ড উল্পম চলেছে সেটা শান্ত্রিক নয়, সাহিত্যিক নয়, সেটা সামাজিক জীবনমৃত্যুর একান্ত প্রয়োজনঘটিত। যদি পরক্তন্ম থাকে, তবে পৌত্র হুয়ে জনিয়ে তথন ফলাফল দেথে বিচার করব। ইতি ২১ এপ্রেল ১৯৩৩।

আপনাদের রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

[প্রবাসী সম্পাদককে লিপিত চিঠি]

মৃত্যু নাহি মম

শ্রীমলিনা হালদার

কবি কহে, মৃত্যু তার আপনার জন,
হরাশার কুয়াশার নিরাশ-স্বপন
নামে যবে তন্দ্রাহত স্লান আঁথিপাতে
আলো-আঁথারের মাঝে; কঠোর আঘাতে
সচকিত হদে দেখে নাহি হর্য্য তার,
চন্দ্র সেও কালো মেঘে চাকে যার-বার।
আসে যবে ধ্রণীর বিবাহ-শগন,

কবি ক.হ, মৃত্যু তার খ্রাম-দম ধন।
মিথ্যা কথা, কেবা কহে নাহি কিছু বড়
মৃত্যু চেয়ে? ভত্ম-স্ত পু হর্ষে করি জড়োসর্বাক্ষে মাথিয়া মোর মহাদেব সম
জানাবো লগতজনে মৃত্যু নাহি মম।
প্রেমিক মরে না কভু, প্রেম সে অমর,
প্রেম বেথা নাহি সেথা মৃত্যু বাধে ঘর।

কুটীর-শিপ্প ও বঙ্গীয় শিপ্প-বিভাগ

শ্রীকঙ্গণাদাস গুহ, এম-এস্সি (লিভারপুল)

বাংলার নিজম্ব শিল্প বাঙালীর জীবন এবং সভ্যতার সঙ্গে সঙ্গে বাংলার কুটীরেই বেড়ে উঠেছে। বাংলার অর্থ নৈতিক এবং সামাঞ্চিক জীবনের ক্রমবিকাশের সঙ্গে সঙ্গতি রেখে বাংলার শিল্পপ্রচেষ্টা একটা বিশিষ্ট আকার নিয়েছিল। তথন বাংলার প্রত্যেকটি গ্রাম ছিল স্বাবলম্বী। চাধীরা চাষ ক'রত, কুটীরে কুটীরে তথন চরকা চলত, গ্রামের তল্পবায় সেই স্থতো নিয়ে কাপড় বুনে দিত। গ্রামের চর্মকার পাত্রকা তৈরি ক'রত, গ্রামের কুন্তকার প্রয়োজনীয় হাড়িকুড়ি ক'রে দিত। অনেক রকমের কর্মকার থাকত গ্রামে, কেউ ক'রে দিত চাষ্বাদের জন্ত লাজলের ফাল কোদালী দা কান্তে ইত্যাদি, কেউ করত তামা-কাঁদার ব'সনপত্র, কেউ বা গড়ত মেয়েদের অলকার-অলকারের প্রতি মেয়েদের হর্মণতাটা একেবারে প্রাগৈতিহাসিক কালের। গ্রামে গ্রামে স্ত্রধর ছিল, তারা ধর তৈরি করত, ক্ষকদের লাজল ইত্যাদি যন্ত্রপাতি ক'রে দিত। কাঠের পাতুকা, আসবাবপত্র, নৌকা ইত্যাদিও তৈরি করত। কলুরা ঘানিতে তেল ক'রত, জেলেরা মাছ ধ'রত, গোয়ালারা থি দই ইত্যাদি ক'রত, পটুয়ারা ছবি আঁকত, বাদ্যকররা উৎসবের সময় ঢাক ঢোল সানাই ইত্যাদি বাজাত—তথন বাংলার পল্লীতে ম্যালেরিয়া চোকে নাই। তথন বাংলার ঘরে ঘরে গোলভিরা ধান, গোয়ালভরা গরু, পুকুর-ভরা মাছ এবং বাঙালীর বুকভরা প্রাণ ছিল। তথন বাংলার কবি ছিলেন চণ্ডীদাস, বিশ্বাপতি, জয়দেব।

বাংলার সেদিন অনেক কাল চ'লে গেছে। বিভিন্ন ভাব এবং সভ্যতার সংবাতে বাঙালীর জীবনপ্রণালীর সেই সহত্ব ভলীটি আজ আর দেখতে পাওরা যার না। প্রাচীন সামাজিক গঠন আজ অনেক দিন হ'ল ভেঙে বাচ্ছে, সেই সঙ্গে আমাদের কুটীর-শিল্পগুলিও। বাঙালী-জীবনের এই নতুন অভাববোধকে পূরণ করতে আমাদের সেই পূরনো কুটীর-শিল্প আজ অকম। অভাবপূরণ- হিদাবে বাংশার গ্রামের স্বাবশন্ধন এখন ঐতিহাসিক তথ্যের মধ্যে পরিগণিত হয়েছে।

বাঙালীর জীবন-তরী চলেছিল ভাটিরাল সুরে।
চলতে চলতে হঠাৎ ধালা থেল সে পাল্টাত্য সভ্যতার
বাষ্ণীয়পোতের সঙ্গে। সব ওলট-পালট হয়ে গেল।
পাল্টাত্য সভ্যতা হ'ল বাষ্ণীয় বা বৈত্যুতিক সভ্যতা—গতির
সভ্যতা। ইচ্ছায় হোক আর অনিচ্ছায় হোক সেই সভ্যতার
গতির ব্রিপাকের মধ্যে আমরা এ:স পড়েছি। আরু নিরালা
পল্লীর শ্রামলিমার মধ্যে বাংলার ভালগাছ-বেরা পুকুরপাড়ে
শীতলপাটিকে আশ্রয় ক'রে প্রাতনের সাধনা অসাধ্য হয়ে
উঠেছে। জীবনসংগ্রাম চার দিক থেকে ঘনীভূত হয়ে
উঠছে, একটু বস্বার অবকাশ নাই, কেবল গতি আর
গতি। বিজ্ঞান পৃথিবীর সমস্ত বিভিন্নতাকে একছের দিকে
নিয়ে আসছে, কোনও জ্বাতিই আক্র এর হাত থেকে
নিজেকে একান্ত বিচ্ছিন্ন ক'রে রাখতে পারবে না,—এটা
ব্গধর্মণ আমাদেরও চলতে হবে। নইলে যারা আক্র

পাশ্চাত্য সভ্যতার একটি মুশস্ত্র হ'ল অর্থনীতি।
ইহাকে প্রধানত: বণিক-সভ্যতাও বলা চলে। ইহার সঙ্গে
প্রথম সাক্ষাৎও আমাদের বাণিজ্যের মধ্য দিয়ে হয়েছিল।
পাশ্চাত্য দেশসমূহ শিল্প ও বাণিজ্যে যে বিশেষ পদ্ধা
অবলম্বন করেছে সেটা হ'ল ব্যাপক ভাবে উৎপাদন
(mass production) ও কেন্দ্রীকরণ (centralization)। এই পদ্ধা অবলম্বন ক'রে পাশ্চাত্য দেশসমূহ বিপুল
অর্থের অধিকারী হয়েছে বটে, কিন্তু সেই সঙ্গে অনর্থও বে
না এসেছে তা নয়, সমস্ত পৃথিবী আজ ধনিক ও শ্রমিক
ভার্থের টানা-হেচড়ার বীভৎসভার পূর্ণ হয়ে উঠেছে।

সে যাই হোক, পাশ্চাত্য পদ্ধার সংক্ষ প্রতিষোগিতার বাংলার অসংবন্ধ কুটীর-শিল্প বিশেষভাবে বিধবন্ত হয়েছে। কতকগুলি বিশেষ শিল্প—বেমন ঢাকার মসলিন, বিলুপ্ত হরে

গেছে। আর যে-সব শিল্প এখনও আছে তাদের অধিকাংশেরই অবস্থা অতীব শোচনীয়। শীঘ্রই উন্ধত প্রণালী ও শুদ্ধের সাহায্য না-পেলে পঞ্চলাভ ছাড়া বাজারে তাদের আর কোনও লাভের সম্ভাবনা দেখা যায় না।

গত অর্দ্ধ শতাকী যাবৎ বাংলা দেশে পাশ্চাত্যের অন্ত্রন্থনে বিদেশী ও দেশী মূলধনে অনেক বড় বড় কল-কারথানাই হরেছে। কিন্তু এতে বাংলার সর্বসাধারণের সমৃদ্ধির দিক থেকে বিশেষ কল্যাণ হরেছে ব'লে মনে হয় না। বেকারের সংখ্যা ক্রমশঃ বেড়েই চলেছে। এখন প্রশ্ন হ'ল কুটীর-শিল্পকে বৈজ্ঞানিক ভিত্তির উপর স্থাপন ক'রে ভার পুনরুদ্ধারের চেটা করা, না অর্দ্ধমূত কুটীর-শিল্পতিকি যথারীতি সৎকার ক'রে ভার স্থানে বড় বড় কলকারথানা স্থাপন করা। এই সমস্তা মীমাংসার পুর্ব্বে বাংলা দেশের বর্ত্তমান অবস্থাটা একটু আলোচনা করা যাক।

১৯৩১ সনের সেন্সদ বা আদমপুমারীতে করদ-রাজ্য বাদে বাংলার লোকসংখ্যা ছিল ৫০,১১৪,০০০ (পাচ কোটী এক লক্ষ চৌদ্দ হাজার)। তার মধ্যে—

উপাৰ্জ্জক— ১৩,৭৫০,০০০ কন্মী পোধ্য (Working dependent) ৬৬৩,০০০ মোট কন্মী—১৪,৪১৩,০০০ (এক কোটী চুরাল্লিশ লক্ষ তের হান্ধার)

অর্থাৎ মোট লোকসংখ্যার মধ্যে শতকরা মাত্র ২৯ জন কাজ করে আর বাকী ৭১ জন পোয়। ১৯২১ সনের আদমস্রমারীতে দেখিতে পাই শতকরা ৩৫ জন কর্ম্মী ও বাকী ৬৫ জন পোয়। বাংলার বেকার-সমস্থা যে ক্রমশ: অতীব গুরুতর আকার ধারণ করছে বা পূর্বেই করেছে সে-বিষয়ে আর কোনও সন্দেহ নাই।

বর্ত্তমানে বাংলার কর্মক্ষম লোকসংখ্যা ২৩,০০০,০০০ (তুই কোটি অিশ লক্ষ), তার এক-তৃতীয়াংশেরও বেশী অর্থাৎ ৮,০৫০,০০০ (আশী লক্ষ পঞ্চাশ হাজার) লোক সম্পূর্ণ বেকার। বেকারের এই বিরাট বাহিনী দিনের পর দিন বেডেই চলেছে।

বাংলা দেশের শতকরা প্রায় ৭০ জন লোক কৃষিকীবী।

রুষির উপরেই বাংলার জীবন-মরণ নির্ভর করে। কিন্তু এই কৃষির অবস্থাও অতীব লোচনীয়। জন-প্রতি কৃষকের ভাগে জমীর পরিমাণ অতি কম। যে জমী এক জন লোক চাষ ক'রতে পারে সেখানে আজ পাঁচ জন লোক নিযুক্ত আছে। লাভও সেই পরিমাণে জন-প্রতি এক-পঞ্চমাংশ হরে গেছে। তা ছাড়া বাংলার কৃষকদের বৎসরে প্রায় নর মাস ব'সে থাকতে হয়। বর্ত্তমানে পৃথিবীব্যাপী আর্থিক হরবন্থার জন্ত কৃষিজাত উব্যের মূল্য অসম্ভব রকম কমে যাওয়ায় বাংলার আর্থিক জীবন প্রায় অচল হয়ে পড়েছে। কৃষকদের ক্রেম করবার ক্ষমতা প্রায় অক্ষমতার সীমায় এসে পৌছেছে এবং সেই সঙ্গে সংক্র শিক্ষজাত জব্যের চাহিলাও অসম্ভব রকম কমে গেছে। কৃষকদের আ্রেম করবার ক্ষমতা বৃদ্ধির উপরেই দেশের শিক্ষ ও অার্থিক উন্নতি নির্ভর করছে।

এই ত গেল ক্লাকদের অবস্থা। এ ছাড়া বর্ত্তমানে আর একটি জটিল সমস্থার উদ্ভব হয়েছে, সেটা হ'ল মধাবিত্ত শিক্ষিত শ্বকদের বেকার-সমস্থা। স্কুল-কলেজের শিক্ষাসমাপ্ত ক'রে বাঙালী যুবক আজ চারি দিক অন্ধকার দেপছে। চাকরির আশা হ্রাশা হয়ে উঠেছে। চার দিকে অসক্ষেয়ে বৃদ্ধি পাছে।

বাংশা দেশ ক্ষয়িসর্বাহ্য দেশ। কিন্তু কোন রাষ্ট্রই কেবল মাত্র ক্ষরির সাহাযো তার অর্থনৈতিক সামঞ্জ্য রক্ষা করতে পারে না। ক্ষমি ও শিল্প এই হুল্লের সামঞ্জ্যতার ওপরেই রাষ্ট্রের অর্থনৈতিক সামঞ্জ্যতা নির্ভর করে। এই অসামঞ্জ্যতার জ্যুই বাংলার আজ এই হুরবস্থার দিনে কুটীর-শিল্পের প্রয়োজনীয়তা এমন ভাবে অসুভূত হুচ্ছে।

সামান্ত্রিক প্রথা ও লোকের মানসিক গড়নের উপরই জাতীর শিল্পানুগ্রানের প্রকার ও ক্রতকার্যাতা নির্ভর করে। গত ৫০ বছরের অভিজ্ঞতার মনে হর বাঙালী বড় বড় কল-কারখানার চেয়ে কুটীর-শিল্পকেই বেশী ভালবালে। ১৯২১ সনের আদমস্মারীতে দেখতে পাওয়া যায়, বাংলার বড় বড় কলকারখানাতে প্রায় ১৭০,০০০ (এক লক্ষ সন্তর হাজার) দক্ষ কার্রিগর কাজ ক'রড, তার মধ্যে বাঙালী ছিল মাত্র ৭২,০০০ (একাত্তর হাজার) জন, অর্থাৎ শতকরা ৪২ জনেরও কম। অবশ্র এমন অনেক শিল্প আছে যা বড় বড়

কলকারধানাতেই কেবল করা সম্ভব, যেমন পোহ ও ইম্পাত শিল্প। তা ছাড়া আর প্রায় সব প্রয়োজনীয় জিনিষই অল্প-বিস্তব্য কুটীর-শিল্প হিসাবে করা চলে এবং শিল্পে শিক্ষা ও দক্ষতা অনুসারে নানা প্রকারের দ্রব্য তৈরি ক'রে ক্ল্যক তার বংসরের কর্মহীন নয় মাস এবং বেকার তার বংসরের কর্মহীন বার মাসকে উর্বর ক'রে তুলতে পারে।

আমি প্রথমেই বলেছি বাংলার সভাতা, সমাজ ও প্রতিভার সঙ্গে কু**টী**র-শি**ল্পের একটা নাড়ীর** যোগ আছে। পাশ্চাত্য সভ্যতায় বিশেষ বিধ্বস্ত হ'লেও বাংলা দেশ যৌথ-পরিবারের দেশ। যৌথ-পরিবার ভাল কি মন্দ সে বিচারের স্থান এ নয়। যৌথ-পরিবারে আর যাই থাক আলভা এবং দায়িত্বহীনতার প্রশ্রেয় যে সেধানে অনেকটা হয় তা অস্বীকার করবার উপায় নাই। পরিবারের একটি প্রাণী হয়ত রাত-দিন রুতদাসের মত থাটছে আর তার উপর কর্ম্মক্ম আগ্রীয়েরা ব'সে ব'লে খাচেছ —এ দুখ্য বাংলার ঘরে ঘরে। নানা প্রকার কুটীর-শিল্পকে সহজসাধ্য ক'রে তুলে বাংলার হয়ারে হয়ারে নিয়ে থেতে হবে—একান্নভূক্ত প্রত্যেক বাঙালীই যাতে নিজান্নভুক্তের মর্যাদা পেতে পারে; ব'দে থাকবার সব যুক্তিই যাতে অচল হয়। এদিক থেকে আৰু কুটীর-শিল্পের প্রয়োজন বাঙাশীর আর্থিক জীবনে সবচেয়ে বেণী। এই জ্বন্তই আজ বাংলা-সরকার বঙ্গীয় শিল্প-বিভাগের সাহাব্যে কুটীর-শিল্পের উল্লভিসাধনে এমন তৎপর হয়ে উঠেছেন।

দেশী ও বিদেশী কলকারথানার প্রাপ্তত দ্রব্যের সঙ্গে প্রতিবোগিতা ক'রেও আজ বে সব কুটীর-শিল্প—বিশেষ ক'রে বয়নশিল্প, বাংশার বেঁচে আছে তাতেই প্রমাণ হয় বাংশার পারিপার্শিকভার সঙ্গে এর একটা বিশেষ সঙ্গতি ।আছে । আছও বাংলা দেশে হাতের তাঁতের কাজে পাঁচ লক্ষেরও বেশী লোক নিযুক্ত আছে এবং সেই সম্পর্কে আরও বছ লোক প্রতিপালিত হচেছে।

আমরা বৈজ্ঞানিক যুগে বাস ক'রছি। প্রতি দিনের গবেবণা ও আবিদার মাহ্যের হাতে নতুন নতুন যন্ত্র নতুন নতুন কৌশলে তুলে দিছে। বাংলার কুটীর-শিল্পকেও আমাদের আধুনিক বৈঞ্জানিক ভিন্তির উপর প্রতিষ্ঠিত ক'রতে হবে এবং সেই প্রতিষ্ঠানের সাফলোর উপরেই কুটীর-

শিল্পের ভবিষ্যৎ নির্ভর করে। সেই উদ্দেশ্য সাধনের ক্ষন্তই আজ কয়েক বছর হ'ল বঙ্গীয় শিল্প-বিভাগ পাগলাডাঙাতে একটি গবেষণাগার স্থাপন করেছেন। শিল্প-বিভাগের এঞ্জিনিয়ার প্রীযুক্ত সতীশঃক্র মিত্র, রাসায়নিক শ্রীযুক্ত রসিক-লাল দত্ত ও চর্মা-পারদর্শী শ্রীযুক্ত বিরাজমোহন দাসের তস্বাবধানে বিশেষ গবেষণা চলছে এবং তাঁদের সাফল্য ইতিমধ্যেই নানা কু**টী**র-শিল্পকে বৈজ্ঞানিক ভি**ত্তি**র উপর[্] স্থাপন করেছে। এ ছাড়া বঙ্গীয় শি**ন্ন-বিভাগের অন্তর্গত** শ্রীযুক্ত ব্রজেক্সচক্র ভট্টাচার্য্য মহাশয়ের অধ্যক্ষতায় শ্রীরামপুরের বয়ন-বিদ্যালয় দেশের কারিগর ও শিক্ষিত যুবকদের উন্নত लागानी व वत्रन '७ दर-कदा मिक्ना पिरा वारमा प्राप्त वत्रन-শিল্পকে উল্লভ করার চেষ্টা ক'রছেন। বললে হয়ত অত্যক্তি হবে না যে, বাংশার বয়নশিল্প তার বর্ত্তমান সাফলোর জন্ত শ্রীরামপুরের শিক্ষার কাছেই সম্পূর্ণভাবে ঋণী।

বঙ্গীয় শিল্প-বিভাগের পক্ষ থেকে আমরা ক্**টী**র-শিল্পের প্রচার ও উন্নতির পথে বিশেষ কয়েকটি বাধা শক্ষ্য করেছি, যথা—

- (১) কু**টী**র-শি**রে** অভাস ও উৎসাহের অভাব।
- (২) শিল্পকার্যো উপযুক্ত শিক্ষা ও অভিজ্ঞতার অভাব।
- (৩) বড় বড় কলকারধানায় প্রস্তুত সন্তা জিনিষের সঙ্গে প্রতিযোগিতা।
- (৪) মহাজন ও বেপারীদের হাত থেকে রক্ষা পাওয়ার উপযুক্ত টাকা-পয়সার অভাব।
- (৫) **আধু**নিক উন্নত প্রণাশীর ছোট ছোট যত্রপাতির অপ্রচ**ন**ন
- (৬) উপযুক্ত বিজ্ঞাপন এবং শি**র**ঙ্গাত জিনিয় সম্বন্ধে প্রচারকার্য্যের অভাব বা অজ্ঞতা।
- (৭) বাজারের অবস্থা এবং চা**হিদা সম্বন্ধে অনভিজ্ঞতা** এবং শিক্ষজাত দ্রবের বিক্রীর স্থবন্দোবন্তের অভাব।

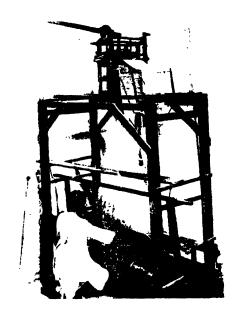
বঙ্গীয় শিল্প-বিভাগের ভারপ্রাপ্ত কর্মচারী বা ডিরেক্টর শ্রীযুক্ত এ. টি. ওয়েপ্টনের অধীনে শিল্প-বিভাগ উক্ত সমস্থা-গুলির সমাধানে বিশেষরূপে অগ্রসর হয়েছেন উন্নত প্রশালীর তাঁতের প্রচলন এবং বৈজ্ঞানিক প্রণালীতে রং-করা শিক্ষা দিয়ে শিল্প-বিভাগ বাংলার বয়নশিল্পকে অনেকটা আধুনিক বৈজ্ঞানিক ভিত্তির উপর স্থাপন করেছেন। আপনারা হয়ত অনেকেই জানেন না বে, পাৰদা জেলার সাহজাদপুর, এনারেৎপুর, নদীয়া জেলার শান্তিপুর, বাকুড়া জেলার বিষ্ণুপুর, ঢাকা জেলার কুমারভোগ, কাজিরপাগলা ইত্যাদি স্থানের বয়নশিল্পের আজকের এই অপ্রত্যাশিত সাফল্য শিল্প-বিভাগের একাস্ত চেষ্টারই ফল। শিল্প-বিভাগের ভাম্যমাণ (peripetitic) ব্যন-বিদ্যালয়গুলি ঐ সব স্থানে গিয়ে অনেক দিন ধ'রে কুটীর-কর্মীদের উরত প্রণালীর তাঁতে কাজ এবং বৈজ্ঞানিক ভাবে রং-করা শিক্ষা দিয়েছে। তাই কিছুদিন আগে বেখানে অতি সেকেলে ধরণের ক্ষেকটা হাতের তাঁত চল্ত আজ সেধানে শত শত উন্নত প্রণালীর তাঁতে (fly-shuttle এবং Jacquarda) নানা ধরণের কাগড় হয়ে বাছার বাছার ছেয়ে ফেল্ডে।

গত দেও বছরের মধ্যে শিল্প-সংক্রান্ত কাজে আমাকে অনেকবার পাবনা জেলায় গেতে হয়েছিল। পাবনার শিল্পকেন্দ্রগুলি—বিশেষ ক'রে বয়নশিল্পের কেন্দ্রগুলি, এবং তাদের কর্মপদ্ধতি আমি একাধিকবার পরিদর্শন করেছি। গ্রহের আবেষ্টনের মধ্যে নিজের পরিবারের লোক নিরে যম্বপরিবেষ্টিত কুটীর-শিল্পের কাজে এবং একঘেয়ে কারখানার কান্ধে কি পার্থকা। ইউরোপের **অনেক** বড় বড় কারথানা দেখবারও স্থোগ আমার হয়েছিল। জার্মেনীর কুপ, ম্যানচেষ্টারের কাপড়ের কলগুলি, রঙের কার্থানা, ফোডের শাখা-কার্থানা, পোর্ট সানলাইটের সাবানের কার্থানা, ইত্যাদি অনেক দেখেছি। সে-স্ব কারধানায় একাস্ক বিশেষজ্ঞতা প্রতিবোগিতার ক্ষেত্রে বিশেষ কার্য্যকরী হলেও কন্মীকে শিল্পের সমগ্রতার সৌন্দর্য্য ও আনন্দ দিতে পারে না। ফোর্ডের কারধানায় জিজ্ঞাসা ক'রে জানলাম গত দশ বছর হ'ল একটা লোক মোটর গাড়ীর স্থানবিশেষে কেবল জুই টিপে দিচ্ছে। ব্যাপারে দে হয়ত অতিপূর্ণতা লাভ করেছে, কিন্তু কর্ম্মের যে আনন্দ আছে, এ ধরণের কাজে তা পাওয়া বার ব'লে মনে হয় না। ফোর্ডের কারখানার মানুষকে একেবারে যন্ত্র ক'রে ভোলার সাফল্য দেখে মনটা এত দমে গিয়েছিল তা আর কি বলব। একঘেরে কাজের বৈচিত্র্যহীনতার কর্ত্তই মনে হয় কার্থানার কন্মীদের মন ও চরিত্রে স্বাস্থ্যের এত অভাব। পাবনা জেলার কৃটীর-কন্সীদের মধ্যে সেই স্বাস্থ্যের প্রাচূর্য্য দেখলাম।

कि हूमिन আগে থেকেই ছুইটি ভাষ্যমাণ বয়ন-বিদ্যালয় উক্ত স্বেলায় কাজ ক'বছিল। তাদের সাফল্য অভূতপূর্ব। বর্ত্তমানে সমস্ত জেলায় প্রায় বিশ হাজার তাঁত চলছে। কেউ ক্ষিকার্য্যের অবদরে তাঁত চালায়, কারও বা তাঁতের কাজই একমাত্র অবশয়ন। এই বিশ হাজার তাঁতের মধ্যে উন্নত ধরণের তাঁত (fly-shuttle এবং Jacquard) প্রায় পাঁচ হাজার এবং তার সবগুলিই শিল্প-বিভাগের চেষ্টায় প্রবর্ত্তিত হয়েছে। সাহজাদপুরে হোসেন আলী নামে একটি লোক কয়েক বছর আগে শিল্প-বিভাগের ভাষামাণ বয়ন-বিদ্যালয় থেকে উন্নত প্রণালীর কাজ শিথে প্রথমে মাত্র গুইথানি তাঁত নিয়ে কার্জ আরম্ভ করে। চার-পাঁচ বছরের মধ্যে সে প্রায় হুই শত তাঁতের মালিক হয়েছে। বাংশা দেশে এখনও এরপ বহু হোসেন আলীর স্থান আছে। এই আর্থিক ছর্দিনেও পল্লীতে পল্লীতে কারিগরদের মুখের হাসি ও মাথায় তেলের প্রাচুর্য্য তাদের বাবসায়ের সমৃদ্ধি জ্ঞাপন করছে। এখানে ম্যাঞ্চেষ্টার, বোষাই, আমেদাবাদ, কলকাতা, এমন কি জাপানও হার মেনেছে। কুটীর-কর্মীরা অনেকে এখনও মহাজ্ঞানর হাত থেকে রক্ষা পায় নাই বটে, কিন্তু বর্ত্তমানে বোম্বায়ের মিন-ওয়ালাদের মত ধর্মবটের ভয়ও তাদের নাই।

ভ্রাম্যমাণ বয়ন-বিদ্যালয় ছাড়া বাংলা-সরকার মধ্যবিত্ত
শিক্ষিত যুবকদের বেকার-সমস্তার বথাসাধ্য সমাধানের ক্ষন্ত
উন্নত প্রণালীর কুটীর-শিল্প প্রচলনের যে পদ্ধা অবলহন
করেছেন তাতেও আট রকমের ভ্রাম্যমাণ শিল্পবিদ্যালয় গত দেড় বছর হ'ল বাংলার বিভিন্ন কেন্দ্রে কাজ
করছে। ইতিমধ্যেই বহু শিক্ষিত মধ্যবিত্ত যুবক এই সব
বিদ্যালয়ে ছয় মাস থেকে এক বছর পর্যান্ত বিনা-বেতনে
বিশেষজ্ঞদের কাছ থেকে নানা শিল্প শিক্ষা ক'রে নিজেরা
ছোটবাট কারবানা করেছে এবং চারদিক থেকেই তাদের
কাজের সাক্ষল্যের কথা শোনা বাচ্ছে। এই সম্পর্কে
আপাততঃ যে আটিট শিল্প শিক্ষা দেওৱা হচ্ছে তাদের নাম লি

(১) সাবান প্রস্তুত করা—রাসায়নিক ডাঃ রসিক লাল দ্বুত্ব সহাশ্যের ভবাবধানে।



উন্ত প্ৰশালীর জ্যাকাও ভাত

- (২) এতা প্রস্তুত করা—চর্ম্ম-পারদ্ধী ত্রীপ্ত বিরাজ-নোহন দাস মহাশয়ের তত্তাবধানে।
 - (৩) নক্শাদার পশমী কাপড় বয়ন করা।
- (৪) পাট রং-করা এবং তা থেকে নানা প্রয়োজনীয় দব্য বয়ন করা—বয়ন-পরিদর্শক শ্রীগুক্ত প্রেক্তনাথ চক্রবর্তী মহাশয়ের তথাবধানে।
 - (e) ছাতা তৈরি করা।
- (৬) ছুরি কাঁচি ইত্যাদি ইম্পাতের জিনিয[়]তেরি করা।
 - (৭) পিতল-কাঁনার জিনিষ তৈরি করা।
- (৮) উন্নত চাকে মাটির দ্বিনিষ তৈরি ক'রে উন্নত পোয়ানে বা পাজায় পুড়িয়ে নেওয়া।

এই শেষোক্ত চারটি শিল্প এঞ্জিনিয়র প্রীযুক্ত সতীশচক্ত নিত্র মহাশরের তক্বাবধানে শিক্ষা দেওরা হচ্ছে। উক্ত



উন্নত প্রধালার ঠকঠকি আঁহ

আটিট কুটীর-শিল্পের মনো ছহাট বয়ন-শিল্প এবং ভূতা প্রস্তুত করা বাদে বাকী প'চটি শিল্প কলিকাতার কেনাল সাউপ রোডে শিল্প-বিভাগের গবেষণাগারেও শিক্ষা দেওয়া হয়। বিশেষ গবেষণা দ্বারা এই সব শিল্প বাংলা দেশে লাভজনক ব'লে বিবেচিত হয়েছে এবং এই আটিট শিল্পের প্রভাকটি শিক্ষা দেওয়ার জন্স চার ক্ষম ক'রে শিক্ষক-দল নিয়ে শামামান বিদ্যালয় গঠন করা হয়েছে। আধুনিক বৈজ্ঞানিক প্রণালীর উপর এই সব শিল্প শভিষ্ঠিত হয়েছে। এই প্রাক্তি শিল্প-বিভাগের এটিনিয়ার ভারতে সভাশচন্দ্র মিত্র মহাশয়ের নাম বিশেষ উল্লেখযোগ্য। তার উদ্যাবিত ছাতার বাটে নানাল্প চিত্র করার কল, মাটির জিনিয় তৈরি করার উল্লভ চাক এবং কামার পরিবর্জে সেই শুণেরই অথচ সন্তা একটি ন্তন মিশ্র-ধাতুর প্রবর্তন কুটীর-শিল্পে বিশেষ শান।

গিরিডির ঔপনিবেশিক বাঙালী এবং ব্যবসা-বাণিজ্য

শ্রীসরোজকুমার দে ও শ্রীশরদিন্দু চট্টোপাধ্যায়

ভোটনাগপুরের স্বাস্থ্যকর স্থানসমূহের মধ্যে গিরিডি* ইহা হাজারীবাগ জেলার একটি মহকুমা অগ্ৰতম । গিরিডিকে "কুরহর বাড়ী" নামেও অভিহিত *হর*তে দেখা নায়। পুর্বেল ইফা খড়কডিহা ভেলার অন্তৰ্গত ছিল; গডক ডিহা এখন নামে পৃথক কোন জেলার অভিত না থাকিলেও, ইহা পডকডিহা প্রগণার অস্তর্ভুক্ত বটে। ক**লিকাতা হই**তে গিরিডির দুর্ম এই শত চয় মাইল মাতা। স্থাধুরাখুরেখা (sea-level) হইতে ইহার উচ্চতা এক হাজার দুট। গিরিডির উত্তরে উট্রা নামক পারতা নদী, দক্ষিণে কুলডিহা, পুরে বারওয়াড়ী ও জরিয়াগাদী গ্রামন্বয় ও পশ্চিমে পচন্দা। গিরিডির মিউনিসিপাল সীমানা। 55 5 ব্রমান লোকসংখ্যা 25.2391 জরিপ-**ই**হার বঙ্মান বিভাগের ১৮৬৭ গাঁঠানের মানচিত্রে গিরিডির নামোল্লেখ দৃষ্ট হয় না। গিরিডির তৎকা**লীন টী**কাইং (দেশিয় ক্ষমিণার) ছিলেন পচম্বার দসিদ্ধনাথ সিংহ। কয়লা-খনির দিগন্তপ্রসারী প্রবিজীণ জমিগুলি তিনি গ্রভণ্মেণ্টকে মাত্র নয় পক্ষ ভত্তিশ থাকার টাকা মূলো বিক্রয় করেন। গভর্ণমেন্ট ঐ জমি ঈষ্ট ইণ্ডিয়ান রেল কোম্পানীকে বাংসরিক পঞ্চান হাজার টাকা খাজনায় ইজার। দেন। গীষ্টানে প্রথম কয়লাগনি গাবিষ্ত হয় ও সেই সঙ্গেই গিরিডিতে রেলপথ স্থাপনার স্থারপতি হয়। ঈষ্ট ইণ্ডিল্ল রেল কোম্পানীর আবশুক সমুদয় কয়লা অদ্যাবধি এই স্থান হইতেই সরবরাহ হইয়া থাকে।

তৎকালে গিরিডি গছন অরণো পরিবৃত ছিল। রেল

কোম্পানীর চাকরী লইয়া প্রথমে কয়েক ঘর বাঙালী-পরিবার মকতপুরা নামক স্থানে আসিয়া বদবাদ করেন। এখন খে-স্থানে মকতপুরার বাজার বদে, সেই স্থান হইতে বৰ্তমান "পুরাতন কৃতীর" ("Oldest Cottage") নামক বাটী অবধি বিপৃত ভূভাগেই বাঙালীরা প্রথম উপনিবেশ বত স্বাস্থ্যায়েলী অবদরপ্রাপ্ত বাঙালী ভদ্রলোক এই স্বাস্থাকর স্থানটির প্রতি আরুষ্ট হইয়া এগন এই স্থানে মনোরম উদ্যানবেষ্টিত স্কুদুগ্য বাটী নিম্মাণ করিয়া স্থানটিকে শ্রীসম্পন্ন করিয়াছেন, কিন্তু পূর্ব্বে সেই দক্ষণাগৃত স্থানে দিনমানেও লোকচলাচল নিরাপদ ছিল না। এ-বিষয়ে একটি কৌতুকাবহ সভাগটনামূলক জনশভি• মাছে। দে-সময় গিরিডিতে নারো রায় নামক এক হলতি দেশয় ঘাটোয়ার দ্যার ভয়ানক অভাচারে জনসাধারণ সুধত হইয়া তৎকালীন নবাগত বাঙালীদের সহিত এই দপ্তার এক রফা হয় যে প্রত্যেকে তাহাকে মাদিক কিছু কিছ অর্থদান করিলে সে বাঙালীদের উপর কোন হতাচার করিবে না। ৺ মতিলাল মুখোপাধায় মহাশয় তথন কয়লা-খনিতে নেটিভ ইনসপেক্টর-রূপে কার্যা করিতেন। একদিন কার্যান্তে গৃহপ্রভাবির্ত্তনকালে পথিমধ্যে মস্ত.ক গুরুতর আঘাতপ্রাপ্ত হুইয়া তিনি ধরাশায়ী হন: সগুই নীত হইবার পর ভাঁহার েতনা হইলে নারো রায় আসিয়া ভাহার নিকট ভাহার ভ্রম স্বীকার করিয়া অপরাধের 🤛 ক্ষমা প্রার্থনা করে। দুগু হ**ইলেও** তাহার কর্ত্তবাজ্ঞান ছিল, সে-বিষ য় সন্দেহ নাই। এই নারো রায় অমিতবিক্রমশালী ছিল। একবার নাকি সে গ্রেপ্তার হইয়া পুলিস-পাহারার রেলে করিয়া স্থানাস্তরে প্রেরিত হইতেছিল। লোহশুখলে আবদ্ধ থাকা সত্ত্বেও উশ্রীনদীর উপর গাড়ী পৌছিবামাত্র, সে সেই বদ্ধ অবস্থায় প্রাহরীদের প্রাহার করিয়া চলস্ত গাড়ী হইতে লক্ষপ্রদানে নদীমধ্যে পতিত হয় ' নিমেযমধ্যে প্রস্তরাঘাতে হস্তপদের শুখল মোচন করিঃ

^{&#}x27;কেং কেং এই স্থানটির নাম গিরিধি লেগেন। তাং! ভুল।
ইংরার নাম গিরিচি—গিরিডিই বা গিরিডিই ইইডে উৎপন্ন। ডিইি
শব্দ বঙ্গের আরও খনেক স্থানের নামে পাওয়া যায়। ডিইিল অর্থ,
''গ্রামসন্থি: কয়েকটি কুজ কুজ গ্রামে একটি মৌজা হয়, কয়েকটি
মৌজায় একটি ডিই হয়।"—জ্ঞানেজমোহন দাস প্রণীত 'বাক্লালা ভাষার
অভিধনে'।

লোয়ন করে। পরে অবশ্য এক 'বাটোয়ার' জমিদার ভাহাকে গ্রেপ্তার করিয়া গভর্ণমেণ্টের হস্তে অর্পণ করেন ও সেই সময় হইতে দম্বার অত্যাচারও দূর হয়। বর্ত্তমান কাডারিবাটীর অনভিদ্রে এই দ্যার গৃহ ছিল।

মাহা হউক, কয়লাখনি ও রেলপথ বিস্থৃতির সহিত ক্রমশঃ এই স্থানে একটি জনপদ গড়িয়া উঠে। বাঙালীদের মধ্যে সর্ব্যর্থম এইস্থানে আগমন করেন পরাথালচন্দ্র কুণ্ড মহাশয়। তথন তিনি রেলওলে কণ্ট্রাক্টার ছিলেন। তাঁহার আদিনিবাস থলেন ষ্টেশনের নিক্টবর্ত্তী ইটেচোন: পরে তিনি গিরিডিতে বাডিগর করিয়া স্থাগী ব্যবাস করেন। স্থানীয় উচ্চ-ইংবেজী বালক-বিদ্যালয় প্রতিষ্ঠায় তাহার উদ্যোগ ছিল। তাহার পুঞ ৎগোষ্ঠবিহারী ক'ও মহাশ্য বহু বংসর বাবং গিরিডির অবৈত্রনিক ম্যাজিষ্টেট ছিলেন। বারগণ্ডার নিকট উত্তী নদীর অপর তীর হইতে থানচুলি পাহাড়ের পাদদেশ পর্যান্ত বিস্তৃত সিসিয়া নামক থবিস্তীর্ণ জমিদারী গোওঁবাবু ক্রেয় করেন। সাধারণের থবিবার জন্য উদ্মীর উপর তারের একটি দোলায়মান সেতু তিনি নিমাণ করাইয়া দেন ও স্থানীয় হাসপাতাল-বাটী নিখাণকল্পে **অর্থ**দাহান্য করেন। এখন তাহার পুত্র <u>ই</u>নিযুত ফিতীন্দনাথ কণ্ড মহাশয় জমিদারী পর্যানেক্ষণ করিল থাকেন। গিরিডিতে বাঙালী গৃহস্থবা**টী**র মধ্যে একমাত্র ইং**দের বাটীতে**ই তর্গোৎসৰ হইয়া থাকে ।

বর্ত্তমান গিরিডির ক্রমোন্নতির ইতিহাস লিখিতে হইলে বাহাদের কথা স্বতঃই মনোমধ্যে উদিত হয়, সেই লোকহিত- ।
বহী উদ্যামশাল বাক্তিদিগের বিধয়ে কিছু লিখিতেছি।

৺তিনকড় বহু মহাশয় ১৮৭২ গ্রীষ্টাব্দে গিরিডি:ত
ধাসিয়া পচদায় বাস করিতে থাকেন। তাহার আদিনিবাস
গেলী দশ্বরা গ্রামে। সাধারণ-ব্রাহ্মসমাজ-মন্দির প্রতিষ্ঠায়
ঠাহার মথেষ্ট উদ্যোগ ছিল। ধন্মবিষয়ে তাঁহার উদারতা
উল অনন্তসাধারণ। ব্রাহ্মসমাজ-প্রতিষ্ঠা প্রথমে তাঁহারই
১১৯ ছিত গৃতে হয়, য়দিও তিনি নিজে হিন্দুসমাজভুক্ত
ভিলেন। প্রতিষ্ঠার সময় হইতে প্রায় পরবিশে বৎসর
য়বৎ সাধারণ-ব্রাহ্মসমাজের সম্পাদকরূপে তিনি কার্য্য
ফরিয়াছিলেন। তাঁহার অক্লান্ত চেষ্টায় সাধারণ-ব্রাহ্মসমাজয়নিবরের পাকা বাটী স্থাপিত হয়। রাট্রের দাতব্য

চিকিৎসালয়ের (Rattray Charitable Hospital)
প্রতিগতাদের মধ্যেও তিনি অন্ততম ব্যক্তি ছিলেন।
স্থানীয় উচ্চ-ইংরেজী বালক-বিদ্যালয় প্রতিগ্রায়ও তাঁহার
সাহাথ্য নিতান্ত সামান্ত ছিল না। তিনি এই জেলার অন্তর্গত
শ্রীরামপুর রাজ-এইটের ম্যানেজার ছিলেন। ধানওয়াররাজ-এইটের ম্যানেজার রূপেও তিনি কিছুদিন কার্য্য



উশ্ব নুদার উপর দোলায়দান তারের পুল

করিয়াছিলেন। তাহার মৃত্যুর পর নাজসমাজভুক্ত বাক্তিবর্গের চেষ্টায় সাধারণ-ব্রাক্ষসমাজ-মন্দিরের পার্গে তাহার স্মৃতিরক্ষার্থ উক্ত সমাজের প্রচারকগণের বাসের জ্বন্ত তিনকজি বস্থ প্রচারক আশ্রম" নামে একটি একতলা পাকা বাটী প্রায় পাঁচ ছয়-বংসর হইল নির্মিত হইয়াছে। তিনি এই স্থানে জমি ক্রম্ন ও নিজন্ম বাজি-ঘর করিয়া গিয়াছেন। তাহার পুত্র শ্রীযুক্ত আশুতোয় বস্থ মহাশম্বও পিতার ন্তায় ধানওম্বার রাজ-এইটের ম্যানেজার ছিলেন; এগন অবসর লইয়া গিরিভিতে বাস করিতেছেন।

৺ধরণীধর বন্দ্যোপাধার মহাশম বন্ধমান জেলার অন্তর্গত
শ্রীরামপুর গ্রাম হইতে এই স্থানে উচ্চ-ইংরেজী বালকবিদ্যালয়ের প্রথম প্রধান শিক্ষক রূপে আগমন করেন ও
পরে ঐ কার্য্য ত্যাগ করিয়া এই স্থানেই ওকালতি করিতে
থাকেন। র্যাট্রে দাতব্য চিকিৎসালয় ও সাধারণ-ব্রাহ্মসমাজ-মন্দির নিম্মাণকল্পে তিনি অগসাহায্য করেন। স্বয়ং
হিন্দুসমাজভুক্ত হইলেও সকল ধ্যেই তাঁহার সমান শ্রদ্ধা
ছিল। সকলেই তাঁহাকে বিশেব সন্ধান করিত। পচ্ছা

রোদের উপর বাটী নিশাণ করাইয়া তিনি গিরিদিতে গোলী ভাবে ব'স করেন। পরে ধরমপুর নামে একখানি মৌজাও জব্ম করেন। একাদিজমে প্রায় চল্লিশ বংসর এই স্থানে বাস করিবার পর পঁচাত্তর বংসর ব্য়সে তাঁহার মূছা হয়। তাঁহার পত্র ক্রিয়ক্ত বৈদ্যাপ বন্দ্যোপাধ্যায় মহাশয় এই স্থানের অন্ততম ঘ্যাদভোকেট ও স্থানীয় ছেটিনাগপুর ব্যাদের অন্ততম দিরেক্তর।

ভীগ্রত রামলাল বন্দোপোশায় মহাশর প্রায় । চল্লিশ বৎসর যাবৎ এইস্থানে বাস করিতেছেন। কলিকাতা আহিরী-



উল জলপ্রপাত

টোলায় ইহার আদিনিবাস। কিছুদিন পুল পর্যাও ইনি অপের বাবদায়ে লিপ্ত ছিলেন, কিন্তু কোন বিশ্বস্ত ব্যক্তি কর্ত্বক প্রবিশ্বস্ত হওয়ায় ও বাবদায়ে ইহার দক্ষিণহস্তস্করপ একমাত্র উপযুক্ত পুত্র অকালে মৃত্যুমুথে পতিত হওয়ায় ইহার বাবদায়ে লোকদান হয় ও পরে ইনি অলের কার্যা ছাজ্যা দেন। ইনি বহুকাল দাধারণ-ব্রাহ্মদান্দের দম্পাদক ছিলেন। বাহ্মদান্দ্রক বাক্তিদিগের মধ্যে গিরিভিতে তানিই দক্ষপ্রথম উপনিবেশ স্থাপন করেন। স্থানীয় বঙ্গশিভবিদ্যালয় ও উচ্চ-ইংরেজী বালিকা-বিদ্যালয়ের সংস্থাপকদিগের মধ্যে ইনি অন্তত্তম। অতি অমায়িক ও বিনয়ী পুরুষ; ইহার বয়স এখন, তিয়ান্তর বৎসর।

ত্রীযুক্ত শক্তিকণ্ঠ ভট্টাচার্য্য মহাশয় ১৮৯০ প্রীষ্টান্দে এই স্থানে প্রবাদী হন। ইনি এক জন শক্তপ্রতি প্রধান উকীল। পচসা-রে:ডের উপর শক্তিকণ্ঠ বাবুর বৃহৎ অট্টালিকা ব্যবসায়ে ইহার সাফল্যের সাফ্য দেয়। স্বীয় গুল ইনি প্রভৃত সন্ধান ও প্রতিপত্তি অর্জ্জন করিয়াছেন। লোকহিতকর প্রায় সকল প্রতিষ্ঠানের সহিতই ইহার যোগ আছে। বর্ত্তমান সাধারণ-রাক্ষসমাজ-মন্দির স্থাপনার সময়ে ইনি সাহায্যকারীদিগের মধ্যে অন্ততম ব্যক্তি ছিলেন। উচ্চ-ইংরেজী বালক-বিল্যালয়ের বাটী-নির্মাণকল্পেও ইনি মথেষ্ট অর্থসাহায়্য করেন। উকীল-লাইকেরী-প্রতিষ্ঠায় ইহার বিশেষ উপ্রোগ ছিল। ইনি গিরিডি মিউনিসি-প্যালিটীর প্রথম ভাইস্-চেয়ারম্যান হইয়াছিলেন।

দরাজক্ষণ সাহানা মহাশর বাঙালী অলব্যবসায়ীদের
মধ্যে সর্প্রপ্রথম এই স্থানে আগমন করেন। ইহাদের অল্রের
থনি কোডাম্মার অবস্থিত। ইহার ল্রাভূম্পুত্র সভ্যকিন্ধর
সাহানা নহাশর বঙ্গীর-বাবস্থাপক-সভার সভা। দরাজক্ষণ
বাবুর এই স্থানে অনেকগুলি বাড়িঘর আছে। ইহাদের
বসভবাটী হাজারিবাগ রোডের উপর অবস্থিত। রাট্রে
দাতবা চিকিৎসাল্য প্রতিষ্ঠায় ইনি সাহান্য করেন। পুরাতন
প্রবাসী বাঙালীদের মধ্যে ইনি অন্তত্ম।

্রাথালচক্র তা মহাশয় প্রথমে রেলওয়ে কন্টাক্টররূপে এই স্থানে আসেন; পরে করলার ব্যবসায় করিয়া যথেই অর্থ উপার্জন করেন। গিরিভিতে ইনি বাড়িঘর করিয়া গিয়াছেন। 'লভাবৈহার' নামে একটি মৌজাও ইনি ক্রয় করেন। ইহার পুত্রের একটি মুদির দোকান আছে।

তগদানরচন্দ্র রায় মহাশয় বাকুড়া হইতে আসিয়াছিলেন ।
কথিত আছে টাহার কাকা তপ্রসর বাবু প্রথমে গরুর গাড়ী
করিয়া বাকুড়া হইতে এই স্থানে আসেন। তগদাধর বাবুব
কয়লার ব্যবসায় ছিল। গিরিডিতে তথন রেল-চলাচল হয়
নাই। তিনি এই স্থান হইতে কুলি-মারফৎ ঈষ্ট-ইণ্ডিয়ান
রেলের মেন-লাইনস্থিত লগ্নীসরাই ষ্টেশনে কয়লা চালান
দিতেন। তৎকালে শ্রমিকদের পারিশ্রমিক এত কম চিল
রে, মাল-চালানের এইরূপ অস্বিধা সংস্তে তিনি এই
বাবসারে প্রচুর অর্থ লাভ করেন। মকতপুরায় তিনি বাড়ি
করিয়াছিলেন।

স্থানীয় স্থানি তিত মোক্তার শ্রীবৃক্ত শ্রীপতি সামস্ত মহাশয় ক্রেক্স বাবুর সমসাময়িক বাক্তি। গত বংসর ইনি স্থানীয় মটনিসিগালিটীর নির্ক: চিত ভাইস-চেয়ারমান ছিলেন। গহার ছিতল বস্তবাটী পচ্যা-রোডের উপর অবস্থিত; এত দ্বির ইনি গিরিডিকে বহু ঘরবাড়ি করিয়াছেন। ইহার ব্র শ্রীমৃক্ত প্রাণক্ষক সামস্ত মহাশয় উপস্থিতি ছইবার গ্রানীয় লোক্যাল বোডের চেয়ারম্যান নির্কাচিত হইয়াছেন।

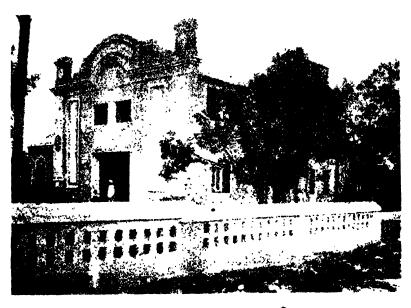
ভাজার নজেখন মুখোপ্রায়ায়, এম্-বি, মহাশার ১৯০১
সালে স্থানীয় হাসপাতালের
আসিষ্ট্যান্ট সার্জ্জন রূপে আগমন
করেন। এই স্থানে তিনি
কোদিজেমে প্রায় আট বৎসর
আসিষ্ট্যান্ট সার্জ্জন ভিলেন।
গরে কার্য্য হইতে অবসর গ্রহণ
করিয়া এই স্থানে নিজন্ম বাটী
করিয়া স্থায়ী বাসিন্দা হইয়া
খান। ইহার পুত্র শ্রীযুক্ত
শ্বিহারী মুখোপাধ্যায় মহাশ্য
ই স্থানের হোমিওপ্যাথিক

্রাথ**লে**দাস চট্টোপাধায় ও ংখার হুই ভ্রাতা জীযুক্ত শরৎ

চটোপাধার ও জীযুক্ত লক্ষ্মীনারায়ন চটোপাধার এই খানের পুরাতন বাঙালী অধিবাসীদিগের মধ্যে অন্ততম। চকের উপর পূর্ব্বে শরং বাবুর একথানি কাপড়ের দোকান কিল। লক্ষ্মীবাবু স্থানীর কোন অনু-বাবসায়ীর আপিসে গোঁ করিতেন; পরে তিনি এই কার্গ্য ছাড়িয়া দেন। প্রিয়া নামক স্থানে ইহাদের অন্তর্ব থনি আছে। কিল্ও হল্" (Health Hall) নামক যে স্পরিচিত প্রতিষ্ঠিত হয়, হারাই তাহার স্বত্যাধিকারী! পরে উষ্ধালয়টি পচ্ছা-প্রাহের উপর অব্যন্থিত ইহাদের নিদ্ধ বার্টীতে স্থানাস্তরিত হয়। এস্থানে ইহাদের একাধিক বাড়িঘ্র আছে। ইহারা

ক্রীন্তু প্রতাপচন্দ্র শুপ্ত মহাশয় রেলওয়ের ডাক্তার ছিলেন ; পরে নিজ বাটী করিয়া গিরিডিতে স্থায়ী ভাবে বাস করেন। ইনি পুরাতন ওপনিবেশিক রাঙালী-বাসিন্দানের মধ্যে বয়োজ্যেওঁ।

পূর্নাক্ত খনতিলাল মুখোপাধার মহাশয় করলা-খনির দেশায় ইন্সপেষ্টার রূপে গিরিডিতে আগমন করেন। ইহার আদি নিবাস বদ্ধমান কেলাস্থ রায়না আমে। ইনি নিজে



গিরিডি ইলেকট্রিক সাপ্লাই করপোরশন লিমিটেড

এই স্থানে বাজ্যর না-করিলেও, ইহার পুত্র নীযুক্ত তিনকজ্
মুখোপাধায় মহাশ্র সম্পতি প্রদারোজের উপর নিজস্ব
বাটী করিয়াভেন। তিনকজি বাব্ ওকালতি করেন।
তিনি কিছুদিন দ'তিয়া-তিটের চীফ্ জ্ডিশিয়াল অফিসার
ছিলেন। বভনানে ইনি স্থানীয় মিউনিসিপ্যালিটীর এক জন
কমিশনার। উচ্চ-ইংরেজী বালক-বিদ্যালয়ের সম্পাদকরূপে
সাত বংসর খাবং রহিয়াছেন। গিরিডির প্রায় সকল
ক্ষনহিতাফ্ঠান ও উংস্বাদিতে ইহার উৎসাহ পরিদ্তী হয়।

গিরিডির তিন মাইল পুর্দের ভ্রুতিহা নামক স্থানের অধিবাসীদের মধ্যে অধিকাংশত বাঙালী। ইহারা 'মিশ্র' উপাধিধ'রী। ইহাদের আদি বাসস্থান ছিল চব্বিশ-প্রগণার অন্তর্গত হালিশহর গ্রামে। এখন ইহারা



ব্যবিষ্যা ওয়াটার ওয়ার্কদ, তোপচাচি। দূরে পরেশনাথ পালাড় দেখা যাইতেকে

প্রায় পয়জিশ-ছজিশ গর গৃহস্থ এইস্থানে বাস করিতেছেন।
অন্মান বঙ্গান্ধ ১০০৬ সালে এই জেলার মন্তর্গত
শ্রীনামপ্রের তদানীপ্তন রাজা, বামচন্দ্র মিশ নামক এক
বাঙালী বাজগকে হালিশহর হইতে গাহার প্রোহিত রূপে
গিবিছিতে আনয়ন করেন ও ভাহাকে ভাহার গীবিকানিব্যাহের উপায়সরূপ বিশুর স্মিদান করেন। স্কুপ্তিহার
বভ্নান প্রাসী বাঙালী বাজগের: সকলে ভাহারই
বংশাঙ্ত। ইহাবা এই স্থানে পৌবোহিতা করেন। প্রের
বিধর, ইহারা দীগকাল প্রবাসী হইয়াও বাঙালীও অজ্ব
বাগিয়াছেন। ইহাদের বংশের এক বাক্তি স্থানীয়
কাছারীতে ওকালতি করেন।

গিরিভিতে বারগণ্ডা নামক স্থানেই অধিকাংশ বাঙালীরা বাস করেন। এই বারগণ্ডা নামের উৎপত্তি কিরুপে হইল বলিতেছি। গিরিভি হইতে প্রায় কুড়ি মাইল দুরে হাজারিবাগ রোডের নিকট বারগণ্ডা নামক স্থানে পূর্ব্বেবাড এও কোং-এর একটি তামের থনি ছিল। গিরিভিস্থ বত্তমান বারগণ্ডা রোড দে-স্থানে উত্তী নদীর তীর অবধি আসিয়া শেষ হইয়াছে, ঐস্থানে কপারকীন্ড নামক একটি ছিতল অট্টালিকা আছে। তৎকালে উহাতেই উক্ত

কোম্পানীর কাৰ্য্যালয় আক্রিক তাম হইতে বিভূত তাম নিয়াশনের জন্ম যমপাতি স্থাপিত হয়। আসল গনিট বারগণ্ডা ন,মক স্থানে অব্ধিত বলিয়া এবং আপিস ও তান-নিষাশণ সংক্রান্ত কার্যোর ভত এস্থানের সহিত বারগণ্ডা নামক স্থানের যোগ থাকায় কাল্ডমে এই স্থানের নামও বারগভা কপারফী ৬ হইয়া ধায়। নামক বাটীট এখন 🗐 🔗 জিতেপ্রাথ (F মহাশয়ের অধিকারে আছে। পরে থনিক তাণ নিঃশেষিত হওয়ার জলই হউক অথবা ব্যবসায়ে কোম্পানীৰ

ফতি হওয়ার কারণে**ই** হউক উক্ত আকর *হহ*ে তান-উত্তোলনকার্যা কর হইয়া নায়। বারগণ্ডা নামক স্থানটি এখন বেঙ্গল ইকুইটেব ল কোল কোম্পানীব জমিদারীর অন্তর্ভুক্ত। ইহারা স্থানীয় **টা**কাইৎ-এর নিকট হইতে প্রথমে কয়লা-উত্তোলনের উদ্দেশ্যে জমিটি ক্রঃ করেন: কিন্তু পরে কয়লা না-পাওয়ায় জমি পড়িয়া থাকে। ক্ষিত আছে, ইকুইটেব্ল কোল কোম্পানী এককালে মাগ্র ছয় শত টাকা বাৎস্ত্রিক থাজনায় সম্গ্র বার্গভা ইজারা দিতে প্রস্বত ছিলেন। কি**স্তু সেই জঙ্গলাবৃত** কম্বরাকীর্ণ অনুকার জমি'তে ফদলোৎপাদনের চেষ্টা স্থাদুরপরাহত ব্রিয়া তথন কেহই সেই জমি ইজারা লইতে ভর্মা করেন নাই। শ্রীযুক্ত শ্রীভূষণ বস্তু মহাশয়ের পরামর্শে উক্ত কোম্পার্নী এই জমিগুলি বহু অংশে বিভক্ত করিয়া প্রত্যেক অংশ বাৎসরিক দশ টাকা খাজনায় বিলি করিবার বন্দোব? করেন। শূলীবাবুই প্রথম এই সব জমিতে ব্রাহ্মদের বস্বাস করাইতে আরম্ভ করেন। তদবধি গিরিডি ব্রাহ্ম-উপনিবেশ রূপে পরিগণিত হয়। শুনাবাবুর আদি নিবাস ছোট-জাগুলিয়া গ্রামে। তিনি পূর্নের ক্ষমনগর কলেজের অধ্যাপ ছিলেন। বারগণ্ডায় তাম্থনির আপিস প্রতিষ্ঠার সম[্] বাড় কেম্পানীর সাহেব-কর্মচারীদের জন্ম আপিস-বাটীর অনুরে তিনখানি বাংলো-বাটী নিঞ্জি হয়। পরে ইহারই একগানি শশীভূষণ বাব্ জন্ম করেন। এগনও ইহা তাঁহারই অধিকারে রহিয়াছে। বাড়িটর বর্ত্তমান নাম "বারগণ্ডা বাংলোশ" অপর হুইটি বাটী ডাক্তার সার নীলরতন সরকার ও প্রীয়ক্ত সত্যানন্দ বস্থ জন্ম করেন। গিরিডি উচ্চ-ইংরেজী বালিকা-বিদ্যালয়ের প্রতিষ্ঠাত্বর্গের মধ্যে শশভূষণ বাব্ অন্ততম ব্যক্তি ছিলেন। গিরিডিতে রাজা-উপনিবেশস্থাপনের ইচ্ছা, শুনিয়াছি, পেগমে আনন্দমোহন বপ্ মহাশয়ের মনেই উদিত হয়। তিনি পচম্বায় কিছু ছমিও সেই উদ্দেশ্যে বন্দোবস্ত করেন; কিন্তু নোকারণেই ইটক, শেষ-পর্যান্থ তাঁহার ইচ্ছা ফলবতী হয় নাই। তিনি প্রস্থায় 'মিজিলপুর ভিলা' নামক বাটীতে আসিয়া বাস ক্রিডেন।

বারগণ্ডার প্রাতন অধিবাদী দিগের মধ্যে গাতিক ছি দেব মহাশ্য অন্ততম ছিলেন। ইংহার আদি নিবাদ ছিল কে স্থার প্রামে। প্রায় জিশ বংসর পূর্ব্বে ইনি প্রথম এই স্থানে বাছিনর নিয়াণ করাইয়া বসবাদ করিতে আরও করেন। ইংগর পূর্ব ইঃমৃক বারেক্রনাগ দেব মহাশ্য দর্ব্বপ্রথম এই স্থানে তুইখানি গোড়ার গাড়ী আনাইয়া ভাড়া খাটাইতে থাকেন। সেই হুইতে এ স্থানে ঘোড়ার গাড়ীর প্রচলন হয়। সেই জ্বন্ত এ ক্যাটির উল্লেশ করিলাম। পিতার স্থাতিরক্ষার্থ বারেক্র বার্ গিরিভি উচ্চ-ইংরেজী বালিকা-বিল্গল্যের ছাজী-আবাস নির্মানোক্ষেপ্ত তুই সহস্র মুদ্রা দান করেন। স্থানীয় গ্রান্সংগরে কার্যের জ্ব্যন্ত তিনি পাঁচ শত টাক। দান করিহাছেন। বারেক্র বার্ রাক্রসমাজভুক্ত।

ডাক্তার শুর নীলরতন সরকার মহাশরের নাতা জীয়ক নোগাল্রনাথ সরকার মহাশয়ের বারগণ্ডায় নিজ বাটা আছে। উদ্দী নদীর অপর তাঁবে পাড়েডিছি নামক মৌজাখানিও ইহার। উচ্চ-ইংরেজী বালিক।-বিদ্যালয়ের ইনি অক্সতম প্রতিষ্ঠাত।।

গিরিভির প্রধান খনিজ পণ্য কয়লা ও অন। কয়লার থনিগুলি রেল-কোম্পানীর অধিকত। উপস্থিত বাজার মন্দা হওয়ায় খনিগুলিতে কয়লার চাহিদা হিসাবে সপ্তাহে কয়েক দিন মাত্র কয়লা উজোলিত হয়। গত মহাসমরের

সময়ে নখন অভ্রের মূল্য অতাধিক ছিল, তথন স্থানীয় বহু লোক ও প্রবাসী বাঙালী অল-ব্যবসায়ীরা অনেকেই বিশেষ বিভ্রশালী হইয়া উঠিয়াছিলেন। এমন কি সে সময়ে অন-ব্যবসায়ের সহিত সংশিষ্ট সাধারণ দিনমজুররা অবধি প্রতাহ গড়ে তিন চারি টাকা পর্যান্ত উপার্জন করিত। কিন্তু পরে অলের দর অসম্ভব রক্ম গ্রাস হওয়ার সঙ্গেই উক্ত ব্যক্তিদের অধিকাংশেরই আর্থিক অবস্থার অবনতি ঘটিয়াছে। ঠিক গিরিডিতে কোন অনের খনি না-থাকিলেও, কোদামা, গাওয়া প্রভৃতি নিকটবভী স্থানসমূতের খনিগুলি হইতে প্রাচ্চর উৎক্লাই অন পাওয়া যায়। ঐ সকল স্থান হইতে অনের পুরু স্তবক সংগ্রহ করিয়া গিরিডিতে আনীত হয়। এই স্থানে তাহা হই ত অনতিঃল তক্তি প্রাস্তত হয় ও পরে তাহার মধা হইতে উৎক্র অপক্র হিমাবে শ্রেণী-বিভাগ হইলে ছরির সাহায়ে ওর বিচ্ছেদ করিয়া পুর স্থা অনুপ্র প্রায়ত হয়। গিরিডিন বছ বাঙালী মধ্যবিত্ত গুহস্ত অনের স্থানীয় কারখানা চইতে অনত্তি আনিয়া নিজ বাটীতে বদিয়া উপরিউক্ত পাগায় কাটিয়া-ছাটিয়া অনপত্র প্রস্থত করিয়া শুনরায় ঐ কার্থানায় দিয়া আসেন। এল কার্য্যেই বল পরিবারের জীবিকা নির্দাহ হয়। ইহার পর কারখানায় এই অন্প্রভাল হইতে বিশেষ পাক্রিয়ায় বিভিন্ন আকার ও গলতা বিশিষ্ট খণের তক্তা প্রায়ত হইয়া বিদেশে রপ্তানী হয়। অল-ব্যবসায়ের সাময়িক অবদাদ হেড় গিরিডিতে উপস্থিত অন্নাভাব প্রাকট হইয়াছে।

বাঙালী অল-ব্যবদায়ীদের মধ্যে প্রথমেই প্রীযুক্ত কমারক্কম্ মিত্রের নাম উল্লেখনোগ্য। ইনি এককালে "খনের রাজা" (Mica Prince) নামে পরিচিত ছিলেন। গিরিডিতে ইহার বাড়িগর ও অনের প্রকাণ্ড কারথানা-বাটী অবস্থিত। প্রীযুক্ত শরৎ চক্র খোলের প্রচ্যাস্থিত বসত্রাটী ও কারথানা-বাটী ইহারও ব্যবদায়ে উন্লতির পরিচয় প্রাদান করে। ব্যবদায়ক্ষেত্রে সাফলালাভ হেছু অতি দীন অবস্থা হইতে ইনি লক্ষপতি হইয়াছেন এবং এথনও এই ব্যবদায়ে লিপ্ত আছেন। ইনি স্থানীয় মিউনিদিগ্যালিটীর কমিশনার। প্রীযুত জিতেক্তনাথ দে মহাশয় এক সময়ে অভ-ব্যবদায়ে লক্ষপতি হইয়াছিলেন। উপ্রী নদীর তীরে ক্পারফীক্ত' নামক স্থান বিভল অট্যালিকাথানির ইনিই অধিকারী। রাজনীতিক্ষেত্রে স্থারিচিত প্মনোর্জন গুহ ঠাকুরতা মহাশ যর এক সময়ে গিরিডিতে অত্রের ধনি ছিল। ইনি স্থানীয় পুরাতন প্রবাসী বাঙালীদের মধ্যে অন্ততম ছিলেন। গিরিডিতে ইহার বাটী বত্দান। গ্রীযুক্ত গগনচক্ত মুপোপাধ্যায় মহাশয়ও এক জন স্থানীয় অল্ল-ব্যব্দায়ী। ইংহার এস্থানে নিজ্ব বাটী ও জমি আছে। ইনি এক জন মিউনিসিপ্যাল কমিশনার। ইহার পিতা ৺মহেক্সনাথ মুখোপাধ্যায় মহাশয় একাদিক্রমে কুড়ি বংসর যাবং এস্থানের জেশন-মান্টার ছিলেন। শ্রীবৃক্ত প্রবেধিচন্দ্র মুগোপাধ্যায় মহাশয় পূর্বে কলিকাভায় বেচু চাটুডের স্থাটে বাস করিতেন। ১৯১৫ দালে গিরিডিতে কপর্দ্দকশূল অবস্থায় আসিয়া কিছুকাল স্থানীয় কাডারীতে ওকালতি করিয়াছিলেন : পরে অলের ব্যবসায় আর্থ করিয়া বিশেষ লাভবান হন। এখনও ইনি বিলাতে অন রপ্রানী করিয়া থাকেন। স্থানীয় বিহার-মাইকা কোম্পানীর ইনিই সম্বাধিকারী। গিরিডিতে ইঁহার একাধিক বাড়িঘর আছে; ইনি এ স্থানের স্থায়ী অধিবাদী। ৺রাথালদাস চটোপাধায় ও ৺রাজরুক সাহানা মহাশয়দের কোদাম্মার নিকট অনুথনি বভ্যান। গিলোপী র্জাস পিয়েট কোম্পানী এই স্থানের প্রধান মল-ব্যবসায়ী: ইহার মানেদ্রার ভারতে নিবারণচন্দ্র মুখোপাধার মহাশর বহ বংসর যাবৎ এই কোম্পানীতে কার্য্য করিতেছেন। সামাস কশ্বচারী হইতে স্বীয় কার্যাদক্ষতায় এইরূপ দায়িত্বপূর্ণ পদে ইনি উন্নত হইয়াছেন। অনের শ্রেণা-বিভাগকার্যো ইহার লায় অভিজ্ঞ ব্যক্তি বিবল। গিরিডিতে ইহার বাড়ি আছে। বাঙালীদের মুদিখানার দোকান গিরিভিতে পাঁচখানি

বাঙালীদের মুদিখানার দোকান গিরিভিতে পাঁচগানি আছে। তন্মধাে মকতপুরার জ্ঞানবাবুর দোকান সমধিক জনপ্রিয় ও প্রাচীন। ইহার শ্বড়াধিকারী শ্রীযুক্ত জ্ঞানেক্রনাথ দত্ত মহাশয়ের আদি নিবাস ছিল গশোহর জেলার অন্তর্গত মাগুরা অমুত্রবাজার গ্রামে। প্রায় পঁচিশ বংসর পূর্বে শ্বাহোয়তিকামনায় ইনি গিরিভিতে আগমন করেন। পরে জ্ঞান একথানি ছোট মুদির দোকান খূলিয়া বসেন। এখন নিজ্ঞ বাটী করিয়া ইনি এ-শ্বানে শ্বামী বসবাস করেন। ক্ষলার ভিপো, মণিহারী দোকান ও চারি-পাঁচগানি মিটারের দোকানও বাঙালীদের ছারী পরিচাশিত হয়।

হেল্থ হল্, ইম্পিরিয়াল মেডিক্যাল হল, বিহার

ড়াগিষ্টস্ হল, স্থলত ফার্মেসী, ক্লফতাবিনী মেডিক্যাল তল প্রভৃতি স্থানীয় সকল ঔষধালয়গুলিই প্রবাসী বাঙালীদের দ্বারা পরিচালিত। ইম্পিরিয়াল মেডিক্যাল হলের স্বন্ধ্বি কারী শ্রীযুক্ত সত্যদাস রায় মহাশন্ন ঈষ্ট ইণ্ডিন্নান বেল কোম্পানীর স্থানীয় কোলিয়ারী আপিসের হেড ক্লার্ক।



শানুক্ত রামলাল বন্দ্যোপাধায়ে

গিরিভিতে দর্জিমহলা নামক স্থানে পোষ হান্সরা এও কোং নামে বাঙালীদের একটি কাপড়-কাচা সাবানের কারণানা আছে। স্থের বিষয়, ইহাদের গুল্পত সাবান এস্থানে বেশ আদৃত হওয়ায় কারখানা উত্তরোত্তর শ্রীরুদ্ধি লাভ কবিতেছে।

গিরিডি ইলেকট্রক কোম্পানী বাবদায়ক্ষেত্রে বাঙালীব ক্রমেরিতির হার একটি নিদর্শন। ১৯২৯ গ্রীষ্টাব্দের নবেপ্থব মাসে বারগণ্ডায় তিন বিবা জমি নিরান্ফরই বৎসরের ভক্ত ইজারা লইয়া ইহার বিহাৎ-উৎপাদন গৃহ (power house), বিশ্রাম কুটীর নামক কার্যালয় প্রাভৃতি নিম্মাণ লারস্থ হয় ও কজ্ঞ একুশ হাজার টাকা বায়িত হয়। সাতাশী হাজার টাকা মুলোর বিহাৎ-উৎপাদক যরপাতি ক্রীত হয় ও বিহাং সরবরাহের আমুঘ্যিক অন্তান্ত বন্দোবন্তের হন্তও একানকও হাজার টাকা বায়িত হয়। ১৯০১ সালের ২৮এ মার্চ্চ তারিত্র ইহার দ্বারোদ্বাটন-উৎসব সম্পন্ন হইয়াছে ও ৩১এ মার্চ্চ হাজার টাকা বায়িত হয়। ১৯০১ সালের ২৮এ মার্চ্চ তারিত্র ইহার দ্বারোদ্বাটন-উৎসব সম্পন্ন হইয়াছে ও ৩১এ মার্চ্চ হাজার টাকা বায়িত হয়। ১৯০২ সালের ২৮এ মার্চ্চ তারিত্র ইহার দ্বারোদ্বাটন-উৎসব সম্পন্ন হইয়াছে ও ৩১এ মার্চ্চ হাজার দ্বারা দ্বারিতি শহরে তাড়িৎপ্রবাহ সরবরাহ করিঃ। থাকেন। লালজী এও কোম্পানী উপস্থিত ত্রিশ বৎসঙ্গে জন্ত ইহার ম্যানেজিং ডিরেক্টর ক্রপে চুক্তিবদ্ধ হইয়াছেন ৩৪ নং শোভাবাজার ষ্ট্রাট, কলিকাতায় ইহার একটি শাহ্ন

কার্য্যালয় আছে। ইহার ডিরেক্টরেরা সকলেই বাঙালী;
চন্মধ্যে প্রীযুত বিধুত্বণ দিংহ মহাশয় স্থানীয় অল্ল-ব্যবসায়ী।
মিঃ এন এল রায়, এম-ই (কর্ণেল, ইউ এম এ) ইহার
প্রধান ইঞ্জিনিয়ার; ইহা ভিয় সাত জন বিচক্ষণ বাঙালী
কোরম্যান ও এক জন বাঙালী সহকারী এঞ্জিনিয়ার বিহাৎউৎপাদন ও আপিস-সংক্রাস্ত সকল কার্য্যের তত্বাবধান
করেন। কোম্পানী ক্রমশঃ উন্নতির পথে অগ্রসর
চইতেছে।

গিরিভির অদ্রবর্ত্তী দ্রষ্টবাস্থান-সমূহের কথা উল্লেখ করিতে হইলে বারগণ্ডা হইতে সাত-আট মাইল দূরস্থ উদ্রী জলপ্রগাতের কথাই প্রথমে মনে উদিত হয়। বর্ধার শেষে অগবা শরৎকালের প্রারম্ভে জলপ্রপাত দেখিতে বাওয়াই প্রশন্ত। উচ্চ পর্বতেশীর্ষ হইতে অজ্ঞল্ল ফেনগুল উচ্চলিত জলধারার সশব্দ পতন ও শৃত্যোৎক্ষিপ্ত ধুমাভ বারিবিন্দ্র উপর হর্য্যকিরণপাতে সপ্তবর্ণের বিচিত্র লীলা সতাই মনোরম।

গিরিভি হইতে সাতাশ-আটাশ মাইল দুরে ঐ অঞ্চলের সর্ব্বোচ্চ পর্বত পরেশনাথ। পূর্বের রেলবোগে গিরিভি গিরা পূদ্পুদ্ অথবা গোবানে এই দীর্ঘপথ অতিক্রম করিয়া পরেশনাথ বাইতে হইত; ইহা ভিন্ন অন্ত পথ ছিল না। এখন অবশ্য পরেশনাথ টেশনে নামিয়া বাইবার ফ্রবিধা হইয়াছে। গিরিভি হইতে বাইতে হইলে এখন সকলে মোটরকারে অথবা মোটরবাসে ঐ স্থানে গমনাগদন করিয়া থাকেন। পরেশনাথ গুসিদ্ধ জৈনতীর্থস্থান।

গিরিডি হই:ত প্রায় আটচল্লিশ মাইল দুরে তোপচাঁচি
নামক ছানে ঝরিয়া ওয়াটার ওয়ার্কস্ও অনেকে দেখিতে
যান। এই স্থানের নৈসর্গিক দৃশ্য অতি রমণীয়। বর্ধার
সময়ে চারি ধারের স্উচ্চ গিরিগাত্র হইতে যে বারিধারা
নামিয়া আসে, স্থাপত্যকৌশলে এক দিকে দীর্ঘ বাঁধ দিয়া
সেই বারি সঞ্চিত করা হয় ও পরে তাহাই বৈজ্ঞানিক
প্রক্রিয়ায় শোধন করিয়া ঝরিয়া প্রভৃতি স্থানে নলের মধ্য
দিয়া সরবরাহ করা হয়। ফলে এই স্থানে মনোহর
প্রাকৃতিক পরিপার্মের মধ্যে প্রায় সার্দ্ধ তিন মাইল
দীর্ঘ ও সাত্যটি ফুট গভীর একটি ক্কৃত্রিম হুদের স্থিটি
হইয়াছে।

গিরিভির শ্মশানের বিষয়ে কিছু না-লিখিলে প্রবন্ধ অসম্পূর্ণ থাকিয়া বায়। উত্রী নদীর তীরে এই শ্মশান অবস্থিত। শ্মশানঘাট নির্মাণ করাইয়া দেন প্রসিদ্ধ অত্র-ব্যবসায়ী প্রীযুক্ত কুমারক্কফ মিত্র মহাশয়। শ্মশানঘাট-সংস্কার-সভ্ত (Burning (That Improvement Trust) বিহারী ও প্রবাসী বাঙালীদের সহবোগিতায় গঠিত হইয়াছে। এই সভ্তম শবান্থগামী ব্যক্তিদের জন্ত এই স্থানে একটি বিশ্রামগৃহ নির্মাণকরে অর্থসংগ্রহের চেষ্টা করিতেছেন। এ-পর্যান্ত প্রায় সাত শত পঁচাছের টাকা সংগৃহীত হইয়াছে। তত্মধ্যে প্রীযুক্ত বীরেক্তনাথ দে প্রদক্ত পাত করি তাকার ও নিউ-বারগণ্ডার অবসরপ্রাপ্ত ডাক্তার প্রায়ক্ত ম্বেক্তনাথ দত্ত প্রদত্ত ছই শত পঞ্চাশ টাকা উল্লেখবোগা।



বাঁশীর স্থর

শ্ৰীআশালতা দেবী

•

মেরেটি আব্দ ক'দিন হইল ইনফুরেঞ্জা হইতে উঠিয়াছে।
অনুখটা হইয়াছিল শক্ত রকমের। রোগা হইয়া গিয়াছে,
মাণার চুলগুলি ছোট করিয়া ছাঁটা। সমস্ত মুখে রোগশীর্ণ একটি করুণ আভা।

স্কালবেলা হইতে একটি কমলানেরু হাতে করিয়া ভর্মোজা পারে ঘুরিরা বেড়াইতেছে। নেবুটি তথনই ধাইতে মীরার মায়া হইতেছে। ক্লানে ফ্রাইয়া গেলে মারের কাছে আর নাই।

মীরার মা তথন ভাণ্ডার-ঘরের রোয়াকে বসিয়া তরকারী ক্টিতেছিলেন। সামনেই কল। সেধানে চাকরে বাসন শুইতেছে। স্থানটা জলে এবং কাদায় ভর্তি। মীরা মারের কাছে ঘোরাফেরা করিতেছে। মা ডাক দিয়া কহিলেন, "ও মাণিক, শুধু মোজা প'রে ঘুরে কেডায় না। জলে এখনট ভিজে মোজা নই হয়ে যাবে আর পায়ে ঠাণ্ডালাগবে।"

মীরা করুণ ভাবে মায়ের পানে চাহিয়া বলিল, "আমার যে জুতো নেই মা। তুমি তো জান।"

তথন মারের স্মরণ হইক তাই বটে। মীরার জুতা-ক্লোড়াটা অন্ততঃ দশবার মুচির কাছে পাঠাইয়া তিনি তালি দিয়া আনিরাছেন কিন্তু আর সেটা দিয়া কাজ চলেনা। এত দিন মীরার অসুধ চলিতেছিল, শুইয়া তাহার দিন কাটিত, জুতার প্রয়োজন তেমন ছিল না।

সমরটা শীতকাল, পশ্চিমের শীত হরস্ত, তাহার উপর মেয়েটা সন্ধ্য এতবড় অমুধ হইতে উঠিল।

মীরার মা মনে মনে সঙ্ক করিলেন, কাজকর্ম শেষ হইলে বাক্স খুলিয়া তাঁহার তহবিল মিলাইবেন এবং থেমন করিয়া হোক ও-বাড়ির ঠাকুরপোকে দিয়া বিকালে তাহার জন্ত একজোড়া জুতা আনাইবেন। এখন মেরেকে কাছে ডাকিয়া পালে একখানা আসন পাতিয়া বলিলেন,

"এথানে এসে বোদ মা। আৰু বিকে**লে** তোর জন্তে দোকান থেকে নভুন জুতো নিশ্চয় আনিয়ে দেব।"

্থবরটা মীরার পক্ষে এমন অভাবনীয় বে আনন্দে তাহার শীর্ণ মুখ উদ্ধাসিত হইয়া উঠিল। কবে যে তার জুতা কেনা হইয়াছে সে আর এখন তার মনেও পড়ে না। বোধ হয় বছর-তিনেক আগে। অতাস্ত খুণী হইয়া সে আসনে বসিয়া কহিল, "সত্যি মা?"

— है।, मा। कित्न (मत्वा वहेकि।

নেব্টা আলেষ্টারের ছিন্ন পকেটে গুঁজিয়া রাখিয়া সে স্থির হইয়া বসিল। এখন বাধ হয় ঘড়িতে নটা বাজে। আর কিছুক্ষণ পরে ছপুর হইবে, ভার পরে বিকাল, আর তার কিছুক্ষণ পরেই ভার নতুন জুতা আসিবে। পৃথিবীতে এত সুখও অবশেষে ছিল। মধ্যবিস্ত, অভাবের ঘরের মেয়ে, এই ভো মোটে ভার ছ-সাভ বছর বয়স হইয়াছে ইহারই মধ্যে ঘরকরার কাজ অনেক শিথিয়াছে। বলিল, শাও না মা ভোমার শুক্তনিটা আমি তত ক্ষণ কুটে দিই। নটা বাজে, বাবা খেয়ে-দেয়ে কাছারি বাবেন। ভূমি রায়া করবে না ?"

মা সম্বেহে একবার তাহার দিকে চাহিয়া কহিলেন, "তোর রোগা শরীর, থাক না মীরা। ক'টা আনাচ কুটতে আমার কতক্ষণই বা লাগবে।"

তার পরে মীরার বাবা আসিলেন। তিনি চার-পাঁচ
বছর হইতে পশ্চিমের এই শহরে ওকালতী করিতেছেন।
স্থানীর বড় উকিল তেজনারারণ ধনধনিরার কাছে জুনিয়ারি
করেন। সকাল সাতটা বাজিতে-না-বাজিতে তাঁর বাড়িতে
ছোটেম এবং কাছারি বাইবার আধ ঘণ্টা আগে বড়ভেরে
বাড়ি ফিরিরা আসেন। তথু যে তাঁছার জুনিয়ারি করেন
এমন নর। তাঁছার বোকা ছেলেকে ঘণ্টাছই করিরা পড়ান,
শহরের একপ্রাত্তে গোলাঘাটের এক স্বোকানে কাশীর

া আর লক্ষোরের স্থা এবং কিমাম পাওরা বার, সেখান তে ধনধনিরা-গৃহিণীর অন্ত তাহা সংগ্রহ করিরা আনেন। রও কত টুকি-টাকি কাজ যে করিরা দেন, প্রত্যহের র প্রশীভূত হীনতা, কত মিখ্যা চাটুবাক্যের মানি যে হাকে বহন করিরা চলিতে হয়। তথাপি তিনি স্থাবিধারিতে পারেন নাই। কত বেহারী জুনিরার উকিল হার ক্ষ্থার্ত লোলুপ দৃষ্টির সমূখ হইতে প্রতিদিন মোকর্দমাইরা বার, তিনি পান না। কারক্রেশে তাঁর সংসার চলে। বিন্যুদ্ধে অবিরত সংগ্রাম করিয়া তাঁহার স্বাস্থ্য ভয় এবং । ছতি ক্লক্ষ হইয়া গেছে।

₹

ঘড়িতে এগারটা বাজিল। মীরার বাবা মন্মথবার্ ান এবং আহার সারিয়া চাপকানের বোতাম আঁটিতে াঁটিতে একার চড়িয়া কাছারির উদ্দেশে বাহির হইয়া গলেন।

মীরা কয়েকটা স্থাজির ক্লাট অনেক ক্লণ ধরিয়া বিসিমা বাইল। তার মায়ের রায়াবরের সব কাজ মিটিল।
কুদ্র অপরিসর বারান্দায় বেখানে রোদ আসিয়া পড়িয়াছে
সইবানে একটি মায়ের বিছাইয়া মীরার মা বসিলেন
মীরার ছোট ভাইটিকে লইয়া। এই তো হুপুর কাটিয়া
আসিল, এইবারে বিকাল হইবে। তার পরেই মীরার
কুতা। আনন্দে মীরা তাহার বহু পুরাতন আলেষ্টারের
পকেট হইতে কমলানেব্টি বাহির করিয়া এতক্ষণ পরে
তার বোসা ছাড়াইল।

থোকাকে ডাকিয়া কহিল, "চুনি, নেবু নিয়ে যা। তোকে ছ্-কোয়া দেবো।'

মীরার মা স্থমনা বড়লোকের মেয়ে। কলিকাতার বাপের বাড়ি। কিন্তু আজ দশ-বার বছর বিবাহ হইরাছে, দীর্ঘকাল ধরিরা অভাবগ্রস্ত স্থামীর সংসারের ঘরণী হইরা সে-সবই ভূলিয়াছেন। একটু পরে ধোকাকে ঘুম পাড়াইয়া উঠিয়া তিনি ঘরে আসিয়া বাক্স খুলিলেন। টাকার বাগে খুলিয়া গুণিলেন, আঠারটি টাকা আছে। আজ ইংরেজী মাসের একুশে, এমাসে রোজকার সামান্ত, বাজার-ধরচ তিন-চার আনা বাদ দিয়া স্থামীর উপার্জন

এই হইরাছে। এখনও কত বাকী। মাস ফুরাইতেনা-ফুরাইতেই গোরালার হুখের দাম, ঠিকা চাকরটার মাহিনা, বাড়িভাড়া সমস্তই দিতে হইবে। কিন্তু ভাবিরা ফল নাই।

পাশের বাড়ির নিভূ তথন হুয়ারের কাছে আসিয়া ভাক দিতেছে, "বৌদি ডেকে পাঠিয়েছিলে, কিছু দরকার আছে না-কি ?"

"হ্যা, ভাই। মীরার পায়ের এক জোড়া **স্কু**তো এনে দিতে হবে।"

"কেমন জুতো চাই ?"

"ওরই মধ্যে একটু শক্ত টেকসই হয়। জানই তো একবার কিনলে আবার যে কিছুদিন পরে কিনে দোব সে সামর্থ্য নাই।"

চোথ-মূথ খুশীতে উজ্জ্বল করিয়া মীরা নিতৃর গা বেঁ বিয়া দাঁড়াইয়া কহিল, "নিতৃ কাকা, আমি সেই রকম ফুলওয়ালা জুতো নেব। সেই যে তোমার বোন ক্লমুর পায়ে দেখেছি।"

তাহার মা তাড়া দিয়া বলিলেন, "না না পাম্ভ নিতে হবে না। বড়ড তাড়াতাড়ি ছিঁড়ে যায়।" নিতু মমতা ভরা চোথে একবার মীরার দিকে চাহিল। বেচারা জানে না ভাল-কাজ-করা পাম্ভ, রুম বেমন পায়ে দিয়েছিল, তার দাম পাচ-ছ টাকা। কহিল, "আচ্ছা বৌদি এক কাজ করলে হয় না, মীরাকে আমি সঙ্গে নিয়ে যাই। জুতো কেনা, যার জঙ্গে কিন্ব সে সঙ্গে থাকলেই ভাল হয়।"

"বেশ ভাহলে ক'টাকা ভোমায় দেব ?"

"ঐটুকু বাচ্চার **জ্**তোর দাম আর কত **হবে? আচ্ছা** আগে আমি নিয়ে আসি তার পরে সে-সব হবে।"

ঘণ্টা-ছই পরে লাইমজুদ্ থাইয়া পিপারমেণ্ট্-দেওরা পানে ঠোঁট ছটি লাল টুকটুকে করিয়া খুব সৌথীন এক পাম্ভ পারে, জুতার বাক্দটা বগলে চাপিয়া আনন্দে উদ্বেশিত মীরা যথন তাহাদের বাড়িতে চুকিল, ঠিক সেই সমরে মীরার বাবা কাছারি-ফেরত শুক্ষুধে টমটম হইতে নামিতেছেন।

নিতু মীরাকে ভার মারের কাছে দিরা বলিদ, "নাও বৌদি ভোমার মেরে। আহা বেচারা অহথে ভূগে বড় হুর্ম্বল হয়ে গেছে। এক দোকান থেকে আর এক দোকানে একট্থানি বেতেই একেবারে ক্লান্ত হয়ে পড়ে। শেযে কোলে ক'রে নিলুম। জুতো কেমন হয়েছে? কত দাম নিয়েছে? কাম আর কত, টাকা-ছ:য়ক।" আসলে জুতার দাম চার টাকা পনের আনা। কিন্তু নিতৃ ঠিক করিয়াছিল বৌদির কাছে ছ-টাকার বেশী কিছুতেই লইবে না।

"···ও কি, আবার মোজা, গার্ডার। এ-সব কেন ঠাকুরপো ?"

"হাঁ, ঠিক মনে পড়েছে। তোমাকে বলতে ভূলেছিলুম, ফুতোর দাম এক টাকা ছ-খানা। আর মোঞ্চা-টোঞা সবহদ্ধ ধরে ছ-টাকা।…" নিতু অপ্রস্তুত হইয়া কহিল। সে অনেকবার নিজে হইতে মীরাকে কিছু দিতে গিয়া দেখিয়াছে দারিদ্র্যাভিমানিনী নৌদি তাহা নেন না। তাই এবারে এই ছলনাটুকু করিল।

স্মনা অপ্রসন্ধ বাক্স হইতে ছটি টাকা বাহির করিয়া আনিল। মনে মনে ভাবিল, আবার মোজা কেনা কেন। তানা হইলে ত পুরা তুইটি টাকা লাগিত না।

নিতৃ চলিয়া যাইবার ঘণ্টাথানেক পরে মন্মথ ঘরে চুকিয়া ব্রীকে কহিল, "ওগো বাক্সে টাকা আঠার আছে, নয় বৈলা ধে কাছারি যাবার আগে গুণেছিলুম আঠার টাকা এগার আনা ছিল। তা হু-দিনের বাজার-থরচে খুচরো পরসাটা বাদে আঠার টাকাই নিশ্চয় থাকবে। তুমি এক কাজ কর দেশি, ধরচের জন্ত একটি টাকা রেথে সতের টাকা আমাকে বার ক'রে দাও। আজ আর কাছারিতে কিছুই পাই নি।"

"একসং**ল** এত টাকা কি হবে ?"

''তোমাকে বলি নি, আর ব'লেই বা কি হবে! মাসে যা যৎসামান্ত পাই, ভাতে খরচ চলে কই। প্রত্যেক মাসেই ভারাপদর কাছে কোন মাসে আট কোন মাসে দশ এমনি ধার করতে করতে প্রায় একশো টাকা দাঁড়িয়ে গেছে। আজ বার-লাইব্রেরীতে সকলের সামনেই অপমান ক'রে বদলে। আমার সঙ্গে সঙ্গে এসেছে। বলেছে আজ পনের টাকা কম ক'রে ভাকে দিভেই হবে।"

"তবে সতের চাইছ কেন?" সুমনা সাহস সঞ্চর করিরা ক্ষীণ স্বরে কহিল।

"আর হুটো টাকা জরদা আর কিমাম বিক্রী ক'রে সেই

মুদ্দমানটাকে দিতে হবে। ধনধনিয়া-গিলীকে নিজের প্রদায় স্থিতি আর জরদা কিনে ভেট দিতে দিতে ফতুর হতে গেলাম, তব্ যদি একটা মকেলের মুখ দেখবার জো রয়েছে। আজ মুদ্দমান বুড়োটা পথের মাঝে একা দাঁড়ে করিরে বলে, 'বাব্জি, আমার দোকানে কমদে কম তোমার পনের রূপেয়া বাকী। আজ পাঁচ মাস ছ-মাস হয়ে গেল এক পর্সা দিলে না। আর আমি কেমন ক'রে অপেক্ষা করব।' তাকেও আজ টাকা-হয়েক না দিলে অনর্থ করবে।"

"তোমার বে এত জারগার ধার রয়েছে সে-কণা আগে ত আমাকে ঘ্ণাক্ষরেও বল নি।" সুমনা বিহ্বলের মত তার নিজের নাম লেখা ক্যাশ-বাক্ষটার দিকে চাহিল।

"ব'লে কি হবে ? বলবার মত কথা হ'লে বলতুম। এগন দাও দিকি টাকাটা চটপট বাক্স থেকে বার ক'রে।"

আর অপেক্ষা করিবার সময় নাই। স্থমনা মরীয়া হইয়া কহিল, "অত টাকা নেই বাক্সে, যোলটি টাকা রয়েছে।"

মন্মথ বিবর্ণ হইরা উঠিল, "এর মধ্যে এত পরচ ক'রে ফেলেছ? কিসে পরচ করলে? এবার থেকে টাকাকড়ি হিসেবপত্র সব আমি নিজে করব। চাবিও রাধব আমার কাছে। চুপ ক'রে রইলে কেন? জবাব দাও। এত কি নবাবের মেয়ে হয়েছ বে এক জন মুথের রক্ত উঠিয়ে টাকারোজগার করবে আর ভূমি তা জলের মত থরচ ক'রে যাবে, হিসেবটাও দিতে পারবে না।"

"মেরেটার জুতো ছিল না।"••• স্মনার মুর্চিছত প্রায় কণ্ঠস্বর হাওয়ায় মিশাইয়া গেল।

"ফুতো কিনেচ মীরার ?…হ-টাকা ধরচ ক'রে! তাই বটে, আজ কাছারি থেকে ফেরবার সময় দেখলুম মেরে নতুন সৌখীন ফুতো পারে আজ্ঞাদে ডগ্মগ হয়ে আসছে। তোমাদের লজ্জা নেই ? দেনার দায়ে স্বামীকে পথের লোকে অপমান ক'রে বাচ্ছে আর এদিকে এই সব হচছে।"

মন্মথর গলার আওয়াল ক্রমশং উচ্চতর হইতে লাগিল .
মীরা ভয় পাইয়া ছারপ্রান্তে আসিয়া দাঁড়াইয়াছিল । নতুন
ফুতোটি পা হইতে খুলিয়া বাক্সে ভরিয়া কাগজের বাক্সটা
সে বুকের কাছে চাপিয়া ছিল । ভাহার দিকে চোধ পড়িভেই
মন্মথ খেন ক্রেপিয়া গেল । ঝাঁপাইয়া পড়িয়া ভাহার হাত
হইতে বাক্সটা কাড়িয়া লইয়া উন্মত্তের মত বলিতে লাগিল,

"এই সব হচ্ছে, এই সব হচ্ছে! আহ্লাদে মেয়ে, অমন জুতোর নিকৃচি কর!" বলিয়া জুতাজোড়া সবেগে দেওয়ালের দিকে নিক্ষেপ করিল। একটা জুতার ফুল ছিঁড়িয়া খুলিয়া গেল। মীরা কাঁদিবার উপক্রম করিতেই তাহার বাবা গালে সশক্ষে এক চড় মারিয়া দেওয়ালে মাথা ঠুকিয়া দিলেন।

মা ছুটিয়া অশুস্তস্তিত চক্ষে মেরেকে তুলিয়া স্থিরকঠে কহিলেন, "রোগা মেরেকে অমন ক'রে মেরোনা। হয়ত এখন তোমার মন খুব উত্তেজিত হয়ে রয়েছে, অন্ত জায়গায় যাও। পয়সা না-থাকলেও মানুষের মনুষ্যত্ব থাকে, সেটা যায় না। এটুকু অস্ততঃ তোমার কাছে আশা করতে পারি।"

9

পরের মাঝে একটুকুরো জ্যোৎসা আসিয়া পড়িয়াছে। স্মনা চুপ করিয়া বদিয়া ছিল। রাত্রি অনেক হইয়াছে। সামী এথনও ফেরেন নাই। অদুরে কুম্র বিছানায় থোকা পার মীরা শুইয়া আছে। সুমনা বসিয়া ভাবিতেছিল আগেকার দিনের কথা। বাবা ছিলেন কলিকাভার বড় ডাক্তার, চাল-চলন ছিল একালের মত। স্থমনাকে গান শিধাইয়াছিলেন, মেম রাখিয়া সেলাই শিথাইয়াছিলেন। বেথুন কলেজিয়েট্ স্থূলে সে যখন ফোর্থ ক্লাসে পড়ে তখন বিরে হয়। স্থামী মনাথ ছিল দেখিতে স্থপুরুষ, তাহার চেহারা দেখিলে ছ-দণ্ড তাকাইয়া থাকিতে ইচ্ছা করে। প্রেসিডেন্সি কলেজে বি-এ পড়ে। **লেখা**পড়ায় অত্যস্ত হরকুমার বাবুর সঙ্গে আলাপ হইয়া গেল একদিন কি-একটা উপ**লক্ষ্যে। বৃঝি কোন বন্ধুর অন্তথে সে তাঁহাকে** ডাকিয়া নিয়া গিয়াছিল। দেখিবামাত্র ছেলেটকে তিনি কি যে স্থচক্ষে দেখিলেন। স্থমনার সঙ্গে সম্বন্ধ ঠিক করিবার পরেও বাড়ির মেরেরা আপত্তি তুলিরাছিল ছেলের আর্থিক অবস্থা ভাল নয় বলিয়া। কিন্তু হরকুমার সে আপত্তি গ্রাহে আনেন নাই। ... সোনারটুকরো ছেলে। ওকালতী পাস করাইয়া কলিকাভায় ভাহাকে ভিনি বসাইবেন। বপেষ্ট প্রতিপত্তিশালী, জামাইকে সাহায্য করিয়া দাঁড় क्त्रारेश मित्रा शहरतन। काथात्र वा कि इरेन, य वहत মন্মথ ওকালতী পাস করিয়া বাহির হইল, সেই বছর স্থমনার

বাবা হঠাৎ মারা গেলেন। মারা বাইবার পরে দেখা গেল কিছই রাখিয়া যান নাই। বালীগঞ্জে এক সুবৃহৎ বাড়ি, মোটর, ছোট পাচ-বছর বয়ংসর একটি মেয়ে এবং বিধবা স্ত্রী। ভবে একমাত্র আশার কথা তাঁর বড় ছেলে বছর-ছই আগে বিলেডী ডিগ্রী লইয়া ডাক্তারি ফ্রন্স করিয়াছে এবং বাবার পশার আন্তে আন্তে তাহার হাতে আদিতেছে। নরেন্দ্র প্রথমটায় খুব ভাঙিয়া পড়িয়াছিল। বাবা বাঁচিয়া থাকিতে এত নাম এত ষ্টাইণ কিন্তু মৃত্যুর পরে তাঁহার সিন্দুক শুন্ত। এমন গোলমালের সময়ে স্থমনা বা তার স্বামীর কথা কেছ ভাবিল না। পশ্চিমে জীবনযাত্রার ব্যয় অল্প, জিনিষপত্র সন্তা, তাই মন্মথ এখানে আনিয়া ওকালতীতে বসিল। মুমনা তন্ময় হইয়া ভাবিতেছিল সেই সব দিন কত আশা কত আনন্দেই না কাটিয়াছে। ওকালতি পাদের থবর रयिनिन वात इहेन रामिन मनाभ कड हाछ-পतिहाम कड আমোদের ভিতর দিয়া তার কানে কানে এই অতিশয় প্রিয় সংবাদটি দিয়াছিল। তার পরে হুই জনে মিলিয়া ভবিবাতের কত ছবি আঁকা • • কত স্বপ্ন দেখা • • হঠাৎ বিনামেষে বজ্ঞাঘাতের মত 'সমনার বাবা সন্ধাসরোগে করেক ঘণ্টার মধ্যে মারা গেলেন। যেথানে অনেক আলো জলিতেছিল. সভা বসিয়াছিল, সঙ্গীতপ্রবাহ বহিতেছিল, সেধানে অকস্মাৎ আলো নিবিয়া গেল। গাঢ় তমিস্রায় সকলের নয়ন অৱকার হইয়া গেল। বাহা কিছু ছিল সমন্তই অকালে ভাঙিয়া গেল। সেই হইতে হুমনা বিদেশে। জীবনতরণী বাহিয়া অপরিচিত জারগার কোনক্রমে চলিয়াছে। মনে আর আশা নাই, জীবনে আর জ্যোতি নাই। কালে স্বই সহিয়া আসিতেছে। ... কেবল আজিকার ব্যাপারটায় মনে বড় লাগিয়াছে। রোগা মেয়েটা অত মার থাইয়া কেমন যেন নিজ্জীবের মত হ**ইয়া** পড়িয়াছে। অত যে স্থের জুতা তাও অনাদৃতের মত আলনার তলায় পড়িয়া আছে। সুমনা ভাবিতেছিল সে ছেলেবেলায় দাদার সঙ্গে মোটরে করিয়া নিউমার্কেটে গিয়া কত দিন কত দামী ফুতা কিনিয়া আনিয়াছে আর নিজের মেয়ের একটা সামান্ত সং ना, गथ्छ नत्र, व्यवश्रव्यात्राक्रनीत्र अक्टा नामाल किनिय, ভাও কিনিয়া দিবার অধিকার বা সামর্থা ভাহার নাই। নানা স্থৃতির আলোড়নে আপন অজ্ঞাতসারে চোণ দিয়া- তাহার জল পড়িতেছিল অত খেরাল করে নাই। অফ্ট্ চক্রালোকে নিঃশব্দে অপরাধীর মত কে ঘরে চুকিল। চুকিয়া নিজিতা মীরার পালে আসিয়া বসিল। অনেক ক্ষণ ধরিয়া বড় যড়ে তাহার নরম রেশমের মত চুলগুলির উপর হাত বুলাইতে লাগিল।

আধা আলোছারামর ঘরে কিছুই স্পত্ত করিয়া দেখা যার না।

"হুমনা !"

ক্মনা চমকাইয়া উঠিল। তাহার পরে আপনাকে সংবরণ করিয়া লইয়া স্বামীর পানে চাহিয়া কহিল, "কি বলচ ?"

"মেরেটা কি বড় বেশী কাঁদছিল ?···" মন্মথ ধীরে ধীরে অতি সম্ভর্শণে ঘুমপ্ত মীরার মুঠিবাধা হাতটি থুলিয়া দিল।

"না, তেমন আর কি কাঁদছিল। ছেলেমাম্য অপ্প সমরের মধাই গব ভূলে যায়। কিন্তু ফিরতে তোমার এত রাত হ'ল কেন?" স্মনা তথন সাংসারিক জগতে ফিরিয়া আসিরাছে। একটুথানি আগেকার ক্রন্সনবিবশা শ্বতিভারাভূরা নারী তথন আর নাই, তাহার জায়গায় মমতাময়ী গ্রী আদিয়া স্থান নিয়াছে। স্থমনা মনে মনে শ্বামীকে ক্ষমা করিল তথনই। ভাবিল, একে ত লোকটা সংসারের ভার বহিয়া নানা আলায় উদ্ভান্ত। তাঁহাকে আর র্থা কট দিই কেন।

"রাত খনেক হয়েছে। এবারে তুমি থেতে বসো। ভাতটা ঠাণ্ডা হয়ে যাবে ব'লে গরম জলের কড়ার উপর বসিয়ে রেখে দিয়েছি। চলো দিইগে।"

কিন্ত মন্মথ বেন শুনিতেই পায় নাই, সে আপন মনে বিশিল্প চিলিল্লাচিল, "ছুটে পালালুম---দাঁড়িরে দাঁড়িরে মীরার কালা শুনতে পারলুম না। আহা মা আমার কতদিন পরে সবে তৃটি ভাত মুখে দিল্লেছিল। কি মনে করলে যে! এমনিতেই ত অনেক কট প্রমনা, ছেলেমেরেকে কথনও না-দিতে পেরেছি একটা সংধর জিনিব, না একটা থেলনা। বলে, মাথার ঘায়ে কুকুর পাগল, আমারও হয়েছে তাই। সামনে পিছনে কোনদিকে ভাকাবার আয় অবলর নাই।"

"নাও, কি বে বকতে সুক্ষ করলে পাগলের মত ভার ঠিক নেই। রাগের সময় মাসুবের অভ ঠিক থাকে না। ছেলে- মেরেকে তখন অন্তার ক'রে হুটো বকে, মারে। ভাতে মহাভারত অশুদ্ধ হয়ে যায় না। আর সত্যিই ত, তোমার মাথা কি ঠিক ররেছে, এক জনের উপর কন্ত ভার।" স্বমনা সাস্থনামাথা স্নিশ্ব সূরে কহিল। তুই জনেই এবারে ছ-জনের মনের কথা ব্ঝিল। ব্ঝিয়া চুপ করিয়া থাকিল। আর কথা হইল না, মন্মথ থাইবার জন্ত উঠি-উঠি করিতেছে এমন সময় হঠাৎ রাত্রির স্তব্ধতাকে চিরিয়া কোন্থান হইতে বাশীর একটা আওয়াব্দ আসিল। ক্রমে সিন্ধু, তার পর বারোয়া, তার পরে ইমনকল্যাণ এবং তাহারও পরে বেহাগ বাজিতে লাগিল। মনে হইতে লাগিল স্থরের সেই তরকাবেগে ক্রোৎসার সৃশ্ম উত্তরীয় যেন কাঁপিয়া কাঁপিয়া উঠিতেছে। মুনাথ অফুট স্বরে কহিল, "ধনধনিয়ার সেই বেকরি ভাইপোটা, রামধেলাওন্, এ তারই বালী। ছোক্রা বাজায় ভাল। বেদিন তার মন খুলে যায় সেদিন প্রাণ দিয়ে বাজায়।" বাশী বাজিয়াই চলিল। অনেক ক্ষণ পরে থামিল। কিন্তু সুরের মূর্জ্কনা যেন থামিতেই চায় না।

স্মনা আর মন্মণ চুপ করিয়া আছে। স্থানা ভূলিয়া গিয়াছে আর খাওয়ার তাগিদ দিতে। এখন যে তার অনেক কাজ বাকী। মন্মথর খাওয়া হইলে সে খাইবে, তার পর রায়াঘর ধুইবে, হেঁদেল ভূলিবে। সে-সব কথা নিঃশেষে ভূলিয়া গিয়াছে। মন্মথ ভূলিয়া গিয়াছে তাহার পাওনাদারের তাড়া, ভূলিয়া গিয়াছে তাহার নিরীহ রোগা মেয়েটাকে বিনা দোবে মারিয়া ফেলার মর্ম্মজালা। বালীর স্থব তাহাকে প্রতিদিনের কাঁটার ঘা হইতে ভূলিয়া আরও অনেক উর্লোকে লইয়া গিয়াছে।

সেখানকার জ্যোৎসার আলো-হাওয়ার কম্পন, আকাশের তারা সমস্তই কেন্দ্র করিয়া আছে একটি অনিল্যস্কর কিশোরী মুখকে। বছক্ষণ চুপ করিয়া বছিয়া মন্মথ মৃত্ত্রে কানে কানে কথা বলার মত করিয়া কছিল, "মান পড়ে ফ্—েসেই যে তোমাকে বলতুম, বাড়ি থেকে যথন কলকাতায় আসতুম, কলকাতা ষ্টেশন যত এগিয়ে আসত ততই বুকের মধ্যে কি রক্ম করত। চোথে জল এসে পড়ত। মনে হ'ত, আর একটু পরে, তার পরেই তোমাকে দেখতে পাব। এর চেয়ে আশ্রুয়্য আর কি আছে!"

স্থন। কোন কথা বলিতে পারিল না। কি**ভ** ভাহার

সমন্ত মন পূর্ণ হইয়া উঠিল। প্রীতিভরা চোথে সে একবার আমীর দিকে একবার অমস্ক ছেলে-মেরের পানে চাহিল। একটু আগে মেরেকে অস্তার করিয়া অমন মারার জন্ত আমীর উপর ভাহার মনে যত অভিমান যত ক্লেশ সঞ্জিত হইয়াছিল, যত অশ্বাপ্প ঘনীভূত হইয়া উঠিয়াছিল, সমস্ত কাটিয়া গেল। বালীর স্থরের মায়ায় তাহার একটানা ক্লাস্তিকর জীবনের উপর হইতে এক নিমেরে ঘেন সকল আবরণ খদিয়া পড়িল। ছেলে অস্ত্র হইলে, রাগ অভিমান করিলে সব সময়ে ত তাহার মেরাজ ভাল থাকে না, তথন মায়ের উপর অযথা পীড়ন করে। মাকে কন্ত দেয়। কিন্তু ভাই বলিয়া মা কি ছেলের উপর রাগ করিয়া থাকিতে পারেন? মাতার সেই বিশাল বৈর্যাপুর্ণ অস্তর লইয়া স্থমনা ভাহার আমীর সমস্ত কঠোর

ব্যবহার ক্ষমা করিয়া ফেলিল। মনে মনে কছিল, 'বাইরের নানা অপমান নানা ধালা ওঁকে সইতে হয়। তাইতেই আমাদের সক্ষে মাঝে মাঝে এমন ব্যবহার ক'রে ফেলেন। না-হয় মানলুম আমার ছোট সংসারে অনেক দৈন্ত অনেক অভাব-অনটন। কিন্তু আমার মত এমন ক'রে ভালবাস্বার সুযোগ পেমেছিল ক'জনে, আর এত বেলী ক'রে তা ফিরে পেয়েছিলই বা কে।"

কমেকটা বাজির পরে ধনধনিয়াদের মন্ত বড় জিতলের ছাদে তথন রামধেলাওন বাশীতে কানাড়ার স্থন্ন ধরিমাছিল। আকাশের তারা অতক্র হইমা চাহিয়াছিল, আর নিভূত জোৎসা ক্ষণে কণে মণ্মরিত হইমা, উঠিতেছিল।

সংস্কৃত-শিক্ষা ও জীবিকা

শ্রীবৈষ্ণনাথ কাব্য-পুরাণতীর্থ

সংস্কৃত ভাষা একদিন ভারতের জাতীয় ভাষা ছিল। আরু হিন্দী ভাষাকে যে-স্থানে প্রতিষ্ঠিত করিবার প্রচেষ্টা চলিতে:ছ—ভাব-সম্পদে ও ভাষার চমৎকারিতায় সংস্কৃত ভাষা কোন আদিম যুগে আপনিই সে-স্থান অধিকার করিয়াছিল। জগতের বিভিন্ন জাতি এই ভাষার দর্শন সাহিত্য জ্যোতিয প্রভৃতি শাস্ত্রগ্রন্থ পাঠ করিয়া আনন্দে বিভার। এই সংস্কৃত ভাষার অন্তরালে আমাদের পূর্ব-পূক্ষগণের যে অমূল্য দান আন্থগোপন করিয়া রহিয়াছে ভাষার সন্ধান লওয়া কর্ত্তর।

আমাদের ক্রিরাকলাপ ভজন-পূক্ষন প্রায় সমস্ত বিষয়ই সংস্কৃত ভাষার সাহায্যে হইরা থাকে। আজও আমরা জ্ঞানে অজ্ঞানে উৎসবে ব্যসনে সেই সংস্কৃত ভাষারই সেবা করিরা আসিভেছি। বিবাহ জীবনের শ্রেষ্ঠ সংস্কার। ভাহাতেও আমরা সংস্কৃত ভাষায় মন্ত্রপাঠ করিয়াই দাম্পত্য-জীবন লাভ করিরা সংসার-পথে প্রবিষ্ট হইতেছি। আমাদের চরম সংস্কার শ্রাদ্ধ তর্পণ—তাহাও দেবভাষাক্র সাহায্যেই চলে।

জাতীয় জীবনের মূলভিত্তি জাতীয় সাহিত্য। আজ অবশু রবীক্স-শরৎ-সেবিত বঙ্গভাষা বাঙালীর জাতীয় সাহিত্যের দাবি রাখে। ভারতের কিন্তু নয়। একদিন এই সংস্কৃত ভাষা সে-স্থান পূরণ করিয়াছিল। সংস্কৃত আলোচনা শিথিল হওয়ার সঙ্গে সঙ্গেই সারা ভারতের জাতীয় জীবনের মূলভিত্তি তুর্ম্মল হইয়া পড়িয়াছে।

ভারতের হিন্দু সমাজের বিভিন্ন স্থানের বিভিন্ন ভাষাভাষী জনগণের সাধারণ ভাষা ছিল সংস্কৃত। রাষ্ট্র বাণিজ্য প্রভৃতির কার্য্যকলাপের সংস্কৃত ভাষাই ছিল একমাত্র যোগস্ত্র। আজ অবশ্য রাজভাষা ইংরেজী সেম্বান অধিকার করিরাছে। ভারতীয় সভাতার গৌরব বেদ বেদান্ত তন্ত্র প্রাণ স্বৃতি দর্শন সাহিত্য সমস্তই সংস্কৃত ভাষার নিবদ্ধ।

যে-জাতি নিজের বিশেষত বিসর্জন দিয়া অপ্রের

ভাবধারায় ভাসিয়া চলে জগতের ইতিহাস হইতে সে জাতি শীঘুই নিশ্চিক হইয়া যায়। হিন্দুর ভাবধারা অকুর রাথিতে হ'ইলে সংস্কৃত ভাষার সহিত পরিচয় রাথা একান্ত প্রয়োজন।

তথাপি একটি কথা ভয়ে ভয়েই বলিতে হয়—সংস্কৃত ভাষার সহিত আমরা আর ওতপ্রোত ভাবে মিলিতে পারিতেছি না। গদিও ক্রিয়াকলাপে আজও সংস্কৃত মন্ত্রই চলিতেছে, তথাপি আমাদের অজ্ঞতায় তাহা দিন দিন অসংস্কৃতই হঠয়া উঠিতেছে। আনেক স্থানেই দেখা যায় পুরোহিত না-বৃধিয়া মথ পড়ান—যক্ষমান তোতাপাখীর মত সেই বৃলিই কপ্চাইয়া চলেন। কেহই অর্থ বোঝেন না; ইহারই জন্ম ইশ্রেশক্রয়াগের মত বিপরীত ফল প্রস্ব হয়

অবগ্য ইহার হৃত্য দায়ী আমাদের পারিপার্থিক অবস্থা। সংস্কৃত শিক্ষার্থীদিগের সক্ষুবে একমাত্র যাজনক্রিয়া ভিন্ন অন্য কোনও পথ খোলা নাই। তাহা ভিক্ষারই নামান্তর। যতই তাহার অক্লে নৈতিক পোষাক পরান হউক্ না কেন, তবু তাহাকে আক্ল আর কেহ শ্রেনার চোথে দেখে না।

একদিন শাস্ত্রকারগণ উদান্ত হবে ধোষণা করিয়াছিলেন 'দেবা খ্যন্তির্নতা'—কাহারও দেবা করিয়া জীবিকানির্ব্বাহকে কুকুরের গৃত্তির সহিত তুলনা করিয়াছেন। সেই সেবাই আরু অবশু ব্রাহ্মণ কায়স্থ প্রভৃতি উচ্চ বর্ণের বরণীয় পেশা হইয়া দাঁড়াইয়াছে। সেবা খ্যন্তি—একথা ঘাঁহারা বলিয়াছেন, তাঁহারাই বলিয়াছেন—'ভিক্ষায়াং নৈব নৈব চ'। ভিক্ষা অপেকা চাকরি অর্থাৎ রাজদেবাও ভাল।

সংশ্বত শিক্ষার্থীদিগের প্রধান বৃত্তিই যাজনক্রিয়া। কিন্তু আজ প্রতীচ্য শিক্ষিত সমাজে ঐ বৃত্তি ভিক্ষারই রূপান্তর। প্রশ্নাশল যজমান নাই বলিলেও বেশা বলা হইবে না। শিক্ষিত মর্যাদাসম্পন্ন প্রোহিতের বৃক্তেও আস্থাহীন যজমান-বাডিতে কাজ করিতে আধাত লাগে।

ইগা ভিন্ন জীবিকার আর একটি উপার—স্কুলে পণ্ডিতী করা। কিন্তু তাহাও নির্দ্দিটদংখ্যক। সে কাজের জন্তও প্রত্যেক স্কুলই চাহিরা থাকেন—'ইংরেজী-জানা কাবাতীর্থ'। আর আজিকার দিনে গ্রাজুরেট কাবাতীর্থও বিরল নয়। প্রতিবংসর যে এতগুলি 'তীর্থ'-উপাধিধারী পণ্ডিত বাহির হইতেছেন তাঁহাদের সম্মুখে খোলা আছে কোন্ পথ? তাঁহারা নির্দ্ধোয ভাবে জীবিকার্জ্জনের জ্ঞ কোনু উপায় অবশহন করিবেন?

এই সকল কারণে দিন দিন সংস্কৃত পরীক্ষার ছাত্রসংখ্যা বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হইলেও কেবল সংস্কৃতাধ্যায়ী ছাত্রসংখ্যা দিন দিন প্রাসপ্রাপ্ত হইতেছে, নিষ্ঠাবান পণ্ডিতের পুত্রও আর্জ খর্ত্তির আশার বিশ্ববিদ্যালয়ে ইংরেজী অধ্যয়ন করিতেছেন। তাঁহার বা তাঁহার পিতার কাহারও আর সংস্কৃত-শিক্ষার প্রতিতেমন আহা নাই। শুকু বা পুরোহিত বংশের বহু সন্তান খর্ত্তির মোহে শ্বর্ত্তি পরিত্যাগ করিতেছেন। সেই খর্ত্তিও আক্ উঞ্বৃত্তিতে আসিয়া পর্যাবসিত হইতেছে। ইহার প্রতিকার-চিন্তার সময়ও আসয়।

আজকাল সংস্কৃত-শিক্ষার আর অরসংস্থান হর না।
অধ্যাপক-বিদার শহরে বং শহরের উপকঠে তুই একটি
হইলেও পল্লীর অধ্যাপকদিগের অদৃটে তাহা জোটে না।
তেমন বড়লোক নিরল যিনি অধ্যাপকর্ম্মকে মাসে মাসে
দুরে থাক, বংসরেও একবার সাহায্য করিতে পারেন বা
করিয়া থাকেন। অথচ শত শত অকার্য্য করিতে
(অপকার্য্য শতং রুড়া) যাহাদের ভরণপোষণ করিতে
হইবে সেই পোষ্য পরিবারবৃদ্দের ভরণপোষণ আর
সংস্কৃত-শিক্ষার সাহায্যে চলে না। সংস্কৃত-শিক্ষার্থী যেন
আজ সমাজের বৃকে অভিশাপ-স্বরূপ। শত অকার্য্যের স্থানে
স্থ্য অকার্য্য করিয়াও তাঁহাদের গ্রাসাচ্ছাদনের কোনও
উপার করিতে পারিতেছেন না।

সমাক আৰু শত ঝঞ্চাবাতে বিপৰ্যান্ত। অভাব-উৎপীড়ন আৰু সাৰ্বাঞ্চনীন হইতে বসিয়াছে। দীনতা-হীনতা-সঙ্কীৰ্ণতা ইহাকে চারিদিক হইতে আক্রমণ করিয়াছে। সন্মুখে পণ নাই—কোনও উপায় নাই।

সত্য কথা—পরের প্রতি চাহিয়া থাকার দিন চলিয়া গিয়াছে, এ-কথা উজ্জ্বল সন্ত্য যে—

> সর্বাং পরবশং ছঃখং সর্বামান্তবশং ফুখং।

আজিকার দিনে সংস্কৃত-শিক্ষার্থী ছাত্রদিগকে এমন ভাবে শিক্ষা দিতে হইবে যেন তাহাদিগকে সমাজের গলগ্রহ হইয়া জীবিকার জন্ত পরের মারস্থ না-হইতে হয়।

অবশ্য আয়ুর্কেদশান্ত্র অধ্যয়ন করিয়া জীবিকা অর্জ্জন অনেকে করিতেছেন। ঐত্তপ হোমিওপ্যাথি প্রভৃতি বিদেশীয় চিকিৎসা-বিদ্যা ভারতীয় ভাষার সাহায্যে শিক্ষা করিয়াও ঐ সকল বৃত্তি অবলম্বন করা ঘাইতে পারে। বর্তুমান সময়ে ব্রাদ্যণের বৈদ্যবৃত্তিগ্রহণ সমাজের কাছে আর হেয় নছে। া সংস্কৃত শিক্ষা করিলেই অল্লের জন্ত ধনীর দ্বারে স্তাবক সাক্রিয়া দাঁড়াইতে হইবে ইহার কোনও মানে নাই। সংস্কৃত শিক্ষা করিয়াও বিভিন্ন অর্থকর অগ্রান্ত বৃত্তি অবশ্যন করা যাইতে পারে। পুর্ত্ত, স্থাপত্য, শিল্পবিছা, বাণিজ্য প্রভৃতি যে কেবল ইংরেজীনবীশদিগের ক্ষন্তই ধোলা আছে তাহা সংস্কৃতজ্ঞ ছাত্রগণকেও পূর্ত্তবিদ্যা, স্থপতিবিদ্যা শিক্ষা করিতে হইবে। এ-দেশে অনেক নিরক্ষর লোকও গৃহাদি নির্মাণ কার্য্যের কন্ট্রাক্টারি করিয়া অর্থ উপার্জন করিতেছেন। পণ্ডিতগণ কি সে কার্যোরও অমুপযুক্ত? ছবি আঁকিতে শেখাও তাঁহাদের উচিত। চিত্রবিদ্যাতেও অৰ্থ আছে।

আমরা হিন্দ্। নিষ্ঠা আমাদের রক্তের সহিত মিশিরা আছে। শাস্ত্র আমাদের শিথিতেই হইবে। কিন্তু মনে হয় ঐ সঙ্গে আর একটি অর্থকরী বিদ্যাও আমাদের শিক্ষা করা উচিত। তাহা হইলে শাস্ত্র ও সংসার উভরেরই একসঙ্গে সেবা করিয়া জীবন-আহবে জয়ন্ত্রী মণ্ডিত হওরা যাইতে পারে।

শানি ভ্রুভোগী। দেই জন্ত সমস্তাম্বরণ এই প্রবন্ধটি সমাজের ছারে পেশ করিলাম। হয়ত, বর্ত্তমান শিক্ষা— সামাজিক আবৃহাওয়া— আমাদের চালচলন ইহার বিপরীত পথেই উদ্দাম বেগে ছুটিয়া চলিয়াছে, তবু মনে হয়— আন্তরিক আগ্রহ, মধুর সহামুভ্তি—পরম্পারের প্রীতির আদান-প্রদান হয়ত এ-পথকে জয়য়ুক্ত করিয়া তুলিতে পারে। এ-সম্বন্ধে প্রদাম বিদ্যাওলী, সামাজিকবর্গের অভিমত ভানিতে ইচ্ছা করি। কিন্তু কি জানি কাহার যেন উদান্ত মুরে ধ্বনিত হইতেছে— নান্তঃ পছাঃ বিদ্যাতহয়নায়'।

চিরস্তনী

গ্রীপারুল দেবী

এলাহাবাদেই বিয়ে। বরপক্ষীয়েরা প্রথমে আপত্তি হলেছিলেন যে ঢাকা থেকে এলাহাবাদে আসবার স্থবিধা হয়ে উঠ্বে না, বড়জোর কলিকাতা অবধি যাওয়া যোত পারে। বর্ষাত্রীরা কেউ কেউ রাগ ক'রে বললেন, যদি যেতেই হয়্ন এলাহাবাদে, ত বর একাই যাক্—একরাত্রি নিমন্ত্রণ থাবার ক্স্ত এতটা কই স্বীকার ক'রে তাঁরা কেউ যাবেন না। কিন্তু শেষ-অবধি আপত্তি টিকল না। পর্যটি জ্বন বর্ষাত্রীর রেলভাড়া ইত্যাদির ধরচের টাকা এবং বিনর্বচনপূর্ণ সাদর নিমন্ত্রণ-পত্র পাঠিয়ে দিয়ে ক্সাপক্ষীয়েরা সে আপত্তি থওঁন করলেন।

ত্ই পুৰুষ থেকে এলাহাবাদেই বাস—বাংলা দেশ এঁদের কাছে প্রায় বিদেশ হয়ে এসেছে। বাড়ির প্রথম মেরেটির বিয়ে—কোথার অজানা অচেনা কলিকাতার যাবেন, কারই বা সাহায্য সেথানে নেবেন—কনের বাপ-মা ভেবেই দিশাহারা। যা হোক, পথধরচ ইত্যাদি বাবদে মোটা টাকা হাতে পেয়ে বরপকীয়েরঃ যধন এলাহাবাদেই আসতে রাজী হলেন, কন্তাপকীয়েরা সকলে হাফ ছেড়ে বাঁচলেন।

বসত-বাড়িতে এত লোক কুলোবে না ব'লে পাশেই আর একটা বাড়ি কিছুদিনের জন্ত ভাড়া নেওরা হয়েছিল, কিন্তু ভাতেও এখন আঁটছে না। পরমান্ত্রীয়, আত্মীয় এবং অনান্ত্রীয়ের ভিড়ে বাড়ি গিস্গিস্ করছে। কোলাহলের বিরাম নেই। "ও ছোট বৌ, ছেলে যে কেঁলে সারা হ'ল, ভোল্ না ভাই," "ওরে, হেমাকে ডাক্ না পুরুত-মশাইকে জলখাবারটা খাওরাক কাছে বসে," "ছোটদা, এতকণ ছিলে কোথার? বাও না বাইরে জ্যাঠামশাইরের কাছে একবার—বকুনি থাবে" ইত্যানি মেরেদের কলরবে এবং ছেলেদের "ওরে আন, ওরে ডাক্, ওরে ভোল্" ইত্যানি হাঁকাহাঁকি ডাকা-ডাকিডে বাড়ি একেবারে সরগরম। সকলেরই কাজ আলানা, প্রয়োজন বিভিন্ন এবং সকলেই সব গোলমাল ছাপিরে নিজের দরকারী কথাটি অপরকে শুনিরে দিতে চার। একটি ঘরে চারি পালে বিছানার স্তুপ এবং কাপড়-চোপড়ের স্তুপের মধ্যে একটি বল্প-হারমোনিয়ামের সাহাব্যে সঙ্গীত-চর্চা করছিল। ওরই মধ্যে অপেক্ষাকৃত বড় বরসের একটি ছেলে প্রাণপণ চেঁচিয়ে গান ধরেছিল "ধনি গোকুলচন্দ্র একে লা এল, স্বি গো।" যথাসম্ভব মুখ ব্যানান ক'রে এবং গলার জোরে স্থরের ক্রটি চেকে নেবার চেষ্টার অভাব ছিল না এবং অন্ত ছেলেগুলি নিজেরাও অল্পবিস্তর হা ক'রে গারকের মুধের দিকে তাকিয়েছিল, এমন সম্বের কক্ষণা ঘরে চুকল।

কন্ধণার চাবি হারিয়েছে। তারই বাক্সে কনের নৃতন বাজুবছ আছে, একটু পরেই কনে সাজাতে হবে, গন্ধনাটা চাই, কিন্তু চাবি পাওয়া যাছে না। কন্ধণা ঘরে প্রবেশ করতেই 'সবি গো'র বিকট টান এক মূহুর্ত্তে থেমে গেল। কন্ধণা বললে, "ওরে, বাপ্রে, এই গরমে গলা ফাটিয়ে আর ভূল স্থরে কীর্ত্তন গাস নে বাবা—থাম্ সব। কান গেল। একেই ত গোলমালে বাড়িতে টেঁকা দার হয়েছে। তেরে ওই ছেলেরা, লক্ষী বাবা সব—আমার চাবিটা খুঁজে দে না! পরসা পাবে যে আমার চাবি খুঁজে দেবে—চার আনা পরসা। সেই যে লম্বা চক্চকে চেনে-বাধা চাবির গোছা—একটা মন্ত লখা লোহার সিল্কের চাবি ঝোলান আছে তাতে—মনে নেই, সেই যে রে, ভামু, ভূই যে আমার চাবি কাল নিয়েছিলি আমার বাল্প খুলতে, মনে নেই আবার কেন? দরকারের সময়ে বৃধি ভূলে গেলি? নে, নে, থোঁজ সর, পরসা পাবি খুঁজে দিলে।"

ছেলেরা লোহার সিন্দুকের লখা চাবি ঝোলান ঝক্রকে চেনে বাধা চাবির গোছা এই বিরেবাড়িতে বে কতগুলো দেখেছে তা গুণে উঠতে পারলে না—ঠিক কোন্ চাবিটা বে তাদের খুঁজে বার করতে হবে তাও ব্রলে না; কিন্তু এ-সব ভুচ্ছ কারণে তাদের খোঁজা আটকাল না। কে

প্রথমে খুঁজে পাবে এবং খুঁজতে পারলে চার আনা পয়সার আধিপতি হরে সে প্রথমে সেই পয়সায় কি করবে, তারই ঘোর গবেষণা করতে করতে কেউ থাটের তলায়, কেউ কাপড়ের আলনায়, কেউ থোলা বাল্লের মধ্যে চাবি খুঁজতে লেগে গেল। কিছুক্ষণের মধ্যেই কাপড়ে-চোপড়ে জিনিয়-পত্রে ঘরের গোছান দ্বিনিষ সব হারিয়ে গেল, কিন্তু হারনে চাবির সন্ধান পাওয়া গেল ন।।

ভাঁড়ার-বরের সামনের চওড়া বারান্দায় সারি সারি বঁট পড়েছে, এক তারই পাশে পাশে বস্তা বস্তা আলু, ঝুড়ি ঝুড়ি বেশুন এবং রাশীকৃত পটল রয়েছে। অল্পরয়দী মেয়েরা এদিকে কেউ ঘেঁষে নি; এখানে কনের মাসী পিসী খুড়ী জ্যেঠার দল। কালিয়ার আলু কোটার সঙ্গে সঙ্গে সকলের মুখে কথারও বিরাম নেই। বিরাম্প-পিদী বলছিলেন, "তুমি আর বোক না মেজ বৌ, রেণুর বয়েস আর আমি জানি নে ? তোমার যথন বিয়ে হ'ল, তথন তোমার ঐ ভাইঝি ত" মেজে থেকে হাত-দেড়েক উচুতে শৃন্তে হাত রেথে মেরেটিং উচ্চতার পরিমাপ দেখিয়ে বলংশন, "এই এত বড় মেয়েটি। আমার ইন্দু ত তথন মোটে মাস-আস্টেকের মেয়ে। তা হ'লেই হিসেব ক'রে দেখ না রেণুর বয়েদ কত হ'ল—ইন্দুর চেয়ে অস্ততঃ চার-পাঁচ বছরের বড় হ'ল কি না। তোমার দাদা মেয়ের বিয়ে না-দিয়ে আইবুড় ক'রে রেখেছেন বলেই ত আর মেয়ের বয়েসটিও তাই থেমে থাকবে না। আমার ইন্ (र इ-ছেলের মা इ'न।"

নেজবৌ ব'ললে, "না ঠাকুরঝি, রেণু ত আমার বিয়ের সময়ে অতবড় নেয়ে ছিল না। ও ত তথন হাঁটতেই পারত না। ও ইন্দুর চেয়ে মাস-করেকের বড় যদি হয়। এই ত মোটে সতেরোম্ন পা দিয়েছে।"

সই-মা বললেন, "তোমাদের ভাই কেমন বরেদ ভাঁড়ান শ্বভাব। রেণুর দতেরো যে কোন্ কালে পেরিয়েছ—এখন আবার নভুন ক'রে সে দতেরোর পা দেবে কেমন করে লা ? এই আমি দেদিনই হিসেব ক'রে দেখছিলুম বে আমার সুরমার চেরে, রেণু তবে গিরে ঐ ইন্দু, সকলেই বড়। সেই আমার শাঙ্ডী যে বছর মারা গেলেন, সেই বছরেই সুরমা হ'ল কি না—ভাই হিসেবে ত ভুল হবার জো নেই। স্বাই বললে, আমার শাঙ্ডীই আমার মেরে হরে জন্ম নিয়েছেন: নারা কাটাতে পারেন নি। আহা এমন শান্তড়ী কিছ কারুর হর না ভাই, এমন মাহ্ম আফকালকার দিনে আর পাবে না, তা আমি তোমাদের বলছি। কিন্তু আমি হাজার হোক ছেলেমানুষ ছিলুম ত, ও-সব কথা শুলে ভয়েই মরি।... তা সে ঘাই হোক, তা হ'লেই হিসেব ক'রে দেখ না যে কার কত ব্যেস। ইন্দু, রেণু, স্থরমা স্বাই ত ছোটবেলার একসঙ্গে খেলা করেছে। ব্য়েসে ছোট ছিল ব'লে স্থরমাটা কেবল মার খেরে মরত সকলের কাছে, মনে নেই? আমার কাছে স্বারই ব্য়েসের হিসেব পাবে, ভূল হ্বার ছো নেই।"

পাশের বাডির বৌটি এলাহাবাদেরই এলাহাবাদেরই বৌ-ও হয়েছে। উজ্জ্বল ভামবর্ণ রং, দোহার। গড়নটি, পাতশা ঠোঁট হুখানিতে চাপা হাসিটি লেগেই আছে। ্যোটি এতক্ষণ চুপ ক'রে ব'দে আলু কুটছিল, এত ক্ষণ কুট্নো শেষ ক'রে বাল্তির জলে হাত ধুতে ধুতে হাসিমুথে বললে, "কি জানি দিদি, আমি ত নিজের মেয়েদেরই বয়েসের হিসেব রাথতে পারি নে, তা আবার পরের মেয়ের। কি ক'রে তোমরা এত মনে রাথ কি জানি! আমার বড় মেয়েট এই বছর ম্যাট্রিক দিয়েছে; আমার যতদুর হিদেব তাতে ত তার এই আষাঢ় মাসে ষোল ভরল। কিন্তু সেদিন ঐ म्थू ब्बिलिय वर्षो अस्य व'ल शिलन स्थ अत नाकि अकून ভরে গেছে। ও-বাড়ির বড় পিসীমাও বলেন যে, আমার মেরের বরেদ না-কি তাঁর কাছে লেখা অবধি আছে-এই তেইশে পড়ল। ভনে ভনে ভাই ঘুলিয়ে যায় সত্যিকারের বয়েসটা কি--- একুশ, না তেইশ, না যোল। তাই নিজে আর হিসেব করবার চেষ্টাও তেমন করি নে—ভাবি পাড়ার পাঁচ জনে যথন সে কাজটা করছেন, আমি আর নাই ক্রলাম।"

কথাটার প্রচ্ছন্ন খোঁটা বিরাজ-পিসী কতটা ব্যবেদন তা ঠিক বলা বান্ধ না; তবে এট্টুকু স্পাইই ব্যবেদন যে কথাটা ঠিক সোজা ভাবে বলা হয় নি, একটু গোল আছে। কি উত্তর দেবেন ভাবছেন, এমন সময়ে সইমা খন্-খন ক'রে ব'লে উঠলেন, "তা ভাই—নিজেদের মেন্বের ব্যেসটি কমিন্নে কমিন্নে বল যে ভোমরা—কাভেই পরকে হিসেব রাখতে হয়। নাহ'লে কার আরু কি মাধাব্যথা বল না? এই দেখ না দীলা—এ যে ঐ হরিনাথবাব্র মেজছেলের বৌ গো, জাঁকে যার মাটিতে পা পড়ে না, অথচ কিসের যে এত জাঁক তা ত জানি নে—এ দীলা আজ তিন বছর থেকে ব'লে আসছে যে ওর মেজমেরে সরয্র চৌদ্দ বছর বরেস। কাজেই না ব'লে থাকতে পারি নে। তবে তোমরা হ'লে লেখাপড়া-জানা মেরে, পাসটাশ করেছ, তোমাদের হিসেবই বোধ করি আলাদা। আমরা মুখ্যু মানুষ, অত ত জানি নে, যেটা চোবে দেখি সেইটেই বলি।"

মেজবৌ হেসে উঠল। বললে, "রাগ করছেন কেন সই-দি? সব মেয়েরই ত একদিন চৌদ্দ বছর বয়েদ হয়, একদিন বোলও হয়, আবার একদিন সে তেইশেও পড়ে—কেউ ত কোনটা ডিঙিয়েও য়য় না, কোনখানে থেমেও থাকে না। আমার ভাইঝি রেণুর তেইশ হ'লে য়ি আপনারা সব খূলী হন ত বেশ ত, তাই না, হয় হ'ল। আমার ত তাতে কিছু আপত্তি নেই।" বলতে বলতে বঁটিছেড়ে উঠে মেজবৌ পাশের বাড়ির বৌটিকে উদ্দেশ ক'রে বললে, "ও কি ভাই, চলে য়াছ বয়? বলেছি না ধোকার জত্তে মিষ্টি রেখেছি, না নিয়ে মেও না? আজ মিষ্টি না পাঠালে খোকা যে তার মাসীকে খেয়ে ফেলবে। এয়, সরা সাজিয়ে ভাঁড়ারে রেখেছি, দিই গে। যা মাছি এখানে, থাবার জিনিষ কি বার করবার জো আছে?"

মেশ্বরো বোটকে নিয়ে ভাড়ারের উদ্দেশে চলে গেল। বিরাশ্ব-পিসী কিছু ক্ষণ তাদের দিকে চেয়ে থেকে ভার পর এদিকে মুখখানা ফিরিয়ে বললেন, "মেজবৌর কথা শুনলে? আমরা বেন সব মিথ্যেবাদী! কেন সই মন্দ কথাটা কি বলেছে? চোদ্দ বছরের মেয়ে কি সভ্যি চিরকাল থ'রে চোদ্দই থাকবে নাকি? সভ্যি কথাটা মুখের ওপর বলতে গেলেই আর সে কথা মিটি লাগে না, অমনি রাগ হয়ে ওঠে সব। নিজেরাও সব খুকী সেকে আছেন—ধাড়ি ধাড়ি মেয়েদেরও সব খুকী ক'রে রেখেছেন, লজ্জাও করে না! ঐ দেব না মেজবৌকে—বাল্ল একেবারে রং-বেরঙের জ্ঞামা-কাপড়ে ঠাসা—বেন পরবার বয়েস এখনও আছে আর কি। জিজ্ঞেস কর গে না—বলবে এখন ওরও এই ভেইশ ভরেছে।"

সই-মা বললেন, "ঠিক বলেছ ভাই। বরেস কমান হয়েছে

আজকালকার এক ফ্যাশান। ঐ রেণুর ব্য়েসের কথার মেজবৌ অমন রাগ ক'রে উঠল বটে, কিন্তু বিফ্নী পিঠে গুরিরে বেড়ালে কি হবে? কম-সম ক'রে ধরলেও ওর ব্য়েস চবিবশ-পাচিশ হবে। হবে না ভাই প্রভা?"

প্রভা ঘা**ড়** নেড়ে সম্মতি জানালে এবং নিস্তারিণীর দিকে তাকিয়ে বললে, "তা হবে। হবে না নিস্তার-দিদি ?"

নিস্তার-দিশিও ঘাড় নেড়ে জানালেন যে তাঁরও সেইরকম মনে হয়—যদিও তিনি এই মাত্র তিন মাস হ'ল ছাপরা থেকে বায়ুপরিবর্ত্তনের জন্ত এলাহাবাদে ননদিনীর নিকট এসেছেন এবং এই তিন মাসের মধ্যে বার-ছ্ইয়ের বেণী রেণুকে চোথে দেখেন নি।

সর্ব্যদমতিক্রেমে যথন স্থির হ'ল যে রেণুর সভের বছর বয়স সতের বছর আগে পেরিমে গেছে, তথন সকলে হাউচিত্তে যথাকর্ত্তব্য সম্পাদন ক'রে বঁটি ছেড়ে অন্ত কাজে গেলেন।

ক'নে নমিতার ঘরে আরও ভিড়। কুমারী এবং বিবাহিতা, বালিকা এবং কিশোরীর দল ক'নেকৈ বিরে ব'সে আছে। অত্যন্ত সাধারণ নমিতা যেন আজ অকস্মাৎ এক বিশ্বয়কর বস্তু হয়ে উঠেছে, কেউ আর তার মুখ হ'তে একদণ্ড দৃষ্টি নামাতে চায় না। ক'নের মা গৌরাঙ্গিনী বায় খুলে কন্তার বিবাহসজ্জার উপকরণ বার ক'রে কয়ণার হাতে দিচ্ছিলেন—সে-ই কনে সাজাবে। শুধু কপালে চন্দন পরাবার নৃতন পদ্ধতিটা তার ভাল জানা নেই—মেমবৌ এসে পরিয়ে দিয়ে যাবে। গহনায়, কাপড়ে কয়ণার শাড়ীয় আঁচল ভরে উঠ্ল—গহনার ছোট-বড় নানা রকম বায়গুলি সে থাটের উপর সাজিয়ে রাখতে রাখতে বললে, "বাকা, যা রোগা মেয়ে, এত গয়নার বোঝা বইতে পারলে হয়।"

সারাদিনের উপবাসে ক্লান্ত দেহ—তার ওপর একমাত্র মেরেটির আসন্ধ বিরহ-বেদনায় মারের চিন্ত উদ্ভান্ত হয়ে গেছে, কোনও কাজে মন লাগছে না। ইচ্ছা হচ্ছে সব সরিয়ে নিভৃতে মেয়ের কাছে একটু বসেন—তাকে কোলে বসিয়ে মাতৃহদয়ের সমস্ত স্নেহ দিয়ে আশীর্কাদ করেন; তার নবগৃহযাত্রা-পথকে স্নেহ-অভিষিক্ত ক'রে দেন। যে তারই একমাত্র আপনার খন ছিল, সে আজ পরের গৃহে পর হ'তে চলেছে। সেই বিদারের আরোজন করতে করতে মারের তৃই চোথে অঞ্জর আর বিরাম নেই। সকলের নিকট হ'তে আপনাকে তিনি লুকিয়ে বেড়াচ্ছেন—বার-বার নিজেকে বোঝাচ্ছেন যে আজ মঞ্চলের দিনে চোথের জল ফেলতে নেই—কিন্তু মন মানে না।

যা-কিছু বাজে গোছান ছিল, সব বার ক'রে করণার হাতে দিয়ে মা বললেন, "ওরে, ঘরে যে বড় ভিড় হয়েছে মা। বে যে তোরা ক'নে সাজাবি, তারাই শুধু ঘরে থাক্—আর সকলকে বল্ যে ক'নে সাজান হয়ে গেলে পরে তখন এসে দেখবে। উপোস ক'রে এই গরমে আর লোকের ভিড়ে মেয়েটার মুথ শুকিয়ে কি হয়ে উঠেছে!"

কঞ্চণা হেসে বললে, "মাসীমা কেবলই মেয়ের মৃথ শুকনো দেখছ—কোথার বাপু তোমার মেয়ের শুকনো মৃথ? এখন তোমাকে দেখে ওর চোথ ছলছলিয়ে এল—না হ'লে এতক্ষণ ত কত হাসি-তামাশা করছিল আমাদের সঙ্গে। তুমি যাও না নিজের কাজে—শুক্নো মুথে হাসি কুটতে দেরি লাগবে না। তোমার মুখধানা যা হয়েছে, ও দেখে আমাদেরই কালা পাচেছ, তা ওর ত পাবেই। তুমি যাও এ-ঘর থেকে।"

গৌরাঙ্গিনী মেয়েদের ভিড় ঠেলে নমিতার কাছে এসে বসলেন। আঁচল দিয়ে তার মুখটি মুছিয়ে দিয়ে জিজ্ঞাসা করলেন, "থাবি কিছু?" মায়ের স্নেহস্পর্শে নমিতার চোথে জ্বল ভরে এল, সে কথা বলতে পারলে না, ঘাড় নেড়ে জানালে যে সে কিছু খেতে চায় না। মায়ের বুকে কায়ার ঢেউ কণ্ঠ অবধি ঠেলে এল, ভিনি তাড়াভাড়ি ঘর ছেডে চলে গেলেন।

পাশের ঘরে করুণার মা অর্থাৎ গৌরাজিনীর দিদি ব'সে কনের বাক্সে কাপড় গোছাচ্ছিলেন। গৌরাজিনী দেই ঘরে চুকতেই তিনি মুখ ভূলে বললেন, "হাারে গৌরী, ভূই কি বাজারে আর কিছু কাপড় রাখিদ নি? করেছিদ কি? এত কাপড় এই একটা বাক্সে আমি ধরাই কি ক'রে? এ বাক্স যে তুর্ব বেনারদী আর রেশমের কাপড়েই ভরে উঠ্ল—এই শান্তিপুরী, ঢাকাই, আর তাঁতের শাড়ীর গাদা আমি এখন ঢোকাই কোখা?"

গৌরা**ন্দিনী ক্লান্ত ভাবে আল**মারীর গারে ঠেস দিয়ে সে**ই**খানে মেক্লেভে বসে পড়লেন। উদাসীন ভা^{বে} বললেন, "ধা ভাল বোঝ কর দিদি, আমি আর অত ভারতে পারি নে।"

তাঁর দিদি জিজাত্মভাবে ভগিনীর দিকে তাকালেন। প্রস্থা কর'লন, "কেন রে, ভোর হ'ল কি ?"

গৌরাঙ্গিনী বিরক্ত হয়ে উত্তর দিলেন, "হবে আবার কি? মেরেটা চলল আমার ঘর ছেড়ে পরের ঘরে কোথায় কত দ্রে তার ঠিক নেই, আমার কি যে হছে মনের মধ্যে তা ত কেউ বৃশ্বতে পারছে না। ও-সব গয়নাগাঁটি কাপড়-চোপড় ঘখন স্থ্ ক'রে কিনেছিলুম তথন কিনেছিলুম, এখন আর ও-সব কিছুই ভাল লাগছে না। তুমি আমায় ও-সব কথা কিছু জিজ্ঞেস ক'রো না দিদি।"

দিদি বলদেন, "ওমা, ও কি রে? অমন ভাল জামাই হচ্ছে, কত ভাগ্যি তোর—কত আনন্দের দিন আজ, আজকে অমন মনখারাপ করতে আছে কি? তোর ঘর ছেড়ে যে ঘরে যাছে আজ সেই ঘরে চিরকাল থাকে যেন ভাই। তোর ঐ একটি মেয়ে, বড় একলা পড়বি ওকে দ্রে পাঠিয়ে, তাই কিছু কই হবে বইকি প্রথম প্রথম; কিন্তু এর পর মেয়ের হাসিম্থ দেখলে তখন আবার নিজের কই ভলে যাবি, তাও ব'লে দিলাম। তথন, দেখেছ, এই কাপড়ের রাশ থেকে আবার একখানা প্রবী শাড়ী বেরোল! না ভাই, তোমার মেয়ের কাপড় ভূমিই গোছাও এসে, আমাকে দিয়ে হবে না। আচ্ছা, এক প্রবী শাড়ীই ক'খানা কিনেছিস কি করতে বল ত ? ত

গৌরাঙ্গিনী শাড়ীর কথায় কান দিলেন না। বললেন, "হাা, মেয়ের হাসিমুখ! কেঁদে কেঁদে ত সারা হচ্ছে আজ সাত দিন থেকে! এই এখনই দেখে এলাম চোখের জলে ভাসছে। রোজ রাজিরে যা ক'রে আমাকে আঁকড়ে শুরে থাকে। কখনও একদিন আমাকে ছেড়ে দুরে থাকে নি—কি ক'রে যে সেই অত দুরে ঢাকায় গিয়ে থাকবে ভানি নে।"

মেরের বাপ অমরেক্স বরে চুকলেন। লম্বা ফরসা চহারা, রগের কাছে চুলে সামান্ত পাক ধরেছে—চশ্মী-পরা। স্থামি-স্ত্রী কাউকে দেখেই বোঝা যায় না যে এদেরই আজ জামাই আসছে।

অমরেক্স ঘরে ঢুকে বড় শ্রালিকার দিকে তাকিয়ে

বললেন, "কি দিদি, তুমি যে কাপড়ের রাশির মধ্যে ডুব দিয়েছ একেবারে! করছ কি ওগুলো নিয়ে ?"

গৌরাঞ্চিনীর দিদি হাসিমুথে বললেন, "কি করব ভাই—যা কাপড়ের রাশ কিনেছ ভোমরা—না ডুবে করি কি বল? গৌরীকে ভাই ত বলছিলুম যে এ কি কাও ভোমাদের? এ কাপড়ে যে পাঁচটা মেরের বিরে দেওরা যার, একটাকে এত দিলে সে প'রে উঠবে কত দিনে? আমি ত ভাই ভাবছিলুম যে থানকতক এই থেকে বেছে নিয়ে রেথে দিলে হয়—যাবার ত এই পূজো আসছে সামনে, তখন তথায় দিলেই হবে। ভা মেরের মা ত মেরেকে শশুরবাড়ি পাঠাবার ভাবনাতেই উতলা—ও ত কোনও কথায় কান দেয় না। তুমিই বল না, রাথব নাকি?"

অমরেক্স জিব কেটে বললেন, "সর্বনাশ! মভামত দেব আমি? কোনও দিন ওটা অভ্যেস নেই দিদি, জানই তো। সে কাজটা এই ইনিই সব সময়ে ক'রে থাকেন। ছই-এক বার মত প্রকাশ করতে গিয়ে দেখেছি যে, ঠিক যে জায়গাটিতে মত দেওয়া আমার উচিত ছিল, সেইখানেই যোরতর আপত্তি জানিয়ে ফেলেছি এবং যেখানে ঘোর আপত্তি জানান উচিত ছিল, সেই জায়গাটিতেই সম্প্রতি দিয়ে এসেছি। অবিশ্রি আমার সে-সব ভূল ইনিই আমাকে পরে চোথে আঙুল দিয়ে দেখিয়ে দিয়েছেন, না হ'লে আমি বোকা মান্ত্য, অত ব্রতে পারি নে। কাজেই ও গোল-মালের মধ্যে আমাকে আর কেন?"

গৌরাঙ্গিনীর দিদি হাসতে লাগলেন। বললেন, "ওমা, ও কি গো? শশুর হ'তে যাচ্ছ, একটা মত অবধি দেবার ক্ষমতা নেই নিজের বাড়িতে? এমন পুরুবমামূষও ত ক্ষমও দেবি নি। দেখ ত একবার গৌরী কি টাকাটাই নই করেছে! পাচথানা দামী দামী বেনারসী কিনেছে বাজ্মে দেবার—একে নই বলে না? বেনারসী পরে কোথা আক্রকালকার মেয়েরা? সে সব ছিল আমাদের কালে—তখন ত আর এত রকম-বেরক্মের শাড়ী হয় নি—ভাল শাড়ী না-হয় ঐ বেনারসী, কিন্ত এখন এত কেন? তু-খানা কিনলেই ত ঢের হ'ত।"

গৌরান্দিনী ক্লান্ত দেহে আনমারীতে ঠেন দিয়ে নিম্পৃহ

চোথে কাপড়ের রাশির দিকে চেম্নে নীরবে বসেছিলেন। এখন বললেন, "কেন আর গোলমাল করছ দিদি? মেয়েটার নাম করেই কিনেছি সব, দাও না বাপু ওকেই সব দিয়ে। ভগ্নীপতিকে এত রাখারাখির কথা জিজ্ঞেস করছ কেন? ও রেখে হবে কি ছাই? তোমার ভগ্নীপতি কি আবার একটা বৌ বিয়ে ক'রে আনবে নাকি যে তাকে ছটো বেনারসী দেবে?"

অমরেক্স বললেন, "কথার সংযোগটা দেখলে দিদি? তোমার বোন ত লঞ্জিক পড়েন নি—কিন্তু হটি সম্পূর্ণ বিভিন্ন কথাকে একটি স্ত্র দিন্নে যুক্ত ক'রে দেখাবার কি অন্তর ক্ষমতা দেখলে একবার ? আশ্বর্য !"

গৌরাঙ্গিনীর দিদি হেসে উঠে দাড়ালেন। বললেন, ''ওর এখন মন খারাপ হয়ে রয়েছে ভাই—তুমি আর ওকে রাগিও না। ' কিন্তু হাারে গৌরী, এত মন থারাপই বা কেন বাপু তোর? বিয়ে হ'লেই মেয়ে পরের বাড়ি যাবে, এ ত বেদিন মেয়ে জয়েছে সেইদিনই জেনেছিস—আফ কি নতুন ফানলি? আর কই, নমিতার ত দিবিয় হাসিমূপ দেখে এলাম রে—কত মেয়ে কত কালাকাটি করে, তোর মেয়ে ত লক্ষী। কুণির বিয়ে হ'ল দেখিস নি? বাপ্রে, মেয়ের বিয়ে হচ্ছে না ত, বেন ধ'রে মারছে। এমনি কাণ্ড তার! ও বাপু আমার কিন্তু ভাল লাগে না, তা যাই বলিস। কয়ণাও বিয়ের সময়ে মুক্ত করেছিল অমনি কালা—ত্ই ধমক দিয়ে তথন চুপ করাই।'

গৌরান্ধিনী অপ্রাসন্ন মুথে বললেন, "আমাদের কন্ধণার একটু মান্নাই কম দিদি, তা তুমি থা-ই বল। সব মেরের কি আর সমান টান হয়? নমিতা থে দিদি 'মা' বলতে অজ্ঞান। মা থাওয়াবে, মা শোওয়াবে, মা ওর সব কাল্প ক'রে দেবে এখন অবধি, তবে মেরের হবে। আমার কেবল ভয় হয় ও খণ্ডরবাড়ি গিয়ে কাল্লাকাটি ক'রে একটা অস্থেধ না পড়ে। ছেলেমেরেরা কত মাসীর বাড়ি, পিসীর বাড়ি সধ ক'রে বেড়াতে গিয়েও ছ-চার দিন মা ছেড়ে থাকে ত? তা ও মেরে তা-ও এক দিনের জ্বন্তে কথনও যেতে চাইত না। উনি বরং কতদিন বলেছেন বে ইম্পুলের ছুটির সমল্লে যাক্ না রাচিতে, হয় ভোমার কাছে নয় ন'দির কাছে, তা কি কিছুতে যেতে চাইত? এই ত উনি

বসে—ওঁকেই জিজেস কর না। আমি কি আর মিছে বলছি ?"

দিদি বললেন, "মিছে কেন বলবি? আইবুড় মেয়ে, একটি মোটে মেয়ে — মা-অন্ত-প্রাণ ত হবারই কথা। এতে আৰু বিার কি আছে ? কিন্তু তা ব'লে যাই বলিস গোরী, মাসী-পিসীর বাড়ি আর খণ্ডরবাড়ি আমাদের বাঙালীর মেয়ের কথনও এক হয় না। মাসী-পিসীর বাড়ি লোকে ছ-দিন পাঁচ দিন বেড়াতে যায়---দে কারুর ইচ্ছে হ'ল ত গেল, না ইচ্ছে হ'ল ত না-ই গেল-কিয় খ**ভ**রঘর না ক'রে উপায় কার আছে? যা করতেই হবে জানে—বড় হয়েছে, বৃদ্ধি হয়েছে, লেখা-পড়া শিখেছে, তাতে অবুধোর মত কান্নাকাটি করবে কেন? তুই মিছে ভাবিস নে, দেখিস খণ্ডরবাড়ি গিয়ে নমিতা দিব্যি থাকবে। সবাইকেই ত দেখছি। --- আমি আর একটা বাকার জোগাড় দেখি, এতে ত আঁটল না। অমনি তুইও ওঠ, চল্ একটু সরবৎ-টরবৎ কিছু থাবি। মুগটা শুকিয়ে হয়ে গেছে।"

অমরেক্স বসে পড়েছিলেন, এখন উঠে দাঁড়িয়ে বললেন, "সবাই এ পৃথিবীতে নিজের নিজের দেখে। ইনি ভাবছেন এঁর মেয়ের কথা, তুমি ভাবছ তোমার বোনের কথা— আমার ত এখানে মাও নেই, বোনও নেই, আমার কথা আর কে ভাববে বৃদ্ ? আর এ পৃথিবীর এমনই নিয়ম ষে, ষে-হতভাগ্যের জ্বন্তে ভাববার কেউ নেই, সে নিজেও নিজের জন্তে ভাবতে ভূলে যায়। দেখনা, আমি বাইরে থেকে এসেইছিলুম ঐ সরবৎ-টরবৎ জাতীয় কিছু একটা চেয়ে থাব ব'লে-গরমে, খেটে খেটে, আর সকাল থেকে উপযুর্গেরি চারবার শুরু শুক্নো সন্দেশ গিলে উপোদ ক'রে তেন্তার আমার গলা শুকিয়ে গেছে। তা তোমাদের তুই ভগ্নীকে এখানে একত্র দেখে নিজের কণ্টের কথা ভূলেই ব'সে আছি। ভূমিও কেবল তোমার বোনের ভূঞাটাই অমুভব করলে—অপচ ধুব সম্ভব তিনি তাঁর কন্তার খণ্ডর-গৃহযাত্রারূপ মহা গোলমেলে ঘটনায় উদ্ভ্রাস্ত হয়ে তৃষ্ণা অনুভ্ব করতে ভূ**লেই** গেছেন। কিন্তু আমার বুক, গ**লা, মুখ,** চোথ সব শুকিরে উঠেছে তেষ্টার, তা তোমার চোখেও পড়ল না ! হা অদৃষ্ট !"

গৌরান্ধিনীর দিদি হেসে বললেন, "এখনও যে এক ঘণ্টাও হয় নি গো, তোমাকে সন্দেশ ফল জল সব খাইয়ে এসেছি—এর মধ্যেই আবার যে তোমার পা থেকে মাথা অবধি তেত্তায় শুকিয়ে উঠেছে তা কেমন করে জানব বল ? বাপ রে, সকাল থেকে মোটে চারবার সন্দেশ খেয়ে নির্জ্ঞলা উপোস করা—তোমার বড়ই কই হ'ল বল।"

অমরেক্ত বললেন, "অমন একটা তৃষ্ণায় ছাতি-ফাটার করণ কাহিনী শোনালাম তাতেও দরা নেই? 'পাষাণী রমণী' কবিরা কি আর সাধ ক'রে ব'লে গেছেন? সবারেরই এমনি এক একটি জনমহীনা প্রাণী ছিল আর কি! যাক্, আমারই অস্তায় হয়েছিল তোমাদের কাছে তৃষ্ণার জল চাইতে ফাসা। যাই লেখি পিসীমাদের ভাঁড়ারে, যদি কিছু পাই।"

গৌরাঙ্গিনীর দিদি বললেন, "চল, চল, আমিই দিচ্ছি, পিনীমাদের কাছে আর থেতে হবে না। আর রে গৌরী।"

গৌরাঙ্গিনী বললেন, "মেয়েটাকেও ডাক না দিদি— গাওয়াই কিছু। ক'দিন দিনে খাওয়া নেই, রাত্রে ঘুম নেই, সারা হ'ল মেয়েটা।"

"এগো তোরা, আমি নমিতাকে ডেকে আনছি" ব'লে দিদি বেরিয়ে গেলেন, সঙ্গে সঙ্গে অমরেক্স ও গৌরাঙ্গিনীও তার অনুসরণ করলেন।

আখিন মাস। পূজা এল বলে, আর দশ দিন মাত্র
বাকী আছে। নমিতাকে শ্রাবণ মাসে বিরের পরেই
তারা নিরে গেছেন, তার পর ভাল্ত মাস পড়ে যাওয়াতে
আর পাঠান হরে ওঠে নি। গৌরাঙ্গিনী থাকতে নাপেরে ভাল্ত মাসের মাথামাঝি স্বামীকে জ্বোর-জবরদন্তি
ক'রে ধ'রে সঙ্গে নিয়ে ঢাকায় গিয়ে চার দিনের জন্ত
মেয়েকে দেখে এসেছেন; তার পর ফিরে এসে দিন শুণছেন
মেয়ে কবে তাঁর কাছে আসবে। পূজার সমরই পাঠাবার
কথা। জামাইকে বেয়াইকে বার-বার ব'লে এসেছেন পূজার
সমরে জামাই মেয়ে যেন আসে তাঁর কাছে, কিছুতে যেন
অন্তথা না-হয়। নৃতন কুটম অত্যন্ত ভল্ত। ছেলের
পিতা বেছানকে আখাস দিয়েছেন ধে, তাঁর মেয়ে-জামাই

তাঁর কাছে যাবে এ আর বড় কথা কি, তিনি নিশ্চয়ই পাঠিয়ে দেবেন।

গৌরান্ধনীর এলাহাবাদের বাড়িতে ঘর অনেকগুলি।
স্বামি-স্ত্রী তৃ-জনের মাত্র সংসার—সব ঘরই খাঁ-খাঁ। করে।
তুপুরে শৃন্তগৃহে গৌরান্ধিনী একবার এঘর, একবার ওঘর
করে বেড়ান; কর্মবিহীন দীর্ঘ অবসর কাটানো হুছর হয়ে ওঠে,
কন্তাহীন অনভ্যস্ত গৃহে কোনও মতে মন বসে না।
নমিভার কাপড়ের আলমারীতে ভার পুরান কাপড়ন্ধামা
ঠাসা—বিষের ক'নের সঙ্গে পুরান কাপড় দিতে মায়ের মন
সরে নি, ভাই সবই রয়ে গেছে। সে এইবার এসে সব
আবার পরবে, ভার পর যাবার সময়ে নিয়ে যাবে। সেই
আলমারী খুলে, বার-বার ঝেড়ে কাপড়গুলি নৃতন ক'রে
শুছিয়ে রাবেন। মেয়ের কাপড়গুলি নাড়াচাড়া ক'রে
মায়ের মন তৃপ্তি পায়।

সেদিন অমরেক্র আপিস পেকে ফিরে দেখলেন যে, তাঁর
শরনগৃহ-সংস্থারকার্য্যে বাড়ির চাকরগুলা, মার মালীটা
পর্যান্ত সকলেই মূহা ব্যস্ত। ঘরের জিনিষপত্র বারান্দার
বার করা হয়েছে এবং চাকরেরা ধরাধরি ক'রে ওঘরের বড় আলমারী এ-ঘরে নিরে আসছে, বসবার ঘরের
বড় গালিচাটা এ-ঘরে টেনে এনেছে, পাতা হবে মেজেডে,
জিজ্ঞান্থ নেত্রে স্ত্রীর প্রতি তাকিয়ে তিনি বললেন, "ক'দিনই
বা আছে আর? নমিতা আসছে, প্রথমবার জামাই আসছে,
ভাল শোবার ঘরটা না-ছেড়ে দিলে কপনও হয়? আমরা
ভৌ পশ্চিমের দিকের ঘরটার শোব ক'দিন।"

অমরেক্স বললেন, "সে ত এখনও দশ দিন দেরি গো।
আর আসে কিনা তাই দেখো আগে। কই, এখন অবধি
ত ওরা নিশ্চর আসছে ব'লে কোনও খবরই পাই নি।
তুমি এতও পার সত্যি! কোণায় কি তার ঠিক নেই,
তার জত্যে এই জিনিষপত্র নাড়ানাড়ি করছ আজ সারাদিন
ধরে? ক্রমে ক্রমে করলেই ত হ'ত, এত তাড়াতাড়ি কি ?"

গৌরাঙ্গিনী স্থামীর কণায় অপ্রসন্ন হয়ে বললেন, "তাড়া আবার কোথার করলাম? তোমাদের সেই শেষ মিনিটেতে সব না করলেই অমনি তার নাম হয়ে যায় তাড়াতাড়ি করা। ঘরদোর গোছাব, ঝাড়াব, জিনিষপত্র ঠিক করাব—শেষের ছ-দিন ত আমার ওদিকের থাবার-দাবান্ধ করতেই যাবে, তথন কি আর এসব দিক দেখবার সময় পাব? আমাকে ত আবার সব দিক একাই দেখতে। হয় কি না—তোমাকে দিয়ে ত এতটুকু সাহায্য কোনও দিকে পাবার জো নেই। নমি আবার বার-বার বলে দিয়েছে—মা, যদি যাই ত তুমি নিশ্চয় ষ্টেশনে নিতে এস। মাকে দেখবার জন্তে তার প্রাণ যা করছে তা আমিই জানি। এসেই যদি উেশনে আমাকে না-দেখতে পায় ত কি অনর্থ করবে দেখো তখন। এই দেবী সিং, ও আয়নাটা কোথায় রাথছিস? ব'লে দিলুম না যে ওটা এই পূব্মুখো রাথবি? সর্ সর্, আমিই টেনে আনছি। তোরা ত সব সময়ে উল্টোটি ক'রে আমার কাজ বাড়াতেই আছিস কিনা।"

অমরে ল এদিক-ওদিক তাকিয়ে বললেন, "এ-ঘর ত তোমার মেরের ঘর হয়ে গেল দেখিছি—আমার বোধ হয় প্রবেশ নিষেধ? আচ্ছা, পশ্চিমের ঘরটাই ওদের দিলে দোষ হ'ত কি ? দেটা ত আমার মনে হয় এর চেয়ে ভালই ঘর— আর এত নাড়াচাড়ি ক'রে হাঙ্গামও করতে হ'ত না। তা যাক্, যা করছ তা কর, কিন্তু আমি এখন স্নান-টান করি কোথা? স্নানের ঘরটাও আজ থেকে আমার বাবহার বন্ধ নাকি?"

গৌরাঙ্গিনী বললেন, "এ স্নানের ধরটা ওদেরই দিলুম। তোমার জত্যে ঐ পশ্চিমের গোসল্থানাটা ঠিক করিয়ে দেব—এই যাচিছ এখনই। এই আনলায় নমির সেমিজ-টেমিজগুলো বার ক'রে রেখেই চল যাচিছ ওদিকে তোমার সব বাবস্থা করিয়ে দেব।"

ইংরেজী গানের একটা শিষ দিতে দিতে অমরেক্স নিজের নৃতন শোবার ঘরের উদ্দেশে চলে গেলেন। কিন্তু একটু পরেই দে গর থেকে চেঁচামেটি শুনতে পাওয়া গেল, "কট গো, আমার কাপড় কই, তোয়ালে কই, জল কই, সাবান কই? কিছু যে নেই এথানে। তোমার মেয়ে স্নান কররে আজ দশ দিন পরে এসে, তার কাপড় বার ক'রে সাজান হয়ে গেল, আর আমি এদিকে কি দাঁড়িয়ে থাকব নাকি ও

কিন্তু গৌরাঙ্গিনীর কাছে থেকে সাড়া পাওয়া গেল না। অমরেন্দ্র এসে আবার সেই ঘরে প্রবেশ করলেন। একখানা ডাকের চিঠি ছাতে নিয়ে গৌরাঙ্গিনী থাটের উপর বদে আছেন। অমরেক্র ভয় পেয়ে কাছে এসে স্ত্রীর হাত থেকে নিয়ে নিলেন: উদ্বিগকঠে প্রশা করলেন, চিঠিথানা "কি হয়েছে গৌরী?" বলতে বলতেই চিঠিখানার দিকে চেয়ে দেখলেন যে নমিতার লেখা। পড়লেন নমিতা লিখেছে, "গ্রীচরণেযু মা, এবার পুজার ছুটিতে আমাদের তোমাব কাছে যাবার কথা ছিল, আমার শশুরেরও ইচ্ছা যে আমরা যাই, কিন্তু উনি বলছেন যে এণাহাবাদ বড় পুরান জায়গা, **७था** ति या (मथवात हिन व्यानक वातरे (मथा राष्ट्र । পূজার ছুটিটা এবার কোনও নৃতন সায়গায় কাটাতে চান। ওঁর খুব ইচ্ছা যে আমি ওঁর সঙ্গে পুরী বেড়াতে যাই। সমুদ্র ত কথনও দেখি নি, তাই তোমরা বদি অমত না কর ত আমিও ভাবছি এবার না-হর পুরীর সমুদ্রটা দেখে আদি। শুনেছি নাকি অমন ঢেউ আর কোথাও হয় না। বড়দিনের ছুটিতে তোমাদের কাছে যাব। তোমার জত্যে বড় মন কেমন করে; বাবার কথাও সব সময়ে মনে হয়। আমার প্রণাম জেনো। ইতি ভোমার নমিতা।"

অমরেক্স স্ত্রীর মুথের দিকে তাকালেন। গৌরাদিনী চোথের জল সামলাইতেছিলেন।



প্রবাসী প্রেস, কলিক'ড়া

নহানানা প্রোধন ভাননাগোপাল দাসগুপ

ছোটনাগপুরে সাহিত্যসেবার উপাদান

শ্রীশরৎ চন্দ্র রায়

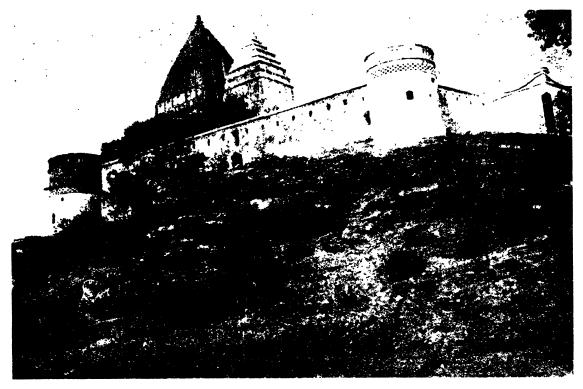
২ ঐতিহাসিক যুগ

প্রাগৈতিহাসিক যুগের কণা ছাড়িয়া এইবার ঐতিহাসিক াগর প্রেক্ত:ব্র আ**লে**!চনা করিব। স্প্রেথাম সামবা চেটনাগপুরের অর্থাবংশসমূত জৈনদের প্রভাবেব িছু নিদর্শন পাই। মানভূম দেলায় তেলকুপী, াড়া, দল্মা প্রাভৃতি গ্রামে অনেকগুলি জৈনন্তি গাওয়া খ্যা; তাহাদের কতক অট্ট এনং কতক ভগ্ন। বাঁচি জেলাতে ও মান জুমে বে সরাক নামে জ্ঞাতি এখনও বুলুমান তাহারা জৈন **প্রোবক'দেরই বংশ**ধর। বাঁচি ভেলার এক গামে একটি নথ জৈনমূর্তি ভথাবস্থায় পাইয়াছি। হাজারি-বাগ জেলার পরেশনাথ পাছাড়ে দ্বৈন-ভীর্থন্ধর পারেশনাথ ত্র্যা ও সিদ্ধিলাভ করিয়াছিলেন; ইহা বহুকাল হইতে জৈনদের একটি প্রধান তীর্থস্থান। সিংহতুম জেলায় বেণদাগর লামে বেণদাগর নামে যে বান বাদীখিকা আছে ্রাহার তীরে প্রভূতক-বিভাগের ভূতপূর্ন্ন স্পারি ঐণ্ডেন্ট বেংলার (Beglar) সাহেব একটি জৈননুর্ভি পাইয়াছিলেন ; তিনি এখানে একটি প্রস্তরমূর্ত্তির পাইয়াছিলেন—তাহা ৈন কি বৌদ্ধ ঠিক নির্ণয় করা যায় না।

বৌদ্ধ প্রচারকগণ যে বর্তমান মানান্ত্রম জেলায় আগমন করিয়াছিলেন তাহার প্রমাণ আরও সন্তোয়জনক; সেখানে করেকটি গ্রানে কতকগুলি সমগ্র বৌদ্ধমূর্ত্তিও আনেক বৌদ্ধ তির ভগ্নবিশ্য পাওয়া নায়; তাহ দের মধ্যে একটি গ্রামের মিই বৃদ্ধপুর। গ্রাষ্ট্রীয় সপ্তম শভান্দীতে বৌদ্ধ পরিরাজক ইউএন সাঙ্ যে কিরণপুরর্ণ (Kio-lo-na Sufa-la-na) পদেশ পরিভ্রমণ করিয়াছিলেন পুরণ্রেখা নদীর উপত্যকা শনভূম জেলা তাহারই অন্তর্গত ছিল, কানিংহাম এরপ শিন্দান করেন; কিন্তু এ-বিন্য়ে তাঁহার পরবর্ত্তী বিশেষজ্ঞগণ মত প্রকাশ করিয়াছেন।

চোটনাগপুরের ওঁরাও জাতি বে 'ধ্র্মে' বা ধ্যাদেবতার পূজা করে, ভগবানের সেই নাম সম্ভবতঃ বৌদ্ধদের নিকট হইতে গৃহীত। তবে ওঁরাওরা বিহার হইতে রোহটাস্ পাহাড়ের পথ দিয়া মুণ্ডাদের জনেক পরে পালামৌ হট্যা রাঁচি জেলায় আগমন করে। সম্ভবতঃ বিহার হইতে এট 'ধ্র্মে' নামটি আফ্রিছাছল। পালামৌ শহরের জনভিদ্রে চেরো রাজাদেব বে পুরাতন কেলা দেগা যায়, তাহার পূর্মে-তোরণে একটি বৃদ্ধান্ত ছিল। ঐ চেরো রাজারাও রোহটাস্গড়ের পথে ভোটনাগপুরে আসে।

ভোটনাগপুরের সঙ্গে পুরাকাল হইতে বাহিরের যোগ ছিল, এ-সম্বন্ধে কিছু কিছু প্রমাণ পাওয়া বায়। তামলিপ্তি বন্দর (আধুনিক তমগুক) হুইতে মন্তরভান রাজ্যের বামনগাটি ত্রীয়া সিংহভূম ভেলার পোড়াহাট পর্যাও বাণিজ্যের রাস্তা ছিল। পোড়াহাট প্রগণা র'াচি জেলার সংলগ। ঐ বামনবাটি গ্রামে অনেকগুলি অর্ণমুদ্রা পাওয়া গিয়াছিল; তাহার মধ্যে কয়েকটি মদা কলটানটাইন, গণ্ডিয়ান প্রভৃতি রোমান স্থাটদের স্ময়ের। চাইবাসার করেক মাইল দক্ষিণে গুলফা গ্রামে এক হাড়ি পরাতন তানমুদা পাওয়া নায়, কশান-মুদ্রা (Indo-Scythian)-—ভারতীয় সেগুলি প্রক্রতন্ত্র-বিভাগের কার্যাবিবরণীর ক্রয়েদশ পভে এরপ নির্দ্দেশ করা হইয়াছে। গাস্তায় দ্বিতীয় শতান্দীতে কুশান-স্মাট ভবিদ্ধ ও কনিদেব সময় ছোটনাগপুরের সঙ্গে উত্তর-ভারতের যে আদান-প্রদান চলিত, তাহার আরও প্রমাণ র'াচি জেলায় ভাপে কুশান-রাজাদের মুদ্রা। র'চি জেলায় ত্বিপের একটি স্বর্ণমুদ্রা পাইয়াছিলাম, তাহা এখন পাটনার গুড়িগরে আছে এবং আরও কয়েকটি ইম্পিরিয়াল কুশান-মুদ্রা গ্রামা বালকবালিকার গলায় কবঃম্বরূপ পরিহিত দেখিরাছি---উদ্ধার করিতে পারি নাই। সবগুলিই মটি



জগন্নাথ-মন্দির, রাঁচি

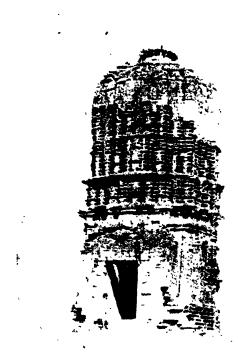
্লাযুত বিভূতিভূষণ মিলের সৌজক্তে

থনন করিতে গিয়া পাওয়া যায়। কুশান-স্নাটদের মুদ্রার অন্তর্মপ যে মুদ্রাগুলি "পুরী কুশান মুদ্রা" নামে অভিহিত হয় তাহার অনেকগুলি রুঁ।চি জেলায় পাওয়া গিয়ছে। এই শ্রেণীর কয়েকটি মুদ্রা প্রথমে ১৮৫৮ ঐটান্দে গঞ্জাম জেলায় পাওয়া যায় এবং ঐ সনের Mulrus Journal of Literature and Science-এ সেগুলির বিবরণ আছে। তার পর ১৮৯৩ ঐটান্দে পুরী জেলায় ৫৪৮টি ঐরপ মুদ্রা পাওয়া য়য়; ১৮৯৫ ঐটান্দে পুরী জেলায় ৫৪৮টি ঐরপ মুদ্রা পাওয়া য়য়; ১৮৯৫ ঐটান্দে ডাঃ হর্ণলী (Dr. Hoernle) Proceedings of the Asiatic Societyতে সেগুলির সম্বন্ধে যে প্রবন্ধ লেখেন তাহাতে প্রথমে উহাদের "পুরী কুশান-মুদ্রা" এইরপ নামকরণ করেন। এই শ্রেণীর মুদ্রা কুশান-রাজাদের সমসাময়িক বা তাহাদের অব্যবহিত পরবর্ত্তী—কোন কোন প্রথমে অনুষ্কাপ অনুষ্কাণ করিয়াছেন। অধ্যাপক র্যাপদন্ (Indian Coins, pp. 13-14) এই পুরী কুশান-মুদ্রা-গুলির কাল গীয়য় তিন শতান্ধীর মধ্যে, এবং ভিনদেট

এ স্মিথ হতীয় বা চতুর্থ শতাক্ষীর—এরপ স্থির করিয়াছেন।
১৯১৭ প্রীষ্টান্দের গাঁচি জেলায় প্রাপ্ত একটি পুরী কুশানমুদ্রা-পৃ:
৪ থোদিত 'টফা' শক্টি দেখিয়া স্বর্গীয় রাখালদাস
বন্দ্যোপাধাায় উহাকে ষত্ত শতাক্ষীর বা সপ্তম শতাক্ষীয়
প্রথমার্দ্ধের, এইরপ অনুমান করিয়াছিলেন। কিন্তু আমি
প্রোয় এক শত পুরী কুশান-মুদ্রা রাঁচি জেলায় পাইয়াছিলাম :
তাহার কোনটিতে কোনও লেখা নাই; কেবল কুশানদের
স্তায় রাজপরিচ্ছদপরিহিত মূর্জি আছে। পরবর্তী গুপ্তসন্রাটদের, কিংবা পাল-বংশ বা সেন-বংশ অথবা অন্ত কোন
হিন্দ্রাজবংশের মুদ্রা অন্ততঃ রাঁচি জেলায় এ-পর্যান্ত পাওয়া
যায় নাই। তার পর কোন কোন মুসল্মান বাদশাহেব
মুদ্রা মধ্যে এথানে পাওয়া যায়। আর বিশেষত
কোনপ্রের শাকী (Sharqui) রাজাদের অনেকগুলি মুদ্রা
এখানে পাওয়া গিয়াছে। তাহাদের সঙ্গে ছোটনাগপ্রের
কিন্নপ নোগ ছিল ইতিহাসে ঠিক পাওয়া যায় না।

তবে ইতিহাস-পাঠে জানা যায় বে, দিল্লী-সুমাট মুবারক শাহের প্রধান মন্ত্রী মশিক সর্বার ১৩৯৪ খ্রীষ্টাব্দে "মুল্ডান-উষ-শার্ক" (পুর্বাদেশের রাজা) উপাধি অবলম্বন করিয়া স্থাটকে অবজ্ঞা করিয়া জৌনপুরে স্বাধীন রাজ্য স্থাপন করেন এবং পশ্চিমে অযোধা হইতে কোইল পর্যান্ত এবং পূর্বের ত্রিহত ও মগধ পর্যান্ত আপন রাজ্য বিস্তার করেন। ঐ বংশের তৃতীয় রাজা শামপুদীন ইব্র'হিম বঙ্গদেশ আক্রমণ করেন এবং বঙ্গভূপতির প্রধান সামস্ভ রাজা ংণেশের পুত্র জয়মল্লকে মুদলমানধর্মে দীক্ষিত করেন, কিন্তু দিলীখারের দৈলদল জৌনপুর আক্রমণ করিতে আসিতেছেন এই সংবাদ পাইয়া স্বরাজ্যে প্রত্যাগমন করেন। ইব্রাহিমের পৌত্র হুসেন উড়িয়া আক্রমণ করেন ও উড়িয়ার রাজার নিকট হ'ইতে বহু অর্থ আদায় করিয়া স্বরজ্যে প্রত্যাগমন করেন। কিন্তু পরে স্মাট বুহ্নুল লোদী কর্ত্তক স্বরাজ্য হইতে বিতাড়িত হইয়া বঙ্গদেশে পলায়ন করেন ও শামস্দ্দীন ইউ হফ শাহের আশ্রেরে ১৫০০ খ্রীষ্টাব্দ প্রান্ত বাস করেন। যদিও শাকী-রাজাদের ছোটনাগপুর-অধিকারের কোনও উল্লেখ পাওয়া দায় না, তথাপি মনে হয় বঙ্গদেশে এবং উড়িধ্যা-অভিযান উপলক্ষে ছোটনাগপুরে শার্কী-রাজাদের প্রভাব বিস্তার হইয়াছিল। তৎপূর্বে ১৩১০ গ্রীষ্টান্দে সমাট কিরোজ শাহ উড়িয়া-অভিযান হইতে প্রত্যাগমনকালীন ঝাড়থণ্ড বা ছোটনাগণুরের পথে আসিয়াছিলেন এবং তাঁহার দৈতদল পথ হারাইয়া ছয় মাস কাল ছোটনাগপুরের ক্ষ**েল** ঘুরিয়া বেড়ায়।

শের শাহের সময় হইতে ছোটনাগপুরের জলদের হাতী ও শভা নদীর হীরা মুসলমান রাজাদের দৃষ্টি আকর্ষণ করে। ১৫৮৫ গ্রীষ্টাব্দে স্মাট আকরর শাহের প্রেরিত দৈন্তদল ছোটনাগপুরের তৎকালীন নাগবংশী রাজাকে পরাস্ত করে। আর ঐ রাজা মোগল স্মাটকে বাৎসরিক কর দিতে স্বীকৃত হন। তথন রাজাদের রাজধানী ছিল বর্তুমান ধূথ্রা পরগণাস্থ ধূথ্রা গ্রামে। সেই জন্ত এই প্রেদেশ শোগল স্মাটের সরকারে 'খোথ্রা' নামে অভিহিত হয়। 'আইন-ই-আকর্মী'তে দেখিতে পাই, 'খোথ্রা' প্রাদেশ শোগল-সামাজ্যে "মোথেরাজি" তালুক রূপে সামাজ্য ভুক্ত হয়। গাড়উইন সাহেব উাছার 'আইন-ই-আক্র্য়ী'র



পাড়াগ্রামে পাণরে নির্মিত দেউল

অনুবাদে এবং Grant's Fifth Report of the Revenues of the Last India Companyes 'মোথেরাজি' শব্দের অনুবাদ করা হইয়াছে 'unattached' অর্থাৎ অসংলগ্ন। থোগ্রার রাজা স্বেচ্ছায় বোধ হয় এই কর কথনও দেন নাই: মধ্যে মধ্যে ফৌজ প্রেরণ করিয়া এই কর আদায় করা হইত এবং ১৬১৬ গ্রীষ্টাব্দে ছোটনাগগুর বা থোখুরার রাজা হুক্তন শাল বন্দী হইয়া গোয়ালিয়র-চূর্গে কারারুদ্ধ হন ও বাৎসরিক ছয় সহস্র টাকা কর দিবার কডারে কারামুক্ত হন। তিনি স্বরাজ্যে ফিরিয়া কিছু দিন পরে পোখরা হইতে ডোএদা নগরে রাজধানী স্থান।স্তরিত করেন। কথিত আছে, গোয়ালিয়র-হুর্গে অবস্থানকালে খোণ্রার রাজা ঝুটা হীরা ও আসল হীরার প্রভেদ দেখাইয়া দিয়া বাদশাহকে খুনা করেন এবং তাঁহার অনুরোধে তাঁহার क्ष्मकृष्टि मह-यन्त्री हिन्द्राक्षां कात्रामुक इन । शद्र के হিন্দুরাজগণ রাজা গুর্জন শালের সঙ্গে সাক্ষাৎকারমানসে নাগবংশী-রাজার রাজধানীতে রাজার অনুপ্যোগী সামাত



রামগড়ে বিশ্পুরা চঙের পঞ্রত্ব-মন্দির

বাজবাদী দেখিয়া বিশ্বিত হন ও খাদেশে ফিরিয়া গিয়া নিপুণ বাজমিপ্রী প্রাকৃতি কারিগর প্রেরণ করেন এবং তাহারাই দোগদা নগরের 'নৌরতন' (নব-রত্ব) নামক রাজপ্রাসাদ নির্মাণ করে। আর ঐ সময় হইতে সভ্য প্রেদেশের হিন্দ্ রাজাদের সংস্পর্শে আদিয়া ছোটনাগপুরের নাগবংশী রাজারাও রাজোচিত আড়ম্বর ও পদমর্যাদা রক্ষার জন্ত বিহার ও মধ্যপ্রাদেশ হইতে হিন্দু আমলা সিপাহী প্রভৃতি আমদানী করেন। সেই অবধি বর্তমান রাঁচি জেলায় হিন্দু সভ্যতার প্রচলন দম্বরমত আরম্ভ হয়। অবশ্র ছোটনাগপুরের সীমান্ত-স্থানগুলিতে—বেমন বঙ্গভাষাভাষী মান্ত্ম জেলা বেং মিশ্রিত বঙ্গ ও উড়িয়াভাষী ধলত্ম প্রগণায়—হিন্দু সভ্যতার প্রচলন বহু পূর্ব্ব হইতেই ছিল।

ছোটনাগপুরের মালভূমিতে হিলুধন্মের বিস্তার সম্বন্ধে জানা যায় যে, বোড়শ শতাব্দীর প্রথমান্ধে চৈতক্তদেব পুরীধাম হইতে মথুরা যাইবার পথে ঝাড়খণ্ডে আগমন করিয়াছিলেন ও দেখানকার আদিম অধিবাসীদের মধ্যে ইংশনাম প্রচার করিয়াছিলেন। ছোটনাগপুর ঝাড়খণ্ডের

অস্ত ভূপ্ত ছিল এরপ অসুমিত হয়। পুরীধাম হইতে ভারতের উত্তর-পশ্চিম প্রদেশে যাইবার পুরাতন রাস্তা র*াচি জেলার বৃঞ্ ও তামাড় পরগণার মধা দিয়া বিস্তৃত ছিল; এখনও স্থানে স্থানে সে-রাস্তার নিদর্শন পাওয়া যায়। স্থানীয় প্রবাদ এই যে বুঞু গ্রামের



বোড়েয়ার দন্দিরে ''নবগুঞ্জর"

নিকট চৈতন্তদেব বিশ্রাম করিয়াছিলেন; বস্থতঃ বৃত্ত্ ও তামাড় পরগণায়, এমন কি অসভ্য মৃত্যাদের মধ্যেও, বৈষ্ণব ধর্মের প্রভাব এখনও দেখা যায়। নিকটবর্ত্তী সিরি, শোণপুর প্রভৃতি অন্তান্ত পরগণায় মৃত্যাদের মধ্যেও মৃত্যা ভাষায় রাধাক্কফের সঙ্গীতের প্রচলন আছে। এমন কি বিবাহের "সিন্দুরদান" শেষ হইলে মৃত্যারা 'রাধে' 'রাধে' ধ্বনি করে, কিন্তু অর্থ জিপ্তানা করিলে বলে ইহার অর্থ 'আড়ান্সিটু ভূজানা' অর্থাৎ 'বিবাহক্রিয়া সমাপ্ত হইল'। এই সমস্ত দেখিয়া মনে হয় যে চৈতন্তচরিতামৃতে এই প্রদেশের সম্বন্ধেই বলা হইয়াছে যে—

মথুরা ধাবার ছলে আসি ঝংরিপণ্ড, [ভিন্ন প্রায় লোক তাহে পরম পাষগু], নামপ্রেম বিয়া কৈল সবার নিস্তার চৈতক্তের গৃঢ় লীলা বুবে সাধ্য কার ? ঝারিপতে স্থাবর জঙ্গম ছিল যত কুণ্ণনাম দিয়া কৈল প্রেমেতে উন্মন্ত, যেই শ্রাম দিয়া ধান হাঁহা করেন স্থিতি দে সব শ্রামের লোকের হয় প্রেমভক্তি।

মুণ্ডাদের মধ্যে রাধা-ক্ষের বে-সব গান প্রচলিত আছে এবং বুড়, সিলি প্রভৃতি 'পাঁচ পরগণা''র কুড্মী প্রভৃতি জাতির মধ্যে রাধাক্ষণবিষয়ক যে বাংলা রুমুর গাঁত শোনা নায়, সেপ্তলি এই বৈষ্ণব ধর্ম প্রচারের ফল। এথানকার

অদভা জাতিদের মধো যে 'ভক্ত' বা 'ভকত' সম্প্রদায় আছে, তাহাও অজ্ঞাত গঠিত रेवकव-खक्रामञ প্রভাবে হইয়াছে। ছোটনাগপুরের পূর্বভাগে নেমন বাংলা দেশের গৌডীয় বৈফব শশ্রদায়ের মত প্রচলিত, তেমনি মধ্য ও পশ্চিম ভাগে রামানন্দী সম্প্রদায়ের মতের প্রাহ্রভাব দেখা যায়। ভোরাগুার নদীর মধ্যে যে মইটি আছে উহা द!मान**न**ी গোডীয় मञ्जलस्यात । े्रकः द्वत्र চৈতন্ত্রদেবকে শ্রীক্রফের গ্রতার মনে করেন : কিন্তু রামাননীরা শাস্ত্রের অবতার ভিন্ন অক্ত

চক্যাঙ্গক অবতার বলিয়া স্বীকার করেন না; ভৈতভাদে**ব প্রভৃতিকে কেবল** প্রমভক্ত আচার্য্য বলিয়াই মানেন। গৌড়ীয় বৈষ্ণবেরা জ্রীকৃষ্ণকে প্রথম স্থান দেন : রামানন্দীরা রামচক্রকে প্রথম স্থান দেন। চোটনাগপুরের দক্ষিণ ভাগে ধলভূম পরগণায় যে বৈষ্ণব মত প্রচ**লিত তাহাও গৌড়ীয় বৈষ্ণব মত।** কিন্তু উড়িয়া ्शो ज़ीय देवस्वदानत मासा छूटे नन ट्रेशां छ । अभिकमः थाक বৈষ্ণব শ্রীকৃষ্ণকে প্রথম স্থান দেন আর প্রথমে বলেন, "रत कृष्ण रत कृष्ण, कृष्ण कृष्ण रत रत," जात এक पण ামানন্দীদের মত রামনামকেই প্রথম স্থান দেন এবং প্রথমে रानन, "हात त्रांभ हात त्रांभ, त्रांभ त्रांभ हात हात ।" धहे (भंध শ্রেণীর বৈষ্ণবদের নাম হইয়াছে 'অতিবড়ি' বা 'অতি-বড়ু সম্প্রদায়।

গ্রীষ্টায় পঞ্চনশ শতাব্দীতে জোলাবংশসস্থৃত কবীর যে উত্তর-পশ্চিম প্রদেশ হইতে যে ভিক্তবোগ ধর্ম প্রচার করেন, মধ্যপ্রদেশ হইতে তাহা গত ভোএসা নগরে রাজপ্রাসাদ

শতাকীর প্রথম ভাগে ছোটনাগপুরের ওঁরাওদের মধ্যে প্রচারিত হয় এবং কতকগুলি ওঁরাও-পরিবার এই ধ্রেদ্ম দীক্ষিত হয়; এমন কি কয়েকটি ওঁরাও-ভক্ত এখন কবারপদ্ধী-গুরুর কাজও করেন। গত শতাক্ষী হইতে ছোটনাগপুরের আদিম নিবাসীদের মধ্যে গ্রীষ্টধন্মের প্রচার আরম্ভ হয়। ১৮৪৫ গিষ্টাক্ষে জাম্মান পাদ্রীরা আসেন, ১৮৬৯ ঞীষ্টাক্ষে হংরেজ য়্যাংলিকান পাদ্রীরা আসেন, এবং ১৮৭৪ গ্রীষ্টাক্ষে



বডাডিহি গ্রামের একট প্রাচ্যন চিবি

রোমান ক্যাথলিক পাদ্রীরা চাইবাসায় প্রথম প্রচার আরম্ভ করেন। ধর্ম্মবিস্তারের সঙ্গে সঙ্গে ধ্যুমন্দিরাদি নির্মাণ ও ধর্মগ্রন্থের প্রচার ও আলোচনার প্রবর্তন দেখিতে পাওয়া ধায়।

ছোটনাগপুর ষোড়শ শতাকী হইতে অটাদশ শতাকী
পর্যান্ত নামমাত্র মোগল-সানাজাত্তক থাকিলেও এথানে
মুসলমান সভ্যতার বা ধন্মের প্রভাব পরিলক্ষিত হয় নাই।
কেবল মুসলমান দৈগুদের ও তাহাদের অক্চরদের মধ্যে
কতকগুলি মুসলমান ছোটনাগপুর হইতে গিয়াছিল ও
সম্ভবতঃ নিয়প্রেণীর স্থানীয় লোকদের মধ্যে কোন কোন
পরিবারকে মুসলমান ধর্মে দীক্ষিত করিয়াছিল। ইছাদেরই
সংমিশ্রণে রাঁচি জেলায় বর্তমান নিয়প্রেণীর জোলা প্রভৃতি
মুসলমানের উত্তব হইয়াছে। নাগ-বংশীয় রাজা হর্জন শাল
উত্তর-পশ্চিম প্রদেশ হইতে যে রাজমিন্ত্রী প্রভৃতি দ্বারা
ভোএসা নগরে রাজপ্রাসাদ নিশ্নাণ করান তাহারাও



বুড়াড়িতি আমে আবিগত পুরাতন প্রস্তঃ-মন্দির

সম্ভবতঃ পরে এই প্রাদেশেই এবস্থান করে। ডোএসার 'নওরতন' প্রাস্ত্র বাদিও থানিকটা মুসলমানী প্রাথার সেখানকার পরবর্ত্তী মন্দিরাদি হইয়াছিল, হিন্দু প্রাথায় নির্দ্ধিত। ভোএদা নগরে জগরাথ-মন্দিরের যে ভগাবশেষ আছে তাহার খোদিত লিপি হইতে জানা যায় নে, ১৭৩৯ সমতে অর্থাৎ ১৬৩৮ গাঁষ্টাব্দে রাজগুরু হরিনাথ ব্রদাচারী উহা নির্মাণ করান। আর দেখানকার কণিলনাথ-দেবের মন্দিরের খে!দিত লিপি হইতে জানা যায় যে, সে মন্দির ১৭৬৮ সম্বতে অর্থাৎ ১৭১১ গ্রীষ্টাব্দে নির্দ্ধিত হয়। তথাকার বোধীমঠ, পঞ্মঠ ও মহাদেবের মন্দিরে কোন লিপি পাওয়া যায় না। র'াচির ছয় মাইল উত্তরে বোড়েয়া গ্রামে বে মদনমোহনের মন্দির আছে তালতে থোদিত লিপি হইতে জানা নায় নে, ১৭২২ সন্থতে অর্থাৎ গ্রাষ্টাব্দে তাহার নির্মাণকার্যা আরম্ভ হয় এবং ১৭৩৯ সম্বতে কর্থাৎ ১৬৮২ গ্রীষ্টাবেদ সম্পূর্ণ হয়। হিন্দু রাজমিস্বী অনিক্দ্ধ ইহার নিশ্বাতা এবং নিশ্বাণ-বায় টাকা। ঐ মন্দিরের একটি এক কপাটের থাপে (panel এ) কাঠের উপর একটি "নব-গুঞ্জর" মূর্ত্তি থোদিত আছে।* উড়িষারে বাহিরে আর কোণাও এই মূর্ত্তি দেখা বার না।

হিন্দুর নিকটস্থ জগল্লাথপুর পাহাড়ের উপরে জগল্লাথ* শীমান নির্মান্তনার বহু এই মুর্স্তিটি প্রথম লক্ষ্য করেন।

দেবের মন্দির ১৭৪৮ সম্বতে অর্থাৎ ১৬৯১ গ্রীষ্টাব্দে "ঠাকুর"-উপাধিধারী জমিদার আইনিসাহি নিশ্মাণ করান। এই মন্দির অনেকটা পুরীর ভগন্নাথ-মন্দিরের অনুকরণে নিশ্মিত।

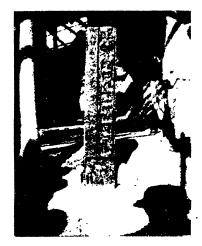
এই থোদিত দিপিশুলি ছাড়া হুইএকটি দীর্ঘিকা, ইদারা ও ক্পের
থননকাল ও থনন-কর্তার নামের
স্মারক-চিহ্নস্করপ শিলালিপি দেখা
যায়; উদাহরণ-স্করপ তিল্সি গ্রামের
অকবর নামক নাগবংশী 'ঠাকুর'
উপাধিধারী ভ্মিদারের ছারা ১৭৯৪
সম্বতে (অর্থাৎ ১৭৩৭ গ্রীষ্টাব্দে)

প্রতিষ্ঠিত কৃপ বা ইদাবার উল্লেখ করা বাইতে পারে। হাজারীবাগ ছেলায় রামগড় থানায় কতকণ্ডলি হিন্দুমন্দিরের ভগাবশেষ আছে। তাহার কোনটিই সপ্তদশ বা অষ্টাদশ শতাব্দীর পূর্ব্বেকার বলিয়া মনে হয় না। উহাদের মধ্যে রাজরোপ্লায় ছিন্নমন্তার মন্দির প্রসিদ্ধ।

পূর্বকালে হিন্দ্ রাজারা থেরপে তামশাসন ছারা গ্রাম ও ভূমি দান করিতেন, ছোটনাগপুরে গত শতাকীর মধাভাগ পর্যান্ত ঐরপ পিতলের পাটা দেওয়ার প্রচলন ছিল। আমি ঐরপ একটি পিতলের পাটা সংগ্রহ করিয়াছি; তাহার উপর সম্বং ১৯.. (১৮.. গ্রাষ্টাব্দ) এই তারিব আছে।

রাঁচি জেলায় পুরাতন মন্দিরাদি যাহা উল্লেথ করিয়াছি তাহার একটিও প্রীষ্টায় যোড়শ বা সপ্তদশ শতাব্দীর পূর্বেকার বলিয়া মনে হয় না। কিন্তু ছইটি বৃট-পরা স্থ্যমূর্ত্তি পাইয়াছি, তাহা হয়ত অপেক্ষাক্ত পুরাতন। উহাদের মধ্যে বড়টি পাটনার সরকারী যাহ্বরে রক্ষিত আছে। মানভূম জেলায় আরও অনেক আগেকার পুরাতন মন্দিরাদি আছে। কয়েক বৎসর হইল রাঁচি-পুর্কলিয়া রেল-লাইনের গড়জয়পুর উেশনের এক মাইল দুরে বোড়াম প্রামে বৈ মন্দিরের ভগাবশেষ ও প্রস্তরমূর্ত্তি প্রভৃতি পাওয়া গিয়াছে, তাহাতে কয়েকটি স্কলর মূর্ত্তি লোগা বায়। সেগুলি মধ্যযুগের। রাঁচি জেলার বুড়াডিছি প্রামের নিয়ন্থ নদীর অপর তীরে কয়েকটি পুরাতন দেউলের ধ্বংদাবশেষ ও







ঃ। বুড়াডিহি গ্রামে প্রাথ দেবা-মূর্ত্তি । বুড়াডিহিতে প্রাথ থোনি ১ প্রস্তারের চৌকাট

ু । বুড়াড়িহি গামে প্রাপ্ত একটি লিঙ্গ-মূর্ত্তি

পুরাতন দেবদেবীর মূর্ত্তি পাওয়া গিয়াছে, তাহাও সম্ভবতঃ বোড়ামের মূর্ত্তিগুলির সমসাময়িক। ইহার প্রধান মন্দিরটি পুরীর জগন্ধাদেবের মন্দিরের অনুকরণে নির্দ্ধিত।

পালামৌ জেলার ডালটনগঞ্জ শহরের অদ্ববর্তী জঙ্গলে 'তেরো' রাজাদের সে কেলা আছে তাহার গঠন প্রণালীরে হটাস্গড় ও শেরগড়ের অনুরূপ; মোগল সামাজ্যের প্রথম দিকের বলিয়া মনে হয়। সিংহভূম কেলার দক্ষিণ-পূর্ব কোণে বেণুদাগরের উল্লেথ পূর্ব্বেই করিয়াছি, সেধানকার পুরাকালের ধ্বংসাবংশযের মধ্যে যে পুরাতন প্রস্তব্ব মুর্জিণ্ডলি—শিবকালী, মহিযামুরী দেবী, গণেশ প্রভৃতি—একটি প্রস্তরের হন্তিমুর্জি বেগলার সাহেব পাইয়াছিলেন, সেগুলি তিনি গ্রীষ্টায় সপ্তম শতাব্দীর বলিয়া স্থির করিয়াছেন। কয়েক বৎসর হইল বেণ্সাগর হইতে আরও কতকগুলি স্বন্দর দেবদেবীর মুর্জি পাওয়া গিয়াছে, সেগুলি পাটনার যাহবরে রক্ষিত আছে।

মন্দির-নির্দ্ধাণ ও দেবমন্দির-গঠন ছাড়া ধর্ম্মের অভ্যুথান ও সমৃদ্ধির আর একটি নিদর্শন ধর্ম্মগ্রন্থের প্রচার। রাচি জেলার বুণ্ডু পরগণা পাঁচপরগণার বৈষ্ণবদের কেন্দ্রস্থল। গৌড়ীয় বৈষ্ণবদের সংখ্যা অধিক; তবে রামানন্দী বৈষ্ণবণ্ড আছে। বুণ্ডু পরগণায় দূত্র গবেষণা উপলক্ষ্যে অবস্থান-কালে আমি কয়েকখানি হস্তলিখিত পুঁথি সংগ্রহ করিয়াছিল।ম। এণ্ডলি প্রায় সুবই ধর্মগ্রন্থ; সুবই বাংলা অক্ষরে লেখা। ইহার মশ্যে চারিথানির ভাষা বাংলা, যোলথানির ভাষা সংস্কৃত এবং পাঁচথানি উড়িয়া অক্ষরে লেখা। এই পাঁচথানি উড়িয়া পুঞ্চ কর মধ্যে ছুইথানির ভাষা সংস্কৃত ও তিন্থানি উড়িয়া।

প্রথম বাংলা পুঁথিখানির নাম 'তথ্বিলাস'। ইহাতে পদ্যে রাধারুফ-তত্ত্বকথ; বলা হইরাছে। গ্রন্থক গ্রার নাম বৃন্ধাবনদাস। তারিখ দেওয়া নাই। গ্রন্থের প্রারম্ভে গৌরাঙ্গদেব ও তাঁহার ভক্তদের বন্দনা ভাছে; বিশেষ করিয়া গৌরাঙ্গ-পার্যদ গদাধর পণ্ডিতের বন্দনা করা হইয়াছে; তাহাতে মনে হয় গ্রন্থকার গদাধর পণ্ডিতের শিব্য-পরিবার ছিলেন। গ্রন্থের শেখে লিখিয়াছেন:—

"বৃন্দাবন নাম কহে তও্তবিলাম। শুনিলে ধমের দুও নাহি আলে পাশ।"

বিতীয় বাংলা পুঁথি কবিচন্দের 'এক্সনরায়বার'।
নকলের তারিথ ৭ই আ্যাচ দন ১২০৬ দাল; অর্থাৎ
এ পুঁথি ১৩৫ বংদর আংগের লেখা। তৃতীয় বাংলা পুঁথি
রামায়ণেব অর্ণ্যকাণ্ড। কৃতিবাদের রামায়ণের দক্ষে ভাষায়
কিছু প্রভেদ আছে। শেষে লেখক ও তারিখের বিবরণ
এইরপ:—

''ইতি সন ১২৽া সাল পা নাগপুর, তঃ বারনা, মৌ পাঙাভি, ২ংশে ভাদ্র, কৃষণপথ সপমা, লিপিতঃ ¶বিজৈরাম মঙল।"

চতুর্থ বাংলা পুঁথি মহাভারতের ভীত্মপর্ক। কাশীরাম-দাদের মহাভারতের সঙ্গে মেলে; লেখক জ্রীক্মলনাথ দাস,



ছিন্নমন্তার মন্দির, রাজরোপ্লা

িশাৰ্ত বিভূতিভূষণ মিৰের সৌজভে

সাং খ!স্ বুও, ১৮৯৮ সম্বৎ (= ১৮৪১ খ্রীঃ), অর্থাৎ ৯৩ বৎসর।
আন্যোকার।

বাংলা অক্ষার লেখা সংস্কৃত পুঁণিগুলির নাম-

- (১) বিন্দন্ত 'গোবিন্দনামোদর স্থোত্র';
- (২) প্রীবিষ্ণুপ্রী সংগৃহীত 'শ্রীভগবন্ধজিরত্বাবলী' (লিখিতং কুত্বপ্র মধ্যে শ্রীরামচন্দ্র সমীপে; সংবৎ ১৯৬০)
- (৩) সনৎকুমার-সংহিতায় নারদোক্ত "শ্রীরামচন্দ্র-জববান্ধতোত্র"
 - (৪) জীরামকর্ণামৃত, (৫) রামমন্ববিধিপদ্ধতিপটল,
 - (৬) গৌর অষ্টক, (৭) গীতা, দশম অধ্যায়,
 - (b) গ্রীরামানুক্তরতং "গ্রীরামপদ্ধতি" (বেদেকি)
- ৯) জ্রাত্রশ্বাদলে স্থাপ্তপ্রশংসায়াং উমামহেশ্বরদংবাদে
 রকারাদি জ্রীরামসহস্রাস্তোত । ১৯৬০ সাল ।
- (১০) ক¦মরজু (বশীকরণ-বিদ্যার বই)···(নাগরী অক্ষর)
- (১১) রকারাদি রামসহস্র নামস্তোত্ত (ত্রহ্মবামশে স্ষ্টিপ্রশংসায়াং উমামছেশ্বসংবাদে)
 - (১২) পঞ্চরাত্তোক্ত আরাধনাক্রম (ভগবানদাস্কত)
 - (১৩)⁻ পদ্মপুরাণে ভৃগুদংবাদে নারায়ণস্থতি।

(১৪) পঞ্চামৃতঃ, (১৫) হন্মান-পূজাপদ্ধতি।

রাঁচি জেলার দ ক্ষিণ ভাগে তালপত্তে উড়িয়া অক্ষরে লেখা কয়েফথানি পুঁথি ও একটি লোহের লেগনী পাই। প্রথমখানি উড়িয়া ভাষায় 'করম কণা' (অর্থাৎ করম একাদশীতে আবৃত্তি করিবার জগ্ত করম ধর্মের কাহিনী), দ্বিতীয়ধানি উডিয়া অক্ষরে লেখা শিবদাস-বির্চিত 'বেতালপঞ্চবিংশতি'। ত্তীগ্ৰানি উড়িয়া অক্ষরে লেখা সংস্কৃত দশকর্মাণি (গর্ভাধান প্রভৃতি); চতুর্থানি উড়িল অক্ষরে সংস্কৃত ভাষার নিবগ্রহ স্তব ও মন্ত্র প্রহশান্তির পদ্ধতি ও মন্ত্র

প্রভৃতি। পঞ্চমথানি উড়িয়া অক্ষরে ও উড়িয়া ভাষায় নেথা পঞ্চত্তের ও মহাভারতের কয়েকটি উপাধ্যান ও দেহত ব সম্বন্ধে কবিতা।

জৈতিহাদিক কালের প্রত্নতন্ত্র, মুর্ত্তিত্ব, থোদিত লিপিত্র ও প্রাচীনমুদাত্র সম্বান্ধ গবেনণার প্রচুর উপাদান না থাকিলেও, ভাষাত্র—বিশেষতঃ নৃত্র—সম্বন্ধে গবেনণার জন্ত ছোটনাগপুর একটি স্বিস্থৃত ও উর্পর ক্ষেত্র। ছোটনাগপুরের উত্তরে মগধ বা বিহার, দক্ষিণ-পূর্ব্বে উড়িয়াও দক্ষিণ-পশ্চিমে মধাপ্রদেশ, উত্তরে এবং পশ্চিমে ম্কুল্রাদেশ এবং পূর্বে বাংলা দেশ। এইরপ সীমান্ত প্রদেশের ভাষা বেরূপ সক্ষর বা দোআঁাস্লা হইরা থাকে এ প্রদেশের প্রচলিত সংস্কৃত্র তিনটি ভাষাই—বাংলা হিন্দী ও উড়িয়া—দেই সাক্ষ্যা দোবে ছন্ট। এই দোবে সীমান্ত দেশের ভাগা কতদ্র ছন্ট হইতে পারে ভাহার একটি চরম দৃষ্টান্ত 'করমালি' বুলি, আর একটি 'হেটগোলা' বা ধোট্টাই বাংলা।

র'নি জেলার পাঁচপরগণাব এবং মানভূম দ্বেলার কুর্দ্মি জাতি যে বিক্কত বাংলা ভাষা ব্যবহার করে তাহা ১৯০১ গীষ্টাব্দের আদমস্মারির রিপোর্টে ও তৎপূর্ব্বে বাংলা ভাষার একটি বুলি (কুরমালি বাংলা) ব্লিয়া পরিগণিত হইরা আসিরাছে। কিন্তু ১৯১১ খ্রীষ্টাব্দের আদমহ্রমারির রিপোর্টে এই 'কুরমানি' বুলিকে হিন্দী ভাষার মধ্যে পরিগণিত করা হইরাছে। গাহা হউক, এই রিপোর্টের ৩৮৮ পূর্চার স্বীকার করিতে হইরাছে যে, এই বুলিকে স্থানীয় লোকে 'খোটা বাংলা' বলে এবং ইহা বাংলা অক্ষরে লিখিত হয়।

"This patois is known as *Khotta Bengali* and is written in the Bengali character. Locally it is regarded as a corrupt form of Bengali."

ন্তার ভর্জ গ্রীয়ারদনও এই ক্রমালি ঠার বা ব্লিকে Eastern Magahi dialect বলিয়াছেন। কিন্তু তিনি ইহারে যে নমুনা দিয়াছেন তাহা হইতে বাঙালী পাঠক ইহাকে বাংলা ভাষারই অপত্রংশ বলিয়া চিনিবেন। মানভূম জেলায় কুরমালি ঠারের নমুনা এইরপ:—

"এক লকের ছটা বেটা ছালিয়া রেহেক। তারাদের মইধে ছুটু বেটাটায় অকর্ বাপকে কেহলাক্ বে বাপ্-হে হামরাকর দৌলতকর যে মঁয় হিঁসা পায়ন্ সে মকে দে। তথন তাকর বাপ্ আপন দৌলত বাঁটিকে অকর হিঁসা দেঁই দেলাক্। থড়েক দিন বাদে ছুট্ বেটা ছাওয়াটা আপন ধন দরিব লেইকে বিদেশ গেল্।" (Linguistic Survey of India, Vol. v, part II. p. 152.)

রাঁটি জেলার পাঁচপরগণায় কুরমালি ঠারের বা পাঁচ-প্রগণিয়া বুলির নমুনা এইরূপ:—

"কোনোঁ এক আদমিকের ছুইটা ছুবা রোহে। তেকর মাহনে ছোট ছুবাটা আপন বাপকে কোহলক বাপ, মোএঁ ধনকের বে হিস্দা পামু সে মোকে দেউ।" (*1bid*, p. 170)

আৰার হাজারিবাগ জেলার গোলা, কাস্মার ও রামগড় থানায় যে বাংলা বুলি প্রচালত আছে তাহা বরাবর বাংলা বুলি বলিয়াই পরিচিত : কিন্তু তাহাও ১৯১১ গ্রীষ্টাব্দের সেক্সস রিপোর্টে বিশ্বত মগাহি হিন্দী ("a corrupt form of Magahi Hindi") বলিয়া পরিগণিত হইয়াছে। এ সম্বন্ধেও ঐ রিপোর্টে স্বীকার করিতে হইয়াছে

"This patois which is called *Het Gola* contains Bengali words and phrases and locally is considered to be Bengali."

ভবে ভৎপূর্বে গ্রীয়ার্সনণ্ড ইহাকে "So-called Bengali of Hazaribagh" এই আখা দিয়া মগাহি হিন্দীর মধ্যে স্থান দেন।

এই ভাষার যে বাংলা ও মগাহি হিন্দীর মিশ্রণ হইরাছে তাহা গ্রীরার্সন প্রমন্ত নিয়লিখিত উদাহরণে বুঝা বাইবে— "এক লোকের ছু বেটা ছিল। তকরুমে ছোট বেটা আপম বাপ্সে কহলই,এ বাপ চিজকে বে বথ্রা হাম পারেব সে হামরা দেই দে। তব সে ধারকে সে দেশের এক লোকের আশ্রয় লেলক।" (Ibid, p. 163.)

১৯২১ এটাব্দের আদমস্মারির রিপোর্টে ১৯১১ সনের রিপোর্ট অনুসরণ করিয়া 'কুরমালি' বাংলা ও খোট্টা বাংলাকে হিন্দী ভাষার মধ্যে পরিগণিত করা হয়। কিন্তু সন্তবতঃ এইরূপ শ্রেণী-বিভাগের যৌজিকতা সম্বন্ধ সন্দিহান হইয়া সেন্সস স্থপারিণ্টেণ্ডেণ্ট ট্যালেণ্ট্স (Mr. Tallents) ২০৯ পূর্টার লিখিয়াছেন, "এই খোট্টা বুলি হিন্দী কি বাংলা বলা কঠিন; তবে যখন ১৯১১ সনের সেন্সসে হিন্দীর মধ্যে ধরা হইয়াছে তখন মোটের উপর এবারেও তাই করাই ভাল।"* ভাষার এইরূপ নাম-পরিবর্তনের ফলস্বরূপ এই সব স্থানের স্থলে বাংলা পাঠ্যপুস্তকের পরিবর্তে হিন্দী পড়ান হইজেছে। আবার, সিংহভূম ক্রেলার আদালতের ভাষা হিন্দী, কিন্তু দর্বান্ত ও দলিলাদি যদিও হিন্দী অক্ষরে লেখা হয় তাহার মধ্যে মধ্যে তুই চারিটি উড়িয়া অক্ষর এবং বাংলা কথা ও বাক্যসমষ্টি পাওয়া যায়।

মুণ্ডাভাষাগুলিতে বাংলা, হিন্দী ও সংস্কৃত শব্দের অনুরূপ অনেক শব্দ পাওয়া যায়। তাহার মধ্যে কতক শব্দ মুণ্ডারা কোনও প্রাকৃত বা বাংলা বা হিন্দী ভাষা হইতে গ্রহণ করিয়াছে, আবার কতক শব্দ মুণ্ডানের নিকট হইতে সংস্কৃতে বা বাংলাতে কিংবা যে প্রাকৃত হইতে বাংলা ভাষা হইয়াছে তাহাতে পুরাকালে গৃহীত হইয়াছিল বলিয়া মনে হয়। এ-সম্বন্ধে সম্যুক্ গবেষণার প্রয়োজন।

এই সব সংশ্বত ভাষা ছাড়া ছোটনাগপুরে আদিম জাতিদের অনেকগুলি ভাষা আছে। সেগুলি agglutinative, এবং সংশ্বত ও সংশ্বতজ্ব inflexional ভাষাগুলি হুইতে সম্পূর্ণ বিভিন্ন গোটার। এখানে প্রায় ২০টি বিভিন্ন জাতি আছে, তন্মধ্যে ওঁরাও জাতির ভাষা দ্রাবিড়ী শ্রেণীর অন্তর্গত এবং মুখা, হো, ভূমিজ, অন্তর, সাস্থাল, বিরহোড়, খাড়িয়া, কোড়োয়া, ভূরি প্রভৃতি জাতি মুখাশ্রেণীর ভিন্ন ভিন্ন ব্লি ব্যবহার করে। অবশিষ্ট জাতি-

^{*&}quot;It is impossible to say that Khetta is either Hindi or Bengali. As it was treated as Hindi in 1911 it was thought better on the whole to treat it as such again on the present occasion."

শুলি—যথা, ভ্^{*}ইয়া, চেরো, ধারোয়ার, পহিড়া, নাগেসিয়া, বেদেয়া প্রভৃতি—আপন আপন পূর্বপুরুষদের মুণ্ডাশ্রেণীর ভাষা বিশ্বত হইয়া স্থানীয় গাঁওয়ারী হিন্দী বা বিকৃত বাংলা বুলি বাবহার করে। মানভূমের অসভ্য থাড়িয়াদের মুধে বাংলা ভাষা বিকৃত হইয়া কিরপ রূপ ধারণ করিয়াছে ভাহার ছই-একটি দৃষ্টান্ত মানভূম জেলার থাড়িয়াদের বুলি হইতে দিভেচি।

"তুমি কোধা হইতে আসিতেছ?" ইহার খাড়িয়া বাংলা— "তুই কুধা?"

"কি এনেছ ?" ইহার খাড়িয়া বাংল৷—''কিস্ আইনে ?''

"वन्नन। शृक्षा त्रविवादत हरेदन नाकि ?" हेरात था फिन्ना वारला— "वन्नना त्रव वादत रिश्व ना करे ?"

"আনমি দোকানে বসিয়া নাড়ু কিনিতেছিলাম; আমি কিছু জানি না; আমার দোব নাই।" ইহার বাড়িয়া বাংলা এই:—"মুই দোকানে বসি নাড়ু কিনিৎগে না। মুই কিসক্ জাতু নাই। মহর দব নাই।"

সন্তবতঃ এক সময়ে মুগুণগোষ্ঠীর ভাষা ভারতবর্ষের প্রায় সর্বব্যই, অন্ততঃ উত্তর পূর্ব্ব ও পশ্চিম ভারতের অধিকাংশ ভাগে প্রচলিত ছিল, এবং অস্তান্ত ভাষার উপর প্রভাব বিস্তার করিয়াছিল। বাংলা, বিহার ও উত্তর-পশ্চিম প্রদেশের অশিক্ষিত লোকে যে কুড়ি হিদাবে গণনা করে সম্ভবতঃ সেটা মুগুণের ভাষা হইতে লওয়া। এইরূপ আরও কত রকমে আর্যাণ্ড জাবিড়ী ভাষাশুলি মুগুা ভাষার নিকট ধ্রণা, সে-সম্বন্ধে এখনও গ্রেষণার প্রয়োভন আছে।

এইবার স্তবের কণা। স্তবের আলোচা বিষয় এক কথার বলিতে গেলে—মানুষ প্রথমে কি ছিল, এখন কি হুইয়াছে, কেন ও কি রীভিতে এমন গরিবর্ত্তন হুইয়াছে এবং এই পরিবর্ত্তনের গতি মোটের উপর কোন্দিকে চলিয়াছে ?

আমরা দেখিতে পাই, পৃথিবীর বিভিন্ন দেশে যে ভিন্ন ভিন্ন শাদা, কালো, তামাটে ও পীত রঙের লম্বা, বেটে ও মাঝারী ধরণের বিভিন্ন জাতির মানুষ আছে, তাহাদের শারীরিক গঠনের যেরপ পার্থকা তেমনই জীবিকা ও পরিচ্ছদ, গৃহনিম্মাণ-প্রণালী, জাচার-ব্যবহার, নামাজিক রীতি-নীতি, ধর্মমত ও পৃজা-পদ্ধতি প্রভৃতির সেইরূপ পার্থকা বর্তমান। বিভিন্ন জাতির শারীরিক গঠনের পার্থকা সম্বন্ধে বিশেষজ্ঞরা যে-কারণ নির্দ্দেশ করেন, আমাদের সহজ বৃদ্ধিতে সেটা অন্মান করিয়া শইতে পারি। সহজ বুজিতে আমরাও বৃথি বে বিভিন্ন দেশের বিভিন্ন আবহাওয়া ও ধাল্পাদির প্রভাবে এরূপ পার্থক্য উৎপন্ন হইতে পারে। কিন্তু ভিন্ন ভিন্ন জাতিকে যে আমরা সভ্যতার বিভিন্ন স্তরে অবস্থিত দেখি, ইহার কারণ নির্ণয় করিতে হইলে সব চেয়ে নিম্ন স্তরের জাতিদের শইয়া গবেষণা আরম্ভ করিয়া, ক্রমশঃ উচ্চ হইতে উচ্চতর জাতির সভ্যতার সহিত তুলনা করা প্রয়োজন এবং তাহাদের মধ্যে প্রভেদের প্রকার ও পরিমাণ এবং তাহাদের প্রত্যেকের ইতিহাস ও পারিপার্গিক অবস্থা পর্য্যালোচনা করিয়া প্রভেদের কারণ অবেষণ করিতে হয়। ছোটনাগপুরের পার্ম্বত্য মালভূমিতে বিভিন্ন স্তরের, বিশেষতঃ নিম্নতর স্তর-শুলির, যেরূপ বহুসংখ্যক জাতি আছে, তাহা ভারতে খুব অল্প প্রদেশেই বর্ত্তমান। এই জন্ম নৃতব্বের গবেষণার ইহা একটি প্রধান ক্ষেত্র।

সভ্যতার বিভিন্ন স্তরের কাতিদের এইরূপে তুশনা করিলে ও তাহাদের সভ্যতার ইতিহাস পর্যালোচনা করিলে দেখা যায় যে, প্রথমতঃ পারিপার্থিক অবস্থার পরিবর্তনে সভাতার উন্নতি ও অবনতি হইতে পারে। বিতীয়তঃ, সভ্যতর জ্বাতির সংস্পর্শ সভ্যতার উন্নতির একটি প্রধান উপায়। ততীয়তঃ, **অ**ন্ত জাতির সঙ্গে সংস্পর্শে সকল জাতি সমান ফললাভ করিতে পারে না। বন্ধমূল পুর্ব সংস্কারের প্রভাবে ও শিক্ষার অভাবে কোন কোন জাতি সমাক ভাবে নুতন ভাব, আচার-ব্যবহার প্রভৃতি গ্রহণ করিতে অসমর্থ; আবার কোন কোন সৌভাগাবান জাতি অধিকতর উন্নত জাতির সংস্পর্শে ও সাহায্যে একেবারে তুই চারি ধাপ উপরে উঠিয়া যায়। এই সমস্ত বিবেচনা করিয়া মোটের উপর এই সিদ্ধান্ত করা যায় যে সভ্য ক্ষাতিদের স্ঞ্নে অস্ভ্য জাতিদের প্রভেদ প্রকৃতিগত নয়—কেবল শিক্ষাগত মাত্র। যে-সব জাতিকে আমরা অসভ্য বলিয়া অবহেশ৷ করি তাহারা সাধারণতঃ সভ্যতাভিমানী জাতিদের অপেক্ষা স্বাভাবিক বৃদ্ধি বা অপরাপর মনোবৃত্তিতে নিক্ট নয়; কেবল প্রতিকৃল পারিপার্থিক অবস্থার প্রভাবে বা উপযুক্ত শিক্ষা ও স্থযোগের অভাবে দেগুলির যথায়থ স্ফুরণ বা পরিমার্কন হইতে পারে নাই। এই জন্ত প্রাচীন হিন্দু শাস্ত্রকারেরা বলিয়াছেন যে, বস্ততঃ শবর কোল ভীল প্রভৃতি অসভ্য জাতিরা প্রকৃতিগত ক্ষত্রিয় জাতি : কেবল

ব্রাহ্মণ অর্থাৎ আচার্য্যের দর্শনাভাবে বুয়লত্ব বা পাতিত্য প্রাপ্ত হইয়াছে। আমরা দেখিতে পাই ইহারাও প্রকৃতির সহিত সাধামত সংগ্রাম করিয়া যতটা সম্ভব নিজেদের ধাপ ধাওয়াইয়া আবাসস্থান ও ধাদাসমস্থা প্রভাতর মোটা**মৃটি একটা সমাধান করিয়া লই**য়াছে। পারিবারিক ও দামান্দ্রিক বিধিবিধান, আইনকান্ত্রন, নীতিধর্ম প্রভৃতির উদ্ভাবন করিয়াছে, প্রয়োজনীয় অস্ত্রশস্ত্র, যন্ত্রপাতি, দাব্দশয়া, অলম্বারাদি ও অক্তাক্ত গৃহসামগ্রী ও বাদ্যযন্ত্র প্রভৃতির উদ্ভাবন করিয়াছে। বস্তুতঃ সভ্য জাতিদের অস্ত্রশস্ত্র, বাদ্য-যন্ত্রাদি, অলহার ও সাজসজ্জা, আসবাবপত্র প্রভৃতির মধ্যে অনেকশুলিই আদিম নিবাসীদের উদ্ভাবিত জিনিয়ের উন্নত ও সংস্কৃত সংস্করণ মাত্র। যে 'অসভ্য' জাতিরা ক্বযিকার্য্য অবলম্বন করিয়া অপেক্ষাকৃত সচ্ছল অবস্থা প্রাপ্ত হইয়াছে, ভাহারা জীবিকা-অর্জ্জনের ও শরীর-বক্ষার চেষ্টা অল্পবিস্তর উৎকর্ষ সাধন করিবার অবকাশ পাইয়াছে। অবসর-বিনোদনের ও জীবনের স্থুতরাং সৌকুমার্য্য সম্পাদনের জগু নুত্যগীত ও শিল্পকলার স্ষ্টি করিয়াছে। **জীবনের সম্ভা ও মৃত্যুর** পরপারের প্রহেলিকা তাহাদের মনকেও আলোড়িত করিয়াছে, ভৃতপূব্দার অসারত্ব উপলব্ধি করিয়া ধর্ম্মের ও ভগবানের চেষ্টা**তেই** প্রক্তত তত্ত্ব অমুসন্ধান করিয়াছে। এই মুণ্ডাদের মধ্যে 'বীরসা' ধর্ম্মের, ওঁরাওদের মধ্যে 'টানা ভকত' ধর্ম্মের, সাঁওতালদের মধ্যে 'দাফাহোড়' ধর্মের এবং সম্প্রতি ছোটনাগপুর ও উড়িফাায় 'হরিবাবা' ও 'হরিরাজ' ধর্ম্মের আবির্ভাব হয়, কিন্তু শিক্ষার ও পরিচালনার অভাবে অবাস্তর পথে চলিয়া গিয়া অক্বতকার্য্য হইয়াছে। এই সমস্ত বিষয়ে সভ্য জাতিদের সঙ্গে অসভ্য আদিম অধিবাসীদের প্রভেদ কেবল 'উৎকর্ষের পরিমাণে, প্রকারে নয়'।

প্রমাণস্থন্ধপ ছোটনাগপুরের অসভা মুণ্ডাদের গীতি-সাহিত্যের সামান্ত পরিচয় দিব। মুণ্ডাজাতি নিরক্ষর। তাহারা গদ্য পদ্য কিছুই লেখে না। তাহাদের মধ্যে কতিপর ভাবৃক ব্যক্তি কথনও কথনও মনের আবেগে মুখে-মুখে গান বাথে ও গার এবং তাহাদের ভাষার দৈত, সুর-ভালের অসম্পূর্ণতা ও অলহারের অভাব ভাহারা পুরণ করে গভীর ভাবের আবেগে ভালে ভালে নৃত্য করিরা। স্থনসাধারণ সেই গীতগুলিতে আপন আপন মনোভাবের প্রকাশ দেখিয়া পুলকিত হয় ও সাগ্রহে গীতগুলি আরম্ভ করে।

স্বভাবের সৌন্দর্য্য, যুবক-যুবতীর প্রেম, মিলনের স্থ্র ও বিরহের হঃধ; পার্থিব স্থথের, সৌন্দর্য্যের ও মানবজীবনের নশ্বরতা প্রভৃতি যাহা চিরকাল সর্বাদেশে কবি-হৃদয়কে ভাবের প্রবন উচ্ছাদে উচ্ছদিত করিয়াছে তাহা অসভ্য মুণ্ডা-কবিদের অদয়কেও উদ্বেশিত করে। সভ্য জাতির কবির উচ্চাঙ্গের কবিতায় যে উচ্ছাস মুখরিত হয়, সেই সব স্থৰ-ছ:থ, প্রেম ও মৃত্যু, আশা ও ভর নিরক্ষর মৃতার হারেকেও আলোড়িত করে এবং সেই ভাবের উচ্ছাস তাহারাও গানের দ্বারা ধ্বনিত করে। কিন্তু তাহাদের ভাষা ভাবের গভীরতায় তলম্পর্শ করিতে না-পারিয়া হস্তপদের বিভিন্ন ভঙ্গী বা নৃত্যের সাহায্য শইয়া থাকে। মুণ্ডাক্বি ভাবের গভীরতা প্রকাশ করিবার ব্যাকুশতায় একই ভাব নানা ছম্দে পুনরাবৃত্তি করে, **একই শব্দ বার-বার আবৃত্তি করে, আর প্রতিশব্দের** উপর প্রতিশব্দ চাপায়। আর শ্রুতিমধুর করিবার জ্বন্ত গানে শব্দের প্রথম অক্ষর ম্বরবর্ণ বা 'হ' থাকিলে তাহার আগে 'ন' জুড়িয়া দেয়, যেমন 'হাতু'র স্থানে 'নাতু', 'হুণ্ডি'র স্থলে 'মুণ্ডি', 'ওড়া'র পরিবর্ত্তে 'নোড়া' ও আরও কয়েকটি উপায় অ**বলম্বন** করে।

প্রথমে একটি প্রেমগীতি বলিতেছি। একটি মুণ্ডা যুবক তাহার ঈপ্যিত যুবতীকে বলিতেছে—

কুচা মুচা কুলুরুষ্ কুচা কোটোং তাদিকী কুলুরুষ্, কুচা কোটোং তাদিকা নাইরি। নাড়ি নাড়িন পলাঞ্ম নাড়িন্। কোটোং তাদিকা পলাঞ্নোড়িন্, কোটোং তাদিকা নাইরি। জিউরে ফুকুয়ানরে দো দোলাং সেনোয়া কুলুরু দো দোলাং সেনোয়া নাইরি। কুড়ামবারে রেড়াখানরে, মারে দে!লাং বিরিদা, পলাঞ্, মারে দোলাং বিরিদা নাইরি॥

অনুবাদ

কুন্দুক লতা যেমন বৃক্ষকে জড়িয়ে রাখে,
তুমিও তেমনি তোমার [প্রেম] ভোরে আমাকে বেধে কেলেছ :
পলাঙ্লতা যেমন বৃক্ষকে আলিজন ক'রে আঁক্ড়ে রাগে
তুমিও তেমনি আমার ক্ররকে জড়িয়ে রেপেছ ।
যথন ক্লর [এমন] আনন্দে উপলে উঠছে, হে আমার কুন্দুরুলভিংক,
চল আমরা একত্র জীবনপথে পাড়ি দিই।

প্রাণ যথন প্রেমানন্দে ভ'রে গেছে চল, পলাওুলতিকে, চল আমরা একত্তে জীবনপথের পথিক হই ।

তার পর যুবতী তার প্রেমাম্পদের জন্ত ফুলের মালা লইরা সারা দিন মাঠে মাঠে খুঁজিরা বেড়াইতেছে, মালার ফুল শুকাইরা যাইতেছে, তবু প্রেমাম্পদের সাক্ষাৎ মিলিতেছে না; তথন এইরূপে বিলাপ করিতেছে—

মোদে পিড়ি লেলেম্বে গাডিং কাম্ লেলো লেলোরা গাডিং, বারে পিড়ি লেলেম্বে গাডিং কাম্ চিনাও চিনাও। প্রন্দিবাইং গুড়ুলেদা গাডিং কাম্ নেলো লেলোরা গাডিং, বাগড়ি বা-ইং গালাকলেদা সাকাইং কাম্ চিনাও চিনাও। প্রন্দি বা-ইং গুড়ুলেদা গাডিং চারিগে গোসোরানা, বাগড়ি বা-ইং গালাং লেদা সাকাইং প্রতাম্ রেগে মরলামানা।

অনুবাদ

হে সধা, ভোমার সন্ধানে প্রথম এক ক্ষেতে গেলাম, কিন্ত পেলাম না ভোমার দেখা পেলাম না,

ষিতার কেতে গেলাম, সধা, ভবু তোমার সন্ধান মিল্লোনা সধা, মিল্লোনা।

আমি (ভোমারই জ্ঞা) গুলি ফুলের মালা গেঁথেছিলাম, ভোমার দেখা পেলাম না, স্থা, পেলাম না।

বাগড়ি ফুলের মালা পৌ. খছিলাম, সথা, কিন্তু ভোমার সাক্ষাৎ ফিল্লোনা, সধা, মিল্লোনা।

(থড়িকার উপর) ছন্দি ফুলের মালা গেঁ:থছিলাম, সথা, (হার) সে মালা খড়িকার উপরেই শুকিয়ে গেল। বাগড়ি ফুলের মালা গেঁ:খছিলাম, সথা, (হার) সে মালা স্ক্তোর

তার পর ধৌবনের নর্মরতা সম্বন্ধে অনেক গীত আছে। একটি গাঁত এইরপ :---

উপরেই স্লান হ'য়ে গেল।

[গেৰা]

সিরিজাটি নোড়ারে মা গাভিম্, পাটাগোঁড়া রোসোম রে ! বা'লেকাম্ মুড়ুক্লেনা, গাভিম; ডালি'লেকাম্ পারারলেন । বালেকাম্ মুড়ুক্লেনা, গাভিম, বালেকাম্ গোসোরান্ ডালিলেকাম্ পারারলেনা, সালাইং ডালিলেকাম্ মইলায়ান । ওতে লোলেভেচি, গাভিম্, সিরিমা জেটেতে ? বালেকাম্ গোসোরানা গাভিম্, ডালিলেকাম্ মরলায়ান্ । ওতে লোলোভেও কা'গে; সিরিমা-জেটেভেও কা'গে; সোমার সেনোভানা, গাভিম্, নোসাড় বিরিদ্ভান্ ।

অনুবাদ

ছিটে বেড়ার মর থেকে, সধি, ছিটে বেড়ার মর থেকে ; তুমি ফুলের মত দীবিতে বেরিয়ে আসতে, সধি, বেরুতে ময়ুর-ঝুটির মত শোভাতে।

ভথন (প্রক্ষুটিত] ফুলের মত শোভার বেক্তে, স্থি, এখন (বারা) ফুলের মত গেছ শুকিরে। তথন তুমি মর্ব-বৃটির মত দাখিতে শোভা পেতে, স্থি,

এখন শুক্লো মদ্ব-ঝুটরু মত গেছো মলিন হ'লে। ভোমার ছিটে বেড়ার খর কি এত উত্তপ্ত হরেছে, সখি, যে তোমার সে সৌন্দর্য আল শুক্নো ফুলের মত শুকিরে কেলেছে?
শুক্নো মন্থুর-ঝুটর মত মলিন ক'রে কেলেছে?

(উপ্তর)

মাটির উত্তাপেও এমন হর নি, স্থা, স্থেট্র উত্তাপেও এমন হর নি, সমর চ'লে গেছে, স্থা, তাই এমন হরেছে, ঘোৰন ফুরিয়ে গেছে,—তাই এমন হরেছে;

মিলন বিরহ এবং জীবন ও যৌবনের নশ্বরতা ছাড়া, মুণ্ডাদের সঙ্গীতের প্রধান বিষয়,—রাধারুফপ্রেম, বিবাহ, মৃগ্য়া, যুদ্ধ, বর্ধায় চাধীর আনন্দ, বাদ্যের মধুর স্বরে मुखा-क्लायत चानन, धालनक्षीत मधर्कना, अथत त्रीए কিংবা অনাবৃষ্টিতে ক্বয়কের আশস্কা, অত্যাচারীর উপর ম্বণা বা রোয। একটি গানে মুগুাকবি ধান:ক 'লক্ষীরাজা' বলিয়া আহ্বান করিয়াছে ও নদী-তীরের ঠাণ্ডা হাওয়ায় শীতে 'লক্ষীরাজা' কাঁপিতেছেন মনে করিয়া সমবেদনা প্রকাশ করিতেছে। অনেক গানেই ফুলের সৌন্দর্য্যে কবি-খদয়ের আনন্দ নানা রূপে বর্ণনা করিয়াছে। কোন তুলকে উদীয়মান প্রভাতস্থর্যার সঙ্গে, কোন ফুলকে উদীয়মান চক্রের সঙ্গে, এইরূপ নানা ভাবে ফুলের শোভা ও সুগন্ধের বর্ণনা আছে। ফুলের ভিতর মুণ্ডাকবি ফুলের প্রাণ অনুভব করে ও তাহার সঙ্গে সহান্তৃতি প্রকাশ করে। শিকারীদের বল্লমের আঘাতে হুণ্ডি ফুল ও শিরাড়ী ফুল ভাঙিয়া গিয়াছে আর বাঙ্গুর ও বকাই ফুলের পাতা ছি ড়িয়া গিয়াছে কিংবা অন্ত কোন ফুল বা পাতার ফুর্দ্না ঘটিয়াছে, এই জন্ত সেই ছিন্ন ফুল ও পাতার সঙ্গে সমবেদনাজ্ঞাপক অনেকগুলি গান আছে। সেগুলি গুনিলে স্কটলণ্ডের ক্লবক-কবি বার্ণস্-এর কবিতা মনে পড়ে। মুণ্ডাগীতির আর একটি উল্লেখবোগ্য বিষয় —ছোট ছোট পাখীদের স্থ-ক্রথে কবির সহামুভূতি। মুগুাগীতি-রচয়িতা বেমন আপন ছোট ছে**লে-মে**রের স্থ্গুংথে সহান্নভূতি ও সমবেদনা গানে প্রকাশ করেন, ঠিক শেইরূপে পাখীদের মুধে মুধ, তুঃথে তুঃথ, আশকায় আশকা, গানে প্রকাশ করেন।

অসভা আদিম অধিবাসীদের শ্বদমেও যে সর্বভূতের সঙ্গে নিজের প্রাণের যোগ এবং ভগবানের যোগের উপলব্ধি হইতে পারে, ইহার প্রমাণ-স্বরূপ ওঁরাও ভকতদের একটি গীতের নমুনা দিতেছি। গীতটির প্রারম্ভ এইরপ:— মহবার গাহি জিরা, বাবা, মহবার গাহি, ভেঁস গাহি জিরা, বাবা, ভেঁস গাহি। মহবার গাহি জিরাকা, মহবার গাহি জিরা, গাই গাহি জিরা বাবা, গাই গাহি জিরা মহবার গাহি জিরাকা, মহবার গাহি জিরা; ইত্যাদি

অনুব!দ

মহিষের জীবন আর মামুষের জীবন একই জীবন। মহিষ-শাবকের জীবন আর মামুষের জীবন একই জীবন! এইরূপ গরু বাছুর—ইডাদি।

সকল ন্দীবজন্তবহঁ জীবন মনুষ্য-জীবনের অনুরূপ এই মর্ম্মে ওঁরাও ভকত প্রত্যেক প্রাণীর সম্বন্ধে গীত গায়। তার পর ওঁরাও ভক্তের গানের চরম এই :—

বাবা বাবা বাণর হারো ভৈরো, বাবাস নামহাই

জিরামুম্ রাণস হারো, ভৈরো,

বাবাস নামহাই কারামুম্ রাণস

বাবা বাবা' বাণর হারো, ধর্মে বাবাস জিরামুম রাণস

অনুবাদ

হে ভাই, তুমি মুখে ভগবনকে 'বাবা' 'বাবা' বলিয়া ডেকে থাকো; কিন্তু সেই বাবা তোমার প্রাণের ভিতরেই আছেন, বাবা তোমার শরীরের ভিতরেই আছেন।

রাশিয়ায় আইন-আদালত

শ্রীনিতানারায়ণ বন্দ্যোপাধ্যায়

মস্কৌর একটি আদালতে চুকলাম। প্রথমেই বিশ্মিত হ'লাম এর অনাড্ত্বরতা দেখে। পোষাক-পরা আর্দ্রালীর দল হৈ হৈ ক'রে লোক থামাচ্ছে না. জ্বয়ী দলের পেছন বকশিসের দাবি নিয়ে বিরক্ত করছে না; মামলাকারী লোকজনও খুব বেশী নেই। আমি ও আমার তক্ষণী গাইডটি গিয়ে একটি বিচারগৃহে বদলাম। একটি কাঠের নীচু ভক্তার ওপর একটি টেবিল ও তিনটি চেয়ার; ত্-জন পুৰুষ-বিতারক ও এক জ্বন নারী। মহিশা বিচারকটির মাথায় একটি বভ কুমাল বাঁধা ছিল; পুরুষ-বিচারকদের মাথার চুলগুলি ছোট ছোট ক'রে ছ"টো, দুড়ভাবাঞ্জক মুখ-মণ্ডল, শিরা ও পেশীবতুল হাতগুলি, দেখেই মনে হয় বিলাসে এই সব বিচারকের দল লালিত নয়, জীবনে কঠোর সংগ্রাম করেছে এরা, সে সংগ্রামের সমস্ত চিহ্ন আজও স্থাপন্ত ওদের সর্বাধরীরে। বিচারকদের টেবিলের সামনে একটি কাঠের লম্বা দণ্ড আড়াআড়ি ভাবে রক্ষিত, তার এ-পাশে বিচারার্থী ও শ্রোতাদের জন্ত বেঞ্চ। আমরা এই বেঞে বদলাম। আমরা যথন বিচারগ্রহে ঢুকলাম তথন একটি ত্রীলোক কাঠের দণ্ডটির ওপর ঠেস দিয়ে মাঝে মাঝে ফু"পিয়ে ষ্ট্রপিরে কি পৰ বলছিল, আবার পরক্ষণেই চেঁচিরে কেঁদে উঠছিল। গাইড্কে জিল্লাশা করলাম, "ব্যাপারটা কি ?" সে কিছুক্ষণ শুনে বললে, "মেয়েটি তার ছেলের খোরপোষের জন্ত এক জনের ওপর নালিশ করেছে, কিন্তু সেই লোকটি বোধ হয় ছেলেটির পিতৃত্ব অস্বীকার করছে।"

বড় কৌ ভূক বোধ হ'ল; রাশিয়ার নবপ্রবর্ত্তিত সমাজব্যবস্থার ফলে উছ্ত এই সব ন্তন রকমের মোকজমা। এখন
রাশিয়ার নরনারীকে একত্রে থাকতে হলেই লৌ কিক
বিবাহের প্রয়োজন হয় না, বিবাহ না-করেও একত্রে
থাকলে সমাজ বা রাষ্ট্র তাতে বাধা দেয় না, এর ফলে
ব্যভিচার বাড়বে বলেই আমাদের ধারণা। এই রকম
মোকর্পমার কি বিচার হয় জানতে বড় কৌ ভূহল হ'ল।

যার বিরুদ্ধে অভিবোগ তাকে ডাকা হ'ল—সে ম্পট্টই
বললে সে ছাড়া আরও অনেকে ঐ নারীর সঙ্গে বাস
করেছে, কাজেই সন্তান যে তারই ঔরসজাত সে-বিষ্
ের
নিশ্চর কি? অতঃপর যারা যারা বাস করেছিল বা আসাযাওয়া করত তালের ও যারা তালের আসা-যাওয়া লেখেছে
তা.দর সাক্ষ্য-প্রমাণ নেওয়া হ'ল। এর পর এই মোকদ্দমার
কোনও রায় না দিয়েই আর একটি মোকদ্দমা ধ্রলে। এরও
বাদী একটি স্ত্রীলোক; এর নালিশের বিবরণ এই যে,

কিছু দিন পূর্ব্বে স্ত্রীলোকটি তার স্থামীর বিরুদ্ধে স্থামীর বেতনের এক-তৃতীয়াংশ ছেলেমেরেদের ভরণপোষণের জন্ত ডিক্রী পেয়েছিল। এখন সেই স্থামীর বেতন জনেক বেড়েছে কিন্তু সে পূর্ব্ব বেতনেরই এক-তৃতীয়াংশ এখনও দের, তার দাবি বর্ত্তমান বেতনের এক-তৃতীয়াংশ তাকে দেওয়া হোক। এই মোকদ্দমাটির তৃই পক্ষের শুনানী হ'তে প্রায় পনের মিনিট লাগলো। এর পর বিচারকেরা পাশের ঘরে পরামর্শের জন্ত উঠে গেলেন। যাবার সময় এক জন বিচারক আমার গাইডকে ডেকে আমাকে তাদের কাছে নিয়ে যাবার জন্তে বললে।

পাশের ঘরটি অপেক্ষাক্কত ছোট; একধারে একটি টেবিল, তাতে কতকগুলো বই ও থাতাপত্র ছড়ান, তার পাশে একটি চেয়ারে এক জন নারী সেক্রেটারী, আর থান-ছই চেয়ার ও একটি টুল ঘরটিতে ছিল। ঘরে কোন ছবি, ফুল বা সাজাবার আসবাব একটিও ছিল না। প্রথমে আমি কোথাকার লোক, কি জন্ত রাশিয়ায় এসেছি, বিচার কেমন দেখলাম ইত্যাদি তারা জিজ্ঞাসা করলেন। পরে আমি রাশিয়ার বিচার-বিভাগের গঠনপ্রণালী, আপীলের ব্যবস্থা, বিচারক-নিয়োগের ব্যবস্থা ইত্যাদি সম্বন্ধে একে একে প্রশ্ন করতে লাগলাম; তাঁরাও সানন্দে গাইড-মারফত তার জ্বাব দিতে লাগলেন।

রাশিয়ার সর্ব্ধনিম আদালতের নাম পিপ্লস কোট (People's Court), এর এলাকা ছোট হলেও ক্ষমতা যথেষ্ট আছে। এই বিচারালয়ের বিচারের বিক্লম্বে প্রভিলিয়াল বা রিজিয়্লাল আদালতে আপীল চলে। এইখানে রাশিয়ার রাষ্ট্র-বিভাগগুলি সম্বন্ধে কিছু বলা ভাল, নচেৎ এই আদালতগুলির এলাকা সম্বন্ধে সঠিক ধারণা করতে ক্ট হবে।

সমস্ত রাশিয়াটি (U. S. S. R.) সাডটি রিপাব্লিকে এই বিপারিকগুলি প্রভিন্স বা রি জিয়ন বিভক্ত। বিভক্ত : এই প্রদেশগুলি অর্থাৎ নানা প্রদেশে আবার জেলা ও গ্রামে বিভক্ত। কাভেই সাধাবণ আপীল প্রভিজিয়াল বিচারালয়ে হয়। বিচারালয়ের ভবে এই বিচারালয়গুলি শুধু আপীল-শোনা ছাডাও প্রাদেশের সমস্ত বিচারামূর্চানের কার্য্যকলাপের ওপর নম্ভর

রাথে এবং যে-সব ছুরুছ প্রাশের আইনগত সমস্তা নীচের আদালতগুলি ক'রে উঠতে পারে না, সেগুলি এই আদালতের বিচারকেরা তাঁদের সাধারণ সভায় মীমাংসা করেন। এই সংক একটা বিদ্নিষ উল্লেখ করা প্রাক্তেন যে, রাশিয়ায় আমাদের মত 'কেস-ল' (case laws) নাই অর্থাৎ কবে কোন বিচারক একটা মোকদ্দমার কি বিচার ক'রে গেছেন সেই নন্দীরে পরবর্ত্তী বিচারকদের বিচার কবতে হবে এ ব্যবস্থা সেধানে নাই। তারা বলে এতে সাধারণ বিবেক-বৃদ্ধি ব্যাহত হয়। এটা যে বাস্তবিকই একটা ভূল ও অনিষ্টকর প্রথা তা আমরাও আমাদের দেশে দেখতে পাই। একই রকম মোকদ্দমার বিচার কলকাতা, মাদ্রাব্দ, বোম্বাই প্রভৃতি বিভিন্ন ভায়গার হাইকোর্ট ভিন্নরূপে ক'রে থাকে; যে-বিচারক যেমন বোঝেন তেমনি বিচার ক'রে থাকেন, কিন্তু যদি নিমুআদালভগুলিকে অন্ধভাবে সেই সব নজীর মানতে হয় তা হ'লে সভাই বিবেকবৃদ্ধি ব্যাহত হয়। ওদেশে আইন শেখাবার জন্তে 'ইনষ্টিটিউট অব সোভিয়েট ল' আছে, দেখানে আইন ছাড়াও রাজনৈতিক অর্থনীতি, মনস্তন্ত্ৰ-ৰিজ্ঞান, সমাজ-বিজ্ঞান প্ৰভৃতি শেখান হয়। বিচারক বিবেকবৃদ্ধি নিয়ে বিচার করে আর আইন-মত তার मण्ड (मग्र।

প্রভিন্মিরাল বা প্রাদেশিক আদালতগুলির ওপরওয়ালা সুপ্রীম-কোর্ট। প্রত্যেক রিপাব্লিকগুলির রিপা**রিকে**র স্থপ্ৰীম-কোৰ্ট স্বাধীন। সব রিপাব্লিকের স্থপ্রীম-কোট একমাত্র ইউনিয়ন অব সোভালিষ্ট সোভিয়েট রাশিয়ার (U. S. S. R.) সুপ্রীম-কোর্টের এবং সামরিক আদালতের অধীন। এই হটি আদাশত ছাড়া আরও একটি প্রতিষ্ঠান সমস্ত রাশিয়ার সর্বময়কর্তা। তার নাম 'গেপেয়ু' যার ইংরেজী প্রতিশব্দ আমরা জানি G. P. U.। এটা দেশের রা**জনৈতিক গোয়েন্দা-বিভাগ। কাজেই সব রিপারিকে**র অপ্রতিহত ক্ষমতা এবং এর শাসনব্যবস্থা কেন্দ্রীয় সরকারের (U. S. S. R.) অধীন। রিপাল্লিকগুলির স্থপ্রীম-কোর্টের মোটামুটি তিনটি কাঞ্চ—(১) আপীল-শোনা, (২) বিচার-বিভাগ (original) ও (৩) কঠিন আইন-সমস্তাগুলির সমাধান করা। প্রভিলিয়াল বিচারালয়ের বায়ের বিরুদ্ধে এখানে আপীল শোনা হয় এবং এই

বিচারালয়ের আদেশই চূড়ান্ত, যদি-না এখানকার প্রেসিডেণ্ট অন্তমত হন। যদি প্রেসিডেণ্ট ভিন্ন মত পোষণ করেন তা হ'লে সে বিষয়টি 'প্লেনাম' বা আদালতের সাধারণ সভার উপস্থিত ক'রে মীমাংসা করা হয়। তবে সাধারণতঃ বাদী বা প্রতিবাদী পক্ষ এই আদালতে আপীল করতে পারে না। যদি এই আদালত ইচ্ছা ক'রে কোন মোকদ্দমা প্র্নবিচার করতে চার বা রিপাব্লিকের প্রোকিউরেটার কোনটি এখানে পাঠাতে চান তা হ'লে নিয়—আদালতের রায় উন্টে দেবার ক্ষমতা এই আদালতের আছে। এর বিচার-বিভাগে কেবল দেশের এতান্ত দারিত্বশীল লোকেদের (যথা, প্রোকিউরেটার, স্থপ্রীম-কোটের বিচারক ইত্যাদি) বিচার হয়। রিপাব্লিকের সব আইনকান্তন বা বিচার-পদ্ধতির (procedure) সমস্তা এই আদালত সমাধান ক'রে দেন।

কেন্দ্রীয় সরকারের (U.S.S.R.) সূপ্রীম-কোটেরও উল্লিখিত সমস্ত ক্ষমতা আছে। এই আদালত সাতটি রিপাব্লিকের স্থুপ্রীম-কোটের বিচার পুনরায় তদস্ত করতে পারে ও অন্ত রায় দিতে পারে। রিপাব্লিকগুলির মধ্যে কোন ঝাড়া-ঝাঁটি হ'লে এই আদালত তার বিচার করে এবং এর বিচারকেই চ্ড়াস্ত ব'লে শিরোধার্য্য ক'রতে হয়। খুব উচ্চপদস্থ সরকারী কন্মচারীদের বিচার এই আদালত করে। এর 'প্রেনাম' বা সভার রিপাব্লিকগুলির সেণ্ট্রোল এক্সিকিউটিভ কমিটির সিদ্ধান্ত বা বিচারের কিছু কিছু ওলট-পালট ক'রে দেবার ক্ষমতা আছে। এই সেণ্ট্রাল একসিকিউটিভ কমিটিগুলিই রিপাব্লিকগুলির কর্ণধার। এই সব বিচারালয় ছাড়াও রেড আর্মি বা সৈললের বিচারার্থ মিলিটারী কোটে আছে।

আমি জিপ্তাসা করলাম, "বিচারকদের মাইনে কত? তাদের শিক্ষা-দীক্ষাই বা কতদ্র? ওদের মাইনে নিশ্চয়ই বেশী?"

গাইড উত্তর দিল, "ফ্যাক্টরীতে কুশলী কর্মীরা (skilled labourer) যে বেতন পায় বিচারকরাও তাই পেয়ে থাকে। ও এক সময় শ্রমিকই ছিল, পরে ওর বিচার-বৃদ্ধি ও সাধারণ জ্ঞানের তীক্ষতা দেখে ওকে বিচারক করা হয়েছে।" পরে মহিলা-বিচারক ও অক্ত বিচারককে

দেখিরে গাইড বলতে লাগল "ওরা এখনও কারখানাতেই কাজ করে। বছরে ছ-দিন মাত্র ওদের বিচার করতে দেওয়া হয়েছে—এর পর ওরা আবার কারখানায় ফিরে যাবে। যদি ওরা বিচারে নৈপুণ্য ও বৃদ্ধি দেখাতে পারে হয়ত একদিন ওরাও এমনি পাকাপোক্ত বিচারক হবে।"

বিশ্বিত হয়ে জিজ্ঞাসা করলাম, ''এই সব আনাড়ী লোক, দিয়ে বিচার হয় ? ওরা নিশ্চয়ই আইন পডে।"

গাইড হেসে উত্তর দিলে, "না, কিন্তু ওদের বিবেক-বৃদ্ধি ও সাধারণ জ্ঞান আছে, তা ছাড়া মাঝে মাঝে কারখানার আইন-বিষয়ে ওদের শিক্ষা দেওয়া হয়। এথানেও ঐ বিচারক ওদের আইনের ধারা ব্ঝিয়ে দেন।" জিল্ঞাসা করলাম, "তা হ'লে যদি স্থায়ী বিচারক ও এই তৃই জন ছ-দিনের বিচারকের মধ্যে মতকৈথ ঘটে তা হ'লে কার মত বাহাল থাকবে? ঐ আনাড়ীদের, না শিক্ষিত বিচারকের?"

"যদি ওরা ত্-জনেই একমত হয় তবে শিক্ষিত বিচারকের মত বাতিল হবে, কারণ মতাধিক্য এদিকেই বেণী।"

দ্বিজ্ঞাসা করলাম, "আছো, মহিলা-বিচারকদের কি পুরুষদের মতই বিচক্ষণ মনে কর; ওদের বিচার-বৃদ্ধি কি সমান তীক্ষ ?" আমার মহিলা গাইড এ-প্রশ্নে বেশ উন্তেক্তিত হয়ে উঠলেন। তিনি সন্মিত মুথে বললেন, "কেন তারা সমান হবে না? তার: কি পুরুষদের চেয়ে বোকা ? মেয়েরা যে অধিকাংশ ক্ষেত্রেই পুরুষদের চেয়ে চালাক হয় এ-কথা স্বীকার কর না ?" তার হাসির মধ্যেও অন্তরের উন্নার আঁচ পেল!ম। বললাম, "তারা বৃদ্ধিমান হ'তে পারে কিন্তু তারা ভাষপ্রবিণ, যেটা বিচারের সময় নিরপেক্ষতার একটা প্রধান অন্তরায়।" হেসে গাইড উত্তর দিলে, "ওটা সেকেলে যুক্তি। একই শিক্ষা ও আবহাওয়ার মান্য হ'লে মেয়েরা পুরুষদের চেয়ে ভাবপ্রবণ হবে কেন ? আর যদিই বা হয় তাতেই বা বিশেষ ক্ষতি কি ? বিচারার্থীদের সব বিষয় দরদ দিয়ে দেখতে পারলে তবেই স্তায়বিচার হয়।"

বললাম, 'আচ্ছা, ও তর্ক পরে হবে। এখন বিচারকদের

সময় নট করা হবে না। আচ্ছা, এই বিচারকদের কে নিযুক্ত করে এবং কত দিনের জন্তে কায়েমী বিচারকের। নিযুক্ত হয় ?"

"এই আদালতের বিচারক প্রভিন্সিরাল এক্সিকিউটিভ কমিট নিযুক্ত করে সাধারণত: এক বৎসরের জ্বন্ত, কিন্তু এরাই আবার পুনর্নির্বাচিত হয়।"

জিজ্ঞাসা করলাম, "আছো, তোমাদের আদালতে কি উকীল স্থাডভোকেট নাই? তাদের বড় বড় পকেট নিয়েত কাউকে ঘুরতে দেখলাম না।"

গাইড উত্তর দিলে, "আমাদের এখানে উকিল আছে, তবে উকিল দিতেই হবে এমন কোন আইন নাই। বিচারাথীরাই নিঙেরা সমস্ত খাতাপত্র দেখতে পায়, দরকার হ'লে নকল করতে পারে, বিচারের সময় যা-খুনী বলতে পায়, কাজেই উকিল দিয়ে পয়দা নই করবে কেন? বিশ্বিত হয়ে বললাম, "পর্দা নই কেন? উকিলোক প্রদা নেয়?"

''নিশ্চয়ই, এখনও ত আমরা ক্ষ্যুনিট নই, আমরা যে সোপ্তালিষ্ট, কাজেই স্বকিছুর বিনিময়েই ত অর্থ এখনও চলচে। শ্রমিক তার শ্রমের বিনিময়ে অর্থ নের, শ্রমের তারতমা অসুদারে পারিশ্রমিকের তারতমা আছে। এখন তার বাডির বদলে ভাড়া নেয়, থাবারের মূল্য নেয়. যানের ভাড়া নেয়, কাজেই পয়সা না-নেবার কথা উঠছে কোণায়। যথন আমরা ক্মানিষ্ট হব তথনই কেবল প্রদার বিনিময় উঠে যাবে, তথন প্রত্যেকে দেবে তার যথাসাধ্য শ্রম আর পাবে তার বা বা প্রয়োজন, মুদ্রার মধ্যস্থতা তথন লোপ পাবে। এখন উকিল পয়সা নেবে না শুধু পয়দা নেওয়া নয়, প্রত্যেক উকিল তার বোগাতা হিসেবে মকেলদের কাছ থেকে ফি আদায় করে। ভবে এই ফি সবার কাছ থেকেই সব উকিল সমান পায় না। অন্তান্ত সব জিনিধের মতই বার বেমন বেতন অর্থাৎ আরু তাকে সেই হারে উকিল ফি-ও দিতে হয়; তবে উকিলর। এই ফি সোজামুজি পায়না। এই সব ফি "ক্লেক্সিয়াম" বা উকিল সমিতিতে হুমা হয়, পরে প্রত্যেক উকিলকে তার যোগ্যতা অনুসারে মাসে মাসে ঐ টাকা ভাগ ক'রে দেওয়া হয়।"

জিজ্ঞাসা করলাম, "তাহ'লে বারা অতি দরিন্ত, বাদের রোজগার থেকে কেবল থাওয়া-পরা চলতে পারে মাত্র, তারা উকিল দিতে পারে না তোমাদের দেশে ?"

গাইড বেশ জোর দিয়ে বললে, "নিশ্চরই পারে। কনসালটেশান ব্যুরোতে ত'কে থালি দর্থান্ত করতে হয়; যদি ঐ প্রতিষ্ঠান বোঝে যে, সে স্ত্যুই ফি দিতে অপারগ তথন তাকে বিনিপয়সায় ঐ সমিতি থেকে-সাহায্য করা হয়।"

ভিজ্ঞাসা করলাম, "আচছা, তোমাদের কোট-ফির হার কিরকম ?"

"কোর্ট-ফি-ই আমাদের লাগে না। বিচারের জন্ত রাষ্ট্র আদালত রেখেছে, তার সমস্ত থরচ রাষ্ট্র বইবে; তার ওপর আবার কে:ট-ফি চাপিয়ে দরিদ্র লোককে স্থবিচার থেকে বঞ্চিত ক'রে লাভ কি? কোর্ট-ফি স্থষ্টি করা মানেই দরিদ্রদের অদালতের বাইরে রাখা বা তাদের ঘাড়ে ঋণের বোঝা চাপান; জা'রের রাজ্বতে এটা আমরা মন্মে মার্মা ব্রেছি, কাজেই কোর্ট-ফি ব'লে কোন জিনিয় এখন নাই।"

বললাম, "কিন্তু এর ফ**লে** অব্থামোকদ্দমার সংখ্যা অনেক বাড়বে।"

''যদি কারও কোন অভিযোগ থাকে সে আদাশতে এসে বলুক না; সভামিথা আদাশত দেখবে। কতকগুলো হাকা মামলা এসে কোটের কাজ বাড়াবে ব'লে দরিদ্রকে ভায়বিচার থেকে বঞ্চিত করলে সে আবার ধনীর হাতে পিষ্ট হবে।"

হেদে বললাম, "তোমাদের দেশে ত ধনী আর নেই; কি বল ?" অপেক্ষাক্কত ধনী ও নিধন শ্রেণী যে এখনও রাশিরায় আছে এ-বিষয়ে পূর্ব্বে তার সঙ্গে আমার তর্ক হয়ে গিয়েছিল এবং তাকে আমার যুক্তি মানতে হয়েছিল, তাই সে একটু লজ্জিত হয়ে বললে, "বলেছি ত, এখনও আমরা সোখালিই।"

জিজ্ঞাসা করলাম, "তোমাদের ফৌজদারী ও দেওরানী আদালত একই ব'লে মনে হয়; তাই কি ?"

<u>-रा।</u>

অতঃপর বিচারকদের আমার স্ব প্রশ্নের উত্তর

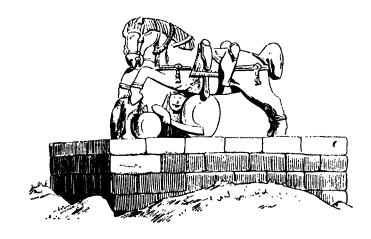
নেওরার ও আমার জ্বন্ত তাদের মূল্যবান সময় নই করার জ্বন্ত ধন্তবাদ দিয়ে করমর্মন ক'রে উঠে বাইরে এলাম।

আরক্ষণের মধ্যেই বিচারকরা বাইরে এলেন। প্রথম মামলার রায় হ'ল, বে-বে স্ত্রীলোকটির সঙ্গে সহবাস করেছিল সকলকেই ছেলেটির ভরণ-পোষণের দায়ী হ'তে হবে।

এই রক্ম বিচারের ফলেই রাশিয়ার বিবাহ-বন্ধন শিথিল হওয়া সংবাও ব্যভিচার বাড়িতে পারে নাই, একদিন ব্যভিচারের ফলে হয়ত বেতনের এক-ভৃতীয়াংশ নিয়মিত কেটে দিতে হবে—এই আর্থিক শাসনের ফলে ব্যভিচার বাড়তে পারে না। দিতীয় মামলায় বাদিনী তার স্বামীর বর্তমান বেতনের এক-ভৃতীয়াংশই ডিক্রী পেল।

রাশিয়ার আদালতের বিচারে, বাদী-প্রতিবাদীর নিজেদের কথা বলবার হুচ্ছন্দ ভঙ্গীতে, সব-কিছুর মধ্যে অর্থলিম্ম্ দালাল ও :লোভী কর্মচারীদের বিযাক্ত আব্হাওয়ার অভাব এবং সর্কোপরি বিচারকমণ্ডলী আমায় মুয় করেছিল। এখানে বিচার করে তারা যারা বিচারপ্রার্থীদের অস্তরের ও বাইরের সব কথা, আচার-ব্যবহার, মনস্তব্ধ সবই জানে। অস্তান্ত দেশে সাধারণতঃ ধনী সম্প্রদার থেকে বিচারকদল নির্বাচিত হয়, ফলে তারা অধিকাংশই সাধারণ লোকের প্রথহংথের সঙ্গে প্রাণের যোগের অভাবে অনেক সময় অজ্ঞতায় সাধারণ লোকের ওপর অথথা কঠোর ব্যবহার ক'রে বসে। অন্তান্ত দেশে বিচারার্থীর দল বিচারকদিগকে একটা ভয়ের চোথে দেখে, ফলে তাদের সব কথা সরলভাবে বলতে ভয় পায়। বিচারকও নিজের আসন থেকে নেমে সাধারণের সঙ্গে মিলতে ছিথা বোধ করেন—তাতে সম্মানহানির আশকা আছে। রাশিয়ায় যদি কোন বিচারকের মনে এই ভ্রান্ত আম্মর্যাদাজ্ঞান উকি মারে, তা ধরা পড়বানাত্র তাকে বিচারকের আসন থেকে নামিয়ে শ্রমিকের দলে ঠেলে দেওয়া হয়। যত ক্ষণ বিচারের আসনে সে আসীন তত ক্ষণ তার সম্মান, কিন্তু সেই সম্মানবোধ বিচারককে বিচারের পর সাধারণের সঙ্গে মিশতে বাধা দের না। এই জন্তই বিচার করা এক বৎসরের জন্ত মনোনীত হয়।

রাশিয়ার বিচার-বিভাগের অনাজ্মরতা, দরিদ্রতম ব্যক্তির স্তায়বিচার পাবার স্থবিধা, অর্থগৃধ, ঘুমধোর কর্মচারীদলের অভাব এবং দিনকে রাত তৈরি করতে স্পটু উকিশমহর্শের শ্বরতা পৃথিবীর যে-কোন সভ্য দেশের বিচার-বিভাগের অন্তক্রণীয়।



আধুনিকী

শ্রীসুশীলকুমার ঘোষ

এখনও লোকেরা ভূলে কবিতারে থোঁজে— চাঁদিনীর মধুরাতে, আধফোটা হাস্থনোহানায়, সেতারের মধুর গুঞ্জনে, আর প্রেয়দীর শরীর-সীমায়, নির্বারের কলগাতে, মর্মারিত বনবীথিকায়, প্রভাতের সায়াহ্নের পাধীর কৃজনে—। ভুল, ভুল—সেথা হ'তে আসন টলেছে তার— নামিয়াছে প্রত্যহের জীবন-সংগ্রামে, অন্নকষ্টক্ষর্জ্জবিত আমাদের দরিদ্র এ দেশে। যেথায় সমষ্টি এই,—ব্যষ্টির ভৃষ্টিতে সেথা কবিতা থাকিতে পারে, বিলাস-বাসনে গর্বিতার স্থরভিত রেশমী-আঁচলে ! তাহারা শোনে নি-কি চন্দ গাঁথিছে গানে কোলাহলে মুখর বাজার, গমামান ষ্টীমারের চাকার আওয়াজ। কলরবে থে সঙ্গীত উঠিতেছে রেলের ষ্টেশনে পাথর-বাঁধানো পথে লোহা-বাধা চক্রের ঘর্ষরে নিরস্তর যে ছন্দের প্রতিধ্বনি বাজে, সেই স্থরে— এস নেমে কবিতা আমার। বিখের আতপ হ'তে সারাদিন রহিয়া বঞ্চিত কারখানা-ছাদতলে কোটি কোটি লোক, মুহুর্ত্তে মুহুর্ত্তে বরে মৃত্যু-হিম কোল---কান পেতে শোনো গান, মেশিনের লোহ-নিমাশন। যেথা, লোহারে গলায়ে জ্বলে প্রদীপ্ত 'ফারনেস' প্রকাণ্ড চিমনী-নীচে উড়িতেছে ছাই— ষে-ভালে ইকিছে মাথা নেহায়ে হাভুড়ি কিম্বা গ্রাম্য কামারের ফাঁপর হাপরে

বাজিয়া ওঠে না গান, নাহিক কবিডা ? আকাশের রৌত্রদগ্ধ চন্দ্রাতপ-তলে গাঁতিতে রাখিয়া মাথা মছুর ঝিমায়— · পাশে গান গাহে তার, 'ষ্টামে'র 'রোলার'। ফেনায় ভরেছে মুথ —বোড়া ও সহিদ, नातामिन राजौ शूँ कि भाग्न नि रुमिन; শকটের একটানা ক্লান্ত রব—কবিতা গাঁথে না ? গরু ও মোধের মত টানে গাড়ী রিক্শওয়ালা পীচ গলে পদতলে তার, তবু টানে---ত্বপুর-স্তব্ধতা হরে হাতের নুপুর। [পশুক্রেশ-নিবারণী রয়েছে সমিতি, মানু্য-পশুর তরে নাই কেহ, রয়েছে শ্রশান। কারাগারে নির্বাসিত নির্বাচিত নর শৃঙ্গলের বিশৃঙ্গলে হতেছে বানর— ভাদের পায়ের সেই ভারী শিকলেরা গাহিয়া ওঠে না গান, গবে ভারা চলে আপনার 'সেলে' ফিরে ঘানিটানা-শেষে ? এঞ্জিনের চক্রতলে বান্ধিতেছে অধুনা কবিতা। হাটুরে নৌকার সেই তালে তালে বৈটার বিক্লেপ, চারিভলে মজুরেরা ছাদ পেটে যবে---স্থর নাই তাল নাই সেও কি বেস্থরা। সে ছন্দে গুঞ্জরি ওঠ কবিতা আমার। জীবন-সংগ্রামে শোন আজের কবিতা। কবির শেখনী যদি, বেদনার নাহি গাহে গান বেদনারে আনন্দেতে রূপায়িত না করিতে পারে বুথা সে কবিতা ভবে বুথা সে লেখনী।

বাংলা ভাষার প্রশ্নপত্র

শ্রীসনংকুমার সিংহ

ক্লিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় আমাদের মাতৃভাষাকে সম্মানের আসনে বসাইয়াছেন। সুধীবৃন্দ বঙ্গভাষাকে শিক্ষার বাহন করিবার জন্ম চেষ্টাও করিতেছেন। বঙ্গভাষা এখন কিয়ৎ পরিমাণে সমুদ্ধিশালিনী। কিন্ত আক্ষেপের বিষয়. প্রবেশিকা, আই-এ, বি-এ, এবং এম-এ পরীক্ষার বাংলা ভাষার প্রশাপত্র ইংরেজী ভাষায় করা হয়। বহুদিন হইতেই এইরপ চলিয়া আসিতেছে। কিন্তু ইহার কোনরপ সঙ্গত কারণ নাই। যাহার। বাংলা ভাষা ও বাংলা সাহিত্যে পরীক্ষা দিতে যাইতেছে, ভাহাদের ইংরেজী ভাষায় মুদ্রিত প্রশাপত্র দেওয়া হয় কেন? বঙ্গভাষা ও সাহিত্যের প্রশা করিতে হইলে কি ইংরেজী ভাষার সাহায্য ব্যতিরেকে ভাহা रम मा? हेरा कि मञ्जात कथा नट्ट (य, कनिका**छ**।-বিশ্ববিদ্যালয়ের মত ভারতবর্ষের একটি প্রধান বিশ্ববিদ্যালয়ের দকল পরীক্ষারই বাংলা প্রশ্নপত্তে আগাগেড়োই ইংরেজী হরফ, কেবলমাত্র যে-অংশ ব্যাখ্যা করিতে হইবে—যাহা ইংরেক্সীতে দেওয়া অসম্ভব—তাহাই শুধু বাংশা হরফে সুদ্রিত হয় ?

এমন বহু ছাত্র আছেন যাঁহারা ইংরেজীতে দেওয়া প্রশ্ন অপেক্ষা মাতৃ ভাষার দেওয়া প্রশাকে উত্তমরূপে হৃদমুক্ষম করিয়া প্রচিন্ধিত উত্তর প্রদান করিতে পারেন। ইংরেজী ভাষার পাাচ-দেওয়া কঠিন শব্দে বাংলা ভাষার প্রশাকরিয়া এই সকল ছাত্রদের উপর কিরূপ অবিচার করা হয়, প্রশাকরিয়া বোধ হয় ভাহা পেয়াল করেন না। অনেক সময়ে বি-এ, এম-এ পরীক্ষার বাংলা প্রশাবিশ বেশ কঠিন হয়, এবং সেগুলি ইংরেজী ভাষার মুদ্রিত পাকায় ভাহাদের মাতৃভাষার অর্থ

করিরা প্রাঞ্জল ও সরলভাবে হৃদরক্ষম করিতেই ছাত্রদের অনেকটা সময় অযথা নষ্ট হয়। ইহার জন্ত কাহার। দায়ী?

इःरत्रकी ভाষার অনাদর বা অবহেশা করিভেছি না, কিন্তু বন্ধভাষা ও সাহিত্যের প্রাশ্নপতা বন্ধভাষাতেই ইওয়া শোভন ও সঙ্গত নহে কি ? ইংরেমী ভাষা ও সাহিত্যের ছাত্রকে পরীক্ষার সময়ে জার্ম্যান বা ফরাসী ভাষায় মুদ্রিত প্রশাপত দিলে দে কি করে ? অবশ্য কথা উঠিতে পারে যে কলিকাতা-বিশ্ববিদ্যালয়ে ইংরেজী অবশ্রশিক্ষণীয় ভাষা। কিন্তু তাই বলিয়া যে বাংলা প্রশ্নপত্র ইংরেন্দী ভাষাতেই করিতে হইবে, ইহার কি যুক্তি আছে? একণা মানিতেই হইবে যে, বাঁহারা বঙ্গভাষার ও সাহিত্যের প্রশ্নকর্তা তাঁহারা সকলেই বঙ্গসাহিত্য ও ভাষাটিকে সমাক্রপ আয়ত্ত করিয়াছিলেন, এবং বঞ্চভাষা ও সাহিত্যে তাঁহাদের ধথেট জ্ঞানের পরিচয় পাইয়াই তাঁহাদের প্রশাকর্তা নিযুক্ত করা হইয়াছে। তবে কেন তাঁহারা প্রশাগুলি করিবার সময়ে ইংরেজা ভাষার কাছে ভিক্ষা করিতে যান ? ইহা কি হাস্তকর ব্যাপার নহে যে, যে-ভাষায় উত্তর লিখিতে হইবে সে-ভাষায় সেই উত্তরের প্রশ্ন করা চলে না? এ-কথাও নিশ্চিত যে, বঙ্গভাষার এতবড় দৈল ঘটে নাই ঘাহাতে প্রশ্নপত্র করিবার সময় শব্দের বা ভাবের অনটন পড়ে। বাংলা প্রশাপত্র ব্যাপারে কলিকাতা-বিশ্ববিদ্যালয় মাতৃভাষার উপর অনাস্থা প্রকাশ করিতেছেন বলিয়াই বোধ হয়। **দিণ্ডিকেটের স্ভার্ম্ম এবং বঙ্গভাষার অক্তম সেবক** আশুতোষের সুযোগ্য পুত্র বর্ত্তমান ভাইস-চাঞ্চেলারের দৃষ্টি এই বিষয়ের উপর আকর্ষণ করিভেছি।



শান্তিনিকেতন, প্রথম খণ্ড—রবীক্রনাথ ঠাকুর। বিখ-ভারতী ক্রনালয়, ২০ কর্ণপ্রয়ালিস ট্রাট, কলিকাতা। মূল্য ১৮ টাকা, বীধান ২ টাকা। ডবল ক্রাউন ধ্যোড়শাংশিত ৩০০ পৃষ্ঠা। ক্রমুক্তিত।

রবীক্রনাথের "শান্তিনিকেতন," 'ধর্ম," ওধর্মবিবরক অপ্রকাশিত সমস্ত প্রবন্ধ সংগ্রহ করিরা একর প্রকাশ করিবার যে আরোজন ও চেষ্টা হইরাছে, এই পুস্তকটি তাহার প্রথম ফল। ইহা দেখিয়া প্রীত ইইরাছি। ধর্মজিজাত্ম ব্যক্তিরা ইহা হইতে অনেক জ্ঞান লাভ করিতে পারিবেন, তাহাদের অনেক সন্দেহ দূর হইবে; আবার অনেক প্রশ্ন ও সন্দেহও তাহাদের মনে উদিত হইবে। তাহাও সমুদর প্রকৃত ধর্মোপদেষ্টার অভিপ্রেত।

ধর্মামুরাগী ব্যক্তিগণ ইহা পাঠ করিয়া আনন্দিত হইবেন।

মুদ্রাকর ও প্রকাশক প্রত্যেক উপদেশের উপর দক্ষিণ পার্থে বংসর, মাস ও দিন মুদ্রিত করিরা দিলে ভাল হইত। অনেকগুলিতে শুধু মাস ও দিন আছে, বংসর থুজিরা বাহির করিতে হয়। ইহা বৃহৎ কোন দোষ নয়; কিন্তু যাহা করা হয় তাহা নিগুঁৎ ভাবেই করা ভাল।

বঙ্গীয় মহাকোষ—নমুনা সংখ্যা ও প্রথম সংখ্যা। প্রধান সম্পাদক জীঅমূল্যচরণ বিদ্যাভূবণ। 'বঙ্গীয় মহাকোব'-কার্যালয়, ৬-এ, রামরতন বোসের লেন, শ্রামবাজার ডাক্ষর, কলিকাতা।

ইংরেজীতে এবং অন্ত কোন কোন প্রধান ভাষার প্রত্যেকটিতে একাৰিক এন্সাইক্রোপীডিয়া আছে। কোনটিই অনাবগুক নহে, এবং কোনটিতেই সব প্রয়োজন ও উদ্দেশ্য সিদ্ধ হয় না, সব প্রহাের উত্তর পাওয়া যার না। সুতরাং বাংলায় এক ''বিষকোষ" প্রকাশিত হইরাছিল এবং তাহার বিতীয় সংস্করণ হইতেছে বলিয়া আর একটি একাইক্লোপীডিরা অনাবশুক, ইহা কেহ বলিতে পারেন না। বরং বিজ্ঞাভূষণ মহাশয়ের মত পরিশ্রমী, বহু বিজ্ঞাবিৎ, উল্পোগী ও পঞ্জিত ৰাক্তির সম্পাদকতার আর একটি এই জাতীয় মহা**া:ভুর প্রকাশে** াসভাষা ও বঙ্গদাহিত্যের অনুরাগী মাত্রেরই আনন্দিত হইবার কথা। তাঁহার মহাকোষের নমুনা সংখ্যা ও প্রথম সংখ্যা আমাদের মনে যুগপৎ আনন্দ, উৎসাহ ও আশার সঞার করিয়াছে। তিনি ভাল কাগজে, নুতন অক্ষরে, ভাল ভাল ছবি নিয়া গ্রন্থখানি ছাপাইতেছেন। সমুনয় তথ্য সাৰধানতার সহিত বহু বঞ্জে সংগৃহীত হইতেছে। প্রত্যেক সংখ্যা ৪• পৃষ্ঠা পরিমিত। মূল্য আট আনা। আট বৎসরে ২১১>• পৃষ্ঠায় এছিথানি সম্পূৰ্ণ হইবে। বিজ্ঞান নানা বিভাগে বিশেষক্ষ ও বিদান বহু সংখ্যক লেখক নিরমিত রূপে প্রমূল্য বাবুর সহারতা করিতেছেন। তিনি নিজে ত অনেক বৎসর ধরিরা মহা সঙ্কপ্লটে জনরে পোষণ করিরা পরিশ্রম করিরা আদিতেছিলেন, এবং এখনও থাটিতেছেন। তাহার <u>ব্রতের যে-দিন উদ্যাপন হইবে,</u> সেদিন তিনি ও **ভা**হার সহক**শ্রা**রা ইহা ভাৰিরা আস্কুশ্রদাদ অনুভৰ করিতে পারিবেন, বে, বাঙালীদিগকে তাঁহারা এমন একটি মহাএছ দিলেন যাহা অধ্যরন করিরা তাঁহারা শিক্ষিত বলিয়া পরিচিত হইতে পারিবেন।

শ্ৰীশ্ৰীরামকৃষ্ণবাণী—শ্ৰীকুমারকৃষ্ণ নন্দী কর্ত্ব সন্ধলিত। পরিবর্তিত ও পরিবর্দ্ধিত দ্বিতীয় সংস্করণ। প্রকাশক—ষ্টুডেউন্ লাইরেরী, ৭৭/১, কলেজ ট্রীট, কলিকাতা। পৃষ্ঠা সংখ্যা ৮৮০-৮+।/০, মূল্য এক টাকা।

আলোচা গ্রন্থানিতে মহাপুরুষ রামকৃষ্ণ প্রমহংসদেবের কতকগুলি উপদেশ ও বাণা সংগৃহাত হইরাছে। বাংলা ভাষার এরূপ একটি সংগ্রহের বিশেব অভাব ছিল; এই গ্রন্থ সেই অভাব দূর করিবে। বর্ষমান সংগ্রহণ পরমহংসদেবের করেকটি উপদেশ নূতন করিরঃ। সম্প্রিরেষ্ট করা হইরাছে এবং সেই সঙ্গে পরমহংসদেবের সহধর্মিণী শ্রীমতী সারদেখরী দেবীর (প্রীশ্রীমারের) ও স্বামী বিবেকানন্দের কতকগুলি উপদেশ দেওয়া ইইরাছে। মতরাং এই সংগ্রহণে গ্রন্থের সোহব বৃদ্ধি শাইরাছে। সকল্মিতা বিষয় ভাগ করিরা উপদেশগুলি সাজাইরাছেন এবং গ্রন্থানিকে সর্কাক্রন্থান করিতে চেষ্টার জাটি করেন নাই। ভক্ত পাঠকগর্ণের নিকট এই গ্রন্থ যে সমাদর লাভ করিবে তাহাতে সন্দেহ নাই। মহাপ্রুবগণের বাণী যতই প্রচার লাভ করে ততই মঙ্গল। হাপা, বাধাই ও আকার হিসাবে গ্রন্থের মূল্য গুরুই কম।

প্রবর্ত্তক বিজয়কৃষ্ণ — বিপিনচল পাল প্রণীত ৷ প্রকাশক প্রবর্ত্তক পাবলিশিং হাউন, ৬১ বহুবাজার স্থাট, কলিকাতা ৷ পৃষ্ঠাসংখ্যা ১৪২ ৷ মূল্য পাঁচ দিকা।

বগাঁর বিপিনচক্র পাল 'প্রবর্তক' মাসিক পত্রে প্জ্যপাদ বিজ্ঞাক্তকণ গোস্থানী মহাশরের একটি জাবনকাহিনী ধারাবাহিক ভাবে লিখিতে আরম্ভ করেন। তাহার মৃত্যুতে সে রচনা অসম্পূর্ণ থাকিরা গিরাছে। প্রবর্তক-সজ্জের কর্ত্বপক্ষ সেই অসম্পূর্ণ জীবনকাহিনী বর্ত্তমানে গ্রন্থাকারে প্রকাশ করিরাছেন। বিপিনবাবু গোস্থামী মহাশরের অস্তরক্র ভক্ত ছিলেন ও তাহাকে বনিইভাবে জানিবার হ্রেগাগ পাইরাছিলেন। প্রস্তেম্বর বিবর-স্চনার তিনি কি ভাবে গোস্থামী মহাশরের এই জীবনকাহিনা লিখিবেন দ্বির করিরাছিলেন তাহার একটি পরিকল্পনা পাওরা বার। তাহা পড়িলে মনে হয় বে, লেখা শেব হইলে গ্রন্থানি বাংলা ভাষার জীবনচরিত্ত-সাহিত্যের সম্পাদ বৃদ্ধি করিত। মৃত্যুর পূর্বেক বিপিনবাবু যেটক লিখিরা গিরাছেন তাহাতেই ইহার পরিচর পাওরা বার।

বইথানির ছাপা ও বাধাই চমংকার, তবে আকার হিসাবে ইহার মূল্য কিছু বেশী বলিয়া মনে ২ইল।

গ্রীঅনাথনাথ বস্থ

রাতের অতিথি—জ্ঞানরদিন্দু বন্দ্যোপাধাার। পি. সি. সরকার এও কোং। ২ শ্রামাচরণ দে ব্লীষ্ট, কলিকাতা। দাম দশ আনা। ১৩৪১

ছোট ছেলেমেরেদের জক্ত রচিত ছয়টি কাহিনীর সমষ্টি। ঐতিহাসিক, তুত্ত্, জাবজন্ত—সব রক্ষের গণ্ডই আছে। গলগুলি হুলিখিত এবং উপভোগ্য, বরন্ধ পাঠকেরাও ইহাতে আনন্দ পাইবেন। ছানে ছানে বে সকল ইক্লিড আছে, শিশু-চিন্ত হয়ত সেগুলির অর্থ সম্পূর্ণভাবে বুবিতে পারিবে না, কিন্তু কোথাও সরসভার অভাব নাই।

শ্রীপ্রিয়রঞ্জন সেন

্ **বিড়** — গ্রীবাহনের বন্দ্যোপাধ্যার। পি সি. সরকার এও সঙ্গ, ২ খ্যামাচরণ দে খ্রীট, কলিকাতা। মূল্য ২১

একখানি স্বরহৎ উপঞাস। সাহিত্যক্ষেত্র নৃতন হইলেও করেকটি বিশিষ্ট শক্তির জোরে লেখক ক্ষত নিজের স্থান করিয়া লইতেছেন। উাহার বইরের আধ্যানভাগ বেশ গতিশীল—স্বাই নবতর ঘটনার মধ্য দিরা বেশ অভ্যনভাবেই পরিণতির দিকে অগ্রসর হয়, অতিরিস্তারিক্ষেক্সন বা মন্তব্যের চাপে কোখাও ক্ষম্বাতি হইগা পড়ে না। ইহাতে উপঞাসের মোহটুকু বরাবর বজার খাকিরা যায়। ভাষাও বেশ সমৃদ্ধ অধ্যন্ন উটিলতাবিজ্ঞিত।

় আলোচ্য বইখানিতে এক দিকে প্রধান পুরুষচারিত্রগুলি ও অপর দিকে প্রধান নারীচরিত্রগুলির মধ্যে একটি ভাবগত ঐক্য আছে। লেখক শক্তিশালী, ভবিবাতে তাঁহার নিকট আরও বৈচিত্রের আশা রাখিলাম। বইথের ছাপা, বাঁধাই, কাগজ প্রকাশকের ঝাতি অকুর রাখিয়াছে।

শ্রীবিভূতিভূষণ মুখোপাধ্যায়

আমার বাবসা-জীবন-রায়-সাহের বিনোদবিহারী সাধুবা। ২র সংশ্বরণ, ১৩১১। প্রকাশক-জীবিজয়চন্দ্র দাশ, বি-এল, সাহিত্য-ভূষণ, ২০ উণ্টাডাঙ্গা রোড, কলিকাতা, মূল্য ১৫০ টাকা। প্রা ৮০ + ৫০ + ১১১ + ৮

এক বংসরের মধো যে উল্লিখিত গ্রন্থগানির দ্বিতীয় সংশ্বরণ ছাপিতে ২ইল, ইহা হইতেই ইহার উপযোগিতা বুঝা ঘাইবে। আমরা আশা করি পুস্তক্থানি পড়িয়া বাংলার উপীয়মান ব্যবসায়িগণ লাভবান ছইবেন।

জহরলালের চিঠি বা পৃথিবীর ইতিহাস— শীপ্রবোধচন্দ্র দাশগুং কর্ত্ত্ব অনুদিত। প্রকাশক শীংশীলচন্দ্র দাশগুংগ, ১৬৪ লেক রোড, কলিকাতা। মূল্য ২০০ গৃঃ ১৩৫।

জ্বওহরলাল তাহার কস্তাকে "Letters from a Father to his Daughter—নামে যে সকল চিট্ট লেখেন বর্তমান গ্রন্থখানি তাহারই অমুবাদ। ছোটদের জন্ত পৃথিবীর ইতিহাস গল্পাকারে আগেও বাংলার বাহির হইলাছে। কিন্তু সেগুলি অপেকা এ বইখানি অনেক ভাল ইরাছে। প্রথমতঃ জন্তহরলালন্ধী বুব সরস করিরা বিষয়টি লিখিয়াছেন, খিতারতঃ, অমুবাদের ভাষাও স্বচ্ছ ও সরস হইরাছে। আমরা বইখানির বহল প্রচার কামনা করি।

শ্রীনির্মালকুমার বস্থ

চুস্বক-রহস্ত — এরাজেজনাথ দাশগুল, এম্-এস্সি প্রণীত ; ২০৩২, কর্ণভরালিস খ্রীট, কলিকাতা হইতে এস্ ওল এও সল কর্তৃক প্রকাশিত। মূল্য আট আনা।

পুস্তকথানি বালক-বালিকাদিগের জন্ত লিখিত। চরিত্রে ও চিত্রে
চুখক সম্বন্ধে সাধারণ তত্ত্তলি সরস ও সরলভাবে উনিখিত হইরাছে।
ইহাতে চুখকের উপাদান, উহার উত্তরসেরু ও দক্ষিণ্সেরুর বিশেষত,
চুখকের লৌহাকর্বণ, লৌহের চুখকত্ব প্রান্থি, লৌহ ও ইস্পাত্তের প্রভেদ,
গুইটি চুখকের ছুইটি খিদদুশ হেরুর প্রস্পার আকর্ষণ ও ছুইটি সদুশ

নেকর বিকর্বণ, চুখকের প্রতি অংশের চ্বকত্ব প্রভৃতি বৈজ্ঞানিক তথাগুলি গল্লছেলে এমন সহলবোধ্য ও চিন্তাক্বক করিরা লিখিত হইরাছে
বে পুত্তকথানি প্রধানত: বালক-বালিকাদিগের জল্প রচিত হইলেও, ইহা
ছোট-বড় সকলকে সমান ভাবে তৃথ্যি দান করিবে। বিজ্ঞানের সাধারণ
নিরমণ্ডলি শিশুপাঠ্য ও বালকপাঠ্য করিরা প্রকাশ করার বিশেক
প্রয়োজন এবং সেই জ্পপ্রই প্রস্থকারের এই উদ্যুম প্রশংসার্হ। প্রস্থের
ভাষা বেশ সরল ও মনোজ্ঞ। তুই এক হলে আর একট্ সংজ করিরা
লিখিলে ভাল হইত। যাহা হউক, পুত্তকথানি ক্রথপাঠ্য ও ফুলিখিত
হইরাছে। পুত্তকের ছাপা, বাগাই, ও কাগজ প্রশংসনীর।

শ্রীস্কুমাররঞ্জন দাশ

লেনিন—সোমেক্রনাথ ঠাকুর, গণবাণী পাবলিশিং হাউস, ২৬ মিব্দাপুর ব্রীট, মূল্য আট আনা, ১১৬ পৃষ্ঠা।

বইথানিতে মোটামুটি ১৮৮৭ সাল থেকে ১৯২৪ সাল প্র্যাস্ত লেনিনের কার্য্যারা ও বফুতাবলীর অংশবিশেব উল্লেখ ক'রে লেখক রাশিয়ার ইতিহাস আলোচনা করেছেন। এটিকে লেনিনের জীবনী বলা যায় না, কারণ জাবনার যা উপাদান, বইটিতে তার অভাব। লেনিনকে কেন্দ্র ক'রে বইখানিতে সমাজতাত্ত্রের ইতিহাস বর্ণিত হয়েছে. লেখকের মুখ্য উদ্দেশুও যে তাই একথা তার ভূমিকাতেই বোঝা যায়। লে**থকের উদ্দেশ্য সিদ্ধ হয়েছে**; ভাষা জোরাল, সহজ। তবে অনাবৃহ্ণক ইংরেজী শৃষ্ণগুলি বাংলা ভাষার মধ্যে বাংলা হরুফে ना थाकरल है जाल २'छ। जानक हैश्रवको मंस वावहात कत्रा অপরিহান্য কিন্তু এমন বহু শব্দ বার-বার ব্যবস্থাত হরেছে, যার তাল ৰাংলা প্ৰতিশ্ন মাছে লেখন ধনাৰ্থ্যত ; মতামতও প্রবাতে। কাঞ্চেই এর মধ্যে আমরা সমাজভন্ত মতবাদের নিরপেক সমালোচনা পেতে পারি না। তবু তিনি লেনিনের যে-সর মত ও পথ লেনিনের লেখ। থেকে উদ্ধৃত করেছেন সেগুলো বাংলার সমূদ্ধি বৃদ্ধি করবে। যে-সব না-পডে-পণ্ডিত লেনিন সম্বন্ধে থালি শুনে শুনে ক্লালি রালি প্রবন্ধ লিখে ও জোরালে৷ বক্তৃতা নিয়ে শ্রমিকবন্ধু দেক্তে সন্তায় নাম কিনবার চেষ্টা করে, তাদের এই সব বই প্রভুত কলাণি করবে। সমাজ্তন্ত কি, কথন এর বিকাশ সম্ভব, প্রভৃতি সম্বন্ধে লেনিনের মতবাদের সতাপরিচয় বইটিতে পাওয়া যাবে।

শ্রীনিত্যনারায়ণ বন্দ্যোপাধ্যায়

বক্তৃতা ও উপদেশ—আচায্য বিজয়ক্ষ। প্রকাশক— শীজিতেক্সনাথ রায়। গুরুসক লাইব্রেরী, ২০০৪ কর্ণওয়ালিস খ্রীট, কলিকাতা। তৃতীয় সংস্করণ। পৃষ্ঠা ১৯১, মূল্য ৮০ '

শীমদাচার্য্য বিজয়কৃষ্ণ গোস্বামা মহাশয় কর্তৃক বিভিন্ন সময়ে প্রদত্ত উপদেশ ও বক্তৃতার সমষ্টি। সাধুজনের বক্তৃতা সর্ববদাই হুণপাঠ্য। মুখ্য ও ছাপা চলন্দই।

গ্রীবিমলেন্দু কয়াল

সোজন বাদিয়ার ঘাট—জনীম-উদ্দীন প্রণীত কাবা। শুরুদাস চটোপাধ্যায় এও সন্স, ২০৩২) কর্ণওয়ালিস ব্লীট, কলিকাত।। দাম দেও টাকা।

শহরের কোলাহল, মোটর-ট্রামের বিওট আওরাজ আর শত কর্ত্তব্যের টানাটানিডে কলিকাতার প্রাণ যেন হাঁপাইরা উঠে। মাকে মাকে পরীর পথ ঘাট গাছ লতা পুকুর নদী কিঙে বুলবুলি আর তাহাদেরই সঙ্গে পদীর গাছের ছারা ও নদীর জ্লের আদরে-সোহাগে-গড়া মানুষগুলিকে যখন মনে পড়ে তথন আরামে আখাসে মন জুড়াইরা যার।

কবি জনীম-উদ্দীনের এই কাব্যপ্রস্থানি পন্নীর সকল ছবি, সকল রীতি, সকল বিবাদ-মিলন সকল শান্তি-বিবাদ এবং সকল সোহাগ-আদর লইয়া শহরবাসাদের হলরের ঘারে আসিরা দাঁড়াইরাছে। কাব্যের কাহিনাটি অতি সরল, অত্যন্ত গ্রামা এবং সেই জগু সম্পূর্ণ নির্ম্মন ও বাচি।

এক মুসলমান যুবক ও এক নমঃশৃত্ব যুবতীর প্রণন্ধ-কাহিনী নানাবিধ সামাজিক বাধাবিত্ব এবং ব্যর্থতার মধ্য দিরা আসিরা অবলেবে অপরূপ করুণ মগ্মন্থানী সার্থকতার পরিণতি লাভ করিমাছে। এই প্রেম-কাহিনীটি বিবৃত করিতে গিয়া বর্তমান কালের হিন্দু-মুসলমানের বহু বিরোধ-মিলনের পা, সামাজিক অসাম্যের কথা, চক্রীর চক্রাস্তজাত সাম্প্রদায়িক কলহের বপা এবং অত্যাচারী গ্রাম্য জ্মাদার ও তাহার অত্যাচারী সার্থাপ্রেমী নামেবের কৃটজালে হিন্দু-মুসলমানের সর্বনাশের কথা কবিকে বলিতে হইয়াছে। কিন্তু এই গুরুতর সাম্প্রদায়িক সমস্থার উল্লেখ সম্প্রভ সমস্থ কাব্যথানির মধ্যে কবির উদার্হিত্তার কল্পন্থাত বহিয়া গিয়াছে, এবং তাহাই কাব্যথানিকে স্লিগ্ধ করিয়া তুলিয়াছে। বহু স্থানে কবির সরল ভাষা ও সরল আম্য উপমা বিশেষ উপভোগ্য হইয়াছে।

এমন গ্রাম্য প্রেম, এমন গ্রাম্য সমাজ ও এমন গ্রাম্য প্রকৃতির কথা অনেক দিন পাই নাই; সেইজগু কাব্যথানি আমাদিগকে যথার্থই আনন্দ দান করিয়াছে।

কাৰাখানির ছাপা ও বাঁধাই ভালই; কিন্তু ছাপার ভূল অনেক আছে :

শ্রীপ্যারীমোহন সেনগুপ্ত

শ্রীবামলীলা — বামাক্ষ্যাপাবাবার দ্বারনী ও সাধ্যসাধন-ত একথা)। আদি লহরী। শান্ত্রী গ্রীহরিচরণ গঙ্গোপাধ্যার, এম্-এ, বি-এল কর্তৃক সঙ্গলিত। প্রকাশক—শীপশুপতি বন্দ্যোপাধ্যায়, এম-এ, সম্পাদক, গ্রীবামসেবক সম্প্রদার ও ৪৮০, বেনেটোলা খ্রীট, কলিকাতা।

বীরভ্য ভারাপীঠের বাহ্যাড়ম্বরহীন আধুনিক যুগের প্রসিদ্ধ সাধক ৰামাচরণ চট্টোপাধ্যায় বা বামাক্ষাপার জীবনের আংশিক বৃত্তান্ত এই গ্রন্থে প্রকাশিত হইয়াছে। মধ্য ও অস্তালহরী নামে আর ছই গওে তাহার জীবনের সম্পর্ণ বিবরণ প্রকাশিত হইবে। বাঙ্গালা দেশের এই অন্তিপ্রিচিত সাধকপ্রবরের ধর্মজীবনের ঘটনাবলার বিবরণ এই গ্রন্থে এতদবিষয়ক অক্সান্ত গ্রন্থ অপেক্ষা বিষদ ভাবে প্রদত্ত হইয়াছে। এন্তমধ্যে এন্তকারের শিষাজ্ञনোচিত আবেগ ও আন্তরিকতা হবাক্ত। যে প্রকরণে সাধক সম্বাদ্ধ যে কথা বলা হইয়াছে, প্রকরণের প্রারম্ভে এক একটি সংস্কৃত শ্লোকে ভাহার ইঙ্গিত দেওয়া ২ইরাছে। তুঃথের বিবর, এই লোকগুলির আকর সম্বন্ধে গ্রন্থকার সম্পূর্ণ নির্বাক। সাধকের জীবনবুডান্ত ছাড়া, ধর্মকুতাের অমুঠানাদি সম্বন্ধে বিবিধ মতবাদ ও সাধারণ ধর্মতত্ত্ব বিষয়ে বিকৃত আলোচনা গ্রন্থমধ্যে করা হইরাছে। এই আলোচনা এম্বনারের পাণ্ডিত্যের পরিচয় প্রদান করে সভ্যা তবে ইহা একট मः किल इरेल अञ्चर भीत्रव शनि **रहेज विनया मन दर्म ना । व**छ ठः. আশ্বা হয়, সর্কাধা আড়ম্বরসম্পর্কণুক্ত সাধকের এই জীবনী সাধারণ পাঠক ও ঐতিহাসিকের নিকট একটু আড়ব্রবহন্দ বলিয়া মনে হইতে পারে ৷

ঞ্জীচিম্ভাহরণ চক্রবর্ত্তী

যুগের বাংলা— এঅরণচন্দ্র দত প্রণত। প্রবর্তন গারিদিং হাউস্ কর্ত্তক প্রকাশিত। ৬১ নং বহবাঞ্জার ব্রীট, কলিকাতা। ৬০ প্রঃ মূল্য। • আনা।

এই কুত্ৰ পৃষ্টিকাথানিতে এছকার বাংলা দেশের বর্তমান অবস্থা मः क्लिप चारलाहना कविद्रारहन । हिन्मुद मः शा-हाम, वाबमा-वाणिखा বাঙালার স্থানাভাব, বাংলার শিল্পের অবনতি, নারী-প্রগতির নৃতন ধারা ও তাহার বিপদ—এই সমস্ত বিষয়েই আলোচনা ইথাতে রহিরাছে ৷ नोत्री-कांगत्रण मचरक अञ्चलात मत्न करत्रन त्य. त्य-कांगत्ररण नात्री ''विक्यो সভ্যতার অমুকরণে ডাইভোস চার, প্রাক্ষামূলক বিবাহের অভিনয় চার, ... কুমারা, বুবতী, বিধবা নির্কিশেবে গর্ভনিরোধ-বটকার অনিয়ন্ত্রিত বৌৰনের মুশ্দিল আসান পুঞ্জে"—সে জাগরণ জাতির ভবিষ্যৎ রক্ষা করিতে পারিবে না। (৬০ পুঃ)। কিন্তু এই সেদিন করাচীতে নিধিল ভারতীয় নারী-সম্মেলনের ম্ম অধিবেশনে ৫৪:৩৫ ভোটে ম্বিরাকৃত হইয়াছে যে, জন্মনিরোধ সম্বন্ধে উপদেশ লইবার অধিকার মেয়েদের আছে এবং উহা বর্তমানে অতান্ত প্রয়োজনীয়ও হইয়া পডিরাছে। অতঃপর পরবর্ত্তা সংক্ষরণে আমাদের গ্রন্থকার এ সম্বন্ধে তার মত পরিবর্ণন করেন কিনা জানিবার জন্ম উৎক্রক হইয়া রহিলাম। যে-সব বিপদের ইঙ্গিত তিনি করিয়াছেন তাহা আমরাও সম্পূর্ণ স্বীকার করি ; কিন্তু উদ্ধারের পথ কোন দিকে ?

শ্রীউমেশচন্দ্র ভট্টাচার্য্য

আকাশ ও মৃত্তিকা--- শ্রাসরোজকুমার রায় চৌধুরা। গুরুরাস চট্টোপাধায়ে এও সন্স ; ২০০/১৮১ কর্ণওয়ালিস খ্রীট, কলিকাত!। মূল্য ছুই টাকা। প্র: ১৯২ :

এই উপগ্রাস্থানি গতামুগতিক গয়। প্রধান চরিত্র জরস্তাকৈ অতি বিচিনরপে ফুটাইয়া তোলা হইয়ছে। বস্তুত, চরিত্র বলিতে এই একটিই; অপরগুলি প্রত্যুক্ষ বা পরোক্ষ ভাবে ইহার বিকাশে সাহায়্য করিয়াছে মাত্র। লেখকের সকল স্প্টিচাতুল তাই ইহারই উপর পড়িয়াছে। ইহাকে লইয়াই মুগুল্ল আকাশ ও আবিলতামর পৃথিবার হল-সংঘাত। এ যেন সরু দড়ির পোলের উপর দিয়া চলিয়াছে। পড়িতে পড়িতে তাই চমকিয়া উঠিতে হয়। একটু এদিক-ওদিক হইলেই হয় অস্বাভাবিকতের কোঠায় পৌছিত, নয়ত শিব গড়িতে বানর হইয়া য়াইত। কিন্তু বিশ্বরকর লেখনী-সংখ্যম সকল দিক সামলাইয়া গিয়াছে; চরিত্রটি মুসমঞ্জস পরিণত্তি লাভ করিয়াছে। মুলেবক বলিয়া সরোজক্মারের খ্যাতি আছে; বর্জমান উপজ্ঞাসে সে যশ বাড়িবে। ছ্লাপা বাধাই ফুলর

শ্রীমনোজ বস্থ

কলিকাতা-পরিচয়—মূল এক টাকা, প্রাপ্তিহান—অঞ্জ খ্রিন্টিং গুরার্কস, ৬ নং মুরলীধর সেন লেন, কলিকাতা।

প্রবাসী-বঙ্গ-সাহিত্য-সন্মেলন উপলক্ষে অভ্যর্থনা-সমিতি আগত প্রবাসী বাঙালাদিগকে কলিকাতা সম্বন্ধে সম্যক্ষ পরিচয় দিবার উদ্দেশ্তে এই পুত্তক প্রকাশ করিরাছিলেন। এই পুত্তকে কলিকাতার ইতিহাস, প্রাচান ৰাঙালী মনীবিগণের জীবনী ও তাঁহাদের কীর্ত্তিকলাপ আলোচিত হইরাছে। ইহাতে কলিকাতার প্রইবাছানসমূহ ও বিবিধ প্রতিষ্ঠানের সচিত্র বিবরণ প্রকাশিত হইরাছে। এতহাতীত কলিকাতার প্রাচীন ও আধুনিক জ্ঞাতব্য তথ্যাধি এই পুত্তকে সন্ধিবিষ্ট হইরাছে। সাধারণভাবে কলিকাতা সম্বন্ধে ঘাহা জানা দরকার, এই পুত্তক পাঠ করিলে তাহা জানা বাইবে!

বাঁকুড়ার পুরাক্বতি-রক্ষা

গ্রীযোগেশচন্দ্র রায়

বাকুড়াজেশা কয়েকটি ভূমে বিভক্ত। ভূম, ভূমি, দেশ। উত্তরে সামস্তভূম, দক্ষিণে মল্লভূম, পূর্বে শুরভূম, পশ্চিমে বরাহভূম, ধবশভূম, তুক্সভূম। এক এক ভূমের এক এক রাজা ছিলেন; সে সে রাজার বংশের নামে ভূমের নাম। এই সকল ভূমের মধ্যে মল্লভূম বিস্তীর্ণ। এককালে শূরবংশ হীনব**ল হ**ইলে শূরভূম মল্লরাজার শাসনে আসিয়াছিল। মরভূম ঈষ্ট-ইণ্ডিয়া-কোম্পানীর আমল পর্যস্ত আট-নয় শত বৎসর প্রায় স্বাধীন ছিল। বর্গী-দন্য ভাস্করপণ্ডিত মলরাজধানী বিষ্ণুপুর আক্রমণ ও অবরোধ করিয়াছিল, কিন্তু দলমর্দন (দলমাদল) কামানের অধ্যাদগার সহিতে না পারিয়া পলায়ন করিয়াছিল। মল্লরাজ বীরহান্বীর भागन वानगारक किथिए कत्र श्रीकात कतिशाहित्नन, কিন্তু কোন বৎসর দিতেন, কোন বৎসর দিতেন না। বঙ্গের পাঠান স্থলতানেরা মল্লভূমে প্রবেশ করিয়াছিলেন কিনা, তাহার কোন কিম্বদন্তীও নাই। লোকে শুনিয়াছে, ঐানিবাস আচার্যের হই গাড়ী গ্রন্থ মন্ধ্রভূমে লুঠিত হইয়া-ছিল। কিন্তু ভাবে নাই, মল্লভূম স্বাধীন রাজ্য ছিল, সে রাঞ্জ্যে প্রবেশ করিতে হইলে বিদেশীকে রাজার অনুমতি প্রার্থনা করিতে হইত। খ্রীনিবাস আচার্য একা শুন্তহস্তে গমন কুরিলেও ঘাটিতে (পুলিদ আউটপোষ্ট) ক্সানাইয়া याहेट इंड । कान् विद्वानी कान् ब्राह्म श्राप्तीन ভादि-গমনাগমন করিতে পারে? আচার্য-ঠাকুরের সর্বস্থ অপহত হইয়াছিল, প্রত্যাপিতও হইয়াছিল। দেশশাসনের এই দ্নাতন বিধি লজ্মিত হয় নাই। রাজা অপক্ষত গ্রন্থের মূল্য ব্ৰেন নাই, এমন নহে। তিনি ভাগবতপাঠ ভনিতেছিলেন, আচার্যঠাকুর-কৃত ব্যাধ্যা শুনিয়া মুগ্ধ হ্ইয়াছিলেন। মলভূমের রাজা গোপাল সিংহের সময়ে এক বিদেশী পর্যটক লিখিয়া গিয়াছেন, প্রজা রাত্তিকালে গৃহ্ছার ক্লব্ধ না করিয়া নিজা যায়, সে রাজ্যে বিদেশী প্রবেশ করিলে ঘাটিআলেরা ঘাটিভে ঘাটিতে পঁহছাইয়া দের।

কিন্ত কবে বিষ্ণুপুর রাজধানী হইয়াছিল, কবে হ**ই**ভে ও কেন মল্লাব্য প্রচলিত হইয়াছিল, আমরা কিছুই জানি না। কে সে কোটেশ্বর, যাহার কোট (ছর্গ) শোকমুখে কোড়া হুর-গড় হইয়াছে; কে সে ঈশ্বর, ভূমিনাথ, যাহার নামে (বি এন রেলের পিয়ারডোবা টেশনের কাছে) অধুরগড় প্রাসিদ্ধ হইয়াছে ? কে **সারংগড়** করাইয়াছিলেন? তিনি কোন্দেশ শাসন করিতেন? দফিণে বেত্রগড়, হোমগড়, রামগড়, শাশগড়, মন্দারগড়, ইত্যাদি এক এক গড়ে এক এক রাজবংশ প্রতিষ্ঠিত ছিলেন। কিন্তু কে সে অভীত কাহিনী শুনাইবে? শ্রভূম নিশ্চয় শ্রবংশীয় রাজ্যাদিগের রাজ্য দামোদরের পশ্চিম পার্ফে রাজ্য। ভূমি উর্বরা, রাজ্যস্থাপনের বোগা। শ্রবংশের যিনি আদি, যিনি পশ্চিমদেশ **হইতে** পঞ্চ যাজ্ঞিক ত্রাহ্মণ আনাইয়া যজ্ঞ করিয়াছিলেন, তিনি কি এই শূরভূমের রাজা ছিলেন ? ধবল ভূ'মর প্রতিষ্ঠাতা কি গুর্জর-প্রতীহার, ও তুঙ্গভূমের কর্ণাটদেশীয় ছিলেন? লাউদেন কি এই ছই বংশে বিবাহ করিয়াছিলেন ?

শিশুনিয়া পাহাড়ট শিশুনাগ (শিশুহন্তী) তুলা শুইয়া আছে। কে তাহার গাত্রে বিঞ্চুচ্ক প্রতিটা করিয়াছিলেন? তিনি পৃষ্করণার অধিপতি সিংহ্বমার পুত্র চক্রবর্মা। আমরা উৎকীর্ণ লিপি হইতে এইটুকু জানিতেছি। লিপিপ্রাজ্ঞেরা চতুর্থ থিউশতাব্দের বলিয়াছেন। প্রথমে প্রীয়ৃত ন:গক্রনাথ বহু প্রাচাবিদ্যামহার্ণব অজমের দেশের পৃষ্করতীর্থের চক্রবর্মা মনে করিয়াছিলেন। পরে ঐতিহাসিক রাখালদাস বন্দ্যোপাধ্যায় মালবদেশাধিপতি সিংহ্বর্মার পুত্র অক্মান করেন। হাই জনেরই মৃক্তি থণ্ডিত। এক জনও জানিতেন না, শিশুনিয়া হইতে ২৪ মাইল পূর্বে পোধ্বর্মা নামে গ্রাম আছে। দামোদরের দক্ষিণ তীরে গ্রাম। এধানে গড়েশ্ব চিহ্ন আছে। ইহার প্রাচীনতার বহু নিদর্শন ইতন্ততঃ বিক্ষিপ্ত আছে, বিত্তীয় থিউশতাব্দের আছে, বহু চিহ্ন দামোদরের

বক্তার নৃপ্ত হইরাছে। চক্রবর্মা এই প্রাচীন প্রকার অধিপতি ছিলেন কি? কে আমাদের সংশয়চ্ছেদ করিবে? ছাতনার ও কেঞাক্ড়ার যুদ্ধে নিহত আয়ুধিক সৈনিকের পাষাণ-মূর্তি দাঁড়াইরা আছে। তাহারা কত কালের মৃত শাক্ষী, কোন্ যুদ্ধের, কোন্ প্রতিপক্ষের সাক্ষী, কে সে বিজয়বাত্বা-ঘোষণার কাহিনী শুনাইবে? সে পক্ষ পরাজিত হইয়াছিল। সে নিমিন্ত মূর্তি স্থাপিত হইয়াছে। এইরপ মূর্তি অন্ত স্থানেও আছে।

দেশটি অনার্যের অধিকৃত ছিল। নিরুপমা রাচ্ভূমিও এককালে তাহাদের ভোগে ছিল, পবিত্র ব্রহ্মাবর্তও ছিল। ভাহাতে দেশের গৌরবহানি হয় না। নিবিড় অরণ্যানী রাচের পশ্চিমের দেশটিকে রক্ষা করিয়া আসিয়াছে। নুতনও নয়। কত যুগ চলিয়া গিয়াছে, বাহার সংখ্যা করিতে ভূবিদ্যার আশ্রম লইতে হইবে। বাকুড়া নগরের যেখানে সরকারী ক্লযি আপিস, দেখিতেছি স্তর-বিক্লত -প্রস্তবের রৃষ্টিবাত্যা-শীতাতপহত পর্বতের উপরে রহিয়াছে। ज्यम शास्त्रवती नमीत खना हम नाहे, वर्षात वला चात्राक्यात প্রভিত। বন্তার কর্দমে সে ভগ্ন ক্ষয়িত বিশ্লিষ্ট পর্বতের শিরোদেশে এখনও আধহাত-পুরু মৃত্তিকা রহিয়াছে। সে বস্তার পলিতে কৃষিকেত হইয়াছে। সে খাপদসমূল বনভূমি কতকাল জনহীন ছিল, কে জানে? তার পর মানুষের কুঠারে স্থানে স্থানে কুদ্র স্কুদ্র জনপদ আরম্ভ হইয়াছিল। সে কুঠার কেহ খুবে নাই, কে খুজিবে? লোখে পড়িয়াছে, সামাল পাথর মনে হইয়াছে, দুরে নিকিপ্ত হুইয়াছে। কোথাও কোথাও এখনও শিলাশস্ত্র আছে। কিন্তু কে অবেষণ করে, রক্ষা করে?

বাকুড়ার উত্তরসীমা হইতে পার্থনাথ পর্বত অধিক দুরে
নয়। এটি শেখর ভূম। বাকুড়া ও শেথরভূম মিশিয়া গিয়াছে,
উভয়ের অবচ্ছেদক রেখা আধুনিক ও ক্রন্তিম। দেশটি গয়া
হইতে দক্ষিণগামী পথেও পড়ে। ক্রৈন ও বৌদ্ধ পরিব্রাক্তক
এদেশে বাস করিয়াছি:লন। তাহাদের নির্মিত শিলামুর্তি
নানান্থানে দেখিতে পাওয়া যায়। বিকুপ্রের পূর্বভাগে
ঘারকেশ্বর নদের কুলে বৌদ্ধ বিহার ছিল। এখনও লোকে সে
গ্রামকে বিহার বলে। সেখানে মক্রাক্ষ নামে নরপতি
ভাগাইর ঘাট বাধাইয়া দিয়াছিলেন। কে সে রাজা? তিনি

কবে ছিলেন? একতেশর শিবদন্দিরের বহিঃপ্রাচীরের মধ্যে 'বাঁদারাণী' নামে যে শিলামূর্তি পূজিত হইতেছে, সেটি জৈন কি বৌদ্ধ তাহাও জ্ঞাত রহিয়াছে। কোন শাক্ত মহামুত্তর রাজা আংকানগর নামে রাজধানী করিয়াছিলেন? কোন বিচক্ষণ তবদশা কৈন-বৌদ্ধ-শাক্ত-শৈব-বৈফব-গাণপত্য-সৌর প্রতিমা কুমারী নদীতটে বর্ত্তমান কালের চিত্রশালা করিয়াছেন? কত প্রতিমা নদীগর্ভে বিনই হইয়াছে, কত অপজত হইয়াছে, কত সাগরান্তরিত হইয়াছে! এখনও এবানে ওবানে মৃত্তিকা হইতে নৃতন নৃতন শিলামূর্তি পাওয়া যাইতেছে। কে সে সব সংগ্রহ ও রক্ষা করিবে? কে বাছলাড়া গ্রামের সিদ্ধের শিবের, কে ইক্রপুরের চণ্ডীর মন্দির নির্মাণ করাইয়াছিলেন? কে কবে একতেখরের মন্দির, কে ঘুটগড়িয়ার মন্দির, সোনাতাপলের মন্দির নির্মাণ করাইয়াছিলেন?

পূর্বকালে নেশটি দরিদ্র ছিল, এখনও দরিদ্র। তথাপি কমিন্ত বস্ত্র, উত্তম কাংসপাত্র নির্মিত হইত। সেকালের বস্ত্র, লোহতাত্রপিন্তলকাংসপাত্র, রৌপ্য ও স্বর্গ অলঙ্কার, মুনার পুত্তলিকা দেশের কলানৈপুণ্যের ও রূপকল্পনার সাক্ষী। সে পট-কার কই যে রামলীলা ও ক্লুফের ত্রজলীলার চিত্র লিখিত, দশাবতার তাস লিখিত? কোন্ সে লোহকার যে আকর হইতে লোহ নিক্ষাশিত করিত? কোন্ সে কর্মকার বে যুদ্ধান্ত্র নির্মাণ করিত? সে যুদ্ধান্ত্রের কি রূপ ছিল? কোন দক্ষ কর্মকার ২ ফুট স্থারের ২২ ফুট দীর্ঘ দলমর্দন কামান গড়িয়াছিল? কত কর্মকার হই শত মণ লোহ জুড়িয়াছিল? লোহের নিমিন্ত কর্মকারকে দুরে বাইতে হর নাই। বিষ্ণুপ্রের দক্ষিণ-পশ্চিমে রাইপুরের নিকটে এক ছোট পাহাড় হইতে এখনও লোহ নিক্ষাশিত হইতেছে। হাজারিবাগ হইতেও আকর আসিত, কেঞাকুড়ার নিকটে লোহ পুথক হইত, লোহমল তাহার সাক্ষী।

সমস্তাল, ভূমিন্ধ, মৃত্তিক ও বর্বর ক্রাতির বাসভূমিতে কাঞ্জিলাল গাঞির ব্রাহ্মণের আদিগ্রাম কেঞ্জাকুড়ার স্থাপিত হইরাছিল। কনৌক হইতে কত পাঠক, ত্রিবেদী, অধ্বযুর্, বাহ্মপেরী, অগ্নিহোত্রী আসিরা বাস করিরাছেন। উত্তরব্দ হইতে বারেক্স ব্রাহ্মণ আসিরাছেন। উৎকল হইতে বারেক্স বাসরা নিবাসী হইরাছেন। বর্দ্মান হইতে

অসংখ্য কুলীন ত্রাহ্মণ আসিয়া চিরবাসী হইয়াছেন। এই রূপ নানা দেশাগতেরা নূতন দেশ বর্জন করেন নাই, স্ব স্থ দেশের বিদ্যামূশীশন ও আচার-অনুষ্ঠান ত্যাগ করেন নাই। ইহার ও অপরে অসংখ্য পূর্থী লিথিয়াছিলেন। গ্রহন বনের ভিতর দিয়া বাহিরের লোকের গমনাগমন ছিল না।) বাহিরের পু**থী বাহি**রের লোকের সহিত আসিয়াছিল, কিন্তু বাহিরে যায় নাই। এইরূপে দীর্ঘকালে বহু পুথী সঞ্চিত হইয়াছিল। কত পুথী ইতুর কাটিয়াছে, উই মাটি করিয়াছে, বর্ণার জল পচাইয়াছে, আগুনে ভন্ম করিয়াছে; নষ্ট পুথী ডোবার জলে ও সারকুড়ে নিক্ষিপ্ত হইয়াছে। তথাপি গাড়ী গাড়ী পুথী স্থানান্তরিত হইয়াছে। "এশিয়াটিক দোদাইটি"র প্থীশালাম, "বিশ্বকোষ" কার্যালয়ে, কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের প্থীশালায়, কিছু বঙ্গীয়-সাহিত্য-পরিষদের ও ঢাকা বিশ্ব-विमानरवत भूशीत मःथा वाष्ट्राह्याद्य । तम मकन भूशी স্বাত্ত বৃদ্ধিত হইতেছে, স্তা; কিন্তু বাকুড়া নিঃস্ব হইয়াছে। আর বে কত পুথী, কত পুথীর পাতা গ্রন্থগুঙ ছলে বলে আত্মদাৎ করিয়া অজ্ঞাত দেশে লইয়া গিয়াছে, তাহার সংখ্যা নাই। কাশীরামদাসের মহাভারতের তিনধানা পুথী পাত্রসায়র হইতে কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের পুণীশালায় গিয়াছে। তন্মধ্যে একথানি কাণারামদাসের নিজের পুথীর মাত্র পনর বৎসর পরে পাত্রসায়রে অনুলিখিত হইয়াছিল। "ধর্মপূজাবিধানে"র ও রামাই পণ্ডিতের "শুক্তপুরাণে"র প্ণী বিষ্ণুপুর অঞ্চলে পাওয়া গিয়াছিল। এত পুণী নষ্ট ও স্থানাস্তরিত হইবার পরেও যে বিষ্ণুপুরে মাদি কবি 🏗ড়ু চণ্ডীদাসের পদাবদীর পুথী পাওয়া গিয়াছে, **আ**শ্চর্য বটে। এই আবিদ্ধারে সাহিত্যিক-সমাজ চমকিত হইয়া জিজ্ঞাসা করিতেছেন, এই চণ্ডীদাসই কি ছাতনার বাসলী দেবীর বড়ু ছিলেন? আঠার বৎসর হইল সে পুথী মুদ্রিত হইয়াছে। কিন্তু এখনও ইহাদের বিশায় কাটে নাই। স্বাধীন দেশে গতানুগতিকতা থাকে, থাকেও না। বড়ু রাধা**রফলীলা**-গীতে কোথাও পুরাণ মানিয়াছেন, কোথাও নৃতন গড়িয়াছেন। দৈশেই উত্তম উত্তম গীতের উদ্ভব হইয়া থাকে। শত বংসর পূর্বেও বিষ্ণুপুরে বড়ুর গীত ধরিয়া নারদমতে তাল ^{পিক্ষা} দেওয়া হইত। সে গীতের ও তালের পুণী পাওয়া

গিয়াছে। আর, কে না য**ূ-**ভট্টের থে**য়াল, কীর্তি**-গোস্বামীর পাথোয়ান্তের খ্যাতি শুনিয়াছে? আর কোণায় জগৎ-গোম্বামীর টোলে শিষ্যেরা প্রতিপালিত ও গম্বর্ববিদ্যা আয়ত করিয়া গিয়াছে ? সে ধ্রুসদ এখনও নিঃশব্দ হয় নাই। যে শুভন্ধরী আর্যা বঙ্গদেশের তাবৎ পাঠশালায় অধীত হইতেছে, আদি ওভগ্ন যিনিই হউন, তিনি এই দেশে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন। আর কোন্ ভভঙ্করী আর্যায় ভূমিপরিমাণের প্রাচীন পদ্ধতি আছে ; শুভঙ্করী 'দাঁড়া' নামে যে আট ক্রোণ দীর্ঘ থাল আছে, ক্লঘকের হিতাথে খনিত ইইয়াছিল, সে দাঁড়ার নামেই প্রকাশ স্তাধর (ইঞ্জিনিয়র) স্তা ধরিতে জানিতেন, দাঁড়ার শিরায় শিরায় ব্দুলনালা করিয়াছিলেন। কত গ্রামে কত 'বাদ্ধ' নির্মিত হইয়াছিল, কত পোশরী থনিত হইয়াছিল। এথনও বামন দাদনা দিনে ইক্রধ্ব উত্তোলিত হয়, এখনও আখান দিনে (> লা মাব) গ্রামবাসীরা মুগয়া করে। দেশ স্বাধীন ছিল, দেশবাদী স্বাধীনভাবে জীবনদাতা নির্বাহ করিত। দেশের গ্রহাচার্বেরা স্বরচিত গ্রহগণিতযোগে পঞ্জিকা প্রণয়ন করিতেন। তাহার চিহ্ন এখনও বগডি-তে (বকদ্বীপ) আচার্য-বংশে রহিয়াছে। সর্বাপেক্ষা বিশ্বয়ের বিষয়, ভরণা নক্ষত্রে রবি প্রবেশ করিলে (১৩ই বৈশাধ) নববর্ষ গণনা অক্সাপি প্রচলিত আছে। অশ্বিনীর উদয়ের পরেই সুর্যের প্রকাশ দেখিয়া এই বিধি হইয়া থাকিবে। কিন্ধ উৎপত্তি অজ্ঞাত।

প্রত্যেক জেলাতেই পুরাবৃত্তের উপকরণ আছে।
প্রত্যেক জেলাতেই উপকরণ সংগ্রহ ও রক্ষা, নৃতন উপকরণ
অধেষণ ও বিনিয়োগ নিমিত্ত যে নামেই হউক এক
সমিতি স্থাপন কর্তব্য। করেক বৎপর পূর্বে কে জানিত
লামোদরের দক্ষিণে মহানাদ নামক স্থানে পুরাক্কতি পাওয়া
যাইবে? এক এক দিন যাইতেছে, কোথাও না কোথাও কিছু
না কিছু নই হইতেছে। পুরাক্কতির মুশ্য নাই। আর, যে
মাহ্য তাহার বাসভূমির বর্তমান ও অতীত দশা শ্রবণ না করে,
সে অন্ধ থাকিয়া কাল কাটায়। স্থদেশের জ্ঞান নিমিত্ত আর
কত কাল বিদেশার কোতৃহলের প্রতীক্ষায় থাকিবেন?
যে দেশ নৃতন নৃতন ধন উপান্ধন করে, সে দেশ ধন্ত।
আর, যে দেশ পৈতৃক ধন রক্ষা করিতে উদাসীন, সে



বাঁকুড়া জেলার বাহলাড়ার মন্দির [ভারতীয় প্রগ্রহ-বিভাগের সৌজ্ঞে]

কিসের গৌরব করিবে? বাকুড়ায় যত প্রকারের যত উপকরণ আছে, রাঢ়ের অন্ত কোন জেলাতে তত নাই।

১৩২৯ বঙ্গাব্দে বাকুড়ায় 'দারম্বত দমারু' স্থাপিত হইয়াছে। ইহার অনুষ্ঠান-পত্রের কিঞ্চিৎ উদ্ধৃত হইতেছে। "দারস্বত-সমাজ জনগণের চিতে কর্ষণ ও বর্ষণ প্রয়াসী। হল্প-পানে দেহ রক্ষিত হইতে পারে, কিন্তু মনের ভোজা না পাইলে সে দেহ গুৰু ও শীৰ্ণ হয়। · · · কেহ কেহ অলীক আশক্ষা করেন; মনে করেন তিনি লেথাপড়া করেন না. সারস্বত-সমাজ সরস্বতীর বরপুত্রের সমাজ। কিন্তু সরস্বতীর পূজা কে না করেন? কে মন ব্যতীত দেহ শইয়া সংসার **क्ष्मा** विष्य करतन ? श्रामदा करन करन मञ्ज छे९भानन করি না, কিন্তু আমরা সকলেই ভোক্তা। কেহ ভোক্তা পরিবেবণ আহরণ করেন, কেহ করেন। · · সম্প্রতি কর্তু টোলের ছাত্রদিগের সারস্বত-সম(জের

পরীক্ষা হইতেছে।* কিন্তু ইহা বিপুল কার্যক্ষেত্রের এক ক্ষুদ্র কোন মাত্র।"

নানা কারণে সারশ্বত-সমাজ দেশজ্ঞানসঞ্চয়ে মনোষাের হইতে পারেন নাই। কিন্তু কোথায় কি আছে, কোথায় কি পাওয়া ঘাইবে, সে অনুসন্ধানে বিরত হয়েন নাই। প্রায় তুই বৎসর পূর্বে প্রভুত্তবন প্রতিষ্ঠার প্রয়োজনীয়তা সারশ্বত-সমাজে তুই দিন বিমুষ্ট হইয়াছে। আনুমানিক বায় ২৫০০০০০০ পাঁচল হাজার টাকা নির্ধারিত হইয়াছে। ঢাকা চিত্রশালার অবেক্ষক ('কিউরেটর') শ্রীযুত্ত নলিনীকান্ত ভটুশালা মহাশরের সহিত পত্রবাবহার হইয়াছে। স্থির হইয়াছে, বাছলা দবীর মন্দিরের আদর্শে বাকুড়া প্রভুত্তবন নির্মিত হইবে। ভবনে পাঁচটি কক্ষ থাকিবে। এক দীর্ঘ কক্ষে গ্রহাগার, তুই সক্ষ কক্ষে শিলা ধাতু ও মৃত্তিকার মৃতি, এক কক্ষে পূথী থাকিবে। অপর কক্ষে নিয়োগা বসিবেন। বায় এইরূপ হইবে,

| ভূমি ও ভবন | ••• | ;oooo′ |
|------------------------|-----|---------|
| <u> ত্</u> ব্য আহরণ | ••• | 6000 |
| গ্রন্থাগার | ••• | 8000 |
| স্ভজ্ | | ,000C |
| | | 20000 |
| বার্ষিক ব্যয় সম্প্রতি | | _ |
| অবেক্ষক (৫০,-৫,-১০০,) | ••• | .900√ |
| প্রতীহারী (১২ ়) | ••• | 288/ |
| অনিশ্চিত বায় | ••• | > • • / |
| | | P88- |

পরে অবেক্ষকের বেতন বৃদ্ধি হইবে, আহরণের নিমির্জ ৫০০০, ও গ্রন্থাগারের নিমিত ৪০০০, টাকা ক্ষর হইবে বার্থিক ১৫০০, এবং ৩০০০, টাকা লাগিবে। বাকুড়ায় একটি উচ্চ শ্রেণীর কলেন্দ্র, তিনটি ইংরেজী ইছুল, একটি মেডিকার ইছুল আছে। কিন্তু গ্রন্থাগার নাই। প্রভ্রুত্বনের গ্রন্থাগারে দেশজ্ঞানবৃদ্ধির অনুকৃল সারবান্ গ্রন্থ থাকিবে। সে কর্মের ভিত্তিতে প্রসিদ্ধ প্রসিদ্ধ মন্দিরের চিত্র থাকিবে।

সমাজের আশা আছে, বাকুড়া মুন্সিপালটি ও ডিপ্লিক বোর্ড বার্ষিক বায় ৮৫০ হইতে ১২০০২ টাকা দিবেন। এবং

^{*} হথের বিষয় এখন পরীক্ষাখীর সংখ্যা বিশুণ হইরা আড়া^{র স্বত} হইয়াছে।

বায় ২৫০০০ টাকা দানশীল স্বদেশহিতেচ্ছু দান করিবেন।
বিনি এই টাকা দান করিবেন প্রাক্তবন তাহার নামে
আখ্যাত হইবে। বিনি ৫০০০ টাকা দান করিবেন, তিনি
'গোগু' নাম পাইবেন, এবং ভবনের এক কক্ষ তাহার নামে
আখ্যাত হইবে। বিনি ১০০০ টাকা দিবেন, তিনি ভবনের
'পোষ্টা'; এবং বিনি ৫০০ টাকা দিবেন, তিনি 'মিত্র' নামে
প্রিচিত হইবেন।

ইতিমধ্যে প্রত্নভবন নিমিত্ত কিছু কিছু দান প্রতিশ্রত হুইরাছে। কেহ কেহ এই দান লইয়া পুথী সংগ্রহ করিতে বলিয়াছেন। কিন্তু পুণীকে অনুল্যানিধি মনে করিয়া তাহা রক্ষা করিতে হুইবে। সমাজের নিজের গৃহ না হইলে ধর্ম হা হইবে না। প্ণীর স্বামী কি দেখিয়া কাহাকে দেখিয়া তাহার বংশের ক্রমায়াতরিক্থ কোথায় ক্রস্ত করিবেন? কে লগ্যক হইবেন? এদিকে যত দিন বাইতেছে, শিলাপ্রতিমা ও প্ণীও তত নষ্ট ও স্থানাস্তরিত হইতেছে। এই সঙ্কটে পড়িয়া বাকুড়া দারস্বত-সমাজ বাকুড়াবাসী ও স্থদেশবাসী বদান্ত ও বিদ্যোৎসাহীর নিকটে ২৫০০০ টাকা প্রার্থনা করিতেছেন। আপনাদের শিববৃদ্ধি হউক, দেশের মুখ উজ্জ্ল হউক।

বাকুড়া সারসভ-সমাজ ১০৪১ সাল, মা**ব**

জীযোগেশচন্দ্র রায়, প্রকৃত্বন অন্তর্গানের অন্যযোজক 🗩

বঙ্গের পট-চিত্র

শ্রীঅজিতকুমার মুখোপাধাায়

ভারতে বৌদ্যুগকে জাগরণের যুগ বলিলে বোধ হয় অত্যুক্তি হইবে না, কেন-না, বৌদ্যুগে ভারত সর্ক্রবিষয়ে—
চিত্রে, ভাস্কর্যো, স্থপতি-কলায় যেরপ উন্নত হইয়াছিল সেরপ বিকাশ আর কোনও যুগে দেখা যায় না। এই কারণে বাংলার চিত্র-পরিচয় দেওয়ার পূর্বেব বৌদ্ধ সংস্কৃতির সক্ষে বাংলার শিক্ষ সম্বন্ধ কিরপ ছিল তাহার আলোচনা একাস্ক প্রয়োজন।

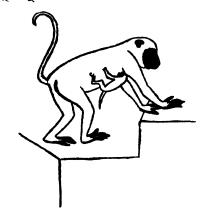
বৌদ্ধ ধর্ম প্রচারিত হওয়ার পর ভারতের অন্তান্ত কংশের তুলনায় পূর্ন্ধ-ভারতেই প্রথম অধিকাংশ লোক বৌদ্ধমত গ্রহণ করিতে থাকে। এমন কি আফগানেরা বখন বাংলা আক্রমণ করে তখন পূর্ব্ব-ভারতের অধিকাংশ লোকই বৌদ্ধ ছিল। তাহারও পূর্ব্বে পাঁচ শত বংসর ধরিয়া বৌদ্ধেরা বাংলা ও বিহারে রাজত্ব করিয়াছিলেন। সেনেরা ইহার মধ্যে এক শত বংসর ধরিয়া বাংলার একাংশে রাজা ছিলেন মাত্র এবং বল্লাল সেন যখন তাহাদ্বের সংখ্যা গণনা করেন তথন বাংলায় ছই হাজার বর মাত্র প্রান্ধণ ছিল। পালেরা বৌদ্ধ ছিলেন। বাংলা ও বিহারে রাজত্ব বাতীতও মন্ত অনেক দেশ তাঁহাদের অধিকারে আদে। এক শত বৎসর ধরিয়া তাঁহারা উত্তর-পশ্চিম সীমান্ত-প্রেদেশ হইতে গোদাবরীর মুখ পর্যান্ত আপনাদের আধিপতা বিস্তার করিয়াছিলেন। সমন্ত ভারত যখন বৌদ্ধ ধর্ম্মের সংস্পর্শে আসে নাই তথন বাংলায় রীতিমত বৌদ্ধ ধর্ম্মের চর্চা আরম্ভ হইয়া গিয়াছে। তাহাকে ভিত্তি করিয়াই বৌদ্ধ সন্ধাসীরা পৃথিবীর নানাস্থানে বৌদ্ধমত প্রচার করিতে থাকেন। বাংলার ও মগধের বৌদ্ধ সাহিত্য, বৌদ্ধ ব্যাকরণ, এবং বৌদ্ধ কোয়, বৌদ্ধ শাস্ত্র, বৌদ্ধ দশ্দি, বৌদ্ধ প্রি ও বৌদ্ধ সভ্যতা সমস্ত ভারতে বিস্তৃতি লাভ করিয়াছিল। (ভহরপ্রসাদ শাস্ত্রী লিখিত প্রবন্ধ, ভারতবর্ষণ)।

এই সময় বৌদ্ধ শিল্প, ভাস্কর্যা, স্থপতি-কশা বৌদ্ধ ধর্ম্মের সহিত:যুক্ত হইরা দিখিজয় করিতে ছুটিয়াছিল এবং ইহার শ্রেষ্ঠ নিদর্শন থ্রীঃ-পৃঃ প্রথম শতাব্দীর পূর্ব হইতে থ্রীষ্টীয় সপ্তম শতাব্দীর পর পর্য্যস্ত পাওয়া বায়। এই সাত শত বৎসর অর্থাৎ বৃদ্ধদেবের মৃত্যুর পর হইতে ব্রাহ্মণ্য ধর্ম্মের পুনরুত্থান পর্যান্ত বাংশা দেশ বৌদ্ধদের লীলাক্ষেত্রে



ছিল এবং এই বাংলা দেশের শিল্পকুশলীরা ভারতীয় প্রাচীন সভ্যতাও সংস্কৃতির শিল্প-বিভাগে প্রতিভার কি পরিচয় দিয়াছিলেন সেই সম্বন্ধে আমরা এখন আলোচনা ক্রিব।

থ্রী:-পূ: চতুর্থ শতাব্দীর মধ্যভাগ হইতে পাল-রাজাদের



ংশুমান ও সম্ভান (অল্লন্ডা)

শেষ-সময় পর্যান্ত মগধে শিল্পের চরম উন্নতি সাধিত হন্ন
এবং কলদেশেই মগধের চিত্রাগার ছিল ইহা ক্রমশই
প্রমাণিত হইতেছে। পাল-রাজ্ঞান্তর পূর্ব হইতেই গৌড়
উত্তর-ভারতের সভ্যতার কেন্দ্রস্থল ও বর্দ্ধিষ্ণু নগর বলিরা
বিদেশীরগণের আকর্ষণ-ভূমি ছিল। এই সমন্ন হইতেই
কলদেশ চার্ন্ধ-শিল্পের শ্রেষ্ঠ নিদর্শন রাধিরা গিরাছে।
দেবপালের রাজ্ঞ্জকালে আমরা হই জন প্রতিভাশালী



শিল্পী ধীমান্ ও তৎপুত্র বীতপালের পরিচয় পাই।
ভিক্ষু তারনাথ তাঁহার গ্রন্থে লিথিয়াছেন যে, দেবপালের
রাজত্বের সময়ে বরেক্সভূমিতে নিপুণ দক্ষশিল্পী ধীমান্
ও তৎপুত্র বীতপাল ধাতৃশিল্পে, ভাস্কর্যো, চারুকলায়
বহু শ্রেষ্ঠ নিদর্শন রাথিয়া গিয়াছেন। বীতপালের শিয়া
মগধেই বেনী ছিল এবং ধীমানের শিল্পদ্ধতিকে 'পূর্দ্দা
বিভাগ' এবং বীতপালের পদ্ধতিকে 'মধ্যদেশ শিল্পবিভাগ' বিশা হইত।

দশম শতাকীর শেষভাগে দিতীয় গোপাল সিংহাসন অধিকার করেন। সেই সময়ের একথানি সচিত্র পুঁথি পাওয়া গিয়াছে এবং তাহা বর্ত্তমানে ব্রিটশ মিউজিয়মে রক্ষিত আছে। এই সময় তিববতীয়েরা উত্তর-বন্ধ আক্রমণ করাতে বন্ধশিল্পের অধঃপতন স্থক্ক হইয়াছিল। ইহার পর একাদশ শতাকীর প্রথম ভাগে মহীপাল দেবের সময় বন্ধশিল্পের পুনর্জাগরণের মহতী চেষ্টা হইয়াছিল এবং এই সময়েই 'অইসাহস্রিকা প্রজ্ঞাপারমিতা' পুঁথি লিখিত হয়। এই পুঁথিখানির চিত্রগুলি ত্রিবর্ণে রঞ্জিত এবং ইহা 'এশিয়াটিক সামাইটি'র প্রস্থশালার রক্ষিত আছে।

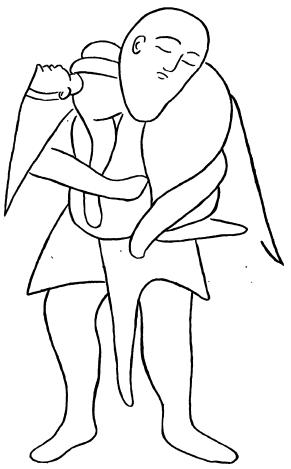
দশম শতাব্দীর মধাভাগ হইতেই তিব্বতীয়েরা বাংশা



অনুপূৰ্ণ!—কালীঘাট

প্রবেশ করিতে থাকে এবং মহীপালদেবের রাদ্রত্বের সময় বিক্রমশিলার প্রধান বৌদ্ধ ভিক্সু অতীশ বৌদ্ধ ধর্ম প্রচারের দ্বন্ত নেপালও তিব্বত গমন করেন। এই সময় হইতেই বোধ হয় বঙ্গশিল্প নেপালও তিব্বতে প্রভাব বিস্তার করিতে থাকে। 'এলিস গেটি লিখিয়াছেন, "বাংলায় একাদশ শতান্দী পর্যান্ত তৈজসপত্রে মগধরীতি অন্থায়ী যে চিত্রান্ধন হইত সেই চিত্রান্ধনের পদ্ধতি তিব্বত এবং নেপালে প্রভাব বিস্তার করিয়াছিল।" * নিলনীকান্ত ভট্টশালী মহাশয়ের প্রস্থের † ভূমিকায় ষ্টেপল্টন্ লিখিয়াছেন যে একাদশ শতান্দীর তিব্বতীয় 'Pog-Sam-Zom-Zam' প্রস্থে এইরপ লিখিত আছে যে, ভাস্কর্যা এবং চিত্রে বঙ্গশিল্পীরা সর্ব্বশ্রেষ্ঠ, তাহার পরে নেওয়ার ও তিব্বতীয় শিল্পিগণ এবং সর্ব্বশেষে চীনাশিল্পী।

কেবলমাত্র স্থলপথে নয় জ্বলপথেও বল্পদেশের সহিত স্থান্তর পূর্বেথণ্ডের বহু পূর্বে হাই.তাই যোগাযোগ ছিল। বাংলার প্রসিদ্ধ বন্দর তাম্রলিগু, চটুগ্রাম, সাতগা প্রভৃতি হইতে বহু প্রকার বন্ধপোত সিংহল, ব্রহ্মদেশ, চীন, জাপান, মালয় প্রভৃতি স্থানে গমনাগমন করিত। চতুর্থ শতাব্দীতে ফা-ছিয়ান তাত্রলিপ্ত বন্দরের শ্রীবৃদ্ধি দেখিয়াছেন। প্রায় তই বৎসর এখানে থাকিয়া তিনি তাত্রলিপ্তের একখানি পোতে চৌদ্দ দিনে সিংহলে পৌছেন। ইহার আড়াই শত বৎসর পরে হয়েন-সাং আসিয়াও তাত্রলিপ্তকে একটি সমৃদ্ধ নগর বলিয়া বর্ণিত করিয়াছেন। হুয়েন-সাঙের পরবর্ত্তী



সত্ৰীৰ দেহত্যাগ—কালীঘাট

ইৎ-সিংও তাম্র**লিপ্ত বন্দ**রে নির্মিত পোতে চীনে প্রত্যাগমন করেন। এই ভাবে কঙ্গ-প্রভাব চারি দিকে বিস্তৃত হুইতে থাকে। রাধাকুমুদ বাবুর Indian Shipping প্রস্থে লিখিত আছে যে, জাপানের হরিউজি মন্দিরে রক্ষিত কয়েকখানা

^{*} The Gods of Northern Buddhism.

[†] Iconography of Buddhist and Brahminical Sculptures in the Dacca Museum.

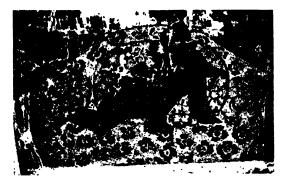
^{*} ৰাখাকুমুদ মুখোপাধ্যায়েৰ Indian Shipping and Maritime Activities from the Earliest Time মন্তব্য |



ষিতায় গোপালের রাজত্বকালান রঞ্জিত পঁ,ুপি (ব্রিটশ মিউঞ্জিয়ন)
কাপানী ধর্মগ্রন্থের বর্ণমালা একাদশ শতাকীর বাংলা
অক্ষরের অক্সরূপ।

ডাক্তার আনন্দকুমারস্বামী ব্রহ্মদেশের বিখ্যাত পেগান মিক্সিরের গাত্তে অঞ্চিত ক্রেস্তো চিত্র সম্বন্ধে আলোচনা করিতে গিয়া লিথিয়াছেন, "এই ফ্রেকোে চিত্রাঙ্গন-রীতির সহিত বাংলা ও নেপালের একট প্রকৃতিগত সাদৃশ্য আছে এবং কেম্বিক বিশ্ববিদ্যালয়ে রক্ষিত ১৬৪৩ খ্রীষ্টান্দের রঞ্জিত পুঁথি (নেপাল ১০১৫ খ্রীষ্টাব্দ), এশিয়াটক সোসাইটিতে রক্ষিত পুঁথি (নেপাল ১০৭১ গ্রীষ্টাব্দ), ১৪৬৪ এবং ১৬৮৮ গ্রীষ্টান্সের কেম্বি,ক্লে রক্ষিত পুঁপি (বাংলা একাদশ শতান্দীর, বোষ্টনে রক্ষিত পুঁথি) প্রভৃতি করিলে ইহার প্রমাণ পাওয়া যায়।" বাবার ভিক্ তারনাথও তাঁহার গ্রন্থে লিথিয়াছেন যে, দেবপালের সময় হইতেই নেপালের শিল্প বঙ্গশিল্পের দারা গভীর-ভাবে প্রভাবান্বিত হইয়াছিল এবং তিব্বতের ধর্মের বর্তমান রূপ অতীশই প্রথম প্রবর্তন করেন। তথন তিকতের শিল্পও পালশিল্পদার অনুপ্রাণিত হয়। আমরা নেপাল ও তিব্বতের মন্দির-গাত্তে লম্ববান চিত্র ও সমসাময়িক বঙ্গচিত্র বিশ্লেষণ করিলে এই সত্য উপলব্ধি করিতে পারি।

ইছার পর পালেরা মাত্র কয়েক পুরুষ বাংলার সিংহাসনে
অধিষ্ঠিত ছিলেন এবং পালরাজা মদন পালের সময় হইতেই
বঙ্গ দেশ বার-বার বিদেশীগণ কর্ত্বক উৎপীড়িত হইতে থাকে।
অবশেষে দ্বাদশ শতাকীর প্রারম্ভে সেনেরা বাংলার সিংহাসনে
অধিষ্ঠিত হন। এত দিন পর্যান্ত বৌদ্ধ ও রাহ্মণেরা শাস্তিতেই
পরস্পর বাস করিতেছিলেন, কিন্তু সেন রাজ্বাদের সময়
হইতেই বৌদ্ধ ধর্মের বিরুদ্ধে রাহ্মণ্য ধর্মের প্রতিক্রিয়া আরম্ভ
হয়। এই সব কারণে বোধ হয় বঙ্গশিল্পীরা ব্যতিবাস্ত ইইয়া



গোপাল

সমস্ত ভারতে ছড়াইয়া পড়েন । আমাদের মনে হয় কাংড়াউপতাকার শিল্পীরা ইহাদেরই বংশধর । কাংড়া-শিল্প
বিচার করিলে আমরা দেখিতে পাই ইহার বিধয়-বস্তু,
বর্ণবিকাস ও মূর্ত্তি-রচনা বঙ্গশিল্পের একই ধাচে গঠিত । বদিও
ইহাতে রাজপুত শিল্পের প্রভাব দেখিতে পাওয়া বায় এবং
ইহা সম্ভবপর, কেন-না, তদ্দেশে বসবাস করিয়া রাজপুত
শিল্পীর প্রভাব হইতে মুক্ত হওয়া কঠিন ছিল, তথাপি
তাহাদের চিত্রাঙ্গনে বঙ্গশিল্পের ধারা বথেষ্ট পরিমাণে অঙ্গুর আছে দেখিতে পাওয়া বায় । পূর্কেই বলা হইয়াছে,
দেবপালের রাজত্ব উত্তর-পশ্চিম-সীমান্ত প্রদেশ পর্যান্ত বিস্তৃতি
লাভ করিয়াছিল এবং শ্রীযুক্ত জে সি ফ্রেক্ট মহাশয়ের প্রত্থে
ইহার আরও স্পষ্ট প্রমাণ পাই। তিনি লিথিয়াছেন:—

''লেখক ঘখন পাঞ্চাব 'হিল্' ষ্টেটে ছিলেন তথন তিনি পালবংশ-সম্পৰ্কীয় একটি কোতৃহংলাদীপক ও অপ্ৰতাশিত প্ৰবল প্ৰবাদ শুনিতে পান বে স্কেত, কাওনখল, কাছওয়ার, মৃতি প্ৰভৃতি ষ্টেটের মুগতিগণ বাংলার গৌড়-রাঞ্চবংশোভূত। এই সব প্রাচীন রাঞ্জপুত রাজবংশের

[†] History of India and Indonesian Art, p. 172.

প্রবাদগুলি শক্তিশালী ও নিজুল বলিয়া পরিগণিত : কবিত আছে যে, কাস্থওয়ার রাজ্যের প্রতিষ্ঠা গা 'কাহন পাল' একদল কুদ বাহিনী লইরা রাজ্যন্থাপনার্থ ঐ প্রদেশে আদিয়াছিলেন। তিনি বাংলার প্রাচীন রাজ্যানী গৌড় হইতে আদিয়াছিলেন এবং তথাকার রাজ্বংশের কুমার ছিলেন।"

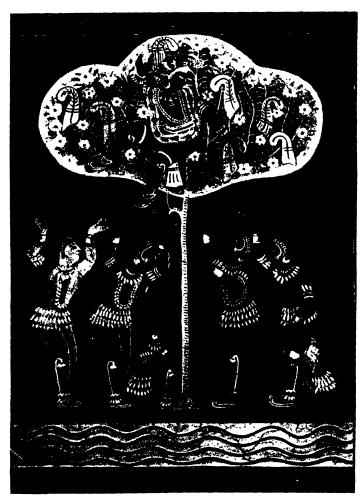
ইহা ছাড়া গভর্ণমেণ্টের গেজেটিয়ারেও লিখিত আছে—তদ্দেশীয় অনেক দুপতি পালবংশোদৃত এবং তাহারা এখনও উহা বলিয়াই পরিচয় দেন।
†

পূর্বেই বলিয়াছি পাল-রাজত্বের অবসানের সঙ্গে সঙ্গে বিদেশীয়ের বঙ্গদেশ বার-বার আক্রমণ করিতেছিল এবং সেন-রাজত্বের সময়ে ত্রাহ্মণ্য ধন্মের পুনকথানে বাংলার শিল্পে এক নৃতন প্রভাব বিস্তার লাভ করে। গীষ্টাব্দে রাজ। মানসিংহ বঙ্গদেশ জয় করেন এবং প্রথম শতাব্দী হইতে দাদশ শতাবদী পর্যান্ত কৈনধন্ম সৃদ্ধ প্রতিম-বাংলার প্রধান ধ্যা ছিল, এই প্ৰোগে মানসিংহের আক্রমণের সঞ্চে সঙ্গে জয়পুর-পদ্ধতি বাংলার অতি সহজেই স্থান করিয়া লইল। বোধ হয় বাংলার শিল্পে মুসলমান পদ্ধতি নাই বলিলেও অত্যক্তি হুইবে না, তবে পরবর্ত্তী সময়ে বাংলা দেশ ইহা হইতে সম্পূর্ণ মুক্তি লাভ করিতে পারে নাই।

তাহা হইলে আমরা চিত্রকলা বিশ্লেষণ করিলে দেখিতে পাই যে বাংলার সমগ্র শিল্পকে বিশেষভাবে ছই ভাগে বিভক্ত করা যায়। প্রথমটি প্রাচীন বৌদ্ধ শিল্পর ধারা, এবং

দ্বিতীয় ধারাটি জয়পুর শিল্পের সংমিশ্রণ। ইহার মধ্যে আবার বাংলার শিল্প-পদ্ধতি, তৃই ভাগে বিভক্ত। একটি সুদূর পশ্চিম-বাংলার শিল্প-পদ্ধতি আর একটি খাস বাংলার

শিল্প-পদ্ধতি এবং বাংলার সমগ্র শিল্প-বিভাগকৈ আমরা এক কথায় পট-চিত্র বা চিত্র-পট বলিতে পারি। কেন-না, বাংলায় পাহাড়-পর্ব্বতের অভাবে কোন শিল্পীই স্থায়িভাবে কোন চিত্রান্ধন করিয়া যাইতে পারেন নাই।



বস্ত্ৰহন্ত্ৰণ

তার পর বাংলার মন্দিরগুলি অধিকাংশই মৃন্মন্ন এবং এ সব মন্দিরেরপ্ত অস্তিত্ব বেশী দিন থাকে না, এইরূপ : অসুবিধার জন্ত বাংশার চাক্ষচিত্র অনুসাধারণের শিল্প হই দাঁড়াইরাছিল।

থাস বাংলায় সাধারণতঃ আচার্য্য এবং প'ল

^{*} Art of the Pala Empire, p. 91.

[🕆] मोत्नमहस्र प्राप्तत्र 'वृश्य वक्र' प्रष्टेवा ।



অষ্ট্রনাহস্রিক। প্রজ্ঞাপারমিতা (ফু**শের পুত্ত**ক হইতে গুহাত)

তই শ্রেণীর শিল্পীরাই চিত্রাগ্ধন ক বিষা থাকেন। আচার্যোরা সাধারণতঃ জড়ানো পট, চালচিত্র, কুল , পিড়ি ইত্যাদি এবং পালেরা লক্ষীসরা, পুতুল ও দেবদেবীর প্রতিমাঞ্চলি চিত্রিত করিয়া থাকেন। পাল-শিলীরা মর্ত্তি ভিন্ন মস্তা কোন বস্তুর উপর স্বপ্রণোদিত হইয়া অঞ্চন করিতে প্রায়ই অক্ষম। ইহার কারণ বোধ হয় তাঁহারা বহু দিন হইতেই উৎসাহের অভাবে চিত্রাঙ্কন-বিদ্যা পরিত্যাগ করেন এবং পরবর্ত্তী কালে পূজা-পার্ব্বণে শুৰু মুনার-মূর্ব্ভি গড়িতে গড়িতে বর্ণবিক্যাস একেবারে ভলিয়া থান। তাঁহাদের হস্তান্ধিত চিত্র মধ্যে মধ্যে দেখিতে পাওয় যায় বটে, কিন্তু ভাষা বার্থ অফুকরণের চেষ্টা মাত্র এবং এই রচনার মধ্যে নিম্নশ্রেণীর কৃত্রিমতা ভিন্ন অন্ত কোন প্রতিভার পরিচয় পাওয়া যায় না।

আচার্যাদের চিত্রগুলি অনেক উচ্চ স্তরের এবং ইহাদের
চিত্রাঙ্কন-পদ্ধতিতে অনাবিল দৌন্দর্যা রক্ষিত আছে। চাহিদা
এবং উৎসাহের অভাবে তাঁহারা বর্ত্তমানে জ্যোতিষ প্রভৃতি
শাস্ত্রের আলোচনা করিলেও বংশাস্ক্রুমিক চিত্রাঙ্কন-পদ্ধতিগুলি এখনও শিক্ষা করিয়া থাকেন এবং নিজেদের অন্ত
কোন উপাধি থাকিলেও অমুকচক্র আচার্য্য বলিয়াই পরিচয়
দেন। আচার্যাদের পদ্ধতি অন্সরণ করিয়া কালীঘাটের
পটুয়ারা প্রাচীনকালে চিত্রাঙ্কন করিতেন এবং তাঁহারা
বর্ণবিক্তাস অপেক্ষা রেখা-সময়য়-চিত্রে অতি চমৎকার
মৌলিকভার পরিচয় দিয়াছেন। যোড়শ শতাকীর

প্রথম ভাগে কালীঘাটের প্রতিভা জীবন্ত স্টিতে আনন্দ ও
দিচুর্ত্তি পাইরাছিল, কিন্তু উনবিংশ শতান্দীর মধ্যভাগ হই.ত
পাশ্চাত্য প্রভাবে কালীঘাটের শিল্পীরা অত্যন্ত অমুকরণপ্রির
হইরা উঠেন। তাঁহারা সন্তার জনসাধারণের মনোরঞ্জনার্থ
দৈনন্দিন জীবনের ব্যঙ্গচিত্রগুলি আঁকিতে আরম্ভ করেন।
যদিও চিত্রের দিক হইতে বিচার করিলে এই সব বাঙ্গচিত্রে
বিশেষ কোন প্রতিভার পরিচর পাই না, তথাপি সেই সময়ে
শিল্পীদের এই চিত্রগুলি মৃক ও বধির জনসাধারণকে কথা
বলাইতে শিক্ষা দিয়াছিল এবং এই সব চিত্রান্ধনে স্পষ্ট
নিদ্ধি ভঙ্গী থাকা সন্থেও তাহাদের প্রকাশে একটি কোমল
পেলবতা ও শ্রী মণ্ডিত আছে।



কেন্দ্রিক্ত বিশ্ববিদ্যালয়ে রক্ষিত পুঁ বি (ফুলের পুস্তক হইতে গৃহীত)

ওদিকে সূদ্র পশ্চিম-বাংশার পটুরারাই প্রধান শিল্পী।
এই শিল্পীদের চিত্রাঙ্কন-পদ্ধতির সঙ্গে থাস বাংশার চিত্রাঙ্কন-পদ্ধতির একটি পার্থকা দেখিতে পাওয়া যায় তাহা পূর্ব্বেই উল্লেখ করিয়াছি। এখানকার চিত্রাঙ্কনের প্রধান উপাদান ছিল পূঁথির পাটা। এই সময়েই পূঁথির পাটার উপর রামারণ, শ্রীমন্তাগবত, পৌরাণিক ও বৈফ্রীয় ঘটনাবলী চিত্রিত হইতে থাকে। পূঁথির ভিতরকার বিষয়বস্বস্তালি তাঁহারা এই পাটার উপর প্রতিক্ষলিত করিতে যথাসাধা চেটা করিয়াছেন। সাধারণতঃ তেরেট বৃক্কের পত্র কিংবা পূঁথির পাটাতে ময়দা, খোল, বেল, বাবলার আঠার লেপন দিরা চিত্রাঙ্কন করা হইয়া থাকে। এই পাটার চিত্রাঙ্কন-

পদ্ধতি আবার ছইটি শ্রেণীভূক্ত। একটি জয়পুর-শিল্পের সংমিশ্রণ এ কথা পুর্বেই উল্লেখ করিয়াছি, অস্তটি উড়িষ্যা-পদ্ধতি। বোধ হয় পঞ্চদশ শতাব্দীর গোড়ার দিকে যখন গঙ্গা-বংশীয় হিন্দু রাজারা এই সব অঞ্চল জয় করেন তথন হইতেই উড়িয়া-পদ্ধতি এখানে স্থানলাভ করে এবং ঐ সময়েই শ্রীচৈতন্তদেবের নীলাচল-ভ্রমণে বঙ্গ ও উড়িষ্যার মধ্যে বোগস্ত্র স্থাপিত হয়।

অবশ্য সর্ব্যাই যে এ-কথা সত্য তাহা বলা চলে না।
মধুনা আবিদ্বত বীরভ্মের পটগুলি বিচার করিলে দেখা
নায় যে ইহাতে থাস বাংলার প্রভাব বথেষ্ট পরিমাণে
বিস্তৃতি লাভ করিয়াছে। ইহার কারণ হয়ত এই পটশিল্পীরা খাস বাংলার প্রভাবে পরবর্ত্তী কালে আসিয়াছিলেন,
নতুবা খাস বাংলা হইতে যে-কোন কারণে বিতাড়িত হইয়া
পশ্চিম-বাংলায় গিয়া বসবাস করিতে থাকেন। যদিও
বর্তমানে ইহাদের অনেকে মুসলমান, কিন্তু তাহাদের
প্রত্যেকের নাম নাদব, কার্ত্তিক, গণেশ প্রভৃতি এবং ইহারা
নে ছই এক পুরুষ পুর্বেও হিন্দু ছিলেন ইহা প্রমাণিত
হইয়াছে। (প্রীযুক্ত শুরুসদয় দত্ত প্রণীত পট্যা)

এই অঞ্চলের পটুয়াগণ প্রায় পাঁচিশ-ত্রিশ হাত লম্বা কাপড়ে পাতলা মৃত্তিকা লেপনের উপর কাগজ আঁটিয়া রামলীলা ও রুঞ্লীলার পধান প্রধান ঘটনাগুলি চিত্রিত করিয়া থাকেন এবং রামায়ণ ও রুঞ্লীলার পট পরিবর্ত্তন সময়ে স্বরচিত গান করিয়া চিত্রিত বিষয় জনসাধারণের সন্মুখে ফুটাইয়া তোলেন।

সুদ্র বাংলায় এখনও এই রূপ ধরণের চিত্রিত পটের প্রচলন দৈথিতে পাওয়া যায়, কিন্তু থাস বাংলায় এই রূপ জড়ানো পটের ছই -এক জায়গায় সামান্ত প্রচলন থাকিলেও ইহার চলন বহু পূর্বেই উঠিয়া গিয়াছে। ইহার কায়ণ বোধ হয় থাস বাংলায় মুসলমানাধিকা। তাহাদের সন্মুখে রামায়ণ মহাভারতের গান গাহিয়া চিত্রপট দেখাইয়া রেই কায়ণ বিপদ আসিতে পারে বলিয়াই ধীরে ধীরে জড়ানো পটের প্রচলন খাস বাংলায় থামিয়া য়য়। এই জড়ানো পটের অনুরূপ গাজির পটের প্রচলন আজকাল থাস বাংলায় দেখিতে পাই। পশ্চিম-বাংলার পটশিয়ে অনেক পটুয়া আবার আজকাল পটের শেষভাগে সামাজিক

পুঁথির পাটার উপর চিত্রাঙ্কনের সময় হইতেই আমাদের মনে হয় বঙ্কদেশে প্রতিকৃতি-অঙ্কনের প্রবর্তন হয়। এই সময় ক্ষর বাধাক্ষের নয় নিমাই ও ডাঁহার শিল্যাম্প্রকী

রহস্তমূলক চিত্র এবং যমালয়ের দৃশ্র অঙ্কিত করিয়া থাকেন।

সময় শুধু রাধাক্তকের নয় নিমাই ও তাঁহার শিব্যম**ওলী** প্রভৃতিরও প্রতিকৃতি পাটার উপর মঙ্কিত দেখিতে পাওয়া

যায়। এই বিষয়ে প্রীযুক্ত দীনেশচক্র সেন লিখিয়াছেন :—

হলিবংশের চিত্রলেখা আদি যুগের চিত্রকরী। প্রাগ্-জ্যোতিষ-

হদিবংশের চিত্রলেখা আদি যুগের চিত্রকরী। প্রাণ্-জ্যোতিব-পুরের বাণ-রাজার কল্পা উবা স্বপ্নে প্রীকুষ্ণের পোত্র কামদেবের পুত্র অম্ব্রুক্তরকে দেখিরা প্রেমে পত্তিত হন। এই স্বশ্ন-দৃষ্ট ভক্রণ ফ্রন্সনার কে তাহা তিনি কিছুভেই জ্ঞানিতে না পারিরা আহার নিপ্রা ত্যাগ করেন। তাহার সথি চিত্রলেখা তথন ভারতীয় তৎকাল প্রসিদ্ধ যাবতীয় তরুণ রাজকুমারের চিত্র অক্ষন করিরা কুমারা উবার নিকটে উপস্থিত করেন। তন্মধা হইতে উবা সহজেই অম্বরুদ্ধকে চিনিয়া লইয়াছিলেন। হরিবংশের পূর্বে মমুষ্যমুর্ত্তির অবিকল প্রতিকৃতি অক্ষনের কথা বোধ হয় আর কেহ বলেন নাই। চিত্রলেখার সময়ে এবং তাহার পূক্র হইতে যে এদেশে চিত্র-বিদ্যার বিশেষ উৎকর্ষ সাধিত হইয়াছিল এই বিবরণ হইতে তাহা অমুমিত হর।

এইরূপ বর-কনের চিত্র জাঁকিয়া দেশ-বিদেশে ঘটক বিবাহ ছির করিতেন। এতং সথক্ষে বাঙ্গালার বহু দিনের কিংবদন্তী আছে। প্রাচীন পলী-গীতিকায় দৃষ্ট ংয় বহু পলী-ফুলরীর চিত্র লইয়া ঘটকের। দেশ-বিদেশে আনাগোনা করিতেন। কথিত আছে, রাধা-কুঞ্চের প্রেমও এই নিদর্শন হইতেই প্রথম উভূত হইয়াছিল। রাধার পূর্বরাগ বর্ণনায় এই কথা পাওরা যায়। পূর্বারাগের প্রথমাংশের নামই 'চিত্রদর্শন'।

কি চিত্র বিচিত্র মরি দেখাইল চিত্রকরী, প্রাণ মম নিল থে হরি।
বিশাখা যথন দেখায় চিত্রপট, মোরা বলেছিলাম সে বড় লম্পট।
প্রভৃতি বহবিধ গান বৈঞ্চব কবিগণ রচনা করিয়াছেন। ঐতিহাসিক
যুগেও ঐরূপ চিত্রাঞ্চনের দারা পাত্র-পাত্রীর মন আকর্ষণ করার হীতির
অতিত্বের প্রমাণ পাওরা যায়। জক্ললবাড়ীর দেওয়ান কিরোজ খা
বানিয়াচন্দের দেওগান-কুমারী স্থিনার চিত্র দেখিরা মুগ্ধ হইরা
কুমারত্রত অবলম্বনের সহল্ল ভাগে করিয়াছিলেন, 'ফিরোজ খাঁ' নামক
প্রী-গীতিতে ভাহা দৃষ্ট হয়।

চণ্ডীদাসের, হাম সে অবলা, সরলা অথলা, ভালমন্দ বাহি জানি।

বিশ্বলে বসিয়া, পটেতে লিখিয়া বিশাপা দেখাল আনি । (বৃহৎ বঙ্গা, পু. ২০৮)

ইহা ছাড়া বাংলা দেশে আর একটি শিল্পারা দেখিতে পাওয়া বায়। ইহা সাধারণতঃ ঘরে ঘরে সময়-অসময়ে আঁকা হইয়া থাকে, ইহার কোন একটি হুনিদিটি পথ নাই। চাউলের গুড়া অথবা সিন্দুর দিয়া আঙুলের ডগায় অথবা নেকড়া দিয়া এই সব চিত্রাহ্বন করা হইয়া থাকে। পালীতে ক'নে-বউ স্বামীর সহিত শশুরবাড়ি বাইতেছে, এই ছবি- খানিতে ছই-একটি রেখার টানে বেহারাদের পারের গতি দেখান হইরাছে। এই ধারার শিল্প যে এখনও জীবিত আছে তাহার কারণ বোধ হর ঘরে ঘরে ইহার প্রচলন এবং দৈনন্দিন জীবনের দেখান্তনা লইরা চিত্রগুলি আঁকা হইত। কোন স্থপটু শিল্পীর হাতে এই এক চিরস্কন গত্তালিকা প্রধার আঁকা অসম্ভব বলিরাই বোধ হর। আজকাল এই শিল্পের ধারা বাংলা হইতে এক রকম উঠিরা যাইতেছে, তবে শিবহুর্গা প্রভৃতি চিত্র প্রভাস্থানে আঁকিতে হর বলিরাই ইহার প্রচলন এখনও দেখিতে পাওরা যায়।

এই গেল বাংলার মোটামূটি শিল্পের ইতিহাস। এখন আমরা চিত্রগুলি বিচার করিয়া দেখিব এই ইতিহাসের সঙ্গে ইহাদের সামঞ্জ্ঞ কডটুকু আছে।

আমরা কালীঘাটের পটুরাদের অন্ধিত 'অরপূর্ণা'
চিত্রথানিতে দেখিতে পাই—পট-ভূমিকাশুন্ত শুরু রেখাচিত্রে বিরাট কর্নাকে রূপ দিবার অন্তুত পরিচয়
শিল্পী এখানে দিরাছেন। চিত্রথানিতে শিল্পী রেখাটানের
নৈপূণ্যে এক অনির্ব্বচনীর ভাব ফুটাইয়া ভূলিরাছেন।
বাংলার শিল্পীদের বরাবর এই দিবাছন্দ ও জীবনগতির
উপর লক্ষ্য ছিল। 'অরপূর্ণা' চিত্রথানিতে শিব
ভিথারীর বেশে হয়ারে হয়ারে ভিক্ষা করিয়া রিক্ষ হস্তে
সতীর কাছে আসিয়া দাঁড়াইয়াছেন। সতীও তাঁহার
সর্ব্বত্যাগী উমানাথকে দেখিয়া ভিক্ষা দিতে ভূলিয়া গেলেন,
তুই জনেই আজ একে অন্তের মধ্যে আজহারা। শিবের
ব্যান্থ-চর্ম্ম ধসিয়া পড়িয়াছে, চোথের পলক নাই, তিনি আজ
সর্বত্যাগী আজ্বভোলা মহেশ্বর।

কালীঘাটের পটুরাদের অন্ধিত "মাডুমূর্জি" এবং আচার্য্যদের অন্ধিত "বন্ধহরণ" চিত্র গুইথানিতেও বাংলার শিল্পীদের মৌলিক কল্পনার প্রসার কতদূর হইরাছিল তাহা বুরিতে পারি। গো-দোহনের সমর সম্ভান হুধ ধাইতে আসিরাছে। উহা দেখিরা ছেলে মারের কোলের উপর ঝাঁপাইরা পড়িরা হুধ ধাইতে আরম্ভ করিরা দিল। করেকটি রেখার এইরূপ অসাধারণ চিত্র ফুটাইরা ভূলিতে বাঙালী শিল্পীরাই পারিত। অন্ধ্রার আমরা এইরূপ করেকটি মাডুমূর্জির উৎকট নিদর্শন পাই এবং অক্ষন্তার শিল্পীরা "হুম্মান ও তাহার সম্ভান"—এই মাডুমূর্জি চিত্রখানিতে প্রতিভার পরিচর দিরাছেন। বাংলার অক্সান্ত পশুপক্ষী হুইতে গোমাতার

চিত্রই বেশী দেখিতে পাওরা যার। এখানে গঙ্গ তাহার সম্ভানকে তথ্ দিতে দিতে আদর করিতেছে, শিল্পী এই ভাবটি ফুটাইরা ভূশিরাছেন।

"বস্ত্রন্ণ" চিত্রে (এই পদ্ধতিতে অন্ধিত একখানি বস্ত্রন্থ চিত্র প্রীযুক্ত শুক্ষসদর দন্ত Journal of the Oriental Society of Art পত্রিকায় প্রকাশিত করিয়াছিলেন, উহার বিষয়বস্তু এই চিত্রখানি হইতে আরও উৎকৃষ্ট) জলটা বড় কথা নয়, গোপিনীদের স্থান করাটাও সর্বস্থ নয়; বস্ত্র ভাহাদের চুরি গিরাছে, এখন ভাহারা নিরাভরণ এই সমস্তাই প্রবল। এখানে শিল্পী ভাহাদের এই অসহায় ক্ষুদ্ধ অভিমান খুব সামঞ্জন্ত রাখিয়া ফুটাইয়া ভূলিয়াছেন। ইহা ছাড়া বাংলায় স্ক্রধর, মালাকরেরাও কিছু কিছু চিত্রাঙ্কন করিয়া থাকেন, তবে উহা বিশেষ উল্লেখযোগ্য নয়।

বাংলার চিত্রশিল্প ধীরে ধীরে এইরূপ একটি বিংশষ ভাবে মুর্চ্ট লাভ করিতে পারিয়াছিল এবং চিত্রগুলির (मोन्स्या-त्र्णां ७ कमनीम्राजां यहे निद्धात वित्नवः। একটি চিত্রাঙ্কন-রীভিতে মুর্ভিগুলির বঙ্গশিক্ষের হাত, পা তুইটি দীর্ঘ রেখার ছই পার্ফে ভূলি দিয়া রঙের নিটোল টানে অঙ্কিত এবং ইহাতে একটি বিশেষ ভঙ্গীতে অঙ্গ-প্রতা**জে**র কমনীয়তা ফুটিয়া উঠিয়াছে। সাধারণতঃ মুর্বিশুলির বক্ষ উন্মৃক্ত, শুধু কটিদেশ বন্ধার্ত এবং উহাও আবার মাত্র কয়েকটি রেখার সমাবেশে পূর্ণ। এই পদ্ধতির সঙ্গে অজন্তার চিত্রাঙ্কন-পদ্ধতির একটি পরস্পর ঐক্য ভাব শক্ষিত হয়। গ্রিফিথ সাহেব তাঁহার অবস্তা পুস্তকের প্রথম থতে, ১৮-১৯ পুর্গার লিখিয়াছেন, "অজ্ঞা-গুহার কতকগুলি চিত্রে মেয়েদের শাড়ী ও পুরুষদের পুতি ঠিক বাঙালীর মত।" যদিও অজস্তার চিত্রগুলিতে মুকুট, ति थी, अन्नम, तनव, कर्श्रहात, मूख्नाकान, त्मथना, काकी, বাজুবন্ধ, মণিবন্ধ, কটিবন্ধ, নৃপুর প্রভৃতি অসংখ্য অলকার চিত্রিত দেখিতে পাই এবং বাংলার পটচিত্রে ইহার অঙ্কন ষদিও কম, তথাপি বাংলার মৃন্মঃ-মূর্ব্তিতে এইরূপ বছপ্রকার বেশ ও অলম্বারের প্রাচলন আছে দেখিতে পাওয়া যায় এবং অধিকাংশ মুন্ময়-মূর্বিতে এই পদ্ধতিগুলি এখনও সুস্পট আছে। এই বিষয়ে প্রীযুক্ত অসিতকুমার হালদার অজন্তা সম্ভাৱে লিখিয়াছেন,

"আক্রেয়ের বিষয় অবস্থার ছবির মধ্যে আমরা বাংলা দেশের প্রচ্

আভাস পাই। প্রথমতঃ আমরা গুহার নিকটবর্ত্তী দূরবর্ত্তা গ্রামে বেড়াতে গিয়ে যত কুটীর দেখেছি, সবগুলিই মাটির ছাদ, অক্সার ছবিডে অবিকল বাংলার খড়ে-ছাওয়া অটিচালা। সে দেশের লোক নারিকেল गाह कार्य प्राय नि, किन्न हरिए नाजरकन वर्षहे। वहरात वाज्य দেহের তুলনার তাহার ক্ষটা যতটা বেশী উঁচু দেখা যায় অঞ্চ কোন (मर्ल সে রকম দেখা বার না । অজস্তার ১নং ভহার বাঁড়ের বড়াইরের ছবিতে ঠিক আমাদের দেশের যাঁড়ই অবিত। যশোহর, মেদিনীপুর প্ৰভৃতি অঞ্চলের শত শত ৰৎসল্লের প্রাচীন কাঠের পাষ্টার উপর আকা যে সকল চিত্র দেখা যায়, অঞ্জায় ছবির সঙ্গে তার অঙ্কন-পদ্ধতি, এমন কি বর্ণ ও রেখাগুলিম্ব (অঞ্চন্তার মত অত উৎকৃষ্ট না হলেও) একটা অভুত মিল স**হজেই অনুভূত হর। আমাদের ছুর্গা-**প্রতিমা প্রভৃতির চালচিত্রগুলি এখনও ঠিক অজ্বস্তার নিরমেই গোবর-নাটির জমির উপর সাদা রং দিরা তার উপর জাকা হয়। কালীঘাটের পটের ও অজস্তার রেথাকোশলের মধ্যে পুরুষ্ট সামঞ্জন্ত দেখতে পাওরা যার। কালীঘাটের এই প্রচলিত পটগুলির রেথার টান দেখলেই অজন্তার শিল্পীদের কথা মনে পড়িরে দেয়।"

বাংলার পট-শিল্প ও অজন্তার চিন্তান্থন-রীতিতে রেখার স্ম্পাইতা ও অন্ধন-নিপুণতা একই সাদৃশ্যে পূর্ণতার বিকশিত হইয়া উঠিয়াছিল এবং চিত্রগুলি বিশ্লেষণ করিলে মনে হর বাংলার নায়ক-নায়িকার স্মার ও কমনীয় ভলীর প্রকাশ অজন্তার চিত্রকেও ছাপাইয়া যায়। বাংলার এই পদ্ধতিতে অন্ধিত সমন্ত চিত্রই বিচার করিলে আমরা দেখিতে পাই যে ইহা ক্রেকো-ধরণে অন্ধিত। এমন কি 'অইসাহস্রিকা প্রজ্ঞাপারমিতা' প্রভৃতি পূঁথির ক্ষুদ্র চিত্রগুলিকেও বিশ্লেষণ করিলে এই সত্য উপলব্ধি করা যায়। ভার্ডেন্বার্গ 'রূপম' প্রিকার ১৯২০ সনের জান্মারীর প্রথম সংখ্যায় এই পূঁথির চিত্রগুলি বিশ্লেষণ করিতে গিয়া বলিয়াছেন,

''ম্র্ডিওলির সহজ ও মাধুর্যমণ্ডিত ভকী ও তাহাদের দেহের অলকার-সজ্জা এবং বেশ-ভূবার অকন রীতি, অলন্তার বে পদ্ধতির সহিত আমরা পরিচিত উহার সহিত মিলিরা বার এবং স্থাপত্য-শিল্প ও বৃক্ষাদি অকনের পদ্ধতিও অসুরূপ।

'রূপম' পত্রিকার সম্পাদক মহাশর আমাক্তে লক্ষ্য করাইরা দেন যে এসব কুত্রাকৃতি চিত্র পুস্তক-প্রসাধনের কোন বছতর পদ্ধতি নর, উহা বৃহৎ চিত্রাকনের কুত্র সংকরণ মাত্র।" (১০ পৃষ্ঠা)

ওদিকে আর একট বিভিন্ন পদ্ধতির চিত্রগুলিতে, বিশেষতঃ পুঁথির রঞ্জিত চিত্রে, এইরূপ নিটোল ভাবের অভাব আছে দেখিতে পাওরা যার, উহা পুর্কেই উল্লেখ

করিয়াছি। এইরূপ পদ্ধতিতে অন্ধিত মুর্ভিগুলির বক্তগুলি সাধারণত: মুর্ত্তির পাদদেশ স্পর্শ করে এবং ইহার বিস্তাসেও সন্মাতিসন্ম খুঁটনাটি প্রকাশিত হইত। স্ত্রীমৃত্তিগুলির বক্ষে আভরণ, দেহ কিংবা মস্তক চাদরারত এবং এই শিশ্প-পদ্ধতির বাহিত্রের রেখা কঠোর, রং প্রথর ও পাধিক দুশ্রের মধ্যে কেমন একটা ভাবের দীনতা সুস্পষ্ট আছে। এই চিত্রাহন-পদ্ধতিতে শিল্পীরা রাজপুত ও জমপুরী অত্যজ্জান রং ফলানোর অমুকরণে ব্যর্থ চে^{ট্র}া করিতেন। বাংলার খাঁটি চিত্রের পট-ভূমিকার সাধারণতঃ প্রধানতম রং হিঙ্গুল ছিল। বোধ হয় ইহা সুর্য্যের রক্তাভ বণকেই চিহ্নিত করে এবং বন্ধ-শিল্পীর চিত্র-পটের এই বর্ণবিক্তাস অতীব এই সব ওস্তাদ শিল্পীর হাতের রং এমন আশ্বর্যা গভীর ও পাকা যে প্রায় তিন-চারি শত বৎসরের অয়ত্ব ও অসাবধান নাড়া-চাড়া সংখ্যে এখনও নৃতনের মত উজ্জ্বল ও অটুট আছে। উনবিংশ শতাব্দীর মধ্যভাগ হইতে বাংলার চাক্লশিরের অধংপতন স্থক হয় এবং চিত্রকরেরা সাহায্যের অভাবে বাধ্য হইয়া ভিন্ন ভিন্ন উপার্চ্চনের উপায় অবলম্বন করিতে থাকে। এইরূপে চর্চা ও উৎসাহের অভাবে বাংলায় চিত্র-সৃষ্টি বন্ধ হইয়া গেল। वर्खमात्न वाःना (मान्न हेरामित्रहे अव-आध कन वःनधत পূর্ব্ব-পুরুষের শিল্পকলা নকল করিয়া আসিতেছে, ইহার মধ্যে স্বকীয় কোন বিশেষত্ব বা আত্মশক্তির কোন পরিচয় পাই না, ভরু তাহার পূর্বপুরুষের চিত্রান্ধন-রীতির ধারাটাই চোখের সামনে ফুটিয়া উঠে।*

শীগুরুসদর দড়ের সংগ্রহ, শ্রীদীনেশচক্র সেনের সংগ্রহ—বর্তমানে ইহা ত্রিপুরাধিপতির সংগ্রহাগারে রক্ষিত, শ্রীঅন্সিত বোবের চিত্রশালা, কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালর সংগ্রহ, শ্রীবামিনী রারের সংগ্রহ—বর্তমানে ইহার করেকথানি চিত্রের স্বন্ধাধিকারী ষ্টেলা ক্রামরিশ। বাংলার এই লুগু শিরীদের মধ্যে ক্রুরী, মটর, বজীচরণ আচার্য্য, বামাচরণ আচার্য্য এবং কালীখাটের ক্রেক জন পটুরা বাঁচিরা আছেন।

^{*} বল্পিল-সংগ্ৰহ নিম্বলিখিত স্থানে আছে :---

देवज्ञौ

बीकानारेमाम गात्र्मी

5

"শিকল-দেবীয় ঐ যে প্লা-বেৰা চিরকাল কি য়ইবে খাড়া ?''

এই ত দেদিন মহাযুদ্ধের অবসান হ'ল, এখনও তার বিভীবিকা ইউরোপের ধরে ঘরে জাস সঞ্চার ক:র, আবার রণ-ভেরীর গভীর নিনাদ মহাদেশ কম্পিত ক'রে তুলল—প্রবল ফরাসীবাহিনী চলেছে জার্ম্মেনীর শিল্পকেন্দ্র রূর্ অধিকার করতে। নিরন্ত্র জার্ম্মেনী শক্ষিত হ'রে উঠল।

১৯২০ সাল জাত্রারীর ত্রস্ত শীতে রাইন নদের বিপুল জলপ্রবাহ জমে বরফ হয়ে গেছে, হয়ত নিরয় জার্মান জাতির রঙীন জীবন-প্রবাহের একই ত্র্লশা হ'তে চলেছে,—তার হৎয়য় রার্-ই যে ফ্রাসীর অধীন হ'তে চলেছ।

রর্-অভিযাত্রী ফরাসীবাহিনীর পথে পড়ে বিখ্যাত শিল্প-নগর ভূপেশ্ভর্ষ। রাইনের পশ্চিম তীরে তিন নম্বর রেজিমেন্ট ভকুম পেল ভূপেশ্ভর্ফ দখল করতে হবে, তারা রওনা হোক! অমনি আরম্ভ হ'ল রেজিমেন্টের রওনা হবার তোড়জোড়,—বিগেল বাজে, ডেরাডাণ্ডা ওঠে, সারি সারি মোটর লরি ওভারি ভারি কামানের গাড়ী ঘর-বাড়ি কাঁপিয়ে বরফ কেটে কেটে চলে, চারিদিকে ধ্বনিত হয় সৈনিকদের পদ্চারণ-ধ্বনি ও কুচ-কাওয়াজের উচ্চ সামরিক নির্দেশ এবং ইতিহাস-প্রসিদ্ধ রণবাদ্য "লা-মার্সেইএস্"-এর উন্মন্ত হয় উচ্ছল হ'রে অভুল সুন্দর রাইনের ভূষারমণ্ডিত ছই ক্ল ভাসিয়ে দেয়।

কিন্ত দৈনিকরা কেউ সন্তুষ্ট হ'ল না। হয়ত তাদের প্রচ্ছন্ন বশ্*-ভীতি এথনও যায় নি। তথু সি-কোম্পানীর।সার্জ্জেণ্ট্-মেন্দর লাকক্ এ-সংবাদ পাওয়া মাত্র তার ঘরে ছুটে এসে টেবিলের ওপর দাঁড় করানো একটা ছবি বুকের মধ্যে চেপে ধ'রে চীৎকার ক'রে উঠল, "কেতে !—কেতে !!' তার পরই একবার ছুটে যায় একটা ব্যাগে জিনিযপত্তর ভরতে, সেটা ফেলে আবার ছোটে তার জামাকাপড় ঝাড়তে, সেগুলো ফেলে আবার অস্থির হ'য়ে স্থক করে তার জুতোজোড়া ঝাড়তে, আর মাঝে মাঝে টেবিলের কাছে ছুটে এসে সেই ছবিটাকে পাগলের মত চুমু ধার।

এই দেখে সেই ঘরেরই বাসিন্দে স্থলকায় সার্জ্জেণ্ট, ত্রাপ অবাক হ'রে জিজ্ঞাসা করল, "ব্যাপার কি হে ?" ল্যুকক্ উল্লসিত হ'রে বলল, "আরে জান না ?—ছকুম হ'রেছে ভ্যুসেল্ডর্ফের রওনা হবার !" এবং হঠাও ত্রাপর সেই বিশাল দেহ আঁকড়ে ধ'রে অবলীলাক্রমে নাচতে আরম্ভ করল। ত্রাপ বেচারী যত বংল, "ছাড়ো!— প্রারে ছাড়ো!" লাকক্-ও তত তাকে চেপে ধ'রে নাচে আর চেচায়, "ভ্যুসেল্ডর্ফ— ভ্যুসেল্ডর্ফ।" গ্রুপ প্রাণপন চেন্টায় তার স্থল দেহ মুক্ত ক'রে হাপাতে হাপাতে বলল, "এ কি ?—পাগল হ'লে না কি ?" লাকক্-এর ক্রাক্ষেপ নেই, সে নাচে আর সমানে চেঁচায়! এতক্ষণে সেখানে একটা ভিড় জমে গেল, সকলে হা ক'রে এই ব্যাপার দেখতে লাগল। লেযে হাপার ইলিতে সকলে মিলে লাকক্কে জাপটে ধ'রে থামাল! হাপ জিজ্ঞাসা করল, "কি হ'ল তোমার ?"

"কান না ?—সামরা যে চলেছি ভ্যুদেল্ডর্ফে !"

মুখ ভেঙ্ছে ত্বাপ বলল, "ড্যুদেল্ডফেঁ!—তাতে কি হবে বে অমন করছ?—হবে ত শুধু বশ্-এর হাতে অকা পাওয়া, ভার জভো আমাকেম্বছ টেনে নাচা ?"—অপর সকলে হেসে ফেলল।

শ্যকক্ চীৎকার ক'রে উঠশ, "ভোমরা কি বুঝবে?" সন্দোরে তাদের হাত ছাড়িয়ে ছুটে গিয়ে দেই ছবিটা নিয়ে বশল, "বিশ বছর পরে পাব আমার এই কেতেকে—'' হাপ বাধা দিয়ে বশল, "এই ব্যাপার!—তা ভেবে রেখেছ, এই বশ্-এর দেশে ঐ সুন্দরী বিশ বছর অমনিটি রয়েছে?

^{&#}x27; বশ্ [Boclio] :—শ্রার । বৃদ্ধের সমরে করাসীগণ জার্মানদের প্রতি এই অবক্তাস্চক সমোধন ব্যবহার করতেন।

এত দিনে মস্ততঃ ডজনখানেক হজম ক'রে একটা বোকা বশ্-এর কাঁধে জে^{*}কে বদে নি ?—"

সঙ্গে লকক্-এর কানে গেল সকলের একটা চাপা হাসির শক্ষ। "থামো শূয়ার!" চীৎকার ক'রে হঠাৎ সে বা-হাত দিয়ে ছাপর মুথ চেপে ধরল, "এই রিভল্ভারের বাঁট দিয়ে তোমার মুথ থেঁতলে দেব—তোমাকে—" তার দান হাত থাপ থেকে রিভল্ভার টেনে বার করল, তৎক্ষণাৎ সকলে তার ছই হাত চেপে ধরল। "ছেড়ে দাও—ওকে খুন করব—" কয়েক জন তার রিভল্ভার ছিনিয়ে নিল। এখন লাকক্-এর উত্তেজনা সীমা অভিক্রেম করেছে, তার সর্বাশরীর থর থর ক'রে কাঁপছে, সকলে ভয়ে তার হাত ছেড়ে দিল, সে তার বিছানার ওপর উপুড় হ'য়ে ভয়ে প'ড়ে ভুকরে কেঁলে উঠল।

সকলে হতভম্ব! এর চেয়ে কত মজার কথা তাদের মধ্যে রাতদিন চলে, স্বাই তাতে প্রাণ খুলে হাসে— এ কি? আর লাকক্-এর এত উত্তেজনা? সেই লাকক্, যাকে সকলে জানত দূচ্চেতা, স্বল্পভাষী! অনেকে অবশ্য সন্দেহ করত তার জীবনে কোন রহস্য আছে, সে হয়ত একটা দারুল বাথা চেপে রাখে, কারণ তার মুখে নিরস্তর লেগে থাকত বিষাদের গভীর রেখা! এমন কি রণক্ষেত্রের চরম উত্তেজনায় তার মুখে এই বিষরতার স্কুল্প ছায়া স্থানচ্তে হ'ত না। হেতু জিজ্ঞাসার খোঁচা দিয়ে তার স্বায়ে এই গভীর বাথার কঠিন আবরণ উন্মোচন করতে কারও কোন দিন সাহস হয় নি। কিছু আজু এ কি হ'ল?

ফরাসী-সৈতা ভাষেল্ভর্ফ দথল করেছে। সদাহাত্ময়ী
নগরী আজ বিষাদের কুল্লাটকার আছের। ফরাসী কর্তৃক
পাশবিক শক্তির এমন অসংক্ষাচ অপপ্রয়োগ ক্সার্মান্ ক্সাতির
বক্ষে শেল বিদ্ধ করেছে। নিক্ষপায় জার্মান্ সরকার এই
ভূলুমের একমাত্র প্রতিকার-স্বরূপ অসহযোগ বোষণা
করেছে। তাই কল-কারথানা কম্মিশৃত্য, রাস্তাঘাট জনশৃত্য,
আনক্ষতবন সব নিরানন্দ—শহর যেন শোকাত্র ! এমন কি
বে-সব সম্পত্র ফরাসী-সৈত্য চমক্লার পোষাক প'রে বুক
ভূলিয়ে চলা-ফেরা করছিল, তাদেরও মুগে কিসের একটা
শক্ষা!

এই ভীষণ পুরীর মধ্যে শুধু এক ব্যক্তি পরম উৎসাহে

চলেছে রাস্তার ওপর স্তুপীকৃত বরফ ভেডে—লৈ আমাদের সার্জ্জেন্ট্-মেজর লাকক্। এতক্ষণে ছুটি পেয়ে, সে তার উৎকৃষ্ট পোষাক আর চক্চকে সধের জুতা-জোড়াট প'রে, কাঁচাপাকা চুলের বাহারে টেরির ওপর কারদা ক'রে টুপিটি চড়িয়ে, হাতে একটা সৌধীন ছড়ি নিয়ে বার হয়েছে। ছুটে গিয়ে হাজির হ'ল তার সেই চিরপরিচিত রাস্তার, কিন্তু অবাক হয়ে দেখল তার ছ-ধারে নতুন নতুন অট্টালিকার সারি উঠেছে আর তার চালু ছাদের ওপর জমাটবাঁধা বরফের চাঁই ভেঙে ভেঙে ক্টপাতে পড়ছে—রাস্তা জনশৃত্য! তার ব্কের মধ্যে ধড়াস্ ধড়াস্ ক'রে উঠল। কিন্তু বিশ বিছর একটি মুখ ধ্যান করার সক্ষে সক্ষে সে-বাড়ির ছবিটাও তার মনের পটে থোদা হ'য়ে গেছে তার কি কখনও ভূল হয়? অয় সন্ধানের পরই তার সামনে এল সেই বাড়ি।

হাা, এই ত সেই! শুরু একটু পুরনো হয়েছে। সেই একতালায় কেক আর চকোলেটের দোকান, তার সকল দেওয়াল কাঁচের, তার পাশ দিয়ে উঠেছে সেই সিঁড়ি তেতলায়! **তেত্ৰা**য় রান্ডার দিকে সেই জানালা এখনও ঠিক তেমনই রয়েছে, সেই রঙ্, সেই কাজ, সেই পর্না। এমন কি তার ওপর বরফও জমেছে ঠিক পূর্বের মত! ফটকের ফ্রেমে তেতলার রীঙ্বেলের বোভামটা সে ভাড়াভাড়ি টিপল-—একবার ছ-বার আড়াইবার —ঠিক পূর্বের সংক্রমত। আশা এখুনি ঐ রঙীন পर्ना मदत वादन, ओ खानानात काँ ह शीदत भीदत भूतन वादन, ঐ বাতায়নে এখুনি কুটে উঠবে সেই স্মিত স্থচারু স্থানন, সেই ভীত কুরঙ্গনয়নের চকিত বিলোল চাহনি—ভার কানে সুধা ঢালবে সেই মিষ্ট মদির সম্বোধন-তার শিরায় শিরায় উদ্বেশিত হবে সেই উন্মন্ত জাগরণ। সন্তায় লীলায়িত হবে কপ-রস-শব্দ-গন্ধ-স্পর্শ-প্রাণের সেই উদ্ধাম আলোড়ন।

কিন্তু এ কি ? কি হ'ল ? সাড়া নেই কেন ? ঐ
পদ্ধা ত কই সরছে না, ঐ জানালা ত কই খুল্ছে না—
অনেক ক্ষণ যে কেটে গেল! আবার ঠিক সেই রকম ক'রে
বোতাম টিপল—অনেক ক্ষণ জানালার দিকে চেয়ে রইল—
তবু কোন সাড়া নেই ?

তবে? হয়ত তার জ্ঞানালার কাছে আসতে ভয় হ'ছেছ।—যদি সে ভূল শুনে থাকে? আগেও হয়ত কতবার অমন হয়েছে?

নাবার সেই বোতাম টিপল, কর্র্রীং, কর্র্রীং—
ক্রিং! সঙ্গে তার সমস্ত কণ্ঠ সর্বোচ্চ শ্বরে জানাতে
চাইল, "আমি—আমি—আমি।"

তবু কেউ এল না ? তবে ? তবে সে নিশ্চর মুর্চ্ছা গেছে। তিন-তিন বার এ সঙ্কেত শুনে তার সন্দেহ গেছে 'বুচে, অমনি এক আনন্দ-সমুদ্ধ উপ্'লে উঠে তার সমস্ত ইন্দ্রির প্লাবিত ক'রে দিয়েছে—সে মুর্চ্ছা গেছে। ছি, ছি, ছি-ই! সে কি অক্সারই করেছে! আগে ওকে ধবর দিয়ে প্রস্তুত ক'রে তবে তার আসা উচিত ছিল!

আর রীঙ বেল টিপে কি হবে ছাই! সে দরজায় প্রচণ্ড থাকা মারতে আরম্ভ করল। তবু লাড়া নেই? হঠাৎ তার হঁল হ'ল সে যে ফরাসী দৈনিক, তার প্রেরসী মুর্চ্ছিতা, ঐ জার্মান্-বাড়ি ত কে তাকে দরজা খুলে দেবে? সে চীৎকার ক'রে উঠল, "দরজা খোল, কোন ভর নেই, ওগো তোমরা দরজা খোল!" আর শরীরের সমন্ত শক্তি দিয়ে দরজা-ভাঙার জোগাড় করল—তাকে তার মুর্চ্ছিতা কেতের কাছে যে যেতেই হবে! হঠাৎ দরজা খুলে গেল, এক বুদ্ধা ভয়ে বিবর্ণা হ'রে জিজ্ঞাসা করল, "সেনাপতি-মুশার, কী চান ?"

"দে কেমন আছে ?"

"**(**本 ?"

"কেভে—আবার কে ?"

"কেতে ?"

"द्या ला द्या, त्य मूर्का लाइ !"

"কি বলছেন? ও নামেরই ত কেউ এখানে নেই!"

"ভূমি জাহরমে যাও!" এই ব'লে ল্যাকক্ দৌড়ে সিঁড়ি বেরে উঠতে আরম্ভ করল। বৃদ্ধা তার পিছু পিছু ছোটে আর মিনতি করে, "পাসুন—কথা শুস্থন—ও নামের কেউ বে এথানে নেই—তেতালার বে কণী থাকে—ওথানে অমন চেঁচামেটি করবেন না—" লাকক্ তাঁরের মত তেতলার উঠে লরআর তীবল থাকা মারতে লাগল। ş

নিবিড় নিশীথ। তুষারাচ্ছর নগর নীরব—তমসাবৃত। মাঝে মাঝে তথু তেসে আসে প্রহরীর পদচারণ-ধ্বনি—মচ্-মচ্! তাঁবুর মধ্যে ব'সে ল্যকক্ কত কি ভাবে! এই দশ দিন সে সর্ব্বে খুঁজেছে—কোথাও পায় নি তার কেতে-র সন্ধান। সে নিয়েছে জার্মান্ প্লিসের সাহায্য, তারাও কোন সংব'দ দিল না—কেনই বা দেবে, সমস্ত জার্মান্ জাতি যে অসহযোগী? তার বক্ষে জমেছে আঁধার নিরাশা, তার মর্মে বিধৈছে নির্দাম ব্যথা—সে হ'ল নিশ্চিছ?

ह्यां एक वक्षा नक इ'न-कि, कर्ं, कर्ं! কাঁটা-তার কাটার আওয়াঞ্চ? তার চিস্তান্দাল গেল বিচ্ছিন্ন হ'রে। আবার সেই?—অতি ক্ষীণ কিন্তু স্পষ্ট! সে মনোযোগী হ'ল। গত মহাযুদ্ধে সে চার বৎসর ট্রেঞ কাটিয়েছে—এ শব্দ সে চেনে! কতবার হুসিয়ার জার্মান স্নাইপার দৈ**ন্ত**কে দে কাঁটা-ভার কাটার অবস্থায় হঠাৎ প্রেপ্তার ক'রে এনেছে—তার ফলে, ফরাসী-সৈন্তের অনেক উপকার হয়েছে-কারণ এদের কাছে শত্রু-সৈন্তের দামী থবর পাওয়া যায়—এই কারণে তার যথেষ্ট স্থলাম হয়েছে। তাই আৰু তার এত বড় থাতির, সে রর্-দথলকারী ফরাসী-বাহিনীর প্রধান সেনাপতির বাসায় প্রভরি-নায়ক সে প্রাসাদ যেন একটা হুর্গ। তার চারি ধারে ঘন কাঁটা-তারের হুর্ভেদ্য প্রাচীর—প্রাচীরের স্থানে স্থানে মেশিন্গান—প্রধান দেউড়ির সামনে মেশিনুগান্-এর সারি! প্রত্যেকটির পেছনে সর্বাদা-সতর্ক সশস্ত্র সৈনিক। এ ছাড়া ঘাঁটিতে ঘাঁটিতে. ও প্রাচীরের সর্বত্তে সন্দীন-চড়ানো রাইফেল্-কাঁধে সন্দাগ रेननिक नर्कमा शाहाता मिराइ। माकक् এই धर्मम প্রহরিবুন্দের চালক।

আবার হ'ল সেই আওরাজ?—হাা, এ তাই! এখন ছ্-জারগা থেকে শব্দ আসছে! তবে কি একটা দল এসেছে ঐ কাঁটা-ভারের বেড়া কাটতে?—হাা, ডাই! ওদের সকলকে জ্যান্ত ধরতে হবে! মেজের থড়ের বিছানায় জনকরেক সৈপ্ত ঘুমিরে ছিল, ভারের চুপি চুপি ভূলে, চুপি চুপি নানা রক্ষের নির্দেশ দিরে তাঁবুর কোণে ন্তুপীরুত অন্ত্রশক্ত নিঃশব্দে নিরে, আন্তে আন্তে সকলে বেরিরে পড়ল।

করেক মিনিট পরে হ'ল করেক বার রিভল্ভারের আওয়াজ, বাইরে হ'ল ভূমূল লোরগোল, করেক বার হ'ল রাইফেলের শব্দ, কিছুক্ষণ ধ'রে হ'ল বছ মেশিন্গান্ ছোঁড়ার তীক্ষ ধ্বনি—টা-টা-টা-টা-টা-টা-টা-টা-তার পরই সব স্তর্জ একেবারে নিঝুম।

কিছুক্ষণ পরে তাঁব্র বাইরে দৈগদের ফেরার শব্দ আর লাকক্-এর উচ্চ কণ্ঠন্বর শোনা গেল। লাকক্ বকতে বকতে চুকল, "দব মাটি হ'ল—সমন্ত মাটি হ'ল—" আর তার পেছনে পেছনে এক আন্টেপিটে দড়ি-বাধা যুবককে নিয়ে দৈগুরা চুকল। চীৎকার ক'রে লাকক্ এক কর্পোরাল্কে ধমকাল, "এখন লিয়াৎনাঁকে মুখ দেখাই কি ক'রে? ওদের গেল ছ-হুটো লোক পালিয়ে, তারা আমাদের তিনটেকে মারলে গুলি ক'রে, আর তোমরা নাণারলে তাদের একটাকেও ধরতে, না-পারলে মারতে? ছি, ছি, ছি-ই!

"আজ্ঞে শ্রের্জণী তাতে কি হয়েছে? আপনার ধরা ছোকরার কাছেই সব ধবর পাওয়া যাবে।

"ভাতে ভোমার কি বাহাছরী? আমি ঐ দিকটার গিরে একে নিজে হাতে না-ধরলে এও ত যেত পালিরে! বেখানে শুরে পড়ে বুকে হাটতে বলেছিলাম সেখানে না ক'রে বিশ হাত দুরে স্কুক করলে কেন? আমার হুকুম শুনলে না কেন? জান, আমার হুকুম না শুনে এই যে ভ্রানক লোকসান করালে, এর জন্তে ভোমার কি শান্তি হবে?"

"স্যে**র্জ**ী, জানি! দোহাই স্যের্জী মাপ কর্মন— আমাকে বাচান—না হ'লে আমার প্রাণ ধাবে—আপনিই আমাদের মালিক—"

"থামো !—এই ছোকরা, কে তুমি ?" বুবক বুক ফুলিরে বলল, "জার্মান !"

"তা আর শেথাতে হবে না, ফাজিল ! নাম কি ? বাড়ি কোথায় ? এখানে এগে কাঁটা-তার কাটছিলে কেন ?"

"विम ना विन ?"

"বলবে না ?—আলবৎ বলতে হবে !—বল !—বল !!" "সভ্যিই ঠিক করেছি এ-সব কিছুই বলব না ।" ল্যাকক ধৈৰ্যাচ্যুত হয়ে যুৰকের গালে চড় মারল । "এই কি পৃথিবীর শ্রেষ্ঠ সভ্য জাতির রীতি? অসহার বন্দীর ওপর পাশবিক অভ্যাচার!"

"বন্দী?—এসেছ চুরি করতে, আশা করো বন্দীর খাতির পাবে?"

"আর ভোমরা বৃঝি আমাদের দেশে সাধুতা করতে এসেছ?"

"তুমি বলা?—পাঞ্জি বশ্! মুখ সামলে কথা বল, না হ'লে—"

হয়ত আর একটা চড় যুব:কর গালে পড়ত, কিন্তু হঠাৎ বাইরে প্রহরীর গোড়ালী ঠুকে ও রাইফেলে হাত ঠুকে সেলাম করার শব্দ হ'ল, সকলে চমকে উঠে সতর্ক হ'ল—সন্তবতঃ কোন অফিসার আসছেন! সি-কোম্পানীর প্রথম লেফ্টেনেণ্ট্ প্রবেশ করলেন, যুবক ভিন্ন সকলে রাটেন্শনে দাঁড়াল। লেফ্টেনেণ্ট্ নাকি চশমাটা লাগিয়ে বন্দীকে কিছুক্ষণ সহাস্যে নিরীক্ষণ ক'রে বললেন, 'আ!—তক্ষণ জার্মান, আঁ!? দাক্ষণ অদেশ-হিতৈবী, আঁ!?"

"তাঙ্গণ্য, স্থাদেশ-প্রীতি এ-সব কি আপনাদের 'লা প্র*াদ নাসিয়"র'* কাছে পরিহাসের বিষয় ?"

"বা !—প্রাণে বেজায় আঘাত লাগল, আঁগ ? দেশভজির মাত্রাটা তা'হলে অতি ভীষণ, আঁগ ? তাই দেশের জন্তে প্রাণ বিসর্জ্জন করতে আসা হয়েছে, রার-দ্বলের প্রতিহিংসা, আঁগ ?"

"专用!"

"হ্যা-আঁয় ! সাবাশ !" [পকেট থেকে সিগারেট্-কেস্ বার করে খুলে যুবকের সামনে ধরে,] "সিগারেট ?"

"ना "

"আ!—তীব্ৰ ফরাসী-বিছেম, আঁা? সোজঁ গাঁ লাকক্, খুলী হলাম, বেশ হ'লেছে!"

"श्रञ्जवाम, निग्रापन"।"

যুবকের আশ্চর্যা ভাবান্তর হ'ল! সে বিশ্বিত হ'রে ল্যাকক্কে নিরীক্ষণ করতে থাকল। লেফ্টেনেণ্ট্ ভিজ্ঞাসা করলেন, "হাা, হের পেটিয়টের নাম ?"

যুবক হ'ল অধিক বিচলিত, সে ওধু ইতন্তত: চাইতে

^{*} লা আৰু নাসির [La grande Nation]:— The grand nation বা জোচ লাভি।

লাগল, ল্যাকক্কে বার-বার দেখতে লাগল, কি**ন্ত** তার বাক্যফ_ুরণ হ'ল না।

"সে কি হের্ পেট্রিই, ভর হ'চ্ছে ? চারি দিকে এই সব সভর্ক সেপাইদের নন্ধর এড়িয়ে, ঐ কামান বন্দুকের জন্ত্রল ক'রে, অমন চর্ভেদ্য কাঁটা-তারের বেড়ায় দরন্ধা কুটিয়ে এই গভীর রাত্রে, এই দারুণ শাতে একা এসেছিলেন করাসীবাহিনীর প্রধান সেনাপতির সঙ্গে সাক্ষাৎ করতে, আর—''

হঠাৎ ল্যাকক্ ব'লে ফেলল, "একা নয় লিয়াৎনাঁ, ওর সঙ্গে আরিও ত্-জন ছিল!"

"তারা কোণায় ?"

"আমারই বোকামিতে তারা পালিয়ে গেছে লিয়াৎনা।" "পালিয়ে গেছে?" রোফক্যায়িত নেত্রে লেফ্টনেণ্ট্ ল্যাকক্-এর দিকে তাকালেন, "পালিয়ে গেল?" ক্রোধে তাঁর মুথ আরক্ত হ'ল।

কটে আত্মদংবরণ ক'রে বললেন, "হাা!—মহাশয়ের এতথানি ব্কের পাটা হয়েছিল, আর নাম বলতে গিয়ে সেই বৃক কেঁণে উঠল ;"

"আমার নাম—সীগৃফ্রীড।"

"দীগ্জীড, আঁ ? মহাবীর দীগ্জীড ?—বা ! সেই জ্যাগন্-বিজয়ী জার্মান্ বীর পুনর্জন্ম নিয়ে এসেছেন, আঁা ?— চমৎকার ! কিন্তু, দীগ্জীড কী ?"

"ঐটি জিজ্ঞাসা করবেন না।"

"ঐট জিজ্ঞাসা করব না ?—কেন ?"

"অনুরোধ করি ঐটি জিজ্ঞাসা করবেন না।"

"আ!—এটি সম্পূর্ণ নিশুরোজন, নদি অবশু হের্ পেট্রিয়ট্ ব'লে দেন, মহাশয় কোন দলের লোক, কোন মহৎ উদ্দেশ্য নিয়ে প্রধান সেনাপতির সন্ধান করছিলেন, আর যে-সব মহামতি পেট্রিয়ট্লের সঙ্গে এসেছিলেন তাঁদের কি নাম—"

"আমি বিশ্বাস্থাতক নই।"

"এই ধ্বরটুকু দিলে মহাশরকে নাম জিজ্ঞাসা ক'রে আর বির্ক্ত ত করবই না, বরং প্রচুর প্রস্কার দিয়ে এখুনি খালাস ক'রে দেব।"

"আমি বিশ্বাসঘাতক নই !"

"মা!—হের পেট্রিরট অকারণ ভর পাচেছন! কেউ জানবে না এ-সব ধবর আমরা কোথার পেলাম।"

"সেটা বড় কথা নয়।"

"সেইটাই আসল কথা! লোকে জানলে সব মাটি, নাজানলে আপনি ত নিজনুয় অদেশহিতৈষী থেকেই যাবেন! চাই কি রটিয়ে দেবেন, এথান থেকে বহু ফরাসী-দৈন্ত খুন ক'রে পালিয়েছেন, আমরাও তার কোন প্রতিবাদ করব না, ফলে হবে আপনার অদেশে এনেয় খ্যাতি, অার আমাদের প্রচুর ভর্মে নিয়ে আদর্শ অদেশ-সেবক হিসাবে—"

"বুথা বাকাব্যয় করবেন না !"

''আঁণ !—আ! হের শুধুপেট্রি ইট্নন, ভীষণ আদর্শবাদী, আঁণ ? কিন্ত হুংথের সহিত জানাতে হ'চছে, এ থবর না দিলে মহাশরের কিছু বিপদ হবে। হয়ত বা প্রাণদণ্ড দেওয়া আমাদের অপ্রিয় কর্ত্তবা হবে।"

"कानि।"

"তবু কিছু বলবেন না?"

"না ?—আ! আদর্শবাদের পরিমাণটা কিছু বেনা। ভাল!—শ্রেজ । লাকক্, এই ভদ্রগোকের জল্ঞে উত্তম বিশ্রামের বাবস্থা হোক!"

"বে আজে, লিয়াৎনী, কোণায়?"

"জে**লে,** আবার কোথায়! কিন্তু সাবধান, কেউ খেন শুর বিশ্রামের ব্যাঘাত না করে।"

"যে আছে লিয়াৎনা।"

"হাা, কাল সকালে আবার দেখা যাবে। আউফ্ভিদারসেন্* হের্ পেট্রিষ্ট্। আশা করি রাত্রে ভাল ঘুম
হবে, তার পর মাথা ঠাণ্ডা হ'লে এই অনাবশুক
আদর্শবাদের বোঝা থেকে নিফুডি পাবেন।" লেফ্টেনেণ্ট্
প্রস্থান করলেন।

এর পর আরও এক সপ্তাহ অতীত হ'ল, সে যুবক কিছুই প্রকাশ করল না। সুসভ্য বৈজ্ঞানিক যুগে স্বীকার করানোর যত উৎকৃষ্ট উপায় আবিদ্ধৃত হয়েছে তার সব কিছু ঐ ভক্ষণের ওপর প্রয়োগ করা হ'ল, কোন

^{*} জাউক্ভিদারনেন্ [Aufwicderschen] :—জার্মানীতে বহ প্রচলিত শব্দ, অর্থ প্রদর্শনার।



রুধাকক [২নুন মুদিহুত্বরে মুনোপণারেশ্ব সাছে হরীছে]

थवाभे (शत, क्लिक

ফল হ'ল না। শেযে সামরিক বিচারে তার প্রাণদভের •আদেশ হ'ল।

কিন্তু সি-কোম্পানীর সেই প্রথম লেফ্টেনেন্ট্ তথনও হাল ছাড়লেন না। ঐ ছোক্রা বশ্-এর কাছে হার মানতে হবে তার মত চতুর ফরাসী অফিসারকে? তার তীক্ষ প্রেষ-শক্তি বাকা মুরিশ তলোয়ারের মত ক্ষুধিত হ'য়ে উঠল, কিন্তু তার নির্ম্ম আখাত যুবকের জিদ বাড়াল বই কমাল না। তিনি ব্রালেন তাঁকে অন্ত অন্ত ব্যবহার করতে হবে। তাঁর প্রেন-দৃষ্টি মাত্র যুবকের মনে একটি ছিদ্র লক্ষ্য করেছিল। মধ্যে মধ্যে যখন ল্যাকক্কে সঙ্গে নিয়ে তার কাছে বেতেন, ল্যাকক্কে দেখা মাত্র যুবকের অন্ত ভাবান্তর হ'ত, যেন তাকে কটে মন শক্তা করতে হ'ত, তার অপূর্ব্ব মানসিক গঠনের সৌগ্রব নন্ট হ'য়ে যেত। কিন্তু তখন যুবকের ঐ কেক্ষ্যাত মনকে আয়ত্তে আনবার জন্তে যেই তিনি মুখ খুলতেন, অমনি শামুকের মত সেটা যেত এক কঠিন আবরণের মধ্যে লুকিয়ে, আবার তাঁর তীক্ষধার শ্লেষের আঘাত পড়ত শুধু একথণ্ড ইম্পাতের ওপর।

অবশেষে লেফ্টেনেণ্ট্ মনস্থ করলেন সেই চরম
মূহর্ত্তের কিছু পূর্বেল লাকক্কে তার কাছে একা পাঠাতে
হবে। লাকক্ অতি পাকা লোক, সম্পূর্ণ নির্ভরবোগা। অমন ভীষণ মূহর্তে তার কাছে যুবকের মন
অধিক বিকল হবে এবং স্থানক লাকক সফল হবে।

সেদিন ভোর ছটায় সি-কোম্পানীর বিশটা রাইফেলের জ্বন্ত গুলি বালকের বুক ঝাঁঝরা ক'রে দেবে। তার ঠিক এক ঘণ্টা পূর্ব্বে ল্যকক্ এল তার ঘরের সামনে। লোহার দরজা ধোলার শব্দে বালকের ঘুম ভাঙ্ল। উঠে ব'সে, হাই ভূলে, আড়মোড়া ভেঙে সে বলন, "ব্রেছি, এখুনি প্রস্তুত হচিছ।" বিছানা থেকে লাফ্ দিয়ে নেমে, পাশেই সানের ঘরে গেল। ল্যক্ক ছরে চুকে আলো জালল। বালক ফিরে এল সান ক'রে, উত্তম পোষাকে ভূষিত হ'য়ে, প্রেচ্ল মনে। ল্যকক্কে দেখেই চমকে উঠে বলন, "আপনি? এ কাজও করবেন আপনি?" আজ্মসম্বরণ ক'রে বলন, "ভাল! কেনই বা তা না হবে? চলুন, আমি প্রস্তুত।"

"আমি এসেছি ভোমাকে বাঁচাতে।"

"বাচাতে? ও ব্ঝেছি! আপনি চান, শেব মৃহুর্ত্তেও

আমাকে মৃক্তি দেওয়া হবে, অর্থ-পুরস্কার দেওয়া হবে, বদি ঐ হীন কান্ধ করি।—না, এমন কুৎসিত প্রস্তাব আপনি মৃধে আনুবেন না!"

"কিন্ত কেন ?—"

"ও প্রসঙ্গ আর তুশবেন না। আমার প্রতি আপনার শেষ কর্ত্তব্য পালন ক'রে আমাকে শান্ত মনে পৃথিবী থেকে বিদায় নিতে দিন—কোন দোষ হবে না। কিন্তু এমন কুৎসিত প্রস্তাব আপনি ক'রে আমার মন ক্লোভে ভ'রে দেবেন না—বিশেষ ক'রে আপনি।"

"বিশেষ ৰ'রে আমি ?—এ-কথা কেন বলছ ?"

ল্যকক্ বুঝল, তারা পিতা ও পুতা।

9

বসস্ত তথনও অনাগত, ধরণী তথনও তুষারমণ্ডিত, শীতের সে জমাট জড়তা পরাজয় করতে যৌবন হয়ে ওঠে সহসা উচ্চুসিত। "ফাশিং"এর রাত্রে সারা জার্মেনী উন্মন্ত হয় মদনোৎসবে। দলে দলে নরনারী আসে ঘর ছেড়ে, বিচিত্র সাজে সজ্জিত হ'য়ে, ধনী-গৃহের স্থানরী আসেন অবশুটিতা হ'য়ে। সেদিন তরুণ-তরুণীর মিলনে প্রয়োজন হয় তথু নিয়মহীন থেয়াল, অথবা হয়ত সেই ছ্র্নিবার আকর্ষণ! ধনী-নির্ধনের পার্থক্য যায় ঘৢচে, আভিজ্ঞান্ডোর গৌরব হয়্ ধূলিসাৎ, সমাজের বন্ধন হয় শিথিল, যৌবন হ'য়ে ওঠে উচ্চুছ্ উদ্ধাম, নির্বাধ, বৃদ্ধেরাও ফিরে পায় যৌবন—সকলে করে সারারাত্র বাধাহীন লভা।

ঠিক বিশ বৎসর পূর্ব্বে এমনি এক রাত্তে এই উৎসবের মধ্যে ল্যাকক্-এর সঙ্গে হয়েছিল কেন্ডের মিলন, আর সেই রাত্তেই উভয়ে করেছিল উভয়কে হলয়-দান।

কেতের পিতা হের গেহাইম্রাট[®] নিদ্ধ, কাইসারে উচ্চ রাজকর্মচারী, লাকক্-এর মত পাত্তের হাতে একমা সন্তান ঐ কেতেকে সমর্পণ করা যে তার পক্ষে চিন্তাতী তা ঐ প্রণরীযুগল ব্রাল। কিন্তু তাদের প্রণায় এড গভীর হ'রে উঠল যে তারা গোপনে বিবাহ না ক'রে থাক্য পারল না।

^{*} গেহাইন্রাট [Goheimrat]—লার্দান কাইসাল্ল-রত ই উপাধি বিশেব, অনেকটা ইংরেলা Birএর মত।

হের গেছাইম্রাটের কাছে এ সংবাদ গোপন থাকল না।
তিনি তৎক্ষণাৎ জার্মান্-সরকারের সাহায়ে জামাতাকে
জার্মেনী পরিত্যাগ করতে বাধ্য ত করলেনই, এমন কি
নবদন্পতীর মধ্যে পত্র-বিনিময়টাও যাতে অসম্ভব হয় তার
নিপুণ ব্যবস্থা করলেন এবং এই ত্র্বটনার সমস্ত চিহ্ন
মুছে ফেলগার জত্যে রাজকার্যা থেকে অবসর নিয়ে কন্তাসহ
প্রস্থান করলেন দুরে, ব্যাভেরিয়ার রাজধানী মিউনিক্ শহরে।
কিন্তু তাঁর নিজ্টক মিউনিক্-ভবনেও যথাসময়ে ভূমির্গ হ'ল
ঐ যুবক, এবং তার চিবিশ ঘণ্টার মধ্যে স্থামীর প্রিয় নাম
ভাকতে ভাকতে তাঁর অতি আদরের কন্তা কেতে ইহধাম
ভ্যাগ করল।

নবদাত হ'ল মাতামহের গৃহে লালিভপালিত। তাকে দেওরা হ'ল জার্মেনীতে অতি বিরল, অগ্নীষ্ঠাই নাম, সীগ্রীড্। হের গেহাইম্রাট হয়ত আশা করেছিলেন অতীত জার্মেনীর বীরত্বের প্রতীক এই নাম, এর দাপটে বালকের জন্ম-ঋণ লুপ্ত হবে!

কিছু যথাকালে বাল কর পিতৃ-পরিচয়ের ক্ষুধা তীত্র হ'রে উঠল। হের গেহাইন্রাট তাকে বোঝালেন, তার পিতার নাম লাকক্ হ'লেও তিনি ছিলেন এক দেশগতপ্রাণ জার্মান্। ফরাসীরা তাঁকে কৌশলে বন্দী ক'রে তাদের আফ্রিকার অবস্থিত ভীষণ "বিদেশী বাহিনী"তে জোর ক'রে সৈনিকের কাজে নিযুক্ত ক'রছে!—বালকের মনে পুরু হ'ল উগ্র ফরাসীবিষেয়। সে তার জনক-জননীর একত্রে-তোলা ফটোটা যদ্ধ ক'রে তার ঘরের টেবিলে রাশত, তাকে নিত্য ফুল দিত, আর প্রতিজ্ঞা করত, একদিন সে এর প্রতিশোধ নেবে, তার পিতাকে উদ্ধার করবে, তার নামের উপস্কু কাজ সেকরবে।

নির্মাসনের বজাঘাত পেয়ে, ততোধিক কণ্টকর বিরহকে অতিক্রম করবার জত্যে ল্যাকক্-দম্পতী মনে করেছিল একত্রে ফরাসী দেশে পলায়ন করবে। কিন্তু হের্ গেহাইম্রাটের নিপুণ বাবস্থায় তাও হ'ল অসম্ভব! ল্যাকক্কে একাই দেশে ফিরতে হ'ল।

শ্যকক্-এর পিতা, প্যারিসের এক ক্ষুদ্র মৃদী, এই ঘটনাকে এক সৌভাগ্যের ব্যাপার মনে করলেন। তিনি চেয়েছিলেন ভার ঐ ভাবপ্রবণ অপদার্থ পুত্রকে ব্যবসায় নিযুক্ত ক'রে মান্য ক'রে তুলতে, তার জন্তে তিনি অর্থবার করতেও প্রস্তুত্ত ছিলেন, কিন্তু তাঁর মূর্য পুত্র পালিয়ে গিয়েছিল ভূাসেল্ভফে'। এখন বহু চেষ্টা ক'রে কেতের একটা সংবাদ পর্যান্ত না-পেরে তাঁর পুত্রের মন যখন সেই ব্যবসার দিকেই গেল, তিনি হলেন অতিশয় সম্কৃত্ত।

কিন্তু লাকক্-এর পক্ষে ইউরোপবাস অসহ হ'রে উঠল।
সে আবার পালাল—এবার স্থান ইন্দো-চীনে। সেধানে
দীর্ঘলা কঠোর পরিশ্রম ও রুচ্ছ্, সাধন ক'রে প্রচুর অর্থ সঞ্চর
ক'রে আবার যথন দেশে ফিরল, তথনই আরম্ভ হ'ল বিশ্বসমর, সে বাধ্য হ'ল ফরাসী সৈনিক হ'তে। সে ধনী হ'লে
তার গেহ:ইম্বাট শক্তরও সন্তুট হবেন, ত'র কেতেকে ফিরে
পাবে, এ সব দীর্ঘ-সঞ্চিত আশা নিবে গেল।

তার পর এই দশ বৎসর সে করেছে নিগার সহিত সৈনিকের কাজ—উৎক্রুই স্বদেশ-সেবা! তার প্রস্কার?
—আর আধ ঘণ্টার মংগ্রই তার কেতের একমাত্র চিহ্ন এই বালককে হত্যা করবে!—কারা? সেই সব তক্ষণ সৈতা বাদের সে আপন হাতে রাইফেল্ ছুঁড়তে শিথিয়েছে!

সে চাইল তার প্রাণ-পুত্তলীকে ব্কের মধ্যে নিয়ে পলায়ন করতে। কারাগারের সকল প্রহরী তারই অধীন, তাকে বাধা দেবার কেউ ছিল না। কিন্তু যুবক হ'ল অস্বীকৃত্ত
—অমন পলায়ন সে চায় না।

লাকক্ ব্ঝল, এ তার মাতৃহীন গুত্রের কত বড় অভিমান।
সে তথন সব বলল—তার ত্ই গণ্ড অঞ্চানিক্ত হ'রে
উঠল। বুবক বিচলিত হ'রে বলল, "বুরেছি, এ ভরু অনৃষ্টের নিষ্ঠুর পরিহাস!"

"চৰ সীগ্ৰুণীড, পাৰাই, এ থেকে রেহাই পাই—"

"ছি! সে কাজ তোমার জীবনে কী এনে দেবে? তার চেয়ে মৃত্যু ভাল।"

ল্যকক্ এ-কথার মর্ম্ম অন্তব করল। কিন্তু, তাই ব'লে সে হবে পুত্রহস্তা? কোন্টা ভীষণতর? যুবক হয়ত সে বিষয়ে নিঃসন্দেহ,—লাকক্? ঐ পুত্র যে তার কেতের একমাত্র চিহ্ন! ও বালক তার কী বৃশ্ববে? দীর্ঘ্যাস ফেলে সে শুধু বলল, "হা, ভগবান!"

"হুর্মল হ'লে চলবে না পিতা, তা হ'লে আদবে হীনতা। এ ত তবু অদৃষ্টের পরিহাস নর, এ ধে এক নিষ্ঠুর বিধানের "এর অর্থ ?"

নির্ম্ম আঘাত! কিন্তু, সে বিধান হর্কোধ্য অলভ্যা, তার আঘাত বীরের মত গ্রহণ করা ছাড়া কোন উপায় নেই—-°

"উপায় অ:ছে, আমি যে তোমার বাবা!" এই ব'লে ল্যাকক্ আপন বক্ষে বেওনেট্ বিদ্ধ করতে উদ্যাত হ'ল, যুবক ক্ষিপ্রবেগে তার হাত ধ'রে ফেশল, তার বেওনেট জ্ঞার ক'রে ছিনিয়ে নিয়ে দুরে নিক্ষেপ ক'রে পিতাকে আলিঙ্গন করল। ল্যাকক্ পুত্রকে স্কন্ধে তুলে নিয়ে ফ্রন্ড দরজার দিকে অগ্রাসর হ'ল।

ঠিক সেই মুহুর্তে সি-কোম্পানীর প্রথম লেফ্টেনেন্ট্ কারাকক্ষে প্রবেশ করল। লাকক্ পুত্রকে স্কন্ধ হ'তে নামিয়ে বুকের মধ্যে চেপে ধরল। নাকি চশমাটা লাগিয়ে পরম বিশ্বয়ে লেফ্টেনেন্ট্ এ দৃশ্য দেখতে থাকলেন। বাইয়ে সৈত্য-বাহিনীর পদশব্দ মশ্, মশ্, মশ্, মশ্, মশ্ ম্পান্ট হ'তে ম্পান্ট-তর হয়ে উঠল, তারা এল যুবককে বধ করতে। লেফ্টে-নেন্ট্ হাক দিলেন, "সোক্র"। লাকক্!" লাকক্ য়য়বৎ পুত্রকে ছেড়ে দিয়ে য়াটেন্শনে দাঁড়াল, "হা, লিয়াৎন"।!"

সব ওনে, লেফ্টেনেণ্ট্ যুবককে বললেন, "বা! মৃসিয়া লাকক্—আঁা? ভূল ক'রে মৃসিয়া এতদিন জার্মান ভেবে এসেছেন—আজ মসিয়ার বণ্-জীবন গে.ক মৃক্তি হ'ল— আঁা? ফেলিসিতাসি য় মৃসিয়া, হা! সোর্জা লা,কক্, এমন বীর পুত্র ফরাসী জাতিকে দেওয়া মন্ত গৌরব—হা—আঁা!"

"লিয়াৎন'। প্রাণের ধ্যুবাদ নিন। সীগ্ফ্রীড এখন তুই এই দেবতার দ্যায় ধালাস পেলি, আর কোন ভয় নেই! প্রাণের ধ্যুবাদ নিন, লিয়াৎন'।—"

"এ! বেশ, বেশ! হাঁ, আশা করি ম্সিয়া তাঁর পিতাকে সব থবর ঠিক ঠিক দিয়েছেন।"

"ক্ষের খবর লিয়াৎনী? আমার ছেলে কি খবর দেবে?—ও হা, খবর!"

"হুঁ! সোর্জা দেখছি বড়ই আত্মহারা হয়েছেন—হাা, তার কারণও কিছু হয়েছে! [ঘড়ি দেখে] কিন্তু, কিন্তু অম্লা সময় নই হ'লে গেছে সোর্জা! জানেন, সামরিক আইনে এই কর্তুবোর অবহেলা কত বড় অপরাধ?"

* কেলিসিভাসিঁয় [Folicitation]:—অভিনন্দন-জ্ঞাপন। [Congratulation] যুবক চীৎকার ক'রে উঠল, "পিতা!"

"স্থির হও সীগ্রুলীড্ !—কানি লিয়াৎন'!! এর শান্তি কি তাও জানি! কিন্তু যে ফরাসী রিপাব্লিক্কে এত বছর প্রাণ দিয়ে সেবা করেছি, তার কাছে তুপু এই ভিক্লে চাই, স্মামার একমান্তর ছেলের প্রাণটুকু যেন বাঁচে!"

"এ আপনার অন্তায় দাবি নর! এর **জত্তে দর্থাত** করুন, আমি তা ভাল ক'রে সুপারিশ করব।"

"বে আজে শিয়ৎন", ধন্তবাদ !"

"হা। সোর্জ্ব। লাকক, তথন একটু বাইরে যান।"

ল্যকক্ সে কক্ষ ভ্যাগ করল। তার অদৃশু হওরা পর্যান্ত লেফ্টেনেণ্ট্ তাকে অবজ্ঞা ভরে দেখলেন—"মেহ্ছর্বল ক্ষুত্র কীট!" তার পরই যুবকের দিকে ফিরে বললেন, "হাা, এইবার আশা করি, ম্সিয়া তার ক্ষুত্র কর্ত্তবাটুকু শিক্সির সেরে ফেলবেন, আ্যা? বিশেষ ক'রে এখন যখন পৃথিবীর শ্রেষ্ঠ জ্ঞাতির সভা হ'লেন—"

"পৃথিবীর শ্রেঞ্জাতি জার্মান্!"

'আঁ। —বুঝেছি! [ঘড়ি দেখে] তা হোক তবু ধবরটা শিক্ষার দি য় ফেলুন।"

"ना।"

"না?——মা কিন্ত ম্সিয়া ভূলে যাচ্ছেন, এক জন ফরাসী হিসাবে—"

''আমি জার্মানৃ !"

"আা ?--এখনও বশ্?"

"আমি জার্মান্ : .খানে আমার জন্ম, যার আয়ে আমি
পুষ, যার শিক্ষায় আমার মমুয়াত্ব, আমি সেই পুণাভূমির
সন্তান—আমি জার্মান্।"

"আ, ব্ঝেছি! মৃসিয়া এখন হারানো জিনিব আঁকড়ে ধরতে চান—আঁ। ?"

"আমি জার্মান !"

"বেশ ত !—কিন্তু, যে পিতৃভূমির ক জরগান করতে বাল্যকাল থেকে অভ্যস্ত, এখন সেই পিতৃভূমিকেও একটু দরা কক্ষন!—কি? চুপ ক'রে রই.লন যে? সংক্ষেহ হ'ছে কোনটা বড়? পিতৃভূমি না মাতৃভূমি,

* পিতৃত্সি:—জার্দানর! বদেশকে বলে Das Vatorland, অর্থাৎ পিতৃত্সি। আঁা ? আশা করি, য্সিয় এমন নির্কোধ নন বে এমন সক্ষেহস্থলে সঠিক কর্ত্তব্য নির্দারণ করতে ভূল করবেন।"

''আমার কর্ত্তব্য আমি জানি।"

"নিশ্চর !—এই ত চাই ! [ঘড়ি দেখে] এখন পিতৃভূমির ধাতিরে—"

"আমি বিশ্বাস্থাতক নই।"

"আ! ম্সিয়া এখন বাড়াবাড়ি করছেন। এ সংবাদ না দিলেও যে আপন পিভৃভূমির কিখাসঘাতকতা করবেন, আর তার ফ:ল আপনার নিজের জীবন ত নষ্ট হবেই— আপনার পিভারও সর্বনাশ হ:ব—"

"কেন? তিনি কি অপরাধ করেছেন?—"

"এটা ব্রছেন না, পুত্র দেশদ্রোহী হ'লে, পিতার কথনও সেই দেশের সৈল্পে স্থান থাকে, না থাকা উচিত ৮—"

"9 !"

"তাই বলি মৃসিয়া, এই ধ্বরটুকু দিয়ে ফেলে নিজের পিতাকে বাচান, তাহ'লে সব দিক রক্ষা পাবে, আপনিও আমাদের প্রচুর অর্থ নিয়ে ফ্রান্সের কোন মনোরম নগরে ক্রে বাস ক'রে জীবন সার্থক করতে পারবেন।——মা! ভয় নেই মৃসিয়। পিতৃভূমির এত বড় উপকার করলে লোকে আপনাকে দেবতার মত পূজা করবে—"

"অমন পূজা চাই নে, জীবনকে স্থমন ভাবে সার্থক করাও চাই নে।"

"কিন্ধু, জীবনদাতা পিতাকে রক্ষা করা কি আদর্শ-বাদীর শ্রেষ্ঠ কর্ত্তব্য নয় ?"

"বুণা চেষ্টা, কিছুই বলব না।"

"না বললে, আপনার পিতার সর্বনাশ হবে, তাকে কোটম:শাল করা হবে, তাকে ভীষণ শাস্তি দেওয়া হবে, তাকে – "

"তাঁর কি দোষ? তিনি ত ইতিপূর্ব্বে আমার জন্ম-সংবাদও জানতেন না—"

" আপনার এই জিদ—এই সর্বনেশে জিদ—"

"আপনারা না তাঁর কাছে অশেষ ঋণী? আমার স্বর্গীর মাতামহ ছিলেন গোঁড়া ক্ষার্মান, তিনি ওঁর জীবন হু:ধে ড'রে দিরেছেন, আপনারা তাঁর চেরেও নিষ্ঠুর হ'বেন? "আ! ম্সিয়া সাবধান! সেই বৃদ্ধের আত্মাটি কিছ
আপনার কাঁধে চেপেছেন—হা আঁম!—কী? ঘাব্ডে
গেলেন যে? ভয় নেই ম্সিয়া, শুধু এই কুইয়াটক জিল
ছেড়ে দিন, ডাহ'লেই সব রক্ষা পাবে।—এ কাজ ত
অতি সহদ্ধ, চিস্তা কিসের?"

"সহজ্ব নয়, অসম্ভব। আমার পিতাকে রক্ষা করার জন্তে আমার সহচরদের মৃত্যুমুখে তু:ল দিতে আমি পারি নে—কিছুতেই নয়। আমার এল যদি ফরাসী দেশে হ'ত, আমার মাতা যদি ফরাসী নারী হ'তেন, এ সব অস্তায় করেছি এমন ধারণা গদি বন্ধমূল হ'ত, তাহ'লেও এমন হীন কাজ করতে আমি পারি নে—কিছুতেই নয়! কিছুতেই নয়!"

লেফ্টেনেণ্ট্ শুন্তিত হলেন। কিছুক্ষণ তাঁর মুখেও বাকাক্ষুরণ হ'ল না—এও সন্তব ? হঠাৎ তাঁর মনে জাগল, বহু বৎসর পূর্বের শ্বৃতি, যথন তিনি এই বয়সে নতুন ইউনিফম্ প'রে 'ক্যাডেট' হয়েছিলেন—হয়ত তিনিও তথন এমনিটি ছিলেন! আর য়্গপৎ তাঁর চোখের সামনে ভেসে উঠল অশীতিপর র্দ্ধ ব্যারনের তরুণী ব্রী ফুন্সরী ব্যারনেস্ আঁছে দ্য লা-র সেই আবেশ-জড়িত আয়ত লোচনের উন্মাদক কটাক্ষ, যা সেই সময়ে তাঁর কৈশোর ঘুচিয়ে যৌবনের উন্মেষ করেছিল,—কী তার মাদকতা! মনে পড়ল পরবর্তী কত রোমাঞ্চকর ঘটনা, যা অজ্ঞাতে তাঁর পূর্বের প্রেকৃতি সম্পূর্ণ বিকৃত ক'রে দিয়েছে, যার তীত্র শ্বৃতি তাঁর এতক্ষণ অদ্ধিচেতন রক্ত-পিপাসা জাগ্রত ক'রে দিল।

তাঁর ক্ষতি দৃষ্টি পড়ল সুকুমার কিশোরের নবীন কাস্তির ওপর। সে দৃষ্টি যুবকের মনে কেমন একটা অস্বস্থি সৃষ্টি করল।

তিনি হাক দি:লন "সোর্জী গুপী।" গুপীও লাকক্ প্রবেশ করল।

"আ!—দ্যোজাঁ লাকক, আমি নিরুপার! আপনার তরুণ পুত্র নিজের নবীন জীবন বিসর্জন কর ত দৃঢ়সঙ্কর, আমি কি করব? অমন তাঙ্গা দেহ ধ্বংস করার প্রথর আনক্ষের কাছে ওঁর পিতা, ওঁর পিতৃত্মি এ-সব ভূচহ।" যুবক বণণ, "আমার পিতৃভূমি জার্মেনী, আমার মাতৃভূমি জার্মেনী, আমার স্বর্গ—জার্মেনী !"

"লিয়াৎন", ও পাগল, ওকে আমার হাতে ছেড়ে দিন, আমি সব ঠিক ক'রে নেব—''

"তার আর সময় নেই !— স্যের্জ'। হার্ণ, বন্দীকে নিয়ে চল।"

"লিয়াৎন'া, ও শিশু, ওকে মাপ করুন—" "অসম্ভব—"

''তবে আর এক ঘণ্টা সময় দিন, প্রধান সেনাপতির কাছে গিয়ে এখুনি ওর প্রাণ ভিক্ষে ক'রে আনচি! আমি তাঁর জীবন বাচিয়েছি, তিনি আমাকে এটুকু দয়া করবেন, "এক মুহুৰ্ত্তও নয়! এ সামরিক নিৰ্দেশ—অলজ্যা!"

রণ-দামামা বেদে উঠদ। যুবক বধ্যভূমিতে দীড়াল—
মাথা খাড়া ক'রে, বিংশতি রাইফেলের দিকে বুক পেতে
দিয়ে।

ঠিক ছ'টায় **লেফ্টেনেণ্টের মুধ-নিঃস্ত হ'ল আদেশ**। যুবক শতচ্ছিল্ল বক্ষ নিল্লে তার প্রাণাধিক পিতৃভূমিকে চুম্বন ক'রে চিরনিদ্রায় শায়িত হ'ল।

সহসা সকলে দেখে, তাদের সাক্ষেত্-মেজর শ্রকক্ ছিল্ল-মূল জরুর ন্থায় ভূপতিত হ'ল! প্রথম লেফ্টেনেন্ট ছুটে গিয়ে দেখেন, তাঁর বিশেষ আদেশ সক্ষেপ্ত লাকক্-এর অঙ্গুলী রাইফেলের খোড়া টানতে অসমর্থ হয়েছে, তার ছৎযন্ত্রপ্ত বিকল হয়েছে,—তার দেহ প্রাণহীন।

লাভথ্ৰোক্

আবুল হাছানাৎ

চাকুরীটি আমার বিশেষ বড় নয়, তবে অসাধাসাধন আমাদের নিতাকর্ম। নাটক-নভেল লেখকেরা মনস্তম্ব বিশ্লেষণ করিয়া থাকেন বটে, কিন্তু আমাদের ভাতে পাকা হাত। দিনগুলো বেশ কাটিয়া যাইতেছে; ছোটথাটো বিপদ্ দুরে থাকুক, বড় বড় কঠিন সমস্তাও এখন হেলায় কাটাইয়া দিই। কিন্তু প্রথম চাকুরী-জীবনে সামান্ত একটি ব্যাপারেই বড় মুবড়াইয়া গিয়াছিলাম! দয়াময়ের উদ্দেশে কত কাতর মিনতি, নির্জ্জনে কত অশ্রণাত! মনের সেই অস্তিরতায় ভবিষাৎ জীবনের প্রতি বড়ই আস্থাহীন হইয়া পড়িয়াছিলাম। এখন শুধু হাসি আসে সে কথা মনে পড়িলে।

দে বৎসর ট্রেনিং কলেজ হইতে পাস করিয়া আসিয়া আবার ফ্রেলায় কাজ লিখিতে হইল। প্রবেশনারী অবস্থার লাঞ্চনা মনে পড়িলে মুগার উদ্রেক হয়। কত লোকের ধমকানি, চোগরাঙানি ধে সহ্থ করিতে হইল! একদিন মনের হুংখ খুলিয়া এক চার্জ্জ-অফিসার অর্থাৎ পাকা দারোগান্দীর কাছে বলিলাম। বলিলেন,—"ওহে, আর একটু সবুরই কর না! দেখবে কত লোকের জানমালের মালিক হ'য়ে পড়বে। তখন ভোমাকে খোসামদ না করে থমন লোকই এলাকায় থাক্বে না। ক্ষমতা হবে ভোমার অসীম, দাপট হবে বিষম!"—আপাততঃ আখন্ত হইলাম।

শিক্ষাদীক্ষার চোটে এক রকম মনমরা হইয়াই গিয়াছিলাম; তাই কবে কথন এমন স্থবোগ আসিবে তাহারই অপেক্ষা করিতে লাগিলাম।

আসিলও থুব ভাড়াভাড়ি! গোয়ালদিবী থানার বাসা-গুলি সেবার ঝড়ে উড়াইয়া লইয়া গেল। চার্জ্জ-অফিসার অসম ছেলেমেয়ের অফুহাতে ছুটি লইয়া পলাইয়া গেলে, নাহেব আমাকেই ডাকিয়া হাসিয়া বলিলেন,—"বাও, ভোমাকে গোয়ালদিবীর চাৰ্জ্জ পোষ্ট্ করা গেল! ভালমতে কাজকর্মা করিও।"

লাইনে খবর লাইরা জানিলাম বিবাহিত অনেকেই এই অজুহাতে সাহেবের নিকট হই ত এই থানাটার পালা এড়াইরা ফেলিরাছে। আর আমি ? আমি যে সদাবিবাহিত ! একেবারে কাঁদিরাই ফেলিলাম। লাইন বাবু বলিলেন,—"সাহেবকে বলা হরেছিল কিন্তু তিনি ছেলেপিলেওরালাদের আপত্তি আরও বেশা গ্রহে বলিরা উহাকে উড়াইরা দিরাছেন।

মনে মনে সকলের চৌদপুরুবের গুণগান করিলাম, আর নব-দম্পতিব এতি স্থান অধিকারটুকুর দিকেও যাহার। চাহিল না তাহাদের পারিবারিক স্থান্ডন্দা ও হিতকামনা করিয়া রওনা হইলাম। স্বামীস্থবঞ্চিতা তক্ষীর কর-ক্মলে ক্ষয়ের গভীরতম ব্যথাটুকু ক্ষানাইয়া গুণু এই বলিয়া অশ্রাদিপে পাঠাইলাম,—দারোগাদের নৈতিক উন্নতি অবনতির জন্স দায়ী তাহাদের কর্মপদ্ধতি!

পথ নৌকাধোগে। সময়টা আর কাটিতে চাহে না।
মনের সেই বিরাগ, বিরক্তি মেজাজটাকে গরম করিয়াই
রাখিল। থানাঘাটে যখন পৌছিলাম, তখন সংবাদ শুনিয়া
সবাই ছুটিয়া অভ্যর্থনা করিতে আসিল। মাঝি:দর সঙ্গে ভাড়া
লইয়া একটু তর্কবিতর্ক হইতেই একেবারে জলিয়া উঠিলাম।
বেদম প্রহারে ভাহারা ছত্তভঙ্গ হইয়া কোথায় মিলাইয়া গেল
ভাহার আর খোঁজ মিলিল না।

বেতথানির সেই প্রথম সম্বাবহার, কিন্তু শাসনকার্য্যে আমায় বড়ই সহায়তা করিয়া বাসল। "বাবু বড় কড়া," "ভারী তাঁর মেজাজ," ইত্যাদি কথা গুই-তিন দিনেই পানায় ও এলাকাময় রাষ্ট্র হইয়া পড়িল।

>

টেনিং কলে: জ বড় বড় ওপ্তাদের নিকট 'ল' পড়া ইইয়াছিল। তাই আইনের ব্যবহারিক দিকটা বেশ করিয়া আয়ন্ত করিয়া ফেলিয়াছিলাম। শিক্ষকেরা স্বাই ছিলেন অভিজ্ঞ— ক্ষীবনের শ্রেষ্ঠ অংশটা কাটাইয়াছিলেন দারোগাগিরি করিয়া; চাকুরী-জীবনে আমাদিগকে ছুইটি প্রধান তথাের দিকে দৃষ্টি রাখিয়া চলিতে হইবে ব্রাইয়া দিয়াছিলেন। একটি ছিল, Disearding of uncorroborated statement— আর্থাৎ যে-কথার কোন উপযুক্ত সমর্থক না থাকে তাহার উপর ভরসা করিতে নাই। দ্বিতীয়তঃ, Careful crossexamination of persons— মর্থাৎ কাহাকেও বিশ্বাস্থারা বলিয়া গ্রহণ করিবার পূর্কে তাহাকে ভালমতে জেরা করিয়া গইতে হইবে।

তাই নিয়তন কর্মচারীরা ধখন বলিয়া বসিত আমরা সবাই এক একটি সেরা অফিসার, তখন ভাহাদিগকে শুধু জেরা করিয়াই বাতিব্যস্ত করিতাম না, কাগজপত্র, দলিল-লগুবিজ তলব করিয়া রীতিমত বিচারে বসিয়া বাহতাম। কয়েক দিনের ম:ধাই আন্দারের হাত হইতে রক্ষা পাইয়া বাচিলাম। সব'ই বলিত, দারোগা বাবু ভারী নিট্থুটে লোক ধটেন, তার কাছে ধাপ্লায় কলে চলবৈ না।

সাক্ষী দিতে আসিয়া প্রায় সকলেই মুবড়িগা বাইত।
আমার সংক্ষহত্তক বিশ্বয়োক্তি শুনিয়া ও মুবের হাবভাব
দেখিয়া তাহারা থামিয়া থামিয়া তলাইয়া দেখিয়া অতিশন্ত
সংক্ষাচের সহিত ভবানবন্দী করিত। ক্রেরার চোটে ও
মেজাজের দাপটে তাহাদের মুখ এতটুকু না-হইয়া বাইত না।
স্বাই বলিত,—ছক্সুরের অসাধারণ তীক্ষ্বদ্ধি।

কাজকর্ম চলিল বেশ। ভাবিলাম বে-রকম নাম করিয়া ফেলিনাম তাহাতে আর কোন কা-জ বিশেব আট্কাহতে হইবে না। মনটি মাঝে মাঝে ভক্তিরসে আগ্রত হইয়া উঠিত মার ট্রেনিং কলেজের শিক্ষকদের উদ্দেশে প্রায়ই হাতজ্ঞাড় করিরা কপালে ঠেকাইরা গোপনে প্রণাম করিয়া ফেলিডাম।

৩

একদিন বৈকালবেলায় আনমনে নদীর ধারে বেড়াইতে আসিলাম। সকলের সঙ্গে অবাধ মেলামেশার প্রশ্রের কথনই দিতাম না, তাই থানার অন্ত কাহারও আমার সঙ্গে আসার মত হঃসাহস হইত না। তবে অন্ততম সহায় "বেত্রবর" অর্থাৎ শাসনদগুথানি সর্বলাই হাতে থাকিত।

খুলনা হইতে ষ্টামারখানি আঁকাবাকা কাটা খালটি বাহিয়া আসিয়া ঘাটে লাগিল। হঠাৎ স্বামী সুখবঞ্চিতা তব্ধণী স্ত্ৰীর কথা মনে পড়িয়া গেল। এই খুলনায়ই তিনি বর্ত্তমান! তথু কয়েক ঘণ্টার রাস্তার বাবধান; অথচ বহুলিন মিলন ঘটে নাই। মেজাজ ক্লফ হইনা উঠিল, রাগ করিবার মত কেই সঙ্গেও ছিল না, তাই পাল্মদংবরণ করিলাম।

ছাতা, লাঠি, বাহা, পুঁটলী লইয়া যাত্রীরা দিখিদিকে ছুটেল। তাহাদের মধ্যে ও কে? কঠিন পুরে ডাকিলাম,— রজনী। ওদিকে কোথায় যাচ্ছিদ? আমি যে এগানে!

নমস্কার বাবু মশাই। তাই ত! দক্ষরী থবর। বাবা আমার পাঠি র দিলেন, বললেন ভামাইবাবুকে তাড়া ক'রে নিয়ে আয় গে।

নিমেযের মধো বুকের রক্ত জমাট হইবার উপক্রেম হইল। ব্যাপারটা তবে কি? বলিলাম,—হাা, চল্ বেটা আগে থানার ঘাই, তার পরে সব শুনব।

রজনী রজনীর মতই অজকার-মুখে মাথা হেঁট করিয়া
পিছু পিছু চলিল। থানার পৌছিরাই হাকিলাম,—ক্ষমাদার
বাধু! একথানা টেলিগ্রাফের ফর্মানিয়ে আফুন ত! থবর
বিশেষ ভাল বোধ হচ্ছেনা, তবে বেটাকে 'জেরা' করা
যা বাকী।

ফর্ম একখানার জায়গায় দশখানা আসিল ও ভক্ত প্রজাবুন্দের মত থানার স্বাই আদিয়া জড়ো হইল। আমি 'জেরা'ধ্রিলাম,—

- আচ্ছা, বল ত, তোকে কে পাঠালেন? তোর বাবা, মা, না তোর ঐ দিদিমণি, বুঝলি কি না ঐ আমার স্থা।
- —পাঠালেন ত ব'বা, মাও নিকটে দাঁড়িরে-ছিলেন। দিদিমণির সঙ্গে আস্বার আগে আর দেখাই হয় নি।
- —তবেই মরে:ছ রে ব্যাটা! তিনি তবে কোপায় কি অবস্থায় ছিলেন শিপনীর ক'রে ব'লে ফেল!

জ্ঞাদার বাব্—ি-কিগার ক'রে বল ত বাপু!

—তা আমি মোটেই জানি নে। তবে বাক, মা কি অবস্থায় কোথা থেকে হকুম দিলেন তা বল্ভে পারি বটে। —বেশ, তাই বল্ দিকিন! শিপানি! জমাদার বাবু—তাই ব'লে ফেল।

— আজ সকালবেলার ঘুম ভাঙতে-না-ভাঙতেই ডাক পড়ল—রজনী, রজনী! হাত-মুখ তখনও ধুতে পারি নি। দৌড়ে গেলাম মাঝের কোঠার। বাবু আমাকে দেখে নড়ে-চড়ে পাল ফিরে শুলেন, মা পাল থেকে গোমটা দিরে উঠে ইংড়ালেন। বাবু জ্ঞারে হাই তুললেন, হাজের দশ-দশটি আংঙুল মটকালেন, তার পরে আন্তে আন্তে ভারী গলার বললেন,—রজনী, যা একটু গোরালদিখী,—এখনকার স্থীমারেই যা, জামাই বাবুকে নিরে আর। বল্বি—বাবা আপনাকে অবগ্রই থেতে বলেছেন।

"খণ্ডর ভারী অসুস্থ, এক মাসের বিদায় চাই"—বিদায় 'তার' লেখা হইল। জমাদার বাবুরা ছই জন, দিপাই গণ্ডাতিনেক—স্বাই "আমি 'তার' করে আসি," "নেই হাম যাতে ইয়ায় দৌড়কে" বলিয়া যে কাড়াকাড়ি আরম্ভ করিল তাহাতে আমার প্রতি তাহাদের অটল শ্রনা না হউক তাহাদের উপর আমার যে অবাধ অধিকার প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে তাহাতে আর সন্দেহ রহিল না। রঙ্গনী আমার বিরক্রিপূর্ণ রক্তিম চাহনি দেখিয়া সরিয়া পড়িয়াছিল। তাহ'কে বাসায় লইয়া গিয়া খাওয়াইবার বাবস্থা লইয়াও খ্ব কাড়াকাড়ি টানাটানি পড়িয়া গেল।

বিছানা, টাঙ্বাক্স ম শপত্তর ইত্যাদি কম ত নয়?
সাজাইয়া-শুছাইয়া টেশনে আসিতে প্রায় নয়টা বাজিয়া গেল। ষ্টীমার তখনও দেখা দেয় নাই। মাটার বাব্ 'চেয়ার' 'চেয়ার' করিয়া অস্থির, শীঘ্র জোগাড় করিতে না পারিয়া নিজের আসনই ছাড়িয়া দিশেন।

বসিয়া সিগ'রেটের উন্টোদিকটা ধরাইয়া ফুঁকিতে ফুঁকিতে ইাকিয়া ডাকিলাম, "রজনী, ব্যাটা এদিকে আয় ত ছুটে।"

বেচারা পিছনে মাথা গু"জিয়া ছিল, ভয়ে ভয়ে আসিয়া বলিল, "ব'বু!"

- —তোর মণিমালা দিদি কিছুই ব'লে দেন নি ?
- --বাবু না, তাঁর সঙ্গে ত দেখাই হয় নি ?
- —বলিস্কি? কালও হয় নি।
- —কাল বিকেলে, কি একটা কাজের জন্ত ডেকেছিলেন, মুখচোৰ তাঁর একটু ভারী বোধ হচ্ছিল।
- —বাটা গৰু! আসবার সমরে আবার একটু দেখাও ক'রে এসি নে ?
- —বাব্, না,—বাবা আমার বে তাড়া ক'রে পাঠিরে দিলেন, তাতে ত আমি হুটো মুখেও দিরে আসতে পারি নি।

খণ্ডর-মহাশরের এই অবথা তাড়াছড়ার জ্বন্ত তাঁহাকে ধক্তবাদ দিতে পারিলাম না। অসুস্থ মন লইরাই চীমারে উঠিরা পড়িলাম। ইণ্টার ক্লাসের টিকিট হইলেও ফার্ট ক্লাসটা দথক করিয়া কইতে আর বেগ পাইতে হইল না। রজনীকে মালপভ্রের পাহারার রাখিয়া গিয়া কেবিনে শুইয়া প্রভিশাম।

'জেরা' করিয়া অন্ত সব ক্ষেত্রে ফ্রুল পাইরা থাকিলেও এক্ষেত্রে কেমন বেন উণ্টো ফলই ফলিল। খণ্ডর-মহাশরের হাইতোলা—দশ-দশট আঙুল মটকানো—মণিমালার চোথ মুব ভারী—উঃ—কিছুই ত হদিস্ মিলে না! ইছার উপর ছারণোকার কামড়ে একেবারে ছটফট করিতে লাগিলাম। মনে করিলাম এ ক্লাসের হাত্রীরা নেহাৎ 'ভালমাত্র' হিসাবে বোকা, তাহা না হইলে ভাহারা স্থীমার কোশ্লানীকে ভাড়া এবং ছারণোকা মাকড় ও কোককে গায়ের রক্ত দিতে কিছুতেই সম্মত হইত না!

R

পরাদন সকালবেলার খুলনা টেশনে পৌছিয়া ছোট পার হইতে-না-হইতেই "বাবা অনিল, এই যে তুমি এসেছ?—এই খোড়াগাড়ী—রজনী গাড়ীটা ডাক্ত"— ইত্যাদি চীৎকার করিতে করিতে অয়ং খণ্ডর-মহাশয় দর্শন দিলেন। তাই ত—লোক না-পাঠালে কি আর ভোমার আসা হত?—আছো, আছো, থাম, পদধুলিটুলি নেওয়াটা, ও পুর্ব্বকালের অমাৰ্জ্জিত প্রথা—বলি শরীর ভাল ত?

গাড়ীতে উঠিতে উঠিতে বিশাম,—আজে হাা, এক রকম ভাশই—তবে মনে অশান্তি—এই যা! বাড়িভে কাক্ষর অসুধ-বিস্থু নেই ত ?

দোলা থাইতে থাইতে—না; বালাই, সবাই বেল আছে।

আমি---হঠাৎ স্থম্বপ্লে অচেতন হইয়া পড়িলাম।
তাহা হ'লে ত তক্ষণী ভার্যার সহিত একমাস কালের
অবিচিন্ন মিলন। সে যেন মুর্ত্ত হইয়া চোথের সামনে ভাসিয়া
বেড়াইতে লাগিল। মনে হইল গাড়ী মোটেই চলে না,
হাকিলাম,—এই বেটা—চা—লা।

কিছু ক্ষণের জন্ত অন্তমনত্ব হইয়া পড়ায় গুক্কজনের বক্তুতার অনেকটা ধরিতেই পারি নাই। কেবল শিষ্টতার খাতিরে হা বা না করিয়া যাইতেছিলাম। উদ্ভর ঠিক না হওয়ায়ই বোধ করি ক্ষেপিয়া গিয়া আমার হাতথানাঃ ধরিয়া বেশ নাড়া দিয়া তিনি বলিলেন—বলি, শুনছ ত ? কাল রবিবার ও পরও বন্ধ—এ তু-দিনেরই ছুটি নিয়ে এসেছ ত ? হাৎ মুধ শুকাইয়া গেল, সাহসেভের করিয়া বলিয়া ফেলিলাম—ছুটি ত এক মাসেরই নিয়ে এসেছি। ব্যাপার গুক্তর বলেই মনে হয়েছিল। বাক্ কিছুদিন—

—ক্ষতি আর কিই বা হরেছে ? ছুটি ক্যাব্দেশ ক'রে জরেন ত করাই থেতে পারে। বিষয়টা একটু খুলেই

ব'লে ফেলি। কাল রাতে ভাষার শান্তড়ী-ঠাকরণ
হঠাৎ বললেন,—অনেক দিন কামাই বেড়াতে আসে নি।
তাকে একবার আনাও না। আমি বললাম, সে কি করে
হ'তে পারে? সে এখন নৃত্ন চার্চ্জ পেয়েছে। কাজের
বে ক্ষতি হবে। দেখ আমার মতে ছুটি-ফুটি ও-সব ঐ
গোরাদের জন্তে। সাত সমুদ্র তের নদী পার হয়ে ওরা আসে
আর আমরা ত ধর না এই বাড়ি বসেই চাকরি করি।
এই কত বছর জজের সেরেজদারী করছি। ছুটি নিয়ে
ব'সে থাকলে ত ওরা স্বাই যা পারে লুটে নেবে। অসমর্থ
হ'লে ত ওঁরাই আমাকে একেবারে ছুটি দিয়ে দেবেন। যত
দিন শক্তি আছে—এই এসে পড়ল যে—রজনী তোর
মাকে ধবর দে—আমরা এসে পড়েছি।

খণ্ডর-মহাশয়ের পশ্চাতে পশ্চাতে ক্লান্ত দেহথানি ও
বিরক্তভরা মুখবানি লইনা বাড়ির ভিতরে প্রবেশ করিলাম।
শাশুড়ী-ঠাকুরাণীকে আর প্রণাম করাও হইনা উঠিল না।
নিতান্ত অশোভন না হইলে হয়ত বেতথানি অনর্থক
রজনী বেচারার পিঠের উপর দিয়া চালাইনা দিতাম।
শাশুড়ী বলিলেন,—কি বাবা অনুথ-বিনুথ হয় নি ত?
চেহারা ত একেবারে ছাই হয়ে গ্রেছ—

—হা।—একটু খারাপই লাগছে—বলিয়া যেন কাঁদিয়াই কেলিলাম।

বাধা দিয়া,—ও কিছু নয়, ষ্টামারের ঝাকানিতে একটু থারাপ লাগেই—এক্নি সেরে যাবে—ভূমি না-হয় একটু চা থেয়ে আরাম কর গে, আমার আফিসের সময় হয়ে এল—বলিয়া যাওর মহাশয় সরিয়া পড়িলেন।

ভিন্ন একথানি স্পজ্জিত কামরায় শুইয়া পড়িয়া আকাশ-পাতাল ভাবিতে লাগিলাম। মণিমালার আসিতে দেরি হুইতেছিল। ভাবিলাম—কপাল! এরা বুঝি সবদিকেই সমান! মেয়েটকে আফিসে নিয়ে যান্নি ত?

হঠাৎ অলঙ্কারের কুনুরুন্থ শব্দে চারিদিক মুধরিত হইল। বুঝিলাম—প্রিয়তমার আগমন। অভ্যর্থনা করিবার মত উৎসাহ আর হইল না, রাগ তথনও পড়ে নাই।

নিজেকে নিজেই ইণ্ট্রোডিউস করিতে বা বোধ করি বিলম্বের কৈফিয়ৎ দিতে গিয়া দে হঠাৎ থামিয়া গেল, বলিল,—উ: ভাই ত মা বললেন তোমার শরীর খারাপ! মাথা ধরেছে কি? জলপটি বেঁধে দেব? য়াস্পিরীন আন্ব? স্থান ক'রে নেবে?—না যাই, পাধাটা নিয়ে আসি গে।

ফিরিয়া আসিয়া হাওয়ার চোটে চাদর ও ক্নমাল উড়াইয়া দিয়া অভিমানের স্থরে কহিল,—কে বলেছিল ভোমার অসুথ নিরে আস্তে? আমার পোড়া কপাল! নইলে এমন হবে কেন?

অভিমানে অভিমান আনে, তাই এত ক্ষণে উত্তর দিলাম,
—না গো না, ভোষাদের কড়া তলবে আসতে হ'ল। শরীর

ভালই ছিল, মনে করেছিলাম এখানে কারুর অমুধ-বিমুধ হয়েছে। কিন্তু ভোমরা ত দেখছি দিব্যি চলাফেরা কর্ছ। অমুধের অকুহাতে এক মাসের ছুটি নিয়ে এলুম, তা কারুর অমুধ-বিমুধ না থাকলে আমাকেই অমুস্থ হ'য়ে পড়তে হবে। না-হয় শিক্ষীর ফিয়ে যেতে হ'বে।—তোমার বাবা ভুকুম করেছেন।

—কেন, লোকে কি শুধু গাধার মত থাটবেই বার মাস? বেড়াতে নেই, আমোল-প্রমোল নেই? এ কি রকম? নাঃ, তোমাকে একটি মাস থেকে থেতেই হবে। তুমি তার জন্তে ভেব না।

় কণিকের জন্ত আখন্ত হইয়া প্রিয়তমার অনভ্যর্থনার ক্ষতিপূরণ করিলাম। ধাওয়া-দাওয়ার পরে ত্পুরটা এক রকম ভালই কাটিল।

খণ্ডর-মহাশয়ের প্রত্যাবর্ত্তনের সময় হইরাছে ঘোষণা করার অপরাধে রজনীকে তিরস্কার করিয়া উঠিলাম। আবার ত্র্ভাবনা আসিয়া ফুটিল। তাঁহার সহিত পূর্ব্বে এত আলাপের স্থাোগ হয় নাই, এবার তাঁর বৈষয়িক বৃদ্ধির যেবহর দেখিলাম তাহাতে সমস্তা জটিল বলিয়াই মনে হইল। তবে মণিমালার আখাস?—সেত নিতান্ত মেয়েমান্থ ! জক্ষ-সাহেবের সেরেজদার ও থানার বড় দারোগার মধ্যকার ব্যাপারে তার হাত আর কত দুর থাকিতে পারে?

đ

যগুর-মহাশার পাশের ধরে ঢুকিয়া কাপড় ছাড়িতে ছাড়িতে শাগুড়ী-মাতাকে বলিলেন,—দেখ, জামাই মাত্র তু-দিনই এধানে আছে—খাওয়া-দাওয়ার বন্দোবস্ত যেন একটু ভালই হয়।

আমি মনে মনে বলিলাম,—তার বদলে একটু বিষ থাইয়ে দিন না কেন?

চটীফুতা পারে দিয়া চট-চট করিরা এ ধারে আসির বলিলেন,—হাা, এখন ত বেশ লাগছে? চেহারা দেখেই ত বুঝতে পাছিছ। বেশ, চল একটু চা খেরে নিই গে।

সমন্ত শরীর তথন রাগে পুঁড়িরা যাইতেছিল। দম বছ করিয়া চক্ষু মুদিয়া সমন্ত মুখখানি জোরে বিক্কৃত করিয়া বিলাম,—মোটেই নর, মাফ করবেন। চা খাবার প্রবৃত্তি হচ্ছে না। খাবই না।

অনেক পীড়াপীড়ি করিয়াও হারিয়া গিয়া শেহে চায়ের দোষকীর্ত্তন করিয়া বলিলেন,—চা থাই বলেই হে ওটার প্রশংসা করব তা নয়। ওটার দোষ রয়েছে অনেক বেশ, নাই থেলে এবেলা। রাত্তে একটু ত্থ-ক্ষতীর বন্দোবহু দেখা যাবে। কাল সকালে নিশ্চর দেখবে দিব্যি সেরে গেছে যদি না-যায় তবে—ও মণিমা, ও মণিমা আমার—বক্তা আছিলাল লাগিল না, তাই ভাড়াভাড়ি বাহির হইয়া পড়িলাম।

সন্ধার পরে থাওরা-দাওরার একটু বিরক্তিই দেখাইলাম। মণিমালার আদরয়ত্ত্বে রাত্রিটা কোন মতে ভালই কাটিল।

পর দিন সকালে বাহিরে আসিয়। হাত-মুখ ধুইতেছি এমন সময়ে রক্ষনী ছুটিয়া আসিয়া,—বাব্, বা—ব্, দিদি, দি—দি থেন কেমন কেমন কচ্ছে গো—বিলয় কাঁদিয়া ফেলিল।

ধমক দিয়া বলিলাম,—হারামজাদা, ন্তাকামী কর্ছিদ্— বল না কি হয়েছে।

— দিদি, ও গো আমার মণি দি—দি, চোধ মুথ বুজে কেবল মেন্দ্রতে গড়াচ্ছেন। কথাও কন না, জবাবও দেন না, বাবা মা ত এখনও ভয়েই রয়েছেন।

সময় অতি সঞ্চীর্ণ, তাই আর জেরা করিলাম না। মনে করিলাম, শেয়ে অতি প্রিয়ন্ত্রনকেই অস্থপে ধরিল বাড়িতে এত লোক থাকিতে? বলিলাম, আমি যাচ্ছি, তোর বাবা মাকে চট্ ক'রে শ্বর দে।

বিভানার পাশে দকলের জড়ো হইতে আর বেণী দেরি হইল না। কেহ বলিল মুর্জা গেছে, কেহ বলিল মুগী, কেহ সোনার চাঁদকে রাহুতে ধরেছে বলিয়া কভকটা কাঁদিয়াই ফেলিল।

আমার শুধু হুঃখ হইল, এ বাড়িতে এত লোক থাকিতে আমার কেবল আর এক দিনেরই সন্দিনীকে ভূতে ধরিল।

—ভাল শরীরে হঠাৎ মৃষ্ঠা গেলে তাকে ভূতে-ধরা ছাড়া আর কিই বলিব—বলিয়া আক্ষেপের সহিত মস্তব্য প্রকাশ করিলাম।

খণ্ডর-মহাশর তথন আসিরা পড়িরাছেন। সকলের মুখের দিকে তাকাইরা আমাকেই উদ্দেশ করিরা মাথা নাড়িরা কহিলেন,—ভূতে যদি ধরেই থাকে, তা হ'লে বাবা, ভূমিই গোরালদিখী থেকে ভূত সঙ্গে ক'রে নিয়ে এসেছ। কি বল ভূমি, মণির মা! এ বাড়িতে ত আর কথনও এ বালাই এসে জোটে নি। এখন ওঝা ডাকাই, না ডাক্টার ?

বিরক্তি চাপিরা গন্তীর গলার বলিলাম, ভাল ডাক্তার— আর যদি পাওরা বার তবে লেডী ডাক্তার ডাকাইরা রোগ নির্ণর করাই ভাল।

— আ-রে বলেছ ভাল। ঐ প্রির ডাক্তার আর তার ঐ মোটা বৌট— ত্-জনেই একসঙ্গে রোগী দেখে বেড়ার। যাও না বাবা রক্তনীকে সঙ্গে ক'রে—একবার তালের নিরে এস দৌড়ে। আমি নিজেই যেতাম, কিন্তু তারা রোগীর সম্বন্ধে আগেই যত খুঁটিনাটি প্রাশ্ব করেন 'জেরা' করেন তার উন্তর ভূমিই দিতে পারবে বেশী।

প্রির ডাক্তার বারান্দার বদিরা **আনমনে কি একটা** কাগক পড়িতেছিলেন। আমি সি^{*}ড়ির তলার পৌছিতেই ঘরের দিকে মুথ ফিরাইয়া চাপা গলায় বলিলেন,—ও গো কাপড় ছেড়না। দেশি কল্ এসেছে বলেই মনে হচছে।

আমার দিকে চাহিয়া হাসিমুখে শুধাইলেন,—কি ব্যাপার বনুন! আমি ঠিক ধরেছি,—ডেলিভারী কেন্; বটে ত? তা হাতে অনেক কান্দ, অবসর বড্ড কম! চট ক'রে ব'লে ফেনুন ত কি রকম অবস্থা।

—এসেছি যখন, তথন বলব বইকি ? শুনেছি আপনারা ত অল্লে ছাড়েন না, 'জেরা' ক'রে দম্বরমত নাড়ীর ধবর নিয়ে নেন। তা আপনার স্ত্রীকে একটু ব'ল রাধুন তাঁকেও ে

—ও আমার বলাই আছে। এই দেখুন—আমাকে কেউ একলা ডাকে না, মনে হয় যেন আমার স্ত্রীর উপরেই লোকের চোথ বেশা—বলিয়া হো হো করিয়া হাদিয়া ফেলিলেন।

আমি বতটা জানি বলিলাম।

ডাক্তার ও ডাক্তারণী উভয়কে সঙ্গে দাইয়া আসিদাম। বদিদাম,—উনিই অন্ত্রহ ক'রে ভিডরে গিয়ে দেখে আহন। আপনাকে বদদেই হবে, আপনি এধানে বহুন।

প্রিয়বাবু হাসিয়াই সারা। বশিলেন—ভা বেশ, তবে আমার যে বয়স তাতে ক'রে আপনার স্ত্রীকে থামার মা ব'লে ডাকবার অধিকারই ত রয়েছে। আছো, দেখা-শুনাটা উনিই না-হয় কয়ন।

প্রায় আধ্বণ্টাকাল দেখিয়া-শুনিয়া আদিয়া ডাক্তারণী হিসাব দিলেন। নাড়ীর গতি ক্রত, কিন্তু অস্বাভাবিক নয়; ফুসফুস নির্দ্ধোয়! রোগিণীর কথাবার্তা ফিরিয়া আসিয়াছে, তবে কথা বড্ড কম কহিতেছেন। তালিকা দিয়া বলিলেন— আমি ত বাহতঃ কোন ব্যারামই ধরতে পারছি না।

খণ্ডর-মহাশর এতক্ষণ চুপ করিরাই ছিলেন, লাফাইরা বলি:লন,—তা হ'লে ধুঝেছি—ওঝারই দরকার হবে! তবে রছনী—

প্রিরবাব বাধা দিয়া বলিলেন,—থামুন, ওঝা-ফোঝার দিন চ'লে গিয়েছে। নিজের স্ত্রীর প্রতি চাহিয়া বলিলেন—হাা, কি ক'রে ধরতে পারবে বল? তুমি ত আর রোগের পূর্বকার ই তহাসটা শোন নি। আমি ঠিক ধরেছি। ঐ যে সেদিন তোমাকে বলনুম না, আক্লাল আবার একটা নৃতন রোগ দেখা দিরে ছ,—বাকে বলে, 'লাভ্ট্রোক্'। এক্লি প্রেক্তিশন ক'রে দিছিছ। দিন ত এক টুকরো কাগজ।

কাগন্ধ লইবা ইংরেজীতে লিখিলেন,—"একুরা পির্ডরা ইন্ বোটল্ ডি লিউক্"—"সেও ওরান্ য়াট্ ওরাল্"— বলিলেন, শীক্ষীর একটি লোক পাঠিরে দিন ত ওবুখটা নিরে আসতে। আমার ডিস্পেলারী ছাড়া অন্ত কোথাও মিলবে না।

ঔষধ আনিতে দিয়া প্রিয়বাবু স্বাইকে উদ্দেশ করিয়া বক্তা ঝাড়িলেন,—ব্যারাম এটা নুতন হ'লেও—আসলে কিন্তু নৃতন নয়। তবে এর প্রগতি ও প্রতিধানের ব্যবস্থা এত দিন জ'না ছিল না। পুর্বে ভূতে ধরেছে বলেই লোকের বিশ্বাস ছিল। "ভূত কিন্তু মনের বাঘ"-এর মত একটি ভিজিহীন কুসংস্কার মাত্র। এটাকে বহু গবেষণা ও রিসার্চ্চ ক'রে আমি ধরতে পেরেছি। এটার নৃতন নাম 'লাভট্টোক'। যুবক-যুবতীদের মধ্যেই এর বেশা। এর মেডিক্যাল কজেল বা বৈজ্ঞানিক কারণ বিশেষ কিছু নয়। আশা ও নিরাশায় ওদের Nervous system বা সায়ুমণ্ডলে এক রকম gaseous vapour বা ধুঁরার মত বাষ্প তৈরি ক'রে দেয়। পরস্পরের আশু অমঙ্গল সংবাদ, হঠাৎ বিরহ-ভয় বা ব্যবহারজনিত পীড়া---এই স্ব কারণের কোন একটিই হঠাৎ ঐ গ্যাসে আগুন ধরিয়ে দেয় এবং সঙ্গে সঙ্গে সিষ্টেমে ভীষণ firing আরম্ভ তখনই সংজ্ঞালোপ, পাক খাওয়া ইত্যাদি সিম্টম্ দেখা দেয়। কেস প্রায়ই ফেটাল্ হয় না, তবে ব্রেন ও হার্ট য়্যাফেক্ট ক'রে বলে সাবধান হ'তে হয়।

ব্রুর-মহাশর মনোযোগ দিয়া শুনিয়া যাইতেছিলেন. এবারে বাধা দিয়া তর্কের অবতারণা করিলেন। বলি:লন.— বারোম ত নৃতন কতই দেখা দিয়েছে।—এই ধরুন না, কালাজর, ডেকু, ওরারফিভার, ইত্যাদি। এটা না হয় বিশাস করেই নিলুম, 'শাভষ্ট্রোক'ও দে-রকম একটা। কিন্তু ডাক্তার-মশাই, কারণগুলি যা দিলেন ভাতে ভ ঠিক একমত হ'তে পার্ছি নে—আপনার স্ত্রীকেই জিজেন কর্ছি,—ধকন না ও স্ব কারণ ত আমাদের জীবনে কতই ঘটেছে।—"স্ত্রীর ভয়ানক অনুখ'' ব'লে 'তার' পেয়েছি, ত্রঃখ হয়েছে, ছুটে গিয়েছি;—বিরহ ত সামাক্ত কথা, কত বিচ্ছেদ পর্যাস্ত ঘটে ছ, সব সামলে গিয়েছি। আর কলহ-বিবাদ ত স্বামি-স্ত্রীর মধ্যে অহরহ হবেই, হওয়াই উচিত—ভাতে ক'রে আমার ড দুরের কথা, আমার স্ত্রীরও ত কখনও সংজ্ঞালোপ বা রোগ-টোগ হয় নি! যাক,—আপনার হাতে যথন কেদ গিয়েছে তথন নিশ্চিন্তই হওয়া গেল। জামাই বাবু তাহ'লে কালই বাসায় ফিরতে পাবেন—ওঁর নূতন চার্চ্চ! সেবা-গুশ্রযা ত মা-বাপ হিসেবে আমাদের করতেই হবে।—কি বনুন ?

আমার গারের রক্ত আবার ফুটিয়া উঠিল, মনে হইল তথনই ছুটিয়া গিয়া ষ্টীমার ধরিয়া ফেলি!

প্রিয়বাব্ বৃদ্ধের দিকে অঙ্গুলি-সঞ্চালন করিয়া ঝঙার দিয়া বলিলেন,—আপনার মভামতে আস্.বই কি আর বাবেই বা কি? চিকিৎসাশান্তের আপনি জালনই বা কি? এ রোগের আমুবলিক ব্যবস্থাই বেণী দ্বকার। ওঁকে হু-চার দিন এবানে থাক্তেই হবে এবং এই বে ওব্ধুটা এসে পড়ল এটি আমার নিজের তৈরি, মনে ক্রছি

পেটেন্ট ক'রে ফেলব। নৃতন আবিদার হিসেবে দাম খ্ব কমই রেখেছি—মাত্র আ॰ টাকা। ভাবলাম গরিব বাঙালীদের দিকে কেউ তাকিরেও দেখে না। দাম কম না রাখলে ভারা যে মারা যাবে। আহা বেচারারা ত কুইনাইনের পর্নাই যোগাতে পারে না।—তা নিন এক ডোল্ল এক্মনি খাইয়ে দিন, ভার পর ভিন-ভিন ঘণ্টা পর এক ডোল্ল!— চার-পাচ শিশি খাওয়াতে হবে—ভর কিছুই নেই—তার এখন উঠি।

খণ্ডর-মহাশর প্রচণ্ড বাধা পাইরাই হউক বা ঔষ্টের দাম শুনিরাই হউক স্তব্ধ হইঃা রহিলেন। প্রিঃবাব্ সন্ত্রীক উঠিরা পড়িলেন, অথচ ভিকিটের কোনই ব্যবস্থা হইল না দেখিয়া অগত্যা, আনিই পকেট হইতে আ॰ আর ৫্মোট ৮॥॰ টাকা বাহির করিয়া দিলাম।

তাঁহারা বিদায় হইলে খণ্ডর-মহাশয় ক্রতিম হাসির ভান করিয়া বলিলেন—দিয়ে দিয়েছ? বেশ করেছ? তা হিসেব রেথ এখন। স্বটা তোমায় দিতে হবে না, অর্দ্ধেকটা আমরাই দিয়ে দেব। স্থামী ও বাবা হিসেবে আমার ও তোমার উপর মণিমালার স্মান দাবি। যাও, এখন ভাববার কিছু নেই, ও্যুধটা একটু খাইয়ে দাও গে!

•

ঔষধ খাওয়ান আমার একটি প্রধান কর্ত্তবা হুইল। তিনচার দিন অন্তর ডাক্তারেরা আসিয়া দেখিয়া যাইতে লাগিলেন
এবং একই ঔষধের পুনর্ব্যবস্থা করিয়া দিয়া মণিমালার
মনস্তুতিসাধন—অনুপান বা আনুব্দিক ব্যবস্থাস্ক্রপ—
আমাকেই করিতে হুইবে পুনঃ পুনঃ আদেশ দিয়া যাইতেন।

মণিম লা বলিল—শরীর ত আমার একটু অনুস্থ হয়েই ছিল, কিন্তু তা ব'লে ভূমি চিকিৎসার ঘটা ক'রে এত টাকা উড়োবে নাকি? ধাও, আমি ভাল হ'রে গিরেছি।

আমি বলিলাম, — তুমি বল্লে ত হবে না! তোমাকে ডাব্রুনারী আইনের চকে সেরে উঠতে হবে। টাকা ত ভারী জিনিষ, ভোমার নিকটে থাকতে পারছি, এর মূলা কি কম?

সময়টা বেশ কাটিয়া ঘাইতেছিল। তেইশ-চব্বিশ দিন পরে ডাক্তারবাবু লিখিয়া পাঠাইলেন, তাঁহাদের আর আসিতে হংবে না। ঔষধটি মাঝে মাঝে এক ডোজ দিলেই হইবে।

এবার নিজেই শশুর-মহাশয়ের সমীপে প্রস্তাব করিলাম,
—ভগবানের ইচ্ছার মণিমালার শরীর ত বেশ ভালই হয়ে
গেছে। এবার যাত্রার উদ্যোগ করি ?

—হা বাবে বইকি? মণির মা, মণির মা, দেও ত এদিক,—স্মা বাবা, ভূমি মোট কত টাকা বার করেছ? ৫২ টাকা?—হাা, মণির মা, দেও ত অনিলের ছাবিবলটি টাকা দেওরা বার কি না? না হয়ত আসছে মাসের মাইনে পেলেই পাঠিরে দেওরা ধাবে। ওর হাতে টাকাও যা আমার হাতেও তা।

—কেন দেওয়া বাবে না? এই আমি এখনই দিয়ে দিছি,—বালয়া ঋশমাতা উদারতার পরকালা দেধাইলেন।

মাংসর শেষে বিদায় লইতে গিয়া মণিমালার ছল ছল চোথ ছটি দেখিয়া মনে বড় বাথা পাইলাম। হাতখানি বুকে টানিয়া লইয়া বলিলাম,—প্রিয়তমে, কেন? ভূমি ত তোমার কথা রেখেছট,—একটি মাস বেশ কেটে গেল। এখন আসি! তোমার শিক্ষাতেই ত এমন অভিনয় করতে পারলাম।"

—হাা, আস্বে বইকি? একটি মাস বইত নয়?—আচ্ছা, কথা দাও,—হত দিন তোমার ওধানে বাসা তৈরি না হয়, তার মধ্যে আর অন্ততঃ একবার এসে বেড়িরে ধাবে। বল, কথা দাও!

হঠাৎ শশুর-মহাশরের অভিনত ও হাবভাব মনে পড়িয়া গেল, রাগিয়া উঠিয়া বলিলাম,—কথা দিতুম বইকি? কিন্তু তোমার ব বা ত ভূলেও আর থরচ পাঠাবেন না, আর এমনি এলে অভার্থনা যে কেমন করবেন তা'ত দেখলেই।—

ব্যথিত সূরে মণিমালা কানের কাছে মুখটি আনিয়া বলিল—তবে দে সময়ও আস্বে না ?

শক্রমাতার নিকট বিদায় লইয়া আসিয়া এবার শশুরমহাশয়ের সমীপে উপস্থিত হইলাম। তিনি থড়ম পায়ে দিয়া
তাঁহ:র বরের মধ্যে পাইটারি করিতেছিলেন, বোধ করি
আমি অবলেষে বিদায়ই লইতেছি সেই সুথে! আমি প্রণাম
করিলাম। তিনি হাসিয়া বলিলেন,—বেচে থাক বাবা,

স্থা থাক,—খন, গৌরব ছই-ই ভোমার হউক,— হাা, বাবা বুড়ো মান্:বর কথাটা মনে রেখ—এ বরস থাটবার আর উপার্জনের। একনিষ্ঠ হ'য়ে এবার কাজে লাগবে।—আর ভোমায় আমরাও বিরক্ত করছি না—

- ---আন্তে, হা, আর শীগগীর ছুটিও মিলবে না! তবে---
- —ও চিঠিপত্তে পৌজপবর নেবে ও দেবে। এথান থেকে বেশী দূরও ত নয় ?
- না ভাবছি কি—তবে, মণিমালার ডেলীভারির সময়টায় একটু বিশেষ যত্ব নেবেন। ঐ ডাক্তারই ওর স্ত্রীকে নিয়ে এসে দেখে যাবেন। আমি ওথান থেকে থোঁজ নেব।

চমকিয়া—না, না, র'সো, একটু ভেবে দেখছি—বলিয়া ধানিকক্ষণ চোথ মুদিয়া রহিলেন, বলিলেন—না, তবে বাবা, ভূমিই এসে প'ড়ো। ব্যাপারটা ত কিছুই নয়। তবে কি জান? ভয় করি ঐ রোগ-টোগের। আবার দেখলে ত? প্রিয়বাব্র পেটেণ্ট ওষুধগুলির দাম? তা বাবা, ভূমিই হিসেব রাথবে ভাল! ভেব না, অর্জেক পরচ ত আমিই দেব। বোঝাপড়াটা `কেবল ঐ ড:ক্ডারের সঙ্গে, ভূমিই না-হয় স্বটা কর। মনে থাকে যেন আবার এসো।

- আজে, তবে আসাই যাবে। এখন আসি।
- ——আছে। বাবা, এস, রজনী ও রজনী, আমার জামাটা দেও। টেশনে ওকে দিয়ে আসি।

ষ্ঠীমার বাশি দিয়া ছাড়িয়া দিশ। খণ্ডর-মহাশয় তথনও পাড়ে দাড়াইয়া রুমাল ঘুর:ইয়া বলিতে লাগিলেন— মনে থাকে যেন। আবার ছুটি নিয়ে এস গো—এসে · · ·





আলাচনা



"ভারতে লিপি-দমস্থা"

পৌৰ সংখ্যা 'প্ৰৰাসী'তে অধ্যাপক নিমন্ত্ৰন নিয়োগী মহাশরের "ভারতে লিপি-সমস্তা" পড়ে বে ছই-একটি কখা জানাবার ব'লে মনে করি, তাই জানাছিছ। ভারতীয় 'অক্ষর'ভলির জটিলতা খীকার্য্য— অতএব তার সংস্কার্মন্ত কামা। কিন্তু রোম্যান লিপি গ্রহণে আমাদের কি বাধা জানতে পারে তাই এখানে জানতে চাই।

›। প্রথম কথা হচেছ ছুইটি পৃথক পৃথক বর্ণ নিরে বে একটি বর্ণ বুঝাবে—ছ=ৣা; ঠ=th থ=th প্রভৃতি, ভাহাকে সরলভর করা উচিত। অর্থাৎ ঘঠথ প্রভৃতি বর্ণগুলিকে এক একটি পৃথক পৃথক বর্ণ বিশেষ ঘারা স্টিভ করা উচিত। ছুইটি সম্পূর্ণ পৃথক বর্ণ মিলে বে কি ক'রে একটি বর্ণ স্পষ্ট করল তা মনে আসতে পারে। বেমন, সু(৪) আর হ (h) মিলে 'ঘ' ইত্যাদি।

আমাদের ভাষা যে এই রূপকে সহ্য করতে পারে নি তার প্রমাণ হচ্ছে, ক+ব=ক; ম+হ=দ্ধ; জ+ঞ=জ্ঞ প্রভৃতি তুইটি পৃথক বর্ণ মিলে যখনই একটি বিশেষ ধ্বনি সৃষ্টি করেছে, তথনই তারা হাইড্রোজেন ও অক্সিজেনের মিলনের মত এক বিশেষ পৃথক রূপ পেরেছে। তাই এই সব ব্যক্ত বর্ণ মিশে গিয়ে একটি বিশেষ রূপ পারে ইহাই বাজনীয়।

- ং। আমাদের বর্ণমালার যে যে উচ্চারণ সেই সেই বর্ণমালাই থাকিল, কেবলমাত্র নৃত্ন সংগ্রহণ ঐগুলিকে অঞ্চ ভাবে লিগব— এই ত হক্তে নৃত্ন সংগ্রহের মূল কথা? অর্থাৎ আমরা। 'কাকা'কে Kaka লিগব! এথানে একটি কথা আমছে, যে, আমাদের ছেলে-মেয়েরা এই নৃত্ন কাকাকে (Kaka) বানান কর ব কি ক'রে! এত দিন যে 'ক'র আকারে কা, 'ক'র আকারে কা কাকা ছিল, 'কাকা'র সেই 'কারা'গুলি বৃষ্ণি আর থাকে না। অবশুনা-ই যদি থাকে ভার জগু আমার আফশোষ নেই! কিন্তু এই নৃত্ন Kakaর যে বিপদ্টুকু ভাই বল্লম।
- ০। আমাদের প্রতিলিখনের অনুবারী লিখতে হবে 'বই লও'র জারগার 'b.u l.o.', এইবানে আরও একটু মুদ্ধিল আছে। আর সে মুদ্ধিলই একটু বিশেষ। তা হচ্ছে এই যে, আমাদের ব্যপ্তনবর্শগুলি সবই 'অ'কারছে। অন্ত অনেক ভাষার ব্যপ্তনগুলি হ'তে আমাদের ব্যপ্তনগুলির এই বিশেষ। স্তরাং আমাদের 'প্রতিলিখনে' এই সব 'অ'কারান্ত বাপ্তনগুলির 'ম' লোপ পাবে। কেননা, যথনই 'ব'র পরে 'অ' হবে, তথনই তা দেখিরে দিতে হবে। অর্থাৎ 'b.i' দিয়ে 'ব' লিখতে হবে। প্রের্থ বে আমাদের 'ব'র ভিতরেই ব+অ ছিল এখন আর তা রাখা বাবে না; আর তা-ই যদি না বার, তবে নামাদের ব্যপ্তনগুলির নামও বদলাতে হবে। অর্থাৎ সব ব্যপ্তনগুলির 'অ'কারান্ত নাম না হরে হসন্ত বা ঐ রক্ষই কিছ হবে।

তথন আমাদের প্রতিলিখনের হ ph, ল l, ক k, ন n, ট t, প্রভৃতিকে এক, এল, কে, এন, টি প্রভৃতি ব'লে ডাকতে হবে ৷ এতটা

বীকার করবার শর্জা রাখ্যেন্ড নিস্তার নেই—আবার সন্ধির ভীতি আছে। বর্ণমালার এই নৃতন নামকরণে সন্ধিকে ভাষা থেকে বিসর্জন দিতে হবে। তাই এই সব দেখে মনে হয়, আমাদের রোম্যান লিপি নেওরার পথে বাধা কম নর। তুরস্কের কেমাল পালা বে নিজের দেশে সংসার করেছেন তাতে বেগ পেতে হয় নি তাকে, কেন-না, রেমান বর্ণমালার মতই বোধ হয় আরবী বর্ণমালা 'অ'কার'ন্ত ধানি পার না। স্বতরাং 'বে'র স্থলে 'বি' b নেওরা সহজ হয়েছে লাজনি নেশের গৃষিক বর্ণমালার সম্বন্ধেও আমার জ্ঞান নেই, কিন্তু আমার বিষাস সেগুলিও রোম্যান বর্ণমালার মত 'অ'ধনি পায় না; স্বতরাং কার্মানরা গৃষিক ছেড়ে রোম্যান সহজেই নিতে পারছে।

কিন্তু আমাদের বেলা এই বিপদকে পেরিয়ে যাওয়া অসম্ভবও হ'তে পারে। তাই বাংলা লিপির যুক্তবর্ণ দূব ক'রে অক্ষর কমিয়ে আমাদের সংস্করণ চলে কিনা দেখা উচিত।

প্রীরচক্র আচার্য্য

- ়। মুগ্রায়ন, টাইপরাইটার, শিক্ষা প্রভৃতি বিষয়ে সুবিধার **জস্তু** ভারতীয় বর্ণমালার যে পরিবর্ণন আবগুক ইহা স্বীকার করি।
- ২। ভারতীয় বর্ণমালাসমূহের আদি সংস্কৃত বর্ণমালা যে রোমক বর্ণমালা অপেকা অনেক বেণী বিজ্ঞানসমূত ইহা ফ্রিদিত। এরপ অবস্থায় রোমক বর্ণমালা গ্রহণ করিতে যাওয়া পশ্চাদ্বর্থন হইবে মার।
- মতরাং বোঝা বাইতেছে যে, সংস্কৃত বর্ণমালার ক্রটিগুলি অপসারণ করিরা পরিবর্ত্তিত আকারে আমাদিগকে গ্রহণ করিতে হইবে।
- ে। দৃষ্টান্তখন্তপ বলা ঘাইতে পারে, যে, অন্তাবর্ণ বাদ দিলে, ক, চ, ট, ত, প এই পাঁচটি বর্গার প্রত্যেক বর্ণ একটি মূল দক্ষের উচ্চার পর গাচ্ছ ভেদ মাত্র। কেবল মাত্র পাঁচটি মূল বর্ণের সাহায্য প্রথণ করিব। চিন্তের সাহায্যে অপর সমুদর বর্ণগুলি প্রকাশ করা যাইতে পারে। বর্গার সমুদর অন্তাবর্ণগুলি চিন্তের সাহায্য কেবলমাত্র একটি বর্ণদ্বার প্রকাশ করা যাইতে পারে। আবার 'ট'ও 'ত'কে মূলত: একই শক্ষের উচ্চারপের গাচ্ছ ভেদ ধরিয়া, চিন্তের সাহাযো সমুদর বর্ণ কেবল মাত্র একটি বর্ণ সাহাযো প্রকাশ করা ঘাইতে পারে। অঞ্চ সকল বর্ণ সম্বন্ধেও উপযুক্ত উপার থাটে।
- ৬। অধাপক মহাশর ঐতিহ্যও "সেণ্টিমেণ্টে"র কথা একেবারে ভূলিয়াছেন। এণ্ডলি এত ডাচ্ছিলোর বিষয় মনে করি না।

প্রীউমাদাস শুপ্ত

শ্রীস্থারকুমার আচার্বা বে-কয়ট বাধার কথা উরেব করেছেন সে-বিবরে এই বলা বেতে পারে :—

>। थ, व, इ, व देखांकित संख शुधक वर्ग छेद्वावन कवांत्र श्रादावन

ফান্তন

কিছু নেই, কেন-না, প্রতি বর্গের ২র ও ৪র্থ বর্গের ধ্বনি ১ম ও ৩র বর্গের সজে 'h' অর্থাৎ 'হ' ধ্বনি, বোগ ক'রে সহজেই প্রকাশ করা যার এবং এখনও করা হর, বেমন, কামাখাা Kamakhya । ধ্বনিতব্বের দিক বিরেও 'ক' ও 'হ' ধ্বনি মিলিত হরে 'ব' ধ্বনিই হর, উচ্চারণ ক'রে দেখলে সহজেই সেটা বুঝা যাবে। এই 'h' ধ্বনিকে aspirato বলা হর এবং এই অনুসারে 'ব'কে sepiratod 'ক', 'ঘ'কে aspiratod 'গ', ইত্যাদি বলা বেতে পারে। পুনদ্দ, বর্গগুলির হর ও ৪র্থ বর্গের জন্তু নুক বর্গ উদ্ভাবন করতে গেলে আমাদের বর্গমালার এখন যে জটিল অবস্থা তাই ধাকবে, কোন লাভ হবে না; ভাছাড়া রোমানে অক্ষরের যে সরলভার কথা আমার প্রবন্ধে উল্লেখ করেছি সেটা রক্ষা করা যাবে না।

- ২। বানান করার অহুবিধা অসংগৃক্ত বর্ণের সময়ে বিশেষ কিছু হবে না, এখন ধে ভাবে হয় তাই হবে এবং 'কার' ও 'ফলা'ও ধাকরে, কেবল অ-কারান্ত বাঞ্জন ভিন্ন অন্য বাঞ্জনের পরের অরবর্ণ বা বাঞ্জনবর্ণ এখনকার মতই 'কার' ও 'ফলা' ক'রে বানান করতে হবে। যুক্তবর্ণের বানানেও তাই, যদিও প্রথম প্রথম এক এক স্থানে কিছু অহুবিধা হওরা সম্ভব; ক্রমে ক্রমে এ-সব অহুবিধা দূর করার ব্যবদ্ধা সহজেই করা থেতে পারে।
- ৩। কোন অক্ষরের নাম বা উচ্চারণ পরিবর্ত্তন করার আমি
 পক্ষপাতী নই এবং প্রয়োজন মনে করি না। অক্ষর-পরিচয়ের সময়
 এখন আমরা বে-ভাবে পড়ি সেই ভাবেই k, kh, ইন্টাদিকে ক, খ,
 গড়া হবে, কেবল লিখার সময় অ-কারান্ত ব্যঞ্জনগুলির পরে 'a' অর্থাৎ
 অ-কার, প্রকাশ করতে হবে; যেমন, কখন = kukinna। 'হসন্ত'
 অ্কাশের সময় হসন্তের চিহ্ন () বর্ত্তমান আকারে বাবহার করা শ্রের
 মনে হয়; ছাপার সময়ে 'হসন্ত' একটি পৃথক typo হবে, লেখার সময়ে
 'হসন্ত'-অক্ষরে 'ম' অর্থাৎ অ-কার না দিয়ে নাচের দিকে হসন্তের টান
 দিলেই হবে। এরূপ হ'লে 'স্কি' নিয়ে কোন অম্বিধা থাকবে না।

ঞীউমাদাদ গুপ যে করেকটি বিবর উল্লেখ করেছেন দে-স্থক্তে আমার বক্তবঃ:—

- ১। মলে হয় তথা মহাশয় 'বর্ণ' ও 'ধ্বনি', এই ছাটকে মিলিরে কেলেছেন; এই ভয়েই আমার প্রবন্ধ দাঠকদের দৃষ্টি এ-বিষয়ে বিশেষ ভাবে আকর্ষণ করেছিলাম। 'সংস্কৃত (?) বর্ণমালা'কে সকলে বিজ্ঞানসম্মত ব'লে স্বালর করেন এই লল্প বে পৃথিবার অন্ত কোনও ভাষার ব্যঞ্জন ধ্বনিগুলিকে এরণ স্বশৃষ্টাল ও বিজ্ঞানসম্মত ভাবে সাজান দেখা বায় না। এই ধ্বনিক্রমের লল্প এর এত প্রশংসা, কিন্তু বর্ণ বা অকরের আকারের লল্প নয়। আমার প্রবন্ধ এই ধ্বনিক্রমের কোন ব্যতিক্রম আমি প্রত্তাব করি নি, বরং রোম্যান লিপিতেও এই ক্রমরকার কথাই বলেছি, স্তরাং প্রভাবিত পরিষর্ধন 'পশ্চাদ্বর্ধন' নয়। এখানে উয়েধ করা বেতে পারে যে সংস্কৃতের স্বর-ধ্বনিক্রম-সম্পর্কে এ প্রশান উল্লেখন ইং কোন বিজ্ঞানসম্মত প্রণালীতে সালোন নয়।
- ২ ! 'সংস্কৃত বর্ণমালা'র যে ক্রটিগুলির উল্লেখ আমার প্রবৃদ্ধে করেছি দেগুলির অপনারণ সম্ভব নর ।
- ৩। একাদশটি বর্ণদ্বারা কতকগুলি 'সহজ চিছে'র সাহাব্যে তিনি বেষ বর্ণদ্বালা উদ্ভাবন করতে চান, দেটা না দেখলে কোন মন্তব্য প্রকাশ করা বার না। তিনি বনি ঐ বর্ণদালা প্রস্তুত ক'রে সাধারণের সন্মুখে উপস্থিত করেন তবেই সকলে বিচার ক'রে দেখবার মবোগ পাবেন বে সেটা চলতে পারে কিনা। এই বর্ণনালা উদ্ভাবনের সময় প্রথম্ম আদর্শ

লিপির যে বিশেবছের কথা বলা হরেছে, সেওলির প্রতি দৃষ্টি রাখা প্ররোজন।

৪। ঐতিহা ও সেন্টিমেন্টকৈ আমি ভাছিলা করি না। কিন্ত কখনও কখনও এমন অবস্থা উপস্থিত হ'তে পারে যখন এগুলিকে প্রাধান্ত দেওরা সম্ভব নর। লিপিসংঝার সেই প্রকার একটি বিবর ব'লে মনে হয়। তাছাড়া, গুপ্ত-মহাশর চিহান্থি সাহাব্যে বে নৃতন অক্ষর শুচলিত করতে চান তাতেও কি ঐতিহ্য ও সেন্টিমেন্টের আপত্তি আসতে পারে না?

প্রীনিরঞ্জন নিয়োগী

বাণীবন বালিকা-বিভালয়

দ্দী অন্তব্যাচরণ সেন

বাণীবন কথাটা উল্লেখ করিবামাত্র হাঁহার নাম লোকের মনে পড়ে. তিনি কর্মবীর পরলোকগত এককডি সিংহরার মহাশর। বাঁহারা জানেন তাহারা বলেন, "বাগীবন বললে এককড়ি বাবু এবং এককড়ি বাৰু বললে বাণীবন ব্রবায়।" একথা কত লোকের মূপে যে শুনিরাছি তাহা বলিয়া শেষ করিতে পারি না। এই বিজ্ঞালয়টি তাঁহারট বিশেষ চেষ্টার প্রথম তাহার বাড়ির বারান্দায় শ্রীবুক্ত গৌরাকান্ত বস মহাশরের শিক্ষকভার ১৯০০ সালে আরম্ভ করা হয় এবং ব⁵মান ফলর পাক৷ বাড়িটিও তাঁহার ও স্বর্গায় হাবাণচক্র সিংহরায়ের প্রদান্ত জমির উপরই প্রন্তুত করা হইয়াছে এবং এজন্ত অর্থসংগ্রহ করিতে হাঁহারা থাটিয়াছেন ভাঁহাদের মধ্যে কলিকাতার জীবুক্ত কৃষ্ণধুমার মিত্র, জীবুক্ত ডাক্তার প্রাণকৃষ্ণ জাচার্যা, স্বৰ্গীয় এককড়ি বাবু ও বৰ্ত্তমান লেখক অৰ্গ্ৰণী ছিলেন। শ্ৰীণুক্ত প্ৰা**ৰক্ত** আচাৰ্য্য নিজেও অনেক টাকা এজন্ত দান কৰিয়াছেন। পাকাৰাড়ি তৈৰি করিবার সময় স্বর্গীয় এককডি সিংহরায় মহাশয় ঐ স্কুলের সম্পাদক ছিলেন এবং ভাহার উপর নির্ভর করিয়াই বালিকাদের জন্ত বোর্ডিং স্থাপন করা হয়। ইহাকে বাঁচাইয়া বাখিতে হইলে তাঁহার মত অক্লা**ন্ত-**কশ্মীর আবগ্যক। ভগবান সেরূপ কশ্মী আনিয়া দিন।

ৰাণীবন স্থুলটির কৃতী ছাত্র-ছাত্রাদের নামের মংধ্য ব্রাহ্মবালিকা-বিদ্যালয়ের ট্রেনিং-বিভাগের প্রধান শিক্ষয়িত্র। শ্রীবৃক্তা পূণিমা বসাকের নাম বিশেষ উল্লেখংযাগ্য।

বালিকা-বিভালার যথন Standard Examination প্রবর্ত্তিত হয়, তথন বালিকা-বিভালয় হইটে প্রথম বালীর এককড়ি বাবুর ক্রোলিকা বালিকা-বিভালয় হইটে প্রথম বালীর এককড়ি বাবুর ক্রোলিকারা দেবর দাস ও বালীর হারাণ বাবুর ক্রা পরজাকসভা অমিয়া সিংহরারকে পরাকা দিতে পাঠান হয়। তথন এই প্রবন্ধ-লেথক স্কুলের শিক্ষাক ছিলেন। ইহার পরই Miss L. Brock বিনিসেই সময় স্কুলের Inspectress ভি লন—স্কুল পরিকর্শন করিতে আসেন এবং ইহার কাণ্য দেবিরা সন্তুত্ত হন। কলে সেই সময় হইডে Grant-in-aid পাওয়া ধায়। প্রবন্ধ-লেথক ও স্বালীর এককড়ি সিংহরারের পর অধ্যাপক জীতুক অমিয়ক্রমার সেন, এম-এ, ইহার সম্পাদক হন এবং ৯ বংসরকাল সম্পাদকের কার্যা করেন। এই স্কুলে গাঁহারা প্রধান লিককের কান্ত্র করে। কর্মীর জিরোণ্টক্র লাস মহালারের কথ। বালীর মণিলাল মন্ত্রিক, স্বালীর জিরোণ্টক্র লাস মহালারের কথ। বালীর মণিলাল মন্ত্রিক, স্বালীর জন্মাধন্ধ সরকার, স্বালীর হবিমাহন বোরালে, স্বালীর কিলোন্ত্রীমাহন বাল বড়ুরা ও জীগুকুর বন্নালী প্রামাণিকও ইহার প্রধান শিককের কান্ত্র করেন।

ভারতে মনঃসমীক্ষা

এহিরশয় **মুন্সী**

গত পৌষ সংখ্যার 'প্রবাসী'তে শ্রীরবীক্সনাথ ঘোষ মহালর 'ভারতে মনঃসমীক্ষা' বিজ্ঞানের যে সংক্ষিপ্ত ইতিহাস লিখিরাছেন, তাহাতে লেখক মনঃসমীক্ষা বিজ্ঞান বিষয়ে আর একখানি বইছের নাম উল্লেখ করেন নাই। সে বইখানি অধ্যাপক শ্রীকৃষ্ণপ্রসম্ম ভট্টাচার্য্যের 'মনের পথে,' ২০২০ সালে পাবনা সংসঙ্গ হইতে প্রকাশিত হয়।

"পাটের বদলে অহ্য ফসল"

প্রীদেবেক্তন থ মিত্র

পৌৰ মাদের 'প্ৰবাসা'র বিবিধ প্রদানে 'পাটের বনলে অন্ত ক্ষদল'' শীৰ্ণক অধ্যক্তনে বাহা লেখা হইয়াছে দে-সম্বন্ধে ছুই-একটি কথা বলিতে ইচ্ছা করি!

চীনাবাদাম বেলে, বেংল দোয়াঁশ ও দোয়াঁশ জমিতে উৎপন্ন হয়; বেলে দোয়াঁশ ও দেখাশ জমিতে পাটও জম্মে; এইরূপ উচু জমিতে বগী পাট জংছা; স্থতরাং বগী পাট চাব কম করিবার জ্বস্তু বে-সকল উচু বে:ল দোরাঁশ ও দোরাঁশ জমি (অর্থাৎ বংহার উপর জল দীড়ার না) উদ্বৃত্ত থাকিবে সেই সকল জমিতে চীনাবাদামের চাব করা বাইতে পারে । চীনাবাদাম বৎসরে ছুইবার অর্থাৎ শীতকালে ও বর্বাকালে রোপণ করা বাইতে পারে ।

তামাক শীতকালের অর্থাৎ রবি-ফসল; পাট বর্ধাকালের অর্থাৎ ধরিস্-কসল; প্রাবণ, ভাজ মাসে পাট উঠাইরা পাটের জমিতে তামাকের কসল করা যাইতে পারে।

পাটের বদলে রবিশস্তের বাবস্থা দেওরা হইতেছে বলিলে ভুল বলা হইবে; রবি-ফসল সম্বন্ধ যে পত্রিকা প্রকাশিত হইরাছে, তাহা হইতে দেবা যাইবে যে পাটের বদলে রিশস্তের ব্যবস্থা দেওরা হর নাই। পাটের দাম কম হওয়ার জন্ত কুষকদিগের যে আর্থিক ক্ষতি হইতেছে তাহা তাহারা রবিশস্তের আবাদ বাড়াইরা ও নুতন ন্তন লাভজনক রবিশস্তের চাব করিয়া কতক পরিমাণে প্রণ করিতে পারেন; এই উদ্দেশ্ডেই রবি-ফসলের চাব সম্বন্ধে কুষকদিগকে উপদেশ দেওরা হইতেছে।

বিক্রমপুর—একালে ও সেকালে*

গ্রীরমাপ্রসাদ চন্দ

[যথন অণ্ডিয়ল পল্লীমণ্ডলের বার্নিক অধিবেশনের সভাপত্তি-পদ এহণ করিবার জম্ম নিমন্ত্রিত হইয়াছিলাম, তথন মনে করিয়াছিলাম, ব্যাপার বুঝি সাহিত্য-সন্মিলন বা ঐক্নপ ৷কছু, ভাই সহস' নিমমুণ এংণ করিবার সাহস করিয়াছিলাম। তার পর আড়িংল পরীমগুলের প্রথম বংসরের কার্যাবিবর্ণা পাঠ করিয়া দেখিলাম, এই মণ্ডলের মাণ্ডলিকগণ কেবল গ্রন্থার, মুর্ত্তি সংগ্রহ, পু'থি সংগ্রহ, বিজ্ঞালয় পরিচালন করিয়া ক্ষান্ত নহেন, বিজ্ঞান লোকেরা যংহাকে বলে কাজেব কাজ এমন অনেক কাজে হন্তক্ষেপ করিয়া ইহাঁরা সফলতা লাভ করিয়াছেন। বাাকস্থাপন, চোর-ডাকাতের হস্ত হইতে আম-রক্ষণ, ব্রতাদল ও সেবা-সমিতি গঠন, এমন কি পদরক্রে ভূপয।টানের বাবভাও আপনারা করিয়াছেন। মওলাচার্য্য ব' মহামাওলিক এযুক্ত পূর্ণচক্ত চক্রবর্ত্তী মহাশয় চিনি ও তৈল প্রস্তুত করিবার জল্প প্রামের মধ্যে কল প্রতিষ্ঠিত করিরাছেন। আপনারা আপনাদের পল্লীর সকল প্রকার উল্ল ডসাধনে রত: আর আমি আমার পলী হইতে পলায়িড; মতরং আপনাদের সমাজে অপাংক্রেয়। এইরূপ অপাংক্রেয় ব্যক্তিকে আপনার। কেবল পংক্তিতে নহে, আপনাদের পংক্তির প্রথম আসনে বসাহরাছেন। এই জন্ত বে আপনাদিগকে কি বলিব ভাহা আমি বুঝিতে পারি না; কিন্তু ছু-দিনের জপ্ত এই পলাতককে যে আপনাদের সং

সঙ্গ লাভের স্বযোগ নিয়াছেন, তজ্জন্ত আপনাদিগকে আন্তন্ধিক কৃতজ্ঞতা[;] জানাইতেছি।]

বর্ত্তমান যুগে নগর পল্লীর গৌরব অপহরণ করিয়াছে।
কিন্তু এক সময় পল্লীই ছিল দেশের সর্বস্থা। আমাদের
সভ্যতা পল্লীর সভ্যতা, নগরের অনুপ্যোগী। নগরের আশ্রম
লইয়া এই সভ্যতা ধ্বংসের পথে চলিয়ছে। পল্লীর অনেক
দোয ছিল, কিন্তু অনেক গুণও ছিল। এখনকার হিসাবে,
পল্লীসমাজের প্রধান দোষ, জাভিভেদ এবং অস্পৃত্যতা।
কিন্তু পল্লীতে বেমন জাভিভেদ আছে, তেমন জাভিভেদ নাই
বা ছিল নাও বলা বাইতে পারে। কারণ, পল্লীতে জাতি-ভেদের সঙ্গে তাহার প্রভিষ্কেশকও ছিল। নিমাই পণ্ডিত
গয়া হইতে ফিরিয়া আসিয়া বধন প্রকাশ্র ভাবে নব্দীপে
সংকীর্ত্তন আরম্ভ করিলেন, তখন নব্দীপের কাঞী তাহা
নিষ্ণে করিয়াছিলেন। এই নিষেধাক্রার উন্তরে বিরাট
এক দল কীর্ত্তনিয়া লাইয়া গিয়া নিমাই কাঞ্লীর বাড়ি চড়াও

^{&#}x27; আড়িরল পরীমগুলের দশম বার্ষিক অধিবেশনের সভাপতির অভিভাবণ।

করিয়াছিলেন। কৃষ্ণদাস কবিরাজ 'তৈতন্তচিরতামৃতে' (আদিলীলা ১৭শ পরিছেন, ১৪৮-১৫০) শিবিয়াছেন, কাজীসাহেব তথন বাড়ির বাহির হইয়া নিমাইকে ব্যামান ছিলেন—

া প্রাম সককে চক্রবর্জী হর মোর চাচা।
বেং সক্ষ হৈতে প্রাম সক্ষ সাঁচা।
নীলাম্বর চক্রবর্জী হর তোমার নানা।
সেই সক্ষে হও তুমি আমার ভাগিনা।
ভাগিনার কোধ মামা অবশ্য সহয়।
মাতুলের অপরাধ ভাগিনা না লয়।

এখনও আমাদের প্রাম হইতে প্রাম শবদ্ধ একেবারে লুপ্ত এখনও গ্রামের আচরণীয় হিন্দু, অনাচরণীয় रुष्र नारे। हिन्, এवः भूमनभान পরস্পরকে চাচা, খুড়া, শাসু, ভাই, ভগিনী, পিদী, মাদী বলিয়াই সম্বোধন করে, এবং ঝগড়ার সময় পর্যায় শুজ্বন করিয়া গালি দেওয়া বিশেষ অপরাধজনক মনে করে। এই গ্রাম-সম্বন্ধে গ্রামের বিভিন্ন জাতির গোককে আত্মীয়তা-সূত্রে আবদ্ধ করিয়া রাখিয়াছিল। প্রামের সকল অধিবাসী আদৌ একই বংশোদ্ভৰ এইব্লপ সংস্কারও বোধ হয় গ্রাম-সম্বন্ধের অস্তরালে প্রচন্ধের হিয়াছে। শঘু-শুক্-ভেদ, ক্ষোষ্ঠ-কনির্জ-ভেদ, এইরূপ বিবিধ বৈষ্ম্যের অন্তর্গালে একপ্রকার সাম্যও এক সময় ছিল। প্রভুর পুত্র বয়োজ্যেষ্ঠ ভূত্যকে রীতিমত সন্ধান করিত ; এবং বয়োজ্যেষ্ঠ ভূতা কনিষ্ঠ প্রভূপুত্রকৈ অভিভাবকের মত শাসন করিত। রবী স্থনাথের 'জীবন স্থতি'তে জোড়াসাঁকোর ঠাকুর-বাড়ির ভূতাতর-শাসনের চিত্র আছে। এই চিত্র প্রীতিকর নয়। কিন্তু অন্তপ্রকার ভূত্যতন্ত্র-শাসনের সহিতও আমাদের পরিচর আছে। এইরপ শাসনের অন্তিত্ব সপ্রমাণ করে, প্রভূ-ভূত্যে, ধনী-নিধ'নে এখন যত ভেদ তথন তত ভেদ ছিল না। প্রকৃত জাতিভেদের উৎপত্তি হইয়াছে এখনকার শহরে। শহরে গ্রাম-সম্বন্ধের বন্ধনমুক্ত জাতিভেদ ধনী-নির্ধন, শিক্ষিত-অশিক্ষিত, সভ্য-অসভ্য ভেদের মিলিত হইরা বিকট আকার ধারণ করিয়াছে। অপরিচিত দীন ব্যক্তিকেও "ভাই" বলিয়া সম্বোধন করা হয়। শহরে আগিয়া পাশ্চাত্য ফ্রেটারনিটি বা ভ্রাতৃত্ব-মন্ত্রে দীক্ষিত আমরা এইরপ "ভাই" ডাক ভূলিয়া গিয়াছি। দেশের লে:কের প্রকৃতি এবং দেশাচারের মর্ম্ম-অনভিজ্ঞ-সমাজ-সংস্কারকগণ শহরের সমাজের কাটা ঘারে কুনের ছিটা দিতেছেন। শহরের সামাজিক ব্যাধির বিষ ক্রমণঃ পল্লীতে সংক্রামিত হ ইতেছে। এমন সময় ভোট-বাটোয়ারার এবং শাসন-পরিষদে আসন-বাটোরারার বিতথা উপস্থিত হওরায় আমানের এক সময়ে গ্রাম-সম্বন্ধের একতাস্থতে সম্বন্ধ সমাক্ত ত্রিথতে বিচ্ছিন্ন হইবার জন্ম প্রস্তুত। এই ভর্বোগে দেশনায়কগণ এদেশের ফনগণের মধ্যে অনৈক্য স্বভঃসিদ্ধ মানিয়া লইয়া ঐক্যন্থাপনের জন্ত নানা প্রকার বি.দণী ঔষধ প্রয়োগ করিতেছেন। ই**ই**ারা আপনাকে পর করিয়া **লই**য়া পরহিতের তৃপ্তি ও খ্যাতি লাভ করিতেছেন; স্বন্ধনকৈ হরিজনে পরিণত করিয়া হরিভক্তি প্রদর্শন করিতেছেন। আমাদের পল্লীসমাজে এই বে অনৈক্যের এবং অস্তর্ট্রেটের স্ত্রপাত হইতেছে, পরিণাম চিস্তা করিতে ইহার গেলে শরীর শিহরিয়া উঠে।

পল্লীসমাজের অস্তরে যথন এই অস্তর্ক্রোহের স্কনা হইতেছে, তথন আবার বাহির হইতে রাজন্রোহের তাপ আসিয়া সমাজকে উত্তপ্ত করিয়া তুলিতেছে। আমাদের দেশের রাষ্ট্রীয় আন্দোলনের প্রধান প্রতিষ্ঠান নিরস্ত্র বিফ্রোহ ঘোষণা করিয়াছিল ; মঙ্গে সঙ্গে কতিপয় যুবক সশস্ত্র বিজ্রোহ—অলফিতভাবে রাজপুরুষ হত্যা আরস্ত করিয়াছিল। নিরস্ত্র বিজ্রোহ আপাতত স্থগিত আছে এবং সশস্ত্র বিজ্রোহরও বিরাম দেখা যায়। শুপ্ত সশস্ত্র বিদ্রোহের অপকারিতা এবং নিফলতা সম্বন্ধে অনেক বহুদর্শী এবং বিজ্ঞ ব্যক্তি অথগুনীয় যুক্তি-প্রমাণ উপস্থিত করিয়াছেন এবং করিতেছেন। কিন্তু এদেশে রাষ্ট্রীনতিক আক্ষোলন-ক্ষেত্রে সকল প্রকার চরম পন্থার অনুপ্যোগিতা সম্বন্ধে আমার একটি কথা বক্তবা আছে।

দেশের মৃক্তি সকলেরই প্রার্থনীয় এবং এই মুক্তির ক্ষন্ত দেশবাসী মাত্রেরই সাধানত চেটা করা কর্ত্তবা। আমাদের মুক্তির দাবি যে অসক্ষত নহে এ-কথা সরকারও স্বীকার করিয়াছেন; কালে আমাদিগকে ব্রিটিশ সাম্রাজ্যে সালোক্য মুক্তি (Dominion Status) দান করিবেন এরূপ আশাও দিয়াছেন। স্তরাং মুক্তির আকাজ্যা দোবের কথা নহে এবং মুক্তির বিশম্ব ঘটিলে অধৈর্য হওয়া অম্বাভাবিক নছে। কিন্তু অধৈর্য হইয়া চরম পন্থা অবশন্ধন করিলে এদেশে লাভের অপেক্ষা ক্ষতির স্থাবনা অনেক মনে হয়। রাষ্ট্রীয় মুক্তিসাধনের

শুরু যুরোপীয়গণ আরিটোটলের সংজ্ঞা অনুসারে মানুষ্কে
মান করেন রাষ্ট্রীয় জীব (political animal), অর্থাৎ তাঁহারা
বিশ্বাস করেন, মানুষের সুখ-তৃঃখ অনেকটা রাষ্ট্রীয় বিধিবাবস্থার উপর নির্ভর করে। কিন্তু হিন্দু-সাধারণ তাহা মনে
করে না। হিন্দু-সাধারণ মনে করে, মানুষ কর্মকলের
হাতের ক্রীড়াপুতুল; এই কর্মকল ভোগ করিবার জন্ত সে
পুনঃ পুনঃ জনো এবং পুনঃ পুনং মরে। এই পুনঃ পুনং জনামরণের হাত হইতে মুক্তি বা মোক্ষলাভ করা মনুষ্য-জীবনের
প্রধান লক্ষা। মোক্ষ অবগু সহজলভা নহে এবং প্রকৃত
মুমুক্র সংখ্যা কখনও থুব বেশী হইতে পারে না। গীভাকার
বিলয়াছেন—

মনুব্যানাং সহস্রেষু কশ্চিৎ বততি সিদ্ধয়ে। ছাজার হাজার লোকের মধ্যে এক-আধলন সিদ্ধির (মোক্ষের) চেষ্টা করে। কিন্তু হিন্দু-সাধারণের মধ্যে যাহারা মোক্ষের ক্ষুত্র চেষ্টা করিতে অসমর্থ, তাহারাও ঐহিক ব্যাপারে অনেক সময় অর্থবিরাগী; দৃষ্ট বিষয় অপেক্ষা অদৃষ্ট তাহাদের মনকে অধিক আকর্ষণ করে। এইরূপ সংস্থারসম্পন্ন জনগণকে ঐতিক যুক্তির জন্ম চরম পদ্বায় পরিচালিত করা অস্থ্য মনে হয়। কথায় বলে, "গুরু মিলে লাখে লাখ, চেলা না মিলে এক।" পাশ্চাত্য শিক্ষা-দীক্ষার ফলে এদেশে কতক ৰুন চরম পন্থার নায়ক অভ্যুদিত হইতেছেন এবং হুইবেন। কিন্তু কর্ম্ম-জন্মান্তরে বিশ্বাসী জনসাধারণের পক্ষে দীর্ঘকাল তাঁহাদের অনুসরণ করা অসম্ভব। গতি সম্পূর্ণরূপে পরিবর্ষিত হিন্দু-সাধারণের মনের হয়, তত দিন তাহারা যুরোপীয় জনপাধারণের মত রাষ্ট্রীয় আন্দোলনে সম্পূর্ণ মাতিতে পারিবে না। কিন্তু সেদিন বোধ হয় অ:नक मृ:त । এইরপ অনধিকারী শিষ্য-সম্প্রদায় লইয়া চরম পন্থা অবলম্বন করিতে গেলে ইষ্ট অপেক্ষা অনিষ্টের সম্ভাবনাই বেশী। · স্থতরাং আমাদের দেশের যে-সকল যুবক-বুদ্ধের মনে রাষ্ট্রীয় ভাব জাগরিত হইয়াছে তাঁহাদিগকে সংযত হইয়া, জনসাধারণ যতটা বেগে তাঁহানের সঙ্গে অগ্রসর হইতে পার্বে ততটা বেগে অগ্রসর হওয়া উচিত। তাঁহারা যদি ধীর পদে অগ্রসর হইতে সম্মত হন তবে পূর্ণ স্বরাজ না হউক সুরাজ-প্রতিষ্ঠার যথেষ্ট সহায়তা করিতে পারেন।

কিছ ধীর পদে চলিতে হইবে বলিয়া এক মুহুর্তের জন্তও

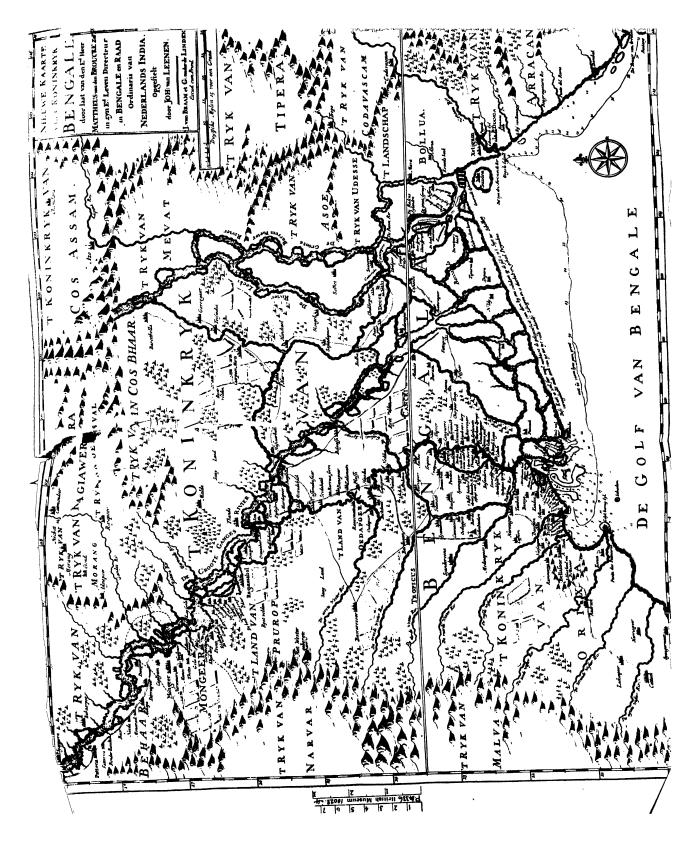
লক্ষ্য বিশ্বত হওয়া কর্ত্তব্য নহে। লক্ষ্য অবশ্য আমাদের মাতৃতৃমির উপর মুক্তিমগুপ-গঠন। মুক্তিমগুপ-গঠনের বিশ্ব হয় হউক; কিন্তু নে-ভূমির উপর মুক্তিমগুপ গঠিত হইবে সেই ভিত্তিভূমির বাটোয়ারা হইতে দেওয়া কর্ত্তব্য নহে। সম্প্রালায়ভেদ বা দ্বাতিভেদ অনুসারে শাসন-পরিষদের আসন বাটোয়ারা করিলে মুক্তিমগুপের ভিত্তিভূমি খণ্ড খণ্ড হইয়া বাইবে। যদি আমাদের মুসলমান ভাতৃগণ এবং 'অনাচরণীয়' হিন্দু ভাতৃগণ হিন্দু ভত্তশোককে বিশ্বাস করিতে না পারেন, সকল আসনই ভাঁহাদিগকে ছাড়িয়া দেওয়া উচিত; রাগ করিয়া নয়, অভিমান করিয়া নয়, কাহারও অহুবিধা জ্য়াইয়া নয়, সানন্দে ছাড়িয়া দেওয়া উচিত। তথাপি বাটোয়ারায় সম্মত হওয়া উচিত নহে।

বাঙ্গালার ধে-সকল ভদ্রসম্ভান দেশগতপ্রাণ তাঁহাদের কাজের অস্ত নাই। তন্মধ্যে সর্বপ্রধান কাজ, বাঙালীর জন্ত বাঙ্গালার সম্পদ (natural wealth) বা আর্থিক ম্বরাজ রক্ষা। শৈশবে আমরা একটি কোমালি শুনিতাম—

"বল ত পৃথিবীটা কার বশ।"

হেঁয়ালির উত্তর ছিল—"প্রথিবী টাকার বশ।"

জনসমাজে সম্পদের সাম্যবাদী কার্ল মার্কস দেখাইয়া গিয়াছেন, মানবের ভাগাচক্র আর্থের ছারা পরিচালিত। মার্কসের ব্যাখ্যাত এই তবের নাম ইতিহাসের অর্থনৈতিক ব্যাখ্যা (economic interpretation of history)। টাকা শুধু টাকৃশালে মুদ্রিত টাকা নহে; বে-সকল বস্তুর ঘারা বা বে-সকল উপারে টাকা উপার্জ্জন করা যায় তাহাও টাকা। যে-দেশের টাক:-উপারের সকল পথ বিদেশীর হাতে, সে দেশের মুক্তি অসম্ভব। বাঙ্গাণার টাকা-উপায়ের অধিকাংশ পথই এখন বিদেশী বা ভিন্ন প্রদেশীর হস্তগত। উচ্চন্দ্ৰাতীয় হিন্দুরা ইংরেঞ্জের আমলে ওকালতি, ডাক্তারী প্রভৃতি পেশার মোছে চাষবাস, শিল্প-বাণিজ্য ত্যাগ করিয়াছিলেন, এবং সঞ্চিত অর্থের ছারা জমিদারী থরিদ করিতেছিলেন। ফলে বাঙ্গালার সম্পাদ— কয়লার ধনি, পাটের বাজার, চা-বাগান, কল-কারধানা, দোকান-পদার পরহ্তগভ হইয়াছে। তন্মধ্যে এখনও ৰাহা অবশিষ্ট আছে তাহা দেশবাসীর জন্ত রক্ষা করিতে না পারিলে দেশের কোন প্রকার মুক্তিই সম্ভব হইবে না।



ভদ্রেলাকের হস্থগত চাকুরী এখন করিবেন মুদলমান এবং অনাচরণীর হিন্দুগণ। তাঁহারা বে শীঘ চাকু নীর এবং শাসন-পরিঘদে আদানর মোহ কাট ইলা দেশের সম্পদরকার দিকে দৃষ্টি নিক্ষেণ করিবার অবদর পাইবেন এরূপ আশা করা যায় না। স্তরং বাঙ্গালার দম্পদ রক্ষার ভার এখন অপর হিদুদিগকেই গ্রহণ করিতে ্হইবে। যদি তাঁহারা এ ভার বহনে অনুমর্থ হয়ন তবে শাসন বিবায়ে অন্তরাজ অপেক্ষা গুরুতর বিশল্প ধনসম্পদের ক্ষেত্রেও আমাদিগকে সম্পূর্ণরূপে অন্তরাজ হইতে হঠবে। শাসনবিধিদংস্কার হ্যাৎ আমাদের জন্ত নৃত্য অবস্থার (environmentএর) স্থাই করিয়াছে। নৃতন অবস্থার স্থিত নিজেকে খাপ খ'ওয়'ইতে इ हे (ल (adaptation to environment) অব্নালের দরকার। দে অবকাশ আর পাওয়া বাইবে না। প্রতরাং আর সকল কর্ম, আর দকণ আন্দোলন, তাগে করিয়া আর্থিক পরাধীনতা হইতে মুক্তিলাভের জন্ত আমাদিগকে সচ্চে হই তে হইবে। নতুবা বে ভদ্রশোকট ধ্বংদপ্রাপ্ত হইবে তাহা নয়; তাঁহাদের প্রতিবেণী মুদলমান এবং অস জাতীয় হিদুগণও কালে অধঃপাতে যাইব। আড়িয়ল পলী-মণ্ড.লর মাণ্ডলিকগণ কো-অপারেট্ভ ব্যাক্ষ এবং শ্রীধর মিল প্রতিষ্ঠিত করিয়া বিক্রমপুরে আর্থিক মুক্তির প্রকৃত পথ প্রদর্শন করিয়াছেন। সমন্ত বিক্রনপুরবাদীর, বিশেবতঃ খদেশগভপ্রাণ যুবকগণের, সনন্তকর্মা হ্ইয়া এই আদ্র্যের অমুকরণ করা কর্ত্তব্য।

বড়ই আনন্দের বিষয়, আপনারা ব্যাক্ষ এবং মিল করিরা ক্ষান্ত হয়েন নাই, দেশবাসার বৈহিক মুক্তির সঙ্গে সঙ্গে তাহাদের মনের মুক্তির (intellectual emancipationএর) জন্ত পুতকল্য, প্রাচীন পুঁথিশালা, এবং চিত্রশালাও প্রতিষ্ঠিত করিয়াছেন। বন্ধুবর শ্রীযুক্ত বোগেক্সনাথ গুণ্ড বিক্রমণুরর প্রভ্রন্থাদের দিকে প্রথমতঃ আনাদের মনোবোগ আকর্ষণ করিয়াছিলেন। তার পর ঢাকা মিউজিয়মের স্ববোগা অধাক্ষ ডাক্তার শ্রীযুক্ত নলিনী গান্ত ভট্রশালী অনেক রড়া উদ্ধার করিয়া ঢাকার চিত্রশালার সঞ্চিত্র করিয়াছেন, এবং তাঁহার স্প্রাচিদ্ধ

ইতিহাস বিক্রমপুরের এই এই জন অুসস্তানকে বিশ্বত হইবে না। আড়িল ভিত্রশালায় সংগৃহীত মুর্ত্তিসমূহকে প্রীযুক্ত রমেশ বসু মহাশয় ছাদশ শতাক্ষীর ভাস্কর্য, নিদর্শন বশিয়া মনে করেন। এরূপ এনুমানের কারণ, বিক্রমপুরে প্রাপ্ত এই ধরণের কোন কোন মূর্ত্তি ছাদ্রশ শতাকীর হৃক্ষারর লিপি পাওয়া গিয়াছে। বিক্রমপুরে ে-রক.মর সুর্যামূর্তি পাওয়া বায়, ঠিক এই রক মর একখানি সুর্যামূর্তি ব্রিটিশ মিউঞ্জিয়মে আছে। এই মূর্ত্তির পাদপীঠের শিপির অক্ষরের উপর সরল ম'তা নাই; প্রত্যেক লম্বমান রেধার অগ্রভাগ একটু তেপ্টা পেরেকের মাগার মত। এইরূপ লিপিযুক্ত মূর্ত্তিকে দশম শতান্দীর পার ফেলা বার না। ফুতরাং আড়িয়ল চিত্রশালার এই সকল মুর্জ্জিকে গৌড়ের পালশিলের নিদর্শন ভিন্ন বড় বেণী কিছু বলা কঠিন। আজিয়ল হইতে সংগৃহীত এবং ঢাকা জীবনবাবুর বাড়ি রক্ষিত লক্ষণ দেনের তৃতীয় বর্ষের লিপিযুক্ত চণ্ডীনৃর্ষি দেবিলে ব্ঝি:ত পারা যায়, ছাদশ শতাব্দের চতুর্থ পাদ পর্যান্ত এই মূর্তিশিল্প সঙ্গীব ছিল।

এদেশের সকল পদার্থই গুণদোয বিচারের বিচারালয় এখন যুরোপে স্থানাস্তরিত হট্যাছে। উনবিংশ শভাবেশ আমাদের প্রাচীন মূর্তিশিল্প বর্জরতার নিদর্শন বশিয়া গণ্য হইত। বর্তনান শতাবেশ গেই মত পরিবর্ত্তি হইয়াছে।

এই মত পরিবর্তনের মূলে পরলে কৈগত হেবেল দাহে বের ১৯০৮ সালে প্রকাশিত ভারতীয় ভাস্কর্য এবং তির বিশ্যক পুস্তক। হে:বলের দুগান্ত প্রথম অনুসরণ করেন ডাক্তার কুমারস্বামী। তার পরের ঘটনা সম্বন্ধে সার উইলিয়ম রোটেনস্তাইন তাহার আত্মজীবনীতে লিধিয়াছেন—

"Later, when H well returned to England, he, Coomaraswamy and I went to hear a lecture by Sir George Birdwood, who, while praising her crafts denied fine art to India; the noble figure of Buddha he likened to a noble suet pudding! This so disgusted me that, there and then, I projosed we should found an India Society. A meeting was held at Havell's house, and with the support of Dr. and Mrs. Herringham, Thomas Arnod, W. R. Lethaby, Roger Fry. Dr Thomas, T. W. R lie ton and others the new society was formed." (Men and Memoirs, 1953-1922. Vol. 2, p. 231.)

১৯১০ সালে ইণ্ডিয়া সোসাইটি প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল,
এবং অনেকে সার জর্জ বার্ডিডের প্রকাশ্য প্রতিবাদও
করিয়াছিলেন। তদবধি পাশ্চাতা রসজ্ঞ পণ্ডিতগণ ভারতের
প্রাচীন মূর্ব্ধির আধ্যাথিক সৌন্দর্য্য মূক্তকর্ত্তে স্বীকার করিয়া
আসিতেছেন।

ধান-ধারণা-সম:ধিতে আধাে আক ভাবের চরম বিকাশ লক্ষিত হয়। আমাদের দেশের ভাস্কর দেবদেবীর এবং বৃদ্ধ ও ক্সিনের মূর্ব্জিতে ধাান-ধারণা-সমাধিকে মূর্ব্জিমন্ত করিয়া তুলিয়াছেন। সার উইলিয়ম রোটেনয়াইন বলিয়াছেন, ভারতীয় শিল্পী তিনটি মহাভাবকে রূপদান করিতে সমর্থ হুইয়াছে।

- (১) The plastic interpretation of samadhi
 সমাধির রূপের সৃষ্টি।
- (২) জগৎসৃষ্টিকারিণী মহাশক্তির প্রচণ্ড লীলা যে ঐকতান বাদ্যের তালে তালে চলিতেছে তাহার প্রকাশ। নটরাজের মুর্তি।
- (৩) The interpretation in material form of a moment between movement and tranquillity গতিশীশতার এবং শাস্ত অবস্থার সন্ধিক্ষণের রূপ। ইহার পূর্ণ বিকাশ দেখা যায় দাক্ষিণাত্যের শিল্পে।

প্রাচীন ভারতের মৃত্তিশিল্পের কি ইহা ছাড়া আরু কোন গুণ নাই ? রোটেনটাইন ভারতীয় মুর্ত্তিশিল্পের যে-সকল গুণের উল্লেখ করিয়াছেন তাহা symbolic meaning বা সাক্ষেতিক অর্থের সামিল। ভারতীয় মৃত্তিশিল্প কি কেবল সংগত মাত্র? ইহার রূপের কি কোন স্বত্র মহিমা বা সার্থকতা (formal meaning) নাই? মুর্ডিশিল্লের এই সকল গুণ রূপকে সার্থকতা দান করে—সঞ্জীবতা, নিরেট বস্তুর দর্শন এবং ञ्लाक् স্থ খের অমুভূতি, এবং **শুরুত্বের অনুভৃতি।** দৃষ্টাস্তব্ধন আড়িয়ল চিত্রশালার কৰিমুর্ভির উল্লেখ করিব। মুর্ভির মুখ ভাঙ্গিয়া গিয়াছে। অবশিষ্ট মৃষ্টির প্রতি দৃষ্টিপাত করিলে মনে হয়, পাষাণ থেন ষত:ক্ষীত হইয়া অথে এবং অশ্বারোহীতে পরিণত হইয়াছে। অখের সুগোল পুঠ এবং গ্রীবা দর্শকের স্পর্শ-স্থপ জাগাইয়া দের। আরোহীর এবং অধের গুরুত সহজেই অমুভূত হয়। আরোহীর কক্ষন্তল, বাহু এবং জানুর গড়ন নয়নমনের

তৃপ্তিকর। চারিটি বাছর বিস্থাসে সুসঙ্গতি রহিয়ছে।
আড়িয়ল চিত্রশালায় যে কয়থানি মুর্ত্তি আছে তাহার কোন
থানিই নির্জীব নহে, এবং কোনধানিরই আকার একেবারে
অর্থহীন নহে। এই সকল মুর্ত্তি দেখিলেই বুঝিতে পারা
যায় বিক্রমপুরবাসী সেকালে আধ্যাত্মিক হিসাবে কত উন্নতি
লাভ করিয়াছিল, তাঁহাদের ক্ষতি কত মার্জিত ছিল, এবং
তাঁহাদের অনুভৃতি কত সুক্ষ ছিল।

পৃষ্ঠীয় অন্তম হইতে দ্বাদণ শতান্দের প্রথম ভাগ পর্য্যস্ত গৌডমণ্ডলের সার্কভৌম পালনরপালগণের কোন লিপি এ-পর্যান্ত বিক্রমপুরে পাওয়া বায় নাই; পঞ্চান্তরে চক্র, বর্দ্মা এবং সেন রাজগণের তামশাসনে বিক্রমপুর স্বন্দাবারে বাদের উল্লেখ আছে। ইহা হইতে মনে হয়, পাল্যুগে বিক্রমপুর একটি থগুরাজ্য ছিল। এই থণুরাজ্যের অধিপতিগণ গৌড়াধিপের প্রাধান্ত স্বীকার করিতেন। আমার অনুমান হয়, যোড়শ শতাব্দীর শেষভাগ পর্যাস্ত এই থণ্ডরাজ্য কথনও করদ, কথনও স্বাধীনরূপে বর্ত্তমান ছিল, এবং সপ্তাদশ শতাব্দীর আরন্তে আক্বরের দেনাপতি মানদিংহ কর্তৃক কেদার রায়ের পরাজয়ের এবং নিধনের দক্ষে দক্ষে ইহার অবসান হয়! কেদার রায়ের পরাজয়ের দিন বিক্রমপুরের জীবনসন্ধা। তার পর হইতে ধ্বংসলীলা চলিতেছে। কীর্ত্তিনাশা পদ্মার দক্ষিণ তীরে বিক্রমপুরের ভগাবশেষ এথনও বর্তমান আছে: এথনও প্রবাদ আছে, এই কীভিনাশা এক সময় একটি সরু খাল মাত্র ছিল। বিক্রমপুরের জীবনসন্ধ্যার বিক্রমপুর যে কভ বড় ছিল খুষ্টীয় সপ্তদশ শতাব্দের অক্ষিত বান্ধালার তুইখানি মানচিত্রে তাহার পরিচয় পাওয়া যায়।

(১) মেথুজ ভেন ডার ক্রকের ম্যাপ। ভেন্ডার ক্রক (Matheus van der Broucke) ১৬৫৮ হইতে ১৬৬৪ সাল পর্যান্ত বালালার ওলন্দাজ (Dutch) বনিক-গণের অধিনারক ছিলেন। ভেন্ ডার ক্রকের ম্যাপের প্রথম সংল্পরণ পাওয়া যার নাই। ১৭২৬ গ্রীষ্টাব্দে প্রকাশিত বেলেন্টিনের (Valentyn's) ইট ইণ্ডিয়া (East India) নামক পুত্তকের পঞ্চম থণ্ডে ক্রকের ম্যাপের যে সংল্পরণ আছে ব্রিটিশ মিউজিয়ম হইতে আনীত তাহার ফটোগ্রাফ প্রদর্শিত হইল। ভেন ডার ক্রকের সময় কলিকাতা একটি নগণা গ্রাম ছিল। বেলেটিনের প্রকাশিত ম্যাপের এই সংস্করণে কলিকাতার স্থানে স্থতাসূতী কলিকাতা (Collecatta) এবং কলকুল (Calcula) নামক তিনটি গ্রাম দেখা যায়। কলকুল গোবিন্দপুরের স্থলবর্তী। এই তিনটি গ্রাম এবং নিকটবর্তী অন্তান্ত গ্রাম বোধ হয় ভেন্ ডার ক্রেকের পরে চিহ্নিত হইয়াছে।

(২) খুষ্টীয় সপ্তদশ শতাকে বাঙ্গালা মোগল-সামাজের অন্তর্ভুক্ত ছিল। পর্জ্যাক, ওলনাজ, ইংরাজ বণিকগণ তথন প্রজার হিসাবে বাঙ্গালায় বাণিজ্য করিত, স্থুতরাং জরীপ করিয়া ম্যাপ তৈরি করিবার তাঁহাদের অধিকার বা প্রয়োকন ছিল না। নদীপথে নৌকায় মাল চাল'ন করিয়া তাঁহারা বাবদা করিতেন। মালের নৌকার মাঝিমাল্লার সুবিধার জ্বল তাঁহাদের নদ-নদীর এবং আ**ডকের ম্যাপ আবশুক ছিল। এই জন্ত ভেন** ডার ক্রক মাপে তৈরি করাইয়াছিলেন। ইংরাজ বণিকদেরও মালের নৌকার মাঝির সহায়তার জন্ত ম্যাপসহ নদ-নদীর বিবরণ প্রকাশিত করা আবশ্যক ছিল। এই শ্রেণীর বিবরণীর নাম English Pilot, ইংরাজীনদীপথপ্রদর্শক। এইরূপ একধানি পুস্তক প্রথম প্রকাশিত হইয়াছিল ১৬৭৫ খৃষ্টাব্দে।* এই পুস্তকে একখানি ম্যাপ আছে। তাহাতে শেথা আছে যে ঈষ্ট ইণ্ডিয়া কোম্পানীর কর্মচারীরা ইহা প্রস্তুত করিয়াছে, এবং জন থর্ণ টন কর্তৃক প্রথম প্রকাশিত হইল। এই পুস্তকের এক খণ্ড মাত্র লণ্ডনের নৌসেনা-বিভাগের বড় আফিসে (Admiraltyতে) আছে। সেথান হইতে ম্যাপের ফটোগ্রাফ আনা হইয়াছে।

এই তুইধানি ম্যাপে বিশেষ কোন প্রভেদ নাই। ভেন্ ডার ক্রকের ম্যাপে নাম বেশা আছে; স্থতরাং এই ম্যাপ হইতে বিক্রমপুর অংশের বিবরণ সংগৃহীত হইল।

বর্ত্তমানে শুরুপ্রায় করতোয়া নদীর খাতের পূর্বতীরে ঘোড়াঘাট অবন্থিত। এই মানচিত্রে একটি নদীর পশ্চিমে ঘোড়াঘাট (Gerregaat) চিহ্নিত হইয়াছে। এই নদী



ক বিচ্মূৰ্ত্তি

অইগ্র করতোরা, এবং ভ্রমক্রমে পশ্চিম পারে যোড়াবাট চিহ্নিত হইরাছে। এই ম্যাপে করভোরা প্রবহমান। এখন আর করতোরার সেদিন নাই। সেকালে যে জলরাশি করতোরার থাত দিয়া প্রবাহিত হইত, এখন তাহা তিস্তার থাতে চলিতেছে।

পশ্চিমে করতোয়া এবং পূর্বে শীতশ্লক্ষ্যা (Lecki) এই চুই নদীর মধ্যভাগে আর কোন নদী চিহ্নিত হয় মাই; অর্থাৎ তথন তিন্তা আত্মপ্রকাশ করে নাই, এবং ব্রহ্মপুত্র নদের জলরাশি তথন বমুনার খাত দিলা বহিতে আরম্ভ করে নাই। এক্ষপুত্রের জলরাশি তথন কতক লক্ষ্যা দিয়া, এবং কতক দক্ষার পূর্বাদিকে অবস্থিত ব্রহ্মপুত্রের প্রাচীন প্রাত দিয়া গিয়া মেঘনায় পতিত হ**ইত**। শী**তলল**ক্ষ্যার এবং ব্রহ্মপুত্রের সঙ্গমের উত্তরে কাঠারব (Catterabo), এবং কাঠারবর রাজধানী সোণারগাঁও (Sonnergam)। যোড়শ শতকার শেষভাগে ঈশার্থা কাঠারবর অধিপতি ছिলেন। नक्षात পশ্চিম দিকে, একটি অল্পরিসর নদীর তীরে বৃহৎ ঢাকা নগরী। এই নদী বোধ হয় বৃড়িগঙ্গা। এই নদীর দক্ষিণে যে আর একটি অল্পরিসর নদী আছে এই ক্ষুদ্র নদী কীর্ত্তিনাশার প্রাচীন থাত। এই নদীর অনেক দক্ষিণ দিয়া পদ্মার বিপুল জলধারা প্রবাহিত হইত। এই নদীর জীর হইতে কক্ষার জীর পর্যাম্ভ কেদার-রামের রাজ্য

[•] The English Pilot: The Third Book, Describing, sea.....()riginal Navigation, collected for the general benefit of our own countrymen. By John Seller, Hydrographer to the King.

বিস্তৃত ছিল। আমার অত্ম'ন হয় এক সময় এই সমস্ত ভূভাগই বিক্রমপুর নামে পরিচিত ছিল।

ত্রজাপুত্রের বিপুল জলরাশি প্রাচীন থাত পরিত্যাগ করিয়া বর্তমান যমুনার পথে প্রবাহিত হইনা বিক্রমপ্রকে দ্বিখণ্ডিত করিয়াছে এবং কেনার-রায়ের কীর্তিনাশ করিয়া কীর্তিনাশা নামধারণ করিয়াছে। কীর্তিনাশা কত বে সমৃদ্ধ প্রামধ্বংস করিয়াছে ত হা গণনা করা অসম্ভব। কীর্তিনাশার কীর্তিনাশের এখনও বিভাগ নাই। কালে বিক্রমপুরের উত্তর পারের চিক্ন থাকিবে কি না সংসহ।

স্তরাং বিক্রমপুরবাসী আমানের স্কল দিকেই বিগদ।
এই বিগদ হইতে মুক্তির পথও প্পরিচিত। এই পথে চনিবার
শক্তির একটি উপাদান ভক্তি বা ভাবের টানেরও অভাব
নাই। কিছু আমাদের এই ভক্তি শুদ্ধা ভক্তি, জ্ঞানমিশ্রিত
ভক্তি নহে। এই জটিল বিপজ্জাল অভিক্রম করিতে হইলে
জ্ঞানমিশ্রিত ভক্তি বা ভক্তিমিশ্রিত জ্ঞানের আবগুক।
এইরপ জ্ঞান লাভ করিবার উপায় কি? এইরপ জ্ঞানলাভের উপায় জানিতে হইলে আড়িয়লের চিত্রশালায় বা
অস্তান্ত চিত্রশালায় যে-সকল উৎয়ন্ত প্রাচীন দেব দেবীর এবং
বৃদ্ধ জিনের প্রতিমা রক্ষিত হইয়াছে এই সদল প্রতিমাকে
কিজ্ঞাসা করা উচিত। এই সকল প্রতিমা কেবল সক্ষীব
নহে, স্বাক; প্রাণ পাতিয়া, অনুভূতির ছারা, ইহাদিগের
বাণী শুনিতে পাওয়া যাইবে। শহ্ম-চক্ত-গদা-পদ্মধারী
নারায়ণর দিকে দৃষ্টিপাত কর্মন। নারায়ণ অচল অটল ভাবে
দুখ্যামান। ভাঁহার মুখ্যগুল—

কিঞ্চিৎ প্রকাশ স্তিমিতোগ্রতারৈ ন্ধানিক্রিয়ায়াং বিরত প্রসক্ষৈঃ। নৈরে রবিম্পানিত পক্ষমালৈ কান্মীকৃতন্ত্রাণ্যধে! মমুবৈঃ।

কুমারসম্ভব কাবো (৩।৪৭) কালিদ'স ধা'নমগ্ন শিবের চকুর এই দ্লপ বর্ণনা করিয়াছেন। বুদ্ধ ও জিনের মূর্ত্তির তা'র বিষ্ণুমূর্ত্তিতেও দেখা যাইবে, স্বাই-উন্নীলিত চকুর তারার অধ্যেমুখী রশ্মি নাগাগ্র লক্ষ্য করিতেছে। এই দ্লপ নয়নভঙ্গী ধানমগ্ন মানের পরিচয় দেয়। স্বতরাং পাবাণের বিষ্ণুদর্শককে নীরবে উপ্লেশ দি:তেছেন অ মি দেমন ধান করি, ভ্রমিও ভেমন ধান কর।

হরগোরীর যুগল মুর্ত্তি সেই কথ ই বলিতেছেন। গৌরীকে ক্রোড়ে করিয়া হর ধানমগ্ন; হারর ক্রোড়ে বদিয়া গৌরী ধ্যানমগ্ন। আধ্যাবর্তের প্রাচীন দেব দবীর মর্ত্তিতে দেখা য'য়, ধান কেবল বুদ্ধের বে'ধির, এবং জিনের কেবল জ্ঞানের নিদর্শন নহে; দেবতার দেবাতর নিনর্শন ধান: মারুযের যোক্ষণাভের উপায়ও ধান। ভগবাগীত'য়, উপনিয়দে, সকল বেদাত্তে, মুনুজুর জন্ম ধানই বিহিত হইয়াতে। এথন আমাদের মনে ঐহিক মৃক্তির আকাজ্ঞা জাগরিত হইয়াছে। মুক্তির মন্ত্রাসিয়াছে যুরোপ হটতে। কিন্তু এই মন্ত্রে সাধনায় সি দ্বিশাভ করিতে হউলেও ধানে করিতে হইবে; একাগ্রচিতে চিতা করিতে হই:ব, মুক্তিলাভের উপায় কি। মুক্তির বাহ্য-আভাত্তর হুই প্রকার বাধাই আছে। অ'ভ্যস্তরীণ বাধাণ্ডণি অভিক্রম না-করিয়া বাহ্য বাধ:র সম্মুখীন হওয়া বিভ্ননা মাত্র। আভাস্তরীণ বাধা যে কি তাহা আর কাহাকেও বলিয়া দিতে হইবে না; ধান করিলেই ধরা পড়িবে, এবং ধান করিলেই তাহা অতিক্রম করিবার উপায় দেখা যাইবে। আমার বিশ্বাস, ধ্যানের পথ পরিত্যাগ করার ফলে হিদুদের অলঃপতন ঘটিয়াছে। হিন্দুশাস্ত্রে মানুষের ইতিহাসকে ক্বত (সতা), ত্রেতা, দ্বাপর, কলি এই চারি যুগে বিভক্ত করা হইয়াছে, এবং যুগে যুগে মালুবের শারীরিক মানসিক সকল প্রকার শক্তি ক্রমশঃ কমিয়া আগিতেছে এই রূপ মত প্রকাশ করা হইয়াছে: এবং মামুযের শক্তির ক্রমিক হ্রাস হিসাব করিয়া যুগে যুগে বিভিন্ন আচার বিহিত হইয়াছে। যথা বিষ্ণুবুরাণ (৬।২।১৫-১৮)-

যৎকৃতে দশভিবর্ধে ত্রেভায়াং হায়নেন যং ।
দাপরে যচন মানেন অ হারাত্রেণ তৎকলোঁ।
তপদো ব্রহ্মচর্যাক্ত গুপা দশন ফলং দ্বিদ্ধঃ
প্রাপ্তে পুক্ষ স্তেন কলিং দান্তিতি ভাষিত্র ।
ধ্যায়ন কৃতে, যঞ্জন যক্তৈ দ্বেভায়াং দ্ব প রহর্তমন।
যদাপ্রোতি তনাপ্রোতি কলো সংকার্ত কেশংম্ ॥

ক্তযু:গ দশ বংসরকাল তপসা, ত্রদার্থ্য, জপ করিছে বে-ফল পাওয়া যায়, ত্রেড'যুগ এক বংসরকাল অন্ঠাল করি:ল, থাপরযুগ এক ম'স অনুগান করিলে, এবং কলিযুগে মাত্র এক দিবারাত্র অনুষ্ঠান করিলে সেই ফল পাওয়া যায় এই নিমিত্ত কৰিষ্ণকে স'ধু বলা হয়। কুত্যুগে খ্যান করিয়া, বেতাযুগে বজ্ঞ করিয়া, দ্বাপ:র দেবতার অর্কনা করিয়া বে-ফল পাওয়া বাইত, কলিষ্গে কেশবের সংকীর্তন করিয়া সেই ফল পাওয়া বায়।

প'রত্তিক মুক্তির ক্ষেত্রে কলিধর্ম-পালন কভটা ক'র্যাকরী ত'হা বলা আমাদের অস্থা। আমাদের চিত্রশ'লায় .রিফিত এবং প্রদর্শনীতে সজ্জিত ধ্যানমগ্ন প্রাচীন প্রতিমা দেখিলে মনে হয়, পাল্যুগে এবং দেন-যুগেও এদেশে কৃত্যুগের পালনীয় ধানই মুক্তির সোপান বলিয়া গণ্য হইত। বঙ্গালা দেশে ধ্যানম্থ চতুত্বজ বিষ্ণুর স্থানে বংশাবাদনরত গোপীনাথের পূজা এবং সংকীর্ত্তন বহুল প্রচার লাভ করিয়াছে যোড়ণ শতাবে চৈতত্যের সময় হই:ত। পারত্রিক ব্যাপারে যাহাই হউক, ঐহিক ব্যাপারে পাশ্চাত্য বিজ্ঞান এবং পাশ্চাত্যগণের সংযম এবং সংগঠন শক্তি কলি উণ্টাইয়া দিয়াছে। এগন আর্থিক বা:পারে এবং রাষ্ট্রীয় ব্যাপারে মুক্তিলাভ করিতে হইলে সতাযুগের ধর্ম ধ্যানে ফিরিয়া যাইতে হইবে; গুণু সংকীর্ত্তনে 5লিবেনা। ধান করিলে জ্ঞানলাভ হইবে, এবং সেই জ্ঞানের আশো আমাদিগকে মুক্তির প্রকৃত পথ দেখাইয়া দিবে। পাশ্চাত্য শিক্ষাদীক্ষার মোহে আমরা আমাদের দেশ-কাল-পাত্র ভুলিয়া, পাশ্চাত্য ময়ে মাতিয়া, উদভট

সংকীর্ত্তন আরম্ভ করিয়াছি, এবং পদে পদে হচট থাইয়া আহত হইতেছি। এই বিগদ হইতে উদ্ধার পাইতে হইলে ধান করা আবশুক।

পরি শিষ্ট

বলা বাহুল্য কলিকাতায় ৰসিয়া এই **প্ৰবন্ধটি লিখিয়াছিলাম**। তার পর আড়িয়াল গিয়া যাহা দেখিলাম এবং ভনিলাম তাহা হৃদর-বিদারক। যাহাদের শহরে গিয়া বাস করিবার সাধ্য আছে তাহারা এখন আর প্রামে বাস করে না | ভদ্রলোকের মধ্যে খাহারা এখন গ্রামে বাস করে ভাহাদের মুখে হাসি নাই, মনে আনন্দ নাই! ভীতির ছায়া আনেকের মুপের মলিন চাকে গাঢ়তর করিয়াছে। প্রামের উপকঠে গোরা-দৈন্তের শিবির। আমের অনেক যুবকই গৃহে আবদ্ধ। পুলিদ এবং গে:র'-সৈক্ত রাজিতে গিয়া ইহাদিগকে দেখিয়া আসে। গোর'-সৈপ্তেরা কোন অত্যাচার করে না। পথ না চিনায় এবং ভাষা না জানার সময় সময় ইহার। গ্রামবাসীদিগের অস্তবিধার সৃষ্টি করে এবং নি:জরাও অফ্রিধা ভোগ করে। আড়িয় লের গোরা-সেনার অধিনায়ক পুর ভদ্র এবং অমাথিক। বিক্রমপু:র এইরূপ আটাট গোর-সেনার শিবির আছে। প্রত্যেক শিবিরের অধিনায়ক এক জন লেফ টেনাণ্ট, চারিটি শিবিরের অধ্যক্ষ এক জন কাপ্থান। আশা করিয়াছিলাম গত ১৫ বৎসর যাবং রাষ্ট্রীয় আন্দোলনের চেউ যে-ভাবে পল্লীসমাজ আন্দোলিত করিয়াছে, তাহার ফাল প্রার ভদ্রলোকেরা অন্ততঃ দলাদলি ভুলিরা একযোগে কাজ করিতে অভান্ত হ**ট্**যাছে। কিন্তু দেখিয়া তিনিয়া আমার ধারণ৷ হইয়াছে, লোকশিকার হিসাবে বিক্রমপুরের এই অংশে আন্দোলন নিফল হইয়াছে। গ্রাম্য দলাদলির কলেও বোধ হয় অনেক হতভাগ্য যুৰকের পরকাল নষ্ট হইতেছে। আমৰাসীর মধ্যে কেহ কাহাকে বিখাস করিতে পারিতেছে না ; কে যে বন্ধু, কে যে গুণ্টর (spy), তাহা চেনা যাইতেছে না। কথায় বলে, "আঁধার ছার সাপ, ফুডরাং সকল মরেই সাপ। এইরূপ সংশয়াচ্ছন্ন হইয়া বিক্রমপুরের পলীবাসী দরিদ্র ভদ্রলোকগণ অতি কষ্টে দিনযাপন করিতেছেন।]

কলিকাতায় প্রবাসী-বঙ্গসাহিত্য-সম্মেলন

প্রবাসী শক্ষাট ন্তন নয়, প্রাতন। কিন্তু বাংলা দেশের বাহিরে যে-সব বাঙালী বাস করেন, তাঁহাদের প্রতি বিশেষণরূপে ইহার প্রয়োগ প্রাতন নয়। বোধ হয় চৌ ত্রিশ বংসর আগে প্রয়াগে আমরাই এই মাদিকপত্র-থানিতে এই প্রয়োগ চালাইতে আরম্ভ করি। তথন তর্ক উঠিয়াছিল এবং এখনও তা চলে, পরেও চলিতে পারিরে, যে, ভারতবর্ষ যখন আমাদের ভারতীয় মহাক্রাতির দেশ, তথন বাংলার বাহিরে অন্ত সব প্রদেশকে প্রবাস বলা ঠিক্ নয়। ইহাও বলা যাইতে পারে, যে, যেহেতু "উদারচরি-

তানান্ত বহু থৈব কুটুম্বকম্," সেই জন্ত পৃথিবীর কোন জায়গাই প্রবাদ নয়, সব মান্যই আত্মীয়। অন্ত দিকে চিরক্তীৰ শর্মা গাহিয়াছেন—

হরিবোল হরি, চল যাই বাড়ী, বেলা গেল সন্ধা হ'ল।
ফুরাল খেনা ভাঙ্গ ল মেলা, আর কেন বিলম্ব বল?
বিদেশে প্রবাদে ভব পাছবাদে, কিছুই আর লাগে না ভাল,
বাড়াপানে মন ছুট ছ এখন, মা মা ব'লে মার চল।
অর্থাৎ সমস্ত পৃথিবীটাই প্রবাদ।

বঙ্গের বাছিরের বাঙালীরা প্রবাসী কিনা তাহার বিচার না-ক্রিয়াও ইহা বলা যাইতে পারে, যে, তাঁহাদের ও ব.কর



কুমার শীয়ক্ত ধীরেজ্ঞনারায়ণ রায়

অধিবাদী বাঙালাদের পরস্পর আয়ীয়তা-বাধ জাগাইয়া তোলা ও বাড়ান আবশুক। এই চেষ্টা প্রবাদী-বঙ্গদাহিত্য-সন্মেলন করিতেছেন। তা ছাড়া, অন্ত কর্ট্রন্ত অবশ্র সন্মেলনের আছে—সন্মেলন তাহাও করিতেছেন। সন্মেলনের সহিত 'প্রবাদী' মাদিকপত্তের কোন বিশেষ, একচেটিয়া, সম্বন্ধ না-থাকিলেও, একটি দাবি 'প্রবাদী' করিতে পারে, বে, ইহাই বিশেষ করিয়া প্রবাদী বাঙালীদের কথা বাঙালী সমাজের নিকট বার-বার বলিতে আরম্ভ করে এবং চৌত্রিশ বৎসর ধরিয়া তাহা তাহার নিকট মধ্যে মধ্যে উপস্থিত করিয়াছে। প্রবাদী-বঙ্গদাহিত্য-সন্মেলন যে কাজ বার বৎসর করিতেছেন, 'প্রবাদী' মাদিকপত্ত্রও ৩৪ বৎসর সেই কাক্ষ কিছু কিছু করিয়াছে।

সেই হুন্ত 'প্রবাসী' বঙ্গের বাহিরের ও বঙ্গের বাঙালীদের আখ্রীয়তার কথা প্রাপ্রা বলিতে চায়। কলিকাতায় প্রবাসী-বঙ্গসাহিত্য-সম্মেলনের দ্বাদশ

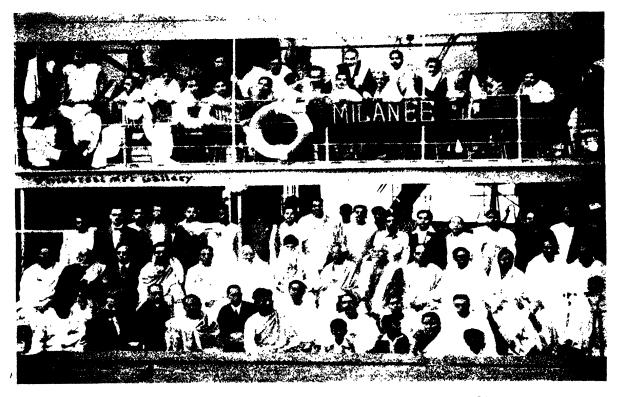


শীযুক্ত ডক্টর সভাচরণ লাহা

অধিবেশনের উদ্বোধিনী বক্তৃতায় রবীক্রনাথ এই আত্মীয়তা সম্বন্ধে বলিয়াছিলেন :—

রাধীয় ঐকাসাধনার তর্ফ থেকে ভারতবর্ণে বঙ্গেতর প্রদেশের প্র প্রবাদ শব্দ প্রয়োগ করার আপত্তি থাকতে পারে: কিন্তু মুখের ব বাদ দিয়ে বাস্তবিকতার যুক্তিতে ভারতবর্ষের বিভিন্ন প্রদেশের ম অকুত্রিম আক্সায়তার সাধারণ ভূমিকা পাওয়া যায় কি না, সে তর্ক ছে দিয়েও, সাহিত্যের দিক থেকে ভারতের অক্ত প্রদেশ বাঙালীর প প্রবাস, সে কথা মানতে হবে। এ সম্বন্ধে আমাদের পার্থকা এত 🤆 যে, অন্য প্রদেশের বর্তমান সংস্কৃতির সঙ্গে বাংলার সংস্কৃতির সাম অসওব ৷ এ ছাড়া সংস্কৃতির প্রধান যে বাহন ভাষা, সে সম্বন্ধে বাং সঙ্গে অন্য প্রদেশীয় ভাষার কেবল ব্যাকরণের প্রভেদ নয়, অভিব্যা প্রভেদ। অর্থাৎ ভাবের ও সত্যের প্রকাশকরে বাংলা ভাষা : প্রতিভাশালী ব্যক্তির সাহায্যে যে রূপ ও শক্তি উদ্ধাবন করেছে, প্রদেশের ভাষায় তা পাওয়া যায়না, অথবা তাহার অভিনুষিতা দিকে; অপচ সে দকল ভাষার মধ্যে হয়তো নানা বিষয়ে বাংলার (শ্রেষ্টতা আছে। অপ্ত প্রদেশবাদীর দক্ষে ব্যক্তিগত ভাবে বাঙা হাদক্ষের মিলন অসম্ভব নয়। আসরা তার অতি ফুন্দর দৃষ্টা**ন্ত** দেওে যেমন পরলোকগত অতুলপ্রসাদ সেন। উত্তর-পশ্চিমে বৈধানে বি ছিলেন, মাথুষ হিসাবে সেথানকার লোকের সঙ্গে তার হলেরে হলয়ে **ছিল :** কিন্তু সাহিত্যরচয়িতা বা সাহিত্যরসিক হিসাবে সেখানে বি প্রবাসীই ছিলেন, একথা স্বীকার না ক'রে উপায় নেই।

তাই বলঙি, আজ প্রবাসী-বঙ্গসাহিত্য-সম্মেলন বাঙালীর অস্ত ঐকাচেডনাকে সপ্রমাণ করবে। নদী বেমন প্রোভের পথে নানা



প্রবাসী-বঙ্গসাহিত্য সম্মেলন উপলক্ষে স্টামারে প্রাতিসন্মিলনী। মধ্যস্থলে রবাজনাথ উপবিষ্ট

ক আপন নানাদিক্গামী তটকে এক ক'বে নের, আধুনিক লা-ভাষা ও সাহিত্য তেমনি করেই নানা দেশপ্রদেশের বাণালীর বের মধ্য দিয়ে প্রবাহিত হরে তাকে এক প্রাণধারার মিলিয়েছে:

কলিকাতায় প্রবাদী-বঙ্গদাহিত্য-সম্মেলনের অধিবেশন প্লক্ষ্যে বাহারা বঙ্গের ও বঙ্গের বাহিরের বাঙালীদিগকে গাঁজনে ও কথোপকথনে সম্মিলিত হইয়া "নানা দেশ দেশের বাঙালীর জন্মের মধ্য দিয়ে প্রবাহিত" "এক াণধারা" অনুভব করিবার সুযোগ দিয়াছিলেন, তাঁহারা মুগ্র বাঙালী সমাজের ক্রভ্ঞতার পাত্র।

কেলিকাতায় "মিলনী" নামে একটি ক্লাব আছে।

ইবি পক্ষ হইতে লালগোলার কুমার শ্রীব্ৰুক্ত ধীরেল্ডনারায়ণ

ই প্রবাসী-বল্পাহিত্য-সন্মেলনের প্রতিনিধিবর্গ, অভ্যর্থনা
মিতির সম্ভ্যবৃন্ধ প্রান্থতির একত্র সন্মিলিত হইবার

ইবোজন করেন। নিমন্ত্রিত ব্যক্তিগণ প্রায় তিন ঘণ্টা

মারবোগে গলাবক্ষে ভ্রমণ করেন। প্রচুর জলবোগের ও

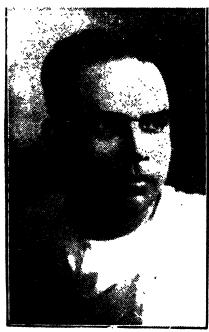
পোপকথনের ব্যবস্থা ছিল। ঘাট হইতে খ্রীমার রওনা

হইবার পূর্বের রবীজ্রনাথ আগমন করেন এবং তাহাকে লইয়া একটি ফটোগ্রাফ তোলা হয়। তাহার পর তিনি প্রতাবর্ত্তন করেন।

২২ই পৌষ ২৮শে ডিসেম্বর কলিকাতার মেয়র প্রীযুক্ত নলিনীরঞ্জন সরকার টাউন-হলে প্রতিনিধিবর্গ ও অন্ত নিমন্ত্রিত ব্যক্তিগণের একটি প্রীতি-সম্মেলনের বন্দোবস্ত করেন। সকলে প্রচুর জলবোগ ও কথোপকথনে আপ্যায়িত হন।

তাহার পরদিন মহিলা প্রতিনিধিগণ ও অপর নিমন্ত্রিত মহিলার্ক ডাঃ শুর নীলরতন সরকার মহাশয়ের সহধর্মিণী শ্রীযুক্তা লেডী নির্মালা সরকার মহোদয়ার বার্টীতে উপ্তান-সম্মেলনে একত্র সমবেত হন। সেথানেও জ্বলবোগ আদির ব্যবস্থা ছিল।

ঐ দিন ঐ সময় ডক্টর শ্রীযুক্ত সত্যচরণ লাহা আগড়পাড়ায় তাঁহার সুরম্য বাগান-বাড়ি ও পক্ষিনিবাসে



श्रीपुळ निमनीयक्षन महकाद

উদ্যান-সম্মেলনের আয়োজন ক:রন। উন্মুক্ত প্রশন্ত তুণাচ্ছাদিত সমতলভূমিতে নীল আকাশের নীচে তিনি বে শুধু রসনার তৃত্তির বন্দেবেও করিয়াছিলেন তাহা নয়, তাহার নানাজাতীয় স্থলতর জলতর পকী সকলের নামধাম আহার জীবন্বাজা-প্রণালী প্রভৃতি এক এক দল নিমন্তিত ব জ্ঞিদিগকে পরে পরে অবগত করাইবারও ব্যবস্থা করিয়াছিলেন।

প্রবাদী-বঙ্গনাহিত্য-সন্দেশনের উদ্যোক্তারা মহিলানিগকেও পক্ষিনিবাসটি দেখিবার হ্রোগ দিতে ইক্ছা করিয়াছিলেন। কিন্তু অন্ধ করেক দিনের মধ্যে নানা শাখা-সভার
অধিবেশন, অনেক প্রীতি-সম্মেশন এবং করেকটি প্রতিগানদর্শনের বক্ষোবস্ত করিতে হওয়ায় মহিলাদের অন্ত পক্ষিনিবাস-দর্শন এবং উদ্যান-সম্মেশন একই দিনে একই সময়ে
পড়িয়া গিয়াছিল।

১০ই পৌষ ২৬শে ডিনেম্বর আচার্য্য প্রফুরচন্দ্র রার বঙ্গীয়-সাহিত্য-পরিষদ মন্দিরে প্রফর্মনীর উদ্বোধন করেন। তথন যত প্রতিনিধি আসিয়া পৌছিয়াছিলেন, তাঁহারা



শীবু কা লেড। নির্মলা সরকার

উপস্থিত ছিলেন। পরে আবার ১৪ই পৌষ পরিবদ সকল প্রতিনিধি ও অশা বহু বিজ্ঞোৎসাহী ব্যক্তিকে পরিবদ-মন্দির ও রমেশ ভবনের মূর্ত্তি সংগ্রহাদি দর্শন করিতে অ,হ্বান করেন এবং তাঁহাদের সকলের জ্লাবোগের ব্যবস্থা করেন।

ঐ ধিন রাত্রে কলিকাতাস্থ ভারতীয় সাংব'দিক সমিতি (Indian Journalists' Association) সমূদর প্রাক্তিনিধি ও কলিকাতার বহু বিশিষ্ট বাক্তিকে টাউন-হলে বিদায়ভালে দেন। বর্ত্তমানে শ্রীযুক্ত মৃণালকান্তি বতু এই সমিতির সভাপতি ও শ্রীযুক্ত কিশোরীমোহন বন্দ্যোপাধ্যায় ইহার সম্পাদক।

এই সকল প্রীতি-সন্দোশন ব্যতীত প্রীযুক্ত বিমলানন্দ তর্কতীর বৈদ্যলাত্ত্রপীয়ে, প্রীযুক্ত নগেন্দ্রনাথ বহু "বিশ্বকোর" কার্যালয়ে, প্রীযুক্ত বামিনীর মন রায় তাঁহার চিত্রশালায়, এবং আনন্দরাজার পত্রিকার কর্ত্বপক্ষ তাঁহালের প্রেনে প্রতিনিধিলের অভ্যর্থনা করিয়াছিলেন।



> । অরণ্যে রাম, সাঁতা ও লক্ষণ---শ্রীতারক বহু । ২ । বিজ্ঞাপনী চিত্র---শ্রীভূদেব মুখোপাধ্যার । ৩ । ফালীপুলা---শীরাধা বাগ্চী ।





১। সে কি আসিবে না?—জীয়াম রাও। ৩। প্রয়াস—জীকালীকিহর ঘোষ দজিদার। ১। ধানী বুদ্ধ—জীবেহট নারায়ণ রাও।)। खातुक-टिभड़म खाड्टामम्।



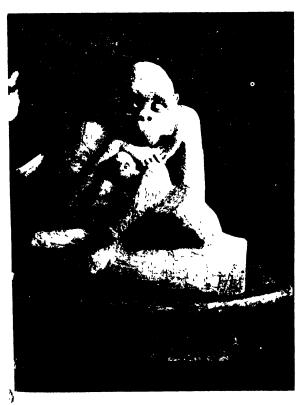
। নটা—জনুক দেৰীপ্ৰসাদ রায় চৌধুরী। ৬। লাল শাড়ী—জীলোকিয়া। ৭। হোলি উৎসব—জীবেকটয়ন্ত্ৰন্থ ৮। ফুলকয়নে—জীবেকট না রায়ণ রাধ

গবর্ণমেণ্ট আট স্কুলসমূহে চিত্রকলা-প্রদর্শনী

কলিকাতা গ্ৰণমেণ্ট আট স্কুলে চিত্ৰকলা-প্ৰদৰ্শনী-

কলিকাতা গ্রন্মেট আর্ট ফুলে চিত্রকলা-প্রদর্শনা প্রতিবৎসর হইয়া থাকে। আর্ট ফুলের শিক্ষক ও ছাত্রগণের অফিত চিত্র এথানে প্রদর্শিত হয়। এবারেও গত ডিনেম্বর মানে এই প্রদর্শনী হইয়া গিরাছে।

এবারকার প্রদর্শনী একটি বিষয়ে বিশেষ স্মরণীয়। ক্ষুলের তিন শ্বচ ছাত্রের দাঁকা ছুই হাজারের অধিক চিত্র এপানে প্রদর্শিত ২ইয়াছিল। আর একটি বিষয়ের উপ্রেথ এখানে অপ্রাসন্ধিক ২ইবে না! এই ক্ষুলের ছাত্রনের ভারতীয় রীতিতে আঁকা প্রায় পঞ্চাশপানি চিত্র লপ্তনের বেলিটেন হাউনে প্রদর্শিত হইয়া বিশেষ প্রশংসা লাভ করিয়াছে। এ-বংসরের স্থানায় প্রদর্শনীটিও বিভিন্ন ধরণের চিত্ত-সমাবেশে সকলের দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াছিল।



কলিকাতা প্রদর্শনী চিড়িয়াথানার একটি দৃশু (মাটির কাজ)—শীহ্ষযিকে**শ ঘোষ** •

আট স্কুলের শিক্ষকগণের চিত্রাবলী একটি বিশেষ দ্বানে প্রদর্শিত ইন্যাছিল। বলা বাহল্য, এগুলি প্রদর্শনীর সৌঠব যথেপ্ট বাড়াইয়াছে -ছাত্রগণের চিত্রগুলি কয়েকটি বিভাগে বিভক্ত হইয়া বিভিন্ন প্রকোঠে ইংবা হইয়াছিল। ভারতীয় রীতিতে অঞ্চিত চিত্রকে প্রথম দ্বান দিওরা হয়। শ্রীমৃত ইন্দু রক্ষিতের প্রাচীর-চিত্র চিত্রাকর্ষক হইয়াছিল।

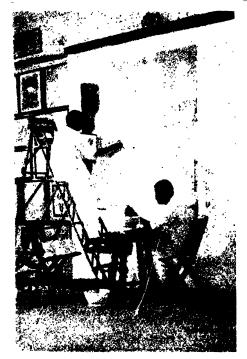
এই বিভাগে শ্রীষ্ত স্থীল সেন, শ্রীষ্ত প্রেন্দ্ বস্থ, শ্রীষ্ত ভারক বস, শ্রীষ্ত নির্দান মুণুজো, শ্রীষ্ত বিপুরেখর মুখুজো, শ্রীষ্ত সভা মজুম্লার,



মাদাজ প্রদশনা

উপরেঃ রাস্তি—জ্জিবাধ দাশগুল, নিমেঃ মুখোস—জ্জিকার্তিকের জান্ত মাণিকলাল বাড়ুপ্লো ও মৌলবী আন্দূল মৈনের চিত্রাবলাও বিশেষ উল্লেখযোগ্য।

কমার্শালে আর্ট ও কাঠ-বোদাই চিত্র বিভাগও সাধারণের দৃষ্টি আর্কর্যণ করিয়াছিল। বাবসং-বাণিজার উন্ধৃতির সঙ্গে সঙ্গে বিজ্ঞাপন-কলারও চর্চ্চা আরম্ভ হইয়াছে। কোন্ জিনিবের কিরুপ বিজ্ঞাপন দিলে সইজে সাধারণের দৃষ্টি আর্গ্ট করা বায় ভাষা কলা-বিভাগের একটি বিশেষ শিক্ষণীয় বিষয়। ইংরেজাতে ইংকি কমার্শ্যান আর্ট বলে। আর্ট কুলের ছাত্রগণ এবিষয়ে শিক্ষা লাভ করিতেছেন। ছাত্রগণ কাঠ-খোনাই বিভাগেও বিশেষ কৃতিত্ব সর্জন করিয়াছেন। আর্ট কুলের শিক্ষক মৌলবী আব্দুল মৈন এবিষয়ে সকলেরই ধ্যুবাদার্হ। কারণ ভাষারই ঐকান্তিক চেষ্টা-বত্বে ছাত্রগণ এ-বিভাগে বিশেষ সাকল্য লাভ করিয়াছেন।



কলিকাতা গবর্ণমেট আট স্কুলে ঐনুত ইন্দু রিকিত প্রচীয় চিত্র পাঁ।কিতেছেন

এৰাব্নকার চিত্র-প্রন্থশিন) হইতে একটি বিষয়ে প্রষ্ট ধারণা সম্বন্ধর হইয়াছে। গুণু সৌন্দর্যোর অম্ভূতির জন্মই নহে, দেশের ব্যবসা-বাণিকা তথা আর্থিক উন্নতির জন্মশু কলা-বিজ্ঞার চর্চা একাস্ত প্রয়োজন।

মাদ্রাজে চারু ও কারু শিল্প প্রদর্শনী-

কলিকাভার ক্সায় মাজাকের সরকারী আট সুলেও গত করেক বংসর ধরিয়া চারু ও কারু শির প্রদর্শন। অর্প্তিত হইতেছে। এ-বংসর গত জামুমারী মাসে এই সুলের চতুর্গ বাসিক প্রদর্শনী হইয়া গিয়াছে। মাজাজ আট সুলের অ্থাক প্রীনৃত্ত দেবীপ্রসান রায় চৌধুরী মহাশরের চেষ্ট-বংছে প্রতি-বংসর স্পৃত্তাবে এই প্রদর্শনী হইয়া আসিতেছে। মাল্রাজের গ্রন্থ লউ এব্স্কিন মহোদয় এবারে প্রদর্শনীর বাব উল্মোচন করিয়া-ছিলেন।

ফুনর প্রনর ভাপ্যা-চিত্রের সমাবেশে এই প্রদর্শনীর চারুলির বিভাগ বড়ই প্রীতিপ্রদ হইয়াছিল। ভাপ্তর শীর্চ কালিকিঙ্কর ঘোষ দক্তিবার, শীর্ক প্রনোষ দাশগুল শ্রীনুত বেকট নারায়ণ রাও, শ্রীনতা মুথুভেল্ ও শীর্চ কার্ত্তিকেরর ভাপ্যা-চিত্র সর্বাগ্রে উল্লেখযোগ্য। উঠাকের পরিকল্পন ও নির্দাণ-কৌশলে মোলিকতা যথেষ্ট। কালিকিছরের "প্রয়াস", নারায়ণ রাওএর "ধ্যানী বৃদ্ধা" প্রভৃতি ইহার নিদর্শন। শীমতা মুগুভেগুর স্থায় ভাগা শীমত। কমলার চিত্রও উল্লেখযোগা।

পাশ্চাত্য রীতিতে অফিত বহু চিন্নও প্রদর্শিত হইমাছিল। এ। বুত রাম রাও, এ। বুড় পল্রাঞ্জ ও এ। বুড় বংগশ্র রায়ের চিন্ন্তলি এই বিভাগের শোভা বর্জন করিমাছিল।

নে-সব চিত্রে ভারতীয় পদ্ধতি অঞ্জত ইইয়াছিল দেগুলি এক স্থলে প্রদর্শিত হয়। সৈয়দ ফাগুমেদ, কালিকিগুর, লোকিয়া, গগেন্ত্র রায়, ডোরাইসামী বেগুটনারয়েদ রাএ, রাম রাও, বেগুটরত্বস্থ, পি.সি.রাজু প্রভৃতির চিএাবলী সকলের দৃষ্টি আকর্ষণ করে।

শ্রীবৃত দেবী প্রসাদ রায়-চৌধুরীর চিত্রাবলী যে মনোরম হটয়াছিল

ভাহা বলাই বাচলা।

জীবনায়ন

শ্রীমণীন্দ্রলাল বস্থ

.

অঞ্চল যথন অজয়দের বাড়িতে আসিয়া পৌছাইল, কলিকাতার দৌধাবলীর উপর অপরাস্থের আলো মান হইয়া আসিয়াছে, নগরের গলিতে প্রাসাদগুলির দীর্ঘতর ছায়া।

ছাদ হইতে অরুণকে দেখিতে পাইয়া চন্দ্রা সি^{*} জি দিয়া ছুটিয়া আসিল, অরুণের হাত ধরিয়া হাপাইতে হাপাইতে বলিল,—কেল, কাল আস নি কেন? কাল বড়দির জন্মদিন গেল।

অরণ বৈশ্বিত হইয়া বলিল—আমি কি জানতুম ? হাজ নাড়িয়া চুল দোলাইয়া চন্দ্রা বলিল—ভোমার কিছু মনে থাকে না। আমার লাট্ট এনেছ ?

- —'ওই, আনতে ভূলে গেছি।
- —বড় ভোলা মন বাপু তোমার।
- —লাট্ট্র ত ছেলেরা থেলে, আচ্ছা, থুকু তোর জন্তে বড় পুতুল এনে দেব, কেমন ?
- না আমার পুতৃল চাই না, আমার লাটু, চাই, বা, ছেলেরা স্থিপ্ করে কেন?

চক্রা অজয়ের ছোট বোন। ছর বৎসর বয়স হইবে।
থয়ের রঙের ক্রকের ওপর ফ্ল-কাটা সালা এগুপ্রন;
কচি আমপাতার মত স্থামঞ্জী; মুখখানি মঙ্গোলীয়,
টালের সহিত তুলনা দেওরা ঘাইতে পারে, স্থলের মেয়ের।
ভাহাকে টাদামাছ বলিয়া ভাকে। ভাহার হই চোপ্রে

সিঁড়ি নামে, কলহাস্তে উচ্চ স্বরে কথা বলে, নৃত্যের ভঙ্গীতে চলে।

চন্দ্রার সহিত দ্রুতপদে সি^{*}ড়ি উঠিতে উঠিতে অ**রুণ** বলিল—মামীমা কোথায় ?

তৃষ্টামিভরা চোধ নাচাইয়া চন্দ্রা উত্তর দিল—মা তোমার সঙ্গে আজ দেখাই করবেন না, খুঁজেই পাবে না মাকে।

—তুই বুঝি লুকিয়ে রেখেছিস, আচ্ছা, কোন্ রঙের লাটু তোর পছন্দ? অস্কণ পকেট গ্রহতে তিনটি শাট্ট্র বাহির কবিল।

চন্দা লাফাইয়া উচ্ছুদিত স্বরে বলিল—ও, কি তুই তুমি! থ্যাক্ষম থ্যাক্ষম, আমি তিনটিই নিচিছ।

বিহাদেশে চন্দ্রা অন্তর্হিত হইল। অন্ধ্রণ রান্নাগরের দিকে চলিল। মামী এখন নিশ্চয় রান্নার তদারক করিতে গিয়াছেন। ভাঁড়ার-ঘরের সন্মুথে থোলা বারান্দায় আসিতে চলার গতি করু হইয়া গেল। আলোছায়ায়য় ঘরের পটে এক কিশোরীম্র্রি সন্ধ্যাকাশে তারার মত ফুটিয়া উঠিল। গদশকে উমা প্রবেশ-দ্বারের চৌকাটে আসিয়া দাঁড়াইয়াছে। হাতীর দাঁতের মত গৌরবর্ণ দেহে লাল-পাড় তসরের শাড়ী মপরাক্রের আলোয় যেন আগুনের আভা।

হ**রণ স্তব্ধ হইয়া** রহিল। সৌন্দর্যা তাহাকে এমন করিয়া অভিভূত করে কেন!

উমা ধীরে বলিল—মা বাড়ি নেই। উমা বড় শাস্ত ফরে কথা বলে, কর্জে একটু আবেগ আনে না কেন!

লজ্জিত ভাবে অরুণ বলিল—ও, আমার আসতে দেরি হয়ে গেল।

- —তাতে কি, এক থণ্টার মধ্যেই আসবেন, মাসীমার ওথানে গেছেন। বাবা তোমায় খুঁজছিলেন।
 - —আচ্চা।
 - —শোন, কি থাবে !
 - আমি খেয়ে এসেছি, কিছু খাব না।
- —তা হবে না, মা এসে আমায় বকবেন, ভিনি নেই ব'লে—

গজদস্তণ্ড আননে মৃত্ হাস্য খেলিয়া গেল। উমার ই'সি বড় সংঘত, উচ্ছুসিত হইয়া একটু হাসে না কেন!

- সভ্যি, আমার এখন ক্ষিদে নেই।

- —বেশ, রাতে থেয়ে যেও।
- —অজয় এসেছে ?
- —না, দাদা আসেন নি—বাবা ওদিকে ছাদে আছেন।

 অঙ্কণ একটু অগ্রসর হইয়া আবার নীরবে দাঁড়াইল।

 স্থ্যান্তের স্বর্ণাভামণ্ডিত ঐ অলৌকিক সৌন্দর্যাক্রপ যেন
 সে দৃষ্টিচ্যুত করিতে চায় না। একটু ব্যথিত স্বরে সে
 বলিল—কাল তোমার জন্মদিন আমি জানতুম না।
- দাদা ব্ঝি বলতে ভূলে গেছল। কিছু দেদিন যে মা'র সঙ্গে তোমার অত হিসেব হচ্ছিল,—তোমার জন্মদিনের দশ দিন পরেই আমার জন্মদিন, সব ভূলে গেছলে—
 - --- হা, আজকাল কিছু মনে থাকে না।
 - -- খুব পড়ছ বুঝি, দেখ অরুণ---
- —এই বললে, আমি তোমার চেয়ে বড়, আমায় দাদা বলা উচিত।
 - —ভারি দশ দিনের বড়, তবু যদি এক মাস হ'ত।

উমা অরুণকে দাদা বলিতে কেমন সঞ্চোচ বোধ করে। তাহার অন্ত বোনেরা, এমন কি মাসভুতো বোনেরাও, অরুণকে স্বচ্ছন্দে দাদা বলে, কিন্তু সে তেমন পারে না।

- —আচ্ছা, আমি তোমাকে আমার নাম ধরে ডাকবার অনুমতি দিলুম, এটা তোমার পঞ্চদশ জন্মদিনে আমার উপহার ক্ষেনো।
- খুব কথার ভট্চার্গা হয়েছ, না দিলেও আমি তোমায় ডাকতুম। কিন্তু অত গড়ীর কেন!
 - —কি জান, উমা, মনটা তেমন ভাল নেই।
- —মন খারাপ কি জল্মে? যত চং, অত রাজ্যের বই পড়লে মন কেন, মাধাই খারাপ হয়ে যায়। আমি মাকে ব'লে দেব, তোমা: আর বই দেবেন না।
 - ---তুমিও কিছু কম বই পড় না।
- আমার তাতে মন থারাপ হয় না, যাও বাবা এক। ছাদে আছেন, আমি যাচিছ।

অজ্ঞরের পিতা শ্রীহেমচক্র রায় মহাশয় ভারত-গর্ভামেণ্টের দপ্তরথানার এক উচ্চপদস্থ কর্মচারী। অসুস্থতার স্বস্ত প্রায় হুই বংসর হুইল চিকিৎসা করাইতে কলিকাতার ছুটি লইয়া আছেন। অরুণের মাতা তাঁহার জন্মগ্রামের মেয়ে, তাঁহাকে দাদা বলিতেন, ছেলেবেলায় একসঙ্গে থেলাগুলা করিয়াছেন। সেই সম্পর্কে অরুণ তাঁহাকে মামাবাব বলে।

হেমবাব্ ধ্বাবয়দে কলৈজে পাঠের সময় বাদ্ধদমাজের সম্পর্কে ও প্রভাবে আসেন। একবার রাদ্ধদ্য গ্রহণ করিবেন ঠিক করিয়াছিলেন। পরে হিল্দমাজে বিবাহ করিবেও গ্রাদ্ধদমাজের সামাজিক সম্প্রার আধুনিক আদর্শ নিজপরিবারে প্রতিঠা করিতে চেষ্টা করিয়াছেন। এ-বিষয়ে তাঁহার প্রী অর্থময়ী তাঁহার সাহায্যকারিণী। বিবাহের পর তিনি ত্রীকে মেম রাগিয়া ইংরেড়ী শিগাইয়াছিলেন, তাহা প্রথা হয় নাই। দিল্লী সিমলার উচ্চতম অফিসার-সমাজে তিনি নিঃসংশ্লোচ সম্প্রানে মিলিতে পারিয়াছেন।

হই বৎসর পূর্নের সিমলাতে গাণ্ডা লাগিয়া হেমবাবুর জর ও পেটের অত্থ হয়। দিল্লীতে নামিয়া পেটের অত্থ কমিল, কিন্তু জর ছাড়িল না। কলিকাতায় আসিয়া প্রথমে কিছু সুস্থ হইয়াছিলেন। কিন্তু জর একেবারে ছাড়িতেছে না। ডাক্তারেরা অ.খ'স দেন, শাঘ্রই সুস্থ হইয়া উঠিবেন, আর একটু বল পাইলেই চেডে গেলে সম্পূর্ণ আরে'গ্যলাভ করিবেন। বস্তুত', রোগ যে কি, তাহা ঠিকরপ নির্দ্ধারিত হয় নাই।

শয়নগৃহের সম্প্র ঢাকা বারান্দায় এক লম্বা চেয়ারে পিঠে বালিশ ঠেদান দিয়া হেমবাবু শুইয়াছিলেন। ফাল্পনের শেষে বেশ গরম পড়িয়াছে, সন্ধায় ঘরে থাকিতে আর ইচ্ছা করে না।

বারান্দার সামনে বড় থোলা ছাদ জুড়িয়া নানা ফুলের গাছ—জুঁট, বেল, গোলাপ, এটের, ডালিয়া, ক্রিসেনথিমাম্। কন্তাদের সহায়তা ও উৎসাহে বিছানাতে গুইয়া হেমবাব্ এই ফুলের ক্ফ-গার্ডেন তৈরি করিয়াছেন।

অরুণ বারান্দায় প্রবেশ করিতেই চক্রা চেঁচাইয়া উঠিল— বাষা, অরুণদা এগেছেন।

হেমবাবু একটু উঠিয়া বসিয়া বলিলেন—এস, অরুণ এস, ওরে শূলা, তোব অরুণধার জ্বতে একটা চেয়ার দে।

অরু : ধীরে বলিল—আমি এই মোড়াতে বসছি, কেমন আছেন মামাবার ? শীলা ফুলের টবেজল দিতেছিল। ঝাঁঝরি নামাইয়া পিতার নিকট ছুটিয়া আদিল। হাতে একটি ফুল।

- বাবা, দেখ, কি স্থলর নীলফুল, দেখ অরুণ-দা—িকি নাম বল ত ?
 - —কোন বিলিতি ফুল হবে।

শীলা একটি লম্বানাম বলিল। স্ব ফুলের নাম তাহার মুথস্থ।

- —অরুণ-দা, তোমার ত বাট্ন-হোল নেই।
 - —তোমার মাগায় গোঁজ, বেশ দেখাবে।

খোঁপাতে ও জিবার ইচ্ছা হইলেও, ফুলটি শীলা পিতার চেয়ারের পার্থে ছোট মার্শ্বেল টেবিলের উপর ফুলদানির পুশগুডেছ ও জিয়া দিল।

হেনবাব্ অতি সৌণীন প্রাক্তির মান্য। অপস্থতার তাঁহার শুটিতা ও সৌন্দর্যাবেধি আরও স্থা প্রবল হইরাছে। তাঁহার শ্যা, আসবাব, গৃহ সব সময়ে পরিষ্কার থাকা চাই, জানালায় রটীন দিজের পর্লা, নীল দেওয়ালে রাফা য়লের 'মাতৃন্তিঁ', মাইকেল এঞ্জিলার 'আদামের জন্ম' কোরো-র 'লাওস্থেপ' ইত্যাদি কয়েকথানি ছবি নথানথ টাঙানো: চেয়ারে রভীন রেশমের ঝালরওয়ালা বালিশ, টেবিলে স্টের স্থা কাজ-করা সাদা আছোদন, চারি দিকে শোহন পরিছেয়তা। তাঁহার শ্রী-প্র-কর্সা সকলকে তাঁহার নিকট পরিষ্কার পরিছেদে থাকিতে হয়, সকলে প্রেশে থাকে, স্চার জীবন বাপন করে, ইহাই তাঁহার বাসনা। তাঁহার সম্মুথে ভ্তারাও ময়লা কাপড়ে আদিতে পারে না।

হেমবাবু স্লেহকণ্ঠে বলিলেন—ওরে অরুণকে কিছু থেতে দে।

- ---না, আমি এই খেয়ে আসছি:
- —তা হোক, কিছু ফল খাও, উম। !
- —না, মামাবাব্!

শীলা হাসিয়া বলিল—বাবা, অঙ্কণদা কি লাজুক।
চক্রা বড়দিদির নিকট ছুটিল, খাবার আনিতে।

উমামিষ্টিও ফল লইয়া আসিলে অরুণ আর আপতি করিল না।

হেমবাবু বলিলেন—তুমি থাও অরুণ। রোগে ভূগিয়া তাঁহার অন্তর যেমন সকলের হলয়ের প্রেম পাইবার পিয়াদী হইয়াছে, তেমনি স্নেহে প্রেমে আপনাকে বিশাইয়া দিবার জন্ম তিনি ত্যিত।

খাওয়া শেষ করিয়' অফণ বলিল—খুকু কি নতুন গান শিখেছ? এবার অফণের প্রতিশোধের পালা।

চক্রা ছুটিয়া ঘর হইতে শালার এমাজ লইয়া আদিল।

- —ছোটদির এম্রাজ দেরে এদেছে বাবা।
- —আচ্ছা, তোমার বড়দি'কে ডাক।

হেমবাবু নিজে ফ্কণ্ঠ গায়ক না হইলেও, অত্যন্ত সঙ্গীত-প্রিয়। রোগশ্যায় সঙ্গীতানুরাগ অত্যন্ত প্রবাদ হইয়াছে। দিলীতে তিনি মেয়েদের সঙ্গীতশিক্ষার জন্ম ওস্তাদ রাথিয়া দিয়'ছিলেন। ফুস্থ বোধ করিলে কলিকাতাতেও মধ্যে মধ্যে ভাল গায়ক আহ্বান করিয়া জলসা হয়। প্রায় প্রতি সন্ধ্যাতেই কন্তাদের লইয়া পারিবারিক সঙ্গীত্যভা ব্যে।

উমার গলা ভাল, কিন্তু কলিকাতাতে আদার পর প্রায়ই ত'হার সর্ন্ধি-কাশি হয়, নিয়মিত ভাবে গান শিথিতে পারে না। শীলা গান ভাল গায় না, তবে সেতার এস্রাজ সকল প্রকার ব'দ্যান্য বাজাইতে স্থনিপুণা। চন্দ্রা যে কোন দিন গানিকা হইবে এ আশ: তাঁহার পিতাও করেন না; তবে ক্ষণ্থ পিতাকে সাধামত গান গাহিয়া আনন্দ দিতে তাহার অত্যন্ত উৎসাহ। সে উৎসাহ কেহ দমন করিতে চায়না।

চক্রার গান দিয়াই সে সন্ধার জলস আরম্ভ হইল। বড়দিদির সহোগো সে স্ব-সমুদ্র অকুতোভারে পাড়ি দিল।

শীলার এস্রাজ বাজান শেষ হইলে উমা বলিল—কোন্ -গান করব, বাবা ?

- ---আজ সকালে কি গানটা গুন-গুন করছিলে ?
- —ও, তিমির-ছয়ার খোল এস, এস নীরব চরণে—
- —সে ত ভোরবেলার গান বাবা।
- —ওই গানই ত রাতে বসে গাইবার গান মা, যখন আলো শেন হ'ল, অন্ধকার ঘনিয়ে আসছে, 'তিমির-ত্যার ধোল—' এ সে অন্ধকারে আলোর জন্ত প্রার্থনা।

উমা ধীরে গান ধরিল,

'তিমির-হুরার খোল এস, এস নীরব চরণে জননি আমার দাঁড়াও এই নবীন অঙ্কণ কিরণে।' ধীরে সন্ধা ঘনাইয়া আসিতেছে; চারি দিকে মায়াময় আবছায়া; পশ্চিমাকাশে নারিকেল বুক্ষগুলির অন্তরাশে স্থ্যান্তের স্বর্ণ্ডাতি প্রকৃতি-লক্ষ্মীর ললাটে রক্তচন্দনের মত। হালাহানার গন্ধভরা বাতাস মুত বহিতেছে।

অৰুণ গান শুনিতে লাগিল।

উমা প্রতিমার মত অত চমৎকার গায় না। ছ-জনের গান গাহিবার ভঙ্গীর কত প্রভেদ। প্রতিমা যদি এ গানটি গাহিত, মনে হইত, নীড়ে-জাগা ভোরের পাণী সহজ উচ্চৃসিত আনন্দ সূরে হরুণোদয়ের অভার্থনা করিতেছে। উমা গাহিতেছে, যেন প্রাপ্ত পথিক ক্লান্ত চরণে অন্ধনার রাত্রে পথহারা হইয়া আলোর জন্ত ব্যাকুল প্রার্থনা করিতেছে। উমার কঠ এমন করণ উদাস কেন?

উমা তাহার মাতার প্লার বং পাইরাছে বটে, কিন্তু তাহার মুখের দামজন্তপূর্ণ কুলঠিত রূপ পার নাই। মুখখানি লম্বা, অনতিপক পেরার-ফলের মত; প্রাণস্ত উন্নত ললাটে একটি টিপ জলজন করিতেছে, দেন উবার গগনে শুকতারা; টানা জর নীচে আয়ত নয়ন নীচু করিয়া বদান, দে নয়নে কথনও নিষ্কাষিত অদি-লতার দীপ্তি, কখনও আয়াঢ়ের নবীন মেঘের ছায়ালিগ্রতা; অপরিপুষ্ট অগর একটু শূর্ণ, দে শীর্ণতা রোগশনার সেবাক্লিইতা, রাত্রি জাগরণের ক্লাস্তি; গণ্ড চইটিতে কথনও উধার পাতুরতা, কখনও সন্ধার রক্তিমা; প্রশন্ত চোয়াল হইতে কমনীয় চিবুকের রেখাব কলাটে উচ্চুদিত, নয়নে আনত, কপোলে প্রবাহিত হইয়া চিবুকের দিগন্তে কোন্ অসীমে মিশিয়া গিয়াছে। স্বর্ণাভ প্রদোষাক্ষারে পটভ্যমিকার গারিকা কিশোরীর মূর্ণ্ডি।

তিন বোনের মধ্যে দেহরপে কত প্রভেদ। শীলার মুথ উমার মত লম্বা নয়, গোল হইয়া আসিয়াছে, তার পর চক্রার মুথ ত ট'দ'মছে। শীলার বং উজ্জ্বল শুমবর্ণ, বয়সের তুলনায় গ্লকায়, সহছেই আবেগে উচ্ছসিত হইয়া ওঠে, যেন এক সতেজ বনশতা নিজের চারি দিকে ভাবের কুঞ্জ রচনা করিতে চায়।

উমার দেহের গঠন পরিমিত, মুখে পরিণত বৃদ্ধির গান্তীর্যা, সোঁটের টানে স্থিরসঙ্কল্প, কণ্ঠের হুরে শাণিত ভাব, ব্রী ও ধীশক্তি মন্তরাবেগকে সংযতকরিয়া তাহাকে শ্রীমণ্ডিত করিয়াছে ; কিন্তু তাহার একটু ভাবে ছোস থাকিলে বুঝি ভাল হইত, মনে হয় তার হনয়ে কোথাও নিষ্ঠুরতা, শৃগুতা আছে।

উমার গান শুনিতে অরুণের বড় ইচ্ছা করে, কিন্তু উমা যথন গান গায় সে আনন্দ পায় না। প্রতিমার গান গাওয়ায় গে নিরবচ্ছিল আনন্দস্থর আছে, উমার কঠে সে স্থর খুঁ দিয়া পায় না।

হেমবাব্ব রোগাভূর ম্থের দিকে চাহিয়া, উমার নীর্ণক্ষণ নরনপল্লবের দিকে তাকাইয়া দে অন্তরে কি বেদনা অন্তব করিতেছিল। তাহার মনে হইতেছিল এই মুখ, এই দঙ্গীতের আনন্দ যেন কোন বিশুদ্ধ মহানন্দের ছায়ামাত্র, বে বেদনাহীন মহানন্দের একটুকু আভাস সে পাইতেছে, কল্পলাকের দিগতে সে পূর্ণ আনন্দছেটা ক্ষণিকের জন্ত দেখা দিয়া আবার মিলাইয়া যায় কেন, ব্যথাভরা তৃষণা রাথিয়া যায়।

দেই অলোকিক সন্ধ্যায় অরুণের জীবনে প্রেম, বেদনা ও অহুস্থতা এক হ'তে তিনটি মুক্তার মত গাঁথা ইইয়া গেল।

রাত প্রায় নয়টার সময় অরুণ বাড়ি ফিরিল। ঘরের সম্মুথে বারান্দায় ঠাকুমা ত:হার জন্ত প্রতীক্ষা করিতে-ছিলেন। জিজ্ঞাসা করিলেন—হাারে থেয়ে এসেছিস?

অরুণ উত্তর দিশ— হাা, ঠাকুমা, আমি ত তোমার বলেই গেলম।

ঠাকুমার ইচ্ছা হইল, জিপ্তাসা করেন, মামী কি খাওয়ালেন। কিন্তু অরুণ খাদ্যদ্রব্যের সম্পূর্ণ তালিকা দেবে না, আর অত খাবারের নাম শুনিলে পরদিন তাঁহাকে কিছু বেণী রাধিতে হইবে।

- —আৰু আর বেণী রাত জেগে পড়িদ নে, শুরে পড়। —আমি শুচ্ছি, তুমিও শুতে বাও ঠাকুমা।
- অরুণ বে অজ্বনের বাড়ি অত বেণী যায়, থায়, গল্প করে, ঠাকুমা তাহা মনে মনে পছন্দ করেন না। কোন বাধাও দিতে ইচ্ছা হয় না। এই মাতৃহীন বাদকের অন্তরের স্নেহকুধা তিনি ত মিটাইতে পারেন না। অরুণ যদি

কোথাও গিয়া আনন্দ পায়, তাহাতে তিনি বারণ করিবেন কেমন করিয়া। প্রতিমার কিন্তু এ সব হাঙ্গাম নাই। সে বাড়িতে বেশ থাকে। স্থূলের পড়া পড়ে, গান গায়, পাথীদের পালন করে, হেলা-ফেলা করিয়া কাটাইয়া দেয়; মাঝে মাঝে তাহার কোন সহপাঠিনীকে নিমন্ত্রণ করিয়া সথ করিয়া বাঁধিয়া থাওয়ায়। কাহারও বাড়ি যাইতে সে রাজী হয় না। পুরুষেরা চিরকালই মাহিরমুথা।

প্রতিমার ঘরে উকি মারিয়া ঠাকুমা নিজের ঘরে গেলেন। প্রাদীপ নিবাইয়া বারান্দায় মাত্র পাতিয়া শুইলেন। স্থান্দর চাঁদ্ উঠিয়াছে।

রুশাঙ্গী, থর্কারুতি, কাঁচাপাকা চুলগুলি ছোট করিয়া ভাঁটা বলিয়া বার্দ্ধকারেণাঞ্চিত মুখ নীর্ণ দেখায়। আঁটদাট গড়ন, মুখের স্নেহপ্রদন্নতা তপ্তকাঞ্চনবর্ণ, দেখিলে বোঝা যায়, ঠাকুমা এক সময়ে স্থলরী ছিলেন। বস্ততঃ, অতি গরিব ঘরের মেয়ে হইলেও, অতুলনীয়া সুন্দরী ছিলেন বলিয়াই এই ধনী বনিয়াদী বংশে তাঁহার বিবাহ হইয়াছিল। ছোটবেলায় স্বাই তাঁহাকে পুতৃল বলিয়া ডাকিত। তাঁহার সমস্ত জীবন নিষ্ঠুর বিধাতার হত্তে পুতৃলের খেলাই হইয়াচে। ছোট মেয়ে আপন পুতৃলকে অ'দুর করিয়া নানা রঙীন কাপড়ের টুকরায় খুশীমত সাজায়, হৈ চৈ করিয়া ভাহার বিবাহ দেয়, আবার রাগ হইলে সমস্ত সজ্জা ছিঁডিয়া দেই মাটিতে আছড়ায়। বিধাতাও একদিন তাঁহাকে বালিকাবয়সে বগুবেশে সাজাইয়া কোন সোনার সংসারে পাঠাইয়াছিলেন। সে-কথা ঠাকুমার স্বপ্নের মত মনে হয়। সোনার স্বপ্ন মিলাইয়া গেল, যৌবনেই তাঁহাকে যোগিনী হইতে হইন। যে প্রাবণ-রাত্রে ছই শিশুপুত্রকে বক্ষে চাপিয়া তিনি বিধবা হইয়াছিলেন, মনে হইয়াছিল সে অন্ধকার নিশীথের বুঝি অবসান হইবে না। সে রাত্রিও বড় সাধ করিয়া প্রথম পুত্রের বিবাহ প্ৰভাত হইল। দিয়।ছিলেন। সে পুত্র, সে শৃন্ধীস্বরূপিণী পুত্রবধু আজ কোপার! সব ফাঁকি দিয়া চলিয়া গেল ট স্বামীর মৃত্যুর পর ভিনি ভাঙিয়া পড়িয়াছিলেন, কিন্তু তার পর হুঃথ তাঁহার ললাটে যতই আঘাত করিয়াছে, তিনি মনের বল হারান নাই, কোথা হইতে নবশক্তি পাইয়াছেন। নিষ্ঠুর বিধাতা সংসারাঙ্গনে এ পুতুলটিকে বার-বার আছড়াইয়াছেন,

ভাঙিতে নয়, আরও মদ্বৃত করিতে। কোন অখ্যাত দ্বর্থান হইতে এক সরলা শক্ষিতা বালিকা যেদিন দাল্কতা গৃহবধ্রূপে এই গৌরবময় বনিয়াদী পরিবারে আসিয়াছিল, ওই পূজার অঙ্গনে বরণডালার প্রদীপশিখায় সেদিন এই বংশের মহিমা মর্যাদা রক্ষার ভার যে তাহারই হস্তে সমর্পণ করা হইয়াছিল। অক্ষণ ও প্রতিমার জীবনে সেই মহিমার অক্ষ্র রূপ দেখিয়া না-যাইতে পারিলে ঠাকুমা শান্তিতে মরিতে পারিবেন না।

বিলীয় পুত্রের উপর তিনি কিছু আশা করেন না।
বিলাত হইতে সে মদাপ, অনাচারী, হিল্পুর্যম্বেষী হইয়া
আদিয়াছে। কেহ কেহ বলে, সে বিলাতে বিবাহ
করিয়াও আদিয়াছে। ঠাকুমা তাহা বিশ্বাস করেন না,
তবে ভাষার বিবাহেরও কোন চেষ্টা করেন নাই। সে
শুধু তাহার মৃত্যু প্রয়ন্ত বাচিয়া থাকুক।

অরুণ ও প্রতিমাকে তিনি জীবনের সমস্ত আশা ও রেহ নিয়া জড়াইয়াছেন। এ-বংশের আদর্শান্সারে তাহাদের মাত্য করিতে হইবে। তাহারা যথন পিতার মৃত্যুর পর ঠাকুমার সহিত বাস করিতে আসিল, তাহাদের ভবিষ্যুৎ নিক্ষা-দীক্ষার ব্যবস্থা লইয় মাতা ও পুত্রে বিবাদ বাধিল। প্রতিমার বিলাত-ফেরৎ বাবা তাহাকে কোন মেমসাহেবর স্থলে ভর্তি করিয়া দিতে চাহিলেন, আর ঠকুমার ইচ্ছা, প্রতিমা সংসারের কান্ধকম্ম করে, খুব-জোর কোন বৃদ্ধ রাহ্মণ-পণ্ডিতের নিকট সংস্কৃত শ্লোক শিক্ষা করে। এ-বংশের কোন মেয়ে কথনও গাড়ী করিয়া স্থলে যায় নাই। শেবে রফা হইল প্রতিমা কলিকাতার কোন বাঙালী মেয়েদের স্থলে পড়িবে, বাড়ির গাড়ী তাহাকে পৌছাইয়া দিয়া আসিবে। স্থলে গিয়া প্রতিমা কোন ছরস্তপনা, বেহায়াপনা শিথে নাই, বেশ শান্ত, বাধ্য মেয়ে, তবে মাঝে মাঝে বড় একপ্রামে করে।

অর্পনের জন্ত ঠাকুমার বড় ভাবনা। ঘরে তাহার
মন নাই, তাহার বহু বন্ধু, তাহারা বনিয়াদী বংশের ছেলে
বলিয়া মনে হয় না। তাহার শরীরও রোগা, টো-টো করিয়া
ঘোরে, বাগানে একা বদিয়া থাকে, প্রতিমার মত আব্দার
করে না, মন খুলিয়া কথা বলে না, তাহার মনে কিলের
ছঃব ? তাহাকে তিনি ঠিক বুঝিয়া উঠিতে পারেন না।

অরুণ বি-এ ক্লাদে উঠিলেই, স্থানরী মেয়ে দেখিয়। ঠাকুমা তাহার বিবাহ দিবেন, গরিব বনিয়াদী ঘরের মেয়ে আনিবেন। তাহাকে বিলাত ঘাইতে দিবেন না।

ঠাকুমার চোথে জল আসিল। রেথান্ধিত কপোল অশ্রতে ভিজিয়া গেল। মাহ্র হইতে উঠিয়া তিনি ইউন্বেত্তাকে প্রণাম করিলেন।

ঠাকুমা চলিয়া গেলে অরুণ হাতমুখ ধুইয়া জামা বদলাইয়া খোলা জানালার কাছে এক চেয়ার টানিয়া বসিল। স্তব্ধ জ্যোৎসারাত্রি খণ্ডের কুহেলিকাজড়ান।

স্থলের বই পড়িতে ইচ্ছা করিল না। মন থেদিন বিষর বা আনন্দপূর্ণ থাকে, দে ডায়েরি লেখা বা রবীন্দ্রনাথের কাবাগ্রন্থ খুলিয়া পড়ে। মামীমার নিকট হইতে রবীন্দ্রনাথের শান্তিনিকেতন পুন্তিকাগুলি লইয়া আনিয়াছে। উপদেশগুলি একটু সূর করিয়া মৃত্স্বরে পড়িতে বিদল, খেন মহান কবিতা। সব ব্ঝিতে পারিশ না, গভীর ভাবগর্ভ কথাগুলির তরঙ্গাবাতে তাহার অন্তরের কোন গোপনগুহার স্থা জলে চঞ্চলতা জাগিল। উপদেশের শেষে প্রার্থনা সে ভক্তির সহিত পাঠ করিল, এ ফেন তাহার অন্যক্ত ভাষার ভাযাহীন বেদনার বাণী।

ডায়েরি শেথা হইল না। শাস্তিনিকেতন হইতে কয়েকটি অংশ ডায়েরিতে ঢুকিল।

"জ্ঞান, প্রেম ও শক্তি এই তিন ধারা বেগানে এক**ত্র সঙ্গত** সেইখানেই আনন্দতীর্থ। আমাদের মধ্যে জ্ঞান, প্রেম ও কম্মের বে পরিমাণে পূর্ণ মিলন সেই পরিমাণেই আমাদের পূর্ণ আনন্দ।"

তাহার নীচে ধরুণ লিখিল—জ্ঞানের সাধনা করিতে হইবে সত্য কি জানিবার জন্ম, শক্তির সাধনা করিতে হইবে মানবকলাণের জন্ম, কিন্তু প্রেমের সাধনা কিসের জন্ম ? সৌন্দর্যোর জন্ম ? বেদনার জন্ম ? কবি বলিতেছেন, জ্ঞান প্রেম ও শক্তির সমন্বয় করিতে হইবে তবে আনন্দতীর্থে পৌছান যায়।

এ বিষয় জয়স্তর দ**লে আলোচনা** করিতে হইবে।

ডামেরি বন্ধ করিয়া অরুণ প্রতিমার ঘরের দিকে চলিল।

প্রতিমা নিশ্চয় তখন ঘুমায় নাই। তাহার এত রাতজাগা উচিত নয়।

গৃহস্বারের নিকট আসিয়া অরুণ শুনিতে পাইল, প্রতিমা একা গরে বসিয়া আপন মনে উচ্চ শ্বরে হাসিতেছে। মাথা ধারাপ হইল না কি!

খরে চুকিয়া অরুণ দেখিল, প্রতিমা নিবিষ্ট মনে কি বই পড়িতেছে; ও ডন্কুই.কাট।

- -দ'দা, কি মজার বই, তুমি আমায় এত দিন দাও নি!
- টুলি, কি মজা? খুব চেঁচিয়ে হাসছিদ ত!
- ---এই তোমার ডন্কুই কাটি গো।
- —ওতে হাসবার কি আছে ?
- —বা, হাসবার নেট? আছো, উইওমিলগুলোর সঙ্গে কি ব'লে যুদ্ধ করতে বায় ? শোন, আমি একটা কবিতা লিখেছি, ভোমার কবিবন্ধু এমন লিখতে পারবে না, ছল মিলেছে—

ভন্কুইক্সোটের লাগল চোট রক্ত ঝরিল বক্ষে এমন কাণ্ড হতেই হবে দেশে না ধারা চক্ষে

ত্-চার লাইনে বাঙ্গ-কবিতা রচনা করিতে গুতিমা পুনিপুণা।

অরুণ হাসিয়া বলিল—তুই গল্পট। কিছুই বুঝিস নি, ও কত বড আইডিয়াল নিয়ে বাহির হয়েছে।

- মাথায় থাক অমন আইডিয়াল, ওর ত বই পড়ে পড়ে মাথা খারাপ হয়েছে। আচ্চা, তোমার বন্ধু কি দব বাজে কবিতা লেণেন, এই গল্লটা কবিতায় অত্বাদ করতে ব'লো।
 - টুলি, যা ব্ঝিদ না তাই নিয়ে ঠাটা করিদ না।
 - —বা আমি ত সিরিয়দলি বলছি।

অরণ ভাবিল, পৃথিবীর ডন্কুইক্রোটদের মেয়েরা কি চিরকাল পরিহাস করিবে, তাহাদের আদর্শ ব্ঝিয়া ভাল-বাসিবে না?

—দাদা, ভূমি বড় গ্ন্তীর হয়ে যাও। কিন্তু তোমার

কবিবন্ধটিকে সাবধান ক'রে দিও। আমাদের স্থূলের গাড়ীর খোড়াটি ওই উইগুমিলের চেয়েও বেগবান ও সজীব।

- —কেন কি হয়েছে ?
- —কবিটি আর একটু হ'লে ঘোড়া-চাপা পড়তেন, একেবারে আকাশের দিকে চেয়ে হাটেন।
- যা, বান্ধে বিকিদ না, এগন বই বন্ধ ক'রে শুয়ে পড়। বেনা পড়লে কি অবস্থা হয়, দেখছিদ্ত ডনকুইকোট—
- সেটি তুমিও মনে রেখো। আমি বাপুগল্লটি শেষ না ক'রে শুফিচ নে।
 - —আছা, আর আধ ঘণ্টা।
 - —ও, ভূলেই গেছনুম, এই নাও দাদা সেই গানটা।

গানের কাগদগানি লইয়া অক্সণ নিজের থবে গেল না।

বি*ড়ি দিয়া নামিয়া বাগানে বাহির হইয়া গেল। মুঞ্জরিত রক্তকরবীকুঞ্জের ছায়ায় ভগ্ন মন্মর বেদিকায় ধীরে বিদল।

জ্যোৎসা-নিশাণের নৈঃশব্দ দক্ষিণ স্মীরণে ক্ষণে কাণ মামরিত হইয়া উঠিতেছে। স্প্রদৌধ মহানগরী দেন কোন সূদ্রে। এই প্রাচীন পরিতাক্ত উদ্যানে ঝরা-পাতার গর্মম রহস্তার্ককারে, ঝুরিনামা বটগাছের পুঞ্জীভূত গুরুতার অরুণ তাহার জীবন-কল্লেলময় বেদনাপূর্ণ পৃথিবীর মধ্যে একটি শান্তির আপ্রায় লাভ করে; এই নিভ্ত নির্জ্জনতায় তক্ষরেথাবেষ্টিত যে থণ্ডিত আকাশ দেখা গায়, সেই নীলকান্তপ্রেভ স্থনির্মল আকাশটুক্ তাহার নিজম্ব; এই আকাশের স্থ্যাদিয়, স্থ্যান্তে চুনি-পাল্লা-গলানো আলো, চক্রমার স্থগময় শুল্তা, তারালোকের অসীমতা, নীহারিকার জ্যোতির্ম্ম বস্তাধারা, এ আলোক অন্ধকার কেবল মাত্র তাহারই। এ শ্রামল বিজনতার আকাশটুকু তাহার একমাত্র সঙ্গী।

আজ কিন্তু সেই পরিচিত নীল যবনিকার নিঃসঙ্গতা রহিল না, নিভূত আশ্রায়ে নানা গানের সুর ভিড় করিয়া আসিল।

(ক্রমশঃ)

মহিলা-সংবাদ



ভীমতা কল্যাণী চত্ৰবৰ্ত্তা

শ্রীমতী কল্যাণা চক্রবর্ত্তী কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় হইতে গত এম্-এ পরীক্ষায় বাংলায় প্রথম স্থান অধিকার করিয়াছেন।

শ্রীমতী মিথোবাঈ এম্ চিন্নর বোষাই বিশ্ববিদ্যালয় হইতে ম্যাট্রকুলেশ্যন্ পরীক্ষার আঠার হাজার ছাত্র-ছাত্রী দর মধ্যে প্রথম স্থান অধিকার করিয়াছেন। তিনি ডক্টর দাদাভাই নওরোজী বৃত্তি পাইয়াছেন।

শ্রীমতী অমিয়া বন্দ্যোপাধ্যায় বিলাতে অরুফোর্ডে শিক্ষা সমাপ্ত করিয়া সম্প্রতি স্বদেশে ফিরিয়া আসিয়াছেন। গত বৎসর তিনি অরুফোর্ড হইতে শিক্ষা বিষয়ে ডিপ্লোমা প্রাপ্ত হইয়াছেন। শ্রীমতী অমিয়া কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়েরও একজন কতী ছাত্রী, তিনি এথান হইতে ইংরেজীতে এম্-এ পরীক্ষায় প্রথম শ্রেণীতে উত্তীর্ণ হন। তিনি সরকারী বৃত্তি লইয়া অরুফোর্ডে গমন করিষাছিলেন।



শীন হা মিংখাবাঈ এণ্ চিল্লয়



শ্ৰীমতী অমিয়া ৰন্দ্যোপাধ্যায়



বাংলা

বঙ্গীর-দাহিত্য-পরিষদ মন্দিরে চিত্র-প্রতিষ্ঠা---

সম্প্রতি বন্ধীয়-সাহিত্য-পদ্ধিবদ মন্দিল্লে ছই জন বাঙালী মনীযার চিত্র প্রতিন্তিত হইয়াছে। ইইয়ায় যথাক্রমে মনোমোহন গলোপাগায়, বি-ই, বিভারত্ব, এম্-আর-এ-এস, এবং রায় মুক্লদেব মুপোপাধায় বাহাছ্র। তার যহনাধ সরকার মহাশর চিত্র ছইথানি উল্মোচন করিয়া একটি নাতিদীর্থ বস্তুতা প্রদান করেন। মুক্লবাবুর সঙ্গে ভাষার সাক্ষাএ-পরিচয় থাকায় বক্তৃতার এই অংশটি বড়ই প্রদয়্মাহী হইয়াছিল। মুক্লবাবুর প্রসঙ্গে তিনি বলেন-

পুরুক্দদেব বেমন তাঁহার আকৃতির সৌনাদৃখ্যে তেমনি তাঁহার চরিত্রগুণে স্থাঁর ভূদেব মুপোপাধার মহাশরের স্মৃতি অতি উজ্জলভাবে আনিয়া দিতেন। তিনি পিতার সেই বুঢ়োরস্ক শালপ্রাংশু দেহ, সেই প্রশন্ত নির্মান ললাট, সেই সৌম্য সহাস বদন পাইয়াছিলেন। আর ভূদেববাবুর মতই ছিল তাঁহার ছির বুদ্ধি, আয়সংযম, গভীর সংসারজ্ঞান, নিজস্পে নিস্পৃহত!, লোকহিতপরারশতা। আমাদের মহাকবি ভারতের আদর্শ নূপত্তির বর্ণনার বলিরাছেন—

স্বস্থ-নিরভিলামঃ খিডাতে লোকহেতো প্রতিদিন্ম।

এই ছুটি ব্রাহ্মণ সন্তানের জাবনেও ঠিক সেই কথা সত্য প্রমাণ হুয়াছিল।

পিতাপুন ছু-জনের চরিনেই একাধারে নৈতিক দৃঢ়তা ও জীবের প্রতি
অগাধ দয়া মিলিত ছিল। তাহাদের হৃদয়ে করুণা আর চোপের
কোণে বিগুদ্ধ রুসজ্ঞান উঁকি মারিত। তাহারা সরকারী কর্ম উপলক্ষে
বঙ্গ ও বিহারের অনেক শহরে বাস করিয়াছিলেন, সর্পত্রই তাহাদের
অদ্যা ক্যায়পরায়ণ্ডা ও বিশ্বমানবগ্রীতির কথা লোকের মনে আছে।

মুকুশবাবুর সহিত আমার তিন পুরুষের পরিচয়। ভূদেববাবু আমার পিতার গুরুস্থানীয় ছিলেন, বন্ধু বলিলে অসঙ্গত হটবে, কারণ বাবা ভাহার চেরে ব্য়সে অনেক ছোট। ভূদেববাবু রেল-স্বিধা হইবার পূর্বে আমাদের ব্যালশাহীস্থ পৈত্রিক প্রামে একবার গিয়াছিলেন। আর, মুকুশবাবুর সঙ্গে আমি অনেক বৎসর পাটনায় ছিলাম, সর্ব্বনাই সাক্ষাৎ হইত। তিনি অবসর লইরা কাশী যাইবার পরও আমি সেবানে অনেক বার ভাহার অসিধামে গিয়া দেখা করি। এই সব স্ববোগে ভাহার নিকট ভূদেববাবু মাইকেল প্রভৃতির অনেক গল এবং মুকুশবাবুর নিক্ত জীবনের অনেক কাহিনী শুনি; এশুলি বেমন শিক্ষাপ্রদ ভেমনি মনোরম। ইহার করটি মাত্র ''সদালাপ'' ও ''ভূদেব-চিন্নভ'' প্রস্থে তিনি প্রকাশ করিয়াছেন, ভাহাও স্থানে হানে নাম বদলাইয়া।

শেষবার যথন উংহার নিকট যাই, তখন দেখি যে তিনি শ্ব্যাশারী, বাতে আক্রান্ত, হাত-পা ফ্লানেলের মোলা ও দান্তানা দিরা জড়াইঃ: ক্ট্ লাখবের চেপ্টায় আছেন। রোগটি অত্যন্ত কেশকর, উহোর তথন বয়মও গুব অধিক, কিন্তু বাাধি উহোকে জয় করিতে পারে নাই, শারীরিক ধন্তশীর মধ্যেও উহোর সেই পূর্বপরিচিত শাস্ত সরস বাণী ভিন্ন আর কিছুই শুনিলাম না; হাসিয়া আমাকে বিলায় নিলেন।



मूक्न तव मृत्यानामात्र

তিনি জীবনে অনেক অর্থ উপার্জন করিয়াছিলেন, কিন্তু ঠিক ভূদেব-বাবুর মতই, তাহা নিজ ভোগে বার না করিয়া নানাবিধ লোকহিতকর কাণ্যে দান করিতেন। একটি দৃষ্টান্তে তাহার চরিত্রের অসাধারণতা দেখাইতেছি—

সেবার পাটনার বিহার স্থাশানাল কলেজ অর্থাভাবে ডুব ডুব হইরাছে, উহা রক্ষার লগু সভা হইল, সব স্থাশানাল নেতারা লগা লগা বর্তৃতা করিলেন, কিন্তু পরসা দিলেন না। একমাত্র মুকুন্দবাবু কোম্পানীর কাগজ দান করিলেন, বলিলেন যে ইহা হইতে অন্ততঃ কিছু স্থায়ী আর হটবে!

মুকুন্দৰাবু জীবনে অনেক ছ:খ পাইয়াছিলেন। পুত্ৰ সোমদেব থাৰ্ড ইয়াৱে উঠিয়া অকালে মান্তা গেল। পুত্ৰ প্ৰতিমন্ত্ৰাম দেব আমান্ত কলেজে প্ৰথম হইত, সেও ডেপুটা পদ পাইন্তা, অসামান্ত নাম ও উন্নতি অৰ্জন কৰিবা, মহাযুদ্ধের পরবর্ত্তা সেই ভাষণ ইনফুকুগুঞ্লা রোগে হঠাৎ সকলকে ছাড়িয়া চলিয়া গেল।
মুকুন্দৰাবৃত্ত শেববরসে ব্যাধিতে পড়িলেন।
কিন্তু এই মহাপুকুবের বৈর্ণ্য ও ধর্মজ্ঞান
ভাহাকে এ-সব রোগশোক নীরবে সহ
করিতে সমর্থ করিয়াছিল। এমন হলয়বল
ভূদেব-পুত্রেরই সম্ভবে।

বঙ্গদাহিত্যে মুক্লদেৰের অনেক দান অচ্ছে, তাহা চিরদিনই আদৃত হইবে, কারণ তাহার মধ্যে অনেক মূল্যবান তথা নিহিত। "নেপালে ছত্রী," "সদালাপ" ও "ভূদেবচরিত" অনেকেই পড়িয়াছেন। তাহা ভিন্ন অনেক সত্য সদ্গপ্প তাহার মুথ হইতে শুনিবার প্যোগ অনামার হইয়াছিল।

মনোমোহন গঙ্গোপাধ্যায় মহাশন্ন বক্লীয়-সাহিত্য-পরিষদের একনিষ্ঠ সেবক ছিলেন। ১৩২৭-১৩৩১ সাল প্র্যান্ত তিনি ইহার চিত্রশালাধ্যক ছিলেন। প্রিষ্ণ-মন্দিরের



কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ের প্রতিষ্ঠা-উৎসবে ভাইস-চ্যান্সেলার শ্রীযুক্ত খামাপ্রসাদ মুখোপাধ্যায় ও অস্তাক্ত কর্মিগণ। ইংরো শোভাষাতার পুরোভাগে ছিলেন।

মনোমোহন গঙ্গোপাধ্যায়

বে-অংশে চিত্রশালা আছে তাহা শ্বমেশ-ভবন নামে পক্লিচিত।
এই রমেশ-ভবনের পরিকল্পনা গঙ্গোপাধ্যার মহাশল্পের। তিনি
একাধারে প্রত্নতাত্ত্বিক ও স্পাহিত্যিক ছিলেন। ভাস্কর্যা বিব্য়েও
তাহার অগাধ পাণ্ডিত্য ছিল। তাহার পুতকাবলাই ইহার
প্রমাণ। "Orissa and Her Romains," "Vivekananda—
a study," "Handbook to the Sculptures in the Museum
of the Bangiya Sahitya Parishad" প্রভৃতি করেক্থানি পুতক

তিনি লিগিয়াছেন। ইহা ছাড়া দক্ষিণ-ভারতীয় মূর্ত্তিত্ব সম্বন্ধেও অনেক তথ্য সংগ্রহ করিয়াছিলেন। বিগত ১০০০ সালে গঙ্গোপাধাায় মহাশয় পরলোকগ্যান করেন।

কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রতিষ্ঠা-দিবদ-

কলিকাতা বিশ্ববিভালের ৮০% সনের জাত্মারা মাসে প্রতিষ্ঠিত হর। গত ২৪এ জাত্মারী ইহার প্রতিষ্ঠা-উৎসব সম্পান হইরাছে। কলিকাতা বিশ্বিভালারের ভাইস্-চান্সেলার শাসুক্ত গুণাপ্রসাদ মুখোপাধারে ইহার অক্সতম প্রধান উভোগী ছিলেন। কলিকাতার কলেজগুলির বহু ছাত্র-ছাত্রা এই উৎসবে যোগদান করেন। শ্রেসিডেন্সী কলেজ প্রান্ধণ হইতে ছাত্র-ছাত্রাদের একটি দীঘ শোভাষাত্রাও বাহির হইরাছিল।

কলিকাতা মেডিক্যাল কলেজ শতবাৰ্ষিকী-

কলিকাতা মেডিক্যাল কলেজ শতৰাধিকীও সম্প্ৰতি হইৰা গিয়াছে। ইহা লৰ্ড উইলিয়ন বেণ্টিফ্বের আমলে ১৮০৫, ২৮এ জানুয়ারী প্ৰতিন্তিত হয়। শতৰাধিক।র শৃতিরক্ষার জম্ভ মেডিন্যাল কলেজের হাসপাতালের একটি নৃত্ন ওয়াত নির্মাণের ব্যবস্থা হইরাছে। এই উপলক্ষ্যে চিকিৎসার যত্রপাতি, উবধপত্র প্রভৃতিরও একটি প্রদর্শনী হইয়াছিল।

শিক্ষাকার্য্যে দান—

চিক্কশ-পরগণার অন্তর্গত গোবিনপুর-নিবাসী ^{কা}যুত কালীচরণ করাল গোবিন্দপুর উচ্চ ইংরেজী বিদ্যালয়ে যাট হাজার টাকা মৃদ্যোর প্রায় তিন শত পটিশ বিশা জমি দান ক্লিয়াছেন। তিনি আরও দশ হাজার টাকায় বিদ্যালয়ের গৃহ নির্দ্মাণ করিয়া দিয়াছেন। তাহার প্রদন্ত জমি হইতে বার্ষিক আর হইবে আমুমানিক আড়াই হাজার টাকা। কালীচরণবাবুর দান সকল অর্থশালী বান্ডির অফুকরণীয়।

অর্থ নৈতিক-প্রসঙ্গ

লাকাশার'র ও ভারতীয় কার্পাস-

ইংলওে একটি সমিতি আছে, তাহার নাম ''লাফাশায়ার ভারতীয় কার্পাদ কমিটি"। ইহার সভাপতি সার বিচার্ড জ্যাক্সন। তিনি গত বংসর ভারতীয় কার্পাস সম্পর্কে প্রভাক জান লাভের জন্ম এদেশে আসিয়া-ছিলেন। সম্প্রতি এই কমিটির প্রথম বার্ষিক বিবৃতি প্রচারিত হইয়াছে। ইহাতে প্ৰকা**শ** যে এই কমিটি স্থাপিত হইবা<mark>র পর</mark> ইংলও কর্ত্তক ভারতীয় কার্পাসক্রয় দিওণ মাত্রা বাড়িয়াছে। সমগ্র লাক্ষাশায়ারের কলসমূহে ভারতীয় কার্পাদের প্রচলন করাই এই কমিটির প্রধান উক্ষেপ্ত | যে সকল কল পুনের কথনও ভারতায় কার্পাস ক্রয় করে নাই, এখন তাহারা ভারতার কাপাস বাবহার করিয়া ভাল ফল পাইতেছে। চাহিদামত উপযুক্ত পরিমাণে ভাল কার্পাস যাহাতে সরবরাহ হয় ভারতে সে চেষ্টা হওয়া প্রয়োজন। ইতিপূর্বে জাপানই ভারতের বড় থরিদ্দার ছিল কিন্তু এখন জাপান ভারতীয় অপেকা মিশরীয় ও আমেরিকার কার্পাসই বেশী কর করে। ওদিকে লাঞ্চাশায়ার প্রধানতঃ আমেরিকার কার্পাদের উপরই বস্তুশিল্প গড়িয়া তুলিয়াছিল কিন্তু অটোয়া চুক্তির ফলে অবস্থার পরিবর্তন ঘটিরাছে। লাক্ষাশায়ারে ভারতীয় কার্পানের চাহিদা বাড়িয়াছে। ভারতেও ব্রদেশীয় শিল্পের পরই লাগাশায়ারের শিগ্পের চাহিদা হওয়া উচিত।

লাগগোয়ারে ভারতীয় কার্পাদের চাহিদা ঘাহাতে বাড়ে এই জন্ম ভিনটি বিষয়ে বিশেষ লক্ষ্য রাখা উচিত। প্রথম লাগালায়র-ভারতীয় বাপিজ্য ঘাহাতে অব্যাহত গাকে এরপ ব্যবস্থার প্রয়োজন, দিতীয়তঃ ইংলভের বাজারে ভারতায় কার্পাদের নিয়মিত সর্বরাহ ও তৃতায়তঃ ভারতীয় বাজারে লাগালায়ারের ব্যের চাহিনা বৃদ্ধি। ভারতীয় তুলা যে সকল কল বন্ধ প্রস্তুত করে ভাহার তালিকা প্রস্তুত আছে।

ভারতীর কার্পাস সম্পর্কে টেক্নিকাল অনুসন্ধান জন্ম কমিটি উপদেষ্ট'-সভা গঠন করিয়াছেন, সিলে ইনস্টিটিউটের সহায়তায় এরূপ অনুসন্ধান হইয়াছে। এই সভার অনুরোধে গড় ১১০৪ জানুয়ারী নাসে একটি প্রদর্শনা হইয়াছে। ইহার কল অতীব সন্তোধজনক।

কমিটা আরও বলেন যে কেবল কার্পানের উৎকর্গ সাধিত হইলেই চলিবে না, নিয়মিতভাবে সরবরাহ আবশ্যক। ইতিপূর্নে প্রশানতঃ মূল্য সম্পর্কেই প্রতিযোগিতা চলিতে ছল। কম মূল্য ছিল সকলেরই লক্ষা স্তরাং নানা বিভিন্ন শ্রেণীর কার্পাস মিশ্রিত হইত। ফলে ফুলার উৎকর্ম সম্পর্কে কেহই নিঃসন্দিহান হইতে পারিতেন না!

সামাজ্যের ভিতর যে বাপিলা আমুক্লা নাতি বন্ধান সময়ে চলিতেছে দে সম্পক্তি কমিটা বলেন যে বিশ্বনাপী অর্থ সফটে এরপ ব্যবস্থা সমাচীন। রাজনীতিক বা সামাজ্য-প্রীতির কথা ছাড়িয়া দিলেও এই ব্যবস্থাই যে ভারত ও ইংলগ্ডের পক্তে নিরাপদ। সোভাগাবলতঃ ব্রিটিশ সামাজ্য এত বিষ্তুত ও এরপ প্রাকৃতিক সম্পদে পূর্ণ যে বামিরের সহায়তা ভিন্নও ইহা স্বরং নিজকে স্বপ্রতিক করিতে পারে। সামাজ্যের প্রত্যেক অংশ আদান প্রদানের চুলচেরা ভাগ করিতে বসিলে ব্যাপার কঠিন হইবে। যতটুকু নিব ঠিক ততটুকু চাই—সম্পত্র এই দাবি হইলে বথেষ্ট উপকার পাওরা যাইবে না ' অংশীদার-গণের পরস্পরের প্রতি জান্বা ও বংগিতাগের আকাঝা থাকা প্রগোজন। কেই কেই এরপ কথাও বলেন যে লাকাশায়ার ভারতে যে বালার হারাইরাছে তাহা উপযুক্ত পরিমানে ফিরিরা না পাইলে ভারতীর কাপিদ সম্পর্কে সহযোগীতা করা লাকাশারায়ের পক্ষে উচিত নহে।

কিন্তু কমিটী মনে করেন যে অপর পক্ষও অনুরূপ ব্যবস্থা করিবেন এই বিখাসেই পারস্পরিক বার্ণিক্সা পরিচালিত ২ওয়া কর্ত্তব্য । ভারতবর্ণ হইতে তাহার। উৎসাহ পাইবেন এ বিখাস কমিটীর আছে।

ইঙ্গ-ভারত চক্তি---

এই বিবৃতি ভারতে প্রচারিত হইবার অপ্পদিন পরেই রাষ্ট্রীয় পরিষদে ''ইঙ্গ-ভারত বাণিকা চুক্তি" সম্পর্কে আলোচনা ইইয়াছে। মতাধিক্যে পরিষদ ইহা অগ্রাহা করিয়াছেন; পরিষদের এই মত প্রকাশের ফলে ইঙ্গ-ভারত চুক্তি যে বাতিল হইল তাহা নহে।

এদিকে ইংলওে কমন্য সভার ভারতীয় সংস্কার সম্পর্কে বিতর্কে মিঃ এদ এদ্ হামাদ লৈ বলেদ যে রাজনৈতিক নমনোভাবাপন্ন ভারতীয়গণ লাকাশায়ারকে সন্দেহের চক্ষে দেখিলা থাকেন। ভারতীয় শাসন্যস্তর চাকা লক্ষাশায়ারে স্বার্থের জঞ্চই মৃরে এ ধারণা ভূল ! পরিষদের সিদ্ধান্ত নৈরাগুজনক কিন্তু লাক্ষাশায়ার মনে করে যে চৃতির মৃতিন্তুকতার উপর পরিষদের এই বিক্ল মত প্রকাশ হয় নাই, ভারতসরকার ভারতীয় ব্যক্ষিতবাদকে উপেকা করিরাছেন এই ধারণায়ই এরাপ দিলান্ত ইইয়াছে। যাহাই ইউক লাক্ষাশায়ার বর্ত্তমান নীতি ত্যাগ করিবনে না।

মিঃ এদ এদ হামাদ লের প্রথের উত্তরে ভারত-দটিব স্থর দামুঞ্জ হোর কমন্দ-দভায় ঘোষণ। করিয়াছেন যে পরিষদের দিলান্ত ভারত-দরকার প্রথণ করিবেন না। এই দিলান্তে চুক্তির বৈধতা কুল হয় নাই, নীতিরও পরিবর্জন হইবে না।



মহাতা গান্ধী

কৃষ্ণভাবিনী নার্হী-শিক্ষা মন্দিরের ছাত্রী শ্রীমতী মলিনীবালা রাষ কর্ত্তক সুচীশিল হইতে।



Some lower think has the Charles had Downter nik Dis Base স্ধাত্মাত্ত চকুৰতী, সোপালচক্ৰ শীল, ভোলানাথ বহু, ছাত্ৰিকানাথ দাস ব্যূ

(১৯২৯ সনের জান্টাবর মাসের মডার্শ বিভিন্নতে প্রথম প্রকাশিত)

কলিকাতা বিশ্ববিভালয় প্রতিষ্ঠা-দিবস



ছাত্ৰীদের শোভাষাত্ৰা—একাংশ





শোভাষত্রোর পূর্বে—শ্রীভক্তকুমার ঘোষ কর্তৃক গৃহাত ফটোগ্রাফ





ছাত্ৰ-বাদক বাহিনী

অর্কোদয় যোগ





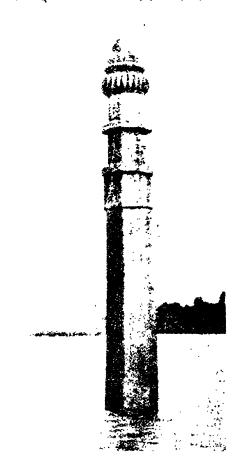
বঙ্গে অন্টম শতাব্দীতে নৃপতি-নির্ব্বাচন

দিনাজপুর জেলার দিবর গ্রামের "দিব্য" দীখির গর্ভে প্রতিষ্ঠিত একটি স্তম্ভ আছে। উহা মহারাজ দিবা বা দিকোক কর্ত্বক নিম্মিত জয়স্তম্ভ বলিয়া অনেকে বিশ্বাস করেন। উহার একটি চিত্র ঐতিহাসিক অক্ষয়কুমার মৈত্রেয় মহাশয় "গৌড় রাজমালা" গ্রন্থে নিবিষ্ট করিয়াছিলেন। তাঁহার মতে উহা দিব্যের জয়স্তম্ভ। এই সিন্ধাস্ত সর্ব্ববাদিসন্মত না হইলেও অনেকেই ইহা গ্রহণ করিয়াছেন।

গত ২৬শে মাব এই দীবির নিকট মহারাজ দিবোর সিংহাদন-আরোহণ দিবদের স্মৃতি-উৎসব হইয়া গিয়াছে। দভার সভাপতিত্ব করিয়াছিলেন, প্রভুত্ববিৎ রায় বাহাছ্র রমাপ্রাদা চলা। তাঁহার অভিভাষণে তিনি দিব্যের বিষয় বির্ত করিবার পূর্বে, খ্রীষ্টীয় অষ্টম শতাব্দীতে বাংলা দেশে বে গোপাল দেব প্রজাদের ছারা নৃপতি নির্বাচিত হইয়াছিলেন, তাঁহার সম্বন্ধে কিছু ঐতিহাদিক তংবের আলোচনা করিয়াছেন; বলিয়াছেনঃ—

আমাদের দেশে মহাস্থা, মহাজন, মহাপুক্ষ বলিতে আধাাত্মিক সাধনায় সিদ্ধা পুরুষই বুঝায়। কিন্তু ঐহিক জগতে বাধাবিত্র অতিএম করিয়া প্রকৃত মহৎকাণ্য সাধন করিতে হইলেও সংঘমের সহিত সাধনার আব্যাক। এইরূপ ঐহিক সাধনায় সিদ্ধপুরুষও মহাপুরুষরূপে গণনীয়। পাশ্চাত্য শিক্ষার প্রভাবে আমরা এইরূপ মহাপুরুষদিগকে পুষ্ধা করিতে শিথিয়াছি। ভারতবর্ণের রাষ্ট্রীয় ইতিহাস রাজার এবং রাজপুরুষগণের লীলাক্ষেত্র। এই সকল রাজ! এবং রাজপুরুষের মধ্যে মহান্ উদ্দেশ্য সাধনের জান্ত সাধনরত, এবং সাধনায় যথা-সম্ভব সিদ্ধ, মহাপুরুষের অভাব নাই। কিন্তু আদে বেডছায় নছে, জনদাধারণের ভারা আহত বা নির্বাচিত হইয়া, রাষ্ট্রীয়দাধন-সমরে অবতীৰ্ণ হইলা বাহালা সিদ্ধিলাভ ক্রিয়া গিলাছেন, এইরূপ মহাপুক্ষের দুষ্টাস্ত ভারতবর্ধের রাষ্ট্রীয় ইতিহাসে স্থলভ নহে। সৌভাগাক্রনে বাঙ্গলার প্রাচান ইতিহাসে এইরূপ ছুই জন মহাপুরুষের সাক্ষাৎ পাওরা যায়। এই ছুই জনের মধে: এক জন, পাল-রাজবংশের প্রথম রাজা গোপালদেব, বিনি খ্রীষ্টীয় অন্তম শতাকীর শেষভাগে জনসাধারণ কর্ত্তক অরাজকতা নিবারণের জম্ম রাজপদে প্রতিষ্টিত হইরাছিলেন ; বিভীয়,

গ্ৰীষ্টায় একাদশ শতাব্দীর শেষাকে সংশটিত রাষ্ট্রবিপ্লবের নায়ক দিব্য-গাহার খৃতির পূজার জম্ম আজ আমর: মিলিত হইয়াছি।



মহারাজ দিব্যের জয়স্তস্ত

পাল-রাজবংশের প্রথম রাজা গোপাল দেবের প্রেও উত্তরাধিকারী ধর্মপাল দেবের তামশাসনের একটি শ্লোকে আছে:—

''নাৎস্ঞানমাণাহিতুং প্রকৃতিভির্লন্যাঃ করং গ্রাহিতঃ শীগোপাল-ইতি কিতীশ্লিরসাংচ্ডামণিস্তংহতঃ।'' ''তাহার (বপাটের) পুত বুপতিগণের চূড়ামণি প্রাণাপাল। মাৎস্তন্তার অর্থাৎ অরাজকতা দূর করিবার জন্ত প্রকৃতিপুঞ্জ তাঁহার অর্থাৎ গোপালের করে রাজলন্দীকে অর্পণ করিয়াছিলেন।"

রমাপ্রসাদবাবু তাঁহার অভিভাষণে দেখাইয়াছেন, যে,
"গোপালের নির্বাচনের কাল ধুব সন্তব গ্রীষ্টার অষ্টম শতাব্দের শেষভাগ" এবং নির্বাচন আদে বর্তমান মালদহ দিনাজপুর রাজশাহী বঞ্ডা
ও পাবনা জিলার সমষ্ট প্রাচীন বরেক্রীতে হইরাছিল। 'কিন্ত বাজলার
অন্তাক্ত প্রদেশেরও এই নির্বাচনে সম্মতি থাকা সন্তব * * * গোপালের
নির্বাচনের সময়ে বাজলার অপরাপর অংশের, বিশেষতঃ রাচের,
অধিবাসিগণ বারেক্রগণের সহিত মিলিত হইয়া এই মহৎ কার্যা
সম্পাদন করিরাছিল এইরূপ অনুমান অস্ক্রত নহে।"

গোপালের অসাধারণ রণনৈপুণ্য, বিনয় এবং রাষ্ট্রকে শাস্তিমুথ দান ও রাষ্ট্রের কল্যাণসাধনের ক্ষমতা ছিল। "ভারতবর্ধের ইতিহাসে এই মহাপুরুষের তুলনা পাওয়া যায় না।"

বঙ্গে স্পতি-নির্বাচন মুসলমান রাজত্বকালেও একবার হইয়াছিল।

''পোজা রাজা মজঃকর সাহের অত্যাচারে উৎপীড়িত হিন্দু
মুসলমান নায়কগণ একত্র মিলিত হইয়া তাহাকে মৃদ্ধে পরাজিত ও নিহত
করেন এবং এই বিদ্যোহের নায়ক মজঃকরের উজীর আলাউদ্দিন হোসেন
সাহ নামক এক গোগ্য ব্যক্তিকে সকলে মিলিয়া রাজা নির্কাচিত করেন।''
(ডাঃ রমেশচক্র মজুমদার প্রণীত ৫ম। ৬৪ মানের পাঠ্য ভারতের
ইতিহাস, ৮৭ পূচা ও ম্যাট্রিক পাঠ্য ভারতবর্ধের সংক্রিপ্ত ইতিহাস, ১৩৭
পূচা ১৯৩০ অকে প্রকাশিত);

মহারাজ দিব্য

রমাপ্রদাদ বাবু তাঁহার অভিভাষণে সন্ধ্যাকর নন্দী বিরচিত "রামচরিত" এবং কোন কোন তামশাসনের বিচার করিয়া মহারাঞ্জ দিবা সম্বন্ধে ঐতিহাসিক তথ্য উদ্ধার করিয়াছেন।

"প্রকৃতিপুঞ্জকর্ত্ক গোপালের রাজপদে প্রতিষ্ঠার প্রায় তিন শত বংসর পরে বাঙ্গলায় আর একটি আশ্চযা ঘটনা, রাষ্ট্রবিপ্লব, ঘটিয়াছিল। এই রাষ্ট্রবিপ্লবের অনস্তমামস্তচক্রের নির্ব্বাচিত নামক ছিলেন দিব্য বা দিব্যোক।"

বি:দ্রোহ হইরাছিল মহারাজ দ্বিতীয় মহীপালের বিরুদ্ধে—শেহতু তিনি অত্যাচারী ও গুর্নীতিপরায়ণ ছিলেন।

''গৌড়েখর ছিতীয় মহীপাল সন্দেহের বলে কনিষ্ঠ আত্ত্বর, স্বপাল এবং রামপালকে, লোহার শৃখলে বদ্ধ করিয়া কারাগারে নিকেপ করিয়াছিলেন। বিপ্লবের অপর কারণ অরূপ কবি বলিয়াছিলেন,

মহীপাল 'অনীতিকারন্তরত,' অর্থাৎ নীতিবিক্লন্ধ কার্য্যে রত, এবং 'ভূতনরা নাণ্যুক্ত,' অর্থাৎ সত্যের এবং নীতির মর্যাদা লজননকারীছিলেন। দিন্তার বিদ্রোহ করিবার প্রবৃত্তি ছিল না; ঘটনাচক্রে অব্প্রকর্ধবা বলিরা তিনি রাজনোছ করিতে বাধ্য হইরাছিলেন। দিব্য উচ্চাভিলাবের বলবর্তী হইরা বরেক্রী অধিকার করেন নাই, উপায়ান্তর না থাকার রাজপদ স্বীকার করিতে বাধ্য হইরাছিলেন। ভও তপস্বী হওরা দোবের কথা, কিন্তু ভঙ বিজ্ঞোহী, অর্থাৎ যে সাধ করিরা বিদ্রোহ করে না, কঠোর কর্ভবার অমুরোধে বিজ্ঞোহ করে, সে মহৎ বাজি। এই বিজ্ঞোহ কোন জাতিবিশেবের মধ্যে নিবন্ধ ছিল না। ইং। সার্বজনীন বিজ্ঞোহ বা রাট্রবিপ্রব।''

় রমাপ্রসাদ বাবু প্রত্নতত্ত্ববিদ্ ঐতিহাসিক। রাষ্ট্রনৈতিক নেতৃত্ব ও আন্দোলন তিনি করেন না, তাহা তাঁহার কাল নয়। এই কারণেই তাঁহার অভিভাষণের শেষে তিনি গাহা বলিয়াছিলেন, তাহার প্রণিধানগোগ্যতা বাড়িয়াছে। তিনি বলিয়াছেন:—

"মিলিত অনস্ত সামস্তচক নির্নাচিত গোপাল দেব এবং দিবা জাতিবর্ণের অতীত মহাপুরুষ ছিলেন। সেকালের সামস্তচকের ছলবর্ত্তা বর্ত্তমান জননারকগণ। গোপাল দেব আবিভূত হইয়াছিলেন সার্দ্ধ একাদশ শত বৎসর পূর্বের এবং দিবা আবিভূত হইয়াছিলেন সার্দ্ধ আট শত বংসর পূর্বের এবং দিবা আবিভূত হইয়াছিলেন সার্দ্ধ আট শত বংসর পূর্বের। এই স্থনি কালের মধ্যে দেশের অবস্তার জনেক পরিবর্ত্তন ঘটিয়াছে। সর্ব্বাপেক্ষা প্রধান পরিবর্ত্তন আমাদের রাষ্ট্রীয় জীবনের ভিত্তি পর্প্তীসমাজ, ধাহা মুসলমানগণকেও আপনার করিয়া ভাই চাচা, নানায় পরিণত করিয়াছিল, তাহা প্রাণ হারাইয়াছে, এবং পরীসমাজের প্রাণ্ড্রপ্ত দেহ এখন আবার থণ্ডে বংগু বিশুক্ত হইতে আরম্ভ হইয়াছে। আমাদের রাষ্ট্রনীতির বর্ত্তমান লক্ষ্য স্বাধীনতা, কিন্তু প্রাণ্ডিনতা চরম লক্ষ্য (ond) নহে চরম লক্ষ্যে পাইছিবার পথ (moans) মাত্র। রাষ্ট্রনীতির চরম লক্ষ্য, সার্বাজনীন কল্যাণ, সার্বাজনীন ক্রমান ক্রম

"এই লক্ষ্যে পৃথছতে হইলে সেকালেও গে উপার অবলম্বন করিতে হইত, এপনও তডিয় উপায়াস্তর নাই। সেই উপায় অনস্তদামস্তচক্রের নিলন: সকল জনসেবকের ঐক্য। এরপ একঃ বর্তমানে অসাধ্য মনে হয়। যে ছই জন মহাপুরুষ বিশেষ বিপদকালে এদেশ অনস্তদামস্তচক্রের মঙ্গলময় ঐক্যের স্থমতি উদ্বোধিত করিয়াছিলেন, তাহাদের চরিতকথা আমাদের মুরনীয়, মাননীয় এবং কার্তনীয়। এইরূপ মুরণ, মনন, কার্ত্তন আমাদের মনে ঐক্যের হমতি উম্বোধনের সহায়তা করিতে পারে। ইহাই দিবাম্মুতি-উৎসবের সার্থকতা। আর এক কারণেও এই উৎসব বড় সময়োপযোগী হইয়াছে। ভাহাকে আরালা আজ আয়নির্ভর এবং আয়য়য়য়ালা হায়াইয়াছে। ভাহাকে আরার দেশের দিকে ফ্রিয়াইয়া আনার ইহা অপেক্ষা উৎকৃষ্ট উপায়

স্থভাষ বাবুর পুস্তক ভারতে নিষিদ্ধ

শ্রীযুক্ত সুভাষচক্র বস্থ ইউরোপে থাকিবার সময়ে ভারতবর্ষের আধুনিক স্বাধীনতালাভ-প্রায়াস সম্বন্ধে একথানি পুস্তক লেখেন। তাহারই একটি টাইপলিপি

করাচীতে পুলিস অধিকার করে ও
তাহা গবন্দেণ্ট কর্ত্তক পরে বাজেরাপ্ত
হয়। অন্ত প্রতিনিপি তাঁহার বিলাতী
প্রকাশকদের নিকট ছিল। তাঁহারা
তাহা প্রকাশ করিয়াছেন। অবিলম্বে
ভারত-সরকার তাহার বা ভাহার
কোন অংশের বা কোন অন্তবাদের
ভারতে আনয়ন বা প্রকাশ নিষেধ
করিয়া দিয়াছেন। সাঙালগাঁও সাহেবের
"ইণ্ডিয়া ইন্বভেজে"র ভারতীয় মুদ্দক
ও প্রকাশককে ফৌজদারী সোপর্দ্দ করিয়া শান্তি দেওয়া হইয়াছিল।
তথন ভনিয়াছিলাম, এবং আগে ও

পরেও অনেক বার শুনিয়াছি, যে, রাজদ্রোহবিষয়ক আইন না কি ইংলণ্ডে ও ভারতে একই। হইতে পারে। তবে,



শীযুক্ত হভাষচত্ত্ৰ বহু ও শীযুক্ত বমুনাদাস মেহত!

বস্তত: দেখিতেছি, স্থভাব বাব্র পুস্তকের বিশাতী মুদ্দক ও প্রকাশক কৌদ্দারী দোপদ্ধ ও দণ্ডিত হন নাই; কেন-না, মাকড় মারিলে ধোকড় হয়। আমরা তাঁহাদের শান্তি চাহিতেছিও না। বরং ইহা ভাল মনে করি, বে, অস্ততঃ



শ্ৰীযুক্ত স্বভাষচক্ৰ ৰহ ও ৰোখাইয়েশ্বৰন্ধু ৰৰ্গ

ইংলণ্ডেও ভারতবর্ধ সম্বন্ধে মতামত প্রকাশের স্বাধীনতা থাকা ভালই। সভায বাব্র পুস্তকটি ভারতবর্ধে নিষিদ্ধ হওয়ায় এক হিসাবে উহার প্রচারের পক্ষে স্থবিধা হইয়াছে; ইংলণ্ডে, ইউরোপে ও আমেরিকায় উহার সম্বন্ধে কৌতুহল বাড়িয়াছে। তাহাতে উহার কাটতি বাড়িয়াছে এবং বেণী লোকে উহা প্রতিতেছে।

স্থভাষ বাবুর পুনর্বার ইউরোপ যাত্র।

পুভাষ বাবু চিকিৎদার্থ আবার ইউরোপ গিয়াছেন।

তিনি স্বস্থ হইয়া দেশে প্রত্যাবর্তন পূর্বক দেশহিতকর
কার্যে তীবন উৎদর্গ করিলে তাহা শুভদলদায়ক হইবে।

পণ্ডিত রাজেন্দ্রনাথ বিদ্যাভূষণ

কানী হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয়ের বাংলার অধ্যাপক পণ্ডিত রাজেন্দ্রনাগ বিশ্বাভূষণ মহাশরের মৃত্যুতে বঙ্গের বাহিরে বাংলা ভাষা ও সাহিত্যের অনুশীলনের এক জন প্রধান প্রযত্ত্বকর্ত্তার তিরোভাব ঘটিল। তিনি প্রবাসী-বৃঙ্গসাহিত্য-সম্মেলনের এক জন প্রধান সহায়ক ছিলেন। কলিকাতায় থাকিতে তিনি সংস্কৃত কলেজের অন্ততম অধ্যাপক রূপে এবং কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ের অন্ততম শিক্ষক রূপে শিক্ষাক্ষেত্রে ও সাহিত্যক্ষেত্রে ক্ষিষ্ঠতার পরিচয় দিয়াছিলেন। পরে পেন্স্যন শইয়া কাশীবাসী হইয়াও তিনি অলস হন নাই।
কাশী বিশ্ববিজ্ঞালয়ে কাজ লইয়া তিনি বঙ্গভাষা ও সাহিত্যের
শিক্ষাদানে আয়নিয়োগ করিয়াছিলেন। তিনি রাজ্ঞণ
ছিলেন এবং পণ্ডিতও ছিলেন। কিন্তু "রাজ্ঞণপণ্ডিত" বলিলে
থেরপ যুক্তিবিমুখ অন্ধ গোঁড়ামির সমর্থক অনেক ক্ষেত্রে
বুঝার, তিনি সেরপ ছিলেন না। তিনি বিধবা-বিধাহের

পণ্ডিত রাজেন্সনাথ বিদ্যাভূষণ

সমর্থন করিতেন, পণপ্রথা নিবারণের চেটা করিয়াছিলেন, বাল্যবিবাহনিষেধক শারদা-আইনের সমর্থনকল্পে সীতা-সাবিত্রী প্রভৃতি পুজনীয়া নারীগণের বিবাহের বয়স দক্ষভার সহিত আলোচনা করিয়াছিলেন, এবং সামাজিক ত্নীতির বিরোধী ছিলেন। তাঁহার উপস্থিতবাগিতা স্বিদিত ছিল। সদালাপে ও আগ্যায়নে তাঁহার দক্ষতার ক্ষন্ত তিনি লোকপ্রিয় ছিলেন। কালিদাস, ভবভূতি প্রভৃতি সম্বন্ধে বাংলা বহি লিখিয়া তিনি যশস্বী হইয়াছিলেন।

শ্ৰীমতী হালিদে এদীব্ হানুম

ভূরত্বের প্রাসিদ্ধ শেধিকা ও স্বজাতির স্বাধীনতা-প্রচেষ্টার অন্তত্তম নেত্রী ভারতবর্ষে আসিয়া নানা স্থানে



শীমতী হালিদে এদীৰ হানুম ও শীমতা কমলা চট্টোপাধ্যায়

বক্ততা করিতেছেন। তাঁহার জীবন আয়োৎসর্গ ও ছথেবরণের দৃষ্টান্তে পূর্ণ। কলিকাতা বিশ্ববিচ্ছালয়েও তাঁহার বক্তৃতা হই ব। সম্ভবতঃ এখানকার ভারতীয় মহিলারা তাঁহার সহিত্ত সাক্ষাৎ করিয়া তাঁহার সম্বর্জনা করিবেন।

ব্যবস্থাপক সভায় জয়পরাজয়

মত নৃত্ন আইন ইহারা করেন, প্রাতন আইনের সংশোধন করেন, এবিধি কাজ। ইত্যাকার কাজ করিতে গিয়া ব্যবস্থাপক সভায় ইহাদের পরাজয় হইলে, অর্থাৎ যত প্রতিনিধি ইহাদের বিরুদ্ধে ভার চেয়ে বেলী লোক ভোট দিলে, ইহারা পদত্যাগ করেন। তথন নৃত্ন প্রতিনিধিনির্কাচন দারা বা অন্ত প্রকারে নৃত্ন মন্ত্রীম গুল ও "গবলেণ্ট" গঠিত হয়।

এই প্রকারে প্রজাদের প্রতিনিধি-দিগের দ্বারা যে সব দেশের রাষ্ট্রীয় কার্য্য নির্মাহিত হয় তথাকার ব্যবস্থাপক সভায় জয়পরাজয়ের সদ্য সদ্য একটা ফল ফলে। আমাদের দেশের ব্যবস্থাপক সভায় জন্মপরাজয়ে এরূপ কিছু ঘটে না, ঘটতে পারে না। ইংরেজ জাতি ভারতেরপ্রভু। তাহারা, ইংশও হইতে শাসনকর্তা পাঠায়। সেই কর্তারা "গ্রন্মেণ্ট"। ব্যবস্থাপক সভার ভোটে এই "গ্ৰন্ম টেকে" যতবারই পরাজিত कत्र ना, देशदाह गवत्त्र ले थाकित्व, জম্মী ভারতীয় প্রতিনিধিরা মন্ত্রীমণ্ডল গঠন করিয়া "গবনোণ্ট" পারিবে না। সুতরাং হইতে ভারতীয় ব্যবস্থাপক সভায় জয়পরাজয়ে

ইংরেজদের কিছু আসে যায় না। গবনেণ্ট পক্ষ পরাজিত হইরাছে বলিয়া যে শরৎ চক্র বস্তুর মুক্তি হইবে, কিংবা তথাকথিত ভারত-ত্রিটেন বাণিজ্য-চুক্তি নাকচ হইবে, তাহার বিন্দুমাত্রও আশা নাই। মি: মোহদ্মদ-আলী জিল্লার সংশোধক প্রস্তাবের শেষ হই অংশ অধিকাংশ ভোটদাতার ভোট অনুসারে গৃহীত হইরাছে বলিয়া বে বিলাজী গবনেণ্ট দেশী রাজ্যগুলির সহিত কেডারেশ্রন ভ্যাগ করিয়া কেবল ব্রিটিশ ভারতের জন্তই নুতন শাসনবিধি



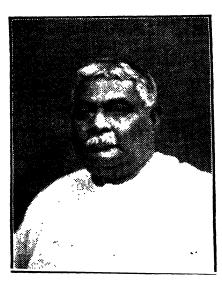
স্থার আৰহ্ন হুহিম

প্রণায়ন করিবেন বা ত্রিটিশ ভারতীয় প্রাদেশগুলির লোক-দিগকে সভ্যকার রাষ্ট্রীয় ক্ষমতা কিছু দিবেন, এরপ মনে করা ছুরাশা মাত্র।

তবে, মি: কিয়ার সংশোধক প্রস্তাবের প্রথম অংশ গৃহীত হওয়ায় কুফল ফলিবে। তাহা গৃহীত না হইলেও প্রধান মন্ত্রীর সাম্প্রদায়িক বাটোয়ারার কোন পরিবর্তন হইত না, এখনও ভালর দিকে পরিবর্তন হইবে না। কিছ এখন এই কুফল হইল, যে, ইংরেজরা ইহা বলিবার স্ববোগ পাইল, যে, ভারতবর্ষের লোকের। বাঁটোয়ারাটা গ্রহণ করিয়াছে। কংগ্রেস পালে নেটারী দলের "না-গ্রহণ না-বর্জন" নীতির এই ব্যাখ্যা বিলাতের সরকারী লোকেরা করিয়াছে, যে, কংগ্রেস বাটোয়ারাটা মানিঃ। লইয়াছে, উহাতে সায় দিয়াছে। এই ব্যাখ্যাটা এখন জোর পাইল।

ভারতীয় ব্যবস্থাপক সভার সভাপতি ও ডেপুটী সভাপতি

্ ভারে আবহর রহিম ভারতীয় বাবস্থাপক সভার সভাপতি ও গ্রীযুক্ত অথিশচন্দ্র দত্ত তাহার ডেপুটী সভাপতি

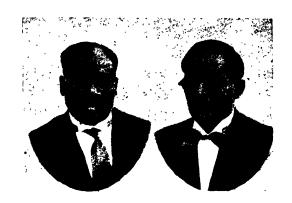


শীযুক্ত অখিলচন্দ্র দত্ত

নির্বাচিত হইয়াছেন। উভয়েই যোগ্য ব্যক্তি। স্থার আবহুর রহিম মেদিনীপুরের ও গ্রীযুক্ত অধিলচক্ত দত্ত কুমিলার অধিবাসী।

নিথিলত্রন্ম ভারতীয়-শ্রমিক কন্ফারেন্স

প্রথম নিখিশব্রদ্ধ ভারতীয়-শ্রমিক কন্ফারেক ভারত-গবন্মেণ্টের নিকট নিজ মতামত জানাইবার জন্ত হই জন প্রতিনিধি পাঠাইয়াছেন। ইংগদের নাম ঞ্রিযুক্ত ঈ পী



শ্রীযুক্ত ই পী পিলেই শ্রীযুক্ত ভক্তর লকাহান্দরম্
পিলেই ও শ্রীযুক্ত ভক্তর লকাহান্দরম্। ইহাদের চেষ্টার
ক্রমাদেশের ও তথাকার ভারতীয় শ্রমিকদের কল্যান হইলে
প্রথের বিষয় হইবে।

কংগ্রেদ পালে মেন্টারী দলের কার্য্যতঃ দেশদ্যোহিতা

কংগ্রেস এই প্রকার মত প্রকাশ করিয়াছ, বে, সাক্ত্রদায়িক বাঁটোরারাটা ঠিক্ নয়, কিন্তু যে-হেতু সকল সম্প্রদার উহার বিরোধী নহে, অতএব কংগ্রেস উহা গ্রহণও করে না, বর্জ্জনও করে না। কংগ্রেসের এই প্রকার মতের সমালোচনা আমরা 'প্রবাসী'তে এবং বিশেষ করিয়া আমাদের ইংরেজী মাসিক পত্রে করিয়াছি। এখন পুনর্কার ভাহা করিব না। এখন আমরা কেবল ইহাই বলিতে চাই, যে, কংগ্রেস পালেনিকীরী দলের নিজের মতে স্থির থাকা উচিত। মি: জিল্লার প্রস্তাবের প্রথম অংশের বিক্লছে উাহারা ভোট না দেওয়াম, তাহারা নিরপেক থাকার, তাহারো ভোট না দেওয়াম, তাহারা কার্যাতঃ দেশদ্রোহী হইয়াছেন। অবশ্য দেশদ্রোহিতা করা তাহাদের অভিপ্রেত ছিল না।

কংগ্রেস পালে মেণ্টারী দলের মত এই, বে, তাছার। বাঁটোরারটা গ্রহণও করেন না, বর্জনও করেন না। স্থতরাং ইহার সোজা মানে এই, বে, কেছ বদি উহা গ্রহণ করেন, তাঁহার বিরোধী তাঁহারা, এবং কেছ বৃদি উহা বর্জন করেন, তাঁহারও বিরোধী তাঁহারা;— কেবল মাত্র যিনি উহা 'গ্রেহণ করেন না বর্জনও করেন না'' তিনিই তাঁহাদের দশভ্জে।

মি: জিল্লার প্রস্তাবের প্রথম অংশ বলিতেছে, "এই বাবস্থাপক সভা, বাটোয়ারাটা মত দুর গিয়াছে তত দুর, উ**হা গ্রহণ** করি**তে**ছে।" ব্যবস্থাপক সভার নে সব সভ্য উহা গ্রহণ করেন না (এবং বর্জনও করেন না) তাঁহাদের নিশ্চরই বলা উচিত ছিল, "না, আমরা উহা গ্রহণ করি না।" তাহার পর যদি আর কেহ প্রস্তাব করিতেন, "এই ব্যবস্থাপক সভা বাটোয়ারাটা বর্জন করিতেছে," তথনও তাঁহাদের বলা উচিত ছিল, "না, আমরা উহা বর্জন করি না।" অবশ্র, তুইবার এই তুই রকমে ভোট দিলে তাহা একটা হাস্থকর ব্যাপার হইত। কিন্তু উপায় কি? তাঁহাদের "না-গ্রহণ না-বর্জ্জন" ব্যাপারটাই যে হাস্তকর। উহার সোজা মানে দাঁড়াইয়াছে "গ্রহণ," এবং জিনিষ্টা ভাল বলিয়া গ্রহণ নহে-সাহস ও দৃঢ়তার অভাবে রাষ্ট্রনৈতিক কৃট চা'ল ভেদ করিবার শক্তির অভাবে গ্রহণ, কয়েক জন স্বাক্ষাতিকতার ছম্মবেশ ও ছম্মনাম-ধারী চতুর শোকের ছলনায় প্রভারিত হইয়া গ্রহণ।

ব্যবস্থাপক সভার অধিকাংশের সাম্প্রদায়িক বাঁটোয়ারায় সম্মতির মূল্য

ভারতীয় ব্যবস্থাপক সভা কি পরিমাণে দেশের লোকদের প্রতিনিধিস্থানীয় তাহার আলোচনা ন। করিয়া, ইহা ধরিয়া লওয়া যাক্ যে, উহার নির্বাচিত সদস্তেরা দেশের লোকদের প্রতিনিধি। তাহা হইলে, সাম্প্রদায়িক বাটোয়ারা দেশের লোকে অনুমোদন করে কি না তাহা ব্যবস্থাপক সভার ভোট দারা দ্বির করিতে হইলে, কেবল নির্বাচিত সদস্তদেরই ভোট লওয়া উচিত ছিল। তাহা না করিয়া গবন্মেণ্ট সরকারী সদস্ত এবং সরকারের মনোনীত সদস্তদিগকেও ভোট দেওয়াইয়াছেন। ইহাদের ভোটের সাহাব্যে, এবং তহুপরি কংগ্রেস পালেপ্মেণ্টারী সদস্তদের নিরপেক্ষতার, বে প্রভাবটি অধিকাংশের ভোটোগ্রীগৃহীত

হইয়াছে, ভাহা দেশের লোকদের অনুমোদিত বলিংশ নিডান্ত মিথ্যা কথা বলা হইবে।

মিঃ ভিন্নার প্রস্তাবের সমর্থক ৬৮ জন সদস্থের মধ্যে ২৫ জন গবন্মেণ্ট সদস্ত, ১ জন গবন্মেণ্ট-মনোনীত সদস্ত, এবং বাকী ৩৪ জন মুসলমান সদস্ত। স্তরাং অ-মুসলমান নির্বাচিত সদস্ত এক জনও উহার পক্ষে ভোট দেন নাই। ইহাও লক্ষা করিবার বিষয়, যে, কংগ্রেসের "না-গ্রহণ না-বর্জন" নীতি মুসলমানদিগকে খুশী করিবার জন্ত অভিপ্রেত হইলেও, এক জন অকংগ্রেসী মুসলমান সদস্তও একারণে নৃত্ন করিয়া কংগ্রেসী দলে গিয়া ভোটের সময় নিরপেক্ষতা অবলয়ন করেন নাই।

ঢাকায় সেণ্ট্রাল ব্যাক্ষের শাখায় বাঙালী এজেণ্ট

সেণ্ট্রাল বাক্ষি অব ইণ্ডিয়া ভারতবর্ষের একটি প্রধান বাক্ষ। ঢাকায় সম্প্রতি ইহার একটি শাধা ধোলা ছইয়াছে।



শ্রীযুক্ত গোকুলকুফ দে খাড়া শ্রীযুক্ত গোকুলকুফ দে খাড়া ইহার এজেণ্ট নিযুক্ত হইয়াছেন

ব্যাক্ষের কার্য্যে তাঁহার অনেক বংসরের অভিজ্ঞতা আছে। তিনি বিশেষ যোগ্য ব্যক্তি না হইলে বোছাই-ওয়ালাদের ব্যাক্ষ ইহার একটি শাখার এক জন বাঙ্গালীকে নিযুক্ত করিত না। আশা করি, তাঁহার ও তাঁহার মত অন্ত বাঙ্গালীদের ছারা বঙ্গে বাঙ্গালীদের ব্যাক্ষিং ব্যবসায়ে প্রতিষ্ঠা হইবে।

ঈশানচক্ত মুখোপাধ্যায়

রাজ্বপুতানার অন্তর্গত জয়পুর রাজ্যের অক্ততম ভূতপূর্ব প্রাসিদ্ধ প্রধান মন্ত্রী স্বর্গীয় কান্তিচক্র মূখে,পাধ্যায়ের পুত্র এবং স্বন্ধং তথাকার এক জন প্রধান অমাত্য ও জারগীরদার



ঈশানচন্দ্র মুখোপাধ্যায়

ঈশানচক্র মুখোপাধ্যায় দেহত্যাগ করিয়াছেন। তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ-পরিচয়ের আনন্দ আমরা পাইয়াছিলাম। কলদেশে ক্ষলপ্লাবনাদিতে মাছ্য বিপন্ন হইলে তিনি বর্থাসাধ্য চেটা করিয়া সাহায্য পাঠাইডেন। ইহা আমরা সাক্ষাৎভাবে জানি। পাঠকবর্গ তাঁহার কিঞ্চিৎ পরিচয় জয়পুর-প্রবাসী ডাক্তার পালালাল দাস কর্ত্ক 'প্রবাসী'র জক্ত লিখিত নিয়মুক্তিত তাঁবমুটি হইতে পাইবেন:—

কালের পরিবর্জনে বদিও বিশিষ্ট প্রবাসী বাঙ্গালীর সংখ্যা ক্রমশই বিরল হইতেছে; বদিও পূর্ণের মত রাজস্থানের বিবিধ রাজ্যে, মন্ত্রী-পদাধিতিত বিদ্যাধর ভট্টাচার্থ্য, হরিমোহন সেন, কাস্তিচক্র মুণোপাধ্যার, সংসারচক্রী সেন, ভোলানাধ চট্টোপাধ্যার, ভোলানাধ বিষাস ও মতিলাল ভট্টাচার্য্য প্রমুখ মনীয়ী প্রবাদা বান্ধালীর আর আবির্ভাব নাই; তথাপিও ইংহারা দেই অনামধন্ত পুরুষ মনরদের কীর্ত্তিরশির অমুসরণ করিয়া ভাঁহাদের প্রদর্শিত মার্গ অবলঘন করিতে চেষ্টা করিয়াছিলেন, ভাঁহাদের অন্ততম এক জন ছিলেন রায় বাহাছর স্পানচক্র মুখোপাধায়। এত দিন প্রবাদী বান্ধালীর গৌরব রক্ষা করিয়া তিনি আজ বিধাতার আহ্বাদে ইহজগৎ পরিত্যাগ করিয়া চলিয়া গিরাছেন।

গত ১৯শে জ্ঞামুগারী শনিবার সন্ধ্যার সমর চন্দ্রগ্রহণের কিছু পূর্বেতিনি স্বর্গধামে চলিরা গিরাছেন। কৌসিলের সদস্ত-পদ হইতে অবসর গ্রহণ করিবার পর তাহার স্বাস্থ্যভঙ্গ হইরাছিল। অতিরিক্ত মন্তিক চালনার ফলে পীড়িত হইরা তাহার পরিণামেই একদিন মান্দ্রগ্রহান অবস্থার থাকিরা তিনি দেহত্যাগ করেন।

রার বাহাছর ঈশানচক্র মুখোপাধাার ভূতপূর্ব জয়পুর নরেশের প্রধান অমাত্য রাও বাহাছর কান্তিচক্র মুগোপাধাার, দি-আই-ই, মহোদয়ের ভূতীর পূত্র। ১৮৭২ খ্রীষ্টাব্দের ডিদেম্বর মাদে জয়পুর নগরে ডাহার জয় হয়। ডাহার শিকা-দাক্ষা জয়পুরেই হয়। এখানে মহারাজার কলেঞ্জ বি-এ পর্যান্ত অধ্যয়ন করিয়া ডাহার পিতার নিকট ১ইতে নৈতিক ও রাষ্ট্র-শাদন পদ্ধতিতে প্রত্যক্ষ শিক্ষালাভ করেন। পরে উপনৃক্ত হইলে জয়পুরাধিপতি মহারাজা সওয়াই মাধো দিংজী সাহেব বাহাছরের আজ্ঞাকমে ডাহার পিতা কান্তিবাৰু ডাহাকে আপীল কোটের জজ রূপে নিযুক্ত করেন।

১৯০০ খ্রীষ্টাব্দে কান্তিবাব গ্রন্থিটে দ্বারা ভারতীয় ছুর্ভিক্ষনিবারণ কমিশনে সনস্থ মনোনীত হইলে, মহারাক্ষ ভারতের হিতকর এ কার্ণো উাহাকে প্রেরণ করেন। তথন কান্তিবাবুর স্বাস্থ্য ভাল না থাকায়, বড়লাট লর্ড কর্জন স্বয়ং তাহার পুন ঈশান বাবুকে পিতার সাহচর্যো থাকিতে অনুমতি প্রদান করেন। এই বিশেষ কায়ে থাকাতে এবং বিভিন্ন দেশ পরিশ্রমণ করাতে উাহার বিলক্ষণ অভিক্রতা জয়ে। কমিশন বথন নাগপুরে আসেন, তথন ছুর্ভাগাক্রমে হঠাৎ কান্তিবাবুর পীড়া বৃদ্ধি পাওয়াতে স্বল্প সময়ের মধ্যেই তিনি কালগানে প্রতিত হন '

এই অভাবনীয় ঘটনাতে গভৰ্মেণ্ট ক্ষতিগ্ৰস্ত হন এবং ঈশান বাবুকে যথারীতি সাম্বনা প্রদান করিতে বিলম্ব করেন নাই। নাগপুর শহরে কান্তিবাবুর আরক-মন্দির নির্দ্ধাণ জন্ত এক বিস্তীর্ণ ভূমিগও দান করেন, যাহাতে ঈশানবাবু তাঁহার পিতার পারণার্থে এক পারক-মন্দির নির্মাণ করিরা প্রবাসী বাঙ্গালীর নাম অকুর করিরা রাখিরাছেন। মহারাজা মাধ্যে সিংজা তাঁহার বিশন্ত প্রধান অমাত্যের অকালমৃত্যুতে অত্যস্ত চিস্তিত হইরা পড়েন এবং অনক্ষোপার হইরা কৌন্সিলের সমস্ত পদে উন্নীত করিরা, আপনার ''গুরুভাই" ঈশানবাবুকে রাজাশাসনের গুরুভার অর্পণ করেন; এবং গুরুভাইকে গুরুপদে বন্ধণ করেন। কাস্তিবাব ১৯০: গ্রীষ্টাব্দের জামুরারী মাসে বেহত্যাপ করেন। মহারাজা এপ্রিল মাসেই ঈশানচক্রকে কৌ সিলের সদস্তপদ দেন, এবং কান্তিবাবুর মুকুর এক মাদের মধ্যেই তাঁহাকে তাজিমী সর্পার পদে জারগীরদার স্বীকার করিরা ''মহাৎমী" অর্থাৎ সনদ দিবার জন্ত তাঁহার বাটীতে স্বরং আসেন'। এত অল্ল সমলে, অর্থাৎ কোন জানগীরদারের মৃত্যুর পর তাঁহ'র পুত্রের মহাৎমী, এক মাসের মধ্যে হয় না! কিন্তু অব্যৱহান মহারাক মাথো সিংদ্রী তাহার 'গুরুভাই'এর ক্রন্তই এরপ অনুত্রহ দেপাইয়া শীঘ্ৰই মহাৎমী করেন '

কান্তিবাবুর জীবদ্দশার স্থাপানচক্র বিবিধ রাজকার্যো পিতার সহকারী রূপে বাকার হাতেকলমে সর্বাস্থীন শিক্ষার উহোর স্থবোগ হয়। সে শিক্ষা ভবিষাতে কর্মকেত্রে তাঁহার বিশেষ উপকারে আসে। কৌলিলের সকল বিভাগেই রাজস কোঁজদারী দেওয়ানী প্রভৃতিতে এরূপ যোগাতা ও স্থারপরায়ণতার সহিত তিনি কার্ব্য করেন যে, রাজা প্রজা সকলেরই অনুসময়ের মধ্যে প্রিরণাত্র ও বিখাসভাজন হইরা উঠেন। তাঁহার সহক্ষী অস্তান্ত সক্তর্বর্গ পলিটিকালে অফিসার ও উচ্চপদস্থ রাজকর্মচারারা সকলেই তাঁহার বিচারে নির্ভীক্তা ও সত্ততার জন্ত মুক্তকঠে প্রশংসা করিরাছেন। তিনি যে রাজ্যশাসন কার্য্যে এক শুন্ত-বর্মপ ছিলেন তাহা তাহারা মনে করেন।

মহারাজ সওয়াই মাথে সিজো সাহেব বাহাছুর অর্গলান্ত করিবার কিছুকাল পূর্ব হইতে অহন্ত হইয়! থাকেন; তাহার জক্ত তিনি রাজকার্যা হতারুররেপ পরিদর্শন করিতে না পারার কিছু বিশৃঝলা ঘটে। তাহার মৃত্যুর পর সওয়াই মহারাজা মানসিং বাহাছুরের নাবালকতার বিটিশ গবরের তি একটি কমিটি গঠন করিয়া ঐ বিশৃঝলতা দূর করিতে মনস্থ করেন, এবং ঈশানবাবুকে একমাত্র উপযুক্ত সদস্য নির্দারিত কয়িয়া তাহাকে ঐ কমিটিতে নিযুক্ত করেন; তাহার অভিজ্ঞতার ফলে রাজ্যের ঐ বিশৃঝলতা দূর হয় এবং অপরখারা দণ্ডিত হয়। এই জটিল কর্ম্মের সমাধানে বিটিশ গবরের তি অতীর প্রতি হইয়া তাহাকে জাওয়ার ১৯২৫ খ্রীঃ অব্দের রার বাহাছুর ধেতাবে ভূষিত করেন:

কৌ সিলের সদস্ত পদের নির্দ্ধারিত বেতন আছে, কিন্তু ঈশান বাবু ওাহার পৈতৃক জায়গীরের অধিকারী হইয়াছিলেন বলিয়া, অনেক দিন অবৈতনিক ভাবেই কর্ম করেন। পরে মহারাজার আদেশামুসারে ঐ নির্দ্ধারিত বেতন গ্রহণ করেন।

গৰছে টের তরাবধানে চালিত কোলিল অব রিজেন্সীতেও বিশেষ গোগাতার সহিত কার্য্য করিয়া তিনি ইংরেজ রাজপুক্ষদের বিশাসভাজন ও শারার পাত্র হন। তিনি এমন সাধীনচেতা ও উচিত্রকা ছিলেন থে নিজের স্থবিষ্টেত মত পরিবর্ত্তন করিতে চাহিতেন না, তহ্মপ্র কতিশীকার করিতেও প্রস্তুত হইতেন।

ঈশানচক্রের পিতামাড়া ভাঁহাকে আদর করিয়া ''হাভি'' বলিয়া ডাকিতেন। তাই সাধারণো "হাতি বাবু'' নামেই তিনি প্রসিদ্ধ।

: ৯২৫ অবেদ শারীদ্বিক অনুস্থতা-নিবন্ধন তিনি রাজকার্য্য হইতে অবসর গ্রহণ করিতে বাগ্য হন। রাজকার্য্য হইতে অবসর গ্রহণ করিলেও কথনই তিনি আলন্তে কালক্ষেপ করিতেন না। অর্গলাংজর এক দিন পূর্ব্ব পর্যান্তপ্ত দৈনিক বিষয়কর্ম্ম, পূস্তকপাঠ, উত্যান-পরিদর্শন প্রস্তৃতি কোন কার্য্যই অসমাপ্য রাধ্যেন নাই।

উন্তানের উন্নতি ও সৌন্দর্য্য বৃদ্ধি করা তাঁহার এক অধান দৈনিক কর্ম ছিল। প্রাতে, সারাহে, নিরমিত ভাবে উন্তান পরিদর্শন ও উন্তানপালদের কার্য্য দেখান, তাঁহার তৃপি সাধন করিত। দূর দেশ হইতে আনাত বহুমূল্য নানাবিধ বৃক্ষলতাদিতে তাঁহার মনোরম উন্তানটি স্থলোভিত করিরা রাথিরাছেন। তাঁহার বাগানের আত্র এত স্থাসিত ও উত্তম, বে, মহারালা তাঁহার নিজের ব্যবহারের লক্ত করেকটি বৃক্ষনির্দ্ধিক্ত করিরা দিয়াছিলেন, এবং দূর প্রবাসে বা তীর্বহলে আকিলেও তথার বিশ্বত লোকের হতে ঐ আত্র তাঁহাকে অতি বড়ের সহিত গাঁঠাইতে হইত। এরূপ স্থলর উন্তান বে-কোন নগরেরই পৌরবকর। বাগানের সৌন্দর্য্য বৃদ্ধি করা ব্যতিরেকে তাঁহার প্রসাদাকূল্য দৌলাকিও সর্বদ্ধা সংস্কৃত ও লোভিত করিতে উচ্চদরের দিল্লা নিযুক্ত করিরা প্রতাহ তাহাদের কার্য্য পরিকর্শন করিতেন। ইহা অপেকাও তাহার সংস্কৃতির অধিক পরিচারক তাহার বহুমূল্য ও স্ক্ষর পুত্ববাগার। এই পুত্রকাগারে শিক্ষাপুরাধী সকলেরই অবান্ধিতবার ছিল। তাহার

পছন্দসই কোন পৃস্তক, কি ইংরেজী, কি বাংলা, কি হিন্দী, কি সংস্কৃত, কি উর্দু, যথনই যাহা প্রকাশিত হইত, তথনই তিনি তাহা আনাইয়া নিজে পাঠ করিয়া বা পাঠ করাইয়া আনমারী শোভিত করিতেন। যথন কোন কার্যাবাপদেশে কলিকাতা বা অন্ত নগরীতে যাইতেন, তথন পুরাতন ছুত্থাপা পৃস্তক সংগ্রহ করা তাহার এক বিশেব কার্যাের মধ্যে ছিল। তিনি পুরাতন প্রকালরগুলি অনুসদ্ধান করিয়া তথার নিজে গিয়া প্রকেবিক্রেতাদিসকে অতিরিক্ত মূলাে পৃস্তক কর করিয়া উৎসাহিত করিতেন। তাহার প্রকাগার সংরক্ষণের জন্ত মুকা ও দপ্তরী প্রভৃতি কর্মাতার নিযুক্ত ছিল।

ধর্মবিবয়ে তিনি সনাতনপদ্ধা হইলেও, তাহার ধর্মমত উদার ছিল। হিন্দু মুসলমান খ্রীষ্টরান প্রভৃতি সকলকেই সমদৃষ্টিতে দেখিতেন এবং তাহারাও তাহাকে শ্রদ্ধা-ভক্তির চক্ষে দেখিত।

৩২ বৃৎসর ব্য়সে তাহার প্রথমা পত্নীর স্বর্গলাভ হয়। আস্থীয়-বন্ধু-বান্ধবদের নির্কালাভিশরে ও মহারাজার আদেশে তিনি পুনরার দারপত্তিশ্রহ করেন।

জন্মপুর-প্রবাসী ইইলেও তিনি তাহাদের পৈত্রিক বাসভূমিকে পুলেন নাই। স্থামনগরের নিকট রাহতঃ তাহাদের আদিম প্রাম। সে প্রামের সর্পান্তান উন্নতি করিতে তিনি উদাসনে ছিলেন না। তাহার রাত্তাঘাট লাছ্যোল্পতি প্রভৃতি সমস্ত সংকার্যেই তাহার আগ্রহ ছিল এবং সর্পাপেকা প্রয়োজনীয় যে শিক্ষাবিতার, তাহাতে বিশেষ মনোনিবেশ করিয়া "কান্তিচক্র হাই স্কুল" নামে একটি বিজ্ঞালয় স্থাপন করিয়া, তাহার সমস্ত প্রচ বহন করিয়া দেশের সকলেরই কৃতজ্ঞার পার হইয়াছেন।

বাফিক আর্কৃতি প্রকৃতিতে তিনি সম্পূর্ণ আড়্মরণ্য ও আভিজ্ঞাত্যগর্বহীন ছিলেন। আভিজ্ঞাত্যমণ্ডিত এ রাজস্থানের কায়না-কায়নের
প্রতি লক্ষ্য রাপিতেন না। সাধারণ কর্মচারী প্রভৃতির সহিত
একাসান বসিতে ছিধাবোগ করিতেন না। তাঁহার এই অমারিক
ব্যবহার এদেশে আদ্ব-কায়দার খেলাপ-এমে, লোকে প্রথমে তাহা
তত শ্রদ্ধার চক্ষে দেপিত না। কিন্তু পরে তাঁহার গুণগ্রামের ও
সন্ধাবহারের পরিচয় পাইলে, সতঃই তাহাদের আদ্ব-কায়দাজড়িত
মন্ত্রক শ্রদ্ধার ও সন্ধমে অবনত হইত।

অপ্তাগত বাঙ্গালীর। তঁহোর ধর্মশালায় আদরের সহিত ছান পাইতেন এবং যাহাতে বাঙ্গালীর কোন উপকার হয় তিনি তাহা করিতে কথনও পরাঘুধ হইতেন না। জরপুর-প্রবাদী বাঙ্গালীদের নেতাস্বরূপ হইরা তিনি অনেকের হংগকষ্ট নিবারণ করিরাছেন। পত পাঁচ বংসর তাহার নেতৃত্বে সকল বাঙ্গালা একনিষ্ঠ হইরা শারদীয়া বারোয়ান্ত্রা পূঞ্জা উপলক্ষ্যে বিশেষ আনন্দ উপভোগ করিয়াছেন। ভাহার মহিমামরী ভাষ্যার বার-ব্রত উপলক্ষ্যে রাস দোল প্রভৃতি উৎসবে ফুলুর এই মঙ্গভূমিতেও ভক্তি-উৎস প্রবাহিত হইত। শির, নাটাকলা ও সঙ্গীতেও তাহার বিলক্ষণ সহায়তৃতি ছিল। সে-সব আজ প্রবাসী বাঞ্জালীদের মানসপটে মন্ত্রীতিকামাত্র প্রতীত হইতেছে!

বালাকালে তাঁহার ছই অগ্নজের অকালমূত্যতে ঈশানচক্র পৈত্রিক বিত্তীৰ্ণ কারগার, বর্ণগদালকারভূবিত তামিন্ট সরদারী ও শুক্রপদের অধিকারী হন।

তাহার প্রথমা পত্নীর পর্ত্তনাত ছই পুর ও ছই কল্পা এবং কনিটা পত্নীর পর্ত্তনাত ছই পুর ও ছই কল্পা এবং তাহার এক কনিট লাতা ও বৃহৎ পরিবারবর্গ বন্ধবালব সহ তাহার মৃত্যুতে শোকাতৃর হইরাছেন। তাহার পুরোরা সকলেই শিক্ষিত, এবং আশা করা বার তাহার জোটপুর জীবান সাতকড়ি সুযোপাধ্যায়, বি-এ, মহাশর উহোর গৈরিক বিষয় ও বর্বাালার অধিকারীরূপে তাঁহাদের বংশসোঁরৰ ফুকুরুর রাখিরা প্রবাসী বাজানীয় সুথোজ্ঞসকারী হটবেন।

মিঃ জিলা কি চান

ব্দরেণ্ট পার্লেমেণ্টারী কমিটির রিপোর্ট এবং ভদ্মসারে ভারতশাসন বিল ভারতীয়দিগকে কোন প্রাক্তত ক্ষমতা দেয় নাই, ইহা মিঃ মোহশ্বদ আলী জিলা বেশ জানেন। তাহা হইলে লোকের কৌতৃহল হইতে পারে, যে, এই যে সারশুন্ত ভারতায় কন্সটিটিউশুন বা শাসনবিধি হইতেছে, তাহার বাবস্থাপক সভাগুলিতে মি: জিলা নিজের সম্প্রদায়ের জ্বন্ত একটা বড বধরা (দাহা তাঁহাদের লাঘ্য পাওনা নহে) শইয়া কি করিবেন । শুক্তের রকম পাঁচ আনা চার পাই বা আট আনা বা বার আনা বা যোল আনা---किছूतरे कान भूना नारे। (मरे कल मि: किन्ना गरामा जी অব ইণ্ডিয়া বিশটাকে তাঁহার প্রস্তাবের একটি অংশ দ্বারা এব্লপ ভাবে সংশোধিত করাইতে চান ঘাহাতে কতকটা ক্ষমতা ভারতীয়দের হাতে আসে। সেরপ সংশোধন হুইলে সেই ক্ষমতার রকম পাঁচ আনা চার পাই মুসলমানেরা সাম্প্রদায়িক বাটোয়ারা অনুসারে পাই:ব—াদিও ভাহারা শিক্ষা, সার্বাঞ্চনিক কার্যো উৎসাহ, আত্মোৎসর্গ ও ত্যাগ, ধন-শালিতা, এমন কি লোকসংখ্যা অনুসারেও সমুদয় ক্ষমতার এক-তৃতীয়াংশ পাইবার অধিকারী স্তায়তঃ নহে।

মি: ভিন্না ইহাও জানেন, যে, প্রধানতঃ হিন্দুদের চেটার এবং আত্মোৎসর্গ ও তৃঃধবরণের জোরে রাষ্ট্রীয় ক্ষমতা কাল-ক্রমে দেশের লোকদের হাতে আসিবেই। তথন, এখন বাহা শৃন্ত (০), তাহা কিছু-একটাতে পরিণত হইবে, এবং তথন সাম্প্রধায়িক বাটোয়ারা কায়েম থাকিলে সেই কিছু-একটার এক-তৃতীয়াংশ মুস্লমানেরা পাইবে। এই ক্লন, তিনি সাম্প্রণায়িক বাটোয়ারাটাকে জীয়াইয়া রাথিতেছেন, এবং সেই অভিসন্ধিতে ডাং আকারী, মৌলানা আবুল কালাম আফ্রাদ প্রভৃতি তথাক্থিত স্তাশন্তলিউদের বরাবর বোগ আছে অমুমান করা অনুচিত হইবে না।

কংগ্রেস জন্মেন্ট পালে মেন্টারী কমিটর রিপোর্ট অমুবারী শাসনবিধি মোটেই চান না—মহাত্মা গাত্তীরও মত তাই, কংগ্রেস ওক্ষপ শাসনবিধি সম্পূর্ণ কর্জনীয় মনে করেন।

উদারনৈতিক সংঘও উহা সম্পূর্ণ কর্জনীয় মনে করেন। হিন্দু মহাসভাও তাই মনে করেন।

কিন্তু মিঃ জিলা তাহা বলেন নাই। তিনি চতুর লোক।
তিনি কানেন, কংগ্রেস সাম্প্রদায়িক বাটোয়ারা গ্রহণীয় নয়,
বর্জনীয়ও নয় বলিলেও, জয়েণ্ট পালে মেণ্টারী রিপোটটা
সম্পূর্ণ রূপে পরিত্যক্ত হইলে তাহার অঙ্গীভূত সাম্প্রদায়িক
বাটোয়ারাটাও পরিত্যক্ত হইবে। সেই জন্ত, তিনি প্রস্তাবিত
শাসনবিধিটার সংশোধন চান, সম্পূর্ণ বর্জন চান না, এবং
সাম্প্রদায়িক বাটোয়ারাটাকে ত আগে হইতেই বাচাইয়া
বাধিয়াছেন!

তার পর, মিঃ জিল্পা দেশী রাজ্যগুলির সলে ত্রিটিশ ভারতের সংযোগে একটি সমগ্রভারতীঃ ফেডারেশুন চান না। যেরপ ফেডারেখানের প্রস্তাব হইয়াছে, আমরাও ত!হা চাই না। আমরা চাই না, যে, দেশী রাজ্যের ও কারা সম্পূর্ণ রাষ্ট্রীয়ক্ষমভাহীন থাকে, এবং ভাহাদের উপর নিরমুশ প্রভূত্বশালী রাজারা নিজেদের মনোনীত কতকগুলি লোককে ভারতীয় বাৰস্থাপক সভায় প্রতিনিধিরণে পাঠায়; আমরা চাই না, যে, ঐ সভার ৩৭৫ জন সভোর এক-তৃতীয়াংশ ১২৫ জন দেশী রাজাদের দ্বারা মনোনীত হয়। কারণ, প্রথমতঃ আন্দাজ দেড় শত রাজ্যের দেড় শত রাজ্ঞাদিগকে বিলের তপশীলে কোন ৱাজা (বাকী প্রতিনিধি পাঠাইবার (দপ্তয়া ক্ষমতা ১২৫ জন প্রতিনিধি মনোনীত করিবেও ব্রিটিশ-ভারতের ২৫ কোটির উপর মামুষ ২৫০ জন প্রতিনিধি নির্বাচন করিবে, ইহা নিতান্ত অসঙ্গত বাপোর, এবং যদি ইহা শোচনীয় না হইত তাহা হইলে ইহাকে সাতিশন্ন হাস্যকর দ্বিতীয়ত: যদি দেশী রাজ্যের ব্যাপার বলা চলিত। প্রজারাও ব্রিটশ-ভারতের প্রজাদেরই মত নির্ব্বাচনাধিকার পার, তাহা হইলেও দেশী রাজ্যের ৮ কোটি প্রজা পাইবে ১২৫ জন প্রতিনিধি এবং ব্রিটিশ-ভারতের ২৫ কোটির উপর অধিবাসী পাইবে ২৫০ জন প্রতিনিধি, ইছা স্তায্য বাবস্থা নছে।

প্রস্তাবিত ফেডারেশুনের বিরুদ্ধে আরও নানা আপত্তি আমাদের আছে। মি: বিরারও সেই সমস্ত আপত্তি থাকিতে পারে। তা ছাড়া মুসলমানদের আর একটা আপত্তির

অন্তিত্ব তাঁহাদের একটি দাবী হইতে বুঝা হায়। তাঁহারা ফেডার্যাল য্যানেমন্ত্রীতে (Federal Assemblyতে) ২৫০টি আসনের মধ্যে ৮২টি অর্থাৎ মোটামুটি এক-তৃতীয়াংশ পাইবেন প্রস্তাবিত গবনোণ্ট অবু ইণ্ডিয়া বিলে এইরূপ আছে । মুসলমানেরা চাহিরাছেন, যে, দেশী রাজাগুলির ऽ२०ि মাসনেরও এইরূপ একটি ভাগ আইন ঘারা ঠাহাদিগকে দেওয়া হয়; কিন্তু তাহা দেওয়া হয় নাই। অবগ্য ১২৫টিরও কতক অংশ তাঁহারা পাইবেন, কিন্তু তাঁহারা চান নির্দিষ্ট এক-তৃতীয়াংশ, কিন্তু দেশী রাজ্যের অধিবাদীদের এক-তৃতীয়াংশ বা এক-চতুর্থাংশও মুসলমান নহেন। দেশী নৃপতিকের মধ্যেও মুসলমান मःथा कम-हिन्मू **७ नियहे दिनी।** মুক্তরাং নৃপতিদের মনোনীত প্রতিনিধিদের মধ্যে মুসলমান থাকিবে ক্ষ, এবং তাহা মন্তায় নহে। সেই জন্ত য়াসেমন্ত্রীর ৩৭৫ জন সদস্তের মধ্যে মুসলমান সদস্তদের প্রভাব ততটা হইবে না, যতটা হইবে ব্রিটিশ-ভারতের ২৫০ জনের মধ্যে ৮২ জন ম্দলমান সদস্তের। এই কারণে মুদলমানরা দেশী রাজ্যগুলির সহিত ফেডারেশুন চান না, তাঁহারা কেবল ব্রিটিশ-ভারতের জন্তই এমন একটা শাসনতন্ত্র চান ঘাহাতে তাঁহাদের পাওনার অভিরিক্ত ক্ষমতা থাকে। মিঃ জিল্লার ফেডারেখন-বি:রাধিতার রহস্ত ইহা হইতে বুঝা যায়।

আইন-সচিবের নিরপেক্ষ থাকা

সাম্প্রদায়িক বাটোয়ারা সম্বন্ধে মি: জিয়ার প্রস্তাবে আইন-সচিব স্থার নূপেক্সনাথ সরকার কোন পক্ষেই ভোট দেন নাই। ইহা তাঁহার পক্ষে সঙ্গত কার্য্য হইয়াছে। তিনি আইন-সচিব হইবার পুর্বে বিলাতে ও ভারতে সাম্প্রদায়িক বাঁটোয়ারার বিরোধিতা উৎসাহ ও দক্ষতার সহিত করিয়াছিলেন। এখন সরকারী কর্মচারী, হইয়া উন্টা স্বর ধরিলে ভাহা অসঙ্গত ও নিভাস্ত অশোভন হইত। অবশ্য তিনি স্বাধীন সদ্যত নহেন বলিয়াই বাটোয়ারাটার বিরুদ্ধে ভোট দিতে পারেন নাই।

ব্যবসা-বাণিজ্যে বাঙালীর আত্মরক্ষা

ইংলণ্ডের লোকেরা খদেশে "বাই ব্রিটিশ" ("Buy British") নীতির অনুসরণ করে, ইংরেক্সের তৈরি জিনিষ পাইলে বিদেশী জিনিষ কেনে না। যুবরাজ এই নীতির প্রধান পাঞাগিরি করিয়াছেন। এদেশে মহাত্মা গান্ধী বলিয়াছেন, ''আমার গ্রামে ধে জিনিষ্টি তৈরি হয়, তাহাই আমার স্বদেশী জিনিষ্," অর্থাৎ তিনি স্কাণ্ডে সেই জিনিষ কিনিবেন, তাহা না-পাইলে বা তাহা না-থাকিলে অন্ত ভারতীয় ফিনিষ কিনিবেন। অপচ আমরা দেখিতে পাই ও শুনিতে পাই, যে, বাংলা **(मर्म यमि (कह वर्म, "ग्रामि जार्श वर्ष्म वांडामीत रे**डिति জিনিষ কিনিব, তাহা না-পাকিলে বা না-পাইলৈ তবে অন্ত প্রদেশের ভারতীয় শ্বিনিয় কিনিব," ভাষা হইলে তাহাকে সংকীৰ্ণমনা বলা হয়! যদিও দেখিতে পাই. এই কলিকাতা শহরে শিখরা বাঙালীদিগকে বয়কট করে, निष्करमत्र ट्राटिन, मूमिथाना, ठिकि९मा পर्यास्त शक्षाव হই:ত আমদানী লোকদের বারা চালায়; ওলরাটী বাবসাদাররা নিজেদের দোকান ও ব্যাঙ্গের কেরানীটি পর্যান্ত অনেকটা গুলরাট হইতে আমদানী করে; কিন্তু বাঙালী निष्कत नहरत ७ शास्त्र विद्या विन वाडामीत वादमा-বাণিজ্য রক্ষার ও বেকার বাঙাশীদের অক্সের উপায়ের কণা ভাবে, তাহা হটলে দে হয় সংকীৰ্ণমনা! সংশ্ৰতি হাবড়া মিউনিসিপালিটিতে এইরূপ একটি প্রস্তাব ধার্য্য হইয়াছে, যে, যোগ্য বাঙালী থাকিলে চাকরি ভাছাকেই দিতে হইবে, যোগ্য বাঙালী কণ্টাক্টর থাকিলে তাহাকেই কণ্টাক্ট দিতে হইবে, মিউনিসিপালিটির জিনিষপতা পরিদ করিবার সময় বাঙালীর তৈরি ক্ষিনিষ্ট কিনিবার চেষ্টা আগে করিতে হইবে। এরপ প্রস্তাব আমরা স্থায় মনে করি। বঙ্গপ্রবাসী অবাঙাগীদের ইহার বিক্লম্বে আন্দোলন করা উচিত নয়। বরং তাঁহাদের পক্ষে বঙ্গের স্থায়ী বাসিন্দা হইয়া যাওয়াই ভাল, যেমন স্বর্গীয় রামেক্সফুলর ত্রিবেদীর পূর্ব্বপুরুষেরা হইয়াছিলেন, পণ্ডিত স্থারাম গণেশ দেউস্করের পূর্ব্বপুক্ষবেরা হইরাছিলেন। বাঙালীরা এমন কথা বলে না, যে, তাহারা অন্ত প্রেদেশের বা অন্ত প্রেদেশীয়দের জিনিষ কিনিবে না। বঙ্গের ও বাঙালীর তৈরি জিনিষ যা নাই, অন্ত প্রদেশের ও

প্রাদেশীর সেরূপ জিনিষ বাঙালী নিশ্চর কিনিবে ও কেনে।

বাংলা দেশের ও বিহারের কয়লা না কিনিয়া বোদাই ও আহমেদাবাদের মিলওয়লারা যে দক্ষিণ-আফ্রিকার কয়লা কেনে, তাহাতে ত আমাদের সমগ্রভারতীয় খদেশপ্রেমের শিক্ষাদাতারা কোন উচ্চবাচ্য করেন না!

কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের জম্মোৎসব

কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় স্থাপিত হুইবার ৭৭ বৎসর
পরেও যে ইহার জ্বন্মোৎসবের কথা কর্ত্বপাক্ষর মনে
পড়িয়াছে, তাহার জন্ম তাঁহারা প্রশংসার পাত্তা। এই
উপলক্ষ্যে যে শোভাষাত্রা ব্যায়ামাদি হইয়াছিল, তাহা
স্থান্দার হুইয়াছিল। ভবিষ্যতে কলিকাতার বাহিরের
ছাত্র-ছাত্রীদিগকে এরপ উৎসবে যোগ দিবার—অন্ততঃ

তাহাদের প্রতিনিধিদের যোগ দিবার—মুখোগ দিতে হইবে, যাহারা পঠদশা অতিক্রম করিয়াছে সেই সব প্রাক্তন ছাত্রদিগকেও সুযোগ দিতে হইবে, দৈহিক ক্রিয়াশীলতার পরিচয় ছাড়া মানসিক কর্মিণ্টতার প্রমাণ দিবার মুখোগ দিতে হইবে, এবং কোন-না-কোন প্রকারে ও কোন-না-কোন দিকে শিক্ষালাভের স্থবিধা প্রতি বৎসরই কিছু

মেডিক্যাল কলেজের শতবার্ষিক উৎসব

বাডাইতে হইবে।

১৮৩২ সালে কলিকাতার মেডিক্যাল কলেজ স্থাপিত হয়।
এই বংসর তাহার শতবার্ষিক উৎসব হইয়া গেল। স্বাস্থ্য ও
চিকিৎসা সম্বন্ধে জ্ঞানোল্পতি ও আরোগ্যবিধান যাহার উদ্দেশু,
এরপ প্রতিষ্ঠানের উৎসব যেরপ হওয়া উচিত, মেডিক্যাল
কলেজের শতবার্ষিক উৎসব সেইরপই হইয়াছিল। বক্তৃতাদি
ছিল, অস্ত্র-চিকিৎসা ও অন্তর্রণ চিকিৎসার জন্ত আবশুক
অস্ত্র যত্র ঔষধ পথ্যাদির প্রদর্শনী হইয়াছিল, এবং তাহার
উপর আক্ষিক মুর্ঘটনাল্প আহত লোকদের জন্ত একটি
হাসপাতালের ভিত্তিও স্থাপিত হইয়াছে।

অৰ্দ্ধোদয় যোগে স্নান অৰ্দ্ধোদয় বোগ উপলক্ষ্যে গদায় স্নান করিবার জন্ত

বাহির হইতে পাঁচ লক্ষ ভীর্থযাত্রী আসিয়াছিল অসুমিত ভদ্মির কলিকাভারও চার-পাঁচ লক্ষ লোক থাকিবে। এতগুলি লোকের স্নানে স্নান কবিয়া বে অতি অল্পসংখ্যক হুৰ্ঘটনা ঘটিয়াছিল, অতি অল্পসংখ্যক ওলাউঠা আদি লোকের ধে সংক্রামক হইয়াছিল এবং অতি অল্পসংখ্যক লোক যে নিক্লদ্দেশ হইয়াছে, ইহা স্থানার্থীদিগের সাহায্যকারী সকল কর্ত্-বিশেষ প্রশংসার বিষয়। পক্ষের ও স্বেচ্ছা দেবকদের কলিকাতা মিউনিসিপালিটি সকল রকমের স্থবন্দোবস্ত क्तिश्राष्ट्रित्न। श्रुनिम कर्म्महात्री ও कनत्हेवत्नता मकत्नत সাহায্য করিয়াছিলেন। ধাঙ্গড় মেথর প্রভৃতি তাঁহাদের নির্দ্দিষ্ট কান্ত সানন্দে ও সোৎসাহে করিয়াছিলেন। বিশ হাজার পুরুষ ও মহিলা স্বেচ্ছাদেবক দিন-রাত রেলওয়ে व्यात्मत्र घाष्ट्रममूरह, नमीवत्क नोकान्न, व्यवः পান্থশালায় ও স্থায়ী ও অস্থায়ী চিকিৎসাকেন্দ্রে দৃক্পাত না করিয়া আপনাদের সুখস্বাচ্ছন্যের দিকে করিয়াছিলেন। শিক্ষালয়. কাজ সেবার প্রতিষ্ঠান ও অন্তবিধ নানা প্রতিষ্ঠান হ'ইতে স্বেচ্ছাসেবকগণ আসিয়াছিলেন।

কংগ্রেস অর্জোদর্যোগ কেন্দ্রীয় বোর্ড এই উপলক্ষ্যে কৃত সেবাকার্য্যের যে প্রশংসা করিরাছেন, তাহাতে বলিরাছেন, স্বেছাসেবকগণকে ডিল বা কুচনাওরাজ কিছুই অভ্যাস করান হর নাই। কিন্তু তাহা সম্বেও ছাত্রগণ প্রমুখ সমাজের বিভিন্ন শ্রেণী হইতে সংগৃহীত ২০ হাজারেরও অধিক স্বেছ্যাসেবক কর্ত্তবাসম্পাদনে অতি আন্চর্যায়কম কৃতিছের পরিচর প্রদান করে। এই সাক্ষণ্যের জন্ত প্রশংসা করিতে হইলে সর্বপ্রথম স্বেছ্যাসেবকগণেরই উহা প্রাণ্য। স্বেচ্ছাসেবকগণ সম্পূর্ণরূপে নিরমাম্বর্ত্তিত। রক্ষা করিরা পরম্পরের মধ্যে সহযোগিতা করে ও সন্মিলিতভাবে কার্য্য করে। আমরা যুব্-বাললাকে অনেধ ধন্তবাদ ক্রাণন করিতেছি।

ছই-এক দিন, ছই-এক সপ্তাহ বা তদপেক্ষা কিছু দীর্ঘ কালের জন্ত উৎসাহ ও আগ্রহের সহিত কঠিন কাজ করিতে বাঙালী ছেলেমেরেরা আপনাদের সামর্ঘ্য অনেক বার দেখাইয়াছেন, এবং তাঁহারা যে প্রশংসা পাইবার জন্তই সকল স্থলে এইরপ কাজ করিয়াছেন, তাহাও নহে। যেখানে বছ জনসমাগমজনিত উত্তেজনা ও উৎসাহের আকর্ষণ নাই, সেরপ কার্যাক্ষেত্রেও লোকচকু হইতে দুরে তাঁহারা বৎসরের পর বৎসর জনহিতকর কার্য্যে আত্মনিরোগ

ক্ষরিতে পারিবেন, তাঁহাদের ক্কতিত্ব হইতে এই আশা পোষণ ক্রিতেছি।

কংগ্ৰেস বোর্ড বলিয়াছেন :---

অক্সান্ত প্রতিষ্ঠানও আশামুদ্ধপ্রতাবে কর্ত্তবা প্রতিপালন করিরাছেন।
সর্বাপেকা লক্ষাের ও সন্ত্যোবের বিষয় এই যে, এই সকল প্রতিষ্ঠান
তাহাদের শক্তি ও উপাদান সম্বেতভাবে নিয়োগের প্রয়োজনীয়তা
উপানি করেন এবং সন্মিলিভভাবে একটি প্রতিষ্ঠানরূপে কার্য্য করিতে
বৈভোপ্রশোদিত হইরা অগ্রসর হন।

কংগ্রেস বোর্ড কোন কোন প্রতিষ্ঠানের উল্লেখ বিশেষ ভাবে করিয়াছেন।

বে ছানে প্রত্যেক প্রতিষ্ঠানই অগরের কৃতিত্ব ছাপাইয়া উঠিতে চেষ্টা করে, সে হলে কোনও বিশেষ প্রতিষ্ঠানের বৈষম্যমূলকভাবে নামোন্নেপ করা নিতান্ত অক্সায়রূপে প্রজ্ঞোক্ষক বলিয়া পরিগণিত হইবে। কিন্তু বিপুরা হিতসাধিনী সভা শিয়ালগহ ষ্টেশনে যে স্থানর কার্য্য করিয়াছে ও এখনও করিতেছে, চারিনিকে তাহা শত্যমূপে প্রশংসিত হইতেছে। সেই প্রশংসায় বদি আমরা যোগদান না করি, তবে আমাদের কর্পব্যে ক্রটি হইবে। শিয়ালদহে এবং স্থামবালারে মাটন কোম্পানীর রেল ষ্টেশনে অক্সান্ত বে সকল প্রতিষ্ঠানের স্বেচ্ছাসেবকগণ এগনও কাষ্য করিতেছেন, ভাহাদের নাম বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য।

কলিকাতা কর্পোরেশনের কার্য্য সম্বন্ধে বোড বলেন:-

কলিকাতা কর্পোরেশনও তীর্থযাত্রিগণের প্রতি ভাহাদের কর্ত্তন্য স্থচারুরপেই সম্পন্ন করিয়াছেন। মনে হয়, উত্তমতর রূপে উহা আর করা সম্ভব নহে। যাত্রাদের স্থেষাচ্ছন্যের জপ্ত কি করা কর্ত্তবিদে সম্বন্ধে সকলের অভিমত ওাহারা চাহিয়া পাঠান এবং যে সকল প্রস্তাব যাত্রাদের নিরাপত্তা ও স্বাচ্ছন্যের জপ্ত প্রয়োজন বলিয়া মনে করেন, তাহার বাবস্থাও ওাহারা করিয়াছিলেন। প্রধান কর্মকর্ত্তা হইতে সামাপ্ত ভূত্য পন্যস্ত কর্পোরেশনের বাবস্থার ক্রমচারি-গর্শকে আমরা আমানের ধ্রুবাদ জ্ঞাপন করিতেছি।

কর্পোরেশনের কাউন্সিসর ও অন্তারম্যানগণ, তথ্যগো বিশেষ করিয়া কর্পোরেশনের স্বাস্থ্য-কমিটির চেয়ারম্যান মিঃ রেজ্ঞাক, অতি ফলর রূপে স্বায় কর্ত্তব্য সম্পাদন করিয়াছেন।

অন্ত সকলকেও কংগ্রেস বোড ধক্তবাদ দিয়াছেন।

ছানায় বিভিন্ন রেল কর্তৃপক এবং তাহাদের অধানন্থ কর্মচারিগণ ও বিশেষ করিরা শিরালদহ স্টেশনের কর্তৃপক ও গ্রহাদের অধান রেল-কর্মচারিগণ আমাদের ধন্তবাদের পাব। আমরা অকুটিত ভাবে তাহাদিগকে ধন্তবাদ জ্ঞাপন করিতেছি। তাহান্না যাত্রিগপের ও কর্ম্মিগপের প্রতি ধার হিরভাবে, প্রসঙ্গতরপে সহাম্মৃত্তি জ্ঞাপনের উদ্দেক্তে অতি সন্থাবহার করেন। ট্রাম কোম্পানী ও বেলল টেলিকোন কোম্পানীকেও আমরা ধন্তবাদ জ্ঞাপন করিতেছি।

আহত ও পীড়িতদের চিকিৎসার যে সকল প্রতিষ্ঠান সাহাব্য করিরাছেন, তাহাদিগকে আমর। ধপ্তবাদ জ্ঞাপন করিতেছি।

পত্রিকাসমূহও আমাদিগকে প্রভূত সাহায্য করিয়াছেন। তাহাদিগকেও আমরা আন্তরিক ধরুবাদ জ্ঞাপন করিতেছি। সাম্প্রদায়িক বাঁটোয়ারার প্রতিবাদ

৭ই ফেব্রুয়ারী ভারতবর্ষের সর্ব্বে জরেণ্ট পার্লে মেণ্টারী রিপোর্টের প্রতিবাদ করিবার দিবস কংগ্রেস কর্ত্বক ঘোষিত হয়। তদন্ত্বায়ী প্রতিবাদ হইয়া গিরাছে। ঐদিন কলিকাভার আলবার্ট-হলে ঐ উদ্দেশ্রে জনসভা আহুত হয়। কংগ্রেস ঠিক করিয়া দিয়াছিলেন ঐ সকল সভায় জরেণ্ট পার্লে মেণ্টারী কমিটির রিপোর্টের প্রতিবাদপ্রচক প্রতাব আলোচিত ও গৃহীত হইবে। সাম্প্রদারিক বাঁটোয়ারার উল্লেখ আদৌ তাহাতে ছিল না। কিন্তু কলিকাভার এই সভায় যে প্রস্তাব গৃহীত হয়, তাহাতে সাম্প্রদারিক বাঁটোয়ারার প্রতিবাদ ভাহার অস্তর্ভূত করা হইয়াছিল, এবং সভার সভাপতি প্রীযুক্ত তুলসী চক্র গোঝামী বলিয়াছিলেন, যে, কলিকাভার জনগণের এরপ পরিবর্ত্তিত প্রতাব সভায় উপস্থাপিত করিবার ও গ্রহণ করিবার অধিকার আছে।

কলিকাতায় প্রীধৃক্ত নরেক্ত্মার বসুর সভাপতিত্বে বঙ্গীয় সমগ্র হিন্দুসমাজের বে কন্ফারেক্ত হইয়া গিয়াছে, তাহাতেও সাম্প্রদায়িক বাটোয়ারার প্রতিবাদ হইরাছে।

১০ই ফেব্রুয়ারী ভারতবর্ষের সকল প্রদেশে এই বাঁটোয়ারার প্রতিবাদ প্রকাশ্র সভায় হইয়া গিয়াছে। কলিকাতাতেও শ্রীযক্ত ষতীন্দ্রনাণ বহুর সভাপতিত্বে এক সভায় হইয়াছিল।

তথাপি এই বাটোয়ারার জেনীতির ভিত্তির উপর নির্মিত ভারতশাসন-বিল পার্লেমেণ্টে আইনে পরিণত হইবে। কিন্তু তাহা থেন ভারতীয় মহান্তাতি-ধ্বংস্কারী এই বাঁটোয়ারার উচ্ছেদ-চেঙা হইতে আমাদিগকে নির্ভু নাকরে।

ভারত-দচিব ও ডোমীনিয়ন ফেটস

• ক্সরেণ্ট পালে মেণ্টারী কমিটির রিপোর্টে (ও তাহার পর ভারতশাসন-বিলে) ব্রিটিশ ক্ষাতির ভারতশাসনের লক্ষা নে ভারতবর্ষকে স্থশাসক ডোমীনিয়নে পরিণত করা, এ-কথার উল্লেখ না থাকায় ডোমীনিয়নত্ব-প্রাথীদের পক্ষ হইতে নানা সমালোচনা ও প্রতিবাদ হইরাছে। সেই ক্সন্ত, পার্লেমেণ্টে ভারতশাসন-বিশ দিঙীয় বার পঠিত হইবার সময় তর্কবিতর্ক উপলক্ষ্যে ভারত-দচিব স্থার দামুরেল হোর বলিয়াছেন, ব্রিটিশ-সরকার ও জাতির পক্ষ হই:ত ডোমীনিয়নত্বকে লক্ষ্য বলিয়া ধ্বন বাঁহার ছারা যাহা বলা হইয়াছে, সেরপ কোন অঙ্গীকার হইতেই আমরা সরিয়া ধাই নাই, লক্ষ্য স্থির আছে। কিন্তু ইহাতে আমাদের লাভটা কি হইল? আগে ব্রিটিশ নূপতি এবং রাষ্ট্রনৈতিক কার্যোর ভারপ্রাপ্ত অভিজ্ঞাত ও সাধারণ বিটিশ মনুষ্য কেহ কেহ বাহা বলিয়াছিলেন, ভার **দামুরেলের কথা দে**ই রূপ আর একটা কথা মাত্র। কোন বৎসর কি উপায়ে ভারত ডোমীনিয়ন হইবে, তাহা বেমন আগে কেহ বলেন নাই, ভারত-সচিবও তেমনি তাহা বলেন নাই। কেহ বলি কাহাকেও বলে, তোমাকে এক শত টাকা দিব, কিন্তু নদি দিবার তারিখ ও স্থান निर्मिष्ठ मा-थारक এवः अकीकारतत्र कान मिन ना-थारक. তাহা হইলে ঐ প্রতিশ্রতির কোনই মুন্য নাই। অঙ্গীকার-কারী প্রভাহই বলিতে পারে, "হ হা, দিব।" কোন অনির্দিষ্ট ভবিষাতে কত বৎসর, যুগ, বা শতাকী পরে ভ'রতবর্ষ ডোমীনিয়ন হইবে? ব্রিটিশ শক্তিও সাম্রাজ্য তত দিন থাকিবে কি? ত হার পর দলিলের কথা। ভারতশাসন-বিশের মধ্যে যদি থাকে, যে, ভারতবর্ধকে ডোমীনিয়ন করা এই আইনের উদ্দেশ, তাহা হইলে তাহার কিছু মূলা থাকিবে স্বীকার করা নায়। কিন্তু ভাছাও ঘথেষ্ট নয়। দেখাইতে হইবে যে, বিশ্টার অর্থাৎ প্রস্তাবিত আইনটার অভিমুখিতা ও গতি ডোমীনিয়নছের দিকে—দেখাইতে হইবে যে, উহা বর্তমান ভারতশাসন-আইন অপেকা বেণা রাষ্ট্রীয় ক্ষমতা ভারতবাসীদিগকে দিতেচে. এবং সর্ব্বোপরি দেখাইতে হইবে, যে, প্রস্তাবিত ভারতশাসন-আইনে ভারতীয়দিগকে প্রদত্ত ক্ষমতার ব্যবহার দারা তাহার৷ স্বয়ং ডোমীনিয়নত্বে পৌছিতে পারিবে, ত'হাদিগকে তাহার জন্ম ব্রিটিশ সাতির ও পার্লেমেণ্টের দারস্থ হইতে চইবে না, এবং ব্রিটিশ পালে মেণ্ট ও লাভি পদে পদে তাহাদের অশাসন-অধিকার-লাভচেষ্টায় বাপা দিতে পারি:বন।

কিন্তু ভারতশাসন-বিলে এরপ কোন ব্যবস্থা নাই--ডোমী-নিয়নত্বের নাম পর্যন্ত নাই। বিপরীত দিকে আছে এরপ সব ব্যবস্থা যাহাতে প্রস্তাবিত শাসনবিধি বর্ত্তমান শাসনবিধির চেরেও অপক্লষ্ট, বাহাতে উহা ভারতীয়-দিগকে এখনকার চেয়েও বেশী ক্ষমতাহীন এবং তাহাদের বিদেশী শাসকদিগকে এখনকার চেয়েও অধিক নিরস্থ্য প্রভূত্তশক্তিশালী করিয়া ভারতবর্ষকে ডোমনিয়নত্বের বিপরীত দিকে লইয়া বাইতে চায় ও লইরা ঘাইবে।

অতএব স্থার সামুয়েল হোরের কথার কোনই মূল্য নাই। ভারতীয়রা প্রাক্ত রাষ্ট্রীয় ক্ষমতা গাছাতে পায় ভারতশাসন-বিলে এরূপ কোন পরিবর্ত্তন না-করিয়া যদি কেবল ডোমী-নিয়নত্বের একটা তারিখহীন অঙ্গীকারাভাগ উহাতে কোণাও বসাইয়া দেওয়া হয়, তাহারও বিশেষ কোন মূল্য পাকিবে না—বরং বিলটার অভিমুখিতা বিপরীত দিকে হওয়ায় ভাহাতে ঐ আভাসের সমাবেশ বিলটাকে স্ববিরোধী ও প্রহসনবৎ করিয়া ভূলিবে।

ইংরেজ জাতির শাসক-শ্রেণী বৃদ্ধিমান্, কিন্তু তাহারা মধ্যে মধ্য বড় রকমের ভূল করে, এবং তাহাতে ত'হাদের দেশের ক্ষতি হয়। যাহা কালক্রমে মানিয়া লইতেই হইবে, তাহা তাহারা কথন কথন যথাসময়ে মানিয়া লয় না, অন্তকে পরে যাহা অপেক্ষা বেণী অধিকার দিতে বাধ্য হয়, কাহাকেও কাহাকেও যথাসময়ে তাহা কোন কোন কোন কেত্রে দিতে চায় না। আমেরিকার স্বরহৎ কানাডা দেশ বিটিশ-সামাজ্যের অন্তর্গত নামে মাত্র, কার্যাতঃ স্বাধীন। কানাডার ক্ষমতা যত তাহার অর্দ্ধেক ক্ষমতাও ম্বন্তাদশ শতাব্দাতে আমেরিকার অন্তর্গতিশ উপনিবেশগুলিকে দিলে তাহারা বিজ্ঞাহ করিয়া স্বাধীন হইত না। বর্ত্তমানে যাহা আমেরিকার ইউনাইটেড্ ইেট্স্বা বৃক্তরাই তাহা হইলে তাহা এখনও কানাডার মত বিটিশ-সামাজ্যভুক্ত থাকিয়া বিটিশ মহাজাতিকে আরও ক্ষমতাশালী করিত।

ডোমিনিয়নত্ব যথন দিলে ভারতীয়ের। লুফিয়া লইড, ইংরেজ তথন তাহাতে কর্ণপাত করে নাই; এখনও কেবল ডোমিনিয়ন ষ্টেটন কথা ছটা মাত্র উচ্চারণ করিতে রাজী, উহার ভিতরকার প্রাকৃত বস্তুটা দিতে নারাজ। এদিকে কিন্তু ভারতে বাহারা সকলের চেয়ে সাহসী, উৎসাহী, ত্যাগী, ও ছঃধ্বরণে সমর্থ, ডোমিনিয়নত্বের নামে ভাহারা হাসে—ভাহারা চার পূর্ণপ্রবাজ। নির্হিত কেন বাধাতে?

ভবিষ্যতে ভারতবর্ণও আমেরিকার যুক্তরাষ্ট্রের মত শক্তিশালী সাধারণতন্ত্র হইবে না, কে বলিতে পারে ?

বঙ্গে নৃতন ট্যাক্সের প্রস্তাব

বঙ্গে বিহাৎ-শুক্ত বিশ ও তামাক বিক্রীর লাইসেন্স বিল দারা ছটি নৃতন ট্যাক্স বিদিনে, এবং ভারতীয় ষ্ট্যান্স বিল, কোটি ফী বিল ও বন্ধীয় আমোদ-কর বিলের সংশোধন দারা অধিকতর ট্যাক্স আদারের চেন্টা হইবে। এই পাঁচ প্রকারে বাংলার অধিবাসীদের কাছ থেকে আরও বেশী টাকা আদায় করিবার চেন্টা স্থায়সন্থত নহে। বঙ্গে তালা সংগৃহীত হয়, তাহার অত্যন্ত অধিক ভাগ ভারত-গবনোন্ট দথল করেন, অস্ত কোন প্রদেশ হইতে এত অধিক ভাগ গ্রহণ করেন না। বাংলা-গবনোন্টের হাতে অত্যন্ত কম টাকা থাকিবার ইহাই প্রধান কারণ। মুভরাং বাংলা-সরকারের অধিক টাকা পাইবার জন্ত বন্ধীয় জনগণের ট্যাকে হাত দিবার আগে ভারত-গবনোন্টের সহিত সংগ্রাম (অবগ্র অহিংস সংগ্রাম!) করাই উচিত।

থিতীয়তঃ, বাংল -সরকার বে বায়সংক্ষেপ কমিটি বসাইয়াছিলেন, সেই কমিটির প্রস্তাবগুলি কাংটা পরিণত করিলে, নৃতন ট্যাক্স ঘারা যে ২৪३ শক্ষ টাকা পাইবার আশা করি:তভেন, তাহা অপেক্ষা অনেক বেশী টাকা বাতিত। "জ্ঞাতিগঠনমূলক" বিভাগগুলিতেও ঐ কমিটি বায় ছাঁটিয়া দিতে বলিয়াছিলেন। আমরা তাহার সমর্থন করি না। কিন্তু কমিটির পুগারিশ অনুযায়ী অন্ত স্ব বিভাগের বায় কমাইলে নৃতন ট্যাক্স বসাইবার প্রয়োজন হইত না।

তৃতীয়তঃ, বাংলা-গবন্দেণ্ট সরকারী চাকর্যেদের যে বেতন হাস করিয়াছিলেন, এখন তাহা রহিত করিয়া তাঁহাদিগকে পূর্ব হারে বেতন দিবেন, স্থির করিয়াছেন। কাহারও মায় বৃদ্ধিতে আমরা হঃবিত হইব না। কিন্তু সরকারী াকর্যেরাই দরিক্রতম ও কেবল তাঁহাদেরই আয় সর্বাব্রে বাড়া দরকার, এবং সেই আয়বৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে (ও কতকটা দেট আয়বৃদ্ধির জ্পাই) জনগণের ক্ষমে নৃতন টাাজ্যের বোঝা চাপান উচিত মনে করি না।

ठकुर्यछः, व्यक्तं व्यक्तिक क्षांत्रशात्र (क्वन माळ हिम्मूमिशक्करे

নিগ্রহ-ট্যাক্স বাবতে হাজার হাজার টাকা দিতে হইয়াছে ও হইতেছে। তাহার উপর আরও ট্যাক্স বসান পীড়াদায়ক হইবে।

পঞ্চনতঃ, বৈহাতিক শক্তির ব্যবহার সবে মাত্র বঙ্গে আরম্ভ হইয়াছে, বিশেষতঃ মফঃসলে। মফঃসলে বৈহাতিক শক্তির মূলা অভ্যন্ত অধিক, কলিকাভাতেও যে বিশেষ কম, ভাহা নহে। ভাহার উপর ট্যাক্স বসাইলে বিহাৎ ব্যবহার বৃদ্ধিতে বাধা পড়িবে। এখন পর্যন্ত প্রধানতঃ উহার ব্যবহার আলোকের জন্তই বঙ্গে হইতেছে। শিল্পকার্য্যের ও রদ্ধনের জন্ত উহা এখনও বেশী ব্যবহৃত হয়না। ক্রমিকার্য্যের জন্ত ত, আমরা বত দূর জানি, হয়ই না। এমত অবস্থায়, ট্যাক্স বসান সমীচীন মান হয় না।

আরও অনেক কথা বলা গায়। কিন্তু বঙ্গীয় ব্যবস্থাপক সভার অবস্থা ভাবিলে অধিক কিছু বলিতে ইচ্ছা হয় না।

নিখিলবঙ্গ প্রজাসম্মেলন

ময়মনসিংহে যে নিবিলবক প্রজাসম্মেলন হইয়া গেল, তাহাতে এভার্থনা-সমিতির সভাপতি ডক্টর প্রীযুক্ত নরেশ চক্র সেনগুপ্তের অভিভাষণ, সভাপতি মৌলবী ফক্সলল হক্ সাহেবের অভিভাষণ এবং নবাব ফরোকি সাহেবের উদ্দোধিনী বক্তৃতা ২৭শে মাথের দৈনিক কাগজে প্রথম দেখিলাম। এই সম্মেলন বঙ্গের স্বর্জাপেক্ষা সংখ্যাবহুল শ্রেণীর অর্থাৎ সাক্ষাৎ ভাবে ক্লমিক্সীবীদের হিতার্থে কল্পিড। অতএব ইহার অভিভাষণসমূহ ও প্রস্তাবাবলী বিশেষ প্রণিধানধাগা।

প্রাথমিক-শিক্ষক-সন্মিলনীর অধিত্বেশন

এবার যশোর দ্বেলার বনপ্রামে প্রাথমিক-শিক্ষকসন্ধিলনীর চতুর্থ গণিবেশন হইরা গিয়াছে। শ্রীযুক্ত
মহীতোব রায় চৌধুরী ইহার সভাপতি মনোনীত
হইরাছিলেন। প্রাথমিক শিক্ষা সম্বন্ধে (এবং অন্ত শিক্ষা
সম্বন্ধেও) গবর্মেণ্ট ও স্থানীর স্বায়ন্তলাসন-প্রতিগ্রানগুলি
বে নিজ নিজ কর্ত্তব্য করিতেছেন না, মহীতোব বাব্
তাহার অভিভাবণে তাহা দেখাইরাছেন। তত্তিয়, তিনি
সভাই বলিয়াছেন:—

প্রাথমিক শিক্ষকপ্রশেষ ভরবলা কেনজ মাত সামিশ সাম্প্রকাশন ----

আমাদের দেশবাসীরও ইহা নিরতিশর কলক ও লজ্জার কথা। আমরা শিক্ষিত, সম্রান্ত ও দেশভক্ত বলিরা বাহারা গর্কামুভব করি, আমাদের মধ্যে গাঁহারা ভগবানের ইচ্ছার ঐয়ধ্য, অর্থ ও সম্পৎশালা, তাঁহারা মুখে যাহা বলুন না কেন, অন্তরে অন্তরে প্রাথমিক শিক্ষার প্রয়োজনীয়তা প্রমুভব করেন না। বিশেষতঃ, আমাদের এই বাংলা দেশে নেতৃগণের দৃষ্টি উচ্চ ও মধ্য শিক্ষার প্রতি বে পরিমাণে আকৃষ্ট হইরাছে, প্রাথমিক শিক্ষার প্রতি তাহা হয় নাই।

তাঁহার মতে নিয়লিথিত দাবীগুলি করা উচিত।

- >। বাগাতামূলক প্রাথমিক শিক্ষার অন্তিবিলম্বে প্রবর্জনের দাবী।
- । প্রাথমিক শিক্ষার জয়্প সরকারী ও ডিব্রীক্ট বোর্ড ও মিউনি-সিশালিটির তহবিল হইতে অধিকতর অর্থব্যরের দাবী।
- ত। অধিকসংখ্যক ট্রেনিংস্কুল ছাপন এবং তাহাতে গুরুগণের শিক্ষা লাভ করিবার অধিকতর ফ্যোগের দাবী।
- ৪। নিয়মিত ভাবে এবং বিনাকেশে সরকারী ও বেসরকার। নির্দিষ্ট সাহাব্য প্রাপির দাবী।

দাবী বে করা উচিত, তাহাতে সন্দেহ নাই। কিন্ধ শিক্ষার ব্যয় উত্তরোজ্ঞর বাড়াইবার পরিবার্জ গ্রন্মেণ্ট ভাহা ক্রমার্য্যে ক্মাইয়াই চলিতেছেন।

স্থার আবত্বলা স্বব্রাওয়াদী

স্থার অ'বহুল্লা স্থাওয়ার্লীর মৃত্যুতে বঙ্গদেশ হইতে এক জন বছভাষাবিৎ বিদ্বান্ ব্যক্তির অন্তর্জান হইয়াছে, এবং বিশেষ করিয়া মৃসলম'ন সম্প্রানায় ক্ষতিগ্রস্ত হইয়াছে। তিনি বঙ্গদেশে, ইংলণ্ডেও মিশর দেশে শিক্ষালাভ করেন। কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের সংশ্রবে তিনি অধ্যাপকের কাক্ষ বছ বৎসর করিয়াছিলেন। বঙ্গীয় বাবস্থাপক সভার এবং ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক সভারও সদস্ত তিনি বছ বৎসর ছিলেন।

যৌবন কালে তিনি থেমন বিলাতে বিশ্ব-ইশ্লামিক সমিতি (Pan-Islam Society) স্থাপন করিয়াছিলেন, তেমনই উৎসাহী স্বাজাতিকও (Nationalist) ছিলেন। আমরা ১৩১৫ সালের জ্যৈছির প্রবাসীতে লিখিয়াছিলাম:—

''সেরদ আবদ্ধা অল্ মাসুন মহাওরাদী বয়সে নবীন ইইলেও জ্ঞানে প্রবীণ, নানা বিক্তার পারদর্শী। তিনি লগুনের বিধ্যাত বিধ-মুসলমান-সমিতির দ্বাপনকর্তা। সাহিত্যক্ষেত্রেও তিনি ঝাতি লাভ করিরাছেন। প্রায় এক মাস ইইল পূর্ণিরার চতুর্থ মুসলমান শিক্ষাসম্বন্ধীর আলোচনা সভার অধিবেশন হয়। তিনি ভাহার সভাপতি মনোনাত হন। তাহার অভিভাবণ উৎসাহপূর্ণ, এবং ধর্মভাব, ব্লাভিপ্রেম, স্বন্ধেপ্রেম, ধর্মবিবরক উদার্থা, ও বিভাল্বরাগের একত্র সন্মিলনে উপাদের ইইরাছিল।

ঐ অভিভাষণ উহা হইতে আমরা প্রবাসীর প্রায় এক পূর্গাব্যাপী ছটি অমুচ্ছেদ উদ্ধৃত করিয়াছিলাম। ভাহার করেকটি বাক্য নীচে মুক্তিত হইল।

"I for one am proud to declare that the blood of the Aryans flows in my veins with that of the Semitics. A greater and a wider heritage becomes mine when I feel that I owe allegiance not only to Moses, Christ and Muhammad, but also that Zarathustra, Srikrishna and Gautama claim my homage. The Gita as well as the Gospel of Islam belongs not to this race or that, but to whole humanity."

"The Muslim is often reproached for lack of patriotism. Yet it was the prophet of Islam who declared

patriotism to be a part of religion."

অমূল্যচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়

স্থেনিভাতে যে লীগ্ অব্ নেশুক্ল বা রাষ্ট্রসংঘ আছে, ভাহার সভা সম্দ্র রাষ্ট্রকে চাঁদা দিয়া তাহার বায় নির্বাহ করিতে হয়। ভারতবর্ষকেও চাঁদা দিতে হয়, গদিও লীগে ভারতবর্ষরে ক্ষমতা কিছুই নাই। ব্রিটিশ গবন্মেণ্টের অধীন গবন্মেণ্টরপে ভারত-গবন্মেণ্টের স্থান লীগে আছে। ভারতবর্ষের প্রতিনিধি বলিয়া ধাহারা লীগে প্রেরিভ হন, ভাহার। বস্তুতঃ ভারত-গবন্মেণ্টের আজ্ঞাধীন মনোনীত লোক।

লীগের সভ্য স্বাধীন দেশসকল লীগ হুইতে কোন,কোন রক্ষ স্বিধা পাইয়া থাকে, ভারতবর্গ না-পাওয়ারট মধ্যে।

ইউরোপের স্বাধীন দেশসমূহের অনেক লোক লীগের বড় বড় কর্মচারী। ক্ষাপান যত দিন সভা ছিল, তত দিন আপানেরও এই সুবিধা কিয়ৎ পরিমাণে ছিল। ভারতবর্ষ লীগে টাকা নিতান্ত কম দেয় না, কিন্তু ভারতীয় অতি অপ্পাংখ্যক লোক লীগের কর্ম্মে নিযুক্ত আছে। খুব বড় কাজে কোন ভারতীয় নাই। মাঝারী-গোছ কাজে জন চার-পাঁচ ছিলেন। তাহার মধ্যে স্থার অত্লচন্দ্র চট্টোপাধাারের লাভা প্রীযুক্ত অমুল্যচন্দ্র চট্টোপাধাায় ছিলেন এক জন। তিনি আগে লীগের সংবাদ-বিভরণ বিভাগে (Information Sectiona) কাজ করিতেন, পরে রাষ্ট্রনৈতিক বিভাগে কাজ পান। সম্প্রতি তিনি ছুটিতে ভারতবর্ষে আসিয়াছিলেন। ইহুটাৎ কলিকাতার তিনি যে মোটর গাড়ীতে ঘাইতেছিলেন ভাহার সহিত ট্রামগাড়ীর ধালা লাগার তিনি পড়িয়া গিয়া সাংঘাতিক আঘাত পান। তাহাতেই অবিলম্বে হালপাতালে

তাঁহার মৃত্যু হয়। এই শোচনীয় হুৰ্ঘটনায় তাঁহার অকাল-মৃত্যুতে লীগে ভারতের মৃষ্টিমের কর্মীদের সংখ্যাও কমিয়া গেল। অমূল্যবাবু ভারতবর্ষে থাকিতে বোদ্বাইমে রয়টার ও এসোসিয়েটেড প্রেসের প্রধান কর্মচারী ছিলেন। ব্লেনিভাষ লীগের কাজে তিন জন বাঙালী ছিলেন। এখন ছুই জন রহিলেন। ভাহার মধ্যে ডক্টর প্রীযুক্ত রজনীকান্ত দাস কতকটা বড় কাজ করেন, স্থার বিপিনবিহারী ঘোষের পুত্র ডক্টর শ্রীযুক্ত সুধীক্রনাথ ঘোষ অপেক্ষাক্বত অল্প বেতনের কাজ করেন।

বাণিজ্য-চুক্তি

ব্রিটেনে ও ভারতবর্ষে এক বাণিজ্ঞা-চুক্তি হইয়া গিয়াছে, ব্দগতের লোক ইহা শুনিয়াছে। কিন্তু ইহার অর্থ এই, প্রভ ব্রিটিশ গবনেণ্ট তদধীন ভারত-গবনেশ্রেটের কর্মচারীর দ্বারা ব্রিটেনের পক্ষে স্থবিধাজনক কতকগুলি সর্ত্তে দন্তথত কর'ইয়া শইষাছেন। ভাহার আগে সর্ভগুণা ভারতব্যীয় বাবস্থাপক সভাকে জানানও হয় নাই।

এইরপ আর একটা বাণিজ্য-চক্তির নাম ইণ্ডো-বশ্মা (ভারত-ব্রহ্ম) চক্তি। ইহাও ভারতীয় লোকদের ভারতীয় প্রতিনিধি এবং ত্রন্ধদেশীয় লোকদের ব্রন্ধদেশীয় প্রতিনিধির মধ্যৈ আলোচনার পর উভয় পক্ষের সম্রতিক্রমে স্বাক্ষরিত চুক্তি নহে। ইহাও ভারত-গবন্দেণ্ট ও তদধীন বর্ণা-্গবন্মেণ্টের ম:ধ্য চুক্তি। অর্থাৎ কোন মান্নবের ডান হাত বাঁ হাতের মধ্যে চুক্তি হইলে যেমন হয়, কতকটা সেই প্রকার! সভ্যতায় যত রকমের ভান আছে, এগুলা ভাহারই অগতম।

লগুনে ভারতীয় চিত্রাদির প্রদর্শনী

গাওঁ ডিসেম্বর মাসে শণ্ডনে ভারতীয় চিত্র প্রভৃতি শ্লিতক্লার যে প্রদর্শনী হইয়া গিয়াছে, তাহার সম্বন্ধে বিলাতী কাগজে প্রকাশিত কতকগুলি মত আগে প্রকাশ করিয়াছিলাম। পরে আরও কিছু এইরপ মত হস্তগত হইয়াছে। তাহার কিছু কিছু নীচে উদ্ধৃত করিতেছি।

বর্লিংটন ম্যাগাঞ্জিনের সম্পাদক মি: ট্যাটলক ডেলী টেলিগ্রাফে লিথিয়াছেন :---

What astonishes the English visitor is not any discernible differences between one part of India and another, but an essential unity of aesthetic feeling.

The most surprising impression is that the inhabitants of a country so vast as India have contrived splendidly to "pull together."

The population of India is roughly equivalent that of extra-Russian Europe. But if we were t envisage an exhibition of European art we should tak This exhibition gives the impression very distinctly that, so far as art is concerned, India is much more closely knit than Europe. It is true that Bombay, best seen in College I attended to the concerned to th seen in Gallery I, attracts the occidental eye most insistently, but that may be due to Mr. W. E. Gladstone Solomon's power of organization.

মি: ট্যাটলক বলিতেছেন, যে, যদিও ভারতবর্ষ ক্রশিয়া বাদে সমস্ত ইউরোপের সমান, তথাপি এত বড় দেশে ইহার শলিতকলাস্ট রসে একটি সামঞ্জ ও ঐক্য দৃষ্ট হয়। তিনি আরও বলিয়াছেন, যে, প্রদর্শনীর শ্রেষ্ঠ ছবিগুলি নিংসন্দেহ স্বাধিক ভারতীয় ("The best pictures are undoubtedly the most Indian") |

মনিং পোষ্টের আর্ট-সমালোচক বলেন, এখন ভারতবর্ষে আর্টের মোটামুটি ছটি স্রোত প্রবাহিত। একটিকে বাংলা ও অন্তটিকে বোম্বাইয়ের স**ন্ধে দংপুক্ত বলা** বাইতে পারে। বাংলা ভারতবর্ষের পরম্পরাগত রীতিসমূহের প্রতিনিধি, বোদ্বাই পাশ্চাত্য য়্যানাটমি অনুশালনের মু:লার পরিচয় দেয়া তাহার পর এই সমালোচক লিখিতেছেন, বাংলা দেশ সমগ্র ভারতবর্ষে ভারতীয় শলিতকশার পুনরুজীবনে **ব্যাপু**ত আছে। যথা—

"Bengal also is active in the renaissance of Indian art throughout the Peninsula. The thirty odd years' revival in Calcutta, based upon a continuity of India's artistic tradition, has been inspired by the lead of the Tagore family, and spread by Bengalee artists who removed to other parts of the country. Moreover, young students came from distant places to the School of Oriental Art at Calcutta, and the Institute founded by the Poet Rabindranath Tagore at Shantiniketan."

ভাহার পর এই সমালোচক বলিতে:ছন ---

"Poetry, vigorous romance, and somewhat timid Western realism characterize Bengalee art. . . .

ললিভকলা-সমালোচক মি: ফ্রান্থ রুটর (Mr. Frank Rutter) সুতে টাইম্সে লিখিয়াছেন :---

"The great lesson taught by the current exhibition at the New Burlington Galleries is that Indian Artists are far more fruitfully inspired when following the noble traditions of their own country, than when they seek to imitate the superficial realism of Western academic art....While much from elsewhere also commands our admiration, it is most instructive to compare the work of the two principal schools, that of

Calcutte and of Bombay. For of these two the latter has been far more influenced by European art; and its products have far less charm and distinction than those of the former, which has remained loyal to the Hindu

and Moghal masters of the past.

"The renaissance of Indian art dates from rather more than a generation ago, when, under the sympathetic guidance of Mr. E. B. Havell, the students of the Calcutta School of Art were persuaded to base their practice on the style of India's indigenous masterpieces rather than on that of imports from the West. London became aware of the rise of a new Calcutta School when the work of those two fine artists. Abanindranath Tagore and J. P. Gangooly, was seen in the first London Salon of the Allied Artists in 1908; and it is a pleasure to see he present exhibition. ... name among the exhibitors, and

there is a very beautiful wash drawing, "Devatatina Himalaya" (381), by the poet Rabindranath Tagorer but just as he was one of the earliest leaders of the revival, so Maunindranath Tagore remains the outstane

ing modern master of Bengal,

"Whether on the smaller scale of miniature painting or on the larger scale of such a decoration as Sarada I kil's "Shiya's Grief" (115), the superiority of the traditional linear style is incontestable in this exhibition."

বাঁকুড়াঃ মিউজিয়ম স্থাপনের প্রস্তাব

धमाभिक व्याक्षिमहत्त्व वाय विकारीनिधि महानग्न दाक्छ। জেলাব পরাক্ষতি এথাৎ প্রাণ্ডীন প্রস্তব-মৃতি, ধাতৃ-মৃতি, শিলাবা ধাতুর তৈরি অন্ধশন্ধ, প্রাচীন পুলি প্রভৃতি সংগ্রহ করিয়া রক্ষা করিবার নিমিন্ত বাক্তা শহরে একটি মিউজিয়ম স্থাপনের প্রান্তাব কবিয়াছেন। ভিভাব **প্রাবন্ধটি** 'প্রাদী'র বভ্নান সংখার হলত মুদ্রিত ত্ইল। আমরা তাঁহার প্রস্তাবটির সম্পূর্ণ সমর্থন করি। তিনি যে-সকল প্রাচীন জিনিয়রক কবিতে চাহিয়াছেন, তাহা একবার নষ্ট হটলে বা বাক্ডা হইতে অন্তর অপস্থত হটলে আর পাওয়া ধাইবে না, অগচ সেগুলি বাঁক্ড়া ক্লেলার অমূলা সম্পন। প্রবাসীর প্রান্তর্গণ বিক্রমপুরের একটি গ্রাম অ!ডিয়লের মিউক্লিয়মটি সম্বন্ধে ২৩৪০ সালের ফাল্লন সংখ্যায় প্রাক্ষাশিত সচিত্র প্রবন্ধ পাঠ করি**য়াছেন ও** করিতে পারেন। একটি প্রামে যাহা হওয়া আবগুক বিবেচিত হইয়'ছে এবং যাহা বাস্তব প্রতিষ্ঠানে পরিণত হইয়াছে, তাহা একটি শহরে নিশ্চমই হওয়া উচিত ও হওয়া সম্ভবপর। ২৫,০০০ টাকা কিছু বেশী নয় । বাঁকুড়া জেলার অধিবাসী এবং বাঁকুড়ার ইারাদের জনা কিন্তু এখন অন্তরে বাস করিতেছেন, এরপ অনেক লোক আছেন বাহারা এই টাকা দিতে পারেন।

যাঁহারা বিশেষ সঙ্গতিপত্ন নহেন, ভাঁহার ও ব্লাসাধ্য দান করিলে-ন্যুনকল্পে দান সংগ্রহ করিয়া দিলে, এই কাভটি হ**ইতে** পারে।

> ভারতীয় ব্যবস্থাপক সভায় প্রাফেশিক আসনবণ্টনে ন্যায় ও নিয়মের মভাব

বর্তুমান ভ রতশাসন-আইন অনুসারে ভারতীয় ব্যবস্থাপক সভার ভিন্ন ভিন্ন প্র**াদ্রিগাকে নতগুলি করিয়া সনসো**র ঘাদন দেওয়া হইয়াছে, তাহাতে কোন লাগা নিয়মের এনুব্রিতা নাই। ইহা আমরা অনেক বার দেগাইষাছি। কিন্তু স্থাদশশ্রেমিক সাংবাদিকগণ, এমন কি ভভোধিক পদেশপ্রেমিক কংগ্রেসওয়ালারাও, এ-বিষয়ে দৃক্পতি ক রন ন, है। গ্রন্মেণ্ট ত দুক্পাত করিবেনই না। নুতন শে ভারতশাসন-আইন হইতে গাইতেচে, তাহাতেও প্রদেশ-গুলির মধ্যে আসনকটনে কোন নিয়ম ও তারবিচার দেখা বাইতেছে না । ব্যবন প্রতিনিধি-নির্বাচনে থুব জ্ঞানী, থুব োগা, গুর ধনীর এক ভোট, এবং নিরক্ষর কম গোগা, অল্প-বিত্ত লোকের ও এক ভোট, এবং নগন প্রাপ্তবয়স্ক ব্যক্তিমাত্রেরই এক ভোট (স্বর্ধাং adult suffrage) এই আদর্শের দিকে সব দেশ চলিতেছে (এব কোথাও কোগাও এখনও তাহাই নিয়ম), তথন প্রত্যেক প্রাদশের লোকসংগ্যা অনুসারে ভারতীয় ব্যবস্থাপক সভায় তাহার জন্ত আসনের সংখ্যা নির্দিষ্ট হওয়া উচিত। ইহা আমাদের উদ্ভাবিত একটা. আদর্শ নহে। ইহার বাস্তব দৃষ্টাস্ত ও নজীর দিতেছি।

আমেরিকার ইউনাইটেড, ষ্টেট্সে ৪৮টি ষ্টেট বা রাষ্ট্ আছে। উহার প্রতিনিধি-সভায় (House of Representativesএ) প্রতিনিধির সংখ্যা ৪৩৫। প্রত্যেক ষ্টেট প্রতি ২১০৪১৫ জন অধিবাসীর জন্ম এক জন করিয়া প্রতিনিধি নির্মাচন করিয়া ভাহাতে পাঠাইতে পারে। তদমুসারে নিউ ইয়র্ক ষ্টেট সর্বাপেক্ষা অধিক, ৪৫ জন, প্রতিনিধি পাঠায় এবং ছয়টি ষ্টেট 🗦 জন করিয়া পাঠায়।

নুত্রন ভারতশাসন-বিলে ব্রিটিশ-ভারতের প্রদেশগুলিকে ফেডার্যাল স্থাসেম্ব্রীতে ২৫০ জন প্রতিনিধি নির্বাচনের অধিকার দেওয়া হইবে, এইরূপ প্রস্তাব হইয়াছে, এবং কোন আসন পাইবে, বিলের তপশীলে তাহা লেখা শশুলির অধিবাসীর সংখ্যা আহুদারে এই রাউচিত। কিন্তু তাহা করা হর নাই। যাহা ছে এবং যাহা করা উচিত তাহা আমরা

শকে ভারতদান। জ্য হইতে পুথক করা হইবে ্যা: ছ। তাহাকে বাদ দিয়া ব্রিটিশ-ভারতের কিন্ধগা ২৫,৬৮,৫৯,৭৮৭। ইহাদিগকে ২৫০ জন বিনিরাচন করিতে বলিলে, ১০,২৭,৪৩৯ ৪নীলোকের এক এক জন প্রভিনিধি নির্দাচন করিতে দেওয়া এই নিয়ম অনুসারে কোন্ প্রদেশের কত নিধি পাওনা হয়, এবং বাস্তবিক কোন্পদেশকে কত নিধি দেওয়া হইয়াছে, তাহা নীচের তালিকায় বুইতেছি। গোটা গোটা অক্ষণ্ডশিই ধরা হইয়াছে,

| '•1 | লোকসংখ্যা। | প্রাপ্য আসন। | প্রদত্ত আসন |
|-----------------------------|------------------------|--------------|-------------|
| F194 | · 5 · 4 · 4 • 4 | 8 € | .94 |
| ষ্ব(ই | . 38 2 0.5 | 2.9 | ્ ધૃ• |
| ল বী | | 20 | ৩৭ |
| <u>বাগা-জাবোধ্যা</u> | 868-64:5 | 8.9 | s . |
| ञाव . | >> A 65 | ř | ن |
| বিহার | ⊍ 28 (• ∪ • • | 52 | .50 |
| सना अंतम्ब-दिवर्दार | \$6:01120 | 2% | 24 |
| আ সা ম | ₹ ₩ 655.6? | ь | , • |
| ্ত্র-প্ _{তিম} সংমা | ~3 | ٠. | œ |
| ্ডিব্য | | • | • |
| मका:प्रभ | ` \$664.0 4. | ૭ | * |
| उठिण रहित्र | . ৪৬৩৫০৮ | • | ۵ |
| प्रि ली | ৬ - ৮২ | 2 | > |
| আল্লমার-মেরোআ | ात्र (७०२३३ व्या | c | : |
| | ; ₽. 0x 6 н | • | > |

প্রশ্ন হইতে পারে, যে, ছোট ছোট চারিটি প্রদেশের
বাপ্য আসন যে শৃত্ত (০) ধরা হইয়াছে, তাহা হইলে
চাহার কি প্রতিনিধিশৃত থাকিবে? উত্তর এই, যে, এত
মল্লীর লোককে লইচা এক-একটা প্রন্দ করিয়া পরচ
ভানই কুল। কোন-কোনটাকে সন্নিছিত্র বড় কোন
নান প্রদেশের সামিল করা উচিত। যদি তাহাদের স্বত্ত
ভিদ্ন রাধিতেই হয়, তাহা হইলে তাহাদের করেকটার
নিষ্টিকে তা বান ইটা আন্ত্র দেওয়া যাইতে পারে।
প্রভাবের নিজীরও স্বাছে দেশী রাজ্যসমূহের মধ্যে
নিকগুলি কুলে রাজ্যসমূহকে কুকটি করিয়া আসন দেওয়া
ইয়াছে।

ি কতক**গুলি ছোট ছোট প্রদেশ** নি**লেদের রাজস্ব হইতে** নিজেদের ব্যয়নির্কীহে অসমর্থ। ভারত-সব্দ্রেণ্ট ভাহাদের য**াট**ভি পুরণ করিয়া কাজ চালাইয়া দেন। অর্থাৎ বড় প্রদেশগুলি হইতে—বিশেষতঃ বাংলা দেশ হইতে—রাজন্ম শেষণ করিয়া ভারত-সরকার তাহা এই সব চির-দেউলিয়া ছোট ছোট প্রদেশে অপব্যয় করেন। বড প্রদেশগুলির উপর – বিশেষ করি**য়া বঙ্গে**র উপর—এই এক ভাবিচার। আর এক মবিচার, বড় কোন কোন প্রদেশকে ভারতীয় ব্যবস্থাপক সভায় প্রাপ্য আসন হইতে কতকটা বঞ্চিত করিয়া ছেটি ছোট কোন প্রদেশকে আসন দেওয়া ও বেণা আসন দেওয়া। ইহাতে বড় প্রদেশগুলির মধ্যে সকলের চেয়ে বেলী বঞ্জিত হইয়াছে বাংলা দেশ—ইহার প্রাপ্য অন্ততঃ ১১টি আসন ইহা পায় নাই। অন্ততঃ বলিতেছি এই জন্ত, যে, ভৌ গালিক ও প্রাকৃতিক বঙ্গের মন্তর্গতকতালি জেলাকে বিহার ও আসামের মধ্যে ফেলিয়া বা লার আয়তন ও বক্সের অধিবাসী-সংখ্যা কম করা হইয়াছে। বাওবিক বাংলা দেশ যত বড তাহাকে তত বড় পাকিতে দিয়া তাহার অধিবাসীসমষ্টিকে ত্যাযাসংখ্যক প্রতিনিধি দিশে ভারতীয় বাবস্থাপক সভায় বঙালীদের নে প্রভাব হইতে পারিত, বাঙালীদিগকে ভাষা হুইতে বঞ্চিত রাখা হুইয়াছে।

এই প্রসঙ্গে বাহা লিখিত হইল, বঙ্গের নেতৃবর্গ বা বঙ্গের সাংবাদিকগণ তাহার থালোচনা করিবেন, এরূপ আশা কম। এবাঙালীরা—বিশেন্ত: বোদাইওয়ালার:—ইহাতে মন দিবেন না। বোদাইয়ের যত আসন পাওনা, বর্তমান ভারতীয় বাবস্থাপক সভাতে তদপেকা বেশী আসন বোদাইয়ের আছে। নৃত্ন ভারতশাসন-বিলে বোদাইয়ের কান্য প্রাপ্ত আসন বেশী দেওয়া ভাইয়াছে।

অবিচারগৃষ্ট ও পক্ষণাত্তৃপ্ট এই পাকরে আসন-বর্ণনের কারণ কি : অভিপ্রায়ই বা কি ? থে-সব প্রাদেশকে বঞ্জিত করা হইয়াছে, তথাকার অধিবাসীদের মূল্য কি কারণে কম বিবেচিত হইল ?

উড়িষ্যার বাঙালী, এবং বঙ্গের বাঙালী ও প্রবাদী-বঙ্গসাহিত্য-সম্মেলন

নিন্দ্রজিত মন্ত্রাটি 'দ্রাবিনী' ইইতে উদ্ধৃত।

উড়িব্যায় বাজালীর ছরবস্ত'—কলিকাভায় প্রবাসা-বঙ্গসাহিত্যসম্মেলন হইলা গিলাছে: উডিলায় বং বাজালীর বাস কিন্তু উড়িব্যাবাসা বাজালাকের মধ্যে এই সম্মেলনে যোগ দিবার জন্ম ভেমন উৎসাহ
দেখা বায় নাই। সিংহল, রহ্ম প্রভৃতি ফ্লুর স্থান হইলত বাজালা
কাসিয়া এই সম্মেলনে যোগ দিয়াছে, কিন্তু বাজালার পার্ন্ত প্রকালন যোগ দিয়াছে, কিন্তু বাজালার পার্ন্ত প্রকালন মধ্যে অন্তর্ভুক্ত উড়িন্যার প্রবাসী
বাজালাদের মধ্যে এই সম্মেলনে বালা দিবার উৎসাহ নাই কেন ?
উড়িয়ার পরীতে পর্যান্ত বহু বাজালী বাস করে। এমন সকল প্রী
আছে মুলায় বাজালীর সংখ্যা উড়িয়ালিংগর অপেকা স্বিক। ভাহাদের
প্রায় স্কর্লই বাজালী ভাষায় কথাবার্ত্তা বলিয়া পাকে। কিন্তু



"मछाम्' निवम् स्येक्षस्य । अनासमे चिर्म सर्वेशैंदनेनै केछाः"

৩৪শ ভাগ ২য় খণ্ড

CEE, 5085

৬র্স সংখ্যা

সাঁওত্বাল মেয়ে

- রবীজ্ঞান্যুপ ঠাকুর

যায় আসে সাঁওতাল মেয়ে চ্টান কৰিছে। শিমূল গাছের তলে কাকর-বিলালে পুল বেজেন এ ওড় ওক্সাঃ মোটা শাড়ি আঁট কারে যিনেনিটে ডাফু করেনা দেহ।

বিধাতার ভোলাশ্বন কারিগর কেহ কোন্ কালো পাখীটিরে গড়িভে গাঁড়িভে

শ্রাবণের মেবে ও তড়িও বিশ্বস্থান কর্মান ক্রামান ক্রামান

ওর হাট পাখা ভিতরে অণ্ট আহৈ ট্রিন, লঘু পারে মিলে গেছে চ্লু হ পউষের পানা হ'ন শেষ,
উত্তর বাতাদে লাগে দক্ষিপ্তের কচিং আবেশ
কিন্তুল পাতা অলমল করে
শীতের রোদ্ধরে।
পাত্নীল আকাশেতে চল উড়ে যায় বহুদ্রে
আমলকা-তলা ছেয়ে খনে পড়ে ফল,
জোটে দেখা ছেলেদের দল।
আঁকবিলা বনপথে আলোছায়া গাঁখ

অকস্মাৎ ঘূরে ঘূরে ওড়ে ঝরা পাতা
সঁচকিত হাওয়ার খেয়ালে।
ঝোপের আড়ালে
গলা-ফোলা গিরগিটি স্তব্ধ আছে ঘাসে।
ঝুড়ি নিয়ে বার-বার সাঁওতাল মেয়ে যায় আসে।

আমার মাটির ঘরখানা

আরম্ভ হয়েছে গড়া, মজুর জুটেছে তার নানা।

ধীরে ধীরে তিতালে গেঁথে

রৌদ্রে পিঠ পেতে।

মাঝে মাঝে

স্থানুরে রেলের বাঁশি বাজে;

প্রহর চলিয়া যায় বেলা পড়ে আসে,

ঢং ঢং ঘন্টাধানি জেগে ওঠে দিগন্ত আকাশে।

আমি দেখি চেয়ে,

সক্ষোচে ভাবি এ কিশোরী মেয়ে

পল্লীকোণে যে ঘরের তরে

ক্টিত দেহে ও অস্তরে



রবীক্রনাথের পত্র

8

e**ল্যাণীয়ে**ষ্

অঞ্জিত, তুমি আমাকে যে প্রশা করেছ তার উত্তর আমি পূর্বেই দিয়েছি। একথা আমি ক্রমশই স্পষ্টতর ক'রে বুঝতে পারছি, ভালো নামক জিনিঘটা খামাদের পক্ষে একটা কথার কথা যতক্ষণ তা আমাদের পক্ষে সভা না হয়। মতএব আমরা ভালোকে চাই বনলে কিছুই বলা হয় না, আমরা সত্যকে চাই এইটেই খাঁটি কথা। ভালোর পতি লোভ ক'রে সভ্যকে হারানো মাহুযের পক্ষে বড় হুর্গতি। বস্তুত পৃথিবীতে যথার্থ সৎশোকের এই একটা মস্ত বিপদ্ আছে। তাঁর**া ভালো**র প্রতি অত্যন্ত **লুক হ**য়ে নিজের সত্যের প্রতি অন্ধ হয়ে পড়েন। তাঁরা বাইরের দিকের ভালোটাকেই সমুজ্জল ক'রে দেখেন, নিজের ভিতরের দিকের ভালোটা দেখতে পান না। যারা bull's-eye লঠন নিয়ে দেখে তারা নিজের চারি দিকটাকে অমকার ক'রে দেখে — সেটা বিশেষ কোনো একটা প্রয়োজনের দেখা হ'তে পারে কিন্তু সেটা স্বাভাবিক দেখা নয়। আমরা কোনো উপায়েই অন্তকে পেতে পারি নে ;—অন্তকে দেখতে পারি, ভালবাসতে পারি, নিজেকেই পেতে পারি। ভা.লাকে বাইরে দেখতে পাওয়ার একমাত্র সার্থকতা এই বে, নিঞ্চের ভালোর সঙ্গে তার সামগুল্ঞ সাধন করা যায়। নইলে তাকে আত্মদাৎ করতে যাওয়া চুরি করতে যাওয়ার মত। -চোরাই মাল আপনার নয় এবং দণ্ডস্বরূপে আপনারটাকে খোয়াতে হয়। নিজের সত্যের সঙ্গে সকল স:তার যোগ আছে, নিজের ভালোর সঙ্গে সকল ভালোর আখীয়তা এইটেকে ঠিকমত অনুভব করতে আথাবদাননার হাত থেকে ছুটি পাওয়া যায়। অবশু নিজের সত্যকে জানা অৰুদ নিশ্চেষ্ট ৰোকের কম্ম নয় কিন্তু বস্তুত সেইটেই সবচেয়ে কঠিন সাধনার কর্ণ মা আপনার -ছেলেকে বেমন আপনার প্রাণ দি 'व किन्द्र অন্তের ছেলেকে কোলে তুলে নিলেই হ

নিক্ষের সভ্যের দায়ই স্বতেয়ে বেণী। তেমনি নিক্ষের সতোর আনন্দেরও তুলনা নেই। इত্তিম কর্ত্ত:বার দোহাই দিয়ে মাসুষের নিজের ভিতরকার সত্যকে অবরোধ করতে আমি অত্যস্ত সঙ্কোচ অনুভব করি। নিজের জোরকে অন্তের প্রতি প্রয়োগ করাই দৌরাখ্যা, অন্তের জোরকে জাগিয়ে তোলাই যথার্থ হিতৈযিতা। তোমার যেথানে কান্ধের ক্ষেত্র সেধানে তুমি যেটা সব.চয়ে ঠিকমত করতে পার সেই দিকেই প্রাণপণে ঝোঁক দিয়ো, অন্ত কিছু যতই ভালো এবং যতই আবশুক হোকু না তোমার তাতে কিছুমাত্র দায়িত্ব নেই। এইটেই যথার্থ নির্শোভ এবং নিরাসক্ত ভাবে কর্ম্ম করা ; এই ভাবটি ঠিক্সত রক্ষা করতে পারলেই কর্ম্মের দাসত থেকে পরিত্রাণ পাওয়া হায়। স.তার কাছেই আমি ধরা দিতে পারি, তাতেই আমার আনন কিন্তু কর্মের কাছে নয়;—সভোরই প্রকাশক্ষেত্র ব,লই কম্মের গৌরব, নইলে তার মত হরিণবাড়ি জগতে কোথাও আছে গ

আমি সম্প্রতি প্রসটারশায়ারে এক গণ্ডগ্রামের রুষকের থবে বাস করছি। নিকটে আর এক বাড়িতে রটেন্টাইন থাকেন। বেশ আনন্দে আছি। শিশু থেকে একটা আঘটা কবিতা তাঁকে ভক্জমা ক'রে দিহ—তার ভাগো শাগে। ইতি ৩১ প্রাবেণ ১৩১৯

ভোমাদে শ্রীরবীক্রন

m mar t

অঞ্জিত, আমরা আপ করব। কথা ছিল, ত পরে রওনা হব—ে কিন্তু আমার মন শাস্তি চাচ্ছে। আমি নিজের লেথা
নিজের আলোচনা নিয়ে আর পাকতে পারছি নে—এপানকার
বন্ধনজাল কাটিয়ে আবার একবার মৃক্তিলাভ করবার অক্তে
সমস্ত মন ব্যাকুল হয়ে উঠেছে। আমি শিলাইদহের
নির্জন ঘরে বসে গীতাঞ্জলি তর্জনা করছিলুম সে আমার
আপন মনের আনন্দে করছিলুম। সেই বিজনতা থেকে
একেবারে মান্তবের ভিড়ের মাঝগানে এসে পড়েছি—
এপন যা কিছু করছি সে তো আনন্দের কাজ নয় সে
ভাগিদের কাজ। সে আমার বেশি দিন পোযাবে না।
যতই বেতন খোরাক পাই না কেন আমি জবাব দিলুম।
বরাবর নির্জন অবকাশের সমৃত্রে জাল ফেলাই আমার
বাবসা—জাল যদি গুটিয়েও বসে থাকি তরু সমৃত্র আছে—
সেই আমার সবচেয়ে বড় লাভ। এপানে আমার বন্ধুরা
আমাকে টেনে রাগতে চান—কিন্তু কিছুতে আমাকে ধরে
রাগ্তে পারবে না।

তুমি ছাড়া এবার আর কারো কাছ থে:ক চিঠি পাই নি।
বোধ হর আনাদের জর্মনি যাবার শুজবে তোমরা ছুটি
নিয়েছ। কিন্তু শরীরটা কিছু বিগড়েছে। ক্ষিতীশ সেন
নামক এখানকার এক জন ছাত্র "রাজা" তর্জ্জনা করছেন।
তর্জ্জনাটা বোধ হচ্ছে ভালই হবে। বিদ্যালয় সম্বাদ্ধ তোমার
লেগাটা আমেরিকার গিয়ে ছাপাবার ব্যবস্থা করব ঠিক
করেছি। ইতি ৩০ আখিন ১৩১৯

ভোমাদের শ্রীব্রনাথ ঠাকুর

1

স্থার

র্থান্তের পথ অন্সরণ করতে চললুম। এবার
ওপারের ঘাটে পাড়ি দেওয়া যাছে।
রথরেখার অন্বর্তন করতে করতেই
—কিন্তু বোধ হচ্ছে ঠিক সে রকমটি
রেছেন আবার আমার অর
মামার অন্ত বই ছাপ্বার সময়
ব সঙ্গে দেখা হয়েছিল।
লেগেছে। ওটা

তিনি তাঁদের আইরিশ থিয়েটারে অভিনয় করবার জন্তে উৎস্থক হয়েছেন। এথানকার এক জ্বন ছাত্র "রাজা" তর্জ্জমা ক'রে দিয়েছেন, সেটাও কালরাত্রে ইয়েইসকে দিয়েছি, আমার বিখাস এইটেই আমার সকল লেখার চেয়ে এঁদের ভালো লাগবে। কাল সকালে এক জন ফরাসী গ্রন্থকার আমার সঙ্গে দেখা করতে এসেছিলেন। তিনি প্রুফে আমার ভর্জমাণ্ডলো পড়ে উত্তেন্ধিত হয়ে আমার কাছে এগেছেন। তিনি বললেন, ভোমার মতো কবির জক্তে আমরা অপেক্ষা করে আছি। আমাদের লিরিকো আমরা কেবল accidental ক নিয়ে বৃদ্ধ হয়ে আছি—তোমার লেখা দেশকালের অতীত, চলো তুমি আমাদের ক্রান্সে চলো, সেগানে ভোমাকে আমাদের প্রয়োজন আছে। ইত্যাদি। ইনি আমার এই তৰ্জ্জমাণ্ডাল ফরাসীতে অনুবাদ করবার অনুমতি নিয়ে গেলেন। এঁদের এই উৎসাহ দেখে আমি অত্যন্ত বিশ্বয় বোধ করি-এ আমি কথনো কল্পনা করতেও পারতুম না। ব্ৰজেন্দ্ৰ বাবুকে কেম্ব্ৰিজে কিম্বা লণ্ডনে কোনো কাজ নিয়ে এখানে আবদ্ধ করবার জন্তে আমরা খুব চেষ্টা করছি। একটা কিছু জুটবে ব'লে মনে করছি। এদেশে উনি থাকলে আমাদের ভারি উপকার হবে।

বৈজ্ঞানিক পৃস্তকগুলি এত দিনে নিশ্চর তোমাদের হাতে গিরে পৌচেছে। সেটা খুব একটা ভারি পার্মেল হয়েছে—সেই জন্তে পেতে দেরি হবার সম্ভাবনা আছে। কিন্তু পেলে যেন তোমাদের বিদ্যালয়ের কাজে লাগাতে পারো। ইতি হরা কার্ডিক ১৩১৯

> তোমাদের শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

Now York ২৮ অক্টোবর ১৯১২ ১২ কার্ত্তিক ১৩১৯

কল্যাণীয়েষু

অভিত, আ নিলাটিক পার হয়ে এ-পারে এসে কাল পৌচেছি। থম ক্য়দিন যে-রক্ম অশাস্ত ছিল এমন আমি দেখি নি। এই দেহপাত্রের मधा ८१ हेकू की वन हिन छाटक वी कानि निष्म निष्म छात অধ্বেকটা প্রায় বের ক'রে ফেল্লৈ—বেটুকু বাকি ছিল ভাতে কেবৰমাত্র বেচে থাকা চলে, ভার অভিবিক্ত আর কোনো कांकरें हरन ना। जनकारंत्र रहा है का विस्तत शांहात्र मरश অনাহারে পড়ে পড়ে কেবল ভাবছিলুম বরুণদেব করুণ হবেন কবে। মনে মনে মহাসমুদ্রকে একটা চতুর্বপ্রদী মানত করেছিলুম। কিন্তু মহাসমুদ্র ম'নবচরিত্রের জর্মণতা বোধ হয় অবগত খাছেন। তিনি জানেন যদি নিতার্ভ সহছে তিনি আমাদের পার করেন তা হ'লে পারে এ.সই তাঁকে ভ্লতে আর বিলম্ব হবে না কিন্তু খুব কদে একবার দোলা দিয়ে भि**(लर्ट अक्षः क्रांल** मिष्ठा এकেবারে মুদ্রিত হয়ে পাকবে। কথাটা মিথ্যা নয়--এবার আমাদের আট্লাণ্টিকের এই ঝুলনবাত্রা আমরা হহ-দীবনে কথনো ভূপতে পারব না। কিন্ত একটা বড় অ.শ্চর্য্য জিনিব এবার দেখনুম— শরীরে যথন কোগাও কিছুমাত্র আরাম নেই এবং চারিদিক ব্যন স্থীপ্রপে বদ্ধ—তথন নিঞ্চের অস্তরতম শক্তি গেই সঙ্গীৰ্ণতার কোণে একটুথানি ছিদ্ৰপথ দিয়ে অমৃত উৎদ উৎদারিত ক'রে দিয়েছিল। কতদিন এবং কভরাত্রি আমার রোগশধ্যা যেন এননীর কোল হয়ে আমাকে গ্রহণ করেছিল-সমন্ত মুক্তি জগতের আনন্দ ক্যাবিনের ভিতরটিতে এসে আমার থবর নিয়ে গেছে। কী স্থগভীর শান্তি, সান্ত্রনা এবং আরামের দ্বরা আমার শরীরের সমস্ত ছংথ গ্লানি একেবারে সমাবৃত হয়ে গিয়ে িল সে আমি বলতে পারি নে। আমার চতুদ্দিক অতাস্ত স্থীৰ্ণ ছিল বলেই আমি এমন একটি বৃহৎকে এমন সত্য-ভাবে উপদান্ধি করতে পেরেছিলুম। কেননা যে বৃহৎটি সভা, কোনো বাহ্য সঙ্গীৰ্ণভাষ ভাকে ছোট করতে পারে না—ভূমাতে আয়তনের ছারা ছোটও হ'ল না বড়ও হ'ল না। আমার সেই অবরুদ্ধ ক্যাবিন্টার মধ্যে সমস্ত জগৎকে ধরেছিল—আমার কোনো অভাব হয় নি।—আমি বেশ দেখতে পেলুম বঞ্চিত হলেই যথাৰ্থ রূপে পাওয়া যায়—হার নোর ভিতর দিয়ে পাওয়ার মতো নিবিড় পাওয়া আর কিছুই নেই। সভ্য মাঝে মাঝে ছল ক'রে মুগ ঢাকা দেন, গিয়ে দেখা তথন ব্যাকুল হয় তাঁকে জড়িয়ে যায় তাঁকে হারাবার জো নেই। াররাত্তে

যথন বাই র ঘন মেন বৃষ্টি ও কশান্ত বাতাস তথন আমি গাছিলুম "জননী আমার দাঁড়াও এই নবীন অরুণ কিরণে।" তেমন নবীন অরুণ কিরণ তো আমি বোলপুরর মাঠের ধারে বদেও এমন ক'রে পাই নি। অরুণ কিরণকে পাবার জল্যে যথন সামনে অরুণ কিরণকে সাজিয়ে রাথবার কোনো দরকার হয় না তথনই ভীবন ধন্ত। ছবির গায়ের উপরে ছবির নাম লিখে দিতে হয় নিতান্ত ছেলেমান্থদের জন্ত নাইরের এই উপকরণভলো তেমনি নাম শেখা মাত্র—ওভলো না দেখলে আমরা মুচ্রা কিছু বলতে পারি নে—কিন্তু অকর তো জিনিয় নয়।

শ্রীক্রনাথ ঠাকুর।

New York ১৯ অক্টোবর ১৯১২

Š

विनय नभक्षात्र भूक्षक निरवनन

দেবাস্থরে মিলে যথন সমুদ্রমন্থনে লেগেছিলেন তথন মহাসমুদ্রের পেটে থা-কিছু ছিল সমস্ত তাকে নিঃশেয়ে উদগার করতে হয়েছিল। দে সময়ে তার যে কীরকম পীড়া উপস্থিত হয়েছিল সেটা তিনি মহাভারতের বেদব্যাসকে কোনোদিন বোঝাবার সুযোগ পেয়েছিলেন किना कानि त किन्न 'वह वर्डमान करिटिक थ्रव म्लडे ক'রে বুঝিয়ে দিয়েছেন। আমার জঠর তাঁর জঠরের মতো এমন বিরাট নম্ন এবং ভার মধ্যে বছমূল্য জিনিষ কিছুই ছিলানা কিন্তু বেদনার পরিমাণ আয়তনের পরিমা উপর নির্ভর করে না; সেই জন্তে ৯তলান্তিক 🕆 সময় তার অপার দুংখ অল্লকালের মধ্যেই নিয়েছিলুম। আমরা যে নিতান্তই ম[া] বুঝতে বাকি ছিল না। এখন কেব জল আর ছেবব না গো দৃতী, সং ষ্টীমারের বংশীধননি যত পোটে মন যাচেছ না। ডাঙায় আছে। দিনরাত্রিন' থেকে আলগা হলে ভার ঝুমুঝুমি

নাড়া দিয়েছিল, ভেবেছিল কবির প্রেটের মধ্যে ত্রিপদী চতুপদী বা-কিছু আছে সমগুর মি.ল একটা ইটুগোল বাধিরে তুলবে — কিন্তু উল্টে পাল্টে খানাতক্সাসী ক'রে জঠরের মধ্য থেকে ছন্দোবন্ধের কোনো সন্ধানই যথন পাওয়া গেল না তথন মহাসমূদ্র আমাকে নিম্বুতি দিলেন।

সুরুবের বাড়িটা পাওঁয়া গেছে। পুর্বেই নিখেছি আপাতত সেটা ইশ্ব.লর কাজে নাগিরে দিয়ো। সিংহ নিখেছেন তার আসবাবগুলো আপাতত ঐবানেই রেথে ব্যবহার করতে। কিন্তু পাছে লোকসান হ'লে তার দাম ধরে বসেন এই আমার আশকা হয়। দ্বিপুকে জানিয়ো

তিনি যেটা ভালো বোঝেন তাই করবেন। আস্বাবের একটা ফর্ল ক'রে বুঝে নিম্নো এবং তার একটা কাপি আমাকে পাঠিয়ে দিয়ো। স্ফুলের বাগানে বিদ্যালয়ের জন্যে তরীতরকারী উৎপন্ন করানো যেতে পারে কিনা ভেবে দেখো—অবশ্য ফসলের দামের চেয়ে চামের দাম বেশি না পড়ে। অস্তুত ফলের গাছের গোড়া খুঁড়ে এহবেলা সার দিয়ে রাখলে নিশ্চয়ই ফল পেতে পারবে। ইলিনয়ের ঠিকানায় পত্র লিখো। ইতি

ভোমাদের শ্রীরবীন্দ্রনাথ ঠাকুর

মৈথিল কবি গোবিন্দদাস ঝা

গ্রীনগেন্দ্রনাথ গুপ্ত

বিদ্যাপতির পদাবলী সক্ষন ও সম্পাদন করিবার জন্ত ত্তিশ বংসর পূর্বে আমা.ক মিথিলার যাইতে হয়। মৈথিল কবিতাসমূহ অনুসন্ধান করিবার সময় জানিতে পাই যে, বাংলা দেশে প্রচলিত বৈষ্ণব পদাবলীর মধ্যে যেগুলি মৈথিল ভাষার রচিত এবং গোবিন্দদাসের ভণিতা সম্বলিত সেগুলি স্বাবাসী গোবিন্দদাস ঝার রচনা। আমাদের দেশে স্থিল ভাষা বিশ্বত হওয়াতে ঐ সকল পদ অভান্ত ক্ত হইয়া গিয়াছে, এমন কি স্থানে স্থানে

গিলা বন্ধীয়-সাহিত্য-পরিষদে এই
রি। উহার মর্ম্ম পরিষদের

কৈ। সে সময় আমার

ম্মানাই, কোন সাম্বিক

শাত হয় নাই।

বি গোবিন্দদাস

করি এবং উহা পরিষ্থ পত্রিকায় প্রকাশিত হয়। ত'হার পর কলিকাতা পোয়েটি, দোসাইটী.ত ইংরেজীতে আর একটি প্রবন্ধ পাঠ করি, এবং সেই প্রবন্ধ পাটনা-বিশ্ববিদ্যালয়ে পঠিত হয়। 'মডার্ণ রিভিউ' পত্রে উহা প্রকাশিত হয়। এবার আমার মতের বিস্তর প্রতিবাদ হয়। বঙ্গীয়-সাহিত্য-গরিষৎ-পত্রিকায় ও অন্তান্ত পত্রে আমার সিদ্ধান্ত ভ্রাস্ত এই এভিযোগ প্রকাশিত হয়। প্রতিবাদীরা বলেন, ব্ৰশ্ব্ৰিতে রচিত পদসমূহ শ্রীখণ্ড বুধরী নিবাসী গোবিন্দ-দাদের লেখা। অপভংশ মৈথিল ভাষার কল্পিত নাম ব্ৰহ্মবুলি। এই গোবিন্দদাস জাতিতে বৈদ্য ছিলেন ও তাঁহার উপাধি ছিল কবিরাছ---চিকিৎসক অর্থে নয়, শ্রেষ্ঠ কবি অর্থে। এই মতও কল্পিত ও আরুমানিক। বাঁছারা এ-কথা লিখিয়াছিলেন তাঁহারা বুহদাকার 'পদকল্পতরু' আদ্যোপাস্ত পাঠ করিয়াছেন কিন্দ সন্দেহ। গোবিন্দদাস ্ৰ ছিলেন ভাহাও বোধ হয় জানেন নামে কয় জন বৈ গোবিন্দদাসের রচিত তাহা কোন-না। কোন । যায় না। বৈষ্ণৰ কাব্যের ছইটি মতে নি

প্রধান সঙ্কলন, 'পদকল্পতরু' বৈষ্ণবদাস ক্লত সঙ্কলিত ও 'পদসমূদ্য' রাধামোহন াকুর সঙ্কলন করিয়াছিলেন। পদকল্পতরু:ত টীকা নাই, পদসমূদ্রে সংস্কৃত ভাষায় টীকা আছে, কোন করির কোন পরিচয় নাই। গোবিন্দদাস নামে পাঁচ হ্বন করি ছিলেন, কোন কোন পদের ভণিতায় করির উপাধি আছে, বেমন গোবিন্দ ঘোষ। অক্ষয়চন্দ্র সরকার কর্ত্বক সম্পাদিত প্রাচীন কার্যসংগ্রহে গোবিন্দদাস নামধারী সকল করির পদ একত্রে প্রকাশিত হইয়াছে, কেবল একাল্প পদ নামে স্বতন্ত্র সঙ্কলন আছে। এগুলি এক জন করির রচনা, ভাষা বাংলা, গ্রীপণ্ডের গোবিন্দদাসের হইতে পারে। কিন্তু এ-কথাও অনুমান মাত্র, প্রামাণিক নয়। গোবিন্দ ঘোষ, গোবিন্দ দত্ত, গোবিন্দ চক্রবর্তী, কে কোন্ পদ রচনা করেন, নিঃসংশল্পত ভালা স্থির করিবার কোন উপায় নাই। ক্ষেকটি পদের ভণিতায় করির পদবী আছে, নচেৎ সর্ব্বিত্রই কেবল গোবিন্দদাস নাম পাওয়া গায়।

বে-সকল প্রতিবাদ প্রকাশিত হয় আমি তাহার কোন উত্তর দিই নাই। দিবার কোন প্রয়োজন ছিল না। বাহারা প্রধান কবি গোবিন্দদাসকে মৈথিল স্বীকার করিতে চাহেন না, তাহাদের প্রধান উদ্দেশু বাঙালী জাতির গোরব রক্ষা করা, কিন্তু সভ্যের অপেক্ষা মহন্তর কিছুই নাই এবং সভ্যের অনুসন্ধানে বংহা জানিতে পারা বায় তাহা গোপন করা অসম্ভব। আমি বৈষ্ণব কবিতা অল্পস্থন্ধ দেখিয়াছি, কবিরাজ গোবিন্দদাসকে সাধ করিয়া মিথিলাকে প্রত্যাপণ করি নাই। বিদ্যাপতি-সম্পাদনকালে আমাকে অনেক পরিশ্রম করিয়া মৈথিল ভাষা শিষিতে হয়। মৈথিল গোবিন্দদাসের ভাষা, তাঁহার শক্ষ-কৌশল উদ্ভমরূপে বৃথিতে পারিলে তাঁহাকে কোন মতেই বাঙালী বলিতে পারা বায় না। বিশেষ যথন তাঁহার রচনা আমি মিথিলায় দেখিয়া আসিয়াছি এমন অবস্থায় ধিধার আর স্থান নাই।

এ-কণা কি সকলের জানা আছে যে কিছুকাল পূর্দে বিদ্যাপতিকে সকলে বাঙালী বলিত ? বলিবারই কথা। তাহার অপূর্ব পদাবলী বাংলা দেশ ছাড়া আর কোগাও প্রকাশিত হয় নাই। ১২৮০ সালে জগদ্ধ ভদ্র 'মহাজনপদাবলী' নামে বৈষ্ণব কাব্য প্রকাশ করেন। তাহাতে তিনি লেখেন বিভাগতির নাম ছিল বিভাগতি ভট্টাচার্য্য এবং তিনি যশোহরনিবাসী। ১২৮২ সালে ভৈট্ট মাসের 'বঙ্গদর্শনে' রাজক্বক মুখোপাধ্যায় জনেক প্রমাণ সংগ্রহ করিয়া বিভাগতিকে মিথিলাবাসী নির্দেশ করেন। সার জর্জ গ্রিয়রসন মিথিলা হইতে বিভাগতির কতকণ্ডলি পদ সংগ্রহ করিয়া ইংরেজীতে অনুবাদ করেন। মিথিলাবাসীরা নিজের কর্ত্তব্যে উদাসীন। বাঙালীর বড় গৌরবের কথা যে, বিভাগতি ও গোবিন্দদাস থাকে এত উচ্চ আসন প্রদত্ত হুইয়াছে।

মিথিলায় মৈথিল সাহিত্যে এখন অনুরাগ হইয়াছে।
লহেরিয়াসরায় দরভঙ্গায় মৈথিল সাহিত্য-পরিষদ স্থাপিত
হইয়াছে। বিভাপতি যন্ত নামক মুদ্রায়ন্ত এবং প্রাচীন
মৈথিল লিপির ৯ক্ষর ঢালা হইয়াছে, কয়েকথানি গ্রন্থও
ছাপা হইয়াছে। গত বৎসর বিদ্যাপতির জয়ন্তী-উৎসব
হইয়াছিল, সভাপতি হইয়াছিলেন দরভঙ্গার মহারাজা।
পাটনার বিশ্ববিভালয়ে মৈথিল ভাষার শিক্ষক মহারাজার বায়ে
নিযুক্ত হইয়াছেন। বারাণসী হিন্দ্ বিশ্ববিভালয়ে এই ভাষা
পঠিত হইতেছে।

গোবিন্দাস ঝার সম্বন্ধেও বিবাদ মিটিয়া গিয়াছে।
বিশ্বাপতি যত্র হইতে 'গোবিন্দগীতাবদী' পুস্তক প্রকাশিত
হইয়াছে, সঙ্গদায়িতা দরভঙ্গা রাজকীয় পুস্তকালয়ের অধ্যক্ষ
শ্রীমগুরাপ্রসাদ দীক্ষিত। বে-সকল পদ এই পুস্তকে সঙ্গলিত
হইয়াছে তাহা বঙ্গদেশেও পাওয়া যায়। সঙ্গলনকার আমার র প্রবন্ধাদির উল্লেখ করিয়া কিছু কিছু উদ্ধৃত স্
কিন্তু তিনি জানেন না যে ত্রিশ বৎসর পূর্কে
করিয়াছিশাম যে গোবিন্দদাস করিরাজ মিনি

'গোবিন্দগীতাবলী' সম্পূর্ণ গ্রন্থ নয় ! পদাবলী আমি সম্পাদন করি, গো

বাংলা দেশের একটি শিক্ষা-প্রতিষ্ঠান

গ্রীঅনাধনাপ কমু

আমাদের দেশে শিক্ষাসংস্কারের কণা তুলিলেই এক দল লোক বলেন বর্তমান অবস্থার আমূল পরিবর্তন না করিলে কোন ভাল কাজই আমাদের বিভালয়ে করা স্ভবপর নহে। তাঁহাদের মতে পরীকাবিধি, পরিদর্শন-পদ্ধতি ইত্যাদি বাহিরের শাসন আমাদের শিক্ষা-প্রণাশীকে কঠিন নাগপাশে বাধিয়া রাধিয়াছে যে সেধানে উন্নতির ্যে-কোন চেষ্টা করিলেই বার্থ হইতে হইবে। ক্পাটা আংশিক হিসাবে ঠিকই বটে, কিন্তু অনেক দিন হইতেই আমার মনে সক্ষেহ ছিল যে সেটা হঃত প্রাপুরিভাবে সভা না-হইতেও পারে। এই জন্তই অনেক কাল ধরিয়া সহান করিতেছিলাম এমন কে'ন শিক্ষায়তন মেলে কিনা যেখান দেশের সর্বাত্ত প্রচলিত সাধ'রণ শিক্ষাপ্রণাদী অনুসবণ করিয়াও তাহ'রই মধো ন্তন কিছু গড়িয়া তুলিব'র চেটা হইতেচে, ঘেষানে বাহিরের সমস্ত শাদন স্বীকার করিয়াই শত বাধাসবেও বিস্থালয় নূতন প্রাণসঞ্চার করার প্রয়াস চলিতেছে এবং সেই প্রাণবেংধন-তপস্তা কিছু পরিমাণ সার্থকতা লাভ করিয়াছে। পুরাতন প্রণালীকে সম্পূর্ণভাবে বর্জন করিয়া ন্তন শিক্ষাপ্রণালী গড়িয়া তুলিবার চেটা আমাদের দেশে কোন কোন স্থানে হইয়াছে এবং সে চেটা কোণাও -কাল্'ও হয়ত অ'-শিকভাবে সফল হইয়া**চ**; কিন্তু চন্তা নানা কারণে স্বভ'বতই দেশবাংপী হইতে গবং এই নৃতন ধরণের বিভালেরগুলি দেশের অতি াত্ররই অভাব মিটাইতে পারে। এই দস্ত প্রফোকন যাহা সাধারণ হটয়াও অস'ধারণ,

প্রচলিত শিক্ষা-প্রণালী স্বীকার করিয়াই ক্ষান করি তছে এবং সেই সংস্কৃত 'র ধীরে দে**'শর শিক্ষার ক্ষেত্রে** পুশস্ত করিয়া দি:তছে। বি ডাই াই, সকলেই আবার বিজ্ঞোহ করিয়া সফল হয় না ; সে শক্তি বাঁহার আছে তিনি সে পথ অবশ্বন করিবেন, কিন্তু দেপথ প্রভৃততমের পথ নহে। দেশের অধিকাংশকেই বিপ্লবের পরিবর্তে ক্রমবিকাশের পথ স্বীকার করিয়া লইতে হয়। পুরাতনকে একেবারে ভাঙিয়া-চুরিয়া নৃতন করিয়া গড়িতে এক প্রকারের শক্তির প্রাঞ্জন হয়। তাহার মধ্যে উন্মাদনা আছে, দেই উনাদনাই আনন্দের খোরাক জোগায়। কিন্তু অসীম ধৈর্যের সহিত একটির পর একটি করিয়**। ই**ট ব**দল** করিয়া সম্ভারের যে প্রয়াস তাহার জন্ত চাই আর এক প্রাকারের শক্তি; তাহার মধ্যে উ্না;দনা নাই, আছে শাস্ত-ধৈর্যা। হয়ত প্রথম শক্তির তুলনায় তাহার ম.ধা বাহ্ বৈভবের, ঐপর্যোর অভাব আছে কিন্তু তাই বুলিয়া তাহাকে ছে:ট করিলে চলিবে না। আম দের দেশে আজ সে শক্তির, সেরপ চেঙ্গার একাস্ত প্রয়োজন হইয়াছে।

দেদিন শিক্ষাসংস্কারের এইরূপ একটি প্রচেষ্টার সহিত আমার পরিচয় ঘটিয়াছে, ত'হার কথা বলি।

কলিকাতার দক্ষিণে যে প্রশস্ত সুদীর্ঘরাঞ্চপথ ক্লিকাতা হুইতে ডায়মও হারবার প্র্যান্ত চলিয়া গিয়াছ তাহারই পার্শে ডায়ম'ণ্ড হারবার হইতে চার মাইল উভ্রেস্রিয়া নামে একটি নাতিবৃহৎ গ্রাম আছে। রাজপথ হই ত গ্রামের উপাত্তে স্থিত প্রকাণ্ড একটি দীবি চোখে পড়ে; ভাহারই পূর্বে অন কাঁঠাল নারিকেল গাছের ছায়ায় ্গ্রামটি অবস্থিত। রাজপথের পশ্চিমে এক কালে যে্থানে শুদু ধানের ক্ষেত ছিল সেধানে আক্ষণাল ক্ষেক্টি ক্ষুত্ৰগৃহৎ কুটী রর সমষ্টি দেখা যায়। এই ওলিই স্বিধার রামক্রক মিশ্ন আহম। প্রায়ে বারো বৎসর পূর্ব্বে রামক্রফ মিশনের কয়েকটি সেবাব্রড সন্নাদী মাঠের মাঝে এই আশ্রমটি প্রতিষ্ঠা করেন। ত'হাদের উ িছল শিক্ষার ভিতর দিয়া নৃতন করিয়া দই জন্ত তাঁহারা বিশেষ করিয়া শিক্ষা-পল্লীস্ফ ' । प्रशिक्षिना। ব্

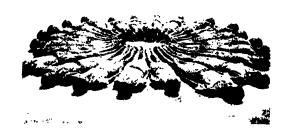
একদিন আমাদের দেশে বর্থন সমাজ সংহত এবং সমাজবোধ প্রবল ছিল তথন সকলেই নিজ নিজ প্রয়োজন-অমুবায়ী সমাজের নিকট সেবাগ্রহণ করিত এবং আপন আপন সামর্থ্য অনুবায়ী সমাজের সেবা করিয়া সেই ঋণ পরিশোধ করিত। দেদিন যেবাগ্রহণেও লক্ষা ছিল না, সেবা করিতেও গৌরব ছিল না। তাই তথন সমাজসেবার দ্বত্ত কেন্দ্রীভূত প্রতিষ্ঠান করিবার বি.শ্ব কোন প্রয়োজন হয় নাই। কিন্তু আজ সমাজ সংহতি হারাইয়াচে এবং আমাদের সমাজবোধ ক্ষীণ হই া উঠিয়াছে, তাই নানা ভাবেই আজ সমাজসেবার কেন্দ্রের প্রয়োজন হইয়া উঠিয়াছে। কিন্তু সে সেবাৰ ভাৰ লইবে কে? একদিন যে সন্নাশী সমাজের নিকট হইতে গ্রীবনধারণের গ্রিকারের বিনিময়ে অধ্যাত্মসম্পদ দানের ও সেবার অধিকার লাভ করিয়াছিলেন তিনি আজ নিতাওঁট ভিফারতী. সমাদের প্রতি ভাহার কর্ত্রসাধনে বিমুখ। ভাই দেশের ভিথারীর দংগার বাড়িয়া চলিয়াছে, সেবকের সংখ্যা ক্ষীণ হইতে ফীণতর হইতেছে, তার অধিকাংশ স্থ**লেই** তথাকথিত আশ্রম-গুলি সেবাকেন্দ্র না-হইয়া ভিক্ষাকেন্দ্রে পরিণত ইইতেছে। অথচ প্রাচীন ভারতবর্শের ঋষিগণের তপোবনগুলি শিক্ষা, দীকা, অধ্যায়সাধনা ও জ্ঞানচর্চ্চা সকল দিক দিয়াই প্রাণের কেন্দ্র ছিল। এ-কথা মনে করিলে ভুল করা হয় যে সেই মাশ্রমগুলি শুধু অধ্যাত্ম-সাধনা লইয়া বাণিত ছিল। এদেশের আধুর্বেদের প্রতিগাতা ঋষি নামেই প্রোক্ত; বাৎস্থায়নও পায়ি ছিলেন।

স্বামী বিবেকানন্দ আমাদের কালে সন্নাসেব সেই
প্রাচীন আদর্শ নৃতন করিয়া প্রচার করিবার চেটা
করিয়াছিলেন। তাঁহার দ্বারা অনুপাণিত হইয়া রামক্র্যমিশনের সন্ন্যাসী-সেবকগণ আজ সমগ্র ভারতবর্ষে ছড়াইয়া
পড়িয়াছেন। তাঁহাদের দ্বারা পরিচালিত সেবাপ্রতিষ্ঠানশুলি সাধারণতঃ বছলোকের দৃষ্টি আকর্ষণ করিয়াছে; কিন্তু
আমি জ্ঞানি না যে, আমি বে-প্রতিষ্ঠানটির কথা বলিতেছি
তাহার সহিত কয় জনের পরিচয় আছে। বাংলার একটি
নিভ্ত অধ্যাতনামা পদ্লীতে এই যে কয়েক জন সন্ন্যাসী
মিলিয়া তাঁহাদের বাছ্ঞেব্যাহীন, অনাড্যর চেটা ও
সাধনার দ্বারা ভাবী কালের স্থচনা করিয়াছেন, ভাবী

সমাজগঠন করিতেছেন তাহা সতাই বিশ্বয়ের ব্যাপার ; তাহার সন্ধান লওয়া আমাদের গ্রায়েজন।







(২) বেদ্যালয়ের থেলা। (২) বিদ্যালয়ের কয়েক য়ন ছাত্রী।
 (৩) মেয়েদের থেলা। (৪) জ্রিলের দৃগ্য।

এই আশ্রমের বাহিরের সৌষ্ঠব কিছু নাই।

টুকরা জমির উপর ইতততবিধ্যিপ্ত কয়েকটি কুটীর, একটি ইইকনিন্দিত ফুলোয়তন গৃহ, দেখিলেই বিভালয় বলিয়া চেনা নায়, এই লইয়াই সরিবার রামকৃষ্ণ মিশন আশ্রম।

ধানক্ষেতের দমি উচু করিয়া তাহার উপর অ'শ্রমগৃহ
ও কুটীরগুলি নির্দ্মিত হইয়াছে চারি দিকে নয়নাভিরাম
পল্লীদৃষ্ম দিগন্ত পর্যান্ত বিস্তৃত। আশ্রমের সন্মুথে রাজপথের
অপর পারে সরিযাগ্রাম; দুরে রুজপল্লবের অন্তরালে আরও
ত্-একটা গ্রাম দেখা যায়। এই কয়েকটি গ্রামকে অবস্থান
করিয়াই আশ্রমের কার্যোক্ষেত্র বিস্তৃত। বাংলার অন্তান্ত
শত শত পল্লীগ্রামেরই মত্র এই কয়েকটি গ্রাম, কোন বিধ্রে



- (:) ছেলেদের সমাজ-সেবা।
- (২) মেয়েরা মাচ করিয়া যাইভেছে ৷

বিশেষত্বপূর্ণ বা উন্নতিশাল নহে। সেই আম-কার্মাল-নারিকেলের বন, বাশের ঝাড়, সেই শৈবালাছের ছোট ছোট পুছরিণী, সেই প্রাচীন গৌরবের চিহ্নস্বরূপ ভগ্ননির, ক্যুক্টি কোঠাবাড়ি ও পূণপ্রায় দীর্ঘিকা এবং এই

আবহাওয়ার মধ্যে মানুষ ম্যালেরিয়া-প্রপীড়িত দারিজ্য-ভারক্রিষ্ট জরাজীর্ণ গুটিকতক বাঙালী সন্তান। তাহাদের মধ্যে তথাকথিত ভদ্র ও অভদ্র হুই শ্রেণী বাস করে। যাহার। ভদ্র বলিয়া পরিগণিত, তাহাদের মধ্যে যাহারা ভাগ্যবান তাহারা শহরে চাকরি করে এবং ধীরে ধীরে পল্লীজননীর মেহাঞ্চল ত্যাগ করিয়া নগরেই আশ্রয় খোঁজে; আর যাখাদের অদৃষ্টে সে-দৌভাগা জোটে নাই তাহারা গ্রামে থাকিয়া দলাদলি করে, মামলামোকদ্দমা প্রনিন্দা করিয়া তামকুটের ধোঁয়ায় পল্লী-চণ্ডীমণ্ডপ ধূমায়িত করে আর প্রতিদিন তাছাদের অদৃষ্টকে ধিকার দেয়। আর যাহারা অভদে বলিয়া পরিচিত তাহাদের মধ্যে যাহাদের অল্লবিস্তর ক্রমি আছে তাহারা চাষ করিয়া কোনমতে দিনাতিপাত করে; গাহাদের জমি নাই তাহারা হয় দিনমজুরী করে, না-হয় নিকটবত্তী পাটের কলে কুলির কাজ করে। গ্রামের মে য়রা গৃহকর্ম করে এবং তাহার অবসরে কলহ ও প্রচর্চ্চা করে। এখানকার পল্লীজীবনে আৰু আর কোন শ্রী, কোন দৌন্দর্য্য বা মাধুর্য্য নাই; মারুষের মনকে মুক্তি দিবার, তাহাকে সার্থকভাবে ব্যাপৃত করিয়া রাখিবার কোন আয়োদনই আজ সেথানে নাই।

এরপ আবেষ্টনের মধ্যেই ১৯২১ সালের ২৫শে ডিসেম্বর রামরক মিশনের সরিযা আশ্রমটি প্রতিষ্ঠিত হয়। পূর্বেই বলিয়াছি ইহার বাহিরের ঐশ্বর্যা বিশেষ কিছু নাই। যে ছই টুকরা জমির উপর আশ্রমটি অবস্থিত ভাহাদের একটির আয়তন প্রায় তিন বিখা। ভাহার উপরে বিদ্যালয়গৃহ ছাড়া আরও পাচ-ছয়টি ক্টীর আছে; সেগুলি যথাক্রমে ব্যায়ামাগার, ডাক্তারখানা, রন্ধনগৃহ, ঠাকুরপূজার মন্দির এবং আশ্রমের সাধুও অভিথিদের থাকিবার স্থান। যদি ইহাদের কোন বিশেষত্ব থাকে, তবে সে ভাহাদের আড়ম্বরহীন পরিপাটি পরিচ্ছন্নভা; বিদ্যালয়ের সম্মুধে বিস্তৃত প্রাক্তনে বা অন্ত কোথাও একটুও আবর্জনা নাই দেখিয়া সভাই বিশ্বিত ও মুগ্ধ ইইয়াছিলাম।

তদুরে রাস্তার ওপারে সারদামন্দির বা মেয়েদের শিক্ষালয়। একটা নালার উপর বাঁশের সেতৃ, সেই সেতৃ অতিক্রেম করিয়া সারদামন্দিরে যাইতে হয়। প্রকাণ্ড একটি চারচালা মাটির কোঠা, পরিচছন্ন ও স্কর্করভাবে সাজান; কোথাও আয়োজন-বাহুল্য নাই। আশ্রমের সর্ব্বত্রই একটা সংঘত ভাচিতার ভাব রহিয়াছে।

১৯২৩ সালে ছেলেদের বিদ্যালয়টি, শিক্ষামন্দির প্রতিষ্ঠিত হইরাছিল; এথানে ছেলেরা ছাত্রবৃত্তি পর্যান্ত পড়ে। ইহার ছাত্রসংখ্যা অনুমান ছই শত। এথানকার ছাত্রগণ প্রতি বৎসর গ্রথমেন্টের বৃত্তি পাইতেছে।

সারদামন্দির প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিল ১৯২৭ দালে; প্রথমে ইহা সামাত্ত একটি নিয়প্রাথমিক বিদ্যালয় মাত্র ছিল, কিন্তু धीरत धीरत खन्न करत्रक वरमस्त्रत मस्त्रह हैश मरा-हेशसङी বিদ্যালয়ে পরিণত হইয়াছে এবং সম্প্রতি ইহার সঙ্গে উচ্চ-বিদ্যালয়েরও একটি শ্রেণী খোলা হইয়াছে। বিদ্যালয়েই একদিন শিক্ষার্থী জুটিত না ; শিক্ষামন্দির আরম্ভ হইয়াছিল মাত্র পাচটি ছাত্রকে লইয়া। সারদামিন্দিরের আরম্ভ কয়টি ছাত্রীকে লইয়া তাহার সংখ্যা ঠিক মনে পড়িতেছে না, কিন্তু আজ উভয় বিদ্যালয়েই স্থানাভাব ঘটিতেছে। শিক্ষামন্দিরের ছাত্রের সংখ্যা প্রস্নেই বলিয়াছি, সারদা**মন্দিরের বর্ত্তমান ছাত্রী-সংখ্যা এক শতের** অধিক। এমন কি পার্থবন্তী গ্রামের ছাত্রীদের জন্ম আশ্রমের ক্ষ্মিগণকে মান্ধণ্ডা ও ক্লাগাছি গ্রামে আরও ছইটি সারদামন্দির প্রতিষ্ঠা করিতে হইয়াছে। বিদ্যালয়ের ছাত্রীসংখ্যাও মোট প্রায় এক শত হইবে। সারদামন্দিরের ছাত্রীগণও প্রতি বৎসর গবর্ণমেণ্ট বত্তি পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়া বুদ্ধিলাভ করি.তছে।

ছেলেমেরেদের বুজিলাভের কথা এই ফুন্তই উল্লেখ করিয়াছি বে, সাধারণ হিসাবেও ইহারা বাংলা দেশের অন্তান্ত শত শত বিদ্যালয়ের চেয়ে কম ন:হ। বরং গদি বুজিলাভ বিদ্যালয়ের শ্রেষ্ঠত্বের পরিচয়:ও মাপকাঠি হয়, তাহা হইলে হয়ত ইহারা অন্ত বহু বিদ্যালয় অপেক্ষা শ্রের বিলিয়াই পরিগণিত হইবে।

কিন্তু শিক্ষামন্দির ও দারদামন্দিরের বিশেষত্ব সেথানে নছে। সে বিশেষত্ব চোথে পড়ে যথন এই বিদ্যালয় তুইটির ছাত্রছাত্রীগণকে দেখি।

অল্পবয়স্ক প্রাম্য ছেলেমেরেরা স্কে'রাড্ডিল করিতেছে, লেম্ট্ রাইট্ করিয়া বালী বাজাইয়া রাজপথ দিয়া মার্চ করিয়া বাইতেছে, মেরেরা সাইকেল চড়িতেছে, জুজুৎসু করিতেছে; ছেলেরা কুন্তী করিতেছে, সকলেই দেহ-মন দিয়া কাজ করিতেছে, প্রাণ থুলিয়া হাসিতেছে, থেলা করিতেছে। সকলের দেহ বলিওঁ, গতি ফিপ্রা, মন চলিফু সবল, মুগলী উৎসাহে উজ্জ্বল, দীপ্ত; সকলেরই মনে আশা, আনন্দ ও স্বাধীনতা। তাহারা আপন কর্মের ভার আপনারাই লইয়াছে; ছাত্রছাত্রীদেব নিজ নিজ সঙ্গ্র আগেনারাই লইয়াছে; ছাত্রছাত্রীদেব সামাজিক জাবন নিয়ন্ত্রণের ভার ও অধিকার দেওয়া হইয়াছে। সঙ্গ্রের ভার, কোনটির উপর বিচারের ভার, কোনটির উপর বিচারের ভার, কোনটির উপর নিশ্বিদ্যালয়-চালনার ভার, কোনটি বাায়ামের বাবস্থা করে, কোনটি বা সংবাদপ্র ও প্রেকাদি পাঠ করিয়া নুহন নুহন আদর্শ ও চিন্তা ভারের করিবার ও ছড়াইবার ভার লইয়াছে।





(-) व्यासाम्बर्धना। (२) ছেলেনের नुहा।

বিদ্যালয়গৃহ পরিষ্ক'র রাখিবার ভারও ছেলেমেয়েদেরই উপর; এমন কি তাহারা পারখানাও পরিষ্কার করে।

এথানকার ছেলেমেয়ের; এমোদীবনের গভারগতিক লোকাচার, জন্ধ সংস্ক'র ও গুরুনামুক্তমিক অক্সতা, পল্লীগুলভ সকল জড়ভাই ধীরে ধীরে ভাগে করিয়াছে। ভোরের স্তিমিত আলোকে এখানকার ছাত্রীরা একা বা দলে দলে নারদামন্দিরে ছুটিয়া অংসে; রাজির অন্ধকারে গ্রাম হইতে গ্রামান্তরে শিক্ষা দিয়া কেরে; পিঙ্গল জ্যাকেট পরিয়া নেত্রীর আদেশের সঙ্গে তাল রাথিয়া ডি্ল করে। এথানকার ছেলেরা গ্রামের পথ তৈরি করে, পুন্ধরিণীর পঞ্চোদ্ধার করে, বৈশ্বিদ্যালয় চালায়, আনন্দ-উৎসব করে।

এই নির্ভিয় নির্বাস, কর্মনিপুণ, আনন্দত্বনর ছাত্র-ছাত্রীদের দেখিয়া সত্যই চৃপ্ত ইইতে হয়। বাংশার অতি অল্প বিদ্যালয়েই এইরপে দুগু দেখা যায়।

এপানে একটি পরিপূর্ণ সমাজের ছবি চোপে পজিল। ছেলেমেয়েরা সকলেই আন্মকে ভালবানে, হহার সকল কাজেই ভাহারা ছটিয়া আসে, উৎসাহের সহিত পোগ দেয়, অধাবদায়ের সহিত কর্ম্ম সার্থক করে ও আপনার আনন্দ্রারা ভাহাকে ফুলর করিয়া ভোলে। এখানে ভাহারা ভাগু বিদ্যাই লাভ করিভেছে না, নবজীবনের দীক্ষালাভ করিভেছে। এখানকার বিদ্যালয় ছুইটির কর্ম্ম মাত্র বিদ্যাদানেই প্র্যাবসিত নহে; বাহিরের বহুত্র সমাজ বেমন নানা টেপ্তার ভিতর দিয়া নানাভাবে আলপ্রকাশ করিয়া পূর্ণ, এখানকার এই কুদ্র বিদ্যালয়সমাজও ভেমনত বিদ্যালাভের ব্রবহা, সমাজদেবা, আনন্দ-উৎসব ও সঙ্গীতের ভিতর দিয়া আপনার প্রাণশক্তির বিকাশ করিয়াছে।

নিদালিয়ের এই সমাজ-রূপ সাধারণতঃ আমাদের চোণে পড়ে না; আমরা বিদ্যার একটি থও রূপ দেপি, ইহার উদার ও মহারর রূপ দেখিতে পাই না। এই জন্তই আমাদের বিদ্যালয়গুলি অধিকাংশ স্থালই নিচক বিদ্যালাভেরই কেন্দ্র হুইয়া দাঁড়ায়, সেগুলির কোন অধ্যাগ্রনীবন বা সত্তা থাকে না। তাহার ফলে সেখানে বিদ্যালাভ করা যায় বটে কিন্তু জ্ঞানলাভ করা যায় না, সেখানে চরিত্রগঠনের বা জীবনবিকাশের কোন সহায়তা পাওয়া গায় না। খেমন খাদ্যদ্রব্য জীব করিতে হইলে খাদ্য ছাড়াও অন্তান্ত বস্তর প্রোক্তন হয়, তেমনই বিদ্যাকেও

সার্থক করিতে হইলে বিদ্যালয়ে অন্তান্ত নানা আয়োজন করিতে হয়, বিদ্যালয়কে একটি কুদে অণচ সর্বাঙ্গপূর্ণ সমাব্দে পরিণত করিতে হয়।

এই আশ্রমে সেই বিস্তালয়-সমাজকে প্রত্যক্ষ দেখিলাম। তাহার জন্তই ইহার শিক্ষা দার্থক হইতেছে। আমি যথন সেখানে গিয়াছিলাম তথন অবকাশ; বিদ্যালয়ের সাধারণ কাজ বন্ধ: কিন্তু ছেলেমেয়েদের কাজের অবকাশ 🕯 ছিল না। দেখানে তথন শিক্ষাশিবির বসিয়াছিল। দ্বিপ্রহরে দেখি এক দল ছেলে পূলাকাদা মাথিয়া ঘর্মাক্ত দেহে গান করিতে করিতে কিরিল: শ্বিজ্ঞাদা করিয়া জানিলাম ছেলেরা এবার গ্রামের একটি জীর্ণ পয়ংপ্রণালী সংস্থার করিবার ভার লইয়াছে। তাহাদের দলে কয়েকজন যুবককৈও দেখিলাম। শুনিলাম আশ্রেমের মহৎ আদর্শ ধীরে ধীরে আর দকলের মধ্যেও বিস্তৃত হইয়াছে এবং তাহাকে কেন্দ্ করিয়া এক দল অহুরাগী-মণ্ডলী গড়িয়া উঠিতেছে। মনে হইল হহাই ভভাবী কালের বিদ্যালয়ের মত প্রতীক। একদিন স্থন ধ্যাবোধ প্রবেশ ছিল, তথ্ন দেবায়তনগুলিকে কেন্দ্র করিয়াই পল্লীসমাজ গড়িয়া উঠিয়াছিল; তাহার পর 🗀 নানা কারণে আজ দেবায়তনগুলি তাহাদের আক্ষণ হারাইয়াছে, কলে পল্লীসমাজ কোন প্রাণকেন্দ্র গুঁজিয়া পাইতেছে না। অথচ পল্লীসমান্দের সংস্কার ও পুনঃপ্রতিল ক্ষিতে হইলে সেই প্রাণকেন্দ্র সন্ধান ক্ষিয়া বাহির ক্ষিতে 🕠 হইবে। সত্যকার বিদ্যালয়ের চেয়ে ভাল কেন্দ্র আর কি হইতে পাবে? দেশের বিদ্যালয়গুলি যেদিন প্রাণতীন প্রতিগান ন:-হইয়া নবজীবনের তীর্থস্থল পূজামন্দির হইয়া উঠিবে, দেদিন দেশ আপনার প্রাণের সন্ধান পাইবে।

এইথানে বাংলার এই অথ্যাতনামা নিভূত পল্লীটিতে ছুইটি বিদ্যাগ্নতন দেখিলাম যাহা সত্যসত্যই নবজীবনের তীর্থস্থল পূজামন্দির হুইয়া উঠিতেছে।

গিরিডির বিবিধ প্রতিষ্ঠান

শ্রীসরোজকুমার দে ও শ্রীশরদিন্দু চট্টোপাধ্যায়

লোকবৃদ্ধির সঙ্গে সাস বাঙালীরা ক্রমে ক্রমে কিরুপে গিরিডিতে লোকহিতকর প্রতিধানসমূহ গড়িয়া গুলিলেন, তাহার বিশ্ব ইতিহাস দিতেছি।

গিরিডি সাধারণ-ব্রাক্ষসমাজ প্রধানত এতিনকড়ি ব্য মহাশ্যের চেটাও উদ্যোগে তাহারই প্রচ্যান্থিত বা**টী**ত ১৮৭৪ গাঁঠাব্দে প্রতিষ্ঠিত হয়। তৎকালে ইহা প্রচ্যা সময়ে গিরিডিতে অভিন্তানিক লাজ এক জনও ছিলেন না।
১৮৮২ গিষ্টানে দকতপুবা নামক স্থানে প্রচন্থার তৎকালীন
টীকাইং প্রসিদ্ধনাথ সিংহ মহাশয় প্রদত্ত নিম্বর জমির উপর
একটি ফুদ্র কাঁচা মন্দিরগৃহ নিখিত হয়। সমাজের স্থাবরঅস্থাবর সম্দ্র সম্পত্তির রক্ষণাবেক্ষণের জ্ঞা ২৮৯৯ গাঁষ্টাব্দে
প্রানন্দমোহন বণ্, প্রপ্তিত শিবনাথ শাস্ত্রী, প্তিনকড়ি



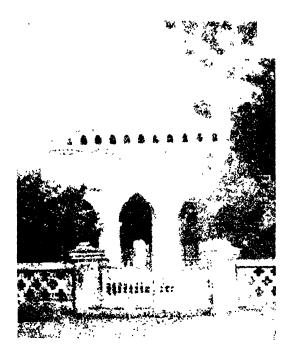
গিরিডি নববিধান-ব্রাক্ষ্যনাজ-মন্দিরের প্রতিষ্ঠাতা প্রস্মৃত্রাল ঘোষ

রাক্ষসমাজ নামে এতিহিত হইত। তিনক জি বানু থদিও হিন্দুধ্যাবিলমী ছিলেন, তথাপি বাধ্বধ্যের উপর তাঁহার গভীর শ্রদ্ধা ছিল। ১৮৭৪ ইইতে ১৯০৯ গ্রীষ্টান্দ অবধি তিনি ইহার সম্পাদক ছিলেন এবং ইহার তরাবধানের ভার তাঁহারই উপর সম্পূর্ণভাবে সম্ভ ছিল। সমাজ-প্রতিষ্ঠার



৺ভিনকড়ি বহু

বধ্, ৺উমেশচন্দ্র দত্ত ও জিন্মত রাম্লাল বন্দোপাধায়, এই পাঁচ কনকে লইয়া একটি অভিমন্তনী (Board of Trustees) গঠিত হয় । আনন্দমোহন বহু ও উমেশচন্দ্র দত্ত মহাশয়েরা পরে অর্থগত হউলে ৺ভি. রায়, ডি-এল ও জীমুত শশীভূবণ বধ্, এম্-এ মহাশয়েরা ভাহাদের স্থাভিষিক্ত হন। এতাবং ৺তিনকড়ি বাব্র হস্তে ট্রন্মাজ-সংক্রাস্ত সকল কার্যোর ক্ষমতাই অপিত ছিল। তাঁহার এই গুরুতার কিঞ্চিংলাঘর করিবার উদ্দেশ্যে ১৯১০ গ্রীষ্টান্দে ৺ভি. রায়, মিঃ পি. এন্. দত্ত (পার্বাতীচরণ দত্ত), ৺তিনকড়ি বহু, ৺ভগবানচক্র মুখোপাধ্যায়, ৺রহনীকাস্ত নিয়োগী, শীয়ত রামলাল বন্দ্যোপাধ্যায় ও ৺উমেশচক্র নাগ, এই সাত জনকে লইয়া প্রথম একটি কার্যানির্বাহ্ক সমিতি গঠিত করা হয় ও শেয়োক্ত ছই জন ব্যাজ্যমে উহার সম্পাদক ও



গিরিডি দাধারণ-বাক্ষমণাজ-মন্দির

সহকারী সম্পাদক মনোনীত হন। উক্ত সভাগণের মধ্যে মিং পি. এন. দত্ত ও প্রীগ্রুক রামলাল বন্দ্যোপাধ্যার মহাশয় ভীবিত আছেন। ১৯১২ গ্রীষ্টান্দে পুরাতন কাঁচা মন্দিরগৃহ ভূমিশাৎ করিয়া প্রায় চারি সহস্র মুদ্রা বায়ে বর্তমান মন্দিরগৃহ নিম্মিত হয়। অর্থসাহাযা প্রধানত: বাধ্বয়মারলম্বী ব্যক্তিদিগের নিকট হইতে সংগৃহীত হইলেও কিয়দংশ শতিনকড়ি বহু, শধ্রণীধর বন্দ্যোপাধ্যায়, প্রীগৃত শক্তিকণ্ঠ ভট্টাচার্যা ও শমনোরগুন গুহুঠাকুরতা প্রাম্থ হিন্দ্সমাজভুক্ত ব্যক্তিবর্গের নিকট হইভেও পাওয়া গিয়াছিল। এই

মন্দিরের ত্থাশস্ত উপাসনাগৃহে প্রায় তুই শত ব্যক্তি সমবেত ভাবে উপাসনা করিতে পারেন। প্রতি রবিবারে সকাল ও সন্ধ্যায় নিয়মিতভাবে উপাসনা হইয়া থাকে। উনিশ-কুড়ি বৎসর পূর্দ্দে গিরিডিতে দীক্ষিত বাধ্মের সংখ্যা ছিল প্রার



গিরিডি নববিধান-ব্রাক্ষসমাজ-মন্দির

সাতচল্লিশ জন; বর্ত্তমান সংখ্যা প্রায় সন্তর জন। উপাসনাগৃহে বিজলী আলোকের বন্দোবস্ত হইলে মন্দিরের শ্রীকৃদ্ধি হইতে পারে। এ-বিষয়ে গিরিডিস্থিত প্রবাসী বাঙালীরা চেষ্টিত হইলে গুপের বিষয় হইবে!

সমাজের বর্ত্তমান সম্পাদক শ্রীয়ত কুঞ্জবিহারী বিশাস
মহাশয় পুর্বের সব্জন্ধ ছিলেন। পরে কার্যা হইতে অবসর
লইয়া সাত-আট বৎসর হইল গিরিডিতে নিজন্ম বাটী করিয়া
বাস করিতেছেন। সম্প্রতি ইহার মৃত্যু হইয়াছে।

সাধারণ রাক্ষসমাজ মন্দিরের অদুরে বারগণ্ডা রোডের উপর স্থদ্য 'নববিধান-রাক্ষসমাজ্ব-মন্দির' অবস্থিত। এক বিথা বার কাঠা হাতার মধ্যে প্রায় পাঁচ সহস্র মূদ্রা বারে ইহা নিশ্মিত হয়। সম্পূর্ণ বায়ভার বহন করেন কলিকাতার হারিসন রোডের স্পরিচিত জুয়েলাস্ মেসার্স যোষ এণ্ড সন্দের তৎকালীন স্বস্থাধিক রী প্রমৃতলাল লোষ মহাশয়। ১৯১৫ গীষ্টাব্দের অগ্রহারণ নালে সমাজের গৃহ-প্রবেশ-উৎসব কুচবিহারের মহারাণী প্রনীতি দেবী কর্তৃক সম্পন্ন হয়। সমাজের স্থায়ী ধনভাণ্ডারের জন্ম প্রমৃত বাবু পাচ সহস্র মুদ্রা দান করিয়াছিলেন। ইহার নিজেরও

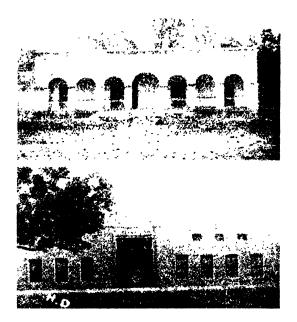
হয়। সংস্থাপকবর্গের মধ্যে শ্রীস্ত গোগীক্রনাথ সরকার, শ্রীস্ত বামনদাস মজুমদার, ৺রজনীকান্ত নিয়োগী, শ্রীসুত শ্রীভূষণ বসু, শ্রীষ্ত বিনোদবিহারী রায় ও তাঁহার



র্য়াট্রে দাত্র্য চিকিৎসালর

গিরিভিতে অনেকগুলি বাড়িগর আছে। কুচবিহারের মহারাণী প্রদন্ত এক সহস্র মূলা বায়ে সমাজের প্রচারক আশ্রম উক্ত হাতার মধ্যে নির্মিত হয়। গিরিভিতত নববিধান-সমাজ-অন্তর্গত ব্রাপ্তের সংখ্যা নিতান্ত অল্ল:— মাত্র তিন ঘর। এ-স্থানের স্থায়ী বাসিন্দা ও অল্লতমা প্রধান চিকিৎসক ডাক্তার গোগানন্দ রায় মহাশয় উপস্থিত এই সমাজের সম্পাদক ও প্রীযুত জীবনক্কফ পাল মহাশয় ইহার সহকারী সম্পাদক। জীবনক্কফ বাব্র গিরিভিতে নিজস্ব বাটী আছে; তিনি এ স্থানের স্থায়ী অধিবাসী।

গিরিডিতে বাঙালীদের প্রতিষ্ঠিত যে কয়টি প্রতিষ্ঠান আছে, গিরিডি উচ্চ-ইংরেজী বালিকা-বিদ্যালয় তন্মধ্যে অন্ততম। বহু বৎসর পূর্বে বথন স্ত্রী শিক্ষা-বিষয়ে বাঙালী জনসাধারণ উদাসীন ছিলেন, সেই সময়ে প্রধানতঃ কতিপয় ব্রাহ্মধর্মাবলম্বী বাঙালী ভদ্রলোকের উদ্যোগে এই বার্লিকা-বিদ্যালয়ের প্রতিষ্ঠা হয়। ১৯১১ গ্রীষ্টাক্ষে প্রথম প্রতিষ্ঠার সময়ে ইহার নাম ছিল ছোটনাগপুর বালিকা-উচ্চবিদ্যালয় (Choto Nagpur Girls' High School)। পরে ইহা গিরিডি উচ্চ-ইংরেজী বালিকা-বিশ্বালয় নামে অভিহিত



(-) গিরিভি উচ্চ-ইংরেজা বিজ্ঞানায়র প্রস্তাবিত বাটা। (২) গিরিভি উচ্চ-ইংরেজী বালিকা-বিজ্ঞালয়

সহধন্দিণী প্রীমতী লীলা রায়, গ্রক্তার শুর নীলরতন সরকারের ভগ্নী গ্রীমতী ক্ষারে!দবাসিনী মিত্র, মিস পরাধারাণী লাহিড়ী (বিনি এক সময়ে কলিকাতা বেগুন কলেজ হোষ্টেলের লেড়ী পুপারিন্টেণ্ডেণ্ট ছিলেন), প্রীযুত রামললে বল্যোনাধায় ও পতিনকড়ি বংশ প্রভৃতির নাম উল্লেথ করা বাইতে পারে। প্রথমে মাত্র আট জন ছাত্রী লগ্যা এই বিল্পালয়ের কার্যা আরম্ভ হয়। কয়েক মাসের মধ্যেই এই সংখ্যা বৃদ্ধিপ্রাপ্ত হইগা সর্প্রসমেত উনপ্রকাশটি ছাত্রী হলল বিল্পালয়ের একটি ছাত্রী-আবাস স্থাপিত হয়। সেই সময়ে ছই জন প্রথাবী ও কয়েক জন আসামী ছাত্রী ভিন্ন অপর সকল ছাত্রীই বাঙালী ছিলেন। বিল্পালয়ের প্রথম প্রধান শিক্ষক ছিলেন গ্রীযুত ক্কম্প্রসাদ

বদাক মহাশর। উত্তরকালে পুরুষ-শিক্ষকের অপেক্ষা মহিলা-শিক্ষয়িত্রী নিয়োগ অধিকতর সমীচীন বিবেচিত হওয়ায় কলিকাতা বেথন কলেজিয়েট স্কুলের বর্তমান প্রধানা শিক্ষয়িত্রী ত্রীমতী হিরগমী দেন উক্ত বিস্তালয়ের প্রথম প্রধানা শিক্ষয়িত্রী নিম্ক্রা হন। বর্তমান বিদ্যালয়-বাটী পুর্বের কবি ৺কামিনী রায়ের অবিক্রত ছিল; সেই সময়ে তিনি ঐ বাটী এক বৎসর বিনা-ভাড়ায় বিদ্যালয়ের জ্ঞা ছাড়িয়া দিয়াছিলেন। শুর নীলরতন সরকার মহাশয় তাঁহার বাটীতে ছাত্রী-গ্রাবাদ-প্রাপনের অনুমতি দিয়াছিলেন ও ভাড়া-বাবদ হাহার প্রাপ্ত প্রায় গুই সহমে মুদ্যা তিনি



ছাৰীর রন্ধন করিছেছে

অন্তাহ করিয়া গ্রহণ করেন নাই। মিঃ পি। এনা দণ্ড
মহাশ্য বিদ্যালয়ের কার্যানির্নাহক সমিতিকে তের শত টাকা
আণদান করিয়াছিলেন; তিনিও ঐ অর্থ গ্রহণ করেন
নাই। পএম্ এনা দণ্ড মহাশ্য বছদিবদাবিধি বিদ্যালয়কে
মাসিক এক শত টাকা অর্থসাহাগ্য করিয়াছিলেন। এতদ্বির
নীন্ত গৌরীকান্ত রায়, ভাগত সত্যানন্দ বপু প্রভৃতির
নিকট হইতেও অর্থসাহায্য লাভ করিয়া স্থল-কমিট উপক্কত
ইইয়াছিল। বিহার-গ্রব্মেন্টের নিকট হইতেও বিভিন্ন
সময়ে মাসিক তিন শত প্রকাশ টাকা হইতে পাঁচ শত টাকা
পর্যান্ত অর্থসাহায্য পাওয়া গিয়াছে। ১৯২। সালে নানা
কারণে বিদ্যালয়টি অতিশ্য শোচনীয় অবস্থায় নীত হয়।
তৎকালে ছাত্রীর সংখ্যা ক্রমশঃ হাস হইতে হইতে মাত্র
আট্রিশ জন হয় ও গ্রব্মেন্টের নিকট হইতে প্রাপ্য
পাঁচ শত টাকা অর্থসাহায্য বন্ধ হইয়া যায়। এই স্কটাপর
অবস্থায় স্থল-কমিটি শ্রীপ্রকা লাবণ্যবালা গোস্য, এম-এ, বি-টি

মহাশরাকে বিদ্যালয়ের প্রধানা শিক্ষরিত্রী নিযক্তা করেন। ইহার উদ্যোগে ও প্রোদেশিক গবর্ণমেণ্টের তৎকালীন মধী ফকক্ষদ্দিন সাহেবের চেষ্টায় গভবর্ণমেণ্ট পুনরায় পূর্ব্যমত



গিরিডি উন্ত-ইংরেজ, বিজ্ঞালয়ের ছার্থার: চরকা কাট্ট, হছে

মাসিক পাঁচ শত টাকা অর্থসাহায্যদান আর্থ করেন। উপস্থিত বিদ্যালয়ের ছাত্রী-সংখ্যা সন্ধ্যমত চুরানকাই জন। তন্মধ্যে পাট জন বিহারী, এক জন ওঁরাওও এক জন চোটনাগপুরের অধিবাসিনী ভিন্ন অপর সকল ছাত্রীই বাঙালী। বিদ্যালয়ের শিক্ষয়িত্রী সর্বসমেত দশ জনের মধোনয় জন বাঙালী; তমধোতিন জন গ্রাজুটে, এক জন শিক্ষয়িত্রী ছোটনাগপুরের অধিবাসিনী ও বিদ্যা-লয়েরই হৃতপূর্দা ছাত্রী। ইহা ভিন্ন এক জন বিহারী পণ্ডিত মহাশগ্র আছেন। বিদ্যালয়ের ও ছাত্রী-আবাসের নিদস গৃহ না থাকায় মাসিক বত্ অথ বাড়িভাড়া-বাবদ বায়িত হইতেছে। বিদ্যালয়ের নিজস্ব গৃহ ক্রয়ের জ্বন্ত কার্যানির্বাহক সমিতি অর্থসংগ্রহের চেষ্টা করিতেছেন। ুতিমধ্যে কিছু অর্থ সংগৃহীতও হুইয়াছে। শ্রীসূত বীরেন্দ্রনাথ দেব মহাশয় তাঁহার স্বর্গগত পিতা সাতকড়ি দেব মহাশায়র শ্বতিরক্ষাথ ছাত্রী-খাবাদ-নিশ্মাণের জন্ত হুই সহস্র মুন্তা দান করিয়াছেন। রামগড় ওয়াড এটেট ছই সহল মুদ্রা ও রায় অনস্তনাথ মিত্র বাহাত্রর পাঁচ শত মুদ্রা বিদ্যালয়-বাটী-নির্মাণের জন্ত দান করিয়াছেন। মি ডি পি শর্মা, আই-সি-এস, মিঃ এন দলোমন, আই-সি-এন, রায়-বাহাছর ভবদেব সরকার, মিঃ এইত ভ্ইটেকার, আই-সি-এস (ছোটনাগ-পুরের বর্ত্তমান জুডিশিয়াল কমিশনার) প্রভৃতি স্থানীয় ভতপর্ব সাবডিভিস্নাল অফিসারেরা গৃহনিশ্বাণের জ্বন্ত

ঐকাস্তিক চেষ্টা করিয়াছেন। এই স্থানের ভূতপূর্ব্ব প্রসিদ্ধ জার্মান অভ্র-ব্যবসায়ী মুর সাহেবের বাসাবাটীট (যাহা উপস্থিত রাণাঘাট নটুদহের জমিদার ৺নফরচক্র পাল মহালয়ের পুত্রগণের অধিকাবে আছে) বিদ্যালয়ের-গৃহের উদ্দেশ্যে ক্রয় করিবার বন্দোবন্ত হইতেছে। অদুর ভবিন্যতে ঐ বাটীতে বর্ত্তমান বিদ্যালয় স্থানাস্তরিত হইবার আশা আছে। প্রধানা শিক্ষয়িত্রী ও সম্পাদিকা বিদ্যালয়ের বর্ত্তমান গ্রীমতী লাবণ্যবালা ঘোষ মহাশয়া ইতিপূর্ব্বে পাঁচ বৎসর ধাবৎ কটক ব্যাভেন্শ বালিকা-বিদ্যালয়ের শিক্ষয়িত্রী ছিলেন ও লক্ষ্ণে থবর্ণ কলেজের প্রফেসর ও রীডার রূপে তিন বৎসর কার্য্য করিয়াছিলেন। ইনি অনাম্থ্যাত রেভারেও ৺কাশীচরণ বন্দ্যোপাধ্যায় মহাশয়ের দৌহিত্রী ও গীষ্টবান-সমাজভুকা। স্থানীয় মিউনিসিপ্যালিটির ইনি গবর্ণমেণ্ট মনোনীত একমাত্র ও প্রথম মহিলা সদস্থা। বিদ্যালয়ের নিজ্ञ গৃহ ক্রীত হইলে বাড়িভাড়া-বাবদ মাসিক বারের কিছ সঙ্কোচ হইবে। বিদ্যালয়-পরিচালনের বর্ত্তমান মাসিক বায় প্রায় আট শত টাকার মধ্যে পাঁচ শত টাকা গ্রথমেণ্ট-সাহাব্য ভিন্ন সাধারণের অর্থসাহায্যের উপর নির্ভর করিয়াই বিদ্যা**লয়টি** পরিচালিত হইতেছে। কি**ন্ত** উপস্থিত পৃথিবীব্যাপী অর্থকুচ্ছ তা ও অন্তাগ্ত নানা কারণে সাধারণের সাহায্যের পরিমাণ হাস হওরায় বিদ্যালয়-পরিচালন বিশেষ কন্ট্রদাধ্য হইয়া পড়িয়াছে। তজ্জ্ঞ সম্পাদিকা মহাশয়ার আর্থিক সাহায্য সংগ্রহের আন্তরিক প্রয়াস বিশেষ শ্লাঘনীয়। এতহদেখে তিনি হাজারিবাগ ও অন্তান্ত দুরবর্তী স্থানস্থ অধিবাসীদের নিকট শ্বয়ং সাহায্য ভিক্ষা করিতে ধাইতেও কুন্তিতা হন না তাঁহার নির্লস চেষ্টা ব্যতিরেকে বিদ্যালয়-পরিচালন যে বিশেষ কষ্টকর হুইত সে-বিষয়ে সন্দেহ নাই। সাধারণ শিক্ষা ব্যতীত এই বিদ্যালয়ে সেবাল্ডশ্রমা, স্বাস্থ্য-বিজ্ঞান, সাধারণ জ্ঞান, গৃহস্থালী, রন্ধন ও নীতি শিক্ষা দিবারও ফুব্দর ব্যবস্থা আছে। কাপড় কাটা ও সেলাই, নানা প্রকার কারুকার্য্য, উল-বোনা, চিত্রাঙ্কণ ও মৃত্তিকা সাহায্যে থেলনা প্রস্তুত করিতেও নিয়মিত ভাবে শিক্ষা দেওয়া হয়। চরকা ও কুটীর-শিল্প শিক্ষণের ব্যবস্থাও আছে। বালিকাদের এই সকল বিষয়ে উৎসাহ দানের উদ্দেশ্যে স্বভন্ন পুরস্কার পদক

প্রভৃতিও প্রদন্ত হইয়া থাকে। বিদ্যালয়ে প্রত্যাহ্ সমবেত অসাম্প্রদায়িক উপাসনার বিধান আছে। সাধারণ কেতাবী বিদ্যাদান ভিন্ন ছাত্রীদের শরীর, মন ও হৃদয় উন্নত করিয়া, তাহাদের শরীর, বৃদ্ধি ও ধর্মবোধকে জাগ্রত করাই এই শিক্ষায়তনের মুখ্য উদ্দেশ্য। গিরিভির স্বাস্থাকর জ্ঞানবায়ুর গুণে ও অপেক্ষাক্রত স্বাধীন ও স্বাভাবিক আবেষ্টনের মধ্যে চলাফেরা খেলাধূলা করিতে পারায় ছাত্রীদের প্রায়্ম সকলেই বেশ স্বাস্থারতী। তাহাদের শৃল্ফালাজ্ঞান ও নিয়মানুবর্ভিতাও প্রশংসনীয়। বাঙালী ধনী ব্যক্তিগণ ধনি এই বিদ্যালয়ের স্থায়ী অর্থভাগুরের জন্ম সকলে বণাসাধ্য অর্থসাহাব্য করেন; অথবা অস্ততঃ ধনি সকলে বিদ্যালয়ের ছাত্রীসংখ্যার্দ্ধির জন্ম সচেষ্ট হন, তাহা হইলে প্রবাসী বাঙালীদের একটি বিশেষ প্রয়েশজনীয় প্রতিষ্ঠান দীর্ঘ স্থায়ী হইতে পারে।

গিরিডির বর্তুমান উচ্চ-ইংরেঞ্জী (বালক) বিদ্যালয় স্থাপনার মুশেও প্রধানতঃ বাঙালীরাই ছিলেন। প্রথমে পচম্বায় বাঙালীদের একটি প্রাথমিক বিদ্যালয় ও গিরিভিতে একটি মধ্য-ইংরেজী বিদ্যালয় ছিল। শেষোক্ত বিদ্যালয়ের সম্পাদক ছিলেন পপূৰ্ণানন্দ মিত্ৰ মহাশয়। এই হুইটি বিদ্যালয় ১৮৮৫ গ্রীষ্টাব্দে এক হইয়া যায়। পচম্বা রোডের উপর ভাণ্ডারডিছি নামক স্থানে পজিনকড়ি বস্তু, পপূর্ণানন্দ মিত্র, ৺রাখালদাস কুণ্ডু প্রমুখ ভদ্রলোকদের চেষ্টায় বিদ্যালয়ের বর্তুমান নিজম্ব বাটী নিশ্মিত হয়। এতত্বদেশ্রে পচমার তৎকালীন টীকাইৎ অনুগ্রহ করিয়া ভামি দান করেন। পরে শক্তিকর্ম বাবুর চেষ্টায় বিদ্যালয়-বাটীর বহু উন্নতি সাধিত হয়। বিদ্যালয়ের প্রথম প্রধান শিক্ষক হইয়া আসেন ৺ধরণীধর বন্দ্যোপাধ্যায় মহাশয়; গরে তিনি শিক্ষকজা ত্যাগ করিয়া গিরিডিতেই ওকাশতি করিতে পাকেন। তাঁহার বিষয়ে পূর্বে সবিশেষ শিখিত হইরাছে। বিদ্যালয়ের ছাত্রের সংখ্যা উপস্থিত সর্বসমেত চার শত উননব্বই জন : তন্মধ্যে বাঙালী ছাত্রের সংখ্যা এক-শ চল্লিণ জন মাত্র। বিদ্যালয়ের বর্ত্তমান প্রধান শিক্ষক প্রীযুত মণিলাল সান্তাল, এম-এ মহাশয় ১৯১৮ সাল হইতে কার্য্য করিতেছেন। অন্তান্ত শিক্ষক সর্বসমেত চবিবশ জনের মধ্যে বাঙালী বারো জন। স্থানীয় উকীল শ্রীযুত তিনকড়ি মুখোপাধ্যায়

এম-এ, বি-এশ মহাশয় প্রায় সাত বংসর বাবং বিদ্যালয়ের সম্পাদক রহিয়াছেন।

স্থানীয় উক্তপ্রাথমিক বালিকা-বিদ্যালয় আর একটি বিশেষ কার্যাকর শিক্ষা-প্রতিঠান। ইহা ৺ভি. রায়, ডি-এল, ৺ধরণীধর বন্দ্যোপাথায়, ৺উমেশচন্দ্র নাগ প্রভৃতি ব্যক্তিবর্গের চেটায় মকতপুরায় বারগণ্ডা রোডের উপর প্রতিন্তিত হয়। বিশালয়-বংটী বিদ্যালয়ের নিক্ষম্ব সম্পত্তি। গৃহনিম্মাণে দেশীয় এক ভদ্রগোক কিছু অর্থনাহায়্য করিয়াছিলেন। ইহার ছাত্রী-সংখ্যা উপস্থিত চল্লিশ জন। ছই জন মহিলা শিক্ষিত্রী ও এক জন পণ্ডিত মহাশয় বাংলা ভাষার সাহায্যে শিক্ষাদান করেন। শিক্ষক শিক্ষমিত্রী ও ছাত্রীরা সকলেই বাঙালী। গিরিডি মিউনিসিগ্যালিটি হইতে এই বিশ্বালয় মাসিক পঞ্চাশ টাকা অর্থনাহায়্য প্রাপ্ত হয়নাথ বন্দ্যোপাধায় মহাশয় ইহার বর্তমান সম্পাদক।

গিরিভি 'বঙ্গশিশু-বিস্থালয়' প্রায় কুড়ি বৎসর হইল প্রতিষ্ঠিত হর্মাছে। প্রবাদী বঙ্গদন্তানেরা যাহাতে শৈশব হইতে মাতৃভযোৱ মধ্যবর্ত্তিতার শিক্ষাশাভ করিতে পারে সেই উদ্দেশপ্রাণাদিত হইয়া প্রধানত: ৺তিনকড়ি বরু ও প্রীযুত রামলাল বল্ফোপাধ্যায় মহাশাররা উত্থোগী হইয়া ইহা স্থাপন করেন। এই বিস্থাল:য় উচ্চ ইংবেজী বিছালেরে ষ্ট শ্রেণীর পাঠোর সমান শিক্ষা প্রদত্ত হয়। ছাত্রের সংখ্যা সর্বাদ্দত ছেচল্লিশ জন; ইংারা সকলেই বাঙালী। ছাত্রদের বেতন ও স্থানীয় বাঙালীদের কর্থ-সাহায্য সম্বল করিয়া বিভালয়টি চালিত হই.তছে। ইহার নিজন্ম কোন ব টী নাই। গিরিডিস্থিত প্রব'সী বাঙালীদের ইহার নিজ্য গৃহ নিমাণের জন্ত চেষ্টা করা কর্তব্য। স্থানীয় অবদরপ্রাপ্ত ডেপুটি পুলিদ স্থপ:বিনটেণ্ডেট রায়-সাহেব শ্রীযুত কেলারনাথ ব.ক্যাপাধ্যায় মহাশয় ইহার সম্পাদক। ইনি উপস্থিত রেল-কোম্পানীর কয়লা-থাদে লেবার ইন্সংগক্তর রূপে কার্যা করি.তছেন। নিউ বারগণ্ডায় নিজন্ম বাটী করিলা ইনি স্থারিভাবে বাস কবিতেছেন। ইনি এই স্থানের মিউনিসিপাল ক্মিশনার अटेवङिक मािक्टिंछे ।

গিরিডি মিউনিসিগালিটি স্থাপনার সহিতও স্থানীয়

প্রবাসী বাঙালীরা সংশ্লিষ্ট ছিলেন; তর্নধ্যে ৮ধরণীধর বন্দোপাধার, ৺গোষ্ঠবিহারী কুতু ও প্রীযুত শক্তিকণ্ঠ ভট্টাটার্য্য মহাশ্রেরাই বিশেষ অগ্রণী ছিলেন। তৎকালে সাবডিভিসনাল অফিসারই মিউনিসিপ্যালিটির পদহেতৃক (Ex-officio) চেয়ারমান হইতেন ও ভাইস্-চেয়ারমান কমিশনারগণ কর্ত্ক নির্বা৹িত হইতেন। প্রথম ভঃইম্-চেয়ারম্যান নির্ব:6িত হন এীযুত শক্তিকণ্ঠ ভটাচার্যা উত্তরকালে চেয়ারমানও কমিশনারগণ কর্তক নির্বাচিত হইতে থাকেন। উপস্থিত সর্বাদত কুড়ি কন মিউনিদিপ্যাল কমিশনারের মধ্যে সাধারণ কর্তৃক যোল জন ও গবর্ণ,মণ্ট কর্ত্তক মনোনীত বাকী চার জন। ইংগ্রের মধ্যে বাঙালীর সংখ্যা সর্বসমেত নয় জন: তন্মধ্যে সাধারণ কর্ত্তক নির্ব্বাচিত আট জন। গিরিডি উচ্চ-ইংরেজী বালিকা-বিশ্বালয়ের প্রধানা শিক্ষয়িতী প্রীমূক্তা লাবণাবালা ঘোষ, এম-এ, বিটি মহাশয়া গবর্ণমেণ্ট কর্ত্তক সদতা। এ-পর্যাস্ত মিউনিসিপ্যালিটর চেরারমান ও ভাইদ চেয়াবম্যান পদ এইটিতে স্থানীয় বাঙালীবাই নির্বাচিত হুইয়া আদিতেছিলেন। গত বৎদর চেয়ার্মানে ছিলেন রায় অনন্তনাথ মিত্র বাহাতুর ও ভাইসু-চেয় রম্যান ছিলেন শ্রীপত্তি এ-বৎদৰ কোন ৰাঙালী সামস্ত মহাশয় ৷ চেয়ারম্যান অথবা ভাইদ-চেয়ারম্যান নির্বাচিত হন নাই। লোকমুথে ভানিলাম, বাঙালী কমিশন'রদের মাধা এই-এক জন তাঁহাদের বক্তিগত স্ব'র্থেদেশ্রে উক্ত পদের জন্ত উপযুক্ত ব'ঙালী প্রার্থী:দর সমর্থন না করিয়া স্বান্ধাতিকত'র পরাকালা দেখাইয়াছিলেন; তাহাতেই বাঙালীদের এই শোচনীয় প্রাজয় ঘটে। ইহা যদি সতা হয়, ত হা হই ল বিশেষ ছঃপও লজ্জার কপা সে-বিনার সন্দেহ নাই। যাহা হউক, গিরিডির প্রবাদী বঙালীগণ পরবর্ত্তী কমিশনার নির্বাচনকাশে বিশেষ বিবেচনা কবিয়া এমন প্রার্পীদের যেন সমর্থন করেন ই হাদের ছ'রা অন্তার ভাবে বাঙালীর অ'র্থ কুর হইব'র কোন আশহা না পাকে।

মিউনিদিপ্যাণিটির হেড্ক'র্ক শ্রী ত জগদী শচক্র যোষ মহাশয় বজ্রিশ বৎসর বাবৎ উক্ত পদে কর্মা করিতেছেন। ইনি অতি কর্মকুশল বাক্তি এবং গিরিডির স্থায়ী বাদিনদা; এ-স্থানে তাঁহার নিজস্ব বার্চী আছে। শ্রীযুক্ত সভীশচক্র ঘোষ কুড়ি বৎসর এক।দিক্রমে নিউনিসিপ্যাল ওভারসিয়ার রূপে কার্য্য করিতেছেন।

হাজারিব'গ ব্যাক্ষের একটি শাখা পচথা রোডের উপর অবস্থিত। ব টীটে ব্যাক্ষের নিজস্ব সম্পত্তি। স্থানীয় ব্যবদায়ী ও মহাজনদের নিকট ব্যাক্ষ বেশ স্থানাম জর্জন করিয়'ছে। ইংগ প্রবদানী বাঙালীদের হারা প্রতিষ্ঠিত ও পরিচালিত। ব্যাক্ষ-পরিচালনে বর্তমান ম্যানেজার শ্রীযুত কালীপদ মুখোপাধাায় মহাশয়ের বিশেষ বিচক্ষণতার পরিয়ে পাওয়া যায়। তিনি গিরিডিতে নিজস্ব বাটী কবিয়া স্থায়িভাবে বনবাস করিতেছেন।

স্থানীয় ্য টারে দাতব্য চিকিৎদালয় প্রতিষ্ঠিত ইইয়াছিল প্রাধ'নত: ৺তিনকড়ি বতু, ৺ধরণীধর ব.ল্কাপোধ্যায়, ৺রাজরফ সাহানা, পগেটেবিহারী কুণু, প্রীয়ুত শক্তিকণ্ঠ ভট্টাচার্যা, **৺ডাক্তার অরদাপ্রদাদ মন্তুমদার প্রভৃতির উল্পোগে ও অর্থ-**সাহান্যে। প্রথ.মাক্ত ব্যক্তি গৃহ প্রস্তুত করিবার ভক্ত দমুদ্য ইষ্টক ক্রয়ের বায় বহন ও চিকিৎদালয়ের সাহালার্থ বহু বৎসরাবধি এক শত টাকা করিয়া মাসিক অর্থসাহায্য করিয়াছিলেন। ডাঃ ৺অল্লপাপ্রাসাদ মজুমদার মহাশয় একানিক্রমে বহু বৎদর যাবৎ এই চিকিৎদালয়ের চিকিৎদক ছিলেন। বাঙালী দর মধ্যে একমাত্র ভারেই একখানি প্রতিকৃতি চিকিৎসালয়ের একটি কক্ষে এখনও শোভা পাইতেছে। ইহার য়াসিষ্টাণ্ট সার্জন ভিন্নও গিরিডিতে অ.নকগুলি বাঙাশী চিকিৎসক আছেন। তাহাদের মধ্যে ডাঃ যোগানন্দ রায় মহাশয়ের পসার সর্বাধিক। ডা: জয়ন্তকুমার ঘোষ মহাশয়ও গিরিডির এক ভন শব্দপ্রতির্গ চিকিৎসক ও স্থানীয় মিউনিদিপ্যাশিটির কমিশনার। তদ্মি ডাঃ হরেন্দ্রনাথ মলিক, ডা: শিরীবচক্র বসু, ডা: গোপীবল্লভ চট্টোপাধ্যায়, ডা: ভূপেন চট্টোপাধাায়, ডা: এ. বি. দাশগুপ্ত প্রভৃতি এই স্থানে विकिৎभा-वःवनाष्ट्र निश्च बाइन । देशामत्र मध्य वागानम বাবু, গোপীবল্লভ বাবু ও হরেক্র বাবু বাড়িঘর করিয়া এই স্থানে স্থায়িভাবে বসবাস করিভেছেন। ইহা ভিন্ন গিরিডিতে ক্ষেক জন বাঙালী হোমিওগাথিক চিকিৎসক ও ক্ষেক জন কবিবাজও আছেন।

স্থানীঃ উকীলের সংখ্যা সর্বসমেত আটত্রিশ জন; তন্মধ্যে বাইশ ক্ষন বাঙালী। ক্যাডভোকেট চারি জনই বাঙাদী ; – তাঁহাদের নাম, শ্রীসতীশচন্দ্র রায়, শ্রীশক্তিকণ্ঠ ভট্টাচার্য্য, শ্রীপ্রাণক্কফ সামস্ত ও শ্রীবৈক্ষনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়।

স্থানীয় উকীল-লাইত্রেরীটি শক্তিবাব্, ৺ধরণীধর বাবু প্রমুখ বাঙালীদের চেষ্টায় স্থাপিত হয়। ইহার সংলগ্ধ একটি টেনিদ্-কোর্টণ্ড আছে। শ্রীযুত যতীক্রনাথ সিংহ মহাশয় ইহার বর্তমান সম্পাদক।

প্রদক্ষক্রমে একটি বিশেষ প্রয়োজনীয় কথা বলিতে চাই। গিরিডির সাধারণ জনহিতকর প্রায় সকল প্রতিষ্ঠানগুলিই श्वामी वाहानीत्मत (5 होत्र ७ व्यर्थनाहार्दश মুখাত: প্রতিষ্ঠিত। এ-হাবৎ স্থানীয় ডনসাধারণের সহিত প্রবাসী বাঙালী দের পারস্পরিক মধুর সৌহার্স অলুর ছিল। কিন্তু হু:খের বিষয় সম্প্রতি উগ্র প্রাদেশিকতা প্রকট হওয়ায় বিহারী ভাতারা বাঙালীদের অন্ত চক্ষে দেখিতে আরম্ভ করিয়া:ছন ও এ-বিনয়ে আন্দোলন ও শ্বন হইয়াছে। বাঁহারা গিরিডিকে নিজের দেশ বলিয়াই জ্ঞান কারন, গিরিডির কল্যাণ ও শ্রীবৃদ্ধির জ্ঞা কায়মনোবাক্যে চেষ্টা করেন ও স্বোপার্জ্জিত অর্থ মুক্তহন্তে দান করেন,—বস্তুত: গিরিডির বর্তুমান সমৃদ্ধির মূলে ইংহারা, তাঁহাদের বিপক্ষে এইরপ বিষদ্ধ মনোভাব পোষণ করা নীতির দিক দিয়া যে কত বড অন্তায় ও কিরুপ আ:শাতন, তাহা আরু কাহাকেও বলিয়া দি ত হইবে না।

উপসংহারে আর একটি বিষয় সংক্ষেপে উল্লেখ করিব।
স্থানীয় বাঙালী যুবক দর সামাজিক কীবনে আলাগুরূপ
প্রাণের স্পন্দন লক্ষ্য না করিয়া ব্যথিত হুইরাছি।
পরস্পরের মধ্যে মিলন ও নির্দোব আমোদ-প্রমোদের ক্ষন্ত
কোন নির্দিষ্ট স্থানে একটি উল্লেখযোগ্য মিলনক্ষেত্র আছে
বিলয়া শুনি নাই; বদিও "মিলনী" নামে একটি নামমাত্র
সমিতি আছে। সেদিন পর্যন্ত লাইব্রেরী বলিতে গিরিডিতে
কিছু ছিল না। সম্প্রতি একটি ছোট লাইব্রেরী হুইয়াছে।
গিরিডিতে স্থায়ী বাঙালী যুবকের সংখ্যা নিত্যান্ত অল্পন নহ।
কিন্তু তৎসক্ষেত্র সেখানে একটি উপযুক্ত লাইব্রেরী না
থাকায়, তাঁহাদের জ্ঞানস্প্রা অথবা মানসিক উৎকর্ষের
বিষয়ে বদি কেহু কটাক্ষ করে, ভাহা ছুইলে সপক্ষে বলিবার
তাঁহাদের হয়ত বিশেষ কিছু থাকিবে না। স্থাপর বিষয়,
সাহিত্য-আলোচনা, আরুদ্ধি, গীতবাদ্য প্রভৃতির জন্ত

সময়ে সময়ে 'বাণী বৈঠকে'র অধিবেশন হয়। বৈঠকের পূর্গণোষক যাঁহারা, তাঁহারাও ইচ্ছা করিলে বর্ত্তমান লাইবেরীটের উন্নতির অথবা একটি উপযুক্ত লাইবেরী প্রতিষ্ঠার বিষয়ে যত্ত্বান হইতে পারেন। উন্মুক্ত বাতাসে ব্রকদের ক্রীড়া ও শরীরচর্চ্চার জন্ত কাছারীর নিকট সাধারণের অর্থসাহায্যে একটি স্থপরিসর ক্রীড়াক্ষেত্র বহু দিন হইল ক্রীত হইয়া পড়িয়া আছে শুনিয়াছি; তাহার এক পার্শে একটি ক্লাব হইবারও কথা আছে। কথা অবিশব্দে কার্য্যে পরিণত হইলে, বিশেষ প্রথের বিষয় হইবে। ক্রীড়া-কেইত্বক, গীতবাদ্য, বিদ্যান্মশীলন, সাহিত্যচর্চ্চা,

সামাজিক মঙ্গলাম্গ্রান প্রভৃতি সকল বিষয়েই প্রবাসী বঙ্গন্ ব্বকদের অগ্রণী দেখিতে আশা করি, সেই জন্ত এই মস্তব্যটি করিয়া প্রবন্ধ শেষ করিলাম।*

* শ্রীযুত রামলাল বন্দ্যোপাধ্যার, শ্রীযুত তিনক্তি মুখোপাধ্যার, শ্রীযুত আগুতোৰ বন্ধ প্রভৃতির নিকট হইতে প্রবন্ধ-রচনার যথেষ্ট সাহায্য ও উৎসাহ পাইয়াছি। শ্রীযুক্তা লাবণ্যবালা খোষ মহাশরার সৌজ্ঞতা গিরিডি উচ্চ-ইংরেজী বালিকা-বিদ্যালয় সম্পর্কিত ছবিগুলি ও মেসাসলালজী এণ্ড কোম্পানীর সৌজ্ঞে গিরিডি ইলেক্ট্রিক্ কোম্পানীর বাটার ছবিখানি পাইয়াছি। বাক। ফটোগুলি প্রায় সমস্তই গিরিডির ফটোগ্রাফার মি: এইচ্ সি. দন্ত অল্লমূল্যে তুলিরা দিয়াছেন। ইংগ্রের সকলের নিকট কৃতজ্ঞা প্রকাশ করিতেছি।

মহোৎসব

শ্রীস্থবোধ বন্দ্যোপাধ্যায়

নবদীপের বৈষ্ণবকুলচুড়ামণি ঠাকুর হরিদাস গোস্বামী এদেছেন মহোৎদবে আমাদের গ্রামে। ক্রৈষ্ট মাস, গঙ্গার উপকু:ল বিশাল বুড়ো বটের তলে মহাসংকীর্ত্তনে জেগে উঠেছে মুহুমান গ্রাম। নবোদিত রবির রাঙা কিরণ গাছের ফাঁকে ফাঁকে উকি মেরে দীপ্ত করেছে উৎসব। সভার অনভিদুরে মাধবজীর মন্দির থেকে মাঝে মাঝে ভেদে আদছে নহৰতের করুণ হার। গ্রামের জমিদার-পরিবারের এক্ত আলাদা আদনের ব্যবস্থা হয়েছে। জাতে 'বাবুরা' গন্ধবণিক। ভারা বৈষ্ণব-সম্প্রদায়ের লোক। বার মাদ থাকেন কলকাতায়। কেবল প্রতি-বছর এমন সময়ে গ্রামে আসেন তাঁদের গৃহ-দেবতা শ্রীশ্রী৺ মাধবজীউর মহোৎসব উপলক্ষে। শহর থেকে তাঁদের সম্প্রদায়ের আরও অনেক নরনারী এসেছেন উৎসবে। গ্রামের দশন্তনও জড়ো হয়েছেন। মহিলারা ভক্তিগদগদচিত্তে গলায় আঁচল দিয়ে মধুর হরিনাম শুনছেন ঠাকুরের মুধ থেকে। জাঁকাল রকমের হাটবাজার বসেছে মাধবজীর ঘাটের চার ধারে। গোবরার মা প্রতি-বছরই মেশায় আসে তাদের গাঁ থেকে। এ-বছরও সে আর গোব্রা এসেছে। গোবরার মা'র মাথার এক মন্ত ঝুড়ি। ভাতে আছে মাটির পুতুল, মেয়েদের মাথার কাঁটা আর বেলোয়ারি চুড়ি। ভাল বকম একটা জায়গা দখল ক'রে সে সরঞ্জাম সাজিয়ে वनन। मार्स्स मार्स्स भना है। देक चात्र शक्तित वृत्स होन মারে। গোব্রা ছোট্র ছেলে। সে ছটফট করছে হরিনাম শুনতে যাবে ব'লে! তার মা তাকে সাবধান ক'রে দিল সে থেন না কিছু ছোঁয়, কিছুতে থেন তার গা না লাগে। সে যে বাগ্দীর ছেলে। গোব্রার বাপের মতন সে একটু ভানপিটে। সে ভাল আসন দেখে বাবুদের ওধারে এগোর। তার মা'র বুক তুরু তুরু ক'রে উঠে দেখতে পেরে। 'বড়বাবু যা বাগী লোক। ভেনা দেখতে পেলে কি গোব্রাকে আস্ত রাখবেন।' সে চট্ ক'রে উঠে গোবরাকে ধরে গালে একটা থাবড়া মেরে সরিয়ে নিয়ে গেল। গোব্রা কিছুতে তার মা'র কাছে থাকবে না। তার মা অনেক ক'রে তাকে ব্যায়ে দিলে যদি সে বাড়াবাড়ি করে তা হ'লে 'বাবুদের' বাজির ভকুষা লাঠি মেরে তার মাধার খুলিটা ভেঙে দেবে। সে হলপ করলে সে আর ওধারে বাবে না। এক পয়সা দিয়ে একথানা ভেলেভালা বড় পাঁপর কিনে মাধবলীর শান্-বাঁধানো ঘাটের বাঁ-পালে একটা ভাঙা পৈঠের উপর ব'সে, খেতে খেতে পার-বাটের নৌকাবাত্রীদের দেখতে লাগল। বেলা বাড়লো। ঠাকুর হরিদাস গোস্থামী সকালকার মত সভাভঙ্গ ক'রে উঠলেন। তিনি জমিদার-বাড়ির পৈতৃক শুরুদেব। গোঁড়া গোঁগাই ব্রাহ্মণ। গোঁর রং, দোহারা চেহারা, মাথা মুড়ানো, নাকে তিলক, গলায় কপ্তী এবং একগোচা পৈতা, পরনে গরদের কোঁচান খুতি, খালি পা; দেখলে মনে হয় যেন আভিজাতোর গোঁরবে গোঁরবান্বিত। মাধবজীর ভোগের সময় হ'ল। ভেঁপু বেজে উঠল।

র্নোদাইজী বাবেন স্নানে। পথে শত শত লোক তাঁর পায়ের ধু:লা ভক্তিসহকারে মাথায় ঠেকালে। তারা ভাবলে তালের জীবন আজ ধত হ'ল ঠাকুরের প্রীচরণের ধূলিতে। তারা জীবনের এই পরম সুযোগ লাভ থেকে বঞ্চিত হ'ল তারা গ্রামের ছোট জাত। ভয়ে ভয়ে দূর থেকে ঠাকুরকে দওবৎ ক'রে তারা মনের কেভি মেটালে। বড়বাবুর কড়া তকুম কোন ছোটলোক যেন চুকতে না পায় গাটে। ভজুয়া সদলবলে ঘাড়ে লাঠি নিয়ে খিয়ে স্টাড়াল মাধবন্দীর ঘাট। গোব্রার মা রুদ্ধ নিখোসে ছুটে এল গোব্রা ব্রিবা কি সর্ব্ধনাশ করে দেখতে। "ওয়ে গোব্রা দূর থাক্। ছুয়ে কেলিস নি গেন ঠাকুরকে…। এয়ারে চৌধুরীপাড়ার বেঁদী কাঁটা কিনতে এসে দোকান-ওয়ালীকে দেখতে না পেয়ে হাকলে, "গোব্রার মা কোথায় গেলে গো—ও—ও—ও।" "এই যে হেথা, কি

নিবে গা মাসি ?" গোব্রার মাথায় কিন্তু ভূত চাপ্লো।
তার মা গেল চ'লে। সে ঝুপ ক'রে জলে নেমে এক ডুবে
লাতরে গেল ঘাটে ব্যাপারখানা দেখতে। ঠাকুর স্নান
সেরে ঘাটে উঠবেন। গোব্রা তাড়াতাড়ি তার পা-ছটো
জড়িয়ে মিনতি করলে, "ঠাকুর, আমি যাব মাধবজীর মন্দিরে
আপনার সাথে।" বড়বাবু চোথ রাঙিয়ে ধমকালেন, "কে
তুই ?" ভীড়ের ভিতর থেকে কে এক জন ক্ষীণকঠে বললে,
"তালপুকুরের চুড়িওয়ালীর ছেলে। ঠাকুর ওকে ছোঁবেন
না; ছোঁবেন না। ও ছোট জাত "

মাধবদ্দীর ত কোন জাত নেই বড়বাবু, উনি সকল জাতের মধ্যে বে:·····

"চোপ্রও উল্ক, বত বড় মুখ নয় তত বড় কথা?"

"কিন্তু আৰু আমি ঠাকুর তোমায় ছাড়ব না।" অতচুকু ছেলে গোব্রা। তার বুকের পাটা দেখে বড়বাবু রাগে থর থর ক'রে উঠলেন। হুঞ্চার করলেন, "ভক্ষা। '''

"হজুর!"

সকলে এক অপ্রত্যাশিত আশুধার শিউরে উঠলো। এক
মুদ্রন্ত এবং ভদ্ধার সঞ্চালিত লাঠি ধস্কে সজোরে আঘাত
করল ঠাকুরের মাথার। কপালের দিকে থানিকটা কেটে
গিয়ে রক্ত ছুটতে লাগল। সবাহ নির্দাক। সব
ছুপটাপ্। বিনামেথে বজ্রপাতের মত ভদ্ধার লাঠির
আবাতে ঠাকুরের রক্তপ্লাবিত অচেতন দেহ ধীরে ধীরে
নুটিয়ে পড়লো ঘাটের উপর। বাবুরা পাগলের মত ছুটাছুটি
করতে লাগলেন চার নিকে।

মাধবজী সেদিন ভোগ পেলেন না।

দৃষ্টি-প্রদীপ

শ্রীবিশ্বতিভূষণ বন্দ্যোপাধ্যায়

চতুর্দ্দশ পরিচেছদ

₹

যাবার ত্-দিন আগে জিনিবণাত্র গোছাচ্ছি—হঠাৎ হিব্দারী নিশে ক ঘরের মাধ্য এদে কথন দাঁড়িয়েছ। মুখ তুলে ওর দিকে চাইতেই হেদে ফেললে। বললে—আগিনি নাকি চলে যাবেন এখান থে ক?

আমি বল্লাম—বাবই ত। তার পর এত দিন পরে কি মনে করে? হির্ণালী তার অভ্যাসমত আমার প্রশাের কোন জবাব না দিয়ে বল্লা— কবে যাবেন?

—বুধবারে বিকেশে, গাড়ী ঠিক করা আছে, চাকদাতে গিয়ে উঠুব।

হিরময়ী একবার থরের চারি ধারে চেয়ে দেখাল। বললে—আপনার দে বড় বারুটা কই?

—সেটা কান্তর বাবার কাছে বিক্রী ক'রে ফেলে দিয়েছি।

অত বড় বাক্স কি হবে, তা ছাড়া সঙ্গে টেনে টেনে নিরে
বেড়ানোও মুস্কিশ।

হঠাৎ হিরমন্ষী ঝাশ্ ক'রে মেছেতে ব'সে পড়ল— কর্ত্ব ও আত্মপ্রতায়ের স্থরে বশলে—না আপনি থেতে পারবেন না। দেখি দিকি কেমন যান ?

আমার হাসি পেল ওর রকম দেখে। খুব আনন্দও হ'ল—একটা অঙ্ত ধরণের আনন্দ হ'ল। বললাম—তোমার তাতে কি, আমি বাই আর না-বাই ? তুমি ত আর এত দিন উকি মেরেও দেখাত আস নি হিরণ, তুমি আমার পাঠশালা পর্যান্ত যাওয়া ছেড়েছ।

- —ইস্! তা**ই** বইকি!
- —ভূমি ভেবে দেখ তাই কি না। উড়িয়ে দিলে চলবে না, হিরণ। আমি যাবই ঠিক করেছি, ভূমি আমার আট্কাতে পারবে না। কাক্ষর জন্তে কাক্ষর আট্কায় না—
 এ ভূমি নিজেই আমার একদিন বলেছিলে ।

হিরমন্ত্রী বালিকামূলভ হাসিতে ঘর ভরিয়ে ফেলে

বললে—ওই! কথা যদি একবার সুক্র ক'রে দিলেন, ত কি অ'র আপনার মুখের বিরাম আছে? কাক্রর জন্তে কাক্রর জাটকায় না, হেন না তেন না—মাগো—কথার ঝু'ছ একেবারে!

- त याहे (इंक्, आमि यावहे।
- कक्षता ना। दे:, वनताहे ह'न यात!

আমি চুপ ক'রে রইণ:ম—ছেলেমাফ্যের সঞ্চে তর্ক ক'রে আর লাভ কি।

দেখি যে বিকেলে পাঠশালায় হির্মায়ী বইগতো নিয়ে হাজির হয়েছে। সে এসে সব ছেলেমেয়েকে ব'লে দিলে আমার পাঠশালা উঠবে না, আমি কোপাও যাব না, সবাই বেন ঠিকমত আসে। এমন সুরে বললে বে সে বেন আমার দওমু ওর মালিক। বললে—এই হ'ছ, মান্তারমশায় তোমায় বলেছিলেন না ধারাপাত আনতে— কেন নি কেন ধারাপাত ? এই সোমবারের হাট থেকে আনতে ব'লে দেবে। বুঝাল ?

হাত্র বে'কার মত দৃষ্টিতে ওর দিকে চেয়ে বদাল— মান্টার-মশাই যে সোমবারে চলে যাবেন এখান থেকে?

হিরময়ী তাকে এক তাড়া দিয়ে বলংশ—কে বলেছে চশে যাবেন? মেরে হাড় েডে দেব হোঁড়ার! যা বলছি তা শোন্। বাদর কোথাকার—

আমি বলগাম—কেন ওকে মি:গ্য বক্ছ হিরণ, ছেলে-মাকুনকে—ওর দোষ কি, অ:মি যাবই, কেউ আমাই আটকা:ত পারবে না।

হিরণীয়ী ঝকার দি য় বললে—আচহা, আচহা, হবে। যাবেন ভ যাবেন।

সেদিন সন্ধাবেলা অনেক দিন পরে ও রাল্লাঘরে এনে চুকল। বললে—গুড়ের ভ^{*}াড়টা কই!

—সেটা তিনকড়ি, দর দিয়ে দিইছি। ছ-দিনের মত-

খানিকটা গুড় ওই বাটী:ত রেখেছি—হটো বিন ও.তই চলে বাবে।

হিরমনী অন্ত দিনের মত বদল না, দাঁড়িয়ে রইল।
একবার বাইরে যাবার সময় ও সরে দরভার কপাটের
আর দেওয়ালের মধ্যের থে জায়গাটুকু, দেশানটাতে
দেবি জড়দড় হয়ে দাঁড়িয়েছে। বলতে গেলাম—ওথানে
না, ওবানে না—কাপড়ে কালিটালি লেগে যাবে কি না
—বার হয়ে এস—

ওর মুগের দিকে চেরে দেখি ওর ভাগর চোধত্টি ফলে ভ'রে টল্ টল্ কর: হ। হিরমনীর চোধে জল! অবাক্, এ দৃষ্ট ত কথন দেখি নি! ও জল-ভরা ধরা-গলার বনলে— আপনি বনুন, যাবেন না, মাই:র মশার। আমি তথন পাচশালার বনতে পারলাম না ওদের সংমনে। ওরা হাদবে তাহ'লে। আর কেউ নয়—আর স্বাই আমার ভর করে, কেবল ওই মন্ট্রা বড় তুই!

তার পর আমার দিকে চোধের এল হার হাসি-মিশানো এক অপুর্বাদৃষ্টাত চেয়ে বললে—যাবেন না, কেমন ?

হিরময়া এই প্রথম এরল তা প্রকাশ করলে—এর আগে কথন দেখি নি। ছেলেমানুন, ও কথা ত তেমন কানে না, কিন্তু ওর ডাগর সজল চোথের মিনভিপূর্ণ দৃষ্টি ওর ভাষার দৈত ঘুচিয়ে দিয়ে এমন কিছু প্রকাশ করলে— এক জাহাত্র কথাতে তা প্রকাশ করা বেত না।

আমার মনে অনুতাপ হ'ল—কেন ওকে মি:থা কাঁদালাম সন্ধাবেলাটিতে ?

জীব:নর এই স্ব মুহূর্ত্ই না মাত্র ভগবানকে প্রত্যক্ষ করে? ব্রাউনিঙের 'পালন্' কবিতার সেই সর্বহারা লোকটিব মত আমার মনও ব'লে উলৈ:—I believe in God and Truth and Love!…

ওর হাতটি ধ'রে দরজরে কপা.টর ফাঁক পেকে বার ক'রে এনে আজে আজে সিঁড়িব ওপর বনিরে দিয়ে বলনাম—ওধানে সন্ধোবেলা দাঁড়াতে নেই। বিছেটিছে বেক্তে পারে—এধানে বোদ। ফটিওলো বেলে দাও দিকি, লক্ষীনেরে। আমি অব না—বদহ তুমি ধধন, তধন আর ধাব না। চোধের জল ফেলতে আছে অবেলায় ? ছি:—

ভার পরই ক্লটি তৈরি করতে ব'লে যে হিরশায়ী,

নেই হিরম্য়ী—সেই মুখরা বালিকা, যে সকল কথা এমন কর্তৃত্বের স্থের বলে যেন ওর কথা না মেনে চললে ও ভয়কর একটা কিছু শান্তির ব্যবস্থা করবে, সেটা আবার খুব কৌ চুকপ্রদ এবং ভেবে দেখলে করুণ বলেই মনে হয়, যখন বেশ ব্রুতে পারা যাচেছ যে মু.খর বৃশিটুকু ছাড়া ওর হুকুমের পেছনে ওর কোন জোর খাটাবার নেই—নিভাস্ত অসহায় ও নিরুপায়।

প্রেম আসে এই সব সামান্ত তুচ্ছ খুঁটিনাটি স্ত্র ধ'রে।
বড় বড় ঘটনাকে এড়ান সহজ, কিছু এই সব ছোট জিনিব
প্রাণে গেঁথে থাকে—ফলুই মাছের সক্ষ চুল-চুল কাঁটার মত।
গায়ের জোরে সে কাঁট। তুলে ছুড়ে ফেলে দিতে গেলে,
বিপদের সন্থাবনা বাজে বই কমে না।

পুরুষমান্ত্র প্রেমের ব্যাপারে আত্মরক্ষা ক'রে চলতে পারে না, যেটা অনেক সময়ে মে ররা পারে। যেখানে যা হবার নয়, পাবার নয়, সেধানেও তারা বোকার মত ধরা দিয় বসে থাকে—এবং নাকালও তার জতে মথেই হয়। কিয় পুরুষমান্ত্যই আবার বেগতিক বুঝাল যত সম্বর হাব্ডুবু পেতে বেতেও সাঁত্রে তীরের কাছে আসতে পারে—মেয়েরা গভীর জলে একবার গিয়ে পড়লে অত সহজে নিজেদের সামলে নিতে পারে না।

তব্ও আমি হিরম্মীকে দুরে রাখবার চেটাই করলাম।

একদিন গুপুরের পরে হিরম্মীদের বাড়িতে পুলিদ
এদেছে শুন্ম। পুলিদ কিসের? একে ও.ক জিগ্যেদ্
করি, কেউ সঠিক উত্তর দেয় না অগচ মান হ'ল ব্যাপারটা
সব'ই ছানে। এগিয়ে গেলুম—ও দর বাড়ির সামনের
তেঁতুলভলার বড় দারোগা চেয়ার পেতে ব'লে—পাড়ার
লোকেদের সাক্ষ্য নেওয়া চলছে। দেবলাম গ্রামে ওদের
মিত্র বড় কেউ নেই। আমি আগেও যে একথা একেবারে
না-ভানতাম এমন নয়—ভবে পাড়াগাঁয়ের কাণামুয়ে তে কান
দিই নি।

বিংকলের দিকে হিরম্মীর মা আব বিধবা দিদিকে থানায় ধ'রে নিয়ে গেল। কাভারির মুহুরী সাতকড়ি মুখুয়ো আমার কাছেই দাঁড়িয়েছিল। সে বদলে—ও মেরেটার তত্ত দোব দিই নে—মা-ই বত নঠের গুরুমশাই। ওই ত ওকে শিধিয়ছে? নইলে মেরেটার সাধ্যি কি—কিন্তু

মাগী কি ডাকাত! মেয়েটার প্রাণের আশক্ষা করণি নে একবারও?

বাপোরটা ব্**রতে** আমার দেরি হ'ল না। সাতকড়ি আরও বললে—কালীনাথ গাঙ্লী কি গ্রাম ত্যাগ করেছে সাধে? এই জন্তেই সে বাড়িম্থো হয় না, ওদের সঙ্গে কোন সম্পর্ক রাথে না।

এত কণা আমি কিন্তু জানতাম না—এই নতুন শুনলাম। আমি মুক্ষিলে পড়ে গেলাম—আমি এখন কি করি? হিরপ্রীর মা আর দিদি দোধী কি দোধী নয়—সে বিচারের ভার আছে অন্ত বিচারকের ওপর—সাতকড়ি মুখুবার ওপর নয়। কিন্তু এদের মোকদ্দমা উঠলে উকীল নিযুক্ত কে করে, এদের স্বার্থ বা কে দেখে, এদের জন্তে পয়সা-খরচই বা কে করে?

এদিকে আর এক মুস্কিল। ওর মা আর দিদিকে বথন ধ'রে নিয়ে গোল, হিরণারী তথন ওদের বাড়ির সামনে আড়ন্ট হয়ে দাঁড়িয়ে। সামনে অন্ধকার রাত, সে রাত্রে সে একাই বা বাড়িতে থাকে কেমন ক'রে, বাড়িতে আর বখন কেউই নেই— লগচ সন্ধা। পর্যান্ত কেউ তাকে নিজের বাড়িতে ডাকলে না। সন্ধার সময় ও-পাড়ার কৈলাস মন্ত্র্মদারের স্ত্রী এসে ওকে ও-অবস্থায় দেখে বললেন—ওমা, এ মেয়েটা এখানে একা দাঁড়িয়ে আছে যে! ছেলেমান্থন, বাড়িতে একা থাকবেই বা কি ক'রে? ওর মা দিদি কি করেছে জানি নে—কিন্তু ওকে আমি চিনি। ও পাগলী, আনন্দমরী। এস ত মা হিরণ, তোমান্থের হারিকেনটা বাড়ির ভিতর থেকে নিয়ে ঘরে চাবি দিয়ে বুএস। ওকে জারগা দিলে যদি জাত না থাকে—তবে না থাকল তেমন জাত?

মজুমদার-গিল্লী যদি কোন কথা না ব'লে নিঃশব্দে হিরমন্ত্রীকে নিজের বাড়িতে নিরে যেতেন, তবে হয়ত কোনই গোলবোগ বাধতো না—কিন্তু শেষের কথাটি ব'লে ফেলে তিনি নিতাস্ত নির্কোধের মত কাজ ক'রে বসলেন। কাছেই গ্রামের সমাজপতি আচার্য্য-মশাল্লের বাড়ি। তাদের সঙ্গে বাধলো তুমূল ঝগড়া। শশধর আচার্য্যের স্ত্রী অনেক কণ নিজের মনে একতরফা গেরে যাবার পর উপসংহারে বললেন—ও বড় ভাল মেরে—না?

মুখ খ্ললেই অনেক কথা বেরিয়ে পড়বে। সব জানি, সব বৃঝি। চুপ ক'রে থাকি মুখ বৃজে—বিল মাথার ওপর এক জন আছেন, তিনিই দেখবেন সব—আমি কেন বলতে যাই?

মন্ত্র্মদার-গিল্লী বললেন—বা কর ন-বৌ, আবার এ মেরেটার নামে কেন বা তা বলছ? সেটাই কি ভগবান স্থবেন?

আবিথা-মশারের স্ত্রী বারুদের মত জলে উঠলেন—
আরও বিশুল চেঁচিয়ে বললেন—ধশ্ম দেখো না ব'লে দিছি,
ভাল হবে না। ওই রয়েছে মুখুলোরা, ভট্চায়িরা
জিগ্যেস্ কর গিয়ে। ওই মেয়ে ওই পাঠশালার মাটারছোকরার কাছে রাভ বারটা অব্ধি কাটিয়ে আসে—
রোজ তিন-শ তিরিশ দিন। সারা রাভিরও থাকে একএক দিন। বলুক ও মেয়েই বলুক, সত্যি না মিথো।
ভেবেছিলুম কিছু বলব না—মন্ধক্ গে, যার আঁন্ডাকুড়,
সেই গিয়ে ঘাঁটুক, না ব'লে পার্কাম না। কে ও মেয়েক
ঘরে জায়গা দিয়ে কালকে আবার একটা হালামা বাধাতে
যাবে?

আমি এত ক্ষণ চুপ ক'রে ছিলুম, কথা বলি নি—কোন
পুরুষমানুষ উপস্থিত ছিল না ব'লে। টেচামেচি শুনে
আচায্যি-মশায়, সাতকড়ি ও সনাতন রায় ঘটনাশ্বলে এসে
দাঁড়াতেই আমি এগিয়ে গিয়ে বললুম—আপনারা আমার
মায়ের মত—আপনাদের কাছে একটা অনুরোধ, হিরণকে এ
ঝগড়ার মধ্যে মিথ্যে আনবেন না। ও আমার ছাত্রী,
ছেলেমানুষ, আমার কাছে যায় সন্ধ্যেবেশা গয় শুনতে—
কোনদিন পড়েও। রাত নটা বাজতেই চলে আসে।
একটা নিপ্পাপ নিরপরাধ মেয়ের নাম এ-সবের সঙ্গে নাজড়ানই ভাল! মা, আপনি ওকে বাড়িতে নিয়ে যান।

এতে ফল হ'ল উলটো। বাগড়া না থেমে বরং বেড়ে উঠল। মন্ত্র্মদার-মশারের হুই ছেলে ও ছোট ভাই এসে মন্ত্র্মদার-গিন্ধীকে বকাবকি করতে লাগল—ডিনি কেন ওপাড়া থেকে এসে এই-সব হেঁড়া ল্যাটার মধ্যে নিজেকে জড়াতে বান ? এ বয়েসেও তাঁর জ্ঞান বদি না-হ্য় তবে আর কবে হবে? তিনি চলে আহ্ন বাড়ি। এ-পাড়ার ব্যবস্থা এ-পাড়ার লোকে ব্যবহা এ-পাড়ার লোকে ব্যবহা, ভিনি কেন মাথাবাধা

করতে যান—ইত্যাদি। যাকে িয়ে এত গোলমাল, দে ভয়ে ও লজায় কাঠ হয়ে গাঁড়িয়েই আছে ওদের বাড়ির সদর দরকায়। ওর চোথে একটা দিশেহারা ভাব, লজার চেয়ে চোথের চাউনিতে ভঁয়ের চিহ্নই বেণী। ওর সেই কথাটা মনেপ ড়ল— জানেন, মান্টার-মশায়, আমায় স্বাই ভয় করে, স্বাই মানে এপাড়ায়—আমার সঙ্গে লাগতে এলে দেখিয়ে দেব না মজা? বেচারী মুপরা হির্ময়ী!

শেষ পর্যাপ্ত কৈলাস মজুমনারের স্ত্রী ওকে না নিয়েই চলে গেলেন। তাঁর দেওর ও ছেলেরা একরকম জোর করেই তাঁকে সরিয়ে নিয়ে গেল।

আমি তথন এগিয়ে গিয়ে বলনুম—হিরণ, তুমি কিছু তেব না। আমি এত ফণ দেখছিলাম এরা কি করে। বে ভয়ে তোমাকে ডাকতে পারি নি, সে ভয় আমার কেটে গিয়েছে। তুমি একটু একলা থাক—আমি কাভরাপাড়া থেকে মোহিনী কাওরাণীকে ডেকে আনছি। সে তোমার ধরের বারালাতে শোবে রাত্রে। তা'হলে তোমার রাত্রে একা থাকার সমদ্যা মিটে গেল। আর এক কথা—তুমি রালা চভিয়ে দাও। চাল-ডাল সব আছে ত ?

কাওরাপাড়া থেকে ফিরে আসতে আধ ঘণ্টার বেশী লাগল। মোহিনী-বৃড়ীকে চার আনা পরসা দিরে রাত্রে হিরণদের বাড়িতে শোবার জ্বস্তে রাজ্ঞী করিয়ে এলুম। ফিরে এসে দেখি দালানের চৌকাঠে বসে হিরণ্মী হাপুস্ নয়নে কাঁদছে। অনেক ক'রে বোঝালুম। বড় কট হ'ল ওকে এ অবস্থায় দেখে। বললে—মার আর দিদির কি হবে মান্টার-মশায়? আপনি কালই বাবাকে একটা চিঠি লিখে দিন। ওদের ফাঁসি হবে না ত?

হেদে সাম্বনা দিলাম। বললাম—রাঁধ হিরণ। থাওয়াদাওয়া কর। কিছু ভেব না— আমি কাল রাণাঘাট যাব।
ভাল উকীল দিয়ে জামিনে খালাস ক'রে নিয়ে আসবার
চেষ্টা করব। ভং কি ?

হিরণ কিছুতেই রাঁধতে চায় না—শেথে বললে— আপনিও—এথানে থাবেন কিন্তু। ঠিক ত ?

ও রাঁধছে ব'সে, আমাকে রাল্লাঘরেই বসে থাকতে হ'ল
—ও বেতে দের না, ছেলেমান্ত্র, ভর করে। কেবল জিগ্যেস
করে মা আর দিদির কি হবে।

রালা হয়ে গেল, ঠাই ক'রে আমায় ভাত বেড়ে দিলে।
এদিকে হিরণ বড় অগোছালো, কুটনো-বাটনা, এটোকাঁটা, ভাতের ফেন, ডালের খোসাতে রালাঘর এমন নোংরা
ক'রে তুলেছে। ভাত বাড়তে গিয়ে উন্নের পাড়ে আঁচল
নুটিয়ে পড়েছে—নিতান্ত আনাড়ি।

বললাম—দিনমানে কোন রকমে একা থেক। আমি সন্ধ্যের আগেই রাণাঘাট থেকে ফিরবো। রেঁধে থেও কিন্তু। নাহ'লে বড় রাগ করব। মোহিনী কাওরাণী এল রাত ন'টার পরে। তার পরে আমি আমার বাসায় চলে এলুম।

পরদিন রাণাঘাটে গিয়ে দেখি কেন্ ওঠে নি আদালতে। উকীল ঠিক ক'রে তার সঙ্গে জামিনের কথাবার্তা ব'লে এলুম। ফিরবার সময় হিরময়ীর জ্বন্তে ত্ব-একটা জিনিয় কিনে নিলুম ওকে একটু আনন্দ দেবার জন্তে। ফিরে দেখি ও ব'সে ব'সে আবার কাঁদছে কালকার মত। সারাদিন বোধ হয় রাঁধে নি, কিছু থায় নি। স্নানও করে নি, ত্ব-এক গাছা কক্ষ চুল মুখের আশেগালে উড়ছে। মহা বিপদে প'ড়ে গেলুম ওকে নিয়ে! কি করি এখন ? ওর বাবাকে আজ রাণাঘাটে পৌছেই টেলিগ্রাম করেছি, যদি আজ তা পেয়ে থাকেন, তবে কাল তিনি এসে পৌছলেও ত বাচি । নইলে হিরম্বরীকে ভাবছি কালীগল্পে বৌদিদির কাছে কি রেখে আসব ? কারণ এসে শুনলুম মোহিনী-বুড়ী ব'লে গিয়েছে সে রাত্রে এখানে আর শুতে আসতে পারবে না।

ও আমায় দেখেই ছুটে এসে বলপে—মাকে দিদিকে দেখে এলেন, মান্তার-মশাই : তারা কেমন আছে? ধালাস পেলেনা?

আমি ওদের নিজে দেখতে শই নি, উকীলের মুথে হির্ময়ীর সংবাদ পাঠিয়ে বলেচিলুম হির্ময়ীর জন্ত যেন তারা কিছু না ভাবে। বললাম সে কথা।

তার পর হির্ময়ী আমাকে বালতী ক'রে জল তুলে দিলে সানের জ্বন্তে—বরে প্রাদীপ জেলে উত্তন ধবিরে চায়ের জল চড়ালে। রাণাঘাট থেকে ওর জ্বন্তে কিছু থাবার এনেছিল্ম, তার বেশী অর্দ্ধেক আমার রেকাবী ক'রে চায়ের সঙ্গে জ্বোর ক'রে ধাওয়ালে—ভার পর রালা চাপিয়ে দিলে। ওর মনে সুধ নেই, কেমন যেন মুসড়ে পড়েছে ছেলেমামুষ, নইলে

ওর মত হাদ্যময়ী আনন্দময়ী চঞ্চলা মেয়ে এত ক্ষণ কত কথা বলত, হাদি-থুশীতে ধর ভরিয়ে তুলত।

একবার জিগ্যেস করলে—রাণাঘাটে নাকি সার্কাস এসেছে সবাই বলে? দেখেছেন আপনি? এও তৃঃখের মধ্যেও ওর ছেলেমানুষী মন সার্কাসের সম্বন্ধে কৌতৃহলী না হয়ে পারে নি ভেবে আমার হাসি পেল।

এ-রাত্রে মোহিনী-বৃড়ী এল না—আমি ওকে ঘরের মধ্যে রেথে বাইরের বারান্দাতে শুয়ে রইলুম। বারান্দায় বিছান। পাতছি, ও আবার এত সরলা, নিষ্কনুধ—আমায় অবাক হয়ে জিগ্যেস করলে আপনি বাইরে শোবেন কেন? কোন নীতিবাদের সঙ্গোত এনে ফেলে ওর নিম্পাপ মনে দাগ দিতে আমার বাধল। বললুম—দেগছ না কি রকম গরম আজ ? বাইরে শোরাই আমার অভ্যেস তা ছাড়া। সারারাত ছ-জনে গল্প ক'রে কাটালুম ! ও ঘর থেকে কথা বলে, আমি বারানদা থেকে তার উত্তর দিই। বাবা বোধ হয় কাল আসবেন, না? মা দিদি কবে সার্কানওয়ালা কোথায় তাবু ফেলেছে? কলকাতায় কথনও যায় নি—একবার যাবার ইচ্ছে আছে। কলকাতার থিয়েটার দেগতে কেমন ? চৌধুরীরা বোধ হয় মোহিনী-বুড়ীকে বারণ ক'রে দিয়েছে এখানে আসতে। আমার *শী*ত করছে কিনা। রাত বেশী, গাণ্ডা পড়েছে, গায়ে দেবার একটা মোটা চাদর দেবে ? আরব্য-উপক্তাদের মত গল্প আর নেই। আচ্ছা, অঙ্ক কত দুর শেখা যায় ? বিস্তার শেন নেই—না ? এম-এ পাস করে আরও পড়া ষায়, পড়বার আছে ?

ধর বাবা এলেন পরদিন সকাল দশটার সময়। তাঁর মুথে গুনলুম পুলিস থেকে তাকে চিঠি দিয়ে জানিয়েছে শীর বাড়ি এসে মেয়ের ভার নিভে। তিনি অত্যস্ত বস্মেজান্দী লোক, ছ-একটা কথা গুনেই বুঝতে দেরি হ'ল না। আমার ওপর আদৌ তিনি প্রসন্ন হ'তে পারলেন না—তাঁর মেয়ের তত্থাবধান করার জন্তে একটা ধল্যবাদ দেওয়া ত দ্রের কথা, সেটাকেই তিনি আমার একটা অপরাধ ব'লে গণ্য ক'রে নিলেন এবং যে মুখ্যো ও চৌধুরীরা পরগু সন্ধোবেলা হিরময়ীকে বাড়িতে জায়গা দিতে চায় নি তাদেরই বাড়িতে খোষামোদ ক'রে তাদের সঙ্গে এ-বিপদে পরামর্শ চাইতে গেলেন।

আরও একটা ব্যাপার দেখলুম তিনি হিরম্মীকে আদৌ দেখতে পারেন না। আমার সামনেই ত তাকে তাড়না, তর্জ্জন-গর্জন যথেষ্ট করলেন এ নিয়ে, যে সে-রাত্রে চৌধুরী-গিন্নীর পায়ে পড়ে কেন অনুরোধ করে নি তাকে জায়গ্য দেবার জন্তে। কারণ তারো দেখলুম লাগিয়েছে যে তাদের কি আর ইচ্ছে ছিল না ওকে জায়গা দেবার ? ও মেয়ের তা ইচ্ছে নয়। হিরণের অপরাধ সে মুখ ফুটে কারও কাছে আশ্রম প্রার্থনা করে নি। এ ওরা কেউ বুঝল না যে, হিরণের বয়সের মেয়েরা মুখে কোন নাটুকে-ধরণের কথা ব'লে গাশ্রম চাইতে পারে না পরের কাছে—বিশেষ ক'রে হিরম্মীর মত একটু তেজী মেয়েরা।

আমি হিরমন্ত্রীর ভার থেকে মুক্ত হয়ে কালীগঞ্জে চলে এলুম পরদিন সকালেই। শুনেছিলুম হিরমন্ত্রীর মা ও দিদি রাণাঘাট থেকে প্রমাণাভাবে খালাস পেয়ে এসেছেন।

কাশীগঞ্জে এসে বসলুম ব:ট, কিন্তু বিশ্বয়ের সঙ্গে লক্ষ্য করলুম, মনের কি অভুত পরিবর্ত্তন হয়েছে। হিরমন্ত্রীর সেহ শুক্নো মুথখানা কেবলই মনে পড়ে, সেদিন সন্ধার সময় खत (य पूथ (मृत्थिष्टिमांस, (यिमेंस खत मार्क आंत्र मिनिटक शानाम निष्म (शन । हित्रप्रमीत वाशा, ... हित्रप्रमीत क्रांग, ... अहे রকম বাড়িতে, ওই গাঁয়ের আবহাওয়ায় হিরময়ীর মত মেয়ে শুকিয়ে ঝারে পড়বে। কেই বা দেখবে, বুঝবে ওকে? একদিন মালতীর সম্বন্ধে ঠিক এই কথাই ভাবতুম। কত ভেবেছি। এখন বুঝি কি হুর্জ্জয় অভিমান করেই চলে এসেছিলাম ওর কাছ থেকে! কিছুতেই সে অভিমান ভাঙলো না। তার পর দাদা মারা গেলেন, দাদার সংসার পড়ল ঘাড়ে, নইলে হয়ত আবার এত দিন ফিরে যেতাম। কিন্তু বৌদিদিদের নিয়েত দারবাসিনীর আখড়াতে গিয়ে উঠতে পারি নে? এক সময় ধার ভাবনায় কত বিনিদ্র রাত্রি কাটিয়েছি বটেশ্বরনাথ পাহাড়ে, সেই মালতী এখন আমার মনে ক্রমশঃ অম্পষ্ট হায় আসছে— হয়ে এসেছে। আর ত তাকে চো:४ দেখলুম না? ক্রমে তাই সে দুরে গিয়ে পড়ল। কি করব, মনের ওপর জাের নেই-নইলে আমি কি বুরতে পারি নে কতবড় ট্রাজেডি এটা মামুষের জীবনের? শ্রীরামপুরের ছোট বৌঠাককণ আজ কোথায়? কে বশবে কেন এমন হয়।

পঞ্চদশ পরিচ্ছেদ

একদিন আবার হিরময়ীকে দেশবার ই:চ্ছ হ'ল। তথন মাস তুই কেটে গিয়েছে, কামালপুরে আর যাই নি, সেখানে আমার বাদায় জিনিয়পত্র এখনও রয়েচে—দেওলো আনবার ছতো করেই গেলুম দেখানে। মাস ছই পরে, গ্রাম ঠাণ্ডা হয়েছে, কেবল শুননুম হিরময়ীরা একঘরে হয়ে আছে। হিরময়ী আগেকার মতই ছুটে এল আমি এসেছি শুনে। এখানে ওর চরিত্রের একটা দিক আমার চোথে পড়ল-লে'কে কি বলবে এ-ভয় ও করে না--এথানে মালতীর সঙ্গে ওর মিল আছে। কিন্তু মালতীর সঙ্গে ওর তফাৎও সামি বুঝতে পারি। হিরমন্ত্রী বেখানে দেবে, সেথানে পেছন ফিরে আর চায় না—মাশতীর নানা পিছুটান। সব্ভি সমান ভালবাসতেও পারে না। প্রেমের ক্ষেত্রেও প্রতিভার প্রয়োজন আছে। খুব বড় শিল্পী, কি খুব বড় গারক যেমন পথেঘাটে মেলে না—খুব বড় প্রেমিক বা প্রেমিকাও তেমনি পথেবাটে মেলে না। 'ও প্রতিভাবে কোন বড ফুলনী প্রতিভার মতই চলভ। সবাই জানে না, তাই যার কাছে যা পাবার নয়, তার কাছে তাই আশা করতে গিয়ে পদে পদে যা খায় আর ভাবে অন্ত সবারই ভাগ্যে ঠিক্মত জুটেছে, সে-ই কেবল বঞ্চিত হয়ে রইল জীবনে। নয়ত ভাবে তার রূপগুণ কম, ভাই তেমন ক'বে বাধতে পারে নি।

হিরগন্ধীর তত্লতার প্রথম যৌবনের মঞ্জী দেখা দিয়েছে। হসাৎ বেন বেড়ে উঠেছে এই ছ্-মাদের মধ্যে। আমার বললে—কথন এলেন? আফ্ন আমাদের বাড়িতে। মা বলেছিলেন আপনাকে ডেকে নিয়ে খেতে। কত দিনের ছটি দিয়েছিলেন পাঠশালাতে, দেড় মাদ পরে খুললো?

—ভাল আছ হিরণ? উঃ মাথায় কত বেড়ে গিয়েছ?
—এত দিন কোথায় ছিলেন? বেশ ত লোক? সেই
গেলেন আর আসবার নামটি নেই।

হরত ত্র-বছর আগেও এ-কথা কেউ বললে বেদমাতুর হরে ভাবভাম—অংহা, দ্বারবাসিনীতে ফিরলে মালতীও আমার এ-রকম বলত। কিন্তু সমরের বিচিত্র লীলা। এ সম্পর্কে মালতীর কথা আমার মনেই এল না। ত্-দিন কামালপুরে রইলাম, হিরমন্ত্রী এ-কথা ভাবে নি
বে, আমি আমার জিনিষপত্র আনতে গিয়েছি ওবানে, সে
ভেবেছিল আমি আবার পাঠশালা খুলব। ওবানেই
থাকব। এবার কিন্তু সে আসবার সময় তর্ক, ঝগড়া করলে
না, যেমন ক'রে থাকে। ও শুধু শুক্নো মুখে এসে দাঁড়িয়ে
দাঁড়িয়ে দেখল আমার যাওয়া। ওর সে আগেকার ছেলেমান্ন্বী ঘেন চলে গিয়ে একটু অন্ত রকম হয়েছে। তনু ৭ কত
অন্বোধ করলে ওবানে থাকবার জন্তে—গাঁ এখন ভাল
হয়ে গিয়েছে, কেন আমি যাচ্ছি, গাঁয়ের ছেলেরা ভবে পড়বে
কোথায় ? তা কি ক'রে বলব কোথায় পড়বে, আমার
পোবাবে না এখানে থাকা।

কামালপুর গাঁ পিছু ফেলেছি, মাঠের রাস্তা, গরুর গাড়ী আন্তে আন্তেচলছে। কি মন খারাপ যে হয়ে গেল! মাঠের गर्या कि महेत्र-शांक, (यंगाति-शांक्त शांमन त्रीनार्या, শিরিষ্গাছে কাঁচা ফুটি ঝুলছে, বাস্থদেবপুরের মরগাঙের আগাড়ে নতুন ঘাদের ওপর গরুর দল চ'রে থেড়াচ্ছে। হির্ময়ীর নিরাশার দৃষ্টি বুকে যেন কোণায় বিঁধে রয়েছে, থচ পচ্ ক'রে বাজছে। বেলা যায়-যায়, চাকদার বাজার থেকে গুড়ের গাড়ীর দারি ফিরছে, বোধ হয় বেলে কি চুয়াডাঙ্গার বাজারে রাত কাটা**বে। জীবনটা কি যেন হ**য়ে গেল, এক ভাবি আর হয়, কোণায় চলেচি আমিই জানি নে। কেনই বা অপরের মনে এত কট্ট দিই ? এই রাঙা রোদ-মাথান মটর মুস্থরির মার্চ যেন বটেশ্বরনাথের দিনগুলোর কণা মনে করিয়ে দেয়। এই সন্ধ্যায় গঙ্গার বুকে বড় বড় পাল তুলে নৌকোর দারি মুক্তেরের দিকে বেড, আমি মালতীর স্বপ্নে বিভোর হয়ে পাধাণ-বাধানো ঘাটের ওপর বদে বদৈ অন্তমনস্ক হয়ে চেয়ে চেয়ে দেখতুম। সব মিথো, স্ব স্বপ্ন। ঐ মরগাঙের ওপারে জমা সন্ধ্যার কুয়াশার মত —ফাঁকা, গু-দিনের জিনিষ। এখানে ফল পাকে না। ক্ষেক্সালেম পাথারর দেশ।

₹

রে কিছুদিন পরে হিরণারীর বাব আমার কাছে এলেন কালীগঞ্জে। সামায় একবার তাঁদের ওথানে যেতে হবে, হিরণারী বিশেষ ক'রে বলে দিয়েছে। আর একটা কথা, মেমের বিয়ে নিমে তিনি বড় বিপদে পড়েছেন। তিনি গরিব, অবস্থা আমি সবই জানি, গ্রামের সমাজে একঘরেও বটে। ত্-তিন জায়গা থেকে সম্বন্ধ এসেছিল, নানা কানাঘুযো শুনে তারা পেছিয়ে গিয়েছে। মেয়েও বেজায় একশুঁয়ে, তাকে দেখতে আসছে শুনলেই সে বাড়ি থেকে পালায়। অত বড় মেয়ে, এখনও জ্ঞানকাণ্ড হ'ল না, চিরকাল কি ছেলেমালুশী করলে মানায়? স্তরাং তিনি বড় বিপদে পড়েছেন, আমি যদি রাহ্মণের এ দায় উদ্ধার না-করি তবে তিনি, কালীকান্ত গাঙ্গুলী, সম্পূর্ণ নিরুপায়। আমার কি মত থ

আমি আর কিছুই ভাবলাম না, ভাবলাম কেবল হিরণ্যীর আশা-ভাঙা চোপের চাউনি আর ভার ভক্নো মুণ, দেদিন ধখন জিনিয়প এ বাংধিছি দেই সময়কারের।

বৈশাধ মাসের প্রথমেই বিগ্নে হয়ে গেল। বিয়ের পর ওকে নিয়ে প্রথম গেলাম আটারার বাড়িতে, বরণ করে নেবার সময় ছোট কাকামা, (পানীর মা, এখন বিধবা) দুরে দাঁড়িয়ে আছেন দেখে বলনুম—সীতা, ছোট কাকীমাকে আসতে বল বরণের সময়। উনি দুরে থাকলে দে-কাছে মঙ্গল হবে না, সংস্কার থাক্ক। আজ মা নেই, উনি আছেন, ওকে কি দুরে থাকলে চলে ৮

একদিন হিরমন্ত্রী বললে—একটা কথা শোন। বেদিন তুমি প্রথম পাঠশালাতে পড়াতে এলে, আমি ভোমার কাছে গেলাম, সেদিন থেকে ভোমার দেখে আমার কেমন লজা করত। সেই ওলে কাছে বসতে চাইতাম না। তার পর তুমি একদিন রাগ করলে, তাতে আমারও খুব রাগ হ'ল। তুমি তার পর বললে—আমাদের গাঁ ছেড়ে চলে ধাবে। সেদিন ভলে আমার প্রাণ উড়ে গেল। এত কালা আসতে লাগল, কালা চাপতে পারি নে, পাছে কেউ টের পায়, ছুটে পেছনের সঙ্গুনেতলায় চলে গেলাম। সব ঘেন ফাকা হয়ে গেল মনের মধ্যে। উ: মাগো, সে ধে কি দিন গিয়েছে।

হির্ময়ী গুছিয়ে কথা বলতে শেথে নি এথনও।

ভগবান স্থানেন বিয়ের সময় কেমন থেন অন্তমনস্ক হুরে গিয়েছিলুম। সপ্ত-সমুদ্র পারের কোন দেশে অনেক দুরে এই সব সন্ধার অম্পষ্ট অন্ধকারে একটি হাক্তমুখী তথী কিশোরী প্রদীপ-হাতে ভাঙা বিকুমন্দিরে সন্ধাা দেখাতে যেত কত যুগ আগে প্রকুর-পাড়ের তম: ল-বনের আড়ালে তার সঙ্গে সেই যে সব কত স্থ-ছ: থের কাহিনী, কত ঠাকুর-দেবতার কথা, সে-সব সত্যি ঘটেছিল, না স্বপ্ন ? কোগায় গেল সে মেয়েটি? আর তাকে তেমন ক'রে ত চাই না? যেন কত দ্রন্দ্রে তার সঙ্গে সে পরিচয়ের দিনগুলো কালের কুয়াশায় অম্পষ্ট হয়ে এসেছে—তাকে যেন চিনি, চিনি, চিনি না। কেন তার শ্বতিতে মন আর নেচে ওঠে না? কোগায় গেল সে-সব দিন, সে-সব প্রদীপ-দেখানো সন্ধা।?

9

বছরপানেক পরে একদিন রাণাঘাট ষ্টেশনের প্ল্যাটফর্মে দাঁড়িয়ে আছি। মুর্শিধাবাদের ট্রেন থেকে এনেকগুলি বৈষ্ণব নামলো। ভারা যাবে খুলনার গাড়ীতে। ভাদের মধ্যে এক জনকে পরিচিত ব'লে•মনে হ'ল। কাছে গিয়ে দেখি ঘারবাসিনীর আখড়ার সেই নরহরি বৈরাগী—যে একবার জীব-গোস্বামীর পদাবলী গেয়েছল। সে প্রলানম্বরের ভববুরে, মাঝে মাঝে আখড়ায় আসত, আবার কোথাম চলে গেড। নরহরিও আমায় চিনলে, প্রণাম ক'রে বললে—এখানে কোথায় বার্? এটা কি দেশ নাকি? আপনি ত অনেক দিন ঘারবাসিনী যান নি। আর মাবেনই বা কি, সব শুনেছেন বোধ হয়, আখড়া আর সে আখড়া নেই। দিদি-ঠাকুকণ মারা যাওয়ার পরে—

—(本?

—কেন আপনি জানেন না? মালতী দিদি-ঠাকরুণ ত আছু বছর-চারেক মারা গিয়েছেন।

আমি ওর দিকে একদৃষ্টে চেয়ে রইলুম। নরহরি আপন মনেই ব'লে খেতে লাগল—এখন উদ্ধবদাসের এক ভাইপো তার সেবাদাসী নিয়ে কোথা থেকে এসে জুটেছে। সেই এখন করা। উদ্ধবদাস তো বুড়ো হয়েছে, সে কিছু দেখে-পোনে না। এখন অতিথ-বোটম গেলে আর জায়গাহয় না। মালতী দিদি-ঠাকুক্বণ ত মানুষ ছিলেন না, অর্থের দেবী ছিলেন, কি বাপের মেয়ে! তিনি স্বর্গে চ'লে

লিয়েছেন, এখন তাঁর অত সাধের আথড়ার কি দশা হয়েছে এই চার বছরে, দেখে চোখে জল আখাসে বাব্। তাই বড়-একটা দেখানে যাই নে।

পুরা চলে গেল। আমি ষ্টেশনের বাইরের সেগুলবাগানে গিয়ে কত ক্ষণ ব'সে রইলাম। কত ক্ষণ ক্রেক ক'রে দেখলাম আমি যখন বটেশ্বনাথ পাহাড়ে তথনই
সে মারা গিয়েছে। অর্থাৎ আমি আধড়া ছেড়ে আসবার
এক বছর পরেই। আজ হঠাৎ মনে হ'ল তার ওপর কি
স্বিচার করেছিলুম? অভিমান ভাঙাবার স্বোগও তাকে
আর একবার দিই নি। আমার জীবনে সে মরে গিয়েছে
অনেক দিন, বদিও খবরটা আজ পেলাম। আমার মন
খলক্ষিতে আগ্রক্ষা করেছে, বেদনার স্থানে শক্ত আবরণ
গড়ে তুলেছে—শামুক যেমন আগ্রক্ষার জ্বন্তে খোলা তৈবি
করে। আজ সে খোলা হয়ে প্ডেছে শক্ত, অন্তৃতিহীন—
অন্তঃ এত দিন ভাই ভাবতাম। কিম্ব খোলার আবরণের
তলার বাথার জায়গটো আজ মনে হছে একেবারে সম্পূর্ণরূপে
সারে নি।

কে আৰু উত্তর দেবে আমি চলে এলে গোগনে একটুখানি চোথের জলও কি ফেলেনি সে কোনদিন প্রিফু-মন্দিরে প্রদীপ দিতে গিয়ে একদিনও কি অসমনক্ষ হয় নি প দিনের কাজ নিটে গেলে সে বখন 'পামণ্ডদলনের অফ্করণে' বই লেখবার উদ্দেশ্য নিয়ে তার সেই খাতাখানা খ্লে বসত, একদিনও কি আমার কথা মনে পড়ে নি প্রশার কতা ঠাট্টা যে করতুম তার সেই বইলেখা নিয়ে! আমার বিদি আজি দশ হাজার টাকা থাকত, আমি চাইলে স্ব টাকাই দিয়ে দিতে পারতাম, যদি এই ধ্বরগুলো আমায় কেউ দিতে পারতো। টাকার মায়া করতুম না, করি নি কোনদিনই। ওই ধ্বরের বদলে আমি কি না দিতে পারি!

পাগলের মত কি ভাবছি বা তা বদে! লাভ কি আজ এ-সব ভাবনার ? ভালই হয়েছে মালতী, তোমার সঙ্গে মার আমার দেখা হয় নি। সুমুখ জ্যোৎসা রাতে পদ্নী-প্রান্তের বনে মর্চে-লতায় ফুল ফোটে, স্থবাসে পথচারীদের মন আনন্দে ভরিয়ে তোলে, কিন্তু কত দিন তার আয়ু? জ্যোৎসা লুকিয়ে আঁধার পক্ষ নামে, বন্তুল ঝরে যায়, পূপ- ত্বভি হিমের রাত্রির থন কুয়াশায় চাপা পড়ে, নয়ত
অকাল বর্ধার বারি-ধারায় ধুয়ে মুছে যায়। মানুষের অনেক
সেবা ভূমি করেছিলে, মানুষের মনে তোমার রূপ ভগবান
য়ান হ'তে দিলেন না। কুলের স্বাস চলে গেলে বনলতা
পাছে অনাদৃতা হয় ? তোমার বেলা ভগবান তা সহ
করবেন না।

সেণ্ডন-বাগান থেকে উঠে এগুম তথন রাত হয়ে গিয়েছে।

একটা কথা হঠাৎ মনে পড়ল। একবার মালতীকে বলেছিলুম—আমাদের গাঁরে একটা হাত-ভাঙা বিষ্ণুমূর্ত্তি আছে। ছেলেবেলাম ঠাকে বড় ভালবাসভূম। ভগবান যদি দিন দেন, ঠাকে নিমে এসে ভোমার বাবার মন্দিরে প্রতিগ করব।

8

দেখতে দেখতে কত দিন হয়ে গেল। ভার পর সাত-আট বছর কেটে গিয়েছে

আমার সে ১ল্ল বয়সের ভবঘুরে জীবনের পূর্ণচেছদ পড়েছে অনেক দিন। তবু সে-সব দিনের ছল্লছাড়া মূহ উপ্তলোর কলে এথনও মরে মাঝে মন কেমন ক'রে ওঠে, যদিও এথন বুর্ঝেছি হারান-বসস্থের জাতে আক্ষেপ ক'রে কোন লাভ নেই। মহাকালের বীথিপথ অনাগত দিনের শত বসপ্তের পাথীর কাকলীতে মুখর, যা পেলুম তাই সত্য, আবার পাব, আবার দ্রিয়ে যাবে তার চলমান রূপের মধ্যেই ভার সার্থকতা।

মাশতীও চলে গিয়েছে কত দিন হ'ল, পৃথিবী ছেড়ে কোন্ প্রেমের লোকে, নক্ষত্রদের দেশে, নক্ষত্রদের মতই বয়সহীন হয়ে গিয়েছে।

কেবল মাঝে মাঝে গভীর ঘুমের মধ্যে তার সংক্র দেখা হয়। সে যেন মাথার শিয়রে ব'সে থাকে। গুমের মধ্যেই শুনি সে গাইছে :—

> মুক্ত আমার প্রাণের মাঠে
> ধেন্দ্র চরায় রাখাল কিশের প্রিয়ন্ত্রকে লয় সে হরি
> ননী খায় সে ননীচের

সেই আমার প্রিয় গানটা•••য† ওর মুধে ভনতে ভাৰবাসভূম।

চোঝোচোথি হ'লেই হাসি হাসি মুথে পুরনো দিনের
মত তার সেই ছেলেমানুখী ভঙ্গিতে খাড় ছালিয়ে বলেছে—
পালিয়ে এসে যে বড় লুকিয়ে আছ? আখড়ার কত কাজ
বাকী আছে মনে নেই?

তথন মামার মনে হয় ওকে আমি খুব কাছে পেয়েছি।
ঘারবাসিনীর পুক্র-পাড়ের কাঞ্চন্দ্র-তলার দিনগুলোতে
তাকে যেমনই পেতৃম, তার চেয়েও কাছে। গভীর সুর্প্তির
মধ্যেই তন্ত্রাবোরে বলি—সব মনে আছে, ভূলি নি মালতী।
তোমার ব্যথা দিয়ে বার্থতা দিয়ে ভূমি আমাকে জয় করেছ।
দে কি ভোলবার ?

মুমাপু

শীতের রোম

শ্রীপ্রমথনাথ রায়, এম-এ, ডি-লিট্

এ বংসর রোমে প্রবল শান্ত পড়িয়াছে। প্রবল শান্ত রোমে বড়-একটা পড়ে না, কিন্তু এব'র মনেক দিন তাপ শ্রে — এমন কি শ্রেরও কয়েক ডিগ্রি নীটে নামিয়াছে। কয়েক দিন শহরের গায় ও তার মাশপাশে পাতলা বরকের জামা দেখা গিয়াছে। তই দিন খুব রুষ্টি হইয়াছে। টাইবার সাধারণতঃ শান্ত-প্রকৃতির নদী, কিন্তু বৃষ্টির ফাল সেও বেশ তুর্লান্ত হইয়া উঠিয়াছিল। কয়েক স্থানে স্রোভ ক্লিয়া নিকটবর্ত্তী রাস্তা ও জমি ড্বাইয়া দিয়াছিল। এয়প দৃগ্র কলিকাতায় মামরা প্রায়ই দেখি। একটু রুষ্টি হইলেই সেখানে রাস্তাঘাট জলে ড্বিয়া বায়। বস্ততঃ, সেদিন এখানকার জলে-ডোবা রাস্তায় বাস ও লোক চলাচলের দৃগ্র দেখিয়া কলিকাতার কথা খুব বেশী করিয়া মনে প্রতিভেছিল।

জানুয়ারির প্রথম হই:তই শীতটা বেশী হইয়াছে।
অক্টোবর মাসের শেবালেথি ও নবেম্বরের প্রথম দিকে কয়েক
দিন বেশ ঠাণ্ডা পড়িয়াছিল। তার পর বাতাস আবার
কবোফ হয়। মনে হইত যেন বসন্তের বাতাস। নবেম্বর
মাসের এই বাসন্তী কবোফতাকে রোমের বাসিন্দারা বলে
সেণ্ট মার্টিনের বসন্ত। এমন কি বড়দিনের কয়েক
দিন আগে পর্যান্ত অনেক সন্ধ্যা এই অকাল বসন্তের
বাতাসে মনোহর লাগিয়াছে ও তার ছোঁয়া লাগিয়া মনের

ভিতর সেই "মিষ্ট কিছু না করার" (doled far niente) ভাব কাগিয়াছে যা শুধু ইটালীর লোকেরাই জানে! তার পরেই শিশিরের ঋতু প্রবল প্রতাপে দেখা দিয়াছে ও এখন পর্যান্ত সকলকে অত্যাচার করিয়া মারিতেছে।

কিম্ব রোমে এ-বৎসর শীত পুব প্রবল হইলেও ইউরোপের অন্তান্ত রাজধানীতে শীতকাল যত খারাপ এথানে তার অর্দ্ধেকও নর। সাধারণ লোকের কল্পনায় শীতকালকে পলিতকেশ বিরদ-বদন বৃদ্ধের সহিত তুলনা করা হয়। কিন্তু রোমে নাঁতের পলিতকেশ দেখা যায় না, তার বদনও বিরদ নয়। রোমের শীত প্রায় সর্বাদাই হাসিমুখ। রোম শহরের উপর সতত স্থোর আশীর্মাদ ঝরিয়া পড়ে। শীতকালে এই আশীর্নাদ আপনি প্রাণ ভরিয়া উপভোগ করিতে পারেন। দেব বিভাবস্থর এই উদারতা প্রতিবংসর শীতকালে উত্তর-ইউরোপের হাজার হাজ্ঞার অধিবাদীকে রোমে আকর্ষণ করে। রোমের হোটেলওয়ালাদের তথন সুসময়, পয়সা-উপার্জ্জনের আনন্দে তখন তাহাদের মুণে হাদি আর ধরে না। রোমের বাদিন্দারাও এই সূর্যালোকে আরুট হইয়া ছুটির দিনে দলে দলে ঘরের বাহির হয় ও পিন্চো পাহাড়ের বাগানে জড়ো হইয়া ঘণ্টার পর ঘণ্টা বিসিয়া বসিয়া মৌমাছির মত বোদ পোহায়।

ইতিহাস বলে পিন্চো পাহাড়ের বাগানের নিশ্বাতা রোমের সমাট লুকুলাস (Lucullus)। এই পরম বিলাসী সমাট এই পাহাড়ের উপর বাগান রচনা করিয়া তার মধ্যে নিজের ডাইনিং-হল তৈয়ার করেন। পিন্চো পাহাড়ের অবস্থিতি এমন চমৎকার বে, এর উপরে দাঁড়াইয়া প্রায় অক্ষেক শহর দেখা যায়। তা ছাড়া এখান হইতে স্থ্যাস্ত বেমন স্থান তারে দেখা যায়, শহরের আরে কোথাও হইতে দেয়প দেখা যায় না। সমাট নাকি শুরু স্থ্যাস্ত দেখিবার জন্তই এখানে তার ডাইনিং-হল তৈয়ার করিয়াছিলেন। তার ধননীতে যে থানিকটা কাব্য-ধারা প্রবাহিত ছিল, গন্দেহ নাই।

স্থাটও নাই, তার চাইনিং-হলও আর নাই। এখন দেখানে একটি প্রকাণ্ড ব্যালকনি বানানো হইয়াছে। এই ব্যালকনি একটা পাথরের বেড়া দিয়া থেরা। এখানে নাড়াইলে আপনার দৃষ্টি শহরের বৃহদায়তন বাড়িগুলির উপর দিয়া ভাসিতে ভাসিতে সেন্ট পিটারের সিজ্জার আকাশভেদী চূড়ায় আসিমা আবদ্ধ হয়। এর একটু দক্ষিণে মতেমাাররো নামে পাহাড়—রোমের একটি সৌন্দর্যানিলয়। একটু বামে জানিকোলো নামে পাহাড়। এই পাহাড়ের উপর গারিবাল্দি ও তাঁর স্ত্রী আনিতার মহমেন্ট ও সেন্ট ওনোক্তিও নামক গির্জ্জায় কবি ভাসোর সমাধি।

পিন্টো পাহাড়ের এই বাশকনির উপর দাঁড়াইয়া শহরের রূপ পান করা ও স্থ্যালোক উপভোগ করা বিশেষ আনন্দর্শায়ক। সন্ধ্যাবেলার মিনিটগুলি বিশেষ করিয়া আনন্দর্শায়ক। পাশ্বের নীতে বিস্তৃত পিরাৎসা দেল পপোলো, বশ্বুবে দেউ পিটারের গিজ্জা ও মন্তেমারিয়ো, স্থ্যান্তকালে শহরের এই রূপ দেখিয়া মনে হয় যেন "একটি প্রকাণ্ড নৌকা কগতের সামাজ্যের অভিমূখে ভাসিয়া চলিয়াহে" (an immense ship launched towards the empire of the world.)

থেমন রোমের স্থাতেমন রোমের চাঁদ। রোমের আকাশ সর্বাদাই পরিষ্কার আর নীল। কিন্তু শীতের রাত্রে এর এক বিশেষ রক্ষমের দীপ্তি চোথে পড়ে। তথন চাঁদের মালোকেও থেন এক বিশেষ কুহক জ্বো। বড়দিনের সন্ধা হইতে আরম্ভ করিয়া ইইরে পর্যান্ত শীতের এই

কর মাসই এই অপূর্ব স্থালোক ও জোৎসার মায়াজালের মধ্যে রোমের শ্বরূপ অন্তব করিতে পারা ধার। অনেক পার্থিব আনন্দ উপভোগ করিবার পক্ষে এই সময়ই স্প্রশস্ত। কিন্তু যারা রোমকে ব্ঝি:ত চেটা করে এই কর মাসই সে তার হৃদয়ের রহস্ত একটু খুলিয়া দেখায়।

গ্রীষ্টমাসের দিন মধ্যরাত্রে সিঁড়ি ভাঙিয়া ক্যাপিটল পাহাডে আরোহণ ককন ও আরা চেলি (Ara Coeli) গিজ্জায় প্রবেশ করিয়া খ্রীষ্টের জন্মোৎদবে যোগ দিন। গির্জার ঘণ্টার চং চং ধ্বনি গভীর রাত্রের নিস্তব্ধতায় দুরে ছড়াইয়া যায়। পুরোহিতের কণ্ঠ হইতে আগমনীর হ্বর ধীরে ধীরে উপরে উঠিয়া থানিক ক্ষণ গির্জার অভ্যন্তরে বিলানে-থিলানে ঘুরিতে-ঘুরিতে অবশেষে জানালার ফাঁক দিয়া বাাহর হইয়া আসে ও ক্রমে ক্ষীণ হইতে ক্ষীণতর হইণ অদংখ্য নক্ষত্রের মৌন বাগ্মিতার মধ্যে বিশীন হইয়া যায়। তার পর বেদীর উপরে মোমের মৃত্র আলোকে গ্রীষ্টের নকল জন্মগ্রহণ। এই দৃশ্য দেখিয়া আপনি গির্জার বাহিরে আফুন ও ক্যাপিটন পাহাড়ের উপরে দাঁড়াইমা রোমান ফোরামের দিকে দৃষ্টিপাত করিয়া তার ভেস্তার মন্দির, ক্যান্টর ও পলাক্সের মন্দির, তার জয়স্তম্ভালির ও রাজ্পাসাদের ভগ্নস্ত পের কাহিনী শুন্ন। তার পর পিছন ফিরিয়া শ্বেত-পাথরের তৈরি ভিক্টর ইমাত্রয়েশ মনুমেণ্ট ও পিয়াৎসা-ভেনেৎসিয়ার দিকে চাহিয়া নৃতন রোমের কণ্ঠ শুরুন। ক্র:ম এই তিন কণ্ঠ মিলিয়া আপনার ভিতর এক গভীর নাদের সৃষ্টি করিবে। আন্দোলিত মনে আপনি তথন পাহাড হইতে নামিয়া আসেন ও নব-নিৰ্মিত "সামুংজোৱ রাজপথ" (via del impero) ধরিয়া পথ চলিতে থাকেন। এই রাজপথ প্রাচীন রোমকে নৃতন রোমের সঙ্গে যুক্ত করিয়াছে। চলিতে চলিতে আপনার মনে এই অবিতীয় নগরীর ভাগ্য সম্বন্ধে চিস্তার উদয় হয়। এর অতীতের কথা, এর বর্তমান নিয়তি ও ভবিষাৎ নিয়তির রহস্ত চিত্ত অভিভূত করিয়া ফেলে।

গ্রীষ্টমাদের দিন মধারাত্রে ক্যালিটিল পাহাড়ের উপরে দীড়াইয়া রোমকে থেমন বুঝা বায়, আর কোন সময় আর কোন স্থান হইতে তেমন বুঝা বায় না; অন্তর্ত্ত অন্ত সময় এই কিংকা-সদৃশ নগরীর রহস্তের একটু আভাস পাওয়া

নাম মাত্র। কিন্তু ২৪ শে ডিসেম্বরের মধারাত্রে ক্যাপিটল পাহাড়ের উপরে এই মায়াবিনী আপনার সঙ্গে একটু মন খুলিয়া কথা বলে ও তার রহস্তময় অস্তরে দৃষ্টিপাত করিবার অবকাশ দেয়। আপনার কাছে তথন এই অস্তরের সৌন্দর্য্য তার বিভিন্ন অবস্থায় প্রশিট ইয়—তার গর্বের ভঙ্গিমায়, তার বিলাস-লালগার উত্তেজনায়, তার বিনয়ের মৃষ্টিতে, তার ককার কমনীয়ভায়। কিন্তু তা সবেও আপনি বাস্তবিক ব্রিতে পারেন না এই পুনরী কা'কে তার হনয় দিয়াছে—রোমোলাস ও তার বংশধরদের, না গ্যালিলিয়ান ও তার শিব্যদের। বদি প্রশ্ব করেন, সে সমান স্নেহে তার ভ্রমন্ত্রের ও তার গিজ্জান্তলির দিকে ইক্ষিত করে।

গ্রীষ্টমাদ্যের পরে রোমে বেফানার উৎসব। বেকানা এক রূপকথার বুড়ী। ৬ই জানুয়ারির রাত্রে এই বুড়ী ব,ড়িতে বাড়িতে ভাল ছেলেদের উপহার বিতরণ করিয়া বেড়ার। ছেলেরা যথন মুমার সে তথন গোপনে বাভিতে ঢুকিরা তাদের মোজার ভিতর উপহার রাপিয়া চলিয়া যায়। প্রদিন প্রাতে ঘুম হইতে জাগিয়াই ছেলেরা ছোটে নিজ নিজ মোজার থে জৈ ভার ভিতর বেফানা কি উপহার রাখিয়া গিয়াছে দেখিবার জন্ত। রূপকথায় ক্ষিনিষ্টা এই ভাবে বলা হয়। প্রকৃতপক্ষে ছেলেদের মায়েরার বেকানার কাল করেন। ভারাই রাত্রিকালে ছেলেরা গুমাইলে মোঞার ভিতর যার যা সাধামত উপহার ভালিয়া দেটাকে ঘরের এক জায়গায়, সাধারণতঃ রাল্লাথরে, ঝুলাইলা রাখেন। এই উপহার দেওয়া উপলক্ষে ৬ই জাতুয়ারি রোমের পিয়াৎসা নাভোনায় এক মেলা বলে। পিয়াৎসা নাভোনা রোমের একটি নাম-করা জায়গা। এখানে সুবিখ্যাত বের্ণিনির অন্তান্ত ভাস্কর্য্যের কান্সের মধ্যে নীল, গঙ্গা, রিও দেলা প্লাতা ও দানিউব এই চারিট নদীর মুর্ত্তি আছে। এই মেলা রোমের একটি বিশেষ্ড। রোমের জনসাধারণ সেদিন খ্রীশতার ভূলিয়া ধায়। সেইজন্ত সেদিন স্ত্রী-পুরুষ বারা মেলার আন-েদ যোগ দিতে চায় তাহাদিগকে গীণতাবিক্স আচরণের জন্ম প্রস্তুত হইয়া বাইতে হয়।

বেফানার পরে কার্ণেভাল উৎসব আরম্ভ হয় ও ঈষ্টারের চল্লিশ দিন আগে শেষ হয়। এক সময় রোমের কার্ণেভাল জগছিষ্যাত ছিল। তথন রোমের রাজ্ঞপুঞ্জলি সার্থ

শীতকা**ল** উদ্ধাম আ**নন্দে মত্ত জনতা**য় গমগম করিত। কিন্তু আবেকার রাস্তার ফুর্ত্তি এখন 'বলক্ষমে' আশ্রয় গ্রহণ করিয়াছে। এগনও দোকানে দোকানে নানা রকমের মুথোদ ও রকমারি পোহাক বিক্রয়ার্থ সাজান দেখা যায়, কিন্ত ক্রেতার দল এখন শুধু শিশুরাই। পরিণত-বয়স্থেরা শুধু ঘরের ভিতর নাচিয়াই ফান্ত। আগেকার ১টকদার শোভাবাতা, পূপযুদ্ধ ও মুখোদ পরিয়া নাচ আর নাই। এখনকার রোমানরা ভরু খোল: মুথে নাতিঃ, কনস্ট শুনিয়া, অপেরা দেখিয়া ও খেলাগুলা করিলা কার্ণেভালের সময় কাটায়। মুসোলিনির আমল ইইতে খেলাগুলার প্রতি ঝোঁক গুব বাড়িয়াছে। শীতের কয় মাস দলে দ'লে হাজার হাজার যুবক-যুবতী বোম হইতে অন্তিদুরে রঞ্চারাদ্যে ও টেরমিনিল্নো নামক স্থানে স্কি খেলিতে সায়। আভিকাল রোমান য্বকদের মধ্যে ইংরেজদের অনুকরণে শিয়াল-শিকার, পোলো ও ফুটবল খেলিবার আগ্রহও খুব বাডিতেছে।

ঈষ্টারের সময় রোম আবার তার চারি শত গিজ্জার ভিতর দিয়া জগতের কাছে নিজের মহিমা গোষণা করে। গ্রীষ্টের লীবনের যে ট্রাজেডি জেব্লুজালেমে সংঘটিত হয় তাহা লোকোত্তর মহিমায় মহিমান্তিত হইয়াছে রোমের মাটিতে, কারণ রোম দেণ্ট পল ও দেণ্ট পিটারকে নিজের বুকে স্থান দিয়াছে ও গ্রীষ্টধর্ম্মকে বিশ্বধর্মে পরিণত করিয়াছে। প্রতি-বংসর ঈটারের দিনে রোমানরা দীর্ঘকাশব্যাপী আচারের ভিতর দিয়া গীষ্টের জীবনের ট্রাজেডির পুনরতুর্গান করিয়া নিজেদের এই কীর্ভির কথা স্মরণ করে। রোমে আভেন্তিনো পাহাড়ের উপর বে:নডিকটিন সন্ন্যাসীদের একটি বিহার আছে। নাম দেণ্ট আনদেশম। কি নিগ্লী ও সংযমের সহিত এই অনুঞান সম্পন্ন করা হয়, গত বৎসর ঈষ্টারের দিনে এই বিহারে আমি তাহা দেখিয়াছিলাম। ক্যাথশিক ধর্ম্মের ভিতর বে কতটা কাব্য স্পাছে তাহাও আমি দেদিন উপলব্ধি করিয়াছিলাম। পুজার্চনার অমুদান-বিধির জটিনতা ও আড়ম্বরের কথা ভাবিলে ক্যাথলিকদিগকে ব্রাহ্মণদের নিকট-জ্ঞাতি বলিয়া মনে হয়।

ঈষ্টারের পরে ২১শে এপ্রিল রোমের **জ্ঞােৎসবের দিন।** শাত শেষ হইয়াছে। প্রকৃতির চেহারা বদলাইয়াছে।

क्रक्रकट इ.५८२<u>। इ</u>.३ थ रम्

धरमा (धम, विक्रमा

ঐদিন আপনি থাবার ক্যাপিট পাহাড়ের উপরে উঠিয়া দেখান হইতে রোমের জন্মেৎসব লক্ষ্য কক্ষন। আপনার দৃষ্টি আবার ফোরামেও পালাটিন পাহাড়ের ভগ্নস্তূপ ও আরা চেলি গিজ্জার উপর পতিত হয়। আবার আপনার মনে প্রশ্ব জাগে—রোম কা'কে তার ফার দিয়াছে, রোমোলাস

ও তার বংশধরদের, না গ্যালিলিয়ান ও তার শিষ্যদের ? কিন্তু রোম কোন জ্বাব দেয় না। সে শুধু বসস্তের মৃত্ স্থাকিরণে আপনার দিকে চাহিয়া হাসে। সে-হাসি মোনালিসার হাসির মত ত্র্বোধ্য ও স্ক্রর।

রোম (২০.১.৩৫)

কুলীনের মেয়ে

শ্রীভারাশঙ্কর বন্দ্যোপাধ্যায়

ননদা নুথ্জের কল্যা তরু শেষে বিব থাইয়া আয়হত্যা করিল। এই মেয়েটিই অতি ত্বংস্থ পরিবারটির কর্ণধারহীন সংসার-তরণীর হাল ধরিয়া বসিয়াছিল। পরিবারের মধ্যে বিধবা ল্রাভ্ছারা, একটি বালক ভাইপো, আর নিভান্ত নাবালিকা একটি ভাইঝি। পাড়ার্নারে যাহাকে বলে—সাপের গর্ভ, ইত্রের গর্ভ ইইতে আহার সংগ্রহ করা—ভাই করিয়া ভক্ক বাপের বংশটির ভরণপোষণ করিয়া চলিতেছিল। অভিত্যুথেও ভাহার মুথে হাসিটি লাগিয়া থাকিত—লোকে বলিত ধৈর্য্যের প্রতিমূর্ত্তি ভক্ক। সেই ভক্ক কেন যে অক্সাৎ ধৈর্য্য হারাইয়া বসিশ ভাহা কেহ অনুমান করিতে পারিল না। তক্ষও ঘুণাক্ষরে ভাহার কোন আভাস দিয়া গেল না। রাত্রি এগারটার সময়েই ভক্কর যন্ত্রণাকাতর প্রনিতে ভাহার ল্রাভ্রায়ার গুম ভাঙিয়া গিয়াছিল। সে পাড়া-প্রতিবেশীর সুম ভাঙাইয়া সকলকে ডাকিয়া আনিল।

তক্ষর মুখ দিয়া তথন ফেনা ভাঙিতেছে—মৃত্যু বুকে আদিয়া নিশ্মভাবে চাপিয়া বিষিষ্টে। তক্ষর দেহধানাকে সে বেন ত্মড়াইয়া ভাঙিয়া জীবনটুকু টানিয়া বাহির করিয়া লইবার চেটা করিতেছিল। তক্ষর সই—প্রতিবেশিনী ভামিদার-গিলী ডাকিলেন—সই—সই!

অতিকটে চোধ মেলিয়া তব্ধ উত্তর দিল—জ্যা। স্নেহভরেই জমিদার-গিন্ধী প্রশ্ন করিলেন—এ কার্ কেন কর্লে সই ? তক্ষ অবশপ্রায় হাতথানি কপালের উপর রাথিয়া বোধ করি ইঙ্গিত করিল—কপাল, অনুষ্ঠ !

আছিরতা প্রগাত হইয়া আসিতেছিল—ক্ষমিদার-গিন্ধী তাহাকে নাড়া দিয়া আবার ডাকিলেন—সই—সই ! তরু।

তক্র চোথ মেলিবার চেষ্টা করিল, কিন্তু চোথ খুলিল না—জ্র-ছইটি থানিকটা উপরে উঠিল মাত্র। মুথে দে জড়িতথ্যরে বলিয়া উঠিল—ছি—বড় ধেলা!

আবার মৃত্যুরে বলিল—আর সহা হ'ল না। আর—। আবার সে আছেল হইয়া পড়িল।

ভাক্তার আদিয়াছি:লন। ইনজেক্খন—ইমাাক পাশ্প দিয়া বিশের সহিত যুদ্ধও যথেষ্ট চলিতেছিল। কিন্তু বিষ তথন বিথম হইয়া উঠিয়াছে—উপায় ছিল না। ডাক্তার হতাশ হইয়া উঠিতেছিল। সে আর একটা ইন্ভেক্শন দিল। বিষ-ঘোরের আচ্ছয়তার মধ্যে তরু একটু মুখ বিকৃত করিল মাতা। ভামিদার-গিন্নী আবার ভাহাকে সজোরে নাড়া দিয়া ভাকিলেন—তরু—ভরু!

ইন্ফেক্শনের শক্তি-ফলেই বোধ করি তরু এবার একবার চোথ মেলিয়া করেকটি কথাই বলিল—আঃ—আর ডেক না গো!

জমিদার-গিন্দী বলিলেন-একবার দেখবি?

তক্ষ স্থিরদৃষ্টিতে স্ইয়ের মুখের দিকে চাহিয়া রহিল। ক্ষমিদার-গিল্পী বলিলেন -ভারণকে একবার দেখবি ? ভাকব ?

তক্ষ বলিল-ছি!

তক্ষ সংবা—তাহার স্থামীও এই গ্রামেরই অধিবাসী—
নাম বিপদতারণ । পেশাদার কুলীন বিপদতারণ—সর্বস্ত্রের
তাহার ছয়টি বিবাহ। জমিদার-গিল্পীর চোথ দিলা কয়
ফোঁটা জল ঝরিয়া পড়িল। দাক্ষণ বরণার আক্ষেপে ভক্ষ
আঁকিয়া-বাকিয়া গোডাইতে-গোডাই.ত জড়িত স্বরে বলিল—
মুক্তি দাও—হে ঠাকুর।

মৃক্তি সে পাইল ভোররাত্রে—প্রায়-অবসান রাত্তির অর্কার তথন গুক্তারার আলোকে ঈষ্ৎ স্বচ্ছ হইয়া উঠিয়াছে—সে সম্ফুট আলোকে তরু মানুষের অজানা পথে যাত্রা করিল।

কাঁদিবার বড় কেহ ছিল না— আতৃজায়া একবার কাঁদিয়া নীরব হুইল—কিন্তু ছেলেমানুষ ভাইপোটির কালায় নৈশ প্রাকৃতির খানিকটা অংশ দকরণ ভাবে স্পান্দিত হুইয়া উঠিল। ঐটুকু:তুই বোধ করি জন্ধর অনিদিপ্ত বাত্রা দার্থক হুইয়া উঠিল।

এদিকে কিন্তু বাস্তব সংসারে ইহার পরেও অনেক-কিছু অপেকা করিয়াছিল। প্রভাত হইতে-না-হইতে পুলিস আসিয়া দরজায় বসিল। সকলের মূপ গুকাইয়া গেল, ছেলেটা এক মুহূর্তে সভয়ে কালা থামাইয়া ধেন মুক হইয়া গেল।

ভদলোক কয়েক জন অংসিয়াছিলেন। পুলিসের স্ব-সনম্পেক্টর ভাঁহাদের সমক্ষে তদন্ত আরম্ভ করিলেন। তরুর বিচানার মধ্যে গুইগানা পত্র পাওয়া গেল। একথানা শিরোনামাহীন—সেগানায় সে আঁকা-বাকা অক্ষরে লিখিয়া গিয়াছে— আমি আপন ইচ্ছায় বিষ থাইয়া আংগ্রহতা। করিতেছি। বড় শুজা—বড় স্থার জীবন—এ গাওয়াই ভাল। আর সহা করিতে পারিলাম না।

অপরথানিতে দক্ষিণপাড়ার ভামিদার গাঙ্গুলীবাবুর নাম লেখা ছিল—বোগীক্রনাথ গাঙ্গুলী। গাঙ্গুলীবাবুকে আহ্বান করিয়া তাঁহাকে দিয়াই পত্রখানি খোলান হংল। পত্রখানি পাড়িতে পড়িতে তাঁহার হাত কাঁপিতেছিল—মুখ বিবর্ণ হইয়া উঠিল। প্রতাল্লিশ বৎনর পূর্ব্বে এই সংসার রঙ্গমঞ্চ একটা সদ্যজাত শিশুর ভূমিকা লইয়া তরু প্রবেশ করিয়াছিল। একটি সচ্ছল গৃহস্থ—বাপ, মা, তুই বড় ভাই, তরুর আদরের আর সীমা ছিল না। বাপ ধনদা মুখুজ্জর পৈতৃক অবস্থাই গুগু সচ্ছল ছিল না—তাঁহার নিজের উপার্জ্জনও ছিল পর্যাপ্ত। স্থানীয় রেজেন্টারী আপিনে কাল করিতেন—বেতন পনের টাকা—কিন্তু উপবি-পাওনা দৈনিক তই-তিন টাকার কম ছিল না। তাহার উপর তিনি ছিলেন একটু অস্বাভাবিক প্রকৃতির। তাঁহাদের বংশকেই লোকে বিলিত মাথাথারাপের বংশ। ধনদা বাব্র পিতা এক দিন প্রয়োজনের সময় একটা স্থান না পাইয়া ক্ষিপ্ত হইয়া পাঁচ টাকার স্থা কিনিয়া সমন্ত বাড়ি-বরের দেওয়াল স্থানীন কণ্টিকত করিয়া কেলিয়া বিশ্বাছিলেন—স্ক্রের অভাব আমার বাড়িতে!

আরও একটা থেয়ালের কথা বলি—তিনি ছিলেন कुनीत्नत गरतत जीशित्नय्य-भाजनातत आक्षासर वाम हिन। মাতৃল ছিলেন সে আমলের লব্ধপ্রতিই উকীল। পূজার সময় সপরিবারে দেশে আসিতেন। তথন রেল মোটর ছিল না-পানীই ছিল সম্ভ্রান্ত যান। সেকালে তাঁহার মাতুলের বৃহৎ সংসার আট-দশখানি পালীতে সদর হইতে যেদিন গ্রামে ফিরিড, সেদিন দশখানা পালীর বেহারার হাকে গ্রামধানা সরগরম হইয়া উঠিত। ইতর ভদ্র সকলে দলে দলে দেখিতে ছুটিত। ভদ্রলোকেরা সাগ্রহে কুশল দ্বিজ্ঞাসা করিবার ফুযোগে কথা কহিয়া ধন্ত হইত। ধনদা বাবর পিতার সে দহ হইত না। বলিতেন—আঁটি—সবটে গিয়ে মামাকেই বলবে-কথন এলেন-কেমন ছিলেন ? মুবদ ত একথানা পালীর। লে আও পালী। তিনি নিজে এক পাকী চাপিয়া প্রাম হইতে মাইল-চুই দুরে গিয়া অপেকা করিয়া থাকিতেন। মাতৃল-পরিবারের পান্ধীবাহিনীর সাড়া পাইবা মাত্র তিনি ছকুম দিতেন—উঠাও পান্ধী। হামরা পাকী আগে বায়ে গা। মাতুলের আগেই তাঁহার পান্ধী গ্রামে আদিয়া পৌছিত। পান্ধী হইতে নামিয়া তিনি প্রতীক্ষমান ভদ্রজনদের সহিত নিজেই আলাপ করিতেন— কি চাটুজ্জে মশায় বে--নমস্কার, নমস্কার। বাড়ির সব ভাল --আপনি ভাল আছেন? আমি ভালই আছি। এই আসছি।

তাঁহার পিতা—ধনদাবাবুর পিতামহ, আহার করিতে বসিয়া সমুধে যাহাকে পাইতেন প্রশ্ন করিতেন—বলি— হাা-হে আর খেতে পারব—পেট ভরেছে কি না বল দেখি ?

ধনদাবাবৃত্ত পিতা-পিতামহেরই মত ছিলেন। আয়-বাষের হিসাব তাঁহার ছিল না। কেহ বলিলে বলিতেন— হিসেব কিসের রে—হিসেব ? একের পরে শৃত্ত দিলে হয় দশ – আর এক শৃন্ত দিলে শ— আবার শুন্ত দাও হাজার - -ক্জা দিয়ে অঙ্ক বাড়ানোর নাম হিসেব? তাহার তিন পুত্রও কংশের ধারা হ**ইতে** বাদ যায় নাই— বড়টি মাতাল, মেজটি বদ্ধ গোঁয়ার, ছোটটি ছিল তানসেন। স্কুলে ফের্থ ক্লাস হুইতে প্রমোশন না পাইয়া যেদিন সে কাঁদিতে কাঁদিতে বাডি कितिया अभिन, त्रिनिन धननावाय विनालन-वाँछ। यात्र ইস্কুলের মুথে—কিছুই জানে না বেটারা। **লেখা**পড়ার জন্মে কালা কিদের – কাঁদ্ছিদ কেন তুই – একরাতে তোকে বিদোন ক'রে দেব আমি। তাহার পর দিনই তিনি ছেলেকে ত্বলা কিনিয়া দিলেন। যাক্, তের বংসর পর্যাত তরুর জীবনের ভূমিকায় নাটকীয় ঘাত-প্রতিবাতের সংস্থান নাট্যকার করেন নাই। ছোট মেয়েটি আনন্দময়ী প্রতিমার মত হাসিয়া থেশিয়া বেড়াইত—দাদার মাঠারের নিকট নিজে হইতেই গিয়া গভীর মনোথোগের সহিত একখানা ইংরেজী বই খুলিয়া মনে বাহা আদিত তাহাই পড়িয়া বাহত। ছাত্রীটির অনুরাগ দেখিয়া মাষ্টার ভাহাকে লিখিতে পড়িতে শিথাইলেন। পাড়ার মেয়েদের সঙ্গে থেলিতে গিয়া কৌন্দল বাধাইয়া ফিরিয়া আসিত—তুমি শালপাতা ছেঁট ছুমে দিলে কেন আমাকে? বলব না--গাল দেব না আমি ? হাা ভাই গঙ্গাকল ।

সন্ধ্যায় সে মায়ের আঁচল ধরিয়া আকার ধরিত—গল্প বল ভূমি—বিয়ের গল্প।

এই বিবাহের গল্পের উপর তরুর বিশেষ একটি প্রীতি ছিল। নিতা সন্ধার বিবাহের গল্প না শুনিলে তাহার হইত না। তাহার তের বৎসরের সন্ধার মধ্যে শৈশব ও শেষের হুই বৎসর ছাড়িয়া দিয়া এই গল্প শেংনার ব্যতিক্রম যে কয় দিন ঘটয়াছে, তাহার সংখ্যা বোধ করি হিসাব করিয়া বলা যায়। মা গল্প বলিতেন—এই রত্নেচেকি বাজবে—চোলের বাজনা হবে। মশালের আলো আলিয়ে হুম্হাম্ ক'রে বরের

পান্ধী আসবে। রাঙা টুক্টুকে বর! ইদিকে লুচি ভাজা হবে, সন্দেশ হবে, মৃড়কী হবে, মৃড়ী হবে। ঘরের মধ্যে তরুর পাটী পেড়ে চুল বেধে দেব। তরু গয়না পর্বে—হাতে দেব কাঁক্নি, ওপর হাতে বাজ্বন্ধ, গলায় মৃড়কী-মাহলী, কোমরে গোট!

তরু নীরব নিস্তর—তাহার 'হু" দেওয়া কখন বন্ধ হুইয়া গেছে। মা নাড়া দিয়া ডাকেন—তরু, তরু ঘুমুস না—ধেয়ে মুম্বি। অ—তরু!

তরু জাগিয়া উঠিয়া বলে—তার পরে ?

তরুর ছোটদাদা বুক বাজাইয়া তবলার একটা বোল সাধিতে সাধিতে পান লই:ত আদিয়াছিল। সে তরুর মাথার উপবে একটা চাটি মারিয়া দিয়া বলিল—কত্তে-ধাগিনাক—

তরুর এই 'তার পর' প্রশ্নের উত্তর নাট্যকার তাহার জীবনভূমিকার মধ্যেই রচনা করিয়া রাখিয়াছিলেন। তের বৎসর বয়সেই সে উত্তর সে পাইল। ত্রিশ-বৃত্তিশ্ব বৎসর বয়সেই সে উত্তর সে পাইল। ত্রিশ-বৃত্তিশ্ব বৎসর পূর্বে তথন বাংলা দেশে বলাল সেনেরই রাজত্ব চলিতেছে। গঙ্গাগাত্রার পণেও কুলীনাফ তথন লোকের কন্তালায় উদ্ধার করিতে হইত। ধনদাবাবু সেদিন তাঁহার পিতার মাতুলপুত্র—স্থানীয় দ্দানার ক্ষ্ণবাব্র বৈঠকখানার দরজা হইতেই লাফ দিতে এবং চীৎকার করিতে আরম্ভ করিলেন—বাপ রে, বাপ রে, পেলের—।

রুফবাবু শশবান্তে ব'হির হত্যা আসিলেন— কি হ'ল, কি হ'ল—ধনদা-ভাইপো?

ধনদাবাবু বলিলেন—প্রকাণ্ড এক সাপ! বাপ রে, বাপ, হাত-চারেক লম্বা, হয়া ফণা! পেয়ে ফেলেছিল আর একটু হ'লেই।

কৃষ্ণবাবু প্রশ্ন করিলেন—কোণায় ?

ধনদাবার বলিলেন—তোমার সি*ড়ির মুখেই, বাপ রে বাপ !

আন্তিক—গরুড়— আন্তিকস্য মুন্দর্শতা—। সাপের কথা শুনিয়াই কুফবাব্র লোকজন লাঠিসে টা লইয়া প্রস্তুত হইয়াছিল। তাহারা আগাইয়া গেল, সঙ্গে সক্ষে কুফবাব্ও গেলেন, পিছনে ধনদাবাব্। माल प्रथा (शम ना। इक्ष्यान् विमानन-प्रथ् मर् ভाग क'रत्र भू" ख---

ভাহার কথা শেষ হ**ইন না**, ধনদাবাবু চীৎকার করিয়া উঠিলেন—ঐ—সাপ!

—æ ·

ধনদাবার্ ক্রফবার্র কাপত টানিতেছিলেন, বলিলেন— পালিয়ে এস—পালিয়ে এস বাবা।

ক্লফবাবু প্রশ্ন করিলেন—সাপ কট?

— ঐ বে, ঐ বে গাদের মধ্যে। থাস নড়ছে। নড়স্ত থাদের উপরে লাঠিবৃষ্টি হইয়া গেল। তাহার পর তাহার ভিতর হইতে বাহির হইল হাতথানেক লখা একটি হেলে-সাপ।

ক্ষণবাধু হাসিয়া বলিলেন—মধুস্দনের ঝাড়ের দোব, তোমার দোষ কি বল !

ধনদাবাবুরা মধুহদন তর্কাল্কারের বংশ। ধনদাবাবু বলিলেন—সাপ ত বটে হে বাপু। ওটাই কি কম? ওর আবার বিব বেশী, নামই হ'ল হলাহল। ওটা থেলেই বে— বাস, ধনদা-ভাইপো অভা। নাও, চা করতে বল।

চা তথন সবে দেশে চুকিতেতে। রুঞ্বাবুর বৈঠকথানা সে আমলে ছিল সমন্ত গ্রামের চায়ের আসর। সন্ধি হইলে কেহ কেহ এক-একটা পাঁচ সেরি খোরাবাটী-হাতে চা লইতে আসিত।

তামাক টানিতে টানিতে ধনদাবাব হাত-পা নাড়িয়া বলিলেন —বাপজান, ফেনাদ ত চুকিয়ে ফেললাম।

ক্ষণবাৰু সবিশ্বায় বলিলেন—ফেসাদ আবার কি হ'ল, কই কিছুত শুনি নাই, তুমিও বল নাই।

ধনদাবাবু বলিয়া উঠিলেন—কেলাদ নয়? মহা ফেলাদ। মেমের বিয়ে দাও, বিয়ে দাও! আরে বিয়ে দাও বললেই হ'ল!

ক্বক্ষবাব্ হাসিলা বলিলেন ও তক্কর বিজের কথা বলছ?

—দেখ দেখি বাপু, ছেলে হয় মেয়ে হয় থেয়ে থেলে
বেড়ায়—সেই ত ভাল। তার আবার বিয়ে কেনে
রে বাপু!

ক্ষমবাবু হাসিতে লাগিলেন, কোন উত্তর দিলেন না। ধনদাবার কয়েক বার হন বন নলে টান দিয়া বলিলেন—তা

আমি ত ফেদাদ চুকিয়ে ফেদানাম বাপজান। সব ঠিক হয়ে গোল।

কৃষ্ণবাবু প্রশ্ন করিলেন—কোথা?

বার-তৃই মাথা নাড়িয়া ধনদাবার বলিলেন—হাঁ। হাঁ। বাগজান, এ কি তোমাদের চোথ, এ আমাদের শিকের দিকের তারণ আমাদের ঘরের হুয়োরেই পাত্ত—হরিচরণের ছেলে তারণ—ওই থাকে বলে আঁটি-চোথো তারণ।

কৃষ্ণবাবু স্বিশ্বয়ে ধনদাবাবুর মুথের দিকে চাহিয়া বলিলেন—সে কি!

কৃষ্ণবাব্র বিশ্বয় ধনদাবাব্র গোচরেই আসিল না: তিনি মহা উৎসাহভরেই বলিতেছিলেন—কুলীনের সেরা কুলীন—কেশব চক্রবর্তীর সস্তান—

ক্ষুথবাবু বাধা দিয়া বলিলেন---কুল ত ভাল, কিন্তু ছেলে যে কুলাক্ষার।

ধনধাবাবু প্রথল প্রতিবাদ তুলিয়া বলিলেন - খুব ভাল ছেলে। পাচ-হিংসুকে বলে মন্দ। অতি উত্তম ছেলে।

ক্লকবার্ উত্তর খুঁজিয়া পাইলেন না। তিনি শুধু ধনদাবাবুর মুখের দিকেই চাহিয়া রহিলেন।

ধনদাবাবু থামেন নাই। তিনি বলিলেন— সে দিন এক-নজরে আমি চিনে নিয়েছি। যে থাতিরটা আমাকে করলে সেদিন—ও: সে আর তোমাকে কি বলব! জলের সময় আসছি—ছাতা নাই—দেখেই আমাকে ডেকে বসালে, নিজে হাতে তামাক সেক্তে থাওয়ালে। বুঝাল কি না, সেইখানেই ওর মা নিজে সেধে ক্যা পাড়লে।

কৃষ্ণবাবু এতক্ষণে বলিলেন—এরই মধ্যে পাচটা বিয়ে ওর হয়ে গিয়েছে—ভা জান!

ধনদাবার উ:গুজিত ভাবে উত্তর দিলেন—বাঃ কুলীনের ছেলে বিয়ে করবে না? আরও দশটা করে নাই এই আশ্চিয়ি।

কৃষ্ণবাবু কিছুক্ষণ চুপ করিয়া থাকিয়া বলিলেন— কাজটা ভাল হবে না ধনদ:-ভাইপো, পেশাদার কৃদীনের ছেলে—ও কখনও বশ মানে না।

ধনদাবাব হা হা করিয়া হাসিয়া বলিলেন —রপোর শেকল দিয়ে বেটাকে বেংধে রাধব। ঘর ক'রে দেব, জমি দেব, আর স্বরেজেন্টারী আপিসে একটা কাছে চুকিয়ে দেব, ব্রালে, বাদ্— আর যাবে ে গথা, ঘুরে ঘুরে নড়েই ব'দ ভাবেদার হয়ে থাকবে। বজ্জাতি করলেই যাতে-ভাতে ফাইন ক'রে দেব।

কৃষ্ণবাবু আর কোন কথা বলিলেন না। তাঁহার অসন্থান্তি অসুমান করিয়া ধনদাবাবু বলিলেন— তারণের মা পোশামোদ করছে। পাত্রপক্ষ থোশামোদ করছে এ কখনও ছাড়তে আছে? কোণা এগান-ওগান ক'রে লোকের খোশামোদ ক'রে বেড়াব বল ত?

কৃষ্ণবাবু এ-কথারও কোন জ্বাব দিলেন না। কয়েক মুহর্ত নীরব থাকিয়া ধনদাবাবু আবার বলিলেন—গাঁজা মদ একটু থায়, রংটা কাল, তার আর কি হবে? কুলাঙ্গার বলছ —'ও আঙ্গারে আগুন ঠেকালেই আঙ্গার আগুন, বুঝলে। গরসংসার হলেই সব ঠিক হয়ে যাবে।—বলিয়া নিজের রসিক্তায় নিজেই তিনি হা-হা করিয়া হাসিয়া সারা হুইলেন। কৃষ্ণবাবু নীরব হুইয়াই রহিলেন।

তক্কর জীবন-ভূমিকার একটি পট পরিবতিত হইল।
অদৃষ্ট নাট্যাকারকে মানিতে গেলে বলিতে হয় ভাহারই
নির্দ্দে-অত্যায়ী তক্ক একদিন রাঙা চেলী পরিল, চোথে
কাজল পরিল, আভরণ পরিল, বসনে ভূষণে রাজকতা
সাজিয়া রাঙা টুকটুকে বরের প্রত্যাশা করিয়া বদিয়া বহিল।

তার পর শুভক্ষণে বিপদ্ভারণের জীবনের সহিত নিজের জীবনের প্রস্থি বাধিয়া লইল। খনদাবাব্ ক্যার বিবাহে খরচের ক্রটি করেন নাই। বরাভরণে, দানে তিনি ভার বোঝাই করিয়া দিয়া ক্যাকে জামাতার সহিত পাঠিইয়া দিলেন।

ফুলশন্যার রাত্রে তরু বিভানার শুইয়া ঘুমাইয়া পড়িয়াছিল।
তারণের থোঁজ ছিল না—দে কোগায় গিয়াছে। ফ্রবাভাবিক
হইলেও বরের বাড়িতে এ লইয়া কোন বাস্ততা বা আন্দোলন
ছিল না। অকস্মাৎ কাহার আন্দালন-আহ্বানে বহিছারি
উচ্চ আঘাত-শব্দে তরুর ঘুম ভাঙিয়া গেল। রাত্রি বোধ
হয় গভীর, বাহিরে কোথাও আর কোন শব্দ নাই। সদ্য ঘুম
ভাঙিয়া অপরিচিত আবেষ্টনীর মধ্যে আপনাকে দেখিয়া
তরু ভয় পাইয়া গেল—ভার পর তাহার মনে পড়িল এ
স্বামীর ঘর। ওদিকে দরজা-খোলার শব্দ হইল, সঙ্গে

সঙ্গে কাহার কণ্ঠন্বরও সে শুনিতে পাইল—আক্সকের দিনেও কি এই কাণ্ড করে—? স্কড়িত উচ্চ স্বরে কে বলিয়া উঠিল —কেয়া হাায়—কোন শালার পরোয়া করি আমি!

কে বৰিল-ওয়ে শোন-শোন-

সেই মৃহূর্তেই তক্ষর শয়ন্থরের দরজা প্রচণ্ড আঘাতে আছাড় খাইয়া থূলিয়া গেল—টলিতে টলিতে প্রবেশ করিল তারণ, তাহার এক হাতে একতাল কি রহিয়াছে।

তারণ আসিয়াই বলিল—ইধার আও—এই—ইধার আও।

নে মূর্জ্তি ও আক্ষালন দেখিয়া তরু ভয়ে থর থর করিয়া কাঁপিয়া উঠিল।

তারণ বলিল—তোর মুখের ছাঁচ তুলব আমি—এই কাদা দিয়ে, এই কাদা দিয়ে—।

হাতটা নাড়িয়া কাদার তালটা দেখাইতে গিয়া হাত হইতে কাদার তালটা থপ করিয়া পড়িয়া গেল। ভক্ক সভয়ে ফোণাইয়া কাঁদিয়া উঠিল।

তারণ কাদার তালটা মাটি হই:ত চাচিয়া তুলিতে তুলিতে বলিল—পণ্ডী দেণ্ডে চেয়েছে তোর মুখের ছাচ— তোর মুথের ছাঁচ তুলব আমি।

পরী একটা নীচজাতীয়া স্ত্রীলোক—পরীর কথা তক জানে, বিবাহের পূর্বেই শুনিয়াছে। তকর চেডনা যেন লুপ্ত হুইয়া আসিতেছিল—গুলা দিয়া বর তাহার বাহির হুইল না।

তারণ বশিল—পরীকে বালা দিতে হবে—খুলে দে তোর বালা।

তক্র বালা ত্ইগাছা গুলিয়া ফেলিয়া দিল। তারণ খুনী হইরা বলিল—আব্ ইধার আও, মুখের ছাঁচ লেঙ্গে—আও, আও—।

ক্ষেক মৃত্তু অপেক্ষা করিয়া তারণ অগ্রসর হইল।
তক্ষ এবার প্রাণপণে সাহস সঞ্চয় করিয়া উঠিয়া দরজার
দিকে ছাটল। তারণও ছাটল, দরজার মৃথেই সবলে তক্ষকে
ধরিয়া মাটিতে কেলিয়া তাহার মুথের উপর কাদার তালটা
চাপাইয়া দিল। কাদার তালটা তুলিয়া লইয়া দেখিয়া
বলিল—ওঠে নাই ভাল।—বলিয়া আবার সেটা ভক্ষর
মুখের উপর চাপাইয়া দিল। তক্ষর খাসক্ষম হইয়া
আসিতেছিল। সে সমস্ত শক্তি সঞ্চয় করিয়া মন্ত তারণকে

একটা ধাকা দিল। নেশার উত্তেজনায় তুর্বল তারণ পড়িয়া গেল—সেই অবসরে দরজা খুলিয়া ছুটিয়া সে বাহির হইয়া পড়িল।

কিন্ত বাহিরেও নিক্ষতি ছিল না—সেথানে শাশুড়ী প্রাহ্মা দিডেছিল বাঘিনীর মত। তারণের ঘরের দরজার অতি ক্ষিপ্রভাবে শিকল দিয়া বন্ধ করিয়া দিয়া ব্যুকে আটক করিয়া কহিল—পালাবি কোগায় শুনি? হারামজাদী, স্থামীকে কেলে দিয়ে তুমি পালাবে? কেলেকারী করবে আমার?

তক্ষ সভায় স্থির হইয়া দাঁড়াইল। শাশুড়ী ভাহাকে সেই অবস্থাতেই আপনার গরে বন্ধ করিলেন। তকর কাঁদিবার স'হস ছিল না, কিন্তু ক'লার আবেগে বুক গেন ভাহার ফাটিনা নাইভেছিল। সে নিদ্রাহীন চক্ষে আবেগের সহিত সৃদ্ধ করিয়া বিক্ষারিত চক্ষে গ্রভরা অন্ধকারের দিকে চাহিয়া পড়িনা বহিল।

ভোরের দিকে শাশুড়ী গুমাইয়া পড়িয়াছিল—ও ঘরে তারণের নাসিকা-গর্জনের ধ্বনি শোনা ধাইতেছিল। তরু উঠিবার চেলা করিল, কিন্তু ভয়ে খেন সে পঙ্গু হইয়া গেছে। কিছুক্ষণ পর আবার সে উঠিল। দরজার কাছে আসিয়া কর্থকেছাত দিল।

ধনদাবাব গ্রামের মধ্যে প্রাত্যে উঠিয়া থাকেন—অন্ধার থাকিতে থাকিতেই তিনি বাহিরে আদেন। সেদিন প্রত্যুবে বহির্বার মুক্ত করিবা মাত্র প্রথম দর্শন করিলেন নববিবাহিতা কন্তার কর্মশিশু মুধ। তিনি শিহরিয়া প্রশ্ন করিলেন—তর্ক—মা।

তক্ষ উত্তর দিতে গেল, কিন্তু পারিল না—দে এতক্ষণে মুচ্ছিত হইয়া পিতার কোলে চলিয়া পড়িল।

তরুর জীবনের এইবানেই বোধ হয় প্রথম অক্ষ শেষ হইল।

প্রদিন প্রভাতেই তক্কর শাশুড়ী বউ শইতে আসিয়া বলিল—আরও পঞ্চাশ টাকা তোমাকে লাগবে বেয়াই : তারণ ত আমার রেগে খুন—বলে ও পরিবার আমি নোব না । আমি অনেক বুঝিয়ে-স্বি:র—

অসহিষ্ণু ভাবে ধনদাবাবু বলিলেন—না।

সবিশ্বরে চমকিয়া উঠিয়া তক্কর শাশুড়ী বলিল—না কি ? এক কথায় ধনদাবাবু বলিয়া দিলেন—মেয়ে আমি পাঠাব না।

তরুর শাশুড়ী বলিল—অ—তা বেশ। কিন্তু গরনাশুলি আমার দাও। গরনা ত আমার তারণের।

ধনদাবাবু বলিলেন--- গরনা আমার মেয়ের।

ইহার উত্তরে তক্কর শাশুড়ী চীংকার করিয়া পথে পথে তক্কর গতরাত্রির নৈশ অভিদারের একটা রচিত কাহিনী রচনা করিয়া বাড়ি ফিরিল।

ধনদবোৰু প্রতিজ্ঞা করিলেন—ও জামায়ের মামি মুখ দেখব না। আমার মেয়ের ভাবনা! এক লাখ টাকা দেব আমি তক্লকে—বেটা নিজে এসে গড়িয়ে পড়বে— তবে মামার নাম!

কিন্তু এ প্রতিজ্ঞা তাহার থাকিল না।

চার বংসর প্রের কণা। তব্ধর বয়স তপন সতের বংসর।

তরুর মা সেদিন ধনদ:বাবুকে বলিলেন — হা গো— মেয়েটার একটা ব্যবস্থা কর।

ধনদাবাৰু বলিলেন—-পাচ হাজার টাকা দেব আমি তক্কে— ভাবনা কি ?

গৃহিণী বলিলেন—টাকা নিয়ে কি করবে ভক্ন ? কে ভোগ করবে ?

ধনদাবাবু সচকিত হইয়া উঠিলেন, বলিলেন— হ'।

গৃহিণী বলিলেন—জামায়ের সঙ্গে কি মাথ। ভুলে চলা চলে, বার পায়ে ধরে মেয়ে দি:য়ছ! তরুর দি:ক চেয়ে দেখ দেখি।

ধনদাবার কোন কথা বলিলেন না। কিন্তু সন্ধ্যার সময় নিজেই গৃহিণীকে ডাকিয়া বলিলেন—তক্ষ ত বেশ রয়েছে—কেবল দেখলাম আজকাল বৌদের সঙ্গে ঝগড়া করে বেণী।

গৃহিণী বলিলেন— ঝগড়া করাটা ব্ঝি ভাল মনের লক্ষণ?

ধনদাবাবু ডাকিলেন—তক্ষ—তকু!

তক্ষ তথন নীচে ঝগড়াই করিতেছিল—সে তীক্ষকঠে অন্ধকার বাড়িটার প্রাঙ্গণে একা দাঁড়াইয়া বলিতেছিল— গোপালের মা সব—গোপাল কোলে ক'রে শুয়েছেন। আর আমি—দাসী-বাদী আমার ত না ধাটলে উপায় নেই। আমি ত গোপালের মানই।

ধনদাবাবু গৃহিণীকে বলিলেন—ছ"।

তরু তথনও আপন মনেই বকিতেছিল—কাল যে
ন্ঠা—তা দে-উয়্গও আমাকে করতে হবে? কেন—
শুনি ? ঝাঁটা মারি আমি ষ্টার মুখে।

প্রদিন প্রাতঃকালে উঠিয়াই ধনদাবার গৃহিণীকে বলিলেন—কুম্ঠাককণকে একবার ডাক দেখি!

গৃহিণী বলিলেন—কেন ?

—ভারণের মায়ের কাছে একবাব পাঠাব।

কুমুঠাকক্ষণ দৌত্য লইয়া গিন্তা ফিরিয়া আদিয়া বলিল—তাবে আদতে-বেতে রাজী আছে। কিন্তু ঘ-দিন আদবে সম্মানী দিতে হবে পাঁচ টাকা ক'রে। প্রথম দিন কিন্তু দশ টাকা লাগবে।

ধনদাবার বলিলেন—দশ টাকা, মোটে দশ টাকা! গ্রশ-পাচ-শ দেব আমি। চাঁদির জুতো মারব আর নিরে আসব বেটাকে—বাও তুমি কুমুদিদি, নেমস্তর ক'রে এস— রাত্রে সে এখানে থাবে।

কুমু আবার ফিরিয়া আসিা ব**লিল—টাকা কিন্তু আগাম** দিতে হবে।

দশ টাকার গুইখানি নোট বাহির করিগ তিনি কুমুর হাতে তুলিয়া দিলেন, বিশ টাকা দিলাম—আবার দেব। ভাবনা কি! বাড়িতে নানা আয়োজন হইল। তব্দ নিজে হাতে শ্যা রচনা করিল।

ছোট ভাক্ত রসিকতা করিয়া বশিল—গাকুরঝি:ক আজ ভাই বড় থুশী খুশা দেগছি।

ফিক্ করিয়া হাসিয়া ফেলিয়া তরু বলিল—মরণ আর কি।

বড় ভাজ যত্ন করিয়া কেশবিন্তাস করিয়া দিল।

রাত্রে শুই:ত যাইবার সময় সে আঁচলের খুঁট খুলিয়া কয়টা বেলফুল থোঁপায় পরিয়া লইল। কথন গোপনে সেক্কেবাবুর বাগান হইতে সংগ্রহ করিয়াছিল।

প্রভাতে উঠিয়া ভক্ন দেখিল শ্যাশুন্ত—ভারণ কথন

উঠিয়া চলিয়া গে:ছ। দেওয়ালে ঝুলানো আয়নায় সে বিশৃখাল মাথাটা ঠিক কবিয়া লইতে গিয়া শিহরিয়া উঠিল— তাহার কানের একটা মাকড়ী নাই। বিছানা খুঁজিতে তাহার প্রবৃত্তি ছিল না—কিন্তু তব্ও একবার খুঁজিয়া দেখিল।

সে বেশ ভাল করিয়াই জানিত মাকড়ী পাওয়। যাইবে না—পাওয়া গেলও না।

কয় দিন পর আবোর সেদিন সকালে কুমু-ঠাকরুণকে দেখিয়া তরু মাকে বলিল—কুমুঠাকরুণ কেন এসেছিল মা ?

মা বলিলেন—ত'রণকে নেমস্তন্ত্র করতে পাঠা**লা**ম।

তক্র বলিল—আমি গলায় দড়ি দিয়ে মরব মা।

সবিশ্বয়ে মা প্রাশ্ব করিলেন—কেন :

তক্ষ বলিল---ইটা।

কিছুকণ পর ক্মু আসিয়া বশিশ—কই গো তরুর মা—টাকা-পাচটা দাও বাপু—আগাম না হ'লে তোমার জামায়ের চলবে না।

গ্রহণ মা বাক্স খুলিতেছিলেন—তক্ষ আসিয়া ওঁহোর পা চাপিয়া ধরিয়া বলিল—অ'মাকে আর আয়হত্যা করিও না মা—তোমার পায়ে ধরছি আমি।

মা সম্প্রেহে ভরুকে ট:নিয়া ভূলিবার চেটা করিয়া বলিলেন—কেন সে-কথা খামায় বলবি না ভরু ?

মায়ের আকর্ষণেও তক উঠিল না, সে ঝরঝর করিয়া কাদিয়া মায়ের পায়ে মুখ লুকাইয়া বলিল—চোর—চোর, ম', সেদিন আমার মাকড়ী চুরি ক'রে নিয়ে পালিয়েছে।

আট বৎসর পরের কথা --

পশ্চাতের পটভূমির অনেক পরিবর্তন ঘটিয়া গেছে।
জীবনেও অনেক পরিবর্তন ঘটিয়াছে। ধনদাবাবুর বড়
বাড়িটা ভোট ভোট ভাগে ভাগ হইয়াছে। ধনদাবাবুও
নাই—তাঁহার স্ত্রীও নাই। বাড়িটা চারি অংশে বিভক্ত
হইয়াছে—তিন ভাইরের তিন অংশ, তরুর এক অংশ।
তরুকে তিনি দিয়া গিয়াছেন নগদ পাচ শত টাকা ও
হাজার-দেড়েক টাকা মুলাের হমি। লাধ-পঞাশ হাজারদশ হাজার-পাঁঠ হাজার ওটা ছিল ধনদাবাবুর স্বভাবসিদ্ধ
আন্দালনের অঙ্গ। বড় ভাইরের বাড়ি বন্ধ, বড়ভাইও

নাই—ছেলেটিকে শইয়া বড়ভাজ ভাইপোর কাছে গিয়া
আছেন। মেন্বভাই এখানকার বাসই ভূলিয়া দিয়াছে
—সমস্ত বিক্রেয় করিয়া সে শ্বন্তরবাড়িতে গিয়া বাস
করিতেছে। থাকিবার মাধ্য আছে তব্দ ও তব্দর ছোটদাদা।
তব্দও শ্বতয় ভাবে সংসার পাতিয়াছে। ধনদাবাব্র
শ্রাদ্ধশাস্তি চুকিয়া যাওয়ার কিছুদিন পর সেদিন তব্দর দূরসম্প্রীয়া এক ননদ আসিয়া ডাকিল—বৌ রয়েছ না কি ?

তক্ষ সবিশ্বয়ে প্রশ্ন করিল—কে ?

ননদ রিস্কিতা করিল—কুট্ন হে কুট্ন—সন্দেশ বার কর।

ভক্ বলিল--এস---ব'দ।

ননদ বলিল—পাৰ্কী এনেছি—নিতে এলাম তোমাকে। একথানা আসন পাতিয়া দিয়া তক্ব বলিল—ব'স।

বাসিয়া ননদ চারি দিক দেখিয়া বলিল—বেশ বাড়ি হয়েছে। কারু সঙ্গে কোন লেপ্ড নাই।

তরু শুক্ষরে বলিল--ছ'।

ননদ বেলিল—আর কি দিয়ে গেল কাকা ? কেউ বলভে পাঁচ হাজার, কেউবলভে দশ হাজার—ভা অবিধাসের ত কথা নয় বাপ ত তোমার বড বাপেই ছিল।

তরু গম্ভীর ভাবে ব**লিল—পা**চ হাজার টাকা দিয়ে গিয়েছেন।

ননদ বলিল— তা আমাকে কিছু শিরোপা দিও ভাই, আমি পুথবর এনেছি।

তক্ষ কোন উত্তর দিশ না—সে পুথবরটার *গুল্ম* তাহার মুখের দিকে চাহিয়া রহিশ।

কেহ কোগাও ছিল না—তব্ও অনাবগ্যক ভাবে মৃত্স্বরে ননদ গোপন সংবাদটি প্রকাশ করিল—দাদার মন টলেছে হে—তোমার কপাল গুলেছে।

বিচিত্ৰ হাসি হাসিয়া তব্দ বলিল—তাই না কি ?

- হ্লা, তঃই ভ বলশাম—তোমাকে নিতে এগেছি।
- <u>-9-1</u>
- —তা হ'লে কবে বাবে বল—এ মাসের ২০৫ে, ২৫৫ে, ২৭৫ে এই তিনটি দিন আছে।

ভক্ক কঠিন স্বরে অপ্রত্যাশিত রুঢ়ভাবে এবার হ্লবাব দিল—বলতে ভোমার লজ্জা লাগল না ঠাকুরঝি—ছি—ছি। এজন্ম তোমার দাদাকে তপস্থা করতে বল গে—আসংছ জন্মে যাব। আমার টাকার লোভে নিতে এসেছ—আবার ছ-দিন পরে টাকা ক'টা কেড়ে নিয়ে আর একটা কলফ দিয়ে বিদেয় ক'রে দেবে, কেমন ?

ননদ মুধ কালো করিয়া উঠিয়া গেল। তরু পূজার জন্ত ফুল বাছিতে বিদিশ। সে এখন নিত্য নিয়মিত পূজা করে—এত-নিয়মের কোনটি সে বাদ দেয় না।

· ছোট ভাজ আসি**য়া দাঁড়াইল**।

জ্রকুঞ্চিত করিয়া তরু বলিল—কি ?

বৌটি ভয়ে ভয়ে বশিশ—ভোমার দাদা একবার ডাকছে।

কর্কশভাবেই তরু উত্তর দিল-কেনে ?

- সেত আমি জানিনাভাই।
- তুমি জান না— আমি জানি—বল গে টাকা আমি দিতে পারব না।

বৌটি ট্ৰিয়া গেল। কিছুক্ষণ প্রই ইমনকল্যাণ ভাজিতে ভাজিতে ছোট্দাদা আদিয়া বিনা-ভূমিকায় বিশ্বি—পাচ্টা টাকা দে ত তক্ষ।

তক্ষ ভাইকে দেখিয়া একটু কোমল হইয়া উঠিল— এই ছোটদাদাটিকে সে বাল্যকাল হইতেই বড় ভালবাসে। তক্ষ একট্ কোমল কঠেই বলিল—টাকা আমার নাই ভোট্লা।

ছোটদাদা বসিয়া পড়িয়া থানের গায়ে টোকা দিয়া বোল বাক্সাইতে বাজাইতে বলিল— মাঃ আজ একটা গানের মঞ্চলিস বসংক—এক জন সেতারী ওক্তাদ এসেছে।

তক্র বলিল—এই ক'রেই তুমি সব নাশাবে ছোটদা। ছোটদাদা আংটিটা খুলিয়া ফেলিয়া দিয়া বলিল— এইবার দিবি ত!

আংটিটা কুড়াইয়া লইয়া তরু পাঁচটা টাকা বাহির করিয়া দিল। খুণী হইয়া ছোটদাদা টাকা লইয়া ঘাইতেছিল, কিন্তু তরু আবার ডাকিল—ছোট্দা—নিয়ে যাও ভোমার আংটি । অংটিটা সে ভাইয়ের দিকে কেলিয়া দিল।

দিনকয়েক পর---সেদিন তথন সে রাল্লা করিতেছিল। কাহার গলার সাড়া পাইয়া সে বুঝিল ছোটদাদা আঞ্জ আবের টাকার জন্ত আদিয়াছে। .স কঠে হইয়া বসিয়া রহিল। মনে মনে শক্ত কথার নারি সাজাইয়া তুলিতেছিল সে।

- একটু অ'खन माও দেখি।

ভক্ক চমকিয়া উঠিন—মূপ ফিরাইয়া দেখিল—বিপদতারণ নিলক্ষ ভাবে দ'ত মেলিয়া হাসিতেছে।

হি-হি করিয়া হাদিয়া বিপদতারণ ব**লিল**—চম্কে উঠ্লে বে—ভূত নাকি খামি ?

দেওগালে ঠেদ দিয়া তক কাঠের মত দাঁড়াইয়া রহিল।
ত'রণ বলিল—বেশ ধর্দেরে হয়েছে। তা আমাকে
একদিন নেমন্তর-টেমন্তর কর।

ভক্ত এবার বলিল—না।

ভারণ ক্লেম ভরে একটু পিছ.ইয়া আসিয়াবশিশ— ও রে বাণ রে! সাশিনী রে—ন'গিনী রে ফোঁস্!

তকু কিন্তু এ রদিকতাম হাদিল না।

তরেণ বলিল—তা হ'লে কবে নেমন্তর করছ বল? ভব্নবলিল - বল্পাম ত — না।

—না! কেন শুনি?

তক্র এণ্ড কঠে দৃঢ়তার সহিত বলিশ—চে রকে আমি বঢ় েলা করি।

এক মুহুর্ত্তে তারণের কাশ মুপও কেমন অস্বাভাবিক বর্ণধ্রণ করিল। মাথাও নত কারতে হইল।

ভক্স বলিল—মাকড়ী তুমি আময়ে চাইলে নাকেন? ভারণ বলিল—চাইলে তুমি দিতে?

— েয়ে দেপলে না কেন তুমি? মুখে মাটির ছাঁচ তু.লছিলে, তবুত আমি রাগ করি নি!

ভাহার এটি চোধ দশে টল্টল্ করি তিছিল।

ভারণ অঃসিহা ত'হার হুট হাত ধরিয়া অক্ল**এম** মেহপূর্ণ স্বরে বলিল—অম'কে ম'ক্ কর তক্স।

তক্ষ ঝবঝর করিয়া কাঁদিল ওধু। তারণ ভাহাকে বু:ক টানিয়া লইয়া ব:র-বার ভাহাকে চুম্বন করিল।

ভার পর যাইবার সময় বলিল—রাজে আমারে নেম**ওর** রইল এবানে।

. .

জীব:নর এই তৃতীয় অংক নাট্যকার সুথের চিত্র আঁকিয়াছিলেন। বিগদভারণ তাহাকে ধরা দিল, সত্য সত্য

স্বামীর মতই ধরা দিল। অর্থ চাহিল না—সম্পদ চাহিল না—
আপনার মত করিয়াই সমস্ত জোতজমার তদারক করিল,
তরুর সেবাও লইল—শাসনও মানিল। মাস-চারেক পর
সেদিন তারণ মাঠ হুইতে ফিরিয়া দেখিল তরু শুইয়া আছে।
প্রাশ্ন করিয়া জানিল তাহার জর হুইয়াছে। তারণ নিজেই
বালা করিতে বদিল।

তব্ধ বলিল—ছোটবৌ যে নেমস্তন্ন ক'রে গিরেছে স্কালেই। জর দেখে বললে—ঠাকুরজামাই তা হ'লে আমার বাড়িতেই থাবেন।

তুম্ করিয়া কড়াটা নামাইয়া দিয়া তারণ বলিল—
বাচলাম বাবা। একটান ভামাক থাই ববং—কাজ দেখবে।
আক্ষ কিন্তু একটা টাকা দিতে হবে—অনেক দিন মদটদ
ধাই নাই। কে—কে গো?

তরুর ননদ প্রবেশ করিয়া বলিল—তোমাকে একবার ডাকছে দাদা। কটি লোক এসেচে বাড়িতে। দাদা আজ বাড়িতেই থাবে বউ।

তারণ বলিল—লোক—কেরে বাপু? কার ধার ধারি আমি ৷

ভক্ন বলিল--দেখেই এস না বাপু!

তারণ গেল, কিন্তু সমস্ত দিনের মধ্যেও আর ফিরিল না। অপরাহে ছোটবগু আসিয়া বলিল—ঠাকুরজামাই ফেরেন নি ঠাকুরঝি?

তব্দর জর ছাড়িয়া আগিতেছিল—সে বলিল—সেই জলখাবার বেলাতেই গিয়েছে বাড়ি—কে লোক এসেছে। এখনও ত ফিরল না। কাউকে যে পাঠাব এমন লোক নাই।

কিছুক্ষণ নিগুর থাকিয়া বউ বনিশ—তোমার ঝলকার সভীন এসেছে।

তক্ষ চমকিয়া উঠিয়া বলিল—কে বললে ?

অপরাধিনীৰ মত বউটি বলিল—পাড়াতেই **ভনলাম**— থবর স্ত্যি।

ভক্স কিছুক্ষণ নীরব থাকিয়া বশিশ—দেখি কিছুক্ষণ। ভূমি ছোট্দাকে একবার ডেকে দিও ভাই।

ডাকিতে কিন্তু পাঠাইতে হইল না—তারণ নিজেই সন্ধ্যার পূর্ব্বে ফিরিল। তক্ষ প্রেপ্ন করিল-কাল চার বৌ এসেছে ?

তারণ বলিল—ইনা। দেখ কেনে, বলা নাই, কওয়া নাই—ড্যাং ডাাং এ চ-কাপড়ে এসে হাজির। শালারা মদ গাইরে বিনা প্রদায় বিয়ে দিয়েছে—এখন বলে ভাতকাপড় দাও—নিয়ে খব কর।

তক্ষ চুপ করিয়া রহিল। তারণ বলিল—দিলাম বিদেয় ক'রে। বলে ভেসে ধাবে—আমি ব'লে দিলাম—গলায় কলদী বেধে দিও ভূবে ধাবে—ভেদে যাবার ভয় পাকবে না।

एक विन - ছि-- ७३ कि वरन भा।

আবার কিছুক্ষণ পর তব্দই বিশিশ— আন্নত কেন বিদেয় ক'রে দিলে বল ত? না-হয় একটা রাত থাকত। না-হয় সম্মানীটা আমি দিতাম।

ভারণ বলিশ—একটা টাকা দাও দেখি—একটা বোতল আনব আ**ন্ধ**।

ভক্ক বলিণ-বাকুটা আন না, লক্ষ্মী !

ভারণ বাক্স আনিলে তক্ষ একটা টাকো বাহির করিয়া দিয় বলিল —রেখে এদ এটা—আমি পারছি না। ভারণ ভখন বহিদ্ব'ারের কাছাকাছি পেঁই ছিয়াছে—ফিরিয়া চাহিবার ভাহার সময় ছিল না। তক্ষ শুধু হাসিল। পরদিন প্রভাতে উঠিয়া ভক্ষ ভাকিল—ছোটবৌ! ছোটাবৌ আসিয়া কাছে দাঁছাহয়া বলিল—কেমন আছ ঠাকুরবি ? ঠাকুরভামাই কই ?

তক্ষ বলিল—মাঠ গিয়েছে। আমি ভালই আছি। আজ আমরা গু-জন এবেলা তে,মার কাছেই থাব। আর ওবেলার জন্তে কিছু মাচ আনিয়ে ভেচে রেথ ত ভাই। বাল্লটা বের ক'রে আন, পয়দাটা জি—নিয়ে যাও।

ধরে চুকিয়া ছোটবৌ বলিল—বাক্স কই গাকুরঝি ? এ কি—তেমার সিদুকের ভালা খোলা কেন ?

তাড়াতাড়ি এরে থাসিয়া তক্ত দেখিল—কাঠের হাত-বায়টা নাই—সিন্দুকের তালাটা খোলা ঝুলিতেছে।

ঝাঁপ দিয়া পড়িয়া তরু সিদুকের ডালা খুলিয়া দেখিল— শুস—গহনার বাক্স—টাকার বাক্স কিছই নাই।

তক্ষ থর থর করিয়া কাঁপিতেছিল।

বৌ ভাকিল--ঠাকুরঝি--ঠ'কুরঝি!

ভক্ল বলিল—গোল ক'রো না—গোল ক'রো না বৌ। গেছে বাক। ভূতীয় 'অঙ্কের ধ্বনিকা বোধ করি ধীরে ধীরে নামিয়া 'আদিতেছিব।

তক্র আবার পূর্বের মত জীবন আরম্ভ করিল। তিল তিল করিয়া সঞ্চয়ে অংপনার ভাগ্য আবার সে গড়িয়া ভূলি:তছিল—আর আবার দেই পূজা-অর্জনা—বারব্রতের মধ্যে অংপনাকে ডুবাইয়া দিল।

. কিন্তু কঠোর তা তাহার প্রেরির চেয়ে অনেক গুণ বাজিয়া উঠিয়াছে। সংসারে কক্ষণা সে কাহাকেও করে না। ছোটদাদার এখন যথেষ্ট অভাব—একে একে সে সম্পত্তি বিক্রয় করিতেছে—তব্ একটি পয়সা সাহায়া সে করে না। ত্বদা টাকা ধার দেওয়া ব্যবদারে ফুদ সে একটি পয়সা ছাড়ে না। তাহার গুদয়ের সমস্ত আবেগ সে ঐ শৃত্ত সিল্লুকটি পূর্ণ করিবার জন্ত কঠোর ভাবে নিয়াক্রিত করিয়া বসিল।

তারণ ঝলকার বৌকে শইয়া সংসার পাতিয়াছে। কয়টি ছেলেমেয়েও হইয়াছে। তরু পাড়ার সে-দিকটা মাড়ায় না পর্যাস্ত। কিন্তু মুখে সে কোনদিন একটা কথা বলিল না।

দশ বৎসর পর।

সেদিন ছোটদাদা আসিয়া ব<mark>ণিল—তক্ত</mark> একটা কথা বল্ডিলাম ভোকে—।

বাধা দিয়া তক্ক বিশিশ-নিজে খেতে পাই না আমি,
আমি কোথা সাহায্য করতে পাব বল!

ছোটদাদা নীরবে কিছুক্ষণ দীড়াইয়া থাকিয়া ফিরিল। বলিল—সে কথা ঠিক তোকে বদতে আদি নাই আমি তক্ত্ব—অন্ত কথা বদছিলাম—তা থাক—।

সে চলিয়া গেল। কিন্তু তাহার কথাগুলির মধ্যে কঠম্বরের দীনতায় তক্ষ আজ একটু বেদনা বোধ না-করিয়া পারিল না। ছোটদাদা চলিয়া গেল—তক্ষর আজ মনে হইল ছোটদাদা বেন বড় বৃদ্ধ হইয়া পড়িয়াছে। অথচ বয়স ত তাহার বেশী নয়! চল্লিশ এখনও পূর্ণ হয় নাই! সে দরজাটায় কুলুপ বৃদ্ধ করিয়া ছোটদাদার বাড়িতে চলিল।

ক প্রিক মাস, রাস-পূর্ণিমা উপলক্ষ্যে বাবুদের গোবিন্দ-মন্দ্রিরে রৌসনটোকী বাজি তেছে। তক্ষ শুনিল ছোটদানা ালি:তছেন—কি রাগিণী আলাপ সরছে জান?—বাগেন্সী।— বলিয়া নিজেই গুণ-গুণ করিয়া রাগিণী ভাঁকিতে আরস্ত করিল। তকু আসিয়া সন্মুখে দাঁড়াইল।

ছোটদাদা বলিল-তরু ? আয়- ব'স্!

তরু ছোটদাদাকে দেখিতেছিল—সত্যই ছোটদাদার ,টউ-বেলানো চুলে আজ সাদা রং ধরিয়াছে—তাহাতে আর সে বিস্তাসও নাই।

কাঁচা সোনার মত বং তামাটে হইয়া আসিয়াছে— গাল্যের বাায়'মপুষ্ট স্বল দেহ যেন জীর্ণ শিথিল—গায়ের গমড়ায় কুঞ্চন ধরিয়াছে।

ছোটদ**'দা** ব**লিল—কেটেভে তাল বেটাচ্ছেলে।**

তক্ষ বলিল-বাগ করেছ ছোট্দা :

श्मिश (कार्षमःना विनन-ना (त-ताश कत्रव (कन ?

— जत कि वनिक्रः**न भा व'**तन हतन जतन (य ?

—তুই শুন্লি কই—আ:, আবার তাল কেটেছে— দীড়া ত ব'লে আদি বেটাকে!

তরু বলিল—কি কথা ছিল ব'লে তরে গেতে পাবে। চিরকালই কি মানুষের একভাবে যায় ?ছি—ছি—ছি!

ছোটদ দা বলিল—বলছিলাম কি—ছোটবৌ বড় কাতর হয়ে পড়ে:ছ—মানে ওর ছেলে হবে তা জানিস ত ?

इ! प्रिया कि निया उक विन - देश का कानि।

ভোটদাদাও একটু বোকার মত হাসিয়া বলিল—মানে বেশী বয়নে ছেলে হবে—আর আফাকাল হযেই আছে। মানে—কাল থেকেই শ্রীর খেন—আঃ বল নাগো ভূমি!

তক্র অ'বার হাদিয়া বলিল—ভূমিই বল।

ছোটদাদা বলিল—তাই বলছিলাম—রান্নাটা বদি এক জানগায় এ-কদিন ভূই চালিয়ে দিস, তবে বড় ভাল হয়।

তক্র ছোটবৌরের নিকট আসিয়া প্রশাকরিল—শরীর কিভেঙেছে ছোটবৌ?

ছোটবো বলিল - शा ভাই কেমন যেন-।

তক্ষ ভাইকে প্রশ্ন করিল— দাই এপুনি ব'লে রেখেছ ত ছোট্লা ?

त्मरेशिन हे बाद्य इडाउँदवी এकिं श्रृद्ध व्यंत्रव कदिया.

অজ্ঞান হইয়া পড়িল। ছোটদাদা ছল-ছল নেত্রে তরুর দিকে চাহিয়া বলিল—কি হবে তরু ?

ভক্ক কোন কথা বলিল না—সে আপনার বাড়ি চলিয়াগেল:

মিনিট করেক পরেই আবার ফিরিয়া হুইটি টাকা ভাইয়ের হাতে দিয়া বলিল—যাও ডাক্তার ডেকে নিরে এস।

ভাক্তার আসিয়া দেশিয়া ভরসা দিয়া বলিলেন—বিশেষ কিছু ভয় নেই

নবজাত মানবকটি ল'বল্পের চীৎকার করিতেছিল। ডাক্তার তাহাকে কোলে লইয়া বলিলেন—বাঃ বড় প্দের খোকা হয়েছে। এর ধে একটা ব্যবস্থা করা দরকার—এক-খাধ দিন ত নয়, এখন মাস্থানেকই ধ'রে রাখন।

তক্ষ অন্ধের্টে সাঁত্র্থরের মধ্যে প্রবেশ কবিয়া খোকাকে কোলে তুলিয়া লইল।

এই বোধ হয় চতুর্থ অংশ্বর সমাপ্তি।

ভোটবৌ ভাল হইর উঠিল। কিন্তু মা হওয়া তাহার হইল না। সে-ই হইল ধার্ত্তী— থার তর হইল মা।

সঙ্গে সঙ্গে তাহার জীবনে একটা অভ্তপূর্প পরিবতন গটিয়া গেল। বে-কয়দিন সে তারণকে জীবনে নিবিড় ভাবে পাইয়াছিল, সে-কয়দিনের মধ্যেও তাহার এত মিষ্ট কথা কেছ কোন দিন শুনে নাই। জীবনের মেহের মধ্যর ভাগ্ডার সে যেন উভাড় করিয়া দিল। শুধু মেহই নয়—তাহার জীবনের সঞ্চর সামর্থ্য সমস্ত দিয়া ছোটদাদার সংসারটি প্রাণপনে আঁকড়াইয়া ধরিল। সঙ্গাতবিৎ ছোটদাদাও হাপ ছাড়িয়া বাচিল। বলিল—আঃ, বাচলাম আমি তক্ষ—তক্ষর ছায়ায় এবার জুড়োব আমি। তক্ষ এখন আর রাগ করিল না—হাসিয়াই বলিল—ওই শিষেছিলে শুধু—কথার ঝুড়ে—আর কত্তে ধাগিনাক্।

ছোটদাদাও হাসিয়া ব**লিলেন—আ**য় আজ একবার তোর মাথায় কত্তে ধাগিনাক বা**জি**য়ে দি।

—থবরদার ছোট্দা—ভাল হবে না বলছি। খোকার ত্থ গরম করব, সরো। ছোটদাদা একবিদ্ও অতির্মিত করিয়া কিছু বলে নাই। তাহার সম্পত্তি যাহা কিছু সবই প্রায় গিয়াছে—
এখনও ঋণ পর্বতপ্রমাণ। তরুর সঞ্চয় ও সম্পত্তি হইতে
বছদিন পরে পরিবারটির অবস্থা সচ্চল হইয়া উঠিল। কিছুদিনের মধ্যেই অকালর্ক ছোটদাদার শরীরে চিক্রণতা দেখা
দিল। তরুর তাড়ায় মাঝে মাঝে জোতদ্বমার তলারক
করিতে যাইতে হয়—অত সময়ে আপনার দাওয়াটির
উপর বসিয়া কন্তে ধাগিনাক করেন—কগনও বা ইমনকল্যাণের রাগিণা একটু হেরফের করিয়া একটা ন্তন হর
স্থাই করিবার চেটা করেন। মধ্যে বলেন—তরু তুই
আপত্তি করিস নে—আমি ওপ্তাদি করতে আরম্ভ করি।
দশ্টাকা আস্থে—আমার পেটটাও বাইতে-বাইতে—

তক্ষ বলে—ধ্যা---নেশাভাংটা চলবে—সেইটাই হ'ল আদল কথা ভোমার ছোটদাদা।

ছোটদাদা অপ্রতিভের মত হাসে।

ভক্ষ বলে—না—চুল রেখে, গাঁজা থেয়ে বেড়াতে হবে না ছোটদাদা। বড় হ'লে ছেলেটা যাতে বাপ ব'লে পরিচয় দিতে পারে তার মূগ রেখে যাও।

ছোটদাদা আরও কি বলিতে যায়—কিন্তু তক্ব শোনে না—থোকার কোন পরিচর্য্যার সময় অতিবাহিত হইয়া যাহতেছে অজুহাতে সে সেখান হইতে চলিয়া যায়।

বংসর-ভি:নক পর ছোটবো আর একটি কন্তা প্রস্ব কবিল।

তক্ষ হাসিয়া বলিল -- নাও ছোট্দা--- মহাজন হ'ল ভোমার। ভোটদাদা হাসিয়াই উত্তর দি:লন- - মহাজন নএ বোন---পাথর। সংসারসমূদ্রে কোন রকমে ভাসছিলাম-- এইবার বুকে চাপল পাথর।

তক্র সম্বল চক্ষে বলিল—ছি, ছোট্দা! জীব দিয়েছেন বিনি আহার দেবেন তিনি। তোমার ভাবনা ত মিছে।

ছোটদাদা ভরু হাসিল।

তরু বশিশ--ওর ভাবনা তোমাকে ভাবতে হবে না ছোট্দা--আমাকে ভার দিও--কুশের মাথা থেয়ে আমি ওকে হুখী করব।

ছোটদাদা হাসিয়াই উত্তর দিল---আনার ভারই তোর হাতে তক্ষ। সংসারের হাটে ভারী ত দুরের কথা ঝাঁকা-

মুটে হ্বার সামর্থাও আমার নাই। এ সংসারের স্ব ভারই তোর।

ইহার কিছুদিন পরই একদিন ছোটদাদা সঙ্গীতের ষন্ত্রপাতি বাহ্রি করিয়া সেগুলা ব্যবহারের বোলা করি ত বদিল। তব্ধ বলিল—যুক্ত বাজে কাজ কি তোমার ছোট্দা!

ছোটদাদা বলিলেন—এবার এগুলোকে কাভেই লাগাব তক্ষ। আর ভোর কথা শুনব না। মনে যাক—তানে যদি পেট ভরে তাতে দোয কি?

তক্ষ এবার আর আপ্তি করিল না। তাহার সঞ্চয় প্রায় নিংশেষিত হইরা আনিয়াছিল। কিন্তু তাহার বাপাক মনে পড়িয়া গেল—দে একটা দীর্ঘনিংখাদ না ফেলিয়া পারিল না। ছোটদাদা তানপুরা ঘাড়ে ফেলিয়া বাহির হইয়া পড়িল। মাস্থানের পরে ভোটদাদা ফিরিয়া ডাকিলেন—তক্ষ।

পোকা:ক কোলে লইয়া তক্ত তাড়াতাড়ি বাহিরে আসিয়া হাসিমূথে বলিল—চোটদাণা!

দশটি টাকা তরুর হাতে দিয়া ছোটদাদা ব**ণিলেন**— রাথ।

তরু বলিল-খোকার জ্বান্ত কি এনেচ, দাও।

অপ্রতিভ হইরা ছোটদাদা বলি লন—কিছু ত আনি নাই তক্ত্র—ও কথা আমার মনেই হয় নাই।

তক্ষ ছেলেমানুষের মত অভিমান করিয়া বলিল— তোমার টাকা তুমি রাথ দাদা—আমার দরকার নাই। বেশ ত তোমার সংসার তুমি চালাও—থোকার ভাবনা তোমাকে ভাবতেহবে না।

বহু কটে ছোটদাদা ওক্লকে শাস্ত করিলেন। মাস্থানেক পুর আবার ছোট্দাদা বাহির হইয়া গেলেন।

মাস-চয়েক পর।

সন্ধার সময় ননদ ও ভাতৃজায়ার প্রথচঃথের কথা হইতেছিল। তরুর কোলে থোকা, বৌর কোলে ছিল খুকী। ছোটদাদা বাড়িতে নাই—বাহির হইয়া গিয়াছেন। থোকা বায়না ধরিয়াছিল সে মাতৃস্তপ্র পান করিবে।

বৌ বলিল—না ঠাকুরঝি, মেয়েটা ত এক ফোঁটা ছং
পায় না—তার ওপর ম.ইত্.ধ ভাগ বদালে ও বাচে কি
ক'রে বল!

তক বশিশ—ও হে—কুশীনের ঘরের মেরে অকর অমর—দেশত না আমাকে! দাও ভাই দাও খোকাকে আমার—একবার হুধ দাও। তাতে তোমার রাজকত্যের কম পড়বে না।

বাহির হইতে কে ডাকিল—কে বৈছেন গো ঘরে! তব্দ সাড়া দিল—কে? কোপা বাড়ি?

উত্তর এইল— আমরাই গো—ওস্তাদগীকে নিয়ে এসেছি - অসুথ তেনার।

তক ছুটিরা বাহিরে গিয়া দেখিল—ছোটদাদা গাড়ীর ছটরের মধ্যে অদাড়ের মত পড়িয়া আছে। সে ব্যাকুল ভাবে ডাকিল—ছোট্দা—গোট্দা গো!

গোঙাইয়া গোঙাইয়া ছোটদাদা বে কি উত্তর দিল তক্ষ বুঝি:ত পারিশ না। সে গাড়োয়ানকে প্রশ্ন করিল—কি হয়েছে গো?

গাড়োরান বলিল—আজে কবরেজ দেখাল্ছিলাম আমরা—ভাক্তারও দেখেছে—এক অঙ্গ প'ড়ে গিয়েছে ঠাকুরের।

তক ব্ঝাল পকাপাত।

পক্ষাবাত ভাল হইবার ঝাধি নয়—ভাল হইল না।
পঙ্গু অক্ষম হইয়া ছোটদাদা তক্ষর ক্ষেই বোঝা হইয়া চাপিয়া
রহিলেন। তক্ষ চিকিৎসায় কিছু অর্থবায় করিল, কোন
ফল হইল না।

কিন্তু এত তেও তক্ দমিশ না। তাহার জোতজমা হইতেই নিপুণ বন্দোবতে সে সংসারটির অন্নবন্তের সংস্থান করিয়া চ'লিশ। ছোটদাদা আরও বংসরখানেক বাচিয়া রোগ-ভোগ করিয়া তবে গেলেন। তিনি বোধ করি ছিলেন তক্ষর জীবনের প্রবলতম মন্দ্র্যাহ। তাহার পিতা তাহার এত ক্ষতি করেন নাই—তারণও করে নাই—কিন্তু ছোটদাদা তাহাকে পথে বস্:ইয়া দিয়া গেলেন। জীবনে অমিতব্যয় ছাড়া তিনি আর কিছু করেন নাই—দেহে তাহার জন্ত শেষপর্যান্ত হইল পক্ষাঘাত—আর যে ঋণ তাঁহার অবশিষ্ট ছিল তাহাই একনিন প্রদে আদলে আদালত-খরচায় যোল শত টাকার বিভিন্নারেণ্টরূপে আসিয়া হাজির হইল। মহাজন গ্রামের লোক—তিনি তক্ষর সম্পত্তিটুকুর দিকে লক্ষ্য করিয়া জাল নিক্ষেপ করিবলন।

উঠানে আদালতের পেয়াদা—মহাজন ওয়ারেণ্ট-হাতে অপেফা করিতেছিল। চিস্তা করিবার অবদর ছিল না —তথ্য ছল-ছল চোথে আদিয়া জ্বোড়হাত করিয়া মহাজনকে বিলি— আমার সম্পত্তিটুকু নিয়েও আপনি দ'দাকে রেহাই দেন।

সেই দিনই দলিল লেখাগড়া বেজেট্রারী হইয়া গেল। তক্ত মহাজনকে আশীর্কাদ করিতে করিতে ফিরিয়া আসিল।

ইহার ঠিক দিন হুই পর। ছোটবৌ বলিল—চাল ভ আজ নাই ঠাকুরঝি!

তরু কিছুক্ষন চুপ করিয়া বদিয়া বাহির হইয়া গেল। কত বাড়ির ভ্যার পর্যান্ত গিরাও দে ফিরিয়া আসিল। দে ধার চাহিবার জ্বল্য বাহির হইরাছিল। পথে সহসা ভাহার মনে হইল—শেধ করিবে কি করিয়া?

এই লজাতেই সে ফিরিল—অনেক ক্ষণ **এর্থহীনভাবে** এদিক-ওদিক দুরিয়া সে বাড়িই ফিরিয়া আদিল। কিন্ত বাড়ির ছয়ারে আদিয়া থমকিয়া দাঁড়েইটা গেল।

ভড়িত স্বরে রুগ ছোটদাদা চীৎকার করিতেছেন—বিদে —বিদে।

বোকা কাঁদিতেছে—ভাত—গা—বো!

তরু আবার ফিরিল—ছিধা তাহার কাটিয়া গিয়াছে।
সে সইয়ের বাড়িতে গিয়া সইকে বিনা-ভূমিকায় বলিয়া
ফেলিল—পাচ সের চাল দিতে পারবে সই?—ভিক্ষে—
শোধ দেবার ত উপায় নাই।

সই কোন কথা বলিল না—একটি ধামাতে সের-সাতেক চাল ভরিয়া তাহার হাতে তুলিয়া দিল। এতক্ষণে তরু ঝর-ঝর করিয়া কাঁদিয়া ফেলিয়া বলিল—কি হবে সই ?

আরও বৎসর-গ্রেক পরে তরুকে দেখা যায়—কিন্তু চেনা যায় না। ছোটদাদা আর নাই—ভিক্ষা এখন তরুর উপজীবিকা। ভিক্ষা করিঘাই সে খোকাকে পড়াইতে সুদ্ধ করিরাছে। বাড়ুজ্জেদের পুকুরে সেদিন মাছ-ধরানো হইতেছিল—খুচরা চুনামাছ। চারিদিকে ছোটলোকের ছেলেমেরের ভিড় লাগিয়া গিয়াছে।

পাড়ের উপর একটা পরিষ্কার স্থানে মাছ ঢা**লিয়া** ভাগ হইতেছে। ছোটলোকের ছেলেগুলাকে ধমক দিয়া কে ব্লিল—সর্ সর্ এই ছেলেগুলো—পথ দে।

একটা ছেলে হি হি করিয়া হাদিয়া বলিল— যেথেনে
মাছ ধরবে—আম পাড়বে—দেইখানেট ঠাক্ফণের
ভাগ থাড়ে।

ভক্ত একটি কচুপতো হাতে পথ খুঁজিতেছিল। ভিড়ের ভিতঃর সাদিয়া দে বলিদ—ভোটবাবু—মাছ ভূটো দাও বাপু—ভূলে কানিছে—গরে।

বাররতে দে দধবা বাইয়া ব্রতদান গ্রহণ করিয়া কেরে: দেদিন বোগেন গাসুশীর স্ত্রীর এয়ে-সংক্রান্তির ব্রতঃ তরু মাগে হটতেই গাসুশী-গিন্নীকে ধরিয়াভিল—সধবা ভূমি মামাকেই কর দিদিমা!

গাসুলী-গিল্লী মুধ এড়াইতে পারিলেন না—ধরাও হইল। গাসুলীর ভাইগো শুধু বলিল—না—না—ও ছাঁ। চড় মেরেটাকে খাবার পুঞো কেন ? ভিক্লে বরং দাও ত কিছু দাও।

গাসুলী-গিন্নী কিন্তু বলিলেন—আহা ব্যো—ছ্থী ব'লে যা তা বলতে নাই—ছি।

ব্রতের দিন তক্তকে আপনার শ্রন-গরে বসাইয়া, দীপ বন্ধ পরিত্যাগ করাইয়া নৃতন শাড়ী পরাইয়া দিলেন— সীথিতে সিদুব দিয়া পুগন তেলে চুল আঁটড়াইয়া দিলেন, পারে আলতা পরাইয়া দিয়া নানাবিধ মিঠায়ভরা পাত্র সন্মুবে নামাইয়া দিয়া বলিলেন — থাও।

ভক্ত একটু ইতপ্ততঃ করিয়া বলিল—বাড়ি নিয়ে গাই দিদিমা—ছেলেগুলো আছে—বিধবা বৌটা আছে :

গাঙ্গুণী-গিলী বলিগেন—না—না— হুমি ওগুলো গাও তথ্য, মামি ছেলেদের জ্ঞে আলাদা এনে দিছি।

তিনি তাড়াতাড়ি বাহির হইয়া চলিয়া গেলেন।

নির্জ্ঞন বরে তরু পরমতৃপ্টিভরে ধাইতে ধাইতে চারিদিক চাহিয়া দেখিতেছিল। বরের চারিদিকে স্পোভন প্রাচ্যা। কিছুই তরুর অপরিচিত নয়—একদিন এ সবই তাহাদের ছিল। দেওয়ালের ছবি, আলমারী, পুতুল, খাট, বিছানা—সবই সে বাবহার করিয়াছে, কিন্তু আজ তাহার পক্ষে সবই অপরূপ। পূর্কদিকের খোলা জানালা দিরা রৌজ আসিয়া সমস্ত ঝক্মক্ করিতেছে।

বালিদের নীচে ওটা কি? রৌডাভার আগুনের মত রাঙা—ধ্বক ধ্বক করিতেছে। এক মুহুর্তে তক্ষর সমস্ত গোলনাল হইয়া গোল—দে চিলের মত ছোঁ মারিয়া সেটাকে টানিয়া লইল। সোনার চেন তাগা এক ছড়া!

তাহার বুকের মধ্যে যেন রেলগাড়ী ছুটিয়া চলিয়াছে ! থর থর করিয়া সমগু অঙ্গ তাহার কাঁপিতেছিল। ঘরধানা বেন পুরিতেছে ! তরু জতপদে বাহির হইয়ানীচে নামিয়া অসিল।

গান্ধুলী-গিন্নী একটা ঠোন্ধা হাতে উপরে গাইতে-ভিলেন—সিচনে পিছনে ভাহার ভাহেরগো।

গালুলী-গিনী বলিলেন—থাওয়া হয়ে গেল তোমার ? ভাপ্রণো অনহিঞ্ ভাবে বলিল—কোথা রেপেছ আমাকে বল না— আমি বার ক'রে নোব :

গাঙ্গুলী-গিন্ধী বলিলেন—তোমার বাবা, গোড়ার চড়ে কাজ করা সভাব—মাধার বালিসের নীচেই আছে তোমার ভাগা নাও গে।

্দ চলিত্র গেল। গাঙ্গুলী-গিন্ধি বলিলেন—কোথার জেটিমা—পাচ্ছি নে যে।

বিরক্তভাবে গাঙ্গুলী-গিল্লী বলিলেন—বালিদের নীচে-ভাল ক'রে গোধ মেলে চেলে দেখ। ভাচচা আমি বাই।

ত্রুর হাতে ঠে'ফাটা দিয়া তিনি বলিলেন—এদ ভাই।
তক্ষ ক্রতপদে চলিবার চেটা করিতেছিল, কিন্তু কম্পিত
পদে ত'হার গতি বাহত হইয়া যাইতেছিল। উপরে
চাহারা খুঁদিতেছে। হয় ত—দেই মুহুর্ত্তে বাড়ির ভিতর
হইতে ডাক আদিল—তক্ষ—তক্ষ—এই মাগী। তক্ষ তথন
গাসুলীদের বাড়ির ঠিক বাহিরে। তক্ষ এদিক-ওদিক
চাহিয়া ত'গাটা বাহির করিয়া গাসুলীদের নর্মায় তরল
পক্ষের মাধ্য ফেলিয়া দিল। কিন্তু তথনও সে ঠক্ ঠক্
করিয়া কাপিতেছিল।

ক্রত পদধ্বনির সঙ্গে গাঙ্গুলীবাব্র ভাইপো আসিরা বলিল—বের কর্তাগা—বের কর্বলছি।

পিছ**ন হইতে গাঙ্গুণী-গিন্নী বলিলেন—তকু !**

ভক্ত কি বলিবার চেটা করিল, কিন্তু মূখে কথা ছুটিল না। গাঙ্গুৰা-গিন্নী বলিলেন—নিয়ে থাক ত দাও তক্র— পাচটা টাকা আমি দেব।

তক্ষ তথুও নিৰ্ম্বাক।

গাঙ্গুলীবাব্ব ভাইপো চীৎকার করিয়া ডাকিল— মোক্ষ্যা—মোক্ষ্যা। মোক্ষ্যা বাড়ির ঝি। সে আসিতেই ভাহাকে হক্ম হইল—দেণ্ড ঘাগীর কাপড়চোপড় গানাতল্লাস ক'রে। তক্ষ শিহরিয়া উঠিল—তাহার হাত হই ত থাবারের ঠোঙাটা পড়িয়া গিয়া সন্দেশগুলা ছড়াইয়া পড়িল। মোক্ষদা তাহার দিকে সভাই অশ্রেসর হইল।

ষোণান গাঙ্গুলীকে তক্ব যে পত্ত দিয়াছিল—তাহাতে ওই ত'গার কথাই লেখা ছিল। লেখা ছিল— মাপনাদের তাগা— অংকাদের নক্ষার মধ্যে পড়িয়া আছে।

মধুগন্ধি বনে

শ্রীহেমচন্দ্র বাগচী

প্রিয়তমে, ছিল সাধ যাবে দিন মধুগন্ধি বনে,
সঞ্জিনার মৃত্র বাসে হগন্ধি দক্ষিণ সমীরতে
যাবে দিন,—ভেবেছির, এ বঙ্গের নিভূত পলীতে
আমু-পনদের কুল্লে কালো জলে হংদের সঙ্গীতে
বাধিব আমার বীণা—ভেবেছির তারি হরে হরে
দরিতা এ বঙ্গভূমি দেখা দিবে অক্ষর মুকুরে,
দরিতা কবির অথে দেখা দিবে জীর্ণ ভিখারিণী
ফ্রুকেণ অর্থ-ছায়াতে! অনাহত সে রাগিণী
জাগারে তুলিবে মনে কত দূর বিশ্বত বেদনা,
কত অথ, কত গান, কত চিত্র, কত আরাধনা—
দে শুরু রহিল স্বর, প্রিয়তমে, রহিল তা মনে—
ভেবেছিরু যাবে দিন নদীতীরে মধুগন্ধি বনে!

আজ দাঁড়ায়েছি আদি নগরীর উচ্চ কোলাহলে
জীবিকার জয়-নাত্তা-পপে, স্নান কেরানীর দলে
লিখেছি আপন নাম, ললাটের স্বেন্ধ্লি-রেখা
স্বিতহান্তে মুছিয়াছি, চলিয়াছি ধীর পদে একা
এ পুরীর শ্রান্ত সরণীতে! প্রিয়তমে, চাহো মোর পানে—
দেখে আমি সেই কবি, আছো আছি মধ অভিমানে,

লগাটে বয়েছে লেখা জন্ম হ'তে অধির অক্ষরে
অসহন হুংগের তিলক, ডাকো আজ গ্রেহ্থার
পরাইয়া দাও মালা, তব পেম—এই অহস্কার
ভূলা মুচ্ছে জীবনের তুচ্ছতম অজ্ঞ বিকার—
দেখো চলিয়াছে কবি হুংগ হ'তে কা'র অবেষণে!
প্রিয়তমে, ছিল সাধ ধাবে দিন মধুগন্ধি বনে।

ভবু ডাকে সেই বন, তারা বেথা হয়েছে কুপুম,
নচছায়াতলে গেথা বর্ণারণ আলোর কুকুম
পড়েছে কপোলে তব, নতনেত্রে, রিশ্ব কেশপাশে—
ছিল সাধ থাবে দিন তাহারি মধুব ক্রবকাশে!
সেই ছায়া-অন্তর্গালে নব শিল্প করিব রচনা,
ক্রপায়ন জীবনের,—হেরি কা'র মূর্ত্তি ক্রসহনা
নামিয় আসিয় পণে, দেখিলাম তাহারি ইঙ্গিতে
ছুটেছে নিখিল পুথী অবিশ্রাম উদান্ত সঙ্গীতে
মুখরিয়া মহাকাশ, কহিলাম, কর সঙ্গী মোরে
ভোমাদের যাত্রাপণে, বাধিও না মুগ্ন মায়া-ভোরে—
আজ তবু মনে হয়, বেদনার নিগ্র বন্ধনে
ভোৱান্তর যাবে দিন তব সাথে মধুগুরি বনে!



পুরাণ প্রবেশ — গাগিরী স্থানধর বহা। প্রকাশক—এম্. সি. সরকার এও সল লিমিটেড, এ কলেছ গোয়ার, কলিকাতা। মূল্য ১

শ্বনেক দিন পরে বাঙ্গাল। ভাষার প্রাণ দক্ষে একধানি পুথক বাহির হইল। এ রকম বই বাঙ্গালার এই ন্তন। এপানি বইয়ের মতবই। পাণ পুলিয়া ফ্লাতি করিবার মত বই। পুরাণপ্রবেশ পড়িলেই বৃঝিতে পারা যায়, গ্রন্থকার নিষ্ঠার সহিত খাটিয়া প্টিয়া বইপানি লিপিয়াছেন। নিষ্ঠার ফলে পুরাণে তাহার ফটি জামিয়াছে। পুরাণের প্রকৃত ভাব ও অর্থ কি তাহা তিনি নিজে বুঝিয়া বৃঝাইবার চেষ্টা করিয়াছেন। ভাহার প্রাস ও প্রথম্ভ অনকটা সফলও হইয়াছে।

পুরাণ্প্রেশ । ৭টি অধ্যায়ে বিভক্ত। এই অধ্যায়গুলিতে পুরাণ সম্বাদ্ধ অবগ্ৰহাত্তৰা বিষয়গুলির বিচার ও আলোচনা আছে: এই ২৭টি অধ্যায়ে গ্রন্থকার ১২০টি গুরুতর সমস্তার সমাধান করিতে প্রব্র ২উয়া অনুসন্ধিৎসার যথেষ্ট পরিচয় দিয়াছেন। পুরাণকে তিনি পুরাপুরি Hostory বলিয়া মানিয়া লইয়াছেন এবং এই সিদ্ধান্তের সমর্থনকালে নানা বিষয়ের অবতারণা করিয়া নানা দিক দিয়া ভাষায় সংগ্ৰাই পমাণ লিপিবন কবিধাছেন: পক্ষান্তার 'ইডিহাস' যে History নয় হাছাও দেপাই:ত তিনি কটি কারন নাই। বস্তুতঃ উতিহাস ও প্রাণের পার্থক কি তাহাও তিনি পানকের সন্মার্থ ধ্রিয়াছেন। তিনি পুরাণের স্বরূপ কি ভাষা বুঝাইয়াছেন। ইহা যে ক্লেক্সার ক্লার নানাপ্রকার অসম্ভব, অবাস্তব ও অভিপ্রাকৃত ঘটনা-সভার এর নয় তাহা তি.ন বি.শ্য কৃতিখের সহিত বুঝাইতে চেপ্তা করিয়াছেন। পুরাণের সকল কথা এ-পয়স্ত কেহ সহ্য বলিয়া এইণ ক্রেন নাই। পুরাণে রাজাদের বংশতালিক' যে-রকম হনিবদ্ধ 🗫 अन्। लो. ५ अन् ५ ठेवा: इ १-वक्य बाद (काथां ६ (१४) यात्र ना । ভিনেন শিল এ বিষয়ে পরম্পরাগত র তি যে পুরাণে চন্দুর আছে ভাহা স্বীকার করেন। তিনি ব'লেন খাঁটি বংশতালিকা বায়ু, মংস্তু, বিষ্ণ, ভ্রহ্ম'ও ও ভাগ্রত পুরাণে পাওয়া যায়। তিনি এ-কথাও বলেন যে ব্ৰমান ইউ'ৰাপীয় লেখকগ্ৰ পৌর।ণিক বংশতালিকা মানিতে চাংহন না: কিন্তু যুত্ত পুৰাণের অৱশীলন হইতেছে তত্ত পুরাণে প্রাট্ট ঐতিহাসিক তারের সন্ধান পাওয়া যাইতে ছ।

গিবাল বাবু ইাহার গ্রন্থ বহু বিষয়ে সালোচনা করিয়াছেন। কিন্তু সকল বিষয় সম্বাদ্ধ মত প্রকাশ করা এই অন্ন পরিচান সম্বর্পন্ন নয়। হিনি যে পৌরাণিক সার্থা ও কালানিলেপ পিয়াছন তজ্জ্জ্জ্জানিক মার্গ্য পিরাল্ল বাবুর নিকট কৃত্ত্ব থাকিবেন। তিনি মরস্তরানি, ইল্বাক, পুরু প্রভৃতি বংশবিচারে যে পুল্ম বিচার-পদ্ধতি অবলম্বন করিয়াছেন তাহা সক্ষধা প্রশাসনীয়। প্রস্তোত, লিখনাগ, নন্দ, যৌয, ওঙ্গ, কণ্ প্রভৃতি বংশবিদ্ধান্ধ। প্রস্তোত, লিখনাগ, নন্দ, যৌয, ওঙ্গ, কণ্ প্রভৃতি বংশবিদ্ধান্ধ বিচার বিভিন্ন পৌরাণিক মতের তিনি পরিচয় নিয়াছেন। এ-সমস্ত বিবায় ভাষার প্রদত্ত সার্থীগুলি যথেষ্ট সাহায়া করিবে। সনপ্রধায় বিভিন্ন বংশীর প্রচান রাজগণের সার্থায় বিচায়:কাশল অতি ফুক্সর হইয়াছে। পুরাণ বিবরে বিশ্লোটনর পক্ষণতে সম্বন্ধীয় অধ্যারে লেখক বে-পরিমাণ পরিশ্রম করিণছেন তাহ। অম্ন্য। কেবল পুরাণের অত্যক্তিবিচার অধারে লেগকের অনেক সিদ্ধান্তই আমরা মানিতে পারিলাম না। কতকগুলি সিদ্ধান্ত নিতান্তই বিস্কৃশ হইয়াছে। এ অধাায়টি কাটিয়া-ছাটিয়া নুতন করিয়া লেখা আৰ্খাক .

প্রস্থের সকল মতের সহিত সকলের মতের ঐক্য না থাকিতে পারে। বাক্তিগত ভাবে আমার নিজেরও কডকগুলি বিষয়ে মতান্তর আছে। কিন্তু তৎসংকও প্রস্থানি যে স্কর পদ্ধতিতে লিখিত তাহাতে সকলেই আকৃষ্ট ইউবে সন্দেহ নাই। লেখকের বলিবার প্রণালী যেমন সরল ও বিলন, বিচরেপন্ধতিও তেমনই বিলেষপ্র্ক। প্রাণ তথা ইতিহাস (History) সম্বন্ধে এরূপ সার্বান্ অখচ প্রসাদত্ত্ব-বিশিষ্ট প্রস্থ অতি অল্পই দেখা যায়। ইহা স্কৃপৎ বিশেষজ্ঞ ও সাধারণ পাঠকের উপজাব্য হইবে। সকল প্রস্থাগারে ইহা রক্ষিত হওয়া বাঞ্জনীয়।

শ্রীঅমূল্যচরণ বিত্তাভূষণ

জীবনযাত্রায় মনোবিত্যার প্রেয়োগ— দিনীয় সংগ্রন, মূলা। চারি জানা। এই নং আপার মাকুলার রোড, কলিকাতা বিববিত্যালয় মনোবিজ্ঞানাগার ১ইতে উন্তুস্থ স্থারকুমার বহু কর্ত্ব প্রকাশিত। ১০২ পৃষ্ঠায় সংপূর্ণ।

কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়র মনোবিদ্যা-প্রয়োগশালায় অধ্যাপকগণ কর্ত্তক এই পুস্তিকাধানি লিখিত হইয়াছ। কি বরিয়া শিশুর মন বিকশিত হয়, কি ভাবে পালন করি ল শিশুর মন পুর্ণত। লাভ কবিতে পারে, কি করিয়া বালক-বালিকাকে লেখাপড়া শিধাইতে হয়, ম'নদিক স্বাস্থ্য কেমন করিয়া অবস্থ রাখিতে হয়, ছাই বা ছার্রাধা শিশুকে কি করিলে ভাল করা যায়, মানসিক বিকাবের প্রাথমিক লক্ষণগুলি কি কি ও কোন উপায়ে তাহা নিবারিত হটতে পারে, কিশোর-কিশোর র নান। মানসিক সমস্তা কি করিয়া নিরাকৃত হটতে পারে, কোন বালকের পক্ষে ভবিষ্যং জীবনে কোন বৃদ্ধি উপযুক্ত इडे.व. इंडानि व्हरिष अंडाविश्वक विष्यःत ऍल'नम विरम्बळ्णन কর্ত্তক এই পুত্তিকায় লিখিত হইয়াছ। আখার মতে প্রত্যেক পিচামাতার এই পুস্তক্ধানি অ শুপঠা ৷ বাংলা ভাষার এইরূপ পুত্তিকা একেবারে নূতন। কলিকাতা মনে।বিদ্যা-প্রায়াগদালার অধ্যাপকগণ যে ভাঁহাদের অভিজ্ঞতা ও চেষ্টালয় জ্ঞান সাধারণের উপযোগী করিরা প্রচার করি:ত:ছন ইহা বাস্তবিকই প্রশংসনায়। শরীরের দিকে এখন অনেকেরই নজর পড়িয়াছে, বিস্তু শরুরের স্থায় মনের স্বংস্থাও যে অত্যাবেশুক সম্পান, একথা আমরু সকলে সমাক উপানি করিতে পারিনা। এই পুস্তিকাপাঠে আমানর অনেকেরই চকু তুটিবে ৷ সাধার গ ইহাতে বহু নুত্র ও বাস্তব জীবানর পকে অতি প্রয়োজনীয় তথে।র সন্ধান পাইবেন, শিক্ষকগণও অনেক নুতন জিনিব শিখি বন। পুত্তকাধৃত প্ৰবন্ধওলিয় মধ্যে কেনে-কোনটি পূর্বে মাসিক পত্রিকায় প্রকাশিত হইরাছিল। প্রত্যেক

প্রবন্ধরই লেখক আলোচ্য বিদরে বিশেষজ্ঞ বলির। পরিচিত।
এইরপ পুলিকা প্রকাশে বাংল -নাহিত্যের সৌরব বৃদ্ধি পাইবে।
পুলিকা প্রথম সংগ্রব সাগরপের হিতকল্পে কলিকত্যে স্বাহাপ্রদর্শনীতে
বিনাম্ল্যে বিচরি হ ইয়াছিল। এই অম্লা পুলিকাখানির খিংটার
সংগ্রপের ম্লা নামমার চারি আনা কর' হইয়ছে। ইহার বহল
প্রচারই সম্পাদকমণ্ডলার উদ্দেশ্য। পুলিকাখানিতে অনেক মুদ্রাকরপ্রমাদ রহিলা গিরাছে। আশা করে পরবন্তী সংগ্রেশে এগুলি
সংশোধিত হইবে।

শ্রীপ্রফুল্লচন্দ্র রায়

বিজ্ঞান কলেক, কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়।

ব্যবসায়ী— শীনুক মহেশচক্র ভট্টাচার্য্য প্রণীত। ৭ম সংস্করণ। কলিকাতা, ৮৪ ক্লাইভ খ্রীট হইতে প্রকাশিত। মুন্য ৫০ আনা।

গ্রন্থকার এক জন সনামপ্রসিদ্ধ ব্যবদায়ী। তিনি নিজে হাতেকলমে কাজ করিয়া বাবদায়-দম্ম দ্ধ যে স্থিপ্ততা লাভ করিয়াছেন, তাই এই পুস্তকে লিপিবদ্ধ করিয়াছেন। পরিশিপ্তে গ্রন্থকারের আস্কর্নান, কিবাপে স্বতি সামান্ত অবস্থা হইতে অধ্যবদায়, স্বতা ও পরিশ্রমের ফলে তিনি উন্নতিলাভ করিয়াছেন, তাহার বর্ণনা সাছে। ব্যবদায়কামী ব্যক্তিগণ এই পুস্তক পাঠে ব্যবদায়-সম্বন্ধে যথেই সহায়তা লাভ করিবেন।

দানবিধি—— শাক্ত মহেলচক্ষ্র ভট্টাচালা প্রণীত। দিতীর সংস্করণ। কলিকাতা, ৮৪ রংগিভ খ্রীট হইতে প্রকাশিত। মূল্য 🗸 আনা।

গ্রন্থকার নিজে এক এন দানবীর। দেশ কাল ও পার-ভেদ কিরুপে দান করিলে দান সফল হয়, ভাছাই এই পুর্তিকায় আলোচনা করিয়াছেন।

শ্ৰী সনঙ্গমোহন সাহা

ত্যা। জাভারাপদ বাহা। পি. সি. সরকার এও কোং, নং ভাষাত্রণ দে খ্রীট, কলিকা হা। মুলা এক টাক, পু. ১১০।

ছোটগল্লের বই। গুঞ্জি হথবাঠ্য, এর বেণী আর কিছু বলা বার না। ছাপাও বাধাই ভাল ,

মায়ামুক্তি। এ ব্যামকেশ বন্দ্যোপাধার। কমলা পাবলিশিং ছাউস। ২৭, কলেজ খ্লীট, কলিকাডা। মূল দেড় টাকা!

আলোচ্য এছথানি উপঞ্চা: বেণী ব'ণার ভাষায় লেখা একটি স্মিট গল । রঞ্জিতার চরিত্র আমাণের ভাগ লাগিরাছে। ছাপাও বাঁধাই ভাল।

এগারোই ফাল্পন — শীংরিক্সনারায়ণ মুগোপাধার। কমলা পাবলিশি হাউদ। ২৭, কলেজ খ্রীট। দাম পঁচে দিকা। পু. ১৪৮। বইনানি পড়িরা ভাল লাগিগাছে। লেগক চরিত্রান্ধনে কৃতিত্বের পরিচর নিরাছেন। রমলা চো একেবারে জাবস্তা। টেক্নিকের দিক ছইতেও বইধানি নতুন ধাঁচের।

গ্রীবি ভূতিভূষণ বন্দ্যোপাধ্যায়

খেয়াল—শীফ্ৰিনর রাম চৌধুরা। ধনং কলেজ ফোরার কলিকাতা হইতে আঞ্জেষে লাইব্রেরা কর্তৃক প্রকাশিত। মূল্য আট আন!!

ইহা একথানি শিশুপাঠা গ্রপুত্তক ইহাতে সর্কস্থন্ধ নয়টি গ্র আছে,—পাগালর পেয়াল, নাম-না-ভানা কল, পিতলের ওলি, কুঁড়ের কীর্ত্তি, বারবেলা, জ্মাবস্তার অন্ধকারে, জুগধনের নেশা, নিরুদ্দেশ ও নামচ্বি। শেবের গলটি একটি জাপানী গলের ভাবামুন্রণে লিগিত। গল্পতি বেমন ফুপ ঠা তেমনই ছেলেদের মনোরঞ্জনের উপযোগী রমধাবার ভরপুর। পুত্তকগনি সর্কাংশ শিশুনিগের মনোরঞ্জন করিবে বলিরা মনে হয়। গলের মধ্য সয়িবিষ্ট চিত্রগুলিও ছান, কাল ও পারের উপবোগী হসয়াছ। ছাপা, বাধাই ও কাগ্র বেশ ফুলর। করেকথানি সুক্রর চিত্রও সয়িবিষ্ট হইয়াছে।

প্রবাসী বাঙালী—-জীঅবনানাধ রায়। ২ নং স্থামাচরণ দেখ্রীট, কলিকাতা, হইতে পি. সি. সরকার এও কোং কর্তৃক প্রকাশিত। মূল্য দেড় টাকা।

এই পুস্তকথ।নি লেখকের চৌদ্দ-পনর বৎসর প্রবাসের শ্বন্তি লইয়া রচিত। নিলীর কথা, মীরাটের কথা, আগ্রার কথা, **পুণাত্র** কথা. দেওবরের কথা, শিলাওর কথা-এই কয়টি নিবন্ধ লইয়া এই গ্রন্থ রচিত। পরিশিষ্ট ভাগে কয়েকটি মৃত প্রবাসী বাঙালীয় জ্ञাবন সম্বন্ধে কিছু বিবরণ লিপিবদ্ধ হইয়'ছে। বি.শ্য বিশেষ স্থানে ছে-সকল দ্ৰষ্টব্য বস্তু বা প্ৰবাসী বাঙালী লেখকের মনের উপর একটা রেখাপাত করিয়াছে, তাহাদের স্থান্ধই আলোচনা করা হইয়াছে: মৃত্রাং এই পুস্তকে কেবল তথা নাই, আবার কেবল কঃনাও নাই, ছুইটির সংমিশ্রণে কোন কোন বর্ণনা লেগকের দেগার ভঙ্গীর ভিত্র বিয়া বিশেষভাবে ফুটিয়া উঠিয়াছ ব্রচনাগুলির মধ্যে দিল্লব কথা, মীরাটের কথা ও আগার কথা---এই তিনটি সর্বাপেক অ্থক মনোজ্ঞ হট্যাছে। লেগকের ভাষা এমন সরস ও সরল এবং বর্ণনা**ভর**ী এমন চিত্তাকর্থক যে স্থানে স্থানে উহা উচ্চাক্তের উপস্থাদের মত জন্ম-প্ৰাহী হইয়াছে স্থান স্থানে লেখক মহাশ্য কিছু কিছু অবাস্তর উচ্ছুাস আনিয়া ফেলিয়াছেন, উহা তাহার এমন মনে:রম বর্ণনার মধো না থাকিলেই ভাল হইত। লেপকের বর্ণিত ভানগুলির মধো অনেকগুলিই দেপিবার স্থাগ অনেকেরই হইয়াছে, কিন্তু লেপকের মত এমন আন্তরু′টি ও সহামুভৃতিপূর্ণ মন লাইয়া দেখিবার ক্ষমতা মতি মহ লোকেরই অ'ছে। মুণরাং এই রচনাগুলি সকলের নিকট্ট ৰিশেষ উপাদেয় ১ই:ব, এ-বিষয়ে কোন সন্দেহ নাই। প্রবাসী বঙ্গসস্তানগণের মন ও এন্তাবের যে পরিচয় এই পুস্তাক পাওয়া যায়, তাহাতে মুগ্ন হইতে হয় এবং আমানের সেই একাস্ত আপনার লোক-দিগের উদ্দেশে সঞ্জর প্রীতিনিবেদন জানাইতে হৃদয় উৎস্থক হুইরা উঠে। পুস্তকের ছাপা, বাধাই, কাগজ পুস্তকের রচনার মতই ফুল্র।

ভেক রাজকুনার — এবিনয় দিংছ। ১৭।১ ফড়িয়াপুক্র খ্রীট, কলিকাতা, বিচিত্তা-নিকেতন হইতে প্রকাশিত। মূল্য ডিন আনা।

ইংরেজী শিশুলাঠ্য উপকথার Prog Prince নামক গল্প অবলম্বনে ইয়া রচিত। গো-দকল শিশু দবেমাত্র অল্প বাংলা পড়িতে শিলিয়াছে, তাহানের জন্ত ইয়া লিখিত। এই পুস্তকের বড় গুণ মে ইয়া থুব দরল ভাষায় লিখিত, একেবারে একটিও মুক্তাক্ষর নাই। ছেলনের রং দিবার জন্ত ছুইবানি চিত্রের রেখাহ্বনও ইহাতে দেওয়া ইইয়ছে। ছাপা ও কাগত্র বেশ ভাল।

গাঁয়ে কাঁটা— গ্ৰহ্মাকেশ মৌলিক প্ৰণাত। এণাও মেছুরা-বাজার ষ্ট্ৰাট, কলিকাতা। কুলজা সাহিত্য-মনির হইতে প্রীকিতীশচ**ক্ত** ভট্টাচাধ্য কর্ত্তক প্রকাশিত। দাম আট আনা। ইহা একবানি শিশুপাঠ্য উপস্থান। একট বাণক কলিকাতা হইতে মানারীপুরে তাহার শিসিমার বাটীতে গিয়া, দেখান হইতে নিকটবর্ত্তা গামে তাহার পিস্তুত বোনের স্বপ্তর-বাটতে নিমন্ত্র ক্ষাক্তিতে যাইবার পাখ তাহার হোট পিনু হত বোনের সহিত রানিকালে বে ভীষণ বিপদে পড়িয়াছিল তাহারই বিবরণ ইহাতে দেওরা হইয়াছে। বালকটি বিপদে পড়িয়া যে অনুত সাহন, উপস্থিত-বৃদ্ধি ও সতর্কতার সাহায্যে উদ্ধার পাইয়াছিল, তাহাই এই পুরকে বেশ ভাল রকম ফুটাইয়া তোলা হইয়াছে। গল্লটি আগোগোড়া বেশ জমিয়াতে, ত্ই-একটি চিত্রের সমাবেশে আন্তর চিত্রাকর্ষক হইয়াছে। ভাষা সরল ও লিপিবার জ্লীও সরম; শিশুরা এই পুরক পাঠে বেশ আমান পাইবে! বাগাই, ছাপা ও কাগল ফ্লম্র।

ত্ৰিত— শীকিভাশপ্ৰদাদ চট্টোপাধান্ত প্ৰদান ৷ ২০৪, কৰ্ণভ্যালিদ্ খ্লীট, কলিকাডা হইতে ব্যৱন্দ লাইব্ৰেছা কৰ্ত্তক পকাশিত। মূলা ১১টাকা

ইহা একথানি গলসংগ্রহ পুস্তক; ইহাতে স্বস্ত্র এগারটি গল স্থান পাইয়াছে। গল্পগুলি পাঠ করিয়া মনে হয় উহাদের বচনার সময়ের মধ্যে বিশেষ ব্যবধান আছে, উহানের ভাব ও ভাষার क्रमिकिश्मित पिरक लक्षा कित्रिलाहे अकथा राज्य स्वाधितमा इस। কয়েকটি গল্পের রচনাভক্রী চনৎকার | ছোটগল্পের বে একটা বিশিষ্ট পদ্ধতি আছে, ভাহা লেখকের কয়েকটি রচনায় স্থেশর ফুটিল উঠিলছে, নিদর্শন-স্বরূপ "আতহ্ব", "রায়বাড়া" ও "নারীর মুলা" কয়টির উল্লেখ করা ধাইতে পারে : ''পণ-ভোলা" গল্লটিভেও বেশ একট সম্বলতা ও কৰুণতা ফটিয়া উঠিয়াছে। গ্রম্বের সর্বাপেকা বৃহৎ পর " মপরাব" সমাজের একটি জটিল সমস্তার কথা তুলিয়া নিভীকভাবে তাহার সমাধান করিয়াছে, এই গল্পটির রচনা ও বর্ণনাবেশ মনোজ নোটের উপর ছোটগাল্লর আটি জিনিধটা লেখাকর আয়ত্ত আছে বলিয়া বোধ হয়। আশ। করি গিনি ভবিষ্যতে এ-বিষয়ে আরও কুডিছ দেখাইটে পারিবেন। পুস্তকের ছাপা, কাগদ ও रीतांत्रे छालहे श्रेशांक ।

শ্রীস্কুমাররঞ্জন দাশ

জাতীয় সাহিত্য-জর আত্তোষ মুগোপাধ্যায় প্রণীত এবং ৭৭, আন্তরোষ মুগার্জি রোচ, ভবানীপুর, হইতে শীরমাগ্রসাদ মুখো-প্রধার কর্ত্ব প্রকাশিক। মুলা এক টাকা।

প্রেরিক সামার বন্ধনের মধ্যেই দেশ এক নয়, ভারগত ঐকাই ভারতবর্ধকে সমর্থতা দান করিয়াছে। সেই ঐকারোধের উপর জাতীরভার প্রতিষ্ঠা। এই বোধের বারা নিয়ন্ধিত ইইখা যে-সাহিত্য সমর্থ-ভারতের জনগণের মন উব্বুদ্ধ করিতে পারিবে, ভাংই জাতীর সাহিন। সম্প্রের সকল খালোচনার মূলে এই প্রবাদ কথাট রহিবাছে। কর্মে করির মধ্যা ভারথকাশে কন্ধীর শক্তি-প্রয়োগের প্রণালী ও নৈপুণা আমারের কোতুহলী মনকে চিরদিন উধিক করে। প্রতিভাগাপন প্রকৃতি অনুসারে আপনার কেব বাছিয়ালয়। কর্মের মধ্যা দিয়া আহতোবের গাতিলা খুরিত ইইয়াছে। এখানে সাহিত্যে ভাহার আক্সপ্রকাশ। যে ভার ও কল্পনা ভারর স্তিকুশলী শক্তিকে কম্মে প্রেরিত করিয়াছে ভাহারই সাহিত্যিক পরিচয় এই পুরক্যানিতে পাওরা বার। ভূমিকার রবীক্রনাপ বলিতেছেন, 'আন্তর্ভোব ভারত-বার্গি বিশাল ভূমিকার ভার মনের সর্বেচত কামনার ও সাধনার বে

চিত্র এ'কেছেন, ভাতে এই কর্মবীরের ধ্যানের মহত্ব আমি স্পষ্টরূপে অনুভব করেছি।' পূর্বাভাষে এীবুকু খগেন্দ্রনাথ মিত্র গ্রন্থ ও জীবন-পরিচয় প্রদান করিয়াছেন। 'ভার চীয় সাহিত্যের ভবিবাৎ', 'কুবিবাদ', 'মহাকবি মধুত্বন', 'জাতীর সাহিতোর উন্নতি', 'বঙ্গ সাহিতোর ভবিষ্যং'--এই প্ৰবন্ধপঞ্চক পুস্তকখানি সম্পূৰ্ণ: প্ৰথম ও শেষ্টি বঙ্গীয়-দাহিত্য-দম্মিলনের এবং চতুর্থটি উত্তর-বঙ্গ-দাহিত্য-দম্মিলনের সভাপত্তির অভিভাষণ। ব্যক্তি-মানদের ফুঠ, প্রকাশে সাহিত্যের সার্থকতা। উৎসাহ, সাহস, নবনবোল্ফেষলালিনী বুদ্ধি এবং প্রাণশক্তিক প্রবলতার যে ব্যক্তিত্ব আবেগণীল তাহার পরিচয় এই প্রবন্ধগুলির রচনা ৬ঙ্গাতে পরিফুট। আশুতোষ বলিতেছেন, 'এ।জ বঙ্গদাহিতাকে সমগ্র-ভারতের আত্ম-সাহিত। করিতে ২ইবে।' তিনি জানিতেন, 'এল কয়েক জন মাত্র ইংরেজা ভাষার অঞ্শীলন করে।…জাতীয় ভাব বন্ধায় রাখিতে হইলে ভারতীয় ভাষার সেবা আবগুক।' ভার ও চিস্তার পারস্পরিক আদান-প্রদান সহজ করিবার অভিপারে ভার ভর প্রভোক প্রদেশের বিথবিতালয় যদি অক্ত প্রদেশগুলির ভাষার অনুশীলনের ব্যবস্থা বিধান করে তাহা হইলে 'যা যা বাজিও ও বৈশিষ্ট্য না হারাইয়:••••সমগ্র-ভারতে জাতীয় সাহিত্যগত একতার সমাধান করা ধাইতে পারে।' কলিকাতা-বিশ্ববিদ্যালয়ে তিনি সঙ্কলকে কার্থ্যে পরিণতি দিয়া গিয়াছেন। শেষ প্রবংক তিনি বলিতেছেন, 'যদি এমন ভাবে বঙ্গ-ভাষার সম্পুদ বৃদ্ধি করা যায় যে, সংস্পরপে মামুখ হইতে হইলে অপরাপর ভাষারক্ষায় বঙ্গ-ভাষাও শিখিতে হয়, এবং না–শিবিলে অনেক অবগ্য-জ্ঞাত্রা বিষয় চিরকালের মত অজ্ঞাত থাকিয়া যায় ও অক্ত শত ভাষা শিক্ষা করিয়াও পুরা মানুষ হওয়া না যায়, তবেই বঙ্গ-ভাষা চিরপ্লায়িনী ছইবে।'

সুন্দরের সীমানা—- ঐত্ররবিন্দ, স্থারণ, দিলাপ, নলিনী লিখিত এবং কলিকাতা, ৩০ কলেজ খ্রীট, আধ্য-পাবলিশিং হাউদ হুইতে প্রকাশিত। দাম বার আনা।

চার জনের লেখা পাঁচটি প্রবন্ধের সমষ্টি। আলোচনাগুলি পর্বছংল लायां। वहेवानिएक शिवूक स्ट्रावनक्ष ठकवाती, पिनोशक्रमात बाब, নলিনীকাস্ত গুল্ব আর্টের এবং আর্টসম্পর্কিত মতের বিচার করিয়াছেন : তর্কের নিপ্পত্তি-স্বরূপ এ সম্বংশ অমুবাদ-সহ শ্রীষ্ণরবিন্দের একখানি ইংরেক্সী পর প্রকাশিত। তর্কের বিষয়, আর্ট ফর আউস্-সেক পুত্রট সভা কিনা এবং সভা হইলে কভদুর সভা এবং কভ খানি আহা। মার্ট লইয়া তর্ক করিতে গেলে সৌন্দর্য্যের কথা আপনিই चानिया भएए: এই हिनारव 'शुल्यात्र नोमान' नाम रमस्या **२**हेरलस, নাম হইতে বিষয়ের স্পষ্ট প্রতীতি জ্ঞান:। শীহরেশচক্র সুর্টির ন) তি সমর্থন করিয়া বলি:ত:ছন, 'বস্তু-জগড়ের ধ্য় সামার ধর্ম••• প্রতোক অটিষ্টের মাৰে একটি স্বতঃদিদ্ধ মুক্ত আস্কা আছে যা সব কিছুরই উর্দ্ধেন্দেতাই সে হাতের একই তুলি দিয়ে রাজপ্রাসাদ ও কুঁড়েমর আকে, ডেস্ডেমোনাও ইয়াগোকে রচনা করে' ইত্যাদি। উত্তরে এটিলীপকুমার বংলন, 'জীবনের মত আঠেও চুটকি ও গভার, চকচকে ও প্রনার. মেকি ও সঁটো, মুড়ি ও মিছরির এক দর হতেই পারে না∤•••ছে:টও বড়র সকাক্ষ্কর অভিবাক্তি তুলামূল্য নয়।' শ্ৰীনলিনীকান্ত শুণ্ড ব**্লন, 'উভৌ ভৌ'—ছুই-ই সভা। 'যে নৈপুণা** নিয়ে কালিবাস তার মহাদেবকে এঁকেছেন, সেই নৈপুণা নিয়েই এঁকেছেন মহাদেবের বৃষ্টিকে। ছু-জনার মর্য্যাদা এক নয়, কিন্তু সৌন্দবাস্ত হিসাবে ছটিই সমান নয় কি ? জীতর বিশের ম:ত, 'তিনটি ভিনিব নিয়ে আটের সমগ্রতা। প্রথম, প্রকাশক্ষম রূপের অনবভাতা, সৌন্দর্য্যের আবিষ্ণার; বিভীয়, াশর যে মূল সঙা বা অন্তরায়া থার মতিবাক্তি; তৃতীয়, এই ছটি অস বার বাহন সেই স্থাইপটু চৈতন্তের ও আনন্দের শক্তিরাজি। এই তিনটি যদি আমরা এক সাথে গ্রহণ করি তবে-----মীমাংসার হয়ত আমরা পৌছতে পারি।' ধাহারা ইংরেজী জানেন ভারাদের পকে শ্রীঅবে-নের ইংরেজী লেখাটি অনুবাদের অপেক্ষা হবোগা ইইবে। পূর্কোক্ত স্থাটির প্রচলন অবিধি আটি সম্পন্ধ ভর্কের এই এিগারা চলিগা আসিতেছে। এক দল আটিনে বিষয়নরিরশেক্ষ প্রকাশ সৌজবের দিক দিয়া, তার তৃত্যায় দল রূপ ও বিষয়ের অন্তেছ্য দলকার বিষয়ের অন্তেছ্য দলকার করিয়া আটিকে সমগ্রভাবে দেখিয়াছেন।

শ্রীশৈলেন্দ্রকৃষ্ণ লাহা

পরিচয়—জানিশিকান্ত বন্দোগোগায়। এম. সি. গরকার এও শঙ্গ, ১ং কলেজ স্বোধার, কলিকাতা। মূলা এক টাকা। গৃ. ২০২।

প্রথম দিকটার কতকগুলি চিঠি, তার পর এক উপন্তাদ দ্বাদা ১ইরাছে: চিঠিগুলি মোটের উপর ভালই; কিন্তু উপন্তাদে কাচা ২/তের ছাপ সক্ষান্তিয়া উঠিয়াছে। আবার অসংখা ছাপার ভূলর অক্স ভাহাও শেষ প্রায়ু পড়িয়া ওঠা চুলায়া।

শ্রীমনোজ বস্থ

ব্দাপুত্রভাষ্য ভাষতী, কর্ত্মণ্ড নবীন টীকা ভাষতীপ্রভাপ্ত বিস্কৃত বন্ধান্থবাদ ও তাৎপথ্য বিষয়ণ সহিত। টীকাকার ও অনুবাদক— পণ্ডিত শ্রীবৃক্ত চারুকুফ তর্জভাগি। পণ্ডিত শ্রীবৃক্ত রাজেন্সনাথ ঘোষ বেদাস্তক্ষণ সম্পাদিত। দ্বিতীয় অধ্যায় গুতিপাদ নামক এখনপাদ।

আম্মেরা এই নবীন টীকাও বঙ্গালবাদ দেনিয়া পরিচট হইলাম ! ব্রহ্মপুরের শুভিপাদ ও তর্কপাদ অতি জটিলও সমস্তাপুর্ণ। যে-সমস্ত মতবংগের আলোচনা ও খণ্ডন এই পাদদায়ে অনুষ্ঠিত হইয়াছে, ভাষাদের সহিত সাক্ষাংপরিচয় বল্দিন ২ইটেট পণ্ডিতস্মাজের সংঘটিত হয় নাই। এমন কি ইহা বলিলে অভিরঞ্জন করা হটবে না যে এই গ্রন্থালোচনাকালেই এই সমন্ত মতবাদের অভিত্ স্থায়ৰ এখন অভিজ্ঞান জন্মে। ভানতী প্ৰাপ্ত এই সুম্প্ত মতবাদের সংক্ষিপ্ত ও স্বস্থন্ধ বিবরণ আমরা পাই ব.ট, কিন্তু ভাষাতে জানিবার আকাজ্ঞা বাডিয়া যায় অখ্য সে আকাজ্ঞা চরিতার্থ করা সম্বর্ণর ২য় না। বর্তমান কালে বৌদ্ধ প্রভৃতি সম্প্রদায়ের অনেক গ্রন্থ প্রকাশিত হইয়াছে: তাহাতে দে-সমস্ত দর্শন ও মতবার আলোচনা করিবার সৌকর্য্য বৃদ্ধি পাইয়াছে এবং সুধীসমাজে সে-সমস্ত মতের অনুধীলন বৃদ্ধি পাইয়াছে। কিন্তু ব্রাহ্মণ-প্তিত্যমাজ এ জাতীয় আলে:চন! হইতে এতকাল উনাসীন ছিলেন। বৰ্ষান গ্ৰন্থ আমরা দেখিয়া বিশেষ আনন্দ লাভ করিলাম যে পণ্ডিতপ্রবর শ্রীনৃক্ত চারুকৃষ্ণ তর্ক-বেদাস্তভীর্থ মহাশয় সে-সমস্ত আকর গ্রন্থের আলোচনা করিয়া নিজ টীকা মধ্যে সে-সমস্ত মতের বিনিবেশ করিয়াছেন। এ-টীকার জমু-^{भी}नन दुष्णि भारेरल विछात अभाव वाष्ट्रिया घारेरव भागर नाहै।

এ-সংস্করণের কতকগুলি বৈশিষ্টা আমরা উপলব্ধি করিয়াছি—তক্ষধ্যে সম্পাদক প্রায়ুক্ত রাজেক্সনাথ ঘোষ বেনাস্তভ্যণ মহাশয়ের অবলবিত প্রাক্ষর সাহায়েয় অধিকরণনির্গম-প্রণালী আমাদের নিকট একেবারে নবীন বিলয়া মনে হইয়াছে। সম্পাদক মহাশয় ভূমিকামধাে বিলয়াছেন যে, এ শৈলা তিনি সম্প্রদায়ক্রমে পূজাপাদ অর্গত মহামহোপাধাার প্রায়ুক্ত লক্ষণ শাস্ত্রী মহাশয়ের নিকট অধ্যয়নকালে প্রাপ্ত ইন্টাছেন। ধাহা হউক্, ইহা নিশ্চিত যে যদি বর্তমান কোন গ্রেথশাকারী এ শৈলা অবলধান স্বর্গ নির্ণয় করিতে প্রবৃত্ত হন, তবে হরত অনেক সাম্প্রদায়িক বিবাদের মীমাংসা স্কর হইবে। ঘিতীয় বিশেষভ এই যে—ভাষা ও ভামতা মধ্যে যে-সম্প্র প্রাথশিক বচন উদ্ধৃত ইইয়াছে ভাষার যথাগন্তব আকর নির্দেশ ইন্ট্যাছে।

এ-ছাতীয় অন্ত্রে প্রচার বঙ্গদেশে অন্তি-পুর্বাল ইইতে আর্থ ইয়াছে। প্রার্থনা করি 'অয়মারগুঃ শুভায় ভবতু'। বঙ্গদেশবাসী পণ্ডিতগণ যগন বেদান্ত-অনুশীলনে প্রবৃত্ত ইয়াছেন তথন ইহা আশা করিতে পারা বায় যে বেদান্ত চিন্তার মধ্যে একটি স্বতম্ন ধারার প্রবর্ত্তন অসম্ভব হুইবে না। বাঙালা যে-সমন্ত শান্তের আলোচনা করিয়াছেন, তাহারই মধ্যে স্বত্ত প্রভার পরিচয় বিশেষভাবে লক্তিত হয়। দৃষ্টান্তম্বক্রপ নবা ভায়ে ও নবা প্রতির উল্লেখ করা যাইতে পারে। মামাংসাদেশন-মধ্য ভ্কুক্তের প্রকায় ও বাঙলা বঙ্গদেশেই সাধিত হুইয়াছিল। বেদান্তের মন্যেও এ অভিনব ধারা প্রবর্ত্তিত হুইবে ইহা পালা করা যাইতে পারে।

শ্রীসাতকড়ি মুখোপাধ্যায়

প্রেস্তি ও স্তান— নাগিরাক্ত্রক মিত্র, এম-বি, এল্-এম (ডাব্লিন) প্রনাহ ও বেদল পাব্লিশিং হোম হইতে প্রকাশিত। দাম এক টাকা।

ধাত্রবিদ্যা ও প্রস্থৃতি পরিচ্যা সম্বন্ধ আনাদের বাংলা ভাষার মাও ছই-তিনধানি ভাল বই আছে। সে হলে গিরীপ্রবাব্ আর একগানি বই লিখিয়া গাঁডালা গৃহস্থ সমাজের অনেক কলাশাগাধন ও উপকার করিয়াছেন। যে-দেশে শিশুর জন্ম ও মৃত্যুহার এত অধিক, যে-দেশে অজ্ঞতা, নির্ম্বরণ ও অল্পতা এত ভীষণ, সে-দেশের প্রস্থৃতি ও সন্তান পালনের হুল্য এ রক্ষ পৃত্যুক্তর নিত্তা প্রয়োজন—একথা বলা বাংলা। আলোচা বইখানি বিশেষজ্ঞাদিগের জন্ম নহে—মাধারণ নর-মারীদের পাঠোপ্রাম্যী করিয়াই লেগক লিখিয়াছেন। প্রস্থৃতির প্রসাবর প্রধাব্য ইউচে প্রসাবের পর প্রয়ন্ত সমস্ত অবস্থাই লেগক গুটিনাটি ভাবে বুঝাইয়া বলিয়াছেন। প্রসাবের সময়কার কথা আরও বিশ্বভাবে বর্ণনা করা উচিত ছিল; বইগানি ডাজারিশারে অনভিজ লোকের কথাই লিপিত, সে স্থানে ডাজারি উপকরশের কণা না বলিয়া যায়। সাধ্যমণের প্রশ্বেক সন্তব্যার উপর বইগানি সলিপিত ইইয়াছে ও গৃহত্ব-সংসাবের অনেক উপকার সাধ্যন করিবে। বইয়ের সামও প্রব্ অল্প।

ভারমেশচন্দ্র দাস

প্রেত

শ্রীঅমিয়জীবন মুখোপাধ্যায়

বনমালীবাব্ প্রথমটা একটু ইত ওতঃ করিয়াছিলেন, কিন্তু না বলিলে চলিবেই না। নিজের ক্লামাই হইলেই বা কি? দরদ দেখাইতে গিয়া শেষে গোষ্ঠীদমেত মরিবে নাকি? কবিরাক বাংলা বলিলেন, সে অতি ভন্নাক কথা। এ-সব বাাধি লইয়া ছেলেখেলা নয়!

দিবাকর ধরের ভিতরে বদিয়া কাশিতেছিল। একবার পুক্ করিয়া থানি ফটা গায়র জানালা দিয়া বাহিরে ফেলিল।

শক্ষণ গুনিয়া বনমালীবাবু পুনরায় শিহরিয়া উঠিলেন।
দিব'কর থাকিয়া থাকিয়া কাশিতেছেই। বনমালী
আত্তে আত্তে ঘরের স'ম্ন আ'সিয়া দিবাকরের দিকে
চাহিয়া বলিলেন—হাঁয়, ব্রুলে দিবাকর, ভূমি যে আর এথানে
থাক এটা আমরে মত নয়। এ-সব ব্যাধির পক্ষে শহর
কিনিষটাই খারাপ। আমার মতে তোমার এথন দেশে
যাওয়াই উঠিত। হাজার হ'লেও গ্রামে থাবার জিনিষপত্র
প্রেচ্র মেলে, জিনিষও সব টাট্কা। ভার কি বলে, হাা,
ইশ্বলের ছুটির জন্তে একখনো দর্থান্ত ক'রে কি দিয়ছিলে?

দিবাকর বলিল—আঁত্তে হাা। দরখাস্ত ক'রেছিলুম, তিন মাসের ছুট মঞ্র করেছে।

—বেশ বেশ। তিন মান বাড়িতে গিরে থাক, ভগবানের ক্লপার এর ভিতরেই সৃস্থ হ'রে যাবে। মাইনেটা প্রোই দেবে ত?

—ইপ্লের অবস্থা ত তেমন ভাল নর, প্রথমটা আবিত্তি করেছিল। শেষে হেড্ মান্টারকে ব'লে-ক'রে পুরো মাইনেতেই গ্রাণ্ট করিমে নিয়েছি।

দিবাকর আবার কাশিতে লাগিল।

বনমাণীবাধু বলিপেন—তা'হলে আর দেরি ক'রে দরকার নেই, কালকেই ভূমি চ'লে যাও।

দিবাকর যেন একটু বিপন্ন বোধ করিল। বলিল—যাব তো, কিন্তু বাড়ি গিয়ে কি অবস্থার ভেতরে প'ড়ব ঠিক বুঝতে পারছি নে। আর মাধুরীকেও নিয়ে যাব ভাব্ছি— বাধা দিয়া বনমালীবাবু বনিলেন,—না না, মাধুরীকে নিয়ে আর কাজ নেই, ওরা স্বাই এখানেই থাক্। শুধু যে মঞ্চাট বাড়্বে তাই নয়, মাধুরীর এখন যাওয়াও ড অসম্ভব। কোলে ওই কচি ছেলে—

একটু থামিয়া পুনরায় বলিলেন—তোমাদের ভিটেয় এখন যে ঠাক্কণটি বাস করছেন, তোমার একলা মান্বের সামান্ত কোগাড়, তিনিই করতে পারবেন। আর এই ত ক'টা দিন মোটে…

খণ্ডর-মহাশয়ের কথার উত্তরে দিবাকর আর কিছু বলিতে পারিশ না। চুপ করিয়া বসিতা থাকিল। আবার কাশির বেগ আসিল।

রাত্রে পাওয়া-দাওয়া সারা হইয়া গেলে নিজের ঘরে বিসিয়া দিবাকর কস্তাকে বলিল—মীরা, তোমার মাকে একবার ডেকে নিয়ে এস ত একট়!

আজ ত্-তিন রাত্রি মাধুরী প্রকলা লইলা পৃথক ধরে শোর, স্বামীর ঘরে থাকে না। কবিরাজ কড়া ভাবে এই রকম থাকিতেই বলিয়া দিয়াছেন। কবিরাজ বেটুকু বারণ করিয়া দিয়াছেন, মাধুরী তাহাও ছাড়াইয়া আরও অধিক দ্র থায়—দে পারতপক্ষে স্বামীর কাছে ঘেঁঘেই না! এমন ব্যাধির কথা শুনিবার পরমূহুর্ত্ত হইড়ে স্বামীর প্রতি দারণ বিতৃষ্ণার তাহার মন পূর্ণ হইয়া গিয়াছে। সন্দেহ একটু একটু তাহারও পূর্ব হইতেই হইয়াছিল, এখন স্বামীর ওই শীর্ণ দেহের প্রতি তাকাইয়া মন তাহার স্কুচিত হইয়া পড়ে, কাশির কুৎদিত শব্দ কানে গেলে গায়ের ভিতরে কাটা দিয়া উঠে! তিন দিন পূর্বেও স্বামীর পার্বেএক বিছানায় শুইয়া সে রাত্রি কাটাইয়াছিল, কিন্তু এখন সেই কথা স্বরণ করিতেই দেন মাধুরী ভয় পায়।

মীরা মাকে গিয়া বলিল—মা তোমায় বাবা ডাক্ছে।
মাধুরী কোলের ছেলেটির জত্তে ত্থ গরম করিভেছিল।
মুখ তুলিয়া জিজ্ঞাসা করিল—কেন?

- —তা জানি না, একুনি বেতে ব'নন।
- এফুনি থে:ত পারে না, ব'লগে যা। ওকে ত্থ থাইয়ে গুইরে রেখে ঝারও তুটো-একটা কারু আছে দব দেরে তবে বাবো'খন। আর তুই ও-বরে অত বাস্নি, বুবালি? যা, গুধু এই কথ'টা ব'ল এসে গুয়ে পড়গো।

মীরা আদিয়া ব'বাকে বলিল। গুনিয়া ছোট একটা নিখে'দ ফেলিয়া দিবাকর মাধুবীর আপেকায় চুপ করিয়া বদিয়ারহিল।

আধ ঘটা থানেক পরে মাধুী দরকার গোড়ায় আসিয়া দীড়াইল। ঘরে না-চুকিয়া ওখনে হইতেই জিজ্ঞাসা করিল—ডাক্ডিলে কেন ?

মাধুবীর দিকে তাকাইয়া দিব'কর কহি**ল**—ভিতরে এস।

—বল। এখান থে'কই শুন্চি।

দিবাকরের চোথ তুইটি একট্ নত হইয়া আদিল। ধীরে ধীরে বলিল—দ্যাখ, ইদ্বল পেকে তিন মাদের ছুটি পেয়েছি। তোমার বাবা বালছেন এই তিন মাদ বাড়িতে গিয়ে কাটাতে। তা জানই ত, আমার আর কেউই নেই। বাড়িতে শুধু একটা ভিটে প'ড়ে আছে। এত দিন বন-ক্ষলেই ছে য় নেত, তা নায় নি শুধু প্রাামর এক বিধবা ঠাক্কণ আমাদের ভিটের ওপরে ছগানা ঘর তুলে বাদ ক'রছেন দেই জন্তো। আমি ভেবেছিলাম বে তোমাদের নিয়েই বাই, দেই স্বর্গ-দিদির ঘারই এই তিনটে মাদ গিয়ে থাক্ব। তিনি বুড়ো মাত্যা, ৯তি ভাল মানুষও। ছোটাবলা থেকেই আমাকে বড় মেহ ক'রতেন। তা

- —তা বাবার অমত হ'লে আমি কেমন ক'রে কোন কথা বলি? আমার বাওয়া হয় না।
- —অবিশ্রি তুমি যা ভাবছ, তে'মা'দর তেমন কোন অস্বিধা হবে না। আমরা স্বত্ত্ব ভাবেই থাক্ব, স্বর্ণ-দিদির সাহাব্যও থানিকটা পাওয়া বাবে। তা'ছাড়া সেদিন মীরা বল্ছিল, ব'ড়ি কেমন তার দেগতেইচ্ছে করে। কে'নো দিন দেখে নি ত!

একটু অসহিষ্ণু হইরা মাধুী বলিল—আছো, সে ব'ড়ি দেখা হবে'খন্।···তা ভূমি তে.মার সেই মানিদিনির কাছেই

এই তিন.ট মাস থেকে এসগো না ? িথ্যে আমাদের নিম্নে আর টানাটানি করছ কেন? হাঙ্গামা নিক্তাই হবে। নিজেদের বাড়ি নেই, ঘর নেই—ভার পরে আবার প্রায় চিরদিনই দেশ ছাড়া!

- —না, না ভূমি যা ভাবছ—
- —ঠিকই ভাবছি আমি। বাবার পরাম**র্শই ভাল।** কব্রে.জর কাল থেকে ওযুধপন্তর নিয়ে চ**ল** বাও —

কাপভের আঁচেল দিয়া মাধুরী মুখটা একবার মুছিরা। ফেলিল।

দিবাকর ঘরের মেঝের দিকে মুগ নীচু করিয়া তাকাইয়া। মাঝে মাঝে হ্-একবার কাশিতেছিল। ধীরে ধীরে বলিশ— এই ফাসেই তোমায় ডেকেছিনুম, আর কোন কিছু নয়। আছো, তাই ই হর্ব।

ও-নরে ছেলেটা আবার কাঁদিয়া উঠিয়াছে, **মাধুরী** এক-পাত্ত-পাকরিয়া করিয়া চলিয়া গেল।

বহুকাল পরে প্রামের ভিতরে প্রবেশ করি.ত করিতে একটি ন্তন অভ্তৃতিতে দিবকৈবের মন ভরিষা উঠিল। তাহারও পরিবর্তন হইয়াতে, প্রামেরও গরিবর্তন হইয়াতে, ক্রামেরও গরিবর্তন হইয়াতে, ক্রামেরও গরিবর্তন হইয়াতে, কিন্তু এত দিন পরেও গেন পরস্পর পরস্পারকে চিনিতে পারিতেছে। এই গ্রামে সে অন্ধিকার প্রবেশ করিতেছে, এমন কপা ত হার মনে হইল না, পরং কত যুগ আগেকার শৈশব-স্থাতিগুলিই অগুরে এক-এক করিয়া ভাগিয়া উঠি.ত থাকিল।

দিবাকর হালদরে-বাজি ছাড়াইয়া গেল; নবীন দাসের পানাপুক্র পার হইয়া মা ভবতারিলীর মন্দির। বছদিন পুর্বই মন্দির হটতে ইট খুলিয়া খুলিয়া পড়িতেছিল, এখন তাহার আরও করাজীব অবস্থা। মন্দিরের মাথার উপর দিয়া একটি বিশাল বটগাছ ফুঁজিয়া বাহির হইয়াছে।
দিবকের মা-ভবতারিলীর উদ্দেশে ছই হাত ক্ষোড় করিয়া প্রণাম করিল।

এখনই কাহারও সঙ্গে দেখা হয়, ইহা দিবাকর চাহিতেছিল না। চূপে চুপে যথাসভ্যে এক-একটি বাড়ির পিছন দিয়া, যে-সব পাথ বেশী লোকজন সর্বদা চলাচন্দ্র করে না এমন পথ ধরিয়া নিজের বাড়ির দিকে চলিতেছিল। কিন্তু এত সাবধানতা সক্তেও নরেশ-কাকার সঙ্গে দেখা হইয়া গেল।

দিবাকর নরেশ-কাকাকে দেখিয়াই চিনিয়াছে, কিন্তু
নরেশ প্রথমটা ব্ঝিতেই পারেন নাই। প্রণাম করিয়া
দিবাকর পরিচয় দিতেই নরেশ আশ্চর্যান্থিত হইয়া
বলিলেন—আরে! এত কাল পরে বাড়ি এলি দেবা? তা
তোর একি ছিরি হয়েছে রে? অমুখ-টয়ুখ না কি? তোকে
বে মোটে চেনারই কো নেই!

নরেশ-কাকার কথার ছ্ই-চারিটা উত্তর দিয়া তাঁহার কৌত্হল যথাদন্তব প্রশমিত করিয়া দিবাকর পুন্রায় চলিতে থাকিল। আর বেণী দুর নয়!

নিজের বাজির উপরে আসিয়া যথন দিবাকর দাঁজাইল, তথন অব-িনিক্রাণী পরের বারান্দার উপরে বসিয়া বসিয়া একখানা কাঁপা সেলাই করিতেছিলেন। সহসা দিবাকরকে দেখিয়া কাঁপা, ছুঁচ, মাটিতে কেলিয়া রাখিয়া ব্যস্ত হইয়া উঠিয়া দাঁডাইলেন।

— ওমা, দেবা যে! ওমা—কতকাশ পরে তোকে দেশগুম! আয় বাছা আয়ি, সঙ্গে আর কে?

দিবাকর বারান্দায় উঠিতে উঠিতে উ**ন্তর দিল—আর** কেউ নমু সঙ্গোদিনি, আমি একলাই।

ঘরের ভিতর হইতে তাড়াতাড়ি একটা মাছর আনিয়া বারান্দায় বিছাইয়া দিয়া অর্থময়ী বলিলেন—ব'দ্ বাছা, ব'দ্। পাথা এনে দি…

ফাদিদি প্ররায় ঘরে ডুকিয়া একখানা পাখা আনিয়া দিবকেরের হাতে দিলেন,—শাটের বোতাম থুলিতে খুলিতে দিবাকর নিজেকে হাওয়া করিতে লাগিল।

দিবাকরের মুখের দিকে তাকাইয়া স্বর্ণদিদি জিজ্ঞাসা করিলেন—তুই কি কোন ব্যাশোতে ভুগছিল দেবা? তোর সেই অমন মোটা-সোটা নাজ্স্-মূজ্স্ শরীর তা কোথায় গেল?

দিবাকর হাসিয়া বশিশ—আচ্চা সে-সব পরে হবে সল্লোদিদি, এখন তুমি আমার এক গ্লাস পাবার জল এনে মাও দেখি!…

রাত্রে দিবাকর সকল কথাই খুলিয়া বলিল। শুনিয়া অর্ণদিদি বলিলেন—তা বেশ ক'রেছিদ বাপু। তিনটে মাদ থাক, কবরেজ বে ওযুধ দিয়েছে নিয়ম-মতন বা, মা-ভবতারিণী তোকে অবিশ্রিই ভাল করবেন।… বৌমাও যদি আস্ত, তা হ'লে বেশ হ'ত, বড় দেখতে ইচ্ছে হয়। অপ্রবিধে আর কিই-বা হ'ত, ভোরা সবাই মিলে এই ঘরে থাকতিস, আমি না-হয় ওই ঘরে গিয়ে থাকতাম।

দিবাকর নিয়ম-মত কবিরাজী ঔষধ থাওয়া সুরু করে।
হপুরের ঔষধটা কেবল মাত্র মধু দিয়া থাইতে হয়, তেমন কিছু
হাঙ্গামা নাই। দিবাকর নিজেই সেটা পারে; কিন্তু
সকালে, বিকালে এবং রাত্রে বর্ণদিদির সাহায় লইতে হয়।

সকালবেলাকার পাঁচনের উপকরণগুলি সে কিনিয়াই লইয়া আদিয়াছিল। সেগুলি বাছিয়া ওজন করিয়া পুথক পৃথক মোড়কে এক-এক দিনের মত দিবাকর বাধিয়া রাথে। স্বাদিদিকে বলিল—তোমাকে কিন্তু এই ক'টা দিন একটু বিরক্ত করব সংলাদিদি। আমার ওষ্ধ-প্তরগুলি তোমার একটু গুছিয়ে-টুছিয়ে দিতে হবে।

শ্বণিদি উদ্ভৱ করিলেন—ওমা, বিরক্ত হব সে আবার কি কথা? তোর বধন যা ক'রে দেবার দরকার হবে সবই আমায় বলবি। মুড়িতে ওড় মাথিয়ে, শশা কেটে, নারকেল কুরিয়ে কত খেতে দিয়েছি, মনে নেই? পুলীপিঠে তৈরি ক'রে দেবার কল্যে দিন-রাত আমায় কত আলাতন ক্র্তিস্, সব ভ্লে গেছিস্ ব্ঝি প সেই দেবা আমার এধন ভদ্পোক হয়েছেন!…

দেড় সের জল এক পোয়া থাকিতে নামাইয়া পরিষ্কার একখণ্ড জাকড়া দিয়া ছাঁকিয়া অপদিদি পাঁচনটা আনিয়া দিবাকরের হাতে দিলেন। থাইতে বিজ্ঞী তেতো এবং কটু, কিন্তু দিবাকর সাড়ে পাঁচনের বাটিটা তুলিয়া ধরিয়া তলানিটুকু পর্যান্ত গলার ভিতরে ঢালিয়া দিল।

বিকালের ঔষধটা খাইতে হয়, চালকুমড়ার রস দিয়া।
দিবাকর প্রামে খ্রিয়া বৃরিয়া বহু কন্টে চালকুমড়া জোগাড়
করিয়া শইয়া আসিল। অর্থময়ীই চেটিয়া রস বানাইয়া
দিলেন।

রাত্রের জন্ত কবিরাজ বুকে একটি মালিশের ঔষধ
দিয়াছেন। ঔষধ মালিশ করিয়া আকল-পাতা আগুনের
উপর অল্প গরম করিয়া তার পরে বুকে সেক দিতে হইবে।
ইহাতে ত স্বর্ণদিদির সাহায্য লওয়া ছাড়া উপায়ই নাই!

দিবাকরের বুকে মালিশার লাগাইয়া দিতে দিতে স্বাদিদি বিশালন—বুকের পাঁজরাগুলো একেবারে বেরিয়ে পড়েছে—আহা! বাবে, ভাল হ'য়ে যাবে, কিছু ভূই ভয় করিস নে দেবা! মা-ভবতারিনা, ভূমি আমার দেবাকে ভাল ক'রে দাও—।

এই মুহুর্ত্তে দহদা মাধুরীর কথা দিবাক:রর মনে পড়িল, অকারণে বুকের ভিতরটায় একটা মোচড় দিয়া উঠিল।

ঔবধ খাওয়া প্রতাহ চলিতে থাকিল।

কিন্তু একদিন দিবাকরের দিকে তাকাইয়া স্থাদিদি বলিলেন—আজ প্রায় ছটি মাস কেটে গেল দেবা, কিন্তু কই, চেহারা ত তোর মোটে ফেরে না! আরও যেন বেজায় কার্ হ'য়ে যাচ্ছিদ, আর কাশিটাও ত কিছুতেই কমছে না।

দিবাকরও নিজের শরীরের অবস্থা বেশ ব্রিতে পারে। বলিল—তাইত সন্মোদিদি, কি যেকরি তাও ত বুরিনো।…

হঠাৎ কাশি আসিল। কাশিতে কাশিতে দিবাকরের মুখ রাঙা হইয়া উঠিল। বলিল—সন্নোদিদি, একটা শিশিতে কালো মতন কতকগুলি বড়ি আছে। ওরই একটা বড়ি আমার শীগ্রীর এনে দাও ত—

শ্বণিদি ভাড়াভাড়ি ঘরের ভিতর যান্; কিন্ত দিবাকর যেটা চায়, দেটা তিনি ঠাছর করিতে পারেন না। তৃ-তিনটা শিশি আনিয়া দিবাকরের হাতে দিলেন, দিবাকর বাছিয়া একটি শিশি হইতে একটি বড়ি বাহির করিয়া মু:থ প্রিয়া চ্যিতে থাকিল। কিন্তু তবুও কাশি দমন হইল না।

স্বর্ণদিদি বশিলেন, কবরেছকে বরং একথানা চিঠি শিথে দে, দেবা, শরীরের সব কথা জানিয়ে। তিনি ধদি নতুন ব্যবস্থা কিছু করেন—

—নতুন বাবস্থা আর কি-ইবা ক'রবেন, বে-ওযুধপত্ত দিয়েছেন এ সবই অস্ততঃ মাসচারেক থেতে বলেছেন। এখন ত সবে ছটি মাস হ'ল। আর আছিই বা কত দিন। দিন-পনর-বিশের ভেতরেই তো চলে যেতে হতে, সাম্নে গিয়েই দেখানো বাবে!

—চ'লে ত যাবি বাছা, কিন্তু—

কিন্ত বলিয়া স্বর্ণাদিদি থামিয়া আছেন দেখিয়া দিবাকর জিজ্ঞাসা করিল--কিন্তু কি ?

- —না বশছিলাম যে তোর শরীরের দিকে তাকিয়েই বে মনে শাস্তি পাচ্ছি নে। ঝামি বলি কি, চাকরি-বাকরি ক'রে এখন আর তোর কাজ নেই। প্রাণে বাঁচলে সব হবে। অহথের জন্তে একটু ভাল রকম চেষ্টা-চরিভির কর।
 - —ভাল রকম চেষ্টা-চরিত্তির আর কি করব তাই বল।
- —আমি আর সে-কথা কি বা বলি, কবরেজকে আবার দেখিরে তিনি কি ব্যবস্থা করেন সেইটেই ত জান্বার দরকার।

কিছুক্ষণ চুপ করিয়া থাকিয়া অর্ণদিদি পুনরার জিল্পাসা করিলেন—হাা রে দেবা, বৌমার চিঠি-টিঠি পাস্? কেমন আছে ওরা সবাই ?

দিবাকর চুপ করিয়া থাকিল।

—किरब, कशा वन हिम् ना **८**४?

ধীরে ধীরে দিবাকর উত্তর দিল—না সন্ধোদিদি, ওদের কোনো চিঠিপত্রই আমি পাই নে।

স্বর্ণদিদি বিশ্বর বোধ করিয়া বলিলেন—ওমা এত দিনের ভেতরে চিঠি পাসু নি, সে কেমন কথা? তুই লিখেছিস্ ত ?

—হা সল্লোদিদি, একখানা নয় পর-পর কয়েকথানা লিখেছি।

মুধ নীচু করিয়া পায়ের বুড়া আঙ্ল দিয়া দিবাকর উঠানের মাটি খুঁড়িতে থাকিল।

দিবাকরের ছুটি তুরাইয়া আসিল।

রওনা ইইবার সময়ে অর্ণদিদি দিবাকরের গায়ে হাত বুলাইয়া বলিতে লাগিলেন—মা-ভবভারিণীকে আমি সর্কাদা ডাকছি, তিনি ভোকে নিশ্চয়ই হেন্ত ক'রে দেবেন। আর ভাল হ'য়ে মাঝে মাঝে আসিদ্ বাছা। তোর মুপখানা দেখে যে কভ শান্তি পেগেছি, তা বল্তে পারি নে। এবারে যথন কো.নাদিন আস্বি—বৌমাকে, ছেলেমেছে ছটোকে নিয়ে আস্বি—

দিবাকর একটু হ'দিল :

বাসায় চুকিবার পূর্কেই রাস্তার উপর বনমাণী বাবুর সঙ্গে দেখা হইয়া গেল। বনমালী বাবু বলিলেন—এই থে দিবাকর, কেমন আছ

— মাজ্ঞে তত সুবিধার নয়।

—তা চোহারা দেখেই বৃষ্তে পারছি। তোমার এখন বাড়ি খেকে চলে আসাটা মোটেই ঠিক হয় নি।

দিবাক,রর শরীরের অবস্থা দেখিলা বনমালী বাবু অত্যন্ত সঙ্কৃতিত হইয়া উঠিতেছিলেন। গাল একেবারে ভাতিয়া পাড়য়ছে, চোধ ছটি যে কোগায় গিয়া চুকিয়াছে তাহার ঠিক নাই। আর থাকিয়া থাকিয়া ঐ কুৎসিত কালি।

দিবাকর বলিল—না এসেই বা কি করি। ছুটিও ফুরিয়ে গেল, কবরেজকেও ভাবার দেখানো দরক র—

এবারে মাণা চুলকাইয়া বনমালী বাবু বলিলেন—
এলে ত, বাদায়ই বে কেউ নেই! আমি একলা শুণু
ঠাকুর আর ঝিটাকে নিয়ে আছি। সেদিন আমার শালা
এসেছিল, ও দর স্বাইকে সে মাস-দেড়েকের জ্ঞান্ত তার
কাছে নিয়ে গেল। আমি আছি সে এক মহা বিদ্রাটের
ভেতরে। ভোমার ত অস্বিধার একেবারে চরম হব।
ওরা থাক্লে বরঞ্চ এক রকম হ'ত। না হে বাপু, তুমি
রোগা মানুয, •সকল সম য় তে'মার ঠিক-মতন ভদারক
হওয়া চাই, বাসায় গিয়ে আর কাজ নেই। — বনমালী বাবু
পুনরার ম'থা চুল্কাইলেন—তুমি বাড়িতেই ফিরে যাও
আবার। কবরেজ যা বাল পোন গে, আর—

বনম'লী বাবুপকেটে হাত দিলেন, একথ'না দশ টাকার নোট বাহিব করিয়া দিবাকরের সন্মুখে ধরিয়া বলিলেন— এই ট'কাটা রাখ। দরকার মতন—

দিবকৈব একটু আক্র্যান্থিত হইয়া উঠিল, বুঝিতে পারিল, তাহার ব'স'য় নাওয়াটাকেই বনমালী বাবুপছন্দ করিছেছেন না। নতুবা উহারা কেহ না থাকিলেই বা কি? ব'ড়ি হইতে এতদিন পরে আসিলছে, অস্ততঃ বিশ্রামের জল্পেও ত তাহাকে একটি কি ছটি দিন থাকিয়া যাইতে বলা উচ্ডে!

মাধুরী কেন তাহার চিঠির উত্তর দেয় নাই, মামার নিকট যাওয়ার উপরে কারণট আরোপ করিতে দিবাকর চেটা করিল। কিন্তু মামার কাছে গিয়াছে ত সেদিন, এত দিন কেন মাধুরী চিঠি দেয় নাই? আর মামার কাছে গেলেই বা কি, তাহাতে চিঠি লিখিবার ব'ধা কোথায়? তাহার এমন অসুস্থতা, একটু থোঁত লাইবারও কি ইচ্ছা হয় না?

বুছিমান দিবাকর মাধুরীর মনের গতি বুঝিতে পারিল।

মুহুর্তের জন্ত মাধুরীর, মীরার, থোকনের মুখগুলি শ্বরণ করিয়া তাহার অস্তর বৈদনাতুর হইয়া উঠিল।

বনমালী বাবু বলিলেন—এখন তা'হলে কবরেজ-বাড়িই যাও দিবাকর—

তাহ'কে এড়াইবার জন্ত খণ্ডর-মহাশয়ের এত বেশী গরন্ধ দেখিয়া দিবাকর সতাই ছংখিত না-হইয়া পারিল না। কিন্তু অর বেশা কোন কথা বলিতে তাহার প্রবৃত্তিও হইতেছিল না। ওই অবস্থায়ই সে তাঁহার নিকট হইতে বিদায় গ্রহণ করিল।

রাস্তার মোড় ঘুরিতেই হঠাৎ বাসার ঝি কাচর সঙ্গে দেখা। ক'ছ বাজার হইতে ফিরিতেছে, হাতে ঝুড়িতে বাজারের সঞ্চা।

- ওমা দাদাবাবু বে! কথন এলে?

দিবাকর উত্তর দিশ—এই ত একটু আগে। ভাশ আহিস্ত?

— এই চলে যাচেছ, এক রকম। আমাদের আবার ভাল থাকা আর মনদ থাকা। তা এখনই চলেছ কোথার? ভোমার চেহারা ত বেজার খারাপ হয়ে গেছে দাদাবাবু! কবরেজ এখন কি বলভে?

---কবরেন্দের কাছেই ত যাচিছ।

হাসিয়া কাছ বালল—বোকনমণিকে কেমন দেখলে লাদাবাবু? তেমার কোলে এল না ? উ:, যা ত্রস্ত হয়েছে! হামাগুড়ি দি তে শিবেছ—চার হাত পায়ে এমন ছুটবে, ওর সলে পারে কার সাধা? গায়ে আবার জোরও হয়েছে বাবুব! কালকে রাজিরে থাটের ওপর থেকে মীরাকে মাটিতে ফেলে দেবার জন্তে কি চেটা! আমরা ত হেসে বাচি নে!

দিবাকর স্তব্ধ হইয়া কাহুর কথা শুনিতেছিল। এক মুহুর্ত্তের ভিতরে সে সমস্ত বুঝিল।

খণ্ডর-মহাশারে উপরে এতটুকু আজোশের ভাব ভাহার মনে জাগিল না, কিন্তু ভার মাধুরী—?

কাত্তকে কেংনো কথাই সে ভিজ্ঞানা করিল না, এমন কি ত'হার মুখ-চোথের চেহারা দেখিয়া কাত্ পাছে কিছু সন্দেহ কার এই ভারে দিবাকর নিষ্ঠেকে সম্পূর্ণ সংযত করিয়া অত্যন্ত সহজ কঠে বলিল—দেখ কাত্য, ভূমি একটা

কান্ধ কর ত, বাসায় গিয়েই মীরাকে পাঠিয়ে দিও। খোকনকৈ বেন কোলে ক'রে নিয়ে আসে। বাসায় পৌছতেই মীরা বলেছে তার ছটো পুতৃল ভেঙে গেছে, খোকনমণির ঝুম্ঝুমি নাই, আর কত ফরমায়েস! বাজারের পাশেই ত কবরেছের বাসা, বাজার থেকে মীরাকে সব কিনে দেব'খন, ৯:র ওদের সঙ্গে করেই কবরেজের বাড়ি থেকে ঘুরে আসব'খন।

কাত্ পা বাড়াইল। দিবাকর বলিল—হাা, ওর মা যদি আবার বারণ ক.র, তুমি শুধু চুপি চুপি মীরাকে ডেকে খোকনকে কোলে দিয়ে আমার কথা ব'লে পাঠিয়ে দিও, বুঝেছ?

কাছ একবার পা বাড়াইয়া আবার ফিরিয়া হাসিতে হাসিতে বলিল,—মাধ নাসের একুশে তারিথে থোকন-মণির মুখে ভাত, গুনেছ ত থ আমায় কিন্তু বথশিশ্ দিতে হবে দাদাবাবু। এক:জাড়া কাপড়ের কমে ছাড়ছি না।

দিবাকরও হাসিতে চেষ্টা করিল। বলিল—দেব বইকি কাছ, নিশ্চয় দেব।

--- है।।, मटन थांदक (धन---

কাত চলিয়া গেল। দিবাকর রাস্তার দিকে তাকাইয়া চুপ করিয়া দাঁড়াইয়া থাকিল।

পাঁচ-দাত মিনিট কাটিয়া যায়, কিন্তু কেহই আদিল না।
দিবাকর তেমনই দাঁড়াইয়া রহিল।

আধ ঘণ্টা থানেকের ভিতরেও যথন কেই আসিশ না, দিবাকর এক পা তুই পা করিয়া রাস্তা দিয়া একটু আগাইয়া আদিল। বাসা দেথা যায়, কিন্তু আর কাহাকেও দেথা যায় না।

দিবাকর আরও কিছু ক্ষণ দাঁড়াইয়া থাকিল। কপালে বিন্দু বিন্দু ঘামের রেখা কুটিয়া উঠিল।

কিন্তু বহু ক্ষণ অপেকা করিয়াও যথন মীরা আসিল না,
দিবাকর একটা দীর্ঘনিঃখাস ফেলিয়া আন্তে আন্তে সেখান
হইতে সরিয়া গেল; হয়ত বা চক্ষু হইটি একটু সিক্ত হইয়া উঠিল!

ক্ষিরান্ধের বাড়িতে আর দিবাকর গেল না। দশ টাকা ক্রিয়া সপ্তাহ, চালাইবারও উপায় নাই—আর এই ক্ষিরান্ধের উপর বিশ্বাসও তাহার কিছু ক্মিয়া গিয়াছে। আগুবাবু নামজাদা হোমিওপ্যাথিক ডাব্রার । শহরের কোনো রাংলোপ্যাথও তাঁহার মত যশ অর্জন করিতে পারেন নাই দিবাকর আগুবাবুর বাড়ির দি ক যাইতে লাগিল। ডাব্রুারও ভাল, আর হোমিওপ্যাথিক চিকিৎসার ধরচও কম!

সমস্ত শুনিয়া আশুবাব্ ঔষধের বাবস্থা করিলেন। আশুবাব্র ডিস্পেঙ্গারী হইতেই দিবাকর ঔষধ কিনিয়া। দটল। ব'হির হইয়া অ'সিবার অ'াগ অল্প একট্ হ'সিয়া। জিল্পাসা করিল—কেমন দেবলৈন ডাক্ডারব'ব্? ভাল হব ত?

আংশুবাৰু খাড় কা**ৎ ক**রিয়া বলিলেন—অবিশ্রি। ভয় কিছু নেই, তবে হাং, একটু সাবধান।

আগুরাব্র বাড়ি হইতে দিবাকর সোকা ইস্কাল আসিল। হেড্মাসার মহাশয় একটু গন্তীর ভাব বলিলেন — কিছু মনে কর্বন্ না দিবাকর বাব্, কাজ থেকে আসনার জবাব দিতে হাব। আপনার যে ব্যাধির কথা গুন্লাম, এতে আপনাকে আর রাখতে পারিনে এবং এই কথা জানাবার জন্তে সেক্টোরীও আমায় সেদিন থবর পাঠিয়ে-ছিলেন।

দিবাকরের মুখ শুক'ইয়া গেল। বলিল—যদি আম'কে আর কিছু দিনের ছুটি দিতেন স্তর, অন্ততঃ চেষ্টা ক'রে দেখ্তাম। এই অবস্থায় এখন গদি আম'য়—

—ত' অ'মি আব কি কর্ত পারি দিবাকর বাব্? আমার কোনো হাত নেই। আপনাকে তিন মাসের ছুটি পুরো মাইনের দিয়েছি। আর ছুটি দেওয়া অসন্তব। এতে ইস্কুলের কাজে বিশৃগুলাও হয়, আর ইস্কুলের আর্থিক অবস্থাও—

কাতর ভাবে দিবাকর ক**হিল--পুরো মাই**নে আমি চাই নে, দলা ক'রে যদি অন্ত্রেক মাইনেতেও---

হেড্মানীর একট্ অসহিষ্ণু ভাবে বলিলেন—আপনি ব্যুতে পারছেন না দিব'কর বাবু। আপন'র ওই ব্যাধিটাই বে সব গোলমাল কর্ছে। আগনার যা শরীরের অবস্থা দেখ্ছি, এতে আপনি নিজেই যে কাল্ল করতে পারবেন না। আর আপনাকে আমবা রালেণ্ডই বা করি কি ক'রে? দশ বিশ দিন বা এক মাসের ছুটিতে আপনার

কিছুই হবে না। আপনার জতে আমি বড়ই ছংখিত হচ্ছি দিবাকর বাবু, কিন্তু কোন উপায় নেই। আমি আপনাকে বলি, এখানকার প্রভিডেণ্ট্ ফাণ্ডের টাকাটা আপনি ভুলে নিয়ে যান্—তা সে যা-ই হোক্ না কোন, নিয়ে গিয়ে ওরই ভেতর নিজের যপাসম্ভব তিকিৎদার ব.কাবন্ত কক্ষন।

দিবাকর আর কোনো কথাই বলিতে পারিশ না। চকুর সমুথে অন্ধকার দনাইয়া আদিল।

* * *

খণমগ্রী বশিতেছেন, তা ভালই করেছিদ দেবা, ফিরে এ.স। একেবারে মড়ার হাল হয়েছে, এই শরীর নিয়ে কেউ খাটুনীর কাছ ক'রতে পারে? চাকরিতে জববে দিয়ে এসেছিস্, তাতে কি হ'য়েছে? মা-ভবতারিণীর দর'য় সেরে উঠ্.ল, অমন চাকরি আবার পাবি। তুই মন ধারাপ করিস্ নি বাছা।

দিবাকর বলিল — না সম্নোদিদি, মন আর কি ধারাপ ক'রব, ত.ব থাবার চলাও তো চাহ! তব্ও যাহোক কটা টাকা পাচছিলাম, কিন্তু এখন বে থার উপায় নেই। কে আমায় সাহায্য ক'রবে?

—তা বাবা এই এবছায় শশুর কি আর কিছু না-ই ক'রবেন ' অবিভিই ক'রবেন। এত দিন তাঁর কাছেই ত থাকলি!

স্থাদিদি অবগ্র সরল মনেই বলিলেন, কিন্তু সেধান হইতে কোন সংহায় প্রার্থনা করি গার কথা ভাবিতেও দিবাকর মনের ভিতরে কেমন একটা গ্রানি এন্তব করে। কিন্তু ভাই বলিয়া সে মাথাটাকে প্রথামই ধারাপ করিয়া বসে না।

আন্তব ব্র দেওয়া হোমিওপাথিক ঔষধ বিশ্বংসের সহিত খাহতে থাকে। কথনও কথনও কলিকাভার গিলা এক জন বড় ডাক্তর বা কবিরাজকে দিলা দেখাইবার ইচ্ছা মনে ছাগে; কিন্তু পরক্ষণেই সে-চিস্তা সেমন হইতে মুছিয়া কেলিয়া দেয়। কলিকাভা যাওয়া এবং থাকার খরচ, ডাক্তারের ফি, ঔবধপত্র, বড় ডাক্তারের বড় ফর্মায়েল
••• অসম্ভব!

তা অ'ও ডাকোরই বা কম কিসে? বিদ্ধিম মোকোরের অতবড় অপুৰ, তা শেষে আওব'বুর হাতেই ত সারিল! সে ত কলিকাডাও গিয়াছিল, পয়সাও ঢালিয়াছিল ছুই হাতে; কিন্তু কই, কলিকাতার ডাক্তাররা ত কিছুই করিতে পারিলেন না, শেষকালটায় ত এক রকম জবাবই দিয়া দিলেন!

আগুবাবুর দেওয়া হোমিওপাথিক ঔ্যধের প্র*ড়া শিশি হইতে কাগজের উপর মাত্রা ঠিক করিয়া দিবাকর ঢালিয়া লইল; মুখর ভিতর ফেলিয়া জিহ্বা দারা চাটতে চাটতে মনকে প্রবোধ দিতে পাকিল।

. কিন্তু কিছুই হইল না!

দিব।করের শরীর যেন ক্রমেই ভার্ডিয়া পড়িতে চায়।
কাশিতে কাশিতে বৃক পিঠ বাকা হইয়া আসে, পেটের
নাজিগুলি ছিড়িয়া আসিবার উপক্রম করে। গায়ে জর
সর্বক্ষণ লাগিয়া আছে। সন্ধার দিকে দিবাকর বেছ'সের
মত বিছানার উপর পড়িয়া থাকে।

পাড়ার ভিতরে নরেশই সর্বাপেক্ষা গ্রাচীন লোক, হাঁহার বিজ্ঞতার উপরেও সকলের আস্থা।

স্বর্ণ-সাকুর ণী জিজ্ঞাসা করিলেন—হঁটা নরেশ, দেবা যে বড় ভাবনার ভিতার ফেলল। কি করা যায় বল দেখি !

নরেশ প্রথমটা কিছু ক্ষণ চুপ করিয়া রহি.লন। তার পরে
মাথা নাড়িয়া উত্তর দিলেন—আসল কথা বলাত কি সায়া ?

এ-সব শিবের অসাধা বাাধি। তবে ভাগোর জোর থাক্লে
সেবেও যায়, একেবারে বে না-সারে এমন না। এই ত
ধর না কেন, আমার খুড়ো-মশায়েরই ত এই বাাধি ছিল।
ভা তিনি সম্পূর্ণ সারেন নি বটে কোনোদিন, তাব একেবারে
ভেঙেও পড়েন নি। একটু-আন্টু উপদর্গ থাক্তই, মাঝে
মাঝে আবার ভালও থাক তন! ওই নিয়েই ত পাঁগালী
বছর তিনি বেচেও গোলন—ছেলে, মেয়ে, বট নিয়ে ঘরগেরগুলী ক'রেই!

- —কিন্তু দেবা বে ক্রমেই শব্যে-ধরা হ'তে চ'লন।
- —ভাই ত সলো, কি করা যায়।
- ভূমি না-হয় বেয়ো বাবা একবার বাড়ির ওদিকে। দেবাকে একটু দেখে এস।

— যাব'থন্; তবে আজকে ত আর পারব না।
নাম্বে-কাছারীতে একটু বেতে হবে, লাটের কিন্তির তারিধ
আবার। কাল সকালের দিকে যাব।...

একদিন কাছার নিকট হইতে নরেশ যশোরের কোন

এক ভদ্রলোকের থবর স্বর্ণর নিকটে আনিয়া হাজির করিলেন। বলিলেন—আমার মনে হয় এটা একবার দেখলে মন্দ হয় না।

স্থান্দ্রী বলিলেন— খামার তো কোনই আপতি নেই, দেবা মত ক'বলে হয়।

—এতে আর অমত করবার কি আছে? সে ভদ্রলোক নাকি অনেককেই সারাচ্ছেন শুন্লাম। তিনি কতকগুলো লেকড় দেবেন, পনের দিন তাই রোজ বেটে থেতে হবে। এটায় এমন থবচ কিছু নয়, হাঙ্গমে'ও নেই। কার কিসে গে কি হয়, বলা ত বার না। ব'ল তুমি দিবাকরকে।

রাত্রে দি গ্রকর বসিয়া স্কটি থাইতেছে। স্বর্ণময়ী আন্তে আন্তে তাহার পাশে অংসিয়া বসিলেন।

--একটা কথা, দেবা।

দিবকের মুধ তুলিয়া ঙিজ্ঞা,সা করিল—কি কথা সম্লোদিদি?

—নরেশ বলছিল, সে কা'র কাছে শুনেতে যশোরের এক হন ভদ্রশোক নাকি এই ব্যামোর ভাল চিকিচ্ছে ক'রছেন, আনককে সাবিয়েছেন। ভার ওধুন হচ্ছে কতকগুলি শেকড়, মাজ্তর পনর দিন পেতে হবে। আমি বলি কি, এটা একবার চেষ্টা ক'রে দেশলে হয়। তুই কি মত করিদ?

একখানা রুটি ছিঁড়িতে ছিঁড়িতে দিবাকর বলিল—
আমার ত অমত কিছু নেই, তবে কেমন ক'রে বা সেই
ওযুধ আনান যাবে, আর ধরচ-টরচ—

—সে দ্বের জ্ঞাতোর বেশা ভাব্না ক'রতে হবে না।
সে ভদ্রলোক মোটে নাকি পাঁচটি টাকা নিয়ে থাকেন।
আর তাঁর কাছে নাকি কারও নিজে গিয়ে ওষ্ধ নিয়ে
আস্তেহ ব, ডাকে তিনি পাঠান না। কিয় তাও আমি
ভেবে রেখেছি। হালদার-বাাড়র বিনোদ ত নিজ্মা
হয়েই বাড়িতে ব'সে থাকে, আমি ভাবছি ওকেই ব'লেক'য়ে পাঠাব। তুই বাবা এই কটা টাকা ধরচের জ্ঞে
ভাবিস্নি। এমন সাংঘাতিক বাামো যদি ভাল হ'য়ে
বায়—

দিবাকর মত করিল। স্বর্ণদিদি দিবাকরের পিঠে সম্মেহে হাত বুলাইয়া মানৎ করিলেন, আমার দেবাকে ভূমি ভাশ ক'রে দ:ও মা-ভবতারিণী, আমি তোমার পুষ্কো। দেব।

একটু পরে পুনরায় বিজ্ঞাসা করিলেন — হাঁারে দেবা, বৌমার চিঠি-পত্তর পাস নে ?

দিবাকর মৃহুর্ত্তের জ্বন্ত স্বর্ণদিদির মুখের দিকে তাকাইয়া চোখ নামাইয়া লইল। কিছু ক্ষণ চুপ করিয়া থাকিয়া বাটির ভিতরে গরম হুধটা আঙুল দিয়া নাড়িতে নাড়িতে ধীরে ধীরে বলিল—তারা ত ওখানে নেই সয়ে।দিদি, মামার কাছে গেছে। এক শ্বতবমশায় ছাড়া বাসায় আর কেউই নেই। হার বোয়েরও িঠি-পত্তর লিখবার অভ্যেস আবার একটু কম কিনা! তা পে.য়হি, একখানা চিঠি এই ত কিছু দিন আ.গ পেলাম। ভালই আছে ওরা।

কথাটা বলিতে গিয়া দিবাকরের বুকের ভিতরটা টাটাইয়া উঠিল। তবু ইচ্ছা করিয়াই মিথাা কথা বলিল। স্বণিদির মনে কোন বিশ্বয় জাগিয়া উঠিবার আগৈ, কোনো হা-হতাশের কথা শুনাইবার আগে, আজ সে কোনগতিকে কথাটা এড়াইয়া যাইতে চেটা করিল।

বাহিরে আসিয়া মৃথ ধুইয়া জলের ঘটিটাকে হাতে করিয় ই দিবাকর কিছু ফণের জন্ত সন্মুখের অন্ধকারের দিকে স্তব্ধ হইয়া তাকাইয়া থাকিল। একুশে মাথ, তার খোকনের অন্ধ্রাশন!…

তিন-চারি দিন পরে বিনেদে গশোর হইতে ফিরিয়া আসিল। ঔষধ অর্ণমনীর হাতে দিতে দিতে বিলল — যদ্ধ ক'রে তুলে রেথে দাও সর্লা-মাসি। সকালবেলা উঠে কাপড় ছে:ড় তুল্সীজল মাথায় ছিটিয়ে তুমি বেটে রেথে দেবে, দিবাকর চান্ ক'রে ভিজে কাপড়েই পুবের দিকে মুখ ক'রে দাঁড়িয়ে ওবুখটা থেয়ে ফেল্বে। পনর দিন। এই নাও, ধর—

উষ্ধ হাতে লই.ত লইতে স্থানগ্ৰী ভিজ্ঞাসা করিলেন— তোর বাছা কট হয় নি ত কোন ?

—সে কথা আর কেন বল মাসি, হুর্ভো^ন কিছু গেছে বইকি,⋯

বি নাদ হাত-মুখ ঘুরাইয়া বলিতে লাগিল, যাওয়ার দিন অবিক্তি তেমন কিছু অসুবিধে হয় নি; কিন্তু ফেরবার সমায়ই সব চিত্তির ক'রে ফেল্লাম। ওই গাঁ থেকে বেরিয়ে মাইলথ নৈক দুরে বাজারের ওপর এসে চ'ড়তে হয় মটোরে। মাটোরে আট্ মাইল এসে তবে ইস্টিদান।
শালার মাটারই দিলাম ফেল মেরে। কিন্তু বিনোদ হাল্দার মোটে সেই বালাই নয় যে আবার ফিরে গিয়ে ভদ্দর লোককে উৎপাত কর্বে। পা তো নয় মাসি, যেন বজুবা নৌকো! দিলাম চালিয়ে। সে টেন আর ধর্তে পার্লাম না। মাঝারাভিরের আগো আর টেনও নাই। কিন্তু এ বাবা বিনোদ হালদার, ইস্টিদানে সিঁট্কে প'ড়ে থাক্বার পান্তর নয়! থানিক পরেই এল এক মাল গাড়ী। তা পরে বুঝ্লে মাসি,—

হাসিয়া বিনোদ বলিতে থাকে, নিলাম হাতে ওঁজে আট গণ্ডা মুদ্রা। এর নাম বাবা রূপচাঁদ, পেছন দিক দিয়ে পুড় পুড় ক'রে নিলে গার্ড বেটা আমার ভূলে। তা পরে রাণাবাটে এসে এব ট্রেনর এভাব কি? যে একটা টাকা বাচ্লো, রাণাবাটে এসে এক মেঠায়ের দোকানে চুকে,—

হাসিয়া বিনোদ বলে,—বুঝলে ত মাসি ?

তা বা ক'রেছিস্বাপু ক'রেছিস্, এখন এই কট আর পয়সাবায় সাথক হয় যদি দেবা আমার এই উবধে উপ্গার পায়—

— কিছু ভয় নেই সংগ্রামানি, স্কু ক'রে দাও ভরস্থ ক'ুর। সেরে যাবে।

— এই কথাই বলু তে'রা সকলে বাছা।

নারশ পাতিকা দেপিয়া একটি শুভদিন ঠিক করিয়া দিলেন, স্বৰ্গ সেহদিন হইতে দিবাকরকে ঔষধ ধাওয়াইতে সুক্তু করিলেন।

ান করিয়া আদিয়া কাঁপিতে কাঁপিতে দিবাকর পুবমুখী গ্রহা দাঁড়াইল। তাহার কপালে ঔনধের বাটিটা একবার চোঁয়াইয়া অর্থময়ী বলিলেন—ভক্তি ক'রে থেয়ে ফেলে দেব'বা।

দিবাকর ঔষধটা গিলিয়া ফেলিবার সময়ে অনুভব করে বেন গলা হইতে পেট পর্যান্ত একেবারে জ্বলিয়া উঠিল।

কংক দিন ঔবধ ধাইবার পরেই হ'গং একদিন এমন জোরে দ্বর চড়িল আর সারা শরী.র এমন একটা ১সহ্য যন্ত্রণা হইল যে দিবাকর একেবারে পাগলের মন্ত বকিতে সুক্ল করিয়া দিল। কাটা-ছাগ.লর মত ছট্ফট্ করিতে থাকিল। পর-পর তিন চারি দিন কাটিয়া গেল, তবুও উপশম হইল না।

স্থানরী শুদ্ধুবে বিনোদের কাছে গিয়া ঔষধ থাওয়ানোর পরে দিবাকরের যে অবস্থা হইয়াছে সমস্ত খুলিয়া বলিলেন। শুনিয়াই, বিনোদ তড়াক্ করিয়া লাফাইয়া উঠিল—ওঃ, বলতে ডাহা ভূল হ'য়ে গিয়েছিল মাসি, এই ওয়ুধ থাবার সঙ্গে সঙ্গে নানারকম ঠাণ্ডা জিনিষ থেতে হ:ব, ভদ্মবলোক ত ব'লে দিয়েছিলেন! ঠাণ্ডা জিনিষ মানে ধর এই যেমন—যোল, ডাবের জল, মিছরীর পানা…এই সব। আর থালি ওয়ুধ-থাওয়ার সময়ে নয়, সন্ধোবেলায়ও আর একবার চান ক'ব্:ত হবে। ওয়ুবটা নিশ্চয়ই বড় বদরাগী…

তা একথা আগে বল্তে হয়। মানুষের জীবন নিয়ে খেলাত নয়! তোর খেয়ালটাই একটু কম বাপু...

বিরক্তির সঙ্গে বি.নাদকে তিরস্কার করিয়া আসিএ। স্বর্ণমন্ত্রী যথোপযুক্ত উদ্যোগ করিতে লাগিলেন।

দিবাকরের মনের ভিতরে বার-বার জাগিয়া উঠে, একুশে মাঘ তার খোকনের ১য়প্রাশন! ছোটু ফুট্ফুটে সেই কচি মুগগানি দিবাকরের মনের প্রত্যেকটি অলি-গলিতে ঘুরিয়া বেড়ায়। কাত্ বলিল, গোকন বড়ই তুই, হইয়াছে। দিবাকরের চোগের সামনে গেন ভাসিয়া উঠে মাধুরী বসিয়া হয়ত চুল বাঁধিতেছে। খোকন কিছুতেই গেন মীরার কোলে থাকিবে না—মায়ের কাছে আসিবেই! মীরা ওর মতলব বুঝিয়া তুপ্ করিয়া মাটতে নামাইয়া দিল। হামাওছি দিয়া আগাইয়া আসিয়া পিঠ বাহিয়া বাহিয়া মায়ের কাঁধের উপর হাত দিয়া খোকন দাঁড়াইল। তাহার পরে কতকগুলি চুল মুঠির ভিতরে লইয়া এমনভাবে টানিতেছে যে, মধুবী চাঁৎকার করিয়া উঠিল—উঃ, কি দিন্তা ছেলে মাগো, চুলটাও বাঁধ্তে দেবে না! তার পরে যেন মীরাকে অনুনয় করিয়া বিল—লক্ষীটি ওকে একট্ নাও—

মীরা বলিল—নিয়েছিলামই ত, তা বাপু কিছুতেই কোলে থাক্ বন্ না—তার পরেই গাল ফুলাইয়া চোগমুথ পাকাইয়া এক ধমক—ও ছউু থোকন্, ফেল্বো একেবারে মেরে, চল্লীগগীর·····

ধোকন হয়ত দিদিকে গ্রাহ্ও না করিয়া মারের কতগুলি চুল নিজের মুথের মধ্যে নির্কিকারভাবে পুরিয়া দিল!

পরের দিনকার ডাকে দিবাকর মাধুরীকে একখানা চিঠি শিখিশ—

প্রম কল্যাণীয়াসু

মাধু, অনেক দিন তোমাদের কোনই থবর জানি না। কত চিঠি শিথি, কিন্তু একথানারও ত উত্তর দিবে না!

কাল রাত্রে ভোমাদের অনেক স্বপ্নে দেখিয়াছি। খোকনেব জন্তে মনটা এক সময়ে অত্যস্ত চঞ্চল হইয়া উঠে। সে কেমন আছে, তাহার সমস্ত কথা আমায় জনোইবে কি ?

মীরাও কি আমার ভ্লিয় গিয়াছে ৈ আমার কথা সে তোমাকে জিজ্ঞাসা করে না ে তোমার শরীর ভাল আছে ত ় সর্বলা সাবধানে থাকিও। লক্ষ্মীট, চিঠির উত্তর দিতে ভূলিও না। আমার ক্ষেহানাব লও। ইতি দিবাকর।

পনের দিন ক:টিয়া গেল। দিবকের যশোহর হইতে আনা ওয়ধের কোন গুণই বুঝিতে পারিলনা। কিন্তু স্বর্ণমন্ত্রী বলিলেন, আগের চাইতে একটু ভালই দেখা যায় যেন রে দেবা। তোর কেমন ঠেকছে?

- —কি জানি সল্লোদিদি, কিছুই ত বুঝি-টুঝি নে !
- —আর ও ছটো দিন থেতে দে, দ্বাই ধাক ।…

সহসা অর্ণদিদির আর একটি কথা মনে পড়িয়া গেল, বলিলেন—হাা—পুরু-গাকুরকে ব'লে এলাম একটা সভিনোরাণ পূজো ক'রে দিয়ে গাবার জন্তে। অনেক দিন সভিনোরাণের পূজো বাড়িতে হয় না, ভোরও এই রকম বাামো। দেবভার পূজো একটা ক'রে ফেলাই দরকার।

मिवाकत अर्वमिमित (कारना कारक वे वांधा (मन्न ना ।

পূর্ণ-ঠাকুরের নির্দ্ধিষ্ট দিনে স্বর্ণ-ঠাকুরাণী পূন্দার আয়োজন করিঃ। ফেলিলেন।

পূজা ছই মিনিটেই হইয়া গেল। পূর্ব-ঠাকুব পাঁচালী পাঠ করিতে সুক্ক করিলেন।

গণেশ-বন্দনার আরম্ভটা সামান্ত একটু বোঝা গোল, তার পরে সত্যনারাণ দবের প্রসাদ অবহেল। করিবার ফলে সওদাগরের ডিঙ্গা নিমজন, কারাবাস, ইত্যাদি অনেষ হুর্গতির শেষে পুনরায় গভীর বিখাসের সহিত তব-স্কৃতি করিয়া তঁংহার রূপায় সমস্ত পুনংপ্রাপ্তি পর্যাস্ত—এক নিঃখাসেই সমাপ্ত গুইয়া গেল। ব্লেল-ভরা হুঁকায় ত মাক থাইবার সময়ে যেয়প একটা শব্দ হয়, সেইয়প একটি শব্দ পূর্ণ-টাকুর কিছু কণ করিয়া গেলেন মাত্র। এক বাড়িতেই বেণী সময় নই করি.ল চলিবে না, আরও প'চগানা সভানারাণ পুলা ভাহার সেই রাত্রেই করিতে হইবে।

ভক্তিভরে একটি ফুল পুজার স্থান হইতে তুলিয়া আনিয়া অপ্রিদি দিবাকরের কপালে ছোঁগাইয়া কানে ভাজিয়া দিলেন। অভঃপর দিন্তি-চটকানো চলিতে থাকিল। এতকাল পরে এই সভানারাঃল পূজা দেবিয়া দিবাকরের শৈশবের একটি কথা মনে পড়িয়া গেল।

দিবাকবের পিতা ঠিক পুরোহিত না হইলেও সর্বপ্রথকার পূজা-পদ্ধতিই জানিতেন এবং সদাচারী ব্রাহ্মণ ছিলেন। লক্ষ্মীপুলা, কার্ত্তিকপুলা ইচাদি খনেক সময়ে তিনি অ নক বাড়িতে করিতেন। তিনি যথন মরিণা গেলেন, তথন দিবকেরকে মাঝে মাঝে এক-এক বাডিতে ধরিয়া বসিত, তাহাদের পূজা করিয়া দিতে হলবে। দিবাকর পূজার কিছুই ভানিত না, কাজে কাজেই এড়াইয়া যাহত।

কিন্তু কায়েত-পাড়ার হরিদাসেই দিত মুক্তিল করিয়া।
দাদাঠাকুরের প্রতি তাহার অগাধ বিশ্বাস, অসীম শ্রদ্ধা।
তিনি মরিয়া গেলে কি হগবে, উহার পুত্র—সেচে লমানুষই
হউক এর বাহাই হউক—তাহাকে দিয়া পূজা করাইয়াই
ত'হার ভৃপ্তি! জোর করিয়া সে দিবাকরকে একব র ত হার
ঘরে লক্ষ্মীপূজা করিয়া দিব ব ক্রন্ত লইয়া গেল; অগদর
করিয়া, যতু করিয়া ত'হাকে পূজার এাসনে বসাইয়া
বলিল—তৃমি সেনন ক'রে পূজা করবে তাই তই আমার
পুলা হবে ভোটদ দা!

দিবাকর আসনে বসিয়া ঘামিয়া উঠিল। হরিদাসের বড়মেয়ে কাছে বসিয়া দিব'কর ক সব দেখাইয়া দিল। না-জানা আছে মন্থ, না-জানা আছে কিছু—ভবুও তাহাকে ধরিয়া টান'ট'নি! দিব'কর মনে মনে এতান্ত চটিয়া ফ'র্ম অব রিডিং-এর ঘোড়ার গল্লটা বিড় বিড করিয়া প্রথম হইতে শেষ পর্যাক মুগস্থ বলিয়া লক্ষীর ঘটের উপর ফুল এবং আলোচাল ছিটাইয়া দিল।

পূর্ণ-মাকুরকে তাহার নিজের চাইতে বড় বেলা কিছু তকাৎ বলিয়া মনে হইল না। কিন্তু পূর্ণ-ঠাকুর যাহাই হউক না কেন, সভ্যনারায়ণদেবকে সে অপ্রদা করে না; পাঁচালী-পাঠ দমাপ্ত হইয়া গোলে দিবাকর মাটিতে মাথা রাপিয়া দেবভার কাছে অন্তরের একান্ত প্রার্থনা জানাইল—আমায় সুস্থ ক'রে লাও ঠাকুর!

কিন্ত দেবতার কা.ন সে-প্রার্থনা পৌছাইশ না। দিবাকরের স্বাস্থ্য ক্রমেই মারও বেশা ভাঙিয়া পডিতে শাগিল।

ইতিমাধ্য নরেশ আর একটি থবর পুনরায় স্বর্ণময়ীর নিকটে লইয়া আদিশেন। থবরটি আর কিছু নয়, কোন একণানি পুস্তকে নাকি এই কাল ব্যাধির সন্ত্যাসী-উক্ত একটি ওয়ধের বিবরণ হঠাৎ ভাঁহার চোথে পড়িয়া গিয়াছে। সমস্ত শুনিয়া স্থনিয়া দিবাকরকে আদিয়া বলিলেন। দিবাকর ম্নাথোগ দিয়া শুনিল।

স্থানিয়ী মন্তব্য করিশেন, যাশারের এই ওধুৰে কিছুই হ'ল ন। ব্যবন, তথন নিশ্চিন্তি হয়ে ত আর বাস পাকা বায় না, বা হোক আর কিছু দেখতেই হবে। আর এ-ওধুধ্টা ত থালি বাসকের পাতার রসেরই ব্যাপার, উপগার না হোক, অপকার কিছুতেই হবে না।

দিবাকরও জুড়িয়া দিল—সব রকম কাশির পক্ষেই ত বাসকের রস ভাল ব'লে শুনেছি। কিন্তু বড় নট্থট—

—তাব'লে এখন আর কি করা যাবে? প্রাণের চাইতে আর কিছুই বড় নম্ন! বিনোদটাকেই লাগিয়ে দেব ভাবভি।

বিনোদ বাড়ির কাজকণ্ম কিছু কঞ্ক-না-কক্ষক, অপরের বাড়ির এই সব হুছুগে কাডে বড় পটু।

নরেশ বেরপ বলিরা দিয়াছিলেন, স্বর্ণময়ী বিনোদকে সেইভাবে বুঝাইয়া দেন। বাদকের পাতা লাগিবে এক মণ। সেইপাতা একটা মাটির হাড়িতে বোঝাই করিয়া মাটির ভিতরে গর্ভ ফ রয়া রাখিতে হইবে। হাড়ির তদায় থাকিবে । ছাঁটো, তার নীচে বদানো থাকিবে একটা পাথুরে বাটি। শেযে হাড়ির মুধ বন্ধ করিয়া গর্ভের ভিতরেই হাড়ির চারি পালে করিতে হইবে আগুন। আগুনর তাপে পাতা হইতেরদ বৃহির হইয়া বেটুকু

বাটিতে পড়িবে, ভাহাই হইবে ঔষধ। আগুনও যার তার নয়; করিতে হইবে গোবরের ঘুঁটের।

স্বৰ্ণমন্ত্ৰী জিল্পাসা করিলেন—পার্বি ত বিনোদ ? একটু কষ্ট ক'রেও তোকে বাবা ক'রতেই হ'ব, তা না হ'লে আমি যে আর কাউকে ব'লব এমন মান্ত্রয়ও তো দেবছি নে—

বিনোদ উৎসাহের সহিত বলিল—আরে সে-সব কিচ্ছু ভেব না মাসি, দ্যাথ না সবই জোগাড় ক'রে নিচিছ। এ বাবা বিনোদ হালদার।

একটু পৰে মাথা চুলকাইয়া বলিল—কিন্তু—

- —কিন্তু কি, ব'লে ফাল বাপু।
- কিন্তু কথা হচ্ছে, এক মণ বাসকের পাতা জোগাড় করাই বে অসম্ভব ব'লে মনে হচ্ছে। কোথায় পাব অত বাসকের পাতা? আর অতবড় হাড়িই বা মিলবে কোথেকে?

ভাবিবার বিষয় বটে। এ প্রামেত বাসকের গাছ নাই ই, এক পাশের প্র'মে তৃ-এক বাড়িতে আছে; কিন্তু সমস্ত গাছ মুড়া করিয়া আনিলেও এক মণ হইবে না। আর বাহাদের বাগানে গাছগুলি আছে, তাহারাই বা তা করিতে দিবে কেন কৈ সময়ে কত দরকার হইয়া পড়ে!

অগত্যা স্থানিয়ী পুনরায় বিনোদকে সংশ্ব করিয়াই নরেশের নিকট উপদেশ লইতে গোলেন। তিন জনে প্রামর্শ করিয়া কবংশবে স্থির হয়, এক মণ-টন দিয়া আর কাজ নাই, বে-পরিমাণ পাতা সংগ্রহ করা সম্ভব হয়, তাহা দিয়াই 'ঔষধ বান;ইতে হইবে।

সমস্তই হইল।

কিন্তু আদল জিনিয় লইয়াই শেষ-পর্যাপ্ত গোলমাল বাধিল। পাথুরে বাটিটাঃ বাদকের রদের মত কিছুই পড়েনাই, একটু সাদা জলের মত জমা হইয়াছে।

নরেশ বলিলেন—সাবধান, ওর ভেতর মাটি না পড়ে। শিশিতে পুরে রেথে দাও।

কিন্ত বিনোদ বলিল—এই নাকি তোমার বাসকের রস : আমার বিখাস গর্মে পাথর ছেমে, বা দেখছো—জমা হয়েছে।

সন্দে হরই ব্যাপার।

थानिको। कथा-कांग्रेकांग्रे हिनन विस्तान आह नहिल्ला

মধা। নরেশ বশিবেই যে ওই তরল পদার্থটা ইাড়ির ভিতর হইতেই চুয়াইয়া পড়িয়াছে; বিনোদও বলিতে থাকিবে পাথরের বাটি-খামা জ্বল।

দিবাকর থানিক ক্ষন পরে বলিল—থাক্ গে নরেশ-কাকা,
এক কাজ কল্পন্, মিটে যাক্। হাজি থেকে পাতা
গুলি বের ক'রে নিংজে রস বানিয়ে পাথুরে বাটির
এই জিনিয়টুক্ তাতে চেলে মিশিয়ে বোতল ভ'রে
রেথে দেওয়া যাক্, রোজ একটু একটু ক'রে থাই। বাসকর পাতার রসও তো উপকারীই, তা ছাড়া ওটা
নিয়ে যথন এফটু সন্দেহই হচ্ছে—এ ব্যবস্থা মন্দ নয়!

অভঃপর ভাহাই করা হইল।

দিবাকর সকালে বিকালে গু-বার করিয়া তিন-চারি দিন খায়, কিন্তু তাবে পাবেই দে রস্বোভাগের ভিতরে বিশ্রীরকম প্রিয়া উঠিল।

একদিন মুখের কাছে লইয়া গন্ধে বমি আসিল। দিবকৈর বেতিলত্তক স্বারস্ভালিয়া ফেলিয়া দিল।

কিছুই আর ভাল লাগে না, দিবাকর সমস্ত আশার্চ ছাড়িয়া দিল। হাতের টাকা কয়টিও প্রায় ফুরাইয়া আদিল। দিবাকর আর কুল-কিনারা করিতে পারে না।

প্রভাষ ডাকের আশায় তাকাইয়া থাকে, মাধুবীর চিঠি আদে না। দে-মাধুবী ছাড়া এই পুনিবীতে তাহার খার কেহই নাই, দেই মাধুরী তাহাকে এত পুণা করে! ধোকনের অরপ্রাণন—একগানা চিঠি, গুরু একথানা চিঠিইহাও দে তাহাকে লিখিবে না থ মীরাও কি তাহাকে ভলিয়া গিয়াছে, দেও কি মায়ের কাছে গিয়া ।তাহার কথা কখনও জিজ্ঞানা করে না থ করিলে, দে তার কি উত্তর দেয় থ তাহার কথা মনে করিয়া মাধুরীর মনটা কি একব'রও একট্ কঁ:দিয়া ওঠে না।

নার্থিটু তুগট জোড়া করিয়া ভাহার উপরে জরাতুর মাথাটা রাধিয়া দিবাকর চুপ করিয়া বসিয়া রহিল।

একদিন জোগান্ গৃধ দি:ত মাদিয়া আব্জ্ল বশিল-ছা
দা-ঠাকুর, আমার একটা কথা রাখ না কেনে, এতই ত
ক'র্লে!

দিবাকর কাশিতে কাশিতে জিজ্ঞাসা করিল—কি কথা মাব্তুল ?

- —তে:মার ওই কাশির লেগেই বলুব'র চাই।
- -कि वन निकिन ?
- —নওপাড়া গেছ কোনোদিন ? মধুথালীর বাজার ছাই:ড়ই ওই পাশে যে গাঁও ?
- —ছোটবেলায় একবার গিয়েহিলাম, ম.ন প'ড়্ছে। কেন বল দেগি ?

—নওপাড়ায় এক ভৈরবী মা-চাক্রেণ আসেছে।
বড় ভারি সাধু। শনি-মঙ্গলবেরে কালীমুর্ত্তির পূ:জা করেন,
পূজার গ্রাবে তেনার আদেশ হয়। তথন তিনি তেনার
কাছে যারা গেছে—কি মান ক'রে গেছে, কারু বেয়ারাম
থাক্লে সার্বে কিনা—সকল কথাই ব'লে দেন, ওযুধও
দেন। কত লোকে নিত্তিয় যাছে। তা দা-চাকুর,
এনার কাছে তুমি একবার গিয়ে ঘুরে আসোনা! দৈব
ওয়ুধর তুলা ওয়ুধ আর কিছু নাই।

দিবকের ক্ষিজ্ঞাসাকরিণ— মাচচা, সেই ভৈরবী মায়ের কাছে গিয়ে কেউ কোনো শক্ত মুস্থ থেকে ভাল হ'য়ে সেরে গেছে এমন তুমি নিজে ফান ?

তৃদ্ধের শৃত্ত ভাঁড়েটাকে ম টিতে উপ্জ করিয়া রাগিয়া আবহল বলিল—জানি নে দা-ঠাকুর? সাধে কি আর বল্ছি? আমারই এক ফুফার সে যা বিপরীত হাঁফানি হয়েছেল, বাচবার ত কথাই না মোটে! এক তুই দিনেরও নয়—বিশ বছরের বেয়ার ম। সেই বেয়ার ম ভার নিদ্যোষ হয়ে সেরে গেল ভৈরবী মায়ের ঠেঁরে ওষুধ পেয়ে!

দিব¦কর আব্তুলের কাছে সমস্ত থেঁাজ্যবর ভানিয়া রাখে।

স্থানিয়ী পাড়ায় কি কাজে বাহির হুইয়াছিলেন, ফিরিয়া আসিতেই আব্তল যাতা বলিয়াছে, দিবাকর সমস্ত বলিল। শুনিয়া স্থানিয়ী আগ্রহের সহিত বলিলেন—
তা'হলে দেবা, তুই আয় গিয়েন ওপাড়া থেকে একবার ঘুরে। আব্তল ঠিক্ কথাই ব'লেছে, দেব ওষু ধ্ব মত ওষ্ধ সতি।ই আর কিছু নেই।

তার পরে স্বর্ণ-দিদি তাঁহ'রও জানা এবং শোনার ভিতরে ক'রকটি কঠিন রোগী দৈব উ্যধ লাভ করিয়া কেমন করিয়া ভীষণ কঠিন ব্যাধি হইতে সম্পূর্ণ মৃক্তি পাইয়াছিল, ত হ'ব অত্যাল্চর্যা বিববণী দিতে আরছ করিলেন। যে লোক ডুবিয়া গাইতেছে, একটি তুল পাইলে সে চাপিয়া ধবে, দিবাকর কিছুই অবিশ্বাস করিল না; কিছুই অত্যীকার করিল না। বলিল—স্বই ত বুঝ্লাম সায়াদিদি, কিন্তু অ'সল কথা, সেধানে যাই কেমন ক'রে। পথ তো আট-নয় মাইলের কম হবে না।

কিছু ক্ষণ ভানিয়া স্বৰ্ণদিদি বলি লন—তাতেও আট-কাবে না, ভূলীতে ক'রে নাবি।…

নরেশও শুনিয়া বলিলেন—হা হাা, খামিও সেদিন শুন্লাম বটে—নওপাড়ার দেই ভৈরবীব কথা। বে-সব আশ্চর্ষ্যি কথা তাঁর সম্বন্ধে শুনলাম উড়িয়ে দেওয়া বায় না! দিবাকর ওর কাছে গিয়ে ঘুরে আসে, এতে আম রও মত আছে।

স্থানী দিবাকবের নওপাড়া যাওয়া স্থির করিয়াই ফোলি.লন। রওনা হইবার আগে দিবাকর স্থাদিদির পারের ধূলা গ্রহণ করিলেন, তাঁহার ম'থার উপরে হাত রাখিয়া মনে মনে আশার্কাদ করিয়া স্থান্যী চকু মুছিতে লাগি.লন।

মাঠের ভিতর দিয়া চলিতে চলিতে প্রচণ্ড রোজ আর ডুলীর এনবরত ঝাঁকোনি। নওপ'ড়া আদিয়া যথন দিবাকর পৌছায়, শরীরের আর ভাহার কিছু অবশিষ্ট নাই। লোকেব নিক.ট জিজ্ঞাসা করিতে করিতে আগাইয়া ভৈরবীর ঘরের পাথে আনিয়া বেহারারা ডুলী রাখিল।

অন্ত কোন্ এক গ্রাম হইতে আরও একধানা ডুলী আদিরাছে। ডুলাখানা কাপড় দিরা ধেরা, ভিতরে কে আছে দিবাকর ব্ঝিতে পারিল না। সেই ডুলীখানা ছাড়াও স্ত্রী-পুরুষে আরও দশ-বারো জন লোককে তথায় দেখা গেল। সকলেই হয়ত ভৈরবীর নিকটে কোনো-না-কোনো প্রাথনা লইয়া আদিয়াছে!

কালীর ঘরের দরজা বন্ধ। দিবাকর জিজ্ঞাসা করিয়া জানিল ভৈরবী ভিতরে আছেন, সন্ধারে আগে তিনি দরজা থোলেন না।

যাহার সহিত দিবাকরের কথা হইল, সেই লোকটিই অপর ডুলীর সহিত আসিয়াছে। ডুলীর ভিতরে তাহার

পাইয়াছিল, ত হ'র অত্যাশ্চর্যা বিবৰণী দিতে আরম্ভ ভগ্নী, কোনো একটি শক্ত ব্যাধিতে ভূগিতেছে। ভৈরবী করিলেন। যে লোক ডবিয়া যাইতেছে, একটি তল মায়ের যদি কুপাহয়!

> সন্ধার পরে ভৈরবী ঘরের দরজা খুলিলেন। একে একে সমস্ত লোক গিয়া বারান্দার উপরে সারি সারি বসিদ। দিবাকরও ধীরে ধীরে গিয়া সকলের সহিত বসিশ।

> একটি আধা-বয়সী ক্লফবর্ণা স্ত্রীলোক। পরনে লাল-রঙের ছোপানো কাপড়। কপালে একটি প্রকাশু সিন্দুরের ফোঁটা। স্থলশরীরা।

> সন্মুপেই মূন্ময়ী কাশীমূর্জি। মুক্তকেশী, গলায় মুগুমালা, হাতে খড়া, বুকের উপর দিয়া কধির বহিয়া যাইতেছে, চক্ষুর দৃষ্টি ভীষণ। শিবের বুকের উপর পা রাণিয়া জিহুবা দংশন করিয়া দাঁড়াইয়া আছেন।

> প্রায় এক ঘণ্টা ধরিয়া ভৈরবী কাণীমায়ের পূজা করিবেন।

> সহসা কিরপ একটি গোঁ-গোঁ শব্দ শোনা গেল। পরক্ষণেই ভৈরবীর হাত-পা কি রকম কাঁপিতে থাকিল, ক্রমে মাগাটা প্রবল বে.গ ঝাঁকাইয়। উঠিল। সকলে তটস্থ হইয়া বিদিয়া রহিল।

ভৈরবী উচ্চারণ করিলেন—বহুদেব মাইতী।

—এই থে মা····একটি লোক সমু থের দিকে আগাইয়া গেল।

দিবাকর লক্ষ্য করিয়া বুঝিল ধে-লোকটির সঙ্গে তাহার কথা হইয়াছিল, সেই।

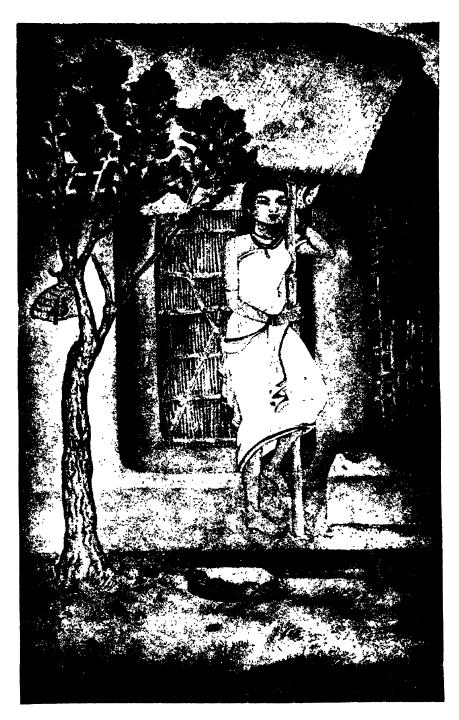
—বোনের ব্যামো?

হুই হাত ক্লোড় করিয়া বস্থদেব কহিদ—হাঁ মা। · · · · · হ । হ ।

ভৈরবী একটু ক্ষণ চুপ করিয়া বসিরা থাকিলেন।
হঠাৎ মাটি হইতে কি একটু কুড়াইরা বস্থদেবের হাতে দিয়া
বলিলেন, যাঃ—

বস্থদেব পরম ভক্তিভরে হাতের মুঠাটি কপাণে ঠেকাইল।

এই লোকটির নাম বস্থাদেব এবং ইছার ভগ্নীর অস্থেপ, ভৈরবী কেমন করিয়া টের পাইল? দিবাকর একটু বিশ্বিত হইয়াই বিশিয়া রহিল। পূর্ব্ব হইতেই জানিত-



নলি বালিকা শ্ৰাশ্বনিদ্ সিংহ

টানিত না কি? সন্দেহেব দোলায় নিবাকর ছলিতে। থাকে।

আরও ছ-চারি জনের নাম ভৈরবী উচ্চারণ করিলেন।
ব্যাধি-মুক্তির জন্তেই প্রায় সকলেই আসিয়াছে। কেহ
বা নিজের জন্ত, কেহবা পুত্র, কন্তা, স্বামী, স্ত্রী অথবা
অন্ত কোনো আত্মীয়স্বজনের জন্ত। আরও ছ-চারি
নাক ভৈরবী উধ্ধ দিলেন, কাহাকেও একটি দুল,
কাহাকেও বা একটি বিষপত্র, কাহাকেও বা কালীর বেদীর
নীচে হইতে একটু মাটি। ক্বচ করিয়া ইহাই ধারন
করিতে হইবে, পুত্র হইতেই সকলে জানে।

সহসা গভীর কঠে ভৈরবী ডাকিলেন—দিবাকর চকোবতী!

দিবাকরের বৃকের ভিতরে বড়াদ্ করিছা উঠিল, সমস্থানীরের মধ্য দিয়া যেন একটি তীব্র বিচ্ছে-প্রাহ্ চলিয়া গেল। কাঁপিতে কাঁপিতে আড়ুই সরে বলিল—মা।

—মিথো এদেছিস্, সার্বে না। এই মাগ মাস্থানা টেনেট্নে-····

বনম'লী বাণ্র বাসার সন্মুখে এক দল কাঙালী জটলা করিতেছে।

আশপাশে এধারে-ওবারে ছেঁড়া কলার পাতা, ভাঙা মেটে গোলাস, ভাত, ডাল, ভরকারি ছড়াইয়া পড়িয়া আছে। কয়েকটি কুক্র আসিয়া পাতাগুলি চাটি:তছে।

বন্মালী বাবুর নিজের পুত্রসন্তান নাই, একমাত্র কন্সার শিশুপুত্রের অল্পাশন তিনি ঘটা করিয়াই করিয়াছেন; প্রচম্পাশকরিলেন না।

তুপুরবেলা শহরের বাবুরা থাইয়া গিয়াছেন, নিমন্তি। মহিলার সংখ্যাও নিতান্ত কম হয় নাই। এখন তুঃগী, ভিধারীদিগকে খাওয়ানো চলিতেছে।

সন্ধান আব্ছা আঁধারে একটি শীণ, কলালসার লোককে বাসার সম্থে কয়েক বার ঘুরিতে দেখা গেল। একবার একপাশে সরিয়া আসিয়া বাসার ভিতরকার একথানি ঘরের দিকে লোকটি কাতর, সভৃষ্ণ নয়নে, নিপালক দৃষ্টিতে তাকাইয়া রহিল। একটি ভিখারী তংহার ছিন্ন বস্ত্ত কণ্ডল ভাত আর তরকারী বাধিতে বাধিতে আগাইরা আদিয়া লোকটিকে বলিল—বাপু হে, এগানে দেঁইড়ে পেকে কি হবে, পেটের গরত্ব থাকে ত স্মৃকে গ্রেডা হাতে ক'রে দাঁড়াও গে যাও।

কোনো উত্তর না দিয়া লোকটি ভিগারীর মুখের দিকে একবার অর্থশূল একটি দৃষ্টি নিক্ষেপ করিয়া সেথান হুইতে পুনুবায় ধীবে ধীবে স্বিয়া গোল।

এক ঘুম রাত্রের পরে মীরা সহসা বিকট চীৎকার করিয়া কাঁদিয়া উঠিল। মাধুরী ধড়্মড় করিয়া উঠিয়া বসিয়া জিজ্ঞাসা করিল—কি হ'ল রে মীরা, কি হ'ল তে'র---?

মীরা পাণপদে মাকে জড়াইয়া ধরিয়া ঠক্ ঠক্ করিয়া কাঁপিতে কাঁপিতে কাঁদিতে লাগিল।

ওই গরে বনমালী বাবুর গুম ভাঙিয়া গেল, ভাড়াছাড়ি লঠন হাতে করিয়া ছুটিয়া আসিলেন। ধাকা মারিভে মারিতে বলিলেন—দোর গোল ত মাধু—

মাধুবী দরজা খুলিয়া দিলে তিনি অতাও বিশ্বিত হুইয়া ডিজ্ঞাদা করিলেন—ব্যাপার কি দেশকৈ হ'ল মীরার —অমন কর্ছে কেন দেশ

কোলের ছেলেটাও ইতিমধ্যে জাগিয়া উঠিয়া কাল্লা পুরু করিয়া দিল।

মাধুরী বলিশ—িক জানি, কিছুই তো বুঝ্তে পার্ছি না, হঠাৎ এক চীৎকার দিয়ে কেঁদে উঠেছে—

বন্দাণী বাব শীরাকে কোলের কাছে টানিয়া অনেক করিয়া অনেক রকম ভাবে ভিজ্ঞাসা করিতে লাগিলেন।

মীরার কালা থামিল বটে, কিন্তু কাঁপুনি খার তাহার যায় না। কোনো কথা মুখ দিয়া বাহির করিতে পারে না।

অবশেষে কোনো গতিকে ফোঁপাইতে ফোঁপাইতে বাহা বলিল: ছাবপোলার কামড়ে তাহার ভাল বুম আসিতেছিল না। একবার আসে, আবার ভাঙিয়া যাইতে থাকে। হঠাৎ জানালার দিকে চোগ পড়িতেই দেখে একটা মাত্র জানালার ভিতর দিয়া ভাহাদের দিকে একদৃষ্টে ভাকাইমা রহিয়াছে।

মীরার আছেক কথা মুখ দিল বাহির হইতেছে, আছেক মুথের ভিতরেই থাকিয়া বাইতেছে। ভড়াইয়া জড়াইয়া বাহা বলিতেছে, কাঁপুনির চোটে তাহাও স্পষ্ট হইতেছে না। বনমালী বাবু বুঝিলেন, মীরা থাই হোক্ একটা-কিছু দেখিয়া ভয় পাইয়াছে।

শঠন হাতে করিয়া বাহির হট্যা তিনি জানালার ধার, ঘরের আনাচ-কানাচ খুরিয়া দেখিয়া আদিলেন, কোগাও কিছু নাই!

বলিশেন—হঃ, মানুষ না হাতী। চল্ আমার সঙ্গে, নিজেই দেগ বি!

কিন্তু মীরা কিছুতেই বাহিরে যাইতে রাজী হইল না। মাধুবী বলিল-স্থান-উপন দেখেছে নাকি তার ঠিক কি ! বনমালী বাবু বলিলেন-তা ত নয়, আমার বিধাস এই যে আমগাছের পাতাসুদ্ধ ভালটা জানালার সাম্নে এসে পড়েছে, গুমের চোথে ওই দেখেই হয়ত মানুষ ভেবে চেটিয়ে উঠেছে!

মীরা তথাপি কাঠের মতন্ শক্ত হইয়া দাঁড়াইয়া রহিল।

বন্দালী বাবু হাসিয়া বলিলেন—দিদির আমার কি সাহস ! যা যা ভায়ে পড় গে যা !…

পিতা ঘর হইতে চলিয়া গে.ল কি ভাবিয়ামাধুনী দীর্ঘনি-খাস ফেলিয়া ছুই ফেঁটো চে'থেব জল মুছিল। কল্যাকে ভিজ্ঞাসা করিল—কার মত দেখতে রে সে?

প্রবাসী-বঙ্গসাহিত্য-সম্মেলন

অধ্যাপক শ্রীনলিতমোহন কর, কাব্যতীর্থ, এম্-এ, বি-এল্

প্রবাসী-বঙ্গসাহিতা-সম্মেলনের দ্ব দশ অধিবেশন বঙ্গ-সাহিত্যের কেন্দ্রস্থানে সুসম্পন্ন হইমা গেল। নিকট ও দূর হইতে ছই শতাধিক প্রবাসী মাতৃভূমিতে আদিয়া মাতৃভাষার সেবার সুযোগ পাইমা পরম পরিতৃপ্তি লভে করিয়াছেন। ইছে'দের প্রচেপায় ও পরিশ্রেমে এইজ্রপ বিরাট ব্যাপার সম্ভবপর ইয়াছিল, ভাহাদের সময়, সামর্থা ও অর্থবায়—উচ্চ মন্দিরের অলক্ষিত ভিত্তির মত—সাধারণের অজ্ঞাত হইলেও, প্রণিধান ও সাধুবাদের গোগ্য।

ইহরে পূর্দ্ধ এধিবেশনে, গোরক্ষপুরে, যগন এই মহাসংশ্বলনের অক্তম প্রতিগতা স্বর্গীয় মহাকবি অতুলপ্রসাদ উংহার শেব সাহিত্যিক অতুল প্রসাদ বিভরণ করি ত আসিয়া বলিতে ছিলেন, "প্রাসী! চল্বে দেশে চল্," তখন ডাঃ প্রেশচন্দ্র রায় ও প্রীম্ক রামানন্দ চটোপাধাায় প্রবাসী-ফ্র-সাহিত্য-সম্মেলনকে দেশে লইয়া বাইবার কল্পনা করিতেছিলেন। এই কল্পনা সত্যে পরিণত্ত হইল; কিন্তু হায়! সেই মহাপ্রবাদী তখন তাঁহার আকাজ্যিত দেশ হইতে ব্রদ্বে। প্রথমে প্রবাদিগণের মাধ্য একটা আশকা উঠিয়'ছিল—প্রবাদী-বঙ্গদ হিতা-সাম্থনন বঙ্গে গিয়া নিজের নিজ্প হারাইয়ানা ফেলেন। হয়ত একাদশ বর্ষের বালক মাতৃ-জ্যোড় হইতে ফিরিয়া আদিতে চাহিবে না; কিবো হয়ত সম্মেশনের নাম ও রূপ বদশাইয়া যাইবে। কিন্তু একপ কিছুই ঘটে নাই। বরং, সম্মেশনের মূল সভাপতি, শাখা সভাপতি প্রবাদ হই তই নির্বাচিত হইঃছিলেন। প্রবাদী সভাপতির অভাবে সাংবাদিকী শাখার অধ্বেশন হয় নাই। প্রবন্ধ-পাঠকগণ্ড সকলেই প্রবাদী ছিলেন।

সম্বেশনের এবার মহাসোভাগা যে, গেসকল মনীযীকে বাষ্টিরূপে সভাপতি-প দ পাইলেই ধন্ত মনে করিতেন, তাঁহারা সমষ্টিরূপে ইহার মূলর ও শথের উল্লোধনকর্ত্তী রূপে কার্যা করিয়াছেন। অফ্রিকল্প করিয়া সাহিত্য ও বিজ্ঞানতাপস আচার্য্য বস্কে সভায় লাভ করিয়া সাহিত্য ও বিজ্ঞান শাখা ফুলে ফলে পূর্ণ হইয়াছে। সাহিত্য-পরিয়দ্-গুহে কর্মানব আচার্য্য রায় মূলের উল্লোধন করিয়াছেন। প্রবাসে বেখানই

বঙ্গদাহিতা-সমিতি হউ চনা কেন, উহা যদি কেন্দ্রখনীয় বঙ্গীয়-সাহিতা-পরিষদের অঙ্গী গৃত হয়, তাহাতে উভয়েবই সাকলা ও সার্থকতা। প্রবাসী-বঙ্গসাহিতা-সম্মেলন বঙ্গীয়-সাহিতা-পরিষদের নিকট এই সম্মান পাইয়া ধল হইয়াছেন। এই অঙ্গাঞ্জিভাবে চিরস্থায়ী হইয়া অশেষ কল্যাণকর হইবে বলিয়া আশা কবা যায়।

সভার স্মাবেছ বন্ধ দেশের রাজনগরীর মতই ইইয়াছে।
কিন্তু ভাহার মধ্যে যে আন্তরিকভা ও আংলীলার প্রকাশ
পাইয়াছে তাহাই প্রবাসীদিগের বিশিষ্ট সম্পদ্।
শুনিয়াছি, অভাগনা-সমিতি বে-স্কল প্রাপ্তের নিকট ম্ল
ও শাগার উদ্বোধনের প্রাতার লইয়া গিয়াছেন, উ'হারা
স্মলেই প্রাসিগণের নামে সানন্দ সম্বতি দিয়াছিলেন।
বস্পাকট্রগণের এই স্বজনবাৎস্লা স্মানীয়াও মহাকরণীয়া।
সাতিভার আসার বিশ্বদির ব্রীলের অক্সাপোকে মাণ্ডতি
নিয়া গমনের পর, সভায় শ্রুচ্চ লব উনয় ও আ-বিদায়
মালোকদানে, প্রবাসী-বল্প-সাহিত্য-সাম্মেলনের প্রতিনিধিগণ,
বস্পাতিভার বিশ্বদির কাঠি—রপার কাঠির স্পাশ পাইয়া
গৌরবান্তিভ ইইয়াছন।

প্রীযুক্তা লেডী স্বকার ও প্রীযুক্ত বিমলানন্দ তর্কতীর্থ, কমাব বীরেক্তনাবায়ণ বায়, স্তাচরণ লাহা, নগ্রেক্তনাথ বস্ত্রণমিনীকান্ত রায়, নলিনীর্জন স্বকাব এবং অ'নন্দবান্তার সম্প্রদায়, সাংব'দিক-স্থ্রপ্রভাত সহদ্য ব্যক্তিগণ, প্রে'সী-দিগকে সামাজিক মেলামেশার স্থানা ও ভলে স্থাল ভলাগোগ দান করিয়া ও হাদের আনন্দবর্জন করিয়াছেন। প্রীক্তা স্বলা দেবীর ও তাঁহার ছাত্রীগাণ্য গান এবং অপ্রণা দেবীর গীর্জন বিশেষ উল্লেখ্যাগা। আছও ব'ঙ'লীর নিজ্ম স্পীত ব'ঙ'লীর ভাবে গান্ত হই ল সামাজিকগণের কিরপ্রপীতির উল্লেক করে, ভাহা ভিনি দেখাইয়াছন।

নে-দকল খ্যাত । মা দাহিত্যিক সভা উল্প্লুণ করিয়া ইনারতার পরিচয় দিয়াছেন প্রবাসী বাহলীগণ ওঁহি'দের কিলের প্রতি কতজ্ঞ। হয়ত তাঁহারা প্রবাস হঠতে দেশে ইপস্থিত হইয়া আ'রও অধিকসংখ্যক শ্রুতনামা সাহিত্যিক-শের উপস্থিতি দেখিলে ও তাঁহাদের সহিত সন্মিলিভ ইইব'র শুভ অবসর পাইলে অধিক আনন্দল'ভ করিতেন। অবগ্র কোনে সাহিত্যিকেরই পক্ষে অভার্থনা-সমিতির সদস্য হইবার বাধা ছিল না—দার অবারিত ছিল; সদস্য না-হইয়াও সাংগলনে উপস্থিত হওয়া সহক্ষ ছিল। তার, "আশার অস্ত নাহিক ঘটে," এই নীতিবাকা সর্বদাই অর্ত্রনা

প্রবাসী-বঙ্গসাহিত্য-সংখ্যলন যে-কোন প্রকংবে ত্রয়ে'দশ বংসর বাচিয়'ছে। এখন ইহ'কে কিরপে দীর্ঘজীবী 'ও ক'ৰ্যাকথী কৰা মায় ত'হা চিন্তা কৰিব'ৰ সময় আসিব'ছে। এরপ প্রতিগান এই নূতন। বঙ্গদেশ শেকত মহীয়'ন—বাংলা ভাষাব স্থান যে কত উচ্চ—ত'হ'র স'ধকগণ একনিই স'ধনায় সিকির প্রে কভদ্র অগ্রস্ব হইয়া-চেন, ত'হা প্রভোক বাঙ'লীব ও অব'ঙ'লীব বনিব'র ও বে: ঝ' ইব'ব সময় অ'সিয়'ছে। ভারত্যন্ত্র বৃদ্ধিচন্ত্র ববীন্ত্র-নাণ, অতলপ্ৰাদ, বিজেনল'ল, স্তোল্লনাণ প্ৰেম্প যে বাংলার ভয়গানে দেশকে মুগ্র করিয়াছেন —রামেলুস্তুনর, দীনেশ্চন্দ, নাগন্দ্রনাথ, সুনীতিক্ষার প্রায়ণ যে ভাষার প্রতিয়া স্থাপন ও খ্যাপন ক্রিয়'ছেন, ভাহা বাঙালীর গৌববের ও গর্কের ও অবাঙালীর পেশংসা ও অকুকরণের বিশ্য হটয়'ছে। অনেক অব'ঙ'লী অনুভব কবেন শে বাংলা ভাষার মর্যাদা অভ প্রচলিত ভাষায় এখনও আসে নাই। ব্লুফানে এম্-এ প্রীকায় মসু ভাষার হব'ত্তর ভাষা দ্বপে প্নীয় হ ওয়'য় ব''লা ভাষার বাণিক ভা আনক ব'ভিয়াছে। বিহারে ও কাশী-বিশ্ববিদ্যালয়ে ব'ংলার মধ্যাপনা হয়। সংযুক্ত-পাদশে প্রবাদী বন্দদাহিত্য-শংখ্যল নর পক্ষ হইতে চেষ্টা চলি ততে গাহ'তে ইহাকে বি এ পরীক্ষার পাঠ্য করা হয়। মাটিক, অ'ই-এ ও এম-এ পরীক্ষার ইহা পরিগণিত হ্টিয়'জে। প্রবাদে বঙ্গভান'র কয়গাত্র'য় দেশবাসিগণের সহক রৈতা, সহয়ে বিতা ও সহ'কুত্তি প্রার্থনীয়।

নিরভিমানে ব'ংল'র সকল সাহিত্যিকট, বাহিত্য না দিয়া, সাহিত্য দান করুন, ইহাই প্রাব'সী-বঙ্গসাহিত্য-সন্দ্রেলনের অংকাজ্মিত। এ বংসরের অভ্যর্থনা-সমিতি সে "বিবরণপথ্নী" সভাস্থলে বিতরণ করিয়াছিলেন, কাহাতে বিগত এক'দশ বর্বের অধিবেশনের উল্লেখ আছে। ইহাতে দেখা নায় যে প্রবাসে লক্ষপতিও বাঙালীগণ স'গ্রহে এই স্থোলনকে আহ্ব'ন করিলা নিজ নিজ কর্মভূমিতে জ্-তিন দিনের জন্তও মাতৃভাষার সার্ব্বিজ্বনীন সেবায় আত্মনিরোগ

করিছেল। তাহাদের কৃত কার্টোর কৃতকার্যাতা নির্ভর করিতেছে প্রত্যেক ভবিষাৎ অধিনেশনের উপর। এই দাদশ অধিবেশনাট পূর্নবর্ত্তী একাদশ অধিবেশনের সার্থকতা দান করিয়াছে। আগামী ত্রয়োদশ অধিবেশন এই দাদশটির নার্থকতা দিবে। বিগত বারোটি অধিবেশন প্রমাণ করিয়াছে প্রবাসী-বঙ্গদাহিত্য-সংগ্রেলন বাংলার বাহিরের ও অন্তরের। কান্ড শক্তিমান্ থাকিলেই শাখা-প্রশাখাও শক্তিমান্ হয়। মাতৃত্যির লাহিত্যিকগা বিভিন্ন মূল্ফরূপ থাকিয়া পারুতির যে রস ও প্রাণশক্তি আহরণ করি া কান্ডের ভিতর দিয়া শাখা-প্রশায় প্রেরণ করিবেন তাহাতেই নিকট ও দূরের প্রশাখা পল্লবে, তুলে, ফলে শোভিত হইবে।

প্রবাসে বিশেষরূপে এন্টুড একটি বাস্তবিক অস্থবিধার কথা উল্লেখ করিয়া তাহার নিরাকরণের উপায় ডিজ্ঞাসা করিতেভি। প্রবাদ হইতে সাহিত্যিকগণের আমন্ত্রকালে, হাঁহাদের সকলের নাম ও ধাম সংগ্রহ করা অতি কঠিন হইয়া উঠে। তাহার দলে অনিজ্ঞাকৃত আংশিক্ষাত্র ব্যক্তিগত আমন্ত্রণ ঘটিয়া থাকে। ইহার সংশোধনে কিরূপ সতুপায় হই:ত পারে? যদি বঙ্গদেশে একটি দাধারণ দাহিত্যিক কেন্দ্র প্রিগণিত হয় এবং তাহাতে সকল সাহিত্যিক অস্তর্ভুক্ত হন — বণা বঙ্গীয়-সাহিত্য-পরিষৎ— তাহা হইলে এক স্থান হই:তই এই সমস্ত পাওয়া নায়, অথবা উত্তমাঙ্গে লগ ঢালিলে তাহা যেমন সর্বাঙ্গে পড়ে সেইরপ কেন্দ্রে আমন্ত্রণ পঠিছেল উহা সর্বত্ত পৌচিতে পারে। তাহা যত দিন না-হইবে তত দিন সংবাদপত্ত্রে ও মাসিক পত্রিকায় সাধারণ ভাবে আমন্ত্রণ পাচানই সকলের নিকট নিবেদন জানাইবার একমাত্র উপায়**রূপে আলম্বিত হও**য়া ছাড়া গতান্তর নাই।

প্রবাদিগণের ভাষাদেবার একটা দিক এবারকার দম্মেলনে প্রস্টুই হইম ছিল। মূল সভাপতি ও বৃহত্তর-বঙ্গ-শাথার সভাপতি বাংলার বাহিরে বাবহৃত শব্দ হইতে ক্ষেকটি বাংলা শব্দের আগতি, বাংলা প্রথার সহিত অন্ত প্রদেশের পথার তুলনা ও পরস্পরের ভাষাগত আদান-পদানের সংবাদ দিয়া দেখাইয়াছেন যে বাংলা ভাষা, অন্ত প্রাদ্দে প্রচলিত—শুধু পৃস্তকগত নম্ন—জীবিত ভাষার সহিত কিরূপ সম্পুক্ত ভাহা অনুসন্ধানের যোগ্য। যে-সকল নিকট বা দূর প্রদেশে প্রবাদী বাঙালী আছেন, তাহারা যদি সেই

সেই প্রদেশের ভাষার সহিত বাংলা ভাষার, ভাবের বা প্রথার তুলনামূলক আলোচনার সামগ্রী পান, তাহা সংগৃহীত হইলে বাংলা ভাষার শব্দও সমাজতবের দিক দিয়া প্রচুর পুষ্টি হইবে। বঙ্গীয়-সাহিত্য-পরিষদের কল্পিত বাংলার প্রতি ক্লেণ্র ভাষার তুলনামূলক অধ্যয়নের মত, ভারতবর্ষের প্রতি প্রদেশের সহিত বাংলার সাদৃভ্যমূলক গবেষণা সমভাবে উপকারী হইবে।

প্রবাসী-বঙ্গদাহিত্য-সংশ্বলনের একটি খায়ী পরিচালক সমিতি আছে। নিতাকার্যোর ভার এই সমিতির উপর লাস্ত আছে। বার্ষিক অধিবেশন নৈমিত্তিক ব্যাপার। নীরব কর্ম্মী ডাঃ স্বরেন্দ্রনাথ সেন ঐ পরিচালক-সমিতির সভাপতি। তাঁহার তত্বাবধানে প্রবাসের বিভিন্ন স্থানের বাঙালীগণের সংখ্যা ও পরিচয় সংগৃহীত হইতেছে।

দাদশ বর্ষের মধ্যে প্রবাসীকে জন্মভূমি দর্শন করিতে হয়, নহিলে না কি তাহার দেশের সহিত সম্প্রবিচ্চতি ঘটে। প্রবাসী-বঙ্গমাহিত্য-সম্প্রেলন সে কর্ত্তরা পালন করিয়া আসিয়াছেন। যুগে যুগে সম্প্রেলন গৃতে ঘাইবেন, এবং একাদশ বংসর দেশবাসিগণ প্রবাসে তাঁহার সহিত মিলিভ হইবেন এরপ হইলে বঙ্গ ও প্রবাসের সম্পর্ক অবিচিন্ন পাকিবে। যে সম্প্রেলনে প্রবাসী বাঙালীর ও বঙ্গের বাঙালীর সাহিত্য বা একখোগ ঘটে তাহাতেই "প্রবাসী-বঙ্গমাহিত্য-সম্প্রকার সার্থকতা।

যাহারা প্রয়োজনাধিক আয়োজনে, আমন্ত্রণে ও আতিথ্যে, তবাবধানে ও সাহিত্যদানে, উন্থোধনে ও সম্বোধনে, অভিভাষণে ও ভাবণে, ছন্দে ও প্রবন্ধে, গানে ও কীর্ত্তনে প্রবাসীদিগকে ধন্ত করিয়াছেন তাঁহাদিগের মধুর শ্বতি প্রবাসী বাঙাদীগণের চিত্তে চিরজাগন্ধক থাকিবে।

শ্রীযুক্ত রামানন্দ চট্টোপাধাায় প্রতিনিধিগণের স্বাচ্ছন্দোর তত্তাবধানে প্রত্যেক প্রতিনিধির নিকট উপস্থিত হইয়ছিলেন। অনলস কর্মী শ্রীযুক্ত সুরেশচন্দ্র রায় কথনও সম্মুথে ও কথনও অন্তর্রালে থাকিয়া সকল ব্যবস্থা করিয়াছিলেন। শ্রীযুক্তন নরেশচন্দ্র রায় পুত্রের ঘোর অসুস্থতা সম্বেও আহারাদির সুব্যবস্থার ক্রটি করেন নাই। ভগস্বাস্থা শ্রীযুক্ত কেদারনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় বতক্ষণ পারিয়াছেন প্রতিনিধিনিবাসে শাসিয়া দেখান্তনা করিয়াছেন। প্রবীণ জলধর সেন মহাশন্ধ প্রতিকক্ষে নিত্য আদির। এবং সভার প্রতিকার্য্যেও সন্মিলনীতে উন্দেষ্টত থাকির। প্রতিনিধিগণকে আপ্যায়িত করিয়াছেন। স্থার যত্নাথ সরকার পুরংসর থাকিয়া তাঁহাদিগকে বিভিন্ন আমন্ত্রণস্থলে যাতায়াতের সতর্ক সঙ্গী ছিলেন। এই রপে রায় থগেন্দ্রনাথ মিত্র প্রমুথ অনেক বিশিষ্ট ব্যক্তি সঞ্জনের স্বাচ্ছন্যে আম্বনিয়োগ করিয়াছিলেন। তাঁহাবা সকলেই আম্বালিগের ধ্রুবাদার্হ।

শ্রীযুক্ত ব্রজেক্তনাথ ভদ্রের অধিনায়কত্বে সুকুমার বালক হইতে তরুণ খেচ্ছাসেবকগণ প্রতিনিধিগণের অক্রান্ত ও পর্যাপ্ত সেবা করিয়াছেন। অভিজ্ঞ কর্মী শ্রীযুক্ত ক্যোতিশ্চন্দ্র ঘোষের কলা কুমারী উমা ধোষ মহিলা-প্রতিনিধিগণের জল সর্বাদা উপস্থিত গাকিতেন। প্রতিনিধি-নিবাদের বৃহৎ প্রাদাদে চাবি বন্ধ করিবার ব্যবস্থা ছিল না, অথচ পুরুষ ও মহিলা প্রতিনিধিবর্গ নিঃশত্ম চিত্তে জিনিষপত্র ফেলিয়া রাখিয়া ঘাইতেন ও ফিরিয়া আসিয়া সকল বস্থই অস্থানে পাইতেন। স্বেচ্ছাসেবকগণের এরূপ সভর্কতা ও সকল আমোদ-প্রমোদে ঘোগদানে প্রলোভনত্যাগ প্রশংসাই ও স্বেচ্ছাসেবকমণ্ডলীর কর্ত্রপঞ্চের কর্মকুশলতার নিদর্শন।

সাবিত্রী

শ্রীঅমরেশ রায়

অগম নিফল মৃত্যু হ'তে মোরে রফা কর হে পাবিত্রি,—তব পুণ্য প্রেম-শিগা ধর, ক্রুন মোর জীবনের লফাহারা শৃত্ত অরুকারে বেথা পলে পলে কোন তৃপ্তিহীন বেদনার ভারে বিলুপ্তির ভত্মতলে মিশে বাই চিররাত্রিদিন পরম ব্যর্থতা ল'য়ে অগৌরবে—পরিচয়হীন! এস সেথা,—আনো তব দৃগ্য শুভব্রত, মৃত্যু মোর কর প্রতিহত; নৃত্ন জীবন কর দান

মোরে কর উজ্জীবিত পূর্ণ সভাবান !

বেথায় গহন বনতলে
নামহারা, রাজ্যহারা, একাকী বিফলে
ভ্রমিসু হেলায়,
স্পান্দিত পল্লব আলো-ছায়ার থেলায়;
আত্মবিস্থাতির মাঝে
ফিরিফ্ মলিন দীন সাজে!

পড়ুক তোমার জ্যোতি, যেন কোন স্বৰ্গ হ'তে খসা;

কাগায়ে আঁধার বনভূমি দাঁড়াইবে তুমি, জানিবে আমার নাম, কহিবে আমার পরিচয়, ঘটিবে সকল প্লানি ভীবনের সর্বা-পর্!জয়! সে দিন জাগিবে মোর হিয়া! ভার পর, হে গাবিত্রি,—শাবে কি ফিরিয়া আপন প্রাসাদ মাঝে:---হর্ম্মা-বাভায়নে বিচিত্র থটিত রত্র'দনে বসিবে নীরবে বাজিবে পূরবী তান সন্ধার উৎসবে ! হেথ: বনতলে চিত্ত মোর ব্যথা-দীর্ণ ব্যাকুল উছলে, উৎकर्श व्यक्तीत्र. বাগ্র আঁথি বিদ্ধ করে গছন ভিমির ;— সর্ব্য দেহে-মনে কোন ধর-অগ্নি করেছি বরণ, মুহুর্ণ্ড মুহুর্ণ্ডে সহি আতাত মরণ ! তবে এদ ত্বরা, হে সাবিত্রি, হও সমন্বরা! ভার পর দিনে দিনে তিলে তিলে মোরে করছ উদ্ধার: বিখের গৌরব মাঝে ফিরে দাও মোর অধিকার।



আলাচনা



"কোন্টি চান ?" শুণ্টীন সেন রায়

শী কৈ গোগেশচন্দ্র রায় বিধ্যানিধি মহালায়ের "কোন্ট চান ?" নামক থাকি পূর্ব প্রবাদর প্রতিবাদকারে শী কি মনিশচন্দ্র বন্দ্যাপাধায়, এম্-এ মহোনয় "কনিকাভা ও মফখালের কলেঙ্গনম্থর তুলনা" শীর্ধক শ্বাদ্ধ ব্যাদ্ধান তার্থার উল্লেখ করিয়াছেন, তাহারই স্মালোচনা প্রবাদ্ধানক্তি কথা বলা আবিগ্রুক মনে করি।

প্রথমতঃ বন্দেশিপাধ্যয়ে-মহাশয় মজিরমরূপ ভূতপূর্বে ভাইস্-চ্যান্দেলর হরাওয়ার্দ্দি সাহেংবর বক্তৃতা হটতে একটি অংশ ত্লিয়া লিখিলাছন যে মফপল কলেজে গুণী শিক্ষক নাই যত আছেন किनिका गरा । क्यांत्रीत्र मन्यूर्ग मजा जा मदास याथरे मान्यर शांकि लाउ না-চ্য ঠাহার পাণ্ডি চা ঝাড়াই স্থাপন করা গেল ৷ তাই বলিয়া একপা মোটেই সাধানা নধ গে ক্রিকাভার জ্বী অন্যাপকগণ ছাত্রদর নিকট আপনাদের বিভাগে বার সম্পূর্ণ সহাবহার করেন--কারণ বাহিরে ছেলে প্রান এবং ম্ঞান্ত কায়ে। উচ্চাদের আনেকেই বেশীর ভাগ সময় ব্যাপুত্র থাকিয়া নিজেনের অধ্যাপনা করিবার শক্তির ব্যতায় ঘটান—ফলে প্রসনে বক্তা বিত্র গারেন না। দ্বিতীয়তঃ, বন্দ্যোপাধায়-মহাশ্য অ'বও বলিয়াছেন যে মক্ষণ শহারর আবহাওয়া সাধারণতঃ জ্ঞান-পিপাসা বৃদ্ধি ও ভাহার ভৃষির পক্ষে অথুকৃল নয় এবং কলিকাভার গ্রন্থলা, পাঠশ্লে, সভা-সম্মেল ন ছাবগণ প্রতিদিন নিতান্ত স্থাবাধ বংল'কর মহ গোগদান করিয়া নিহা নূহন অহান লাভ করে। কিয় ইম্প রিয়াল লাই বরী, মিট্রিযাম ইত্যাদিতে যত ছাত্র যায় তাহার সহিত বিৰেমা হাউন, খেলার মাঠ, ও থিয়েটার দর্শক চাহদের সংখ্যা তুলনা করিলে বন্দ্যোপাধায় মহোদর আপনার যুক্তির সারবার বুরিতে পারিবেন। ইম্প্রিয়াল লাইব্রেরী ও মিউজিয়াম ইত্যাদি সং-প্রিপানে যে নিডক্তে নগ্রণ-সংথাক ছাত্র যোগদান করে ইহা আমর৷ থুব ভালভাবেই জানি, আর আমাদের মতা ঘটনার সহিত্ত কারবার করিতে হটবে। একেতে একটি উপমানেওয়ার লোভ সংবংশ করিতে পারিলাম না। কাহাকেও যুদ প্ৰস্কৃতঃ প্ৰশ্ন করা যায় যে সে কত ৰই পড়িয়াছে আরে সে যদি উধর নেয় যে ভাষার বাডিতে এক লক্ষ বই আছে, ভাব যে জাহাকে হাজ্যাম্পদ হইতে হয় ইহা সকলেই জানন। শীবুক অনিল বাবু ভাষার প্রবান্ধ আরও বলিয়াছেন যে মফম্বাল অধ্যাপকচাত্রর বাহিরে এমন লোক থব কমট থাবেন গাঁহাদের সংস্পার্শ, উপ দলে ও সাহাযো মানসিক উনুতি লাভ স্থাপর হয়। এঞ্চল উন্হার নিকট আমার ভিজ্ঞান্ত এই যে কলিকাভার ভারগণের মধ্যে কয় জন অব্যাপকচাকের महि ५३ वा छानात्वाहना करत्र ?

তৃষ্ণায়তঃ, বন্দ্যোপাধায়ে-মহালয় আকিও বলিয়াছেন যে মকসল কলেজ অনেক স্থান অনা স'র বাবস্থা এবং ভালরকম যন্থাদি না থাকায় অনেক ছেল কলিকাতায় যায়। আমরা জানি ভাল ডেলরাই অনাস'লয়। কাজেই মফসলে ভাল ছাত্র কদাচিৎ থাকে। সুদ্বাং অল্পবিদ্যু ছাত্র লইয়া কারবার করিয়াও যে মফসল কলেজ কলিছাতার আনক কলেজ ইইতে ভাল ফল করে ইহাতে কি তথাকার অধ্যাপকাণের কৃতিত্ব প্রকাশ পার না ? বন্দোপাধায়-মছাশর হেতমপুর প্রভৃতি কয়েকটি কলেজকে অপকৃষ্ট কলেজর অস্তভুক্ত করিয়ায়ে অবি বচনার কার্য্য করিয়াছেন তাহার প্রতিবাদকল্পে বঙ্গোলা-সরকারের ''Eighth quinquential Report on the Progress of Education'' হউতে কলিকাতার ও তথাকথিত উৎকৃষ্ট মফদল কলেজ ও হেতমপুর কলেজ ১ইতে শতকরা কত ছাব আউ-এ ও বি-এ প্রীক্ষায় ১৯০২ সনে উত্তীবিহিইথাছিল তাহা নিমে লিপিবন্ধ করিলাম :—

| · আই এ প র | ক্ষায় উৰু,ৰ্ণ | বি-এ পৰীক্ষায় উত্তীৰ্ণ | |
|----------------------------|----------------|-------------------------|--|
| কালেজ | শতকরা | শতকরা | |
| ং তমপুর | a 4.1 | ৬৮.৭ | |
| হগল। | es e | ৬৭.৫ | |
| রাজশাহী | 8 b. ? | ^:,6 | |
| ম্যমন সিংহ | ৩৪.৬ | હ ે.હ | |
| . वविशाल | : b. à | ৩৮.৩ | |
| ফেণী | 80.0 | | |
| মেদিনী পুর | , e | | |
| ফরিদপুর | e a . o | | |
| শীৰাম পুর | · • | | |
| সে ণ্ট পল্ স | 87.1 | | |
| কুমিলা | e 5.2 | | |
| বঙ্গবাসী | 88.p | د م. <i>د</i> | |
| সিটি | ৭৩.৬ | 82.2 | |
| রিপন | 12.0 | 80.6 | |
| আন্ত:তাৰ | € ₹.⊬ | 65.6 | |
| বিদ্যাসাগ র | 49.9 | 80.2 | |
| শং ক্ষত | | 6 ૨.૨ | |
| শং ক্ষত | | 65.6 | |

এ বিষয়ে আর কোন চিঠি ছাপা হইবে না। প্রবাসীর সম্পানক।

"বিক্রমপুর—একালে ও সেকালে" শ্রীকুমুদলাল গ স্থাপ্রধায়

গাঁচ ফান্তুন মাসের 'প্রবাসী'রে আড়িয়ল পলীমগুলের দশম বার্ধিক অধিবেশনে সভাপতি আদ্ধান্দ্দ শীযুক্ত রমাপ্রদাদ চন্দ্র মহালয়ের অভিভাষণ বাতির হইটাছে। তাহার পরিলিষ্টের একাংশে চন্দ্রমধানর লিখিয়াছেন—"আশা করিয়াছিলাম গত ২০ বংসর যাবং রাষ্ট্রীয় আন্দোলনের চেউ খে-ভাবে পলীসমাজ আন্দোলিত করিয়াছে, তাহার ফলে পল্লর ভত্তলোকেরা অন্ততঃ দলাদলি ভূলিরা এক্যোগে কার করিতে অভান্ত ইইটাছে। কিন্তু দেখিয়া ভূলিয়া আন্ধার ধারণা ইইয়াছে, লোকলিকার হিসাবে বিরমপুত্রর এই অংশে আন্দোলন নিফল ইইয়াছে। গ্রামা দলাদলির ফলেও বেলধ হয় অনেক হত্তাগ্য যুবকের পরকাল নই ইইডেছে। গ্রামবাসন্দের মধ্যে কেহ কাহাকে বিশ্বাস করিতে পারিতেছে না। কথার বলে

'আঁধার মরে সাপ, পুতরাং সকং বারেই সাপ'। এইরাপ সংশ্যাত্যু হুইয়া বিজ্মারের প্রায়ানা দ্বিদ্র ভদ্রেকেগণ এতিক ই দিন্যাপন क्रि: उट्डम। " विभ महास्य ११ ठ ३० वद्मः तत्र ताद्वीत्र व्यात्मालामञ्ज ফলে প্রার্থামের অধিবাদীরা দল-দলি ভুলিয়া একযোগে কাজ করিতে অভান্ত হয় নাই বলিয়া ছংগ প্রকাশ করিয়াছেন। এজন্ত আমরাও ছ:পিড। কিন্তু এই দে:ধটা কি কেবল পলাগ্রমেই দৃষ্ট হয়? (রমাপ্রদাদ বাবু বলেন নাই বা ইক্লিঙও করেননাই,যে, ইহা কেবল পলাগ্রামেই দৃষ্ট হয়।—প্রবাসার সম্পানক:) শহরে—-ध्यशाल भवत्यामाध्यत्र ८०१म निकानाकाश अधिक अधमत्र (लाएकत्र वामः रप्रथान । कि धहे भनान नि चा भी नाहरे कशायन, कनका बन्न, কর্পোরেশন প্রভৃতি হইতে আরও করিয়া স্থান্ত সভাস্মিতি প্রান্ত এই মহানৈকা এবং দলনেনির ভিছ্ন প্রস্তার বিভাগন। চলা-মহাশ্য নিশ্চণ্ট একথ। অস্কার করিছে পারবেননা এবং গভ ১৫ বন্দারর রাধীয় থানোলানর ফলে শহারর লোকেরা যাদ अक थाला कांक्र कब्रिट, अञ्चल्ड ना ६३४। थाटक, एटव एवं अव अवस्तातात्मक घाएँ व प्राप्त हालाहरत होले.व (कन १ लग्न (र महावद धावनीहें অপুকরণ করে। আরে এই জন্মই ননি লোকশিকা হিদাবে বিক্রমপুরের এই 'গংশে আন্দোলন নিঘল ১ইয়াছে বলিখা মনে করা যায়, তাব এই কারণেই কি শহরে এহা দর্থেক হইয়াছে বলিফ মনে করিছে হইবে ? (রমাপ্রদাৰ ববেু ইহাও ব'লন নাই বা ইঞ্চিত করেননাই।— প্রবাসার সম্পাদক ।) বর্ণমান আন্দোলনের ফলে দেশের অঞ্চল সেকালের লোকের চেয়ে একালের লোকের মধ্যে যদি সংসাহস, কর্মপ্রবাতা, নিভীকতা এবং স্বার্থত্যাগের পরিচয় প্রেয়া যায় তবে বিন্মপুরের এই অংশের লোকের মধ্যেও যে এই স্ব ভ্রের অস্ভাব নাই ভাহা লেখক মহাশয় যদি ভাহার বিবল অবগরের মধ্যেও ক্ট ব্রিয়া একটু অনুসন্ধান ক্রিটেন, তবে আশাক্রাযায় দিনি এ•টা ছঃবিত হইডেন না। আমা দলাদলির ফলে িনি ব্রু নুবকের পরকাল নষ্ট ইইবাছে বলিয়া মনে করেন। হিনি নিশ্চয়ই ''অন্তর গে' আবদ্ধ যুবকদিগের এবং যাখাদের উপর পুলি সর নজর পাছে, ভাহাদিগকে উদ্দেশ্য করিয়া এই কথা লিখিয়াছেন। বঙ্গণেশের সমস্ত শহরে এবং প্রাথামে উজ প্রকার যুবকের সংখ্যা যে প্রচর ভাহা অবগুট প্রবীণ লেখক মহ'শর অবগত আছেন। সর্ব্যাহই কি এট সলাসলিব খনিবার্যা কারণে এই সকল বুককের এই অবস্থা ঘট্টয়াছে বলিয়। তিনি মনে করেন? যদি তাহা ন'-হয়, ভবে এখানেই বা ভাষা হইবে কেন[়] গভৰ্ণমেট কি প্ৰকারে গোয়েন্দা দ্ব'র' সংবাদ সংগ্রহ করিয়া এই সকল যুবককে অন্তরীণে আবিদ্ধ অথবা পুলিসের নজরবন্দা করেন, তাহা সাধারণ পলাবাসীদের ধারণারও অভীত।

ইংহাদের দানর আধানে লেখক মহাশয় ফুদ্র প্রাথানে শুভাগনন করিয়াছিলেন, তাহাদের প্রশংসায় তাহার অক্ষয় লেখনী সার্থক ইউক, ইহাতে কাহারও আপত্তি নাই। কিন্তু চিনি যদি এই প্রশংক অবাস্তর কথার অবভারণা করেন, তবে তাহা একান্তই ছংখের বিষয় হয়।

"বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রশ্নপত্র"

প্রীবিজয়কুমার গঙ্গোপাধাার

কান্ধন মাসের 'প্রবান'তৈ শীকুল বাবু সনৎকুমার সিংহ বাংলা ভাষার প্রথপত্রে প্রথনিক ইংরেজীতে করা হয় বলিয়া আপত্তি করিয়াকেন। আপত্তির প্রধান কারণ 'বিঙ্গান্তায় এলন কিঃং পরিমাণে সমৃদ্ধিলালিনী হইগ্রাতে। বিধিবিস্থানায় এল ভাষারও পরাক্ষা হয়, 'দিন-সব ভাষার মধ্যে সবস্থলি না হউক অনেকস্থলিই 'কিয়ং পরিমাণে সমৃদ্ধিলালিনা" সে সব ভাষার প্রথপব্য সেই সেই ভাষায় লেখা হউক বলেন নাই। বি.শ্ব সংস্কৃতের প্রথনিক সংস্কৃতে করা হউক ও উব্রস্থলি সংস্কৃতি করা হউক

ইংলও, ফুল্ম ও জার্গ্নিতি সেই সেই ছেলের ভাষা ছাড়া অস্ত ভাষার প্রথপুত্র সেই দেশের ভাষাতেই ইইবার সঞ্চাবনা।

ইংরেজ রাজভাষা, বর্তমান কালে ভারত্ব্যের lingua franca, বিশ্ববিজ্ঞালয়ের সা লেগা-পড়া, কাজকথা ইংরেজাতে হয়। ইংরেজাত্ত সঙ্গ ফরসেন ব' জাখান ভাষার তুলনার অর্থ বুঝা যায় না। বিশ্ববিজ্ঞালয়ে সব প্রথাই ইংরেজাতে হওয়া ঠিক বলিয়ামনে হয়।

"বাঁকুড়ার পুরাকৃতি-রক্ষা"

গ্রীপুগলকিশোর চট্টোপাধ্যায়

ষান্ত্ৰৰ সংখ্যার 'প্ৰবাসং'তে মাননায় শ্ৰীমুক্ত যোগে**গতক্ৰ রায়** মহাশয় 'বাকুড়ার পুরাকুতি-রক্ষ' সম্বর্দ যাহা লিপিয়াছেন তাহা পাঠ করিয়া বাঁকুডাবাদীর মধ্যে কাহার মনে না আনন্দ হয়? বাশ্ববিকই বাঁবড়া প্রভাৱন-অনুধানর একটি কেন্দ্র ২ওয়া বিশেষ আবগ্যক! কত শত অমলা গ্ৰন্থ ও পুথি যে বাক্ডা হইটে খিলু দেশে স্থানান্তবিত হইয়াছে, বাকুডার কত পুরাতন শিলামূর্ত্তি যে বিভিন্ন ক্রেলার সম্পদ বুদ্ধি করিলাছে সাহা চিন্তা করিয়া বিশ্বনবিঠ হইতে ২য় । এত্দিন যে বাকু দাবাদী উপেক্ষা করিয়া কাল কাটাইয়াছেন দেৱস্ত ভাঁহাদের ষ্পেই ক্ষতি চইয়াছে, সাক্ষ নাই। এখনও সময় আছে। এখনও বাক্ড়া জেলার অধিবাদী ও প্রবাদী সকলকেই বাক্ডার সারস্বত-সমাপ্লকে কেন্দ্র কবিয়া পুরাকৃতি-রক্ষার আয়োজন করিতে ২ইংব। শীবুক ব্যোগেশচন্দ্র রায় মহাশয় যে প্রভারত্বন-অনুষ্ঠানের অনুযোজক হট্যা এ অমূলা প্রস্তাব দিয়াছেন তাংগর জন্ম বাকুড়াবাসী সকলেই কুতজ্ঞ । বাক্ডায় অলেশহিংশী দানশীল এমন অনেক ধনী অধিবাসী আছেন ধাহার৷ উক্ত প্রসাব মত ২৫০০০ আনামা:সই দান করিয়া অক্ষয় ক.ব্রি গ্রাপন করিতে পারেন।

ভারতের প্রায় প্রত্যেক প্রাণ-শই বাঁক্ডার অধিবাসী দনী প্রবাসী হইয়া বাস করিতেছন; ভাহাদেরও এ ওড:58।য় যোগদান করা অবগ্রকর্ত্তা।

নিশীথে ডাকিল কে!

শ্রীমমিয়কুমার ঘোষ

কগাটা বীণাও শুনিল।

দরাশ রাশ্নথেরের পৈঠার উপর পা তুলিয়া বলিতেছিল—
আনলে খুড়ী আজ রাইগড়ের হারনে কবরেজের ওগানে
গ্রেছনুম। ওব্ধ আন্নুম। ওব্ধ ত ধাওয়ানো হচ্ছে
কিন্তু মেয়েটা সার্ছে না কেন কে জানে! মেয়েটার চেহারা
বা হয়েছে খুড়ী ভানলে? ঠিক এমনি, পাট-কাঠির মত—

দরাল তাহার হাতের একটি আঙুল উঁচু করিয়া দেখাইল। তাহার পর বলিতে আরও করিল—সেই যে গো দেবার আখিন মাসে বিটি আরও হ'ল! মেয়েটা কিছুতেই গুন্লে না—জলে ভিজে ভিজে ঘাটে গা পুতে যেত রোজ ছটি বেলা। তার পর সেই যে জরে ধর্লো আর ছাড়ছে না।

রাশ্লাবরের ভিতর হইতে মোক্ষদা দেবী দয়ালকে কি বেন বলিলেন। কিন্তু বীণা ভাহাতে কান দিল না। সে আন্তে আন্তে সেখান হইতে উঠিয়া চলিয়া গেল। ঘরে আদিয়া শুক্নো কাপড়শুলি অ'ঙ্লে করিয়া কোঁচাইতে কোঁচাইতে বাহিবের দিকে ভাকাইল।

থাকিত। কিছু ক্ষণ পরে বিমলা আদিয়া আত্তে আত্তে ঘরের শিকল নাড়িত। সে চুপি চুপি দবজা খুলিয়া ভাহার দহিত বাহির হইয়া গাইত।—তুপুববেলা পাড়ার পণ নির্জ্জন। তাহারা ছই বন্ধতে থিড়কী পার হইয়া কিচে' পুকুরের পাড়ে বেথানে একটা সন্ধিনা গাছ ঝড়ে মইয়া পড়িয়াছে দেইথানে গিয়া বসিত। তার পর ত্-জনায় কত কথা—।

বীণার এখনও মনে পড়ে…

ঠাৎ তাহার চিন্তাস্থতে বাধা পড়িল। বিনয় স্নান করিয়া আসিয়া বলিল—ওগো একখানা কাপড় দাও ত।

বীণা স্বামীকে কাপড় দিয়া ঘর হইতে বাহির হইয়া গেল।

বেলা হইয়া গিয়াছিল। কিছু ফণ পরে বিনয়
আসিয়া থাইয়া গেল। তাহার পর সরকারদের অনেকে।
তাহার পর মেয়েরা থাইয়া লইল। তুপুরবেলা বীণার
নিরবচ্ছিয় অবকাশট্কু যেন ফ্রাইতে চাহে না! সে
আত্তে আত্তে ছাদে চলিয়া গেল। ছাদের আলিসার পাল
হইতে দ্রে অনেক দুর দেখা যায়। রৌদ্রে চুল মেলিয়া
দিয়া সে দেবিতে লাগিল চাধারা বিলের ধারে পাট
কাচিতেছে। এখান হইতে শক্ষ লোনা যাইতেছে ধপ্
ধপ্
ধপ্
ভাজের রৌদ্রে একটুতেই মাথা ঘুরিয়া যায়।
বীণা একটু ছায়ায় আসিয়া দাঁড়াইল। তুপুরবেলা সমস্ত
বাড়িটা নিজ্জীব, নিস্তর। তাহার মনটা কেমন শৃন্ত
হইয়া পড়ে। বিমলার কথা মনে পড়িত। কিন্তু রায়
আসিয়া অন্ত কথা পাড়িল।

রাণু বাঁণার ছোট ননদিনী। বীণা ভাহাকে একটা কাজে পাঠাইয়াছিল।

রাণু বলিল--- দিরে এসেছি বৌদিদি। দাদা বললে---আচহা আচহা আমার মনে আছে, তুই এখন যা!

কথাটা শুনিয়া বীণার মনে হইল তাহার এইরুপ

করা উচিত হয় নাই। হয়ত বৈঠকখানা-ঘরে নব্দেব বলিতেছে—গত সনের একটা মাস মাপ ক'রে দাও দাদামণি! খামারের যা হ'ল! এবাব থেকে আলু থেয়ে থাক্ব। আরু ভোমার ধানের চায় নয়!

বিনয় হাসিয়া বলিতেছে— সে কানি না। খড়ের দামটা ওতেই কাটান গেল।

সরকার-মশাই কানকোঁড় খতিয়ানে কলমের খোঁচায় কিসি টানিতেছেন। থস্ থস্ শব্দ হইতেছে। এমন সময় রাণু গিয়া চিঠিখানি দিল। চিঠিখানি দেখিয়া বিনয়ের কান লাল হইয়া উঠিল। সরকার-মশাই একবার চশমার ফাঁকে বিনয়ের মুখের দিকে তাকাইয়া লইলেন। ছিঃ! ছিঃ! বীণার লজা করিতে লাগিল। সরকার-মশাই বুজাে মানুষ, বিনয়কে এ বাড়িতে হইতে দেখিয়াছে, আর তাহারই কাছে…।

রৌদ্র এবার বেজায় চড়া হইয়া পড়িয়াছে। ছাদে আর বদিয়া থাকা যায় না। রাণু চলিয়া গিয়াছে। ... বীণা ছাদ হইতে নামিয়া আসিল। আপনার গ্রে আসিয়া আন্তে আন্তে আঁচল হইতে চাবি লইরা আলমারী খুলিল। আল্মারীর ভিতর তাহার কাপ্ড-চোপডগুলি গোছানই ছিল তবুও তাহার মন উঠে না। দেওলি আবার নামাইয়া গোছাইতে লাগিল। হঠাৎ একথানি কাপড়ের ভাঁজের ভিতর তাকাইয়া—'যাঃ, কাপড়খানা রং লেগে একদম গেছে ⊶কি ক'রে লাগ্ল ?'—বীণা তংড়াতাড়ি কাপড়ের ভাঁজ খুলিয়া ফেলিল। ভাঁজ খুলিয়া ফেলিতেই তাহার ভিতর হইতে ফদ করিয়া একটি দিন্দুরের কৌটা বাহির হইয়া পড়িল। কাপড়ের ভিতর দিন্দুর পড়িয়া গিয়া লাল হইয়া গিয়াছে ! বীণা ছ-হাতে কোটাটি তুলিয়া শইল। কিন্তু ওকি ? স্পষ্ট বাহিরে কাহার কণ্ঠমর শুনিতে পাইল। হা, ঠিক তাহারই কণ্ঠন্মর বটে। বীণা চোপ বুদিয়া ফেলিল। দে এমনি করিয়া চোখ বুজিয়া থাকিবে। ঐ ে দে ঠিক ওনিতে পাইল--

> 'রাঙাদিদি থোকার মা আমি না এলে গেয়ো না!'

বীণা বেশ চাপিয়া চোধ বৃদ্ধিয়া ফেলিল। বিমলা আদিয়ানা ভাহার চোধ টিপিয়া ধরিলে সে খুলিবে না। একদিনের কথা তাহার মনে পড়িল। উঃ, সেদিন যা বীণা ভয় পাইয়া গিয়াছিল। তাহার এখনও মনে আছে। তুপুর-বেলা দালানে কেহ নাই। রায়াদরে বড় ণিসিমা নারিকেল পাতা আর পাঁকাটি পোড়াইয়া রায়া করিতেছেন! তাহার একটা তীব্র গদ্ধ আদিতেছে। একলা দালানে বিসমা থাকিয়া বীণার কেমন যেন গা ভম্ ছম্ করিতে লাগিল। দালানের একদিকে বহু চাল-বোঝাই বস্তা পর্বত-আকার নাজনৈ ছিল। হঠাৎ তাহার মান হইল কে খেন তাহার ভিতর হইতে নড়িয়া উঠিল। ভায় তাহার আকর্ঠ শুকাইয়া গেল। একবার ভাবিল দৌড়াইয়া রায়াণরে পলাইবে। কিছু সে অনেকগানি পথ। দরদালান পার হইয়া রায়াঘরে দৌড়াইয়া পলাইবার সাহস তাহার ছিল না। ভয়ে আড়াই হইয়া গেল ব্রিয়া সে বিসমা ছিল এমন সময় আবার—

ब्राङानिनि (थोकांत्र मा, आमि ना खल (याद्या ना ।

তথন বীণা ব্ঝিতে পারিল। 'উ:, বিমলা এমনি ক'রে ভর দেখাতে হয়!' আজও ভাবিল সে আদিয়াছে। কিন্তু আজ সে চোধ বৃদ্ধিয়া থাকিবে। সে চোধ বৃদ্ধিয়া বদিয়া রহিল। সে স্পষ্ট বিমলার আঙ্লের স্পর্শ পাইল। সে ডাইার চোগ টিপিয়া ধরিল। বীণা ছই হাতে তাহার হাত তথানি ধরিল। হাত ধরিয়া সে বিশ্বিত হইল—একি বিমলা, ডোর নরম হাত তথানা একি হয়েছে। ইম্!

বিমলা বলিল—কানিস্না ব্ঝি সেগ যে তেরে বাবার অহথ কর্তে কলমি:ছঙা গেলি। তার পর যে জর ধর্ণ আর কিছুতেই সারল না। কত সালসা, কত পাঁচন খেলাম, সব র্থা গেল। তুই ব্ঝি আব কোন খবর রাথিস্নে?

বীণা উত্তরে কিছু না বলিয়া চুপ করিয়া রহিল। সভাই বিমলাকে চিনিবার জো নাই! কি চেহারা ছিল ভাহার— কি হইরাছে! চুলগুলি উস্কথ্যু, মুখধানি মলিন। রোগে মাত্যকে ভূ-দিনেই এতথানি বদলাইয়া ফেলে! বীণার মনে ভারী হঃধ হইল। বিমলা ভাহার কভ আপন ছিল। খণ্ডববংড়ি আদিয়া সে এক জন সমবাধী বন্ধু পাইয়াছিল বটে, কিন্তু অস্থ করিয়া সে যেন কত দুরে চলিয়া গিয়াছে। ভাহাকে আর দেখিতে পায় না। ভাহার

বড় একলা-একলা ঠেকে। মিশিবার মত বাঁণার এখানে আর কেহ নাই।···

···শশশুড়ী ডাকি:তছিলেন—বউমা! ওমা এ কি মেরে তুমি! এই মবেলার ভূঁরে শুরে থাকে বাছা? উঠে পড়, উঠে পড়।

ধড়মড় করিয়া বীণা উঠিয়া বদিল। কিন্তু কোথায় বিমলা, কোথার কে! বীণা আলমারী হৃদ্ধ কাপড় বিছাইয়া মেবের আঁচল বিছাইয়া কথন শুইয়া পড়িয়াছিল। তাহার অলক্ষ্যে কথন বেলা বহিয়া গিয়াছে। দুরে নারিকেল-বনের মাথার উপর বেলালেবের রৌড কাঁপিতেছে। বীণা লজ্জায় পড়িল। তাড়াভাড়ি উঠিয়া পড়িয়া দে কাপড় গুছাইতে লাগিল। শাশুড়ী বলিয়া গোলেন—দেখ মা, অমন অবেলায় আর ঘুমিও নি। অবেলায় ঘুমুলে গা ভারী করে!

* * * *

हाक रम दिन प्यामिश्राहिन।

উঠানে দাঁড়াইয়া সে বলিতে জিল— আমি আবার তেমনি সেমনা ছেলে থুড়ী! আমি আর সেদিন সারারাত পুমুনুম না। জেগে বসে রইনুম। তোমার বউমা আমাকে শোনালে। জানলার কাছ্কে এসে তিনবার কুক্ফলে 'হাফ! হাফ! হক্ষ!!' আমি কোন জবাব দিহু না। তার পর আর এক পোয়র বাদে একবার, তার পর আবার, এটা কি ভাল কাছ হচ্ছে খুড়ী। দ্যালদার এটা করা সম্গীন হল প্

মোক্ষদা বলিলেন—সভিচ হাঞ্চ, দয়ালের এ কাজ ভাল হচ্ছে না। মেঞ্রে অত্থ, ডাক্তার বলি দেখাও। তানর এ সব ধাবার কি! তুকফুক আমি দেখতে পারি নে বাপু।

হারু আবার দ্বিগুণ উৎসাহের সহিত বলি:ত আরম্ভ করিল—তা জান না বুঝি খুড়ী, হারান কবরেজ যে একে দি.রছে? ব.লছে বাচ.ব না। তাই কোথা থেকে এক সাধু বাবাকে এনেছে। ধুব তুঞ্চুক হচ্ছে। হুম বাগ হচ্ছে।

তাহার পর কানের কাছে মুব আনিয়া ফিন-ফি**ন্** করিয়া যাহা বলিল তাহার মশ্মার্থ এই:---

রাত্রিদশটার পর সাধ্বাবা হোমে বসেন। হে'ম শেষ করিয়া তিন প্রহরের সময় একটি ডাবের মুখ কাটিঃ। জল বাহির করিয়া শুক্নো ভাবটি হাতে করিয়া বাহির হৃত্যা যান। তাহার পর নিজের স্থিধানাফিক কাহারও বাড়ির সম্মুখে গিয়া তাহার নাম ধরিয়া ভাকেন। যদি সে সাড়া দিয়া ফেলে ত, তখনই শুকনো ভাবের ভিতর জলের তরক্ষ ফুটিয়া উঠিবে। সেই জল রোগীকে খাওয়াইবে। কিন্তু যাহার নাম ভাকা হইল সে সেই রোগে আক্রান্ত হইয়া ভগিয়া মবিবে।

কথাটা শুনিয়া মোক্ষদা দেবী অবাক হইয়া গেলেন। তঁংহারই বাজ্রি পাশে আগ্রীয়স্কনের মধ্যে এক জন হইয়া দ্যাল এ কি আতেক্ষের স্থাই করিল। ধরে বিদিয়া সৃষ্থ শরীরে স্বাইকে প্রাণের ভয়ে কাঁপিতে হতবে, এ কি অস্তায় কথা।

কথাটা ক্রমশঃ অনেকের নিকট রাষ্ট্র হইরা পড়িল।
মোক্ষদা দেদিন বীণাকে ডাকিয়া বলি.লন—বৌমা, আজ
থেকে আর তোমার খাটে গিয়ে কাজ নেই; নব্নে
বাল্তি ক'রে জল তুলে এনে দেবে, ভাতেই চান ক'রো—

বীণা আশ্চর্যা হইয়া বলিল—কেন মা, কি হয়েছে?

তিনি বলিংলন—নামা দিন-কাল ভাল নয়। ডামা-ডোলের দিন বাত স থারাপ। হারুর বউকে বাতাস লোগছে, আজ ছ-দিন সে হ'ত-পা থি'চে পড়ে আছে। মুখে স্থল দিছেনা—দাঁতে কুটো কাউছেনা, দে এক কাও!

বীণা অবাক হইয়া গেল। 'বাতাস লেগেছে!' ষে বাতাস পাতার পাতার করুণ মার্মার তোলে, হেনার শারে দোলন দেয়, যে বাতাস ভ্বন ভবিয়া চড়াইয়া আছে, সেই বাতাস মান্যের মনের ভিতর অলক্ষ্যে আবার কি প্রভাব বিস্তার করিতে পারে!

বীণার উপর মোক্ষদা দেবীর নকর অ'ছে।

তিনি বধ্র সন্ধরে বিশেষ কারণে উদ্বিগ্ন ভিলেন।
বীণার হেলেবেলা ইইতে কি এক বদ স্বভাব সে গুমাইতে
ঘুমাইতে অনেক সময় চলিয়া বেড়ায়। কখন কখন আবার
ঘুমাইতে ঘুমাইতে 'উ.' করিয়া সাড়া দিয়া উঠিয়া বসে।
বেন কে তাহাকে ডাকিয়াছে। বিনয় তাহাক ত্-একবার
ধরিয়া ফেলিয়াছিল। একদিন বেশ মনে পড়ে রাত্রিবেলা
কে বেন ধড়াস করিয়া দরকা খুলিয়া বাহির হইয়া গেল।

সে উঠিয়া দেখিল তাহার প'শে বধুনাই! তাহার ঘোর সংলহ হইল। তথন বাহিরে গিয়া দেখে ছাদের সি ড়িটির দরজা থোলা। তাহার ভিতর হইতে শুল্ল গ্রেয়ার থানিকটা আংসিয়া পড়িয়াছে। তাড়াতাড়ি সে ছাদে উঠিয়া পড়িয়া দেখিল বীণা চোধ বৃদ্ধিয়া ছাদে আলিসার পাশে গিয়া দাঁড়োইয়া আছে। এক দিনের ঘটনা মোফদা দেখী বিনয় ক শুনাইয়াছিলেন—গভীর রাত্তে তিনি দরজা খুলিয়া বাহিরে ঘাঁহতেছিলেন, হঠাৎ দেখেন দরজার পাশে বধু এক গ্রাম কল লইয়া দাঁডোইগা আছে।

— ওমা, বউমা তুমি এত রাজিরে দাঁড়িয়ে?

বীণার স্থপনের আমেজ ভাঙিয়া গেল। সে ব**লিল—** ভূমি ধে এল চাইলে মা খানিক আগে, ভা**ই** জল নিয়ে এনুম !

তিনি অবাক হইথা গেলেন। বুমাইতে বুমাইতে স্থানের মধ্যে হয়ত তাহার মনে হইয়াছে শাশুড়ী জল চাহিয়াছেন, তাই জল লইয়া আসিয়া দাঁড়াইয়া আছে। আশুর্যাঃ!

এই সমস্ত কথা স্মরণ করাইয়া দিয়া একদিন খেস্ফদা-দেবী পুত্র বিনয়কে বলিলেন—ওরে সভাগ হয়ে শুস; বউ যেন রাত্রিরে কাফুকে সাড়া দিয়ে ফেলে না।

বিনয় বলিল—কই মা, আজিকাল ত আর সে রকম করে না। সে অসুধ সেরে গেছে।

তিনি বলিলেন—সেরে বাক আবার ধরতে কতক্ষণ!
শুনিস নি বুঝি আবার কি হয়েছে। তোকে বলতে তুলে
গেছি। দয়ালদের বাড়ির পূব দিকের ঐ তেমাতাটা দিয়ে
আর ইটেস নে। আজ সকালে গয়লা আসে নি, হাককে
ভাকতে যাচ্ছিলুম গাই হয়ে দেবার হজে—দেখি তেমাভার
ওপর থেজুর-গাছ্টার গায়ে কে একটা ঘট বেধে রেখে
গেছে।

বিনয় শুনিয়া বলিল—তাই না কি! আমারও সেদিন নজর পড়েছিল। দয়ালদার বাড়ির পাশ দিয়ে বাচ্ছিলুম, দেখি রাস্তার মাঝখানে কে থানিকটা চুল খুত্রুড়ি দিয়ে ফেলে রেখে গেছে। তথুনি আমি গিয়ে দয়ালদাকে ডাকলুম। সাড়া পেলুম না তাই, তা না হ'লে সেদিনই এক5োট হ'য়ে খেত। মেয়ের অসুধ, ডাক্তার-বৃদ্যি দেখাও, ভানয়। তুক্তুক আবার কি! মোক্ষদা ইসারা করিলেন—বীণা আসিতেছে, শুনিতে পাইবে। কাজেই বিনয় অন্ত কথা বলিয়া চলিয়া গেল।

আখিন মাস পড়িয়া গেল। পূজা এবার মাসের মাঝেই। বোধন বসিয়াছে। পটুয়ারা রোজ তুপুরবেলা উৎসাহের সহিত ঠাকুর গড়িতেছে। নিস্তন্ধ ঠাকুর-দালানটি প্রাণ-প্রাচ্যে মুখর হইয়া উঠিয়াছে। ছোট ছোট বহু ছেলে-মেয় আসিয়া হড়ো হইয়াছে। দালানের এক পালে বহুৎ কাদা ভিজান হইয়াছে। এক জন কাদা ঠেসিয়া মাধিতেছে। আজ হইতে কাঠামোর গায়ে কাদা দেওয়া হইবে।

বীণার আজকাল অবকাশ কম। তুপুর বলা পটুয়াদের বাইবার সময় তাহাকে দাঁড়াইয়া তদ্বির করিতে হয়। সকালশেলা ফলেরা মাঠে ঘাইবার পূর্কে উঠানে আসিয়া বদে।
তাহাদের স্বাইকার কোঁচড়ে মুড়ি ঢালিয়া দিতে হইবে।
মাঠে বসিয়া বিশ্রামের সময় তাহারা থাইবে—দে কান্ডের
ভারও বীণার উপর। কান্ডেই সারা দিবসের মধ্যে বীণার অবকাশ অত্যন্ত অল্লই।

দক্ষার কিছুক্ষণ পর হইতেই হঠাৎ সেদিন বৃষ্টি আসিল।
বীণার কাজ সারিয়া জাসিয়া শুইতে, যে রাত্রি হইল,
পাড়াগাঁর পক্ষে তাহাকে ভারী রাত্রিই বলিতে হইবে।
ঘরে আসিয়া বীণা দেখিল বিনয় পরিপ্রাপ্ত হইয়া বেঘারে
ঘুমাইতেছে। চারি দিক নিস্তর্ধ। শুধু যা জলপড়ার ছড়
ছড় শব্দ হইতেছে। এলোংমেলো ব'তাস বহিতেছে।
জানশাশুলো তাহার ধাকায় মাঝে ম'ঝে হুমুহুম করিয়া
উঠিতেছে। ঠাণ্ডা হাপ্রায় গোয়াল হইতে গরুপ্ত লা ভাবিয়া
উঠিতেছে। বীণা বেশ শুনিতে পাইল। ভাহার পর সে
কুলন্ধীতে প্রদীপ্তির সলিতা টানিয়া দিয়া শুইয়া প্রিল।

গভীর রাত্তে তংহার মনে ইইল কে যেন তাহার দরজা ঠেলিয়া ডাকিতেছে। আতে আতে উঠিয়া সে দরজা খুলিয়া ফেলিল। কিন্তু কাহাকেও ত দেখিতে পাইল না! দরজা বন্ধ করিয়া দি.তছিল এমন সময় আশার দেই

> 'রাঙ'দিদি থে'কার মা আমি না এলে শেয়ো না—'

বীণা অবাক হইয়া গেল। আবার সেই হাত্ময়ী বিমলা আসিল কি করিয়া! তার ত আর সেরপ নাই। মাবার পূর্বের 🕮 কিরিয়া পাইর:ছে; বীণা ভাহাকে চিনিভেই পারে নাই। না চিনিবারই কথা।

বিমলা হাসিয়া বলিল—এত রাতে দেখে গ্রাঞ্হয়ে গেছিস না বীণা? কিন্তু কি ক'রে দিনের বেলা আসবো বল্? জানিস না বুঝি আমার আক্ষকাল তোলের বাড়ি আসা বন্ধ—রাভিরে স্থকিয়ে—

বিমলার অত্থ দারিয়া গিয়াছে এথচ ভাহাকে আদিতে দেওয়া হয় না! এইবার বীণা সমত বিষয় পরিষ্কার ভাবে ব্ৰিতে পারিল। দে ব্ৰিতে পারিল এই কারণেই **एथन** শাওড়ীকে বিশলার কথা জিজ্ঞাদা করিত তথনই তিনি নয় দে-কণা উল্টাইয়া দিতেন আর নম্ম বলিতেন-- যাক্রেগ মা ওসব কথা! তুমি পরের বউ—লরের কথা বল! পরের কথায় কা**জ** কি খামাদের।…শশুড়ীর উপর দারুল বিতৃষ্ণার তাহার অস্তর ভরিয়া উঠিল। বিমলা বলিল-চলু বউ, এক ভাষুগায় যাবি ?...বীণা বলিল—যাব ? এত রাত্রে আবার কোপায় थाव ?...विमला विलन-- हल हिलमादी द हलाद शाद वर्वात्र वानि वानि क्यांक्न कू उ আছে। नित्य आपि ल याहे!

'কেয়াতুল' ! পৃথিবীর মধ্যে বীণার নিকট সর্বাংশক্ষা প্রিন্ন বস্তু এই কেয়াজুল। বিমলা পূজে তাহাকে কত এই কেয়া-क्ल थानिया नियारः। किन्छ विनमानित क्ला रय अथान হহতে বহুদুর। দেখানে কি এই দক্ষিণ বর্ধায় নিশাণ রাত্রে ধাওয়া যায় ? কিন্তু দিনা বিমলা ছাড়িল না। সে তাহাকে জোর করিয়া টানিতে টানিতে শহরা চলিল। খর ছাড়াইরা, গভী পার হর্যা ভাহারা পথে আসিয়া নামিল। তথনও বৃষ্টি পড়িতেছে। দাকে। বৃষ্টির মু:খ কুলবধুর আর সে বেশবাস বহিল না, বোমটা ভাহার থসিয়া পড়িল-খব্দের বসন নুটাইতে লাগিল। তীরের ফলার মত ভীক্ষ বৃষ্টির বিন্দুগুলি তাহার প্রকামল অঙ্গট বিন্ধ করিতে লাগিল। কিন্তু কি এক অজানা নেশার ঘোরে সে इंटिएं नाशिन। विभना विनन-'वडे भाष्ट्रिम ना शका ঐ যে কেমন স্থার কেয়ার গন্ধ আসছে!' সভাই বীণার মনে হইতে লাগিল দূর-দূরাস্ত হইতে মাঠ পার হইয়া মাতাল কেয়াগন্ধের বক্তা আদিতেছে। কি ফুল্মর দে গন্ধ। ৰীণার প্রাণ আকুল হইয়া ওঠে। কিন্তু অনভ্যস্ত পদক্ষেপে আর কত ক্ষণ সে ছুটিতে পারিবে ? বার-বার সে বিমলাকে বিজ্ঞাসা করিতে লাগিল—কোথায় রে! আর কত দুর? विमना विनन-'ओ (य सन तिथा वाष्ट्र, ओ ज सना!' কিছ বীণা কিছুতেই দেখিতে পাইৰ না। বিমলা ভাহাকে ভীম-বলে টানিয়া লইয়া চলিল। সে ক্রমশঃ নিস্তেজ হইয়া পড়িল। কিন্তু তবুও টলিতে টলিতে চলিতে লাগিল।… শেযে সত্য সত্যই তাহার সমুথে কেয়াবন আসিয়া দাঁড়াহল। হাজার হাজার কেয়াকুল কুটিয়া আছে। সপ্ত বর্ণায় সাত হইয়া তাহারা আকুল গন্ধ বিকীর্ণ করিতে.ছ। পাগণের ন্তায় বীণা বনের ভিতর নামিয়া পড়িল। কাদায় তাহার পা ভূবিয়া গেল। কাঁটায় তাহার অঙ্গ কাটিয়া ছড়িয়া রক্তাক্ত হইয়া উঠিল। তবুও সে আরও ঘন বনের ভিতর টুকিতে লাগিল। কিনের নেশায় ভাহাকে পাইয়া বসিয়াছে বেন! হটাং ভাহার পায়ে কটু করিয়া কি বেন কামড়াইয়া দিল: তীব্র বাতনায় কাতর হুইয়া সে ডাকিয়া উঠিল---'বিমলা, ও বিমলা! দেখুত কি কামড়াল' কিন্তু কোথায় বিমলা ! সে চারি দিকে কোখাও বিমলাকে দেখিতে পাইল না। সে বভূগণ মিলাইয়া হিয়াছে। এমনিতর এগহায় অবস্থায় পড়িয়া সে ভয়ানক ভয় থাইয়া গেল। কেয়াবনের পাশেই জলার কালো জল। বর্গার আকাশের জলায় যেন ভাহা আরও কালো মনে হইতেছিল। সেই নিকে ত কাইয়া তাহার মনে হইল বুঝি ব্ধায় জলার এল লক্ষ ঞিহবা বাড়াইলা, প্রাবশ বলায় ভাহার দিকে ছুটিয়া আদিতেছে! ভয়ে, দংশনের অসহ বরণায় সে কাতরাইতে লাগিল। নিত্তম রাত্রে, বিদ্দা জলার ভটটিতে তাহার আকুল কালা ক্রমণঃ নীরব হইয়া আদিতে লাগিল।

সেই রা**তে**র শেখে…

বৃষ্টি থামিয়া গিয়াছে। আকাশে চাদ উঠিয়াছে।
কাহারা হ্লারিকেন হাতে শইয়া তাড়াতাড়ি যাইতেছিল।
একটা ঝোণের কাছে আদিয়া তাহারা দাড়াইল। ঝোপের
ভিতর হইতে ঠক্ ঠক্ শব্দ আদিতেছে। এক জন বালতেছে
— 'সরল দেখে কাট হে, নই:ল কাঁখে লাগবে—' আর
এক জন কি বলিল ঠিক বোঝা গেল না।

শঠন-হাতে লোকগুলিকে দেখিয়া ভাহাদের মধ্যে

এক জন বলিল—'কেও—ে যায়?' 'আমরা—' 'ও বীণু দা, এত রাতে—?' 'দবকার আছে—তোমরা এখানে কেন?' 'আজ দ্যালদার মেয়েট মারা গেল কি না— বিমলা গো—!'

কথাটা শুনিবার সঙ্গে সঙ্গেই বিনয় থানিকটা দুর অগ্রসর হুইয়া পড়িল। দুরে মাঠের দিক হুইতে কে ভাহাকে আলো নাড়িয়া সঙ্কেত করিতেছিল। সে সেইদিকে গিয়া পড়িলে নব্নে ভাহাকে বলিল—'পাওয়া গেছে দাদাবাবু অশার ধারে —'

বিনয় তাড়াতাড়ি জলার দিকে চলিল—দেখানে পৌছিয়া সে দেখিল হাক কেয়াবনের ধারে কলের দিকে তাকাইয়া বদিয়া আছে। বিনয় আদিয়াই জলেব ভিতর ন:মিয়া পড়িতেছিল, কিন্তু খণ্ করিয়া হাক তাহার হাত ধরিয়া কেলিয়া বলিল—দাঁড়াও, দাঁড়াও, নেম না! এবার দশহারায় মা'র পুজো দাও নি। দেগুতে পাচছ না, জলের ভেতর কি ?

বিনয় একবার জলের গারে আসিয়া দাঁড়াইল। তাহার পর হাতে তুড়ি দিতেই সেটি মিলাইয়া গেল। সে ঝপ্ করিয়া জলে নামিয়া বীণাকে টানিয়া তুলিয়া আনিল।

সে অক্ষে থার লাবণ্য নাই। বি:ব্র ক্রিয়ায় অক্ষ নীল-বর্ণ হইয়া উঠিয়াছে। সেই দিকে তাকাইয়া বিনয় বলিল—
বা হারু, শিগ্লীর রজন-ওঝার বাড়ি যা। বাড়ি চিনিস
ত ? ত:ড়াতাড়ি থাসবি। দেরি করিস নি খেন!
হারু ছটিতে ছটিতে চলিয়া গেল।

ভারতে নিমুজাতি-সমস্থা

শ্রীসুকুনাররঞ্জন দাশ, এম-এ, পিএইচ-ডি

বহুবৰ্গ পূনের বড় ত্রুখে কবি লিপিয়াছিলেন :--

হে মোর তুর্তাগা দেশ, যাদের করেছ অপ্যান অপ্নানে ২০১ হবে ত্রোদের স্বার স্নান গ নালুযের অধিকা ত বঞ্চিত করেছ যারে, সন্মুখে গাঁড়ায়ে রেখে তবু কোলে দাও নাই স্থান অপ্নানে হতে হবে ভাহাদের স্বার স্থান ॥

ভধন প্রায় কেহ কবির এই পেদোক্তিতে দাড়া দেয়
নাই। তার পর যথন ভারত বহু ঝড়ঝঞার মধ্য দিয়া আদিয়া
আপনার অবস্থা কতকটা বুঝিতে পারিল, তথন কেহ কেহ
এই নিম্ন্নাতি-সমস্থা সম্বন্ধে অল্লবিস্তন্ন সংক্ষা
উঠিল। কিন্তু সে-চেতনাও ক্ষীণ, একান্ত বিল্পনা হইলে
সে-চেতনা জাগে না। অগচ এই সম্পার সম্থান না
ইংলে ভারতের মুক্তি স্পুর্পরাহত।

ভারতবর্ষের সমাজে উচ্চ-নীচ, স্পৃগ্-অস্পৃগ্, আচরণীয়-অনাচরণীয় শইয়া বিচার যে অনুদারতার স্থাই করিয়া আসিয়াছে, ভাহা একাস্ত শোচনীয় বিষয়। এই বিচারের ভিত্তিতে যে-সামাজিক কুপ্রাথার উদ্বব হ্রয়াছে, তাহা ভারতবার্যর সনাতন প্রথা ত নহেই, হিন্দ্পায়ের নিত্যসিদ্ধ বিধিও নহে। অথচ এই নিয়ন্ত্র তথা পাতিতা আমাদের সামাজিক জীবনের সহিত এমন অঙ্গাসী ভাবে জড়িত হইনা রহিয়াছে, যে, উহার প্রাণ্যাতী পীড়নে সামাজিক জীবন পঙ্গুও ক্লিষ্ট ত হইগাছেই, উহার সহজ গতিবেগ একেবানের স্তব্ধ হইনা গিয়াছে: তাই পাশ্চাত্য দেশের এক জন মনীয়ী ভারতবার্যর মান্যকে এক প্রকার শ্বতব্ জীব বিশিন্না আখ্যা দিয়াছেন—নিত্যাত বাজভাবি, সে ওরু আপনাকে গ্রম্পর হইতে বিচ্ছিন্ন রাগিতেই বাজ—বর্ত্তমান হিন্দ্রমাঞ্চে বিভেদনীতি এতই প্রবশ্ধ সমস্যাটি কিরপ ভ্রাবহ হইন্না উঠিয়াছে, তাহা এই একটি কথা বিশ্বেল ব্রমা যাইবে যে, ভারতের অন্ধাবিক সংখ্যার হিন্দু অম্পৃত্য বিশ্বা ত্রথাকণিত উচ্চদ্বাতি হিন্দুর নিকট গণ্য হইনা আসিতেছে।

অবগ্য ইহাও স্বীকার করিতে হইনে, বে, দমাজের ক্রম-বিকাশের ধারায় স্তরবিভাগ অবগ্যস্তাবী: রাষ্ট্র ও সভাতা গঠনের একটা প্রধান উপকরণ ক্রেতা ও বিজিত জ্ঞাতির

বৈষ্মা। আর এই বৈষ্মায়ে ভারতবর্ষের অতীত যু গর ইতিহাসের জাতি-বিভাগের মূল তাহাও অস্বীকার করিবার উপায় নাই। নবাগত শুক্লবর্ণ আর্য্য ও আদিম কুফাবর্ণ অনার্যার বিরোধই আহার বিহার ও যৌন সম্বন্ধে স্বাতম্মের সৃষ্টি করিয়াভিল। ইউরোপীয় জগতে রাষ্ট্ররপ যুদ্ধ-বিগ্রহকে আশ্রেয় করিয়া বিকাশলাভ করিয়াছে বলিয়া সেখানে জেতা জাতি বিপিত সমাজ হইতে চিরকালই আপনাকে বিচ্ছিল রাখিলছে। ইউরোপের মধাযুগের 'শিভা'লরি'র (chivalry) উৎপত্তি এইগানে। আমেবিকার প্রছাত্য়েও খাল পর্যান্ত অভিজাতবর্গ ও কনস'ধারণের বৈষ্মা সমান অকুর রহিয়াছে। সেখানে নিপ্রোদি গর প্রতি নির্মান সামাজিক নিগ্রহ প্রাজা-তান্তর একটি ছরপ্রের কল্প। জাদেনীতে মণাযুগে সামরিক তেনি বাবসায়ী, শিল্পী ও র্যকের বে ভেদবিভাগ ডিল, তাহা এমন একটা ভাদামঞ্চা দমাজে ভাগাইয়া রাথিয়াছে, বাহার ফলে শ্রমিক-বিপ্লাবর ইতিহাসে জাম্মেনীতে কার্লমার্কসের এত প্রভাব হুইয়াছিল। শ্রেণীটেডন্ত দেখানে ইউরোপের অন্য দেশের বহু পর্বের জাগিয়া উঠিয়াছিল এবং আগও তাহা পাশ্চাতা দেশের ভবিষ্যৎকে অনিশ্চিত রাগিয়াছে। আর ক্রশিয়া দেশে এই অসামঞ্জন্য এমনই অনহাহটয়া উঠিয়াছিল যে, উহার ফলে একটা প্রচণ্ড বিপ্লব সংঘটিত হুইল। রুলিয়ার এই বিপ্লব এখনও শান্ত হয় নাই, সামাজিক অসাম্যস্যা দূর হইয়া কিরূপে আবার নুতন সমাজ-বিশ্বাস দেখা দিবে তাহার নিরূপণ করিবার এখনও উপায় নাই। সমগ্র ইউরোপগভেই এখন ভাঙাগড়ার পালা চলি গছে, ব্যবসায়ী ও ধনীর প্রভারের পরিবর্তে শ্রমণীবীর প্রভুত্ব ইউরোপের সমাজভিত্তি শিথিল কবিয়া দিতেছে।

ভারতবর্ষ ও চ্নীনদেশের অতীত ইতিহাসে সামাজিক স্তরবিভাগ মৃদ্ধবিপ্র হর দ্বারা তত অধিক নিমন্ত্রিত হয় নাই। তাই মৃদ্ধের জী লাগে প্রীস ও রোমের ভার ভারতের সমাজে তত পরিচিত নহে। পরিবার, কুল, ভাতি ও শ্রেণীর প্রসার ও সমবায়ে প্রাচ্চা সভাগায় রাষ্ট্রের উৎপত্তি ও বিকাশ বলিয়া ভারতে আর এক প্রকার শ্রেণী-বিভাগ জন্মলাভ করিয়াছে। কর্ম্ম, ক্রিয়া ও ব্যবসায় হিস'বে শ্রেণী-বিভাগ দেই কারণেই ভারতের আদিম বর্ণবিভাগের সহিত

মিশ্রিত হুহয়াছে এবং চিরাচরিত শান্তিপূর্ণ কুযিবৃত্তির অনু-শীলানর ফলে এক দিকে যেমন শাস্ত্রথক্তা ব্রাহ্মণ জাতির অধিকার প্রতিষ্ঠিত ও ৯ জন্ম রহিয়াছিল, অপর দিকে তেমন অগণ্য অনাচরণীয় ও অস্পুখ্য জাতির সৃষ্টি হইয়!ছিল; ইহারাই কুঘিকশের নিয়ন্তরের কার্যা চালাইয়া আসিতেছে, যণা চ:মার, নমংশুদ্র, জালিক, ভু'ইম:লী, ঈড়ভ, পুলেয়া, মাহার প্রভৃতি। চীনদেশে আমাদের <u>ব্রাহ্মণ ছাতি</u>ব স্থায় মাণ্ডারীণ জাতির শ্রেণ্ড সাভাবিক, কিন্তু ভাবতবর্ষের মত সেগানে সমাজ এত শতধাবিভক্ত নহে, সেগানে বিবাহ-'বচার নাই, অন্ন-বিচার নাই, সামাজিক নির্যাতন নাই। চীনদেশে নে-কেছ শিক্ষাদীকা লাভ করিয়া ম'গুরীলের পর্যায়ে উন্নীত হই ত পাবে: কিন্তু ভারতবর্ষ হই ত ব্র'শ্লণত্বলাভের অমুরূপ অধিকার বহুকাল লুপ্ত হইয়া গিয়াছে। বর্তুমান কালে এর-বিচার ও স্পর্শ-বিচারের ভ্রান্ত বিশ্ব স অনেক সময়ে যে কিরূপ অনৌক্রিকতার প্রাশ্রম দিতেছে, নদি এখন ত'হা ভাবিয়া না দেগা বায়, তাতা হইলে এদেশে সভা, লায়ও প্রেম আর অকুর থাকিবে কিনা সন্দেহ।

সর্বাংশেকা শোচনীয় ও লভাজনক বিষয় ভার তর পাতিতা-পথা। নিয়শ্রেণীর যে হলুচি ও অম্ভাতা ভারতবার্যর সামাজিক ভীবান নিন্দা ও গুণার মূল কারণ, তাহা অপরিহার্যাভাবে এ দশে থাকিয়া গিয়াছে। বাংলা দেশে এই পাতিতা-প্রাগার বন্ধন নানা কারণে কতকটা শিথিল হইলেও মান্তাহ ও রাজপুতানা প্রদেশে সে-বন্ধন বিশেষকাপেই কঠার রহিয়াছে। দক্ষিণ-ভারতে, বিশেষতঃ মালাবাবে, ইহা কি নিদারণ সামাজিক নিগ্রহের কারণ হইয়াছে ভাহা বহু লেখক অতি কর্ষণভাবে বর্ণনা করিয়াছেন—সেবর্ণনা পাঠ করিয়া কোন্ হিন্দু লক্ষায়ও বেদনায় মন্তক অবনত না করিবন ?

অগচ এই তথাকণিত নিম্ন ও পতিত জাতির মধ্যে ভারতবর্ষের অধিকাংশ লে'কই অন্তভ্তি; ত'হ'রাই সমাজের মৃলভিত্তি। কাতির এত বড় একটা অংশকে চিরক'ল পঙ্গু করিয়া রাখা সমাজের পক্ষে কিরূপ আত্মবাতী বাপোর তহা বলাই বাহলা। ইহার কিরূপ নিদ্দেশ বিষময় ফল হইয়াছে, ত'হা বলিয়া শেষ করা যায় না। এই সকল তথাকথিত নিম্প্রেণীর লোকই সামাজিক নির্যাতনে

পীড়িত ও অতিব হুইয়া ধর্মান্তব গ্রহণ করিয়া হিদ্দুসমাজকে হীনবীয়া করিয়া দিতেছে। উচ্চশ্রেণীর হিদ্দিগের নিয়-শ্রেণীর শোকের প্রতি ছ্বিনীত ব বহারের ইংা অপেকা তীব্র নিকাবদৈ আর কি হুইতে পারে।

ভারতের তথাক্থিত নিমন্থাতিং নানা প্রকার অপ্রবিধা ও সামাজিক বাধার ম ধা জীবনবাপন করিতে ছ: তাহারা শিকাবিবরে বথেষ্ট হবোগ পার না, ভাহাদের নৈতিক উন্নতিবিধানের প্রিধা অল্প, তাহাদের রাজনীতিক ক্ষমতা স্কীর্ণ, ত'হারা সামাজিক বিধ'নে পঙ্গু এবং ভাহানের ধর্মাণক ন্ত ক্রিয়াকলাপ বাধাপাপ্ত। ভাছারা অধিকাংশ স্থানের অশিক্ষিত, অথচ উচ্চকাতির অব হলায় তাহাদের শিক্ষার স্বাবস্থা নাই বলিয়া, ভাহারা নৈতিক বিশয়েও তেমন উন্নতি কবিতে সমৰ্থ নহে। সূত্রং যে-যুগে রাগনীতিক বোগাতা, এধিকার ও ক্ষমতা স্কলই বচল-পরিমাণে শিক্ষা ও সংস্কৃতির উপর নির্ভর করে, দে-সুষোগে শিক্ষার অভাবে তাহারা যে রাজনীতি ক্রে নানাবিধ অত্বিধা ভোগ করিবে, ইহাতে বিশ্বায়র কি আছে? তাহারা স্মা.জর কংয়ার বিধি-নিয়েধের শৃঙ্গলে এমনই আবন্ধ যে কোন দিক দিয়াই তাহারা মুক্তির আন্ধাদ পায় না। ধর্মানুঠানেও তাহার। তেমনই বাধাপ্রাপ্ত, জগৎপিতার সারিধা হইতে তঃহারা বলপূর্কক অভায়ভাবে বিতাড়িত। এই সমও বাধা ও নির্ধাতনের ফলে তাহারা তাহাদের সধর্মী উচ্চশ্রেণীস্থ প্র তৃব:র্গর প্রতি বিমুগ ও মমত শুলা, এবং এই বৈরিভাব এছান্ত স্থাভাবিক। একই ধর্মের উচ্চ ও নিমুত্ই শ্রেণীর মুধ্য এমন বিরোধের ভাব দমাকের পক্ষে কত দূর অকল্যাণকর, তাহা আর ব্রাইবার প্রায়াজন হয় না। বর্তমান সময়ের অস্পুশ্ ভাত্তির মন্দিরপ্রবেশ-আন্দোলন কেবল এক দিক দিয়া সমাক্ষের এই অকলাণে দূর করিবার একটি সামান্ত উপায়। কিন্তু এই বাাধি এত সরল নহে, ইহা অবেও অনেক জটিল এবং ইহার প্রতিবিধানের উপায়ও বহুমুনী।

তথাকথিত নিম্নগাতির সমুম্মন বাতিরেকে ভার তর জাতীয় উন্নতি সুদ্বপর হত। যেমন, কোনও একটি অঙ্গের পৃষ্টির অবংহলায় সমগ্র দেহের পৃষ্টি অসম্ভব, সেইরূপ এক সম্প্রদায়ের যথেষ্ট উন্নতি না হইলে সমগ্র জাতির উন্নতির চেষ্টা নিফল; এবং ভারতের হিদুর্বাতির দামাজিক ভিত্তি এমনভাবে গঠিত যে এক সম্প্রদার অনু সম্প্রদায়ের সহিত অঙ্গাঙ্গিভাবে সম্বন্থ এবং এক মন্তের উপর সম্প্র নির্ভরণীল। মুভরাং হিন্দুর এইরপ সামাজিক গঠনে একুলত শ্রেণীর সমাক উন্নয়ন বাতীত সমগ্র ভাতির উন্নতিসাধন অলীক কল্পনা মাতা।

জত'তে কালে হিলুসমাজ নিয় ও পতিত জাতির উল্লয়নের ব্যবস্থা করিয়াছিল —বর্ণত্রাহ্মণ ও পুরোহিত-সম্প্রদায় উহা দের শিক্ষা-দীক্ষার ভার গ্রহণ করিয়াছিল, শিব ও শক্তি পুজা তাহাদের আদিম গাছ, পাথর ও স্থাপুড়াকে রূপান্তরিত করিয়াছিল, ভ'হাদের মধ্যে অপক মাংসভক্ষণ নিথিদ্ধ হইয়াছিল, নিমুজাতির নেতাকে রাজবংশী, উগ্রহ্মতিয়, ব্যাগ্রক্ষবির প্রভৃতি আখা দেওয়া হইয়াছিল, পুরাতন 'টোটেম' (totem)-এর পরিবর্ত্তে গোত্রের প্রভাব ও বিবাহ-বিচার দেখা দিয়'ছিল। এইর:প নানা উপায়ে নুতন বিধিনিথেধের বলে যে কত নিমুজাতি শৌচাচার লাভ করিয়া হিল্দমান্তের গণ্ডীর মধ্যে সহজে অতর্কিত ভাবে প্রবেশাধি-কার লাভ করিয়াছিল তাহার ইয়ভা নাই। এতাত যুগে হিদ্ধর্ম ডলা না বাজাইয়া এইরপে আপনার সংস্থারসাধন করিয়াছিল। দেই জ্বলুট ইহা আরও ছংখের বিষয় যে, হিন্দুদমাজের এই কলা।ণকর অনাড়ম্বর প্রচার ও প্রদার কার্য্য আর সেইরপ কল্যাপের পথে চলিতেছে না। যাহা অফুট, যাহা প্রতিরুদ্ধ, তাহাকে জাতীয়তার নূতন আদর্শের প্রেরণায় প্রাক্ষ্ট ও প্রথর করিয়া তোলা আমাদের সমাজের প্রধান কর্ত্তর । উচ্চভাতির মনোভাবের পরিবর্তনের উপর নিয়ক্ষাতির উন্নয়ন নির্ভর করিতেছে। উচ্চজাতির লোকেরা আপনাদিগকে পতিত জাতির অবস্থাপর মনে করিয়া কইয়া যদি কার্যা ক্ষত্রে অগ্রন্থর হয়, তবেই অ'স্তরিক সহানুভূতি দিয়া তাহারা নিয়জাতির প্রাকৃত উন্নতিসাধন করিতে পারিবে, নতুবা ক্রতিম চেটায় কোনও স্ফলের আশা নাই। কেবল বক্ততা বা সভাস্মিতি তে মন্তব্যগ্রহণ এ সমস্থার বিশুমাত্র সমাধান করিবে না। কর্মা,ক্ষত্তে অগ্রসর হটবার মহানু সুযোগ উপস্থিত হইয়াছে। মহালা গান্ধী প্রাণের আবেগে আন্তরিকভাবে হিল্পমাজের নেতৃগণকে এই কর্ত্ত:বার দিকে আহ্বান করিয়াছেন। সেদিন ত তিনি সুস্পষ্ট ভাষার বলিয়া দিয়াছেন, নিমু ও পতিত জাতির

উন্নয়ন না করিলে স্বরাঞ্লাভ অসন্তব ও অলীক। নিন্ন ও পতিত লাতিরও একটি কথা স্বরণ রাখিতে হইবে; কেবল পরম্যাপেক্ষী হইলে চলিবে না, অনেক স্থলে তাহাদের আগ্রনির্ভরণীল হইতে চেষ্টা করিতে হইবে। সর্ক্রপ্রথমে তাহাদিগের মধ্যে যে কতকগুলি কুপ্রথা ও কু-অভ্যাস আধিপতা বিস্তার করিয়াছে, উহাদের প্রভাব হইতে তাহাদিগকে মুক্র হইতে হইবে, তাহাদের মনে রাখিতে হইবে যে বাস্তাবক যোগ্য না হইলে কেহ কোনও বিষয়ের অধিকারী হয় না। হিংসা বা ধ্যে কোনও উচ্চ কার্য্য সাধিত হয় না, প্রেম ও বোগ্যতার মাস্থ্য উন্নতির পথে অগ্রসর হয়।

এখনও ভারতের স্থানে স্থানে দমাজের সেই প্রাচীন স্কীবতা বর্ত্তমান রহিলছে, এখনও প্রেম ও স্থার্ভুতির ধারা মন্তঃশ্লিলা কন্ধনদীর মত প্রবাহিত হইতেছে। উৎকট ভেদনীতির প্রভাব সংরও এখনও মাল্রাজের এনেক গ্রামে গ্রামা পঞ্যেতে নিয় শ্রণীর লোকেরও বিচার করিবার অধিকার আছে, গ্রাম্য উন্নতির জন্ত গে-সকল কার্যোর অত্ঠান হ; তাহাতে নিয়:শ্ৰীর লোকেরাও চাঁদা দিয়া থাকে, নিয়-শ্রেণার ভগবতী-পুদ্ধায় মহিষের মূল্যের জন্ম ব্রাহ্মণগণও অর্থ দিয়া থাকে। জাতিপঞ্চায়েৎ যেমন কুন্ত কুন্ত উচ্চ-নীচ ক্ষাত্তির আমারক্ষার সহায়ক, তেমনই প্রাম-পঞ্চায়েতে বিভিন্ন কাতির ক্রিয়া ও স্বার্থের সমবায় সাবিত হয়। বৃদিও আধুনিক কুপ্রথা ও কুরীতি এই সমবায়কে বথেও লাঞ্ডিত করিয়াছে, তথাপি এই সমবায়ই ভারতের সনাতন প্রথা, নিতাসিদ্ধ রীতি। নির ও উচ্চ কাতির মিশন ঘটাইতে হইলে এই সমবায়কে পুনরায় জাগাইয়া তুলিতে হইবে। জেলায় জেলায়, মহকুমায় মহকুমার, গ্রামে গ্রামে এই সমবায় বাহাতে শুধু বারোয়ারী পূজায় নহে, নিরশ্রেণীর निक्षां १ दानिकान्य, विद्यानागात, कृषि । निष्ठ সমবায়ের অনুঠানে নৃতন মূর্ত্তি লাভ করে, তাহার জ্ঞ্ নুতন করিয়া দেবা ও সামোর বাতা প্রচার করিতে হইবে।

এই ভারতেই কবে কোন্ অতীত যুগে প্রথম রবির কিরণ-সম্পাতের সঙ্গে সঙ্গে তপোবনে ত্রন্ধজ্ঞাসার প্রসঙ্গে সামামন্ত্রধনিত হইয়াছিল, তাহার অনুরণন এখনও থামিয়া যায় নাই। সেই সামামত্যের ছারাই বৈযমোর মধো ওদার্যা, অসামঞ্জের মধ্যে সমন্ত্র ফিরিয়া আসিবে। যুগে युल इंडिशन (म महत्क श्रीनवीर्य) कतिया नियाहि; বিদেণীর সংস্পর্শে হৃতগৌরব ভারতবর্ষে আত্মরকাকল্পে কঠোর বিধানে বিবিনিংযধের লোহশুঝলের প্রয়োজন হইয়াছিল, তথন আতীয় বিশুদ্ধিরক্ষা-নিবন্ধন ক্রিয়া ও কর্ম্ম পরিত্যাগ পূর্মক জন্মবিচার জাতি-বিভাগের ভি**ত্তির**পে কল্পিত হইয়াছিল, তথন বীরাচারের বন্তায় প্লাণিত ও নানা বিদেশীর আচার-ব্যবহার ও মহাযান বৌদ্ধ ধর্ম্মের ফুর্নীতির প্রকোপে জর্জ্জরিত দেশকে বাচাইবার জন্ত বিবাহ-বিচারের দারা সমাজ্ঞিতি রক্ষার আবেগুকতা হইয়াছিল, তথন মেচ্ছ-সংস্পর্শ হইতে রক্ষাকল্পে ধর্ম্মনিদরে কঠোর পর্যাবেক্ষকের কার্য্য প্রবর্ত্তিত হইরাছিল। তাহার পর কত যুগ অতীত হ্ইয়াছে, কখনও কুফ, কখনও বুদ্ধ, ক্ষমও রামারুজ, ক্ষমও ক্ষীর, ক্ষমও চৈত্র ভারতে অবতীর্ণ হইয়া প্রেমের দারা এই অধিকার-ভেদকে থকা করিয়াছেন, লাভি-বৈব্যার মূলে কুঠারাঘাত করিয়াছেন, প্রীতির ধারা সামাজিক শৃভাল ভাঙিতে চাহিয়াছেন এবং সমবেদনা ও সহাকুভূতির দারা উচ্চ ও নীচের প্রভেদ ঘুচাইতে অগ্রদর হইয়াছিলেন। আবার এখন নৃতন শিক্ষার আলোকে বৈষম্যের অন্ধকার দুর করিয়া সাম্যের আসন প্রতিষ্ঠিত করিবার সময় আসিয়াছে, পাঞ্চজন্ত-নির্ঘোষে ভারতবাসীকে কর্তব্যের পথে অগ্রসর হইবার আহ্বান আসিয়াছে। সে-আহ্বান প্রত্যাখনন করিলে হিন্দুর বাঁচিবার আর উপায় থাকিবে না, তাহার শক্তি গম্ব হইবে, তাহার সুধ-মৌভাগ্য চিরতরে অন্তর্হিত হইবে। "বছ বর্ষ পূর্বের কবির সাবধান-বাণী বন্ধনিৰ্ঘোঘে বাজিয়া উঠিয়াছিল:---

শতেক শতাকা প্রেম নিমে লিরে অসন্মানভার
মাপ্ষের নারাহণে তব্ও কর না নম্মার !
তব্ নত করি আবি
নেখিবারে পাও নাকি
নেমেছে ধুলার তলে হান পতিতের ভগবান্,
অপমানে হতে হবে সেখা ভোরে সবার সমান ।
দেখিতে পাও না তুনি মৃত্যুদ্ত দাড়ায়েছে ছারে,
অভিলাপ আঁকি দিল ভোমার জাতির অহকারে!
সবারে না যদি ডাক,
এখনো সরিয়া থাক,
আপনারে বেধে রাগ চৌদকে জড়ারে অভিমান—

মুড়ামাৰে হবে তব চিডাছম্মে সবার সমান ঃ

এই প্রবংশর ঐতিহাসিক উপকরণ অধ্যাপক ডক্টর রাধাকমন মুখোপাধ্যায় প্রথাত "বিষভারত" গ্রন্থ ইইতে সংগ্রন্থ করিয়াছি।

সে-কালিনী ও আধুনিকা

খ্রীঅপরাজিতা দেবী

ভ্নেছিন্ত, নারী প্রাচীন ভারতে
ক্ষরবৃগা ধরেছিল বথে —
দত পলাইতে প্রিয়তমন্ত্।
কাবো কেবা তা রচে নাই কহ ?
পদগতি নয় রথগতিশলা !—
ঘাজো বত কবি গাহে দেই লীলা !
মণিগর-প্রা—গৃহিতা নাজাব,—
কবে শগে দম্ পিঠে ত্রভার,
প্রথের বেশে ভূটেডে বথন,—
গজগামিনী কি ভিল সে ভথন স পদগতিবৈগ কে নেপেছে ভার
দেব ববে থাঁজেছে শিকার ?—

মতীতে একদা ধন্ তরবারি
ধরেছে শুনেডি একাবিক নারী!
অবপুর্তে ছুটয়াতে বেগে,—
গেয়েছে নেচেছে নিশি নিশি জেগে।
দেখেছি তাদেব কুঞ্চগলিতে
ক্ষিপ্রচরণে একাকী চলিতে।
হুর্যোগ-রাতে গভীর আঁধারে
কত সাহসিকা গেছে অভিসারে।
মরালগামিনী,—হ'লে প্রয়োজন
মুগগামিনী কি হন্ নি তথন :—
গোড়ে না হোক্ আর্যাবর্তে
হেন বীরনারী ছিল এমর্টো।

সেই গজ্ঞ-বাজী-রথ-পথ যুগে
কবি কালিদাসও গিয়ে.ছন ভ্গে।
নূপুরহীনার চপল চরণ
করে.ছ সমানই হলমহরণ!
অপারী চেয়ে তাপদীরা তাই
ভাহার কাব্যে ছোট হন নাই।
নাবী-প্রগতির প্রার্থিত দিনে
ধরে যদি গাড়ী, চুটে পথ চিনে
কোনো অগুনিকা নবীনা তরুণী
কেন বিশ্বা সে ঘটনা গুনি ?
পাছকা-মুগর চরণ-শন্দ
করে নি ত কোনো কবিকে জন্ধ ?-

চুপি চুপি, শোন, বাল কানে কানে,—
ভাগায় কাবা- এন্ত ভৃতি প্রাণে
বম্য মধুর গাণের সঙ্গ,—
ভাগের কোমল চরপ ভঙ্গ
নূপ্র ভাজিয়া হ'ল সম্প্রতি
পাত্কা-মূপর, – ভাহে কী বা ক্ষতি ?
লিগ্যন্তায়া সে এতীত দিবা,
ভিল না রবির খর-কর বিভা!
মেনদৃত ভাহ রচিত অভীতে!—
বিহাৎ-দৃত বচিবেন গাঁতে—
আধুনিকাদের আধুনিক কবি,
আলেকেদীপ্ত উক্জ্ল রবি।

এই কবিতাটির নামটির জগু লেখিকা দায়ী নছেন। প্রবাসীর সম্পাদক

আধুনিকা

রবীজ্ঞনাথ ঠাকুর

চিঠি তব পড়িলাম, বলিবার নাই মোর,
তাপ কিছু আছে তাহে, সন্থাপ তাই মোর।
কবি-গিরি ফলাবার উৎসাহ বস্তায়
আধুনিকাদের পরে করিয়াছি সন্তায়
যদি সন্দেহ করো এত বড়ো অবিনয়
চুপ ক'রে যে সহিবে সে কখনো কবি নয়।
বলিব ত্ত-চার কথা, ভাল মনে শুনো তা;
পূরণ করিয়া নিয়ো প্রকাশের ন্যনতা।

পাঁজিতে যে আঁক টানে গ্রহ-নক্ষরর সামি তো তদন্তসারে পেরিয়েছি সত্তর। খায়ুর তবিল মোর কুষ্টির হিসাবে এতি অল্প দিনেই শুন্মেতে মিশারে। চলিতে চলিতে পথে আজকাল হরদম বুকে লাগে যম রথ-চক্রের কদ্ম। ৩ব মোর নাম আজো পারিবে না ওঠাতে প্রাত্মিক তত্ত্বের গবেষণা-কোঠাতে। জীর্ণ জীবনে আজ রং নাই মধ্নাই মনে রেখো তবু আমি জন্মেছি অধুনাই। সাড়ে আঠারো শতক A.D. সে যে B.C. নয় মোর যারা মেয়ে বোন, নারদের পিসি নয়। মাধুনিকা যারে বলো তারে আমি চিনি যে, কবি-যশে তারি কাছে বারো খানা ঋণী যে। তারি হাতে চির্নিন যৎপরোনাস্তি পেয়েছি পুরস্কার, পেয়েছিও শাস্তি। প্রমাণ গিয়েছি রেখে, এ কালিনী রমণীর রমণীয় তালে বাঁধা ছন্দ এ ধমনীর।

কাছে পাই হারাই-বা তবু তারি স্মৃতিতে স্থর-সৌরভ জাগে আজো মোর গীতিতে। মনোলোকে দৃতী যারা মাধুরী-নিকুঞ্জে গুজন করিয়াছি তাহাদেরি গুণ-যে। সেকালেও কালিদাস বরকৃচি আদিরা. পুরস্ক্রীদের প্রশন্তিবাদীরা, যাদের মহিমাগানে জাগালেন নাণারে, তারাও সবাই ছিল অধুনার কিনারে। সাধুনিকা ছিল নাকো হেন কাল ছিল না, তাহাদেবি কল্যাণে কাব্যান্তশীলনা। পুরুষ কবির ভালে আছে কোনো স্থগ্রহ চিরকাল তাই তারে এত মহামুগ্রহ। জুতা পায়ে খালি পায়ে সিপারে বা নুপুরে নবীনারা থ্গে থুগে এল দিনে ছুপুরে, যেথা স্বপনের পাড়া, সেথা যার আগিয়ে, প্রাণটাকে নাডা দিয়ে গান যায় জাগিয়ে। ৩বু কবি রচনায় যদি কোনো ললনা দেখো অকুভজ্ঞতা, জেনো সেটা ছলনা। মিঠে আর কটু মিলে মিছে আর সভিয ঠোকাঠুকি ক'রে হয় রস-উৎপত্তি। মিষ্ট কটুর মাঝে কোন্টা যে মিথো সে কথাটা চাপা থাকু কবির সাহিত্যে। ঐ দেখো, ওটা বুঝি হ'ল শ্লেষবাক্য। এ রকম বাঁকা কথা ঢাকা দিয়ে রাখ্য। প্রলোভনরূপে আসে পরিহাসপটুতা, সামলানো নাহি যায় অকারণ কটুতা। বারে বারে এই মতো করি অত্যুক্তি, ক্ষমা ক'রে কোরো সেই অপরাধমুক্তি॥

আর যা-ই বলি নাকো এ কথাটা বলিবই তোমাদের দ্বারে মোরা ভিক্ষার পলি বই।

গ্লিপ্রবাসী গি

মন্ন ভরিয়া দাও স্থধা তাকে লুকিয়ে, মূল্য তাহারি আমি কিছু যাই চুকিয়ে। অনেক গেয়েছি গান মুগ্ধ এ:প্রাণ দিয়ে, তোমরা তে। শুনেছ তা, অস্তত:কান দিয়ে : পুরুষ পরুষ ভাষে করে সমালোচনা, সে অকালে তোমাদেরি বাণী হয় রোচনা। করুণায় ব'লে থাকো, ''আহা, মন্দ বা কী !" খঁটে বের করো না তো কোনো ছন্দ-ফাঁকি। এইটুকু যা মিলেছে তাই পায় ক'জনা, এত লোক করেছে তো ভারতীর ভজনা। এর পরে বাঁশি যবে ফেলে যাব ধুলিতে তখন আমারে ভূলো পারো যদি ভূলিতে। সেদিন নুতন কবি দক্ষিণ প্রনে মধ ঋতু মুখরিবে তোমাদের স্তবনে. তখন আমার কোনো কীটে কাটা পাতাতে একটা লাইনো যদি পারে মন মাতাতে তা হ'লে হঠাৎ বুক উঠিবে যে কাঁপিয়া বৈতরণীতে যবে যাব খেয়া চাপিয়া। এ কী গেরো! কাজ কী এ কল্পনা-বিহারে, সেন্টিমেন্টালিটি বলে লোকে ইহারে। ম'রে তবু বাচিবার আব দার থোকামি, সংসারে এর চেয়ে নেই ঘোর বোকামি। এটা তো আধুনিকার সহিবে না কিছুতেই এস্টিমেশনে তার পড়ে যাব নীচুতেই। অতএব মন, তোর কল্সী ও দড়ি আন্ অতলে মারিস্ ডুব Mid-Victorian । কোনো ফল ফলিবে না আঁখিজল-সিচনে. শুক্নো হাসিটা তবে রেখে যাই পিছনে। গদগদ স্থর কেন বিদায়ের পাঠটায়, শেষ বেলা কেটে যাক্:ঠাট্টায় ঠাট্টায়॥

তোমাদের মুখে থাক্ হাস্তের রোস্নাই, কিছু সীরিয়াস কথা বলি তবু, দোষ নাই। কখনো দিয়েছে দেখা হেন প্রভাশালিনী শুধু এ-কালিনী নয়, যারা চিরকালিনী। এ কথাটা ব'লে যাব মোর কন্ফেশানেই ভাদের মিলনে কোনো ক্ষণিকের নেশা নেই। জীবনের সন্ধ্যায় তাহাদেরি বরণে শেষ রবি-রেখা র'বে সোনা-আঁকা স্থারণে। স্থর-স্থরধুনীধারে যে অমৃত উথলে মাঝে মাঝে কিছু তার ঝ'রে পড়ে ভূওলে, এ জনমে সে কথা জানার সম্ভাবনা কেমনে ঘটিরে যদি সাক্ষাৎ পাব না। গামাদের কত জটি খাসনে ও শয়নে. ক্ষমা ছিল চির্দিন তাহাদের নয়নে। প্রেম-দীপ জেলেছিল পুণ্যের ভালোকে, মধুর করেছে তারা যত কিছু ভালোকে। নানারূপে ভোগস্থা যা করেছে বরষণ তারে শুচি করেছিল স্থকুমার পরশন। দামী যাহা মিলিয়াছে জীবনের এ পারে মরণের তাঁরে তারে নিয়ে যেতে কে পারে। তবু মনে আশা করি মৃত্যুর রাতেও তাহাদেরি প্রেম যেন নিতে পারি পাথেয়। গার বেশি কাজ নেই, গেছে কেটে তিনকাল. যে কালে এসেছি আজ সে কালটা Cynical। কিছু আছে যার লাগি স্থগভীর নিশ্বাস জেগে ওঠে, ঢাকা থাক্ তার প্রতি বিশ্বাস।

একট্ সব্র করো, আরো কিছু ব'লে যাই, কথার চরম পারে তার পরে চলে যাই। যে গিয়েছে তার লাগি খুঁচিয়ো না চেতনা, ছায়ারে অতিথি ক'রে আসনটা পেত না। বংসরে বংসরে শোক করা রীতিটার মিথ্যার ধাক্কায় ভিৎ ভাঙে স্মৃতিটার। ভিড ক'রে ঘটা ক'রো ধরা-বাঁধা বিলাপে পাছে কোনো অপরাধ ঘটে প্রথা-খিলাপে, ভারতে ছিল না লেশ এই সব খেয়ালের, কবি 'পরে ভার ছিল নিজ মেমোরিয়ালের। "ভুলিব না ভুলিব না" এই ব'লে চীৎকার বিধি না শোনেন কভু, বলো তাহে হিত কার। যে ভোলা সহজ ভোলা নিজের অলক্ষ্যে সেই ভালো হৃদয়ের স্বাস্থ্যের পক্ষে। শুদ উৎস খুঁজে মরুমাটি খোঁড়াটা, তেলহীন দীপ লাগি দেশালাই পোডাটা যে-মোষ কোথাও নেই সেই মোষ ভাড়ানো, কাজে লাগিবে না যাহা সেই কাজ বাডানো. শক্তির বাজে ব্যয় এরে কয় জেনো হে. উৎসাহ দেখাবার সত্নপায় এ নতে। মনে জেনো জীবনটা মরণেরই যজ্ঞ. স্থায়ী যাহা, আর যাহা থাকার অযোগ্য সকলি আহুতি রূপে পড়ে তারি শিখাতে, টি কৈ না যা, কথা দিয়ে কে পারিবে টি কাতে ছাই হয়ে গিয়ে ৩বু বাকি যাহা রহিবে আপনার কথা সে তো আপনিই কহিবে॥

লাহোর ২০ ফে.কথারী

জীবনায়ন

শ্রীমণীন্দ্রলাল বস্থ

a

ধাম-চলা বড় রাস্তা হইতে স্ক্র-কুটপাথওয়ালা পথ সোজা পূর্বাদিকে চলিয়া গিয়াছে ; তাহার এক প্রশাধার মত গলিট দক্ষিণ দিকে কিছু দৃর অগ্রসর হইয়া আবার প্রাদিকে আঁকিয়া-বাকিয়া বৃহৎ বাড়িগুলির সীমান্তে হারাইয়া গিয়াছে। অৰুণদের বাড়ির সমুপে গ**লিট সরু,** সোজা, নিস্কুম। উত্তরে ঘোষ বংশের প্রাচীন প্রাসাদভূমির স্কীর্ণ হলদে দেওয়াল, দক্ষিণে মল্লিকদের বাগানের উচ্চ গুল্র পোচীর ও কয়েকটি কুজ প্রাতন বাড়ি। আম, নিম, কদম্ব নানা বৃক্ষের শাখা গশির উপর আসিয়া পড়িয়াছে। প্রভাতের রৌদ্র তিয়াকভাবে আদিয়া ক্ষণকালের জন্ত গলিটিকে উক্ষ্ণ করিয়া ভোলে, মধ্যাহ্নে বৃক্ষশাথাগুলির স্থলিগ্ন ছায়াপাত হয়, রাত্রে জ্যোৎসা মায়াজাল বোনে। এখানে কলিকাতার জনশোত অতি মন্দ; দকালে ছেলেরা হল্লা করিয়া স্থূলে যায় ; তুপুরে কোন পথলান্ত ফিরিওয়ালা হাকিয়া চলে, 'চুড়ি চাই' 'ছাতা দারাবে গো', তাহাদের উদাস কণ্ঠের স্থর করুণ প্রতিধ্বনির মত গলিটতে বুরিয়া বেড়ায়; সন্ধার পর সব নিস্তন, গুমস্ত। কোন ভাড়াটে গাড়ী যথন ঝন্ ঝন্ শব্দে চলিয়া নায়, বোড়ার খুরের শব্দে সমস্ত পপ কাঁপিয়া উঠে। গভীর রাত্তে ন্থন ব্যারিষ্টার ঘোষের লম্বা বড় মোটরকার হেড লাইট জালাইয়া প্রবেশ করে, মনে হয় কোন অতিকায় সরীস্থপ মাপায় মণি জালাইয়া অন্ধ বিবরে আশ্রয় গ্রহণ করিতেছে। এ গলিতে মোটরকার মানায় না। পূর্বে বধন লোবেদের, মলিকদের বাবুবা জুড়ি গাড়ী হাকাইয়া বাহির হইতেন, পাড়ার গৃহিনীগণ পাষী চড়িয়া গঙ্গাসান করিতে যাইতেন, তথন গলিটি সঞ্জীব ছিল।

গলিতে ছয় ঋতুর লীলা করণ স্থলর। ফাস্তুনে ঝরা-পাতার পীত আবর্জনায় বসস্ত-বাতাস হতাখাসের মত বহিয়া গার। গ্রীয়ে আম্মুকুল বকুল ফুল ঝরিয়া পড়ে, রৌজে পাথরশুলি ঝিকিমিকি করে। বর্ষায় স্থান অন্ধারে গৈরিক্

শ্রোত বস্তান্ধলের মত বেগে প্রবাহিত হয়, ছোট ছেলেমে য়েদের কাগজের নৌকা ভাদিয়া ডুবিয়া ধায়। কত বিগত আখিনে এখানে পূজার বাজনা বাজিয়াছে, লোকে লোকারণ্য, কোন্ বাড়ির প্রতিমা আগে যাইবে, বলিয়া লাঠালাঠি হইয়াছে, এখন কেবল ছুই পাগের বাগান হইতে উদাদ স্থতির মত শেকালীর মৃত্র গদ্ধ আসে, অপরাঞ্চিতা লতার নীল ভূলগুলি হলদে দেওয়াল ভরিয়া গলির উপর ক্লিয়া পড়ে।

থিলানওয়ালা বড় গেট পার হইয়া অরুণদের বাড়িতে প্রবেশ করিলে প্রথমেই চোথে পড়ে বৃহৎ প্রাসাদের বিতল অংশের আইয়োনিক গামগুলির সারি। ছালওয়ালা ঝিলিমিলি-ঢাকা প্রশন্ত বারান্দার সম্মুখে আইয়োনিক গামগুলি থেমন মোটা তেমনি উঁচু, চুই কোলে ও মধ্যে এক জোড়া করিয়া।

দক্ষিণমুখী প্রাসাদের সমুখে ডিম্বারুতি ফোরারা ও বড় বড় কালো পাথর-গাড়া ক্রিম পাহাড়। পাহাড়ের গারে গাছপালা বিশেষ কিছু নাই; ফোরারার স্বচ্ছ জলে লাল নীল মাছ খেলা করে, এই মাছগুলি প্রতিমার প্রিয়; তাহাদের পরিচর্য্যার ভার সে লইয়াছে।

ত্র মহলওয়ালা চক-মিলান বাজি। ঢুকিয়াই চকবন্দী
বৃহৎ অঙ্গন। প্রাচীন কালে এখানে কত বাত্রা,
কথকতা, প্রচালী, কবির লড়াই হইয়াছে, এখন শৃত্ত কলন
দেখিলে বৃক্টা খচ্ খ ্ করে। সম্মুখে প্রজার দালান,
মেঝের মাঝেল পাগর অধিকাংশ কাটিয়া ভাঙিয়া গিয়াছে,
এক কোণে কয়েকটি ভাঙা চেয়ার ও বাক্ম জড়ো করা, ধেন
ভদামবর; শৃত্ত ঠাকুর-দালান দেখিলে মনে বেদনা হয়।

অঙ্গনের পূর্ব্বদিকে লাইব্রেরী-ঘর। সাহেবী দোকানে তৈরি নানা আগবাবে ভরা: আলমারীগুলিতে নানা পুরাতন গ্রন্থ—শেক্সপীয়ারের অষ্টাদশ শতাব্দীর এক সংস্করণ, স্কটের ওয়েভারলি উপন্যাসাবলী, ১৮৩০ গীষ্টাব্দের ছাপা; ভিকেন্দ্র, বিষ্ণিচন্দ্র, ববীক্রনাথের নানা গ্রন্থের প্রথম সংস্করণ, পাচীন সংস্কৃত পুঁথি; ফার্দ্ধ্রী, হাফেন্ড্র, নানা ফারসী কবির গ্রন্থ। দেওয়াল জুড়িয়া অরুণের প্রাপিতামহের অয়েল পেন্টিং—মাথায় কান্ত-করা শামলা, গায়ে শালের চোগাচাপকান, বীর্যাব্যঞ্ক মুণ, ওয়াধর পাতলা ও চাপা, টানা চোধ ছটি জল জল করিতেছে।

অঙ্গণের পশ্চিমে দপ্তরখানা। ময়লা ফরাসের ওপর সরকার-মহাশন্ন সকালে হিদাব শেপেন, তুপুরে গড়গড়া টানিতে টানিতে নিদ্রাখান। অঙ্গনের দফিশে তুইটি বৈঠকগানা-ধর। একটিতে তক্তরে ওপর ফরাসপাতা, মোটা মোটা তাকিয়া সাজান। সে ধরে কেছ বসে না। সরকার-মহাশন্ন রাত্রে নিদ্রাখান।

শপর বৈঠকথানায় চেরার-টেবিল সাজান। বোড়শ নুই চেয়ারগুলির বাকা পায়া নড়বড় করে, কার্পেটগুলির চিত্র মলিন। ইহাদের মধ্যে নুভন হালকাসানের চেয়ার-গুলি বড় বেমানান দেখায়। প্রায়োজন হইলে এরণের সাহেব-কাকা এই গরে মাঝে মাঝে বসেন। গাহার পর বৈঠকখানা-বয়গুলির উপর দোতলায়।

শিবপ্রসাদ দিনের বেলায় বাড়িতে অল্প সমন্ত্র থাকেন। আইরোনিক থামওয়ালা প্রশন্ত বারান্দায় যথন প্রভাতের রৌদ্র আদিয়া পড়ে, ভাঁহার শোবার মরের জানালা বন্ধ থাকে। সকাল আটটার সময় ছকু থানসামা চায়ের পেয়ালা ও লাড়ি-কামাইবার গরম জল লইয়া শিবপ্রসাদের শয়নগৃহে প্রবেশ করে। নয়টার সময় য়ান করিয়া তিনি রেকফার্ট ধান। দপ্তর্থানার উপর দোতশায় ভাঁহার থাবাব ঘর। মেহগ্নী কাঠের লমা বড় সাইডবােচ, দেওয়ালে অনেকগুলি বাঁধানো ছবি, ঘরটি স্থসজ্জিত। ছবিগুলি ভাহার ইউরোপের খোবনের আনন্দম্বতি, অধিকাংশই উপহার—রেনায়ার 'সানরতা তরুলী,'' রসেটির 'লান্তের স্বগ্ন,'' দেগার 'নর্ভকী,'' নানা ছবি; ইংলণ্ডের সামাজিক জীবনের খেলাব্লা, পিকনিক, নিশীখোৎসবের চিত্র, প্রাণোল্লাসপূর্ণ বিচিত্র বেশসজ্জিত নর-নারীদের ফটো।

সকাল সাড়ে দশটার সময় শিবপ্রসাদ বাহির হইরা ধান। ক্লাব হইতে ফিরিতে রাত এগারটা হয়। তার পর সাপার। ঠাণ্ডা মাংস ও সবজী থাওয়া উপলক্ষ্য মাত্র, মদ থাওয়াই উদ্দেশ্য। গভীর রাত্রে তাঁহার গ্রন্থপাঠের সময়।
তিনি বহুভাষাবিং। ইংলণ্ডে থাকিবার সময় জার্মাণ,
ইতালীয়ান, কল ও সুইডিস্ ভাষা আয়ত্ত করেন। দেশে
আসিয়া শিক্ষক রাথিয়া সংস্কৃত ও ফারসী শিথিয়াছেন।
এখন তম্পাস্ত্র ও ইতালীয় কবি কারত্তি পাঠে নিমগ্ন।
বারান্দায় লক্ষা বেতের চেয়ারে হেলান দিয়া বসিয়া মদ ও
বই লইয়া রাত একটা কাটিয়া বায়।

কৈন্ত কোন কোন রাতে কালিদাস বা কার্গ্চি, হাকেজ বা পুস্কিন্, কোন দেশের কোন কবিই তাঁহার চিততকে শান্ত করিতে পারে না।

তাঁহার শয়নগৃহে টেবিলের উপর রূপার ক্রেমে বাধানো তুইগানি ফটো পূর্বে ছিল। একটি, এক সম্জনীলনয়না প্রূপা ইংরেজ ললনার, মাথায় রুজিম জ্লভরা টুপি, কলকাওয়ালা কাশ্মীরী শাল হইতে তৈরি জামা ও স্কটি, মুখগানি ক্রজিম ক্লের মত, শোভনতা আছে, প্রাণের দীপ্তি নাই। আব একট ফটো একটি ছোট মেয়ের, তাহার নীলনয়ন সিন্ধা, চুলগুলি একটু কালো, কুটস্ত গোলাপের মত মুখখানি, হাসিটি চমৎকার।

এখন সে নীলনয়না ইংরেজ-ছৃহিতার ফটো নাই, কোগায় অন্তহিত হুইয়াছে। আর বেবীর ফটো থাটের মাথায় দেওয়ালে ঝুলান। নিগোহীন অশান্ত রাত্রে কথনও কথনও শিবপ্রদাদ খুকীর ফটোটি ত্ক হুইতে খুলিয়া হাতে ধরিয়া বারান্দায় পদচারণা করেন। তার পর ফটোটি বগাস্থানে রাখিয়া চেয়াবে বিদ্যা অঞ্চকার গলির দিকে চাহিয়া থাকেন।

চৈত্রের জ্যোৎসা। পদাশ বৃক্ষের শাধার শাধার রক্তিম পুপাপ্তচ্ছ পুঞিত; নারিকেল বৃক্ষগুলির আড়ালে শুল্র মেঘ-জুপে চক্রমা বেন স্বপ্নতরী। শিবপ্রসাদের রক্তে বসস্ত-রাত্রির মন্ততা লাগে। মনে পড়ে ইংলণ্ডের বসস্তাগমন। আপেল পিয়ার চেরীগাছে নবপুশস্তবকের কি অপরূপ সৌন্দর্য্যাচ্ছাস! শিশুমুথের মত কচি পাতাগুলি এলম্ বৃক্ষের ডালে।

শিবপ্রদাদ ভাবেন দেই বেবী এখন কত বড় হইয়াছে। তাহার বয়স এখন প্রতিমার সমান হইবে।

গণির অন্ধকারের দিকে শিবপ্রসাদ চাহিরা থাকেন কোথার কোন্ নিশাচর পাধী ডাকিয়া ওঠে। ছুটির দিন। তৈত্ত্বের নির্ম হপুর। স্বচ্ছ রৌজ যেন কোন নিস্তরক রজত সমুদ্রের স্রোত; এই শুল্র জ্যোতির্মার শক্ষহীন ধারায় বরবাড়ি গাছ পথ সব পরিপুত। ঝিরি ঝিরি ঈষদোফ বাতাদে বসন্ত-ম্পন্দিত মুদ্ভিকার স্বরভি। এইরূপ রৌজের দিকে চাহিয়া স্বপ্ন বোনা যায়। মনে হয় এই দীপ্ত স্তর্জতা কোন গভীর প্রাণস্রোতে পূর্ব।

এইরপ আলোভরা দিনে অরুণ বাড়ি থাকিতে চায় না, রথঘর্থরপূণ জনস্রোতময় কলিকাতার পথের জীবনকল্লোল-মধ্যে তাহার ঘুরিতে ইচ্ছা করে। রাত্তির গুরুতায় মনে শাস্তি আনে, কিন্তু এই স্ব্যালোকপূর্ণ নিশস্কতায় প্রাণে চঞ্চলতা জাগে।

খাওয়ার পর অরুণ একেবারে প্রতিমার ঘরের দিকে চলিল। প্রতিমা নিজের ঘরে নাই, ঠাকুরমার ঘরে; গাঁহাকে রামায়ণ পড়াইয়া শোনাইতেছে। বারান্দায় ময়না ও কেনারী পাধীগুলি খাঁচায় ঝিমাইতেছে। সাদা কাকাতুয়াট ছোলা ও ছাতু খাইতেছিল, অরুণকে দেখিয়া লাল ঠোঁট নাড়িয়া চেঁচাইল—গুড্ মনিং। সমস্ত বাড়ি সচকিত হইয়া উঠিল। অরুণ তাহার জলপাত্রে জল ভরিয়া দিয়া বলিল, চুপ কৃস্তকর্ণ। এই পফীগুলি প্রতিমার পোষ্য জাব। কাকাতুয়ার নামকরণ তাহারই।

অরুণ বাড়ি হইতে বাহির হ**ইল।** জয়প্তের বাড়ি যাইবে ঠিক করিল। জয়স্ত গতকল্য স্কুলে আসে নাই। অসুথ হ**ইল** কিনা খোঁজ লওৱা দরকার।

জন্নতের বাড়িতে তাহার বাইতে ইচ্ছা করে না। সে-বাড়ির আবহাওন্না, জীবন-প্রণালী সুস্থ স্বাভাবিক বলিয়ামনে হয় না।

জয়ত্তের মেসো-মহাশর তাহার প্রানীয়। কিন্তু তিনি
মারুণের সহিত এত বিনীত বাবহার করেন, তাহার
বংশ-গরিমার এত উচ্চ প্রশংসা করেন যে অরুণের লজা
হয়। পীতাঘরের কপালে চন্দনের তিলক, গলার কন্তী, গায়ে
মরলা ফতুরা, নর হাত ছোট মোটা কাপড় পরা, সব-সময়
জোড়হাতে নম্র স্থারে কথা বলেন, যেন স্বার দাসাম্পাস।
সরল কৈশোর বৃদ্ধি দিয়া অরুণ এই লোকটিকে ঠিক বিচার
করিতে পারে না, সে কিন্তু বৃশিতে পারে লোকটি খাঁটি
নয়। বস্তুতঃ, অভি প্রমবৈষ্ণব বলিয়া নিজেকে পরিচিত

করিতে চাহিলেও পীতাম্বর ভণ্ড ও অত্যাচারী। তাঁহার গৃহিণী মুন্মনীকে দিনরাত খাটিতে হয়; কাল বড় কম নয়, নিজের চার ছেলে, চার মেয়ে, তাছাড়া ক্ষমন্ত ও মণ্ট, আছে; বাড়িতে পীতাম্বর বি রাখিতে দেন নাই, কারণ সেবাই শ্রেষ্ঠ ধর্ম। ছেলেমেয়েরা ভাল থাইতে ও পরিতে পায় না, কারণ দারিদ্রা-দীনতাই বৈফবের ভ্ষণ। কাহারও অমুথ হইলে ডাক্তার ডাকিয়া চিকিৎসা হয় না, হরিনাম গান হয়। পীতাম্বর কিন্তু মুক্সর নাম-সংকীর্ত্তন করিতে পায়েন। আসলে লোকটি অতি ক্রপণ ও মার্থপর।

জয়ন্তের মাসতৃতো ভাইবোনগুলির ব্যবহারও অতি
জত্ত অভাতাবিক লাগে। তাহাদের লীর্ভুক্ষু চেহারা
মরলা ছোট কাপড় ভামা দেবিলেও ছংখ হয়। বড় বোন
হুর্না প্রতিমার বরসীই হইবে, কিন্তু অরুণকে দেখিলে কেবল
মাত্র সে নয় তাহার তিন-পাঁচ-সাত-নয়-দশ-এগার বৎসরের
ভাইবোনগুলি লক্ষ্মী, সরস্বতী, গণেশ, জগরাথ, বলরাম,
স্তুদ্রা সকলে ছুটিয়া পলায়—পীতাম্বর তাঁহার সকল
প্রক্রার নাম দেবদেবীর নামে রাধিয়াছেন, হ্যালফ্যাসানের নাম মোটেই পছল করেন না—তার পর সকলে
দরজার আড়াল হইতে কৌতুকপূর্ণ নেত্রে অরুণকে দেখে,
যেন সে কোন অপরুপ জীব। একদিন ঘটনাক্রমে হুর্গা ভাহার
সন্মুথে আসিয়া পড়াতে লজার পিছন ফিরিয়া দাঁড়াইল,
তার পর লম্বা ঘোমটা টানিয়া ছুটিয়া পলাইয়াছিল। ইহাতে
অরুণের যেমন হাসি পাইয়াছিল তেমনি রাগও হইয়াছিল।

কিন্ত কি কারণে ছুর্গা ঘোমটা টানিরা পলাইরাছিল, তাহা জানিতে পারিলে, অঙ্কণ আর জয়ন্তের বাড়ি বাইত না।

একদিন থাবারের পর পান চিবাইতে চিবাইতে পীতাম্বর তাঁহার গৃহিণীকে বলিয়াছিলেন—দেখ, আমাদের হুর্গার সঙ্গে অরুণের বেশ মানায়। কি বল? চেষ্টা করব?

স্থামীর সকল মতে সমর্থন করা মুন্মরীর অভ্যাস হইরা গিয়াছে। কোন আপত্তি বা তর্ক করা সেবিকার ধর্ম নর। কিন্তু মুন্ময়ী স্থামীর এই কথার সার দিতে পারিলেন না। নিজ্প পুত্রকন্তা সম্বদ্ধে পিতামাতার এক বিচারহীন শ্রেষ্ঠন্ধবোধ আছে। পীতাম্বর হুর্গাকে অক্ষণের বিবাহখোগ্যা ভাবিলেও মুন্ময়ী ভাহা পারিলেন না। এই স্বর্শন নম্ম বালকটির প্রতি তাহার কেমন গভার স্নেহ জন্মিরাছে। তিনি ধীরে বলিলেন—কি যে বল, অরুণ কত বড় ঘরের ছেলে, আর আমার মেয়ে ত পেডুী।

পীতাম্বর রীতিমত জুদ্ধ হইরা উঠিল। অতি মিহি সুরে তিনি নির বংশের খ্যাতি ও শুণগরিমা এবং তালপুকুরের বোব-বংশের অসচ্চরিত্রতার ইতিহাস সম্বন্ধ ভূলনামূলক দীর্ঘ বকুতা দিলেন। নানা কাজ বাকী থাকিলেও মুনারীকে দাড়াইরা শুনিতে হইল। সমস্ত বাসন মাল্যা বাকী। অবংশেষে মুনারীকে শীকার করিতে হইল, এমন বংশে বিবাহকরা অরুণের মহাসোভাগ্য। স্থামী যদি এ-বিষয়ে চেষ্টা করেন তাহা হইলে তিনি বথেই সাহায্য করিবেন। ঠিক হইল, অরুণকে নিমন্ত্রণ করিয়া একদিন হুর্গার হাতের রান্না বাওয়াই ত হইবে, অবশ্ব মুনারীই সমস্ত রাধিবেন।

জয়স্তের বাড়ির সমুখে আসিয়া একণ দেখিল বাড়ির দরলা বন্ধ। পীতাম্বর অতি ভীত প্রাকৃতির মাসুয়। উাহার বিশ্বাস কলিকাতার সকল শুণ্ডাও টোরের দৃষ্টি তাঁহার বাড়ির ওপর।

দরজায় কড়াও নাই। অরুণ মৃত্ আঘাত করিণ, কোন সাড়া পাওয়া গেল না। জয়স্তের ছোট ভাই মন্টু এক হাতে কয়েকথানি ঘুড়িও অপর হাতে লাটাই লইয়া আসি:ডেছে দেখিয়া সে আশান্তিত হইয়া দাঁড়াইল।

মণ্ট্র চেঁচাইতে চেঁচাইতে ছুটিয়া আদিশ—অরুণনা, যাবেন না, দাদা বাড়ির ভেতর আছেন। দ'দা ! দাদা !

বন্ধ দরজায় মণ্ট দম'দম লাপি মারিতে লাগিল। বলিল—দাঁড়ান অক্লাদা, বাড়ির সবাই একদম কালা, দরজা দেব এক দিন ভেঙে!

বাড়ির মধ্যে এই ছোট ছেলেটি উন্মন্ত প্রাণে-ভরা; সে বিজ্ঞাহী, কাছারও কথা শোনে না, শাসন মানে না, আপন খুনী-মত হাসিলা-গেলিয়া বেড়ায়; পাড়ার সকল তুই ছোলর স্থার। এই অশস্ত ভ্রাতাটিকে জয়ত্ত অভাত্ত ভালবাসে। নিক্লের মধ্যে প্রাণের ধে তেড় নাই, নিজ্ব বালক-ভ্রাতার মধ্যে তাছা দেখিতে পাইয়া সে গৌরবম্ম আনক্ষ উপভোগ করে; ভাছার সকল অনিয়ম অভাতারক প্রভাব দেয়। বালকের খাভাবিক বাবহার নিবেধ করিলে অমজল হয়, ইউরোপের এই আছুনিক শিশুশিকানীতি

ভাহার জানা না-থাকিলেও সে বুঝিয়াছে প্রাণের সহজ প্রকাশকে বাধা দিলে মানুষ সজীব স্বাধীন হইয়া গড়িয়া উঠিতে পারে না, এই শাসন-অনুশাসনের পীড়নে সমস্ত জাতি স্বাধীনতা হারাইয়াছে।

জয়ন্ত দরজা খূলিয়া অরুণকে দেখিয়া উল্লেশিত হইয়া উঠিল।

- ঝারে ভাই, তোর কথাই ভাবছিলুম, জানি তুই আসবি। একে বলে টেলিপ্যাথি।
 - -কাল স্কুলে যাও নি কেন?
- —ও যে ভীষণ কাণ্ড কাল, ভয়হ্বর ব্যাপার, ঘরে আয় বলছি।

ক্ষরন্তের 'ভীষণ' 'ভয়য়র'কে কেহ সভাই ভীতিপ্রাদ বলিয়া ভাবে না। স্বাই জানে অভিরক্ষিত করিয়া বলা তাহার অভ্যাস। সে আবৈগের সহিত কথা বলে, নিজেকে কোন করণ জীবন-নাট্যের ট্রাজিক অভিনেতা রূপে সকলের সম্মুধ্বে পরিচিত করিতে পুথ পায়, সমবেদনার জন্ত তৃষিত।

আক্রণ ইছাপূর্বক অভি গম্ভীর মুখ করিয়া বলিল,—কি ব্যাপার, আবার কোন নৃতন হর্ঘটনা ? আমি কাল থেকে ভোমার কথা ভাবছি।

উচ্ছাসের সহিত জায়স্ত বলিল—অরুণ, তুই সত্যি আমার বন্ধু! নিজের ঘরে লইয়া কোঁকড়া চুল গুলাইয়া হাত নাড়িয়া জয়স্ত যে দীর্ঘ কাহিনী বলিল তাহার মন্দাংশ এইরপ—

ছুই দিন হুইৰ জয়স্তের পিতা কামাখ্যাচরণের একখানি পত্ত আনিয়াছে হরিছার হইতে। তিনি জয়স্তকে লেখেন নাই পীতাম্বকে লিখিয়াছেন, এজ্য জয়ন্ত বড় বাথিত। কামাথ্যাচরণ লিথিয়াছেন, তিনি এক সন্ন্যাসী-দলের সহিত শীঘুই বদ্বিকাশ্রম বাইবেন, সেম্থান হইতে মানস-সরোবরে যাইবারও ইচ্ছা আছে। শেষে তিনি শিখিয়াছেন বাধাবাজারের দোকানের তাঁহার অংশের সমস্ত উপস্বত্ত তিনি ত্যাগ করিয়া পীতাম্বরকে দিতেছেন, দোকানের একমাত্র মালিক পীতাখর এ-বিবয়ে ষথোচিত দলিল তিনি কবিয়া क्रियन । পাঠাইলে সই ক বিয়া ইহা লইরা পারিবারিক কলহ চলিতেছে। পীতাম্বরের ইচ্ছা ছিল, চিঠি সহছে কাহাকেও কিছু বলিবেন না, দলিলটি

P-103

নুকাইরা পাঠাইরা দিবেন। কিন্তু কোনন্ধণে চিঠিখানি মুনায়ীর হস্তগত হয়, তিনি সকল কথা জয়স্তকে বলেন। কাল সে মেদোমহাশরের সহিত রীতিমত ঝগড়া করে, গালাগালি পর্যান্ত হইয়া গিয়াছে। রাগ করিয়া অভুক্রাবস্থায় বাড়ি ছাড়িয়া সে চলিয়া যায়। সেজন্ত কাল সমস্ত পরিবার উপবাসী ছিল; মাসীমা, ছোট ভাই-বোনেরা কেহই খাইতে চায় নাই। মণ্টু প্ৰ্যন্ত সারাদিন কিছু খায় নাই জানিয়া সন্ধার জরস্ত বাড়ি ফিরিয়া আসে। মাসীমা, তুর্গা, লক্ষ্মী সকলে তাহাকে ঘিরিয়া উচ্চৈম্বরে কাঁদিতে আরম্ভ করে। অগতা৷ তাহাকে রাতে এ-বাড়িতেই অন্নগ্রহণ করিতে হইয়াছে ও আপাততঃ বাড়ি-ছাড়ার সম্বন্ধও ত্যাগ করিতে হইয়াছে। মেসো-মহাশরের সহিতও তাহার একটা বোঝাপড়া হইয়া গিয়াছে। তাহার মাসীমা ও ভাইবোনদের ছাডিয়া সে-ও থাকিতে পারিবে না। মেসো-মহাশ্র বলিয়াছেন বটে তিনি এখন কোন দলিল পাঠাইবেন না, তবে তাঁহার কথায় বিখাস করা যায় না।

দীর্ঘ বৃত্তান্ত শুনিরা অঙ্কণ বলিল—তা হালাম চুকে গেছে ত। অল্দ ওএল স্থাট্ এগুন্ ওএল্ (দব ভাল বার শেষ ভাল)। এখন চল কোথাও বেড়িয়ে আদা যাক, আমি আজ ঘুরে বেড়াবার mood-এতে।

— হাা, আমারও তাই ইচ্ছে করছে, মনটা ভাগ নেই। আজ আমরা হু-জনে ঘাই চল।

অরশ ভাবিল, ত্ই-জনে বেড়াইতে গেলে জয়ন্ত সমস্ত পথ ভাহার তুঃখের কথাই বলিবে; বাণেশ্বরকে ডাকিয়া লইয়া সাইতে হইবে।

এই কিশোরদের নিকট বিপুল কলিকাতা নগর এক রহস্তপুরী। নানা অজানা পাড়ায় ঘুরিয়া বেড়াইতে তাহাদের অফুরস্ত উৎসাহ। তাহাদের মন উৎস্কে, দৃষ্টি নবীন, অপরিচিতকে জানিবার অপূর্ব আকাজ্ঞায় হলয় পূর্ণ।

চার-পাঁচ জন সহপাঠা লইয়া অরুপ প্রারই ছুটির অপরাত্ত্রে কলিকাভার রহস্যোদ্ঘাটন করিতে বাহির হয়। মাণিকতেলা থালের ধার; খাল-পারে কদর্য্য পল্লী, রহৎ বাগানবাড়ি, বিপুল গড়ের মাঠ, গলার ধার, খিদিরপুরের ভক; অজানা বস্তি, সংকীর্ণ বক্রগালিমর অপরিচিত পাড়া, পুরাতন গোরস্থান, কলিকাভার নানা অংশে ভাহারা দল বাঁধিয়া বেড়ার। জরস্ক হাত দোলাইরা মাইকেল, রবীক্সনাথের কবিতা আর্ত্তি করে; বাণেশ্বর তর্ক করে, বাঙ্গ করে, আদিরসাথ্যক সংশ্বত শ্লোক বলে; অরুণ তর্কে ফোড়ন দের, থাবার কিনিয়া থাওরার; যতীন চুপ করিরা চলে, মাঝে মাঝে ধনী-দরিদ্রের বৈষম্য সম্বন্ধে মস্তব্য প্রকাশ করে; হরিসাধন কুলীমন্ত্রদের জীবন, বন্তির অবস্থা সম্বন্ধে তথা সংগ্রহ করে। কোন পথিক, পথদৃশ্য, সামান্ত কথা, তৃষ্ক্ ঘটনা লইরা কত তর্ক, কৌতৃক, হাস্ত। এই কিশোরদের নিকট নগরের পথ, জনশ্রোত, ট্রাম-মোটর-ধ্বনি, তাহার কদর্যাতা, বীভৎসতা সমস্তই নবীন শ্রন্ধর কৌতৃককর লাগে, এ খেন কোন নবদেশ-আবিদ্ধারের আনন্দময় অভিযান।

বাণেশ্বরকে ডাকিয়া লইয়া অরুণ ও জয়ন্ত যথন ট্রাম-রান্তার মোড়ে আসিরাছে, দেখিল মেটা বৃন্ধাবন এক বড় ঠোঙা হাতে তাহাদের দিকে আসিতেছে। অরুণের দলটিকে বৃন্ধাবন ভয় করে না, সে জানে ইহারা পেটে ঘুঁষি মারিবে না। সে হাসিয়া বিশিল—হ্যালো বয়েজ, এত নয়েজ ক'রে কোথায় চলেছিল ?

বাণেশ্বর উন্তর দিল—হ্যালো ফ্যাটি, মারবো চাঁটি, এত গর্ণগৃহ করে কি থাছিল্?

বৃন্ধাবনের উত্তর দিতে হইল না। ভরস্ক তাহার হাতের ঠোঙা ছিনাইয়া লইল, তার পর সকলে মিলিয়া টেপারি ও অবাক-দ্বলপান খাইতে লাগিল। বৃন্ধাবন তাহাতে বাধা দিল না। তাহার ইচ্ছা, অরুণ তাহাকে বেডাইবার দলে লয়।

সহসা বৃন্ধাবন চেঁচাইয়া উঠিল—ওরে !

পথের মোড়ে হেডপণ্ডিত মহাশরের ছাতা দেখা গেল, উন্নাত শিখা।

আৰুণ বলিল—চূপ_্। বুন্দাবন, সামনে দাঁড়া আর বাণেশ্ব আমাদের পেছনে লুকিয়ে ব'স্।

বিপদ কাটিয়া গেল। পণ্ডিত-মহাশয় এক ট্রামে উঠিলেন। বাণেশর হাসিয়া বলিল—এ জগতে কিছুই বৃধা নয়, ভৌদাদেরও প্রয়োজনীয়তা আছে।

অরুণ বলিল—এখন্ ঠিক কর কোন দিকে যাওরা বার । বিশোষাবি নাকি ?

— নিশ্চর। আমি বলি, চল ট্রামে।

- ও, তাহ'লেই হয়েছে। না বাপু, তোমার গিয়ে কাল নেই, কিছুলুর গিয়ে বলবে কোলে কর। আমরা এখন সাত-আট মাইল ইটেব।
- —সে আমি খুব পারি। একবার আমি দেওঘরে দশ মাইল কেটেছিলুম।
 - ---व्याद्य, এ দেও चत्र नम्र । এখন কোপায় যাওয়া যায় ?
 - —বে পথে যায় চোথ চল সেই পথে।
- —রাখ তোমার কবিত্ব পড়বে চাপা রংগ, ওরে সরে দীজা।
- —আমি বলি, যে নতুন যুদ্ধজাহাক এসেছে সেটা দেপে আসা যাক।
 - জাহাজে উঠতে দেবে ? ভেতবে বেতে দেবে ?
 - --তা দেবে না।
- —জাহাজ দেখে কিন্তু চৌরঙ্গী হগ্ সাহেবের বাজার হয়ে আসব।
- —না ভাই, আমাদের বোটানিক্যাল গার্ডেন যাবার কথা ছিল।
- —বেশ, জাহাজ দেখে চাঁদপাল-ঘাট থেকে যাওয়া বাবে।
 - —আমি দেখি নি বোটানিক্যাল গাণ্ডেন।
 - —কি বা তুমি দেখেছ!
 - —কিন্তু আমার সঙ্গে ত বেশী পর্সা নেই।
 - —আমার আছে, এক টাকা—

হাপ্প্যাণ্টের পকেট হইতে বৃক্ষাবন এক চক্চকে টাকা ও কতকগুলি শুচরা পয়সা বাহির করিল।

বাণেশ্বর বলিল-অচল টাকা নয় ত!

অরণ কহিল —আমার ব্যাগেও কিছু আছে।

হিসাব করিরা দেখা গেল ষ্টামারে যাতায়াতের ভাড়া যথেষ্ট হইবে। চারিজন হাস্তে গল্পে পথ মুখর করিয়া চলিল।

কিছু দুর গিয়া বৃন্দাবন এক দেশী হোটেলের সমুথে
দীড়াইল। বলিল—ভাই, কিছু চপ্-কাট্লেট কিনে নেওয়া

যাক্। ফিরতে ত সন্ধ্যে, খিদে পাবে।

--কি পেটুক বাবা! চপ্-কাটলেট কিনলে ষ্টামারের ভাড়াটা কোথা থেকে আসবে শুনি ? —ও তাই ত। আচহা, চার পরসার চিনেবাদাম কেনা বেতে পারে। আবার কিছু দ্ব গিরা মুসলমানদের এক ধাবারের দোকানের সামনে বাণেশ্বর থামিল। ক্ষয়স্ত তথন উচ্ছুসিত কঠে আবৃত্তি করিতেছে—সব ঠাই মোর ঘর আছে, আমি সেই ঘর মরি খুঁজিয়া—

বাণেশ্বর গম্ভীর ভাবে বলিল—অঙ্কণ ভূমি সেদিন বলেছিলে, একনিন শিক-কাবাব খাওয়াবে।

় জয়স্ত ও বৃন্ধাবন চমকিয়া উঠিল—শিক-কাবাব চ মুসলমানের দোকানের!

- -- रा।
- —কি মাংসের জান ?
- ---জানি।
- --তুমি খাবে ?
- —কেন খাব না ?

व्यक्त विन-ना, ना, शाशन नाकि !

বাণেশ্বর উত্তর দিশ— গাচ্ছা, আজ আমার সঙ্গে প্রসা নেই; দেখো, এক দিন খাব ভোমাদের দেখিরে।

- —তোর বাবা জানতে পারলে বে বাড়ি থেকে দুক্র ক'রে দেবেন।
- আমি কেয়ার করি না। আচ্ছা, আর চার বছর যাক্, তার পর সবার সামনে থাব।
 - —ছি i
 - —তুমি থাও নি ও মাংস?
 - --ना ।
- —আচ্ছা, সেদিন যে ছকু খানসামা আমাদের স্যাও-উইচগুলি থাওয়ালে, সে কিসের মাংস বাবা ?
 - —সে হাম।
- ও, একদিন ভূমিও খাবে দেখো। তোমার কাকা খান না ?
- —না, বাড়িতে থান না। ঠাকুমা তা হ'লে মনে কট পাবেন।
- স্থার আমাদের কট কে দেখে গুনি। বাবা হলেন ভাটপাড়ার পণ্ডিত-ব্রাহ্মণ, স্থতরাং রোজ কেবল শাক-চচ্চড়ি ভাত খাও গব্য হুত দিয়ে।
 - ---আমরাও ত বাড়িতে মাছমাংস থাই না।

—চল চল, কি পাগলামি করিস।

বাণেশ্বর সতাই শিক-কাবাব থাইতে চায় না, কিন্তু
পিতার অর্থহীন নির্ম্ম শাসনের বিরুদ্ধে তাহার অন্তরে যে
বিদ্রোহের কালো মেঘ ঘনাইয়া ওঠে, এ তাহারই বজ্ঞগর্জন।
ঘরে মমতাহীন শাসন-বিদ্রেপ, অপমানিত আত্মা মুক থাকে;
বাহিরে সে সারাক্ষণ বাঙ্গোক্তি কথা-কাটাকাটি করে।
শিশু গাছ যেমন সোজা চলিয়া আলোক না-পাইলে আঁকিয়াবাঁকিয়া চলে, শিশুমনও তেমনই স্নেহ আনক্ষের অভাবে
অস্থাভাবিক বক্ত হইয়া যায়।

বিশ্বস্থান্তির মধ্যে কোন গৃঢ় শক্তি এক আনন্দমর সামপ্রস্যের সন্ধানে একবার কেন্দ্রাতিগ, একবার কেন্দ্রাভিগ। নটরাঙ্গের নৃত্যাছনেদ নদীর এক পাড় ভাঙে, নৃত্ন তীর কাগে; প্রাচীন বংশ বিরাট সাম্রাজ্য ধ্বংস হইয়া যার, নব বংশ নব সভাতার ধ্বন্ম হয়। নটরাজের এক চরণে প্রশারের অগ্নি, অপর চরণে নবস্থান্তির শতদশ।

যুদ্ধ-জাহাজ দুর এইতে দেখিতে হইল। পুলিস ঘাটের নিকট পাহারা দিতেছে। বৃন্দাবন কাহাকেও নিকটে ঘাইতে দিল না।

টাদপালবাটে আসিয়া জানা গেল, পরবর্তী ষ্টামার আসিতে আধ থতী দেরি। এক নৌকার মাঝি আসিয়া বলিল—আধ থতীর মধ্যে সে বোটানিক্যাল গার্ডেন পৌছাইয়া দিবে, ভাড়াও ধুব সন্তা।

জয়স্ত উন্নদিত হইয়া উঠিল। বৃন্দাবন ভয় পাইল, কিছু আপত্তি করিতে সাহস করিল না। অরুণ ভাবিল, সকলেই সাঁতার জানে, ভয়ের কিছুই নাই। অরুণদের বাড়ির পুর্করিণীতে ছুটির সকালে প্রায়ই সন্তরণ-লীলা হয়। অজয়ই এ-সম্বন্ধে বিশেষ উৎসাহী। বৃন্দাবনকেও ধরিয়া নাকে মুখে জল গাওয়াইয়া সাঁতার শিথাইয়াছে।

হলা করিয়া সকলে নৌকায় উঠিল। মাঝি পাল তুলিয়া নৌকা ছাড়িয়া দিল। সমুজগামী জাহাজগুলির পাশ দিয়া নৌকা তরতর করিয়া চলিল। সকলের বড় ক্রুর্ত্তি। শুখু বৃন্ধাবনের বড় অসোয়ান্তি, মাঝি তাহ'কে বার-বার সাবধান করিতেছে, সে বেন ধারে হেলিয়া না বসে, তাহা হইলে নৌকা উল্টাইয়া যাইতে পারে। জয়ন্ত গান ধরিল.---

আরে মন-মাঝি, তোর বৈঠা নে রে— আমি আর বাইতে পার্লাম না !

কলের চিম্নী, ষ্টীমারের ধেঁায়া, ক্রেনে গাঁটতোলা, মাল-ভরা গাধাবোট, বণিক-সভ্যতা-কনুষিত কলিকাভার গলার ওপর অপরাত্নের আলোকে কিশোরকঠে ভাটিয়ালী স্বর বেমন বিদদুশ তেমনই করুণ মনে হইল।

বোটানিক্যাল বাগানে সকলে খুব হল্লা করিয়া ঘুরিল; ভাব থাইল; ছুটোছুট করিল; বড় বটগাছের উচ্চতা কত, তর্ক বাধিল। সকলে চপ-কাট্লেটের অভাব অন্ভব করিল।

ফিরিবার সময় ষ্টীমারে জাসা ঠিক হইল। ষ্টীমার-ঘাটে আসিয়া বৃন্দাবন কাতর স্বরে চীৎকার করিয়া উঠিল— ভাই, আমার টাকা?

- —টাকা! কি হয়েছে?
- —আমার টাকা হারিয়ে গেছে, কোথার পড়ে গেছে। সে কাঁদিয়া ফেলিল।
 - —বেষন চাল ক'রে হাফপ্যাণ্টের পকেটে রেখেছিলি।
 - —কাঁদিস না, তোর নিজের টাকা ত ?
 - -- रा, मां पिराहिलन। हन पूँकि छ।
- —কোথায় খু^{*}জবি এখন, এ ষ্টামারে না যেতে পার**লে** রাভ হয়ে যাবে ফিরভে।

অৰুণ বলিল—আচ্ছা, আমি তোকে একটা টাকা দেব'খন।

- --দেবে ভাই ?
- —বা, তুমি কেন দেবে ? ভাব্ না, চপ কিনে খেয়েছিস।
- —আমার এত কল্পনা নেই, আমি ত কবি নই।

ষ্টীমার আসিয়া পড়াতে আর টাকার সন্ধ:ন হইল না।

চাঁদপাল-খাটে সকলে পরিপ্রাস্ত হ**ইয়া নামিল। সক্রে** ট্রামে ফিরিয়া বাইবারও প্রসা নাই।

অরুণ বলিশ—চশ ছেটেই থেতে হবে। বৃন্দাবন অতি শ্রান্ত, তার পর টাকা হারাইয়া বিষয়। সে ভগ্নস্থরে বলিশ—আমি আর হাঁটতে পার্চি না।

- খুব যে দেওঘরে দশ মাইল বেড়িয়েছিলে।
- —না ভাই, আমার নতুন জুতো, পাঃ ফোস্কা পড়েছে। অঙ্কণের মনে পড়িল মামীমা রাজে নিমন্ত্রণ করিয়াছেন.

সন্ধার পূ:ৰ্ব বাড়ি ফেরা দরকার। সে এক ফিটন-গাড়ীর গাড়োয়ানকে ডাকিল।

গাড়ে'রানটি সন্দিগ স্ব:র বলিল—বাবু পরসা আছে ত ? অঞ্ব গন্ধীর ভাবে দরাদরি হক্ষ করিল।

পিছন হইতে কে ডাকিল—হালো, অরুণ নাক ?
অরুণ চমকিয়া চাহিয়া দেখিল, নৃতন সুন্দর মোটরকারের
য়য়ারিং-ছইল ধরিয়া বদিয়া কে'টপাাল-পরিহিত এক যুবক
ভাহাকে ডাকিতেছে। সে মোটরকার চালাইয়া মাইতেছিল,
অরুণকে দেখিয়া গাড়ী থামাইয়াছে।

গৃবকট বলিল—কোথার থাবে—এস— joy ride—
সকল ভাছাকে ঠিক টিনিভে পারিল না, ধীরে বলিল,
—না, পাান্ধন, আমাদের বাড়ি ফিরতে হবে, আমর।
গাড়ী ঠিক ক'রে ফেলেছি।

—অল্রাইট্ (আছো)। পুলি উড়াইয়া সশকে মোটরকার চলিয়া গেল। গাড়োয়ান আর ভাড়ার টাকার সম্বন্ধে কোন সম্বেহ প্রকাশ করিল না। সকলে ফিটন-গাড়ীতে উঠিয়া বসিল।

জয়ন্ত জিজ্ঞাসা করিল—কে রে ছোকরা? খুব চাল্।

অরুণের তথন মনে পড়িল, যুবকটিকে সে মামাবাবুর বাড়িতে কোন সন্ধ্যায় দেখিয়াছে।

গাড়ী ধীরে চলিল।

জাহাজের মাস্তল, কলের চিমনীশুলির আড়ালে গলার পশ্চিম তীরে স্থা অস্ত গেল। অরুণের মনে হইল স্থা্রের এরূপ রক্তিম বর্ণ সে কখনও দেখে নাই।

সমস্ত পথ সে চুপ করিয়া বসিয়া রহিল। পথ, মাঠ, জনস্রোত, প্রাসাদশ্রেণী সব যেন অবাস্তব, রঙীন স্বপ্ন।

গাড়ী যথন অৰুণদের বাড়ির সক গলির মধ্যে আসিয়া চুকিল, অন্ধকার আকাশ তারায় তারায় ভরিয়া গিয়াছে। ক্রমশঃ

সিন্ধু-তটে

গ্রীগোপাললাল দে

আমি এরে বাসিয়ছি ভালো!
মুক্ত নীলাকাশ এই নিয় খণ শরতের আলো,
আজ শাস্ত নীত বাযু, তারই মাঝে অসীম সাগর
প্রনীল সফেন-পুঞ্জ সচঞ্চল আদিম জাগর!
দুর দিগন্তর হ'তে বহে আদে তরক উত্তাল
উচ্ছসিয়া, উদ্বেলিয়া, আলোড়িয়া পড়ে চিরকাল,
উন্মন্ত আপন রঙ্গে, নাহি থা.ম, নাহি শোনে বাণী,
ক্ষণতরে দ্বিধা নাই, এতটুকু নাহি কানাকানি,
শাসন মা.ন না কোন কারো পানে ফিরিয়া না চায়,
কক্ষ বাহু পদারিয়া ধ্রণীরে আলিক্সিতে ধায়।

গগনেতে নাছিক বাদল,
তব্ দ্বে দ্বে বাজে শুক শুক লতেক মাদল,
উদ্মি আসে মহোল্লাসে অতি দীর্ঘ তুল চলচল,
ভাঙি ভাঙি ফেনপুঞ্চ উচ্ছুসিরা উঠে ছলছল;
প্রবল তরঙ্গবাতে তটপ্রান্তে পড়ে আছাড়িরা,
ধ্বনি উঠে প্রতিধ্বনি' অকন্মাৎ কাঁপি উঠে হিরা!
তীব্রবেগে ফিরে বার জলতলে বিপরীত স্রোতে,
বাহা পার টানি লর, রোধে নাক কভু কোন মতে;
কখনও বা হুই দিকে তীর্বেগে সংঘর্ষি ভীষণ,
আকাশের পানে উঠি বিধাবিছে অশনি-নিশ্বন।

সভাই কি আদিম জাগর!
চিররাজি চিরদিন এই মত আছিলে সাগর?
নামে ধবে নিশীখিনী অন্তরীক্ষে হলে কেশভার
আঁচলে আনন চাকি, বাম কক্ষে শান্তিঘট তার;
কুষ্প্রির মারাদণ্ড পরশনে লুপ্ত চরাচর,
আঁথি চূলে চূলে পড়ে সপ্তর্ধি ও অর্গের উপর;
কেহ নাহি চেরে দেখে নববধ্ লজ্জা-বিভ্ষণা,
অস্ত বাস সংবরিতে ত্রন্তা নহে অ্প্র-নিমগনা,
তথনও কি জেগে থাক? মহোদধি! এই জ্বোচ্ছাস্
অনস্ত ক্ষেত্র নাদে কি কহিছে চির বর্ধমাস?

আমি বড় ভালবাসিয়ছি,
নীলাকাশ নীল সিন্ধ চুমি আছে তারই কাছাকাছি,
মেব ভেলা ভেসে যায়, অন্তরালে উঁকি মারে চাঁদ,
উষার অঞ্চলতলে স্বর্ণরিব রচে মায়ার্ফাদ!
মধ্যান্তের থর দীখি, গোধুলির পুলকিত বেলা,
আনন্দিত নরনারী সিন্ধতীরে করে ছেলেখেলা।
বালুক মন্দির রচি, শুক্তি দিয়া নয়নাভিরাম,
কমল' 'চপল' দৌহে লিখে গেছে আপনার নাম।
বে যাহারে ভালবাসে, মাতা, পিতা, স্থা, প্রিয়তমা,
সাথে তারে আনিয়াছে! জীবনের সার্থক সাধনা!

কথাকলি

শ্রীশরদিন্দু সিংহ

দক্ষিণ-ভারতে মালাবার অঞ্চলে প্রচলিত কথাক্লি নৃত্য-সম্প্রনায় আজিও প্রচৌন ভারতের শাস্তানুদারী নৃত্যাভিনয়কে অভ্যাসের ভিতর বাঁচিয়ে রেখেছে। এদের খ্যাতিতে আরু র হয়ে কেরল-কথামণ্ডল নাম দিয়ে ও-দেশের কবি ভালাথোল আজে চার বংসর হ'ল রে নৃত্য-বিন্যালয় খুলেছেন, সামি গত জুন মাসে ভারত ছাঞাল ভুক্ত হই।

স্থাদেশ থেকে দেড় হাজার মাইলের দূরত্ব রেলপথে অতিক্রম ক'রে যথন ও-দেশে গিয়ে পৌক্রেছিশাম তথন শেষ রাত্রি। রেলওয়ে ষ্টেশন থেকে প্রায় ছ-সাত মাইল মোটর-বাসে ক'রে গিয়ে কেরশ-কথামণ্ডলে পৌছতে হয়। মোটর-বাসের অপেক্ষায় প্রায় ঘণ্টা-ভিনেক ষ্টেশনে ব'সে কাটাতে **হয়েছিল। সেই সময়ে পথশ্রম ও বুমের বাবিতি খুবই সম্প্রকর** মনে হয়েছিল। কিন্তু স্র্য্যোদয়ের সঙ্গে সঙ্গে যথন ও-দেশের প্রাকৃতিক দৃশ্যের সৌন্দর্য্য চোপের সামনে ফুটে উঠেছিল তথন দেই অভাবিতের রূপে মোহিত হয়েছিলাম ও নিজের ক্লাস্তি ভূলে যেতে দেরি লাগে নি। জায়গায় জায়গায় আমাদের শান্তিনিকেতনের প্রাকৃতিক দুগ্রের সঙ্গে হবছ মিল দেখতে পেয়ে একটা নিগৃ অনিশ উপভোগ করে-हिलाम। अ-तन्यवानौत्मत्र अन्तरकत्र मू.थ अन्त के रच यथन মহাত্মা গান্ধী ও-দেশে গিয়েছিলেন, তথন ওদের স্থানারুণ, অর্থাৎ প্রাচীন শাসনকর্ত্তা, মহাত্মাকে জিজ্ঞাদা করায় উনি বলেছিলেন এ ত স্বৰ্গ। সত্যহ ও-দেশেৰ প্ৰাকৃতিক সৌন্দর্যের মর্যাদা রক্ষা করতে এক কবির লেখনীই শমর্থ। ও-দেশের ছোট-বড় বৃক্বত্ল পাহাড় বর্ষা লের স্থতা দিয়ে গাঁথা আঁকাৰাকা সৰ্জ ধানের ক্ষেতের মালা গলায় ছলিরে এবং কোথাও বৃক্ষণুত্ত তৃণাচ্ছাদিত যেন সব্দ্র গালিচা বিহান সুপ্রাশস্ত উন্নত ভূমি কোলে কোলে আম কাঁটাল ও সুপারি গাছের বাগান-ঘেরা টালির বাড়িকে নিয়ে যে সৌন্দর্যোর বিকাশ করেছে, সেটা কবি এবং শিল্পীর লেখনী ও তুলিকাকে অফুরস্ত থোরাক দি:তে সমর্থ। ও-দেশের - ধানের ক্ষেতে ক্র্যক-রমণীরা তাদের নিরাবরণ সূপ্ট বক্ষ নিয়ে শশুভারনত ধানগাছের বঞ্চিম ভঙ্গীর ছক্ষে ছন্দ মিশিয়ে ঝুঁকে প'ড়ে সারাদিন কাজ ক্রছে যেন ক্লপদক্ষের ভূলিকার অপেক্ষা করেই আনন্দের চিরস্থায়ী প্রভীকে রূপান্তরিত হবার জন্তে।

সামাদের কাছে স্থা ব'লে মনে হয় যথন দেখি ও-দেশের শোকেরা প্রাতীন ভারতের আদর্শ জীবনবাতা। আদিও মেনে চলেছে। সামার এক মাসীমা বলেছিলেন, যে, বাঙালীর জিভ্ স্থাদেশ ভাড়া অন্ত কোপাও গেয়ে তৃথি পার না, এ-কপা মর্শ্বে মর্শ্বে অনুভব করেছিলাম।

ও-দেশে কথাকলি ছাড়াও আরও কতকগুলি ভনপ্রিয় নৃত্য প্রচলিত আছে, গেমন, "কুমি" "কাইকটু টেলি" "আটম্ তুলাল," "মোহিনী আটম্" ইত্যাদি। প্রথ.মাক্ত ছুইট ওধানকার বালিকা-বিশ্বালয়েও শেধান হয়। অবগ্র শ্রেষ্টতায় কথাকলি এদের স্কলের জগ্রণী। কণা অর্থাৎ গ্রহ এবং কলি অর্থাৎ নৃত্যাভিনয়। কথাকলি অর্থে আখ্যানের নৃত্যাভিনয় করা। এদেব সমত্ত এভিনয়ের আখ্যান-বস্ত হচ্ছে পুরাণ, এবং নৃত্যরত এবস্থায় কোন রক্ম কথা না-ব'লে হাতের মুদ্রার স্বারা কথোপকথন ও চোগ, জ, মুখের ভাবভঙ্গীর সাহাযে অর্থপূর্ণ ভাব প্রকাশ এদের প্রধান বৈশিষ্টা। ঠিক কবে থেকে এই সম্প্রদায়ের অভিনয় চলে এদেছে, দে-কথা কেউ শ্বৰণ করতে পারছেন না। কেউ কেউ বলেন, "কুড়ী- এটিম্" ব'লে এক সম্প্রদায়র অভিনয় মন্দিরে শুধু ব্রাহ্মণদের মধ্যে প্রচলিত ছিল, তারই একটি পরিবর্ত্তিত ও পরিবৃদ্ধিত সংস্করণ এই কথাকলি। কুড়ী-আটম व्यक्तिकाल भूतके वित्रम, स्निक वनश्म हे ५८म ।

কোন স্থানগত ও জাতিগত বাধা না-থাকার কথাকলি জনপ্রিয় ও দীর্ঘদীবী হ'তে পে.রছে। কথাকলি মন্দির থেকে যে জন্মলাভ করেছে ভার পক্ষে সংক্ষা দের এদের ঐকতান বাছা। এদের ঐকতান বাছে থাকে জই

জন গায়ক, একটি মাদল, একটি ঢণ্ডা (ঢাক), এক জন গায়কের হাতে একটি কাঁসর ঘণ্টা ও আর এক জনের হাতে এক জোড়া করতাল। অভিনয়কালে এই সঙ্গীত ও বাদ্য মন্দিরের আরতির ভাব প্রকাশ করে।

ষাত্রার মত খোলা জায়গায় সামিয়ানার নীচে অভিনয়
হয়। গায়কেরা থাকে অভিনেতাদের পেছনে; সামনের দিকে

ত্-ধারে তুটা, সময়ে সময়ে একটি প্রায় চার তুট উঁচু পিতলের
প্রদীপে নারকেল-তেল ও তুলোর পলতে জলতে থাকে।
এই আলোর হলদে আভা ও কম্পন গিল্টি-করা গহনা ও
বিচিত্র বর্ণের পোযাককে জমকালো ক'রে তুলতে ও বছবর্ণরঞ্জিত মুখের সজ্জা-রচনাকে দীপ্রিমান করে তুলতে সহায়ক
রূপে বিশেষ উপয়োগী ব'লে ব্যবহার করা হয়। আলোর
ঠিক পরেই তৃ-জন স্থবেশধারী ব্যক্তি একথানি বিচিত্র
বর্ণের পদ্দাধ্রে থাকে। একে য্বনিক্য-রূপে ব্যবহার
করা হয়। সারারাত্রি ধ'রে অভিনয় হয়ে থাকে। আজকাল

এ-প্রাপা শিথিল হয়ে এসেচে। স্থানীয় জাদার কিংযা
বিশিষ্ট ব্যক্তির শ্বা আছুত হয়ে গিয়ে এবা অভিনয়
করে থাকেন, সময়ে সময়ে নিজেদের উ দ্যাগেও করে
থাকেন।

অভিনয়ের দিন সন্ধার সময়ে ঢাক পেটান হয়। এই ঢাকের শব্দ শুনলে লোকেরা ব্রুতে পারে, যে, সেদিন রাত্রে কথাকলির অভিনয় হচ্ছে এবং লোকের মুথে মুথে বহু দুর দুর গ্রামেও খবর ছড়িয়ে পড়ে। এই ঢাক-পেটানকে "কেলীকট্ট্," বলে। এই হ'ল এদের বিজ্ঞাপনের প্রথা। তার পর রাত্রি প্রায় নটা-সাড়ে-নটার সময় প্রকৃত অভিনয় আরম্ভ হবার পূর্ব্বে পর্দার পেছনে বন্দনার শ্লোক-আবৃত্তি, ও মাদল, চণ্ডা, কাঁসর ঘণ্টা ও করতালের বাদ্য স্হকারে এক নৃত্য করা হয়। একে "ভ:ঢ্ম" বলে, এর উদ্দেশ্য হচ্ছে নটরাঙ্গকে বন্দনা করা। তার পর পর্দা সরিরে "পুড় পাঢ়" নামক আর একটি নৃত্য করা হয়, পুড়পাঢ় অর্থে সমগ্র কান্ধের স্টনা। এর পর করতাল ঘণ্টা মাদল ও চণ্ডা সহকারে জয়দেবের গীতগোবিন্দ থেকে একটা গান গাওয়া হয়। একে "মেলাপদ" বলে। "মেলা" অর্থাৎ চাকবাজ্ঞান ও 'পদ'' অর্থাৎ গান। "মেলাপদ'' অর্থে চাকের সক্তে গান গাওয়া। এই সময়ে ওয়ু গায়ক এবং বাদ্যকরদের স্বীয় ক্বতিত্ব দেখাবার প্রযোগ দেওয়া হয় ব'লে মনে হয়। এই "তঢ়েম" থেকে "মেলাপদ" পর্যান্ত প্রায় এক ঘণ্টা সময় লাগে। আজকাল সব সময়ে এ-সব না ক'রে একেবারে অভিনয় আরম্ভ করা হয়ে থাকে।

রামারণ ও মহাভারতের সমস্ত উপাধ্যান গীতের উপযোগী ভাষায় রূপাস্তরিত করা আছে। এই কার্য্যে ত্রিবাঙ্কুড়-রাজকুমারদের মধ্যে কেউ কেউ উদ্যোগী হয়ে স্বীয় রচনার দ্বারা সাহায্য ক'রেছেন দেখতে পাওয়া যায়। গায়কেরা অভিনয়ের আরম্ভ থেকে শেষ পর্য্যস্ত গান গেয়ে সমস্ত ঘটনা বিবৃত করেন এবং এই গানের কথা অনুসরণ ক'রে অভিনেতারা হাতের মুদ্রার দারা কথোপকথন করেন। সঙ্গীতের ধরণ কতকটা বাংশার কীর্ত্তনের মত। একই পদকে অনেক ক্ষণ ধ'রে বিভিন্ন স্থরে গাইতে হয়। কারণ, মুদ্রার সাহায্যে সেটাকে বলতে বতটা সময়ের দরকার তার দিকে নজর রাখতে হয়েছে। এদের এক-একটা দৃশ্য প্রায় চল্লিশ-পঞ্চাশ মিনিট ধ'রে থাকে। প্রত্যেক দুষ্টের শেষের দিকে দশ-পনর মিনিট গান বন্ধ থাকে, শুধু বাজনা বান্ধতে থাকে। সেই সময়ে অভিনেতাকে স্বীয় ভূমিকা, মৃশ আখ্যানকে অঞুন্ন রেখে, স্বাধীন ভাবে অভিনয় করতে দেওয়া হয়। এই সময়ে অভিনেতারা প্রায়ই কোন যুদ্ধ অথবা কোন প্রাকৃতিক দৃশ্যের বিস্তারিত বর্ণনা ক'রে থাকেন। ত্রথ হঃথ কিংবা বীর্ত্ব প্রভৃতি ভাব প্রকাশের সময়ে সুর যাতে অভিনেতাকে সাহায্য করতে পারে, সেদিকে শক্ষ্য আছে। এদের সঙ্গীতে সুরের গমক, হুন্ধার ও স্বর-বিক্তাস বেশী প্রাধান্ত পেয়েছে।

অভিনয় ও নৃত্য ফুটাকে আলাদা ভাবে দেখলে ব্যবার স্থবিধা হবে। অভিনয়ের ভেতর প্রথমতঃ হচ্ছেদ্র চোষ জ্র ও ঠোটের সাহায়ে নব রস, বথা—আদি, বীর, করুণ, অঙ্কুত, হাসা, ভয়, বীভৎস, রৌদ্র ও শাস্ত, এদের অভিনয়। শেষোক্ত রসের অভিনয় প্র্যুই বিরল। এই রসের অভিনয়ের পেছনে গভীর রসাম্ভৃতি, স্ক্র বিশ্লেষণ ও দীর্ঘ অভ্যাস বর্তমান, সে-বিষদ্ধে কোনো সন্দেহ নেই। এর অভিনয় না দেখলে বোঝান শক্ত। বিতীয়তঃ হচ্ছে হাতের মুদ্রার দ্বারা কথোপকথন। নৃত্যের সময় অভিনেতার পক্ষে কথাবলা সন্তব নয় ব'লে এই





কথাকলির অভিনেতারগ

প্রথার উদ্ধা। হাতের আঙ্লকে নানান্রকমে শাসিয়ে নিয়ে হাত পুরিয়ে-ফিরিয়ে বিশেব ভঙ্গীর দারা বিশেব অর্থ প্রকাশ করা হয়।

এই রকম প্রায় চারি শত মুদ্রা কথাকলি অভিনয় কালে ব্যবহৃত হচ্ছে। এই মুদার সংহায়ে সমগ্র রামায়ণ ও মহাভারত অভিনীত হচ্ছে, এই বললেই বুরতে পারা বাবে এ কত্তথানি সফলতা লাভ করেছে। এর দারা এমন কি



উদয়শকর, সিম্কী ও কথাকলির আচার্য্য নাধুদ্রি

গাহিত্যিক রসও যে কতথানি ব্যক্ত করা গেতে পারে তার একটা উদাহরণ না-দিয়ে থাকতে পারদাম না। যেমন্, "ভোমার মুখের সৌন্দর্যা দেখে চক্র শজ্জিত, ভোমার ধুসজ্জিত অলকণ্ডচ্ছ মুখের ওপর এসে পড়েছে, মনে হচ্ছে নেন মধুশোভী লমর পল্লের ওপর শোভা পাচ্ছে, মন্ত গল্জের গমনভঙ্গীর মত তোমার গতি, এইরূপ সৌন্দর্যাবিশিষ্ট নারী তুমি বনে বিচরণ করছ, তুমি কে?

আরম্ভ থেকে শেষ পর্যাও অভিনেতারা মুদ্রার দ্বারা এই রকম কথা বলার সময়ে যে কথা যে রসাত্মক তার সঙ্গে সেই রবের অভিনয় ক'রে সেটাকে সপ্রাণ ক'রে তোলেন।



প্রালোকের বেশে কথাকলির অভিনেতা

১। পতাকা, ২। ত্রিপতাকা, ৩। কর্ত্তরিম্থম, ৪। অর্ক্তর্ক, ৫। এলার্য, ৬। ম্কত্ত্, ৭। ম্টি, ৮। শিথরম্, ৯। কপিথম, ২০। কটাকাম্থম্, ১১। হৃচিম্থম, ১২। গৃজা, ২০। সপশার্ক, ১৪। মৃগশীর্ক, ১৫। অঞ্চলি, ১৬। গুলব্য, ১৭। মৃকুর্য, ১৮। ভ্রমর, ১৯। হংস্য, ২০। হংস্পক্ষম, ২১। বর্ষন্য, ২২। মৃকুল্যু, ২৩। উণ্ডম, ২৪। কটক। এই চলিশটি মূল ম্ডা। এদের সংমিশ্রণে এবং ব্যবহারের প্রকারভেদে বিভিন্ন অর্থ

নত্যের ভিতর প্রথমতঃ লালিতাপূর্ণ দৈহিক ভঙ্গীর বাহলা আধুনিক বে-কোন ভারতীয় নৃত্যসম্প্রদায়কে ছাড়িয়ে গেছে এবং এদের তালের হিসাবের ছটিলতার সমকক্ষ লক্ষোর কথক-সম্প্রদায়ের ব্যবহৃত তাল ছাড়া আর কোগাও নাই। কিন্তু কথক-সম্প্রদায়ের নৃত্যে কমনীয় দৈহিক ভলীর যথেষ্ট অভাব আছে। এদের ভঙ্গিমার ভেতর প্রধান বৈশিষ্ট্য

কথাকলি-অভিনয়ের চিত্











আটম হলাল পদ্ধতিতে অভিনয় ও নুতা

ষারা সমত ভঙ্গিমা মণ্ডিত এবং দফিণ-ভারতের ভূতা-সম্বন্ধীয় অধিকাংশ ভাস্বনোর বচয়িতা বে এদের কাচ থেকে প্রেরণা প্রেছেন, সেটঃ অপ্পেই নয়। এদের ভূতা-রচয়িতারা প্রকৌশলে লাফান, মুক্তি পড়া প্রভৃতির মাহায়ো দৈহিক ভঙ্গিমার দৌলগা প্রকাশ ক'রে ফান্তে হন নি। ফণায়্ক্ত সাপের ডাইনে বাঁয়ে দোল থাবার ভঙ্গীর অনুকরণে একটি ভূতাভঙ্গীর বচনা, ও অভিন্য-প্রসঙ্গে মন্তবের বর্ণনা দেবার ভক্ত উক্ত পক্ষীর চোল-মুগের হাবভাব ও ভূতাভঙ্গীর অনুকরণে ভূতার স্ট্টি—এদের স্টি শক্তির পরিণ্ড অবস্থার রসানুভূতি ও প্রাবেক্ষণ-ক্ষমতা কোথায় পৌছেছে, এইগুলি তার প্রমাণ দেয়। মুদাপ্রসঙ্গে উল্লিখিত মন্ত গজের গমনভঙ্গীর যে অভিনয় সেটাও উল্লেখযোগ্য। না দেখলে এ-স্বের সম্পূর্ণ রস উপভোগ করবার মন্ত কোন চেটা নিক্ষল। এদের ভূতো ব্যবহৃত ভালের সংখ্যা হচ্ছে পাঁচ, নগা—চম্পরা, চম্পা, প্রাঞ্চাহারি,

গুলটা ও আরন্দা। প্রত্যেক তালের তিন-চার রকম গরনের উপর গং-ব্ধা নৃত্য আছে। এগুলোকে এরা "কালাসন্" বলেন। অভিনয়কালে আগাগোড়া মাদল, দড়া ও করতালের সাহায়ে তাল বাক্ততে পাকে। তারই বেঁকে বেলকৈ মুদ্রার ধারা এক-একটি পদকে অভিনয় ক'রে এর রকম একটি "কালাসন্" দিয়ে সেটাকে শেষ করা হয়, একে "খড়" বলে। নর্ভকরা মগন সংগত ও দুচপ্দক্ষেপে তালের নানান্ ছান্দে কথনও দত্ত ও কগনও দিমা লয়ের ওপর নাচতে গাকেন, তথন তাদের তাল্যান ও অক্সম্পালনের দক্ষতা যে কতথানি সাধনাসাপেক, তার আভাস সহজে স্থাতি হয়। পুরুষের নতো ও স্বীর এতো পার্থকা আছে। পুরুষরাই স্ত্রী-বেশ নিয়ে তা করছেন। স্থী এবং প্রত্যের একসঙ্গে অভিনয়ের



রাক্ষদ-বেশে কথাকলির অভিনেতা

প্রথা প্রচলিত নার। পুরের ভিল, এবং সেটাকে ফিরিয়ে আনবার চেষ্টা হচ্চে।

কথাকলিতে বিভিন্ন 'রসে'র অভিব্যক্তি





। কথাকলির যেছা

এদের বাবহুত পোষাক ও চুল এবং চালের গুঁডাব সাহায়ে মুগোস রচনা একটি প্রধান ক্ষ ও খুবই সময়সাপেকা। পূর্দ্ধেই বলা হয়েছে এঁদের আগানবস্থ হাছে
পুরাল, অর্থাৎ দেবতা ও রাক্ষসদেব কাহিনী। এঁদের
নারক-নারিকাকে সন্ত, রজ, তম প্রাভৃতি গুণের বিচারী
হিসাবে ছরটি শ্রেণীতে ভাগ কবা। প্রথম হছে দেবতা,
মুথের রং লালচে হলদে, সোঁটে সিঁত্র, চোখ ও কা
কক্ষল দিয়ে ফোটান এবং কানের কাছ থেকে
আরম্ভ ক'রে তুই গালের ওপর দিরে এসে চিব্ক ও
সোঁটের মাঝামাঝি স্লায়গায় মেশা, চুল ও চালের গুঁডা
দিয়ে তৈরি এক দেয়াল তুলে দেওরা গাকে। গুঁদেব
কাছ পেকে ক্ষেনেছি, রসাভিনয়কালে মুগের অনাবভাক

অংশকে আবৃত রেথে মৃথকে কান্তিমান ক'রে তোলার উদ্দেশ্যে একে ব্যবহার করা হচ্ছে। এবং আধুনিক রক্ষমঞ্চের 'ম্পট" লাইটের ব্যবহারের অর্থও এতে আছে। এই রকম চূল ও চালের ও'ড়ার সাহাযে। মুথের ওপর নানান্ রকম নক্ষায় ভাগ ক'রে রাক্ষম প্রভৃতি তমোগুল-বিশিষ্ট ভাবকে রূপ দিয়েছে। বিশেষ ক'রে রাক্ষ্যেসর এই রকম মুখ্য-রচনা খুবই স্ফল হয়েছে। দ্বিতীয় "পাচো," সক্তুণবিশিষ্ট। মুথের রং স্বৃজ, ঠোটে সিন্দুর, চোথ ও জ কাজল দিয়ে ফোটান এবং ঐ রকম দেয়াল। হৃতীয় "কাতি" রজোমিশ্রিত তমোগুণবিশিষ্ট, খেমন রাবণ, কীচক



রাবণ-বেশে কথাকলির অভিনয়

প্রভৃতি। চতুর্থ "তাড়ি" বোর তম। তিন শ্রেণীতে একে ভাগ করা হয়, যেমন, বীভৎস, রৌদ্র, শাস্ত। বীভৎস হচ্চে কীরাত ও রাক্ষমী। রৌদ্র,—হুর্যোধন, হংশাসন ও বকাম্রব পাভৃতি। শাস্ত হচ্চে হতুমান। পঞ্চম, "মিহ্ন

কিয়াও" স্থী-বেশ ও মহর্গি। এদের মুখের রং লাল্চে হলদে, সোঁটে সিন্দুর, চোথ ও ল কাজল দিয়ে ফোটান এবং সাভাবিক। বহু "নিমান"। এ হছে বারা ফতবিক্ষত শরীরে দর্শকের সামনে উপস্থিত হয়, খেমন—শূর্পনথা প্রভৃতি। এই মুখেস জাপান কিংবা জাভার মুখোসের মত স্থায়ী নয়। প্রথাকে বার অভিনয়ের সময়ে নুতন ক'রে

তৈরি করতে হয়। এতে খুবই সময় লাগে। তব্ও মুণ থেকে পুথক্ কোন স্থায়ী মুণোদে ইহা কপাস্তরিত হয় নাই। কারণ, রদাভিনয়ের জন্ত মুথের পেণার সঞ্চালনের কোন বাধা না দিয়ে এই রকম ম্পাবরণ তৈরি করতে হয়েছে। এদের ব্যবহৃত পোষাক ও গানো ছবিতে বেশী স্পষ্ট হবে।

মহিলা-সংবাদ



রাণী লগাীৰাস রাজবাড়ে

রাণী শক্ষীবান্ধ রাজবাড়ে এক চন বিখাত কর্মী ও সমাজদেবিকা। তিনি গোয়ালিয়রের কাউন্সিল অন বিজেন্দীর দৈজ-বিভাগের ভার-পাপ্ত সদস্থেব সহস্থিণী। নারীজাতিব উন্নতিকল্পে তাহার প্রচেষ্টা স্পর্কনবিদিত। তিনি এই জ্লা গোমালিয়র ও বাহিরের অনেকেবর আদর্শপানীয়া। সামাজিক কুসংস্কার ও চুর্নীতি-নিবারণেও তাহার বিশেষ ক্রিছ আছে।



ডটুর শ্বিতী **শাস্তা স**প্র

ডক্টর শ্রীমতী শাস্তা সপ্তর্ধি তৃতীয় এম্-বি, বি-এস্ গরীক্ষায় প্রথম বিভাগে প্রথম স্থান অধিকার করিয়া শ্বপদক লাভ করিয়াছেন।

ब्रू

রবীজ্ঞনাথ ঠাকুর

শ'ল্পনের পূর্ণিমার আমন্ত্রণ পল্লবে প্লবে পোন মুথর হোলো অধীর মন্ত্রর কলরবে। বংদে, তুমি বংদরে বংদরে সাড়া তারি দিতে মধূষরে, আমাদের দৃত হয়ে তোমাব কপের কলগান উংদ্বের পূপাদ্দন বৃদ্ধেরে করেতে আহ্বান॥

নিপুর শাঁতের দিনে গেলে তুমি কথতত্ ব'রে আমাদের সকলের উৎকন্তিত থাশীকাদি ল'রে। থাশা করেছিত মনে মনে নব বদস্তের আগমনে কিরিয়া থাসিবে গবে লবে আপনার চিরস্থান, কানন-লক্ষ্মীরে তুমি করিবে আনন্দ-খণ্যদান।

এবার দক্ষিণবায় ভূথের নি:ঝাস এল ব'হে;
ভূমি ভো এলে না কিরে; এ আশ্রম ভোমার বিবহে
বীথিকায় ছায়ার আলোকে
স্থগভীর পরিব্যাপ্ত শোকে
কহিছে নির্বাক্ষণী বৈরাগ্য-কর্মণ স্লান্ত প্রে,
ভাহারি রণন-ধ্বনি প্রান্তরে বাজিছে দুরে দুরে ॥

শিশুকাল হ'তে হেপা স্থে ছঃথে ভরা দিনরাত করেছে ভোমার প্রাণে বিচিত্র বর্ণের রেথাপাত। কাশের মঞ্জরী-শুল দিশা; নিশুক মালভীঝরা নিশা: প্রশাস্ত শিউলি-ফোটা প্রভাত, শিশিরে ছলোছলো; এখনো তেমনি হেপা আদিবে দিনের পরে দিন,—
তথ্ও সে আছ হ'তে চিরকাল র'বে তুমিহীন।
ব'সে আমাদের মাঝখানে
ক'ড় যে তোমাব গানে গানে
ভিরিবে না ত্থ-সন্ধা, মনে হয় অসম্ভব অভি,
বসে বগে দিনে দিনে প্রমাণ করিবে সেই কভি॥



শ্মতীর্মাকর

বারে বারে নিতে তুমি গাঁতিলোতে কবি-থানীবাণী, ভাহারে আপন পাত্রে প্রণামে কিরায়ে দিতে আনি'। জীবনের দেওয়া নেওয়া সেহ ঘূচিল অন্তিম-নিমেবেই : রেহে;স্কুল কল্যাণের সে শহক তোমার আমার গানের নির্দ্ধাল্য সাথে নিয়ে গেলে মরণের পার ।

े श्रेथियामा की

হায় হায় এত প্রিয় এতই হুর্লভ যে-সঞ্চয়
একদিনে অকস্মাৎ তারো যে ঘটিতে পারে শয়।
হে অসীম, তব বক্ষোমাঝে
ভার বাথা কিছুই না বাজে,
স্থান্তির নেপথা সেও আছে তব দৃষ্টির ছায়ায়;—
স্থান-বীণা রক্ষাহে মোরা বুথা করি হায় হায়॥

তে বংদে, যা দিয়েছিলে আমাদের আনন্দভাণ্ডারে তারি স্থতিরূপে তুমি বিরাজ করিবে চারিধারে। আমাদের আশ্রম-উৎসব গথনি জাগাবে গীতরব তথনি তাহার মাঝে অশ্রুত তোমার কণ্ঠস্বর এশ্রুব আভাস দিয়ে অভিষিক্ত করিবে অন্তর ॥*

় ১৮ মাখ, ১৩৪১

্ শান্তিনিকেতনের সঙ্গাতশিক্ষারী প্রলোকগতা শ্রীমতা রমা করের উপ্দেশে লিখিত রবাজ্যনাথের এই কবিত টি ''বিবভারতী নিউদ' পরিকার বাহির হইরাছে। রমা তাঁহার বন্ধু বগাঁর শ্রীশচক্র মন্ম্বারের অস্তমা কল্পা ও তাঁহার প্রেহভালন ছিলেন, ডাক-নাম ছিল 'এট'!

দিবাস্বপ্ন

শ্ৰীসীতা দেবী

দরের গির্জার গড়িতে চং চং করিয়া আটটা বাজিয়া গেল। মিনি আর সম্ভ এত ক্ষণ ছটফট করিয়া সবে ঘুমাইয়া পড়িয়াছে। স্ক্রা হইতে এমন ভীষণ গুমোট হইয়াছিল ্য মাসুষ সিদ্ধ হইয়া বাইবার জোগাড়। কোথাও হাওয়ার লেশমাত্র নাই। বাতাস থাকিলে, শামনের এক ফালি বারান্দাতে বদিলে, গা বেশ জুড়াইয়া যায়। বাড়ির ভিতর ঐটুকু জায়গা থালি ফাঁকা। আর বাড়ি বলিতে ত মস্ত বাড়ি, ১০০ টাকা মাহিনা যার, সে কেরাণীবাবুর আরু কত বড় বাড়ি ভাড়া করিবার ক্ষমতা হইবে? গুই ধানি থাকিবার ঘর, ঐ ছোট বারান্দট্টিকু, ইহাই বি:নাদিনীর বাড়ি। কলের ঘর, রাশ্লাঘর প্রভৃতি এমন ছোট ছোট যে পুতৃলের ঘর বলিয়া বোধ হয়। যাহা হোক, তাহারা চারিট প্রাণী, কোনোমতে ঠাসাঠাসি করিয়া ইহারই ভিতর কুলাইয়া যায়। প্রকাশ বাহির হয় সাড়ে নটার, আর বাড়ি ফেরে সন্ধার পর, কাজেই বাড়ির সজে সম্পর্ক ভাহার আট-ন ঘণ্টার বেশী নয়। সম্ভটা ছ-সাত বৎসবের হইয়াছে, সামনের জামুয়ারিতে ভাহাকে স্থলে ভর্ষ্টি করিবার কথা। সেও চলিয়া গেলে বাকি थाकित वितामिनी बात मिनि। एखताः हेशत (ह्रा বেশী স্বায়গায় তাহাদের প্রয়োজনই বা কি ? আর প্রয়োজন থাকিলেই বা হইতেছে কি ? কোনো কালে অবস্থার উন্নতি হইবার আশা বিনোদিনী ছাড়িয়াই দিয়াছে।

তাহার বিবাহ হইয়াছে ন-দশ বৎসর আগে। তথন
প্রকাশ মাহিনা পাইত মাত্র পঞ্চাশ টাকা। এত দিন
ধরিটা ত্ই-চার টাকা করিয়া বাড়িয়া এখন ১০০০
দাঁড়াইয়াছে। তেমনি প্রকাশের বয়স ত বসিয়া নাই,
তাহাও বাড়িয়াছে। বিনোদিনীই বুড়ী হইতে চলিক,
তাহারই গেল মাসে পঁটিশ পুরিয়া সিয়াছে। প্রকাশ
তাহার চেয়ে বছর-দশের বড়। বাঙালীর স্বাস্থ্য ত?
কত দিনই আর পুর্ণোদ্যমে কাক করিতে পারিবে?
চল্লিশ বৎসরে পা দিতে না-দিতেই ত তাহাদের চোখের
দৃষ্টি কমিয়া গায়, পিঠ কুলা হইয়া পড়ে, হাজার বাাধি
আসিয়া কোটে! যা উয়তি করিবার তাহা এই ত্রিশ
হইতে চল্লিশের মধ্যে।

এমন সময় গির্জ্জার ঘড়ির শব্দে তাহার চিস্তাস্ত্র ছিল্ল হইমা গেল। ওমা, আটটা বাজিলা গেল, এখনও মান্ত্যের ফিরিবার নাম নাই। কি আকেশ বলিহারি হাই। স্বীলোক বলিমা ফোল্ম্মা কি জানোরারেরও অধম? তাহ িনর সময়মত খাওয়া-শোওয়া কিছুরই প্রয়োজন নাই। যখন কর্ত্তার মর্জ্জি হইবে, তখন তিনি ফিরিবেন এবং ধাইয়া-দাইয়া স্ত্রীকে ক্বতার্থ ক্রিবেন। তাহার পর সে নিজে খাইবে, হেসেল তুলিবে, তাহার পর শুইতে যাইবে।

কিন্তু স্থামী বাজি না ফিরিলে বেশ প্রাণ খুলিয়া তাহার উপর রাগও করা যায় না বে? কুর্ত্তি করিয়া দেরি করিতেছে কি? আহা তাহাই যেন হয়। যে স্থানে তাহারের বাস, শহর না ত মান্ত্যথেকো রাক্ষম। বাাধি ত হাজার রকমের বংসর-ভোর লাগিয়াই আছে, তাহার উপর যমের স্থার এক নৃতন দৃত হইয়াছে এই মোটরকার আর বাস্গুলি। ধবরের কাগছ খুলিলেই হয়, গুইটা কি এ৯টা এই ববর চোবে পজ্বেই পজ্বে। হাজার সাবধান মান্ত্য হোক, কধন কি ঘটে, বলা যায় কি? ভগবান না-কর্মন, চের কই সে সহিয়াছে, স্থামী পুত্রের বুল চাহিয়া আরও সহিবার জন্ত প্রস্তুত হইয়াই আছে, কিন্তু প্রপ্রণা বাদে।

পুরুষণাত্ব অবিশ্রান্ত পরিশ্রম করে, মাঝে মাঝে একটু তৃত্তি করিবার তাহাদের প্রয়োজন হয় বইকি? বিনোদিনীর অপ্রিধা হয় বটে, কিন্তু দায়ের নয়। দেও সারাদিন থাটে, ঘর ছাড়িয়া কোগাও নভ়তে পায় না, জীবনে তাহার কোনোই বৈচিত্রা নাই, তৃল্ডিয়ার ভারে জীবন হইতে সব সৌন্দর্যা, দব আনন্দ ও হার মুছিয়া বাইতে বসিয়াছে। প্রকাশ দেশে আনন্দ সহরে কে আবার কবে এত ভাবনা ভাবিতে যায় বল? একটা আছে, সেটা না থাকিলে আর একটা আদিরে, এই ত? বিনোদিনীর মেঞাজটা অনেকথানি কোমল হইয়া আসিয়াছিল, হুর্ঘটনার ভাবনায়, উহা আবার ধীরে ধীরে উদ্ভপ্ত হইতে আরম্ভ করিল।

ঘরের ভিতর নিজিত সন্ত্ব সংগাবে পা ইছিরা য়িনিকে লাগাইরা দিল। মিনি আঁটা করিরা কাঁদিরা উঠিল। বিনোদিনী ত'ড়'তাড়ি বারান্দা হইতে উঠিমা আসিয়া চাপ্ডাইয়া চাপ্ডাইয়া চাপ্ডাইয়া চাপ্ডাইয়া কিল। ঠাক্কণ এখন অগিয়া উঠিয়া বসিলেই হইয়াছিল আর কি ৪

প্রকাশের সঙ্গে ছুইটা কথাও বলিতে বিবে না, খ্যান-খ্যান করিয়া জালাইয়া মারিবে।

সাড়ে আটটা হইয়া থাকিবে, বোধ হয়। ঐ ত পাশের বাড়ির মন্ট্র মান্তার পড়াইয়া ফিরিয়া ঘাইতেছে। মাগো মা, এত দেরি কেন? আপিস হইতে বাহির হইয়া কোথায় গেল এ মান্ত্য? কোথাও ঘাইবার কথা আছে, তাহাও ত বলে নাই সকালে? আজ আবার মাহিনা পাইবার দিন, সজে টাকাকড়ি থাকিবে। মাঃ, আর ফ্রভাবনার বোঝা সে বহিতে পারে না, কবে যে তাহার মুক্তি হইবে। ইহার চেয়ে তাহার খণ্ডরবাড়ির প্রামে গিয়া থাকা ভাল। থাইবার-পরিবার কই সেধানে হয়ত আরও বেশী হইতে পারে, কিন্তু এত ভাবনা ভাবিতে হইবে না। আমী ত সারাক্ষণ চোথের উপর থাকিবে? বিনোদিনীর চোথ চুইটা ছল ছল করিয়া উঠিল, গলাটাও যেন ব্যথায় টন-টন করিতে লাগিল।

সারটো মাস কি টানাটানির ভিতর দিয়াই চলে।
মাহিনার টাকাটা হাতে পাইতে-না-পাইতেই ত আগের
মাসের বাকী শোধ করিতে অর্জেকটা কুরাইয়া যায়।
একটা দিনও নিশ্ভিত হইবার উপায় নাই, একটা দিনও
প্রাণ খুলিয়া আট গণ্ডা পয়সা নিজের ইচ্ছামত ধরচ
করিবার উপায় নাই। থালি ভাবনা, থালি অনটন, খালি
পাই-পয়সার হিসাব। তাও এত হিসাব করিয়াও যদি কিছু
ইউত। কোনো দিন গে ইহার শেষ হইবে তাহা ত আর
মনে হয় না।

বিনোদিনী বড়লোকের মেয়ে নয়, গৃহস্থ ঘরেরই মেয়ে।
তবু ভাহার বাপের বাড়ির অবস্থা ইহার চেয়ে খানিকটা
সচ্ছল ছিল বইকি? এত ক্যাক্ষি করিতে মাকে সে
কোনো দিন দেখে নাই। ভাহার ত সন্তান মাত্র ত্ইট, ভাই-বোনে কিন্তু ভাহারা বাপের বাড়িতে পাঁচ ক্ষন ছিল। তুই
বোন তিন ভাই। তা ভাগমন্দ সর্বদাই ভাহারা
খাইয়াছে, ছেঁড়া তাকড়া পরিয়াও বেড়ায় নাই। ফলপাকুড়
বে-সময়কার যা সবই ভাহাদের মুথে উঠিয়াছে। পূজার
সময় নৃতন কাপড় পরিয়াছে, পৌব-পার্বণে পেট ভরিয়া
পিঠাও থাইয়াছে। মা অবশ্র পাবের উপর পা দিয়া বসিয়া
থাকেন নাই কোনো দিন, সংসারের কালকর্দ্ম সবই করিভেন একটা ঠিকা-বি সম্বদ করিয়া। মেরেরাও তাঁহার যথেষ্ট সাহায্য করিত।

তা বিনোদিনীই কি খাটিতে কিছু কম্বর করে ? ঠিকা-বিও ত তাহার সব সময় জোটে না? কিন্তু দিনের ধরা-বাধা চার আনার বেশী বাজার থরচ করিতে কোনো मिन उ পरिन ना । ভान कन, वा मत्सन दमर्गाला काराटक বলে তাহা ছেলেপিলে জানেও না। কালেভদ্ৰে কোথাও নিমন্ত্রণে গেলে এ-সব জিনিষ তাহাদের পেটে পড়ে। (धनना, ए-এक প्यमा पार्यत्र अवस्त एन मथ कतिया তাহাদের কিনিয়া দেয় না। কাজ কি বাপু? ইহা শইয়া কে আবার কথা গুনিতে যাইবে? পূজার সময় সন্তা ছিটের জামা কিনিয়া দিয়া সে বেচারীদের ভূলায়। বৎসর-কার দিন কি করিয়া আর পুরান স্তাকড়া প্রাইয়া ভাহাদের লোকসমাঞ্জে পাঠাইবে? কিন্তু নিজেও নৃতন কাপড় এ-পাঁচ বৎসরের মধ্যে তাহার অঙ্গে উঠে নাই। পাচ বৎসর হইল মা স্বর্গে গিয়াছেন, বিনোদিনীকে নুতন কাপড় পরাইবার কথা কে আর ভাবিতেছে বল? প্রকাশ অবগ্র নিজের জন্তও পূজার সময় কাপড় কেনে না। কিন্তু পুরুষ-মানুষ তাহাকে স্থাপিসে বাইতে হয়, কাজেই মাঝে মাঝে নৃতন কাপড়-জামা করাইতে হয় বইকি। সব ক'খানাই ভাহার ছেঁডা নয়। বিনোদিনীর যাদশা ভাহা আর বশিয়া কাজ নাই।

গণির দরজার মৃত্ শব্দ হইণ, ঠুক্ ঠুক্ ঠুক্। বিশেষ তেল নাই আজকার আহ্বানে। বিনোদিনী মনে মনে বকুনিটা মুখস্থ করিয়া নামিয়া গিরা, হড়াৎ করিয়া দরজাটা খুণিরা দিল। প্রকাশ থেন না-দেবিয়াই আবার তড় তড় করিয়া উপরে উঠিয়া আসিল।

প্রকাশের জানাই ছিল, আজ অভ্যর্থনাটা ইহার চেয়ে উৎরুষ্টভর হইবেনা। দশ বৎসর বর করিভেছে ত, বিনোদিনীকে তাহার দশবার-পড়া বইরের মত জানা হইরা গিয়াছে। কখন সে কি বলিবে, কোন্ অবস্থার কেমন ব্যবহার করিবে, সব তার জানা। কিছু লইরাই তাহার আর কল্পনা ধরচ করিতে হর না। ঋষিরা বুধাই বলিরা গিয়াছেন ক্রা-চরিত্র হজের। বাংলা দেশে অস্তভঃ, অধিকাংশ ক্ষেত্রেই কথাটা ঠিক নর।

সে সিঁ ড়ির দরজাটা বন্ধ করিয়া বিনোদিনীর পিছন পিছন উপরে উঠিয়া আসিল। বিনোদিনী চুপ করিয়া বারান্দার দাঁড়াইয়া আছে, প্রকাশ যে একটা মানুষ কাছে আসিয়া দাঁড়াইয়াছে তাহা যেন দেখিতে পাইতেছে না। গভীর মনোযোগ দিয়া সে রাস্তার গাড়ী ও লোক-চলাচল দেখিতেছে।

প্রকাশ আরও কাছে আদিয়া স্ত্রীর কাঁধে হাত দিয়া বিদিন, "কি গো খেতে-টেতে দেবে? খিদেয় ত পেট চেঁ1-চোঁ করছে।"

বিনোদিনী অসহিষ্ণু ভাবে তাহার হাতথানা ঠেলিয়া সরাইয়া দিরা বলিল, ''তাই নাকি? এত ক্ষণ যেখানে ছিলে তারা খেতে দের নি?''

প্রকাশ হাসিবার চেষ্টা করিয়া বলিল, "সেটা আমার মামা-বাড়ি নয়?" মুখে হাসি আছে বটে, কিন্তু মনে যে একটু রাগও না-হইতেছে তাহা নয়। এই এক ব্যাপার লইয়া চিরকালই কি রাগারাগি করিতে হইবে? নব-বিবাহিত অবস্থায় যে-মান অভিমানশুলি ময়ুর লাগে, বেলী দিনের পর তাহাই মনে হয় অনাবশুক উৎপাত বা তাকামী। এত দিনে বিনোদিনীর একটু বৃদ্ধি-বিবেচনা ২ওয়া উচিত, সংসারকে একটু চিনিতে শেখা উচিত। অর্থাৎ সোজা ভাষায় কর্তার ধেয়াল-পুশীশুলি নির্বিবাদে সহিয়া যাওয়া উচিত।

বিনোদিনী ঘরের দিকে অগ্রসর হইতে হইতে বদিদ, "মামার বাড়ি নয় তা ত জানিই। সে কি আর জানতে বাকী আছে? তবু কোধায় যাওয়া হয়েছিল সেটা শুনিই না-হয়?"

প্রকাশ মোড়ায় বসিয়া জুতার ফিতা খুলিতে খুলিতে বলিল, "বুঝতেই ত পারছ যে বারোজোপে গিরেছিলাম। সেটা আমাকে দিয়ে বলিয়ে নিলে বেশী কি মিটি লাগে?"

"হঁ। কত চমৎকার খবর, মিটি আর লাগবে না?" বলিরা বিনোদিনী হন-হন করিয়া রালাঘরের দিকে চলিরা গেল। ঝনাৎ করিয়া শিকল খুলিরা ভিতরে ঢুকিরা স্থামীর জন্ত ভাত বাড়িতে বসিরা গেল।

তৃইখানি ঘরের ভিতর একটিতে ছেলেমেরে লইরা বিনোদিনী শোর, অন্তটাতে প্রকাশ শোর। ছেলেপিলের উৎপাতে তাহার গুম হয় না। সারা দিন ভূতের মত খাটিবে, আবার রাত্তে উহাদের চীৎকার উপভোগ করিবে, অত সথে আর কান্ধ নাই। বিনোদিনী অবশু খাটে তাহার চেয়ে বেশী, কিন্তু সে একে মেয়েমানুষ তাহার উপর তাহার খাটুনিতে পয়সা আসে না, সুত্রাং তাহার পরিশ্রমকে কেহ থাতির করে না।

ভাত বাড়িয়া থানিয়া, প্রকাশের ঘরেই আসন পাতিয়া বিলোদিনী জারগা করিয়া দিল। জামা-জুতা ছাড়িয়া, আপিসের শুতিধানিও বদলাইয়া প্রকাশ আসিয়া ধাইতে বসিল। বিনোদিনী সামনে মাটিতে বসিয়া থাওয়া দেখিতে লাগিল। স্বামীর ধাইবার সময় তাঁহার কাছে বসিতে হয়, মাছি থাকিলে মাছি তাড়াইতে হয় এবং হাজার রাগিয়া থাকিলেও তথন রাগের কথা কহিতে হয় ন', ইহা বিনোদিনী বাপের বাড়ি হইতেই শিথিয়া আসিয়াছে। মাকে চিরকালই সে এমনি ভাবে চলিতে দেখিত।

প্রকাশ খেন ইচ্ছা করিয়াই থাওয়া শেষ করিতে দেরি করিতে লাগিল। এইটুকু সময়ই সন্ধির সময়, ইহার পরই বিনোদিনীর মৃত্তি বদলাইয়া ঘাইবে। তবে আজ একটা ব্রনান্ত হাতে আছে, আজ মাহিনার টাকা তাহার সঙ্গে আছে। বিনোদিনীর টাকা-ক'টা হাতে করিয়া নাড়িয়াই যা স্থা। ইহার একটা পয়সা পর্যান্ত সে নিজের জন্ত, বা নিজের ইচ্ছামত কোনো দিন ধরচ করিতে পারে না।

প্রকাশ অবশেষে থাওয়া সারিতে বাধা হইল। মুখহাত ধুইয়া, বিনোদিনীর হাত হইতে পান লইয়া চিবাইতে
চিবাইতে বিছানায় গিয়া বসিল। এখন তাহার মেজাজটা
বেশ আছে। বিনোদিনীর মেজাজটাও যদি ভাল থাকিত
ত থানিক মিষ্টালাপ এই সময় করা বাইত। ছেলেমেয়ে
ছটাও পাশের ঘরে ঘুমাইয়া আছে। কিন্তু মুস্কিল ত
এইথানেই! হু-জনের মেজাজ এক সময় ভাল থাকাটা অতি
কালেভজে ঘটিয়া থাকে। বিনোদিনী মুথ বুজিয়া সারা
দিন থাটে বটে, কিন্তু নিজের জেল কথনও ছাড়ে না।
প্রকাশ খাকার না-কক্ষক, সে নিজে জানে যে সে কাহারও
বিসাম খাইতেছে না। অতএব কাহারও অঙ্গুলহেলনে হাসিতে বা কাঁদিতে সে বাধা নয়। বিনোদিনী
তাড়াতাড়ি করিয়া এঁটো বাসন-কোসন তুলিতে আরম্ভ

করিল। প্রকাশ গলার স্বরটাকে যথাসম্ভব মোলারেম করিয়া বলিল, "ভোমার এখনও খাওয়া হয় নি বুঝি?"

বিনোদিনী ফোঁস করিয়া উঠিল, "ভোমার আগে কবে আমি গিলে ব'লে থাকি শুনি ?"

প্রকাশ এখন ঝগড়া বাধাইতে চার না, বলিল, "তা বদি থাকতেও ত কিছু চণ্ডী অন্তদ্ধ হয়ে বেত না। ভোমার ভাত এইথানেই নিয়ে এস না?"

"থাক, অত আদরে আর কাজ নেই, আবার এথানে আর এক পালা এঁটো পাড়তে বসি। তার চেয়ে আমার রান্নাবরই ভাল।"—বলিয়া বাসন হাতে করিয়া বিনোদিনী চলিয়া গেল।

প্রকাশ হতাশ ভাবে গুইয়া পড়িল। নাঃ, এদের সলে আর পারা ধার না। বিনোদিনীকে স্থে রাধিতে তাহার কি অসাধ? সাধ্যে কুলাইয়া উঠে না তা সে কি করিবে? সেই জন্ত কি চিরদিন ধরিয়া ধালি মুখ-ঝামটা খাইতে হইবে? পান থেকে একটু চুণ থস্ক দেখি, অমনি গৃহিণীর মুখ তোলা-হাড়ির মত হইয়া উঠিবে। বাহিরে পরের দাসত্বের জালা, আর ঘরে থালি বিচিমিচি, কাঁহাতক আর মানুষ পারিয়া ওঠে?

বিনোদিনীর খাইতে সময় বেশী লাগে না। সারাদিন ভূতের মত থাটিয়া সে এত প্রাস্ত হইয়া পড়ে যে থাওরা-দাওমা কিছু তাহার ভালও লাগে না। এই কুন্ত ঝোঁপের মত ঘরে বসিয়া বসিয়া প্রাণ তাহার হাপাইয়া ওঠে, দম যেন বন্ধ হইয়া আসে। চিবিশটা ঘণ্টার মধ্যে একটি বার পাঁচ মিনিটের জন্তও যদি সে বাহিরে যাইতে পারিত, তাহা হইলে খানিকটা যত্রণা তাহার হয়ভ কমিয়া ঘাইত। কিন্তু কেইবা ভাহাকে লইয়া ঘাইবে গ বিকালে তাহার সময় হয় না এবং প্রকাশও বাড়ি ফেরে না। ভোর-বেলা হইলে সে ঘাইতে পারে। কিন্তু ভোগের প্রকাশকে উঠান একেবারেই অসন্তব ব্যাপার।

থাওয়া শেষ করিয়া এঁটো বাসনের রাশ সে কলতলায় ঠোলিয়া রাবিয়া দিল। এখন আর মাজিতে বসিতে পারে না, সকালে দেখা বাইবে এখন। রায়াহরটা চট করিয়া ধুইয়া দিয়া সে দরফার শিকল তুলিয়া দিল। ভাহার পর একটা পান মুখে দিয়া, ভইবার ঘরে গিয়া প্রবেশ করিল। এতক্ষণে বির-বির করিয়া একটু হাওয়া বহিতে আরম্ভ করিয়াছে। বিনোদিনী ঘরের সব-ক'টা জানলা-মরজা ধূলিরা দিল, একটু ঠাণ্ডা হোক ঘরথানা। ছেলেমেরে হুইটা ঘামে বেন স্নান করিয়া উঠিয়াছে। নিভাস্ত শিশু ভাই, বরম্ব লোক হুইলে আর এত গরমে ঘুমাইতে হুইত না।

পাশের ঘর **হইতে প্রকাশ** ডাকিয়া বলিল, "ও গো, ভনে যাও।"

বিনোদিনী সুখধানার উপর আবার গান্তীর্য্যের আবরণ টানিরা দিয়া, পাশের ঘরে গিরা প্রবেশ করিল। প্রকাশ তথন লক্ষা হইরা শুইরা পড়িরাছে। বলিল, "আমার পাঞাবীটা নিয়ে এল ভ, ওবরে আল্নার রেথে এসেছি।"

বিনোদিনী আবার বিনা-বাক্যবায়ে পাশের ঘরে গিয়া পাঞ্চাবীটা লইয়া আসিল। প্রকাশ তাহার হাত হইতে জামাটা লইয়া বলিল, "ব'স না বাপু, এথানে বস্লে ত আর তোমার জাত বাবে না ?"

বিনোদিনী জকুটি করিয়া সেইখানে, বিছানার এক পাশে বসিরা পড়িল। প্রকাশ জামার পকেট হইতে খান-করেক নোট্ আর খুচরা করেকটি টাকা বাহির করিয়া হাতে দিয়া বলিল, "এই নাও।"

নোট এবং টাকা এক নিমেবে গণিয়া লইয়া বিনোদিনী বিরক্ত কঠে বলিল, "আর তটো টাকা কম কেন? বা-পুনী ভাই নিয়ে আস্বে, আর তাই দিয়েই আমাকে সব চালাভে হ'ব। কেন, আমি কি ভেল্কি জানি?"

প্রকাশ বলিল, "হুটো টাকা বেশী আর কমে কিই বা এসে যায়? থাকলেও যা, না গাকলেও তা। একই অভাবের পালা চলতে থাকবে।"

বিনোদিনী বলিল, "মাহা তা নার নর। হাতে ক'রে কিছু ত থরচ করতে হয় না, কাজেই লখা লখা কথা বল। তুটো টাকার এক হপ্তার বাজার-খরচ চলে, তার বেরাল আছে ?"

প্রকাশ চটিয়া বলিল, "নাঃ, ভোষাকে নিয়ে আর পারা গোল না। কি এমন মহাপাপ ক'রে এসেছি বে, তথন থেকে থালি খাঁাক-খাঁাক করছ? সন্তিয় এক-একবার ইচ্ছে হয় খরবাড়ি ছেড়ে বিবাগী হয়ে চলে বাই।"

वितामिनी টाका नांछ त्रव विष्ठानांत्र स्थानां मित्रा

উঠিরা ইাড়াইল, তাহার তথন তৃই চোথ জলে ভরিয়া উঠিরাছে। ভাঙা গলার বলিল, "এই রইল তোমার টাকা-কড়ি, আমার খঁয়াক খঁয়াক করেও কাজ নেই, তোমার টাকা নিরেও কাজ নেই। ভূমি কিনে-কেটে এনে দিও, আমি রেঁধে-বেড়ে দেব এখন। তা হলেই আমার কথা আর সইতে হবে না।" সে নিজের ঘরে চলিয়া যাইবার উপক্রম করিল

বিনোদিনীর মুখঝামটাটা প্রকাশের অসহ লাগিত বটে, কিন্তু তাহার চেয়েও অসহ লাগিত বিনোদিনীর চোথের জল। এই অস্ত্রটির সাহায্যে চিরদিনই প্রকাশকে বেশ চট করিয়া হার মানাইয়া দেওয়া যায়।

প্রকাশ উঠিয়া বসিয়া স্ত্রীর হুই হাত ধরিয়া টানিয়া একেবারে নিজের ব্কের উপর আনিয়া ফেলিল। বিনোদিনী আর তাহার হাত ছাড়াইবার চেটা করিল না, প্রকাশের বুকে মুখ শুঁভিয়াই কাঁদিতে লাগিল।

প্রকাশ ভাহার চুলে হাত বুলাইতে বুলাইতে বলিল,
"এই সামান্ত কথাতেই কেঁলে ফেল্লে? ছি, ছি, তুমি
আবার বরস-বাড়ার গর্ক কর। আগলে ভোমার বরস দশ
বছর, ঐ ও-বাড়ির প্রটির মত। সেও বেমন সব কথার
ভাঁন ক'রে কেঁলে ওঠে, ভূমিও ভাই।"

বিনোদিনী মাথা তুলিরা চোথ সুছিতে সুছিতে বলিল, "হাা, তা আর না। যা ক'রে আমার দিন কাটে, অমন বেন শক্রবও না হয়।"

প্রকাশ বলিল, "ত্নিয়াস্থ বুই এমনি ক'রে দিন কাটছে, কেই বা স্থে আছে বল? আমরা তবু থেটে-পুটে ত্-বেলা ত্-মুঠো থেতে পাচিছ, অনেকে ত তাও পাচেছ না?"

বিনোদিনী বলিল, "সবাই কেন আমাদের মত হ'তে বাবে? তোমার মেঞ্চভাইরাই ত বেশ রুরেছে। বাক্ গে, পরের হিংসে ক'রে লাভই বা কি? বে বেমন অদৃষ্ট নিরে জন্মেছে।"

প্রকাশ বলিল, "তাই বোঝাও নিজের মনকে।" বানিক ক্ষণ চূপ করিরা থাকিয়া বলিল, "ঐ টাকা-হুটো দিরে কি করেছি জান? একটা লটারীর টিকিট কিনেছি, বদি কপাল কেরে।"

वितामिनी वनिन, "जूमिश दयमत। आमारमद कशारन

ও-সব নেই। ভগৰান জানেন থালি তেলা মাধায় তেল ঢাল'ত। দেখ, গরিবরা কেউ কিছু পাবে না, যার দরকার নেই কিছু, এমন কোনো মান্ত্য পাবে।"

প্রকাশ বলিল, "সে এক রকম জানা কথাই। তবু একবার কপাল ঠুকে দেখি। মাঝে মাঝে পানবিড়িওয়ালা, গাড়োয়ান এরাও পেরে যায় কি না।"

বিনোদিনী বলিল, "তা দেখ, কত টাকাই ত কত রক্ষে বাচ্ছে, এ-ও না হয় বাবে। বাবা, কি গরম আজ। এ বছর দেখি বেশ সকাল-সকালই গরম পড়ে গেল।"

প্রকাশ বলিল, "সন্তিয়, একেবারে সেদ্দ ক'রে দেবার কো। পাধা একধানা নিয়ে এস ত।"

বিনোদিনী উঠিয়া পাশের ঘর ছইতে পাখা লইয়া
আদিল। সেইখানেই আধশোরা অবস্থার নিক্ষেও হাওয়া
খাইতে লাগিল, প্রকাশকেও হাওয়া করিতে লাগিল।
তন্দ্রায় কখন তাহার অলক্ষ্যে হাত হইতে পাখাখানা খদিয়া
পড়িয়া গেল। মাঝরাত্রে মিনির চীৎকারে জাগিয়া উঠিয়া
আবার তাহাদের কাছে গিয়া শুইল। মাহিনার টাকা
বালিসের তলাতেই গোঁজা রহিল, ঘুমের ঝোঁকে আর বাক্সে
ভূলিয়া রাখা হইল না।

পর দিন ভোর হইতেই উঠিয়া আবার দিনের থাটুনির পালা। আৰু তবু ভাহার মনটা একটু ভাল আছে। সকাল হইতে বত ছোট ছোট পাওনাদার আসিয়া স্ফোটে, ছিনেকোনের মত পিছন ছাড়িতে চায় না। অন্ত দিন কেবলই ভাহাদের ফিরাইয়া দিতে হয়। ভাহারা কেহবা নীরবে বায়, কেহবা হইটা কথা ভনাইয়াও দিয়া বায়। ছোটলোকের মুবে বখন কথা ভনিতে হয়, তথন বিনোদিনীর ইচ্ছা করে মাথা খুঁড়িয়া মরিতে। কিন্তু ছেলেমেরে হুইটার মুবের দিকে চাহিয়া সে চুপ করিয়া থাকে। ইহাদের বে সে ভিয় গতি নাই। বাপ রোজগার করিয়া আনে বটে, কিন্তু মানা-থাকিলে বাপ পর হইয়া বাইতে কত ক্প?

আজ তব্ সকলকে ত্-এক টাকা করিয়া দিতে পারিবে, কথা শোনার পরিবর্ত্তে, সেই কথা শুনাইতে পারিবে, জাগিরা সকাল হইতেই বিনোদিনীর চিন্ত প্রসন্ন ছিল। চা থাইবার জন্ত প্রকাশ বধন রালাধরে স্ত্রীর খোঁজ করিতে গেল, বিনোদিনীর হাসিল্য দেখিলা ভাহারও মনটা একটা অকারণ আনব্দে ভরিরা উঠিল। ভাবিল "মাসের স্ব-ক'টা দিন 'পে ডে' (মাহিনার দিন) হ'লে তব্ কিছু স্থাধে থাকা যেত।"

চা থাইয়া সে বাজার করিতে বাহির হইল। আগে একাজটা ঠিকা-ঝিয়ের নারাই হইত। এখন কিন্তু তাহাকে
বিনোদিনী বিদায় করিয়া দিয়াছে। মাস সাত-আট আগে
মিনির টায়ফরেড্ ফিভার হয়, তখন চিকিৎসার জয়
বেশ থানিক দেনা হইয়া গিয়াছে। গরিবের এক পয়সা
সঞ্চয়ের উপায় নাই। বিপদ-আপদ ঘটলে তখন হয় ধার
কর, না-হয় স্ত্রীর গায়ের গহনা থাকিলে তাহা বাধা দাও।
বিনোদিনী কিন্তু এ-ক্ষেত্রে ধুব শক্তঃ গহনা বিশেষ যে তাহার
বেশী আছে তাহা নয়, কিন্তু সেগুলিতে সে হাত দিতে দেয়
না।মেয়ের বিবাহ ত দিতে হইবে? তখন কোথা হইতে কি
ফুটবে? এই কয় টুকরাই ত সম্বল? তাহার চেয়ে ধার
করা ভাল, সে যেমন করিয়া পারে শোধ করিবে। করিতেছেও
তাহাই, ঠিকা-ঝিটাকে পর্যান্ত বিদায় করিয়া দিয়াছে।

প্রকাশ বাজার করিয়া আনিল। ইহার পর সব রালা করিতে গেলে সময় থাকে না, কাজেই নিরামিষ রালা বিনোদিনী আগে সারিয়া রাখে, মাছের ঝোলটা শুশু ভাড়াভাড়ি নামাইয়া দেয়। ভরকারি আগেকার দিনের বাজার হুইতে রাথিয়া দেয়।

সান করিয়া খাইয়া প্রকাশ আপিসে চলিয়া গেল।
বিনোদিনী তথন মিনিকে, সম্ভকে থাওয়াইতে বসিল।
প্রকাশ একটা কাজ তাহার করিয়া দেয়, ছেলেমেরে
হুইটাকে সান করাইরা দিয়া বায়। নীচের তলার বাধান
উঠানে বেশ বড় চৌবাচচা আছে, সেইথানে প্রকাশ বার
স্থান করিতে। সম্ভ ও মিনিও তাহার পিছন পিছন হোটে,
তাহারাও বাবার সঙ্গে সান করিবে। উপরে মা মাত্র এক
বাল্তি তোলা জলে হু-জনের সান সারিয়া দেয়, দে উহাদের
ভাল লাগে না। টিনের মগে করিয়া রূপাঝপ্ জল মাধার
চালিতে চালিতে সম্ভ চীৎকার করিতে থাকে, "মা,
আমাদের তোরালে আর সাবান ফেলে দাও, আমর
এইথানে চান করিছি।" একটা দার হইতে মুক্ত হইল মনে
করিয়া আনন্দিত চিত্তে বিনোদিনী হাত বাড়াইয়া তোরালে
সাবান নীচে ফেলিয়া দেয়।

বাইতে বিদিয়াও ছেলেমেয়ের হাজার হাজামা।
সহজে কি ভাত তাহাদের মুখে ওঠে? এ মাছ ভাল নর,
ও তরকারিতে ঝাল। সম্ভকে মা বড় মাছখানা দিয়াছে,
মিনিকে দেয় নাই। নয় ত মা নিজে খাইবে বলিয়া বড়
মাছের মুড়াটা লুকাইয়া রাধিয়াছে। আবার কোনো দিন
বা বায়না ধরে যে তাহারা মাছ খাইবে না। রোজ কেন
মাছ খাইবে? মণ্টুদের বাড়ি কেমন মাংস হয়, ডিম
হয়, মা বৃঝি তাহাদের একদিনও কিছু ভাল জিনিষ দিতে
পারে না? ছইটি ছোট মানুষকে খাওয়ান শেষ করিতে
প্রায় বিনোদিনীর এক ঘণ্টা কাটিয়া যায়।

তাহার পর ধীরেমুস্থে মান সারিয়া, ঘরে আসিয়া বসে। ছেলেমেয়র এবন ঘুমাইবার কথা, কিন্তু হুই বৎসরের ভিতর কথনও তাহাদের দিনের বেলা ঘুমাইতে দেখা যায় নাই। মাহর পাতিয়া শুইয়া তাহারা কেবল পরস্পরের সঙ্গে খুনুষ্ট করে, এ উহাকে চিম্ট কাটে, নয় ত পা দিয়া ঠেলা দেয়, আবার থাকিয়া থাকিয়া বালিল ছোঁড়াছুড়িও হয়। বিনোদিনী আসিয়া হুইজনের মাঝখানে শুইয়া পড়ে, কাজেই বাধ্য হইয়া তাহাদের খানিক কল চুপ করিয়া থাকিতে হয়। কিন্তু চুপ করিয়া থাকাটা যে একেবারেই অসম্ভব? অপচ এখন মারামারি করিতে গোলে মা বিরক্ত হয়া হই-একটা চড় যে লাগাইবেন না, তাহাও বলা যায় না। মতেরাং থানিক অপেকা করিয়া তাহারা আন্তে আন্তে উঠিয়া নীচে মণ্টুদের ঘরে পলায়ন করে বিনোদিনী তত ক্ষণ ঘুমাইয়া পড়িয়াছে।

বেশী ক্ষণ অবশ্য ঘুম তাহার হয় না। পাড়ার মেয়ে-ইস্কুলে চং চং করিয়া ঘন্টা বাজিতেই সে উঠিয়া পড়ে। উন্নে আঁচি দিয়া ছেলেমেয়েকে ডাকিয়া উপরে লইয়া আসে। ছ্যটুকু কোনোমতে গিলিয়া আবার ভাহারা যে বার খেলার সাধীর সন্ধানে প্রস্থান করে। ভাহার পর রান্না করা, ঘর ঝাঁট দেওয়া, শুকনো কাপড় ভোলা, বিহানা পাতা, একটানা কাজের স্রোভ বহিতে থাকে, রাস্তার আলো জালিবার আগে ভাহার আর নিঃখাস লইবার অবসর থাকে না।

আদ্ধ কেবলই কান্দের ফাঁকে ফাঁকে তাহার মনে হইতে লাগিল, লটারীর টিকিটটার কথা। আচহা, ধর যদি সতাই কিছু পাওরা যার ? এমনও ত হয় ? কেহ-না-কেহ ত প্রাইজ্পুলি পাইবেই? প্রকাশ পাইলেই বা? আঃ, তাহা হইলে চিরদিনের মত হাড় ক'থানা বিনোদিনীর জুড়ায়। পাঁচ লাখ, দশ লাখ কিছু সে চায় না, অতি লোভ তাহার নাই। শুধু এই নিত্য গ্রশ্ভিষা, নিত্য অপমানের হাত হইতে যদি সে নিফুতি পায় তাহা হইলেই যথেই। মোটা ভাত, মোটা কাপড় আর মাথা শুজিবার মত নিজের একটু ঘর, ইহা হইলেই হয়। কতই বা তাহাতে লাগে? কে জানে, অত হিনাব করিয়াই বা কি হইবে? সত্যই ত আর সে টাকা পাইবে না?

কিন্তু এই অভিলোভনীয় চিস্তাটিকে কিছুতেই সে মন হাইতে দ্ব করিতে পারে না। লটারীর টিকিট কেনা এই ভাহাদের প্রথম, তাই আশা বেশী, উৎকণ্ঠাও বেশী। যদিই হয়, হওয়া এমনিই কি অসম্ভব?

সেদিন প্রকাশ একটু সকাল-সকাল বাড়ি ফিরিল।
আজ আর স্ত্রীকে রাগাইবার তাহার ইছো ছিল না।
বিনোদিনী ভাড়াভাড়ি চা করিয়া আনিল, ছটি থানি
চিড়াও ভাজিয়া দিল। পাধা হাতে করিয়া আমীর
কাছে আসিয়া বসিয়া জিজ্ঞাসা করিল, "হ্যা গা, লটারীর
ফল বেরবে কবে?"

প্রকাশ চিঁড়াভাকা থাইতে থাইতে বশিশ, "বেশ আছ, ঐ ভাবছ বুঝি সারাক্ষণ ৈ সে এখনও চের দেরি, মাসথানেক ত হবেই।"

বিনোদিনী ছাড়িবার পাত্রী নয়, বলিল, "তা একটু ভাবছি বইকি? নগদ হু-ছু-টাকা খরচ ক'রে টিকিট কেনা হ'ল। আচ্ছা, টাকা পেলে ভূমি কি কর?"

প্রকাশের যে একটু দটারীর নেশা দাগে নাই ভাষা নয়। সে বদিদ, "কভটা পাব, তার উপর নির্ভর করে। লাখ টাকার প্রাইজও হয়, আবার পাঁচ-শ'রও হয়। পাঁচ-শ পেলে কিছুই করি না, ভোমায় দিয়ে দিই বোধ হয় গহনা। গডাবার ক্ষন্তে।"

বিনোদিনী হাসিয়া বলিল "ইস্, তা আর না? কডই গহনা দিয়েছ এই দশ বছরে, তার আবার কথা।"

চায়ের পেয়ালা থালি করিয়া প্রকাশ বলিল, "কি দিয়ে দেব শুনি? টাকা যে-কটা আনি তাত দেখতেই পাও? স্তিয় এবার টাকা পেলে একখানা গ্রনা তোমায় ভাল দেখে ক'রে দেবই, বা তৃমি চাও। সব চেরে ভাল হর ফার্ট প্রাইজ ্টা পেলে। ভোমার গহনাও হর, আমার সথও মেটে।"

বিনোদিনী বলিদ, "কি তোমার স্থ ভনিই না একটু ?"

প্রকাশ বলিল, "তাহ'লে হাজার পঞ্চাশ তোমার নামে লিখে দিই, বাতে তোমাদের কোনোদিকে কোন কট না হয়। বাকীটা নিয়ে একবার কেটে পড়ি পৃথিবীটা ভাল ক'রে দেখবার জন্তে। বায়স্থোপের কল্যাণে ছবিতে চের দেশই দেশলাম, একবার সন্তিটা কেমন দেখতে চাই। ওদের জীবনটাও একবার উপভোগ ক'রে দেখতে ইচ্ছে করে।"

বিনোদিনী ঠোঁট উন্টাইয়া বলিল, "মাগো মা, কিছিরির সধ। ভগবান ভোমায় কথনও প্রাইজ দেবেন না। স্ত্রী-পুত্র ফেলে পালাতে চাও এমনি অমানুষ তুমি। লোকে কোথায় টাকা চায় এদেরই সুখী করবার জন্তে, না ভোমার মতলব কি ক'রে তাদের ফাঁকি দেবে।"

প্রকাশ বলিল, "বেশ, এমন না হ'লে আর স্ত্রী-বৃদ্ধি।
পঞ্চাশ হাজার টাকা দিয়ে যাব, তার নাম হ'ল ফাঁকি
দেওয়া? একসঙ্গে লেপ্টে পড়ে থেকে, সবাই মিলে নাথেয়ে মরলে, সেইটেই বৃঝি সবচেয়ে চমৎকার হয়? আর
ভগবান যাদের প্রাইজ্পুলি দেন, তারা বৃদ্ধি সবাই তখনই
তা দিয়ে দেবালয় ফেঁদে বসে? আমোদ-প্রমোদ
করেই লোকে এ-সব টাকা উড়িয়ে দেয়।"

বিনোদিনী বলিল, "তোমার টাকার আমার কাঞ্চ নেই বাপু। পঞ্চাশ হাজার তোমারই থাক। ছেলেমেরে নিরে বিলেত হয়, আমেরিকা হয় যেদিকে খুনী বেরো, আমি তাদের মান্ন্য করতে পারব না। আমি গরিবের মেরে, তু-মুঠো আমার খেতে পেলেই হ'ল।"—বলিয়া পাগা ফেলিয়া উঠিয় রালাঘরে চলিয়া গোল।

প্রকাশ বলিল, "ভাল যা হোক, গাছে কাঁঠাল গোঁকে ভেল। প্রাইক ত পাছিছ নগন, তার ভাগ-বাঁটোরারা বাগড়া-বাঁটি সব আগে ভাগে হরে গেল।" সে উঠিরা পড়িরা ছেলেমেরেদের সন্ধানে চলিরা গেল। বলিতে গেলে রাল্লাঘরে বদিয়া বদিয়া বিনোদিনীর রাগও হইতে লাগিল, হাসিও পাইতে লাগিল। কোথা দিক তার ঠিক নাই, ইহারই মধ্যে চটাচটি। কিন্তু ধন্ত পুরুষ-মান্থবের মন, কি করিয়া স্বাইকে ফেলিয়া চলিয়া যাইবার কথা ভাবিতে পারিল? বিধাতা ত্রী-পুরুষকে সতাই আলালা ধাতুতে গড়িয়াছেন। বিনোদিনী ত লক্ষ টাকা পাইলেও স্থামী বা সন্তানদের ফেলিয়া গিয়া আমোদ করার কথা ভাবিতেও পারে না। যাহা হউক, এ লইয়া আর বেশী বাড়াইয়া কাল নাই, ব্যাপারটা স্তাই কল্পনা ছাড়া ত কিছু নয়?

তবু রাত্রে শুইবার সময় আবার এই কথা না-পাড়িয়াই সে পারে না। প্রকাশ যদিও তাহাকে বিন্দুমাত্র উৎসাহ দেয় না, বলে, "কাল্ল কি বাপু, অত আলনন্ধরের স্বপ্নে? মাঝ থেকে লাথি লেগে বাসন-কোসন ভাঙ্কের।"

বিনোদিনী বলিল, "ওগো, মেয়েমানুষ অত ক'রে স্বপ্ন দেখে না। তাদের বাস্তব নিয়ে নাড়াচাড়া সারাদিন, ছটোর তফাৎ তারা রাখতে জানে। তুমি কথাটা তখন বললে কি না তাই ভাবছিলাম টাকা পেলে একটা মুজোর সরস্বতী-হার করতাম, বেমন আমাদের বড়বৌয়ের আছে। ভারি স্কর্মর জিনিষটা, তুমিও ত দেখেছিলে।"

প্রকাশ বলিন, "কে জানে অত শত আমার মনে নেই। তোমাদের বড়বৌ বেশ স্থকর, সেইটে মনে আছে, অত শন্মী-হার সরস্বতী-হার মনে নেই বাপু।"

বিনোদিনী ঠোঁট উণ্টাইয়া বলিল, "তা ত থাকবেই, বলিহারি ভোমাদের জাতকে।"

প্রকাশ বলিল, "তা কি করব বল, যেমন যাকে বিধাতা করেছেন। তোমর। গহনা কাপড় দেখ, আমরা দেখি মাহুয়কে।"

বিনোদিনী জানিত এ সবই তাহাকে ক্যাপাইবার চেষ্টা, তবু না কেপিয়াও পারিত না। রাত্রে আর রগড়া বাধাইতে ইচ্ছা করে না. চকিল ঘণ্টার ভিতর ঐটুকুই বা গল্পাছা করিবার সময়। বিশিল, "তা বেশ। আর কি কিনি জান? ছখানা ভাল শাড়ী আর ছটো ভাল দ্লাউল। বাক্লে একখানাও আমার ভাল শাড়ী কি জামানেই। কোখাও ঘাই না তাই, না হ'লে মান থাকত না।"

स्थानाच्या कार्यकाच्य रहीतिका जाणिया अर्थका कर करेरे किर्यालय जा

সকালে উঠিয়া কাজের ভীড়ে লটারীর ভাবনা চাপা পাড়য়া যায়, কিন্তু বিপ্রহরের নিশ্চিত্ত অবসরে আবার তাহা বিনোদিনীকে পাইয়া বসে। কত কয়নাই করে, কত ভাঙাগড়াই বে তাহার মনে চলিতে থাকে। স্বামীর কাছে বেশী কিছু বলিতে সাহস হয় না, সে বা ঠাটা করে। প্রকাশও বে কথাটা মন হইতে ঝাড়িয়া ফেলিয়াছে তাহা নয়, কিন্তু সেও বিনোদিনীর সঙ্গে এ-সব কথা আলোচনা করে না, আবার পাছে ঝগড়া-ঝাঁটি বাধিয়া যায়।

এমনি করিয়া দিনের পর দিন কাটিয়া থায়, শটারীর স্থাক্য জানিবার দিন ক্রমাগত এগ্রসর হইয়া আদিতে থাকে। উভয়েই উব্গ্রীব হইয়া অপেক্ষা করিয়া থাকে, কিন্তু পরস্পরের কাছে ধরা পড়িতে চায় না।

কিন্তু সন্ধার সময় প্রকাশ স্নানমূখে বাড়ি ফিরিয়া আসিয়া বলে, "না গো, ও সব আমাদের জুটবে কেন?"

বিনাদিনী নিজের আশাতঙ্গের হুঃথ ভূলিয়া প্রকাশকে সাম্বনা দিতে বনে, বলে, "হাা, ও কি আর কেউ পায় ? কই কথনও ত চেনাশুনোর মধ্যে কাউকে পেতে দেখি নি ?" তাড়াভাড়ি করিয়। কড়াইস্টের কচুরি ভাজে, স্বামীকে বত্ব করিয়া থাওয়ায় । বিকালে কাজের অজ্হাতে কথনও সে বাহির হইতে চায় না, আজ নিজের থেকে কাজ সারিয়া

পরিষ্কার-পরিচ্ছর হইরা ছেলেনেরে ছটিকেও পরিষ্কার কাপড় পরাইরা, স্বামীর সঙ্গে বাহির হয়। ট্রামে চড়িরা গড়ের মাঠে গিরা খুব থানিক বেড়াইয়া আসে ।

বিধাতার একটু ধেন ইহাদের দিকে দৃষ্টি পড়িয়াছিল। পরাদিন আপিদ হইতে আসিয়া প্রকাশ হাসিতে হাসিতে বলিল, "ও গো জান, আমরা একটা কাঁছনে প্রাইজ্ পেরেছি, ৫০০ টাকার।"

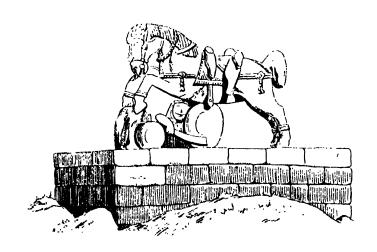
বিনোদিনীর মুখ উৎফুল হইলা উঠিল। সে বলিল, "কাছনে প্রাইজ কেন !"

প্রকাশ বলিল, "এই স্কুলের প্রাইজে ছোট ছেলেণ্ডলোকে কান্নার ভয়ে প্রাইজ্ দেয় দেখ নি? দেই রকম আর কি? তা সরস্বতী-হারের আর বেনারদীর ফরমাস দেব ত?

বিনোদিনী বিজ্ঞভাবে মুখ নাড়িয়া বশিশ, "যা বশেছ, টাকা ক'টা অমনি ক'রে জলে দিই আর কি? ও থাক, ওর একটি টাকাও তুমি ছুতে পারবে না।"

প্রকাশ বশিশ, "কি হবে একটু শোনাই যাক না ?"

বিনোদিনী বলিল, "ডাক্তারের দেনাটা দিয়ে দিই, তার পর খণ্ডরের ভিটেয় একখানা ঘর তুল্ব। মাঝে মাঝে এই যিঞ্জি থেকে বেক্ললে ছেলেমেয়েগুলো বাচে, আমিও বাচি।"



অর্থোদয়-যোগ

শ্রীযোগেশচন্দ্র রায় বিষ্ণানিধি

হিন্দুর যত ধর্মকৃত্য আছে, এত আর কারও নাই। দৈনিক কমে, সংসার-চিন্তার, স্থাও হংখে দিন যার, কৃত্য এলে সে একটানা স্রোত থমক্যে থেকে অন্ত পথে বর। এক দিনের জ্বন্ত হ'ক, এক বেলার জ্বন্ত হ'ক, ইইপথ দেখতে হয়। হিন্দু ভাগ্যবান্। আর, যিনি, যে ব্রাহ্মণ, সে পথ বেঁধে দিরেছেন, তাঁর চরণে কোটি নমস্কার।

শৈশবে পাঠশালার প'ড়ভাম। মাসে মাসে শুক্ল-পঞ্চমী
ভিথিতে সরম্বতী পূজা ক'রতে হ'ত। পৌষ মাঘ মাসেও
প্রাতঃকালে পুকুরে ডুব দিতে হ'ত, দীতে ও বাতাসে
থর্ণর করি, স্নান ক'রতেই হ'ত। অন্ত দিন সকালবেলা
কিছু থেরে পাঠশালার ব'সতাম। এ দিন পূজা না হ'লে
থাবার জো ছিল না। পীড়ি কিল্লা জল-চৌকিতে
ভালপাতার তাড়ি, দেশী কালির দোরাত, দেশী কলম।
এই, সরম্বতী। কিন্তু রূপে কিছুই আসে যার না, ভাবগ্রাহী
ভগবান্। পূজার পর কি আনন্দ! মনে হ'ত, খেন নূতন
ক্রম হয়েছে। ইংরেজী ইকুলে চুকলাম, সরম্বতী-পূজাও
হারালাম। রবিবারে ইকুলের ছুটি, সেটা খেলবার ছুটি ছিল।

ধর্মকৃত্য অনেক। পাজিতে গ'ণলে ১৬০।১৭০টি হবে। কেহ এত্গুলি ক'রতে পারেন না, করবার কথাও নর। ধর্ম, আচার। বিনি বৈষ্ণবের আচার পালন করেন, তিনি বৈষ্ণব। বিনি শাক্তের আচার পালন করেন, তিনি শাক্ত। এইরূপ, শৈব, সৌর, গাণপত্য। এক এক ধর্মের এক এক কৃত্য ছিল। পরে পঞ্চদেবতার উপাসনা প্রচলিত হয়েছে। তাতেই কৃত্য বেড়ে গেছে। বঙ্গদেশে সৌরধর্ম বদি বা ছিল, গাণপত্য প্রায় ছিল না।

বে-সে দিনে বে-সে কতা হর না । বৈশ্ব শুক্র-একাদশী বেছে নিলেন, শাক্ত শুক্র-অন্তমী, শৈব কফ-চভূদশী, লাণপতা শুক্র-চতুর্থী নিলেন। সৌর, তিথি ছেড়ে সৌর দিন বাছলেন। পঞ্চদেবতার উপাসনা প্রচলিত হ'লেও লোআ ওঠা পাশমোড়া।
তার অংশক ভীমে ছোড়া।
কেপার চৌন্দ, কেপীর আট।
এই নিয়ে কাল কাট

অর্থাৎ হরির জন্ত শরন, উত্থান, পার্মপরিবর্তন, ও ভীম-একাদশী। শিবের জন্ত শিব-চতুর্দশী, এবং অম্বিকার জন্ত মহাউমী। এই ছরটি।

ধর্মকৃত্য ব্যতীত নিমিত্ত-কৃত্য আছে। কারও বিবাহ, কারও অন্ধ্রশান হবে, কেহ পুষ্করিণী প্রতিষ্ঠা ক'রবে, ইত্যাদি।

বে-কোন কভা হ'ক, প্রথমে সংকর, ও তপস্তা, ভার পর কুত্যকর্ম। বিনা সংকলে ইষ্ট সিদ্ধ হয় না। তপস্তা ত্রিবিধ. শারীর বাচিক মানস। তপস্তা ক্লেশকর। কিন্তু বিনা ক্লেশে ইষ্ট সিদ্ধ হয় না। কেহ একাদশী-ব্ৰত ক'রবে। কেন ক'রবে, তা সংকরের সময় স্পষ্ট জন্মজম করা চাই। একাদশীর উপবাস ক্লেশকর হ'লেও সেটা বড় নয়। যে জন্ত উপবাস, সে জন্তটা বার্থ হ'লে ক্লেশভোগ বার্থ। বিষ্ণু-উপাসক হরিম্মরণ নিমিত্ত একাদনী কেন বেছেছিলেন, সে কেন-র উত্তর এখন নাই। বৎসর কোন শুক্ল-একাদশীতে জ্যোতিষিক কোন কিছু একটা ঘটোছিল, সে ঘটনা শ্বরণীর হয়েছিল, विक्-डेभानक मिलिन मान क्रा क्रा क्रि कि विद्याहन। তার পর মাসে মাসে সে দিন, তার পর মাসে মাসে হুই দিন একাদশী-ব্ৰত-পালন বিহিত হয়েছে। এ সব কি অল্পকালের কথা ? শত শত বৎসর গেছে, একটি একটি বিধি ব্যবস্থিত হয়েছে। করেকটার তিথি নক্ষত্র দিন শ্বরণ করে। ব'লতে পারা যায়, এই জ্যোতিবিক যোগ এই সময়ে হয়েছিল, অতএব সে বোগ ধরেয় বে কতা, সে কতা সে সমরের পরে প্রবর্তিত হয়েছে। পূর্বকালে ব্রাহ্মণ পাঁজি গ'ণতেন, স্থতি অর্থাৎ ধর্মব্যবন্থা তার হাতে ছিল।

.

গদার অশেষ মহিমা। গদাতীরে বাস, গদাজলে ান, গলাজৰ পান,—এ সকলের মহিমা আমরা বুঝতে ারব না। যারা প্রথমে গঙ্গাতীরে বাস কর্যোছিলেন, তাঁরা অতেন। বাঁদের দে ভাগ্য ছিল না, বাঁরা গঙ্গা হ'তে দূরে াদ ক'রতেন, তাঁরা গঙ্গাকে তীর্থজ্ঞান ক'রতেন। তীর্থ-র্শনের বছ ফল। গঙ্গা-মানেরও বছ ফল। কিন্তু টো-টো ার্যে ঘুরতে ঘুরতে তীর্থদর্শনে ফল নাই। রেলে মোটরে ারোম ক'রতে ক'রতে গেলে ভীর্থ অদুগু হন। বিনা ংকরে গলামানেও ফল নাই। সহজে মনঃ স্থির করবার দেশ্যে করেকটা জ্যোতিষিক যোগে গঙ্গামান প্রশস্ত করা ্রছে। যেমন, ক্যৈষ্ঠ-শুক্ল-দশমীতে দশহরা-স্নান। দশহরা, ঙ্গা। লোকে দশবিধ পাপ করে। থাকে, সেদিন স্মোনের পূর্বে সে সব পাপ স্মরণ ক'রতে হয়, ভার পর দ্ধাভক্তিসম্পন্ন হয়ে ব'লতে হয়, "জ্বাহ্নবি, আমার পাপ ্রণ কর।" পাপ-খ্যাপন ছারা পাপের প্রায়ন্চিত্ত হয়। হুদ্বতিতেও আছে। কিন্তু পাপ-খ্যাপন কি সোজা কথা ? হা মাতত্বরূপা; মায়ের কাছে ছেলের গুণাগুণ অজানা কে না। মাকে ব'লতেও তেমন সঞ্চে হয় না। আর, ্ব'লতে পারে দে এই হৃষ্ম করেছে, সে সে পাপ হ'তে ক্র হবার পথে এসেং

গঙ্গালানের আর একটি বিশেষ দিন বারণী। শতভিবাকর্ত্ত মুখ্য কান্তন রুক-অরাদণা। সেদিন শনিবার
লে মহাবারণা। বারণীতে গঙ্গালান ক'রলে বহু ফঙ্গ,
াবারণীতে ক'রলে বহু বহু ফঙ্গ। শুভিতে লিখিত আছে,
শত স্ব্রহণকালীন গঙ্গালানজন্ত ফলের সমান ফঙ্গ।
াবারণীতে সান ক'রলে কোটি স্ব্রহণকালীন সানভার সমান ফঙ্গ। চক্রস্ব্রহণ এক একটা উপলক্ষ,
ক একটা নৈস্গিক নিমিন্তা ভক্তিশ্রদাসম্পন্ন হয়ে সান
রলে দেহ-মন শুদ্ধ হয়। যে কর্মের দিন স্থির নাই, সে
গ্রহানা। সানের পর দান, এটি মুখ্য উদ্দেশ্য। যে
গি যত হর্লভ, মান্ত্র সেটি ভত আদর করে। বারণী
ভি নয়, মহাবারণী স্তর্লভ। বার-বোগ এর কারণ।
গত্তা, বেদের এক ঋষি। ভাঁর নামে এক ভারার নাম

অগস্ত্য হয়েছে। অগস্ত্য তারা, বরুণের সন্তান, বারুণি।

এই কয়েকটি ক্রে ধরো বারুণী-বোগের ইতবৃত্ত অসুমান

অসাধ্য নর। সপ্তবার গণনা-প্রচলনের পরে, কোনও

জ্যোতিধী বারটি পেয়েছিলেন, শনিবার ক্র্ডে দিয়েছেন।
পরে দেখা যাবে, বারুণী-সানে বহু প্রাকালের নিদর্শন
আছে।

অর্থোদয়-যোগও স্বহর্লভ। পৌষ মাঘ মাসে রবিবারে জ্মাবস্তা হবে, প্রবণা-নক্ষত্র-যুক্ত হবে, ব্যতীপাত 'যোগ' হবে, অর্ধোদয়ের এই লক্ষণ। কিন্তু এই বর্ণনা পরবর্তী কালের। कात्रण, 'अर्थाएक' पह नात्मत्र नार्थकणा नाह । अर्थाएक, त्रविविष्यत अर्थानम, अक्टालानम, ठिक व कल निवा आंत्रख হয়। সেই ক্ষণে অমাবস্থা ও শ্রবণা চাই। পৌষ মাঘ गारम, व्यवश्र हात्म, मूथा हात्म (भीष, त्शीन हात्म माघ। গুই এক ভিখি। কেহ কেহ সৌর পৌষ কিম্বা সৌর-মাব বুঝেছেন। সেটা ভূশ। কারণ, অমাবস্থা একটা চাক্রমাসের একটা দিন। চাক্রমাসের নাম: ন। ক'রলে কোনু মাদের তিথি, তা বুঝতে পারা ষায় না। कोक मारमत २०३ व'नान मिनि निर्मिष्ठ रह ना। जिथि ষারা ব্রি ক্র্য হ'তে চক্র কত দুরে। নক্ষত ষারা ব্রি, চন্দ্র নক্ষত্রচক্রের আদি হ'তে কত দুরে। আর, 'যোগ' দারা বুঝি সে আদি হ'তে চক্রের দূরত্ব ও স্থের দূরত্বের বোগ-ফল কত। অতএব চাক্রমাসের নাম না ক'রলে তিথি ও নক্ষত্র ছারা চন্দ্র ও হর্ষের স্থিতি জানতে পারা যায় না। আরও দেখা যাচেছ, তিথি ও নক্ষত্র পেলে চক্র ও স্থের স্থিতি পাই। 'বোগ'টা একটা অঙ্কনাত্র, এর নৈদর্গিক অর্থ নাই, দিনজ্ঞাপনে একেবারে অনাবশুক। জোষীরা (ফল-क्यां जियोता) 'यांग' है क्टू पिरविश्वान । व्यर्थापव, মুখ্য চাক্র পৌষ-অমাবস্তায়। আমরা বঙ্গদেশে মুখ্য চাক্রমাস গণি। এই প্রথম্ভে দে রীতি ধরোছি। অমাবস্তা, অত এব চন্দ্র পূর্য এক স্থানে আছে। চন্দ্রের নক্ষত্র শ্রবণা, অতএৰ সূৰ্যের নক্ষত্ত্ত প্ৰবণা। এই হেডু ব্যতীপাত 'যোগ' হবেই হবে। কিন্তু তিথি ৩০, নক্ষত্ৰ ২৭, 'যোগ' ২৭টি বর্ষে বর্ষে অগ্রপশ্চাৎ হরে পড়ে। স্মান থাকে না। চাক্রমাসেরও অগ্র-পশ্চাৎ হয়। কোন वर्शित रंशी, क्लांन वर्शित २०वे वास्मान।

উপরে বার অলঞ্জাল পেতেছে। বৎসরে ১.২৬ বার বাড়ে। কিন্তু বারের উনাধিক হয় না, নিয়ত ৬০ দশু। এই ৬০ দশুের মধ্যে বে-কোন সময়ে অমাবস্থা প্রবণা ও ব্যতীপাত শেষ হ'তে পারে। এই সব কারণে ক্মধোদয়ের চক্রনির্ণিয় কঠিন হয়েছে। ন্যুনপক্ষে ১৭ বৎসর পরে অধোদয় হ'তে পারে। ২৭ বৎসর পরে আরও বেশী সম্ভাবনা।

• গত ২০ মাঘ আর্ধোদয় যোগ গেছে। দেখি. কি হয়েছিল। সেদিন রবিবার মুখ্য চাক্র পৌষ-অমাবস্তা ৪• দং, প্রবণা ৫০ দং। অতএব অর্ধোদয়কালে পৌষ-অমাবস্থা ও শ্রবণা ছিল, যোগও হয়েছিল। কিন্তু অর্ধোদন্তে ব্যতীপাত হয় নি, আ দং পরে, প্রায় বেলা ১টার পরে হয়েছিল। অতএব প্রকৃত অর্ধোদয় হয় নি, ব্যতীপাত 'যোগ' অগ্রাহ ক'রতে হয়েছিল। বেলা ১টা হ'তে সন্ধ্যা পর্যস্ত যোগ ধরাও চলে না। ভাতে অর্থেদয় নামটি বার্থ হয়। বে ত্র্প ভ কালে যে-কোন জলে স্নান ক'রলে কোট স্থাগ্রহণকালীন স্নানজন্ত ফলের সমান ফল হয়, সে কাল দীর্ঘ হ'তে পারে না। ফলে বলা হয়েছে, ২০ মাঘ বেলা ৯টার পর বে-কোন সময় স্থান ক'রবে। এটা আর নৃতন কি? সকলেই স্থান করে। অর্থোদয়ের মাহাত্মোর উৎপত্তি চিন্তা ক'রলে মনে হয়, ব্যতীপাত 'যোগ'ট উৎপত্তির বছকাল পরে যো**লি**ত। বাহ্নণী ও মহাবাহ্নণী সানে 'যোগ' দেখা হয় না। এ বৎসর ১৮ চৈত্র ১ এপ্রেল সোমবার মুখ্য ফাস্কন কৃষ্ণ-ত্রমোদশী ৪১ দং, শতভিষা নক্ষত্ৰ ২৪ দং। অতএব বাঙ্গণী-বোগ। ক্ল-ব্রেল্নশী ও শতভিষা নক্ষত্র হ'লে ভভ নামক 'যোগ' হয়। এদিন শুভযোগ ১৯ দং থাকবে। সোমবার না হয়ে শনিবার হ'লে মহাবাকণী যোগ হ'ত।

অর্থোদয়-বোগে লোকসমাগমহেতু কলিকাতা মৃন্সি-পালটির খরচ হয়। খরচ লিখতে হ'লে যোগের সাল ও তারিখও লিখতে হয়। মৃন্সিপালটির ''গেজেটে'' পূর্ব তিনটি যোগের সাল ও তারিখ দেওয়া হয়েছিল।

- (১) मन ১२१०। २७ माघ, देः ১৮৬৪। १ क्व
- (२) मन ১२৯१। २० माच, देः ১৮৯১। ৮ स्व
- (৩) সন ১৩১৪। ১৯ মাঘ, ইং ১৯০৮। **২ ফেব** জ্বার একার

(৪) সন ১৩৪১। ২০ মাঘ, ইং ১৯৩৫। ও ফেব দেখা যাচেছ, প্রথমটির ২৭ বৎসর পরে বিতীরটি, বিতীরটির ১৭ বৎসর পরে ভৃতীরটি, এবং ভৃতীরটির ২৭ বৎসর পরে চতুর্থ-টি হয়েছে। এই ক্রম ধর্যে দেখিদি, ১৭ বৎসর পরে, ১৩৫৬ সালে যোগটি হ'তে হ'তে হবে না। কলিকাতায় স্থোদেরের সময় অমাবস্তা থাকবে না। ২৭ বৎসর পরে সন ১৩৬৮। ২১ মাঘ, ইং ১৯৬২। ৪ ফেব স্থোদয়কালে পঞ্চলক্ষণ যোগটি পাওয়া যাবে।

9

গত অর্থেদির-যোগে কলিকাতার নাকি চারি-পাঁচ লক্ষ নরনারী এসেছিল। শিরালদহ রেল-ষ্টেশন কলিকাতার। কলিকাতার প্রতি আরও টান ছিল। সেথানে এলে কালীঘাট-দর্শনও হয়। রাজধানী-দর্শনের আকাজ্ঞাও কম নয়। হাওড়ার দিকে তিন-চারি লক্ষ নরনারী এসে থাকবে। গঙ্গা এই থানেই নয়, হাওড়ার উত্তরে হরিষার পর্যন্ত গঙ্গা। সুবুঁৱ লোকে যোগাট মেনে গঙ্গাসান কর্যেছিল কি না, জানি না। আছেবা গোদাবরীকে গঙ্গা বলেন।

শ্বার্তাচার্য রঘ্নন্দন ভট্টাচার্য এক পাশ্চান্ত্য "নির্ণয়ামৃত্য" হ'তে অধ্যোদয়কাল বৃবিয়েছেন। তিনি বরাহকত "কত্যচিস্তামণি" ও স্কলপুরাণ হ'তেও বচন তৃ:লছেন। আমি "নির্ণয়মৃত" দেখি নি। "কত্যচিস্তামণি" পাওয়া যায় কি না; জানি না। স্কলপুরাণ বৃহৎ গ্রন্থ, প'ড়তে পারি নি। বৃক্তি, যোগকালে মান ও দান কর্তব্য। গঙ্গায় মান চাই, এমনও নয়। যে-কোন নদী কিষা প্রারণীতে মান ক'রলেও চলে। দিনটা অভত। ব্যতীপাত যোগ নামের অর্থ দারুণ ঘূর্নিমিত্ত। অমাবস্তা তিথিটাও অভত।

নোগকালটা অণ্ডভই বটে, বৎসরের অন্তিমকাল। তথন পোষ প্রবণার রবির উত্তরারণ-প্রবৃত্তি হ'ত। অর্ধোদরের পরে নববর্ধ আরম্ভ হ'ত। প্রিষ্টপূর্ব ৪০১ অব্দের, শকপূর্ব ৪৭৯ অব্দের কথা। কেবল নববর্ধপ্রবেশ নয়, সে বৎসর হ'তে এক নৃতন অব্দ-গণনা প্রচলিত হয়েছিল। অমিনীর আদি বিন্দু খ্রুতে বেয়ে ধ্রি-পূ ৪০১ অব্দটি পেরেছি * (খুঁরু অতিপ্রাম্যভাষা)

^{*} বাঁরা ইংরেজী জানেন, তাঁরা The First Point of Asvini নামক পুত্তিক। প'ড়তে পারেন। পুত্তিকা 'প্রবাসী প্রেসে'' পাওয়া বাবে।

পৌষ শ্রবণা হ'তে বর্ষগণনা তৎকালের পক্ষে এক নৃত্ন কাণ্ড। কিন্ত শ্রবণা অত্বীকারের উপার ছিল না। সেটা প্রতাক্ষ। রামারণ ও মহাভারত বিশ্বামিত্রকে এনেছেন। রামারণে (আদি কাণ্ডে) আছে, তপোধন বিশ্বামিত্র গুক্ষণাপে চণ্ডালছ-প্রাপ্ত নরপতি ত্রিশঙ্কুকে স্থানীরে স্থর্গ প্রেরণ করেন। ইক্স স্থর্গে স্থান দিলেন না। বিশ্বামিত্র ক্লুদ্ধ হরে আকাশের দক্ষিণ দিকে নৃত্ন "নক্ষত্র-বংশ" স্থিটি ক'রলেন।" নৃত্ন স্থিটি হেতু তিনি অপর প্রজাপতি অর্থাৎ ব্রহ্মা হ'লেন। পূর্বকালে ব্রহ্মা সপ্তবিংশতি নক্ষত্র স্থিটি করের যে নক্ষত্রকে আদি করেছিলেন, সেটা রহিত ক'রলেন। শ্রবণা, ধনিগ্রা, শতভিষা, এই ক্রম। ব্রহ্মা ধনিগ্রাকে প্রথম করেরছিলেন, বিশ্বামিত্র ধনিগ্রির পূর্ববর্তী শ্রবণাকে ক'রলেন। একথা মহাভারতে (আদি পর্বে ৭১ রাা অধ্যারে, অশ্বমেধ-পর্বে ৪৪ শাণ অধ্যারে) আছে। সেধানে ধনিষ্ঠার নাম নাই বটে, কিন্তু এই নম্ব্রে লক্ষ্য ভিল।

বৈদিক যজ্ঞকর্ম যে-সেদিন কবা হ'ত না। সে কর্মের নিমিত্ত অমাবদান, পূর্ণিমা, তুই বিষুব, তুই অয়ন দিন গ'ণতে হ'ত। একদা ধনিষ্ঠা নক্ষত্র-ভাগের আদিতে উত্তরায়ণ হ'ত। তথন স্বর্ঘোদয়ের কিছু পূর্বে মৃদক্ষাকার ধনিষ্ঠা-তারাচতুইয়ত দেখা বেত। লোকে অফ্লেশে উত্তরায়ণ দেখতেন, তাঁরা যাজ্ঞিক ব্রাহ্মণ, তাঁদের তিথি নক্ষত্রের পরিপুই জ্ঞান ছিল। এমাবস্থাও পূর্ণিমায় বৈদিক ক্বত্য ছিল। যাজ্ঞিকেরা বেদিন পৌষ-অমাবস্থার অস্ত ও ধনিষ্ঠার আরস্ত সেদিন স্থির ক'রলেন। পরদিন মাঘ-শুক্ল-প্রতিপদে নববর্ষ আরস্ত। এ-সব কথা বড়ক্ল-বেদের জ্যোতিষ-অক্ষে ওপুরাণে বিস্তারিত

আছে। পিতামহ ব্রহ্মা যাবতীয় স্প্টির কর্তা। ধনিষ্ঠাদি-গণনাপ্ত তাঁর ক্কত। ক:ব এই ঘটনা হয়েছিল? অখিনীর আদি নির্ণয় ক'রতে যেয়ে অব্দটি পেয়েছি। সেটি ধ্রি-পু১৩৭২ অব্দ। তারিখ ২ জামুআরি।

কিন্তু উদ্ভরায়ণ-বিন্দ স্থির থাকে না, পিছাতে থাকে। ধনিষ্ঠার আদি হ'তে প্রবণার আদিতে এসে প'ড়ল। এ সময়ে निक्त इ-नन रुखि हिन। এक नन वरना हिन, "यिमन আছে তেমন থাক, ধনিষ্ঠাই নক্ষ:ত্রের প্রথম ধরা হ'ক। এই বিধি ব্রহ্মার ক্বত। এর জায়গায় প্রবণাকে বদালে ধর্ম কর্ম সব পণ্ড হবে।" স্বস্ত দল বল্যেছিলে, "তোমরা রাথতে চাও, রাধ। আমরা যেটা প্রত্যক্ষ ক'রছি, দেটা ধ'রব। উত্তরায়ণ-কালে সুধোঁদায়ের পূর্বে প্রবণা দেখতে পাচ্ছি, কেমনে বলি ধনিষ্ঠা।" বাস্তবিক উচ্চরায়ণকালে সংগোদয়ের পূর্বে ত্রিপদাকার ত্রিভারক। শ্রবণা দেখা যেত। রাজ্যি বিশ্বামিত তেজম্বী ও জোধনমভাব ছিলেন, তাঁকে দিয়ে নৃতন স্ষ্টি করালেন। অবশ্য নামটি কাল্পনিক। গাধি-পুত্র বিশ্বামিক বহুকাল পূর্বে ছিলেন। এত দিন এই বিধি-প্রচলনের প্রত্যক্ষ প্রমাণ পাই নি। অর্ধোদয়-বোগের উৎপত্তি চিস্তা ক'রতে যেয়ে দেখছি, অস্তাপি আমরা সে নৃতন স্ষ্টি শ্বরণ ক'রছি। থি,-পূ ৪০১ অব্দে ৫ জামুআরি অর্ধোদয়-'যোগ' প্রথম হয়েছিল। সূর্যের অর্ধোদয় কালে অর্থাৎ. দিবার ছে পৌষ-অমাবভা ও শ্রবণা নক্ষত্রের যোগ হয়েছিল।

তৎকালে রব্যাদি সপ্তবার, আর বিষ্কুভাদি সপ্তবিংশ 'বোগ' গণনা ছিল না। বছকাল পরে যথন এই তুই গণনা পাঞ্জির অঙ্গীভূত হয়েছিল, তখন কোন জ্যোতিষী প্রথম অর্ধোদয়ের বার ও 'বোগ' গণ্যেছিলেন। দেখেছিলেন সেদিন রবিবার, ব্যতীপাত 'যোগ'। গণ্যেও দেখছি, ঠিক। বারের ঐক্যে অস্ক্-নির্ণর সমর্থিত হ'চছে।

শ্রবণাদি-গণনা কতকাল চল্যেছিল, ভারতের কোন্
প্রাদেশে চল্যেছিল, কিছুই জানি না। কিন্তু বে-টা একবার
চলে, সে-টার চিহ্ন থেকে ধার। আমাদের পাজিতে এমন
শ্বতি অসংখ্য আছে। বহু বহু প্রাকালের শ্বতি আছে।
পৌষ অমাবস্থার অধোদার, মাঘ ক্ষ-চতুর্দনীতে শিবরাত্তি,
ফাল্পন কৃষ্ণ-ত্রেরাদনীতে বাক্ষণী। বাক্ষণী দেখি। থ্রি-পু ১৩৭২
অংশ ধনিষ্ঠার আদ্যে উত্তরারণ হ'ত। বোধ হয় অমাবস্থার

^{*} ত্রিশহু দক্ষিণ আকাশে এক নকত্র হয়েছিলেন। ''আমানের ল্যোতিরী ও জ্যোতির'' দেগুন।

[†] এর অমূরণ বাক্ডাতে পেয়েছি । কুষক মাত্রেই ব্র্যা-আরম্ভ প্রতাক্ষা করে, বলে 'মিগের বাত' হ'লেই ব্র্যা আরম্ভ হবে। মিগের বাত' মুগশিরা নক্ষত্রের বায়ু, আবহের প্রকৃতি। রবি মুগশিরার এলে প্রথম ব্র্যা হয়। কিন্তু রবির উদরে সকল তারাই অদৃত্য হয়। রোহিণীর পর মুগশিরা। স্র্যোদরের অবাবহিত পূবে প্রাকাশে রোহিণীর উদর হ'লে ব্রুতে পারা যায়, প্রথম ব্র্যা আসর, দিন তের চৌদ্দ পরে 'মিগের বাত' প'ড়বে। রোহিণী শকটাকার, সহজ্ঞে চিনতে পারা বায়। বায়ুড়ার ও মান্তুমে অশিক্ষত আম্যক্ষনও রোহিণীর উদর লক্ষ্য ক'রতে থাকে। কথাটা অত'ব্য!

অৰুণোৰয় বেৰায় স্নান বিহিত ছিল। সেটি প্ৰথম অর্ধোদয়ে তৎপূর্বে, প্রায় সংস্র বৎসর পূর্বে, শতভিষা নক্ষত্রের আদ্যে হ'ত। ইহা গণিত ছারা জানছি। স্মৃতি অর্থাৎ ধর্ম-ব্যবস্থা হ'তে প্রমাণ পাচ্ছি, বৈদিক ঋষিরা শতভিষায় উত্তরায়ণ দেখেছিলেন। না দেখলে স্মৃতি থাকত না। তাঁরা এটা গণিত হারা পেয়েছিলেন, শতভিষা-তারাপুঞ্জ দৃষ্টিগোচর হ'ত না। বোধ হয়, অগন্তা-তারার উদয় দেখা হ'ত। অগস্ত্যোদয় প্রাসিদ্ধ ছিল। তথন শতভিষার বিপরীত দিকে মথা নক্ষ**ে দ**ক্ষিণায়ণ হ'ত। বৈদিক গ্রন্থে এর অনেক প্রমাণ আছে। এরও পূর্বে, প্রায় সহস্র বংসর পূর্বে, ফল্লুনী নক্ষত্তে দক্ষিণায়ণ, এবং ভাদ্রপদা নক্ষত্রে উত্তরায়ণ হ'ত। এই দক্ষিণায়ণের প্রমাণ বৈদিক গ্রন্থে আছে। অদ্যাপি আমরা দোলবাত্রায় ও ঝুলন-যাত্রায় সে কাল স্মরণ ক'রছি। বাতে চন্দ্র সূর্য সাক্ষী ভাতে অবিখাস ক'রতে পারি না। স্মৃতিশান্ত্র, স্মৃতিরক্ষার শাত্র। ভারতের অতীত, শ্বতিমুখে কথা কইছে, আকাশের তারা অনিমেষ চেয়ে আছে।

প্রাচীন স্থৃতি রক্ষা দারা হিন্দুজাতি বেঁচে আছে। সে স্থৃতি লোপ ক'রলে আশ্রয়হীন হবে, নৃতন জাতি হরে প'ড়বে। স্থৃতির উৎপত্তি না জেনে উদ্দেশ্য না বুঝে কেহ কেহ মনে করেন, স্বৃতির ব্যবস্থা কুসংস্থার। তাঁরা জিজ্ঞাসেন, স্নান ক'রলে কি হবে? আমিও জিজ্ঞাসি, জন্ম-ভিথি পালন ক'বলে কি হবে ? এই যে, সে বৎসর জয়ন্তীর ধুম পড়োছিল, জয়ন্তী-পত্রও দেওয়া হয়েছিল; কার কি क्ष्म इस्रिक्षि । এই यে अभूरकत शक्षितः म विर्विकी, অমুকের শতবার্ষিকী হ'চেছ, কার কি ফল হ'চেছ? মাহবের পূজা অহরহ হ'চছে। পটের উপরে ফুলের মালা দেওয়া হ'চ্ছে: এসব হ'চেছ, মিটিং কর্য়ে, নাম স্থাতি-সভা, স্থৃতি-তর্পণ। প্রাচীনেরা মিটিং ক'রতেন না, হাকা-হাকি ডাকা-ডাকি ক'রতেন না, যথা তিথিতে প্রাতঃসান **হারা** দেহ নির্মণ ক'রতেন, দান ছারা পুণ্য ক'রতেন, তপস্তা দারা মনঃসংযম ক'রতেন, ইট্টের পূজা দারা আত্মার প্রসন্নতা ক'রতেন। সে ইষ্ট, মানুষের অনুগ্রহ নয়, ক্কডজ্ঞতা-জ্ঞাপন নয় :

রাজা রামমোহন রায়

শ্রীদীননাথ সাস্থাল

১৮৩৩ খ্রীষ্টাব্দের সেপ্টেম্বর মাসের ২৭শে তারিথে রাজা রামমোহন রায় বিলাতে দেহত্যাগ করেন এবং সেই দেশেই ব্রিষ্টল নগার তাঁহার সমাধি হয়। এই উপলক্ষে ইহা ভারতের এবং বিশেষ করিয়া বাংলার এক শ্বরণীয় দিন।

কিছুকাল পূর্বে ভারত ব্যাপিয়া তাঁহার পরলোক-প্রাপ্তির শত-বার্ষিক উৎসব সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে এবং সেই উপলক্ষে তাঁহার জীবন-চরিত সম্বন্ধে অনেক আলোচনাও হইয়াছে। নির্দেশ্য ও ধীরভাবে বিবেচনা করিয়া দেখিলে, তাহা হইতে এই সত্যটুকু নিছাযিত হয় বে, য়ামমোহ:নর জীবন-চরিত হাহা প্রচলিত, তাহা অম-প্রমাদ-বর্জিতও নয় এবং সম্পূর্ণও নয়। পক্ষাস্ত:র, যিনি য়ুগ- মানব বলিয়া গণ্য, তাঁহার জীবনী অতি নিরপেক্ষভাবে ও সত্যান্সন্ধিৎস্থ মনে, কেবলমাত্র সত্যের দিকে দৃষ্টি রাখিয়া, ঘূম্পাপ্য ঘটনাগুলির সন্ধান স্বড্বে সংগ্রহ করিয়া, লিখিত হওয়া একাস্ত আবগ্যক।

ইহা একটি চিরস্তন সত্য যে, অ-লোকসামান্ত ব্যক্তি-গণকে সাধারণ মানব হইতে পৃথক করা যত সহজ, তাঁহা-দিগের মনস্তব্ধে প্রবেশ করা তত সহজ নর, বাস্তবিকই যুগ-মানবদিগের মনস্তব্ধ ত্রবগাহ—বিশেষতঃ সমসামন্ত্রিক কালে। উপস্থিত প্রসঙ্গে জীবদ্দশায় বে-কলিকাভার বন্ধনের পরামর্শে রামমোহনকে প্রাণভরে সাবধান থাকিতে হইত, শত বর্ধ পরে সেই কলিকাভার তাঁহার শত-বার্ষিক উৎসব মহাসমারোহে সম্পন্ন হইরা গেল। যুগ-মানব বা অতি-মানবদিগের মনস্তক্ত বাস্তবিকই ত্ররবগাহ—সকল দেশে এবং সকল কালে। বিংশ শতাব্দীতে পাশ্চাত্য দেশেও ইহার উদাহরণ একাস্ত ত্ল'ভ নয়।

যাহা হউক, শত বৎসর পরে আমরা এই যুগ-মানবের মনস্তব বেরূপ বুঝিতে পারিয়াছি, ভাহাতে মনে হয়,— রামমোহনের স্বভাব-গত ছইটি মনোবৃদ্ধি তাঁহাকে জীবন-পথে চালিত করিয়াছিল-অনাধারণ ধর্ম-দ্বিজ্ঞানা অর্থাৎ প্রচলিত বিবিধ ধর্মগুলির তন্তানুসন্ধান করিবার ইচ্চা এবং প্রবল কর্মপ্রচেষ্টা। ধর্ম-জিজ্ঞাসাই তাঁহাকে সংস্কৃত-শিক্ষার প্রণোদিত করিয়াছিল,—যাহার ফলে তিনি তন্ত্র-পুরাণাদি শাস্ত্র-সকল হইতে আরম্ভ করিয়া ব্রহ্ম-প্রতিপাদক উপ-नियमानि গভীর ভাবে অসুশীলন কবিকে এবং ভাৎকাণিক পণ্ডিতগণের সহিত সমকক্ষভাবে তর্কযুদ্ধ করিতে সমর্থ হইয়াছিলেন। ধর্ম-জিজ্ঞাদার মনোবুদ্ধিই তাঁহাকে হুরহে আরবীয় ভাষা আয়ত্ত করিতে প্রণোদিত করিয়াছিল:—বাহার ফলে, ধর্মান্দোলনক লে মুসলমান মৌলবীদিগের গহিত সতেজে ভর্ক করিয়া তাঁহাদের কাছে "জবরদন্ত মৌলবী" আখ্যা প্রাপ্ত হইয়া-ধর্ম্ম-জিজ্ঞাসার ছিলেন। তাডনাতেই তিনি প্রবল हेःदब्धी वहिरवत्न পরিতৃষ্ট পাকিতে না-পারিয়া মূল বাইবেল পড়িবার উদ্দেশ্যে হিক্র ভাষা শিক্ষা করেন এবং সেই বলে বলীয়ান হইয়া ভর্কযুদ্ধ এটান পাদ্রী দিগকে পরান্ত করিতে পারিতেন। কথিত আছে, য়াডাম নামক এক ইংরেজ পাদরী রামনোহনকে গ্রীষ্টধর্মে ভঞ্চাইতে আসিয়া নিজেই রামমোহনের কাছে সার্বজনীন ধর্মে দীক্ষিত হইয়াছিলেন এবং কলিকাতায় ইউনিটেরিয়ান চার্চ্চ স্থাপন করেন। এই উপলক্ষে কশিকাতার তাৎকালিক সাহেবের। ঐ য়াডাম সাহেবকে "Second Fallen Adam" বলিয়া বিজ্ঞাপ করিতেন। ফলে, অতি অল্প সময়ের মধ্যে রামমোহন বিবিধ ধর্ম্ম-সম্প্রদায়ের মধ্যে এমন একটা আন্দোলনের সৃষ্টি করিয়াছিলেন এবং নিজ পক্ষে এমন ধীরভার সহিত যুক্তি প্রয়োগ করিতেন, যাহাতে অপর भक्त हमकिछ नी-इडेश शकिए शांत्रिक ना। **এ-**मकनहे তাঁহার অন্তর্নিহিত ধর্ম-জিঞাসা-মনোবৃত্তির ওণে।

তাহার পর, তাঁহার কর্মপ্রচেষ্টা। সেই যুগ-সন্ধির কালে কি ধর্ম, কি সমাজ, কি শিক্ষা, এমন কি, তর্ক করিবার ও গ্রন্থাদি নিথিবার জন্ত বাংলা ভাষার গদ্যে করেকথানি উপনিষদের অম্বাদ, এমন কি ব্যাকরণ, ভূগোল ইত্যাদিও তাঁহার কর্মপ্রচেষ্টার অন্তর্গত। ইহাদের প্রত্যেকটি সম্বন্ধে তাঁহার কর্মপ্রচেষ্টার অন্তর্গত। ইহাদের প্রত্যেকটি সম্বন্ধে তাঁহার কার্য্য সবিস্তারে বলা এ-প্রবন্ধের উ.দেশ্ত নয়। এ-স্থলে আমি কেবল তাঁহার তিনটি কার্য্যের প্রেরণ্থে

(১) মহানির্বাণ তন্ত্র, (যাহা রামমোহনের করামলকস্বরূপ ছিল), দেখিলেই সুস্পন্ত প্রতীতি হয় যে, রামমোহনের
ব্রহ্মোপাসনার প্রেরণা ঐ তন্ত্র হইতে। মহানির্বাণ তন্ত্রের
প্রথম তিনটি উল্লাস ব্রহ্মোপাসনা-বিষয়ক এবং সে
উপাসনার প্রতি সনাতন শাস্ত্রান্ম্যায়ী নয়। মহানির্বাণের
ব্রহ্মোপাসনায়—

'নারাসো নোপবাসন্ত কারক্লেশে ন বিদ্যতে।
নৈবাচারাদি নিরমো নোপচারান্ত ভূরিশঃ ॥''
''ন দিকাল-বিচারোহস্তি ন মুডা-শুস-সংহতিঃ।
যৎ সাধনে কুলেশানি তং বিনা কোংগুনাগ্রয়েই ॥"
(২র উল্লাস—হ০ ও ই৪ শ্লোক)
''অস্নাতো বা কুভসানো ভূজোরাপি বুভূক্ষিতঃ।
পূজ্ঞরেই পরমান্ধানং সদা নির্মান-মানসঃ।"
(র উল্লাস—শচ শ্লোক)
''পূর্জনে পরমেশস্ত নাবাহন-বিসর্জনে।
সর্বত্র সর্ব্ধকান্তেরু সাধ্যেক্ ব্রহ্মসাধনম্॥"

''ভক্ষাভক্ষ্য-বিচারোহর ত্যাজাং ঝাহং ন বিদ্যতে। ন কালগুদ্ধি নিরমো ন বা ছান-নিরপণম্ ॥'' ''অভুক্তো বাপিভুক্তো বা মাতো বামতি এব বা। সাধ্যেৎ প্রমং মন্ত্রং স্বেচ্ছাচারেণ সাধ্বঃ।" (ঐ—১১৬, ১১৭)

রামমোহন উপনিষদে যে নিরাকার এক্ষের সন্ধান পাইয়াছিলেন, মহানির্বাণোক্ত এক্ষোপাসনার এক্ষও তাহাই ;—

> "বতো বিশং সমৃত্যুতং বেন জাতক তিউতি। বিন্দিন্ সর্ব্বাণি লীয়ন্তে জ্ঞেয়ং তদ্ব ব্রহ্মলক্ষণৈ: ।'' (ঐ—>

মহানির্বাণোপদিষ্ট ত্রন্ধোপাসনার বিধি ও পদ্ধতি এবং রামমোহনের তান্ত্রিক মনোভাব একত্রে বিচার করিয়া দেখিলে স্পষ্টই ধারণা হয় যে, তাঁহার প্রবর্ত্তিত ত্রন্ধসভার বীজ ঐ তন্ত্র হইতে সংগৃহীত। (২) সতীদাহ-প্রথা-নিবারণ-কল্পে রামমে: হনের প্রশংসনীয় প্রচেষ্টার বীজও ঐ তন্ত্র হইতে সংগৃহীত, একথা স্কুটিত-ভাবে বলা ঘাইতে পারে। কারণ, দশম ইলাসে উল্লিখিত:—

> ''ভর্মা সহ কুলেশানি ন দহেৎ কুলকামিনাম্। তব স্বরূপা রমণী জগত্যাচ্ছল বিপ্রহা।'' মোহাদ্ ভর্জুনিত্তারোহাৎ ভবেলুক ক-সামিনী ॥ " (১০ম উরাস—৭০, ৮০)

এ-বিষয়ে মহানির্বাণের নির্দ্দেশিট বেমন সুস্পট, মিভিশাপটি তেমনই তীব্র ও রোষ-ক্যায়িত। ইহা হইতে মহমান করা অসঙ্গত নয় বে, ঐ তন্তরচনার পূর্ব ইতেই সতীদাহ-প্রথার অমাক্ষিক নিষ্ঠুরতা লোক-মাঙ্গের হাদয়-তন্ত্রীকে আলোড়িত করিতেছিল এবং হানির্ব্বাণে সেই প্রতিক্রিয়াই শাস্ত্রোচিত শাসন-বাকো প্রতিফলিত হইয়ছে। আরও বোধ হয়, তাল্লিকতা-প্লাবিত হাৎকালিক বাংলা দেশে মহানির্ব্বাণের আদেশ একেবারে নফল যায় নাই;—সতী-দাহ সংখ্যা ক্রমেই কমিয়ায়িরতিছিল। পরে, যাহা অবশিষ্ট ছিল, তাহা রামমোহনের চেটায় রাজ-আজ্ঞা ছারা একেবার বন্ধ হইয়া যায়। এ-কার্য্যে য়ামমোহনের ক্রতিছ যথেষ্ট থাকিলেও প্রেরণা মহানির্ব্বাণ

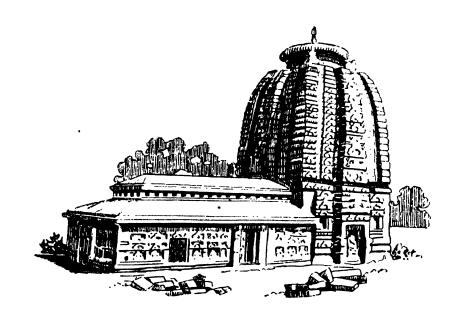
হইতে, এ-কথা না-বিশিষা থাকা যায় না। তবু কিছে এ-কথা, মহানির্কাণের অনুবাদ ও টীপ্পনীকার জগন্মোহন তর্কাশস্কার নামে প্রসিদ্ধ শ্রীমৎ পূর্ণানন্দ তীর্থনাথ ভিন্ন আর কেহ বিশিষ্যাছন বিশিষ্য আমার জানা নাই।

(৩) এদেশে রীতিমত প্রথার স্ত্রী-শিক্ষার প্রচলন সম্বন্ধেও রামমোহনের প্রেরণা ঐ তন্ত্র হইতে। উহার অষ্টম উল্লাসের ৪৭ সংখ্যক শ্লোকটি এখন সর্বজ্ঞনবিদিজ্ঞ হইরা পড়িয়াছে;—

> ''ক্তাপেবং পালনীয়া শিক্ষণীয়াতি ষত্নত:। দেয়া বরায় বিছ্বে ধনরত্বসমন্বিতা।

আমি রামমে!হনের মনন্তত্বের সন্ধানে তাঁহার কয়েকটি প্রধান কার্ব্যের প্রেরণা সম্বন্ধে আলোচনা করিলাম। প্রেরণায় মান্ত্যকে থর্কা করে না; বরং প্রেরণা গ্রহণ এবং তদন্দারে ভক্লান্ত-ভাবে কার্য্যাধনই মন্ত্যান্ত্রে পরিচায়ক। সে পক্ষে, তাঁহার ঐকান্তিক আগ্রহ, অদম্য চেষ্টা, ও অসীম সহিষ্কৃতা তাঁহার অ-লোকসামান্ত ও সমুদ্ধত ব্যক্তিক্তেই পরিচয় প্রদান করে।*

 গত ২৭ সেপ্টেম্বর তারিথে কৃষ্ণনগরে রামমোহন স্মৃতিসভার অধিবেশনে লেখক কর্ত্বক গাঁ
উত্তি ।



পরমহংস রামকৃষ্ণ

পণ্ডিত শিবনাথ শান্ত্ৰী

[১৯১• সালের অক্টোবর মাসে পণ্ডিত নিবনাৰ শান্ত্রী রামকৃষ্ণ পরমহংসবেৰ সম্বন্ধে ইংরেজীতে একটি প্রবন্ধ লেখেন। উহার সমগ্র বাংলা অপুরাদ করিলে তাহা ছাপিতে প্রবাদীর ন্যুনকল্পে দশ পূঠা লাগিবে। এখন সমগ্র অপুরাদ করিরা ছাপিতে পারা এপেন না। পরমহংসবেবের শতবাধিক অনুযোৎসব উপলক্ষো শান্ত্রী-মহাপরের প্রবংশের তাৎপর্য্য নীচে দেওরা হইল।

"পরমহংস রামক্কফ তাঁহার সাধনা সম্বন্ধে আমাকে বাহা বলিয়াছিলেন, তাহার অনেক কথা আমার মনে আছে। তদুষ্ঠান্ত-শ্বরূপ, এক হাতে কিছু ধূলা ও অন্ত হাতে করেকটি মূলা লইয়া তিনি নদীর ধারে বিদয়া ধানস্থ হইতেন, এবং উভয়েরই সমান অকিঞ্চিৎকরত: উপলব্ধি করিতে চেটা করিতেন। তাহার পর তিনি পুনঃ পুনঃ বলিতেন, 'টাকা ধূলা, ধূলা টাকা, টাকা ধূলা, ধূলা টাকা, বহং এই সত্যের সম্পূর্ণ উপলব্ধি হইবার পর ধূলা ও টাকা ছুই-ই নদীতে ফেলিয়া দিতেন।"

"এক জন সাধু তাহাকে দীনতা সাধন করিতে, আপনাকে হীনতম মেথরের সমান মনে করিতে, বলেন। রামক্রফ তৎক্ষণাৎ মেথরের কাজ করিতে প্রতিজ্ঞা করিলেন। তিনি গোপনে এক প্রতিবেশীর পারধানার নীচের দরদা দিয়া চুকিয়া মরলার গামলা হইতে মরলা ফেলিয়া দিয়া তাহা নদীতে ধুইয়া বথাস্থানে রাখিয়া দিতেন। কিছু দিন তিনি এইরপ করিবার পর ব্যাপারটি জানা পড়িল, এবং তাহার বিক্লছে আপত্তি ও অসুযোগ হইল। তথন তাঁহাকে মেথরের কাজ ছাড়িয়া দিতে হইল।"

"বস্ততঃ তাঁহার সহিত মিলামিশার আমার মনে এই ধারণা জন্মে যে, আমি কচিৎ এমন আর একটি মানুষকে দেখিয়াছি আধ্যাত্মিক জীবনের জন্ত বাঁহার আকাজ্জা এত অধিক এবং বিনি ধর্ম সাধনের জন্ত এত হঃথ ভোগ ও ত্যাগ স্বীকার করিয়াছেন। বিতীয়তঃ, আমার এই দৃঢ় বিশাস জন্মে, যে, তিনি এখন আর সাধক নহেন কিন্তু সিদ্ধ হইরাছেন। যে সভাটির তিনি আজিক সাক্ষাৎ-

দর্শন লাভ করিয়াছিলেন এবং যাহা হইতে তিনি স্বীয় আত্মায় মহৎ প্রেরণা লাভ করিতেন, তাহা পরমাত্মার মাতৃত্ব। তিনি পরমদেবতাকে মা বলিয়া উল্লেখ করিতে ভালবাসিতেন, ঐশী মাতৃত্বের চিস্তায় তাঁহার ক্ষরে প্রবল ভাবাবেশ হইত, এবং বিশ্বজ্ঞননীর বাৎসল্যের গ'ন গাহিতে গাহিতে উত্তেজ্জনার আধিক্যে তিনি সংজ্ঞাহারা হইতেন। তাঁহার এই বিশ্বমাতৃত্বের ধারণা কোন বিগ্রহ বা মুর্ভিকে অতিক্রম করিয়া অনস্তের ধারণায় পরিণত হইত।"

"ভবানীপুরের এক জন খ্রীষ্টায় ধর্মের প্রচারক আমার বন্ধু ছিলেন। তিনি একবার রামক্কফের স্থিত সাক্ষাংকারে আমার সঙ্গী ছিলেন। এই বন্ধুকে তাঁহার সহিত পরিচিত কার্মা দিবার জন্ত আমি বলিলাম, 'আজ এক জন খ্রীষ্টায় প্রচারককে আপনার নিকট এনছি। তিনি আমার কাছ থেকে আপনার কথা শুনে আপনাকে দেখতে খুব ব্যপ্ত ছিলেন।' রামক্কফ তখন মাটিতে মাথা ঠেকাইয়া বলিলেন, 'আমি যীশুর পারে বার বার প্রণাম করছি।' তাহার পর এইরপ কথোপকথন হইক:—

আমার গ্রীষ্টার বন্ধু—আপনি বীশুর পারে প্রণত হচ্ছেন এ কেমন কথা? আপনি তাঁকে কি মনে করেন?

র¦মরুক্ষ—কেন আমি তাঁকে ঈশ্বরের এক জন অবতার মনে করি।

আমার বন্ধু—ঈশবের অবভার! আপনি কি দরা ক'রে বলবেন আপনার কথার অর্থ কি ?

রামক্ক আমাদের রাম বা ক্লফের মত এক জ্বন অবতার। আপনি কি জানেন না, বে, ভাগবতে একটি উক্তি আছে, বে, বিষ্ণু বা পরব্রন্ধের অবতার অসংখ্য ?

আমার বন্ধ আপনি দরা ক'রে আরও ব্যাখ্যা করুন; আপনার কথা সম্পূর্ণ বুঝতে পারছি না।

রামক্রক-সমুদ্রের কথা ধর না। মহাসাগর বিশাল ও প্রায় অপার জলরাশি। কিন্তু বিশেষ বিশেষ কারণে,



স্বানী বিবেকানন্দ

মহাসমুদ্রের বিশেষ রিশেষ অংশে, জব জমে বরফ হয়ে বায়। বথন তা জমে বরফ হয়, তথন তা সহজে নাড়া-চাড়া করা এবং বিশেষ বিশেষ রূপে বাবহার করা যায়। অবভার কতকটা তার মত। বেমন মহাসমূদ্র, তেমনি আছেন জড়ের ও চেতনের মধ্যে অনন্ত শক্তি; কিন্তু কোন কোন উপেশ্যে কোন কোন স্থানে ঐ অনন্ত শক্তির এক একটি অংশ যেন ইতিহাসে মূর্ভিমান হন। তাঁকে ভোমরা বল মহাপুরুষ, মহামানব। কিন্তু তিনি ঠিক্ বলিতে গেলে সর্ববাপী ঐশীশক্তির স্থানীয় প্রকাশ, অর্থাৎ কিনা ভগবানের এক অবতার। মহাপুরুষদের মহন্থ সারতঃ ঐশীশক্তির প্রকাশ।

আমার বন্ধু—আপনার মত ব্রালাম, যদিও আমরা তাতে সম্পূর্ণ সায় দি না। (তাহার পর আমার দিকে ফিরিয়া আমার গ্রীষ্টীয় বন্ধু বলিলেন) আমার ব্রান্ধি বন্ধরা এ-বিধয়ে কি বলেন জানতে চাই।

রামক্কথ—(ব্রাহ্মসমাজের সভ্যদিগকৈ শক্ষা করিয়া) ও আহাত্মক দের কথা বশবেন না, এ-সব জিনিষ দেধবার চোধ ভাদের নাই।

আমি—(রামরুফকে সংখাধন করিয়া) আপনাকে কে বলেছে, মশার, যে, মানবসমাজের বড় বড় উপদেষ্টাদের মহন্ত ঐশীশক্তির প্রকাশ ব'লে আমরা বিশ্বাস করি না, এবং সেই অর্থে তাঁহাদিগকে ঐশ কোন ভাবের ("iden"র) অবতার মনে করি না !*

্রামক্ষ্ণ—তোমরা কি সত্যি তাই ব'েশ বিখাস কর ? আমি তা জানতাম না।"

"একবার এক জন দর্শক তাঁহাকে প্রান্ম করিল, জ্ঞান ও ভক্তির মধ্যে কোন্টি শ্রেষ্ঠ । রামক্রফ সংস্কৃত থাকিরণ অনুযারী লিক্স অনুসারে জ্ঞান ও ভক্তি শব্দ-ফুটির মধ্যে জ্ঞানকে পুরুষ ও ভক্তিকে নারী বলিয়া উপদেশ দিলেন । কিন্তু তিনি জানিতেন না, যে, সংস্কৃত ব্যাকরণ অনুসারে জ্ঞান ক্লীবশিক।
বাহা হউক, একেত্রে তাঁহার জ্ঞানাস্থায়ী শিক্ষভেদের
চমৎকার প্রয়োগ তিনি করিলেন। একটিকে পুরুষ ও
অন্তটিকে নারী বশিয়া বর্ণনা করিয়া এবং নারীদিগের
অন্তঃপুরে থাকিবার ভারতীয় প্রথার উল্লেখ করিয়া তিনি
বলিলেন:—'জ্ঞান পুরুষ ব'লে মা'র বাড়ির বাইরের মহলে
দাঁড়িয়ে অপেক্ষা করতে বাধ্য হয়; কিন্তু ভক্তি নারী ব'লে
একেবারে সোজা মা'র অন্তঃপুরে গিয়ে তাঁর সামনে
উপস্থিত হয়।"

"আর একদিন এক জন দর্শক জিজ্ঞাসা করিলেন, 'আমরা সংসারে নিত্য নানা উদ্বেগ ও কর্ত্তবা নিয়ে থাকি; এ অবস্থায় পারমার্থিক বিষয়ে মন:সংযোগ করতে হ'লে কি করতে হবে ?' বাসক্ষ বলিলেন, 'টেকিতে মেয়েদের চিঁড়া তৈরি করতে দেখেছ ? চেঁকির মুশল যে গর্তীতে ক্রমাগত পড়ে ও তার থেকে ওঠে, তার কাছে একটি স্ত্রীলোক ব'সে থেকে তাতে ধান দেয় আর কটা ধানগুলি সরিয়ে নেয়। তাকে গর্তুটি থেকে কুটা ধান খুব সাবধানে সরাতে হয়, নইলে তার আঙ্গলগুলি খেঁতলে খেতে পারে। এই খ্রীলোকটির কথা ভাব। আর এও বিবেচনা কর, যে, সে তথন অন্ত কাজেও ব্যাপত থাকে। তার কোলে একটি শিশু আছে, তাকে সে মাই দিচেছ, বা হাত দিয়ে কুটা ধান রোদে দিবার জন্তে ছড়াচ্ছে, আবার এক জন প্রতিবেশীকে কিছুক্ষণ আগে যে চিঁডা দিয়েছিল তার সঙ্গে তার দামের কথাও বলছে। ঐ স্ত্রীলোকটির মন সকলের আগে সকলের চেয়ে বেণী কিসে আছে মনে কর ? নিশ্চয়ই সেই টেকির গর্তে ট্কান হাভটিতে, যাতে ক'রে মুশলে হাতটা পেঁতলে না যায়। সেই রকম তোমর: এই সংসারে নানা ব্যাপারে লিপ্ত থেকো, নানা কন্তব্যে বাস্ত থেকো, কিন্তু সকলের আগে সকলের চেয়ে মন দিও তোমাদের পারমার্থিক কল্যাণের বিষয়ে, যাতে তা নষ্ট না হয়।'''

"আর একবার কথা উঠে, মালা জপ করা বা ঠাকুর দেবতার নাম বার বার উচ্চারণ করার বিষয়ে। সিদ্ধ সাধ্পুক্ষর বলিলেন, 'একটি নাম বার-বার আওড়ান কিছুই নয় যদি তার সঙ্গে সঙ্গে তদক্রপ ভাবের উদ্রেক না হয়। একটা টিয়া পাধীর দুষ্টান্ত নাও। তার মালিক তাকে নিজের

^{*} শান্ত্ৰী-মহাশয়ের ব্যবহাত ইংরেজী কথাগুলির অবিকল, অমুবাদ করা পেল না বলিয়া মূল ইংরেজী দিতেছি:—

[&]quot;Myself—(addressing Ramakrishna) Who told you, Sir, that we do not believe that the greatness of the great teachers of humanity was a Divine communication, and in that sense they were incarnations of a Divine Idea?"

দেবতাদের নাম শিধিয়েছে। তাই সে দিন নাই ক্ষণ নাই সকাল-সন্ধা কেবলই রাধা ক্ষণ রাধা ক্ষণ ব'লে চলেছে— বেন সে তাঁদের প্রেমে আয়হারা। কিন্তু একদিন একটা ধূর্ত্ত বেরাল পেছন থেকে এসে তাকে ধরল ও মেরে ফেলবার চেটা করল। তথন কি শুন্তে পেলে ? তথন তার কর্প থেকে আর রাধাক্ষণ বেরম না; তার ক্ষায়গায় তার য়য়ণার স্বাভাবিক কাঁা কাঁা শব্দ বেরতে থাকে। এই রকম, তোমাদের ক্ষপওয়ালা মানুষ প্রলোভন ও পরীক্ষার সময় হয়ত আওড়ান নামটি ভূলে যায়; তোর মামুলি অবিশ্বাস এসে পড়ে, ভগবানের নাম ভ্লে যায়; তার মামুলি অবিশ্বাস এসে পড়ে, ভগবানের চরণে তার গে আয়সমর্পণ নাই তা ধরা পড়ে। যে ভগবদবিখাস জীবনের নানা পরীক্ষায় টিকে থাকতে না পারে, তা বিশ্বাসই নয়।"

"একদিন তাঁহার নিকট বসিয়া আছি, এমন সময় কতক-গুলি লোক আসিলেন। তাঁহাদের মধ্যে এক জন অন্তান্ত প্রশ্নের মধ্যে এই প্রশ্ন করিলেন, যে, আধ্যান্মিক উন্নতির জন্ত মানুষের শুরু অর্থ: আধ্যাত্মিক শিক্ষাদাভার পরিচালন ও উপদেশের আবশুক কিনা। রামকৃষ্ণ বলিলেন, 'যদি কেউ তার আধ্যাত্মিক জীবনের যোগ্য পরিচালক পায়, তা হ'লে তা নিশ্চরই সুবিধাজনক ও মহা মৌভাগা; এরপ শোক তাকে বিশেষ সাহাগ্য করবেন। সে যে স্বচেষ্টায় প্রাকৃত আধ্যাত্মিক উন্নতি করতে পারে না এমন নয়, কিন্তু এরপ লোকের সংসর্গে আধ্যাত্মিক উরতি অধিকতর সহজে হয়।' তাহার পর নদীবক্ষে তথন যে স্থীমারটি বাইতেছিল তাহা प्रशास्त्रा स्थारितन, 'ओ श्रीमात्री कथन् हु हुड़ा शीह्रद मत्न প্রশাকর্তা বলিলেন, 'সম্ব্যার আগে ৫টা ৬টার সময়।' রামকৃষ্ণ বলিলেন, 'ষ্টীমারের পেছনে দড়ি দিয়ে বাঁধা একটা নৌকা দেখছ। ষ্টীমারটার সাহায্যে নৌকাটাও ঐ সময়ে চুঁচুড়া পৌছবে। কিন্তু ধর, নৌকাটাকে ষ্টীমার থকে পুলে নেওয়া হ'ল একং তাকে ছীমারটার সাহায্য না নিমে যেতে হবে; তা হ'লে সেটা কখন্ চুঁচ্ড়া পৌছবে ?' লোকটি বলিলেন, 'সম্ভবতঃ কাল প্রাতঃকালের আগে নয়।' তথন রামক্বফ বলিলেন, 'ঠিক সেই রকম, মানুষ নিজের আধ্যাত্মিক জীবনে তার চুর্বলতা ও ভ্রান্তির মধ্যে দিয়ে বিনা সাহায্যে অগ্রসর হ'তে পারে-এতে কেবল বেশী সময়

লাগে মাত্র; অন্ত দিকে, যদি সে কোন অগ্রসর আত্মার সঙ্গ ও সাহায্যের স্থবিধা পার, তা হ'লে সে দশ-বার ঘণ্টার পথ চার ঘণ্টায় অভিক্রম করতে পারে।"

"থাক্, তাঁহার উপদেশের কথা অনেক বলিলাম। এখন তাঁহার ব্যক্তিগত স্নেহ আমার প্রতি কিন্ধপ ছিল, তাহা কিছু বলি। এক সময় তিনি তাঁহার কাছে গিয়া তাঁহার সহিত দেখা করিবার জন্ত আমাকে বার-বার অনুরোধ পাঠাইতেছিলেন, কিন্তু আমি ব্রাহ্মসমাজের কাজে বাস্ত থাকায় যাইতে পারিতেছিলাম না; তখন তিনি একদিন স্বয়ং আমার বাসায় আসিমা উপস্থিত হইলেন—হয়ত অন্ত কোথাও কোন কাজে নাইবার পথে। তখন আমাদের মধ্যে এই কথাবার্তা। হইল—

"রামরুফ--- আমি বার-বার অনুরোধ করা সব্বেও এবং ভূমিও বার-বার আসবে বলা সব্বেও ভূমি অনেক দিন আমার সঙ্গে দেখা কর নাই, এ কেমন কথা?

"আমি —ব্রাধ্যসমাজের কাজে আটক পড়ে গিয়েছিলাম। আজকাল আমি বড় ব্যস্ত।

"রামরুক—চুলোয় যাক্ তোমার আক্রদমাজ যদি তা তোমাকে তোমার বন্ধুদের দঙ্গে দেখা-সাক্ষাতের স্বাধীনতা থেকে বঞ্চিত করে!

"তার পর আমার মুখের দিকে তাকাইয়া তিনি হাসিলেন ও বলিলেন—'আমি যখন তোমার কাছে আসছিলাম তথন লোকগুলা (অর্থাৎ তাঁহার ন্তন শিষ্যেরা) বললে, 'আপনি একটা আজের কাছে কেন যাবেন, সে আপনার দর্শন পাবার যোগা নয়।' তাতে আমি তাদের কি বলেছিল।ম জান ?'

"আমি—আপনি তাদের কি বলেছিলেন?

"রামকৃষ্ণ—কামি তাদের বললাম, দ্যাথ, আমি স্ববাইকার জন্তে।"

"আর একবার তিনি দম্দমায় এক বাগান-বাড়িতে একটি ব্রাহ্ম উৎসবে যোগ দিবার জন্ত নিমন্ত্রিত হইয়াছিল। ছিলেন। আমার সেধানে যাইতে একটু বিলম্ব হইয়াছিল। পৌছিয়া দেখি, তিনি ভিড়ের মধ্যে দাঁড়াইয়া গান করিতেছেন। আমাকে দেখিবামাত্র তিনি আমাকে বুকে জড়াইয়া ধরিলেন ও বলিলেন, 'আঃ এখন আমার বুকটা

স্থৃত্যল !' ভাহার পর তাঁহার সঙ্গীতাদি অসাধারণ উৎসাহের সহিত চলিতে লাগিল।"

"একদিন আমি দীর্ঘকাল পরে যথন দক্ষিণেশ্বরের यन्दितत निक्रेंवर्खी इहें:उहि, उथन दिश এই সাধুপুরুষ তাঁহার সরস বালকোপম ভাবে ত্রীর-ধনুক হাতে নিকটের গাছগুলার থেকে কতকগুলা কাক তাড়াইবার চেষ্টা করিতেছেন। তাঁহাকে ঐ অবস্থায় দেখিয়া আমি চমকিত হইলাম। বলিলাম, 'কি হচ্চে? তীরন্দাজ হংহছেন?' তাহাতে তিনিও আমাকে এত দিন পরে আসিতে দেশিয়া সমান বিশ্বিত হইলেন ও তীর-ধন্ক ফেলিয়া দিয়া দৌড়িয়া আমাকে জড়াইয়া ধরিলেন। তাঁহার এত অ'নন্দ হইয়া-ছিল, যে, তিনি ভাষাবেগের আতিশ্যে সংজ্ঞাহীন হইয়া পড়েন। আমি তঁ:হাকে ধীরে ধীরে ঠাহার কক্ষের মধ্যে শইয়া গেলাম, বিছানায় শুয়াইলাম, এবং বত ক্ষণ পর্য্যস্ত না তাঁহার জ্ঞান হইল তত ক্ষণ অপেক্ষা করিয়া রহিলাম। যথন তিনি **আবা**র কথা কহিতে পারিলেন তথন তিনি তাঁহার সঙ্গে আলিপুরের "চিড়িয়াধানায়" ঘাইব'র প্রস্তাব করিলেন। তাঁহার কয়েক জ্বন শিষ্য তাঁহাকে সিংহ দেখাইতে লইয়া বাইবার প্রস্তাব করিয়াছিলেন। তিনি সিংহওলা দেখিতে পাইবার চিস্তার আনন্দ বে-ভাবে প্রকাশ করিয়াছিলেন, তাহার সর**নতা** অতি মধুর। তিনি বার-বার আমাকে জিজ্ঞাসা করিতে লাগিলেন, 'তুমি কি নিংহগুলিকে দেখতে ভালবাস না? মা-হুর্গার বাহন সিংহওলিকে?' আমি হাদিয়া বলিলাম, 'আমি অনেক বার 'তাদেরকে দেখেছি।' তাহাতে তিনি উত্তর দিলেন, তাদেরকৈ আর একবার দেখতে আমার সঙ্গে যাওয়া খুব মজা নয় কি ?' আমি বলিলাম, 'হা, নিশ্চয়ই খুব মজা; কিন্তু তুঃথের বিষয় আমাকে আর একটা কাল্পে যেতে হবে। আমি কিন্তু আপনার সঙ্গে প্রকিয়াস ষ্ট্রীটের মোড পর্যান্ত যাব; তার পর নরেনকে তার ইম্বুল থেকে ডেকে পাঠাব, সে আপনাকে সঙ্গে ক'রে জূ'তে নিয়ে গাবে।' পরে স্বামী বিবেকানন্দ নামে পরিচিত নরেন্দ্রনাপ তথন মেট্পশিটান ই**ন্সটিটি**উগ্যনে কাব্দ করিতেন।

"শেষে সেইক্লপ ব্যবস্থাই হইল, এবং এক জন যুবা
নিষা একখানা ছেকড়া গাড়ী ডাকিয়া আনিলেন। আমার
যত দুর মনে পড়িতেছে, তিনিও গাড়ীতে আমাদের সলে
উঠিলেন। কিন্তু গাড়ীতে উঠিয়া রামক্রফ আমারে বামদিকে
বিসিবার জিদ ধরিলেন। আমি প্রথম প্রথম তাঁহার উদ্দেশ্য
ব্রিতে পারি নাই। কিন্তু যধন গাড়ীটা চলিতে আরম্ভ করিল, তখন তিনি চাদর দিয়া বাঙালী নববধ্দের মত মাথার
বোষ্টা দিলেন। আমি ভাঁহাকে সেরপ করিবার কারণ

জিজ্ঞাস। করিলাম। তিনি বলিলেন, 'দেখছ না, আমি এখন বৌ হয়েছি; আমার বরের স:ক যাচিছ।' এই বলিয়া তিনি তাঁহার হাত দিয়া আমার কোমর জড়াইয়া ধরিলেন, এবং উপবিষ্ট অবস্থাতেই আনন্দে নুভ্যের ভঙ্গী করিতে লাগিলেন। এই সময় তাঁহার ভাবা**বেশ** হ**ইল।** তথন যা**হা** দেথিশাম, তাহা কথনও ভূলিব না। তাঁহার সমগ্র মুধমওল অসামান্ত আধ্যায়িক ক্যোতিতে দীপ্তিমান হইয়া উঠিন, এবং সম্পূর্ণ সংজ্ঞাহারা হইবার পুর্বে তিনি আধ আধ স্বরে বলি'তে লাগিলেন, 'মা, ওমা, আমাকে সংজ্ঞাহীন কারে৷ না মা। ওমা, আমি চিড়িয়াধানায় সিংহ দেখতে যাচিছ। ওমা, আমি গাড়ী পেকে পড়ে যেতে পারি। এই যাওয়া-আসাটা শেষ হওয়া পৰ্যাস্ত আমাকে বেশ ভাল থাকতে দাও।' হতঃপর তিনি আমার <mark>বাছতে</mark> ভর দিয়া বাহুজ্ঞানশুল হই**শে**ন। কয়েক মিনিট পরে ভিনি আবার তাঁহার বালকোপম সরল ভাবে কথা বলিতে লাগিলেন। স্থুকিয়াস দ্রীটের মোড় পোছিবার পর নরেনকে ডাকা হইল। তিনি তৎক্ষণাৎ আদিলেন এবং তাঁহার গুরুদেবকে জ্বতে লইয়া গেলেন। এথানে বলা দরকার, যে, মেট্রপলিটান ইনষ্টিটিউশুন তথন স্থকিয়াস দ্রীটে অবস্থিত ছিল।"

[শাঙ্গী-মহাপায়ের প্রবন্ধের শেষ তিনটি বাকা উদ্ধৃত করিতেছি।]

"My acquaintance with him, though short, was fruitful by strengthening many a spiritual thought in me. I owe him a debt of gratitude for the sincere affection he bore towards me. He was certainly one of the most remarkable personalities I have come across in life."

তাৎপর্যা। "তাঁহার সহিত আমার পরিচর অল্পকালস্থায়ী হইলেও, তাহা এই ফল দান করিয়াছিল, যে, তাহা
আমার অনেক আধ্যায়িক চিস্তাকে পুষ্ট করিয়াছিল। তিনি
আমার প্রতি যে অকপট স্নেহ স্থায়ে পোষণ করিতেন,
তাহার জন্য আমি ক্লতক্সতাঝাণে ঋণী। আমি জীবনে
যে-সকল বাক্তিস্থবৈশিষ্ট্যসম্পন্ন অসাধারণ মান্যদের সংস্পর্শে
আসিয়াছি, তিনি নিঃসন্দেহ তাঁহাদের মধ্যে এক জন।"

্ এই প্রবন্ধটিতে শার্থা-মহাশংরর ইংরেজী প্রবন্ধের কোন কোন অংশের তাৎপ্যান্ত্রপ অনুবাদ দেওরা ইইরাছে। স্থতরাং ইহাতে পর্মহংসদেবের নিজস বচনজ্জার আভাস পাওরা যাইবে, না: শান্ত্রী-মহাশ্রেরও বাংলা ইহা নহে।

চেকোলোভাকিয়ার রাজধানী প্রাপ শহরের প্রসিদ্ধ চিত্রকর ডোরাকের অফিড তৈলচিত্রের ফোটে।গ্রাফ হইতে পরমহংস রামকৃফের ছবি দিলাম। কোটে।গ্রাফটি ব্রহ্মচারী গণেজনাথের সৌক্তরে প্রাপ্ত।



ভারতবর্ষ

অঙ্গহীন ও বিক্লাঙ্গ ভিথারী ও স্বাবলম্বী মাসুয-

গত অন্ধ্রোদয় বোগের সময় প্রথাগের বেণীখাটে অনেক সাধ্-সন্মাসী, তীর্থবাত্রী, ভিপারী ও স্থানীয় সানার্থীর সমাগম হইরাছিল। তাহাদের মধ্যে ছটি অঙ্গহীন মানুনের কোটোগ্রাফ প্রয়াগের ডাক্তার ললিতমোহন বহু তুলিয়া পাঠাইয়াছেন। একজন প্রাপ্তবয়স।

প্রয়াগের বেণীখাটে বিকলাক ভিথার।

ভাহার হাত গঞার নাই। ছুটা হাতের জারগায় ছুটা নাংসপিও আছে। জন্মঅবধি এইরপ। নাংসপিও ছুটা সরু, । ৬ ইঞ্চি লখা। ইছার একটা দিয়ে লোকটি নালা জপে, পরসা কড়ি দিলে অক্সটা দিয়ে নমন্ধার করে। অক্স বাজি বালক, বরুস বছর আঠার ইইবে। জন্মঅবিধি ইছার বাম হাত নাই, গঞার নাই। ডান হাতের গড়ন ভাল ও খাভাবিক। ইহার কোমর খেকে মাখা পর্যন্ত গড়ন খাভাবিক; কিন্ত কোমরের নাচের অংশে ডান পা মার ৮ ইঞ্চি লখা ও তাহাতে ইটি নাই, বাম পা ১০ ইঞ্চি লখা এবং তাহাতে উরু ও গাড়ীতে বসাইয়া ভিজার জক্ত যুরাইয়া লইয়া বেড়ায়। এইরূপ অক্সহীন ও বিকলাক্স মানুহ নিভান্ত বিরুল নহে তাহালের উল্লেখ করিবার কারণ এই, যে, আমানের নেশে ডাহারা খন্য ভিশারী হর বা অন্তেম্ব ধারা ভিজার্যহের প্রস্থাব্যক্ত হয়। ইউরোপে কিন্তু

এরপ মাসুষকেও শিকা দিরা স্বাবন্ধী ও আস্থ্যসন্থানবান্করা হয়।
১৯২৬ সালে আমি যথন চেকোলোভাকিয়ার রাজধানী প্রাগ শহরে
একটি অনাথ বালকবালিকাদের বিজ্ঞালয় দেখিতে যাই, তগন দেখি,
জন্মাবিধি উভয় হস্তহীন কিঞ্চিৎ কুক্ত একটি ১৮। ১৯ বংসরের ছেলে
কেবল ছটি পাও পারের আসুলগুলির সাহায্যে কাঠের ফুলর ফুলর
আসবাব প্রস্তুত করিয়াছে ও করিতেছে। সে বে পারের ঘারাই
সব কাজ করিতে পারে, তাহা দেখাইবার জক্ত কাঠের আসবাবের



প্রয়াগের বেণীঘাটে বিকলাক ভিখারী

উপর হন্দর রেখাচিত্র আঁকিল এবং দিরাশলাইরের বার গুলিল, একটা কাঠি লইল, সেটা আলাইল, মুথে চুরুট লইল এবং চুরুট ধরাইল। আমার ইউরোপ দর্শন বিষয়ক একটা সম্পাদকার চিঠিতে আমি ইহার বিষয় লিখিয়াছিলাম। সে প্রার ৯ বৎসরের কথা।

ए ७ वद दामुक्क भिन्न विद्या*नी* ठे

পেওবর রামকৃষ্ণ মিশন বিদ্যাপীঠের বিবর আগে কাগজে ও রিপোর্টে পড়িরাছিলাম। এবার তাহার বার্ধিক পুরস্কার বিতরণ উপলক্ষ্যে তথার উপন্থিত হইরা তাহার সধক্ষে কিছু সাক্ষাৎ জ্ঞান লাভ করিলাম। বিদ্যাপীঠিট বেশ উচু থোলা বিশ্বত ভূষণেওর উপর নির্মিত, জারগাটি বাস্থাকর,



বিজ্ঞাপীঠের একটি অংশ



দেওখর রামকৃষ্ণ মিশন বিদ্যাপাঠের বার্ষিক পুরস্কার বিতরণী দেও। বিদ্যাপাঠের ছাত্র ও শিক্ষকগণ এবং প্রবাদা-সম্পাদক।

বরবাড়িগুলিও পাক! ও বাস্থ্যকর। চাতেরা বাস্থাতে নানা বিষয়ে জ্ঞান লাভ করিতে পারে এবং যাহাতে চাহাদের নৈতিক ও দৈহিক উন্নতি হয় তাহাদিগকে এইরূপ লিকা দেওরা হয়। রামকুষ্ণ মিলনের সন্নাদী ও প্রকাচান্ত্রীরা লিক্ষাদান ও তহাবধান করেন। ছলেনের বাামাদের বাবস্থা আছে। তাহারা ফুলের বাগদেন নানাবিধ ফুলের ও তরকারীর ক্ষেতে নানা প্রকার তরকারীর চাম করে। দেওবর গোলাপ ফুলের জক্ষ বিধাতে। বিভাগীতে বেশ বড়বড় গোলাপ হয়। এথনেকার একটি অফুবিধা এই, বে, গরমের সমর কুমার জ্বল কমিরা বার বা থাকেনা। একটি গুব গভীর নলকুপ চইকেটে এই অফুবিধা দুর হইতে পারে। তাহাতে অধ্যাপক ও ছাত্রের

রান, রন্ধন, পান ত হউতেউ পারে, নানা প্রকার কৃষিকাযাও যথেপ্ট বাডাইতে পারা বায়। কতিপয় ধনী লোক বিভাগীটের সাহাযা করিয়াছেন। তাহাদেরই কেহ ব' অক্স কোন সদাশহ সক্ষতিপর ব্যক্তি নলকপের বায় জনায়াসে দিতে পারেন। ছাত্রেরা ডিল ও ব্যায়াম ভলেই করিল, আবৃত্তিও মন্দ নহে। তাহারা স্কাত এবং চিত্রাফণ্ড করে। কেনী বাভাযুক্তের একতান বাভা ভাল লাগিয়াছিল। কণ্ঠসঙ্গাতের একতান শিক্ষকের বায় কোন ধনী লোক দিলে ভাল হয়। কোন এক জন ধনী লোকের সাহায়ো চিত্রাকণ শিক্ষকেও নিযুক্ত হউতে পারেন।



দেওবর বিদ্যাপীঠের ছাত্রগণ শ্রেণীবদ্ধ ভাবে প্রবাসী-সম্পাদককে সম্মান প্রদর্শন করিতেছে



শীমতী মারা ভট্টাচার্যা, শীমতী সান্ধনা ভট্টাচার্য্য ও শীমতী শোভা ভট্টাচার্য্য। ইইবার মি: ডি, আম, ভট্টাচার্য্যের করা

সাজাহানপুরে সঙ্গীত সম্মেলন—

গত কেন্দ্রারী মাসে সাজাহানপুরে এলাহাবাদ বিশ্ববিদ্যালয়ের অধাপক মিঃ ডি, আর, ভট্টাচার্য্যের সভাগতিতে একটি সঙ্গীত সংশ্বলন হইয়া গিরাছে। সঙ্গীত-প্রতিষোগিতা স্থানীয় অধিবাসীদের মধ্যে আবদ্ধ ছিল। অস্তু অঞ্চল হইতেও বহু সঙ্গীতবিৎ ইহাতে যোগদান করেন। কলিকাতা হইতে আগত জ্ঞীমতী বীণাপাদি মুগুজো ও জ্ঞীমতী ক্ষমা দে সঙ্গীতে বিশেষ কৃতিত্ব প্রদর্শন করিয়া বহুসংখ্যক পদক লাভ করিয়াছেন। সভাপতি-মহালাহের কন্দ্রার্থা প্রত্যাক্ষা ও জ্ঞীমতী বিশ্বাদিনীয় হার্যোনিয়ম সঙ্গীত চক্রশেবর পান্তর বেয়াল ও জ্ঞীমতী বিশ্বাদিনীয় হার্যোনিয়ম সঙ্গীত সকলকে মুগ্ধ করে। সাজাহানপুরবাসীদের এই উল্লম প্রশংসনায়।

ক্রীডা-প্রতিযোগিতায় প্রবাসী বাঙালী বালকের ক্রতিড-

গত কেব্ৰু:রী মাসে ব্রহ্মণেশে বেসিন শহরে একটি ব্যাড় মিন্টন্ থেলার প্রতিযোগিতা হটমা গিয়াছে। ছটজন বন্মী ও ছটজন প্রবাসী বাঙালী বালকের মধ্যে এই প্রতিযোগিতা হয়। বেসিন



শ্ৰী স আং ডোয়ে, শ্ৰী স বা গিন্, এবং শ্ৰী বিপুল সিংহ, শীরমেন দাস

শহরত্ব সম্রান্ত বশ্মীগণ ও মি: এস্, বি, সেন, মি: এ, কে, বস্থ ও শ্রীমতা স্বরভি সিংহ, বি-এল্ প্রমূপ বৃচ মান্ত্রগণ্য বাঙালীর সমুপে এই ক্রাড়া অমুষ্ঠিত হয়। বাঙালী বালক ছুইটি বশ্মীবিয়কে হারাইরা দিরা।বিশেষ প্রশংসা লাভ করেন। ইছাদের চিত্র এথানে দেওরা হইল।

হরমুন্দরী ধর্মশালা কাশী---

প্রস্থিদ্ধ ব্যবসায়ী ও দানবীর ত্রিপুরানিবাসী জ্রীযুক্ত মহেশচক্র ভট্টাচার্য্য কাশী গোধুলিরা অঞ্চলে একটি ধর্মশালা স্থাপন করিয়াছেন। হিন্দুর সর্কবিধ পুল্লার্চনা এধানে বিনা ভাড়ার অনুষ্ঠিত হইতে পারিবে।

বাংলা

বাণীবন বালিকা বিদ্যালয়---

এই বিদালেরের উন্নতিবিধানের অস্ত্র ৭ বংসর পূর্বে একটি বোর্ডিং বোলা হয়। এই বোর্ডিঙে বর্ত্তমানে পেটি বালিকা আছে। ইহাদের মধ্যে একটি বালিক! স্বল্ব নাজ্রাজের অস্তর্গত পীঠপুরুষ্ হইতে আসিয়াছে। অবশিষ্ট ঢাকা, ফরিদপুর, বরিশাল, যশোহর, গুলনা, পাবনা, দিনাজপুর, শ্রীহট্ট, ব্রিপুরা, বর্দ্ধমান, মুর্শীদাবাদ, নদীয়!
১৪ পরগণা, কলিকাতা, মেনিনাপুর প্রভৃতি পনেরটি জেলা হইতে আসিয়াছে। এই বালিকাদের মধ্যে তিনটি বিধাহিতা ও তিনটি বিধবা অঞ্জন্ত শ্রেণীর বালিকার সংখ্যা পাঁচটি। এই ছাবী-নিবাস্টিই এই বিদ্যালয়ের বিশেষত্ব, বাংলা দেশের আর কোনও মধ্য ইংরেজী বালিকা বিদ্যালয়ের ছাত্রী-নিবাস্ নাই।

ন্দী-শিক্ষা সহজলভা করিবার জন্ম বোর্ডিং ফি ফুল ফি সহ মাত্র ৭ টাকা কর। হইয়াছে। বোর্ডারগণকে থতম বেতন দিতে হয় না

ব্ৰাহ্ম ৰাতীত স্থানীয় বালিকাগণ সকলেই এ প্ৰ্যান্ত বিনা বেতনে প্ৰিয়া আদিয়াছে।

বিদ্যালয়ের মোট ছাত্রী, সংখ্যা বর্ষমানে ৮২টি, তার মধ্যে ২টি মুদলমান। এই বিদ্যালয় গত ছুই বংসর মধ্য ইংরেজী বৃত্তি প্রীক্ষায় বিভাগে প্রথম স্থান অধিকার ক্রিয়াছে।

করেক বৎসর হইল এই বিদ্যালয়ে একটি চরকা ও বয়ন বিভাগ খোলা হইয়াছে। একল্পন অভিজ্ঞ শিক্ষক ইহাতে শিক্ষাদান করিয়া থাকেন। এখানে গাম্ছা, ভোয়ালে, চাদর, শাড়ী, ধুতী, টেবিল-চাক্না, ঝাড়ন ও জামার কাপড় বোনা শিক্ষা দেওয়া হইয়া থাকে।

এই বিদ্যালয় বাংলা দেশের একটি বড় অভাব পূরণ করিয়া আসিতেছে। ইহা গভর্ণমেটের ও জনসাধারণের সাহাযা পাইবার সপূৰ্ণ উপনৃক্ত। ইহা অনেক গৰাৰ বিধৰা ও অনুমুত শ্ৰেণীৰ বালিকা-দি:গর স্বাধীনভাবে উন্নত জীবন যাপ:নর পথ শুধু উন্মুক্ত করিয়া নেয় নাই, এখানে আদিয়া না পড়িতে পারিলে অনেক বালিকার কোনরূপ শিক্ষালাভের ফ্যোগই মিশিত না । কিন্তু থবই ছঃখের বিষয় যে, বাহারা আদিতে চায় তাহাদের সকলকেও কর্ত্তপক্ষ স্থান দিতে পারেন না। এই জন্ম অবিলম্বেই একটি পুৰক স্কুল ৰাড়ি অত্যাবগুৰু হইয়াছে। তাহা হইলে এই সমগ্ৰ বাড়িটীই ৰোডিঙের জম্ব ব্যবহাত হইতে পারে। স্থানাভাব ছাড়াও একই বাড়িতে স্কল ও বোর্ডিং থাকাতে বোর্ডারদিগের অনেক অস্থবিদা হইরা মাকে। এই সকল অভাব ও অস্থবিগা দুরীকরণ-উদ্দেশ্যে স্কুল কমিটি বিদ্যালয়সংলগ্ন উত্তরদিকের জমির উপর বিদ্যালয়গৃহ নির্দ্মাণের জন্ত আট বৎসর পূর্বে গভর্ণমেটের নিকট আমুমানিক ব্যারের পরিমাণ সহ একটি নক্স পেশ করিয়াছেন। কিন্তু টাকার অভাবের জন্ম গভর্ণমেণ্ট কিছুই করিতে পারেন নাই। এই গৃহ নির্মাণের জস্ত মুল কমিটি গত বৎসর ৫২০০০ ইট প্রস্তুত করিয়াছেন, এখন গ্রভামেণ্টের আখাস পাইলেই কার্যা আরম্ভ করিতে পারা যাইবে।

वाहेनिक्क मिल्ली शमन---

চারিটি বালক বাইসিক্রে দিল্লী পিরাছিলেন ভাহাদের নাম নীলমাধব বন্দ্যোপাধারে, অলোককুমার রায় চৌধুরী, ফ্বোধকুমার মুখোপাণ্যার ও বিখনাথ চট্টোপাধ্যার। ভাহাদের ছবি দেওরা হইল।



৽ ওামনান—শীঅলোককুমার রার চৌধুরী, শীস্তবোধকুমার মুখোণাধার, শীবিখনাথ চট্টোপাধার



बीनीममाध्य बल्मामाधाप्र

পরলোকে প্রেমলতা দেবী---

হুগারিকা প্রেমলতা দেবী মহোদর। গত ২০এ পৌষ ইহধাম ভাগে করিরাছেন। তিনি ক্তর রাজেক্রনাথ মুখোপাধ্যার



প্ৰেমলতা দেবী

মংগদয়ের তৃত্য কথা ও প্রাযুক্ত প্রবীক্রনাথ বন্দ্যোপাগ্যায় মহাশয়ের পরা। তিনি সঙ্গান্তনায়কঃ প্রীযুক্ত গোপেণর বন্দ্যোপাগ্যায় মহাশয়ের একজন গুলী ছার্রা ছিলেন। গোপেণর বাবুর নিকট ১০ বংসর যাবং বেয়াল, ঠুংরা, টবা প্রভৃতি লিক্ষা করিয়া তিনি বিশেষ থাতি অর্জন করিয়াছিলেন সমীত সাধনা তাহার অতি প্রিয় বস্তু ছিল। তাহার রচিত 'সঙ্গীত হধা' থেয়াল, টয়া, ঠুংরী ও বাংলা গানের একগানি উংকৃত্ত স্বর্নিপি পুত্তক: তিনি প্রত্যেক গান্টির এলহার বিস্তারিত ভাবে ধিরাছেন। এলাহাবাণে 'মুক্লাত হধা'র হিন্দা সংক্রম বাহির হইয়াছে এবং হিন্দুগানী ওস্তাদগণ এই পুস্তুকটিয় বিশেষ সমাদ্য করেন।

ভক্টর শ্রীনিবাসচল রায় মহাপাত্র—

্ব মেদিনীপুর ফেলার পালপাড়া আমে একটি অতি প্রাচীন ও বিগাত বংলে জীমান শ্রানিবাসচক্ষ রাথ মাহাপাএ জন্মগ্রহণ করেন ইহার



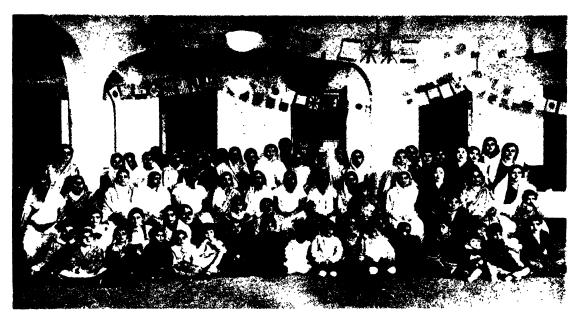
ডটর শানিবাদ রার মহাপাত্র

পি গার নাম উপেশ্রনাথ রায় মাহাপার। কাশী হিন্দু বিববিদ্যালয় হঠতে সাধারণ ইতিহাসের সহিত প্রচান ভারতীয় ইতিহাসে এম, এ, পরাক্ষায় উত্তীপ হইয়া পণ্ডিত সদনমোহন মালবীয় মহাশদ্ধের সহায়ভার বর্গার প্রস্কৃতারিক ঐতিহাসিক রাবালদাস বন্দ্যোপায়ায় মহাশদ্ধের সহায়ভার প্রয়তম ছাত্ররূপে প্রাচীন ভারতীয় ইতিহাস ও সংস্কৃতিতে গবেষণা থারপ্র করেন। অধ্যাপক বন্দ্যোপাধ্যায় মহাশদ্ধের মৃত্যুর পর উহার দাহায়ে বক্ষিত হইয়া অতিকঠে দীবকাল বাধানভাবে গবেষণা করিয়া ডি, লিট, উপাধির জহু উহার মৌলিক প্রবন্ধ দাধিল করেন। পরীক্ষায় ভাহার প্রবন্ধের যোগাতা বিশেষ ভাবে প্রশাসিত হওয়ার কাশীহিন্দু-বিখিদ্যালয় ১৯০৪ সালের সমাবর্ত্তন উৎসবে উহাকে ডি, লিট, উপাধি ভূষিত করিয়াছেন। শ্রীমানু রার মহাপাত্র প্রাচীন ভারতীয় ইতিহাস ও কৃষ্টি ভিন্ন সাধারণ ইতিহাস, পৌরশান্ত, অর্থশান্ত, রাষ্ট্রনীতি, শাসনতহু, সভ্যন্তা প্রভৃতি বিষয়েও জ্ঞান লাভ করিয়াছেন।

िदिसम

জাপানে ভারতীয় নারী দিগের ঈদ্ পর্বা—

কোবে জাপানের একটি প্রধান শহর। সেধানে ভারতীয়
নারাদের একটি ক্লাব আছে। সেই ক্লাবের উদ্যোগে কোবেতে
দদ্ পর্কের অনুষ্ঠান হইলা গিলাছে। তাহাতে হিন্দু মুদ্যনান
পাসাঁ ও খ্রীষ্টানা মহিলারা এবং শিশুর! বোগ দিলাছিলেন।
ভাহাদের কোটোপ্রাফ এখানে মুদ্রিত হইল। ইহা দিলার
হিন্দুহান টাইম্সের খ্রীযুক্ত চননলালের সৌক্তে প্রাপ্ত।



জাপানে বিভিন্ন ধ্যাবলধ। ভারতীয় নার্নাগণ ঈদ্পদা উদ্যাপন করি তেছেন



ডাঃ সতালচন্দ্ৰ যোষ

ডাঃ সতীশচন্দ্র ধোষ—

ডাঃ সতীশচক্র খোষ প্রথম জাবনে একজন পাণ্ডিকিৎসক ভিলেন। পশুচিকিৎসায় অধিকতর জ্ঞান আহরণের সম্ম তিনি আমেরিকার গুকুরাষ্ট্রে যান ও নিজন সনে এই বিশয়ক পরীক্ষায় উত্তার্গ হন। ১৯১১ সন প্রাস্ত খোষ-মহাশয় শিকাগো ও ইলিনর বিশ্ববিদ্যালয়ে এ-বিষয় আরও অধ্যয়ন করেন।

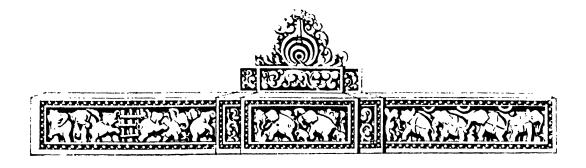
তিনি অতঃপর দেশে না ফিরিয়া শিকাগো শৃহরে বাবসায়ে লিপ্
ধন : তেইশ বংসর গুজরাষ্ট্রের বিভিন্ন অঞ্চল পরিশ্রমণ করিয়া তিনি
বিশেষ অভিজ্ঞতা লাভ করিয়াছেন : ধেষ-মহাশর সেধানে এপের ব্যবসায়
আরম্ভ করেন । তাহার অপ্রবতী হইয়া অনেকে এপন পুশ উৎপাদন
কাষ্যে প্রবৃত্ত হইয়াছেন । ঘোষ-মহাশয়ের কোম্পানার নাম ইডিয়া
ইনসেল কোম্পানী । ধুশের উপাদানের অনেকগুলি তিনি ভারতব্য
হইতে লইয়া থাকেন । তিনি সম্পত্তিভারতব্যে আসিয়াছেন, পুশ
ছাড়া মার্কিনীদের উপযোগা অস্তান্ত কি কি জিনিব আমেরিকায
চালান দেওরা যাইতে পারে তাহা অনুসন্ধান করাই উল্লেখ্ন ভারত

স্বরলিপি

গান

কোন গছন অরণ্যে তারে এলেম হারায়ে—
কোন দ্র জনমের কোন শ্বতি বিশ্বতি ছায়ে।
আজ আলো আঁখারে
কখন ব্ঝি দেখি কখন দেখি না তারে
কোন মিলন স্থের খণন সাগর এলো পারায়ে॥
ধরা অধরার মাঝে
ছায়ানটের রাগিণীতে আমার বাঁশি বাজে।
বকুলতলায় ছায়ার নাচন কুলের গজে মিশে
কানি নে মন পাগল করে কিসে
কোন নটিনীর ঘ্ণী আঁচল লাগে আমার গায়ে॥

| -1 না-না সা গা রা সা -সা সা না সা ধা পা পা রা রা গা ০ কোন্মি ল ন হ থে র হ প ন সা গ র এ ০ ০ |
|---|
| গ্ৰানা রারা-পা পা পা না কা পাধা না পা রা সা পা সানাধাধাণা- লো০০ এ লো০ পা রা০ ০ ০ ০ ০ ০ ০ গ হ ন অ র ০ |
| া <mark>স^{্ন}মা মা মা মগা-পা ^{পি}জা ^থপা -। -। -। -। বা ধা -সা ধা পা-পা ০ ধ রা জ ধ রাও র্ মা ঝে ০ ০ ০ ০ ছা য়া ০ নিটে র্</mark> |
| ক্ষা প্ৰকাজা বা পা না |
| क्षा ना ना शा ना जा भा भा भा जा जिला ने ने ने ने ने ने जा का भा जा जा का का भा जा जिला के जा के लिए हैं जा कि क |
| ^{ग श ।} शान्त्रभ । श्री श्री श्री भी शो शो । ती भी मी ना ना सा । ना ना मी । व कल जिला ग्री इस सा त् । ना । न् इस स्वात । श न् स्व |
| না সা-া । -া -া -। সাঁ সাঁ গাঁ - রা সাঁ-সা না না ধা। না সাঁরী নাসা-া মি শেও । ০০০ জা নি ০ কে ম ন্পাগ ল ক রে ০ কিসেও |
| -: - ना-क्षा भा दो भी ना ना मी था था -शा दाताका था -मा- ००० का नून कि नी व घूत ले खाँ हल् गा ०० का ०० |
| न न न न जा दादा-शा आप शा शा आ शा शा शा शा मार्ग वी ना न मा ००० ००० माराठ आसाद्शा ०००० ० छ। ०० |
| বা পা পা রা ^র ণা ণা । ধা ধ: -ণা পা খা -ণা । ধা পা -। ও কে: ন্ গ হ ন । আম র ০ । গো ০ ০ । তারে ০ |





ভারতীয় ব্যবস্থাপক সভায় আসন-বণ্টনে অবিচাব

ভবিষ্যতে নে আইন অন্সারে ভারতবর্ষ শাসিত হইবে, একার গশড়ার এক একটি ধারা বিলাতী পালে মেণ্টের হাউস শব কমন্সে বিচারবিতর্কের পর গৃহীত হইতেছে। ভারতবর্ষের লাকেরা সমগ্র পসড়াটার ও ধারাগুলার যত সমালোচনাই কর্ষক না, তাহার পরিবর্তন হইবে না। ইংরেজদের মধ্যেও সে-স্ব পালে মেণ্ট-সদস্ত সংখ্যাভূষিষ্ঠ দলের নহেন, হাহাদেরও উপস্থাপিত কোনও ধারার বিশিষ্ট রক্ষমের সংশোধক প্রস্তাব গৃহীত হইতেছে না। তথাপি সমগ্র বিল্টার এবং ধারাগুলার সমালোচনা আবশ্রুক, স্ক্রিমাধারনের ভানা আবশ্রক ভারতবর্ষের পঞ্চে অনিষ্টকর কিব্রপ আইন হইতে াইতেছে। দৈনিক কাগজে ইহা দেখান বতটা নম্বর্পন, মাসিক কাগজে ততটা নহে। তথাপি, আমরা কৈছ কিছু দোষ-কটিও অবিচার দেখাইয়া থাকি।

গত থাদের 'প্রবাসী'তে আমরা সমগ্রভারতের জান্ত এতিপ্রেত ভবিধ্যতের ব্যবস্থাপক সভার য়াদেম্ব্রীতে ভিন্ন ভিন্ন প্রদেশগুলিকে বেভাবে আসনগুলি বাটিয়া দিবার প্রস্তাব হংয়াছে, তাহার দোঘ দেখাইয়াছিশাম। এবারে ভবিষাৎ বাবস্থাপক সভার কৌ জিল অব ষ্টেট্ এবং য়াদেমব্রী উভ্তেব্র আসন বন্টনের কোন কোন দোঘ দেখাইব।

য়্যাদেমরীর আসন বণ্টন

ন্তন ভারতশাসন বিশ অন্সারে য়াসেমন্ত্রীতে ৩৭৫ জন সদস্য থাকিবেন। এই ৩৭৫ জনের ৩৭৫টি আসন কি প্রকারে বন্টিত হইয়াছে ব**লিতেছি**।

বন্ধদেশকে ভারতবর্ষ হইতে পূগক করা হইবে ঠিক্ গ্রহ্মছে। শুধু ভারতবর্ষের ব্রিটশ-শাসিত প্রদেশগুলির ও দেশী রাজ্যগুলির মোট লোকসংখ্যা ৩৩,৫৯,০১,৯১২। এই

তেত্রিশ কোটির অধিক লোকদের প্রতিনিধি হইবেন ৩৭৫ জন। তাহা হইলে প্রতি ৮,৯৫,৭৩৮ জনের সমষ্টির প্রতিনিধি হইবেন এক জন করিয়া। (কেন না, ৩৩,৫৯,০১.৯১২কে ৩৭৫ দিয়া ভাগ করিশে ৮,৯৫,৭৩৮ হয়।) অতএব বে-সব দেশী রাজ্যের ফেডারেশ্রনভ্তুক হইবার কথা, তাহাদের অধিবাসী ৭,৮৮,০১,৯১২ জনের প্রাপ্য হয় ৮৭ এবং ৮৮ জন, প্রতিনিধি। ব্রিটশ-শাসিত व्यादिन विश्व विश्व विश्व के अभिवासी व প্রাপ্য হয় ২৮৭ জন প্রতিনিধি। কিন্তু দেশী রাজ্যগুলিকে দেওয়া হইয়াছে ১২৫টি প্রতিনিধি ও আসন, অর্থাৎ তাহা-দের স্থায় প্রাপ্য অপেক্ষা ৩৭টি বেশী, এবং প্রদেশগুলিকে দেওয়া হইয়াছে ২৫০টি অর্থাৎ ক্রানা প্রাপা অপেক্ষা ৩৭টি কম। বলা ইইয়াছে বটে, বে, প্রদেশগুলিকে ২৫০টি আসন দেওয়া হইবে, কিন্তু বাস্তবিক দেওয়া হইবে ২৪৬টি। কারণ ৪টি আসন বিশেষ কোন প্রদেশকে দেওয়া হইবে না। সে**ও**লির সদস্য গ্রবর্ণর-জেনার্যাল মনোনীত করিয়া দিবেন। অতএব বাস্তবিক প্রদেশগুলিকে তাহাদের ক্যাগ্য প্রাপ্য অপেক্ষা ৪১ জন কম প্রতিনিধি দেওয়া হইবে।

প্রদেশগুলির মধ্যে আসন বণ্টন

২৫,৭১,০০,০০০ ব্রিটিশভারতীয়দের প্রতিনিধি হইবেন ২৪৬ জন। ২৫,৭১,০০,০০০কে ২৪৬ দিয়া ভাগ করিলে পাওয়া যায় ১০,৪৫,১২১। তাহা হইলে প্রভ্যেক ১০,৪৫,১২১ জনের সমষ্টি এক জন করিয়া প্রতিনিধি পাইবেন। এই সংখ্যা অন্সারে হিদাব করিয়া আমরা নীচের তালিকায় দেখাইব, কোন্ প্রদেশের কত হল প্রতিনিধি ও আসন প্রাপা হয় এবং ভারতশাসন বিলে তাহাকে কত দেওয়া হইয়াছে। প্রদেশগুলির সেলোকসংখ্যা তালিকায় দিলাম, তাহা ভারতশাসন বিলের ভিত্তীত্তে, ভিত্ততি পালে মেন্টারী কমিটির রিপোর্ট অন্থারী। সেক্সস রিপোর্টে যে লোকসংখ্যা আছে, তালিকার মান্তাজ, বোদাই, বিহার, ও উড়িষ্যার লোকসংখ্যা তাহা হই ত কিছু ভিন্ন দেখা যাইবে। কারণ, মান্তাজ প্রেসিডেক্সীর অল্প অংশ উড়িষ্যা প্রদেশে যাইবে, সিন্ধু ও এডেন বোদ্ধাই প্রেসিডেক্সী হইতে পূপক্ করা হইবে, এবং নিহার ও উড়িয়া ভাটি আলাদা প্রদেশ হইবে।

| প্রদেশ | লে(কসংখ্যা | প্রাপ্য অ্যাসন | প্রদার বাসে |
|----------------------|------------------|-----------------|-------------|
| মা <u>শ্ৰা</u> জ | 80 6000 . | 8 5 | 54 |
| ৰো থাই | | ۹ > | ٥. |
| বাং লা | 9.518.00 | × 9 % | 59 |
| আগ্ৰা-স্মযোধ্য | 88816145 | ٠, ٠ <u>. ٠</u> | ৩৭ |
| বিহার | *** | y • | ٥٠ |
| পঞ্চাব | 206 · 0 P.C2 | ર , દ | و |
| মধ্য প্রদেশ-বেরার | .৫ •१९२७ | \$ - * y | 2 a |
| ঝাসাম | ৮७ ፡ ` - | ۵.۵ | >• |
| উত্তৰ-পাশ্চম দীমান্ত | ياب و • بايد | 5.0 | ଜ |
| উডিবাা | 6 | ₩*s | q |
| সিন্ধ | 51-7-1-1- | •• , | • |
| ব্রিটিশ বাল্চীয়ান | ১৬৩৫৮• | ভগাংশ | : |
| फि नो | • ••• • 8 | 11 | ٥ |
| আজ্যার-মেরোআড্ | 1 0502.2 | ,, | |
| क-शे | <i>५७७</i> २ व | ,, | |
| | | | |

এই তালিকা হইকে বুঝা গাইনে, যে. কতকণ্ডলি প্রদেশ অনুগ্রহভাজন ও কতকণ্ডলি প্রদেশ স্থায়া প্রাপা হাইতে বঞ্চিত হইলাছে। অনুগ্রহ করিবার কারণ ধেমন বলা হয় নাই, বঞ্চিত করিবাব কারণও তেমনই বলা হয় নাই।

দেশীরাজ্যসমূহের নরেশদের ও ব্রিটিশ∵শাসিত ভারতীয়দের মূল্য

দেশীরাজ্যসমূহের অধিবাসীরা তাহাদের প্রতিনিধি
নির্মাচন করিবে, ইহা ধরিয়া লইলে দেখা থাইবে, থে,
৭,৮৮,০১,৯১২ জন মানুষের প্রতিনিধি হইবেন ১২৫ জন।
তাহা হইলে প্রত্যেক ৬,৩০,৪১৫ জনের সমষ্টি এক জন
করিয়া প্রতিনিধি পাইবে। কিন্তু ব্রিটিশ-শাসিত ভারতীয়
প্রদেশগুলিতে প্রত্যেক ১০,৪৫.১২১ জনের সমষ্টি এক জন
করিয়া প্রতিনিধি পাইবে। যদি দেশীরাজ্যগুলির

পাইত, তাহা হইলে না-হয় এই বৈষমা অসায় হইলেও স্থাকর। চলিত। কিন্তু দেশীরাজ্যের প্রজারাত প্রতিনিধিনা কর্মাচনের অধিকার পাইবে না, তথাকার প্রতিনিধিরা তথাকার নূপতিদের দ্বারা মনোনীত হইবে। ভারত-শাসন বি লব তপশীলে দেখিতেছি ১৫০ জন রাজ্যা মহারাজ্যা রাণা মহারাণা নবাব নিজাম জাম ২০৫ জন প্রতিনিধি মনোনীত করিবেন। এর্থাৎ রিটিশ-শাসিত ভারতে এক এক জন প্রতিনিধি পাইবে মোটামুটি দশ লক্ষাধিক লোকের সমাটি, কিন্তু এই নরেশগে প্রায় গড়ে এক এক জন এক এক প্রতিনিধি মনোনীত করিবেন। অর্থাৎ তাহাদের এক এক জনের মতের দাম আমাদের মত দশ লাখ অ-নরেশদের মতের সমান! কি বিষম, অসাধারণ, অতিমানব ভাহারা!

ইহাতেও কিন্তু অনেক জন নরেশের অতিমানবতার ঠিক পরিচয় পাঠকেরা পাইবেন না। আরও কিছু জানা দবকার।

কোন কোন দেশারাজ্যের নরেশ একাই কয়েক জন কবিয়া প্রতিনিধি মনোনীত করিবেন। হায়দরাবাদের নিজ'ম গোল জন প্রতিনিধি মনোনীত করিবেন। অর্থাৎ বিটিশ-ভার:তর এক কোটি যাট লক্ষ লোকেব প্রতিনিধি হইবে ১৬ জন, কিন্তু একা নিজামেরই প্রতিনিধি হইবে ১৬ জন ! মহীশুরের মহারাজা, কাশ্টীবের মহারাজা, গোয়ালিয়রের মহারাজ্য শিলে, বড়োদার মহারাজ্য গায়েকোআড়, নথাক্রমে ৭, ৪, ৪, ও ৩ জন প্রতিনিধি মনোনীত করিবেন। তাঁহাদেব এক এক জনের মতের মূলা বথাক্রমে ব্রিটিশ ভারতের ৭০ লাক, ৪০ লাক্ষ, ৪০ লাক্ষ ও ৩০ লাক্ষ লো কর মতের নলোর সমান। ত্রিবাদ্ধড়ের মহারাজা ৫ জন, উদয়পু.রর মহারাণা ২ জন, জয়পুরের মহারাজাত জন, যোধপুরের মহারাজা ২ জন, ইন্সোরের মহারাজা হোলার ২ জন, রেওয়ার মহারাজা ২ জন ও পাটিয়ালার মহারাজা ২ জন প্রতিনিধি মনোনীত করিবেন। ১ জন করিয়া প্রতিনিধি মনোনীত করিবেন অনেক নরেশ। সর্বশেষে আছেন ভাঁহারা খাঁহাবা ২ হইভে৮ জনে মিলিয়া এক একটি বা ২।৩টি প্রতিনিধি মনোনীত করিবেন।

দেশীরাজ্যের প্রজাদের মতের মূল্য

ব্রিটিশ-শাসিত ভারতবর্ষের লোক'দর অস্ততঃ কতকগুলি লোক প্রতিনিধি-নির্মাচনে ভোট দিতে পারিবে। দেশারাজাসমূহের নরেশর: ই সর্কোসকা. প্রজাদের এক ক্ষনেরও নিব্বাচনাধিকার নাই। বিটিশ গবনোণ্ট ভাছাদের অভিন্ন বরাবর কার্যাতঃ সম্পূর্ণ অম্বীকার করিয়া আসিতেছেন। এথচ তাহারা সবাই আমাদেরই মত মানুধ। পুর বড বড় জননায়ক দেশারাজাদকলে জনাগৃহণ করিয়াছেন। গোপালরক গোগলে জন্মতঃ কোফাপুর রাজ্যের প্রজ্ঞা ছিলেন। মহাগ্রাগান্ধী জন্মতঃ পোবৰন্দর রাজ্যের প্রজা। বাবগাবাণিজ্যেও দেশীরাজ্যসকলের অনেক প্রজা বিশেষ ুক্তিজ দেখাইয়াছেন। মাড়োয়ারীরা ও ক্ছেীরা স্বাই দেশী বাজের প্রজা। প্রকামদাস বিভ্লা জ্বপুরের এবং এমুতল'ল ওঝা কচ্ছের প্রজা। স্থাচ দেশী রাজ্যের কোন প্রার্থ মতের ম্লা নাই,ভাহাদেব কাহারও নির্বাচনাধিকাব नाई!

কেলিসল অব্কেটের আসন বণ্টন

ভবিষাৎ ভারতীয় বাবস্থাপক সভায় য়াসেমন্ত্রীর আসন-বণ্টন সম্বন্ধ কিছু লিধিয়াছি। ভবিষাৎ কৌন্ধিল অব্ ্ষট্ সম্বন্ধে তত না হইলেও কিছু লিধিতেছি।

কৌন্সিল অব স্টেটে মোট ২৬০ জন প্রতিনিধি ও তাহাদের ২৬০টি আসন থাকিবে। ব্রিটিশানিত প্রদেশগুলি পাইবে ১৫০টি আসন, দেশীরাজগুলি ১০৪টির অনধিক, এবং ফিরিঙ্গীরা ১, ইউরোপীয়েরা ৭, ও দেশী গাঁপ্টর'নেরা ২টি আসন পাইব। ব্রিটিশ-শাসিত ভারত-ব.ষর লোকসংখ্যা প্রায় ২৬ কোটি এবং দেশীরাজগুলির প্রায় আট কোটি। স্তরাং হিসাব-মত দেশীরাজগুলির প্রতিনিধি মোটামুটি ৬০।৬২ জনের অধিক হওয়া উচিত নয়। কিন্তু ভাহাদিগকে তদপেক্ষা ৪০এর অধিক প্রতিনিধি দেওয়া হইয়াছে, এবং ব্রিটিশ-শাসিত প্রদেশগুলিকে তদপেক্ষা অধিক সংখ্যার কম প্রতিনিধি দেওয়া হইয়াছে। ইহাও মনে রাধিতে হইবে, যে, দেশীরাজ্যগুলির প্রজাদিগকৈ কৌ জিল অব্ ষ্টেটের প্রাতিনিধি নির্নাচনেরও অধিকার দেওয়া হয় নাই।

দেশা গ্রীষ্টিয়ানদের সংখা। ফিরিঙ্গী ও ইউরোপীয়দের চেয়ে অনেক বেশী। তাহাদিগকে ২ট আসন দিয়া ইউরোপীয়দিগকে ৭টি দেওয়া তাহাদের অপমান করা হইয়াছে।

কৌশ্সিল অব্ কৌটে প্রদেশ অনুসারে আসন বন্টন

ব্রিটিশ-শাসিত প্রদেশগুলি মোট ২৫০টি গাসন পাইবে।
তাহাদের ২৫,৭২,০০,০০০ জন অধিবাসীর প্রতিনিধি এ৫০
জন কইবে, অর্থাৎ প্রতি ২৭,১৪,০০০ মানুষের সম্প্রি
এক জন করিয়া প্রতিনিধি পাইবে। এই হিসাবে প্রতোক
প্রদেশের মত প্রতিনিধি পাইনে। এই হিসাবে প্রতোক
প্রদেশের মত প্রতিনিধি পাওনা হয়, সকলকে সেরূপ
দেওয়া হয় নাই—কোগাও কম কোথাও বেশী দেওয়া
হইয়াছে। তাহা নীচের তালিকা হইতে বুঝা নাইবে।
প্রতোক প্রদেশের প্রাপ্য খাসন কয়টি হয়, তাহা উহার
লোকসংখ্যাকে ২০,১৪,০০০ দিয়া ভাগ করিলোই পাওয়া
নাইবে। বঙ্গের প্রাপ্য হয় প্রায় ৩০টি আসন, কিন্তু তাহাকে
দেওয়া হইয়াছে ২০টি। বে'হাইয়ের প্রাপ্য হয় ২০টি;
দেওয়া হইয়াছে ২৩টি। প্রাবের প্রাপ্য হয় ২৩টি, দেওয়া
হইয়াছে ১৬টি। উত্তর-পশ্চিম সীমাওের দেড়টিও পাওনা
হয় না, দেওয়া হইয়াছে ৫টি, সিয়্র ২টি পাওনা হয়, দেওয়া
হয়াছে ৫টি।

| প্ৰদেশ বা সম্প্ৰদায় | লোকসংখ্যা (লক্ষে) | প্ৰদন্ত আসন |
|----------------------|---------------------|-------------|
| মাক্রাজ | 8 . @ | ₹• |
| বোষাই | 76. | |
| বাংলা | e • > | |
| আত্ৰা-অযোগ্য | | |
| পঞ্চাৰ | | |
| বিহার | | |
| মধ্যপ্রনেশ-বেরার | | |
| আসাম | | |
| উত্তর-পশ্চিম সীমাস্ত | | |
| সিকু | • 3 | • |
| উড়িব্যা | હ 4 | • |
| पि सी | • | - 1 ye |

| প্ৰদেশ বা সম্প্ৰদায় | ' লোকসংখ্যা (লকে) | প্ৰণত আস |
|----------------------|---------------------|----------|
| আজমীর-মেরোআড়া | 15 | : |
| ব্রিটিশ বাল্ড:স্থান | | |
| কুৰ্গ | 2 | : |
| কি রিঙ্গী | | > |
| ইউরোপীর | | 9 |
| प्रनी शिष्ठियान | | ર |
| | | |

আমেরিকার দক্ষাত্ত অনকুস্ত

ভারতবর্গকে ভবিধাতে কেডারেশন অথাৎ সক্তরাষ্ট্রমণ্ডল করিবার প্রস্তাব হুইয়াছে। পৃথিবীতে বর্ত্তমানে সকলের চেয়ে বড় কেডাবেশন আমেরিকার ইউনাইটেড় প্রেটস বা স্ক্রাষ্ট্রমণ্ডল। ভাইতবংশর ব্যবস্থাপক সভায় সেমন হইকে (को जिल अब १९१ । अहारमध्यो, आध्यतिकां बावहाशक সভা কংগ্ৰেস তেমনি আছে খেনেট ও প্ৰতিনিধি-ভবন of Representatives) ! আমেবিকার (House প্রতিনিধি-ভবনে প্রত্যেক রাই তাহার লোকসংখ্যা অনুসারে প্রত্যেক ২১০৪১৫ জনের সমষ্টি প্রতি ১ জন করিয়া প্রতিনিধি নির্দ্ধাচন করে। ইহাতে পাচে বড় বড় রাষ্ট্রগুলির অপ্রতিহত প্রাধান্য স্থাপিত হয়, সেই জন্ত তাহা নিবারণার্থ শেনেটে গুন্তু বৃহৎ প্রতোক রাষ্ট্রই ২ জন করিয়া সদস্<u>র</u> নির্মাচন করে। ভারতবর্ষে য়াসেমন্ত্রীতে লোকসংখ্যা গ্রন্থারে প্রতিনিধি-নির্বাচনের বাবন্ধা হয় নাই; কৌন্সিল অব প্টেটও লোকসংখ্যা অত্সারে প্রদেশগুলিকে আসন দেওয়া হয় নাই, অথচ আমেরিকার রীতি ত্রুসারে কুন্ত বছৎ প্রত্যেক রাষ্ট্রকৈ সমান সমান সদস্যও দেওয়া হয়। নাই। কোন লাব্য বা বোধগমা নিয়মই অত্সত হয় নাই।

লোকসংখ্যা অনুসারে প্রতিনিধির সংখ্যা নিদেশ বিলাতেও আছে। তথাকার পালে মেন্টের হাউস স্বব কমলো জেলা ও শহরগুলি প্রত্যেক ১০,০০০ লোকের সমষ্টি এক জন করিয়া প্রতিনিধি পাঠাইবার অধিকারী।

আসনবল্টন বৃহত্ত অনুসারেও নহৈ

প্রতিনিধি দেওয়া হয় সব দেশেই মন্ব্যদিগকে; ভূপগুকে নহে, তাগার উপরিক্তিত গৃক্ষলতাভূণাদিকে নহে, বালুকারাশি বা ধূলিপুঞ্জকে নহে, এবং বস্ত ও গৃহপালিত

পশুপক্ষীদিগকেও নহে। তৃতরাং ইহা বলিলে চলিবে
না বে, দেশীরাজাসম্হের ও ব্রিটিশ ভারতের সুহত্ত
অনুসারে এবং প্রদেশগুলির সূহত্ত অনুসারে ভাষাদের
প্রতিনিধিসংখ্যা নির্দিষ্ট হইয়াছে। বস্ততঃ ভাষা হইলে
সাভিশয় অনৌক্তিক ব্যবস্থা হইত। কিন্তু ব্যবস্থাসে-প্রকারও
হয় নাই। ব্রিটিশ ভারতের আয়তন ৮,৬২,৬৭৯
বর্গ-মাইল, এবং দেশারাজ্যাসমুহের মোট আয়তন ৭,১২,৫০৮
বর্গ-মাইল। ইহাদের মাধ্য আসন-বর্ণটন আয়তন
অনুসারে হয় নাই। ব্রিটিশ ভারতের প্রেদেশগুলির মধ্যেও
আসন-বর্ণটন আয়তন অনুসারে হয় নাই। নীচের ভালিকা
দেখিলে ভাগা বুরা গাইবে।

| প্রদেশ | বর্গমাইলে আয়তন । | য়্যাদেশ্রাতে আসন। | কৌ শিল অব ষ্টেটে আসন। |
|------------|--------------------|--------------------|--------------------------|
| মা-পান্ত | .,82,2 9 | ૭ · | ₹• |
| বোপাই | 44,= 3 | 5. | - ' |
| বাংল! | ,42 | ·94 | > • |
| আগ্ৰ-অ | योभा ১,०७,०४४ | 5· | : . |
| পঞ্চাৰ | ,\$ ~ 6 | ٠, | 5 % |
| বিহার | U. 19× · | ৩ | \$6 |
| মধ্য প্রাপ | -বেরার 👵 ২ • | . @ | lr |
| উড়িষ্যা | 39,100 | æ | æ |
| 'হাদাম | 4,028 | : • | ē |
| উত্তর-প | শ্চম দীমান্ত .৩,৫১ | | 4 |
| ব্রিটশ ব | াল্চীস্থান ৫২,২২৮ | 1 | ۲ |
| আজ্ঞান্ত | -মেরোপাড়া ২,৭:: | > | 2 |
| কুগ | ., | > | > |
| भिन्ती | 15 | ₹ | > |
| সিপু | 8७, 5 क | | ৰ |
| | | | |

লোকসংখ্যা ও অধিতন গুণ-ই একসংক্ষ বিবেচনা করিয়া প্রতিনিধির সংখ্যা নিরূপণ করিবার এমন কোন নিয়ম জানি না ধাহা গণিতশাধের ও ভাষেধান্তের অনুমোদিত। বস্তুত: এরপ কোন নিয়মও অনুসূত হয় নাই।

আসনবণ্টন শিক্ষান্ত্যায়ীও নহে

একটা কথা মনে হইতে পারে, যে, লিখনপঠনক্ষম লোকদের সংখ্যা অনুসারে প্রতিনিধির সংখ্যা নিদিন্ত হইষা থাকিতে পারে। বাস্তবিক তাহাও হয় নাই। দেশী রাজ্য-সন্ত্রেও ব্রিটিশ ভারতের লিখনপ্টনক্ষমদের সংখ্যা নীচে দিতেছি।

| ভারত্বর্ধের অংশ। | লিখনপঠনক্ষম পুরুষ। | লিখনপঠনকম নারী। |
|------------------|-----------------------------|--------------------|
| ব্রিটিশ ভারতবর্ষ | :, 6,80,269 | ঽ ঽ,७৯, ⋄⋼७ |
| দেশী রাজাসমূহ | 84,8 5 ,2 9 8 | ۵,۵৯,۹৬১ |

আসনবর্তন এই সংখাগুলি অনুসারেও হয় নাই। লিখনপঠনক্ষমদের বিটিশ-শাসিত প্রদেশগুলিতেও সংখ্যা অনুসারে আসন বণ্টিত হয় নাই। ইতিপূর্নের প্রদেশ-শুলিকে প্রদত্ত আসনের বে-যে তালিকা দিয়াচি, তাহার সভিত নীচের তালিকা বিবেচনা করিলেই তাহা ব্যা গাইবে। লিখনপঠনক্ষম পুক্ষ। লিখনপঠনক্ষম নাক্ষ্ম। <u>शक्त्र</u> ه ۰ ه , . . , ۶ 5 ,0 5,09C মাশার্জ (সিশ্লসহ) বোপাই . 9, 0,030 २.५०,७१৫ বাংলা 80,50,000 15, 10, 83 আগ্রা-সংগ্রাদ্যা 20,00,8.4 ٧,٠,٠ 30,01,088 -,00,950 পঞার বিহার-উড়িয়া 3,2.,350 14. 9, 0 9,008 মধা প্রদেশ-বেরার 9,20, 45% 98,600 ه و د د ه উত্তর-পশ্চিম স,মাস্ত 3,500 বিটিশ বাগচীস্থান 15. 20. 1 3,000 আজনাব-মেরোগাড়া a.,390 4, 195 কুণ 15.000 0,888 कि जो 90,044 . 6. 0.3

আসনবল্টনে অন্যায়ের প্রতিবাদ

আমরা দেখাইশান, যে, ভবিষাৎ ভারতবর্ষীয় ব্যবস্থাপক সভার আসনবর্ণটনে কোন নিয়ম অনুস্ত হয় নাই। বর্ত্তমান ব্যবস্থাপক সভাতেও এইকপ নিয়ম'ভাব, অনৌক্তিকতা ও আবচার আছে। ভাহ'তে সন্দাপেক্ষা অধিক অবিচার হইগাছে বঙ্গের উপর। ইহা আমরা এই পেথম বলিভেছি না। আগুওে বলিয়াছি ও ভাহার প্রতিবাদ করিয়াছি। দুষ্টাস্তপর্ম, পাঠকদিগকে ভানাইভেছি, আমরা প্রায় আট বংসর পূর্বে ১৯০৭ সালের অক্টোবর মাসে এই বিশয়ে একটি প্রবন্ধ মডার্গ বিভিন্ন প্রিকায় লিখিয়াছিলাম (পরেও লিখিয়াছি) এবং ভাহা নিগিলভারতীয় কংগ্রেস কমিটির, নিগিলভারতীয় মুশ্রিম লাগের, ভারতীয় ফাতীয় উদারনৈতিক ক্ষেভারেগ্রনের, হিন্দু মহাসভার, ও (মাজান্ধ প্রেস্থিত প্রস্তিহ পাঠাইয়াছিলাম। কিন্তু এক জনও ভাহার প্রাপ্তিশ্বীকার পর্যান্ত করেন নাই। অন্তান্ত প্রক্রেশনের কথা দুরে পাক, বাংলা দেশেও এই

অবিচারের বিরুদ্ধে কোন আন্দোলন হয় নাই। ভাহাতে বাংলা দেশ ক্ষতিগ্রস্ত হইয়াছে এবং ভবিষাতেও হইবে।

কৌন্সিল অব্ ফেটে দেশী রাজ্যের নরেশদের মতের মূল্য

আগে বলিয়াছি, ব্রিটশ-ভারতের ১৭,১৪,০০০ মালথের সমষ্টি কৌন্সিল এব্ ষ্টেটে একটি করিয়া প্রতিনিধি পাইবে। কিন্তু দেশী রাজ্যের নরেশরা অনেকে একাই একাধিক প্রতিনিধি মনোনীত করিবেন। যথা—

হায়দরাব'দের নিজাম ৫ জন। তাঁহার মতের মূল্য বিটিশ-ভারতবর্গের ১৭,১৪,০০০ × ৫ = ৮৫,৭০,০০০ জন মাত্যের মতের গ'লার সমান।

মহীশুরের মহারাজা তিন জন; এবং কাশ্রীর, গোয়ালিয়ার, ও বড়োদার মহারাজারাও তিন জন করিয়া।

প্রত্যেক ছ-জন করিয়া প্রতিনিধি মনোনীত করিবেন কালাত, ব্রিবাঙ্কুড়, কোচিন, উদ্বয়পুর, জয়পুর, গোধপুর, বিকানের, ইন্দোর, ভোপাল, রেওয়া, কোণ্ছাপুর, পাটিয়ালা, ও বাহাওঅলপুরের নরেশগণ।

এক জন করিয়া করিবেন অনেকে, এবং কয়েক জনে মিলিয়া এক এক জন প্রতিনিধি মনোনীত করিবেন আরও কতকগুলি নরেশ।

এই সমৃদর ব্যক্তির মতের মূলা ব্রিটিশ-ভারতবর্ষের কত জন করিয়া মাল্লেয়ে মতের মূল্যের সমান, তাহা পাঠশালার ছাত্রছাত্রীরাও গুণ করিয়া সহক্তে বাহির করিতে পারিবে।

দেশী নরেশদের গুরুত্ব কেন এত

এটা খুব জানা কথা, দে, অনেক বিষয়ে দেশা নরেশ-দের স্বাধীনতা ব্রিটিশ-ভারতের সাধারণ প্রজাদের চেয়েও কম। তাঁহাদিগকে রেসিডেণ্ট ও পলিটিকাল এফেণ্টদের তাবে যেরূপ থাকিতে হয় এবং হকুম ও ধমক সাক্ষাৎ বা পরোক্ষ-ভাবে শুনিতে হয়, আমাদিগকে কোন রাজকশ্যচারীর তাঁবে সেরূপ থাকিতে হয় না এবং হকুম ও ধমক শুনিতে হয় না। তথাপি এই মানুষশুলির মতের দাম য়াসেম্ব্রীতে ও কৌজিল অব্ তেটে লক্ষ্ক লক্ষ্ক সাধারণ ব্রিটিশ প্রজার সমান ধরা হইতেছে। তাঁহাদিগকে ভারতীয় ফেডারেশুন বা রাষ্ট্রসংঘের মধ্যে আনিবার জন্ত বিলাতী গবর্মেণ্ট এত বেলী ব্যপ্তা, যে, ব্রিটিশ-ভারতের সব ন্যাশন্তালিট কাগজ, সব রাজনৈতিক নেতা, সব রাজনৈতিক দল ভবিষ্যৎ ভারত-শাসন বিল সম্বন্ধে কত সমালোচনা করিলেন, ভারতীয় ব্যবস্থাপক সভায় তাহার বিরুদ্ধে প্রস্তাব অধিকাংশের মতে গৃহীত হইল, কিন্তু বিলাতী গবর্মেণ্ট বিলাতী ভারত-সচিব ক্রফেপও করিলেন না—অটল অচল রহিলেন; কিন্তু যাই দেশী নরেশরা প্রমর্শ করিয়া একটা প্রস্তাব ধার্য্য করিলেন, অমনি ভারত-সচিব সাার সামুম্বেল হোর লম্বা কৈ ফিয়ৎ দিলেন, বিলাতী সম্পাদক ও রাজনীতিপ্রদের মহলে হৈ হৈ পড়িয়া গোল, ভারত-সচিব নরেশদিগকে খুণী করিবার জন্ত তাঁহাদের মতানুযায়ী পরিবর্ত্তন বিলোর কোন কোন ধারায় করা হইবে বলিলেন।

নরেশ্রদিগকে এত তোয়াঞ্জ কেন করা হইতে:ছ ? এর উত্তর দেওয়া কঠিন নহে। ব্রিটেন জগৎকে দেখাইতে চায়, বে. ভারতবর্ষকে স্থাসন-অধিকার দেওয়া হইতেছে, ত্র্পচ ভবিষ্যৎ শাসনবিধি এরপ করা হইতেছে, যে, তাহা বর্ত্তমান ভারতশাসনবিধি অপেকাও নিরুষ্ট। ভারতবর্ষের লোক-দিগকে কোন বিষয়ে চূড়ান্ত ক্ষমতা দেওয়া হইতেছে না, গবর্ণর-জেনার্যাল ও গবর্ণরদিগকে এক্লপ প্রভুত্ব দেওয়া হইতেছে, যাহা হিন্দাস্ত অনুসারে স্বাধীন হিন্দুরাজাদের ছিল না ও নাই, মুসলমান-শাস্ত্র অনুসারে স্বাধীন মুসলমান রাজাদের নাই, ইংশণ্ডের খ্রীষ্টিয়ান রাজার নাই। ভারত-গবন্মেণ্টের রাজ্ঞরে শতকরা ৮০ টাকার উপর ভারতীয় ব্যবস্থাপক সভার কোন অধিকার থাকিতে না। বাকী শতকরা ২০ টাকার উপর ভর্কবিতর্ক করিবার যে ক্ষমতা দেওয়া হইবে, এবং অভাভ ক্ষমতা যাহা দেওয়া হইবে, তাহার ব্যবহার দারা যাহাতে ব্রিটশ-ভারতীয় লোকেরা স্বরাক একটও না পাইতে পারে, তাহার প্রধান উপায়-স্করপ য়াসেমন্ত্রীর এক-তৃতীয়াংশ প্রতিনিধি ও কৌশিল অব্ ষ্টেটের এক-তৃতীয়াংশের অধিক প্রতিনিধি নরেশ্বিগকে মনোনীত করিতে দেওরা হইবে; कार्त्रण, नद्रम्या ক্ষেত্রকারী, গণভান্ত্রিক শাসক নছে, স্বভরাং তাঁহাদের মনোনীত সদজেরা গণডান্ত্রিকতার অগ্রগতিতে বাধা দিবে

এবং ই রেজদের প্রভূষে আপত্তি করিবে না (কেন না, ইংরেজ গবর্মেণ্টও দেশীরাজ্যগুলিতে নরেশদের নিরন্থশ প্রভূত মানিয়া লইয়াছে)। সংক্ষেপে, নরেশদের ধারা নিজেদের উদ্দেশ্যসিদ্ধির জন্ত ইংরেজরা তাঁহাদের ওজন বাডাইতেচে।

গণতান্ত্রিকতার অগ্রগতি রোধ করিবার অস্তাক্ত উপায়ও অবদন্ধিত হইয়াছে। যেনন, ব্রিটশ-ভারতে মুদলমানেরা শতকরা ২৪.৬৯, কিন্তু তাহাদিগকে ব্রিটশ-ভারতের আদন-গুলির শতকরা ৩০১ট দেওরা হইয়াছে; হিন্দু এবং অক্তান্ত অগ্রীষ্টয়ান, অমুদলমান ও অশিথ বাজে লোকেরা ব্রিটশ-ভারতের শতকরা ৭২.৭১ জন হইলেও তাহাদিগকে য়্যাসেম্ব্রীর ব্রিটশ-ভারতীয় ২৫০টি আদনের মধ্যে ১২৪টি অর্থাৎ শতকরা ৪৯.৫টি আদন দেওয়া হইয়াছে। সংখ্যাভ্রিফদিগকে এই প্রেকারে সংখ্যাল্থিন্ঠ করা হইয়াছে। কারণ, হিন্দুরাই গণতান্ত্রিক স্বরাজ সকলের চেয়ে আগে সকলের চেয়ে বেনী চাহিয়াছিল। ভারতশাসন বিশ তাহাদিগকে বলিতেছে, "ভোমরা স্বরাজ চেয়েছিলে, এই নাও স্বরাজ!"

আসনবণ্টনের দোযোদ্ঘাটন করি কেন

কংগ্রেস প্রস্তাবিত ভারতশাসনবিধি অগ্রান্থ বলিরাছেন
ও সাংস্থানিক বাটোয়ারা সম্বন্ধ নিরপেক্ষ থাকিলেও তারা
বে মন্দ তাহা বলিয়াছেন, ভারতীয় জাতীয় উদারনৈতিক
সংঘ ভারতশাসন বিলের বিরোধী, এবং কোন সম্প্রদায় বা শ্রেণী উহাতে সম্পূর্ণ সম্ভূত্ত নহেন। সেই জন্ত কেহ খুলিয়া
প্রশ্ন না করিলেও মনে মনে ভাবিতে পারেন, সমস্ভ জিনিঘটাই খধন অধিকাংশ ভারতীয়ের চক্ষে নামঞ্ব,
তথন আসনবর্তন লইয়া এত লিধিবার কি প্রশ্লেজন ?

জরেণ্ট পালে মেণ্টারী রিপোটের এবং ভারতশাসন বিলের অন্ত সমালোচনার থেরপ প্রয়োজন, আসনবন্টনের সমালোচনারও প্রয়োজন সেইরূপ। ব্রিটিশ-ভারতীয়নের কোন সমালোচনাতেই কোন ফল হইবে না। আমরা সমালোচবেরা গীতার উপদেশ অনুসারে নিশ্বাভারে সমালোচনা-কর্ম করিভেছি, ফল পাইব না জানিরাও কর্ম করিয়া ঘাইভেছি! ভবিষ্যৎ শাসনবিধি অগ্রাহ্য বাহারাই বলুন, উচা আইনে পরিণত হইবে, এবং কংগ্রেসওয়ালারাও ব্যবস্থাপক সভার তদস্সারে চুকিবেন। ত্তরাং উহার গঠনের দোষগুলা বুঝিয়া লওয়া আবশ্রক।

কেছ কেছ বেমন বলেন, সাম্প্রদায়িক বাটোয়ারাটার প্রতিকৃপ সমালোচনায় সাম্প্রদায়িক রেবারেষি বাড়ান হর, জেমনি কেছ কেছ মনে করি:ত পারেন, আসনবন্টনের দোযোদ্যটন করিলে প্রাদেশিক ঈর্যাদ্বেয় বাড়িবে। কোন জায়গায় খুব মশা বাড়িলে যদি কেছ ভাছার অনিইশ্রুকারিতা দেখাইয়া দেয়, ভাছা হইলে কেছ কি বলে, "ঐ লোকটা ম্যালেরিয়ার্দ্ধির জন্ত দায়ী?" সাম্প্রদায়িক বাটোয়ায়া যে বিদেশারা করিয়াছে, তাছায়া সাম্প্রদায়িক ঈর্বাদ্বেষ উন্ধাইবার জন্ত দায়ী নহে, দায়ী উহার প্রতিবাদকারীরা, ইহা বেমন চমৎকার যুক্তি, আসনবন্টন যাহায়া করিয়াছে ভাছায়া প্রাদেশিক ঈর্বাদ্বেষ বৃদ্ধির জন্ত দায়ী নহে, দায়ী আসনবন্টনের মর্শ্বোভ্রেদকারী, ইহাও সেইরপ চমৎকার যুক্তি।

বস্ততঃ, আমরা দেশে গ্রারদক্ষত সাম্যের ভিত্তির উপর গণতান্ত্রিক স্বরাজ প্রতিষ্ঠিত করিতে পারি বা না-পারি, ভবিষ্যতে তাহার প্রতিষ্ঠার কত প্রকার বিশ্ব স্থিটি করা হইতেছে, তাহা জানিয়া রাখা আবগুক। বিশ্ববাধার সম্যক্ষান না জারিলে তাহা দূর করিবার ইচ্ছা জন্মে না, এবং দূর করিবার উপায় উদ্ভাবিত ও অবলম্বিত হয় না।

বাঙালীর প্রভাব হ্রাস

আমরা বাঙালীরা সর্ব্বেসর্বা হইরা থাকিব, এরপ কোন ছুরভিসন্ধি ও ছুরাশা আমাদের নাই, কিন্তু অভাবতঃ আমাদের স্থায় বডটুকু প্রভাব হইরাছিল ও থাকিতে পারে, ভাহার হ্রাসে নিশ্চরই আমাদের স্থায়সকত অসস্তোষ হইতে পারে।

বঙ্গের অঙ্গছেদ নিবারণ বাগদেশে বধন ভারতবর্ধের রাজধানী কলিকাতা হইতে দিনীতে স্থানাস্তরিত হইল, তথন সেই পরিবর্ত্তনে বাঙালীর প্রভাব কমিল। ভারতীয় লোকমতের বডটুকু প্রভাব ভারত-গ্রন্থেণ্টের উপর হইতে পারে, বাঙালী কাগজপত্রের মত ও জনমত দেরপ প্রভাব অনেকটা ভারত-গবর্নেণ্টের উপর বিস্তার করিত। ভারত-গবর্নেণ্টেকে সেই প্রভাব হইতে দুরে লইয়া বাওয়া হইল, অবচ দিলীতে এমন কোন জনমত ছিল না এবং এবনও নাই বাহা তাহার স্থলাভিবিক্ত হইগাছিল বা হইতে পারে। যাহারা বাঙালীর ঈর্যা করে, বাঙালীকে দেখিতে পারে না, ভাহারা এই পরিবর্ত্তনে খুলা হইলেও ইহা প্রজালক্তির্দ্ধির অ্নুক্ল হয় নাই। মনস্বী গোধলে বখন বলিয়াছিলেন, "আজ বাংলা বাহা ভাবে, কাল ভারতের অবনিষ্ট অংল ভাহা ভাবিবে," তখন রাজধানী কলিকাভার ছিল।

এ প্রশ্ন হইতে পারে, স্থায়ী রাজধানী হইবার কোন বিধিদন্ত অধিকার ত কলিকাতার ছিল না, স্তরাং রাজধানী অন্তর হওয়াতে যদি বাঙালীর প্রভাব হ্রাস ও অন্ত অসুবিধা হইয়া থাকে, তাহা হইলেও সে পরিবর্ত্তনের প্রতিবাদ করিবার কি অধিকার তোমাদের আছে? বাঙালী বিদিয়া প্রতিবাদ করিবার, বঙ্গের প্রভাব হ্রাস হেডু প্রতিবাদ করিবার অধিকার আমাদের না থাকিতে পারে; কিন্তু আমরাও ভারতীয় বলিয়া এবং রাজধানী স্থানান্তরিত হওয়ায় গবর্নেণ্টের অপকর্ষ ঘটায় (অন্ততঃ উৎকর্ষলাভের ব্যাঘাত হওয়ায়), সে দিক দিয়া সমালোচনা করিবার অধিকার আমাদের আছে।

রাজধানী স্থানাস্তরিত করিবার অধিকার গবন্মেণ্টের থাকিতে পারে, কিন্তু যে-সব জেলার বা মহকুমার অধিকাংশ লোক বাঙালী, বন্ধসংলগ্ধ সেই সব স্থানকে বাংলা হইতে বিচ্ছিন্ন করিয়া অন্তপ্রদেশভূক্ত করিয়া বাঙালীর সমষ্টি-সমূহত শক্তিও প্রভাব কমাইবার ভাষ্য অধিকার কাহারও ছিল না। বাঙালীর অধ্যাবিত ঐ সব জেলাও মহকুমা বন্ধের সামিল থাকিলে ভারভবর্ষীর ব্যবস্থাপক সভার আরও আসন পাইবার বাঙালীর ভাষ্য অধিকার থাকিত। বাংলা দেশটাকে ছোট করিয়া বাঙালীকে সেই আসনগুলি হইতে বঞ্জিত করা হইরছে।

আমরা শ্বনেক বৎসর আগে হইতে দেখাইরা আসিডেছি, বে, বর্ত্তমানে বলবৎ ভারতশাসনবিধি অসুসারেও বাংলা বেশকে ভারতীয় ব্যবস্থাপক সভায় কম আসন দিয়া ভাহার স্থাব্য প্রভাব হইতে তাহাকে বঞ্চিত রাধা হইরাছে। বাংলার লোকসংখ্যা সব প্রাদেশের চেয়ে বেশী অথচ তাহার আসন-সংখ্যা সকলের চেয়ে বেশী নয়। বঙ্গের লোকসংখ্যা বোদ্বাই প্রেসিডেন্সীর আড়াই গুণেরও অধিক। অথচ বর্ত্তমান ভারতীয় ব্যবস্থাপক সভায় বাংলা দেশের প্রতিনিধি-সংখ্যা বোদ্বাইয়ের আড়াই গুণ, দ্বিগুণ, দেড় গুণ বা কিছু বেশীও নহে।

এই অস্তার ও অবিচার ভবিষ্যৎ শাসনবিধিতেও যে থাকিবে, তাহা ভারতশাসন বিলের আসন সম্বন্ধীয় ধারা ও তণশীল হইতে বুঝা যায়, ইহা আমরা একাধিক তালিকাতে সংখ্যা শারা দেখাইয়াছি। পুনর্মল্লেখ নিশ্বলোজন।

এক-একটি প্রদেশকে যত আসন দেওয়া হইয়াছে, কেবল তাহার দারা বিচার করিলেও বঙ্গের প্রভাবকে যে কমান হইয়াছে, তাহা বুঝা যায়। এই ক্ষতিপুরণ পরোক্ষভাবে কিছু হইতে পারিত, যদি বাংলাভাষী অনেক এমন দেশী রাজ্য থাকিত যাহ:র বাঙাশী নরেশরা ভারতীয় ব্যবস্থাপক সভায় বঙ্গভাষী সদস্ত মনোনীত করিয়া পাঠাইতেন। কারণ, এমন অনেক বিষয় আছে যাহাতে মাতৃভাষা অনুসারে সদভেরা পরম্পরের সহিত সহামুভৃতি করে এবং পরস্পরের সহযোগিতার একদিকে ভোট দেয়। কিন্তু বঙ্গভাষাভাষী কুচবিহারের ১টি প্রতিনিধি মনোনীত হইবে, এবং ত্রিপুরা >টি প্রতিনিধি মনোনীত করিবে। মণিপুরকে যদি ঠিক বঙ্গভাষাভাষী ধরা যায়, তবে তাহারও এক জন প্রতিনিধি আছে। অন্ত বোম্বাই মাক্রান্ত পঞ্জাব উডিয়া প্রভৃতির সহিত এক ভাষাভাষী অর্থাৎ মরাঠা গুঞ্জরাটী কন্নাড তেলুগু তামিল মলয়ালম পঞ্জাবী হিন্দী ওড়িয়া প্রভৃতি ভাষাভাষী বিস্তর দেশী রাদ্ধ্য আছে যে-সকল হইতে মনোনীত সদস্তেরা বোম্বাই মান্দ্রাঞ্চ পঞ্জাব উড়িফ্যাদির সদস্যদের সহিত ভাষার ঐক্য হেতু দল বাধিতে পারিবে।

স্তরাং দেখা যাইতেছে, যে, এক দিকে বাংলা দেশকে তাহার স্থায় প্রাণ্য আসন-সংখ্যা হইতে বঞ্চিত করা হইরাছে, অন্ত দিকে বাংলাভাষী দেশী রাজ্য নিতাস্ত কম থাকার দেশী রাজ্য হইতে যে ভারতীর ব্যবস্থাপক সভার বাঙালী সদস্ত বেশী করিয়া আসিরা জুটবে, এরূপ সভাবনা নাই। অন্ত অনেকগুলি প্রদেশের এই সভাবনা আছে।

পঞ্জাব বোদাই প্রভৃতি প্রদেশ স্থায় প্রাণ্যের অধিক সদস্ত পাইরাছে। অধিকত্ব তাহারা নিক্টবন্তী দেশারাজ্যসমূহ হতৈ মনোনীত এক এক ভাষাভাষী এমন অনেক সদস্ত পাইবে, যাহারা ভাহাদের সহিত সহামূভূতি ও সহযোগিতা করিবে। মাজ্রাজ্ঞ স্থায় প্রাণ্য হইতে কম আসন পাইরাছে, কিন্তু পরোক্ষভাবে ক্ষতিপূরণ-স্বরূপ তেলুগু তামিল করাজ প্রভৃতি ভাষাভাষী দেশা রাজ্য হইতে মনোনীত অনেক সদজ্যের সহযোগিতা পাইবে। আগ্রা-অযোধা স্থায় প্রাণ্য অপেক্ষা কম আসন পাইবে, কিন্তু ইহাও সংলগ্ধ দেশা রাজ্য-সমূহ হইতে মনোনীত হিন্দীউর্দ্ধুভাষী অনেক সদজ্যের সহযোগিতা পাইবে।

এই সকল কারণে বাংলা দেশের স্থায় প্রাণ্য আসন
পাইবার জন্ত আন্দোলন হওয়া উচিত ছিল। তাহাতে হয়ত
ফল কিছুই হইত না—গবয়েশেটর মত ও উদ্দেশ্যের বিরোধী
কয়টা আন্দোলনই বা সফল হয় ? কিন্তু ফল হয় নাই বা
হইবে না বলিয়া আমরা অন্ত নানা আন্দোলন হইতে বেমন
নিবৃত্ত হই নাই বা হইব না, এই বিষয়ে আন্দোলন হইতেও
তেমনি নিবৃত্ত থাকা উচিত হয় নাই ও হইবে না।

বাঙালীদের নিজেদের দোষ-ক্রটিভেও যে বাঙালীর প্রভাব কমিরাছে, তাহা ভূলিরা থাকিলে চলিবে না। রাজনৈতিক দলাদলি, অতিরিক্ত আরামপ্রিয়তা ও আমোদপ্রিয়তা, ল্যুচিন্ততা, ঈর্যাপরায়ণতা প্রভৃতি অন্ত কোন লোকদের যে নাই, ভাহা নহে। কিন্তু অন্তদের তাহা আছে বলিয়া সেই দোষগুলি আমাদের গুণে পরিণ্ড হুইতে পারে না।

মিঃ জিমার রফার সর্ত্ত

সাম্প্রদারিক বাটোরারা সম্বন্ধে আপোয়ে মীমাংসা করিবার নিমিত্ত বাবু রাজেন্দ্রপ্রসাদ ও মিং মেঃহম্মদ আলী দিল্লার মধ্যে যে কথাবার্তা হইতেছিল ও যাহা আপাততঃ নিফল হইরাছে, তাহা যে সর্তগুলিকে ভিত্তি করিয়া চলিতেছিল, সেগুলি থবরের কাগজে প্রকাশিত হইরাছে। তাহার আগে ও পরে আমরা দিলীতে ও কলিকাতার একাধিক বাজির নিকট উহা ইংরেজীতে টাইপলিবিভ আকারে দেখিরাছি। সেই জন্ত ঐশুলিই যে রকার ভিত্তিরূপে আলোচিত হইরাছিল, তাহাতে সন্দেহ করিবার কারণ নাই। সর্বপ্তলি কাগলে প্রকাশিত হওয়া এবং তাহার আলোচনা হওয়া বাবু রাজেক্সপ্রসাদ পছন্দ করেন নাই, এইরপ কথা সংবাদপত্রে বাহির হইয়াছে। প্রকাশে আপদ্ধিনা হইলেই ভাল হইত। তবে সর্বগুলির ঝাঝাল রক্ষের আলোচনা বাঞ্চনীয় নহে বটে।

প্রথম ও চতুর্থ সর্তুটি সম্বন্ধে বাংলা দেশের হিন্দুদের পক্ষ হইতে করেক জন হিন্দু আপত্তি প্রকাশ করিরাছিলেন। আমরা সেই আপত্তি যুক্তিসক্ষত মনে করি। আপত্তির কারণ বৃধিতে হইলে সর্তুগুলির উদ্দেশ্য জানা আব্দাক।

ষে খসড়া চুক্তিপত্তে সর্গুণ্ডলি আছে তাহার শেষে বলা হইয়াছে, যে, উপরিলিখিত সর্গু এনুসারে সন্মিলিত নির্মাচকমণ্ডলীর দারা নির্মাচনে পক্ষগণ সম্মত আছেন।

সম্বিলিত নির্বাচকমণ্ডলীর ছারা নির্বাচনের উদ্দেশ্য এই. যে, বাবস্থাপক সভার সদশুপদপ্রার্থী হিন্দুর নির্বাচনে অহিন্দু নির্মাচকদিগেরও ভোটের প্রভাব অনুভূত হইবে, এবং মুদলমান প্রার্থীর নির্বাচনে এমুদলমান নির্বাচকদিগেরও ভোটের প্রভাব অনুভূত হইবে। যেরূপ যোগ্যতা অনুসারে নির্বাচকদের নাম নির্বাচক-তালিকাভুক্ত হইবে, সেই যোগাতা দকল ধর্মসম্প্রদায়ের লোকদের জন্ম এক ও সমান হওয়াই ভাগসঙ্গত। যোগ্যভার এইরূপ সমান माপकाठि अनुमादा यनि काथा हिन् निर्काठकान्द्र मःथा अहिन्दुत्तद (bरम्न कम वा दिनो इम्न, वा मूननमान নির্বাচকদের সংখ্যা অমুসলমান নির্বাচকদের চেয়ে কম বা বেশী হয়, ভাহাতে কাহারও ন্যায়সমত কোন আপন্তির कार्तन थार्क ना। किछ अथम मार्ख वना इहेम्राइ, (य, हिन्तू ও ক্লাল্যানদের মধ্যে যোগ্যতার মাপকাঠি এ প্রকারে ভিন্ন রকম করিতে হইবে, বাহাতে (দৃষ্টান্তম্বরূপ বঙ্গে) মুসলমান নিকাচকদের সংখ্যা শভকরা মোটামুট ৫৫ হয় ও হিন্দু निकाहकरात है तरका निकास देश है । वर्षा देश है । वर हिन्दू निर्वाठकापत्र (हारा मूननमान निर्वाठकापत्र नःशा, य-কোন বিভিন্ন যোগাভার মাপকাঠি অনুসারেই হউক. বাড়াইতেই হইবে। আনুমানিক দৃষ্টান্ত দারা এই সর্ভটির উদ্দেশ্য ব্রাইডেছি। যদি এইরূপ ছির হয়, যে, যাহারা **মাটি ক পাস করিয়াছে, তাহারা ভোট দিবার অধিকার**

পাইবে, এবং যদি তাহাতে দেখা যার, যে, মুদলমান ভোটদাতাদের সংখ্যা হিন্দু ভোটদাতাদের সংখ্যার চেয়ে অনেক
কম, তাহা হইলে এইরপ কোন নিয়ম করিতে হইবে, যে,
হিন্দুরা ম্যাটি,ক পাস করিলে ভোটাধিকার পাইবে, মুদলমানরা
উচ্চ প্রাইমারী বা জন্দ্রপ নিয় অন্ত কোন পরীক্ষা পাস
করিলে ভোটাধিকার পাইবে, যাহাতে মুদলমান ভোটদাতাদের সংখ্যা হিন্দু ভোটদাতাদের চেয়ে শতকরা ১০।১১টি
বেশী হয়। অথবা, ধকন যদি নিয়ম হয়, যে, ১০ টাকা
খাজনা বা ট্যাক্স দিলে ভোটাধিকার মিলিবে, এবং গদি
তাহাতে দেখা যার, যে, মুদলমান ভোটদাতার সংখ্যা হিন্দুদের
চেয়ে বেশী হয় নাই, তাহা হইলে নিয়মটা বদলাইয়া এইরপ
করিতে হইবে, যে, হিন্দুদের বেলায় যোগ্যতা ১০ টাকা
খাজনা বা ট্যাক্স দেওয়া, মুদলমানদের বেলায় ২ টাকা বা
তক্ষেপ এরপ কিছু যাহাতে মুদলমান নির্বাচকেরা হিন্দুদের
চেয়ে শতকরা ১০।১১ স্কন বেশী হয়।

এইরপ সর্ত্ত সম্বন্ধে আপন্তির কারণ বলিতেছি।
সাম্প্রদায়িক বাঁটোয়ারাতে ভিন্ন ভিন্ন সম্প্রদায়কে পৃথক্
রাথিবার ক্ষন্ত ভেদ-নীতি অবলম্বিত হইয়াছে। বাটোয়ারাটার
অনিষ্টকারিতা দূর করিতে হইলে, সকল সম্প্রদায়ের সম্বন্ধে
একই নিরম চালাইয়া ভাহাদের মধ্যে মিলন ও সম্ভাব
স্থাপনের চেষ্টা করিতে হইবে। কিন্তু ভিন্না-রাদ্দেন্দ্রপ্রসাদ
আলোচনার কোন সর্ত্তেই ভাহা করা ত হয়ই নাই, অধিকন্ত্র
ভাহার উন্টা দিকে গিয়া এই একটি নৃতন ভেদ সৃষ্টি করিবার
চেষ্টা হইভেছে, বে, সম্পত্তি বা শিক্ষার দিক্ দিয়া কোন
মুসলমান হিন্দুর চেয়ে কম যোগ্য হইলেও ভাহাকে
ভোটাধিকারের বোগ্য মনে করিতে হইবে।

এখনে আমরা বলিয়া রাখি, যে, ভারতবর্ষে যদি সম্পত্তি বা শিক্ষাঘটিত কোন যোগাতার মাপকাঠি অবলম্বিত না হইয়া প্রাপ্তবয়স্ক নরনারী মাত্রকেই জাতিধর্মনির্মিশেষে ভোটের অধিকার দিবার নিরম প্রবর্ত্তিত হয় এবং যদি ভাহাতে দেখা যায়, যে, কোথাও হিন্দু কোথাও মুসলমান কোথাও শিথ ইত্যাদি কম বা বেণী সংখ্যায় ভোটাধিকার পাইতেছে, তাহা হইলে স্থায় আপত্তি থাকে না; কারণ একই বোগাতার নিয়ম সকলের প্রতি থাটিতেছে। আপত্তির কারণ তথনই ঘটে, বথন ক্লুত্রিম উপারে ভিন্ন ভিন্ন সম্প্রদায়

সম্বন্ধে ভিন্ন ভিন্ন যোগ্যতা আদির শিধিত বা অশিধিত
নির্ম চালাইয়া কাহাকেও নিগ্রহ, কাহাকেও অমুগ্রহ করা
হয়। এরপ করিলে, সাম্প্রদায়িক বাটোরারাটার জাতীয়
ঐক্য স্থাপনে বাধাজনকতারপ অনিউকারিভার আংশিক
প্রতিকারও না-হইরা বরং নৃতন ভেদ-নিয়ম প্রয়োগহেতু ঐ
অনিউকারিভা বাঙিবে।

অতএব মিঃ खिन्नाর প্রথম।সর্তুটি গ্রহণবোগ্য নহে।

প্রথম সর্ভটির দহরে আরও আপত্তি আছে। তাহার একটি বলিতেছি। স**শ্বি**শিত নিৰ্বাচকমণ্ডলীর ছারা সন্মিশিত নির্মাচনের উদ্দেশ্য এই নিবন্ধিকার তৃতীয় অমু-চ্ছেদে কিছু বলিয়াছি। অপর উদ্দেশ্য, সদস্তপদপ্রার্থীদের ধর্ম কি তাহা বিবেটিত না-হইয়া সদস্যের কান্স করিবার বোগাতা তাহাদের কিন্ত্রপ আছে, তাহাই যেন বিবেচিত হয়। কিন্ত মিঃ জিল্লার প্রথম সর্ভটির মধ্যে এই ক্রেদ त्रश्चित्राटक, त्व, भूमनभान निर्द्धाठक एवत मः चा বাডাইতেই উদ্দেশ্য এই, যে, যে-হিন্দু সদস্যপদপ্রার্থী সদস্তপদপ্ৰাৰ্থী অধিকাংশ **९** (य-मून्रवमान নির্মাচকের ভোট পাইকেন, তিনিই বেন নির্মাচিত হন এবং হিন্দু নির্ব্যাচকদের ভোটের প্রভাব বেন অনুভূত না হয় বা ধুব কম অনুভূত হয়। সম্মিলিত নির্বাচকমগুলীর দার। দশ্দিলিত নির্বাচনের যে যে উদ্দেশ্য পূর্বে লিখিত হইয়াছে, মি: জিলার সর্ভটির অন্তর্নিহিত উদ্দেশ্য তাহার ঠিক বিপরীত এবং তাহাকে অসিদ্ধ করিবার উপার মাত্র।

অতএব এই সব কারণেও মিঃ জিল্লার প্রথম সর্ভটি প্রহণ-বোগা নহে।

চতুর্থ সর্ভটিতে আছে, যে, বঙ্গে ইউরোপীয়দিগকে
'(তাহাদের সংখ্যা হিসাবে প্রাপ্য নহে এরপ) অত্যন্ত বেশী
বে আসনগুলি দেওরা হইয়াছে, তাহাদের হাত হইতে তাহার
করেকটা পাওরা গেলে মুসনমানেরা তাহার শতকরা
মোটাম্টি ৫৫টি ও হিন্দ্রা মোটাম্টি শতকরা ৪৪টি পাইবে।
—ইহা কালনেমির লক্ষাভাগের মত; ইউরোপীয়েরা কোন
আসন ছাড়িয়া দিবে না, হিন্দু মুসলমানে বধরাও হইবে না।
মাহা হউক, ইহা অপ্রাসন্ধিক।—সকলেই জানেন, অস্ততঃ
সকলেরই জানা উচিত, যে, গুরু লোকসংখ্যা হিসাবেও বঙ্গে
হিন্দুদের যতগুলি আসন পাওনা হয়, তাহা তাহাদিগকে

দেওয়া হয় নাই। লোকদংখা হিদাবে মুস্লমানদের যভ পাওনা হয়, ভাহাদিগকেও তাহা দেওয়া হয় নাই বটে, কিন্তু হিন্দুদিগকে যতগুলা আদন হইতে বঞ্চিত করা হয়রাছে, মুস্লমানদিগকে ততগুলা হইতে বঞ্চিত করা হয় নাই। ফতরাং ইউরোপীয়দিগের নিকট হইতে, কিংবা সাধারণত সকল খ্রীষ্টয়ানদিগের নিকট হইতে কতকগুলি আদন পাইলে তাহার বেশীর ভাগ ভায়ান্সারে হিন্দুদেরই পাওয়া উচিত। কিন্তু মি: জিয়ার চতুর্থ সর্ত্ত বেশীর ভাগ মুস্লমানদিগকেই দিতে বলিতেছে। এই কারণে এই সর্ত্ত প্রহণযোগ্য নহে।

খসড়া চুক্তিপত্রটি সম্বন্ধে আরও একটি বক্তব্য আছে।
উহার কোথাও এ কথা লেখা নাই, যে, হিন্দু মুদলমান লিখ
কেবল নির্বাচনের জন্ত নহে, পরস্ক স্বরাজ-সংগ্রাম চালাইবার
জন্ত মিলিত হইবে। যে-কেই স্বরাজ-সংগ্রাম চালাইবার
ক্রন্ত মিলিত হইবে। যে-কেই স্বরাজ-সংগ্রাম চালাইবে,
সে-ই ইংরেজের বিরাগভাজন এবং অসুগ্রহ হইতে
বঞ্চিত হইবে। খসড়া চুক্তিপত্রটিতে এই প্রকারে
ইংরেজের বিরাগভাজন হইতে প্রস্তৃতির কোন লক্ষণ নাই।
তাহাতে কেবল ইহাই দেখা যাইতেছে, বে, ইংরেজের
অন্ত্রহে মুদলমানেরা যাহা পাইয়াছেন, মিঃ জিল্লা ভাহা
সমস্তই রাধিতে চান এবং মুদলমানদের জন্ত আরও কিছু
লাভ চান।

মাক্রাজের কংগ্রেদী নেতা শ্রীযুক্ত রাজগোপালাচারী বঙ্গের হিন্দুদিগকে স্বার্থত্যাগ করিতে উপদেশ দিয়াছেন, মুসলমানদিগকে কিছু ত্যাগ করিতে বলেন নাই।

থবরের কাগজে ইহাও বাহির গ্রাছে, যে, তিনি এইরাণ বলিয়াতেন, যে, সব প্রায় ঠিকঠাক হইরা গিয়াতির কংগ্রেস এবং নুসলিমলীগ তাহাতে রাজী হইতেন, কেবল বাহিরের লোকদিগের সহিত ("outsiders"দের সহিত্র) আলোচনা করিয়া তাহাদিগকে রাজী করিতে যাওয়ায় চেটাটা পণ্ড হইয়ছে। পঞ্জাবের কথা আমাদের বলা উচিত নয়, তাহা খুব ভাল করিয়া আমাদের জানাও নাই। বাংলা দেশের হিলুরা প্রায়ই প্রীযুক্ত রাজগোপালাচারীর দলের বাহিরের লোক বটে, কিন্তু গুংখের বিষয় সম্প্রদায়িক বাটোরারার বিরুদ্ধে তাহাদেরই অভিবোগ একটা বড় অভিবোগ। প্রীযুক্ত রাজগোপালাচারীর আদালতে বনি ফরিয়াদীকে বাদ দিয়া বিচার চলে, ত চলুক। কিন্তু

ফরিরাদীকে সেই আদাশতের রার শিরোধার্য্য করিতে বলিলে তাহা কিঞ্চিৎ ক্ষবরদন্তী হইবে না কি?

বঙ্গের ক্ষয়িষ্ণু অঞ্চলগুলির উন্নতিসাধন

জলসেচনের ব্যবস্থা ধারা, এবং পদ্মপ্রশালী খনন ও নির্মাণ ধারা অনাবশ্যক জল নিঃসারণের ব্যবস্থা করিয়া, বাংলা-গবাদ্রণ্ট বঙ্গের ক্ষরিষ্ণু অঞ্চলগুলির উন্নতিসাধন করিতে চান, এই রূপ প্রকাশ করিয়াছেন। তদর্থে একটি আইন বঙ্গীর ব্যবস্থাপক সভার পেশ করা ইইয়াছে। গবদ্মেণ্ট এই বিষয়ে একটি পুন্তিকা ক্ষেক্টি মান্চিত্র সহ প্রকাশ করিয়াছেন।

বঙ্গের বহু জেলার এইরূপ চেষ্টার বিশেষ প্রয়োজন আছে। গবনেনি এরূপ চেষ্টা যদি প্রকৃতপ্রস্তাবে করেন ও তাহাতে ক্ষল হয়, তাহা সন্তোবের বিষয় হইবে। তবে, পুতিকাটির মুখবদ্ধ-শ্বরূপ জলসেচ-বিভাগের কমিটির রিপোর্ট হইতে ও বলীয় প্রজামত্ব আইন হইতে বে-সব বাক্য উদ্ধৃত ইইয়াছে, তৎসম্বদ্ধে আমাদের কিছু বক্তব্য আছে। সামান্ত কিছু বলিতেছি।

জলদেচন সম্বন্ধে ঘুমন্ত কে ?

জনসেচ-বিভাগের কমিটি বলিয়াছেন, বাঙালী দিগের মনে এই মিথা বিশ্বাস জন্মাইয়। তাহাদিগকে যুমস্ত রাখা উচিত নর, যে, ক্ষয়্প্র অঞ্চলগুলির উন্নতিসাধন কঠিন ও দীর্ঘকাল-সাপেক্ষ ক্রিক্রা ব্যতীত অন্ত কিছু। কমিট এবং গবন্ধেণ্ট কি নিনেন না, যে, ওয়াকিফ-হাল বাঙালীয়াও তাহাদের নেতা সাংবাদিকরা এই বিশ্বাসে কখনও যুমার নাই; অন্ত কারণে যদি যুমাইয়া থাকে, তাহা হইলেও তাহাদের ঘুম ভাঙিয়াছে অনেক বৎসর আগে, এবং যুমস্ত বা নিক্রিতমন্ত আছেন সরকারী বড় ও ছোট কর্ত্তার।?

বঙ্গে জলসেচন অনাবশ্যক, এ ভ্রম কাহার ?

বঙ্গে জলসেচনের বেশী প্রয়োজন বা মূল্য নাই, জলসেচ-বিভাগের কমিটি এই ভ্রম ভাঙিবারও চেটা করিয়াছেন। কিন্তু এই ভ্রমটা জেশের লোকের চেয়ে গবরোণ্টই বেশী করিয়াছেন। তাহার প্রমাণ করেক বৎসর ধরিয়া পুন: পুন: সাংখ্যিক ভশ্ববিষয়ক সরকারী পুন্তক (Statistical Abstract for British India) হইতে আমরা দিয়াছি। ঐ বিষয়ক সর্বাধুনিক পুন্তক (Eleventh Issue of Statistical Abstract for British India, ১৯৩৪ সালের ১১ই ডিনেম্বর মুদ্রিত ও বর্তমান ১৯৩৫ সালের প্রথম বা দিতীয় মানে প্রকাশিত) হইতে আবার কিছু তথ্য সংগ্রহ করিয়া দিতেছি।

কোন্ প্রদেশে গবর্মেণ্ট ধনোৎপাদক (productive)
জলসেচনের থাল কও মাইল খুলিয়াছেন, ভাহার হিসাব
নীচের ভালিকায় দিভেছি। ইহা মে-বৎসরের (১৯৩০৩১এর) শেষ পর্যান্ত ভাহার পর আর সব প্রদেশের ভূলনামূলক
সংখাতি ল একসলে ছাপা হয় নাই। কিন্তু এই ভালিকা
হইভেই বঙ্গের প্রতি অবহেলা বুঝা যাইবে। প্রসালের পর রি
বঙ্গে এমন কিছু করা হয় নাই, যাহাতে বজের প্রতি যত্ত অন্ত

| প্রদেশ। | খালগুলির | উপ খালগু লির | ব্যব্বিত |
|-----------------|----------|---------------------|-------------------------------|
| | टेक्स्]। | देवचा । | मृत्यक्ष । |
| <u> শক্তাৰ</u> | ં,૯૯૬ | ≈,4•• | :७, 8२, १ •,१•• |
| বোদাই | 6,.20 | : 64 | २२ ,३७, 88,8३• |
| बां श्चा | >> | 9 | レリットリ、ツァイ |
| আগ্ৰা-জযোধা | २,७१५ | :3,526 | २२,२१,७ ५, १ ५८ |
| পঞ্জাব | ७,२ | >७,७७ २ | ७७,১१,१०,१०७ |

অ-ধনোৎপাদক (unproductive) থাল কোথার কড মাইল কত বারে প্রস্তুত করা হইরাছে, ভাহার ভালিকা নীচে দেওয়া হইল।

| ा ज्य : | খালগুলির দৈর্ঘা। | উপখালগুলির দৈর্ঘ্য। | ৰায়িত মূলধন ু |
|----------------|---------------------|------------------------|---------------------|
| <u> শক্তাৰ</u> | \$>> | b 5P | 8,00, e •, 5 : 4. e |
| <u>ৰোম্বাই</u> | २,३•৪ | :,৮:৩ | :>,>e,eq,>eh |
| বাংলা | • 1 | • | ۳8,32,٠٤٠٠ والع |
| আগ্ৰা-অবোধ্যা | 85F | ۱۹8۵ رد | ৩,৩৫, ৫•,২১৬ |
| পঞ্জাৰ | :, • @ • | ৯৬ ૨ | e»,6>,2r0 |

এই ঘূটি তালিকা হইতে বুকা বাইবে, বে, গবংশটি বিদ্ধে স্থলসৈচন সম্বন্ধে উদাসীন ছিলেন। বরাবরই বলে নোট,রাজত্ব আদার অন্ত সব প্রদেশের চেরে বেশী বই কম হয় নাই। স্থতরাং টাকার অভাবে গবর্মেণ্ট বলে কিছু করিতে পারেন নাই, অন্ত সব প্রদেশ খুব রাজত্ব দেয় বলিয়া তথায় প্রচুর জলসেচনের ব্যবস্থা করিয়াছেন, ইহা সত্য

নহে। বরং ইহাই সভা, যে, ব্রিটিশ রাজ্যকালের অভীত সমরে ভারতবর্ধের অন্তর তথাকার বাটতিপুরণের অন্ত এবং ব্রিটিশ রাজ্য বিস্তারের জন্ত, ও অন্ত নানাবিধ ব্যৱের জন্ত, বঙ্গের টাকা বাহিরে শইরা যাওয়া হইত, এবং এখনও হয়।

গবমে তের বণিক্রুদ্ধি

জনসেচনাদি দারা বঙ্গের ক্ষরিষ্ণু জেলাসমূহের উন্নতির চেন্টা সম্বানীর পৃত্তিকার গবন্দেণ্ট বলীর প্রজামত আইন হইতে ৩০ ও ৩৪ ধারা উদ্ধৃত করিরা দেখাইতেছেন, যে, কোন রায়তের জমির উৎপাদিকা শক্তি জমিদারের সম্পূর্ণ আংশিক বামে অথকা নদীর ক্রিরাতে বাড়িয়া থাকিলে জ্মিদার থাজনা বাড়াইবার মোকদমা করিতে পারিবেন, ক্রির বাদ্ধত উৎপাদিত শস্তের অর্দ্ধেকের দাম অপেক্ষা বাজনা বৃদ্ধি আদালত মগুর করিবেন না।

এই ধারাপ্তলি উদ্ধৃত করিবার উদ্দেশ্য এই, যে, গবর্মেণ্ট এখন বঙ্গে বাহা করিতে বাইতেছেন, তন্ধারা জমির উৎপাদিকা শক্তি বাড়িলে জ্বমির ক্লয়কেরা এখনকার চেয়ে ষত বেশী শশু পাইবে, তাহার অছেকের দামটা বৎসর বৎসর সরকার বাহাগ্রর শইবেন। বর্ত্তমান সময়ে বঙ্গের যে-সব অঞ্চল ক্ষিত্র হইয়াছে, তাহা বদি বরাবর ক্ষার্কু ছিল, কিংবা যদি গবন্দেণ্টের দোষক্রটিও অবহেশা ব্যতিরেকে পূর্ব্ব উল্লভ অবস্থা হইতে এখন ক্ষয়িকু হইয়া থাকে, তাহা হইলে গবর্নেণ্ট টাকা ধরচ করিয়া ক্ষয়িকু অঞ্চলগুলিকে বদ্ধিকু করিয়া ্ৰিলে লাভের কতক অংশ পাইবার অধিকারী হইতে রেন। কিন্তু তাহা পাইতে হুইলে জমিদারের মত মণ্টিকে দেওৱানী আদালতে মোকদ্দমা করিয়া তাহা শা তে হইবে, এইরূপ নিয়ম হওয়াই সমত। কলেক্টররূপী শাব্দিষ্ট্রেট নিক্ষের হকুম দারা রায়তের নিকট হই:ত নিজের ধারণা অনুসারে বর্দ্ধিত উৎপাদিত-শস্তের অর্দ্ধেক দাম বংগর বংগর আদার করিবেন, এরপ নিয়ম হওয়া উচিত নয়।

ক্ষয়িস্থৃতার জন্য গবদ্মে প্রের দায়িত্ব বর্জমান জেলা; দক্ষিণ-পশ্চিম বর্জমান ও হুগলী; গ্রিক্ত হুগলীও হাওড়া; বীরভূম; বার্ডা; মেদিনীপুর; মুর্শিদাবাদ; করিদপুরের গোরালক মহকুমা;
নদীরা ও যশোর; চহিবশ-পরগণা; পাবনা; মালদহ;
এবং দিনাজপুর, জলপাইগুড়ি, বগুড়া, রাজশাহী ও রক্ষপুর;
—এই সকল অঞ্চল সহজে গবন্দেণ্ট কাজ করিবেন।

বাংলা দেশে ভূ-করের চিরস্থায়ী বন্ধোবস্ত প্রচলিত। এই বন্দোবন্ত যথন করা হয়, তথন বর্ত্তমানে ক্ষয়িষ্ণু স্থানগুলি गांधात्र निष्कृ हिन ना । এই জञ्ज स्मेर मद अक्षात्र व খাজনার দাবি বেশী, দেখিতে পাওয়া বায়। পূর্ব্ব-বঙ্গের অনেক জেলার ধাজনার দাবি তদপেকা কম। তাহার একটা কারণ অবশ্য এই, যে, হয়ত তথন পূর্ব্ব-বঙ্গে চাথের জমি এখনকার চেয়ে কম ও অরণ্য বেশী ছিল। আমরা পূর্ব্ব-বঙ্গের কোন জায়গারই খাজনা বাড়াইতে বলিভেছি আমরা পূর্ব-বঙ্গের জেলাসমূহকে তুলনার মধ্যে আনিতেছি এই জন্ত, বে, বর্ত্তমানে ক্ষয়িকু অনেক অঞ্চলে বে থাজনার দাবি বেশী, তাহা হই:তই বুঝা ঘাইতেছে, বে. সেগুলি দশশালা বন্দোবন্ত ও চিরস্থায়ী বন্দোবন্তের প্রারম্ভ-কালে ক্ষয়িকু না থাকিয়া বৰ্দ্ধিকু পাকার তথাকার বাজনার হার বেশী করা হইয়াছিল। বঙ্গের বর্ত্তমানে ক্ষয়িক অনেক জেলার যে থাজনার দাবি বেণী, তাহার প্রমাণস্বরূপ আমরা গত (১৯৩৪) ডিদেম্বর মাদে প্রাপ্ত বঙ্গের ভূমির রাজস্ব সম্বন্ধীয় রিপোর্ট (Report on the Land Revenue Administration of the Presidency of Bengal for the year 1933-34) হইতে কতকগুলি জেলার আয়তন এবং ভূমির রাজ্বের দাবির পরিমাণ উদ্ধৃত করিতেছি।

| ८क्नम ! । | বৰ্গমাইলে আয়তন। | ৰাজনার দাবির পরিমার্ |
|-------------------|-----------------------|--------------------------|
| ৰৰ্জমান | ુ ે ક હ | <i>৹৽৾ঀৢ৽ঀ</i> ৢ৻ |
| ৰীৰভূম | 2,9•₩ | :•,85,6•9 |
| বা কুড়া | २,७>১ | 4 8,00,038 |
| <u>ৰেদিনীপুর</u> | 8,5 19 | ₹ ७,७३ ७ |
| र त्रनी | 1,909 | 2,20,696 |
| হাৰড়া | 57.3 | 8 ,89,96 8 |
| চৰিবশ-পরগণা | 5 ,48 % | રર, ∉ ∙ , ૭ 8∦ |
| नवीत्रा | २,9∙≈ | 3,59.936 |
| ৰুশিদাবাদ | >,•₩> | ৴ ৽৾৸8৾ ৢঽ৾৾৾ |
| বশোর | 2,2 • 6 | ٣,38,2 ٩٢ |
| খুলনা | >,865 | a,59,825 |
| চাকা | ৽,৽ ঽ৮ | 4,83,342 |
| মৈমনসিং | ৬,৩•৩ | > ,२७,०১० |
| क्षि ल्लूत | २,७•• | 9,:2 8,8 2,2 |

| বৃাপদ্ধপঞ্জ | 0,486 | ર≥,8૭,৬৫৪ |
|-----------------------|----------------|--|
| চট্টগ্রাম | :,260 | ን ቈ, ፡ ዓ, « ኡ « |
| ত্রিপুরা | ə, ७% | :२,•३,७२৮ |
| নোয়াপালী | . ,≥ ; e | :2,:•,•48 |
| রা জশা হী | २,७∙ ७ | ः •,७৮,२ ०६ |
| নিনাজপুর | 8,303 | ۶ د _و ، ۵ د و د د د د د د د د د د د د د د د د د |
| ब नभा रे छ फ़ि | ÷ ,७१८ | ३२, ११,३ १२ |
| বঙ্গপুর | 8,2 • 8 | ∶•, ১৬ ,৩ ৬8 |
| ৰগুড়া | > ,७ >> | ۵, ۰۲,۵ ۵۵ |
| পাবন' | 1,4+1 | 0,0606 |
| মাল্যঃ | ১,২৩৭ | 8,00,084 |

কোন জেলার আয়তন বড় হইলেই বে দেখানে চাধের জমি বেদী থাকিবেই, এমন নয়। কোন কোন জেলায় পাছাড়-পর্বাত, অরণা, জলা, বিল, কছর ও বালুকাকীর্ণ ভূমি বেদী থাকিতে পারে, এবং চাধের যোগ্য জমি কম থাকিতে পারে। কিন্তু বাংলা দেশে মোটের উপর জেলার আয়তন তাহার চাধের জমির পরিমাণের পরিচায়ক মনে করা যাইতে পারে।

ক্ষয়িক জেলা সম্বন্ধীয় সরকারী পৃত্তিকাটিতে সকলের আগে বর্জমানের কথা বলা হইয়াছে। ইহার সহিত অন্ত ক্ষেকটি কেলার তুলনা করা যাক্। বর্জমানের আয়তন ৩২৬৬ বর্গমাইল, খাজনার দাবি ৩০,৪৩,৬১৫ টাকা। আর কোন জেলার খাজনার দাবি এত নয়। ইহার সমান বা ইহা অপেক্ষা বড় জেলারও খাজনার দাবি ইহার চেয়ে কম। এই বৈষম্য পূর্ব্ব-বঙ্গের কোন কোন জেলায় স্থাপতি। ঢাকার আয়তন ৩২২৮ বর্গমাইল, খাজনার দাবি মাত্র ৬,৪১,১৮৯। মৈননিসংহের আয়তন ৬৩০৩ বর্গমাইল, খাজনার দাবি নিত্র ৯,২৬,০১০।

চিরস্থায়ী বন্দোবন্তে বর্জমান প্রভৃতি কোন কোন

ক্ষেণার থাওনার পরিমাণ বেনী নির্জারিত হওয়াই তাহাদের
পূর্ব্ববিভিঞ্তার একমাত্র প্রমাণ নহে। অন্ত প্রমাণও আছে।
সরকারী কোন কোন ব্যবস্থার ফলে যে তাহারা ক্ষরিষ্ণু
হইয়াছে, তাহারও প্রমাণও আছে।

ডক্টর মেখনাদ সাহা রাজনৈতিক আন্দোলনকারী নহেন। তিনি অধ্যাপক এবং বিজ্ঞানজগতে বৈজ্ঞানিক বলিয়া তিনি প্রসিদ্ধ। তিনি আচার্য্য প্রস্কৃতিক রাবের সপ্রতিবর্ধ পৃত্তি উপলক্ষ্যে প্রকাশিত স্থারক প্রন্তে "Need for a Hydraulic Research Laboratory in Bengal" শীর্ষক যে-প্রাবন্ধ লেথেন, তাহাতে বড় বড় এঞ্জিনিয়ার ও স্বাস্থ্যতন্ধ্যের মত উদ্ধৃত করিয়া তিনি নিজের মত ব্যক্ত করিয়াছেন। সেই প্রবন্ধে তিনি লিখিয়াছেন:—

Central Bengal which enjoyed a salubrious climate during the whole of the Moghul age and early part of the British rule is now fast becoming a wilderness owing to the blocking of the head-waters of her river systems (the Bhagirathi, Jelanghee, etc.) by sand deposits, and blocking of the inland waterways by railway bunds and bridges. West Bengal, which was as healthy and prosperous as Central Bengal up to 1850, has been converted into a malaria-stricken wilderness by the construction of railway bunds, and blocking of the headwaters of the Damodar and her tributaries.

বালী জমিয়া নদীর স্রোত বন্ধ হইয়া যাওয়া সরকারী অনবধানতা ও অবহেলার ফল। রেনওয়ের বাঁধ ও ক্রেনির্মাণ কোথাও বা গবর্মেণ্টের অনুমতি অনুসারে, কোথাও বা গবর্মেণ্টের ছারা—সকল ক্ষেত্রেই গবর্মেণ্টের জ্ঞাতসারে, —হইয়াভে।

বর্ত্তমান প্রভৃতি অঞ্চল যে আগে ভারতবর্ষের একটি উর্বারতম ভূবণ্ড ছিল এবং মাস্ত্রাক্তের তাল্লোর কেলার মন্ত এখনও সেইরূপ থাকিতে পারিত, ডক্টর সাহা তাহার প্রমাণ দিয়াছেন।

The problems of Western Bengal stand by themselves. As Sir William Wilcocks and Dr. Bentley have
very convincingly showed, the decline of this part in
health and prosperity is due to the blocking of the
Damodar and her branches by the bunds and canals
erected to safeguard the E. I. Ry. Wilcocks finds a
surprising parallel between the fanshape alignment of
the old Damodar branches and the alignment of the
Cauvery system in the Tanjore district of Southern
India. . . . At any rate, both Burdwan and Tanjore
formed the richest districts of India in 1815, and, comparing the two, Hamilton wrote in 1815, "In productive
agriculture Burdwan stands first and Tanjore second."

তাহার পর গত এক শত বংসরের ইতিহাস উল্লেখ্ করিয়া ডাঃ সাহা দেখাইয়াছেন, যে, তাটোরে কাষেরী। নদীর বাধ ধ্বংসোমুথ হওয়ার বিখাত এঞিনিয়ার ভারী এ. কটন প্রাচীন হিন্দু রাজাদের এই বাধটি আবার নির্মাণ করিয়া নদীর জল কাবেরী ব-ধীপে সমভাবে বিতরণ করিবার বাবস্থা করেন। সেই জন্ত কাবেরী ব-ধীপের শ্রীসম্পদ অসুর আছে। উহা বর্জমান অপেক্ষা ঐর্যাশালী এবং সম্পূর্ণ ম্যালেরিয়ামুক্ত। বর্জমান সম্বন্ধে এঞিনিয়াররা বিপরীত উপার অবলম্বন করার বর্জমানের তুর্গতি হইয়াছে।

for a Hydraulic Research Laboratory in Bengal" in Burdwan. This was due to the dread of the

Danodar. Tidevastating fixed of the Danodar which becutred at livels of 30 or 40 years was a thing of which everybe was afraid. But apart from the have which such description floods an indicate fixed great leagths of time, however, deed, as the fixed regularly were nothing but be soil. They amended the soil, and washed washed washed larvae. But who about 1850, the Coverament ranted to open the E. Ry, they determined to the the Damodar in order that the rankey might be afe. They shut up the fiver within waterlight comparisent, desed the headwaster of rarious breaches, in the male breaches by men in the molonimists, which were needed for invigating their leads, a criminal act

ইছার কলে কলি ভার ক্রিক্স ক্রেন্ড্র বিশেষ্ট্র দেব ভ্রেছ] বাশিয়া প্র বাড়িল এবং ভরার অবাঞ্জানীদের ভার থাবন বটিলা ভূ বর্তনাম ভিবিজনের-সাভিশ্ব

The result was that the igh a sale before for munication with upper lin ha was breast and the de of Calcutti is reaser commonly and prophe from promitive in the prophe of the line it was done at a terrible cost the people of the line it was done at a terrible cost the people of the line it was done at a terrible cost the people of the line was done at a terrible malarity produce to line it is a line was discussed in the propulation, 122 at million out of two died within ten year. The density of population fell from 750 per square mile to 50th, and according to Bentley, and other competent symborates who ascribel the outbreak of these terrible endemnes to the fault assistant of railway embassisments, the country has never being feel from malaria up to the present time. The farther of the country has never being feel by about 50 per cent, as the land was desired of the inverborne all.

ু রেণও এ-বাধজনিত ম্যালেরিরার বজ্ঞান ভিরিজনেব কার্ট্যারাশ ও ভীষণ লোককর, এবং নীর পাঁচ হইছে উহার চাথেব কেডভনি বঞ্চিত হওগাঁর বর্ধার্য শক্তির আর্কেক ক্লার ইংার জল, ড়াঃ, পাংল বলেন, জারতঃ এই স্ব অঞ্চলেন নারী পাক্ষিণের নিকট ব্রুচে, ক্লাউপ্রণ পাইবার ভারা কিরপো, প্লেক্ষ্মীরার কার্ট্যার ভিনি নির্দেশ করিরাছেন।

there be anything like restrice in the wind, the of Burdwan are entitled to con pensation from that platies concerned for all these terrible inflictions on them. It may be given to them by imposing a contract of the contract of the old pro-perity of the country by unde taking new constructive works according to well lind out and vell-studied plans.

অভাপর লেখক বলি'তছেন, বে, তিনি ব্রমণন ডিবিজনের লোকদিগোব ক্ষতিপূবণ কবিবাব কথা পবিহাস-ছলে তুলেন নাই। অনেক এঞ্জিনিয়ার এরপ সংশে ক্ষতিপুরণের কথা বলিয়াছেন :—

Let nobody think that when I am proposing that the people of Burdwan are entitled to compensation, I am at all loking Such a claim supported by many

build railway bunds in North Bengal for the safety of the Sara Bildge

Any blocking of flood waters by these proposed new railway lines would increase the damage to crops, and in the light of experience of similar works elsewhere the would lead to demind on the part of cultivators for compensation of for increased waterway to pass the flood waters. The best efforts of the Railway Department would be devoted to show that the flood spills were not held up and if these efforts failed, the railway authorities would have to provide increased waterway."

আমাদের বিবে নায়, প্রায়ন্তিও ও ক্ষতিপূরণ স্বরূপ বঙ্গেব ক্ষরিষ্ট অঞ্চলসন্হেব স্বাস্থ্যেব ও উৎপাদিকা শক্তির উন্নতিদাবন ভাবত-গবলোণ্টব নিজ বাবে করিয়া দেওয়া উচিত, এবা তজ্জা অবিবাসীদেব নিকট হইতে ভবিষ্যতেও মূল্য আণায় কবা উচিত নয়। গবলোণ্টকে ইহা কবাইবাব ক্ষমতা অবশু আমাদের নাই। কিন্তু যাহা তাণ্যক্ষত ত'হা বিশাম।

গবল্মেণ্ট মূল্য আদায় করিয়াও যদি ব ক্ষর স্বাস্থ্য ও উৎপাদিকা শক্তি বাড'ইয়া দেন তাহা হইলে দেশের কল্যান হইবে।

माल्यामाग्निक-वाटिंगावा-विटवांशो कन्काटत्रका

গত ১১ ২০ ই ৰ দ্বন দিলীতে সাম্প্রদায়িক-বাটোয়ারা-বি ব'বী কন। রঙ্গ হর্তথা গিয়'ছে। এশ'হাবাদেব বিধ্যাত লী দাব দৈনিক পাত্রর সম্পাদক শ্রীযুক্ত চিবুরাভরী ব**জ্ঞেশ্বর** চিন্ত মণি তাহাব সভাপতি নিকাচিত হইয়াছিলেন। তাঁহার বক্ত গৃদ্ধিপূর্ণ ও দ্বদ হইয়াছিল। অভা**র্থনা-দমিভির** সভাপতি হইয়াভিলেন দি ীব পুপ্রতিষ্ঠিত জনপ্রিয় ডাকোর অপ্রক'শ চক্ত দেন। তিনি "র মব'বু" নামে পবিচিত। তিনিও সংক্ষেপে বেশ সার্ণভ কথা বলিয়াছিলেন ভারত্য ঘব নানা পদেশ হঠ.ত চারি শত প্রতিনিষ্ক্রি আংসিয়াছি লন, এবং শ্রোতাব সংখ্যা হাজাব হুই হইয়াছিলস ডাঃ সেনের ব্জুতার পর সভাপত্তি-নিকাচন হয়। প**ণ্ডিত** মদনমোহন ম'লবীয় নিব্যাচনের প্রস্তাব কবেন, প্রবাসী সম্পাদক প্রভৃতি এই প্রস্তাব সমর্থন করেন। তাহার প্র নভাপতি গ্রাব মুদ্রিত বক্তৃতা পাঠ করেন। ভালনস্তর বিষ্মানিকাচন-সমিতি গ্ৰাসন করিবাব বাবস্থা হয়, ও সেই দিনই পশুবিগু'লব মুদাবিদা করা হয়। তাহার পর দিন তিনটি প্রস্তাব গৃহীত হয়। প্রধান প্রস্তাব**টি** প**ণ্ডিত** মননমে'হন মালবীয় সভার সমক্ষে উপস্থিত কবিয়া হিন্দীতে ভিষয়ে একটি বক্ততা করেন। ভাবাবেগ বশতঃ বক্তভার শেয়ের দিকে তিনি প্রায় অভিভূত হটয়া পড়েন। অভঃপর প্রবাসীর সম্পাদক এবং মুসলমান হিন্দু ও শিখ অনেক ৰক্ষা প্ৰস্তাবটির সমর্থন ও পোষকতা কবেন। মূর্দিদাবাদেব

উকিল ও ব্যবস্থাপক সভাগ সভা মৌলবী আবহুস্ সমদ বলেন, "বাটোয়ারটোর দারা ত্রিটিশ গবলেণ্ট এখন হিন্দু ক্রিকার্ড ক্রিয়াল বিজ্ঞানিশার্ক ক ও মুসলমানদের মধ্যে ভেদ জন্মাইতে পাবিয়াছেন, সেদিন 🕻 রঙ্গাঞ্চালী 🎺 বত্দুরবর্তী নহে যথন মুদলমান সম্প্রদায়ও এই প্রকারে প্রায়রণ করাইরা বিবারি করেক ভাগে বিভক্ত হইবে।" লাহোবের অধ্যাপক **্রীক্রারেল ভাবন্ধক। অন্তা**রের আবহল মজিদ খাঁ বলেন, "দাম্প্রদায়িক পুণক নির্বাচক- विशेष मा। মণ্ডলীপ্ডলা মুসলমান সম্প্রদায়কে আর্থিক উন্নতি কবিতে



ডাকোৰ অপকাশ চন্ত্ৰ সেন ('রামবাবু")

বিন্দুমাত্রও সাহাধ্য করিবে না। তাহাবা সম্প্রদায়েব মধ্যে ন একটা দলেব স্তি করিয়াছে, যাহাবা স্বার্থনিদ্ধিব জ্ঞ ধনায়ের নাম ব্যবহার করি'তছে, এবং আমলাভয়ের ও ত্রিজেদেব সাহায্য করিতেছে।"

প্রতিনিধি ও শ্রোতাদেব মধ্যে গ্রবগু হিন্দু ও শিবই লেশা ছিলেন। কিন্তু মুসলমানের সম্পূর্ণ অভাব ছিল না।

জয়েণ্ট পালে মেণ্টারী কমিটিব রিপোর্টে বলা হইয়াছে, হিন্দুরাও থ্র বেশা পরিমাণে সাম্প্রদায়িক বাটোয়ারাটা मानिया महेबाए । हेश (य मछा नरह, मिल्लीव कनकार्त्रकारि তাহার অন্তত্তম প্রমাণ। কংগ্রেসপক্ষীয় কোন কোন ব্যক্তি বলিয়াছেন, ধখন বাবু রাজেক্তপ্রেসাদ ও মি: ভিরাব মধ্যে বাটোয়ার৷ সম্বন্ধে রম্বার কথাবার্তা চলিতেছিল, তখন কনফারে**লটি** করা ঠিক হুণ নাই। আমবা তাহামনে করি না। তাঁহারা কথাবার্তা চালান, তাহাতে আপত্তি নাই। কিন্তু বাটোৱারাটা যে কভ থারাপ, ভাহা

কিব্ৰপ ুপ্ৰতি

मयकामकात्र रहा

अवता विश्व े अवता वर्षी भारतानिक विकितासक दिनाव उत्पादक विकित व्यक्तित स्वरामक मुकार ७ व्यक्तिक विकास **উनवानिक वह**े पुर्वि वित नवंड प्राविद्यान विद्याली न्याक्रिक मान्यक्त वदवात हुन्दे क्रमण अभिकृत एक विश्व नीटन माज महा मध्य मिसीहिक मनत्कर প্রবাদ্ধিক প্রাঞ্জিত কাছে সারিদেন। ভারতি অনাবশুক ব্যৱ ও অপব্যয় অমিবে না, এবং আৰশাক সং ব্যব্ন বাডিবে না।

পুৰুষ্যু ভারতীয় করেটে উব্ত দেশান হইরাজে ভাষার দ্রান্ত ভারত ক্রত্তার ক্রতারীদেব যে শতকর e টাকা বৈজ্ঞী হ'টাবন্ধী ইয়াছিল, তাহা আর থাকিবে না ব্যাদ্ধান্ত বৈতন পূৰ্ববং ক্রিয়া বেপক্ত वर्तक ना-कावन, उद्धानमध्यत माठा विकास ক্রিটে স্থায়ী করিল দেওরাই উচিত ছিল। ভারতবৃত্তী 獅 প্ৰস্কৃত্য গ্ৰীয়া যত বেশী বেতন পান, অন্ত, 🥌 শ্লেশের গছাত্র বিশ্বাহারীয়া তত মোটা বেতন পৰিপ্র ১৯৩৫-१७ देखन ट्य क्रें ज्लाक होका दानी वात **रहेरव अहाराब** প্রায় সার্থই ব্রহ্ম বি কর্মচারী দিল তে প্রায়ং প্রা কবেছক

ভারতেব ভিন্ন ভার প্রাম্থের প্রাম্থের ক্রাম্থিক ক্লিক্তিব্যক উন্নতির অনু ভারত-শব্দেক্তি এক ক্লিক্তি টার্ছা বর্গদ করিরাছেন। ইহাতে প্রত্যেক প্রদেশের ক্রিটা করেক 'ব্লক্ষ টাকা করিবা পড়িবে। সমগ্র ব্রিটিকশাসিও ভারতক্র ৪,৯৯,৩৫ • টি, পর্বাৎ মোটামুটি পাঁচ লগ প্রাম পাচ লক্ষ গ্রামেব উন্নতির জন্ত এক কোটি (অধাৎ আচে এক শত লক্ষ্য) টাকা বায়ের মানে, গড়ে প্রতি গ্রামের উন্নতির জন্ত কুডি টাকা করিয়া খরচ করা। টাকাণ্ডণি সব প্রামে ছড়াইয়া খরচ করিলে কোনই ফল হইবে না---বিশেষতঃ যথন এক কোটি টাকার একটা বড় অংশ সরকারী নুতন নুতন চাকরোদের বেডন দিতে ব্যয় হইবে। ক্ষরিষ্টু প্রদেশগুলির ক্ষিকু অঞ্চলসমূহের ক্ষিকু গ্রামগুলির উন্নতির ব্দুপ্তই প্রথমে চেষ্টা ক্রিলে কিছু ফল পাওয়া বাইবে।

ভারত-গৰমে পেট বজেটে কিছু টাকংট্টেৰ 🛩 মঞ্বার

| · | | | |
|---|--|--|--|
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |
| | | | |

